

## Table of Contents

|                 |    |
|-----------------|----|
| WAFER.....      | 10 |
| WAFERS.....     | 10 |
| WAG.....        | 10 |
| WAGES.....      | 11 |
| WAGGING.....    | 11 |
| WAGON.....      | 12 |
| WAGONS.....     | 12 |
| WAIL.....       | 12 |
| WAILED.....     | 12 |
| WAILING.....    | 12 |
| WAIT.....       | 13 |
| WAITED.....     | 17 |
| WAITETH.....    | 19 |
| WAITING.....    | 19 |
| WAKE.....       | 20 |
| WAKED.....      | 20 |
| WAKENED.....    | 20 |
| WAKENETH.....   | 20 |
| WAKETH.....     | 20 |
| WAKING.....     | 20 |
| WALK.....       | 20 |
| WALKED.....     | 29 |
| WALKEDST.....   | 35 |
| WALKEST.....    | 35 |
| WALKETH.....    | 35 |
| WALKING.....    | 37 |
| WALL.....       | 38 |
| WALLED.....     | 46 |
| WALLOW.....     | 46 |
| WALLOWED.....   | 47 |
| WALLOWING.....  | 47 |
| WALLS.....      | 47 |
| WANDER.....     | 50 |
| WANDERED.....   | 51 |
| WANDERERS.....  | 51 |
| WANDEREST.....  | 51 |
| WANDERETH.....  | 51 |
| WANDERING.....  | 52 |
| WANDERINGS..... | 52 |
| WANT.....       | 52 |
| WANTED.....     | 53 |
| WANTETH.....    | 54 |
| WANTING.....    | 54 |
| WANTON.....     | 54 |
| WANTONNESS..... | 55 |
| WANTS.....      | 55 |
| WAR.....        | 55 |
| WARD.....       | 65 |

|                  |     |
|------------------|-----|
| WARDROBE.....    | 66  |
| WARDS.....       | 66  |
| WARE.....        | 66  |
| WARES.....       | 67  |
| WARFARE.....     | 67  |
| WARM.....        | 67  |
| WARMED.....      | 68  |
| WARMETH.....     | 68  |
| WARMING.....     | 68  |
| WARN.....        | 68  |
| WARNED.....      | 69  |
| WARNING.....     | 69  |
| WARP.....        | 70  |
| WARRED.....      | 70  |
| WARRETH.....     | 71  |
| WARRING.....     | 71  |
| WARRIOR.....     | 71  |
| WARRIORS.....    | 71  |
| WARS.....        | 71  |
| WAS.....         | 72  |
| WASH.....        | 232 |
| WASHED.....      | 236 |
| WASHEST.....     | 238 |
| WASHING.....     | 238 |
| WASHINGS.....    | 239 |
| WASHPOT.....     | 239 |
| WAST.....        | 239 |
| WASTE.....       | 242 |
| WASTED.....      | 245 |
| WASTENESS.....   | 245 |
| WASTER.....      | 245 |
| WASTES.....      | 245 |
| WASTETH.....     | 246 |
| WASTING.....     | 246 |
| WATCH.....       | 246 |
| WATCHED.....     | 249 |
| WATCHER.....     | 249 |
| WATCHERS.....    | 249 |
| WATCHES.....     | 249 |
| WATCHETH.....    | 250 |
| WATCHFUL.....    | 250 |
| WATCHING.....    | 250 |
| WATCHINGS.....   | 250 |
| WATCHMAN.....    | 251 |
| WATCHMEN.....    | 251 |
| WATCHTOWER.....  | 252 |
| WATER.....       | 252 |
| WATERCOURSE..... | 269 |
| WATERED.....     | 269 |
| WATEREDST.....   | 269 |

|                   |     |
|-------------------|-----|
| WATEREST.....     | 270 |
| WATERETH.....     | 270 |
| WATERFLOOD.....   | 270 |
| WATERING.....     | 270 |
| WATERPOT.....     | 270 |
| WATERPOTS.....    | 270 |
| WATERS.....       | 271 |
| WATERSPOUTS.....  | 282 |
| WATERSPRINGS..... | 282 |
| WAVE.....         | 282 |
| WAVED.....        | 283 |
| WAVERETH.....     | 283 |
| WAVERING.....     | 283 |
| WAVES.....        | 283 |
| WAX.....          | 285 |
| WAXED.....        | 286 |
| WAXEN.....        | 287 |
| WAXETH.....       | 288 |
| WAXING.....       | 288 |
| WAY.....          | 288 |
| WAYFARING.....    | 314 |
| WAYMARKS.....     | 314 |
| WAYS.....         | 314 |
| WAYSIDE.....      | 323 |
| WE.....           | 323 |
| WEAK.....         | 379 |
| WEAKEN.....       | 381 |
| WEAKENED.....     | 381 |
| WEAKENETH.....    | 381 |
| WEAKER.....       | 381 |
| WEAKNESS.....     | 381 |
| WEALTH.....       | 382 |
| WEALTHY.....      | 383 |
| WEANED.....       | 383 |
| WEAPON.....       | 383 |
| WEAPONS.....      | 384 |
| WEAR.....         | 385 |
| WEARETH.....      | 386 |
| WEARIED.....      | 386 |
| WEARIETH.....     | 386 |
| WEARINESS.....    | 387 |
| WEARING.....      | 387 |
| WEARISOME.....    | 387 |
| WEARY.....        | 387 |
| WEASEL.....       | 389 |
| WEATHER.....      | 389 |
| WEAVE.....        | 389 |
| WEAVER.....       | 389 |
| WEAVEST.....      | 390 |
| WEB.....          | 390 |

|                   |     |
|-------------------|-----|
| WEBS.....         | 390 |
| WEDDING.....      | 390 |
| WEDGE.....        | 391 |
| WEDLOCK.....      | 391 |
| WEEDS.....        | 391 |
| WEEK.....         | 391 |
| WEEKS.....        | 392 |
| WEEP.....         | 392 |
| WEEPEST.....      | 394 |
| WEEPETH.....      | 394 |
| WEEPING.....      | 395 |
| WEIGH.....        | 397 |
| WEIGHED.....      | 397 |
| WEIGHETH.....     | 398 |
| WEIGHING.....     | 398 |
| WEIGHT.....       | 398 |
| WEIGHTIER.....    | 401 |
| WEIGHTS.....      | 401 |
| WEIGHTY.....      | 401 |
| WELFARE.....      | 401 |
| WELL.....         | 402 |
| WELL-BELOVED..... | 413 |
| WELLBELOVED.....  | 413 |
| WELLFAVOURED..... | 413 |
| WELLPLEASING..... | 413 |
| WELLS.....        | 413 |
| WELLSPRING.....   | 414 |
| WEN.....          | 414 |
| WENCH.....        | 414 |
| WENT.....         | 414 |
| WENTEST.....      | 471 |
| WEPT.....         | 472 |
| WERE.....         | 475 |
| WERT.....         | 579 |
| WEST.....         | 580 |
| WESTERN.....      | 583 |
| WESTWARD.....     | 583 |
| WET.....          | 584 |
| WHALE.....        | 585 |
| WHALES.....       | 585 |
| WHAT.....         | 585 |
| WHATSOEVER.....   | 623 |
| WHEAT.....        | 629 |
| WHEATEN.....      | 632 |
| WHEEL.....        | 632 |
| WHEELS.....       | 632 |
| WHELP.....        | 634 |
| WHELPS.....       | 634 |
| WHEN.....         | 634 |
| WHENCE.....       | 755 |

|                    |      |
|--------------------|------|
| WHENSOEVER.....    | 758  |
| WHERE.....         | 758  |
| WHEREABOUT.....    | 774  |
| WHEREAS.....       | 774  |
| WHEREBY.....       | 776  |
| WHEREFORE.....     | 778  |
| WHEREIN.....       | 793  |
| WHEREINSOEVER..... | 801  |
| WHEREINTO.....     | 801  |
| WHEREOF.....       | 801  |
| WHEREON.....       | 805  |
| WHERESOEVER.....   | 806  |
| WHERETO.....       | 807  |
| WHEREUNTO.....     | 807  |
| WHEREUPON.....     | 808  |
| WHEREWITH.....     | 809  |
| WHEREWITHAL.....   | 814  |
| WHET.....          | 814  |
| WHETHER.....       | 814  |
| WHICH.....         | 821  |
| WHILE.....         | 1001 |
| WHILES.....        | 1010 |
| WHILST.....        | 1011 |
| WHIP.....          | 1011 |
| WHIPS.....         | 1011 |
| WHIRLETH.....      | 1011 |
| WHIRLWIND.....     | 1011 |
| WHIRLWINDS.....    | 1013 |
| WHISPER.....       | 1013 |
| WHISPERED.....     | 1013 |
| WHISPERER.....     | 1013 |
| WHISPERERS.....    | 1013 |
| WHISPERINGS.....   | 1013 |
| WHIT.....          | 1013 |
| WHITE.....         | 1014 |
| WHITED.....        | 1017 |
| WHITER.....        | 1017 |
| WHITHER.....       | 1017 |
| WHITHERSOEVER..... | 1023 |
| WHO.....           | 1024 |
| WHOEVER.....       | 1060 |
| WHOLE.....         | 1060 |
| WHOLESOME.....     | 1071 |
| WHOLLY.....        | 1071 |
| WHOM.....          | 1073 |
| WHOMSOEVER.....    | 1105 |
| WHORE.....         | 1106 |
| WHOREDOME.....     | 1107 |
| WHOREDOMS.....     | 1108 |
| WHOREMONGER.....   | 1109 |

|                   |      |
|-------------------|------|
| WHOREMONGERS..... | 1109 |
| WHORES.....       | 1109 |
| WHORING.....      | 1109 |
| WHORISH.....      | 1110 |
| WHOSE.....        | 1111 |
| WHOSO.....        | 1124 |
| WHOSOEVER.....    | 1126 |
| WHY.....          | 1133 |
| WICKED.....       | 1145 |
| WICKEDLY.....     | 1157 |
| WICKEDNESS.....   | 1158 |
| WIDE.....         | 1163 |
| WIDENESS.....     | 1164 |
| WIDOW.....        | 1164 |
| WIDOWHOOD.....    | 1166 |
| WIDOWS.....       | 1167 |
| WIFE.....         | 1168 |
| WILD.....         | 1184 |
| WILDERNESS.....   | 1186 |
| WILES.....        | 1199 |
| WILFULLY.....     | 1199 |
| WILILY.....       | 1199 |
| WILL.....         | 1200 |
| WILLETH.....      | 1327 |
| WILLING.....      | 1327 |
| WILLINGLY.....    | 1328 |
| WILLOW.....       | 1329 |
| WILLOWS.....      | 1330 |
| WILT.....         | 1330 |
| WIMPLES.....      | 1339 |
| WIN.....          | 1339 |
| WIND.....         | 1339 |
| WINDING.....      | 1344 |
| WINDOW.....       | 1344 |
| WINDOWS.....      | 1345 |
| WINDS.....        | 1346 |
| WINDY.....        | 1347 |
| WINE.....         | 1347 |
| WINEBIBBER.....   | 1357 |
| WINEBIBBERS.....  | 1357 |
| WINEFAT.....      | 1357 |
| WINEPRESS.....    | 1357 |
| WINEPRESSES.....  | 1358 |
| WINES.....        | 1358 |
| WING.....         | 1358 |
| WINGED.....       | 1359 |
| WINGS.....        | 1359 |
| WINK.....         | 1362 |
| WINKED.....       | 1362 |
| WINKETH.....      | 1362 |

|                   |      |
|-------------------|------|
| WINNETH.....      | 1362 |
| WINNOWNED.....    | 1362 |
| WINNOWETH.....    | 1362 |
| WINTER.....       | 1363 |
| WINTERED.....     | 1363 |
| WINTERHOUSE.....  | 1363 |
| WIPE.....         | 1363 |
| WIPED.....        | 1364 |
| WIPETH.....       | 1364 |
| WIPING.....       | 1364 |
| WIRES.....        | 1364 |
| WISDOM.....       | 1364 |
| WISE.....         | 1373 |
| WISELY.....       | 1382 |
| WISER.....        | 1383 |
| WISH.....         | 1383 |
| WISHED.....       | 1383 |
| WISHING.....      | 1384 |
| WIST.....         | 1384 |
| WIT.....          | 1384 |
| WITCH.....        | 1386 |
| WITCHCRAFT.....   | 1386 |
| WITCHCRAFTS.....  | 1386 |
| WITH.....         | 1386 |
| WITHAL.....       | 1602 |
| WITHDRAW.....     | 1604 |
| WITHDRAWEST.....  | 1604 |
| WITHDRAWETH.....  | 1604 |
| WITHDRAWN.....    | 1604 |
| WITHDREW.....     | 1605 |
| WITHER.....       | 1605 |
| WITHERED.....     | 1606 |
| WITHERETH.....    | 1607 |
| WITHERSOEVER..... | 1607 |
| WITHHELD.....     | 1607 |
| WITHHELDEST.....  | 1607 |
| WITHHOLD.....     | 1608 |
| WITHHOLDEN.....   | 1608 |
| WITHHOLDETH.....  | 1609 |
| WITHIN.....       | 1609 |
| WITHOUT.....      | 1617 |
| WITHS.....        | 1633 |
| WITHSTAND.....    | 1633 |
| WITHSTOOD.....    | 1634 |
| WITNESS.....      | 1634 |
| WITNESSED.....    | 1639 |
| WITNESSES.....    | 1640 |
| WITNESSETH.....   | 1642 |
| WITNESSING.....   | 1642 |
| WITTINGLY.....    | 1642 |

|                    |      |
|--------------------|------|
| WITTY.....         | 1642 |
| WIVES.....         | 1642 |
| WIZARD.....        | 1648 |
| WIZARDS.....       | 1648 |
| WOE.....           | 1648 |
| WOEFUL.....        | 1653 |
| WOES.....          | 1653 |
| WOLF.....          | 1653 |
| WOLVES.....        | 1653 |
| WOMAN.....         | 1654 |
| WOMANKIND.....     | 1669 |
| WOMB.....          | 1669 |
| WOMBS.....         | 1672 |
| WOMEN.....         | 1672 |
| WOMENSERVANTS..... | 1680 |
| WON.....           | 1680 |
| WONDER.....        | 1680 |
| WONDERED.....      | 1681 |
| WONDERFUL.....     | 1682 |
| WONDERFULLY.....   | 1683 |
| WONDERING.....     | 1683 |
| WONDEROUSLY.....   | 1683 |
| WONDERS.....       | 1683 |
| WONDROUS.....      | 1685 |
| WONDROUSLY.....    | 1686 |
| WONT.....          | 1686 |
| WOOD.....          | 1687 |
| WOODS.....         | 1692 |
| WOOF.....          | 1693 |
| WOOL.....          | 1693 |
| WOOLLEN.....       | 1694 |
| WORD.....          | 1694 |
| WORDS.....         | 1721 |
| WORK.....          | 1744 |
| WORKER.....        | 1760 |
| WORKERS.....       | 1760 |
| WORKETH.....       | 1762 |
| WORKFELLOW.....    | 1763 |
| WORKING.....       | 1763 |
| WORKMAN.....       | 1764 |
| WORKMANSHIP.....   | 1764 |
| WORKMEN.....       | 1765 |
| WORKS.....         | 1765 |
| WORLD.....         | 1775 |
| WORLDLY.....       | 1785 |
| WORLDS.....        | 1785 |
| WORM.....          | 1785 |
| WORMS.....         | 1786 |
| WORMWOOD.....      | 1786 |
| WORSE.....         | 1786 |



|                   |      |
|-------------------|------|
| WORSHIP.....      | 1788 |
| WORSHIPPED.....   | 1792 |
| WORSHIPPER.....   | 1796 |
| WORSHIPPERS.....  | 1796 |
| WORSHIPPETH.....  | 1796 |
| WORSHIPPING.....  | 1797 |
| WORST.....        | 1797 |
| WORTH.....        | 1797 |
| WORTHIES.....     | 1798 |
| WORTHILY.....     | 1798 |
| WORTHY.....       | 1798 |
| WOT.....          | 1801 |
| WOTTETH.....      | 1801 |
| WOULD.....        | 1801 |
| WOULDEST.....     | 1819 |
| WOUND.....        | 1821 |
| WOUNDED.....      | 1822 |
| WOUNDEDST.....    | 1823 |
| WOUNDETH.....     | 1823 |
| WOUNDING.....     | 1824 |
| WOUNDS.....       | 1824 |
| WOVE.....         | 1824 |
| WOVEN.....        | 1824 |
| WRAP.....         | 1825 |
| WRAPPED.....      | 1825 |
| WRATH.....        | 1825 |
| WRATHFUL.....     | 1834 |
| WRATHS.....       | 1834 |
| WREATH.....       | 1834 |
| WREATHED.....     | 1834 |
| WREATHEN.....     | 1834 |
| WREATHS.....      | 1835 |
| WREST.....        | 1835 |
| WRESTLE.....      | 1835 |
| WRESTLED.....     | 1835 |
| WRESTLINGS.....   | 1835 |
| WRETCHED.....     | 1835 |
| WRETCHEDNESS..... | 1836 |
| WRING.....        | 1836 |
| WRINGED.....      | 1836 |
| WRINGING.....     | 1836 |
| WRINKLE.....      | 1836 |
| WRINKLES.....     | 1836 |
| WRITE.....        | 1836 |
| WRITER.....       | 1840 |
| WRITEST.....      | 1840 |
| WRITETH.....      | 1840 |
| WRITING.....      | 1841 |
| WRITINGS.....     | 1842 |
| WRITTEN.....      | 1843 |

|                 |      |
|-----------------|------|
| WRONG.....      | 1855 |
| WRONGED.....    | 1856 |
| WRONGETH.....   | 1856 |
| WRONGFULLY..... | 1856 |
| WROTE.....      | 1857 |
| WROTH.....      | 1859 |
| WROUGHT.....    | 1862 |
| WROUGHTEST..... | 1866 |
| WRUNG.....      | 1866 |

## WAFER

Occurrences: 3

Exodus 29:23: "And one loaf of bread, and one cake of oiled bread, and one wafer out of the basket of the unleavened bread that is before the LORD:"

Leviticus 8:26: "And out of the basket of unleavened bread, that was before the LORD, he took one unleavened cake, and a cake of oiled bread, and one wafer, and put them on the fat, and upon the right shoulder:"

Numbers 6:19: "And the priest shall take the sodden shoulder of the ram, and one unleavened cake out of the basket, and one unleavened wafer, and shall put them upon the hands of the Nazarite, after the hair of his separation is shaven:"

## WAFERS

Occurrences: 5

Exodus 16:31: "And the house of Israel called the name thereof Manna: and it was like coriander seed, white; and the taste of it was like wafers made with honey."

Exodus 29:2: "And unleavened bread, and cakes unleavened tempered with oil, and wafers unleavened anointed with oil: of wheaten flour shalt thou make them."

Leviticus 2:4: "And if thou bring an oblation of a meat offering baken in the oven, it shall be unleavened cakes of fine flour mingled with oil, or unleavened wafers anointed with oil."

Leviticus 7:12: "If he offer it for a thanksgiving, then he shall offer with the sacrifice of thanksgiving unleavened cakes mingled with oil, and unleavened wafers anointed with oil, and cakes mingled with oil, of fine flour, fried."

Numbers 6:15: "And a basket of unleavened bread, cakes of fine flour mingled with oil, and wafers of unleavened bread anointed with oil, and their meat offering, and their drink offerings."

## WAG

Occurrences: 3

Jeremiah 18:16: "To make their land desolate, and a perpetual hissing; every one that passeth thereby shall be astonished, and wag his head."

Lamentations 2:15: "All that pass by clap their hands at thee; they hiss and wag their head at the daughter of Jerusalem, saying, Is this the city that men call The perfection of beauty, The joy of the whole earth?"

Zephaniah 2:15: "This is the rejoicing city that dwelt carelessly, that said in her heart, I am, and there is none beside me: how is she become a desolation, a place for beasts to lie down in! every one that passeth by her shall hiss, and wag his hand."

## WAGES

Occurrences: 17

Genesis 29:15: "And Laban said unto Jacob, Because thou art my brother, shouldest thou therefore serve me for nought? tell me, what shall thy wages be?"

Genesis 30:28: "And he said, Appoint me thy wages, and I will give it."

Genesis 31:7: "And your father hath deceived me, and changed my wages ten times; but God suffered him not to hurt me."

Genesis 31:8: "If he said thus, The speckled shall be thy wages; then all the cattle bare speckled: and if he said thus, The ringstraked shall be thy hire; then bare all the cattle ringstraked."

Genesis 31:41: "Thus have I been twenty years in thy house; I served thee fourteen years for thy two daughters, and six years for thy cattle: and thou hast changed my wages ten times."

Exodus 2:9: "And Pharaoh's daughter said unto her, Take this child away, and nurse it for me, and I will give thee thy wages. And the women took the child, and nursed it."

Leviticus 19:13: "Thou shalt not defraud thy neighbour, neither rob him: the wages of him that is hired shall not abide with thee all night until the morning."

Jeremiah 22:13: "Woe unto him that buildeth his house by unrighteousness, and his chambers by wrong; that useth his neighbour's service without wages, and giveth him not for his work;"

Ezekiel 29:18: "Son of man, Nebuchadrezzar king of Babylon caused his army to serve a great service against Tyrus: every head was made bald, and every shoulder was peeled: yet had he no wages, nor his army, for Tyrus, for the service that he had served against it:"

Ezekiel 29:19: "Therefore thus saith the Lord GOD; Behold, I will give the land of Egypt unto Nebuchadrezzar king of Babylon; and he shall take her multitude, and take her spoil, and take her prey; and it shall be the wages for his army."

Haggai 1:6: "Ye have sown much, and bring in little; ye eat, but ye have not enough; ye drink, but ye are not filled with drink; ye clothe you, but there is none warm; and he that earneth wages earneth wages to put it into a bag with holes."

Malachi 3:5: "And I will come near to you to judgment; and I will be a swift witness against the sorcerers, and against the adulterers, and against false swearers, and against those that oppress the hireling in his wages, the widow, and the fatherless, and that turn aside the stranger from his right, and fear not me, saith the LORD of hosts."

Luke 3:14: "And the soldiers likewise demanded of him, saying, And what shall we do? And he said unto them, Do violence to no man, neither accuse any falsely; and be content with your wages."

John 4:36: "And he that reapeth receiveth wages, and gathereth fruit unto life eternal: that both he that soweth and he that reapeth may rejoice together."

Romans 6:23: "For the wages of sin is death; but the gift of God is eternal life through Jesus Christ our Lord."

2 Corinthians 11:8: "I robbed other churches, taking wages of them, to do you service."

2 Peter 2:15: "Which have forsaken the right way, and are gone astray, following the way of Balaam the son of Bosor, who loved the wages of unrighteousness;"

## WAGGING

Occurrences: 2

Matthew 27:39: "And they that passed by reviled him, wagging their heads,"

Mark 15:29: "And they that passed by railed on him, wagging their heads, and saying, Ah, thou that destroyest the temple, and buildest it in three days,"

## **WAGON**

Occurrences: 1

Numbers 7:3: "And they brought their offering before the LORD, six covered wagons, and twelve oxen; a wagon for two of the princes, and for each one an ox: and they brought them before the tabernacle."

## **WAGONS**

Occurrences: 9

Genesis 45:19: "Now thou art commanded, this do ye; take you wagons out of the land of Egypt for your little ones, and for your wives, and bring your father, and come."

Genesis 45:21: "And the children of Israel did so: and Joseph gave them wagons, according to the commandment of Pharaoh, and gave them provision for the way."

Genesis 45:27: "And they told him all the words of Joseph, which he had said unto them: and when he saw the wagons which Joseph had sent to carry him, the spirit of Jacob their father revived:"

Genesis 46:5: "And Jacob rose up from Beersheba: and the sons of Israel carried Jacob their father, and their little ones, and their wives, in the wagons which Pharaoh had sent to carry him."

Numbers 7:3: "And they brought their offering before the LORD, six covered wagons, and twelve oxen; a wagon for two of the princes, and for each one an ox: and they brought them before the tabernacle."

Numbers 7:6: "And Moses took the wagons and the oxen, and gave them unto the Levites."

Numbers 7:7: "Two wagons and four oxen he gave unto the sons of Gershon, according to their service:"

Numbers 7:8: "And four wagons and eight oxen he gave unto the sons of Merari, according unto their service, under the hand of Ithamar the son of Aaron the priest."

Ezekiel 23:24: "And they shall come against thee with chariots, wagons, and wheels, and with an assembly of people, which shall set against thee buckler and shield and helmet round about: and I will set judgment before them, and they shall judge thee according to their judgments."

## **WAIL**

Occurrences: 3

Ezekiel 32:18: "Son of man, wail for the multitude of Egypt, and cast them down, even her, and the daughters of the famous nations, unto the nether parts of the earth, with them that go down into the pit."

Micah 1:8: "Therefore I will wail and howl, I will go stripped and naked: I will make a wailing like the dragons, and mourning as the owls."

Revelation 1:7: "Behold, he cometh with clouds; and every eye shall see him, and they also which pierced him: and all kindreds of the earth shall wail because of him. Even so, Amen."

## **WAILED**

Occurrences: 1

Mark 5:38: "And he cometh to the house of the ruler of the synagogue, and seeth the tumult, and them that wept and wailed greatly."

## **WAILING**

Occurrences: 15

Esther 4:3: "And in every province, whithersoever the king's commandment and his decree came, there was great mourning among the Jews, and fasting, and weeping, and wailing; and many lay in

sackcloth and ashes."

Jeremiah 9:10: "For the mountains will I take up a weeping and wailing, and for the habitations of the wilderness a lamentation, because they are burned up, so that none can pass through them; neither can men hear the voice of the cattle; both the fowl of the heavens and the beast are fled; they are gone."

Jeremiah 9:18: "And let them make haste, and take up a wailing for us, that our eyes may run down with tears, and our eyelids gush out with waters."

Jeremiah 9:19: "For a voice of wailing is heard out of Zion, How are we spoiled! we are greatly confounded, because we have forsaken the land, because our dwellings have cast us out."

Jeremiah 9:20: "Yet hear the word of the LORD, O ye women, and let your ear receive the word of his mouth, and teach your daughters wailing, and every one her neighbour lamentation."

Ezekiel 7:11: "Violence is risen up into a rod of wickedness: none of them shall remain, nor of their multitude, nor of any of their's: neither shall there be wailing for them."

Ezekiel 27:31: "And they shall make themselves utterly bald for thee, and gird them with sackcloth, and they shall weep for thee with bitterness of heart and bitter wailing."

Ezekiel 27:32: "And in their wailing they shall take up a lamentation for thee, and lament over thee, saying, What city is like Tyrus, like the destroyed in the midst of the sea?"

Amos 5:16: "Therefore the LORD, the God of hosts, the LORD, saith thus; Wailing shall be in all streets; and they shall say in all the highways, Alas! alas! and they shall call the husbandman to mourning, and such as are skilful of lamentation to wailing."

Amos 5:17: "And in all vineyards shall be wailing: for I will pass through thee, saith the LORD."

Micah 1:8: "Therefore I will wail and howl, I will go stripped and naked: I will make a wailing like the dragons, and mourning as the owls."

Matthew 13:42: "And shall cast them into a furnace of fire: there shall be wailing and gnashing of teeth."

Matthew 13:50: "And shall cast them into the furnace of fire: there shall be wailing and gnashing of teeth."

Revelation 18:15: "The merchants of these things, which were made rich by her, shall stand afar off for the fear of her torment, weeping and wailing,"

Revelation 18:19: "And they cast dust on their heads, and cried, weeping and wailing, saying, Alas, alas that great city, wherein were made rich all that had ships in the sea by reason of her costliness! for in one hour is she made desolate."

## **WAIT**

Occurrences: 101

Exodus 21:13: "And if a man lie not in wait, but God deliver him into his hand; then I will appoint thee a place whither he shall flee."

Numbers 3:10: "And thou shalt appoint Aaron and his sons, and they shall wait on their priest's office: and the stranger that cometh nigh shall be put to death."

Numbers 8:24: "This is it that belongeth unto the Levites: from twenty and five years old and upward they shall go in to wait upon the service of the tabernacle of the congregation:"

Numbers 35:20: "But if he thrust him of hatred, or hurl at him by laying of wait, that he die;"

Numbers 35:22: "But if he thrust him suddenly without enmity, or have cast upon him any thing without laying of wait,"

Deuteronomy 19:11: "But if any man hate his neighbour, and lie in wait for him, and rise up against him, and smite him mortally that he die, and fleeth into one of these cities:"

Joshua 8:4: "And he commanded them, saying, Behold, ye shall lie in wait against the city, even behind the city: go not very far from the city, but be ye all ready:"

Joshua 8:13: "And when they had set the people, even all the host that was on the north of the city, and their liers in wait on the west of the city, Joshua went that night into the midst of the valley."

Judges 9:25: "And the men of Shechem set liers in wait for him in the top of the mountains, and they robbed all that came along that way by them: and it was told Abimelech."

Judges 9:32: "Now therefore up by night, thou and the people that is with thee, and lie in wait in the field:"

Judges 9:34: "And Abimelech rose up, and all the people that were with him, by night, and they laid wait against Shechem in four companies."

Judges 9:35: "And Gaal the son of Ebed went out, and stood in the entering of the gate of the city: and Abimelech rose up, and the people that were with him, from lying in wait."

Judges 9:43: "And he took the people, and divided them into three companies, and laid wait in the field, and looked, and, behold, the people were come forth out of the city; and he rose up against them, and smote them."

Judges 16:2: "And it was told the Gazites, saying, Samson is come hither. And they compassed him in, and laid wait for him all night in the gate of the city, and were quiet all the night, saying, In the morning, when it is day, we shall kill him."

Judges 16:9: "Now there were men lying in wait, abiding with her in the chamber. And she said unto him, The Philistines be upon thee, Samson. And he brake the withs, as a thread of tow is broken when it toucheth the fire. So his strength was not known."

Judges 16:12: "Delilah therefore took new ropes, and bound him therewith, and said unto him, The Philistines be upon thee, Samson. And there were liers in wait abiding in the chamber. And he brake them from off his arms like a thread."

Judges 20:29: "And Israel set liers in wait round about Gibeah."

Judges 20:33: "And all the men of Israel rose up out of their place, and put themselves in array at Baaltamar: and the liers in wait of Israel came forth out of their places, even out of the meadows of Gibeah."

Judges 20:36: "So the children of Benjamin saw that they were smitten: for the men of Israel gave place to the Benjamites, because they trusted unto the liers in wait which they had set beside Gibeah."

Judges 20:37: "And the liers in wait hasted, and rushed upon Gibeah; and the liers in wait drew themselves along, and smote all the city with the edge of the sword."

Judges 20:38: "Now there was an appointed sign between the men of Israel and the liers in wait, that they should make a great flame with smoke rise up out of the city."

Judges 21:20: "Therefore they commanded the children of Benjamin, saying, Go and lie in wait in the vineyards;"

1 Samuel 15:2: "Thus saith the LORD of hosts, I remember that which Amalek did to Israel, how he laid wait for him in the way, when he came up from Egypt."

1 Samuel 15:5: "And Saul came to a city of Amalek, and laid wait in the valley."

1 Samuel 22:8: "That all of you have conspired against me, and there is none that sheweth me that my son hath made a league with the son of Jesse, and there is none of you that is sorry for me, or sheweth unto me that my son hath stirred up my servant against me, to lie in wait, as at this day?"

1 Samuel 22:13: "And Saul said unto him, Why have ye conspired against me, thou and the son of Jesse, in that thou hast given him bread, and a sword, and hast enquired of God for him, that he should rise against me, to lie in wait, as at this day?"

2 Kings 6:33: "And while he yet talked with them, behold, the messenger came down unto him: and he said, Behold, this evil is of the LORD; what should I wait for the LORD any longer?"

1 Chronicles 23:28: "Because their office was to wait on the sons of Aaron for the service of the house of the LORD, in the courts, and in the chambers, and in the purifying of all holy things, and the work of the service of the house of God;"

2 Chronicles 5:11: "And it came to pass, when the priests were come out of the holy place: (for all the priests that were present were sanctified, and did not then wait by course:"

2 Chronicles 13:10: "But as for us, the LORD is our God, and we have not forsaken him; and the

priests, which minister unto the LORD, are the sons of Aaron, and the Levites wait upon their business:"

Ezra 8:31: "Then we departed from the river of Ahava on the twelfth day of the first month, to go unto Jerusalem: and the hand of our God was upon us, and he delivered us from the hand of the enemy, and of such as lay in wait by the way."

Job 14:14: "If a man die, shall he live again? all the days of my appointed time will I wait, till my change come."

Job 17:13: "If I wait, the grave is mine house: I have made my bed in the darkness."

Job 31:9: "If mine heart have been deceived by a woman, or if I have laid wait at my neighbour's door;"

Job 38:40: "When they couch in their dens, and abide in the covert to lie in wait?"

Psalms 10:9: "He lieth in wait secretly as a lion in his den: he lieth in wait to catch the poor: he doth catch the poor, when he draweth him into his net."

Psalms 25:3: "Yea, let none that wait on thee be ashamed: let them be ashamed which transgress without cause."

Psalms 25:5: "Lead me in thy truth, and teach me: for thou art the God of my salvation; on thee do I wait all the day."

Psalms 25:21: "Let integrity and uprightness preserve me; for I wait on thee."

Psalms 27:14: "Wait on the LORD: be of good courage, and he shall strengthen thine heart: wait, I say, on the LORD."

Psalms 37:7: "Rest in the LORD, and wait patiently for him: fret not thyself because of him who prospereth in his way, because of the man who bringeth wicked devices to pass."

Psalms 37:9: "For evildoers shall be cut off: but those that wait upon the LORD, they shall inherit the earth."

Psalms 37:34: "Wait on the LORD, and keep his way, and he shall exalt thee to inherit the land: when the wicked are cut off, thou shalt see it."

Psalms 39:7: "And now, Lord, what wait I for? my hope is in thee."

Psalms 52:9: "I will praise thee for ever, because thou hast done it: and I will wait on thy name; for it is good before thy saints."

Psalms 56:6: "They gather themselves together, they hide themselves, they mark my steps, when they wait for my soul."

Psalms 59:3: "For, lo, they lie in wait for my soul: the mighty are gathered against me; not for my transgression, nor for my sin, O LORD."

Psalms 59:9: "Because of his strength will I wait upon thee: for God is my defence."

Psalms 62:5: "My soul, wait thou only upon God; for my expectation is from him."

Psalms 69:3: "I am weary of my crying: my throat is dried: mine eyes fail while I wait for my God."

Psalms 69:6: "Let not them that wait on thee, O Lord GOD of hosts, be ashamed for my sake: let not those that seek thee be confounded for my sake, O God of Israel."

Psalms 71:10: "For mine enemies speak against me; and they that lay wait for my soul take counsel together,"

Psalms 104:27: "These wait all upon thee; that thou mayest give them their meat in due season."

Psalms 123:2: "Behold, as the eyes of servants look unto the hand of their masters, and as the eyes of a maiden unto the hand of her mistress; so our eyes wait upon the LORD our God, until that he have mercy upon us."

Psalms 130:5: "I wait for the LORD, my soul doth wait, and in his word do I hope."

Psalms 145:15: "The eyes of all wait upon thee; and thou givest them their meat in due season."

Proverbs 1:11: "If they say, Come with us, let us lay wait for blood, let us lurk privily for the innocent without cause:"

Proverbs 1:18: "And they lay wait for their own blood; they lurk privily for their own lives."

Proverbs 7:12: "Now is she without, now in the streets, and lieth in wait at every corner.)"

Proverbs 12:6: "The words of the wicked are to lie in wait for blood: but the mouth of the upright shall deliver them."

Proverbs 20:22: "Say not thou, I will recompense evil; but wait on the LORD, and he shall save thee."

Proverbs 23:28: "She also lieth in wait as for a prey, and increaseth the transgressors among men."

Proverbs 24:15: "Lay not wait, O wicked man, against the dwelling of the righteous; spoil not his resting place:"

Isaiah 8:17: "And I will wait upon the LORD, that hideth his face from the house of Jacob, and I will look for him."

Isaiah 30:18: "And therefore will the LORD wait, that he may be gracious unto you, and therefore will he be exalted, that he may have mercy upon you: for the LORD is a God of judgment: blessed are all they that wait for him."

Isaiah 40:31: "But they that wait upon the LORD shall renew their strength; they shall mount up with wings as eagles; they shall run, and not be weary; and they shall walk, and not faint."

Isaiah 42:4: "He shall not fail nor be discouraged, till he have set judgment in the earth: and the isles shall wait for his law."

Isaiah 49:23: "And kings shall be thy nursing fathers, and their queens thy nursing mothers: they shall bow down to thee with their face toward the earth, and lick up the dust of thy feet; and thou shalt know that I am the LORD: for they shall not be ashamed that wait for me."

Isaiah 51:5: "My righteousness is near; my salvation is gone forth, and mine arms shall judge the people; the isles shall wait upon me, and on mine arm shall they trust."

Isaiah 59:9: "Therefore is judgment far from us, neither doth justice overtake us: we wait for light, but behold obscurity; for brightness, but we walk in darkness."

Isaiah 60:9: "Surely the isles shall wait for me, and the ships of Tarshish first, to bring thy sons from far, their silver and their gold with them, unto the name of the LORD thy God, and to the Holy One of Israel, because he hath glorified thee."

Jeremiah 5:26: "For among my people are found wicked men: they lay wait, as he that setteth snares; they set a trap, they catch men."

Jeremiah 9:8: "Their tongue is as an arrow shot out; it speaketh deceit: one speaketh peaceably to his neighbour with his mouth, but in heart he layeth his wait."

Jeremiah 14:22: "Are there any among the vanities of the Gentiles that can cause rain? or can the heavens give showers? art not thou he, O LORD our God? therefore we will wait upon thee: for thou hast made all these things."

Lamentations 3:10: "He was unto me as a bear lying in wait, and as a lion in secret places."

Lamentations 3:25: "The LORD is good unto them that wait for him, to the soul that seeketh him."

Lamentations 3:26: "It is good that a man should both hope and quietly wait for the salvation of the LORD."

Lamentations 4:19: "Our persecutors are swifter than the eagles of the heaven: they pursued us upon the mountains, they laid wait for us in the wilderness."

Hosea 6:9: "And as troops of robbers wait for a man, so the company of priests murder in the way by consent: for they commit lewdness."

Hosea 7:6: "For they have made ready their heart like an oven, whiles they lie in wait: their baker sleepeth all the night; in the morning it burneth as a flaming fire."

Hosea 12:6: "Therefore turn thou to thy God: keep mercy and judgment and wait on thy God continually."

Micah 7:2: "The good man is perished out of the earth: and there is none upright among men: they all lie in wait for blood; they hunt every man his brother with a net."

Micah 7:7: "Therefore I will look unto the LORD; I will wait for the God of my salvation: my God will hear me."

Habakkuk 2:3: "For the vision is yet for an appointed time, but at the end it shall speak, and not lie:



though it tarry, wait for it; because it will surely come, it will not tarry."

Zephaniah 3:8: "Therefore wait ye upon me, saith the LORD, until the day that I rise up to the prey: for my determination is to gather the nations, that I may assemble the kingdoms, to pour upon them mine indignation, even all my fierce anger: for all the earth shall be devoured with the fire of my jealousy."

Mark 3:9: "And he spake to his disciples, that a small ship should wait on him because of the multitude, lest they should throng him."

Luke 11:54: "Laying wait for him, and seeking to catch something out of his mouth, that they might accuse him."

Luke 12:36: "And ye yourselves like unto men that wait for their lord, when he will return from the wedding; that when he cometh and knocketh, they may open unto him immediately."

Acts 1:4: "And, being assembled together with them, commanded them that they should not depart from Jerusalem, but wait for the promise of the Father, which, saith he, ye have heard of me."

Acts 20:3: "And there abode three months. And when the Jews laid wait for him, as he was about to sail into Syria, he purposed to return through Macedonia."

Acts 20:19: "Serving the LORD with all humility of mind, and with many tears, and temptations, which befell me by the lying in wait of the Jews:"

Acts 23:16: "And when Paul's sister's son heard of their lying in wait, he went and entered into the castle, and told Paul."

Acts 23:21: "But do not thou yield unto them: for there lie in wait for him of them more than forty men, which have bound themselves with an oath, that they will neither eat nor drink till they have killed him: and now are they ready, looking for a promise from thee."

Acts 23:30: "And when it was told me how that the Jews laid wait for the man, I sent straightway to thee, and gave commandment to his accusers also to say before thee what they had against him. Farewell."

Acts 25:3: "And desired favour against him, that he would send for him to Jerusalem, laying wait in the way to kill him."

Romans 8:25: "But if we hope for that we see not, then do we with patience wait for it."

Romans 12:7: "Or ministry, let us wait on our ministering: or he that teacheth, on teaching;"

1 Corinthians 9:13: "Do ye not know that they which minister about holy things live of the things of the temple? and they which wait at the altar are partakers with the altar?"

Galatians 5:5: "For we through the Spirit wait for the hope of righteousness by faith."

Ephesians 4:14: "That we henceforth be no more children, tossed to and fro, and carried about with every wind of doctrine, by the sleight of men, and cunning craftiness, whereby they lie in wait to deceive;"

1 Thessalonians 1:10: "And to wait for his Son from heaven, whom he raised from the dead, even Jesus, which delivered us from the wrath to come."

## **WAITED**

Occurrences: 34

Genesis 49:18: "I have waited for thy salvation, O LORD."

1 Kings 20:38: "So the prophet departed, and waited for the king by the way, and disguised himself with ashes upon his face."

2 Kings 5:2: "And the Syrians had gone out by companies, and had brought away captive out of the land of Israel a little maid; and she waited on Naaman's wife."

1 Chronicles 6:32: "And they ministered before the dwelling place of the tabernacle of the congregation with singing, until Solomon had built the house of the LORD in Jerusalem: and then they waited on their office according to their order."

1 Chronicles 6:33: "And these are they that waited with their children. Of the sons of the Kohathites: Heman a singer, the son of Joel, the son of Shemuel,"

1 Chronicles 9:18: "Who hitherto waited in the king's gate eastward: they were porters in the companies of the children of Levi."

2 Chronicles 7:6: "And the priests waited on their offices: the Levites also with instruments of musick of the LORD, which David the king had made to praise the LORD, because his mercy endureth for ever, when David praised by their ministry; and the priests sounded trumpets before them, and all Israel stood."

2 Chronicles 17:19: "These waited on the king, beside those whom the king put in the fenced cities throughout all Judah."

2 Chronicles 35:15: "And the singers the sons of Asaph were in their place, according to the commandment of David, and Asaph, and Heman, and Jeduthun the king's seer; and the porters waited at every gate; they might not depart from their service; for their brethren the Levites prepared for them."

Nehemiah 12:44: "And at that time were some appointed over the chambers for the treasures, for the offerings, for the firstfruits, and for the tithes, to gather into them out of the fields of the cities the portions of the law for the priests and Levites: for Judah rejoiced for the priests and for the Levites that waited."

Job 6:19: "The troops of Tema looked, the companies of Sheba waited for them."

Job 15:22: "He believeth not that he shall return out of darkness, and he is waited for of the sword."

Job 29:21: "Unto me men gave ear, and waited, and kept silence at my counsel."

Job 29:23: "And they waited for me as for the rain; and they opened their mouth wide as for the latter rain."

Job 30:26: "When I looked for good, then evil came unto me: and when I waited for light, there came darkness."

Job 32:4: "Now Elihu had waited till Job had spoken, because they were elder than he."

Job 32:11: "Behold, I waited for your words; I gave ear to your reasons, whilst ye searched out what to say."

Job 32:16: "When I had waited, (for they spake not, but stood still, and answered no more;)"

Psalms 40:1: "I waited patiently for the LORD; and he inclined unto me, and heard my cry."

Psalms 106:13: "They soon forgat his works; they waited not for his counsel:"

Psalms 119:95: "The wicked have waited for me to destroy me: but I will consider thy testimonies."

Isaiah 25:9: "And it shall be said in that day, Lo, this is our God; we have waited for him, and he will save us: this is the LORD; we have waited for him, we will be glad and rejoice in his salvation."

Isaiah 26:8: "Yea, in the way of thy judgments, O LORD, have we waited for thee; the desire of our soul is to thy name, and to the remembrance of thee."

Isaiah 33:2: "O LORD, be gracious unto us; we have waited for thee: be thou their arm every morning, our salvation also in the time of trouble."

Ezekiel 19:5: "Now when she saw that she had waited, and her hope was lost, then she took another of her whelps, and made him a young lion."

Micah 1:12: "For the inhabitant of Maroth waited carefully for good: but evil came down from the LORD unto the gate of Jerusalem."

Zechariah 11:11: "And it was broken in that day: and so the poor of the flock that waited upon me knew that it was the word of the LORD."

Mark 15:43: "Joseph of Arimathaea, an honourable counsellor, which also waited for the kingdom of God, came, and went in boldly unto Pilate, and craved the body of Jesus."

Luke 1:21: "And the people waited for Zacharias, and marvelled that he tarried so long in the temple."

Luke 23:51: "(The same had not consented to the counsel and deed of them;) he was of Arimathaea, a city of the Jews: who also himself waited for the kingdom of God."

Acts 10:7: "And when the angel which spake unto Cornelius was departed, he called two of his

household servants, and a devout soldier of them that waited on him continually;"

Acts 10:24: "And the morrow after they entered into Caesarea. And Cornelius waited for them, and he had called together his kinsmen and near friends."

Acts 17:16: "Now while Paul waited for them at Athens, his spirit was stirred in him, when he saw the city wholly given to idolatry."

1 Peter 3:20: "Which sometime were disobedient, when once the longsuffering of God waited in the days of Noah, while the ark was a preparing, wherein few, that is, eight souls were saved by water."

## **WAITETH**

Occurrences: 11

Job 24:15: "The eye also of the adulterer waiteth for the twilight, saying, No eye shall see me: and disguiseth his face."

Psalms 33:20: "Our soul waiteth for the LORD: he is our help and our shield."

Psalms 62:1: "Truly my soul waiteth upon God: from him cometh my salvation."

Psalms 65:1: "Praise waiteth for thee, O God, in Sion: and unto thee shall the vow be performed."

Psalms 130:6: "My soul waiteth for the Lord more than they that watch for the morning: I say, more than they that watch for the morning."

Proverbs 27:18: "Whoso keepeth the fig tree shall eat the fruit thereof: so he that waiteth on his master shall be honoured."

Isaiah 64:4: "For since the beginning of the world men have not heard, nor perceived by the ear, neither hath the eye seen, O God, beside thee, what he hath prepared for him that waiteth for him."

Daniel 12:12: "Blessed is he that waiteth, and cometh to the thousand three hundred and five and thirty days."

Micah 5:7: "And the remnant of Jacob shall be in the midst of many people as a dew from the LORD, as the showers upon the grass, that tarrieth not for man, nor waiteth for the sons of men."

Romans 8:19: "For the earnest expectation of the creature waiteth for the manifestation of the sons of God."

James 5:7: "Be patient therefore, brethren, unto the coming of the Lord. Behold, the husbandman waiteth for the precious fruit of the earth, and hath long patience for it, until he receive the early and latter rain."

## **WAITING**

Occurrences: 8

Numbers 8:25: "And from the age of fifty years they shall cease waiting upon the service thereof, and shall serve no more:"

Proverbs 8:34: "Blessed is the man that heareth me, watching daily at my gates, waiting at the posts of my doors."

Luke 2:25: "And, behold, there was a man in Jerusalem, whose name was Simeon; and the same man was just and devout, waiting for the consolation of Israel: and the Holy Ghost was upon him."

Luke 8:40: "And it came to pass, that, when Jesus was returned, the people gladly received him: for they were all waiting for him."

John 5:3: "In these lay a great multitude of impotent folk, of blind, halt, withered, waiting for the moving of the water."

Romans 8:23: "And not only they, but ourselves also, which have the firstfruits of the Spirit, even we ourselves groan within ourselves, waiting for the adoption, to wit, the redemption of our body."

1 Corinthians 1:7: "So that ye come behind in no gift; waiting for the coming of our Lord Jesus Christ:"

2 Thessalonians 3:5: "And the Lord direct your hearts into the love of God, and into the patient waiting for Christ."

## **WAKE**

Occurrences: 4

Jeremiah 51:39: "In their heat I will make their feasts, and I will make them drunken, that they may rejoice, and sleep a perpetual sleep, and not wake, saith the LORD."

Jeremiah 51:57: "And I will make drunk her princes, and her wise men, her captains, and her rulers, and her mighty men: and they shall sleep a perpetual sleep, and not wake, saith the King, whose name is the LORD of hosts."

Joel 3:9: "Proclaim ye this among the Gentiles; Prepare war, wake up the mighty men, let all the men of war draw near; let them come up:"

1 Thessalonians 5:10: "Who died for us, that, whether we wake or sleep, we should live together with him."

## **WAKED**

Occurrences: 1

Zechariah 4:1: "And the angel that talked with me came again, and waked me, as a man that is wakened out of his sleep."

## **WAKENED**

Occurrences: 2

Joel 3:12: "Let the heathen be wakened, and come up to the valley of Jehoshaphat: for there will I sit to judge all the heathen round about."

Zechariah 4:1: "And the angel that talked with me came again, and waked me, as a man that is wakened out of his sleep."

## **WAKENETH**

Occurrences: 1

Isaiah 50:4: "The Lord GOD hath given me the tongue of the learned, that I should know how to speak a word in season to him that is weary: he wakeneth morning by morning, he wakeneth mine ear to hear as the learned."

## **WAKETH**

Occurrences: 2

Psalms 127:1: "Except the LORD build the house, they labour in vain that build it: except the LORD keep the city, the watchman waketh but in vain."

Song of Solomon 5:2: "I sleep, but my heart waketh: it is the voice of my beloved that knocketh, saying, Open to me, my sister, my love, my dove, my undefiled: for my head is filled with dew, and my locks with the drops of the night."

## **WAKING**

Occurrences: 1

Psalms 77:4: "Thou holdest mine eyes waking: I am so troubled that I cannot speak."

## **WALK**

Occurrences: 203

Genesis 13:17: "Arise, walk through the land in the length of it and in the breadth of it; for I will give it unto thee."

Genesis 17:1: "And when Abram was ninety years old and nine, the LORD appeared to Abram, and said unto him, I am the Almighty God; walk before me, and be thou perfect."

Genesis 24:40: "And he said unto me, The LORD, before whom I walk, will send his angel with thee, and prosper thy way; and thou shalt take a wife for my son of my kindred, and of my father's house:"

Genesis 48:15: "And he blessed Joseph, and said, God, before whom my fathers Abraham and Isaac did walk, the God which fed me all my life long unto this day,"

Exodus 16:4: "Then said the LORD unto Moses, Behold, I will rain bread from heaven for you; and the people shall go out and gather a certain rate every day, that I may prove them, whether they will walk in my law, or no."

Exodus 18:20: "And thou shalt teach them ordinances and laws, and shalt shew them the way wherein they must walk, and the work that they must do."

Exodus 21:19: "If he rise again, and walk abroad upon his staff, then shall he that smote him be quit: only he shall pay for the loss of his time, and shall cause him to be thoroughly healed."

Leviticus 18:3: "After the doings of the land of Egypt, wherein ye dwelt, shall ye not do: and after the doings of the land of Canaan, whither I bring you, shall ye not do: neither shall ye walk in their ordinances."

Leviticus 18:4: "Ye shall do my judgments, and keep mine ordinances, to walk therein: I am the LORD your God."

Leviticus 20:23: "And ye shall not walk in the manners of the nation, which I cast out before you: for they committed all these things, and therefore I abhorred them."

Leviticus 26:3: "If ye walk in my statutes, and keep my commandments, and do them;"

Leviticus 26:12: "And I will walk among you, and will be your God, and ye shall be my people."

Leviticus 26:21: "And if ye walk contrary unto me, and will not hearken unto me; I will bring seven times more plagues upon you according to your sins."

Leviticus 26:23: "And if ye will not be reformed by me by these things, but will walk contrary unto me;"

Leviticus 26:24: "Then will I also walk contrary unto you, and will punish you yet seven times for your sins."

Leviticus 26:27: "And if ye will not for all this hearken unto me, but walk contrary unto me;"

Leviticus 26:28: "Then I will walk contrary unto you also in fury; and I, even I, will chastise you seven times for your sins."

Deuteronomy 5:33: "Ye shall walk in all the ways which the LORD your God hath commanded you, that ye may live, and that it may be well with you, and that ye may prolong your days in the land which ye shall possess."

Deuteronomy 8:6: "Therefore thou shalt keep the commandments of the LORD thy God, to walk in his ways, and to fear him."

Deuteronomy 8:19: "And it shall be, if thou do at all forget the LORD thy God, and walk after other gods, and serve them, and worship them, I testify against you this day that ye shall surely perish."

Deuteronomy 10:12: "And now, Israel, what doth the LORD thy God require of thee, but to fear the LORD thy God, to walk in all his ways, and to love him, and to serve the LORD thy God with all thy heart and with all thy soul,"

Deuteronomy 11:22: "For if ye shall diligently keep all these commandments which I command you, to do them, to love the LORD your God, to walk in all his ways, and to cleave unto him;"

Deuteronomy 13:4: "Ye shall walk after the LORD your God, and fear him, and keep his commandments, and obey his voice, and ye shall serve him, and cleave unto him."

Deuteronomy 13:5: "And that prophet, or that dreamer of dreams, shall be put to death; because he hath spoken to turn you away from the LORD your God, which brought you out of the land of Egypt, and redeemed you out of the house of bondage, to thrust thee out of the way which the LORD thy God commanded thee to walk in. So shalt thou put the evil away from the midst of thee."

Deuteronomy 19:9: "If thou shalt keep all these commandments to do them, which I command thee this day, to love the LORD thy God, and to walk ever in his ways; then shalt thou add three cities more for thee, beside these three:"

Deuteronomy 26:17: "Thou hast avouched the LORD this day to be thy God, and to walk in his ways, and to keep his statutes, and his commandments, and his judgments, and to hearken unto his voice:"

Deuteronomy 28:9: "The LORD shall establish thee an holy people unto himself, as he hath sworn unto thee, if thou shalt keep the commandments of the LORD thy God, and walk in his ways."

Deuteronomy 29:19: "And it come to pass, when he heareth the words of this curse, that he bless himself in his heart, saying, I shall have peace, though I walk in the imagination of mine heart, to add drunkenness to thirst:"

Deuteronomy 30:16: "In that I command thee this day to love the LORD thy God, to walk in his ways, and to keep his commandments and his statutes and his judgments, that thou mayest live and multiply: and the LORD thy God shall bless thee in the land whither thou goest to possess it."

Joshua 18:8: "And the men arose, and went away: and Joshua charged them that went to describe the land, saying, Go and walk through the land, and describe it, and come again to me, that I may here cast lots for you before the LORD in Shiloh."

Joshua 22:5: "But take diligent heed to do the commandment and the law, which Moses the servant of the LORD charged you, to love the LORD your God, and to walk in all his ways, and to keep his commandments, and to cleave unto him, and to serve him with all your heart and with all your soul."

Judges 2:22: "That through them I may prove Israel, whether they will keep the way of the LORD to walk therein, as their fathers did keep it, or not."

Judges 5:10: "Speak, ye that ride on white asses, ye that sit in judgment, and walk by the way."

1 Samuel 2:30: "Wherefore the LORD God of Israel saith, I said indeed that thy house, and the house of thy father, should walk before me for ever: but now the LORD saith, Be it far from me; for them that honour me I will honour, and they that despise me shall be lightly esteemed."

1 Samuel 2:35: "And I will raise me up a faithful priest, that shall do according to that which is in mine heart and in my mind: and I will build him a sure house; and he shall walk before mine anointed for ever."

1 Samuel 8:5: "And said unto him, Behold, thou art old, and thy sons walk not in thy ways: now make us a king to judge us like all the nations."

1 Kings 2:3: "And keep the charge of the LORD thy God, to walk in his ways, to keep his statutes, and his commandments, and his judgments, and his testimonies, as it is written in the law of Moses, that thou mayest prosper in all that thou doest, and whithersoever thou turnest thyself:"

1 Kings 2:4: "That the LORD may continue his word which he spake concerning me, saying, If thy children take heed to their way, to walk before me in truth with all their heart and with all their soul, there shall not fail thee (said he) a man on the throne of Israel."

1 Kings 3:14: "And if thou wilt walk in my ways, to keep my statutes and my commandments, as thy father David did walk, then I will lengthen thy days."

1 Kings 6:12: "Concerning this house which thou art in building, if thou wilt walk in my statutes, and execute my judgments, and keep all my commandments to walk in them; then will I perform my word with thee, which I spake unto David thy father:"

1 Kings 8:23: "And he said, LORD God of Israel, there is no God like thee, in heaven above, or on earth beneath, who keepest covenant and mercy with thy servants that walk before thee with all their heart:"

1 Kings 8:25: "Therefore now, LORD God of Israel, keep with thy servant David my father that thou promisedst him, saying, There shall not fail thee a man in my sight to sit on the throne of Israel; so that thy children take heed to their way, that they walk before me as thou hast walked before me."

1 Kings 8:36: "Then hear thou in heaven, and forgive the sin of thy servants, and of thy people Israel, that thou teach them the good way wherein they should walk, and give rain upon thy land, which thou hast given to thy people for an inheritance."

1 Kings 8:58: "That he may incline our hearts unto him, to walk in all his ways, and to keep his commandments, and his statutes, and his judgments, which he commanded our fathers."

1 Kings 8:61: "Let your heart therefore be perfect with the LORD our God, to walk in his statutes, and to keep his commandments, as at this day."

1 Kings 9:4: "And if thou wilt walk before me, as David thy father walked, in integrity of heart, and in uprightness, to do according to all that I have commanded thee, and wilt keep my statutes and my judgments:"

1 Kings 11:38: "And it shall be, if thou wilt hearken unto all that I command thee, and wilt walk in my ways, and do that is right in my sight, to keep my statutes and my commandments, as David my servant did; that I will be with thee, and build thee a sure house, as I built for David, and will give Israel unto thee."

1 Kings 16:31: "And it came to pass, as if it had been a light thing for him to walk in the sins of Jeroboam the son of Nebat, that he took to wife Jezebel the daughter of Ethbaal king of the Zidonians, and went and served Baal, and worshipped him."

2 Kings 10:31: "But Jehu took no heed to walk in the law of the LORD God of Israel with all his heart: for he departed not from the sins of Jeroboam, which made Israel to sin."

2 Kings 23:3: "And the king stood by a pillar, and made a covenant before the LORD, to walk after the LORD, and to keep his commandments and his testimonies and his statutes with all their heart and all their soul, to perform the words of this covenant that were written in this book. And all the people stood to the covenant."

2 Chronicles 6:14: "And said, O LORD God of Israel, there is no God like thee in the heaven, nor in the earth; which keepest covenant, and shewest mercy unto thy servants, that walk before thee with all their hearts:"

2 Chronicles 6:16: "Now therefore, O LORD God of Israel, keep with thy servant David my father that which thou hast promised him, saying, There shall not fail thee a man in my sight to sit upon the throne of Israel; yet so that thy children take heed to their way to walk in my law, as thou hast walked before me."

2 Chronicles 6:27: "Then hear thou from heaven, and forgive the sin of thy servants, and of thy people Israel, when thou hast taught them the good way, wherein they should walk; and send rain upon thy land, which thou hast given unto thy people for an inheritance."

2 Chronicles 6:31: "That they may fear thee, to walk in thy ways, so long as they live in the land which thou gavest unto our fathers."

2 Chronicles 7:17: "And as for thee, if thou wilt walk before me, as David thy father walked, and do according to all that I have commanded thee, and shalt observe my statutes and my judgments;"

2 Chronicles 34:31: "And the king stood in his place, and made a covenant before the LORD, to walk after the LORD, and to keep his commandments, and his testimonies, and his statutes, with all his heart, and with all his soul, to perform the words of the covenant which are written in this book."

Nehemiah 5:9: "Also I said, It is not good that ye do: ought ye not to walk in the fear of our God because of the reproach of the heathen our enemies?"

Nehemiah 10:29: "They clave to their brethren, their nobles, and entered into a curse, and into an oath, to walk in God's law, which was given by Moses the servant of God, and to observe and do all the commandments of the LORD our Lord, and his judgments and his statutes;"

Psalms 12:8: "The wicked walk on every side, when the vilest men are exalted."

Psalms 23:4: "Yea, though I walk through the valley of the shadow of death, I will fear no evil: for thou art with me; thy rod and thy staff they comfort me."

Psalms 26:11: "But as for me, I will walk in mine integrity: redeem me, and be merciful unto me."

Psalms 48:12: "Walk about Zion, and go round about her: tell the towers thereof."

Psalms 56:13: "For thou hast delivered my soul from death: wilt not thou deliver my feet from falling, that I may walk before God in the light of the living?"

Psalms 78:10: "They kept not the covenant of God, and refused to walk in his law;"

Psalms 82:5: "They know not, neither will they understand; they walk on in darkness: all the foundations of the earth are out of course."

Psalms 84:11: "For the LORD God is a sun and shield: the LORD will give grace and glory: no good thing will he withhold from them that walk uprightly."

Psalms 86:11: "Teach me thy way, O LORD; I will walk in thy truth: unite my heart to fear thy name."

Psalms 89:15: "Blessed is the people that know the joyful sound: they shall walk, O LORD, in the light of thy countenance."

Psalms 89:30: "If his children forsake my law, and walk not in my judgments;"

Psalms 101:2: "I will behave myself wisely in a perfect way. O when wilt thou come unto me? I will walk within my house with a perfect heart."

Psalms 115:7: "They have hands, but they handle not: feet have they, but they walk not: neither speak they through their throat."

Psalms 116:9: "I will walk before the LORD in the land of the living."

Psalms 119:1: "Blessed are the undefiled in the way, who walk in the law of the LORD."

Psalms 119:3: "They also do no iniquity: they walk in his ways."

Psalms 119:45: "And I will walk at liberty: for I seek thy precepts."

Psalms 138:7: "Though I walk in the midst of trouble, thou wilt revive me: thou shalt stretch forth thine hand against the wrath of mine enemies, and thy right hand shall save me."

Psalms 143:8: "Cause me to hear thy lovingkindness in the morning; for in thee do I trust: cause me to know the way wherein I should walk; for I lift up my soul unto thee."

Proverbs 1:15: "My son, walk not thou in the way with them; refrain thy foot from their path:"

Proverbs 2:7: "He layeth up sound wisdom for the righteous: he is a buckler to them that walk uprightly."

Proverbs 2:13: "Who leave the paths of uprightness, to walk in the ways of darkness;"

Proverbs 2:20: "That thou mayest walk in the way of good men, and keep the paths of the righteous."

Proverbs 3:23: "Then shalt thou walk in thy way safely, and thy foot shall not stumble."

Ecclesiastes 4:15: "I considered all the living which walk under the sun, with the second child that shall stand up in his stead."

Ecclesiastes 6:8: "For what hath the wise more than the fool? what hath the poor, that knoweth to walk before the living?"

Ecclesiastes 11:9: "Rejoice, O young man, in thy youth; and let thy heart cheer thee in the days of thy youth, and walk in the ways of thine heart, and in the sight of thine eyes: but know thou, that for all these things God will bring thee into judgment."

Isaiah 2:3: "And many people shall go and say, Come ye, and let us go up to the mountain of the LORD, to the house of the God of Jacob; and he will teach us of his ways, and we will walk in his paths: for out of Zion shall go forth the law, and the word of the LORD from Jerusalem."

Isaiah 2:5: "O house of Jacob, come ye, and let us walk in the light of the LORD."

Isaiah 3:16: "Moreover the LORD saith, Because the daughters of Zion are haughty, and walk with stretched forth necks and wanton eyes, walking and mincing as they go, and making a tinkling with their feet:"

Isaiah 8:11: "For the LORD spake thus to me with a strong hand, and instructed me that I should not walk in the way of this people, saying,"

Isaiah 30:2: "That walk to go down into Egypt, and have not asked at my mouth; to strengthen themselves in the strength of Pharaoh, and to trust in the shadow of Egypt!"



Isaiah 30:21: "And thine ears shall hear a word behind thee, saying, This is the way, walk ye in it, when ye turn to the right hand, and when ye turn to the left."

Isaiah 35:9: "No lion shall be there, nor any ravenous beast shall go up thereon, it shall not be found there; but the redeemed shall walk there:"

Isaiah 40:31: "But they that wait upon the LORD shall renew their strength; they shall mount up with wings as eagles; they shall run, and not be weary; and they shall walk, and not faint."

Isaiah 42:5: "Thus saith God the LORD, he that created the heavens, and stretched them out; he that spread forth the earth, and that which cometh out of it; he that giveth breath unto the people upon it, and spirit to them that walk therein:"

Isaiah 42:24: "Who gave Jacob for a spoil, and Israel to the robbers? did not the LORD, he against whom we have sinned? for they would not walk in his ways, neither were they obedient unto his law."

Isaiah 50:11: "Behold, all ye that kindle a fire, that compass yourselves about with sparks: walk in the light of your fire, and in the sparks that ye have kindled. This shall ye have of mine hand; ye shall lie down in sorrow."

Isaiah 59:9: "Therefore is judgment far from us, neither doth justice overtake us: we wait for light, but behold obscurity; for brightness, but we walk in darkness."

Jeremiah 3:17: "At that time they shall call Jerusalem the throne of the LORD; and all the nations shall be gathered unto it, to the name of the LORD, to Jerusalem: neither shall they walk any more after the imagination of their evil heart."

Jeremiah 3:18: "In those days the house of Judah shall walk with the house of Israel, and they shall come together out of the land of the north to the land that I have given for an inheritance unto your fathers."

Jeremiah 6:16: "Thus saith the LORD, Stand ye in the ways, and see, and ask for the old paths, where is the good way, and walk therein, and ye shall find rest for your souls. But they said, We will not walk therein."

Jeremiah 6:25: "Go not forth into the field, nor walk by the way; for the sword of the enemy and fear is on every side."

Jeremiah 7:6: "If ye oppress not the stranger, the fatherless, and the widow, and shed not innocent blood in this place, neither walk after other gods to your hurt:"

Jeremiah 7:9: "Will ye steal, murder, and commit adultery, and swear falsely, and burn incense unto Baal, and walk after other gods whom ye know not;"

Jeremiah 7:23: "But this thing commanded I them, saying, Obey my voice, and I will be your God, and ye shall be my people: and walk ye in all the ways that I have commanded you, that it may be well unto you."

Jeremiah 9:4: "Take ye heed every one of his neighbour, and trust ye not in any brother: for every brother will utterly supplant, and every neighbour will walk with slanders."

Jeremiah 13:10: "This evil people, which refuse to hear my words, which walk in the imagination of their heart, and walk after other gods, to serve them, and to worship them, shall even be as this girdle, which is good for nothing."

Jeremiah 16:12: "And ye have done worse than your fathers; for, behold, ye walk every one after the imagination of his evil heart, that they may not hearken unto me:"

Jeremiah 18:12: "And they said, There is no hope: but we will walk after our own devices, and we will every one do the imagination of his evil heart."

Jeremiah 18:15: "Because my people hath forgotten me, they have burned incense to vanity, and they have caused them to stumble in their ways from the ancient paths, to walk in paths, in a way not cast up;"

Jeremiah 23:14: "I have seen also in the prophets of Jerusalem an horrible thing: they commit adultery, and walk in lies: they strengthen also the hands of evildoers, that none doth return from his wickedness; they are all of them unto me as Sodom, and the inhabitants thereof as Gomorrah."

Jeremiah 26:4: "And thou shalt say unto them, Thus saith the LORD; If ye will not hearken to me, to walk in my law, which I have set before you,"

Jeremiah 31:9: "They shall come with weeping, and with supplications will I lead them: I will cause them to walk by the rivers of waters in a straight way, wherein they shall not stumble: for I am a father to Israel, and Ephraim is my firstborn."

Jeremiah 42:3: "That the LORD thy God may shew us the way wherein we may walk, and the thing that we may do."

Lamentations 5:18: "Because of the mountain of Zion, which is desolate, the foxes walk upon it."

Ezekiel 11:20: "That they may walk in my statutes, and keep mine ordinances, and do them: and they shall be my people, and I will be their God."

Ezekiel 20:18: "But I said unto their children in the wilderness, Walk ye not in the statutes of your fathers, neither observe their judgments, nor defile yourselves with their idols:"

Ezekiel 20:19: "I am the LORD your God; walk in my statutes, and keep my judgments, and do them;"

Ezekiel 33:15: "If the wicked restore the pledge, give again that he had robbed, walk in the statutes of life, without committing iniquity; he shall surely live, he shall not die."

Ezekiel 36:12: "Yea, I will cause men to walk upon you, even my people Israel; and they shall possess thee, and thou shalt be their inheritance, and thou shalt no more henceforth bereave them of men."

Ezekiel 36:27: "And I will put my spirit within you, and cause you to walk in my statutes, and ye shall keep my judgments, and do them."

Ezekiel 37:24: "And David my servant shall be king over them; and they all shall have one shepherd: they shall also walk in my judgments, and observe my statutes, and do them."

Ezekiel 42:4: "And before the chambers was a walk to ten cubits breadth inward, a way of one cubit; and their doors toward the north."

Daniel 4:37: "Now I Nebuchadnezzar praise and extol and honour the King of heaven, all whose works are truth, and his ways judgment: and those that walk in pride he is able to abase."

Daniel 9:10: "Neither have we obeyed the voice of the LORD our God, to walk in his laws, which he set before us by his servants the prophets."

Hosea 11:10: "They shall walk after the LORD: he shall roar like a lion: when he shall roar, then the children shall tremble from the west."

Hosea 14:9: "Who is wise, and he shall understand these things? prudent, and he shall know them? for the ways of the LORD are right, and the just shall walk in them: but the transgressors shall fall therein."

Joel 2:8: "Neither shall one thrust another; they shall walk every one in his path: and when they fall upon the sword, they shall not be wounded."

Amos 3:3: "Can two walk together, except they be agreed?"

Micah 4:2: "And many nations shall come, and say, Come, and let us go up to the mountain of the LORD, and to the house of the God of Jacob; and he will teach us of his ways, and we will walk in his paths: for the law shall go forth of Zion, and the word of the LORD from Jerusalem."

Micah 4:5: "For all people will walk every one in the name of his god, and we will walk in the name of the LORD our God for ever and ever."

Micah 6:8: "He hath shewed thee, O man, what is good; and what doth the LORD require of thee, but to do justly, and to love mercy, and to walk humbly with thy God?"

Micah 6:16: "For the statutes of Omri are kept, and all the works of the house of Ahab, and ye walk in their counsels; that I should make thee a desolation, and the inhabitants thereof an hissing: therefore ye shall bear the reproach of my people."

Nahum 2:5: "He shall recount his worthies: they shall stumble in their walk; they shall make haste to the wall thereof, and the defence shall be prepared."

Habakkuk 3:15: "Thou didst walk through the sea with thine horses, through the heap of great

waters."

Habakkuk 3:19: "The LORD God is my strength, and he will make my feet like hinds' feet, and he will make me to walk upon mine high places. To the chief singer on my stringed instruments."

Zephaniah 1:17: "And I will bring distress upon men, that they shall walk like blind men, because they have sinned against the LORD: and their blood shall be poured out as dust, and their flesh as the dung."

Zechariah 1:10: "And the man that stood among the myrtle trees answered and said, These are they whom the LORD hath sent to walk to and fro through the earth."

Zechariah 3:7: "Thus saith the LORD of hosts; If thou wilt walk in my ways, and if thou wilt keep my charge, then thou shalt also judge my house, and shalt also keep my courts, and I will give thee places to walk among these that stand by."

Zechariah 6:7: "And the bay went forth, and sought to go that they might walk to and fro through the earth: and he said, Get you hence, walk to and fro through the earth. So they walked to and fro through the earth."

Zechariah 10:12: "And I will strengthen them in the LORD; and they shall walk up and down in his name, saith the LORD."

Matthew 9:5: "For whether is easier, to say, Thy sins be forgiven thee; or to say, Arise, and walk?"

Matthew 11:5: "The blind receive their sight, and the lame walk, the lepers are cleansed, and the deaf hear, the dead are raised up, and the poor have the gospel preached to them."

Matthew 15:31: "Insomuch that the multitude wondered, when they saw the dumb to speak, the maimed to be whole, the lame to walk, and the blind to see: and they glorified the God of Israel."

Mark 2:9: "Whether is it easier to say to the sick of the palsy, Thy sins be forgiven thee; or to say, Arise, and take up thy bed, and walk?"

Mark 7:5: "Then the Pharisees and scribes asked him, Why walk not thy disciples according to the tradition of the elders, but eat bread with unwashen hands?"

Luke 5:23: "Whether is easier, to say, Thy sins be forgiven thee; or to say, Rise up and walk?"

Luke 7:22: "Then Jesus answering said unto them, Go your way, and tell John what things ye have seen and heard; how that the blind see, the lame walk, the lepers are cleansed, the deaf hear, the dead are raised, to the poor the gospel is preached."

Luke 11:44: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye are as graves which appear not, and the men that walk over them are not aware of them."

Luke 13:33: "Nevertheless I must walk to day, and to morrow, and the day following: for it cannot be that a prophet perish out of Jerusalem."

Luke 20:46: "Beware of the scribes, which desire to walk in long robes, and love greetings in the markets, and the highest seats in the synagogues, and the chief rooms at feasts;"

Luke 24:17: "And he said unto them, What manner of communications are these that ye have one to another, as ye walk, and are sad?"

John 5:8: "Jesus saith unto him, Rise, take up thy bed, and walk."

John 5:11: "He answered them, He that made me whole, the same said unto me, Take up thy bed, and walk."

John 5:12: "Then asked they him, What man is that which said unto thee, Take up thy bed, and walk?"

John 7:1: "After these things Jesus walked in Galilee: for he would not walk in Jewry, because the Jews sought to kill him."

John 8:12: "Then spake Jesus again unto them, saying, I am the light of the world: he that followeth me shall not walk in darkness, but shall have the light of life."

John 11:9: "Jesus answered, Are there not twelve hours in the day? If any man walk in the day, he stumbleth not, because he seeth the light of this world."

John 11:10: "But if a man walk in the night, he stumbleth, because there is no light in him."

John 12:35: "Then Jesus said unto them, Yet a little while is the light with you. Walk while ye have

the light, lest darkness come upon you: for he that walketh in darkness knoweth not whither he goeth."

Acts 3:6: "Then Peter said, Silver and gold have I none; but such as I have give I thee: In the name of Jesus Christ of Nazareth rise up and walk."

Acts 3:12: "And when Peter saw it, he answered unto the people, Ye men of Israel, why marvel ye at this? or why look ye so earnestly on us, as though by our own power or holiness we had made this man to walk?"

Acts 14:16: "Who in times past suffered all nations to walk in their own ways."

Acts 21:21: "And they are informed of thee, that thou teachest all the Jews which are among the Gentiles to forsake Moses, saying that they ought not to circumcise their children, neither to walk after the customs."

Romans 4:12: "And the father of circumcision to them who are not of the circumcision only, but who also walk in the steps of that faith of our father Abraham, which he had being yet uncircumcised."

Romans 6:4: "Therefore we are buried with him by baptism into death: that like as Christ was raised up from the dead by the glory of the Father, even so we also should walk in newness of life."

Romans 8:1: "There is therefore now no condemnation to them which are in Christ Jesus, who walk not after the flesh, but after the Spirit."

Romans 8:4: "That the righteousness of the law might be fulfilled in us, who walk not after the flesh, but after the Spirit."

Romans 13:13: "Let us walk honestly, as in the day; not in rioting and drunkenness, not in chambering and wantonness, not in strife and envying."

1 Corinthians 3:3: "For ye are yet carnal: for whereas there is among you envying, and strife, and divisions, are ye not carnal, and walk as men?"

1 Corinthians 7:17: "But as God hath distributed to every man, as the Lord hath called every one, so let him walk. And so ordain I in all churches."

2 Corinthians 5:7: "(For we walk by faith, not by sight:)"

2 Corinthians 6:16: "And what agreement hath the temple of God with idols? for ye are the temple of the living God; as God hath said, I will dwell in them, and walk in them; and I will be their God, and they shall be my people."

2 Corinthians 10:3: "For though we walk in the flesh, we do not war after the flesh:"

Galatians 5:16: "This I say then, Walk in the Spirit, and ye shall not fulfil the lust of the flesh."

Galatians 5:25: "If we live in the Spirit, let us also walk in the Spirit."

Galatians 6:16: "And as many as walk according to this rule, peace be on them, and mercy, and upon the Israel of God."

Ephesians 2:10: "For we are his workmanship, created in Christ Jesus unto good works, which God hath before ordained that we should walk in them."

Ephesians 4:1: "I therefore, the prisoner of the Lord, beseech you that ye walk worthy of the vocation wherewith ye are called,"

Ephesians 4:17: "This I say therefore, and testify in the Lord, that ye henceforth walk not as other Gentiles walk, in the vanity of their mind,"

Ephesians 5:2: "And walk in love, as Christ also hath loved us, and hath given himself for us an offering and a sacrifice to God for a sweetsmelling savour."

Ephesians 5:8: "For ye were sometimes darkness, but now are ye light in the Lord: walk as children of light:"

Ephesians 5:15: "See then that ye walk circumspectly, not as fools, but as wise,"

Philippians 3:16: "Nevertheless, whereto we have already attained, let us walk by the same rule, let us mind the same thing."

Philippians 3:17: "Brethren, be followers together of me, and mark them which walk so as ye have us for an ensample."

Philippians 3:18: "(For many walk, of whom I have told you often, and now tell you even weeping, that they are the enemies of the cross of Christ:"

Colossians 1:10: "That ye might walk worthy of the Lord unto all pleasing, being fruitful in every good work, and increasing in the knowledge of God;"

Colossians 2:6: "As ye have therefore received Christ Jesus the Lord, so walk ye in him:"

Colossians 4:5: "Walk in wisdom toward them that are without, redeeming the time."

1 Thessalonians 2:12: "That ye would walk worthy of God, who hath called you unto his kingdom and glory."

1 Thessalonians 4:1: "Furthermore then we beseech you, brethren, and exhort you by the Lord Jesus, that as ye have received of us how ye ought to walk and to please God, so ye would abound more and more."

1 Thessalonians 4:12: "That ye may walk honestly toward them that are without, and that ye may have lack of nothing."

2 Thessalonians 3:11: "For we hear that there are some which walk among you disorderly, working not at all, but are busybodies."

2 Peter 2:10: "But chiefly them that walk after the flesh in the lust of uncleanness, and despise government. Presumptuous are they, selfwilled, they are not afraid to speak evil of dignities."

1 John 1:6: "If we say that we have fellowship with him, and walk in darkness, we lie, and do not the truth:"

1 John 1:7: "But if we walk in the light, as he is in the light, we have fellowship one with another, and the blood of Jesus Christ his Son cleanseth us from all sin."

1 John 2:6: "He that saith he abideth in him ought himself also so to walk, even as he walked."

2 John 1:6: "And this is love, that we walk after his commandments. This is the commandment, That, as ye have heard from the beginning, ye should walk in it."

3 John 1:4: "I have no greater joy than to hear that my children walk in truth."

Jude 1:18: "How that they told you there should be mockers in the last time, who should walk after their own ungodly lusts."

Revelation 3:4: "Thou hast a few names even in Sardis which have not defiled their garments; and they shall walk with me in white: for they are worthy."

Revelation 9:20: "And the rest of the men which were not killed by these plagues yet repented not of the works of their hands, that they should not worship devils, and idols of gold, and silver, and brass, and stone, and of wood: which neither can see, nor hear, nor walk:"

Revelation 16:15: "Behold, I come as a thief. Blessed is he that watcheth, and keepeth his garments, lest he walk naked, and they see his shame."

Revelation 21:24: "And the nations of them which are saved shall walk in the light of it: and the kings of the earth do bring their glory and honour into it."

## **WALKED**

Occurrences: 120

Genesis 5:22: "And Enoch walked with God after he begat Methuselah three hundred years, and begat sons and daughters:"

Genesis 5:24: "And Enoch walked with God: and he was not; for God took him."

Genesis 6:9: "These are the generations of Noah: Noah was a just man and perfect in his generations, and Noah walked with God."

Exodus 2:5: "And the daughter of Pharaoh came down to wash herself at the river; and her maidens walked along by the river's side; and when she saw the ark among the flags, she sent her maid to fetch it."

Exodus 14:29: "But the children of Israel walked upon dry land in the midst of the sea; and the waters were a wall unto them on their right hand, and on their left."

Leviticus 26:40: "If they shall confess their iniquity, and the iniquity of their fathers, with their

trespass which they trespassed against me, and that also they have walked contrary unto me;"

Leviticus 26:41: "And that I also have walked contrary unto them, and have brought them into the land of their enemies; if then their uncircumcised hearts be humbled, and they then accept of the punishment of their iniquity:"

Joshua 5:6: "For the children of Israel walked forty years in the wilderness, till all the people that were men of war, which came out of Egypt, were consumed, because they obeyed not the voice of the LORD: unto whom the LORD sware that he would not shew them the land, which the LORD sware unto their fathers that he would give us, a land that floweth with milk and honey."

Judges 2:17: "And yet they would not hearken unto their judges, but they went a whoring after other gods, and bowed themselves unto them: they turned quickly out of the way which their fathers walked in, obeying the commandments of the LORD; but they did not so."

Judges 5:6: "In the days of Shamgar the son of Anath, in the days of Jael, the highways were unoccupied, and the travellers walked through byways."

Judges 11:16: "But when Israel came up from Egypt, and walked through the wilderness unto the Red sea, and came to Kadesh;"

1 Samuel 8:3: "And his sons walked not in his ways, but turned aside after lucre, and took bribes, and perverted judgment."

1 Samuel 12:2: "And now, behold, the king walketh before you: and I am old and grayheaded; and, behold, my sons are with you: and I have walked before you from my childhood unto this day."

2 Samuel 2:29: "And Abner and his men walked all that night through the plain, and passed over Jordan, and went through all Bithron, and they came to Mahanaim."

2 Samuel 7:6: "Whereas I have not dwelt in any house since the time that I brought up the children of Israel out of Egypt, even to this day, but have walked in a tent and in a tabernacle."

2 Samuel 7:7: "In all the places wherein I have walked with all the children of Israel spake I a word with any of the tribes of Israel, whom I commanded to feed my people Israel, saying, Why build ye not me an house of cedar?"

2 Samuel 11:2: "And it came to pass in an eveningtide, that David arose from off his bed, and walked upon the roof of the king's house: and from the roof he saw a woman washing herself; and the woman was very beautiful to look upon."

1 Kings 3:6: "And Solomon said, Thou hast shewed unto thy servant David my father great mercy, according as he walked before thee in truth, and in righteousness, and in uprightness of heart with thee; and thou hast kept for him this great kindness, that thou hast given him a son to sit on his throne, as it is this day."

1 Kings 8:25: "Therefore now, LORD God of Israel, keep with thy servant David my father that thou promisedst him, saying, There shall not fail thee a man in my sight to sit on the throne of Israel; so that thy children take heed to their way, that they walk before me as thou hast walked before me."

1 Kings 9:4: "And if thou wilt walk before me, as David thy father walked, in integrity of heart, and in uprightness, to do according to all that I have commanded thee, and wilt keep my statutes and my judgments:"

1 Kings 11:33: "Because that they have forsaken me, and have worshipped Ashtoreth the goddess of the Zidonians, Chemosh the god of the Moabites, and Milcom the god of the children of Ammon, and have not walked in my ways, to do that which is right in mine eyes, and to keep my statutes and my judgments, as did David his father."

1 Kings 15:3: "And he walked in all the sins of his father, which he had done before him: and his heart was not perfect with the LORD his God, as the heart of David his father."

1 Kings 15:26: "And he did evil in the sight of the LORD, and walked in the way of his father, and in his sin wherewith he made Israel to sin."

1 Kings 15:34: "And he did evil in the sight of the LORD, and walked in the way of Jeroboam, and in his sin wherewith he made Israel to sin."

1 Kings 16:2: "Forasmuch as I exalted thee out of the dust, and made thee prince over my people Israel; and thou hast walked in the way of Jeroboam, and hast made my people Israel to sin, to provoke me to anger with their sins;"

1 Kings 16:26: "For he walked in all the way of Jeroboam the son of Nebat, and in his sin wherewith he made Israel to sin, to provoke the LORD God of Israel to anger with their vanities."

1 Kings 22:43: "And he walked in all the ways of Asa his father; he turned not aside from it, doing that which was right in the eyes of the LORD: nevertheless the high places were not taken away; for the people offered and burnt incense yet in the high places."

1 Kings 22:52: "And he did evil in the sight of the LORD, and walked in the way of his father, and in the way of his mother, and in the way of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin:"

2 Kings 4:35: "Then he returned, and walked in the house to and fro; and went up, and stretched himself upon him: and the child sneezed seven times, and the child opened his eyes."

2 Kings 8:18: "And he walked in the way of the kings of Israel, as did the house of Ahab: for the daughter of Ahab was his wife: and he did evil in the sight of the LORD."

2 Kings 8:27: "And he walked in the way of the house of Ahab, and did evil in the sight of the LORD, as did the house of Ahab: for he was the son in law of the house of Ahab."

2 Kings 13:6: "Nevertheless they departed not from the sins of the house of Jeroboam, who made Israel sin, but walked therein: and there remained the grove also in Samaria.)"

2 Kings 13:11: "And he did that which was evil in the sight of the LORD; he departed not from all the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel sin: but he walked therein."

2 Kings 16:3: "But he walked in the way of the kings of Israel, yea, and made his son to pass through the fire, according to the abominations of the heathen, whom the LORD cast out from before the children of Israel."

2 Kings 17:8: "And walked in the statutes of the heathen, whom the LORD cast out from before the children of Israel, and of the kings of Israel, which they had made."

2 Kings 17:19: "Also Judah kept not the commandments of the LORD their God, but walked in the statutes of Israel which they made."

2 Kings 17:22: "For the children of Israel walked in all the sins of Jeroboam which he did; they departed not from them;"

2 Kings 20:3: "I beseech thee, O LORD, remember now how I have walked before thee in truth and with a perfect heart, and have done that which is good in thy sight. And Hezekiah wept sore."

2 Kings 21:21: "And he walked in all the way that his father walked in, and served the idols that his father served, and worshipped them:"

2 Kings 21:22: "And he forsook the LORD God of his fathers, and walked not in the way of the LORD."

2 Kings 22:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, and walked in all the way of David his father, and turned not aside to the right hand or to the left."

1 Chronicles 17:6: "Wheresoever I have walked with all Israel, spake I a word to any of the judges of Israel, whom I commanded to feed my people, saying, Why have ye not built me an house of cedars?"

1 Chronicles 17:8: "And I have been with thee whithersoever thou hast walked, and have cut off all thine enemies from before thee, and have made thee a name like the name of the great men that are in the earth."

2 Chronicles 6:16: "Now therefore, O LORD God of Israel, keep with thy servant David my father that which thou hast promised him, saying, There shall not fail thee a man in my sight to sit upon the throne of Israel; yet so that thy children take heed to their way to walk in my law, as thou hast walked before me."

2 Chronicles 7:17: "And as for thee, if thou wilt walk before me, as David thy father walked, and do according to all that I have commanded thee, and shalt observe my statutes and my judgments;"

2 Chronicles 11:17: "So they strengthened the kingdom of Judah, and made Rehoboam the son of

Solomon strong, three years: for three years they walked in the way of David and Solomon."

2 Chronicles 17:3: "And the LORD was with Jehoshaphat, because he walked in the first ways of his father David, and sought not unto Baalim;"

2 Chronicles 17:4: "But sought to the Lord God of his father, and walked in his commandments, and not after the doings of Israel."

2 Chronicles 20:32: "And he walked in the way of Asa his father, and departed not from it, doing that which was right in the sight of the LORD."

2 Chronicles 21:6: "And he walked in the way of the kings of Israel, like as did the house of Ahab: for he had the daughter of Ahab to wife: and he wrought that which was evil in the eyes of the LORD."

2 Chronicles 21:12: "And there came a writing to him from Elijah the prophet, saying, Thus saith the LORD God of David thy father, Because thou hast not walked in the ways of Jehoshaphat thy father, nor in the ways of Asa king of Judah,"

2 Chronicles 21:13: "But hast walked in the way of the kings of Israel, and hast made Judah and the inhabitants of Jerusalem to go a whoring, like to the whoredoms of the house of Ahab, and also hast slain thy brethren of thy father's house, which were better than thyself:"

2 Chronicles 22:3: "He also walked in the ways of the house of Ahab: for his mother was his counsellor to do wickedly."

2 Chronicles 22:5: "He walked also after their counsel, and went with Jehoram the son of Ahab king of Israel to war against Hazael king of Syria at Ramothgilead: and the Syrians smote Joram."

2 Chronicles 28:2: "For he walked in the ways of the kings of Israel, and made also molten images for Baalim."

2 Chronicles 34:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, and walked in the ways of David his father, and declined neither to the right hand, nor to the left."

Esther 2:11: "And Mordecai walked every day before the court of the women's house, to know how Esther did, and what should become of her."

Job 29:3: "When his candle shined upon my head, and when by his light I walked through darkness;"

Job 31:5: "If I have walked with vanity, or if my foot hath hastened to deceit;"

Job 31:7: "If my step hath turned out of the way, and mine heart walked after mine eyes, and if any blot hath cleaved to mine hands;"

Job 38:16: "Hast thou entered into the springs of the sea? or hast thou walked in the search of the depth?"

Psalms 26:1: "Judge me, O LORD; for I have walked in mine integrity: I have trusted also in the LORD; therefore I shall not slide."

Psalms 26:3: "For thy lovingkindness is before mine eyes: and I have walked in thy truth."

Psalms 55:14: "We took sweet counsel together, and walked unto the house of God in company."

Psalms 81:12: "So I gave them up unto their own hearts' lust: and they walked in their own counsels."

Psalms 81:13: "Oh that my people had hearkened unto me, and Israel had walked in my ways!"

Psalms 142:3: "When my spirit was overwhelmed within me, then thou knewest my path. In the way wherein I walked have they privily laid a snare for me."

Isaiah 9:2: "The people that walked in darkness have seen a great light: they that dwell in the land of the shadow of death, upon them hath the light shined."

Isaiah 20:3: "And the LORD said, Like as my servant Isaiah hath walked naked and barefoot three years for a sign and wonder upon Egypt and upon Ethiopia;"

Isaiah 38:3: "And said, Remember now, O LORD, I beseech thee, how I have walked before thee in truth and with a perfect heart, and have done that which is good in thy sight. And Hezekiah wept sore."

Jeremiah 2:5: "Thus saith the LORD, What iniquity have your fathers found in me, that they are



gone far from me, and have walked after vanity, and are become vain?"

Jeremiah 2:8: "The priests said not, Where is the LORD? and they that handle the law knew me not: the pastors also transgressed against me, and the prophets prophesied by Baal, and walked after things that do not profit."

Jeremiah 7:24: "But they hearkened not, nor inclined their ear, but walked in the counsels and in the imagination of their evil heart, and went backward, and not forward."

Jeremiah 8:2: "And they shall spread them before the sun, and the moon, and all the host of heaven, whom they have loved, and whom they have served, and after whom they have walked, and whom they have sought, and whom they have worshipped: they shall not be gathered, nor be buried; they shall be for dung upon the face of the earth."

Jeremiah 9:13: "And the LORD saith, Because they have forsaken my law which I set before them, and have not obeyed my voice, neither walked therein;"

Jeremiah 9:14: "But have walked after the imagination of their own heart, and after Baalim, which their fathers taught them:"

Jeremiah 11:8: "Yet they obeyed not, nor inclined their ear, but walked every one in the imagination of their evil heart: therefore I will bring upon them all the words of this covenant, which I commanded them to do: but they did them not."

Jeremiah 16:11: "Then shalt thou say unto them, Because your fathers have forsaken me, saith the LORD, and have walked after other gods, and have served them, and have worshipped them, and have forsaken me, and have not kept my law;"

Jeremiah 32:23: "And they came in, and possessed it; but they obeyed not thy voice, neither walked in thy law; they have done nothing of all that thou commandedst them to do: therefore thou hast caused all this evil to come upon them:"

Jeremiah 44:10: "They are not humbled even unto this day, neither have they feared, nor walked in my law, nor in my statutes, that I set before you and before your fathers."

Jeremiah 44:23: "Because ye have burned incense, and because ye have sinned against the LORD, and have not obeyed the voice of the LORD, nor walked in his law, nor in his statutes, nor in his testimonies; therefore this evil is happened unto you, as at this day."

Ezekiel 5:6: "And she hath changed my judgments into wickedness more than the nations, and my statutes more than the countries that are round about her: for they have refused my judgments and my statutes, they have not walked in them."

Ezekiel 5:7: "Therefore thus saith the Lord GOD; Because ye multiplied more than the nations that are round about you, and have not walked in my statutes, neither have kept my judgments, neither have done according to the judgments of the nations that are round about you;"

Ezekiel 11:12: "And ye shall know that I am the LORD: for ye have not walked in my statutes, neither executed my judgments, but have done after the manners of the heathen that are round about you."

Ezekiel 16:47: "Yet hast thou not walked after their ways, nor done after their abominations: but, as if that were a very little thing, thou wast corrupted more than they in all thy ways."

Ezekiel 18:9: "Hath walked in my statutes, and hath kept my judgments, to deal truly; he is just, he shall surely live, saith the Lord GOD."

Ezekiel 18:17: "That hath taken off his hand from the poor, that hath not received usury nor increase, hath executed my judgments, hath walked in my statutes; he shall not die for the iniquity of his father, he shall surely live."

Ezekiel 20:13: "But the house of Israel rebelled against me in the wilderness: they walked not in my statutes, and they despised my judgments, which if a man do, he shall even live in them; and my sabbaths they greatly polluted: then I said, I would pour out my fury upon them in the wilderness, to consume them."

Ezekiel 20:16: "Because they despised my judgments, and walked not in my statutes, but polluted my sabbaths: for their heart went after their idols."

Ezekiel 20:21: "Notwithstanding the children rebelled against me: they walked not in my statutes, neither kept my judgments to do them, which if a man do, he shall even live in them; they polluted my sabbaths: then I said, I would pour out my fury upon them, to accomplish my anger against them in the wilderness."

Ezekiel 23:31: "Thou hast walked in the way of thy sister; therefore will I give her cup into thine hand."

Ezekiel 28:14: "Thou art the anointed cherub that covereth; and I have set thee so: thou wast upon the holy mountain of God; thou hast walked up and down in the midst of the stones of fire."

Daniel 4:29: "At the end of twelve months he walked in the palace of the kingdom of Babylon."

Hosea 5:11: "Ephraim is oppressed and broken in judgment, because he willingly walked after the commandment."

Amos 2:4: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Judah, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because they have despised the law of the LORD, and have not kept his commandments, and their lies caused them to err, after the which their fathers have walked."

Nahum 2:11: "Where is the dwelling of the lions, and the feedingplace of the young lions, where the lion, even the old lion, walked, and the lion's whelp, and none made them afraid?"

Zechariah 1:11: "And they answered the angel of the LORD that stood among the myrtle trees, and said, We have walked to and fro through the earth, and, behold, all the earth sitteth still, and is at rest."

Zechariah 6:7: "And the bay went forth, and sought to go that they might walk to and fro through the earth: and he said, Get you hence, walk to and fro through the earth. So they walked to and fro through the earth."

Malachi 2:6: "The law of truth was in his mouth, and iniquity was not found in his lips: he walked with me in peace and equity, and did turn many away from iniquity."

Malachi 3:14: "Ye have said, It is vain to serve God: and what profit is it that we have kept his ordinance, and that we have walked mournfully before the LORD of hosts?"

Matthew 14:29: "And he said, Come. And when Peter was come down out of the ship, he walked on the water, to go to Jesus."

Mark 1:16: "Now as he walked by the sea of Galilee, he saw Simon and Andrew his brother casting a net into the sea: for they were fishers."

Mark 5:42: "And straightway the damsel arose, and walked; for she was of the age of twelve years. And they were astonished with a great astonishment."

Mark 16:12: "After that he appeared in another form unto two of them, as they walked, and went into the country."

John 1:36: "And looking upon Jesus as he walked, he saith, Behold the Lamb of God!"

John 5:9: "And immediately the man was made whole, and took up his bed, and walked: and on the same day was the sabbath."

John 6:66: "From that time many of his disciples went back, and walked no more with him."

John 7:1: "After these things Jesus walked in Galilee: for he would not walk in Jewry, because the Jews sought to kill him."

John 10:23: "And Jesus walked in the temple in Solomon's porch."

John 11:54: "Jesus therefore walked no more openly among the Jews; but went thence unto a country near to the wilderness, into a city called Ephraim, and there continued with his disciples."

Acts 3:8: "And he leaping up stood, and walked, and entered with them into the temple, walking, and leaping, and praising God."

Acts 14:8: "And there sat a certain man at Lystra, impotent in his feet, being a cripple from his mother's womb, who never had walked:"

Acts 14:10: "Said with a loud voice, Stand upright on thy feet. And he leaped and walked."

2 Corinthians 10:2: "But I beseech you, that I may not be bold when I am present with that confidence, wherewith I think to be bold against some, which think of us as if we walked according

to the flesh."

2 Corinthians 12:18: "I desired Titus, and with him I sent a brother. Did Titus make a gain of you? walked we not in the same spirit? walked we not in the same steps?"

Galatians 2:14: "But when I saw that they walked not uprightly according to the truth of the gospel, I said unto Peter before them all, If thou, being a Jew, livest after the manner of Gentiles, and not as do the Jews, why compellest thou the Gentiles to live as do the Jews?"

Ephesians 2:2: "Wherein in time past ye walked according to the course of this world, according to the prince of the power of the air, the spirit that now worketh in the children of disobedience:"

Colossians 3:7: "In the which ye also walked some time, when ye lived in them."

1 Peter 4:3: "For the time past of our life may suffice us to have wrought the will of the Gentiles, when we walked in lasciviousness, lusts, excess of wine, revellings, banquetings, and abominable idolatries:"

1 John 2:6: "He that saith he abideth in him ought himself also so to walk, even as he walked."

## **WALKEDST**

Occurrences: 1

John 21:18: "Verily, verily, I say unto thee, When thou wast young, thou girdest thyself, and walkedst whither thou wouldest: but when thou shalt be old, thou shalt stretch forth thy hands, and another shall gird thee, and carry thee whither thou wouldest not."

## **WALKEST**

Occurrences: 7

Deuteronomy 6:7: "And thou shalt teach them diligently unto thy children, and shalt talk of them when thou sittest in thine house, and when thou walkest by the way, and when thou liest down, and when thou risest up."

Deuteronomy 11:19: "And ye shall teach them your children, speaking of them when thou sittest in thine house, and when thou walkest by the way, when thou liest down, and when thou risest up."

1 Kings 2:42: "And the king sent and called for Shimei, and said unto him, Did I not make thee to swear by the LORD, and protested unto thee, saying, Know for a certain, on the day thou goest out, and walkest abroad any whither, that thou shalt surely die? and thou saidst unto me, The word that I have heard is good."

Isaiah 43:2: "When thou passest through the waters, I will be with thee; and through the rivers, they shall not overflow thee: when thou walkest through the fire, thou shalt not be burned; neither shall the flame kindle upon thee."

Acts 21:24: "Them take, and purify thyself with them, and be at charges with them, that they may shave their heads: and all may know that those things, whereof they were informed concerning thee, are nothing; but that thou thyself also walkest orderly, and keepest the law."

Romans 14:15: "But if thy brother be grieved with thy meat, now walkest thou not charitably.

Destroy not him with thy meat, for whom Christ died."

3 John 1:3: "For I rejoiced greatly, when the brethren came and testified of the truth that is in thee, even as thou walkest in the truth."

## **WALKETH**

Occurrences: 40

Genesis 24:65: "For she had said unto the servant, What man is this that walketh in the field to meet us? And the servant had said, It is my master: therefore she took a vail, and covered herself."

Deuteronomy 23:14: "For the LORD thy God walketh in the midst of thy camp, to deliver thee, and to give up thine enemies before thee; therefore shall thy camp be holy: that he see no unclean thing

in thee, and turn away from thee."

1 Samuel 12:2: "And now, behold, the king walketh before you: and I am old and grayheaded; and, behold, my sons are with you: and I have walked before you from my childhood unto this day."

Job 18:8: "For he is cast into a net by his own feet, and he walketh upon a snare."

Job 22:14: "Thick clouds are a covering to him, that he seeth not; and he walketh in the circuit of heaven."

Job 34:8: "Which goeth in company with the workers of iniquity, and walketh with wicked men."

Psalms 1:1: "Blessed is the man that walketh not in the counsel of the ungodly, nor standeth in the way of sinners, nor sitteth in the seat of the scornful."

Psalms 15:2: "He that walketh uprightly, and worketh righteousness, and speaketh the truth in his heart."

Psalms 39:6: "Surely every man walketh in a vain shew: surely they are disquieted in vain: he heapeth up riches, and knoweth not who shall gather them."

Psalms 73:9: "They set their mouth against the heavens, and their tongue walketh through the earth."

Psalms 91:6: "Nor for the pestilence that walketh in darkness; nor for the destruction that wasteth at noonday."

Psalms 101:6: "Mine eyes shall be upon the faithful of the land, that they may dwell with me: he that walketh in a perfect way, he shall serve me."

Psalms 104:3: "Who layeth the beams of his chambers in the waters: who maketh the clouds his chariot: who walketh upon the wings of the wind:"

Psalms 128:1: "Blessed is every one that feareth the LORD; that walketh in his ways."

Proverbs 6:12: "A naughty person, a wicked man, walketh with a froward mouth."

Proverbs 10:9: "He that walketh uprightly walketh surely: but he that perverteth his ways shall be known."

Proverbs 13:20: "He that walketh with wise men shall be wise: but a companion of fools shall be destroyed."

Proverbs 14:2: "He that walketh in his uprightness feareth the LORD: but he that is perverse in his ways despiseth him."

Proverbs 15:21: "Folly is joy to him that is destitute of wisdom: but a man of understanding walketh uprightly."

Proverbs 19:1: "Better is the poor that walketh in his integrity, than he that is perverse in his lips, and is a fool."

Proverbs 20:7: "The just man walketh in his integrity: his children are blessed after him."

Proverbs 28:6: "Better is the poor that walketh in his uprightness, than he that is perverse in his ways, though he be rich."

Proverbs 28:18: "Whoso walketh uprightly shall be saved: but he that is perverse in his ways shall fall at once."

Proverbs 28:26: "He that trusteth in his own heart is a fool: but whoso walketh wisely, he shall be delivered."

Ecclesiastes 2:14: "The wise man's eyes are in his head; but the fool walketh in darkness: and I myself perceived also that one event happeneth to them all."

Ecclesiastes 10:3: "Yea also, when he that is a fool walketh by the way, his wisdom faileth him, and he saith to every one that he is a fool."

Isaiah 33:15: "He that walketh righteously, and speaketh uprightly; he that despiseth the gain of oppressions, that shaketh his hands from holding of bribes, that stoppeth his ears from hearing of blood, and shutteth his eyes from seeing evil;"

Isaiah 50:10: "Who is among you that feareth the LORD, that obeyeth the voice of his servant, that walketh in darkness, and hath no light? let him trust in the name of the LORD, and stay upon his God."

Isaiah 65:2: "I have spread out my hands all the day unto a rebellious people, which walketh in a way that was not good, after their own thoughts;"

Jeremiah 10:23: "O LORD, I know that the way of man is not in himself: it is not in man that walketh to direct his steps."

Jeremiah 23:17: "They say still unto them that despise me, The LORD hath said, Ye shall have peace; and they say unto every one that walketh after the imagination of his own heart, No evil shall come upon you."

Ezekiel 11:21: "But as for them whose heart walketh after the heart of their detestable things and their abominations, I will recompense their way upon their own heads, saith the Lord GOD."

Micah 2:7: "O thou that art named the house of Jacob, is the spirit of the LORD straitened? are these his doings? do not my words do good to him that walketh uprightly?"

Matthew 12:43: "When the unclean spirit is gone out of a man, he walketh through dry places, seeking rest, and findeth none."

Luke 11:24: "When the unclean spirit is gone out of a man, he walketh through dry places, seeking rest; and finding none, he saith, I will return unto my house whence I came out."

John 12:35: "Then Jesus said unto them, Yet a little while is the light with you. Walk while ye have the light, lest darkness come upon you: for he that walketh in darkness knoweth not whither he goeth."

2 Thessalonians 3:6: "Now we command you, brethren, in the name of our Lord Jesus Christ, that ye withdraw yourselves from every brother that walketh disorderly, and not after the tradition which he received of us."

1 Peter 5:8: "Be sober, be vigilant; because your adversary the devil, as a roaring lion, walketh about, seeking whom he may devour:"

1 John 2:11: "But he that hateth his brother is in darkness, and walketh in darkness, and knoweth not whither he goeth, because that darkness hath blinded his eyes."

Revelation 2:1: "Unto the angel of the church of Ephesus write; These things saith he that holdeth the seven stars in his right hand, who walketh in the midst of the seven golden candlesticks;"

## **WALKING**

Occurrences: 30

Genesis 3:8: "And they heard the voice of the LORD God walking in the garden in the cool of the day: and Adam and his wife hid themselves from the presence of the LORD God amongst the trees of the garden."

Deuteronomy 2:7: "For the LORD thy God hath blessed thee in all the works of thy hand: he knoweth thy walking through this great wilderness: these forty years the LORD thy God hath been with thee; thou hast lacked nothing."

1 Kings 3:3: "And Solomon loved the LORD, walking in the statutes of David his father: only he sacrificed and burnt incense in high places."

1 Kings 16:19: "For his sins which he sinned in doing evil in the sight of the LORD, in walking in the way of Jeroboam, and in his sin which he did, to make Israel to sin."

Job 1:7: "And the LORD said unto Satan, Whence comest thou? Then Satan answered the LORD, and said, From going to and fro in the earth, and from walking up and down in it."

Job 2:2: "And the LORD said unto Satan, From whence comest thou? And Satan answered the LORD, and said, From going to and fro in the earth, and from walking up and down in it."

Job 31:26: "If I beheld the sun when it shined, or the moon walking in brightness;"

Ecclesiastes 10:7: "I have seen servants upon horses, and princes walking as servants upon the earth."

Isaiah 3:16: "Moreover the LORD saith, Because the daughters of Zion are haughty, and walk with stretched forth necks and wanton eyes, walking and mincing as they go, and making a tinkling with their feet:"

Isaiah 20:2: "At the same time spake the LORD by Isaiah the son of Amoz, saying, Go and loose the sackcloth from off thy loins, and put off thy shoe from thy foot. And he did so, walking naked and barefoot."

Isaiah 57:2: "He shall enter into peace: they shall rest in their beds, each one walking in his uprightness."

Jeremiah 6:28: "They are all grievous revolters, walking with slanders: they are brass and iron; they are all corrupters."

Daniel 3:25: "He answered and said, Lo, I see four men loose, walking in the midst of the fire, and they have no hurt; and the form of the fourth is like the Son of God."

Micah 2:11: "If a man walking in the spirit and falsehood do lie, saying, I will prophesy unto thee of wine and of strong drink; he shall even be the prophet of this people."

Matthew 4:18: "And Jesus, walking by the sea of Galilee, saw two brethren, Simon called Peter, and Andrew his brother, casting a net into the sea: for they were fishers."

Matthew 14:25: "And in the fourth watch of the night Jesus went unto them, walking on the sea."

Matthew 14:26: "And when the disciples saw him walking on the sea, they were troubled, saying, It is a spirit; and they cried out for fear."

Mark 6:48: "And he saw them toiling in rowing; for the wind was contrary unto them: and about the fourth watch of the night he cometh unto them, walking upon the sea, and would have passed by them."

Mark 6:49: "But when they saw him walking upon the sea, they supposed it had been a spirit, and cried out:"

Mark 8:24: "And he looked up, and said, I see men as trees, walking."

Mark 11:27: "And they come again to Jerusalem: and as he was walking in the temple, there come to him the chief priests, and the scribes, and the elders,"

Luke 1:6: "And they were both righteous before God, walking in all the commandments and ordinances of the Lord blameless."

John 6:19: "So when they had rowed about five and twenty or thirty furlongs, they see Jesus walking on the sea, and drawing nigh unto the ship: and they were afraid."

Acts 3:8: "And he leaping up stood, and walked, and entered with them into the temple, walking, and leaping, and praising God."

Acts 3:9: "And all the people saw him walking and praising God:"

Acts 9:31: "Then had the churches rest throughout all Judaea and Galilee and Samaria, and were edified; and walking in the fear of the Lord, and in the comfort of the Holy Ghost, were multiplied."

2 Corinthians 4:2: "But have renounced the hidden things of dishonesty, not walking in craftiness, nor handling the word of God deceitfully; but by manifestation of the truth commending ourselves to every man's conscience in the sight of God."

2 Peter 3:3: "Knowing this first, that there shall come in the last days scoffers, walking after their own lusts,"

2 John 1:4: "I rejoiced greatly that I found of thy children walking in truth, as we have received a commandment from the Father."

Jude 1:16: "These are murmurers, complainers, walking after their own lusts; and their mouth speaketh great swelling words, having men's persons in admiration because of advantage."

## **WALL**

Occurrences: 163

Genesis 49:6: "O my soul, come not thou into their secret; unto their assembly, mine honour, be not thou united: for in their anger they slew a man, and in their selfwill they digged down a wall."

Genesis 49:22: "Joseph is a fruitful bough, even a fruitful bough by a well; whose branches run over the wall:"

Exodus 14:22: "And the children of Israel went into the midst of the sea upon the dry ground: and

the waters were a wall unto them on their right hand, and on their left."

Exodus 14:29: "But the children of Israel walked upon dry land in the midst of the sea; and the waters were a wall unto them on their right hand, and on their left."

Leviticus 14:37: "And he shall look on the plague, and, behold, if the plague be in the walls of the house with hollow strakes, greenish or reddish, which in sight are lower than the wall;"

Leviticus 25:31: "But the houses of the villages which have no wall round about them shall be counted as the fields of the country: they may be redeemed, and they shall go out in the jubile."

Numbers 22:24: "But the angel of the LORD stood in a path of the vineyards, a wall being on this side, and a wall on that side."

Numbers 22:25: "And when the ass saw the angel of the LORD, she thrust herself unto the wall, and crushed Balaam's foot against the wall: and he smote her again."

Numbers 35:4: "And the suburbs of the cities, which ye shall give unto the Levites, shall reach from the wall of the city and outward a thousand cubits round about."

Joshua 2:15: "Then she let them down by a cord through the window: for her house was upon the town wall, and she dwelt upon the wall."

Joshua 6:5: "And it shall come to pass, that when they make a long blast with the ram's horn, and when ye hear the sound of the trumpet, all the people shall shout with a great shout; and the wall of the city shall fall down flat, and the people shall ascend up every man straight before him."

Joshua 6:20: "So the people shouted when the priests blew with the trumpets: and it came to pass, when the people heard the sound of the trumpet, and the people shouted with a great shout, that the wall fell down flat, so that the people went up into the city, every man straight before him, and they took the city."

1 Samuel 18:11: "And Saul cast the javelin; for he said, I will smite David even to the wall with it. And David avoided out of his presence twice."

1 Samuel 19:10: "And Saul sought to smite David even to the wall with the javelin: but he slipped away out of Saul's presence, and he smote the javelin into the wall: and David fled, and escaped that night."

1 Samuel 20:25: "And the king sat upon his seat, as at other times, even upon a seat by the wall: and Jonathan arose, and Abner sat by Saul's side, and David's place was empty."

1 Samuel 25:16: "They were a wall unto us both by night and day, all the while we were with them keeping the sheep."

1 Samuel 25:22: "So and more also do God unto the enemies of David, if I leave of all that pertain to him by the morning light any that pisseth against the wall."

1 Samuel 25:34: "For in very deed, as the LORD God of Israel liveth, which hath kept me back from hurting thee, except thou hadst hastened and come to meet me, surely there had not been left unto Nabal by the morning light any that pisseth against the wall."

1 Samuel 31:10: "And they put his armour in the house of Ashtaroth: and they fastened his body to the wall of Bethshan."

1 Samuel 31:12: "All the valiant men arose, and went all night, and took the body of Saul and the bodies of his sons from the wall of Bethshan, and came to Jabesh, and burnt them there."

2 Samuel 11:20: "And if so be that the king's wrath arise, and he say unto thee, Wherefore approached ye so nigh unto the city when ye did fight? knew ye not that they would shoot from the wall?"

2 Samuel 11:21: "Who smote Abimelech the son of Jerubbesheth? did not a woman cast a piece of a millstone upon him from the wall, that he died in Thebez? why went ye nigh the wall? then say thou, Thy servant Uriah the Hittite is dead also."

2 Samuel 11:24: "And the shooters shot from off the wall upon thy servants; and some of the king's servants be dead, and thy servant Uriah the Hittite is dead also."

2 Samuel 18:24: "And David sat between the two gates: and the watchman went up to the roof over the gate unto the wall, and lifted up his eyes, and looked, and behold a man running alone."

2 Samuel 20:15: "And they came and besieged him in Abel of Bethmaachah, and they cast up a bank against the city, and it stood in the trench: and all the people that were with Joab battered the wall, to throw it down."

2 Samuel 20:21: "The matter is not so: but a man of mount Ephraim, Sheba the son of Bichri by name, hath lifted up his hand against the king, even against David: deliver him only, and I will depart from the city. And the woman said unto Joab, Behold, his head shall be thrown to thee over the wall."

2 Samuel 22:30: "For by thee I have run through a troop: by my God have I leaped over a wall."

1 Kings 3:1: "And Solomon made affinity with Pharaoh king of Egypt, and took Pharaoh's daughter, and brought her into the city of David, until he had made an end of building his own house, and the house of the LORD, and the wall of Jerusalem round about."

1 Kings 4:33: "And he spake of trees, from the cedar tree that is in Lebanon even unto the hyssop that springeth out of the wall: he spake also of beasts, and of fowl, and of creeping things, and of fishes."

1 Kings 6:5: "And against the wall of the house he built chambers round about, against the walls of the house round about, both of the temple and of the oracle: and he made chambers round about:"

1 Kings 6:6: "The nethermost chamber was five cubits broad, and the middle was six cubits broad, and the third was seven cubits broad: for without in the wall of the house he made narrowed rests round about, that the beams should not be fastened in the walls of the house."

1 Kings 6:27: "And he set the cherubims within the inner house: and they stretched forth the wings of the cherubims, so that the wing of the one touched the one wall, and the wing of the other cherub touched the other wall; and their wings touched one another in the midst of the house."

1 Kings 6:31: "And for the entering of the oracle he made doors of olive tree: the lintel and side posts were a fifth part of the wall."

1 Kings 6:33: "So also made he for the door of the temple posts of olive tree, a fourth part of the wall."

1 Kings 9:15: "And this is the reason of the levy which king Solomon raised; for to build the house of the LORD, and his own house, and Millo, and the wall of Jerusalem, and Hazor, and Megiddo, and Gezer."

1 Kings 14:10: "Therefore, behold, I will bring evil upon the house of Jeroboam, and will cut off from Jeroboam him that pisseth against the wall, and him that is shut up and left in Israel, and will take away the remnant of the house of Jeroboam, as a man taketh away dung, till it be all gone."

1 Kings 16:11: "And it came to pass, when he began to reign, as soon as he sat on his throne, that he slew all the house of Baasha: he left him not one that pisseth against a wall, neither of his kinsfolks, nor of his friends."

1 Kings 20:30: "But the rest fled to Aphek, into the city; and there a wall fell upon twenty and seven thousand of the men that were left. And Benhadad fled, and came into the city, into an inner chamber."

1 Kings 21:21: "Behold, I will bring evil upon thee, and will take away thy posterity, and will cut off from Ahab him that pisseth against the wall, and him that is shut up and left in Israel,"

1 Kings 21:23: "And of Jezebel also spake the LORD, saying, The dogs shall eat Jezebel by the wall of Jezreel."

2 Kings 3:27: "Then he took his eldest son that should have reigned in his stead, and offered him for a burnt offering upon the wall. And there was great indignation against Israel: and they departed from him, and returned to their own land."

2 Kings 4:10: "Let us make a little chamber, I pray thee, on the wall; and let us set for him there a bed, and a table, and a stool, and a candlestick: and it shall be, when he cometh to us, that he shall turn in thither."

2 Kings 6:26: "And as the king of Israel was passing by upon the wall, there cried a woman unto him, saying, Help, my lord, O king."



2 Kings 6:30: "And it came to pass, when the king heard the words of the woman, that he rent his clothes; and he passed by upon the wall, and the people looked, and, behold, he had sackcloth within upon his flesh."

2 Kings 9:8: "For the whole house of Ahab shall perish: and I will cut off from Ahab him that pisseth against the wall, and him that is shut up and left in Israel:"

2 Kings 9:33: "And he said, Throw her down. So they threw her down: and some of her blood was sprinkled on the wall, and on the horses: and he trode her under foot."

2 Kings 14:13: "And Jehoash king of Israel took Amaziah king of Judah, the son of Jehoash the son of Ahaziah, at Bethshemesh, and came to Jerusalem, and brake down the wall of Jerusalem from the gate of Ephraim unto the corner gate, four hundred cubits."

2 Kings 18:26: "Then said Eliakim the son of Hilkiyah, and Shebna, and Joah, unto Rabshakeh, Speak, I pray thee, to thy servants in the Syrian language; for we understand it: and talk not with us in the Jews' language in the ears of the people that are on the wall."

2 Kings 18:27: "But Rabshakeh said unto them, Hath my master sent me to thy master, and to thee, to speak these words? hath he not sent me to the men which sit on the wall, that they may eat their own dung, and drink their own piss with you?"

2 Kings 20:2: "Then he turned his face to the wall, and prayed unto the LORD, saying,"

2 Chronicles 3:11: "And the wings of the cherubims were twenty cubits long: one wing of the one cherub was five cubits, reaching to the wall of the house: and the other wing was likewise five cubits, reaching to the wing of the other cherub."

2 Chronicles 3:12: "And one wing of the other cherub was five cubits, reaching to the wall of the house: and the other wing was five cubits also, joining to the wing of the other cherub."

2 Chronicles 25:23: "And Joash the king of Israel took Amaziah king of Judah, the son of Joash, the son of Jehoahaz, at Bethshemesh, and brought him to Jerusalem, and brake down the wall of Jerusalem from the gate of Ephraim to the corner gate, four hundred cubits."

2 Chronicles 26:6: "And he went forth and warred against the Philistines, and brake down the wall of Gath, and the wall of Jabneh, and the wall of Ashdod, and built cities about Ashdod, and among the Philistines."

2 Chronicles 26:9: "Moreover Uzziah built towers in Jerusalem at the corner gate, and at the valley gate, and at the turning of the wall, and fortified them."

2 Chronicles 27:3: "He built the high gate of the house of the LORD, and on the wall of Ophel he built much."

2 Chronicles 32:5: "Also he strengthened himself, and built up all the wall that was broken, and raised it up to the towers, and another wall without, and repaired Millo in the city of David, and made darts and shields in abundance."

2 Chronicles 32:18: "Then they cried with a loud voice in the Jews' speech unto the people of Jerusalem that were on the wall, to affright them, and to trouble them; that they might take the city."

2 Chronicles 33:14: "Now after this he built a wall without the city of David, on the west side of Gihon, in the valley, even to the entering in at the fish gate, and compassed about Ophel, and raised it up a very great height, and put captains of war in all the fenced cities of Judah."

2 Chronicles 36:19: "And they burnt the house of God, and brake down the wall of Jerusalem, and burnt all the palaces thereof with fire, and destroyed all the goodly vessels thereof."

Ezra 5:3: "At the same time came to them Tatnai, governor on this side the river, and Shetharboznai and their companions, and said thus unto them, Who hath commanded you to build this house, and to make up this wall?"

Ezra 9:9: "For we were bondmen; yet our God hath not forsaken us in our bondage, but hath extended mercy unto us in the sight of the kings of Persia, to give us a reviving, to set up the house of our God, and to repair the desolations thereof, and to give us a wall in Judah and in Jerusalem."

Nehemiah 1:3: "And they said unto me, The remnant that are left of the captivity there in the province are in great affliction and reproach: the wall of Jerusalem also is broken down, and the

gates thereof are burned with fire."

Nehemiah 2:8: "And a letter unto Asaph the keeper of the king's forest, that he may give me timber to make beams for the gates of the palace which appertained to the house, and for the wall of the city, and for the house that I shall enter into. And the king granted me, according to the good hand of my God upon me."

Nehemiah 2:15: "Then went I up in the night by the brook, and viewed the wall, and turned back, and entered by the gate of the valley, and so returned."

Nehemiah 2:17: "Then said I unto them, Ye see the distress that we are in, how Jerusalem lieth waste, and the gates thereof are burned with fire: come, and let us build up the wall of Jerusalem, that we be no more a reproach."

Nehemiah 3:8: "Next unto him repaired Uzziel the son of Harhaiah, of the goldsmiths. Next unto him also repaired Hananiah the son of one of the apothecaries, and they fortified Jerusalem unto the broad wall."

Nehemiah 3:13: "The valley gate repaired Hanun, and the inhabitants of Zanoah; they built it, and set up the doors thereof, the locks thereof, and the bars thereof, and a thousand cubits on the wall unto the dung gate."

Nehemiah 3:15: "But the gate of the fountain repaired Shallun the son of Colhozeh, the ruler of part of Mizpah; he built it, and covered it, and set up the doors thereof, the locks thereof, and the bars thereof, and the wall of the pool of Siloah by the king's garden, and unto the stairs that go down from the city of David."

Nehemiah 3:19: "And next to him repaired Ezer the son of Jeshua, the ruler of Mizpah, another piece over against the going up to the armoury at the turning of the wall."

Nehemiah 3:20: "After him Baruch the son of Zabbai earnestly repaired the other piece, from the turning of the wall unto the door of the house of Eliashib the high priest."

Nehemiah 3:24: "After him repaired Binnui the son of Henadad another piece, from the house of Azariah unto the turning of the wall, even unto the corner."

Nehemiah 3:25: "Palal the son of Uzai, over against the turning of the wall, and the tower which lieth out from the king's high house, that was by the court of the prison. After him Pedaiah the son of Parosh."

Nehemiah 3:27: "After them the Tekoites repaired another piece, over against the great tower that lieth out, even unto the wall of Ophel."

Nehemiah 4:1: "But it came to pass, that when Sanballat heard that we builded the wall, he was wroth, and took great indignation, and mocked the Jews."

Nehemiah 4:3: "Now Tobiah the Ammonite was by him, and he said, Even that which they build, if a fox go up, he shall even break down their stone wall."

Nehemiah 4:6: "So built we the wall; and all the wall was joined together unto the half thereof: for the people had a mind to work."

Nehemiah 4:10: "And Judah said, The strength of the bearers of burdens is decayed, and there is much rubbish; so that we are not able to build the wall."

Nehemiah 4:13: "Therefore set I in the lower places behind the wall, and on the higher places, I even set the people after their families with their swords, their spears, and their bows."

Nehemiah 4:15: "And it came to pass, when our enemies heard that it was known unto us, and God had brought their counsel to nought, that we returned all of us to the wall, every one unto his work."

Nehemiah 4:17: "They which builded on the wall, and they that bare burdens, with those that laded, every one with one of his hands wrought in the work, and with the other hand held a weapon."

Nehemiah 4:19: "And I said unto the nobles, and to the rulers, and to the rest of the people, The work is great and large, and we are separated upon the wall, one far from another."

Nehemiah 5:16: "Yea, also I continued in the work of this wall, neither bought we any land: and all my servants were gathered thither unto the work."

Nehemiah 6:1: "Now it came to pass when Sanballat, and Tobiah, and Geshem the Arabian, and the

rest of our enemies, heard that I had builded the wall, and that there was no breach left therein; (though at that time I had not set up the doors upon the gates;)"

Nehemiah 6:6: "Wherein was written, It is reported among the heathen, and Gashmu saith it, that thou and the Jews think to rebel: for which cause thou buildest the wall, that thou mayest be their king, according to these words."

Nehemiah 6:15: "So the wall was finished in the twenty and fifth day of the month Elul, in fifty and two days."

Nehemiah 7:1: "Now it came to pass, when the wall was built, and I had set up the doors, and the porters and the singers and the Levites were appointed,"

Nehemiah 12:27: "And at the dedication of the wall of Jerusalem they sought the Levites out of all their places, to bring them to Jerusalem, to keep the dedication with gladness, both with thanksgivings, and with singing, with cymbals, psalteries, and with harps."

Nehemiah 12:30: "And the priests and the Levites purified themselves, and purified the people, and the gates, and the wall."

Nehemiah 12:31: "Then I brought up the princes of Judah upon the wall, and appointed two great companies of them that gave thanks, whereof one went on the right hand upon the wall toward the dung gate:"

Nehemiah 12:37: "And at the fountain gate, which was over against them, they went up by the stairs of the city of David, at the going up of the wall, above the house of David, even unto the water gate eastward."

Nehemiah 12:38: "And the other company of them that gave thanks went over against them, and I after them, and the half of the people upon the wall, from beyond the tower of the furnaces even unto the broad wall;"

Nehemiah 13:21: "Then I testified against them, and said unto them, Why lodge ye about the wall? if ye do so again, I will lay hands on you. From that time forth came they no more on the sabbath."

Psalms 18:29: "For by thee I have run through a troop; and by my God have I leaped over a wall."

Psalms 62:3: "How long will ye imagine mischief against a man? ye shall be slain all of you: as a bowing wall shall ye be, and as a tottering fence."

Proverbs 18:11: "The rich man's wealth is his strong city, and as an high wall in his own conceit."

Proverbs 24:31: "And, lo, it was all grown over with thorns, and nettles had covered the face thereof, and the stone wall thereof was broken down."

Song of Solomon 2:9: "My beloved is like a roe or a young hart: behold, he standeth behind our wall, he looketh forth at the windows, shewing himself through the lattice."

Song of Solomon 8:9: "If she be a wall, we will build upon her a palace of silver: and if she be a door, we will inclose her with boards of cedar."

Song of Solomon 8:10: "I am a wall, and my breasts like towers: then was I in his eyes as one that found favour."

Isaiah 2:15: "And upon every high tower, and upon every fenced wall,"

Isaiah 5:5: "And now go to; I will tell you what I will do to my vineyard: I will take away the hedge thereof, and it shall be eaten up; and break down the wall thereof, and it shall be trodden down:"

Isaiah 22:10: "And ye have numbered the houses of Jerusalem, and the houses have ye broken down to fortify the wall."

Isaiah 25:4: "For thou hast been a strength to the poor, a strength to the needy in his distress, a refuge from the storm, a shadow from the heat, when the blast of the terrible ones is as a storm against the wall."

Isaiah 30:13: "Therefore this iniquity shall be to you as a breach ready to fall, swelling out in a high wall, whose breaking cometh suddenly at an instant."

Isaiah 36:11: "Then said Eliakim and Shebna and Joah unto Rabshakeh, Speak, I pray thee, unto thy servants in the Syrian language; for we understand it: and speak not to us in the Jews' language, in the ears of the people that are on the wall."

Isaiah 36:12: "But Rabshakeh said, Hath my master sent me to thy master and to thee to speak these words? hath he not sent me to the men that sit upon the wall, that they may eat their own dung, and drink their own piss with you?"

Isaiah 38:2: "Then Hezekiah turned his face toward the wall, and prayed unto the LORD,"

Isaiah 59:10: "We grope for the wall like the blind, and we grope as if we had no eyes: we stumble at noon day as in the night; we are in desolate places as dead men."

Jeremiah 15:20: "And I will make thee unto this people a fenced brasen wall: and they shall fight against thee, but they shall not prevail against thee: for I am with thee to save thee and to deliver thee, saith the LORD."

Jeremiah 49:27: "And I will kindle a fire in the wall of Damascus, and it shall consume the palaces of Benhadad."

Jeremiah 51:44: "And I will punish Bel in Babylon, and I will bring forth out of his mouth that which he hath swallowed up: and the nations shall not flow together any more unto him: yea, the wall of Babylon shall fall."

Lamentations 2:8: "The LORD hath purposed to destroy the wall of the daughter of Zion: he hath stretched out a line, he hath not withdrawn his hand from destroying: therefore he made the rampart and the wall to lament; they languished together."

Lamentations 2:18: "Their heart cried unto the LORD, O wall of the daughter of Zion, let tears run down like a river day and night: give thyself no rest; let not the apple of thine eye cease."

Ezekiel 4:3: "Moreover take thou unto thee an iron pan, and set it for a wall of iron between thee and the city: and set thy face against it, and it shall be besieged, and thou shalt lay siege against it. This shall be a sign to the house of Israel."

Ezekiel 8:7: "And he brought me to the door of the court; and when I looked, behold a hole in the wall."

Ezekiel 8:8: "Then said he unto me, Son of man, dig now in the wall: and when I had digged in the wall, behold a door."

Ezekiel 8:10: "So I went in and saw; and behold every form of creeping things, and abominable beasts, and all the idols of the house of Israel, pourtrayed upon the wall round about."

Ezekiel 12:5: "Dig thou through the wall in their sight, and carry out thereby."

Ezekiel 12:7: "And I did so as I was commanded: I brought forth my stuff by day, as stuff for captivity, and in the even I digged through the wall with mine hand; I brought it forth in the twilight, and I bare it upon my shoulder in their sight."

Ezekiel 12:12: "And the prince that is among them shall bear upon his shoulder in the twilight, and shall go forth: they shall dig through the wall to carry out thereby: he shall cover his face, that he see not the ground with his eyes."

Ezekiel 13:10: "Because, even because they have seduced my people, saying, Peace; and there was no peace; and one built up a wall, and, lo, others daubed it with untempered mortar:"

Ezekiel 13:12: "Lo, when the wall is fallen, shall it not be said unto you, Where is the daubing wherewith ye have daubed it?"

Ezekiel 13:14: "So will I break down the wall that ye have daubed with untempered mortar, and bring it down to the ground, so that the foundation thereof shall be discovered, and it shall fall, and ye shall be consumed in the midst thereof: and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 13:15: "Thus will I accomplish my wrath upon the wall, and upon them that have daubed it with untempered mortar, and will say unto you, The wall is no more, neither they that daubed it;"

Ezekiel 23:14: "And that she increased her whoredoms: for when she saw men pourtrayed upon the wall, the images of the Chaldeans pourtrayed with vermilion,"

Ezekiel 38:20: "So that the fishes of the sea, and the fowls of the heaven, and the beasts of the field, and all creeping things that creep upon the earth, and all the men that are upon the face of the earth, shall shake at my presence, and the mountains shall be thrown down, and the steep places shall fall, and every wall shall fall to the ground."

Ezekiel 40:5: "And behold a wall on the outside of the house round about, and in the man's hand a measuring reed of six cubits long by the cubit and an hand breadth: so he measured the breadth of the building, one reed; and the height, one reed."

Ezekiel 41:5: "After he measured the wall of the house, six cubits; and the breadth of every side chamber, four cubits, round about the house on every side."

Ezekiel 41:6: "And the side chambers were three, one over another, and thirty in order; and they entered into the wall which was of the house for the side chambers round about, that they might have hold, but they had not hold in the wall of the house."

Ezekiel 41:9: "The thickness of the wall, which was for the side chamber without, was five cubits: and that which was left was the place of the side chambers that were within."

Ezekiel 41:12: "Now the building that was before the separate place at the end toward the west was seventy cubits broad; and the wall of the building was five cubits thick round about, and the length thereof ninety cubits."

Ezekiel 41:17: "To that above the door, even unto the inner house, and without, and by all the wall round about within and without, by measure."

Ezekiel 41:20: "From the ground unto above the door were cherubims and palm trees made, and on the wall of the temple."

Ezekiel 42:7: "And the wall that was without over against the chambers, toward the utter court on the forepart of the chambers, the length thereof was fifty cubits."

Ezekiel 42:10: "The chambers were in the thickness of the wall of the court toward the east, over against the separate place, and over against the building."

Ezekiel 42:12: "And according to the doors of the chambers that were toward the south was a door in the head of the way, even the way directly before the wall toward the east, as one entereth into them."

Ezekiel 42:20: "He measured it by the four sides: it had a wall round about, five hundred reeds long, and five hundred broad, to make a separation between the sanctuary and the profane place."

Ezekiel 43:8: "In their setting of their threshold by my thresholds, and their post by my posts, and the wall between me and them, they have even defiled my holy name by their abominations that they have committed: wherefore I have consumed them in mine anger."

Daniel 5:5: "In the same hour came forth fingers of a man's hand, and wrote over against the candlestick upon the plaister of the wall of the king's palace: and the king saw the part of the hand that wrote."

Daniel 9:25: "Know therefore and understand, that from the going forth of the commandment to restore and to build Jerusalem unto the Messiah the Prince shall be seven weeks, and threescore and two weeks: the street shall be built again, and the wall, even in troublous times."

Hosea 2:6: "Therefore, behold, I will hedge up thy way with thorns, and make a wall, that she shall not find her paths."

Joel 2:7: "They shall run like mighty men; they shall climb the wall like men of war; and they shall march every one on his ways, and they shall not break their ranks:"

Joel 2:9: "They shall run to and fro in the city; they shall run upon the wall, they shall climb up upon the houses; they shall enter in at the windows like a thief."

Amos 1:7: "But I will send a fire on the wall of Gaza, which shall devour the palaces thereof:"

Amos 1:10: "But I will send a fire on the wall of Tyrus, which shall devour the palaces thereof."

Amos 1:14: "But I will kindle a fire in the wall of Rabbah, and it shall devour the palaces thereof, with shouting in the day of battle, with a tempest in the day of the whirlwind:"

Amos 5:19: "As if a man did flee from a lion, and a bear met him; or went into the house, and leaned his hand on the wall, and a serpent bit him."

Amos 7:7: "Thus he shewed me: and, behold, the LORD stood upon a wall made by a plumbline, with a plumbline in his hand."

Nahum 2:5: "He shall recount his worthies: they shall stumble in their walk; they shall make haste

to the wall thereof, and the defence shall be prepared."

Nahum 3:8: "Art thou better than populous No, that was situate among the rivers, that had the waters round about it, whose rampart was the sea, and her wall was from the sea?"

Habakkuk 2:11: "For the stone shall cry out of the wall, and the beam out of the timber shall answer it."

Zechariah 2:5: "For I, saith the LORD, will be unto her a wall of fire round about, and will be the glory in the midst of her."

Acts 9:25: "Then the disciples took him by night, and let him down by the wall in a basket."

Acts 23:3: "Then said Paul unto him, God shall smite thee, thou whited wall: for sittest thou to judge me after the law, and commandest me to be smitten contrary to the law?"

2 Corinthians 11:33: "And through a window in a basket was I let down by the wall, and escaped his hands."

Ephesians 2:14: "For he is our peace, who hath made both one, and hath broken down the middle wall of partition between us;"

Revelation 21:12: "And had a wall great and high, and had twelve gates, and at the gates twelve angels, and names written thereon, which are the names of the twelve tribes of the children of Israel:"

Revelation 21:14: "And the wall of the city had twelve foundations, and in them the names of the twelve apostles of the Lamb."

Revelation 21:15: "And he that talked with me had a golden reed to measure the city, and the gates thereof, and the wall thereof."

Revelation 21:17: "And he measured the wall thereof, an hundred and forty and four cubits, according to the measure of a man, that is, of the angel."

Revelation 21:18: "And the building of the wall of it was of jasper: and the city was pure gold, like unto clear glass."

Revelation 21:19: "And the foundations of the wall of the city were garnished with all manner of precious stones. The first foundation was jasper; the second, sapphire; the third, a chalcedony; the fourth, an emerald;"

## **WALLED**

Occurrences: 4

Leviticus 25:29: "And if a man sell a dwelling house in a walled city, then he may redeem it within a whole year after it is sold; within a full year may he redeem it."

Leviticus 25:30: "And if it be not redeemed within the space of a full year, then the house that is in the walled city shall be established for ever to him that bought it throughout his generations: it shall not go out in the jubile."

Numbers 13:28: "Nevertheless the people be strong that dwell in the land, and the cities are walled, and very great: and moreover we saw the children of Anak there."

Deuteronomy 1:28: "Whither shall we go up? our brethren have discouraged our heart, saying, The people is greater and taller than we; the cities are great and walled up to heaven; and moreover we have seen the sons of the Anakims there."

## **WALLOW**

Occurrences: 4

Jeremiah 6:26: "O daughter of my people, gird thee with sackcloth, and wallow thyself in ashes: make thee mourning, as for an only son, most bitter lamentation: for the spoiler shall suddenly come upon us."

Jeremiah 25:34: "Howl, ye shepherds, and cry; and wallow yourselves in the ashes, ye principal of the flock: for the days of your slaughter and of your dispersions are accomplished; and ye shall fall

like a pleasant vessel."

Jeremiah 48:26: "Make ye him drunken: for he magnified himself against the LORD: Moab also shall wallow in his vomit, and he also shall be in derision."

Ezekiel 27:30: "And shall cause their voice to be heard against thee, and shall cry bitterly, and shall cast up dust upon their heads, they shall wallow themselves in the ashes:"

## **WALLOWED**

Occurrences: 2

2 Samuel 20:12: "And Amasa wallowed in blood in the midst of the highway. And when the man saw that all the people stood still, he removed Amasa out of the highway into the field, and cast a cloth upon him, when he saw that every one that came by him stood still."

Mark 9:20: "And they brought him unto him: and when he saw him, straightway the spirit tare him; and he fell on the ground, and wallowed foaming."

## **WALLOWING**

Occurrences: 1

2 Peter 2:22: "But it is happened unto them according to the true proverb, The dog is turned to his own vomit again; and the sow that was washed to her wallowing in the mire."

## **WALLS**

Occurrences: 63

Leviticus 14:37: "And he shall look on the plague, and, behold, if the plague be in the walls of the house with hollow strakes, greenish or reddish, which in sight are lower than the wall;"

Leviticus 14:39: "And the priest shall come again the seventh day, and shall look: and, behold, if the plague be spread in the walls of the house;"

Deuteronomy 3:5: "All these cities were fenced with high walls, gates, and bars; beside unwallied towns a great many."

Deuteronomy 28:52: "And he shall besiege thee in all thy gates, until thy high and fenced walls come down, wherein thou trustedst, throughout all thy land: and he shall besiege thee in all thy gates throughout all thy land, which the LORD thy God hath given thee."

1 Kings 4:13: "The son of Geber, in Ramothgilead; to him pertained the towns of Jair the son of Manasseh, which are in Gilead; to him also pertained the region of Argob, which is in Bashan, threescore great cities with walls and brasen bars:"

1 Kings 6:5: "And against the wall of the house he built chambers round about, against the walls of the house round about, both of the temple and of the oracle: and he made chambers round about:"

1 Kings 6:6: "The nethermost chamber was five cubits broad, and the middle was six cubits broad, and the third was seven cubits broad: for without in the wall of the house he made narrowed rests round about, that the beams should not be fastened in the walls of the house."

1 Kings 6:15: "And he built the walls of the house within with boards of cedar, both the floor of the house, and the walls of the ceiling: and he covered them on the inside with wood, and covered the floor of the house with planks of fir."

1 Kings 6:16: "And he built twenty cubits on the sides of the house, both the floor and the walls with boards of cedar: he even built them for it within, even for the oracle, even for the most holy place."

1 Kings 6:29: "And he carved all the walls of the house round about with carved figures of cherubims and palm trees and open flowers, within and without."

2 Kings 25:4: "And the city was broken up, and all the men of war fled by night by the way of the gate between two walls, which is by the king's garden: (now the Chaldees were against the city

round about:) and the king went the way toward the plain."

2 Kings 25:10: "And all the army of the Chaldees, that were with the captain of the guard, brake down the walls of Jerusalem round about."

1 Chronicles 29:4: "Even three thousand talents of gold, of the gold of Ophir, and seven thousand talents of refined silver, to overlay the walls of the houses withal:"

2 Chronicles 3:7: "He overlaid also the house, the beams, the posts, and the walls thereof, and the doors thereof, with gold; and graven cherubims on the walls."

2 Chronicles 8:5: "Also he built Bethhoron the upper, and Bethhoron the nether, fenced cities, with walls, gates, and bars;"

2 Chronicles 14:7: "Therefore he said unto Judah, Let us build these cities, and make about them walls, and towers, gates, and bars, while the land is yet before us; because we have sought the LORD our God, we have sought him, and he hath given us rest on every side. So they built and prospered."

Ezra 4:12: "Be it known unto the king, that the Jews which came up from thee to us are come unto Jerusalem, building the rebellious and the bad city, and have set up the walls thereof, and joined the foundations."

Ezra 4:13: "Be it known now unto the king, that, if this city be builded, and the walls set up again, then will they not pay toll, tribute, and custom, and so thou shalt endamage the revenue of the kings."

Ezra 4:16: "We certify the king that, if this city be builded again, and the walls thereof set up, by this means thou shalt have no portion on this side the river."

Ezra 5:8: "Be it known unto the king, that we went into the province of Judea, to the house of the great God, which is builded with great stones, and timber is laid in the walls, and this work goeth fast on, and prospereth in their hands."

Ezra 5:9: "Then asked we those elders, and said unto them thus, Who commanded you to build this house, and to make up these walls?"

Nehemiah 2:13: "And I went out by night by the gate of the valley, even before the dragon well, and to the dung port, and viewed the walls of Jerusalem, which were broken down, and the gates thereof were consumed with fire."

Nehemiah 4:7: "But it came to pass, that when Sanballat, and Tobiah, and the Arabians, and the Ammonites, and the Ashdodites, heard that the walls of Jerusalem were made up, and that the breaches began to be stopped, then they were very wroth,"

Job 24:11: "Which make oil within their walls, and tread their winepresses, and suffer thirst."

Psalms 51:18: "Do good in thy good pleasure unto Zion: build thou the walls of Jerusalem."

Psalms 55:10: "Day and night they go about it upon the walls thereof: mischief also and sorrow are in the midst of it."

Psalms 122:7: "Peace be within thy walls, and prosperity within thy palaces."

Proverbs 25:28: "He that hath no rule over his own spirit is like a city that is broken down, and without walls."

Song of Solomon 5:7: "The watchmen that went about the city found me, they smote me, they wounded me; the keepers of the walls took away my veil from me."

Isaiah 22:5: "For it is a day of trouble, and of treading down, and of perplexity by the Lord GOD of hosts in the valley of vision, breaking down the walls, and of crying to the mountains."

Isaiah 22:11: "Ye made also a ditch between the two walls for the water of the old pool: but ye have not looked unto the maker thereof, neither had respect unto him that fashioned it long ago."

Isaiah 25:12: "And the fortress of the high fort of thy walls shall he bring down, lay low, and bring to the ground, even to the dust."

Isaiah 26:1: "In that day shall this song be sung in the land of Judah; We have a strong city; salvation will God appoint for walls and bulwarks."

Isaiah 49:16: "Behold, I have graven thee upon the palms of my hands; thy walls are continually



before me."

Isaiah 56:5: "Even unto them will I give in mine house and within my walls a place and a name better than of sons and of daughters: I will give them an everlasting name, that shall not be cut off."

Isaiah 60:10: "And the sons of strangers shall build up thy walls, and their kings shall minister unto thee: for in my wrath I smote thee, but in my favour have I had mercy on thee."

Isaiah 60:18: "Violence shall no more be heard in thy land, wasting nor destruction within thy borders; but thou shalt call thy walls Salvation, and thy gates Praise."

Isaiah 62:6: "I have set watchmen upon thy walls, O Jerusalem, which shall never hold their peace day nor night: ye that make mention of the LORD, keep not silence,"

Jeremiah 1:15: "For, lo, I will call all the families of the kingdoms of the north, saith the LORD; and they shall come, and they shall set every one his throne at the entering of the gates of Jerusalem, and against all the walls thereof round about, and against all the cities of Judah."

Jeremiah 1:18: "For, behold, I have made thee this day a defenced city, and an iron pillar, and brasen walls against the whole land, against the kings of Judah, against the princes thereof, against the priests thereof, and against the people of the land."

Jeremiah 5:10: "Go ye up upon her walls, and destroy; but make not a full end: take away her battlements; for they are not the LORD's."

Jeremiah 21:4: "Thus saith the LORD God of Israel; Behold, I will turn back the weapons of war that are in your hands, wherewith ye fight against the king of Babylon, and against the Chaldeans, which besiege you without the walls, and I will assemble them into the midst of this city."

Jeremiah 39:4: "And it came to pass, that when Zedekiah the king of Judah saw them, and all the men of war, then they fled, and went forth out of the city by night, by the way of the king's garden, by the gate betwixt the two walls: and he went out the way of the plain."

Jeremiah 39:8: "And the Chaldeans burned the king's house, and the houses of the people, with fire, and brake down the walls of Jerusalem."

Jeremiah 50:15: "Shout against her round about: she hath given her hand: her foundations are fallen, her walls are thrown down: for it is the vengeance of the LORD: take vengeance upon her; as she hath done, do unto her."

Jeremiah 51:12: "Set up the standard upon the walls of Babylon, make the watch strong, set up the watchmen, prepare the ambushes: for the LORD hath both devised and done that which he spake against the inhabitants of Babylon."

Jeremiah 51:58: "Thus saith the LORD of hosts; The broad walls of Babylon shall be utterly broken, and her high gates shall be burned with fire; and the people shall labour in vain, and the folk in the fire, and they shall be weary."

Jeremiah 52:7: "Then the city was broken up, and all the men of war fled, and went forth out of the city by night by the way of the gate between the two walls, which was by the king's garden; (now the Chaldeans were by the city round about:) and they went by the way of the plain."

Jeremiah 52:14: "And all the army of the Chaldeans, that were with the captain of the guard, brake down all the walls of Jerusalem round about."

Lamentations 2:7: "The LORD hath cast off his altar, he hath abhorred his sanctuary, he hath given up into the hand of the enemy the walls of her palaces; they have made a noise in the house of the LORD, as in the day of a solemn feast."

Ezekiel 26:4: "And they shall destroy the walls of Tyrus, and break down her towers: I will also scrape her dust from her, and make her like the top of a rock."

Ezekiel 26:9: "And he shall set engines of war against thy walls, and with his axes he shall break down thy towers."

Ezekiel 26:10: "By reason of the abundance of his horses their dust shall cover thee: thy walls shall shake at the noise of the horsemen, and of the wheels, and of the chariots, when he shall enter into thy gates, as men enter into a city wherein is made a breach."

Ezekiel 26:12: "And they shall make a spoil of thy riches, and make a prey of thy merchandise: and

they shall break down thy walls, and destroy thy pleasant houses: and they shall lay thy stones and thy timber and thy dust in the midst of the water."

Ezekiel 27:11: "The men of Arvad with thine army were upon thy walls round about, and the Gammadims were in thy towers: they hanged their shields upon thy walls round about; they have made thy beauty perfect."

Ezekiel 33:30: "Also, thou son of man, the children of thy people still are talking against thee by the walls and in the doors of the houses, and speak one to another, every one to his brother, saying, Come, I pray you, and hear what is the word that cometh forth from the LORD."

Ezekiel 38:11: "And thou shalt say, I will go up to the land of unwalled villages; I will go to them that are at rest, that dwell safely, all of them dwelling without walls, and having neither bars nor gates,"

Ezekiel 41:13: "So he measured the house, an hundred cubits long; and the separate place, and the building, with the walls thereof, an hundred cubits long;"

Ezekiel 41:22: "The altar of wood was three cubits high, and the length thereof two cubits; and the corners thereof, and the length thereof, and the walls thereof, were of wood: and he said unto me, This is the table that is before the LORD."

Ezekiel 41:25: "And there were made on them, on the doors of the temple, cherubims and palm trees, like as were made upon the walls; and there were thick planks upon the face of the porch without."

Micah 7:11: "In the day that thy walls are to be built, in that day shall the decree be far removed."

Zechariah 2:4: "And said unto him, Run, speak to this young man, saying, Jerusalem shall be inhabited as towns without walls for the multitude of men and cattle therein:"

Hebrews 11:30: "By faith the walls of Jericho fell down, after they were compassed about seven days."

## **WANDER**

Occurrences: 14

Genesis 20:13: "And it came to pass, when God caused me to wander from my father's house, that I said unto her, This is thy kindness which thou shalt shew unto me; at every place whither we shall come, say of me, He is my brother."

Numbers 14:33: "And your children shall wander in the wilderness forty years, and bear your whoredoms, until your carcasses be wasted in the wilderness."

Numbers 32:13: "And the LORD's anger was kindled against Israel, and he made them wander in the wilderness forty years, until all the generation, that had done evil in the sight of the LORD, was consumed."

Deuteronomy 27:18: "Cursed be he that maketh the blind to wander out of the way. And all the people shall say, Amen."

Job 12:24: "He taketh away the heart of the chief of the people of the earth, and causeth them to wander in a wilderness where there is no way."

Job 38:41: "Who provideth for the raven his food? when his young ones cry unto God, they wander for lack of meat."

Psalms 55:7: "Lo, then would I wander far off, and remain in the wilderness. Selah."

Psalms 59:15: "Let them wander up and down for meat, and grudge if they be not satisfied."

Psalms 107:40: "He poureth contempt upon princes, and causeth them to wander in the wilderness, where there is no way."

Psalms 119:10: "With my whole heart have I sought thee: O let me not wander from thy commandments."

Isaiah 47:15: "Thus shall they be unto thee with whom thou hast laboured, even thy merchants, from thy youth: they shall wander every one to his quarter; none shall save thee."

Jeremiah 14:10: "Thus saith the LORD unto this people, Thus have they loved to wander, they have

not refrained their feet, therefore the LORD doth not accept them; he will now remember their iniquity, and visit their sins."

Jeremiah 48:12: "Therefore, behold, the days come, saith the LORD, that I will send unto him wanderers, that shall cause him to wander, and shall empty his vessels, and break their bottles."

Amos 8:12: "And they shall wander from sea to sea, and from the north even to the east, they shall run to and fro to seek the word of the LORD, and shall not find it."

## **WANDERED**

Occurrences: 10

Genesis 21:14: "And Abraham rose up early in the morning, and took bread, and a bottle of water, and gave it unto Hagar, putting it on her shoulder, and the child, and sent her away: and she departed, and wandered in the wilderness of Beersheba."

Joshua 14:10: "And now, behold, the LORD hath kept me alive, as he said, these forty and five years, even since the LORD spake this word unto Moses, while the children of Israel wandered in the wilderness: and now, lo, I am this day fourscore and five years old."

Psalms 107:4: "They wandered in the wilderness in a solitary way; they found no city to dwell in."

Isaiah 16:8: "For the fields of Heshbon languish, and the vine of Sibmah: the lords of the heathen have broken down the principal plants thereof, they are come even unto Jazer, they wandered through the wilderness: her branches are stretched out, they are gone over the sea."

Lamentations 4:14: "They have wandered as blind men in the streets, they have polluted themselves with blood, so that men could not touch their garments."

Lamentations 4:15: "They cried unto them, Depart ye; it is unclean; depart, depart, touch not: when they fled away and wandered, they said among the heathen, They shall no more sojourn there."

Ezekiel 34:6: "My sheep wandered through all the mountains, and upon every high hill: yea, my flock was scattered upon all the face of the earth, and none did search or seek after them."

Amos 4:8: "So two or three cities wandered unto one city, to drink water; but they were not satisfied: yet have ye not returned unto me, saith the LORD."

Hebrews 11:37: "They were stoned, they were sawn asunder, were tempted, were slain with the sword: they wandered about in sheepskins and goatskins; being destitute, afflicted, tormented;"

Hebrews 11:38: "(Of whom the world was not worthy:) they wandered in deserts, and in mountains, and in dens and caves of the earth."

## **WANDERERS**

Occurrences: 2

Jeremiah 48:12: "Therefore, behold, the days come, saith the LORD, that I will send unto him wanderers, that shall cause him to wander, and shall empty his vessels, and break their bottles."

Hosea 9:17: "My God will cast them away, because they did not hearken unto him: and they shall be wanderers among the nations."

## **WANDEREST**

Occurrences: 1

Jeremiah 2:20: "For of old time I have broken thy yoke, and burst thy bands; and thou saidst, I will not transgress; when upon every high hill and under every green tree thou wanderest, playing the harlot."

## **WANDERETH**

Occurrences: 5

Job 15:23: "He wandereth abroad for bread, saying, Where is it? he knoweth that the day of

darkness is ready at his hand."

Proverbs 21:16: "The man that wandereth out of the way of understanding shall remain in the congregation of the dead."

Proverbs 27:8: "As a bird that wandereth from her nest, so is a man that wandereth from his place."

Isaiah 16:3: "Take counsel, execute judgment; make thy shadow as the night in the midst of the noonday; hide the outcasts; bewray not him that wandereth."

Jeremiah 49:5: "Behold, I will bring a fear upon thee, saith the Lord GOD of hosts, from all those that be about thee; and ye shall be driven out every man right forth; and none shall gather up him that wandereth."

## **WANDERING**

Occurrences: 6

Genesis 37:15: "And a certain man found him, and, behold, he was wandering in the field: and the man asked him, saying, What seekest thou?"

Proverbs 26:2: "As the bird by wandering, as the swallow by flying, so the curse causeless shall not come."

Ecclesiastes 6:9: "Better is the sight of the eyes than the wandering of the desire: this is also vanity and vexation of spirit."

Isaiah 16:2: "For it shall be, that, as a wandering bird cast out of the nest, so the daughters of Moab shall be at the fords of Arnon."

1 Timothy 5:13: "And withal they learn to be idle, wandering about from house to house; and not only idle, but tattlers also and busybodies, speaking things which they ought not."

Jude 1:13: "Raging waves of the sea, foaming out their own shame; wandering stars, to whom is reserved the blackness of darkness for ever."

## **WANDERINGS**

Occurrences: 1

Psalms 56:8: "Thou tellest my wanderings: put thou my tears into thy bottle: are they not in thy book?"

## **WANT**

Occurrences: 30

Deuteronomy 28:48: "Therefore shalt thou serve thine enemies which the LORD shall send against thee, in hunger, and in thirst, and in nakedness, and in want of all things: and he shall put a yoke of iron upon thy neck, until he have destroyed thee."

Deuteronomy 28:57: "And toward her young one that cometh out from between her feet, and toward her children which she shall bear: for she shall eat them for want of all things secretly in the siege and straitness, wherewith thine enemy shall distress thee in thy gates."

Judges 18:10: "When ye go, ye shall come unto a people secure, and to a large land: for God hath given it into your hands; a place where there is no want of any thing that is in the earth."

Judges 19:19: "Yet there is both straw and provender for our asses; and there is bread and wine also for me, and for thy handmaid, and for the young man which is with thy servants: there is no want of any thing."

Job 24:8: "They are wet with the showers of the mountains, and embrace the rock for want of a shelter."

Job 30:3: "For want and famine they were solitary; fleeing into the wilderness in former time desolate and waste."

Job 31:19: "If I have seen any perish for want of clothing, or any poor without covering;"

Psalms 23:1: "The LORD is my shepherd; I shall not want."  
 Psalms 34:9: "O fear the LORD, ye his saints: for there is no want to them that fear him."  
 Psalms 34:10: "The young lions do lack, and suffer hunger: but they that seek the LORD shall not want any good thing."  
 Proverbs 6:11: "So shall thy poverty come as one that travelleth, and thy want as an armed man."  
 Proverbs 10:21: "The lips of the righteous feed many: but fools die for want of wisdom."  
 Proverbs 13:23: "Much food is in the tillage of the poor: but there is that is destroyed for want of judgment."  
 Proverbs 13:25: "The righteous eateth to the satisfying of his soul: but the belly of the wicked shall want."  
 Proverbs 14:28: "In the multitude of people is the king's honour: but in the want of people is the destruction of the prince."  
 Proverbs 21:5: "The thoughts of the diligent tend only to plenteousness; but of every one that is hasty only to want."  
 Proverbs 22:16: "He that oppresseth the poor to increase his riches, and he that giveth to the rich, shall surely come to want."  
 Proverbs 24:34: "So shall thy poverty come as one that travelleth; and thy want as an armed man."  
 Isaiah 34:16: "Seek ye out of the book of the LORD, and read: no one of these shall fail, none shall want her mate: for my mouth it hath commanded, and his spirit it hath gathered them."  
 Jeremiah 33:17: "For thus saith the LORD; David shall never want a man to sit upon the throne of the house of Israel;"  
 Jeremiah 33:18: "Neither shall the priests the Levites want a man before me to offer burnt offerings, and to kindle meat offerings, and to do sacrifice continually."  
 Jeremiah 35:19: "Therefore thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Jonadab the son of Rechab shall not want a man to stand before me for ever."  
 Lamentations 4:9: "They that be slain with the sword are better than they that be slain with hunger: for these pine away, stricken through for want of the fruits of the field."  
 Ezekiel 4:17: "That they may want bread and water, and be astonied one with another, and consume away for their iniquity."  
 Amos 4:6: "And I also have given you cleanness of teeth in all your cities, and want of bread in all your places: yet have ye not returned unto me, saith the LORD."  
 Mark 12:44: "For all they did cast in of their abundance; but she of her want did cast in all that she had, even all her living."  
 Luke 15:14: "And when he had spent all, there arose a mighty famine in that land; and he began to be in want."  
 2 Corinthians 8:14: "But by an equality, that now at this time your abundance may be a supply for their want, that their abundance also may be a supply for your want: that there may be equality."  
 2 Corinthians 9:12: "For the administration of this service not only supplieth the want of the saints, but is abundant also by many thanksgivings unto God;"  
 Philippians 4:11: "Not that I speak in respect of want: for I have learned, in whatsoever state I am, therewith to be content."

## **WANTED**

Occurrences: 3

Jeremiah 44:18: "But since we left off to burn incense to the queen of heaven, and to pour out drink offerings unto her, we have wanted all things, and have been consumed by the sword and by the famine."

John 2:3: "And when they wanted wine, the mother of Jesus saith unto him, They have no wine."

2 Corinthians 11:9: "And when I was present with you, and wanted, I was chargeable to no man: for that which was lacking to me the brethren which came from Macedonia supplied: and in all things I

have kept myself from being burdensome unto you, and so will I keep myself."

## **WANTETH**

Occurrences: 7

Deuteronomy 15:8: "But thou shalt open thine hand wide unto him, and shalt surely lend him sufficient for his need, in that which he wanteth."

Proverbs 9:4: "Whoso is simple, let him turn in hither: as for him that wanteth understanding, she saith to him,"

Proverbs 9:16: "Whoso is simple, let him turn in hither: and as for him that wanteth understanding, she saith to him,"

Proverbs 10:19: "In the multitude of words there wanteth not sin: but he that refraineth his lips is wise."

Proverbs 28:16: "The prince that wanteth understanding is also a great oppressor: but he that hateth covetousness shall prolong his days."

Ecclesiastes 6:2: "A man to whom God hath given riches, wealth, and honour, so that he wanteth nothing for his soul of all that he desireth, yet God giveth him not power to eat thereof, but a stranger eateth it: this is vanity, and it is an evil disease."

Song of Solomon 7:2: "Thy navel is like a round goblet, which wanteth not liquor: thy belly is like an heap of wheat set about with lilies."

## **WANTING**

Occurrences: 7

2 Kings 10:19: "Now therefore call unto me all the prophets of Baal, all his servants, and all his priests; let none be wanting: for I have a great sacrifice to do to Baal; whosoever shall be wanting, he shall not live. But Jehu did it in subtilty, to the intent that he might destroy the worshippers of Baal."

Proverbs 19:7: "All the brethren of the poor do hate him: how much more do his friends go far from him? he pursueth them with words, yet they are wanting to him."

Ecclesiastes 1:15: "That which is crooked cannot be made straight: and that which is wanting cannot be numbered."

Daniel 5:27: "TEKEL; Thou art weighed in the balances, and art found wanting."

Titus 1:5: "For this cause left I thee in Crete, that thou shouldest set in order the things that are wanting, and ordain elders in every city, as I had appointed thee:"

Titus 3:13: "Bring Zenas the lawyer and Apollos on their journey diligently, that nothing be wanting unto them."

James 1:4: "But let patience have her perfect work, that ye may be perfect and entire, wanting nothing."

## **WANTON**

Occurrences: 3

Isaiah 3:16: "Moreover the LORD saith, Because the daughters of Zion are haughty, and walk with stretched forth necks and wanton eyes, walking and mincing as they go, and making a tinkling with their feet:"

1 Timothy 5:11: "But the younger widows refuse: for when they have begun to wax wanton against Christ, they will marry;"

James 5:5: "Ye have lived in pleasure on the earth, and been wanton; ye have nourished your hearts, as in a day of slaughter."

## WANTONNESS

Occurrences: 2

Romans 13:13: "Let us walk honestly, as in the day; not in rioting and drunkenness, not in chambering and wantonness, not in strife and envying."

2 Peter 2:18: "For when they speak great swelling words of vanity, they allure through the lusts of the flesh, through much wantonness, those that were clean escaped from them who live in error."

## WANTS

Occurrences: 2

Judges 19:20: "And the old man said, Peace be with thee; howsoever let all thy wants lie upon me; only lodge not in the street."

Philippians 2:25: "Yet I supposed it necessary to send to you Epaphroditus, my brother, and companion in labour, and fellowsoldier, but your messenger, and he that ministered to my wants."

## WAR

Occurrences: 220

Genesis 14:2: "That these made war with Bera king of Sodom, and with Birsha king of Gomorrah, Shinab king of Admah, and Shemeber king of Zeboiim, and the king of Bela, which is Zoar."

Exodus 1:10: "Come on, let us deal wisely with them; lest they multiply, and it come to pass, that, when there falleth out any war, they join also unto our enemies, and fight against us, and so get them up out of the land."

Exodus 13:17: "And it came to pass, when Pharaoh had let the people go, that God led them not through the way of the land of the Philistines, although that was near; for God said, Lest peradventure the people repent when they see war, and they return to Egypt:"

Exodus 15:3: "The LORD is a man of war: the LORD is his name."

Exodus 17:16: "For he said, Because the LORD hath sworn that the LORD will have war with Amalek from generation to generation."

Exodus 32:17: "And when Joshua heard the noise of the people as they shouted, he said unto Moses, There is a noise of war in the camp."

Numbers 1:3: "From twenty years old and upward, all that are able to go forth to war in Israel: thou and Aaron shall number them by their armies."

Numbers 1:20: "And the children of Reuben, Israel's eldest son, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, by their polls, every male from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:22: "Of the children of Simeon, by their generations, after their families, by the house of their fathers, those that were numbered of them, according to the number of the names, by their polls, every male from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:24: "Of the children of Gad, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:26: "Of the children of Judah, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:28: "Of the children of Issachar, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:30: "Of the children of Zebulun, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that

were able to go forth to war;"

Numbers 1:32: "Of the children of Joseph, namely, of the children of Ephraim, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:34: "Of the children of Manasseh, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:36: "Of the children of Benjamin, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:38: "Of the children of Dan, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:40: "Of the children of Asher, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:42: "Of the children of Naphtali, throughout their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:45: "So were all those that were numbered of the children of Israel, by the house of their fathers, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war in Israel;"

Numbers 10:9: "And if ye go to war in your land against the enemy that oppresseth you, then ye shall blow an alarm with the trumpets; and ye shall be remembered before the LORD your God, and ye shall be saved from your enemies."

Numbers 26:2: "Take the sum of all the congregation of the children of Israel, from twenty years old and upward, throughout their fathers' house, all that are able to go to war in Israel."

Numbers 31:3: "And Moses spake unto the people, saying, Arm some of yourselves unto the war, and let them go against the Midianites, and avenge the LORD of Midian."

Numbers 31:4: "Of every tribe a thousand, throughout all the tribes of Israel, shall ye send to the war."

Numbers 31:5: "So there were delivered out of the thousands of Israel, a thousand of every tribe, twelve thousand armed for war."

Numbers 31:6: "And Moses sent them to the war, a thousand of every tribe, them and Phinehas the son of Eleazar the priest, to the war, with the holy instruments, and the trumpets to blow in his hand."

Numbers 31:21: "And Eleazar the priest said unto the men of war which went to the battle, This is the ordinance of the law which the LORD commanded Moses;"

Numbers 31:27: "And divide the prey into two parts; between them that took the war upon them, who went out to battle, and between all the congregation:"

Numbers 31:28: "And levy a tribute unto the Lord of the men of war which went out to battle: one soul of five hundred, both of the persons, and of the beeves, and of the asses, and of the sheep:"

Numbers 31:32: "And the booty, being the rest of the prey which the men of war had caught, was six hundred thousand and seventy thousand and five thousand sheep,"

Numbers 31:36: "And the half, which was the portion of them that went out to war, was in number three hundred thousand and seven and thirty thousand and five hundred sheep:"

Numbers 31:49: "And they said unto Moses, Thy servants have taken the sum of the men of war which are under our charge, and there lacketh not one man of us."

Numbers 31:53: "(For the men of war had taken spoil, every man for himself.)"

Numbers 32:6: "And Moses said unto the children of Gad and to the children of Reuben, Shall your brethren go to war, and shall ye sit here?"



Numbers 32:20: "And Moses said unto them, If ye will do this thing, if ye will go armed before the LORD to war,"

Numbers 32:27: "But thy servants will pass over, every man armed for war, before the LORD to battle, as my lord saith."

Deuteronomy 1:41: "Then ye answered and said unto me, We have sinned against the LORD, we will go up and fight, according to all that the LORD our God commanded us. And when ye had girded on every man his weapons of war, ye were ready to go up into the hill."

Deuteronomy 2:14: "And the space in which we came from Kadeshbarnea, until we were come over the brook Zered, was thirty and eight years; until all the generation of the men of war were wasted out from among the host, as the LORD sware unto them."

Deuteronomy 2:16: "So it came to pass, when all the men of war were consumed and dead from among the people,"

Deuteronomy 3:18: "And I commanded you at that time, saying, The LORD your God hath given you this land to possess it: ye shall pass over armed before your brethren the children of Israel, all that are meet for the war."

Deuteronomy 4:34: "Or hath God assayed to go and take him a nation from the midst of another nation, by temptations, by signs, and by wonders, and by war, and by a mighty hand, and by a stretched out arm, and by great terrors, according to all that the LORD your God did for you in Egypt before your eyes?"

Deuteronomy 20:12: "And if it will make no peace with thee, but will make war against thee, then thou shalt besiege it:"

Deuteronomy 20:19: "When thou shalt besiege a city a long time, in making war against it to take it, thou shalt not destroy the trees thereof by forcing an axe against them: for thou mayest eat of them, and thou shalt not cut them down (for the tree of the field is man's life) to employ them in the siege:"

Deuteronomy 20:20: "Only the trees which thou knowest that they be not trees for meat, thou shalt destroy and cut them down; and thou shalt build bulwarks against the city that maketh war with thee, until it be subdued."

Deuteronomy 21:10: "When thou goest forth to war against thine enemies, and the LORD thy God hath delivered them into thine hands, and thou hast taken them captive,"

Deuteronomy 24:5: "When a man hath taken a new wife, he shall not go out to war, neither shall he be charged with any business: but he shall be free at home one year, and shall cheer up his wife which he hath taken."

Joshua 4:13: "About forty thousand prepared for war passed over before the LORD unto battle, to the plains of Jericho."

Joshua 5:4: "And this is the cause why Joshua did circumcise: All the people that came out of Egypt, that were males, even all the men of war, died in the wilderness by the way, after they came out of Egypt."

Joshua 5:6: "For the children of Israel walked forty years in the wilderness, till all the people that were men of war, which came out of Egypt, were consumed, because they obeyed not the voice of the LORD: unto whom the LORD sware that he would not shew them the land, which the LORD sware unto their fathers that he would give us, a land that floweth with milk and honey."

Joshua 6:3: "And ye shall compass the city, all ye men of war, and go round about the city once. Thus shalt thou do six days."

Joshua 8:1: "And the LORD said unto Joshua, Fear not, neither be thou dismayed: take all the people of war with thee, and arise, go up to Ai: see, I have given into thy hand the king of Ai, and his people, and his city, and his land:"

Joshua 8:3: "So Joshua arose, and all the people of war, to go up against Ai: and Joshua chose out thirty thousand mighty men of valour, and sent them away by night."

Joshua 8:11: "And all the people, even the people of war that were with him, went up, and drew

nigh, and came before the city, and pitched on the north side of Ai: now there was a valley between them and Ai."

Joshua 10:5: "Therefore the five kings of the Amorites, the king of Jerusalem, the king of Hebron, the king of Jarmuth, the king of Lachish, the king of Eglon, gathered themselves together, and went up, they and all their hosts, and encamped before Gibeon, and made war against it."

Joshua 10:7: "So Joshua ascended from Gilgal, he, and all the people of war with him, and all the mighty men of valour."

Joshua 10:24: "And it came to pass, when they brought out those kings unto Joshua, that Joshua called for all the men of Israel, and said unto the captains of the men of war which went with him, Come near, put your feet upon the necks of these kings. And they came near, and put their feet upon the necks of them."

Joshua 11:7: "So Joshua came, and all the people of war with him, against them by the waters of Merom suddenly; and they fell upon them."

Joshua 11:18: "Joshua made war a long time with all those kings."

Joshua 11:23: "So Joshua took the whole land, according to all that the LORD said unto Moses; and Joshua gave it for an inheritance unto Israel according to their divisions by their tribes. And the land rested from war."

Joshua 14:11: "As yet I am as strong this day as I was in the day that Moses sent me: as my strength was then, even so is my strength now, for war, both to go out, and to come in."

Joshua 14:15: "And the name of Hebron before was Kirjatharba; which Arba was a great man among the Anakims. And the land had rest from war."

Joshua 17:1: "There was also a lot for the tribe of Manasseh; for he was the firstborn of Joseph; to wit, for Machir the firstborn of Manasseh, the father of Gilead: because he was a man of war, therefore he had Gilead and Bashan."

Joshua 22:12: "And when the children of Israel heard of it, the whole congregation of the children of Israel gathered themselves together at Shiloh, to go up to war against them."

Judges 3:2: "Only that the generations of the children of Israel might know, to teach them war, at the least such as before knew nothing thereof;"

Judges 3:10: "And the Spirit of the LORD came upon him, and he judged Israel, and went out to war: and the LORD delivered Chushanrishathaim king of Mesopotamia into his hand; and his hand prevailed against Chushanrishathaim."

Judges 5:8: "They chose new gods; then was war in the gates: was there a shield or spear seen among forty thousand in Israel?"

Judges 11:4: "And it came to pass in process of time, that the children of Ammon made war against Israel."

Judges 11:5: "And it was so, that when the children of Ammon made war against Israel, the elders of Gilead went to fetch Jephthah out of the land of Tob:"

Judges 11:27: "Wherefore I have not sinned against thee, but thou doest me wrong to war against me: the LORD the Judge be judge this day between the children of Israel and the children of Ammon."

Judges 18:11: "And there went from thence of the family of the Danites, out of Zorah and out of Eshtaol, six hundred men appointed with weapons of war."

Judges 18:16: "And the six hundred men appointed with their weapons of war, which were of the children of Dan, stood by the entering of the gate."

Judges 18:17: "And the five men that went to spy out the land went up, and came in thither, and took the graven image, and the ephod, and the teraphim, and the molten image: and the priest stood in the entering of the gate with the six hundred men that were appointed with weapons of war."

Judges 20:17: "And the men of Israel, beside Benjamin, were numbered four hundred thousand men that drew sword: all these were men of war."

Judges 21:22: "And it shall be, when their fathers or their brethren come unto us to complain, that

we will say unto them, Be favourable unto them for our sakes: because we reserved not to each man his wife in the war: for ye did not give unto them at this time, that ye should be guilty."

1 Samuel 8:12: "And he will appoint him captains over thousands, and captains over fifties; and will set them to ear his ground, and to reap his harvest, and to make his instruments of war, and instruments of his chariots."

1 Samuel 14:52: "And there was sore war against the Philistines all the days of Saul: and when Saul saw any strong man, or any valiant man, he took him unto him."

1 Samuel 16:18: "Then answered one of the servants, and said, Behold, I have seen a son of Jesse the Bethlehemite, that is cunning in playing, and a mighty valiant man, and a man of war, and prudent in matters, and a comely person, and the LORD is with him."

1 Samuel 17:33: "And Saul said to David, Thou art not able to go against this Philistine to fight with him: for thou art but a youth, and he a man of war from his youth."

1 Samuel 18:5: "And David went out whithersoever Saul sent him, and behaved himself wisely: and Saul set him over the men of war, and he was accepted in the sight of all the people, and also in the sight of Saul's servants."

1 Samuel 19:8: "And there was war again: and David went out, and fought with the Philistines, and slew them with a great slaughter; and they fled from him."

1 Samuel 23:8: "And Saul called all the people together to war, to go down to Keilah, to besiege David and his men."

1 Samuel 28:15: "And Samuel said to Saul, Why hast thou disquieted me, to bring me up? And Saul answered, I am sore distressed; for the Philistines make war against me, and God is departed from me, and answereth me no more, neither by prophets, nor by dreams: therefore I have called thee, that thou mayest make known unto me what I shall do."

2 Samuel 1:27: "How are the mighty fallen, and the weapons of war perished!"

2 Samuel 3:1: "Now there was long war between the house of Saul and the house of David: but David waxed stronger and stronger, and the house of Saul waxed weaker and weaker."

2 Samuel 3:6: "And it came to pass, while there was war between the house of Saul and the house of David, that Abner made himself strong for the house of Saul."

2 Samuel 11:7: "And when Uriah was come unto him, David demanded of him how Joab did, and how the people did, and how the war prospered."

2 Samuel 11:18: "Then Joab sent and told David all the things concerning the war;"

2 Samuel 11:19: "And charged the messenger, saying, When thou hast made an end of telling the matters of the war unto the king,"

2 Samuel 17:8: "For, said Hushai, thou knowest thy father and his men, that they be mighty men, and they be chafed in their minds, as a bear robbed of her whelps in the field: and thy father is a man of war, and will not lodge with the people."

2 Samuel 21:15: "Moreover the Philistines had yet war again with Israel; and David went down, and his servants with him, and fought against the Philistines: and David waxed faint."

2 Samuel 22:35: "He teacheth my hands to war; so that a bow of steel is broken by mine arms."

1 Kings 2:5: "Moreover thou knowest also what Joab the son of Zeruiah did to me, and what he did to the two captains of the hosts of Israel, unto Abner the son of Ner, and unto Amasa the son of Jether, whom he slew, and shed the blood of war in peace, and put the blood of war upon his girdle that was about his loins, and in his shoes that were on his feet."

1 Kings 9:22: "But of the children of Israel did Solomon make no bondmen: but they were men of war, and his servants, and his princes, and his captains, and rulers of his chariots, and his horsemen."

1 Kings 14:30: "And there was war between Rehoboam and Jeroboam all their days."

1 Kings 15:6: "And there was war between Rehoboam and Jeroboam all the days of his life."

1 Kings 15:7: "Now the rest of the acts of Abijam, and all that he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? And there was war between Abijam and Jeroboam."

1 Kings 15:16: "And there was war between Asa and Baasha king of Israel all their days."

1 Kings 15:32: "And there was war between Asa and Baasha king of Israel all their days."

1 Kings 20:18: "And he said, Whether they be come out for peace, take them alive; or whether they be come out for war, take them alive."

1 Kings 22:1: "And they continued three years without war between Syria and Israel."

2 Kings 8:28: "And he went with Joram the son of Ahab to the war against Hazael king of Syria in Ramothgilead; and the Syrians wounded Joram."

2 Kings 13:25: "And Jehoash the son of Jehoahaz took again out of the hand of Benhadad the son of Hazael the cities, which he had taken out of the hand of Jehoahaz his father by war. Three times did Joash beat him, and recovered the cities of Israel."

2 Kings 14:7: "He slew of Edom in the valley of salt ten thousand, and took Selah by war, and called the name of it Joktheel unto this day."

2 Kings 16:5: "Then Rezin king of Syria and Pekah son of Remaliah king of Israel came up to Jerusalem to war: and they besieged Ahaz, but could not overcome him."

2 Kings 18:20: "Thou sayest, (but they are but vain words,) I have counsel and strength for the war. Now on whom dost thou trust, that thou rebellest against me?"

2 Kings 24:16: "And all the men of might, even seven thousand, and craftsmen and smiths a thousand, all that were strong and apt for war, even them the king of Babylon brought captive to Babylon."

2 Kings 25:4: "And the city was broken up, and all the men of war fled by night by the way of the gate between two walls, which is by the king's garden: (now the Chaldees were against the city round about:) and the king went the way toward the plain."

2 Kings 25:19: "And out of the city he took an officer that was set over the men of war, and five men of them that were in the king's presence, which were found in the city, and the principal scribe of the host, which mustered the people of the land, and threescore men of the people of the land that were found in the city:"

1 Chronicles 5:10: "And in the days of Saul they made war with the Hagarites, who fell by their hand: and they dwelt in their tents throughout all the east land of Gilead."

1 Chronicles 5:18: "The sons of Reuben, and the Gadites, and half the tribe of Manasseh, of valiant men, men able to bear buckler and sword, and to shoot with bow, and skilful in war, were four and forty thousand seven hundred and threescore, that went out to the war."

1 Chronicles 5:19: "And they made war with the Hagarites, with Jetur, and Nephish, and Nodab."

1 Chronicles 5:22: "For there fell down many slain, because the war was of God. And they dwelt in their steads until the captivity."

1 Chronicles 7:4: "And with them, by their generations, after the house of their fathers, were bands of soldiers for war, six and thirty thousand men: for they had many wives and sons."

1 Chronicles 7:11: "All these the sons of Jediael, by the heads of their fathers, mighty men of valour, were seventeen thousand and two hundred soldiers, fit to go out for war and battle."

1 Chronicles 7:40: "All these were the children of Asher, heads of their father's house, choice and mighty men of valour, chief of the princes. And the number throughout the genealogy of them that were apt to the war and to battle was twenty and six thousand men."

1 Chronicles 12:1: "Now these are they that came to David to Ziklag, while he yet kept himself close because of Saul the son of Kish: and they were among the mighty men, helpers of the war."

1 Chronicles 12:8: "And of the Gadites there separated themselves unto David into the hold to the wilderness men of might, and men of war fit for the battle, that could handle shield and buckler, whose faces were like the faces of lions, and were as swift as the roes upon the mountains;"

1 Chronicles 12:23: "And these are the numbers of the bands that were ready armed to the war, and came to David to Hebron, to turn the kingdom of Saul to him, according to the word of the LORD."

1 Chronicles 12:24: "The children of Judah that bare shield and spear were six thousand and eight hundred, ready armed to the war."

1 Chronicles 12:25: "Of the children of Simeon, mighty men of valour for the war, seven thousand and one hundred."

1 Chronicles 12:33: "Of Zebulun, such as went forth to battle, expert in war, with all instruments of war, fifty thousand, which could keep rank: they were not of double heart."

1 Chronicles 12:35: "And of the Danites expert in war twenty and eight thousand and six hundred."

1 Chronicles 12:36: "And of Asher, such as went forth to battle, expert in war, forty thousand."

1 Chronicles 12:37: "And on the other side of Jordan, of the Reubenites, and the Gadites, and of the half tribe of Manasseh, with all manner of instruments of war for the battle, an hundred and twenty thousand."

1 Chronicles 12:38: "All these men of war, that could keep rank, came with a perfect heart to Hebron, to make David king over all Israel: and all the rest also of Israel were of one heart to make David king."

1 Chronicles 18:10: "He sent Hadoram his son to king David, to enquire of his welfare, and to congratulate him, because he had fought against Hadarezer, and smitten him; (for Hadarezer had war with Tou;) and with him all manner of vessels of gold and silver and brass."

1 Chronicles 20:4: "And it came to pass after this, that there arose war at Gezer with the Philistines; at which time Sibbechai the Hushathite slew Sippai, that was of the children of the giant: and they were subdued."

1 Chronicles 20:5: "And there was war again with the Philistines; and Elhanan the son of Jair slew Lahmi the brother of Goliath the Gittite, whose spear staff was like a weaver's beam."

1 Chronicles 20:6: "And yet again there was war at Gath, where was a man of great stature, whose fingers and toes were four and twenty, six on each hand, and six on each foot and he also was the son of the giant."

1 Chronicles 28:3: "But God said unto me, Thou shalt not build an house for my name, because thou hast been a man of war, and hast shed blood."

2 Chronicles 6:34: "If thy people go out to war against their enemies by the way that thou shalt send them, and they pray unto thee toward this city which thou hast chosen, and the house which I have built for thy name;"

2 Chronicles 8:9: "But of the children of Israel did Solomon make no servants for his work; but they were men of war, and chief of his captains, and captains of his chariots and horsemen."

2 Chronicles 13:2: "He reigned three years in Jerusalem. His mother's name also was Michaiah the daughter of Uriel of Gibeah. And there was war between Abijah and Jeroboam."

2 Chronicles 13:3: "And Abijah set the battle in array with an army of valiant men of war, even four hundred thousand chosen men: Jeroboam also set the battle in array against him with eight hundred thousand chosen men, being mighty men of valour."

2 Chronicles 14:6: "And he built fenced cities in Judah: for the land had rest, and he had no war in those years; because the LORD had given him rest."

2 Chronicles 15:19: "And there was no more war unto the five and thirtieth year of the reign of Asa."

2 Chronicles 17:10: "And the fear of the LORD fell upon all the kingdoms of the lands that were round about Judah, so that they made no war against Jehoshaphat."

2 Chronicles 17:13: "And he had much business in the cities of Judah: and the men of war, mighty men of valour, were in Jerusalem."

2 Chronicles 17:18: "And next him was Jehozabad, and with him an hundred and fourscore thousand ready prepared for the war."

2 Chronicles 18:3: "And Ahab king of Israel said unto Jehoshaphat king of Judah, Wilt thou go with me to Ramothgilead? And he answered him, I am as thou art, and my people as thy people; and we will be with thee in the war."

2 Chronicles 22:5: "He walked also after their counsel, and went with Jehoram the son of Ahab king of Israel to war against Hazael king of Syria at Ramothgilead: and the Syrians smote Joram."

2 Chronicles 25:5: "Moreover Amaziah gathered Judah together, and made them captains over thousands, and captains over hundreds, according to the houses of their fathers, throughout all Judah and Benjamin: and he numbered them from twenty years old and above, and found them three hundred thousand choice men, able to go forth to war, that could handle spear and shield."

2 Chronicles 26:11: "Moreover Uzziah had an host of fighting men, that went out to war by bands, according to the number of their account by the hand of Jeiel the scribe and Maaseiah the ruler, under the hand of Hananiah, one of the king's captains."

2 Chronicles 26:13: "And under their hand was an army, three hundred thousand and seven thousand and five hundred, that made war with mighty power, to help the king against the enemy."

2 Chronicles 28:12: "Then certain of the heads of the children of Ephraim, Azariah the son of Johanan, Berechiah the son of Meshillemoth, and Jehizkiah the son of Shallum, and Amasa the son of Hadlai, stood up against them that came from the war,"

2 Chronicles 32:6: "And he set captains of war over the people, and gathered them together to him in the street of the gate of the city, and spake comfortably to them, saying,"

2 Chronicles 33:14: "Now after this he built a wall without the city of David, on the west side of Gihon, in the valley, even to the entering in at the fish gate, and compassed about Ophel, and raised it up a very great height, and put captains of war in all the fenced cities of Judah."

2 Chronicles 35:21: "But he sent ambassadors to him, saying, What have I to do with thee, thou king of Judah? I come not against thee this day, but against the house wherewith I have war: for God commanded me to make haste: forbear thee from meddling with God, who is with me, that he destroy thee not."

Job 5:20: "In famine he shall redeem thee from death: and in war from the power of the sword."

Job 10:17: "Thou renewest thy witnesses against me, and increasest thine indignation upon me; changes and war are against me."

Job 38:23: "Which I have reserved against the time of trouble, against the day of battle and war?"

Psalms 18:34: "He teacheth my hands to war, so that a bow of steel is broken by mine arms."

Psalms 27:3: "Though an host should encamp against me, my heart shall not fear: though war should rise against me, in this will I be confident."

Psalms 55:21: "The words of his mouth were smoother than butter, but war was in his heart: his words were softer than oil, yet were they drawn swords."

Psalms 68:30: "Rebuke the company of spearmen, the multitude of the bulls, with the calves of the people, till every one submit himself with pieces of silver: scatter thou the people that delight in war."

Psalms 120:7: "I am for peace: but when I speak, they are for war."

Psalms 140:2: "Which imagine mischiefs in their heart; continually are they gathered together for war."

Psalms 144:1: "Blessed be the LORD my strength which teacheth my hands to war, and my fingers to fight:"

Proverbs 20:18: "Every purpose is established by counsel: and with good advice make war."

Proverbs 24:6: "For by wise counsel thou shalt make thy war: and in multitude of counsellors there is safety."

Ecclesiastes 3:8: "A time to love, and a time to hate; a time of war, and a time of peace."

Ecclesiastes 8:8: "There is no man that hath power over the spirit to retain the spirit; neither hath he power in the day of death: and there is no discharge in that war; neither shall wickedness deliver those that are given to it."

Ecclesiastes 9:18: "Wisdom is better than weapons of war: but one sinner destroyeth much good."

Song of Solomon 3:8: "They all hold swords, being expert in war: every man hath his sword upon his thigh because of fear in the night."

Isaiah 2:4: "And he shall judge among the nations, and shall rebuke many people: and they shall beat their swords into plowshares, and their spears into pruninghooks: nation shall not lift up sword

against nation, neither shall they learn war any more."

Isaiah 3:2: "The mighty man, and the man of war, the judge, and the prophet, and the prudent, and the ancient,"

Isaiah 3:25: "Thy men shall fall by the sword, and thy mighty in the war."

Isaiah 7:1: "And it came to pass in the days of Ahaz the son of Jotham, the son of Uzziah, king of Judah, that Rezin the king of Syria, and Pekah the son of Remaliah, king of Israel, went up toward Jerusalem to war against it, but could not prevail against it."

Isaiah 21:15: "For they fled from the swords, from the drawn sword, and from the bent bow, and from the grievousness of war."

Isaiah 36:5: "I say, sayest thou, (but they are but vain words) I have counsel and strength for war: now on whom dost thou trust, that thou rebellest against me?"

Isaiah 37:9: "And he heard say concerning Tirhakah king of Ethiopia, He is come forth to make war with thee. And when he heard it, he sent messengers to Hezekiah, saying,"

Isaiah 41:12: "Thou shalt seek them, and shalt not find them, even them that contended with thee: they that war against thee shall be as nothing, and as a thing of nought."

Isaiah 42:13: "The LORD shall go forth as a mighty man, he shall stir up jealousy like a man of war: he shall cry, yea, roar; he shall prevail against his enemies."

Jeremiah 4:19: "My bowels, my bowels! I am pained at my very heart; my heart maketh a noise in me; I cannot hold my peace, because thou hast heard, O my soul, the sound of the trumpet, the alarm of war."

Jeremiah 6:4: "Prepare ye war against her; arise, and let us go up at noon. Woe unto us! for the day goeth away, for the shadows of the evening are stretched out."

Jeremiah 6:23: "They shall lay hold on bow and spear; they are cruel, and have no mercy; their voice roareth like the sea; and they ride upon horses, set in array as men for war against thee, O daughter of Zion."

Jeremiah 21:2: "Enquire, I pray thee, of the LORD for us; for Nebuchadrezzar king of Babylon maketh war against us; if so be that the LORD will deal with us according to all his wondrous works, that he may go up from us."

Jeremiah 21:4: "Thus saith the LORD God of Israel; Behold, I will turn back the weapons of war that are in your hands, wherewith ye fight against the king of Babylon, and against the Chaldeans, which besiege you without the walls, and I will assemble them into the midst of this city."

Jeremiah 28:8: "The prophets that have been before me and before thee of old prophesied both against many countries, and against great kingdoms, of war, and of evil, and of pestilence."

Jeremiah 38:4: "Therefore the princes said unto the king, We beseech thee, let this man be put to death: for thus he weakeneth the hands of the men of war that remain in this city, and the hands of all the people, in speaking such words unto them: for this man seeketh not the welfare of this people, but the hurt."

Jeremiah 39:4: "And it came to pass, that when Zedekiah the king of Judah saw them, and all the men of war, then they fled, and went forth out of the city by night, by the way of the king's garden, by the gate betwixt the two walls: and he went out the way of the plain."

Jeremiah 41:3: "Ishmael also slew all the Jews that were with him, even with Gedaliah, at Mizpah, and the Chaldeans that were found there, and the men of war."

Jeremiah 41:16: "Then took Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces that were with him, all the remnant of the people whom he had recovered from Ishmael the son of Nethaniah, from Mizpah, after that he had slain Gedaliah the son of Ahikam, even mighty men of war, and the women, and the children, and the eunuchs, whom he had brought again from Gibeon:"

Jeremiah 42:14: "Saying, No; but we will go into the land of Egypt, where we shall see no war, nor hear the sound of the trumpet, nor have hunger of bread; and there will we dwell:"

Jeremiah 48:14: "How say ye, We are mighty and strong men for the war?"

Jeremiah 49:2: "Therefore, behold, the days come, saith the LORD, that I will cause an alarm of

war to be heard in Rabbah of the Ammonites; and it shall be a desolate heap, and her daughters shall be burned with fire: then shall Israel be heir unto them that were his heirs, saith the LORD." Jeremiah 49:26: "Therefore her young men shall fall in her streets, and all the men of war shall be cut off in that day, saith the LORD of hosts."

Jeremiah 50:30: "Therefore shall her young men fall in the streets, and all her men of war shall be cut off in that day, saith the LORD."

Jeremiah 51:20: "Thou art my battle axe and weapons of war: for with thee will I break in pieces the nations, and with thee will I destroy kingdoms;"

Jeremiah 51:32: "And that the passages are stopped, and the reeds they have burned with fire, and the men of war are affrighted."

Jeremiah 52:7: "Then the city was broken up, and all the men of war fled, and went forth out of the city by night by the way of the gate between the two walls, which was by the king's garden; (now the Chaldeans were by the city round about:) and they went by the way of the plain."

Jeremiah 52:25: "He took also out of the city an eunuch, which had the charge of the men of war; and seven men of them that were near the king's person, which were found in the city; and the principal scribe of the host, who mustered the people of the land; and threescore men of the people of the land, that were found in the midst of the city."

Ezekiel 17:17: "Neither shall Pharaoh with his mighty army and great company make for him in the war, by casting up mounts, and building forts, to cut off many persons:"

Ezekiel 26:9: "And he shall set engines of war against thy walls, and with his axes he shall break down thy towers."

Ezekiel 27:10: "They of Persia and of Lud and of Phut were in thine army, thy men of war: they hanged the shield and helmet in thee; they set forth thy comeliness."

Ezekiel 27:27: "Thy riches, and thy fairs, thy merchandise, thy mariners, and thy pilots, thy calkers, and the occupiers of thy merchandise, and all thy men of war, that are in thee, and in all thy company which is in the midst of thee, shall fall into the midst of the seas in the day of thy ruin."

Ezekiel 32:27: "And they shall not lie with the mighty that are fallen of the uncircumcised, which are gone down to hell with their weapons of war: and they have laid their swords under their heads, but their iniquities shall be upon their bones, though they were the terror of the mighty in the land of the living."

Ezekiel 39:20: "Thus ye shall be filled at my table with horses and chariots, with mighty men, and with all men of war, saith the Lord GOD."

Daniel 7:21: "I beheld, and the same horn made war with the saints, and prevailed against them;"

Daniel 9:26: "And after threescore and two weeks shall Messiah be cut off, but not for himself: and the people of the prince that shall come shall destroy the city and the sanctuary; and the end thereof shall be with a flood, and unto the end of the war desolations are determined."

Joel 2:7: "They shall run like mighty men; they shall climb the wall like men of war; and they shall march every one on his ways, and they shall not break their ranks:"

Joel 3:9: "Proclaim ye this among the Gentiles; Prepare war, wake up the mighty men, let all the men of war draw near; let them come up:"

Micah 2:8: "Even of late my people is risen up as an enemy: ye pull off the robe with the garment from them that pass by securely as men averse from war."

Micah 3:5: "Thus saith the LORD concerning the prophets that make my people err, that bite with their teeth, and cry, Peace; and he that putteth not into their mouths, they even prepare war against him."

Micah 4:3: "And he shall judge among many people, and rebuke strong nations afar off; and they shall beat their swords into plowshares, and their spears into pruninghooks: nation shall not lift up a sword against nation, neither shall they learn war any more."

Luke 14:31: "Or what king, going to make war against another king, sitteth not down first, and consulteth whether he be able with ten thousand to meet him that cometh against him with twenty



thousand?"

Luke 23:11: "And Herod with his men of war set him at nought, and mocked him, and arrayed him in a gorgeous robe, and sent him again to Pilate."

2 Corinthians 10:3: "For though we walk in the flesh, we do not war after the flesh:"

1 Timothy 1:18: "This charge I commit unto thee, son Timothy, according to the prophecies which went before on thee, that thou by them mightest war a good warfare;"

James 4:1: "From whence come wars and fightings among you? come they not hence, even of your lusts that war in your members?"

James 4:2: "Ye lust, and have not: ye kill, and desire to have, and cannot obtain: ye fight and war, yet ye have not, because ye ask not."

1 Peter 2:11: "Dearly beloved, I beseech you as strangers and pilgrims, abstain from fleshly lusts, which war against the soul;"

Revelation 11:7: "And when they shall have finished their testimony, the beast that ascendeth out of the bottomless pit shall make war against them, and shall overcome them, and kill them."

Revelation 12:7: "And there was war in heaven: Michael and his angels fought against the dragon; and the dragon fought and his angels,"

Revelation 12:17: "And the dragon was wroth with the woman, and went to make war with the remnant of her seed, which keep the commandments of God, and have the testimony of Jesus Christ."

Revelation 13:4: "And they worshipped the dragon which gave power unto the beast: and they worshipped the beast, saying, Who is like unto the beast? who is able to make war with him?"

Revelation 13:7: "And it was given unto him to make war with the saints, and to overcome them: and power was given him over all kindreds, and tongues, and nations."

Revelation 17:14: "These shall make war with the Lamb, and the Lamb shall overcome them: for he is Lord of lords, and King of kings: and they that are with him are called, and chosen, and faithful."

Revelation 19:11: "And I saw heaven opened, and behold a white horse; and he that sat upon him was called Faithful and True, and in righteousness he doth judge and make war."

Revelation 19:19: "And I saw the beast, and the kings of the earth, and their armies, gathered together to make war against him that sat on the horse, and against his army."

## **WARD**

Occurrences: 18

Genesis 40:3: "And he put them in ward in the house of the captain of the guard, into the prison, the place where Joseph was bound."

Genesis 40:4: "And the captain of the guard charged Joseph with them, and he served them: and they continued a season in ward."

Genesis 40:7: "And he asked Pharaoh's officers that were with him in the ward of his lord's house, saying, Wherefore look ye so sadly to day?"

Genesis 41:10: "Pharaoh was wroth with his servants, and put me in ward in the captain of the guard's house, both me and the chief baker:"

Genesis 42:17: "And he put them all together into ward three days."

Leviticus 24:12: "And they put him in ward, that the mind of the LORD might be shewed them."

Numbers 15:34: "And they put him in ward, because it was not declared what should be done to him."

2 Samuel 20:3: "And David came to his house at Jerusalem; and the king took the ten women his concubines, whom he had left to keep the house, and put them in ward, and fed them, but went not in unto them. So they were shut up unto the day of their death, living in widowhood."

1 Chronicles 12:29: "And of the children of Benjamin, the kindred of Saul, three thousand: for hitherto the greatest part of them had kept the ward of the house of Saul."

1 Chronicles 25:8: "And they cast lots, ward against ward, as well the small as the great, the teacher

as the scholar."

1 Chronicles 26:16: "To Shuppim and Hosah the lot came forth westward, with the gate Shallecheth, by the causeway of the going up, ward against ward."

Nehemiah 12:24: "And the chief of the Levites: Hashabiah, Sherebiah, and Jeshua the son of Kadmiel, with their brethren over against them, to praise and to give thanks, according to the commandment of David the man of God, ward over against ward."

Nehemiah 12:25: "Mattaniah, and Bakbukiah, Obadiah, Meshullam, Talmon, Akkub, were porters keeping the ward at the thresholds of the gates."

Nehemiah 12:45: "And both the singers and the porters kept the ward of their God, and the ward of the purification, according to the commandment of David, and of Solomon his son."

Isaiah 21:8: "And he cried, A lion: My lord, I stand continually upon the watchtower in the daytime, and I am set in my ward whole nights:"

Jeremiah 37:13: "And when he was in the gate of Benjamin, a captain of the ward was there, whose name was Irijah, the son of Shelemiah, the son of Hananiah; and he took Jeremiah the prophet, saying, Thou fallest away to the Chaldeans."

Ezekiel 19:9: "And they put him in ward in chains, and brought him to the king of Babylon: they brought him into holds, that his voice should no more be heard upon the mountains of Israel."

Acts 12:10: "When they were past the first and the second ward, they came unto the iron gate that leadeth unto the city; which opened to them of his own accord: and they went out, and passed on through one street; and forthwith the angel departed from him."

## **WARDROBE**

Occurrences: 2

2 Kings 22:14: "So Hilkiah the priest, and Ahikam, and Achbor, and Shaphan, and Asahiah, went unto Huldah the prophetess, the wife of Shallum the son of Tikvah, the son of Harhas, keeper of the wardrobe; (now she dwelt in Jerusalem in the college;) and they communed with her."

2 Chronicles 34:22: "And Hilkiah, and they that the king had appointed, went to Huldah the prophetess, the wife of Shallum the son of Tikvath, the son of Hasrah, keeper of the wardrobe; (now she dwelt in Jerusalem in the college;) and they spake to her to that effect."

## **WARDS**

Occurrences: 3

1 Chronicles 9:23: "So they and their children had the oversight of the gates of the house of the LORD, namely, the house of the tabernacle, by wards."

1 Chronicles 26:12: "Among these were the divisions of the porters, even among the chief men, having wards one against another, to minister in the house of the LORD."

Nehemiah 13:30: "Thus cleansed I them from all strangers, and appointed the wards of the priests and the Levites, every one in his business;"

## **WARE**

Occurrences: 6

Nehemiah 10:31: "And if the people of the land bring ware or any victuals on the sabbath day to sell, that we would not buy it of them on the sabbath, or on the holy day: and that we would leave the seventh year, and the exaction of every debt."

Nehemiah 13:16: "There dwelt men of Tyre also therein, which brought fish, and all manner of ware, and sold on the sabbath unto the children of Judah, and in Jerusalem."

Nehemiah 13:20: "So the merchants and sellers of all kind of ware lodged without Jerusalem once or twice."

Luke 8:27: "And when he went forth to land, there met him out of the city a certain man, which had devils long time, and ware no clothes, neither abode in any house, but in the tombs."

Acts 14:6: "They were ware of it, and fled unto Lystra and Derbe, cities of Lycaonia, and unto the region that lieth round about:"

2 Timothy 4:15: "Of whom be thou ware also; for he hath greatly withstood our words."

## **WARES**

Occurrences: 5

Jeremiah 10:17: "Gather up thy wares out of the land, O inhabitant of the fortress."

Ezekiel 27:16: "Syria was thy merchant by reason of the multitude of the wares of thy making: they occupied in thy fairs with emeralds, purple, and broidered work, and fine linen, and coral, and agate."

Ezekiel 27:18: "Damascus was thy merchant in the multitude of the wares of thy making, for the multitude of all riches; in the wine of Helbon, and white wool."

Ezekiel 27:33: "When thy wares went forth out of the seas, thou filledst many people; thou didst enrich the kings of the earth with the multitude of thy riches and of thy merchandise."

Jonah 1:5: "Then the mariners were afraid, and cried every man unto his god, and cast forth the wares that were in the ship into the sea, to lighten it of them. But Jonah was gone down into the sides of the ship; and he lay, and was fast asleep."

## **WARFARE**

Occurrences: 5

1 Samuel 28:1: "And it came to pass in those days, that the Philistines gathered their armies together for warfare, to fight with Israel. And Achish said unto David, Know thou assuredly, that thou shalt go out with me to battle, thou and thy men."

Isaiah 40:2: "Speak ye comfortably to Jerusalem, and cry unto her, that her warfare is accomplished, that her iniquity is pardoned: for she hath received of the LORD's hand double for all her sins."

1 Corinthians 9:7: "Who goeth a warfare any time at his own charges? who planteth a vineyard, and eateth not of the fruit thereof? or who feedeth a flock, and eateth not of the milk of the flock?"

2 Corinthians 10:4: "(For the weapons of our warfare are not carnal, but mighty through God to the pulling down of strong holds;)"

1 Timothy 1:18: "This charge I commit unto thee, son Timothy, according to the prophecies which went before on thee, that thou by them mightest war a good warfare;"

## **WARM**

Occurrences: 8

2 Kings 4:34: "And he went up, and lay upon the child, and put his mouth upon his mouth, and his eyes upon his eyes, and his hands upon his hands: and stretched himself upon the child; and the flesh of the child waxed warm."

Job 6:17: "What time they wax warm, they vanish: when it is hot, they are consumed out of their place."

Job 37:17: "How thy garments are warm, when he quieteth the earth by the south wind?"

Ecclesiastes 4:11: "Again, if two lie together, then they have heat: but how can one be warm alone?"

Isaiah 44:15: "Then shall it be for a man to burn: for he will take thereof, and warm himself; yea, he kindleth it, and baketh bread; yea, he maketh a god, and worshippeth it; he maketh it a graven image, and falleth down thereto."

Isaiah 44:16: "He burneth part thereof in the fire; with part thereof he eateth flesh; he roasteth roast, and is satisfied: yea, he warmeth himself, and saith, Aha, I am warm, I have seen the fire:"

Isaiah 47:14: "Behold, they shall be as stubble; the fire shall burn them; they shall not deliver themselves from the power of the flame: there shall not be a coal to warm at, nor fire to sit before it."

Haggai 1:6: "Ye have sown much, and bring in little; ye eat, but ye have not enough; ye drink, but ye are not filled with drink; ye clothe you, but there is none warm; and he that earneth wages earneth wages to put it into a bag with holes."

## **WARMED**

Occurrences: 5

Job 31:20: "If his loins have not blessed me, and if he were not warmed with the fleece of my sheep;"

Mark 14:54: "And Peter followed him afar off, even into the palace of the high priest: and he sat with the servants, and warmed himself at the fire."

John 18:18: "And the servants and officers stood there, who had made a fire of coals; for it was cold: and they warmed themselves: and Peter stood with them, and warmed himself."

John 18:25: "And Simon Peter stood and warmed himself. They said therefore unto him, Art not thou also one of his disciples? He denied it, and said, I am not."

James 2:16: "And one of you say unto them, Depart in peace, be ye warmed and filled; notwithstanding ye give them not those things which are needful to the body; what doth it profit?"

## **WARMETH**

Occurrences: 2

Job 39:14: "Which leaveth her eggs in the earth, and warmeth them in dust,"

Isaiah 44:16: "He burneth part thereof in the fire; with part thereof he eateth flesh; he roasteth roast, and is satisfied: yea, he warmeth himself, and saith, Aha, I am warm, I have seen the fire:"

## **WARMING**

Occurrences: 1

Mark 14:67: "And when she saw Peter warming himself, she looked upon him, and said, And thou also wast with Jesus of Nazareth."

## **WARN**

Occurrences: 11

2 Chronicles 19:10: "And what cause soever shall come to you of your brethren that dwell in your cities, between blood and blood, between law and commandment, statutes and judgments, ye shall even warn them that they trespass not against the LORD, and so wrath come upon you, and upon your brethren: this do, and ye shall not trespass."

Ezekiel 3:18: "When I say unto the wicked, Thou shalt surely die; and thou givest him not warning, nor speakest to warn the wicked from his wicked way, to save his life; the same wicked man shall die in his iniquity; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 3:19: "Yet if thou warn the wicked, and he turn not from his wickedness, nor from his wicked way, he shall die in his iniquity; but thou hast delivered thy soul."

Ezekiel 3:21: "Nevertheless if thou warn the righteous man, that the righteous sin not, and he doth not sin, he shall surely live, because he is warned; also thou hast delivered thy soul."

Ezekiel 33:3: "If when he seeth the sword come upon the land, he blow the trumpet, and warn the people;"

Ezekiel 33:7: "So thou, O son of man, I have set thee a watchman unto the house of Israel; therefore thou shalt hear the word at my mouth, and warn them from me."

Ezekiel 33:8: "When I say unto the wicked, O wicked man, thou shalt surely die; if thou dost not speak to warn the wicked from his way, that wicked man shall die in his iniquity; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 33:9: "Nevertheless, if thou warn the wicked of his way to turn from it; if he do not turn from his way, he shall die in his iniquity; but thou hast delivered thy soul."

Acts 20:31: "Therefore watch, and remember, that by the space of three years I ceased not to warn every one night and day with tears."

1 Corinthians 4:14: "I write not these things to shame you, but as my beloved sons I warn you."

1 Thessalonians 5:14: "Now we exhort you, brethren, warn them that are unruly, comfort the feebleminded, support the weak, be patient toward all men."

## **WARNED**

Occurrences: 10

2 Kings 6:10: "And the king of Israel sent to the place which the man of God told him and warned him of, and saved himself there, not once nor twice."

Psalms 19:11: "Moreover by them is thy servant warned: and in keeping of them there is great reward."

Ezekiel 3:21: "Nevertheless if thou warn the righteous man, that the righteous sin not, and he doth not sin, he shall surely live, because he is warned; also thou hast delivered thy soul."

Ezekiel 33:6: "But if the watchman see the sword come, and blow not the trumpet, and the people be not warned; if the sword come, and take any person from among them, he is taken away in his iniquity; but his blood will I require at the watchman's hand."

Matthew 2:12: "And being warned of God in a dream that they should not return to Herod, they departed into their own country another way."

Matthew 2:22: "But when he heard that Archelaus did reign in Judaea in the room of his father Herod, he was afraid to go thither: notwithstanding, being warned of God in a dream, he turned aside into the parts of Galilee:"

Matthew 3:7: "But when he saw many of the Pharisees and Sadducees come to his baptism, he said unto them, O generation of vipers, who hath warned you to flee from the wrath to come?"

Luke 3:7: "Then said he to the multitude that came forth to be baptized of him, O generation of vipers, who hath warned you to flee from the wrath to come?"

Acts 10:22: "And they said, Cornelius the centurion, a just man, and one that feareth God, and of good report among all the nation of the Jews, was warned from God by an holy angel to send for thee into his house, and to hear words of thee."

Hebrews 11:7: "By faith Noah, being warned of God of things not seen as yet, moved with fear, prepared an ark to the saving of his house; by the which he condemned the world, and became heir of the righteousness which is by faith."

## **WARNING**

Occurrences: 7

Jeremiah 6:10: "To whom shall I speak, and give warning, that they may hear? behold, their ear is uncircumcised, and they cannot hearken: behold, the word of the LORD is unto them a reproach; they have no delight in it."

Ezekiel 3:17: "Son of man, I have made thee a watchman unto the house of Israel: therefore hear the word at my mouth, and give them warning from me."

Ezekiel 3:18: "When I say unto the wicked, Thou shalt surely die; and thou givest him not warning, nor speakest to warn the wicked from his wicked way, to save his life; the same wicked man shall

die in his iniquity; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 3:20: "Again, When a righteous man doth turn from his righteousness, and commit iniquity, and I lay a stumbling-block before him, he shall die: because thou hast not given him warning, he shall die in his sin, and his righteousness which he hath done shall not be remembered; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 33:4: "Then whosoever heareth the sound of the trumpet, and taketh not warning; if the sword come, and take him away, his blood shall be upon his own head."

Ezekiel 33:5: "He heard the sound of the trumpet, and took not warning; his blood shall be upon him. But he that taketh warning shall deliver his soul."

Colossians 1:28: "Whom we preach, warning every man, and teaching every man in all wisdom; that we may present every man perfect in Christ Jesus:"

## **WARP**

Occurrences: 9

Leviticus 13:48: "Whether it be in the warp, or woof; of linen, or of woollen; whether in a skin, or in any thing made of skin;"

Leviticus 13:49: "And if the plague be greenish or reddish in the garment, or in the skin, either in the warp, or in the woof, or in any thing of skin; it is a plague of leprosy, and shall be shewed unto the priest:"

Leviticus 13:51: "And he shall look on the plague on the seventh day: if the plague be spread in the garment, either in the warp, or in the woof, or in a skin, or in any work that is made of skin; the plague is a fretting leprosy; it is unclean."

Leviticus 13:52: "He shall therefore burn that garment, whether warp or woof, in woollen or in linen, or any thing of skin, wherein the plague is: for it is a fretting leprosy; it shall be burnt in the fire."

Leviticus 13:53: "And if the priest shall look, and, behold, the plague be not spread in the garment, either in the warp, or in the woof, or in any thing of skin;"

Leviticus 13:56: "And if the priest look, and, behold, the plague be somewhat dark after the washing of it; then he shall rend it out of the garment, or out of the skin, or out of the warp, or out of the woof:"

Leviticus 13:57: "And if it appear still in the garment, either in the warp, or in the woof, or in any thing of skin; it is a spreading plague: thou shalt burn that wherein the plague is with fire."

Leviticus 13:58: "And the garment, either warp, or woof, or whatsoever thing of skin it be, which thou shalt wash, if the plague be departed from them, then it shall be washed the second time, and shall be clean."

Leviticus 13:59: "This is the law of the plague of leprosy in a garment of woollen or linen, either in the warp, or woof, or any thing of skins, to pronounce it clean, or to pronounce it unclean."

## **WARRED**

Occurrences: 9

Numbers 31:7: "And they warred against the Midianites, as the LORD commanded Moses; and they slew all the males."

Numbers 31:42: "And of the children of Israel's half, which Moses divided from the men that warred,"

Joshua 24:9: "Then Balak the son of Zippor, king of Moab, arose and warred against Israel, and sent and called Balaam the son of Beor to curse you:"

1 Kings 14:19: "And the rest of the acts of Jeroboam, how he warred, and how he reigned, behold, they are written in the book of the chronicles of the kings of Israel."

1 Kings 20:1: "And Benhadad the king of Syria gathered all his host together: and there were thirty

and two kings with him, and horses, and chariots; and he went up and besieged Samaria, and warred against it."

1 Kings 22:45: "Now the rest of the acts of Jehoshaphat, and his might that he shewed, and how he warred, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 6:8: "Then the king of Syria warred against Israel, and took counsel with his servants, saying, In such and such a place shall be my camp."

2 Kings 14:28: "Now the rest of the acts of Jeroboam, and all that he did, and his might, how he warred, and how he recovered Damascus, and Hamath, which belonged to Judah, for Israel, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

2 Chronicles 26:6: "And he went forth and warred against the Philistines, and brake down the wall of Gath, and the wall of Jabneh, and the wall of Ashdod, and built cities about Ashdod, and among the Philistines."

## **WARRETH**

Occurrences: 1

2 Timothy 2:4: "No man that warreth entangleth himself with the affairs of this life; that he may please him who hath chosen him to be a soldier."

## **WARRING**

Occurrences: 3

2 Kings 19:8: "So Rabshakeh returned, and found the king of Assyria warring against Libnah: for he had heard that he was departed from Lachish."

Isaiah 37:8: "So Rabshakeh returned, and found the king of Assyria warring against Libnah: for he had heard that he was departed from Lachish."

Romans 7:23: "But I see another law in my members, warring against the law of my mind, and bringing me into captivity to the law of sin which is in my members."

## **WARRIOR**

Occurrences: 1

Isaiah 9:5: "For every battle of the warrior is with confused noise, and garments rolled in blood; but this shall be with burning and fuel of fire."

## **WARRIORS**

Occurrences: 2

1 Kings 12:21: "And when Rehoboam was come to Jerusalem, he assembled all the house of Judah, with the tribe of Benjamin, an hundred and fourscore thousand chosen men, which were warriors, to fight against the house of Israel, to bring the kingdom again to Rehoboam the son of Solomon."

2 Chronicles 11:1: "And when Rehoboam was come to Jerusalem, he gathered of the house of Judah and Benjamin an hundred and fourscore thousand chosen men, which were warriors, to fight against Israel, that he might bring the kingdom again to Rehoboam."

## **WARS**

Occurrences: 13

Numbers 21:14: "Wherefore it is said in the book of the wars of the LORD, What he did in the Red sea, and in the brooks of Arnon,"

Judges 3:1: "Now these are the nations which the LORD left, to prove Israel by them, even as many of Israel as had not known all the wars of Canaan;"

2 Samuel 8:10: "Then Toi sent Joram his son unto king David, to salute him, and to bless him, because he had fought against Hadadezer, and smitten him: for Hadadezer had wars with Toi. And Joram brought with him vessels of silver, and vessels of gold, and vessels of brass:"

1 Kings 5:3: "Thou knowest how that David my father could not build an house unto the name of the LORD his God for the wars which were about him on every side, until the LORD put them under the soles of his feet."

1 Chronicles 22:8: "But the word of the LORD came to me, saying, Thou hast shed blood abundantly, and hast made great wars: thou shalt not build an house unto my name, because thou hast shed much blood upon the earth in my sight."

2 Chronicles 12:15: "Now the acts of Rehoboam, first and last, are they not written in the book of Shemaiah the prophet, and of Iddo the seer concerning genealogies? And there were wars between Rehoboam and Jeroboam continually."

2 Chronicles 16:9: "For the eyes of the LORD run to and fro throughout the whole earth, to shew himself strong in the behalf of them whose heart is perfect toward him. Herein thou hast done foolishly: therefore from henceforth thou shalt have wars."

2 Chronicles 27:7: "Now the rest of the acts of Jotham, and all his wars, and his ways, lo, they are written in the book of the kings of Israel and Judah."

Psalms 46:9: "He maketh wars to cease unto the end of the earth; he breaketh the bow, and cutteth the spear in sunder; he burneth the chariot in the fire."

Matthew 24:6: "And ye shall hear of wars and rumours of wars: see that ye be not troubled: for all these things must come to pass, but the end is not yet."

Mark 13:7: "And when ye shall hear of wars and rumours of wars, be ye not troubled: for such things must needs be; but the end shall not be yet."

Luke 21:9: "But when ye shall hear of wars and commotions, be not terrified: for these things must first come to pass; but the end is not by and by."

James 4:1: "From whence come wars and fightings among you? come they not hence, even of your lusts that war in your members?"

## **WAS**

Occurrences: 3630

Genesis 1:2: "And the earth was without form, and void; and darkness was upon the face of the deep. And the Spirit of God moved upon the face of the waters."

Genesis 1:3: "And God said, Let there be light: and there was light."

Genesis 1:4: "And God saw the light, that it was good: and God divided the light from the darkness."

Genesis 1:7: "And God made the firmament, and divided the waters which were under the firmament from the waters which were above the firmament: and it was so."

Genesis 1:9: "And God said, Let the waters under the heaven be gathered together unto one place, and let the dry land appear: and it was so."

Genesis 1:10: "And God called the dry land Earth; and the gathering together of the waters called he Seas: and God saw that it was good."

Genesis 1:11: "And God said, Let the earth bring forth grass, the herb yielding seed, and the fruit tree yielding fruit after his kind, whose seed is in itself, upon the earth: and it was so."

Genesis 1:12: "And the earth brought forth grass, and herb yielding seed after his kind, and the tree yielding fruit, whose seed was in itself, after his kind: and God saw that it was good."

Genesis 1:15: "And let them be for lights in the firmament of the heaven to give light upon the earth: and it was so."

Genesis 1:18: "And to rule over the day and over the night, and to divide the light from the darkness: and God saw that it was good."

Genesis 1:21: "And God created great whales, and every living creature that moveth, which the



waters brought forth abundantly, after their kind, and every winged fowl after his kind: and God saw that it was good."

Genesis 1:24: "And God said, Let the earth bring forth the living creature after his kind, cattle, and creeping thing, and beast of the earth after his kind: and it was so."

Genesis 1:25: "And God made the beast of the earth after his kind, and cattle after their kind, and every thing that creepeth upon the earth after his kind: and God saw that it was good."

Genesis 1:30: "And to every beast of the earth, and to every fowl of the air, and to every thing that creepeth upon the earth, wherein there is life, I have given every green herb for meat: and it was so."

Genesis 1:31: "And God saw every thing that he had made, and, behold, it was very good. And the evening and the morning were the sixth day."

Genesis 2:5: "And every plant of the field before it was in the earth, and every herb of the field before it grew: for the LORD God had not caused it to rain upon the earth, and there was not a man to till the ground."

Genesis 2:10: "And a river went out of Eden to water the garden; and from thence it was parted, and became into four heads."

Genesis 2:19: "And out of the ground the LORD God formed every beast of the field, and every fowl of the air; and brought them unto Adam to see what he would call them: and whatsoever Adam called every living creature, that was the name thereof."

Genesis 2:20: "And Adam gave names to all cattle, and to the fowl of the air, and to every beast of the field; but for Adam there was not found an help meet for him."

Genesis 2:23: "And Adam said, This is now bone of my bones, and flesh of my flesh: she shall be called Woman, because she was taken out of Man."

Genesis 3:1: "Now the serpent was more subtil than any beast of the field which the LORD God had made. And he said unto the woman, Yea, hath God said, Ye shall not eat of every tree of the garden?"

Genesis 3:6: "And when the woman saw that the tree was good for food, and that it was pleasant to the eyes, and a tree to be desired to make one wise, she took of the fruit thereof, and did eat, and gave also unto her husband with her; and he did eat."

Genesis 3:10: "And he said, I heard thy voice in the garden, and I was afraid, because I was naked; and I hid myself."

Genesis 3:20: "And Adam called his wife's name Eve; because she was the mother of all living."

Genesis 3:23: "Therefore the LORD God sent him forth from the garden of Eden, to till the ground from whence he was taken."

Genesis 4:2: "And she again bare his brother Abel. And Abel was a keeper of sheep, but Cain was a tiller of the ground."

Genesis 4:5: "But unto Cain and to his offering he had not respect. And Cain was very wroth, and his countenance fell."

Genesis 4:18: "And unto Enoch was born Irad: and Irad begat Mehujael: and Mehujael begat Methusael: and Methusael begat Lamech."

Genesis 4:19: "And Lamech took unto him two wives: the name of the one was Adah, and the name of the other Zillah."

Genesis 4:20: "And Adah bare Jabal: he was the father of such as dwell in tents, and of such as have cattle."

Genesis 4:21: "And his brother's name was Jubal: he was the father of all such as handle the harp and organ."

Genesis 4:22: "And Zillah, she also bare Tubalcain, an instructor of every artificer in brass and iron: and the sister of Tubalcain was Naamah."

Genesis 4:26: "And to Seth, to him also there was born a son; and he called his name Enos: then began men to call upon the name of the LORD."

Genesis 5:24: "And Enoch walked with God: and he was not; for God took him."  
Genesis 5:32: "And Noah was five hundred years old: and Noah begat Shem, Ham, and Japheth."  
Genesis 6:5: "And God saw that the wickedness of man was great in the earth, and that every imagination of the thoughts of his heart was only evil continually."  
Genesis 6:9: "These are the generations of Noah: Noah was a just man and perfect in his generations, and Noah walked with God."  
Genesis 6:11: "The earth also was corrupt before God, and the earth was filled with violence."  
Genesis 6:12: "And God looked upon the earth, and, behold, it was corrupt; for all flesh had corrupted his way upon the earth."  
Genesis 7:6: "And Noah was six hundred years old when the flood of waters was upon the earth."  
Genesis 7:12: "And the rain was upon the earth forty days and forty nights."  
Genesis 7:17: "And the flood was forty days upon the earth; and the waters increased, and bare up the ark, and it was lift up above the earth."  
Genesis 7:22: "All in whose nostrils was the breath of life, of all that was in the dry land, died."  
Genesis 7:23: "And every living substance was destroyed which was upon the face of the ground, both man, and cattle, and the creeping things, and the fowl of the heaven; and they were destroyed from the earth: and Noah only remained alive, and they that were with him in the ark."  
Genesis 8:1: "And God remembered Noah, and every living thing, and all the cattle that was with him in the ark: and God made a wind to pass over the earth, and the waters asswaged;"  
Genesis 8:2: "The fountains also of the deep and the windows of heaven were stopped, and the rain from heaven was restrained;"  
Genesis 8:11: "And the dove came in to him in the evening; and, lo, in her mouth was an olive leaf pluckt off: so Noah knew that the waters were abated from off the earth."  
Genesis 8:13: "And it came to pass in the six hundredth and first year, in the first month, the first day of the month, the waters were dried up from off the earth: and Noah removed the covering of the ark, and looked, and, behold, the face of the ground was dry."  
Genesis 8:14: "And in the second month, on the seven and twentieth day of the month, was the earth dried."  
Genesis 9:19: "These are the three sons of Noah: and of them was the whole earth overspread."  
Genesis 9:21: "And he drank of the wine, and was drunken; and he was uncovered within his tent."  
Genesis 10:9: "He was a mighty hunter before the LORD: wherefore it is said, Even as Nimrod the mighty hunter before the LORD."  
Genesis 10:10: "And the beginning of his kingdom was Babel, and Erech, and Accad, and Calneh, in the land of Shinar."  
Genesis 10:19: "And the border of the Canaanites was from Sidon, as thou comest to Gerar, unto Gaza; as thou goest, unto Sodom, and Gomorrah, and Admah, and Zeboim, even unto Lasha."  
Genesis 10:25: "And unto Eber were born two sons: the name of one was Peleg; for in his days was the earth divided; and his brother's name was Joktan."  
Genesis 10:30: "And their dwelling was from Mesha, as thou goest unto Sephar a mount of the east."  
Genesis 11:1: "And the whole earth was of one language, and of one speech."  
Genesis 11:10: "These are the generations of Shem: Shem was an hundred years old, and begat Arphaxad two years after the flood:"  
Genesis 11:29: "And Abram and Nahor took them wives: the name of Abram's wife was Sarai; and the name of Nahor's wife, Milcah, the daughter of Haran, the father of Milcah, and the father of Iscah."  
Genesis 11:30: "But Sarai was barren; she had no child."  
Genesis 12:4: "So Abram departed, as the LORD had spoken unto him; and Lot went with him: and Abram was seventy and five years old when he departed out of Haran."  
Genesis 12:6: "And Abram passed through the land unto the place of Sichem, unto the plain of

Moreh. And the Canaanite was then in the land."

Genesis 12:10: "And there was a famine in the land: and Abram went down into Egypt to sojourn there; for the famine was grievous in the land."

Genesis 12:11: "And it came to pass, when he was come near to enter into Egypt, that he said unto Sarai his wife, Behold now, I know that thou art a fair woman to look upon:"

Genesis 12:14: "And it came to pass, that, when Abram was come into Egypt, the Egyptians beheld the woman that she was very fair."

Genesis 12:15: "The princes also of Pharaoh saw her, and commended her before Pharaoh: and the woman was taken into Pharaoh's house."

Genesis 12:18: "And Pharaoh called Abram and said, What is this that thou hast done unto me? why didst thou not tell me that she was thy wife?"

Genesis 13:2: "And Abram was very rich in cattle, in silver, and in gold."

Genesis 13:6: "And the land was not able to bear them, that they might dwell together: for their substance was great, so that they could not dwell together."

Genesis 13:7: "And there was a strife between the herdmen of Abram's cattle and the herdmen of Lot's cattle: and the Canaanite and the Perizzite dwelled then in the land."

Genesis 13:10: "And Lot lifted up his eyes, and beheld all the plain of Jordan, that it was well watered every where, before the LORD destroyed Sodom and Gomorrah, even as the garden of the LORD, like the land of Egypt, as thou comest unto Zoar."

Genesis 13:14: "And the LORD said unto Abram, after that Lot was separated from him, Lift up now thine eyes, and look from the place where thou art northward, and southward, and eastward, and westward:"

Genesis 14:10: "And the vale of Siddim was full of slimepits; and the kings of Sodom and Gomorrah fled, and fell there; and they that remained fled to the mountain."

Genesis 14:14: "And when Abram heard that his brother was taken captive, he armed his trained servants, born in his own house, three hundred and eighteen, and pursued them unto Dan."

Genesis 14:18: "And Melchizedek king of Salem brought forth bread and wine: and he was the priest of the most high God."

Genesis 15:12: "And when the sun was going down, a deep sleep fell upon Abram; and, lo, an horror of great darkness fell upon him."

Genesis 15:17: "And it came to pass, that, when the sun went down, and it was dark, behold a smoking furnace, and a burning lamp that passed between those pieces."

Genesis 16:1: "Now Sarai Abram's wife bare him no children: and she had an handmaid, an Egyptian, whose name was Hagar."

Genesis 16:4: "And he went in unto Hagar, and she conceived: and when she saw that she had conceived, her mistress was despised in her eyes."

Genesis 16:5: "And Sarai said unto Abram, My wrong be upon thee: I have given my maid into thy bosom; and when she saw that she had conceived, I was despised in her eyes: the LORD judge between me and thee."

Genesis 16:14: "Wherefore the well was called Beerlahairoi; behold, it is between Kadesh and Bered."

Genesis 16:16: "And Abram was fourscore and six years old, when Hagar bare Ishmael to Abram."

Genesis 17:1: "And when Abram was ninety years old and nine, the LORD appeared to Abram, and said unto him, I am the Almighty God; walk before me, and be thou perfect."

Genesis 17:24: "And Abraham was ninety years old and nine, when he was circumcised in the flesh of his foreskin."

Genesis 17:25: "And Ishmael his son was thirteen years old, when he was circumcised in the flesh of his foreskin."

Genesis 17:26: "In the selfsame day was Abraham circumcised, and Ishmael his son."

Genesis 18:10: "And he said, I will certainly return unto thee according to the time of life; and, lo,

Sarah thy wife shall have a son. And Sarah heard it in the tent door, which was behind him."  
 Genesis 18:15: "Then Sarah denied, saying, I laughed not; for she was afraid. And he said, Nay; but thou didst laugh."  
 Genesis 19:22: "Haste thee, escape thither; for I cannot do anything till thou be come thither. Therefore the name of the city was called Zoar."  
 Genesis 19:23: "The sun was risen upon the earth when Lot entered into Zoar."  
 Genesis 20:16: "And unto Sarah he said, Behold, I have given thy brother a thousand pieces of silver: behold, he is to thee a covering of the eyes, unto all that are with thee, and with all other: thus she was reproved."  
 Genesis 21:3: "And Abraham called the name of his son that was born unto him, whom Sarah bare to him, Isaac."  
 Genesis 21:5: "And Abraham was an hundred years old, when his son Isaac was born unto him."  
 Genesis 21:8: "And the child grew, and was weaned: and Abraham made a great feast the same day that Isaac was weaned."  
 Genesis 21:11: "And the thing was very grievous in Abraham's sight because of his son."  
 Genesis 21:15: "And the water was spent in the bottle, and she cast the child under one of the shrubs."  
 Genesis 21:20: "And God was with the lad; and he grew, and dwelt in the wilderness, and became an archer."  
 Genesis 22:20: "And it came to pass after these things, that it was told Abraham, saying, Behold, Milcah, she hath also born children unto thy brother Nahor;"  
 Genesis 22:24: "And his concubine, whose name was Reumah, she bare also Tebah, and Gaham, and Thahash, and Maachah."  
 Genesis 23:1: "And Sarah was an hundred and seven and twenty years old: these were the years of the life of Sarah."  
 Genesis 23:17: "And the field of Ephron which was in Machpelah, which was before Mamre, the field, and the cave which was therein, and all the trees that were in the field, that were in all the borders round about, were made sure"  
 Genesis 24:1: "And Abraham was old, and well stricken in age: and the LORD had blessed Abraham in all things."  
 Genesis 24:15: "And it came to pass, before he had done speaking, that, behold, Rebekah came out, who was born to Bethuel, son of Milcah, the wife of Nahor, Abraham's brother, with her pitcher upon her shoulder."  
 Genesis 24:16: "And the damsel was very fair to look upon, a virgin, neither had any man known her: and she went down to the well, and filled her pitcher, and came up."  
 Genesis 24:29: "And Rebekah had a brother, and his name was Laban: and Laban ran out unto the man, unto the well."  
 Genesis 24:33: "And there was set meat before him to eat: but he said, I will not eat, until I have told mine errand. And he said, Speak on."  
 Genesis 24:36: "And Sarah my master's wife bare a son to my master when she was old: and unto him hath he given all that he hath."  
 Genesis 24:67: "And Isaac brought her into his mother Sarah's tent, and took Rebekah, and she became his wife; and he loved her: and Isaac was comforted after his mother's death."  
 Genesis 25:1: "Then again Abraham took a wife, and her name was Keturah."  
 Genesis 25:8: "Then Abraham gave up the ghost, and died in a good old age, an old man, and full of years; and was gathered to his people."  
 Genesis 25:10: "The field which Abraham purchased of the sons of Heth: there was Abraham buried, and Sarah his wife."  
 Genesis 25:17: "And these are the years of the life of Ishmael, an hundred and thirty and seven years: and he gave up the ghost and died; and was gathered unto his people."

Genesis 25:20: "And Isaac was forty years old when he took Rebekah to wife, the daughter of Bethuel the Syrian of Padanaram, the sister to Laban the Syrian."

Genesis 25:21: "And Isaac intreated the LORD for his wife, because she was barren: and the LORD was intreated of him, and Rebekah his wife conceived."

Genesis 25:26: "And after that came his brother out, and his hand took hold on Esau's heel; and his name was called Jacob: and Isaac was threescore years old when she bare them."

Genesis 25:27: "And the boys grew: and Esau was a cunning hunter, a man of the field; and Jacob was a plain man, dwelling in tents."

Genesis 25:29: "And Jacob sod pottage: and Esau came from the field, and he was faint:"

Genesis 25:30: "And Esau said to Jacob, Feed me, I pray thee, with that same red pottage; for I am faint: therefore was his name called Edom."

Genesis 26:1: "And there was a famine in the land, beside the first famine that was in the days of Abraham. And Isaac went unto Abimelech king of the Philistines unto Gerar."

Genesis 26:7: "And the men of the place asked him of his wife; and he said, She is my sister: for he feared to say, She is my wife; lest, said he, the men of the place should kill me for Rebekah; because she was fair to look upon."

Genesis 26:8: "And it came to pass, when he had been there a long time, that Abimelech king of the Philistines looked out at a window, and saw, and, behold, Isaac was sporting with Rebekah his wife."

Genesis 26:28: "And they said, We saw certainly that the LORD was with thee: and we said, Let there be now an oath betwixt us, even betwixt us and thee, and let us make a covenant with thee;"

Genesis 26:34: "And Esau was forty years old when he took to wife Judith the daughter of Beeri the Hittite, and Bashemath the daughter of Elon the Hittite:"

Genesis 27:1: "And it came to pass, that when Isaac was old, and his eyes were dim, so that he could not see, he called Esau his eldest son, and said unto him, My son: and he said unto him, Behold, here am I."

Genesis 27:30: "And it came to pass, as soon as Isaac had made an end of blessing Jacob, and Jacob was yet scarce gone out from the presence of Isaac his father, that Esau his brother came in from his hunting."

Genesis 28:7: "And that Jacob obeyed his father and his mother, and was gone to Padanaram;"

Genesis 28:11: "And he lighted upon a certain place, and tarried there all night, because the sun was set; and he took of the stones of that place, and put them for his pillows, and lay down in that place to sleep."

Genesis 28:17: "And he was afraid, and said, How dreadful is this place! this is none other but the house of God, and this is the gate of heaven."

Genesis 28:19: "And he called the name of that place Bethel: but the name of that city was called Luz at the first."

Genesis 29:2: "And he looked, and behold a well in the field, and, lo, there were three flocks of sheep lying by it; for out of that well they watered the flocks: and a great stone was upon the well's mouth."

Genesis 29:12: "And Jacob told Rachel that he was her father's brother, and that he was Rebekah's son: and she ran and told her father."

Genesis 29:16: "And Laban had two daughters: the name of the elder was Leah, and the name of the younger was Rachel."

Genesis 29:17: "Leah was tender eyed; but Rachel was beautiful and well favoured."

Genesis 29:25: "And it came to pass, that in the morning, behold, it was Leah: and he said to Laban, What is this thou hast done unto me? did not I serve with thee for Rachel? wherefore then hast thou beguiled me?"

Genesis 29:31: "And when the LORD saw that Leah was hated, he opened her womb: but Rachel was barren."

Genesis 29:33: "And she conceived again, and bare a son; and said, Because the LORD hath heard I was hated, he hath therefore given me this son also: and she called his name Simeon."

Genesis 29:34: "And she conceived again, and bare a son; and said, Now this time will my husband be joined unto me, because I have born him three sons: therefore was his name called Levi."

Genesis 30:2: "And Jacob's anger was kindled against Rachel: and he said, Am I in God's stead, who hath withheld from thee the fruit of the womb?"

Genesis 30:29: "And he said unto him, Thou knowest how I have served thee, and how thy cattle was with me."

Genesis 30:30: "For it was little which thou hadst before I came, and it is now increased unto a multitude; and the LORD hath blessed thee since my coming: and now when shall I provide for mine own house also?"

Genesis 30:37: "And Jacob took him rods of green poplar, and of the hazel and chesnut tree; and pilled white strakes in them, and made the white appear which was in the rods."

Genesis 31:1: "And he heard the words of Laban's sons, saying, Jacob hath taken away all that was our father's; and of that which was our father's hath he gotten all this glory."

Genesis 31:2: "And Jacob beheld the countenance of Laban, and, behold, it was not toward him as before."

Genesis 31:22: "And it was told Laban on the third day that Jacob was fled."

Genesis 31:31: "And Jacob answered and said to Laban, Because I was afraid: for I said, Peradventure thou wouldest take by force thy daughters from me."

Genesis 31:36: "And Jacob was wroth, and chode with Laban: and Jacob answered and said to Laban, What is my trespass? what is my sin, that thou hast so hotly pursued after me?"

Genesis 31:39: "That which was torn of beasts I brought not unto thee; I bare the loss of it; of my hand didst thou require it, whether stolen by day, or stolen by night."

Genesis 31:40: "Thus I was; in the day the drought consumed me, and the frost by night; and my sleep departed from mine eyes."

Genesis 31:48: "And Laban said, This heap is a witness between me and thee this day. Therefore was the name of it called Galeed;"

Genesis 32:7: "Then Jacob was greatly afraid and distressed: and he divided the people that was with him, and the flocks, and herds, and the camels, into two bands;"

Genesis 32:24: "And Jacob was left alone; and there wrestled a man with him until the breaking of the day."

Genesis 32:25: "And when he saw that he prevailed not against him, he touched the hollow of his thigh; and the hollow of Jacob's thigh was out of joint, as he wrestled with him."

Genesis 34:19: "And the young man deferred not to do the thing, because he had delight in Jacob's daughter: and he was more honourable than all the house of his father."

Genesis 34:24: "And unto Hamor and unto Shechem his son hearkened all that went out of the gate of his city; and every male was circumcised, all that went out of the gate of his city."

Genesis 34:28: "They took their sheep, and their oxen, and their asses, and that which was in the city, and that which was in the field,"

Genesis 34:29: "And all their wealth, and all their little ones, and their wives took they captive, and spoiled even all that was in the house."

Genesis 35:3: "And let us arise, and go up to Bethel; and I will make there an altar unto God, who answered me in the day of my distress, and was with me in the way which I went."

Genesis 35:4: "And they gave unto Jacob all the strange gods which were in their hand, and all their earrings which were in their ears; and Jacob hid them under the oak which was by Shechem."

Genesis 35:5: "And they journeyed: and the terror of God was upon the cities that were round about them, and they did not pursue after the sons of Jacob."

Genesis 35:8: "But Deborah Rebekah's nurse died, and she was buried beneath Bethel under an oak: and the name of it was called Allonbachuth."

Genesis 35:16: "And they journeyed from Bethel; and there was but a little way to come to Ephrath: and Rachel travailed, and she had hard labour."

Genesis 35:17: "And it came to pass, when she was in hard labour, that the midwife said unto her, Fear not; thou shalt have this son also."

Genesis 35:18: "And it came to pass, as her soul was in departing, (for she died) that she called his name Benoni: but his father called him Benjamin."

Genesis 35:19: "And Rachel died, and was buried in the way to Ephrath, which is Bethlehem."

Genesis 35:29: "And Isaac gave up the ghost, and died, and was gathered unto his people, being old and full of days: and his sons Esau and Jacob buried him."

Genesis 36:12: "And Timna was concubine to Eliphaz Esau's son; and she bare to Eliphaz Amalek: these were the sons of Adah Esau's wife."

Genesis 36:22: "And the children of Lotan were Hori and Hemam; and Lotan's sister was Timna."

Genesis 36:24: "And these are the children of Zibeon; both Ajah, and Anah: this was that Anah that found the mules in the wilderness, as he fed the asses of Zibeon his father."

Genesis 36:32: "And Bela the son of Beor reigned in Edom: and the name of his city was Dinhabah."

Genesis 36:35: "And Husham died, and Hadad the son of Bedad, who smote Midian in the field of Moab, reigned in his stead: and the name of his city was Avith."

Genesis 36:39: "And Baalhanan the son of Achbor died, and Hadar reigned in his stead: and the name of his city was Pau; and his wife's name was Mehetabel, the daughter of Matred, the daughter of Mezahab."

Genesis 37:1: "And Jacob dwelt in the land wherein his father was a stranger, in the land of Canaan."

Genesis 37:2: "These are the generations of Jacob. Joseph, being seventeen years old, was feeding the flock with his brethren; and the lad was with the sons of Bilhah, and with the sons of Zilpah, his father's wives: and Joseph brought unto his father their evil report."

Genesis 37:3: "Now Israel loved Joseph more than all his children, because he was the son of his old age: and he made him a coat of many colours."

Genesis 37:15: "And a certain man found him, and, behold, he was wandering in the field: and the man asked him, saying, What seekest thou?"

Genesis 37:23: "And it came to pass, when Joseph was come unto his brethren, that they stript Joseph out of his coat, his coat of many colours that was on him;"

Genesis 37:24: "And they took him, and cast him into a pit: and the pit was empty, there was no water in it."

Genesis 37:29: "And Reuben returned unto the pit; and, behold, Joseph was not in the pit; and he rent his clothes."

Genesis 38:1: "And it came to pass at that time, that Judah went down from his brethren, and turned in to a certain Adullamite, whose name was Hirah."

Genesis 38:2: "And Judah saw there a daughter of a certain Canaanite, whose name was Shuah; and he took her, and went in unto her."

Genesis 38:5: "And she yet again conceived, and bare a son; and called his name Shelah: and he was at Chezib, when she bare him."

Genesis 38:6: "And Judah took a wife for Er his firstborn, whose name was Tamar."

Genesis 38:7: "And Er, Judah's firstborn, was wicked in the sight of the LORD; and the LORD slew him."

Genesis 38:12: "And in process of time the daughter of Shuah Judah's wife died; and Judah was comforted, and went up unto his sheepshearers to Timnath, he and his friend Hirah the Adullamite."

Genesis 38:13: "And it was told Tamar, saying, Behold thy father in law goeth up to Timnath to shear his sheep."

Genesis 38:14: "And she put her widow's garments off from her, and covered her with a vail, and

wrapped herself, and sat in an open place, which is by the way to Timnath; for she saw that Shelah was grown, and she was not given unto him to wife."

Genesis 38:16: "And he turned unto her by the way, and said, Go to, I pray thee, let me come in unto thee; (for he knew not that she was his daughter in law.) And she said, What wilt thou give me, that thou mayest come in unto me?"

Genesis 38:21: "Then he asked the men of that place, saying, Where is the harlot, that was openly by the way side? And they said, There was no harlot in this place."

Genesis 38:22: "And he returned to Judah, and said, I cannot find her; and also the men of the place said, that there was no harlot in this place."

Genesis 38:24: "And it came to pass about three months after, that it was told Judah, saying, Tamar thy daughter in law hath played the harlot; and also, behold, she is with child by whoredom. And Judah said, Bring her forth, and let her be burnt."

Genesis 38:25: "When she was brought forth, she sent to her father in law, saying, By the man, whose these are, am I with child: and she said, Discern, I pray thee, whose are these, the signet, and bracelets, and staff."

Genesis 38:29: "And it came to pass, as he drew back his hand, that, behold, his brother came out: and she said, How hast thou broken forth? this breach be upon thee: therefore his name was called Pharez."

Genesis 38:30: "And afterward came out his brother, that had the scarlet thread upon his hand: and his name was called Zarah."

Genesis 39:1: "And Joseph was brought down to Egypt; and Potiphar, an officer of Pharaoh, captain of the guard, an Egyptian, bought him of the hands of the Ishmeelites, which had brought him down thither."

Genesis 39:2: "And the LORD was with Joseph, and he was a prosperous man; and he was in the house of his master the Egyptian."

Genesis 39:3: "And his master saw that the LORD was with him, and that the LORD made all that he did to prosper in his hand."

Genesis 39:5: "And it came to pass from the time that he had made him overseer in his house, and over all that he had, that the LORD blessed the Egyptian's house for Joseph's sake; and the blessing of the LORD was upon all that he had in the house, and in the field."

Genesis 39:6: "And he left all that he had in Joseph's hand; and he knew not ought he had, save the bread which he did eat. And Joseph was a goodly person, and well favoured."

Genesis 39:11: "And it came to pass about this time, that Joseph went into the house to do his business; and there was none of the men of the house there within."

Genesis 39:13: "And it came to pass, when she saw that he had left his garment in her hand, and was fled forth,"

Genesis 39:19: "And it came to pass, when his master heard the words of his wife, which she spake unto him, saying, After this manner did thy servant to me; that his wrath was kindled."

Genesis 39:20: "And Joseph's master took him, and put him into the prison, a place where the king's prisoners were bound: and he was there in the prison."

Genesis 39:21: "But the LORD was with Joseph, and shewed him mercy, and gave him favour in the sight of the keeper of the prison."

Genesis 39:22: "And the keeper of the prison committed to Joseph's hand all the prisoners that were in the prison; and whatsoever they did there, he was the doer of it."

Genesis 39:23: "The keeper of the prison looked not to any thing that was under his hand; because the LORD was with him, and that which he did, the LORD made it to prosper."

Genesis 40:2: "And Pharaoh was wroth against two of his officers, against the chief of the butlers, and against the chief of the bakers."

Genesis 40:3: "And he put them in ward in the house of the captain of the guard, into the prison, the place where Joseph was bound."



Genesis 40:9: "And the chief butler told his dream to Joseph, and said to him, In my dream, behold, a vine was before me;"

Genesis 40:10: "And in the vine were three branches: and it was as though it budded, and her blossoms shot forth; and the clusters thereof brought forth ripe grapes:"

Genesis 40:11: "And Pharaoh's cup was in my hand: and I took the grapes, and pressed them into Pharaoh's cup, and I gave the cup into Pharaoh's hand."

Genesis 40:15: "For indeed I was stolen away out of the land of the Hebrews: and here also have I done nothing that they should put me into the dungeon."

Genesis 40:16: "When the chief baker saw that the interpretation was good, he said unto Joseph, I also was in my dream, and, behold, I had three white baskets on my head:"

Genesis 40:17: "And in the uppermost basket there was of all manner of bakemeats for Pharaoh; and the birds did eat them out of the basket upon my head."

Genesis 40:20: "And it came to pass the third day, which was Pharaoh's birthday, that he made a feast unto all his servants: and he lifted up the head of the chief butler and of the chief baker among his servants."

Genesis 41:7: "And the seven thin ears devoured the seven rank and full ears. And Pharaoh awoke, and, behold, it was a dream."

Genesis 41:8: "And it came to pass in the morning that his spirit was troubled; and he sent and called for all the magicians of Egypt, and all the wise men thereof: and Pharaoh told them his dream; but there was none that could interpret them unto Pharaoh."

Genesis 41:10: "Pharaoh was wroth with his servants, and put me in ward in the captain of the guard's house, both me and the chief baker:"

Genesis 41:12: "And there was there with us a young man, an Hebrew, servant to the captain of the guard; and we told him, and he interpreted to us our dreams; to each man according to his dream he did interpret."

Genesis 41:13: "And it came to pass, as he interpreted to us, so it was; me he restored unto mine office, and him he hanged."

Genesis 41:24: "And the thin ears devoured the seven good ears: and I told this unto the magicians; but there was none that could declare it to me."

Genesis 41:32: "And for that the dream was doubled unto Pharaoh twice; it is because the thing is established by God, and God will shortly bring it to pass."

Genesis 41:37: "And the thing was good in the eyes of Pharaoh, and in the eyes of all his servants."

Genesis 41:46: "And Joseph was thirty years old when he stood before Pharaoh king of Egypt. And Joseph went out from the presence of Pharaoh, and went throughout all the land of Egypt."

Genesis 41:48: "And he gathered up all the food of the seven years, which were in the land of Egypt, and laid up the food in the cities: the food of the field, which was round about every city, laid he up in the same."

Genesis 41:49: "And Joseph gathered corn as the sand of the sea, very much, until he left numbering; for it was without number."

Genesis 41:53: "And the seven years of plenteousness, that was in the land of Egypt, were ended."

Genesis 41:54: "And the seven years of dearth began to come, according as Joseph had said: and the dearth was in all lands; but in all the land of Egypt there was bread."

Genesis 41:55: "And when all the land of Egypt was famished, the people cried to Pharaoh for bread: and Pharaoh said unto all the Egyptians, Go unto Joseph; what he saith to you, do."

Genesis 41:56: "And the famine was over all the face of the earth: and Joseph opened all the storehouses, and sold unto the Egyptians; and the famine waxed sore in the land of Egypt."

Genesis 41:57: "And all countries came into Egypt to Joseph for to buy corn; because that the famine was so sore in all lands."

Genesis 42:1: "Now when Jacob saw that there was corn in Egypt, Jacob said unto his sons, Why do ye look one upon another?"

Genesis 42:5: "And the sons of Israel came to buy corn among those that came: for the famine was in the land of Canaan."

Genesis 42:6: "And Joseph was the governor over the land, and he it was that sold to all the people of the land: and Joseph's brethren came, and bowed down themselves before him with their faces to the earth."

Genesis 42:27: "And as one of them opened his sack to give his ass provender in the inn, he espied his money; for, behold, it was in his sack's mouth."

Genesis 42:35: "And it came to pass as they emptied their sacks, that, behold, every man's bundle of money was in his sack: and when both they and their father saw the bundles of money, they were afraid."

Genesis 43:1: "And the famine was sore in the land."

Genesis 43:12: "And take double money in your hand; and the money that was brought again in the mouth of your sacks, carry it again in your hand; peradventure it was an oversight:"

Genesis 43:18: "And the men were afraid, because they were brought into Joseph's house; and they said, Because of the money that was returned in our sacks at the first time are we brought in; that he may seek occasion against us, and fall upon us, and take us for bondmen, and our asses."

Genesis 43:21: "And it came to pass, when we came to the inn, that we opened our sacks, and, behold, every man's money was in the mouth of his sack, our money in full weight: and we have brought it again in our hand."

Genesis 43:26: "And when Joseph came home, they brought him the present which was in their hand into the house, and bowed themselves to him to the earth."

Genesis 43:34: "And he took and sent messes unto them from before him: but Benjamin's mess was five times so much as any of their's. And they drank, and were merry with him."

Genesis 44:3: "As soon as the morning was light, the men were sent away, they and their asses."

Genesis 44:12: "And he searched, and began at the eldest, and left at the youngest: and the cup was found in Benjamin's sack."

Genesis 44:14: "And Judah and his brethren came to Joseph's house; for he was yet there: and they fell before him on the ground."

Genesis 45:8: "So now it was not you that sent me hither, but God: and he hath made me a father to Pharaoh, and lord of all his house, and a ruler throughout all the land of Egypt."

Genesis 45:16: "And the fame thereof was heard in Pharaoh's house, saying, Joseph's brethren are come: and it pleased Pharaoh well, and his servants."

Genesis 47:13: "And there was no bread in all the land; for the famine was very sore, so that the land of Egypt and all the land of Canaan fainted by reason of the famine."

Genesis 47:14: "And Joseph gathered up all the money that was found in the land of Egypt, and in the land of Canaan, for the corn which they bought: and Joseph brought the money into Pharaoh's house."

Genesis 47:18: "When that year was ended, they came unto him the second year, and said unto him, We will not hide it from my lord, how that our money is spent; my lord also hath our herds of cattle; there is not ought left in the sight of my lord, but our bodies, and our lands:"

Genesis 47:28: "And Jacob lived in the land of Egypt seventeen years: so the whole age of Jacob was an hundred forty and seven years."

Genesis 48:7: "And as for me, when I came from Padan, Rachel died by me in the land of Canaan in the way, when yet there was but a little way to come unto Ephrath: and I buried her there in the way of Ephrath; the same is Bethlehem."

Genesis 48:14: "And Israel stretched out his right hand, and laid it upon Ephraim's head, who was the younger, and his left hand upon Manasseh's head, guiding his hands wittingly; for Manasseh was the firstborn."

Genesis 49:7: "Cursed be their anger, for it was fierce; and their wrath, for it was cruel: I will divide them in Jacob, and scatter them in Israel."

Genesis 49:15: "And he saw that rest was good, and the land that it was pleasant; and bowed his shoulder to bear, and became a servant unto tribute."

Genesis 49:26: "The blessings of thy father have prevailed above the blessings of my progenitors unto the utmost bound of the everlasting hills: they shall be on the head of Joseph, and on the crown of the head of him that was separate from his brethren."

Genesis 49:32: "The purchase of the field and of the cave that is therein was from the children of Heth."

Genesis 49:33: "And when Jacob had made an end of commanding his sons, he gathered up his feet into the bed, and yielded up the ghost, and was gathered unto his people."

Genesis 50:9: "And there went up with him both chariots and horsemen: and it was a very great company."

Genesis 50:11: "And when the inhabitants of the land, the Canaanites, saw the mourning in the floor of Atad, they said, This is a grievous mourning to the Egyptians: wherefore the name of it was called Abelmizraim, which is beyond Jordan."

Genesis 50:15: "And when Joseph's brethren saw that their father was dead, they said, Joseph will peradventure hate us, and will certainly requite us all the evil which we did unto him."

Genesis 50:26: "So Joseph died, being an hundred and ten years old: and they embalmed him, and he was put in a coffin in Egypt."

Exodus 1:5: "And all the souls that came out of the loins of Jacob were seventy souls: for Joseph was in Egypt already."

Exodus 1:7: "And the children of Israel were fruitful, and increased abundantly, and multiplied, and waxed exceeding mighty; and the land was filled with them."

Exodus 1:14: "And they made their lives bitter with hard bondage, in mortar, and in brick, and in all manner of service in the field: all their service, wherein they made them serve, was with rigour."

Exodus 1:15: "And the king of Egypt spake to the Hebrew midwives, of which the name of the one was Shiprah, and the name of the other Puah:"

Exodus 2:2: "And the woman conceived, and bare a son: and when she saw him that he was a goodly child, she hid him three months."

Exodus 2:11: "And it came to pass in those days, when Moses was grown, that he went out unto his brethren, and looked on their burdens: and he spied an Egyptian smiting an Hebrew, one of his brethren."

Exodus 2:12: "And he looked this way and that way, and when he saw that there was no man, he slew the Egyptian, and hid him in the sand."

Exodus 2:21: "And Moses was content to dwell with the man: and he gave Moses Zipporah his daughter."

Exodus 3:2: "And the angel of the LORD appeared unto him in a flame of fire out of the midst of a bush: and he looked, and, behold, the bush burned with fire, and the bush was not consumed."

Exodus 3:6: "Moreover he said, I am the God of thy father, the God of Abraham, the God of Isaac, and the God of Jacob. And Moses hid his face; for he was afraid to look upon God."

Exodus 4:6: "And the LORD said furthermore unto him, Put now thine hand into thy bosom. And he put his hand into his bosom: and when he took it out, behold, his hand was leprous as snow."

Exodus 4:7: "And he said, Put thine hand into thy bosom again. And he put his hand into his bosom again; and plucked it out of his bosom, and, behold, it was turned again as his other flesh."

Exodus 4:14: "And the anger of the LORD was kindled against Moses, and he said, Is not Aaron the Levite thy brother? I know that he can speak well. And also, behold, he cometh forth to meet thee: and when he seeth thee, he will be glad in his heart."

Exodus 5:13: "And the taskmasters hastened them, saying, Fulfil your works, your daily tasks, as when there was straw."

Exodus 5:19: "And the officers of the children of Israel did see that they were in evil case, after it was said, Ye shall not minish ought from your bricks of your daily task."

Exodus 6:3: "And I appeared unto Abraham, unto Isaac, and unto Jacob, by the name of God Almighty, but by my name JEHOVAH was I not known to them."

Exodus 7:7: "And Moses was fourscore years old, and Aaron fourscore and three years old, when they spake unto Pharaoh."

Exodus 7:15: "Get thee unto Pharaoh in the morning; lo, he goeth out unto the water; and thou shalt stand by the river's brink against he come; and the rod which was turned to a serpent shalt thou take in thine hand."

Exodus 7:21: "And the fish that was in the river died; and the river stank, and the Egyptians could not drink of the water of the river; and there was blood throughout all the land of Egypt."

Exodus 7:22: "And the magicians of Egypt did so with their enchantments: and Pharaoh's heart was hardened, neither did he hearken unto them; as the LORD had said."

Exodus 8:15: "But when Pharaoh saw that there was respite, he hardened his heart, and hearkened not unto them; as the LORD had said."

Exodus 8:19: "Then the magicians said unto Pharaoh, This is the finger of God: and Pharaoh's heart was hardened, and he hearkened not unto them; as the LORD had said."

Exodus 8:24: "And the LORD did so; and there came a grievous swarm of flies into the house of Pharaoh, and into his servants' houses, and into all the land of Egypt: the land was corrupted by reason of the swarm of flies."

Exodus 9:7: "And Pharaoh sent, and, behold, there was not one of the cattle of the Israelites dead. And the heart of Pharaoh was hardened, and he did not let the people go."

Exodus 9:11: "And the magicians could not stand before Moses because of the boils; for the boil was upon the magicians, and upon all the Egyptians."

Exodus 9:24: "So there was hail, and fire mingled with the hail, very grievous, such as there was none like it in all the land of Egypt since it became a nation."

Exodus 9:25: "And the hail smote throughout all the land of Egypt all that was in the field, both man and beast; and the hail smote every herb of the field, and brake every tree of the field."

Exodus 9:26: "Only in the land of Goshen, where the children of Israel were, was there no hail."

Exodus 9:31: "And the flax and the barley was smitten: for the barley was in the ear, and the flax was bolled."

Exodus 9:33: "And Moses went out of the city from Pharaoh, and spread abroad his hands unto the LORD: and the thunders and hail ceased, and the rain was not poured upon the earth."

Exodus 9:35: "And the heart of Pharaoh was hardened, neither would he let the children of Israel go; as the LORD had spoken by Moses."

Exodus 10:13: "And Moses stretched forth his rod over the land of Egypt, and the LORD brought an east wind upon the land all that day, and all that night; and when it was morning, the east wind brought the locusts."

Exodus 10:15: "For they covered the face of the whole earth, so that the land was darkened; and they did eat every herb of the land, and all the fruit of the trees which the hail had left: and there remained not any green thing in the trees, or in the herbs of the field, through all the land of Egypt."

Exodus 10:22: "And Moses stretched forth his hand toward heaven; and there was a thick darkness in all the land of Egypt three days:"

Exodus 11:3: "And the LORD gave the people favour in the sight of the Egyptians. Moreover the man Moses was very great in the land of Egypt, in the sight of Pharaoh's servants, and in the sight of the people."

Exodus 11:6: "And there shall be a great cry throughout all the land of Egypt, such as there was none like it, nor shall be like it any more."

Exodus 12:29: "And it came to pass, that at midnight the LORD smote all the firstborn in the land of Egypt, from the firstborn of Pharaoh that sat on his throne unto the firstborn of the captive that was in the dungeon; and all the firstborn of cattle."

Exodus 12:30: "And Pharaoh rose up in the night, he, and all his servants, and all the Egyptians; and

there was a great cry in Egypt; for there was not a house where there was not one dead."

Exodus 12:34: "And the people took their dough before it was leavened, their kneadingtroughs being bound up in their clothes upon their shoulders."

Exodus 12:39: "And they baked unleavened cakes of the dough which they brought forth out of Egypt, for it was not leavened; because they were thrust out of Egypt, and could not tarry, neither had they prepared for themselves any victual."

Exodus 12:40: "Now the sojourning of the children of Israel, who dwelt in Egypt, was four hundred and thirty years."

Exodus 13:17: "And it came to pass, when Pharaoh had let the people go, that God led them not through the way of the land of the Philistines, although that was near; for God said, Lest peradventure the people repent when they see war, and they return to Egypt:"

Exodus 14:5: "And it was told the king of Egypt that the people fled: and the heart of Pharaoh and of his servants was turned against the people, and they said, Why have we done this, that we have let Israel go from serving us?"

Exodus 14:20: "And it came between the camp of the Egyptians and the camp of Israel; and it was a cloud and darkness to them, but it gave light by night to these: so that the one came not near the other all the night."

Exodus 15:23: "And when they came to Marah, they could not drink of the waters of Marah, for they were bitter: therefore the name of it was called Marah."

Exodus 16:14: "And when the dew that lay was gone up, behold, upon the face of the wilderness there lay a small round thing, as small as the hoar frost on the ground."

Exodus 16:15: "And when the children of Israel saw it, they said one to another, It is manna: for they wist not what it was. And Moses said unto them, This is the bread which the LORD hath given you to eat."

Exodus 16:20: "Notwithstanding they hearkened not unto Moses; but some of them left of it until the morning, and it bred worms, and stank: and Moses was wroth with them."

Exodus 16:24: "And they laid it up till the morning, as Moses bade: and it did not stink, neither was there any worm therein."

Exodus 16:31: "And the house of Israel called the name thereof Manna: and it was like coriander seed, white; and the taste of it was like wafers made with honey."

Exodus 17:1: "And all the congregation of the children of Israel journeyed from the wilderness of Sin, after their journeys, according to the commandment of the LORD, and pitched in Rephidim: and there was no water for the people to drink."

Exodus 18:3: "And her two sons; of which the name of the one was Gershom; for he said, I have been an alien in a strange land:"

Exodus 18:4: "And the name of the other was Eliezer; for the God of my father, said he, was mine help, and delivered me from the sword of Pharaoh:"

Exodus 18:11: "Now I know that the LORD is greater than all gods: for in the thing wherein they dealt proudly he was above them."

Exodus 19:16: "And it came to pass on the third day in the morning, that there were thunders and lightnings, and a thick cloud upon the mount, and the voice of the trumpet exceeding loud; so that all the people that was in the camp trembled."

Exodus 19:18: "And mount Sinai was altogether on a smoke, because the LORD descended upon it in fire: and the smoke thereof ascended as the smoke of a furnace, and the whole mount quaked greatly."

Exodus 20:21: "And the people stood afar off, and Moses drew near unto the thick darkness where God was."

Exodus 22:13: "If it be torn in pieces, then let him bring it for witness, and he shall not make good that which was torn."

Exodus 24:10: "And they saw the God of Israel: and there was under his feet as it were a paved

work of a sapphire stone, and as it were the body of heaven in his clearness."

Exodus 24:17: "And the sight of the glory of the LORD was like devouring fire on the top of the mount in the eyes of the children of Israel."

Exodus 24:18: "And Moses went into the midst of the cloud, and gat him up into the mount: and Moses was in the mount forty days and forty nights."

Exodus 25:40: "And look that thou make them after their pattern, which was shewed thee in the mount."

Exodus 26:30: "And thou shalt rear up the tabernacle according to the fashion thereof which was shewed thee in the mount."

Exodus 27:8: "Hollow with boards shalt thou make it: as it was shewed thee in the mount, so shall they make it."

Exodus 29:33: "And they shall eat those things wherewith the atonement was made, to consecrate and to sanctify them: but a stranger shall not eat thereof, because they are holy."

Exodus 31:17: "It is a sign between me and the children of Israel for ever: for in six days the LORD made heaven and earth, and on the seventh day he rested, and was refreshed."

Exodus 32:16: "And the tables were the work of God, and the writing was the writing of God, graven upon the tables."

Exodus 33:7: "And Moses took the tabernacle, and pitched it without the camp, afar off from the camp, and called it the Tabernacle of the congregation. And it came to pass, that every one which sought the LORD went out unto the tabernacle of the congregation, which was without the camp."

Exodus 33:8: "And it came to pass, when Moses went out unto the tabernacle, that all the people rose up, and stood every man at his tent door, and looked after Moses, until he was gone into the tabernacle."

Exodus 34:28: "And he was there with the LORD forty days and forty nights; he did neither eat bread, nor drink water. And he wrote upon the tables the words of the covenant, the ten commandments."

Exodus 34:34: "But when Moses went in before the LORD to speak with him, he took the vail off, until he came out. And he came out, and spake unto the children of Israel that which he was commanded."

Exodus 35:23: "And every man, with whom was found blue, and purple, and scarlet, and fine linen, and goats' hair, and red skins of rams, and badgers' skins, brought them."

Exodus 35:24: "Every one that did offer an offering of silver and brass brought the LORD's offering: and every man, with whom was found shittim wood for any work of the service, brought it."

Exodus 36:7: "For the stuff they had was sufficient for all the work to make it, and too much."

Exodus 36:9: "The length of one curtain was twenty and eight cubits, and the breadth of one curtain four cubits: the curtains were all of one size."

Exodus 36:12: "Fifty loops made he in one curtain, and fifty loops made he in the edge of the curtain which was in the coupling of the second: the loops held one curtain to another."

Exodus 36:15: "The length of one curtain was thirty cubits, and four cubits was the breadth of one curtain: the eleven curtains were of one size."

Exodus 36:21: "The length of a board was ten cubits, and the breadth of a board one cubit and a half."

Exodus 37:1: "And Bezaleel made the ark of shittim wood: two cubits and a half was the length of it, and a cubit and a half the breadth of it, and a cubit and a half the height of it:"

Exodus 37:6: "And he made the mercy seat of pure gold: two cubits and a half was the length thereof, and one cubit and a half the breadth thereof."

Exodus 37:10: "And he made the table of shittim wood: two cubits was the length thereof, and a cubit the breadth thereof, and a cubit and a half the height thereof:"

Exodus 37:22: "Their knops and their branches were of the same: all of it was one beaten work of

pure gold."

Exodus 37:25: "And he made the incense altar of shittim wood: the length of it was a cubit, and the breadth of it a cubit; it was foursquare; and two cubits was the height of it; the horns thereof were of the same."

Exodus 38:1: "And he made the altar of burnt offering of shittim wood: five cubits was the length thereof, and five cubits the breadth thereof; it was foursquare; and three cubits the height thereof."

Exodus 38:18: "And the hanging for the gate of the court was needlework, of blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen: and twenty cubits was the length, and the height in the breadth was five cubits, answerable to the hangings of the court."

Exodus 38:21: "This is the sum of the tabernacle, even of the tabernacle of testimony, as it was counted, according to the commandment of Moses, for the service of the Levites, by the hand of Ithamar, son to Aaron the priest."

Exodus 38:23: "And with him was Aholiab, son of Ahisamach, of the tribe of Dan, an engraver, and a cunning workman, and an embroiderer in blue, and in purple, and in scarlet, and fine linen."

Exodus 38:24: "All the gold that was occupied for the work in all the work of the holy place, even the gold of the offering, was twenty and nine talents, and seven hundred and thirty shekels, after the shekel of the sanctuary."

Exodus 38:25: "And the silver of them that were numbered of the congregation was an hundred talents, and a thousand seven hundred and threescore and fifteen shekels, after the shekel of the sanctuary:"

Exodus 38:29: "And the brass of the offering was seventy talents, and two thousand and four hundred shekels."

Exodus 39:4: "They made shoulderpieces for it, to couple it together: by the two edges was it coupled together."

Exodus 39:5: "And the curious girdle of his ephod, that was upon it, was of the same, according to the work thereof; of gold, blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen; as the LORD commanded Moses."

Exodus 39:9: "It was foursquare; they made the breastplate double: a span was the length thereof, and a span the breadth thereof, being doubled."

Exodus 39:10: "And they set in it four rows of stones: the first row was a sardius, a topaz, and a carbuncle: this was the first row."

Exodus 39:19: "And they made two rings of gold, and put them on the two ends of the breastplate, upon the border of it, which was on the side of the ephod inward."

Exodus 39:23: "And there was an hole in the midst of the robe, as the hole of an habergeon, with a band round about the hole, that it should not rend."

Exodus 39:32: "Thus was all the work of the tabernacle of the tent of the congregation finished: and the children of Israel did according to all that the LORD commanded Moses, so did they."

Exodus 40:17: "And it came to pass in the first month in the second year, on the first day of the month, that the tabernacle was reared up."

Exodus 40:35: "And Moses was not able to enter into the tent of the congregation, because the cloud abode thereon, and the glory of the LORD filled the tabernacle."

Exodus 40:36: "And when the cloud was taken up from over the tabernacle, the children of Israel went onward in all their journeys:"

Exodus 40:37: "But if the cloud were not taken up, then they journeyed not till the day that it was taken up."

Exodus 40:38: "For the cloud of the LORD was upon the tabernacle by day, and fire was on it by night, in the sight of all the house of Israel, throughout all their journeys."

Leviticus 4:10: "As it was taken off from the bullock of the sacrifice of peace offerings: and the priest shall burn them upon the altar of the burnt offering."

Leviticus 6:2: "If a soul sin, and commit a trespass against the LORD, and lie unto his neighbour in

that which was delivered him to keep, or in fellowship, or in a thing taken away by violence, or hath deceived his neighbour;"

Leviticus 6:3: "Or have found that which was lost, and lieth concerning it, and sweareth falsely; in any of all these that a man doeth, sinning therein:"

Leviticus 6:4: "Then it shall be, because he hath sinned, and is guilty, that he shall restore that which he took violently away, or the thing which he hath deceitfully gotten, or that which was delivered him to keep, or the lost thing which he found,"

Leviticus 6:27: "Whatsoever shall touch the flesh thereof shall be holy: and when there is sprinkled of the blood thereof upon any garment, thou shalt wash that whereon it was sprinkled in the holy place."

Leviticus 8:4: "And Moses did as the LORD commanded him; and the assembly was gathered together unto the door of the tabernacle of the congregation."

Leviticus 8:10: "And Moses took the anointing oil, and anointed the tabernacle and all that was therein, and sanctified them."

Leviticus 8:16: "And he took all the fat that was upon the inwards, and the caul above the liver, and the two kidneys, and their fat, and Moses burned it upon the altar."

Leviticus 8:21: "And he washed the inwards and the legs in water; and Moses burnt the whole ram upon the altar: it was a burnt sacrifice for a sweet savour, and an offering made by fire unto the LORD; as the LORD commanded Moses."

Leviticus 8:25: "And he took the fat, and the rump, and all the fat that was upon the inwards, and the caul above the liver, and the two kidneys, and their fat, and the right shoulder:"

Leviticus 8:26: "And out of the basket of unleavened bread, that was before the LORD, he took one unleavened cake, and a cake of oiled bread, and one wafer, and put them on the fat, and upon the right shoulder:"

Leviticus 8:29: "And Moses took the breast, and waved it for a wave offering before the LORD: for of the ram of consecration it was Moses' part; as the LORD commanded Moses."

Leviticus 8:30: "And Moses took of the anointing oil, and of the blood which was upon the altar, and sprinkled it upon Aaron, and upon his garments, and upon his sons, and upon his sons' garments with him; and sanctified Aaron, and his garments, and his sons, and his sons' garments with him."

Leviticus 9:8: "Aaron therefore went unto the altar, and slew the calf of the sin offering, which was for himself."

Leviticus 9:15: "And he brought the people's offering, and took the goat, which was the sin offering for the people, and slew it, and offered it for sin, as the first."

Leviticus 9:18: "He slew also the bullock and the ram for a sacrifice of peace offerings, which was for the people: and Aaron's sons presented unto him the blood, which he sprinkled upon the altar round about,"

Leviticus 10:16: "And Moses diligently sought the goat of the sin offering, and, behold, it was burnt: and he was angry with Eleazar and Ithamar, the sons of Aaron which were left alive, saying,"

Leviticus 10:18: "Behold, the blood of it was not brought in within the holy place: ye should indeed have eaten it in the holy place, as I commanded."

Leviticus 10:20: "And when Moses heard that, he was content."

Leviticus 13:18: "The flesh also, in which, even in the skin thereof, was a boil, and is healed,"

Leviticus 14:6: "As for the living bird, he shall take it, and the cedar wood, and the scarlet, and the hyssop, and shall dip them and the living bird in the blood of the bird that was killed over the running water:"

Leviticus 14:48: "And if the priest shall come in, and look upon it, and, behold, the plague hath not spread in the house, after the house was plaistered: then the priest shall pronounce the house clean, because the plague is healed."

Leviticus 15:10: "And whosoever toucheth any thing that was under him shall be unclean until the even: and he that beareth any of those things shall wash his clothes, and bathe himself in water, and



be unclean until the even."

Leviticus 16:27: "And the bullock for the sin offering, and the goat for the sin offering, whose blood was brought in to make atonement in the holy place, shall one carry forth without the camp; and they shall burn in the fire their skins, and their flesh, and their dung."

Leviticus 17:15: "And every soul that eateth that which died of itself, or that which was torn with beasts, whether it be one of your own country, or a stranger, he shall both wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even: then shall he be clean."

Leviticus 19:20: "And whosoever lieth carnally with a woman, that is a bondmaid, betrothed to an husband, and not at all redeemed, nor freedom given her; she shall be scourged; they shall not be put to death, because she was not free."

Leviticus 21:10: "And he that is the high priest among his brethren, upon whose head the anointing oil was poured, and that is consecrated to put on the garments, shall not uncover his head, nor rend his clothes;"

Leviticus 24:10: "And the son of an Israelitish woman, whose father was an Egyptian, went out among the children of Israel: and this son of the Israelitish woman and a man of Israel strove together in the camp;"

Leviticus 24:11: "And the Israelitish woman's son blasphemed the name of the Lord, and cursed. And they brought him unto Moses: (and his mother's name was Shelomith, the daughter of Dibri, of the tribe of Dan:)"

Leviticus 25:33: "And if a man purchase of the Levites, then the house that was sold, and the city of his possession, shall go out in the year of jubile: for the houses of the cities of the Levites are their possession among the children of Israel."

Leviticus 25:50: "And he shall reckon with him that bought him from the year that he was sold to him unto the year of jubile: and the price of his sale shall be according unto the number of years, according to the time of an hired servant shall it be with him."

Leviticus 25:51: "If there be yet many years behind, according unto them he shall give again the price of his redemption out of the money that he was bought for."

Leviticus 27:24: "In the year of the jubile the field shall return unto him of whom it was bought, even to him to whom the possession of the land did belong."

Numbers 1:44: "These are those that were numbered, which Moses and Aaron numbered, and the princes of Israel, being twelve men: each one was for the house of his fathers."

Numbers 3:16: "And Moses numbered them according to the word of the LORD, as he was commanded."

Numbers 3:21: "Of Gershon was the family of the Libnites, and the family of the Shimites: these are the families of the Gershonites."

Numbers 3:27: "And of Kohath was the family of the Amramites, and the family of the Izecharites, and the family of the Hebronites, and the family of the Uzzielites: these are the families of the Kohathites."

Numbers 3:33: "Of Merari was the family of the Mahlites, and the family of the Mushites: these are the families of Merari."

Numbers 3:35: "And the chief of the house of the father of the families of Merari was Zuriel the son of Abihail: these shall pitch on the side of the tabernacle northward."

Numbers 6:12: "And he shall consecrate unto the LORD the days of his separation, and shall bring a lamb of the first year for a trespass offering: but the days that were before shall be lost, because his separation was defiled."

Numbers 7:9: "But unto the sons of Kohath he gave none: because the service of the sanctuary belonging unto them was that they should bear upon their shoulders."

Numbers 7:10: "And the princes offered for dedicating of the altar in the day that it was anointed, even the princes offered their offering before the altar."

Numbers 7:12: "And he that offered his offering the first day was Nahshon the son of Amminadab,

of the tribe of Judah:"

Numbers 7:13: "And his offering was one silver charger, the weight thereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them were full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:17: "And for a sacrifice of peace offerings, two oxen, five rams, five he goats, five lambs of the first year: this was the offering of Nahshon the son of Amminadab."

Numbers 7:19: "He offered for his offering one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:23: "And for a sacrifice of peace offerings, two oxen, five rams, five he goats, five lambs of the first year: this was the offering of Nethaneel the son of Zuar."

Numbers 7:25: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:29: "And for a sacrifice of peace offerings, two oxen, five rams, five he goats, five lambs of the first year: this was the offering of Eliab the son of Helon."

Numbers 7:31: "His offering was one silver charger of the weight of an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:35: "And for a sacrifice of peace offerings, two oxen, five rams, five he goats, five lambs of the first year: this was the offering of Elizur the son of Shedeur."

Numbers 7:37: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:41: "And for a sacrifice of peace offerings, two oxen, five rams, five he goats, five lambs of the first year: this was the offering of Shelumiel the son of Zurishaddai."

Numbers 7:43: "His offering was one silver charger of the weight of an hundred and thirty shekels, a silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:47: "And for a sacrifice of peace offerings, two oxen, five rams, five he goats, five lambs of the first year: this was the offering of Eliasaph the son of Deuel."

Numbers 7:49: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:53: "And for a sacrifice of peace offerings, two oxen, five rams, five he goats, five lambs of the first year: this was the offering of Elishama the son of Ammihud."

Numbers 7:55: "His offering was one silver charger of the weight of an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:59: "And for a sacrifice of peace offerings, two oxen, five rams, five he goats, five lambs of the first year: this was the offering of Gamaliel the son of Pedahzur."

Numbers 7:61: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:65: "And for a sacrifice of peace offerings, two oxen, five rams, five he goats, five lambs of the first year: this was the offering of Abidan the son of Gideoni."

Numbers 7:67: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:71: "And for a sacrifice of peace offerings, two oxen, five rams, five he goats, five

lambs of the first year: this was the offering of Ahiezer the son of Ammishaddai."

Numbers 7:73: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:77: "And for a sacrifice of peace offerings, two oxen, five rams, five he goats, five lambs of the first year: this was the offering of Pagiel the son of Ocran."

Numbers 7:79: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:83: "And for a sacrifice of peace offerings, two oxen, five rams, five he goats, five lambs of the first year: this was the offering of Ahira the son of Enan."

Numbers 7:84: "This was the dedication of the altar, in the day when it was anointed, by the princes of Israel: twelve chargers of silver, twelve silver bowls, twelve spoons of gold:"

Numbers 7:86: "The golden spoons were twelve, full of incense, weighing ten shekels apiece, after the shekel of the sanctuary: all the gold of the spoons was an hundred and twenty shekels."

Numbers 7:88: "And all the oxen for the sacrifice of the peace offerings were twenty and four bullocks, the rams sixty, the he goats sixty, the lambs of the first year sixty. This was the dedication of the altar, after that it was anointed."

Numbers 7:89: "And when Moses was gone into the tabernacle of the congregation to speak with him, then he heard the voice of one speaking unto him from off the mercy seat that was upon the ark of testimony, from between the two cherubims: and he spake unto him."

Numbers 8:4: "And this work of the candlestick was of beaten gold, unto the shaft thereof, unto the flowers thereof, was beaten work: according unto the pattern which the LORD had shewed Moses, so he made the candlestick."

Numbers 9:14: "And if a stranger shall sojourn among you, and will keep the passover unto the LORD; according to the ordinance of the passover, and according to the manner thereof, so shall he do: ye shall have one ordinance, both for the stranger, and for him that was born in the land."

Numbers 9:15: "And on the day that the tabernacle was reared up the cloud covered the tabernacle, namely, the tent of the testimony: and at even there was upon the tabernacle as it were the appearance of fire, until the morning."

Numbers 9:16: "So it was alway: the cloud covered it by day, and the appearance of fire by night."

Numbers 9:17: "And when the cloud was taken up from the tabernacle, then after that the children of Israel journeyed: and in the place where the cloud abode, there the children of Israel pitched their tents."

Numbers 9:20: "And so it was, when the cloud was a few days upon the tabernacle; according to the commandment of the LORD they abode in their tents, and according to the commandment of the LORD they journeyed."

Numbers 9:21: "And so it was, when the cloud abode from even unto the morning, and that the cloud was taken up in the morning, then they journeyed: whether it was by day or by night that the cloud was taken up, they journeyed."

Numbers 9:22: "Or whether it were two days, or a month, or a year, that the cloud tarried upon the tabernacle, remaining thereon, the children of Israel abode in their tents, and journeyed not: but when it was taken up, they journeyed."

Numbers 10:11: "And it came to pass on the twentieth day of the second month, in the second year, that the cloud was taken up from off the tabernacle of the testimony."

Numbers 10:14: "In the first place went the standard of the camp of the children of Judah according to their armies: and over his host was Nahshon the son of Amminadab."

Numbers 10:15: "And over the host of the tribe of the children of Issachar was Nethaneel the son of Zuar."

Numbers 10:16: "And over the host of the tribe of the children of Zebulun was Eliab the son of

Helon."

Numbers 10:17: "And the tabernacle was taken down; and the sons of Gershon and the sons of Merari set forward, bearing the tabernacle."

Numbers 10:18: "And the standard of the camp of Reuben set forward according to their armies: and over his host was Elizur the son of Shedeur."

Numbers 10:19: "And over the host of the tribe of the children of Simeon was Shelumiel the son of Zurishaddai."

Numbers 10:20: "And over the host of the tribe of the children of Gad was Eliasaph the son of Deuel."

Numbers 10:22: "And the standard of the camp of the children of Ephraim set forward according to their armies: and over his host was Elishama the son of Ammihud."

Numbers 10:23: "And over the host of the tribe of the children of Manasseh was Gamaliel the son of Pedahzur."

Numbers 10:24: "And over the host of the tribe of the children of Benjamin was Abidan the son of Gideon."

Numbers 10:25: "And the standard of the camp of the children of Dan set forward, which was the rereward of all the camps throughout their hosts: and over his host was Ahiezer the son of Ammishaddai."

Numbers 10:26: "And over the host of the tribe of the children of Asher was Pagiel the son of Ocran."

Numbers 10:27: "And over the host of the tribe of the children of Naphtali was Ahira the son of Enan."

Numbers 10:34: "And the cloud of the LORD was upon them by day, when they went out of the camp."

Numbers 11:1: "And when the people complained, it displeased the LORD: and the LORD heard it; and his anger was kindled; and the fire of the LORD burnt among them, and consumed them that were in the uttermost parts of the camp."

Numbers 11:2: "And the people cried unto Moses; and when Moses prayed unto the LORD, the fire was quenched."

Numbers 11:4: "And the mixt multitude that was among them fell a lusting: and the children of Israel also wept again, and said, Who shall give us flesh to eat?"

Numbers 11:7: "And the manna was as coriander seed, and the colour thereof as the colour of bdellium."

Numbers 11:8: "And the people went about, and gathered it, and ground it in mills, or beat it in a mortar, and baked it in pans, and made cakes of it: and the taste of it was as the taste of fresh oil."

Numbers 11:10: "Then Moses heard the people weep throughout their families, every man in the door of his tent: and the anger of the LORD was kindled greatly; Moses also was displeased."

Numbers 11:18: "And say thou unto the people, Sanctify yourselves against to morrow, and ye shall eat flesh: for ye have wept in the ears of the LORD, saying, Who shall give us flesh to eat? for it was well with us in Egypt: therefore the LORD will give you flesh, and ye shall eat."

Numbers 11:25: "And the LORD came down in a cloud, and spake unto him, and took of the spirit that was upon him, and gave it unto the seventy elders: and it came to pass, that, when the spirit rested upon them, they prophesied, and did not cease."

Numbers 11:26: "But there remained two of the men in the camp, the name of the one was Eldad, and the name of the other Medad: and the spirit rested upon them; and they were of them that were written, but went not out unto the tabernacle: and they prophesied in the camp."

Numbers 11:33: "And while the flesh was yet between their teeth, ere it was chewed, the wrath of the LORD was kindled against the people, and the LORD smote the people with a very great plague."

Numbers 12:3: "(Now the man Moses was very meek, above all the men which were upon the face

of the earth.)"

Numbers 12:9: "And the anger of the LORD was kindled against them; and he departed."

Numbers 12:10: "And the cloud departed from off the tabernacle; and, behold, Miriam became leprous, white as snow: and Aaron looked upon Miriam, and, behold, she was leprous."

Numbers 12:15: "And Miriam was shut out from the camp seven days: and the people journeyed not till Miriam was brought in again."

Numbers 13:20: "And what the land is, whether it be fat or lean, whether there be wood therein, or not. And be ye of good courage, and bring of the fruit of the land. Now the time was the time of the firstripe grapes."

Numbers 13:22: "And they ascended by the south, and came unto Hebron; where Ahiman, Sheshai, and Talmai, the children of Anak, were. (Now Hebron was built seven years before Zoan in Egypt.)"

Numbers 13:24: "The place was called the brook Eshcol, because of the cluster of grapes which the children of Israel cut down from thence."

Numbers 14:16: "Because the LORD was not able to bring this people into the land which he swore unto them, therefore he hath slain them in the wilderness."

Numbers 15:34: "And they put him in ward, because it was not declared what should be done to him."

Numbers 16:15: "And Moses was very wroth, and said unto the LORD, Respect not thou their offering: I have not taken one ass from them, neither have I hurt one of them."

Numbers 16:31: "And it came to pass, as he had made an end of speaking all these words, that the ground clave asunder that was under them:"

Numbers 16:42: "And it came to pass, when the congregation was gathered against Moses and against Aaron, that they looked toward the tabernacle of the congregation: and, behold, the cloud covered it, and the glory of the LORD appeared."

Numbers 16:47: "And Aaron took as Moses commanded, and ran into the midst of the congregation; and, behold, the plague was begun among the people: and he put on incense, and made an atonement for the people."

Numbers 16:48: "And he stood between the dead and the living; and the plague was stayed."

Numbers 16:50: "And Aaron returned unto Moses unto the door of the tabernacle of the congregation: and the plague was stayed."

Numbers 17:6: "And Moses spake unto the children of Israel, and every one of their princes gave him a rod apiece, for each prince one, according to their fathers' houses, even twelve rods: and the rod of Aaron was among their rods."

Numbers 17:8: "And it came to pass, that on the morrow Moses went into the tabernacle of witness; and, behold, the rod of Aaron for the house of Levi was budded, and brought forth buds, and bloomed blossoms, and yielded almonds."

Numbers 19:13: "Whosoever toucheth the dead body of any man that is dead, and purifieth not himself, defileth the tabernacle of the LORD; and that soul shall be cut off from Israel: because the water of separation was not sprinkled upon him, he shall be unclean; his uncleanness is yet upon him."

Numbers 20:1: "Then came the children of Israel, even the whole congregation, into the desert of Zin in the first month: and the people abode in Kadesh; and Miriam died there, and was buried there."

Numbers 20:2: "And there was no water for the congregation: and they gathered themselves together against Moses and against Aaron."

Numbers 20:13: "This is the water of Meribah; because the children of Israel strove with the LORD, and he was sanctified in them."

Numbers 20:29: "And when all the congregation saw that Aaron was dead, they mourned for Aaron thirty days, even all the house of Israel."

Numbers 21:4: "And they journeyed from mount Hor by the way of the Red sea, to compass the land of Edom: and the soul of the people was much discouraged because of the way."

Numbers 21:24: "And Israel smote him with the edge of the sword, and possessed his land from Arnon unto Jabbok, even unto the children of Ammon: for the border of the children of Ammon was strong."

Numbers 21:26: "For Heshbon was the city of Sihon the king of the Amorites, who had fought against the former king of Moab, and taken all his land out of his hand, even unto Arnon."

Numbers 21:35: "So they smote him, and his sons, and all his people, until there was none left him alive: and they possessed his land."

Numbers 22:3: "And Moab was sore afraid of the people, because they were many: and Moab was distressed because of the children of Israel."

Numbers 22:4: "And Moab said unto the elders of Midian, Now shall this company lick up all that are round about us, as the ox licketh up the grass of the field. And Balak the son of Zippor was king of the Moabites at that time."

Numbers 22:22: "And God's anger was kindled because he went: and the angel of the LORD stood in the way for an adversary against him. Now he was riding upon his ass, and his two servants were with him."

Numbers 22:26: "And the angel of the LORD went further, and stood in a narrow place, where was no way to turn either to the right hand or to the left."

Numbers 22:27: "And when the ass saw the angel of the LORD, she fell down under Balaam: and Balaam's anger was kindled, and he smote the ass with a staff."

Numbers 22:30: "And the ass said unto Balaam, Am not I thine ass, upon which thou hast ridden ever since I was thine unto this day? was I ever wont to do so unto thee? And he said, Nay."

Numbers 22:36: "And when Balak heard that Balaam was come, he went out to meet him unto a city of Moab, which is in the border of Arnon, which is in the utmost coast."

Numbers 24:10: "And Balak's anger was kindled against Balaam, and he smote his hands together: and Balak said unto Balaam, I called thee to curse mine enemies, and, behold, thou hast altogether blessed them these three times."

Numbers 24:20: "And when he looked on Amalek, he took up his parable, and said, Amalek was the first of the nations; but his latter end shall be that he perish for ever."

Numbers 25:3: "And Israel joined himself unto Baalpeor: and the anger of the LORD was kindled against Israel."

Numbers 25:8: "And he went after the man of Israel into the tent, and thrust both of them through, the man of Israel, and the woman through her belly. So the plague was stayed from the children of Israel."

Numbers 25:11: "Phinehas, the son of Eleazar, the son of Aaron the priest, hath turned my wrath away from the children of Israel, while he was zealous for my sake among them, that I consumed not the children of Israel in my jealousy."

Numbers 25:13: "And he shall have it, and his seed after him, even the covenant of an everlasting priesthood; because he was zealous for his God, and made an atonement for the children of Israel."

Numbers 25:14: "Now the name of the Israelite that was slain, even that was slain with the Midianitish woman, was Zimri, the son of Salu, a prince of a chief house among the Simeonites."

Numbers 25:15: "And the name of the Midianitish woman that was slain was Cozbi, the daughter of Zur; he was head over a people, and of a chief house in Midian."

Numbers 25:18: "For they vex you with their wiles, wherewith they have beguiled you in the matter of Peor, and in the matter of Cozbi, the daughter of a prince of Midian, their sister, which was slain in the day of the plague for Peor's sake."

Numbers 26:46: "And the name of the daughter of Asher was Sarah."

Numbers 26:59: "And the name of Amram's wife was Jochebed, the daughter of Levi, whom her mother bare to Levi in Egypt: and she bare unto Amram Aaron and Moses, and Miriam their sister."

Numbers 26:60: "And unto Aaron was born Nadab, and Abihu, Eleazar, and Ithamar."

Numbers 26:62: "And those that were numbered of them were twenty and three thousand, all males from a month old and upward: for they were not numbered among the children of Israel, because there was no inheritance given them among the children of Israel."

Numbers 26:64: "But among these there was not a man of them whom Moses and Aaron the priest numbered, when they numbered the children of Israel in the wilderness of Sinai."

Numbers 26:65: "For the LORD had said of them, They shall surely die in the wilderness. And there was not left a man of them, save Caleb the son of Jephunneh, and Joshua the son of Nun."

Numbers 27:3: "Our father died in the wilderness, and he was not in the company of them that gathered themselves together against the LORD in the company of Korah; but died in his own sin, and had no sons."

Numbers 27:13: "And when thou hast seen it, thou also shalt be gathered unto thy people, as Aaron thy brother was gathered."

Numbers 28:6: "It is a continual burnt offering, which was ordained in mount Sinai for a sweet savour, a sacrifice made by fire unto the LORD."

Numbers 31:14: "And Moses was wroth with the officers of the host, with the captains over thousands, and captains over hundreds, which came from the battle."

Numbers 31:16: "Behold, these caused the children of Israel, through the counsel of Balaam, to commit trespass against the LORD in the matter of Peor, and there was a plague among the congregation of the LORD."

Numbers 31:26: "Take the sum of the prey that was taken, both of man and of beast, thou, and Eleazar the priest, and the chief fathers of the congregation:"

Numbers 31:32: "And the booty, being the rest of the prey which the men of war had caught, was six hundred thousand and seventy thousand and five thousand sheep,"

Numbers 31:36: "And the half, which was the portion of them that went out to war, was in number three hundred thousand and seven and thirty thousand and five hundred sheep:"

Numbers 31:37: "And the LORD's tribute of the sheep was six hundred and threescore and fifteen."

Numbers 31:38: "And the beeves were thirty and six thousand; of which the LORD's tribute was threescore and twelve."

Numbers 31:39: "And the asses were thirty thousand and five hundred; of which the LORD's tribute was threescore and one."

Numbers 31:40: "And the persons were sixteen thousand; of which the LORD's tribute was thirty and two persons."

Numbers 31:41: "And Moses gave the tribute, which was the LORD's heave offering, unto Eleazar the priest, as the LORD commanded Moses."

Numbers 31:43: "(Now the half that pertained unto the congregation was three hundred thousand and thirty thousand and seven thousand and five hundred sheep,"

Numbers 31:52: "And all the gold of the offering that they offered up to the LORD, of the captains of thousands, and of the captains of hundreds, was sixteen thousand seven hundred and fifty shekels."

Numbers 32:1: "Now the children of Reuben and the children of Gad had a very great multitude of cattle: and when they saw the land of Jazer, and the land of Gilead, that, behold, the place was a place for cattle;"

Numbers 32:10: "And the LORD's anger was kindled the same time, and he swore, saying,"

Numbers 32:13: "And the LORD's anger was kindled against Israel, and he made them wander in the wilderness forty years, until all the generation, that had done evil in the sight of the LORD, was consumed."

Numbers 32:39: "And the children of Machir the son of Manasseh went to Gilead, and took it, and dispossessed the Amorite which was in it."

Numbers 33:14: "And they removed from Alush, and encamped at Rephidim, where was no water

for the people to drink."

Numbers 33:39: "And Aaron was an hundred and twenty and three years old when he died in mount Hor."

Numbers 35:23: "Or with any stone, wherewith a man may die, seeing him not, and cast it upon him, that he die, and was not his enemy, neither sought his harm:"

Numbers 35:25: "And the congregation shall deliver the slayer out of the hand of the revenger of blood, and the congregation shall restore him to the city of his refuge, whither he was fled: and he shall abide in it unto the death of the high priest, which was anointed with the holy oil."

Numbers 35:26: "But if the slayer shall at any time come without the border of the city of his refuge, whither he was fled;"

Numbers 36:2: "And they said, The LORD commanded my lord to give the land for an inheritance by lot to the children of Israel: and my lord was commanded by the LORD to give the inheritance of Zelophehad our brother unto his daughters."

Deuteronomy 1:34: "And the LORD heard the voice of your words, and was wroth, and sware, saying,"

Deuteronomy 1:37: "Also the LORD was angry with me for your sakes, saying, Thou also shalt not go in thither."

Deuteronomy 2:14: "And the space in which we came from Kadeshbarnea, until we were come over the brook Zered, was thirty and eight years; until all the generation of the men of war were wasted out from among the host, as the LORD sware unto them."

Deuteronomy 2:15: "For indeed the hand of the LORD was against them, to destroy them from among the host, until they were consumed."

Deuteronomy 2:20: "(That also was accounted a land of giants: giants dwelt therein in old time; and the Ammonites call them Zamzummims;"

Deuteronomy 2:36: "From Aroer, which is by the brink of the river of Arnon, and from the city that is by the river, even unto Gilead, there was not one city too strong for us: the LORD our God delivered all unto us:"

Deuteronomy 3:3: "So the LORD our God delivered into our hands Og also, the king of Bashan, and all his people: and we smote him until none was left to him remaining."

Deuteronomy 3:4: "And we took all his cities at that time, there was not a city which we took not from them, threescore cities, all the region of Argob, the kingdom of Og in Bashan."

Deuteronomy 3:8: "And we took at that time out of the hand of the two kings of the Amorites the land that was on this side Jordan, from the river of Arnon unto mount Hermon;"

Deuteronomy 3:11: "For only Og king of Bashan remained of the remnant of giants; behold his bedstead was a bedstead of iron; is it not in Rabbath of the children of Ammon? nine cubits was the length thereof, and four cubits the breadth of it, after the cubit of a man."

Deuteronomy 3:13: "And the rest of Gilead, and all Bashan, being the kingdom of Og, gave I unto the half tribe of Manasseh; all the region of Argob, with all Bashan, which was called the land of giants."

Deuteronomy 3:26: "But the LORD was wroth with me for your sakes, and would not hear me: and the LORD said unto me, Let it suffice thee; speak no more unto me of this matter."

Deuteronomy 4:21: "Furthermore the LORD was angry with me for your sakes, and sware that I should not go over Jordan, and that I should not go in unto that good land, which the LORD thy God giveth thee for an inheritance:"

Deuteronomy 4:35: "Unto thee it was shewed, that thou mightest know that the LORD he is God; there is none else beside him."

Deuteronomy 8:2: "And thou shalt remember all the way which the LORD thy God led thee these forty years in the wilderness, to humble thee, and to prove thee, to know what was in thine heart, whether thou wouldest keep his commandments, or no."

Deuteronomy 8:15: "Who led thee through that great and terrible wilderness, wherein were fiery



serpents, and scorpions, and drought, where there was no water; who brought thee forth water out of the rock of flint;"

Deuteronomy 9:8: "Also in Horeb ye provoked the LORD to wrath, so that the LORD was angry with you to have destroyed you."

Deuteronomy 9:9: "When I was gone up into the mount to receive the tables of stone, even the tables of the covenant which the LORD made with you, then I abode in the mount forty days and forty nights, I neither did eat bread nor drink water:"

Deuteronomy 9:10: "And the LORD delivered unto me two tables of stone written with the finger of God; and on them was written according to all the words, which the LORD spake with you in the mount out of the midst of the fire in the day of the assembly."

Deuteronomy 9:19: "For I was afraid of the anger and hot displeasure, wherewith the LORD was wroth against you to destroy you. But the LORD hearkened unto me at that time also."

Deuteronomy 9:20: "And the LORD was very angry with Aaron to have destroyed him: and I prayed for Aaron also the same time."

Deuteronomy 9:21: "And I took your sin, the calf which ye had made, and burnt it with fire, and stamped it, and ground it very small, even until it was as small as dust: and I cast the dust thereof into the brook that descended out of the mount."

Deuteronomy 9:28: "Lest the land whence thou broughtest us out say, Because the LORD was not able to bring them into the land which he promised them, and because he hated them, he hath brought them out to slay them in the wilderness."

Deuteronomy 10:6: "And the children of Israel took their journey from Beeroth of the children of Jaakan to Mosera: there Aaron died, and there he was buried; and Eleazar his son ministered in the priest's office in his stead."

Deuteronomy 11:6: "And what he did unto Dathan and Abiram, the sons of Eliab, the son of Reuben: how the earth opened her mouth, and swallowed them up, and their households, and their tents, and all the substance that was in their possession, in the midst of all Israel:"

Deuteronomy 19:6: "Lest the avenger of the blood pursue the slayer, while his heart is hot, and overtake him, because the way is long, and slay him; whereas he was not worthy of death, inasmuch as he hated him not in time past."

Deuteronomy 21:15: "If a man have two wives, one beloved, and another hated, and they have born him children, both the beloved and the hated; and if the firstborn son be hers that was hated:"

Deuteronomy 22:27: "For he found her in the field, and the betrothed damsel cried, and there was none to save her."

Deuteronomy 26:5: "And thou shalt speak and say before the LORD thy God, A Syrian ready to perish was my father, and he went down into Egypt, and sojourned there with a few, and became there a nation, great, mighty, and populous:"

Deuteronomy 29:27: "And the anger of the LORD was kindled against this land, to bring upon it all the curses that are written in this book:"

Deuteronomy 32:12: "So the LORD alone did lead him, and there was no strange god with him."

Deuteronomy 32:50: "And die in the mount whither thou goest up, and be gathered unto thy people; as Aaron thy brother died in mount Hor, and was gathered unto his people:"

Deuteronomy 33:5: "And he was king in Jeshurun, when the heads of the people and the tribes of Israel were gathered together."

Deuteronomy 33:16: "And for the precious things of the earth and fulness thereof, and for the good will of him that dwelt in the bush: let the blessing come upon the head of Joseph, and upon the top of the head of him that was separated from his brethren."

Deuteronomy 33:21: "And he provided the first part for himself, because there, in a portion of the lawgiver, was he seated; and he came with the heads of the people, he executed the justice of the LORD, and his judgments with Israel."

Deuteronomy 34:7: "And Moses was an hundred and twenty years old when he died: his eye was

not dim, nor his natural force abated."

Deuteronomy 34:9: "And Joshua the son of Nun was full of the spirit of wisdom; for Moses had laid his hands upon him: and the children of Israel hearkened unto him, and did as the LORD commanded Moses."

Joshua 1:5: "There shall not any man be able to stand before thee all the days of thy life: as I was with Moses, so I will be with thee: I will not fail thee, nor forsake thee."

Joshua 1:17: "According as we hearkened unto Moses in all things, so will we hearken unto thee: only the LORD thy God be with thee, as he was with Moses."

Joshua 2:2: "And it was told the king of Jericho, saying, Behold, there came men in hither to night of the children of Israel to search out the country."

Joshua 2:5: "And it came to pass about the time of shutting of the gate, when it was dark, that the men went out: whither the men went I wot not: pursue after them quickly; for ye shall overtake them."

Joshua 2:15: "Then she let them down by a cord through the window: for her house was upon the town wall, and she dwelt upon the wall."

Joshua 3:7: "And the LORD said unto Joshua, This day will I begin to magnify thee in the sight of all Israel, that they may know that, as I was with Moses, so I will be with thee."

Joshua 4:10: "For the priests which bare the ark stood in the midst of Jordan, until everything was finished that the LORD commanded Joshua to speak unto the people, according to all that Moses commanded Joshua: and the people hastened and passed over."

Joshua 5:1: "And it came to pass, when all the kings of the Amorites, which were on the side of Jordan westward, and all the kings of the Canaanites, which were by the sea, heard that the LORD had dried up the waters of Jordan from before the children of Israel, until we were passed over, that their heart melted, neither was there spirit in them any more, because of the children of Israel."

Joshua 5:13: "And it came to pass, when Joshua was by Jericho, that he lifted up his eyes and looked, and, behold, there stood a man over against him with his sword drawn in his hand: and Joshua went unto him, and said unto him, Art thou for us, or for our adversaries?"

Joshua 6:1: "Now Jericho was straitly shut up because of the children of Israel: none went out, and none came in."

Joshua 6:21: "And they utterly destroyed all that was in the city, both man and woman, young and old, and ox, and sheep, and ass, with the edge of the sword."

Joshua 6:24: "And they burnt the city with fire, and all that was therein: only the silver, and the gold, and the vessels of brass and of iron, they put into the treasury of the house of the LORD."

Joshua 6:27: "So the LORD was with Joshua; and his fame was noised throughout all the country."

Joshua 7:1: "But the children of Israel committed a trespass in the accursed thing: for Achan, the son of Carmi, the son of Zabdi, the son of Zerah, of the tribe of Judah, took of the accursed thing: and the anger of the LORD was kindled against the children of Israel."

Joshua 7:16: "So Joshua rose up early in the morning, and brought Israel by their tribes; and the tribe of Judah was taken:"

Joshua 7:17: "And he brought the family of Judah; and he took the family of the Zarhites: and he brought the family of the Zarhites man by man; and Zabdi was taken:"

Joshua 7:18: "And he brought his household man by man; and Achan, the son of Carmi, the son of Zabdi, the son of Zerah, of the tribe of Judah, was taken."

Joshua 7:22: "So Joshua sent messengers, and they ran unto the tent; and, behold, it was hid in his tent, and the silver under it."

Joshua 7:26: "And they raised over him a great heap of stones unto this day. So the LORD turned from the fierceness of his anger. Wherefore the name of that place was called, The valley of Achor, unto this day."

Joshua 8:11: "And all the people, even the people of war that were with him, went up, and drew nigh, and came before the city, and pitched on the north side of Ai: now there was a valley between

them and Ai."

Joshua 8:13: "And when they had set the people, even all the host that was on the north of the city, and their liers in wait on the west of the city, Joshua went that night into the midst of the valley."

Joshua 8:17: "And there was not a man left in Ai or Bethel, that went not out after Israel: and they left the city open, and pursued after Israel."

Joshua 8:25: "And so it was, that all that fell that day, both of men and women, were twelve thousand, even all the men of Ai."

Joshua 8:29: "And the king of Ai he hanged on a tree until eventide: and as soon as the sun was down, Joshua commanded that they should take his carcase down from the tree, and cast it at the entering of the gate of the city, and raise thereon a great heap of stones, that remaineth unto this day."

Joshua 8:33: "And all Israel, and their elders, and officers, and their judges, stood on this side the ark and on that side before the priests the Levites, which bare the ark of the covenant of the LORD, as well the stranger, as he that was born among them; half of them over against mount Gerizim, and half of them over against mount Ebal; as Moses the servant of the LORD had commanded before, that they should bless the people of Israel."

Joshua 8:35: "There was not a word of all that Moses commanded, which Joshua read not before all the congregation of Israel, with the women, and the little ones, and the strangers that were conversant among them."

Joshua 9:5: "And old shoes and clouted upon their feet, and old garments upon them; and all the bread of their provision was dry and mouldy."

Joshua 9:10: "And all that he did to the two kings of the Amorites, that were beyond Jordan, to Sihon king of Heshbon, and to Og king of Bashan, which was at Ashtaroth."

Joshua 9:24: "And they answered Joshua, and said, Because it was certainly told thy servants, how that the LORD thy God commanded his servant Moses to give you all the land, and to destroy all the inhabitants of the land from before you, therefore we were sore afraid of our lives because of you, and have done this thing."

Joshua 10:2: "That they feared greatly, because Gibeon was a great city, as one of the royal cities, and because it was greater than Ai, and all the men thereof were mighty."

Joshua 10:14: "And there was no day like that before it or after it, that the LORD hearkened unto the voice of a man: for the LORD fought for Israel."

Joshua 10:17: "And it was told Joshua, saying, The five kings are found hid in a cave at Makkedah."

Joshua 11:10: "And Joshua at that time turned back, and took Hazor, and smote the king thereof with the sword: for Hazor beforetime was the head of all those kingdoms."

Joshua 11:11: "And they smote all the souls that were therein with the edge of the sword, utterly destroying them: there was not any left to breathe: and he burnt Hazor with fire."

Joshua 11:19: "There was not a city that made peace with the children of Israel, save the Hivites the inhabitants of Gibeon: all other they took in battle."

Joshua 11:20: "For it was of the LORD to harden their hearts, that they should come against Israel in battle, that he might destroy them utterly, and that they might have no favour, but that he might destroy them, as the LORD commanded Moses."

Joshua 11:22: "There was none of the Anakims left in the land of the children of Israel: only in Gaza, in Gath, and in Ashdod, there remained."

Joshua 12:4: "And the coast of Og king of Bashan, which was of the remnant of the giants, that dwelt at Ashtaroth and at Edrei,"

Joshua 13:1: "Now Joshua was old and stricken in years; and the LORD said unto him, Thou art old and stricken in years, and there remaineth yet very much land to be possessed."

Joshua 13:16: "And their coast was from Aroer, that is on the bank of the river Arnon, and the city that is in the midst of the river, and all the plain by Medeba;"

Joshua 13:23: "And the border of the children of Reuben was Jordan, and the border thereof. This was the inheritance of the children of Reuben after their families, the cities and the villages thereof."

Joshua 13:25: "And their coast was Jazer, and all the cities of Gilead, and half the land of the children of Ammon, unto Aroer that is before Rabbah;"

Joshua 13:29: "And Moses gave inheritance unto the half tribe of Manasseh: and this was the possession of the half tribe of the children of Manasseh by their families."

Joshua 13:30: "And their coast was from Mahanaim, all Bashan, all the kingdom of Og king of Bashan, and all the towns of Jair, which are in Bashan, threescore cities:"

Joshua 13:33: "But unto the tribe of Levi Moses gave not any inheritance: the LORD God of Israel was their inheritance, as he said unto them."

Joshua 14:2: "By lot was their inheritance, as the LORD commanded by the hand of Moses, for the nine tribes, and for the half tribe."

Joshua 14:7: "Forty years old was I when Moses the servant of the LORD sent me from Kadeshbarnea to spy out the land; and I brought him word again as it was in mine heart."

Joshua 14:11: "As yet I am as strong this day as I was in the day that Moses sent me: as my strength was then, even so is my strength now, for war, both to go out, and to come in."

Joshua 14:15: "And the name of Hebron before was Kirjatharba; which Arba was a great man among the Anakims. And the land had rest from war."

Joshua 15:1: "This then was the lot of the tribe of the children of Judah by their families; even to the border of Edom the wilderness of Zin southward was the uttermost part of the south coast."

Joshua 15:2: "And their south border was from the shore of the salt sea, from the bay that looketh southward:"

Joshua 15:5: "And the east border was the salt sea, even unto the end of Jordan. And their border in the north quarter was from the bay of the sea at the uttermost part of Jordan:"

Joshua 15:9: "And the border was drawn from the top of the hill unto the fountain of the water of Nephtoah, and went out to the cities of mount Ephron; and the border was drawn to Baalah, which is Kirjathjearim:"

Joshua 15:11: "And the border went out unto the side of Ekron northward: and the border was drawn to Shicron, and passed along to mount Baalah, and went out unto Jabneel; and the goings out of the border were at the sea."

Joshua 15:12: "And the west border was to the great sea, and the coast thereof. This is the coast of the children of Judah round about according to their families."

Joshua 15:15: "And he went up thence to the inhabitants of Debir: and the name of Debir before was Kirjathsepher."

Joshua 16:5: "And the border of the children of Ephraim according to their families was thus: even the border of their inheritance on the east side was Atarothaddar, unto Bethhoron the upper;"

Joshua 17:1: "There was also a lot for the tribe of Manasseh; for he was the firstborn of Joseph; to wit, for Machir the firstborn of Manasseh, the father of Gilead: because he was a man of war, therefore he had Gilead and Bashan."

Joshua 17:2: "There was also a lot for the rest of the children of Manasseh by their families; for the children of Abiezer, and for the children of Helek, and for the children of Asriel, and for the children of Shechem, and for the children of Hopher, and for the children of Shemida: these were the male children of Manasseh the son of Joseph by their families."

Joshua 17:7: "And the coast of Manasseh was from Asher to Michmethah, that lieth before Shechem; and the border went along on the right hand unto the inhabitants of Entappuah."

Joshua 17:9: "And the coast descended unto the river Kanah, southward of the river: these cities of Ephraim are among the cities of Manasseh: the coast of Manasseh also was on the north side of the river, and the outgoings of it were at the sea:"

Joshua 17:10: "Southward it was Ephraim's, and northward it was Manasseh's, and the sea is his

border; and they met together in Asher on the north, and in Issachar on the east."

Joshua 18:1: "And the whole congregation of the children of Israel assembled together at Shiloh, and set up the tabernacle of the congregation there. And the land was subdued before them."

Joshua 18:12: "And their border on the north side was from Jordan; and the border went up to the side of Jericho on the north side, and went up through the mountains westward; and the goings out thereof were at the wilderness of Bethaven."

Joshua 18:14: "And the border was drawn thence, and compassed the corner of the sea southward, from the hill that lieth before Bethhoron southward; and the goings out thereof were at Kirjathbaal, which is Kirjathjearim, a city of the children of Judah: this was the west quarter."

Joshua 18:15: "And the south quarter was from the end of Kirjathjearim, and the border went out on the west, and went out to the well of waters of Nephtoah:"

Joshua 18:17: "And was drawn from the north, and went forth to Enshemesh, and went forth toward Geliloth, which is over against the going up of Adummim, and descended to the stone of Bohan the son of Reuben,"

Joshua 18:19: "And the border passed along to the side of Bethhoglah northward: and the outgoings of the border were at the north bay of the salt sea at the south end of Jordan: this was the south coast."

Joshua 18:20: "And Jordan was the border of it on the east side. This was the inheritance of the children of Benjamin, by the coasts thereof round about, according to their families."

Joshua 19:1: "And the second lot came forth to Simeon, even for the tribe of the children of Simeon according to their families: and their inheritance was within the inheritance of the children of Judah."

Joshua 19:9: "Out of the portion of the children of Judah was the inheritance of the children of Simeon: for the part of the children of Judah was too much for them: therefore the children of Simeon had their inheritance within the inheritance of them."

Joshua 19:10: "And the third lot came up for the children of Zebulun according to their families: and the border of their inheritance was unto Sarid:"

Joshua 19:18: "And their border was toward Jezreel, and Chesulloth, and Shunem,"

Joshua 19:25: "And their border was Helkath, and Hali, and Beten, and Achshaph,"

Joshua 19:33: "And their coast was from Heleph, from Allon to Zaanannim, and Adami, Nekeb, and Jabneel, unto Lakum; and the outgoings thereof were at Jordan:"

Joshua 19:41: "And the coast of their inheritance was Zorah, and Eshtaol, and Irshemesh,"

Joshua 21:10: "Which the children of Aaron, being of the families of the Kohathites, who were of the children of Levi, had: for theirs was the first lot."

Joshua 22:14: "And with him ten princes, of each chief house a prince throughout all the tribes of Israel; and each one was an head of the house of their fathers among the thousands of Israel."

Joshua 22:17: "Is the iniquity of Peor too little for us, from which we are not cleansed until this day, although there was a plague in the congregation of the LORD,"

Joshua 24:26: "And Joshua wrote these words in the book of the law of God, and took a great stone, and set it up there under an oak, that was by the sanctuary of the LORD."

Joshua 24:33: "And Eleazar the son of Aaron died; and they buried him in a hill that pertained to Phinehas his son, which was given him in mount Ephraim."

Judges 1:10: "And Judah went against the Canaanites that dwelt in Hebron: (now the name of Hebron before was Kirjatharba:) and they slew Sheshai, and Ahiman, and Talmi."

Judges 1:11: "And from thence he went against the inhabitants of Debir: and the name of Debir before was Kirjathsepher:"

Judges 1:17: "And Judah went with Simeon his brother, and they slew the Canaanites that inhabited Zephath, and utterly destroyed it. And the name of the city was called Hormah."

Judges 1:19: "And the LORD was with Judah; and he drave out the inhabitants of the mountain; but could not drive out the inhabitants of the valley, because they had chariots of iron."

Judges 1:22: "And the house of Joseph, they also went up against Bethel: and the LORD was with them."

Judges 1:23: "And the house of Joseph sent to descry Bethel. (Now the name of the city before was Luz.)"

Judges 1:28: "And it came to pass, when Israel was strong, that they put the Canaanites to tribute, and did not utterly drive them out."

Judges 1:36: "And the coast of the Amorites was from the going up to Akkrabbim, from the rock, and upward."

Judges 2:14: "And the anger of the LORD was hot against Israel, and he delivered them into the hands of spoilers that spoiled them, and he sold them into the hands of their enemies round about, so that they could not any longer stand before their enemies."

Judges 2:15: "Whithersoever they went out, the hand of the LORD was against them for evil, as the LORD had said, and as the LORD had sworn unto them: and they were greatly distressed."

Judges 2:18: "And when the LORD raised them up judges, then the LORD was with the judge, and delivered them out of the hand of their enemies all the days of the judge: for it repented the LORD because of their groanings by reason of them that oppressed them and vexed them."

Judges 2:19: "And it came to pass, when the judge was dead, that they returned, and corrupted themselves more than their fathers, in following other gods to serve them, and to bow down unto them; they ceased not from their own doings, nor from their stubborn way."

Judges 2:20: "And the anger of the LORD was hot against Israel; and he said, Because that this people hath transgressed my covenant which I commanded their fathers, and have not hearkened unto my voice;"

Judges 3:8: "Therefore the anger of the LORD was hot against Israel, and he sold them into the hand of Chushanrishathaim king of Mesopotamia: and the children of Israel served Chushanrishathaim eight years."

Judges 3:17: "And he brought the present unto Eglon king of Moab: and Eglon was a very fat man."

Judges 3:20: "And Ehud came unto him; and he was sitting in a summer parlour, which he had for himself alone. And Ehud said, I have a message from God unto thee. And he arose out of his seat."

Judges 3:24: "When he was gone out, his servants came; and when they saw that, behold, the doors of the parlour were locked, they said, Surely he covereth his feet in his summer chamber."

Judges 3:25: "And they tarried till they were ashamed: and, behold, he opened not the doors of the parlour; therefore they took a key, and opened them: and, behold, their lord was fallen down dead on the earth."

Judges 3:27: "And it came to pass, when he was come, that he blew a trumpet in the mountain of Ephraim, and the children of Israel went down with him from the mount, and he before them."

Judges 3:30: "So Moab was subdued that day under the hand of Israel. And the land had rest fourscore years."

Judges 3:31: "And after him was Shamgar the son of Anath, which slew of the Philistines six hundred men with an ox goad: and he also delivered Israel."

Judges 4:1: "And the children of Israel again did evil in the sight of the LORD, when Ehud was dead."

Judges 4:2: "And the LORD sold them into the hand of Jabin king of Canaan, that reigned in Hazor; the captain of whose host was Sisera, which dwelt in Harosheth of the Gentiles."

Judges 4:11: "Now Heber the Kenite, which was of the children of Hobab the father in law of Moses, had severed himself from the Kenites, and pitched his tent unto the plain of Zaanaim, which is by Kedesh."

Judges 4:12: "And they shewed Sisera that Barak the son of Abinoam was gone up to mount Tabor."

Judges 4:16: "But Barak pursued after the chariots, and after the host, unto Harosheth of the Gentiles: and all the host of Sisera fell upon the edge of the sword; and there was not a man left."

Judges 4:17: "Howbeit Sisera fled away on his feet to the tent of Jael the wife of Heber the Kenite: for there was peace between Jabin the king of Hazor and the house of Heber the Kenite."

Judges 4:21: "Then Jael Heber's wife took a nail of the tent, and took an hammer in her hand, and went softly unto him, and smote the nail into his temples, and fastened it into the ground: for he was fast asleep and weary. So he died."

Judges 4:22: "And, behold, as Barak pursued Sisera, Jael came out to meet him, and said unto him, Come, and I will shew thee the man whom thou seekest. And when he came into her tent, behold, Sisera lay dead, and the nail was in his temples."

Judges 5:8: "They chose new gods; then was war in the gates: was there a shield or spear seen among forty thousand in Israel?"

Judges 5:14: "Out of Ephraim was there a root of them against Amalek; after thee, Benjamin, among thy people; out of Machir came down governors, and out of Zebulun they that handle the pen of the writer."

Judges 5:15: "And the princes of Issachar were with Deborah; even Issachar, and also Barak: he was sent on foot into the valley. For the divisions of Reuben there were great thoughts of heart."

Judges 6:3: "And so it was, when Israel had sown, that the Midianites came up, and the Amalekites, and the children of the east, even they came up against them;"

Judges 6:6: "And Israel was greatly impoverished because of the Midianites; and the children of Israel cried unto the LORD."

Judges 6:11: "And there came an angel of the LORD, and sat under an oak which was in Ophrah, that pertained unto Joash the Abiezrite: and his son Gideon threshed wheat by the winepress, to hide it from the Midianites."

Judges 6:21: "Then the angel of the LORD put forth the end of the staff that was in his hand, and touched the flesh and the unleavened cakes; and there rose up fire out of the rock, and consumed the flesh and the unleavened cakes. Then the angel of the LORD departed out of his sight."

Judges 6:22: "And when Gideon perceived that he was an angel of the LORD, Gideon said, Alas, O LORD God! for because I have seen an angel of the LORD face to face."

Judges 6:27: "Then Gideon took ten men of his servants, and did as the LORD had said unto him: and so it was, because he feared his father's household, and the men of the city, that he could not do it by day, that he did it by night."

Judges 6:28: "And when the men of the city arose early in the morning, behold, the altar of Baal was cast down, and the grove was cut down that was by it, and the second bullock was offered upon the altar that was built."

Judges 6:30: "Then the men of the city said unto Joash, Bring out thy son, that he may die: because he hath cast down the altar of Baal, and because he hath cut down the grove that was by it."

Judges 6:34: "But the Spirit of the LORD came upon Gideon, and he blew a trumpet; and Abiezer was gathered after him."

Judges 6:35: "And he sent messengers throughout all Manasseh; who also was gathered after him: and he sent messengers unto Asher, and unto Zebulun, and unto Naphtali; and they came up to meet them."

Judges 6:38: "And it was so: for he rose up early on the morrow, and thrust the fleece together, and wringed the dew out of the fleece, a bowl full of water."

Judges 6:40: "And God did so that night: for it was dry upon the fleece only, and there was dew on all the ground."

Judges 7:8: "So the people took victuals in their hand, and their trumpets: and he sent all the rest of Israel every man unto his tent, and retained those three hundred men: and the host of Midian was beneath him in the valley."

Judges 7:13: "And when Gideon was come, behold, there was a man that told a dream unto his fellow, and said, Behold, I dreamed a dream, and, lo, a cake of barley bread tumbled into the host of Midian, and came unto a tent, and smote it that it fell, and overturned it, that the tent lay along."

Judges 7:15: "And it was so, when Gideon heard the telling of the dream, and the interpretation thereof, that he worshipped, and returned into the host of Israel, and said, Arise; for the LORD hath delivered into your hand the host of Midian."

Judges 8:3: "God hath delivered into your hands the princes of Midian, Oreb and Zeeb: and what was I able to do in comparison of you? Then their anger was abated toward him, when he had said that."

Judges 8:11: "And Gideon went up by the way of them that dwelt in tents on the east of Nobah and Jogbehah, and smote the host; for the host was secure."

Judges 8:13: "And Gideon the son of Joash returned from battle before the sun was up,"

Judges 8:20: "And he said unto Jether his firstborn, Up, and slay them. But the youth drew not his sword: for he feared, because he was yet a youth."

Judges 8:26: "And the weight of the golden earrings that he requested was a thousand and seven hundred shekels of gold; beside ornaments, and collars, and purple raiment that was on the kings of Midian, and beside the chains that were about their camels' necks."

Judges 8:28: "Thus was Midian subdued before the children of Israel, so that they lifted up their heads no more. And the country was in quietness forty years in the days of Gideon."

Judges 8:31: "And his concubine that was in Shechem, she also bare him a son, whose name he called Abimelech."

Judges 8:32: "And Gideon the son of Joash died in a good old age, and was buried in the sepulchre of Joash his father, in Ophrah of the Abiezrites."

Judges 8:33: "And it came to pass, as soon as Gideon was dead, that the children of Israel turned again, and went a whoring after Baalim, and made Baalberith their god."

Judges 9:5: "And he went unto his father's house at Ophrah, and slew his brethren the sons of Jerubbaal, being threescore and ten persons, upon one stone: notwithstanding yet Jotham the youngest son of Jerubbaal was left; for he hid himself."

Judges 9:6: "And all the men of Shechem gathered together, and all the house of Millo, and went, and made Abimelech king, by the plain of the pillar that was in Shechem."

Judges 9:25: "And the men of Shechem set liers in wait for him in the top of the mountains, and they robbed all that came along that way by them: and it was told Abimelech."

Judges 9:30: "And when Zebul the ruler of the city heard the words of Gaal the son of Ebed, his anger was kindled."

Judges 9:44: "And Abimelech, and the company that was with him, rushed forward, and stood in the entering of the gate of the city: and the two other companies ran upon all the people that were in the fields, and slew them."

Judges 9:45: "And Abimelech fought against the city all that day; and he took the city, and slew the people that was therein, and beat down the city, and sowed it with salt."

Judges 9:47: "And it was told Abimelech, that all the men of the tower of Shechem were gathered together."

Judges 9:51: "But there was a strong tower within the city, and thither fled all the men and women, and all they of the city, and shut it to them, and gat them up to the top of the tower."

Judges 9:55: "And when the men of Israel saw that Abimelech was dead, they departed every man unto his place."

Judges 10:2: "And he judged Israel twenty and three years, and died, and was buried in Shamir."

Judges 10:5: "And Jair died, and was buried in Camon."

Judges 10:7: "And the anger of the LORD was hot against Israel, and he sold them into the hands of the Philistines, and into the hands of the children of Ammon."

Judges 10:9: "Moreover the children of Ammon passed over Jordan to fight also against Judah, and against Benjamin, and against the house of Ephraim; so that Israel was sore distressed."

Judges 10:16: "And they put away the strange gods from among them, and served the LORD: and his soul was grieved for the misery of Israel."



Judges 11:1: "Now Jephthah the Gileadite was a mighty man of valour, and he was the son of an harlot: and Gilead begat Jephthah."

Judges 11:5: "And it was so, that when the children of Ammon made war against Israel, the elders of Gilead went to fetch Jephthah out of the land of Tob:"

Judges 11:18: "Then they went along through the wilderness, and compassed the land of Edom, and the land of Moab, and came by the east side of the land of Moab, and pitched on the other side of Arnon, but came not within the border of Moab: for Arnon was the border of Moab."

Judges 11:34: "And Jephthah came to Mizpeh unto his house, and, behold, his daughter came out to meet him with timbrels and with dances: and she was his only child; beside her he had neither son nor daughter."

Judges 11:39: "And it came to pass at the end of two months, that she returned unto her father, who did with her according to his vow which he had vowed: and she knew no man. And it was a custom in Israel,"

Judges 12:5: "And the Gileadites took the passages of Jordan before the Ephraimites: and it was so, that when those Ephraimites which were escaped said, Let me go over; that the men of Gilead said unto him, Art thou an Ephraimite? If he said, Nay;"

Judges 12:7: "And Jephthah judged Israel six years. Then died Jephthah the Gileadite, and was buried in one of the cities of Gilead."

Judges 12:10: "Then died Ibzan, and was buried at Bethlehem."

Judges 12:12: "And Elon the Zebulonite died, and was buried in Aijalon in the country of Zebulun."

Judges 12:15: "And Abdon the son of Hillel the Pirathonite died, and was buried in Pirathon in the land of Ephraim, in the mount of the Amalekites."

Judges 13:2: "And there was a certain man of Zorah, of the family of the Danites, whose name was Manoah; and his wife was barren, and bare not."

Judges 13:6: "Then the woman came and told her husband, saying, A man of God came unto me, and his countenance was like the countenance of an angel of God, very terrible: but I asked him not whence he was, neither told he me his name:"

Judges 13:9: "And God hearkened to the voice of Manoah; and the angel of God came again unto the woman as she sat in the field: but Manoah her husband was not with her."

Judges 13:16: "And the angel of the LORD said unto Manoah, Though thou detain me, I will not eat of thy bread: and if thou wilt offer a burnt offering, thou must offer it unto the LORD. For Manoah knew not that he was an angel of the LORD."

Judges 13:21: "But the angel of the LORD did no more appear to Manoah and to his wife. Then Manoah knew that he was an angel of the LORD."

Judges 14:4: "But his father and his mother knew not that it was of the LORD, that he sought an occasion against the Philistines: for at that time the Philistines had dominion over Israel."

Judges 14:8: "And after a time he returned to take her, and he turned aside to see the carcase of the lion: and, behold, there was a swarm of bees and honey in the carcase of the lion."

Judges 14:19: "And the Spirit of the LORD came upon him, and he went down to Ashkelon, and slew thirty men of them, and took their spoil, and gave change of garments unto them which expounded the riddle. And his anger was kindled, and he went up to his father's house."

Judges 14:20: "But Samson's wife was given to his companion, whom he had used as his friend."

Judges 15:14: "And when he came unto Lehi, the Philistines shouted against him: and the Spirit of the LORD came mightily upon him, and the cords that were upon his arms became as flax that was burnt with fire, and his bands loosed from off his hands."

Judges 15:18: "And he was sore athirst, and called on the LORD, and said, Thou hast given this great deliverance into the hand of thy servant: and now shall I die for thirst, and fall into the hand of the uncircumcised?"

Judges 15:19: "But God clave an hollow place that was in the jaw, and there came water thereout; and when he had drunk, his spirit came again, and he revived: wherefore he called the name thereof

Enhakkore, which is in Lehi unto this day."

Judges 16:2: "And it was told the Gazites, saying, Samson is come hither. And they compassed him in, and laid wait for him all night in the gate of the city, and were quiet all the night, saying, In the morning, when it is day, we shall kill him."

Judges 16:4: "And it came to pass afterward, that he loved a woman in the valley of Sorek, whose name was Delilah."

Judges 16:9: "Now there were men lying in wait, abiding with her in the chamber. And she said unto him, The Philistines be upon thee, Samson. And he brake the withs, as a thread of tow is broken when it toucheth the fire. So his strength was not known."

Judges 16:16: "And it came to pass, when she pressed him daily with her words, and urged him, so that his soul was vexed unto death;"

Judges 16:20: "And she said, The Philistines be upon thee, Samson. And he awoke out of his sleep, and said, I will go out as at other times before, and shake myself. And he wist not that the LORD was departed from him."

Judges 16:22: "Howbeit the hair of his head began to grow again after he was shaven."

Judges 16:27: "Now the house was full of men and women; and all the lords of the Philistines were there; and there were upon the roof about three thousand men and women, that beheld while Samson made sport."

Judges 16:29: "And Samson took hold of the two middle pillars upon which the house stood, and on which it was borne up, of the one with his right hand, and of the other with his left."

Judges 17:1: "And there was a man of mount Ephraim, whose name was Micah."

Judges 17:6: "In those days there was no king in Israel, but every man did that which was right in his own eyes."

Judges 17:7: "And there was a young man out of Bethlehemjudah of the family of Judah, who was a Levite, and he sojourned there."

Judges 17:11: "And the Levite was content to dwell with the man; and the young man was unto him as one of his sons."

Judges 17:12: "And Micah consecrated the Levite; and the young man became his priest, and was in the house of Micah."

Judges 18:1: "In those days there was no king in Israel: and in those days the tribe of the Danites sought them an inheritance to dwell in; for unto that day all their inheritance had not fallen unto them among the tribes of Israel."

Judges 18:7: "Then the five men departed, and came to Laish, and saw the people that were therein, how they dwelt careless, after the manner of the Zidonians, quiet and secure; and there was no magistrate in the land, that might put them to shame in any thing; and they were far from the Zidonians, and had no business with any man."

Judges 18:20: "And the priest's heart was glad, and he took the ephod, and the teraphim, and the graven image, and went in the midst of the people."

Judges 18:28: "And there was no deliverer, because it was far from Zidon, and they had no business with any man; and it was in the valley that lieth by Bethrehob. And they built a city, and dwelt therein."

Judges 18:29: "And they called the name of the city Dan, after the name of Dan their father, who was born unto Israel: howbeit the name of the city was Laish at the first."

Judges 18:31: "And they set them up Micah's graven image, which he made, all the time that the house of God was in Shiloh."

Judges 19:1: "And it came to pass in those days, when there was no king in Israel, that there was a certain Levite sojourning on the side of mount Ephraim, who took to him a concubine out of Bethlehemjudah."

Judges 19:2: "And his concubine played the whore against him, and went away from him unto her father's house to Bethlehemjudah, and was there four whole months."

Judges 19:10: "But the man would not tarry that night, but he rose up and departed, and came over against Jebus, which is Jerusalem; and there were with him two asses saddled, his concubine also was with him."

Judges 19:11: "And when they were by Jebus, the day was far spent; and the servant said unto his master, Come, I pray thee, and let us turn in into this city of the Jebusites, and lodge in it."

Judges 19:15: "And they turned aside thither, to go in and to lodge in Gibeah: and when he went in, he sat him down in a street of the city: for there was no man that took them into his house to lodging."

Judges 19:16: "And, behold, there came an old man from his work out of the field at even, which was also of mount Ephraim; and he sojourned in Gibeah: but the men of the place were Benjamites."

Judges 19:26: "Then came the woman in the dawning of the day, and fell down at the door of the man's house where her lord was, till it was light."

Judges 19:27: "And her lord rose up in the morning, and opened the doors of the house, and went out to go his way: and, behold, the woman his concubine was fallen down at the door of the house, and her hands were upon the threshold."

Judges 19:29: "And when he was come into his house, he took a knife, and laid hold on his concubine, and divided her, together with her bones, into twelve pieces, and sent her into all the coasts of Israel."

Judges 19:30: "And it was so, that all that saw it said, There was no such deed done nor seen from the day that the children of Israel came up out of the land of Egypt unto this day: consider of it, take advice, and speak your minds."

Judges 20:1: "Then all the children of Israel went out, and the congregation was gathered together as one man, from Dan even to Beersheba, with the land of Gilead, unto the LORD in Mizpeh."

Judges 20:3: "(Now the children of Benjamin heard that the children of Israel were gone up to Mizpeh.) Then said the children of Israel, Tell us, how was this wickedness?"

Judges 20:4: "And the Levite, the husband of the woman that was slain, answered and said, I came into Gibeah that belongeth to Benjamin, I and my concubine, to lodge."

Judges 20:27: "And the children of Israel enquired of the LORD, (for the ark of the covenant of God was there in those days,"

Judges 20:34: "And there came against Gibeah ten thousand chosen men out of all Israel, and the battle was sore: but they knew not that evil was near them."

Judges 20:38: "Now there was an appointed sign between the men of Israel and the liers in wait, that they should make a great flame with smoke rise up out of the city."

Judges 20:41: "And when the men of Israel turned again, the men of Benjamin were amazed: for they saw that evil was come upon them."

Judges 21:25: "In those days there was no king in Israel: every man did that which was right in his own eyes."

Ruth 1:1: "Now it came to pass in the days when the judges ruled, that there was a famine in the land. And a certain man of Bethlehemjudah went to sojourn in the country of Moab, he, and his wife, and his two sons."

Ruth 1:2: "And the name of the man was Elimelech, and the name of his wife Naomi, and the name of his two sons Mahlon and Chilion, Ephrathites of Bethlehemjudah. And they came into the country of Moab, and continued there."

Ruth 1:3: "And Elimelech Naomi's husband died; and she was left, and her two sons."

Ruth 1:4: "And they took them wives of the women of Moab; the name of the one was Orpah, and the name of the other Ruth: and they dwelled there about ten years."

Ruth 1:5: "And Mahlon and Chilion died also both of them; and the woman was left of her two sons and her husband."

Ruth 1:7: "Wherefore she went forth out of the place where she was, and her two daughters in law

with her; and they went on the way to return unto the land of Judah."

Ruth 1:18: "When she saw that she was stedfastly minded to go with her, then she left speaking unto her."

Ruth 1:19: "So they two went until they came to Bethlehem. And it came to pass, when they were come to Bethlehem, that all the city was moved about them, and they said, Is this Naomi?"

Ruth 2:1: "And Naomi had a kinsman of her husband's, a mighty man of wealth, of the family of Elimelech; and his name was Boaz."

Ruth 2:3: "And she went, and came, and gleaned in the field after the reapers: and her hap was to light on a part of the field belonging unto Boaz, who was of the kindred of Elimelech."

Ruth 2:5: "Then said Boaz unto his servant that was set over the reapers, Whose damsel is this?"

Ruth 2:6: "And the servant that was set over the reapers answered and said, It is the Moabitish damsel that came back with Naomi out of the country of Moab:"

Ruth 2:14: "And Boaz said unto her, At mealtime come thou hither, and eat of the bread, and dip thy morsel in the vinegar. And she sat beside the reapers: and he reached her parched corn, and she did eat, and was sufficed, and left."

Ruth 2:15: "And when she was risen up to glean, Boaz commanded his young men, saying, Let her glean even among the sheaves, and reproach her not:"

Ruth 2:17: "So she gleaned in the field until even, and beat out that she had gleaned: and it was about an ephah of barley."

Ruth 2:18: "And she took it up, and went into the city: and her mother in law saw what she had gleaned: and she brought forth, and gave to her that she had reserved after she was sufficed."

Ruth 3:7: "And when Boaz had eaten and drunk, and his heart was merry, he went to lie down at the end of the heap of corn: and she came softly, and uncovered his feet, and laid her down."

Ruth 3:8: "And it came to pass at midnight, that the man was afraid, and turned himself: and, behold, a woman lay at his feet."

Ruth 4:3: "And he said unto the kinsman, Naomi, that is come again out of the country of Moab, selleth a parcel of land, which was our brother Elimelech's:"

Ruth 4:7: "Now this was the manner in former time in Israel concerning redeeming and concerning changing, for to confirm all things; a man plucked off his shoe, and gave it to his neighbour: and this was a testimony in Israel."

Ruth 4:9: "And Boaz said unto the elders, and unto all the people, Ye are witnesses this day, that I have bought all that was Elimelech's, and all that was Chilion's and Mahlon's, of the hand of Naomi."

Ruth 4:13: "So Boaz took Ruth, and she was his wife: and when he went in unto her, the LORD gave her conception, and she bare a son."

1 Samuel 1:1: "Now there was a certain man of Ramathaimzophim, of mount Ephraim, and his name was Elkanah, the son of Jeroham, the son of Elihu, the son of Tohu, the son of Zuph, an Ephrathite:"

1 Samuel 1:2: "And he had two wives; the name of the one was Hannah, and the name of the other Peninnah: and Peninnah had children, but Hannah had no children."

1 Samuel 1:4: "And when the time was that Elkanah offered, he gave to Peninnah his wife, and to all her sons and her daughters, portions:"

1 Samuel 1:10: "And she was in bitterness of soul, and prayed unto the LORD, and wept sore."

1 Samuel 1:13: "Now Hannah, she spake in her heart; only her lips moved, but her voice was not heard: therefore Eli thought she had been drunken."

1 Samuel 1:18: "And she said, Let thine handmaid find grace in thy sight. So the woman went her way, and did eat, and her countenance was no more sad."

1 Samuel 1:20: "Wherefore it came to pass, when the time was come about after Hannah had conceived, that she bare a son, and called his name Samuel, saying, Because I have asked him of the LORD."

1 Samuel 1:24: "And when she had weaned him, she took him up with her, with three bullocks, and one ephah of flour, and a bottle of wine, and brought him unto the house of the LORD in Shiloh: and the child was young."

1 Samuel 2:13: "And the priest's custom with the people was, that, when any man offered sacrifice, the priest's servant came, while the flesh was in seething, with a fleshhook of three teeth in his hand;"

1 Samuel 2:17: "Wherefore the sin of the young men was very great before the LORD: for men abhorred the offering of the LORD."

1 Samuel 2:22: "Now Eli was very old, and heard all that his sons did unto all Israel; and how they lay with the women that assembled at the door of the tabernacle of the congregation."

1 Samuel 2:26: "And the child Samuel grew on, and was in favour both with the LORD, and also with men."

1 Samuel 3:1: "And the child Samuel ministered unto the LORD before Eli. And the word of the LORD was precious in those days; there was no open vision."

1 Samuel 3:2: "And it came to pass at that time, when Eli was laid down in his place, and his eyes began to wax dim, that he could not see;"

1 Samuel 3:3: "And ere the lamp of God went out in the temple of the LORD, where the ark of God was, and Samuel was laid down to sleep;"

1 Samuel 3:7: "Now Samuel did not yet know the LORD, neither was the word of the LORD yet revealed unto him."

1 Samuel 3:19: "And Samuel grew, and the LORD was with him, and did let none of his words fall to the ground."

1 Samuel 3:20: "And all Israel from Dan even to Beersheba knew that Samuel was established to be a prophet of the LORD."

1 Samuel 4:2: "And the Philistines put themselves in array against Israel: and when they joined battle, Israel was smitten before the Philistines: and they slew of the army in the field about four thousand men."

1 Samuel 4:6: "And when the Philistines heard the noise of the shout, they said, What meaneth the noise of this great shout in the camp of the Hebrews? And they understood that the ark of the LORD was come into the camp."

1 Samuel 4:10: "And the Philistines fought, and Israel was smitten, and they fled every man into his tent: and there was a very great slaughter; for there fell of Israel thirty thousand footmen."

1 Samuel 4:11: "And the ark of God was taken; and the two sons of Eli, Hophni and Phinehas, were slain."

1 Samuel 4:15: "Now Eli was ninety and eight years old; and his eyes were dim, that he could not see."

1 Samuel 4:18: "And it came to pass, when he made mention of the ark of God, that he fell from off the seat backward by the side of the gate, and his neck brake, and he died: for he was an old man, and heavy. And he had judged Israel forty years."

1 Samuel 4:19: "And his daughter in law, Phinehas' wife, was with child, near to be delivered: and when she heard the tidings that the ark of God was taken, and that her father in law and her husband were dead, she bowed herself and travailed; for her pains came upon her."

1 Samuel 4:21: "And she named the child Ichabod, saying, The glory is departed from Israel: because the ark of God was taken, and because of her father in law and her husband."

1 Samuel 5:3: "And when they of Ashdod arose early on the morrow, behold, Dagon was fallen upon his face to the earth before the ark of the LORD. And they took Dagon, and set him in his place again."

1 Samuel 5:4: "And when they arose early on the morrow morning, behold, Dagon was fallen upon his face to the ground before the ark of the LORD; and the head of Dagon and both the palms of his hands were cut off upon the threshold; only the stump of Dagon was left to him."

1 Samuel 5:6: "But the hand of the LORD was heavy upon them of Ashdod, and he destroyed them, and smote them with emerods, even Ashdod and the coasts thereof."

1 Samuel 5:7: "And when the men of Ashdod saw that it was so, they said, The ark of the God of Israel shall not abide with us: for his hand is sore upon us, and upon Dagon our god."

1 Samuel 5:9: "And it was so, that, after they had carried it about, the hand of the LORD was against the city with a very great destruction: and he smote the men of the city, both small and great, and they had emerods in their secret parts."

1 Samuel 5:11: "So they sent and gathered together all the lords of the Philistines, and said, Send away the ark of the God of Israel, and let it go again to his own place, that it slay us not, and our people: for there was a deadly destruction throughout all the city; the hand of God was very heavy there."

1 Samuel 6:1: "And the ark of the LORD was in the country of the Philistines seven months."

1 Samuel 6:4: "Then said they, What shall be the trespass offering which we shall return to him? They answered, Five golden emerods, and five golden mice, according to the number of the lords of the Philistines: for one plague was on you all, and on your lords."

1 Samuel 6:9: "And see, if it goeth up by the way of his own coast to Bethshemesh, then he hath done us this great evil: but if not, then we shall know that it is not his hand that smote us: it was a chance that happened to us."

1 Samuel 6:14: "And the cart came into the field of Joshua, a Bethshemite, and stood there, where there was a great stone: and they clave the wood of the cart, and offered the kine a burnt offering unto the LORD."

1 Samuel 6:15: "And the Levites took down the ark of the LORD, and the coffer that was with it, wherein the jewels of gold were, and put them on the great stone: and the men of Bethshemesh offered burnt offerings and sacrificed sacrifices the same day unto the LORD."

1 Samuel 7:2: "And it came to pass, while the ark abode in Kirjathjearim, that the time was long; for it was twenty years: and all the house of Israel lamented after the LORD."

1 Samuel 7:10: "And as Samuel was offering up the burnt offering, the Philistines drew near to battle against Israel: but the LORD thundered with a great thunder on that day upon the Philistines, and discomfited them; and they were smitten before Israel."

1 Samuel 7:13: "So the Philistines were subdued, and they came no more into the coast of Israel: and the hand of the LORD was against the Philistines all the days of Samuel."

1 Samuel 7:14: "And the cities which the Philistines had taken from Israel were restored to Israel, from Ekron even unto Gath; and the coasts thereof did Israel deliver out of the hands of the Philistines. And there was peace between Israel and the Amorites."

1 Samuel 7:17: "And his return was to Ramah; for there was his house; and there he judged Israel; and there he built an altar unto the LORD."

1 Samuel 8:1: "And it came to pass, when Samuel was old, that he made his sons judges over Israel."

1 Samuel 8:2: "Now the name of his firstborn was Joel; and the name of his second, Abiah: they were judges in Beersheba."

1 Samuel 9:1: "Now there was a man of Benjamin, whose name was Kish, the son of Abiel, the son of Zeror, the son of Bechorath, the son of Aphiah, a Benjamite, a mighty man of power."

1 Samuel 9:2: "And he had a son, whose name was Saul, a choice young man, and a goodly: and there was not among the children of Israel a goodlier person than he: from his shoulders and upward he was higher than any of the people."

1 Samuel 9:5: "And when they were come to the land of Zuph, Saul said to his servant that was with him, Come, and let us return; lest my father leave caring for the asses, and take thought for us."

1 Samuel 9:9: "(Beforetime in Israel, when a man went to enquire of God, thus he spake, Come, and let us go to the seer: for he that is now called a Prophet was beforetime called a Seer.)"

1 Samuel 9:10: "Then said Saul to his servant, Well said; come, let us go. So they went unto the city

where the man of God was."

1 Samuel 9:24: "And the cook took up the shoulder, and that which was upon it, and set it before Saul. And Samuel said, Behold that which is left! set it before thee, and eat: for unto this time hath it been kept for thee since I said, I have invited the people. So Saul did eat with Samuel that day."

1 Samuel 10:9: "And it was so, that when he had turned his back to go from Samuel, God gave him another heart: and all those signs came to pass that day."

1 Samuel 10:20: "And when Samuel had caused all the tribes of Israel to come near, the tribe of Benjamin was taken."

1 Samuel 10:21: "When he had caused the tribe of Benjamin to come near by their families, the family of Matri was taken, and Saul the son of Kish was taken: and when they sought him, he could not be found."

1 Samuel 10:23: "And they ran and fetched him thence: and when he stood among the people, he was higher than any of the people from his shoulders and upward."

1 Samuel 11:6: "And the Spirit of God came upon Saul when he heard those tidings, and his anger was kindled greatly."

1 Samuel 11:11: "And it was so on the morrow, that Saul put the people in three companies; and they came into the midst of the host in the morning watch, and slew the Ammonites until the heat of the day: and it came to pass, that they which remained were scattered, so that two of them were not left together."

1 Samuel 12:8: "When Jacob was come into Egypt, and your fathers cried unto the LORD, then the LORD sent Moses and Aaron, which brought forth your fathers out of Egypt, and made them dwell in this place."

1 Samuel 12:12: "And when ye saw that Nahash the king of the children of Ammon came against you, ye said unto me, Nay; but a king shall reign over us: when the LORD your God was your king."

1 Samuel 12:15: "But if ye will not obey the voice of the LORD, but rebel against the commandment of the LORD, then shall the hand of the LORD be against you, as it was against your fathers."

1 Samuel 13:3: "And Jonathan smote the garrison of the Philistines that was in Geba, and the Philistines heard of it. And Saul blew the trumpet throughout all the land, saying, Let the Hebrews hear."

1 Samuel 13:4: "And all Israel heard say that Saul had smitten a garrison of the Philistines, and that Israel also was had in abomination with the Philistines. And the people were called together after Saul to Gilgal."

1 Samuel 13:7: "And some of the Hebrews went over Jordan to the land of Gad and Gilead. As for Saul, he was yet in Gilgal, and all the people followed him trembling."

1 Samuel 13:19: "Now there was no smith found throughout all the land of Israel: for the Philistines said, Lest the Hebrews make them swords or spears:"

1 Samuel 13:22: "So it came to pass in the day of battle, that there was neither sword nor spear found in the hand of any of the people that were with Saul and Jonathan: but with Saul and with Jonathan his son was there found."

1 Samuel 14:3: "And Ahiah, the son of Ahitub, Ichabod's brother, the son of Phinehas, the son of Eli, the LORD's priest in Shiloh, wearing an ephod. And the people knew not that Jonathan was gone."

1 Samuel 14:4: "And between the passages, by which Jonathan sought to go over unto the Philistines' garrison, there was a sharp rock on the one side, and a sharp rock on the other side: and the name of the one was Bozez, and the name of the other Seneh."

1 Samuel 14:5: "The forefront of the one was situate northward over against Michmash, and the other southward over against Gibeah."

1 Samuel 14:14: "And that first slaughter, which Jonathan and his armourbearer made, was about

twenty men, within as it were an half acre of land, which a yoke of oxen might plow."

1 Samuel 14:15: "And there was trembling in the host, in the field, and among all the people: the garrison, and the spoilers, they also trembled, and the earth quaked: so it was a very great trembling."

1 Samuel 14:18: "And Saul said unto Ahiah, Bring hither the ark of God. For the ark of God was at that time with the children of Israel."

1 Samuel 14:19: "And it came to pass, while Saul talked unto the priest, that the noise that was in the host of the Philistines went on and increased: and Saul said unto the priest, Withdraw thine hand."

1 Samuel 14:20: "And Saul and all the people that were with him assembled themselves, and they came to the battle: and, behold, every man's sword was against his fellow, and there was a very great discomfiture."

1 Samuel 14:25: "And all they of the land came to a wood; and there was honey upon the ground."

1 Samuel 14:27: "But Jonathan heard not when his father charged the people with the oath: wherefore he put forth the end of the rod that was in his hand, and dipped it in an honeycomb, and put his hand to his mouth; and his eyes were enlightened."

1 Samuel 14:35: "And Saul built an altar unto the LORD: the same was the first altar that he built unto the LORD."

1 Samuel 14:39: "For, as the LORD liveth, which saveth Israel, though it be in Jonathan my son, he shall surely die. But there was not a man among all the people that answered him."

1 Samuel 14:42: "And Saul said, Cast lots between me and Jonathan my son. And Jonathan was taken."

1 Samuel 14:43: "Then Saul said to Jonathan, Tell me what thou hast done. And Jonathan told him, and said, I did but taste a little honey with the end of the rod that was in mine hand, and, lo, I must die."

1 Samuel 14:50: "And the name of Saul's wife was Ahinoam, the daughter of Ahimaaz: and the name of the captain of his host was Abner, the son of Ner, Saul's uncle."

1 Samuel 14:51: "And Kish was the father of Saul; and Ner the father of Abner was the son of Abiel."

1 Samuel 14:52: "And there was sore war against the Philistines all the days of Saul: and when Saul saw any strong man, or any valiant man, he took him unto him."

1 Samuel 15:9: "But Saul and the people spared Agag, and the best of the sheep, and of the oxen, and of the fatlings, and the lambs, and all that was good, and would not utterly destroy them: but every thing that was vile and refuse, that they destroyed utterly."

1 Samuel 15:12: "And when Samuel rose early to meet Saul in the morning, it was told Samuel, saying, Saul came to Carmel, and, behold, he set him up a place, and is gone about, and passed on, and gone down to Gilgal."

1 Samuel 16:12: "And he sent, and brought him in. Now he was ruddy, and withal of a beautiful countenance, and goodly to look to. And the LORD said, Arise, anoint him: for this is he."

1 Samuel 16:23: "And it came to pass, when the evil spirit from God was upon Saul, that David took an harp, and played with his hand: so Saul was refreshed, and was well, and the evil spirit departed from him."

1 Samuel 17:3: "And the Philistines stood on a mountain on the one side, and Israel stood on a mountain on the other side: and there was a valley between them."

1 Samuel 17:4: "And there went out a champion out of the camp of the Philistines, named Goliath, of Gath, whose height was six cubits and a span."

1 Samuel 17:5: "And he had an helmet of brass upon his head, and he was armed with a coat of mail; and the weight of the coat was five thousand shekels of brass."

1 Samuel 17:7: "And the staff of his spear was like a weaver's beam; and his spear's head weighed six hundred shekels of iron: and one bearing a shield went before him."



1 Samuel 17:12: "Now David was the son of that Ephrathite of Bethlehemjudah, whose name was Jesse; and he had eight sons: and the man went among men for an old man in the days of Saul."

1 Samuel 17:14: "And David was the youngest: and the three eldest followed Saul."

1 Samuel 17:20: "And David rose up early in the morning, and left the sheep with a keeper, and took, and went, as Jesse had commanded him; and he came to the trench, as the host was going forth to the fight, and shouted for the battle."

1 Samuel 17:28: "And Eliab his eldest brother heard when he spake unto the men; and Eliab's anger was kindled against David, and he said, Why comest thou down hither? and with whom hast thou left those few sheep in the wilderness? I know thy pride, and the naughtiness of thine heart; for thou art come down that thou mightest see the battle."

1 Samuel 17:40: "And he took his staff in his hand, and chose him five smooth stones out of the brook, and put them in a shepherd's bag which he had, even in a scrip; and his sling was in his hand: and he drew near to the Philistine."

1 Samuel 17:42: "And when the Philistine looked about, and saw David, he disdained him: for he was but a youth, and ruddy, and of a fair countenance."

1 Samuel 17:50: "So David prevailed over the Philistine with a sling and with a stone, and smote the Philistine, and slew him; but there was no sword in the hand of David."

1 Samuel 17:51: "Therefore David ran, and stood upon the Philistine, and took his sword, and drew it out of the sheath thereof, and slew him, and cut off his head therewith. And when the Philistines saw their champion was dead, they fled."

1 Samuel 18:1: "And it came to pass, when he had made an end of speaking unto Saul, that the soul of Jonathan was knit with the soul of David, and Jonathan loved him as his own soul."

1 Samuel 18:4: "And Jonathan stripped himself of the robe that was upon him, and gave it to David, and his garments, even to his sword, and to his bow, and to his girdle."

1 Samuel 18:5: "And David went out whithersoever Saul sent him, and behaved himself wisely: and Saul set him over the men of war, and he was accepted in the sight of all the people, and also in the sight of Saul's servants."

1 Samuel 18:6: "And it came to pass as they came, when David was returned from the slaughter of the Philistine, that the women came out of all cities of Israel, singing and dancing, to meet king Saul, with tabrets, with joy, and with instruments of musick."

1 Samuel 18:8: "And Saul was very wroth, and the saying displeased him; and he said, They have ascribed unto David ten thousands, and to me they have ascribed but thousands: and what can he have more but the kingdom?"

1 Samuel 18:10: "And it came to pass on the morrow, that the evil spirit from God came upon Saul, and he prophesied in the midst of the house: and David played with his hand, as at other times: and there was a javelin in Saul's hand."

1 Samuel 18:12: "And Saul was afraid of David, because the LORD was with him, and was departed from Saul."

1 Samuel 18:14: "And David behaved himself wisely in all his ways; and the LORD was with him."

1 Samuel 18:15: "Wherefore when Saul saw that he behaved himself very wisely, he was afraid of him."

1 Samuel 18:19: "But it came to pass at the time when Merab Saul's daughter should have been given to David, that she was given unto Adriel the Meholathite to wife."

1 Samuel 18:28: "And Saul saw and knew that the LORD was with David, and that Michal Saul's daughter loved him."

1 Samuel 18:29: "And Saul was yet the more afraid of David; and Saul became David's enemy continually."

1 Samuel 18:30: "Then the princes of the Philistines went forth: and it came to pass, after they went forth, that David behaved himself more wisely than all the servants of Saul; so that his name was much set by."

1 Samuel 19:7: "And Jonathan called David, and Jonathan shewed him all those things. And Jonathan brought David to Saul, and he was in his presence, as in times past."

1 Samuel 19:8: "And there was war again: and David went out, and fought with the Philistines, and slew them with a great slaughter; and they fled from him."

1 Samuel 19:9: "And the evil spirit from the LORD was upon Saul, as he sat in his house with his javelin in his hand: and David played with his hand."

1 Samuel 19:16: "And when the messengers were come in, behold, there was an image in the bed, with a pillow of goats' hair for his bolster."

1 Samuel 19:19: "And it was told Saul, saying, Behold, David is at Naioth in Ramah."

1 Samuel 19:20: "And Saul sent messengers to take David: and when they saw the company of the prophets prophesying, and Samuel standing as appointed over them, the Spirit of God was upon the messengers of Saul, and they also prophesied."

1 Samuel 19:21: "And when it was told Saul, he sent other messengers, and they prophesied likewise. And Saul sent messengers again the third time, and they prophesied also."

1 Samuel 19:23: "And he went thither to Naioth in Ramah: and the Spirit of God was upon him also, and he went on, and prophesied, until he came to Naioth in Ramah."

1 Samuel 20:19: "And when thou hast stayed three days, then thou shalt go down quickly, and come to the place where thou didst hide thyself when the business was in hand, and shalt remain by the stone Ezel."

1 Samuel 20:24: "So David hid himself in the field: and when the new moon was come, the king sat him down to eat meat."

1 Samuel 20:25: "And the king sat upon his seat, as at other times, even upon a seat by the wall: and Jonathan arose, and Abner sat by Saul's side, and David's place was empty."

1 Samuel 20:27: "And it came to pass on the morrow, which was the second day of the month, that David's place was empty: and Saul said unto Jonathan his son, Wherefore cometh not the son of Jesse to meat, neither yesterday, nor to day?"

1 Samuel 20:30: "Then Saul's anger was kindled against Jonathan, and he said unto him, Thou son of the perverse rebellious woman, do not I know that thou hast chosen the son of Jesse to thine own confusion, and unto the confusion of thy mother's nakedness?"

1 Samuel 20:33: "And Saul cast a javelin at him to smite him: whereby Jonathan knew that it was determined of his father to slay David."

1 Samuel 20:34: "So Jonathan arose from the table in fierce anger, and did eat no meat the second day of the month: for he was grieved for David, because his father had done him shame."

1 Samuel 20:37: "And when the lad was come to the place of the arrow which Jonathan had shot, Jonathan cried after the lad, and said, Is not the arrow beyond thee?"

1 Samuel 20:41: "And as soon as the lad was gone, David arose out of a place toward the south, and fell on his face to the ground, and bowed himself three times: and they kissed one another, and wept one with another, until David exceeded."

1 Samuel 21:1: "Then came David to Nob to Ahimelech the priest: and Ahimelech was afraid at the meeting of David, and said unto him, Why art thou alone, and no man with thee?"

1 Samuel 21:6: "So the priest gave him hallowed bread: for there was no bread there but the shewbread, that was taken from before the LORD, to put hot bread in the day when it was taken away."

1 Samuel 21:7: "Now a certain man of the servants of Saul was there that day, detained before the LORD; and his name was Doeg, an Edomite, the chiefest of the herdmen that belonged to Saul."

1 Samuel 21:12: "And David laid up these words in his heart, and was sore afraid of Achish the king of Gath."

1 Samuel 22:2: "And every one that was in distress, and every one that was in debt, and every one that was discontented, gathered themselves unto him; and he became a captain over them: and there were with him about four hundred men."

1 Samuel 22:4: "And he brought them before the king of Moab: and they dwelt with him all the while that David was in the hold."

1 Samuel 22:6: "When Saul heard that David was discovered, and the men that were with him, (now Saul abode in Gibeah under a tree in Ramah, having his spear in his hand, and all his servants were standing about him;)"

1 Samuel 22:9: "Then answered Doeg the Edomite, which was set over the servants of Saul, and said, I saw the son of Jesse coming to Nob, to Ahimelech the son of Ahitub."

1 Samuel 22:22: "And David said unto Abiathar, I knew it that day, when Doeg the Edomite was there, that he would surely tell Saul: I have occasioned the death of all the persons of thy father's house."

1 Samuel 23:7: "And it was told Saul that David was come to Keilah. And Saul said, God hath delivered him into mine hand; for he is shut in, by entering into a town that hath gates and bars."

1 Samuel 23:13: "Then David and his men, which were about six hundred, arose and departed out of Keilah, and went whithersoever they could go. And it was told Saul that David was escaped from Keilah; and he forbore to go forth."

1 Samuel 23:15: "And David saw that Saul was come out to seek his life: and David was in the wilderness of Ziph in a wood."

1 Samuel 24:1: "And it came to pass, when Saul was returned from following the Philistines, that it was told him, saying, Behold, David is in the wilderness of Engedi."

1 Samuel 24:3: "And he came to the sheepcotes by the way, where was a cave; and Saul went in to cover his feet: and David and his men remained in the sides of the cave."

1 Samuel 25:2: "And there was a man in Maon, whose possessions were in Carmel; and the man was very great, and he had three thousand sheep, and a thousand goats: and he was shearing his sheep in Carmel."

1 Samuel 25:3: "Now the name of the man was Nabal; and the name of his wife Abigail: and she was a woman of good understanding, and of a beautiful countenance: but the man was churlish and evil in his doings; and he was of the house of Caleb."

1 Samuel 25:7: "And now I have heard that thou hast shearers: now thy shepherds which were with us, we hurt them not, neither was there ought missing unto them, all the while they were in Carmel."

1 Samuel 25:20: "And it was so, as she rode on the ass, that she came down by the covert on the hill, and, behold, David and his men came down against her; and she met them."

1 Samuel 25:21: "Now David had said, Surely in vain have I kept all that this fellow hath in the wilderness, so that nothing was missed of all that pertained unto him: and he hath requited me evil for good."

1 Samuel 25:36: "And Abigail came to Nabal; and, behold, he held a feast in his house, like the feast of a king; and Nabal's heart was merry within him, for he was very drunken: wherefore she told him nothing, less or more, until the morning light."

1 Samuel 25:37: "But it came to pass in the morning, when the wine was gone out of Nabal, and his wife had told him these things, that his heart died within him, and he became as a stone."

1 Samuel 25:39: "And when David heard that Nabal was dead, he said, Blessed be the LORD, that hath pleaded the cause of my reproach from the hand of Nabal, and hath kept his servant from evil: for the LORD hath returned the wickedness of Nabal upon his own head. And David sent and communed with Abigail, to take her to him to wife."

1 Samuel 25:44: "But Saul had given Michal his daughter, David's wife, to Phalti the son of Laish, which was of Gallim."

1 Samuel 26:4: "David therefore sent out spies, and understood that Saul was come in very deed."

1 Samuel 26:12: "So David took the spear and the cruse of water from Saul's bolster; and they gat them away, and no man saw it, nor knew it, neither awaked: for they were all asleep; because a deep sleep from the LORD was fallen upon them."

1 Samuel 26:16: "This thing is not good that thou hast done. As the LORD liveth, ye are worthy to die, because ye have not kept your master, the LORD's anointed. And now see where the king's spear is, and the cruse of water that was at his bolster."

1 Samuel 26:21: "Then said Saul, I have sinned: return, my son David: for I will no more do thee harm, because my soul was precious in thine eyes this day: behold, I have played the fool, and have erred exceedingly."

1 Samuel 26:24: "And, behold, as thy life was much set by this day in mine eyes, so let my life be much set by in the eyes of the LORD, and let him deliver me out of all tribulation."

1 Samuel 27:4: "And it was told Saul that David was fled to Gath: and he sought no more again for him."

1 Samuel 27:7: "And the time that David dwelt in the country of the Philistines was a full year and four months."

1 Samuel 28:3: "Now Samuel was dead, and all Israel had lamented him, and buried him in Ramah, even in his own city. And Saul had put away those that had familiar spirits, and the wizards, out of the land."

1 Samuel 28:5: "And when Saul saw the host of the Philistines, he was afraid, and his heart greatly trembled."

1 Samuel 28:14: "And he said unto her, What form is he of? And she said, An old man cometh up; and he is covered with a mantle. And Saul perceived that it was Samuel, and he stooped with his face to the ground, and bowed himself."

1 Samuel 28:20: "Then Saul fell straightway all along on the earth, and was sore afraid, because of the words of Samuel: and there was no strength in him; for he had eaten no bread all the day, nor all the night."

1 Samuel 28:21: "And the woman came unto Saul, and saw that he was sore troubled, and said unto him, Behold, thine handmaid hath obeyed thy voice, and I have put my life in my hand, and have hearkened unto thy words which thou spakest unto me."

1 Samuel 30:3: "So David and his men came to the city, and, behold, it was burned with fire; and their wives, and their sons, and their daughters, were taken captives."

1 Samuel 30:6: "And David was greatly distressed; for the people spake of stoning him, because the soul of all the people was grieved, every man for his sons and for his daughters: but David encouraged himself in the LORD his God."

1 Samuel 30:19: "And there was nothing lacking to them, neither small nor great, neither sons nor daughters, neither spoil, nor any thing that they had taken to them: David recovered all."

1 Samuel 30:25: "And it was so from that day forward, that he made it a statute and an ordinance for Israel unto this day."

1 Samuel 31:3: "And the battle went sore against Saul, and the archers hit him; and he was sore wounded of the archers."

1 Samuel 31:4: "Then said Saul unto his armourbearer, Draw thy sword, and thrust me through therewith; lest these uncircumcised come and thrust me through, and abuse me. But his armourbearer would not; for he was sore afraid. Therefore Saul took a sword, and fell upon it."

1 Samuel 31:5: "And when his armourbearer saw that Saul was dead, he fell likewise upon his sword, and died with him."

2 Samuel 1:1: "Now it came to pass after the death of Saul, when David was returned from the slaughter of the Amalekites, and David had abode two days in Ziklag;"

2 Samuel 1:2: "It came even to pass on the third day, that, behold, a man came out of the camp from Saul with his clothes rent, and earth upon his head: and so it was, when he came to David, that he fell to the earth, and did obeisance."

2 Samuel 1:10: "So I stood upon him, and slew him, because I was sure that he could not live after that he was fallen: and I took the crown that was upon his head, and the bracelet that was on his arm, and have brought them hither unto my lord."

2 Samuel 1:26: "I am distressed for thee, my brother Jonathan: very pleasant hast thou been unto me: thy love to me was wonderful, passing the love of women."

2 Samuel 2:10: "Ishbosheth Saul's son was forty years old when he began to reign over Israel, and reigned two years. But the house of Judah followed David."

2 Samuel 2:11: "And the time that David was king in Hebron over the house of Judah was seven years and six months."

2 Samuel 2:16: "And they caught every one his fellow by the head, and thrust his sword in his fellow's side; so they fell down together: wherefore that place was called Helkathhazzurim, which is in Gibeon."

2 Samuel 2:17: "And there was a very sore battle that day; and Abner was beaten, and the men of Israel, before the servants of David."

2 Samuel 2:18: "And there were three sons of Zeruiah there, Joab, and Abishai, and Asahel: and Asahel was as light of foot as a wild roe."

2 Samuel 2:32: "And they took up Asahel, and buried him in the sepulchre of his father, which was in Bethlehem. And Joab and his men went all night, and they came to Hebron at break of day."

2 Samuel 3:1: "Now there was long war between the house of Saul and the house of David: but David waxed stronger and stronger, and the house of Saul waxed weaker and weaker."

2 Samuel 3:2: "And unto David were sons born in Hebron: and his firstborn was Amnon, of Ahinoam the Jezreelitess;"

2 Samuel 3:6: "And it came to pass, while there was war between the house of Saul and the house of David, that Abner made himself strong for the house of Saul."

2 Samuel 3:7: "And Saul had a concubine, whose name was Rizpah, the daughter of Aiah: and Ishbosheth said to Abner, Wherefore hast thou gone in unto my father's concubine?"

2 Samuel 3:8: "Then was Abner very wroth for the words of Ishbosheth, and said, Am I a dog's head, which against Judah do shew kindness this day unto the house of Saul thy father, to his brethren, and to his friends, and have not delivered thee into the hand of David, that thou chargest me to day with a fault concerning this woman?"

2 Samuel 3:22: "And, behold, the servants of David and Joab came from pursuing a troop, and brought in a great spoil with them: but Abner was not with David in Hebron; for he had sent him away, and he was gone in peace."

2 Samuel 3:23: "When Joab and all the host that was with him were come, they told Joab, saying, Abner the son of Ner came to the king, and he hath sent him away, and he is gone in peace."

2 Samuel 3:26: "And when Joab was come out from David, he sent messengers after Abner, which brought him again from the well of Sirah: but David knew it not."

2 Samuel 3:27: "And when Abner was returned to Hebron, Joab took him aside in the gate to speak with him quietly, and smote him there under the fifth rib, that he died, for the blood of Asahel his brother."

2 Samuel 3:35: "And when all the people came to cause David to eat meat while it was yet day, David sware, saying, So do God to me, and more also, if I taste bread, or ought else, till the sun be down."

2 Samuel 3:37: "For all the people and all Israel understood that day that it was not of the king to slay Abner the son of Ner."

2 Samuel 4:1: "And when Saul's son heard that Abner was dead in Hebron, his hands were feeble, and all the Israelites were troubled."

2 Samuel 4:2: "And Saul's son had two men that were captains of bands: the name of the one was Baanah, and the name of the other Rechab, the sons of Rimmon a Beerothite, of the children of Benjamin: (for Beeroth also was reckoned to Benjamin.)"

2 Samuel 4:4: "And Jonathan, Saul's son, had a son that was lame of his feet. He was five years old when the tidings came of Saul and Jonathan out of Jezreel, and his nurse took him up, and fled: and it came to pass, as she made haste to flee, that he fell, and became lame. And his name was

Mephibosheth."

2 Samuel 5:2: "Also in time past, when Saul was king over us, thou wast he that leddest out and broughtest in Israel: and the LORD said to thee, Thou shalt feed my people Israel, and thou shalt be a captain over Israel."

2 Samuel 5:4: "David was thirty years old when he began to reign, and he reigned forty years."

2 Samuel 5:10: "And David went on, and grew great, and the LORD God of hosts was with him."

2 Samuel 5:13: "And David took him more concubines and wives out of Jerusalem, after he was come from Hebron: and there were yet sons and daughters born to David."

2 Samuel 6:3: "And they set the ark of God upon a new cart, and brought it out of the house of Abinadab that was in Gibeah: and Uzzah and Ahio, the sons of Abinadab, drave the new cart."

2 Samuel 6:4: "And they brought it out of the house of Abinadab which was at Gibeah, accompanying the ark of God: and Ahio went before the ark."

2 Samuel 6:7: "And the anger of the LORD was kindled against Uzzah; and God smote him there for his error; and there he died by the ark of God."

2 Samuel 6:8: "And David was displeased, because the LORD had made a breach upon Uzzah: and he called the name of the place Perezuzzah to this day."

2 Samuel 6:9: "And David was afraid of the LORD that day, and said, How shall the ark of the LORD come to me?"

2 Samuel 6:12: "And it was told king David, saying, The LORD hath blessed the house of Obedom, and all that pertaineth unto him, because of the ark of God. So David went and brought up the ark of God from the house of Obedom into the city of David with gladness."

2 Samuel 6:13: "And it was so, that when they that bare the ark of the LORD had gone six paces, he sacrificed oxen and fatlings."

2 Samuel 6:14: "And David danced before the LORD with all his might; and David was girded with a linen ephod."

2 Samuel 6:20: "Then David returned to bless his household. And Michal the daughter of Saul came out to meet David, and said, How glorious was the king of Israel to day, who uncovered himself to day in the eyes of the handmaids of his servants, as one of the vain fellows shamelessly uncovereth himself!"

2 Samuel 6:21: "And David said unto Michal, It was before the LORD, which chose me before thy father, and before all his house, to appoint me ruler over the people of the LORD, over Israel: therefore will I play before the LORD."

2 Samuel 7:9: "And I was with thee whithersoever thou wentest, and have cut off all thine enemies out of thy sight, and have made thee a great name, like unto the name of the great men that are in the earth."

2 Samuel 7:19: "And this was yet a small thing in thy sight, O Lord GOD; but thou hast spoken also of thy servant's house for a great while to come. And is this the manner of man, O Lord GOD?"

2 Samuel 8:16: "And Joab the son of Zeruiah was over the host; and Jehoshaphat the son of Ahilud was recorder;"

2 Samuel 8:17: "And Zadok the son of Ahitub, and Ahimelech the son of Abiathar, were the priests; and Seraiah was the scribe;"

2 Samuel 8:18: "And Benaiah the son of Jehoiada was over both the Cherethites and the Pelethites; and David's sons were chief rulers."

2 Samuel 9:2: "And there was of the house of Saul a servant whose name was Ziba. And when they had called him unto David, the king said unto him, Art thou Ziba? And he said, Thy servant is he."

2 Samuel 9:6: "Now when Mephibosheth, the son of Jonathan, the son of Saul, was come unto David, he fell on his face, and did reverence. And David said, Mephibosheth. And he answered, Behold thy servant!"

2 Samuel 9:12: "And Mephibosheth had a young son, whose name was Micha. And all that dwelt in the house of Ziba were servants unto Mephibosheth."

2 Samuel 9:13: "So Mephibosheth dwelt in Jerusalem: for he did eat continually at the king's table; and was lame on both his feet."

2 Samuel 10:9: "When Joab saw that the front of the battle was against him before and behind, he chose of all the choice men of Israel, and put them in array against the Syrians:"

2 Samuel 10:17: "And when it was told David, he gathered all Israel together, and passed over Jordan, and came to Helam. And the Syrians set themselves in array against David, and fought with him."

2 Samuel 11:1: "And it came to pass, after the year was expired, at the time when kings go forth to battle, that David sent Joab, and his servants with him, and all Israel; and they destroyed the children of Ammon, and besieged Rabbah. But David tarried still at Jerusalem."

2 Samuel 11:2: "And it came to pass in an eveningtide, that David arose from off his bed, and walked upon the roof of the king's house: and from the roof he saw a woman washing herself; and the woman was very beautiful to look upon."

2 Samuel 11:4: "And David sent messengers, and took her; and she came in unto him, and he lay with her; for she was purified from her uncleanness: and she returned unto her house."

2 Samuel 11:7: "And when Uriah was come unto him, David demanded of him how Joab did, and how the people did, and how the war prospered."

2 Samuel 11:26: "And when the wife of Uriah heard that Uriah her husband was dead, she mourned for her husband."

2 Samuel 11:27: "And when the mourning was past, David sent and fetched her to his house, and she became his wife, and bare him a son. But the thing that David had done displeased the LORD."

2 Samuel 12:3: "But the poor man had nothing, save one little ewe lamb, which he had bought and nourished up: and it grew up together with him, and with his children; it did eat of his own meat, and drank of his own cup, and lay in his bosom, and was unto him as a daughter."

2 Samuel 12:4: "And there came a traveller unto the rich man, and he spared to take of his own flock and of his own herd, to dress for the wayfaring man that was come unto him; but took the poor man's lamb, and dressed it for the man that was come to him."

2 Samuel 12:5: "And David's anger was greatly kindled against the man; and he said to Nathan, As the LORD liveth, the man that hath done this thing shall surely die:"

2 Samuel 12:15: "And Nathan departed unto his house. And the LORD struck the child that Uriah's wife bare unto David, and it was very sick."

2 Samuel 12:18: "And it came to pass on the seventh day, that the child died. And the servants of David feared to tell him that the child was dead: for they said, Behold, while the child was yet alive, we spake unto him, and he would not hearken unto our voice: how will he then vex himself, if we tell him that the child is dead?"

2 Samuel 12:19: "But when David saw that his servants whispered, David perceived that the child was dead: therefore David said unto his servants, Is the child dead? And they said, He is dead."

2 Samuel 12:21: "Then said his servants unto him, What thing is this that thou hast done? thou didst fast and weep for the child, while it was alive; but when the child was dead, thou didst rise and eat bread."

2 Samuel 12:22: "And he said, While the child was yet alive, I fasted and wept: for I said, Who can tell whether GOD will be gracious to me, that the child may live?"

2 Samuel 12:30: "And he took their king's crown from off his head, the weight whereof was a talent of gold with the precious stones: and it was set on David's head. And he brought forth the spoil of the city in great abundance."

2 Samuel 13:1: "And it came to pass after this, that Absalom the son of David had a fair sister, whose name was Tamar; and Amnon the son of David loved her."

2 Samuel 13:2: "And Amnon was so vexed, that he fell sick for his sister Tamar; for she was a virgin; and Amnon thought it hard for him to do anything to her."

2 Samuel 13:3: "But Amnon had a friend, whose name was Jonadab, the son of Shimeah David's

brother: and Jonadab was a very subtil man."

2 Samuel 13:6: "So Amnon lay down, and made himself sick: and when the king was come to see him, Amnon said unto the king, I pray thee, let Tamar my sister come, and make me a couple of cakes in my sight, that I may eat at her hand."

2 Samuel 13:8: "So Tamar went to her brother Amnon's house; and he was laid down. And she took flour, and kneaded it, and made cakes in his sight, and did bake the cakes."

2 Samuel 13:15: "Then Amnon hated her exceedingly; so that the hatred wherewith he hated her was greater than the love wherewith he had loved her. And Amnon said unto her, Arise, be gone."

2 Samuel 13:19: "And Tamar put ashes on her head, and rent her garment of divers colours that was on her, and laid her hand on her head, and went on crying."

2 Samuel 13:21: "But when king David heard of all these things, he was very wroth."

2 Samuel 13:38: "So Absalom fled, and went to Geshur, and was there three years."

2 Samuel 13:39: "And the soul of king David longed to go forth unto Absalom: for he was comforted concerning Amnon, seeing he was dead."

2 Samuel 14:1: "Now Joab the son of Zeruah perceived that the king's heart was toward Absalom."

2 Samuel 14:6: "And thy handmaid had two sons, and they two strove together in the field, and there was none to part them, but the one smote the other, and slew him."

2 Samuel 14:25: "But in all Israel there was none to be so much praised as Absalom for his beauty: from the sole of his foot even to the crown of his head there was no blemish in him."

2 Samuel 14:26: "And when he polled his head, (for it was at every year's end that he polled it: because the hair was heavy on him, therefore he polled it:) he weighed the hair of his head at two hundred shekels after the king's weight."

2 Samuel 14:27: "And unto Absalom there were born three sons, and one daughter, whose name was Tamar: she was a woman of a fair countenance."

2 Samuel 15:2: "And Absalom rose up early, and stood beside the way of the gate: and it was so, that when any man that had a controversy came to the king for judgment, then Absalom called unto him, and said, Of what city art thou? And he said, Thy servant is of one of the tribes of Israel."

2 Samuel 15:5: "And it was so, that when any man came nigh to him to do him obeisance, he put forth his hand, and took him, and kissed him."

2 Samuel 15:12: "And Absalom sent for Ahithophel the Gilonite, David's counsellor, from his city, even from Giloh, while he offered sacrifices. And the conspiracy was strong; for the people increased continually with Absalom."

2 Samuel 15:17: "And the king went forth, and all the people after him, and tarried in a place that was far off."

2 Samuel 15:30: "And David went up by the ascent of mount Olivet, and wept as he went up, and had his head covered, and he went barefoot: and all the people that was with him covered every man his head, and they went up, weeping as they went up."

2 Samuel 15:32: "And it came to pass, that when David was come to the top of the mount, where he worshipped God, behold, Hushai the Archite came to meet him with his coat rent, and earth upon his head:"

2 Samuel 16:1: "And when David was a little past the top of the hill, behold, Ziba the servant of Mephibosheth met him, with a couple of asses saddled, and upon them two hundred loaves of bread, and an hundred bunches of raisins, and an hundred of summer fruits, and a bottle of wine."

2 Samuel 16:5: "And when king David came to Bahurim, behold, thence came out a man of the family of the house of Saul, whose name was Shimei, the son of Gera: he came forth, and cursed still as he came."

2 Samuel 16:16: "And it came to pass, when Hushai the Archite, David's friend, was come unto Absalom, that Hushai said unto Absalom, God save the king, God save the king."

2 Samuel 16:23: "And the counsel of Ahithophel, which he counselled in those days, was as if a man had enquired at the oracle of God: so was all the counsel of Ahithophel both with David and



with Absalom."

2 Samuel 17:6: "And when Hushai was come to Absalom, Absalom spake unto him, saying, Ahithophel hath spoken after this manner: shall we do after his saying? if not; speak thou."

2 Samuel 17:19: "And the woman took and spread a covering over the well's mouth, and spread ground corn thereon; and the thing was not known."

2 Samuel 17:22: "Then David arose, and all the people that were with him, and they passed over Jordan: by the morning light there lacked not one of them that was not gone over Jordan."

2 Samuel 17:23: "And when Ahithophel saw that his counsel was not followed, he saddled his ass, and arose, and gat him home to his house, to his city, and put his household in order, and hanged himself, and died, and was buried in the sepulchre of his father."

2 Samuel 17:25: "And Absalom made Amasa captain of the host instead of Joab: which Amasa was a man's son, whose name was Ithra an Israelite, that went in to Abigail the daughter of Nahash, sister to Zeruiah Joab's mother."

2 Samuel 17:27: "And it came to pass, when David was come to Mahanaim, that Shobi the son of Nahash of Rabbah of the children of Ammon, and Machir the son of Ammiel of Lodebar, and Barzillai the Gileadite of Rogelim,"

2 Samuel 18:6: "So the people went out into the field against Israel: and the battle was in the wood of Ephraim;"

2 Samuel 18:7: "Where the people of Israel were slain before the servants of David, and there was there a great slaughter that day of twenty thousand men."

2 Samuel 18:8: "For the battle was there scattered over the face of all the country: and the wood devoured more people that day than the sword devoured."

2 Samuel 18:9: "And Absalom met the servants of David. And Absalom rode upon a mule, and the mule went under the thick boughs of a great oak, and his head caught hold of the oak, and he was taken up between the heaven and the earth; and the mule that was under him went away."

2 Samuel 18:14: "Then said Joab, I may not tarry thus with thee. And he took three darts in his hand, and thrust them through the heart of Absalom, while he was yet alive in the midst of the oak."

2 Samuel 18:29: "And the king said, Is the young man Absalom safe? And Ahimaaz answered, When Joab sent the king's servant, and me thy servant, I saw a great tumult, but I knew not what it was."

2 Samuel 18:33: "And the king was much moved, and went up to the chamber over the gate, and wept: and as he went, thus he said, O my son Absalom, my son, my son Absalom! would God I had died for thee, O Absalom, my son, my son!"

2 Samuel 19:1: "And it was told Joab, Behold, the king weepeth and mourneth for Absalom."

2 Samuel 19:2: "And the victory that day was turned into mourning unto all the people: for the people heard say that day how the king was grieved for his son."

2 Samuel 19:16: "And Shimei the son of Gera, a Benjamite, which was of Bahurim, hasted and came down with the men of Judah to meet king David."

2 Samuel 19:18: "And there went over a ferry boat to carry over the king's household, and to do what he thought good. And Shimei the son of Gera fell down before the king, as he was come over Jordan;"

2 Samuel 19:25: "And it came to pass, when he was come to Jerusalem to meet the king, that the king said unto him, Wherefore wentest not thou with me, Mephibosheth?"

2 Samuel 19:32: "Now Barzillai was a very aged man, even fourscore years old: and he had provided the king of sustenance while he lay at Mahanaim; for he was a very great man."

2 Samuel 19:39: "And all the people went over Jordan. And when the king was come over, the king kissed Barzillai, and blessed him; and he returned unto his own place."

2 Samuel 20:1: "And there happened to be there a man of Belial, whose name was Sheba, the son of Bichri, a Benjamite: and he blew a trumpet, and said, We have no part in David, neither have we inheritance in the son of Jesse: every man to his tents, O Israel."

2 Samuel 20:8: "When they were at the great stone which is in Gibeon, Amasa went before them. And Joab's garment that he had put on was girded unto him, and upon it a girdle with a sword fastened upon his loins in the sheath thereof; and as he went forth it fell out."

2 Samuel 20:10: "But Amasa took no heed to the sword that was in Joab's hand: so he smote him therewith in the fifth rib, and shed out his bowels to the ground, and struck him not again; and he died. So Joab and Abishai his brother pursued after Sheba the son of Bichri."

2 Samuel 20:13: "When he was removed out of the highway, all the people went on after Joab, to pursue after Sheba the son of Bichri."

2 Samuel 20:17: "And when he was come near unto her, the woman said, Art thou Joab? And he answered, I am he. Then she said unto him, Hear the words of thine handmaid. And he answered, I do hear."

2 Samuel 20:23: "Now Joab was over all the host of Israel: and Benaiah the son of Jehoiada was over the Cherethites and over the Pelethites:"

2 Samuel 20:24: "And Adoram was over the tribute: and Jehoshaphat the son of Ahilud was recorder:"

2 Samuel 20:25: "And Sheva was scribe: and Zadok and Abiathar were the priests:"

2 Samuel 20:26: "And Ira also the Jairite was a chief ruler about David."

2 Samuel 21:1: "Then there was a famine in the days of David three years, year after year; and David enquired of the LORD. And the LORD answered, It is for Saul, and for his bloody house, because he slew the Gibeonites."

2 Samuel 21:7: "But the king spared Mephibosheth, the son of Jonathan the son of Saul, because of the LORD's oath that was between them, between David and Jonathan the son of Saul."

2 Samuel 21:11: "And it was told David what Rizpah the daughter of Aiah, the concubine of Saul, had done."

2 Samuel 21:14: "And the bones of Saul and Jonathan his son buried they in the country of Benjamin in Zelah, in the sepulchre of Kish his father: and they performed all that the king commanded. And after that God was intreated for the land."

2 Samuel 21:16: "And Ishbibenob, which was of the sons of the giant, the weight of whose spear weighed three hundred shekels of brass in weight, he being girded with a new sword, thought to have slain David."

2 Samuel 21:18: "And it came to pass after this, that there was again a battle with the Philistines at Gob: then Sibbechai the Hushathite slew Saph, which was of the sons of the giant."

2 Samuel 21:19: "And there was again a battle in Gob with the Philistines, where Elhanan the son of Jaareoregim, a Bethlehemite, slew the brother of Goliath the Gittite, the staff of whose spear was like a weaver's beam."

2 Samuel 21:20: "And there was yet a battle in Gath, where was a man of great stature, that had on every hand six fingers, and on every foot six toes, four and twenty in number; and he also was born to the giant."

2 Samuel 22:8: "Then the earth shook and trembled; the foundations of heaven moved and shook, because he was wroth."

2 Samuel 22:10: "He bowed the heavens also, and came down; and darkness was under his feet."

2 Samuel 22:11: "And he rode upon a cherub, and did fly: and he was seen upon the wings of the wind."

2 Samuel 22:19: "They prevented me in the day of my calamity: but the LORD was my stay."

2 Samuel 22:24: "I was also upright before him, and have kept myself from mine iniquity."

2 Samuel 22:42: "They looked, but there was none to save; even unto the LORD, but he answered them not."

2 Samuel 23:1: "Now these be the last words of David. David the son of Jesse said, and the man who was raised up on high, the anointed of the God of Jacob, and the sweet psalmist of Israel, said,"

2 Samuel 23:2: "The Spirit of the LORD spake by me, and his word was in my tongue."

2 Samuel 23:8: "These be the names of the mighty men whom David had: The Tachmonite that sat in the seat, chief among the captains; the same was Adino the Eznite: he lift up his spear against eight hundred, whom he slew at one time."

2 Samuel 23:9: "And after him was Eleazar the son of Dodo the Ahohite, one of the three mighty men with David, when they defied the Philistines that were there gathered together to battle, and the men of Israel were gone away:"

2 Samuel 23:10: "He arose, and smote the Philistines until his hand was weary, and his hand clave unto the sword: and the LORD wrought a great victory that day; and the people returned after him only to spoil."

2 Samuel 23:11: "And after him was Shammah the son of Agee the Hararite. And the Philistines were gathered together into a troop, where was a piece of ground full of lentiles: and the people fled from the Philistines."

2 Samuel 23:14: "And David was then in an hold, and the garrison of the Philistines was then in Bethlehem."

2 Samuel 23:16: "And the three mighty men brake through the host of the Philistines, and drew water out of the well of Bethlehem, that was by the gate, and took it, and brought it to David: nevertheless he would not drink thereof, but poured it out unto the LORD."

2 Samuel 23:18: "And Abishai, the brother of Joab, the son of Zeruah, was chief among three. And he lifted up his spear against three hundred, and slew them, and had the name among three."

2 Samuel 23:19: "Was he not most honourable of three? therefore he was their captain: howbeit he attained not unto the first three."

2 Samuel 23:23: "He was more honourable than the thirty, but he attained not to the first three. And David set him over his guard."

2 Samuel 23:24: "Asahel the brother of Joab was one of the thirty; Elhanan the son of Dodo of Bethlehem,"

2 Samuel 24:1: "And again the anger of the LORD was kindled against Israel, and he moved David against them to say, Go, number Israel and Judah."

2 Samuel 24:2: "For the king said to Joab the captain of the host, which was with him, Go now through all the tribes of Israel, from Dan even to Beersheba, and number ye the people, that I may know the number of the people."

2 Samuel 24:11: "For when David was up in the morning, the word of the LORD came unto the prophet Gad, David's seer, saying,"

2 Samuel 24:16: "And when the angel stretched out his hand upon Jerusalem to destroy it, the LORD repented him of the evil, and said to the angel that destroyed the people, It is enough: stay now thine hand. And the angel of the LORD was by the threshingplace of Araunah the Jebusite."

2 Samuel 24:25: "And David built there an altar unto the LORD, and offered burnt offerings and peace offerings. So the LORD was intreated for the land, and the plague was stayed from Israel."

1 Kings 1:1: "Now king David was old and stricken in years; and they covered him with clothes, but he gat no heat."

1 Kings 1:4: "And the damsel was very fair, and cherished the king, and ministered to him: but the king knew her not."

1 Kings 1:6: "And his father had not displeased him at any time in saying, Why hast thou done so? and he also was a very goodly man; and his mother bare him after Absalom."

1 Kings 1:15: "And Bathsheba went in unto the king into the chamber: and the king was very old; and Abishag the Shunammite ministered unto the king."

1 Kings 1:23: "And they told the king, saying, Behold Nathan the prophet. And when he was come in before the king, he bowed himself before the king with his face to the ground."

1 Kings 1:51: "And it was told Solomon, saying, Behold, Adonijah feareth king Solomon: for, lo, he hath caught hold on the horns of the altar, saying, Let king Solomon swear unto me today that he will not slay his servant with the sword."

1 Kings 2:5: "Moreover thou knowest also what Joab the son of Zeruiah did to me, and what he did to the two captains of the hosts of Israel, unto Abner the son of Ner, and unto Amasa the son of Jether, whom he slew, and shed the blood of war in peace, and put the blood of war upon his girdle that was about his loins, and in his shoes that were on his feet."

1 Kings 2:10: "So David slept with his fathers, and was buried in the city of David."

1 Kings 2:12: "Then sat Solomon upon the throne of David his father; and his kingdom was established greatly."

1 Kings 2:15: "And he said, Thou knowest that the kingdom was mine, and that all Israel set their faces on me, that I should reign: howbeit the kingdom is turned about, and is become my brother's: for it was his from the LORD."

1 Kings 2:26: "And unto Abiathar the priest said the king, Get thee to Anathoth, unto thine own fields; for thou art worthy of death: but I will not at this time put thee to death, because thou barest the ark of the LORD God before David my father, and because thou hast been afflicted in all wherein my father was afflicted."

1 Kings 2:29: "And it was told king Solomon that Joab was fled unto the tabernacle of the LORD; and, behold, he is by the altar. Then Solomon sent Benaiah the son of Jehoiada, saying, Go, fall upon him."

1 Kings 2:34: "So Benaiah the son of Jehoiada went up, and fell upon him, and slew him: and he was buried in his own house in the wilderness."

1 Kings 2:41: "And it was told Solomon that Shimei had gone from Jerusalem to Gath, and was come again."

1 Kings 2:46: "So the king commanded Benaiah the son of Jehoiada; which went out, and fell upon him, that he died. And the kingdom was established in the hand of Solomon."

1 Kings 3:2: "Only the people sacrificed in high places, because there was no house built unto the name of the LORD, until those days."

1 Kings 3:4: "And the king went to Gibeon to sacrifice there; for that was the great high place: a thousand burnt offerings did Solomon offer upon that altar."

1 Kings 3:12: "Behold, I have done according to thy words: lo, I have given thee a wise and an understanding heart; so that there was none like thee before thee, neither after thee shall any arise like unto thee."

1 Kings 3:15: "And Solomon awoke; and, behold, it was a dream. And he came to Jerusalem, and stood before the ark of the covenant of the LORD, and offered up burnt offerings, and offered peace offerings, and made a feast to all his servants."

1 Kings 3:17: "And the one woman said, O my lord, I and this woman dwell in one house; and I was delivered of a child with her in the house."

1 Kings 3:18: "And it came to pass the third day after that I was delivered, that this woman was delivered also: and we were together; there was no stranger with us in the house, save we two in the house."

1 Kings 3:21: "And when I rose in the morning to give my child suck, behold, it was dead: but when I had considered it in the morning, behold, it was not my son, which I did bear."

1 Kings 3:26: "Then spake the woman whose the living child was unto the king, for her bowels yearned upon her son, and she said, O my lord, give her the living child, and in no wise slay it. But the other said, Let it be neither mine nor thine, but divide it."

1 Kings 3:28: "And all Israel heard of the judgment which the king had judged; and they feared the king: for they saw that the wisdom of God was in him, to do judgment."

1 Kings 4:1: "So king Solomon was king over all Israel."

1 Kings 4:4: "And Benaiah the son of Jehoiada was over the host: and Zadok and Abiathar were the priests:"

1 Kings 4:5: "And Azariah the son of Nathan was over the officers: and Zabud the son of Nathan was principal officer, and the king's friend:"

1 Kings 4:6: "And Ahishar was over the household: and Adoniram the son of Abda was over the tribute."

1 Kings 4:15: "Ahimaaz was in Naphtali; he also took Basmath the daughter of Solomon to wife:"

1 Kings 4:16: "Baanah the son of Hushai was in Asher and in Aloth:"

1 Kings 4:19: "Geber the son of Uri was in the country of Gilead, in the country of Sihon king of the Amorites, and of Og king of Bashan; and he was the only officer which was in the land."

1 Kings 4:22: "And Solomon's provision for one day was thirty measures of fine flour, and threescore measures of meal,"

1 Kings 4:31: "For he was wiser than all men; than Ethan the Ezrahite, and Heman, and Chalcol, and Darda, the sons of Mahol: and his fame was in all nations round about."

1 Kings 5:1: "And Hiram king of Tyre sent his servants unto Solomon; for he had heard that they had anointed him king in the room of his father: for Hiram was ever a lover of David."

1 Kings 5:12: "And the LORD gave Solomon wisdom, as he promised him: and there was peace between Hiram and Solomon; and they two made a league together."

1 Kings 5:13: "And king Solomon raised a levy out of all Israel; and the levy was thirty thousand men."

1 Kings 5:14: "And he sent them to Lebanon, ten thousand a month by courses: a month they were in Lebanon, and two months at home: and Adoniram was over the levy."

1 Kings 6:2: "And the house which king Solomon built for the LORD, the length thereof was threescore cubits, and the breadth thereof twenty cubits, and the height thereof thirty cubits."

1 Kings 6:3: "And the porch before the temple of the house, twenty cubits was the length thereof, according to the breadth of the house; and ten cubits was the breadth thereof before the house."

1 Kings 6:6: "The nethermost chamber was five cubits broad, and the middle was six cubits broad, and the third was seven cubits broad: for without in the wall of the house he made narrowed rests round about, that the beams should not be fastened in the walls of the house."

1 Kings 6:7: "And the house, when it was in building, was built of stone made ready before it was brought thither: so that there was neither hammer nor axe nor any tool of iron heard in the house, while it was in building."

1 Kings 6:8: "The door for the middle chamber was in the right side of the house: and they went up with winding stairs into the middle chamber, and out of the middle into the third."

1 Kings 6:17: "And the house, that is, the temple before it, was forty cubits long."

1 Kings 6:18: "And the cedar of the house within was carved with knops and open flowers: all was cedar; there was no stone seen."

1 Kings 6:20: "And the oracle in the forepart was twenty cubits in length, and twenty cubits in breadth, and twenty cubits in the height thereof: and he overlaid it with pure gold; and so covered the altar which was of cedar."

1 Kings 6:22: "And the whole house he overlaid with gold, until he had finished all the house: also the whole altar that was by the oracle he overlaid with gold."

1 Kings 6:24: "And five cubits was the one wing of the cherub, and five cubits the other wing of the cherub: from the uttermost part of the one wing unto the uttermost part of the other were ten cubits."

1 Kings 6:25: "And the other cherub was ten cubits: both the cherubims were of one measure and one size."

1 Kings 6:26: "The height of the one cherub was ten cubits, and so was it of the other cherub."

1 Kings 6:37: "In the fourth year was the foundation of the house of the LORD laid, in the month Zif:"

1 Kings 6:38: "And in the eleventh year, in the month Bul, which is the eighth month, was the house finished throughout all the parts thereof, and according to all the fashion of it. So was he seven years in building it."

1 Kings 7:1: "But Solomon was building his own house thirteen years, and he finished all his house."

1 Kings 7:2: "He built also the house of the forest of Lebanon; the length thereof was an hundred cubits, and the breadth thereof fifty cubits, and the height thereof thirty cubits, upon four rows of cedar pillars, with cedar beams upon the pillars."

1 Kings 7:3: "And it was covered with cedar above upon the beams, that lay on forty five pillars, fifteen in a row."

1 Kings 7:4: "And there were windows in three rows, and light was against light in three ranks."

1 Kings 7:5: "And all the doors and posts were square, with the windows: and light was against light in three ranks."

1 Kings 7:6: "And he made a porch of pillars; the length thereof was fifty cubits, and the breadth thereof thirty cubits: and the porch was before them: and the other pillars and the thick beam were before them."

1 Kings 7:7: "Then he made a porch for the throne where he might judge, even the porch of judgment: and it was covered with cedar from one side of the floor to the other."

1 Kings 7:8: "And his house where he dwelt had another court within the porch, which was of the like work. Solomon made also an house for Pharaoh's daughter, whom he had taken to wife, like unto this porch."

1 Kings 7:10: "And the foundation was of costly stones, even great stones, stones of ten cubits, and stones of eight cubits."

1 Kings 7:12: "And the great court round about was with three rows of hewed stones, and a row of cedar beams, both for the inner court of the house of the LORD, and for the porch of the house."

1 Kings 7:14: "He was a widow's son of the tribe of Naphtali, and his father was a man of Tyre, a worker in brass: and he was filled with wisdom, and understanding, and cunning to work all works in brass. And he came to king Solomon, and wrought all his work."

1 Kings 7:16: "And he made two chapiters of molten brass, to set upon the tops of the pillars: the height of the one chapter was five cubits, and the height of the other chapter was five cubits:"

1 Kings 7:20: "And the chapiters upon the two pillars had pomegranates also above, over against the belly which was by the network: and the pomegranates were two hundred in rows round about upon the other chapter."

1 Kings 7:22: "And upon the top of the pillars was lily work: so was the work of the pillars finished."

1 Kings 7:23: "And he made a molten sea, ten cubits from the one brim to the other: it was round all about, and his height was five cubits: and a line of thirty cubits did compass it round about."

1 Kings 7:24: "And under the brim of it round about there were knops compassing it, ten in a cubit, compassing the sea round about: the knops were cast in two rows, when it was cast."

1 Kings 7:25: "It stood upon twelve oxen, three looking toward the north, and three looking toward the west, and three looking toward the south, and three looking toward the east: and the sea was set above upon them, and all their hinder parts were inward."

1 Kings 7:26: "And it was an hand breadth thick, and the brim thereof was wrought like the brim of a cup, with flowers of lilies: it contained two thousand baths."

1 Kings 7:27: "And he made ten bases of brass; four cubits was the length of one base, and four cubits the breadth thereof, and three cubits the height of it."

1 Kings 7:28: "And the work of the bases was on this manner: they had borders, and the borders were between the ledges:"

1 Kings 7:29: "And on the borders that were between the ledges were lions, oxen, and cherubims: and upon the ledges there was a base above: and beneath the lions and oxen were certain additions made of thin work."

1 Kings 7:31: "And the mouth of it within the chapter and above was a cubit: but the mouth thereof was round after the work of the base, a cubit and an half: and also upon the mouth of it were gravings with their borders, foursquare, not round."

1 Kings 7:32: "And under the borders were four wheels; and the axletrees of the wheels were joined

to the base: and the height of a wheel was a cubit and half a cubit."

1 Kings 7:33: "And the work of the wheels was like the work of a chariot wheel: their axletrees, and their naves, and their felloes, and their spokes, were all molten."

1 Kings 7:35: "And in the top of the base was there a round compass of half a cubit high: and on the top of the base the ledges thereof and the borders thereof were of the same."

1 Kings 7:38: "Then made he ten lavers of brass: one laver contained forty baths: and every laver was four cubits: and upon every one of the ten bases one laver."

1 Kings 7:47: "And Solomon left all the vessels unweighed, because they were exceeding many: neither was the weight of the brass found out."

1 Kings 7:48: "And Solomon made all the vessels that pertained unto the house of the LORD: the altar of gold, and the table of gold, whereupon the shewbread was,"

1 Kings 7:51: "So was ended all the work that king Solomon made for the house of the LORD. And Solomon brought in the things which David his father had dedicated; even the silver, and the gold, and the vessels, did he put among the treasures of the house of the LORD."

1 Kings 8:9: "There was nothing in the ark save the two tables of stone, which Moses put there at Horeb, when the LORD made a covenant with the children of Israel, when they came out of the land of Egypt."

1 Kings 8:17: "And it was in the heart of David my father to build an house for the name of the LORD God of Israel."

1 Kings 8:18: "And the LORD said unto David my father, Whereas it was in thine heart to build an house unto my name, thou didst well that it was in thine heart."

1 Kings 8:54: "And it was so, that when Solomon had made an end of praying all this prayer and supplication unto the LORD, he arose from before the altar of the LORD, from kneeling on his knees with his hands spread up to heaven."

1 Kings 8:57: "The LORD our God be with us, as he was with our fathers: let him not leave us, nor forsake us:"

1 Kings 8:64: "The same day did the king hallow the middle of the court that was before the house of the LORD: for there he offered burnt offerings, and meat offerings, and the fat of the peace offerings: because the brasen altar that was before the LORD was too little to receive the burnt offerings, and meat offerings, and the fat of the peace offerings."

1 Kings 9:1: "And it came to pass, when Solomon had finished the building of the house of the LORD, and the king's house, and all Solomon's desire which he was pleased to do,"

1 Kings 9:25: "And three times in a year did Solomon offer burnt offerings and peace offerings upon the altar which he built unto the LORD, and he burnt incense upon the altar that was before the LORD. So he finished the house."

1 Kings 10:2: "And she came to Jerusalem with a very great train, with camels that bare spices, and very much gold, and precious stones: and when she was come to Solomon, she communed with him of all that was in her heart."

1 Kings 10:3: "And Solomon told her all her questions: there was not any thing hid from the king, which he told her not."

1 Kings 10:5: "And the meat of his table, and the sitting of his servants, and the attendance of his ministers, and their apparel, and his cupbearers, and his ascent by which he went up unto the house of the LORD; there was no more spirit in her."

1 Kings 10:6: "And she said to the king, It was a true report that I heard in mine own land of thy acts and of thy wisdom."

1 Kings 10:7: "Howbeit I believed not the words, until I came, and mine eyes had seen it: and, behold, the half was not told me: thy wisdom and prosperity exceedeth the fame which I heard."

1 Kings 10:14: "Now the weight of gold that came to Solomon in one year was six hundred threescore and six talents of gold,"

1 Kings 10:19: "The throne had six steps, and the top of the throne was round behind: and there

were stays on either side on the place of the seat, and two lions stood beside the stays."

1 Kings 10:20: "And twelve lions stood there on the one side and on the other upon the six steps: there was not the like made in any kingdom."

1 Kings 10:21: "And all king Solomon's drinking vessels were of gold, and all the vessels of the house of the forest of Lebanon were of pure gold; none were of silver: it was nothing accounted of in the days of Solomon."

1 Kings 11:4: "For it came to pass, when Solomon was old, that his wives turned away his heart after other gods: and his heart was not perfect with the LORD his God, as was the heart of David his father."

1 Kings 11:9: "And the LORD was angry with Solomon, because his heart was turned from the LORD God of Israel, which had appeared unto him twice,"

1 Kings 11:14: "And the LORD stirred up an adversary unto Solomon, Hadad the Edomite: he was of the king's seed in Edom."

1 Kings 11:15: "For it came to pass, when David was in Edom, and Joab the captain of the host was gone up to bury the slain, after he had smitten every male in Edom;"

1 Kings 11:20: "And the sister of Tahpenes bare him Genubath his son, whom Tahpenes weaned in Pharaoh's house: and Genubath was in Pharaoh's household among the sons of Pharaoh."

1 Kings 11:21: "And when Hadad heard in Egypt that David slept with his fathers, and that Joab the captain of the host was dead, Hadad said to Pharaoh, Let me depart, that I may go to mine own country."

1 Kings 11:25: "And he was an adversary to Israel all the days of Solomon, beside the mischief that Hadad did: and he abhorred Israel, and reigned over Syria."

1 Kings 11:26: "And Jeroboam the son of Nebat, an Ephrathite of Zereda, Solomon's servant, whose mother's name was Zeruah, a widow woman, even he lifted up his hand against the king."

1 Kings 11:27: "And this was the cause that he lifted up his hand against the king: Solomon built Millo, and repaired the breaches of the city of David his father."

1 Kings 11:28: "And the man Jeroboam was a mighty man of valour: and Solomon seeing the young man that he was industrious, he made him ruler over all the charge of the house of Joseph."

1 Kings 11:30: "And Ahijah caught the new garment that was on him, and rent it in twelve pieces:"

1 Kings 11:40: "Solomon sought therefore to kill Jeroboam. And Jeroboam arose, and fled into Egypt, unto Shishak king of Egypt, and was in Egypt until the death of Solomon."

1 Kings 11:42: "And the time that Solomon reigned in Jerusalem over all Israel was forty years."

1 Kings 11:43: "And Solomon slept with his fathers, and was buried in the city of David his father: and Rehoboam his son reigned in his stead."

1 Kings 12:2: "And it came to pass, when Jeroboam the son of Nebat, who was yet in Egypt, heard of it, (for he was fled from the presence of king Solomon, and Jeroboam dwelt in Egypt;)"

1 Kings 12:15: "Wherefore the king hearkened not unto the people; for the cause was from the LORD, that he might perform his saying, which the LORD spake by Ahijah the Shilonite unto Jeroboam the son of Nebat."

1 Kings 12:18: "Then king Rehoboam sent Adoram, who was over the tribute; and all Israel stoned him with stones, that he died. Therefore king Rehoboam made speed to get him up to his chariot, to flee to Jerusalem."

1 Kings 12:20: "And it came to pass, when all Israel heard that Jeroboam was come again, that they sent and called him unto the congregation, and made him king over all Israel: there was none that followed the house of David, but the tribe of Judah only."

1 Kings 12:21: "And when Rehoboam was come to Jerusalem, he assembled all the house of Judah, with the tribe of Benjamin, an hundred and fourscore thousand chosen men, which were warriors, to fight against the house of Israel, to bring the kingdom again to Rehoboam the son of Solomon."

1 Kings 13:5: "The altar also was rent, and the ashes poured out from the altar, according to the sign which the man of God had given by the word of the LORD."



1 Kings 13:6: "And the king answered and said unto the man of God, Intreat now the face of the LORD thy God, and pray for me, that my hand may be restored me again. And the man of God besought the LORD, and the king's hand was restored him again, and became as it was before."

1 Kings 13:9: "For so was it charged me by the word of the LORD, saying, Eat no bread, nor drink water, nor turn again by the same way that thou camest."

1 Kings 13:17: "For it was said to me by the word of the LORD, Thou shalt eat no bread nor drink water there, nor turn again to go by the way that thou camest."

1 Kings 13:24: "And when he was gone, a lion met him by the way, and slew him: and his carcase was cast in the way, and the ass stood by it, the lion also stood by the carcase."

1 Kings 13:26: "And when the prophet that brought him back from the way heard thereof, he said, It is the man of God, who was disobedient unto the word of the LORD: therefore the LORD hath delivered him unto the lion, which hath torn him, and slain him, according to the word of the LORD, which he spake unto him."

1 Kings 14:6: "And it was so, when Ahijah heard the sound of her feet, as she came in at the door, that he said, Come in, thou wife of Jeroboam; why feignest thou thyself to be another? for I am sent to thee with heavy tidings."

1 Kings 14:8: "And rent the kingdom away from the house of David, and gave it thee: and yet thou hast not been as my servant David, who kept my commandments, and who followed me with all his heart, to do that only which was right in mine eyes;"

1 Kings 14:21: "And Rehoboam the son of Solomon reigned in Judah. Rehoboam was forty and one years old when he began to reign, and he reigned seventeen years in Jerusalem, the city which the LORD did choose out of all the tribes of Israel, to put his name there. And his mother's name was Naamah an Ammonitess."

1 Kings 14:28: "And it was so, when the king went into the house of the LORD, that the guard bare them, and brought them back into the guard chamber."

1 Kings 14:30: "And there was war between Rehoboam and Jeroboam all their days."

1 Kings 14:31: "And Rehoboam slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David. And his mother's name was Naamah an Ammonitess. And Abijam his son reigned in his stead."

1 Kings 15:2: "Three years reigned he in Jerusalem. and his mother's name was Maachah, the daughter of Abishalom."

1 Kings 15:3: "And he walked in all the sins of his father, which he had done before him: and his heart was not perfect with the LORD his God, as the heart of David his father."

1 Kings 15:5: "Because David did that which was right in the eyes of the LORD, and turned not aside from any thing that he commanded him all the days of his life, save only in the matter of Uriah the Hittite."

1 Kings 15:6: "And there was war between Rehoboam and Jeroboam all the days of his life."

1 Kings 15:7: "Now the rest of the acts of Abijam, and all that he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? And there was war between Abijam and Jeroboam."

1 Kings 15:10: "And forty and one years reigned he in Jerusalem. And his mother's name was Maachah, the daughter of Abishalom."

1 Kings 15:11: "And Asa did that which was right in the eyes of the LORD, as did David his father."

1 Kings 15:14: "But the high places were not removed: nevertheless Asa's heart was perfect with the LORD all his days."

1 Kings 15:16: "And there was war between Asa and Baasha king of Israel all their days."

1 Kings 15:22: "Then king Asa made a proclamation throughout all Judah; none was exempted: and they took away the stones of Ramah, and the timber thereof, wherewith Baasha had builded; and king Asa built with them Geba of Benjamin, and Mizpah."

1 Kings 15:23: "The rest of all the acts of Asa, and all his might, and all that he did, and the cities

which he built, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? Nevertheless in the time of his old age he was diseased in his feet."

1 Kings 15:24: "And Asa slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David his father: and Jehoshaphat his son reigned in his stead."

1 Kings 15:32: "And there was war between Asa and Baasha king of Israel all their days."

1 Kings 16:6: "So Baasha slept with his fathers, and was buried in Tirzah: and Elah his son reigned in his stead."

1 Kings 16:9: "And his servant Zimri, captain of half his chariots, conspired against him, as he was in Tirzah, drinking himself drunk in the house of Arza steward of his house in Tirzah."

1 Kings 16:18: "And it came to pass, when Zimri saw that the city was taken, that he went into the palace of the king's house, and burnt the king's house over him with fire, and died."

1 Kings 16:28: "So Omri slept with his fathers, and was buried in Samaria: and Ahab his son reigned in his stead."

1 Kings 17:1: "And Elijah the Tishbite, who was of the inhabitants of Gilead, said unto Ahab, As the LORD God of Israel liveth, before whom I stand, there shall not be dew nor rain these years, but according to my word."

1 Kings 17:10: "So he arose and went to Zarephath. And when he came to the gate of the city, behold, the widow woman was there gathering of sticks: and he called to her, and said, Fetch me, I pray thee, a little water in a vessel, that I may drink."

1 Kings 17:11: "And as she was going to fetch it, he called to her, and said, Bring me, I pray thee, a morsel of bread in thine hand."

1 Kings 17:17: "And it came to pass after these things, that the son of the woman, the mistress of the house, fell sick; and his sickness was so sore, that there was no breath left in him."

1 Kings 18:2: "And Elijah went to shew himself unto Ahab. And there was a sore famine in Samaria."

1 Kings 18:3: "And Ahab called Obadiah, which was the governor of his house. (Now Obadiah feared the LORD greatly:"

1 Kings 18:4: "For it was so, when Jezebel cut off the prophets of the LORD, that Obadiah took an hundred prophets, and hid them by fifty in a cave, and fed them with bread and water.)"

1 Kings 18:7: "And as Obadiah was in the way, behold, Elijah met him: and he knew him, and fell on his face, and said, Art thou that my lord Elijah?"

1 Kings 18:13: "Was it not told my lord what I did when Jezebel slew the prophets of the LORD, how I hid an hundred men of the LORD's prophets by fifty in a cave, and fed them with bread and water?"

1 Kings 18:26: "And they took the bullock which was given them, and they dressed it, and called on the name of Baal from morning even until noon, saying, O Baal, hear us. But there was no voice, nor any that answered. And they leaped upon the altar which was made."

1 Kings 18:29: "And it came to pass, when midday was past, and they prophesied until the time of the offering of the evening sacrifice, that there was neither voice, nor any to answer, nor any that regarded."

1 Kings 18:30: "And Elijah said unto all the people, Come near unto me. And all the people came near unto him. And he repaired the altar of the LORD that was broken down."

1 Kings 18:38: "Then the fire of the LORD fell, and consumed the burnt sacrifice, and the wood, and the stones, and the dust, and licked up the water that was in the trench."

1 Kings 18:45: "And it came to pass in the mean while, that the heaven was black with clouds and wind, and there was a great rain. And Ahab rode, and went to Jezreel."

1 Kings 18:46: "And the hand of the LORD was on Elijah; and he girded up his loins, and ran before Ahab to the entrance of Jezreel."

1 Kings 19:6: "And he looked, and, behold, there was a cake baken on the coals, and a cruse of water at his head. And he did eat and drink, and laid him down again."

1 Kings 19:11: "And he said, Go forth, and stand upon the mount before the LORD. And, behold, the LORD passed by, and a great and strong wind rent the mountains, and brake in pieces the rocks before the LORD; but the LORD was not in the wind: and after the wind an earthquake; but the LORD was not in the earthquake:"

1 Kings 19:12: "And after the earthquake a fire; but the LORD was not in the fire: and after the fire a still small voice."

1 Kings 19:13: "And it was so, when Elijah heard it, that he wrapped his face in his mantle, and went out, and stood in the entering in of the cave. And, behold, there came a voice unto him, and said, What doest thou here, Elijah?"

1 Kings 19:19: "So he departed thence, and found Elisha the son of Shaphat, who was plowing with twelve yoke of oxen before him, and he with the twelfth: and Elijah passed by him, and cast his mantle upon him."

1 Kings 20:12: "And it came to pass, when Ben-hadad heard this message, as he was drinking, he and the kings in the pavilions, that he said unto his servants, Set yourselves in array. And they set themselves in array against the city."

1 Kings 20:16: "And they went out at noon. But Benhadad was drinking himself drunk in the pavilions, he and the kings, the thirty and two kings that helped him."

1 Kings 20:29: "And they pitched one over against the other seven days. And so it was, that in the seventh day the battle was joined: and the children of Israel slew of the Syrians an hundred thousand footmen in one day."

1 Kings 20:36: "Then said he unto him, Because thou hast not obeyed the voice of the LORD, behold, as soon as thou art departed from me, a lion shall slay thee. And as soon as he was departed from him, a lion found him, and slew him."

1 Kings 20:40: "And as thy servant was busy here and there, he was gone. And the king of Israel said unto him, So shall thy judgment be; thyself hast decided it."

1 Kings 20:41: "And he hasted, and took the ashes away from his face; and the king of Israel discerned him that he was of the prophets."

1 Kings 21:1: "And it came to pass after these things, that Naboth the Jezreelite had a vineyard, which was in Jezreel, hard by the palace of Ahab king of Samaria."

1 Kings 21:11: "And the men of his city, even the elders and the nobles who were the inhabitants in his city, did as Jezebel had sent unto them, and as it was written in the letters which she had sent unto them."

1 Kings 21:15: "And it came to pass, when Jezebel heard that Naboth was stoned, and was dead, that Jezebel said to Ahab, Arise, take possession of the vineyard of Naboth the Jezreelite, which he refused to give thee for money: for Naboth is not alive, but dead."

1 Kings 21:16: "And it came to pass, when Ahab heard that Naboth was dead, that Ahab rose up to go down to the vineyard of Naboth the Jezreelite, to take possession of it."

1 Kings 21:25: "But there was none like unto Ahab, which did sell himself to work wickedness in the sight of the LORD, whom Jezebel his wife stirred up."

1 Kings 22:13: "And the messenger that was gone to call Micaiah spake unto him, saying, Behold now, the words of the prophets declare good unto the king with one mouth: let thy word, I pray thee, be like the word of one of them, and speak that which is good."

1 Kings 22:33: "And it came to pass, when the captains of the chariots perceived that it was not the king of Israel, that they turned back from pursuing him."

1 Kings 22:35: "And the battle increased that day: and the king was stayed up in his chariot against the Syrians, and died at even: and the blood ran out of the wound into the midst of the chariot."

1 Kings 22:37: "So the king died, and was brought to Samaria; and they buried the king in Samaria."

1 Kings 22:42: "Jehoshaphat was thirty and five years old when he began to reign; and he reigned twenty and five years in Jerusalem. And his mother's name was Azubah the daughter of Shilhi."

1 Kings 22:43: "And he walked in all the ways of Asa his father; he turned not aside from it, doing that which was right in the eyes of the LORD: nevertheless the high places were not taken away; for the people offered and burnt incense yet in the high places."

1 Kings 22:47: "There was then no king in Edom: a deputy was king."

1 Kings 22:50: "And Jehoshaphat slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David his father: and Jehoram his son reigned in his stead."

2 Kings 1:2: "And Ahaziah fell down through a lattice in his upper chamber that was in Samaria, and was sick: and he sent messengers, and said unto them, Go, enquire of Baalzebub the god of Ekron whether I shall recover of this disease."

2 Kings 1:7: "And he said unto them, What manner of man was he which came up to meet you, and told you these words?"

2 Kings 1:8: "And they answered him, He was an hairy man, and girt with a girdle of leather about his loins. And he said, It is Elijah the Tishbite."

2 Kings 2:17: "And when they urged him till he was ashamed, he said, Send. They sent therefore fifty men; and they sought three days, but found him not."

2 Kings 2:23: "And he went up from thence unto Bethel: and as he was going up by the way, there came forth little children out of the city, and mocked him, and said unto him, Go up, thou bald head; go up, thou bald head."

2 Kings 3:4: "And Mesha king of Moab was a sheepmaster, and rendered unto the king of Israel an hundred thousand lambs, and an hundred thousand rams, with the wool."

2 Kings 3:5: "But it came to pass, when Ahab was dead, that the king of Moab rebelled against the king of Israel."

2 Kings 3:9: "So the king of Israel went, and the king of Judah, and the king of Edom: and they fetched a compass of seven days' journey: and there was no water for the host, and for the cattle that followed them."

2 Kings 3:20: "And it came to pass in the morning, when the meat offering was offered, that, behold, there came water by the way of Edom, and the country was filled with water."

2 Kings 3:26: "And when the king of Moab saw that the battle was too sore for him, he took with him seven hundred men that drew swords, to break through even unto the king of Edom: but they could not."

2 Kings 3:27: "Then he took his eldest son that should have reigned in his stead, and offered him for a burnt offering upon the wall. And there was great indignation against Israel: and they departed from him, and returned to their own land."

2 Kings 4:8: "And it fell on a day, that Elisha passed to Shunem, where was a great woman; and she constrained him to eat bread. And so it was, that as oft as he passed by, he turned in thither to eat bread."

2 Kings 4:18: "And when the child was grown, it fell on a day, that he went out to his father to the reapers."

2 Kings 4:31: "And Gehazi passed on before them, and laid the staff upon the face of the child; but there was neither voice, nor hearing. Wherefore he went again to meet him, and told him, saying, The child is not awaked."

2 Kings 4:32: "And when Elisha was come into the house, behold, the child was dead, and laid upon his bed."

2 Kings 4:36: "And he called Gehazi, and said, Call this Shunammite. So he called her. And when she was come in unto him, he said, Take up thy son."

2 Kings 4:38: "And Elisha came again to Gilgal: and there was a dearth in the land; and the sons of the prophets were sitting before him: and he said unto his servant, Set on the great pot, and seethe pottage for the sons of the prophets."

2 Kings 4:41: "But he said, Then bring meal. And he cast it into the pot; and he said, Pour out for the people, that they may eat. And there was no harm in the pot."

2 Kings 5:1: "Now Naaman, captain of the host of the king of Syria, was a great man with his master, and honourable, because by him the LORD had given deliverance unto Syria: he was also a mighty man in valour, but he was a leper."

2 Kings 5:8: "And it was so, when Elisha the man of God had heard that the king of Israel had rent his clothes, that he sent to the king, saying, Wherefore hast thou rent thy clothes? let him come now to me, and he shall know that there is a prophet in Israel."

2 Kings 5:11: "But Naaman was wroth, and went away, and said, Behold, I thought, He will surely come out to me, and stand, and call on the name of the LORD his God, and strike his hand over the place, and recover the leper."

2 Kings 5:14: "Then went he down, and dipped himself seven times in Jordan, according to the saying of the man of God: and his flesh came again like unto the flesh of a little child, and he was clean."

2 Kings 6:5: "But as one was felling a beam, the axe head fell into the water: and he cried, and said, Alas, master! for it was borrowed."

2 Kings 6:11: "Therefore the heart of the king of Syria was sore troubled for this thing; and he called his servants, and said unto them, Will ye not shew me which of us is for the king of Israel?"

2 Kings 6:13: "And he said, Go and spy where he is, that I may send and fetch him. And it was told him, saying, Behold, he is in Dothan."

2 Kings 6:15: "And when the servant of the man of God was risen early, and gone forth, behold, an host compassed the city both with horses and chariots. And his servant said unto him, Alas, my master! how shall we do?"

2 Kings 6:17: "And Elisha prayed, and said, LORD, I pray thee, open his eyes, that he may see. And the LORD opened the eyes of the young man; and he saw: and, behold, the mountain was full of horses and chariots of fire round about Elisha."

2 Kings 6:25: "And there was a great famine in Samaria: and, behold, they besieged it, until an ass's head was sold for fourscore pieces of silver, and the fourth part of a cab of dove's dung for five pieces of silver."

2 Kings 6:26: "And as the king of Israel was passing by upon the wall, there cried a woman unto him, saying, Help, my lord, O king."

2 Kings 7:5: "And they rose up in the twilight, to go unto the camp of the Syrians: and when they were come to the uttermost part of the camp of Syria, behold, there was no man there."

2 Kings 7:7: "Wherefore they arose and fled in the twilight, and left their tents, and their horses, and their asses, even the camp as it was, and fled for their life."

2 Kings 7:10: "So they came and called unto the porter of the city: and they told them, saying, We came to the camp of the Syrians, and, behold, there was no man there, neither voice of man, but horses tied, and asses tied, and the tents as they were."

2 Kings 7:15: "And they went after them unto Jordan: and, lo, all the way was full of garments and vessels, which the Syrians had cast away in their haste. And the messengers returned, and told the king."

2 Kings 7:16: "And the people went out, and spoiled the tents of the Syrians. So a measure of fine flour was sold for a shekel, and two measures of barley for a shekel, according to the word of the LORD."

2 Kings 8:5: "And it came to pass, as he was telling the king how he had restored a dead body to life, that, behold, the woman, whose son he had restored to life, cried to the king for her house and for her land. And Gehazi said, My lord, O king, this is the woman, and this is her son, whom Elisha restored to life."

2 Kings 8:6: "And when the king asked the woman, she told him. So the king appointed unto her a certain officer, saying, Restore all that was hers, and all the fruits of the field since the day that she left the land, even until now."

2 Kings 8:7: "And Elisha came to Damascus; and Benhadad the king of Syria was sick; and it was

told him, saying, The man of God is come hither."

2 Kings 8:11: "And he settled his countenance stedfastly, until he was ashamed: and the man of God wept."

2 Kings 8:17: "Thirty and two years old was he when he began to reign; and he reigned eight years in Jerusalem."

2 Kings 8:18: "And he walked in the way of the kings of Israel, as did the house of Ahab: for the daughter of Ahab was his wife: and he did evil in the sight of the LORD."

2 Kings 8:24: "And Joram slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David: and Ahaziah his son reigned in his stead."

2 Kings 8:26: "Two and twenty years old was Ahaziah when he began to reign; and he reigned one year in Jerusalem. And his mother's name was Athaliah, the daughter of Omri king of Israel."

2 Kings 8:27: "And he walked in the way of the house of Ahab, and did evil in the sight of the LORD, as did the house of Ahab: for he was the son in law of the house of Ahab."

2 Kings 8:29: "And king Joram went back to be healed in Jezreel of the wounds which the Syrians had given him at Ramah, when he fought against Hazael king of Syria. And Ahaziah the son of Jehoram king of Judah went down to see Joram the son of Ahab in Jezreel, because he was sick."

2 Kings 9:15: "But king Joram was returned to be healed in Jezreel of the wounds which the Syrians had given him, when he fought with Hazael king of Syria.) And Jehu said, If it be your minds, then let none go forth nor escape out of the city to go to tell it in Jezreel."

2 Kings 9:16: "So Jehu rode in a chariot, and went to Jezreel; for Joram lay there. And Ahaziah king of Judah was come down to see Joram."

2 Kings 9:21: "And Joram said, Make ready. And his chariot was made ready. And Joram king of Israel and Ahaziah king of Judah went out, each in his chariot, and they went out against Jehu, and met him in the portion of Naboth the Jezreelite."

2 Kings 9:30: "And when Jehu was come to Jezreel, Jezebel heard of it; and she painted her face, and tired her head, and looked out at a window."

2 Kings 9:33: "And he said, Throw her down. So they threw her down: and some of her blood was sprinkled on the wall, and on the horses: and he trode her under foot."

2 Kings 9:34: "And when he was come in, he did eat and drink, and said, Go, see now this cursed woman, and bury her: for she is a king's daughter."

2 Kings 10:5: "And he that was over the house, and he that was over the city, the elders also, and the bringers up of the children, sent to Jehu, saying, We are thy servants, and will do all that thou shalt bid us; we will not make any king: do thou that which is good in thine eyes."

2 Kings 10:12: "And he arose and departed, and came to Samaria. And as he was at the shearing house in the way,"

2 Kings 10:15: "And when he was departed thence, he lighted on Jehonadab the son of Rechab coming to meet him: and he saluted him, and said to him, Is thine heart right, as my heart is with thy heart? And Jehonadab answered, It is. If it be, give me thine hand. And he gave him his hand; and he took him up to him into the chariot."

2 Kings 10:21: "And Jehu sent through all Israel: and all the worshippers of Baal came, so that there was not a man left that came not. And they came into the house of Baal; and the house of Baal was full from one end to another."

2 Kings 10:22: "And he said unto him that was over the vestry, Bring forth vestments for all the worshippers of Baal. And he brought them forth vestments."

2 Kings 10:30: "And the LORD said unto Jehu, Because thou hast done well in executing that which is right in mine eyes, and hast done unto the house of Ahab according to all that was in mine heart, thy children of the fourth generation shall sit on the throne of Israel."

2 Kings 10:36: "And the time that Jehu reigned over Israel in Samaria was twenty and eight years."

2 Kings 11:1: "And when Athaliah the mother of Ahaziah saw that her son was dead, she arose and destroyed all the seed royal."

2 Kings 11:2: "But Jehosheba, the daughter of king Joram, sister of Ahaziah, took Joash the son of Ahaziah, and stole him from among the king's sons which were slain; and they hid him, even him and his nurse, in the bedchamber from Athaliah, so that he was not slain."

2 Kings 11:3: "And he was with her hid in the house of the LORD six years. And Athaliah did reign over the land."

2 Kings 11:14: "And when she looked, behold, the king stood by a pillar, as the manner was, and the princes and the trumpeters by the king, and all the people of the land rejoiced, and blew with trumpets: and Athaliah rent her clothes, and cried, Treason, Treason."

2 Kings 11:16: "And they laid hands on her; and she went by the way by the which the horses came into the king's house: and there was she slain."

2 Kings 11:20: "And all the people of the land rejoiced, and the city was in quiet: and they slew Athaliah with the sword beside the king's house."

2 Kings 11:21: "Seven years old was Jehoash when he began to reign."

2 Kings 12:1: "In the seventh year of Jehu Jehoash began to reign; and forty years reigned he in Jerusalem. And his mother's name was Zibiah of Beersheba."

2 Kings 12:2: "And Jehoash did that which was right in the sight of the LORD all his days wherein Jehoiada the priest instructed him."

2 Kings 12:6: "But it was so, that in the three and twentieth year of king Jehoash the priests had not repaired the breaches of the house."

2 Kings 12:9: "But Jehoiada the priest took a chest, and bored a hole in the lid of it, and set it beside the altar, on the right side as one cometh into the house of the LORD: and the priests that kept the door put therein all the money that was brought into the house of the LORD."

2 Kings 12:10: "And it was so, when they saw that there was much money in the chest, that the king's scribe and the high priest came up, and they put up in bags, and told the money that was found in the house of the LORD."

2 Kings 12:12: "And to masons, and hewers of stone, and to buy timber and hewed stone to repair the breaches of the house of the LORD, and for all that was laid out for the house to repair it."

2 Kings 12:13: "Howbeit there were not made for the house of the LORD bowls of silver, snuffers, basons, trumpets, any vessels of gold, or vessels of silver, of the money that was brought into the house of the LORD:"

2 Kings 12:16: "The trespass money and sin money was not brought into the house of the LORD: it was the priests'."

2 Kings 12:18: "And Jehoash king of Judah took all the hallowed things that Jehoshaphat, and Jehoram, and Ahaziah, his fathers, kings of Judah, had dedicated, and his own hallowed things, and all the gold that was found in the treasures of the house of the LORD, and in the king's house, and sent it to Hazael king of Syria: and he went away from Jerusalem."

2 Kings 13:2: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, and followed the sins of Jeroboam the son of Nebat, which made Israel to sin; he departed not therefrom."

2 Kings 13:3: "And the anger of the LORD was kindled against Israel, and he delivered them into the hand of Hazael king of Syria, and into the hand of Benhadad the son of Hazael, all their days."

2 Kings 13:11: "And he did that which was evil in the sight of the LORD; he departed not from all the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel sin: but he walked therein."

2 Kings 13:13: "And Joash slept with his fathers; and Jeroboam sat upon his throne: and Joash was buried in Samaria with the kings of Israel."

2 Kings 13:14: "Now Elisha was fallen sick of his sickness whereof he died. And Joash the king of Israel came down unto him, and wept over his face, and said, O my father, my father, the chariot of Israel, and the horsemen thereof."

2 Kings 13:19: "And the man of God was wroth with him, and said, Thou shouldest have smitten five or six times; then hadst thou smitten Syria till thou hadst consumed it: whereas now thou shalt smite Syria but thrice."

2 Kings 13:21: "And it came to pass, as they were burying a man, that, behold, they spied a band of men; and they cast the man into the sepulchre of Elisha: and when the man was let down, and touched the bones of Elisha, he revived, and stood up on his feet."

2 Kings 13:23: "And the LORD was gracious unto them, and had compassion on them, and had respect unto them, because of his covenant with Abraham, Isaac, and Jacob, and would not destroy them, neither cast he them from his presence as yet."

2 Kings 14:2: "He was twenty and five years old when he began to reign, and reigned twenty and nine years in Jerusalem. And his mother's name was Jehoaddan of Jerusalem."

2 Kings 14:3: "And he did that which was right in the sight of the LORD, yet not like David his father: he did according to all things as Joash his father did."

2 Kings 14:5: "And it came to pass, as soon as the kingdom was confirmed in his hand, that he slew his servants which had slain the king his father."

2 Kings 14:9: "And Jehoash the king of Israel sent to Amaziah king of Judah, saying, The thistle that was in Lebanon sent to the cedar that was in Lebanon, saying, Give thy daughter to my son to wife: and there passed by a wild beast that was in Lebanon, and trode down the thistle."

2 Kings 14:12: "And Judah was put to the worse before Israel; and they fled every man to their tents."

2 Kings 14:16: "And Jehoash slept with his fathers, and was buried in Samaria with the kings of Israel; and Jeroboam his son reigned in his stead."

2 Kings 14:20: "And they brought him on horses: and he was buried at Jerusalem with his fathers in the city of David."

2 Kings 14:21: "And all the people of Judah took Azariah, which was sixteen years old, and made him king instead of his father Amaziah."

2 Kings 14:24: "And he did that which was evil in the sight of the LORD: he departed not from all the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 14:25: "He restored the coast of Israel from the entering of Hamath unto the sea of the plain, according to the word of the LORD God of Israel, which he spake by the hand of his servant Jonah, the son of Amittai, the prophet, which was of Gathhepher."

2 Kings 14:26: "For the LORD saw the affliction of Israel, that it was very bitter: for there was not any shut up, nor any left, nor any helper for Israel."

2 Kings 15:2: "Sixteen years old was he when he began to reign, and he reigned two and fifty years in Jerusalem. And his mother's name was Jecholiah of Jerusalem."

2 Kings 15:3: "And he did that which was right in the sight of the LORD, according to all that his father Amaziah had done;"

2 Kings 15:5: "And the LORD smote the king, so that he was a leper unto the day of his death, and dwelt in a several house. And Jotham the king's son was over the house, judging the people of the land."

2 Kings 15:9: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, as his fathers had done: he departed not from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 15:12: "This was the word of the LORD which he spake unto Jehu, saying, Thy sons shall sit on the throne of Israel unto the fourth generation. And so it came to pass."

2 Kings 15:18: "And he did that which was evil in the sight of the LORD: he departed not all his days from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 15:24: "And he did that which was evil in the sight of the LORD: he departed not from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 15:28: "And he did that which was evil in the sight of the LORD: he departed not from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 15:33: "Five and twenty years old was he when he began to reign, and he reigned sixteen years in Jerusalem. And his mother's name was Jerusha, the daughter of Zadok."

2 Kings 15:34: "And he did that which was right in the sight of the LORD: he did according to all



that his father Uzziah had done."

2 Kings 15:38: "And Jotham slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David his father: and Ahaz his son reigned in his stead."

2 Kings 16:2: "Twenty years old was Ahaz when he began to reign, and reigned sixteen years in Jerusalem, and did not that which was right in the sight of the LORD his God, like David his father."

2 Kings 16:8: "And Ahaz took the silver and gold that was found in the house of the LORD, and in the treasures of the king's house, and sent it for a present to the king of Assyria."

2 Kings 16:10: "And king Ahaz went to Damascus to meet Tiglathpileser king of Assyria, and saw an altar that was at Damascus: and king Ahaz sent to Urijah the priest the fashion of the altar, and the pattern of it, according to all the workmanship thereof."

2 Kings 16:12: "And when the king was come from Damascus, the king saw the altar: and the king approached to the altar, and offered thereon."

2 Kings 16:14: "And he brought also the brasen altar, which was before the LORD, from the forefront of the house, from between the altar and the house of the LORD, and put it on the north side of the altar."

2 Kings 16:20: "And Ahaz slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David: and Hezekiah his son reigned in his stead."

2 Kings 17:2: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, but not as the kings of Israel that were before him."

2 Kings 17:7: "For so it was, that the children of Israel had sinned against the LORD their God, which had brought them up out of the land of Egypt, from under the hand of Pharaoh king of Egypt, and had feared other gods,"

2 Kings 17:18: "Therefore the LORD was very angry with Israel, and removed them out of his sight: there was none left but the tribe of Judah only."

2 Kings 17:23: "Until the LORD removed Israel out of his sight, as he had said by all his servants the prophets. So was Israel carried away out of their own land to Assyria unto this day."

2 Kings 17:25: "And so it was at the beginning of their dwelling there, that they feared not the LORD: therefore the LORD sent lions among them, which slew some of them."

2 Kings 18:2: "Twenty and five years old was he when he began to reign; and he reigned twenty and nine years in Jerusalem. His mother's name also was Abi, the daughter of Zachariah."

2 Kings 18:3: "And he did that which was right in the sight of the LORD, according to all that David his father did."

2 Kings 18:5: "He trusted in the LORD God of Israel; so that after him was none like him among all the kings of Judah, nor any that were before him."

2 Kings 18:7: "And the LORD was with him; and he prospered whithersoever he went forth: and he rebelled against the king of Assyria, and served him not."

2 Kings 18:9: "And it came to pass in the fourth year of king Hezekiah, which was the seventh year of Hoshea son of Elah king of Israel, that Shalmaneser king of Assyria came up against Samaria, and besieged it."

2 Kings 18:10: "And at the end of three years they took it: even in the sixth year of Hezekiah, that is in the ninth year of Hoshea king of Israel, Samaria was taken."

2 Kings 18:15: "And Hezekiah gave him all the silver that was found in the house of the LORD, and in the treasures of the king's house."

2 Kings 18:18: "And when they had called to the king, there came out to them Eliakim the son of Hilkiyah, which was over the household, and Shebna the scribe, and Joah the son of Asaph the recorder."

2 Kings 18:36: "But the people held their peace, and answered him not a word: for the king's commandment was, saying, Answer him not."

2 Kings 18:37: "Then came Eliakim the son of Hilkiyah, which was over the household, and Shebna

the scribe, and Joah the son of Asaph the recorder, to Hezekiah with their clothes rent, and told him the words of Rabshakeh."

2 Kings 19:2: "And he sent Eliakim, which was over the household, and Shebna the scribe, and the elders of the priests, covered with sackcloth, to Isaiah the prophet the son of Amoz."

2 Kings 19:8: "So Rabshakeh returned, and found the king of Assyria warring against Libnah: for he had heard that he was departed from Lachish."

2 Kings 19:37: "And it came to pass, as he was worshipping in the house of Nisroch his god, that Adrammelech and Sharezer his sons smote him with the sword: and they escaped into the land of Armenia. And Esarhaddon his son reigned in his stead."

2 Kings 20:1: "In those days was Hezekiah sick unto death. And the prophet Isaiah the son of Amoz came to him, and said unto him, Thus saith the LORD, Set thine house in order; for thou shalt die, and not live."

2 Kings 20:4: "And it came to pass, afore Isaiah was gone out into the middle court, that the word of the LORD came to him, saying,"

2 Kings 20:13: "And Hezekiah hearkened unto them, and shewed them all the house of his precious things, the silver, and the gold, and the spices, and the precious ointment, and all the house of his armour, and all that was found in his treasures: there was nothing in his house, nor in all his dominion, that Hezekiah shewed them not."

2 Kings 21:1: "Manasseh was twelve years old when he began to reign, and reigned fifty and five years in Jerusalem. And his mother's name was Hephzibah."

2 Kings 21:2: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, after the abominations of the heathen, whom the LORD cast out before the children of Israel."

2 Kings 21:15: "Because they have done that which was evil in my sight, and have provoked me to anger, since the day their fathers came forth out of Egypt, even unto this day."

2 Kings 21:16: "Moreover Manasseh shed innocent blood very much, till he had filled Jerusalem from one end to another; beside his sin wherewith he made Judah to sin, in doing that which was evil in the sight of the LORD."

2 Kings 21:18: "And Manasseh slept with his fathers, and was buried in the garden of his own house, in the garden of Uzza: and Amon his son reigned in his stead."

2 Kings 21:19: "Amon was twenty and two years old when he began to reign, and he reigned two years in Jerusalem. And his mother's name was Meshullemeth, the daughter of Haruz of Jotbah."

2 Kings 21:20: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, as his father Manasseh did."

2 Kings 21:26: "And he was buried in his sepulchre in the garden of Uzza: and Josiah his son reigned in his stead."

2 Kings 22:1: "Josiah was eight years old when he began to reign, and he reigned thirty and one years in Jerusalem. And his mother's name was Jedidah, the daughter of Adaiah of Boscath."

2 Kings 22:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, and walked in all the way of David his father, and turned not aside to the right hand or to the left."

2 Kings 22:7: "Howbeit there was no reckoning made with them of the money that was delivered into their hand, because they dealt faithfully."

2 Kings 22:9: "And Shaphan the scribe came to the king, and brought the king word again, and said, Thy servants have gathered the money that was found in the house, and have delivered it into the hand of them that do the work, that have the oversight of the house of the LORD."

2 Kings 22:19: "Because thine heart was tender, and thou hast humbled thyself before the LORD, when thou heardest what I spake against this place, and against the inhabitants thereof, that they should become a desolation and a curse, and hast rent thy clothes, and wept before me; I also have heard thee, saith the LORD."

2 Kings 23:2: "And the king went up into the house of the LORD, and all the men of Judah and all the inhabitants of Jerusalem with him, and the priests, and the prophets, and all the people, both

small and great: and he read in their ears all the words of the book of the covenant which was found in the house of the LORD."

2 Kings 23:11: "And he took away the horses that the kings of Judah had given to the sun, at the entering in of the house of the LORD, by the chamber of Nathanmelech the chamberlain, which was in the suburbs, and burned the chariots of the sun with fire."

2 Kings 23:15: "Moreover the altar that was at Bethel, and the high place which Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin, had made, both that altar and the high place he brake down, and burned the high place, and stamped it small to powder, and burned the grove."

2 Kings 23:22: "Surely there was not holden such a passover from the days of the judges that judged Israel, nor in all the days of the kings of Israel, nor of the kings of Judah;"

2 Kings 23:23: "But in the eighteenth year of king Josiah, wherein this passover was holden to the LORD in Jerusalem."

2 Kings 23:25: "And like unto him was there no king before him, that turned to the LORD with all his heart, and with all his soul, and with all his might, according to all the law of Moses; neither after him arose there any like him."

2 Kings 23:26: "Notwithstanding the LORD turned not from the fierceness of his great wrath, wherewith his anger was kindled against Judah, because of all the provocations that Manasseh had provoked him withal."

2 Kings 23:31: "Jehoahaz was twenty and three years old when he began to reign; and he reigned three months in Jerusalem. And his mother's name was Hamutal, the daughter of Jeremiah of Libnah."

2 Kings 23:32: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, according to all that his fathers had done."

2 Kings 23:36: "Jehoiakim was twenty and five years old when he began to reign; and he reigned eleven years in Jerusalem. And his mother's name was Zebudah, the daughter of Pedaiah of Rumah."

2 Kings 23:37: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, according to all that his fathers had done."

2 Kings 24:8: "Jehoiachin was eighteen years old when he began to reign, and he reigned in Jerusalem three months. And his mother's name was Nehushta, the daughter of Elnathan of Jerusalem."

2 Kings 24:9: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, according to all that his father had done."

2 Kings 24:10: "At that time the servants of Nebuchadnezzar king of Babylon came up against Jerusalem, and the city was besieged."

2 Kings 24:18: "Zedekiah was twenty and one years old when he began to reign, and he reigned eleven years in Jerusalem. And his mother's name was Hamutal, the daughter of Jeremiah of Libnah."

2 Kings 24:19: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, according to all that Jehoiakim had done."

2 Kings 25:2: "And the city was besieged unto the eleventh year of king Zedekiah."

2 Kings 25:3: "And on the ninth day of the fourth month the famine prevailed in the city, and there was no bread for the people of the land."

2 Kings 25:4: "And the city was broken up, and all the men of war fled by night by the way of the gate between two walls, which is by the king's garden: (now the Chaldees were against the city round about:) and the king went the way toward the plain."

2 Kings 25:13: "And the pillars of brass that were in the house of the LORD, and the bases, and the brasen sea that was in the house of the LORD, did the Chaldees break in pieces, and carried the brass of them to Babylon."

2 Kings 25:16: "The two pillars, one sea, and the bases which Solomon had made for the house of

the LORD; the brass of all these vessels was without weight."

2 Kings 25:17: "The height of the one pillar was eighteen cubits, and the chapter upon it was brass: and the height of the chapter three cubits; and the wreathen work, and pomegranates upon the chapter round about, all of brass: and like unto these had the second pillar with wreathen work."

2 Kings 25:19: "And out of the city he took an officer that was set over the men of war, and five men of them that were in the king's presence, which were found in the city, and the principal scribe of the host, which mustered the people of the land, and threescore men of the people of the land that were found in the city:"

2 Kings 25:21: "And the king of Babylon smote them, and slew them at Riblah in the land of Hamath. So Judah was carried away out of their land."

2 Kings 25:30: "And his allowance was a continual allowance given him of the king, a daily rate for every day, all the days of his life."

1 Chronicles 1:19: "And unto Eber were born two sons: the name of the one was Peleg; because in his days the earth was divided: and his brother's name was Joktan."

1 Chronicles 1:39: "And the sons of Lotan; Hori, and Homam: and Timna was Lotan's sister."

1 Chronicles 1:43: "Now these are the kings that reigned in the land of Edom before any king reigned over the children of Israel; Bela the son of Beor: and the name of his city was Dinhabah."

1 Chronicles 1:44: "And when Bela was dead, Jobab the son of Zerah of Bozrah reigned in his stead."

1 Chronicles 1:45: "And when Jobab was dead, Husham of the land of the Temanites reigned in his stead."

1 Chronicles 1:46: "And when Husham was dead, Hadad the son of Bedad, which smote Midian in the field of Moab, reigned in his stead: and the name of his city was Avith."

1 Chronicles 1:47: "And when Hadad was dead, Samlah of Masrekah reigned in his stead."

1 Chronicles 1:48: "And when Samlah was dead, Shaul of Rehoboth by the river reigned in his stead."

1 Chronicles 1:49: "And when Shaul was dead, Baalhanan the son of Achbor reigned in his stead."

1 Chronicles 1:50: "And when Baalhanan was dead, Hadad reigned in his stead: and the name of his city was Pai; and his wife's name was Mehetabel, the daughter of Matred, the daughter of Mezahab."

1 Chronicles 2:3: "The sons of Judah; Er, and Onan, and Shelah: which three were born unto him of the daughter of Shua the Canaanitess. And Er, the firstborn of Judah, was evil in the sight of the LORD; and he slew him."

1 Chronicles 2:17: "And Abigail bare Amasa: and the father of Amasa was Jether the Ishmeelite."

1 Chronicles 2:19: "And when Azubah was dead, Caleb took unto him Ephrath, which bare him Hur."

1 Chronicles 2:21: "And afterward Hezron went in to the daughter of Machir the father of Gilead, whom he married when he was threescore years old; and she bare him Segub."

1 Chronicles 2:24: "And after that Hezron was dead in Calebephratah, then Abiah Hezron's wife bare him Ashur the father of Tekoa."

1 Chronicles 2:26: "Jerahmeel had also another wife, whose name was Atarah; she was the mother of Onam."

1 Chronicles 2:29: "And the name of the wife of Abishur was Abihail, and she bare him Ahban, and Molid."

1 Chronicles 2:34: "Now Sheshan had no sons, but daughters. And Sheshan had a servant, an Egyptian, whose name was Jarha."

1 Chronicles 2:42: "Now the sons of Caleb the brother of Jerahmeel were, Mesha his firstborn, which was the father of Ziph; and the sons of Mareshah the father of Hebron."

1 Chronicles 2:45: "And the son of Shammai was Maon: and Maon was the father of Bethzur."

1 Chronicles 2:49: "She bare also Shaaph the father of Madmannah, Sheva the father of

Machbenah, and the father of Gibeah: and the daughter of Caleb was Achsa."

1 Chronicles 3:10: "And Solomon's son was Rehoboam, Abia his son, Asa his son, Jehoshaphat his son,"

1 Chronicles 4:3: "And these were of the father of Etam; Jezreel, and Ishma, and Idbash: and the name of their sister was Hazelelponi:"

1 Chronicles 4:9: "And Jabez was more honourable than his brethren: and his mother called his name Jabez, saying, Because I bare him with sorrow."

1 Chronicles 4:11: "And Chelub the brother of Shuah begat Mehir, which was the father of Eshton."

1 Chronicles 4:40: "And they found fat pasture and good, and the land was wide, and quiet, and peaceable; for they of Ham had dwelt there of old."

1 Chronicles 4:41: "And these written by name came in the days of Hezekiah king of Judah, and smote their tents, and the habitations that were found there, and destroyed them utterly unto this day, and dwelt in their rooms: because there was pasture there for their flocks."

1 Chronicles 5:1: "Now the sons of Reuben the firstborn of Israel, (for he was the firstborn; but forasmuch as he defiled his father's bed, his birthright was given unto the sons of Joseph the son of Israel: and the genealogy is not to be reckoned after the birthright."

1 Chronicles 5:2: "For Judah prevailed above his brethren, and of him came the chief ruler; but the birthright was Joseph's:)"

1 Chronicles 5:6: "Beerah his son, whom Tilgathpilneser king of Assyria carried away captive: he was prince of the Reubenites."

1 Chronicles 5:7: "And his brethren by their families, when the genealogy of their generations was reckoned, were the chief, Jeiel, and Zechariah,"

1 Chronicles 5:20: "And they were helped against them, and the Hagarites were delivered into their hand, and all that were with them: for they cried to God in the battle, and he was intreated of them; because they put their trust in him."

1 Chronicles 5:22: "For there fell down many slain, because the war was of God. And they dwelt in their steads until the captivity."

1 Chronicles 6:54: "Now these are their dwelling places throughout their castles in their coasts, of the sons of Aaron, of the families of the Kohathites: for theirs was the lot."

1 Chronicles 7:2: "And the sons of Tola; Uzzi, and Rephaiah, and Jeriel, and Jahmai, and Jibsam, and Shemuel, heads of their father's house, to wit, of Tola: they were valiant men of might in their generations; whose number was in the days of David two and twenty thousand and six hundred."

1 Chronicles 7:9: "And the number of them, after their genealogy by their generations, heads of the house of their fathers, mighty men of valour, was twenty thousand and two hundred."

1 Chronicles 7:15: "And Machir took to wife the sister of Huppim and Shuppim, whose sister's name was Maachah;) and the name of the second was Zelophehad: and Zelophehad had daughters."

1 Chronicles 7:16: "And Maachah the wife of Machir bare a son, and she called his name Peresh; and the name of his brother was Sheresh; and his sons were Ulam and Rakem."

1 Chronicles 7:24: "(And his daughter was Sherah, who built Bethhoron the nether, and the upper, and Uzzensherah.)"

1 Chronicles 7:25: "And Rephah was his son, also Resheph, and Telah his son, and Tahan his son."

1 Chronicles 7:40: "All these were the children of Asher, heads of their father's house, choice and mighty men of valour, chief of the princes. And the number throughout the genealogy of them that were apt to the war and to battle was twenty and six thousand men."

1 Chronicles 8:29: "And at Gibeon dwelt the father of Gibeon; whose wife's name was Maachah:"

1 Chronicles 8:34: "And the son of Jonathan was Meribbaal; and Meribbaal begat Micah."

1 Chronicles 8:37: "And Moza begat Binea: Rapha was his son, Eleasah his son, Azel his son:"

1 Chronicles 9:17: "And the porters were, Shallum, and Akkub, and Talmon, and Ahiman, and their brethren: Shallum was the chief;"

1 Chronicles 9:20: "And Phinehas the son of Eleazar was the ruler over them in time past, and the

LORD was with him."

1 Chronicles 9:21: "And Zechariah the son of Meshelemiah was porter of the door of the tabernacle of the congregation."

1 Chronicles 9:27: "And they lodged round about the house of God, because the charge was upon them, and the opening thereof every morning pertained to them."

1 Chronicles 9:31: "And Mattithiah, one of the Levites, who was the firstborn of Shallum the Korahite, had the set office over the things that were made in the pans."

1 Chronicles 9:35: "And in Gibeon dwelt the father of Gibeon, Jehiel, whose wife's name was Maachah:"

1 Chronicles 9:40: "And the son of Jonathan was Meribbaal: and Meribbaal begat Micah."

1 Chronicles 10:3: "And the battle went sore against Saul, and the archers hit him, and he was wounded of the archers."

1 Chronicles 10:4: "Then said Saul to his armourbearer, Draw thy sword, and thrust me through therewith; lest these uncircumcised come and abuse me. But his armourbearer would not; for he was sore afraid. So Saul took a sword, and fell upon it."

1 Chronicles 10:5: "And when his armourbearer saw that Saul was dead, he fell likewise on the sword, and died."

1 Chronicles 11:2: "And moreover in time past, even when Saul was king, thou wast he that leddest out and broughtest in Israel: and the LORD thy God said unto thee, Thou shalt feed my people Israel, and thou shalt be ruler over my people Israel."

1 Chronicles 11:6: "And David said, Whosoever smiteth the Jebusites first shall be chief and captain. So Joab the son of Zeruiah went first up, and was chief."

1 Chronicles 11:9: "So David waxed greater and greater: for the LORD of hosts was with him."

1 Chronicles 11:12: "And after him was Eleazar the son of Dodo, the Ahohite, who was one of the three mighties."

1 Chronicles 11:13: "He was with David at Pasdammim, and there the Philistines were gathered together to battle, where was a parcel of ground full of barley; and the people fled from before the Philistines."

1 Chronicles 11:16: "And David was then in the hold, and the Philistines' garrison was then at Bethlehem."

1 Chronicles 11:18: "And the three brake through the host of the Philistines, and drew water out of the well of Bethlehem, that was by the gate, and took it, and brought it to David: but David would not drink of it, but poured it out to the LORD."

1 Chronicles 11:20: "And Abishai the brother of Joab, he was chief of the three: for lifting up his spear against three hundred, he slew them, and had a name among the three."

1 Chronicles 11:21: "Of the three, he was more honourable than the two; for he was their captain: howbeit he attained not to the first three."

1 Chronicles 11:23: "And he slew an Egyptian, a man of great stature, five cubits high; and in the Egyptian's hand was a spear like a weaver's beam; and he went down to him with a staff, and plucked the spear out of the Egyptian's hand, and slew him with his own spear."

1 Chronicles 11:25: "Behold, he was honourable among the thirty, but attained not to the first three: and David set him over his guard."

1 Chronicles 12:3: "The chief was Ahiezer, then Joash, the sons of Shemaah the Gibeathite; and Jeziel, and Pelet, the sons of Azmaveth; and Berachah, and Jehu the Antothite."

1 Chronicles 12:14: "These were of the sons of Gad, captains of the host: one of the least was over an hundred, and the greatest over a thousand."

1 Chronicles 12:18: "Then the spirit came upon Amasai, who was chief of the captains, and he said, Thine are we, David, and on thy side, thou son of Jesse: peace, peace be unto thee, and peace be to thine helpers; for thy God helpeth thee. Then David received them, and made them captains of the band."

1 Chronicles 12:22: "For at that time day by day there came to David to help him, until it was a great host, like the host of God."

1 Chronicles 12:27: "And Jehoiada was the leader of the Aaronites, and with him were three thousand and seven hundred;"

1 Chronicles 12:40: "Moreover they that were nigh them, even unto Issachar and Zebulun and Naphtali, brought bread on asses, and on camels, and on mules, and on oxen, and meat, meal, cakes of figs, and bunches of raisins, and wine, and oil, and oxen, and sheep abundantly: for there was joy in Israel."

1 Chronicles 13:4: "And all the congregation said that they would do so: for the thing was right in the eyes of all the people."

1 Chronicles 13:10: "And the anger of the LORD was kindled against Uzza, and he smote him, because he put his hand to the ark: and there he died before God."

1 Chronicles 13:11: "And David was displeased, because the LORD had made a breach upon Uzza: wherefore that place is called Perezuzza to this day."

1 Chronicles 13:12: "And David was afraid of God that day, saying, How shall I bring the ark of God home to me?"

1 Chronicles 14:2: "And David perceived that the LORD had confirmed him king over Israel, for his kingdom was lifted up on high, because of his people Israel."

1 Chronicles 14:8: "And when the Philistines heard that David was anointed king over all Israel, all the Philistines went up to seek David. And David heard of it, and went out against them."

1 Chronicles 15:22: "And Chenaniah, chief of the Levites, was for song: he instructed about the song, because he was skilful."

1 Chronicles 15:27: "And David was clothed with a robe of fine linen, and all the Levites that bare the ark, and the singers, and Chenaniah the master of the song with the singers: David also had upon him an ephod of linen."

1 Chronicles 16:39: "And Zadok the priest, and his brethren the priests, before the tabernacle of the LORD in the high place that was at Gibeon,"

1 Chronicles 17:13: "I will be his father, and he shall be my son: and I will not take my mercy away from him, as I took it from him that was before thee:"

1 Chronicles 17:17: "And yet this was a small thing in thine eyes, O God; for thou hast also spoken of thy servant's house for a great while to come, and hast regarded me according to the estate of a man of high degree, O LORD God."

1 Chronicles 18:15: "And Joab the son of Zeruah was over the host; and Jehoshaphat the son of Ahilud, recorder."

1 Chronicles 18:16: "And Zadok the son of Ahitub, and Abimelech the son of Abiathar, were the priests; and Shavsha was scribe;"

1 Chronicles 18:17: "And Benaiah the son of Jehoiada was over the Cherethites and the Pelethites; and the sons of David were chief about the king."

1 Chronicles 19:10: "Now when Joab saw that the battle was set against him before and behind, he chose out of all the choice of Israel, and put them in array against the Syrians."

1 Chronicles 19:17: "And it was told David; and he gathered all Israel, and passed over Jordan, and came upon them, and set the battle in array against them. So when David had put the battle in array against the Syrians, they fought with him."

1 Chronicles 20:1: "And it came to pass, that after the year was expired, at the time that kings go out to battle, Joab led forth the power of the army, and wasted the country of the children of Ammon, and came and besieged Rabbah. But David tarried at Jerusalem. And Joab smote Rabbah, and destroyed it."

1 Chronicles 20:2: "And David took the crown of their king from off his head, and found it to weigh a talent of gold, and there were precious stones in it; and it was set upon David's head: and he brought also exceeding much spoil out of the city."

1 Chronicles 20:4: "And it came to pass after this, that there arose war at Gezer with the Philistines; at which time Sibbechai the Hushathite slew Sippai, that was of the children of the giant: and they were subdued."

1 Chronicles 20:5: "And there was war again with the Philistines; and Elhanan the son of Jair slew Lahmi the brother of Goliath the Gittite, whose spear staff was like a weaver's beam."

1 Chronicles 20:6: "And yet again there was war at Gath, where was a man of great stature, whose fingers and toes were four and twenty, six on each hand, and six on each foot and he also was the son of the giant."

1 Chronicles 21:5: "And Joab gave the sum of the number of the people unto David. And all they of Israel were a thousand thousand and an hundred thousand men that drew sword: and Judah was four hundred threescore and ten thousand men that drew sword."

1 Chronicles 21:6: "But Levi and Benjamin counted he not among them: for the king's word was abominable to Joab."

1 Chronicles 21:7: "And God was displeased with this thing; therefore he smote Israel."

1 Chronicles 21:15: "And God sent an angel unto Jerusalem to destroy it: and as he was destroying, the LORD beheld, and he repented him of the evil, and said to the angel that destroyed, It is enough, stay now thine hand. And the angel of the LORD stood by the threshingfloor of Ornan the Jebusite."

1 Chronicles 21:20: "And Ornan turned back, and saw the angel; and his four sons with him hid themselves. Now Ornan was threshing wheat."

1 Chronicles 21:30: "But David could not go before it to enquire of God: for he was afraid because of the sword of the angel of the LORD."

1 Chronicles 22:7: "And David said to Solomon, My son, as for me, it was in my mind to build an house unto the name of the LORD my God:"

1 Chronicles 23:1: "So when David was old and full of days, he made Solomon his son king over Israel."

1 Chronicles 23:3: "Now the Levites were numbered from the age of thirty years and upward: and their number by their polls, man by man, was thirty and eight thousand."

1 Chronicles 23:8: "The sons of Laadan; the chief was Jehiel, and Zetham, and Joel, three."

1 Chronicles 23:11: "And Jahath was the chief, and Zizah the second: but Jeush and Beriah had not many sons; therefore they were in one reckoning, according to their father's house."

1 Chronicles 23:13: "The sons of Amram; Aaron and Moses: and Aaron was separated, that he should sanctify the most holy things, he and his sons for ever, to burn incense before the LORD, to minister unto him, and to bless in his name for ever."

1 Chronicles 23:16: "Of the sons of Gershom, Shebuel was the chief."

1 Chronicles 23:28: "Because their office was to wait on the sons of Aaron for the service of the house of the LORD, in the courts, and in the chambers, and in the purifying of all holy things, and the work of the service of the house of God;"

1 Chronicles 24:21: "Concerning Rehabiah: of the sons of Rehabiah, the first was Isshiah."

1 Chronicles 24:25: "The brother of Michah was Isshiah: of the sons of Isshiah; Zechariah."

1 Chronicles 24:29: "Concerning Kish: the son of Kish was Jerahmeel."

1 Chronicles 25:1: "Moreover David and the captains of the host separated to the service of the sons of Asaph, and of Heman, and of Jeduthun, who should prophesy with harps, with psalteries, and with cymbals: and the number of the workmen according to their service was:"

1 Chronicles 25:7: "So the number of them, with their brethren that were instructed in the songs of the LORD, even all that were cunning, was two hundred fourscore and eight."

1 Chronicles 26:1: "Concerning the divisions of the porters: Of the Korhites was Meshelemiah the son of Kore, of the sons of Asaph."

1 Chronicles 26:10: "Also Hosah, of the children of Merari, had sons; Simri the chief, (for though he was not the firstborn, yet his father made him the chief;)"

1 Chronicles 26:20: "And of the Levites, Ahijah was over the treasures of the house of God, and



over the treasures of the dedicated things."

1 Chronicles 26:24: "And Shebuel the son of Gershom, the son of Moses, was ruler of the treasures."

1 Chronicles 26:28: "And all that Samuel the seer, and Saul the son of Kish, and Abner the son of Ner, and Joab the son of Zeruiah, had dedicated; and whosoever had dedicated any thing, it was under the hand of Shelomith, and of his brethren."

1 Chronicles 26:31: "Among the Hebronites was Jerijah the chief, even among the Hebronites, according to the generations of his fathers. In the fortieth year of the reign of David they were sought for, and there were found among them mighty men of valour at Jazer of Gilead."

1 Chronicles 27:2: "Over the first course for the first month was Jashobeam the son of Zabdiel: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:3: "Of the children of Perez was the chief of all the captains of the host for the first month."

1 Chronicles 27:4: "And over the course of the second month was Dodai an Ahohite, and of his course was Mikloth also the ruler: in his course likewise were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:5: "The third captain of the host for the third month was Benaiah the son of Jehoiada, a chief priest: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:6: "This is that Benaiah, who was mighty among the thirty, and above the thirty: and in his course was Ammizabad his son."

1 Chronicles 27:7: "The fourth captain for the fourth month was Asahel the brother of Joab, and Zebadiah his son after him: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:8: "The fifth captain for the fifth month was Shamhuth the Izrahite: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:9: "The sixth captain for the sixth month was Ira the son of Ikkesh the Tekoite: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:10: "The seventh captain for the seventh month was Helez the Pelonite, of the children of Ephraim: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:11: "The eighth captain for the eighth month was Sibbecai the Hushathite, of the Zarhites: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:12: "The ninth captain for the ninth month was Abiezer the Anetothite, of the Benjamites: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:13: "The tenth captain for the tenth month was Maharai the Netophathite, of the Zarhites: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:14: "The eleventh captain for the eleventh month was Benaiah the Pirathonite, of the children of Ephraim: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:15: "The twelfth captain for the twelfth month was Heldai the Netophathite, of Othniel: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:16: "Furthermore over the tribes of Israel: the ruler of the Reubenites was Eliezer the son of Zichri: of the Simeonites, Shephatiah the son of Maachah:"

1 Chronicles 27:24: "Joab the son of Zeruiah began to number, but he finished not, because there fell wrath for it against Israel; neither was the number put in the account of the chronicles of king David."

1 Chronicles 27:25: "And over the king's treasures was Azmaveth the son of Adiel: and over the storehouses in the fields, in the cities, and in the villages, and in the castles, was Jehonathan the son of Uzziab:"

1 Chronicles 27:26: "And over them that did the work of the field for tillage of the ground was Ezri the son of Chelub:"

1 Chronicles 27:27: "And over the vineyards was Shimei the Ramathite: over the increase of the vineyards for the wine cellars was Zabdi the Shiphmite:"

1 Chronicles 27:28: "And over the olive trees and the sycomore trees that were in the low plains

was Baalhanan the Gederite: and over the cellars of oil was Joash:"

1 Chronicles 27:29: "And over the herds that fed in Sharon was Shitrai the Sharonite: and over the herds that were in the valleys was Shaphat the son of Adlai:"

1 Chronicles 27:30: "Over the camels also was Obil the Ishmaelite: and over the asses was Jehdeiah the Meronothite:"

1 Chronicles 27:31: "And over the flocks was Jaziz the Hagerite. All these were the rulers of the substance which was king David's."

1 Chronicles 27:32: "Also Jonathan David's uncle was a counsellor, a wise man, and a scribe: and Jehiel the son of Hachmoni was with the king's sons:"

1 Chronicles 27:33: "And Ahithophel was the king's counsellor: and Hushai the Archite was the king's companion:"

1 Chronicles 27:34: "And after Ahithophel was Jehoiada the son of Benaiah, and Abiathar: and the general of the king's army was Joab."

1 Chronicles 29:27: "And the time that he reigned over Israel was forty years; seven years reigned he in Hebron, and thirty and three years reigned he in Jerusalem."

2 Chronicles 1:1: "And Solomon the son of David was strengthened in his kingdom, and the LORD his God was with him, and magnified him exceedingly."

2 Chronicles 1:3: "So Solomon, and all the congregation with him, went to the high place that was at Gibeon; for there was the tabernacle of the congregation of God, which Moses the servant of the LORD had made in the wilderness."

2 Chronicles 1:6: "And Solomon went up thither to the brasen altar before the LORD, which was at the tabernacle of the congregation, and offered a thousand burnt offerings upon it."

2 Chronicles 1:11: "And God said to Solomon, Because this was in thine heart, and thou hast not asked riches, wealth, or honour, nor the life of thine enemies, neither yet hast asked long life; but hast asked wisdom and knowledge for thyself, that thou mayest judge my people, over whom I have made thee king:"

2 Chronicles 1:13: "Then Solomon came from his journey to the high place that was at Gibeon to Jerusalem, from before the tabernacle of the congregation, and reigned over Israel."

2 Chronicles 2:14: "The son of a woman of the daughters of Dan, and his father was a man of Tyre, skilful to work in gold, and in silver, in brass, in iron, in stone, and in timber, in purple, in blue, and in fine linen, and in crimson; also to grave any manner of graving, and to find out every device which shall be put to him, with thy cunning men, and with the cunning men of my lord David thy father."

2 Chronicles 3:3: "Now these are the things wherein Solomon was instructed for the building of the house of God. The length by cubits after the first measure was threescore cubits, and the breadth twenty cubits."

2 Chronicles 3:4: "And the porch that was in the front of the house, the length of it was according to the breadth of the house, twenty cubits, and the height was an hundred and twenty: and he overlaid it within with pure gold."

2 Chronicles 3:6: "And he garnished the house with precious stones for beauty: and the gold was gold of Parvaim."

2 Chronicles 3:8: "And he made the most holy house, the length whereof was according to the breadth of the house, twenty cubits, and the breadth thereof twenty cubits: and he overlaid it with fine gold, amounting to six hundred talents."

2 Chronicles 3:9: "And the weight of the nails was fifty shekels of gold. And he overlaid the upper chambers with gold."

2 Chronicles 3:11: "And the wings of the cherubims were twenty cubits long: one wing of the one cherub was five cubits, reaching to the wall of the house: and the other wing was likewise five cubits, reaching to the wing of the other cherub."

2 Chronicles 3:12: "And one wing of the other cherub was five cubits, reaching to the wall of the

house: and the other wing was five cubits also, joining to the wing of the other cherub."

2 Chronicles 3:15: "Also he made before the house two pillars of thirty and five cubits high, and the chapter that was on the top of each of them was five cubits."

2 Chronicles 4:3: "And under it was the similitude of oxen, which did compass it round about: ten in a cubit, compassing the sea round about. Two rows of oxen were cast, when it was cast."

2 Chronicles 4:4: "It stood upon twelve oxen, three looking toward the north, and three looking toward the west, and three looking toward the south, and three looking toward the east: and the sea was set above upon them, and all their hinder parts were inward."

2 Chronicles 4:5: "And the thickness of it was an handbreadth, and the brim of it like the work of the brim of a cup, with flowers of lilies; and it received and held three thousand baths."

2 Chronicles 4:6: "He made also ten lavers, and put five on the right hand, and five on the left, to wash in them: such things as they offered for the burnt offering they washed in them; but the sea was for the priests to wash in."

2 Chronicles 4:11: "And Hiram made the pots, and the shovels, and the basons. And Hiram finished the work that he was to make for king Solomon for the house of God;"

2 Chronicles 4:19: "And Solomon made all the vessels that were for the house of God, the golden altar also, and the tables whereon the shewbread was set;"

2 Chronicles 5:1: "Thus all the work that Solomon made for the house of the LORD was finished: and Solomon brought in all the things that David his father had dedicated; and the silver, and the gold, and all the instruments, put he among the treasures of the house of God."

2 Chronicles 5:3: "Wherefore all the men of Israel assembled themselves unto the king in the feast which was in the seventh month."

2 Chronicles 5:10: "There was nothing in the ark save the two tables which Moses put therein at Horeb, when the LORD made a covenant with the children of Israel, when they came out of Egypt."

2 Chronicles 5:13: "It came even to pass, as the trumpeters and singers were as one, to make one sound to be heard in praising and thanking the LORD; and when they lifted up their voice with the trumpets and cymbals and instruments of musick, and praised the LORD, saying, For he is good; for his mercy endureth for ever: that then the house was filled with a cloud, even the house of the LORD;"

2 Chronicles 6:7: "Now it was in the heart of David my father to build an house for the name of the LORD God of Israel."

2 Chronicles 6:8: "But the LORD said to David my father, Forasmuch as it was in thine heart to build an house for my name, thou didst well in that it was in thine heart:"

2 Chronicles 7:7: "Moreover Solomon hallowed the middle of the court that was before the house of the LORD: for there he offered burnt offerings, and the fat of the peace offerings, because the brasen altar which Solomon had made was not able to receive the burnt offerings, and the meat offerings, and the fat."

2 Chronicles 8:16: "Now all the work of Solomon was prepared unto the day of the foundation of the house of the LORD, and until it was finished. So the house of the LORD was perfected."

2 Chronicles 9:1: "And when the queen of Sheba heard of the fame of Solomon, she came to prove Solomon with hard questions at Jerusalem, with a very great company, and camels that bare spices, and gold in abundance, and precious stones: and when she was come to Solomon, she communed with him of all that was in her heart."

2 Chronicles 9:2: "And Solomon told her all her questions: and there was nothing hid from Solomon which he told her not."

2 Chronicles 9:4: "And the meat of his table, and the sitting of his servants, and the attendance of his ministers, and their apparel; his cupbearers also, and their apparel; and his ascent by which he went up into the house of the LORD; there was no more spirit in her."

2 Chronicles 9:5: "And she said to the king, It was a true report which I heard in mine own land of thine acts, and of thy wisdom:"

2 Chronicles 9:6: "Howbeit I believed not their words, until I came, and mine eyes had seen it: and, behold, the one half of the greatness of thy wisdom was not told me: for thou exceedest the fame that I heard."

2 Chronicles 9:9: "And she gave the king an hundred and twenty talents of gold, and of spices great abundance, and precious stones: neither was there any such spice as the queen of Sheba gave king Solomon."

2 Chronicles 9:13: "Now the weight of gold that came to Solomon in one year was six hundred and threescore and six talents of gold;"

2 Chronicles 9:19: "And twelve lions stood there on the one side and on the other upon the six steps. There was not the like made in any kingdom."

2 Chronicles 9:20: "And all the drinking vessels of king Solomon were of gold, and all the vessels of the house of the forest of Lebanon were of pure gold: none were of silver; it was not any thing accounted of in the days of Solomon."

2 Chronicles 9:31: "And Solomon slept with his fathers, and he was buried in the city of David his father: and Rehoboam his son reigned in his stead."

2 Chronicles 10:2: "And it came to pass, when Jeroboam the son of Nebat, who was in Egypt, whither he fled from the presence of Solomon the king, heard it, that Jeroboam returned out of Egypt."

2 Chronicles 10:15: "So the king hearkened not unto the people: for the cause was of God, that the LORD might perform his word, which he spake by the hand of Ahijah the Shilonite to Jeroboam the son of Nebat."

2 Chronicles 10:18: "Then king Rehoboam sent Hadoram that was over the tribute; and the children of Israel stoned him with stones, that he died. But king Rehoboam made speed to get him up to his chariot, to flee to Jerusalem."

2 Chronicles 11:1: "And when Rehoboam was come to Jerusalem, he gathered of the house of Judah and Benjamin an hundred and fourscore thousand chosen men, which were warriors, to fight against Israel, that he might bring the kingdom again to Rehoboam."

2 Chronicles 12:13: "So king Rehoboam strengthened himself in Jerusalem, and reigned: for Rehoboam was one and forty years old when he began to reign, and he reigned seventeen years in Jerusalem, the city which the LORD had chosen out of all the tribes of Israel, to put his name there. And his mother's name was Naamah an Ammonitess."

2 Chronicles 12:16: "And Rehoboam slept with his fathers, and was buried in the city of David: and Abijah his son reigned in his stead."

2 Chronicles 13:2: "He reigned three years in Jerusalem. His mother's name also was Michaiiah the daughter of Uriel of Gibeah. And there was war between Abijah and Jeroboam."

2 Chronicles 13:7: "And there are gathered unto him vain men, the children of Belial, and have strengthened themselves against Rehoboam the son of Solomon, when Rehoboam was young and tenderhearted, and could not withstand them."

2 Chronicles 13:13: "But Jeroboam caused an ambushment to come about behind them: so they were before Judah, and the ambushment was behind them."

2 Chronicles 13:14: "And when Judah looked back, behold, the battle was before and behind: and they cried unto the LORD, and the priests sounded with the trumpets."

2 Chronicles 14:1: "So Abijah slept with his fathers, and they buried him in the city of David: and Asa his son reigned in his stead. In his days the land was quiet ten years."

2 Chronicles 14:2: "And Asa did that which was good and right in the eyes of the LORD his God:"

2 Chronicles 14:5: "Also he took away out of all the cities of Judah the high places and the images: and the kingdom was quiet before him."

2 Chronicles 14:14: "And they smote all the cities round about Gerar; for the fear of the LORD came upon them: and they spoiled all the cities; for there was exceeding much spoil in them."

2 Chronicles 15:4: "But when they in their trouble did turn unto the LORD God of Israel, and

sought him, he was found of them."

2 Chronicles 15:5: "And in those times there was no peace to him that went out, nor to him that came in, but great vexations were upon all the inhabitants of the countries."

2 Chronicles 15:6: "And nation was destroyed of nation, and city of city: for God did vex them with all adversity."

2 Chronicles 15:8: "And when Asa heard these words, and the prophecy of Oded the prophet, he took courage, and put away the abominable idols out of all the land of Judah and Benjamin, and out of the cities which he had taken from mount Ephraim, and renewed the altar of the LORD, that was before the porch of the LORD."

2 Chronicles 15:9: "And he gathered all Judah and Benjamin, and the strangers with them out of Ephraim and Manasseh, and out of Simeon: for they fell to him out of Israel in abundance, when they saw that the LORD his God was with him."

2 Chronicles 15:15: "And all Judah rejoiced at the oath: for they had sworn with all their heart, and sought him with their whole desire; and he was found of them: and the LORD gave them rest round about."

2 Chronicles 15:17: "But the high places were not taken away out of Israel: nevertheless the heart of Asa was perfect all his days."

2 Chronicles 15:19: "And there was no more war unto the five and thirtieth year of the reign of Asa."

2 Chronicles 16:3: "There is a league between me and thee, as there was between my father and thy father: behold, I have sent thee silver and gold; go, break thy league with Baasha king of Israel, that he may depart from me."

2 Chronicles 16:6: "Then Asa the king took all Judah; and they carried away the stones of Ramah, and the timber thereof, wherewith Baasha was building; and he built therewith Geba and Mizpah."

2 Chronicles 16:10: "Then Asa was wroth with the seer, and put him in a prison house; for he was in a rage with him because of this thing. And Asa oppressed some of the people the same time."

2 Chronicles 16:12: "And Asa in the thirty and ninth year of his reign was diseased in his feet, until his disease was exceeding great: yet in his disease he sought not to the LORD, but to the physicians."

2 Chronicles 16:14: "And they buried him in his own sepulchres, which he had made for himself in the city of David, and laid him in the bed which was filled with sweet odours and divers kinds of spices prepared by the apothecaries' art: and they made a very great burning for him."

2 Chronicles 17:3: "And the LORD was with Jehoshaphat, because he walked in the first ways of his father David, and sought not unto Baalim;"

2 Chronicles 17:6: "And his heart was lifted up in the ways of the LORD: moreover he took away the high places and groves out of Judah."

2 Chronicles 17:15: "And next to him was Jehohanan the captain, and with him two hundred and fourscore thousand."

2 Chronicles 17:16: "And next him was Amasiah the son of Zichri, who willingly offered himself unto the LORD; and with him two hundred thousand mighty men of valour."

2 Chronicles 17:18: "And next him was Jehozabad, and with him an hundred and fourscore thousand ready prepared for the war."

2 Chronicles 18:14: "And when he was come to the king, the king said unto him, Micaiah, shall we go to Ramothgilead to battle, or shall I forbear? And he said, Go ye up, and prosper, and they shall be delivered into your hand."

2 Chronicles 18:32: "For it came to pass, that, when the captains of the chariots perceived that it was not the king of Israel, they turned back again from pursuing him."

2 Chronicles 20:25: "And when Jehoshaphat and his people came to take away the spoil of them, they found among them in abundance both riches with the dead bodies, and precious jewels, which they stripped off for themselves, more than they could carry away: and they were three days in

gathering of the spoil, it was so much."

2 Chronicles 20:26: "And on the fourth day they assembled themselves in the valley of Berachah; for there they blessed the LORD: therefore the name of the same place was called, The valley of Berachah, unto this day."

2 Chronicles 20:29: "And the fear of God was on all the kingdoms of those countries, when they had heard that the LORD fought against the enemies of Israel."

2 Chronicles 20:30: "So the realm of Jehoshaphat was quiet: for his God gave him rest round about."

2 Chronicles 20:31: "And Jehoshaphat reigned over Judah: he was thirty and five years old when he began to reign, and he reigned twenty and five years in Jerusalem. And his mother's name was Azubah the daughter of Shilhi."

2 Chronicles 20:32: "And he walked in the way of Asa his father, and departed not from it, doing that which was right in the sight of the LORD."

2 Chronicles 21:1: "Now Jehoshaphat slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David. And Jehoram his son reigned in his stead."

2 Chronicles 21:3: "And their father gave them great gifts of silver, and of gold, and of precious things, with fenced cities in Judah: but the kingdom gave he to Jehoram; because he was the firstborn."

2 Chronicles 21:4: "Now when Jehoram was risen up to the kingdom of his father, he strengthened himself, and slew all his brethren with the sword, and divers also of the princes of Israel."

2 Chronicles 21:5: "Jehoram was thirty and two years old when he began to reign, and he reigned eight years in Jerusalem."

2 Chronicles 21:6: "And he walked in the way of the kings of Israel, like as did the house of Ahab: for he had the daughter of Ahab to wife: and he wrought that which was evil in the eyes of the LORD."

2 Chronicles 21:17: "And they came up into Judah, and brake into it, and carried away all the substance that was found in the king's house, and his sons also, and his wives; so that there was never a son left him, save Jehoahaz, the youngest of his sons."

2 Chronicles 21:20: "Thirty and two years old was he when he began to reign, and he reigned in Jerusalem eight years, and departed without being desired. Howbeit they buried him in the city of David, but not in the sepulchres of the kings."

2 Chronicles 22:2: "Forty and two years old was Ahaziah when he began to reign, and he reigned one year in Jerusalem. His mother's name also was Athaliah the daughter of Omri."

2 Chronicles 22:3: "He also walked in the ways of the house of Ahab: for his mother was his counsellor to do wickedly."

2 Chronicles 22:6: "And he returned to be healed in Jezreel because of the wounds which were given him at Ramah, when he fought with Hazael king of Syria. And Azariah the son of Jehoram king of Judah went down to see Jehoram the son of Ahab at Jezreel, because he was sick."

2 Chronicles 22:7: "And the destruction of Ahaziah was of God by coming to Joram: for when he was come, he went out with Jehoram against Jehu the son of Nimshi, whom the LORD had anointed to cut off the house of Ahab."

2 Chronicles 22:8: "And it came to pass, that, when Jehu was executing judgment upon the house of Ahab, and found the princes of Judah, and the sons of the brethren of Ahaziah, that ministered to Ahaziah, he slew them."

2 Chronicles 22:9: "And he sought Ahaziah: and they caught him, (for he was hid in Samaria,) and brought him to Jehu: and when they had slain him, they buried him: Because, said they, he is the son of Jehoshaphat, who sought the LORD with all his heart. So the house of Ahaziah had no power to keep still the kingdom."

2 Chronicles 22:10: "But when Athaliah the mother of Ahaziah saw that her son was dead, she arose and destroyed all the seed royal of the house of Judah."

2 Chronicles 22:11: "But Jehoshabeath, the daughter of the king, took Joash the son of Ahaziah, and stole him from among the king's sons that were slain, and put him and his nurse in a bedchamber. So Jehoshabeath, the daughter of king Jehoram, the wife of Jehoiada the priest, (for she was the sister of Ahaziah,) hid him from Athaliah, so that she slew him not."

2 Chronicles 22:12: "And he was with them hid in the house of God six years: and Athaliah reigned over the land."

2 Chronicles 23:15: "So they laid hands on her; and when she was come to the entering of the horse gate by the king's house, they slew her there."

2 Chronicles 23:18: "Also Jehoiada appointed the offices of the house of the LORD by the hand of the priests the Levites, whom David had distributed in the house of the LORD, to offer the burnt offerings of the LORD, as it is written in the law of Moses, with rejoicing and with singing, as it was ordained by David."

2 Chronicles 23:19: "And he set the porters at the gates of the house of the LORD, that none which was unclean in any thing should enter in."

2 Chronicles 23:21: "And all the people of the land rejoiced: and the city was quiet, after that they had slain Athaliah with the sword."

2 Chronicles 24:1: "Joash was seven years old when he began to reign, and he reigned forty years in Jerusalem. His mother's name also was Zibiah of Beersheba."

2 Chronicles 24:2: "And Joash did that which was right in the sight of the LORD all the days of Jehoiada the priest."

2 Chronicles 24:4: "And it came to pass after this, that Joash was minded to repair the house of the LORD."

2 Chronicles 24:11: "Now it came to pass, that at what time the chest was brought unto the king's office by the hand of the Levites, and when they saw that there was much money, the king's scribe and the high priest's officer came and emptied the chest, and took it, and carried it to his place again. Thus they did day by day, and gathered money in abundance."

2 Chronicles 24:13: "So the workmen wrought, and the work was perfected by them, and they set the house of God in his state, and strengthened it."

2 Chronicles 24:15: "But Jehoiada waxed old, and was full of days when he died; an hundred and thirty years old was he when he died."

2 Chronicles 25:1: "Amaziah was twenty and five years old when he began to reign, and he reigned twenty and nine years in Jerusalem. And his mother's name was Jehoaddan of Jerusalem."

2 Chronicles 25:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, but not with a perfect heart."

2 Chronicles 25:3: "Now it came to pass, when the kingdom was established to him, that he slew his servants that had killed the king his father."

2 Chronicles 25:10: "Then Amaziah separated them, to wit, the army that was come to him out of Ephraim, to go home again: wherefore their anger was greatly kindled against Judah, and they returned home in great anger."

2 Chronicles 25:14: "Now it came to pass, after that Amaziah was come from the slaughter of the Edomites, that he brought the gods of the children of Seir, and set them up to be his gods, and bowed down himself before them, and burned incense unto them."

2 Chronicles 25:15: "Wherefore the anger of the LORD was kindled against Amaziah, and he sent unto him a prophet, which said unto him, Why hast thou sought after the gods of the people, which could not deliver their own people out of thine hand?"

2 Chronicles 25:18: "And Joash king of Israel sent to Amaziah king of Judah, saying, The thistle that was in Lebanon sent to the cedar that was in Lebanon, saying, Give thy daughter to my son to wife: and there passed by a wild beast that was in Lebanon, and trode down the thistle."

2 Chronicles 25:22: "And Judah was put to the worse before Israel, and they fled every man to his tent."

2 Chronicles 26:1: "Then all the people of Judah took Uzziah, who was sixteen years old, and made him king in the room of his father Amaziah."

2 Chronicles 26:3: "Sixteen years old was Uzziah when he began to reign, and he reigned fifty and two years in Jerusalem. His mother's name also was Jecoliah of Jerusalem."

2 Chronicles 26:4: "And he did that which was right in the sight of the LORD, according to all that his father Amaziah did."

2 Chronicles 26:13: "And under their hand was an army, three hundred thousand and seven thousand and five hundred, that made war with mighty power, to help the king against the enemy."

2 Chronicles 26:15: "And he made in Jerusalem engines, invented by cunning men, to be on the towers and upon the bulwarks, to shoot arrows and great stones withal. And his name spread far abroad; for he was marvellously helped, till he was strong."

2 Chronicles 26:16: "But when he was strong, his heart was lifted up to his destruction: for he transgressed against the LORD his God, and went into the temple of the LORD to burn incense upon the altar of incense."

2 Chronicles 26:19: "Then Uzziah was wroth, and had a censer in his hand to burn incense: and while he was wroth with the priests, the leprosy even rose up in his forehead before the priests in the house of the LORD, from beside the incense altar."

2 Chronicles 26:20: "And Azariah the chief priest, and all the priests, looked upon him, and, behold, he was leprous in his forehead, and they thrust him out from thence; yea, himself hasted also to go out, because the LORD had smitten him."

2 Chronicles 26:21: "And Uzziah the king was a leper unto the day of his death, and dwelt in a several house, being a leper; for he was cut off from the house of the LORD: and Jotham his son was over the king's house, judging the people of the land."

2 Chronicles 27:1: "Jotham was twenty and five years old when he began to reign, and he reigned sixteen years in Jerusalem. His mother's name also was Jerushah, the daughter of Zadok."

2 Chronicles 27:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, according to all that his father Uzziah did: howbeit he entered not into the temple of the LORD. And the people did yet corruptly."

2 Chronicles 27:8: "He was five and twenty years old when he began to reign, and reigned sixteen years in Jerusalem."

2 Chronicles 28:1: "Ahaz was twenty years old when he began to reign, and he reigned sixteen years in Jerusalem: but he did not that which was right in the sight of the LORD, like David his father:"

2 Chronicles 28:5: "Wherefore the LORD his God delivered him into the hand of the king of Syria; and they smote him, and carried away a great multitude of them captives, and brought them to Damascus. And he was also delivered into the hand of the king of Israel, who smote him with a great slaughter."

2 Chronicles 28:7: "And Zichri, a mighty man of Ephraim, slew Maaseiah the king's son, and Azrikam the governor of the house, and Elkanah that was next to the king."

2 Chronicles 28:9: "But a prophet of the LORD was there, whose name was Oded: and he went out before the host that came to Samaria, and said unto them, Behold, because the LORD God of your fathers was wroth with Judah, he hath delivered them into your hand, and ye have slain them in a rage that reacheth up unto heaven."

2 Chronicles 29:1: "Hezekiah began to reign when he was five and twenty years old, and he reigned nine and twenty years in Jerusalem. And his mother's name was Abijah, the daughter of Zechariah."

2 Chronicles 29:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, according to all that David his father had done."

2 Chronicles 29:6: "For our fathers have trespassed, and done that which was evil in the eyes of the LORD our God, and have forsaken him, and have turned away their faces from the habitation of the LORD, and turned their backs."



2 Chronicles 29:8: "Wherefore the wrath of the LORD was upon Judah and Jerusalem, and he hath delivered them to trouble, to astonishment, and to hissing, as ye see with your eyes."

2 Chronicles 29:25: "And he set the Levites in the house of the LORD with cymbals, with psalteries, and with harps, according to the commandment of David, and of Gad the king's seer, and Nathan the prophet: for so was the commandment of the LORD by his prophets."

2 Chronicles 29:28: "And all the congregation worshipped, and the singers sang, and the trumpeters sounded: and all this continued until the burnt offering was finished."

2 Chronicles 29:32: "And the number of the burnt offerings, which the congregation brought, was threescore and ten bullocks, an hundred rams, and two hundred lambs: all these were for a burnt offering to the LORD."

2 Chronicles 29:34: "But the priests were too few, so that they could not flay all the burnt offerings: wherefore their brethren the Levites did help them, till the work was ended, and until the other priests had sanctified themselves: for the Levites were more upright in heart to sanctify themselves than the priests."

2 Chronicles 29:35: "And also the burnt offerings were in abundance, with the fat of the peace offerings, and the drink offerings for every burnt offering. So the service of the house of the LORD was set in order."

2 Chronicles 29:36: "And Hezekiah rejoiced, and all the people, that God had prepared the people: for the thing was done suddenly."

2 Chronicles 30:5: "So they established a decree to make proclamation throughout all Israel, from Beersheba even to Dan, that they should come to keep the passover unto the LORD God of Israel at Jerusalem: for they had not done it of a long time in such sort as it was written."

2 Chronicles 30:12: "Also in Judah the hand of God was to give them one heart to do the commandment of the king and of the princes, by the word of the LORD."

2 Chronicles 30:17: "For there were many in the congregation that were not sanctified: therefore the Levites had the charge of the killing of the passovers for every one that was not clean, to sanctify them unto the LORD."

2 Chronicles 30:18: "For a multitude of the people, even many of Ephraim, and Manasseh, Issachar, and Zebulun, had not cleansed themselves, yet did they eat the passover otherwise than it was written. But Hezekiah prayed for them, saying, The good LORD pardon every one"

2 Chronicles 30:26: "So there was great joy in Jerusalem: for since the time of Solomon the son of David king of Israel there was not the like in Jerusalem."

2 Chronicles 30:27: "Then the priests the Levites arose and blessed the people: and their voice was heard, and their prayer came up to his holy dwelling place, even unto heaven."

2 Chronicles 31:1: "Now when all this was finished, all Israel that were present went out to the cities of Judah, and brake the images in pieces, and cut down the groves, and threw down the high places and the altars out of all Judah and Benjamin, in Ephraim also and Manasseh, until they had utterly destroyed them all. Then all the children of Israel returned, every man to his possession, into their own cities."

2 Chronicles 31:12: "And brought in the offerings and the tithes and the dedicated things faithfully: over which Cononiah the Levite was ruler, and Shimei his brother was the next."

2 Chronicles 31:14: "And Kore the son of Imnah the Levite, the porter toward the east, was over the freewill offerings of God, to distribute the oblations of the LORD, and the most holy things."

2 Chronicles 31:20: "And thus did Hezekiah throughout all Judah, and wrought that which was good and right and truth before the LORD his God."

2 Chronicles 32:2: "And when Hezekiah saw that Sennacherib was come, and that he was purposed to fight against Jerusalem,"

2 Chronicles 32:4: "So there was gathered much people together, who stopped all the fountains, and the brook that ran through the midst of the land, saying, Why should the kings of Assyria come, and find much water?"

2 Chronicles 32:5: "Also he strengthened himself, and built up all the wall that was broken, and raised it up to the towers, and another wall without, and repaired Millo in the city of David, and made darts and shields in abundance."

2 Chronicles 32:14: "Who was there among all the gods of those nations that my fathers utterly destroyed, that could deliver his people out of mine hand, that your God should be able to deliver you out of mine hand?"

2 Chronicles 32:15: "Now therefore let not Hezekiah deceive you, nor persuade you on this manner, neither yet believe him: for no god of any nation or kingdom was able to deliver his people out of mine hand, and out of the hand of my fathers: how much less shall your God deliver you out of mine hand?"

2 Chronicles 32:21: "And the LORD sent an angel, which cut off all the mighty men of valour, and the leaders and captains in the camp of the king of Assyria. So he returned with shame of face to his own land. And when he was come into the house of his god, they that came forth of his own bowels slew him there with the sword."

2 Chronicles 32:23: "And many brought gifts unto the LORD to Jerusalem, and presents to Hezekiah king of Judah: so that he was magnified in the sight of all nations from thenceforth."

2 Chronicles 32:24: "In those days Hezekiah was sick to the death, and prayed unto the LORD: and he spake unto him, and he gave him a sign."

2 Chronicles 32:25: "But Hezekiah rendered not again according to the benefit done unto him; for his heart was lifted up: therefore there was wrath upon him, and upon Judah and Jerusalem."

2 Chronicles 32:31: "Howbeit in the business of the ambassadors of the princes of Babylon, who sent unto him to enquire of the wonder that was done in the land, God left him, to try him, that he might know all that was in his heart."

2 Chronicles 33:1: "Manasseh was twelve years old when he began to reign, and he reigned fifty and five years in Jerusalem:"

2 Chronicles 33:2: "But did that which was evil in the sight of the LORD, like unto the abominations of the heathen, whom the LORD had cast out before the children of Israel."

2 Chronicles 33:12: "And when he was in affliction, he besought the LORD his God, and humbled himself greatly before the God of his fathers,"

2 Chronicles 33:13: "And prayed unto him: and he was intreated of him, and heard his supplication, and brought him again to Jerusalem into his kingdom. Then Manasseh knew that the LORD he was God."

2 Chronicles 33:19: "His prayer also, and how God was intreated of him, and all his sins, and his trespass, and the places wherein he built high places, and set up groves and graven images, before he was humbled: behold, they are written among the sayings of the seers."

2 Chronicles 33:21: "Amon was two and twenty years old when he began to reign, and reigned two years in Jerusalem."

2 Chronicles 33:22: "But he did that which was evil in the sight of the LORD, as did Manasseh his father: for Amon sacrificed unto all the carved images which Manasseh his father had made, and served them;"

2 Chronicles 34:1: "Josiah was eight years old when he began to reign, and he reigned in Jerusalem one and thirty years."

2 Chronicles 34:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, and walked in the ways of David his father, and declined neither to the right hand, nor to the left."

2 Chronicles 34:3: "For in the eighth year of his reign, while he was yet young, he began to seek after the God of David his father: and in the twelfth year he began to purge Judah and Jerusalem from the high places, and the groves, and the carved images, and the molten images."

2 Chronicles 34:9: "And when they came to Hilkiah the high priest, they delivered the money that was brought into the house of God, which the Levites that kept the doors had gathered of the hand of Manasseh and Ephraim, and of all the remnant of Israel, and of all Judah and Benjamin; and they

returned to Jerusalem."

2 Chronicles 34:14: "And when they brought out the money that was brought into the house of the LORD, Hilkiah the priest found a book of the law of the LORD given by Moses."

2 Chronicles 34:16: "And Shaphan carried the book to the king, and brought the king word back again, saying, All that was committed to thy servants, they do it."

2 Chronicles 34:17: "And they have gathered together the money that was found in the house of the LORD, and have delivered it into the hand of the overseers, and to the hand of the workmen."

2 Chronicles 34:27: "Because thine heart was tender, and thou didst humble thyself before God, when thou heardest his words against this place, and against the inhabitants thereof, and humbledst thyself before me, and didst rend thy clothes, and weep before me; I have even heard thee also, saith the LORD."

2 Chronicles 34:30: "And the king went up into the house of the LORD, and all the men of Judah, and the inhabitants of Jerusalem, and the priests, and the Levites, and all the people, great and small: and he read in their ears all the words of the book of the covenant that was found in the house of the LORD."

2 Chronicles 35:10: "So the service was prepared, and the priests stood in their place, and the Levites in their courses, according to the king's commandment."

2 Chronicles 35:16: "So all the service of the LORD was prepared the same day, to keep the passover, and to offer burnt offerings upon the altar of the LORD, according to the commandment of king Josiah."

2 Chronicles 35:18: "And there was no passover like to that kept in Israel from the days of Samuel the prophet; neither did all the kings of Israel keep such a passover as Josiah kept, and the priests, and the Levites, and all Judah and Israel that were present, and the inhabitants of Jerusalem."

2 Chronicles 35:19: "In the eighteenth year of the reign of Josiah was this passover kept."

2 Chronicles 35:24: "His servants therefore took him out of that chariot, and put him in the second chariot that he had; and they brought him to Jerusalem, and he died, and was buried in one of the sepulchres of his fathers. And all Judah and Jerusalem mourned for Josiah."

2 Chronicles 35:26: "Now the rest of the acts of Josiah, and his goodness, according to that which was written in the law of the LORD,"

2 Chronicles 36:2: "Jehoahaz was twenty and three years old when he began to reign, and he reigned three months in Jerusalem."

2 Chronicles 36:5: "Jehoiakim was twenty and five years old when he began to reign, and he reigned eleven years in Jerusalem: and he did that which was evil in the sight of the LORD his God."

2 Chronicles 36:8: "Now the rest of the acts of Jehoiakim, and his abominations which he did, and that which was found in him, behold, they are written in the book of the kings of Israel and Judah: and Jehoiachin his son reigned in his stead."

2 Chronicles 36:9: "Jehoiachin was eight years old when he began to reign, and he reigned three months and ten days in Jerusalem: and he did that which was evil in the sight of the LORD."

2 Chronicles 36:10: "And when the year was expired, king Nebuchadnezzar sent, and brought him to Babylon, with the goodly vessels of the house of the LORD, and made Zedekiah his brother king over Judah and Jerusalem."

2 Chronicles 36:11: "Zedekiah was one and twenty years old when he began to reign, and reigned eleven years in Jerusalem."

2 Chronicles 36:12: "And he did that which was evil in the sight of the LORD his God, and humbled not himself before Jeremiah the prophet speaking from the mouth of the LORD."

2 Chronicles 36:16: "But they mocked the messengers of God, and despised his words, and misused his prophets, until the wrath of the LORD arose against his people, till there was no remedy."

Ezra 1:6: "And all they that were about them strengthened their hands with vessels of silver, with gold, with goods, and with beasts, and with precious things, beside all that was willingly offered."

Ezra 2:61: "And of the children of the priests: the children of Habaiah, the children of Koz, the children of Barzillai; which took a wife of the daughters of Barzillai the Gileadite, and was called after their name:"

Ezra 2:64: "The whole congregation together was forty and two thousand three hundred and threescore,"

Ezra 3:1: "And when the seventh month was come, and the children of Israel were in the cities, the people gathered themselves together as one man to Jerusalem."

Ezra 3:3: "And they set the altar upon his bases; for fear was upon them because of the people of those countries: and they offered burnt offerings thereon unto the LORD, even burnt offerings morning and evening."

Ezra 3:6: "From the first day of the seventh month began they to offer burnt offerings unto the LORD. But the foundation of the temple of the LORD was not yet laid."

Ezra 3:11: "And they sang together by course in praising and giving thanks unto the LORD; because he is good, for his mercy endureth for ever toward Israel. And all the people shouted with a great shout, when they praised the LORD, because the foundation of the house of the LORD was laid."

Ezra 3:12: "But many of the priests and Levites and chief of the fathers, who were ancient men, that had seen the first house, when the foundation of this house was laid before their eyes, wept with a loud voice; and many shouted aloud for joy:"

Ezra 3:13: "So that the people could not discern the noise of the shout of joy from the noise of the weeping of the people: for the people shouted with a loud shout, and the noise was heard afar off."

Ezra 4:7: "And in the days of Artaxerxes wrote Bishlam, Mithredath, Tabeel, and the rest of their companions, unto Artaxerxes king of Persia; and the writing of the letter was written in the Syrian tongue, and interpreted in the Syrian tongue."

Ezra 4:14: "Now because we have maintenance from the king's palace, and it was not meet for us to see the king's dishonour, therefore have we sent and certified the king;"

Ezra 4:15: "That search may be made in the book of the records of thy fathers: so shalt thou find in the book of the records, and know that this city is a rebellious city, and hurtful unto kings and provinces, and that they have moved sedition within the same of old time: for which cause was this city destroyed."

Ezra 4:20: "There have been mighty kings also over Jerusalem, which have ruled over all countries beyond the river; and toll, tribute, and custom, was paid unto them."

Ezra 4:23: "Now when the copy of king Artaxerxes' letter was read before Rehum, and Shimshai the scribe, and their companions, they went up in haste to Jerusalem unto the Jews, and made them to cease by force and power."

Ezra 5:5: "But the eye of their God was upon the elders of the Jews, that they could not cause them to cease, till the matter came to Darius: and then they returned answer by letter concerning this matter."

Ezra 5:7: "They sent a letter unto him, wherein was written thus; Unto Darius the king, all peace."

Ezra 5:11: "And thus they returned us answer, saying, We are the servants of the God of heaven and earth, and build the house that was builded these many years ago, which a great king of Israel builded and set up."

Ezra 5:14: "And the vessels also of gold and silver of the house of God, which Nebuchadnezzar took out of the temple that was in Jerusalem, and brought them into the temple of Babylon, those did Cyrus the king take out of the temple of Babylon, and they were delivered unto one, whose name was Sheshbazzar, whom he had made governor;"

Ezra 5:17: "Now therefore, if it seem good to the king, let there be search made in the king's treasure house, which is there at Babylon, whether it be so, that a decree was made of Cyrus the king to build this house of God at Jerusalem, and let the king send his pleasure to us concerning this matter."

Ezra 6:1: "Then Darius the king made a decree, and search was made in the house of the rolls, where the treasures were laid up in Babylon."

Ezra 6:2: "And there was found at Achmetha, in the palace that is in the province of the Medes, a roll, and therein was a record thus written:"

Ezra 6:15: "And this house was finished on the third day of the month Adar, which was in the sixth year of the reign of Darius the king."

Ezra 7:6: "This Ezra went up from Babylon; and he was a ready scribe in the law of Moses, which the LORD God of Israel had given: and the king granted him all his request, according to the hand of the LORD his God upon him."

Ezra 7:8: "And he came to Jerusalem in the fifth month, which was in the seventh year of the king."

Ezra 7:28: "And hath extended mercy unto me before the king, and his counsellors, and before all the king's mighty princes. And I was strengthened as the hand of the LORD my God was upon me, and I gathered together out of Israel chief men to go up with me."

Ezra 8:22: "For I was ashamed to require of the king a band of soldiers and horsemen to help us against the enemy in the way: because we had spoken unto the king, saying, The hand of our God is upon all them for good that seek him; but his power and his wrath is against all them that forsake him."

Ezra 8:23: "So we fasted and besought our God for this: and he was intreated of us."

Ezra 8:31: "Then we departed from the river of Ahava on the twelfth day of the first month, to go unto Jerusalem: and the hand of our God was upon us, and he delivered us from the hand of the enemy, and of such as lay in wait by the way."

Ezra 8:33: "Now on the fourth day was the silver and the gold and the vessels weighed in the house of our God by the hand of Meremoth the son of Uriah the priest; and with him was Eleazar the son of Phinehas; and with them was Jozabad the son of Jeshua, and Noadiah the son of Binnui, Levites;"

Ezra 8:34: "By number and by weight of every one: and all the weight was written at that time."

Ezra 8:35: "Also the children of those that had been carried away, which were come out of the captivity, offered burnt offerings unto the God of Israel, twelve bullocks for all Israel, ninety and six rams, seventy and seven lambs, twelve he goats for a sin offering: all this was a burnt offering unto the LORD."

Ezra 10:9: "Then all the men of Judah and Benjamin gathered themselves together unto Jerusalem within three days. It was the ninth month, on the twentieth day of the month; and all the people sat in the street of the house of God, trembling because of this matter, and for the great rain."

Nehemiah 1:1: "The words of Nehemiah the son of Hachaliah. And it came to pass in the month Chisleu, in the twentieth year, as I was in Shushan the palace,"

Nehemiah 1:11: "O LORD, I beseech thee, let now thine ear be attentive to the prayer of thy servant, and to the prayer of thy servants, who desire to fear thy name: and prosper, I pray thee, thy servant this day, and grant him mercy in the sight of this man. For I was the king's cupbearer."

Nehemiah 2:1: "And it came to pass in the month Nisan, in the twentieth year of Artaxerxes the king, that wine was before him: and I took up the wine, and gave it unto the king. Now I had not been beforetime sad in his presence."

Nehemiah 2:2: "Wherefore the king said unto me, Why is thy countenance sad, seeing thou art not sick? this is nothing else but sorrow of heart. Then I was very sore afraid,"

Nehemiah 2:10: "When Sanballat the Horonite, and Tobiah the servant, the Ammonite, heard of it, it grieved them exceedingly that there was come a man to seek the welfare of the children of Israel."

Nehemiah 2:11: "So I came to Jerusalem, and was there three days."

Nehemiah 2:12: "And I arose in the night, I and some few men with me; neither told I any man what my God had put in my heart to do at Jerusalem: neither was there any beast with me, save the beast that I rode upon."

Nehemiah 2:14: "Then I went on to the gate of the fountain, and to the king's pool: but there was no

place for the beast that was under me to pass."

Nehemiah 2:18: "Then I told them of the hand of my God which was good upon me; as also the king's words that he had spoken unto me. And they said, Let us rise up and build. So they strengthened their hands for this good work."

Nehemiah 3:16: "After him repaired Nehemiah the son of Azbuk, the ruler of the half part of Bethzur, unto the place over against the sepulchres of David, and to the pool that was made, and unto the house of the mighty."

Nehemiah 3:25: "Palal the son of Uzai, over against the turning of the wall, and the tower which lieth out from the king's high house, that was by the court of the prison. After him Pedaiah the son of Parosh."

Nehemiah 4:1: "But it came to pass, that when Sanballat heard that we builded the wall, he was wroth, and took great indignation, and mocked the Jews."

Nehemiah 4:3: "Now Tobiah the Ammonite was by him, and he said, Even that which they build, if a fox go up, he shall even break down their stone wall."

Nehemiah 4:6: "So built we the wall; and all the wall was joined together unto the half thereof: for the people had a mind to work."

Nehemiah 4:15: "And it came to pass, when our enemies heard that it was known unto us, and God had brought their counsel to nought, that we returned all of us to the wall, every one unto his work."

Nehemiah 4:18: "For the builders, every one had his sword girded by his side, and so builded. And he that sounded the trumpet was by me."

Nehemiah 5:1: "And there was a great cry of the people and of their wives against their brethren the Jews."

Nehemiah 5:6: "And I was very angry when I heard their cry and these words."

Nehemiah 5:14: "Moreover from the time that I was appointed to be their governor in the land of Judah, from the twentieth year even unto the two and thirtieth year of Artaxerxes the king, that is, twelve years, I and my brethren have not eaten the bread of the governor."

Nehemiah 5:18: "Now that which was prepared for me daily was one ox and six choice sheep; also fowls were prepared for me, and once in ten days store of all sorts of wine: yet for all this required not I the bread of the governor, because the bondage was heavy upon this people."

Nehemiah 6:1: "Now it came to pass when Sanballat, and Tobiah, and Geshem the Arabian, and the rest of our enemies, heard that I had builded the wall, and that there was no breach left therein; (though at that time I had not set up the doors upon the gates;)"

Nehemiah 6:6: "Wherein was written, It is reported among the heathen, and Gashmu saith it, that thou and the Jews think to rebel: for which cause thou buildest the wall, that thou mayest be their king, according to these words."

Nehemiah 6:10: "Afterward I came unto the house of Shemaiah the son of Delaiah the son of Mehetabeel, who was shut up; and he said, Let us meet together in the house of God, within the temple, and let us shut the doors of the temple: for they will come to slay thee; yea, in the night will they come to slay thee."

Nehemiah 6:13: "Therefore was he hired, that I should be afraid, and do so, and sin, and that they might have matter for an evil report, that they might reproach me."

Nehemiah 6:15: "So the wall was finished in the twenty and fifth day of the month Elul, in fifty and two days."

Nehemiah 6:16: "And it came to pass, that when all our enemies heard thereof, and all the heathen that were about us saw these things, they were much cast down in their own eyes: for they perceived that this work was wrought of our God."

Nehemiah 6:18: "For there were many in Judah sworn unto him, because he was the son in law of Shechaniah the son of Arah; and his son Johanan had taken the daughter of Meshullam the son of Berechiah."

Nehemiah 7:1: "Now it came to pass, when the wall was built, and I had set up the doors, and the

porters and the singers and the Levites were appointed,"

Nehemiah 7:2: "That I gave my brother Hanani, and Hananiah the ruler of the palace, charge over Jerusalem: for he was a faithful man, and feared God above many."

Nehemiah 7:4: "Now the city was large and great: but the people were few therein, and the houses were not builded."

Nehemiah 7:7: "Who came with Zerubbabel, Jeshua, Nehemiah, Azariah, Raamiah, Nahamani, Mordecai, Bilshan, Mispereth, Bigvai, Nehum, Baanah. The number, I say, of the men of the people of Israel was this;"

Nehemiah 7:63: "And of the priests: the children of Habaiah, the children of Koz, the children of Barzillai, which took one of the daughters of Barzillai the Gileadite to wife, and was called after their name."

Nehemiah 7:64: "These sought their register among those that were reckoned by genealogy, but it was not found: therefore were they, as polluted, put from the priesthood."

Nehemiah 7:66: "The whole congregation together was forty and two thousand three hundred and threescore,"

Nehemiah 7:72: "And that which the rest of the people gave was twenty thousand drams of gold, and two thousand pound of silver, and threescore and seven priests' garments."

Nehemiah 8:1: "And all the people gathered themselves together as one man into the street that was before the water gate; and they spake unto Ezra the scribe to bring the book of the law of Moses, which the LORD had commanded to Israel."

Nehemiah 8:3: "And he read therein before the street that was before the water gate from the morning until midday, before the men and the women, and those that could understand; and the ears of all the people were attentive unto the book of the law."

Nehemiah 8:5: "And Ezra opened the book in the sight of all the people; (for he was above all the people;) and when he opened it, all the people stood up:"

Nehemiah 8:17: "And all the congregation of them that were come again out of the captivity made booths, and sat under the booths: for since the days of Jeshua the son of Nun unto that day had not the children of Israel done so. And there was very great gladness."

Nehemiah 8:18: "Also day by day, from the first day unto the last day, he read in the book of the law of God. And they kept the feast seven days; and on the eighth day was a solemn assembly, according unto the manner."

Nehemiah 10:29: "They clave to their brethren, their nobles, and entered into a curse, and into an oath, to walk in God's law, which was given by Moses the servant of God, and to observe and do all the commandments of the LORD our Lord, and his judgments and his statutes;"

Nehemiah 11:9: "And Joel the son of Zichri was their overseer: and Judah the son of Senuah was second over the city."

Nehemiah 11:11: "Seraiah the son of Hilkiah, the son of Meshullam, the son of Zadok, the son of Meraioth, the son of Ahitub, was the ruler of the house of God."

Nehemiah 11:14: "And their brethren, mighty men of valour, an hundred twenty and eight: and their overseer was Zabdiel, the son of one of the great men."

Nehemiah 11:17: "And Mattaniah the son of Micha, the son of Zabdi, the son of Asaph, was the principal to begin the thanksgiving in prayer: and Bakbukiah the second among his brethren, and Abda the son of Shammua, the son of Galal, the son of Jeduthun."

Nehemiah 11:22: "The overseer also of the Levites at Jerusalem was Uzzi the son of Bani, the son of Hashabiah, the son of Mattaniah, the son of Micha. Of the sons of Asaph, the singers were over the business of the house of God."

Nehemiah 11:23: "For it was the king's commandment concerning them, that a certain portion should be for the singers, due for every day."

Nehemiah 11:24: "And Pethahiah the son of Meshezabeel, of the children of Zerah the son of Judah, was at the king's hand in all matters concerning the people."

Nehemiah 12:8: "Moreover the Levites: Jeshua, Binnui, Kadmiel, Sherebiah, Judah, and Mattaniah, which was over the thanksgiving, he and his brethren."

Nehemiah 12:37: "And at the fountain gate, which was over against them, they went up by the stairs of the city of David, at the going up of the wall, above the house of David, even unto the water gate eastward."

Nehemiah 12:43: "Also that day they offered great sacrifices, and rejoiced: for God had made them rejoice with great joy: the wives also and the children rejoiced: so that the joy of Jerusalem was heard even afar off."

Nehemiah 13:1: "On that day they read in the book of Moses in the audience of the people; and therein was found written, that the Ammonite and the Moabite should not come into the congregation of God for ever;"

Nehemiah 13:4: "And before this, Eliashib the priest, having the oversight of the chamber of the house of our God, was allied unto Tobiah:"

Nehemiah 13:5: "And he had prepared for him a great chamber, where aforetime they laid the meat offerings, the frankincense, and the vessels, and the tithes of the corn, the new wine, and the oil, which was commanded to be given to the Levites, and the singers, and the porters; and the offerings of the priests."

Nehemiah 13:6: "But in all this time was not I at Jerusalem: for in the two and thirtieth year of Artaxerxes king of Babylon came I unto the king, and after certain days obtained I leave of the king:"

Nehemiah 13:13: "And I made treasurers over the treasuries, Shelemiah the priest, and Zadok the scribe, and of the Levites, Pedaiah: and next to them was Hanan the son of Zaccur, the son of Mattaniah: for they were counted faithful, and their office was to distribute unto their brethren."

Nehemiah 13:26: "Did not Solomon king of Israel sin by these things? yet among many nations was there no king like him, who was beloved of his God, and God made him king over all Israel: nevertheless even him did outlandish women cause to sin."

Nehemiah 13:28: "And one of the sons of Joiada, the son of Eliashib the high priest, was son in law to Sanballat the Horonite: therefore I chased him from me."

Esther 1:2: "That in those days, when the king Ahasuerus sat on the throne of his kingdom, which was in Shushan the palace,"

Esther 1:8: "And the drinking was according to the law; none did compel: for so the king had appointed to all the officers of his house, that they should do according to every man's pleasure."

Esther 1:10: "On the seventh day, when the heart of the king was merry with wine, he commanded Mehuman, Biztha, Harbona, Bigtha, and Abagtha, Zethar, and Carcas, the seven chamberlains that served in the presence of Ahasuerus the king,"

Esther 1:11: "To bring Vashti the queen before the king with the crown royal, to shew the people and the princes her beauty: for she was fair to look on."

Esther 1:12: "But the queen Vashti refused to come at the king's commandment by his chamberlains: therefore was the king very wroth, and his anger burned in him."

Esther 1:13: "Then the king said to the wise men, which knew the times, (for so was the king's manner toward all that knew law and judgment:"

Esther 1:14: "And the next unto him was Carshena, Shethar, Admatha, Tarshish, Meres, Marsena, and Memucan, the seven princes of Persia and Media, which saw the king's face, and which sat the first in the kingdom;)"

Esther 2:1: "After these things, when the wrath of king Ahasuerus was appeased, he remembered Vashti, and what she had done, and what was decreed against her."

Esther 2:5: "Now in Shushan the palace there was a certain Jew, whose name was Mordecai, the son of Jair, the son of Shimei, the son of Kish, a Benjamite;"

Esther 2:7: "And he brought up Hadassah, that is, Esther, his uncle's daughter: for she had neither father nor mother, and the maid was fair and beautiful; whom Mordecai, when her father and



mother were dead, took for his own daughter."

Esther 2:8: "So it came to pass, when the king's commandment and his decree was heard, and when many maidens were gathered together unto Shushan the palace, to the custody of Hegai, that Esther was brought also unto the king's house, to the custody of Hegai, keeper of the women."

Esther 2:12: "Now when every maid's turn was come to go in to king Ahasuerus, after that she had been twelve months, according to the manner of the women, (for so were the days of their purifications accomplished, to wit, six months with oil of myrrh, and six months with sweet odours, and with other things for the purifying of the women;)"

Esther 2:13: "Then thus came every maiden unto the king; whatsoever she desired was given her to go with her out of the house of the women unto the king's house."

Esther 2:15: "Now when the turn of Esther, the daughter of Abihail the uncle of Mordecai, who had taken her for his daughter, was come to go in unto the king, she required nothing but what Hegai the king's chamberlain, the keeper of the women, appointed. And Esther obtained favour in the sight of all them that looked upon her."

Esther 2:16: "So Esther was taken unto king Ahasuerus into his house royal in the tenth month, which is the month Tebeth, in the seventh year of his reign."

Esther 2:20: "Esther had not yet shewed her kindred nor her people; as Mordecai had charged her: for Esther did the commandment of Mordecai, like as when she was brought up with him."

Esther 2:22: "And the thing was known to Mordecai, who told it unto Esther the queen; and Esther certified the king thereof in Mordecai's name."

Esther 2:23: "And when inquisition was made of the matter, it was found out; therefore they were both hanged on a tree: and it was written in the book of the chronicles before the king."

Esther 3:4: "Now it came to pass, when they spake daily unto him, and he hearkened not unto them, that they told Haman, to see whether Mordecai's matters would stand: for he had told them that he was a Jew."

Esther 3:5: "And when Haman saw that Mordecai bowed not, nor did him reverence, then was Haman full of wrath."

Esther 3:12: "Then were the king's scribes called on the thirteenth day of the first month, and there was written according to all that Haman had commanded unto the king's lieutenants, and to the governors that were over every province, and to the rulers of every people of every province according to the writing thereof, and to every people after their language; in the name of king Ahasuerus was it written, and sealed with the king's ring."

Esther 3:14: "The copy of the writing for a commandment to be given in every province was published unto all people, that they should be ready against that day."

Esther 3:15: "The posts went out, being hastened by the king's commandment, and the decree was given in Shushan the palace. And the king and Haman sat down to drink; but the city Shushan was perplexed."

Esther 4:1: "When Mordecai perceived all that was done, Mordecai rent his clothes, and put on sackcloth with ashes, and went out into the midst of the city, and cried with a loud and a bitter cry;"

Esther 4:3: "And in every province, whithersoever the king's commandment and his decree came, there was great mourning among the Jews, and fasting, and weeping, and wailing; and many lay in sackcloth and ashes."

Esther 4:4: "So Esther's maids and her chamberlains came and told it her. Then was the queen exceedingly grieved; and she sent raiment to clothe Mordecai, and to take away his sackcloth from him: but he received it not."

Esther 4:5: "Then called Esther for Hatach, one of the king's chamberlains, whom he had appointed to attend upon her, and gave him a commandment to Mordecai, to know what it was, and why it was."

Esther 4:6: "So Hatach went forth to Mordecai unto the street of the city, which was before the king's gate."

Esther 4:8: "Also he gave him the copy of the writing of the decree that was given at Shushan to destroy them, to shew it unto Esther, and to declare it unto her, and to charge her that she should go in unto the king, to make supplication unto him, and to make request before him for her people."

Esther 5:2: "And it was so, when the king saw Esther the queen standing in the court, that she obtained favour in his sight: and the king held out to Esther the golden sceptre that was in his hand. So Esther drew near, and touched the top of the sceptre."

Esther 5:9: "Then went Haman forth that day joyful and with a glad heart: but when Haman saw Mordecai in the king's gate, that he stood not up, nor moved for him, he was full of indignation against Mordecai."

Esther 6:2: "And it was found written, that Mordecai had told of Bigthana and Teresh, two of the king's chamberlains, the keepers of the door, who sought to lay hand on the king Ahasuerus."

Esther 6:4: "And the king said, Who is in the court? Now Haman was come into the outward court of the king's house, to speak unto the king to hang Mordecai on the gallows that he had prepared for him."

Esther 7:6: "And Esther said, The adversary and enemy is this wicked Haman. Then Haman was afraid before the king and the queen."

Esther 7:7: "And the king arising from the banquet of wine in his wrath went into the palace garden: and Haman stood up to make request for his life to Esther the queen; for he saw that there was evil determined against him by the king."

Esther 7:8: "Then the king returned out of the palace garden into the place of the banquet of wine; and Haman was fallen upon the bed whereon Esther was. Then said the king, Will he force the queen also before me in the house? As the word went out of king's mouth, they covered Haman's face."

Esther 7:10: "So they hanged Haman on the gallows that he had prepared for Mordecai. Then was the king's wrath pacified."

Esther 8:1: "On that day did the king Ahasuerus give the house of Haman the Jews' enemy unto Esther the queen. And Mordecai came before the king; for Esther had told what he was unto her."

Esther 8:9: "Then were the king's scribes called at that time in the third month, that is, the month Sivan, on the three and twentieth day thereof; and it was written according to all that Mordecai commanded unto the Jews, and to the lieutenants, and the deputies and rulers of the provinces which are from India unto Ethiopia, an hundred twenty and seven provinces, unto every province according to the writing thereof, and unto every people after their language, and to the Jews according to their writing, and according to their language."

Esther 8:13: "The copy of the writing for a commandment to be given in every province was published unto all people, and that the Jews should be ready against that day to avenge themselves on their enemies."

Esther 8:14: "So the posts that rode upon mules and camels went out, being hastened and pressed on by the king's commandment. And the decree was given at Shushan the palace."

Esther 8:15: "And Mordecai went out from the presence of the king in royal apparel of blue and white, and with a great crown of gold, and with a garment of fine linen and purple: and the city of Shushan rejoiced and was glad."

Esther 9:1: "Now in the twelfth month, that is, the month Adar, on the thirteenth day of the same, when the king's commandment and his decree drew near to be put in execution, in the day that the enemies of the Jews hoped to have power over them, (though it was turned to the contrary, that the Jews had rule over them that hated them;)"

Esther 9:4: "For Mordecai was great in the king's house, and his fame went out throughout all the provinces: for this man Mordecai waxed greater and greater."

Esther 9:11: "On that day the number of those that were slain in Shushan the palace was brought before the king."

Esther 9:14: "And the king commanded it so to be done: and the decree was given at Shushan; and

they hanged Haman's ten sons."

Esther 9:22: "As the days wherein the Jews rested from their enemies, and the month which was turned unto them from sorrow to joy, and from mourning into a good day: that they should make them days of feasting and joy, and of sending portions one to another, and gifts to the poor."

Esther 9:32: "And the decree of Esther confirmed these matters of Purim; and it was written in the book."

Esther 10:3: "For Mordecai the Jew was next unto king Ahasuerus, and great among the Jews, and accepted of the multitude of his brethren, seeking the wealth of his people, and speaking peace to all his seed."

Job 1:1: "There was a man in the land of Uz, whose name was Job; and that man was perfect and upright, and one that feared God, and eschewed evil."

Job 1:3: "His substance also was seven thousand sheep, and three thousand camels, and five hundred yoke of oxen, and five hundred she asses, and a very great household; so that this man was the greatest of all the men of the east."

Job 1:5: "And it was so, when the days of their feasting were gone about, that Job sent and sanctified them, and rose up early in the morning, and offered burnt offerings according to the number of them all: for Job said, It may be that my sons have sinned, and cursed God in their hearts. Thus did Job continually."

Job 1:6: "Now there was a day when the sons of God came to present themselves before the LORD, and Satan came also among them."

Job 1:13: "And there was a day when his sons and his daughters were eating and drinking wine in their eldest brother's house:"

Job 1:16: "While he was yet speaking, there came also another, and said, The fire of God is fallen from heaven, and hath burned up the sheep, and the servants, and consumed them; and I only am escaped alone to tell thee."

Job 1:17: "While he was yet speaking, there came also another, and said, The Chaldeans made out three bands, and fell upon the camels, and have carried them away, yea, and slain the servants with the edge of the sword; and I only am escaped alone to tell thee."

Job 1:18: "While he was yet speaking, there came also another, and said, Thy sons and thy daughters were eating and drinking wine in their eldest brother's house:"

Job 2:1: "Again there was a day when the sons of God came to present themselves before the LORD, and Satan came also among them to present himself before the LORD."

Job 2:11: "Now when Job's three friends heard of all this evil that was come upon him, they came every one from his own place; Eliphaz the Temanite, and Bildad the Shuhite, and Zophar the Naamathite: for they had made an appointment together to come to mourn with him and to comfort him."

Job 2:13: "So they sat down with him upon the ground seven days and seven nights, and none spake a word unto him: for they saw that his grief was very great."

Job 3:3: "Let the day perish wherein I was born, and the night in which it was said, There is a man child conceived."

Job 3:25: "For the thing which I greatly feared is come upon me, and that which I was afraid of is come unto me."

Job 3:26: "I was not in safety, neither had I rest, neither was I quiet; yet trouble came."

Job 4:4: "Thy words have upholden him that was falling, and thou hast strengthened the feeble knees."

Job 4:12: "Now a thing was secretly brought to me, and mine ear received a little thereof."

Job 4:16: "It stood still, but I could not discern the form thereof: an image was before mine eyes, there was silence, and I heard a voice, saying,"

Job 8:7: "Though thy beginning was small, yet thy latter end should greatly increase."

Job 15:7: "Art thou the first man that was born? or wast thou made before the hills?"

Job 15:19: "Unto whom alone the earth was given, and no stranger passed among them."

Job 16:12: "I was at ease, but he hath broken me asunder: he hath also taken me by my neck, and shaken me to pieces, and set me up for his mark."

Job 17:6: "He hath made me also a byword of the people; and aforetime I was as a tabret."

Job 20:4: "Knowest thou not this of old, since man was placed upon earth,"

Job 22:16: "Which were cut down out of time, whose foundation was overflown with a flood:"

Job 23:17: "Because I was not cut off before the darkness, neither hath he covered the darkness from my face."

Job 29:4: "As I was in the days of my youth, when the secret of God was upon my tabernacle;"

Job 29:5: "When the Almighty was yet with me, when my children were about me;"

Job 29:13: "The blessing of him that was ready to perish came upon me: and I caused the widow's heart to sing for joy."

Job 29:14: "I put on righteousness, and it clothed me: my judgment was as a robe and a diadem."

Job 29:15: "I was eyes to the blind, and feet was I to the lame."

Job 29:16: "I was a father to the poor: and the cause which I knew not I searched out."

Job 29:19: "My root was spread out by the waters, and the dew lay all night upon my branch."

Job 29:20: "My glory was fresh in me, and my bow was renewed in my hand."

Job 30:2: "Yea, whereto might the strength of their hands profit me, in whom old age was perished?"

Job 30:25: "Did not I weep for him that was in trouble? was not my soul grieved for the poor?"

Job 31:18: "(For from my youth he was brought up with me, as with a father, and I have guided her from my mother's womb;)"

Job 31:23: "For destruction from God was a terror to me, and by reason of his highness I could not endure."

Job 31:25: "If I rejoice because my wealth was great, and because mine hand had gotten much;"

Job 32:1: "So these three men ceased to answer Job, because he was righteous in his own eyes."

Job 32:2: "Then was kindled the wrath of Elihu the son of Barachel the Buzite, of the kindred of Ram: against Job was his wrath kindled, because he justified himself rather than God."

Job 32:3: "Also against his three friends was his wrath kindled, because they had found no answer, and yet had condemned Job."

Job 32:5: "When Elihu saw that there was no answer in the mouth of these three men, then his wrath was kindled."

Job 32:6: "And Elihu the son of Barachel the Buzite answered and said, I am young, and ye are very old; wherefore I was afraid, and durst not shew you mine opinion."

Job 32:12: "Yea, I attended unto you, and, behold, there was none of you that convinced Job, or that answered his words:"

Job 33:27: "He looketh upon men, and if any say, I have sinned, and perverted that which was right, and it profited me not;"

Job 42:7: "And it was so, that after the LORD had spoken these words unto Job, the LORD said to Eliphaz the Temanite, My wrath is kindled against thee, and against thy two friends: for ye have not spoken of me the thing that is right, as my servant Job hath."

Psalms 4:1: "Hear me when I call, O God of my righteousness: thou hast enlarged me when I was in distress; have mercy upon me, and hear my prayer."

Psalms 7:4: "If I have rewarded evil unto him that was at peace with me; (yea, I have delivered him that without cause is mine enemy:)"

Psalms 18:7: "Then the earth shook and trembled; the foundations also of the hills moved and were shaken, because he was wroth."

Psalms 18:9: "He bowed the heavens also, and came down: and darkness was under his feet."

Psalms 18:12: "At the brightness that was before him his thick clouds passed, hail stones and coals of fire."

Psalms 18:18: "They prevented me in the day of my calamity: but the LORD was my stay."  
 Psalms 18:23: "I was also upright before him, and I kept myself from mine iniquity."  
 Psalms 18:41: "They cried, but there was none to save them: even unto the LORD, but he answered them not."  
 Psalms 22:9: "But thou art he that took me out of the womb: thou didst make me hope when I was upon my mother's breasts."  
 Psalms 22:10: "I was cast upon thee from the womb: thou art my God from my mother's belly."  
 Psalms 30:7: "LORD, by thy favour thou hast made my mountain to stand strong: thou didst hide thy face, and I was troubled."  
 Psalms 31:11: "I was a reproach among all mine enemies, but especially among my neighbours, and a fear to mine acquaintance: they that did see me without fled from me."  
 Psalms 31:13: "For I have heard the slander of many: fear was on every side: while they took counsel together against me, they devised to take away my life."  
 Psalms 32:4: "For day and night thy hand was heavy upon me: my moisture is turned into the drought of summer. Selah."  
 Psalms 33:9: "For he spake, and it was done; he commanded, and it stood fast."  
 Psalms 35:13: "But as for me, when they were sick, my clothing was sackcloth: I humbled my soul with fasting; and my prayer returned into mine own bosom."  
 Psalms 37:36: "Yet he passed away, and, lo, he was not: yea, I sought him, but he could not be found."  
 Psalms 38:13: "But I, as a deaf man, heard not; and I was as a dumb man that openeth not his mouth."  
 Psalms 38:14: "Thus I was as a man that heareth not, and in whose mouth are no reproofs."  
 Psalms 39:2: "I was dumb with silence, I held my peace, even from good; and my sorrow was stirred."  
 Psalms 39:3: "My heart was hot within me, while I was musing the fire burned: then spake I with my tongue,"  
 Psalms 39:9: "I was dumb, I opened not my mouth; because thou didst it."  
 Psalms 50:21: "These things hast thou done, and I kept silence; thou thoughtest that I was altogether such an one as thyself: but I will reprove thee, and set them in order before thine eyes."  
 Psalms 51:5: "Behold, I was shapen in iniquity; and in sin did my mother conceive me."  
 Psalms 53:5: "There were they in great fear, where no fear was: for God hath scattered the bones of him that encampeth against thee: thou hast put them to shame, because God hath despised them."  
 Psalms 55:12: "For it was not an enemy that reproached me; then I could have borne it: neither was it he that hated me that did magnify himself against me; then I would have hid myself from him:"  
 Psalms 55:13: "But it was thou, a man mine equal, my guide, and mine acquaintance."  
 Psalms 55:18: "He hath delivered my soul in peace from the battle that was against me: for there were many with me."  
 Psalms 55:21: "The words of his mouth were smoother than butter, but war was in his heart: his words were softer than oil, yet were they drawn swords."  
 Psalms 66:14: "Which my lips have uttered, and my mouth hath spoken, when I was in trouble."  
 Psalms 66:17: "I cried unto him with my mouth, and he was extolled with my tongue."  
 Psalms 68:8: "The earth shook, the heavens also dropped at the presence of God: even Sinai itself was moved at the presence of God, the God of Israel."  
 Psalms 68:9: "Thou, O God, didst send a plentiful rain, whereby thou didst confirm thine inheritance, when it was weary."  
 Psalms 68:11: "The Lord gave the word: great was the company of those that published it."  
 Psalms 68:14: "When the Almighty scattered kings in it, it was white as snow in Salmon."  
 Psalms 69:10: "When I wept, and chastened my soul with fasting, that was to my reproach."  
 Psalms 69:12: "They that sit in the gate speak against me; and I was the song of the drunkards."

Psalms 69:20: "Reproach hath broken my heart; and I am full of heaviness: and I looked for some to take pity, but there was none; and for comforters, but I found none."  
 Psalms 73:3: "For I was envious at the foolish, when I saw the prosperity of the wicked."  
 Psalms 73:16: "When I thought to know this, it was too painful for me;"  
 Psalms 73:21: "Thus my heart was grieved, and I was pricked in my reins."  
 Psalms 73:22: "So foolish was I, and ignorant: I was as a beast before thee."  
 Psalms 74:5: "A man was famous according as he had lifted up axes upon the thick trees."  
 Psalms 76:8: "Thou didst cause judgment to be heard from heaven; the earth feared, and was still,"  
 Psalms 77:3: "I remembered God, and was troubled: I complained, and my spirit was overwhelmed. Selah."  
 Psalms 77:18: "The voice of thy thunder was in the heaven: the lightnings lightened the world: the earth trembled and shook."  
 Psalms 78:8: "And might not be as their fathers, a stubborn and rebellious generation; a generation that set not their heart aright, and whose spirit was not stedfast with God."  
 Psalms 78:21: "Therefore the LORD heard this, and was wroth: so a fire was kindled against Jacob, and anger also came up against Israel;"  
 Psalms 78:30: "They were not estranged from their lust. But while their meat was yet in their mouths,"  
 Psalms 78:35: "And they remembered that God was their rock, and the high God their redeemer."  
 Psalms 78:37: "For their heart was not right with him, neither were they stedfast in his covenant."  
 Psalms 78:59: "When God heard this, he was wroth, and greatly abhorred Israel:"  
 Psalms 78:62: "He gave his people over also unto the sword; and was wroth with his inheritance."  
 Psalms 79:3: "Their blood have they shed like water round about Jerusalem; and there was none to bury them."  
 Psalms 81:4: "For this was a statute for Israel, and a law of the God of Jacob."  
 Psalms 87:4: "I will make mention of Rahab and Babylon to them that know me: behold Philistia, and Tyre, with Ethiopia; this man was born there."  
 Psalms 87:5: "And of Zion it shall be said, This and that man was born in her: and the highest himself shall establish her."  
 Psalms 87:6: "The LORD shall count, when he writeth up the people, that this man was born there. Selah."  
 Psalms 95:10: "Forty years long was I grieved with this generation, and said, It is a people that do err in their heart, and they have not known my ways:"  
 Psalms 97:8: "Zion heard, and was glad; and the daughters of Judah rejoiced because of thy judgments, O LORD."  
 Psalms 105:17: "He sent a man before them, even Joseph, who was sold for a servant:"  
 Psalms 105:18: "Whose feet they hurt with fetters: he was laid in iron:"  
 Psalms 105:37: "He brought them forth also with silver and gold: and there was not one feeble person among their tribes."  
 Psalms 105:38: "Egypt was glad when they departed: for the fear of them fell upon them."  
 Psalms 106:9: "He rebuked the Red sea also, and it was dried up: so he led them through the depths, as through the wilderness."  
 Psalms 106:11: "And the waters covered their enemies: there was not one of them left."  
 Psalms 106:18: "And a fire was kindled in their company; the flame burned up the wicked."  
 Psalms 106:30: "Then stood up Phinehas, and executed judgment: and so the plague was stayed."  
 Psalms 106:31: "And that was counted unto him for righteousness unto all generations for evermore."  
 Psalms 106:38: "And shed innocent blood, even the blood of their sons and of their daughters, whom they sacrificed unto the idols of Canaan: and the land was polluted with blood."  
 Psalms 106:40: "Therefore was the wrath of the LORD kindled against his people, insomuch that he

abhorred his own inheritance."

Psalms 107:12: "Therefore he brought down their heart with labour; they fell down, and there was none to help."

Psalms 114:2: "Judah was his sanctuary, and Israel his dominion."

Psalms 114:3: "The sea saw it, and fled: Jordan was driven back."

Psalms 116:6: "The LORD preserveth the simple: I was brought low, and he helped me."

Psalms 116:10: "I believed, therefore have I spoken: I was greatly afflicted:"

Psalms 119:67: "Before I was afflicted I went astray: but now have I kept thy word."

Psalms 119:158: "I beheld the transgressors, and was grieved; because they kept not thy word."

Psalms 122:1: "I was glad when they said unto me, Let us go into the house of the LORD."

Psalms 124:1: "If it had not been the LORD who was on our side, now may Israel say;"

Psalms 124:2: "If it had not been the LORD who was on our side, when men rose up against us:"

Psalms 124:3: "Then they had swallowed us up quick, when their wrath was kindled against us:"

Psalms 126:2: "Then was our mouth filled with laughter, and our tongue with singing: then said they among the heathen, The LORD hath done great things for them."

Psalms 139:15: "My substance was not hid from thee, when I was made in secret, and curiously wrought in the lowest parts of the earth."

Psalms 139:16: "Thine eyes did see my substance, yet being unperfect; and in thy book all my members were written, which in continuance were fashioned, when as yet there was none of them."

Psalms 142:3: "When my spirit was overwhelmed within me, then thou knewest my path. In the way wherein I walked have they privily laid a snare for me."

Psalms 142:4: "I looked on my right hand, and beheld, but there was no man that would know me: refuge failed me; no man cared for my soul."

Proverbs 4:3: "For I was my father's son, tender and only beloved in the sight of my mother."

Proverbs 5:14: "I was almost in all evil in the midst of the congregation and assembly."

Proverbs 8:23: "I was set up from everlasting, from the beginning, or ever the earth was."

Proverbs 8:24: "When there were no depths, I was brought forth; when there were no fountains abounding with water."

Proverbs 8:25: "Before the mountains were settled, before the hills was I brought forth:"

Proverbs 8:27: "When he prepared the heavens, I was there: when he set a compass upon the face of the depth:"

Proverbs 8:30: "Then I was by him, as one brought up with him: and I was daily his delight, rejoicing always before him;"

Proverbs 23:35: "They have stricken me, shalt thou say, and I was not sick; they have beaten me, and I felt it not: when shall I awake? I will seek it yet again."

Proverbs 24:31: "And, lo, it was all grown over with thorns, and nettles had covered the face thereof, and the stone wall thereof was broken down."

Ecclesiastes 1:10: "Is there any thing whereof it may be said, See, this is new? it hath been already of old time, which was before us."

Ecclesiastes 1:12: "I the Preacher was king over Israel in Jerusalem."

Ecclesiastes 2:3: "I sought in mine heart to give myself unto wine, yet acquainting mine heart with wisdom; and to lay hold on folly, till I might see what was that good for the sons of men, which they should do under the heaven all the days of their life."

Ecclesiastes 2:9: "So I was great, and increased more than all that were before me in Jerusalem: also my wisdom remained with me."

Ecclesiastes 2:10: "And whatsoever mine eyes desired I kept not from them, I withheld not my heart from any joy; for my heart rejoiced in all my labour: and this was my portion of all my labour."

Ecclesiastes 2:11: "Then I looked on all the works that my hands had wrought, and on the labour that I had laboured to do: and, behold, all was vanity and vexation of spirit, and there was no profit under the sun."

Ecclesiastes 2:15: "Then said I in my heart, As it happeneth to the fool, so it happeneth even to me; and why was I then more wise? Then I said in my heart, that this also is vanity."

Ecclesiastes 2:24: "There is nothing better for a man, than that he should eat and drink, and that he should make his soul enjoy good in his labour. This also I saw, that it was from the hand of God."

Ecclesiastes 3:16: "And moreover I saw under the sun the place of judgment, that wickedness was there; and the place of righteousness, that iniquity was there."

Ecclesiastes 4:1: "So I returned, and considered all the oppressions that are done under the sun: and behold the tears of such as were oppressed, and they had no comforter; and on the side of their oppressors there was power; but they had no comforter."

Ecclesiastes 5:6: "Suffer not thy mouth to cause thy flesh to sin; neither say thou before the angel, that it was an error: wherefore should God be angry at thy voice, and destroy the work of thine hands?"

Ecclesiastes 7:23: "All this have I proved by wisdom: I said, I will be wise; but it was far from me."

Ecclesiastes 9:14: "There was a little city, and few men within it; and there came a great king against it, and besieged it, and built great bulwarks against it:"

Ecclesiastes 9:15: "Now there was found in it a poor wise man, and he by his wisdom delivered the city; yet no man remembered that same poor man."

Ecclesiastes 12:7: "Then shall the dust return to the earth as it was: and the spirit shall return unto God who gave it."

Ecclesiastes 12:9: "And moreover, because the preacher was wise, he still taught the people knowledge; yea, he gave good heed, and sought out, and set in order many proverbs."

Ecclesiastes 12:10: "The preacher sought to find out acceptable words: and that which was written was upright, even words of truth."

Song of Solomon 2:3: "As the apple tree among the trees of the wood, so is my beloved among the sons. I sat down under his shadow with great delight, and his fruit was sweet to my taste."

Song of Solomon 2:4: "He brought me to the banqueting house, and his banner over me was love."

Song of Solomon 3:4: "It was but a little that I passed from them, but I found him whom my soul loveth: I held him, and would not let him go, until I had brought him into my mother's house, and into the chamber of her that conceived me."

Song of Solomon 5:6: "I opened to my beloved; but my beloved had withdrawn himself, and was gone: my soul failed when he spake: I sought him, but I could not find him; I called him, but he gave me no answer."

Song of Solomon 6:12: "Or ever I was aware, my soul made me like the chariots of Amminadib."

Song of Solomon 8:10: "I am a wall, and my breasts like towers: then was I in his eyes as one that found favour."

Song of Solomon 8:11: "Solomon had a vineyard at Baalhamon; he let out the vineyard unto keepers; every one for the fruit thereof was to bring a thousand pieces of silver."

Isaiah 1:21: "How is the faithful city become an harlot! it was full of judgment; righteousness lodged in it; but now murderers."

Isaiah 6:4: "And the posts of the door moved at the voice of him that cried, and the house was filled with smoke."

Isaiah 7:2: "And it was told the house of David, saying, Syria is confederate with Ephraim. And his heart was moved, and the heart of his people, as the trees of the wood are moved with the wind."

Isaiah 9:1: "Nevertheless the dimness shall not be such as was in her vexation, when at the first he lightly afflicted the land of Zebulun and the land of Naphtali, and afterward did more grievously afflict her by the way of the sea, beyond Jordan, in Galilee of the nations."

Isaiah 10:14: "And my hand hath found as a nest the riches of the people: and as one gathereth eggs that are left, have I gathered all the earth; and there was none that moved the wing, or opened the mouth, or peeped."

Isaiah 10:26: "And the LORD of hosts shall stir up a scourge for him according to the slaughter of



Midian at the rock of Oreb: and as his rod was upon the sea, so shall he lift it up after the manner of Egypt."

Isaiah 11:16: "And there shall be an highway for the remnant of his people, which shall be left, from Assyria; like as it was to Israel in the day that he came up out of the land of Egypt."

Isaiah 14:28: "In the year that king Ahaz died was this burden."

Isaiah 21:3: "Therefore are my loins filled with pain: pangs have taken hold upon me, as the pangs of a woman that travaileth: I was bowed down at the hearing of it; I was dismayed at the seeing of it."

Isaiah 21:14: "The inhabitants of the land of Tema brought water to him that was thirsty, they prevented with their bread him that fled."

Isaiah 22:14: "And it was revealed in mine ears by the LORD of hosts, Surely this iniquity shall not be purged from you till ye die, saith the Lord GOD of hosts."

Isaiah 22:25: "In that day, saith the LORD of hosts, shall the nail that is fastened in the sure place be removed, and be cut down, and fall; and the burden that was upon it shall be cut off: for the LORD hath spoken it."

Isaiah 23:13: "Behold the land of the Chaldeans; this people was not, till the Assyrian founded it for them that dwell in the wilderness: they set up the towers thereof, they raised up the palaces thereof; and he brought it to ruin."

Isaiah 26:16: "LORD, in trouble have they visited thee, they poured out a prayer when thy chastening was upon them."

Isaiah 28:13: "But the word of the LORD was unto them precept upon precept, precept upon precept; line upon line, line upon line; here a little, and there a little; that they might go, and fall backward, and be broken, and snared, and taken."

Isaiah 36:3: "Then came forth unto him Eliakim, Hilkiyah's son, which was over the house, and Shebna the scribe, and Joah, Asaph's son, the recorder."

Isaiah 36:21: "But they held their peace, and answered him not a word: for the king's commandment was, saying, Answer him not."

Isaiah 36:22: "Then came Eliakim, the son of Hilkiyah, that was over the household, and Shebna the scribe, and Joah, the son of Asaph, the recorder, to Hezekiah with their clothes rent, and told him the words of Rabshakeh."

Isaiah 37:2: "And he sent Eliakim, who was over the household, and Shebna the scribe, and the elders of the priests covered with sackcloth, unto Isaiah the prophet the son of Amoz."

Isaiah 37:8: "So Rabshakeh returned, and found the king of Assyria warring against Libnah: for he had heard that he was departed from Lachish."

Isaiah 37:38: "And it came to pass, as he was worshipping in the house of Nisroch his god, that Adrammelech and Sharezer his sons smote him with the sword; and they escaped into the land of Armenia: and Esarhaddon his son reigned in his stead."

Isaiah 38:1: "In those days was Hezekiah sick unto death. And Isaiah the prophet the son of Amoz came unto him, and said unto him, Thus saith the LORD, Set thine house in order: for thou shalt die, and not live."

Isaiah 38:8: "Behold, I will bring again the shadow of the degrees, which is gone down in the sun dial of Ahaz, ten degrees backward. So the sun returned ten degrees, by which degrees it was gone down."

Isaiah 38:9: "The writing of Hezekiah king of Judah, when he had been sick, and was recovered of his sickness:"

Isaiah 38:20: "The LORD was ready to save me: therefore we will sing my songs to the stringed instruments all the days of our life in the house of the LORD."

Isaiah 39:1: "At that time Merodachbaladan, the son of Baladan, king of Babylon, sent letters and a present to Hezekiah: for he had heard that he had been sick, and was recovered."

Isaiah 39:2: "And Hezekiah was glad of them, and shewed them the house of his precious things,

the silver, and the gold, and the spices, and the precious ointment, and all the house of his armour, and all that was found in his treasures: there was nothing in his house, nor in all his dominion, that Hezekiah shewed them not."

Isaiah 41:28: "For I beheld, and there was no man; even among them, and there was no counsellor, that, when I asked of them, could answer a word."

Isaiah 43:10: "Ye are my witnesses, saith the LORD, and my servant whom I have chosen: that ye may know and believe me, and understand that I am he: before me there was no God formed, neither shall there be after me."

Isaiah 43:12: "I have declared, and have saved, and I have shewed, when there was no strange god among you: therefore ye are my witnesses, saith the LORD, that I am God."

Isaiah 43:13: "Yea, before the day was I am he; and there is none that can deliver out of my hand: I will work, and who shall let it?"

Isaiah 47:6: "I was wroth with my people, I have polluted mine inheritance, and given them into thine hand: thou didst shew them no mercy; upon the ancient hast thou very heavily laid thy yoke."

Isaiah 48:8: "Yea, thou heardest not; yea, thou knewest not; yea, from that time that thine ear was not opened: for I knew that thou wouldest deal very treacherously, and wast called a transgressor from the womb."

Isaiah 48:16: "Come ye near unto me, hear ye this; I have not spoken in secret from the beginning; from the time that it was, there am I: and now the Lord GOD, and his Spirit, hath sent me."

Isaiah 49:21: "Then shalt thou say in thine heart, Who hath begotten me these, seeing I have lost my children, and am desolate, a captive, and removing to and fro? and who hath brought up these? Behold, I was left alone; these, where had they been?"

Isaiah 50:2: "Wherefore, when I came, was there no man? when I called, was there none to answer? Is my hand shortened at all, that it cannot redeem? or have I no power to deliver? behold, at my rebuke I dry up the sea, I make the rivers a wilderness: their fish stinketh, because there is no water, and dieth for thirst."

Isaiah 50:5: "The Lord GOD hath opened mine ear, and I was not rebellious, neither turned away back."

Isaiah 52:14: "As many were astonied at thee; his visage was so marred more than any man, and his form more than the sons of men:"

Isaiah 53:3: "He is despised and rejected of men; a man of sorrows, and acquainted with grief: and we hid as it were our faces from him; he was despised, and we esteemed him not."

Isaiah 53:5: "But he was wounded for our transgressions, he was bruised for our iniquities: the chastisement of our peace was upon him; and with his stripes we are healed."

Isaiah 53:7: "He was oppressed, and he was afflicted, yet he opened not his mouth: he is brought as a lamb to the slaughter, and as a sheep before her shearers is dumb, so he openeth not his mouth."

Isaiah 53:8: "He was taken from prison and from judgment: and who shall declare his generation? for he was cut off out of the land of the living: for the transgression of my people was he stricken."

Isaiah 53:9: "And he made his grave with the wicked, and with the rich in his death; because he had done no violence, neither was any deceit in his mouth."

Isaiah 53:12: "Therefore will I divide him a portion with the great, and he shall divide the spoil with the strong; because he hath poured out his soul unto death: and he was numbered with the transgressors; and he bare the sin of many, and made intercession for the transgressors."

Isaiah 57:17: "For the iniquity of his covetousness was I wroth, and smote him: I hid me, and was wroth, and he went on frowardly in the way of his heart."

Isaiah 59:15: "Yea, truth faileth; and he that departeth from evil maketh himself a prey: and the LORD saw it, and it displeased him that there was no judgment."

Isaiah 59:16: "And he saw that there was no man, and wondered that there was no intercessor: therefore his arm brought salvation unto him; and his righteousness, it sustained him."

Isaiah 59:17: "For he put on righteousness as a breastplate, and an helmet of salvation upon his

head; and he put on the garments of vengeance for clothing, and was clad with zeal as a cloak."

Isaiah 63:3: "I have trodden the winepress alone; and of the people there was none with me: for I will tread them in mine anger, and trample them in my fury; and their blood shall be sprinkled upon my garments, and I will stain all my raiment."

Isaiah 63:5: "And I looked, and there was none to help; and I wondered that there was none to uphold: therefore mine own arm brought salvation unto me; and my fury, it upheld me."

Isaiah 63:8: "For he said, Surely they are my people, children that will not lie: so he was their Saviour."

Isaiah 63:9: "In all their affliction he was afflicted, and the angel of his presence saved them: in his love and in his pity he redeemed them; and he bare them, and carried them all the days of old."

Isaiah 63:10: "But they rebelled, and vexed his holy Spirit: therefore he was turned to be their enemy, and he fought against them."

Isaiah 65:1: "I am sought of them that asked not for me; I am found of them that sought me not: I said, Behold me, behold me, unto a nation that was not called by my name."

Isaiah 65:2: "I have spread out my hands all the day unto a rebellious people, which walketh in a way that was not good, after their own thoughts;"

Isaiah 66:7: "Before she travailed, she brought forth; before her pain came, she was delivered of a man child."

Jeremiah 2:2: "Go and cry in the ears of Jerusalem, saying, Thus saith the LORD; I remember thee, the kindness of thy youth, the love of thine espousals, when thou wentest after me in the wilderness, in a land that was not sown."

Jeremiah 2:3: "Israel was holiness unto the LORD, and the firstfruits of his increase: all that devour him shall offend; evil shall come upon them, saith the LORD."

Jeremiah 3:21: "A voice was heard upon the high places, weeping and supplications of the children of Israel: for they have perverted their way, and they have forgotten the LORD their God."

Jeremiah 4:23: "I beheld the earth, and, lo, it was without form, and void; and the heavens, and they had no light."

Jeremiah 4:25: "I beheld, and, lo, there was no man, and all the birds of the heavens were fled."

Jeremiah 4:26: "I beheld, and, lo, the fruitful place was a wilderness, and all the cities thereof were broken down at the presence of the LORD, and by his fierce anger."

Jeremiah 7:12: "But go ye now unto my place which was in Shiloh, where I set my name at the first, and see what I did to it for the wickedness of my people Israel."

Jeremiah 8:16: "The snorting of his horses was heard from Dan: the whole land trembled at the sound of the neighing of his strong ones; for they are come, and have devoured the land, and all that is in it; the city, and those that dwell therein."

Jeremiah 11:19: "But I was like a lamb or an ox that is brought to the slaughter; and I knew not that they had devised devices against me, saying, Let us destroy the tree with the fruit thereof, and let us cut him off from the land of the living, that his name may be no more remembered."

Jeremiah 13:7: "Then I went to Euphrates, and digged, and took the girdle from the place where I had hid it: and, behold, the girdle was marred, it was profitable for nothing."

Jeremiah 13:20: "Lift up your eyes, and behold them that come from the north: where is the flock that was given thee, thy beautiful flock?"

Jeremiah 14:4: "Because the ground is chapt, for there was no rain in the earth, the plowmen were ashamed, they covered their heads."

Jeremiah 14:5: "Yea, the hind also calved in the field, and forsook it, because there was no grass."

Jeremiah 14:6: "And the wild asses did stand in the high places, they snuffed up the wind like dragons; their eyes did fail, because there was no grass."

Jeremiah 15:9: "She that hath borne seven languisheth: she hath given up the ghost; her sun is gone down while it was yet day: she hath been ashamed and confounded: and the residue of them will I deliver to the sword before their enemies, saith the LORD."

Jeremiah 15:16: "Thy words were found, and I did eat them; and thy word was unto me the joy and rejoicing of mine heart: for I am called by thy name, O LORD God of hosts."

Jeremiah 17:16: "As for me, I have not hastened from being a pastor to follow thee: neither have I desired the woeful day; thou knowest: that which came out of my lips was right before thee."

Jeremiah 18:4: "And the vessel that he made of clay was marred in the hand of the potter: so he made it again another vessel, as seemed good to the potter to make it."

Jeremiah 20:1: "Now Pashur the son of Immer the priest, who was also chief governor in the house of the LORD, heard that Jeremiah prophesied these things."

Jeremiah 20:2: "Then Pashur smote Jeremiah the prophet, and put him in the stocks that were in the high gate of Benjamin, which was by the house of the LORD."

Jeremiah 20:7: "O LORD, thou hast deceived me, and I was deceived; thou art stronger than I, and hast prevailed: I am in derision daily, every one mocketh me."

Jeremiah 20:8: "For since I spake, I cried out, I cried violence and spoil; because the word of the LORD was made a reproach unto me, and a derision, daily."

Jeremiah 20:9: "Then I said, I will not make mention of him, nor speak any more in his name. But his word was in mine heart as a burning fire shut up in my bones, and I was weary with forbearing, and I could not stay."

Jeremiah 20:14: "Cursed be the day wherein I was born: let not the day wherein my mother bare me be blessed."

Jeremiah 22:15: "Shalt thou reign, because thou closest thyself in cedar? did not thy father eat and drink, and do judgment and justice, and then it was well with him?"

Jeremiah 22:16: "He judged the cause of the poor and needy; then it was well with him: was not this to know me? saith the LORD."

Jeremiah 25:1: "The word that came to Jeremiah concerning all the people of Judah in the fourth year of Jehoiakim the son of Josiah king of Judah, that was the first year of Nebuchadrezzar king of Babylon;"

Jeremiah 26:20: "And there was also a man that prophesied in the name of the LORD, Urijah the son of Shemaiah of Kirjathjearim, who prophesied against this city and against this land according to all the words of Jeremiah."

Jeremiah 26:21: "And when Jehoiakim the king, with all his mighty men, and all the princes, heard his words, the king sought to put him to death: but when Urijah heard it, he was afraid, and fled, and went into Egypt;"

Jeremiah 26:24: "Nevertheless the hand of Ahikam the son of Shaphan was with Jeremiah, that they should not give him into the hand of the people to put him to death."

Jeremiah 28:1: "And it came to pass the same year, in the beginning of the reign of Zedekiah king of Judah, in the fourth year, and in the fifth month, that Hananiah the son of Azur the prophet, which was of Gibeon, spake unto me in the house of the LORD, in the presence of the priests and of all the people, saying,"

Jeremiah 31:11: "For the LORD hath redeemed Jacob, and ransomed him from the hand of him that was stronger than he."

Jeremiah 31:15: "Thus saith the LORD; A voice was heard in Ramah, lamentation, and bitter weeping; Rahel weeping for her children refused to be comforted for her children, because they were not."

Jeremiah 31:18: "I have surely heard Ephraim bemoaning himself thus; Thou hast chastised me, and I was chastised, as a bullock unaccustomed to the yoke: turn thou me, and I shall be turned; for thou art the LORD my God."

Jeremiah 31:19: "Surely after that I was turned, I repented; and after that I was instructed, I smote upon my thigh: I was ashamed, yea, even confounded, because I did bear the reproach of my youth."

Jeremiah 31:26: "Upon this I awaked, and beheld; and my sleep was sweet unto me."

Jeremiah 31:32: "Not according to the covenant that I made with their fathers in the day that I took them by the hand to bring them out of the land of Egypt; which my covenant they brake, although I was an husband unto them, saith the LORD:"

Jeremiah 32:1: "The word that came to Jeremiah from the LORD in the tenth year of Zedekiah king of Judah, which was the eighteenth year of Nebuchadrezzar."

Jeremiah 32:2: "For then the king of Babylon's army besieged Jerusalem: and Jeremiah the prophet was shut up in the court of the prison, which was in the king of Judah's house."

Jeremiah 32:8: "So Hanameel mine uncle's son came to me in the court of the prison according to the word of the LORD, and said unto me, Buy my field, I pray thee, that is in Anathoth, which is in the country of Benjamin: for the right of inheritance is thine, and the redemption is thine; buy it for thyself. Then I knew that this was the word of the LORD."

Jeremiah 32:9: "And I bought the field of Hanameel my uncle's son, that was in Anathoth, and weighed him the money, even seventeen shekels of silver."

Jeremiah 32:11: "So I took the evidence of the purchase, both that which was sealed according to the law and custom, and that which was open:"

Jeremiah 33:1: "Moreover the word of the LORD came unto Jeremiah the second time, while he was yet shut up in the court of the prison, saying,"

Jeremiah 35:4: "And I brought them into the house of the LORD, into the chamber of the sons of Hanan, the son of Igdaliah, a man of God, which was by the chamber of the princes, which was above the chamber of Maaseiah the son of Shallum, the keeper of the door:"

Jeremiah 36:22: "Now the king sat in the winterhouse in the ninth month: and there was a fire on the hearth burning before him."

Jeremiah 36:23: "And it came to pass, that when Jehudi had read three or four leaves, he cut it with the penknife, and cast it into the fire that was on the hearth, until all the roll was consumed in the fire that was on the hearth."

Jeremiah 37:5: "Then Pharaoh's army was come forth out of Egypt: and when the Chaldeans that besieged Jerusalem heard tidings of them, they departed from Jerusalem."

Jeremiah 37:11: "And it came to pass, that when the army of the Chaldeans was broken up from Jerusalem for fear of Pharaoh's army,"

Jeremiah 37:13: "And when he was in the gate of Benjamin, a captain of the ward was there, whose name was Irijah, the son of Shelemiah, the son of Hananiah; and he took Jeremiah the prophet, saying, Thou fallest away to the Chaldeans."

Jeremiah 37:16: "When Jeremiah was entered into the dungeon, and into the cabins, and Jeremiah had remained there many days;"

Jeremiah 38:6: "Then took they Jeremiah, and cast him into the dungeon of Malchiah the son of Hammelech, that was in the court of the prison: and they let down Jeremiah with cords. And in the dungeon there was no water, but mire: so Jeremiah sunk in the mire."

Jeremiah 38:7: "Now when Ebedmelech the Ethiopian, one of the eunuchs which was in the king's house, heard that they had put Jeremiah in the dungeon; the king then sitting in the gate of Benjamin;"

Jeremiah 38:27: "Then came all the princes unto Jeremiah, and asked him: and he told them according to all these words that the king had commanded. So they left off speaking with him; for the matter was not perceived."

Jeremiah 38:28: "So Jeremiah abode in the court of the prison until the day that Jerusalem was taken: and he was there when Jerusalem was taken."

Jeremiah 39:2: "And in the eleventh year of Zedekiah, in the fourth month, the ninth day of the month, the city was broken up."

Jeremiah 39:15: "Now the word of the LORD came unto Jeremiah, while he was shut up in the court of the prison, saying,"

Jeremiah 40:5: "Now while he was not yet gone back, he said, Go back also to Gedaliah the son of

Ahikam the son of Shaphan, whom the king of Babylon hath made governor over the cities of Judah, and dwell with him among the people: or go wheresoever it seemeth convenient unto thee to go. So the captain of the guard gave him victuals and a reward, and let him go."

Jeremiah 41:7: "And it was so, when they came into the midst of the city, that Ishmael the son of Nethaniah slew them, and cast them into the midst of the pit, he, and the men that were with him."

Jeremiah 41:9: "Now the pit wherein Ishmael had cast all the dead bodies of the men, whom he had slain because of Gedaliah, was it which Asa the king had made for fear of Baasha king of Israel: and Ishmael the son of Nethaniah filled it with them that were slain."

Jeremiah 44:6: "Wherefore my fury and mine anger was poured forth, and was kindled in the cities of Judah and in the streets of Jerusalem; and they are wasted and desolate, as at this day."

Jeremiah 46:2: "Against Egypt, against the army of Pharaohnecho king of Egypt, which was by the river Euphrates in Carchemish, which Nebuchadrezzar king of Babylon smote in the fourth year of Jehoiakim the son of Josiah king of Judah."

Jeremiah 46:5: "Wherefore have I seen them dismayed and turned away back? and their mighty ones are beaten down, and are fled apace, and look not back: for fear was round about, saith the LORD."

Jeremiah 46:21: "Also her hired men are in the midst of her like fatted bullocks; for they also are turned back, and are fled away together: they did not stand, because the day of their calamity was come upon them, and the time of their visitation."

Jeremiah 48:13: "And Moab shall be ashamed of Chemosh, as the house of Israel was ashamed of Bethel their confidence."

Jeremiah 48:27: "For was not Israel a derision unto thee? was he found among thieves? for since thou spakest of him, thou skippedst for joy."

Jeremiah 49:12: "For thus saith the LORD; Behold, they whose judgment was not to drink of the cup have assuredly drunken; and art thou he that shall altogether go unpunished? thou shalt not go unpunished, but thou shalt surely drink of it."

Jeremiah 49:21: "The earth is moved at the noise of their fall, at the cry the noise thereof was heard in the Red sea."

Jeremiah 51:5: "For Israel hath not been forsaken, nor Judah of his God, of the LORD of hosts; though their land was filled with sin against the Holy One of Israel."

Jeremiah 51:59: "The word which Jeremiah the prophet commanded Seraiah the son of Neriah, the son of Maaseiah, when he went with Zedekiah the king of Judah into Babylon in the fourth year of his reign. And this Seraiah was a quiet prince."

Jeremiah 52:1: "Zedekiah was one and twenty years old when he began to reign, and he reigned eleven years in Jerusalem. And his mother's name was Hamutal the daughter of Jeremiah of Libnah."

Jeremiah 52:2: "And he did that which was evil in the eyes of the LORD, according to all that Jehoiakim had done."

Jeremiah 52:5: "So the city was besieged unto the eleventh year of king Zedekiah."

Jeremiah 52:6: "And in the fourth month, in the ninth day of the month, the famine was sore in the city, so that there was no bread for the people of the land."

Jeremiah 52:7: "Then the city was broken up, and all the men of war fled, and went forth out of the city by night by the way of the gate between the two walls, which was by the king's garden; (now the Chaldeans were by the city round about:) and they went by the way of the plain."

Jeremiah 52:8: "But the army of the Chaldeans pursued after the king, and overtook Zedekiah in the plains of Jericho; and all his army was scattered from him."

Jeremiah 52:12: "Now in the fifth month, in the tenth day of the month, which was the nineteenth year of Nebuchadrezzar king of Babylon, came Nebuzaradan, captain of the guard, which served the king of Babylon, into Jerusalem,"

Jeremiah 52:17: "Also the pillars of brass that were in the house of the LORD, and the bases, and

the brasen sea that was in the house of the LORD, the Chaldeans brake, and carried all the brass of them to Babylon."

Jeremiah 52:19: "And the basons, and the firepans, and the bowls, and the caldrons, and the candlesticks, and the spoons, and the cups; that which was of gold in gold, and that which was of silver in silver, took the captain of the guard away."

Jeremiah 52:20: "The two pillars, one sea, and twelve brasen bulls that were under the bases, which king Solomon had made in the house of the LORD: the brass of all these vessels was without weight."

Jeremiah 52:21: "And concerning the pillars, the height of one pillar was eighteen cubits; and a fillet of twelve cubits did compass it; and the thickness thereof was four fingers: it was hollow."

Jeremiah 52:22: "And a chapter of brass was upon it; and the height of one chapter was five cubits, with network and pomegranates upon the chapters round about, all of brass. The second pillar also and the pomegranates were like unto these."

Jeremiah 52:27: "And the king of Babylon smote them, and put them to death in Riblah in the land of Hamath. Thus Judah was carried away captive out of his own land."

Jeremiah 52:34: "And for his diet, there was a continual diet given him of the king of Babylon, every day a portion until the day of his death, all the days of his life."

Lamentations 1:1: "How doth the city sit solitary, that was full of people! how is she become as a widow! she that was great among the nations, and princess among the provinces, how is she become tributary!"

Lamentations 2:5: "The LORD was as an enemy: he hath swallowed up Israel, he hath swallowed up all her palaces: he hath destroyed his strong holds, and hath increased in the daughter of Judah mourning and lamentation."

Lamentations 2:12: "They say to their mothers, Where is corn and wine? when they swooned as the wounded in the streets of the city, when their soul was poured out into their mothers' bosom."

Lamentations 3:10: "He was unto me as a bear lying in wait, and as a lion in secret places."

Lamentations 3:14: "I was a derision to all my people; and their song all the day."

Lamentations 4:6: "For the punishment of the iniquity of the daughter of my people is greater than the punishment of the sin of Sodom, that was overthrown as in a moment, and no hands stayed on her."

Lamentations 4:7: "Her Nazarites were purer than snow, they were whiter than milk, they were more ruddy in body than rubies, their polishing was of sapphire:"

Lamentations 4:20: "The breath of our nostrils, the anointed of the LORD, was taken in their pits, of whom we said, Under his shadow we shall live among the heathen."

Lamentations 5:10: "Our skin was black like an oven because of the terrible famine."

Ezekiel 1:1: "Now it came to pass in the thirtieth year, in the fourth month, in the fifth day of the month, as I was among the captives by the river of Chebar, that the heavens were opened, and I saw visions of God."

Ezekiel 1:2: "In the fifth day of the month, which was the fifth year of king Jehoiachin's captivity,"

Ezekiel 1:3: "The word of the LORD came expressly unto Ezekiel the priest, the son of Buzi, in the land of the Chaldeans by the river Chebar; and the hand of the LORD was there upon him."

Ezekiel 1:4: "And I looked, and, behold, a whirlwind came out of the north, a great cloud, and a fire infolding itself, and a brightness was about it, and out of the midst thereof as the colour of amber, out of the midst of the fire."

Ezekiel 1:5: "Also out of the midst thereof came the likeness of four living creatures. And this was their appearance; they had the likeness of a man."

Ezekiel 1:7: "And their feet were straight feet; and the sole of their feet was like the sole of a calf's foot: and they sparkled like the colour of burnished brass."

Ezekiel 1:12: "And they went every one straight forward: whither the spirit was to go, they went; and they turned not when they went."

Ezekiel 1:13: "As for the likeness of the living creatures, their appearance was like burning coals of fire, and like the appearance of lamps: it went up and down among the living creatures; and the fire was bright, and out of the fire went forth lightning."

Ezekiel 1:16: "The appearance of the wheels and their work was like unto the colour of a beryl: and they four had one likeness: and their appearance and their work was as it were a wheel in the middle of a wheel."

Ezekiel 1:20: "Whithersoever the spirit was to go, they went, thither was their spirit to go; and the wheels were lifted up over against them: for the spirit of the living creature was in the wheels."

Ezekiel 1:21: "When those went, these went; and when those stood, these stood; and when those were lifted up from the earth, the wheels were lifted up over against them: for the spirit of the living creature was in the wheels."

Ezekiel 1:22: "And the likeness of the firmament upon the heads of the living creature was as the colour of the terrible crystal, stretched forth over their heads above."

Ezekiel 1:25: "And there was a voice from the firmament that was over their heads, when they stood, and had let down their wings."

Ezekiel 1:26: "And above the firmament that was over their heads was the likeness of a throne, as the appearance of a sapphire stone: and upon the likeness of the throne was the likeness as the appearance of a man above upon it."

Ezekiel 1:28: "As the appearance of the bow that is in the cloud in the day of rain, so was the appearance of the brightness round about. This was the appearance of the likeness of the glory of the LORD. And when I saw it, I fell upon my face, and I heard a voice of one that spake."

Ezekiel 2:9: "And when I looked, behold, an hand was sent unto me; and, lo, a roll of a book was therein;"

Ezekiel 2:10: "And he spread it before me; and it was written within and without: and there was written therein lamentations, and mourning, and woe."

Ezekiel 3:3: "And he said unto me, Son of man, cause thy belly to eat, and fill thy bowels with this roll that I give thee. Then did I eat it; and it was in my mouth as honey for sweetness."

Ezekiel 3:14: "So the spirit lifted me up, and took me away, and I went in bitterness, in the heat of my spirit; but the hand of the LORD was strong upon me."

Ezekiel 3:22: "And the hand of the LORD was there upon me; and he said unto me, Arise, go forth into the plain, and I will there talk with thee."

Ezekiel 8:3: "And he put forth the form of an hand, and took me by a lock of mine head; and the spirit lifted me up between the earth and the heaven, and brought me in the visions of God to Jerusalem, to the door of the inner gate that looketh toward the north; where was the seat of the image of jealousy, which provoketh to jealousy."

Ezekiel 8:4: "And, behold, the glory of the God of Israel was there, according to the vision that I saw in the plain."

Ezekiel 8:14: "Then he brought me to the door of the gate of the LORD's house which was toward the north; and, behold, there sat women weeping for Tammuz."

Ezekiel 9:2: "And, behold, six men came from the way of the higher gate, which lieth toward the north, and every man a slaughter weapon in his hand; and one man among them was clothed with linen, with a writer's inkhorn by his side: and they went in, and stood beside the brasen altar."

Ezekiel 9:3: "And the glory of the God of Israel was gone up from the cherub, whereupon he was, to the threshold of the house. And he called to the man clothed with linen, which had the writer's inkhorn by his side;"

Ezekiel 9:8: "And it came to pass, while they were slaying them, and I was left, that I fell upon my face, and cried, and said, Ah Lord GOD! wilt thou destroy all the residue of Israel in thy pouring out of thy fury upon Jerusalem?"

Ezekiel 10:1: "Then I looked, and, behold, in the firmament that was above the head of the cherubims there appeared over them as it were a sapphire stone, as the appearance of the likeness of



a throne."

Ezekiel 10:4: "Then the glory of the LORD went up from the cherub, and stood over the threshold of the house; and the house was filled with the cloud, and the court was full of the brightness of the LORD's glory."

Ezekiel 10:5: "And the sound of the cherubims' wings was heard even to the outer court, as the voice of the Almighty God when he speaketh."

Ezekiel 10:7: "And one cherub stretched forth his hand from between the cherubims unto the fire that was between the cherubims, and took thereof, and put it into the hands of him that was clothed with linen: who took it, and went out."

Ezekiel 10:9: "And when I looked, behold the four wheels by the cherubims, one wheel by one cherub, and another wheel by another cherub: and the appearance of the wheels was as the colour of a beryl stone."

Ezekiel 10:13: "As for the wheels, it was cried unto them in my hearing, O wheel."

Ezekiel 10:14: "And every one had four faces: the first face was the face of a cherub, and the second face was the face of a man, and the third the face of a lion, and the fourth the face of an eagle."

Ezekiel 10:17: "When they stood, these stood; and when they were lifted up, these lifted up themselves also: for the spirit of the living creature was in them."

Ezekiel 10:19: "And the cherubims lifted up their wings, and mounted up from the earth in my sight: when they went out, the wheels also were beside them, and every one stood at the door of the east gate of the LORD's house; and the glory of the God of Israel was over them above."

Ezekiel 10:21: "Every one had four faces apiece, and every one four wings; and the likeness of the hands of a man was under their wings."

Ezekiel 10:22: "And the likeness of their faces was the same faces which I saw by the river of Chebar, their appearances and themselves: they went every one straight forward."

Ezekiel 11:22: "Then did the cherubims lift up their wings, and the wheels beside them; and the glory of the God of Israel was over them above."

Ezekiel 12:7: "And I did so as I was commanded: I brought forth my stuff by day, as stuff for captivity, and in the even I digged through the wall with mine hand; I brought it forth in the twilight, and I bare it upon my shoulder in their sight."

Ezekiel 13:10: "Because, even because they have seduced my people, saying, Peace; and there was no peace; and one built up a wall, and, lo, others daubed it with untempered mortar:"

Ezekiel 15:5: "Behold, when it was whole, it was meet for no work: how much less shall it be meet yet for any work, when the fire hath devoured it, and it is burned?"

Ezekiel 16:3: "And say, Thus saith the Lord GOD unto Jerusalem; Thy birth and thy nativity is of the land of Canaan; thy father was an Amorite, and thy mother an Hittite."

Ezekiel 16:4: "And as for thy nativity, in the day thou wast born thy navel was not cut, neither wast thou washed in water to supple thee; thou wast not salted at all, nor swaddled at all."

Ezekiel 16:8: "Now when I passed by thee, and looked upon thee, behold, thy time was the time of love; and I spread my skirt over thee, and covered thy nakedness: yea, I swore unto thee, and entered into a covenant with thee, saith the Lord GOD, and thou becamest mine."

Ezekiel 16:13: "Thus wast thou decked with gold and silver; and thy raiment was of fine linen, and silk, and brodered work; thou didst eat fine flour, and honey, and oil: and thou wast exceeding beautiful, and thou didst prosper into a kingdom."

Ezekiel 16:14: "And thy renown went forth among the heathen for thy beauty: for it was perfect through my comeliness, which I had put upon thee, saith the Lord GOD."

Ezekiel 16:15: "But thou didst trust in thine own beauty, and playedst the harlot because of thy renown, and pouredst out thy fornications on every one that passed by; his it was."

Ezekiel 16:19: "My meat also which I gave thee, fine flour, and oil, and honey, wherewith I fed thee, thou hast even set it before them for a sweet savour: and thus it was, saith the Lord GOD."

Ezekiel 16:36: "Thus saith the Lord GOD; Because thy filthiness was poured out, and thy nakedness discovered through thy whoredoms with thy lovers, and with all the idols of thy abominations, and by the blood of thy children, which thou didst give unto them;"

Ezekiel 16:45: "Thou art thy mother's daughter, that lotheth her husband and her children; and thou art the sister of thy sisters, which lothed their husbands and their children: your mother was an Hittite, and your father an Amorite."

Ezekiel 16:49: "Behold, this was the iniquity of thy sister Sodom, pride, fulness of bread, and abundance of idleness was in her and in her daughters, neither did she strengthen the hand of the poor and needy."

Ezekiel 16:56: "For thy sister Sodom was not mentioned by thy mouth in the day of thy pride,"

Ezekiel 16:57: "Before thy wickedness was discovered, as at the time of thy reproach of the daughters of Syria, and all that are round about her, the daughters of the Philistines, which despise thee round about."

Ezekiel 17:7: "There was also another great eagle with great wings and many feathers: and, behold, this vine did bend her roots toward him, and shot forth her branches toward him, that he might water it by the furrows of her plantation."

Ezekiel 17:8: "It was planted in a good soil by great waters, that it might bring forth branches, and that it might bear fruit, that it might be a goodly vine."

Ezekiel 19:4: "The nations also heard of him; he was taken in their pit, and they brought him with chains unto the land of Egypt."

Ezekiel 19:5: "Now when she saw that she had waited, and her hope was lost, then she took another of her whelps, and made him a young lion."

Ezekiel 19:7: "And he knew their desolate palaces, and he laid waste their cities; and the land was desolate, and the fulness thereof, by the noise of his roaring."

Ezekiel 19:8: "Then the nations set against him on every side from the provinces, and spread their net over him: he was taken in their pit."

Ezekiel 19:10: "Thy mother is like a vine in thy blood, planted by the waters: she was fruitful and full of branches by reason of many waters."

Ezekiel 19:11: "And she had strong rods for the sceptres of them that bare rule, and her stature was exalted among the thick branches, and she appeared in her height with the multitude of her branches."

Ezekiel 19:12: "But she was plucked up in fury, she was cast down to the ground, and the east wind dried up her fruit: her strong rods were broken and withered; the fire consumed them."

Ezekiel 21:22: "At his right hand was the divination for Jerusalem, to appoint captains, to open the mouth in the slaughter, to lift up the voice with shouting, to appoint battering rams against the gates, to cast a mount, and to build a fort."

Ezekiel 22:10: "In thee have they discovered their fathers' nakedness: in thee have they humbled her that was set apart for pollution."

Ezekiel 23:5: "And Aholah played the harlot when she was mine; and she doted on her lovers, on the Assyrians her neighbours,"

Ezekiel 23:11: "And when her sister Aholibah saw this, she was more corrupt in her inordinate love than she, and in her whoredoms more than her sister in her whoredoms."

Ezekiel 23:13: "Then I saw that she was defiled, that they took both one way,"

Ezekiel 23:17: "And the Babylonians came to her into the bed of love, and they defiled her with their whoredom, and she was polluted with them, and her mind was alienated from them."

Ezekiel 23:18: "So she discovered her whoredoms, and discovered her nakedness: then my mind was alienated from her, like as my mind was alienated from her sister."

Ezekiel 23:40: "And furthermore, that ye have sent for men to come from far, unto whom a messenger was sent; and, lo, they came: for whom thou didst wash thyself, paintedst thy eyes, and deckedst thyself with ornaments,"

Ezekiel 23:42: "And a voice of a multitude being at ease was with her: and with the men of the common sort were brought Sabeans from the wilderness, which put bracelets upon their hands, and beautiful crowns upon their heads."

Ezekiel 23:43: "Then said I unto her that was old in adulteries, Will they now commit whoredoms with her, and she with them?"

Ezekiel 24:18: "So I spake unto the people in the morning: and at even my wife died; and I did in the morning as I was commanded."

Ezekiel 25:3: "And say unto the Ammonites, Hear the word of the Lord GOD; Thus saith the Lord GOD; Because thou saidst, Aha, against my sanctuary, when it was profaned; and against the land of Israel, when it was desolate; and against the house of Judah, when they went into captivity;"

Ezekiel 26:2: "Son of man, because that Tyrus hath said against Jerusalem, Aha, she is broken that was the gates of the people: she is turned unto me: I shall be replenished, now she is laid waste:"

Ezekiel 27:7: "Fine linen with brodered work from Egypt was that which thou spreadest forth to be thy sail; blue and purple from the isles of Elishah was that which covered thee."

Ezekiel 27:12: "Tarshish was thy merchant by reason of the multitude of all kind of riches; with silver, iron, tin, and lead, they traded in thy fairs."

Ezekiel 27:16: "Syria was thy merchant by reason of the multitude of the wares of thy making: they occupied in thy fairs with emeralds, purple, and brodered work, and fine linen, and coral, and agate."

Ezekiel 27:18: "Damascus was thy merchant in the multitude of the wares of thy making, for the multitude of all riches; in the wine of Helbon, and white wool."

Ezekiel 27:20: "Dedan was thy merchant in precious clothes for chariots."

Ezekiel 28:13: "Thou hast been in Eden the garden of God; every precious stone was thy covering, the sardius, topaz, and the diamond, the beryl, the onyx, and the jasper, the sapphire, the emerald, and the carbuncle, and gold: the workmanship of thy tabrets and of thy pipes was prepared in thee in the day that thou wast created."

Ezekiel 28:15: "Thou wast perfect in thy ways from the day that thou wast created, till iniquity was found in thee."

Ezekiel 28:17: "Thine heart was lifted up because of thy beauty, thou hast corrupted thy wisdom by reason of thy brightness: I will cast thee to the ground, I will lay thee before kings, that they may behold thee."

Ezekiel 29:18: "Son of man, Nebuchadrezzar king of Babylon caused his army to serve a great service against Tyrus: every head was made bald, and every shoulder was peeled: yet had he no wages, nor his army, for Tyrus, for the service that he had served against it:"

Ezekiel 30:22: "Therefore thus saith the Lord GOD; Behold, I am against Pharaoh king of Egypt, and will break his arms, the strong, and that which was broken; and I will cause the sword to fall out of his hand."

Ezekiel 31:3: "Behold, the Assyrian was a cedar in Lebanon with fair branches, and with a shadowing shroud, and of an high stature; and his top was among the thick boughs."

Ezekiel 31:5: "Therefore his height was exalted above all the trees of the field, and his boughs were multiplied, and his branches became long because of the multitude of waters, when he shot forth."

Ezekiel 31:7: "Thus was he fair in his greatness, in the length of his branches: for his root was by great waters."

Ezekiel 31:8: "The cedars in the garden of God could not hide him: the fir trees were not like his boughs, and the chestnut trees were not like his branches; nor any tree in the garden of God was like unto him in his beauty."

Ezekiel 32:15: "When I shall make the land of Egypt desolate, and the country shall be destitute of that whereof it was full, when I shall smite all them that dwell therein, then shall they know that I am the LORD."

Ezekiel 32:25: "They have set her a bed in the midst of the slain with all her multitude: her graves

are round about him: all of them uncircumcised, slain by the sword: though their terror was caused in the land of the living, yet have they borne their shame with them that go down to the pit: he is put in the midst of them that be slain."

Ezekiel 33:22: "Now the hand of the LORD was upon me in the evening, afore he that was escaped came; and had opened my mouth, until he came to me in the morning; and my mouth was opened, and I was no more dumb."

Ezekiel 33:24: "Son of man, they that inhabit those wastes of the land of Israel speak, saying, Abraham was one, and he inherited the land: but we are many; the land is given us for inheritance."

Ezekiel 34:4: "The diseased have ye not strengthened, neither have ye healed that which was sick, neither have ye bound up that which was broken, neither have ye brought again that which was driven away, neither have ye sought that which was lost; but with force and with cruelty have ye ruled them."

Ezekiel 34:6: "My sheep wandered through all the mountains, and upon every high hill: yea, my flock was scattered upon all the face of the earth, and none did search or seek after them."

Ezekiel 34:8: "As I live, saith the Lord GOD, surely because my flock became a prey, and my flock became meat to every beast of the field, because there was no shepherd, neither did my shepherds search for my flock, but the shepherds fed themselves, and fed not my flock;"

Ezekiel 34:16: "I will seek that which was lost, and bring again that which was driven away, and will bind up that which was broken, and will strengthen that which was sick: but I will destroy the fat and the strong; I will feed them with judgment."

Ezekiel 35:10: "Because thou hast said, These two nations and these two countries shall be mine, and we will possess it; whereas the LORD was there:"

Ezekiel 35:15: "As thou didst rejoice at the inheritance of the house of Israel, because it was desolate, so will I do unto thee: thou shalt be desolate, O mount Seir, and all Idumea, even all of it: and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 36:17: "Son of man, when the house of Israel dwelt in their own land, they defiled it by their own way and by their doings: their way was before me as the uncleanness of a removed woman."

Ezekiel 36:23: "And I will sanctify my great name, which was profaned among the heathen, which ye have profaned in the midst of them; and the heathen shall know that I am the LORD, saith the Lord GOD, when I shall be sanctified in you before their eyes."

Ezekiel 36:35: "And they shall say, This land that was desolate is become like the garden of Eden; and the waste and desolate and ruined cities are become fenced, and are inhabited."

Ezekiel 36:36: "Then the heathen that are left round about you shall know that I the LORD build the ruined places, and plant that that was desolate: I the LORD have spoken it, and I will do it."

Ezekiel 37:1: "The hand of the LORD was upon me, and carried me out in the spirit of the LORD, and set me down in the midst of the valley which was full of bones,"

Ezekiel 37:7: "So I prophesied as I was commanded: and as I prophesied, there was a noise, and behold a shaking, and the bones came together, bone to his bone."

Ezekiel 37:8: "And when I beheld, lo, the sinews and the flesh came up upon them, and the skin covered them above: but there was no breath in them."

Ezekiel 40:1: "In the five and twentieth year of our captivity, in the beginning of the year, in the tenth day of the month, in the fourteenth year after that the city was smitten, in the selfsame day the hand of the LORD was upon me, and brought me thither."

Ezekiel 40:2: "In the visions of God brought he me into the land of Israel, and set me upon a very high mountain, by which was as the frame of a city on the south."

Ezekiel 40:3: "And he brought me thither, and, behold, there was a man, whose appearance was like the appearance of brass, with a line of flax in his hand, and a measuring reed; and he stood in the gate."

Ezekiel 40:6: "Then came he unto the gate which looketh toward the east, and went up the stairs

thereof, and measured the threshold of the gate, which was one reed broad; and the other threshold of the gate, which was one reed broad."

Ezekiel 40:7: "And every little chamber was one reed long, and one reed broad; and between the little chambers were five cubits; and the threshold of the gate by the porch of the gate within was one reed."

Ezekiel 40:9: "Then measured he the porch of the gate, eight cubits; and the posts thereof, two cubits; and the porch of the gate was inward."

Ezekiel 40:12: "The space also before the little chambers was one cubit on this side, and the space was one cubit on that side: and the little chambers were six cubits on this side, and six cubits on that side."

Ezekiel 40:13: "He measured then the gate from the roof of one little chamber to the roof of another: the breadth was five and twenty cubits, door against door."

Ezekiel 40:18: "And the pavement by the side of the gates over against the length of the gates was the lower pavement."

Ezekiel 40:21: "And the little chambers thereof were three on this side and three on that side; and the posts thereof and the arches thereof were after the measure of the first gate: the length thereof was fifty cubits, and the breadth five and twenty cubits."

Ezekiel 40:23: "And the gate of the inner court was over against the gate toward the north, and toward the east; and he measured from gate to gate an hundred cubits."

Ezekiel 40:25: "And there were windows in it and in the arches thereof round about, like those windows: the length was fifty cubits, and the breadth five and twenty cubits."

Ezekiel 40:27: "And there was a gate in the inner court toward the south: and he measured from gate to gate toward the south an hundred cubits."

Ezekiel 40:29: "And the little chambers thereof, and the posts thereof, and the arches thereof, according to these measures: and there were windows in it and in the arches thereof round about: it was fifty cubits long, and five and twenty cubits broad."

Ezekiel 40:33: "And the little chambers thereof, and the posts thereof, and the arches thereof, were according to these measures: and there were windows therein and in the arches thereof round about: it was fifty cubits long, and five and twenty cubits broad."

Ezekiel 40:36: "The little chambers thereof, the posts thereof, and the arches thereof, and the windows to it round about: the length was fifty cubits, and the breadth five and twenty cubits."

Ezekiel 40:40: "And at the side without, as one goeth up to the entry of the north gate, were two tables; and on the other side, which was at the porch of the gate, were two tables."

Ezekiel 40:43: "And within were hooks, an hand broad, fastened round about: and upon the tables was the flesh of the offering."

Ezekiel 40:44: "And without the inner gate were the chambers of the singers in the inner court, which was at the side of the north gate; and their prospect was toward the south: one at the side of the east gate having the prospect toward the north."

Ezekiel 40:47: "So he measured the court, an hundred cubits long, and an hundred cubits broad, foursquare; and the altar that was before the house."

Ezekiel 40:48: "And he brought me to the porch of the house, and measured each post of the porch, five cubits on this side, and five cubits on that side: and the breadth of the gate was three cubits on this side, and three cubits on that side."

Ezekiel 40:49: "The length of the porch was twenty cubits, and the breadth eleven cubits, and he brought me by the steps whereby they went up to it: and there were pillars by the posts, one on this side, and another on that side."

Ezekiel 41:1: "Afterward he brought me to the temple, and measured the posts, six cubits broad on the one side, and six cubits broad on the other side, which was the breadth of the tabernacle."

Ezekiel 41:2: "And the breadth of the door was ten cubits; and the sides of the door were five cubits on the one side, and five cubits on the other side: and he measured the length thereof, forty cubits:

and the breadth, twenty cubits."

Ezekiel 41:6: "And the side chambers were three, one over another, and thirty in order; and they entered into the wall which was of the house for the side chambers round about, that they might have hold, but they had not hold in the wall of the house."

Ezekiel 41:7: "And there was an enlarging, and a winding about still upward to the side chambers: for the winding about of the house went still upward round about the house: therefore the breadth of the house was still upward, and so increased from the lowest chamber to the highest by the midst."

Ezekiel 41:9: "The thickness of the wall, which was for the side chamber without, was five cubits: and that which was left was the place of the side chambers that were within."

Ezekiel 41:10: "And between the chambers was the wideness of twenty cubits round about the house on every side."

Ezekiel 41:11: "And the doors of the side chambers were toward the place that was left, one door toward the north, and another door toward the south: and the breadth of the place that was left was five cubits round about."

Ezekiel 41:12: "Now the building that was before the separate place at the end toward the west was seventy cubits broad; and the wall of the building was five cubits thick round about, and the length thereof ninety cubits."

Ezekiel 41:15: "And he measured the length of the building over against the separate place which was behind it, and the galleries thereof on the one side and on the other side, an hundred cubits, with the inner temple, and the porches of the court;"

Ezekiel 41:18: "And it was made with cherubims and palm trees, so that a palm tree was between a cherub and a cherub; and every cherub had two faces;"

Ezekiel 41:19: "So that the face of a man was toward the palm tree on the one side, and the face of a young lion toward the palm tree on the other side: it was made through all the house round about."

Ezekiel 41:22: "The altar of wood was three cubits high, and the length thereof two cubits; and the corners thereof, and the length thereof, and the walls thereof, were of wood: and he said unto me, This is the table that is before the LORD."

Ezekiel 42:1: "Then he brought me forth into the utter court, the way toward the north: and he brought me into the chamber that was over against the separate place, and which was before the building toward the north."

Ezekiel 42:2: "Before the length of an hundred cubits was the north door, and the breadth was fifty cubits."

Ezekiel 42:3: "Over against the twenty cubits which were for the inner court, and over against the pavement which was for the utter court, was gallery against gallery in three stories."

Ezekiel 42:4: "And before the chambers was a walk to ten cubits breadth inward, a way of one cubit; and their doors toward the north."

Ezekiel 42:6: "For they were in three stories, but had not pillars as the pillars of the courts: therefore the building was straitened more than the lowest and the middlemost from the ground."

Ezekiel 42:7: "And the wall that was without over against the chambers, toward the utter court on the forepart of the chambers, the length thereof was fifty cubits."

Ezekiel 42:8: "For the length of the chambers that were in the utter court was fifty cubits: and, lo, before the temple were an hundred cubits."

Ezekiel 42:9: "And from under these chambers was the entry on the east side, as one goeth into them from the utter court."

Ezekiel 42:11: "And the way before them was like the appearance of the chambers which were toward the north, as long as they, and as broad as they: and all their goings out were both according to their fashions, and according to their doors."

Ezekiel 42:12: "And according to the doors of the chambers that were toward the south was a door in the head of the way, even the way directly before the wall toward the east, as one entereth into them."

Ezekiel 43:2: "And, behold, the glory of the God of Israel came from the way of the east: and his voice was like a noise of many waters: and the earth shined with his glory."

Ezekiel 43:3: "And it was according to the appearance of the vision which I saw, even according to the vision that I saw when I came to destroy the city: and the visions were like the vision that I saw by the river Chebar; and I fell upon my face."

Ezekiel 44:1: "Then he brought me back the way of the gate of the outward sanctuary which looketh toward the east; and it was shut."

Ezekiel 46:19: "After he brought me through the entry, which was at the side of the gate, into the holy chambers of the priests, which looked toward the north: and, behold, there was a place on the two sides westward."

Ezekiel 46:21: "Then he brought me forth into the utter court, and caused me to pass by the four corners of the court; and, behold, in every corner of the court there was a court."

Ezekiel 46:23: "And there was a row of building round about in them, round about them four, and it was made with boiling places under the rows round about."

Ezekiel 47:5: "Afterward he measured a thousand; and it was a river that I could not pass over: for the waters were risen, waters to swim in, a river that could not be passed over."

Ezekiel 48:35: "It was round about eighteen thousand measures: and the name of the city from that day shall be, The LORD is there."

Daniel 1:4: "Children in whom was no blemish, but well favoured, and skilful in all wisdom, and cunning in knowledge, and understanding science, and such as had ability in them to stand in the king's palace, and whom they might teach the learning and the tongue of the Chaldeans."

Daniel 1:19: "And the king communed with them; and among them all was found none like Daniel, Hananiah, Mishael, and Azariah: therefore stood they before the king."

Daniel 2:1: "And in the second year of the reign of Nebuchadnezzar Nebuchadnezzar dreamed dreams, wherewith his spirit was troubled, and his sleep brake from him."

Daniel 2:3: "And the king said unto them, I have dreamed a dream, and my spirit was troubled to know the dream."

Daniel 2:12: "For this cause the king was angry and very furious, and commanded to destroy all the wise men of Babylon."

Daniel 2:14: "Then Daniel answered with counsel and wisdom to Arioch the captain of the king's guard, which was gone forth to slay the wise men of Babylon:"

Daniel 2:19: "Then was the secret revealed unto Daniel in a night vision. Then Daniel blessed the God of heaven."

Daniel 2:26: "The king answered and said to Daniel, whose name was Belteshazzar, Art thou able to make known unto me the dream which I have seen, and the interpretation thereof?"

Daniel 2:31: "Thou, O king, sawest, and behold a great image. This great image, whose brightness was excellent, stood before thee; and the form thereof was terrible."

Daniel 2:32: "This image's head was of fine gold, his breast and his arms of silver, his belly and his thighs of brass,"

Daniel 2:34: "Thou sawest till that a stone was cut out without hands, which smote the image upon his feet that were of iron and clay, and brake them to pieces."

Daniel 2:35: "Then was the iron, the clay, the brass, the silver, and the gold, broken to pieces together, and became like the chaff of the summer threshingfloors; and the wind carried them away, that no place was found for them: and the stone that smote the image became a great mountain, and filled the whole earth."

Daniel 2:45: "Forasmuch as thou sawest that the stone was cut out of the mountain without hands, and that it brake in pieces the iron, the brass, the clay, the silver, and the gold; the great God hath made known to the king what shall come to pass hereafter: and the dream is certain, and the interpretation thereof sure."

Daniel 3:1: "Nebuchadnezzar the king made an image of gold, whose height was threescore cubits,

and the breadth thereof six cubits: he set it up in the plain of Dura, in the province of Babylon."

Daniel 3:19: "Then was Nebuchadnezzar full of fury, and the form of his visage was changed against Shadrach, Meshach, and Abednego: therefore he spake, and commanded that they should heat the furnace one seven times more than it was wont to be heated."

Daniel 3:22: "Therefore because the king's commandment was urgent, and the furnace exceeding hot, the flames of the fire slew those men that took up Shadrach, Meshach, and Abednego."

Daniel 3:24: "Then Nebuchadnezzar the king was astonished, and rose up in haste, and spake, and said unto his counsellors, Did not we cast three men bound into the midst of the fire? They answered and said unto the king, True, O king."

Daniel 3:27: "And the princes, governors, and captains, and the king's counsellors, being gathered together, saw these men, upon whose bodies the fire had no power, nor was an hair of their head singed, neither were their coats changed, nor the smell of fire had passed on them."

Daniel 4:4: "I Nebuchadnezzar was at rest in mine house, and flourishing in my palace:"

Daniel 4:8: "But at the last Daniel came in before me, whose name was Belteshazzar, according to the name of my God, and in whom is the spirit of the holy gods: and before him I told the dream, saying,"

Daniel 4:10: "Thus were the visions of mine head in my bed; I saw, and behold a tree in the midst of the earth, and the height thereof was great."

Daniel 4:11: "The tree grew, and was strong, and the height thereof reached unto heaven, and the sight thereof to the end of all the earth:"

Daniel 4:12: "The leaves thereof were fair, and the fruit thereof much, and in it was meat for all: the beasts of the field had shadow under it, and the fowls of the heaven dwelt in the boughs thereof, and all flesh was fed of it."

Daniel 4:19: "Then Daniel, whose name was Belteshazzar, was astonished for one hour, and his thoughts troubled him. The king spake, and said, Belteshazzar, let not the dream, or the interpretation thereof, trouble thee. Belteshazzar answered and said, My lord, the dream be to them that hate thee, and the interpretation thereof to thine enemies."

Daniel 4:20: "The tree that thou sawest, which grew, and was strong, whose height reached unto the heaven, and the sight thereof to all the earth;"

Daniel 4:21: "Whose leaves were fair, and the fruit thereof much, and in it was meat for all; under which the beasts of the field dwelt, and upon whose branches the fowls of the heaven had their habitation:"

Daniel 4:31: "While the word was in the king's mouth, there fell a voice from heaven, saying, O king Nebuchadnezzar, to thee it is spoken; The kingdom is departed from thee."

Daniel 4:33: "The same hour was the thing fulfilled upon Nebuchadnezzar: and he was driven from men, and did eat grass as oxen, and his body was wet with the dew of heaven, till his hairs were grown like eagles' feathers, and his nails like birds' claws."

Daniel 4:36: "At the same time my reason returned unto me; and for the glory of my kingdom, mine honour and brightness returned unto me; and my counsellors and my lords sought unto me; and I was established in my kingdom, and excellent majesty was added unto me."

Daniel 5:2: "Belshazzar, whiles he tasted the wine, commanded to bring the golden and silver vessels which his father Nebuchadnezzar had taken out of the temple which was in Jerusalem; that the king, and his princes, his wives, and his concubines, might drink therein."

Daniel 5:3: "Then they brought the golden vessels that were taken out of the temple of the house of God which was at Jerusalem; and the king, and his princes, his wives, and his concubines, drank in them."

Daniel 5:6: "Then the king's countenance was changed, and his thoughts troubled him, so that the joints of his loins were loosed, and his knees smote one against another."

Daniel 5:9: "Then was king Belshazzar greatly troubled, and his countenance was changed in him, and his lords were astonished."



Daniel 5:11: "There is a man in thy kingdom, in whom is the spirit of the holy gods; and in the days of thy father light and understanding and wisdom, like the wisdom of the gods, was found in him; whom the king Nebuchadnezzar thy father, the king, I say, thy father, made master of the magicians, astrologers, Chaldeans, and soothsayers;"

Daniel 5:13: "Then was Daniel brought in before the king. And the king spake and said unto Daniel, Art thou that Daniel, which art of the children of the captivity of Judah, whom the king my father brought out of Jewry?"

Daniel 5:20: "But when his heart was lifted up, and his mind hardened in pride, he was deposed from his kingly throne, and they took his glory from him:"

Daniel 5:21: "And he was driven from the sons of men; and his heart was made like the beasts, and his dwelling was with the wild asses: they fed him with grass like oxen, and his body was wet with the dew of heaven; till he knew that the most high God ruled in the kingdom of men, and that he appointeth over it whomsoever he will."

Daniel 5:24: "Then was the part of the hand sent from him; and this writing was written."

Daniel 5:25: "And this is the writing that was written, MENE, MENE, TEKEL, UPHARSIN."

Daniel 5:30: "In that night was Belshazzar the king of the Chaldeans slain."

Daniel 6:2: "And over these three presidents; of whom Daniel was first: that the princes might give accounts unto them, and the king should have no damage."

Daniel 6:3: "Then this Daniel was preferred above the presidents and princes, because an excellent spirit was in him; and the king thought to set him over the whole realm."

Daniel 6:4: "Then the presidents and princes sought to find occasion against Daniel concerning the kingdom; but they could find none occasion nor fault; forasmuch as he was faithful, neither was there any error or fault found in him."

Daniel 6:10: "Now when Daniel knew that the writing was signed, he went into his house; and his windows being open in his chamber toward Jerusalem, he kneeled upon his knees three times a day, and prayed, and gave thanks before his God, as he did aforetime."

Daniel 6:14: "Then the king, when he heard these words, was sore displeased with himself, and set his heart on Daniel to deliver him: and he laboured till the going down of the sun to deliver him."

Daniel 6:17: "And a stone was brought, and laid upon the mouth of the den; and the king sealed it with his own signet, and with the signet of his lords; that the purpose might not be changed concerning Daniel."

Daniel 6:22: "My God hath sent his angel, and hath shut the lions' mouths, that they have not hurt me: forasmuch as before him innocency was found in me; and also before thee, O king, have I done no hurt."

Daniel 6:23: "Then was the king exceedingly glad for him, and commanded that they should take Daniel up out of the den. So Daniel was taken up out of the den, and no manner of hurt was found upon him, because he believed in his God."

Daniel 7:4: "The first was like a lion, and had eagle's wings: I beheld till the wings thereof were plucked, and it was lifted up from the earth, and made stand upon the feet as a man, and a man's heart was given to it."

Daniel 7:6: "After this I beheld, and lo another, like a leopard, which had upon the back of it four wings of a fowl; the beast had also four heads; and dominion was given to it."

Daniel 7:7: "After this I saw in the night visions, and behold a fourth beast, dreadful and terrible, and strong exceedingly; and it had great iron teeth: it devoured and brake in pieces, and stamped the residue with the feet of it: and it was diverse from all the beasts that were before it; and it had ten horns."

Daniel 7:9: "I beheld till the thrones were cast down, and the Ancient of days did sit, whose garment was white as snow, and the hair of his head like the pure wool: his throne was like the fiery flame, and his wheels as burning fire."

Daniel 7:10: "A fiery stream issued and came forth from before him: thousand thousands ministered

unto him, and ten thousand times ten thousand stood before him: the judgment was set, and the books were opened."

Daniel 7:11: "I beheld then because of the voice of the great words which the horn spake: I beheld even till the beast was slain, and his body destroyed, and given to the burning flame."

Daniel 7:14: "And there was given him dominion, and glory, and a kingdom, that all people, nations, and languages, should serve him: his dominion is an everlasting dominion, which shall not pass away, and his kingdom that which shall not be destroyed."

Daniel 7:15: "I Daniel was grieved in my spirit in the midst of my body, and the visions of my head troubled me."

Daniel 7:19: "Then I would know the truth of the fourth beast, which was diverse from all the others, exceeding dreadful, whose teeth were of iron, and his nails of brass; which devoured, brake in pieces, and stamped the residue with his feet;"

Daniel 7:20: "And of the ten horns that were in his head, and of the other which came up, and before whom three fell; even of that horn that had eyes, and a mouth that spake very great things, whose look was more stout than his fellows."

Daniel 7:22: "Until the Ancient of days came, and judgment was given to the saints of the most High; and the time came that the saints possessed the kingdom."

Daniel 8:2: "And I saw in a vision; and it came to pass, when I saw, that I was at Shushan in the palace, which is in the province of Elam; and I saw in a vision, and I was by the river of Ulai."

Daniel 8:3: "Then I lifted up mine eyes, and saw, and, behold, there stood before the river a ram which had two horns: and the two horns were high; but one was higher than the other, and the higher came up last."

Daniel 8:4: "I saw the ram pushing westward, and northward, and southward; so that no beasts might stand before him, neither was there any that could deliver out of his hand; but he did according to his will, and became great."

Daniel 8:5: "And as I was considering, behold, an he goat came from the west on the face of the whole earth, and touched not the ground: and the goat had a notable horn between his eyes."

Daniel 8:7: "And I saw him come close unto the ram, and he was moved with choler against him, and smote the ram, and brake his two horns: and there was no power in the ram to stand before him, but he cast him down to the ground, and stamped upon him: and there was none that could deliver the ram out of his hand."

Daniel 8:8: "Therefore the he goat waxed very great: and when he was strong, the great horn was broken; and for it came up four notable ones toward the four winds of heaven."

Daniel 8:11: "Yea, he magnified himself even to the prince of the host, and by him the daily sacrifice was taken away, and the place of the sanctuary was cast down."

Daniel 8:12: "And an host was given him against the daily sacrifice by reason of transgression, and it cast down the truth to the ground; and it practised, and prospered."

Daniel 8:17: "So he came near where I stood: and when he came, I was afraid, and fell upon my face: but he said unto me, Understand, O son of man: for at the time of the end shall be the vision."

Daniel 8:18: "Now as he was speaking with me, I was in a deep sleep on my face toward the ground: but he touched me, and set me upright."

Daniel 8:26: "And the vision of the evening and the morning which was told is true: wherefore shut thou up the vision; for it shall be for many days."

Daniel 8:27: "And I Daniel fainted, and was sick certain days; afterward I rose up, and did the king's business; and I was astonished at the vision, but none understood it."

Daniel 9:1: "In the first year of Darius the son of Ahasuerus, of the seed of the Medes, which was made king over the realm of the Chaldeans;"

Daniel 9:20: "And whiles I was speaking, and praying, and confessing my sin and the sin of my people Israel, and presenting my supplication before the LORD my God for the holy mountain of my God;"

Daniel 9:21: "Yea, whiles I was speaking in prayer, even the man Gabriel, whom I had seen in the vision at the beginning, being caused to fly swiftly, touched me about the time of the evening oblation."

Daniel 10:1: "In the third year of Cyrus king of Persia a thing was revealed unto Daniel, whose name was called Belteshazzar; and the thing was true, but the time appointed was long: and he understood the thing, and had understanding of the vision."

Daniel 10:2: "In those days I Daniel was mourning three full weeks."

Daniel 10:4: "And in the four and twentieth day of the first month, as I was by the side of the great river, which is Hiddekel;"

Daniel 10:6: "His body also was like the beryl, and his face as the appearance of lightning, and his eyes as lamps of fire, and his arms and his feet like in colour to polished brass, and the voice of his words like the voice of a multitude."

Daniel 10:8: "Therefore I was left alone, and saw this great vision, and there remained no strength in me: for my comeliness was turned in me into corruption, and I retained no strength."

Daniel 10:9: "Yet heard I the voice of his words: and when I heard the voice of his words, then was I in a deep sleep on my face, and my face toward the ground."

Daniel 10:19: "And said, O man greatly beloved, fear not: peace be unto thee, be strong, yea, be strong. And when he had spoken unto me, I was strengthened, and said, Let my lord speak; for thou hast strengthened me."

Daniel 12:1: "And at that time shall Michael stand up, the great prince which standeth for the children of thy people: and there shall be a time of trouble, such as never was since there was a nation even to that same time: and at that time thy people shall be delivered, every one that shall be found written in the book."

Daniel 12:6: "And one said to the man clothed in linen, which was upon the waters of the river, How long shall it be to the end of these wonders?"

Daniel 12:7: "And I heard the man clothed in linen, which was upon the waters of the river, when he held up his right hand and his left hand unto heaven, and sware by him that liveth for ever that it shall be for a time, times, and an half; and when he shall have accomplished to scatter the power of the holy people, all these things shall be finished."

Hosea 1:10: "Yet the number of the children of Israel shall be as the sand of the sea, which cannot be measured nor numbered; and it shall come to pass, that in the place where it was said unto them, Ye are not my people, there it shall be said unto them, Ye are the sons of the living God."

Hosea 2:3: "Lest I strip her naked, and set her as in the day that she was born, and make her as a wilderness, and set her like a dry land, and slay her with thirst."

Hosea 2:7: "And she shall follow after her lovers, but she shall not overtake them; and she shall seek them, but shall not find them: then shall she say, I will go and return to my first husband; for then was it better with me than now."

Hosea 7:1: "When I would have healed Israel, then the iniquity of Ephraim was discovered, and the wickedness of Samaria: for they commit falsehood; and the thief cometh in, and the troop of robbers spoileth without."

Hosea 8:6: "For from Israel was it also: the workman made it; therefore it is not God: but the calf of Samaria shall be broken in pieces."

Hosea 9:8: "The watchman of Ephraim was with my God: but the prophet is a snare of a fowler in all his ways, and hatred in the house of his God."

Hosea 10:14: "Therefore shall a tumult arise among thy people, and all thy fortresses shall be spoiled, as Shalman spoiled Betharbel in the day of battle: the mother was dashed in pieces upon her children."

Hosea 11:1: "When Israel was a child, then I loved him, and called my son out of Egypt."

Hosea 11:4: "I drew them with cords of a man, with bands of love: and I was to them as they that take off the yoke on their jaws, and I laid meat unto them."

Hosea 12:13: "And by a prophet the LORD brought Israel out of Egypt, and by a prophet was he preserved."

Hosea 13:6: "According to their pasture, so were they filled; they were filled, and their heart was exalted; therefore have they forgotten me."

Amos 1:1: "The words of Amos, who was among the herdmen of Tekoa, which he saw concerning Israel in the days of Uzziah king of Judah, and in the days of Jeroboam the son of Joash king of Israel, two years before the earthquake."

Amos 2:9: "Yet destroyed I the Amorite before them, whose height was like the height of the cedars, and he was strong as the oaks; yet I destroyed his fruit from above, and his roots from beneath."

Amos 4:7: "And also I have withholden the rain from you, when there were yet three months to the harvest: and I caused it to rain upon one city, and caused it not to rain upon another city: one piece was rained upon, and the piece whereupon it rained not withered."

Amos 7:1: "Thus hath the Lord GOD shewed unto me; and, behold, he formed grasshoppers in the beginning of the shooting up of the latter growth; and, lo, it was the latter growth after the king's mowings."

Amos 7:14: "Then answered Amos, and said to Amaziah, I was no prophet, neither was I a prophet's son; but I was an herdman, and a gatherer of sycamore fruit:"

Jonah 1:4: "But the LORD sent out a great wind into the sea, and there was a mighty tempest in the sea, so that the ship was like to be broken."

Jonah 1:5: "Then the mariners were afraid, and cried every man unto his god, and cast forth the wares that were in the ship into the sea, to lighten it of them. But Jonah was gone down into the sides of the ship; and he lay, and was fast asleep."

Jonah 1:11: "Then said they unto him, What shall we do unto thee, that the sea may be calm unto us? for the sea wrought, and was tempestuous."

Jonah 1:13: "Nevertheless the men rowed hard to bring it to the land; but they could not: for the sea wrought, and was tempestuous against them."

Jonah 1:17: "Now the LORD had prepared a great fish to swallow up Jonah. And Jonah was in the belly of the fish three days and three nights."

Jonah 2:6: "I went down to the bottoms of the mountains; the earth with her bars was about me for ever: yet hast thou brought up my life from corruption, O LORD my God."

Jonah 3:3: "So Jonah arose, and went unto Nineveh, according to the word of the LORD. Now Nineveh was an exceeding great city of three days' journey."

Jonah 4:1: "But it displeased Jonah exceedingly, and he was very angry."

Jonah 4:2: "And he prayed unto the LORD, and said, I pray thee, O LORD, was not this my saying, when I was yet in my country? Therefore I fled before unto Tarshish: for I knew that thou art a gracious God, and merciful, slow to anger, and of great kindness, and repentest thee of the evil."

Jonah 4:6: "And the LORD God prepared a gourd, and made it to come up over Jonah, that it might be a shadow over his head, to deliver him from his grief. So Jonah was exceeding glad of the gourd."

Micah 4:7: "And I will make her that halted a remnant, and her that was cast far off a strong nation: and the LORD shall reign over them in mount Zion from henceforth, even for ever."

Nahum 3:8: "Art thou better than populous No, that was situate among the rivers, that had the waters round about it, whose rampart was the sea, and her wall was from the sea?"

Nahum 3:9: "Ethiopia and Egypt were her strength, and it was infinite; Put and Lubim were thy helpers."

Nahum 3:10: "Yet was she carried away, she went into captivity: her young children also were dashed in pieces at the top of all the streets: and they cast lots for her honourable men, and all her great men were bound in chains."

Habakkuk 3:2: "O LORD, I have heard thy speech, and was afraid: O LORD, revive thy work in the

midst of the years, in the midst of the years make known; in wrath remember mercy."

Habakkuk 3:3: "God came from Teman, and the Holy One from mount Paran. Selah. His glory covered the heavens, and the earth was full of his praise."

Habakkuk 3:4: "And his brightness was as the light; he had horns coming out of his hand: and there was the hiding of his power."

Habakkuk 3:8: "Was the LORD displeased against the rivers? was thine anger against the rivers? was thy wrath against the sea, that thou didst ride upon thine horses and thy chariots of salvation?"

Habakkuk 3:9: "Thy bow was made quite naked, according to the oaths of the tribes, even thy word. Selah. Thou didst cleave the earth with rivers."

Habakkuk 3:14: "Thou didst strike through with his staves the head of his villages: they came out as a whirlwind to scatter me: their rejoicing was as to devour the poor secretly."

Zephaniah 3:18: "I will gather them that are sorrowful for the solemn assembly, who are of thee, to whom the reproach of it was a burden."

Zephaniah 3:19: "Behold, at that time I will undo all that afflict thee: and I will save her that halteth, and gather her that was driven out; and I will get them praise and fame in every land where they have been put to shame."

Haggai 2:15: "And now, I pray you, consider from this day and upward, from before a stone was laid upon a stone in the temple of the LORD:"

Haggai 2:18: "Consider now from this day and upward, from the four and twentieth day of the ninth month, even from the day that the foundation of the LORD's temple was laid, consider it."

Zechariah 1:15: "And I am very sore displeased with the heathen that are at ease: for I was but a little displeased, and they helped forward the affliction."

Zechariah 3:3: "Now Joshua was clothed with filthy garments, and stood before the angel."

Zechariah 5:7: "And, behold, there was lifted up a talent of lead: and this is a woman that sitteth in the midst of the ephah."

Zechariah 5:9: "Then lifted I up mine eyes, and looked, and, behold, there came out two women, and the wind was in their wings; for they had wings like the wings of a stork: and they lifted up the ephah between the earth and the heaven."

Zechariah 7:7: "Should ye not hear the words which the LORD hath cried by the former prophets, when Jerusalem was inhabited and in prosperity, and the cities thereof round about her, when men inhabited the south and the plain?"

Zechariah 7:14: "But I scattered them with a whirlwind among all the nations whom they knew not. Thus the land was desolate after them, that no man passed through nor returned: for they laid the pleasant land desolate."

Zechariah 8:2: "Thus saith the LORD of hosts; I was jealous for Zion with great jealousy, and I was jealous for her with great fury."

Zechariah 8:9: "Thus saith the LORD of hosts; Let your hands be strong, ye that hear in these days these words by the mouth of the prophets, which were in the day that the foundation of the house of the LORD of hosts was laid, that the temple might be built."

Zechariah 8:10: "For before these days there was no hire for man, nor any hire for beast; neither was there any peace to him that went out or came in because of the affliction: for I set all men every one against his neighbour."

Zechariah 10:2: "For the idols have spoken vanity, and the diviners have seen a lie, and have told false dreams; they comfort in vain: therefore they went their way as a flock, they were troubled, because there was no shepherd."

Zechariah 10:3: "Mine anger was kindled against the shepherds, and I punished the goats: for the LORD of hosts hath visited his flock the house of Judah, and hath made them as his goodly horse in the battle."

Zechariah 11:11: "And it was broken in that day: and so the poor of the flock that waited upon me knew that it was the word of the LORD."

Zechariah 11:13: "And the LORD said unto me, Cast it unto the potter: a goodly price that I was prised at of them. And I took the thirty pieces of silver, and cast them to the potter in the house of the LORD."

Zechariah 13:6: "And one shall say unto him, What are these wounds in thine hands? Then he shall answer, Those with which I was wounded in the house of my friends."

Malachi 1:2: "I have loved you, saith the LORD. Yet ye say, Wherein hast thou loved us? Was not Esau Jacob's brother? saith the LORD: yet I loved Jacob,"

Malachi 1:13: "Ye said also, Behold, what a weariness is it! and ye have snuffed at it, saith the LORD of hosts; and ye brought that which was torn, and the lame, and the sick; thus ye brought an offering: should I accept this of your hand? saith the LORD."

Malachi 2:5: "My covenant was with him of life and peace; and I gave them to him for the fear wherewith he feared me, and was afraid before my name."

Malachi 2:6: "The law of truth was in his mouth, and iniquity was not found in his lips: he walked with me in peace and equity, and did turn many away from iniquity."

Malachi 3:16: "Then they that feared the LORD spake often one to another: and the LORD hearkened, and heard it, and a book of remembrance was written before him for them that feared the LORD, and that thought upon his name."

Matthew 1:16: "And Jacob begat Joseph the husband of Mary, of whom was born Jesus, who is called Christ."

Matthew 1:18: "Now the birth of Jesus Christ was on this wise: When as his mother Mary was espoused to Joseph, before they came together, she was found with child of the Holy Ghost."

Matthew 1:19: "Then Joseph her husband, being a just man, and not willing to make her a publick example, was minded to put her away privily."

Matthew 1:22: "Now all this was done, that it might be fulfilled which was spoken of the Lord by the prophet, saying,"

Matthew 2:1: "Now when Jesus was born in Bethlehem of Judaea in the days of Herod the king, behold, there came wise men from the east to Jerusalem,"

Matthew 2:3: "When Herod the king had heard these things, he was troubled, and all Jerusalem with him."

Matthew 2:9: "When they had heard the king, they departed; and, lo, the star, which they saw in the east, went before them, till it came and stood over where the young child was."

Matthew 2:15: "And was there until the death of Herod: that it might be fulfilled which was spoken of the Lord by the prophet, saying, Out of Egypt have I called my son."

Matthew 2:16: "Then Herod, when he saw that he was mocked of the wise men, was exceeding wroth, and sent forth, and slew all the children that were in Bethlehem, and in all the coasts thereof, from two years old and under, according to the time which he had diligently enquired of the wise men."

Matthew 2:17: "Then was fulfilled that which was spoken by Jeremy the prophet, saying,"

Matthew 2:18: "In Rama was there a voice heard, lamentation, and weeping, and great mourning, Rachel weeping for her children, and would not be comforted, because they are not."

Matthew 2:19: "But when Herod was dead, behold, an angel of the Lord appeareth in a dream to Joseph in Egypt,"

Matthew 2:22: "But when he heard that Archelaus did reign in Judaea in the room of his father Herod, he was afraid to go thither: notwithstanding, being warned of God in a dream, he turned aside into the parts of Galilee:"

Matthew 2:23: "And he came and dwelt in a city called Nazareth: that it might be fulfilled which was spoken by the prophets, He shall be called a Nazarene."

Matthew 3:3: "For this is he that was spoken of by the prophet Esaias, saying, The voice of one crying in the wilderness, Prepare ye the way of the Lord, make his paths straight."

Matthew 3:4: "And the same John had his raiment of camel's hair, and a leathern girdle about his

loins; and his meat was locusts and wild honey."

Matthew 3:16: "And Jesus, when he was baptized, went up straightway out of the water: and, lo, the heavens were opened unto him, and he saw the Spirit of God descending like a dove, and lighting upon him:"

Matthew 4:1: "Then was Jesus led up of the spirit into the wilderness to be tempted of the devil."

Matthew 4:2: "And when he had fasted forty days and forty nights, he was afterward an hungred."

Matthew 4:12: "Now when Jesus had heard that John was cast into prison, he departed into Galilee;"

Matthew 4:14: "That it might be fulfilled which was spoken by Esaias the prophet, saying,"

Matthew 5:1: "And seeing the multitudes, he went up into a mountain: and when he was set, his disciples came unto him:"

Matthew 5:21: "Ye have heard that it was said of them of old time, Thou shalt not kill; and whosoever shall kill shall be in danger of the judgment:"

Matthew 5:27: "Ye have heard that it was said by them of old time, Thou shalt not commit adultery:"

Matthew 6:29: "And yet I say unto you, That even Solomon in all his glory was not arrayed like one of these."

Matthew 7:25: "And the rain descended, and the floods came, and the winds blew, and beat upon that house; and it fell not: for it was founded upon a rock."

Matthew 7:27: "And the rain descended, and the floods came, and the winds blew, and beat upon that house; and it fell: and great was the fall of it."

Matthew 8:1: "When he was come down from the mountain, great multitudes followed him."

Matthew 8:3: "And Jesus put forth his hand, and touched him, saying, I will; be thou clean. And immediately his leprosy was cleansed."

Matthew 8:5: "And when Jesus was entered into Capernaum, there came unto him a centurion, beseeching him,"

Matthew 8:13: "And Jesus said unto the centurion, Go thy way; and as thou hast believed, so be it done unto thee. And his servant was healed in the selfsame hour."

Matthew 8:14: "And when Jesus was come into Peter's house, he saw his wife's mother laid, and sick of a fever."

Matthew 8:16: "When the even was come, they brought unto him many that were possessed with devils: and he cast out the spirits with his word, and healed all that were sick:"

Matthew 8:17: "That it might be fulfilled which was spoken by Esaias the prophet, saying, Himself took our infirmities, and bare our sicknesses."

Matthew 8:23: "And when he was entered into a ship, his disciples followed him."

Matthew 8:24: "And, behold, there arose a great tempest in the sea, insomuch that the ship was covered with the waves: but he was asleep."

Matthew 8:26: "And he saith unto them, Why are ye fearful, O ye of little faith? Then he arose, and rebuked the winds and the sea; and there was a great calm."

Matthew 8:28: "And when he was come to the other side into the country of the Gergesenes, there met him two possessed with devils, coming out of the tombs, exceeding fierce, so that no man might pass by that way."

Matthew 8:30: "And there was a good way off from them an herd of many swine feeding."

Matthew 8:33: "And they that kept them fled, and went their ways into the city, and told every thing, and what was befallen to the possessed of the devils."

Matthew 9:20: "And, behold, a woman, which was diseased with an issue of blood twelve years, came behind him, and touched the hem of his garment:"

Matthew 9:22: "But Jesus turned him about, and when he saw her, he said, Daughter, be of good comfort; thy faith hath made thee whole. And the woman was made whole from that hour."

Matthew 9:28: "And when he was come into the house, the blind men came to him: and Jesus saith

unto them, Believe ye that I am able to do this? They said unto him, Yea, Lord."

Matthew 9:33: "And when the devil was cast out, the dumb spake: and the multitudes marvelled, saying, It was never so seen in Israel."

Matthew 9:36: "But when he saw the multitudes, he was moved with compassion on them, because they fainted, and were scattered abroad, as sheep having no shepherd."

Matthew 10:3: "Philip, and Bartholomew; Thomas, and Matthew the publican; James the son of Alphaeus, and Lebbaeus, whose surname was Thaddaeus;"

Matthew 11:14: "And if ye will receive it, this is Elias, which was for to come."

Matthew 12:3: "But he said unto them, Have ye not read what David did, when he was an hungred, and they that were with him;"

Matthew 12:4: "How he entered into the house of God, and did eat the shewbread, which was not lawful for him to eat, neither for them which were with him, but only for the priests?"

Matthew 12:9: "And when he was departed thence, he went into their synagogue:"

Matthew 12:10: "And, behold, there was a man which had his hand withered. And they asked him, saying, Is it lawful to heal on the sabbath days? that they might accuse him."

Matthew 12:13: "Then saith he to the man, Stretch forth thine hand. And he stretched it forth; and it was restored whole, like as the other."

Matthew 12:17: "That it might be fulfilled which was spoken by Esaias the prophet, saying,"

Matthew 12:22: "Then was brought unto him one possessed with a devil, blind, and dumb: and he healed him, insomuch that the blind and dumb both spake and saw."

Matthew 12:40: "For as Jonas was three days and three nights in the whale's belly; so shall the Son of man be three days and three nights in the heart of the earth."

Matthew 13:6: "And when the sun was up, they were scorched; and because they had no root, they withered away."

Matthew 13:19: "When any one heareth the word of the kingdom, and understandeth it not, then cometh the wicked one, and catcheth away that which was sown in his heart. This is he which received seed by the way side."

Matthew 13:26: "But when the blade was sprung up, and brought forth fruit, then appeared the tares also."

Matthew 13:33: "Another parable spake he unto them; The kingdom of heaven is like unto leaven, which a woman took, and hid in three measures of meal, till the whole was leavened."

Matthew 13:35: "That it might be fulfilled which was spoken by the prophet, saying, I will open my mouth in parables; I will utter things which have been kept secret from the foundation of the world."

Matthew 13:47: "Again, the kingdom of heaven is like unto a net, that was cast into the sea, and gathered of every kind:"

Matthew 13:48: "Which, when it was full, they drew to shore, and sat down, and gathered the good into vessels, but cast the bad away."

Matthew 13:54: "And when he was come into his own country, he taught them in their synagogue, insomuch that they were astonished, and said, Whence hath this man this wisdom, and these mighty works?"

Matthew 14:6: "But when Herod's birthday was kept, the daughter of Herodias danced before them, and pleased Herod."

Matthew 14:9: "And the king was sorry: nevertheless for the oath's sake, and them which sat with him at meat, he commanded it to be given her."

Matthew 14:11: "And his head was brought in a charger, and given to the damsel: and she brought it to her mother."

Matthew 14:14: "And Jesus went forth, and saw a great multitude, and was moved with compassion toward them, and he healed their sick."

Matthew 14:15: "And when it was evening, his disciples came to him, saying, This is a desert place,



and the time is now past; send the multitude away, that they may go into the villages, and buy themselves victuals."

Matthew 14:23: "And when he had sent the multitudes away, he went up into a mountain apart to pray: and when the evening was come, he was there alone."

Matthew 14:24: "But the ship was now in the midst of the sea, tossed with waves: for the wind was contrary."

Matthew 14:29: "And he said, Come. And when Peter was come down out of the ship, he walked on the water, to go to Jesus."

Matthew 14:30: "But when he saw the wind boisterous, he was afraid; and beginning to sink, he cried, saying, Lord, save me."

Matthew 15:28: "Then Jesus answered and said unto her, O woman, great is thy faith: be it unto thee even as thou wilt. And her daughter was made whole from that very hour."

Matthew 15:37: "And they did all eat, and were filled: and they took up of the broken meat that was left seven baskets full."

Matthew 16:20: "Then charged he his disciples that they should tell no man that he was Jesus the Christ."

Matthew 17:2: "And was transfigured before them: and his face did shine as the sun, and his raiment was white as the light."

Matthew 17:18: "And Jesus rebuked the devil; and he departed out of him: and the child was cured from that very hour."

Matthew 17:25: "He saith, Yes. And when he was come into the house, Jesus prevented him, saying, What thinkest thou, Simon? of whom do the kings of the earth take custom or tribute? of their own children, or of strangers?"

Matthew 18:11: "For the Son of man is come to save that which was lost."

Matthew 18:24: "And when he had begun to reckon, one was brought unto him, which owed him ten thousand talents."

Matthew 18:27: "Then the lord of that servant was moved with compassion, and loosed him, and forgave him the debt."

Matthew 18:31: "So when his fellowservants saw what was done, they were very sorry, and came and told unto their lord all that was done."

Matthew 18:34: "And his lord was wroth, and delivered him to the tormentors, till he should pay all that was due unto him."

Matthew 19:8: "He saith unto them, Moses because of the hardness of your hearts suffered you to put away your wives: but from the beginning it was not so."

Matthew 20:8: "So when even was come, the lord of the vineyard saith unto his steward, Call the labourers, and give them their hire, beginning from the last unto the first."

Matthew 21:4: "All this was done, that it might be fulfilled which was spoken by the prophet, saying,"

Matthew 21:10: "And when he was come into Jerusalem, all the city was moved, saying, Who is this?"

Matthew 21:23: "And when he was come into the temple, the chief priests and the elders of the people came unto him as he was teaching, and said, By what authority doest thou these things? and who gave thee this authority?"

Matthew 21:25: "The baptism of John, whence was it? from heaven, or of men? And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say unto us, Why did ye not then believe him?"

Matthew 21:33: "Hear another parable: There was a certain householder, which planted a vineyard, and hedged it round about, and digged a winepress in it, and built a tower, and let it out to husbandmen, and went into a far country:"

Matthew 22:7: "But when the king heard thereof, he was wroth: and he sent forth his armies, and

destroyed those murderers, and burned up their city."

Matthew 22:10: "So those servants went out into the highways, and gathered together all as many as they found, both bad and good: and the wedding was furnished with guests."

Matthew 22:12: "And he saith unto him, Friend, how camest thou in hither not having a wedding garment? And he was speechless."

Matthew 22:31: "But as touching the resurrection of the dead, have ye not read that which was spoken unto you by God, saying,"

Matthew 22:35: "Then one of them, which was a lawyer, asked him a question, tempting him, and saying,"

Matthew 22:46: "And no man was able to answer him a word, neither durst any man from that day forth ask him any more questions."

Matthew 24:21: "For then shall be great tribulation, such as was not since the beginning of the world to this time, no, nor ever shall be."

Matthew 25:6: "And at midnight there was a cry made, Behold, the bridegroom cometh; go ye out to meet him."

Matthew 25:10: "And while they went to buy, the bridegroom came; and they that were ready went in with him to the marriage: and the door was shut."

Matthew 25:25: "And I was afraid, and went and hid thy talent in the earth: lo, there thou hast that is thine."

Matthew 25:35: "For I was an hungred, and ye gave me meat: I was thirsty, and ye gave me drink: I was a stranger, and ye took me in:"

Matthew 25:36: "Naked, and ye clothed me: I was sick, and ye visited me: I was in prison, and ye came unto me."

Matthew 25:42: "For I was an hungred, and ye gave me no meat: I was thirsty, and ye gave me no drink:"

Matthew 25:43: "I was a stranger, and ye took me not in: naked, and ye clothed me not: sick, and in prison, and ye visited me not."

Matthew 26:3: "Then assembled together the chief priests, and the scribes, and the elders of the people, unto the palace of the high priest, who was called Caiaphas,"

Matthew 26:6: "Now when Jesus was in Bethany, in the house of Simon the leper,"

Matthew 26:20: "Now when the even was come, he sat down with the twelve."

Matthew 26:56: "But all this was done, that the scriptures of the prophets might be fulfilled. Then all the disciples forsook him, and fled."

Matthew 26:71: "And when he was gone out into the porch, another maid saw him, and said unto them that were there, This fellow was also with Jesus of Nazareth."

Matthew 27:1: "When the morning was come, all the chief priests and elders of the people took counsel against Jesus to put him to death:"

Matthew 27:3: "Then Judas, which had betrayed him, when he saw that he was condemned, repented himself, and brought again the thirty pieces of silver to the chief priests and elders,"

Matthew 27:8: "Wherefore that field was called, The field of blood, unto this day."

Matthew 27:9: "Then was fulfilled that which was spoken by Jeremy the prophet, saying, And they took the thirty pieces of silver, the price of him that was valued, whom they of the children of Israel did value;"

Matthew 27:12: "And when he was accused of the chief priests and elders, he answered nothing."

Matthew 27:15: "Now at that feast the governor was wont to release unto the people a prisoner, whom they would."

Matthew 27:19: "When he was set down on the judgment seat, his wife sent unto him, saying, Have thou nothing to do with that just man: for I have suffered many things this day in a dream because of him."

Matthew 27:24: "When Pilate saw that he could prevail nothing, but that rather a tumult was made,

he took water, and washed his hands before the multitude, saying, I am innocent of the blood of this just person: see ye to it."

Matthew 27:35: "And they crucified him, and parted his garments, casting lots: that it might be fulfilled which was spoken by the prophet, They parted my garments among them, and upon my vesture did they cast lots."

Matthew 27:45: "Now from the sixth hour there was darkness over all the land unto the ninth hour."

Matthew 27:51: "And, behold, the veil of the temple was rent in twain from the top to the bottom; and the earth did quake, and the rocks rent;"

Matthew 27:54: "Now when the centurion, and they that were with him, watching Jesus, saw the earthquake, and those things that were done, they feared greatly, saying, Truly this was the Son of God."

Matthew 27:56: "Among which was Mary Magdalene, and Mary the mother of James and Joses, and the mother of Zebedees children."

Matthew 27:57: "When the even was come, there came a rich man of Arimathaea, named Joseph, who also himself was Jesus' disciple:"

Matthew 27:61: "And there was Mary Magdalene, and the other Mary, sitting over against the sepulchre."

Matthew 27:63: "Saying, Sir, we remember that that deceiver said, while he was yet alive, After three days I will rise again."

Matthew 28:2: "And, behold, there was a great earthquake: for the angel of the Lord descended from heaven, and came and rolled back the stone from the door, and sat upon it."

Matthew 28:3: "His countenance was like lightning, and his raiment white as snow:"

Matthew 28:5: "And the angel answered and said unto the women, Fear not ye: for I know that ye seek Jesus, which was crucified."

Mark 1:6: "And John was clothed with camel's hair, and with a girdle of a skin about his loins; and he did eat locusts and wild honey;"

Mark 1:9: "And it came to pass in those days, that Jesus came from Nazareth of Galilee, and was baptized of John in Jordan."

Mark 1:13: "And he was there in the wilderness forty days, tempted of Satan; and was with the wild beasts; and the angels ministered unto him."

Mark 1:14: "Now after that John was put in prison, Jesus came into Galilee, preaching the gospel of the kingdom of God,"

Mark 1:23: "And there was in their synagogue a man with an unclean spirit; and he cried out,"

Mark 1:33: "And all the city was gathered together at the door."

Mark 1:42: "And as soon as he had spoken, immediately the leprosy departed from him, and he was cleansed."

Mark 1:45: "But he went out, and began to publish it much, and to blaze abroad the matter, insomuch that Jesus could no more openly enter into the city, but was without in desert places: and they came to him from every quarter."

Mark 2:1: "And again he entered into Capernaum after some days; and it was noised that he was in the house."

Mark 2:2: "And straightway many were gathered together, insomuch that there was no room to receive them, no, not so much as about the door: and he preached the word unto them."

Mark 2:3: "And they come unto him, bringing one sick of the palsy, which was borne of four."

Mark 2:4: "And when they could not come nigh unto him for the press, they uncovered the roof where he was: and when they had broken it up, they let down the bed wherein the sick of the palsy lay."

Mark 2:6: "But there was certain of the scribes sitting there, and reasoning in their hearts,"

Mark 2:25: "And he said unto them, Have ye never read what David did, when he had need, and was an hungred, he, and they that were with him?"

Mark 2:27: "And he said unto them, The sabbath was made for man, and not man for the sabbath:"

Mark 3:1: "And he entered again into the synagogue; and there was a man there which had a withered hand."

Mark 3:5: "And when he had looked round about on them with anger, being grieved for the hardness of their hearts, he saith unto the man, Stretch forth thine hand. And he stretched it out: and his hand was restored whole as the other."

Mark 4:1: "And he began again to teach by the sea side: and there was gathered unto him a great multitude, so that he entered into a ship, and sat in the sea; and the whole multitude was by the sea on the land."

Mark 4:6: "But when the sun was up, it was scorched; and because it had no root, it withered away."

Mark 4:10: "And when he was alone, they that were about him with the twelve asked of him the parable."

Mark 4:15: "And these are they by the way side, where the word is sown; but when they have heard, Satan cometh immediately, and taketh away the word that was sown in their hearts."

Mark 4:22: "For there is nothing hid, which shall not be manifested; neither was any thing kept secret, but that it should come abroad."

Mark 4:35: "And the same day, when the even was come, he saith unto them, Let us pass over unto the other side."

Mark 4:36: "And when they had sent away the multitude, they took him even as he was in the ship. And there were also with him other little ships."

Mark 4:37: "And there arose a great storm of wind, and the waves beat into the ship, so that it was now full."

Mark 4:38: "And he was in the hinder part of the ship, asleep on a pillow: and they awake him, and say unto him, Master, carest thou not that we perish?"

Mark 4:39: "And he arose, and rebuked the wind, and said unto the sea, Peace, be still. And the wind ceased, and there was a great calm."

Mark 5:2: "And when he was come out of the ship, immediately there met him out of the tombs a man with an unclean spirit,"

Mark 5:5: "And always, night and day, he was in the mountains, and in the tombs, crying, and cutting himself with stones."

Mark 5:11: "Now there was there nigh unto the mountains a great herd of swine feeding."

Mark 5:14: "And they that fed the swine fled, and told it in the city, and in the country. And they went out to see what it was that was done."

Mark 5:15: "And they come to Jesus, and see him that was possessed with the devil, and had the legion, sitting, and clothed, and in his right mind: and they were afraid."

Mark 5:16: "And they that saw it told them how it befell to him that was possessed with the devil, and also concerning the swine."

Mark 5:18: "And when he was come into the ship, he that had been possessed with the devil prayed him that he might be with him."

Mark 5:21: "And when Jesus was passed over again by ship unto the other side, much people gathered unto him: and he was nigh unto the sea."

Mark 5:26: "And had suffered many things of many physicians, and had spent all that she had, and was nothing bettered, but rather grew worse,"

Mark 5:29: "And straightway the fountain of her blood was dried up; and she felt in her body that she was healed of that plague."

Mark 5:33: "But the woman fearing and trembling, knowing what was done in her, came and fell down before him, and told him all the truth."

Mark 5:36: "As soon as Jesus heard the word that was spoken, he saith unto the ruler of the synagogue, Be not afraid, only believe."

Mark 5:39: "And when he was come in, he saith unto them, Why make ye this ado, and weep? the

damsel is not dead, but sleepeth."

Mark 5:40: "And they laughed him to scorn. But when he had put them all out, he taketh the father and the mother of the damsel, and them that were with him, and entereth in where the damsel was lying."

Mark 5:42: "And straightway the damsel arose, and walked; for she was of the age of twelve years. And they were astonished with a great astonishment."

Mark 6:2: "And when the sabbath day was come, he began to teach in the synagogue: and many hearing him were astonished, saying, From whence hath this man these things? and what wisdom is this which is given unto him, that even such mighty works are wrought by his hands?"

Mark 6:14: "And king Herod heard of him; (for his name was spread abroad:) and he said, That John the Baptist was risen from the dead, and therefore mighty works do shew forth themselves in him."

Mark 6:20: "For Herod feared John, knowing that he was a just man and an holy, and observed him; and when he heard him, he did many things, and heard him gladly."

Mark 6:21: "And when a convenient day was come, that Herod on his birthday made a supper to his lords, high captains, and chief estates of Galilee;"

Mark 6:26: "And the king was exceeding sorry; yet for his oath's sake, and for their sakes which sat with him, he would not reject her."

Mark 6:34: "And Jesus, when he came out, saw much people, and was moved with compassion toward them, because they were as sheep not having a shepherd: and he began to teach them many things."

Mark 6:35: "And when the day was now far spent, his disciples came unto him, and said, This is a desert place, and now the time is far passed:"

Mark 6:47: "And when even was come, the ship was in the midst of the sea, and he alone on the land."

Mark 6:48: "And he saw them toiling in rowing; for the wind was contrary unto them: and about the fourth watch of the night he cometh unto them, walking upon the sea, and would have passed by them."

Mark 6:52: "For they considered not the miracle of the loaves: for their heart was hardened."

Mark 6:55: "And ran through that whole region round about, and began to carry about in beds those that were sick, where they heard he was."

Mark 7:17: "And when he was entered into the house from the people, his disciples asked him concerning the parable."

Mark 7:26: "The woman was a Greek, a Syrophenician by nation; and she besought him that he would cast forth the devil out of her daughter."

Mark 7:30: "And when she was come to her house, she found the devil gone out, and her daughter laid upon the bed."

Mark 7:32: "And they bring unto him one that was deaf, and had an impediment in his speech; and they beseech him to put his hand upon him."

Mark 7:35: "And straightway his ears were opened, and the string of his tongue was loosed, and he spake plain."

Mark 8:8: "So they did eat, and were filled: and they took up of the broken meat that was left seven baskets."

Mark 8:25: "After that he put his hands again upon his eyes, and made him look up: and he was restored, and saw every man clearly."

Mark 9:2: "And after six days Jesus taketh with him Peter, and James, and John, and leadeth them up into an high mountain apart by themselves: and he was transfigured before them."

Mark 9:7: "And there was a cloud that overshadowed them: and a voice came out of the cloud, saying, This is my beloved Son: hear him."

Mark 9:26: "And the spirit cried, and rent him sore, and came out of him: and he was as one dead;

insomuch that many said, He is dead."

Mark 9:28: "And when he was come into the house, his disciples asked him privately, Why could not we cast him out?"

Mark 9:33: "And he came to Capernaum: and being in the house he asked them, What was it that ye disputed among yourselves by the way?"

Mark 10:1: "And he arose from thence, and cometh into the coasts of Judaea by the farther side of Jordan: and the people resort unto him again; and, as he was wont, he taught them again."

Mark 10:14: "But when Jesus saw it, he was much displeased, and said unto them, Suffer the little children to come unto me, and forbid them not: for of such is the kingdom of God."

Mark 10:17: "And when he was gone forth into the way, there came one running, and kneeled to him, and asked him, Good Master, what shall I do that I may inherit eternal life?"

Mark 10:22: "And he was sad at that saying, and went away grieved: for he had great possessions."

Mark 10:47: "And when he heard that it was Jesus of Nazareth, he began to cry out, and say, Jesus, thou son of David, have mercy on me."

Mark 11:11: "And Jesus entered into Jerusalem, and into the temple: and when he had looked round about upon all things, and now the eventide was come, he went out unto Bethany with the twelve."

Mark 11:12: "And on the morrow, when they were come from Bethany, he was hungry:"

Mark 11:13: "And seeing a fig tree afar off having leaves, he came, if haply he might find any thing thereon: and when he came to it, he found nothing but leaves; for the time of figs was not yet."

Mark 11:18: "And the scribes and chief priests heard it, and sought how they might destroy him: for they feared him, because all the people was astonished at his doctrine."

Mark 11:19: "And when even was come, he went out of the city."

Mark 11:27: "And they come again to Jerusalem: and as he was walking in the temple, there come to him the chief priests, and the scribes, and the elders,"

Mark 11:30: "The baptism of John, was it from heaven, or of men? answer me."

Mark 11:32: "But if we shall say, Of men; they feared the people: for all men counted John, that he was a prophet indeed."

Mark 12:11: "This was the Lord's doing, and it is marvellous in our eyes?"

Mark 13:19: "For in those days shall be affliction, such as was not from the beginning of the creation which God created unto this time, neither shall be."

Mark 14:1: "After two days was the feast of the passover, and of unleavened bread: and the chief priests and the scribes sought how they might take him by craft, and put him to death."

Mark 14:4: "And there were some that had indignation within themselves, and said, Why was this waste of the ointment made?"

Mark 14:32: "And they came to a place which was named Gethsemane: and he saith to his disciples, Sit ye here, while I shall pray."

Mark 14:45: "And as soon as he was come, he goeth straightway to him, and saith, Master, master; and kissed him."

Mark 14:49: "I was daily with you in the temple teaching, and ye took me not: but the scriptures must be fulfilled."

Mark 14:66: "And as Peter was beneath in the palace, there cometh one of the maids of the high priest:"

Mark 15:7: "And there was one named Barabbas, which lay bound with them that had made insurrection with him, who had committed murder in the insurrection."

Mark 15:25: "And it was the third hour, and they crucified him."

Mark 15:26: "And the superscription of his accusation was written over, THE KING OF THE JEWS."

Mark 15:28: "And the scripture was fulfilled, which saith, And he was numbered with the transgressors."

Mark 15:33: "And when the sixth hour was come, there was darkness over the whole land until the

ninth hour."

Mark 15:38: "And the veil of the temple was rent in twain from the top to the bottom."

Mark 15:39: "And when the centurion, which stood over against him, saw that he so cried out, and gave up the ghost, he said, Truly this man was the Son of God."

Mark 15:40: "There were also women looking on afar off: among whom was Mary Magdalene, and Mary the mother of James the less and of Joses, and Salome;"

Mark 15:41: "(Who also, when he was in Galilee, followed him, and ministered unto him;) and many other women which came up with him unto Jerusalem."

Mark 15:42: "And now when the even was come, because it was the preparation, that is, the day before the sabbath,"

Mark 15:46: "And he bought fine linen, and took him down, and wrapped him in the linen, and laid him in a sepulchre which was hewn out of a rock, and rolled a stone unto the door of the sepulchre."

Mark 15:47: "And Mary Magdalene and Mary the mother of Joses beheld where he was laid."

Mark 16:1: "And when the sabbath was past, Mary Magdalene, and Mary the mother of James, and Salome, had bought sweet spices, that they might come and anoint him."

Mark 16:4: "And when they looked, they saw that the stone was rolled away: for it was very great."

Mark 16:6: "And he saith unto them, Be not affrighted: Ye seek Jesus of Nazareth, which was crucified: he is risen; he is not here: behold the place where they laid him."

Mark 16:9: "Now when Jesus was risen early the first day of the week, he appeared first to Mary Magdalene, out of whom he had cast seven devils."

Mark 16:11: "And they, when they had heard that he was alive, and had been seen of her, believed not."

Mark 16:14: "Afterward he appeared unto the eleven as they sat at meat, and upbraided them with their unbelief and hardness of heart, because they believed not them which had seen him after he was risen."

Mark 16:19: "So then after the Lord had spoken unto them, he was received up into heaven, and sat on the right hand of God."

Luke 1:5: "THERE was in the days of Herod, the king of Judaea, a certain priest named Zacharias, of the course of Abia: and his wife was of the daughters of Aaron, and her name was Elisabeth."

Luke 1:7: "And they had no child, because that Elisabeth was barren, and they both were now well stricken in years."

Luke 1:9: "According to the custom of the priest's office, his lot was to burn incense when he went into the temple of the Lord."

Luke 1:12: "And when Zacharias saw him, he was troubled, and fear fell upon him."

Luke 1:26: "And in the sixth month the angel Gabriel was sent from God unto a city of Galilee, named Nazareth,"

Luke 1:27: "To a virgin espoused to a man whose name was Joseph, of the house of David; and the virgin's name was Mary."

Luke 1:29: "And when she saw him, she was troubled at his saying, and cast in her mind what manner of salutation this should be."

Luke 1:36: "And, behold, thy cousin Elisabeth, she hath also conceived a son in her old age: and this is the sixth month with her, who was called barren."

Luke 1:41: "And it came to pass, that, when Elisabeth heard the salutation of Mary, the babe leaped in her womb; and Elisabeth was filled with the Holy Ghost:"

Luke 1:64: "And his mouth was opened immediately, and his tongue loosed, and he spake, and praised God."

Luke 1:66: "And all they that heard them laid them up in their hearts, saying, What manner of child shall this be! And the hand of the Lord was with him."

Luke 1:67: "And his father Zacharias was filled with the Holy Ghost, and prophesied, saying,"

Luke 1:80: "And the child grew, and waxed strong in spirit, and was in the deserts till the day of his

shewing unto Israel."

Luke 2:2: "(And this taxing was first made when Cyrenius was governor of Syria.)"

Luke 2:4: "And Joseph also went up from Galilee, out of the city of Nazareth, into Judaea, unto the city of David, which is called Bethlehem; (because he was of the house and lineage of David:)"

Luke 2:6: "And so it was, that, while they were there, the days were accomplished that she should be delivered."

Luke 2:7: "And she brought forth her firstborn son, and wrapped him in swaddling clothes, and laid him in a manger; because there was no room for them in the inn."

Luke 2:13: "And suddenly there was with the angel a multitude of the heavenly host praising God, and saying,"

Luke 2:17: "And when they had seen it, they made known abroad the saying which was told them concerning this child."

Luke 2:20: "And the shepherds returned, glorifying and praising God for all the things that they had heard and seen, as it was told unto them."

Luke 2:21: "And when eight days were accomplished for the circumcising of the child, his name was called JESUS, which was so named of the angel before he was conceived in the womb."

Luke 2:25: "And, behold, there was a man in Jerusalem, whose name was Simeon; and the same man was just and devout, waiting for the consolation of Israel: and the Holy Ghost was upon him."

Luke 2:26: "And it was revealed unto him by the Holy Ghost, that he should not see death, before he had seen the Lord's Christ."

Luke 2:36: "And there was one Anna, a prophetess, the daughter of Phanuel, of the tribe of Aser: she was of a great age, and had lived with an husband seven years from her virginity;"

Luke 2:37: "And she was a widow of about fourscore and four years, which departed not from the temple, but served God with fastings and prayers night and day."

Luke 2:40: "And the child grew, and waxed strong in spirit, filled with wisdom: and the grace of God was upon him."

Luke 2:42: "And when he was twelve years old, they went up to Jerusalem after the custom of the feast."

Luke 2:51: "And he went down with them, and came to Nazareth, and was subject unto them: but his mother kept all these sayings in her heart."

Luke 3:21: "Now when all the people were baptized, it came to pass, that Jesus also being baptized, and praying, the heaven was opened,"

Luke 3:23: "And Jesus himself began to be about thirty years of age, being (as was supposed) the son of Joseph, which was the son of Heli,"

Luke 3:24: "Which was the son of Matthat, which was the son of Levi, which was the son of Melchi, which was the son of Janna, which was the son of Joseph,"

Luke 3:25: "Which was the son of Mattathias, which was the son of Amos, which was the son of Naum, which was the son of Esli, which was the son of Nagge,"

Luke 3:26: "Which was the son of Maath, which was the son of Mattathias, which was the son of Semei, which was the son of Joseph, which was the son of Juda,"

Luke 3:27: "Which was the son of Joanna, which was the son of Rhesa, which was the son of Zorobabel, which was the son of Salathiel, which was the son of Neri,"

Luke 3:28: "Which was the son of Melchi, which was the son of Addi, which was the son of Cosam, which was the son of Elmodam, which was the son of Er,"

Luke 3:29: "Which was the son of Jose, which was the son of Eliezer, which was the son of Jorim, which was the son of Matthat, which was the son of Levi,"

Luke 3:30: "Which was the son of Simeon, which was the son of Juda, which was the son of Joseph, which was the son of Jonan, which was the son of Eliakim,"

Luke 3:31: "Which was the son of Melea, which was the son of Menan, which was the son of Mattatha, which was the son of Nathan, which was the son of David,"



Luke 3:32: "Which was the son of Jesse, which was the son of Obed, which was the son of Booz, which was the son of Salmon, which was the son of Naasson,"

Luke 3:33: "Which was the son of Aminadab, which was the son of Aram, which was the son of Esrom, which was the son of Phares, which was the son of Juda,"

Luke 3:34: "Which was the son of Jacob, which was the son of Isaac, which was the son of Abraham, which was the son of Thara, which was the son of Nachor,"

Luke 3:35: "Which was the son of Saruch, which was the son of Ragau, which was the son of Phalec, which was the son of Heber, which was the son of Sala,"

Luke 3:36: "Which was the son of Cainan, which was the son of Arphaxad, which was the son of Sem, which was the son of Noe, which was the son of Lamech,"

Luke 3:37: "Which was the son of Mathusala, which was the son of Enoch, which was the son of Jared, which was the son of Maleleel, which was the son of Cainan,"

Luke 3:38: "Which was the son of Enos, which was the son of Seth, which was the son of Adam, which was the son of God."

Luke 4:1: "And Jesus being full of the Holy Ghost returned from Jordan, and was led by the Spirit into the wilderness,"

Luke 4:16: "And he came to Nazareth, where he had been brought up: and, as his custom was, he went into the synagogue on the sabbath day, and stood up for to read."

Luke 4:17: "And there was delivered unto him the book of the prophet Esaias. And when he had opened the book, he found the place where it was written,"

Luke 4:25: "But I tell you of a truth, many widows were in Israel in the days of Elias, when the heaven was shut up three years and six months, when great famine was throughout all the land;"

Luke 4:26: "But unto none of them was Elias sent, save unto Sarepta, a city of Sidon, unto a woman that was a widow."

Luke 4:27: "And many lepers were in Israel in the time of Eliseus the prophet; and none of them was cleansed, saving Naaman the Syrian."

Luke 4:29: "And rose up, and thrust him out of the city, and led him unto the brow of the hill whereon their city was built, that they might cast him down headlong."

Luke 4:32: "And they were astonished at his doctrine: for his word was with power."

Luke 4:33: "And in the synagogue there was a man, which had a spirit of an unclean devil, and cried out with a loud voice,"

Luke 4:38: "And he arose out of the synagogue, and entered into Simon's house. And Simon's wife's mother was taken with a great fever; and they besought him for her."

Luke 4:40: "Now when the sun was setting, all they that had any sick with divers diseases brought them unto him; and he laid his hands on every one of them, and healed them."

Luke 4:41: "And devils also came out of many, crying out, and saying, Thou art Christ the Son of God. And he rebuking them suffered them not to speak: for they knew that he was Christ."

Luke 4:42: "And when it was day, he departed and went into a desert place: and the people sought him, and came unto him, and stayed him, that he should not depart from them."

Luke 5:3: "And he entered into one of the ships, which was Simon's, and prayed him that he would thrust out a little from the land. And he sat down, and taught the people out of the ship."

Luke 5:9: "For he was astonished, and all that were with him, at the draught of the fishes which they had taken:"

Luke 5:10: "And so was also James, and John, the sons of Zebedee, which were partners with Simon. And Jesus said unto Simon, Fear not; from henceforth thou shalt catch men."

Luke 5:12: "And it came to pass, when he was in a certain city, behold a man full of leprosy: who seeing Jesus fell on his face, and besought him, saying, Lord, if thou wilt, thou canst make me clean."

Luke 5:17: "And it came to pass on a certain day, as he was teaching, that there were Pharisees and doctors of the law sitting by, which were come out of every town of Galilee, and Judaea, and

Jerusalem: and the power of the Lord was present to heal them."

Luke 5:18: "And, behold, men brought in a bed a man which was taken with a palsy: and they sought means to bring him in, and to lay him before him."

Luke 5:29: "And Levi made him a great feast in his own house: and there was a great company of publicans and of others that sat down with them."

Luke 5:36: "And he spake also a parable unto them; No man putteth a piece of a new garment upon an old; if otherwise, then both the new maketh a rent, and the piece that was taken out of the new agreeth not with the old."

Luke 6:3: "And Jesus answering them said, Have ye not read so much as this, what David did, when himself was an hungred, and they which were with him;"

Luke 6:6: "And it came to pass also on another sabbath, that he entered into the synagogue and taught: and there was a man whose right hand was withered."

Luke 6:10: "And looking round about upon them all, he said unto the man, Stretch forth thy hand. And he did so: and his hand was restored whole as the other."

Luke 6:13: "And when it was day, he called unto him his disciples: and of them he chose twelve, whom also he named apostles;"

Luke 6:16: "And Judas the brother of James, and Judas Iscariot, which also was the traitor."

Luke 6:48: "He is like a man which built an house, and digged deep, and laid the foundation on a rock: and when the flood arose, the stream beat vehemently upon that house, and could not shake it: for it was founded upon a rock."

Luke 6:49: "But he that heareth, and doeth not, is like a man that without a foundation built an house upon the earth; against which the stream did beat vehemently, and immediately it fell; and the ruin of that house was great."

Luke 7:2: "And a certain centurion's servant, who was dear unto him, was sick, and ready to die."

Luke 7:4: "And when they came to Jesus, they besought him instantly, saying, That he was worthy for whom he should do this:"

Luke 7:6: "Then Jesus went with them. And when he was now not far from the house, the centurion sent friends to him, saying unto him, Lord, trouble not thyself: for I am not worthy that thou shouldest enter under my roof:"

Luke 7:12: "Now when he came nigh to the gate of the city, behold, there was a dead man carried out, the only son of his mother, and she was a widow: and much people of the city was with her."

Luke 7:15: "And he that was dead sat up, and began to speak. And he delivered him to his mother."

Luke 7:37: "And, behold, a woman in the city, which was a sinner, when she knew that Jesus sat at meat in the Pharisee's house, brought an alabaster box of ointment,"

Luke 7:41: "There was a certain creditor which had two debtors: the one owed five hundred pence, and the other fifty."

Luke 8:5: "A sower went out to sow his seed: and as he sowed, some fell by the way side; and it was trodden down, and the fowls of the air devoured it."

Luke 8:6: "And some fell upon a rock; and as soon as it was sprung up, it withered away, because it lacked moisture."

Luke 8:20: "And it was told him by certain which said, Thy mother and thy brethren stand without, desiring to see thee."

Luke 8:24: "And they came to him, and awoke him, saying, Master, master, we perish. Then he arose, and rebuked the wind and the raging of the water: and they ceased, and there was a calm."

Luke 8:29: "(For he had commanded the unclean spirit to come out of the man. For oftentimes it had caught him: and he was kept bound with chains and in fetters; and he brake the bands, and was driven of the devil into the wilderness.)"

Luke 8:32: "And there was there an herd of many swine feeding on the mountain: and they besought him that he would suffer them to enter into them. And he suffered them."

Luke 8:34: "When they that fed them saw what was done, they fled, and went and told it in the city

and in the country."

Luke 8:35: "Then they went out to see what was done; and came to Jesus, and found the man, out of whom the devils were departed, sitting at the feet of Jesus, clothed, and in his right mind: and they were afraid."

Luke 8:36: "They also which saw it told them by what means he that was possessed of the devils was healed."

Luke 8:40: "And it came to pass, that, when Jesus was returned, the people gladly received him: for they were all waiting for him."

Luke 8:41: "And, behold, there came a man named Jairus, and he was a ruler of the synagogue: and he fell down at Jesus' feet, and besought him that he would come into his house:"

Luke 8:47: "And when the woman saw that she was not hid, she came trembling, and falling down before him, she declared unto him before all the people for what cause she had touched him, and how she was healed immediately."

Luke 8:53: "And they laughed him to scorn, knowing that she was dead."

Luke 8:56: "And her parents were astonished: but he charged them that they should tell no man what was done."

Luke 9:7: "Now Herod the tetrarch heard of all that was done by him: and he was perplexed, because that it was said of some, that John was risen from the dead;"

Luke 9:8: "And of some, that Elias had appeared; and of others, that one of the old prophets was risen again."

Luke 9:17: "And they did eat, and were all filled: and there was taken up of fragments that remained to them twelve baskets."

Luke 9:18: "And it came to pass, as he was alone praying, his disciples were with him: and he asked them, saying, Whom say the people that I am?"

Luke 9:29: "And as he prayed, the fashion of his countenance was altered, and his raiment was white and glistering."

Luke 9:36: "And when the voice was past, Jesus was found alone. And they kept it close, and told no man in those days any of those things which they had seen."

Luke 9:42: "And as he was yet a coming, the devil threw him down, and tare him. And Jesus rebuked the unclean spirit, and healed the child, and delivered him again to his father."

Luke 9:45: "But they understood not this saying, and it was hid from them, that they perceived it not: and they feared to ask him of that saying."

Luke 9:51: "And it came to pass, when the time was come that he should be received up, he stedfastly set his face to go to Jerusalem,"

Luke 9:53: "And they did not receive him, because his face was as though he would go to Jerusalem."

Luke 10:32: "And likewise a Levite, when he was at the place, came and looked on him, and passed by on the other side."

Luke 10:33: "But a certain Samaritan, as he journeyed, came where he was: and when he saw him, he had compassion on him,"

Luke 10:36: "Which now of these three, thinkest thou, was neighbour unto him that fell among the thieves?"

Luke 10:40: "But Martha was cumbered about much serving, and came to him, and said, Lord, dost thou not care that my sister hath left me to serve alone? bid her therefore that she help me."

Luke 11:1: "And it came to pass, that, as he was praying in a certain place, when he ceased, one of his disciples said unto him, Lord, teach us to pray, as John also taught his disciples."

Luke 11:14: "And he was casting out a devil, and it was dumb. And it came to pass, when the devil was gone out, the dumb spake; and the people wondered."

Luke 11:30: "For as Jonas was a sign unto the Ninevites, so shall also the Son of man be to this generation."

Luke 11:50: "That the blood of all the prophets, which was shed from the foundation of the world, may be required of this generation;"

Luke 12:27: "Consider the lilies how they grow: they toil not, they spin not; and yet I say unto you, that Solomon in all his glory was not arrayed like one of these."

Luke 13:10: "And he was teaching in one of the synagogues on the sabbath."

Luke 13:11: "And, behold, there was a woman which had a spirit of infirmity eighteen years, and was bowed together, and could in no wise lift up herself."

Luke 13:13: "And he laid his hands on her: and immediately she was made straight, and glorified God."

Luke 13:21: "It is like leaven, which a woman took and hid in three measures of meal, till the whole was leavened."

Luke 14:2: "And, behold, there was a certain man before him which had the dropsy."

Luke 14:30: "Saying, This man began to build, and was not able to finish."

Luke 15:6: "And when he cometh home, he calleth together his friends and neighbours, saying unto them, Rejoice with me; for I have found my sheep which was lost."

Luke 15:20: "And he arose, and came to his father. But when he was yet a great way off, his father saw him, and had compassion, and ran, and fell on his neck, and kissed him."

Luke 15:24: "For this my son was dead, and is alive again; he was lost, and is found. And they began to be merry."

Luke 15:25: "Now his elder son was in the field: and as he came and drew nigh to the house, he heard musick and dancing."

Luke 15:28: "And he was angry, and would not go in: therefore came his father out, and intreated him."

Luke 15:30: "But as soon as this thy son was come, which hath devoured thy living with harlots, thou hast killed for him the fatted calf."

Luke 15:32: "It was meet that we should make merry, and be glad: for this thy brother was dead, and is alive again; and was lost, and is found."

Luke 16:1: "And he said also unto his disciples, There was a certain rich man, which had a steward; and the same was accused unto him that he had wasted his goods."

Luke 16:19: "There was a certain rich man, which was clothed in purple and fine linen, and fared sumptuously every day:"

Luke 16:20: "And there was a certain beggar named Lazarus, which was laid at his gate, full of sores,"

Luke 16:22: "And it came to pass, that the beggar died, and was carried by the angels into Abraham's bosom: the rich man also died, and was buried;"

Luke 17:10: "So likewise ye, when ye shall have done all those things which are commanded you, say, We are unprofitable servants: we have done that which was our duty to do."

Luke 17:15: "And one of them, when he saw that he was healed, turned back, and with a loud voice glorified God,"

Luke 17:16: "And fell down on his face at his feet, giving him thanks: and he was a Samaritan."

Luke 17:20: "And when he was demanded of the Pharisees, when the kingdom of God should come, he answered them and said, The kingdom of God cometh not with observation:"

Luke 17:26: "And as it was in the days of Noe, so shall it be also in the days of the Son of man."

Luke 17:28: "Likewise also as it was in the days of Lot; they did eat, they drank, they bought, they sold, they planted, they builded;"

Luke 18:2: "Saying, There was in a city a judge, which feared not God, neither regarded man:"

Luke 18:3: "And there was a widow in that city; and she came unto him, saying, Avenge me of mine adversary."

Luke 18:23: "And when he heard this, he was very sorrowful: for he was very rich."

Luke 18:24: "And when Jesus saw that he was very sorrowful, he said, How hardly shall they that

have riches enter into the kingdom of God!"

Luke 18:34: "And they understood none of these things: and this saying was hid from them, neither knew they the things which were spoken."

Luke 18:35: "And it came to pass, that as he was come nigh unto Jericho, a certain blind man sat by the way side begging:"

Luke 18:40: "And Jesus stood, and commanded him to be brought unto him: and when he was come near, he asked him,"

Luke 19:2: "And, behold, there was a man named Zacchaeus, which was the chief among the publicans, and he was rich."

Luke 19:3: "And he sought to see Jesus who he was; and could not for the press, because he was little of stature."

Luke 19:4: "And he ran before, and climbed up into a sycomore tree to see him: for he was to pass that way."

Luke 19:7: "And when they saw it, they all murmured, saying, That he was gone to be guest with a man that is a sinner."

Luke 19:10: "For the Son of man is come to seek and to save that which was lost."

Luke 19:11: "And as they heard these things, he added and spake a parable, because he was nigh to Jerusalem, and because they thought that the kingdom of God should immediately appear."

Luke 19:15: "And it came to pass, that when he was returned, having received the kingdom, then he commanded these servants to be called unto him, to whom he had given the money, that he might know how much every man had gained by trading."

Luke 19:22: "And he saith unto him, Out of thine own mouth will I judge thee, thou wicked servant. Thou knewest that I was an austere man, taking up that I laid not down, and reaping that I did not sow:"

Luke 19:29: "And it came to pass, when he was come nigh to Bethphage and Bethany, at the mount called the mount of Olives, he sent two of his disciples,"

Luke 19:37: "And when he was come nigh, even now at the descent of the mount of Olives, the whole multitude of the disciples began to rejoice and praise God with a loud voice for all the mighty works that they had seen;"

Luke 19:41: "And when he was come near, he beheld the city, and wept over it,"

Luke 20:4: "The baptism of John, was it from heaven, or of men?"

Luke 20:6: "But and if we say, Of men; all the people will stone us: for they be persuaded that John was a prophet."

Luke 20:7: "And they answered, that they could not tell whence it was."

Luke 21:5: "And as some spake of the temple, how it was adorned with goodly stones and gifts, he said,"

Luke 21:37: "And in the day time he was teaching in the temple; and at night he went out, and abode in the mount that is called the mount of Olives."

Luke 22:14: "And when the hour was come, he sat down, and the twelve apostles with him."

Luke 22:22: "And truly the Son of man goeth, as it was determined: but woe unto that man by whom he is betrayed!"

Luke 22:23: "And they began to enquire among themselves, which of them it was that should do this thing."

Luke 22:24: "And there was also a strife among them, which of them should be accounted the greatest."

Luke 22:37: "For I say unto you, that this that is written must yet be accomplished in me, And he was reckoned among the transgressors: for the things concerning me have an end."

Luke 22:39: "And he came out, and went, as he was wont, to the mount of Olives; and his disciples also followed him."

Luke 22:40: "And when he was at the place, he said unto them, Pray that ye enter not into

temptation."

Luke 22:41: "And he was withdrawn from them about a stone's cast, and kneeled down, and prayed,"

Luke 22:44: "And being in an agony he prayed more earnestly: and his sweat was as it were great drops of blood falling down to the ground."

Luke 22:45: "And when he rose up from prayer, and was come to his disciples, he found them sleeping for sorrow,"

Luke 22:47: "And while he yet spake, behold a multitude, and he that was called Judas, one of the twelve, went before them, and drew near unto Jesus to kiss him."

Luke 22:53: "When I was daily with you in the temple, ye stretched forth no hands against me: but this is your hour, and the power of darkness."

Luke 22:56: "But a certain maid beheld him as he sat by the fire, and earnestly looked upon him, and said, This man was also with him."

Luke 22:59: "And about the space of one hour after another confidently affirmed, saying, Of a truth this fellow also was with him: for he is a Galilaeen."

Luke 22:66: "And as soon as it was day, the elders of the people and the chief priests and the scribes came together, and led him into their council, saying,"

Luke 23:7: "And as soon as he knew that he belonged unto Herod's jurisdiction, he sent him to Herod, who himself also was at Jerusalem at that time."

Luke 23:8: "And when Herod saw Jesus, he was exceeding glad: for he was desirous to see him of a long season, because he had heard many things of him; and he hoped to have seen some miracle done by him."

Luke 23:19: "(Who for a certain sedition made in the city, and for murder, was cast into prison.)"

Luke 23:25: "And he released unto them him that for sedition and murder was cast into prison, whom they had desired; but he delivered Jesus to their will."

Luke 23:38: "And a superscription also was written over him in letters of Greek, and Latin, and Hebrew, THIS IS THE KING OF THE JEWS."

Luke 23:44: "And it was about the sixth hour, and there was a darkness over all the earth until the ninth hour."

Luke 23:45: "And the sun was darkened, and the veil of the temple was rent in the midst."

Luke 23:47: "Now when the centurion saw what was done, he glorified God, saying, Certainly this was a righteous man."

Luke 23:50: "And, behold, there was a man named Joseph, a counsellor; and he was a good man, and a just:"

Luke 23:51: "(The same had not consented to the counsel and deed of them;) he was of Arimathaea, a city of the Jews: who also himself waited for the kingdom of God."

Luke 23:53: "And he took it down, and wrapped it in linen, and laid it in a sepulchre that was hewn in stone, wherein never man before was laid."

Luke 23:54: "And that day was the preparation, and the sabbath drew on."

Luke 23:55: "And the women also, which came with him from Galilee, followed after, and beheld the sepulchre, and how his body was laid."

Luke 24:6: "He is not here, but is risen: remember how he spake unto you when he was yet in Galilee,"

Luke 24:10: "It was Mary Magdalene and Joanna, and Mary the mother of James, and other women that were with them, which told these things unto the apostles."

Luke 24:12: "Then arose Peter, and ran unto the sepulchre; and stooping down, he beheld the linen clothes laid by themselves, and departed, wondering in himself at that which was come to pass."

Luke 24:13: "And, behold, two of them went that same day to a village called Emmaus, which was from Jerusalem about threescore furlongs."

Luke 24:18: "And the one of them, whose name was Cleopas, answering said unto him, Art thou

only a stranger in Jerusalem, and hast not known the things which are come to pass there in these days?"

Luke 24:19: "And he said unto them, What things? And they said unto him, Concerning Jesus of Nazareth, which was a prophet mighty in deed and word before God and all the people:"

Luke 24:23: "And when they found not his body, they came, saying, that they had also seen a vision of angels, which said that he was alive."

Luke 24:35: "And they told what things were done in the way, and how he was known of them in breaking of bread."

Luke 24:44: "And he said unto them, These are the words which I spake unto you, while I was yet with you, that all things must be fulfilled, which were written in the law of Moses, and in the prophets, and in the psalms, concerning me."

Luke 24:51: "And it came to pass, while he blessed them, he was parted from them, and carried up into heaven."

John 1:1: "In the beginning was the Word, and the Word was with God, and the Word was God."

John 1:2: "The same was in the beginning with God."

John 1:3: "All things were made by him; and without him was not any thing made that was made."

John 1:4: "In him was life; and the life was the light of men."

John 1:6: "There was a man sent from God, whose name was John."

John 1:8: "He was not that Light, but was sent to bear witness of that Light."

John 1:9: "That was the true Light, which lighteth every man that cometh into the world."

John 1:10: "He was in the world, and the world was made by him, and the world knew him not."

John 1:14: "And the Word was made flesh, and dwelt among us, (and we beheld his glory, the glory as of the only begotten of the Father,) full of grace and truth."

John 1:15: "John bare witness of him, and cried, saying, This was he of whom I spake, He that cometh after me is preferred before me: for he was before me."

John 1:17: "For the law was given by Moses, but grace and truth came by Jesus Christ."

John 1:28: "These things were done in Bethabara beyond Jordan, where John was baptizing."

John 1:30: "This is he of whom I said, After me cometh a man which is preferred before me: for he was before me."

John 1:39: "He saith unto them, Come and see. They came and saw where he dwelt, and abode with him that day: for it was about the tenth hour."

John 1:40: "One of the two which heard John speak, and followed him, was Andrew, Simon Peter's brother."

John 1:44: "Now Philip was of Bethsaida, the city of Andrew and Peter."

John 2:1: "And the third day there was a marriage in Cana of Galilee; and the mother of Jesus was there:"

John 2:2: "And both Jesus was called, and his disciples, to the marriage."

John 2:9: "When the ruler of the feast had tasted the water that was made wine, and knew not whence it was: (but the servants which drew the water knew;) the governor of the feast called the bridegroom,"

John 2:13: "And the Jews' passover was at hand, and Jesus went up to Jerusalem."

John 2:17: "And his disciples remembered that it was written, The zeal of thine house hath eaten me up."

John 2:20: "Then said the Jews, Forty and six years was this temple in building, and wilt thou rear it up in three days?"

John 2:22: "When therefore he was risen from the dead, his disciples remembered that he had said this unto them; and they believed the scripture, and the word which Jesus had said."

John 2:23: "Now when he was in Jerusalem at the passover, in the feast day, many believed in his name, when they saw the miracles which he did."

John 2:25: "And needed not that any should testify of man: for he knew what was in man."

John 3:1: "There was a man of the Pharisees, named Nicodemus, a ruler of the Jews:"

John 3:23: "And John also was baptizing in Aenon near to Salim, because there was much water there: and they came, and were baptized."

John 3:24: "For John was not yet cast into prison."

John 3:26: "And they came unto John, and said unto him, Rabbi, he that was with thee beyond Jordan, to whom thou barest witness, behold, the same baptizeth, and all men come to him."

John 4:6: "Now Jacob's well was there. Jesus therefore, being wearied with his journey, sat thus on the well: and it was about the sixth hour."

John 4:45: "Then when he was come into Galilee, the Galilaeans received him, having seen all the things that he did at Jerusalem at the feast: for they also went unto the feast."

John 4:46: "So Jesus came again into Cana of Galilee, where he made the water wine. And there was a certain nobleman, whose son was sick at Capernaum."

John 4:47: "When he heard that Jesus was come out of Judaea into Galilee, he went unto him, and besought him that he would come down, and heal his son: for he was at the point of death."

John 4:51: "And as he was now going down, his servants met him, and told him, saying, Thy son liveth."

John 4:53: "So the father knew that it was at the same hour, in the which Jesus said unto him, Thy son liveth: and himself believed, and his whole house."

John 4:54: "This is again the second miracle that Jesus did, when he was come out of Judaea into Galilee."

John 5:1: "After this there was a feast of the Jews; and Jesus went up to Jerusalem."

John 5:4: "For an angel went down at a certain season into the pool, and troubled the water: whosoever then first after the troubling of the water stepped in was made whole of whatsoever disease he had."

John 5:5: "And a certain man was there, which had an infirmity thirty and eight years."

John 5:9: "And immediately the man was made whole, and took up his bed, and walked: and on the same day was the sabbath."

John 5:10: "The Jews therefore said unto him that was cured, It is the sabbath day: it is not lawful for thee to carry thy bed."

John 5:13: "And he that was healed wist not who it was: for Jesus had conveyed himself away, a multitude being in that place."

John 5:15: "The man departed, and told the Jews that it was Jesus, which had made him whole."

John 5:18: "Therefore the Jews sought the more to kill him, because he not only had broken the sabbath, but said also that God was his Father, making himself equal with God."

John 5:35: "He was a burning and a shining light: and ye were willing for a season to rejoice in his light."

John 6:4: "And the passover, a feast of the Jews, was nigh."

John 6:10: "And Jesus said, Make the men sit down. Now there was much grass in the place. So the men sat down, in number about five thousand."

John 6:16: "And when even was now come, his disciples went down unto the sea,"

John 6:17: "And entered into a ship, and went over the sea toward Capernaum. And it was now dark, and Jesus was not come to them."

John 6:21: "Then they willingly received him into the ship: and immediately the ship was at the land whither they went."

John 6:22: "The day following, when the people which stood on the other side of the sea saw that there was none other boat there, save that one whereinto his disciples were entered, and that Jesus went not with his disciples into the boat, but that his disciples were gone away alone;"

John 6:24: "When the people therefore saw that Jesus was not there, neither his disciples, they also took shipping, and came to Capernaum, seeking for Jesus."

John 6:62: "What and if ye shall see the Son of man ascend up where he was before?"



John 6:71: "He spake of Judas Iscariot the son of Simon: for he it was that should betray him, being one of the twelve."

John 7:2: "Now the Jew's feast of tabernacles was at hand."

John 7:12: "And there was much murmuring among the people concerning him: for some said, He is a good man: others said, Nay; but he deceiveth the people."

John 7:30: "Then they sought to take him: but no man laid hands on him, because his hour was not yet come."

John 7:39: "(But this spake he of the Spirit, which they that believe on him should receive: for the Holy Ghost was not yet given; because that Jesus was not yet glorified.)"

John 7:42: "Hath not the scripture said, That Christ cometh of the seed of David, and out of the town of Bethlehem, where David was?"

John 7:43: "So there was a division among the people because of him."

John 8:4: "They say unto him, Master, this woman was taken in adultery, in the very act."

John 8:9: "And they which heard it, being convicted by their own conscience, went out one by one, beginning at the eldest, even unto the last: and Jesus was left alone, and the woman standing in the midst."

John 8:20: "These words spake Jesus in the treasury, as he taught in the temple: and no man laid hands on him; for his hour was not yet come."

John 8:44: "Ye are of your father the devil, and the lusts of your father ye will do. He was a murderer from the beginning, and abode not in the truth, because there is no truth in him. When he speaketh a lie, he speaketh of his own: for he is a liar, and the father of it."

John 8:56: "Your father Abraham rejoiced to see my day: and he saw it, and was glad."

John 8:58: "Jesus said unto them, Verily, verily, I say unto you, Before Abraham was, I am."

John 9:1: "And as Jesus passed by, he saw a man which was blind from his birth."

John 9:2: "And his disciples asked him, saying, Master, who did sin, this man, or his parents, that he was born blind?"

John 9:8: "The neighbours therefore, and they which before had seen him that he was blind, said, Is not this he that sat and begged?"

John 9:13: "They brought to the Pharisees him that aforetime was blind."

John 9:14: "And it was the sabbath day when Jesus made the clay, and opened his eyes."

John 9:16: "Therefore said some of the Pharisees, This man is not of God, because he keepeth not the sabbath day. Others said, How can a man that is a sinner do such miracles? And there was a division among them."

John 9:19: "And they asked them, saying, Is this your son, who ye say was born blind? how then doth he now see?"

John 9:20: "His parents answered them and said, We know that this is our son, and that he was born blind:"

John 9:22: "These words spake his parents, because they feared the Jews: for the Jews had agreed already, that if any man did confess that he was Christ, he should be put out of the synagogue."

John 9:24: "Then again called they the man that was blind, and said unto him, Give God the praise: we know that this man is a sinner."

John 9:25: "He answered and said, Whether he be a sinner or no, I know not: one thing I know, that, whereas I was blind, now I see."

John 9:32: "Since the world began was it not heard that any man opened the eyes of one that was born blind."

John 10:19: "There was a division therefore again among the Jews for these sayings."

John 10:22: "And it was at Jerusalem the feast of the dedication, and it was winter."

John 11:1: "Now a certain man was sick, named Lazarus, of Bethany, the town of Mary and her sister Martha."

John 11:2: "(It was that Mary which anointed the Lord with ointment, and wiped his feet with her

hair, whose brother Lazarus was sick.)"

John 11:6: "When he had heard therefore that he was sick, he abode two days still in the same place where he was."

John 11:15: "And I am glad for your sakes that I was not there, to the intent ye may believe; nevertheless let us go unto him."

John 11:18: "Now Bethany was nigh unto Jerusalem, about fifteen furlongs off:"

John 11:20: "Then Martha, as soon as she heard that Jesus was coming, went and met him: but Mary sat still in the house."

John 11:30: "Now Jesus was not yet come into the town, but was in that place where Martha met him."

John 11:32: "Then when Mary was come where Jesus was, and saw him, she fell down at his feet, saying unto him, Lord, if thou hadst been here, my brother had not died."

John 11:33: "When Jesus therefore saw her weeping, and the Jews also weeping which came with her, he groaned in the spirit, and was troubled."

John 11:38: "Jesus therefore again groaning in himself cometh to the grave. It was a cave, and a stone lay upon it."

John 11:39: "Jesus said, Take ye away the stone. Martha, the sister of him that was dead, saith unto him, Lord, by this time he stinketh: for he hath been dead four days."

John 11:41: "Then they took away the stone from the place where the dead was laid. And Jesus lifted up his eyes, and said, Father, I thank thee that thou hast heard me."

John 11:44: "And he that was dead came forth, bound hand and foot with graveclothes: and his face was bound about with a napkin. Jesus saith unto them, Loose him, and let him go."

John 11:55: "And the Jews' passover was nigh at hand: and many went out of the country up to Jerusalem before the passover, to purify themselves."

John 12:1: "Then Jesus six days before the passover came to Bethany, where Lazarus was, which had been dead, whom he raised from the dead."

John 12:2: "There they made him a supper; and Martha served: but Lazarus was one of them that sat at the table with him."

John 12:3: "Then took Mary a pound of ointment of spikenard, very costly, and anointed the feet of Jesus, and wiped his feet with her hair: and the house was filled with the odour of the ointment."

John 12:5: "Why was not this ointment sold for three hundred pence, and given to the poor?"

John 12:6: "This he said, not that he cared for the poor; but because he was a thief, and had the bag, and bare what was put therein."

John 12:9: "Much people of the Jews therefore knew that he was there: and they came not for Jesus' sake only, but that they might see Lazarus also, whom he had raised from the dead."

John 12:12: "On the next day much people that were come to the feast, when they heard that Jesus was coming to Jerusalem,"

John 12:16: "These things understood not his disciples at the first: but when Jesus was glorified, then remembered they that these things were written of him, and that they had done these things unto him."

John 12:17: "The people therefore that was with him when he called Lazarus out of his grave, and raised him from the dead, bare record."

John 12:21: "The same came therefore to Philip, which was of Bethsaida of Galilee, and desired him, saying, Sir, we would see Jesus."

John 13:1: "Now before the feast of the passover, when Jesus knew that his hour was come that he should depart out of this world unto the Father, having loved his own which were in the world, he loved them unto the end."

John 13:3: "Jesus knowing that the Father had given all things into his hands, and that he was come from God, and went to God;"

John 13:5: "After that he poureth water into a bason, and began to wash the disciples' feet, and to

wipe them with the towel wherewith he was girded."

John 13:12: "So after he had washed their feet, and had taken his garments, and was set down again, he said unto them, Know ye what I have done to you?"

John 13:21: "When Jesus had thus said, he was troubled in spirit, and testified, and said, Verily, verily, I say unto you, that one of you shall betray me."

John 13:23: "Now there was leaning on Jesus' bosom one of his disciples, whom Jesus loved."

John 13:30: "He then having received the sop went immediately out: and it was night."

John 13:31: "Therefore, when he was gone out, Jesus said, Now is the Son of man glorified, and God is glorified in him."

John 16:4: "But these things have I told you, that when the time shall come, ye may remember that I told you of them. And these things I said not unto you at the beginning, because I was with you."

John 17:5: "And now, O Father, glorify thou me with thine own self with the glory which I had with thee before the world was."

John 17:12: "While I was with them in the world, I kept them in thy name: those that thou gavest me I have kept, and none of them is lost, but the son of perdition; that the scripture might be fulfilled."

John 18:1: "When Jesus had spoken these words, he went forth with his disciples over the brook Cedron, where was a garden, into the which he entered, and his disciples."

John 18:10: "Then Simon Peter having a sword drew it, and smote the high priest's servant, and cut off his right ear. The servant's name was Malchus."

John 18:13: "And led him away to Annas first; for he was father in law to Caiaphas, which was the high priest that same year."

John 18:14: "Now Caiaphas was he, which gave counsel to the Jews, that it was expedient that one man should die for the people."

John 18:15: "And Simon Peter followed Jesus, and so did another disciple: that disciple was known unto the high priest, and went in with Jesus into the palace of the high priest."

John 18:16: "But Peter stood at the door without. Then went out that other disciple, which was known unto the high priest, and spake unto her that kept the door, and brought in Peter."

John 18:18: "And the servants and officers stood there, who had made a fire of coals; for it was cold: and they warmed themselves: and Peter stood with them, and warmed himself."

John 18:28: "Then led they Jesus from Caiaphas unto the hall of judgment: and it was early; and they themselves went not into the judgment hall, lest they should be defiled; but that they might eat the passover."

John 18:37: "Pilate therefore said unto him, Art thou a king then? Jesus answered, Thou sayest that I am a king. To this end was I born, and for this cause came I into the world, that I should bear witness unto the truth. Every one that is of the truth heareth my voice."

John 18:40: "Then cried they all again, saying, Not this man, but Barabbas. Now Barabbas was a robber."

John 19:8: "When Pilate therefore heard that saying, he was the more afraid;"

John 19:14: "And it was the preparation of the passover, and about the sixth hour: and he saith unto the Jews, Behold your King!"

John 19:19: "And Pilate wrote a title, and put it on the cross. And the writing was JESUS OF NAZARETH THE KING OF THE JEWS."

John 19:20: "This title then read many of the Jews: for the place where Jesus was crucified was nigh to the city: and it was written in Hebrew, and Greek, and Latin."

John 19:23: "Then the soldiers, when they had crucified Jesus, took his garments, and made four parts, to every soldier a part; and also his coat: now the coat was without seam, woven from the top throughout."

John 19:29: "Now there was set a vessel full of vinegar: and they filled a sponge with vinegar, and put it upon hyssop, and put it to his mouth."

John 19:31: "The Jews therefore, because it was the preparation, that the bodies should not remain upon the cross on the sabbath day, (for that sabbath day was an high day,) besought Pilate that their legs might be broken, and that they might be taken away."

John 19:32: "Then came the soldiers, and brake the legs of the first, and of the other which was crucified with him."

John 19:33: "But when they came to Jesus, and saw that he was dead already, they brake not his legs:"

John 19:41: "Now in the place where he was crucified there was a garden; and in the garden a new sepulchre, wherein was never man yet laid."

John 19:42: "There laid they Jesus therefore because of the Jews' preparation day; for the sepulchre was nigh at hand."

John 20:1: "The first day of the week cometh Mary Magdalene early, when it was yet dark, unto the sepulchre, and seeth the stone taken away from the sepulchre."

John 20:7: "And the napkin, that was about his head, not lying with the linen clothes, but wrapped together in a place by itself."

John 20:14: "And when she had thus said, she turned herself back, and saw Jesus standing, and knew not that it was Jesus."

John 20:24: "But Thomas, one of the twelve, called Didymus, was not with them when Jesus came."

John 21:4: "But when the morning was now come, Jesus stood on the shore: but the disciples knew not that it was Jesus."

John 21:7: "Therefore that disciple whom Jesus loved saith unto Peter, It is the Lord. Now when Simon Peter heard that it was the Lord, he girt his fisher's coat unto him, (for he was naked,) and did cast himself into the sea."

John 21:11: "Simon Peter went up, and drew the net to land full of great fishes, an hundred and fifty and three: and for all there were so many, yet was not the net broken."

John 21:12: "Jesus saith unto them, Come and dine. And none of the disciples durst ask him, Who art thou? knowing that it was the Lord."

John 21:14: "This is now the third time that Jesus shewed himself to his disciples, after that he was risen from the dead."

John 21:17: "He saith unto him the third time, Simon, son of Jonas, lovest thou me? Peter was grieved because he said unto him the third time, Lovest thou me? And he said unto him, Lord, thou knowest all things; thou knowest that I love thee. Jesus saith unto him, Feed my sheep."

Acts 1:2: "Until the day in which he was taken up, after that he through the Holy Ghost had given commandments unto the apostles whom he had chosen:"

Acts 1:9: "And when he had spoken these things, while they beheld, he was taken up; and a cloud received him out of their sight."

Acts 1:16: "Men and brethren, this scripture must needs have been fulfilled, which the Holy Ghost by the mouth of David spake before concerning Judas, which was guide to them that took Jesus."

Acts 1:17: "For he was numbered with us, and had obtained part of this ministry."

Acts 1:19: "And it was known unto all the dwellers at Jerusalem; insomuch as that field is called in their proper tongue, Aceldama, that is to say, The field of blood."

Acts 1:22: "Beginning from the baptism of John, unto that same day that he was taken up from us, must one be ordained to be a witness with us of his resurrection."

Acts 1:23: "And they appointed two, Joseph called Barsabas, who was surnamed Justus, and Matthias."

Acts 1:26: "And they gave forth their lots; and the lot fell upon Matthias; and he was numbered with the eleven apostles."

Acts 2:1: "And when the day of Pentecost was fully come, they were all with one accord in one place."

Acts 2:6: "Now when this was noised abroad, the multitude came together, and were confounded,

because that every man heard them speak in his own language."

Acts 2:16: "But this is that which was spoken by the prophet Joel;"

Acts 2:24: "Whom God hath raised up, having loosed the pains of death: because it was not possible that he should be holden of it."

Acts 2:26: "Therefore did my heart rejoice, and my tongue was glad; moreover also my flesh shall rest in hope:"

Acts 2:31: "He seeing this before spake of the resurrection of Christ, that his soul was not left in hell, neither his flesh did see corruption."

Acts 3:2: "And a certain man lame from his mother's womb was carried, whom they laid daily at the gate of the temple which is called Beautiful, to ask alms of them that entered into the temple;"

Acts 3:10: "And they knew that it was he which sat for alms at the Beautiful gate of the temple: and they were filled with wonder and amazement at that which had happened unto him."

Acts 3:11: "And as the lame man which was healed held Peter and John, all the people ran together unto them in the porch that is called Solomon's, greatly wondering."

Acts 3:13: "The God of Abraham, and of Isaac, and of Jacob, the God of our fathers, hath glorified his Son Jesus; whom ye delivered up, and denied him in the presence of Pilate, when he was determined to let him go."

Acts 3:20: "And he shall send Jesus Christ, which before was preached unto you:"

Acts 4:3: "And they laid hands on them, and put them in hold unto the next day: for it was now eventide."

Acts 4:4: "Howbeit many of them which heard the word believed; and the number of the men was about five thousand."

Acts 4:11: "This is the stone which was set at nought of you builders, which is become the head of the corner."

Acts 4:14: "And beholding the man which was healed standing with them, they could say nothing against it."

Acts 4:21: "So when they had further threatened them, they let them go, finding nothing how they might punish them, because of the people: for all men glorified God for that which was done."

Acts 4:22: "For the man was above forty years old, on whom this miracle of healing was shewed."

Acts 4:31: "And when they had prayed, the place was shaken where they were assembled together; and they were all filled with the Holy Ghost, and they spake the word of God with boldness."

Acts 4:32: "And the multitude of them that believed were of one heart and of one soul: neither said any of them that ought of the things which he possessed was his own; but they had all things common."

Acts 4:33: "And with great power gave the apostles witness of the resurrection of the Lord Jesus: and great grace was upon them all."

Acts 4:34: "Neither was there any among them that lacked: for as many as were possessors of lands or houses sold them, and brought the prices of the things that were sold,"

Acts 4:35: "And laid them down at the apostles' feet: and distribution was made unto every man according as he had need."

Acts 4:36: "And Joses, who by the apostles was surnamed Barnabas, (which is, being interpreted, The son of consolation,) a Levite, and of the country of Cyprus,"

Acts 5:4: "Whiles it remained, was it not thine own? and after it was sold, was it not in thine own power? why hast thou conceived this thing in thine heart? thou hast not lied unto men, but unto God."

Acts 5:7: "And it was about the space of three hours after, when his wife, not knowing what was done, came in."

Acts 5:36: "For before these days rose up Theudas, boasting himself to be somebody; to whom a number of men, about four hundred, joined themselves: who was slain; and all, as many as obeyed him, were scattered, and brought to nought."

Acts 6:1: "And in those days, when the number of the disciples was multiplied, there arose a murmuring of the Grecians against the Hebrews, because their widows were neglected in the daily ministration."

Acts 7:2: "And he said, Men, brethren, and fathers, hearken; The God of glory appeared unto our father Abraham, when he was in Mesopotamia, before he dwelt in Charran,"

Acts 7:4: "Then came he out of the land of the Chaldaeans, and dwelt in Charran: and from thence, when his father was dead, he removed him into this land, wherein ye now dwell."

Acts 7:9: "And the patriarchs, moved with envy, sold Joseph into Egypt: but God was with him,"

Acts 7:12: "But when Jacob heard that there was corn in Egypt, he sent out our fathers first."

Acts 7:13: "And at the second time Joseph was made known to his brethren; and Joseph's kindred was made known unto Pharaoh."

Acts 7:20: "In which time Moses was born, and was exceeding fair, and nourished up in his father's house three months:"

Acts 7:21: "And when he was cast out, Pharaoh's daughter took him up, and nourished him for her own son."

Acts 7:22: "And Moses was learned in all the wisdom of the Egyptians, and was mighty in words and in deeds."

Acts 7:23: "And when he was full forty years old, it came into his heart to visit his brethren the children of Israel."

Acts 7:24: "And seeing one of them suffer wrong, he defended him, and avenged him that was oppressed, and smote the Egyptian:"

Acts 7:29: "Then fled Moses at this saying, and was a stranger in the land of Madian, where he begat two sons."

Acts 7:38: "This is he, that was in the church in the wilderness with the angel which spake to him in the mount Sina, and with our fathers: who received the lively oracles to give unto us:"

Acts 7:58: "And cast him out of the city, and stoned him: and the witnesses laid down their clothes at a young man's feet, whose name was Saul."

Acts 8:1: "And Saul was consenting unto his death. And at that time there was a great persecution against the church which was at Jerusalem; and they were all scattered abroad throughout the regions of Judaea and Samaria, except the apostles."

Acts 8:8: "And there was great joy in that city."

Acts 8:9: "But there was a certain man, called Simon, which beforetime in the same city used sorcery, and bewitched the people of Samaria, giving out that himself was some great one:"

Acts 8:13: "Then Simon himself believed also: and when he was baptized, he continued with Philip, and wondered, beholding the miracles and signs which were done."

Acts 8:16: "(For as yet he was fallen upon none of them: only they were baptized in the name of the Lord Jesus.)"

Acts 8:18: "And when Simon saw that through laying on of the apostles' hands the Holy Ghost was given, he offered them money,"

Acts 8:28: "Was returning, and sitting in his chariot read Esaias the prophet."

Acts 8:32: "The place of the scripture which he read was this, He was led as a sheep to the slaughter; and like a lamb dumb before his shearer, so opened he not his mouth:"

Acts 8:33: "In his humiliation his judgment was taken away: and who shall declare his generation? for his life is taken from the earth."

Acts 8:40: "But Philip was found at Azotus: and passing through he preached in all the cities, till he came to Caesarea."

Acts 9:9: "And he was three days without sight, and neither did eat nor drink."

Acts 9:10: "And there was a certain disciple at Damascus, named Ananias; and to him said the Lord in a vision, Ananias. And he said, Behold, I am here, Lord."

Acts 9:18: "And immediately there fell from his eyes as it had been scales: and he received sight

forthwith, and arose, and was baptized."

Acts 9:19: "And when he had received meat, he was strengthened. Then was Saul certain days with the disciples which were at Damascus."

Acts 9:24: "But their laying await was known of Saul. And they watched the gates day and night to kill him."

Acts 9:26: "And when Saul was come to Jerusalem, he assayed to join himself to the disciples: but they were all afraid of him, and believed not that he was a disciple."

Acts 9:28: "And he was with them coming in and going out at Jerusalem."

Acts 9:33: "And there he found a certain man named Aeneas, which had kept his bed eight years, and was sick of the palsy."

Acts 9:36: "Now there was at Joppa a certain disciple named Tabitha, which by interpretation is called Dorcas: this woman was full of good works and almsdeeds which she did."

Acts 9:37: "And it came to pass in those days, that she was sick, and died: whom when they had washed, they laid her in an upper chamber."

Acts 9:38: "And forasmuch as Lydda was nigh to Joppa, and the disciples had heard that Peter was there, they sent unto him two men, desiring him that he would not delay to come to them."

Acts 9:39: "Then Peter arose and went with them. When he was come, they brought him into the upper chamber: and all the widows stood by him weeping, and shewing the coats and garments which Dorcas made, while she was with them."

Acts 9:42: "And it was known throughout all Joppa; and many believed in the Lord."

Acts 10:1: "There was a certain man in Caesarea called Cornelius, a centurion of the band called the Italian band,"

Acts 10:4: "And when he looked on him, he was afraid, and said, What is it, Lord? And he said unto him, Thy prayers and thine alms are come up for a memorial before God."

Acts 10:7: "And when the angel which spake unto Cornelius was departed, he called two of his household servants, and a devout soldier of them that waited on him continually;"

Acts 10:16: "This was done thrice: and the vessel was received up again into heaven."

Acts 10:18: "And called, and asked whether Simon, which was surnamed Peter, were lodged there."

Acts 10:22: "And they said, Cornelius the centurion, a just man, and one that feareth God, and of good report among all the nation of the Jews, was warned from God by an holy angel to send for thee into his house, and to hear words of thee."

Acts 10:25: "And as Peter was coming in, Cornelius met him, and fell down at his feet, and worshipped him."

Acts 10:29: "Therefore came I unto you without gainsaying, as soon as I was sent for: I ask therefore for what intent ye have sent for me?"

Acts 10:30: "And Cornelius said, Four days ago I was fasting until this hour; and at the ninth hour I prayed in my house, and, behold, a man stood before me in bright clothing,"

Acts 10:37: "That word, I say, ye know, which was published throughout all Judaea, and began from Galilee, after the baptism which John preached;"

Acts 10:38: "How God anointed Jesus of Nazareth with the Holy Ghost and with power: who went about doing good, and healing all that were oppressed of the devil; for God was with him."

Acts 10:42: "And he commanded us to preach unto the people, and to testify that it is he which was ordained of God to be the Judge of quick and dead."

Acts 10:45: "And they of the circumcision which believed were astonished, as many as came with Peter, because that on the Gentiles also was poured out the gift of the Holy Ghost."

Acts 11:2: "And when Peter was come up to Jerusalem, they that were of the circumcision contended with him,"

Acts 11:5: "I was in the city of Joppa praying: and in a trance I saw a vision, A certain vessel descend, as it had been a great sheet, let down from heaven by four corners; and it came even to me:"

Acts 11:10: "And this was done three times: and all were drawn up again into heaven."

Acts 11:11: "And, behold, immediately there were three men already come unto the house where I was, sent from Caesarea unto me."

Acts 11:17: "Forasmuch then as God gave them the like gift as he did unto us, who believed on the Lord Jesus Christ; what was I, that I could withstand God?"

Acts 11:21: "And the hand of the Lord was with them: and a great number believed, and turned unto the Lord."

Acts 11:22: "Then tidings of these things came unto the ears of the church which was in Jerusalem: and they sent forth Barnabas, that he should go as far as Antioch."

Acts 11:23: "Who, when he came, and had seen the grace of God, was glad, and exhorted them all, that with purpose of heart they would cleave unto the Lord."

Acts 11:24: "For he was a good man, and full of the Holy Ghost and of faith: and much people was added unto the Lord."

Acts 12:5: "Peter therefore was kept in prison: but prayer was made without ceasing of the church unto God for him."

Acts 12:6: "And when Herod would have brought him forth, the same night Peter was sleeping between two soldiers, bound with two chains: and the keepers before the door kept the prison."

Acts 12:9: "And he went out, and followed him; and wist not that it was true which was done by the angel; but thought he saw a vision."

Acts 12:11: "And when Peter was come to himself, he said, Now I know of a surety, that the LORD hath sent his angel, and hath delivered me out of the hand of Herod, and from all the expectation of the people of the Jews."

Acts 12:12: "And when he had considered the thing, he came to the house of Mary the mother of John, whose surname was Mark; where many were gathered together praying."

Acts 12:15: "And they said unto her, Thou art mad. But she constantly affirmed that it was even so. Then said they, It is his angel."

Acts 12:18: "Now as soon as it was day, there was no small stir among the soldiers, what was become of Peter."

Acts 12:20: "And Herod was highly displeased with them of Tyre and Sidon: but they came with one accord to him, and, having made Blastus the king's chamberlain their friend, desired peace; because their country was nourished by the king's country."

Acts 12:23: "And immediately the angel of the Lord smote him, because he gave not God the glory: and he was eaten of worms, and gave up the ghost."

Acts 12:25: "And Barnabas and Saul returned from Jerusalem, when they had fulfilled their ministry, and took with them John, whose surname was Mark."

Acts 13:1: "Now there were in the church that was at Antioch certain prophets and teachers; as Barnabas, and Simeon that was called Niger, and Lucius of Cyrene, and Manaen, which had been brought up with Herod the tetrarch, and Saul."

Acts 13:6: "And when they had gone through the isle unto Paphos, they found a certain sorcerer, a false prophet, a Jew, whose name was Barjesus:"

Acts 13:7: "Which was with the deputy of the country, Sergius Paulus, a prudent man; who called for Barnabas and Saul, and desired to hear the word of God."

Acts 13:12: "Then the deputy, when he saw what was done, believed, being astonished at the doctrine of the Lord."

Acts 13:29: "And when they had fulfilled all that was written of him, they took him down from the tree, and laid him in a sepulchre."

Acts 13:31: "And he was seen many days of them which came up with him from Galilee to Jerusalem, who are his witnesses unto the people."

Acts 13:32: "And we declare unto you glad tidings, how that the promise which was made unto the fathers,"



Acts 13:36: "For David, after he had served his own generation by the will of God, fell on sleep, and was laid unto his fathers, and saw corruption:"

Acts 13:43: "Now when the congregation was broken up, many of the Jews and religious proselytes followed Paul and Barnabas: who, speaking to them, persuaded them to continue in the grace of God."

Acts 13:46: "Then Paul and Barnabas waxed bold, and said, It was necessary that the word of God should first have been spoken to you: but seeing ye put it from you, and judge yourselves unworthy of everlasting life, lo, we turn to the Gentiles."

Acts 13:49: "And the word of the Lord was published throughout all the region."

Acts 14:4: "But the multitude of the city was divided: and part held with the Jews, and part with the apostles."

Acts 14:5: "And when there was an assault made both of the Gentiles, and also of the Jews with their rulers, to use them despitefully, and to stone them,"

Acts 14:12: "And they called Barnabas, Jupiter; and Paul, Mercurius, because he was the chief speaker."

Acts 14:13: "Then the priest of Jupiter, which was before their city, brought oxen and garlands unto the gates, and would have done sacrifice with the people."

Acts 15:5: "But there rose up certain of the sect of the Pharisees which believed, saying, That it was needful to circumcise them, and to command them to keep the law of Moses."

Acts 15:37: "And Barnabas determined to take with them John, whose surname was Mark."

Acts 15:39: "And the contention was so sharp between them, that they departed asunder one from the other: and so Barnabas took Mark, and sailed unto Cyprus;"

Acts 16:1: "Then came he to Derbe and Lystra: and, behold, a certain disciple was there, named Timotheus, the son of a certain woman, which was a Jewess, and believed; but his father was a Greek:"

Acts 16:2: "Which was well reported of by the brethren that were at Lystra and Iconium."

Acts 16:3: "Him would Paul have to go forth with him; and took and circumcised him because of the Jews which were in those quarters: for they knew all that his father was a Greek."

Acts 16:13: "And on the sabbath we went out of the city by a river side, where prayer was wont to be made; and we sat down, and spake unto the women which resorted thither."

Acts 16:15: "And when she was baptized, and her household, she besought us, saying, If ye have judged me to be faithful to the Lord, come into my house, and abide there. And she constrained us."

Acts 16:19: "And when her masters saw that the hope of their gains was gone, they caught Paul and Silas, and drew them into the marketplace unto the rulers,"

Acts 16:26: "And suddenly there was a great earthquake, so that the foundations of the prison were shaken: and immediately all the doors were opened, and every one's bands were loosed."

Acts 16:33: "And he took them the same hour of the night, and washed their stripes; and was baptized, he and all his, straightway."

Acts 16:35: "And when it was day, the magistrates sent the serjeants, saying, Let those men go."

Acts 17:1: "Now when they had passed through Amphipolis and Apollonia, they came to Thessalonica, where was a synagogue of the Jews:"

Acts 17:2: "And Paul, as his manner was, went in unto them, and three sabbath days reasoned with them out of the scriptures,"

Acts 17:13: "But when the Jews of Thessalonica had knowledge that the word of God was preached of Paul at Berea, they came thither also, and stirred up the people."

Acts 17:16: "Now while Paul waited for them at Athens, his spirit was stirred in him, when he saw the city wholly given to idolatry."

Acts 17:34: "Howbeit certain men clave unto him, and believed: among the which was Dionysius the Areopagite, and a woman named Damaris, and others with them."

Acts 18:3: "And because he was of the same craft, he abode with them, and wrought: for by their

occupation they were tentmakers."

Acts 18:5: "And when Silas and Timotheus were come from Macedonia, Paul was pressed in the spirit, and testified to the Jews that Jesus was Christ."

Acts 18:12: "And when Gallio was the deputy of Achaia, the Jews made insurrection with one accord against Paul, and brought him to the judgment seat,"

Acts 18:14: "And when Paul was now about to open his mouth, Gallio said unto the Jews, If it were a matter of wrong or wicked lewdness, O ye Jews, reason would that I should bear with you:"

Acts 18:25: "This man was instructed in the way of the Lord; and being fervent in the spirit, he spake and taught diligently the things of the Lord, knowing only the baptism of John."

Acts 18:27: "And when he was disposed to pass into Achaia, the brethren wrote, exhorting the disciples to receive him: who, when he was come, helped them much which had believed through grace:"

Acts 18:28: "For he mightily convinced the Jews, and that publickly, shewing by the scriptures that Jesus was Christ."

Acts 19:1: "And it came to pass, that, while Apollos was at Corinth, Paul having passed through the upper coasts came to Ephesus: and finding certain disciples,"

Acts 19:16: "And the man in whom the evil spirit was leaped on them, and overcame them, and prevailed against them, so that they fled out of that house naked and wounded."

Acts 19:17: "And this was known to all the Jews and Greeks also dwelling at Ephesus; and fear fell on them all, and the name of the Lord Jesus was magnified."

Acts 19:29: "And the whole city was filled with confusion: and having caught Gaius and Aristarchus, men of Macedonia, Paul's companions in travel, they rushed with one accord into the theatre."

Acts 19:32: "Some therefore cried one thing, and some another: for the assembly was confused: and the more part knew not wherefore they were come together."

Acts 19:34: "But when they knew that he was a Jew, all with one voice about the space of two hours cried out, Great is Diana of the Ephesians."

Acts 20:1: "And after the uproar was ceased, Paul called unto him the disciples, and embraced them, and departed for to go into Macedonia."

Acts 20:3: "And there abode three months. And when the Jews laid wait for him, as he was about to sail into Syria, he purposed to return through Macedonia."

Acts 20:9: "And there sat in a window a certain young man named Eutychus, being fallen into a deep sleep: and as Paul was long preaching, he sunk down with sleep, and fell down from the third loft, and was taken up dead."

Acts 20:11: "When he therefore was come up again, and had broken bread, and eaten, and talked a long while, even till break of day, so he departed."

Acts 20:20: "And how I kept back nothing that was profitable unto you, but have shewed you, and have taught you publickly, and from house to house,"

Acts 21:3: "Now when we had discovered Cyprus, we left it on the left hand, and sailed into Syria, and landed at Tyre: for there the ship was to unlade her burden."

Acts 21:8: "And the next day we that were of Paul's company departed, and came unto Caesarea: and we entered into the house of Philip the evangelist, which was one of the seven; and abode with him."

Acts 21:11: "And when he was come unto us, he took Paul's girdle, and bound his own hands and feet, and said, Thus saith the Holy Ghost, So shall the Jews at Jerusalem bind the man that owneth this girdle, and shall deliver him into the hands of the Gentiles."

Acts 21:30: "And all the city was moved, and the people ran together: and they took Paul, and drew him out of the temple: and forthwith the doors were shut."

Acts 21:31: "And as they went about to kill him, tidings came unto the chief captain of the band, that all Jerusalem was in an uproar."

Acts 21:33: "Then the chief captain came near, and took him, and commanded him to be bound with two chains; and demanded who he was, and what he had done."

Acts 21:35: "And when he came upon the stairs, so it was, that he was borne of the soldiers for the violence of the people."

Acts 21:37: "And as Paul was to be led into the castle, he said unto the chief captain, May I speak unto thee? Who said, Canst thou speak Greek?"

Acts 21:40: "And when he had given him licence, Paul stood on the stairs, and beckoned with the hand unto the people. And when there was made a great silence, he spake unto them in the Hebrew tongue, saying,"

Acts 22:3: "I am verily a man which am a Jew, born in Tarsus, a city in Cilicia, yet brought up in this city at the feet of Gamaliel, and taught according to the perfect manner of the law of the fathers, and was zealous toward God, as ye all are this day."

Acts 22:6: "And it came to pass, that, as I made my journey, and was come nigh unto Damascus about noon, suddenly there shone from heaven a great light round about me."

Acts 22:17: "And it came to pass, that, when I was come again to Jerusalem, even while I prayed in the temple, I was in a trance;"

Acts 22:20: "And when the blood of thy martyr Stephen was shed, I also was standing by, and consenting unto his death, and kept the raiment of them that slew him."

Acts 22:28: "And the chief captain answered, With a great sum obtained I this freedom. And Paul said, But I was free born."

Acts 22:29: "Then straightway they departed from him which should have examined him: and the chief captain also was afraid, after he knew that he was a Roman, and because he had bound him."

Acts 22:30: "On the morrow, because he would have known the certainty wherefore he was accused of the Jews, he loosed him from his bands, and commanded the chief priests and all their council to appear, and brought Paul down, and set him before them."

Acts 23:5: "Then said Paul, I wist not, brethren, that he was the high priest: for it is written, Thou shalt not speak evil of the ruler of thy people."

Acts 23:7: "And when he had so said, there arose a dissension between the Pharisees and the Sadducees: and the multitude was divided."

Acts 23:12: "And when it was day, certain of the Jews banded together, and bound themselves under a curse, saying that they would neither eat nor drink till they had killed Paul."

Acts 23:27: "This man was taken of the Jews, and should have been killed of them: then came I with an army, and rescued him, having understood that he was a Roman."

Acts 23:30: "And when it was told me how that the Jews laid wait for the man, I sent straightway to thee, and gave commandment to his accusers also to say before thee what they had against him. Farewell."

Acts 23:31: "Then the soldiers, as it was commanded them, took Paul, and brought him by night to Antipatris."

Acts 23:34: "And when the governor had read the letter, he asked of what province he was. And when he understood that he was of Cilicia;"

Acts 24:2: "And when he was called forth, Tertullus began to accuse him, saying, Seeing that by thee we enjoy great quietness, and that very worthy deeds are done unto this nation by thy providence,"

Acts 24:24: "And after certain days, when Felix came with his wife Drusilla, which was a Jewess, he sent for Paul, and heard him concerning the faith in Christ."

Acts 25:1: "Now when Festus was come into the province, after three days he ascended from Caesarea to Jerusalem."

Acts 25:7: "And when he was come, the Jews which came down from Jerusalem stood round about, and laid many and grievous complaints against Paul, which they could not prove."

Acts 25:15: "About whom, when I was at Jerusalem, the chief priests and the elders of the Jews

informed me, desiring to have judgment against him."

Acts 25:19: "But had certain questions against him of their own superstition, and of one Jesus, which was dead, whom Paul affirmed to be alive."

Acts 25:23: "And on the morrow, when Agrippa was come, and Bernice, with great pomp, and was entered into the place of hearing, with the chief captains, and principal men of the city, at Festus' commandment Paul was brought forth."

Acts 26:4: "My manner of life from my youth, which was at the first among mine own nation at Jerusalem, know all the Jews;"

Acts 26:19: "Whereupon, O king Agrippa, I was not disobedient unto the heavenly vision:"

Acts 26:26: "For the king knoweth of these things, before whom also I speak freely: for I am persuaded that none of these things are hidden from him; for this thing was not done in a corner."

Acts 27:1: "And when it was determined that we should sail into Italy, they delivered Paul and certain other prisoners unto one named Julius, a centurion of Augustus' band."

Acts 27:8: "And, hardly passing it, came unto a place which is called The fair havens; nigh whereunto was the city of Lasea."

Acts 27:9: "Now when much time was spent, and when sailing was now dangerous, because the fast was now already past, Paul admonished them,"

Acts 27:12: "And because the haven was not commodious to winter in, the more part advised to depart thence also, if by any means they might attain to Phenice, and there to winter; which is an haven of Crete, and lieth toward the south west and north west."

Acts 27:15: "And when the ship was caught, and could not bear up into the wind, we let her drive."

Acts 27:20: "And when neither sun nor stars in many days appeared, and no small tempest lay on us, all hope that we should be saved was then taken away."

Acts 27:25: "Wherefore, sirs, be of good cheer: for I believe God, that it shall be even as it was told me."

Acts 27:27: "But when the fourteenth night was come, as we were driven up and down in Adria, about midnight the shipmen deemed that they drew near to some country;"

Acts 27:33: "And while the day was coming on, Paul besought them all to take meat, saying, This day is the fourteenth day that ye have tarried and continued fasting, having taken nothing."

Acts 27:39: "And when it was day, they knew not the land: but they discovered a certain creek with a shore, into the which they were minded, if it were possible, to thrust in the ship."

Acts 27:41: "And falling into a place where two seas met, they ran the ship aground; and the forepart stuck fast, and remained unmoveable, but the hinder part was broken with the violence of the waves."

Acts 27:42: "And the soldiers' counsel was to kill the prisoners, lest any of them should swim out, and escape."

Acts 28:1: "And when they were escaped, then they knew that the island was called Melita."

Acts 28:6: "Howbeit they looked when he should have swollen, or fallen down dead suddenly: but after they had looked a great while, and saw no harm come to him, they changed their minds, and said that he was a god."

Acts 28:7: "In the same quarters were possessions of the chief man of the island, whose name was Publius; who received us, and lodged us three days courteously."

Acts 28:9: "So when this was done, others also, which had diseases in the island, came, and were healed:"

Acts 28:11: "And after three months we departed in a ship of Alexandria, which had wintered in the isle, whose sign was Castor and Pollux."

Acts 28:16: "And when we came to Rome, the centurion delivered the prisoners to the captain of the guard: but Paul was suffered to dwell by himself with a soldier that kept him."

Acts 28:17: "And it came to pass, that after three days Paul called the chief of the Jews together: and when they were come together, he said unto them, Men and brethren, though I have committed

nothing against the people, or customs of our fathers, yet was I delivered prisoner from Jerusalem into the hands of the Romans."

Acts 28:18: "Who, when they had examined me, would have let me go, because there was no cause of death in me."

Acts 28:19: "But when the Jews spake against it, I was constrained to appeal unto Caesar; not that I had ought to accuse my nation of."

Romans 1:3: "Concerning his Son Jesus Christ our Lord, which was made of the seed of David according to the flesh;"

Romans 1:13: "Now I would not have you ignorant, brethren, that oftentimes I purposed to come unto you, (but was let hitherto,) that I might have some fruit among you also, even as among other Gentiles."

Romans 1:21: "Because that, when they knew God, they glorified him not as God, neither were thankful; but became vain in their imaginations, and their foolish heart was darkened."

Romans 1:27: "And likewise also the men, leaving the natural use of the woman, burned in their lust one toward another; men with men working that which is unseemly, and receiving in themselves that recompence of their error which was meet."

Romans 4:3: "For what saith the scripture? Abraham believed God, and it was counted unto him for righteousness."

Romans 4:9: "Cometh this blessedness then upon the circumcision only, or upon the uncircumcision also? for we say that faith was reckoned to Abraham for righteousness."

Romans 4:10: "How was it then reckoned? when he was in circumcision, or in uncircumcision? Not in circumcision, but in uncircumcision."

Romans 4:13: "For the promise, that he should be the heir of the world, was not to Abraham, or to his seed, through the law, but through the righteousness of faith."

Romans 4:18: "Who against hope believed in hope, that he might become the father of many nations, according to that which was spoken, So shall thy seed be."

Romans 4:19: "And being not weak in faith, he considered not his own body now dead, when he was about an hundred years old, neither yet the deadness of Sarah's womb:"

Romans 4:20: "He staggered not at the promise of God through unbelief; but was strong in faith, giving glory to God;"

Romans 4:21: "And being fully persuaded that, what he had promised, he was able also to perform."

Romans 4:22: "And therefore it was imputed to him for righteousness."

Romans 4:23: "Now it was not written for his sake alone, that it was imputed to him;"

Romans 4:25: "Who was delivered for our offences, and was raised again for our justification."

Romans 5:13: "(For until the law sin was in the world: but sin is not imputed when there is no law."

Romans 5:14: "Nevertheless death reigned from Adam to Moses, even over them that had not sinned after the similitude of Adam's transgression, who is the figure of him that was to come."

Romans 5:16: "And not as it was by one that sinned, so is the gift: for the judgment was by one to condemnation, but the free gift is of many offences unto justification."

Romans 6:4: "Therefore we are buried with him by baptism into death: that like as Christ was raised up from the dead by the glory of the Father, even so we also should walk in newness of life."

Romans 6:17: "But God be thanked, that ye were the servants of sin, but ye have obeyed from the heart that form of doctrine which was delivered you."

Romans 7:8: "But sin, taking occasion by the commandment, wrought in me all manner of concupiscence. For without the law sin was dead."

Romans 7:9: "For I was alive without the law once: but when the commandment came, sin revived, and I died."

Romans 7:10: "And the commandment, which was ordained to life, I found to be unto death."

Romans 7:13: "Was then that which is good made death unto me? God forbid. But sin, that it might appear sin, working death in me by that which is good; that sin by the commandment might become

exceeding sinful."

Romans 8:3: "For what the law could not do, in that it was weak through the flesh, God sending his own Son in the likeness of sinful flesh, and for sin, condemned sin in the flesh:"

Romans 8:20: "For the creature was made subject to vanity, not willingly, but by reason of him who hath subjected the same in hope,"

Romans 9:12: "It was said unto her, The elder shall serve the younger."

Romans 9:25: "As he saith also in Osee, I will call them my people, which were not my people; and her beloved, which was not beloved."

Romans 9:26: "And it shall come to pass, that in the place where it was said unto them, Ye are not my people; there shall they be called the children of the living God."

Romans 10:20: "But Esaias is very bold, and saith, I was found of them that sought me not; I was made manifest unto them that asked not after me."

Romans 15:8: "Now I say that Jesus Christ was a minister of the circumcision for the truth of God, to confirm the promises made unto the fathers:"

Romans 15:20: "Yea, so have I strived to preach the gospel, not where Christ was named, lest I should build upon another man's foundation:"

Romans 15:21: "But as it is written, To whom he was not spoken of, they shall see: and they that have not heard shall understand."

Romans 16:25: "Now to him that is of power to stablish you according to my gospel, and the preaching of Jesus Christ, according to the revelation of the mystery, which was kept secret since the world began,"

1 Corinthians 1:6: "Even as the testimony of Christ was confirmed in you:"

1 Corinthians 1:13: "Is Christ divided? was Paul crucified for you? or were ye baptized in the name of Paul?"

1 Corinthians 2:3: "And I was with you in weakness, and in fear, and in much trembling."

1 Corinthians 2:4: "And my speech and my preaching was not with enticing words of man's wisdom, but in demonstration of the Spirit and of power:"

1 Corinthians 7:20: "Let every man abide in the same calling wherein he was called."

1 Corinthians 10:4: "And did all drink the same spiritual drink: for they drank of that spiritual Rock that followed them: and that Rock was Christ."

1 Corinthians 10:5: "But with many of them God was not well pleased: for they were overthrown in the wilderness."

1 Corinthians 11:9: "Neither was the man created for the woman; but the woman for the man."

1 Corinthians 11:23: "For I have received of the Lord that which also I delivered unto you, That the Lord Jesus the same night in which he was betrayed took bread:"

1 Corinthians 13:11: "When I was a child, I spake as a child, I understood as a child, I thought as a child: but when I became a man, I put away childish things."

1 Corinthians 15:4: "And that he was buried, and that he rose again the third day according to the scriptures:"

1 Corinthians 15:5: "And that he was seen of Cephas, then of the twelve:"

1 Corinthians 15:6: "After that, he was seen of above five hundred brethren at once; of whom the greater part remain unto this present, but some are fallen asleep."

1 Corinthians 15:7: "After that, he was seen of James; then of all the apostles."

1 Corinthians 15:8: "And last of all he was seen of me also, as of one born out of due time."

1 Corinthians 15:10: "But by the grace of God I am what I am: and his grace which was bestowed upon me was not in vain; but I laboured more abundantly than they all: yet not I, but the grace of God which was with me."

1 Corinthians 15:45: "And so it is written, The first man Adam was made a living soul; the last Adam was made a quickening spirit."

1 Corinthians 15:46: "Howbeit that was not first which is spiritual, but that which is natural; and

afterward that which is spiritual."

1 Corinthians 16:12: "As touching our brother Apollos, I greatly desired him to come unto you with the brethren: but his will was not at all to come at this time; but he will come when he shall have convenient time."

1 Corinthians 16:17: "I am glad of the coming of Stephanas and Fortunatus and Achaicus: for that which was lacking on your part they have supplied."

2 Corinthians 1:15: "And in this confidence I was minded to come unto you before, that ye might have a second benefit;"

2 Corinthians 1:17: "When I therefore was thus minded, did I use lightness? or the things that I purpose, do I purpose according to the flesh, that with me there should be yea yea, and nay nay?"

2 Corinthians 1:18: "But as God is true, our word toward you was not yea and nay."

2 Corinthians 1:19: "For the Son of God, Jesus Christ, who was preached among you by us, even by me and Silvanus and Timotheus, was not yea and nay, but in him was yea."

2 Corinthians 2:6: "Sufficient to such a man is this punishment, which was inflicted of many."

2 Corinthians 2:12: "Furthermore, when I came to Troas to preach Christ's gospel, and a door was opened unto me of the Lord,"

2 Corinthians 3:7: "But if the ministration of death, written and engraven in stones, was glorious, so that the children of Israel could not stedfastly behold the face of Moses for the glory of his countenance; which glory was to be done away:"

2 Corinthians 3:10: "For even that which was made glorious had no glory in this respect, by reason of the glory that excelleth."

2 Corinthians 3:11: "For if that which is done away was glorious, much more that which remaineth is glorious."

2 Corinthians 5:19: "To wit, that God was in Christ, reconciling the world unto himself, not imputing their trespasses unto them; and hath committed unto us the word of reconciliation."

2 Corinthians 7:7: "And not by his coming only, but by the consolation wherewith he was comforted in you, when he told us your earnest desire, your mourning, your fervent mind toward me; so that I rejoiced the more."

2 Corinthians 7:13: "Therefore we were comforted in your comfort: yea, and exceedingly the more joyed we for the joy of Titus, because his spirit was refreshed by you all."

2 Corinthians 8:9: "For ye know the grace of our Lord Jesus Christ, that, though he was rich, yet for your sakes he became poor, that ye through his poverty might be rich."

2 Corinthians 8:11: "Now therefore perform the doing of it; that as there was a readiness to will, so there may be a performance also out of that which ye have."

2 Corinthians 8:19: "And not that only, but who was also chosen of the churches to travel with us with this grace, which is administered by us to the glory of the same Lord, and declaration of your ready mind:"

2 Corinthians 9:2: "For I know the forwardness of your mind, for which I boast of you to them of Macedonia, that Achaia was ready a year ago; and your zeal hath provoked very many."

2 Corinthians 11:5: "For I suppose I was not a whit behind the very chiefest apostles."

2 Corinthians 11:9: "And when I was present with you, and wanted, I was chargeable to no man: for that which was lacking to me the brethren which came from Macedonia supplied: and in all things I have kept myself from being burdensome unto you, and so will I keep myself."

2 Corinthians 11:25: "Thrice was I beaten with rods, once was I stoned, thrice I suffered shipwreck, a night and a day I have been in the deep;"

2 Corinthians 11:33: "And through a window in a basket was I let down by the wall, and escaped his hands."

2 Corinthians 12:4: "How that he was caught up into paradise, and heard unspeakable words, which it is not lawful for a man to utter."

2 Corinthians 12:7: "And lest I should be exalted above measure through the abundance of the

revelations, there was given to me a thorn in the flesh, the messenger of Satan to buffet me, lest I should be exalted above measure."

2 Corinthians 12:13: "For what is it wherein ye were inferior to other churches, except it be that I myself was not burdensome to you? forgive me this wrong."

2 Corinthians 13:4: "For though he was crucified through weakness, yet he liveth by the power of God. For we also are weak in him, but we shall live with him by the power of God toward you."

Galatians 1:11: "But I certify you, brethren, that the gospel which was preached of me is not after man."

Galatians 1:12: "For I neither received it of man, neither was I taught it, but by the revelation of Jesus Christ."

Galatians 1:22: "And was unknown by face unto the churches of Judaea which were in Christ:"

Galatians 2:3: "But neither Titus, who was with me, being a Greek, was compelled to be circumcised:"

Galatians 2:7: "But contrariwise, when they saw that the gospel of the uncircumcision was committed unto me, as the gospel of the circumcision was unto Peter;"

Galatians 2:8: "(For he that wrought effectually in Peter to the apostleship of the circumcision, the same was mighty in me toward the Gentiles:)"

Galatians 2:9: "And when James, Cephas, and John, who seemed to be pillars, perceived the grace that was given unto me, they gave to me and Barnabas the right hands of fellowship; that we should go unto the heathen, and they unto the circumcision."

Galatians 2:10: "Only they would that we should remember the poor; the same which I also was forward to do."

Galatians 2:11: "But when Peter was come to Antioch, I withstood him to the face, because he was to be blamed."

Galatians 2:13: "And the other Jews dissembled likewise with him; insomuch that Barnabas also was carried away with their dissimulation."

Galatians 3:6: "Even as Abraham believed God, and it was accounted to him for righteousness."

Galatians 3:17: "And this I say, that the covenant, that was confirmed before of God in Christ, the law, which was four hundred and thirty years after, cannot disannul, that it should make the promise of none effect."

Galatians 3:19: "Wherefore then serveth the law? It was added because of transgressions, till the seed should come to whom the promise was made; and it was ordained by angels in the hand of a mediator."

Galatians 3:24: "Wherefore the law was our schoolmaster to bring us unto Christ, that we might be justified by faith."

Galatians 4:4: "But when the fulness of the time was come, God sent forth his Son, made of a woman, made under the law,"

Galatians 4:14: "And my temptation which was in my flesh ye despised not, nor rejected; but received me as an angel of God, even as Christ Jesus."

Galatians 4:23: "But he who was of the bondwoman was born after the flesh; but he of the freewoman was by promise."

Galatians 4:28: "Now we, brethren, as Isaac was, are the children of promise."

Galatians 4:29: "But as then he that was born after the flesh persecuted him that was born after the Spirit, even so it is now."

Ephesians 3:5: "Which in other ages was not made known unto the sons of men, as it is now revealed unto his holy apostles and prophets by the Spirit;"

Ephesians 3:7: "Whereof I was made a minister, according to the gift of the grace of God given unto me by the effectual working of his power."

Philippians 2:5: "Let this mind be in you, which was also in Christ Jesus:"

Philippians 2:7: "But made himself of no reputation, and took upon him the form of a servant, and



was made in the likeness of men:"

Philippians 2:26: "For he longed after you all, and was full of heaviness, because that ye had heard that he had been sick."

Philippians 2:27: "For indeed he was sick nigh unto death: but God had mercy on him; and not on him only, but on me also, lest I should have sorrow upon sorrow."

Philippians 2:30: "Because for the work of Christ he was nigh unto death, not regarding his life, to supply your lack of service toward me."

Colossians 1:23: "If ye continue in the faith grounded and settled, and be not moved away from the hope of the gospel, which ye have heard, and which was preached to every creature which is under heaven; whereof I Paul am made a minister;"

Colossians 2:14: "Blotting out the handwriting of ordinances that was against us, which was contrary to us, and took it out of the way, nailing it to his cross;"

1 Thessalonians 2:1: "For yourselves, brethren, know our entrance in unto you, that it was not in vain:"

1 Thessalonians 2:3: "For our exhortation was not of deceit, nor of uncleanness, nor in guile:"

2 Thessalonians 1:10: "When he shall come to be glorified in his saints, and to be admired in all them that believe (because our testimony among you was believed) in that day."

2 Thessalonians 2:5: "Remember ye not, that, when I was yet with you, I told you these things?"

1 Timothy 1:11: "According to the glorious gospel of the blessed God, which was committed to my trust."

1 Timothy 1:13: "Who was before a blasphemer, and a persecutor, and injurious: but I obtained mercy, because I did it ignorantly in unbelief."

1 Timothy 1:14: "And the grace of our Lord was exceeding abundant with faith and love which is in Christ Jesus."

1 Timothy 2:13: "For Adam was first formed, then Eve."

1 Timothy 2:14: "And Adam was not deceived, but the woman being deceived was in the transgression."

1 Timothy 3:16: "And without controversy great is the mystery of godliness: God was manifest in the flesh, justified in the Spirit, seen of angels, preached unto the Gentiles, believed on in the world, received up into glory."

1 Timothy 4:14: "Neglect not the gift that is in thee, which was given thee by prophecy, with the laying on of the hands of the presbytery."

2 Timothy 1:9: "Who hath saved us, and called us with an holy calling, not according to our works, but according to his own purpose and grace, which was given us in Christ Jesus before the world began,"

2 Timothy 1:14: "That good thing which was committed unto thee keep by the Holy Ghost which dwelleth in us."

2 Timothy 1:16: "The Lord give mercy unto the house of Onesiphorus; for he oft refreshed me, and was not ashamed of my chain:"

2 Timothy 1:17: "But, when he was in Rome, he sought me out very diligently, and found me."

2 Timothy 2:8: "Remember that Jesus Christ of the seed of David was raised from the dead according to my gospel:"

2 Timothy 3:9: "But they shall proceed no further: for their folly shall be manifest unto all men, as their's also was."

2 Timothy 4:17: "Notwithstanding the Lord stood with me, and strengthened me; that by me the preaching might be fully known, and that all the Gentiles might hear: and I was delivered out of the mouth of the lion."

Philemon 1:11: "Which in time past was to thee unprofitable, but now profitable to thee and to me:"

Hebrews 2:2: "For if the word spoken by angels was stedfast, and every transgression and disobedience received a just recompence of reward;"

Hebrews 2:3: "How shall we escape, if we neglect so great salvation; which at the first began to be spoken by the Lord, and was confirmed unto us by them that heard him;"

Hebrews 2:9: "But we see Jesus, who was made a little lower than the angels for the suffering of death, crowned with glory and honour; that he by the grace of God should taste death for every man."

Hebrews 3:2: "Who was faithful to him that appointed him, as also Moses was faithful in all his house."

Hebrews 3:3: "For this man was counted worthy of more glory than Moses, inasmuch as he who hath builded the house hath more honour than the house."

Hebrews 3:5: "And Moses verily was faithful in all his house, as a servant, for a testimony of those things which were to be spoken after;"

Hebrews 3:10: "Wherefore I was grieved with that generation, and said, They do alway err in their heart; and they have not known my ways."

Hebrews 3:17: "But with whom was he grieved forty years? was it not with them that had sinned, whose carcasses fell in the wilderness?"

Hebrews 4:2: "For unto us was the gospel preached, as well as unto them: but the word preached did not profit them, not being mixed with faith in them that heard it."

Hebrews 4:6: "Seeing therefore it remaineth that some must enter therein, and they to whom it was first preached entered not in because of unbelief:"

Hebrews 4:15: "For we have not an high priest which cannot be touched with the feeling of our infirmities; but was in all points tempted like as we are, yet without sin."

Hebrews 5:4: "And no man taketh this honour unto himself, but he that is called of God, as was Aaron."

Hebrews 5:7: "Who in the days of his flesh, when he had offered up prayers and supplications with strong crying and tears unto him that was able to save him from death, and was heard in that he feared;"

Hebrews 6:18: "That by two immutable things, in which it was impossible for God to lie, we might have a strong consolation, who have fled for refuge to lay hold upon the hope set before us:"

Hebrews 7:4: "Now consider how great this man was, unto whom even the patriarch Abraham gave the tenth of the spoils."

Hebrews 7:10: "For he was yet in the loins of his father, when Melchisedec met him."

Hebrews 7:11: "If therefore perfection were by the Levitical priesthood, (for under it the people received the law,) what further need was there that another priest should rise after the order of Melchisedec, and not be called after the order of Aaron?"

Hebrews 7:20: "And inasmuch as not without an oath he was made priest:"

Hebrews 7:22: "By so much was Jesus made a surety of a better testament."

Hebrews 7:28: "For the law maketh men high priests which have infirmity; but the word of the oath, which was since the law, maketh the Son, who is consecrated for evermore."

Hebrews 8:5: "Who serve unto the example and shadow of heavenly things, as Moses was admonished of God when he was about to make the tabernacle: for, See, saith he, that thou make all things according to the pattern shewed to thee in the mount."

Hebrews 8:6: "But now hath he obtained a more excellent ministry, by how much also he is the mediator of a better covenant, which was established upon better promises."

Hebrews 9:2: "For there was a tabernacle made; the first, wherein was the candlestick, and the table, and the shewbread; which is called the sanctuary."

Hebrews 9:4: "Which had the golden censer, and the ark of the covenant overlaid round about with gold, wherein was the golden pot that had manna, and Aaron's rod that budded, and the tables of the covenant;"

Hebrews 9:8: "The Holy Ghost this signifying, that the way into the holiest of all was not yet made manifest, while as the first tabernacle was yet standing:"

Hebrews 9:9: "Which was a figure for the time then present, in which were offered both gifts and sacrifices, that could not make him that did the service perfect, as pertaining to the conscience;"

Hebrews 9:18: "Whereupon neither the first testament was dedicated without blood."

Hebrews 9:23: "It was therefore necessary that the patterns of things in the heavens should be purified with these; but the heavenly things themselves with better sacrifices than these."

Hebrews 9:28: "So Christ was once offered to bear the sins of many; and unto them that look for him shall he appear the second time without sin unto salvation."

Hebrews 10:29: "Of how much sorer punishment, suppose ye, shall he be thought worthy, who hath trodden under foot the Son of God, and hath counted the blood of the covenant, wherewith he was sanctified, an unholy thing, and hath done despite unto the Spirit of grace?"

Hebrews 11:4: "By faith Abel offered unto God a more excellent sacrifice than Cain, by which he obtained witness that he was righteous, God testifying of his gifts: and by it he being dead yet speaketh."

Hebrews 11:5: "By faith Enoch was translated that he should not see death; and was not found, because God had translated him: for before his translation he had this testimony, that he pleased God."

Hebrews 11:8: "By faith Abraham, when he was called to go out into a place which he should after receive for an inheritance, obeyed; and he went out, not knowing whither he went."

Hebrews 11:11: "Through faith also Sara herself received strength to conceive seed, and was delivered of a child when she was past age, because she judged him faithful who had promised."

Hebrews 11:17: "By faith Abraham, when he was tried, offered up Isaac: and he that had received the promises offered up his only begotten son,"

Hebrews 11:18: "Of whom it was said, That in Isaac shall thy seed be called:"

Hebrews 11:19: "Accounting that God was able to raise him up, even from the dead; from whence also he received him in a figure."

Hebrews 11:21: "By faith Jacob, when he was a dying, blessed both the sons of Joseph; and worshipped, leaning upon the top of his staff."

Hebrews 11:23: "By faith Moses, when he was born, was hid three months of his parents, because they saw he was a proper child; and they were not afraid of the king's commandment."

Hebrews 11:24: "By faith Moses, when he was come to years, refused to be called the son of Pharaoh's daughter;"

Hebrews 11:38: "(Of whom the world was not worthy:) they wandered in deserts, and in mountains, and in dens and caves of the earth."

Hebrews 12:2: "Looking unto Jesus the author and finisher of our faith; who for the joy that was set before him endured the cross, despising the shame, and is set down at the right hand of the throne of God."

Hebrews 12:17: "For ye know how that afterward, when he would have inherited the blessing, he was rejected: for he found no place of repentance, though he sought it carefully with tears."

Hebrews 12:20: "(For they could not endure that which was commanded, And if so much as a beast touch the mountain, it shall be stoned, or thrust through with a dart:"

Hebrews 12:21: "And so terrible was the sight, that Moses said, I exceedingly fear and quake:)"

James 1:24: "For he beholdeth himself, and goeth his way, and straightway forgetteth what manner of man he was."

James 2:21: "Was not Abraham our father justified by works, when he had offered Isaac his son upon the altar?"

James 2:22: "Seest thou how faith wrought with his works, and by works was faith made perfect?"

James 2:23: "And the scripture was fulfilled which saith, Abraham believed God, and it was imputed unto him for righteousness: and he was called the Friend of God."

James 2:25: "Likewise also was not Rahab the harlot justified by works, when she had received the messengers, and had sent them out another way?"

James 5:17: "Elias was a man subject to like passions as we are, and he prayed earnestly that it might not rain: and it rained not on the earth by the space of three years and six months."

1 Peter 1:11: "Searching what, or what manner of time the Spirit of Christ which was in them did signify, when it testified beforehand the sufferings of Christ, and the glory that should follow."

1 Peter 1:12: "Unto whom it was revealed, that not unto themselves, but unto us they did minister the things, which are now reported unto you by them that have preached the gospel unto you with the Holy Ghost sent down from heaven; which things the angels desire to look into."

1 Peter 1:20: "Who verily was foreordained before the foundation of the world, but was manifest in these last times for you,"

1 Peter 2:22: "Who did no sin, neither was guile found in his mouth:"

1 Peter 2:23: "Who, when he was reviled, reviled not again; when he suffered, he threatened not; but committed himself to him that judgeth righteously:"

1 Peter 3:20: "Which sometime were disobedient, when once the longsuffering of God waited in the days of Noah, while the ark was a preparing, wherein few, that is, eight souls were saved by water."

1 Peter 4:6: "For for this cause was the gospel preached also to them that are dead, that they might be judged according to men in the flesh, but live according to God in the spirit."

2 Peter 1:9: "But he that lacketh these things is blind, and cannot see afar off, and hath forgotten that he was purged from his old sins."

2 Peter 2:16: "But was rebuked for his iniquity: the dumb ass speaking with man's voice forbad the madness of the prophet."

2 Peter 2:22: "But it is happened unto them according to the true proverb, The dog is turned to his own vomit again; and the sow that was washed to her wallowing in the mire."

2 Peter 3:6: "Whereby the world that then was, being overflowed with water, perished:"

1 John 1:1: "That which was from the beginning, which we have heard, which we have seen with our eyes, which we have looked upon, and our hands have handled, of the Word of life;"

1 John 1:2: "(For the life was manifested, and we have seen it, and bear witness, and shew unto you that eternal life, which was with the Father, and was manifested unto us;)"

1 John 3:5: "And ye know that he was manifested to take away our sins; and in him is no sin."

1 John 3:8: "He that committeth sin is of the devil; for the devil sinneth from the beginning. For this purpose the Son of God was manifested, that he might destroy the works of the devil."

1 John 3:12: "Not as Cain, who was of that wicked one, and slew his brother. And wherefore slew he him? Because his own works were evil, and his brother's righteous."

1 John 4:9: "In this was manifested the love of God toward us, because that God sent his only begotten Son into the world, that we might live through him."

Jude 1:3: "Beloved, when I gave all diligence to write unto you of the common salvation, it was needful for me to write unto you, and exhort you that ye should earnestly contend for the faith which was once delivered unto the saints."

Revelation 1:4: "John to the seven churches which are in Asia: Grace be unto you, and peace, from him which is, and which was, and which is to come; and from the seven Spirits which are before his throne;"

Revelation 1:8: "I am Alpha and Omega, the beginning and the ending, saith the Lord, which is, and which was, and which is to come, the Almighty."

Revelation 1:9: "I John, who also am your brother, and companion in tribulation, and in the kingdom and patience of Jesus Christ, was in the isle that is called Patmos, for the word of God, and for the testimony of Jesus Christ."

Revelation 1:10: "I was in the Spirit on the Lord's day, and heard behind me a great voice, as of a trumpet,"

Revelation 1:16: "And he had in his right hand seven stars: and out of his mouth went a sharp twoedged sword: and his countenance was as the sun shineth in his strength."

Revelation 1:18: "I am he that liveth, and was dead; and, behold, I am alive for evermore, Amen;

and have the keys of hell and of death."

Revelation 2:8: "And unto the angel of the church in Smyrna write; These things saith the first and the last, which was dead, and is alive;"

Revelation 2:13: "I know thy works, and where thou dwellest, even where Satan's seat is: and thou holdest fast my name, and hast not denied my faith, even in those days wherein Antipas was my faithful martyr, who was slain among you, where Satan dwelleth."

Revelation 4:1: "After this I looked, and, behold, a door was opened in heaven: and the first voice which I heard was as it were of a trumpet talking with me; which said, Come up hither, and I will shew thee things which must be hereafter."

Revelation 4:2: "And immediately I was in the spirit: and, behold, a throne was set in heaven, and one sat on the throne."

Revelation 4:3: "And he that sat was to look upon like a jasper and a sardine stone: and there was a rainbow round about the throne, in sight like unto an emerald."

Revelation 4:6: "And before the throne there was a sea of glass like unto crystal: and in the midst of the throne, and round about the throne, were four beasts full of eyes before and behind."

Revelation 4:7: "And the first beast was like a lion, and the second beast like a calf, and the third beast had a face as a man, and the fourth beast was like a flying eagle."

Revelation 4:8: "And the four beasts had each of them six wings about him; and they were full of eyes within: and they rest not day and night, saying, Holy, holy, holy, LORD God Almighty, which was, and is, and is to come."

Revelation 5:3: "And no man in heaven, nor in earth, neither under the earth, was able to open the book, neither to look thereon."

Revelation 5:4: "And I wept much, because no man was found worthy to open and to read the book, neither to look thereon."

Revelation 5:11: "And I beheld, and I heard the voice of many angels round about the throne and the beasts and the elders: and the number of them was ten thousand times ten thousand, and thousands of thousands;"

Revelation 5:12: "Saying with a loud voice, Worthy is the Lamb that was slain to receive power, and riches, and wisdom, and strength, and honour, and glory, and blessing."

Revelation 6:2: "And I saw, and behold a white horse: and he that sat on him had a bow; and a crown was given unto him: and he went forth conquering, and to conquer."

Revelation 6:4: "And there went out another horse that was red: and power was given to him that sat thereon to take peace from the earth, and that they should kill one another: and there was given unto him a great sword."

Revelation 6:8: "And I looked, and behold a pale horse: and his name that sat on him was Death, and Hell followed with him. And power was given unto them over the fourth part of the earth, to kill with sword, and with hunger, and with death, and with the beasts of the earth."

Revelation 6:11: "And white robes were given unto every one of them; and it was said unto them, that they should rest yet for a little season, until their fellowservants also and their brethren, that should be killed as they were, should be fulfilled."

Revelation 6:12: "And I beheld when he had opened the sixth seal, and, lo, there was a great earthquake; and the sun became black as sackcloth of hair, and the moon became as blood;"

Revelation 7:2: "And I saw another angel ascending from the east, having the seal of the living God: and he cried with a loud voice to the four angels, to whom it was given to hurt the earth and the sea,"

Revelation 8:1: "And when he had opened the seventh seal, there was silence in heaven about the space of half an hour."

Revelation 8:3: "And another angel came and stood at the altar, having a golden censer; and there was given unto him much incense, that he should offer it with the prayers of all saints upon the golden altar which was before the throne."

Revelation 8:7: "The first angel sounded, and there followed hail and fire mingled with blood, and they were cast upon the earth: and the third part of trees was burnt up, and all green grass was burnt up."

Revelation 8:8: "And the second angel sounded, and as it were a great mountain burning with fire was cast into the sea: and the third part of the sea became blood;"

Revelation 8:12: "And the fourth angel sounded, and the third part of the sun was smitten, and the third part of the moon, and the third part of the stars; so as the third part of them was darkened, and the day shone not for a third part of it, and the night likewise."

Revelation 9:1: "And the fifth angel sounded, and I saw a star fall from heaven unto the earth: and to him was given the key of the bottomless pit."

Revelation 9:3: "And there came out of the smoke locusts upon the earth: and unto them was given power, as the scorpions of the earth have power."

Revelation 9:4: "And it was commanded them that they should not hurt the grass of the earth, neither any green thing, neither any tree; but only those men which have not the seal of God in their foreheads."

Revelation 9:5: "And to them it was given that they should not kill them, but that they should be tormented five months: and their torment was as the torment of a scorpion, when he striketh a man."

Revelation 9:9: "And they had breastplates, as it were breastplates of iron; and the sound of their wings was as the sound of chariots of many horses running to battle."

Revelation 9:10: "And they had tails like unto scorpions, and there were stings in their tails: and their power was to hurt men five months."

Revelation 9:18: "By these three was the third part of men killed, by the fire, and by the smoke, and by the brimstone, which issued out of their mouths."

Revelation 10:1: "And I saw another mighty angel come down from heaven, clothed with a cloud: and a rainbow was upon his head, and his face was as it were the sun, and his feet as pillars of fire:"

Revelation 10:4: "And when the seven thunders had uttered their voices, I was about to write: and I heard a voice from heaven saying unto me, Seal up those things which the seven thunders uttered, and write them not."

Revelation 10:10: "And I took the little book out of the angel's hand, and ate it up; and it was in my mouth sweet as honey: and as soon as I had eaten it, my belly was bitter."

Revelation 11:1: "And there was given me a reed like unto a rod: and the angel stood, saying, Rise, and measure the temple of God, and the altar, and them that worship therein."

Revelation 11:8: "And their dead bodies shall lie in the street of the great city, which spiritually is called Sodom and Egypt, where also our Lord was crucified."

Revelation 11:13: "And the same hour was there a great earthquake, and the tenth part of the city fell, and in the earthquake were slain of men seven thousand: and the remnant were affrighted, and gave glory to the God of heaven."

Revelation 11:19: "And the temple of God was opened in heaven, and there was seen in his temple the ark of his testament: and there were lightnings, and voices, and thunderings, and an earthquake, and great hail."

Revelation 12:4: "And his tail drew the third part of the stars of heaven, and did cast them to the earth: and the dragon stood before the woman which was ready to be delivered, for to devour her child as soon as it was born."

Revelation 12:5: "And she brought forth a man child, who was to rule all nations with a rod of iron: and her child was caught up unto God, and to his throne."

Revelation 12:7: "And there was war in heaven: Michael and his angels fought against the dragon; and the dragon fought and his angels,"

Revelation 12:8: "And prevailed not; neither was their place found any more in heaven."

Revelation 12:9: "And the great dragon was cast out, that old serpent, called the Devil, and Satan, which deceiveth the whole world: he was cast out into the earth, and his angels were cast out with

him."

Revelation 12:13: "And when the dragon saw that he was cast unto the earth, he persecuted the woman which brought forth the man child."

Revelation 12:17: "And the dragon was wroth with the woman, and went to make war with the remnant of her seed, which keep the commandments of God, and have the testimony of Jesus Christ."

Revelation 13:2: "And the beast which I saw was like unto a leopard, and his feet were as the feet of a bear, and his mouth as the mouth of a lion: and the dragon gave him his power, and his seat, and great authority."

Revelation 13:3: "And I saw one of his heads as it were wounded to death; and his deadly wound was healed: and all the world wondered after the beast."

Revelation 13:5: "And there was given unto him a mouth speaking great things and blasphemies; and power was given unto him to continue forty and two months."

Revelation 13:7: "And it was given unto him to make war with the saints, and to overcome them: and power was given him over all kindreds, and tongues, and nations."

Revelation 13:12: "And he exerciseth all the power of the first beast before him, and causeth the earth and them which dwell therein to worship the first beast, whose deadly wound was healed."

Revelation 14:5: "And in their mouth was found no guile: for they are without fault before the throne of God."

Revelation 14:16: "And he that sat on the cloud thrust in his sickle on the earth; and the earth was reaped."

Revelation 14:20: "And the winepress was trodden without the city, and blood came out of the winepress, even unto the horse bridles, by the space of a thousand and six hundred furlongs."

Revelation 15:5: "And after that I looked, and, behold, the temple of the tabernacle of the testimony in heaven was opened:"

Revelation 15:8: "And the temple was filled with smoke from the glory of God, and from his power; and no man was able to enter into the temple, till the seven plagues of the seven angels were fulfilled."

Revelation 16:8: "And the fourth angel poured out his vial upon the sun; and power was given unto him to scorch men with fire."

Revelation 16:10: "And the fifth angel poured out his vial upon the seat of the beast; and his kingdom was full of darkness; and they gnawed their tongues for pain,"

Revelation 16:12: "And the sixth angel poured out his vial upon the great river Euphrates; and the water thereof was dried up, that the way of the kings of the east might be prepared."

Revelation 16:18: "And there were voices, and thunders, and lightnings; and there was a great earthquake, such as was not since men were upon the earth, so mighty an earthquake, and so great."

Revelation 16:19: "And the great city was divided into three parts, and the cities of the nations fell: and great Babylon came in remembrance before God, to give unto her the cup of the wine of the fierceness of his wrath."

Revelation 16:21: "And there fell upon men a great hail out of heaven, every stone about the weight of a talent: and men blasphemed God because of the plague of the hail; for the plague thereof was exceeding great."

Revelation 17:4: "And the woman was arrayed in purple and scarlet colour, and decked with gold and precious stones and pearls, having a golden cup in her hand full of abominations and filthiness of her fornication:"

Revelation 17:5: "And upon her forehead was a name written, MYSTERY, BABYLON THE GREAT, THE MOTHER OF HARLOTS AND ABOMINATIONS OF THE EARTH."

Revelation 17:8: "The beast that thou sawest was, and is not; and shall ascend out of the bottomless pit, and go into perdition: and they that dwell on the earth shall wonder, whose names were not written in the book of life from the foundation of the world, when they behold the beast that was,

and is not, and yet is."

Revelation 17:11: "And the beast that was, and is not, even he is the eighth, and is of the seven, and goeth into perdition."

Revelation 18:1: "And after these things I saw another angel come down from heaven, having great power; and the earth was lightened with his glory."

Revelation 18:16: "And saying, Alas, alas that great city, that was clothed in fine linen, and purple, and scarlet, and decked with gold, and precious stones, and pearls!"

Revelation 18:24: "And in her was found the blood of prophets, and of saints, and of all that were slain upon the earth."

Revelation 19:8: "And to her was granted that she should be arrayed in fine linen, clean and white: for the fine linen is the righteousness of saints."

Revelation 19:11: "And I saw heaven opened, and behold a white horse; and he that sat upon him was called Faithful and True, and in righteousness he doth judge and make war."

Revelation 19:13: "And he was clothed with a vesture dipped in blood: and his name is called The Word of God."

Revelation 19:20: "And the beast was taken, and with him the false prophet that wrought miracles before him, with which he deceived them that had received the mark of the beast, and them that worshipped his image. These both were cast alive into a lake of fire burning with brimstone."

Revelation 20:4: "And I saw thrones, and they sat upon them, and judgment was given unto them: and I saw the souls of them that were beheaded for the witness of Jesus, and for the word of God, and which had not worshipped the beast, neither his image, neither had received his mark upon their foreheads, or in their hands; and they lived and reigned with Christ a thousand years."

Revelation 20:10: "And the devil that deceived them was cast into the lake of fire and brimstone, where the beast and the false prophet are, and shall be tormented day and night for ever and ever."

Revelation 20:11: "And I saw a great white throne, and him that sat on it, from whose face the earth and the heaven fled away; and there was found no place for them."

Revelation 20:12: "And I saw the dead, small and great, stand before God; and the books were opened: and another book was opened, which is the book of life: and the dead were judged out of those things which were written in the books, according to their works."

Revelation 20:15: "And whosoever was not found written in the book of life was cast into the lake of fire."

Revelation 21:1: "And I saw a new heaven and a new earth: for the first heaven and the first earth were passed away; and there was no more sea."

Revelation 21:11: "Having the glory of God: and her light was like unto a stone most precious, even like a jasper stone, clear as crystal;"

Revelation 21:18: "And the building of the wall of it was of jasper: and the city was pure gold, like unto clear glass."

Revelation 21:19: "And the foundations of the wall of the city were garnished with all manner of precious stones. The first foundation was jasper; the second, sapphire; the third, a chalcedony; the fourth, an emerald;"

Revelation 21:21: "And the twelve gates were twelve pearls: every several gate was of one pearl: and the street of the city was pure gold, as it were transparent glass."

Revelation 22:2: "In the midst of the street of it, and on either side of the river, was there the tree of life, which bare twelve manner of fruits, and yielded her fruit every month: and the leaves of the tree were for the healing of the nations."

## **WASH**

Occurrences: 83

Genesis 18:4: "Let a little water, I pray you, be fetched, and wash your feet, and rest yourselves under the tree:"



Genesis 19:2: "And he said, Behold now, my lords, turn in, I pray you, into your servant's house, and tarry all night, and wash your feet, and ye shall rise up early, and go on your ways. And they said, Nay; but we will abide in the street all night."

Genesis 24:32: "And the man came into the house: and he ungirded his camels, and gave straw and provender for the camels, and water to wash his feet, and the men's feet that were with him."

Exodus 2:5: "And the daughter of Pharaoh came down to wash herself at the river; and her maidens walked along by the river's side; and when she saw the ark among the flags, she sent her maid to fetch it."

Exodus 19:10: "And the LORD said unto Moses, Go unto the people, and sanctify them to day and to morrow, and let them wash their clothes,"

Exodus 29:4: "And Aaron and his sons thou shalt bring unto the door of the tabernacle of the congregation, and shalt wash them with water."

Exodus 29:17: "And thou shalt cut the ram in pieces, and wash the inwards of him, and his legs, and put them unto his pieces, and unto his head."

Exodus 30:18: "Thou shalt also make a laver of brass, and his foot also of brass, to wash withal: and thou shalt put it between the tabernacle of the congregation and the altar, and thou shalt put water therein."

Exodus 30:19: "For Aaron and his sons shall wash their hands and their feet thereat:"

Exodus 30:20: "When they go into the tabernacle of the congregation, they shall wash with water, that they die not; or when they come near to the altar to minister, to burn offering made by fire unto the LORD:"

Exodus 30:21: "So they shall wash their hands and their feet, that they die not: and it shall be a statute for ever to them, even to him and to his seed throughout their generations."

Exodus 40:12: "And thou shalt bring Aaron and his sons unto the door of the tabernacle of the congregation, and wash them with water."

Exodus 40:30: "And he set the laver between the tent of the congregation and the altar, and put water there, to wash withal."

Leviticus 1:9: "But his inwards and his legs shall he wash in water: and the priest shall burn all on the altar, to be a burnt sacrifice, an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD."

Leviticus 1:13: "But he shall wash the inwards and the legs with water: and the priest shall bring it all, and burn it upon the altar: it is a burnt sacrifice, an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD."

Leviticus 6:27: "Whatsoever shall touch the flesh thereof shall be holy: and when there is sprinkled of the blood thereof upon any garment, thou shalt wash that whereon it was sprinkled in the holy place."

Leviticus 9:14: "And he did wash the inwards and the legs, and burnt them upon the burnt offering on the altar."

Leviticus 11:25: "And whosoever beareth ought of the carcase of them shall wash his clothes, and be unclean until the even."

Leviticus 11:28: "And he that beareth the carcase of them shall wash his clothes, and be unclean until the even: they are unclean unto you."

Leviticus 11:40: "And he that eateth of the carcase of it shall wash his clothes, and be unclean until the even: he also that beareth the carcase of it shall wash his clothes, and be unclean until the even."

Leviticus 13:6: "And the priest shall look on him again the seventh day: and, behold, if the plague be somewhat dark, and the plague spread not in the skin, the priest shall pronounce him clean: it is but a scab: and he shall wash his clothes, and be clean."

Leviticus 13:34: "And in the seventh day the priest shall look on the scall: and, behold, if the scall be not spread in the skin, nor be in sight deeper than the skin; then the priest shall pronounce him clean: and he shall wash his clothes, and be clean."

Leviticus 13:54: "Then the priest shall command that they wash the thing wherein the plague is, and

he shall shut it up seven days more:"

Leviticus 13:58: "And the garment, either warp, or woof, or whatsoever thing of skin it be, which thou shalt wash, if the plague be departed from them, then it shall be washed the second time, and shall be clean."

Leviticus 14:8: "And he that is to be cleansed shall wash his clothes, and shave off all his hair, and wash himself in water, that he may be clean: and after that he shall come into the camp, and shall tarry abroad out of his tent seven days."

Leviticus 14:9: "But it shall be on the seventh day, that he shall shave all his hair off his head and his beard and his eyebrows, even all his hair he shall shave off: and he shall wash his clothes, also he shall wash his flesh in water, and he shall be clean."

Leviticus 14:47: "And he that lieth in the house shall wash his clothes; and he that eateth in the house shall wash his clothes."

Leviticus 15:5: "And whosoever toucheth his bed shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:6: "And he that sitteth on any thing whereon he sat that hath the issue shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:7: "And he that toucheth the flesh of him that hath the issue shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:8: "And if he that hath the issue spit upon him that is clean; then he shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:10: "And whosoever toucheth any thing that was under him shall be unclean until the even: and he that beareth any of those things shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:11: "And whomsoever he toucheth that hath the issue, and hath not rinsed his hands in water, he shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:13: "And when he that hath an issue is cleansed of his issue; then he shall number to himself seven days for his cleansing, and wash his clothes, and bathe his flesh in running water, and shall be clean."

Leviticus 15:16: "And if any man's seed of copulation go out from him, then he shall wash all his flesh in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:21: "And whosoever toucheth her bed shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:22: "And whosoever toucheth any thing that she sat upon shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:27: "And whosoever toucheth those things shall be unclean, and shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 16:4: "He shall put on the holy linen coat, and he shall have the linen breeches upon his flesh, and shall be girded with a linen girdle, and with the linen mitre shall he be attired: these are holy garments; therefore shall he wash his flesh in water, and so put them on."

Leviticus 16:24: "And he shall wash his flesh with water in the holy place, and put on his garments, and come forth, and offer his burnt offering, and the burnt offering of the people, and make an atonement for himself, and for the people."

Leviticus 16:26: "And he that let go the goat for the scapegoat shall wash his clothes, and bathe his flesh in water, and afterward come into the camp."

Leviticus 16:28: "And he that burneth them shall wash his clothes, and bathe his flesh in water, and afterward he shall come into the camp."

Leviticus 17:15: "And every soul that eateth that which died of itself, or that which was torn with beasts, whether it be one of your own country, or a stranger, he shall both wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even: then shall he be clean."

Leviticus 17:16: "But if he wash them not, nor bathe his flesh; then he shall bear his iniquity."

Leviticus 22:6: "The soul which hath touched any such shall be unclean until even, and shall not eat of the holy things, unless he wash his flesh with water."

Numbers 8:7: "And thus shalt thou do unto them, to cleanse them: Sprinkle water of purifying upon them, and let them shave all their flesh, and let them wash their clothes, and so make themselves clean."

Numbers 19:7: "Then the priest shall wash his clothes, and he shall bathe his flesh in water, and afterward he shall come into the camp, and the priest shall be unclean until the even."

Numbers 19:8: "And he that burneth her shall wash his clothes in water, and bathe his flesh in water, and shall be unclean until the even."

Numbers 19:10: "And he that gathereth the ashes of the heifer shall wash his clothes, and be unclean until the even: and it shall be unto the children of Israel, and unto the stranger that sojourneth among them, for a statute for ever."

Numbers 19:19: "And the clean person shall sprinkle upon the unclean on the third day, and on the seventh day: and on the seventh day he shall purify himself, and wash his clothes, and bathe himself in water, and shall be clean at even."

Numbers 19:21: "And it shall be a perpetual statute unto them, that he that sprinkleth the water of separation shall wash his clothes; and he that toucheth the water of separation shall be unclean until even."

Numbers 31:24: "And ye shall wash your clothes on the seventh day, and ye shall be clean, and afterward ye shall come into the camp."

Deuteronomy 21:6: "And all the elders of that city, that are next unto the slain man, shall wash their hands over the heifer that is beheaded in the valley:"

Deuteronomy 23:11: "But it shall be, when evening cometh on, he shall wash himself with water: and when the sun is down, he shall come into the camp again."

Ruth 3:3: "Wash thyself therefore, and anoint thee, and put thy raiment upon thee, and get thee down to the floor: but make not thyself known unto the man, until he shall have done eating and drinking."

1 Samuel 25:41: "And she arose, and bowed herself on her face to the earth, and said, Behold, let thine handmaid be a servant to wash the feet of the servants of my lord."

2 Samuel 11:8: "And David said to Uriah, Go down to thy house, and wash thy feet. And Uriah departed out of the king's house, and there followed him a mess of meat from the king."

2 Kings 5:10: "And Elisha sent a messenger unto him, saying, Go and wash in Jordan seven times, and thy flesh shall come again to thee, and thou shalt be clean."

2 Kings 5:12: "Are not Abana and Pharpar, rivers of Damascus, better than all the waters of Israel? may I not wash in them, and be clean? So he turned and went away in a rage."

2 Kings 5:13: "And his servants came near, and spake unto him, and said, My father, if the prophet had bid thee do some great thing, wouldest thou not have done it? how much rather then, when he saith to thee, Wash, and be clean?"

2 Chronicles 4:6: "He made also ten lavers, and put five on the right hand, and five on the left, to wash in them: such things as they offered for the burnt offering they washed in them; but the sea was for the priests to wash in."

Job 9:30: "If I wash myself with snow water, and make my hands never so clean;"

Psalms 26:6: "I will wash mine hands in innocency: so will I compass thine altar, O LORD:"

Psalms 51:2: "Wash me thoroughly from mine iniquity, and cleanse me from my sin."

Psalms 51:7: "Purge me with hyssop, and I shall be clean: wash me, and I shall be whiter than snow."

Psalms 58:10: "The righteous shall rejoice when he seeth the vengeance: he shall wash his feet in the blood of the wicked."

Isaiah 1:16: "Wash you, make you clean; put away the evil of your doings from before mine eyes; cease to do evil;"

Jeremiah 2:22: "For though thou wash thee with nitre, and take thee much soap, yet thine iniquity is marked before me, saith the Lord GOD."

Jeremiah 4:14: "O Jerusalem, wash thine heart from wickedness, that thou mayest be saved. How long shall thy vain thoughts lodge within thee?"

Ezekiel 23:40: "And furthermore, that ye have sent for men to come from far, unto whom a messenger was sent; and, lo, they came: for whom thou didst wash thyself, paintedst thy eyes, and deckedst thyself with ornaments,"

Matthew 6:17: "But thou, when thou fastest, anoint thine head, and wash thy face;"

Matthew 15:2: "Why do thy disciples transgress the tradition of the elders? for they wash not their hands when they eat bread."

Mark 7:3: "For the Pharisees, and all the Jews, except they wash their hands oft, eat not, holding the tradition of the elders."

Mark 7:4: "And when they come from the market, except they wash, they eat not. And many other things there be, which they have received to hold, as the washing of cups, and pots, brasen vessels, and of tables."

Luke 7:38: "And stood at his feet behind him weeping, and began to wash his feet with tears, and did wipe them with the hairs of her head, and kissed his feet, and anointed them with the ointment."

John 9:7: "And said unto him, Go, wash in the pool of Siloam, (which is by interpretation, Sent.) He went his way therefore, and washed, and came seeing."

John 9:11: "He answered and said, A man that is called Jesus made clay, and anointed mine eyes, and said unto me, Go to the pool of Siloam, and wash: and I went and washed, and I received sight."

John 13:5: "After that he poureth water into a bason, and began to wash the disciples' feet, and to wipe them with the towel wherewith he was girded."

John 13:6: "Then cometh he to Simon Peter: and Peter saith unto him, Lord, dost thou wash my feet?"

John 13:8: "Peter saith unto him, Thou shalt never wash my feet. Jesus answered him, If I wash thee not, thou hast no part with me."

John 13:10: "Jesus saith to him, He that is washed needeth not save to wash his feet, but is clean every whit: and ye are clean, but not all."

John 13:14: "If I then, your Lord and Master, have washed your feet; ye also ought to wash one another's feet."

Acts 22:16: "And now why tarriest thou? arise, and be baptized, and wash away thy sins, calling on the name of the Lord."

## **WASHED**

Occurrences: 43

Genesis 43:24: "And the man brought the men into Joseph's house, and gave them water, and they washed their feet; and he gave their asses provender."

Genesis 43:31: "And he washed his face, and went out, and refrained himself, and said, Set on bread."

Genesis 49:11: "Binding his foal unto the vine, and his ass's colt unto the choice vine; he washed his garments in wine, and his clothes in the blood of grapes:"

Exodus 19:14: "And Moses went down from the mount unto the people, and sanctified the people; and they washed their clothes."

Exodus 40:31: "And Moses and Aaron and his sons washed their hands and their feet thereat:"

Exodus 40:32: "When they went into the tent of the congregation, and when they came near unto the altar, they washed; as the LORD commanded Moses."

Leviticus 8:6: "And Moses brought Aaron and his sons, and washed them with water."

Leviticus 8:21: "And he washed the inwards and the legs in water; and Moses burnt the whole ram

upon the altar: it was a burnt sacrifice for a sweet savour, and an offering made by fire unto the LORD; as the LORD commanded Moses."

Leviticus 13:55: "And the priest shall look on the plague, after that it is washed: and, behold, if the plague have not changed his colour, and the plague be not spread; it is unclean; thou shalt burn it in the fire; it is fret inward, whether it be bare within or without."

Leviticus 13:58: "And the garment, either warp, or woof, or whatsoever thing of skin it be, which thou shalt wash, if the plague be departed from them, then it shall be washed the second time, and shall be clean."

Leviticus 15:17: "And every garment, and every skin, whereon is the seed of copulation, shall be washed with water, and be unclean until the even."

Numbers 8:21: "And the Levites were purified, and they washed their clothes; and Aaron offered them as an offering before the LORD; and Aaron made an atonement for them to cleanse them."

Judges 19:21: "So he brought him into his house, and gave provender unto the asses: and they washed their feet, and did eat and drink."

2 Samuel 12:20: "Then David arose from the earth, and washed, and anointed himself, and changed his apparel, and came into the house of the LORD, and worshipped: then he came to his own house; and when he required, they set bread before him, and he did eat."

2 Samuel 19:24: "And Mephibosheth the son of Saul came down to meet the king, and had neither dressed his feet, nor trimmed his beard, nor washed his clothes, from the day the king departed until the day he came again in peace."

1 Kings 22:38: "And one washed the chariot in the pool of Samaria; and the dogs licked up his blood; and they washed his armour; according unto the word of the LORD which he spake."

2 Chronicles 4:6: "He made also ten lavers, and put five on the right hand, and five on the left, to wash in them: such things as they offered for the burnt offering they washed in them; but the sea was for the priests to wash in."

Job 29:6: "When I washed my steps with butter, and the rock poured me out rivers of oil;"

Psalms 73:13: "Verily I have cleansed my heart in vain, and washed my hands in innocency."

Proverbs 30:12: "There is a generation that are pure in their own eyes, and yet is not washed from their filthiness."

Song of Solomon 5:3: "I have put off my coat; how shall I put it on? I have washed my feet; how shall I defile them?"

Song of Solomon 5:12: "His eyes are as the eyes of doves by the rivers of waters, washed with milk, and fitly set."

Isaiah 4:4: "When the Lord shall have washed away the filth of the daughters of Zion, and shall have purged the blood of Jerusalem from the midst thereof by the spirit of judgment, and by the spirit of burning."

Ezekiel 16:4: "And as for thy nativity, in the day thou wast born thy navel was not cut, neither wast thou washed in water to supple thee; thou wast not salted at all, nor swaddled at all."

Ezekiel 16:9: "Then washed I thee with water; yea, I thoroughly washed away thy blood from thee, and I anointed thee with oil."

Ezekiel 40:38: "And the chambers and the entries thereof were by the posts of the gates, where they washed the burnt offering."

Matthew 27:24: "When Pilate saw that he could prevail nothing, but that rather a tumult was made, he took water, and washed his hands before the multitude, saying, I am innocent of the blood of this just person: see ye to it."

Luke 7:44: "And he turned to the woman, and said unto Simon, Seest thou this woman? I entered into thine house, thou gavest me no water for my feet: but she hath washed my feet with tears, and wiped them with the hairs of her head."

Luke 11:38: "And when the Pharisee saw it, he marvelled that he had not first washed before dinner."

John 9:7: "And said unto him, Go, wash in the pool of Siloam, (which is by interpretation, Sent.) He went his way therefore, and washed, and came seeing."

John 9:11: "He answered and said, A man that is called Jesus made clay, and anointed mine eyes, and said unto me, Go to the pool of Siloam, and wash: and I went and washed, and I received sight."

John 9:15: "Then again the Pharisees also asked him how he had received his sight. He said unto them, He put clay upon mine eyes, and I washed, and do see."

John 13:10: "Jesus saith to him, He that is washed needeth not save to wash his feet, but is clean every whit: and ye are clean, but not all."

John 13:12: "So after he had washed their feet, and had taken his garments, and was set down again, he said unto them, Know ye what I have done to you?"

John 13:14: "If I then, your Lord and Master, have washed your feet; ye also ought to wash one another's feet."

Acts 9:37: "And it came to pass in those days, that she was sick, and died: whom when they had washed, they laid her in an upper chamber."

Acts 16:33: "And he took them the same hour of the night, and washed their stripes; and was baptized, he and all his, straightway."

1 Corinthians 6:11: "And such were some of you: but ye are washed, but ye are sanctified, but ye are justified in the name of the Lord Jesus, and by the Spirit of our God."

1 Timothy 5:10: "Well reported of for good works; if she have brought up children, if she have lodged strangers, if she have washed the saints' feet, if she have relieved the afflicted, if she have diligently followed every good work."

Hebrews 10:22: "Let us draw near with a true heart in full assurance of faith, having our hearts sprinkled from an evil conscience, and our bodies washed with pure water."

2 Peter 2:22: "But it is happened unto them according to the true proverb, The dog is turned to his own vomit again; and the sow that was washed to her wallowing in the mire."

Revelation 1:5: "And from Jesus Christ, who is the faithful witness, and the first begotten of the dead, and the prince of the kings of the earth. Unto him that loved us, and washed us from our sins in his own blood,"

Revelation 7:14: "And I said unto him, Sir, thou knowest. And he said to me, These are they which came out of great tribulation, and have washed their robes, and made them white in the blood of the Lamb."

## **WASHEST**

Occurrences: 1

Job 14:19: "The waters wear the stones: thou wastest away the things which grow out of the dust of the earth; and thou destroyest the hope of man."

## **WASHING**

Occurrences: 10

Leviticus 13:56: "And if the priest look, and, behold, the plague be somewhat dark after the washing of it; then he shall rend it out of the garment, or out of the skin, or out of the warp, or out of the woof:"

2 Samuel 11:2: "And it came to pass in an eveningtide, that David arose from off his bed, and walked upon the roof of the king's house: and from the roof he saw a woman washing herself; and the woman was very beautiful to look upon."

Nehemiah 4:23: "So neither I, nor my brethren, nor my servants, nor the men of the guard which followed me, none of us put off our clothes, saving that every one put them off for washing."

Song of Solomon 4:2: "Thy teeth are like a flock of sheep that are even shorn, which came up from

the washing; whereof every one bear twins, and none is barren among them."

Song of Solomon 6:6: "Thy teeth are as a flock of sheep which go up from the washing, whereof every one beareth twins, and there is not one barren among them."

Mark 7:4: "And when they come from the market, except they wash, they eat not. And many other things there be, which they have received to hold, as the washing of cups, and pots, brasen vessels, and of tables."

Mark 7:8: "For laying aside the commandment of God, ye hold the tradition of men, as the washing of pots and cups: and many other such like things ye do."

Luke 5:2: "And saw two ships standing by the lake: but the fishermen were gone out of them, and were washing their nets."

Ephesians 5:26: "That he might sanctify and cleanse it with the washing of water by the word,"

Titus 3:5: "Not by works of righteousness which we have done, but according to his mercy he saved us, by the washing of regeneration, and renewing of the Holy Ghost;"

## **WASHINGS**

Occurrences: 1

Hebrews 9:10: "Which stood only in meats and drinks, and divers washings, and carnal ordinances, imposed on them until the time of reformation."

## **WASHPOT**

Occurrences: 2

Psalms 60:8: "Moab is my washpot; over Edom will I cast out my shoe: Philistia, triumph thou because of me."

Psalms 108:9: "Moab is my washpot; over Edom will I cast out my shoe; over Philistia will I triumph."

## **WAST**

Occurrences: 57

Genesis 3:11: "And he said, Who told thee that thou wast naked? Hast thou eaten of the tree, whereof I commanded thee that thou shouldest not eat?"

Genesis 3:19: "In the sweat of thy face shalt thou eat bread, till thou return unto the ground; for out of it wast thou taken: for dust thou art, and unto dust shalt thou return."

Genesis 33:10: "And Jacob said, Nay, I pray thee, if now I have found grace in thy sight, then receive my present at my hand: for therefore I have seen thy face, as though I had seen the face of God, and thou wast pleased with me."

Genesis 40:13: "Yet within three days shall Pharaoh lift up thine head, and restore thee unto thy place: and thou shalt deliver Pharaoh's cup into his hand, after the former manner when thou wast his butler."

Deuteronomy 5:15: "And remember that thou wast a servant in the land of Egypt, and that the LORD thy God brought thee out thence through a mighty hand and by a stretched out arm: therefore the LORD thy God commanded thee to keep the sabbath day."

Deuteronomy 15:15: "And thou shalt remember that thou wast a bondman in the land of Egypt, and the LORD thy God redeemed thee: therefore I command thee this thing to day."

Deuteronomy 16:12: "And thou shalt remember that thou wast a bondman in Egypt: and thou shalt observe and do these statutes."

Deuteronomy 23:7: "Thou shalt not abhor an Edomite; for he is thy brother: thou shalt not abhor an Egyptian; because thou wast a stranger in his land."

Deuteronomy 24:18: "But thou shalt remember that thou wast a bondman in Egypt, and the LORD

thy God redeemed thee thence: therefore I command thee to do this thing."

Deuteronomy 24:22: "And thou shalt remember that thou wast a bondman in the land of Egypt: therefore I command thee to do this thing."

Deuteronomy 25:18: "How he met thee by the way, and smote the hindmost of thee, even all that were feeble behind thee, when thou wast faint and weary; and he feared not God."

Deuteronomy 28:60: "Moreover he will bring upon thee all the diseases of Egypt, which thou wast afraid of; and they shall cleave unto thee."

Ruth 3:2: "And now is not Boaz of our kindred, with whose maidens thou wast? Behold, he winnoweth barley to night in the threshingfloor."

1 Samuel 15:17: "And Samuel said, When thou wast little in thine own sight, wast thou not made the head of the tribes of Israel, and the LORD anointed thee king over Israel?"

2 Samuel 1:14: "And David said unto him, How wast thou not afraid to stretch forth thine hand to destroy the LORD's anointed?"

2 Samuel 1:25: "How are the mighty fallen in the midst of the battle! O Jonathan, thou wast slain in thine high places."

2 Samuel 5:2: "Also in time past, when Saul was king over us, thou wast he that leddest out and broughtest in Israel: and the LORD said to thee, Thou shalt feed my people Israel, and thou shalt be a captain over Israel."

1 Chronicles 11:2: "And moreover in time past, even when Saul was king, thou wast he that leddest out and broughtest in Israel: and the LORD thy God said unto thee, Thou shalt feed my people Israel, and thou shalt be ruler over my people Israel."

Job 15:7: "Art thou the first man that was born? or wast thou made before the hills?"

Job 38:4: "Where wast thou when I laid the foundations of the earth? declare, if thou hast understanding."

Job 38:21: "Knowest thou it, because thou wast then born? or because the number of thy days is great?"

Psalms 99:8: "Thou answeredst them, O LORD our God: thou wast a God that forgavest them, though thou tookest vengeance of their inventions."

Psalms 114:5: "What ailed thee, O thou sea, that thou fleddest? thou Jordan, that thou wast driven back?"

Isaiah 12:1: "And in that day thou shalt say, O LORD, I will praise thee: though thou wast angry with me, thine anger is turned away, and thou comfortedst me."

Isaiah 14:3: "And it shall come to pass in the day that the LORD shall give thee rest from thy sorrow, and from thy fear, and from the hard bondage wherein thou wast made to serve,"

Isaiah 33:1: "Woe to thee that spoilest, and thou wast not spoiled; and dealest treacherously, and they dealt not treacherously with thee! when thou shalt cease to spoil, thou shalt be spoiled; and when thou shalt make an end to deal treacherously, they shall deal treacherously with thee."

Isaiah 43:4: "Since thou wast precious in my sight, thou hast been honourable, and I have loved thee: therefore will I give men for thee, and people for thy life."

Isaiah 48:8: "Yea, thou heardest not; yea, thou knewest not; yea, from that time that thine ear was not opened: for I knew that thou wouldest deal very treacherously, and wast called a transgressor from the womb."

Isaiah 54:6: "For the LORD hath called thee as a woman forsaken and grieved in spirit, and a wife of youth, when thou wast refused, saith thy God."

Isaiah 57:10: "Thou art wearied in the greatness of thy way; yet saidst thou not, There is no hope: thou hast found the life of thine hand; therefore thou wast not grieved."

Jeremiah 2:36: "Why gaddest thou about so much to change thy way? thou also shalt be ashamed of Egypt, as thou wast ashamed of Assyria."

Jeremiah 50:24: "I have laid a snare for thee, and thou art also taken, O Babylon, and thou wast not aware: thou art found, and also caught, because thou hast striven against the LORD."



Ezekiel 16:4: "And as for thy nativity, in the day thou wast born thy navel was not cut, neither wast thou washed in water to supple thee; thou wast not salted at all, nor swaddled at all."

Ezekiel 16:5: "None eye pitied thee, to do any of these unto thee, to have compassion upon thee; but thou wast cast out in the open field, to the lothing of thy person, in the day that thou wast born."

Ezekiel 16:6: "And when I passed by thee, and saw thee polluted in thine own blood, I said unto thee when thou wast in thy blood, Live; yea, I said unto thee when thou wast in thy blood, Live."

Ezekiel 16:7: "I have caused thee to multiply as the bud of the field, and thou hast increased and waxen great, and thou art come to excellent ornaments: thy breasts are fashioned, and thine hair is grown, whereas thou wast naked and bare."

Ezekiel 16:13: "Thus wast thou decked with gold and silver; and thy raiment was of fine linen, and silk, and broidered work; thou didst eat fine flour, and honey, and oil: and thou wast exceeding beautiful, and thou didst prosper into a kingdom."

Ezekiel 16:22: "And in all thine abominations and thy whoredoms thou hast not remembered the days of thy youth, when thou wast naked and bare, and wast polluted in thy blood."

Ezekiel 16:28: "Thou hast played the whore also with the Assyrians, because thou wast unsatiable; yea, thou hast played the harlot with them, and yet couldest not be satisfied."

Ezekiel 16:29: "Thou hast moreover multiplied thy fornication in the land of Canaan unto Chaldea; and yet thou wast not satisfied therewith."

Ezekiel 16:47: "Yet hast thou not walked after their ways, nor done after their abominations: but, as if that were a very little thing, thou wast corrupted more than they in all thy ways."

Ezekiel 21:30: "Shall I cause it to return into his sheath? I will judge thee in the place where thou wast created, in the land of thy nativity."

Ezekiel 24:13: "In thy filthiness is lewdness: because I have purged thee, and thou wast not purged, thou shalt not be purged from thy filthiness any more, till I have caused my fury to rest upon thee."

Ezekiel 26:17: "And they shall take up a lamentation for thee, and say to thee, How art thou destroyed, that wast inhabited of seafaring men, the renowned city, which wast strong in the sea, she and her inhabitants, which cause their terror to be on all that haunt it!"

Ezekiel 27:25: "The ships of Tarshish did sing of thee in thy market: and thou wast replenished, and made very glorious in the midst of the seas."

Ezekiel 28:13: "Thou hast been in Eden the garden of God; every precious stone was thy covering, the sardius, topaz, and the diamond, the beryl, the onyx, and the jasper, the sapphire, the emerald, and the carbuncle, and gold: the workmanship of thy tabrets and of thy pipes was prepared in thee in the day that thou wast created."

Ezekiel 28:14: "Thou art the anointed cherub that covereth; and I have set thee so: thou wast upon the holy mountain of God; thou hast walked up and down in the midst of the stones of fire."

Ezekiel 28:15: "Thou wast perfect in thy ways from the day that thou wast created, till iniquity was found in thee."

Obadiah 1:11: "In the day that thou stoodest on the other side, in the day that the strangers carried away captive his forces, and foreigners entered into his gates, and cast lots upon Jerusalem, even thou wast as one of them."

Matthew 26:69: "Now Peter sat without in the palace: and a damsel came unto him, saying, Thou also wast with Jesus of Galilee."

Mark 14:67: "And when she saw Peter warming himself, she looked upon him, and said, And thou also wast with Jesus of Nazareth."

John 1:48: "Nathanael saith unto him, Whence knowest thou me? Jesus answered and said unto him, Before that Philip called thee, when thou wast under the fig tree, I saw thee."

John 9:34: "They answered and said unto him, Thou wast altogether born in sins, and dost thou teach us? And they cast him out."

John 21:18: "Verily, verily, I say unto thee, When thou wast young, thou girdest thyself, and walkedst whither thou wouldest: but when thou shalt be old, thou shalt stretch forth thy hands, and

another shall gird thee, and carry thee whither thou wouldest not."

Revelation 5:9: "And they sung a new song, saying, Thou art worthy to take the book, and to open the seals thereof: for thou wast slain, and hast redeemed us to God by thy blood out of every kindred, and tongue, and people, and nation;"

Revelation 11:17: "Saying, We give thee thanks, O LORD God Almighty, which art, and wast, and art to come; because thou hast taken to thee thy great power, and hast reigned."

Revelation 16:5: "And I heard the angel of the waters say, Thou art righteous, O Lord, which art, and wast, and shalt be, because thou hast judged thus."

## WASTE

Occurrences: 62

Leviticus 26:31: "And I will make your cities waste, and bring your sanctuaries unto desolation, and I will not smell the savour of your sweet odours."

Leviticus 26:33: "And I will scatter you among the heathen, and will draw out a sword after you: and your land shall be desolate, and your cities waste."

Numbers 21:30: "We have shot at them; Heshbon is perished even unto Dibon, and we have laid them waste even unto Nophah, which reacheth unto Medeba."

Deuteronomy 32:10: "He found him in a desert land, and in the waste howling wilderness; he led him about, he instructed him, he kept him as the apple of his eye."

1 Kings 17:14: "For thus saith the LORD God of Israel, The barrel of meal shall not waste, neither shall the cruse of oil fail, until the day that the LORD sendeth rain upon the earth."

2 Kings 19:25: "Hast thou not heard long ago how I have done it, and of ancient times that I have formed it? now have I brought it to pass, that thou shouldest be to lay waste fenced cities into ruinous heaps."

1 Chronicles 17:9: "Also I will ordain a place for my people Israel, and will plant them, and they shall dwell in their place, and shall be moved no more; neither shall the children of wickedness waste them any more, as at the beginning,"

Nehemiah 2:3: "And said unto the king, Let the king live for ever: why should not my countenance be sad, when the city, the place of my fathers' sepulchres, lieth waste, and the gates thereof are consumed with fire?"

Nehemiah 2:17: "Then said I unto them, Ye see the distress that we are in, how Jerusalem lieth waste, and the gates thereof are burned with fire: come, and let us build up the wall of Jerusalem, that we be no more a reproach."

Job 30:3: "For want and famine they were solitary; fleeing into the wilderness in former time desolate and waste."

Job 38:27: "To satisfy the desolate and waste ground; and to cause the bud of the tender herb to spring forth?"

Psalms 79:7: "For they have devoured Jacob, and laid waste his dwelling place."

Psalms 80:13: "The boar out of the wood doth waste it, and the wild beast of the field doth devour it."

Isaiah 5:6: "And I will lay it waste: it shall not be pruned, nor digged; but there shall come up briars and thorns: I will also command the clouds that they rain no rain upon it."

Isaiah 5:17: "Then shall the lambs feed after their manner, and the waste places of the fat ones shall strangers eat."

Isaiah 15:1: "The burden of Moab. Because in the night Ar of Moab is laid waste, and brought to silence; because in the night Kir of Moab is laid waste, and brought to silence;"

Isaiah 23:1: "The burden of Tyre. Howl, ye ships of Tarshish; for it is laid waste, so that there is no house, no entering in: from the land of Chittim it is revealed to them."

Isaiah 23:14: "Howl, ye ships of Tarshish: for your strength is laid waste."

Isaiah 24:1: "Behold, the LORD maketh the earth empty, and maketh it waste, and turneth it upside

down, and scattereth abroad the inhabitants thereof."

Isaiah 33:8: "The highways lie waste, the wayfaring man ceaseth: he hath broken the covenant, he hath despised the cities, he regardeth no man."

Isaiah 34:10: "It shall not be quenched night nor day; the smoke thereof shall go up for ever: from generation to generation it shall lie waste; none shall pass through it for ever and ever."

Isaiah 37:18: "Of a truth, LORD, the kings of Assyria have laid waste all the nations, and their countries,"

Isaiah 37:26: "Hast thou not heard long ago, how I have done it; and of ancient times, that I have formed it? now have I brought it to pass, that thou shouldest be to lay waste defenced cities into ruinous heaps."

Isaiah 42:15: "I will make waste mountains and hills, and dry up all their herbs; and I will make the rivers islands, and I will dry up the pools."

Isaiah 49:17: "Thy children shall make haste; thy destroyers and they that made thee waste shall go forth of thee."

Isaiah 49:19: "For thy waste and thy desolate places, and the land of thy destruction, shall even now be too narrow by reason of the inhabitants, and they that swallowed thee up shall be far away."

Isaiah 51:3: "For the LORD shall comfort Zion: he will comfort all her waste places; and he will make her wilderness like Eden, and her desert like the garden of the LORD; joy and gladness shall be found therein, thanksgiving, and the voice of melody."

Isaiah 52:9: "Break forth into joy, sing together, ye waste places of Jerusalem: for the LORD hath comforted his people, he hath redeemed Jerusalem."

Isaiah 58:12: "And they that shall be of thee shall build the old waste places: thou shalt raise up the foundations of many generations; and thou shalt be called, The repairer of the breach, The restorer of paths to dwell in."

Isaiah 61:4: "And they shall build the old wastes, they shall raise up the former desolations, and they shall repair the waste cities, the desolations of many generations."

Isaiah 64:11: "Our holy and our beautiful house, where our fathers praised thee, is burned up with fire: and all our pleasant things are laid waste."

Jeremiah 2:15: "The young lions roared upon him, and yelled, and they made his land waste: his cities are burned without inhabitant."

Jeremiah 4:7: "The lion is come up from his thicket, and the destroyer of the Gentiles is on his way; he is gone forth from his place to make thy land desolate; and thy cities shall be laid waste, without an inhabitant."

Jeremiah 27:17: "Hearken not unto them; serve the king of Babylon, and live: wherefore should this city be laid waste?"

Jeremiah 46:19: "O thou daughter dwelling in Egypt, furnish thyself to go into captivity: for Noph shall be waste and desolate without an inhabitant."

Jeremiah 49:13: "For I have sworn by myself, saith the LORD, that Bozrah shall become a desolation, a reproach, a waste, and a curse; and all the cities thereof shall be perpetual wastes."

Jeremiah 50:21: "Go up against the land of Merathaim, even against it, and against the inhabitants of Pekod: waste and utterly destroy after them, saith the LORD, and do according to all that I have commanded thee."

Ezekiel 5:14: "Moreover I will make thee waste, and a reproach among the nations that are round about thee, in the sight of all that pass by."

Ezekiel 6:6: "In all your dwellingplaces the cities shall be laid waste, and the high places shall be desolate; that your altars may be laid waste and made desolate, and your idols may be broken and cease, and your images may be cut down, and your works may be abolished."

Ezekiel 12:20: "And the cities that are inhabited shall be laid waste, and the land shall be desolate; and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 19:7: "And he knew their desolate palaces, and he laid waste their cities; and the land was

desolate, and the fulness thereof, by the noise of his roaring."

Ezekiel 26:2: "Son of man, because that Tyrus hath said against Jerusalem, Aha, she is broken that was the gates of the people: she is turned unto me: I shall be replenished, now she is laid waste:"

Ezekiel 29:9: "And the land of Egypt shall be desolate and waste; and they shall know that I am the LORD: because he hath said, The river is mine, and I have made it."

Ezekiel 29:10: "Behold, therefore I am against thee, and against thy rivers, and I will make the land of Egypt utterly waste and desolate, from the tower of Syene even unto the border of Ethiopia."

Ezekiel 29:12: "And I will make the land of Egypt desolate in the midst of the countries that are desolate, and her cities among the cities that are laid waste shall be desolate forty years: and I will scatter the Egyptians among the nations, and will disperse them through the countries."

Ezekiel 30:12: "And I will make the rivers dry, and sell the land into the hand of the wicked: and I will make the land waste, and all that is therein, by the hand of strangers: I the LORD have spoken it."

Ezekiel 35:4: "I will lay thy cities waste, and thou shalt be desolate, and thou shalt know that I am the LORD."

Ezekiel 36:35: "And they shall say, This land that was desolate is become like the garden of Eden; and the waste and desolate and ruined cities are become fenced, and are inhabited."

Ezekiel 36:38: "As the holy flock, as the flock of Jerusalem in her solemn feasts; so shall the waste cities be filled with flocks of men: and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 38:8: "After many days thou shalt be visited: in the latter years thou shalt come into the land that is brought back from the sword, and is gathered out of many people, against the mountains of Israel, which have been always waste: but it is brought forth out of the nations, and they shall dwell safely all of them."

Joel 1:7: "He hath laid my vine waste, and barked my fig tree: he hath made it clean bare, and cast it away; the branches thereof are made white."

Amos 7:9: "And the high places of Isaac shall be desolate, and the sanctuaries of Israel shall be laid waste; and I will rise against the house of Jeroboam with the sword."

Amos 9:14: "And I will bring again the captivity of my people of Israel, and they shall build the waste cities, and inhabit them; and they shall plant vineyards, and drink the wine thereof; they shall also make gardens, and eat the fruit of them."

Micah 5:6: "And they shall waste the land of Assyria with the sword, and the land of Nimrod in the entrances thereof: thus shall he deliver us from the Assyrian, when he cometh into our land, and when he treadeth within our borders."

Nahum 2:10: "She is empty, and void, and waste: and the heart melteth, and the knees smite together, and much pain is in all loins, and the faces of them all gather blackness."

Nahum 3:7: "And it shall come to pass, that all they that look upon thee shall flee from thee, and say, Nineveh is laid waste: who will bemoan her? whence shall I seek comforters for thee?"

Zephaniah 3:6: "I have cut off the nations: their towers are desolate; I made their streets waste, that none passeth by: their cities are destroyed, so that there is no man, that there is none inhabitant."

Haggai 1:4: "Is it time for you, O ye, to dwell in your cieled houses, and this house lie waste?"

Haggai 1:9: "Ye looked for much, and, lo it came to little; and when ye brought it home, I did blow upon it. Why? saith the LORD of hosts. Because of mine house that is waste, and ye run every man unto his own house."

Malachi 1:3: "And I hated Esau, and laid his mountains and his heritage waste for the dragons of the wilderness."

Matthew 26:8: "But when his disciples saw it, they had indignation, saying, To what purpose is this waste?"

Mark 14:4: "And there were some that had indignation within themselves, and said, Why was this waste of the ointment made?"

## WASTED

Occurrences: 15

Numbers 14:33: "And your children shall wander in the wilderness forty years, and bear your whoredoms, until your carcasses be wasted in the wilderness."

Numbers 24:22: "Nevertheless the Kenite shall be wasted, until Asshur shall carry thee away captive."

Deuteronomy 2:14: "And the space in which we came from Kadeshbarnea, until we were come over the brook Zered, was thirty and eight years; until all the generation of the men of war were wasted out from among the host, as the LORD sware unto them."

1 Kings 17:16: "And the barrel of meal wasted not, neither did the cruse of oil fail, according to the word of the LORD, which he spake by Elijah."

1 Chronicles 20:1: "And it came to pass, that after the year was expired, at the time that kings go out to battle, Joab led forth the power of the army, and wasted the country of the children of Ammon, and came and besieged Rabbah. But David tarried at Jerusalem. And Joab smote Rabbah, and destroyed it."

Psalms 137:3: "For there they that carried us away captive required of us a song; and they that wasted us required of us mirth, saying, Sing us one of the songs of Zion."

Isaiah 6:11: "Then said I, Lord, how long? And he answered, Until the cities be wasted without inhabitant, and the houses without man, and the land be utterly desolate,"

Isaiah 19:5: "And the waters shall fail from the sea, and the river shall be wasted and dried up."

Isaiah 60:12: "For the nation and kingdom that will not serve thee shall perish; yea, those nations shall be utterly wasted."

Jeremiah 44:6: "Wherefore my fury and mine anger was poured forth, and was kindled in the cities of Judah and in the streets of Jerusalem; and they are wasted and desolate, as at this day."

Ezekiel 30:7: "And they shall be desolate in the midst of the countries that are desolate, and her cities shall be in the midst of the cities that are wasted."

Joel 1:10: "The field is wasted, the land mourneth; for the corn is wasted: the new wine is dried up, the oil languisheth."

Luke 15:13: "And not many days after the younger son gathered all together, and took his journey into a far country, and there wasted his substance with riotous living."

Luke 16:1: "And he said also unto his disciples, There was a certain rich man, which had a steward; and the same was accused unto him that he had wasted his goods."

Galatians 1:13: "For ye have heard of my conversation in time past in the Jews' religion, how that beyond measure I persecuted the church of God, and wasted it:"

## WASTENESS

Occurrences: 1

Zephaniah 1:15: "That day is a day of wrath, a day of trouble and distress, a day of wasteness and desolation, a day of darkness and gloominess, a day of clouds and thick darkness,"

## WASTER

Occurrences: 2

Proverbs 18:9: "He also that is slothful in his work is brother to him that is a great waster."

Isaiah 54:16: "Behold, I have created the smith that bloweth the coals in the fire, and that bringeth forth an instrument for his work; and I have created the waster to destroy."

## WASTES

Occurrences: 7

Isaiah 61:4: "And they shall build the old wastes, they shall raise up the former desolations, and they shall repair the waste cities, the desolations of many generations."

Jeremiah 49:13: "For I have sworn by myself, saith the LORD, that Bozrah shall become a desolation, a reproach, a waste, and a curse; and all the cities thereof shall be perpetual wastes."

Ezekiel 33:24: "Son of man, they that inhabit those wastes of the land of Israel speak, saying,

Abraham was one, and he inherited the land: but we are many; the land is given us for inheritance."

Ezekiel 33:27: "Say thou thus unto them, Thus saith the Lord GOD; As I live, surely they that are in the wastes shall fall by the sword, and him that is in the open field will I give to the beasts to be devoured, and they that be in the forts and in the caves shall die of the pestilence."

Ezekiel 36:4: "Therefore, ye mountains of Israel, hear the word of the Lord GOD; Thus saith the Lord GOD to the mountains, and to the hills, to the rivers, and to the valleys, to the desolate wastes, and to the cities that are forsaken, which became a prey and derision to the residue of the heathen that are round about;"

Ezekiel 36:10: "And I will multiply men upon you, all the house of Israel, even all of it: and the cities shall be inhabited, and the wastes shall be builded:"

Ezekiel 36:33: "Thus saith the Lord GOD; In the day that I shall have cleansed you from all your iniquities I will also cause you to dwell in the cities, and the wastes shall be builded."

## WASTETH

Occurrences: 3

Job 14:10: "But man dieth, and wasteth away: yea, man giveth up the ghost, and where is he?"

Psalms 91:6: "Nor for the pestilence that walketh in darkness; nor for the destruction that wasteth at noonday."

Proverbs 19:26: "He that wasteth his father, and chaseth away his mother, is a son that causeth shame, and bringeth reproach."

## WASTING

Occurrences: 2

Isaiah 59:7: "Their feet run to evil, and they make haste to shed innocent blood: their thoughts are thoughts of iniquity; wasting and destruction are in their paths."

Isaiah 60:18: "Violence shall no more be heard in thy land, wasting nor destruction within thy borders; but thou shalt call thy walls Salvation, and thy gates Praise."

## WATCH

Occurrences: 57

Genesis 31:49: "And Mizpah; for he said, The LORD watch between me and thee, when we are absent one from another."

Exodus 14:24: "And it came to pass, that in the morning watch the LORD looked unto the host of the Egyptians through the pillar of fire and of the cloud, and troubled the host of the Egyptians,"

Judges 7:19: "So Gideon, and the hundred men that were with him, came unto the outside of the camp in the beginning of the middle watch; and they had but newly set the watch: and they blew the trumpets, and brake the pitchers that were in their hands."

1 Samuel 11:11: "And it was so on the morrow, that Saul put the people in three companies; and they came into the midst of the host in the morning watch, and slew the Ammonites until the heat of the day: and it came to pass, that they which remained were scattered, so that two of them were not left together."

1 Samuel 19:11: "Saul also sent messengers unto David's house, to watch him, and to slay him in the morning: and Michal David's wife told him, saying, If thou save not thy life to night, to morrow

thou shalt be slain."

2 Samuel 13:34: "But Absalom fled. And the young man that kept the watch lifted up his eyes, and looked, and, behold, there came much people by the way of the hill side behind him."

2 Kings 11:5: "And he commanded them, saying, This is the thing that ye shall do; A third part of you that enter in on the sabbath shall even be keepers of the watch of the king's house;"

2 Kings 11:6: "And a third part shall be at the gate of Sur; and a third part at the gate behind the guard: so shall ye keep the watch of the house, that it be not broken down."

2 Kings 11:7: "And two parts of all you that go forth on the sabbath, even they shall keep the watch of the house of the LORD about the king."

2 Chronicles 20:24: "And when Judah came toward the watch tower in the wilderness, they looked unto the multitude, and, behold, they were dead bodies fallen to the earth, and none escaped."

2 Chronicles 23:6: "But let none come into the house of the LORD, save the priests, and they that minister of the Levites; they shall go in, for they are holy: but all the people shall keep the watch of the LORD."

Ezra 8:29: "Watch ye, and keep them, until ye weigh them before the chief of the priests and the Levites, and chief of the fathers of Israel, at Jerusalem, in the chambers of the house of the LORD."

Nehemiah 4:9: "Nevertheless we made our prayer unto our God, and set a watch against them day and night, because of them."

Nehemiah 7:3: "And I said unto them, Let not the gates of Jerusalem be opened until the sun be hot; and while they stand by, let them shut the doors, and bar them: and appoint watches of the inhabitants of Jerusalem, every one in his watch, and every one to be over against his house."

Job 7:12: "Am I a sea, or a whale, that thou settest a watch over me?"

Job 14:16: "For now thou numberest my steps: dost thou not watch over my sin?"

Psalms 90:4: "For a thousand years in thy sight are but as yesterday when it is past, and as a watch in the night."

Psalms 102:7: "I watch, and am as a sparrow alone upon the house top."

Psalms 130:6: "My soul waiteth for the Lord more than they that watch for the morning: I say, more than they that watch for the morning."

Psalms 141:3: "Set a watch, O LORD, before my mouth; keep the door of my lips."

Isaiah 21:5: "Prepare the table, watch in the watchtower, eat, drink: arise, ye princes, and anoint the shield."

Isaiah 29:20: "For the terrible one is brought to nought, and the scorner is consumed, and all that watch for iniquity are cut off:"

Jeremiah 5:6: "Wherefore a lion out of the forest shall slay them, and a wolf of the evenings shall spoil them, a leopard shall watch over their cities: every one that goeth out thence shall be torn in pieces: because their transgressions are many, and their backslidings are increased."

Jeremiah 31:28: "And it shall come to pass, that like as I have watched over them, to pluck up, and to break down, and to throw down, and to destroy, and to afflict; so will I watch over them, to build, and to plant, saith the LORD."

Jeremiah 44:27: "Behold, I will watch over them for evil, and not for good: and all the men of Judah that are in the land of Egypt shall be consumed by the sword and by the famine, until there be an end of them."

Jeremiah 51:12: "Set up the standard upon the walls of Babylon, make the watch strong, set up the watchmen, prepare the ambushes: for the LORD hath both devised and done that which he spake against the inhabitants of Babylon."

Nahum 2:1: "He that dasheth in pieces is come up before thy face: keep the munition, watch the way, make thy loins strong, fortify thy power mightily."

Habakkuk 2:1: "I will stand upon my watch, and set me upon the tower, and will watch to see what he will say unto me, and what I shall answer when I am reproved."

Matthew 14:25: "And in the fourth watch of the night Jesus went unto them, walking on the sea."

Matthew 24:42: "Watch therefore: for ye know not what hour your Lord doth come."

Matthew 24:43: "But know this, that if the goodman of the house had known in what watch the thief would come, he would have watched, and would not have suffered his house to be broken up."

Matthew 25:13: "Watch therefore, for ye know neither the day nor the hour wherein the Son of man cometh."

Matthew 26:38: "Then saith he unto them, My soul is exceeding sorrowful, even unto death: tarry ye here, and watch with me."

Matthew 26:40: "And he cometh unto the disciples, and findeth them asleep, and saith unto Peter, What, could ye not watch with me one hour?"

Matthew 26:41: "Watch and pray, that ye enter not into temptation: the spirit indeed is willing, but the flesh is weak."

Matthew 27:65: "Pilate said unto them, Ye have a watch: go your way, make it as sure as ye can."

Matthew 27:66: "So they went, and made the sepulchre sure, sealing the stone, and setting a watch."

Matthew 28:11: "Now when they were going, behold, some of the watch came into the city, and shewed unto the chief priests all the things that were done."

Mark 6:48: "And he saw them toiling in rowing; for the wind was contrary unto them: and about the fourth watch of the night he cometh unto them, walking upon the sea, and would have passed by them."

Mark 13:33: "Take ye heed, watch and pray: for ye know not when the time is."

Mark 13:34: "For the Son of Man is as a man taking a far journey, who left his house, and gave authority to his servants, and to every man his work, and commanded the porter to watch."

Mark 13:35: "Watch ye therefore: for ye know not when the master of the house cometh, at even, or at midnight, or at the cockcrowing, or in the morning:"

Mark 13:37: "And what I say unto you I say unto all, Watch."

Mark 14:34: "And saith unto them, My soul is exceeding sorrowful unto death: tarry ye here, and watch."

Mark 14:37: "And he cometh, and findeth them sleeping, and saith unto Peter, Simon, sleepest thou? couldest not thou watch one hour?"

Mark 14:38: "Watch ye and pray, lest ye enter into temptation. The spirit truly is ready, but the flesh is weak."

Luke 2:8: "And there were in the same country shepherds abiding in the field, keeping watch over their flock by night."

Luke 12:38: "And if he shall come in the second watch, or come in the third watch, and find them so, blessed are those servants."

Luke 21:36: "Watch ye therefore, and pray always, that ye may be accounted worthy to escape all these things that shall come to pass, and to stand before the Son of man."

Acts 20:31: "Therefore watch, and remember, that by the space of three years I ceased not to warn every one night and day with tears."

1 Corinthians 16:13: "Watch ye, stand fast in the faith, quit you like men, be strong."

Colossians 4:2: "Continue in prayer, and watch in the same with thanksgiving;"

1 Thessalonians 5:6: "Therefore let us not sleep, as do others; but let us watch and be sober."

2 Timothy 4:5: "But watch thou in all things, endure afflictions, do the work of an evangelist, make full proof of thy ministry."

Hebrews 13:17: "Obey them that have the rule over you, and submit yourselves: for they watch for your souls, as they that must give account, that they may do it with joy, and not with grief: for that is unprofitable for you."

1 Peter 4:7: "But the end of all things is at hand: be ye therefore sober, and watch unto prayer."

Revelation 3:3: "Remember therefore how thou hast received and heard, and hold fast, and repent. If therefore thou shalt not watch, I will come on thee as a thief, and thou shalt not know what hour I will come upon thee."



## **WATCHED**

Occurrences: 12

Jeremiah 20:10: "For I heard the defaming of many, fear on every side. Report, say they, and we will report it. All my familiars watched for my halting, saying, Peradventure he will be enticed, and we shall prevail against him, and we shall take our revenge on him."

Jeremiah 31:28: "And it shall come to pass, that like as I have watched over them, to pluck up, and to break down, and to throw down, and to destroy, and to afflict; so will I watch over them, to build, and to plant, saith the LORD."

Lamentations 4:17: "As for us, our eyes as yet failed for our vain help: in our watching we have watched for a nation that could not save us."

Daniel 9:14: "Therefore hath the LORD watched upon the evil, and brought it upon us: for the LORD our God is righteous in all his works which he doeth: for we obeyed not his voice."

Matthew 24:43: "But know this, that if the goodman of the house had known in what watch the thief would come, he would have watched, and would not have suffered his house to be broken up."

Matthew 27:36: "And sitting down they watched him there;"

Mark 3:2: "And they watched him, whether he would heal him on the sabbath day; that they might accuse him."

Luke 6:7: "And the scribes and Pharisees watched him, whether he would heal on the sabbath day; that they might find an accusation against him."

Luke 12:39: "And this know, that if the goodman of the house had known what hour the thief would come, he would have watched, and not have suffered his house to be broken through."

Luke 14:1: "And it came to pass, as he went into the house of one of the chief Pharisees to eat bread on the sabbath day, that they watched him."

Luke 20:20: "And they watched him, and sent forth spies, which should feign themselves just men, that they might take hold of his words, that so they might deliver him unto the power and authority of the governor."

Acts 9:24: "But their laying await was known of Saul. And they watched the gates day and night to kill him."

## **WATCHER**

Occurrences: 2

Daniel 4:13: "I saw in the visions of my head upon my bed, and, behold, a watcher and an holy one came down from heaven;"

Daniel 4:23: "And whereas the king saw a watcher and an holy one coming down from heaven, and saying, Hew the tree down, and destroy it; yet leave the stump of the roots thereof in the earth, even with a band of iron and brass, in the tender grass of the field; and let it be wet with the dew of heaven, and let his portion be with the beasts of the field, till seven times pass over him;"

## **WATCHERS**

Occurrences: 2

Jeremiah 4:16: "Make ye mention to the nations; behold, publish against Jerusalem, that watchers come from a far country, and give out their voice against the cities of Judah."

Daniel 4:17: "This matter is by the decree of the watchers, and the demand by the word of the holy ones: to the intent that the living may know that the most High ruleth in the kingdom of men, and giveth it to whomsoever he will, and setteth up over it the basest of men."

## **WATCHES**

Occurrences: 5

Nehemiah 7:3: "And I said unto them, Let not the gates of Jerusalem be opened until the sun be hot; and while they stand by, let them shut the doors, and bar them: and appoint watches of the inhabitants of Jerusalem, every one in his watch, and every one to be over against his house."  
Nehemiah 12:9: "Also Bakbukiah and Unni, their brethren, were over against them in the watches."  
Psalms 63:6: "When I remember thee upon my bed, and meditate on thee in the night watches."  
Psalms 119:148: "Mine eyes prevent the night watches, that I might meditate in thy word."  
Lamentations 2:19: "Arise, cry out in the night: in the beginning of the watches pour out thine heart like water before the face of the LORD: lift up thy hands toward him for the life of thy young children, that faint for hunger in the top of every street."

## **WATCHETH**

Occurrences: 3

Psalms 37:32: "The wicked watcheth the righteous, and seeketh to slay him."  
Ezekiel 7:6: "An end is come, the end is come: it watcheth for thee; behold, it is come."  
Revelation 16:15: "Behold, I come as a thief. Blessed is he that watcheth, and keepeth his garments, lest he walk naked, and they see his shame."

## **WATCHFUL**

Occurrences: 1

Revelation 3:2: "Be watchful, and strengthen the things which remain, that are ready to die: for I have not found thy works perfect before God."

## **WATCHING**

Occurrences: 6

1 Samuel 4:13: "And when he came, lo, Eli sat upon a seat by the wayside watching: for his heart trembled for the ark of God. And when the man came into the city, and told it, all the city cried out."  
Proverbs 8:34: "Blessed is the man that heareth me, watching daily at my gates, waiting at the posts of my doors."  
Lamentations 4:17: "As for us, our eyes as yet failed for our vain help: in our watching we have watched for a nation that could not save us."  
Matthew 27:54: "Now when the centurion, and they that were with him, watching Jesus, saw the earthquake, and those things that were done, they feared greatly, saying, Truly this was the Son of God."  
Luke 12:37: "Blessed are those servants, whom the lord when he cometh shall find watching: verily I say unto you, that he shall gird himself, and make them to sit down to meat, and will come forth and serve them."  
Ephesians 6:18: "Praying always with all prayer and supplication in the Spirit, and watching thereunto with all perseverance and supplication for all saints;"

## **WATCHINGS**

Occurrences: 2

2 Corinthians 6:5: "In stripes, in imprisonments, in tumults, in labours, in watchings, in fastings;"  
2 Corinthians 11:27: "In weariness and painfulness, in watchings often, in hunger and thirst, in fastings often, in cold and nakedness."

## WATCHMAN

Occurrences: 16

2 Samuel 18:24: "And David sat between the two gates: and the watchman went up to the roof over the gate unto the wall, and lifted up his eyes, and looked, and behold a man running alone."

2 Samuel 18:25: "And the watchman cried, and told the king. And the king said, If he be alone, there is tidings in his mouth. And he came apace, and drew near."

2 Samuel 18:26: "And the watchman saw another man running: and the watchman called unto the porter, and said, Behold another man running alone. And the king said, He also bringeth tidings."

2 Samuel 18:27: "And the watchman said, Me thinketh the running of the foremost is like the running of Ahimaaz the son of Zadok. And the king said, He is a good man, and cometh with good tidings."

2 Kings 9:17: "And there stood a watchman on the tower in Jezreel, and he spied the company of Jehu as he came, and said, I see a company. And Joram said, Take an horseman, and send to meet them, and let him say, Is it peace?"

2 Kings 9:18: "So there went one on horseback to meet him, and said, Thus saith the king, Is it peace? And Jehu said, What hast thou to do with peace? turn thee behind me. And the watchman told, saying, The messenger came to them, but he cometh not again."

2 Kings 9:20: "And the watchman told, saying, He came even unto them, and cometh not again: and the driving is like the driving of Jehu the son of Nimshi; for he driveth furiously."

Psalms 127:1: "Except the LORD build the house, they labour in vain that build it: except the LORD keep the city, the watchman waketh but in vain."

Isaiah 21:6: "For thus hath the LORD said unto me, Go, set a watchman, let him declare what he seeth."

Isaiah 21:11: "The burden of Dumah. He calleth to me out of Seir, Watchman, what of the night? Watchman, what of the night?"

Isaiah 21:12: "The watchman said, The morning cometh, and also the night: if ye will enquire, enquire ye: return, come."

Ezekiel 3:17: "Son of man, I have made thee a watchman unto the house of Israel: therefore hear the word at my mouth, and give them warning from me."

Ezekiel 33:2: "Son of man, speak to the children of thy people, and say unto them, When I bring the sword upon a land, if the people of the land take a man of their coasts, and set him for their watchman:"

Ezekiel 33:6: "But if the watchman see the sword come, and blow not the trumpet, and the people be not warned; if the sword come, and take any person from among them, he is taken away in his iniquity; but his blood will I require at the watchman's hand."

Ezekiel 33:7: "So thou, O son of man, I have set thee a watchman unto the house of Israel; therefore thou shalt hear the word at my mouth, and warn them from me."

Hosea 9:8: "The watchman of Ephraim was with my God: but the prophet is a snare of a fowler in all his ways, and hatred in the house of his God."

## WATCHMEN

Occurrences: 12

1 Samuel 14:16: "And the watchmen of Saul in Gibeah of Benjamin looked; and, behold, the multitude melted away, and they went on beating down one another."

2 Kings 17:9: "And the children of Israel did secretly those things that were not right against the LORD their God, and they built them high places in all their cities, from the tower of the watchmen to the fenced city."

2 Kings 18:8: "He smote the Philistines, even unto Gaza, and the borders thereof, from the tower of the watchmen to the fenced city."

Song of Solomon 3:3: "The watchmen that go about the city found me: to whom I said, Saw ye him whom my soul loveth?"

Song of Solomon 5:7: "The watchmen that went about the city found me, they smote me, they wounded me; the keepers of the walls took away my veil from me."

Isaiah 52:8: "Thy watchmen shall lift up the voice; with the voice together shall they sing: for they shall see eye to eye, when the LORD shall bring again Zion."

Isaiah 56:10: "His watchmen are blind: they are all ignorant, they are all dumb dogs, they cannot bark; sleeping, lying down, loving to slumber."

Isaiah 62:6: "I have set watchmen upon thy walls, O Jerusalem, which shall never hold their peace day nor night: ye that make mention of the LORD, keep not silence,"

Jeremiah 6:17: "Also I set watchmen over you, saying, Hearken to the sound of the trumpet. But they said, We will not hearken."

Jeremiah 31:6: "For there shall be a day, that the watchmen upon the mount Ephraim shall cry, Arise ye, and let us go up to Zion unto the LORD our God."

Jeremiah 51:12: "Set up the standard upon the walls of Babylon, make the watch strong, set up the watchmen, prepare the ambushes: for the LORD hath both devised and done that which he spake against the inhabitants of Babylon."

Micah 7:4: "The best of them is as a brier: the most upright is sharper than a thorn hedge: the day of thy watchmen and thy visitation cometh; now shall be their perplexity."

## **WATCHTOWER**

Occurrences: 2

Isaiah 21:5: "Prepare the table, watch in the watchtower, eat, drink: arise, ye princes, and anoint the shield."

Isaiah 21:8: "And he cried, A lion: My lord, I stand continually upon the watchtower in the daytime, and I am set in my ward whole nights:"

## **WATER**

Occurrences: 363

Genesis 2:10: "And a river went out of Eden to water the garden; and from thence it was parted, and became into four heads."

Genesis 16:7: "And the angel of the LORD found her by a fountain of water in the wilderness, by the fountain in the way to Shur."

Genesis 18:4: "Let a little water, I pray you, be fetched, and wash your feet, and rest yourselves under the tree:"

Genesis 21:14: "And Abraham rose up early in the morning, and took bread, and a bottle of water, and gave it unto Hagar, putting it on her shoulder, and the child, and sent her away: and she departed, and wandered in the wilderness of Beersheba."

Genesis 21:15: "And the water was spent in the bottle, and she cast the child under one of the shrubs."

Genesis 21:19: "And God opened her eyes, and she saw a well of water; and she went, and filled the bottle with water, and gave the lad drink."

Genesis 21:25: "And Abraham reproved Abimelech because of a well of water, which Abimelech's servants had violently taken away."

Genesis 24:11: "And he made his camels to kneel down without the city by a well of water at the time of the evening, even the time that women go out to draw water."

Genesis 24:13: "Behold, I stand here by the well of water; and the daughters of the men of the city come out to draw water:"

Genesis 24:17: "And the servant ran to meet her, and said, Let me, I pray thee, drink a little water of

thy pitcher."

Genesis 24:19: "And when she had done giving him drink, she said, I will draw water for thy camels also, until they have done drinking."

Genesis 24:20: "And she hasted, and emptied her pitcher into the trough, and ran again unto the well to draw water, and drew for all his camels."

Genesis 24:32: "And the man came into the house: and he ungirded his camels, and gave straw and provender for the camels, and water to wash his feet, and the men's feet that were with him."

Genesis 24:43: "Behold, I stand by the well of water; and it shall come to pass, that when the virgin cometh forth to draw water, and I say to her, Give me, I pray thee, a little water of thy pitcher to drink;"

Genesis 24:45: "And before I had done speaking in mine heart, behold, Rebekah came forth with her pitcher on her shoulder; and she went down unto the well, and drew water: and I said unto her, Let me drink, I pray thee."

Genesis 26:18: "And Isaac digged again the wells of water, which they had digged in the days of Abraham his father; for the Philistines had stopped them after the death of Abraham: and he called their names after the names by which his father had called them."

Genesis 26:19: "And Isaac's servants digged in the valley, and found there a well of springing water."

Genesis 26:20: "And the herdmen of Gerar did strive with Isaac's herdmen, saying, The water is ours: and he called the name of the well Esek; because they strove with him."

Genesis 26:32: "And it came to pass the same day, that Isaac's servants came, and told him concerning the well which they had digged, and said unto him, We have found water."

Genesis 29:7: "And he said, Lo, it is yet high day, neither is it time that the cattle should be gathered together: water ye the sheep, and go and feed them."

Genesis 29:8: "And they said, We cannot, until all the flocks be gathered together, and till they roll the stone from the well's mouth; then we water the sheep."

Genesis 37:24: "And they took him, and cast him into a pit: and the pit was empty, there was no water in it."

Genesis 43:24: "And the man brought the men into Joseph's house, and gave them water, and they washed their feet; and he gave their asses provender."

Genesis 49:4: "Unstable as water, thou shalt not excel; because thou wentest up to thy father's bed; then defiledst thou it: he went up to my couch."

Exodus 2:10: "And the child grew, and she brought him unto Pharaoh's daughter, and he became her son. And she called his name Moses: and she said, Because I drew him out of the water."

Exodus 2:16: "Now the priest of Midian had seven daughters: and they came and drew water, and filled the troughs to water their father's flock."

Exodus 2:19: "And they said, An Egyptian delivered us out of the hand of the shepherds, and also drew water enough for us, and watered the flock."

Exodus 4:9: "And it shall come to pass, if they will not believe also these two signs, neither hearken unto thy voice, that thou shalt take of the water of the river, and pour it upon the dry land: and the water which thou takest out of the river shall become blood upon the dry land."

Exodus 7:15: "Get thee unto Pharaoh in the morning; lo, he goeth out unto the water; and thou shalt stand by the river's brink against he come; and the rod which was turned to a serpent shalt thou take in thine hand."

Exodus 7:18: "And the fish that is in the river shall die, and the river shall stink; and the Egyptians shall lothe to drink of the water of the river."

Exodus 7:19: "And the LORD spake unto Moses, Say unto Aaron, Take thy rod, and stretch out thine hand upon the waters of Egypt, upon their streams, upon their rivers, and upon their ponds, and upon all their pools of water, that they may become blood; and that there may be blood throughout all the land of Egypt, both in vessels of wood, and in vessels of stone."

Exodus 7:21: "And the fish that was in the river died; and the river stank, and the Egyptians could not drink of the water of the river; and there was blood throughout all the land of Egypt."

Exodus 7:24: "And all the Egyptians digged round about the river for water to drink; for they could not drink of the water of the river."

Exodus 8:20: "And the LORD said unto Moses, Rise up early in the morning, and stand before Pharaoh; lo, he cometh forth to the water; and say unto him, Thus saith the LORD, Let my people go, that they may serve me."

Exodus 12:9: "Eat not of it raw, nor sodden at all with water, but roast with fire; his head with his legs, and with the purtenance thereof."

Exodus 15:22: "So Moses brought Israel from the Red sea, and they went out into the wilderness of Shur; and they went three days in the wilderness, and found no water."

Exodus 15:27: "And they came to Elim, where were twelve wells of water, and threescore and ten palm trees: and they encamped there by the waters."

Exodus 17:1: "And all the congregation of the children of Israel journeyed from the wilderness of Sin, after their journeys, according to the commandment of the LORD, and pitched in Rephidim: and there was no water for the people to drink."

Exodus 17:2: "Wherefore the people did chide with Moses, and said, Give us water that we may drink. And Moses said unto them, Why chide ye with me? wherefore do ye tempt the LORD?"

Exodus 17:3: "And the people thirsted there for water; and the people murmured against Moses, and said, Wherefore is this that thou hast brought us up out of Egypt, to kill us and our children and our cattle with thirst?"

Exodus 17:6: "Behold, I will stand before thee there upon the rock in Horeb; and thou shalt smite the rock, and there shall come water out of it, that the people may drink. And Moses did so in the sight of the elders of Israel."

Exodus 20:4: "Thou shalt not make unto thee any graven image, or any likeness of any thing that is in heaven above, or that is in the earth beneath, or that is in the water under the earth."

Exodus 23:25: "And ye shall serve the LORD your God, and he shall bless thy bread, and thy water; and I will take sickness away from the midst of thee."

Exodus 29:4: "And Aaron and his sons thou shalt bring unto the door of the tabernacle of the congregation, and shalt wash them with water."

Exodus 30:18: "Thou shalt also make a laver of brass, and his foot also of brass, to wash withal: and thou shalt put it between the tabernacle of the congregation and the altar, and thou shalt put water therein."

Exodus 30:20: "When they go into the tabernacle of the congregation, they shall wash with water, that they die not; or when they come near to the altar to minister, to burn offering made by fire unto the LORD:"

Exodus 32:20: "And he took the calf which they had made, and burnt it in the fire, and ground it to powder, and strawed it upon the water, and made the children of Israel drink of it."

Exodus 34:28: "And he was there with the LORD forty days and forty nights; he did neither eat bread, nor drink water. And he wrote upon the tables the words of the covenant, the ten commandments."

Exodus 40:7: "And thou shalt set the laver between the tent of the congregation and the altar, and shalt put water therein."

Exodus 40:12: "And thou shalt bring Aaron and his sons unto the door of the tabernacle of the congregation, and wash them with water."

Exodus 40:30: "And he set the laver between the tent of the congregation and the altar, and put water there, to wash withal."

Leviticus 1:9: "But his inwards and his legs shall he wash in water: and the priest shall burn all on the altar, to be a burnt sacrifice, an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD."

Leviticus 1:13: "But he shall wash the inwards and the legs with water: and the priest shall bring it

all, and burn it upon the altar: it is a burnt sacrifice, an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD."

Leviticus 6:28: "But the earthen vessel wherein it is sodden shall be broken: and if it be sodden in a brasen pot, it shall be both scoured, and rinsed in water."

Leviticus 8:6: "And Moses brought Aaron and his sons, and washed them with water."

Leviticus 8:21: "And he washed the inwards and the legs in water; and Moses burnt the whole ram upon the altar: it was a burnt sacrifice for a sweet savour, and an offering made by fire unto the LORD; as the LORD commanded Moses."

Leviticus 11:32: "And upon whatsoever any of them, when they are dead, doth fall, it shall be unclean; whether it be any vessel of wood, or raiment, or skin, or sack, whatsoever vessel it be, wherein any work is done, it must be put into water, and it shall be unclean until the even; so it shall be cleansed."

Leviticus 11:34: "Of all meat which may be eaten, that on which such water cometh shall be unclean: and all drink that may be drunk in every such vessel shall be unclean."

Leviticus 11:36: "Nevertheless a fountain or pit, wherein there is plenty of water, shall be clean: but that which toucheth their carcase shall be unclean."

Leviticus 11:38: "But if any water be put upon the seed, and any part of their carcase fall thereon, it shall be unclean unto you."

Leviticus 14:5: "And the priest shall command that one of the birds be killed in an earthen vessel over running water:"

Leviticus 14:6: "As for the living bird, he shall take it, and the cedar wood, and the scarlet, and the hyssop, and shall dip them and the living bird in the blood of the bird that was killed over the running water:"

Leviticus 14:8: "And he that is to be cleansed shall wash his clothes, and shave off all his hair, and wash himself in water, that he may be clean: and after that he shall come into the camp, and shall tarry abroad out of his tent seven days."

Leviticus 14:9: "But it shall be on the seventh day, that he shall shave all his hair off his head and his beard and his eyebrows, even all his hair he shall shave off: and he shall wash his clothes, also he shall wash his flesh in water, and he shall be clean."

Leviticus 14:50: "And he shall kill the one of the birds in an earthen vessel over running water:"

Leviticus 14:51: "And he shall take the cedar wood, and the hyssop, and the scarlet, and the living bird, and dip them in the blood of the slain bird, and in the running water, and sprinkle the house seven times:"

Leviticus 14:52: "And he shall cleanse the house with the blood of the bird, and with the running water, and with the living bird, and with the cedar wood, and with the hyssop, and with the scarlet:"

Leviticus 15:5: "And whosoever toucheth his bed shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:6: "And he that sitteth on any thing whereon he sat that hath the issue shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:7: "And he that toucheth the flesh of him that hath the issue shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:8: "And if he that hath the issue spit upon him that is clean; then he shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:10: "And whosoever toucheth any thing that was under him shall be unclean until the even: and he that beareth any of those things shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:11: "And whomsoever he toucheth that hath the issue, and hath not rinsed his hands in water, he shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:12: "And the vessel of earth, that he toucheth which hath the issue, shall be broken: and every vessel of wood shall be rinsed in water."

Leviticus 15:13: "And when he that hath an issue is cleansed of his issue; then he shall number to himself seven days for his cleansing, and wash his clothes, and bathe his flesh in running water, and shall be clean."

Leviticus 15:16: "And if any man's seed of copulation go out from him, then he shall wash all his flesh in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:17: "And every garment, and every skin, whereon is the seed of copulation, shall be washed with water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:18: "The woman also with whom man shall lie with seed of copulation, they shall both bathe themselves in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:21: "And whosoever toucheth her bed shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:22: "And whosoever toucheth any thing that she sat upon shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:27: "And whosoever toucheth those things shall be unclean, and shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 16:4: "He shall put on the holy linen coat, and he shall have the linen breeches upon his flesh, and shall be girded with a linen girdle, and with the linen mitre shall he be attired: these are holy garments; therefore shall he wash his flesh in water, and so put them on."

Leviticus 16:24: "And he shall wash his flesh with water in the holy place, and put on his garments, and come forth, and offer his burnt offering, and the burnt offering of the people, and make an atonement for himself, and for the people."

Leviticus 16:26: "And he that let go the goat for the scapegoat shall wash his clothes, and bathe his flesh in water, and afterward come into the camp."

Leviticus 16:28: "And he that burneth them shall wash his clothes, and bathe his flesh in water, and afterward he shall come into the camp."

Leviticus 17:15: "And every soul that eateth that which died of itself, or that which was torn with beasts, whether it be one of your own country, or a stranger, he shall both wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even: then shall he be clean."

Leviticus 22:6: "The soul which hath touched any such shall be unclean until even, and shall not eat of the holy things, unless he wash his flesh with water."

Numbers 5:17: "And the priest shall take holy water in an earthen vessel; and of the dust that is in the floor of the tabernacle the priest shall take, and put it into the water:"

Numbers 5:18: "And the priest shall set the woman before the LORD, and uncover the woman's head, and put the offering of memorial in her hands, which is the jealousy offering: and the priest shall have in his hand the bitter water that causeth the curse:"

Numbers 5:19: "And the priest shall charge her by an oath, and say unto the woman, If no man have lain with thee, and if thou hast not gone aside to uncleanness with another instead of thy husband, be thou free from this bitter water that causeth the curse:"

Numbers 5:22: "And this water that causeth the curse shall go into thy bowels, to make thy belly to swell, and thy thigh to rot: And the woman shall say, Amen, amen."

Numbers 5:23: "And the priest shall write these curses in a book, and he shall blot them out with the bitter water:"

Numbers 5:24: "And he shall cause the woman to drink the bitter water that causeth the curse: and the water that causeth the curse shall enter into her, and become bitter."

Numbers 5:26: "And the priest shall take an handful of the offering, even the memorial thereof, and burn it upon the altar, and afterward shall cause the woman to drink the water."

Numbers 5:27: "And when he hath made her to drink the water, then it shall come to pass, that, if she be defiled, and have done trespass against her husband, that the water that causeth the curse shall enter into her, and become bitter, and her belly shall swell, and her thigh shall rot: and the woman shall be a curse among her people."



Numbers 8:7: "And thus shalt thou do unto them, to cleanse them: Sprinkle water of purifying upon them, and let them shave all their flesh, and let them wash their clothes, and so make themselves clean."

Numbers 19:7: "Then the priest shall wash his clothes, and he shall bathe his flesh in water, and afterward he shall come into the camp, and the priest shall be unclean until the even."

Numbers 19:8: "And he that burneth her shall wash his clothes in water, and bathe his flesh in water, and shall be unclean until the even."

Numbers 19:9: "And a man that is clean shall gather up the ashes of the heifer, and lay them up without the camp in a clean place, and it shall be kept for the congregation of the children of Israel for a water of separation: it is a purification for sin."

Numbers 19:13: "Whosoever toucheth the dead body of any man that is dead, and purifieth not himself, defileth the tabernacle of the LORD; and that soul shall be cut off from Israel: because the water of separation was not sprinkled upon him, he shall be unclean; his uncleanness is yet upon him."

Numbers 19:17: "And for an unclean person they shall take of the ashes of the burnt heifer of purification for sin, and running water shall be put thereto in a vessel:"

Numbers 19:18: "And a clean person shall take hyssop, and dip it in the water, and sprinkle it upon the tent, and upon all the vessels, and upon the persons that were there, and upon him that touched a bone, or one slain, or one dead, or a grave:"

Numbers 19:19: "And the clean person shall sprinkle upon the unclean on the third day, and on the seventh day: and on the seventh day he shall purify himself, and wash his clothes, and bathe himself in water, and shall be clean at even."

Numbers 19:20: "But the man that shall be unclean, and shall not purify himself, that soul shall be cut off from among the congregation, because he hath defiled the sanctuary of the LORD: the water of separation hath not been sprinkled upon him; he is unclean."

Numbers 19:21: "And it shall be a perpetual statute unto them, that he that sprinkleth the water of separation shall wash his clothes; and he that toucheth the water of separation shall be unclean until even."

Numbers 20:2: "And there was no water for the congregation: and they gathered themselves together against Moses and against Aaron."

Numbers 20:5: "And wherefore have ye made us to come up out of Egypt, to bring us in unto this evil place? it is no place of seed, or of figs, or of vines, or of pomegranates; neither is there any water to drink."

Numbers 20:8: "Take the rod, and gather thou the assembly together, thou, and Aaron thy brother, and speak ye unto the rock before their eyes; and it shall give forth his water, and thou shalt bring forth to them water out of the rock: so thou shalt give the congregation and their beasts drink."

Numbers 20:10: "And Moses and Aaron gathered the congregation together before the rock, and he said unto them, Hear now, ye rebels; must we fetch you water out of this rock?"

Numbers 20:11: "And Moses lifted up his hand, and with his rod he smote the rock twice: and the water came out abundantly, and the congregation drank, and their beasts also."

Numbers 20:13: "This is the water of Meribah; because the children of Israel strove with the LORD, and he was sanctified in them."

Numbers 20:17: "Let us pass, I pray thee, through thy country: we will not pass through the fields, or through the vineyards, neither will we drink of the water of the wells: we will go by the king's high way, we will not turn to the right hand nor to the left, until we have passed thy borders."

Numbers 20:19: "And the children of Israel said unto him, We will go by the high way: and if I and my cattle drink of thy water, then I will pay for it: I will only, without doing anything else, go through on my feet."

Numbers 20:24: "Aaron shall be gathered unto his people: for he shall not enter into the land which I have given unto the children of Israel, because ye rebelled against my word at the water of

Meribah."

Numbers 21:5: "And the people spake against God, and against Moses, Wherefore have ye brought us up out of Egypt to die in the wilderness? for there is no bread, neither is there any water; and our soul loatheth this light bread."

Numbers 21:16: "And from thence they went to Beer: that is the well whereof the LORD spake unto Moses, Gather the people together, and I will give them water."

Numbers 24:7: "He shall pour the water out of his buckets, and his seed shall be in many waters, and his king shall be higher than Agag, and his kingdom shall be exalted."

Numbers 27:14: "For ye rebelled against my commandment in the desert of Zin, in the strife of the congregation, to sanctify me at the water before their eyes: that is the water of Meribah in Kadesh in the wilderness of Zin."

Numbers 31:23: "Every thing that may abide the fire, ye shall make it go through the fire, and it shall be clean: nevertheless it shall be purified with the water of separation: and all that abideth not the fire ye shall make go through the water."

Numbers 33:9: "And they removed from Marah, and came unto Elim: and in Elim were twelve fountains of water, and threescore and ten palm trees; and they pitched there."

Numbers 33:14: "And they removed from Alush, and encamped at Rephidim, where was no water for the people to drink."

Deuteronomy 2:6: "Ye shall buy meat of them for money, that ye may eat; and ye shall also buy water of them for money, that ye may drink."

Deuteronomy 2:28: "Thou shalt sell me meat for money, that I may eat; and give me water for money, that I may drink: only I will pass through on my feet;"

Deuteronomy 8:7: "For the LORD thy God bringeth thee into a good land, a land of brooks of water, of fountains and depths that spring out of valleys and hills;"

Deuteronomy 8:15: "Who led thee through that great and terrible wilderness, wherein were fiery serpents, and scorpions, and drought, where there was no water; who brought thee forth water out of the rock of flint;"

Deuteronomy 9:9: "When I was gone up into the mount to receive the tables of stone, even the tables of the covenant which the LORD made with you, then I abode in the mount forty days and forty nights, I neither did eat bread nor drink water:"

Deuteronomy 9:18: "And I fell down before the LORD, as at the first, forty days and forty nights: I did neither eat bread, nor drink water, because of all your sins which ye sinned, in doing wickedly in the sight of the LORD, to provoke him to anger."

Deuteronomy 11:4: "And what he did unto the army of Egypt, unto their horses, and to their chariots; how he made the water of the Red sea to overflow them as they pursued after you, and how the LORD hath destroyed them unto this day;"

Deuteronomy 11:11: "But the land, whither ye go to possess it, is a land of hills and valleys, and drinketh water of the rain of heaven:"

Deuteronomy 12:16: "Only ye shall not eat the blood; ye shall pour it upon the earth as water."

Deuteronomy 12:24: "Thou shalt not eat it; thou shalt pour it upon the earth as water."

Deuteronomy 15:23: "Only thou shalt not eat the blood thereof; thou shalt pour it upon the ground as water."

Deuteronomy 23:4: "Because they met you not with bread and with water in the way, when ye came forth out of Egypt; and because they hired against thee Balaam the son of Beor of Pethor of Mesopotamia, to curse thee."

Deuteronomy 23:11: "But it shall be, when evening cometh on, he shall wash himself with water: and when the sun is down, he shall come into the camp again."

Deuteronomy 29:11: "Your little ones, your wives, and thy stranger that is in thy camp, from the hewer of thy wood unto the drawer of thy water:"

Joshua 2:10: "For we have heard how the LORD dried up the water of the Red sea for you, when ye

came out of Egypt; and what ye did unto the two kings of the Amorites, that were on the other side Jordan, Sihon and Og, whom ye utterly destroyed."

Joshua 3:8: "And thou shalt command the priests that bear the ark of the covenant, saying, When ye are come to the brink of the water of Jordan, ye shall stand still in Jordan."

Joshua 3:15: "And as they that bare the ark were come unto Jordan, and the feet of the priests that bare the ark were dipped in the brim of the water, (for Jordan overfloweth all his banks all the time of harvest,)"

Joshua 7:5: "And the men of Ai smote of them about thirty and six men: for they chased them from before the gate even unto Shebarim, and smote them in the going down: wherefore the hearts of the people melted, and became as water."

Joshua 9:21: "And the princes said unto them, Let them live; but let them be hewers of wood and drawers of water unto all the congregation; as the princes had promised them."

Joshua 9:23: "Now therefore ye are cursed, and there shall none of you be freed from being bondmen, and hewers of wood and drawers of water for the house of my God."

Joshua 9:27: "And Joshua made them that day hewers of wood and drawers of water for the congregation, and for the altar of the LORD, even unto this day, in the place which he should choose."

Joshua 15:9: "And the border was drawn from the top of the hill unto the fountain of the water of Nephtoah, and went out to the cities of mount Ephron; and the border was drawn to Baalah, which is Kirjathjearim:"

Joshua 15:19: "Who answered, Give me a blessing; for thou hast given me a south land; give me also springs of water. And he gave her the upper springs, and the nether springs."

Joshua 16:1: "And the lot of the children of Joseph fell from Jordan by Jericho, unto the water of Jericho on the east, to the wilderness that goeth up from Jericho throughout mount Bethel,"

Judges 1:15: "And she said unto him, Give me a blessing: for thou hast given me a south land; give me also springs of water. And Caleb gave her the upper springs and the nether springs."

Judges 4:19: "And he said unto her, Give me, I pray thee, a little water to drink; for I am thirsty. And she opened a bottle of milk, and gave him drink, and covered him."

Judges 5:4: "LORD, when thou wentest out of Seir, when thou marchedst out of the field of Edom, the earth trembled, and the heavens dropped, the clouds also dropped water."

Judges 5:11: "They that are delivered from the noise of archers in the places of drawing water, there shall they rehearse the righteous acts of the LORD, even the righteous acts toward the inhabitants of his villages in Israel: then shall the people of the LORD go down to the gates."

Judges 5:25: "He asked water, and she gave him milk; she brought forth butter in a lordly dish."

Judges 6:38: "And it was so: for he rose up early on the morrow, and thrust the fleece together, and wringed the dew out of the fleece, a bowl full of water."

Judges 7:4: "And the LORD said unto Gideon, The people are yet too many; bring them down unto the water, and I will try them for thee there: and it shall be, that of whom I say unto thee, This shall go with thee, the same shall go with thee; and of whomsoever I say unto thee, This shall not go with thee, the same shall not go."

Judges 7:5: "So he brought down the people unto the water: and the LORD said unto Gideon, Every one that lappeth of the water with his tongue, as a dog lappeth, him shalt thou set by himself; likewise every one that boweth down upon his knees to drink."

Judges 7:6: "And the number of them that lapped, putting their hand to their mouth, were three hundred men: but all the rest of the people bowed down upon their knees to drink water."

Judges 15:19: "But God clave an hollow place that was in the jaw, and there came water thereout; and when he had drunk, his spirit came again, and he revived: wherefore he called the name thereof Enhakkore, which is in Lehi unto this day."

1 Samuel 7:6: "And they gathered together to Mizpeh, and drew water, and poured it out before the LORD, and fasted on that day, and said there, We have sinned against the LORD. And Samuel

judged the children of Israel in Mizpeh."

1 Samuel 9:11: "And as they went up the hill to the city, they found young maidens going out to draw water, and said unto them, Is the seer here?"

1 Samuel 25:11: "Shall I then take my bread, and my water, and my flesh that I have killed for my shearers, and give it unto men, whom I know not whence they be?"

1 Samuel 26:11: "The LORD forbid that I should stretch forth mine hand against the LORD's anointed: but, I pray thee, take thou now the spear that is at his bolster, and the cruse of water, and let us go."

1 Samuel 26:12: "So David took the spear and the cruse of water from Saul's bolster; and they gat them away, and no man saw it, nor knew it, neither awaked: for they were all asleep; because a deep sleep from the LORD was fallen upon them."

1 Samuel 26:16: "This thing is not good that thou hast done. As the LORD liveth, ye are worthy to die, because ye have not kept your master, the LORD's anointed. And now see where the king's spear is, and the cruse of water that was at his bolster."

1 Samuel 30:11: "And they found an Egyptian in the field, and brought him to David, and gave him bread, and he did eat; and they made him drink water;"

1 Samuel 30:12: "And they gave him a piece of a cake of figs, and two clusters of raisins: and when he had eaten, his spirit came again to him: for he had eaten no bread, nor drunk any water, three days and three nights."

2 Samuel 14:14: "For we must needs die, and are as water spilt on the ground, which cannot be gathered up again; neither doth God respect any person: yet doth he devise means, that his banished be not expelled from him."

2 Samuel 17:20: "And when Absalom's servants came to the woman to the house, they said, Where is Ahimaaz and Jonathan? And the woman said unto them, They be gone over the brook of water. And when they had sought and could not find them, they returned to Jerusalem."

2 Samuel 17:21: "And it came to pass, after they were departed, that they came up out of the well, and went and told king David, and said unto David, Arise, and pass quickly over the water: for thus hath Ahithophel counselled against you."

2 Samuel 21:10: "And Rizpah the daughter of Aiah took sackcloth, and spread it for her upon the rock, from the beginning of harvest until water dropped upon them out of heaven, and suffered neither the birds of the air to rest on them by day, nor the beasts of the field by night."

2 Samuel 23:15: "And David longed, and said, Oh that one would give me drink of the water of the well of Bethlehem, which is by the gate!"

2 Samuel 23:16: "And the three mighty men brake through the host of the Philistines, and drew water out of the well of Bethlehem, that was by the gate, and took it, and brought it to David: nevertheless he would not drink thereof, but poured it out unto the LORD."

1 Kings 13:8: "And the man of God said unto the king, If thou wilt give me half thine house, I will not go in with thee, neither will I eat bread nor drink water in this place:"

1 Kings 13:9: "For so was it charged me by the word of the LORD, saying, Eat no bread, nor drink water, nor turn again by the same way that thou camest."

1 Kings 13:16: "And he said, I may not return with thee, nor go in with thee: neither will I eat bread nor drink water with thee in this place:"

1 Kings 13:17: "For it was said to me by the word of the LORD, Thou shalt eat no bread nor drink water there, nor turn again to go by the way that thou camest."

1 Kings 13:18: "He said unto him, I am a prophet also as thou art; and an angel spake unto me by the word of the LORD, saying, Bring him back with thee into thine house, that he may eat bread and drink water. But he lied unto him."

1 Kings 13:19: "So he went back with him, and did eat bread in his house, and drank water."

1 Kings 13:22: "But camest back, and hast eaten bread and drunk water in the place, of the which the Lord did say to thee, Eat no bread, and drink no water; thy carcass shall not come unto the

sepulchre of thy fathers."

1 Kings 14:15: "For the LORD shall smite Israel, as a reed is shaken in the water, and he shall root up Israel out of this good land, which he gave to their fathers, and shall scatter them beyond the river, because they have made their groves, provoking the LORD to anger."

1 Kings 17:10: "So he arose and went to Zarephath. And when he came to the gate of the city, behold, the widow woman was there gathering of sticks: and he called to her, and said, Fetch me, I pray thee, a little water in a vessel, that I may drink."

1 Kings 18:4: "For it was so, when Jezebel cut off the prophets of the LORD, that Obadiah took an hundred prophets, and hid them by fifty in a cave, and fed them with bread and water.)"

1 Kings 18:5: "And Ahab said unto Obadiah, Go into the land, unto all fountains of water, and unto all brooks: peradventure we may find grass to save the horses and mules alive, that we lose not all the beasts."

1 Kings 18:13: "Was it not told my lord what I did when Jezebel slew the prophets of the LORD, how I hid an hundred men of the LORD's prophets by fifty in a cave, and fed them with bread and water?"

1 Kings 18:33: "And he put the wood in order, and cut the bullock in pieces, and laid him on the wood, and said, Fill four barrels with water, and pour it on the burnt sacrifice, and on the wood."

1 Kings 18:35: "And the water ran round about the altar; and he filled the trench also with water."

1 Kings 18:38: "Then the fire of the LORD fell, and consumed the burnt sacrifice, and the wood, and the stones, and the dust, and licked up the water that was in the trench."

1 Kings 19:6: "And he looked, and, behold, there was a cake baked on the coals, and a cruse of water at his head. And he did eat and drink, and laid him down again."

1 Kings 22:27: "And say, Thus saith the king, Put this fellow in the prison, and feed him with bread of affliction and with water of affliction, until I come in peace."

2 Kings 2:19: "And the men of the city said unto Elisha, Behold, I pray thee, the situation of this city is pleasant, as my lord seeth: but the water is naught, and the ground barren."

2 Kings 3:9: "So the king of Israel went, and the king of Judah, and the king of Edom: and they fetched a compass of seven days' journey: and there was no water for the host, and for the cattle that followed them."

2 Kings 3:11: "But Jehoshaphat said, Is there not here a prophet of the LORD, that we may enquire of the LORD by him? And one of the king of Israel's servants answered and said, Here is Elisha the son of Shaphat, which poured water on the hands of Elijah."

2 Kings 3:17: "For thus saith the LORD, Ye shall not see wind, neither shall ye see rain; yet that valley shall be filled with water, that ye may drink, both ye, and your cattle, and your beasts."

2 Kings 3:19: "And ye shall smite every fenced city, and every choice city, and shall fell every good tree, and stop all wells of water, and mar every good piece of land with stones."

2 Kings 3:20: "And it came to pass in the morning, when the meat offering was offered, that, behold, there came water by the way of Edom, and the country was filled with water."

2 Kings 3:22: "And they rose up early in the morning, and the sun shone upon the water, and the Moabites saw the water on the other side as red as blood:"

2 Kings 3:25: "And they beat down the cities, and on every good piece of land cast every man his stone, and filled it; and they stopped all the wells of water, and felled all the good trees: only in Kirharaseth left they the stones thereof; howbeit the slingers went about it, and smote it."

2 Kings 6:5: "But as one was felling a beam, the axe head fell into the water: and he cried, and said, Alas, master! for it was borrowed."

2 Kings 6:22: "And he answered, Thou shalt not smite them: wouldest thou smite those whom thou hast taken captive with thy sword and with thy bow? set bread and water before them, that they may eat and drink, and go to their master."

2 Kings 8:15: "And it came to pass on the morrow, that he took a thick cloth, and dipped it in water, and spread it on his face, so that he died: and Hazael reigned in his stead."

2 Kings 20:20: "And the rest of the acts of Hezekiah, and all his might, and how he made a pool, and a conduit, and brought water into the city, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

1 Chronicles 11:17: "And David longed, and said, Oh that one would give me drink of the water of the well of Bethlehem, that is at the gate!"

1 Chronicles 11:18: "And the three brake through the host of the Philistines, and drew water out of the well of Bethlehem, that was by the gate, and took it, and brought it to David: but David would not drink of it, but poured it out to the LORD."

2 Chronicles 18:26: "And say, Thus saith the king, Put this fellow in the prison, and feed him with bread of affliction and with water of affliction, until I return in peace."

2 Chronicles 32:4: "So there was gathered much people together, who stopped all the fountains, and the brook that ran through the midst of the land, saying, Why should the kings of Assyria come, and find much water?"

Ezra 10:6: "Then Ezra rose up from before the house of God, and went into the chamber of Johanan the son of Eliashib: and when he came thither, he did eat no bread, nor drink water: for he mourned because of the transgression of them that had been carried away."

Nehemiah 3:26: "Moreover the Nethinims dwelt in Ophel, unto the place over against the water gate toward the east, and the tower that lieth out."

Nehemiah 8:1: "And all the people gathered themselves together as one man into the street that was before the water gate; and they spake unto Ezra the scribe to bring the book of the law of Moses, which the LORD had commanded to Israel."

Nehemiah 8:3: "And he read therein before the street that was before the water gate from the morning until midday, before the men and the women, and those that could understand; and the ears of all the people were attentive unto the book of the law."

Nehemiah 8:16: "So the people went forth, and brought them, and made themselves booths, every one upon the roof of his house, and in their courts, and in the courts of the house of God, and in the street of the water gate, and in the street of the gate of Ephraim."

Nehemiah 9:15: "And gavest them bread from heaven for their hunger, and broughtest forth water for them out of the rock for their thirst, and promisedst them that they should go in to possess the land which thou hadst sworn to give them."

Nehemiah 9:20: "Thou gavest also thy good spirit to instruct them, and withheldest not thy manna from their mouth, and gavest them water for their thirst."

Nehemiah 12:37: "And at the fountain gate, which was over against them, they went up by the stairs of the city of David, at the going up of the wall, above the house of David, even unto the water gate eastward."

Nehemiah 13:2: "Because they met not the children of Israel with bread and with water, but hired Balaam against them, that he should curse them: howbeit our God turned the curse into a blessing."

Job 8:11: "Can the rush grow up without mire? can the flag grow without water?"

Job 9:30: "If I wash myself with snow water, and make my hands never so clean;"

Job 14:9: "Yet through the scent of water it will bud, and bring forth boughs like a plant."

Job 15:16: "How much more abominable and filthy is man, which drinketh iniquity like water?"

Job 22:7: "Thou hast not given water to the weary to drink, and thou hast withholden bread from the hungry."

Job 34:7: "What man is like Job, who drinketh up scorning like water?"

Job 36:27: "For he maketh small the drops of water: they pour down rain according to the vapour thereof:"

Psalms 1:3: "And he shall be like a tree planted by the rivers of water, that bringeth forth his fruit in his season; his leaf also shall not wither; and whatsoever he doeth shall prosper."

Psalms 6:6: "I am weary with my groaning; all the night make I my bed to swim; I water my couch with my tears."

Psalms 22:14: "I am poured out like water, and all my bones are out of joint: my heart is like wax; it is melted in the midst of my bowels."

Psalms 42:1: "As the hart panteth after the water brooks, so panteth my soul after thee, O God."

Psalms 63:1: "O God, thou art my God; early will I seek thee: my soul thirsteth for thee, my flesh longeth for thee in a dry and thirsty land, where no water is;"

Psalms 65:9: "Thou visitest the earth, and waterest it: thou greatly enrichest it with the river of God, which is full of water: thou preparest them corn, when thou hast so provided for it."

Psalms 66:12: "Thou hast caused men to ride over our heads; we went through fire and through water: but thou broughtest us out into a wealthy place."

Psalms 72:6: "He shall come down like rain upon the mown grass: as showers that water the earth."

Psalms 77:17: "The clouds poured out water: the skies sent out a sound: thine arrows also went abroad."

Psalms 79:3: "Their blood have they shed like water round about Jerusalem; and there was none to bury them."

Psalms 88:17: "They came round about me daily like water; they compassed me about together."

Psalms 107:35: "He turneth the wilderness into a standing water, and dry ground into watersprings."

Psalms 109:18: "As he clothed himself with cursing like as with his garment, so let it come into his bowels like water, and like oil into his bones."

Psalms 114:8: "Which turned the rock into a standing water, the flint into a fountain of waters."

Proverbs 8:24: "When there were no depths, I was brought forth; when there were no fountains abounding with water."

Proverbs 17:14: "The beginning of strife is as when one letteth out water: therefore leave off contention, before it be meddled with."

Proverbs 20:5: "Counsel in the heart of man is like deep water; but a man of understanding will draw it out."

Proverbs 21:1: "The king's heart is in the hand of the LORD, as the rivers of water: he turneth it whithersoever he will."

Proverbs 25:21: "If thine enemy be hungry, give him bread to eat; and if he be thirsty, give him water to drink:"

Proverbs 27:19: "As in water face answereth to face, so the heart of man to man."

Proverbs 30:16: "The grave; and the barren womb; the earth that is not filled with water; and the fire that saith not, It is enough."

Ecclesiastes 2:6: "I made me pools of water, to water therewith the wood that bringeth forth trees:"

Isaiah 1:22: "Thy silver is become dross, thy wine mixed with water:"

Isaiah 1:30: "For ye shall be as an oak whose leaf fadeth, and as a garden that hath no water."

Isaiah 3:1: "For, behold, the Lord, the LORD of hosts, doth take away from Jerusalem and from Judah the stay and the staff, the whole stay of bread, and the whole stay of water."

Isaiah 12:3: "Therefore with joy shall ye draw water out of the wells of salvation."

Isaiah 14:23: "I will also make it a possession for the bittern, and pools of water: and I will sweep it with the besom of destruction, saith the LORD of hosts."

Isaiah 16:9: "Therefore I will bewail with the weeping of Jazer the vine of Sibmah: I will water thee with my tears, O Heshbon, and Elealeh: for the shouting for thy summer fruits and for thy harvest is fallen."

Isaiah 21:14: "The inhabitants of the land of Tema brought water to him that was thirsty, they prevented with their bread him that fled."

Isaiah 22:11: "Ye made also a ditch between the two walls for the water of the old pool: but ye have not looked unto the maker thereof, neither had respect unto him that fashioned it long ago."

Isaiah 27:3: "I the LORD do keep it; I will water it every moment: lest any hurt it, I will keep it night and day."

Isaiah 30:14: "And he shall break it as the breaking of the potters' vessel that is broken in pieces; he

shall not spare: so that there shall not be found in the bursting of it a sherd to take fire from the hearth, or to take water withal out of the pit."

Isaiah 30:20: "And though the Lord give you the bread of adversity, and the water of affliction, yet shall not thy teachers be removed into a corner any more, but thine eyes shall see thy teachers:"

Isaiah 32:2: "And a man shall be as an hiding place from the wind, and a covert from the tempest; as rivers of water in a dry place, as the shadow of a great rock in a weary land."

Isaiah 35:7: "And the parched ground shall become a pool, and the thirsty land springs of water: in the habitation of dragons, where each lay, shall be grass with reeds and rushes."

Isaiah 37:25: "I have digged, and drunk water; and with the sole of my feet have I dried up all the rivers of the besieged places."

Isaiah 41:17: "When the poor and needy seek water, and there is none, and their tongue faileth for thirst, I the LORD will hear them, I the God of Israel will not forsake them."

Isaiah 41:18: "I will open rivers in high places, and fountains in the midst of the valleys: I will make the wilderness a pool of water, and the dry land springs of water."

Isaiah 44:3: "For I will pour water upon him that is thirsty, and floods upon the dry ground: I will pour my spirit upon thy seed, and my blessing upon thine offspring:"

Isaiah 44:4: "And they shall spring up as among the grass, as willows by the water courses."

Isaiah 44:12: "The smith with the tongs both worketh in the coals, and fashioneth it with hammers, and worketh it with the strength of his arms: yea, he is hungry, and his strength faileth: he drinketh no water, and is faint."

Isaiah 49:10: "They shall not hunger nor thirst; neither shall the heat nor sun smite them: for he that hath mercy on them shall lead them, even by the springs of water shall he guide them."

Isaiah 50:2: "Wherefore, when I came, was there no man? when I called, was there none to answer? Is my hand shortened at all, that it cannot redeem? or have I no power to deliver? behold, at my rebuke I dry up the sea, I make the rivers a wilderness: their fish stinketh, because there is no water, and dieth for thirst."

Isaiah 58:11: "And the LORD shall guide thee continually, and satisfy thy soul in drought, and make fat thy bones: and thou shalt be like a watered garden, and like a spring of water, whose waters fail not."

Isaiah 63:12: "That led them by the right hand of Moses with his glorious arm, dividing the water before them, to make himself an everlasting name?"

Jeremiah 2:13: "For my people have committed two evils; they have forsaken me the fountain of living waters, and hewed them out cisterns, broken cisterns, that can hold no water."

Jeremiah 8:14: "Why do we sit still? assemble yourselves, and let us enter into the defenced cities, and let us be silent there: for the LORD our God hath put us to silence, and given us water of gall to drink, because we have sinned against the LORD."

Jeremiah 9:15: "Therefore thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will feed them, even this people, with wormwood, and give them water of gall to drink."

Jeremiah 13:1: "Thus saith the LORD unto me, Go and get thee a linen girdle, and put it upon thy loins, and put it not in water."

Jeremiah 14:3: "And their nobles have sent their little ones to the waters: they came to the pits, and found no water; they returned with their vessels empty; they were ashamed and confounded, and covered their heads."

Jeremiah 23:15: "Therefore thus saith the LORD of hosts concerning the prophets; Behold, I will feed them with wormwood, and make them drink the water of gall: for from the prophets of Jerusalem is profaneness gone forth into all the land."

Jeremiah 38:6: "Then took they Jeremiah, and cast him into the dungeon of Malchiah the son of Hammelech, that was in the court of the prison: and they let down Jeremiah with cords. And in the dungeon there was no water, but mire: so Jeremiah sunk in the mire."

Lamentations 1:16: "For these things I weep; mine eye, mine eye runneth down with water, because



the comforter that should relieve my soul is far from me: my children are desolate, because the enemy prevailed."

Lamentations 2:19: "Arise, cry out in the night: in the beginning of the watches pour out thine heart like water before the face of the LORD: lift up thy hands toward him for the life of thy young children, that faint for hunger in the top of every street."

Lamentations 3:48: "Mine eye runneth down with rivers of water for the destruction of the daughter of my people."

Lamentations 5:4: "We have drunken our water for money; our wood is sold unto us."

Ezekiel 4:11: "Thou shalt drink also water by measure, the sixth part of an hin: from time to time shalt thou drink."

Ezekiel 4:16: "Moreover he said unto me, Son of man, behold, I will break the staff of bread in Jerusalem: and they shall eat bread by weight, and with care; and they shall drink water by measure, and with astonishment:"

Ezekiel 4:17: "That they may want bread and water, and be astonished one with another, and consume away for their iniquity."

Ezekiel 7:17: "All hands shall be feeble, and all knees shall be weak as water."

Ezekiel 12:18: "Son of man, eat thy bread with quaking, and drink thy water with trembling and with carefulness;"

Ezekiel 12:19: "And say unto the people of the land, Thus saith the Lord GOD of the inhabitants of Jerusalem, and of the land of Israel; They shall eat their bread with carefulness, and drink their water with astonishment, that her land may be desolate from all that is therein, because of the violence of all them that dwell therein."

Ezekiel 16:4: "And as for thy nativity, in the day thou wast born thy navel was not cut, neither wast thou washed in water to supple thee; thou wast not salted at all, nor swaddled at all."

Ezekiel 16:9: "Then washed I thee with water; yea, I thoroughly washed away thy blood from thee, and I anointed thee with oil."

Ezekiel 17:7: "There was also another great eagle with great wings and many feathers: and, behold, this vine did bend her roots toward him, and shot forth her branches toward him, that he might water it by the furrows of her plantation."

Ezekiel 21:7: "And it shall be, when they say unto thee, Wherefore sighest thou? that thou shalt answer, For the tidings; because it cometh: and every heart shall melt, and all hands shall be feeble, and every spirit shall faint, and all knees shall be weak as water: behold, it cometh, and shall be brought to pass, saith the Lord GOD."

Ezekiel 24:3: "And utter a parable unto the rebellious house, and say unto them, Thus saith the Lord GOD; Set on a pot, set it on, and also pour water into it:"

Ezekiel 26:12: "And they shall make a spoil of thy riches, and make a prey of thy merchandise: and they shall break down thy walls, and destroy thy pleasant houses: and they shall lay thy stones and thy timber and thy dust in the midst of the water."

Ezekiel 31:14: "To the end that none of all the trees by the waters exalt themselves for their height, neither shoot up their top among the thick boughs, neither their trees stand up in their height, all that drink water: for they are all delivered unto death, to the nether parts of the earth, in the midst of the children of men, with them that go down to the pit."

Ezekiel 31:16: "I made the nations to shake at the sound of his fall, when I cast him down to hell with them that descend into the pit: and all the trees of Eden, the choice and best of Lebanon, all that drink water, shall be comforted in the nether parts of the earth."

Ezekiel 32:6: "I will also water with thy blood the land wherein thou swimmest, even to the mountains; and the rivers shall be full of thee."

Ezekiel 36:25: "Then will I sprinkle clean water upon you, and ye shall be clean: from all your filthiness, and from all your idols, will I cleanse you."

Daniel 1:12: "Prove thy servants, I beseech thee, ten days; and let them give us pulse to eat, and

water to drink."

Hosea 2:5: "For their mother hath played the harlot: she that conceived them hath done shamefully: for she said, I will go after my lovers, that give me my bread and my water, my wool and my flax, mine oil and my drink."

Hosea 5:10: "The princes of Judah were like them that remove the bound: therefore I will pour out my wrath upon them like water."

Hosea 10:7: "As for Samaria, her king is cut off as the foam upon the water."

Joel 3:18: "And it shall come to pass in that day, that the mountains shall drop down new wine, and the hills shall flow with milk, and all the rivers of Judah shall flow with waters, and a fountain shall come forth out of the house of the LORD, and shall water the valley of Shittim."

Amos 4:8: "So two or three cities wandered unto one city, to drink water; but they were not satisfied: yet have ye not returned unto me, saith the LORD."

Amos 8:11: "Behold, the days come, saith the Lord GOD, that I will send a famine in the land, not a famine of bread, nor a thirst for water, but of hearing the words of the LORD:"

Jonah 3:7: "And he caused it to be proclaimed and published through Nineveh by the decree of the king and his nobles, saying, Let neither man nor beast, herd nor flock, taste any thing: let them not feed, nor drink water:"

Nahum 2:8: "But Nineveh is of old like a pool of water: yet they shall flee away. Stand, stand, shall they cry; but none shall look back."

Habakkuk 3:10: "The mountains saw thee, and they trembled: the overflowing of the water passed by: the deep uttered his voice, and lifted up his hands on high."

Zechariah 9:11: "As for thee also, by the blood of thy covenant I have sent forth thy prisoners out of the pit wherein is no water."

Matthew 3:11: "I indeed baptize you with water unto repentance. but he that cometh after me is mightier than I, whose shoes I am not worthy to bear: he shall baptize you with the Holy Ghost, and with fire:"

Matthew 3:16: "And Jesus, when he was baptized, went up straightway out of the water: and, lo, the heavens were opened unto him, and he saw the Spirit of God descending like a dove, and lighting upon him:"

Matthew 10:42: "And whosoever shall give to drink unto one of these little ones a cup of cold water only in the name of a disciple, verily I say unto you, he shall in no wise lose his reward."

Matthew 14:28: "And Peter answered him and said, Lord, if it be thou, bid me come unto thee on the water."

Matthew 14:29: "And he said, Come. And when Peter was come down out of the ship, he walked on the water, to go to Jesus."

Matthew 17:15: "Lord, have mercy on my son: for he is lunatick, and sore vexed: for oftentimes he falleth into the fire, and oft into the water."

Matthew 27:24: "When Pilate saw that he could prevail nothing, but that rather a tumult was made, he took water, and washed his hands before the multitude, saying, I am innocent of the blood of this just person: see ye to it."

Mark 1:8: "I indeed have baptized you with water: but he shall baptize you with the Holy Ghost."

Mark 1:10: "And straightway coming up out of the water, he saw the heavens opened, and the Spirit like a dove descending upon him:"

Mark 9:41: "For whosoever shall give you a cup of water to drink in my name, because ye belong to Christ, verily I say unto you, he shall not lose his reward."

Mark 14:13: "And he sendeth forth two of his disciples, and saith unto them, Go ye into the city, and there shall meet you a man bearing a pitcher of water: follow him."

Luke 3:16: "John answered, saying unto them all, I indeed baptize you with water; but one mightier than I cometh, the latchet of whose shoes I am not worthy to unloose: he shall baptize you with the Holy Ghost and with fire:"

Luke 7:44: "And he turned to the woman, and said unto Simon, Seest thou this woman? I entered into thine house, thou gavest me no water for my feet: but she hath washed my feet with tears, and wiped them with the hairs of her head."

Luke 8:23: "But as they sailed he fell asleep: and there came down a storm of wind on the lake; and they were filled with water, and were in jeopardy."

Luke 8:24: "And they came to him, and awoke him, saying, Master, master, we perish. Then he arose, and rebuked the wind and the raging of the water: and they ceased, and there was a calm."

Luke 8:25: "And he said unto them, Where is your faith? And they being afraid wondered, saying one to another, What manner of man is this! for he commandeth even the winds and water, and they obey him."

Luke 16:24: "And he cried and said, Father Abraham, have mercy on me, and send Lazarus, that he may dip the tip of his finger in water, and cool my tongue; for I am tormented in this flame."

Luke 22:10: "And he said unto them, Behold, when ye are entered into the city, there shall a man meet you, bearing a pitcher of water; follow him into the house where he entereth in."

John 1:26: "John answered them, saying, I baptize with water: but there standeth one among you, whom ye know not;"

John 1:31: "And I knew him not: but that he should be made manifest to Israel, therefore am I come baptizing with water."

John 1:33: "And I knew him not: but he that sent me to baptize with water, the same said unto me, Upon whom thou shalt see the Spirit descending, and remaining on him, the same is he which baptizeth with the Holy Ghost."

John 2:7: "Jesus saith unto them, Fill the waterpots with water. And they filled them up to the brim."

John 2:9: "When the ruler of the feast had tasted the water that was made wine, and knew not whence it was: (but the servants which drew the water knew;) the governor of the feast called the bridegroom,"

John 3:5: "Jesus answered, Verily, verily, I say unto thee, Except a man be born of water and of the Spirit, he cannot enter into the kingdom of God."

John 3:23: "And John also was baptizing in Aenon near to Salim, because there was much water there: and they came, and were baptized."

John 4:7: "There cometh a woman of Samaria to draw water: Jesus saith unto her, Give me to drink."

John 4:10: "Jesus answered and said unto her, If thou knewest the gift of God, and who it is that saith to thee, Give me to drink; thou wouldest have asked of him, and he would have given thee living water."

John 4:11: "The woman saith unto him, Sir, thou hast nothing to draw with, and the well is deep: from whence then hast thou that living water?"

John 4:13: "Jesus answered and said unto her, Whosoever drinketh of this water shall thirst again:"

John 4:14: "But whosoever drinketh of the water that I shall give him shall never thirst; but the water that I shall give him shall be in him a well of water springing up into everlasting life."

John 4:15: "The woman saith unto him, Sir, give me this water, that I thirst not, neither come hither to draw."

John 4:46: "So Jesus came again into Cana of Galilee, where he made the water wine. And there was a certain nobleman, whose son was sick at Capernaum."

John 5:3: "In these lay a great multitude of impotent folk, of blind, halt, withered, waiting for the moving of the water."

John 5:4: "For an angel went down at a certain season into the pool, and troubled the water: whosoever then first after the troubling of the water stepped in was made whole of whatsoever disease he had."

John 5:7: "The impotent man answered him, Sir, I have no man, when the water is troubled, to put

me into the pool: but while I am coming, another steppeth down before me."

John 7:38: "He that believeth on me, as the scripture hath said, out of his belly shall flow rivers of living water."

John 13:5: "After that he poureth water into a bason, and began to wash the disciples' feet, and to wipe them with the towel wherewith he was girded."

John 19:34: "But one of the soldiers with a spear pierced his side, and forthwith came there out blood and water."

Acts 1:5: "For John truly baptized with water; but ye shall be baptized with the Holy Ghost not many days hence."

Acts 8:36: "And as they went on their way, they came unto a certain water: and the eunuch said, See, here is water; what doth hinder me to be baptized?"

Acts 8:38: "And he commanded the chariot to stand still: and they went down both into the water, both Philip and the eunuch; and he baptized him."

Acts 8:39: "And when they were come up out of the water, the Spirit of the Lord caught away Philip, that the eunuch saw him no more: and he went on his way rejoicing."

Acts 10:47: "Can any man forbid water, that these should not be baptized, which have received the Holy Ghost as well as we?"

Acts 11:16: "Then remembered I the word of the Lord, how that he said, John indeed baptized with water; but ye shall be baptized with the Holy Ghost."

Ephesians 5:26: "That he might sanctify and cleanse it with the washing of water by the word,"

1 Timothy 5:23: "Drink no longer water, but use a little wine for thy stomach's sake and thine often infirmities."

Hebrews 9:19: "For when Moses had spoken every precept to all the people according to the law, he took the blood of calves and of goats, with water, and scarlet wool, and hyssop, and sprinkled both the book, and all the people,"

Hebrews 10:22: "Let us draw near with a true heart in full assurance of faith, having our hearts sprinkled from an evil conscience, and our bodies washed with pure water."

James 3:11: "Doth a fountain send forth at the same place sweet water and bitter?"

James 3:12: "Can the fig tree, my brethren, bear olive berries? either a vine, figs? so can no fountain both yield salt water and fresh."

1 Peter 3:20: "Which sometime were disobedient, when once the longsuffering of God waited in the days of Noah, while the ark was a preparing, wherein few, that is, eight souls were saved by water."

2 Peter 2:17: "These are wells without water, clouds that are carried with a tempest; to whom the mist of darkness is reserved for ever."

2 Peter 3:5: "For this they willingly are ignorant of, that by the word of God the heavens were of old, and the earth standing out of the water and in the water:"

2 Peter 3:6: "Whereby the world that then was, being overflowed with water, perished:"

1 John 5:6: "This is he that came by water and blood, even Jesus Christ; not by water only, but by water and blood. And it is the Spirit that beareth witness, because the Spirit is truth."

1 John 5:8: "And there are three that bear witness in earth, the Spirit, and the water, and the blood: and these three agree in one."

Jude 1:12: "These are spots in your feasts of charity, when they feast with you, feeding themselves without fear: clouds they are without water, carried about of winds; trees whose fruit withereth, without fruit, twice dead, plucked up by the roots;"

Revelation 12:15: "And the serpent cast out of his mouth water as a flood after the woman, that he might cause her to be carried away of the flood."

Revelation 16:12: "And the sixth angel poured out his vial upon the great river Euphrates; and the water thereof was dried up, that the way of the kings of the east might be prepared."

Revelation 21:6: "And he said unto me, It is done. I am Alpha and Omega, the beginning and the end. I will give unto him that is athirst of the fountain of the water of life freely."

Revelation 22:1: "And he shewed me a pure river of water of life, clear as crystal, proceeding out of the throne of God and of the Lamb."

Revelation 22:17: "And the Spirit and the bride say, Come. And let him that heareth say, Come. And let him that is athirst come. And whosoever will, let him take the water of life freely."

## **WATERCOURSE**

Occurrences: 2

2 Chronicles 32:30: "This same Hezekiah also stopped the upper watercourse of Gihon, and brought it straight down to the west side of the city of David. And Hezekiah prospered in all his works."

Job 38:25: "Who hath divided a watercourse for the overflowing of waters, or a way for the lightning of thunder;"

## **WATERED**

Occurrences: 11

Genesis 2:6: "But there went up a mist from the earth, and watered the whole face of the ground."

Genesis 13:10: "And Lot lifted up his eyes, and beheld all the plain of Jordan, that it was well watered every where, before the LORD destroyed Sodom and Gomorrah, even as the garden of the LORD, like the land of Egypt, as thou comest unto Zoar."

Genesis 29:2: "And he looked, and beheld a well in the field, and, lo, there were three flocks of sheep lying by it; for out of that well they watered the flocks: and a great stone was upon the well's mouth."

Genesis 29:3: "And thither were all the flocks gathered: and they rolled the stone from the well's mouth, and watered the sheep, and put the stone again upon the well's mouth in his place."

Genesis 29:10: "And it came to pass, when Jacob saw Rachel the daughter of Laban his mother's brother, and the sheep of Laban his mother's brother, that Jacob went near, and rolled the stone from the well's mouth, and watered the flock of Laban his mother's brother."

Exodus 2:17: "And the shepherds came and drove them away: but Moses stood up and helped them, and watered their flock."

Exodus 2:19: "And they said, An Egyptian delivered us out of the hand of the shepherds, and also drew water enough for us, and watered the flock."

Proverbs 11:25: "The liberal soul shall be made fat: and he that watereth shall be watered also himself."

Isaiah 58:11: "And the LORD shall guide thee continually, and satisfy thy soul in drought, and make fat thy bones: and thou shalt be like a watered garden, and like a spring of water, whose waters fail not."

Jeremiah 31:12: "Therefore they shall come and sing in the height of Zion, and shall flow together to the goodness of the LORD, for wheat, and for wine, and for oil, and for the young of the flock and of the herd: and their soul shall be as a watered garden; and they shall not sorrow any more at all."

1 Corinthians 3:6: "I have planted, Apollos watered; but God gave the increase."

## **WATEREDST**

Occurrences: 1

Deuteronomy 11:10: "For the land, whither thou goest in to possess it, is not as the land of Egypt, from whence ye came out, where thou sowedst thy seed, and wateredst it with thy foot, as a garden of herbs:"

## **WATEREST**

Occurrences: 2

Psalms 65:9: "Thou visitest the earth, and waterest it: thou greatly enrichest it with the river of God, which is full of water: thou preparest them corn, when thou hast so provided for it."

Psalms 65:10: "Thou waterest the ridges thereof abundantly: thou settlest the furrows thereof: thou makest it soft with showers: thou blessest the springing thereof."

## **WATERETH**

Occurrences: 5

Psalms 104:13: "He watereth the hills from his chambers: the earth is satisfied with the fruit of thy works."

Proverbs 11:25: "The liberal soul shall be made fat: and he that watereth shall be watered also himself."

Isaiah 55:10: "For as the rain cometh down, and the snow from heaven, and returneth not thither, but watereth the earth, and maketh it bring forth and bud, that it may give seed to the sower, and bread to the eater:"

1 Corinthians 3:7: "So then neither is he that planteth any thing, neither he that watereth; but God that giveth the increase."

1 Corinthians 3:8: "Now he that planteth and he that watereth are one: and every man shall receive his own reward according to his own labour."

## **WATERFLOOD**

Occurrences: 1

Psalms 69:15: "Let not the waterflood overflow me, neither let the deep swallow me up, and let not the pit shut her mouth upon me."

## **WATERING**

Occurrences: 3

Genesis 30:38: "And he set the rods which he had pilled before the flocks in the gutters in the watering troughs when the flocks came to drink, that they should conceive when they came to drink."

Job 37:11: "Also by watering he wearieth the thick cloud: he scattereth his bright cloud:"

Luke 13:15: "The Lord then answered him, and said, Thou hypocrite, doth not each one of you on the sabbath loose his ox or his ass from the stall, and lead him away to watering?"

## **WATERPOT**

Occurrences: 1

John 4:28: "The woman then left her waterpot, and went her way into the city, and saith to the men,"

## **WATERPOTS**

Occurrences: 2

John 2:6: "And there were set there six waterpots of stone, after the manner of the purifying of the Jews, containing two or three firkins apiece."

John 2:7: "Jesus saith unto them, Fill the waterpots with water. And they filled them up to the brim."

## WATERS

Occurrences: 258

Genesis 1:2: "And the earth was without form, and void; and darkness was upon the face of the deep. And the Spirit of God moved upon the face of the waters."

Genesis 1:6: "And God said, Let there be a firmament in the midst of the waters, and let it divide the waters from the waters."

Genesis 1:7: "And God made the firmament, and divided the waters which were under the firmament from the waters which were above the firmament: and it was so."

Genesis 1:9: "And God said, Let the waters under the heaven be gathered together unto one place, and let the dry land appear: and it was so."

Genesis 1:10: "And God called the dry land Earth; and the gathering together of the waters called he Seas: and God saw that it was good."

Genesis 1:20: "And God said, Let the waters bring forth abundantly the moving creature that hath life, and fowl that may fly above the earth in the open firmament of heaven."

Genesis 1:21: "And God created great whales, and every living creature that moveth, which the waters brought forth abundantly, after their kind, and every winged fowl after his kind: and God saw that it was good."

Genesis 1:22: "And God blessed them, saying, Be fruitful, and multiply, and fill the waters in the seas, and let fowl multiply in the earth."

Genesis 6:17: "And, behold, I, even I, do bring a flood of waters upon the earth, to destroy all flesh, wherein is the breath of life, from under heaven; and every thing that is in the earth shall die."

Genesis 7:6: "And Noah was six hundred years old when the flood of waters was upon the earth."

Genesis 7:7: "And Noah went in, and his sons, and his wife, and his sons' wives with him, into the ark, because of the waters of the flood."

Genesis 7:10: "And it came to pass after seven days, that the waters of the flood were upon the earth."

Genesis 7:17: "And the flood was forty days upon the earth; and the waters increased, and bare up the ark, and it was lift up above the earth."

Genesis 7:18: "And the waters prevailed, and were increased greatly upon the earth; and the ark went upon the face of the waters."

Genesis 7:19: "And the waters prevailed exceedingly upon the earth; and all the high hills, that were under the whole heaven, were covered."

Genesis 7:20: "Fifteen cubits upward did the waters prevail; and the mountains were covered."

Genesis 7:24: "And the waters prevailed upon the earth an hundred and fifty days."

Genesis 8:1: "And God remembered Noah, and every living thing, and all the cattle that was with him in the ark: and God made a wind to pass over the earth, and the waters asswaged;"

Genesis 8:3: "And the waters returned from off the earth continually: and after the end of the hundred and fifty days the waters were abated."

Genesis 8:5: "And the waters decreased continually until the tenth month: in the tenth month, on the first day of the month, were the tops of the mountains seen."

Genesis 8:7: "And he sent forth a raven, which went forth to and fro, until the waters were dried up from off the earth."

Genesis 8:8: "Also he sent forth a dove from him, to see if the waters were abated from off the face of the ground;"

Genesis 8:9: "But the dove found no rest for the sole of her foot, and she returned unto him into the ark, for the waters were on the face of the whole earth: then he put forth his hand, and took her, and pulled her in unto him into the ark."

Genesis 8:11: "And the dove came in to him in the evening; and, lo, in her mouth was an olive leaf pluckt off: so Noah knew that the waters were abated from off the earth."

Genesis 8:13: "And it came to pass in the six hundredth and first year, in the first month, the first day of the month, the waters were dried up from off the earth: and Noah removed the covering of the ark, and looked, and, behold, the face of the ground was dry."

Genesis 9:11: "And I will establish my covenant with you, neither shall all flesh be cut off any more by the waters of a flood; neither shall there any more be a flood to destroy the earth."

Genesis 9:15: "And I will remember my covenant, which is between me and you and every living creature of all flesh; and the waters shall no more become a flood to destroy all flesh."

Exodus 7:17: "Thus saith the LORD, In this thou shalt know that I am the LORD: behold, I will smite with the rod that is in mine hand upon the waters which are in the river, and they shall be turned to blood."

Exodus 7:19: "And the LORD spake unto Moses, Say unto Aaron, Take thy rod, and stretch out thine hand upon the waters of Egypt, upon their streams, upon their rivers, and upon their ponds, and upon all their pools of water, that they may become blood; and that there may be blood throughout all the land of Egypt, both in vessels of wood, and in vessels of stone."

Exodus 7:20: "And Moses and Aaron did so, as the LORD commanded; and he lifted up the rod, and smote the waters that were in the river, in the sight of Pharaoh, and in the sight of his servants; and all the waters that were in the river were turned to blood."

Exodus 8:6: "And Aaron stretched out his hand over the waters of Egypt; and the frogs came up, and covered the land of Egypt."

Exodus 14:21: "And Moses stretched out his hand over the sea; and the LORD caused the sea to go back by a strong east wind all that night, and made the sea dry land, and the waters were divided."

Exodus 14:22: "And the children of Israel went into the midst of the sea upon the dry ground: and the waters were a wall unto them on their right hand, and on their left."

Exodus 14:26: "And the LORD said unto Moses, Stretch out thine hand over the sea, that the waters may come again upon the Egyptians, upon their chariots, and upon their horsemen."

Exodus 14:28: "And the waters returned, and covered the chariots, and the horsemen, and all the host of Pharaoh that came into the sea after them; there remained not so much as one of them."

Exodus 14:29: "But the children of Israel walked upon dry land in the midst of the sea; and the waters were a wall unto them on their right hand, and on their left."

Exodus 15:8: "And with the blast of thy nostrils the waters were gathered together, the floods stood upright as an heap, and the depths were congealed in the heart of the sea."

Exodus 15:10: "Thou didst blow with thy wind, the sea covered them: they sank as lead in the mighty waters."

Exodus 15:19: "For the horse of Pharaoh went in with his chariots and with his horsemen into the sea, and the LORD brought again the waters of the sea upon them; but the children of Israel went on dry land in the midst of the sea."

Exodus 15:23: "And when they came to Marah, they could not drink of the waters of Marah, for they were bitter: therefore the name of it was called Marah."

Exodus 15:25: "And he cried unto the LORD; and the LORD shewed him a tree, which when he had cast into the waters, the waters were made sweet: there he made for them a statute and an ordinance, and there he proved them,"

Exodus 15:27: "And they came to Elim, where were twelve wells of water, and threescore and ten palm trees: and they encamped there by the waters."

Leviticus 11:9: "These shall ye eat of all that are in the waters: whatsoever hath fins and scales in the waters, in the seas, and in the rivers, them shall ye eat."

Leviticus 11:10: "And all that have not fins and scales in the seas, and in the rivers, of all that move in the waters, and of any living thing which is in the waters, they shall be an abomination unto you:"

Leviticus 11:12: "Whatsoever hath no fins nor scales in the waters, that shall be an abomination unto you."

Leviticus 11:46: "This is the law of the beasts, and of the fowl, and of every living creature that



moveth in the waters, and of every creature that creepeth upon the earth:"

Numbers 21:22: "Let me pass through thy land: we will not turn into the fields, or into the vineyards; we will not drink of the waters of the well: but we will go along by the king's high way, until we be past thy borders."

Numbers 24:6: "As the valleys are they spread forth, as gardens by the river's side, as the trees of lign aloes which the LORD hath planted, and as cedar trees beside the waters."

Numbers 24:7: "He shall pour the water out of his buckets, and his seed shall be in many waters, and his king shall be higher than Agag, and his kingdom shall be exalted."

Deuteronomy 4:18: "The likeness of any thing that creepeth on the ground, the likeness of any fish that is in the waters beneath the earth:"

Deuteronomy 5:8: "Thou shalt not make thee any graven image, or any likeness of any thing that is in heaven above, or that is in the earth beneath, or that is in the waters beneath the earth:"

Deuteronomy 10:7: "From thence they journeyed unto Gudgodah; and from Gudgodah to Jotbath, a land of rivers of waters."

Deuteronomy 14:9: "These ye shall eat of all that are in the waters: all that have fins and scales shall ye eat:"

Deuteronomy 32:51: "Because ye trespassed against me among the children of Israel at the waters of MeribahKadesh, in the wilderness of Zin; because ye sanctified me not in the midst of the children of Israel."

Deuteronomy 33:8: "And of Levi he said, Let thy Thummim and thy Urim be with thy holy one, whom thou didst prove at Massah, and with whom thou didst strive at the waters of Meribah;"

Joshua 3:13: "And it shall come to pass, as soon as the soles of the feet of the priests that bear the ark of the LORD, the LORD of all the earth, shall rest in the waters of Jordan, that the waters of Jordan shall be cut off from the waters that come down from above; and they shall stand upon an heap."

Joshua 3:16: "That the waters which came down from above stood and rose up upon an heap very far from the city Adam, that is beside Zaretan: and those that came down toward the sea of the plain, even the salt sea, failed, and were cut off: and the people passed over right against Jericho."

Joshua 4:7: "Then ye shall answer them, That the waters of Jordan were cut off before the ark of the covenant of the LORD; when it passed over Jordan, the waters of Jordan were cut off: and these stones shall be for a memorial unto the children of Israel for ever."

Joshua 4:18: "And it came to pass, when the priests that bare the ark of the covenant of the LORD were come up out of the midst of Jordan, and the soles of the priests' feet were lifted up unto the dry land, that the waters of Jordan returned unto their place, and flowed over all his banks, as they did before."

Joshua 4:23: "For the LORD your God dried up the waters of Jordan from before you, until ye were passed over, as the LORD your God did to the Red sea, which he dried up from before us, until we were gone over:"

Joshua 5:1: "And it came to pass, when all the kings of the Amorites, which were on the side of Jordan westward, and all the kings of the Canaanites, which were by the sea, heard that the LORD had dried up the waters of Jordan from before the children of Israel, until we were passed over, that their heart melted, neither was there spirit in them any more, because of the children of Israel."

Joshua 11:5: "And when all these kings were met together, they came and pitched together at the waters of Merom, to fight against Israel."

Joshua 11:7: "So Joshua came, and all the people of war with him, against them by the waters of Merom suddenly; and they fell upon them."

Joshua 15:7: "And the border went up toward Debir from the valley of Achor, and so northward, looking toward Gilgal, that is before the going up to Adummim, which is on the south side of the river: and the border passed toward the waters of Enshemesh, and the goings out thereof were at Enrogel:"

Joshua 18:15: "And the south quarter was from the end of Kirjathjearim, and the border went out on the west, and went out to the well of waters of Nephtoah:"

Judges 5:19: "The kings came and fought, then fought the kings of Canaan in Taanach by the waters of Megiddo; they took no gain of money."

Judges 7:24: "And Gideon sent messengers throughout all mount Ephraim, saying, come down against the Midianites, and take before them the waters unto Bethbarah and Jordan. Then all the men of Ephraim gathered themselves together, and took the waters unto Bethbarah and Jordan."

2 Samuel 5:20: "And David came to Baalperazim, and David smote them there, and said, The LORD hath broken forth upon mine enemies before me, as the breach of waters. Therefore he called the name of that place Baalperazim."

2 Samuel 12:27: "And Joab sent messengers to David, and said, I have fought against Rabbah, and have taken the city of waters."

2 Samuel 22:12: "And he made darkness pavilions round about him, dark waters, and thick clouds of the skies."

2 Samuel 22:17: "He sent from above, he took me; he drew me out of many waters;"

2 Kings 2:8: "And Elijah took his mantle, and wrapped it together, and smote the waters, and they were divided hither and thither, so that they two went over on dry ground."

2 Kings 2:14: "And he took the mantle of Elijah that fell from him, and smote the waters, and said, Where is the LORD God of Elijah? and when he also had smitten the waters, they parted hither and thither: and Elisha went over."

2 Kings 2:21: "And he went forth unto the spring of the waters, and cast the salt in there, and said, Thus saith the LORD, I have healed these waters; there shall not be from thence any more death or barren land."

2 Kings 2:22: "So the waters were healed unto this day, according to the saying of Elisha which he spake."

2 Kings 5:12: "Are not Abana and Pharpar, rivers of Damascus, better than all the waters of Israel? may I not wash in them, and be clean? So he turned and went away in a rage."

2 Kings 18:31: "Hearken not to Hezekiah: for thus saith the king of Assyria, Make an agreement with me by a present, and come out to me, and then eat ye every man of his own vine, and every one of his fig tree, and drink ye every one the waters of his cistern:"

2 Kings 19:24: "I have digged and drunk strange waters, and with the sole of my feet have I dried up all the rivers of besieged places."

1 Chronicles 14:11: "So they came up to Baalperazim; and David smote them there. Then David said, God hath broken in upon mine enemies by mine hand like the breaking forth of waters: therefore they called the name of that place Baalperazim."

2 Chronicles 32:3: "He took counsel with his princes and his mighty men to stop the waters of the fountains which were without the city: and they did help him."

Nehemiah 9:11: "And thou didst divide the sea before them, so that they went through the midst of the sea on the dry land; and their persecutors thou threwest into the deeps, as a stone into the mighty waters."

Job 3:24: "For my sighing cometh before I eat, and my roarings are poured out like the waters."

Job 5:10: "Who giveth rain upon the earth, and sendeth waters upon the fields:"

Job 11:16: "Because thou shalt forget thy misery, and remember it as waters that pass away:"

Job 12:15: "Behold, he withholdeth the waters, and they dry up: also he sendeth them out, and they overturn the earth."

Job 14:11: "As the waters fail from the sea, and the flood decayeth and drieth up:"

Job 14:19: "The waters wear the stones: thou wastest away the things which grow out of the dust of the earth; and thou destroyest the hope of man."

Job 22:11: "Or darkness, that thou canst not see; and abundance of waters cover thee."

Job 24:18: "He is swift as the waters; their portion is cursed in the earth: he beholdeth not the way

of the vineyards."

Job 24:19: "Drought and heat consume the snow waters: so doth the grave those which have sinned."

Job 26:5: "Dead things are formed from under the waters, and the inhabitants thereof."

Job 26:8: "He bindeth up the waters in his thick clouds; and the cloud is not rent under them."

Job 26:10: "He hath compassed the waters with bounds, until the day and night come to an end."

Job 27:20: "Terrors take hold on him as waters, a tempest stealeth him away in the night."

Job 28:4: "The flood breaketh out from the inhabitant; even the waters forgotten of the foot: they are dried up, they are gone away from men."

Job 28:25: "To make the weight for the winds; and he weigheth the waters by measure."

Job 29:19: "My root was spread out by the waters, and the dew lay all night upon my branch."

Job 30:14: "They came upon me as a wide breaking in of waters: in the desolation they rolled themselves upon me."

Job 37:10: "By the breath of God frost is given: and the breadth of the waters is straitened."

Job 38:25: "Who hath divided a watercourse for the overflowing of waters, or a way for the lightning of thunder;"

Job 38:30: "The waters are hid as with a stone, and the face of the deep is frozen."

Job 38:34: "Canst thou lift up thy voice to the clouds, that abundance of waters may cover thee?"

Psalms 18:11: "He made darkness his secret place; his pavilion round about him were dark waters and thick clouds of the skies."

Psalms 18:15: "Then the channels of waters were seen, and the foundations of the world were discovered at thy rebuke, O LORD, at the blast of the breath of thy nostrils."

Psalms 18:16: "He sent from above, he took me, he drew me out of many waters."

Psalms 23:2: "He maketh me to lie down in green pastures: he leadeth me beside the still waters."

Psalms 29:3: "The voice of the LORD is upon the waters: the God of glory thundereth: the LORD is upon many waters."

Psalms 32:6: "For this shall every one that is godly pray unto thee in a time when thou mayest be found: surely in the floods of great waters they shall not come nigh unto him."

Psalms 33:7: "He gathereth the waters of the sea together as an heap: he layeth up the depth in storehouses."

Psalms 46:3: "Though the waters thereof roar and be troubled, though the mountains shake with the swelling thereof. Selah."

Psalms 58:7: "Let them melt away as waters which run continually: when he bendeth his bow to shoot his arrows, let them be as cut in pieces."

Psalms 69:1: "Save me, O God; for the waters are come in unto my soul."

Psalms 69:2: "I sink in deep mire, where there is no standing: I am come into deep waters, where the floods overflow me."

Psalms 69:14: "Deliver me out of the mire, and let me not sink: let me be delivered from them that hate me, and out of the deep waters."

Psalms 73:10: "Therefore his people return hither: and waters of a full cup are wrung out to them."

Psalms 74:13: "Thou didst divide the sea by thy strength: thou brakest the heads of the dragons in the waters."

Psalms 77:16: "The waters saw thee, O God, the waters saw thee; they were afraid: the depths also were troubled."

Psalms 77:19: "Thy way is in the sea, and thy path in the great waters, and thy footsteps are not known."

Psalms 78:13: "He divided the sea, and caused them to pass through; and he made the waters to stand as an heap."

Psalms 78:16: "He brought streams also out of the rock, and caused waters to run down like rivers."

Psalms 78:20: "Behold, he smote the rock, that the waters gushed out, and the streams overflowed;

can he give bread also? can he provide flesh for his people?"

Psalms 81:7: "Thou calledst in trouble, and I delivered thee; I answered thee in the secret place of thunder: I proved thee at the waters of Meribah. Selah."

Psalms 93:4: "The LORD on high is mightier than the noise of many waters, yea, than the mighty waves of the sea."

Psalms 104:3: "Who layeth the beams of his chambers in the waters: who maketh the clouds his chariot: who walketh upon the wings of the wind:"

Psalms 104:6: "Thou coveredst it with the deep as with a garment: the waters stood above the mountains."

Psalms 105:29: "He turned their waters into blood, and slew their fish."

Psalms 105:41: "He opened the rock, and the waters gushed out; they ran in the dry places like a river."

Psalms 106:11: "And the waters covered their enemies: there was not one of them left."

Psalms 106:32: "They angered him also at the waters of strife, so that it went ill with Moses for their sakes:"

Psalms 107:23: "They that go down to the sea in ships, that do business in great waters;"

Psalms 114:8: "Which turned the rock into a standing water, the flint into a fountain of waters."

Psalms 119:136: "Rivers of waters run down mine eyes, because they keep not thy law."

Psalms 124:4: "Then the waters had overwhelmed us, the stream had gone over our soul:"

Psalms 124:5: "Then the proud waters had gone over our soul."

Psalms 136:6: "To him that stretched out the earth above the waters: for his mercy endureth for ever."

Psalms 144:7: "Send thine hand from above; rid me, and deliver me out of great waters, from the hand of strange children;"

Psalms 147:18: "He sendeth out his word, and melteth them: he causeth his wind to blow, and the waters flow."

Psalms 148:4: "Praise him, ye heavens of heavens, and ye waters that be above the heavens."

Proverbs 5:15: "Drink waters out of thine own cistern, and running waters out of thine own well."

Proverbs 5:16: "Let thy fountains be dispersed abroad, and rivers of waters in the streets."

Proverbs 8:29: "When he gave to the sea his decree, that the waters should not pass his commandment: when he appointed the foundations of the earth:"

Proverbs 9:17: "Stolen waters are sweet, and bread eaten in secret is pleasant."

Proverbs 18:4: "The words of a man's mouth are as deep waters, and the wellspring of wisdom as a flowing brook."

Proverbs 25:25: "As cold waters to a thirsty soul, so is good news from a far country."

Proverbs 30:4: "Who hath ascended up into heaven, or descended? who hath gathered the wind in his fists? who hath bound the waters in a garment? who hath established all the ends of the earth? what is his name, and what is his son's name, if thou canst tell?"

Ecclesiastes 11:1: "Cast thy bread upon the waters: for thou shalt find it after many days."

Song of Solomon 4:15: "A fountain of gardens, a well of living waters, and streams from Lebanon."

Song of Solomon 5:12: "His eyes are as the eyes of doves by the rivers of waters, washed with milk, and fitly set."

Song of Solomon 8:7: "Many waters cannot quench love, neither can the floods drown it: if a man would give all the substance of his house for love, it would utterly be contemned."

Isaiah 8:6: "Forasmuch as this people refuseth the waters of Shiloah that go softly, and rejoice in Rezin and Remaliah's son;"

Isaiah 8:7: "Now therefore, behold, the Lord bringeth up upon them the waters of the river, strong and many, even the king of Assyria, and all his glory: and he shall come up over all his channels, and go over all his banks:"

Isaiah 11:9: "They shall not hurt nor destroy in all my holy mountain: for the earth shall be full of

the knowledge of the LORD, as the waters cover the sea."

Isaiah 15:6: "For the waters of Nimrim shall be desolate: for the hay is withered away, the grass faileth, there is no green thing."

Isaiah 15:9: "For the waters of Dimon shall be full of blood: for I will bring more upon Dimon, lions upon him that escapeth of Moab, and upon the remnant of the land."

Isaiah 17:12: "Woe to the multitude of many people, which make a noise like the noise of the seas; and to the rushing of nations, that make a rushing like the rushing of mighty waters!"

Isaiah 17:13: "The nations shall rush like the rushing of many waters: but God shall rebuke them, and they shall flee far off, and shall be chased as the chaff of the mountains before the wind, and like a rolling thing before the whirlwind."

Isaiah 18:2: "That sendeth ambassadors by the sea, even in vessels of bulrushes upon the waters, saying, Go, ye swift messengers, to a nation scattered and peeled, to a people terrible from their beginning hitherto; a nation meted out and trodden down, whose land the rivers have spoiled!"

Isaiah 19:5: "And the waters shall fail from the sea, and the river shall be wasted and dried up."

Isaiah 19:8: "The fishers also shall mourn, and all they that cast angle into the brooks shall lament, and they that spread nets upon the waters shall languish."

Isaiah 22:9: "Ye have seen also the breaches of the city of David, that they are many: and ye gathered together the waters of the lower pool."

Isaiah 23:3: "And by great waters the seed of Sihor, the harvest of the river, is her revenue; and she is a mart of nations."

Isaiah 28:2: "Behold, the Lord hath a mighty and strong one, which as a tempest of hail and a destroying storm, as a flood of mighty waters overflowing, shall cast down to the earth with the hand."

Isaiah 28:17: "Judgment also will I lay to the line, and righteousness to the plummet: and the hail shall sweep away the refuge of lies, and the waters shall overflow the hiding place."

Isaiah 30:25: "And there shall be upon every high mountain, and upon every high hill, rivers and streams of waters in the day of the great slaughter, when the towers fall."

Isaiah 32:20: "Blessed are ye that sow beside all waters, that send forth thither the feet of the ox and the ass."

Isaiah 33:16: "He shall dwell on high: his place of defence shall be the munitions of rocks: bread shall be given him; his waters shall be sure."

Isaiah 35:6: "Then shall the lame man leap as an hart, and the tongue of the dumb sing: for in the wilderness shall waters break out, and streams in the desert."

Isaiah 36:16: "Hearken not to Hezekiah: for thus saith the king of Assyria, Make an agreement with me by a present, and come out to me: and eat ye every one of his vine, and every one of his fig tree, and drink ye every one the waters of his own cistern;"

Isaiah 40:12: "Who hath measured the waters in the hollow of his hand, and meted out heaven with the span, and comprehended the dust of the earth in a measure, and weighed the mountains in scales, and the hills in a balance?"

Isaiah 43:2: "When thou passest through the waters, I will be with thee; and through the rivers, they shall not overflow thee: when thou walkest through the fire, thou shalt not be burned; neither shall the flame kindle upon thee."

Isaiah 43:16: "Thus saith the LORD, which maketh a way in the sea, and a path in the mighty waters;"

Isaiah 43:20: "The beast of the field shall honour me, the dragons and the owls: because I give waters in the wilderness, and rivers in the desert, to give drink to my people, my chosen."

Isaiah 48:1: "Hear ye this, O house of Jacob, which are called by the name of Israel, and are come forth out of the waters of Judah, which swear by the name of the LORD, and make mention of the God of Israel, but not in truth, nor in righteousness."

Isaiah 48:21: "And they thirsted not when he led them through the deserts: he caused the waters to

flow out of the rock for them: he clave the rock also, and the waters gushed out."

Isaiah 51:10: "Art thou not it which hath dried the sea, the waters of the great deep; that hath made the depths of the sea a way for the ransomed to pass over?"

Isaiah 54:9: "For this is as the waters of Noah unto me: for as I have sworn that the waters of Noah should no more go over the earth; so have I sworn that I would not be wroth with thee, nor rebuke thee."

Isaiah 55:1: "Ho, every one that thirsteth, come ye to the waters, and he that hath no money; come ye, buy, and eat; yea, come, buy wine and milk without money and without price."

Isaiah 57:20: "But the wicked are like the troubled sea, when it cannot rest, whose waters cast up mire and dirt."

Isaiah 58:11: "And the LORD shall guide thee continually, and satisfy thy soul in drought, and make fat thy bones: and thou shalt be like a watered garden, and like a spring of water, whose waters fail not."

Isaiah 64:2: "As when the melting fire burneth, the fire causeth the waters to boil, to make thy name known to thine adversaries, that the nations may tremble at thy presence!"

Jeremiah 2:13: "For my people have committed two evils; they have forsaken me the fountain of living waters, and hewed them out cisterns, broken cisterns, that can hold no water."

Jeremiah 2:18: "And now what hast thou to do in the way of Egypt, to drink the waters of Sihor? or what hast thou to do in the way of Assyria, to drink the waters of the river?"

Jeremiah 6:7: "As a fountain casteth out her waters, so she casteth out her wickedness: violence and spoil is heard in her; before me continually is grief and wounds."

Jeremiah 9:1: "Oh that my head were waters, and mine eyes a fountain of tears, that I might weep day and night for the slain of the daughter of my people!"

Jeremiah 9:18: "And let them make haste, and take up a wailing for us, that our eyes may run down with tears, and our eyelids gush out with waters."

Jeremiah 10:13: "When he uttereth his voice, there is a multitude of waters in the heavens, and he causeth the vapours to ascend from the ends of the earth; he maketh lightnings with rain, and bringeth forth the wind out of his treasures."

Jeremiah 14:3: "And their nobles have sent their little ones to the waters: they came to the pits, and found no water; they returned with their vessels empty; they were ashamed and confounded, and covered their heads."

Jeremiah 15:18: "Why is my pain perpetual, and my wound incurable, which refuseth to be healed? wilt thou be altogether unto me as a liar, and as waters that fail?"

Jeremiah 17:8: "For he shall be as a tree planted by the waters, and that spreadeth out her roots by the river, and shall not see when heat cometh, but her leaf shall be green; and shall not be careful in the year of drought, neither shall cease from yielding fruit."

Jeremiah 17:13: "O LORD, the hope of Israel, all that forsake thee shall be ashamed, and they that depart from me shall be written in the earth, because they have forsaken the LORD, the fountain of living waters."

Jeremiah 18:14: "Will a man leave the snow of Lebanon which cometh from the rock of the field? or shall the cold flowing waters that come from another place be forsaken?"

Jeremiah 31:9: "They shall come with weeping, and with supplications will I lead them: I will cause them to walk by the rivers of waters in a straight way, wherein they shall not stumble: for I am a father to Israel, and Ephraim is my firstborn."

Jeremiah 41:12: "Then they took all the men, and went to fight with Ishmael the son of Nethaniah, and found him by the great waters that are in Gibeon."

Jeremiah 46:7: "Who is this that cometh up as a flood, whose waters are moved as the rivers?"

Jeremiah 46:8: "Egypt riseth up like a flood, and his waters are moved like the rivers; and he saith, I will go up, and will cover the earth; I will destroy the city and the inhabitants thereof."

Jeremiah 47:2: "Thus saith the LORD; Behold, waters rise up out of the north, and shall be an

overflowing flood, and shall overflow the land, and all that is therein; the city, and them that dwell therein: then the men shall cry, and all the inhabitants of the land shall howl."

Jeremiah 48:34: "From the cry of Heshbon even unto Elealeh, and even unto Jahaz, have they uttered their voice, from Zoar even unto Horonaim, as an heifer of three years old: for the waters also of Nimrim shall be desolate."

Jeremiah 50:38: "A drought is upon her waters; and they shall be dried up: for it is the land of graven images, and they are mad upon their idols."

Jeremiah 51:13: "O thou that dwellest upon many waters, abundant in treasures, thine end is come, and the measure of thy covetousness."

Jeremiah 51:16: "When he uttereth his voice, there is a multitude of waters in the heavens; and he causeth the vapours to ascend from the ends of the earth: he maketh lightnings with rain, and bringeth forth the wind out of his treasures."

Jeremiah 51:55: "Because the LORD hath spoiled Babylon, and destroyed out of her the great voice; when her waves do roar like great waters, a noise of their voice is uttered."

Lamentations 3:54: "Waters flowed over mine head; then I said, I am cut off."

Ezekiel 1:24: "And when they went, I heard the noise of their wings, like the noise of great waters, as the voice of the Almighty, the voice of speech, as the noise of an host: when they stood, they let down their wings."

Ezekiel 17:5: "He took also of the seed of the land, and planted it in a fruitful field; he placed it by great waters, and set it as a willow tree."

Ezekiel 17:8: "It was planted in a good soil by great waters, that it might bring forth branches, and that it might bear fruit, that it might be a goodly vine."

Ezekiel 19:10: "Thy mother is like a vine in thy blood, planted by the waters: she was fruitful and full of branches by reason of many waters."

Ezekiel 26:19: "For thus saith the Lord GOD; When I shall make thee a desolate city, like the cities that are not inhabited; when I shall bring up the deep upon thee, and great waters shall cover thee;"

Ezekiel 27:26: "Thy rowers have brought thee into great waters: the east wind hath broken thee in the midst of the seas."

Ezekiel 27:34: "In the time when thou shalt be broken by the seas in the depths of the waters thy merchandise and all thy company in the midst of thee shall fall."

Ezekiel 31:4: "The waters made him great, the deep set him up on high with her rivers running round about his plants, and sent her little rivers unto all the trees of the field."

Ezekiel 31:5: "Therefore his height was exalted above all the trees of the field, and his boughs were multiplied, and his branches became long because of the multitude of waters, when he shot forth."

Ezekiel 31:7: "Thus was he fair in his greatness, in the length of his branches: for his root was by great waters."

Ezekiel 31:14: "To the end that none of all the trees by the waters exalt themselves for their height, neither shoot up their top among the thick boughs, neither their trees stand up in their height, all that drink water: for they are all delivered unto death, to the nether parts of the earth, in the midst of the children of men, with them that go down to the pit."

Ezekiel 31:15: "Thus saith the Lord GOD; In the day when he went down to the grave I caused a mourning: I covered the deep for him, and I restrained the floods thereof, and the great waters were stayed: and I caused Lebanon to mourn for him, and all the trees of the field fainted for him."

Ezekiel 32:2: "Son of man, take up a lamentation for Pharaoh king of Egypt, and say unto him, Thou art like a young lion of the nations, and thou art as a whale in the seas: and thou camest forth with thy rivers, and troubledst the waters with thy feet, and fouledst their rivers."

Ezekiel 32:13: "I will destroy also all the beasts thereof from beside the great waters; neither shall the foot of man trouble them any more, nor the hoofs of beasts trouble them."

Ezekiel 32:14: "Then will I make their waters deep, and cause their rivers to run like oil, saith the Lord GOD."

Ezekiel 34:18: "Seemeth it a small thing unto you to have eaten up the good pasture, but ye must tread down with your feet the residue of your pastures? and to have drunk of the deep waters, but ye must foul the residue with your feet?"

Ezekiel 43:2: "And, behold, the glory of the God of Israel came from the way of the east: and his voice was like a noise of many waters: and the earth shined with his glory."

Ezekiel 47:1: "Afterward he brought me again unto the door of the house; and, behold, waters issued out from under the threshold of the house eastward: for the forefront of the house stood toward the east, and the waters came down from under from the right side of the house, at the south side of the altar."

Ezekiel 47:2: "Then brought he me out of the way of the gate northward, and led me about the way without unto the utter gate by the way that looketh eastward; and, behold, there ran out waters on the right side."

Ezekiel 47:3: "And when the man that had the line in his hand went forth eastward, he measured a thousand cubits, and he brought me through the waters; the waters were to the ankles."

Ezekiel 47:4: "Again he measured a thousand, and brought me through the waters; the waters were to the knees. Again he measured a thousand, and brought me through; the waters were to the loins."

Ezekiel 47:5: "Afterward he measured a thousand; and it was a river that I could not pass over: for the waters were risen, waters to swim in, a river that could not be passed over."

Ezekiel 47:8: "Then said he unto me, These waters issue out toward the east country, and go down into the desert, and go into the sea: which being brought forth into the sea, the waters shall be healed."

Ezekiel 47:9: "And it shall come to pass, that every thing that liveth, which moveth, whithersoever the rivers shall come, shall live: and there shall be a very great multitude of fish, because these waters shall come thither: for they shall be healed; and every thing shall live whither the river cometh."

Ezekiel 47:12: "And by the river upon the bank thereof, on this side and on that side, shall grow all trees for meat, whose leaf shall not fade, neither shall the fruit thereof be consumed: it shall bring forth new fruit according to his months, because their waters they issued out of the sanctuary: and the fruit thereof shall be for meat, and the leaf thereof for medicine."

Ezekiel 47:19: "And the south side southward, from Tamar even to the waters of strife in Kadesh, the river to the great sea. And this is the south side southward."

Ezekiel 48:28: "And by the border of Gad, at the south side southward, the border shall be even from Tamar unto the waters of strife in Kadesh, and to the river toward the great sea."

Daniel 12:6: "And one said to the man clothed in linen, which was upon the waters of the river, How long shall it be to the end of these wonders?"

Daniel 12:7: "And I heard the man clothed in linen, which was upon the waters of the river, when he held up his right hand and his left hand unto heaven, and sware by him that liveth for ever that it shall be for a time, times, and an half; and when he shall have accomplished to scatter the power of the holy people, all these things shall be finished."

Joel 1:20: "The beasts of the field cry also unto thee: for the rivers of waters are dried up, and the fire hath devoured the pastures of the wilderness."

Joel 3:18: "And it shall come to pass in that day, that the mountains shall drop down new wine, and the hills shall flow with milk, and all the rivers of Judah shall flow with waters, and a fountain shall come forth out of the house of the LORD, and shall water the valley of Shittim."

Amos 5:8: "Seek him that maketh the seven stars and Orion, and turneth the shadow of death into the morning, and maketh the day dark with night: that calleth for the waters of the sea, and poureth them out upon the face of the earth: The LORD is his name:"

Amos 5:24: "But let judgment run down as waters, and righteousness as a mighty stream."

Amos 9:6: "It is he that buildeth his stories in the heaven, and hath founded his troop in the earth; he that calleth for the waters of the sea, and poureth them out upon the face of the earth: The LORD is



his name."

Jonah 2:5: "The waters compassed me about, even to the soul: the depth closed me round about, the weeds were wrapped about my head."

Micah 1:4: "And the mountains shall be molten under him, and the valleys shall be cleft, as wax before the fire, and as the waters that are poured down a steep place."

Nahum 3:8: "Art thou better than populous No, that was situate among the rivers, that had the waters round about it, whose rampart was the sea, and her wall was from the sea?"

Nahum 3:14: "Draw thee waters for the siege, fortify thy strong holds: go into clay, and tread the mortar, make strong the brickkiln."

Habakkuk 2:14: "For the earth shall be filled with the knowledge of the glory of the LORD, as the waters cover the sea."

Habakkuk 3:15: "Thou didst walk through the sea with thine horses, through the heap of great waters."

Zechariah 14:8: "And it shall be in that day, that living waters shall go out from Jerusalem; half of them toward the former sea, and half of them toward the hinder sea: in summer and in winter shall it be."

Matthew 8:32: "And he said unto them, Go. And when they were come out, they went into the herd of swine: and, behold, the whole herd of swine ran violently down a steep place into the sea, and perished in the waters."

Mark 9:22: "And oftentimes it hath cast him into the fire, and into the waters, to destroy him: but if thou canst do any thing, have compassion on us, and help us."

2 Corinthians 11:26: "In journeyings often, in perils of waters, in perils of robbers, in perils by mine own countrymen, in perils by the heathen, in perils in the city, in perils in the wilderness, in perils in the sea, in perils among false brethren;"

Revelation 1:15: "And his feet like unto fine brass, as if they burned in a furnace; and his voice as the sound of many waters."

Revelation 7:17: "For the Lamb which is in the midst of the throne shall feed them, and shall lead them unto living fountains of waters: and God shall wipe away all tears from their eyes."

Revelation 8:10: "And the third angel sounded, and there fell a great star from heaven, burning as it were a lamp, and it fell upon the third part of the rivers, and upon the fountains of waters;"

Revelation 8:11: "And the name of the star is called Wormwood: and the third part of the waters became wormwood; and many men died of the waters, because they were made bitter."

Revelation 11:6: "These have power to shut heaven, that it rain not in the days of their prophecy: and have power over waters to turn them to blood, and to smite the earth with all plagues, as often as they will."

Revelation 14:2: "And I heard a voice from heaven, as the voice of many waters, and as the voice of a great thunder: and I heard the voice of harpers harping with their harps:"

Revelation 14:7: "Saying with a loud voice, Fear God, and give glory to him; for the hour of his judgment is come: and worship him that made heaven, and earth, and the sea, and the fountains of waters."

Revelation 16:4: "And the third angel poured out his vial upon the rivers and fountains of waters; and they became blood."

Revelation 16:5: "And I heard the angel of the waters say, Thou art righteous, O Lord, which art, and wast, and shalt be, because thou hast judged thus."

Revelation 17:1: "And there came one of the seven angels which had the seven vials, and talked with me, saying unto me, Come hither; I will shew unto thee the judgment of the great whore that sitteth upon many waters:"

Revelation 17:15: "And he saith unto me, The waters which thou sawest, where the whore sitteth, are peoples, and multitudes, and nations, and tongues."

Revelation 19:6: "And I heard as it were the voice of a great multitude, and as the voice of many

waters, and as the voice of mighty thunderings, saying, Alleluia: for the Lord God omnipotent reigneth."

## **WATERSPOUTS**

Occurrences: 1

Psalms 42:7: "Deep calleth unto deep at the noise of thy waterspouts: all thy waves and thy billows are gone over me."

## **WATERSPRINGS**

Occurrences: 2

Psalms 107:33: "He turneth rivers into a wilderness, and the watersprings into dry ground;"

Psalms 107:35: "He turneth the wilderness into a standing water, and dry ground into watersprings."

## **WAVE**

Occurrences: 22

Exodus 29:24: "And thou shalt put all in the hands of Aaron, and in the hands of his sons; and shalt wave them for a wave offering before the LORD."

Exodus 29:26: "And thou shalt take the breast of the ram of Aaron's consecration, and wave it for a wave offering before the LORD: and it shall be thy part."

Exodus 29:27: "And thou shalt sanctify the breast of the wave offering, and the shoulder of the heave offering, which is waved, and which is heaved up, of the ram of the consecration, even of that which is for Aaron, and of that which is for his sons:"

Leviticus 7:30: "His own hands shall bring the offerings of the LORD made by fire, the fat with the breast, it shall he bring, that the breast may be waved for a wave offering before the LORD."

Leviticus 7:34: "For the wave breast and the heave shoulder have I taken of the children of Israel from off the sacrifices of their peace offerings, and have given them unto Aaron the priest and unto his sons by a statute for ever from among the children of Israel."

Leviticus 8:27: "And he put all upon Aaron's hands, and upon his sons' hands, and waved them for a wave offering before the LORD."

Leviticus 8:29: "And Moses took the breast, and waved it for a wave offering before the LORD: for of the ram of consecration it was Moses' part; as the LORD commanded Moses."

Leviticus 9:21: "And the breasts and the right shoulder Aaron waved for a wave offering before the LORD; as Moses commanded."

Leviticus 10:14: "And the wave breast and heave shoulder shall ye eat in a clean place; thou, and thy sons, and thy daughters with thee: for they be thy due, and thy sons' due, which are given out of the sacrifices of peace offerings of the children of Israel."

Leviticus 10:15: "The heave shoulder and the wave breast shall they bring with the offerings made by fire of the fat, to wave it for a wave offering before the LORD; and it shall be thine, and thy sons' with thee, by a statute for ever; as the LORD hath commanded."

Leviticus 14:12: "And the priest shall take one he lamb, and offer him for a trespass offering, and the log of oil, and wave them for a wave offering before the LORD:"

Leviticus 14:24: "And the priest shall take the lamb of the trespass offering, and the log of oil, and the priest shall wave them for a wave offering before the LORD:"

Leviticus 23:11: "And he shall wave the sheaf before the LORD, to be accepted for you: on the morrow after the sabbath the priest shall wave it."

Leviticus 23:12: "And ye shall offer that day when ye wave the sheaf an he lamb without blemish of the first year for a burnt offering unto the LORD."

Leviticus 23:15: "And ye shall count unto you from the morrow after the sabbath, from the day that

ye brought the sheaf of the wave offering; seven sabbaths shall be complete:"

Leviticus 23:17: "Ye shall bring out of your habitations two wave loaves of two tenth deals; they shall be of fine flour; they shall be baked with leaven; they are the firstfruits unto the LORD."

Leviticus 23:20: "And the priest shall wave them with the bread of the firstfruits for a wave offering before the LORD, with the two lambs: they shall be holy to the LORD for the priest."

Numbers 5:25: "Then the priest shall take the jealousy offering out of the woman's hand, and shall wave the offering before the LORD, and offer it upon the altar:"

Numbers 6:20: "And the priest shall wave them for a wave offering before the LORD: this is holy for the priest, with the wave breast and heave shoulder: and after that the Nazarite may drink wine."

Numbers 18:11: "And this is thine; the heave offering of their gift, with all the wave offerings of the children of Israel: I have given them unto thee, and to thy sons and to thy daughters with thee, by a statute for ever: every one that is clean in thy house shall eat of it."

Numbers 18:18: "And the flesh of them shall be thine, as the wave breast and as the right shoulder are thine."

James 1:6: "But let him ask in faith, nothing wavering. For he that wavereth is like a wave of the sea driven with the wind and tossed."

## **WAVED**

Occurrences: 6

Exodus 29:27: "And thou shalt sanctify the breast of the wave offering, and the shoulder of the heave offering, which is waved, and which is heaved up, of the ram of the consecration, even of that which is for Aaron, and of that which is for his sons:"

Leviticus 7:30: "His own hands shall bring the offerings of the LORD made by fire, the fat with the breast, it shall he bring, that the breast may be waved for a wave offering before the LORD."

Leviticus 8:27: "And he put all upon Aaron's hands, and upon his sons' hands, and waved them for a wave offering before the LORD."

Leviticus 8:29: "And Moses took the breast, and waved it for a wave offering before the LORD: for of the ram of consecration it was Moses' part; as the LORD commanded Moses."

Leviticus 9:21: "And the breasts and the right shoulder Aaron waved for a wave offering before the LORD; as Moses commanded."

Leviticus 14:21: "And if he be poor, and cannot get so much; then he shall take one lamb for a trespass offering to be waved, to make an atonement for him, and one tenth deal of fine flour mingled with oil for a meat offering, and a log of oil;"

## **WAVERETH**

Occurrences: 1

James 1:6: "But let him ask in faith, nothing wavering. For he that wavereth is like a wave of the sea driven with the wind and tossed."

## **WAVERING**

Occurrences: 2

Hebrews 10:23: "Let us hold fast the profession of our faith without wavering; (for he is faithful that promised;)"

James 1:6: "But let him ask in faith, nothing wavering. For he that wavereth is like a wave of the sea driven with the wind and tossed."

## **WAVES**

Occurrences: 26

2 Samuel 22:5: "When the waves of death compassed me, the floods of ungodly men made me afraid;"

Job 9:8: "Which alone spreadeth out the heavens, and treadeth upon the waves of the sea."

Job 38:11: "And said, Hitherto shalt thou come, but no further: and here shall thy proud waves be stayed?"

Psalms 42:7: "Deep calleth unto deep at the noise of thy waterspouts: all thy waves and thy billows are gone over me."

Psalms 65:7: "Which stilleth the noise of the seas, the noise of their waves, and the tumult of the people."

Psalms 88:7: "Thy wrath lieth hard upon me, and thou hast afflicted me with all thy waves. Selah."

Psalms 89:9: "Thou rulest the raging of the sea: when the waves thereof arise, thou stillest them."

Psalms 93:3: "The floods have lifted up, O LORD, the floods have lifted up their voice; the floods lift up their waves."

Psalms 93:4: "The LORD on high is mightier than the noise of many waters, yea, than the mighty waves of the sea."

Psalms 107:25: "For he commandeth, and raiseth the stormy wind, which lifteth up the waves thereof."

Psalms 107:29: "He maketh the storm a calm, so that the waves thereof are still."

Isaiah 48:18: "O that thou hadst hearkened to my commandments! then had thy peace been as a river, and thy righteousness as the waves of the sea:"

Isaiah 51:15: "But I am the LORD thy God, that divided the sea, whose waves roared: The LORD of hosts is his name."

Jeremiah 5:22: "Fear ye not me? saith the LORD: will ye not tremble at my presence, which have placed the sand for the bound of the sea by a perpetual decree, that it cannot pass it: and though the waves thereof toss themselves, yet can they not prevail; though they roar, yet can they not pass over it?"

Jeremiah 31:35: "Thus saith the LORD, which giveth the sun for a light by day, and the ordinances of the moon and of the stars for a light by night, which divideth the sea when the waves thereof roar; The LORD of hosts is his name:"

Jeremiah 51:42: "The sea is come up upon Babylon: she is covered with the multitude of the waves thereof."

Jeremiah 51:55: "Because the LORD hath spoiled Babylon, and destroyed out of her the great voice; when her waves do roar like great waters, a noise of their voice is uttered:"

Ezekiel 26:3: "Therefore thus saith the Lord GOD; Behold, I am against thee, O Tyrus, and will cause many nations to come up against thee, as the sea causeth his waves to come up."

Jonah 2:3: "For thou hadst cast me into the deep, in the midst of the seas; and the floods compassed me about: all thy billows and thy waves passed over me."

Zechariah 10:11: "And he shall pass through the sea with affliction, and shall smite the waves in the sea, and all the deeps of the river shall dry up: and the pride of Assyria shall be brought down, and the sceptre of Egypt shall depart away."

Matthew 8:24: "And, behold, there arose a great tempest in the sea, insomuch that the ship was covered with the waves: but he was asleep."

Matthew 14:24: "But the ship was now in the midst of the sea, tossed with waves: for the wind was contrary."

Mark 4:37: "And there arose a great storm of wind, and the waves beat into the ship, so that it was now full."

Luke 21:25: "And there shall be signs in the sun, and in the moon, and in the stars; and upon the earth distress of nations, with perplexity; the sea and the waves roaring;"

Acts 27:41: "And falling into a place where two seas met, they ran the ship aground; and the forepart stuck fast, and remained unmoveable, but the hinder part was broken with the violence of

the waves."

Jude 1:13: "Raging waves of the sea, foaming out their own shame; wandering stars, to whom is reserved the blackness of darkness for ever."

## **WAX**

Occurrences: 23

Exodus 22:24: "And my wrath shall wax hot, and I will kill you with the sword; and your wives shall be widows, and your children fatherless."

Exodus 32:10: "Now therefore let me alone, that my wrath may wax hot against them, and that I may consume them: and I will make of thee a great nation."

Exodus 32:11: "And Moses besought the LORD his God, and said, LORD, why doth thy wrath wax hot against thy people, which thou hast brought forth out of the land of Egypt with great power, and with a mighty hand?"

Exodus 32:22: "And Aaron said, Let not the anger of my lord wax hot: thou knowest the people, that they are set on mischief."

Leviticus 25:47: "And if a sojourner or stranger wax rich by thee, and thy brother that dwelleth by him wax poor, and sell himself unto the stranger or sojourner by thee, or to the stock of the stranger's family:"

1 Samuel 3:2: "And it came to pass at that time, when Eli was laid down in his place, and his eyes began to wax dim, that he could not see;"

Job 6:17: "What time they wax warm, they vanish: when it is hot, they are consumed out of their place."

Job 14:8: "Though the root thereof wax old in the earth, and the stock thereof die in the ground;"

Psalms 22:14: "I am poured out like water, and all my bones are out of joint: my heart is like wax; it is melted in the midst of my bowels."

Psalms 68:2: "As smoke is driven away, so drive them away: as wax melteth before the fire, so let the wicked perish at the presence of God."

Psalms 97:5: "The hills melted like wax at the presence of the LORD, at the presence of the Lord of the whole earth."

Psalms 102:26: "They shall perish, but thou shalt endure: yea, all of them shall wax old like a garment; as a vesture shalt thou change them, and they shall be changed:"

Isaiah 17:4: "And in that day it shall come to pass, that the glory of Jacob shall be made thin, and the fatness of his flesh shall wax lean."

Isaiah 29:22: "Therefore thus saith the LORD, who redeemed Abraham, concerning the house of Jacob, Jacob shall not now be ashamed, neither shall his face now wax pale."

Isaiah 50:9: "Behold, the Lord GOD will help me; who is he that shall condemn me? lo, they all shall wax old as a garment; the moth shall eat them up."

Isaiah 51:6: "Lift up your eyes to the heavens, and look upon the earth beneath: for the heavens shall vanish away like smoke, and the earth shall wax old like a garment, and they that dwell therein shall die in like manner: but my salvation shall be for ever, and my righteousness shall not be abolished."

Jeremiah 6:24: "We have heard the fame thereof: our hands wax feeble: anguish hath taken hold of us, and pain, as of a woman in travail."

Micah 1:4: "And the mountains shall be molten under him, and the valleys shall be cleft, as wax before the fire, and as the waters that are poured down a steep place."

Matthew 24:12: "And because iniquity shall abound, the love of many shall wax cold."

Luke 12:33: "Sell that ye have, and give alms; provide yourselves bags which wax not old, a treasure in the heavens that faileth not, where no thief approacheth, neither moth corrupteth."

1 Timothy 5:11: "But the younger widows refuse: for when they have begun to wax wanton against Christ, they will marry;"

2 Timothy 3:13: "But evil men and seducers shall wax worse and worse, deceiving, and being deceived."

Hebrews 1:11: "They shall perish; but thou remainest; and they all shall wax old as doth a garment;"

## WAXED

Occurrences: 36

Genesis 18:12: "Therefore Sarah laughed within herself, saying, After I am waxed old shall I have pleasure, my lord being old also?"

Genesis 26:13: "And the man waxed great, and went forward, and grew until he became very great:"

Genesis 41:56: "And the famine was over all the face of the earth: and Joseph opened all the storehouses, and sold unto the Egyptians; and the famine waxed sore in the land of Egypt."

Exodus 1:7: "And the children of Israel were fruitful, and increased abundantly, and multiplied, and waxed exceeding mighty; and the land was filled with them."

Exodus 1:20: "Therefore God dealt well with the midwives: and the people multiplied, and waxed very mighty."

Exodus 16:21: "And they gathered it every morning, every man according to his eating: and when the sun waxed hot, it melted."

Exodus 19:19: "And when the voice of the trumpet sounded long, and waxed louder and louder, Moses spake, and God answered him by a voice."

Exodus 32:19: "And it came to pass, as soon as he came nigh unto the camp, that he saw the calf, and the dancing: and Moses' anger waxed hot, and he cast the tables out of his hands, and brake them beneath the mount."

Numbers 11:23: "And the LORD said unto Moses, Is the LORD's hand waxed short? thou shalt see now whether my word shall come to pass unto thee or not."

Deuteronomy 8:4: "Thy raiment waxed not old upon thee, neither did thy foot swell, these forty years."

Deuteronomy 32:15: "But Jeshurun waxed fat, and kicked: thou art waxen fat, thou art grown thick, thou art covered with fatness; then he forsook God which made him, and lightly esteemed the Rock of his salvation."

Joshua 23:1: "And it came to pass a long time after that the LORD had given rest unto Israel from all their enemies round about, that Joshua waxed old and stricken in age."

1 Samuel 2:5: "They that were full have hired out themselves for bread; and they that were hungry ceased: so that the barren hath born seven; and she that hath many children is waxed feeble."

2 Samuel 3:1: "Now there was long war between the house of Saul and the house of David: but David waxed stronger and stronger, and the house of Saul waxed weaker and weaker."

2 Samuel 21:15: "Moreover the Philistines had yet war again with Israel; and David went down, and his servants with him, and fought against the Philistines: and David waxed faint."

2 Kings 4:34: "And he went up, and lay upon the child, and put his mouth upon his mouth, and his eyes upon his eyes, and his hands upon his hands: and stretched himself upon the child; and the flesh of the child waxed warm."

1 Chronicles 11:9: "So David waxed greater and greater: for the LORD of hosts was with him."

2 Chronicles 13:21: "But Abijah waxed mighty, and married fourteen wives, and begat twenty and two sons, and sixteen daughters."

2 Chronicles 17:12: "And Jehoshaphat waxed great exceedingly; and he built in Judah castles, and cities of store."

2 Chronicles 24:15: "But Jehoiada waxed old, and was full of days when he died; an hundred and thirty years old was he when he died."

Nehemiah 9:21: "Yea, forty years didst thou sustain them in the wilderness, so that they lacked

nothing; their clothes waxed not old, and their feet swelled not."

Esther 9:4: "For Mordecai was great in the king's house, and his fame went out throughout all the provinces: for this man Mordecai waxed greater and greater."

Psalms 32:3: "When I kept silence, my bones waxed old through my roaring all the day long."

Jeremiah 49:24: "Damascus is waxed feeble, and turneth herself to flee, and fear hath seized on her: anguish and sorrows have taken her, as a woman in travail."

Jeremiah 50:43: "The king of Babylon hath heard the report of them, and his hands waxed feeble: anguish took hold of him, and pangs as of a woman in travail."

Daniel 8:8: "Therefore the he goat waxed very great: and when he was strong, the great horn was broken; and for it came up four notable ones toward the four winds of heaven."

Daniel 8:9: "And out of one of them came forth a little horn, which waxed exceeding great, toward the south, and toward the east, and toward the pleasant land."

Daniel 8:10: "And it waxed great, even to the host of heaven; and it cast down some of the host and of the stars to the ground, and stamped upon them."

Matthew 13:15: "For this people's heart is waxed gross, and their ears are dull of hearing, and their eyes they have closed; lest at any time they should see with their eyes and hear with their ears, and should understand with their heart, and should be converted, and I should heal them."

Luke 1:80: "And the child grew, and waxed strong in spirit, and was in the deserts till the day of his shewing unto Israel."

Luke 2:40: "And the child grew, and waxed strong in spirit, filled with wisdom: and the grace of God was upon him."

Luke 13:19: "It is like a grain of mustard seed, which a man took, and cast into his garden; and it grew, and waxed a great tree; and the fowls of the air lodged in the branches of it."

Acts 13:46: "Then Paul and Barnabas waxed bold, and said, It was necessary that the word of God should first have been spoken to you: but seeing ye put it from you, and judge yourselves unworthy of everlasting life, lo, we turn to the Gentiles."

Acts 28:27: "For the heart of this people is waxed gross, and their ears are dull of hearing, and their eyes have they closed; lest they should see with their eyes, and hear with their ears, and understand with their heart, and should be converted, and I should heal them."

Hebrews 11:34: "Quenched the violence of fire, escaped the edge of the sword, out of weakness were made strong, waxed valiant in fight, turned to flight the armies of the aliens."

Revelation 18:3: "For all nations have drunk of the wine of the wrath of her fornication, and the kings of the earth have committed fornication with her, and the merchants of the earth are waxed rich through the abundance of her delicacies."

## **WAXEN**

Occurrences: 11

Genesis 19:13: "For we will destroy this place, because the cry of them is waxen great before the face of the LORD; and the LORD hath sent us to destroy it."

Leviticus 25:25: "If thy brother be waxen poor, and hath sold away some of his possession, and if any of his kin come to redeem it, then shall he redeem that which his brother sold."

Leviticus 25:35: "And if thy brother be waxen poor, and fallen in decay with thee; then thou shalt relieve him: yea, though he be a stranger, or a sojourner; that he may live with thee."

Leviticus 25:39: "And if thy brother that dwelleth by thee be waxen poor, and be sold unto thee; thou shalt not compel him to serve as a bondservant:"

Deuteronomy 29:5: "And I have led you forty years in the wilderness: your clothes are not waxen old upon you, and thy shoe is not waxen old upon thy foot."

Deuteronomy 31:20: "For when I shall have brought them into the land which I swear unto their fathers, that floweth with milk and honey; and they shall have eaten and filled themselves, and waxen fat; then will they turn unto other gods, and serve them, and provoke me, and break my

covenant."

Deuteronomy 32:15: "But Jeshurun waxed fat, and kicked: thou art waxen fat, thou art grown thick, thou art covered with fatness; then he forsook God which made him, and lightly esteemed the Rock of his salvation."

Joshua 17:13: "Yet it came to pass, when the children of Israel were waxen strong, that they put the Canaanites to tribute, but did not utterly drive them out."

Jeremiah 5:27: "As a cage is full of birds, so are their houses full of deceit: therefore they are become great, and waxen rich."

Jeremiah 5:28: "They are waxen fat, they shine: yea, they overpass the deeds of the wicked: they judge not the cause, the cause of the fatherless, yet they prosper; and the right of the needy do they not judge."

Ezekiel 16:7: "I have caused thee to multiply as the bud of the field, and thou hast increased and waxen great, and thou art come to excellent ornaments: thy breasts are fashioned, and thine hair is grown, whereas thou wast naked and bare."

## **WAXETH**

Occurrences: 2

Psalms 6:7: "Mine eye is consumed because of grief; it waxeth old because of all mine enemies."

Hebrews 8:13: "In that he saith, A new covenant, he hath made the first old. Now that which decayeth and waxeth old is ready to vanish away."

## **WAXING**

Occurrences: 1

Philippians 1:14: "And many of the brethren in the Lord, waxing confident by my bonds, are much more bold to speak the word without fear."

## **WAY**

Occurrences: 608

Genesis 3:24: "So he drove out the man; and he placed at the east of the garden of Eden Cherubims, and a flaming sword which turned every way, to keep the way of the tree of life."

Genesis 6:12: "And God looked upon the earth, and, behold, it was corrupt; for all flesh had corrupted his way upon the earth."

Genesis 12:19: "Why saidst thou, She is my sister? so I might have taken her to me to wife: now therefore behold thy wife, take her, and go thy way."

Genesis 14:11: "And they took all the goods of Sodom and Gomorrah, and all their victuals, and went their way."

Genesis 16:7: "And the angel of the LORD found her by a fountain of water in the wilderness, by the fountain in the way to Shur."

Genesis 18:16: "And the men rose up from thence, and looked toward Sodom: and Abraham went with them to bring them on the way."

Genesis 18:19: "For I know him, that he will command his children and his household after him, and they shall keep the way of the LORD, to do justice and judgment; that the LORD may bring upon Abraham that which he hath spoken of him."

Genesis 18:33: "And the LORD went his way, as soon as he had left communing with Abraham: and Abraham returned unto his place."

Genesis 21:16: "And she went, and sat her down over against him a good way off, as it were a bow shot: for she said, Let me not see the death of the child. And she sat over against him, and lift up her voice, and wept."



Genesis 24:27: "And he said, Blessed be the LORD God of my master Abraham, who hath not left destitute my master of his mercy and his truth: I being in the way, the LORD led me to the house of my master's brethren."

Genesis 24:40: "And he said unto me, The LORD, before whom I walk, will send his angel with thee, and prosper thy way; and thou shalt take a wife for my son of my kindred, and of my father's house:"

Genesis 24:42: "And I came this day unto the well, and said, O LORD God of my master Abraham, if now thou do prosper my way which I go:"

Genesis 24:48: "And I bowed down my head, and worshipped the LORD, and blessed the LORD God of my master Abraham, which had led me in the right way to take my master's brother's daughter unto his son."

Genesis 24:56: "And he said unto them, Hinder me not, seeing the LORD hath prospered my way; send me away that I may go to my master."

Genesis 24:61: "And Rebekah arose, and her damsels, and they rode upon the camels, and followed the man: and the servant took Rebekah, and went his way."

Genesis 24:62: "And Isaac came from the way of the well Lahairoi; for he dwelt in the south country."

Genesis 25:34: "Then Jacob gave Esau bread and pottage of lentiles; and he did eat and drink, and rose up, and went his way: thus Esau despised his birthright."

Genesis 28:20: "And Jacob vowed a vow, saying, If God will be with me, and will keep me in this way that I go, and will give me bread to eat, and raiment to put on,"

Genesis 32:1: "And Jacob went on his way, and the angels of God met him."

Genesis 33:16: "So Esau returned that day on his way unto Seir."

Genesis 35:3: "And let us arise, and go up to Bethel; and I will make there an altar unto God, who answered me in the day of my distress, and was with me in the way which I went."

Genesis 35:16: "And they journeyed from Bethel; and there was but a little way to come to Ephrath: and Rachel travailed, and she had hard labour."

Genesis 35:19: "And Rachel died, and was buried in the way to Ephrath, which is Bethlehem."

Genesis 38:14: "And she put her widow's garments off from her, and covered her with a vail, and wrapped herself, and sat in an open place, which is by the way to Timnath; for she saw that Shelah was grown, and she was not given unto him to wife."

Genesis 38:16: "And he turned unto her by the way, and said, Go to, I pray thee, let me come in unto thee; (for he knew not that she was his daughter in law.) And she said, What wilt thou give me, that thou mayest come in unto me?"

Genesis 38:21: "Then he asked the men of that place, saying, Where is the harlot, that was openly by the way side? And they said, There was no harlot in this place."

Genesis 42:25: "Then Joseph commanded to fill their sacks with corn, and to restore every man's money into his sack, and to give them provision for the way: and thus did he unto them."

Genesis 42:38: "And he said, My son shall not go down with you; for his brother is dead, and he is left alone: if mischief befall him by the way in the which ye go, then shall ye bring down my gray hairs with sorrow to the grave."

Genesis 45:21: "And the children of Israel did so: and Joseph gave them wagons, according to the commandment of Pharaoh, and gave them provision for the way."

Genesis 45:23: "And to his father he sent after this manner; ten asses laden with the good things of Egypt, and ten she asses laden with corn and bread and meat for his father by the way."

Genesis 45:24: "So he sent his brethren away, and they departed: and he said unto them, See that ye fall not out by the way."

Genesis 48:7: "And as for me, when I came from Padan, Rachel died by me in the land of Canaan in the way, when yet there was but a little way to come unto Ephrath: and I buried her there in the way of Ephrath; the same is Bethlehem."

Genesis 49:17: "Dan shall be a serpent by the way, an adder in the path, that biteth the horse heels, so that his rider shall fall backward."

Exodus 2:12: "And he looked this way and that way, and when he saw that there was no man, he slew the Egyptian, and hid him in the sand."

Exodus 4:24: "And it came to pass by the way in the inn, that the LORD met him, and sought to kill him."

Exodus 5:20: "And they met Moses and Aaron, who stood in the way, as they came forth from Pharaoh:"

Exodus 13:17: "And it came to pass, when Pharaoh had let the people go, that God led them not through the way of the land of the Philistines, although that was near; for God said, Lest peradventure the people repent when they see war, and they return to Egypt:"

Exodus 13:18: "But God led the people about, through the way of the wilderness of the Red sea: and the children of Israel went up harnessed out of the land of Egypt."

Exodus 13:21: "And the LORD went before them by day in a pillar of a cloud, to lead them the way; and by night in a pillar of fire, to give them light; to go by day and night:"

Exodus 18:8: "And Moses told his father in law all that the LORD had done unto Pharaoh and to the Egyptians for Israel's sake, and all the travail that had come upon them by the way, and how the LORD delivered them."

Exodus 18:20: "And thou shalt teach them ordinances and laws, and shalt shew them the way wherein they must walk, and the work that they must do."

Exodus 18:27: "And Moses let his father in law depart; and he went his way into his own land."

Exodus 23:20: "Behold, I send an Angel before thee, to keep thee in the way, and to bring thee into the place which I have prepared."

Exodus 32:8: "They have turned aside quickly out of the way which I commanded them: they have made them a molten calf, and have worshipped it, and have sacrificed thereunto, and said, These be thy gods, O Israel, which have brought thee up out of the land of Egypt."

Exodus 33:3: "Unto a land flowing with milk and honey: for I will not go up in the midst of thee; for thou art a stiffnecked people: lest I consume thee in the way."

Exodus 33:13: "Now therefore, I pray thee, if I have found grace in thy sight, shew me now thy way, that I may know thee, that I may find grace in thy sight: and consider that this nation is thy people."

Numbers 13:17: "And Moses sent them to spy out the land of Canaan, and said unto them, Get you up this way southward, and go up into the mountain:"

Numbers 14:25: "(Now the Amalekites and the Canaanites dwelt in the valley.) Tomorrow turn you, and get you into the wilderness by the way of the Red sea."

Numbers 20:17: "Let us pass, I pray thee, through thy country: we will not pass through the fields, or through the vineyards, neither will we drink of the water of the wells: we will go by the king's high way, we will not turn to the right hand nor to the left, until we have passed thy borders."

Numbers 20:19: "And the children of Israel said unto him, We will go by the high way: and if I and my cattle drink of thy water, then I will pay for it: I will only, without doing anything else, go through on my feet."

Numbers 21:1: "And when king Arad the Canaanite, which dwelt in the south, heard tell that Israel came by the way of the spies; then he fought against Israel, and took some of them prisoners."

Numbers 21:4: "And they journeyed from mount Hor by the way of the Red sea, to compass the land of Edom: and the soul of the people was much discouraged because of the way."

Numbers 21:22: "Let me pass through thy land: we will not turn into the fields, or into the vineyards; we will not drink of the waters of the well: but we will go along by the king's high way, until we be past thy borders."

Numbers 21:33: "And they turned and went up by the way of Bashan: and Og the king of Bashan went out against them, he, and all his people, to the battle at Edrei."

Numbers 22:22: "And God's anger was kindled because he went: and the angel of the LORD stood in the way for an adversary against him. Now he was riding upon his ass, and his two servants were with him."

Numbers 22:23: "And the ass saw the angel of the LORD standing in the way, and his sword drawn in his hand: and the ass turned aside out of the way, and went into the field: and Balaam smote the ass, to turn her into the way."

Numbers 22:26: "And the angel of the LORD went further, and stood in a narrow place, where was no way to turn either to the right hand or to the left."

Numbers 22:31: "Then the LORD opened the eyes of Balaam, and he saw the angel of the LORD standing in the way, and his sword drawn in his hand: and he bowed down his head, and fell flat on his face."

Numbers 22:32: "And the angel of the LORD said unto him, Wherefore hast thou smitten thine ass these three times? behold, I went out to withstand thee, because thy way is perverse before me:"

Numbers 22:34: "And Balaam said unto the angel of the LORD, I have sinned; for I knew not that thou stoodest in the way against me: now therefore, if it displease thee, I will get me back again."

Numbers 24:25: "And Balaam rose up, and went and returned to his place: and Balak also went his way."

Deuteronomy 1:2: "(There are eleven days' journey from Horeb by the way of mount Seir unto Kadeshbarnea.)"

Deuteronomy 1:19: "And when we departed from Horeb, we went through all that great and terrible wilderness, which ye saw by the way of the mountain of the Amorites, as the LORD our God commanded us; and we came to Kadeshbarnea."

Deuteronomy 1:22: "And ye came near unto me every one of you, and said, We will send men before us, and they shall search us out the land, and bring us word again by what way we must go up, and into what cities we shall come."

Deuteronomy 1:31: "And in the wilderness, where thou hast seen how that the LORD thy God bare thee, as a man doth bear his son, in all the way that ye went, until ye came into this place."

Deuteronomy 1:33: "Who went in the way before you, to search you out a place to pitch your tents in, in fire by night, to shew you by what way ye should go, and in a cloud by day."

Deuteronomy 1:40: "But as for you, turn you, and take your journey into the wilderness by the way of the Red sea."

Deuteronomy 2:1: "Then we turned, and took our journey into the wilderness by the way of the Red sea, as the LORD spake unto me: and we compassed mount Seir many days."

Deuteronomy 2:8: "And when we passed by from our brethren the children of Esau, which dwelt in Seir, through the way of the plain from Elath, and from Eziongaber, we turned and passed by the way of the wilderness of Moab."

Deuteronomy 2:27: "Let me pass through thy land: I will go along by the high way, I will neither turn unto the right hand nor to the left."

Deuteronomy 3:1: "Then we turned, and went up the way to Bashan: and Og the king of Bashan came out against us, he and all his people, to battle at Edrei."

Deuteronomy 6:7: "And thou shalt teach them diligently unto thy children, and shalt talk of them when thou sittest in thine house, and when thou walkest by the way, and when thou liest down, and when thou risest up."

Deuteronomy 8:2: "And thou shalt remember all the way which the LORD thy God led thee these forty years in the wilderness, to humble thee, and to prove thee, to know what was in thine heart, whether thou wouldest keep his commandments, or no."

Deuteronomy 9:12: "And the LORD said unto me, Arise, get thee down quickly from hence; for thy people which thou hast brought forth out of Egypt have corrupted themselves; they are quickly turned aside out of the way which I commanded them; they have made them a molten image."

Deuteronomy 9:16: "And I looked, and, behold, ye had sinned against the LORD your God, and had

made you a molten calf: ye had turned aside quickly out of the way which the LORD had commanded you."

Deuteronomy 11:19: "And ye shall teach them your children, speaking of them when thou sittest in thine house, and when thou walkest by the way, when thou liest down, and when thou risest up."

Deuteronomy 11:28: "And a curse, if ye will not obey the commandments of the LORD your God, but turn aside out of the way which I command you this day, to go after other gods, which ye have not known."

Deuteronomy 11:30: "Are they not on the other side Jordan, by the way where the sun goeth down, in the land of the Canaanites, which dwell in the champaign over against Gilgal, beside the plains of Moreh?"

Deuteronomy 13:5: "And that prophet, or that dreamer of dreams, shall be put to death; because he hath spoken to turn you away from the LORD your God, which brought you out of the land of Egypt, and redeemed you out of the house of bondage, to thrust thee out of the way which the LORD thy God commanded thee to walk in. So shalt thou put the evil away from the midst of thee."

Deuteronomy 14:24: "And if the way be too long for thee, so that thou art not able to carry it; or if the place be too far from thee, which the LORD thy God shall choose to set his name there, when the LORD thy God hath blessed thee:"

Deuteronomy 17:16: "But he shall not multiply horses to himself, nor cause the people to return to Egypt, to the end that he should multiply horses: forasmuch as the LORD hath said unto you, Ye shall henceforth return no more that way."

Deuteronomy 19:3: "Thou shalt prepare thee a way, and divide the coasts of thy land, which the LORD thy God giveth thee to inherit, into three parts, that every slayer may flee thither."

Deuteronomy 19:6: "Lest the avenger of the blood pursue the slayer, while his heart is hot, and overtake him, because the way is long, and slay him; whereas he was not worthy of death, inasmuch as he hated him not in time past."

Deuteronomy 22:4: "Thou shalt not see thy brother's ass or his ox fall down by the way, and hide thyself from them: thou shalt surely help him to lift them up again."

Deuteronomy 22:6: "If a bird's nest chance to be before thee in the way in any tree, or on the ground, whether they be young ones, or eggs, and the dam sitting upon the young, or upon the eggs, thou shalt not take the dam with the young:"

Deuteronomy 23:4: "Because they met you not with bread and with water in the way, when ye came forth out of Egypt; and because they hired against thee Balaam the son of Beor of Pethor of Mesopotamia, to curse thee."

Deuteronomy 24:9: "Remember what the LORD thy God did unto Miriam by the way, after that ye were come forth out of Egypt."

Deuteronomy 25:17: "Remember what Amalek did unto thee by the way, when ye were come forth out of Egypt;"

Deuteronomy 25:18: "How he met thee by the way, and smote the hindmost of thee, even all that were feeble behind thee, when thou wast faint and weary; and he feared not God."

Deuteronomy 27:18: "Cursed be he that maketh the blind to wander out of the way. And all the people shall say, Amen."

Deuteronomy 28:7: "The LORD shall cause thine enemies that rise up against thee to be smitten before thy face: they shall come out against thee one way, and flee before thee seven ways."

Deuteronomy 28:25: "The LORD shall cause thee to be smitten before thine enemies: thou shalt go out one way against them, and flee seven ways before them: and shalt be removed into all the kingdoms of the earth."

Deuteronomy 28:68: "And the LORD shall bring thee into Egypt again with ships, by the way whereof I spake unto thee, Thou shalt see it no more again: and there ye shall be sold unto your enemies for bondmen and bondwomen, and no man shall buy you."

Deuteronomy 31:29: "For I know that after my death ye will utterly corrupt yourselves, and turn

aside from the way which I have commanded you; and evil will befall you in the latter days; because ye will do evil in the sight of the LORD, to provoke him to anger through the work of your hands."

Joshua 1:8: "This book of the law shall not depart out of thy mouth; but thou shalt meditate therein day and night, that thou mayest observe to do according to all that is written therein: for then thou shalt make thy way prosperous, and then thou shalt have good success."

Joshua 2:7: "And the men pursued after them the way to Jordan unto the fords: and as soon as they which pursued after them were gone out, they shut the gate."

Joshua 2:16: "And she said unto them, Get you to the mountain, lest the pursuers meet you; and hide yourselves there three days, until the pursuers be returned: and afterward may ye go your way."

Joshua 2:22: "And they went, and came unto the mountain, and abode there three days, until the pursuers were returned: and the pursuers sought them throughout all the way, but found them not."

Joshua 3:4: "Yet there shall be a space between you and it, about two thousand cubits by measure: come not near unto it, that ye may know the way by which ye must go: for ye have not passed this way heretofore."

Joshua 5:4: "And this is the cause why Joshua did circumcise: All the people that came out of Egypt, that were males, even all the men of war, died in the wilderness by the way, after they came out of Egypt."

Joshua 5:5: "Now all the people that came out were circumcised: but all the people that were born in the wilderness by the way as they came forth out of Egypt, them they had not circumcised."

Joshua 5:7: "And their children, whom he raised up in their stead, them Joshua circumcised: for they were uncircumcised, because they had not circumcised them by the way."

Joshua 8:15: "And Joshua and all Israel made as if they were beaten before them, and fled by the way of the wilderness."

Joshua 8:20: "And when the men of Ai looked behind them, they saw, and, behold, the smoke of the city ascended up to heaven, and they had no power to flee this way or that way: and the people that fled to the wilderness turned back upon the pursuers."

Joshua 10:10: "And the LORD discomfited them before Israel, and slew them with a great slaughter at Gibeon, and chased them along the way that goeth up to Bethhoron, and smote them to Azekah, and unto Makkedah."

Joshua 12:3: "And from the plain to the sea of Chinneroth on the east, and unto the sea of the plain, even the salt sea on the east, the way to Bethjeshimoth; and from the south, under Ashdothpisgah:"

Joshua 23:14: "And, behold, this day I am going the way of all the earth: and ye know in all your hearts and in all your souls, that not one thing hath failed of all the good things which the LORD your God spake concerning you; all are come to pass unto you, and not one thing hath failed thereof."

Joshua 24:17: "For the LORD our God, he it is that brought us up and our fathers out of the land of Egypt, from the house of bondage, and which did those great signs in our sight, and preserved us in all the way wherein we went, and among all the people through whom we passed:"

Judges 2:17: "And yet they would not hearken unto their judges, but they went a whoring after other gods, and bowed themselves unto them: they turned quickly out of the way which their fathers walked in, obeying the commandments of the LORD; but they did not so."

Judges 2:19: "And it came to pass, when the judge was dead, that they returned, and corrupted themselves more than their fathers, in following other gods to serve them, and to bow down unto them; they ceased not from their own doings, nor from their stubborn way."

Judges 2:22: "That through them I may prove Israel, whether they will keep the way of the LORD to walk therein, as their fathers did keep it, or not."

Judges 5:10: "Speak, ye that ride on white asses, ye that sit in judgment, and walk by the way."

Judges 8:11: "And Gideon went up by the way of them that dwelt in tents on the east of Nobah and

Jogbehah, and smote the host; for the host was secure."

Judges 9:25: "And the men of Shechem set liers in wait for him in the top of the mountains, and they robbed all that came along that way by them: and it was told Abimelech."

Judges 18:5: "And they said unto him, Ask counsel, we pray thee, of God, that we may know whether our way which we go shall be prosperous."

Judges 18:6: "And the priest said unto them, Go in peace: before the LORD is your way wherein ye go."

Judges 18:22: "And when they were a good way from the house of Micah, the men that were in the houses near to Micah's house were gathered together, and overtook the children of Dan."

Judges 18:26: "And the children of Dan went their way: and when Micah saw that they were too strong for him, he turned and went back unto his house."

Judges 19:5: "And it came to pass on the fourth day, when they arose early in the morning, that he rose up to depart: and the damsel's father said unto his son in law, Comfort thine heart with a morsel of bread, and afterward go your way."

Judges 19:9: "And when the man rose up to depart, he, and his concubine, and his servant, his father in law, the damsel's father, said unto him, Behold, now the day draweth toward evening, I pray you tarry all night: behold, the day groweth to an end, lodge here, that thine heart may be merry; and to morrow get you early on your way, that thou mayest go home."

Judges 19:14: "And they passed on and went their way; and the sun went down upon them when they were by Gibeah, which belongeth to Benjamin."

Judges 19:27: "And her lord rose up in the morning, and opened the doors of the house, and went out to go his way: and, behold, the woman his concubine was fallen down at the door of the house, and her hands were upon the threshold."

Judges 20:42: "Therefore they turned their backs before the men of Israel unto the way of the wilderness; but the battle overtook them; and them which came out of the cities they destroyed in the midst of them."

Ruth 1:7: "Wherefore she went forth out of the place where she was, and her two daughters in law with her; and they went on the way to return unto the land of Judah."

Ruth 1:12: "Turn again, my daughters, go your way; for I am too old to have an husband. If I should say, I have hope, if I should have an husband also to night, and should also bear sons;"

1 Samuel 1:18: "And she said, Let thine handmaid find grace in thy sight. So the woman went her way, and did eat, and her countenance was no more sad."

1 Samuel 6:9: "And see, if it goeth up by the way of his own coast to Bethshemesh, then he hath done us this great evil: but if not, then we shall know that it is not his hand that smote us: it was a chance that happened to us."

1 Samuel 6:12: "And the kine took the straight way to the way of Bethshemesh, and went along the highway, lowing as they went, and turned not aside to the right hand or to the left; and the lords of the Philistines went after them unto the border of Bethshemesh."

1 Samuel 9:6: "And he said unto him, Behold now, there is in this city a man of God, and he is an honourable man; all that he saith cometh surely to pass: now let us go thither; peradventure he can shew us our way that we should go."

1 Samuel 9:8: "And the servant answered Saul again, and said, Behold, I have here at hand the fourth part of a shekel of silver: that will I give to the man of God, to tell us our way."

1 Samuel 12:23: "Moreover as for me, God forbid that I should sin against the LORD in ceasing to pray for you: but I will teach you the good and the right way:"

1 Samuel 13:17: "And the spoilers came out of the camp of the Philistines in three companies: one company turned unto the way that leadeth to Ophrah, unto the land of Shual:"

1 Samuel 13:18: "And another company turned the way to Bethoron: and another company turned to the way of the border that looketh to the valley of Zeboim toward the wilderness."

1 Samuel 15:2: "Thus saith the LORD of hosts, I remember that which Amalek did to Israel, how he

laid wait for him in the way, when he came up from Egypt."

1 Samuel 15:20: "And Saul said unto Samuel, Yea, I have obeyed the voice of the LORD, and have gone the way which the LORD sent me, and have brought Agag the king of Amalek, and have utterly destroyed the Amalekites."

1 Samuel 17:52: "And the men of Israel and of Judah arose, and shouted, and pursued the Philistines, until thou come to the valley, and to the gates of Ekron. And the wounded of the Philistines fell down by the way to Shaaraim, even unto Gath, and unto Ekron."

1 Samuel 20:22: "But if I say thus unto the young man, Behold, the arrows are beyond thee; go thy way: for the LORD hath sent thee away."

1 Samuel 24:3: "And he came to the sheepecotes by the way, where was a cave; and Saul went in to cover his feet: and David and his men remained in the sides of the cave."

1 Samuel 24:7: "So David stayed his servants with these words, and suffered them not to rise against Saul. But Saul rose up out of the cave, and went on his way."

1 Samuel 25:12: "So David's young men turned their way, and went again, and came and told him all those sayings."

1 Samuel 26:3: "And Saul pitched in the hill of Hachilah, which is before Jeshimon, by the way. But David abode in the wilderness, and he saw that Saul came after him into the wilderness."

1 Samuel 26:25: "Then Saul said to David, Blessed be thou, my son David: thou shalt both do great things, and also shalt still prevail. So David went on his way, and Saul returned to his place."

1 Samuel 28:22: "Now therefore, I pray thee, hearken thou also unto the voice of thine handmaid, and let me set a morsel of bread before thee; and eat, that thou mayest have strength, when thou goest on thy way."

1 Samuel 30:2: "And had taken the women captives, that were therein: they slew not any, either great or small, but carried them away, and went on their way."

2 Samuel 2:24: "Joab also and Abishai pursued after Abner: and the sun went down when they were come to the hill of Ammah, that lieth before Giah by the way of the wilderness of Gibeon."

2 Samuel 13:30: "And it came to pass, while they were in the way, that tidings came to David, saying, Absalom hath slain all the king's sons, and there is not one of them left."

2 Samuel 13:34: "But Absalom fled. And the young man that kept the watch lifted up his eyes, and looked, and, behold, there came much people by the way of the hill side behind him."

2 Samuel 15:2: "And Absalom rose up early, and stood beside the way of the gate: and it was so, that when any man that had a controversy came to the king for judgment, then Absalom called unto him, and said, Of what city art thou? And he said, Thy servant is of one of the tribes of Israel."

2 Samuel 15:23: "And all the country wept with a loud voice, and all the people passed over: the king also himself passed over the brook Kidron, and all the people passed over, toward the way of the wilderness."

2 Samuel 16:13: "And as David and his men went by the way, Shimei went along on the hill's side over against him, and cursed as he went, and threw stones at him, and cast dust."

2 Samuel 18:23: "But howsoever, said he, let me run. And he said unto him, Run. Then Ahimaaz ran by the way of the plain, and overran Cushi."

2 Samuel 19:36: "Thy servant will go a little way over Jordan with the king: and why should the king recompense it me with such a reward?"

2 Samuel 22:31: "As for God, his way is perfect; the word of the LORD is tried: he is a buckler to all them that trust in him."

2 Samuel 22:33: "God is my strength and power: and he maketh my way perfect."

1 Kings 1:49: "And all the guests that were with Adonijah were afraid, and rose up, and went every man his way."

1 Kings 2:2: "I go the way of all the earth: be thou strong therefore, and shew thyself a man;"

1 Kings 2:4: "That the LORD may continue his word which he spake concerning me, saying, If thy children take heed to their way, to walk before me in truth with all their heart and with all their soul,

there shall not fail thee (said he) a man on the throne of Israel."

1 Kings 8:25: "Therefore now, LORD God of Israel, keep with thy servant David my father that thou promisedst him, saying, There shall not fail thee a man in my sight to sit on the throne of Israel; so that thy children take heed to their way, that they walk before me as thou hast walked before me."

1 Kings 8:32: "Then hear thou in heaven, and do, and judge thy servants, condemning the wicked, to bring his way upon his head; and justifying the righteous, to give him according to his righteousness."

1 Kings 8:36: "Then hear thou in heaven, and forgive the sin of thy servants, and of thy people Israel, that thou teach them the good way wherein they should walk, and give rain upon thy land, which thou hast given to thy people for an inheritance."

1 Kings 11:29: "And it came to pass at that time when Jeroboam went out of Jerusalem, that the prophet Ahijah the Shilonite found him in the way; and he had clad himself with a new garment; and they two were alone in the field:"

1 Kings 13:9: "For so was it charged me by the word of the LORD, saying, Eat no bread, nor drink water, nor turn again by the same way that thou camest."

1 Kings 13:10: "So he went another way, and returned not by the way that he came to Bethel."

1 Kings 13:12: "And their father said unto them, What way went he? For his sons had seen what way the man of God went, which came from Judah."

1 Kings 13:17: "For it was said to me by the word of the LORD, Thou shalt eat no bread nor drink water there, nor turn again to go by the way that thou camest."

1 Kings 13:24: "And when he was gone, a lion met him by the way, and slew him: and his carcase was cast in the way, and the ass stood by it, the lion also stood by the carcase."

1 Kings 13:25: "And, behold, men passed by, and saw the carcase cast in the way, and the lion standing by the carcase: and they came and told it in the city where the old prophet dwelt."

1 Kings 13:26: "And when the prophet that brought him back from the way heard thereof, he said, It is the man of God, who was disobedient unto the word of the LORD: therefore the LORD hath delivered him unto the lion, which hath torn him, and slain him, according to the word of the LORD, which he spake unto him."

1 Kings 13:28: "And he went and found his carcase cast in the way, and the ass and the lion standing by the carcase: the lion had not eaten the carcase, nor torn the ass."

1 Kings 13:33: "After this thing Jeroboam returned not from his evil way, but made again of the lowest of the people priests of the high places: whosoever would, he consecrated him, and he became one of the priests of the high places."

1 Kings 15:26: "And he did evil in the sight of the LORD, and walked in the way of his father, and in his sin wherewith he made Israel to sin."

1 Kings 15:34: "And he did evil in the sight of the LORD, and walked in the way of Jeroboam, and in his sin wherewith he made Israel to sin."

1 Kings 16:2: "Forasmuch as I exalted thee out of the dust, and made thee prince over my people Israel; and thou hast walked in the way of Jeroboam, and hast made my people Israel to sin, to provoke me to anger with their sins;"

1 Kings 16:19: "For his sins which he sinned in doing evil in the sight of the LORD, in walking in the way of Jeroboam, and in his sin which he did, to make Israel to sin."

1 Kings 16:26: "For he walked in all the way of Jeroboam the son of Nebat, and in his sin wherewith he made Israel to sin, to provoke the LORD God of Israel to anger with their vanities."

1 Kings 18:6: "So they divided the land between them to pass throughout it: Ahab went one way by himself, and Obadiah went another way by himself."

1 Kings 18:7: "And as Obadiah was in the way, behold, Elijah met him: and he knew him, and fell on his face, and said, Art thou that my lord Elijah?"

1 Kings 19:15: "And the LORD said unto him, Go, return on thy way to the wilderness of



Damascus: and when thou comest, anoint Hazael to be king over Syria:"

1 Kings 20:38: "So the prophet departed, and waited for the king by the way, and disguised himself with ashes upon his face."

1 Kings 22:24: "But Zedekiah the son of Chenaanah went near, and smote Micaiah on the cheek, and said, Which way went the Spirit of the LORD from me to speak unto thee?"

1 Kings 22:52: "And he did evil in the sight of the LORD, and walked in the way of his father, and in the way of his mother, and in the way of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin:"

2 Kings 2:23: "And he went up from thence unto Bethel: and as he was going up by the way, there came forth little children out of the city, and mocked him, and said unto him, Go up, thou bald head; go up, thou bald head."

2 Kings 3:8: "And he said, Which way shall we go up? And he answered, The way through the wilderness of Edom."

2 Kings 3:20: "And it came to pass in the morning, when the meat offering was offered, that, behold, there came water by the way of Edom, and the country was filled with water."

2 Kings 4:29: "Then he said to Gehazi, Gird up thy loins, and take my staff in thine hand, and go thy way: if thou meet any man, salute him not; and if any salute thee, answer him not again: and lay my staff upon the face of the child."

2 Kings 5:19: "And he said unto him, Go in peace. So he departed from him a little way."

2 Kings 6:19: "And Elisha said unto them, This is not the way, neither is this the city: follow me, and I will bring you to the man whom ye seek. But he led them to Samaria."

2 Kings 7:15: "And they went after them unto Jordan: and, lo, all the way was full of garments and vessels, which the Syrians had cast away in their haste. And the messengers returned, and told the king."

2 Kings 8:18: "And he walked in the way of the kings of Israel, as did the house of Ahab: for the daughter of Ahab was his wife: and he did evil in the sight of the LORD."

2 Kings 8:27: "And he walked in the way of the house of Ahab, and did evil in the sight of the LORD, as did the house of Ahab: for he was the son in law of the house of Ahab."

2 Kings 9:27: "But when Ahaziah the king of Judah saw this, he fled by the way of the garden house. And Jehu followed after him, and said, Smite him also in the chariot. And they did so at the going up to Gur, which is by Ibleam. And he fled to Megiddo, and died there."

2 Kings 10:12: "And he arose and departed, and came to Samaria. And as he was at the shearing house in the way,"

2 Kings 11:16: "And they laid hands on her; and she went by the way by the which the horses came into the king's house: and there was she slain."

2 Kings 11:19: "And he took the rulers over hundreds, and the captains, and the guard, and all the people of the land; and they brought down the king from the house of the LORD, and came by the way of the gate of the guard to the king's house. And he sat on the throne of the kings."

2 Kings 16:3: "But he walked in the way of the kings of Israel, yea, and made his son to pass through the fire, according to the abominations of the heathen, whom the LORD cast out from before the children of Israel."

2 Kings 19:28: "Because thy rage against me and thy tumult is come up into mine ears, therefore I will put my hook in thy nose, and my bridle in thy lips, and I will turn thee back by the way by which thou camest."

2 Kings 19:33: "By the way that he came, by the same shall he return, and shall not come into this city, saith the LORD."

2 Kings 21:21: "And he walked in all the way that his father walked in, and served the idols that his father served, and worshipped them:"

2 Kings 21:22: "And he forsook the LORD God of his fathers, and walked not in the way of the LORD."

2 Kings 22:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, and walked in all the way

of David his father, and turned not aside to the right hand or to the left."

2 Kings 25:4: "And the city was broken up, and all the men of war fled by night by the way of the gate between two walls, which is by the king's garden: (now the Chaldees were against the city round about:) and the king went the way toward the plain."

2 Chronicles 6:16: "Now therefore, O LORD God of Israel, keep with thy servant David my father that which thou hast promised him, saying, There shall not fail thee a man in my sight to sit upon the throne of Israel; yet so that thy children take heed to their way to walk in my law, as thou hast walked before me."

2 Chronicles 6:23: "Then hear thou from heaven, and do, and judge thy servants, by requiting the wicked, by recompensing his way upon his own head; and by justifying the righteous, by giving him according to his righteousness."

2 Chronicles 6:27: "Then hear thou from heaven, and forgive the sin of thy servants, and of thy people Israel, when thou hast taught them the good way, wherein they should walk; and send rain upon thy land, which thou hast given unto thy people for an inheritance."

2 Chronicles 6:34: "If thy people go out to war against their enemies by the way that thou shalt send them, and they pray unto thee toward this city which thou hast chosen, and the house which I have built for thy name;"

2 Chronicles 11:17: "So they strengthened the kingdom of Judah, and made Rehoboam the son of Solomon strong, three years: for three years they walked in the way of David and Solomon."

2 Chronicles 18:23: "Then Zedekiah the son of Chenaanah came near, and smote Micaiah upon the cheek, and said, Which way went the Spirit of the LORD from me to speak unto thee?"

2 Chronicles 20:32: "And he walked in the way of Asa his father, and departed not from it, doing that which was right in the sight of the LORD."

2 Chronicles 21:6: "And he walked in the way of the kings of Israel, like as did the house of Ahab: for he had the daughter of Ahab to wife: and he wrought that which was evil in the eyes of the LORD."

2 Chronicles 21:13: "But hast walked in the way of the kings of Israel, and hast made Judah and the inhabitants of Jerusalem to go a whoring, like to the whoredoms of the house of Ahab, and also hast slain thy brethren of thy father's house, which were better than thyself:"

Ezra 8:21: "Then I proclaimed a fast there, at the river of Ahava, that we might afflict ourselves before our God, to seek of him a right way for us, and for our little ones, and for all our substance."

Ezra 8:22: "For I was ashamed to require of the king a band of soldiers and horsemen to help us against the enemy in the way: because we had spoken unto the king, saying, The hand of our God is upon all them for good that seek him; but his power and his wrath is against all them that forsake him."

Ezra 8:31: "Then we departed from the river of Ahava on the twelfth day of the first month, to go unto Jerusalem: and the hand of our God was upon us, and he delivered us from the hand of the enemy, and of such as lay in wait by the way."

Nehemiah 8:10: "Then he said unto them, Go your way, eat the fat, and drink the sweet, and send portions unto them for whom nothing is prepared: for this day is holy unto our LORD: neither be ye sorry; for the joy of the LORD is your strength."

Nehemiah 8:12: "And all the people went their way to eat, and to drink, and to send portions, and to make great mirth, because they had understood the words that were declared unto them."

Nehemiah 9:12: "Moreover thou leddest them in the day by a cloudy pillar; and in the night by a pillar of fire, to give them light in the way wherein they should go."

Nehemiah 9:19: "Yet thou in thy manifold mercies forsookest them not in the wilderness: the pillar of the cloud departed not from them by day, to lead them in the way; neither the pillar of fire by night, to shew them light, and the way wherein they should go."

Esther 4:17: "So Mordecai went his way, and did according to all that Esther had commanded him."

Job 3:23: "Why is light given to a man whose way is hid, and whom God hath hedged in?"

Job 6:18: "The paths of their way are turned aside; they go to nothing, and perish."

Job 8:19: "Behold, this is the joy of his way, and out of the earth shall others grow."

Job 12:24: "He taketh away the heart of the chief of the people of the earth, and causeth them to wander in a wilderness where there is no way."

Job 16:22: "When a few years are come, then I shall go the way whence I shall not return."

Job 17:9: "The righteous also shall hold on his way, and he that hath clean hands shall be stronger and stronger."

Job 18:10: "The snare is laid for him in the ground, and a trap for him in the way."

Job 19:8: "He hath fenced up my way that I cannot pass, and he hath set darkness in my paths."

Job 19:12: "His troops come together, and raise up their way against me, and encamp round about my tabernacle."

Job 21:29: "Have ye not asked them that go by the way? and do ye not know their tokens,"

Job 21:31: "Who shall declare his way to his face? and who shall repay him what he hath done?"

Job 22:15: "Hast thou marked the old way which wicked men have trodden?"

Job 23:10: "But he knoweth the way that I take: when he hath tried me, I shall come forth as gold."

Job 23:11: "My foot hath held his steps, his way have I kept, and not declined."

Job 24:4: "They turn the needy out of the way: the poor of the earth hide themselves together."

Job 24:18: "He is swift as the waters; their portion is cursed in the earth: he beholdeth not the way of the vineyards."

Job 24:24: "They are exalted for a little while, but are gone and brought low; they are taken out of the way as all other, and cut off as the tops of the ears of corn."

Job 28:23: "God understandeth the way thereof, and he knoweth the place thereof."

Job 28:26: "When he made a decree for the rain, and a way for the lightning of the thunder:"

Job 29:25: "I chose out their way, and sat chief, and dwelt as a king in the army, as one that comforteth the mourners."

Job 31:7: "If my step hath turned out of the way, and mine heart walked after mine eyes, and if any blot hath cleaved to mine hands;"

Job 36:23: "Who hath enjoined him his way? or who can say, Thou hast wrought iniquity?"

Job 38:19: "Where is the way where light dwelleth? and as for darkness, where is the place thereof,"

Job 38:24: "By what way is the light parted, which scattereth the east wind upon the earth?"

Job 38:25: "Who hath divided a watercourse for the overflowing of waters, or a way for the lightning of thunder;"

Psalms 1:1: "Blessed is the man that walketh not in the counsel of the ungodly, nor standeth in the way of sinners, nor sitteth in the seat of the scornful."

Psalms 1:6: "For the LORD knoweth the way of the righteous: but the way of the ungodly shall perish."

Psalms 2:12: "Kiss the Son, lest he be angry, and ye perish from the way, when his wrath is kindled but a little. Blessed are all they that put their trust in him."

Psalms 5:8: "Lead me, O LORD, in thy righteousness because of mine enemies; make thy way straight before my face."

Psalms 18:30: "As for God, his way is perfect: the word of the LORD is tried: he is a buckler to all those that trust in him."

Psalms 18:32: "It is God that girdeth me with strength, and maketh my way perfect."

Psalms 25:8: "Good and upright is the LORD: therefore will he teach sinners in the way."

Psalms 25:9: "The meek will he guide in judgment: and the meek will he teach his way."

Psalms 25:12: "What man is he that feareth the LORD? him shall he teach in the way that he shall choose."

Psalms 27:11: "Teach me thy way, O LORD, and lead me in a plain path, because of mine enemies."

Psalms 32:8: "I will instruct thee and teach thee in the way which thou shalt go: I will guide thee

with mine eye."

Psalms 35:3: "Draw out also the spear, and stop the way against them that persecute me: say unto my soul, I am thy salvation."

Psalms 35:6: "Let their way be dark and slippery: and let the angel of the LORD persecute them."

Psalms 36:4: "He deviseth mischief upon his bed; he setteth himself in a way that is not good; he abhorreth not evil."

Psalms 37:5: "Commit thy way unto the LORD; trust also in him; and he shall bring it to pass."

Psalms 37:7: "Rest in the LORD, and wait patiently for him: fret not thyself because of him who prospereth in his way, because of the man who bringeth wicked devices to pass."

Psalms 37:23: "The steps of a good man are ordered by the LORD: and he delighteth in his way."

Psalms 37:34: "Wait on the LORD, and keep his way, and he shall exalt thee to inherit the land: when the wicked are cut off, thou shalt see it."

Psalms 44:18: "Our heart is not turned back, neither have our steps declined from thy way;"

Psalms 49:13: "This their way is their folly: yet their posterity approve their sayings. Selah."

Psalms 67:2: "That thy way may be known upon earth, thy saving health among all nations."

Psalms 77:13: "Thy way, O God, is in the sanctuary: who is so great a God as our God?"

Psalms 77:19: "Thy way is in the sea, and thy path in the great waters, and thy footsteps are not known."

Psalms 78:50: "He made a way to his anger; he spared not their soul from death, but gave their life over to the pestilence;"

Psalms 80:12: "Why hast thou then broken down her hedges, so that all they which pass by the way do pluck her?"

Psalms 85:13: "Righteousness shall go before him; and shall set us in the way of his steps."

Psalms 86:11: "Teach me thy way, O LORD; I will walk in thy truth: unite my heart to fear thy name."

Psalms 89:41: "All that pass by the way spoil him: he is a reproach to his neighbours."

Psalms 101:2: "I will behave myself wisely in a perfect way. O when wilt thou come unto me? I will walk within my house with a perfect heart."

Psalms 101:6: "Mine eyes shall be upon the faithful of the land, that they may dwell with me: he that walketh in a perfect way, he shall serve me."

Psalms 102:23: "He weakened my strength in the way; he shortened my days."

Psalms 107:4: "They wandered in the wilderness in a solitary way; they found no city to dwell in."

Psalms 107:7: "And he led them forth by the right way, that they might go to a city of habitation."

Psalms 107:40: "He poureth contempt upon princes, and causeth them to wander in the wilderness, where there is no way."

Psalms 110:7: "He shall drink of the brook in the way: therefore shall he lift up the head."

Psalms 119:1: "Blessed are the undefiled in the way, who walk in the law of the LORD."

Psalms 119:9: "Wherewithal shall a young man cleanse his way? by taking heed thereto according to thy word."

Psalms 119:14: "I have rejoiced in the way of thy testimonies, as much as in all riches."

Psalms 119:27: "Make me to understand the way of thy precepts: so shall I talk of thy wondrous works."

Psalms 119:29: "Remove from me the way of lying: and grant me thy law graciously."

Psalms 119:30: "I have chosen the way of truth: thy judgments have I laid before me."

Psalms 119:32: "I will run the way of thy commandments, when thou shalt enlarge my heart."

Psalms 119:33: "Teach me, O LORD, the way of thy statutes; and I shall keep it unto the end."

Psalms 119:37: "Turn away mine eyes from beholding vanity; and quicken thou me in thy way."

Psalms 119:101: "I have refrained my feet from every evil way, that I might keep thy word."

Psalms 119:104: "Through thy precepts I get understanding: therefore I hate every false way."

Psalms 119:128: "Therefore I esteem all thy precepts concerning all things to be right; and I hate

every false way."

Psalms 139:24: "And see if there be any wicked way in me, and lead me in the way everlasting."

Psalms 142:3: "When my spirit was overwhelmed within me, then thou knewest my path. In the way wherein I walked have they privily laid a snare for me."

Psalms 143:8: "Cause me to hear thy lovingkindness in the morning; for in thee do I trust: cause me to know the way wherein I should walk; for I lift up my soul unto thee."

Psalms 146:9: "The LORD preserveth the strangers; he relieveth the fatherless and widow: but the way of the wicked he turneth upside down."

Proverbs 1:15: "My son, walk not thou in the way with them; refrain thy foot from their path:"

Proverbs 1:31: "Therefore shall they eat of the fruit of their own way, and be filled with their own devices."

Proverbs 2:8: "He keepeth the paths of judgment, and preserveth the way of his saints."

Proverbs 2:12: "To deliver thee from the way of the evil man, from the man that speaketh froward things;"

Proverbs 2:20: "That thou mayest walk in the way of good men, and keep the paths of the righteous."

Proverbs 3:23: "Then shalt thou walk in thy way safely, and thy foot shall not stumble."

Proverbs 4:11: "I have taught thee in the way of wisdom; I have led thee in right paths."

Proverbs 4:14: "Enter not into the path of the wicked, and go not in the way of evil men."

Proverbs 4:19: "The way of the wicked is as darkness: they know not at what they stumble."

Proverbs 5:8: "Remove thy way far from her, and come not nigh the door of her house:"

Proverbs 6:23: "For the commandment is a lamp; and the law is light; and reproofs of instruction are the way of life:"

Proverbs 7:8: "Passing through the street near her corner; and he went the way to her house,"

Proverbs 7:27: "Her house is the way to hell, going down to the chambers of death."

Proverbs 8:2: "She standeth in the top of high places, by the way in the places of the paths."

Proverbs 8:13: "The fear of the LORD is to hate evil: pride, and arrogancy, and the evil way, and the froward mouth, do I hate."

Proverbs 8:20: "I lead in the way of righteousness, in the midst of the paths of judgment:"

Proverbs 8:22: "The LORD possessed me in the beginning of his way, before his works of old."

Proverbs 9:6: "Forsake the foolish, and live; and go in the way of understanding."

Proverbs 10:17: "He is in the way of life that keepeth instruction: but he that refuseth reproof erreth."

Proverbs 10:29: "The way of the LORD is strength to the upright: but destruction shall be to the workers of iniquity."

Proverbs 11:5: "The righteousness of the perfect shall direct his way: but the wicked shall fall by his own wickedness."

Proverbs 11:20: "They that are of a froward heart are abomination to the LORD: but such as are upright in their way are his delight."

Proverbs 12:15: "The way of a fool is right in his own eyes: but he that hearkeneth unto counsel is wise."

Proverbs 12:26: "The righteous is more excellent than his neighbour: but the way of the wicked seduceth them."

Proverbs 12:28: "In the way of righteousness is life: and in the pathway thereof there is no death."

Proverbs 13:6: "Righteousness keepeth him that is upright in the way: but wickedness overthroweth the sinner."

Proverbs 13:15: "Good understanding giveth favour: but the way of transgressors is hard."

Proverbs 14:8: "The wisdom of the prudent is to understand his way: but the folly of fools is deceit."

Proverbs 14:12: "There is a way which seemeth right unto a man, but the end thereof are the ways

of death."

Proverbs 15:9: "The way of the wicked is an abomination unto the LORD: but he loveth him that followeth after righteousness."

Proverbs 15:10: "Correction is grievous unto him that forsaketh the way: and he that hateth reproof shall die."

Proverbs 15:19: "The way of the slothful man is as an hedge of thorns: but the way of the righteous is made plain."

Proverbs 15:24: "The way of life is above to the wise, that he may depart from hell beneath."

Proverbs 16:9: "A man's heart deviseth his way: but the LORD directeth his steps."

Proverbs 16:17: "The highway of the upright is to depart from evil: he that keepeth his way preserveth his soul."

Proverbs 16:25: "There is a way that seemeth right unto a man, but the end thereof are the ways of death."

Proverbs 16:29: "A violent man enticeth his neighbour, and leadeth him into the way that is not good."

Proverbs 16:31: "The hoary head is a crown of glory, if it be found in the way of righteousness."

Proverbs 19:3: "The foolishness of man perverteth his way: and his heart fretteth against the LORD."

Proverbs 20:14: "It is naught, it is naught, saith the buyer: but when he is gone his way, then he boasteth."

Proverbs 20:24: "Man's goings are of the LORD; how can a man then understand his own way?"

Proverbs 21:2: "Every way of a man is right in his own eyes: but the LORD pondereth the hearts."

Proverbs 21:8: "The way of man is froward and strange: but as for the pure, his work is right."

Proverbs 21:16: "The man that wandereth out of the way of understanding shall remain in the congregation of the dead."

Proverbs 21:29: "A wicked man hardeneth his face: but as for the upright, he directeth his way."

Proverbs 22:5: "Thorns and snares are in the way of the froward: he that doth keep his soul shall be far from them."

Proverbs 22:6: "Train up a child in the way he should go: and when he is old, he will not depart from it."

Proverbs 23:19: "Hear thou, my son, and be wise, and guide thine heart in the way."

Proverbs 26:13: "The slothful man saith, There is a lion in the way; a lion is in the streets."

Proverbs 28:10: "Whoso causeth the righteous to go astray in an evil way, he shall fall himself into his own pit: but the upright shall have good things in possession."

Proverbs 29:27: "An unjust man is an abomination to the just: and he that is upright in the way is abomination to the wicked."

Proverbs 30:19: "The way of an eagle in the air; the way of a serpent upon a rock; the way of a ship in the midst of the sea; and the way of a man with a maid."

Proverbs 30:20: "Such is the way of an adulterous woman; she eateth, and wipeth her mouth, and saith, I have done no wickedness."

Ecclesiastes 9:7: "Go thy way, eat thy bread with joy, and drink thy wine with a merry heart; for God now accepteth thy works."

Ecclesiastes 10:3: "Yea also, when he that is a fool walketh by the way, his wisdom faileth him, and he saith to every one that he is a fool."

Ecclesiastes 11:5: "As thou knowest not what is the way of the spirit, nor how the bones do grow in the womb of her that is with child: even so thou knowest not the works of God who maketh all."

Ecclesiastes 12:5: "Also when they shall be afraid of that which is high, and fears shall be in the way, and the almond tree shall flourish, and the grasshopper shall be a burden, and desire shall fail: because man goeth to his long home, and the mourners go about the streets:"

Song of Solomon 1:8: "If thou know not, O thou fairest among women, go thy way forth by the

footsteps of the flock, and feed thy kids beside the shepherds' tents."

Isaiah 3:12: "As for my people, children are their oppressors, and women rule over them. O my people, they which lead thee cause thee to err, and destroy the way of thy paths."

Isaiah 8:11: "For the LORD spake thus to me with a strong hand, and instructed me that I should not walk in the way of this people, saying,"

Isaiah 9:1: "Nevertheless the dimness shall not be such as was in her vexation, when at the first he lightly afflicted the land of Zebulun and the land of Naphtali, and afterward did more grievously afflict her by the way of the sea, beyond Jordan, in Galilee of the nations."

Isaiah 15:5: "My heart shall cry out for Moab; his fugitives shall flee unto Zoar, an heifer of three years old: for by the mounting up of Luhith with weeping shall they go it up; for in the way of Horonaim they shall raise up a cry of destruction."

Isaiah 26:7: "The way of the just is uprightness: thou, most upright, dost weigh the path of the just."

Isaiah 26:8: "Yea, in the way of thy judgments, O LORD, have we waited for thee; the desire of our soul is to thy name, and to the remembrance of thee."

Isaiah 28:7: "But they also have erred through wine, and through strong drink are out of the way; the priest and the prophet have erred through strong drink, they are swallowed up of wine, they are out of the way through strong drink; they err in vision, they stumble in judgment."

Isaiah 30:11: "Get you out of the way, turn aside out of the path, cause the Holy One of Israel to cease from before us."

Isaiah 30:21: "And thine ears shall hear a word behind thee, saying, This is the way, walk ye in it, when ye turn to the right hand, and when ye turn to the left."

Isaiah 35:8: "And an highway shall be there, and a way, and it shall be called The way of holiness; the unclean shall not pass over it; but it shall be for those: the wayfaring men, though fools, shall not err therein."

Isaiah 37:29: "Because thy rage against me, and thy tumult, is come up into mine ears, therefore will I put my hook in thy nose, and my bridle in thy lips, and I will turn thee back by the way by which thou camest."

Isaiah 37:34: "By the way that he came, by the same shall he return, and shall not come into this city, saith the LORD."

Isaiah 40:3: "The voice of him that crieth in the wilderness, Prepare ye the way of the LORD, make straight in the desert a highway for our God."

Isaiah 40:14: "With whom took he counsel, and who instructed him, and taught him in the path of judgment, and taught him knowledge, and shewed to him the way of understanding?"

Isaiah 40:27: "Why sayest thou, O Jacob, and speakest, O Israel, My way is hid from the LORD, and my judgment is passed over from my God?"

Isaiah 41:3: "He pursued them, and passed safely; even by the way that he had not gone with his feet."

Isaiah 42:16: "And I will bring the blind by a way that they knew not; I will lead them in paths that they have not known: I will make darkness light before them, and crooked things straight. These things will I do unto them, and not forsake them."

Isaiah 43:16: "Thus saith the LORD, which maketh a way in the sea, and a path in the mighty waters;"

Isaiah 43:19: "Behold, I will do a new thing; now it shall spring forth; shall ye not know it? I will even make a way in the wilderness, and rivers in the desert."

Isaiah 48:15: "I, even I, have spoken; yea, I have called him: I have brought him, and he shall make his way prosperous."

Isaiah 48:17: "Thus saith the LORD, thy Redeemer, the Holy One of Israel; I am the LORD thy God which teacheth thee to profit, which leadeth thee by the way that thou shouldest go."

Isaiah 49:11: "And I will make all my mountains a way, and my highways shall be exalted."

Isaiah 51:10: "Art thou not it which hath dried the sea, the waters of the great deep; that hath made

the depths of the sea a way for the ransomed to pass over?"

Isaiah 53:6: "All we like sheep have gone astray; we have turned every one to his own way; and the LORD hath laid on him the iniquity of us all."

Isaiah 55:7: "Let the wicked forsake his way, and the unrighteous man his thoughts: and let him return unto the LORD, and he will have mercy upon him; and to our God, for he will abundantly pardon."

Isaiah 56:11: "Yea, they are greedy dogs which can never have enough, and they are shepherds that cannot understand: they all look to their own way, every one for his gain, from his quarter."

Isaiah 57:10: "Thou art wearied in the greatness of thy way; yet saidst thou not, There is no hope: thou hast found the life of thine hand; therefore thou wast not grieved."

Isaiah 57:14: "And shall say, Cast ye up, cast ye up, prepare the way, take up the stumblingblock out of the way of my people."

Isaiah 57:17: "For the iniquity of his covetousness was I wroth, and smote him: I hid me, and was wroth, and he went on frowardly in the way of his heart."

Isaiah 59:8: "The way of peace they know not; and there is no judgment in their goings: they have made them crooked paths: whosoever goeth therein shall not know peace."

Isaiah 62:10: "Go through, go through the gates; prepare ye the way of the people; cast up, cast up the highway; gather out the stones; lift up a standard for the people."

Isaiah 65:2: "I have spread out my hands all the day unto a rebellious people, which walketh in a way that was not good, after their own thoughts;"

Jeremiah 2:17: "Hast thou not procured this unto thyself, in that thou hast forsaken the LORD thy God, when he led thee by the way?"

Jeremiah 2:18: "And now what hast thou to do in the way of Egypt, to drink the waters of Sihor? or what hast thou to do in the way of Assyria, to drink the waters of the river?"

Jeremiah 2:23: "How canst thou say, I am not polluted, I have not gone after Baalim? see thy way in the valley, know what thou hast done: thou art a swift dromedary traversing her ways;"

Jeremiah 2:33: "Why trimmest thou thy way to seek love? therefore hast thou also taught the wicked ones thy ways."

Jeremiah 2:36: "Why gaddest thou about so much to change thy way? thou also shalt be ashamed of Egypt, as thou wast ashamed of Assyria."

Jeremiah 3:21: "A voice was heard upon the high places, weeping and supplications of the children of Israel: for they have perverted their way, and they have forgotten the LORD their God."

Jeremiah 4:7: "The lion is come up from his thicket, and the destroyer of the Gentiles is on his way; he is gone forth from his place to make thy land desolate; and thy cities shall be laid waste, without an inhabitant."

Jeremiah 4:18: "Thy way and thy doings have procured these things unto thee; this is thy wickedness, because it is bitter, because it reacheth unto thine heart."

Jeremiah 5:4: "Therefore I said, Surely these are poor; they are foolish: for they know not the way of the LORD, nor the judgment of their God."

Jeremiah 5:5: "I will get me unto the great men, and will speak unto them; for they have known the way of the LORD, and the judgment of their God: but these have altogether broken the yoke, and burst the bonds."

Jeremiah 6:16: "Thus saith the LORD, Stand ye in the ways, and see, and ask for the old paths, where is the good way, and walk therein, and ye shall find rest for your souls. But they said, We will not walk therein."

Jeremiah 6:25: "Go not forth into the field, nor walk by the way; for the sword of the enemy and fear is on every side."

Jeremiah 6:27: "I have set thee for a tower and a fortress among my people, that thou mayest know and try their way."

Jeremiah 10:2: "Thus saith the LORD, Learn not the way of the heathen, and be not dismayed at the



signs of heaven; for the heathen are dismayed at them."

Jeremiah 10:23: "O LORD, I know that the way of man is not in himself: it is not in man that walketh to direct his steps."

Jeremiah 12:1: "Righteous art thou, O LORD, when I plead with thee: yet let me talk with thee of thy judgments: Wherefore doth the way of the wicked prosper? wherefore are all they happy that deal very treacherously?"

Jeremiah 18:11: "Now therefore go to, speak to the men of Judah, and to the inhabitants of Jerusalem, saying, Thus saith the LORD; Behold, I frame evil against you, and devise a device against you: return ye now every one from his evil way, and make your ways and your doings good."

Jeremiah 18:15: "Because my people hath forgotten me, they have burned incense to vanity, and they have caused them to stumble in their ways from the ancient paths, to walk in paths, in a way not cast up;"

Jeremiah 21:8: "And unto this people thou shalt say, Thus saith the LORD; Behold, I set before you the way of life, and the way of death."

Jeremiah 23:12: "Wherefore their way shall be unto them as slippery ways in the darkness: they shall be driven on, and fall therein: for I will bring evil upon them, even the year of their visitation, saith the LORD."

Jeremiah 23:22: "But if they had stood in my counsel, and had caused my people to hear my words, then they should have turned them from their evil way, and from the evil of their doings."

Jeremiah 25:5: "They said, Turn ye again now every one from his evil way, and from the evil of your doings, and dwell in the land that the LORD hath given unto you and to your fathers for ever and ever:"

Jeremiah 25:35: "And the shepherds shall have no way to flee, nor the principal of the flock to escape."

Jeremiah 26:3: "If so be they will hearken, and turn every man from his evil way, that I may repent me of the evil, which I purpose to do unto them because of the evil of their doings."

Jeremiah 28:11: "And Hananiah spake in the presence of all the people, saying, Thus saith the LORD; Even so will I break the yoke of Nebuchadnezzar king of Babylon from the neck of all nations within the space of two full years. And the prophet Jeremiah went his way."

Jeremiah 31:9: "They shall come with weeping, and with supplications will I lead them: I will cause them to walk by the rivers of waters in a straight way, wherein they shall not stumble: for I am a father to Israel, and Ephraim is my firstborn."

Jeremiah 31:21: "Set thee up waymarks, make thee high heaps: set thine heart toward the highway, even the way which thou wentest: turn again, O virgin of Israel, turn again to these thy cities."

Jeremiah 32:39: "And I will give them one heart, and one way, that they may fear me for ever, for the good of them, and of their children after them:"

Jeremiah 35:15: "I have sent also unto you all my servants the prophets, rising up early and sending them, saying, Return ye now every man from his evil way, and amend your doings, and go not after other gods to serve them, and ye shall dwell in the land which I have given to you and to your fathers: but ye have not inclined your ear, nor hearkened unto me."

Jeremiah 36:3: "It may be that the house of Judah will hear all the evil which I purpose to do unto them; that they may return every man from his evil way; that I may forgive their iniquity and their sin."

Jeremiah 36:7: "It may be they will present their supplication before the LORD, and will return every one from his evil way: for great is the anger and the fury that the LORD hath pronounced against this people."

Jeremiah 39:4: "And it came to pass, that when Zedekiah the king of Judah saw them, and all the men of war, then they fled, and went forth out of the city by night, by the way of the king's garden, by the gate betwixt the two walls: and he went out the way of the plain."

Jeremiah 42:3: "That the LORD thy God may shew us the way wherein we may walk, and the thing that we may do."

Jeremiah 48:19: "O inhabitant of Aroer, stand by the way, and espy; ask him that fleeth, and her that escapeth, and say, What is done?"

Jeremiah 50:5: "They shall ask the way to Zion with their faces thitherward, saying, Come, and let us join ourselves to the LORD in a perpetual covenant that shall not be forgotten."

Jeremiah 52:7: "Then the city was broken up, and all the men of war fled, and went forth out of the city by night by the way of the gate between the two walls, which was by the king's garden; (now the Chaldeans were by the city round about:) and they went by the way of the plain."

Ezekiel 3:18: "When I say unto the wicked, Thou shalt surely die; and thou givest him not warning, nor speakest to warn the wicked from his wicked way, to save his life; the same wicked man shall die in his iniquity; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 3:19: "Yet if thou warn the wicked, and he turn not from his wickedness, nor from his wicked way, he shall die in his iniquity; but thou hast delivered thy soul."

Ezekiel 7:27: "The king shall mourn, and the prince shall be clothed with desolation, and the hands of the people of the land shall be troubled: I will do unto them after their way, and according to their deserts will I judge them; and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 8:5: "Then said he unto me, Son of man, lift up thine eyes now the way toward the north. So I lifted up mine eyes the way toward the north, and behold northward at the gate of the altar this image of jealousy in the entry."

Ezekiel 9:2: "And, behold, six men came from the way of the higher gate, which lieth toward the north, and every man a slaughter weapon in his hand; and one man among them was clothed with linen, with a writer's inkhorn by his side: and they went in, and stood beside the brasen altar."

Ezekiel 9:10: "And as for me also, mine eye shall not spare, neither will I have pity, but I will recompense their way upon their head."

Ezekiel 11:21: "But as for them whose heart walketh after the heart of their detestable things and their abominations, I will recompense their way upon their own heads, saith the Lord GOD."

Ezekiel 13:22: "Because with lies ye have made the heart of the righteous sad, whom I have not made sad; and strengthened the hands of the wicked, that he should not return from his wicked way, by promising him life:"

Ezekiel 14:22: "Yet, behold, therein shall be left a remnant that shall be brought forth, both sons and daughters: behold, they shall come forth unto you, and ye shall see their way and their doings: and ye shall be comforted concerning the evil that I have brought upon Jerusalem, even concerning all that I have brought upon it."

Ezekiel 16:25: "Thou hast built thy high place at every head of the way, and hast made thy beauty to be abhorred, and hast opened thy feet to every one that passed by, and multiplied thy whoredoms."

Ezekiel 16:27: "Behold, therefore I have stretched out my hand over thee, and have diminished thine ordinary food, and delivered thee unto the will of them that hate thee, the daughters of the Philistines, which are ashamed of thy lewd way."

Ezekiel 16:31: "In that thou buildest thine eminent place in the head of every way, and makest thine high place in every street; and hast not been as an harlot, in that thou scornest hire;"

Ezekiel 16:43: "Because thou hast not remembered the days of thy youth, but hast fretted me in all these things; behold, therefore I also will recompense thy way upon thine head, saith the Lord GOD: and thou shalt not commit this lewdness above all thine abominations."

Ezekiel 18:25: "Yet ye say, The way of the LORD is not equal. Hear now, O house of Israel; Is not my way equal? are not your ways unequal?"

Ezekiel 18:29: "Yet saith the house of Israel, The way of the LORD is not equal. O house of Israel, are not my ways equal? are not your ways unequal?"

Ezekiel 21:16: "Go thee one way or other, either on the right hand, or on the left, whithersoever thy

face is set."

Ezekiel 21:19: "Also, thou son of man, appoint thee two ways, that the sword of the king of Babylon may come: both twain shall come forth out of one land: and choose thou a place, choose it at the head of the way to the city."

Ezekiel 21:20: "Appoint a way, that the sword may come to Rabbath of the Ammonites, and to Judah in Jerusalem the defenced."

Ezekiel 21:21: "For the king of Babylon stood at the parting of the way, at the head of the two ways, to use divination: he made his arrows bright, he consulted with images, he looked in the liver."

Ezekiel 22:31: "Therefore have I poured out mine indignation upon them; I have consumed them with the fire of my wrath: their own way have I recompensed upon their heads, saith the Lord GOD."

Ezekiel 23:13: "Then I saw that she was defiled, that they took both one way,"

Ezekiel 23:31: "Thou hast walked in the way of thy sister; therefore will I give her cup into thine hand."

Ezekiel 33:8: "When I say unto the wicked, O wicked man, thou shalt surely die; if thou dost not speak to warn the wicked from his way, that wicked man shall die in his iniquity; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 33:9: "Nevertheless, if thou warn the wicked of his way to turn from it; if he do not turn from his way, he shall die in his iniquity; but thou hast delivered thy soul."

Ezekiel 33:11: "Say unto them, As I live, saith the Lord GOD, I have no pleasure in the death of the wicked; but that the wicked turn from his way and live: turn ye, turn ye from your evil ways; for why will ye die, O house of Israel?"

Ezekiel 33:17: "Yet the children of thy people say, The way of the Lord is not equal: but as for them, their way is not equal."

Ezekiel 33:20: "Yet ye say, The way of the Lord is not equal. O ye house of Israel, I will judge you every one after his ways."

Ezekiel 36:17: "Son of man, when the house of Israel dwelt in their own land, they defiled it by their own way and by their doings: their way was before me as the uncleanness of a removed woman."

Ezekiel 36:19: "And I scattered them among the heathen, and they were dispersed through the countries: according to their way and according to their doings I judged them."

Ezekiel 42:1: "Then he brought me forth into the utter court, the way toward the north: and he brought me into the chamber that was over against the separate place, and which was before the building toward the north."

Ezekiel 42:4: "And before the chambers was a walk to ten cubits breadth inward, a way of one cubit; and their doors toward the north."

Ezekiel 42:11: "And the way before them was like the appearance of the chambers which were toward the north, as long as they, and as broad as they: and all their goings out were both according to their fashions, and according to their doors."

Ezekiel 42:12: "And according to the doors of the chambers that were toward the south was a door in the head of the way, even the way directly before the wall toward the east, as one entereth into them."

Ezekiel 43:2: "And, behold, the glory of the God of Israel came from the way of the east: and his voice was like a noise of many waters: and the earth shined with his glory."

Ezekiel 43:4: "And the glory of the LORD came into the house by the way of the gate whose prospect is toward the east."

Ezekiel 44:1: "Then he brought me back the way of the gate of the outward sanctuary which looketh toward the east; and it was shut."

Ezekiel 44:3: "It is for the prince; the prince, he shall sit in it to eat bread before the LORD; he shall

enter by the way of the porch of that gate, and shall go out by the way of the same."

Ezekiel 44:4: "Then brought he me the way of the north gate before the house: and I looked, and, behold, the glory of the LORD filled the house of the LORD: and I fell upon my face."

Ezekiel 46:2: "And the prince shall enter by the way of the porch of that gate without, and shall stand by the post of the gate, and the priests shall prepare his burnt offering and his peace offerings, and he shall worship at the threshold of the gate: then he shall go forth; but the gate shall not be shut until the evening."

Ezekiel 46:8: "And when the prince shall enter, he shall go in by the way of the porch of that gate, and he shall go forth by the way thereof."

Ezekiel 46:9: "But when the people of the land shall come before the LORD in the solemn feasts, he that entereth in by the way of the north gate to worship shall go out by the way of the south gate; and he that entereth by the way of the south gate shall go forth by the way of the north gate: he shall not return by the way of the gate whereby he came in, but shall go forth over against it."

Ezekiel 47:2: "Then brought he me out of the way of the gate northward, and led me about the way without unto the utter gate by the way that looketh eastward; and, behold, there ran out waters on the right side."

Ezekiel 47:15: "And this shall be the border of the land toward the north side, from the great sea, the way of Hethlon, as men go to Zedad;"

Ezekiel 48:1: "Now these are the names of the tribes. From the north end to the coast of the way of Hethlon, as one goeth to Hamath, Hazarenan, the border of Damascus northward, to the coast of Hamath; for these are his sides east and west; a portion for Dan."

Daniel 12:9: "And he said, Go thy way, Daniel: for the words are closed up and sealed till the time of the end."

Daniel 12:13: "But go thou thy way till the end be: for thou shalt rest, and stand in thy lot at the end of the days."

Hosea 2:6: "Therefore, behold, I will hedge up thy way with thorns, and make a wall, that she shall not find her paths."

Hosea 6:9: "And as troops of robbers wait for a man, so the company of priests murder in the way by consent: for they commit lewdness."

Hosea 10:13: "Ye have plowed wickedness, ye have reaped iniquity; ye have eaten the fruit of lies: because thou didst trust in thy way, in the multitude of thy mighty men."

Hosea 13:7: "Therefore I will be unto them as a lion: as a leopard by the way will I observe them:"

Amos 2:7: "That pant after the dust of the earth on the head of the poor, and turn aside the way of the meek: and a man and his father will go in unto the same maid, to profane my holy name:"

Jonah 3:8: "But let man and beast be covered with sackcloth, and cry mightily unto God: yea, let them turn every one from his evil way, and from the violence that is in their hands."

Jonah 3:10: "And God saw their works, that they turned from their evil way; and God repented of the evil, that he had said that he would do unto them; and he did it not."

Nahum 1:3: "The LORD is slow to anger, and great in power, and will not at all acquit the wicked: the LORD hath his way in the whirlwind and in the storm, and the clouds are the dust of his feet."

Nahum 2:1: "He that dasheth in pieces is come up before thy face: keep the munition, watch the way, make thy loins strong, fortify thy power mightily."

Zechariah 10:2: "For the idols have spoken vanity, and the diviners have seen a lie, and have told false dreams; they comfort in vain: therefore they went their way as a flock, they were troubled, because there was no shepherd."

Malachi 2:8: "But ye are departed out of the way; ye have caused many to stumble at the law; ye have corrupted the covenant of Levi, saith the LORD of hosts."

Malachi 3:1: "Behold, I will send my messenger, and he shall prepare the way before me: and the LORD, whom ye seek, shall suddenly come to his temple, even the messenger of the covenant, whom ye delight in: behold, he shall come, saith the LORD of hosts."

Matthew 2:12: "And being warned of God in a dream that they should not return to Herod, they departed into their own country another way."

Matthew 3:3: "For this is he that was spoken of by the prophet Esaias, saying, The voice of one crying in the wilderness, Prepare ye the way of the Lord, make his paths straight."

Matthew 4:15: "The land of Zabulon, and the land of Nephthalim, by the way of the sea, beyond Jordan, Galilee of the Gentiles;"

Matthew 5:24: "Leave there thy gift before the altar, and go thy way; first be reconciled to thy brother, and then come and offer thy gift."

Matthew 5:25: "Agree with thine adversary quickly, whiles thou art in the way with him; lest at any time the adversary deliver thee to the judge, and the judge deliver thee to the officer, and thou be cast into prison."

Matthew 7:13: "Enter ye in at the strait gate: for wide is the gate, and broad is the way, that leadeth to destruction, and many there be which go in thereat:"

Matthew 7:14: "Because strait is the gate, and narrow is the way, which leadeth unto life, and few there be that find it."

Matthew 8:4: "And Jesus saith unto him, See thou tell no man; but go thy way, shew thyself to the priest, and offer the gift that Moses commanded, for a testimony unto them."

Matthew 8:13: "And Jesus said unto the centurion, Go thy way; and as thou hast believed, so be it done unto thee. And his servant was healed in the selfsame hour."

Matthew 8:28: "And when he was come to the other side into the country of the Gergesenes, there met him two possessed with devils, coming out of the tombs, exceeding fierce, so that no man might pass by that way."

Matthew 8:30: "And there was a good way off from them an herd of many swine feeding."

Matthew 10:5: "These twelve Jesus sent forth, and commanded them, saying, Go not into the way of the Gentiles, and into any city of the Samaritans enter ye not:"

Matthew 11:10: "For this is he, of whom it is written, Behold, I send my messenger before thy face, which shall prepare thy way before thee."

Matthew 13:4: "And when he sowed, some seeds fell by the way side, and the fowls came and devoured them up:"

Matthew 13:19: "When any one heareth the word of the kingdom, and understandeth it not, then cometh the wicked one, and catcheth away that which was sown in his heart. This is he which received seed by the way side."

Matthew 13:25: "But while men slept, his enemy came and sowed tares among the wheat, and went his way."

Matthew 15:32: "Then Jesus called his disciples unto him, and said, I have compassion on the multitude, because they continue with me now three days, and have nothing to eat: and I will not send them away fasting, lest they faint in the way."

Matthew 20:4: "And said unto them; Go ye also into the vineyard, and whatsoever is right I will give you. And they went their way."

Matthew 20:14: "Take that thine is, and go thy way: I will give unto this last, even as unto thee."

Matthew 20:17: "And Jesus going up to Jerusalem took the twelve disciples apart in the way, and said unto them,"

Matthew 20:30: "And, behold, two blind men sitting by the way side, when they heard that Jesus passed by, cried out, saying, Have mercy on us, O Lord, thou son of David."

Matthew 21:8: "And a very great multitude spread their garments in the way; others cut down branches from the trees, and strawed them in the way."

Matthew 21:19: "And when he saw a fig tree in the way, he came to it, and found nothing thereon, but leaves only, and said unto it, Let no fruit grow on thee henceforward for ever. And presently the fig tree withered away."

Matthew 21:32: "For John came unto you in the way of righteousness, and ye believed him not: but

the publicans and the harlots believed him: and ye, when ye had seen it, repented not afterward, that ye might believe him."

Matthew 22:16: "And they sent out unto him their disciples with the Herodians, saying, Master, we know that thou art true, and teachest the way of God in truth, neither carest thou for any man: for thou regardest not the person of men."

Matthew 22:22: "When they had heard these words, they marvelled, and left him, and went their way."

Matthew 27:65: "Pilate said unto them, Ye have a watch: go your way, make it as sure as ye can."

Mark 1:2: "As it is written in the prophets, Behold, I send my messenger before thy face, which shall prepare thy way before thee."

Mark 1:3: "The voice of one crying in the wilderness, Prepare ye the way of the Lord, make his paths straight."

Mark 1:44: "And saith unto him, See thou say nothing to any man: but go thy way, shew thyself to the priest, and offer for thy cleansing those things which Moses commanded, for a testimony unto them."

Mark 2:11: "I say unto thee, Arise, and take up thy bed, and go thy way into thine house."

Mark 4:4: "And it came to pass, as he sowed, some fell by the way side, and the fowls of the air came and devoured it up."

Mark 4:15: "And these are they by the way side, where the word is sown; but when they have heard, Satan cometh immediately, and taketh away the word that was sown in their hearts."

Mark 7:29: "And he said unto her, For this saying go thy way; the devil is gone out of thy daughter."

Mark 8:3: "And if I send them away fasting to their own houses, they will faint by the way: for divers of them came from far."

Mark 8:27: "And Jesus went out, and his disciples, into the towns of Caesarea Philippi: and by the way he asked his disciples, saying unto them, Whom do men say that I am?"

Mark 9:33: "And he came to Capernaum: and being in the house he asked them, What was it that ye disputed among yourselves by the way?"

Mark 9:34: "But they held their peace: for by the way they had disputed among themselves, who should be the greatest."

Mark 10:17: "And when he was gone forth into the way, there came one running, and kneeled to him, and asked him, Good Master, what shall I do that I may inherit eternal life?"

Mark 10:21: "Then Jesus beholding him loved him, and said unto him, One thing thou lackest: go thy way, sell whatsoever thou hast, and give to the poor, and thou shalt have treasure in heaven: and come, take up the cross, and follow me."

Mark 10:32: "And they were in the way going up to Jerusalem; and Jesus went before them: and they were amazed; and as they followed, they were afraid. And he took again the twelve, and began to tell them what things should happen unto him,"

Mark 10:52: "And Jesus said unto him, Go thy way; thy faith hath made thee whole. And immediately he received his sight, and followed Jesus in the way."

Mark 11:2: "And saith unto them, Go your way into the village over against you: and as soon as ye be entered into it, ye shall find a colt tied, whereon never man sat; loose him, and bring him."

Mark 11:4: "And they went their way, and found the colt tied by the door without in a place where two ways met; and they loose him."

Mark 11:8: "And many spread their garments in the way: and others cut down branches off the trees, and strawed them in the way."

Mark 12:12: "And they sought to lay hold on him, but feared the people: for they knew that he had spoken the parable against them: and they left him, and went their way."

Mark 12:14: "And when they were come, they say unto him, Master, we know that thou art true, and carest for no man: for thou regardest not the person of men, but teachest the way of God in

truth: Is it lawful to give tribute to Caesar, or not?"

Mark 16:7: "But go your way, tell his disciples and Peter that he goeth before you into Galilee: there shall ye see him, as he said unto you."

Luke 1:79: "To give light to them that sit in darkness and in the shadow of death, to guide our feet into the way of peace."

Luke 3:4: "As it is written in the book of the words of Esaias the prophet, saying, The voice of one crying in the wilderness, Prepare ye the way of the Lord, make his paths straight."

Luke 4:30: "But he passing through the midst of them went his way,"

Luke 5:19: "And when they could not find by what way they might bring him in because of the multitude, they went upon the housetop, and let him down through the tiling with his couch into the midst before Jesus."

Luke 7:22: "Then Jesus answering said unto them, Go your way, and tell John what things ye have seen and heard; how that the blind see, the lame walk, the lepers are cleansed, the deaf hear, the dead are raised, to the poor the gospel is preached."

Luke 7:27: "This is he, of whom it is written, Behold, I send my messenger before thy face, which shall prepare thy way before thee."

Luke 8:5: "A sower went out to sow his seed: and as he sowed, some fell by the way side; and it was trodden down, and the fowls of the air devoured it."

Luke 8:12: "Those by the way side are they that hear; then cometh the devil, and taketh away the word out of their hearts, lest they should believe and be saved."

Luke 8:39: "Return to thine own house, and shew how great things God hath done unto thee. And he went his way, and published throughout the whole city how great things Jesus had done unto him."

Luke 9:57: "And it came to pass, that, as they went in the way, a certain man said unto him, Lord, I will follow thee whithersoever thou goest."

Luke 10:4: "Carry neither purse, nor scrip, nor shoes: and salute no man by the way."

Luke 10:31: "And by chance there came down a certain priest that way: and when he saw him, he passed by on the other side."

Luke 12:58: "When thou goest with thine adversary to the magistrate, as thou art in the way, give diligence that thou mayest be delivered from him; lest he hale thee to the judge, and the judge deliver thee to the officer, and the officer cast thee into prison."

Luke 14:32: "Or else, while the other is yet a great way off, he sendeth an ambassage, and desireth conditions of peace."

Luke 15:20: "And he arose, and came to his father. But when he was yet a great way off, his father saw him, and had compassion, and ran, and fell on his neck, and kissed him."

Luke 17:19: "And he said unto him, Arise, go thy way: thy faith hath made thee whole."

Luke 18:35: "And it came to pass, that as he was come nigh unto Jericho, a certain blind man sat by the way side begging:"

Luke 19:4: "And he ran before, and climbed up into a sycomore tree to see him: for he was to pass that way."

Luke 19:32: "And they that were sent went their way, and found even as he had said unto them."

Luke 19:36: "And as he went, they spread their clothes in the way."

Luke 20:21: "And they asked him, saying, Master, we know that thou sayest and teachest rightly, neither acceptest thou the person of any, but teachest the way of God truly:"

Luke 22:4: "And he went his way, and communed with the chief priests and captains, how he might betray him unto them."

Luke 24:32: "And they said one to another, Did not our heart burn within us, while he talked with us by the way, and while he opened to us the scriptures?"

Luke 24:35: "And they told what things were done in the way, and how he was known of them in breaking of bread."

John 1:23: "He said, I am the voice of one crying in the wilderness, Make straight the way of the Lord, as said the prophet Esaias."

John 4:28: "The woman then left her waterpot, and went her way into the city, and saith to the men,"

John 4:50: "Jesus saith unto him, Go thy way; thy son liveth. And the man believed the word that Jesus had spoken unto him, and he went his way."

John 8:21: "Then said Jesus again unto them, I go my way, and ye shall seek me, and shall die in your sins: whither I go, ye cannot come."

John 9:7: "And said unto him, Go, wash in the pool of Siloam, (which is by interpretation, Sent.) He went his way therefore, and washed, and came seeing."

John 10:1: "Verily, verily, I say unto you, He that entereth not by the door into the sheepfold, but climbeth up some other way, the same is a thief and a robber."

John 11:28: "And when she had so said, she went her way, and called Mary her sister secretly, saying, The Master is come, and calleth for thee."

John 14:4: "And whither I go ye know, and the way ye know."

John 14:5: "Thomas saith unto him, Lord, we know not whither thou goest; and how can we know the way?"

John 14:6: "Jesus saith unto him, I am the way, the truth, and the life: no man cometh unto the Father, but by me."

John 16:5: "But now I go my way to him that sent me; and none of you asketh me, Whither goest thou?"

John 18:8: "Jesus answered, I have told you that I am he: if therefore ye seek me, let these go their way:"

Acts 8:26: "And the angel of the Lord spake unto Philip, saying, Arise, and go toward the south unto the way that goeth down from Jerusalem unto Gaza, which is desert."

Acts 8:36: "And as they went on their way, they came unto a certain water: and the eunuch said, See, here is water; what doth hinder me to be baptized?"

Acts 8:39: "And when they were come up out of the water, the Spirit of the Lord caught away Philip, that the eunuch saw him no more: and he went on his way rejoicing."

Acts 9:2: "And desired of him letters to Damascus to the synagogues, that if he found any of this way, whether they were men or women, he might bring them bound unto Jerusalem."

Acts 9:15: "But the Lord said unto him, Go thy way: for he is a chosen vessel unto me, to bear my name before the Gentiles, and kings, and the children of Israel:"

Acts 9:17: "And Ananias went his way, and entered into the house; and putting his hands on him said, Brother Saul, the Lord, even Jesus, that appeared unto thee in the way as thou camest, hath sent me, that thou mightest receive thy sight, and be filled with the Holy Ghost."

Acts 9:27: "But Barnabas took him, and brought him to the apostles, and declared unto them how he had seen the Lord in the way, and that he had spoken to him, and how he had preached boldly at Damascus in the name of Jesus."

Acts 15:3: "And being brought on their way by the church, they passed through Phenice and Samaria, declaring the conversion of the Gentiles: and they caused great joy unto all the brethren."

Acts 16:17: "The same followed Paul and us, and cried, saying, These men are the servants of the most high God, which shew unto us the way of salvation."

Acts 18:25: "This man was instructed in the way of the Lord; and being fervent in the spirit, he spake and taught diligently the things of the Lord, knowing only the baptism of John."

Acts 18:26: "And he began to speak boldly in the synagogue: whom when Aquila and Priscilla had heard, they took him unto them, and expounded unto him the way of God more perfectly."

Acts 19:9: "But when divers were hardened, and believed not, but spake evil of that way before the multitude, he departed from them, and separated the disciples, disputing daily in the school of one Tyrannus."



Acts 19:23: "And the same time there arose no small stir about that way."

Acts 21:5: "And when we had accomplished those days, we departed and went our way; and they all brought us on our way, with wives and children, till we were out of the city: and we kneeled down on the shore, and prayed."

Acts 22:4: "And I persecuted this way unto the death, binding and delivering into prisons both men and women."

Acts 24:14: "But this I confess unto thee, that after the way which they call heresy, so worship I the God of my fathers, believing all things which are written in the law and in the prophets:"

Acts 24:22: "And when Felix heard these things, having more perfect knowledge of that way, he deferred them, and said, When Lysias the chief captain shall come down, I will know the uttermost of your matter."

Acts 24:25: "And as he reasoned of righteousness, temperance, and judgment to come, Felix trembled, and answered, Go thy way for this time; when I have a convenient season, I will call for thee."

Acts 25:3: "And desired favour against him, that he would send for him to Jerusalem, laying wait in the way to kill him."

Acts 26:13: "At midday, O king, I saw in the way a light from heaven, above the brightness of the sun, shining round about me and them which journeyed with me."

Romans 3:2: "Much every way: chiefly, because that unto them were committed the oracles of God."

Romans 3:12: "They are all gone out of the way, they are together become unprofitable; there is none that doeth good, no, not one."

Romans 3:17: "And the way of peace have they not known:"

Romans 14:13: "Let us not therefore judge one another any more: but judge this rather, that no man put a stumblingblock or an occasion to fall in his brother's way."

Romans 15:24: "Whensoever I take my journey into Spain, I will come to you: for I trust to see you in my journey, and to be brought on my way thitherward by you, if first I be somewhat filled with your company."

1 Corinthians 10:13: "There hath no temptation taken you but such as is common to man: but God is faithful, who will not suffer you to be tempted above that ye are able; but will with the temptation also make a way to escape, that ye may be able to bear it."

1 Corinthians 12:31: "But covet earnestly the best gifts: and yet shew I unto you a more excellent way."

1 Corinthians 16:7: "For I will not see you now by the way; but I trust to tarry a while with you, if the Lord permit."

2 Corinthians 1:16: "And to pass by you into Macedonia, and to come again out of Macedonia unto you, and of you to be brought on my way toward Judaea."

Philippians 1:18: "What then? notwithstanding, every way, whether in pretence, or in truth, Christ is preached; and I therein do rejoice, yea, and will rejoice."

Colossians 2:14: "Blotting out the handwriting of ordinances that was against us, which was contrary to us, and took it out of the way, nailing it to his cross;"

1 Thessalonians 3:11: "Now God himself and our Father, and our Lord Jesus Christ, direct our way unto you."

2 Thessalonians 2:7: "For the mystery of iniquity doth already work: only he who now letteth will let, until he be taken out of the way."

Hebrews 5:2: "Who can have compassion on the ignorant, and on them that are out of the way; for that he himself also is compassed with infirmity."

Hebrews 9:8: "The Holy Ghost this signifying, that the way into the holiest of all was not yet made manifest, while as the first tabernacle was yet standing:"

Hebrews 10:20: "By a new and living way, which he hath consecrated for us, through the veil, that

is to say, his flesh;"

Hebrews 12:13: "And make straight paths for your feet, lest that which is lame be turned out of the way; but let it rather be healed."

James 1:24: "For he beholdeth himself, and goeth his way, and straightway forgetteth what manner of man he was."

James 2:25: "Likewise also was not Rahab the harlot justified by works, when she had received the messengers, and had sent them out another way?"

James 5:20: "Let him know, that he which converteth the sinner from the error of his way shall save a soul from death, and shall hide a multitude of sins."

2 Peter 2:2: "And many shall follow their pernicious ways; by reason of whom the way of truth shall be evil spoken of."

2 Peter 2:15: "Which have forsaken the right way, and are gone astray, following the way of Balaam the son of Bosor, who loved the wages of unrighteousness;"

2 Peter 2:21: "For it had been better for them not to have known the way of righteousness, than, after they have known it, to turn from the holy commandment delivered unto them."

2 Peter 3:1: "This second epistle, beloved, I now write unto you; in both which I stir up your pure minds by way of remembrance:"

Jude 1:11: "Woe unto them! for they have gone in the way of Cain, and ran greedily after the error of Balaam for reward, and perished in the gainsaying of Core."

Revelation 16:12: "And the sixth angel poured out his vial upon the great river Euphrates; and the water thereof was dried up, that the way of the kings of the east might be prepared."

## **WAYFARING**

Occurrences: 6

Judges 19:17: "And when he had lifted up his eyes, he saw a wayfaring man in the street of the city: and the old man said, Whither goest thou? and whence comest thou?"

2 Samuel 12:4: "And there came a traveller unto the rich man, and he spared to take of his own flock and of his own herd, to dress for the wayfaring man that was come unto him; but took the poor man's lamb, and dressed it for the man that was come to him."

Isaiah 33:8: "The highways lie waste, the wayfaring man ceaseth: he hath broken the covenant, he hath despised the cities, he regardeth no man."

Isaiah 35:8: "And an highway shall be there, and a way, and it shall be called The way of holiness; the unclean shall not pass over it; but it shall be for those: the wayfaring men, though fools, shall not err therein."

Jeremiah 9:2: "Oh that I had in the wilderness a lodging place of wayfaring men; that I might leave my people, and go from them! for they be all adulterers, an assembly of treacherous men."

Jeremiah 14:8: "O the hope of Israel, the saviour thereof in time of trouble, why shouldest thou be as a stranger in the land, and as a wayfaring man that turneth aside to tarry for a night?"

## **WAYMARKS**

Occurrences: 1

Jeremiah 31:21: "Set thee up waymarks, make thee high heaps: set thine heart toward the highway, even the way which thou wentest: turn again, O virgin of Israel, turn again to these thy cities."

## **WAYS**

Occurrences: 198

Genesis 19:2: "And he said, Behold now, my lords, turn in, I pray you, into your servant's house, and tarry all night, and wash your feet, and ye shall rise up early, and go on your ways. And they

said, Nay; but we will abide in the street all night."

Leviticus 20:4: "And if the people of the land do any ways hide their eyes from the man, when he giveth of his seed unto Molech, and kill him not:"

Leviticus 26:22: "I will also send wild beasts among you, which shall rob you of your children, and destroy your cattle, and make you few in number; and your high ways shall be desolate."

Numbers 30:15: "But if he shall any ways make them void after that he hath heard them; then he shall bear her iniquity."

Deuteronomy 5:33: "Ye shall walk in all the ways which the LORD your God hath commanded you, that ye may live, and that it may be well with you, and that ye may prolong your days in the land which ye shall possess."

Deuteronomy 8:6: "Therefore thou shalt keep the commandments of the LORD thy God, to walk in his ways, and to fear him."

Deuteronomy 10:12: "And now, Israel, what doth the LORD thy God require of thee, but to fear the LORD thy God, to walk in all his ways, and to love him, and to serve the LORD thy God with all thy heart and with all thy soul,"

Deuteronomy 11:22: "For if ye shall diligently keep all these commandments which I command you, to do them, to love the LORD your God, to walk in all his ways, and to cleave unto him;"

Deuteronomy 19:9: "If thou shalt keep all these commandments to do them, which I command thee this day, to love the LORD thy God, and to walk ever in his ways; then shalt thou add three cities more for thee, beside these three:"

Deuteronomy 26:17: "Thou hast avouched the LORD this day to be thy God, and to walk in his ways, and to keep his statutes, and his commandments, and his judgments, and to hearken unto his voice:"

Deuteronomy 28:7: "The LORD shall cause thine enemies that rise up against thee to be smitten before thy face: they shall come out against thee one way, and flee before thee seven ways."

Deuteronomy 28:9: "The LORD shall establish thee an holy people unto himself, as he hath sworn unto thee, if thou shalt keep the commandments of the LORD thy God, and walk in his ways."

Deuteronomy 28:25: "The LORD shall cause thee to be smitten before thine enemies: thou shalt go out one way against them, and flee seven ways before them: and shalt be removed into all the kingdoms of the earth."

Deuteronomy 28:29: "And thou shalt grope at noonday, as the blind gropeth in darkness, and thou shalt not prosper in thy ways: and thou shalt be only oppressed and spoiled evermore, and no man shall save thee."

Deuteronomy 30:16: "In that I command thee this day to love the LORD thy God, to walk in his ways, and to keep his commandments and his statutes and his judgments, that thou mayest live and multiply: and the LORD thy God shall bless thee in the land whither thou goest to possess it."

Deuteronomy 32:4: "He is the Rock, his work is perfect: for all his ways are judgment: a God of truth and without iniquity, just and right is he."

Joshua 22:5: "But take diligent heed to do the commandment and the law, which Moses the servant of the LORD charged you, to love the LORD your God, and to walk in all his ways, and to keep his commandments, and to cleave unto him, and to serve him with all your heart and with all your soul."

1 Samuel 8:3: "And his sons walked not in his ways, but turned aside after lucre, and took bribes, and perverted judgment."

1 Samuel 8:5: "And said unto him, Behold, thou art old, and thy sons walk not in thy ways: now make us a king to judge us like all the nations."

1 Samuel 18:14: "And David behaved himself wisely in all his ways; and the LORD was with him."

2 Samuel 22:22: "For I have kept the ways of the LORD, and have not wickedly departed from my God."

1 Kings 2:3: "And keep the charge of the LORD thy God, to walk in his ways, to keep his statutes,

and his commandments, and his judgments, and his testimonies, as it is written in the law of Moses, that thou mayest prosper in all that thou doest, and whithersoever thou turnest thyself:"

1 Kings 3:14: "And if thou wilt walk in my ways, to keep my statutes and my commandments, as thy father David did walk, then I will lengthen thy days."

1 Kings 8:39: "Then hear thou in heaven thy dwelling place, and forgive, and do, and give to every man according to his ways, whose heart thou knowest; (for thou, even thou only, knowest the hearts of all the children of men;)"

1 Kings 8:58: "That he may incline our hearts unto him, to walk in all his ways, and to keep his commandments, and his statutes, and his judgments, which he commanded our fathers."

1 Kings 11:33: "Because that they have forsaken me, and have worshipped Ashtoreth the goddess of the Zidonians, Chemosh the god of the Moabites, and Milcom the god of the children of Ammon, and have not walked in my ways, to do that which is right in mine eyes, and to keep my statutes and my judgments, as did David his father."

1 Kings 11:38: "And it shall be, if thou wilt hearken unto all that I command thee, and wilt walk in my ways, and do that is right in my sight, to keep my statutes and my commandments, as David my servant did; that I will be with thee, and build thee a sure house, as I built for David, and will give Israel unto thee."

1 Kings 22:43: "And he walked in all the ways of Asa his father; he turned not aside from it, doing that which was right in the eyes of the LORD: nevertheless the high places were not taken away; for the people offered and burnt incense yet in the high places."

2 Kings 17:13: "Yet the LORD testified against Israel, and against Judah, by all the prophets, and by all the seers, saying, Turn ye from your evil ways, and keep my commandments and my statutes, according to all the law which I commanded your fathers, and which I sent to you by my servants the prophets."

2 Chronicles 6:30: "Then hear thou from heaven thy dwelling place, and forgive, and render unto every man according unto all his ways, whose heart thou knowest; (for thou only knowest the hearts of the children of men:)"

2 Chronicles 6:31: "That they may fear thee, to walk in thy ways, so long as they live in the land which thou gavest unto our fathers."

2 Chronicles 7:14: "If my people, which are called by my name, shall humble themselves, and pray, and seek my face, and turn from their wicked ways; then will I hear from heaven, and will forgive their sin, and will heal their land."

2 Chronicles 13:22: "And the rest of the acts of Abijah, and his ways, and his sayings, are written in the story of the prophet Iddo."

2 Chronicles 17:3: "And the LORD was with Jehoshaphat, because he walked in the first ways of his father David, and sought not unto Baalim;"

2 Chronicles 17:6: "And his heart was lifted up in the ways of the LORD: moreover he took away the high places and groves out of Judah."

2 Chronicles 21:12: "And there came a writing to him from Elijah the prophet, saying, Thus saith the LORD God of David thy father, Because thou hast not walked in the ways of Jehoshaphat thy father, nor in the ways of Asa king of Judah,"

2 Chronicles 22:3: "He also walked in the ways of the house of Ahab: for his mother was his counsellor to do wickedly."

2 Chronicles 27:6: "So Jotham became mighty, because he prepared his ways before the LORD his God."

2 Chronicles 27:7: "Now the rest of the acts of Jotham, and all his wars, and his ways, lo, they are written in the book of the kings of Israel and Judah."

2 Chronicles 28:2: "For he walked in the ways of the kings of Israel, and made also molten images for Baalim."

2 Chronicles 28:26: "Now the rest of his acts and of all his ways, first and last, behold, they are

written in the book of the kings of Judah and Israel."

2 Chronicles 32:13: "Know ye not what I and my fathers have done unto all the people of other lands? were the gods of the nations of those lands any ways able to deliver their lands out of mine hand?"

2 Chronicles 34:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, and walked in the ways of David his father, and declined neither to the right hand, nor to the left."

Job 4:6: "Is not this thy fear, thy confidence, thy hope, and the uprightness of thy ways?"

Job 13:15: "Though he slay me, yet will I trust in him: but I will maintain mine own ways before him."

Job 21:14: "Therefore they say unto God, Depart from us; for we desire not the knowledge of thy ways."

Job 22:3: "Is it any pleasure to the Almighty, that thou art righteous? or is it gain to him, that thou makest thy ways perfect?"

Job 22:28: "Thou shalt also decree a thing, and it shall be established unto thee: and the light shall shine upon thy ways."

Job 24:13: "They are of those that rebel against the light; they know not the ways thereof, nor abide in the paths thereof."

Job 24:23: "Though it be given him to be in safety, whereon he resteth; yet his eyes are upon their ways."

Job 26:14: "Lo, these are parts of his ways: but how little a portion is heard of him? but the thunder of his power who can understand?"

Job 30:12: "Upon my right hand rise the youth; they push away my feet, and they raise up against me the ways of their destruction."

Job 31:4: "Doth not he see my ways, and count all my steps?"

Job 34:11: "For the work of a man shall he render unto him, and cause every man to find according to his ways."

Job 34:21: "For his eyes are upon the ways of man, and he seeth all his goings."

Job 34:27: "Because they turned back from him, and would not consider any of his ways:"

Job 40:19: "He is the chief of the ways of God: he that made him can make his sword to approach unto him."

Psalms 10:5: "His ways are always grievous; thy judgments are far above out of his sight: as for all his enemies, he puffeth at them."

Psalms 18:21: "For I have kept the ways of the LORD, and have not wickedly departed from my God."

Psalms 25:4: "Shew me thy ways, O LORD; teach me thy paths."

Psalms 39:1: "I said, I will take heed to my ways, that I sin not with my tongue: I will keep my mouth with a bridle, while the wicked is before me."

Psalms 51:13: "Then will I teach transgressors thy ways; and sinners shall be converted unto thee."

Psalms 81:13: "Oh that my people had hearkened unto me, and Israel had walked in my ways!"

Psalms 84:5: "Blessed is the man whose strength is in thee; in whose heart are the ways of them."

Psalms 91:11: "For he shall give his angels charge over thee, to keep thee in all thy ways."

Psalms 95:10: "Forty years long was I grieved with this generation, and said, It is a people that do err in their heart, and they have not known my ways:"

Psalms 103:7: "He made known his ways unto Moses, his acts unto the children of Israel."

Psalms 119:3: "They also do no iniquity: they walk in his ways."

Psalms 119:5: "O that my ways were directed to keep thy statutes!"

Psalms 119:15: "I will meditate in thy precepts, and have respect unto thy ways."

Psalms 119:26: "I have declared my ways, and thou heardest me: teach me thy statutes."

Psalms 119:59: "I thought on my ways, and turned my feet unto thy testimonies."

Psalms 119:168: "I have kept thy precepts and thy testimonies: for all my ways are before thee."

Psalms 125:5: "As for such as turn aside unto their crooked ways, the LORD shall lead them forth with the workers of iniquity: but peace shall be upon Israel."

Psalms 128:1: "Blessed is every one that feareth the LORD; that walketh in his ways."

Psalms 138:5: "Yea, they shall sing in the ways of the LORD: for great is the glory of the LORD."

Psalms 139:3: "Thou compassest my path and my lying down, and art acquainted with all my ways."

Psalms 145:17: "The LORD is righteous in all his ways, and holy in all his works."

Proverbs 1:19: "So are the ways of every one that is greedy of gain; which taketh away the life of the owners thereof."

Proverbs 2:13: "Who leave the paths of uprightness, to walk in the ways of darkness;"

Proverbs 2:15: "Whose ways are crooked, and they froward in their paths:"

Proverbs 3:6: "In all thy ways acknowledge him, and he shall direct thy paths."

Proverbs 3:17: "Her ways are ways of pleasantness, and all her paths are peace."

Proverbs 3:31: "Envy thou not the oppressor, and choose none of his ways."

Proverbs 4:26: "Ponder the path of thy feet, and let all thy ways be established."

Proverbs 5:6: "Lest thou shouldest ponder the path of life, her ways are moveable, that thou canst not know them."

Proverbs 5:21: "For the ways of man are before the eyes of the LORD, and he pondereth all his goings."

Proverbs 6:6: "Go to the ant, thou sluggard; consider her ways, and be wise:"

Proverbs 7:25: "Let not thine heart decline to her ways, go not astray in her paths."

Proverbs 8:32: "Now therefore hearken unto me, O ye children: for blessed are they that keep my ways."

Proverbs 9:15: "To call passengers who go right on their ways:"

Proverbs 10:9: "He that walketh uprightly walketh surely: but he that perverteth his ways shall be known."

Proverbs 14:2: "He that walketh in his uprightness feareth the LORD: but he that is perverse in his ways despiseth him."

Proverbs 14:12: "There is a way which seemeth right unto a man, but the end thereof are the ways of death."

Proverbs 14:14: "The backslider in heart shall be filled with his own ways: and a good man shall be satisfied from himself."

Proverbs 16:2: "All the ways of a man are clean in his own eyes; but the LORD weigheth the spirits."

Proverbs 16:7: "When a man's ways please the LORD, he maketh even his enemies to be at peace with him."

Proverbs 16:25: "There is a way that seemeth right unto a man, but the end thereof are the ways of death."

Proverbs 17:23: "A wicked man taketh a gift out of the bosom to pervert the ways of judgment."

Proverbs 19:16: "He that keepeth the commandment keepeth his own soul; but he that despiseth his ways shall die."

Proverbs 22:25: "Lest thou learn his ways, and get a snare to thy soul."

Proverbs 23:26: "My son, give me thine heart, and let thine eyes observe my ways."

Proverbs 28:6: "Better is the poor that walketh in his uprightness, than he that is perverse in his ways, though he be rich."

Proverbs 28:18: "Whoso walketh uprightly shall be saved: but he that is perverse in his ways shall fall at once."

Proverbs 31:3: "Give not thy strength unto women, nor thy ways to that which destroyeth kings."

Proverbs 31:27: "She looketh well to the ways of her household, and eateth not the bread of idleness."

Ecclesiastes 11:9: "Rejoice, O young man, in thy youth; and let thy heart cheer thee in the days of thy youth, and walk in the ways of thine heart, and in the sight of thine eyes: but know thou, that for all these things God will bring thee into judgment."

Song of Solomon 3:2: "I will rise now, and go about the city in the streets, and in the broad ways I will seek him whom my soul loveth: I sought him, but I found him not."

Isaiah 2:3: "And many people shall go and say, Come ye, and let us go up to the mountain of the LORD, to the house of the God of Jacob; and he will teach us of his ways, and we will walk in his paths: for out of Zion shall go forth the law, and the word of the LORD from Jerusalem."

Isaiah 42:24: "Who gave Jacob for a spoil, and Israel to the robbers? did not the LORD, he against whom we have sinned? for they would not walk in his ways, neither were they obedient unto his law."

Isaiah 45:13: "I have raised him up in righteousness, and I will direct all his ways: he shall build my city, and he shall let go my captives, not for price nor reward, saith the LORD of hosts."

Isaiah 49:9: "That thou mayest say to the prisoners, Go forth; to them that are in darkness, Shew yourselves. They shall feed in the ways, and their pastures shall be in all high places."

Isaiah 55:8: "For my thoughts are not your thoughts, neither are your ways my ways, saith the LORD."

Isaiah 55:9: "For as the heavens are higher than the earth, so are my ways higher than your ways, and my thoughts than your thoughts."

Isaiah 57:18: "I have seen his ways, and will heal him: I will lead him also, and restore comforts unto him and to his mourners."

Isaiah 58:2: "Yet they seek me daily, and delight to know my ways, as a nation that did righteousness, and forsook not the ordinance of their God: they ask of me the ordinances of justice; they take delight in approaching to God."

Isaiah 58:13: "If thou turn away thy foot from the sabbath, from doing thy pleasure on my holy day; and call the sabbath a delight, the holy of the LORD, honourable; and shalt honour him, not doing thine own ways, nor finding thine own pleasure, nor speaking thine own words:"

Isaiah 63:17: "O LORD, why hast thou made us to err from thy ways, and hardened our heart from thy fear? Return for thy servants' sake, the tribes of thine inheritance."

Isaiah 64:5: "Thou meetest him that rejoiceth and worketh righteousness, those that remember thee in thy ways: behold, thou art wroth; for we have sinned: in those is continuance, and we shall be saved."

Isaiah 66:3: "He that killeth an ox is as if he slew a man; he that sacrificeth a lamb, as if he cut off a dog's neck; he that offereth an oblation, as if he offered swine's blood; he that burneth incense, as if he blessed an idol. Yea, they have chosen their own ways, and their soul delighteth in their abominations."

Jeremiah 2:23: "How canst thou say, I am not polluted, I have not gone after Baalim? see thy way in the valley, know what thou hast done: thou art a swift dromedary traversing her ways;"

Jeremiah 2:33: "Why trimmest thou thy way to seek love? therefore hast thou also taught the wicked ones thy ways."

Jeremiah 3:2: "Lift up thine eyes unto the high places, and see where thou hast not been lien with. In the ways hast thou sat for them, as the Arabian in the wilderness; and thou hast polluted the land with thy whoredoms and with thy wickedness."

Jeremiah 3:13: "Only acknowledge thine iniquity, that thou hast transgressed against the LORD thy God, and hast scattered thy ways to the strangers under every green tree, and ye have not obeyed my voice, saith the LORD."

Jeremiah 6:16: "Thus saith the LORD, Stand ye in the ways, and see, and ask for the old paths, where is the good way, and walk therein, and ye shall find rest for your souls. But they said, We will not walk therein."

Jeremiah 7:3: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel, Amend your ways and your doings,

and I will cause you to dwell in this place."

Jeremiah 7:5: "For if ye thoroughly amend your ways and your doings; if ye thoroughly execute judgment between a man and his neighbour;"

Jeremiah 7:23: "But this thing commanded I them, saying, Obey my voice, and I will be your God, and ye shall be my people: and walk ye in all the ways that I have commanded you, that it may be well unto you."

Jeremiah 12:16: "And it shall come to pass, if they will diligently learn the ways of my people, to swear by my name, The LORD liveth; as they taught my people to swear by Baal; then shall they be built in the midst of my people."

Jeremiah 15:7: "And I will fan them with a fan in the gates of the land; I will bereave them of children, I will destroy my people since they return not from their ways."

Jeremiah 16:17: "For mine eyes are upon all their ways: they are not hid from my face, neither is their iniquity hid from mine eyes."

Jeremiah 17:10: "I the LORD search the heart, I try the reins, even to give every man according to his ways, and according to the fruit of his doings."

Jeremiah 18:11: "Now therefore go to, speak to the men of Judah, and to the inhabitants of Jerusalem, saying, Thus saith the LORD; Behold, I frame evil against you, and devise a device against you: return ye now every one from his evil way, and make your ways and your doings good."

Jeremiah 18:15: "Because my people hath forgotten me, they have burned incense to vanity, and they have caused them to stumble in their ways from the ancient paths, to walk in paths, in a way not cast up;"

Jeremiah 23:12: "Wherefore their way shall be unto them as slippery ways in the darkness: they shall be driven on, and fall therein: for I will bring evil upon them, even the year of their visitation, saith the LORD."

Jeremiah 26:13: "Therefore now amend your ways and your doings, and obey the voice of the LORD your God; and the LORD will repent him of the evil that he hath pronounced against you."

Jeremiah 32:19: "Great in counsel, and mighty in work: for thine eyes are open upon all the ways of the sons of men: to give every one according to his ways, and according to the fruit of his doings:"

Lamentations 1:4: "The ways of Zion do mourn, because none come to the solemn feasts: all her gates are desolate: her priests sigh, her virgins are afflicted, and she is in bitterness."

Lamentations 3:9: "He hath inclosed my ways with hewn stone, he hath made my paths crooked."

Lamentations 3:11: "He hath turned aside my ways, and pulled me in pieces: he hath made me desolate."

Lamentations 3:40: "Let us search and try our ways, and turn again to the LORD."

Ezekiel 7:3: "Now is the end come upon thee, and I will send mine anger upon thee, and will judge thee according to thy ways, and will recompense upon thee all thine abominations."

Ezekiel 7:4: "And mine eye shall not spare thee, neither will I have pity: but I will recompense thy ways upon thee, and thine abominations shall be in the midst of thee: and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 7:8: "Now will I shortly pour out my fury upon thee, and accomplish mine anger upon thee: and I will judge thee according to thy ways, and will recompense thee for all thine abominations."

Ezekiel 7:9: "And mine eye shall not spare, neither will I have pity: I will recompense thee according to thy ways and thine abominations that are in the midst of thee; and ye shall know that I am the LORD that smiteth."

Ezekiel 14:23: "And they shall comfort you, when ye see their ways and their doings: and ye shall know that I have not done without cause all that I have done in it, saith the Lord GOD."

Ezekiel 16:47: "Yet hast thou not walked after their ways, nor done after their abominations: but, as if that were a very little thing, thou wast corrupted more than they in all thy ways."

Ezekiel 16:61: "Then thou shalt remember thy ways, and be ashamed, when thou shalt receive thy



sisters, thine elder and thy younger: and I will give them unto thee for daughters, but not by thy covenant."

Ezekiel 18:23: "Have I any pleasure at all that the wicked should die? saith the Lord GOD: and not that he should return from his ways, and live?"

Ezekiel 18:25: "Yet ye say, The way of the LORD is not equal. Hear now, O house of Israel; Is not my way equal? are not your ways unequal?"

Ezekiel 18:29: "Yet saith the house of Israel, The way of the LORD is not equal. O house of Israel, are not my ways equal? are not your ways unequal?"

Ezekiel 18:30: "Therefore I will judge you, O house of Israel, every one according to his ways, saith the Lord GOD. Repent, and turn yourselves from all your transgressions; so iniquity shall not be your ruin."

Ezekiel 20:43: "And there shall ye remember your ways, and all your doings, wherein ye have been defiled; and ye shall lothe yourselves in your own sight for all your evils that ye have committed."

Ezekiel 20:44: "And ye shall know that I am the LORD when I have wrought with you for my name's sake, not according to your wicked ways, nor according to your corrupt doings, O ye house of Israel, saith the Lord GOD."

Ezekiel 21:19: "Also, thou son of man, appoint thee two ways, that the sword of the king of Babylon may come: both twain shall come forth out of one land: and choose thou a place, choose it at the head of the way to the city."

Ezekiel 21:21: "For the king of Babylon stood at the parting of the way, at the head of the two ways, to use divination: he made his arrows bright, he consulted with images, he looked in the liver."

Ezekiel 24:14: "I the LORD have spoken it: it shall come to pass, and I will do it; I will not go back, neither will I spare, neither will I repent; according to thy ways, and according to thy doings, shall they judge thee, saith the Lord GOD."

Ezekiel 28:15: "Thou wast perfect in thy ways from the day that thou wast created, till iniquity was found in thee."

Ezekiel 33:11: "Say unto them, As I live, saith the Lord GOD, I have no pleasure in the death of the wicked; but that the wicked turn from his way and live: turn ye, turn ye from your evil ways; for why will ye die, O house of Israel?"

Ezekiel 33:20: "Yet ye say, The way of the Lord is not equal. O ye house of Israel, I will judge you every one after his ways."

Ezekiel 36:31: "Then shall ye remember your own evil ways, and your doings that were not good, and shall lothe yourselves in your own sight for your iniquities and for your abominations."

Ezekiel 36:32: "Not for your sakes do I this, saith the Lord GOD, be it known unto you: be ashamed and confounded for your own ways, O house of Israel."

Daniel 4:37: "Now I Nebuchadnezzar praise and extol and honour the King of heaven, all whose works are truth, and his ways judgment: and those that walk in pride he is able to abase."

Daniel 5:23: "But hast lifted up thyself against the Lord of heaven; and they have brought the vessels of his house before thee, and thou, and thy lords, thy wives, and thy concubines, have drunk wine in them; and thou hast praised the gods of silver, and gold, of brass, iron, wood, and stone, which see not, nor hear, nor know: and the God in whose hand thy breath is, and whose are all thy ways, hast thou not glorified:"

Hosea 4:9: "And there shall be, like people, like priest: and I will punish them for their ways, and reward them their doings."

Hosea 9:8: "The watchman of Ephraim was with my God: but the prophet is a snare of a fowler in all his ways, and hatred in the house of his God."

Hosea 12:2: "The LORD hath also a controversy with Judah, and will punish Jacob according to his ways; according to his doings will he recompense him."

Hosea 14:9: "Who is wise, and he shall understand these things? prudent, and he shall know them?"

for the ways of the LORD are right, and the just shall walk in them: but the transgressors shall fall therein."

Joel 2:7: "They shall run like mighty men; they shall climb the wall like men of war; and they shall march every one on his ways, and they shall not break their ranks:"

Micah 4:2: "And many nations shall come, and say, Come, and let us go up to the mountain of the LORD, and to the house of the God of Jacob; and he will teach us of his ways, and we will walk in his paths: for the law shall go forth of Zion, and the word of the LORD from Jerusalem."

Nahum 2:4: "The chariots shall rage in the streets, they shall jostle one against another in the broad ways: they shall seem like torches, they shall run like the lightnings."

Habakkuk 3:6: "He stood, and measured the earth: he beheld, and drove asunder the nations; and the everlasting mountains were scattered, the perpetual hills did bow: his ways are everlasting."

Haggai 1:5: "Now therefore thus saith the LORD of hosts; Consider your ways."

Haggai 1:7: "Thus saith the LORD of hosts; Consider your ways."

Zechariah 1:4: "Be ye not as your fathers, unto whom the former prophets have cried, saying, Thus saith the LORD of hosts; Turn ye now from your evil ways, and from your evil doings: but they did not hear, nor hearken unto me, saith the LORD."

Zechariah 1:6: "But my words and my statutes, which I commanded my servants the prophets, did they not take hold of your fathers? and they returned and said, Like as the LORD of hosts thought to do unto us, according to our ways, and according to our doings, so hath he dealt with us."

Zechariah 3:7: "Thus saith the LORD of hosts; If thou wilt walk in my ways, and if thou wilt keep my charge, then thou shalt also judge my house, and shalt also keep my courts, and I will give thee places to walk among these that stand by."

Malachi 2:9: "Therefore have I also made you contemptible and base before all the people, according as ye have not kept my ways, but have been partial in the law."

Matthew 8:33: "And they that kept them fled, and went their ways into the city, and told every thing, and what was befallen to the possessed of the devils."

Matthew 22:5: "But they made light of it, and went their ways, one to his farm, another to his merchandise:"

Mark 11:4: "And they went their way, and found the colt tied by the door without in a place where two ways met; and they loose him."

Luke 1:76: "And thou, child, shalt be called the prophet of the Highest: for thou shalt go before the face of the Lord to prepare his ways;"

Luke 3:5: "Every valley shall be filled, and every mountain and hill shall be brought low; and the crooked shall be made straight, and the rough ways shall be made smooth;"

Luke 10:3: "Go your ways: behold, I send you forth as lambs among wolves."

Luke 10:10: "But into whatsoever city ye enter, and they receive you not, go your ways out into the streets of the same, and say,"

John 11:46: "But some of them went their ways to the Pharisees, and told them what things Jesus had done."

Acts 2:28: "Thou hast made known to me the ways of life; thou shalt make me full of joy with thy countenance."

Acts 13:10: "And said, O full of all subtilty and all mischief, thou child of the devil, thou enemy of all righteousness, wilt thou not cease to pervert the right ways of the Lord?"

Acts 14:16: "Who in times past suffered all nations to walk in their own ways."

Romans 3:16: "Destruction and misery are in their ways:"

Romans 11:33: "O the depth of the riches both of the wisdom and knowledge of God! how unsearchable are his judgments, and his ways past finding out!"

1 Corinthians 4:17: "For this cause have I sent unto you Timotheus, who is my beloved son, and faithful in the Lord, who shall bring you into remembrance of my ways which be in Christ, as I teach every where in every church."

Hebrews 3:10: "Wherefore I was grieved with that generation, and said, They do alway err in their heart; and they have not known my ways."

James 1:8: "A double minded man is unstable in all his ways."

James 1:11: "For the sun is no sooner risen with a burning heat, but it withereth the grass, and the flower thereof falleth, and the grace of the fashion of it perisheth: so also shall the rich man fade away in his ways."

2 Peter 2:2: "And many shall follow their pernicious ways; by reason of whom the way of truth shall be evil spoken of."

Revelation 15:3: "And they sing the song of Moses the servant of God, and the song of the Lamb, saying, Great and marvellous are thy works, Lord God Almighty; just and true are thy ways, thou King of saints."

Revelation 16:1: "And I heard a great voice out of the temple saying to the seven angels, Go your ways, and pour out the vials of the wrath of God upon the earth."

## **WAYSIDE**

Occurrences: 2

1 Samuel 4:13: "And when he came, lo, Eli sat upon a seat by the wayside watching: for his heart trembled for the ark of God. And when the man came into the city, and told it, all the city cried out."

Psalms 140:5: "The proud have hid a snare for me, and cords; they have spread a net by the wayside; they have set gins for me. Selah."

## **WE**

Occurrences: 1316

Genesis 3:2: "And the woman said unto the serpent, We may eat of the fruit of the trees of the garden:"

Genesis 11:4: "And they said, Go to, let us build us a city and a tower, whose top may reach unto heaven; and let us make us a name, lest we be scattered abroad upon the face of the whole earth."

Genesis 13:8: "And Abram said unto Lot, Let there be no strife, I pray thee, between me and thee, and between my herdmen and thy herdmen; for we be brethren."

Genesis 19:2: "And he said, Behold now, my lords, turn in, I pray you, into your servant's house, and tarry all night, and wash your feet, and ye shall rise up early, and go on your ways. And they said, Nay; but we will abide in the street all night."

Genesis 19:5: "And they called unto Lot, and said unto him, Where are the men which came in to thee this night? bring them out unto us, that we may know them."

Genesis 19:9: "And they said, Stand back. And they said again, This one fellow came in to sojourn, and he will needs be a judge: now will we deal worse with thee, than with them. And they pressed sore upon the man, even Lot, and came near to break the door."

Genesis 19:13: "For we will destroy this place, because the cry of them is waxen great before the face of the LORD; and the LORD hath sent us to destroy it."

Genesis 19:32: "Come, let us make our father drink wine, and we will lie with him, that we may preserve seed of our father."

Genesis 19:34: "And it came to pass on the morrow, that the firstborn said unto the younger, Behold, I lay yesternight with my father: let us make him drink wine this night also; and go thou in, and lie with him, that we may preserve seed of our father."

Genesis 20:13: "And it came to pass, when God caused me to wander from my father's house, that I said unto her, This is thy kindness which thou shalt shew unto me; at every place whither we shall come, say of me, He is my brother."

Genesis 24:25: "She said moreover unto him, We have both straw and provender enough, and room

to lodge in."

Genesis 24:50: "Then Laban and Bethuel answered and said, The thing proceedeth from the LORD: we cannot speak unto thee bad or good."

Genesis 24:57: "And they said, We will call the damsel, and enquire at her mouth."

Genesis 26:16: "And Abimelech said unto Isaac, Go from us; for thou art much mightier than we."

Genesis 26:22: "And he removed from thence, and digged another well; and for that they strove not: and he called the name of it Rehoboth; and he said, For now the LORD hath made room for us, and we shall be fruitful in the land."

Genesis 26:28: "And they said, We saw certainly that the LORD was with thee: and we said, Let there be now an oath betwixt us, even betwixt us and thee, and let us make a covenant with thee;"

Genesis 26:29: "That thou wilt do us no hurt, as we have not touched thee, and as we have done unto thee nothing but good, and have sent thee away in peace: thou art now the blessed of the LORD."

Genesis 26:32: "And it came to pass the same day, that Isaac's servants came, and told him concerning the well which they had digged, and said unto him, We have found water."

Genesis 29:4: "And Jacob said unto them, My brethren, whence be ye? And they said, Of Haran are we."

Genesis 29:5: "And he said unto them, Know ye Laban the son of Nahor? And they said, We know him."

Genesis 29:8: "And they said, We cannot, until all the flocks be gathered together, and till they roll the stone from the well's mouth; then we water the sheep."

Genesis 29:27: "Fulfil her week, and we will give thee this also for the service which thou shalt serve with me yet seven other years."

Genesis 31:15: "Are we not counted of him strangers? for he hath sold us, and hath quite devoured also our money."

Genesis 31:49: "And Mizpah; for he said, The LORD watch between me and thee, when we are absent one from another."

Genesis 32:6: "And the messengers returned to Jacob, saying, We came to thy brother Esau, and also he cometh to meet thee, and four hundred men with him."

Genesis 34:14: "And they said unto them, We cannot do this thing, to give our sister to one that is uncircumcised; for that were a reproach unto us:"

Genesis 34:15: "But in this will we consent unto you: If ye will be as we be, that every male of you be circumcised;"

Genesis 34:16: "Then will we give our daughters unto you, and we will take your daughters to us, and we will dwell with you, and we will become one people."

Genesis 34:17: "But if ye will not hearken unto us, to be circumcised; then will we take our daughter, and we will be gone."

Genesis 37:7: "For, behold, we were binding sheaves in the field, and, lo, my sheaf arose, and also stood upright; and, behold, your sheaves stood round about, and made obeisance to my sheaf."

Genesis 37:20: "Come now therefore, and let us slay him, and cast him into some pit, and we will say, Some evil beast hath devoured him: and we shall see what will become of his dreams."

Genesis 37:26: "And Judah said unto his brethren, What profit is it if we slay our brother, and conceal his blood?"

Genesis 37:32: "And they sent the coat of many colours, and they brought it to their father; and said, This have we found: know now whether it be thy son's coat or no."

Genesis 38:23: "And Judah said, Let her take it to her, lest we be shamed: behold, I sent this kid, and thou hast not found her."

Genesis 40:8: "And they said unto him, We have dreamed a dream, and there is no interpreter of it. And Joseph said unto them, Do not interpretations belong to God? tell me them, I pray you."

Genesis 41:11: "And we dreamed a dream in one night, I and he; we dreamed each man according

to the interpretation of his dream."

Genesis 41:12: "And there was there with us a young man, an Hebrew, servant to the captain of the guard; and we told him, and he interpreted to us our dreams; to each man according to his dream he did interpret."

Genesis 41:38: "And Pharaoh said unto his servants, Can we find such a one as this is, a man in whom the Spirit of God is?"

Genesis 42:2: "And he said, Behold, I have heard that there is corn in Egypt: get you down thither, and buy for us from thence; that we may live, and not die."

Genesis 42:11: "We are all one man's sons; we are true men, thy servants are no spies."

Genesis 42:21: "And they said one to another, We are verily guilty concerning our brother, in that we saw the anguish of his soul, when he besought us, and we would not hear; therefore is this distress come upon us."

Genesis 42:31: "And we said unto him, We are true men; we are no spies:"

Genesis 42:32: "We be twelve brethren, sons of our father; one is not, and the youngest is this day with our father in the land of Canaan."

Genesis 43:4: "If thou wilt send our brother with us, we will go down and buy thee food:"

Genesis 43:5: "But if thou wilt not send him, we will not go down: for the man said unto us, Ye shall not see my face, except your brother be with you."

Genesis 43:7: "And they said, The man asked us straitly of our state, and of our kindred, saying, Is your father yet alive? have ye another brother? and we told him according to the tenor of these words: could we certainly know that he would say, Bring your brother down?"

Genesis 43:8: "And Judah said unto Israel his father, Send the lad with me, and we will arise and go; that we may live, and not die, both we, and thou, and also our little ones."

Genesis 43:10: "For except we had lingered, surely now we had returned this second time."

Genesis 43:18: "And the men were afraid, because they were brought into Joseph's house; and they said, Because of the money that was returned in our sacks at the first time are we brought in; that he may seek occasion against us, and fall upon us, and take us for bondmen, and our asses."

Genesis 43:20: "And said, O sir, we came indeed down at the first time to buy food:"

Genesis 43:21: "And it came to pass, when we came to the inn, that we opened our sacks, and, behold, every man's money was in the mouth of his sack, our money in full weight: and we have brought it again in our hand."

Genesis 43:22: "And other money have we brought down in our hands to buy food: we cannot tell who put our money in our sacks."

Genesis 44:8: "Behold, the money, which we found in our sacks' mouths, we brought again unto thee out of the land of Canaan: how then should we steal out of thy lord's house silver or gold?"

Genesis 44:9: "With whomsoever of thy servants it be found, both let him die, and we also will be my lord's bondmen."

Genesis 44:16: "And Judah said, What shall we say unto my lord? what shall we speak? or how shall we clear ourselves? God hath found out the iniquity of thy servants: behold, we are my lord's servants, both we, and he also with whom the cup is found."

Genesis 44:20: "And we said unto my lord, We have a father, an old man, and a child of his old age, a little one; and his brother is dead, and he alone is left of his mother, and his father loveth him."

Genesis 44:22: "And we said unto my lord, The lad cannot leave his father: for if he should leave his father, his father would die."

Genesis 44:24: "And it came to pass when we came up unto thy servant my father, we told him the words of my lord."

Genesis 44:26: "And we said, We cannot go down: if our youngest brother be with us, then will we go down: for we may not see the man's face, except our youngest brother be with us."

Genesis 46:34: "That ye shall say, Thy servants' trade hath been about cattle from our youth even until now, both we, and also our fathers: that ye may dwell in the land of Goshen; for every

shepherd is an abomination unto the Egyptians."

Genesis 47:3: "And Pharaoh said unto his brethren, What is your occupation? And they said unto Pharaoh, Thy servants are shepherds, both we, and also our fathers."

Genesis 47:4: "They said moreover unto Pharaoh, For to sojourn in the land are we come; for thy servants have no pasture for their flocks; for the famine is sore in the land of Canaan: now therefore, we pray thee, let thy servants dwell in the land of Goshen."

Genesis 47:15: "And when money failed in the land of Egypt, and in the land of Canaan, all the Egyptians came unto Joseph, and said, Give us bread: for why should we die in thy presence? for the money faileth."

Genesis 47:18: "When that year was ended, they came unto him the second year, and said unto him, We will not hide it from my lord, how that our money is spent; my lord also hath our herds of cattle; there is not ought left in the sight of my lord, but our bodies, and our lands:"

Genesis 47:19: "Wherefore shall we die before thine eyes, both we and our land? buy us and our land for bread, and we and our land will be servants unto Pharaoh: and give us seed, that we may live, and not die, that the land be not desolate."

Genesis 47:25: "And they said, Thou hast saved our lives: let us find grace in the sight of my lord, and we will be Pharaoh's servants."

Genesis 50:15: "And when Joseph's brethren saw that their father was dead, they said, Joseph will peradventure hate us, and will certainly requite us all the evil which we did unto him."

Genesis 50:17: "So shall ye say unto Joseph, Forgive, I pray thee now, the trespass of thy brethren, and their sin; for they did unto thee evil: and now, we pray thee, forgive the trespass of the servants of the God of thy father. And Joseph wept when they spake unto him."

Genesis 50:18: "And his brethren also went and fell down before his face; and they said, Behold, we be thy servants."

Exodus 1:9: "And he said unto his people, Behold, the people of the children of Israel are more and mightier than we:"

Exodus 3:18: "And they shall hearken to thy voice: and thou shalt come, thou and the elders of Israel, unto the king of Egypt, and ye shall say unto him, The LORD God of the Hebrews hath met with us: and now let us go, we beseech thee, three days' journey into the wilderness, that we may sacrifice to the LORD our God."

Exodus 5:3: "And they said, The God of the Hebrews hath met with us: let us go, we pray thee, three days' journey into the desert, and sacrifice unto the LORD our God; lest he fall upon us with pestilence, or with the sword."

Exodus 8:26: "And Moses said, It is not meet so to do; for we shall sacrifice the abomination of the Egyptians to the LORD our God: lo, shall we sacrifice the abomination of the Egyptians before their eyes, and will they not stone us?"

Exodus 8:27: "We will go three days' journey into the wilderness, and sacrifice to the LORD our God, as he shall command us."

Exodus 10:9: "And Moses said, We will go with our young and with our old, with our sons and with our daughters, with our flocks and with our herds will we go; for we must hold a feast unto the LORD."

Exodus 10:25: "And Moses said, Thou must give us also sacrifices and burnt offerings, that we may sacrifice unto the LORD our God."

Exodus 10:26: "Our cattle also shall go with us; there shall not an hoof be left behind; for thereof must we take to serve the LORD our God; and we know not with what we must serve the LORD, until we come thither."

Exodus 12:33: "And the Egyptians were urgent upon the people, that they might send them out of the land in haste; for they said, We be all dead men."

Exodus 14:5: "And it was told the king of Egypt that the people fled: and the heart of Pharaoh and of his servants was turned against the people, and they said, Why have we done this, that we have

let Israel go from serving us?"

Exodus 14:12: "Is not this the word that we did tell thee in Egypt, saying, Let us alone, that we may serve the Egyptians? For it had been better for us to serve the Egyptians, than that we should die in the wilderness."

Exodus 15:24: "And the people murmured against Moses, saying, What shall we drink?"

Exodus 16:3: "And the children of Israel said unto them, Would to God we had died by the hand of the LORD in the land of Egypt, when we sat by the flesh pots, and when we did eat bread to the full; for ye have brought us forth into this wilderness, to kill this whole assembly with hunger."

Exodus 16:7: "And in the morning, then ye shall see the glory of the LORD; for that he heareth your murmurings against the LORD: and what are we, that ye murmur against us?"

Exodus 16:8: "And Moses said, This shall be, when the LORD shall give you in the evening flesh to eat, and in the morning bread to the full; for that the LORD heareth your murmurings which ye murmur against him: and what are we? your murmurings are not against us, but against the LORD."

Exodus 17:2: "Wherefore the people did chide with Moses, and said, Give us water that we may drink. And Moses said unto them, Why chide ye with me? wherefore do ye tempt the LORD?"

Exodus 19:8: "And all the people answered together, and said, All that the LORD hath spoken we will do. And Moses returned the words of the people unto the LORD."

Exodus 20:19: "And they said unto Moses, Speak thou with us, and we will hear: but let not God speak with us, lest we die."

Exodus 24:3: "And Moses came and told the people all the words of the LORD, and all the judgments: and all the people answered with one voice, and said, All the words which the LORD hath said will we do."

Exodus 24:7: "And he took the book of the covenant, and read in the audience of the people: and they said, All that the LORD hath said will we do, and be obedient."

Exodus 24:14: "And he said unto the elders, Tarry ye here for us, until we come again unto you: and, behold, Aaron and Hur are with you: if any man have any matters to do, let him come unto them."

Exodus 32:1: "And when the people saw that Moses delayed to come down out of the mount, the people gathered themselves together unto Aaron, and said unto him, Up, make us gods, which shall go before us; for as for this Moses, the man that brought us up out of the land of Egypt, we wot not what is become of him."

Exodus 32:23: "For they said unto me, Make us gods, which shall go before us: for as for this Moses, the man that brought us up out of the land of Egypt, we wot not what is become of him."

Exodus 33:16: "For wherein shall it be known here that I and thy people have found grace in thy sight? is it not in that thou goest with us? so shall we be separated, I and thy people, from all the people that are upon the face of the earth."

Leviticus 25:20: "And if ye shall say, What shall we eat the seventh year? behold, we shall not sow, nor gather in our increase:"

Numbers 9:7: "And those men said unto him, We are defiled by the dead body of a man: wherefore are we kept back, that we may not offer an offering of the LORD in his appointed season among the children of Israel?"

Numbers 10:29: "And Moses said unto Hobab, the son of Raguel the Midianite, Moses' father in law, We are journeying unto the place of which the LORD said, I will give it you: come thou with us, and we will do thee good: for the LORD hath spoken good concerning Israel."

Numbers 10:31: "And he said, Leave us not, I pray thee; forasmuch as thou knowest how we are to encamp in the wilderness, and thou mayest be to us instead of eyes."

Numbers 10:32: "And it shall be, if thou go with us, yea, it shall be, that what goodness the LORD shall do unto us, the same will we do unto thee."

Numbers 11:5: "We remember the fish, which we did eat in Egypt freely; the cucumbers, and the melons, and the leeks, and the onions, and the garlick:"

Numbers 11:13: "Whence should I have flesh to give unto all this people? for they weep unto me, saying, Give us flesh, that we may eat."

Numbers 11:20: "But even a whole month, until it come out at your nostrils, and it be loathsome unto you: because that ye have despised the LORD which is among you, and have wept before him, saying, Why came we forth out of Egypt?"

Numbers 12:11: "And Aaron said unto Moses, Alas, my lord, I beseech thee, lay not the sin upon us, wherein we have done foolishly, and wherein we have sinned."

Numbers 13:27: "And they told him, and said, We came unto the land whither thou sentest us, and surely it floweth with milk and honey; and this is the fruit of it."

Numbers 13:28: "Nevertheless the people be strong that dwell in the land, and the cities are walled, and very great: and moreover we saw the children of Anak there."

Numbers 13:30: "And Caleb stilled the people before Moses, and said, Let us go up at once, and possess it; for we are well able to overcome it."

Numbers 13:31: "But the men that went up with him said, We be not able to go up against the people; for they are stronger than we."

Numbers 13:32: "And they brought up an evil report of the land which they had searched unto the children of Israel, saying, The land, through which we have gone to search it, is a land that eateth up the inhabitants thereof; and all the people that we saw in it are men of a great stature."

Numbers 13:33: "And there we saw the giants, the sons of Anak, which come of the giants: and we were in our own sight as grasshoppers, and so we were in their sight."

Numbers 14:2: "And all the children of Israel murmured against Moses and against Aaron: and the whole congregation said unto them, Would God that we had died in the land of Egypt! or would God we had died in this wilderness!"

Numbers 14:7: "And they spake unto all the company of the children of Israel, saying, The land, which we passed through to search it, is an exceeding good land."

Numbers 14:40: "And they rose up early in the morning, and gat them up into the top of the mountain, saying, Lo, we be here, and will go up unto the place which the LORD hath promised: for we have sinned."

Numbers 16:12: "And Moses sent to call Dathan and Abiram, the sons of Eliab: which said, We will not come up:"

Numbers 16:14: "Moreover thou hast not brought us into a land that floweth with milk and honey, or given us inheritance of fields and vineyards: wilt thou put out the eyes of these men? we will not come up."

Numbers 17:12: "And the children of Israel spake unto Moses, saying, Behold, we die, we perish, we all perish."

Numbers 17:13: "Whosoever cometh any thing near unto the tabernacle of the LORD shall die: shall we be consumed with dying?"

Numbers 20:3: "And the people chode with Moses, and spake, saying, Would God that we had died when our brethren died before the LORD!"

Numbers 20:4: "And why have ye brought up the congregation of the LORD into this wilderness, that we and our cattle should die there?"

Numbers 20:10: "And Moses and Aaron gathered the congregation together before the rock, and he said unto them, Hear now, ye rebels; must we fetch you water out of this rock?"

Numbers 20:15: "How our fathers went down into Egypt, and we have dwelt in Egypt a long time; and the Egyptians vexed us, and our fathers:"

Numbers 20:16: "And when we cried unto the LORD, he heard our voice, and sent an angel, and hath brought us forth out of Egypt: and, behold, we are in Kadesh, a city in the uttermost of thy border:"

Numbers 20:17: "Let us pass, I pray thee, through thy country: we will not pass through the fields, or through the vineyards, neither will we drink of the water of the wells: we will go by the king's



high way, we will not turn to the right hand nor to the left, until we have passed thy borders."

Numbers 20:19: "And the children of Israel said unto him, We will go by the high way: and if I and my cattle drink of thy water, then I will pay for it: I will only, without doing anything else, go through on my feet."

Numbers 21:7: "Therefore the people came to Moses, and said, We have sinned, for we have spoken against the LORD, and against thee; pray unto the LORD, that he take away the serpents from us. And Moses prayed for the people."

Numbers 21:22: "Let me pass through thy land: we will not turn into the fields, or into the vineyards; we will not drink of the waters of the well: but we will go along by the king's high way, until we be past thy borders."

Numbers 21:30: "We have shot at them; Heshbon is perished even unto Dibon, and we have laid them waste even unto Nophah, which reacheth unto Medeba."

Numbers 22:6: "Come now therefore, I pray thee, curse me this people; for they are too mighty for me: peradventure I shall prevail, that we may smite them, and that I may drive them out of the land: for I wot that he whom thou blessest is blessed, and he whom thou cursest is cursed."

Numbers 31:50: "We have therefore brought an oblation for the LORD, what every man hath gotten, of jewels of gold, chains, and bracelets, rings, earrings, and tablets, to make an atonement for our souls before the LORD."

Numbers 32:5: "Wherefore, said they, if we have found grace in thy sight, let this land be given unto thy servants for a possession, and bring us not over Jordan."

Numbers 32:16: "And they came near unto him, and said, We will build sheepfolds here for our cattle, and cities for our little ones:"

Numbers 32:17: "But we ourselves will go ready armed before the children of Israel, until we have brought them unto their place: and our little ones shall dwell in the fenced cities because of the inhabitants of the land."

Numbers 32:18: "We will not return unto our houses, until the children of Israel have inherited every man his inheritance."

Numbers 32:19: "For we will not inherit with them on yonder side Jordan, or forward; because our inheritance is fallen to us on this side Jordan eastward."

Numbers 32:31: "And the children of Gad and the children of Reuben answered, saying, As the LORD hath said unto thy servants, so will we do."

Numbers 32:32: "We will pass over armed before the LORD into the land of Canaan, that the possession of our inheritance on this side Jordan may be ours."

Deuteronomy 1:19: "And when we departed from Horeb, we went through all that great and terrible wilderness, which ye saw by the way of the mountain of the Amorites, as the LORD our God commanded us; and we came to Kadeshbarnea."

Deuteronomy 1:22: "And ye came near unto me every one of you, and said, We will send men before us, and they shall search us out the land, and bring us word again by what way we must go up, and into what cities we shall come."

Deuteronomy 1:28: "Whither shall we go up? our brethren have discouraged our heart, saying, The people is greater and taller than we; the cities are great and walled up to heaven; and moreover we have seen the sons of the Anakims there."

Deuteronomy 1:41: "Then ye answered and said unto me, We have sinned against the LORD, we will go up and fight, according to all that the LORD our God commanded us. And when ye had girded on every man his weapons of war, ye were ready to go up into the hill."

Deuteronomy 2:1: "Then we turned, and took our journey into the wilderness by the way of the Red sea, as the LORD spake unto me: and we compassed mount Seir many days."

Deuteronomy 2:8: "And when we passed by from our brethren the children of Esau, which dwelt in Seir, through the way of the plain from Elath, and from Eziongaber, we turned and passed by the way of the wilderness of Moab."

Deuteronomy 2:13: "Now rise up, said I, and get you over the brook Zered. And we went over the brook Zered."

Deuteronomy 2:14: "And the space in which we came from Kadeshbarnea, until we were come over the brook Zered, was thirty and eight years; until all the generation of the men of war were wasted out from among the host, as the LORD sware unto them."

Deuteronomy 2:33: "And the LORD our God delivered him before us; and we smote him, and his sons, and all his people."

Deuteronomy 2:34: "And we took all his cities at that time, and utterly destroyed the men, and the women, and the little ones, of every city, we left none to remain:"

Deuteronomy 2:35: "Only the cattle we took for a prey unto ourselves, and the spoil of the cities which we took."

Deuteronomy 3:1: "Then we turned, and went up the way to Bashan: and Og the king of Bashan came out against us, he and all his people, to battle at Edrei."

Deuteronomy 3:3: "So the LORD our God delivered into our hands Og also, the king of Bashan, and all his people: and we smote him until none was left to him remaining."

Deuteronomy 3:4: "And we took all his cities at that time, there was not a city which we took not from them, threescore cities, all the region of Argob, the kingdom of Og in Bashan."

Deuteronomy 3:6: "And we utterly destroyed them, as we did unto Sihon king of Heshbon, utterly destroying the men, women, and children, of every city."

Deuteronomy 3:7: "But all the cattle, and the spoil of the cities, we took for a prey to ourselves."

Deuteronomy 3:8: "And we took at that time out of the hand of the two kings of the Amorites the land that was on this side Jordan, from the river of Arnon unto mount Hermon;"

Deuteronomy 3:12: "And this land, which we possessed at that time, from Aroer, which is by the river Arnon, and half mount Gilead, and the cities thereof, gave I unto the Reubenites and to the Gadites."

Deuteronomy 3:29: "So we abode in the valley over against Bethpeor."

Deuteronomy 4:7: "For what nation is there so great, who hath God so nigh unto them, as the LORD our God is in all things that we call upon him for?"

Deuteronomy 5:24: "And ye said, Behold, the LORD our God hath shewed us his glory and his greatness, and we have heard his voice out of the midst of the fire: we have seen this day that God doth talk with man, and he liveth."

Deuteronomy 5:25: "Now therefore why should we die? for this great fire will consume us: if we hear the voice of the LORD our God any more, then we shall die."

Deuteronomy 5:26: "For who is there of all flesh, that hath heard the voice of the living God speaking out of the midst of the fire, as we have, and lived?"

Deuteronomy 5:27: "Go thou near, and hear all that the LORD our God shall say: and speak thou unto us all that the LORD our God shall speak unto thee; and we will hear it, and do it."

Deuteronomy 6:21: "Then thou shalt say unto thy son, We were Pharaoh's bondmen in Egypt; and the LORD brought us out of Egypt with a mighty hand:"

Deuteronomy 6:25: "And it shall be our righteousness, if we observe to do all these commandments before the LORD our God, as he hath commanded us."

Deuteronomy 12:8: "Ye shall not do after all the things that we do here this day, every man whatsoever is right in his own eyes."

Deuteronomy 18:21: "And if thou say in thine heart, How shall we know the word which the LORD hath not spoken?"

Deuteronomy 26:7: "And when we cried unto the LORD God of our fathers, the LORD heard our voice, and looked on our affliction, and our labour, and our oppression:"

Deuteronomy 29:7: "And when ye came unto this place, Sihon the king of Heshbon, and Og the king of Bashan, came out against us unto battle, and we smote them:"

Deuteronomy 29:8: "And we took their land, and gave it for an inheritance unto the Reubenites, and

to the Gadites, and to the half tribe of Manasseh."

Deuteronomy 29:16: "(For ye know how we have dwelt in the land of Egypt; and how we came through the nations which ye passed by;"

Deuteronomy 29:29: "The secret things belong unto the LORD our God: but those things which are revealed belong unto us and to our children for ever, that we may do all the words of this law."

Deuteronomy 30:12: "It is not in heaven, that thou shouldest say, Who shall go up for us to heaven, and bring it unto us, that we may hear it, and do it?"

Deuteronomy 30:13: "Neither is it beyond the sea, that thou shouldest say, Who shall go over the sea for us, and bring it unto us, that we may hear it, and do it?"

Joshua 1:16: "And they answered Joshua, saying, All that thou commandest us we will do, and whithersoever thou sendest us, we will go."

Joshua 1:17: "According as we hearkened unto Moses in all things, so will we hearken unto thee: only the LORD thy God be with thee, as he was with Moses."

Joshua 2:10: "For we have heard how the LORD dried up the water of the Red sea for you, when ye came out of Egypt; and what ye did unto the two kings of the Amorites, that were on the other side Jordan, Sihon and Og, whom ye utterly destroyed."

Joshua 2:11: "And as soon as we had heard these things, our hearts did melt, neither did there remain any more courage in any man, because of you: for the LORD your God, he is God in heaven above, and in earth beneath."

Joshua 2:14: "And the men answered her, Our life for yours, if ye utter not this our business. And it shall be, when the LORD hath given us the land, that we will deal kindly and truly with thee."

Joshua 2:17: "And the men said unto her, We will be blameless of this thine oath which thou hast made us swear."

Joshua 2:18: "Behold, when we come into the land, thou shalt bind this line of scarlet thread in the window which thou didst let us down by: and thou shalt bring thy father, and thy mother, and thy brethren, and all thy father's household, home unto thee."

Joshua 2:19: "And it shall be, that whosoever shall go out of the doors of thy house into the street, his blood shall be upon his head, and we will be guiltless: and whosoever shall be with thee in the house, his blood shall be on our head, if any hand be upon him."

Joshua 2:20: "And if thou utter this our business, then we will be quit of thine oath which thou hast made us to swear."

Joshua 4:23: "For the LORD your God dried up the waters of Jordan from before you, until ye were passed over, as the LORD your God did to the Red sea, which he dried up from before us, until we were gone over:"

Joshua 5:1: "And it came to pass, when all the kings of the Amorites, which were on the side of Jordan westward, and all the kings of the Canaanites, which were by the sea, heard that the LORD had dried up the waters of Jordan from before the children of Israel, until we were passed over, that their heart melted, neither was there spirit in them any more, because of the children of Israel."

Joshua 6:17: "And the city shall be accursed, even it, and all that are therein, to the LORD: only Rahab the harlot shall live, she and all that are with her in the house, because she hid the messengers that we sent."

Joshua 7:7: "And Joshua said, Alas, O LORD God, wherefore hast thou at all brought this people over Jordan, to deliver us into the hand of the Amorites, to destroy us? would to God we had been content, and dwelt on the other side Jordan!"

Joshua 8:5: "And I, and all the people that are with me, will approach unto the city: and it shall come to pass, when they come out against us, as at the first, that we will flee before them,"

Joshua 8:6: "(For they will come out after us) till we have drawn them from the city; for they will say, They flee before us, as at the first: therefore we will flee before them."

Joshua 9:6: "And they went to Joshua unto the camp at Gilgal, and said unto him, and to the men of Israel, We be come from a far country: now therefore make ye a league with us."

Joshua 9:7: "And the men of Israel said unto the Hivites, Peradventure ye dwell among us; and how shall we make a league with you?"

Joshua 9:8: "And they said unto Joshua, We are thy servants. And Joshua said unto them, Who are ye? and from whence come ye?"

Joshua 9:9: "And they said unto him, From a very far country thy servants are come because of the name of the LORD thy God: for we have heard the fame of him, and all that he did in Egypt,"

Joshua 9:11: "Wherefore our elders and all the inhabitants of our country spake to us, saying, Take victuals with you for the journey, and go to meet them, and say unto them, We are your servants: therefore now make ye a league with us."

Joshua 9:12: "This our bread we took hot for our provision out of our houses on the day we came forth to go unto you; but now, behold, it is dry, and it is mouldy:"

Joshua 9:13: "And these bottles of wine, which we filled, were new; and, behold, they be rent: and these our garments and our shoes are become old by reason of the very long journey."

Joshua 9:19: "But all the princes said unto all the congregation, We have sworn unto them by the LORD God of Israel: now therefore we may not touch them."

Joshua 9:20: "This we will do to them; we will even let them live, lest wrath be upon us, because of the oath which we sware unto them."

Joshua 9:22: "And Joshua called for them, and he spake unto them, saying, Wherefore have ye beguiled us, saying, We are very far from you; when ye dwell among us?"

Joshua 9:24: "And they answered Joshua, and said, Because it was certainly told thy servants, how that the LORD thy God commanded his servant Moses to give you all the land, and to destroy all the inhabitants of the land from before you, therefore we were sore afraid of our lives because of you, and have done this thing."

Joshua 9:25: "And now, behold, we are in thine hand: as it seemeth good and right unto thee to do unto us, do."

Joshua 10:4: "Come up unto me, and help me, that we may smite Gibeon: for it hath made peace with Joshua and with the children of Israel."

Joshua 22:17: "Is the iniquity of Peor too little for us, from which we are not cleansed until this day, although there was a plague in the congregation of the LORD,"

Joshua 22:23: "That we have built us an altar to turn from following the LORD, or if to offer thereon burnt offering or meat offering, or if to offer peace offerings thereon, let the LORD himself require it;"

Joshua 22:24: "And if we have not rather done it for fear of this thing, saying, In time to come your children might speak unto our children, saying, What have ye to do with the LORD God of Israel?"

Joshua 22:26: "Therefore we said, Let us now prepare to build us an altar, not for burnt offering, nor for sacrifice:"

Joshua 22:27: "But that it may be a witness between us, and you, and our generations after us, that we might do the service of the LORD before him with our burnt offerings, and with our sacrifices, and with our peace offerings; that your children may not say to our children in time to come, Ye have no part in the LORD."

Joshua 22:28: "Therefore said we, that it shall be, when they should so say to us or to our generations in time to come, that we may say again, Behold the pattern of the altar of the LORD, which our fathers made, not for burnt offerings, nor for sacrifices; but it is a witness between us and you."

Joshua 22:29: "God forbid that we should rebel against the LORD, and turn this day from following the LORD, to build an altar for burnt offerings, for meat offerings, or for sacrifices, beside the altar of the LORD our God that is before his tabernacle."

Joshua 22:31: "And Phinehas the son of Eleazar the priest said unto the children of Reuben, and to the children of Gad, and to the children of Manasseh, This day we perceive that the LORD is among us, because ye have not committed this trespass against the LORD: now ye have delivered the

children of Israel out of the hand of the LORD."

Joshua 24:15: "And if it seem evil unto you to serve the LORD, choose you this day whom ye will serve; whether the gods which your fathers served that were on the other side of the flood, or the gods of the Amorites, in whose land ye dwell: but as for me and my house, we will serve the LORD."

Joshua 24:16: "And the people answered and said, God forbid that we should forsake the LORD, to serve other gods;"

Joshua 24:17: "For the LORD our God, he it is that brought us up and our fathers out of the land of Egypt, from the house of bondage, and which did those great signs in our sight, and preserved us in all the way wherein we went, and among all the people through whom we passed:"

Joshua 24:18: "And the LORD drave out from before us all the people, even the Amorites which dwelt in the land: therefore will we also serve the LORD; for he is our God."

Joshua 24:21: "And the people said unto Joshua, Nay; but we will serve the LORD."

Joshua 24:22: "And Joshua said unto the people, Ye are witnesses against yourselves that ye have chosen you the LORD, to serve him. And they said, We are witnesses."

Joshua 24:24: "And the people said unto Joshua, The LORD our God will we serve, and his voice will we obey."

Judges 1:3: "And Judah said unto Simeon his brother, Come up with me into my lot, that we may fight against the Canaanites; and I likewise will go with thee into thy lot. So Simeon went with him."

Judges 1:24: "And the spies saw a man come forth out of the city, and they said unto him, Shew us, we pray thee, the entrance into the city, and we will shew thee mercy."

Judges 8:6: "And the princes of Succoth said, Are the hands of Zebah and Zalmunna now in thine hand, that we should give bread unto thine army?"

Judges 8:15: "And he came unto the men of Succoth, and said, Behold Zebah and Zalmunna, with whom ye did upbraid me, saying, Are the hands of Zebah and Zalmunna now in thine hand, that we should give bread unto thy men that are weary?"

Judges 8:25: "And they answered, We will willingly give them. And they spread a garment, and did cast therein every man the earrings of his prey."

Judges 9:28: "And Gaal the son of Ebed said, Who is Abimelech, and who is Shechem, that we should serve him? is not he the son of Jerubbaal? and Zebul his officer? serve the men of Hamor the father of Shechem: for why should we serve him?"

Judges 9:38: "Then said Zebul unto him, Where is now thy mouth, wherewith thou saidst, Who is Abimelech, that we should serve him? is not this the people that thou hast despised? go out, I pray now, and fight with them."

Judges 10:10: "And the children of Israel cried unto the LORD, saying, We have sinned against thee, both because we have forsaken our God, and also served Baalim."

Judges 10:15: "And the children of Israel said unto the LORD, We have sinned: do thou unto us whatsoever seemeth good unto thee; deliver us only, we pray thee, this day."

Judges 11:6: "And they said unto Jephthah, Come, and be our captain, that we may fight with the children of Ammon."

Judges 11:8: "And the elders of Gilead said unto Jephthah, Therefore we turn again to thee now, that thou mayest go with us, and fight against the children of Ammon, and be our head over all the inhabitants of Gilead."

Judges 11:10: "And the elders of Gilead said unto Jephthah, The LORD be witness between us, if we do not so according to thy words."

Judges 11:19: "And Israel sent messengers unto Sihon king of the Amorites, the king of Heshbon; and Israel said unto him, Let us pass, we pray thee, through thy land into my place."

Judges 11:24: "Wilt not thou possess that which Chemosh thy god giveth thee to possess? So whomsoever the LORD our God shall drive out from before us, them will we possess."

Judges 12:1: "And the men of Ephraim gathered themselves together, and went northward, and said unto Jephthah, Wherefore passedst thou over to fight against the children of Ammon, and didst not call us to go with thee? we will burn thine house upon thee with fire."

Judges 13:8: "Then Manoah intreated the LORD, and said, O my Lord, let the man of God which thou didst send come again unto us, and teach us what we shall do unto the child that shall be born."

Judges 13:12: "And Manoah said, Now let thy words come to pass. How shall we order the child, and how shall we do unto him?"

Judges 13:15: "And Manoah said unto the angel of the LORD, I pray thee, let us detain thee, until we shall have made ready a kid for thee."

Judges 13:17: "And Manoah said unto the angel of the LORD, What is thy name, that when thy sayings come to pass we may do thee honour?"

Judges 13:22: "And Manoah said unto his wife, We shall surely die, because we have seen God."

Judges 14:13: "But if ye cannot declare it me, then shall ye give me thirty sheets and thirty change of garments. And they said unto him, Put forth thy riddle, that we may hear it."

Judges 14:15: "And it came to pass on the seventh day, that they said unto Samson's wife, Entice thy husband, that he may declare unto us the riddle, lest we burn thee and thy father's house with fire: have ye called us to take that we have? is it not so?"

Judges 15:10: "And the men of Judah said, Why are ye come up against us? And they answered, To bind Samson are we come up, to do to him as he hath done to us."

Judges 15:12: "And they said unto him, We are come down to bind thee, that we may deliver thee into the hand of the Philistines. And Samson said unto them, Swear unto me, that ye will not fall upon me yourselves."

Judges 15:13: "And they spake unto him, saying, No; but we will bind thee fast, and deliver thee into their hand: but surely we will not kill thee. And they bound him with two new cords, and brought him up from the rock."

Judges 16:2: "And it was told the Gazites, saying, Samson is come hither. And they compassed him in, and laid wait for him all night in the gate of the city, and were quiet all the night, saying, In the morning, when it is day, we shall kill him."

Judges 16:5: "And the lords of the Philistines came up unto her, and said unto her, Entice him, and see wherein his great strength lieth, and by what means we may prevail against him, that we may bind him to afflict him; and we will give thee every one of us eleven hundred pieces of silver."

Judges 18:5: "And they said unto him, Ask counsel, we pray thee, of God, that we may know whether our way which we go shall be prosperous."

Judges 18:9: "And they said, Arise, that we may go up against them: for we have seen the land, and, behold, it is very good: and are ye still? be not slothful to go, and to enter to possess the land."

Judges 19:12: "And his master said unto him, We will not turn aside hither into the city of a stranger, that is not of the children of Israel; we will pass over to Gibeah."

Judges 19:18: "And he said unto him, We are passing from Bethlehemjudah toward the side of mount Ephraim; from thence am I: and I went to Bethlehemjudah, but I am now going to the house of the LORD; and there is no man that receiveth me to house."

Judges 19:22: "Now as they were making their hearts merry, behold, the men of the city, certain sons of Belial, beset the house round about, and beat at the door, and spake to the master of the house, the old man, saying, Bring forth the man that came into thine house, that we may know him."

Judges 20:8: "And all the people arose as one man, saying, We will not any of us go to his tent, neither will we any of us turn into his house."

Judges 20:9: "But now this shall be the thing which we will do to Gibeah; we will go up by lot against it;"

Judges 20:10: "And we will take ten men of an hundred throughout all the tribes of Israel, and an hundred of a thousand, and a thousand out of ten thousand, to fetch victual for the people, that they may do, when they come to Gibeah of Benjamin, according to all the folly that they have wrought

in Israel."

Judges 20:13: "Now therefore deliver us the men, the children of Belial, which are in Gibeah, that we may put them to death, and put away evil from Israel. But the children of Benjamin would not hearken to the voice of their brethren the children of Israel."

Judges 21:7: "How shall we do for wives for them that remain, seeing we have sworn by the LORD that we will not give them of our daughters to wives?"

Judges 21:16: "Then the elders of the congregation said, How shall we do for wives for them that remain, seeing the women are destroyed out of Benjamin?"

Judges 21:18: "Howbeit we may not give them wives of our daughters: for the children of Israel have sworn, saying, Cursed be he that giveth a wife to Benjamin."

Judges 21:22: "And it shall be, when their fathers or their brethren come unto us to complain, that we will say unto them, Be favourable unto them for our sakes: because we reserved not to each man his wife in the war: for ye did not give unto them at this time, that ye should be guilty."

Ruth 1:10: "And they said unto her, Surely we will return with thee unto thy people."

Ruth 4:11: "And all the people that were in the gate, and the elders, said, We are witnesses. The LORD make the woman that is come into thine house like Rachel and like Leah, which two did build the house of Israel: and do thou worthily in Ephrathah, and be famous in Bethlehem:"

1 Samuel 5:8: "They sent therefore and gathered all the lords of the Philistines unto them, and said, What shall we do with the ark of the God of Israel? And they answered, Let the ark of the God of Israel be carried about unto Gath. And they carried the ark of the God of Israel about thither."

1 Samuel 6:2: "And the Philistines called for the priests and the diviners, saying, What shall we do to the ark of the LORD? tell us wherewith we shall send it to his place."

1 Samuel 6:4: "Then said they, What shall be the trespass offering which we shall return to him? They answered, Five golden emerods, and five golden mice, according to the number of the lords of the Philistines: for one plague was on you all, and on your lords."

1 Samuel 6:9: "And see, if it goeth up by the way of his own coast to Bethshemesh, then he hath done us this great evil: but if not, then we shall know that it is not his hand that smote us: it was a chance that happened to us."

1 Samuel 7:6: "And they gathered together to Mizpeh, and drew water, and poured it out before the LORD, and fasted on that day, and said there, We have sinned against the LORD. And Samuel judged the children of Israel in Mizpeh."

1 Samuel 8:19: "Nevertheless the people refused to obey the voice of Samuel; and they said, Nay; but we will have a king over us;"

1 Samuel 8:20: "That we also may be like all the nations; and that our king may judge us, and go out before us, and fight our battles."

1 Samuel 9:6: "And he said unto him, Behold now, there is in this city a man of God, and he is an honourable man; all that he saith cometh surely to pass: now let us go thither; peradventure he can shew us our way that we should go."

1 Samuel 9:7: "Then said Saul to his servant, But, behold, if we go, what shall we bring the man? for the bread is spent in our vessels, and there is not a present to bring to the man of God: what have we?"

1 Samuel 10:14: "And Saul's uncle said unto him and to his servant, Whither went ye? And he said, To seek the asses: and when we saw that they were no where, we came to Samuel."

1 Samuel 11:1: "Then Nahash the Ammonite came up, and encamped against Jabeshgilead: and all the men of Jabesh said unto Nahash, Make a covenant with us, and we will serve thee."

1 Samuel 11:3: "And the elders of Jabesh said unto him, Give us seven days' respite, that we may send messengers unto all the coasts of Israel: and then, if there be no man to save us, we will come out to thee."

1 Samuel 11:10: "Therefore the men of Jabesh said, To morrow we will come out unto you, and ye shall do with us all that seemeth good unto you."

1 Samuel 11:12: "And the people said unto Samuel, Who is he that said, Shall Saul reign over us? bring the men, that we may put them to death."

1 Samuel 12:10: "And they cried unto the LORD, and said, We have sinned, because we have forsaken the LORD, and have served Baalim and Ashtaroth: but now deliver us out of the hand of our enemies, and we will serve thee."

1 Samuel 12:19: "And all the people said unto Samuel, Pray for thy servants unto the LORD thy God, that we die not: for we have added unto all our sins this evil, to ask us a king."

1 Samuel 14:8: "Then said Jonathan, Behold, we will pass over unto these men, and we will discover ourselves unto them."

1 Samuel 14:9: "If they say thus unto us, Tarry until we come to you; then we will stand still in our place, and will not go up unto them."

1 Samuel 14:10: "But if they say thus, Come up unto us; then we will go up: for the LORD hath delivered them into our hand: and this shall be a sign unto us."

1 Samuel 14:12: "And the men of the garrison answered Jonathan and his armourbearer, and said, Come up to us, and we will shew you a thing. And Jonathan said unto his armourbearer, Come up after me: for the LORD hath delivered them into the hand of Israel."

1 Samuel 15:15: "And Saul said, They have brought them from the Amalekites: for the people spared the best of the sheep and of the oxen, to sacrifice unto the LORD thy God; and the rest we have utterly destroyed."

1 Samuel 16:11: "And Samuel said unto Jesse, Are here all thy children? And he said, There remaineth yet the youngest, and, behold, he keepeth the sheep. And Samuel said unto Jesse, Send and fetch him: for we will not sit down till he come hither."

1 Samuel 17:9: "If he be able to fight with me, and to kill me, then will we be your servants: but if I prevail against him, and kill him, then shall ye be our servants, and serve us."

1 Samuel 17:10: "And the Philistine said, I defy the armies of Israel this day; give me a man, that we may fight together."

1 Samuel 20:42: "And Jonathan said to David, Go in peace, forasmuch as we have sworn both of us in the name of the LORD, saying, The LORD be between me and thee, and between my seed and thy seed for ever. And he arose and departed: and Jonathan went into the city."

1 Samuel 23:3: "And David's men said unto him, Behold, we be afraid here in Judah: how much more then if we come to Keilah against the armies of the Philistines?"

1 Samuel 25:7: "And now I have heard that thou hast shearers: now thy shepherds which were with us, we hurt them not, neither was there ought missing unto them, all the while they were in Carmel."

1 Samuel 25:8: "Ask thy young men, and they will shew thee. Wherefore let the young men find favour in thine eyes: for we come in a good day: give, I pray thee, whatsoever cometh to thine hand unto thy servants, and to thy son David."

1 Samuel 25:15: "But the men were very good unto us, and we were not hurt, neither missed we any thing, as long as we were conversant with them, when we were in the fields:"

1 Samuel 25:16: "They were a wall unto us both by night and day, all the while we were with them keeping the sheep."

1 Samuel 30:14: "We made an invasion upon the south of the Cherethites, and upon the coast which belongeth to Judah, and upon the south of Caleb; and we burned Ziklag with fire."

1 Samuel 30:22: "Then answered all the wicked men and men of Belial, of those that went with David, and said, Because they went not with us, we will not give them ought of the spoil that we have recovered, save to every man his wife and his children, that they may lead them away, and depart."

2 Samuel 5:1: "Then came all the tribes of Israel to David unto Hebron, and spake, saying, Behold, we are thy bone and thy flesh."

2 Samuel 7:22: "Wherefore thou art great, O LORD God: for there is none like thee, neither is there



any God beside thee, according to all that we have heard with our ears."

2 Samuel 11:23: "And the messenger said unto David, Surely the men prevailed against us, and came out unto us into the field, and we were upon them even unto the entering of the gate."

2 Samuel 12:18: "And it came to pass on the seventh day, that the child died. And the servants of David feared to tell him that the child was dead: for they said, Behold, while the child was yet alive, we spake unto him, and he would not hearken unto our voice: how will he then vex himself, if we tell him that the child is dead?"

2 Samuel 13:25: "And the king said to Absalom, Nay, my son, let us not all now go, lest we be chargeable unto thee. And he pressed him: howbeit he would not go, but blessed him."

2 Samuel 14:7: "And, behold, the whole family is risen against thine handmaid, and they said, Deliver him that smote his brother, that we may kill him, for the life of his brother whom he slew; and we will destroy the heir also: and so they shall quench my coal which is left, and shall not leave to my husband neither name nor remainder upon the earth."

2 Samuel 14:14: "For we must needs die, and are as water spilt on the ground, which cannot be gathered up again; neither doth God respect any person: yet doth he devise means, that his banished be not expelled from him."

2 Samuel 15:14: "And David said unto all his servants that were with him at Jerusalem, Arise, and let us flee; for we shall not else escape from Absalom: make speed to depart, lest he overtake us suddenly, and bring evil upon us, and smite the city with the edge of the sword."

2 Samuel 16:20: "Then said Absalom to Ahithophel, Give counsel among you what we shall do."

2 Samuel 17:6: "And when Hushai was come to Absalom, Absalom spake unto him, saying, Ahithophel hath spoken after this manner: shall we do after his saying? if not; speak thou."

2 Samuel 17:12: "So shall we come upon him in some place where he shall be found, and we will light upon him as the dew falleth on the ground: and of him and of all the men that are with him there shall not be left so much as one."

2 Samuel 17:13: "Moreover, if he be gotten into a city, then shall all Israel bring ropes to that city, and we will draw it into the river, until there be not one small stone found there."

2 Samuel 18:3: "But the people answered, Thou shalt not go forth: for if we flee away, they will not care for us; neither if half of us die, will they care for us: but now thou art worth ten thousand of us: therefore now it is better that thou succour us out of the city."

2 Samuel 19:6: "In that thou lovest thine enemies, and hatest thy friends. For thou hast declared this day, that thou regardest neither princes nor servants: for this day I perceive, that if Absalom had lived, and all we had died this day, then it had pleased thee well."

2 Samuel 19:10: "And Absalom, whom we anointed over us, is dead in battle. Now therefore why speak ye not a word of bringing the king back?"

2 Samuel 19:42: "And all the men of Judah answered the men of Israel, Because the king is near of kin to us: wherefore then be ye angry for this matter? have we eaten at all of the king's cost? or hath he given us any gift?"

2 Samuel 19:43: "And the men of Israel answered the men of Judah, and said, We have ten parts in the king, and we have also more right in David than ye: why then did ye despise us, that our advice should not be first had in bringing back our king? And the words of the men of Judah were fiercer than the words of the men of Israel."

2 Samuel 20:1: "And there happened to be there a man of Belial, whose name was Sheba, the son of Bichri, a Benjamite: and he blew a trumpet, and said, We have no part in David, neither have we inheritance in the son of Jesse: every man to his tents, O Israel."

2 Samuel 21:4: "And the Gibeonites said unto him, We will have no silver nor gold of Saul, nor of his house; neither for us shalt thou kill any man in Israel. And he said, What ye shall say, that will I do for you."

2 Samuel 21:5: "And they answered the king, The man that consumed us, and that devised against us that we should be destroyed from remaining in any of the coasts of Israel,"

2 Samuel 21:6: "Let seven men of his sons be delivered unto us, and we will hang them up unto the LORD in Gibeah of Saul, whom the LORD did choose. And the king said, I will give them."

1 Kings 3:18: "And it came to pass the third day after that I was delivered, that this woman was delivered also: and we were together; there was no stranger with us in the house, save we two in the house."

1 Kings 8:47: "Yet if they shall bethink themselves in the land whither they were carried captives, and repent, and make supplication unto thee in the land of them that carried them captives, saying, We have sinned, and have done perversely, we have committed wickedness;"

1 Kings 12:4: "Thy father made our yoke grievous: now therefore make thou the grievous service of thy father, and his heavy yoke which he put upon us, lighter, and we will serve thee."

1 Kings 12:9: "And he said unto them, What counsel give ye that we may answer this people, who have spoken to me, saying, Make the yoke which thy father did put upon us lighter?"

1 Kings 12:16: "So when all Israel saw that the king hearkened not unto them, the people answered the king, saying, What portion have we in David? neither have we inheritance in the son of Jesse: to your tents, O Israel: now see to thine own house, David. So Israel departed unto their tents."

1 Kings 17:12: "And she said, As the LORD thy God liveth, I have not a cake, but an handful of meal in a barrel, and a little oil in a cruse: and, behold, I am gathering two sticks, that I may go in and dress it for me and my son, that we may eat it, and die."

1 Kings 18:5: "And Ahab said unto Obadiah, Go into the land, unto all fountains of water, and unto all brooks: peradventure we may find grass to save the horses and mules alive, that we lose not all the beasts."

1 Kings 20:23: "And the servants of the king of Syria said unto him, Their gods are gods of the hills; therefore they were stronger than we; but let us fight against them in the plain, and surely we shall be stronger than they."

1 Kings 20:25: "And number thee an army, like the army that thou hast lost, horse for horse, and chariot for chariot: and we will fight against them in the plain, and surely we shall be stronger than they. And he hearkened unto their voice, and did so."

1 Kings 20:31: "And his servants said unto him, Behold now, we have heard that the kings of the house of Israel are merciful kings: let us, I pray thee, put sackcloth on our loins, and ropes upon our heads, and go out to the king of Israel: peradventure he will save thy life."

1 Kings 22:3: "And the king of Israel said unto his servants, Know ye that Ramoth in Gilead is ours, and we be still, and take it not out of the hand of the king of Syria?"

1 Kings 22:7: "And Jehoshaphat said, Is there not here a prophet of the LORD besides, that we might enquire of him?"

1 Kings 22:8: "And the king of Israel said unto Jehoshaphat, There is yet one man, Micaiah the son of Imlah, by whom we may enquire of the LORD: but I hate him; for he doth not prophesy good concerning me, but evil. And Jehoshaphat said, Let not the king say so."

1 Kings 22:15: "So he came to the king. And the king said unto him, Micaiah, shall we go against Ramothgilead to battle, or shall we forbear? And he answered him, Go, and prosper: for the LORD shall deliver it into the hand of the king."

2 Kings 2:16: "And they said unto him, Behold now, there be with thy servants fifty strong men; let them go, we pray thee, and seek thy master: lest peradventure the Spirit of the LORD hath taken him up, and cast him upon some mountain, or into some valley. And he said, Ye shall not send."

2 Kings 3:8: "And he said, Which way shall we go up? And he answered, The way through the wilderness of Edom."

2 Kings 3:11: "But Jehoshaphat said, Is there not here a prophet of the LORD, that we may enquire of the LORD by him? And one of the king of Israel's servants answered and said, Here is Elisha the son of Shaphat, which poured water on the hands of Elijah."

2 Kings 6:1: "And the sons of the prophets said unto Elisha, Behold now, the place where we dwell with thee is too strait for us."

2 Kings 6:2: "Let us go, we pray thee, unto Jordan, and take thence every man a beam, and let us make us a place there, where we may dwell. And he answered, Go ye."

2 Kings 6:15: "And when the servant of the man of God was risen early, and gone forth, behold, an host compassed the city both with horses and chariots. And his servant said unto him, Alas, my master! how shall we do?"

2 Kings 6:28: "And the king said unto her, What aileth thee? And she answered, This woman said unto me, Give thy son, that we may eat him to day, and we will eat my son to morrow."

2 Kings 6:29: "So we boiled my son, and did eat him: and I said unto her on the next day, Give thy son, that we may eat him: and she hath hid her son."

2 Kings 7:3: "And there were four leprous men at the entering in of the gate: and they said one to another, Why sit we here until we die?"

2 Kings 7:4: "If we say, We will enter into the city, then the famine is in the city, and we shall die there: and if we sit still here, we die also. Now therefore come, and let us fall unto the host of the Syrians: if they save us alive, we shall live; and if they kill us, we shall but die."

2 Kings 7:9: "Then they said one to another, We do not well: this day is a day of good tidings, and we hold our peace: if we tarry till the morning light, some mischief will come upon us: now therefore come, that we may go and tell the king's household."

2 Kings 7:10: "So they came and called unto the porter of the city: and they told them, saying, We came to the camp of the Syrians, and, behold, there was no man there, neither voice of man, but horses tied, and asses tied, and the tents as they were."

2 Kings 7:12: "And the king arose in the night, and said unto his servants, I will now shew you what the Syrians have done to us. They know that we be hungry; therefore are they gone out of the camp to hide themselves in the field, saying, When they come out of the city, we shall catch them alive, and get into the city."

2 Kings 10:4: "But they were exceedingly afraid, and said, Behold, two kings stood not before him: how then shall we stand?"

2 Kings 10:5: "And he that was over the house, and he that was over the city, the elders also, and the bringers up of the children, sent to Jehu, saying, We are thy servants, and will do all that thou shalt bid us; we will not make any king: do thou that which is good in thine eyes."

2 Kings 10:13: "Jehu met with the brethren of Ahaziah king of Judah, and said, Who are ye? And they answered, We are the brethren of Ahaziah; and we go down to salute the children of the king and the children of the queen."

2 Kings 18:22: "But if ye say unto me, We trust in the LORD our God: is not that he, whose high places and whose altars Hezekiah hath taken away, and hath said to Judah and Jerusalem, Ye shall worship before this altar in Jerusalem?"

2 Kings 18:26: "Then said Eliakim the son of Hilkiah, and Shebna, and Joah, unto Rabshakeh, Speak, I pray thee, to thy servants in the Syrian language; for we understand it: and talk not with us in the Jews' language in the ears of the people that are on the wall."

1 Chronicles 11:1: "Then all Israel gathered themselves to David unto Hebron, saying, Behold, we are thy bone and thy flesh."

1 Chronicles 12:18: "Then the spirit came upon Amasai, who was chief of the captains, and he said, Thine are we, David, and on thy side, thou son of Jesse: peace, peace be unto thee, and peace be to thine helpers; for thy God helpeth thee. Then David received them, and made them captains of the band."

1 Chronicles 13:3: "And let us bring again the ark of our God to us: for we enquired not at it in the days of Saul."

1 Chronicles 15:13: "For because ye did it not at the first, the LORD our God made a breach upon us, for that we sought him not after the due order."

1 Chronicles 16:35: "And say ye, Save us, O God of our salvation, and gather us together, and deliver us from the heathen, that we may give thanks to thy holy name, and glory in thy praise."

1 Chronicles 17:20: "O LORD, there is none like thee, neither is there any God beside thee, according to all that we have heard with our ears."

1 Chronicles 29:13: "Now therefore, our God, we thank thee, and praise thy glorious name."

1 Chronicles 29:14: "But who am I, and what is my people, that we should be able to offer so willingly after this sort? for all things come of thee, and of thine own have we given thee."

1 Chronicles 29:15: "For we are strangers before thee, and sojourners, as were all our fathers: our days on the earth are as a shadow, and there is none abiding."

1 Chronicles 29:16: "O LORD our God, all this store that we have prepared to build thee an house for thine holy name cometh of thine hand, and is all thine own."

2 Chronicles 2:16: "And we will cut wood out of Lebanon, as much as thou shalt need: and we will bring it to thee in floats by sea to Joppa; and thou shalt carry it up to Jerusalem."

2 Chronicles 6:37: "Yet if they bethink themselves in the land whither they are carried captive, and turn and pray unto thee in the land of their captivity, saying, We have sinned, we have done amiss, and have dealt wickedly;"

2 Chronicles 10:4: "Thy father made our yoke grievous: now therefore ease thou somewhat the grievous servitude of thy father, and his heavy yoke that he put upon us, and we will serve thee."

2 Chronicles 10:9: "And he said unto them, What advice give ye that we may return answer to this people, which have spoken to me, saying, Ease somewhat the yoke that thy father did put upon us?"

2 Chronicles 10:16: "And when all Israel saw that the king would not hearken unto them, the people answered the king, saying, What portion have we in David? and we have none inheritance in the son of Jesse: every man to your tents, O Israel: and now, David, see to thine own house. So all Israel went to their tents."

2 Chronicles 13:10: "But as for us, the LORD is our God, and we have not forsaken him; and the priests, which minister unto the LORD, are the sons of Aaron, and the Levites wait upon their business:"

2 Chronicles 13:11: "And they burn unto the LORD every morning and every evening burnt sacrifices and sweet incense: the shewbread also set they in order upon the pure table; and the candlestick of gold with the lamps thereof, to burn every evening: for we keep the charge of the LORD our God; but ye have forsaken him."

2 Chronicles 14:7: "Therefore he said unto Judah, Let us build these cities, and make about them walls, and towers, gates, and bars, while the land is yet before us; because we have sought the LORD our God, we have sought him, and he hath given us rest on every side. So they built and prospered."

2 Chronicles 14:11: "And Asa cried unto the LORD his God, and said, LORD, it is nothing with thee to help, whether with many, or with them that have no power: help us, O LORD our God; for we rest on thee, and in thy name we go against this multitude. O LORD, thou art our God; let no man prevail against thee."

2 Chronicles 18:3: "And Ahab king of Israel said unto Jehoshaphat king of Judah, Wilt thou go with me to Ramothgilead? And he answered him, I am as thou art, and my people as thy people; and we will be with thee in the war."

2 Chronicles 18:5: "Therefore the king of Israel gathered together of prophets four hundred men, and said unto them, Shall we go to Ramothgilead to battle, or shall I forbear? And they said, Go up; for God will deliver it into the king's hand."

2 Chronicles 18:6: "But Jehoshaphat said, Is there not here a prophet of the LORD besides, that we might enquire of him?"

2 Chronicles 18:7: "And the king of Israel said unto Jehoshaphat, There is yet one man, by whom we may enquire of the LORD: but I hate him; for he never prophesied good unto me, but always evil: the same is Micaiah the son of Imla. And Jehoshaphat said, Let not the king say so."

2 Chronicles 18:14: "And when he was come to the king, the king said unto him, Micaiah, shall we go to Ramothgilead to battle, or shall I forbear? And he said, Go ye up, and prosper, and they shall

be delivered into your hand."

2 Chronicles 20:9: "If, when evil cometh upon us, as the sword, judgment, or pestilence, or famine, we stand before this house, and in thy presence, (for thy name is in this house,) and cry unto thee in our affliction, then thou wilt hear and help."

2 Chronicles 20:12: "O our God, wilt thou not judge them? for we have no might against this great company that cometh against us; neither know we what to do: but our eyes are upon thee."

2 Chronicles 25:9: "And Amaziah said to the man of God, But what shall we do for the hundred talents which I have given to the army of Israel? And the man of God answered, The LORD is able to give thee much more than this."

2 Chronicles 28:13: "And said unto them, Ye shall not bring in the captives hither: for whereas we have offended against the LORD already, ye intend to add more to our sins and to our trespass: for our trespass is great, and there is fierce wrath against Israel."

2 Chronicles 29:18: "Then they went in to Hezekiah the king, and said, We have cleansed all the house of the LORD, and the altar of burnt offering, with all the vessels thereof, and the shewbread table, with all the vessels thereof."

2 Chronicles 29:19: "Moreover all the vessels, which king Ahaz in his reign did cast away in his transgression, have we prepared and sanctified, and, behold, they are before the altar of the LORD."

2 Chronicles 31:10: "And Azariah the chief priest of the house of Zadok answered him, and said, Since the people began to bring the offerings into the house of the LORD, we have had enough to eat, and have left plenty: for the LORD hath blessed his people; and that which is left is this great store."

Ezra 4:2: "Then they came to Zerubbabel, and to the chief of the fathers, and said unto them, Let us build with you: for we seek your God, as ye do; and we do sacrifice unto him since the days of Esarhaddon king of Assur, which brought us up hither."

Ezra 4:3: "But Zerubbabel, and Jeshua, and the rest of the chief of the fathers of Israel, said unto them, Ye have nothing to do with us to build an house unto our God; but we ourselves together will build unto the LORD God of Israel, as king Cyrus the king of Persia hath commanded us."

Ezra 4:14: "Now because we have maintenance from the king's palace, and it was not meet for us to see the king's dishonour, therefore have we sent and certified the king;"

Ezra 4:16: "We certify the king that, if this city be builded again, and the walls thereof set up, by this means thou shalt have no portion on this side the river."

Ezra 5:4: "Then said we unto them after this manner, What are the names of the men that make this building?"

Ezra 5:8: "Be it known unto the king, that we went into the province of Judea, to the house of the great God, which is builded with great stones, and timber is laid in the walls, and this work goeth fast on, and prospereth in their hands."

Ezra 5:9: "Then asked we those elders, and said unto them thus, Who commanded you to build this house, and to make up these walls?"

Ezra 5:10: "We asked their names also, to certify thee, that we might write the names of the men that were the chief of them."

Ezra 5:11: "And thus they returned us answer, saying, We are the servants of the God of heaven and earth, and build the house that was builded these many years ago, which a great king of Israel builded and set up."

Ezra 7:24: "Also we certify you, that touching any of the priests and Levites, singers, porters, Nethinims, or ministers of this house of God, it shall not be lawful to impose toll, tribute, or custom, upon them."

Ezra 8:15: "And I gathered them together to the river that runneth to Ahava; and there abode we in tents three days: and I viewed the people, and the priests, and found there none of the sons of Levi."

Ezra 8:21: "Then I proclaimed a fast there, at the river of Ahava, that we might afflict ourselves before our God, to seek of him a right way for us, and for our little ones, and for all our substance."

Ezra 8:22: "For I was ashamed to require of the king a band of soldiers and horsemen to help us against the enemy in the way: because we had spoken unto the king, saying, The hand of our God is upon all them for good that seek him; but his power and his wrath is against all them that forsake him."

Ezra 8:23: "So we fasted and besought our God for this: and he was intreated of us."

Ezra 8:31: "Then we departed from the river of Ahava on the twelfth day of the first month, to go unto Jerusalem: and the hand of our God was upon us, and he delivered us from the hand of the enemy, and of such as lay in wait by the way."

Ezra 8:32: "And we came to Jerusalem, and abode there three days."

Ezra 9:7: "Since the days of our fathers have we been in a great trespass unto this day; and for our iniquities have we, our kings, and our priests, been delivered into the hand of the kings of the lands, to the sword, to captivity, and to a spoil, and to confusion of face, as it is this day."

Ezra 9:9: "For we were bondmen; yet our God hath not forsaken us in our bondage, but hath extended mercy unto us in the sight of the kings of Persia, to give us a reviving, to set up the house of our God, and to repair the desolations thereof, and to give us a wall in Judah and in Jerusalem."

Ezra 9:10: "And now, O our God, what shall we say after this? for we have forsaken thy commandments,"

Ezra 9:14: "Should we again break thy commandments, and join in affinity with the people of these abominations? wouldest not thou be angry with us till thou hadst consumed us, so that there should be no remnant nor escaping?"

Ezra 9:15: "O LORD God of Israel, thou art righteous: for we remain yet escaped, as it is this day: behold, we are before thee in our trespasses: for we cannot stand before thee because of this."

Ezra 10:2: "And Shechaniah the son of Jehiel, one of the sons of Elam, answered and said unto Ezra, We have trespassed against our God, and have taken strange wives of the people of the land: yet now there is hope in Israel concerning this thing."

Ezra 10:4: "Arise; for this matter belongeth unto thee: we also will be with thee: be of good courage, and do it."

Ezra 10:12: "Then all the congregation answered and said with a loud voice, As thou hast said, so must we do."

Ezra 10:13: "But the people are many, and it is a time of much rain, and we are not able to stand without, neither is this a work of one day or two: for we are many that have transgressed in this thing."

Nehemiah 1:6: "Let thine ear now be attentive, and thine eyes open, that thou mayest hear the prayer of thy servant, which I pray before thee now, day and night, for the children of Israel thy servants, and confess the sins of the children of Israel, which we have sinned against thee: both I and my father's house have sinned."

Nehemiah 1:7: "We have dealt very corruptly against thee, and have not kept the commandments, nor the statutes, nor the judgments, which thou commandedst thy servant Moses."

Nehemiah 2:17: "Then said I unto them, Ye see the distress that we are in, how Jerusalem lieth waste, and the gates thereof are burned with fire: come, and let us build up the wall of Jerusalem, that we be no more a reproach."

Nehemiah 2:20: "Then answered I them, and said unto them, The God of heaven, he will prosper us; therefore we his servants will arise and build: but ye have no portion, nor right, nor memorial, in Jerusalem."

Nehemiah 4:1: "But it came to pass, that when Sanballat heard that we builded the wall, he was wroth, and took great indignation, and mocked the Jews."

Nehemiah 4:4: "Hear, O our God; for we are despised: and turn their reproach upon their own head, and give them for a prey in the land of captivity:"

Nehemiah 4:6: "So built we the wall; and all the wall was joined together unto the half thereof: for the people had a mind to work."

Nehemiah 4:9: "Nevertheless we made our prayer unto our God, and set a watch against them day and night, because of them."

Nehemiah 4:10: "And Judah said, The strength of the bearers of burdens is decayed, and there is much rubbish; so that we are not able to build the wall."

Nehemiah 4:11: "And our adversaries said, They shall not know, neither see, till we come in the midst among them, and slay them, and cause the work to cease."

Nehemiah 4:15: "And it came to pass, when our enemies heard that it was known unto us, and God had brought their counsel to nought, that we returned all of us to the wall, every one unto his work."

Nehemiah 4:19: "And I said unto the nobles, and to the rulers, and to the rest of the people, The work is great and large, and we are separated upon the wall, one far from another."

Nehemiah 4:21: "So we laboured in the work: and half of them held the spears from the rising of the morning till the stars appeared."

Nehemiah 5:2: "For there were that said, We, our sons, and our daughters, are many: therefore we take up corn for them, that we may eat, and live."

Nehemiah 5:3: "Some also there were that said, We have mortgaged our lands, vineyards, and houses, that we might buy corn, because of the dearth."

Nehemiah 5:4: "There were also that said, We have borrowed money for the king's tribute, and that upon our lands and vineyards."

Nehemiah 5:5: "Yet now our flesh is as the flesh of our brethren, our children as their children: and, lo, we bring into bondage our sons and our daughters to be servants, and some of our daughters are brought unto bondage already: neither is it in our power to redeem them; for other men have our lands and vineyards."

Nehemiah 5:8: "And I said unto them, We after our ability have redeemed our brethren the Jews, which were sold unto the heathen; and will ye even sell your brethren? or shall they be sold unto us? Then held they their peace, and found nothing to answer."

Nehemiah 5:12: "Then said they, We will restore them, and will require nothing of them; so will we do as thou sayest. Then I called the priests, and took an oath of them, that they should do according to this promise."

Nehemiah 5:16: "Yea, also I continued in the work of this wall, neither bought we any land: and all my servants were gathered thither unto the work."

Nehemiah 9:33: "Howbeit thou art just in all that is brought upon us; for thou hast done right, but we have done wickedly:"

Nehemiah 9:36: "Behold, we are servants this day, and for the land that thou gavest unto our fathers to eat the fruit thereof and the good thereof, behold, we are servants in it:"

Nehemiah 9:37: "And it yieldeth much increase unto the kings whom thou hast set over us because of our sins: also they have dominion over our bodies, and over our cattle, at their pleasure, and we are in great distress."

Nehemiah 9:38: "And because of all this we make a sure covenant, and write it; and our princes, Levites, and priests, seal unto it."

Nehemiah 10:30: "And that we would not give our daughters unto the people of the land, not take their daughters for our sons:"

Nehemiah 10:31: "And if the people of the land bring ware or any victuals on the sabbath day to sell, that we would not buy it of them on the sabbath, or on the holy day: and that we would leave the seventh year, and the exaction of every debt."

Nehemiah 10:32: "Also we made ordinances for us, to charge ourselves yearly with the third part of a shekel for the service of the house of our God;"

Nehemiah 10:34: "And we cast the lots among the priests, the Levites, and the people, for the wood offering, to bring it into the house of our God, after the houses of our fathers, at times appointed year by year, to burn upon the altar of the LORD our God, as it is written in the law:"

Nehemiah 10:37: "And that we should bring the firstfruits of our dough, and our offerings, and the

fruit of all manner of trees, of wine and of oil, unto the priests, to the chambers of the house of our God; and the tithes of our ground unto the Levites, that the same Levites might have the tithes in all the cities of our tillage."

Nehemiah 10:39: "For the children of Israel and the children of Levi shall bring the offering of the corn, of the new wine, and the oil, unto the chambers, where are the vessels of the sanctuary, and the priests that minister, and the porters, and the singers: and we will not forsake the house of our God."

Nehemiah 13:27: "Shall we then hearken unto you to do all this great evil, to transgress against our God in marrying strange wives?"

Esther 1:15: "What shall we do unto the queen Vashti according to law, because she hath not performed the commandment of the king Ahasuerus by the chamberlains?"

Esther 7:4: "For we are sold, I and my people, to be destroyed, to be slain, and to perish. But if we had been sold for bondmen and bondwomen, I had held my tongue, although the enemy could not countervail the king's damage."

Job 2:10: "But he said unto her, Thou speakest as one of the foolish women speaketh. What? shall we receive good at the hand of God, and shall we not receive evil? In all this did not Job sin with his lips."

Job 4:2: "If we assay to commune with thee, wilt thou be grieved? but who can withhold himself from speaking?"

Job 5:27: "Lo this, we have searched it, so it is; hear it, and know thou it for thy good."

Job 8:9: "(For we are but of yesterday, and know nothing, because our days upon earth are a shadow:)"

Job 9:32: "For he is not a man, as I am, that I should answer him, and we should come together in judgment."

Job 15:9: "What knowest thou, that we know not? what understandest thou, which is not in us?"

Job 18:2: "How long will it be ere ye make an end of words? mark, and afterwards we will speak."

Job 18:3: "Wherefore are we counted as beasts, and reputed vile in your sight?"

Job 19:28: "But ye should say, Why persecute we him, seeing the root of the matter is found in me?"

Job 21:14: "Therefore they say unto God, Depart from us; for we desire not the knowledge of thy ways."

Job 21:15: "What is the Almighty, that we should serve him? and what profit should we have, if we pray unto him?"

Job 28:22: "Destruction and death say, We have heard the fame thereof with our ears."

Job 31:31: "If the men of my tabernacle said not, Oh that we had of his flesh! we cannot be satisfied."

Job 32:13: "Lest ye should say, We have found out wisdom: God thrusteth him down, not man."

Job 36:26: "Behold, God is great, and we know him not, neither can the number of his years be searched out."

Job 37:5: "God thundereth marvellously with his voice; great things doeth he, which we cannot comprehend."

Job 37:19: "Teach us what we shall say unto him; for we cannot order our speech by reason of darkness."

Job 37:23: "Touching the Almighty, we cannot find him out: he is excellent in power, and in judgment, and in plenty of justice: he will not afflict."

Job 38:35: "Canst thou send lightnings, that they may go and say unto thee, Here we are?"

Psalms 12:4: "Who have said, With our tongue will we prevail; our lips are our own: who is lord over us?"

Psalms 20:5: "We will rejoice in thy salvation, and in the name of our God we will set up our banners: the LORD fulfil all thy petitions."



Psalms 20:7: "Some trust in chariots, and some in horses: but we will remember the name of the LORD our God."  
 Psalms 20:8: "They are brought down and fallen: but we are risen, and stand upright."  
 Psalms 20:9: "Save, LORD: let the king hear us when we call."  
 Psalms 21:13: "Be thou exalted, LORD, in thine own strength: so will we sing and praise thy power."  
 Psalms 33:21: "For our heart shall rejoice in him, because we have trusted in his holy name."  
 Psalms 33:22: "Let thy mercy, O LORD, be upon us, according as we hope in thee."  
 Psalms 35:25: "Let them not say in their hearts, Ah, so would we have it: let them not say, We have swallowed him up."  
 Psalms 36:9: "For with thee is the fountain of life: in thy light shall we see light."  
 Psalms 44:1: "We have heard with our ears, O God, our fathers have told us, what work thou didst in their days, in the times of old."  
 Psalms 44:5: "Through thee will we push down our enemies: through thy name will we tread them under that rise up against us."  
 Psalms 44:8: "In God we boast all the day long, and praise thy name for ever. Selah."  
 Psalms 44:17: "All this is come upon us; yet have we not forgotten thee, neither have we dealt falsely in thy covenant."  
 Psalms 44:20: "If we have forgotten the name of our God, or stretched out our hands to a strange god;"  
 Psalms 44:22: "Yea, for thy sake are we killed all the day long; we are counted as sheep for the slaughter."  
 Psalms 46:2: "Therefore will not we fear, though the earth be removed, and though the mountains be carried into the midst of the sea;"  
 Psalms 48:8: "As we have heard, so have we seen in the city of the LORD of hosts, in the city of our God: God will establish it for ever. Selah."  
 Psalms 48:9: "We have thought of thy lovingkindness, O God, in the midst of thy temple."  
 Psalms 55:14: "We took sweet counsel together, and walked unto the house of God in company."  
 Psalms 60:12: "Through God we shall do valiantly: for he it is that shall tread down our enemies."  
 Psalms 65:4: "Blessed is the man whom thou chooseth, and causeth to approach unto thee, that he may dwell in thy courts: we shall be satisfied with the goodness of thy house, even of thy holy temple."  
 Psalms 66:6: "He turned the sea into dry land: they went through the flood on foot: there did we rejoice in him."  
 Psalms 66:12: "Thou hast caused men to ride over our heads; we went through fire and through water: but thou broughtest us out into a wealthy place."  
 Psalms 74:9: "We see not our signs: there is no more any prophet: neither is there among us any that knoweth how long."  
 Psalms 75:1: "Unto thee, O God, do we give thanks, unto thee do we give thanks: for that thy name is near thy wondrous works declare."  
 Psalms 78:3: "Which we have heard and known, and our fathers have told us."  
 Psalms 78:4: "We will not hide them from their children, shewing to the generation to come the praises of the LORD, and his strength, and his wonderful works that he hath done."  
 Psalms 79:4: "We are become a reproach to our neighbours, a scorn and derision to them that are round about us."  
 Psalms 79:8: "O remember not against us former iniquities: let thy tender mercies speedily prevent us: for we are brought very low."  
 Psalms 79:13: "So we thy people and sheep of thy pasture will give thee thanks for ever: we will shew forth thy praise to all generations."  
 Psalms 80:3: "Turn us again, O God, and cause thy face to shine; and we shall be saved."

Psalms 80:7: "Turn us again, O God of hosts, and cause thy face to shine; and we shall be saved."  
 Psalms 80:14: "Return, we beseech thee, O God of hosts: look down from heaven, and behold, and visit this vine;"  
 Psalms 80:18: "So will not we go back from thee: quicken us, and we will call upon thy name."  
 Psalms 80:19: "Turn us again, O LORD God of hosts, cause thy face to shine; and we shall be saved."  
 Psalms 90:7: "For we are consumed by thine anger, and by thy wrath are we troubled."  
 Psalms 90:9: "For all our days are passed away in thy wrath: we spend our years as a tale that is told."  
 Psalms 90:10: "The days of our years are threescore years and ten; and if by reason of strength they be fourscore years, yet is their strength labour and sorrow; for it is soon cut off, and we fly away."  
 Psalms 90:12: "So teach us to number our days, that we may apply our hearts unto wisdom."  
 Psalms 90:14: "O satisfy us early with thy mercy; that we may rejoice and be glad all our days."  
 Psalms 90:15: "Make us glad according to the days wherein thou hast afflicted us, and the years wherein we have seen evil."  
 Psalms 95:7: "For he is our God; and we are the people of his pasture, and the sheep of his hand. To day if ye will hear his voice,"  
 Psalms 100:3: "Know ye that the LORD he is God: it is he that hath made us, and not we ourselves; we are his people, and the sheep of his pasture."  
 Psalms 103:14: "For he knoweth our frame; he remembereth that we are dust."  
 Psalms 106:6: "We have sinned with our fathers, we have committed iniquity, we have done wickedly."  
 Psalms 108:13: "Through God we shall do valiantly: for he it is that shall tread down our enemies."  
 Psalms 115:18: "But we will bless the LORD from this time forth and for evermore. Praise the LORD."  
 Psalms 118:24: "This is the day which the LORD hath made; we will rejoice and be glad in it."  
 Psalms 118:26: "Blessed be he that cometh in the name of the LORD: we have blessed you out of the house of the LORD."  
 Psalms 123:3: "Have mercy upon us, O LORD, have mercy upon us: for we are exceedingly filled with contempt."  
 Psalms 124:7: "Our soul is escaped as a bird out of the snare of the fowlers: the snare is broken, and we are escaped."  
 Psalms 126:1: "When the LORD turned again the captivity of Zion, we were like them that dream."  
 Psalms 126:3: "The LORD hath done great things for us; whereof we are glad."  
 Psalms 129:8: "Neither do they which go by say, The blessing of the LORD be upon you: we bless you in the name of the LORD."  
 Psalms 132:6: "Lo, we heard of it at Ephratah: we found it in the fields of the wood."  
 Psalms 132:7: "We will go into his tabernacles: we will worship at his footstool."  
 Psalms 137:1: "By the rivers of Babylon, there we sat down, yea, we wept, when we remembered Zion."  
 Psalms 137:2: "We hanged our harps upon the willows in the midst thereof."  
 Psalms 137:4: "How shall we sing the LORD's song in a strange land?"  
 Proverbs 1:13: "We shall find all precious substance, we shall fill our houses with spoil:"  
 Proverbs 24:12: "If thou sayest, Behold, we knew it not; doth not he that pondereth the heart consider it? and he that keepeth thy soul, doth not he know it? and shall not he render to every man according to his works?"  
 Song of Solomon 1:4: "Draw me, we will run after thee: the king hath brought me into his chambers: we will be glad and rejoice in thee, we will remember thy love more than wine: the upright love thee."  
 Song of Solomon 1:11: "We will make thee borders of gold with studs of silver."

Song of Solomon 6:1: "Whither is thy beloved gone, O thou fairest among women? whither is thy beloved turned aside? that we may seek him with thee."

Song of Solomon 6:13: "Return, return, O Shulamite; return, return, that we may look upon thee. What will ye see in the Shulamite? As it were the company of two armies."

Song of Solomon 8:8: "We have a little sister, and she hath no breasts: what shall we do for our sister in the day when she shall be spoken for?"

Song of Solomon 8:9: "If she be a wall, we will build upon her a palace of silver: and if she be a door, we will inclose her with boards of cedar."

Isaiah 1:9: "Except the LORD of hosts had left unto us a very small remnant, we should have been as Sodom, and we should have been like unto Gomorrah."

Isaiah 2:3: "And many people shall go and say, Come ye, and let us go up to the mountain of the LORD, to the house of the God of Jacob; and he will teach us of his ways, and we will walk in his paths: for out of Zion shall go forth the law, and the word of the LORD from Jerusalem."

Isaiah 4:1: "And in that day seven women shall take hold of one man, saying, We will eat our own bread, and wear our own apparel: only let us be called by thy name, to take away our reproach."

Isaiah 5:19: "That say, Let him make speed, and hasten his work, that we may see it: and let the counsel of the Holy One of Israel draw nigh and come, that we may know it!"

Isaiah 9:10: "The bricks are fallen down, but we will build with hewn stones: the sycomores are cut down, but we will change them into cedars."

Isaiah 14:10: "All they shall speak and say unto thee, Art thou also become weak as we? art thou become like unto us?"

Isaiah 16:6: "We have heard of the pride of Moab; he is very proud: even of his haughtiness, and his pride, and his wrath: but his lies shall not be so."

Isaiah 20:6: "And the inhabitant of this isle shall say in that day, Behold, such is our expectation, whither we flee for help to be delivered from the king of Assyria: and how shall we escape?"

Isaiah 22:13: "And behold joy and gladness, slaying oxen, and killing sheep, eating flesh, and drinking wine: let us eat and drink; for to morrow we shall die."

Isaiah 24:16: "From the uttermost part of the earth have we heard songs, even glory to the righteous. But I said, My leanness, my leanness, woe unto me! the treacherous dealers have dealt treacherously; yea, the treacherous dealers have dealt very treacherously."

Isaiah 25:9: "And it shall be said in that day, Lo, this is our God; we have waited for him, and he will save us: this is the LORD; we have waited for him, we will be glad and rejoice in his salvation."

Isaiah 26:1: "In that day shall this song be sung in the land of Judah; We have a strong city; salvation will God appoint for walls and bulwarks."

Isaiah 26:8: "Yea, in the way of thy judgments, O LORD, have we waited for thee; the desire of our soul is to thy name, and to the remembrance of thee."

Isaiah 26:13: "O LORD our God, other lords beside thee have had dominion over us: but by thee only will we make mention of thy name."

Isaiah 26:17: "Like as a woman with child, that draweth near the time of her delivery, is in pain, and crieth out in her pangs; so have we been in thy sight, O LORD."

Isaiah 26:18: "We have been with child, we have been in pain, we have as it were brought forth wind; we have not wrought any deliverance in the earth; neither have the inhabitants of the world fallen."

Isaiah 28:15: "Because ye have said, We have made a covenant with death, and with hell are we at agreement; when the overflowing scourge shall pass through, it shall not come unto us: for we have made lies our refuge, and under falsehood have we hid ourselves:"

Isaiah 30:16: "But ye said, No; for we will flee upon horses; therefore shall ye flee: and, We will ride upon the swift; therefore shall they that pursue you be swift."

Isaiah 33:2: "O LORD, be gracious unto us; we have waited for thee: be thou their arm every

morning, our salvation also in the time of trouble."

Isaiah 36:7: "But if thou say to me, We trust in the LORD our God: is it not he, whose high places and whose altars Hezekiah hath taken away, and said to Judah and to Jerusalem, Ye shall worship before this altar?"

Isaiah 36:11: "Then said Eliakim and Shebna and Joah unto Rabshakeh, Speak, I pray thee, unto thy servants in the Syrian language; for we understand it: and speak not to us in the Jews' language, in the ears of the people that are on the wall."

Isaiah 38:20: "The LORD was ready to save me: therefore we will sing my songs to the stringed instruments all the days of our life in the house of the LORD."

Isaiah 41:22: "Let them bring them forth, and shew us what shall happen: let them shew the former things, what they be, that we may consider them, and know the latter end of them; or declare us things for to come."

Isaiah 41:23: "Shew the things that are to come hereafter, that we may know that ye are gods: yea, do good, or do evil, that we may be dismayed, and behold it together."

Isaiah 41:26: "Who hath declared from the beginning, that we may know? and beforetime, that we may say, He is righteous? yea, there is none that sheweth, yea, there is none that declareth, yea, there is none that heareth your words."

Isaiah 42:24: "Who gave Jacob for a spoil, and Israel to the robbers? did not the LORD, he against whom we have sinned? for they would not walk in his ways, neither were they obedient unto his law."

Isaiah 46:5: "To whom will ye liken me, and make me equal, and compare me, that we may be like?"

Isaiah 51:23: "But I will put it into the hand of them that afflict thee; which have said to thy soul, Bow down, that we may go over: and thou hast laid thy body as the ground, and as the street, to them that went over."

Isaiah 53:2: "For he shall grow up before him as a tender plant, and as a root out of a dry ground: he hath no form nor comeliness; and when we shall see him, there is no beauty that we should desire him."

Isaiah 53:3: "He is despised and rejected of men; a man of sorrows, and acquainted with grief: and we hid as it were our faces from him; he was despised, and we esteemed him not."

Isaiah 53:4: "Surely he hath borne our griefs, and carried our sorrows: yet we did esteem him stricken, smitten of God, and afflicted."

Isaiah 53:5: "But he was wounded for our transgressions, he was bruised for our iniquities: the chastisement of our peace was upon him; and with his stripes we are healed."

Isaiah 53:6: "All we like sheep have gone astray; we have turned every one to his own way; and the LORD hath laid on him the iniquity of us all."

Isaiah 56:12: "Come ye, say they, I will fetch wine, and we will fill ourselves with strong drink; and to morrow shall be as this day, and much more abundant."

Isaiah 58:3: "Wherefore have we fasted, say they, and thou seest not? wherefore have we afflicted our soul, and thou takest no knowledge? Behold, in the day of your fast ye find pleasure, and exact all your labours."

Isaiah 59:9: "Therefore is judgment far from us, neither doth justice overtake us: we wait for light, but behold obscurity; for brightness, but we walk in darkness."

Isaiah 59:10: "We grope for the wall like the blind, and we grope as if we had no eyes: we stumble at noon day as in the night; we are in desolate places as dead men."

Isaiah 59:11: "We roar all like bears, and mourn sore like doves: we look for judgment, but there is none; for salvation, but it is far off from us."

Isaiah 59:12: "For our transgressions are multiplied before thee, and our sins testify against us: for our transgressions are with us; and as for our iniquities, we know them;"

Isaiah 63:19: "We are thine: thou never barest rule over them; they were not called by thy name."

Isaiah 64:3: "When thou didst terrible things which we looked not for, thou camest down, the mountains flowed down at thy presence."

Isaiah 64:5: "Thou meetest him that rejoiceth and worketh righteousness, those that remember thee in thy ways: behold, thou art wroth; for we have sinned: in those is continuance, and we shall be saved."

Isaiah 64:6: "But we are all as an unclean thing, and all our righteousnesses are as filthy rags; and we all do fade as a leaf; and our iniquities, like the wind, have taken us away."

Isaiah 64:8: "But now, O LORD, thou art our father; we are the clay, and thou our potter; and we all are the work of thy hand."

Isaiah 64:9: "Be not wroth very sore, O LORD, neither remember iniquity for ever: behold, see, we beseech thee, we are all thy people."

Jeremiah 2:31: "O generation, see ye the word of the LORD. Have I been a wilderness unto Israel? a land of darkness? wherefore say my people, We are lords; we will come no more unto thee?"

Jeremiah 3:22: "Return, ye backsliding children, and I will heal your backslidings. Behold, we come unto thee; for thou art the LORD our God."

Jeremiah 3:25: "We lie down in our shame, and our confusion covereth us: for we have sinned against the LORD our God, we and our fathers, from our youth even unto this day, and have not obeyed the voice of the LORD our God."

Jeremiah 4:13: "Behold, he shall come up as clouds, and his chariots shall be as a whirlwind: his horses are swifter than eagles. Woe unto us! for we are spoiled."

Jeremiah 5:12: "They have belied the LORD, and said, It is not he; neither shall evil come upon us; neither shall we see sword nor famine:"

Jeremiah 6:16: "Thus saith the LORD, Stand ye in the ways, and see, and ask for the old paths, where is the good way, and walk therein, and ye shall find rest for your souls. But they said, We will not walk therein."

Jeremiah 6:17: "Also I set watchmen over you, saying, Hearken to the sound of the trumpet. But they said, We will not hearken."

Jeremiah 6:24: "We have heard the fame thereof: our hands wax feeble: anguish hath taken hold of us, and pain, as of a woman in travail."

Jeremiah 7:10: "And come and stand before me in this house, which is called by my name, and say, We are delivered to do all these abominations?"

Jeremiah 8:8: "How do ye say, We are wise, and the law of the LORD is with us? Lo, certainly in vain made he it; the pen of the scribes is in vain."

Jeremiah 8:14: "Why do we sit still? assemble yourselves, and let us enter into the defenced cities, and let us be silent there: for the LORD our God hath put us to silence, and given us water of gall to drink, because we have sinned against the LORD."

Jeremiah 8:15: "We looked for peace, but no good came; and for a time of health, and behold trouble!"

Jeremiah 8:20: "The harvest is past, the summer is ended, and we are not saved."

Jeremiah 9:19: "For a voice of wailing is heard out of Zion, How are we spoiled! we are greatly confounded, because we have forsaken the land, because our dwellings have cast us out."

Jeremiah 13:12: "Therefore thou shalt speak unto them this word; Thus saith the LORD God of Israel, Every bottle shall be filled with wine: and they shall say unto thee, Do we not certainly know that every bottle shall be filled with wine?"

Jeremiah 14:7: "O LORD, though our iniquities testify against us, do thou it for thy name's sake: for our backslidings are many; we have sinned against thee."

Jeremiah 14:9: "Why shouldest thou be as a man astonied, as a mighty man that cannot save? yet thou, O LORD, art in the midst of us, and we are called by thy name; leave us not."

Jeremiah 14:19: "Hast thou utterly rejected Judah? hath thy soul lothed Zion? why hast thou smitten us, and there is no healing for us? we looked for peace, and there is no good; and for the time of

healing, and behold trouble!"

Jeremiah 14:20: "We acknowledge, O LORD, our wickedness, and the iniquity of our fathers: for we have sinned against thee."

Jeremiah 14:22: "Are there any among the vanities of the Gentiles that can cause rain? or can the heavens give showers? art not thou he, O LORD our God? therefore we will wait upon thee: for thou hast made all these things."

Jeremiah 15:2: "And it shall come to pass, if they say unto thee, Whither shall we go forth? then thou shalt tell them, Thus saith the LORD; Such as are for death, to death; and such as are for the sword, to the sword; and such as are for the famine, to the famine; and such as are for the captivity, to the captivity."

Jeremiah 16:10: "And it shall come to pass, when thou shalt shew this people all these words, and they shall say unto thee, Wherefore hath the LORD pronounced all this great evil against us? or what is our iniquity? or what is our sin that we have committed against the LORD our God?"

Jeremiah 18:12: "And they said, There is no hope: but we will walk after our own devices, and we will every one do the imagination of his evil heart."

Jeremiah 20:10: "For I heard the defaming of many, fear on every side. Report, say they, and we will report it. All my familiars watched for my halting, saying, Peradventure he will be enticed, and we shall prevail against him, and we shall take our revenge on him."

Jeremiah 26:19: "Did Hezekiah king of Judah and all Judah put him at all to death? did he not fear the LORD, and besought the LORD, and the LORD repented him of the evil which he had pronounced against them? Thus might we procure great evil against our souls."

Jeremiah 30:5: "For thus saith the LORD; We have heard a voice of trembling, of fear, and not of peace."

Jeremiah 35:6: "But they said, We will drink no wine: for Jonadab the son of Rechab our father commanded us, saying, Ye shall drink no wine, neither ye, nor your sons for ever:"

Jeremiah 35:8: "Thus have we obeyed the voice of Jonadab the son of Rechab our father in all that he hath charged us, to drink no wine all our days, we, our wives, our sons, nor our daughters;"

Jeremiah 35:9: "Nor to build houses for us to dwell in: neither have we vineyard, nor field, nor seed:"

Jeremiah 35:10: "But we have dwelt in tents, and have obeyed, and done according to all that Jonadab our father commanded us."

Jeremiah 35:11: "But it came to pass, when Nebuchadrezzar king of Babylon came up into the land, that we said, Come, and let us go to Jerusalem for fear of the army of the Chaldeans, and for fear of the army of the Syrians: so we dwell at Jerusalem."

Jeremiah 36:16: "Now it came to pass, when they had heard all the words, they were afraid both one and other, and said unto Baruch, We will surely tell the king of all these words."

Jeremiah 38:4: "Therefore the princes said unto the king, We beseech thee, let this man be put to death: for thus he weakeneth the hands of the men of war that remain in this city, and the hands of all the people, in speaking such words unto them: for this man seeketh not the welfare of this people, but the hurt."

Jeremiah 38:25: "But if the princes hear that I have talked with thee, and they come unto thee, and say unto thee, Declare unto us now what thou hast said unto the king, hide it not from us, and we will not put thee to death; also what the king said unto thee:"

Jeremiah 41:8: "But ten men were found among them that said unto Ishmael, Slay us not: for we have treasures in the field, of wheat, and of barley, and of oil, and of honey. So he forbore, and slew them not among their brethren."

Jeremiah 42:2: "And said unto Jeremiah the prophet, Let, we beseech thee, our supplication be accepted before thee, and pray for us unto the LORD thy God, even for all this remnant; (for we are left but a few of many, as thine eyes do behold us:)"

Jeremiah 42:3: "That the LORD thy God may shew us the way wherein we may walk, and the thing

that we may do."

Jeremiah 42:5: "Then they said to Jeremiah, The LORD be a true and faithful witness between us, if we do not even according to all things for the which the LORD thy God shall send thee to us."

Jeremiah 42:6: "Whether it be good, or whether it be evil, we will obey the voice of the LORD our God, to whom we send thee; that it may be well with us, when we obey the voice of the LORD our God."

Jeremiah 42:13: "But if ye say, We will not dwell in this land, neither obey the voice of the LORD your God,"

Jeremiah 42:14: "Saying, No; but we will go into the land of Egypt, where we shall see no war, nor hear the sound of the trumpet, nor have hunger of bread; and there will we dwell:"

Jeremiah 42:20: "For ye dissembled in your hearts, when ye sent me unto the LORD your God, saying, Pray for us unto the LORD our God; and according unto all that the LORD our God shall say, so declare unto us, and we will do it."

Jeremiah 44:16: "As for the word that thou hast spoken unto us in the name of the LORD, we will not hearken unto thee."

Jeremiah 44:17: "But we will certainly do whatsoever thing goeth forth out of our own mouth, to burn incense unto the queen of heaven, and to pour out drink offerings unto her, as we have done, we, and our fathers, our kings, and our princes, in the cities of Judah, and in the streets of Jerusalem: for then had we plenty of victuals, and were well, and saw no evil."

Jeremiah 44:18: "But since we left off to burn incense to the queen of heaven, and to pour out drink offerings unto her, we have wanted all things, and have been consumed by the sword and by the famine."

Jeremiah 44:19: "And when we burned incense to the queen of heaven, and poured out drink offerings unto her, did we make her cakes to worship her, and pour out drink offerings unto her, without our men?"

Jeremiah 44:25: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel, saying; Ye and your wives have both spoken with your mouths, and fulfilled with your hand, saying, We will surely perform our vows that we have vowed, to burn incense to the queen of heaven, and to pour out drink offerings unto her: ye will surely accomplish your vows, and surely perform your vows."

Jeremiah 48:14: "How say ye, We are mighty and strong men for the war?"

Jeremiah 48:29: "We have heard the pride of Moab, (he is exceeding proud) his loftiness, and his arrogancy, and his pride, and the haughtiness of his heart."

Jeremiah 50:7: "All that found them have devoured them: and their adversaries said, We offend not, because they have sinned against the LORD, the habitation of justice, even the LORD, the hope of their fathers."

Jeremiah 51:9: "We would have healed Babylon, but she is not healed: forsake her, and let us go every one into his own country: for her judgment reacheth unto heaven, and is lifted up even to the skies."

Jeremiah 51:51: "We are confounded, because we have heard reproach: shame hath covered our faces: for strangers are come into the sanctuaries of the LORD's house."

Lamentations 2:16: "All thine enemies have opened their mouth against thee: they hiss and gnash the teeth: they say, We have swallowed her up: certainly this is the day that we looked for; we have found, we have seen it."

Lamentations 3:22: "It is of the LORD's mercies that we are not consumed, because his compassions fail not."

Lamentations 3:42: "We have transgressed and have rebelled: thou hast not pardoned."

Lamentations 4:17: "As for us, our eyes as yet failed for our vain help: in our watching we have watched for a nation that could not save us."

Lamentations 4:18: "They hunt our steps, that we cannot go in our streets: our end is near, our days are fulfilled; for our end is come."

Lamentations 4:20: "The breath of our nostrils, the anointed of the LORD, was taken in their pits, of whom we said, Under his shadow we shall live among the heathen."

Lamentations 5:3: "We are orphans and fatherless, our mothers are as widows."

Lamentations 5:4: "We have drunken our water for money; our wood is sold unto us."

Lamentations 5:5: "Our necks are under persecution: we labour, and have no rest."

Lamentations 5:6: "We have given the hand to the Egyptians, and to the Assyrians, to be satisfied with bread."

Lamentations 5:7: "Our fathers have sinned, and are not; and we have borne their iniquities."

Lamentations 5:9: "We gat our bread with the peril of our lives because of the sword of the wilderness."

Lamentations 5:16: "The crown is fallen from our head: woe unto us, that we have sinned!"

Lamentations 5:21: "Turn thou us unto thee, O LORD, and we shall be turned; renew our days as of old."

Ezekiel 11:3: "Which say, It is not near; let us build houses: this city is the caldron, and we be the flesh."

Ezekiel 20:32: "And that which cometh into your mind shall not be at all, that ye say, We will be as the heathen, as the families of the countries, to serve wood and stone."

Ezekiel 21:10: "It is sharpened to make a sore slaughter; it is furbished that it may glitter: should we then make mirth? it contemneth the rod of my son, as every tree."

Ezekiel 33:10: "Therefore, O thou son of man, speak unto the house of Israel; Thus ye speak, saying, If our transgressions and our sins be upon us, and we pine away in them, how should we then live?"

Ezekiel 33:24: "Son of man, they that inhabit those wastes of the land of Israel speak, saying, Abraham was one, and he inherited the land: but we are many; the land is given us for inheritance."

Ezekiel 35:10: "Because thou hast said, These two nations and these two countries shall be mine, and we will possess it; whereas the LORD was there:"

Ezekiel 37:11: "Then he said unto me, Son of man, these bones are the whole house of Israel: behold, they say, Our bones are dried, and our hope is lost: we are cut off for our parts."

Daniel 2:4: "Then spake the Chaldeans to the king in Syriack, O king, live for ever: tell thy servants the dream, and we will shew the interpretation."

Daniel 2:7: "They answered again and said, Let the king tell his servants the dream, and we will shew the interpretation of it."

Daniel 2:23: "I thank thee, and praise thee, O thou God of my fathers, who hast given me wisdom and might, and hast made known unto me now what we desired of thee: for thou hast now made known unto us the king's matter."

Daniel 2:36: "This is the dream; and we will tell the interpretation thereof before the king."

Daniel 3:16: "Shadrach, Meshach, and Abednego, answered and said to the king, O Nebuchadnezzar, we are not careful to answer thee in this matter."

Daniel 3:17: "If it be so, our God whom we serve is able to deliver us from the burning fiery furnace, and he will deliver us out of thine hand, O king."

Daniel 3:18: "But if not, be it known unto thee, O king, that we will not serve thy gods, nor worship the golden image which thou hast set up."

Daniel 3:24: "Then Nebuchadnezzar the king was astonied, and rose up in haste, and spake, and said unto his counsellors, Did not we cast three men bound into the midst of the fire? They answered and said unto the king, True, O king."

Daniel 6:5: "Then said these men, We shall not find any occasion against this Daniel, except we find it against him concerning the law of his God."

Daniel 9:5: "We have sinned, and have committed iniquity, and have done wickedly, and have rebelled, even by departing from thy precepts and from thy judgments:"

Daniel 9:6: "Neither have we hearkened unto thy servants the prophets, which spake in thy name to



our kings, our princes, and our fathers, and to all the people of the land."

Daniel 9:8: "O Lord, to us belongeth confusion of face, to our kings, to our princes, and to our fathers, because we have sinned against thee."

Daniel 9:9: "To the Lord our God belong mercies and forgivenesses, though we have rebelled against him;"

Daniel 9:10: "Neither have we obeyed the voice of the LORD our God, to walk in his laws, which he set before us by his servants the prophets."

Daniel 9:11: "Yea, all Israel have transgressed thy law, even by departing, that they might not obey thy voice; therefore the curse is poured upon us, and the oath that is written in the law of Moses the servant of God, because we have sinned against him."

Daniel 9:13: "As it is written in the law of Moses, all this evil is come upon us: yet made we not our prayer before the LORD our God, that we might turn from our iniquities, and understand thy truth."

Daniel 9:14: "Therefore hath the LORD watched upon the evil, and brought it upon us: for the LORD our God is righteous in all his works which he doeth: for we obeyed not his voice."

Daniel 9:15: "And now, O Lord our God, that hast brought thy people forth out of the land of Egypt with a mighty hand, and hast gotten thee renown, as at this day; we have sinned, we have done wickedly."

Daniel 9:18: "O my God, incline thine ear, and hear; open thine eyes, and behold our desolations, and the city which is called by thy name: for we do not present our supplications before thee for our righteousnesses, but for thy great mercies."

Hosea 6:2: "After two days will he revive us: in the third day he will raise us up, and we shall live in his sight."

Hosea 6:3: "Then shall we know, if we follow on to know the LORD: his going forth is prepared as the morning; and he shall come unto us as the rain, as the latter and former rain unto the earth."

Hosea 8:2: "Israel shall cry unto me, My God, we know thee."

Hosea 10:3: "For now they shall say, We have no king, because we feared not the LORD; what then should a king do to us?"

Hosea 14:2: "Take with you words, and turn to the LORD: say unto him, Take away all iniquity, and receive us graciously: so will we render the calves of our lips."

Hosea 14:3: "Asshur shall not save us; we will not ride upon horses: neither will we say any more to the work of our hands, Ye are our gods: for in thee the fatherless findeth mercy."

Amos 6:10: "And a man's uncle shall take him up, and he that burneth him, to bring out the bones out of the house, and shall say unto him that is by the sides of the house, Is there yet any with thee? and he shall say, No. Then shall he say, Hold thy tongue: for we may not make mention of the name of the LORD."

Amos 6:13: "Ye which rejoice in a thing of nought, which say, Have we not taken to us horns by our own strength?"

Amos 8:5: "Saying, When will the new moon be gone, that we may sell corn? and the sabbath, that we may set forth wheat, making the ephah small, and the shekel great, and falsifying the balances by deceit?"

Amos 8:6: "That we may buy the poor for silver, and the needy for a pair of shoes; yea, and sell the refuse of the wheat?"

Obadiah 1:1: "The vision of Obadiah. Thus saith the Lord GOD concerning Edom; We have heard a rumour from the LORD, and an ambassador is sent among the heathen, Arise ye, and let us rise up against her in battle."

Jonah 1:6: "So the shipmaster came to him, and said unto him, What meanest thou, O sleeper? arise, call upon thy God, if so be that God will think upon us, that we perish not."

Jonah 1:7: "And they said every one to his fellow, Come, and let us cast lots, that we may know for whose cause this evil is upon us. So they cast lots, and the lot fell upon Jonah."

Jonah 1:8: "Then said they unto him, Tell us, we pray thee, for whose cause this evil is upon us;

What is thine occupation? and whence comest thou? what is thy country? and of what people art thou?"

Jonah 1:11: "Then said they unto him, What shall we do unto thee, that the sea may be calm unto us? for the sea wrought, and was tempestuous."

Jonah 1:14: "Wherefore they cried unto the LORD, and said, We beseech thee, O LORD, we beseech thee, let us not perish for this man's life, and lay not upon us innocent blood: for thou, O LORD, hast done as it pleased thee."

Jonah 3:9: "Who can tell if God will turn and repent, and turn away from his fierce anger, that we perish not?"

Micah 2:4: "In that day shall one take up a parable against you, and lament with a doleful lamentation, and say, We be utterly spoiled: he hath changed the portion of my people: how hath he removed it from me! turning away he hath divided our fields."

Micah 4:2: "And many nations shall come, and say, Come, and let us go up to the mountain of the LORD, and to the house of the God of Jacob; and he will teach us of his ways, and we will walk in his paths: for the law shall go forth of Zion, and the word of the LORD from Jerusalem."

Micah 4:5: "For all people will walk every one in the name of his god, and we will walk in the name of the LORD our God for ever and ever."

Micah 5:5: "And this man shall be the peace, when the Assyrian shall come into our land: and when he shall tread in our palaces, then shall we raise against him seven shepherds, and eight principal men."

Habakkuk 1:12: "Art thou not from everlasting, O LORD my God, mine Holy One? we shall not die. O LORD, thou hast ordained them for judgment; and, O mighty God, thou hast established them for correction."

Zechariah 1:11: "And they answered the angel of the LORD that stood among the myrtle trees, and said, We have walked to and fro through the earth, and, behold, all the earth sitteth still, and is at rest."

Zechariah 8:23: "Thus saith the LORD of hosts; In those days it shall come to pass, that ten men shall take hold out of all languages of the nations, even shall take hold of the skirt of him that is a Jew, saying, We will go with you: for we have heard that God is with you."

Malachi 1:4: "Whereas Edom saith, We are impoverished, but we will return and build the desolate places; thus saith the LORD of hosts, They shall build, but I will throw down; and they shall call them, The border of wickedness, and, The people against whom the LORD hath indignation for ever."

Malachi 1:6: "A son honoureth his father, and a servant his master: if then I be a father, where is mine honour? and if I be a master, where is my fear? saith the LORD of hosts unto you, O priests, that despise my name. And ye say, Wherein have we despised thy name?"

Malachi 1:7: "Ye offer polluted bread upon mine altar; and ye say, Wherein have we polluted thee? In that ye say, The table of the LORD is contemptible."

Malachi 2:10: "Have we not all one father? hath not one God created us? why do we deal treacherously every man against his brother, by profaning the covenant of our fathers?"

Malachi 2:17: "Ye have wearied the LORD with your words. Yet ye say, Wherein have we wearied him? When ye say, Every one that doeth evil is good in the sight of the LORD, and he delighteth in them; or, Where is the God of judgment?"

Malachi 3:7: "Even from the days of your fathers ye are gone away from mine ordinances, and have not kept them. Return unto me, and I will return unto you, saith the LORD of hosts. But ye said, Wherein shall we return?"

Malachi 3:8: "Will a man rob God? Yet ye have robbed me. But ye say, Wherein have we robbed thee? In tithes and offerings."

Malachi 3:13: "Your words have been stout against me, saith the LORD. Yet ye say, What have we spoken so much against thee?"

Malachi 3:14: "Ye have said, It is vain to serve God: and what profit is it that we have kept his ordinance, and that we have walked mournfully before the LORD of hosts?"

Malachi 3:15: "And now we call the proud happy; yea, they that work wickedness are set up; yea, they that tempt God are even delivered."

Matthew 2:2: "Saying, Where is he that is born King of the Jews? for we have seen his star in the east, and are come to worship him."

Matthew 3:9: "And think not to say within yourselves, We have Abraham to our father: for I say unto you, that God is able of these stones to raise up children unto Abraham."

Matthew 6:12: "And forgive us our debts, as we forgive our debtors."

Matthew 6:31: "Therefore take no thought, saying, What shall we eat? or, What shall we drink? or, Wherewithal shall we be clothed?"

Matthew 7:22: "Many will say to me in that day, Lord, Lord, have we not prophesied in thy name? and in thy name have cast out devils? and in thy name done many wonderful works?"

Matthew 8:25: "And his disciples came to him, and awoke him, saying, Lord, save us: we perish."

Matthew 8:29: "And, behold, they cried out, saying, What have we to do with thee, Jesus, thou Son of God? art thou come hither to torment us before the time?"

Matthew 9:14: "Then came to him the disciples of John, saying, Why do we and the Pharisees fast oft, but thy disciples fast not?"

Matthew 11:3: "And said unto him, Art thou he that should come, or do we look for another?"

Matthew 11:17: "And saying, We have piped unto you, and ye have not danced; we have mourned unto you, and ye have not lamented."

Matthew 12:38: "Then certain of the scribes and of the Pharisees answered, saying, Master, we would see a sign from thee."

Matthew 13:28: "He said unto them, An enemy hath done this. The servants said unto him, Wilt thou then that we go and gather them up?"

Matthew 14:17: "And they say unto him, We have here but five loaves, and two fishes."

Matthew 15:33: "And his disciples say unto him, Whence should we have so much bread in the wilderness, as to fill so great a multitude?"

Matthew 16:7: "And they reasoned among themselves, saying, It is because we have taken no bread."

Matthew 17:19: "Then came the disciples to Jesus apart, and said, Why could not we cast him out?"

Matthew 17:27: "Notwithstanding, lest we should offend them, go thou to the sea, and cast an hook, and take up the fish that first cometh up; and when thou hast opened his mouth, thou shalt find a piece of money: that take, and give unto them for me and thee."

Matthew 19:27: "Then answered Peter and said unto him, Behold, we have forsaken all, and followed thee; what shall we have therefore?"

Matthew 20:18: "Behold, we go up to Jerusalem; and the Son of man shall be betrayed unto the chief priests and unto the scribes, and they shall condemn him to death,"

Matthew 20:22: "But Jesus answered and said, Ye know not what ye ask. Are ye able to drink of the cup that I shall drink of, and to be baptized with the baptism that I am baptized with? They say unto him, We are able."

Matthew 21:25: "The baptism of John, whence was it? from heaven, or of men? And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say unto us, Why did ye not then believe him?"

Matthew 21:26: "But if we shall say, Of men; we fear the people; for all hold John as a prophet."

Matthew 21:27: "And they answered Jesus, and said, We cannot tell. And he said unto them, Neither tell I you by what authority I do these things."

Matthew 22:16: "And they sent out unto him their disciples with the Herodians, saying, Master, we know that thou art true, and teachest the way of God in truth, neither carest thou for any man: for thou regardest not the person of men."

Matthew 23:30: "And say, If we had been in the days of our fathers, we would not have been partakers with them in the blood of the prophets."

Matthew 25:37: "Then shall the righteous answer him, saying, Lord, when saw we thee an hungred, and fed thee? or thirsty, and gave thee drink?"

Matthew 25:38: "When saw we thee a stranger, and took thee in? or naked, and clothed thee?"

Matthew 25:39: "Or when saw we thee sick, or in prison, and came unto thee?"

Matthew 25:44: "Then shall they also answer him, saying, Lord, when saw we thee an hungred, or athirst, or a stranger, or naked, or sick, or in prison, and did not minister unto thee?"

Matthew 26:17: "Now the first day of the feast of unleavened bread the disciples came to Jesus, saying unto him, Where wilt thou that we prepare for thee to eat the passover?"

Matthew 26:65: "Then the high priest rent his clothes, saying, He hath spoken blasphemy; what further need have we of witnesses? behold, now ye have heard his blasphemy."

Matthew 27:42: "He saved others; himself he cannot save. If he be the King of Israel, let him now come down from the cross, and we will believe him."

Matthew 27:63: "Saying, Sir, we remember that that deceiver said, while he was yet alive, After three days I will rise again."

Matthew 28:13: "Saying, Say ye, His disciples came by night, and stole him away while we slept."

Matthew 28:14: "And if this come to the governor's ears, we will persuade him, and secure you."

Mark 1:24: "Saying, Let us alone; what have we to do with thee, thou Jesus of Nazareth? art thou come to destroy us? I know thee who thou art, the Holy One of God."

Mark 2:12: "And immediately he arose, took up the bed, and went forth before them all; insomuch that they were all amazed, and glorified God, saying, We never saw it on this fashion."

Mark 4:30: "And he said, Whereunto shall we liken the kingdom of God? or with what comparison shall we compare it?"

Mark 4:38: "And he was in the hinder part of the ship, asleep on a pillow: and they awake him, and say unto him, Master, carest thou not that we perish?"

Mark 5:9: "And he asked him, What is thy name? And he answered, saying, My name is Legion: for we are many."

Mark 5:12: "And all the devils besought him, saying, Send us into the swine, that we may enter into them."

Mark 6:37: "He answered and said unto them, Give ye them to eat. And they say unto him, Shall we go and buy two hundred pennyworth of bread, and give them to eat?"

Mark 8:16: "And they reasoned among themselves, saying, It is because we have no bread."

Mark 9:28: "And when he was come into the house, his disciples asked him privately, Why could not we cast him out?"

Mark 9:38: "And John answered him, saying, Master, we saw one casting out devils in thy name, and he followeth not us: and we forbid him, because he followeth not us."

Mark 10:28: "Then Peter began to say unto him, Lo, we have left all, and have followed thee."

Mark 10:33: "Saying, Behold, we go up to Jerusalem; and the Son of man shall be delivered unto the chief priests, and unto the scribes; and they shall condemn him to death, and shall deliver him to the Gentiles:"

Mark 10:35: "And James and John, the sons of Zebedee, come unto him, saying, Master, we would that thou shouldest do for us whatsoever we shall desire."

Mark 10:37: "They said unto him, Grant unto us that we may sit, one on thy right hand, and the other on thy left hand, in thy glory."

Mark 10:39: "And they said unto him, We can. And Jesus said unto them, Ye shall indeed drink of the cup that I drink of; and with the baptism that I am baptized withal shall ye be baptized:"

Mark 11:31: "And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say, Why then did ye not believe him?"

Mark 11:32: "But if we shall say, Of men; they feared the people: for all men counted John, that he

was a prophet indeed."

Mark 11:33: "And they answered and said unto Jesus, We cannot tell. And Jesus answering saith unto them, Neither do I tell you by what authority I do these things."

Mark 12:14: "And when they were come, they say unto him, Master, we know that thou art true, and carest for no man: for thou regardest not the person of men, but teachest the way of God in truth: Is it lawful to give tribute to Caesar, or not?"

Mark 12:15: "Shall we give, or shall we not give? But he, knowing their hypocrisy, said unto them, Why tempt ye me? bring me a penny, that I may see it."

Mark 14:12: "And the first day of unleavened bread, when they killed the passover, his disciples said unto him, Where wilt thou that we go and prepare that thou mayest eat the passover?"

Mark 14:58: "We heard him say, I will destroy this temple that is made with hands, and within three days I will build another made without hands."

Mark 14:63: "Then the high priest rent his clothes, and saith, What need we any further witnesses?"

Mark 15:32: "Let Christ the King of Israel descend now from the cross, that we may see and believe. And they that were crucified with him reviled him."

Luke 1:71: "That we should be saved from our enemies, and from the hand of all that hate us;"

Luke 1:74: "That he would grant unto us, that we being delivered out of the hand of our enemies might serve him without fear,"

Luke 3:8: "Bring forth therefore fruits worthy of repentance, and begin not to say within yourselves, We have Abraham to our father: for I say unto you, That God is able of these stones to raise up children unto Abraham."

Luke 3:10: "And the people asked him, saying, What shall we do then?"

Luke 3:12: "Then came also publicans to be baptized, and said unto him, Master, what shall we do?"

Luke 3:14: "And the soldiers likewise demanded of him, saying, And what shall we do? And he said unto them, Do violence to no man, neither accuse any falsely; and be content with your wages."

Luke 4:23: "And he said unto them, Ye will surely say unto me this proverb, Physician, heal thyself: whatsoever we have heard done in Capernaum, do also here in thy country."

Luke 4:34: "Saying, Let us alone; what have we to do with thee, thou Jesus of Nazareth? art thou come to destroy us? I know thee who thou art; the Holy One of God."

Luke 5:5: "And Simon answering said unto him, Master, we have toiled all the night, and have taken nothing: nevertheless at thy word I will let down the net."

Luke 5:26: "And they were all amazed, and they glorified God, and were filled with fear, saying, We have seen strange things to day."

Luke 7:19: "And John calling unto him two of his disciples sent them to Jesus, saying, Art thou he that should come? or look we for another?"

Luke 7:20: "When the men were come unto him, they said, John Baptist hath sent us unto thee, saying, Art thou he that should come? or look we for another?"

Luke 7:32: "They are like unto children sitting in the marketplace, and calling one to another, and saying, We have piped unto you, and ye have not danced; we have mourned to you, and ye have not wept."

Luke 8:24: "And they came to him, and awoke him, saying, Master, master, we perish. Then he arose, and rebuked the wind and the raging of the water: and they ceased, and there was a calm."

Luke 9:12: "And when the day began to wear away, then came the twelve, and said unto him, Send the multitude away, that they may go into the towns and country round about, and lodge, and get victuals: for we are here in a desert place."

Luke 9:13: "But he said unto them, Give ye them to eat. And they said, We have no more but five loaves and two fishes; except we should go and buy meat for all this people."

Luke 9:49: "And John answered and said, Master, we saw one casting out devils in thy name; and

we forbad him, because he followeth not with us."

Luke 9:54: "And when his disciples James and John saw this, they said, Lord, wilt thou that we command fire to come down from heaven, and consume them, even as Elias did?"

Luke 10:11: "Even the very dust of your city, which cleaveth on us, we do wipe off against you: notwithstanding be ye sure of this, that the kingdom of God is come nigh unto you."

Luke 11:4: "And forgive us our sins; for we also forgive every one that is indebted to us. And lead us not into temptation; but deliver us from evil."

Luke 13:26: "Then shall ye begin to say, We have eaten and drunk in thy presence, and thou hast taught in our streets."

Luke 15:32: "It was meet that we should make merry, and be glad: for this thy brother was dead, and is alive again; and was lost, and is found."

Luke 17:10: "So likewise ye, when ye shall have done all those things which are commanded you, say, We are unprofitable servants: we have done that which was our duty to do."

Luke 18:28: "Then Peter said, Lo, we have left all, and followed thee."

Luke 18:31: "Then he took unto him the twelve, and said unto them, Behold, we go up to Jerusalem, and all things that are written by the prophets concerning the Son of man shall be accomplished."

Luke 19:14: "But his citizens hated him, and sent a message after him, saying, We will not have this man to reign over us."

Luke 20:5: "And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say, Why then believed ye him not?"

Luke 20:6: "But and if we say, Of men; all the people will stone us: for they be persuaded that John was a prophet."

Luke 20:21: "And they asked him, saying, Master, we know that thou sayest and teachest rightly, neither acceptest thou the person of any, but teachest the way of God truly:"

Luke 22:8: "And he sent Peter and John, saying, Go and prepare us the passover, that we may eat."

Luke 22:9: "And they said unto him, Where wilt thou that we prepare?"

Luke 22:49: "When they which were about him saw what would follow, they said unto him, Lord, shall we smite with the sword?"

Luke 22:71: "And they said, What need we any further witness? for we ourselves have heard of his own mouth."

Luke 23:2: "And they began to accuse him, saying, We found this fellow perverting the nation, and forbidding to give tribute to Caesar, saying that he himself is Christ a King."

Luke 23:41: "And we indeed justly; for we receive the due reward of our deeds: but this man hath done nothing amiss."

Luke 24:21: "But we trusted that it had been he which should have redeemed Israel: and beside all this, to day is the third day since these things were done."

John 1:14: "And the Word was made flesh, and dwelt among us, (and we beheld his glory, the glory as of the only begotten of the Father,) full of grace and truth."

John 1:16: "And of his fulness have all we received, and grace for grace."

John 1:22: "Then said they unto him, Who art thou? that we may give an answer to them that sent us. What sayest thou of thyself?"

John 1:41: "He first findeth his own brother Simon, and saith unto him, We have found the Messias, which is, being interpreted, the Christ."

John 1:45: "Philip findeth Nathanael, and saith unto him, We have found him, of whom Moses in the law, and the prophets, did write, Jesus of Nazareth, the son of Joseph."

John 3:2: "The same came to Jesus by night, and said unto him, Rabbi, we know that thou art a teacher come from God: for no man can do these miracles that thou doest, except God be with him."

John 3:11: "Verily, verily, I say unto thee, We speak that we do know, and testify that we have seen; and ye receive not our witness."

John 4:22: "Ye worship ye know not what: we know what we worship: for salvation is of the Jews."

John 4:42: "And said unto the woman, Now we believe, not because of thy saying: for we have heard him ourselves, and know that this is indeed the Christ, the Saviour of the world."

John 6:5: "When Jesus then lifted up his eyes, and saw a great company come unto him, he saith unto Philip, Whence shall we buy bread, that these may eat?"

John 6:28: "Then said they unto him, What shall we do, that we might work the works of God?"

John 6:30: "They said therefore unto him, What sign shewest thou then, that we may see, and believe thee? what dost thou work?"

John 6:42: "And they said, Is not this Jesus, the son of Joseph, whose father and mother we know? how is it then that he saith, I came down from heaven?"

John 6:68: "Then Simon Peter answered him, Lord, to whom shall we go? thou hast the words of eternal life."

John 6:69: "And we believe and are sure that thou art that Christ, the Son of the living God."

John 7:27: "Howbeit we know this man whence he is: but when Christ cometh, no man knoweth whence he is."

John 7:35: "Then said the Jews among themselves, Whither will he go, that we shall not find him? will he go unto the dispersed among the Gentiles, and teach the Gentiles?"

John 8:33: "They answered him, We be Abraham's seed, and were never in bondage to any man: how sayest thou, Ye shall be made free?"

John 8:41: "Ye do the deeds of your father. Then said they to him, We be not born of fornication; we have one Father, even God."

John 8:48: "Then answered the Jews, and said unto him, Say we not well that thou art a Samaritan, and hast a devil?"

John 8:52: "Then said the Jews unto him, Now we know that thou hast a devil. Abraham is dead, and the prophets; and thou sayest, If a man keep my saying, he shall never taste of death."

John 9:20: "His parents answered them and said, We know that this is our son, and that he was born blind:"

John 9:21: "But by what means he now seeth, we know not; or who hath opened his eyes, we know not: he is of age; ask him: he shall speak for himself."

John 9:24: "Then again called they the man that was blind, and said unto him, Give God the praise: we know that this man is a sinner."

John 9:28: "Then they reviled him, and said, Thou art his disciple; but we are Moses' disciples."

John 9:29: "We know that God spake unto Moses: as for this fellow, we know not from whence he is."

John 9:31: "Now we know that God heareth not sinners: but if any man be a worshipper of God, and doeth his will, him he heareth."

John 9:40: "And some of the Pharisees which were with him heard these words, and said unto him, Are we blind also?"

John 9:41: "Jesus said unto them, If ye were blind, ye should have no sin: but now ye say, We see; therefore your sin remaineth."

John 10:33: "The Jews answered him, saying, For a good work we stone thee not; but for blasphemy; and because that thou, being a man, makest thyself God."

John 11:16: "Then said Thomas, which is called Didymus, unto his fellowdisciples, Let us also go, that we may die with him."

John 11:47: "Then gathered the chief priests and the Pharisees a council, and said, What do we? for this man doeth many miracles."

John 11:48: "If we let him thus alone, all men will believe on him: and the Romans shall come and take away both our place and nation."

John 12:21: "The same came therefore to Philip, which was of Bethsaida of Galilee, and desired him, saying, Sir, we would see Jesus."

John 12:34: "The people answered him, We have heard out of the law that Christ abideth for ever: and how sayest thou, The Son of man must be lifted up? who is this Son of man?"

John 13:29: "For some of them thought, because Judas had the bag, that Jesus had said unto him, Buy those things that we have need of against the feast; or, that he should give something to the poor."

John 14:5: "Thomas saith unto him, Lord, we know not whither thou goest; and how can we know the way?"

John 14:23: "Jesus answered and said unto him, If a man love me, he will keep my words: and my Father will love him, and we will come unto him, and make our abode with him."

John 16:18: "They said therefore, What is this that he saith, A little while? we cannot tell what he saith."

John 16:30: "Now are we sure that thou knowest all things, and needest not that any man should ask thee: by this we believe that thou camest forth from God."

John 17:11: "And now I am no more in the world, but these are in the world, and I come to thee. Holy Father, keep through thine own name those whom thou hast given me, that they may be one, as we are."

John 17:22: "And the glory which thou gavest me I have given them; that they may be one, even as we are one:"

John 18:30: "They answered and said unto him, If he were not a malefactor, we would not have delivered him up unto thee."

John 19:7: "The Jews answered him, We have a law, and by our law he ought to die, because he made himself the Son of God."

John 19:15: "But they cried out, Away with him, away with him, crucify him. Pilate saith unto them, Shall I crucify your King? The chief priests answered, We have no king but Caesar."

John 20:2: "Then she runneth, and cometh to Simon Peter, and to the other disciple, whom Jesus loved, and saith unto them, They have taken away the LORD out of the sepulchre, and we know not where they have laid him."

John 20:25: "The other disciples therefore said unto him, We have seen the LORD. But he said unto them, Except I shall see in his hands the print of the nails, and put my finger into the print of the nails, and thrust my hand into his side, I will not believe."

John 21:3: "Simon Peter saith unto them, I go a fishing. They say unto him, We also go with thee. They went forth, and entered into a ship immediately; and that night they caught nothing."

John 21:24: "This is the disciple which testifieth of these things, and wrote these things: and we know that his testimony is true."

Acts 2:8: "And how hear we every man in our own tongue, wherein we were born?"

Acts 2:11: "Cretes and Arabians, we do hear them speak in our tongues the wonderful works of God."

Acts 2:32: "This Jesus hath God raised up, whereof we all are witnesses."

Acts 2:37: "Now when they heard this, they were pricked in their heart, and said unto Peter and to the rest of the apostles, Men and brethren, what shall we do?"

Acts 3:12: "And when Peter saw it, he answered unto the people, Ye men of Israel, why marvel ye at this? or why look ye so earnestly on us, as though by our own power or holiness we had made this man to walk?"

Acts 3:15: "And killed the Prince of life, whom God hath raised from the dead; whereof we are witnesses."

Acts 4:9: "If we this day be examined of the good deed done to the impotent man, by what means he is made whole;"

Acts 4:12: "Neither is there salvation in any other: for there is none other name under heaven given among men, whereby we must be saved."

Acts 4:16: "Saying, What shall we do to these men? for that indeed a notable miracle hath been



done by them is manifest to all them that dwell in Jerusalem; and we cannot deny it."

Acts 4:20: "For we cannot but speak the things which we have seen and heard."

Acts 5:23: "Saying, The prison truly found we shut with all safety, and the keepers standing without before the doors: but when we had opened, we found no man within."

Acts 5:28: "Saying, Did not we straitly command you that ye should not teach in this name? and, behold, ye have filled Jerusalem with your doctrine, and intend to bring this man's blood upon us."

Acts 5:29: "Then Peter and the other apostles answered and said, We ought to obey God rather than men."

Acts 5:32: "And we are his witnesses of these things; and so is also the Holy Ghost, whom God hath given to them that obey him."

Acts 6:2: "Then the twelve called the multitude of the disciples unto them, and said, It is not reason that we should leave the word of God, and serve tables."

Acts 6:3: "Wherefore, brethren, look ye out among you seven men of honest report, full of the Holy Ghost and wisdom, whom we may appoint over this business."

Acts 6:4: "But we will give ourselves continually to prayer, and to the ministry of the word."

Acts 6:11: "Then they suborned men, which said, We have heard him speak blasphemous words against Moses, and against God."

Acts 6:14: "For we have heard him say, that this Jesus of Nazareth shall destroy this place, and shall change the customs which Moses delivered us."

Acts 7:40: "Saying unto Aaron, Make us gods to go before us: for as for this Moses, which brought us out of the land of Egypt, we wot not what is become of him."

Acts 10:33: "Immediately therefore I sent to thee; and thou hast well done that thou art come. Now therefore are we all here present before God, to hear all things that are commanded thee of God."

Acts 10:39: "And we are witnesses of all things which he did both in the land of the Jews, and in Jerusalem; whom they slew and hanged on a tree:"

Acts 10:47: "Can any man forbid water, that these should not be baptized, which have received the Holy Ghost as well as we?"

Acts 11:12: "And the Spirit bade me go with them, nothing doubting. Moreover these six brethren accompanied me, and we entered into the man's house:"

Acts 13:32: "And we declare unto you glad tidings, how that the promise which was made unto the fathers,"

Acts 13:46: "Then Paul and Barnabas waxed bold, and said, It was necessary that the word of God should first have been spoken to you: but seeing ye put it from you, and judge yourselves unworthy of everlasting life, lo, we turn to the Gentiles."

Acts 14:15: "And saying, Sirs, why do ye these things? We also are men of like passions with you, and preach unto you that ye should turn from these vanities unto the living God, which made heaven, and earth, and the sea, and all things that are therein:"

Acts 14:22: "Confirming the souls of the disciples, and exhorting them to continue in the faith, and that we must through much tribulation enter into the kingdom of God."

Acts 15:10: "Now therefore why tempt ye God, to put a yoke upon the neck of the disciples, which neither our fathers nor we were able to bear?"

Acts 15:11: "But we believe that through the grace of the LORD Jesus Christ we shall be saved, even as they."

Acts 15:19: "Wherefore my sentence is, that we trouble not them, which from among the Gentiles are turned to God:"

Acts 15:20: "But that we write unto them, that they abstain from pollutions of idols, and from fornication, and from things strangled, and from blood."

Acts 15:24: "Forasmuch as we have heard, that certain which went out from us have troubled you with words, subverting your souls, saying, Ye must be circumcised, and keep the law: to whom we gave no such commandment:"

Acts 15:27: "We have sent therefore Judas and Silas, who shall also tell you the same things by mouth."

Acts 15:36: "And some days after Paul said unto Barnabas, Let us go again and visit our brethren in every city where we have preached the word of the LORD, and see how they do."

Acts 16:10: "And after he had seen the vision, immediately we endeavoured to go into Macedonia, assuredly gathering that the Lord had called us for to preach the gospel unto them."

Acts 16:11: "Therefore loosing from Troas, we came with a straight course to Samothracia, and the next day to Neapolis;"

Acts 16:12: "And from thence to Philippi, which is the chief city of that part of Macedonia, and a colony: and we were in that city abiding certain days."

Acts 16:13: "And on the sabbath we went out of the city by a river side, where prayer was wont to be made; and we sat down, and spake unto the women which resorted thither."

Acts 16:16: "And it came to pass, as we went to prayer, a certain damsel possessed with a spirit of divination met us, which brought her masters much gain by soothsaying:"

Acts 16:28: "But Paul cried with a loud voice, saying, Do thyself no harm: for we are all here."

Acts 17:19: "And they took him, and brought him unto Areopagus, saying, May we know what this new doctrine, whereof thou speakest, is?"

Acts 17:20: "For thou bringest certain strange things to our ears: we would know therefore what these things mean."

Acts 17:28: "For in him we live, and move, and have our being; as certain also of your own poets have said, For we are also his offspring."

Acts 17:29: "Forasmuch then as we are the offspring of God, we ought not to think that the Godhead is like unto gold, or silver, or stone, graven by art and man's device."

Acts 17:32: "And when they heard of the resurrection of the dead, some mocked: and others said, We will hear thee again of this matter."

Acts 19:2: "He said unto them, Have ye received the Holy Ghost since ye believed? And they said unto him, We have not so much as heard whether there be any Holy Ghost."

Acts 19:13: "Then certain of the vagabond Jews, exorcists, took upon them to call over them which had evil spirits the name of the LORD Jesus, saying, We adjure you by Jesus whom Paul preacheth."

Acts 19:25: "Whom he called together with the workmen of like occupation, and said, Sirs, ye know that by this craft we have our wealth."

Acts 19:40: "For we are in danger to be called in question for this day's uproar, there being no cause whereby we may give an account of this concourse."

Acts 20:6: "And we sailed away from Philippi after the days of unleavened bread, and came unto them to Troas in five days; where we abode seven days."

Acts 20:13: "And we went before to ship, and sailed unto Assos, there intending to take in Paul: for so had he appointed, minding himself to go afoot."

Acts 20:14: "And when he met with us at Assos, we took him in, and came to Mitylene."

Acts 20:15: "And we sailed thence, and came the next day over against Chios; and the next day we arrived at Samos, and tarried at Trogyllium; and the next day we came to Miletus."

Acts 21:1: "And it came to pass, that after we were gotten from them, and had launched, we came with a straight course unto Coos, and the day following unto Rhodes, and from thence unto Patara:"

Acts 21:2: "And finding a ship sailing over unto Phenicia, we went aboard, and set forth."

Acts 21:3: "Now when we had discovered Cyprus, we left it on the left hand, and sailed into Syria, and landed at Tyre: for there the ship was to unlade her burden."

Acts 21:4: "And finding disciples, we tarried there seven days: who said to Paul through the Spirit, that he should not go up to Jerusalem."

Acts 21:5: "And when we had accomplished those days, we departed and went our way; and they all brought us on our way, with wives and children, till we were out of the city: and we kneeled

down on the shore, and prayed."

Acts 21:6: "And when we had taken our leave one of another, we took ship; and they returned home again."

Acts 21:7: "And when we had finished our course from Tyre, we came to Ptolemais, and saluted the brethren, and abode with them one day."

Acts 21:8: "And the next day we that were of Paul's company departed, and came unto Caesarea: and we entered into the house of Philip the evangelist, which was one of the seven; and abode with him."

Acts 21:10: "And as we tarried there many days, there came down from Judaea a certain prophet, named Agabus."

Acts 21:12: "And when we heard these things, both we, and they of that place, besought him not to go up to Jerusalem."

Acts 21:14: "And when he would not be persuaded, we ceased, saying, The will of the Lord be done."

Acts 21:15: "And after those days we took up our carriages, and went up to Jerusalem."

Acts 21:16: "There went with us also certain of the disciples of Caesarea, and brought with them one Mnason of Cyprus, an old disciple, with whom we should lodge."

Acts 21:17: "And when we were come to Jerusalem, the brethren received us gladly."

Acts 21:23: "Do therefore this that we say to thee: We have four men which have a vow on them;"

Acts 21:25: "As touching the Gentiles which believe, we have written and concluded that they observe no such thing, save only that they keep themselves from things offered to idols, and from blood, and from strangled, and from fornication."

Acts 23:9: "And there arose a great cry: and the scribes that were of the Pharisees' part arose, and strove, saying, We find no evil in this man: but if a spirit or an angel hath spoken to him, let us not fight against God."

Acts 23:14: "And they came to the chief priests and elders, and said, We have bound ourselves under a great curse, that we will eat nothing until we have slain Paul."

Acts 23:15: "Now therefore ye with the council signify to the chief captain that he bring him down unto you to morrow, as though ye would enquire something more perfectly concerning him: and we, or ever he come near, are ready to kill him."

Acts 24:2: "And when he was called forth, Tertullus began to accuse him, saying, Seeing that by thee we enjoy great quietness, and that very worthy deeds are done unto this nation by thy providence,"

Acts 24:3: "We accept it always, and in all places, most noble Felix, with all thankfulness."

Acts 24:5: "For we have found this man a pestilent fellow, and a mover of sedition among all the Jews throughout the world, and a ringleader of the sect of the Nazarenes:"

Acts 24:6: "Who also hath gone about to profane the temple: whom we took, and would have judged according to our law."

Acts 24:8: "Commanding his accusers to come unto thee: by examining of whom thyself mayest take knowledge of all these things, whereof we accuse him."

Acts 26:14: "And when we were all fallen to the earth, I heard a voice speaking unto me, and saying in the Hebrew tongue, Saul, Saul, why persecutest thou me? it is hard for thee to kick against the pricks."

Acts 27:1: "And when it was determined that we should sail into Italy, they delivered Paul and certain other prisoners unto one named Julius, a centurion of Augustus' band."

Acts 27:2: "And entering into a ship of Adramyttium, we launched, meaning to sail by the coasts of Asia; one Aristarchus, a Macedonian of Thessalonica, being with us."

Acts 27:3: "And the next day we touched at Sidon. And Julius courteously entreated Paul, and gave him liberty to go unto his friends to refresh himself."

Acts 27:4: "And when we had launched from thence, we sailed under Cyprus, because the winds

were contrary."

Acts 27:5: "And when we had sailed over the sea of Cilicia and Pamphylia, we came to Myra, a city of Lycia."

Acts 27:7: "And when we had sailed slowly many days, and scarce were come over against Cnidus, the wind not suffering us, we sailed under Crete, over against Salmone;"

Acts 27:15: "And when the ship was caught, and could not bear up into the wind, we let her drive."

Acts 27:16: "And running under a certain island which is called Claudia, we had much work to come by the boat:"

Acts 27:18: "And we being exceedingly tossed with a tempest, the next day they lightened the ship;"

Acts 27:19: "And the third day we cast out with our own hands the tackling of the ship."

Acts 27:20: "And when neither sun nor stars in many days appeared, and no small tempest lay on us, all hope that we should be saved was then taken away."

Acts 27:26: "Howbeit we must be cast upon a certain island."

Acts 27:27: "But when the fourteenth night was come, as we were driven up and down in Adria, about midnight the shipmen deemed that they drew near to some country;"

Acts 27:29: "Then fearing lest we should have fallen upon rocks, they cast four anchors out of the stern, and wished for the day."

Acts 27:37: "And we were in all in the ship two hundred threescore and sixteen souls."

Acts 28:10: "Who also honoured us with many honours; and when we departed, they laded us with such things as were necessary."

Acts 28:11: "And after three months we departed in a ship of Alexandria, which had wintered in the isle, whose sign was Castor and Pollux."

Acts 28:12: "And landing at Syracuse, we tarried there three days."

Acts 28:13: "And from thence we fetched a compass, and came to Rhegium: and after one day the south wind blew, and we came the next day to Puteoli:"

Acts 28:14: "Where we found brethren, and were desired to tarry with them seven days: and so we went toward Rome."

Acts 28:16: "And when we came to Rome, the centurion delivered the prisoners to the captain of the guard: but Paul was suffered to dwell by himself with a soldier that kept him."

Acts 28:21: "And they said unto him, We neither received letters out of Judaea concerning thee, neither any of the brethren that came shewed or spake any harm of thee."

Acts 28:22: "But we desire to hear of thee what thou thinkest: for as concerning this sect, we know that every where it is spoken against."

Romans 1:5: "By whom we have received grace and apostleship, for obedience to the faith among all nations, for his name:"

Romans 2:2: "But we are sure that the judgment of God is according to truth against them which commit such things."

Romans 3:5: "But if our unrighteousness commend the righteousness of God, what shall we say? Is God unrighteous who taketh vengeance? (I speak as a man)"

Romans 3:8: "And not rather, (as we be slanderously reported, and as some affirm that we say,) Let us do evil, that good may come? whose damnation is just."

Romans 3:9: "What then? are we better than they? No, in no wise: for we have before proved both Jews and Gentiles, that they are all under sin;"

Romans 3:19: "Now we know that what things soever the law saith, it saith to them who are under the law: that every mouth may be stopped, and all the world may become guilty before God."

Romans 3:28: "Therefore we conclude that a man is justified by faith without the deeds of the law."

Romans 3:31: "Do we then make void the law through faith? God forbid: yea, we establish the law."

Romans 4:1: "What shall we say then that Abraham our father, as pertaining to the flesh, hath

found?"

Romans 4:9: "Cometh this blessedness then upon the circumcision only, or upon the uncircumcision also? for we say that faith was reckoned to Abraham for righteousness."

Romans 4:24: "But for us also, to whom it shall be imputed, if we believe on him that raised up Jesus our Lord from the dead;"

Romans 5:1: "Therefore being justified by faith, we have peace with God through our Lord Jesus Christ:"

Romans 5:2: "By whom also we have access by faith into this grace wherein we stand, and rejoice in hope of the glory of God."

Romans 5:3: "And not only so, but we glory in tribulations also: knowing that tribulation worketh patience;"

Romans 5:6: "For when we were yet without strength, in due time Christ died for the ungodly."

Romans 5:8: "But God commendeth his love toward us, in that, while we were yet sinners, Christ died for us."

Romans 5:9: "Much more then, being now justified by his blood, we shall be saved from wrath through him."

Romans 5:10: "For if, when we were enemies, we were reconciled to God by the death of his Son, much more, being reconciled, we shall be saved by his life."

Romans 5:11: "And not only so, but we also joy in God through our Lord Jesus Christ, by whom we have now received the atonement."

Romans 6:1: "What shall we say then? Shall we continue in sin, that grace may abound?"

Romans 6:2: "God forbid. How shall we, that are dead to sin, live any longer therein?"

Romans 6:4: "Therefore we are buried with him by baptism into death: that like as Christ was raised up from the dead by the glory of the Father, even so we also should walk in newness of life."

Romans 6:5: "For if we have been planted together in the likeness of his death, we shall be also in the likeness of his resurrection:"

Romans 6:6: "Knowing this, that our old man is crucified with him, that the body of sin might be destroyed, that henceforth we should not serve sin."

Romans 6:8: "Now if we be dead with Christ, we believe that we shall also live with him:"

Romans 6:15: "What then? shall we sin, because we are not under the law, but under grace? God forbid."

Romans 7:4: "Wherefore, my brethren, ye also are become dead to the law by the body of Christ; that ye should be married to another, even to him who is raised from the dead, that we should bring forth fruit unto God."

Romans 7:5: "For when we were in the flesh, the motions of sins, which were by the law, did work in our members to bring forth fruit unto death."

Romans 7:6: "But now we are delivered from the law, that being dead wherein we were held; that we should serve in newness of spirit, and not in the oldness of the letter."

Romans 7:7: "What shall we say then? Is the law sin? God forbid. Nay, I had not known sin, but by the law: for I had not known lust, except the law had said, Thou shalt not covet."

Romans 7:14: "For we know that the law is spiritual: but I am carnal, sold under sin."

Romans 8:12: "Therefore, brethren, we are debtors, not to the flesh, to live after the flesh."

Romans 8:15: "For ye have not received the spirit of bondage again to fear; but ye have received the Spirit of adoption, whereby we cry, Abba, Father."

Romans 8:16: "The Spirit itself beareth witness with our spirit, that we are the children of God:"

Romans 8:17: "And if children, then heirs; heirs of God, and joint-heirs with Christ; if so be that we suffer with him, that we may be also glorified together."

Romans 8:22: "For we know that the whole creation groaneth and travaileth in pain together until now."

Romans 8:23: "And not only they, but ourselves also, which have the firstfruits of the Spirit, even

we ourselves groan within ourselves, waiting for the adoption, to wit, the redemption of our body."  
Romans 8:24: "For we are saved by hope: but hope that is seen is not hope: for what a man seeth, why doth he yet hope for?"  
Romans 8:25: "But if we hope for that we see not, then do we with patience wait for it."  
Romans 8:26: "Likewise the Spirit also helpeth our infirmities: for we know not what we should pray for as we ought: but the Spirit itself maketh intercession for us with groanings which cannot be uttered."  
Romans 8:28: "And we know that all things work together for good to them that love God, to them who are the called according to his purpose."  
Romans 8:31: "What shall we then say to these things? If God be for us, who can be against us?"  
Romans 8:36: "As it is written, For thy sake we are killed all the day long; we are accounted as sheep for the slaughter."  
Romans 8:37: "Nay, in all these things we are more than conquerors through him that loved us."  
Romans 9:14: "What shall we say then? Is there unrighteousness with God? God forbid."  
Romans 9:29: "And as Esaias said before, Except the Lord of Sabaoth had left us a seed, we had been as Sodoma, and been made like unto Gomorrha."  
Romans 9:30: "What shall we say then? That the Gentiles, which followed not after righteousness, have attained to righteousness, even the righteousness which is of faith."  
Romans 10:8: "But what saith it? The word is nigh thee, even in thy mouth, and in thy heart: that is, the word of faith, which we preach;"  
Romans 12:4: "For as we have many members in one body, and all members have not the same office:"  
Romans 12:5: "So we, being many, are one body in Christ, and every one members one of another."  
Romans 13:11: "And that, knowing the time, that now it is high time to awake out of sleep: for now is our salvation nearer than when we believed."  
Romans 14:8: "For whether we live, we live unto the Lord; and whether we die, we die unto the Lord: whether we live therefore, or die, we are the Lord's."  
Romans 14:10: "But why dost thou judge thy brother? or why dost thou set at nought thy brother? for we shall all stand before the judgment seat of Christ."  
Romans 15:1: "We then that are strong ought to bear the infirmities of the weak, and not to please ourselves."  
Romans 15:4: "For whatsoever things were written aforetime were written for our learning, that we through patience and comfort of the scriptures might have hope."  
1 Corinthians 1:23: "But we preach Christ crucified, unto the Jews a stumblingblock, and unto the Greeks foolishness;"  
1 Corinthians 2:6: "Howbeit we speak wisdom among them that are perfect: yet not the wisdom of this world, nor of the princes of this world, that come to nought:"  
1 Corinthians 2:7: "But we speak the wisdom of God in a mystery, even the hidden wisdom, which God ordained before the world unto our glory:"  
1 Corinthians 2:12: "Now we have received, not the spirit of the world, but the spirit which is of God; that we might know the things that are freely given to us of God."  
1 Corinthians 2:13: "Which things also we speak, not in the words which man's wisdom teacheth, but which the Holy Ghost teacheth; comparing spiritual things with spiritual."  
1 Corinthians 2:16: "For who hath known the mind of the Lord, that he may instruct him? But we have the mind of Christ."  
1 Corinthians 3:9: "For we are labourers together with God: ye are God's husbandry, ye are God's building."  
1 Corinthians 4:8: "Now ye are full, now ye are rich, ye have reigned as kings without us: and I would to God ye did reign, that we also might reign with you."  
1 Corinthians 4:9: "For I think that God hath set forth us the apostles last, as it were appointed to

death: for we are made a spectacle unto the world, and to angels, and to men."

1 Corinthians 4:10: "We are fools for Christ's sake, but ye are wise in Christ; we are weak, but ye are strong; ye are honourable, but we are despised."

1 Corinthians 4:11: "Even unto this present hour we both hunger, and thirst, and are naked, and are buffeted, and have no certain dwellingplace;"

1 Corinthians 4:12: "And labour, working with our own hands: being reviled, we bless; being persecuted, we suffer it:"

1 Corinthians 4:13: "Being defamed, we intreat: we are made as the filth of the world, and are the offscouring of all things unto this day."

1 Corinthians 6:3: "Know ye not that we shall judge angels? how much more things that pertain to this life?"

1 Corinthians 8:1: "Now as touching things offered unto idols, we know that we all have knowledge. Knowledge puffeth up, but charity edifieth."

1 Corinthians 8:4: "As concerning therefore the eating of those things that are offered in sacrifice unto idols, we know that an idol is nothing in the world, and that there is none other God but one."

1 Corinthians 8:6: "But to us there is but one God, the Father, of whom are all things, and we in him; and one Lord Jesus Christ, by whom are all things, and we by him."

1 Corinthians 8:8: "But meat commendeth us not to God: for neither, if we eat, are we the better; neither, if we eat not, are we the worse."

1 Corinthians 9:4: "Have we not power to eat and to drink?"

1 Corinthians 9:5: "Have we not power to lead about a sister, a wife, as well as other apostles, and as the brethren of the Lord, and Cephas?"

1 Corinthians 9:6: "Or I only and Barnabas, have not we power to forbear working?"

1 Corinthians 9:11: "If we have sown unto you spiritual things, is it a great thing if we shall reap your carnal things?"

1 Corinthians 9:12: "If others be partakers of this power over you, are not we rather? Nevertheless we have not used this power; but suffer all things, lest we should hinder the gospel of Christ."

1 Corinthians 9:25: "And every man that striveth for the mastery is temperate in all things. Now they do it to obtain a corruptible crown; but we an incorruptible."

1 Corinthians 10:6: "Now these things were our examples, to the intent we should not lust after evil things, as they also lusted."

1 Corinthians 10:16: "The cup of blessing which we bless, is it not the communion of the blood of Christ? The bread which we break, is it not the communion of the body of Christ?"

1 Corinthians 10:17: "For we being many are one bread, and one body: for we are all partakers of that one bread."

1 Corinthians 10:22: "Do we provoke the Lord to jealousy? are we stronger than he?"

1 Corinthians 11:16: "But if any man seem to be contentious, we have no such custom, neither the churches of God."

1 Corinthians 11:31: "For if we would judge ourselves, we should not be judged."

1 Corinthians 11:32: "But when we are judged, we are chastened of the Lord, that we should not be condemned with the world."

1 Corinthians 12:13: "For by one Spirit are we all baptized into one body, whether we be Jews or Gentiles, whether we be bond or free; and have been all made to drink into one Spirit."

1 Corinthians 12:23: "And those members of the body, which we think to be less honourable, upon these we bestow more abundant honour; and our uncomely parts have more abundant comeliness."

1 Corinthians 13:9: "For we know in part, and we prophesy in part."

1 Corinthians 13:12: "For now we see through a glass, darkly; but then face to face: now I know in part; but then shall I know even as also I am known."

1 Corinthians 15:11: "Therefore whether it were I or they, so we preach, and so ye believed."

1 Corinthians 15:15: "Yea, and we are found false witnesses of God; because we have testified of

God that he raised up Christ: whom he raised not up, if so be that the dead rise not."

1 Corinthians 15:19: "If in this life only we have hope in Christ, we are of all men most miserable."

1 Corinthians 15:30: "And why stand we in jeopardy every hour?"

1 Corinthians 15:32: "If after the manner of men I have fought with beasts at Ephesus, what advantageth it me, if the dead rise not? let us eat and drink; for to morrow we die."

1 Corinthians 15:49: "And as we have borne the image of the earthy, we shall also bear the image of the heavenly."

1 Corinthians 15:51: "Behold, I shew you a mystery; We shall not all sleep, but we shall all be changed,"

1 Corinthians 15:52: "In a moment, in the twinkling of an eye, at the last trump: for the trumpet shall sound, and the dead shall be raised incorruptible, and we shall be changed."

2 Corinthians 1:4: "Who comforteth us in all our tribulation, that we may be able to comfort them which are in any trouble, by the comfort wherewith we ourselves are comforted of God."

2 Corinthians 1:6: "And whether we be afflicted, it is for your consolation and salvation, which is effectual in the enduring of the same sufferings which we also suffer: or whether we be comforted, it is for your consolation and salvation."

2 Corinthians 1:8: "For we would not, brethren, have you ignorant of our trouble which came to us in Asia, that we were pressed out of measure, above strength, insomuch that we despaired even of life:"

2 Corinthians 1:9: "But we had the sentence of death in ourselves, that we should not trust in ourselves, but in God which raiseth the dead:"

2 Corinthians 1:10: "Who delivered us from so great a death, and doth deliver: in whom we trust that he will yet deliver us;"

2 Corinthians 1:12: "For our rejoicing is this, the testimony of our conscience, that in simplicity and godly sincerity, not with fleshly wisdom, but by the grace of God, we have had our conversation in the world, and more abundantly to you-ward."

2 Corinthians 1:13: "For we write none other things unto you, than what ye read or acknowledge; and I trust ye shall acknowledge even to the end;"

2 Corinthians 1:14: "As also ye have acknowledged us in part, that we are your rejoicing, even as ye also are our's in the day of the Lord Jesus."

2 Corinthians 1:24: "Not for that we have dominion over your faith, but are helpers of your joy: for by faith ye stand."

2 Corinthians 2:11: "Lest Satan should get an advantage of us: for we are not ignorant of his devices."

2 Corinthians 2:15: "For we are unto God a sweet savour of Christ, in them that are saved, and in them that perish:"

2 Corinthians 2:16: "To the one we are the savour of death unto death; and to the other the savour of life unto life. And who is sufficient for these things?"

2 Corinthians 2:17: "For we are not as many, which corrupt the word of God: but as of sincerity, but as of God, in the sight of God speak we in Christ."

2 Corinthians 3:1: "Do we begin again to commend ourselves? or need we, as some others, epistles of commendation to you, or letters of commendation from you?"

2 Corinthians 3:4: "And such trust have we through Christ to God-ward:"

2 Corinthians 3:5: "Not that we are sufficient of ourselves to think any thing as of ourselves; but our sufficiency is of God;"

2 Corinthians 3:12: "Seeing then that we have such hope, we use great plainness of speech:"

2 Corinthians 3:18: "But we all, with open face beholding as in a glass the glory of the Lord, are changed into the same image from glory to glory, even as by the Spirit of the LORD."

2 Corinthians 4:1: "Therefore seeing we have this ministry, as we have received mercy, we faint not;"



2 Corinthians 4:5: "For we preach not ourselves, but Christ Jesus the Lord; and ourselves your servants for Jesus' sake."

2 Corinthians 4:7: "But we have this treasure in earthen vessels, that the excellency of the power may be of God, and not of us."

2 Corinthians 4:8: "We are troubled on every side, yet not distressed; we are perplexed, but not in despair;"

2 Corinthians 4:11: "For we which live are alway delivered unto death for Jesus' sake, that the life also of Jesus might be made manifest in our mortal flesh."

2 Corinthians 4:13: "We having the same spirit of faith, according as it is written, I believed, and therefore have I spoken; we also believe, and therefore speak;"

2 Corinthians 4:16: "For which cause we faint not; but though our outward man perish, yet the inward man is renewed day by day."

2 Corinthians 4:18: "While we look not at the things which are seen, but at the things which are not seen: for the things which are seen are temporal; but the things which are not seen are eternal."

2 Corinthians 5:1: "For we know that if our earthly house of this tabernacle were dissolved, we have a building of God, an house not made with hands, eternal in the heavens."

2 Corinthians 5:2: "For in this we groan, earnestly desiring to be clothed upon with our house which is from heaven:"

2 Corinthians 5:3: "If so be that being clothed we shall not be found naked."

2 Corinthians 5:4: "For we that are in this tabernacle do groan, being burdened: not for that we would be unclothed, but clothed upon, that mortality might be swallowed up of life."

2 Corinthians 5:6: "Therefore we are always confident, knowing that, whilst we are at home in the body, we are absent from the Lord:"

2 Corinthians 5:7: "(For we walk by faith, not by sight:)"

2 Corinthians 5:8: "We are confident, I say, and willing rather to be absent from the body, and to be present with the Lord."

2 Corinthians 5:9: "Wherefore we labour, that, whether present or absent, we may be accepted of him."

2 Corinthians 5:10: "For we must all appear before the judgment seat of Christ; that every one may receive the things done in his body, according to that he hath done, whether it be good or bad."

2 Corinthians 5:11: "Knowing therefore the terror of the Lord, we persuade men; but we are made manifest unto God; and I trust also are made manifest in your consciences."

2 Corinthians 5:12: "For we commend not ourselves again unto you, but give you occasion to glory on our behalf, that ye may have somewhat to answer them which glory in appearance, and not in heart."

2 Corinthians 5:13: "For whether we be beside ourselves, it is to God: or whether we be sober, it is for your cause."

2 Corinthians 5:14: "For the love of Christ constraineth us; because we thus judge, that if one died for all, then were all dead:"

2 Corinthians 5:16: "Wherefore henceforth know we no man after the flesh: yea, though we have known Christ after the flesh, yet now henceforth know we him no more."

2 Corinthians 5:20: "Now then we are ambassadors for Christ, as though God did beseech you by us: we pray you in Christ's stead, be ye reconciled to God."

2 Corinthians 5:21: "For he hath made him to be sin for us, who knew no sin; that we might be made the righteousness of God in him."

2 Corinthians 6:1: "We then, as workers together with him, beseech you also that ye receive not the grace of God in vain."

2 Corinthians 6:9: "As unknown, and yet well known; as dying, and, behold, we live; as chastened, and not killed;"

2 Corinthians 7:2: "Receive us; we have wronged no man, we have corrupted no man, we have

defrauded no man."

2 Corinthians 7:5: "For, when we were come into Macedonia, our flesh had no rest, but we were troubled on every side; without were fightings, within were fears."

2 Corinthians 7:13: "Therefore we were comforted in your comfort: yea, and exceedingly the more joyed we for the joy of Titus, because his spirit was refreshed by you all."

2 Corinthians 7:14: "For if I have boasted any thing to him of you, I am not ashamed; but as we spake all things to you in truth, even so our boasting, which I made before Titus, is found a truth."

2 Corinthians 8:1: "Moreover, brethren, we do you to wit of the grace of God bestowed on the churches of Macedonia;"

2 Corinthians 8:4: "Praying us with much intreaty that we would receive the gift, and take upon us the fellowship of the ministering to the saints."

2 Corinthians 8:5: "And this they did, not as we hoped, but first gave their own selves to the Lord, and unto us by the will of God."

2 Corinthians 8:6: "Insomuch that we desired Titus, that as he had begun, so he would also finish in you the same grace also."

2 Corinthians 8:18: "And we have sent with him the brother, whose praise is in the gospel throughout all the churches;"

2 Corinthians 8:22: "And we have sent with them our brother, whom we have oftentimes proved diligent in many things, but now much more diligent, upon the great confidence which I have in you."

2 Corinthians 9:4: "Lest haply if they of Macedonia come with me, and find you unprepared, we (that we say not, ye) should be ashamed in this same confident boasting."

2 Corinthians 10:2: "But I beseech you, that I may not be bold when I am present with that confidence, wherewith I think to be bold against some, which think of us as if we walked according to the flesh."

2 Corinthians 10:3: "For though we walk in the flesh, we do not war after the flesh:"

2 Corinthians 10:7: "Do ye look on things after the outward appearance? If any man trust to himself that he is Christ's, let him of himself think this again, that, as he is Christ's, even so are we Christ's."

2 Corinthians 10:11: "Let such an one think this, that, such as we are in word by letters when we are absent, such will we be also in deed when we are present."

2 Corinthians 10:12: "For we dare not make ourselves of the number, or compare ourselves with some that commend themselves: but they measuring themselves by themselves, and comparing themselves among themselves, are not wise."

2 Corinthians 10:13: "But we will not boast of things without our measure, but according to the measure of the rule which God hath distributed to us, a measure to reach even unto you."

2 Corinthians 10:14: "For we stretch not ourselves beyond our measure, as though we reached not unto you: for we are come as far as to you also in preaching the gospel of Christ:"

2 Corinthians 10:15: "Not boasting of things without our measure, that is, of other men's labours; but having hope, when your faith is increased, that we shall be enlarged by you according to our rule abundantly,"

2 Corinthians 11:4: "For if he that cometh preacheth another Jesus, whom we have not preached, or if ye receive another spirit, which ye have not received, or another gospel, which ye have not accepted, ye might well bear with him."

2 Corinthians 11:6: "But though I be rude in speech, yet not in knowledge; but we have been throughly made manifest among you in all things."

2 Corinthians 11:12: "But what I do, that I will do, that I may cut off occasion from them which desire occasion; that wherein they glory, they may be found even as we."

2 Corinthians 11:21: "I speak as concerning reproach, as though we had been weak. Howbeit whereinsoever any is bold, (I speak foolishly,) I am bold also."

2 Corinthians 12:18: "I desired Titus, and with him I sent a brother. Did Titus make a gain of you?"

walked we not in the same spirit? walked we not in the same steps?"

2 Corinthians 12:19: "Again, think ye that we excuse ourselves unto you? we speak before God in Christ: but we do all things, dearly beloved, for your edifying."

2 Corinthians 13:4: "For though he was crucified through weakness, yet he liveth by the power of God. For we also are weak in him, but we shall live with him by the power of God toward you."

2 Corinthians 13:6: "But I trust that ye shall know that we are not reprobates."

2 Corinthians 13:7: "Now I pray to God that ye do no evil; not that we should appear approved, but that ye should do that which is honest, though we be as reprobates."

2 Corinthians 13:8: "For we can do nothing against the truth, but for the truth."

2 Corinthians 13:9: "For we are glad, when we are weak, and ye are strong: and this also we wish, even your perfection."

Galatians 1:8: "But though we, or an angel from heaven, preach any other gospel unto you than that which we have preached unto you, let him be accursed."

Galatians 1:9: "As we said before, so say I now again, if any man preach any other gospel unto you than that ye have received, let him be accursed."

Galatians 2:4: "And that because of false brethren unawares brought in, who came in privily to spy out our liberty which we have in Christ Jesus, that they might bring us into bondage:"

Galatians 2:5: "To whom we gave place by subjection, no, not for an hour; that the truth of the gospel might continue with you."

Galatians 2:9: "And when James, Cephas, and John, who seemed to be pillars, perceived the grace that was given unto me, they gave to me and Barnabas the right hands of fellowship; that we should go unto the heathen, and they unto the circumcision."

Galatians 2:10: "Only they would that we should remember the poor; the same which I also was forward to do."

Galatians 2:15: "We who are Jews by nature, and not sinners of the Gentiles,"

Galatians 2:16: "Knowing that a man is not justified by the works of the law, but by the faith of Jesus Christ, even we have believed in Jesus Christ, that we might be justified by the faith of Christ, and not by the works of the law: for by the works of the law shall no flesh be justified."

Galatians 2:17: "But if, while we seek to be justified by Christ, we ourselves also are found sinners, is therefore Christ the minister of sin? God forbid."

Galatians 3:14: "That the blessing of Abraham might come on the Gentiles through Jesus Christ; that we might receive the promise of the Spirit through faith."

Galatians 3:23: "But before faith came, we were kept under the law, shut up unto the faith which should afterwards be revealed."

Galatians 3:24: "Wherefore the law was our schoolmaster to bring us unto Christ, that we might be justified by faith."

Galatians 3:25: "But after that faith is come, we are no longer under a schoolmaster."

Galatians 4:3: "Even so we, when we were children, were in bondage under the elements of the world:"

Galatians 4:5: "To redeem them that were under the law, that we might receive the adoption of sons."

Galatians 4:28: "Now we, brethren, as Isaac was, are the children of promise."

Galatians 4:31: "So then, brethren, we are not children of the bondwoman, but of the free."

Galatians 5:5: "For we through the Spirit wait for the hope of righteousness by faith."

Galatians 5:25: "If we live in the Spirit, let us also walk in the Spirit."

Galatians 6:9: "And let us not be weary in well doing: for in due season we shall reap, if we faint not."

Galatians 6:10: "As we have therefore opportunity, let us do good unto all men, especially unto them who are of the household of faith."

Ephesians 1:4: "According as he hath chosen us in him before the foundation of the world, that we

should be holy and without blame before him in love:"

Ephesians 1:7: "In whom we have redemption through his blood, the forgiveness of sins, according to the riches of his grace;"

Ephesians 1:11: "In whom also we have obtained an inheritance, being predestinated according to the purpose of him who worketh all things after the counsel of his own will:"

Ephesians 1:12: "That we should be to the praise of his glory, who first trusted in Christ."

Ephesians 2:3: "Among whom also we all had our conversation in times past in the lusts of our flesh, fulfilling the desires of the flesh and of the mind; and were by nature the children of wrath, even as others."

Ephesians 2:5: "Even when we were dead in sins, hath quickened us together with Christ, (by grace ye are saved;)"

Ephesians 2:10: "For we are his workmanship, created in Christ Jesus unto good works, which God hath before ordained that we should walk in them."

Ephesians 2:18: "For through him we both have access by one Spirit unto the Father."

Ephesians 3:12: "In whom we have boldness and access with confidence by the faith of him."

Ephesians 3:20: "Now unto him that is able to do exceeding abundantly above all that we ask or think, according to the power that worketh in us,"

Ephesians 4:13: "Till we all come in the unity of the faith, and of the knowledge of the Son of God, unto a perfect man, unto the measure of the stature of the fulness of Christ:"

Ephesians 4:14: "That we henceforth be no more children, tossed to and fro, and carried about with every wind of doctrine, by the sleight of men, and cunning craftiness, whereby they lie in wait to deceive;"

Ephesians 4:25: "Wherefore putting away lying, speak every man truth with his neighbour: for we are members one of another."

Ephesians 5:30: "For we are members of his body, of his flesh, and of his bones."

Ephesians 6:12: "For we wrestle not against flesh and blood, but against principalities, against powers, against the rulers of the darkness of this world, against spiritual wickedness in high places."

Philippians 3:3: "For we are the circumcision, which worship God in the spirit, and rejoice in Christ Jesus, and have no confidence in the flesh."

Philippians 3:16: "Nevertheless, whereto we have already attained, let us walk by the same rule, let us mind the same thing."

Philippians 3:20: "For our conversation is in heaven; from whence also we look for the Saviour, the Lord Jesus Christ:"

Colossians 1:3: "We give thanks to God and the Father of our Lord Jesus Christ, praying always for you,"

Colossians 1:4: "Since we heard of your faith in Christ Jesus, and of the love which ye have to all the saints,"

Colossians 1:9: "For this cause we also, since the day we heard it, do not cease to pray for you, and to desire that ye might be filled with the knowledge of his will in all wisdom and spiritual understanding;"

Colossians 1:14: "In whom we have redemption through his blood, even the forgiveness of sins:"

Colossians 1:28: "Whom we preach, warning every man, and teaching every man in all wisdom; that we may present every man perfect in Christ Jesus:"

1 Thessalonians 1:2: "We give thanks to God always for you all, making mention of you in our prayers;"

1 Thessalonians 1:5: "For our gospel came not unto you in word only, but also in power, and in the Holy Ghost, and in much assurance; as ye know what manner of men we were among you for your sake."

1 Thessalonians 1:8: "For from you sounded out the word of the Lord not only in Macedonia and Achaia, but also in every place your faith to God-ward is spread abroad; so that we need not to

1 Thessalonians 1:9: "For they themselves shew of us what manner of entering in we had unto you, and how ye turned to God from idols to serve the living and true God;"

1 Thessalonians 2:2: "But even after that we had suffered before, and were shamefully entreated, as ye know, at Philippi, we were bold in our God to speak unto you the gospel of God with much contention."

1 Thessalonians 2:4: "But as we were allowed of God to be put in trust with the gospel, even so we speak; not as pleasing men, but God, which trieth our hearts."

1 Thessalonians 2:5: "For neither at any time used we flattering words, as ye know, nor a cloke of covetousness; God is witness:"

1 Thessalonians 2:6: "Nor of men sought we glory, neither of you, nor yet of others, when we might have been burdensome, as the apostles of Christ."

1 Thessalonians 2:7: "But we were gentle among you, even as a nurse cherisheth her children:"

1 Thessalonians 2:8: "So being affectionately desirous of you, we were willing to have imparted unto you, not the gospel of God only, but also our own souls, because ye were dear unto us."

1 Thessalonians 2:9: "For ye remember, brethren, our labour and travail: for labouring night and day, because we would not be chargeable unto any of you, we preached unto you the gospel of God."

1 Thessalonians 2:10: "Ye are witnesses, and God also, how holily and justly and unblameably we behaved ourselves among you that believe:"

1 Thessalonians 2:11: "As ye know how we exhorted and comforted and charged every one of you, as a father doth his children,"

1 Thessalonians 2:13: "For this cause also thank we God without ceasing, because, when ye received the word of God which ye heard of us, ye received it not as the word of men, but as it is in truth, the word of God, which effectually worketh also in you that believe."

1 Thessalonians 2:17: "But we, brethren, being taken from you for a short time in presence, not in heart, endeavoured the more abundantly to see your face with great desire."

1 Thessalonians 2:18: "Wherefore we would have come unto you, even I Paul, once and again; but Satan hindered us."

1 Thessalonians 3:1: "Wherefore when we could no longer forbear, we thought it good to be left at Athens alone;"

1 Thessalonians 3:3: "That no man should be moved by these afflictions: for yourselves know that we are appointed thereunto."

1 Thessalonians 3:4: "For verily, when we were with you, we told you before that we should suffer tribulation; even as it came to pass, and ye know."

1 Thessalonians 3:6: "But now when Timotheus came from you unto us, and brought us good tidings of your faith and charity, and that ye have good remembrance of us always, desiring greatly to see us, as we also to see you:"

1 Thessalonians 3:7: "Therefore, brethren, we were comforted over you in all our affliction and distress by your faith:"

1 Thessalonians 3:8: "For now we live, if ye stand fast in the Lord."

1 Thessalonians 3:9: "For what thanks can we render to God again for you, for all the joy wherewith we joy for your sakes before our God;"

1 Thessalonians 3:10: "Night and day praying exceedingly that we might see your face, and might perfect that which is lacking in your faith?"

1 Thessalonians 3:12: "And the Lord make you to increase and abound in love one toward another, and toward all men, even as we do toward you:"

1 Thessalonians 4:1: "Furthermore then we beseech you, brethren, and exhort you by the Lord Jesus, that as ye have received of us how ye ought to walk and to please God, so ye would abound more and more."

1 Thessalonians 4:2: "For ye know what commandments we gave you by the Lord Jesus."

1 Thessalonians 4:6: "That no man go beyond and defraud his brother in any matter: because that the Lord is the avenger of all such, as we also have forewarned you and testified."

1 Thessalonians 4:10: "And indeed ye do it toward all the brethren which are in all Macedonia: but we beseech you, brethren, that ye increase more and more;"

1 Thessalonians 4:11: "And that ye study to be quiet, and to do your own business, and to work with your own hands, as we commanded you;"

1 Thessalonians 4:14: "For if we believe that Jesus died and rose again, even so them also which sleep in Jesus will God bring with him."

1 Thessalonians 4:15: "For this we say unto you by the word of the Lord, that we which are alive and remain unto the coming of the Lord shall not prevent them which are asleep."

1 Thessalonians 4:17: "Then we which are alive and remain shall be caught up together with them in the clouds, to meet the Lord in the air: and so shall we ever be with the Lord."

1 Thessalonians 5:5: "Ye are all the children of light, and the children of the day: we are not of the night, nor of darkness."

1 Thessalonians 5:10: "Who died for us, that, whether we wake or sleep, we should live together with him."

1 Thessalonians 5:12: "And we beseech you, brethren, to know them which labour among you, and are over you in the Lord, and admonish you;"

1 Thessalonians 5:14: "Now we exhort you, brethren, warn them that are unruly, comfort the feebleminded, support the weak, be patient toward all men."

2 Thessalonians 1:3: "We are bound to thank God always for you, brethren, as it is meet, because that your faith groweth exceedingly, and the charity of every one of you all toward each other aboundeth;"

2 Thessalonians 1:4: "So that we ourselves glory in you in the churches of God for your patience and faith in all your persecutions and tribulations that ye endure:"

2 Thessalonians 1:11: "Wherefore also we pray always for you, that our God would count you worthy of this calling, and fulfil all the good pleasure of his goodness, and the work of faith with power:"

2 Thessalonians 2:1: "Now we beseech you, brethren, by the coming of our Lord Jesus Christ, and by our gathering together unto him,"

2 Thessalonians 2:13: "But we are bound to give thanks alway to God for you, brethren beloved of the Lord, because God hath from the beginning chosen you to salvation through sanctification of the Spirit and belief of the truth:"

2 Thessalonians 3:2: "And that we may be delivered from unreasonable and wicked men: for all men have not faith."

2 Thessalonians 3:4: "And we have confidence in the Lord touching you, that ye both do and will do the things which we command you."

2 Thessalonians 3:6: "Now we command you, brethren, in the name of our Lord Jesus Christ, that ye withdraw yourselves from every brother that walketh disorderly, and not after the tradition which he received of us."

2 Thessalonians 3:7: "For yourselves know how ye ought to follow us: for we behaved not ourselves disorderly among you;"

2 Thessalonians 3:8: "Neither did we eat any man's bread for nought; but wrought with labour and travail night and day, that we might not be chargeable to any of you:"

2 Thessalonians 3:9: "Not because we have not power, but to make ourselves an ensample unto you to follow us."

2 Thessalonians 3:10: "For even when we were with you, this we commanded you, that if any would not work, neither should he eat."

2 Thessalonians 3:11: "For we hear that there are some which walk among you disorderly, working

not at all, but are busybodies."

2 Thessalonians 3:12: "Now them that are such we command and exhort by our Lord Jesus Christ, that with quietness they work, and eat their own bread."

1 Timothy 1:8: "But we know that the law is good, if a man use it lawfully;"

1 Timothy 2:2: "For kings, and for all that are in authority; that we may lead a quiet and peaceable life in all godliness and honesty."

1 Timothy 4:10: "For therefore we both labour and suffer reproach, because we trust in the living God, who is the Saviour of all men, specially of those that believe."

1 Timothy 6:7: "For we brought nothing into this world, and it is certain we can carry nothing out."

2 Timothy 2:11: "It is a faithful saying: For if we be dead with him, we shall also live with him:"

2 Timothy 2:12: "If we suffer, we shall also reign with him: if we deny him, he also will deny us:"

2 Timothy 2:13: "If we believe not, yet he abideth faithful: he cannot deny himself."

Titus 2:12: "Teaching us that, denying ungodliness and worldly lusts, we should live soberly, righteously, and godly, in this present world;"

Titus 3:3: "For we ourselves also were sometimes foolish, disobedient, deceived, serving divers lusts and pleasures, living in malice and envy, hateful, and hating one another."

Titus 3:5: "Not by works of righteousness which we have done, but according to his mercy he saved us, by the washing of regeneration, and renewing of the Holy Ghost;"

Titus 3:7: "That being justified by his grace, we should be made heirs according to the hope of eternal life."

Philemon 1:7: "For we have great joy and consolation in thy love, because the bowels of the saints are refreshed by thee, brother."

Hebrews 2:1: "Therefore we ought to give the more earnest heed to the things which we have heard, lest at any time we should let them slip."

Hebrews 2:3: "How shall we escape, if we neglect so great salvation; which at the first began to be spoken by the Lord, and was confirmed unto us by them that heard him;"

Hebrews 2:5: "For unto the angels hath he not put in subjection the world to come, whereof we speak."

Hebrews 2:8: "Thou hast put all things in subjection under his feet. For in that he put all in subjection under him, he left nothing that is not put under him. But now we see not yet all things put under him."

Hebrews 2:9: "But we see Jesus, who was made a little lower than the angels for the suffering of death, crowned with glory and honour; that he by the grace of God should taste death for every man."

Hebrews 3:6: "But Christ as a son over his own house; whose house are we, if we hold fast the confidence and the rejoicing of the hope firm unto the end."

Hebrews 3:14: "For we are made partakers of Christ, if we hold the beginning of our confidence stedfast unto the end;"

Hebrews 3:19: "So we see that they could not enter in because of unbelief."

Hebrews 4:3: "For we which have believed do enter into rest, as he said, As I have sworn in my wrath, if they shall enter into my rest: although the works were finished from the foundation of the world."

Hebrews 4:13: "Neither is there any creature that is not manifest in his sight: but all things are naked and opened unto the eyes of him with whom we have to do."

Hebrews 4:14: "Seeing then that we have a great high priest, that is passed into the heavens, Jesus the Son of God, let us hold fast our profession."

Hebrews 4:15: "For we have not an high priest which cannot be touched with the feeling of our infirmities; but was in all points tempted like as we are, yet without sin."

Hebrews 4:16: "Let us therefore come boldly unto the throne of grace, that we may obtain mercy, and find grace to help in time of need."

Hebrews 5:11: "Of whom we have many things to say, and hard to be uttered, seeing ye are dull of hearing."

Hebrews 6:3: "And this will we do, if God permit."

Hebrews 6:9: "But, beloved, we are persuaded better things of you, and things that accompany salvation, though we thus speak."

Hebrews 6:11: "And we desire that every one of you do shew the same diligence to the full assurance of hope unto the end:"

Hebrews 6:18: "That by two immutable things, in which it was impossible for God to lie, we might have a strong consolation, who have fled for refuge to lay hold upon the hope set before us:"

Hebrews 6:19: "Which hope we have as an anchor of the soul, both sure and stedfast, and which entereth into that within the veil;"

Hebrews 7:19: "For the law made nothing perfect, but the bringing in of a better hope did; by the which we draw nigh unto God."

Hebrews 8:1: "Now of the things which we have spoken this is the sum: We have such an high priest, who is set on the right hand of the throne of the Majesty in the heavens;"

Hebrews 9:5: "And over it the cherubims of glory shadowing the mercyseat; of which we cannot now speak particularly."

Hebrews 10:10: "By the which will we are sanctified through the offering of the body of Jesus Christ once for all."

Hebrews 10:26: "For if we sin wilfully after that we have received the knowledge of the truth, there remaineth no more sacrifice for sins,"

Hebrews 10:30: "For we know him that hath said, Vengeance belongeth unto me, I will recompense, saith the Lord. And again, The Lord shall judge his people."

Hebrews 10:39: "But we are not of them who draw back unto perdition; but of them that believe to the saving of the soul."

Hebrews 11:3: "Through faith we understand that the worlds were framed by the word of God, so that things which are seen were not made of things which do appear."

Hebrews 12:1: "Wherefore seeing we also are compassed about with so great a cloud of witnesses, let us lay aside every weight, and the sin which doth so easily beset us, and let us run with patience the race that is set before us,"

Hebrews 12:9: "Furthermore we have had fathers of our flesh which corrected us, and we gave them reverence: shall we not much rather be in subjection unto the Father of spirits, and live?"

Hebrews 12:10: "For they verily for a few days chastened us after their own pleasure; but he for our profit, that we might be partakers of his holiness."

Hebrews 12:25: "See that ye refuse not him that speaketh. For if they escaped not who refused him that spake on earth, much more shall not we escape, if we turn away from him that speaketh from heaven:"

Hebrews 12:28: "Wherefore we receiving a kingdom which cannot be moved, let us have grace, whereby we may serve God acceptably with reverence and godly fear:"

Hebrews 13:6: "So that we may boldly say, The Lord is my helper, and I will not fear what man shall do unto me."

Hebrews 13:10: "We have an altar, whereof they have no right to eat which serve the tabernacle."

Hebrews 13:14: "For here have we no continuing city, but we seek one to come."

Hebrews 13:18: "Pray for us: for we trust we have a good conscience, in all things willing to live honestly."

James 1:18: "Of his own will begat he us with the word of truth, that we should be a kind of firstfruits of his creatures."

James 3:1: "My brethren, be not many masters, knowing that we shall receive the greater condemnation."

James 3:2: "For in many things we offend all. If any man offend not in word, the same is a perfect



man, and able also to bridle the whole body."

James 3:3: "Behold, we put bits in the horses' mouths, that they may obey us; and we turn about their whole body."

James 3:9: "Therewith bless we God, even the Father; and therewith curse we men, which are made after the similitude of God."

James 4:13: "Go to now, ye that say, To day or to morrow we will go into such a city, and continue there a year, and buy and sell, and get gain:"

James 4:15: "For that ye ought to say, If the Lord will, we shall live, and do this, or that."

James 5:11: "Behold, we count them happy which endure. Ye have heard of the patience of Job, and have seen the end of the Lord; that the Lord is very pitiful, and of tender mercy."

James 5:17: "Elias was a man subject to like passions as we are, and he prayed earnestly that it might not rain: and it rained not on the earth by the space of three years and six months."

1 Peter 2:24: "Who his own self bare our sins in his own body on the tree, that we, being dead to sins, should live unto righteousness: by whose stripes ye were healed."

1 Peter 4:3: "For the time past of our life may suffice us to have wrought the will of the Gentiles, when we walked in lasciviousness, lusts, excess of wine, revellings, banquetings, and abominable idolatries:"

2 Peter 1:16: "For we have not followed cunningly devised fables, when we made known unto you the power and coming of our Lord Jesus Christ, but were eyewitnesses of his majesty."

2 Peter 1:18: "And this voice which came from heaven we heard, when we were with him in the holy mount."

2 Peter 1:19: "We have also a more sure word of prophecy; whereunto ye do well that ye take heed, as unto a light that shineth in a dark place, until the day dawn, and the day star arise in your hearts:"

2 Peter 3:13: "Nevertheless we, according to his promise, look for new heavens and a new earth, wherein dwelleth righteousness."

1 John 1:1: "That which was from the beginning, which we have heard, which we have seen with our eyes, which we have looked upon, and our hands have handled, of the Word of life;"

1 John 1:2: "(For the life was manifested, and we have seen it, and bear witness, and shew unto you that eternal life, which was with the Father, and was manifested unto us;)"

1 John 1:3: "That which we have seen and heard declare we unto you, that ye also may have fellowship with us: and truly our fellowship is with the Father, and with his Son Jesus Christ."

1 John 1:4: "And these things write we unto you, that your joy may be full."

1 John 1:5: "This then is the message which we have heard of him, and declare unto you, that God is light, and in him is no darkness at all."

1 John 1:6: "If we say that we have fellowship with him, and walk in darkness, we lie, and do not the truth:"

1 John 1:7: "But if we walk in the light, as he is in the light, we have fellowship one with another, and the blood of Jesus Christ his Son cleanseth us from all sin."

1 John 1:8: "If we say that we have no sin, we deceive ourselves, and the truth is not in us."

1 John 1:9: "If we confess our sins, he is faithful and just to forgive us our sins, and to cleanse us from all unrighteousness."

1 John 1:10: "If we say that we have not sinned, we make him a liar, and his word is not in us."

1 John 2:1: "My little children, these things write I unto you, that ye sin not. And if any man sin, we have an advocate with the Father, Jesus Christ the righteous:"

1 John 2:3: "And hereby we do know that we know him, if we keep his commandments."

1 John 2:5: "But whoso keepeth his word, in him verily is the love of God perfected: hereby know we that we are in him."

1 John 2:18: "Little children, it is the last time: and as ye have heard that antichrist shall come, even now are there many antichrists; whereby we know that it is the last time."

1 John 2:28: "And now, little children, abide in him; that, when he shall appear, we may have

confidence, and not be ashamed before him at his coming."

1 John 3:1: "Behold, what manner of love the Father hath bestowed upon us, that we should be called the sons of God: therefore the world knoweth us not, because it knew him not."

1 John 3:2: "Beloved, now are we the sons of God, and it doth not yet appear what we shall be: but we know that, when he shall appear, we shall be like him; for we shall see him as he is."

1 John 3:11: "For this is the message that ye heard from the beginning, that we should love one another."

1 John 3:14: "We know that we have passed from death unto life, because we love the brethren. He that loveth not his brother abideth in death."

1 John 3:16: "Hereby perceive we the love of God, because he laid down his life for us: and we ought to lay down our lives for the brethren."

1 John 3:19: "And hereby we know that we are of the truth, and shall assure our hearts before him."

1 John 3:21: "Beloved, if our heart condemn us not, then have we confidence toward God."

1 John 3:22: "And whatsoever we ask, we receive of him, because we keep his commandments, and do those things that are pleasing in his sight."

1 John 3:23: "And this is his commandment, That we should believe on the name of his Son Jesus Christ, and love one another, as he gave us commandment."

1 John 3:24: "And he that keepeth his commandments dwelleth in him, and he in him. And hereby we know that he abideth in us, by the Spirit which he hath given us."

1 John 4:6: "We are of God: he that knoweth God heareth us; he that is not of God heareth not us. Hereby know we the spirit of truth, and the spirit of error."

1 John 4:9: "In this was manifested the love of God toward us, because that God sent his only begotten Son into the world, that we might live through him."

1 John 4:10: "Herein is love, not that we loved God, but that he loved us, and sent his Son to be the propitiation for our sins."

1 John 4:11: "Beloved, if God so loved us, we ought also to love one another."

1 John 4:12: "No man hath seen God at any time. If we love one another, God dwelleth in us, and his love is perfected in us."

1 John 4:13: "Hereby know we that we dwell in him, and he in us, because he hath given us of his Spirit."

1 John 4:14: "And we have seen and do testify that the Father sent the Son to be the Saviour of the world."

1 John 4:16: "And we have known and believed the love that God hath to us. God is love; and he that dwelleth in love dwelleth in God, and God in him."

1 John 4:17: "Herein is our love made perfect, that we may have boldness in the day of judgment: because as he is, so are we in this world."

1 John 4:19: "We love him, because he first loved us."

1 John 4:21: "And this commandment have we from him, That he who loveth God love his brother also."

1 John 5:2: "By this we know that we love the children of God, when we love God, and keep his commandments."

1 John 5:3: "For this is the love of God, that we keep his commandments: and his commandments are not grievous."

1 John 5:9: "If we receive the witness of men, the witness of God is greater: for this is the witness of God which he hath testified of his Son."

1 John 5:14: "And this is the confidence that we have in him, that, if we ask any thing according to his will, he heareth us:"

1 John 5:15: "And if we know that he hear us, whatsoever we ask, we know that we have the petitions that we desired of him."

1 John 5:18: "We know that whosoever is born of God sinneth not; but he that is begotten of God

keepeth himself, and that wicked one toucheth him not."

1 John 5:19: "And we know that we are of God, and the whole world lieth in wickedness."

1 John 5:20: "And we know that the Son of God is come, and hath given us an understanding, that we may know him that is true, and we are in him that is true, even in his Son Jesus Christ. This is the true God, and eternal life."

2 John 1:4: "I rejoiced greatly that I found of thy children walking in truth, as we have received a commandment from the Father."

2 John 1:5: "And now I beseech thee, lady, not as though I wrote a new commandment unto thee, but that which we had from the beginning, that we love one another."

2 John 1:6: "And this is love, that we walk after his commandments. This is the commandment, That, as ye have heard from the beginning, ye should walk in it."

2 John 1:8: "Look to yourselves, that we lose not those things which we have wrought, but that we receive a full reward."

3 John 1:8: "We therefore ought to receive such, that we might be fellowhelpers to the truth."

3 John 1:12: "Demetrius hath good report of all men, and of the truth itself: yea, and we also bear record; and ye know that our record is true."

3 John 1:14: "But I trust I shall shortly see thee, and we shall speak face to face. Peace be to thee. Our friends salute thee. Greet the friends by name."

Revelation 5:10: "And hast made us unto our God kings and priests: and we shall reign on the earth."

Revelation 7:3: "Saying, Hurt not the earth, neither the sea, nor the trees, till we have sealed the servants of our God in their foreheads."

Revelation 11:17: "Saying, We give thee thanks, O LORD God Almighty, which art, and wast, and art to come; because thou hast taken to thee thy great power, and hast reigned."

## **WEAK**

Occurrences: 43

Numbers 13:18: "And see the land, what it is, and the people that dwelleth therein, whether they be strong or weak, few or many;"

Judges 16:7: "And Samson said unto her, If they bind me with seven green withs that were never dried, then shall I be weak, and be as another man."

Judges 16:11: "And he said unto her, If they bind me fast with new ropes that never were occupied, then shall I be weak, and be as another man."

Judges 16:17: "That he told her all his heart, and said unto her, There hath not come a razor upon mine head; for I have been a Nazarite unto God from my mother's womb: if I be shaven, then my strength will go from me, and I shall become weak, and be like any other man."

2 Samuel 3:39: "And I am this day weak, though anointed king; and these men the sons of Zeruiah be too hard for me: the LORD shall reward the doer of evil according to his wickedness."

2 Samuel 17:2: "And I will come upon him while he is weary and weak handed, and will make him afraid: and all the people that are with him shall flee; and I will smite the king only:"

2 Chronicles 15:7: "Be ye strong therefore, and let not your hands be weak: for your work shall be rewarded."

Job 4:3: "Behold, thou hast instructed many, and thou hast strengthened the weak hands."

Psalms 6:2: "Have mercy upon me, O LORD; for I am weak: O LORD, heal me; for my bones are vexed."

Psalms 109:24: "My knees are weak through fasting; and my flesh faileth of fatness."

Isaiah 14:10: "All they shall speak and say unto thee, Art thou also become weak as we? art thou become like unto us?"

Isaiah 35:3: "Strengthen ye the weak hands, and confirm the feeble knees."

Ezekiel 7:17: "All hands shall be feeble, and all knees shall be weak as water."

Ezekiel 16:30: "How weak is thine heart, saith the LORD GOD, seeing thou doest all these things, the work of an imperious whorish woman;"

Ezekiel 21:7: "And it shall be, when they say unto thee, Wherefore sighest thou? that thou shalt answer, For the tidings; because it cometh: and every heart shall melt, and all hands shall be feeble, and every spirit shall faint, and all knees shall be weak as water: behold, it cometh, and shall be brought to pass, saith the Lord GOD."

Joel 3:10: "Beat your plowshares into swords and your pruninghooks into spears: let the weak say, I am strong."

Matthew 26:41: "Watch and pray, that ye enter not into temptation: the spirit indeed is willing, but the flesh is weak."

Mark 14:38: "Watch ye and pray, lest ye enter into temptation. The spirit truly is ready, but the flesh is weak."

Acts 20:35: "I have shewed you all things, how that so labouring ye ought to support the weak, and to remember the words of the Lord Jesus, how he said, It is more blessed to give than to receive."

Romans 4:19: "And being not weak in faith, he considered not his own body now dead, when he was about an hundred years old, neither yet the deadness of Sarah's womb:"

Romans 8:3: "For what the law could not do, in that it was weak through the flesh, God sending his own Son in the likeness of sinful flesh, and for sin, condemned sin in the flesh:"

Romans 14:1: "Him that is weak in the faith receive ye, but not to doubtful disputations."

Romans 14:2: "For one believeth that he may eat all things: another, who is weak, eateth herbs."

Romans 14:21: "It is good neither to eat flesh, nor to drink wine, nor any thing whereby thy brother stumbleth, or is offended, or is made weak."

Romans 15:1: "We then that are strong ought to bear the infirmities of the weak, and not to please ourselves."

1 Corinthians 1:27: "But God hath chosen the foolish things of the world to confound the wise; and God hath chosen the weak things of the world to confound the things which are mighty;"

1 Corinthians 4:10: "We are fools for Christ's sake, but ye are wise in Christ; we are weak, but ye are strong; ye are honourable, but we are despised."

1 Corinthians 8:7: "Howbeit there is not in every man that knowledge: for some with conscience of the idol unto this hour eat it as a thing offered unto an idol; and their conscience being weak is defiled."

1 Corinthians 8:9: "But take heed lest by any means this liberty of your's become a stumblingblock to them that are weak."

1 Corinthians 8:10: "For if any man see thee which hast knowledge sit at meat in the idol's temple, shall not the conscience of him which is weak be emboldened to eat those things which are offered to idols;"

1 Corinthians 8:11: "And through thy knowledge shall the weak brother perish, for whom Christ died?"

1 Corinthians 8:12: "But when ye sin so against the brethren, and wound their weak conscience, ye sin against Christ."

1 Corinthians 9:22: "To the weak became I as weak, that I might gain the weak: I am made all things to all men, that I might by all means save some."

1 Corinthians 11:30: "For this cause many are weak and sickly among you, and many sleep."

2 Corinthians 10:10: "For his letters, say they, are weighty and powerful; but his bodily presence is weak, and his speech contemptible."

2 Corinthians 11:21: "I speak as concerning reproach, as though we had been weak. Howbeit whereinsoever any is bold, (I speak foolishly,) I am bold also."

2 Corinthians 11:29: "Who is weak, and I am not weak? who is offended, and I burn not?"

2 Corinthians 12:10: "Therefore I take pleasure in infirmities, in reproaches, in necessities, in persecutions, in distresses for Christ's sake: for when I am weak, then am I strong."

2 Corinthians 13:3: "Since ye seek a proof of Christ speaking in me, which to you-ward is not weak, but is mighty in you."

2 Corinthians 13:4: "For though he was crucified through weakness, yet he liveth by the power of God. For we also are weak in him, but we shall live with him by the power of God toward you."

2 Corinthians 13:9: "For we are glad, when we are weak, and ye are strong: and this also we wish, even your perfection."

Galatians 4:9: "But now, after that ye have known God, or rather are known of God, how turn ye again to the weak and beggarly elements, whereunto ye desire again to be in bondage?"

1 Thessalonians 5:14: "Now we exhort you, brethren, warn them that are unruly, comfort the feebleminded, support the weak, be patient toward all men."

## **WEAKEN**

Occurrences: 1

Isaiah 14:12: "How art thou fallen from heaven, O Lucifer, son of the morning! how art thou cut down to the ground, which didst weaken the nations!"

## **WEAKENED**

Occurrences: 3

Ezra 4:4: "Then the people of the land weakened the hands of the people of Judah, and troubled them in building,"

Nehemiah 6:9: "For they all made us afraid, saying, Their hands shall be weakened from the work, that it be not done. Now therefore, O God, strengthen my hands."

Psalms 102:23: "He weakened my strength in the way; he shortened my days."

## **WEAKENETH**

Occurrences: 2

Job 12:21: "He poureth contempt upon princes, and weakeneth the strength of the mighty."

Jeremiah 38:4: "Therefore the princes said unto the king, We beseech thee, let this man be put to death: for thus he weakeneth the hands of the men of war that remain in this city, and the hands of all the people, in speaking such words unto them: for this man seeketh not the welfare of this people, but the hurt."

## **WEAKER**

Occurrences: 2

2 Samuel 3:1: "Now there was long war between the house of Saul and the house of David: but David waxed stronger and stronger, and the house of Saul waxed weaker and weaker."

1 Peter 3:7: "Likewise, ye husbands, dwell with them according to knowledge, giving honour unto the wife, as unto the weaker vessel, and as being heirs together of the grace of life; that your prayers be not hindered."

## **WEAKNESS**

Occurrences: 7

1 Corinthians 1:25: "Because the foolishness of God is wiser than men; and the weakness of God is stronger than men."

1 Corinthians 2:3: "And I was with you in weakness, and in fear, and in much trembling."

1 Corinthians 15:43: "It is sown in dishonour; it is raised in glory: it is sown in weakness; it is raised in power:"

2 Corinthians 12:9: "And he said unto me, My grace is sufficient for thee: for my strength is made perfect in weakness. Most gladly therefore will I rather glory in my infirmities, that the power of Christ may rest upon me."

2 Corinthians 13:4: "For though he was crucified through weakness, yet he liveth by the power of God. For we also are weak in him, but we shall live with him by the power of God toward you."

Hebrews 7:18: "For there is verily a disannulling of the commandment going before for the weakness and unprofitableness thereof."

Hebrews 11:34: "Quenched the violence of fire, escaped the edge of the sword, out of weakness were made strong, waxed valiant in fight, turned to flight the armies of the aliens."

## **WEALTH**

Occurrences: 27

Genesis 34:29: "And all their wealth, and all their little ones, and their wives took they captive, and spoiled even all that was in the house."

Deuteronomy 8:17: "And thou say in thine heart, My power and the might of mine hand hath gotten me this wealth."

Deuteronomy 8:18: "But thou shalt remember the LORD thy God: for it is he that giveth thee power to get wealth, that he may establish his covenant which he sware unto thy fathers, as it is this day."

Ruth 2:1: "And Naomi had a kinsman of her husband's, a mighty man of wealth, of the family of Elimelech; and his name was Boaz."

1 Samuel 2:32: "And thou shalt see an enemy in my habitation, in all the wealth which God shall give Israel: and there shall not be an old man in thine house for ever."

2 Kings 15:20: "And Menahem exacted the money of Israel, even of all the mighty men of wealth, of each man fifty shekels of silver, to give to the king of Assyria. So the king of Assyria turned back, and stayed not there in the land."

2 Chronicles 1:11: "And God said to Solomon, Because this was in thine heart, and thou hast not asked riches, wealth, or honour, nor the life of thine enemies, neither yet hast asked long life; but hast asked wisdom and knowledge for thyself, that thou mayest judge my people, over whom I have made thee king:"

2 Chronicles 1:12: "Wisdom and knowledge is granted unto thee; and I will give thee riches, and wealth, and honour, such as none of the kings have had that have been before thee, neither shall there any after thee have the like."

Ezra 9:12: "Now therefore give not your daughters unto their sons, neither take their daughters unto your sons, nor seek their peace or their wealth for ever: that ye may be strong, and eat the good of the land, and leave it for an inheritance to your children for ever."

Esther 10:3: "For Mordecai the Jew was next unto king Ahasuerus, and great among the Jews, and accepted of the multitude of his brethren, seeking the wealth of his people, and speaking peace to all his seed."

Job 21:13: "They spend their days in wealth, and in a moment go down to the grave."

Job 31:25: "If I rejoice because my wealth was great, and because mine hand had gotten much;"

Psalms 44:12: "Thou sellest thy people for nought, and dost not increase thy wealth by their price."

Psalms 49:6: "They that trust in their wealth, and boast themselves in the multitude of their riches;"

Psalms 49:10: "For he seeth that wise men die, likewise the fool and the brutish person perish, and leave their wealth to others."

Psalms 112:3: "Wealth and riches shall be in his house: and his righteousness endureth for ever."

Proverbs 5:10: "Lest strangers be filled with thy wealth; and thy labours be in the house of a stranger;"

Proverbs 10:15: "The rich man's wealth is his strong city: the destruction of the poor is their poverty."

Proverbs 13:11: "Wealth gotten by vanity shall be diminished: but he that gathereth by labour shall

increase."

Proverbs 13:22: "A good man leaveth an inheritance to his children's children: and the wealth of the sinner is laid up for the just."

Proverbs 18:11: "The rich man's wealth is his strong city, and as an high wall in his own conceit."

Proverbs 19:4: "Wealth maketh many friends; but the poor is separated from his neighbour."

Ecclesiastes 5:19: "Every man also to whom God hath given riches and wealth, and hath given him power to eat thereof, and to take his portion, and to rejoice in his labour; this is the gift of God."

Ecclesiastes 6:2: "A man to whom God hath given riches, wealth, and honour, so that he wanteth nothing for his soul of all that he desireth, yet God giveth him not power to eat thereof, but a stranger eateth it: this is vanity, and it is an evil disease."

Zechariah 14:14: "And Judah also shall fight at Jerusalem; and the wealth of all the heathen round about shall be gathered together, gold, and silver, and apparel, in great abundance."

Acts 19:25: "Whom he called together with the workmen of like occupation, and said, Sirs, ye know that by this craft we have our wealth."

1 Corinthians 10:24: "Let no man seek his own, but every man another's wealth."

## **WEALTHY**

Occurrences: 2

Psalms 66:12: "Thou hast caused men to ride over our heads; we went through fire and through water: but thou broughtest us out into a wealthy place."

Jeremiah 49:31: "Arise, get you up unto the wealthy nation, that dwelleth without care, saith the LORD, which have neither gates nor bars, which dwell alone."

## **WEANED**

Occurrences: 9

Genesis 21:8: "And the child grew, and was weaned: and Abraham made a great feast the same day that Isaac was weaned."

1 Samuel 1:22: "But Hannah went not up; for she said unto her husband, I will not go up until the child be weaned, and then I will bring him, that he may appear before the LORD, and there abide for ever."

1 Samuel 1:23: "And Elkanah her husband said unto her, Do what seemeth thee good; tarry until thou have weaned him; only the LORD establish his word. So the woman abode, and gave her son suck until she weaned him."

1 Samuel 1:24: "And when she had weaned him, she took him up with her, with three bullocks, and one ephah of flour, and a bottle of wine, and brought him unto the house of the LORD in Shiloh: and the child was young."

1 Kings 11:20: "And the sister of Tahpenes bare him Genubath his son, whom Tahpenes weaned in Pharaoh's house: and Genubath was in Pharaoh's household among the sons of Pharaoh."

Psalms 131:2: "Surely I have behaved and quieted myself, as a child that is weaned of his mother: my soul is even as a weaned child."

Isaiah 11:8: "And the sucking child shall play on the hole of the asp, and the weaned child shall put his hand on the cockatrice' den."

Isaiah 28:9: "Whom shall he teach knowledge? and whom shall he make to understand doctrine? them that are weaned from the milk, and drawn from the breasts."

Hosea 1:8: "Now when she had weaned Loruhamah, she conceived, and bare a son."

## **WEAPON**

Occurrences: 8

Numbers 35:18: "Or if he smite him with an hand weapon of wood, wherewith he may die, and he die, he is a murderer: the murderer shall surely be put to death."

Deuteronomy 23:13: "And thou shalt have a paddle upon thy weapon; and it shall be, when thou wilt ease thyself abroad, thou shalt dig therewith, and shalt turn back and cover that which cometh from thee:"

2 Chronicles 23:10: "And he set all the people, every man having his weapon in his hand, from the right side of the temple to the left side of the temple, along by the altar and the temple, by the king round about."

Nehemiah 4:17: "They which builded on the wall, and they that bare burdens, with those that laded, every one with one of his hands wrought in the work, and with the other hand held a weapon."

Job 20:24: "He shall flee from the iron weapon, and the bow of steel shall strike him through."

Isaiah 54:17: "No weapon that is formed against thee shall prosper; and every tongue that shall rise against thee in judgment thou shalt condemn. This is the heritage of the servants of the LORD, and their righteousness is of me, saith the LORD."

Ezekiel 9:1: "He cried also in mine ears with a loud voice, saying, Cause them that have charge over the city to draw near, even every man with his destroying weapon in his hand."

Ezekiel 9:2: "And, behold, six men came from the way of the higher gate, which lieth toward the north, and every man a slaughter weapon in his hand; and one man among them was clothed with linen, with a writer's inkhorn by his side: and they went in, and stood beside the brasen altar."

## **WEAPONS**

Occurrences: 21

Genesis 27:3: "Now therefore take, I pray thee, thy weapons, thy quiver and thy bow, and go out to the field, and take me some venison;"

Deuteronomy 1:41: "Then ye answered and said unto me, We have sinned against the LORD, we will go up and fight, according to all that the LORD our God commanded us. And when ye had girded on every man his weapons of war, ye were ready to go up into the hill."

Judges 18:11: "And there went from thence of the family of the Danites, out of Zorah and out of Eshtaol, six hundred men appointed with weapons of war."

Judges 18:16: "And the six hundred men appointed with their weapons of war, which were of the children of Dan, stood by the entering of the gate."

Judges 18:17: "And the five men that went to spy out the land went up, and came in thither, and took the graven image, and the ephod, and the teraphim, and the molten image: and the priest stood in the entering of the gate with the six hundred men that were appointed with weapons of war."

1 Samuel 21:8: "And David said unto Ahimelech, And is there not here under thine hand spear or sword? for I have neither brought my sword nor my weapons with me, because the king's business required haste."

2 Samuel 1:27: "How are the mighty fallen, and the weapons of war perished!"

2 Kings 11:8: "And ye shall compass the king round about, every man with his weapons in his hand: and he that cometh within the ranges, let him be slain: and be ye with the king as he goeth out and as he cometh in."

2 Kings 11:11: "And the guard stood, every man with his weapons in his hand, round about the king, from the right corner of the temple to the left corner of the temple, along by the altar and the temple."

2 Chronicles 23:7: "And the Levites shall compass the king round about, every man with his weapons in his hand; and whosoever else cometh into the house, he shall be put to death: but be ye with the king when he cometh in, and when he goeth out."

Ecclesiastes 9:18: "Wisdom is better than weapons of war: but one sinner destroyeth much good."

Isaiah 13:5: "They come from a far country, from the end of heaven, even the LORD, and the weapons of his indignation, to destroy the whole land."



Jeremiah 21:4: "Thus saith the LORD God of Israel; Behold, I will turn back the weapons of war that are in your hands, wherewith ye fight against the king of Babylon, and against the Chaldeans, which besiege you without the walls, and I will assemble them into the midst of this city."

Jeremiah 22:7: "And I will prepare destroyers against thee, every one with his weapons: and they shall cut down thy choice cedars, and cast them into the fire."

Jeremiah 50:25: "The LORD hath opened his armoury, and hath brought forth the weapons of his indignation: for this is the work of the Lord GOD of hosts in the land of the Chaldeans."

Jeremiah 51:20: "Thou art my battle axe and weapons of war: for with thee will I break in pieces the nations, and with thee will I destroy kingdoms;"

Ezekiel 32:27: "And they shall not lie with the mighty that are fallen of the uncircumcised, which are gone down to hell with their weapons of war: and they have laid their swords under their heads, but their iniquities shall be upon their bones, though they were the terror of the mighty in the land of the living."

Ezekiel 39:9: "And they that dwell in the cities of Israel shall go forth, and shall set on fire and burn the weapons, both the shields and the bucklers, the bows and the arrows, and the handstaves, and the spears, and they shall burn them with fire seven years:"

Ezekiel 39:10: "So that they shall take no wood out of the field, neither cut down any out of the forests; for they shall burn the weapons with fire: and they shall spoil those that spoiled them, and rob those that robbed them, saith the Lord GOD."

John 18:3: "Judas then, having received a band of men and officers from the chief priests and Pharisees, cometh thither with lanterns and torches and weapons."

2 Corinthians 10:4: "(For the weapons of our warfare are not carnal, but mighty through God to the pulling down of strong holds;)"

## WEAR

Occurrences: 12

Exodus 18:18: "Thou wilt surely wear away, both thou, and this people that is with thee: for this thing is too heavy for thee; thou art not able to perform it thyself alone."

Deuteronomy 22:5: "The woman shall not wear that which pertaineth unto a man, neither shall a man put on a woman's garment: for all that do so are abomination unto the LORD thy God."

Deuteronomy 22:11: "Thou shalt not wear a garment of divers sorts, as of woollen and linen together."

1 Samuel 2:28: "And did I choose him out of all the tribes of Israel to be my priest, to offer upon mine altar, to burn incense, to wear an ephod before me? and did I give unto the house of thy father all the offerings made by fire of the children of Israel?"

1 Samuel 22:18: "And the king said to Doeg, Turn thou, and fall upon the priests. And Doeg the Edomite turned, and he fell upon the priests, and slew on that day fourscore and five persons that did wear a linen ephod."

Esther 6:8: "Let the royal apparel be brought which the king useth to wear, and the horse that the king rideth upon, and the crown royal which is set upon his head:"

Job 14:19: "The waters wear the stones: thou wastest away the things which grow out of the dust of the earth; and thou destroyest the hope of man."

Isaiah 4:1: "And in that day seven women shall take hold of one man, saying, We will eat our own bread, and wear our own apparel: only let us be called by thy name, to take away our reproach."

Daniel 7:25: "And he shall speak great words against the most High, and shall wear out the saints of the most High, and think to change times and laws: and they shall be given into his hand until a time and times and the dividing of time."

Zechariah 13:4: "And it shall come to pass in that day, that the prophets shall be ashamed every one of his vision, when he hath prophesied; neither shall they wear a rough garment to deceive:"

Matthew 11:8: "But what went ye out for to see? A man clothed in soft raiment? behold, they that

wear soft clothing are in kings' houses."

Luke 9:12: "And when the day began to wear away, then came the twelve, and said unto him, Send the multitude away, that they may go into the towns and country round about, and lodge, and get victuals: for we are here in a desert place."

## **WEARETH**

Occurrences: 1

James 2:3: "And ye have respect to him that weareth the gay clothing, and say unto him, Sit thou here in a good place; and say to the poor, Stand thou there, or sit here under my footstool:"

## **WEARIED**

Occurrences: 12

Genesis 19:11: "And they smote the men that were at the door of the house with blindness, both small and great: so that they wearied themselves to find the door."

Isaiah 43:23: "Thou hast not brought me the small cattle of thy burnt offerings; neither hast thou honoured me with thy sacrifices. I have not caused thee to serve with an offering, nor wearied thee with incense."

Isaiah 43:24: "Thou hast bought me no sweet cane with money, neither hast thou filled me with the fat of thy sacrifices: but thou hast made me to serve with thy sins, thou hast wearied me with thine iniquities."

Isaiah 47:13: "Thou art wearied in the multitude of thy counsels. Let now the astrologers, the stargazers, the monthly prognosticators, stand up, and save thee from these things that shall come upon thee."

Isaiah 57:10: "Thou art wearied in the greatness of thy way; yet saidst thou not, There is no hope: thou hast found the life of thine hand; therefore thou wast not grieved."

Jeremiah 4:31: "For I have heard a voice as of a woman in travail, and the anguish as of her that bringeth forth her first child, the voice of the daughter of Zion, that bewaileth herself, that spreadeth her hands, saying, Woe is me now! for my soul is wearied because of murderers."

Jeremiah 12:5: "If thou hast run with the footmen, and they have wearied thee, then how canst thou contend with horses? and if in the land of peace, wherein thou trustedst, they wearied thee, then how wilt thou do in the swelling of Jordan?"

Ezekiel 24:12: "She hath wearied herself with lies, and her great scum went not forth out of her: her scum shall be in the fire."

Micah 6:3: "O my people, what have I done unto thee? and wherein have I wearied thee? testify against me."

Malachi 2:17: "Ye have wearied the LORD with your words. Yet ye say, Wherein have we wearied him? When ye say, Every one that doeth evil is good in the sight of the LORD, and he delighteth in them; or, Where is the God of judgment?"

John 4:6: "Now Jacob's well was there. Jesus therefore, being wearied with his journey, sat thus on the well: and it was about the sixth hour."

Hebrews 12:3: "For consider him that endured such contradiction of sinners against himself, lest ye be wearied and faint in your minds."

## **WEARIETH**

Occurrences: 2

Job 37:11: "Also by watering he wearieth the thick cloud: he scattereth his bright cloud:"

Ecclesiastes 10:15: "The labour of the foolish wearieth every one of them, because he knoweth not how to go to the city."

## WEARINESS

Occurrences: 3

Ecclesiastes 12:12: "And further, by these, my son, be admonished: of making many books there is no end; and much study is a weariness of the flesh."

Malachi 1:13: "Ye said also, Behold, what a weariness is it! and ye have snuffed at it, saith the LORD of hosts; and ye brought that which was torn, and the lame, and the sick; thus ye brought an offering: should I accept this of your hand? saith the LORD."

2 Corinthians 11:27: "In weariness and painfulness, in watchings often, in hunger and thirst, in fastings often, in cold and nakedness."

## WEARING

Occurrences: 3

1 Samuel 14:3: "And Ahiah, the son of Ahitub, Ichabod's brother, the son of Phinehas, the son of Eli, the LORD's priest in Shiloh, wearing an ephod. And the people knew not that Jonathan was gone."

John 19:5: "Then came Jesus forth, wearing the crown of thorns, and the purple robe. And Pilate saith unto them, Behold the man!"

1 Peter 3:3: "Whose adorning let it not be that outward adorning of plaiting the hair, and of wearing of gold, or of putting on of apparel;"

## WEARISOME

Occurrences: 1

Job 7:3: "So am I made to possess months of vanity, and wearisome nights are appointed to me."

## WEARY

Occurrences: 41

Genesis 27:46: "And Rebekah said to Isaac, I am weary of my life because of the daughters of Heth: if Jacob take a wife of the daughters of Heth, such as these which are of the daughters of the land, what good shall my life do me?"

Deuteronomy 25:18: "How he met thee by the way, and smote the hindmost of thee, even all that were feeble behind thee, when thou wast faint and weary; and he feared not God."

Judges 4:21: "Then Jael Heber's wife took a nail of the tent, and took an hammer in her hand, and went softly unto him, and smote the nail into his temples, and fastened it into the ground: for he was fast asleep and weary. So he died."

Judges 8:15: "And he came unto the men of Succoth, and said, Behold Zebah and Zalmunna, with whom ye did upbraid me, saying, Are the hands of Zebah and Zalmunna now in thine hand, that we should give bread unto thy men that are weary?"

2 Samuel 16:14: "And the king, and all the people that were with him, came weary, and refreshed themselves there."

2 Samuel 17:2: "And I will come upon him while he is weary and weak handed, and will make him afraid: and all the people that are with him shall flee; and I will smite the king only:"

2 Samuel 17:29: "And honey, and butter, and sheep, and cheese of kine, for David, and for the people that were with him, to eat: for they said, The people is hungry, and weary, and thirsty, in the wilderness."

2 Samuel 23:10: "He arose, and smote the Philistines until his hand was weary, and his hand clave unto the sword: and the LORD wrought a great victory that day; and the people returned after him only to spoil."

Job 3:17: "There the wicked cease from troubling; and there the weary be at rest."

Job 10:1: "My soul is weary of my life; I will leave my complaint upon myself; I will speak in the bitterness of my soul."

Job 16:7: "But now he hath made me weary: thou hast made desolate all my company."

Job 22:7: "Thou hast not given water to the weary to drink, and thou hast withholden bread from the hungry."

Psalms 6:6: "I am weary with my groaning; all the night make I my bed to swim; I water my couch with my tears."

Psalms 68:9: "Thou, O God, didst send a plentiful rain, whereby thou didst confirm thine inheritance, when it was weary."

Psalms 69:3: "I am weary of my crying: my throat is dried: mine eyes fail while I wait for my God."

Proverbs 3:11: "My son, despise not the chastening of the LORD; neither be weary of his correction:"

Proverbs 25:17: "Withdraw thy foot from thy neighbour's house; lest he be weary of thee, and so hate thee."

Isaiah 1:14: "Your new moons and your appointed feasts my soul hateth: they are a trouble unto me; I am weary to bear them."

Isaiah 5:27: "None shall be weary nor stumble among them; none shall slumber nor sleep; neither shall the girdle of their loins be loosed, nor the latchet of their shoes be broken:"

Isaiah 7:13: "And he said, Hear ye now, O house of David; Is it a small thing for you to weary men, but will ye weary my God also?"

Isaiah 16:12: "And it shall come to pass, when it is seen that Moab is weary on the high place, that he shall come to his sanctuary to pray; but he shall not prevail."

Isaiah 28:12: "To whom he said, This is the rest wherewith ye may cause the weary to rest; and this is the refreshing: yet they would not hear."

Isaiah 32:2: "And a man shall be as an hiding place from the wind, and a covert from the tempest; as rivers of water in a dry place, as the shadow of a great rock in a weary land."

Isaiah 40:28: "Hast thou not known? hast thou not heard, that the everlasting God, the LORD, the Creator of the ends of the earth, fainteth not, neither is weary? there is no searching of his understanding."

Isaiah 40:30: "Even the youths shall faint and be weary, and the young men shall utterly fall:"

Isaiah 40:31: "But they that wait upon the LORD shall renew their strength; they shall mount up with wings as eagles; they shall run, and not be weary; and they shall walk, and not faint."

Isaiah 43:22: "But thou hast not called upon me, O Jacob; but thou hast been weary of me, O Israel."

Isaiah 46:1: "Bel boweth down, Nebo stoopeth, their idols were upon the beasts, and upon the cattle: your carriages were heavy loaden; they are a burden to the weary beast."

Isaiah 50:4: "The Lord GOD hath given me the tongue of the learned, that I should know how to speak a word in season to him that is weary: he wakeneth morning by morning, he wakeneth mine ear to hear as the learned."

Jeremiah 2:24: "A wild ass used to the wilderness, that snuffeth up the wind at her pleasure; in her occasion who can turn her away? all they that seek her will not weary themselves; in her month they shall find her."

Jeremiah 6:11: "Therefore I am full of the fury of the LORD; I am weary with holding in: I will pour it out upon the children abroad, and upon the assembly of young men together: for even the husband with the wife shall be taken, the aged with him that is full of days."

Jeremiah 9:5: "And they will deceive every one his neighbour, and will not speak the truth: they have taught their tongue to speak lies, and weary themselves to commit iniquity."

Jeremiah 15:6: "Thou hast forsaken me, saith the LORD, thou art gone backward: therefore will I stretch out my hand against thee, and destroy thee; I am weary with repenting."

Jeremiah 20:9: "Then I said, I will not make mention of him, nor speak any more in his name. But

his word was in mine heart as a burning fire shut up in my bones, and I was weary with forbearing, and I could not stay."

Jeremiah 31:25: "For I have satiated the weary soul, and I have replenished every sorrowful soul."

Jeremiah 51:58: "Thus saith the LORD of hosts; The broad walls of Babylon shall be utterly broken, and her high gates shall be burned with fire; and the people shall labour in vain, and the folk in the fire, and they shall be weary."

Jeremiah 51:64: "And thou shalt say, Thus shall Babylon sink, and shall not rise from the evil that I will bring upon her: and they shall be weary. Thus far are the words of Jeremiah."

Habakkuk 2:13: "Behold, is it not of the LORD of hosts that the people shall labour in the very fire, and the people shall weary themselves for very vanity?"

Luke 18:5: "Yet because this widow troubleth me, I will avenge her, lest by her continual coming she weary me."

Galatians 6:9: "And let us not be weary in well doing: for in due season we shall reap, if we faint not."

2 Thessalonians 3:13: "But ye, brethren, be not weary in well doing."

## **WEASEL**

Occurrences: 1

Leviticus 11:29: "These also shall be unclean unto you among the creeping things that creep upon the earth; the weasel, and the mouse, and the tortoise after his kind,"

## **WEATHER**

Occurrences: 4

Job 37:22: "Fair weather cometh out of the north: with God is terrible majesty."

Proverbs 25:20: "As he that taketh away a garment in cold weather, and as vinegar upon nitre, so is he that singeth songs to an heavy heart."

Matthew 16:2: "He answered and said unto them, When it is evening, ye say, It will be fair weather: for the sky is red."

Matthew 16:3: "And in the morning, It will be foul weather to day: for the sky is red and lowering. O ye hypocrites, ye can discern the face of the sky; but can ye not discern the signs of the times?"

## **WEAVE**

Occurrences: 2

Isaiah 19:9: "Moreover they that work in fine flax, and they that weave networks, shall be confounded."

Isaiah 59:5: "They hatch cockatrice' eggs, and weave the spider's web: he that eateth of their eggs dieth, and that which is crushed breaketh out into a viper."

## **WEAVER**

Occurrences: 7

Exodus 35:35: "Them hath he filled with wisdom of heart, to work all manner of work, of the engraver, and of the cunning workman, and of the embroiderer, in blue, and in purple, in scarlet, and in fine linen, and of the weaver, even of them that do any work, and of those that devise cunning work."

1 Samuel 17:7: "And the staff of his spear was like a weaver's beam; and his spear's head weighed six hundred shekels of iron: and one bearing a shield went before him."

2 Samuel 21:19: "And there was again a battle in Gob with the Philistines, where Elhanan the son of Jaareogim, a Bethlehemite, slew the brother of Goliath the Gittite, the staff of whose spear was

like a weaver's beam."

1 Chronicles 11:23: "And he slew an Egyptian, a man of great stature, five cubits high; and in the Egyptian's hand was a spear like a weaver's beam; and he went down to him with a staff, and plucked the spear out of the Egyptian's hand, and slew him with his own spear."

1 Chronicles 20:5: "And there was war again with the Philistines; and Elhanan the son of Jair slew Lahmi the brother of Goliath the Gittite, whose spear staff was like a weaver's beam."

Job 7:6: "My days are swifter than a weaver's shuttle, and are spent without hope."

Isaiah 38:12: "Mine age is departed, and is removed from me as a shepherd's tent: I have cut off like a weaver my life: he will cut me off with pining sickness: from day even to night wilt thou make an end of me."

## **WEAVEST**

Occurrences: 1

Judges 16:13: "And Delilah said unto Samson, Hitherto thou hast mocked me, and told me lies: tell me wherewith thou mightest be bound. And he said unto her, If thou weavest the seven locks of my head with the web."

## **WEB**

Occurrences: 4

Judges 16:13: "And Delilah said unto Samson, Hitherto thou hast mocked me, and told me lies: tell me wherewith thou mightest be bound. And he said unto her, If thou weavest the seven locks of my head with the web."

Judges 16:14: "And she fastened it with the pin, and said unto him, The Philistines be upon thee, Samson. And he awaked out of his sleep, and went away with the pin of the beam, and with the web."

Job 8:14: "Whose hope shall be cut off, and whose trust shall be a spider's web."

Isaiah 59:5: "They hatch cockatrice' eggs, and weave the spider's web: he that eateth of their eggs dieth, and that which is crushed breaketh out into a viper."

## **WEBS**

Occurrences: 1

Isaiah 59:6: "Their webs shall not become garments, neither shall they cover themselves with their works: their works are works of iniquity, and the act of violence is in their hands."

## **WEDDING**

Occurrences: 7

Matthew 22:3: "And sent forth his servants to call them that were bidden to the wedding: and they would not come."

Matthew 22:8: "Then saith he to his servants, The wedding is ready, but they which were bidden were not worthy."

Matthew 22:10: "So those servants went out into the highways, and gathered together all as many as they found, both bad and good: and the wedding was furnished with guests."

Matthew 22:11: "And when the king came in to see the guests, he saw there a man which had not on a wedding garment:"

Matthew 22:12: "And he saith unto him, Friend, how camest thou in hither not having a wedding garment? And he was speechless."

Luke 12:36: "And ye yourselves like unto men that wait for their lord, when he will return from the wedding; that when he cometh and knocketh, they may open unto him immediately."

Luke 14:8: "When thou art bidden of any man to a wedding, sit not down in the highest room; lest a more honourable man than thou be bidden of him;"

## **WEDGE**

Occurrences: 3

Joshua 7:21: "When I saw among the spoils a goodly Babylonish garment, and two hundred shekels of silver, and a wedge of gold of fifty shekels weight, then I coveted them, and took them; and, behold, they are hid in the earth in the midst of my tent, and the silver under it."

Joshua 7:24: "And Joshua, and all Israel with him, took Achan the son of Zerah, and the silver, and the garment, and the wedge of gold, and his sons, and his daughters, and his oxen, and his asses, and his sheep, and his tent, and all that he had: and they brought them unto the valley of Achor."

Isaiah 13:12: "I will make a man more precious than fine gold; even a man than the golden wedge of Ophir."

## **WEDLOCK**

Occurrences: 1

Ezekiel 16:38: "And I will judge thee, as women that break wedlock and shed blood are judged; and I will give thee blood in fury and jealousy."

## **WEEDS**

Occurrences: 1

Jonah 2:5: "The waters compassed me about, even to the soul: the depth closed me round about, the weeds were wrapped about my head."

## **WEEK**

Occurrences: 12

Genesis 29:27: "Fulfil her week, and we will give thee this also for the service which thou shalt serve with me yet seven other years."

Genesis 29:28: "And Jacob did so, and fulfilled her week: and he gave him Rachel his daughter to wife also."

Daniel 9:27: "And he shall confirm the covenant with many for one week: and in the midst of the week he shall cause the sacrifice and the oblation to cease, and for the overspreading of abominations he shall make it desolate, even until the consummation, and that determined shall be poured upon the desolate."

Matthew 28:1: "In the end of the sabbath, as it began to dawn toward the first day of the week, came Mary Magdalene and the other Mary to see the sepulchre."

Mark 16:2: "And very early in the morning the first day of the week, they came unto the sepulchre at the rising of the sun."

Mark 16:9: "Now when Jesus was risen early the first day of the week, he appeared first to Mary Magdalene, out of whom he had cast seven devils."

Luke 18:12: "I fast twice in the week, I give tithes of all that I possess."

Luke 24:1: "Now upon the first day of the week, very early in the morning, they came unto the sepulchre, bringing the spices which they had prepared, and certain others with them."

John 20:1: "The first day of the week cometh Mary Magdalene early, when it was yet dark, unto the sepulchre, and seeth the stone taken away from the sepulchre."

John 20:19: "Then the same day at evening, being the first day of the week, when the doors were shut where the disciples were assembled for fear of the Jews, came Jesus and stood in the midst, and saith unto them, Peace be unto you."

Acts 20:7: "And upon the first day of the week, when the disciples came together to break bread, Paul preached unto them, ready to depart on the morrow; and continued his speech until midnight."  
1 Corinthians 16:2: "Upon the first day of the week let every one of you lay by him in store, as God hath prospered him, that there be no gatherings when I come."

## WEEKS

Occurrences: 13

Exodus 34:22: "And thou shalt observe the feast of weeks, of the firstfruits of wheat harvest, and the feast of ingathering at the year's end."

Leviticus 12:5: "But if she bear a maid child, then she shall be unclean two weeks, as in her separation: and she shall continue in the blood of her purifying threescore and six days."

Numbers 28:26: "Also in the day of the firstfruits, when ye bring a new meat offering unto the LORD, after your weeks be out, ye shall have an holy convocation; ye shall do no servile work:"

Deuteronomy 16:9: "Seven weeks shalt thou number unto thee: begin to number the seven weeks from such time as thou beginnest to put the sickle to the corn."

Deuteronomy 16:10: "And thou shalt keep the feast of weeks unto the LORD thy God with a tribute of a freewill offering of thine hand, which thou shalt give unto the LORD thy God, according as the LORD thy God hath blessed thee:"

Deuteronomy 16:16: "Three times in a year shall all thy males appear before the LORD thy God in the place which he shall choose; in the feast of unleavened bread, and in the feast of weeks, and in the feast of tabernacles: and they shall not appear before the LORD empty:"

2 Chronicles 8:13: "Even after a certain rate every day, offering according to the commandment of Moses, on the sabbaths, and on the new moons, and on the solemn feasts, three times in the year, even in the feast of unleavened bread, and in the feast of weeks, and in the feast of tabernacles."

Jeremiah 5:24: "Neither say they in their heart, Let us now fear the LORD our God, that giveth rain, both the former and the latter, in his season: he reserveth unto us the appointed weeks of the harvest."

Daniel 9:24: "Seventy weeks are determined upon thy people and upon thy holy city, to finish the transgression, and to make an end of sins, and to make reconciliation for iniquity, and to bring in everlasting righteousness, and to seal up the vision and prophecy, and to anoint the most Holy."

Daniel 9:25: "Know therefore and understand, that from the going forth of the commandment to restore and to build Jerusalem unto the Messiah the Prince shall be seven weeks, and threescore and two weeks: the street shall be built again, and the wall, even in troublous times."

Daniel 9:26: "And after threescore and two weeks shall Messiah be cut off, but not for himself: and the people of the prince that shall come shall destroy the city and the sanctuary; and the end thereof shall be with a flood, and unto the end of the war desolations are determined."

Daniel 10:2: "In those days I Daniel was mourning three full weeks."

Daniel 10:3: "I ate no pleasant bread, neither came flesh nor wine in my mouth, neither did I anoint myself at all, till three whole weeks were fulfilled."

## WEEP

Occurrences: 45

Genesis 23:2: "And Sarah died in Kirjatharba; the same is Hebron in the land of Canaan: and Abraham came to mourn for Sarah, and to weep for her."

Genesis 43:30: "And Joseph made haste; for his bowels did yearn upon his brother: and he sought where to weep; and he entered into his chamber, and wept there."

Numbers 11:10: "Then Moses heard the people weep throughout their families, every man in the door of his tent: and the anger of the LORD was kindled greatly; Moses also was displeased."

Numbers 11:13: "Whence should I have flesh to give unto all this people? for they weep unto me,



saying, Give us flesh, that we may eat."

1 Samuel 11:5: "And, behold, Saul came after the herd out of the field; and Saul said, What aileth the people that they weep? And they told him the tidings of the men of Jabesh."

1 Samuel 30:4: "Then David and the people that were with him lifted up their voice and wept, until they had no more power to weep."

2 Samuel 1:24: "Ye daughters of Israel, weep over Saul, who clothed you in scarlet, with other delights, who put on ornaments of gold upon your apparel."

2 Samuel 12:21: "Then said his servants unto him, What thing is this that thou hast done? thou didst fast and weep for the child, while it was alive; but when the child was dead, thou didst rise and eat bread."

2 Chronicles 34:27: "Because thine heart was tender, and thou didst humble thyself before God, when thou heardest his words against this place, and against the inhabitants thereof, and humbledst thyself before me, and didst rend thy clothes, and weep before me; I have even heard thee also, saith the LORD."

Nehemiah 8:9: "And Nehemiah, which is the Tirshatha, and Ezra the priest the scribe, and the Levites that taught the people, said unto all the people, This day is holy unto the LORD your God; mourn not, nor weep. For all the people wept, when they heard the words of the law."

Job 27:15: "Those that remain of him shall be buried in death: and his widows shall not weep."

Job 30:25: "Did not I weep for him that was in trouble? was not my soul grieved for the poor?"

Job 30:31: "My harp also is turned to mourning, and my organ into the voice of them that weep."

Ecclesiastes 3:4: "A time to weep, and a time to laugh; a time to mourn, and a time to dance;"

Isaiah 15:2: "He is gone up to Bajith, and to Dibon, the high places, to weep: Moab shall howl over Nebo, and over Medeba: on all their heads shall be baldness, and every beard cut off."

Isaiah 22:4: "Therefore said I, Look away from me; I will weep bitterly, labour not to comfort me, because of the spoiling of the daughter of my people."

Isaiah 30:19: "For the people shall dwell in Zion at Jerusalem: thou shalt weep no more: he will be very gracious unto thee at the voice of thy cry; when he shall hear it, he will answer thee."

Isaiah 33:7: "Behold, their valiant ones shall cry without: the ambassadors of peace shall weep bitterly."

Jeremiah 9:1: "Oh that my head were waters, and mine eyes a fountain of tears, that I might weep day and night for the slain of the daughter of my people!"

Jeremiah 13:17: "But if ye will not hear it, my soul shall weep in secret places for your pride; and mine eye shall weep sore, and run down with tears, because the LORD's flock is carried away captive."

Jeremiah 22:10: "Weep ye not for the dead, neither bemoan him: but weep sore for him that goeth away: for he shall return no more, nor see his native country."

Jeremiah 48:32: "O vine of Sibmah, I will weep for thee with the weeping of Jazer: thy plants are gone over the sea, they reach even to the sea of Jazer: the spoiler is fallen upon thy summer fruits and upon thy vintage."

Lamentations 1:16: "For these things I weep; mine eye, mine eye runneth down with water, because the comforter that should relieve my soul is far from me: my children are desolate, because the enemy prevailed."

Ezekiel 24:16: "Son of man, behold, I take away from thee the desire of thine eyes with a stroke: yet neither shalt thou mourn nor weep, neither shall thy tears run down."

Ezekiel 24:23: "And your tires shall be upon your heads, and your shoes upon your feet: ye shall not mourn nor weep; but ye shall pine away for your iniquities, and mourn one toward another."

Ezekiel 27:31: "And they shall make themselves utterly bald for thee, and gird them with sackcloth, and they shall weep for thee with bitterness of heart and bitter wailing."

Joel 1:5: "Awake, ye drunkards, and weep; and howl, all ye drinkers of wine, because of the new wine; for it is cut off from your mouth."

Joel 2:17: "Let the priests, the ministers of the LORD, weep between the porch and the altar, and let them say, Spare thy people, O LORD, and give not thine heritage to reproach, that the heathen should rule over them: wherefore should they say among the people, Where is their God?"

Micah 1:10: "Declare ye it not at Gath, weep ye not at all: in the house of Aphrah roll thyself in the dust."

Zechariah 7:3: "And to speak unto the priests which were in the house of the LORD of hosts, and to the prophets, saying, Should I weep in the fifth month, separating myself, as I have done these so many years?"

Mark 5:39: "And when he was come in, he saith unto them, Why make ye this ado, and weep? the damsel is not dead, but sleepeth."

Luke 6:21: "Blessed are ye that hunger now: for ye shall be filled. Blessed are ye that weep now: for ye shall laugh."

Luke 6:25: "Woe unto you that are full! for ye shall hunger. Woe unto you that laugh now! for ye shall mourn and weep."

Luke 7:13: "And when the Lord saw her, he had compassion on her, and said unto her, Weep not."

Luke 8:52: "And all wept, and bewailed her: but he said, Weep not; she is not dead, but sleepeth."

Luke 23:28: "But Jesus turning unto them said, Daughters of Jerusalem, weep not for me, but weep for yourselves, and for your children."

John 11:31: "The Jews then which were with her in the house, and comforted her, when they saw Mary, that she rose up hastily and went out, followed her, saying, She goeth unto the grave to weep there."

John 16:20: "Verily, verily, I say unto you, That ye shall weep and lament, but the world shall rejoice: and ye shall be sorrowful, but your sorrow shall be turned into joy."

Acts 21:13: "Then Paul answered, What mean ye to weep and to break mine heart? for I am ready not to be bound only, but also to die at Jerusalem for the name of the Lord Jesus."

Romans 12:15: "Rejoice with them that do rejoice, and weep with them that weep."

1 Corinthians 7:30: "And they that weep, as though they wept not; and they that rejoice, as though they rejoiced not; and they that buy, as though they possessed not;"

James 4:9: "Be afflicted, and mourn, and weep: let your laughter be turned to mourning, and your joy to heaviness."

James 5:1: "Go to now, ye rich men, weep and howl for your miseries that shall come upon you."

Revelation 5:5: "And one of the elders saith unto me, Weep not: behold, the Lion of the tribe of Juda, the Root of David, hath prevailed to open the book, and to loose the seven seals thereof."

Revelation 18:11: "And the merchants of the earth shall weep and mourn over her; for no man buyeth their merchandise any more:"

## **WEEPEST**

Occurrences: 3

1 Samuel 1:8: "Then said Elkanah her husband to her, Hannah, why weepest thou? and why eatest thou not? and why is thy heart grieved? am not I better to thee than ten sons?"

John 20:13: "And they say unto her, Woman, why weepest thou? She saith unto them, Because they have taken away my LORD, and I know not where they have laid him."

John 20:15: "Jesus saith unto her, Woman, why weepest thou? whom seekest thou? She, supposing him to be the gardener, saith unto him, Sir, if thou have borne him hence, tell me where thou hast laid him, and I will take him away."

## **WEEPETH**

Occurrences: 4

2 Samuel 19:1: "And it was told Joab, Behold, the king weepeth and mourneth for Absalom."

2 Kings 8:12: "And Hazael said, Why weepeth my lord? And he answered, Because I know the evil that thou wilt do unto the children of Israel: their strong holds wilt thou set on fire, and their young men wilt thou slay with the sword, and wilt dash their children, and rip up their women with child."  
Psalms 126:6: "He that goeth forth and weepeth, bearing precious seed, shall doubtless come again with rejoicing, bringing his sheaves with him."  
Lamentations 1:2: "She weepeth sore in the night, and her tears are on her cheeks: among all her lovers she hath none to comfort her: all her friends have dealt treacherously with her, they are become her enemies."

## WEEPING

Occurrences: 41

Numbers 25:6: "And, behold, one of the children of Israel came and brought unto his brethren a Midianitish woman in the sight of Moses, and in the sight of all the congregation of the children of Israel, who were weeping before the door of the tabernacle of the congregation."  
Deuteronomy 34:8: "And the children of Israel wept for Moses in the plains of Moab thirty days: so the days of weeping and mourning for Moses were ended."  
2 Samuel 3:16: "And her husband went with her along weeping behind her to Bahurim. Then said Abner unto him, Go, return. And he returned."  
2 Samuel 15:30: "And David went up by the ascent of mount Olivet, and wept as he went up, and had his head covered, and he went barefoot: and all the people that was with him covered every man his head, and they went up, weeping as they went up."  
Ezra 3:13: "So that the people could not discern the noise of the shout of joy from the noise of the weeping of the people: for the people shouted with a loud shout, and the noise was heard afar off."  
Ezra 10:1: "Now when Ezra had prayed, and when he had confessed, weeping and casting himself down before the house of God, there assembled unto him out of Israel a very great congregation of men and women and children: for the people wept very sore."  
Esther 4:3: "And in every province, whithersoever the king's commandment and his decree came, there was great mourning among the Jews, and fasting, and weeping, and wailing; and many lay in sackcloth and ashes."  
Job 16:16: "My face is foul with weeping, and on my eyelids is the shadow of death;"  
Psalms 6:8: "Depart from me, all ye workers of iniquity; for the LORD hath heard the voice of my weeping."  
Psalms 30:5: "For his anger endureth but a moment; in his favour is life: weeping may endure for a night, but joy cometh in the morning."  
Psalms 102:9: "For I have eaten ashes like bread, and mingled my drink with weeping."  
Isaiah 15:3: "In their streets they shall gird themselves with sackcloth: on the tops of their houses, and in their streets, every one shall howl, weeping abundantly."  
Isaiah 15:5: "My heart shall cry out for Moab; his fugitives shall flee unto Zoar, an heifer of three years old: for by the mounting up of Luhith with weeping shall they go it up; for in the way of Horonaim they shall raise up a cry of destruction."  
Isaiah 16:9: "Therefore I will bewail with the weeping of Jazer the vine of Sibmah: I will water thee with my tears, O Heshbon, and Elealeh: for the shouting for thy summer fruits and for thy harvest is fallen."  
Isaiah 22:12: "And in that day did the Lord GOD of hosts call to weeping, and to mourning, and to baldness, and to girding with sackcloth:"  
Isaiah 65:19: "And I will rejoice in Jerusalem, and joy in my people: and the voice of weeping shall be no more heard in her, nor the voice of crying."  
Jeremiah 3:21: "A voice was heard upon the high places, weeping and supplications of the children of Israel: for they have perverted their way, and they have forgotten the LORD their God."  
Jeremiah 9:10: "For the mountains will I take up a weeping and wailing, and for the habitations of

the wilderness a lamentation, because they are burned up, so that none can pass through them; neither can men hear the voice of the cattle; both the fowl of the heavens and the beast are fled; they are gone."

Jeremiah 31:9: "They shall come with weeping, and with supplications will I lead them: I will cause them to walk by the rivers of waters in a straight way, wherein they shall not stumble: for I am a father to Israel, and Ephraim is my firstborn."

Jeremiah 31:15: "Thus saith the LORD; A voice was heard in Ramah, lamentation, and bitter weeping; Rahel weeping for her children refused to be comforted for her children, because they were not."

Jeremiah 31:16: "Thus saith the LORD; Refrain thy voice from weeping, and thine eyes from tears: for thy work shall be rewarded, saith the LORD; and they shall come again from the land of the enemy."

Jeremiah 41:6: "And Ishmael the son of Nethaniah went forth from Mizpah to meet them, weeping all along as he went: and it came to pass, as he met them, he said unto them, Come to Gedaliah the son of Ahikam."

Jeremiah 48:5: "For in the going up of Luhith continual weeping shall go up; for in the going down of Horonaim the enemies have heard a cry of destruction."

Jeremiah 48:32: "O vine of Sibmah, I will weep for thee with the weeping of Jazer: thy plants are gone over the sea, they reach even to the sea of Jazer: the spoiler is fallen upon thy summer fruits and upon thy vintage."

Jeremiah 50:4: "In those days, and in that time, saith the LORD, the children of Israel shall come, they and the children of Judah together, going and weeping: they shall go, and seek the LORD their God."

Ezekiel 8:14: "Then he brought me to the door of the gate of the LORD's house which was toward the north; and, behold, there sat women weeping for Tammuz."

Joel 2:12: "Therefore also now, saith the LORD, turn ye even to me with all your heart, and with fasting, and with weeping, and with mourning:"

Malachi 2:13: "And this have ye done again, covering the altar of the LORD with tears, with weeping, and with crying out, insomuch that he regardeth not the offering any more, or receiveth it with good will at your hand."

Matthew 2:18: "In Rama was there a voice heard, lamentation, and weeping, and great mourning, Rachel weeping for her children, and would not be comforted, because they are not."

Matthew 8:12: "But the children of the kingdom shall be cast out into outer darkness: there shall be weeping and gnashing of teeth."

Matthew 22:13: "Then said the king to the servants, Bind him hand and foot, and take him away, and cast him into outer darkness, there shall be weeping and gnashing of teeth."

Matthew 24:51: "And shall cut him asunder, and appoint him his portion with the hypocrites: there shall be weeping and gnashing of teeth."

Matthew 25:30: "And cast ye the unprofitable servant into outer darkness: there shall be weeping and gnashing of teeth."

Luke 7:38: "And stood at his feet behind him weeping, and began to wash his feet with tears, and did wipe them with the hairs of her head, and kissed his feet, and anointed them with the ointment."

Luke 13:28: "There shall be weeping and gnashing of teeth, when ye shall see Abraham, and Isaac, and Jacob, and all the prophets, in the kingdom of God, and you yourselves thrust out."

John 11:33: "When Jesus therefore saw her weeping, and the Jews also weeping which came with her, he groaned in the spirit, and was troubled."

John 20:11: "But Mary stood without at the sepulchre weeping: and as she wept, she stooped down, and looked into the sepulchre,"

Acts 9:39: "Then Peter arose and went with them. When he was come, they brought him into the upper chamber: and all the widows stood by him weeping, and shewing the coats and garments

which Dorcas made, while she was with them."

Philippians 3:18: "(For many walk, of whom I have told you often, and now tell you even weeping, that they are the enemies of the cross of Christ:"

Revelation 18:15: "The merchants of these things, which were made rich by her, shall stand afar off for the fear of her torment, weeping and wailing,"

Revelation 18:19: "And they cast dust on their heads, and cried, weeping and wailing, saying, Alas, alas that great city, wherein were made rich all that had ships in the sea by reason of her costliness! for in one hour is she made desolate."

## **WEIGH**

Occurrences: 6

1 Chronicles 20:2: "And David took the crown of their king from off his head, and found it to weigh a talent of gold, and there were precious stones in it; and it was set upon David's head: and he brought also exceeding much spoil out of the city."

Ezra 8:29: "Watch ye, and keep them, until ye weigh them before the chief of the priests and the Levites, and chief of the fathers of Israel, at Jerusalem, in the chambers of the house of the LORD."

Psalms 58:2: "Yea, in heart ye work wickedness; ye weigh the violence of your hands in the earth."

Isaiah 26:7: "The way of the just is uprightness: thou, most upright, dost weigh the path of the just."

Isaiah 46:6: "They lavish gold out of the bag, and weigh silver in the balance, and hire a goldsmith; and he maketh it a god: they fall down, yea, they worship."

Ezekiel 5:1: "And thou, son of man, take thee a sharp knife, take thee a barber's razor, and cause it to pass upon thine head and upon thy beard: then take thee balances to weigh, and divide the hair."

## **WEIGHED**

Occurrences: 17

Genesis 23:16: "And Abraham hearkened unto Ephron; and Abraham weighed to Ephron the silver, which he had named in the audience of the sons of Heth, four hundred shekels of silver, current money with the merchant."

Numbers 7:85: "Each charger of silver weighing an hundred and thirty shekels, each bowl seventy: all the silver vessels weighed two thousand and four hundred shekels, after the shekel of the sanctuary:"

1 Samuel 2:3: "Talk no more so exceeding proudly; let not arrogancy come out of your mouth: for the LORD is a God of knowledge, and by him actions are weighed."

1 Samuel 17:7: "And the staff of his spear was like a weaver's beam; and his spear's head weighed six hundred shekels of iron: and one bearing a shield went before him."

2 Samuel 14:26: "And when he polled his head, (for it was at every year's end that he polled it: because the hair was heavy on him, therefore he polled it:) he weighed the hair of his head at two hundred shekels after the king's weight."

2 Samuel 21:16: "And Ishbibenob, which was of the sons of the giant, the weight of whose spear weighed three hundred shekels of brass in weight, he being girded with a new sword, thought to have slain David."

Ezra 8:25: "And weighed unto them the silver, and the gold, and the vessels, even the offering of the house of our God, which the king, and his counsellors, and his lords, and all Israel there present, had offered:"

Ezra 8:26: "I even weighed unto their hand six hundred and fifty talents of silver, and silver vessels an hundred talents, and of gold an hundred talents;"

Ezra 8:33: "Now on the fourth day was the silver and the gold and the vessels weighed in the house of our God by the hand of Meremoth the son of Uriah the priest; and with him was Eleazar the son of Phinehas; and with them was Jozabad the son of Jeshua, and Noadiah the son of Binnui,

Levites;"

Job 6:2: "Oh that my grief were throughly weighed, and my calamity laid in the balances together!"

Job 28:15: "It cannot be gotten for gold, neither shall silver be weighed for the price thereof."

Job 31:6: "Let me be weighed in an even balance that God may know mine integrity."

Isaiah 40:12: "Who hath measured the waters in the hollow of his hand, and meted out heaven with the span, and comprehended the dust of the earth in a measure, and weighed the mountains in scales, and the hills in a balance?"

Jeremiah 32:9: "And I bought the field of Hanameel my uncle's son, that was in Anathoth, and weighed him the money, even seventeen shekels of silver."

Jeremiah 32:10: "And I subscribed the evidence, and sealed it, and took witnesses, and weighed him the money in the balances."

Daniel 5:27: "TEKEL; Thou art weighed in the balances, and art found wanting."

Zechariah 11:12: "And I said unto them, If ye think good, give me my price; and if not, forbear. So they weighed for my price thirty pieces of silver."

## **WEIGHETH**

Occurrences: 2

Job 28:25: "To make the weight for the winds; and he weigheth the waters by measure."

Proverbs 16:2: "All the ways of a man are clean in his own eyes; but the LORD weigheth the spirits."

## **WEIGHING**

Occurrences: 2

Numbers 7:85: "Each charger of silver weighing an hundred and thirty shekels, each bowl seventy: all the silver vessels weighed two thousand and four hundred shekels, after the shekel of the sanctuary:"

Numbers 7:86: "The golden spoons were twelve, full of incense, weighing ten shekels apiece, after the shekel of the sanctuary: all the gold of the spoons was an hundred and twenty shekels."

## **WEIGHT**

Occurrences: 51

Genesis 24:22: "And it came to pass, as the camels had done drinking, that the man took a golden earring of half a shekel weight, and two bracelets for her hands of ten shekels weight of gold;"

Genesis 43:21: "And it came to pass, when we came to the inn, that we opened our sacks, and, behold, every man's money was in the mouth of his sack, our money in full weight: and we have brought it again in our hand."

Exodus 30:34: "And the LORD said unto Moses, Take unto thee sweet spices, stacte, and onycha, and galbanum; these sweet spices with pure frankincense: of each shall there be a like weight:"

Leviticus 19:35: "Ye shall do no unrighteousness in judgment, in meteyard, in weight, or in measure."

Leviticus 26:26: "And when I have broken the staff of your bread, ten women shall bake your bread in one oven, and they shall deliver you your bread again by weight: and ye shall eat, and not be satisfied."

Numbers 7:13: "And his offering was one silver charger, the weight thereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them were full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:19: "He offered for his offering one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of

them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:25: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:31: "His offering was one silver charger of the weight of an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:37: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:43: "His offering was one silver charger of the weight of an hundred and thirty shekels, a silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:49: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:55: "His offering was one silver charger of the weight of an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:61: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:67: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:73: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:79: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Deuteronomy 25:15: "But thou shalt have a perfect and just weight, a perfect and just measure shalt thou have: that thy days may be lengthened in the land which the LORD thy God giveth thee."

Joshua 7:21: "When I saw among the spoils a goodly Babylonish garment, and two hundred shekels of silver, and a wedge of gold of fifty shekels weight, then I coveted them, and took them; and, behold, they are hid in the earth in the midst of my tent, and the silver under it."

Judges 8:26: "And the weight of the golden earrings that he requested was a thousand and seven hundred shekels of gold; beside ornaments, and collars, and purple raiment that was on the kings of Midian, and beside the chains that were about their camels' necks."

1 Samuel 17:5: "And he had an helmet of brass upon his head, and he was armed with a coat of mail; and the weight of the coat was five thousand shekels of brass."

2 Samuel 12:30: "And he took their king's crown from off his head, the weight whereof was a talent of gold with the precious stones: and it was set on David's head. And he brought forth the spoil of the city in great abundance."

2 Samuel 14:26: "And when he polled his head, (for it was at every year's end that he polled it: because the hair was heavy on him, therefore he polled it:) he weighed the hair of his head at two hundred shekels after the king's weight."

2 Samuel 21:16: "And Ishbubenob, which was of the sons of the giant, the weight of whose spear weighed three hundred shekels of brass in weight, he being girded with a new sword, thought to have slain David."

1 Kings 7:47: "And Solomon left all the vessels unweighed, because they were exceeding many: neither was the weight of the brass found out."

1 Kings 10:14: "Now the weight of gold that came to Solomon in one year was six hundred threescore and six talents of gold,"

2 Kings 25:16: "The two pillars, one sea, and the bases which Solomon had made for the house of the LORD; the brass of all these vessels was without weight."

1 Chronicles 21:25: "So David gave to Ornan for the place six hundred shekels of gold by weight."

1 Chronicles 22:3: "And David prepared iron in abundance for the nails for the doors of the gates, and for the joinings; and brass in abundance without weight;"

1 Chronicles 22:14: "Now, behold, in my trouble I have prepared for the house of the LORD an hundred thousand talents of gold, and a thousand thousand talents of silver; and of brass and iron without weight; for it is in abundance: timber also and stone have I prepared; and thou mayest add thereto."

1 Chronicles 28:14: "He gave of gold by weight for things of gold, for all instruments of all manner of service; silver also for all instruments of silver by weight, for all instruments of every kind of service:"

1 Chronicles 28:15: "Even the weight for the candlesticks of gold, and for their lamps of gold, by weight for every candlestick, and for the lamps thereof: and for the candlesticks of silver by weight, both for the candlestick, and also for the lamps thereof, according to the use of every candlestick."

1 Chronicles 28:16: "And by weight he gave gold for the tables of shewbread, for every table; and likewise silver for the tables of silver:"

1 Chronicles 28:17: "Also pure gold for the fleshhooks, and the bowls, and the cups: and for the golden basons he gave gold by weight for every bason; and likewise silver by weight for every bason of silver:"

1 Chronicles 28:18: "And for the altar of incense refined gold by weight; and gold for the pattern of the chariot of the cherubims, that spread out their wings, and covered the ark of the covenant of the LORD."

2 Chronicles 3:9: "And the weight of the nails was fifty shekels of gold. And he overlaid the upper chambers with gold."

2 Chronicles 4:18: "Thus Solomon made all these vessels in great abundance: for the weight of the brass could not be found out."

2 Chronicles 9:13: "Now the weight of gold that came to Solomon in one year was six hundred and threescore and six talents of gold;"

Ezra 8:30: "So took the priests and the Levites the weight of the silver, and the gold, and the vessels, to bring them to Jerusalem unto the house of our God."

Ezra 8:34: "By number and by weight of every one: and all the weight was written at that time."

Job 28:25: "To make the weight for the winds; and he weigheth the waters by measure."

Proverbs 11:1: "A false balance is abomination to the LORD: but a just weight is his delight."

Proverbs 16:11: "A just weight and balance are the LORD's: all the weights of the bag are his work."

Jeremiah 52:20: "The two pillars, one sea, and twelve brasen bulls that were under the bases, which king Solomon had made in the house of the LORD: the brass of all these vessels was without weight."

Ezekiel 4:10: "And thy meat which thou shalt eat shall be by weight, twenty shekels a day: from time to time shalt thou eat it."

Ezekiel 4:16: "Moreover he said unto me, Son of man, behold, I will break the staff of bread in Jerusalem: and they shall eat bread by weight, and with care; and they shall drink water by measure, and with astonishment:"

Zechariah 5:8: "And he said, This is wickedness. And he cast it into the midst of the ephah; and he cast the weight of lead upon the mouth thereof."



John 19:39: "And there came also Nicodemus, which at the first came to Jesus by night, and brought a mixture of myrrh and aloes, about an hundred pound weight."

2 Corinthians 4:17: "For our light affliction, which is but for a moment, worketh for us a far more exceeding and eternal weight of glory;"

Hebrews 12:1: "Wherefore seeing we also are compassed about with so great a cloud of witnesses, let us lay aside every weight, and the sin which doth so easily beset us, and let us run with patience the race that is set before us,"

Revelation 16:21: "And there fell upon men a great hail out of heaven, every stone about the weight of a talent: and men blasphemed God because of the plague of the hail; for the plague thereof was exceeding great."

## **WEIGHTIER**

Occurrences: 1

Matthew 23:23: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye pay tithes of mint and anise and cummin, and have omitted the weightier matters of the law, judgment, mercy, and faith: these ought ye to have done, and not to leave the other undone."

## **WEIGHTS**

Occurrences: 6

Leviticus 19:36: "Just balances, just weights, a just ephah, and a just hin, shall ye have: I am the LORD your God, which brought you out of the land of Egypt."

Deuteronomy 25:13: "Thou shalt not have in thy bag divers weights, a great and a small."

Proverbs 16:11: "A just weight and balance are the LORD's: all the weights of the bag are his work."

Proverbs 20:10: "Divers weights, and divers measures, both of them are alike abomination to the LORD."

Proverbs 20:23: "Divers weights are an abomination unto the LORD; and a false balance is not good."

Micah 6:11: "Shall I count them pure with the wicked balances, and with the bag of deceitful weights?"

## **WEIGHTY**

Occurrences: 2

Proverbs 27:3: "A stone is heavy, and the sand weighty; but a fool's wrath is heavier than them both."

2 Corinthians 10:10: "For his letters, say they, are weighty and powerful; but his bodily presence is weak, and his speech contemptible."

## **WELFARE**

Occurrences: 7

Genesis 43:27: "And he asked them of their welfare, and said, Is your father well, the old man of whom ye spake? Is he yet alive?"

Exodus 18:7: "And Moses went out to meet his father in law, and did obeisance, and kissed him; and they asked each other of their welfare; and they came into the tent."

1 Chronicles 18:10: "He sent Hadoram his son to king David, to enquire of his welfare, and to congratulate him, because he had fought against Hadarezer, and smitten him; (for Hadarezer had war with Tou;) and with him all manner of vessels of gold and silver and brass."

Nehemiah 2:10: "When Sanballat the Horonite, and Tobiah the servant, the Ammonite, heard of it,

it grieved them exceedingly that there was come a man to seek the welfare of the children of Israel." Job 30:15: "Terrors are turned upon me: they pursue my soul as the wind: and my welfare passeth away as a cloud."

Psalms 69:22: "Let their table become a snare before them: and that which should have been for their welfare, let it become a trap."

Jeremiah 38:4: "Therefore the princes said unto the king, We beseech thee, let this man be put to death: for thus he weakeneth the hands of the men of war that remain in this city, and the hands of all the people, in speaking such words unto them: for this man seeketh not the welfare of this people, but the hurt."

## WELL

Occurrences: 248

Genesis 4:7: "If thou doest well, shalt thou not be accepted? and if thou doest not well, sin lieth at the door. And unto thee shall be his desire, and thou shalt rule over him."

Genesis 12:13: "Say, I pray thee, thou art my sister: that it may be well with me for thy sake; and my soul shall live because of thee."

Genesis 12:16: "And he entreated Abram well for her sake: and he had sheep, and oxen, and he asses, and menservants, and maidservants, and she asses, and camels."

Genesis 13:10: "And Lot lifted up his eyes, and beheld all the plain of Jordan, that it was well watered every where, before the LORD destroyed Sodom and Gomorrah, even as the garden of the LORD, like the land of Egypt, as thou comest unto Zoar."

Genesis 16:14: "Wherefore the well was called Beerlahairoi; behold, it is between Kadesh and Bered."

Genesis 18:11: "Now Abraham and Sarah were old and well stricken in age; and it ceased to be with Sarah after the manner of women."

Genesis 21:19: "And God opened her eyes, and she saw a well of water; and she went, and filled the bottle with water, and gave the lad drink."

Genesis 21:25: "And Abraham reproved Abimelech because of a well of water, which Abimelech's servants had violently taken away."

Genesis 21:30: "And he said, For these seven ewe lambs shalt thou take of my hand, that they may be a witness unto me, that I have digged this well."

Genesis 24:1: "And Abraham was old, and well stricken in age: and the LORD had blessed Abraham in all things."

Genesis 24:11: "And he made his camels to kneel down without the city by a well of water at the time of the evening, even the time that women go out to draw water."

Genesis 24:13: "Behold, I stand here by the well of water; and the daughters of the men of the city come out to draw water:"

Genesis 24:16: "And the damsel was very fair to look upon, a virgin, neither had any man known her: and she went down to the well, and filled her pitcher, and came up."

Genesis 24:20: "And she hastened, and emptied her pitcher into the trough, and ran again unto the well to draw water, and drew for all his camels."

Genesis 24:29: "And Rebekah had a brother, and his name was Laban: and Laban ran out unto the man, unto the well."

Genesis 24:30: "And it came to pass, when he saw the earring and bracelets upon his sister's hands, and when he heard the words of Rebekah his sister, saying, Thus spake the man unto me; that he came unto the man; and, behold, he stood by the camels at the well."

Genesis 24:42: "And I came this day unto the well, and said, O LORD God of my master Abraham, if now thou do prosper my way which I go:"

Genesis 24:43: "Behold, I stand by the well of water; and it shall come to pass, that when the virgin cometh forth to draw water, and I say to her, Give me, I pray thee, a little water of thy pitcher to

drink;"

Genesis 24:45: "And before I had done speaking in mine heart, behold, Rebekah came forth with her pitcher on her shoulder; and she went down unto the well, and drew water: and I said unto her, Let me drink, I pray thee."

Genesis 24:62: "And Isaac came from the way of the well Lahairoi; for he dwelt in the south country."

Genesis 25:11: "And it came to pass after the death of Abraham, that God blessed his son Isaac; and Isaac dwelt by the well Lahairoi."

Genesis 26:19: "And Isaac's servants digged in the valley, and found there a well of springing water."

Genesis 26:20: "And the herdmen of Gerar did strive with Isaac's herdmen, saying, The water is ours: and he called the name of the well Esek; because they strove with him."

Genesis 26:21: "And they digged another well, and strove for that also: and he called the name of it Sitnah."

Genesis 26:22: "And he removed from thence, and digged another well; and for that they strove not: and he called the name of it Rehoboth; and he said, For now the LORD hath made room for us, and we shall be fruitful in the land."

Genesis 26:25: "And he builded an altar there, and called upon the name of the LORD, and pitched his tent there: and there Isaac's servants digged a well."

Genesis 26:32: "And it came to pass the same day, that Isaac's servants came, and told him concerning the well which they had digged, and said unto him, We have found water."

Genesis 29:2: "And he looked, and behold a well in the field, and, lo, there were three flocks of sheep lying by it; for out of that well they watered the flocks: and a great stone was upon the well's mouth."

Genesis 29:3: "And thither were all the flocks gathered: and they rolled the stone from the well's mouth, and watered the sheep, and put the stone again upon the well's mouth in his place."

Genesis 29:6: "And he said unto them, Is he well? And they said, He is well: and, behold, Rachel his daughter cometh with the sheep."

Genesis 29:8: "And they said, We cannot, until all the flocks be gathered together, and till they roll the stone from the well's mouth; then we water the sheep."

Genesis 29:10: "And it came to pass, when Jacob saw Rachel the daughter of Laban his mother's brother, and the sheep of Laban his mother's brother, that Jacob went near, and rolled the stone from the well's mouth, and watered the flock of Laban his mother's brother."

Genesis 29:17: "Leah was tender eyed; but Rachel was beautiful and well favoured."

Genesis 32:9: "And Jacob said, O God of my father Abraham, and God of my father Isaac, the LORD which saidst unto me, Return unto thy country, and to thy kindred, and I will deal well with thee:"

Genesis 37:14: "And he said to him, Go, I pray thee, see whether it be well with thy brethren, and well with the flocks; and bring me word again. So he sent him out of the vale of Hebron, and he came to Shechem."

Genesis 39:6: "And he left all that he had in Joseph's hand; and he knew not ought he had, save the bread which he did eat. And Joseph was a goodly person, and well favoured."

Genesis 40:14: "But think on me when it shall be well with thee, and shew kindness, I pray thee, unto me, and make mention of me unto Pharaoh, and bring me out of this house:"

Genesis 41:2: "And, behold, there came up out of the river seven well favoured kine and fatfleshed; and they fed in a meadow."

Genesis 41:4: "And the ill favoured and leanfleshed kine did eat up the seven well favoured and fat kine. So Pharaoh awoke."

Genesis 41:18: "And, behold, there came up out of the river seven kine, fatfleshed and well favoured; and they fed in a meadow:"

Genesis 43:27: "And he asked them of their welfare, and said, Is your father well, the old man of whom ye spake? Is he yet alive?"

Genesis 45:16: "And the fame thereof was heard in Pharaoh's house, saying, Joseph's brethren are come: and it pleased Pharaoh well, and his servants."

Genesis 49:22: "Joseph is a fruitful bough, even a fruitful bough by a well; whose branches run over the wall:"

Exodus 1:20: "Therefore God dealt well with the midwives: and the people multiplied, and waxed very mighty."

Exodus 2:15: "Now when Pharaoh heard this thing, he sought to slay Moses. But Moses fled from the face of Pharaoh, and dwelt in the land of Midian: and he sat down by a well."

Exodus 4:14: "And the anger of the LORD was kindled against Moses, and he said, Is not Aaron the Levite thy brother? I know that he can speak well. And also, behold, he cometh forth to meet thee: and when he seeth thee, he will be glad in his heart."

Exodus 10:29: "And Moses said, Thou hast spoken well, I will see thy face again no more."

Leviticus 24:16: "And he that blasphemeth the name of the LORD, he shall surely be put to death, and all the congregation shall certainly stone him: as well the stranger, as he that is born in the land, when he blasphemeth the name of the Lord, shall be put to death."

Leviticus 24:22: "Ye shall have one manner of law, as well for the stranger, as for one of your own country: for I am the LORD your God."

Numbers 11:18: "And say thou unto the people, Sanctify yourselves against to morrow, and ye shall eat flesh: for ye have wept in the ears of the LORD, saying, Who shall give us flesh to eat? for it was well with us in Egypt: therefore the LORD will give you flesh, and ye shall eat."

Numbers 13:30: "And Caleb stilled the people before Moses, and said, Let us go up at once, and possess it; for we are well able to overcome it."

Numbers 21:16: "And from thence they went to Beer: that is the well whereof the LORD spake unto Moses, Gather the people together, and I will give them water."

Numbers 21:17: "Then Israel sang this song, Spring up, O well; sing ye unto it:"

Numbers 21:18: "The princes digged the well, the nobles of the people digged it, by the direction of the lawgiver, with their staves. And from the wilderness they went to Mattanah:"

Numbers 21:22: "Let me pass through thy land: we will not turn into the fields, or into the vineyards; we will not drink of the waters of the well: but we will go along by the king's high way, until we be past thy borders."

Numbers 36:5: "And Moses commanded the children of Israel according to the word of the LORD, saying, The tribe of the sons of Joseph hath said well."

Deuteronomy 1:17: "Ye shall not respect persons in judgment; but ye shall hear the small as well as the great; ye shall not be afraid of the face of man; for the judgment is God's: and the cause that is too hard for you, bring it unto me, and I will hear it."

Deuteronomy 1:23: "And the saying pleased me well: and I took twelve men of you, one of a tribe:"

Deuteronomy 3:20: "Until the LORD have given rest unto your brethren, as well as unto you, and until they also possess the land which the LORD your God hath given them beyond Jordan: and then shall ye return every man unto his possession, which I have given you."

Deuteronomy 4:40: "Thou shalt keep therefore his statutes, and his commandments, which I command thee this day, that it may go well with thee, and with thy children after thee, and that thou mayest prolong thy days upon the earth, which the LORD thy God giveth thee, for ever."

Deuteronomy 5:14: "But the seventh day is the sabbath of the LORD thy God: in it thou shalt not do any work, thou, nor thy son, nor thy daughter, nor thy manservant, nor thy maidservant, nor thine ox, nor thine ass, nor any of thy cattle, nor thy stranger that is within thy gates; that thy manservant and thy maidservant may rest as well as thou."

Deuteronomy 5:16: "Honour thy father and thy mother, as the LORD thy God hath commanded thee; that thy days may be prolonged, and that it may go well with thee, in the land which the

LORD thy God giveth thee."

Deuteronomy 5:28: "And the LORD heard the voice of your words, when ye spake unto me; and the LORD said unto me, I have heard the voice of the words of this people, which they have spoken unto thee: they have well said all that they have spoken."

Deuteronomy 5:29: "O that there were such an heart in them, that they would fear me, and keep all my commandments always, that it might be well with them, and with their children for ever!"

Deuteronomy 5:33: "Ye shall walk in all the ways which the LORD your God hath commanded you, that ye may live, and that it may be well with you, and that ye may prolong your days in the land which ye shall possess."

Deuteronomy 6:3: "Hear therefore, O Israel, and observe to do it; that it may be well with thee, and that ye may increase mightily, as the LORD God of thy fathers hath promised thee, in the land that floweth with milk and honey."

Deuteronomy 6:18: "And thou shalt do that which is right and good in the sight of the LORD: that it may be well with thee, and that thou mayest go in and possess the good land which the LORD sware unto thy fathers."

Deuteronomy 7:18: "Thou shalt not be afraid of them: but shalt well remember what the LORD thy God did unto Pharaoh, and unto all Egypt;"

Deuteronomy 12:25: "Thou shalt not eat it; that it may go well with thee, and with thy children after thee, when thou shalt do that which is right in the sight of the LORD."

Deuteronomy 12:28: "Observe and hear all these words which I command thee, that it may go well with thee, and with thy children after thee for ever, when thou doest that which is good and right in the sight of the LORD thy God."

Deuteronomy 15:16: "And it shall be, if he say unto thee, I will not go away from thee; because he loveth thee and thine house, because he is well with thee;"

Deuteronomy 18:17: "And the LORD said unto me, They have well spoken that which they have spoken."

Deuteronomy 19:13: "Thine eye shall not pity him, but thou shalt put away the guilt of innocent blood from Israel, that it may go well with thee."

Deuteronomy 20:8: "And the officers shall speak further unto the people, and they shall say, What man is there that is fearful and fainthearted? let him go and return unto his house, lest his brethren's heart faint as well as his heart."

Deuteronomy 22:7: "But thou shalt in any wise let the dam go, and take the young to thee; that it may be well with thee, and that thou mayest prolong thy days."

Joshua 8:33: "And all Israel, and their elders, and officers, and their judges, stood on this side the ark and on that side before the priests the Levites, which bare the ark of the covenant of the LORD, as well the stranger, as he that was born among them; half of them over against mount Gerizim, and half of them over against mount Ebal; as Moses the servant of the LORD had commanded before, that they should bless the people of Israel."

Joshua 18:15: "And the south quarter was from the end of Kirjathjearim, and the border went out on the west, and went out to the well of waters of Nephtoah:"

Judges 7:1: "Then Jerubbaal, who is Gideon, and all the people that were with him, rose up early, and pitched beside the well of Harod: so that the host of the Midianites were on the north side of them, by the hill of Moreh, in the valley."

Judges 9:16: "Now therefore, if ye have done truly and sincerely, in that ye have made Abimelech king, and if ye have dealt well with Jerubbaal and his house, and have done unto him according to the deserving of his hands;"

Judges 14:3: "Then his father and his mother said unto him, Is there never a woman among the daughters of thy brethren, or among all my people, that thou goest to take a wife of the uncircumcised Philistines? And Samson said unto his father, Get her for me; for she pleaseth me well."

Judges 14:7: "And he went down, and talked with the woman; and she pleased Samson well."

Judges 20:48: "And the men of Israel turned again upon the children of Benjamin, and smote them with the edge of the sword, as well the men of every city, as the beast, and all that came to hand: also they set on fire all the cities that they came to."

Ruth 3:1: "Then Naomi her mother in law said unto her, My daughter, shall I not seek rest for thee, that it may be well with thee?"

Ruth 3:13: "Tarry this night, and it shall be in the morning, that if he will perform unto thee the part of a kinsman, well; let him do the kinsman's part: but if he will not do the part of a kinsman to thee, then will I do the part of a kinsman to thee, as the LORD liveth: lie down until the morning."

1 Samuel 9:10: "Then said Saul to his servant, Well said; come, let us go. So they went unto the city where the man of God was."

1 Samuel 16:16: "Let our lord now command thy servants, which are before thee, to seek out a man, who is a cunning player on an harp: and it shall come to pass, when the evil spirit from God is upon thee, that he shall play with his hand, and thou shalt be well."

1 Samuel 16:17: "And Saul said unto his servants, Provide me now a man that can play well, and bring him to me."

1 Samuel 16:23: "And it came to pass, when the evil spirit from God was upon Saul, that David took an harp, and played with his hand: so Saul was refreshed, and was well, and the evil spirit departed from him."

1 Samuel 18:26: "And when his servants told David these words, it pleased David well to be the king's son in law: and the days were not expired."

1 Samuel 19:22: "Then went he also to Ramah, and came to a great well that is in Sechu: and he asked and said, Where are Samuel and David? And one said, Behold, they be at Naioth in Ramah."

1 Samuel 20:7: "If he say thus, It is well; thy servant shall have peace: but if he be very wroth, then be sure that evil is determined by him."

1 Samuel 24:18: "And thou hast shewed this day how that thou hast dealt well with me: forasmuch as when the LORD had delivered me into thine hand, thou killedst me not."

1 Samuel 24:19: "For if a man find his enemy, will he let him go well away? wherefore the LORD reward thee good for that thou hast done unto me this day."

1 Samuel 24:20: "And now, behold, I know well that thou shalt surely be king, and that the kingdom of Israel shall be established in thine hand."

1 Samuel 25:31: "That this shall be no grief unto thee, nor offence of heart unto my lord, either that thou hast shed blood causeless, or that my lord hath avenged himself: but when the LORD shall have dealt well with my lord, then remember thine handmaid."

2 Samuel 3:13: "And he said, Well; I will make a league with thee: but one thing I require of thee, that is, Thou shalt not see my face, except thou first bring Michal Saul's daughter, when thou comest to see my face."

2 Samuel 3:26: "And when Joab was come out from David, he sent messengers after Abner, which brought him again from the well of Sirah: but David knew it not."

2 Samuel 6:19: "And he dealt among all the people, even among the whole multitude of Israel, as well to the women as men, to every one a cake of bread, and a good piece of flesh, and a flagon of wine. So all the people departed every one to his house."

2 Samuel 11:25: "Then David said unto the messenger, Thus shalt thou say unto Joab, Let not this thing displease thee, for the sword devoureth one as well as another: make thy battle more strong against the city, and overthrow it: and encourage thou him."

2 Samuel 17:4: "And the saying pleased Absalom well, and all the elders of Israel."

2 Samuel 17:18: "Nevertheless a lad saw them, and told Absalom: but they went both of them away quickly, and came to a man's house in Bahurim, which had a well in his court; whither they went down."

2 Samuel 17:19: "And the woman took and spread a covering over the well's mouth, and spread

ground corn thereon; and the thing was not known."

2 Samuel 17:21: "And it came to pass, after they were departed, that they came up out of the well, and went and told king David, and said unto David, Arise, and pass quickly over the water: for thus hath Ahithophel counselled against you."

2 Samuel 18:28: "And Ahimaaz called, and said unto the king, All is well. And he fell down to the earth upon his face before the king, and said, Blessed be the LORD thy God, which hath delivered up the men that lifted up their hand against my lord the king."

2 Samuel 19:6: "In that thou lovest thine enemies, and hatest thy friends. For thou hast declared this day, that thou regardest neither princes nor servants: for this day I perceive, that if Absalom had lived, and all we had died this day, then it had pleased thee well."

2 Samuel 23:15: "And David longed, and said, Oh that one would give me drink of the water of the well of Bethlehem, which is by the gate!"

2 Samuel 23:16: "And the three mighty men brake through the host of the Philistines, and drew water out of the well of Bethlehem, that was by the gate, and took it, and brought it to David: nevertheless he would not drink thereof, but poured it out unto the LORD."

1 Kings 2:18: "And Bathsheba said, Well; I will speak for thee unto the king."

1 Kings 8:18: "And the LORD said unto David my father, Whereas it was in thine heart to build an house unto my name, thou didst well that it was in thine heart."

1 Kings 18:24: "And call ye on the name of your gods, and I will call on the name of the LORD: and the God that answereth by fire, let him be God. And all the people answered and said, It is well spoken."

2 Kings 4:23: "And he said, Wherefore wilt thou go to him to day? it is neither new moon, nor sabbath. And she said, It shall be well."

2 Kings 4:26: "Run now, I pray thee, to meet her, and say unto her, Is it well with thee? is it well with thy husband? is it well with the child? And she answered, It is well:"

2 Kings 5:21: "So Gehazi followed after Naaman. And when Naaman saw him running after him, he lighted down from the chariot to meet him, and said, Is all well?"

2 Kings 5:22: "And he said, All is well. My master hath sent me, saying, Behold, even now there be come to me from mount Ephraim two young men of the sons of the prophets: give them, I pray thee, a talent of silver, and two changes of garments."

2 Kings 7:9: "Then they said one to another, We do not well: this day is a day of good tidings, and we hold our peace: if we tarry till the morning light, some mischief will come upon us: now therefore come, that we may go and tell the king's household."

2 Kings 9:11: "Then Jehu came forth to the servants of his lord: and one said unto him, Is all well? wherefore came this mad fellow to thee? And he said unto them, Ye know the man, and his communication."

2 Kings 10:30: "And the LORD said unto Jehu, Because thou hast done well in executing that which is right in mine eyes, and hast done unto the house of Ahab according to all that was in mine heart, thy children of the fourth generation shall sit on the throne of Israel."

2 Kings 25:24: "And Gedaliah sware to them, and to their men, and said unto them, Fear not to be the servants of the Chaldees: dwell in the land, and serve the king of Babylon; and it shall be well with you."

1 Chronicles 11:17: "And David longed, and said, Oh that one would give me drink of the water of the well of Bethlehem, that is at the gate!"

1 Chronicles 11:18: "And the three brake through the host of the Philistines, and drew water out of the well of Bethlehem, that was by the gate, and took it, and brought it to David: but David would not drink of it, but poured it out to the LORD."

1 Chronicles 25:8: "And they cast lots, ward against ward, as well the small as the great, the teacher as the scholar."

1 Chronicles 26:13: "And they cast lots, as well the small as the great, according to the house of

their fathers, for every gate."

2 Chronicles 6:8: "But the LORD said to David my father, Forasmuch as it was in thine heart to build an house for my name, thou didst well in that it was in thine heart:"

2 Chronicles 12:12: "And when he humbled himself, the wrath of the LORD turned from him, that he would not destroy him altogether: and also in Judah things went well."

2 Chronicles 31:15: "And next him were Eden, and Miniamin, and Jeshua, and Shemaiah, Amariah, and Shecaniah, in the cities of the priests, in their set office, to give to their brethren by courses, as well to the great as to the small:"

Nehemiah 2:13: "And I went out by night by the gate of the valley, even before the dragon well, and to the dung port, and viewed the walls of Jerusalem, which were broken down, and the gates thereof were consumed with fire."

Job 12:3: "But I have understanding as well as you; I am not inferior to you: yea, who knoweth not such things as these?"

Job 33:31: "Mark well, O Job, hearken unto me: hold thy peace, and I will speak."

Psalms 48:13: "Mark ye well her bulwarks, consider her palaces; that ye may tell it to the generation following."

Psalms 49:18: "Though while he lived he blessed his soul: and men will praise thee, when thou doest well to thyself."

Psalms 73:2: "But as for me, my feet were almost gone; my steps had well nigh slipped."

Psalms 78:29: "So they did eat, and were well filled: for he gave them their own desire;"

Psalms 84:6: "Who passing through the valley of Baca make it a well; the rain also filleth the pools."

Psalms 87:7: "As well the singers as the players on instruments shall be there: all my springs are in thee."

Psalms 119:65: "Thou hast dealt well with thy servant, O LORD, according unto thy word."

Psalms 128:2: "For thou shalt eat the labour of thine hands: happy shalt thou be, and it shall be well with thee."

Psalms 139:14: "I will praise thee; for I am fearfully and wonderfully made: marvellous are thy works; and that my soul knoweth right well."

Proverbs 5:15: "Drink waters out of thine own cistern, and running waters out of thine own well."

Proverbs 10:11: "The mouth of a righteous man is a well of life: but violence covereth the mouth of the wicked."

Proverbs 11:10: "When it goeth well with the righteous, the city rejoiceth: and when the wicked perish, there is shouting."

Proverbs 13:10: "Only by pride cometh contention: but with the well advised is wisdom."

Proverbs 14:15: "The simple believeth every word: but the prudent man looketh well to his going."

Proverbs 24:32: "Then I saw, and considered it well: I looked upon it, and received instruction."

Proverbs 27:23: "Be thou diligent to know the state of thy flocks, and look well to thy herds."

Proverbs 30:29: "There be three things which go well, yea, four are comely in going:"

Proverbs 31:27: "She looketh well to the ways of her household, and eateth not the bread of idleness."

Ecclesiastes 8:12: "Though a sinner do evil an hundred times, and his days be prolonged, yet surely I know that it shall be well with them that fear God, which fear before him:"

Ecclesiastes 8:13: "But it shall not be well with the wicked, neither shall he prolong his days, which are as a shadow; because he feareth not before God."

Song of Solomon 4:15: "A fountain of gardens, a well of living waters, and streams from Lebanon."

Isaiah 1:17: "Learn to do well; seek judgment, relieve the oppressed, judge the fatherless, plead for the widow."

Isaiah 3:10: "Say ye to the righteous, that it shall be well with him: for they shall eat the fruit of their doings."



Isaiah 3:24: "And it shall come to pass, that instead of sweet smell there shall be stink; and instead of a girdle a rent; and instead of well set hair baldness; and instead of a stomacher a girding of sackcloth; and burning instead of beauty."

Isaiah 25:6: "And in this mountain shall the LORD of hosts make unto all people a feast of fat things, a feast of wines on the lees, of fat things full of marrow, of wines on the lees well refined."

Isaiah 33:23: "Thy tacklings are loosed; they could not well strengthen their mast, they could not spread the sail: then is the prey of a great spoil divided; the lame take the prey."

Isaiah 42:21: "The LORD is well pleased for his righteousness' sake; he will magnify the law, and make it honourable."

Jeremiah 1:12: "Then said the LORD unto me, Thou hast well seen: for I will hasten my word to perform it."

Jeremiah 7:23: "But this thing commanded I them, saying, Obey my voice, and I will be your God, and ye shall be my people: and walk ye in all the ways that I have commanded you, that it may be well unto you."

Jeremiah 15:11: "The LORD said, Verily it shall be well with thy remnant; verily I will cause the enemy to entreat thee well in the time of evil and in the time of affliction."

Jeremiah 22:15: "Shalt thou reign, because thou closest thyself in cedar? did not thy father eat and drink, and do judgment and justice, and then it was well with him?"

Jeremiah 22:16: "He judged the cause of the poor and needy; then it was well with him: was not this to know me? saith the LORD."

Jeremiah 38:20: "But Jeremiah said, They shall not deliver thee. Obey, I beseech thee, the voice of the LORD, which I speak unto thee: so it shall be well unto thee, and thy soul shall live."

Jeremiah 39:12: "Take him, and look well to him, and do him no harm; but do unto him even as he shall say unto thee."

Jeremiah 40:4: "And now, behold, I loose thee this day from the chains which were upon thine hand. If it seem good unto thee to come with me into Babylon, come; and I will look well unto thee: but if it seem ill unto thee to come with me into Babylon, forbear: behold, all the land is before thee: whither it seemeth good and convenient for thee to go, thither go."

Jeremiah 40:9: "And Gedaliah the son of Ahikam the son of Shaphan sware unto them and to their men, saying, Fear not to serve the Chaldeans: dwell in the land, and serve the king of Babylon, and it shall be well with you."

Jeremiah 42:6: "Whether it be good, or whether it be evil, we will obey the voice of the LORD our God, to whom we send thee; that it may be well with us, when we obey the voice of the LORD our God."

Jeremiah 44:17: "But we will certainly do whatsoever thing goeth forth out of our own mouth, to burn incense unto the queen of heaven, and to pour out drink offerings unto her, as we have done, we, and our fathers, our kings, and our princes, in the cities of Judah, and in the streets of Jerusalem: for then had we plenty of victuals, and were well, and saw no evil."

Ezekiel 24:5: "Take the choice of the flock, and burn also the bones under it, and make it boil well, and let them seethe the bones of it therein."

Ezekiel 24:10: "Heap on wood, kindle the fire, consume the flesh, and spice it well, and let the bones be burned."

Ezekiel 33:32: "And, lo, thou art unto them as a very lovely song of one that hath a pleasant voice, and can play well on an instrument: for they hear thy words, but they do them not."

Ezekiel 44:5: "And the LORD said unto me, Son of man, mark well, and behold with thine eyes, and hear with thine ears all that I say unto thee concerning all the ordinances of the house of the LORD, and all the laws thereof; and mark well the entering in of the house, with every going forth of the sanctuary."

Ezekiel 47:14: "And ye shall inherit it, one as well as another: concerning the which I lifted up mine hand to give it unto your fathers: and this land shall fall unto you for inheritance."

Daniel 1:4: "Children in whom was no blemish, but well favoured, and skilful in all wisdom, and cunning in knowledge, and understanding science, and such as had ability in them to stand in the king's palace, and whom they might teach the learning and the tongue of the Chaldeans."

Daniel 3:15: "Now if ye be ready that at what time ye hear the sound of the cornet, flute, harp, sackbut, psaltery, and dulcimer, and all kinds of musick, ye fall down and worship the image which I have made; well: but if ye worship not, ye shall be cast the same hour into the midst of a burning fiery furnace; and who is that God that shall deliver you out of my hands?"

Jonah 4:4: "Then said the LORD, Doest thou well to be angry?"

Jonah 4:9: "And God said to Jonah, Doest thou well to be angry for the gourd? And he said, I do well to be angry, even unto death."

Zechariah 8:15: "So again have I thought in these days to do well unto Jerusalem and to the house of Judah: fear ye not."

Matthew 3:17: "And lo a voice from heaven, saying, This is my beloved Son, in whom I am well pleased."

Matthew 12:12: "How much then is a man better than a sheep? Wherefore it is lawful to do well on the sabbath days."

Matthew 12:18: "Behold my servant, whom I have chosen; my beloved, in whom my soul is well pleased: I will put my spirit upon him, and he shall shew judgment to the Gentiles."

Matthew 15:7: "Ye hypocrites, well did Esaias prophesy of you, saying,"

Matthew 17:5: "While he yet spake, behold, a bright cloud overshadowed them: and behold a voice out of the cloud, which said, This is my beloved Son, in whom I am well pleased; hear ye him."

Matthew 25:21: "His lord said unto him, Well done, thou good and faithful servant: thou hast been faithful over a few things, I will make thee ruler over many things: enter thou into the joy of thy lord."

Matthew 25:23: "His lord said unto him, Well done, good and faithful servant; thou hast been faithful over a few things, I will make thee ruler over many things: enter thou into the joy of thy lord."

Mark 1:11: "And there came a voice from heaven, saying, Thou art my beloved Son, in whom I am well pleased."

Mark 7:6: "He answered and said unto them, Well hath Esaias prophesied of you hypocrites, as it is written, This people honoureth me with their lips, but their heart is far from me."

Mark 7:9: "And he said unto them, Full well ye reject the commandment of God, that ye may keep your own tradition."

Mark 7:37: "And were beyond measure astonished, saying, He hath done all things well: he maketh both the deaf to hear, and the dumb to speak."

Mark 12:28: "And one of the scribes came, and having heard them reasoning together, and perceiving that he had answered them well, asked him, Which is the first commandment of all?"

Mark 12:32: "And the scribe said unto him, Well, Master, thou hast said the truth: for there is one God; and there is none other but he:"

Luke 1:7: "And they had no child, because that Elisabeth was barren, and they both were now well stricken in years."

Luke 1:18: "And Zacharias said unto the angel, Whereby shall I know this? for I am an old man, and my wife well stricken in years."

Luke 3:22: "And the Holy Ghost descended in a bodily shape like a dove upon him, and a voice came from heaven, which said, Thou art my beloved Son; in thee I am well pleased."

Luke 6:26: "Woe unto you, when all men shall speak well of you! for so did their fathers to the false prophets."

Luke 13:9: "And if it bear fruit, well: and if not, then after that thou shalt cut it down."

Luke 19:17: "And he said unto him, Well, thou good servant: because thou hast been faithful in a very little, have thou authority over ten cities."

Luke 20:39: "Then certain of the scribes answering said, Master, thou hast well said."

John 2:10: "And saith unto him, Every man at the beginning doth set forth good wine; and when men have well drunk, then that which is worse: but thou hast kept the good wine until now."

John 4:6: "Now Jacob's well was there. Jesus therefore, being wearied with his journey, sat thus on the well: and it was about the sixth hour."

John 4:11: "The woman saith unto him, Sir, thou hast nothing to draw with, and the well is deep: from whence then hast thou that living water?"

John 4:12: "Art thou greater than our father Jacob, which gave us the well, and drank thereof himself, and his children, and his cattle?"

John 4:14: "But whosoever drinketh of the water that I shall give him shall never thirst; but the water that I shall give him shall be in him a well of water springing up into everlasting life."

John 4:17: "The woman answered and said, I have no husband. Jesus said unto her, Thou hast well said, I have no husband:"

John 8:48: "Then answered the Jews, and said unto him, Say we not well that thou art a Samaritan, and hast a devil?"

John 11:12: "Then said his disciples, Lord, if he sleep, he shall do well."

John 13:13: "Ye call me Master and Lord: and ye say well; for so I am."

John 18:23: "Jesus answered him, If I have spoken evil, bear witness of the evil: but if well, why smitest thou me?"

Acts 10:33: "Immediately therefore I sent to thee; and thou hast well done that thou art come. Now therefore are we all here present before God, to hear all things that are commanded thee of God."

Acts 10:47: "Can any man forbid water, that these should not be baptized, which have received the Holy Ghost as well as we?"

Acts 15:29: "That ye abstain from meats offered to idols, and from blood, and from things strangled, and from fornication: from which if ye keep yourselves, ye shall do well. Fare ye well."

Acts 16:2: "Which was well reported of by the brethren that were at Lystra and Iconium."

Acts 25:10: "Then said Paul, I stand at Caesar's judgment seat, where I ought to be judged: to the Jews have I done no wrong, as thou very well knowest."

Acts 28:25: "And when they agreed not among themselves, they departed, after that Paul had spoken one word, Well spake the Holy Ghost by Esaias the prophet unto our fathers,"

Romans 2:7: "To them who by patient continuance in well doing seek for glory and honour and immortality, eternal life:"

Romans 11:20: "Well; because of unbelief they were broken off, and thou standest by faith. Be not highminded, but fear:"

1 Corinthians 7:37: "Nevertheless he that standeth stedfast in his heart, having no necessity, but hath power over his own will, and hath so decreed in his heart that he will keep his virgin, doeth well."

1 Corinthians 7:38: "So then he that giveth her in marriage doeth well; but he that giveth her not in marriage doeth better."

1 Corinthians 9:5: "Have we not power to lead about a sister, a wife, as well as other apostles, and as the brethren of the Lord, and Cephas?"

1 Corinthians 10:5: "But with many of them God was not well pleased: for they were overthrown in the wilderness."

1 Corinthians 14:17: "For thou verily givest thanks well, but the other is not edified."

2 Corinthians 6:9: "As unknown, and yet well known; as dying, and, behold, we live; as chastened, and not killed;"

2 Corinthians 11:4: "For if he that cometh preacheth another Jesus, whom we have not preached, or if ye receive another spirit, which ye have not received, or another gospel, which ye have not accepted, ye might well bear with him."

Galatians 4:17: "They zealously affect you, but not well; yea, they would exclude you, that ye might

affect them."

Galatians 5:7: "Ye did run well; who did hinder you that ye should not obey the truth?"

Galatians 6:9: "And let us not be weary in well doing: for in due season we shall reap, if we faint not."

Ephesians 6:3: "That it may be well with thee, and thou mayest live long on the earth."

Philippians 4:14: "Notwithstanding ye have well done, that ye did communicate with my affliction."

Colossians 3:20: "Children, obey your parents in all things: for this is well pleasing unto the Lord."

2 Thessalonians 3:13: "But ye, brethren, be not weary in well doing."

1 Timothy 3:4: "One that ruleth well his own house, having his children in subjection with all gravity;"

1 Timothy 3:12: "Let the deacons be the husbands of one wife, ruling their children and their own houses well."

1 Timothy 3:13: "For they that have used the office of a deacon well purchase to themselves a good degree, and great boldness in the faith which is in Christ Jesus."

1 Timothy 5:10: "Well reported of for good works; if she have brought up children, if she have lodged strangers, if she have washed the saints' feet, if she have relieved the afflicted, if she have diligently followed every good work."

1 Timothy 5:17: "Let the elders that rule well be counted worthy of double honour, especially they who labour in the word and doctrine."

2 Timothy 1:18: "The Lord grant unto him that he may find mercy of the Lord in that day: and in how many things he ministered unto me at Ephesus, thou knowest very well."

Titus 2:9: "Exhort servants to be obedient unto their own masters, and to please them well in all things; not answering again;"

Hebrews 4:2: "For unto us was the gospel preached, as well as unto them: but the word preached did not profit them, not being mixed with faith in them that heard it."

Hebrews 13:16: "But to do good and to communicate forget not: for with such sacrifices God is well pleased."

James 2:8: "If ye fulfil the royal law according to the scripture, Thou shalt love thy neighbour as thyself, ye do well:"

James 2:19: "Thou believest that there is one God; thou doest well: the devils also believe, and tremble."

1 Peter 2:14: "Or unto governors, as unto them that are sent by him for the punishment of evildoers, and for the praise of them that do well."

1 Peter 2:15: "For so is the will of God, that with well doing ye may put to silence the ignorance of foolish men:"

1 Peter 2:20: "For what glory is it, if, when ye be buffeted for your faults, ye shall take it patiently? but if, when ye do well, and suffer for it, ye take it patiently, this is acceptable with God."

1 Peter 3:6: "Even as Sara obeyed Abraham, calling him lord: whose daughters ye are, as long as ye do well, and are not afraid with any amazement."

1 Peter 3:17: "For it is better, if the will of God be so, that ye suffer for well doing, than for evil doing."

1 Peter 4:19: "Wherefore let them that suffer according to the will of God commit the keeping of their souls to him in well doing, as unto a faithful Creator."

2 Peter 1:17: "For he received from God the Father honour and glory, when there came such a voice to him from the excellent glory, This is my beloved Son, in whom I am well pleased."

2 Peter 1:19: "We have also a more sure word of prophecy; whereunto ye do well that ye take heed, as unto a light that shineth in a dark place, until the day dawn, and the day star arise in your hearts:"

3 John 1:6: "Which have borne witness of thy charity before the church: whom if thou bring forward on their journey after a godly sort, thou shalt do well:"

## WELL-BELOVED

Occurrences: 2

Song of Solomon 1:13: "A bundle of myrrh is my well-beloved unto me; he shall lie all night betwixt my breasts."

Romans 16:5: "Likewise greet the church that is in their house. Salute my well-beloved Epaphroditus, who is the firstfruits of Achaia unto Christ."

## WELLBELOVED

Occurrences: 3

Isaiah 5:1: "Now will I sing to my wellbeloved a song of my beloved touching his vineyard. My wellbeloved hath a vineyard in a very fruitful hill:"

Mark 12:6: "Having yet therefore one son, his wellbeloved, he sent him also last unto them, saying, They will reverence my son."

3 John 1:1: "The elder unto the wellbeloved Gaius, whom I love in the truth."

## WELLFAVoured

Occurrences: 1

Nahum 3:4: "Because of the multitude of the whoredoms of the wellfavoured harlot, the mistress of witchcrafts, that selleth nations through her whoredoms, and families through her witchcrafts."

## WELLPLEASING

Occurrences: 2

Philippians 4:18: "But I have all, and abound: I am full, having received of Epaphroditus the things which were sent from you, an odour of a sweet smell, a sacrifice acceptable, wellpleasing to God."

Hebrews 13:21: "Make you perfect in every good work to do his will, working in you that which is wellpleasing in his sight, through Jesus Christ; to whom be glory for ever and ever. Amen."

## WELLS

Occurrences: 11

Genesis 26:15: "For all the wells which his father's servants had digged in the days of Abraham his father, the Philistines had stopped them, and filled them with earth."

Genesis 26:18: "And Isaac digged again the wells of water, which they had digged in the days of Abraham his father; for the Philistines had stopped them after the death of Abraham: and he called their names after the names by which his father had called them."

Exodus 15:27: "And they came to Elim, where were twelve wells of water, and threescore and ten palm trees: and they encamped there by the waters."

Numbers 20:17: "Let us pass, I pray thee, through thy country: we will not pass through the fields, or through the vineyards, neither will we drink of the water of the wells: we will go by the king's high way, we will not turn to the right hand nor to the left, until we have passed thy borders."

Deuteronomy 6:11: "And houses full of all good things, which thou filledst not, and wells digged, which thou diggedst not, vineyards and olive trees, which thou plantedst not; when thou shalt have eaten and be full;"

2 Kings 3:19: "And ye shall smite every fenced city, and every choice city, and shall fell every good tree, and stop all wells of water, and mar every good piece of land with stones."

2 Kings 3:25: "And they beat down the cities, and on every good piece of land cast every man his stone, and filled it; and they stopped all the wells of water, and felled all the good trees: only in Kirharaseth left they the stones thereof; howbeit the slingers went about it, and smote it."

2 Chronicles 26:10: "Also he built towers in the desert, and digged many wells: for he had much cattle, both in the low country, and in the plains: husbandmen also, and vine dressers in the mountains, and in Carmel: for he loved husbandry."

Nehemiah 9:25: "And they took strong cities, and a fat land, and possessed houses full of all goods, wells digged, vineyards, and oliveyards, and fruit trees in abundance: so they did eat, and were filled, and became fat, and delighted themselves in thy great goodness."

Isaiah 12:3: "Therefore with joy shall ye draw water out of the wells of salvation."

2 Peter 2:17: "These are wells without water, clouds that are carried with a tempest; to whom the mist of darkness is reserved for ever."

## **WELLSPRING**

Occurrences: 2

Proverbs 16:22: "Understanding is a wellspring of life unto him that hath it: but the instruction of fools is folly."

Proverbs 18:4: "The words of a man's mouth are as deep waters, and the wellspring of wisdom as a flowing brook."

## **WEN**

Occurrences: 1

Leviticus 22:22: "Blind, or broken, or maimed, or having a wen, or scurvy, or scabbed, ye shall not offer these unto the LORD, nor make an offering by fire of them upon the altar unto the LORD."

## **WENCH**

Occurrences: 1

2 Samuel 17:17: "Now Jonathan and Ahimaaz stayed by Enrogel; for they might not be seen to come into the city: and a wench went and told them; and they went and told king David."

## **WENT**

Occurrences: 1289

Genesis 2:6: "But there went up a mist from the earth, and watered the whole face of the ground."

Genesis 2:10: "And a river went out of Eden to water the garden; and from thence it was parted, and became into four heads."

Genesis 4:16: "And Cain went out from the presence of the LORD, and dwelt in the land of Nod, on the east of Eden."

Genesis 7:7: "And Noah went in, and his sons, and his wife, and his sons' wives with him, into the ark, because of the waters of the flood."

Genesis 7:9: "There went in two and two unto Noah into the ark, the male and the female, as God had commanded Noah."

Genesis 7:15: "And they went in unto Noah into the ark, two and two of all flesh, wherein is the breath of life."

Genesis 7:16: "And they that went in, went in male and female of all flesh, as God had commanded him: and the LORD shut him in."

Genesis 7:18: "And the waters prevailed, and were increased greatly upon the earth; and the ark went upon the face of the waters."

Genesis 8:7: "And he sent forth a raven, which went forth to and fro, until the waters were dried up from off the earth."

Genesis 8:18: "And Noah went forth, and his sons, and his wife, and his sons' wives with him:"

Genesis 8:19: "Every beast, every creeping thing, and every fowl, and whatsoever creepeth upon the

earth, after their kinds, went forth out of the ark."

Genesis 9:18: "And the sons of Noah, that went forth of the ark, were Shem, and Ham, and Japheth: and Ham is the father of Canaan."

Genesis 9:23: "And Shem and Japheth took a garment, and laid it upon both their shoulders, and went backward, and covered the nakedness of their father; and their faces were backward, and they saw not their father's nakedness."

Genesis 10:11: "Out of that land went forth Asshur, and builded Nineveh, and the city Rehoboth, and Calah,"

Genesis 11:31: "And Terah took Abram his son, and Lot the son of Haran his son's son, and Sarai his daughter in law, his son Abram's wife; and they went forth with them from Ur of the Chaldees, to go into the land of Canaan; and they came unto Haran, and dwelt there."

Genesis 12:4: "So Abram departed, as the LORD had spoken unto him; and Lot went with him: and Abram was seventy and five years old when he departed out of Haran."

Genesis 12:5: "And Abram took Sarai his wife, and Lot his brother's son, and all their substance that they had gathered, and the souls that they had gotten in Haran; and they went forth to go into the land of Canaan; and into the land of Canaan they came."

Genesis 12:10: "And there was a famine in the land: and Abram went down into Egypt to sojourn there; for the famine was grievous in the land."

Genesis 13:1: "And Abram went up out of Egypt, he, and his wife, and all that he had, and Lot with him, into the south."

Genesis 13:3: "And he went on his journeys from the south even to Bethel, unto the place where his tent had been at the beginning, between Bethel and Hai;"

Genesis 13:5: "And Lot also, which went with Abram, had flocks, and herds, and tents."

Genesis 14:8: "And there went out the king of Sodom, and the king of Gomorrah, and the king of Admah, and the king of Zeboiim, and the king of Bela (the same is Zoar;) and they joined battle with them in the vale of Siddim;"

Genesis 14:11: "And they took all the goods of Sodom and Gomorrah, and all their victuals, and went their way."

Genesis 14:17: "And the king of Sodom went out to meet him after his return from the slaughter of Chedorlaomer, and of the kings that were with him, at the valley of Shaveh, which is the king's dale."

Genesis 14:24: "Save only that which the young men have eaten, and the portion of the men which went with me, Aner, Eshcol, and Mamre; let them take their portion."

Genesis 15:17: "And it came to pass, that, when the sun went down, and it was dark, behold a smoking furnace, and a burning lamp that passed between those pieces."

Genesis 16:4: "And he went in unto Hagar, and she conceived: and when she saw that she had conceived, her mistress was despised in her eyes."

Genesis 17:22: "And he left off talking with him, and God went up from Abraham."

Genesis 18:16: "And the men rose up from thence, and looked toward Sodom: and Abraham went with them to bring them on the way."

Genesis 18:22: "And the men turned their faces from thence, and went toward Sodom: but Abraham stood yet before the LORD."

Genesis 18:33: "And the LORD went his way, as soon as he had left communing with Abraham: and Abraham returned unto his place."

Genesis 19:6: "And Lot went out at the door unto them, and shut the door after him,"

Genesis 19:14: "And Lot went out, and spake unto his sons in law, which married his daughters, and said, Up, get you out of this place; for the LORD will destroy this city. But he seemed as one that mocked unto his sons in law."

Genesis 19:28: "And he looked toward Sodom and Gomorrah, and toward all the land of the plain, and beheld, and, lo, the smoke of the country went up as the smoke of a furnace."

Genesis 19:30: "And Lot went up out of Zoar, and dwelt in the mountain, and his two daughters with him; for he feared to dwell in Zoar: and he dwelt in a cave, he and his two daughters."

Genesis 19:33: "And they made their father drink wine that night: and the firstborn went in, and lay with her father; and he perceived not when she lay down, nor when she arose."

Genesis 21:16: "And she went, and sat her down over against him a good way off, as it were a bow shot: for she said, Let me not see the death of the child. And she sat over against him, and lift up her voice, and wept."

Genesis 21:19: "And God opened her eyes, and she saw a well of water; and she went, and filled the bottle with water, and gave the lad drink."

Genesis 22:3: "And Abraham rose up early in the morning, and saddled his ass, and took two of his young men with him, and Isaac his son, and clave the wood for the burnt offering, and rose up, and went unto the place of which God had told him."

Genesis 22:6: "And Abraham took the wood of the burnt offering, and laid it upon Isaac his son; and he took the fire in his hand, and a knife; and they went both of them together."

Genesis 22:8: "And Abraham said, My son, God will provide himself a lamb for a burnt offering: so they went both of them together."

Genesis 22:13: "And Abraham lifted up his eyes, and looked, and behold behind him a ram caught in a thicket by his horns: and Abraham went and took the ram, and offered him up for a burnt offering in the stead of his son."

Genesis 22:19: "So Abraham returned unto his young men, and they rose up and went together to Beersheba; and Abraham dwelt at Beersheba."

Genesis 23:10: "And Ephron dwelt among the children of Heth: and Ephron the Hittite answered Abraham in the audience of the children of Heth, even of all that went in at the gate of his city, saying,"

Genesis 23:18: "Unto Abraham for a possession in the presence of the children of Heth, before all that went in at the gate of his city."

Genesis 24:10: "And the servant took ten camels of the camels of his master, and departed; for all the goods of his master were in his hand: and he arose, and went to Mesopotamia, unto the city of Nahor."

Genesis 24:16: "And the damsel was very fair to look upon, a virgin, neither had any man known her: and she went down to the well, and filled her pitcher, and came up."

Genesis 24:45: "And before I had done speaking in mine heart, behold, Rebekah came forth with her pitcher on her shoulder; and she went down unto the well, and drew water: and I said unto her, Let me drink, I pray thee."

Genesis 24:61: "And Rebekah arose, and her damsels, and they rode upon the camels, and followed the man: and the servant took Rebekah, and went his way."

Genesis 24:63: "And Isaac went out to meditate in the field at the eventide: and he lifted up his eyes, and saw, and, behold, the camels were coming."

Genesis 25:22: "And the children struggled together within her; and she said, If it be so, why am I thus? And she went to enquire of the LORD."

Genesis 25:34: "Then Jacob gave Esau bread and pottage of lentiles; and he did eat and drink, and rose up, and went his way: thus Esau despised his birthright."

Genesis 26:1: "And there was a famine in the land, beside the first famine that was in the days of Abraham. And Isaac went unto Abimelech king of the Philistines unto Gerar."

Genesis 26:13: "And the man waxed great, and went forward, and grew until he became very great:"

Genesis 26:23: "And he went up from thence to Beersheba."

Genesis 26:26: "Then Abimelech went to him from Gerar, and Ahuzzath one of his friends, and Phichol the chief captain of his army."

Genesis 27:5: "And Rebekah heard when Isaac spake to Esau his son. And Esau went to the field to



hunt for venison, and to bring it."

Genesis 27:14: "And he went, and fetched, and brought them to his mother: and his mother made savoury meat, such as his father loved."

Genesis 27:22: "And Jacob went near unto Isaac his father; and he felt him, and said, The voice is Jacob's voice, but the hands are the hands of Esau."

Genesis 28:5: "And Isaac sent away Jacob: and he went to Padanaram unto Laban, son of Bethuel the Syrian, the brother of Rebekah, Jacob's and Esau's mother."

Genesis 28:9: "Then went Esau unto Ishmael, and took unto the wives which he had Mahalath the daughter of Ishmael Abraham's son, the sister of Nebajoth, to be his wife."

Genesis 28:10: "And Jacob went out from Beersheba, and went toward Haran."

Genesis 29:1: "Then Jacob went on his journey, and came into the land of the people of the east."

Genesis 29:10: "And it came to pass, when Jacob saw Rachel the daughter of Laban his mother's brother, and the sheep of Laban his mother's brother, that Jacob went near, and rolled the stone from the well's mouth, and watered the flock of Laban his mother's brother."

Genesis 29:23: "And it came to pass in the evening, that he took Leah his daughter, and brought her to him; and he went in unto her."

Genesis 29:30: "And he went in also unto Rachel, and he loved also Rachel more than Leah, and served with him yet seven other years."

Genesis 30:4: "And she gave him Bilhah her handmaid to wife: and Jacob went in unto her."

Genesis 30:14: "And Reuben went in the days of wheat harvest, and found mandrakes in the field, and brought them unto his mother Leah. Then Rachel said to Leah, Give me, I pray thee, of thy son's mandrakes."

Genesis 30:16: "And Jacob came out of the field in the evening, and Leah went out to meet him, and said, Thou must come in unto me; for surely I have hired thee with my son's mandrakes. And he lay with her that night."

Genesis 31:19: "And Laban went to shear his sheep: and Rachel had stolen the images that were her father's."

Genesis 31:33: "And Laban went into Jacob's tent, and into Leah's tent, and into the two maidservants' tents; but he found them not. Then went he out of Leah's tent, and entered into Rachel's tent."

Genesis 32:1: "And Jacob went on his way, and the angels of God met him."

Genesis 32:21: "So went the present over before him: and himself lodged that night in the company."

Genesis 34:1: "And Dinah the daughter of Leah, which she bare unto Jacob, went out to see the daughters of the land."

Genesis 34:6: "And Hamor the father of Shechem went out unto Jacob to commune with him."

Genesis 34:24: "And unto Hamor and unto Shechem his son hearkened all that went out of the gate of his city; and every male was circumcised, all that went out of the gate of his city."

Genesis 34:26: "And they slew Hamor and Shechem his son with the edge of the sword, and took Dinah out of Shechem's house, and went out."

Genesis 35:3: "And let us arise, and go up to Bethel; and I will make there an altar unto God, who answered me in the day of my distress, and was with me in the way which I went."

Genesis 35:13: "And God went up from him in the place where he talked with him."

Genesis 35:22: "And it came to pass, when Israel dwelt in that land, that Reuben went and lay with Bilhah his father's concubine: and Israel heard it. Now the sons of Jacob were twelve:"

Genesis 36:6: "And Esau took his wives, and his sons, and his daughters, and all the persons of his house, and his cattle, and all his beasts, and all his substance, which he had got in the land of Canaan; and went into the country from the face of his brother Jacob."

Genesis 37:12: "And his brethren went to feed their father's flock in Shechem."

Genesis 37:17: "And the man said, They are departed hence; for I heard them say, Let us go to

Dothan. And Joseph went after his brethren, and found them in Dothan."

Genesis 38:1: "And it came to pass at that time, that Judah went down from his brethren, and turned in to a certain Adullamite, whose name was Hirah."

Genesis 38:2: "And Judah saw there a daughter of a certain Canaanite, whose name was Shuah; and he took her, and went in unto her."

Genesis 38:9: "And Onan knew that the seed should not be his; and it came to pass, when he went in unto his brother's wife, that he spilled it on the ground, lest that he should give seed to his brother."

Genesis 38:11: "Then said Judah to Tamar his daughter in law, Remain a widow at thy father's house, till Shelah my son be grown: for he said, Lest peradventure he die also, as his brethren did. And Tamar went and dwelt in her father's house."

Genesis 38:12: "And in process of time the daughter of Shuah Judah's wife died; and Judah was comforted, and went up unto his sheepshearers to Timnath, he and his friend Hirah the Adullamite."

Genesis 38:19: "And she arose, and went away, and laid by her vail from her, and put on the garments of her widowhood."

Genesis 39:11: "And it came to pass about this time, that Joseph went into the house to do his business; and there was none of the men of the house there within."

Genesis 41:45: "And Pharaoh called Joseph's name Zaphnathpaaneah; and he gave him to wife Asenath the daughter of Potipherah priest of On. And Joseph went out over all the land of Egypt."

Genesis 41:46: "And Joseph was thirty years old when he stood before Pharaoh king of Egypt. And Joseph went out from the presence of Pharaoh, and went throughout all the land of Egypt."

Genesis 42:3: "And Joseph's ten brethren went down to buy corn in Egypt."

Genesis 43:15: "And the men took that present, and they took double money in their hand and Benjamin; and rose up, and went down to Egypt, and stood before Joseph."

Genesis 43:31: "And he washed his face, and went out, and refrained himself, and said, Set on bread."

Genesis 44:28: "And the one went out from me, and I said, Surely he is torn in pieces; and I saw him not since:"

Genesis 45:25: "And they went up out of Egypt, and came into the land of Canaan unto Jacob their father,"

Genesis 46:29: "And Joseph made ready his chariot, and went up to meet Israel his father, to Goshen, and presented himself unto him; and he fell on his neck, and wept on his neck a good while."

Genesis 47:10: "And Jacob blessed Pharaoh, and went out from before Pharaoh."

Genesis 49:4: "Unstable as water, thou shalt not excel; because thou wentest up to thy father's bed; then defiledst thou it: he went up to my couch."

Genesis 50:7: "And Joseph went up to bury his father: and with him went up all the servants of Pharaoh, the elders of his house, and all the elders of the land of Egypt,"

Genesis 50:9: "And there went up with him both chariots and horsemen: and it was a very great company."

Genesis 50:14: "And Joseph returned into Egypt, he, and his brethren, and all that went up with him to bury his father, after he had buried his father."

Genesis 50:18: "And his brethren also went and fell down before his face; and they said, Behold, we be thy servants."

Exodus 2:1: "And there went a man of the house of Levi, and took to wife a daughter of Levi."

Exodus 2:8: "And Pharaoh's daughter said to her, Go. And the maid went and called the child's mother."

Exodus 2:11: "And it came to pass in those days, when Moses was grown, that he went out unto his brethren, and looked on their burdens: and he spied an Egyptian smiting an Hebrew, one of his brethren."

Exodus 2:13: "And when he went out the second day, behold, two men of the Hebrews strove together: and he said to him that did the wrong, Wherefore smitest thou thy fellow?"

Exodus 4:18: "And Moses went and returned to Jethro his father in law, and said unto him, Let me go, I pray thee, and return unto my brethren which are in Egypt, and see whether they be yet alive. And Jethro said to Moses, Go in peace."

Exodus 4:27: "And the LORD said to Aaron, Go into the wilderness to meet Moses. And he went, and met him in the mount of God, and kissed him."

Exodus 4:29: "And Moses and Aaron went and gathered together all the elders of the children of Israel:"

Exodus 5:1: "And afterward Moses and Aaron went in, and told Pharaoh, Thus saith the LORD God of Israel, Let my people go, that they may hold a feast unto me in the wilderness."

Exodus 5:10: "And the taskmasters of the people went out, and their officers, and they spake to the people, saying, Thus saith Pharaoh, I will not give you straw."

Exodus 7:10: "And Moses and Aaron went in unto Pharaoh, and they did so as the LORD had commanded: and Aaron cast down his rod before Pharaoh, and before his servants, and it became a serpent."

Exodus 7:23: "And Pharaoh turned and went into his house, neither did he set his heart to this also."

Exodus 8:12: "And Moses and Aaron went out from Pharaoh: and Moses cried unto the LORD because of the frogs which he had brought against Pharaoh."

Exodus 8:30: "And Moses went out from Pharaoh, and intreated the LORD."

Exodus 9:33: "And Moses went out of the city from Pharaoh, and spread abroad his hands unto the LORD: and the thunders and hail ceased, and the rain was not poured upon the earth."

Exodus 10:6: "And they shall fill thy houses, and the houses of all thy servants, and the houses of all the Egyptians; which neither thy fathers, nor thy fathers' fathers have seen, since the day that they were upon the earth unto this day. And he turned himself, and went out from Pharaoh."

Exodus 10:14: "And the locust went up over all the land of Egypt, and rested in all the coasts of Egypt: very grievous were they; before them there were no such locusts as they, neither after them shall be such."

Exodus 10:18: "And he went out from Pharaoh, and intreated the LORD."

Exodus 11:8: "And all these thy servants shall come down unto me, and bow down themselves unto me, saying, Get thee out, and all the people that follow thee: and after that I will go out. And he went out from Pharaoh in a great anger."

Exodus 12:28: "And the children of Israel went away, and did as the LORD had commanded Moses and Aaron, so did they."

Exodus 12:38: "And a mixed multitude went up also with them; and flocks, and herds, even very much cattle."

Exodus 12:41: "And it came to pass at the end of the four hundred and thirty years, even the selfsame day it came to pass, that all the hosts of the LORD went out from the land of Egypt."

Exodus 13:18: "But God led the people about, through the way of the wilderness of the Red sea: and the children of Israel went up harnessed out of the land of Egypt."

Exodus 13:21: "And the LORD went before them by day in a pillar of a cloud, to lead them the way; and by night in a pillar of fire, to give them light; to go by day and night:"

Exodus 14:8: "And the LORD hardened the heart of Pharaoh king of Egypt, and he pursued after the children of Israel: and the children of Israel went out with an high hand."

Exodus 14:19: "And the angel of God, which went before the camp of Israel, removed and went behind them; and the pillar of the cloud went from before their face, and stood behind them:"

Exodus 14:22: "And the children of Israel went into the midst of the sea upon the dry ground: and the waters were a wall unto them on their right hand, and on their left."

Exodus 14:23: "And the Egyptians pursued, and went in after them to the midst of the sea, even all Pharaoh's horses, his chariots, and his horsemen."

Exodus 15:19: "For the horse of Pharaoh went in with his chariots and with his horsemen into the sea, and the LORD brought again the waters of the sea upon them; but the children of Israel went on dry land in the midst of the sea."

Exodus 15:20: "And Miriam the prophetess, the sister of Aaron, took a timbrel in her hand; and all the women went out after her with timbrels and with dances."

Exodus 15:22: "So Moses brought Israel from the Red sea, and they went out into the wilderness of Shur; and they went three days in the wilderness, and found no water."

Exodus 16:27: "And it came to pass, that there went out some of the people on the seventh day for to gather, and they found none."

Exodus 17:10: "So Joshua did as Moses had said to him, and fought with Amalek: and Moses, Aaron, and Hur went up to the top of the hill."

Exodus 18:7: "And Moses went out to meet his father in law, and did obeisance, and kissed him; and they asked each other of their welfare; and they came into the tent."

Exodus 18:27: "And Moses let his father in law depart; and he went his way into his own land."

Exodus 19:3: "And Moses went up unto God, and the LORD called unto him out of the mountain, saying, Thus shalt thou say to the house of Jacob, and tell the children of Israel;"

Exodus 19:14: "And Moses went down from the mount unto the people, and sanctified the people; and they washed their clothes."

Exodus 19:20: "And the LORD came down upon mount Sinai, on the top of the mount: and the LORD called Moses up to the top of the mount; and Moses went up."

Exodus 19:25: "So Moses went down unto the people, and spake unto them."

Exodus 24:9: "Then went up Moses, and Aaron, Nadab, and Abihu, and seventy of the elders of Israel:"

Exodus 24:13: "And Moses rose up, and his minister Joshua: and Moses went up into the mount of God."

Exodus 24:15: "And Moses went up into the mount, and a cloud covered the mount."

Exodus 24:18: "And Moses went into the midst of the cloud, and gat him up into the mount: and Moses was in the mount forty days and forty nights."

Exodus 32:15: "And Moses turned, and went down from the mount, and the two tables of the testimony were in his hand: the tables were written on both their sides; on the one side and on the other were they written."

Exodus 33:7: "And Moses took the tabernacle, and pitched it without the camp, afar off from the camp, and called it the Tabernacle of the congregation. And it came to pass, that every one which sought the LORD went out unto the tabernacle of the congregation, which was without the camp."

Exodus 33:8: "And it came to pass, when Moses went out unto the tabernacle, that all the people rose up, and stood every man at his tent door, and looked after Moses, until he was gone into the tabernacle."

Exodus 34:4: "And he hewed two tables of stone like unto the first; and Moses rose up early in the morning, and went up unto mount Sinai, as the LORD had commanded him, and took in his hand the two tables of stone."

Exodus 34:34: "But when Moses went in before the LORD to speak with him, he took the vail off, until he came out. And he came out, and spake unto the children of Israel that which he was commanded."

Exodus 34:35: "And the children of Israel saw the face of Moses, that the skin of Moses' face shone: and Moses put the vail upon his face again, until he went in to speak with him."

Exodus 38:26: "A bekah for every man, that is, half a shekel, after the shekel of the sanctuary, for every one that went to be numbered, from twenty years old and upward, for six hundred thousand and three thousand and five hundred and fifty men."

Exodus 40:32: "When they went into the tent of the congregation, and when they came near unto the altar, they washed; as the LORD commanded Moses."

Exodus 40:36: "And when the cloud was taken up from over the tabernacle, the children of Israel went onward in all their journeys:"

Leviticus 9:8: "Aaron therefore went unto the altar, and slew the calf of the sin offering, which was for himself."

Leviticus 9:23: "And Moses and Aaron went into the tabernacle of the congregation, and came out, and blessed the people: and the glory of the LORD appeared unto all the people."

Leviticus 10:2: "And there went out fire from the LORD, and devoured them, and they died before the LORD."

Leviticus 10:5: "So they went near, and carried them in their coats out of the camp; as Moses had said."

Leviticus 16:23: "And Aaron shall come into the tabernacle of the congregation, and shall put off the linen garments, which he put on when he went into the holy place, and shall leave them there:"

Leviticus 24:10: "And the son of an Israelitish woman, whose father was an Egyptian, went out among the children of Israel: and this son of the Israelitish woman and a man of Israel strove together in the camp;"

Numbers 8:22: "And after that went the Levites in to do their service in the tabernacle of the congregation before Aaron, and before his sons: as the LORD had commanded Moses concerning the Levites, so did they unto them."

Numbers 10:14: "In the first place went the standard of the camp of the children of Judah according to their armies: and over his host was Nahshon the son of Amminadab."

Numbers 10:33: "And they departed from the mount of the LORD three days' journey: and the ark of the covenant of the LORD went before them in the three days' journey, to search out a resting place for them."

Numbers 10:34: "And the cloud of the LORD was upon them by day, when they went out of the camp."

Numbers 11:8: "And the people went about, and gathered it, and ground it in mills, or beat it in a mortar, and baked it in pans, and made cakes of it: and the taste of it was as the taste of fresh oil."

Numbers 11:24: "And Moses went out, and told the people the words of the LORD, and gathered the seventy men of the elders of the people, and set them round about the tabernacle."

Numbers 11:26: "But there remained two of the men in the camp, the name of the one was Eldad, and the name of the other Medad: and the spirit rested upon them; and they were of them that were written, but went not out unto the tabernacle: and they prophesied in the camp."

Numbers 11:31: "And there went forth a wind from the LORD, and brought quails from the sea, and let them fall by the camp, as it were a day's journey on this side, and as it were a day's journey on the other side, round about the camp, and as it were two cubits high upon the face of the earth."

Numbers 13:21: "So they went up, and searched the land from the wilderness of Zin unto Rehob, as men come to Hamath."

Numbers 13:26: "And they went and came to Moses, and to Aaron, and to all the congregation of the children of Israel, unto the wilderness of Paran, to Kadesh; and brought back word unto them, and unto all the congregation, and shewed them the fruit of the land."

Numbers 13:31: "But the men that went up with him said, We be not able to go up against the people; for they are stronger than we."

Numbers 14:24: "But my servant Caleb, because he had another spirit with him, and hath followed me fully, him will I bring into the land whereinto he went; and his seed shall possess it."

Numbers 14:38: "But Joshua the son of Nun, and Caleb the son of Jephunneh, which were of the men that went to search the land, lived still."

Numbers 16:25: "And Moses rose up and went unto Dathan and Abiram; and the elders of Israel followed him."

Numbers 16:33: "They, and all that appertained to them, went down alive into the pit, and the earth closed upon them: and they perished from among the congregation."

Numbers 17:8: "And it came to pass, that on the morrow Moses went into the tabernacle of witness; and, behold, the rod of Aaron for the house of Levi was budded, and brought forth buds, and bloomed blossoms, and yielded almonds."

Numbers 20:6: "And Moses and Aaron went from the presence of the assembly unto the door of the tabernacle of the congregation, and they fell upon their faces: and the glory of the LORD appeared unto them."

Numbers 20:15: "How our fathers went down into Egypt, and we have dwelt in Egypt a long time; and the Egyptians vexed us, and our fathers:"

Numbers 20:27: "And Moses did as the LORD commanded: and they went up into mount Hor in the sight of all the congregation."

Numbers 21:16: "And from thence they went to Beer: that is the well whereof the LORD spake unto Moses, Gather the people together, and I will give them water."

Numbers 21:18: "The princes digged the well, the nobles of the people digged it, by the direction of the lawgiver, with their staves. And from the wilderness they went to Mattanah:"

Numbers 21:23: "And Sihon would not suffer Israel to pass through his border: but Sihon gathered all his people together, and went out against Israel into the wilderness: and he came to Jahaz, and fought against Israel."

Numbers 21:33: "And they turned and went up by the way of Bashan: and Og the king of Bashan went out against them, he, and all his people, to the battle at Edrei."

Numbers 22:14: "And the princes of Moab rose up, and they went unto Balak, and said, Balaam refuseth to come with us."

Numbers 22:21: "And Balaam rose up in the morning, and saddled his ass, and went with the princes of Moab."

Numbers 22:22: "And God's anger was kindled because he went: and the angel of the LORD stood in the way for an adversary against him. Now he was riding upon his ass, and his two servants were with him."

Numbers 22:23: "And the ass saw the angel of the LORD standing in the way, and his sword drawn in his hand: and the ass turned aside out of the way, and went into the field: and Balaam smote the ass, to turn her into the way."

Numbers 22:26: "And the angel of the LORD went further, and stood in a narrow place, where was no way to turn either to the right hand or to the left."

Numbers 22:32: "And the angel of the LORD said unto him, Wherefore hast thou smitten thine ass these three times? behold, I went out to withstand thee, because thy way is perverse before me:"

Numbers 22:35: "And the angel of the LORD said unto Balaam, Go with the men: but only the word that I shall speak unto thee, that thou shalt speak. So Balaam went with the princes of Balak."

Numbers 22:36: "And when Balak heard that Balaam was come, he went out to meet him unto a city of Moab, which is in the border of Arnon, which is in the utmost coast."

Numbers 22:39: "And Balaam went with Balak, and they came unto Kirjathhuzoth."

Numbers 23:3: "And Balaam said unto Balak, Stand by thy burnt offering, and I will go: peradventure the LORD will come to meet me: and whatsoever he sheweth me I will tell thee. And he went to an high place."

Numbers 24:1: "And when Balaam saw that it pleased the LORD to bless Israel, he went not, as at other times, to seek for enchantments, but he set his face toward the wilderness."

Numbers 24:25: "And Balaam rose up, and went and returned to his place: and Balak also went his way."

Numbers 25:8: "And he went after the man of Israel into the tent, and thrust both of them through, the man of Israel, and the woman through her belly. So the plague was stayed from the children of Israel."

Numbers 26:4: "Take the sum of the people, from twenty years old and upward; as the LORD commanded Moses and the children of Israel, which went forth out of the land of Egypt."

Numbers 31:13: "And Moses, and Eleazar the priest, and all the princes of the congregation, went forth to meet them without the camp."

Numbers 31:21: "And Eleazar the priest said unto the men of war which went to the battle, This is the ordinance of the law which the LORD commanded Moses;"

Numbers 31:27: "And divide the prey into two parts; between them that took the war upon them, who went out to battle, and between all the congregation:"

Numbers 31:28: "And levy a tribute unto the Lord of the men of war which went out to battle: one soul of five hundred, both of the persons, and of the beeves, and of the asses, and of the sheep:"

Numbers 31:36: "And the half, which was the portion of them that went out to war, was in number three hundred thousand and seven and thirty thousand and five hundred sheep:"

Numbers 32:9: "For when they went up unto the valley of Eshcol, and saw the land, they discouraged the heart of the children of Israel, that they should not go into the land which the LORD had given them."

Numbers 32:39: "And the children of Machir the son of Manasseh went to Gilead, and took it, and dispossessed the Amorite which was in it."

Numbers 32:41: "And Jair the son of Manasseh went and took the small towns thereof, and called them Havothjair."

Numbers 32:42: "And Nobah went and took Kenath, and the villages thereof, and called it Nobah, after his own name."

Numbers 33:1: "These are the journeys of the children of Israel, which went forth out of the land of Egypt with their armies under the hand of Moses and Aaron."

Numbers 33:3: "And they departed from Rameses in the first month, on the fifteenth day of the first month; on the morrow after the passover the children of Israel went out with an high hand in the sight of all the Egyptians."

Numbers 33:8: "And they departed from before Pihahiroth, and passed through the midst of the sea into the wilderness, and went three days' journey in the wilderness of Etham, and pitched in Marah."

Numbers 33:23: "And they went from Kehelathah, and pitched in mount Shapher."

Numbers 33:29: "And they went from Mithcah, and pitched in Hashmonah."

Numbers 33:33: "And they went from Horhagidgad, and pitched in Jotbathah."

Numbers 33:38: "And Aaron the priest went up into mount Hor at the commandment of the LORD, and died there, in the fortieth year after the children of Israel were come out of the land of Egypt, in the first day of the fifth month."

Deuteronomy 1:19: "And when we departed from Horeb, we went through all that great and terrible wilderness, which ye saw by the way of the mountain of the Amorites, as the LORD our God commanded us; and we came to Kadeshbarnea."

Deuteronomy 1:24: "And they turned and went up into the mountain, and came unto the valley of Eshcol, and searched it out."

Deuteronomy 1:31: "And in the wilderness, where thou hast seen how that the LORD thy God bare thee, as a man doth bear his son, in all the way that ye went, until ye came into this place."

Deuteronomy 1:33: "Who went in the way before you, to search you out a place to pitch your tents in, in fire by night, to shew you by what way ye should go, and in a cloud by day."

Deuteronomy 1:43: "So I spake unto you; and ye would not hear, but rebelled against the commandment of the LORD, and went presumptuously up into the hill."

Deuteronomy 2:13: "Now rise up, said I, and get you over the brook Zered. And we went over the brook Zered."

Deuteronomy 3:1: "Then we turned, and went up the way to Bashan: and Og the king of Bashan came out against us, he and all his people, to battle at Edrei."

Deuteronomy 5:5: "(I stood between the LORD and you at that time, to shew you the word of the LORD: for ye were afraid by reason of the fire, and went not up into the mount;) saying,"

Deuteronomy 10:3: "And I made an ark of shittim wood, and hewed two tables of stone like unto the first, and went up into the mount, having the two tables in mine hand."

Deuteronomy 10:22: "Thy fathers went down into Egypt with threescore and ten persons; and now the LORD thy God hath made thee as the stars of heaven for multitude."

Deuteronomy 26:5: "And thou shalt speak and say before the LORD thy God, A Syrian ready to perish was my father, and he went down into Egypt, and sojourned there with a few, and became there a nation, great, mighty, and populous:"

Deuteronomy 29:26: "For they went and served other gods, and worshipped them, gods whom they knew not, and whom he had not given unto them:"

Deuteronomy 31:1: "And Moses went and spake these words unto all Israel."

Deuteronomy 31:14: "And the LORD said unto Moses, Behold, thy days approach that thou must die: call Joshua, and present yourselves in the tabernacle of the congregation, that I may give him a charge. And Moses and Joshua went, and presented themselves in the tabernacle of the congregation."

Deuteronomy 33:2: "And he said, The LORD came from Sinai, and rose up from Seir unto them; he shined forth from mount Paran, and he came with ten thousands of saints: from his right hand went a fiery law for them."

Deuteronomy 34:1: "And Moses went up from the plains of Moab unto the mountain of Nebo, to the top of Pisgah, that is over against Jericho. And the LORD shewed him all the land of Gilead, unto Dan,"

Joshua 2:1: "And Joshua the son of Nun sent out of Shittim two men to spy secretly, saying, Go view the land, even Jericho. And they went, and came into an harlot's house, named Rahab, and lodged there."

Joshua 2:5: "And it came to pass about the time of shutting of the gate, when it was dark, that the men went out: whither the men went I wot not: pursue after them quickly; for ye shall overtake them."

Joshua 2:22: "And they went, and came unto the mountain, and abode there three days, until the pursuers were returned: and the pursuers sought them throughout all the way, but found them not."

Joshua 3:2: "And it came to pass after three days, that the officers went through the host;"

Joshua 3:6: "And Joshua spake unto the priests, saying, Take up the ark of the covenant, and pass over before the people. And they took up the ark of the covenant, and went before the people."

Joshua 5:13: "And it came to pass, when Joshua was by Jericho, that he lifted up his eyes and looked, and, behold, there stood a man over against him with his sword drawn in his hand: and Joshua went unto him, and said unto him, Art thou for us, or for our adversaries?"

Joshua 6:1: "Now Jericho was straitly shut up because of the children of Israel: none went out, and none came in."

Joshua 6:9: "And the armed men went before the priests that blew with the trumpets, and the rereward came after the ark, the priests going on, and blowing with the trumpets."

Joshua 6:13: "And seven priests bearing seven trumpets of rams' horns before the ark of the LORD went on continually, and blew with the trumpets: and the armed men went before them; but the rereward came after the ark of the LORD, the priests going on, and blowing with the trumpets."

Joshua 6:20: "So the people shouted when the priests blew with the trumpets: and it came to pass, when the people heard the sound of the trumpet, and the people shouted with a great shout, that the wall fell down flat, so that the people went up into the city, every man straight before him, and they took the city."

Joshua 6:23: "And the young men that were spies went in, and brought out Rahab, and her father, and her mother, and her brethren, and all that she had; and they brought out all her kindred, and left them without the camp of Israel."

Joshua 7:2: "And Joshua sent men from Jericho to Ai, which is beside Bethaven, on the east of Bethel, and spake unto them, saying, Go up and view the country. And the men went up and viewed



Ai."

Joshua 7:4: "So there went up thither of the people about three thousand men: and they fled before the men of Ai."

Joshua 8:9: "Joshua therefore sent them forth: and they went to lie in ambush, and abode between Bethel and Ai, on the west side of Ai: but Joshua lodged that night among the people."

Joshua 8:10: "And Joshua rose up early in the morning, and numbered the people, and went up, he and the elders of Israel, before the people to Ai."

Joshua 8:11: "And all the people, even the people of war that were with him, went up, and drew nigh, and came before the city, and pitched on the north side of Ai: now there was a valley between them and Ai."

Joshua 8:13: "And when they had set the people, even all the host that was on the north of the city, and their liers in wait on the west of the city, Joshua went that night into the midst of the valley."

Joshua 8:14: "And it came to pass, when the king of Ai saw it, that they hasted and rose up early, and the men of the city went out against Israel to battle, he and all his people, at a time appointed, before the plain; but he wist not that there were liers in ambush against him behind the city."

Joshua 8:17: "And there was not a man left in Ai or Bethel, that went not out after Israel: and they left the city open, and pursued after Israel."

Joshua 9:4: "They did work wilily, and went and made as if they had been ambassadors, and took old sacks upon their asses, and wine bottles, old, and rent, and bound up;"

Joshua 9:6: "And they went to Joshua unto the camp at Gilgal, and said unto him, and to the men of Israel, We be come from a far country: now therefore make ye a league with us."

Joshua 10:5: "Therefore the five kings of the Amorites, the king of Jerusalem, the king of Hebron, the king of Jarmuth, the king of Lachish, the king of Eglon, gathered themselves together, and went up, they and all their hosts, and encamped before Gibeon, and made war against it."

Joshua 10:9: "Joshua therefore came unto them suddenly, and went up from Gilgal all night."

Joshua 10:24: "And it came to pass, when they brought out those kings unto Joshua, that Joshua called for all the men of Israel, and said unto the captains of the men of war which went with him, Come near, put your feet upon the necks of these kings. And they came near, and put their feet upon the necks of them."

Joshua 10:36: "And Joshua went up from Eglon, and all Israel with him, unto Hebron; and they fought against it:"

Joshua 11:4: "And they went out, they and all their hosts with them, much people, even as the sand that is upon the sea shore in multitude, with horses and chariots very many."

Joshua 14:8: "Nevertheless my brethren that went up with me made the heart of the people melt: but I wholly followed the LORD my God."

Joshua 15:3: "And it went out to the south side to Maalehacrabbin, and passed along to Zin, and ascended up on the south side unto Kadeshbarnea, and passed along to Hezron, and went up to Adar, and fetched a compass to Karkaa:"

Joshua 15:4: "From thence it passed toward Azmon, and went out unto the river of Egypt; and the goings out of that coast were at the sea: this shall be your south coast."

Joshua 15:6: "And the border went up to Bethhogla, and passed along by the north of Betharabah; and the border went up to the stone of Bohan the son of Reuben:"

Joshua 15:7: "And the border went up toward Debir from the valley of Achor, and so northward, looking toward Gilgal, that is before the going up to Adummim, which is on the south side of the river: and the border passed toward the waters of Enshemesh, and the goings out thereof were at Enrogel:"

Joshua 15:8: "And the border went up by the valley of the son of Hinnom unto the south side of the Jebusite; the same is Jerusalem: and the border went up to the top of the mountain that lieth before the valley of Hinnom westward, which is at the end of the valley of the giants northward:"

Joshua 15:9: "And the border was drawn from the top of the hill unto the fountain of the water of

Nephtoah, and went out to the cities of mount Ephron; and the border was drawn to Baalah, which is Kirjathjearim:"

Joshua 15:10: "And the border compassed from Baalah westward unto mount Seir, and passed along unto the side of mount Jearim, which is Chesalon, on the north side, and went down to Bethshemesh, and passed on to Timnah:"

Joshua 15:11: "And the border went out unto the side of Ekron northward: and the border was drawn to Shicron, and passed along to mount Baalah, and went out unto Jabneel; and the goings out of the border were at the sea."

Joshua 15:15: "And he went up thence to the inhabitants of Debir: and the name of Debir before was Kirjathsepher."

Joshua 16:6: "And the border went out toward the sea to Michmethah on the north side; and the border went about eastward unto Taanathshiloh, and passed by it on the east to Janohah;"

Joshua 16:7: "And it went down from Janohah to Ataroth, and to Naarath, and came to Jericho, and went out at Jordan."

Joshua 16:8: "The border went out from Tappuah westward unto the river Kanah; and the goings out thereof were at the sea. This is the inheritance of the tribe of the children of Ephraim by their families."

Joshua 17:7: "And the coast of Manasseh was from Asher to Michmethah, that lieth before Shechem; and the border went along on the right hand unto the inhabitants of Entappuah."

Joshua 18:8: "And the men arose, and went away: and Joshua charged them that went to describe the land, saying, Go and walk through the land, and describe it, and come again to me, that I may here cast lots for you before the LORD in Shiloh."

Joshua 18:9: "And the men went and passed through the land, and described it by cities into seven parts in a book, and came again to Joshua to the host at Shiloh."

Joshua 18:12: "And their border on the north side was from Jordan; and the border went up to the side of Jericho on the north side, and went up through the mountains westward; and the goings out thereof were at the wilderness of Bethaven."

Joshua 18:13: "And the border went over from thence toward Luz, to the side of Luz, which is Bethel, southward; and the border descended to Atarothadar, near the hill that lieth on the south side of the nether Bethhoron."

Joshua 18:15: "And the south quarter was from the end of Kirjathjearim, and the border went out on the west, and went out to the well of waters of Nephtoah:"

Joshua 18:17: "And was drawn from the north, and went forth to Enshemesh, and went forth toward Geliloth, which is over against the going up of Adummim, and descended to the stone of Bohan the son of Reuben,"

Joshua 18:18: "And passed along toward the side over against Arabah northward, and went down unto Arabah:"

Joshua 19:11: "And their border went up toward the sea, and Maralah, and reached to Dabbasheth, and reached to the river that is before Jokneam;"

Joshua 19:47: "And the coast of the children of Dan went out too little for them: therefore the children of Dan went up to fight against Leshem, and took it, and smote it with the edge of the sword, and possessed it, and dwelt therein, and called Leshem, Dan, after the name of Dan their father."

Joshua 22:6: "So Joshua blessed them, and sent them away: and they went unto their tents."

Joshua 24:4: "And I gave unto Isaac Jacob and Esau: and I gave unto Esau mount Seir, to possess it; but Jacob and his children went down into Egypt."

Joshua 24:11: "And you went over Jordan, and came unto Jericho: and the men of Jericho fought against you, the Amorites, and the Perizzites, and the Canaanites, and the Hittites, and the Girgashites, the Hivites, and the Jebusites; and I delivered them into your hand."

Joshua 24:17: "For the LORD our God, he it is that brought us up and our fathers out of the land of

Egypt, from the house of bondage, and which did those great signs in our sight, and preserved us in all the way wherein we went, and among all the people through whom we passed:"

Judges 1:3: "And Judah said unto Simeon his brother, Come up with me into my lot, that we may fight against the Canaanites; and I likewise will go with thee into thy lot. So Simeon went with him."

Judges 1:4: "And Judah went up; and the LORD delivered the Canaanites and the Perizzites into their hand: and they slew of them in Bezek ten thousand men."

Judges 1:9: "And afterward the children of Judah went down to fight against the Canaanites, that dwelt in the mountain, and in the south, and in the valley."

Judges 1:10: "And Judah went against the Canaanites that dwelt in Hebron: (now the name of Hebron before was Kirjatharba:) and they slew Sheshai, and Ahiman, and Talmai."

Judges 1:11: "And from thence he went against the inhabitants of Debir: and the name of Debir before was Kirjathsepher:"

Judges 1:16: "And the children of the Kenite, Moses' father in law, went up out of the city of palm trees with the children of Judah into the wilderness of Judah, which lieth in the south of Arad; and they went and dwelt among the people."

Judges 1:17: "And Judah went with Simeon his brother, and they slew the Canaanites that inhabited Zephath, and utterly destroyed it. And the name of the city was called Hormah."

Judges 1:22: "And the house of Joseph, they also went up against Bethel: and the LORD was with them."

Judges 1:26: "And the man went into the land of the Hittites, and built a city, and called the name thereof Luz: which is the name thereof unto this day."

Judges 2:6: "And when Joshua had let the people go, the children of Israel went every man unto his inheritance to possess the land."

Judges 2:15: "Whithersoever they went out, the hand of the LORD was against them for evil, as the LORD had said, and as the LORD had sworn unto them: and they were greatly distressed."

Judges 2:17: "And yet they would not hearken unto their judges, but they went a whoring after other gods, and bowed themselves unto them: they turned quickly out of the way which their fathers walked in, obeying the commandments of the LORD; but they did not so."

Judges 3:10: "And the Spirit of the LORD came upon him, and he judged Israel, and went out to war: and the LORD delivered Chushanrishathaim king of Mesopotamia into his hand; and his hand prevailed against Chushanrishathaim."

Judges 3:13: "And he gathered unto him the children of Ammon and Amalek, and went and smote Israel, and possessed the city of palm trees."

Judges 3:19: "But he himself turned again from the quarries that were by Gilgal, and said, I have a secret errand unto thee, O king: who said, Keep silence. And all that stood by him went out from him."

Judges 3:22: "And the haft also went in after the blade; and the fat closed upon the blade, so that he could not draw the dagger out of his belly; and the dirt came out."

Judges 3:23: "Then Ehud went forth through the porch, and shut the doors of the parlour upon him, and locked them."

Judges 3:27: "And it came to pass, when he was come, that he blew a trumpet in the mountain of Ephraim, and the children of Israel went down with him from the mount, and he before them."

Judges 3:28: "And he said unto them, Follow after me: for the LORD hath delivered your enemies the Moabites into your hand. And they went down after him, and took the fords of Jordan toward Moab, and suffered not a man to pass over."

Judges 4:9: "And she said, I will surely go with thee: notwithstanding the journey that thou takest shall not be for thine honour; for the LORD shall sell Sisera into the hand of a woman. And Deborah arose, and went with Barak to Kedesh."

Judges 4:10: "And Barak called Zebulun and Naphtali to Kedesh; and he went up with ten thousand

men at his feet: and Deborah went up with him."

Judges 4:14: "And Deborah said unto Barak, Up; for this is the day in which the LORD hath delivered Sisera into thine hand: is not the LORD gone out before thee? So Barak went down from mount Tabor, and ten thousand men after him."

Judges 4:18: "And Jael went out to meet Sisera, and said unto him, Turn in, my lord, turn in to me; fear not. And when he had turned in unto her into the tent, she covered him with a mantle."

Judges 4:21: "Then Jael Heber's wife took a nail of the tent, and took an hammer in her hand, and went softly unto him, and smote the nail into his temples, and fastened it into the ground: for he was fast asleep and weary. So he died."

Judges 6:19: "And Gideon went in, and made ready a kid, and unleavened cakes of an ephah of flour: the flesh he put in a basket, and he put the broth in a pot, and brought it out unto him under the oak, and presented it."

Judges 6:33: "Then all the Midianites and the Amalekites and the children of the east were gathered together, and went over, and pitched in the valley of Jezreel."

Judges 7:11: "And thou shalt hear what they say; and afterward shall thine hands be strengthened to go down unto the host. Then went he down with Phurah his servant unto the outside of the armed men that were in the host."

Judges 8:8: "And he went up thence to Penuel, and spake unto them likewise: and the men of Penuel answered him as the men of Succoth had answered him."

Judges 8:11: "And Gideon went up by the way of them that dwelt in tents on the east of Nobah and Jogbehah, and smote the host; for the host was secure."

Judges 8:27: "And Gideon made an ephod thereof, and put it in his city, even in Ophrah: and all Israel went thither a whoring after it: which thing became a snare unto Gideon, and to his house."

Judges 8:29: "And Jerubbaal the son of Joash went and dwelt in his own house."

Judges 8:33: "And it came to pass, as soon as Gideon was dead, that the children of Israel turned again, and went a whoring after Baalim, and made Baalberith their god."

Judges 9:1: "And Abimelech the son of Jerubbaal went to Shechem unto his mother's brethren, and communed with them, and with all the family of the house of his mother's father, saying,"

Judges 9:5: "And he went unto his father's house at Ophrah, and slew his brethren the sons of Jerubbaal, being threescore and ten persons, upon one stone: notwithstanding yet Jotham the youngest son of Jerubbaal was left; for he hid himself."

Judges 9:6: "And all the men of Shechem gathered together, and all the house of Millo, and went, and made Abimelech king, by the plain of the pillar that was in Shechem."

Judges 9:7: "And when they told it to Jotham, he went and stood in the top of mount Gerizim, and lifted up his voice, and cried, and said unto them, Hearken unto me, ye men of Shechem, that God may hearken unto you."

Judges 9:8: "The trees went forth on a time to anoint a king over them; and they said unto the olive tree, Reign thou over us."

Judges 9:21: "And Jotham ran away, and fled, and went to Beer, and dwelt there, for fear of Abimelech his brother."

Judges 9:26: "And Gaal the son of Ebed came with his brethren, and went over to Shechem: and the men of Shechem put their confidence in him."

Judges 9:27: "And they went out into the fields, and gathered their vineyards, and trode the grapes, and made merry, and went into the house of their god, and did eat and drink, and cursed Abimelech."

Judges 9:35: "And Gaal the son of Ebed went out, and stood in the entering of the gate of the city: and Abimelech rose up, and the people that were with him, from lying in wait."

Judges 9:39: "And Gaal went out before the men of Shechem, and fought with Abimelech."

Judges 9:42: "And it came to pass on the morrow, that the people went out into the field; and they told Abimelech."

Judges 9:50: "Then went Abimelech to Thebez, and encamped against Thebez, and took it."

Judges 9:52: "And Abimelech came unto the tower, and fought against it, and went hard unto the door of the tower to burn it with fire."

Judges 11:3: "Then Jephthah fled from his brethren, and dwelt in the land of Tob: and there were gathered vain men to Jephthah, and went out with him."

Judges 11:5: "And it was so, that when the children of Ammon made war against Israel, the elders of Gilead went to fetch Jephthah out of the land of Tob:"

Judges 11:11: "Then Jephthah went with the elders of Gilead, and the people made him head and captain over them: and Jephthah uttered all his words before the LORD in Mizpeh."

Judges 11:18: "Then they went along through the wilderness, and compassed the land of Edom, and the land of Moab, and came by the east side of the land of Moab, and pitched on the other side of Arnon, but came not within the border of Moab: for Arnon was the border of Moab."

Judges 11:38: "And he said, Go. And he sent her away for two months: and she went with her companions, and bewailed her virginity upon the mountains."

Judges 11:40: "That the daughters of Israel went yearly to lament the daughter of Jephthah the Gileadite four days in a year."

Judges 12:1: "And the men of Ephraim gathered themselves together, and went northward, and said unto Jephthah, Wherefore passedst thou over to fight against the children of Ammon, and didst not call us to go with thee? we will burn thine house upon thee with fire."

Judges 13:11: "And Manoah arose, and went after his wife, and came to the man, and said unto him, Art thou the man that spakest unto the woman? And he said, I am."

Judges 13:20: "For it came to pass, when the flame went up toward heaven from off the altar, that the angel of the LORD ascended in the flame of the altar. And Manoah and his wife looked on it, and fell on their faces to the ground."

Judges 14:1: "And Samson went down to Timnath, and saw a woman in Timnath of the daughters of the Philistines."

Judges 14:5: "Then went Samson down, and his father and his mother, to Timnath, and came to the vineyards of Timnath: and, behold, a young lion roared against him."

Judges 14:7: "And he went down, and talked with the woman; and she pleased Samson well."

Judges 14:9: "And he took thereof in his hands, and went on eating, and came to his father and mother, and he gave them, and they did eat: but he told not them that he had taken the honey out of the carcase of the lion."

Judges 14:10: "So his father went down unto the woman: and Samson made there a feast; for so used the young men to do."

Judges 14:18: "And the men of the city said unto him on the seventh day before the sun went down, What is sweeter than honey? And what is stronger than a lion? and he said unto them, If ye had not plowed with my heifer, ye had not found out my riddle."

Judges 14:19: "And the Spirit of the LORD came upon him, and he went down to Ashkelon, and slew thirty men of them, and took their spoil, and gave change of garments unto them which expounded the riddle. And his anger was kindled, and he went up to his father's house."

Judges 15:4: "And Samson went and caught three hundred foxes, and took firebrands, and turned tail to tail, and put a firebrand in the midst between two tails."

Judges 15:8: "And he smote them hip and thigh with a great slaughter: and he went down and dwelt in the top of the rock Etam."

Judges 15:9: "Then the Philistines went up, and pitched in Judah, and spread themselves in Lehi."

Judges 15:11: "Then three thousand men of Judah went to the top of the rock Etam, and said to Samson, Knowest thou not that the Philistines are rulers over us? what is this that thou hast done unto us? And he said unto them, As they did unto me, so have I done unto them."

Judges 16:1: "Then went Samson to Gaza, and saw there an harlot, and went in unto her."

Judges 16:3: "And Samson lay till midnight, and arose at midnight, and took the doors of the gate of

the city, and the two posts, and went away with them, bar and all, and put them upon his shoulders, and carried them up to the top of an hill that is before Hebron."

Judges 16:14: "And she fastened it with the pin, and said unto him, The Philistines be upon thee, Samson. And he awaked out of his sleep, and went away with the pin of the beam, and with the web."

Judges 16:19: "And she made him sleep upon her knees; and she called for a man, and she caused him to shave off the seven locks of his head; and she began to afflict him, and his strength went from him."

Judges 17:10: "And Micah said unto him, Dwell with me, and be unto me a father and a priest, and I will give thee ten shekels of silver by the year, and a suit of apparel, and thy victuals. So the Levite went in."

Judges 18:11: "And there went from thence of the family of the Danites, out of Zorah and out of Eshtaol, six hundred men appointed with weapons of war."

Judges 18:12: "And they went up, and pitched in Kirjathjearim, in Judah: wherefore they called that place Mahanehdan unto this day: behold, it is behind Kirjathjearim."

Judges 18:14: "Then answered the five men that went to spy out the country of Laish, and said unto their brethren, Do ye know that there is in these houses an ephod, and teraphim, and a graven image, and a molten image? now therefore consider what ye have to do."

Judges 18:17: "And the five men that went to spy out the land went up, and came in thither, and took the graven image, and the ephod, and the teraphim, and the molten image: and the priest stood in the entering of the gate with the six hundred men that were appointed with weapons of war."

Judges 18:18: "And these went into Micah's house, and fetched the carved image, the ephod, and the teraphim, and the molten image. Then said the priest unto them, What do ye?"

Judges 18:20: "And the priest's heart was glad, and he took the ephod, and the teraphim, and the graven image, and went in the midst of the people."

Judges 18:26: "And the children of Dan went their way: and when Micah saw that they were too strong for him, he turned and went back unto his house."

Judges 19:2: "And his concubine played the whore against him, and went away from him unto her father's house to Bethlehemjudah, and was there four whole months."

Judges 19:3: "And her husband arose, and went after her, to speak friendly unto her, and to bring her again, having his servant with him, and a couple of asses: and she brought him into her father's house: and when the father of the damsel saw him, he rejoiced to meet him."

Judges 19:14: "And they passed on and went their way; and the sun went down upon them when they were by Gibeah, which belongeth to Benjamin."

Judges 19:15: "And they turned aside thither, to go in and to lodge in Gibeah: and when he went in, he sat him down in a street of the city: for there was no man that took them into his house to lodging."

Judges 19:18: "And he said unto him, We are passing from Bethlehemjudah toward the side of mount Ephraim; from thence am I: and I went to Bethlehemjudah, but I am now going to the house of the LORD; and there is no man that receiveth me to house."

Judges 19:23: "And the man, the master of the house, went out unto them, and said unto them, Nay, my brethren, nay, I pray you, do not so wickedly; seeing that this man is come into mine house, do not this folly."

Judges 19:27: "And her lord rose up in the morning, and opened the doors of the house, and went out to go his way: and, behold, the woman his concubine was fallen down at the door of the house, and her hands were upon the threshold."

Judges 20:1: "Then all the children of Israel went out, and the congregation was gathered together as one man, from Dan even to Beersheba, with the land of Gilead, unto the LORD in Mizpeh."

Judges 20:18: "And the children of Israel arose, and went up to the house of God, and asked counsel of God, and said, Which of us shall go up first to the battle against the children of Benjamin? And

the LORD said, Judah shall go up first."

Judges 20:20: "And the men of Israel went out to battle against Benjamin; and the men of Israel put themselves in array to fight against them at Gibeah."

Judges 20:23: "(And the children of Israel went up and wept before the LORD until even, and asked counsel of the LORD, saying, Shall I go up again to battle against the children of Benjamin my brother? And the LORD said, Go up against him.)"

Judges 20:25: "And Benjamin went forth against them out of Gibeah the second day, and destroyed down to the ground of the children of Israel again eighteen thousand men; all these drew the sword."

Judges 20:26: "Then all the children of Israel, and all the people, went up, and came unto the house of God, and wept, and sat there before the LORD, and fasted that day until even, and offered burnt offerings and peace offerings before the LORD."

Judges 20:30: "And the children of Israel went up against the children of Benjamin on the third day, and put themselves in array against Gibeah, as at other times."

Judges 20:31: "And the children of Benjamin went out against the people, and were drawn away from the city; and they began to smite of the people, and kill, as at other times, in the highways, of which one goeth up to the house of God, and the other to Gibeah in the field, about thirty men of Israel."

Judges 21:23: "And the children of Benjamin did so, and took them wives, according to their number, of them that danced, whom they caught: and they went and returned unto their inheritance, and repaired the cities, and dwelt in them."

Judges 21:24: "And the children of Israel departed thence at that time, every man to his tribe and to his family, and they went out from thence every man to his inheritance."

Ruth 1:1: "Now it came to pass in the days when the judges ruled, that there was a famine in the land. And a certain man of Bethlehemjudah went to sojourn in the country of Moab, he, and his wife, and his two sons."

Ruth 1:7: "Wherefore she went forth out of the place where she was, and her two daughters in law with her; and they went on the way to return unto the land of Judah."

Ruth 1:19: "So they two went until they came to Bethlehem. And it came to pass, when they were come to Bethlehem, that all the city was moved about them, and they said, Is this Naomi?"

Ruth 1:21: "I went out full and the LORD hath brought me home again empty: why then call ye me Naomi, seeing the LORD hath testified against me, and the Almighty hath afflicted me?"

Ruth 2:3: "And she went, and came, and gleaned in the field after the reapers: and her hap was to light on a part of the field belonging unto Boaz, who was of the kindred of Elimelech."

Ruth 2:18: "And she took it up, and went into the city: and her mother in law saw what she had gleaned: and she brought forth, and gave to her that she had reserved after she was sufficed."

Ruth 3:6: "And she went down unto the floor, and did according to all that her mother in law bade her."

Ruth 3:7: "And when Boaz had eaten and drunk, and his heart was merry, he went to lie down at the end of the heap of corn: and she came softly, and uncovered his feet, and laid her down."

Ruth 3:15: "Also he said, Bring the vail that thou hast upon thee, and hold it. And when she held it, he measured six measures of barley, and laid it on her: and she went into the city."

Ruth 4:1: "Then went Boaz up to the gate, and sat him down there: and, behold, the kinsman of whom Boaz spake came by; unto whom he said, Ho, such a one! turn aside, sit down here. And he turned aside, and sat down."

Ruth 4:13: "So Boaz took Ruth, and she was his wife: and when he went in unto her, the LORD gave her conception, and she bare a son."

1 Samuel 1:3: "And this man went up out of his city yearly to worship and to sacrifice unto the LORD of hosts in Shiloh. And the two sons of Eli, Hophni and Phinehas, the priests of the LORD, were there."

1 Samuel 1:7: "And as he did so year by year, when she went up to the house of the LORD, so she provoked her; therefore she wept, and did not eat."

1 Samuel 1:18: "And she said, Let thine handmaid find grace in thy sight. So the woman went her way, and did eat, and her countenance was no more sad."

1 Samuel 1:21: "And the man Elkanah, and all his house, went up to offer unto the LORD the yearly sacrifice, and his vow."

1 Samuel 1:22: "But Hannah went not up; for she said unto her husband, I will not go up until the child be weaned, and then I will bring him, that he may appear before the LORD, and there abide for ever."

1 Samuel 2:11: "And Elkanah went to Ramah to his house. And the child did minister unto the LORD before Eli the priest."

1 Samuel 2:20: "And Eli blessed Elkanah and his wife, and said, The LORD give thee seed of this woman for the loan which is lent to the LORD. And they went unto their own home."

1 Samuel 3:3: "And ere the lamp of God went out in the temple of the LORD, where the ark of God was, and Samuel was laid down to sleep;"

1 Samuel 3:5: "And he ran unto Eli, and said, Here am I; for thou calledst me. And he said, I called not; lie down again. And he went and lay down."

1 Samuel 3:6: "And the LORD called yet again, Samuel. And Samuel arose and went to Eli, and said, Here am I; for thou didst call me. And he answered, I called not, my son; lie down again."

1 Samuel 3:8: "And the LORD called Samuel again the third time. And he arose and went to Eli, and said, Here am I; for thou didst call me. And Eli perceived that the LORD had called the child."

1 Samuel 3:9: "Therefore Eli said unto Samuel, Go, lie down: and it shall be, if he call thee, that thou shalt say, Speak, LORD; for thy servant heareth. So Samuel went and lay down in his place."

1 Samuel 4:1: "And the word of Samuel came to all Israel. Now Israel went out against the Philistines to battle, and pitched beside Ebenezer: and the Philistines pitched in Aphek."

1 Samuel 5:12: "And the men that died not were smitten with the emerods: and the cry of the city went up to heaven."

1 Samuel 6:12: "And the kine took the straight way to the way of Bethshemesh, and went along the highway, lowing as they went, and turned not aside to the right hand or to the left; and the lords of the Philistines went after them unto the border of Bethshemesh."

1 Samuel 7:7: "And when the Philistines heard that the children of Israel were gathered together to Mizpeh, the lords of the Philistines went up against Israel. And when the children of Israel heard it, they were afraid of the Philistines."

1 Samuel 7:11: "And the men of Israel went out of Mizpeh, and pursued the Philistines, and smote them, until they came under Bethcar."

1 Samuel 7:16: "And he went from year to year in circuit to Bethel, and Gilgal, and Mizpeh, and judged Israel in all those places."

1 Samuel 9:9: "(Beforetime in Israel, when a man went to enquire of God, thus he spake, Come, and let us go to the seer: for he that is now called a Prophet was beforetime called a Seer.)"

1 Samuel 9:10: "Then said Saul to his servant, Well said; come, let us go. So they went unto the city where the man of God was."

1 Samuel 9:11: "And as they went up the hill to the city, they found young maidens going out to draw water, and said unto them, Is the seer here?"

1 Samuel 9:14: "And they went up into the city: and when they were come into the city, behold, Samuel came out against them, for to go up to the high place."

1 Samuel 9:26: "And they arose early: and it came to pass about the spring of the day, that Samuel called Saul to the top of the house, saying, Up, that I may send thee away. And Saul arose, and they went out both of them, he and Samuel, abroad."

1 Samuel 10:14: "And Saul's uncle said unto him and to his servant, Whither went ye? And he said, To seek the asses: and when we saw that they were no where, we came to Samuel."



1 Samuel 10:26: "And Saul also went home to Gibeah; and there went with him a band of men, whose hearts God had touched."

1 Samuel 11:15: "And all the people went to Gilgal; and there they made Saul king before the LORD in Gilgal; and there they sacrificed sacrifices of peace offerings before the LORD; and there Saul and all the men of Israel rejoiced greatly."

1 Samuel 13:7: "And some of the Hebrews went over Jordan to the land of Gad and Gilead. As for Saul, he was yet in Gilgal, and all the people followed him trembling."

1 Samuel 13:10: "And it came to pass, that as soon as he had made an end of offering the burnt offering, behold, Samuel came; and Saul went out to meet him, that he might salute him."

1 Samuel 13:20: "But all the Israelites went down to the Philistines, to sharpen every man his share, and his coultter, and his axe, and his mattock."

1 Samuel 13:23: "And the garrison of the Philistines went out to the passage of Michmash."

1 Samuel 14:16: "And the watchmen of Saul in Gibeah of Benjamin looked; and, behold, the multitude melted away, and they went on beating down one another."

1 Samuel 14:19: "And it came to pass, while Saul talked unto the priest, that the noise that was in the host of the Philistines went on and increased: and Saul said unto the priest, Withdraw thine hand."

1 Samuel 14:21: "Moreover the Hebrews that were with the Philistines before that time, which went up with them into the camp from the country round about, even they also turned to be with the Israelites that were with Saul and Jonathan."

1 Samuel 14:46: "Then Saul went up from following the Philistines: and the Philistines went to their own place."

1 Samuel 15:34: "Then Samuel went to Ramah; and Saul went up to his house to Gibeah of Saul."

1 Samuel 16:13: "Then Samuel took the horn of oil, and anointed him in the midst of his brethren: and the Spirit of the LORD came upon David from that day forward. So Samuel rose up, and went to Ramah."

1 Samuel 17:4: "And there went out a champion out of the camp of the Philistines, named Goliath, of Gath, whose height was six cubits and a span."

1 Samuel 17:7: "And the staff of his spear was like a weaver's beam; and his spear's head weighed six hundred shekels of iron: and one bearing a shield went before him."

1 Samuel 17:12: "Now David was the son of that Ephrathite of Bethlehemjudah, whose name was Jesse; and he had eight sons: and the man went among men for an old man in the days of Saul."

1 Samuel 17:13: "And the three eldest sons of Jesse went and followed Saul to the battle: and the names of his three sons that went to the battle were Eliab the firstborn, and next unto him Abinadab, and the third Shammah."

1 Samuel 17:15: "But David went and returned from Saul to feed his father's sheep at Bethlehem."

1 Samuel 17:20: "And David rose up early in the morning, and left the sheep with a keeper, and took, and went, as Jesse had commanded him; and he came to the trench, as the host was going forth to the fight, and shouted for the battle."

1 Samuel 17:35: "And I went out after him, and smote him, and delivered it out of his mouth: and when he arose against me, I caught him by his beard, and smote him, and slew him."

1 Samuel 17:41: "And the Philistine came on and drew near unto David; and the man that bare the shield went before him."

1 Samuel 18:5: "And David went out whithersoever Saul sent him, and behaved himself wisely: and Saul set him over the men of war, and he was accepted in the sight of all the people, and also in the sight of Saul's servants."

1 Samuel 18:13: "Therefore Saul removed him from him, and made him his captain over a thousand; and he went out and came in before the people."

1 Samuel 18:16: "But all Israel and Judah loved David, because he went out and came in before them."

1 Samuel 18:27: "Wherefore David arose and went, he and his men, and slew of the Philistines two hundred men; and David brought their foreskins, and they gave them in full tale to the king, that he might be the king's son in law. And Saul gave him Michal his daughter to wife."

1 Samuel 18:30: "Then the princes of the Philistines went forth: and it came to pass, after they went forth, that David behaved himself more wisely than all the servants of Saul; so that his name was much set by."

1 Samuel 19:8: "And there was war again: and David went out, and fought with the Philistines, and slew them with a great slaughter; and they fled from him."

1 Samuel 19:12: "So Michal let David down through a window: and he went, and fled, and escaped."

1 Samuel 19:18: "So David fled, and escaped, and came to Samuel to Ramah, and told him all that Saul had done to him. And he and Samuel went and dwelt in Naioth."

1 Samuel 19:22: "Then went he also to Ramah, and came to a great well that is in Sechu: and he asked and said, Where are Samuel and David? And one said, Behold, they be at Naioth in Ramah."

1 Samuel 19:23: "And he went thither to Naioth in Ramah: and the Spirit of God was upon him also, and he went on, and prophesied, until he came to Naioth in Ramah."

1 Samuel 20:11: "And Jonathan said unto David, Come, and let us go out into the field. And they went out both of them into the field."

1 Samuel 20:35: "And it came to pass in the morning, that Jonathan went out into the field at the time appointed with David, and a little lad with him."

1 Samuel 20:42: "And Jonathan said to David, Go in peace, forasmuch as we have sworn both of us in the name of the LORD, saying, The LORD be between me and thee, and between my seed and thy seed for ever. And he arose and departed: and Jonathan went into the city."

1 Samuel 21:10: "And David arose and fled that day for fear of Saul, and went to Achish the king of Gath."

1 Samuel 22:1: "David therefore departed thence, and escaped to the cave Adullam: and when his brethren and all his father's house heard it, they went down thither to him."

1 Samuel 22:3: "And David went thence to Mizpeh of Moab: and he said unto the king of Moab, Let my father and my mother, I pray thee, come forth, and be with you, till I know what God will do for me."

1 Samuel 23:5: "So David and his men went to Keilah, and fought with the Philistines, and brought away their cattle, and smote them with a great slaughter. So David saved the inhabitants of Keilah."

1 Samuel 23:13: "Then David and his men, which were about six hundred, arose and departed out of Keilah, and went whithersoever they could go. And it was told Saul that David was escaped from Keilah; and he forbore to go forth."

1 Samuel 23:16: "And Jonathan Saul's son arose, and went to David into the wood, and strengthened his hand in God."

1 Samuel 23:18: "And they two made a covenant before the LORD: and David abode in the wood, and Jonathan went to his house."

1 Samuel 23:24: "And they arose, and went to Ziph before Saul: but David and his men were in the wilderness of Maon, in the plain on the south of Jeshimon."

1 Samuel 23:25: "Saul also and his men went to seek him. And they told David; wherefore he came down into a rock, and abode in the wilderness of Maon. And when Saul heard that, he pursued after David in the wilderness of Maon."

1 Samuel 23:26: "And Saul went on this side of the mountain, and David and his men on that side of the mountain: and David made haste to get away for fear of Saul; for Saul and his men compassed David and his men round about to take them."

1 Samuel 23:28: "Wherefore Saul returned from pursuing after David, and went against the Philistines: therefore they called that place Selahammahlekoth."

1 Samuel 23:29: "And David went up from thence, and dwelt in strong holds at Engedi."

1 Samuel 24:2: "Then Saul took three thousand chosen men out of all Israel, and went to seek David and his men upon the rocks of the wild goats."

1 Samuel 24:3: "And he came to the sheepcotes by the way, where was a cave; and Saul went in to cover his feet: and David and his men remained in the sides of the cave."

1 Samuel 24:7: "So David stayed his servants with these words, and suffered them not to rise against Saul. But Saul rose up out of the cave, and went on his way."

1 Samuel 24:8: "David also arose afterward, and went out of the cave, and cried after Saul, saying, My lord the king. And when Saul looked behind him, David stooped with his face to the earth, and bowed himself."

1 Samuel 24:22: "And David sware unto Saul. And Saul went home; but David and his men gat them up unto the hold."

1 Samuel 25:1: "And Samuel died; and all the Israelites were gathered together, and lamented him, and buried him in his house at Ramah. And David arose, and went down to the wilderness of Paran."

1 Samuel 25:12: "So David's young men turned their way, and went again, and came and told him all those sayings."

1 Samuel 25:13: "And David said unto his men, Gird ye on every man his sword. And they girded on every man his sword; and David also girded on his sword: and there went up after David about four hundred men; and two hundred abode by the stuff."

1 Samuel 25:42: "And Abigail hasted, and arose and rode upon an ass, with five damsels of hers that went after her; and she went after the messengers of David, and became his wife."

1 Samuel 26:2: "Then Saul arose, and went down to the wilderness of Ziph, having three thousand chosen men of Israel with him, to seek David in the wilderness of Ziph."

1 Samuel 26:13: "Then David went over to the other side, and stood on the top of an hill afar off; a great space being between them:"

1 Samuel 26:25: "Then Saul said to David, Blessed be thou, my son David: thou shalt both do great things, and also shalt still prevail. So David went on his way, and Saul returned to his place."

1 Samuel 27:8: "And David and his men went up, and invaded the Geshurites, and the Gezrites, and the Amalekites: for those nations were of old the inhabitants of the land, as thou goest to Shur, even unto the land of Egypt."

1 Samuel 28:8: "And Saul disguised himself, and put on other raiment, and he went, and two men with him, and they came to the woman by night: and he said, I pray thee, divine unto me by the familiar spirit, and bring me him up, whom I shall name unto thee."

1 Samuel 28:25: "And she brought it before Saul, and before his servants; and they did eat. Then they rose up, and went away that night."

1 Samuel 29:11: "So David and his men rose up early to depart in the morning, to return into the land of the Philistines. And the Philistines went up to Jezreel."

1 Samuel 30:2: "And had taken the women captives, that were therein: they slew not any, either great or small, but carried them away, and went on their way."

1 Samuel 30:9: "So David went, he and the six hundred men that were with him, and came to the brook Besor, where those that were left behind stayed."

1 Samuel 30:21: "And David came to the two hundred men, which were so faint that they could not follow David, whom they had made also to abide at the brook Besor: and they went forth to meet David, and to meet the people that were with him: and when David came near to the people, he saluted them."

1 Samuel 30:22: "Then answered all the wicked men and men of Belial, of those that went with David, and said, Because they went not with us, we will not give them ought of the spoil that we have recovered, save to every man his wife and his children, that they may lead them away, and depart."

1 Samuel 31:3: "And the battle went sore against Saul, and the archers hit him; and he was sore

wounded of the archers."

1 Samuel 31:12: "All the valiant men arose, and went all night, and took the body of Saul and the bodies of his sons from the wall of Bethshan, and came to Jabesh, and burnt them there."

2 Samuel 1:4: "And David said unto him, How went the matter? I pray thee, tell me. And he answered, That the people are fled from the battle, and many of the people also are fallen and dead; and Saul and Jonathan his son are dead also."

2 Samuel 2:2: "So David went up thither, and his two wives also, Ahinoam the Jezreelitess, and Abigail Nabal's wife the Carmelite."

2 Samuel 2:12: "And Abner the son of Ner, and the servants of Ishbosheth the son of Saul, went out from Mahanaim to Gibeon."

2 Samuel 2:13: "And Joab the son of Zeruiah, and the servants of David, went out, and met together by the pool of Gibeon: and they sat down, the one on the one side of the pool, and the other on the other side of the pool."

2 Samuel 2:15: "Then there arose and went over by number twelve of Benjamin, which pertained to Ishbosheth the son of Saul, and twelve of the servants of David."

2 Samuel 2:24: "Joab also and Abishai pursued after Abner: and the sun went down when they were come to the hill of Ammah, that lieth before Giah by the way of the wilderness of Gibeon."

2 Samuel 2:29: "And Abner and his men walked all that night through the plain, and passed over Jordan, and went through all Bithron, and they came to Mahanaim."

2 Samuel 2:32: "And they took up Asahel, and buried him in the sepulchre of his father, which was in Bethlehem. And Joab and his men went all night, and they came to Hebron at break of day."

2 Samuel 3:16: "And her husband went with her along weeping behind her to Bahurim. Then said Abner unto him, Go, return. And he returned."

2 Samuel 3:19: "And Abner also spake in the ears of Benjamin: and Abner went also to speak in the ears of David in Hebron all that seemed good to Israel, and that seemed good to the whole house of Benjamin."

2 Samuel 3:21: "And Abner said unto David, I will arise and go, and will gather all Israel unto my lord the king, that they may make a league with thee, and that thou mayest reign over all that thine heart desireth. And David sent Abner away; and he went in peace."

2 Samuel 4:5: "And the sons of Rimmon the Beerothite, Rechab and Baanah, went, and came about the heat of the day to the house of Ishbosheth, who lay on a bed at noon."

2 Samuel 5:6: "And the king and his men went to Jerusalem unto the Jebusites, the inhabitants of the land: which spake unto David, saying, Except thou take away the blind and the lame, thou shalt not come in hither: thinking, David cannot come in hither."

2 Samuel 5:10: "And David went on, and grew great, and the LORD God of hosts was with him."

2 Samuel 5:17: "But when the Philistines heard that they had anointed David king over Israel, all the Philistines came up to seek David; and David heard of it, and went down to the hold."

2 Samuel 6:2: "And David arose, and went with all the people that were with him from Baale of Judah, to bring up from thence the ark of God, whose name is called by the name of the LORD of hosts that dwelleth between the cherubims."

2 Samuel 6:4: "And they brought it out of the house of Abinadab which was at Gibeah, accompanying the ark of God: and Ahio went before the ark."

2 Samuel 6:12: "And it was told king David, saying, The LORD hath blessed the house of Obededom, and all that pertaineth unto him, because of the ark of God. So David went and brought up the ark of God from the house of Obededom into the city of David with gladness."

2 Samuel 7:18: "Then went king David in, and sat before the LORD, and he said, Who am I, O Lord GOD? and what is my house, that thou hast brought me hitherto?"

2 Samuel 7:23: "And what one nation in the earth is like thy people, even like Israel, whom God went to redeem for a people to himself, and to make him a name, and to do for you great things and terrible, for thy land, before thy people, which thou redeemedst to thee from Egypt, from the

nations and their gods?"

2 Samuel 8:3: "David smote also Hadadezer, the son of Rehob, king of Zobah, as he went to recover his border at the river Euphrates."

2 Samuel 8:6: "Then David put garrisons in Syria of Damascus: and the Syrians became servants to David, and brought gifts. And the LORD preserved David whithersoever he went."

2 Samuel 8:14: "And he put garrisons in Edom; throughout all Edom put he garrisons, and all they of Edom became David's servants. And the LORD preserved David whithersoever he went."

2 Samuel 10:16: "And Hadarezer sent, and brought out the Syrians that were beyond the river: and they came to Helam; and Shobach the captain of the host of Hadarezer went before them."

2 Samuel 11:9: "But Uriah slept at the door of the king's house with all the servants of his lord, and went not down to his house."

2 Samuel 11:10: "And when they had told David, saying, Uriah went not down unto his house, David said unto Uriah, Camest thou not from thy journey? why then didst thou not go down unto thine house?"

2 Samuel 11:13: "And when David had called him, he did eat and drink before him; and he made him drunk: and at even he went out to lie on his bed with the servants of his lord, but went not down to his house."

2 Samuel 11:17: "And the men of the city went out, and fought with Joab: and there fell some of the people of the servants of David; and Uriah the Hittite died also."

2 Samuel 11:21: "Who smote Abimelech the son of Jerubbesheth? did not a woman cast a piece of a millstone upon him from the wall, that he died in Thebez? why went ye nigh the wall? then say thou, Thy servant Uriah the Hittite is dead also."

2 Samuel 11:22: "So the messenger went, and came and shewed David all that Joab had sent him for."

2 Samuel 12:16: "David therefore besought God for the child; and David fasted, and went in, and lay all night upon the earth."

2 Samuel 12:17: "And the elders of his house arose, and went to him, to raise him up from the earth: but he would not, neither did he eat bread with them."

2 Samuel 12:24: "And David comforted Bathsheba his wife, and went in unto her, and lay with her: and she bare a son, and he called his name Solomon: and the LORD loved him."

2 Samuel 12:29: "And David gathered all the people together, and went to Rabbah, and fought against it, and took it."

2 Samuel 13:8: "So Tamar went to her brother Amnon's house; and he was laid down. And she took flour, and kneaded it, and made cakes in his sight, and did bake the cakes."

2 Samuel 13:9: "And she took a pan, and poured them out before him; but he refused to eat. And Amnon said, Have out all men from me. And they went out every man from him."

2 Samuel 13:19: "And Tamar put ashes on her head, and rent her garment of divers colours that was on her, and laid her hand on her head, and went on crying."

2 Samuel 13:37: "But Absalom fled, and went to Talmai, the son of Ammihud, king of Geshur. And David mourned for his son every day."

2 Samuel 13:38: "So Absalom fled, and went to Geshur, and was there three years."

2 Samuel 14:23: "So Joab arose and went to Geshur, and brought Absalom to Jerusalem."

2 Samuel 15:9: "And the king said unto him, Go in peace. So he arose, and went to Hebron."

2 Samuel 15:11: "And with Absalom went two hundred men out of Jerusalem, that were called; and they went in their simplicity, and they knew not any thing."

2 Samuel 15:16: "And the king went forth, and all his household after him. And the king left ten women, which were concubines, to keep the house."

2 Samuel 15:17: "And the king went forth, and all the people after him, and tarried in a place that was far off."

2 Samuel 15:24: "And lo Zadok also, and all the Levites were with him, bearing the ark of the

covenant of God: and they set down the ark of God; and Abiathar went up, until all the people had done passing out of the city."

2 Samuel 15:30: "And David went up by the ascent of mount Olivet, and wept as he went up, and had his head covered, and he went barefoot: and all the people that was with him covered every man his head, and they went up, weeping as they went up."

2 Samuel 16:13: "And as David and his men went by the way, Shimei went along on the hill's side over against him, and cursed as he went, and threw stones at him, and cast dust."

2 Samuel 16:22: "So they spread Absalom a tent upon the top of the house; and Absalom went in unto his father's concubines in the sight of all Israel."

2 Samuel 17:17: "Now Jonathan and Ahimaaz stayed by Enrogel; for they might not be seen to come into the city: and a wench went and told them; and they went and told king David."

2 Samuel 17:18: "Nevertheless a lad saw them, and told Absalom: but they went both of them away quickly, and came to a man's house in Bahurim, which had a well in his court; whither they went down."

2 Samuel 17:21: "And it came to pass, after they were departed, that they came up out of the well, and went and told king David, and said unto David, Arise, and pass quickly over the water: for thus hath Ahithophel counselled against you."

2 Samuel 17:25: "And Absalom made Amasa captain of the host instead of Joab: which Amasa was a man's son, whose name was Ithra an Israelite, that went in to Abigail the daughter of Nahash, sister to Zeruiah Joab's mother."

2 Samuel 18:6: "So the people went out into the field against Israel: and the battle was in the wood of Ephraim;"

2 Samuel 18:9: "And Absalom met the servants of David. And Absalom rode upon a mule, and the mule went under the thick boughs of a great oak, and his head caught hold of the oak, and he was taken up between the heaven and the earth; and the mule that was under him went away."

2 Samuel 18:24: "And David sat between the two gates: and the watchman went up to the roof over the gate unto the wall, and lifted up his eyes, and looked, and behold a man running alone."

2 Samuel 18:33: "And the king was much moved, and went up to the chamber over the gate, and wept: and as he went, thus he said, O my son Absalom, my son, my son Absalom! would God I had died for thee, O Absalom, my son, my son!"

2 Samuel 19:17: "And there were a thousand men of Benjamin with him, and Ziba the servant of the house of Saul, and his fifteen sons and his twenty servants with him; and they went over Jordan before the king."

2 Samuel 19:18: "And there went over a ferry boat to carry over the king's household, and to do what he thought good. And Shimei the son of Gera fell down before the king, as he was come over Jordan;"

2 Samuel 19:19: "And said unto the king, Let not my lord impute iniquity unto me, neither do thou remember that which thy servant did perversely the day that my lord the king went out of Jerusalem, that the king should take it to his heart."

2 Samuel 19:31: "And Barzillai the Gileadite came down from Rogelim, and went over Jordan with the king, to conduct him over Jordan."

2 Samuel 19:39: "And all the people went over Jordan. And when the king was come over, the king kissed Barzillai, and blessed him; and he returned unto his own place."

2 Samuel 19:40: "Then the king went on to Gilgal, and Chimham went on with him: and all the people of Judah conducted the king, and also half the people of Israel."

2 Samuel 20:2: "So every man of Israel went up from after David, and followed Sheba the son of Bichri: but the men of Judah clave unto their king, from Jordan even to Jerusalem."

2 Samuel 20:3: "And David came to his house at Jerusalem; and the king took the ten women his concubines, whom he had left to keep the house, and put them in ward, and fed them, but went not in unto them. So they were shut up unto the day of their death, living in widowhood."

2 Samuel 20:5: "So Amasa went to assemble the men of Judah: but he tarried longer than the set time which he had appointed him."

2 Samuel 20:7: "And there went out after him Joab's men, and the Cherethites, and the Pelethites, and all the mighty men: and they went out of Jerusalem, to pursue after Sheba the son of Bichri."

2 Samuel 20:8: "When they were at the great stone which is in Gibeon, Amasa went before them. And Joab's garment that he had put on was girded unto him, and upon it a girdle with a sword fastened upon his loins in the sheath thereof; and as he went forth it fell out."

2 Samuel 20:13: "When he was removed out of the highway, all the people went on after Joab, to pursue after Sheba the son of Bichri."

2 Samuel 20:14: "And he went through all the tribes of Israel unto Abel, and to Bethmaachah, and all the Berites: and they were gathered together, and went also after him."

2 Samuel 20:22: "Then the woman went unto all the people in her wisdom. And they cut off the head of Sheba the son of Bichri, and cast it out to Joab. And he blew a trumpet, and they retired from the city, every man to his tent. And Joab returned to Jerusalem unto the king."

2 Samuel 21:12: "And David went and took the bones of Saul and the bones of Jonathan his son from the men of Jabeshgilead, which had stolen them from the street of Bethshan, where the Philistines had hanged them, when the Philistines had slain Saul in Gilboa:"

2 Samuel 21:15: "Moreover the Philistines had yet war again with Israel; and David went down, and his servants with him, and fought against the Philistines: and David waxed faint."

2 Samuel 22:9: "There went up a smoke out of his nostrils, and fire out of his mouth devoured: coals were kindled by it."

2 Samuel 23:13: "And three of the thirty chief went down, and came to David in the harvest time unto the cave of Adullam: and the troop of the Philistines pitched in the valley of Rephaim."

2 Samuel 23:17: "And he said, Be it far from me, O LORD, that I should do this: is not this the blood of the men that went in jeopardy of their lives? therefore he would not drink it. These things did these three mighty men."

2 Samuel 23:20: "And Benaiah the son of Jehoiada, the son of a valiant man, of Kabzeel, who had done many acts, he slew two lionlike men of Moab: he went down also and slew a lion in the midst of a pit in time of snow:"

2 Samuel 23:21: "And he slew an Egyptian, a goodly man: and the Egyptian had a spear in his hand; but he went down to him with a staff, and plucked the spear out of the Egyptian's hand, and slew him with his own spear."

2 Samuel 24:4: "Notwithstanding the king's word prevailed against Joab, and against the captains of the host. And Joab and the captains of the host went out from the presence of the king, to number the people of Israel."

2 Samuel 24:7: "And came to the strong hold of Tyre, and to all the cities of the Hivites, and of the Canaanites: and they went out to the south of Judah, even to Beersheba."

2 Samuel 24:19: "And David, according to the saying of Gad, went up as the LORD commanded."

2 Samuel 24:20: "And Araunah looked, and saw the king and his servants coming on toward him: and Araunah went out, and bowed himself before the king on his face upon the ground."

1 Kings 1:15: "And Bathsheba went in unto the king into the chamber: and the king was very old; and Abishag the Shunammite ministered unto the king."

1 Kings 1:38: "So Zadok the priest, and Nathan the prophet, and Benaiah the son of Jehoiada, and the Cherethites, and the Pelethites, went down, and caused Solomon to ride upon king David's mule, and brought him to Gihon."

1 Kings 1:49: "And all the guests that were with Adonijah were afraid, and rose up, and went every man his way."

1 Kings 1:50: "And Adonijah feared because of Solomon, and arose, and went, and caught hold on the horns of the altar."

1 Kings 2:8: "And, behold, thou hast with thee Shimei the son of Gera, a Benjamite of Bahurim,

which cursed me with a grievous curse in the day when I went to Mahanaim: but he came down to meet me at Jordan, and I swore to him by the LORD, saying, I will not put thee to death with the sword."

1 Kings 2:19: "Bathsheba therefore went unto king Solomon, to speak unto him for Adonijah. And the king rose up to meet her, and bowed himself unto her, and sat down on his throne, and caused a seat to be set for the king's mother; and she sat on his right hand."

1 Kings 2:34: "So Benaiah the son of Jehoiada went up, and fell upon him, and slew him: and he was buried in his own house in the wilderness."

1 Kings 2:40: "And Shimei arose, and saddled his ass, and went to Gath to Achish to seek his servants: and Shimei went, and brought his servants from Gath."

1 Kings 2:46: "So the king commanded Benaiah the son of Jehoiada; which went out, and fell upon him, that he died. And the kingdom was established in the hand of Solomon."

1 Kings 3:4: "And the king went to Gibeon to sacrifice there; for that was the great high place: a thousand burnt offerings did Solomon offer upon that altar."

1 Kings 6:8: "The door for the middle chamber was in the right side of the house: and they went up with winding stairs into the middle chamber, and out of the middle into the third."

1 Kings 8:66: "On the eighth day he sent the people away: and they blessed the king, and went unto their tents joyful and glad of heart for all the goodness that the LORD had done for David his servant, and for Israel his people."

1 Kings 10:5: "And the meat of his table, and the sitting of his servants, and the attendance of his ministers, and their apparel, and his cupbearers, and his ascent by which he went up unto the house of the LORD; there was no more spirit in her."

1 Kings 10:13: "And king Solomon gave unto the queen of Sheba all her desire, whatsoever she asked, beside that which Solomon gave her of his royal bounty. So she turned and went to her own country, she and her servants."

1 Kings 10:16: "And king Solomon made two hundred targets of beaten gold: six hundred shekels of gold went to one target."

1 Kings 10:17: "And he made three hundred shields of beaten gold; three pound of gold went to one shield: and the king put them in the house of the forest of Lebanon."

1 Kings 10:29: "And a chariot came up and went out of Egypt for six hundred shekels of silver, and an horse for an hundred and fifty: and so for all the kings of the Hittites, and for the kings of Syria, did they bring them out by their means."

1 Kings 11:5: "For Solomon went after Ashtoreth the goddess of the Zidonians, and after Milcom the abomination of the Ammonites."

1 Kings 11:6: "And Solomon did evil in the sight of the LORD, and went not fully after the LORD, as did David his father."

1 Kings 11:24: "And he gathered men unto him, and became captain over a band, when David slew them of Zobah: and they went to Damascus, and dwelt therein, and reigned in Damascus."

1 Kings 11:29: "And it came to pass at that time when Jeroboam went out of Jerusalem, that the prophet Ahijah the Shilonite found him in the way; and he had clad himself with a new garment; and they two were alone in the field:"

1 Kings 12:1: "And Rehoboam went to Shechem: for all Israel were come to Shechem to make him king."

1 Kings 12:25: "Then Jeroboam built Shechem in mount Ephraim, and dwelt therein; and went out from thence, and built Penuel."

1 Kings 12:30: "And this thing became a sin: for the people went to worship before the one, even unto Dan."

1 Kings 13:10: "So he went another way, and returned not by the way that he came to Bethel."

1 Kings 13:12: "And their father said unto them, What way went he? For his sons had seen what way the man of God went, which came from Judah."



1 Kings 13:14: "And went after the man of God, and found him sitting under an oak: and he said unto him, Art thou the man of God that camest from Judah? And he said, I am."

1 Kings 13:19: "So he went back with him, and did eat bread in his house, and drank water."

1 Kings 13:28: "And he went and found his carcase cast in the way, and the ass and the lion standing by the carcase: the lion had not eaten the carcase, nor torn the ass."

1 Kings 14:4: "And Jeroboam's wife did so, and arose, and went to Shiloh, and came to the house of Ahijah. But Ahijah could not see; for his eyes were set by reason of his age."

1 Kings 14:28: "And it was so, when the king went into the house of the LORD, that the guard bare them, and brought them back into the guard chamber."

1 Kings 15:17: "And Baasha king of Israel went up against Judah, and built Ramah, that he might not suffer any to go out or come in to Asa king of Judah."

1 Kings 16:10: "And Zimri went in and smote him, and killed him, in the twenty and seventh year of Asa king of Judah, and reigned in his stead."

1 Kings 16:17: "And Omri went up from Gibbethon, and all Israel with him, and they besieged Tirzah."

1 Kings 16:18: "And it came to pass, when Zimri saw that the city was taken, that he went into the palace of the king's house, and burnt the king's house over him with fire, and died."

1 Kings 16:31: "And it came to pass, as if it had been a light thing for him to walk in the sins of Jeroboam the son of Nebat, that he took to wife Jezebel the daughter of Ethbaal king of the Zidonians, and went and served Baal, and worshipped him."

1 Kings 17:5: "So he went and did according unto the word of the LORD: for he went and dwelt by the brook Cherith, that is before Jordan."

1 Kings 17:10: "So he arose and went to Zarephath. And when he came to the gate of the city, behold, the widow woman was there gathering of sticks: and he called to her, and said, Fetch me, I pray thee, a little water in a vessel, that I may drink."

1 Kings 17:15: "And she went and did according to the saying of Elijah: and she, and he, and her house, did eat many days."

1 Kings 18:2: "And Elijah went to shew himself unto Ahab. And there was a sore famine in Samaria."

1 Kings 18:6: "So they divided the land between them to pass throughout it: Ahab went one way by himself, and Obadiah went another way by himself."

1 Kings 18:16: "So Obadiah went to meet Ahab, and told him: and Ahab went to meet Elijah."

1 Kings 18:42: "So Ahab went up to eat and to drink. And Elijah went up to the top of Carmel; and he cast himself down upon the earth, and put his face between his knees,"

1 Kings 18:43: "And said to his servant, Go up now, look toward the sea. And he went up, and looked, and said, There is nothing. And he said, Go again seven times."

1 Kings 18:45: "And it came to pass in the mean while, that the heaven was black with clouds and wind, and there was a great rain. And Ahab rode, and went to Jezreel."

1 Kings 19:3: "And when he saw that, he arose, and went for his life, and came to Beersheba, which belongeth to Judah, and left his servant there."

1 Kings 19:4: "But he himself went a day's journey into the wilderness, and came and sat down under a juniper tree: and he requested for himself that he might die; and said, It is enough; now, O LORD, take away my life; for I am not better than my fathers."

1 Kings 19:8: "And he arose, and did eat and drink, and went in the strength of that meat forty days and forty nights unto Horeb the mount of God."

1 Kings 19:13: "And it was so, when Elijah heard it, that he wrapped his face in his mantle, and went out, and stood in the entering in of the cave. And, behold, there came a voice unto him, and said, What doest thou here, Elijah?"

1 Kings 19:21: "And he returned back from him, and took a yoke of oxen, and slew them, and boiled their flesh with the instruments of the oxen, and gave unto the people, and they did eat. Then

he arose, and went after Elijah, and ministered unto him."

1 Kings 20:1: "And Benhadad the king of Syria gathered all his host together: and there were thirty and two kings with him, and horses, and chariots; and he went up and besieged Samaria, and warred against it."

1 Kings 20:16: "And they went out at noon. But Benhadad was drinking himself drunk in the pavilions, he and the kings, the thirty and two kings that helped him."

1 Kings 20:17: "And the young men of the princes of the provinces went out first; and Benhadad sent out, and they told him, saying, There are men come out of Samaria."

1 Kings 20:21: "And the king of Israel went out, and smote the horses and chariots, and slew the Syrians with a great slaughter."

1 Kings 20:26: "And it came to pass at the return of the year, that Benhadad numbered the Syrians, and went up to Aphek, to fight against Israel."

1 Kings 20:27: "And the children of Israel were numbered, and were all present, and went against them: and the children of Israel pitched before them like two little flocks of kids; but the Syrians filled the country."

1 Kings 20:39: "And as the king passed by, he cried unto the king: and he said, Thy servant went out into the midst of the battle; and, behold, a man turned aside, and brought a man unto me, and said, Keep this man: if by any means he be missing, then shall thy life be for his life, or else thou shalt pay a talent of silver."

1 Kings 20:43: "And the king of Israel went to his house heavy and displeased, and came to Samaria."

1 Kings 21:27: "And it came to pass, when Ahab heard those words, that he rent his clothes, and put sackcloth upon his flesh, and fasted, and lay in sackcloth, and went softly."

1 Kings 22:24: "But Zedekiah the son of Chenaanah went near, and smote Micaiah on the cheek, and said, Which way went the Spirit of the LORD from me to speak unto thee?"

1 Kings 22:29: "So the king of Israel and Jehoshaphat the king of Judah went up to Ramothgilead."

1 Kings 22:30: "And the king of Israel said unto Jehoshaphat, I will disguise myself, and enter into the battle; but put thou on thy robes. And the king of Israel disguised himself, and went into the battle."

1 Kings 22:36: "And there went a proclamation throughout the host about the going down of the sun, saying, Every man to his city, and every man to his own country."

1 Kings 22:48: "Jehoshaphat made ships of Tharshish to go to Ophir for gold: but they went not; for the ships were broken at Eziongeber."

2 Kings 1:9: "Then the king sent unto him a captain of fifty with his fifty. And he went up to him: and, behold, he sat on the top of an hill. And he spake unto him, Thou man of God, the king hath said, Come down."

2 Kings 1:13: "And he sent again a captain of the third fifty with his fifty. And the third captain of fifty went up, and came and fell on his knees before Elijah, and besought him, and said unto him, O man of God, I pray thee, let my life, and the life of these fifty thy servants, be precious in thy sight."

2 Kings 1:15: "And the angel of the LORD said unto Elijah, Go down with him: be not afraid of him. And he arose, and went down with him unto the king."

2 Kings 2:1: "And it came to pass, when the LORD would take up Elijah into heaven by a whirlwind, that Elijah went with Elisha from Gilgal."

2 Kings 2:2: "And Elijah said unto Elisha, Tarry here, I pray thee; for the LORD hath sent me to Bethel. And Elisha said unto him, As the LORD liveth, and as thy soul liveth, I will not leave thee. So they went down to Bethel."

2 Kings 2:6: "And Elijah said unto him, Tarry, I pray thee, here; for the LORD hath sent me to Jordan. And he said, As the LORD liveth, and as thy soul liveth, I will not leave thee. And they two went on."

2 Kings 2:7: "And fifty men of the sons of the prophets went, and stood to view afar off: and they

two stood by Jordan."

2 Kings 2:8: "And Elijah took his mantle, and wrapped it together, and smote the waters, and they were divided hither and thither, so that they two went over on dry ground."

2 Kings 2:11: "And it came to pass, as they still went on, and talked, that, behold, there appeared a chariot of fire, and horses of fire, and parted them both asunder; and Elijah went up by a whirlwind into heaven."

2 Kings 2:13: "He took up also the mantle of Elijah that fell from him, and went back, and stood by the bank of Jordan;"

2 Kings 2:14: "And he took the mantle of Elijah that fell from him, and smote the waters, and said, Where is the LORD God of Elijah? and when he also had smitten the waters, they parted hither and thither: and Elisha went over."

2 Kings 2:21: "And he went forth unto the spring of the waters, and cast the salt in there, and said, Thus saith the LORD, I have healed these waters; there shall not be from thence any more death or barren land."

2 Kings 2:23: "And he went up from thence unto Bethel: and as he was going up by the way, there came forth little children out of the city, and mocked him, and said unto him, Go up, thou bald head; go up, thou bald head."

2 Kings 2:25: "And he went from thence to mount Carmel, and from thence he returned to Samaria."

2 Kings 3:6: "And king Jehoram went out of Samaria the same time, and numbered all Israel."

2 Kings 3:7: "And he went and sent to Jehoshaphat the king of Judah, saying, The king of Moab hath rebelled against me: wilt thou go with me against Moab to battle? And he said, I will go up: I am as thou art, my people as thy people, and my horses as thy horses."

2 Kings 3:9: "So the king of Israel went, and the king of Judah, and the king of Edom: and they fetched a compass of seven days' journey: and there was no water for the host, and for the cattle that followed them."

2 Kings 3:12: "And Jehoshaphat said, The word of the LORD is with him. So the king of Israel and Jehoshaphat and the king of Edom went down to him."

2 Kings 3:24: "And when they came to the camp of Israel, the Israelites rose up and smote the Moabites, so that they fled before them: but they went forward smiting the Moabites, even in their country."

2 Kings 3:25: "And they beat down the cities, and on every good piece of land cast every man his stone, and filled it; and they stopped all the wells of water, and felled all the good trees: only in Kirharaseth left they the stones thereof; howbeit the slingers went about it, and smote it."

2 Kings 4:5: "So she went from him, and shut the door upon her and upon her sons, who brought the vessels to her; and she poured out."

2 Kings 4:18: "And when the child was grown, it fell on a day, that he went out to his father to the reapers."

2 Kings 4:21: "And she went up, and laid him on the bed of the man of God, and shut the door upon him, and went out."

2 Kings 4:25: "So she went and came unto the man of God to mount Carmel. And it came to pass, when the man of God saw her afar off, that he said to Gehazi his servant, Behold, yonder is that Shunammite:"

2 Kings 4:31: "And Gehazi passed on before them, and laid the staff upon the face of the child; but there was neither voice, nor hearing. Wherefore he went again to meet him, and told him, saying, The child is not awaked."

2 Kings 4:33: "He went in therefore, and shut the door upon them twain, and prayed unto the LORD."

2 Kings 4:34: "And he went up, and lay upon the child, and put his mouth upon his mouth, and his eyes upon his eyes, and his hands upon his hands: and stretched himself upon the child; and the

flesh of the child waxed warm."

2 Kings 4:35: "Then he returned, and walked in the house to and fro; and went up, and stretched himself upon him: and the child sneezed seven times, and the child opened his eyes."

2 Kings 4:37: "Then she went in, and fell at his feet, and bowed herself to the ground, and took up her son, and went out."

2 Kings 4:39: "And one went out into the field to gather herbs, and found a wild vine, and gathered thereof wild gourds his lap full, and came and shred them into the pot of pottage: for they knew them not."

2 Kings 5:4: "And one went in, and told his lord, saying, Thus and thus said the maid that is of the land of Israel."

2 Kings 5:11: "But Naaman was wroth, and went away, and said, Behold, I thought, He will surely come out to me, and stand, and call on the name of the LORD his God, and strike his hand over the place, and recover the leper."

2 Kings 5:12: "Are not Abana and Pharpar, rivers of Damascus, better than all the waters of Israel? may I not wash in them, and be clean? So he turned and went away in a rage."

2 Kings 5:14: "Then went he down, and dipped himself seven times in Jordan, according to the saying of the man of God: and his flesh came again like unto the flesh of a little child, and he was clean."

2 Kings 5:25: "But he went in, and stood before his master. And Elisha said unto him, Whence comest thou, Gehazi? And he said, Thy servant went no whither."

2 Kings 5:26: "And he said unto him, Went not mine heart with thee, when the man turned again from his chariot to meet thee? Is it a time to receive money, and to receive garments, and oliveyards, and vineyards, and sheep, and oxen, and menservants, and maidservants?"

2 Kings 5:27: "The leprosy therefore of Naaman shall cleave unto thee, and unto thy seed for ever. And he went out from his presence a leper as white as snow."

2 Kings 6:4: "So he went with them. And when they came to Jordan, they cut down wood."

2 Kings 6:23: "And he prepared great provision for them: and when they had eaten and drunk, he sent them away, and they went to their master. So the bands of Syria came no more into the land of Israel."

2 Kings 6:24: "And it came to pass after this, that Benhadad king of Syria gathered all his host, and went up, and besieged Samaria."

2 Kings 7:8: "And when these lepers came to the uttermost part of the camp, they went into one tent, and did eat and drink, and carried thence silver, and gold, and raiment, and went and hid it; and came again, and entered into another tent, and carried thence also, and went and hid it."

2 Kings 7:15: "And they went after them unto Jordan: and, lo, all the way was full of garments and vessels, which the Syrians had cast away in their haste. And the messengers returned, and told the king."

2 Kings 7:16: "And the people went out, and spoiled the tents of the Syrians. So a measure of fine flour was sold for a shekel, and two measures of barley for a shekel, according to the word of the LORD."

2 Kings 8:2: "And the woman arose, and did after the saying of the man of God: and she went with her household, and sojourned in the land of the Philistines seven years."

2 Kings 8:3: "And it came to pass at the seven years' end, that the woman returned out of the land of the Philistines: and she went forth to cry unto the king for her house and for her land."

2 Kings 8:9: "So Hazael went to meet him, and took a present with him, even of every good thing of Damascus, forty camels' burden, and came and stood before him, and said, Thy son Benhadad king of Syria hath sent me to thee, saying, Shall I recover of this disease?"

2 Kings 8:21: "So Joram went over to Zair, and all the chariots with him: and he rose by night, and smote the Edomites which compassed him about, and the captains of the chariots: and the people fled into their tents."

2 Kings 8:28: "And he went with Joram the son of Ahab to the war against Hazael king of Syria in Ramothgilead; and the Syrians wounded Joram."

2 Kings 8:29: "And king Joram went back to be healed in Jezreel of the wounds which the Syrians had given him at Ramah, when he fought against Hazael king of Syria. And Ahaziah the son of Jehoram king of Judah went down to see Joram the son of Ahab in Jezreel, because he was sick."

2 Kings 9:4: "So the young man, even the young man the prophet, went to Ramothgilead."

2 Kings 9:6: "And he arose, and went into the house; and he poured the oil on his head, and said unto him, Thus saith the LORD God of Israel, I have anointed thee king over the people of the LORD, even over Israel."

2 Kings 9:16: "So Jehu rode in a chariot, and went to Jezreel; for Joram lay there. And Ahaziah king of Judah was come down to see Joram."

2 Kings 9:18: "So there went one on horseback to meet him, and said, Thus saith the king, Is it peace? And Jehu said, What hast thou to do with peace? turn thee behind me. And the watchman told, saying, The messenger came to them, but he cometh not again."

2 Kings 9:21: "And Joram said, Make ready. And his chariot was made ready. And Joram king of Israel and Ahaziah king of Judah went out, each in his chariot, and they went out against Jehu, and met him in the portion of Naboth the Jezreelite."

2 Kings 9:24: "And Jehu drew a bow with his full strength, and smote Jehoram between his arms, and the arrow went out at his heart, and he sunk down in his chariot."

2 Kings 9:35: "And they went to bury her: but they found no more of her than the skull, and the feet, and the palms of her hands."

2 Kings 10:9: "And it came to pass in the morning, that he went out, and stood, and said to all the people, Ye be righteous: behold, I conspired against my master, and slew him: but who slew all these?"

2 Kings 10:23: "And Jehu went, and Jehonadab the son of Rechab, into the house of Baal, and said unto the worshippers of Baal, Search, and look that there be here with you none of the servants of the LORD, but the worshippers of Baal only."

2 Kings 10:24: "And when they went in to offer sacrifices and burnt offerings, Jehu appointed fourscore men without, and said, If any of the men whom I have brought into your hands escape, he that letteth him go, his life shall be for the life of him."

2 Kings 10:25: "And it came to pass, as soon as he had made an end of offering the burnt offering, that Jehu said to the guard and to the captains, Go in, and slay them; let none come forth. And they smote them with the edge of the sword; and the guard and the captains cast them out, and went to the city of the house of Baal."

2 Kings 11:16: "And they laid hands on her; and she went by the way by the which the horses came into the king's house: and there was she slain."

2 Kings 11:18: "And all the people of the land went into the house of Baal, and brake it down; his altars and his images brake they in pieces thoroughly, and slew Mattan the priest of Baal before the altars. And the priest appointed officers over the house of the LORD."

2 Kings 12:17: "Then Hazael king of Syria went up, and fought against Gath, and took it: and Hazael set his face to go up to Jerusalem."

2 Kings 12:18: "And Jehoash king of Judah took all the hallowed things that Jehoshaphat, and Jehoram, and Ahaziah, his fathers, kings of Judah, had dedicated, and his own hallowed things, and all the gold that was found in the treasures of the house of the LORD, and in the king's house, and sent it to Hazael king of Syria: and he went away from Jerusalem."

2 Kings 13:5: "(And the LORD gave Israel a saviour, so that they went out from under the hand of the Syrians: and the children of Israel dwelt in their tents, as beforetime.)"

2 Kings 14:11: "But Amaziah would not hear. Therefore Jehoash king of Israel went up; and he and Amaziah king of Judah looked one another in the face at Bethshemesh, which belongeth to Judah."

2 Kings 15:14: "For Menahem the son of Gadi went up from Tirzah, and came to Samaria, and

smote Shallum the son of Jabesh in Samaria, and slew him, and reigned in his stead."

2 Kings 16:9: "And the king of Assyria hearkened unto him: for the king of Assyria went up against Damascus, and took it, and carried the people of it captive to Kir, and slew Rezin."

2 Kings 16:10: "And king Ahaz went to Damascus to meet Tiglathpileser king of Assyria, and saw an altar that was at Damascus: and king Ahaz sent to Urijah the priest the fashion of the altar, and the pattern of it, according to all the workmanship thereof."

2 Kings 17:5: "Then the king of Assyria came up throughout all the land, and went up to Samaria, and besieged it three years."

2 Kings 17:15: "And they rejected his statutes, and his covenant that he made with their fathers, and his testimonies which he testified against them; and they followed vanity, and became vain, and went after the heathen that were round about them, concerning whom the LORD had charged them, that they should not do like them."

2 Kings 18:7: "And the LORD was with him; and he prospered whithersoever he went forth: and he rebelled against the king of Assyria, and served him not."

2 Kings 18:17: "And the king of Assyria sent Tartan and Rabsaris and Rabshakeh from Lachish to king Hezekiah with a great host against Jerusalem. And they went up and came to Jerusalem. And when they were come up, they came and stood by the conduit of the upper pool, which is in the highway of the fuller's field."

2 Kings 19:1: "And it came to pass, when king Hezekiah heard it, that he rent his clothes, and covered himself with sackcloth, and went into the house of the LORD."

2 Kings 19:14: "And Hezekiah received the letter of the hand of the messengers, and read it: and Hezekiah went up into the house of the LORD, and spread it before the LORD."

2 Kings 19:35: "And it came to pass that night, that the angel of the LORD went out, and smote in the camp of the Assyrians an hundred fourscore and five thousand: and when they arose early in the morning, behold, they were all dead corpses."

2 Kings 19:36: "So Sennacherib king of Assyria departed, and went and returned, and dwelt at Nineveh."

2 Kings 22:14: "So Hilkiyah the priest, and Ahikam, and Achbor, and Shaphan, and Asahiah, went unto Huldah the prophetess, the wife of Shallum the son of Tikvah, the son of Harhas, keeper of the wardrobe; (now she dwelt in Jerusalem in the college;) and they communed with her."

2 Kings 23:2: "And the king went up into the house of the LORD, and all the men of Judah and all the inhabitants of Jerusalem with him, and the priests, and the prophets, and all the people, both small and great: and he read in their ears all the words of the book of the covenant which was found in the house of the LORD."

2 Kings 23:29: "In his days Pharaohnechoh king of Egypt went up against the king of Assyria to the river Euphrates: and king Josiah went against him; and he slew him at Megiddo, when he had seen him."

2 Kings 24:12: "And Jehoiachin the king of Judah went out to the king of Babylon, he, and his mother, and his servants, and his princes, and his officers: and the king of Babylon took him in the eighth year of his reign."

2 Kings 25:4: "And the city was broken up, and all the men of war fled by night by the way of the gate between two walls, which is by the king's garden: (now the Chaldees were against the city round about:) and the king went the way toward the plain."

1 Chronicles 2:21: "And afterward Hezron went in to the daughter of Machir the father of Gilead, whom he married when he was threescore years old; and she bare him Segub."

1 Chronicles 4:39: "And they went to the entrance of Gedor, even unto the east side of the valley, to seek pasture for their flocks."

1 Chronicles 4:42: "And some of them, even of the sons of Simeon, five hundred men, went to mount Seir, having for their captains Pelatiah, and Neariah, and Rephaiah, and Uzziel, the sons of Ishi."

1 Chronicles 5:18: "The sons of Reuben, and the Gadites, and half the tribe of Manasseh, of valiant men, men able to bear buckler and sword, and to shoot with bow, and skilful in war, were four and forty thousand seven hundred and threescore, that went out to the war."

1 Chronicles 5:25: "And they transgressed against the God of their fathers, and went a whoring after the gods of the people of the land, whom God destroyed before them."

1 Chronicles 6:15: "And Jehozadak went into captivity, when the LORD carried away Judah and Jerusalem by the hand of Nebuchadnezzar."

1 Chronicles 7:23: "And when he went in to his wife, she conceived, and bare a son, and he called his name Beriah, because it went evil with his house."

1 Chronicles 10:3: "And the battle went sore against Saul, and the archers hit him, and he was wounded of the archers."

1 Chronicles 11:4: "And David and all Israel went to Jerusalem, which is Jebus; where the Jebusites were, the inhabitants of the land."

1 Chronicles 11:6: "And David said, Whosoever smiteth the Jebusites first shall be chief and captain. So Joab the son of Zeruiah went first up, and was chief."

1 Chronicles 11:15: "Now three of the thirty captains went down to the rock to David, into the cave of Adullam; and the host of the Philistines encamped in the valley of Rephaim."

1 Chronicles 11:22: "Benaiah the son of Jehoiada, the son of a valiant man of Kabzeel, who had done many acts; he slew two lionlike men of Moab: also he went down and slew a lion in a pit in a snowy day."

1 Chronicles 11:23: "And he slew an Egyptian, a man of great stature, five cubits high; and in the Egyptian's hand was a spear like a weaver's beam; and he went down to him with a staff, and plucked the spear out of the Egyptian's hand, and slew him with his own spear."

1 Chronicles 12:15: "These are they that went over Jordan in the first month, when it had overflowed all his banks; and they put to flight all them of the valleys, both toward the east, and toward the west."

1 Chronicles 12:17: "And David went out to meet them, and answered and said unto them, If ye be come peaceably unto me to help me, mine heart shall be knit unto you: but if ye be come to betray me to mine enemies, seeing there is no wrong in mine hands, the God of our fathers look thereon, and rebuke it."

1 Chronicles 12:20: "As he went to Ziklag, there fell to him of Manasseh, Adnah, and Jozabad, and Jediahel, and Michael, and Jozabad, and Elihu, and Zilthai, captains of the thousands that were of Manasseh."

1 Chronicles 12:33: "Of Zebulun, such as went forth to battle, expert in war, with all instruments of war, fifty thousand, which could keep rank: they were not of double heart."

1 Chronicles 12:36: "And of Asher, such as went forth to battle, expert in war, forty thousand."

1 Chronicles 13:6: "And David went up, and all Israel, to Baalah, that is, to Kirjathjearim, which belonged to Judah, to bring up thence the ark of God the LORD, that dwelleth between the cherubims, whose name is called on it."

1 Chronicles 14:8: "And when the Philistines heard that David was anointed king over all Israel, all the Philistines went up to seek David. And David heard of it, and went out against them."

1 Chronicles 14:17: "And the fame of David went out into all lands; and the LORD brought the fear of him upon all nations."

1 Chronicles 15:25: "So David, and the elders of Israel, and the captains over thousands, went to bring up the ark of the covenant of the LORD out of the house of Obededom with joy."

1 Chronicles 16:20: "And when they went from nation to nation, and from one kingdom to another people;"

1 Chronicles 17:21: "And what one nation in the earth is like thy people Israel, whom God went to redeem to be his own people, to make thee a name of greatness and terribleness, by driving out nations from before thy people whom thou hast redeemed out of Egypt?"

1 Chronicles 18:3: "And David smote Hadarezer king of Zobah unto Hamath, as he went to stablish his dominion by the river Euphrates."

1 Chronicles 18:6: "Then David put garrisons in Syriadamascus; and the Syrians became David's servants, and brought gifts. Thus the LORD preserved David whithersoever he went."

1 Chronicles 18:13: "And he put garrisons in Edom; and all the Edomites became David's servants. Thus the LORD preserved David whithersoever he went."

1 Chronicles 19:5: "Then there went certain, and told David how the men were served. And he sent to meet them: for the men were greatly ashamed. And the king said, Tarry at Jericho until your beards be grown, and then return."

1 Chronicles 19:16: "And when the Syrians saw that they were put to the worse before Israel, they sent messengers, and drew forth the Syrians that were beyond the river: and Shophach the captain of the host of Hadarezer went before them."

1 Chronicles 21:4: "Nevertheless the king's word prevailed against Joab. Wherefore Joab departed, and went throughout all Israel, and came to Jerusalem."

1 Chronicles 21:19: "And David went up at the saying of Gad, which he spake in the name of the LORD."

1 Chronicles 21:21: "And as David came to Ornan, Ornan looked and saw David, and went out of the threshingfloor, and bowed himself to David with his face to the ground."

1 Chronicles 27:1: "Now the children of Israel after their number, to wit, the chief fathers and captains of thousands and hundreds, and their officers that served the king in any matter of the courses, which came in and went out month by month throughout all the months of the year, of every course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 29:30: "With all his reign and his might, and the times that went over him, and over Israel, and over all the kingdoms of the countries."

2 Chronicles 1:3: "So Solomon, and all the congregation with him, went to the high place that was at Gibeon; for there was the tabernacle of the congregation of God, which Moses the servant of the LORD had made in the wilderness."

2 Chronicles 1:6: "And Solomon went up thither to the brasen altar before the LORD, which was at the tabernacle of the congregation, and offered a thousand burnt offerings upon it."

2 Chronicles 8:3: "And Solomon went to Hamathzobah, and prevailed against it."

2 Chronicles 8:17: "Then went Solomon to Eziongeber, and to Eloth, at the sea side in the land of Edom."

2 Chronicles 8:18: "And Hiram sent him by the hands of his servants ships, and servants that had knowledge of the sea; and they went with the servants of Solomon to Ophir, and took thence four hundred and fifty talents of gold, and brought them to king Solomon."

2 Chronicles 9:4: "And the meat of his table, and the sitting of his servants, and the attendance of his ministers, and their apparel; his cupbearers also, and their apparel; and his ascent by which he went up into the house of the LORD; there was no more spirit in her."

2 Chronicles 9:12: "And king Solomon gave to the queen of Sheba all her desire, whatsoever she asked, beside that which she had brought unto the king. So she turned, and went away to her own land, she and her servants."

2 Chronicles 9:15: "And king Solomon made two hundred targets of beaten gold: six hundred shekels of beaten gold went to one target."

2 Chronicles 9:16: "And three hundred shields made he of beaten gold: three hundred shekels of gold went to one shield. And the king put them in the house of the forest of Lebanon."

2 Chronicles 9:21: "For the king's ships went to Tarshish with the servants of Hiram: every three years once came the ships of Tarshish bringing gold, and silver, ivory, and apes, and peacocks."

2 Chronicles 10:1: "And Rehoboam went to Shechem: for to Shechem were all Israel come to make him king."

2 Chronicles 10:16: "And when all Israel saw that the king would not hearken unto them, the people



answered the king, saying, What portion have we in David? and we have none inheritance in the son of Jesse: every man to your tents, O Israel: and now, David, see to thine own house. So all Israel went to their tents."

2 Chronicles 12:12: "And when he humbled himself, the wrath of the LORD turned from him, that he would not destroy him altogether: and also in Judah things went well."

2 Chronicles 14:10: "Then Asa went out against him, and they set the battle in array in the valley of Zephathah at Mareshah."

2 Chronicles 15:2: "And he went out to meet Asa, and said unto him, Hear ye me, Asa, and all Judah and Benjamin; The LORD is with you, while ye be with him; and if ye seek him, he will be found of you; but if ye forsake him, he will forsake you."

2 Chronicles 15:5: "And in those times there was no peace to him that went out, nor to him that came in, but great vexations were upon all the inhabitants of the countries."

2 Chronicles 17:9: "And they taught in Judah, and had the book of the law of the LORD with them, and went about throughout all the cities of Judah, and taught the people."

2 Chronicles 18:2: "And after certain years he went down to Ahab to Samaria. And Ahab killed sheep and oxen for him in abundance, and for the people that he had with him, and persuaded him to go up with him to Ramothgilead."

2 Chronicles 18:12: "And the messenger that went to call Micaiah spake to him, saying, Behold, the words of the prophets declare good to the king with one assent; let thy word therefore, I pray thee, be like one of their's, and speak thou good."

2 Chronicles 18:23: "Then Zedekiah the son of Chenaanah came near, and smote Micaiah upon the cheek, and said, Which way went the Spirit of the LORD from me to speak unto thee?"

2 Chronicles 18:28: "So the king of Israel and Jehoshaphat the king of Judah went up to Ramothgilead."

2 Chronicles 18:29: "And the king of Israel said unto Jehoshaphat, I will disguise myself, and I will go to the battle; but put thou on thy robes. So the king of Israel disguised himself; and they went to the battle."

2 Chronicles 19:2: "And Jehu the son of Hanani the seer went out to meet him, and said to king Jehoshaphat, Shouldest thou help the ungodly, and love them that hate the LORD? therefore is wrath upon thee from before the LORD."

2 Chronicles 19:4: "And Jehoshaphat dwelt at Jerusalem: and he went out again through the people from Beersheba to mount Ephraim, and brought them back unto the LORD God of their fathers."

2 Chronicles 20:20: "And they rose early in the morning, and went forth into the wilderness of Tekoa: and as they went forth, Jehoshaphat stood and said, Hear me, O Judah, and ye inhabitants of Jerusalem; Believe in the LORD your God, so shall ye be established; believe his prophets, so shall ye prosper."

2 Chronicles 20:21: "And when he had consulted with the people, he appointed singers unto the LORD, and that should praise the beauty of holiness, as they went out before the army, and to say, Praise the LORD; for his mercy endureth for ever."

2 Chronicles 21:9: "Then Jehoram went forth with his princes, and all his chariots with him: and he rose up by night, and smote the Edomites which compassed him in, and the captains of the chariots."

2 Chronicles 22:5: "He walked also after their counsel, and went with Jehoram the son of Ahab king of Israel to war against Hazael king of Syria at Ramothgilead: and the Syrians smote Joram."

2 Chronicles 22:6: "And he returned to be healed in Jezreel because of the wounds which were given him at Ramah, when he fought with Hazael king of Syria. And Azariah the son of Jehoram king of Judah went down to see Jehoram the son of Ahab at Jezreel, because he was sick."

2 Chronicles 22:7: "And the destruction of Ahaziah was of God by coming to Joram: for when he was come, he went out with Jehoram against Jehu the son of Nimshi, whom the LORD had anointed to cut off the house of Ahab."

2 Chronicles 23:2: "And they went about in Judah, and gathered the Levites out of all the cities of Judah, and the chief of the fathers of Israel, and they came to Jerusalem."

2 Chronicles 23:17: "Then all the people went to the house of Baal, and brake it down, and brake his altars and his images in pieces, and slew Mattan the priest of Baal before the altars."

2 Chronicles 25:11: "And Amaziah strengthened himself, and led forth his people, and went to the valley of salt, and smote of the children of Seir ten thousand."

2 Chronicles 25:21: "So Joash the king of Israel went up; and they saw one another in the face, both he and Amaziah king of Judah, at Bethshemesh, which belongeth to Judah."

2 Chronicles 26:6: "And he went forth and warred against the Philistines, and brake down the wall of Gath, and the wall of Jabneh, and the wall of Ashdod, and built cities about Ashdod, and among the Philistines."

2 Chronicles 26:11: "Moreover Uzziah had an host of fighting men, that went out to war by bands, according to the number of their account by the hand of Jeiel the scribe and Maaseiah the ruler, under the hand of Hananiah, one of the king's captains."

2 Chronicles 26:16: "But when he was strong, his heart was lifted up to his destruction: for he transgressed against the LORD his God, and went into the temple of the LORD to burn incense upon the altar of incense."

2 Chronicles 26:17: "And Azariah the priest went in after him, and with him fourscore priests of the LORD, that were valiant men:"

2 Chronicles 28:9: "But a prophet of the LORD was there, whose name was Oded: and he went out before the host that came to Samaria, and said unto them, Behold, because the LORD God of your fathers was wroth with Judah, he hath delivered them into your hand, and ye have slain them in a rage that reacheth up unto heaven."

2 Chronicles 29:16: "And the priests went into the inner part of the house of the LORD, to cleanse it, and brought out all the uncleanness that they found in the temple of the LORD into the court of the house of the LORD. And the Levites took it, to carry it out abroad into the brook Kidron."

2 Chronicles 29:18: "Then they went in to Hezekiah the king, and said, We have cleansed all the house of the LORD, and the altar of burnt offering, with all the vessels thereof, and the shewbread table, with all the vessels thereof."

2 Chronicles 29:20: "Then Hezekiah the king rose early, and gathered the rulers of the city, and went up to the house of the LORD."

2 Chronicles 30:6: "So the posts went with the letters from the king and his princes throughout all Israel and Judah, and according to the commandment of the king, saying, Ye children of Israel, turn again unto the LORD God of Abraham, Isaac, and Israel, and he will return to the remnant of you, that are escaped out of the hand of the kings of Assyria."

2 Chronicles 31:1: "Now when all this was finished, all Israel that were present went out to the cities of Judah, and brake the images in pieces, and cut down the groves, and threw down the high places and the altars out of all Judah and Benjamin, in Ephraim also and Manasseh, until they had utterly destroyed them all. Then all the children of Israel returned, every man to his possession, into their own cities."

2 Chronicles 34:22: "And Hilkiah, and they that the king had appointed, went to Huldah the prophetess, the wife of Shallum the son of Tikvath, the son of Hasrah, keeper of the wardrobe; (now she dwelt in Jerusalem in the college:) and they spake to her to that effect."

2 Chronicles 34:30: "And the king went up into the house of the LORD, and all the men of Judah, and the inhabitants of Jerusalem, and the priests, and the Levites, and all the people, great and small: and he read in their ears all the words of the book of the covenant that was found in the house of the LORD."

2 Chronicles 35:20: "After all this, when Josiah had prepared the temple, Necho king of Egypt came up to fight against Charchemish by Euphrates: and Josiah went out against him."

Ezra 2:1: "Now these are the children of the province that went up out of the captivity, of those

which had been carried away, whom Nebuchadnezzar the king of Babylon had carried away unto Babylon, and came again unto Jerusalem and Judah, every one unto his city;"

Ezra 2:59: "And these were they which went up from Telmelah, Telharsa, Cherub, Addan, and Immer: but they could not shew their father's house, and their seed, whether they were of Israel:"

Ezra 4:23: "Now when the copy of king Artaxerxes' letter was read before Rehum, and Shimshai the scribe, and their companions, they went up in haste to Jerusalem unto the Jews, and made them to cease by force and power."

Ezra 5:8: "Be it known unto the king, that we went into the province of Judea, to the house of the great God, which is builded with great stones, and timber is laid in the walls, and this work goeth fast on, and prospereth in their hands."

Ezra 7:6: "This Ezra went up from Babylon; and he was a ready scribe in the law of Moses, which the LORD God of Israel had given: and the king granted him all his request, according to the hand of the LORD his God upon him."

Ezra 7:7: "And there went up some of the children of Israel, and of the priests, and the Levites, and the singers, and the porters, and the Nethinims, unto Jerusalem, in the seventh year of Artaxerxes the king."

Ezra 8:1: "These are now the chief of their fathers, and this is the genealogy of them that went up with me from Babylon, in the reign of Artaxerxes the king."

Ezra 10:6: "Then Ezra rose up from before the house of God, and went into the chamber of Johanan the son of Eliashib: and when he came thither, he did eat no bread, nor drink water: for he mourned because of the transgression of them that had been carried away."

Nehemiah 2:13: "And I went out by night by the gate of the valley, even before the dragon well, and to the dung port, and viewed the walls of Jerusalem, which were broken down, and the gates thereof were consumed with fire."

Nehemiah 2:14: "Then I went on to the gate of the fountain, and to the king's pool: but there was no place for the beast that was under me to pass."

Nehemiah 2:15: "Then went I up in the night by the brook, and viewed the wall, and turned back, and entered by the gate of the valley, and so returned."

Nehemiah 2:16: "And the rulers knew not whither I went, or what I did; neither had I as yet told it to the Jews, nor to the priests, nor to the nobles, nor to the rulers, nor to the rest that did the work."

Nehemiah 7:6: "These are the children of the province, that went up out of the captivity, of those that had been carried away, whom Nebuchadnezzar the king of Babylon had carried away, and came again to Jerusalem and to Judah, every one unto his city;"

Nehemiah 7:61: "And these were they which went up also from Telmelah, Telharesha, Cherub, Addon, and Immer: but they could not shew their father's house, nor their seed, whether they were of Israel."

Nehemiah 8:12: "And all the people went their way to eat, and to drink, and to send portions, and to make great mirth, because they had understood the words that were declared unto them."

Nehemiah 8:16: "So the people went forth, and brought them, and made themselves booths, every one upon the roof of his house, and in their courts, and in the courts of the house of God, and in the street of the water gate, and in the street of the gate of Ephraim."

Nehemiah 9:11: "And thou didst divide the sea before them, so that they went through the midst of the sea on the dry land; and their persecutors thou threwest into the deeps, as a stone into the mighty waters."

Nehemiah 9:24: "So the children went in and possessed the land, and thou subduedst before them the inhabitants of the land, the Canaanites, and gavest them into their hands, with their kings, and the people of the land, that they might do with them as they would."

Nehemiah 12:1: "Now these are the priests and the Levites that went up with Zerubbabel the son of Shealtiel, and Jeshua: Seraiah, Jeremiah, Ezra,"

Nehemiah 12:31: "Then I brought up the princes of Judah upon the wall, and appointed two great

companies of them that gave thanks, whereof one went on the right hand upon the wall toward the dung gate:"

Nehemiah 12:32: "And after them went Hoshaiiah, and half of the princes of Judah,"

Nehemiah 12:37: "And at the fountain gate, which was over against them, they went up by the stairs of the city of David, at the going up of the wall, above the house of David, even unto the water gate eastward."

Nehemiah 12:38: "And the other company of them that gave thanks went over against them, and I after them, and the half of the people upon the wall, from beyond the tower of the furnaces even unto the broad wall;"

Esther 2:14: "In the evening she went, and on the morrow she returned into the second house of the women, to the custody of Shaashgaz, the king's chamberlain, which kept the concubines: she came in unto the king no more, except the king delighted in her, and that she were called by name."

Esther 3:15: "The posts went out, being hastened by the king's commandment, and the decree was given in Shushan the palace. And the king and Haman sat down to drink; but the city Shushan was perplexed."

Esther 4:1: "When Mordecai perceived all that was done, Mordecai rent his clothes, and put on sackcloth with ashes, and went out into the midst of the city, and cried with a loud and a bitter cry;"

Esther 4:6: "So Hatach went forth to Mordecai unto the street of the city, which was before the king's gate."

Esther 4:17: "So Mordecai went his way, and did according to all that Esther had commanded him."

Esther 5:9: "Then went Haman forth that day joyful and with a glad heart: but when Haman saw Mordecai in the king's gate, that he stood not up, nor moved for him, he was full of indignation against Mordecai."

Esther 7:7: "And the king arising from the banquet of wine in his wrath went into the palace garden: and Haman stood up to make request for his life to Esther the queen; for he saw that there was evil determined against him by the king."

Esther 7:8: "Then the king returned out of the palace garden into the place of the banquet of wine; and Haman was fallen upon the bed whereon Esther was. Then said the king, Will he force the queen also before me in the house? As the word went out of king's mouth, they covered Haman's face."

Esther 8:14: "So the posts that rode upon mules and camels went out, being hastened and pressed on by the king's commandment. And the decree was given at Shushan the palace."

Esther 8:15: "And Mordecai went out from the presence of the king in royal apparel of blue and white, and with a great crown of gold, and with a garment of fine linen and purple: and the city of Shushan rejoiced and was glad."

Esther 9:4: "For Mordecai was great in the king's house, and his fame went out throughout all the provinces: for this man Mordecai waxed greater and greater."

Job 1:4: "And his sons went and feasted in their houses, every one his day; and sent and called for their three sisters to eat and to drink with them."

Job 1:12: "And the LORD said unto Satan, Behold, all that he hath is in thy power; only upon himself put not forth thine hand. So Satan went forth from the presence of the LORD."

Job 2:7: "So went Satan forth from the presence of the LORD, and smote Job with sore boils from the sole of his foot unto his crown."

Job 18:20: "They that come after him shall be astonished at his day, as they that went before were affrighted."

Job 29:7: "When I went out to the gate through the city, when I prepared my seat in the street!"

Job 30:28: "I went mourning without the sun: I stood up, and I cried in the congregation."

Job 31:34: "Did I fear a great multitude, or did the contempt of families terrify me, that I kept silence, and went not out of the door?"

Job 42:9: "So Eliphaz the Temanite and Bildad the Shuhite and Zophar the Naamathite went, and

did according as the LORD commanded them: the LORD also accepted Job."

Psalms 18:8: "There went up a smoke out of his nostrils, and fire out of his mouth devoured: coals were kindled by it."

Psalms 42:4: "When I remember these things, I pour out my soul in me: for I had gone with the multitude, I went with them to the house of God, with the voice of joy and praise, with a multitude that kept holyday."

Psalms 66:6: "He turned the sea into dry land: they went through the flood on foot: there did we rejoice in him."

Psalms 66:12: "Thou hast caused men to ride over our heads; we went through fire and through water: but thou broughtest us out into a wealthy place."

Psalms 68:25: "The singers went before, the players on instruments followed after; among them were the damsels playing with timbrels."

Psalms 73:17: "Until I went into the sanctuary of God; then understood I their end."

Psalms 77:17: "The clouds poured out water: the skies sent out a sound: thine arrows also went abroad."

Psalms 81:5: "This he ordained in Joseph for a testimony, when he went out through the land of Egypt: where I heard a language that I understood not."

Psalms 105:13: "When they went from one nation to another, from one kingdom to another people;"

Psalms 106:32: "They angered him also at the waters of strife, so that it went ill with Moses for their sakes:"

Psalms 106:39: "Thus were they defiled with their own works, and went a whoring with their own inventions."

Psalms 114:1: "When Israel went out of Egypt, the house of Jacob from a people of strange language;"

Psalms 119:67: "Before I was afflicted I went astray: but now have I kept thy word."

Psalms 133:2: "It is like the precious ointment upon the head, that ran down upon the beard, even Aaron's beard: that went down to the skirts of his garments;"

Proverbs 7:8: "Passing through the street near her corner; and he went the way to her house,"

Proverbs 24:30: "I went by the field of the slothful, and by the vineyard of the man void of understanding;"

Ecclesiastes 2:20: "Therefore I went about to cause my heart to despair of all the labour which I took under the sun."

Song of Solomon 5:7: "The watchmen that went about the city found me, they smote me, they wounded me; the keepers of the walls took away my veil from me."

Song of Solomon 6:11: "I went down into the garden of nuts to see the fruits of the valley, and to see whether the vine flourished and the pomegranates budded."

Isaiah 7:1: "And it came to pass in the days of Ahaz the son of Jotham, the son of Uzziah, king of Judah, that Rezin the king of Syria, and Pekah the son of Remaliah, king of Israel, went up toward Jerusalem to war against it, but could not prevail against it."

Isaiah 8:3: "And I went unto the prophetess; and she conceived, and bare a son. Then said the LORD to me, Call his name Mahershalalhashbaz."

Isaiah 37:1: "And it came to pass, when king Hezekiah heard it, that he rent his clothes, and covered himself with sackcloth, and went into the house of the LORD."

Isaiah 37:14: "And Hezekiah received the letter from the hand of the messengers, and read it: and Hezekiah went up unto the house of the LORD, and spread it before the LORD."

Isaiah 37:36: "Then the angel of the LORD went forth, and smote in the camp of the Assyrians a hundred and fourscore and five thousand: and when they arose early in the morning, behold, they were all dead corpses."

Isaiah 37:37: "So Sennacherib king of Assyria departed, and went and returned, and dwelt at Nineveh."

Isaiah 48:3: "I have declared the former things from the beginning; and they went forth out of my mouth, and I shewed them; I did them suddenly, and they came to pass."

Isaiah 51:23: "But I will put it into the hand of them that afflict thee; which have said to thy soul, Bow down, that we may go over: and thou hast laid thy body as the ground, and as the street, to them that went over."

Isaiah 52:4: "For thus saith the Lord GOD, My people went down aforetime into Egypt to sojourn there; and the Assyrian oppressed them without cause."

Isaiah 57:17: "For the iniquity of his covetousness was I wroth, and smote him: I hid me, and was wroth, and he went on frowardly in the way of his heart."

Isaiah 60:15: "Whereas thou has been forsaken and hated, so that no man went through thee, I will make thee an eternal excellency, a joy of many generations."

Jeremiah 3:8: "And I saw, when for all the causes whereby backsliding Israel committed adultery I had put her away, and given her a bill of divorce; yet her treacherous sister Judah feared not, but went and played the harlot also."

Jeremiah 7:24: "But they hearkened not, nor inclined their ear, but walked in the counsels and in the imagination of their evil heart, and went backward, and not forward."

Jeremiah 11:10: "They are turned back to the iniquities of their forefathers, which refused to hear my words; and they went after other gods to serve them: the house of Israel and the house of Judah have broken my covenant which I made with their fathers."

Jeremiah 13:5: "So I went, and hid it by Euphrates, as the LORD commanded me."

Jeremiah 13:7: "Then I went to Euphrates, and digged, and took the girdle from the place where I had hid it: and, behold, the girdle was marred, it was profitable for nothing."

Jeremiah 18:3: "Then I went down to the potter's house, and, behold, he wrought a work on the wheels."

Jeremiah 22:11: "For thus saith the LORD touching Shallum the son of Josiah king of Judah, which reigned instead of Josiah his father, which went forth out of this place; He shall not return thither any more:"

Jeremiah 26:21: "And when Jehoiakim the king, with all his mighty men, and all the princes, heard his words, the king sought to put him to death: but when Urijah heard it, he was afraid, and fled, and went into Egypt;"

Jeremiah 28:4: "And I will bring again to this place Jeconiah the son of Jehoiakim king of Judah, with all the captives of Judah, that went into Babylon, saith the LORD: for I will break the yoke of the king of Babylon."

Jeremiah 28:11: "And Hananiah spake in the presence of all the people, saying, Thus saith the LORD; Even so will I break the yoke of Nebuchadnezzar king of Babylon from the neck of all nations within the space of two full years. And the prophet Jeremiah went his way."

Jeremiah 31:2: "Thus saith the LORD, The people which were left of the sword found grace in the wilderness; even Israel, when I went to cause him to rest."

Jeremiah 36:12: "Then he went down into the king's house, into the scribe's chamber: and, lo, all the princes sat there, even Elishama the scribe, and Delaiah the son of Shemaiah, and Elnathan the son of Achbor, and Gemariah the son of Shaphan, and Zedekiah the son of Hananiah, and all the princes."

Jeremiah 36:20: "And they went in to the king into the court, but they laid up the roll in the chamber of Elishama the scribe, and told all the words in the ears of the king."

Jeremiah 37:4: "Now Jeremiah came in and went out among the people: for they had not put him into prison."

Jeremiah 37:12: "Then Jeremiah went forth out of Jerusalem to go into the land of Benjamin, to separate himself thence in the midst of the people."

Jeremiah 38:8: "Ebedmelech went forth out of the king's house, and spake to the king saying,"

Jeremiah 38:11: "So Ebedmelech took the men with him, and went into the house of the king under

the treasury, and took thence old cast clouts and old rotten rags, and let them down by cords into the dungeon to Jeremiah."

Jeremiah 39:4: "And it came to pass, that when Zedekiah the king of Judah saw them, and all the men of war, then they fled, and went forth out of the city by night, by the way of the king's garden, by the gate betwixt the two walls: and he went out the way of the plain."

Jeremiah 40:6: "Then went Jeremiah unto Gedaliah the son of Ahikam to Mizpah; and dwelt with him among the people that were left in the land."

Jeremiah 41:6: "And Ishmael the son of Nethaniah went forth from Mizpah to meet them, weeping all along as he went: and it came to pass, as he met them, he said unto them, Come to Gedaliah the son of Ahikam."

Jeremiah 41:12: "Then they took all the men, and went to fight with Ishmael the son of Nethaniah, and found him by the great waters that are in Gibeon."

Jeremiah 41:14: "So all the people that Ishmael had carried away captive from Mizpah cast about and returned, and went unto Johanan the son of Kareah."

Jeremiah 41:15: "But Ishmael the son of Nethaniah escaped from Johanan with eight men, and went to the Ammonites."

Jeremiah 44:3: "Because of their wickedness which they have committed to provoke me to anger, in that they went to burn incense, and to serve other gods, whom they knew not, neither they, ye, nor your fathers."

Jeremiah 51:59: "The word which Jeremiah the prophet commanded Seraiah the son of Neriah, the son of Maaseiah, when he went with Zedekiah the king of Judah into Babylon in the fourth year of his reign. And this Seraiah was a quiet prince."

Jeremiah 52:7: "Then the city was broken up, and all the men of war fled, and went forth out of the city by night by the way of the gate between the two walls, which was by the king's garden; (now the Chaldeans were by the city round about:) and they went by the way of the plain."

Ezekiel 1:9: "Their wings were joined one to another; they turned not when they went; they went every one straight forward."

Ezekiel 1:12: "And they went every one straight forward: whither the spirit was to go, they went; and they turned not when they went."

Ezekiel 1:13: "As for the likeness of the living creatures, their appearance was like burning coals of fire, and like the appearance of lamps: it went up and down among the living creatures; and the fire was bright, and out of the fire went forth lightning."

Ezekiel 1:17: "When they went, they went upon their four sides: and they turned not when they went."

Ezekiel 1:19: "And when the living creatures went, the wheels went by them: and when the living creatures were lifted up from the earth, the wheels were lifted up."

Ezekiel 1:20: "Whithersoever the spirit was to go, they went, thither was their spirit to go; and the wheels were lifted up over against them: for the spirit of the living creature was in the wheels."

Ezekiel 1:21: "When those went, these went; and when those stood, these stood; and when those were lifted up from the earth, the wheels were lifted up over against them: for the spirit of the living creature was in the wheels."

Ezekiel 1:24: "And when they went, I heard the noise of their wings, like the noise of great waters, as the voice of the Almighty, the voice of speech, as the noise of an host: when they stood, they let down their wings."

Ezekiel 3:14: "So the spirit lifted me up, and took me away, and I went in bitterness, in the heat of my spirit; but the hand of the LORD was strong upon me."

Ezekiel 3:23: "Then I arose, and went forth into the plain: and, behold, the glory of the LORD stood there, as the glory which I saw by the river of Chebar: and I fell on my face."

Ezekiel 8:10: "So I went in and saw; and behold every form of creeping things, and abominable beasts, and all the idols of the house of Israel, pourtrayed upon the wall round about."

Ezekiel 8:11: "And there stood before them seventy men of the ancients of the house of Israel, and in the midst of them stood Jaazaniah the son of Shaphan, with every man his censer in his hand; and a thick cloud of incense went up."

Ezekiel 9:2: "And, behold, six men came from the way of the higher gate, which lieth toward the north, and every man a slaughter weapon in his hand; and one man among them was clothed with linen, with a writer's inkhorn by his side: and they went in, and stood beside the brasen altar."

Ezekiel 9:7: "And he said unto them, Defile the house, and fill the courts with the slain: go ye forth. And they went forth, and slew in the city."

Ezekiel 10:2: "And he spake unto the man clothed with linen, and said, Go in between the wheels, even under the cherub, and fill thine hand with coals of fire from between the cherubims, and scatter them over the city. And he went in in my sight."

Ezekiel 10:3: "Now the cherubims stood on the right side of the house, when the man went in; and the cloud filled the inner court."

Ezekiel 10:4: "Then the glory of the LORD went up from the cherub, and stood over the threshold of the house; and the house was filled with the cloud, and the court was full of the brightness of the LORD's glory."

Ezekiel 10:6: "And it came to pass, that when he had commanded the man clothed with linen, saying, Take fire from between the wheels, from between the cherubims; then he went in, and stood beside the wheels."

Ezekiel 10:7: "And one cherub stretched forth his hand from between the cherubims unto the fire that was between the cherubims, and took thereof, and put it into the hands of him that was clothed with linen: who took it, and went out."

Ezekiel 10:11: "When they went, they went upon their four sides; they turned not as they went, but to the place whither the head looked they followed it; they turned not as they went."

Ezekiel 10:16: "And when the cherubims went, the wheels went by them: and when the cherubims lifted up their wings to mount up from the earth, the same wheels also turned not from beside them."

Ezekiel 10:19: "And the cherubims lifted up their wings, and mounted up from the earth in my sight: when they went out, the wheels also were beside them, and every one stood at the door of the east gate of the LORD's house; and the glory of the God of Israel was over them above."

Ezekiel 10:22: "And the likeness of their faces was the same faces which I saw by the river of Chebar, their appearances and themselves: they went every one straight forward."

Ezekiel 11:23: "And the glory of the LORD went up from the midst of the city, and stood upon the mountain which is on the east side of the city."

Ezekiel 11:24: "Afterwards the spirit took me up, and brought me in a vision by the Spirit of God into Chaldea, to them of the captivity. So the vision that I had seen went up from me."

Ezekiel 16:14: "And thy renown went forth among the heathen for thy beauty: for it was perfect through my comeliness, which I had put upon thee, saith the Lord GOD."

Ezekiel 19:6: "And he went up and down among the lions, he became a young lion, and learned to catch the prey, and devoured men."

Ezekiel 20:16: "Because they despised my judgments, and walked not in my statutes, but polluted my sabbaths: for their heart went after their idols."

Ezekiel 23:44: "Yet they went in unto her, as they go in unto a woman that playeth the harlot: so went they in unto Aholah and unto Aholibah, the lewd women."

Ezekiel 24:12: "She hath wearied herself with lies, and her great scum went not forth out of her: her scum shall be in the fire."

Ezekiel 25:3: "And say unto the Ammonites, Hear the word of the Lord GOD; Thus saith the Lord GOD; Because thou saidst, Aha, against my sanctuary, when it was profaned; and against the land of Israel, when it was desolate; and against the house of Judah, when they went into captivity;"

Ezekiel 27:33: "When thy wares went forth out of the seas, thou filledst many people; thou didst



enrich the kings of the earth with the multitude of thy riches and of thy merchandise."

Ezekiel 31:15: "Thus saith the Lord GOD; In the day when he went down to the grave I caused a mourning: I covered the deep for him, and I restrained the floods thereof, and the great waters were stayed: and I caused Lebanon to mourn for him, and all the trees of the field fainted for him."

Ezekiel 31:17: "They also went down into hell with him unto them that be slain with the sword; and they that were his arm, that dwelt under his shadow in the midst of the heathen."

Ezekiel 36:20: "And when they entered unto the heathen, whither they went, they profaned my holy name, when they said to them, These are the people of the LORD, and are gone forth out of his land."

Ezekiel 36:21: "But I had pity for mine holy name, which the house of Israel had profaned among the heathen, whither they went."

Ezekiel 36:22: "Therefore say unto the house of Israel, thus saith the Lord GOD; I do not this for your sakes, O house of Israel, but for mine holy name's sake, which ye have profaned among the heathen, whither ye went."

Ezekiel 39:23: "And the heathen shall know that the house of Israel went into captivity for their iniquity: because they trespassed against me, therefore hid I my face from them, and gave them into the hand of their enemies: so fell they all by the sword."

Ezekiel 40:6: "Then came he unto the gate which looketh toward the east, and went up the stairs thereof, and measured the threshold of the gate, which was one reed broad; and the other threshold of the gate, which was one reed broad."

Ezekiel 40:22: "And their windows, and their arches, and their palm trees, were after the measure of the gate that looketh toward the east; and they went up unto it by seven steps; and the arches thereof were before them."

Ezekiel 40:49: "The length of the porch was twenty cubits, and the breadth eleven cubits, and he brought me by the steps whereby they went up to it: and there were pillars by the posts, one on this side, and another on that side."

Ezekiel 41:3: "Then went he inward, and measured the post of the door, two cubits; and the door, six cubits; and the breadth of the door, seven cubits."

Ezekiel 41:7: "And there was an enlarging, and a winding about still upward to the side chambers: for the winding about of the house went still upward round about the house: therefore the breadth of the house was still upward, and so increased from the lowest chamber to the highest by the midst."

Ezekiel 44:10: "And the Levites that are gone away far from me, when Israel went astray, which went astray away from me after their idols; they shall even bear their iniquity."

Ezekiel 44:15: "But the priests the Levites, the sons of Zadok, that kept the charge of my sanctuary when the children of Israel went astray from me, they shall come near to me to minister unto me, and they shall stand before me to offer unto me the fat and the blood, saith the Lord GOD:"

Ezekiel 47:3: "And when the man that had the line in his hand went forth eastward, he measured a thousand cubits, and he brought me through the waters; the waters were to the ankles."

Ezekiel 48:11: "It shall be for the priests that are sanctified of the sons of Zadok; which have kept my charge, which went not astray when the children of Israel went astray, as the Levites went astray."

Daniel 2:13: "And the decree went forth that the wise men should be slain; and they sought Daniel and his fellows to be slain."

Daniel 2:16: "Then Daniel went in, and desired of the king that he would give him time, and that he would shew the king the interpretation."

Daniel 2:17: "Then Daniel went to his house, and made the thing known to Hananiah, Mishael, and Azariah, his companions:"

Daniel 2:24: "Therefore Daniel went in unto Arioch, whom the king had ordained to destroy the wise men of Babylon: he went and said thus unto him; Destroy not the wise men of Babylon: bring me in before the king, and I will shew unto the king the interpretation."

Daniel 6:10: "Now when Daniel knew that the writing was signed, he went into his house; and his windows being open in his chamber toward Jerusalem, he kneeled upon his knees three times a day, and prayed, and gave thanks before his God, as he did aforetime."

Daniel 6:18: "Then the king went to his palace, and passed the night fasting: neither were instruments of musick brought before him: and his sleep went from him."

Daniel 6:19: "Then the king arose very early in the morning, and went in haste unto the den of lions."

Hosea 1:3: "So he went and took Gomer the daughter of Diblaim; which conceived, and bare him a son."

Hosea 2:13: "And I will visit upon her the days of Baalim, wherein she burned incense to them, and she decked herself with her earrings and her jewels, and she went after her lovers, and forgat me, saith the LORD."

Hosea 5:13: "When Ephraim saw his sickness, and Judah saw his wound, then went Ephraim to the Assyrian, and sent to king Jareb: yet could he not heal you, nor cure you of your wound."

Hosea 9:10: "I found Israel like grapes in the wilderness; I saw your fathers as the firstripe in the fig tree at her first time: but they went to Baalpeor, and separated themselves unto that shame; and their abominations were according as they loved."

Hosea 11:2: "As they called them, so they went from them: they sacrificed unto Baalim, and burned incense to graven images."

Amos 5:3: "For thus saith the Lord GOD; The city that went out by a thousand shall leave an hundred, and that which went forth by an hundred shall leave ten, to the house of Israel."

Amos 5:19: "As if a man did flee from a lion, and a bear met him; or went into the house, and leaned his hand on the wall, and a serpent bit him."

Jonah 1:3: "But Jonah rose up to flee unto Tarshish from the presence of the LORD, and went down to Joppa; and he found a ship going to Tarshish: so he paid the fare thereof, and went down into it, to go with them unto Tarshish from the presence of the LORD."

Jonah 2:6: "I went down to the bottoms of the mountains; the earth with her bars was about me for ever: yet hast thou brought up my life from corruption, O LORD my God."

Jonah 3:3: "So Jonah arose, and went unto Nineveh, according to the word of the LORD. Now Nineveh was an exceeding great city of three days' journey."

Jonah 4:5: "So Jonah went out of the city, and sat on the east side of the city, and there made him a booth, and sat under it in the shadow, till he might see what would become of the city."

Nahum 3:10: "Yet was she carried away, she went into captivity: her young children also were dashed in pieces at the top of all the streets: and they cast lots for her honourable men, and all her great men were bound in chains."

Habakkuk 3:5: "Before him went the pestilence, and burning coals went forth at his feet."

Habakkuk 3:11: "The sun and moon stood still in their habitation: at the light of thine arrows they went, and at the shining of thy glittering spear."

Zechariah 2:3: "And, behold, the angel that talked with me went forth, and another angel went out to meet him,"

Zechariah 5:5: "Then the angel that talked with me went forth, and said unto me, Lift up now thine eyes, and see what is this that goeth forth."

Zechariah 6:7: "And the bay went forth, and sought to go that they might walk to and fro through the earth: and he said, Get you hence, walk to and fro through the earth. So they walked to and fro through the earth."

Zechariah 8:10: "For before these days there was no hire for man, nor any hire for beast; neither was there any peace to him that went out or came in because of the affliction: for I set all men every one against his neighbour."

Zechariah 10:2: "For the idols have spoken vanity, and the diviners have seen a lie, and have told false dreams; they comfort in vain: therefore they went their way as a flock, they were troubled,

because there was no shepherd."

Matthew 2:9: "When they had heard the king, they departed; and, lo, the star, which they saw in the east, went before them, till it came and stood over where the young child was."

Matthew 3:5: "Then went out to him Jerusalem, and all Judaea, and all the region round about Jordan,"

Matthew 3:16: "And Jesus, when he was baptized, went up straightway out of the water: and, lo, the heavens were opened unto him, and he saw the Spirit of God descending like a dove, and lighting upon him:"

Matthew 4:23: "And Jesus went about all Galilee, teaching in their synagogues, and preaching the gospel of the kingdom, and healing all manner of sickness and all manner of disease among the people."

Matthew 4:24: "And his fame went throughout all Syria: and they brought unto him all sick people that were taken with divers diseases and torments, and those which were possessed with devils, and those which were lunatick, and those that had the palsy; and he healed them."

Matthew 5:1: "And seeing the multitudes, he went up into a mountain: and when he was set, his disciples came unto him:"

Matthew 8:32: "And he said unto them, Go. And when they were come out, they went into the herd of swine: and, behold, the whole herd of swine ran violently down a steep place into the sea, and perished in the waters."

Matthew 8:33: "And they that kept them fled, and went their ways into the city, and told every thing, and what was befallen to the possessed of the devils."

Matthew 9:25: "But when the people were put forth, he went in, and took her by the hand, and the maid arose."

Matthew 9:26: "And the fame hereof went abroad into all that land."

Matthew 9:32: "As they went out, behold, they brought to him a dumb man possessed with a devil."

Matthew 9:35: "And Jesus went about all the cities and villages, teaching in their synagogues, and preaching the gospel of the kingdom, and healing every sickness and every disease among the people."

Matthew 11:7: "And as they departed, Jesus began to say unto the multitudes concerning John, What went ye out into the wilderness to see? A reed shaken with the wind?"

Matthew 11:8: "But what went ye out for to see? A man clothed in soft raiment? behold, they that wear soft clothing are in kings' houses."

Matthew 11:9: "But what went ye out for to see? A prophet? yea, I say unto you, and more than a prophet."

Matthew 12:1: "At that time Jesus went on the sabbath day through the corn; and his disciples were an hungred, and began to pluck the ears of corn and to eat."

Matthew 12:9: "And when he was departed thence, he went into their synagogue:"

Matthew 12:14: "Then the Pharisees went out, and held a council against him, how they might destroy him."

Matthew 13:1: "The same day went Jesus out of the house, and sat by the sea side."

Matthew 13:2: "And great multitudes were gathered together unto him, so that he went into a ship, and sat; and the whole multitude stood on the shore."

Matthew 13:3: "And he spake many things unto them in parables, saying, Behold, a sower went forth to sow;"

Matthew 13:25: "But while men slept, his enemy came and sowed tares among the wheat, and went his way."

Matthew 13:36: "Then Jesus sent the multitude away, and went into the house: and his disciples came unto him, saying, Declare unto us the parable of the tares of the field."

Matthew 13:46: "Who, when he had found one pearl of great price, went and sold all that he had, and bought it."

Matthew 14:12: "And his disciples came, and took up the body, and buried it, and went and told Jesus."

Matthew 14:14: "And Jesus went forth, and saw a great multitude, and was moved with compassion toward them, and he healed their sick."

Matthew 14:23: "And when he had sent the multitudes away, he went up into a mountain apart to pray: and when the evening was come, he was there alone."

Matthew 14:25: "And in the fourth watch of the night Jesus went unto them, walking on the sea."

Matthew 15:21: "Then Jesus went thence, and departed into the coasts of Tyre and Sidon."

Matthew 15:29: "And Jesus departed from thence, and came nigh unto the sea of Galilee; and went up into a mountain, and sat down there."

Matthew 18:13: "And if so be that he find it, verily I say unto you, he rejoiceth more of that sheep, than of the ninety and nine which went not astray."

Matthew 18:28: "But the same servant went out, and found one of his fellowservants, which owed him an hundred pence: and he laid hands on him, and took him by the throat, saying, Pay me that thou owest."

Matthew 18:30: "And he would not: but went and cast him into prison, till he should pay the debt."

Matthew 19:22: "But when the young man heard that saying, he went away sorrowful: for he had great possessions."

Matthew 20:1: "For the kingdom of heaven is like unto a man that is an householder, which went out early in the morning to hire labourers into his vineyard."

Matthew 20:3: "And he went out about the third hour, and saw others standing idle in the marketplace,"

Matthew 20:4: "And said unto them; Go ye also into the vineyard, and whatsoever is right I will give you. And they went their way."

Matthew 20:5: "Again he went out about the sixth and ninth hour, and did likewise."

Matthew 20:6: "And about the eleventh hour he went out, and found others standing idle, and saith unto them, Why stand ye here all the day idle?"

Matthew 21:6: "And the disciples went, and did as Jesus commanded them,"

Matthew 21:9: "And the multitudes that went before, and that followed, cried, saying, Hosanna to the son of David: Blessed is he that cometh in the name of the Lord; Hosanna in the highest."

Matthew 21:12: "And Jesus went into the temple of God, and cast out all them that sold and bought in the temple, and overthrew the tables of the moneychangers, and the seats of them that sold doves,"

Matthew 21:17: "And he left them, and went out of the city into Bethany; and he lodged there."

Matthew 21:29: "He answered and said, I will not: but afterward he repented, and went."

Matthew 21:30: "And he came to the second, and said likewise. And he answered and said, I go, sir: and went not."

Matthew 21:33: "Hear another parable: There was a certain householder, which planted a vineyard, and hedged it round about, and digged a winepress in it, and built a tower, and let it out to husbandmen, and went into a far country:"

Matthew 22:5: "But they made light of it, and went their ways, one to his farm, another to his merchandise:"

Matthew 22:10: "So those servants went out into the highways, and gathered together all as many as they found, both bad and good: and the wedding was furnished with guests."

Matthew 22:15: "Then went the Pharisees, and took counsel how they might entangle him in his talk."

Matthew 22:22: "When they had heard these words, they marvelled, and left him, and went their way."

Matthew 24:1: "And Jesus went out, and departed from the temple: and his disciples came to him for to shew him the buildings of the temple."

Matthew 25:1: "Then shall the kingdom of heaven be likened unto ten virgins, which took their lamps, and went forth to meet the bridegroom."

Matthew 25:10: "And while they went to buy, the bridegroom came; and they that were ready went in with him to the marriage: and the door was shut."

Matthew 25:16: "Then he that had received the five talents went and traded with the same, and made them other five talents."

Matthew 25:18: "But he that had received one went and digged in the earth, and hid his lord's money."

Matthew 25:25: "And I was afraid, and went and hid thy talent in the earth: lo, there thou hast that is thine."

Matthew 26:14: "Then one of the twelve, called Judas Iscariot, went unto the chief priests,"

Matthew 26:30: "And when they had sung an hymn, they went out into the mount of Olives."

Matthew 26:39: "And he went a little farther, and fell on his face, and prayed, saying, O my Father, if it be possible, let this cup pass from me: nevertheless not as I will, but as thou wilt."

Matthew 26:42: "He went away again the second time, and prayed, saying, O my Father, if this cup may not pass away from me, except I drink it, thy will be done."

Matthew 26:44: "And he left them, and went away again, and prayed the third time, saying the same words."

Matthew 26:58: "But Peter followed him afar off unto the high priest's palace, and went in, and sat with the servants, to see the end."

Matthew 26:75: "And Peter remembered the word of Jesus, which said unto him, Before the cock crow, thou shalt deny me thrice. And he went out, and wept bitterly."

Matthew 27:5: "And he cast down the pieces of silver in the temple, and departed, and went and hanged himself."

Matthew 27:53: "And came out of the graves after his resurrection, and went into the holy city, and appeared unto many."

Matthew 27:58: "He went to Pilate, and begged the body of Jesus. Then Pilate commanded the body to be delivered."

Matthew 27:66: "So they went, and made the sepulchre sure, sealing the stone, and setting a watch."

Matthew 28:9: "And as they went to tell his disciples, behold, Jesus met them, saying, All hail. And they came and held him by the feet, and worshipped him."

Matthew 28:16: "Then the eleven disciples went away into Galilee, into a mountain where Jesus had appointed them."

Mark 1:5: "And there went out unto him all the land of Judaea, and they of Jerusalem, and were all baptized of him in the river of Jordan, confessing their sins."

Mark 1:20: "And straightway he called them: and they left their father Zebedee in the ship with the hired servants, and went after him."

Mark 1:21: "And they went into Capernaum; and straightway on the sabbath day he entered into the synagogue, and taught."

Mark 1:35: "And in the morning, rising up a great while before day, he went out, and departed into a solitary place, and there prayed."

Mark 1:45: "But he went out, and began to publish it much, and to blaze abroad the matter, insomuch that Jesus could no more openly enter into the city, but was without in desert places: and they came to him from every quarter."

Mark 2:12: "And immediately he arose, took up the bed, and went forth before them all; insomuch that they were all amazed, and glorified God, saying, We never saw it on this fashion."

Mark 2:13: "And he went forth again by the sea side; and all the multitude resorted unto him, and he taught them."

Mark 2:23: "And it came to pass, that he went through the corn fields on the sabbath day; and his disciples began, as they went, to pluck the ears of corn."

Mark 2:26: "How he went into the house of God in the days of Abiathar the high priest, and did eat the shewbread, which is not lawful to eat but for the priests, and gave also to them which were with him?"

Mark 3:6: "And the Pharisees went forth, and straightway took counsel with the Herodians against him, how they might destroy him."

Mark 3:19: "And Judas Iscariot, which also betrayed him: and they went into an house."

Mark 3:21: "And when his friends heard of it, they went out to lay hold on him: for they said, He is beside himself."

Mark 4:3: "Hearken; Behold, there went out a sower to sow:"

Mark 5:13: "And forthwith Jesus gave them leave. And the unclean spirits went out, and entered into the swine: and the herd ran violently down a steep place into the sea, (they were about two thousand;) and were choked in the sea."

Mark 5:14: "And they that fed the swine fled, and told it in the city, and in the country. And they went out to see what it was that was done."

Mark 5:24: "And Jesus went with him; and much people followed him, and thronged him."

Mark 6:1: "And he went out from thence, and came into his own country; and his disciples follow him."

Mark 6:6: "And he marvelled because of their unbelief. And he went round about the villages, teaching."

Mark 6:12: "And they went out, and preached that men should repent."

Mark 6:24: "And she went forth, and said unto her mother, What shall I ask? And she said, The head of John the Baptist."

Mark 6:27: "And immediately the king sent an executioner, and commanded his head to be brought: and he went and beheaded him in the prison,"

Mark 6:51: "And he went up unto them into the ship; and the wind ceased: and they were sore amazed in themselves beyond measure, and wondered."

Mark 7:24: "And from thence he arose, and went into the borders of Tyre and Sidon, and entered into an house, and would have no man know it: but he could not be hid."

Mark 8:27: "And Jesus went out, and his disciples, into the towns of Caesarea Philippi: and by the way he asked his disciples, saying unto them, Whom do men say that I am?"

Mark 10:22: "And he was sad at that saying, and went away grieved: for he had great possessions."

Mark 10:32: "And they were in the way going up to Jerusalem; and Jesus went before them: and they were amazed; and as they followed, they were afraid. And he took again the twelve, and began to tell them what things should happen unto him,"

Mark 10:46: "And they came to Jericho: and as he went out of Jericho with his disciples and a great number of people, blind Bartimaeus, the son of Timaeus, sat by the highway side begging."

Mark 11:4: "And they went their way, and found the colt tied by the door without in a place where two ways met; and they loose him."

Mark 11:9: "And they that went before, and they that followed, cried, saying, Hosanna; Blessed is he that cometh in the name of the Lord:"

Mark 11:11: "And Jesus entered into Jerusalem, and into the temple: and when he had looked round about upon all things, and now the eventide was come, he went out unto Bethany with the twelve."

Mark 11:15: "And they come to Jerusalem: and Jesus went into the temple, and began to cast out them that sold and bought in the temple, and overthrew the tables of the moneychangers, and the seats of them that sold doves;"

Mark 11:19: "And when even was come, he went out of the city."

Mark 12:1: "And he began to speak unto them by parables. A certain man planted a vineyard, and set an hedge about it, and digged a place for the winefat, and built a tower, and let it out to husbandmen, and went into a far country."

Mark 12:12: "And they sought to lay hold on him, but feared the people: for they knew that he had

spoken the parable against them: and they left him, and went their way."

Mark 13:1: "And as he went out of the temple, one of his disciples saith unto him, Master, see what manner of stones and what buildings are here!"

Mark 14:10: "And Judas Iscariot, one of the twelve, went unto the chief priests, to betray him unto them."

Mark 14:16: "And his disciples went forth, and came into the city, and found as he had said unto them: and they made ready the passover."

Mark 14:26: "And when they had sung an hymn, they went out into the mount of Olives."

Mark 14:35: "And he went forward a little, and fell on the ground, and prayed that, if it were possible, the hour might pass from him."

Mark 14:39: "And again he went away, and prayed, and spake the same words."

Mark 14:68: "But he denied, saying, I know not, neither understand I what thou sayest. And he went out into the porch; and the cock crew."

Mark 15:43: "Joseph of Arimathaea, an honourable counsellor, which also waited for the kingdom of God, came, and went in boldly unto Pilate, and craved the body of Jesus."

Mark 16:8: "And they went out quickly, and fled from the sepulchre; for they trembled and were amazed: neither said they any thing to any man; for they were afraid."

Mark 16:10: "And she went and told them that had been with him, as they mourned and wept."

Mark 16:12: "After that he appeared in another form unto two of them, as they walked, and went into the country."

Mark 16:13: "And they went and told it unto the residue: neither believed they them."

Mark 16:20: "And they went forth, and preached every where, the Lord working with them, and confirming the word with signs following. Amen."

Luke 1:9: "According to the custom of the priest's office, his lot was to burn incense when he went into the temple of the Lord."

Luke 1:39: "And Mary arose in those days, and went into the hill country with haste, into a city of Juda;"

Luke 2:1: "And it came to pass in those days, that there went out a decree from Caesar Augustus that all the world should be taxed."

Luke 2:3: "And all went to be taxed, every one into his own city."

Luke 2:4: "And Joseph also went up from Galilee, out of the city of Nazareth, into Judaea, unto the city of David, which is called Bethlehem; (because he was of the house and lineage of David:)"

Luke 2:41: "Now his parents went to Jerusalem every year at the feast of the passover."

Luke 2:42: "And when he was twelve years old, they went up to Jerusalem after the custom of the feast."

Luke 2:44: "But they, supposing him to have been in the company, went a day's journey; and they sought him among their kinsfolk and acquaintance."

Luke 2:51: "And he went down with them, and came to Nazareth, and was subject unto them: but his mother kept all these sayings in her heart."

Luke 4:14: "And Jesus returned in the power of the Spirit into Galilee: and there went out a fame of him through all the region round about."

Luke 4:16: "And he came to Nazareth, where he had been brought up: and, as his custom was, he went into the synagogue on the sabbath day, and stood up for to read."

Luke 4:30: "But he passing through the midst of them went his way,"

Luke 4:37: "And the fame of him went out into every place of the country round about."

Luke 4:42: "And when it was day, he departed and went into a desert place: and the people sought him, and came unto him, and stayed him, that he should not depart from them."

Luke 5:15: "But so much the more went there a fame abroad of him: and great multitudes came together to hear, and to be healed by him of their infirmities."

Luke 5:19: "And when they could not find by what way they might bring him in because of the

multitude, they went upon the housetop, and let him down through the tiling with his couch into the midst before Jesus."

Luke 5:27: "And after these things he went forth, and saw a publican, named Levi, sitting at the receipt of custom: and he said unto him, Follow me."

Luke 6:1: "And it came to pass on the second sabbath after the first, that he went through the corn fields; and his disciples plucked the ears of corn, and did eat, rubbing them in their hands."

Luke 6:4: "How he went into the house of God, and did take and eat the shewbread, and gave also to them that were with him; which it is not lawful to eat but for the priests alone?"

Luke 6:12: "And it came to pass in those days, that he went out into a mountain to pray, and continued all night in prayer to God."

Luke 6:19: "And the whole multitude sought to touch him: for there went virtue out of him, and healed them all."

Luke 7:6: "Then Jesus went with them. And when he was now not far from the house, the centurion sent friends to him, saying unto him, Lord, trouble not thyself: for I am not worthy that thou shouldest enter under my roof:"

Luke 7:11: "And it came to pass the day after, that he went into a city called Nain; and many of his disciples went with him, and much people."

Luke 7:17: "And this rumour of him went forth throughout all Judaea, and throughout all the region round about."

Luke 7:24: "And when the messengers of John were departed, he began to speak unto the people concerning John, What went ye out into the wilderness for to see? A reed shaken with the wind?"

Luke 7:25: "But what went ye out for to see? A man clothed in soft raiment? Behold, they which are gorgeously apparelled, and live delicately, are in kings' courts."

Luke 7:26: "But what went ye out for to see? A prophet? Yea, I say unto you, and much more than a prophet."

Luke 7:36: "And one of the Pharisees desired him that he would eat with him. And he went into the Pharisee's house, and sat down to meat."

Luke 8:1: "And it came to pass afterward, that he went throughout every city and village, preaching and shewing the glad tidings of the kingdom of God: and the twelve were with him,"

Luke 8:2: "And certain women, which had been healed of evil spirits and infirmities, Mary called Magdalene, out of whom went seven devils,"

Luke 8:5: "A sower went out to sow his seed: and as he sowed, some fell by the way side; and it was trodden down, and the fowls of the air devoured it."

Luke 8:22: "Now it came to pass on a certain day, that he went into a ship with his disciples: and he said unto them, Let us go over unto the other side of the lake. And they launched forth."

Luke 8:27: "And when he went forth to land, there met him out of the city a certain man, which had devils long time, and ware no clothes, neither abode in any house, but in the tombs."

Luke 8:33: "Then went the devils out of the man, and entered into the swine: and the herd ran violently down a steep place into the lake, and were choked."

Luke 8:34: "When they that fed them saw what was done, they fled, and went and told it in the city and in the country."

Luke 8:35: "Then they went out to see what was done; and came to Jesus, and found the man, out of whom the devils were departed, sitting at the feet of Jesus, clothed, and in his right mind: and they were afraid."

Luke 8:37: "Then the whole multitude of the country of the Gadarenes round about besought him to depart from them; for they were taken with great fear: and he went up into the ship, and returned back again."

Luke 8:39: "Return to thine own house, and shew how great things God hath done unto thee. And he went his way, and published throughout the whole city how great things Jesus had done unto him."



Luke 8:42: "For he had one only daughter, about twelve years of age, and she lay a dying. But as he went the people thronged him."

Luke 9:6: "And they departed, and went through the towns, preaching the gospel, and healing every where."

Luke 9:10: "And the apostles, when they were returned, told him all that they had done. And he took them, and went aside privately into a desert place belonging to the city called Bethsaida."

Luke 9:28: "And it came to pass about an eight days after these sayings, he took Peter and John and James, and went up into a mountain to pray."

Luke 9:52: "And sent messengers before his face: and they went, and entered into a village of the Samaritans, to make ready for him."

Luke 9:56: "For the Son of man is not come to destroy men's lives, but to save them. And they went to another village."

Luke 9:57: "And it came to pass, that, as they went in the way, a certain man said unto him, Lord, I will follow thee whithersoever thou goest."

Luke 10:30: "And Jesus answering said, A certain man went down from Jerusalem to Jericho, and fell among thieves, which stripped him of his raiment, and wounded him, and departed, leaving him half dead."

Luke 10:34: "And went to him, and bound up his wounds, pouring in oil and wine, and set him on his own beast, and brought him to an inn, and took care of him."

Luke 10:38: "Now it came to pass, as they went, that he entered into a certain village: and a certain woman named Martha received him into her house."

Luke 11:37: "And as he spake, a certain Pharisee besought him to dine with him: and he went in, and sat down to meat."

Luke 13:22: "And he went through the cities and villages, teaching, and journeying toward Jerusalem."

Luke 14:1: "And it came to pass, as he went into the house of one of the chief Pharisees to eat bread on the sabbath day, that they watched him."

Luke 14:25: "And there went great multitudes with him: and he turned, and said unto them,"

Luke 15:15: "And he went and joined himself to a citizen of that country; and he sent him into his fields to feed swine."

Luke 16:30: "And he said, Nay, father Abraham: but if one went unto them from the dead, they will repent."

Luke 17:11: "And it came to pass, as he went to Jerusalem, that he passed through the midst of Samaria and Galilee."

Luke 17:14: "And when he saw them, he said unto them, Go shew yourselves unto the priests. And it came to pass, that, as they went, they were cleansed."

Luke 17:29: "But the same day that Lot went out of Sodom it rained fire and brimstone from heaven, and destroyed them all."

Luke 18:10: "Two men went up into the temple to pray; the one a Pharisee, and the other a publican."

Luke 18:14: "I tell you, this man went down to his house justified rather than the other: for every one that exalteth himself shall be abased; and he that humbleth himself shall be exalted."

Luke 18:39: "And they which went before rebuked him, that he should hold his peace: but he cried so much the more, Thou son of David, have mercy on me."

Luke 19:12: "He said therefore, A certain nobleman went into a far country to receive for himself a kingdom, and to return."

Luke 19:28: "And when he had thus spoken, he went before, ascending up to Jerusalem."

Luke 19:32: "And they that were sent went their way, and found even as he had said unto them."

Luke 19:36: "And as he went, they spread their clothes in the way."

Luke 19:45: "And he went into the temple, and began to cast out them that sold therein, and them

that bought;"

Luke 20:9: "Then began he to speak to the people this parable; A certain man planted a vineyard, and let it forth to husbandmen, and went into a far country for a long time."

Luke 21:37: "And in the day time he was teaching in the temple; and at night he went out, and abode in the mount that is called the mount of Olives."

Luke 22:4: "And he went his way, and communed with the chief priests and captains, how he might betray him unto them."

Luke 22:13: "And they went, and found as he had said unto them: and they made ready the passover."

Luke 22:39: "And he came out, and went, as he was wont, to the mount of Olives; and his disciples also followed him."

Luke 22:47: "And while he yet spake, behold a multitude, and he that was called Judas, one of the twelve, went before them, and drew near unto Jesus to kiss him."

Luke 22:62: "And Peter went out, and wept bitterly."

Luke 23:52: "This man went unto Pilate, and begged the body of Jesus."

Luke 24:13: "And, behold, two of them went that same day to a village called Emmaus, which was from Jerusalem about threescore furlongs."

Luke 24:15: "And it came to pass, that, while they communed together and reasoned, Jesus himself drew near, and went with them."

Luke 24:24: "And certain of them which were with us went to the sepulchre, and found it even so as the women had said: but him they saw not."

Luke 24:28: "And they drew nigh unto the village, whither they went: and he made as though he would have gone further."

Luke 24:29: "But they constrained him, saying, Abide with us: for it is toward evening, and the day is far spent. And he went in to tarry with them."

John 2:12: "After this he went down to Capernaum, he, and his mother, and his brethren, and his disciples: and they continued there not many days."

John 2:13: "And the Jews' passover was at hand, and Jesus went up to Jerusalem."

John 4:28: "The woman then left her waterpot, and went her way into the city, and saith to the men,"

John 4:30: "Then they went out of the city, and came unto him."

John 4:43: "Now after two days he departed thence, and went into Galilee."

John 4:45: "Then when he was come into Galilee, the Galilaeans received him, having seen all the things that he did at Jerusalem at the feast: for they also went unto the feast."

John 4:47: "When he heard that Jesus was come out of Judaea into Galilee, he went unto him, and besought him that he would come down, and heal his son: for he was at the point of death."

John 4:50: "Jesus saith unto him, Go thy way; thy son liveth. And the man believed the word that Jesus had spoken unto him, and he went his way."

John 5:1: "After this there was a feast of the Jews; and Jesus went up to Jerusalem."

John 5:4: "For an angel went down at a certain season into the pool, and troubled the water: whosoever then first after the troubling of the water stepped in was made whole of whatsoever disease he had."

John 6:1: "After these things Jesus went over the sea of Galilee, which is the sea of Tiberias."

John 6:3: "And Jesus went up into a mountain, and there he sat with his disciples."

John 6:16: "And when even was now come, his disciples went down unto the sea,"

John 6:17: "And entered into a ship, and went over the sea toward Capernaum. And it was now dark, and Jesus was not come to them."

John 6:21: "Then they willingly received him into the ship: and immediately the ship was at the land whither they went."

John 6:22: "The day following, when the people which stood on the other side of the sea saw that

there was none other boat there, save that one whereinto his disciples were entered, and that Jesus went not with his disciples into the boat, but that his disciples were gone away alone;"

John 6:66: "From that time many of his disciples went back, and walked no more with him."

John 7:10: "But when his brethren were gone up, then went he also up unto the feast, not openly, but as it were in secret."

John 7:14: "Now about the midst of the feast Jesus went up into the temple, and taught."

John 7:53: "And every man went unto his own house."

John 8:1: "Jesus went unto the mount of Olives."

John 8:9: "And they which heard it, being convicted by their own conscience, went out one by one, beginning at the eldest, even unto the last: and Jesus was left alone, and the woman standing in the midst."

John 8:59: "Then took they up stones to cast at him: but Jesus hid himself, and went out of the temple, going through the midst of them, and so passed by."

John 9:7: "And said unto him, Go, wash in the pool of Siloam, (which is by interpretation, Sent.) He went his way therefore, and washed, and came seeing."

John 9:11: "He answered and said, A man that is called Jesus made clay, and anointed mine eyes, and said unto me, Go to the pool of Siloam, and wash: and I went and washed, and I received sight."

John 10:40: "And went away again beyond Jordan into the place where John at first baptized; and there he abode."

John 11:20: "Then Martha, as soon as she heard that Jesus was coming, went and met him: but Mary sat still in the house."

John 11:28: "And when she had so said, she went her way, and called Mary her sister secretly, saying, The Master is come, and calleth for thee."

John 11:31: "The Jews then which were with her in the house, and comforted her, when they saw Mary, that she rose up hastily and went out, followed her, saying, She goeth unto the grave to weep there."

John 11:46: "But some of them went their ways to the Pharisees, and told them what things Jesus had done."

John 11:54: "Jesus therefore walked no more openly among the Jews; but went thence unto a country near to the wilderness, into a city called Ephraim, and there continued with his disciples."

John 11:55: "And the Jews' passover was nigh at hand: and many went out of the country up to Jerusalem before the passover, to purify themselves."

John 12:11: "Because that by reason of him many of the Jews went away, and believed on Jesus."

John 12:13: "Took branches of palm trees, and went forth to meet him, and cried, Hosanna: Blessed is the King of Israel that cometh in the name of the Lord."

John 13:3: "Jesus knowing that the Father had given all things into his hands, and that he was come from God, and went to God;"

John 13:30: "He then having received the sop went immediately out: and it was night."

John 18:1: "When Jesus had spoken these words, he went forth with his disciples over the brook Cedron, where was a garden, into the which he entered, and his disciples."

John 18:4: "Jesus therefore, knowing all things that should come upon him, went forth, and said unto them, Whom seek ye?"

John 18:6: "As soon then as he had said unto them, I am he, they went backward, and fell to the ground."

John 18:15: "And Simon Peter followed Jesus, and so did another disciple: that disciple was known unto the high priest, and went in with Jesus into the palace of the high priest."

John 18:16: "But Peter stood at the door without. Then went out that other disciple, which was known unto the high priest, and spake unto her that kept the door, and brought in Peter."

John 18:28: "Then led they Jesus from Caiaphas unto the hall of judgment: and it was early; and

they themselves went not into the judgment hall, lest they should be defiled; but that they might eat the passover."

John 18:29: "Pilate then went out unto them, and said, What accusation bring ye against this man?"

John 18:38: "Pilate saith unto him, What is truth? And when he had said this, he went out again unto the Jews, and saith unto them, I find in him no fault at all."

John 19:4: "Pilate therefore went forth again, and saith unto them, Behold, I bring him forth to you, that ye may know that I find no fault in him."

John 19:9: "And went again into the judgment hall, and saith unto Jesus, Whence art thou? But Jesus gave him no answer."

John 19:17: "And he bearing his cross went forth into a place called the place of a skull, which is called in the Hebrew Golgotha:"

John 20:3: "Peter therefore went forth, and that other disciple, and came to the sepulchre."

John 20:5: "And he stooping down, and looking in, saw the linen clothes lying; yet went he not in."

John 20:6: "Then cometh Simon Peter following him, and went into the sepulchre, and seeth the linen clothes lie,"

John 20:8: "Then went in also that other disciple, which came first to the sepulchre, and he saw, and believed."

John 20:10: "Then the disciples went away again unto their own home."

John 21:3: "Simon Peter saith unto them, I go a fishing. They say unto him, We also go with thee. They went forth, and entered into a ship immediately; and that night they caught nothing."

John 21:11: "Simon Peter went up, and drew the net to land full of great fishes, an hundred and fifty and three: and for all there were so many, yet was not the net broken."

John 21:23: "Then went this saying abroad among the brethren, that that disciple should not die: yet Jesus said not unto him, He shall not die; but, If I will that he tarry till I come, what is that to thee?"

Acts 1:10: "And while they looked stedfastly toward heaven as he went up, behold, two men stood by them in white apparel;"

Acts 1:13: "And when they were come in, they went up into an upper room, where abode both Peter, and James, and John, and Andrew, Philip, and Thomas, Bartholomew, and Matthew, James the son of Alphaeus, and Simon Zelotes, and Judas the brother of James."

Acts 1:21: "Wherefore of these men which have companied with us all the time that the Lord Jesus went in and out among us,"

Acts 3:1: "Now Peter and John went up together into the temple at the hour of prayer, being the ninth hour."

Acts 4:23: "And being let go, they went to their own company, and reported all that the chief priests and elders had said unto them."

Acts 5:26: "Then went the captain with the officers, and brought them without violence: for they feared the people, lest they should have been stoned."

Acts 7:15: "So Jacob went down into Egypt, and died, he, and our fathers,"

Acts 8:4: "Therefore they that were scattered abroad went every where preaching the word."

Acts 8:5: "Then Philip went down to the city of Samaria, and preached Christ unto them."

Acts 8:27: "And he arose and went: and, behold, a man of Ethiopia, an eunuch of great authority under Candace queen of the Ethiopians, who had the charge of all her treasure, and had come to Jerusalem for to worship,"

Acts 8:36: "And as they went on their way, they came unto a certain water: and the eunuch said, See, here is water; what doth hinder me to be baptized?"

Acts 8:38: "And he commanded the chariot to stand still: and they went down both into the water, both Philip and the eunuch; and he baptized him."

Acts 8:39: "And when they were come up out of the water, the Spirit of the Lord caught away Philip, that the eunuch saw him no more: and he went on his way rejoicing."

Acts 9:1: "And Saul, yet breathing out threatenings and slaughter against the disciples of the Lord,

went unto the high priest,"

Acts 9:17: "And Ananias went his way, and entered into the house; and putting his hands on him said, Brother Saul, the Lord, even Jesus, that appeared unto thee in the way as thou camest, hath sent me, that thou mightest receive thy sight, and be filled with the Holy Ghost."

Acts 9:29: "And he spake boldly in the name of the Lord Jesus, and disputed against the Grecians: but they went about to slay him."

Acts 9:39: "Then Peter arose and went with them. When he was come, they brought him into the upper chamber: and all the widows stood by him weeping, and shewing the coats and garments which Dorcas made, while she was with them."

Acts 10:9: "On the morrow, as they went on their journey, and drew nigh unto the city, Peter went up upon the housetop to pray about the sixth hour:"

Acts 10:21: "Then Peter went down to the men which were sent unto him from Cornelius; and said, Behold, I am he whom ye seek: what is the cause wherefore ye are come?"

Acts 10:23: "Then called he them in, and lodged them. And on the morrow Peter went away with them, and certain brethren from Joppa accompanied him."

Acts 10:27: "And as he talked with him, he went in, and found many that were come together."

Acts 10:38: "How God anointed Jesus of Nazareth with the Holy Ghost and with power: who went about doing good, and healing all that were oppressed of the devil; for God was with him."

Acts 12:9: "And he went out, and followed him; and wist not that it was true which was done by the angel; but thought he saw a vision."

Acts 12:10: "When they were past the first and the second ward, they came unto the iron gate that leadeth unto the city; which opened to them of his own accord: and they went out, and passed on through one street; and forthwith the angel departed from him."

Acts 12:17: "But he, beckoning unto them with the hand to hold their peace, declared unto them how the Lord had brought him out of the prison. And he said, Go shew these things unto James, and to the brethren. And he departed, and went into another place."

Acts 12:19: "And when Herod had sought for him, and found him not, he examined the keepers, and commanded that they should be put to death. And he went down from Judaea to Caesarea, and there abode."

Acts 13:11: "And now, behold, the hand of the Lord is upon thee, and thou shalt be blind, not seeing the sun for a season. And immediately there fell on him a mist and a darkness; and he went about seeking some to lead him by the hand."

Acts 13:14: "But when they departed from Perga, they came to Antioch in Pisidia, and went into the synagogue on the sabbath day, and sat down."

Acts 14:1: "And it came to pass in Iconium, that they went both together into the synagogue of the Jews, and so spake, that a great multitude both of the Jews and also of the Greeks believed."

Acts 14:25: "And when they had preached the word in Perga, they went down into Attalia:"

Acts 15:24: "Forasmuch as we have heard, that certain which went out from us have troubled you with words, subverting your souls, saying, Ye must be circumcised, and keep the law: to whom we gave no such commandment:"

Acts 15:38: "But Paul thought not good to take him with them, who departed from them from Pamphylia, and went not with them to the work."

Acts 15:41: "And he went through Syria and Cilicia, confirming the churches."

Acts 16:4: "And as they went through the cities, they delivered them the decrees for to keep, that were ordained of the apostles and elders which were at Jerusalem."

Acts 16:13: "And on the sabbath we went out of the city by a river side, where prayer was wont to be made; and we sat down, and spake unto the women which resorted thither."

Acts 16:16: "And it came to pass, as we went to prayer, a certain damsel possessed with a spirit of divination met us, which brought her masters much gain by soothsaying:"

Acts 16:40: "And they went out of the prison, and entered into the house of Lydia: and when they

had seen the brethren, they comforted them, and departed."

Acts 17:2: "And Paul, as his manner was, went in unto them, and three sabbath days reasoned with them out of the scriptures,"

Acts 17:10: "And the brethren immediately sent away Paul and Silas by night unto Berea: who coming thither went into the synagogue of the Jews."

Acts 18:22: "And when he had landed at Caesarea, and gone up, and saluted the church, he went down to Antioch."

Acts 18:23: "And after he had spent some time there, he departed, and went over all the country of Galatia and Phrygia in order, strengthening all the disciples."

Acts 19:8: "And he went into the synagogue, and spake boldly for the space of three months, disputing and persuading the things concerning the kingdom of God."

Acts 19:12: "So that from his body were brought unto the sick handkerchiefs or aprons, and the diseases departed from them, and the evil spirits went out of them."

Acts 20:10: "And Paul went down, and fell on him, and embracing him said, Trouble not yourselves; for his life is in him."

Acts 20:13: "And we went before to ship, and sailed unto Assos, there intending to take in Paul: for so had he appointed, minding himself to go afoot."

Acts 21:2: "And finding a ship sailing over unto Phenicia, we went aboard, and set forth."

Acts 21:5: "And when we had accomplished those days, we departed and went our way; and they all brought us on our way, with wives and children, till we were out of the city: and we kneeled down on the shore, and prayed."

Acts 21:15: "And after those days we took up our carriages, and went up to Jerusalem."

Acts 21:16: "There went with us also certain of the disciples of Caesarea, and brought with them one Mnason of Cyprus, an old disciple, with whom we should lodge."

Acts 21:18: "And the day following Paul went in with us unto James; and all the elders were present."

Acts 21:31: "And as they went about to kill him, tidings came unto the chief captain of the band, that all Jerusalem was in an uproar."

Acts 22:5: "As also the high priest doth bear me witness, and all the estate of the elders: from whom also I received letters unto the brethren, and went to Damascus, to bring them which were there bound unto Jerusalem, for to be punished."

Acts 22:26: "When the centurion heard that, he went and told the chief captain, saying, Take heed what thou doest: for this man is a Roman."

Acts 23:16: "And when Paul's sister's son heard of their lying in wait, he went and entered into the castle, and told Paul."

Acts 23:19: "Then the chief captain took him by the hand, and went with him aside privately, and asked him, What is that thou hast to tell me?"

Acts 24:11: "Because that thou mayest understand, that there are yet but twelve days since I went up to Jerusalem for to worship."

Acts 25:6: "And when he had tarried among them more than ten days, he went down unto Caesarea; and the next day sitting on the judgment seat commanded Paul to be brought."

Acts 26:12: "Whereupon as I went to Damascus with authority and commission from the chief priests,"

Acts 26:21: "For these causes the Jews caught me in the temple, and went about to kill me."

Acts 28:14: "Where we found brethren, and were desired to tarry with them seven days: and so we went toward Rome."

Romans 10:18: "But I say, Have they not heard? Yes verily, their sound went into all the earth, and their words unto the ends of the world."

2 Corinthians 2:13: "I had no rest in my spirit, because I found not Titus my brother: but taking my leave of them, I went from thence into Macedonia."

2 Corinthians 8:17: "For indeed he accepted the exhortation; but being more forward, of his own accord he went unto you."

Galatians 1:17: "Neither went I up to Jerusalem to them which were apostles before me; but I went into Arabia, and returned again unto Damascus."

Galatians 1:18: "Then after three years I went up to Jerusalem to see Peter, and abode with him fifteen days."

Galatians 2:1: "Then fourteen years after I went up again to Jerusalem with Barnabas, and took Titus with me also."

Galatians 2:2: "And I went up by revelation, and communicated unto them that gospel which I preach among the Gentiles, but privately to them which were of reputation, lest by any means I should run, or had run, in vain."

1 Timothy 1:3: "As I besought thee to abide still at Ephesus, when I went into Macedonia, that thou mightest charge some that they teach no other doctrine,"

1 Timothy 1:18: "This charge I commit unto thee, son Timothy, according to the prophecies which went before on thee, that thou by them mightest war a good warfare;"

Hebrews 9:6: "Now when these things were thus ordained, the priests went always into the first tabernacle, accomplishing the service of God."

Hebrews 9:7: "But into the second went the high priest alone once every year, not without blood, which he offered for himself, and for the errors of the people:"

Hebrews 11:8: "By faith Abraham, when he was called to go out into a place which he should after receive for an inheritance, obeyed; and he went out, not knowing whither he went."

1 Peter 3:19: "By which also he went and preached unto the spirits in prison;"

1 John 2:19: "They went out from us, but they were not of us; for if they had been of us, they would no doubt have continued with us: but they went out, that they might be made manifest that they were not all of us."

3 John 1:7: "Because that for his name's sake they went forth, taking nothing of the Gentiles."

Revelation 1:16: "And he had in his right hand seven stars: and out of his mouth went a sharp twoedged sword: and his countenance was as the sun shineth in his strength."

Revelation 6:2: "And I saw, and behold a white horse: and he that sat on him had a bow; and a crown was given unto him: and he went forth conquering, and to conquer."

Revelation 6:4: "And there went out another horse that was red: and power was given to him that sat thereon to take peace from the earth, and that they should kill one another: and there was given unto him a great sword."

Revelation 10:9: "And I went unto the angel, and said unto him, Give me the little book. And he said unto me, Take it, and eat it up; and it shall make thy belly bitter, but it shall be in thy mouth sweet as honey."

Revelation 12:17: "And the dragon was wroth with the woman, and went to make war with the remnant of her seed, which keep the commandments of God, and have the testimony of Jesus Christ."

Revelation 16:2: "And the first went, and poured out his vial upon the earth; and there fell a noisome and grievous sore upon the men which had the mark of the beast, and upon them which worshipped his image."

Revelation 20:9: "And they went up on the breadth of the earth, and compassed the camp of the saints about, and the beloved city: and fire came down from God out of heaven, and devoured them."

## **WENTEST**

Occurrences: 14

Genesis 49:4: "Unstable as water, thou shalt not excel; because thou wentest up to thy father's bed; then defiledst thou it: he went up to my couch."

Judges 5:4: "LORD, when thou wentest out of Seir, when thou marchedst out of the field of Edom, the earth trembled, and the heavens dropped, the clouds also dropped water."

Judges 8:1: "And the men of Ephraim said unto him, Why hast thou served us thus, that thou calledst us not, when thou wentest to fight with the Midianites? And they did chide with him sharply."

1 Samuel 10:2: "When thou art departed from me to day, then thou shalt find two men by Rachel's sepulchre in the border of Benjamin at Zelzah; and they will say unto thee, The asses which thou wentest to seek are found: and, lo, thy father hath left the care of the asses, and sorroweth for you, saying, What shall I do for my son?"

2 Samuel 7:9: "And I was with thee whithersoever thou wentest, and have cut off all thine enemies out of thy sight, and have made thee a great name, like unto the name of the great men that are in the earth."

2 Samuel 16:17: "And Absalom said to Hushai, Is this thy kindness to thy friend? why wentest thou not with thy friend?"

2 Samuel 19:25: "And it came to pass, when he was come to Jerusalem to meet the king, that the king said unto him, Wherefore wentest not thou with me, Mephibosheth?"

Psalms 68:7: "O God, when thou wentest forth before thy people, when thou didst march through the wilderness; Selah:"

Isaiah 57:7: "Upon a lofty and high mountain hast thou set thy bed: even thither wentest thou up to offer sacrifice."

Isaiah 57:9: "And thou wentest to the king with ointment, and didst increase thy perfumes, and didst send thy messengers far off, and didst debase thyself even unto hell."

Jeremiah 2:2: "Go and cry in the ears of Jerusalem, saying, Thus saith the LORD; I remember thee, the kindness of thy youth, the love of thine espousals, when thou wentest after me in the wilderness, in a land that was not sown."

Jeremiah 31:21: "Set thee up waymarks, make thee high heaps: set thine heart toward the highway, even the way which thou wentest: turn again, O virgin of Israel, turn again to these thy cities."

Habakkuk 3:13: "Thou wentest forth for the salvation of thy people, even for salvation with thine anointed; thou woundedst the head out of the house of the wicked, by discovering the foundation unto the neck. Selah."

Acts 11:3: "Saying, Thou wentest in to men uncircumcised, and didst eat with them."

## **WEPT**

Occurrences: 68

Genesis 21:16: "And she went, and sat her down over against him a good way off, as it were a bow shot: for she said, Let me not see the death of the child. And she sat over against him, and lift up her voice, and wept."

Genesis 27:38: "And Esau said unto his father, Hast thou but one blessing, my father? bless me, even me also, O my father. And Esau lifted up his voice, and wept."

Genesis 29:11: "And Jacob kissed Rachel, and lifted up his voice, and wept."

Genesis 33:4: "And Esau ran to meet him, and embraced him, and fell on his neck, and kissed him: and they wept."

Genesis 37:35: "And all his sons and all his daughters rose up to comfort him; but he refused to be comforted; and he said, For I will go down into the grave unto my son mourning. Thus his father wept for him."

Genesis 42:24: "And he turned himself about from them, and wept; and returned to them again, and communed with them, and took from them Simeon, and bound him before their eyes."

Genesis 43:30: "And Joseph made haste; for his bowels did yearn upon his brother: and he sought where to weep; and he entered into his chamber, and wept there."

Genesis 45:2: "And he wept aloud: and the Egyptians and the house of Pharaoh heard."



Genesis 45:14: "And he fell upon his brother Benjamin's neck, and wept; and Benjamin wept upon his neck."

Genesis 45:15: "Moreover he kissed all his brethren, and wept upon them: and after that his brethren talked with him."

Genesis 46:29: "And Joseph made ready his chariot, and went up to meet Israel his father, to Goshen, and presented himself unto him; and he fell on his neck, and wept on his neck a good while."

Genesis 50:1: "And Joseph fell upon his father's face, and wept upon him, and kissed him."

Genesis 50:17: "So shall ye say unto Joseph, Forgive, I pray thee now, the trespass of thy brethren, and their sin; for they did unto thee evil: and now, we pray thee, forgive the trespass of the servants of the God of thy father. And Joseph wept when they spake unto him."

Exodus 2:6: "And when she had opened it, she saw the child: and, behold, the babe wept. And she had compassion on him, and said, This is one of the Hebrews' children."

Numbers 11:4: "And the mixt multitude that was among them fell a lusting: and the children of Israel also wept again, and said, Who shall give us flesh to eat?"

Numbers 11:18: "And say thou unto the people, Sanctify yourselves against to morrow, and ye shall eat flesh: for ye have wept in the ears of the LORD, saying, Who shall give us flesh to eat? for it was well with us in Egypt: therefore the LORD will give you flesh, and ye shall eat."

Numbers 11:20: "But even a whole month, until it come out at your nostrils, and it be loathsome unto you: because that ye have despised the LORD which is among you, and have wept before him, saying, Why came we forth out of Egypt?"

Numbers 14:1: "And all the congregation lifted up their voice, and cried; and the people wept that night."

Deuteronomy 1:45: "And ye returned and wept before the LORD; but the LORD would not hearken to your voice, nor give ear unto you."

Deuteronomy 34:8: "And the children of Israel wept for Moses in the plains of Moab thirty days: so the days of weeping and mourning for Moses were ended."

Judges 2:4: "And it came to pass, when the angel of the LORD spake these words unto all the children of Israel, that the people lifted up their voice, and wept."

Judges 14:16: "And Samson's wife wept before him, and said, Thou dost but hate me, and lovest me not: thou hast put forth a riddle unto the children of my people, and hast not told it me. And he said unto her, Behold, I have not told it my father nor my mother, and shall I tell it thee?"

Judges 14:17: "And she wept before him the seven days, while their feast lasted: and it came to pass on the seventh day, that he told her, because she lay sore upon him: and she told the riddle to the children of her people."

Judges 20:23: "(And the children of Israel went up and wept before the LORD until even, and asked counsel of the LORD, saying, Shall I go up again to battle against the children of Benjamin my brother? And the LORD said, Go up against him.)"

Judges 20:26: "Then all the children of Israel, and all the people, went up, and came unto the house of God, and wept, and sat there before the LORD, and fasted that day until even, and offered burnt offerings and peace offerings before the LORD."

Judges 21:2: "And the people came to the house of God, and abode there till even before God, and lifted up their voices, and wept sore;"

Ruth 1:9: "The LORD grant you that ye may find rest, each of you in the house of her husband. Then she kissed them; and they lifted up their voice, and wept."

Ruth 1:14: "And they lifted up their voice, and wept again: and Orpah kissed her mother in law; but Ruth clave unto her."

1 Samuel 1:7: "And as he did so year by year, when she went up to the house of the LORD, so she provoked her; therefore she wept, and did not eat."

1 Samuel 1:10: "And she was in bitterness of soul, and prayed unto the LORD, and wept sore."

1 Samuel 11:4: "Then came the messengers to Gibeah of Saul, and told the tidings in the ears of the people: and all the people lifted up their voices, and wept."

1 Samuel 20:41: "And as soon as the lad was gone, David arose out of a place toward the south, and fell on his face to the ground, and bowed himself three times: and they kissed one another, and wept one with another, until David exceeded."

1 Samuel 24:16: "And it came to pass, when David had made an end of speaking these words unto Saul, that Saul said, Is this thy voice, my son David? And Saul lifted up his voice, and wept."

1 Samuel 30:4: "Then David and the people that were with him lifted up their voice and wept, until they had no more power to weep."

2 Samuel 1:12: "And they mourned, and wept, and fasted until even, for Saul, and for Jonathan his son, and for the people of the LORD, and for the house of Israel; because they were fallen by the sword."

2 Samuel 3:32: "And they buried Abner in Hebron: and the king lifted up his voice, and wept at the grave of Abner; and all the people wept."

2 Samuel 3:34: "Thy hands were not bound, nor thy feet put into fetters: as a man falleth before wicked men, so fellest thou. And all the people wept again over him."

2 Samuel 12:22: "And he said, While the child was yet alive, I fasted and wept: for I said, Who can tell whether GOD will be gracious to me, that the child may live?"

2 Samuel 13:36: "And it came to pass, as soon as he had made an end of speaking, that, behold, the king's sons came, and lifted up their voice and wept: and the king also and all his servants wept very sore."

2 Samuel 15:23: "And all the country wept with a loud voice, and all the people passed over: the king also himself passed over the brook Kidron, and all the people passed over, toward the way of the wilderness."

2 Samuel 15:30: "And David went up by the ascent of mount Olivet, and wept as he went up, and had his head covered, and he went barefoot: and all the people that was with him covered every man his head, and they went up, weeping as they went up."

2 Samuel 18:33: "And the king was much moved, and went up to the chamber over the gate, and wept: and as he went, thus he said, O my son Absalom, my son, my son Absalom! would God I had died for thee, O Absalom, my son, my son!"

2 Kings 8:11: "And he settled his countenance stedfastly, until he was ashamed: and the man of God wept."

2 Kings 13:14: "Now Elisha was fallen sick of his sickness whereof he died. And Joash the king of Israel came down unto him, and wept over his face, and said, O my father, my father, the chariot of Israel, and the horsemen thereof."

2 Kings 20:3: "I beseech thee, O LORD, remember now how I have walked before thee in truth and with a perfect heart, and have done that which is good in thy sight. And Hezekiah wept sore."

2 Kings 22:19: "Because thine heart was tender, and thou hast humbled thyself before the LORD, when thou heardest what I spake against this place, and against the inhabitants thereof, that they should become a desolation and a curse, and hast rent thy clothes, and wept before me; I also have heard thee, saith the LORD."

Ezra 3:12: "But many of the priests and Levites and chief of the fathers, who were ancient men, that had seen the first house, when the foundation of this house was laid before their eyes, wept with a loud voice; and many shouted aloud for joy:"

Ezra 10:1: "Now when Ezra had prayed, and when he had confessed, weeping and casting himself down before the house of God, there assembled unto him out of Israel a very great congregation of men and women and children: for the people wept very sore."

Nehemiah 1:4: "And it came to pass, when I heard these words, that I sat down and wept, and mourned certain days, and fasted, and prayed before the God of heaven,"

Nehemiah 8:9: "And Nehemiah, which is the Tirshatha, and Ezra the priest the scribe, and the

Levites that taught the people, said unto all the people, This day is holy unto the LORD your God; mourn not, nor weep. For all the people wept, when they heard the words of the law."

Job 2:12: "And when they lifted up their eyes afar off, and knew him not, they lifted up their voice, and wept; and they rent every one his mantle, and sprinkled dust upon their heads toward heaven."

Psalms 69:10: "When I wept, and chastened my soul with fasting, that was to my reproach."

Psalms 137:1: "By the rivers of Babylon, there we sat down, yea, we wept, when we remembered Zion."

Isaiah 38:3: "And said, Remember now, O LORD, I beseech thee, how I have walked before thee in truth and with a perfect heart, and have done that which is good in thy sight. And Hezekiah wept sore."

Hosea 12:4: "Yea, he had power over the angel, and prevailed: he wept, and made supplication unto him: he found him in Bethel, and there he spake with us;"

Matthew 26:75: "And Peter remembered the word of Jesus, which said unto him, Before the cock crow, thou shalt deny me thrice. And he went out, and wept bitterly."

Mark 5:38: "And he cometh to the house of the ruler of the synagogue, and seeth the tumult, and them that wept and wailed greatly."

Mark 14:72: "And the second time the cock crew. And Peter called to mind the word that Jesus said unto him, Before the cock crow twice, thou shalt deny me thrice. And when he thought thereon, he wept."

Mark 16:10: "And she went and told them that had been with him, as they mourned and wept."

Luke 7:32: "They are like unto children sitting in the marketplace, and calling one to another, and saying, We have piped unto you, and ye have not danced; we have mourned to you, and ye have not wept."

Luke 8:52: "And all wept, and bewailed her: but he said, Weep not; she is not dead, but sleepeth."

Luke 19:41: "And when he was come near, he beheld the city, and wept over it,"

Luke 22:62: "And Peter went out, and wept bitterly."

John 11:35: "Jesus wept."

John 20:11: "But Mary stood without at the sepulchre weeping: and as she wept, she stooped down, and looked into the sepulchre,"

Acts 20:37: "And they all wept sore, and fell on Paul's neck, and kissed him,"

1 Corinthians 7:30: "And they that weep, as though they wept not; and they that rejoice, as though they rejoiced not; and they that buy, as though they possessed not;"

Revelation 5:4: "And I wept much, because no man was found worthy to open and to read the book, neither to look thereon."

## WERE

Occurrences: 2314

Genesis 1:5: "And God called the light Day, and the darkness he called Night. And the evening and the morning were the first day."

Genesis 1:7: "And God made the firmament, and divided the waters which were under the firmament from the waters which were above the firmament: and it was so."

Genesis 1:8: "And God called the firmament Heaven. And the evening and the morning were the second day."

Genesis 1:13: "And the evening and the morning were the third day."

Genesis 1:19: "And the evening and the morning were the fourth day."

Genesis 1:23: "And the evening and the morning were the fifth day."

Genesis 1:31: "And God saw every thing that he had made, and, behold, it was very good. And the evening and the morning were the sixth day."

Genesis 2:1: "Thus the heavens and the earth were finished, and all the host of them."

Genesis 2:4: "These are the generations of the heavens and of the earth when they were created, in

the day that the LORD God made the earth and the heavens,"

Genesis 2:25: "And they were both naked, the man and his wife, and were not ashamed."

Genesis 3:7: "And the eyes of them both were opened, and they knew that they were naked; and they sewed fig leaves together, and made themselves aprons."

Genesis 4:8: "And Cain talked with Abel his brother: and it came to pass, when they were in the field, that Cain rose up against Abel his brother, and slew him."

Genesis 5:2: "Male and female created he them; and blessed them, and called their name Adam, in the day when they were created."

Genesis 5:4: "And the days of Adam after he had begotten Seth were eight hundred years: and he begat sons and daughters:"

Genesis 5:5: "And all the days that Adam lived were nine hundred and thirty years: and he died."

Genesis 5:8: "And all the days of Seth were nine hundred and twelve years: and he died."

Genesis 5:11: "And all the days of Enos were nine hundred and five years: and he died."

Genesis 5:14: "And all the days of Cainan were nine hundred and ten years: and he died."

Genesis 5:17: "And all the days of Mahalaleel were eight hundred ninety and five years: and he died."

Genesis 5:20: "And all the days of Jared were nine hundred sixty and two years: and he died."

Genesis 5:23: "And all the days of Enoch were three hundred sixty and five years:"

Genesis 5:27: "And all the days of Methuselah were nine hundred sixty and nine years: and he died."

Genesis 5:31: "And all the days of Lamech were seven hundred seventy and seven years: and he died."

Genesis 6:1: "And it came to pass, when men began to multiply on the face of the earth, and daughters were born unto them,"

Genesis 6:2: "That the sons of God saw the daughters of men that they were fair; and they took them wives of all which they chose."

Genesis 6:4: "There were giants in the earth in those days; and also after that, when the sons of God came in unto the daughters of men, and they bare children to them, the same became mighty men which were of old, men of renown."

Genesis 7:10: "And it came to pass after seven days, that the waters of the flood were upon the earth."

Genesis 7:11: "In the six hundredth year of Noah's life, in the second month, the seventeenth day of the month, the same day were all the fountains of the great deep broken up, and the windows of heaven were opened."

Genesis 7:18: "And the waters prevailed, and were increased greatly upon the earth; and the ark went upon the face of the waters."

Genesis 7:19: "And the waters prevailed exceedingly upon the earth; and all the high hills, that were under the whole heaven, were covered."

Genesis 7:20: "Fifteen cubits upward did the waters prevail; and the mountains were covered."

Genesis 7:23: "And every living substance was destroyed which was upon the face of the ground, both man, and cattle, and the creeping things, and the fowl of the heaven; and they were destroyed from the earth: and Noah only remained alive, and they that were with him in the ark."

Genesis 8:2: "The fountains also of the deep and the windows of heaven were stopped, and the rain from heaven was restrained;"

Genesis 8:3: "And the waters returned from off the earth continually: and after the end of the hundred and fifty days the waters were abated."

Genesis 8:5: "And the waters decreased continually until the tenth month: in the tenth month, on the first day of the month, were the tops of the mountains seen."

Genesis 8:7: "And he sent forth a raven, which went forth to and fro, until the waters were dried up from off the earth."

Genesis 8:8: "Also he sent forth a dove from him, to see if the waters were abated from off the face of the ground;"

Genesis 8:9: "But the dove found no rest for the sole of her foot, and she returned unto him into the ark, for the waters were on the face of the whole earth: then he put forth his hand, and took her, and pulled her in unto him into the ark."

Genesis 8:11: "And the dove came in to him in the evening; and, lo, in her mouth was an olive leaf plucked off: so Noah knew that the waters were abated from off the earth."

Genesis 8:13: "And it came to pass in the six hundredth and first year, in the first month, the first day of the month, the waters were dried up from off the earth: and Noah removed the covering of the ark, and looked, and, behold, the face of the ground was dry."

Genesis 9:18: "And the sons of Noah, that went forth of the ark, were Shem, and Ham, and Japheth: and Ham is the father of Canaan."

Genesis 9:23: "And Shem and Japheth took a garment, and laid it upon both their shoulders, and went backward, and covered the nakedness of their father; and their faces were backward, and they saw not their father's nakedness."

Genesis 9:29: "And all the days of Noah were nine hundred and fifty years: and he died."

Genesis 10:1: "Now these are the generations of the sons of Noah, Shem, Ham, and Japheth: and unto them were sons born after the flood."

Genesis 10:5: "By these were the isles of the Gentiles divided in their lands; every one after his tongue, after their families, in their nations."

Genesis 10:18: "And the Arvadite, and the Zemarite, and the Hamathite: and afterward were the families of the Canaanites spread abroad."

Genesis 10:21: "Unto Shem also, the father of all the children of Eber, the brother of Japheth the elder, even to him were children born."

Genesis 10:25: "And unto Eber were born two sons: the name of one was Peleg; for in his days was the earth divided; and his brother's name was Joktan."

Genesis 10:29: "And Ophir, and Havilah, and Jobab: all these were the sons of Joktan."

Genesis 10:32: "These are the families of the sons of Noah, after their generations, in their nations: and by these were the nations divided in the earth after the flood."

Genesis 11:32: "And the days of Terah were two hundred and five years: and Terah died in Haran."

Genesis 13:13: "But the men of Sodom were wicked and sinners before the LORD exceedingly."

Genesis 14:3: "All these were joined together in the vale of Siddim, which is the salt sea."

Genesis 14:5: "And in the fourteenth year came Chedorlaomer, and the kings that were with him, and smote the Rephaims in Ashteroth Karnaim, and the Zuzims in Ham, and the Emims in Shaveh Kiriathaim,"

Genesis 14:13: "And there came one that had escaped, and told Abram the Hebrew; for he dwelt in the plain of Mamre the Amorite, brother of Eshcol, and brother of Aner: and these were confederate with Abram."

Genesis 14:17: "And the king of Sodom went out to meet him after his return from the slaughter of Chedorlaomer, and of the kings that were with him, at the valley of Shaveh, which is the king's dale."

Genesis 17:23: "And Abraham took Ishmael his son, and all that were born in his house, and all that were bought with his money, every male among the men of Abraham's house; and circumcised the flesh of their foreskin in the selfsame day, as God had said unto him."

Genesis 17:27: "And all the men of his house, born in the house, and bought with money of the stranger, were circumcised with him."

Genesis 18:11: "Now Abraham and Sarah were old and well stricken in age; and it ceased to be with Sarah after the manner of women."

Genesis 19:11: "And they smote the men that were at the door of the house with blindness, both small and great: so that they wearied themselves to find the door."

Genesis 19:36: "Thus were both the daughters of Lot with child by their father."

Genesis 20:8: "Therefore Abimelech rose early in the morning, and called all his servants, and told all these things in their ears: and the men were sore afraid."

Genesis 21:16: "And she went, and sat her down over against him a good way off, as it were a bow shot: for she said, Let me not see the death of the child. And she sat over against him, and lift up her voice, and wept."

Genesis 23:1: "And Sarah was an hundred and seven and twenty years old: these were the years of the life of Sarah."

Genesis 23:17: "And the field of Ephron which was in Machpelah, which was before Mamre, the field, and the cave which was therein, and all the trees that were in the field, that were in all the borders round about, were made sure"

Genesis 23:20: "And the field, and the cave that is therein, were made sure unto Abraham for a possession of a buryingplace by the sons of Heth."

Genesis 24:10: "And the servant took ten camels of the camels of his master, and departed; for all the goods of his master were in his hand: and he arose, and went to Mesopotamia, unto the city of Nahor."

Genesis 24:32: "And the man came into the house: and he ungirded his camels, and gave straw and provender for the camels, and water to wash his feet, and the men's feet that were with him."

Genesis 24:54: "And they did eat and drink, he and the men that were with him, and tarried all night; and they rose up in the morning, and he said, Send me away unto my master."

Genesis 24:63: "And Isaac went out to meditate in the field at the eventide: and he lifted up his eyes, and saw, and, behold, the camels were coming."

Genesis 25:3: "And Jokshan begat Sheba, and Dedan. And the sons of Dedan were Asshurim, and Letushim, and Leummim."

Genesis 25:4: "And the sons of Midian; Ephah, and Ephher, and Hanoch, and Abidah, and Eldaah. All these were the children of Keturah."

Genesis 25:24: "And when her days to be delivered were fulfilled, behold, there were twins in her womb."

Genesis 26:35: "Which were a grief of mind unto Isaac and to Rebekah."

Genesis 27:1: "And it came to pass, that when Isaac was old, and his eyes were dim, so that he could not see, he called Esau his eldest son, and said unto him, My son: and he said unto him, Behold, here am I."

Genesis 27:15: "And Rebekah took goodly raiment of her eldest son Esau, which were with her in the house, and put them upon Jacob her younger son:"

Genesis 27:23: "And he discerned him not, because his hands were hairy, as his brother Esau's hands: so he blessed him."

Genesis 27:42: "And these words of Esau her elder son were told to Rebekah: and she sent and called Jacob her younger son, and said unto him, Behold, thy brother Esau, as touching thee, doth comfort himself, purposing to kill thee."

Genesis 29:2: "And he looked, and behold a well in the field, and, lo, there were three flocks of sheep lying by it; for out of that well they watered the flocks: and a great stone was upon the well's mouth."

Genesis 29:3: "And thither were all the flocks gathered: and they rolled the stone from the well's mouth, and watered the sheep, and put the stone again upon the well's mouth in his place."

Genesis 30:35: "And he removed that day the he goats that were ringstraked and spotted, and all the she goats that were speckled and spotted, and every one that had some white in it, and all the brown among the sheep, and gave them into the hand of his sons."

Genesis 30:42: "But when the cattle were feeble, he put them not in: so the feebler were Laban's, and the stronger Jacob's."

Genesis 31:10: "And it came to pass at the time that the cattle conceived, that I lifted up mine eyes,

and saw in a dream, and, behold, the rams which leaped upon the cattle were ringstraked, speckled, and grisled."

Genesis 31:19: "And Laban went to shear his sheep: and Rachel had stolen the images that were her father's."

Genesis 34:5: "And Jacob heard that he had defiled Dinah his daughter: now his sons were with his cattle in the field: and Jacob held his peace until they were come."

Genesis 34:7: "And the sons of Jacob came out of the field when they heard it: and the men were grieved, and they were very wroth, because he had wrought folly in Israel in lying with Jacob's daughter: which thing ought not to be done."

Genesis 34:14: "And they said unto them, We cannot do this thing, to give our sister to one that is uncircumcised; for that were a reproach unto us:"

Genesis 34:25: "And it came to pass on the third day, when they were sore, that two of the sons of Jacob, Simeon and Levi, Dinah's brethren, took each man his sword, and came upon the city boldly, and slew all the males."

Genesis 35:2: "Then Jacob said unto his household, and to all that were with him, Put away the strange gods that are among you, and be clean, and change your garments:"

Genesis 35:4: "And they gave unto Jacob all the strange gods which were in their hand, and all their earrings which were in their ears; and Jacob hid them under the oak which was by Shechem."

Genesis 35:5: "And they journeyed: and the terror of God was upon the cities that were round about them, and they did not pursue after the sons of Jacob."

Genesis 35:6: "So Jacob came to Luz, which is in the land of Canaan, that is, Bethel, he and all the people that were with him."

Genesis 35:22: "And it came to pass, when Israel dwelt in that land, that Reuben went and lay with Bilhah his father's concubine: and Israel heard it. Now the sons of Jacob were twelve:"

Genesis 35:26: "And the sons of Zilpah, Leah's handmaid: Gad, and Asher: these are the sons of Jacob, which were born to him in Padanaram."

Genesis 35:28: "And the days of Isaac were an hundred and fourscore years."

Genesis 36:5: "And Aholibamah bare Jeush, and Jaalam, and Korah: these are the sons of Esau, which were born unto him in the land of Canaan."

Genesis 36:7: "For their riches were more than that they might dwell together; and the land wherein they were strangers could not bear them because of their cattle."

Genesis 36:11: "And the sons of Eliphaz were Teman, Omar, Zepho, and Gatam, and Kenaz."

Genesis 36:12: "And Timna was concubine to Eliphaz Esau's son; and she bare to Eliphaz Amalek: these were the sons of Adah Esau's wife."

Genesis 36:13: "And these are the sons of Reuel; Nahath, and Zerah, Shammah, and Mizzah: these were the sons of Bashemath Esau's wife."

Genesis 36:14: "And these were the sons of Aholibamah, the daughter of Anah the daughter of Zibeon, Esau's wife: and she bare to Esau Jeush, and Jaalam, and Korah."

Genesis 36:15: "These were dukes of the sons of Esau: the sons of Eliphaz the firstborn son of Esau; duke Teman, duke Omar, duke Zepho, duke Kenaz,"

Genesis 36:16: "Duke Korah, duke Gatam, and duke Amalek: these are the dukes that came of Eliphaz in the land of Edom; these were the sons of Adah."

Genesis 36:18: "And these are the sons of Aholibamah Esau's wife; duke Jeush, duke Jaalam, duke Korah: these were the dukes that came of Aholibamah the daughter of Anah, Esau's wife."

Genesis 36:22: "And the children of Lotan were Hori and Hemam; and Lotan's sister was Timna."

Genesis 36:23: "And the children of Shobal were these; Alvan, and Manahath, and Ebal, Shepho, and Onam."

Genesis 36:25: "And the children of Anah were these; Dishon, and Aholibamah the daughter of Anah."

Genesis 37:7: "For, behold, we were binding sheaves in the field, and, lo, my sheaf arose, and also

stood upright; and, behold, your sheaves stood round about, and made obeisance to my sheaf."

Genesis 37:27: "Come, and let us sell him to the Ishmeelites, and let not our hand be upon him; for he is our brother and our flesh. And his brethren were content."

Genesis 38:27: "And it came to pass in the time of her travail, that, behold, twins were in her womb."

Genesis 39:20: "And Joseph's master took him, and put him into the prison, a place where the king's prisoners were bound: and he was there in the prison."

Genesis 39:22: "And the keeper of the prison committed to Joseph's hand all the prisoners that were in the prison; and whatsoever they did there, he was the doer of it."

Genesis 40:5: "And they dreamed a dream both of them, each man his dream in one night, each man according to the interpretation of his dream, the butler and the baker of the king of Egypt, which were bound in the prison."

Genesis 40:6: "And Joseph came in unto them in the morning, and looked upon them, and, behold, they were sad."

Genesis 40:7: "And he asked Pharaoh's officers that were with him in the ward of his lord's house, saying, Wherefore look ye so sadly to day?"

Genesis 40:10: "And in the vine were three branches: and it was as though it budded, and her blossoms shot forth; and the clusters thereof brought forth ripe grapes:"

Genesis 41:21: "And when they had eaten them up, it could not be known that they had eaten them; but they were still ill favoured, as at the beginning. So I awoke."

Genesis 41:48: "And he gathered up all the food of the seven years, which were in the land of Egypt, and laid up the food in the cities: the food of the field, which was round about every city, laid he up in the same."

Genesis 41:50: "And unto Joseph were born two sons before the years of famine came, which Asenath the daughter of Potipherah priest of On bare unto him."

Genesis 41:53: "And the seven years of plenteousness, that was in the land of Egypt, were ended."

Genesis 42:28: "And he said unto his brethren, My money is restored; and, lo, it is even in my sack: and their heart failed them, and they were afraid, saying one to another, What is this that God hath done unto us?"

Genesis 42:35: "And it came to pass as they emptied their sacks, that, behold, every man's bundle of money was in his sack: and when both they and their father saw the bundles of money, they were afraid."

Genesis 43:18: "And the men were afraid, because they were brought into Joseph's house; and they said, Because of the money that was returned in our sacks at the first time are we brought in; that he may seek occasion against us, and fall upon us, and take us for bondmen, and our asses."

Genesis 43:34: "And he took and sent messes unto them from before him: but Benjamin's mess was five times so much as any of their's. And they drank, and were merry with him."

Genesis 44:3: "As soon as the morning was light, the men were sent away, they and their asses."

Genesis 44:4: "And when they were gone out of the city, and not yet far off, Joseph said unto his steward, Up, follow after the men; and when thou dost overtake them, say unto them, Wherefore have ye rewarded evil for good?"

Genesis 45:3: "And Joseph said unto his brethren, I am Joseph; doth my father yet live? And his brethren could not answer him; for they were troubled at his presence."

Genesis 46:12: "And the sons of Judah; Er, and Onan, and Shelah, and Pharez, and Zarah: but Er and Onan died in the land of Canaan. And the sons of Pharez were Hezron and Hamul."

Genesis 46:15: "These be the sons of Leah, which she bare unto Jacob in Padanaram, with his daughter Dinah: all the souls of his sons and his daughters were thirty and three."

Genesis 46:20: "And unto Joseph in the land of Egypt were born Manasseh and Ephraim, which Asenath the daughter of Potipherah priest of On bare unto him."

Genesis 46:21: "And the sons of Benjamin were Belah, and Becher, and Ashbel, Gera, and Naaman,



Ehi, and Rosh, Muppm, and Huppm, and Ard."

Genesis 46:22: "These are the sons of Rachel, which were born to Jacob: all the souls were fourteen."

Genesis 46:25: "These are the sons of Bilhah, which Laban gave unto Rachel his daughter, and she bare these unto Jacob: all the souls were seven."

Genesis 46:26: "All the souls that came with Jacob into Egypt, which came out of his loins, besides Jacob's sons' wives, all the souls were threescore and six;"

Genesis 46:27: "And the sons of Joseph, which were born him in Egypt, were two souls: all the souls of the house of Jacob, which came into Egypt, were threescore and ten."

Genesis 46:31: "And Joseph said unto his brethren, and unto his father's house, I will go up, and shew Pharaoh, and say unto him, My brethren, and my father's house, which were in the land of Canaan, are come unto me;"

Genesis 48:5: "And now thy two sons, Ephraim and Manasseh, which were born unto thee in the land of Egypt before I came unto thee into Egypt, are mine; as Reuben and Simeon, they shall be mine."

Genesis 48:10: "Now the eyes of Israel were dim for age, so that he could not see. And he brought them near unto him; and he kissed them, and embraced them."

Genesis 49:24: "But his bow abode in strength, and the arms of his hands were made strong by the hands of the mighty God of Jacob; (from thence is the shepherd, the stone of Israel:)"

Genesis 50:3: "And forty days were fulfilled for him; for so are fulfilled the days of those which are embalmed: and the Egyptians mourned for him threescore and ten days."

Genesis 50:4: "And when the days of his mourning were past, Joseph spake unto the house of Pharaoh, saying, If now I have found grace in your eyes, speak, I pray you, in the ears of Pharaoh, saying, "

Genesis 50:23: "And Joseph saw Ephraim's children of the third generation: the children also of Machir the son of Manasseh were brought up upon Joseph's knees."

Exodus 1:5: "And all the souls that came out of the loins of Jacob were seventy souls: for Joseph was in Egypt already."

Exodus 1:7: "And the children of Israel were fruitful, and increased abundantly, and multiplied, and waxed exceeding mighty; and the land was filled with them."

Exodus 1:12: "But the more they afflicted them, the more they multiplied and grew. And they were grieved because of the children of Israel."

Exodus 5:12: "So the people were scattered abroad throughout all the land of Egypt to gather stubble instead of straw."

Exodus 5:14: "And the officers of the children of Israel, which Pharaoh's taskmasters had set over them, were beaten, and demanded, Wherefore have ye not fulfilled your task in making brick both yesterday and to day, as heretofore?"

Exodus 5:19: "And the officers of the children of Israel did see that they were in evil case, after it was said, Ye shall not minish ought from your bricks of your daily task."

Exodus 6:4: "And I have also established my covenant with them, to give them the land of Canaan, the land of their pilgrimage, wherein they were strangers."

Exodus 6:16: "And these are the names of the sons of Levi according to their generations; Gershon, and Kohath, and Merari: and the years of the life of Levi were an hundred thirty and seven years."

Exodus 6:18: "And the sons of Kohath; Amram, and Izhar, and Hebron, and Uzziel: and the years of the life of Kohath were an hundred thirty and three years."

Exodus 6:20: "And Amram took him Jochebed his father's sister to wife; and she bare him Aaron and Moses: and the years of the life of Amram were an hundred and thirty and seven years."

Exodus 7:20: "And Moses and Aaron did so, as the LORD commanded; and he lifted up the rod, and smote the waters that were in the river, in the sight of Pharaoh, and in the sight of his servants; and all the waters that were in the river were turned to blood."

Exodus 7:25: "And seven days were fulfilled, after that the LORD had smitten the river."  
Exodus 8:18: "And the magicians did so with their enchantments to bring forth lice, but they could not: so there were lice upon man, and upon beast."  
Exodus 9:26: "Only in the land of Goshen, where the children of Israel were, was there no hail."  
Exodus 9:32: "But the wheat and the rye were not smitten: for they were not grown up."  
Exodus 9:34: "And when Pharaoh saw that the rain and the hail and the thunders were ceased, he sinned yet more, and hardened his heart, he and his servants."  
Exodus 10:6: "And they shall fill thy houses, and the houses of all thy servants, and the houses of all the Egyptians; which neither thy fathers, nor thy fathers' fathers have seen, since the day that they were upon the earth unto this day. And he turned himself, and went out from Pharaoh."  
Exodus 10:8: "And Moses and Aaron were brought again unto Pharaoh: and he said unto them, Go, serve the LORD your God: but who are they that shall go?"  
Exodus 10:11: "Not so: go now ye that are men, and serve the LORD; for that ye did desire. And they were driven out from Pharaoh's presence."  
Exodus 10:14: "And the locust went up over all the land of Egypt, and rested in all the coasts of Egypt: very grievous were they; before them there were no such locusts as they, neither after them shall be such."  
Exodus 12:33: "And the Egyptians were urgent upon the people, that they might send them out of the land in haste; for they said, We be all dead men."  
Exodus 12:37: "And the children of Israel journeyed from Rameses to Succoth, about six hundred thousand on foot that were men, beside children."  
Exodus 12:39: "And they baked unleavened cakes of the dough which they brought forth out of Egypt, for it was not leavened; because they were thrust out of Egypt, and could not tarry, neither had they prepared for themselves any victual."  
Exodus 14:10: "And when Pharaoh drew nigh, the children of Israel lifted up their eyes, and, behold, the Egyptians marched after them; and they were sore afraid: and the children of Israel cried out unto the LORD."  
Exodus 14:11: "And they said unto Moses, Because there were no graves in Egypt, hast thou taken us away to die in the wilderness? wherefore hast thou dealt thus with us, to carry us forth out of Egypt?"  
Exodus 14:21: "And Moses stretched out his hand over the sea; and the LORD caused the sea to go back by a strong east wind all that night, and made the sea dry land, and the waters were divided."  
Exodus 14:22: "And the children of Israel went into the midst of the sea upon the dry ground: and the waters were a wall unto them on their right hand, and on their left."  
Exodus 14:29: "But the children of Israel walked upon dry land in the midst of the sea; and the waters were a wall unto them on their right hand, and on their left."  
Exodus 15:8: "And with the blast of thy nostrils the waters were gathered together, the floods stood upright as an heap, and the depths were congealed in the heart of the sea."  
Exodus 15:23: "And when they came to Marah, they could not drink of the waters of Marah, for they were bitter: therefore the name of it was called Marah."  
Exodus 15:25: "And he cried unto the LORD; and the LORD shewed him a tree, which when he had cast into the waters, the waters were made sweet: there he made for them a statute and an ordinance, and there he proved them,"  
Exodus 15:27: "And they came to Elim, where were twelve wells of water, and threescore and ten palm trees: and they encamped there by the waters."  
Exodus 17:12: "But Moses' hands were heavy; and they took a stone, and put it under him, and he sat thereon; and Aaron and Hur stayed up his hands, the one on the one side, and the other on the other side; and his hands were steady until the going down of the sun."  
Exodus 19:1: "In the third month, when the children of Israel were gone forth out of the land of Egypt, the same day came they into the wilderness of Sinai."

Exodus 19:2: "For they were departed from Rephidim, and were come to the desert of Sinai, and had pitched in the wilderness; and there Israel camped before the mount."

Exodus 19:16: "And it came to pass on the third day in the morning, that there were thunders and lightnings, and a thick cloud upon the mount, and the voice of the trumpet exceeding loud; so that all the people that was in the camp trembled."

Exodus 21:3: "If he came in by himself, he shall go out by himself: if he were married, then his wife shall go out with him."

Exodus 21:29: "But if the ox were wont to push with his horn in time past, and it hath been testified to his owner, and he hath not kept him in, but that he hath killed a man or a woman; the ox shall be stoned, and his owner also shall be put to death."

Exodus 22:21: "Thou shalt neither vex a stranger, nor oppress him: for ye were strangers in the land of Egypt."

Exodus 23:9: "Also thou shalt not oppress a stranger: for ye know the heart of a stranger, seeing ye were strangers in the land of Egypt."

Exodus 24:10: "And they saw the God of Israel: and there was under his feet as it were a paved work of a sapphire stone, and as it were the body of heaven in his clearness."

Exodus 28:32: "And there shall be an hole in the top of it, in the midst thereof: it shall have a binding of woven work round about the hole of it, as it were the hole of an habergeon, that it be not rent."

Exodus 32:3: "And all the people brake off the golden earrings which were in their ears, and brought them unto Aaron."

Exodus 32:15: "And Moses turned, and went down from the mount, and the two tables of the testimony were in his hand: the tables were written on both their sides; on the one side and on the other were they written."

Exodus 32:16: "And the tables were the work of God, and the writing was the writing of God, graven upon the tables."

Exodus 32:25: "And when Moses saw that the people were naked; (for Aaron had made them naked unto their shame among their enemies:)"

Exodus 34:1: "And the LORD said unto Moses, Hew thee two tables of stone like unto the first: and I will write upon these tables the words that were in the first tables, which thou brakest."

Exodus 34:30: "And when Aaron and all the children of Israel saw Moses, behold, the skin of his face shone; and they were afraid to come nigh him."

Exodus 35:22: "And they came, both men and women, as many as were willing hearted, and brought bracelets, and earrings, and rings, and tablets, all jewels of gold: and every man that offered offered an offering of gold unto the LORD."

Exodus 35:25: "And all the women that were wise hearted did spin with their hands, and brought that which they had spun, both of blue, and of purple, and of scarlet, and of fine linen."

Exodus 36:6: "And Moses gave commandment, and they caused it to be proclaimed throughout the camp, saying, Let neither man nor woman make any more work for the offering of the sanctuary. So the people were restrained from bringing."

Exodus 36:9: "The length of one curtain was twenty and eight cubits, and the breadth of one curtain four cubits: the curtains were all of one size."

Exodus 36:15: "The length of one curtain was thirty cubits, and four cubits was the breadth of one curtain: the eleven curtains were of one size."

Exodus 36:29: "And they were coupled beneath, and coupled together at the head thereof, to one ring: thus he did to both of them in both the corners."

Exodus 36:30: "And there were eight boards; and their sockets were sixteen sockets of silver, under every board two sockets."

Exodus 36:36: "And he made thereunto four pillars of shittim wood, and overlaid them with gold: their hooks were of gold; and he cast for them four sockets of silver."

Exodus 36:38: "And the five pillars of it with their hooks: and he overlaid their chapiters and their fillets with gold: but their five sockets were of brass."

Exodus 37:9: "And the cherubims spread out their wings on high, and covered with their wings over the mercy seat, with their faces one to another; even to the mercy seatward were the faces of the cherubims."

Exodus 37:13: "And he cast for it four rings of gold, and put the rings upon the four corners that were in the four feet thereof."

Exodus 37:14: "Over against the border were the rings, the places for the staves to bear the table."

Exodus 37:16: "And he made the vessels which were upon the table, his dishes, and his spoons, and his bowls, and his covers to cover withal, of pure gold."

Exodus 37:17: "And he made the candlestick of pure gold: of beaten work made he the candlestick; his shaft, and his branch, his bowls, his knops, and his flowers, were of the same:"

Exodus 37:20: "And in the candlestick were four bowls made like almonds, his knops, and his flowers:"

Exodus 37:22: "Their knops and their branches were of the same: all of it was one beaten work of pure gold."

Exodus 37:25: "And he made the incense altar of shittim wood: the length of it was a cubit, and the breadth of it a cubit; it was foursquare; and two cubits was the height of it; the horns thereof were of the same."

Exodus 38:2: "And he made the horns thereof on the four corners of it; the horns thereof were of the same: and he overlaid it with brass."

Exodus 38:9: "And he made the court: on the south side southward the hangings of the court were of fine twined linen, an hundred cubits:"

Exodus 38:10: "Their pillars were twenty, and their brasen sockets twenty; the hooks of the pillars and their fillets were of silver."

Exodus 38:11: "And for the north side the hangings were an hundred cubits, their pillars were twenty, and their sockets of brass twenty; the hooks of the pillars and their fillets of silver."

Exodus 38:12: "And for the west side were hangings of fifty cubits, their pillars ten, and their sockets ten; the hooks of the pillars and their fillets of silver."

Exodus 38:14: "The hangings of the one side of the gate were fifteen cubits; their pillars three, and their sockets three."

Exodus 38:15: "And for the other side of the court gate, on this hand and that hand, were hangings of fifteen cubits; their pillars three, and their sockets three."

Exodus 38:16: "All the hangings of the court round about were of fine twined linen."

Exodus 38:17: "And the sockets for the pillars were of brass; the hooks of the pillars and their fillets of silver; and the overlaying of their chapiters of silver; and all the pillars of the court were filleted with silver."

Exodus 38:19: "And their pillars were four, and their sockets of brass four; their hooks of silver, and the overlaying of their chapiters and their fillets of silver."

Exodus 38:20: "And all the pins of the tabernacle, and of the court round about, were of brass."

Exodus 38:25: "And the silver of them that were numbered of the congregation was an hundred talents, and a thousand seven hundred and threescore and fifteen shekels, after the shekel of the sanctuary:"

Exodus 38:27: "And of the hundred talents of silver were cast the sockets of the sanctuary, and the sockets of the vail; an hundred sockets of the hundred talents, a talent for a socket."

Exodus 39:13: "And the fourth row, a beryl, an onyx, and a jasper: they were inclosed in ouches of gold in their inclosings."

Exodus 39:14: "And the stones were according to the names of the children of Israel, twelve, according to their names, like the engravings of a signet, every one with his name, according to the twelve tribes."

Exodus 40:37: "But if the cloud were not taken up, then they journeyed not till the day that it was taken up."

Leviticus 8:28: "And Moses took them from off their hands, and burnt them on the altar upon the burnt offering: they were consecrations for a sweet savour: it is an offering made by fire unto the LORD."

Leviticus 10:12: "And Moses spake unto Aaron, and unto Eleazar and unto Ithamar, his sons that were left, Take the meat offering that remaineth of the offerings of the LORD made by fire, and eat it without leaven beside the altar: for it is most holy:"

Leviticus 10:16: "And Moses diligently sought the goat of the sin offering, and, behold, it was burnt: and he was angry with Eleazar and Ithamar, the sons of Aaron which were left alive, saying,"

Leviticus 14:35: "And he that owneth the house shall come and tell the priest, saying, It seemeth to me there is as it were a plague in the house:"

Leviticus 18:27: "(For all these abominations have the men of the land done, which were before you, and the land is defiled;)"

Leviticus 18:28: "That the land spue not you out also, when ye defile it, as it spued out the nations that were before you."

Leviticus 18:30: "Therefore shall ye keep mine ordinance, that ye commit not any one of these abominable customs, which were committed before you, and that ye defile not yourselves therein: I am the LORD your God."

Leviticus 19:34: "But the stranger that dwelleth with you shall be unto you as one born among you, and thou shalt love him as thyself; for ye were strangers in the land of Egypt: I am the LORD your God."

Leviticus 26:37: "And they shall fall one upon another, as it were before a sword, when none pursueth: and ye shall have no power to stand before your enemies."

Numbers 1:1: "And the LORD spake unto Moses in the wilderness of Sinai, in the tabernacle of the congregation, on the first day of the second month, in the second year after they were come out of the land of Egypt, saying,"

Numbers 1:16: "These were the renowned of the congregation, princes of the tribes of their fathers, heads of thousands in Israel."

Numbers 1:20: "And the children of Reuben, Israel's eldest son, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, by their polls, every male from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:21: "Those that were numbered of them, even of the tribe of Reuben, were forty and six thousand and five hundred."

Numbers 1:22: "Of the children of Simeon, by their generations, after their families, by the house of their fathers, those that were numbered of them, according to the number of the names, by their polls, every male from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:23: "Those that were numbered of them, even of the tribe of Simeon, were fifty and nine thousand and three hundred."

Numbers 1:24: "Of the children of Gad, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:25: "Those that were numbered of them, even of the tribe of Gad, were forty and five thousand six hundred and fifty."

Numbers 1:26: "Of the children of Judah, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:27: "Those that were numbered of them, even of the tribe of Judah, were threescore and fourteen thousand and six hundred."

Numbers 1:28: "Of the children of Issachar, by their generations, after their families, by the house

of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:29: "Those that were numbered of them, even of the tribe of Issachar, were fifty and four thousand and four hundred."

Numbers 1:30: "Of the children of Zebulun, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:31: "Those that were numbered of them, even of the tribe of Zebulun, were fifty and seven thousand and four hundred."

Numbers 1:32: "Of the children of Joseph, namely, of the children of Ephraim, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:33: "Those that were numbered of them, even of the tribe of Ephraim, were forty thousand and five hundred."

Numbers 1:34: "Of the children of Manasseh, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:35: "Those that were numbered of them, even of the tribe of Manasseh, were thirty and two thousand and two hundred."

Numbers 1:36: "Of the children of Benjamin, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:37: "Those that were numbered of them, even of the tribe of Benjamin, were thirty and five thousand and four hundred."

Numbers 1:38: "Of the children of Dan, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:39: "Those that were numbered of them, even of the tribe of Dan, were threescore and two thousand and seven hundred."

Numbers 1:40: "Of the children of Asher, by their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:41: "Those that were numbered of them, even of the tribe of Asher, were forty and one thousand and five hundred."

Numbers 1:42: "Of the children of Naphtali, throughout their generations, after their families, by the house of their fathers, according to the number of the names, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war;"

Numbers 1:43: "Those that were numbered of them, even of the tribe of Naphtali, were fifty and three thousand and four hundred."

Numbers 1:44: "These are those that were numbered, which Moses and Aaron numbered, and the princes of Israel, being twelve men: each one was for the house of his fathers."

Numbers 1:45: "So were all those that were numbered of the children of Israel, by the house of their fathers, from twenty years old and upward, all that were able to go forth to war in Israel;"

Numbers 1:46: "Even all they that were numbered were six hundred thousand and three thousand and five hundred and fifty."

Numbers 1:47: "But the Levites after the tribe of their fathers were not numbered among them."

Numbers 2:4: "And his host, and those that were numbered of them, were threescore and fourteen thousand and six hundred."

Numbers 2:6: "And his host, and those that were numbered thereof, were fifty and four thousand and four hundred."

Numbers 2:8: "And his host, and those that were numbered thereof, were fifty and seven thousand and four hundred."

Numbers 2:9: "All that were numbered in the camp of Judah were an hundred thousand and fourscore thousand and six thousand and four hundred, throughout their armies. These shall first set forth."

Numbers 2:11: "And his host, and those that were numbered thereof, were forty and six thousand and five hundred."

Numbers 2:13: "And his host, and those that were numbered of them, were fifty and nine thousand and three hundred."

Numbers 2:15: "And his host, and those that were numbered of them, were forty and five thousand and six hundred and fifty."

Numbers 2:16: "All that were numbered in the camp of Reuben were an hundred thousand and fifty and one thousand and four hundred and fifty, throughout their armies. And they shall set forth in the second rank."

Numbers 2:19: "And his host, and those that were numbered of them, were forty thousand and five hundred."

Numbers 2:21: "And his host, and those that were numbered of them, were thirty and two thousand and two hundred."

Numbers 2:23: "And his host, and those that were numbered of them, were thirty and five thousand and four hundred."

Numbers 2:24: "All that were numbered of the camp of Ephraim were an hundred thousand and eight thousand and an hundred, throughout their armies. And they shall go forward in the third rank."

Numbers 2:26: "And his host, and those that were numbered of them, were threescore and two thousand and seven hundred."

Numbers 2:28: "And his host, and those that were numbered of them, were forty and one thousand and five hundred."

Numbers 2:30: "And his host, and those that were numbered of them, were fifty and three thousand and four hundred."

Numbers 2:31: "All they that were numbered in the camp of Dan were an hundred thousand and fifty and seven thousand and six hundred. They shall go hindmost with their standards."

Numbers 2:32: "These are those which were numbered of the children of Israel by the house of their fathers: all those that were numbered of the camps throughout their hosts were six hundred thousand and three thousand and five hundred and fifty."

Numbers 2:33: "But the Levites were not numbered among the children of Israel; as the LORD commanded Moses."

Numbers 3:3: "These are the names of the sons of Aaron, the priests which were anointed, whom he consecrated to minister in the priest's office."

Numbers 3:17: "And these were the sons of Levi by their names; Gershon, and Kohath, and Merari."

Numbers 3:22: "Those that were numbered of them, according to the number of all the males, from a month old and upward, even those that were numbered of them were seven thousand and five hundred."

Numbers 3:28: "In the number of all the males, from a month old and upward, were eight thousand and six hundred, keeping the charge of the sanctuary."

Numbers 3:34: "And those that were numbered of them, according to the number of all the males, from a month old and upward, were six thousand and two hundred."

Numbers 3:39: "All that were numbered of the Levites, which Moses and Aaron numbered at the commandment of the LORD, throughout their families, all the males from a month old and upward, were twenty and two thousand."

Numbers 3:43: "And all the firstborn males by the number of names, from a month old and upward, of those that were numbered of them, were twenty and two thousand two hundred and threescore and thirteen."

Numbers 3:49: "And Moses took the redemption money of them that were over and above them that were redeemed by the Levites:"

Numbers 3:51: "And Moses gave the money of them that were redeemed unto Aaron and to his sons, according to the word of the LORD, as the LORD commanded Moses."

Numbers 4:36: "And those that were numbered of them by their families were two thousand seven hundred and fifty."

Numbers 4:37: "These were they that were numbered of the families of the Kohathites, all that might do service in the tabernacle of the congregation, which Moses and Aaron did number according to the commandment of the LORD by the hand of Moses."

Numbers 4:38: "And those that were numbered of the sons of Gershon, throughout their families, and by the house of their fathers,"

Numbers 4:40: "Even those that were numbered of them, throughout their families, by the house of their fathers, were two thousand and six hundred and thirty."

Numbers 4:41: "These are they that were numbered of the families of the sons of Gershon, of all that might do service in the tabernacle of the congregation, whom Moses and Aaron did number according to the commandment of the LORD."

Numbers 4:42: "And those that were numbered of the families of the sons of Merari, throughout their families, by the house of their fathers,"

Numbers 4:44: "Even those that were numbered of them after their families, were three thousand and two hundred."

Numbers 4:45: "These be those that were numbered of the families of the sons of Merari, whom Moses and Aaron numbered according to the word of the LORD by the hand of Moses."

Numbers 4:46: "All those that were numbered of the Levites, whom Moses and Aaron and the chief of Israel numbered, after their families, and after the house of their fathers,"

Numbers 4:48: "Even those that were numbered of them, were eight thousand and five hundred and fourscore,"

Numbers 4:49: "According to the commandment of the LORD they were numbered by the hand of Moses, every one according to his service, and according to his burden: thus were they numbered of him, as the LORD commanded Moses."

Numbers 6:12: "And he shall consecrate unto the LORD the days of his separation, and shall bring a lamb of the first year for a trespass offering: but the days that were before shall be lost, because his separation was defiled."

Numbers 7:2: "That the princes of Israel, heads of the house of their fathers, who were the princes of the tribes, and were over them that were numbered, offered:"

Numbers 7:13: "And his offering was one silver charger, the weight thereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them were full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:86: "The golden spoons were twelve, full of incense, weighing ten shekels apiece, after the shekel of the sanctuary: all the gold of the spoons was an hundred and twenty shekels."

Numbers 7:87: "All the oxen for the burnt offering were twelve bullocks, the rams twelve, the lambs of the first year twelve, with their meat offering: and the kids of the goats for sin offering twelve."

Numbers 7:88: "And all the oxen for the sacrifice of the peace offerings were twenty and four bullocks, the rams sixty, the he goats sixty, the lambs of the first year sixty. This was the dedication of the altar, after that it was anointed."

Numbers 8:21: "And the Levites were purified, and they washed their clothes; and Aaron offered them as an offering before the LORD; and Aaron made an atonement for them to cleanse them."



Numbers 9:1: "And the LORD spake unto Moses in the wilderness of Sinai, in the first month of the second year after they were come out of the land of Egypt, saying,"

Numbers 9:6: "And there were certain men, who were defiled by the dead body of a man, that they could not keep the passover on that day: and they came before Moses and before Aaron on that day:"

Numbers 9:15: "And on the day that the tabernacle was reared up the cloud covered the tabernacle, namely, the tent of the testimony: and at even there was upon the tabernacle as it were the appearance of fire, until the morning."

Numbers 9:22: "Or whether it were two days, or a month, or a year, that the cloud tarried upon the tabernacle, remaining thereon, the children of Israel abode in their tents, and journeyed not: but when it was taken up, they journeyed."

Numbers 10:28: "Thus were the journeyings of the children of Israel according to their armies, when they set forward."

Numbers 11:1: "And when the people complained, it displeased the LORD: and the LORD heard it; and his anger was kindled; and the fire of the LORD burnt among them, and consumed them that were in the uttermost parts of the camp."

Numbers 11:26: "But there remained two of the men in the camp, the name of the one was Eldad, and the name of the other Medad: and the spirit rested upon them; and they were of them that were written, but went not out unto the tabernacle: and they prophesied in the camp."

Numbers 11:29: "And Moses said unto him, Enviest thou for my sake? would God that all the LORD's people were prophets, and that the LORD would put his spirit upon them!"

Numbers 11:31: "And there went forth a wind from the LORD, and brought quails from the sea, and let them fall by the camp, as it were a day's journey on this side, and as it were a day's journey on the other side, round about the camp, and as it were two cubits high upon the face of the earth."

Numbers 12:3: "(Now the man Moses was very meek, above all the men which were upon the face of the earth.)"

Numbers 12:8: "With him will I speak mouth to mouth, even apparently, and not in dark speeches; and the similitude of the LORD shall he behold: wherefore then were ye not afraid to speak against my servant Moses?"

Numbers 13:3: "And Moses by the commandment of the LORD sent them from the wilderness of Paran: all those men were heads of the children of Israel."

Numbers 13:4: "And these were their names: of the tribe of Reuben, Shammua the son of Zaccur."

Numbers 13:22: "And they ascended by the south, and came unto Hebron; where Ahiman, Sheshai, and Talmai, the children of Anak, were. (Now Hebron was built seven years before Zoan in Egypt.)"

Numbers 13:33: "And there we saw the giants, the sons of Anak, which come of the giants: and we were in our own sight as grasshoppers, and so we were in their sight."

Numbers 14:3: "And wherefore hath the LORD brought us unto this land, to fall by the sword, that our wives and our children should be a prey? were it not better for us to return into Egypt?"

Numbers 14:6: "And Joshua the son of Nun, and Caleb the son of Jephunneh, which were of them that searched the land, rent their clothes:"

Numbers 14:29: "Your carcasses shall fall in this wilderness; and all that were numbered of you, according to your whole number, from twenty years old and upward which have murmured against me."

Numbers 14:38: "But Joshua the son of Nun, and Caleb the son of Jephunneh, which were of the men that went to search the land, lived still."

Numbers 15:26: "And it shall be forgiven all the congregation of the children of Israel, and the stranger that sojourneth among them; seeing all the people were in ignorance."

Numbers 15:32: "And while the children of Israel were in the wilderness, they found a man that gathered sticks upon the sabbath day."

Numbers 16:34: "And all Israel that were round about them fled at the cry of them: for they said, Lest the earth swallow us up also."

Numbers 16:39: "And Eleazar the priest took the brasen censers, wherewith they that were burnt had offered; and they were made broad plates for a covering of the altar:"

Numbers 16:49: "Now they that died in the plague were fourteen thousand and seven hundred, beside them that died about the matter of Korah."

Numbers 18:27: "And this your heave offering shall be reckoned unto you, as though it were the corn of the threshingfloor, and as the fulness of the winepress."

Numbers 19:18: "And a clean person shall take hyssop, and dip it in the water, and sprinkle it upon the tent, and upon all the vessels, and upon the persons that were there, and upon him that touched a bone, or one slain, or one dead, or a grave:"

Numbers 21:32: "And Moses sent to spy out Jaazer, and they took the villages thereof, and drove out the Amorites that were there."

Numbers 22:3: "And Moab was sore afraid of the people, because they were many: and Moab was distressed because of the children of Israel."

Numbers 22:22: "And God's anger was kindled because he went: and the angel of the LORD stood in the way for an adversary against him. Now he was riding upon his ass, and his two servants were with him."

Numbers 22:29: "And Balaam said unto the ass, Because thou hast mocked me: I would there were a sword in mine hand, for now would I kill thee."

Numbers 22:40: "And Balak offered oxen and sheep, and sent to Balaam, and to the princes that were with him."

Numbers 23:22: "God brought them out of Egypt; he hath as it were the strength of an unicorn."

Numbers 24:8: "God brought him forth out of Egypt; he hath as it were the strength of an unicorn: he shall eat up the nations his enemies, and shall break their bones, and pierce them through with his arrows."

Numbers 25:5: "And Moses said unto the judges of Israel, Slay ye every one his men that were joined unto Baalpeor."

Numbers 25:6: "And, behold, one of the children of Israel came and brought unto his brethren a Midianitish woman in the sight of Moses, and in the sight of all the congregation of the children of Israel, who were weeping before the door of the tabernacle of the congregation."

Numbers 25:9: "And those that died in the plague were twenty and four thousand."

Numbers 26:7: "These are the families of the Reubenites: and they that were numbered of them were forty and three thousand and seven hundred and thirty."

Numbers 26:9: "And the sons of Eliab; Nemuel, and Dathan, and Abiram. This is that Dathan and Abiram, which were famous in the congregation, who strove against Moses and against Aaron in the company of Korah, when they strove against the LORD:"

Numbers 26:18: "These are the families of the children of Gad according to those that were numbered of them, forty thousand and five hundred."

Numbers 26:19: "The sons of Judah were Er and Onan: and Er and Onan died in the land of Canaan."

Numbers 26:20: "And the sons of Judah after their families were; of Shelah, the family of the Shelanites: of Pharez, the family of the Pharzites: of Zerah, the family of the Zarhites."

Numbers 26:21: "And the sons of Pharez were; of Hezron, the family of the Hezronites: of Hamul, the family of the Hamulites."

Numbers 26:22: "These are the families of Judah according to those that were numbered of them, threescore and sixteen thousand and five hundred."

Numbers 26:25: "These are the families of Issachar according to those that were numbered of them, threescore and four thousand and three hundred."

Numbers 26:27: "These are the families of the Zebulunites according to those that were numbered

of them, threescore thousand and five hundred."

Numbers 26:28: "The sons of Joseph after their families were Manasseh and Ephraim."

Numbers 26:33: "And Zelophehad the son of Hopher had no sons, but daughters: and the names of the daughters of Zelophehad were Mahlah, and Noah, Hoglah, Milcah, and Tirzah."

Numbers 26:34: "These are the families of Manasseh, and those that were numbered of them, fifty and two thousand and seven hundred."

Numbers 26:37: "These are the families of the sons of Ephraim according to those that were numbered of them, thirty and two thousand and five hundred. These are the sons of Joseph after their families."

Numbers 26:40: "And the sons of Bela were Ard and Naaman: of Ard, the family of the Ardites: and of Naaman, the family of the Naamites."

Numbers 26:41: "These are the sons of Benjamin after their families: and they that were numbered of them were forty and five thousand and six hundred."

Numbers 26:43: "All the families of the Shuhamites, according to those that were numbered of them, were threescore and four thousand and four hundred."

Numbers 26:47: "These are the families of the sons of Asher according to those that were numbered of them; who were fifty and three thousand and four hundred."

Numbers 26:50: "These are the families of Naphtali according to their families: and they that were numbered of them were forty and five thousand and four hundred."

Numbers 26:51: "These were the numbered of the children of Israel, six hundred thousand and a thousand seven hundred and thirty."

Numbers 26:54: "To many thou shalt give the more inheritance, and to few thou shalt give the less inheritance: to every one shall his inheritance be given according to those that were numbered of him."

Numbers 26:57: "And these are they that were numbered of the Levites after their families: of Gershon, the family of the Gershonites: of Kohath, the family of the Kohathites: of Merari, the family of the Merarites."

Numbers 26:62: "And those that were numbered of them were twenty and three thousand, all males from a month old and upward: for they were not numbered among the children of Israel, because there was no inheritance given them among the children of Israel."

Numbers 26:63: "These are they that were numbered by Moses and Eleazar the priest, who numbered the children of Israel in the plains of Moab by Jordan near Jericho."

Numbers 31:5: "So there were delivered out of the thousands of Israel, a thousand of every tribe, twelve thousand armed for war."

Numbers 31:8: "And they slew the kings of Midian, beside the rest of them that were slain; namely, Evi, and Rekem, and Zur, and Hur, and Reba, five kings of Midian: Balaam also the son of Beor they slew with the sword."

Numbers 31:38: "And the beeves were thirty and six thousand; of which the LORD's tribute was threescore and twelve."

Numbers 31:39: "And the asses were thirty thousand and five hundred; of which the LORD's tribute was threescore and one."

Numbers 31:40: "And the persons were sixteen thousand; of which the LORD's tribute was thirty and two persons."

Numbers 31:48: "And the officers which were over thousands of the host, the captains of thousands, and captains of hundreds, came near unto Moses:"

Numbers 33:9: "And they removed from Marah, and came unto Elim: and in Elim were twelve fountains of water, and threescore and ten palm trees; and they pitched there."

Numbers 33:38: "And Aaron the priest went up into mount Hor at the commandment of the LORD, and died there, in the fortieth year after the children of Israel were come out of the land of Egypt, in the first day of the fifth month."

Numbers 36:11: "For Mahlah, Tirzah, and Hoglah, and Milcah, and Noah, the daughters of Zelophehad, were married unto their father's brothers' sons:"

Numbers 36:12: "And they were married into the families of the sons of Manasseh the son of Joseph, and their inheritance remained in the tribe of the family of their father."

Deuteronomy 1:41: "Then ye answered and said unto me, We have sinned against the LORD, we will go up and fight, according to all that the LORD our God commanded us. And when ye had girded on every man his weapons of war, ye were ready to go up into the hill."

Deuteronomy 2:11: "Which also were accounted giants, as the Anakims; but the Moabites called them Emims."

Deuteronomy 2:14: "And the space in which we came from Kadeshbarnea, until we were come over the brook Zered, was thirty and eight years; until all the generation of the men of war were wasted out from among the host, as the LORD sware unto them."

Deuteronomy 2:15: "For indeed the hand of the LORD was against them, to destroy them from among the host, until they were consumed."

Deuteronomy 2:16: "So it came to pass, when all the men of war were consumed and dead from among the people,"

Deuteronomy 3:5: "All these cities were fenced with high walls, gates, and bars; beside unwalled towns a great many."

Deuteronomy 4:32: "For ask now of the days that are past, which were before thee, since the day that God created man upon the earth, and ask from the one side of heaven unto the other, whether there hath been any such thing as this great thing is, or hath been heard like it?"

Deuteronomy 4:46: "On this side Jordan, in the valley over against Bethpeor, in the land of Sihon king of the Amorites, who dwelt at Heshbon, whom Moses and the children of Israel smote, after they were come forth out of Egypt:"

Deuteronomy 4:47: "And they possessed his land, and the land of Og king of Bashan, two kings of the Amorites, which were on this side Jordan toward the sunrising;"

Deuteronomy 5:5: "(I stood between the LORD and you at that time, to shew you the word of the LORD: for ye were afraid by reason of the fire, and went not up into the mount;) saying,"

Deuteronomy 5:29: "O that there were such an heart in them, that they would fear me, and keep all my commandments always, that it might be well with them, and with their children for ever!"

Deuteronomy 6:21: "Then thou shalt say unto thy son, We were Pharaoh's bondmen in Egypt; and the LORD brought us out of Egypt with a mighty hand:"

Deuteronomy 7:7: "The LORD did not set his love upon you, nor choose you, because ye were more in number than any people; for ye were the fewest of all people:"

Deuteronomy 8:15: "Who led thee through that great and terrible wilderness, wherein were fiery serpents, and scorpions, and drought, where there was no water; who brought thee forth water out of the rock of flint;"

Deuteronomy 9:15: "So I turned and came down from the mount, and the mount burned with fire: and the two tables of the covenant were in my two hands."

Deuteronomy 10:2: "And I will write on the tables the words that were in the first tables which thou brakest, and thou shalt put them in the ark."

Deuteronomy 10:19: "Love ye therefore the stranger: for ye were strangers in the land of Egypt."

Deuteronomy 24:9: "Remember what the LORD thy God did unto Miriam by the way, after that ye were come forth out of Egypt."

Deuteronomy 25:17: "Remember what Amalek did unto thee by the way, when ye were come forth out of Egypt;"

Deuteronomy 25:18: "How he met thee by the way, and smote the hindmost of thee, even all that were feeble behind thee, when thou wast faint and weary; and he feared not God."

Deuteronomy 28:62: "And ye shall be left few in number, whereas ye were as the stars of heaven for multitude; because thou wouldest not obey the voice of the LORD thy God."

Deuteronomy 28:67: "In the morning thou shalt say, Would God it were even! and at even thou shalt say, Would God it were morning! for the fear of thine heart wherewith thou shalt fear, and for the sight of thine eyes which thou shalt see."

Deuteronomy 29:17: "And ye have seen their abominations, and their idols, wood and stone, silver and gold, which were among them:)"

Deuteronomy 31:24: "And it came to pass, when Moses had made an end of writing the words of this law in a book, until they were finished,"

Deuteronomy 31:30: "And Moses spake in the ears of all the congregation of Israel the words of this song, until they were ended."

Deuteronomy 32:27: "Were it not that I feared the wrath of the enemy, lest their adversaries should behave themselves strangely, and lest they should say, Our hand is high, and the LORD hath not done all this."

Deuteronomy 32:29: "O that they were wise, that they understood this, that they would consider their latter end!"

Deuteronomy 33:5: "And he was king in Jeshurun, when the heads of the people and the tribes of Israel were gathered together."

Deuteronomy 34:8: "And the children of Israel wept for Moses in the plains of Moab thirty days: so the days of weeping and mourning for Moses were ended."

Joshua 2:4: "And the woman took the two men, and hid them, and said thus, There came men unto me, but I wist not whence they were:"

Joshua 2:7: "And the men pursued after them the way to Jordan unto the fords: and as soon as they which pursued after them were gone out, they shut the gate."

Joshua 2:8: "And before they were laid down, she came up unto them upon the roof;"

Joshua 2:10: "For we have heard how the LORD dried up the water of the Red sea for you, when ye came out of Egypt; and what ye did unto the two kings of the Amorites, that were on the other side Jordan, Sihon and Og, whom ye utterly destroyed."

Joshua 2:22: "And they went, and came unto the mountain, and abode there three days, until the pursuers were returned: and the pursuers sought them throughout all the way, but found them not."

Joshua 3:15: "And as they that bare the ark were come unto Jordan, and the feet of the priests that bare the ark were dipped in the brim of the water, (for Jordan overfloweth all his banks all the time of harvest,)"

Joshua 3:16: "That the waters which came down from above stood and rose up upon an heap very far from the city Adam, that is beside Zaretan: and those that came down toward the sea of the plain, even the salt sea, failed, and were cut off: and the people passed over right against Jericho."

Joshua 3:17: "And the priests that bare the ark of the covenant of the LORD stood firm on dry ground in the midst of Jordan, and all the Israelites passed over on dry ground, until all the people were passed clean over Jordan."

Joshua 4:1: "And it came to pass, when all the people were clean passed over Jordan, that the LORD spake unto Joshua, saying,"

Joshua 4:7: "Then ye shall answer them, That the waters of Jordan were cut off before the ark of the covenant of the LORD; when it passed over Jordan, the waters of Jordan were cut off: and these stones shall be for a memorial unto the children of Israel for ever."

Joshua 4:11: "And it came to pass, when all the people were clean passed over, that the ark of the LORD passed over, and the priests, in the presence of the people."

Joshua 4:18: "And it came to pass, when the priests that bare the ark of the covenant of the LORD were come up out of the midst of Jordan, and the soles of the priests' feet were lifted up unto the dry land, that the waters of Jordan returned unto their place, and flowed over all his banks, as they did before."

Joshua 4:23: "For the LORD your God dried up the waters of Jordan from before you, until ye were passed over, as the LORD your God did to the Red sea, which he dried up from before us, until we

were gone over:"

Joshua 5:1: "And it came to pass, when all the kings of the Amorites, which were on the side of Jordan westward, and all the kings of the Canaanites, which were by the sea, heard that the LORD had dried up the waters of Jordan from before the children of Israel, until we were passed over, that their heart melted, neither was there spirit in them any more, because of the children of Israel."

Joshua 5:4: "And this is the cause why Joshua did circumcise: All the people that came out of Egypt, that were males, even all the men of war, died in the wilderness by the way, after they came out of Egypt."

Joshua 5:5: "Now all the people that came out were circumcised: but all the people that were born in the wilderness by the way as they came forth out of Egypt, them they had not circumcised."

Joshua 5:6: "For the children of Israel walked forty years in the wilderness, till all the people that were men of war, which came out of Egypt, were consumed, because they obeyed not the voice of the LORD: unto whom the LORD sware that he would not shew them the land, which the LORD sware unto their fathers that he would give us, a land that floweth with milk and honey."

Joshua 5:7: "And their children, whom he raised up in their stead, them Joshua circumcised: for they were uncircumcised, because they had not circumcised them by the way."

Joshua 5:8: "And it came to pass, when they had done circumcising all the people, that they abode in their places in the camp, till they were whole."

Joshua 6:23: "And the young men that were spies went in, and brought out Rahab, and her father, and her mother, and her brethren, and all that she had; and they brought out all her kindred, and left them without the camp of Israel."

Joshua 7:12: "Therefore the children of Israel could not stand before their enemies, but turned their backs before their enemies, because they were accursed: neither will I be with you any more, except ye destroy the accursed from among you."

Joshua 8:11: "And all the people, even the people of war that were with him, went up, and drew nigh, and came before the city, and pitched on the north side of Ai: now there was a valley between them and Ai."

Joshua 8:14: "And it came to pass, when the king of Ai saw it, that they hastened and rose up early, and the men of the city went out against Israel to battle, he and all his people, at a time appointed, before the plain; but he wist not that there were liers in ambush against him behind the city."

Joshua 8:15: "And Joshua and all Israel made as if they were beaten before them, and fled by the way of the wilderness."

Joshua 8:16: "And all the people that were in Ai were called together to pursue after them: and they pursued after Joshua, and were drawn away from the city."

Joshua 8:22: "And the other issued out of the city against them; so they were in the midst of Israel, some on this side, and some on that side: and they smote them, so that they let none of them remain or escape."

Joshua 8:24: "And it came to pass, when Israel had made an end of slaying all the inhabitants of Ai in the field, in the wilderness wherein they chased them, and when they were all fallen on the edge of the sword, until they were consumed, that all the Israelites returned unto Ai, and smote it with the edge of the sword."

Joshua 8:25: "And so it was, that all that fell that day, both of men and women, were twelve thousand, even all the men of Ai."

Joshua 8:35: "There was not a word of all that Moses commanded, which Joshua read not before all the congregation of Israel, with the women, and the little ones, and the strangers that were conversant among them."

Joshua 9:1: "And it came to pass, when all the kings which were on this side Jordan, in the hills, and in the valleys, and in all the coasts of the great sea over against Lebanon, the Hittite, and the Amorite, the Canaanite, the Perizzite, the Hivite, and the Jebusite, heard thereof;"

Joshua 9:10: "And all that he did to the two kings of the Amorites, that were beyond Jordan, to

Sihon king of Heshbon, and to Og king of Bashan, which was at Ashtaroth."

Joshua 9:13: "And these bottles of wine, which we filled, were new; and, behold, they be rent: and these our garments and our shoes are become old by reason of the very long journey."

Joshua 9:16: "And it came to pass at the end of three days after they had made a league with them, that they heard that they were their neighbours, and that they dwelt among them."

Joshua 9:17: "And the children of Israel journeyed, and came unto their cities on the third day. Now their cities were Gibeon, and Chephirah, and Beeroth, and Kirjathjearim."

Joshua 9:24: "And they answered Joshua, and said, Because it was certainly told thy servants, how that the LORD thy God commanded his servant Moses to give you all the land, and to destroy all the inhabitants of the land from before you, therefore we were sore afraid of our lives because of you, and have done this thing."

Joshua 10:1: "Now it came to pass, when Adonizedec king of Jerusalem had heard how Joshua had taken Ai, and had utterly destroyed it; as he had done to Jericho and her king, so he had done to Ai and her king; and how the inhabitants of Gibeon had made peace with Israel, and were among them;"

Joshua 10:2: "That they feared greatly, because Gibeon was a great city, as one of the royal cities, and because it was greater than Ai, and all the men thereof were mighty."

Joshua 10:11: "And it came to pass, as they fled from before Israel, and were in the going down to Bethhoron, that the LORD cast down great stones from heaven upon them unto Azekah, and they died: they were more which died with hailstones than they whom the children of Israel slew with the sword."

Joshua 10:20: "And it came to pass, when Joshua and the children of Israel had made an end of slaying them with a very great slaughter, till they were consumed, that the rest which remained of them entered into fenced cities."

Joshua 10:26: "And afterward Joshua smote them, and slew them, and hanged them on five trees: and they were hanging upon the trees until the evening."

Joshua 10:28: "And that day Joshua took Makkedah, and smote it with the edge of the sword, and the king thereof he utterly destroyed, them, and all the souls that were therein; he let none remain: and he did to the king of Makkedah as he did unto the king of Jericho."

Joshua 10:30: "And the LORD delivered it also, and the king thereof, into the hand of Israel; and he smote it with the edge of the sword, and all the souls that were therein; he let none remain in it; but did unto the king thereof as he did unto the king of Jericho."

Joshua 10:32: "And the LORD delivered Lachish into the hand of Israel, which took it on the second day, and smote it with the edge of the sword, and all the souls that were therein, according to all that he had done to Libnah."

Joshua 10:35: "And they took it on that day, and smote it with the edge of the sword, and all the souls that were therein he utterly destroyed that day, according to all that he had done to Lachish."

Joshua 10:37: "And they took it, and smote it with the edge of the sword, and the king thereof, and all the cities thereof, and all the souls that were therein; he left none remaining, according to all that he had done to Eglon; but destroyed it utterly, and all the souls that were therein."

Joshua 10:39: "And he took it, and the king thereof, and all the cities thereof; and they smote them with the edge of the sword, and utterly destroyed all the souls that were therein; he left none remaining: as he had done to Hebron, so he did to Debir, and to the king thereof; as he had done also to Libnah, and to her king."

Joshua 11:2: "And to the kings that were on the north of the mountains, and of the plains south of Chinneroth, and in the valley, and in the borders of Dor on the west,"

Joshua 11:5: "And when all these kings were met together, they came and pitched together at the waters of Merom, to fight against Israel."

Joshua 11:11: "And they smote all the souls that were therein with the edge of the sword, utterly destroying them: there was not any left to breathe: and he burnt Hazor with fire."

Joshua 13:21: "And all the cities of the plain, and all the kingdom of Sihon king of the Amorites, which reigned in Heshbon, whom Moses smote with the princes of Midian, Evi, and Rekem, and Zur, and Hur, and Reba, which were dukes of Sihon, dwelling in the country."

Joshua 13:22: "Balaam also the son of Beor, the soothsayer, did the children of Israel slay with the sword among them that were slain by them."

Joshua 13:31: "And half Gilead, and Ashtaroth, and Edrei, cities of the kingdom of Og in Bashan, were pertaining unto the children of Machir the son of Manasseh, even to the one half of the children of Machir by their families."

Joshua 14:4: "For the children of Joseph were two tribes, Manasseh and Ephraim: therefore they gave no part unto the Levites in the land, save cities to dwell in, with their suburbs for their cattle and for their substance."

Joshua 14:12: "Now therefore give me this mountain, whereof the LORD spake in that day; for thou heardest in that day how the Anakims were there, and that the cities were great and fenced: if so be the LORD will be with me, then I shall be able to drive them out, as the LORD said."

Joshua 15:4: "From thence it passed toward Azmon, and went out unto the river of Egypt; and the goings out of that coast were at the sea: this shall be your south coast."

Joshua 15:7: "And the border went up toward Debir from the valley of Achor, and so northward, looking toward Gilgal, that is before the going up to Adummim, which is on the south side of the river: and the border passed toward the waters of Enshemesh, and the goings out thereof were at Enrogel:"

Joshua 15:11: "And the border went out unto the side of Ekron northward: and the border was drawn to Shicron, and passed along to mount Baalah, and went out unto Jabneel; and the goings out of the border were at the sea."

Joshua 15:21: "And the uttermost cities of the tribe of the children of Judah toward the coast of Edom southward were Kabzeel, and Eder, and Jagur,"

Joshua 16:8: "The border went out from Tappuah westward unto the river Kanah; and the goings out thereof were at the sea. This is the inheritance of the tribe of the children of Ephraim by their families."

Joshua 16:9: "And the separate cities for the children of Ephraim were among the inheritance of the children of Manasseh, all the cities with their villages."

Joshua 17:2: "There was also a lot for the rest of the children of Manasseh by their families; for the children of Abiezer, and for the children of Helek, and for the children of Asriel, and for the children of Shechem, and for the children of Hopher, and for the children of Shemida: these were the male children of Manasseh the son of Joseph by their families."

Joshua 17:5: "And there fell ten portions to Manasseh, beside the land of Gilead and Bashan, which were on the other side Jordan;"

Joshua 17:9: "And the coast descended unto the river Kanah, southward of the river: these cities of Ephraim are among the cities of Manasseh: the coast of Manasseh also was on the north side of the river, and the outgoings of it were at the sea:"

Joshua 17:13: "Yet it came to pass, when the children of Israel were waxen strong, that they put the Canaanites to tribute, but did not utterly drive them out."

Joshua 18:12: "And their border on the north side was from Jordan; and the border went up to the side of Jericho on the north side, and went up through the mountains westward; and the goings out thereof were at the wilderness of Bethaven."

Joshua 18:14: "And the border was drawn thence, and compassed the corner of the sea southward, from the hill that lieth before Bethhoron southward; and the goings out thereof were at Kirjathbaal, which is Kirjathjearim, a city of the children of Judah: this was the west quarter."

Joshua 18:19: "And the border passed along to the side of Bethhoglah northward: and the outgoings of the border were at the north bay of the salt sea at the south end of Jordan: this was the south coast."



Joshua 18:21: "Now the cities of the tribe of the children of Benjamin according to their families were Jericho, and Bethhoglah, and the valley of Keziz,"

Joshua 19:8: "And all the villages that were round about these cities to Baalathbeer, Ramath of the south. This is the inheritance of the tribe of the children of Simeon according to their families."

Joshua 19:22: "And the coast reacheth to Tabor, and Shahazimah, and Bethshemesh; and the outgoings of their border were at Jordan: sixteen cities with their villages."

Joshua 19:33: "And their coast was from Heleph, from Allon to Zaanannim, and Adami, Nekeb, and Jabneel, unto Lakum; and the outgoings thereof were at Jordan:"

Joshua 20:9: "These were the cities appointed for all the children of Israel, and for the stranger that sojourneth among them, that whosoever killeth any person at unawares might flee thither, and not die by the hand of the avenger of blood, until he stood before the congregation."

Joshua 21:4: "And the lot came out for the families of the Kohathites: and the children of Aaron the priest, which were of the Levites, had by lot out of the tribe of Judah, and out of the tribe of Simeon, and out of the tribe of Benjamin, thirteen cities."

Joshua 21:10: "Which the children of Aaron, being of the families of the Kohathites, who were of the children of Levi, had: for theirs was the first lot."

Joshua 21:19: "All the cities of the children of Aaron, the priests, were thirteen cities with their suburbs."

Joshua 21:26: "All the cities were ten with their suburbs for the families of the children of Kohath that remained."

Joshua 21:33: "All the cities of the Gershonites according to their families were thirteen cities with their suburbs."

Joshua 21:40: "So all the cities for the children of Merari by their families, which were remaining of the families of the Levites, were by their lot twelve cities."

Joshua 21:41: "All the cities of the Levites within the possession of the children of Israel were forty and eight cities with their suburbs."

Joshua 21:42: "These cities were every one with their suburbs round about them: thus were all these cities."

Joshua 22:9: "And the children of Reuben and the children of Gad and the half tribe of Manasseh returned, and departed from the children of Israel out of Shiloh, which is in the land of Canaan, to go unto the country of Gilead, to the land of their possession, whereof they were possessed, according to the word of the LORD by the hand of Moses."

Joshua 22:30: "And when Phinehas the priest, and the princes of the congregation and heads of the thousands of Israel which were with him, heard the words that the children of Reuben and the children of Gad and the children of Manasseh spake, it pleased them."

Joshua 24:15: "And if it seem evil unto you to serve the LORD, choose you this day whom ye will serve; whether the gods which your fathers served that were on the other side of the flood, or the gods of the Amorites, in whose land ye dwell: but as for me and my house, we will serve the LORD."

Judges 2:10: "And also all that generation were gathered unto their fathers: and there arose another generation after them, which knew not the LORD, nor yet the works which he had done for Israel."

Judges 2:12: "And they forsook the LORD God of their fathers, which brought them out of the land of Egypt, and followed other gods, of the gods of the people that were round about them, and bowed themselves unto them, and provoked the LORD to anger."

Judges 2:15: "Whithersoever they went out, the hand of the LORD was against them for evil, as the LORD had said, and as the LORD had sworn unto them: and they were greatly distressed."

Judges 3:4: "And they were to prove Israel by them, to know whether they would hearken unto the commandments of the LORD, which he commanded their fathers by the hand of Moses."

Judges 3:19: "But he himself turned again from the quarries that were by Gilgal, and said, I have a secret errand unto thee, O king: who said, Keep silence. And all that stood by him went out from

him."

Judges 3:24: "When he was gone out, his servants came; and when they saw that, behold, the doors of the parlour were locked, they said, Surely he covereth his feet in his summer chamber."

Judges 3:25: "And they tarried till they were ashamed: and, behold, he opened not the doors of the parlour; therefore they took a key, and opened them: and, behold, their lord was fallen down dead on the earth."

Judges 4:13: "And Sisera gathered together all his chariots, even nine hundred chariots of iron, and all the people that were with him, from Harosheth of the Gentiles unto the river of Kishon."

Judges 5:6: "In the days of Shamgar the son of Anath, in the days of Jael, the highways were unoccupied, and the travellers walked through byways."

Judges 5:15: "And the princes of Issachar were with Deborah; even Issachar, and also Barak: he was sent on foot into the valley. For the divisions of Reuben there were great thoughts of heart."

Judges 5:16: "Why abodest thou among the sheepfolds, to hear the bleatings of the flocks? For the divisions of Reuben there were great searchings of heart."

Judges 5:18: "Zebulun and Naphtali were a people that jeopardated their lives unto the death in the high places of the field."

Judges 5:22: "Then were the horsehoofs broken by the means of the pransings, the pransings of their mighty ones."

Judges 6:5: "For they came up with their cattle and their tents, and they came as grasshoppers for multitude; for both they and their camels were without number: and they entered into the land to destroy it."

Judges 6:33: "Then all the Midianites and the Amalekites and the children of the east were gathered together, and went over, and pitched in the valley of Jezreel."

Judges 7:1: "Then Jerubbaal, who is Gideon, and all the people that were with him, rose up early, and pitched beside the well of Harod: so that the host of the Midianites were on the north side of them, by the hill of Moreh, in the valley."

Judges 7:6: "And the number of them that lapped, putting their hand to their mouth, were three hundred men: but all the rest of the people bowed down upon their knees to drink water."

Judges 7:11: "And thou shalt hear what they say; and afterward shall thine hands be strengthened to go down unto the host. Then went he down with Phurah his servant unto the outside of the armed men that were in the host."

Judges 7:12: "And the Midianites and the Amalekites and all the children of the east lay along in the valley like grasshoppers for multitude; and their camels were without number, as the sand by the sea side for multitude."

Judges 7:19: "So Gideon, and the hundred men that were with him, came unto the outside of the camp in the beginning of the middle watch; and they had but newly set the watch: and they blew the trumpets, and brake the pitchers that were in their hands."

Judges 8:4: "And Gideon came to Jordan, and passed over, he, and the three hundred men that were with him, faint, yet pursuing them."

Judges 8:10: "Now Zebah and Zalmunna were in Karkor, and their hosts with them, about fifteen thousand men, all that were left of all the hosts of the children of the east: for there fell an hundred and twenty thousand men that drew sword."

Judges 8:18: "Then said he unto Zebah and Zalmunna, What manner of men were they whom ye slew at Tabor? And they answered, As thou art, so were they; each one resembled the children of a king."

Judges 8:19: "And he said, They were my brethren, even the sons of my mother: as the LORD liveth, if ye had saved them alive, I would not slay you."

Judges 8:21: "Then Zebah and Zalmunna said, Rise thou, and fall upon us: for as the man is, so is his strength. And Gideon arose, and slew Zebah and Zalmunna, and took away the ornaments that were on their camels' necks."

Judges 8:24: "And Gideon said unto them, I would desire a request of you, that ye would give me every man the earrings of his prey. (For they had golden earrings, because they were Ishmaelites.)"

Judges 8:26: "And the weight of the golden earrings that he requested was a thousand and seven hundred shekels of gold; beside ornaments, and collars, and purple raiment that was on the kings of Midian, and beside the chains that were about their camels' necks."

Judges 9:29: "And would to God this people were under my hand! then would I remove Abimelech. And he said to Abimelech, Increase thine army, and come out."

Judges 9:34: "And Abimelech rose up, and all the people that were with him, by night, and they laid wait against Shechem in four companies."

Judges 9:35: "And Gaal the son of Ebed went out, and stood in the entering of the gate of the city: and Abimelech rose up, and the people that were with him, from lying in wait."

Judges 9:36: "And when Gaal saw the people, he said to Zebul, Behold, there come people down from the top of the mountains. And Zebul said unto him, Thou seest the shadow of the mountains as if they were men."

Judges 9:40: "And Abimelech chased him, and he fled before him, and many were overthrown and wounded, even unto the entering of the gate."

Judges 9:43: "And he took the people, and divided them into three companies, and laid wait in the field, and looked, and, behold, the people were come forth out of the city; and he rose up against them, and smote them."

Judges 9:44: "And Abimelech, and the company that was with him, rushed forward, and stood in the entering of the gate of the city: and the two other companies ran upon all the people that were in the fields, and slew them."

Judges 9:47: "And it was told Abimelech, that all the men of the tower of Shechem were gathered together."

Judges 9:48: "And Abimelech gat him up to mount Zalmon, he and all the people that were with him; and Abimelech took an axe in his hand, and cut down a bough from the trees, and took it, and laid it on his shoulder, and said unto the people that were with him, What ye have seen me do, make haste, and do as I have done."

Judges 10:8: "And that year they vexed and oppressed the children of Israel: eighteen years, all the children of Israel that were on the other side Jordan in the land of the Amorites, which is in Gilead."

Judges 10:17: "Then the children of Ammon were gathered together, and encamped in Gilead. And the children of Israel assembled themselves together, and encamped in Mizpeh."

Judges 11:3: "Then Jephthah fled from his brethren, and dwelt in the land of Tob: and there were gathered vain men to Jephthah, and went out with him."

Judges 11:33: "And he smote them from Aroer, even till thou come to Minnith, even twenty cities, and unto the plain of the vineyards, with a very great slaughter. Thus the children of Ammon were subdued before the children of Israel."

Judges 12:2: "And Jephthah said unto them, I and my people were at great strife with the children of Ammon; and when I called you, ye delivered me not out of their hands."

Judges 12:5: "And the Gileadites took the passages of Jordan before the Ephraimites: and it was so, that when those Ephraimites which were escaped said, Let me go over; that the men of Gilead said unto him, Art thou an Ephraimite? If he said, Nay;"

Judges 13:23: "But his wife said unto him, If the LORD were pleased to kill us, he would not have received a burnt offering and a meat offering at our hands, neither would he have shewed us all these things, nor would as at this time have told us such things as these."

Judges 15:14: "And when he came unto Lehi, the Philistines shouted against him: and the Spirit of the LORD came mightily upon him, and the cords that were upon his arms became as flax that was burnt with fire, and his bands loosed from off his hands."

Judges 16:2: "And it was told the Gazites, saying, Samson is come hither. And they compassed him in, and laid wait for him all night in the gate of the city, and were quiet all the night, saying, In the

morning, when it is day, we shall kill him."

Judges 16:7: "And Samson said unto her, If they bind me with seven green withs that were never dried, then shall I be weak, and be as another man."

Judges 16:9: "Now there were men lying in wait, abiding with her in the chamber. And she said unto him, The Philistines be upon thee, Samson. And he brake the withs, as a thread of tow is broken when it toucheth the fire. So his strength was not known."

Judges 16:11: "And he said unto her, If they bind me fast with new ropes that never were occupied, then shall I be weak, and be as another man."

Judges 16:12: "Delilah therefore took new ropes, and bound him therewith, and said unto him, The Philistines be upon thee, Samson. And there were liers in wait abiding in the chamber. And he brake them from off his arms like a thread."

Judges 16:25: "And it came to pass, when their hearts were merry, that they said, Call for Samson, that he may make us sport. And they called for Samson out of the prison house; and he made them sport: and they set him between the pillars."

Judges 16:27: "Now the house was full of men and women; and all the lords of the Philistines were there; and there were upon the roof about three thousand men and women, that beheld while Samson made sport."

Judges 16:30: "And Samson said, Let me die with the Philistines. And he bowed himself with all his might; and the house fell upon the lords, and upon all the people that were therein. So the dead which he slew at his death were more than they which he slew in his life."

Judges 17:2: "And he said unto his mother, The eleven hundred shekels of silver that were taken from thee, about which thou cursedst, and spakest of also in mine ears, behold, the silver is with me; I took it. And his mother said, Blessed be thou of the LORD, my son."

Judges 17:4: "Yet he restored the money unto his mother; and his mother took two hundred shekels of silver, and gave them to the founder, who made thereof a graven image and a molten image: and they were in the house of Micah."

Judges 18:3: "When they were by the house of Micah, they knew the voice of the young man the Levite: and they turned in thither, and said unto him, Who brought thee hither? and what makest thou in this place? and what hast thou here?"

Judges 18:7: "Then the five men departed, and came to Laish, and saw the people that were therein, how they dwelt careless, after the manner of the Zidonians, quiet and secure; and there was no magistrate in the land, that might put them to shame in any thing; and they were far from the Zidonians, and had no business with any man."

Judges 18:16: "And the six hundred men appointed with their weapons of war, which were of the children of Dan, stood by the entering of the gate."

Judges 18:17: "And the five men that went to spy out the land went up, and came in thither, and took the graven image, and the ephod, and the teraphim, and the molten image: and the priest stood in the entering of the gate with the six hundred men that were appointed with weapons of war."

Judges 18:22: "And when they were a good way from the house of Micah, the men that were in the houses near to Micah's house were gathered together, and overtook the children of Dan."

Judges 18:26: "And the children of Dan went their way: and when Micah saw that they were too strong for him, he turned and went back unto his house."

Judges 18:27: "And they took the things which Micah had made, and the priest which he had, and came unto Laish, unto a people that were at quiet and secure: and they smote them with the edge of the sword, and burnt the city with fire."

Judges 18:30: "And the children of Dan set up the graven image: and Jonathan, the son of Gershom, the son of Manasseh, he and his sons were priests to the tribe of Dan until the day of the captivity of the land."

Judges 19:10: "But the man would not tarry that night, but he rose up and departed, and came over against Jebus, which is Jerusalem; and there were with him two asses saddled, his concubine also

was with him."

Judges 19:11: "And when they were by Jebus, the day was far spent; and the servant said unto his master, Come, I pray thee, and let us turn in into this city of the Jebusites, and lodge in it."

Judges 19:14: "And they passed on and went their way; and the sun went down upon them when they were by Gibeah, which belongeth to Benjamin."

Judges 19:16: "And, behold, there came an old man from his work out of the field at even, which was also of mount Ephraim; and he sojourned in Gibeah: but the men of the place were Benjamites."

Judges 19:22: "Now as they were making their hearts merry, behold, the men of the city, certain sons of Belial, beset the house round about, and beat at the door, and spake to the master of the house, the old man, saying, Bring forth the man that came into thine house, that we may know him."

Judges 19:27: "And her lord rose up in the morning, and opened the doors of the house, and went out to go his way: and, behold, the woman his concubine was fallen down at the door of the house, and her hands were upon the threshold."

Judges 20:3: "(Now the children of Benjamin heard that the children of Israel were gone up to Mizpeh.) Then said the children of Israel, Tell us, how was this wickedness?"

Judges 20:11: "So all the men of Israel were gathered against the city, knit together as one man."

Judges 20:15: "And the children of Benjamin were numbered at that time out of the cities twenty and six thousand men that drew sword, beside the inhabitants of Gibeah, which were numbered seven hundred chosen men."

Judges 20:16: "Among all this people there were seven hundred chosen men lefthanded; every one could sling stones at an hair breadth, and not miss."

Judges 20:17: "And the men of Israel, beside Benjamin, were numbered four hundred thousand men that drew sword: all these were men of war."

Judges 20:31: "And the children of Benjamin went out against the people, and were drawn away from the city; and they began to smite of the people, and kill, as at other times, in the highways, of which one goeth up to the house of God, and the other to Gibeah in the field, about thirty men of Israel."

Judges 20:36: "So the children of Benjamin saw that they were smitten: for the men of Israel gave place to the Benjamites, because they trusted unto the liars in wait which they had set beside Gibeah."

Judges 20:41: "And when the men of Israel turned again, the men of Benjamin were amazed: for they saw that evil was come upon them."

Judges 20:44: "And there fell of Benjamin eighteen thousand men; all these were men of valour."

Judges 20:46: "So that all which fell that day of Benjamin were twenty and five thousand men that drew the sword; all these were men of valour."

Judges 21:9: "For the people were numbered, and, behold, there were none of the inhabitants of Jabeshgilead there."

Judges 21:13: "And the whole congregation sent some to speak to the children of Benjamin that were in the rock Rimmon, and to call peaceably unto them."

Ruth 1:13: "Would ye tarry for them till they were grown? would ye stay for them from having husbands? nay, my daughters; for it grieveth me much for your sakes that the hand of the LORD is gone out against me."

Ruth 1:19: "So they two went until they came to Bethlehem. And it came to pass, when they were come to Bethlehem, that all the city was moved about them, and they said, Is this Naomi?"

Ruth 4:11: "And all the people that were in the gate, and the elders, said, We are witnesses. The LORD make the woman that is come into thine house like Rachel and like Leah, which two did build the house of Israel: and do thou worthily in Ephratah, and be famous in Bethlehem."

1 Samuel 1:3: "And this man went up out of his city yearly to worship and to sacrifice unto the LORD of hosts in Shiloh. And the two sons of Eli, Hophni and Phinehas, the priests of the LORD,

were there."

1 Samuel 2:5: "They that were full have hired out themselves for bread; and they that were hungry ceased: so that the barren hath born seven; and she that hath many children is waxed feeble."

1 Samuel 2:12: "Now the sons of Eli were sons of Belial; they knew not the LORD."

1 Samuel 2:27: "And there came a man of God unto Eli, and said unto him, Thus saith the LORD, Did I plainly appear unto the house of thy father, when they were in Egypt in Pharaoh's house?"

1 Samuel 4:3: "And when the people were come into the camp, the elders of Israel said, Wherefore hath the LORD smitten us to day before the Philistines? Let us fetch the ark of the covenant of the LORD out of Shiloh unto us, that, when it cometh among us, it may save us out of the hand of our enemies."

1 Samuel 4:4: "So the people sent to Shiloh, that they might bring from thence the ark of the covenant of the LORD of hosts, which dwelleth between the cherubims: and the two sons of Eli, Hophni and Phinehas, were there with the ark of the covenant of God."

1 Samuel 4:7: "And the Philistines were afraid, for they said, God is come into the camp. And they said, Woe unto us! for there hath not been such a thing heretofore."

1 Samuel 4:11: "And the ark of God was taken; and the two sons of Eli, Hophni and Phinehas, were slain."

1 Samuel 4:15: "Now Eli was ninety and eight years old; and his eyes were dim, that he could not see."

1 Samuel 4:19: "And his daughter in law, Phinehas' wife, was with child, near to be delivered: and when she heard the tidings that the ark of God was taken, and that her father in law and her husband were dead, she bowed herself and travailed; for her pains came upon her."

1 Samuel 5:4: "And when they arose early on the morrow morning, behold, Dagon was fallen upon his face to the ground before the ark of the LORD; and the head of Dagon and both the palms of his hands were cut off upon the threshold; only the stump of Dagon was left to him."

1 Samuel 5:12: "And the men that died not were smitten with the emerods: and the cry of the city went up to heaven."

1 Samuel 6:13: "And they of Bethshemesh were reaping their wheat harvest in the valley: and they lifted up their eyes, and saw the ark, and rejoiced to see it."

1 Samuel 6:15: "And the Levites took down the ark of the LORD, and the coffer that was with it, wherein the jewels of gold were, and put them on the great stone: and the men of Bethshemesh offered burnt offerings and sacrificed sacrifices the same day unto the LORD."

1 Samuel 7:7: "And when the Philistines heard that the children of Israel were gathered together to Mizpeh, the lords of the Philistines went up against Israel. And when the children of Israel heard it, they were afraid of the Philistines."

1 Samuel 7:10: "And as Samuel was offering up the burnt offering, the Philistines drew near to battle against Israel: but the LORD thundered with a great thunder on that day upon the Philistines, and discomfited them; and they were smitten before Israel."

1 Samuel 7:13: "So the Philistines were subdued, and they came no more into the coast of Israel: and the hand of the LORD was against the Philistines all the days of Samuel."

1 Samuel 7:14: "And the cities which the Philistines had taken from Israel were restored to Israel, from Ekron even unto Gath; and the coasts thereof did Israel deliver out of the hands of the Philistines. And there was peace between Israel and the Amorites."

1 Samuel 8:2: "Now the name of his firstborn was Joel; and the name of his second, Abiah: they were judges in Beersheba."

1 Samuel 9:3: "And the asses of Kish Saul's father were lost. And Kish said to Saul his son, Take now one of the servants with thee, and arise, go seek the asses."

1 Samuel 9:4: "And he passed through mount Ephraim, and passed through the land of Shalisha, but they found them not: then they passed through the land of Shalim, and there they were not: and he passed through the land of the Benjamites, but they found them not."

1 Samuel 9:5: "And when they were come to the land of Zuph, Saul said to his servant that was with him, Come, and let us return; lest my father leave caring for the asses, and take thought for us."

1 Samuel 9:14: "And they went up into the city: and when they were come into the city, behold, Samuel came out against them, for to go up to the high place."

1 Samuel 9:20: "And as for thine asses that were lost three days ago, set not thy mind on them; for they are found. And on whom is all the desire of Israel? Is it not on thee, and on all thy father's house?"

1 Samuel 9:22: "And Samuel took Saul and his servant, and brought them into the parlour, and made them sit in the chiefest place among them that were bidden, which were about thirty persons."

1 Samuel 9:25: "And when they were come down from the high place into the city, Samuel communed with Saul upon the top of the house."

1 Samuel 9:27: "And as they were going down to the end of the city, Samuel said to Saul, Bid the servant pass on before us, (and he passed on), but stand thou still a while, that I may shew thee the word of God."

1 Samuel 10:14: "And Saul's uncle said unto him and to his servant, Whither went ye? And he said, To seek the asses: and when we saw that they were no where, we came to Samuel."

1 Samuel 10:16: "And Saul said unto his uncle, He told us plainly that the asses were found. But of the matter of the kingdom, whereof Samuel spake, he told him not."

1 Samuel 11:8: "And when he numbered them in Bezek, the children of Israel were three hundred thousand, and the men of Judah thirty thousand."

1 Samuel 11:9: "And they said unto the messengers that came, Thus shall ye say unto the men of Jabeshgilead, To morrow, by that time the sun be hot, ye shall have help. And the messengers came and shewed it to the men of Jabesh; and they were glad."

1 Samuel 11:11: "And it was so on the morrow, that Saul put the people in three companies; and they came into the midst of the host in the morning watch, and slew the Ammonites until the heat of the day: and it came to pass, that they which remained were scattered, so that two of them were not left together."

1 Samuel 13:2: "Saul chose him three thousand men of Israel; whereof two thousand were with Saul in Michmash and in mount Bethel, and a thousand were with Jonathan in Gibeah of Benjamin: and the rest of the people he sent every man to his tent."

1 Samuel 13:4: "And all Israel heard say that Saul had smitten a garrison of the Philistines, and that Israel also was had in abomination with the Philistines. And the people were called together after Saul to Gilgal."

1 Samuel 13:6: "When the men of Israel saw that they were in a strait, (for the people were distressed,) then the people did hide themselves in caves, and in thickets, and in rocks, and in high places, and in pits."

1 Samuel 13:8: "And he tarried seven days, according to the set time that Samuel had appointed: but Samuel came not to Gilgal; and the people were scattered from him."

1 Samuel 13:11: "And Samuel said, What hast thou done? And Saul said, Because I saw that the people were scattered from me, and that thou camest not within the days appointed, and that the Philistines gathered themselves together at Michmash;"

1 Samuel 13:15: "And Samuel arose, and gat him up from Gilgal unto Gibeah of Benjamin. And Saul numbered the people that were present with him, about six hundred men."

1 Samuel 13:16: "And Saul, and Jonathan his son, and the people that were present with them, abode in Gibeah of Benjamin: but the Philistines encamped in Michmash."

1 Samuel 13:22: "So it came to pass in the day of battle, that there was neither sword nor spear found in the hand of any of the people that were with Saul and Jonathan: but with Saul and with Jonathan his son was there found."

1 Samuel 14:2: "And Saul tarried in the uttermost part of Gibeah under a pomegranate tree which is in Migron: and the people that were with him were about six hundred men;"

1 Samuel 14:14: "And that first slaughter, which Jonathan and his armourbearer made, was about twenty men, within as it were an half acre of land, which a yoke of oxen might plow."

1 Samuel 14:17: "Then said Saul unto the people that were with him, Number now, and see who is gone from us. And when they had numbered, behold, Jonathan and his armourbearer were not there."

1 Samuel 14:20: "And Saul and all the people that were with him assembled themselves, and they came to the battle: and, behold, every man's sword was against his fellow, and there was a very great discomfiture."

1 Samuel 14:21: "Moreover the Hebrews that were with the Philistines before that time, which went up with them into the camp from the country round about, even they also turned to be with the Israelites that were with Saul and Jonathan."

1 Samuel 14:24: "And the men of Israel were distressed that day: for Saul had adjured the people, saying, Cursed be the man that eateth any food until evening, that I may be avenged on mine enemies. So none of the people tasted any food."

1 Samuel 14:26: "And when the people were come into the wood, behold, the honey dropped; but no man put his hand to his mouth: for the people feared the oath."

1 Samuel 14:27: "But Jonathan heard not when his father charged the people with the oath: wherefore he put forth the end of the rod that was in his hand, and dipped it in an honeycomb, and put his hand to his mouth; and his eyes were enlightened."

1 Samuel 14:28: "Then answered one of the people, and said, Thy father straitly charged the people with an oath, saying, Cursed be the man that eateth any food this day. And the people were faint."

1 Samuel 14:31: "And they smote the Philistines that day from Michmash to Aijalon: and the people were very faint."

1 Samuel 14:41: "Therefore Saul said unto the LORD God of Israel, Give a perfect lot. And Saul and Jonathan were taken: but the people escaped."

1 Samuel 14:49: "Now the sons of Saul were Jonathan, and Ishui, and Melchishua: and the names of his two daughters were these; the name of the firstborn Merab, and the name of the younger Michal:"

1 Samuel 16:6: "And it came to pass, when they were come, that he looked on Eliab, and said, Surely the LORD's anointed is before him."

1 Samuel 17:1: "Now the Philistines gathered together their armies to battle, and were gathered together at Shochoh, which belongeth to Judah, and pitched between Shochoh and Azekah, in Ephesdammim."

1 Samuel 17:2: "And Saul and the men of Israel were gathered together, and pitched by the valley of Elah, and set the battle in array against the Philistines."

1 Samuel 17:11: "When Saul and all Israel heard those words of the Philistine, they were dismayed, and greatly afraid."

1 Samuel 17:13: "And the three eldest sons of Jesse went and followed Saul to the battle: and the names of his three sons that went to the battle were Eliab the firstborn, and next unto him Abinadab, and the third Shammah."

1 Samuel 17:19: "Now Saul, and they, and all the men of Israel, were in the valley of Elah, fighting with the Philistines."

1 Samuel 17:24: "And all the men of Israel, when they saw the man, fled from him, and were sore afraid."

1 Samuel 17:31: "And when the words were heard which David spake, they rehearsed them before Saul: and he sent for him."

1 Samuel 18:26: "And when his servants told David these words, it pleased David well to be the king's son in law: and the days were not expired."

1 Samuel 19:16: "And when the messengers were come in, behold, there was an image in the bed, with a pillow of goats' hair for his bolster."



1 Samuel 20:9: "And Jonathan said, Far be it from thee: for if I knew certainly that evil were determined by my father to come upon thee, then would not I tell it thee?"

1 Samuel 21:5: "And David answered the priest, and said unto him, Of a truth women have been kept from us about these three days, since I came out, and the vessels of the young men are holy, and the bread is in a manner common, yea, though it were sanctified this day in the vessel."

1 Samuel 22:2: "And every one that was in distress, and every one that was in debt, and every one that was discontented, gathered themselves unto him; and he became a captain over them: and there were with him about four hundred men."

1 Samuel 22:6: "When Saul heard that David was discovered, and the men that were with him, (now Saul abode in Gibeah under a tree in Ramah, having his spear in his hand, and all his servants were standing about him;)"

1 Samuel 22:11: "Then the king sent to call Ahimelech the priest, the son of Ahitub, and all his father's house, the priests that were in Nob: and they came all of them to the king."

1 Samuel 23:13: "Then David and his men, which were about six hundred, arose and departed out of Keilah, and went whithersoever they could go. And it was told Saul that David was escaped from Keilah; and he forbore to go forth."

1 Samuel 23:24: "And they arose, and went to Ziph before Saul: but David and his men were in the wilderness of Maon, in the plain on the south of Jeshimon."

1 Samuel 25:1: "And Samuel died; and all the Israelites were gathered together, and lamented him, and buried him in his house at Ramah. And David arose, and went down to the wilderness of Paran."

1 Samuel 25:2: "And there was a man in Maon, whose possessions were in Carmel; and the man was very great, and he had three thousand sheep, and a thousand goats: and he was shearing his sheep in Carmel."

1 Samuel 25:7: "And now I have heard that thou hast shearers: now thy shepherds which were with us, we hurt them not, neither was there ought missing unto them, all the while they were in Carmel."

1 Samuel 25:15: "But the men were very good unto us, and we were not hurt, neither missed we any thing, as long as we were conversant with them, when we were in the fields:"

1 Samuel 25:16: "They were a wall unto us both by night and day, all the while we were with them keeping the sheep."

1 Samuel 25:40: "And when the servants of David were come to Abigail to Carmel, they spake unto her, saying, David sent us unto thee, to take thee to him to wife."

1 Samuel 25:43: "David also took Ahinoam of Jezreel; and they were also both of them his wives."

1 Samuel 26:12: "So David took the spear and the cruse of water from Saul's bolster; and they gat them away, and no man saw it, nor knew it, neither awaked: for they were all asleep; because a deep sleep from the LORD was fallen upon them."

1 Samuel 27:2: "And David arose, and he passed over with the six hundred men that were with him unto Achish, the son of Maoch, king of Gath."

1 Samuel 27:8: "And David and his men went up, and invaded the Geshurites, and the Gezrites, and the Amalekites: for those nations were of old the inhabitants of the land, as thou goest to Shur, even unto the land of Egypt."

1 Samuel 29:4: "And the princes of the Philistines were wroth with him; and the princes of the Philistines said unto him, Make this fellow return, that he may go again to his place which thou hast appointed him, and let him not go down with us to battle, lest in the battle he be an adversary to us: for wherewith should he reconcile himself unto his master? should it not be with the heads of these men?"

1 Samuel 30:1: "And it came to pass, when David and his men were come to Ziklag on the third day, that the Amalekites had invaded the south, and Ziklag, and smitten Ziklag, and burned it with fire;"

1 Samuel 30:2: "And had taken the women captives, that were therein: they slew not any, either great or small, but carried them away, and went on their way."

1 Samuel 30:3: "So David and his men came to the city, and, behold, it was burned with fire; and their wives, and their sons, and their daughters, were taken captives."

1 Samuel 30:4: "Then David and the people that were with him lifted up their voice and wept, until they had no more power to weep."

1 Samuel 30:5: "And David's two wives were taken captives, Ahinoam the Jezreelitess, and Abigail the wife of Nabal the Carmelite."

1 Samuel 30:9: "So David went, he and the six hundred men that were with him, and came to the brook Besor, where those that were left behind stayed."

1 Samuel 30:10: "But David pursued, he and four hundred men: for two hundred abode behind, which were so faint that they could not go over the brook Besor."

1 Samuel 30:16: "And when he had brought him down, behold, they were spread abroad upon all the earth, eating and drinking, and dancing, because of all the great spoil that they had taken out of the land of the Philistines, and out of the land of Judah."

1 Samuel 30:21: "And David came to the two hundred men, which were so faint that they could not follow David, whom they had made also to abide at the brook Besor: and they went forth to meet David, and to meet the people that were with him: and when David came near to the people, he saluted them."

1 Samuel 30:27: "To them which were in Bethel, and to them which were in south Ramoth, and to them which were in Jattir,"

1 Samuel 30:28: "And to them which were in Aroer, and to them which were in Siphmoth, and to them which were in Eshtemoa,"

1 Samuel 30:29: "And to them which were in Rachal, and to them which were in the cities of the Jerahmeelites, and to them which were in the cities of the Kenites,"

1 Samuel 30:30: "And to them which were in Hormah, and to them which were in Chorashan, and to them which were in Athach,"

1 Samuel 30:31: "And to them which were in Hebron, and to all the places where David himself and his men were wont to haunt."

1 Samuel 31:7: "And when the men of Israel that were on the other side of the valley, and they that were on the other side Jordan, saw that the men of Israel fled, and that Saul and his sons were dead, they forsook the cities, and fled; and the Philistines came and dwelt in them."

2 Samuel 1:11: "Then David took hold on his clothes, and rent them; and likewise all the men that were with him:"

2 Samuel 1:12: "And they mourned, and wept, and fasted until even, for Saul, and for Jonathan his son, and for the people of the LORD, and for the house of Israel; because they were fallen by the sword."

2 Samuel 1:23: "Saul and Jonathan were lovely and pleasant in their lives, and in their death they were not divided: they were swifter than eagles, they were stronger than lions."

2 Samuel 2:3: "And his men that were with him did David bring up, every man with his household: and they dwelt in the cities of Hebron."

2 Samuel 2:4: "And the men of Judah came, and there they anointed David king over the house of Judah. And they told David, saying, That the men of Jabeshgilead were they that buried Saul."

2 Samuel 2:18: "And there were three sons of Zeruiah there, Joab, and Abishai, and Asahel: and Asahel was as light of foot as a wild roe."

2 Samuel 2:24: "Joab also and Abishai pursued after Abner: and the sun went down when they were come to the hill of Ammah, that lieth before Giah by the way of the wilderness of Gibeon."

2 Samuel 3:2: "And unto David were sons born in Hebron: and his firstborn was Amnon, of Ahinoam the Jezreelitess;"

2 Samuel 3:5: "And the sixth, Ithream, by Eglah David's wife. These were born to David in

Hebron."

2 Samuel 3:20: "So Abner came to David to Hebron, and twenty men with him. And David made Abner and the men that were with him a feast."

2 Samuel 3:23: "When Joab and all the host that was with him were come, they told Joab, saying, Abner the son of Ner came to the king, and he hath sent him away, and he is gone in peace."

2 Samuel 3:31: "And David said to Joab, and to all the people that were with him, Rend your clothes, and gird you with sackcloth, and mourn before Abner. And king David himself followed the bier."

2 Samuel 3:34: "Thy hands were not bound, nor thy feet put into fetters: as a man falleth before wicked men, so fellest thou. And all the people wept again over him."

2 Samuel 4:1: "And when Saul's son heard that Abner was dead in Hebron, his hands were feeble, and all the Israelites were troubled."

2 Samuel 4:2: "And Saul's son had two men that were captains of bands: the name of the one was Baanah, and the name of the other Rechab, the sons of Rimmon a Beerothite, of the children of Benjamin: (for Beeroth also was reckoned to Benjamin.)"

2 Samuel 4:3: "And the Beerothites fled to Gittaim, and were sojourners there until this day.)"

2 Samuel 5:13: "And David took him more concubines and wives out of Jerusalem, after he was come from Hebron: and there were yet sons and daughters born to David."

2 Samuel 5:14: "And these be the names of those that were born unto him in Jerusalem; Shammuah, and Shobab, and Nathan, and Solomon,"

2 Samuel 6:2: "And David arose, and went with all the people that were with him from Baale of Judah, to bring up from thence the ark of God, whose name is called by the name of the LORD of hosts that dwelleth between the cherubims."

2 Samuel 8:7: "And David took the shields of gold that were on the servants of Hadadezer, and brought them to Jerusalem."

2 Samuel 8:17: "And Zadok the son of Ahitub, and Ahimelech the son of Abiathar, were the priests; and Seraiah was the scribe;"

2 Samuel 8:18: "And Benaiah the son of Jehoiada was over both the Cherethites and the Pelethites; and David's sons were chief rulers."

2 Samuel 9:12: "And Mephibosheth had a young son, whose name was Micha. And all that dwelt in the house of Ziba were servants unto Mephibosheth."

2 Samuel 10:5: "When they told it unto David, he sent to meet them, because the men were greatly ashamed: and the king said, Tarry at Jericho until your beards be grown, and then return."

2 Samuel 10:8: "And the children of Ammon came out, and put the battle in array at the entering in of the gate: and the Syrians of Zoba, and of Rehob, and Ishtob, and Maacah, were by themselves in the field."

2 Samuel 10:13: "And Joab drew nigh, and the people that were with him, unto the battle against the Syrians: and they fled before him."

2 Samuel 10:14: "And when the children of Ammon saw that the Syrians were fled, then fled they also before Abishai, and entered into the city. So Joab returned from the children of Ammon, and came to Jerusalem."

2 Samuel 10:15: "And when the Syrians saw that they were smitten before Israel, they gathered themselves together."

2 Samuel 10:16: "And Hadarezer sent, and brought out the Syrians that were beyond the river: and they came to Helam; and Shobach the captain of the host of Hadarezer went before them."

2 Samuel 10:19: "And when all the kings that were servants to Hadarezer saw that they were smitten before Israel, they made peace with Israel, and served them. So the Syrians feared to help the children of Ammon any more."

2 Samuel 11:16: "And it came to pass, when Joab observed the city, that he assigned Uriah unto a place where he knew that valiant men were."

2 Samuel 11:23: "And the messenger said unto David, Surely the men prevailed against us, and came out unto us into the field, and we were upon them even unto the entering of the gate."

2 Samuel 12:1: "And the LORD sent Nathan unto David. And he came unto him, and said unto him, There were two men in one city; the one rich, and the other poor."

2 Samuel 12:31: "And he brought forth the people that were therein, and put them under saws, and under harrows of iron, and under axes of iron, and made them pass through the brick-kiln: and thus did he unto all the cities of the children of Ammon. So David and all the people returned unto Jerusalem."

2 Samuel 13:18: "And she had a garment of divers colours upon her: for with such robes were the king's daughters that were virgins apparelled. Then his servant brought her out, and bolted the door after her."

2 Samuel 13:30: "And it came to pass, while they were in the way, that tidings came to David, saying, Absalom hath slain all the king's sons, and there is not one of them left."

2 Samuel 14:27: "And unto Absalom there were born three sons, and one daughter, whose name was Tamar: she was a woman of a fair countenance."

2 Samuel 15:4: "Absalom said moreover, Oh that I were made judge in the land, that every man which hath any suit or cause might come unto me, and I would do him justice!"

2 Samuel 15:11: "And with Absalom went two hundred men out of Jerusalem, that were called; and they went in their simplicity, and they knew not any thing."

2 Samuel 15:14: "And David said unto all his servants that were with him at Jerusalem, Arise, and let us flee; for we shall not else escape from Absalom: make speed to depart, lest he overtake us suddenly, and bring evil upon us, and smite the city with the edge of the sword."

2 Samuel 15:16: "And the king went forth, and all his household after him. And the king left ten women, which were concubines, to keep the house."

2 Samuel 15:22: "And David said to Ittai, Go and pass over. And Ittai the Gittite passed over, and all his men, and all the little ones that were with him."

2 Samuel 15:24: "And lo Zadok also, and all the Levites were with him, bearing the ark of the covenant of God: and they set down the ark of God; and Abiathar went up, until all the people had done passing out of the city."

2 Samuel 16:6: "And he cast stones at David, and at all the servants of king David: and all the people and all the mighty men were on his right hand and on his left."

2 Samuel 16:14: "And the king, and all the people that were with him, came weary, and refreshed themselves there."

2 Samuel 17:21: "And it came to pass, after they were departed, that they came up out of the well, and went and told king David, and said unto David, Arise, and pass quickly over the water: for thus hath Ahithophel counselled against you."

2 Samuel 17:22: "Then David arose, and all the people that were with him, and they passed over Jordan: by the morning light there lacked not one of them that was not gone over Jordan."

2 Samuel 17:29: "And honey, and butter, and sheep, and cheese of kine, for David, and for the people that were with him, to eat: for they said, The people is hungry, and weary, and thirsty, in the wilderness."

2 Samuel 18:1: "And David numbered the people that were with him, and set captains of thousands, and captains of hundreds over them."

2 Samuel 18:7: "Where the people of Israel were slain before the servants of David, and there was there a great slaughter that day of twenty thousand men."

2 Samuel 19:9: "And all the people were at strife throughout all the tribes of Israel, saying, The king saved us out of the hand of our enemies, and he delivered us out of the hand of the Philistines; and now he is fled out of the land for Absalom."

2 Samuel 19:17: "And there were a thousand men of Benjamin with him, and Ziba the servant of the house of Saul, and his fifteen sons and his twenty servants with him; and they went over Jordan

before the king."

2 Samuel 19:28: "For all of my father's house were but dead men before my lord the king: yet didst thou set thy servant among them that did eat at thine own table. What right therefore have I yet to cry any more unto the king?"

2 Samuel 19:43: "And the men of Israel answered the men of Judah, and said, We have ten parts in the king, and we have also more right in David than ye: why then did ye despise us, that our advice should not be first had in bringing back our king? And the words of the men of Judah were fiercer than the words of the men of Israel."

2 Samuel 20:3: "And David came to his house at Jerusalem; and the king took the ten women his concubines, whom he had left to keep the house, and put them in ward, and fed them, but went not in unto them. So they were shut up unto the day of their death, living in widowhood."

2 Samuel 20:8: "When they were at the great stone which is in Gibeon, Amasa went before them. And Joab's garment that he had put on was girded unto him, and upon it a girdle with a sword fastened upon his loins in the sheath thereof; and as he went forth it fell out."

2 Samuel 20:14: "And he went through all the tribes of Israel unto Abel, and to Bethmaachah, and all the Berites: and they were gathered together, and went also after him."

2 Samuel 20:15: "And they came and besieged him in Abel of Bethmaachah, and they cast up a bank against the city, and it stood in the trench: and all the people that were with Joab battered the wall, to throw it down."

2 Samuel 20:18: "Then she spake, saying, They were wont to speak in old time, saying, They shall surely ask counsel at Abel: and so they ended the matter."

2 Samuel 20:25: "And Sheva was scribe: and Zadok and Abiathar were the priests:"

2 Samuel 21:2: "And the king called the Gibeonites, and said unto them; (now the Gibeonites were not of the children of Israel, but of the remnant of the Amorites; and the children of Israel had sworn unto them: and Saul sought to slay them in his zeal to the children of Israel and Judah.)"

2 Samuel 21:9: "And he delivered them into the hands of the Gibeonites, and they hanged them in the hill before the LORD: and they fell all seven together, and were put to death in the days of harvest, in the first days, in the beginning of barley harvest."

2 Samuel 21:13: "And he brought up from thence the bones of Saul and the bones of Jonathan his son; and they gathered the bones of them that were hanged."

2 Samuel 21:22: "These four were born to the giant in Gath, and fell by the hand of David, and by the hand of his servants."

2 Samuel 22:9: "There went up a smoke out of his nostrils, and fire out of his mouth devoured: coals were kindled by it."

2 Samuel 22:13: "Through the brightness before him were coals of fire kindled."

2 Samuel 22:16: "And the channels of the sea appeared, the foundations of the world were discovered, at the rebuking of the LORD, at the blast of the breath of his nostrils."

2 Samuel 22:18: "He delivered me from my strong enemy, and from them that hated me: for they were too strong for me."

2 Samuel 22:23: "For all his judgments were before me: and as for his statutes, I did not depart from them."

2 Samuel 23:9: "And after him was Eleazar the son of Dodo the Ahohite, one of the three mighty men with David, when they defied the Philistines that were there gathered together to battle, and the men of Israel were gone away:"

2 Samuel 23:11: "And after him was Shammah the son of Agee the Hararite. And the Philistines were gathered together into a troop, where was a piece of ground full of lentiles: and the people fled from the Philistines."

2 Samuel 24:9: "And Joab gave up the sum of the number of the people unto the king: and there were in Israel eight hundred thousand valiant men that drew the sword; and the men of Judah were five hundred thousand men."

1 Kings 1:8: "But Zadok the priest, and Benaiah the son of Jehoiada, and Nathan the prophet, and Shimei, and Rei, and the mighty men which belonged to David, were not with Adonijah."

1 Kings 1:41: "And Adonijah and all the guests that were with him heard it as they had made an end of eating. And when Joab heard the sound of the trumpet, he said, Wherefore is this noise of the city being in an uproar?"

1 Kings 1:49: "And all the guests that were with Adonijah were afraid, and rose up, and went every man his way."

1 Kings 2:5: "Moreover thou knowest also what Joab the son of Zeruah did to me, and what he did to the two captains of the hosts of Israel, unto Abner the son of Ner, and unto Amasa the son of Jether, whom he slew, and shed the blood of war in peace, and put the blood of war upon his girdle that was about his loins, and in his shoes that were on his feet."

1 Kings 2:11: "And the days that David reigned over Israel were forty years: seven years reigned he in Hebron, and thirty and three years reigned he in Jerusalem."

1 Kings 3:16: "Then came there two women, that were harlots, unto the king, and stood before him."

1 Kings 3:18: "And it came to pass the third day after that I was delivered, that this woman was delivered also: and we were together; there was no stranger with us in the house, save we two in the house."

1 Kings 4:2: "And these were the princes which he had; Azariah the son of Zadok the priest,"

1 Kings 4:4: "And Benaiah the son of Jehoiada was over the host: and Zadok and Abiathar were the priests:"

1 Kings 4:20: "Judah and Israel were many, as the sand which is by the sea in multitude, eating and drinking, and making merry."

1 Kings 4:28: "Barley also and straw for the horses and dromedaries brought they unto the place where the officers were, every man according to his charge."

1 Kings 4:32: "And he spake three thousand proverbs: and his songs were a thousand and five."

1 Kings 5:3: "Thou knowest how that David my father could not build an house unto the name of the LORD his God for the wars which were about him on every side, until the LORD put them under the soles of his feet."

1 Kings 5:14: "And he sent them to Lebanon, ten thousand a month by courses: a month they were in Lebanon, and two months at home: and Adoniram was over the levy."

1 Kings 5:16: "Beside the chief of Solomon's officers which were over the work, three thousand and three hundred, which ruled over the people that wrought in the work."

1 Kings 6:1: "And it came to pass in the four hundred and eightieth year after the children of Israel were come out of the land of Egypt, in the fourth year of Solomon's reign over Israel, in the month Zif, which is the second month, that he began to build the house of the LORD."

1 Kings 6:24: "And five cubits was the one wing of the cherub, and five cubits the other wing of the cherub: from the uttermost part of the one wing unto the uttermost part of the other were ten cubits."

1 Kings 6:25: "And the other cherub was ten cubits: both the cherubims were of one measure and one size."

1 Kings 6:31: "And for the entering of the oracle he made doors of olive tree: the lintel and side posts were a fifth part of the wall."

1 Kings 6:32: "The two doors also were of olive tree; and he carved upon them carvings of cherubims and palm trees and open flowers, and overlaid them with gold, and spread gold upon the cherubims, and upon the palm trees."

1 Kings 6:34: "And the two doors were of fir tree: the two leaves of the one door were folding, and the two leaves of the other door were folding."

1 Kings 7:4: "And there were windows in three rows, and light was against light in three ranks."

1 Kings 7:5: "And all the doors and posts were square, with the windows: and light was against light in three ranks."

1 Kings 7:6: "And he made a porch of pillars; the length thereof was fifty cubits, and the breadth thereof thirty cubits: and the porch was before them: and the other pillars and the thick beam were before them."

1 Kings 7:9: "All these were of costly stones, according to the measures of hewed stones, sawed with saws, within and without, even from the foundation unto the coping, and so on the outside toward the great court."

1 Kings 7:11: "And above were costly stones, after the measures of hewed stones, and cedars."

1 Kings 7:17: "And nets of checker work, and wreaths of chain work, for the chapiters which were upon the top of the pillars; seven for the one chapter, and seven for the other chapter."

1 Kings 7:18: "And he made the pillars, and two rows round about upon the one network, to cover the chapiters that were upon the top, with pomegranates: and so did he for the other chapter."

1 Kings 7:19: "And the chapiters that were upon the top of the pillars were of lily work in the porch, four cubits."

1 Kings 7:20: "And the chapiters upon the two pillars had pomegranates also above, over against the belly which was by the network: and the pomegranates were two hundred in rows round about upon the other chapter."

1 Kings 7:24: "And under the brim of it round about there were knops compassing it, ten in a cubit, compassing the sea round about: the knops were cast in two rows, when it was cast."

1 Kings 7:25: "It stood upon twelve oxen, three looking toward the north, and three looking toward the west, and three looking toward the south, and three looking toward the east: and the sea was set above upon them, and all their hinder parts were inward."

1 Kings 7:28: "And the work of the bases was on this manner: they had borders, and the borders were between the ledges:"

1 Kings 7:29: "And on the borders that were between the ledges were lions, oxen, and cherubims: and upon the ledges there was a base above: and beneath the lions and oxen were certain additions made of thin work."

1 Kings 7:30: "And every base had four brasen wheels, and plates of brass: and the four corners thereof had undersetters: under the laver were undersetters molten, at the side of every addition."

1 Kings 7:31: "And the mouth of it within the chapter and above was a cubit: but the mouth thereof was round after the work of the base, a cubit and an half: and also upon the mouth of it were gravings with their borders, foursquare, not round."

1 Kings 7:32: "And under the borders were four wheels; and the axletrees of the wheels were joined to the base: and the height of a wheel was a cubit and half a cubit."

1 Kings 7:33: "And the work of the wheels was like the work of a chariot wheel: their axletrees, and their naves, and their felloes, and their spokes, were all molten."

1 Kings 7:34: "And there were four undersetters to the four corners of one base: and the undersetters were of the very base itself."

1 Kings 7:35: "And in the top of the base was there a round compass of half a cubit high: and on the top of the base the ledges thereof and the borders thereof were of the same."

1 Kings 7:41: "The two pillars, and the two bowls of the chapiters that were on the top of the two pillars; and the two networks, to cover the two bowls of the chapiters which were upon the top of the pillars;"

1 Kings 7:42: "And four hundred pomegranates for the two networks, even two rows of pomegranates for one network, to cover the two bowls of the chapiters that were upon the pillars;"

1 Kings 7:45: "And the pots, and the shovels, and the basons: and all these vessels, which Hiram made to king Solomon for the house of the LORD, were of bright brass."

1 Kings 7:47: "And Solomon left all the vessels unweighed, because they were exceeding many: neither was the weight of the brass found out."

1 Kings 8:4: "And they brought up the ark of the LORD, and the tabernacle of the congregation, and all the holy vessels that were in the tabernacle, even those did the priests and the Levites bring

up."

1 Kings 8:5: "And king Solomon, and all the congregation of Israel, that were assembled unto him, were with him before the ark, sacrificing sheep and oxen, that could not be told nor numbered for multitude."

1 Kings 8:8: "And they drew out the staves, that the ends of the staves were seen out in the holy place before the oracle, and they were not seen without: and there they are unto this day."

1 Kings 8:10: "And it came to pass, when the priests were come out of the holy place, that the cloud filled the house of the LORD,"

1 Kings 8:47: "Yet if they shall bethink themselves in the land whither they were carried captives, and repent, and make supplication unto thee in the land of them that carried them captives, saying, We have sinned, and have done perversely, we have committed wickedness;"

1 Kings 9:20: "And all the people that were left of the Amorites, Hittites, Perizzites, Hivites, and Jebusites, which were not of the children of Israel,"

1 Kings 9:21: "Their children that were left after them in the land, whom the children of Israel also were not able utterly to destroy, upon those did Solomon levy a tribute of bondservice unto this day."

1 Kings 9:22: "But of the children of Israel did Solomon make no bondmen: but they were men of war, and his servants, and his princes, and his captains, and rulers of his chariots, and his horsemen."

1 Kings 9:23: "These were the chief of the officers that were over Solomon's work, five hundred and fifty, which bare rule over the people that wrought in the work."

1 Kings 10:12: "And the king made of the almug trees pillars for the house of the LORD, and for the king's house, harps also and psalteries for singers: there came no such almug trees, nor were seen unto this day."

1 Kings 10:19: "The throne had six steps, and the top of the throne was round behind: and there were stays on either side on the place of the seat, and two lions stood beside the stays."

1 Kings 10:21: "And all king Solomon's drinking vessels were of gold, and all the vessels of the house of the forest of Lebanon were of pure gold; none were of silver: it was nothing accounted of in the days of Solomon."

1 Kings 11:29: "And it came to pass at that time when Jeroboam went out of Jerusalem, that the prophet Ahijah the Shilonite found him in the way; and he had clad himself with a new garment; and they two were alone in the field:"

1 Kings 12:1: "And Rehoboam went to Shechem: for all Israel were come to Shechem to make him king."

1 Kings 12:8: "But he forsook the counsel of the old men, which they had given him, and consulted with the young men that were grown up with him, and which stood before him:"

1 Kings 12:10: "And the young men that were grown up with him spake unto him, saying, Thus shalt thou speak unto this people that spake unto thee, saying, Thy father made our yoke heavy, but make thou it lighter unto us; thus shalt thou say unto them, My little finger shall be thicker than my father's loins."

1 Kings 12:21: "And when Rehoboam was come to Jerusalem, he assembled all the house of Judah, with the tribe of Benjamin, an hundred and fourscore thousand chosen men, which were warriors, to fight against the house of Israel, to bring the kingdom again to Rehoboam the son of Solomon."

1 Kings 12:31: "And he made an house of high places, and made priests of the lowest of the people, which were not of the sons of Levi."

1 Kings 14:4: "And Jeroboam's wife did so, and arose, and went to Shiloh, and came to the house of Ahijah. But Ahijah could not see; for his eyes were set by reason of his age."

1 Kings 14:9: "But hast done evil above all that were before thee: for thou hast gone and made thee other gods, and molten images, to provoke me to anger, and hast cast me behind thy back:"

1 Kings 14:20: "And the days which Jeroboam reigned were two and twenty years: and he slept



with his fathers, and Nadab his son reigned in his stead."

1 Kings 14:24: "And there were also sodomites in the land: and they did according to all the abominations of the nations which the LORD cast out before the children of Israel."

1 Kings 15:14: "But the high places were not removed: nevertheless Asa's heart was perfect with the LORD all his days."

1 Kings 15:18: "Then Asa took all the silver and the gold that were left in the treasures of the house of the LORD, and the treasures of the king's house, and delivered them into the hand of his servants: and king Asa sent them to Benhadad, the son of Tabrimon, the son of Hezion, king of Syria, that dwelt at Damascus, saying,"

1 Kings 16:15: "In the twenty and seventh year of Asa king of Judah did Zimri reign seven days in Tirzah. And the people were encamped against Gibbethon, which belonged to the Philistines."

1 Kings 16:16: "And the people that were encamped heard say, Zimri hath conspired, and hath also slain the king: wherefore all Israel made Omri, the captain of the host, king over Israel that day in the camp."

1 Kings 16:21: "Then were the people of Israel divided into two parts: half of the people followed Tibni the son of Ginath, to make him king; and half followed Omri."

1 Kings 16:25: "But Omri wrought evil in the eyes of the LORD, and did worse than all that were before him."

1 Kings 16:30: "And Ahab the son of Omri did evil in the sight of the LORD above all that were before him."

1 Kings 16:33: "And Ahab made a grove; and Ahab did more to provoke the LORD God of Israel to anger than all the kings of Israel that were before him."

1 Kings 20:1: "And Benhadad the king of Syria gathered all his host together: and there were thirty and two kings with him, and horses, and chariots; and he went up and besieged Samaria, and warred against it."

1 Kings 20:15: "Then he numbered the young men of the princes of the provinces, and they were two hundred and thirty two: and after them he numbered all the people, even all the children of Israel, being seven thousand."

1 Kings 20:23: "And the servants of the king of Syria said unto him, Their gods are gods of the hills; therefore they were stronger than we; but let us fight against them in the plain, and surely we shall be stronger than they."

1 Kings 20:27: "And the children of Israel were numbered, and were all present, and went against them: and the children of Israel pitched before them like two little flocks of kids; but the Syrians filled the country."

1 Kings 20:30: "But the rest fled to Aphek, into the city; and there a wall fell upon twenty and seven thousand of the men that were left. And Benhadad fled, and came into the city, into an inner chamber."

1 Kings 21:8: "So she wrote letters in Ahab's name, and sealed them with his seal, and sent the letters unto the elders and to the nobles that were in his city, dwelling with Naboth."

1 Kings 21:11: "And the men of his city, even the elders and the nobles who were the inhabitants in his city, did as Jezebel had sent unto them, and as it was written in the letters which she had sent unto them."

1 Kings 22:43: "And he walked in all the ways of Asa his father; he turned not aside from it, doing that which was right in the eyes of the LORD: nevertheless the high places were not taken away; for the people offered and burnt incense yet in the high places."

1 Kings 22:48: "Jehoshaphat made ships of Tharshish to go to Ophir for gold: but they went not; for the ships were broken at Eziongeber."

2 Kings 2:3: "And the sons of the prophets that were at Bethel came forth to Elisha, and said unto him, Knowest thou that the LORD will take away thy master from thy head to day? And he said, Yea, I know it; hold ye your peace."

2 Kings 2:5: "And the sons of the prophets that were at Jericho came to Elisha, and said unto him, Knowest thou that the LORD will take away thy master from thy head to day? And he answered, Yea, I know it; hold ye your peace."

2 Kings 2:8: "And Elijah took his mantle, and wrapped it together, and smote the waters, and they were divided hither and thither, so that they two went over on dry ground."

2 Kings 2:9: "And it came to pass, when they were gone over, that Elijah said unto Elisha, Ask what I shall do for thee, before I be taken away from thee. And Elisha said, I pray thee, let a double portion of thy spirit be upon me."

2 Kings 2:15: "And when the sons of the prophets which were to view at Jericho saw him, they said, The spirit of Elijah doth rest on Elisha. And they came to meet him, and bowed themselves to the ground before him."

2 Kings 2:22: "So the waters were healed unto this day, according to the saying of Elisha which he spake."

2 Kings 3:14: "And Elisha said, As the LORD of hosts liveth, before whom I stand, surely, were it not that I regard the presence of Jehoshaphat the king of Judah, I would not look toward thee, nor see thee."

2 Kings 3:21: "And when all the Moabites heard that the kings were come up to fight against them, they gathered all that were able to put on armour, and upward, and stood in the border."

2 Kings 4:6: "And it came to pass, when the vessels were full, that she said unto her son, Bring me yet a vessel. And he said unto her, There is not a vessel more. And the oil stayed."

2 Kings 4:38: "And Elisha came again to Gilgal: and there was a dearth in the land; and the sons of the prophets were sitting before him: and he said unto his servant, Set on the great pot, and seethe pottage for the sons of the prophets."

2 Kings 4:40: "So they poured out for the men to eat. And it came to pass, as they were eating of the pottage, that they cried out, and said, O thou man of God, there is death in the pot. And they could not eat thereof."

2 Kings 5:3: "And she said unto her mistress, Would God my lord were with the prophet that is in Samaria! for he would recover him of his leprosy."

2 Kings 6:20: "And it came to pass, when they were come into Samaria, that Elisha said, LORD, open the eyes of these men, that they may see. And the LORD opened their eyes, and they saw; and, behold, they were in the midst of Samaria."

2 Kings 7:3: "And there were four leprous men at the entering in of the gate: and they said one to another, Why sit we here until we die?"

2 Kings 7:5: "And they rose up in the twilight, to go unto the camp of the Syrians: and when they were come to the uttermost part of the camp of Syria, behold, there was no man there."

2 Kings 7:10: "So they came and called unto the porter of the city: and they told them, saying, We came to the camp of the Syrians, and, behold, there was no man there, neither voice of man, but horses tied, and asses tied, and the tents as they were."

2 Kings 9:5: "And when he came, behold, the captains of the host were sitting; and he said, I have an errand to thee, O captain. And Jehu said, Unto which of all us? And he said, To thee, O captain."

2 Kings 10:4: "But they were exceedingly afraid, and said, Behold, two kings stood not before him: how then shall we stand?"

2 Kings 10:6: "Then he wrote a letter the second time to them, saying, If ye be mine, and if ye will hearken unto my voice, take ye the heads of the men your master's sons, and come to me to Jezreel by to morrow this time. Now the king's sons, being seventy persons, were with the great men of the city, which brought them up."

2 Kings 10:29: "Howbeit from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin, Jehu departed not from after them, to wit, the golden calves that were in Bethel, and that were in Dan."

2 Kings 11:2: "But Jehosheba, the daughter of king Joram, sister of Ahaziah, took Joash the son of Ahaziah, and stole him from among the king's sons which were slain; and they hid him, even him

and his nurse, in the bedchamber from Athaliah, so that he was not slain."

2 Kings 11:9: "And the captains over the hundreds did according to all things that Jehoiada the priest commanded: and they took every man his men that were to come in on the sabbath, with them that should go out on the sabbath, and came to Jehoiada the priest."

2 Kings 11:10: "And to the captains over hundreds did the priest give king David's spears and shields, that were in the temple of the LORD."

2 Kings 12:3: "But the high places were not taken away: the people still sacrificed and burnt incense in the high places."

2 Kings 12:13: "Howbeit there were not made for the house of the LORD bowls of silver, snuffers, basons, trumpets, any vessels of gold, or vessels of silver, of the money that was brought into the house of the LORD:"

2 Kings 13:21: "And it came to pass, as they were burying a man, that, behold, they spied a band of men; and they cast the man into the sepulchre of Elisha: and when the man was let down, and touched the bones of Elisha, he revived, and stood up on his feet."

2 Kings 14:4: "Howbeit the high places were not taken away: as yet the people did sacrifice and burnt incense on the high places."

2 Kings 14:14: "And he took all the gold and silver, and all the vessels that were found in the house of the LORD, and in the treasures of the king's house, and hostages, and returned to Samaria."

2 Kings 15:4: "Save that the high places were not removed: the people sacrificed and burnt incense still on the high places."

2 Kings 15:16: "Then Menahem smote Tiphshah, and all that were therein, and the coasts thereof from Tirzah: because they opened not to him, therefore he smote it; and all the women therein that were with child he ripped up."

2 Kings 15:35: "Howbeit the high places were not removed: the people sacrificed and burned incense still in the high places. He built the higher gate of the house of the LORD."

2 Kings 16:17: "And king Ahaz cut off the borders of the bases, and removed the laver from off them; and took down the sea from off the brasen oxen that were under it, and put it upon the pavement of stones."

2 Kings 17:2: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, but not as the kings of Israel that were before him."

2 Kings 17:9: "And the children of Israel did secretly those things that were not right against the LORD their God, and they built them high places in all their cities, from the tower of the watchmen to the fenced city."

2 Kings 17:15: "And they rejected his statutes, and his covenant that he made with their fathers, and his testimonies which he testified against them; and they followed vanity, and became vain, and went after the heathen that were round about them, concerning whom the LORD had charged them, that they should not do like them."

2 Kings 18:5: "He trusted in the LORD God of Israel; so that after him was none like him among all the kings of Judah, nor any that were before him."

2 Kings 18:17: "And the king of Assyria sent Tartan and Rabsaris and Rabshakeh from Lachish to king Hezekiah with a great host against Jerusalem. And they went up and came to Jerusalem. And when they were come up, they came and stood by the conduit of the upper pool, which is in the highway of the fuller's field."

2 Kings 19:12: "Have the gods of the nations delivered them which my fathers have destroyed; as Gozan, and Haran, and Rezeph, and the children of Eden which were in Thelasar?"

2 Kings 19:18: "And have cast their gods into the fire: for they were no gods, but the work of men's hands, wood and stone: therefore they have destroyed them."

2 Kings 19:26: "Therefore their inhabitants were of small power, they were dismayed and confounded; they were as the grass of the field, and as the green herb, as the grass on the house tops, and as corn blasted before it be grown up."

2 Kings 19:35: "And it came to pass that night, that the angel of the LORD went out, and smote in the camp of the Assyrians an hundred fourscore and five thousand: and when they arose early in the morning, behold, they were all dead corpses."

2 Kings 21:11: "Because Manasseh king of Judah hath done these abominations, and hath done wickedly above all that the Amorites did, which were before him, and hath made Judah also to sin with his idols:"

2 Kings 23:3: "And the king stood by a pillar, and made a covenant before the LORD, to walk after the LORD, and to keep his commandments and his testimonies and his statutes with all their heart and all their soul, to perform the words of this covenant that were written in this book. And all the people stood to the covenant."

2 Kings 23:4: "And the king commanded Hilkiah the high priest, and the priests of the second order, and the keepers of the door, to bring forth out of the temple of the LORD all the vessels that were made for Baal, and for the grove, and for all the host of heaven: and he burned them without Jerusalem in the fields of Kidron, and carried the ashes of them unto Bethel."

2 Kings 23:7: "And he brake down the houses of the sodomites, that were by the house of the LORD, where the women wove hangings for the grove."

2 Kings 23:8: "And he brought all the priests out of the cities of Judah, and defiled the high places where the priests had burned incense, from Geba to Beersheba, and brake down the high places of the gates that were in the entering in of the gate of Joshua the governor of the city, which were on a man's left hand at the gate of the city."

2 Kings 23:12: "And the altars that were on the top of the upper chamber of Ahaz, which the kings of Judah had made, and the altars which Manasseh had made in the two courts of the house of the LORD, did the king beat down, and brake them down from thence, and cast the dust of them into the brook Kidron."

2 Kings 23:13: "And the high places that were before Jerusalem, which were on the right hand of the mount of corruption, which Solomon the king of Israel had builded for Ashtoreth the abomination of the Zidonians, and for Chemosh the abomination of the Moabites, and for Milcom the abomination of the children of Ammon, did the king defile."

2 Kings 23:16: "And as Josiah turned himself, he spied the sepulchres that were there in the mount, and sent, and took the bones out of the sepulchres, and burned them upon the altar, and polluted it, according to the word of the LORD which the man of God proclaimed, who proclaimed these words."

2 Kings 23:19: "And all the houses also of the high places that were in the cities of Samaria, which the kings of Israel had made to provoke the Lord to anger, Josiah took away, and did to them according to all the acts that he had done in Bethel."

2 Kings 23:20: "And he slew all the priests of the high places that were there upon the altars, and burned men's bones upon them, and returned to Jerusalem."

2 Kings 23:24: "Moreover the workers with familiar spirits, and the wizards, and the images, and the idols, and all the abominations that were spied in the land of Judah and in Jerusalem, did Josiah put away, that he might perform the words of the law which were written in the book that Hilkiah the priest found in the house of the LORD."

2 Kings 24:16: "And all the men of might, even seven thousand, and craftsmen and smiths a thousand, all that were strong and apt for war, even them the king of Babylon brought captive to Babylon."

2 Kings 25:4: "And the city was broken up, and all the men of war fled by night by the way of the gate between two walls, which is by the king's garden: (now the Chaldees were against the city round about:) and the king went the way toward the plain."

2 Kings 25:5: "And the army of the Chaldees pursued after the king, and overtook him in the plains of Jericho: and all his army were scattered from him."

2 Kings 25:10: "And all the army of the Chaldees, that were with the captain of the guard, brake

down the walls of Jerusalem round about."

2 Kings 25:11: "Now the rest of the people that were left in the city, and the fugitives that fell away to the king of Babylon, with the remnant of the multitude, did Nebuzaradan the captain of the guard carry away."

2 Kings 25:13: "And the pillars of brass that were in the house of the LORD, and the bases, and the brasen sea that was in the house of the LORD, did the Chaldees break in pieces, and carried the brass of them to Babylon."

2 Kings 25:15: "And the firepans, and the bowls, and such things as were of gold, in gold, and of silver, in silver, the captain of the guard took away."

2 Kings 25:19: "And out of the city he took an officer that was set over the men of war, and five men of them that were in the king's presence, which were found in the city, and the principal scribe of the host, which mustered the people of the land, and threescore men of the people of the land that were found in the city:"

2 Kings 25:25: "But it came to pass in the seventh month, that Ishmael the son of Nethaniah, the son of Elishama, of the seed royal, came, and ten men with him, and smote Gedaliah, that he died, and the Jews and the Chaldees that were with him at Mizpah."

2 Kings 25:26: "And all the people, both small and great, and the captains of the armies, arose, and came to Egypt: for they were afraid of the Chaldees."

2 Kings 25:28: "And he spake kindly to him, and set his throne above the throne of the kings that were with him in Babylon;"

1 Chronicles 1:19: "And unto Eber were born two sons: the name of the one was Peleg; because in his days the earth was divided: and his brother's name was Joktan."

1 Chronicles 1:23: "And Ophir, and Havilah, and Jobab. All these were the sons of Joktan."

1 Chronicles 1:51: "Hadad died also. And the dukes of Edom were; duke Timnah, duke Aliah, duke Jetheth,"

1 Chronicles 2:3: "The sons of Judah; Er, and Onan, and Shelah: which three were born unto him of the daughter of Shua the Canaanitess. And Er, the firstborn of Judah, was evil in the sight of the LORD; and he slew him."

1 Chronicles 2:4: "And Tamar his daughter in law bore him Pharez and Zerah. All the sons of Judah were five."

1 Chronicles 2:9: "The sons also of Hezron, that were born unto him; Jerahmeel, and Ram, and Chelubai."

1 Chronicles 2:16: "Whose sisters were Zeruiah, and Abigail. And the sons of Zeruiah; Abishai, and Joab, and Asahel, three."

1 Chronicles 2:25: "And the sons of Jerahmeel the firstborn of Hezron were, Ram the firstborn, and Bunah, and Oren, and Ozem, and Ahijah."

1 Chronicles 2:27: "And the sons of Ram the firstborn of Jerahmeel were, Maaz, and Jamin, and Eker."

1 Chronicles 2:28: "And the sons of Onam were, Shammai, and Jada. And the sons of Shammai; Nadab and Abishur."

1 Chronicles 2:33: "And the sons of Jonathan; Peleth, and Zaza. These were the sons of Jerahmeel."

1 Chronicles 2:42: "Now the sons of Caleb the brother of Jerahmeel were, Mesha his firstborn, which was the father of Ziph; and the sons of Mareshah the father of Hebron."

1 Chronicles 2:50: "These were the sons of Caleb the son of Hur, the firstborn of Ephratah; Shobal the father of Kirjathjearim."

1 Chronicles 3:1: "Now these were the sons of David, which were born unto him in Hebron; the firstborn Amnon, of Ahinoam the Jezreelitess; the second Daniel, of Abigail the Carmelitess:"

1 Chronicles 3:4: "These six were born unto him in Hebron; and there he reigned seven years and six months: and in Jerusalem he reigned thirty and three years."

1 Chronicles 3:5: "And these were born unto him in Jerusalem; Shimea, and Shobab, and Nathan,

and Solomon, four, of Bathshua the daughter of Ammiel:"

1 Chronicles 3:9: "These were all the sons of David, beside the sons of the concubines, and Tamar their sister."

1 Chronicles 3:15: "And the sons of Josiah were, the firstborn Johanan, the second Jehoiakim, the third Zedekiah, the fourth Shallum."

1 Chronicles 3:19: "And the sons of Pedaiah were, Zerubbabel, and Shimei: and the sons of Zerubbabel; Meshullam, and Hananiah, and Shelomith their sister:"

1 Chronicles 3:24: "And the sons of Elioenai were, Hodaiah, and Eliashib, and Pelaiah, and Akkub, and Johanan, and Dalaiah, and Anani, seven."

1 Chronicles 4:3: "And these were of the father of Etam; Jezreel, and Ishma, and Idbash: and the name of their sister was Hazelelponi:"

1 Chronicles 4:6: "And Naarah bare him Ahuzam, and Hopher, and Temeni, and Haahashtari. These were the sons of Naarah."

1 Chronicles 4:7: "And the sons of Helah were, Zereth, and Jezoar, and Ethnan."

1 Chronicles 4:14: "And Meonothai begat Ophrah: and Seraiah begat Joab, the father of the valley of Charashim; for they were craftsmen."

1 Chronicles 4:17: "And the sons of Ezra were, Jether, and Mered, and Ephraim, and Jalon: and she bare Miriam, and Shammai, and Ishbah the father of Eshtemoa."

1 Chronicles 4:20: "And the sons of Shimon were, Amnon, and Rinnah, Benhanan, and Tilon. And the sons of Ishi were, Zoheth, and Benzoheth."

1 Chronicles 4:21: "The sons of Shelah the son of Judah were, Er the father of Lecah, and Laadah the father of Mareshah, and the families of the house of them that wrought fine linen, of the house of Ashbea,"

1 Chronicles 4:23: "These were the potters, and those that dwelt among plants and hedges: there they dwelt with the king for his work."

1 Chronicles 4:24: "The sons of Simeon were, Nemuel, and Jamin, Jarib, Zerach, and Shaul:"

1 Chronicles 4:31: "And at Bethmarcaboth, and Hazarsusim, and at Bethbirei, and at Shaaraim. These were their cities unto the reign of David."

1 Chronicles 4:32: "And their villages were, Etam, and Ain, Rimmon, and Tochen, and Ashan, five cities:"

1 Chronicles 4:33: "And all their villages that were round about the same cities, unto Baal. These were their habitations, and their genealogy."

1 Chronicles 4:38: "These mentioned by their names were princes in their families: and the house of their fathers increased greatly."

1 Chronicles 4:41: "And these written by name came in the days of Hezekiah king of Judah, and smote their tents, and the habitations that were found there, and destroyed them utterly unto this day, and dwelt in their rooms: because there was pasture there for their flocks."

1 Chronicles 4:43: "And they smote the rest of the Amalekites that were escaped, and dwelt there unto this day."

1 Chronicles 5:3: "The sons, I say, of Reuben the firstborn of Israel were, Hanoch, and Pallu, Hezron, and Carmi."

1 Chronicles 5:7: "And his brethren by their families, when the genealogy of their generations was reckoned, were the chief, Jeiel, and Zechariah,"

1 Chronicles 5:9: "And eastward he inhabited unto the entering in of the wilderness from the river Euphrates: because their cattle were multiplied in the land of Gilead."

1 Chronicles 5:13: "And their brethren of the house of their fathers were, Michael, and Meshullam, and Sheba, and Jorai, and Jachan, and Zia, and Heber, seven."

1 Chronicles 5:17: "All these were reckoned by genealogies in the days of Jotham king of Judah, and in the days of Jeroboam king of Israel."

1 Chronicles 5:18: "The sons of Reuben, and the Gadites, and half the tribe of Manasseh, of valiant

men, men able to bear buckler and sword, and to shoot with bow, and skilful in war, were four and forty thousand seven hundred and threescore, that went out to the war."

1 Chronicles 5:20: "And they were helped against them, and the Hagarites were delivered into their hand, and all that were with them: for they cried to God in the battle, and he was intreated of them; because they put their trust in him."

1 Chronicles 5:24: "And these were the heads of the house of their fathers, even Ephraim, and Ishi, and Eliel, and Azriel, and Jeremiah, and Hodaviah, and Jahdiel, mighty men of valour, famous men, and heads of the house of their fathers."

1 Chronicles 6:18: "And the sons of Kohath were, Amram, and Izhar, and Hebron, and Uzziel."

1 Chronicles 6:48: "Their brethren also the Levites were appointed unto all manner of service of the tabernacle of the house of God."

1 Chronicles 6:49: "But Aaron and his sons offered upon the altar of the burnt offering, and on the altar of incense, and were appointed for all the work of the place most holy, and to make an atonement for Israel, according to all that Moses the servant of God had commanded."

1 Chronicles 6:60: "And out of the tribe of Benjamin; Geba with her suburbs, and Alemeth with her suburbs, and Anathoth with her suburbs. All their cities throughout their families were thirteen cities."

1 Chronicles 6:61: "And unto the sons of Kohath, which were left of the family of that tribe, were cities given out of the half tribe, namely, out of the half tribe of Manasseh, by lot, ten cities."

1 Chronicles 6:63: "Unto the sons of Merari were given by lot, throughout their families, out of the tribe of Reuben, and out of the tribe of Gad, and out of the tribe of Zebulun, twelve cities."

1 Chronicles 6:71: "Unto the sons of Gershom were given out of the family of the half tribe of Manasseh, Golan in Bashan with her suburbs, and Ashtaroth with her suburbs:"

1 Chronicles 6:77: "Unto the rest of the children of Merari were given out of the tribe of Zebulun, Rimmon with her suburbs, Tabor with her suburbs:"

1 Chronicles 6:78: "And on the other side Jordan by Jericho, on the east side of Jordan, were given them out of the tribe of Reuben, Bezer in the wilderness with her suburbs, and Jahzah with her suburbs,"

1 Chronicles 7:1: "Now the sons of Issachar were, Tola, and Puah, Jashub, and Shimrom, four."

1 Chronicles 7:2: "And the sons of Tola; Uzzi, and Rephaiah, and Jeriel, and Jahmai, and Jibsam, and Shemuel, heads of their father's house, to wit, of Tola: they were valiant men of might in their generations; whose number was in the days of David two and twenty thousand and six hundred."

1 Chronicles 7:4: "And with them, by their generations, after the house of their fathers, were bands of soldiers for war, six and thirty thousand men: for they had many wives and sons."

1 Chronicles 7:5: "And their brethren among all the families of Issachar were valiant men of might, reckoned in all by their genealogies fourscore and seven thousand."

1 Chronicles 7:7: "And the sons of Bela; Ezbon, and Uzzi, and Uzziel, and Jerimoth, and Iri, five; heads of the house of their fathers, mighty men of valour; and were reckoned by their genealogies twenty and two thousand and thirty and four."

1 Chronicles 7:11: "All these the sons of Jediel, by the heads of their fathers, mighty men of valour, were seventeen thousand and two hundred soldiers, fit to go out for war and battle."

1 Chronicles 7:16: "And Maachah the wife of Machir bare a son, and she called his name Peresh; and the name of his brother was Sheresh; and his sons were Ulam and Rakem."

1 Chronicles 7:17: "And the sons of Ulam; Bedan. These were the sons of Gilead, the son of Machir, the son of Manasseh."

1 Chronicles 7:19: "And the sons of Shemidah were, Ahian, and Shechem, and Likhi, and Aniam."

1 Chronicles 7:21: "And Zabad his son, and Shuthelah his son, and Ezer, and Elead, whom the men of Gath that were born in that land slew, because they came down to take away their cattle."

1 Chronicles 7:28: "And their possessions and habitations were, Bethel and the towns thereof, and eastward Naaran, and westward Gezer, with the towns thereof; Shechem also and the towns thereof,

unto Gaza and the towns thereof:"

1 Chronicles 7:40: "All these were the children of Asher, heads of their father's house, choice and mighty men of valour, chief of the princes. And the number throughout the genealogy of them that were apt to the war and to battle was twenty and six thousand men."

1 Chronicles 8:3: "And the sons of Bela were, Addar, and Gera, and Abihud,"

1 Chronicles 8:8: "And Shaharaim begat children in the country of Moab, after he had sent them away; Hushim and Baara were his wives."

1 Chronicles 8:10: "And Jeuz, and Shachia, and Mirma. These were his sons, heads of the fathers."

1 Chronicles 8:13: "Beriah also, and Shema, who were heads of the fathers of the inhabitants of Aijalon, who drove away the inhabitants of Gath:"

1 Chronicles 8:28: "These were heads of the fathers, by their generations, chief men. These dwelt in Jerusalem."

1 Chronicles 8:35: "And the sons of Micah were, Pithon, and Melech, and Tarea, and Ahaz."

1 Chronicles 8:38: "And Azel had six sons, whose names are these, Azrikam, Bocheru, and Ishmael, and Sheariah, and Obadiah, and Hanan. All these were the sons of Azel."

1 Chronicles 8:39: "And the sons of Eshek his brother were, Ulam his firstborn, Jehush the second, and Eliphelet the third."

1 Chronicles 8:40: "And the sons of Ulam were mighty men of valour, archers, and had many sons, and sons' sons, an hundred and fifty. All these are of the sons of Benjamin."

1 Chronicles 9:1: "So all Israel were reckoned by genealogies; and, behold, they were written in the book of the kings of Israel and Judah, who were carried away to Babylon for their transgression."

1 Chronicles 9:2: "Now the first inhabitants that dwelt in their possessions in their cities were, the Israelites, the priests, Levites, and the Nethinims."

1 Chronicles 9:9: "And their brethren, according to their generations, nine hundred and fifty and six. All these men were chief of the fathers in the house of their fathers."

1 Chronicles 9:17: "And the porters were, Shallum, and Akkub, and Talmon, and Ahiman, and their brethren: Shallum was the chief;"

1 Chronicles 9:18: "Who hitherto waited in the king's gate eastward: they were porters in the companies of the children of Levi."

1 Chronicles 9:19: "And Shallum the son of Kore, the son of Ebiasaph, the son of Korah, and his brethren, of the house of his father, the Korahites, were over the work of the service, keepers of the gates of the tabernacle: and their fathers, being over the host of the LORD, were keepers of the entry."

1 Chronicles 9:22: "All these which were chosen to be porters in the gates were two hundred and twelve. These were reckoned by their genealogy in their villages, whom David and Samuel the seer did ordain in their set office."

1 Chronicles 9:24: "In four quarters were the porters, toward the east, west, north, and south."

1 Chronicles 9:25: "And their brethren, which were in their villages, were to come after seven days from time to time with them."

1 Chronicles 9:26: "For these Levites, the four chief porters, were in their set office, and were over the chambers and treasuries of the house of God."

1 Chronicles 9:29: "Some of them also were appointed to oversee the vessels, and all the instruments of the sanctuary, and the fine flour, and the wine, and the oil, and the frankincense, and the spices."

1 Chronicles 9:31: "And Mattithiah, one of the Levites, who was the firstborn of Shallum the Korahite, had the set office over the things that were made in the pans."

1 Chronicles 9:32: "And other of their brethren, of the sons of the Kohathites, were over the shewbread, to prepare it every sabbath."

1 Chronicles 9:33: "And these are the singers, chief of the fathers of the Levites, who remaining in the chambers were free: for they were employed in that work day and night."



1 Chronicles 9:34: "These chief fathers of the Levites were chief throughout their generations; these dwelt at Jerusalem."

1 Chronicles 9:41: "And the sons of Micah were, Pithon, and Melech, and Tahrea, and Ahaz."

1 Chronicles 9:44: "And Azel had six sons, whose names are these, Azrikam, Bocheru, and Ishmael, and Sheariah, and Obadiah, and Hanan: these were the sons of Azel."

1 Chronicles 10:7: "And when all the men of Israel that were in the valley saw that they fled, and that Saul and his sons were dead, then they forsook their cities, and fled: and the Philistines came and dwelt in them."

1 Chronicles 11:4: "And David and all Israel went to Jerusalem, which is Jebus; where the Jebusites were, the inhabitants of the land."

1 Chronicles 11:13: "He was with David at Pasdammim, and there the Philistines were gathered together to battle, where was a parcel of ground full of barley; and the people fled from before the Philistines."

1 Chronicles 11:26: "Also the valiant men of the armies were, Asahel the brother of Joab, Elhanan the son of Dodo of Bethlehem,"

1 Chronicles 12:1: "Now these are they that came to David to Ziklag, while he yet kept himself close because of Saul the son of Kish: and they were among the mighty men, helpers of the war."

1 Chronicles 12:2: "They were armed with bows, and could use both the right hand and the left in hurling stones and shooting arrows out of a bow, even of Saul's brethren of Benjamin."

1 Chronicles 12:8: "And of the Gadites there separated themselves unto David into the hold to the wilderness men of might, and men of war fit for the battle, that could handle shield and buckler, whose faces were like the faces of lions, and were as swift as the roes upon the mountains;"

1 Chronicles 12:14: "These were of the sons of Gad, captains of the host: one of the least was over an hundred, and the greatest over a thousand."

1 Chronicles 12:20: "As he went to Ziklag, there fell to him of Manasseh, Adnah, and Jozabad, and Jediahel, and Michael, and Jozabad, and Elihu, and Zilthai, captains of the thousands that were of Manasseh."

1 Chronicles 12:21: "And they helped David against the band of the rovers: for they were all mighty men of valour, and were captains in the host."

1 Chronicles 12:23: "And these are the numbers of the bands that were ready armed to the war, and came to David to Hebron, to turn the kingdom of Saul to him, according to the word of the LORD."

1 Chronicles 12:24: "The children of Judah that bare shield and spear were six thousand and eight hundred, ready armed to the war."

1 Chronicles 12:27: "And Jehoiada was the leader of the Aaronites, and with him were three thousand and seven hundred;"

1 Chronicles 12:31: "And of the half tribe of Manasseh eighteen thousand, which were expressed by name, to come and make David king."

1 Chronicles 12:32: "And of the children of Issachar, which were men that had understanding of the times, to know what Israel ought to do; the heads of them were two hundred; and all their brethren were at their commandment."

1 Chronicles 12:33: "Of Zebulun, such as went forth to battle, expert in war, with all instruments of war, fifty thousand, which could keep rank: they were not of double heart."

1 Chronicles 12:38: "All these men of war, that could keep rank, came with a perfect heart to Hebron, to make David king over all Israel: and all the rest also of Israel were of one heart to make David king."

1 Chronicles 12:39: "And there they were with David three days, eating and drinking: for their brethren had prepared for them."

1 Chronicles 12:40: "Moreover they that were nigh them, even unto Issachar and Zebulun and Naphtali, brought bread on asses, and on camels, and on mules, and on oxen, and meat, meal, cakes of figs, and bunches of raisins, and wine, and oil, and oxen, and sheep abundantly: for there was joy

in Israel."

1 Chronicles 14:12: "And when they had left their gods there, David gave a commandment, and they were burned with fire."

1 Chronicles 15:19: "So the singers, Heman, Asaph, and Ethan, were appointed to sound with cymbals of brass;"

1 Chronicles 15:23: "And Berechiah and Elkanah were doorkeepers for the ark."

1 Chronicles 15:24: "And Shebaniah, and Jehoshaphat, and Nethaneel, and Amasai, and Zechariah, and Benaiah, and Eliezer, the priests, did blow with the trumpets before the ark of God: and Obededom and Jehiah were doorkeepers for the ark."

1 Chronicles 16:19: "When ye were but few, even a few, and strangers in it."

1 Chronicles 16:41: "And with them Heman and Jeduthun, and the rest that were chosen, who were expressed by name, to give thanks to the LORD, because his mercy endureth for ever;"

1 Chronicles 16:42: "And with them Heman and Jeduthun with trumpets and cymbals for those that should make a sound, and with musical instruments of God. And the sons of Jeduthun were porters."

1 Chronicles 18:7: "And David took the shields of gold that were on the servants of Hadarezer, and brought them to Jerusalem."

1 Chronicles 18:16: "And Zadok the son of Ahitub, and Abimelech the son of Abiathar, were the priests; and Shavsha was scribe;"

1 Chronicles 18:17: "And Benaiah the son of Jehoiada was over the Cherethites and the Pelethites; and the sons of David were chief about the king."

1 Chronicles 19:5: "Then there went certain, and told David how the men were served. And he sent to meet them: for the men were greatly ashamed. And the king said, Tarry at Jericho until your beards be grown, and then return."

1 Chronicles 19:9: "And the children of Ammon came out, and put the battle in array before the gate of the city: and the kings that were come were by themselves in the field."

1 Chronicles 19:14: "So Joab and the people that were with him drew nigh before the Syrians unto the battle; and they fled before him."

1 Chronicles 19:15: "And when the children of Ammon saw that the Syrians were fled, they likewise fled before Abishai his brother, and entered into the city. Then Joab came to Jerusalem."

1 Chronicles 19:16: "And when the Syrians saw that they were put to the worse before Israel, they sent messengers, and drew forth the Syrians that were beyond the river: and Shophach the captain of the host of Hadarezer went before them."

1 Chronicles 19:19: "And when the servants of Hadarezer saw that they were put to the worse before Israel, they made peace with David, and became his servants: neither would the Syrians help the children of Ammon any more."

1 Chronicles 20:2: "And David took the crown of their king from off his head, and found it to weigh a talent of gold, and there were precious stones in it; and it was set upon David's head: and he brought also exceeding much spoil out of the city."

1 Chronicles 20:3: "And he brought out the people that were in it, and cut them with saws, and with harrows of iron, and with axes. Even so dealt David with all the cities of the children of Ammon. And David and all the people returned to Jerusalem."

1 Chronicles 20:4: "And it came to pass after this, that there arose war at Gezer with the Philistines; at which time Sibbechai the Hushathite slew Sippai, that was of the children of the giant: and they were subdued."

1 Chronicles 20:6: "And yet again there was war at Gath, where was a man of great stature, whose fingers and toes were four and twenty, six on each hand, and six on each foot and he also was the son of the giant."

1 Chronicles 20:8: "These were born unto the giant in Gath; and they fell by the hand of David, and by the hand of his servants."

1 Chronicles 21:5: "And Joab gave the sum of the number of the people unto David. And all they of Israel were a thousand thousand and an hundred thousand men that drew sword: and Judah was four hundred threescore and ten thousand men that drew sword."

1 Chronicles 21:16: "And David lifted up his eyes, and saw the angel of the LORD stand between the earth and the heaven, having a drawn sword in his hand stretched out over Jerusalem. Then David and the elders of Israel, who were clothed in sackcloth, fell upon their faces."

1 Chronicles 21:29: "For the tabernacle of the LORD, which Moses made in the wilderness, and the altar of the burnt offering, were at that season in the high place at Gibeon."

1 Chronicles 22:2: "And David commanded to gather together the strangers that were in the land of Israel; and he set masons to hew wrought stones to build the house of God."

1 Chronicles 23:3: "Now the Levites were numbered from the age of thirty years and upward: and their number by their polls, man by man, was thirty and eight thousand."

1 Chronicles 23:4: "Of which, twenty and four thousand were to set forward the work of the house of the LORD; and six thousand were officers and judges:"

1 Chronicles 23:5: "Moreover four thousand were porters; and four thousand praised the LORD with the instruments which I made, said David, to praise therewith."

1 Chronicles 23:7: "Of the Gershonites were, Laadan, and Shimei."

1 Chronicles 23:9: "The sons of Shimei; Shelomith, and Haziel, and Haran, three. These were the chief of the fathers of Laadan."

1 Chronicles 23:10: "And the sons of Shimei were, Jahath, Zina, and Jeush, and Beriah. These four were the sons of Shimei."

1 Chronicles 23:11: "And Jahath was the chief, and Zizah the second: but Jeush and Beriah had not many sons; therefore they were in one reckoning, according to their father's house."

1 Chronicles 23:14: "Now concerning Moses the man of God, his sons were named of the tribe of Levi."

1 Chronicles 23:15: "The sons of Moses were, Gershom, and Eliezer."

1 Chronicles 23:17: "And the sons of Eliezer were, Rehabiah the chief. And Eliezer had none other sons; but the sons of Rehabiah were very many."

1 Chronicles 23:24: "These were the sons of Levi after the house of their fathers; even the chief of the fathers, as they were counted by number of names by their polls, that did the work for the service of the house of the LORD, from the age of twenty years and upward."

1 Chronicles 23:27: "For by the last words of David the Levites were numbered from twenty years old and above:"

1 Chronicles 24:4: "And there were more chief men found of the sons of Eleazar than of the sons of Ithamar, and thus were they divided. Among the sons of Eleazar there were sixteen chief men of the house of their fathers, and eight among the sons of Ithamar according to the house of their fathers."

1 Chronicles 24:5: "Thus were they divided by lot, one sort with another; for the governors of the sanctuary, and governors of the house of God, were of the sons of Eleazar, and of the sons of Ithamar."

1 Chronicles 24:19: "These were the orderings of them in their service to come into the house of the LORD, according to their manner, under Aaron their father, as the LORD God of Israel had commanded him."

1 Chronicles 24:20: "And the rest of the sons of Levi were these: Of the sons of Amram; Shubael: of the sons of Shubael; Jehdeiah."

1 Chronicles 24:26: "The sons of Merari were Mahli and Mushi: the sons of Jaaziah; Beno."

1 Chronicles 24:30: "The sons also of Mushi; Mahli, and Eder, and Jerimoth. These were the sons of the Levites after the house of their fathers."

1 Chronicles 25:5: "All these were the sons of Heman the king's seer in the words of God, to lift up the horn. And God gave to Heman fourteen sons and three daughters."

1 Chronicles 25:6: "All these were under the hands of their father for song in the house of the

LORD, with cymbals, psalteries, and harps, for the service of the house of God, according to the king's order to Asaph, Jeduthun, and Heman."

1 Chronicles 25:7: "So the number of them, with their brethren that were instructed in the songs of the LORD, even all that were cunning, was two hundred fourscore and eight."

1 Chronicles 25:9: "Now the first lot came forth for Asaph to Joseph: the second to Gedaliah, who with his brethren and sons were twelve:"

1 Chronicles 25:10: "The third to Zaccur, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:11: "The fourth to Izri, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:12: "The fifth to Nethaniah, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:13: "The sixth to Bukkiah, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:14: "The seventh to Jesharelah, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:15: "The eighth to Jeshaiiah, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:16: "The ninth to Mattaniah, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:17: "The tenth to Shimei, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:18: "The eleventh to Azareel, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:19: "The twelfth to Hashabiah, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:20: "The thirteenth to Shubael, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:21: "The fourteenth to Mattithiah, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:22: "The fifteenth to Jeremoth, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:23: "The sixteenth to Hananiah, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:24: "The seventeenth to Joshbekashah, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:25: "The eighteenth to Hanani, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:26: "The nineteenth to Mallothi, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:27: "The twentieth to Eliathah, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:28: "The one and twentieth to Hothir, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:29: "The two and twentieth to Giddalti, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:30: "The three and twentieth to Mahazioth, he, his sons, and his brethren, were twelve:"

1 Chronicles 25:31: "The four and twentieth to Romamtiezer, he, his sons, and his brethren, were twelve."

1 Chronicles 26:2: "And the sons of Meshelemiah were, Zechariah the firstborn, Jediael the second, Zebadiah the third, Jathniel the fourth,"

1 Chronicles 26:4: "Moreover the sons of Obededom were, Shemaiah the firstborn, Jehozabad the second, Joah the third, and Sacar the fourth, and Nethaneel the fifth."

1 Chronicles 26:6: "Also unto Shemaiah his son were sons born, that ruled throughout the house of their father: for they were mighty men of valour."

1 Chronicles 26:7: "The sons of Shemaiah; Othni, and Rephael, and Obed, Elzabad, whose brethren were strong men, Elihu, and Semachiah."

1 Chronicles 26:8: "All these of the sons of Obededom: they and their sons and their brethren, able men for strength for the service, were threescore and two of Obededom."

1 Chronicles 26:11: "Hilkiah the second, Tebaliah the third, Zechariah the fourth: all the sons and brethren of Hosah were thirteen."

1 Chronicles 26:12: "Among these were the divisions of the porters, even among the chief men, having wards one against another, to minister in the house of the LORD."

1 Chronicles 26:17: "Eastward were six Levites, northward four a day, southward four a day, and toward Asuppim two and two."

1 Chronicles 26:21: "As concerning the sons of Laadan; the sons of the Gershonite Laadan, chief fathers, even of Laadan the Gershonite, were Jehieli."

1 Chronicles 26:22: "The sons of Jehieli; Zetham, and Joel his brother, which were over the

treasures of the house of the LORD."

1 Chronicles 26:26: "Which Shelomith and his brethren were over all the treasures of the dedicated things, which David the king, and the chief fathers, the captains over thousands and hundreds, and the captains of the host, had dedicated."

1 Chronicles 26:29: "Of the Izharites, Chenaniah and his sons were for the outward business over Israel, for officers and judges."

1 Chronicles 26:30: "And of the Hebronites, Hashabiah and his brethren, men of valour, a thousand and seven hundred, were officers among them of Israel on this side Jordan westward in all the business of the LORD, and in the service of the king."

1 Chronicles 26:31: "Among the Hebronites was Jerijah the chief, even among the Hebronites, according to the generations of his fathers. In the fortieth year of the reign of David they were sought for, and there were found among them mighty men of valour at Jazer of Gilead."

1 Chronicles 26:32: "And his brethren, men of valour, were two thousand and seven hundred chief fathers, whom king David made rulers over the Reubenites, the Gadites, and the half tribe of Manasseh, for every matter pertaining to God, and affairs of the king."

1 Chronicles 27:1: "Now the children of Israel after their number, to wit, the chief fathers and captains of thousands and hundreds, and their officers that served the king in any matter of the courses, which came in and went out month by month throughout all the months of the year, of every course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:2: "Over the first course for the first month was Jashobeam the son of Zabdiel: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:4: "And over the course of the second month was Dodai an Ahohite, and of his course was Mikloth also the ruler: in his course likewise were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:5: "The third captain of the host for the third month was Benaiah the son of Jehoiada, a chief priest: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:7: "The fourth captain for the fourth month was Asahel the brother of Joab, and Zebadiah his son after him: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:8: "The fifth captain for the fifth month was Shamhuth the Izrahite: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:9: "The sixth captain for the sixth month was Ira the son of Ikkesh the Tekoite: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:10: "The seventh captain for the seventh month was Helez the Pelonite, of the children of Ephraim: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:11: "The eighth captain for the eighth month was Sibbecai the Hushathite, of the Zarhites: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:12: "The ninth captain for the ninth month was Abiezer the Anetothite, of the Benjamites: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:13: "The tenth captain for the tenth month was Maharai the Netophathite, of the Zarhites: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:14: "The eleventh captain for the eleventh month was Benaiah the Pirathonite, of the children of Ephraim: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:15: "The twelfth captain for the twelfth month was Heldai the Netophathite, of Othniel: and in his course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:22: "Of Dan, Azareel the son of Jeroham. These were the princes of the tribes of Israel."

1 Chronicles 27:28: "And over the olive trees and the sycamore trees that were in the low plains was Baalhanan the Gederite: and over the cellars of oil was Joash:"

1 Chronicles 27:29: "And over the herds that fed in Sharon was Shitrai the Sharonite: and over the herds that were in the valleys was Shaphat the son of Adlai:"

1 Chronicles 27:31: "And over the flocks was Jaziz the Hagerite. All these were the rulers of the

substance which was king David's."

1 Chronicles 29:8: "And they with whom precious stones were found gave them to the treasure of the house of the LORD, by the hand of Jehiel the Gershonite."

1 Chronicles 29:15: "For we are strangers before thee, and sojourners, as were all our fathers: our days on the earth are as a shadow, and there is none abiding."

2 Chronicles 2:17: "And Solomon numbered all the strangers that were in the land of Israel, after the numbering wherewith David his father had numbered them; and they were found an hundred and fifty thousand and three thousand and six hundred."

2 Chronicles 3:11: "And the wings of the cherubims were twenty cubits long: one wing of the one cherub was five cubits, reaching to the wall of the house: and the other wing was likewise five cubits, reaching to the wing of the other cherub."

2 Chronicles 3:13: "The wings of these cherubims spread themselves forth twenty cubits: and they stood on their feet, and their faces were inward."

2 Chronicles 4:3: "And under it was the similitude of oxen, which did compass it round about: ten in a cubit, compassing the sea round about. Two rows of oxen were cast, when it was cast."

2 Chronicles 4:4: "It stood upon twelve oxen, three looking toward the north, and three looking toward the west, and three looking toward the south, and three looking toward the east: and the sea was set above upon them, and all their hinder parts were inward."

2 Chronicles 4:12: "To wit, the two pillars, and the pommels, and the chapiters which were on the top of the two pillars, and the two wreaths to cover the two pommels of the chapiters which were on the top of the pillars;"

2 Chronicles 4:13: "And four hundred pomegranates on the two wreaths; two rows of pomegranates on each wreath, to cover the two pommels of the chapiters which were upon the pillars."

2 Chronicles 4:19: "And Solomon made all the vessels that were for the house of God, the golden altar also, and the tables whereon the shewbread was set;"

2 Chronicles 4:22: "And the snuffers, and the basons, and the spoons, and the censers, of pure gold: and the entry of the house, the inner doors thereof for the most holy place, and the doors of the house of the temple, were of gold."

2 Chronicles 5:5: "And they brought up the ark, and the tabernacle of the congregation, and all the holy vessels that were in the tabernacle, these did the priests and the Levites bring up."

2 Chronicles 5:6: "Also king Solomon, and all the congregation of Israel that were assembled unto him before the ark, sacrificed sheep and oxen, which could not be told nor numbered for multitude."

2 Chronicles 5:9: "And they drew out the staves of the ark, that the ends of the staves were seen from the ark before the oracle; but they were not seen without. And there it is unto this day."

2 Chronicles 5:11: "And it came to pass, when the priests were come out of the holy place: (for all the priests that were present were sanctified, and did not then wait by course:"

2 Chronicles 5:12: "Also the Levites which were the singers, all of them of Asaph, of Heman, of Jeduthun, with their sons and their brethren, being arrayed in white linen, having cymbals and psalteries and harps, stood at the east end of the altar, and with them an hundred and twenty priests sounding with trumpets:)"

2 Chronicles 5:13: "It came even to pass, as the trumpeters and singers were as one, to make one sound to be heard in praising and thanking the LORD; and when they lifted up their voice with the trumpets and cymbals and instruments of musick, and praised the LORD, saying, For he is good; for his mercy endureth for ever: that then the house was filled with a cloud, even the house of the LORD;"

2 Chronicles 8:7: "As for all the people that were left of the Hittites, and the Amorites, and the Perizzites, and the Hivites, and the Jebusites, which were not of Israel,"

2 Chronicles 8:8: "But of their children, who were left after them in the land, whom the children of Israel consumed not, them did Solomon make to pay tribute until this day."

2 Chronicles 8:9: "But of the children of Israel did Solomon make no servants for his work; but they

were men of war, and chief of his captains, and captains of his chariots and horsemen."

2 Chronicles 8:10: "And these were the chief of king Solomon's officers, even two hundred and fifty, that bare rule over the people."

2 Chronicles 9:11: "And the king made of the algum trees terraces to the house of the LORD, and to the king's palace, and harps and psalteries for singers: and there were none such seen before in the land of Judah."

2 Chronicles 9:18: "And there were six steps to the throne, with a footstool of gold, which were fastened to the throne, and stays on each side of the sitting place, and two lions standing by the stays:"

2 Chronicles 9:20: "And all the drinking vessels of king Solomon were of gold, and all the vessels of the house of the forest of Lebanon were of pure gold: none were of silver; it was not any thing accounted of in the days of Solomon."

2 Chronicles 10:1: "And Rehoboam went to Shechem: for to Shechem were all Israel come to make him king."

2 Chronicles 10:8: "But he forsook the counsel which the old men gave him, and took counsel with the young men that were brought up with him, that stood before him."

2 Chronicles 10:10: "And the young men that were brought up with him spake unto him, saying, Thus shalt thou answer the people that spake unto thee, saying, Thy father made our yoke heavy, but make thou it somewhat lighter for us; thus shalt thou say unto them, My little finger shall be thicker than my father's loins."

2 Chronicles 11:1: "And when Rehoboam was come to Jerusalem, he gathered of the house of Judah and Benjamin an hundred and fourscore thousand chosen men, which were warriors, to fight against Israel, that he might bring the kingdom again to Rehoboam."

2 Chronicles 11:13: "And the priests and the Levites that were in all Israel resorted to him out of all their coasts."

2 Chronicles 12:3: "With twelve hundred chariots, and threescore thousand horsemen: and the people were without number that came with him out of Egypt; the Lubims, the Sukkiims, and the Ethiopians."

2 Chronicles 12:5: "Then came Shemaiah the prophet to Rehoboam, and to the princes of Judah, that were gathered together to Jerusalem because of Shishak, and said unto them, Thus saith the LORD, Ye have forsaken me, and therefore have I also left you in the hand of Shishak."

2 Chronicles 12:15: "Now the acts of Rehoboam, first and last, are they not written in the book of Shemaiah the prophet, and of Iddo the seer concerning genealogies? And there were wars between Rehoboam and Jeroboam continually."

2 Chronicles 13:13: "But Jeroboam caused an ambushment to come about behind them: so they were before Judah, and the ambushment was behind them."

2 Chronicles 13:18: "Thus the children of Israel were brought under at that time, and the children of Judah prevailed, because they relied upon the LORD God of their fathers."

2 Chronicles 14:8: "And Asa had an army of men that bare targets and spears, out of Judah three hundred thousand; and out of Benjamin, that bare shields and drew bows, two hundred and fourscore thousand: all these were mighty men of valour."

2 Chronicles 14:13: "And Asa and the people that were with him pursued them unto Gerar: and the Ethiopians were overthrown, that they could not recover themselves; for they were destroyed before the LORD, and before his host; and they carried away very much spoil."

2 Chronicles 15:5: "And in those times there was no peace to him that went out, nor to him that came in, but great vexations were upon all the inhabitants of the countries."

2 Chronicles 15:17: "But the high places were not taken away out of Israel: nevertheless the heart of Asa was perfect all his days."

2 Chronicles 16:8: "Were not the Ethiopians and the Lubims a huge host, with very many chariots and horsemen? yet, because thou didst rely on the LORD, he delivered them into thine hand."

2 Chronicles 17:10: "And the fear of the LORD fell upon all the kingdoms of the lands that were round about Judah, so that they made no war against Jehoshaphat."

2 Chronicles 17:13: "And he had much business in the cities of Judah: and the men of war, mighty men of valour, were in Jerusalem."

2 Chronicles 18:30: "Now the king of Syria had commanded the captains of the chariots that were with him, saying, Fight ye not with small or great, save only with the king of Israel."

2 Chronicles 20:22: "And when they began to sing and to praise, the LORD set ambushments against the children of Ammon, Moab, and mount Seir, which were come against Judah; and they were smitten."

2 Chronicles 20:24: "And when Judah came toward the watch tower in the wilderness, they looked unto the multitude, and, behold, they were dead bodies fallen to the earth, and none escaped."

2 Chronicles 20:25: "And when Jehoshaphat and his people came to take away the spoil of them, they found among them in abundance both riches with the dead bodies, and precious jewels, which they stripped off for themselves, more than they could carry away: and they were three days in gathering of the spoil, it was so much."

2 Chronicles 20:33: "Howbeit the high places were not taken away: for as yet the people had not prepared their hearts unto the God of their fathers."

2 Chronicles 20:37: "Then Eliezer the son of Dodavah of Mareshah prophesied against Jehoshaphat, saying, Because thou hast joined thyself with Ahaziah, the LORD hath broken thy works. And the ships were broken, that they were not able to go to Tarshish."

2 Chronicles 21:2: "And he had brethren the sons of Jehoshaphat, Azariah, and Jehiel, and Zechariah, and Azariah, and Michael, and Shephatiah: all these were the sons of Jehoshaphat king of Israel."

2 Chronicles 21:13: "But hast walked in the way of the kings of Israel, and hast made Judah and the inhabitants of Jerusalem to go a whoring, like to the whoredoms of the house of Ahab, and also hast slain thy brethren of thy father's house, which were better than thyself:"

2 Chronicles 21:16: "Moreover the LORD stirred up against Jehoram the spirit of the Philistines, and of the Arabians, that were near the Ethiopians:"

2 Chronicles 22:4: "Wherefore he did evil in the sight of the LORD like the house of Ahab: for they were his counsellors after the death of his father to his destruction."

2 Chronicles 22:6: "And he returned to be healed in Jezreel because of the wounds which were given him at Ramah, when he fought with Hazael king of Syria. And Azariah the son of Jehoram king of Judah went down to see Jehoram the son of Ahab at Jezreel, because he was sick."

2 Chronicles 22:11: "But Jehoshabeath, the daughter of the king, took Joash the son of Ahaziah, and stole him from among the king's sons that were slain, and put him and his nurse in a bedchamber. So Jehoshabeath, the daughter of king Jehoram, the wife of Jehoiada the priest, (for she was the sister of Ahaziah,) hid him from Athaliah, so that she slew him not."

2 Chronicles 23:8: "So the Levites and all Judah did according to all things that Jehoiada the priest had commanded, and took every man his men that were to come in on the sabbath, with them that were to go out on the sabbath: for Jehoiada the priest dismissed not the courses."

2 Chronicles 23:9: "Moreover Jehoiada the priest delivered to the captains of hundreds spears, and bucklers, and shields, that had been king David's, which were in the house of God."

2 Chronicles 23:14: "Then Jehoiada the priest brought out the captains of hundreds that were set over the host, and said unto them, Have her forth of the ranges: and whoso followeth her, let him be slain with the sword. For the priest said, Slay her not in the house of the LORD."

2 Chronicles 24:14: "And when they had finished it, they brought the rest of the money before the king and Jehoiada, whereof were made vessels for the house of the LORD, even vessels to minister, and to offer withal, and spoons, and vessels of gold and silver. And they offered burnt offerings in the house of the LORD continually all the days of Jehoiada."

2 Chronicles 24:25: "And when they were departed from him, (for they left him in great diseases,)



his own servants conspired against him for the blood of the sons of Jehoiada the priest, and slew him on his bed, and he died: and they buried him in the city of David, but they buried him not in the sepulchres of the kings."

2 Chronicles 25:12: "And other ten thousand left alive did the children of Judah carry away captive, and brought them unto the top of the rock, and cast them down from the top of the rock, that they all were broken in pieces."

2 Chronicles 25:24: "And he took all the gold and the silver, and all the vessels that were found in the house of God with Obededom, and the treasures of the king's house, the hostages also, and returned to Samaria."

2 Chronicles 26:12: "The whole number of the chief of the fathers of the mighty men of valour were two thousand and six hundred."

2 Chronicles 26:17: "And Azariah the priest went in after him, and with him fourscore priests of the LORD, that were valiant men:"

2 Chronicles 28:6: "For Pekah the son of Remaliah slew in Judah an hundred and twenty thousand in one day, which were all valiant men; because they had forsaken the LORD God of their fathers."

2 Chronicles 28:15: "And the men which were expressed by name rose up, and took the captives, and with the spoil clothed all that were naked among them, and arrayed them, and shod them, and gave them to eat and to drink, and anointed them, and carried all the feeble of them upon asses, and brought them to Jericho, the city of palm trees, to their brethren: then they returned to Samaria."

2 Chronicles 28:23: "For he sacrificed unto the gods of Damascus, which smote him: and he said, Because the gods of the kings of Syria help them, therefore will I sacrifice to them, that they may help me. But they were the ruin of him, and of all Israel."

2 Chronicles 29:29: "And when they had made an end of offering, the king and all that were present with him bowed themselves, and worshipped."

2 Chronicles 29:31: "Then Hezekiah answered and said, Now ye have consecrated yourselves unto the LORD, come near and bring sacrifices and thank offerings into the house of the LORD. And the congregation brought in sacrifices and thank offerings; and as many as were of a free heart burnt offerings."

2 Chronicles 29:32: "And the number of the burnt offerings, which the congregation brought, was threescore and ten bullocks, an hundred rams, and two hundred lambs: all these were for a burnt offering to the LORD."

2 Chronicles 29:33: "And the consecrated things were six hundred oxen and three thousand sheep."

2 Chronicles 29:34: "But the priests were too few, so that they could not flay all the burnt offerings: wherefore their brethren the Levites did help them, till the work was ended, and until the other priests had sanctified themselves: for the Levites were more upright in heart to sanctify themselves than the priests."

2 Chronicles 29:35: "And also the burnt offerings were in abundance, with the fat of the peace offerings, and the drink offerings for every burnt offering. So the service of the house of the LORD was set in order."

2 Chronicles 30:8: "Now be ye not stiffnecked, as your fathers were, but yield yourselves unto the LORD, and enter into his sanctuary, which he hath sanctified for ever: and serve the LORD your God, that the fierceness of his wrath may turn away from you."

2 Chronicles 30:14: "And they arose and took away the altars that were in Jerusalem, and all the altars for incense took they away, and cast them into the brook Kidron."

2 Chronicles 30:15: "Then they killed the passover on the fourteenth day of the second month: and the priests and the Levites were ashamed, and sanctified themselves, and brought in the burnt offerings into the house of the LORD."

2 Chronicles 30:17: "For there were many in the congregation that were not sanctified: therefore the Levites had the charge of the killing of the passovers for every one that was not clean, to sanctify them unto the LORD."

2 Chronicles 30:21: "And the children of Israel that were present at Jerusalem kept the feast of unleavened bread seven days with great gladness: and the Levites and the priests praised the LORD day by day, singing with loud instruments unto the LORD."

2 Chronicles 31:1: "Now when all this was finished, all Israel that were present went out to the cities of Judah, and brake the images in pieces, and cut down the groves, and threw down the high places and the altars out of all Judah and Benjamin, in Ephraim also and Manasseh, until they had utterly destroyed them all. Then all the children of Israel returned, every man to his possession, into their own cities."

2 Chronicles 31:6: "And concerning the children of Israel and Judah, that dwelt in the cities of Judah, they also brought in the tithe of oxen and sheep, and the tithe of holy things which were consecrated unto the LORD their God, and laid them by heaps."

2 Chronicles 31:13: "And Jehiel, and Azaziah, and Nahath, and Asahel, and Jerimoth, and Jozabad, and Eliel, and Ismachiah, and Mahath, and Benaiah, were overseers under the hand of Cononiah and Shimei his brother, at the commandment of Hezekiah the king, and Azariah the ruler of the house of God."

2 Chronicles 31:15: "And next him were Eden, and Miniamin, and Jeshua, and Shemaiah, Amariah, and Shecaniah, in the cities of the priests, in their set office, to give to their brethren by courses, as well to the great as to the small:"

2 Chronicles 31:19: "Also of the sons of Aaron the priests, which were in the fields of the suburbs of their cities, in every several city, the men that were expressed by name, to give portions to all the males among the priests, and to all that were reckoned by genealogies among the Levites."

2 Chronicles 32:3: "He took counsel with his princes and his mighty men to stop the waters of the fountains which were without the city: and they did help him."

2 Chronicles 32:9: "After this did Sennacherib king of Assyria send his servants to Jerusalem, (but he himself laid siege against Lachish, and all his power with him,) unto Hezekiah king of Judah, and unto all Judah that were at Jerusalem, saying,"

2 Chronicles 32:13: "Know ye not what I and my fathers have done unto all the people of other lands? were the gods of the nations of those lands any ways able to deliver their lands out of mine hand?"

2 Chronicles 32:18: "Then they cried with a loud voice in the Jews' speech unto the people of Jerusalem that were on the wall, to affright them, and to trouble them; that they might take the city."

2 Chronicles 32:19: "And they spake against the God of Jerusalem, as against the gods of the people of the earth, which were the work of the hands of man."

2 Chronicles 34:4: "And they brake down the altars of Baalim in his presence; and the images, that were on high above them, he cut down; and the groves, and the carved images, and the molten images, he brake in pieces, and made dust of them, and strowed it upon the graves of them that had sacrificed unto them."

2 Chronicles 34:12: "And the men did the work faithfully: and the overseers of them were Jahath and Obadiah, the Levites, of the sons of Merari; and Zechariah and Meshullam, of the sons of the Kohathites, to set it forward; and other of the Levites, all that could skill of instruments of musick."

2 Chronicles 34:13: "Also they were over the bearers of burdens, and were overseers of all that wrought the work in any manner of service: and of the Levites there were scribes, and officers, and porters."

2 Chronicles 34:32: "And he caused all that were present in Jerusalem and Benjamin to stand to it. And the inhabitants of Jerusalem did according to the covenant of God, the God of their fathers."

2 Chronicles 34:33: "And Josiah took away all the abominations out of all the countries that pertained to the children of Israel, and made all that were present in Israel to serve, even to serve the LORD their God. And all his days they departed not from following the LORD, the God of their fathers."

2 Chronicles 35:3: "And said unto the Levites that taught all Israel, which were holy unto the

LORD, Put the holy ark in the house which Solomon the son of David king of Israel did build; it shall not be a burden upon your shoulders: serve now the LORD your God, and his people Israel,"

2 Chronicles 35:7: "And Josiah gave to the people, of the flock, lambs and kids, all for the passover offerings, for all that were present, to the number of thirty thousand, and three thousand bullocks: these were of the king's substance."

2 Chronicles 35:14: "And afterward they made ready for themselves, and for the priests: because the priests the sons of Aaron were busied in offering of burnt offerings and the fat until night; therefore the Levites prepared for themselves, and for the priests the sons of Aaron."

2 Chronicles 35:15: "And the singers the sons of Asaph were in their place, according to the commandment of David, and Asaph, and Heman, and Jeduthun the king's seer; and the porters waited at every gate; they might not depart from their service; for their brethren the Levites prepared for them."

2 Chronicles 35:17: "And the children of Israel that were present kept the passover at that time, and the feast of unleavened bread seven days."

2 Chronicles 35:18: "And there was no passover like to that kept in Israel from the days of Samuel the prophet; neither did all the kings of Israel keep such a passover as Josiah kept, and the priests, and the Levites, and all Judah and Israel that were present, and the inhabitants of Jerusalem."

2 Chronicles 36:20: "And them that had escaped from the sword carried he away to Babylon; where they were servants to him and his sons until the reign of the kingdom of Persia:"

Ezra 1:6: "And all they that were about them strengthened their hands with vessels of silver, with gold, with goods, and with beasts, and with precious things, beside all that was willingly offered."

Ezra 1:11: "All the vessels of gold and of silver were five thousand and four hundred. All these did Sheshbazzar bring up with them of the captivity that were brought up from Babylon unto Jerusalem."

Ezra 2:58: "All the Nethinims, and the children of Solomon's servants, were three hundred ninety and two."

Ezra 2:59: "And these were they which went up from Telmelah, Telharsa, Cherub, Addan, and Immer: but they could not shew their father's house, and their seed, whether they were of Israel:"

Ezra 2:62: "These sought their register among those that were reckoned by genealogy, but they were not found: therefore were they, as polluted, put from the priesthood."

Ezra 2:65: "Beside their servants and their maids, of whom there were seven thousand three hundred thirty and seven: and there were among them two hundred singing men and singing women."

Ezra 2:66: "Their horses were seven hundred thirty and six; their mules, two hundred forty and five;"

Ezra 3:1: "And when the seventh month was come, and the children of Israel were in the cities, the people gathered themselves together as one man to Jerusalem."

Ezra 3:5: "And afterward offered the continual burnt offering, both of the new moons, and of all the set feasts of the LORD that were consecrated, and of every one that willingly offered a freewill offering unto the LORD."

Ezra 3:8: "Now in the second year of their coming unto the house of God at Jerusalem, in the second month, began Zerubbabel the son of Shealtiel, and Jeshua the son of Jozadak, and the remnant of their brethren the priests and the Levites, and all they that were come out of the captivity unto Jerusalem; and appointed the Levites, from twenty years old and upward, to set forward the work of the house of the LORD."

Ezra 3:12: "But many of the priests and Levites and chief of the fathers, who were ancient men, that had seen the first house, when the foundation of this house was laid before their eyes, wept with a loud voice; and many shouted aloud for joy:"

Ezra 5:1: "Then the prophets, Haggai the prophet, and Zechariah the son of Iddo, prophesied unto the Jews that were in Judah and Jerusalem in the name of the God of Israel, even unto them."

Ezra 5:2: "Then rose up Zerubbabel the son of Shealtiel, and Jeshua the son of Jozadak, and began to build the house of God which is at Jerusalem: and with them were the prophets of God helping them."

Ezra 5:6: "The copy of the letter that Tatnai, governor on this side the river, and Shetharboznai and his companions the Apharsachites, which were on this side the river, sent unto Darius the king:"

Ezra 5:10: "We asked their names also, to certify thee, that we might write the names of the men that were the chief of them."

Ezra 5:14: "And the vessels also of gold and silver of the house of God, which Nebuchadnezzar took out of the temple that was in Jerusalem, and brought them into the temple of Babylon, those did Cyrus the king take out of the temple of Babylon, and they were delivered unto one, whose name was Sheshbazzar, whom he had made governor;"

Ezra 6:1: "Then Darius the king made a decree, and search was made in the house of the rolls, where the treasures were laid up in Babylon."

Ezra 6:20: "For the priests and the Levites were purified together, all of them were pure, and killed the passover for all the children of the captivity, and for their brethren the priests, and for themselves."

Ezra 6:21: "And the children of Israel, which were come again out of captivity, and all such as had separated themselves unto them from the filthiness of the heathen of the land, to seek the LORD God of Israel, did eat,"

Ezra 8:3: "Of the sons of Shechaniah, of the sons of Pharosh; Zechariah: and with him were reckoned by genealogy of the males an hundred and fifty."

Ezra 8:20: "Also of the Nethinims, whom David and the princes had appointed for the service of the Levites, two hundred and twenty Nethinims: all of them were expressed by name."

Ezra 8:35: "Also the children of those that had been carried away, which were come out of the captivity, offered burnt offerings unto the God of Israel, twelve bullocks for all Israel, ninety and six rams, seventy and seven lambs, twelve he goats for a sin offering: all this was a burnt offering unto the LORD."

Ezra 9:1: "Now when these things were done, the princes came to me, saying, The people of Israel, and the priests, and the Levites, have not separated themselves from the people of the lands, doing according to their abominations, even of the Canaanites, the Hittites, the Perizzites, the Jebusites, the Ammonites, the Moabites, the Egyptians, and the Amorites."

Ezra 9:4: "Then were assembled unto me every one that trembled at the words of the God of Israel, because of the transgression of those that had been carried away; and I sat astonished until the evening sacrifice."

Ezra 9:9: "For we were bondmen; yet our God hath not forsaken us in our bondage, but hath extended mercy unto us in the sight of the kings of Persia, to give us a reviving, to set up the house of our God, and to repair the desolations thereof, and to give us a wall in Judah and in Jerusalem."

Ezra 10:15: "Only Jonathan the son of Asahel and Jahaziah the son of Tikvah were employed about this matter: and Meshullam and Shabbethai the Levite helped them."

Ezra 10:16: "And the children of the captivity did so. And Ezra the priest, with certain chief of the fathers, after the house of their fathers, and all of them by their names, were separated, and sat down in the first day of the tenth month to examine the matter."

Ezra 10:18: "And among the sons of the priests there were found that had taken strange wives: namely, of the sons of Jeshua the son of Jozadak, and his brethren; Maaseiah, and Eliezer, and Jarib, and Gedaliah."

Nehemiah 1:2: "That Hanani, one of my brethren, came, he and certain men of Judah; and I asked them concerning the Jews that had escaped, which were left of the captivity, and concerning Jerusalem."

Nehemiah 1:9: "But if ye turn unto me, and keep my commandments, and do them; though there were of you cast out unto the uttermost part of the heaven, yet will I gather them from thence, and

will bring them unto the place that I have chosen to set my name there."

Nehemiah 2:13: "And I went out by night by the gate of the valley, even before the dragon well, and to the dung port, and viewed the walls of Jerusalem, which were broken down, and the gates thereof were consumed with fire."

Nehemiah 4:7: "But it came to pass, that when Sanballat, and Tobiah, and the Arabians, and the Ammonites, and the Ashdodites, heard that the walls of Jerusalem were made up, and that the breaches began to be stopped, then they were very wroth,"

Nehemiah 4:16: "And it came to pass from that time forth, that the half of my servants wrought in the work, and the other half of them held both the spears, the shields, and the bows, and the habergeons; and the rulers were behind all the house of Judah."

Nehemiah 5:2: "For there were that said, We, our sons, and our daughters, are many: therefore we take up corn for them, that we may eat, and live."

Nehemiah 5:3: "Some also there were that said, We have mortgaged our lands, vineyards, and houses, that we might buy corn, because of the dearth."

Nehemiah 5:4: "There were also that said, We have borrowed money for the king's tribute, and that upon our lands and vineyards."

Nehemiah 5:8: "And I said unto them, We after our ability have redeemed our brethren the Jews, which were sold unto the heathen; and will ye even sell your brethren? or shall they be sold unto us? Then held they their peace, and found nothing to answer."

Nehemiah 5:15: "But the former governors that had been before me were chargeable unto the people, and had taken of them bread and wine, beside forty shekels of silver; yea, even their servants bare rule over the people: but so did not I, because of the fear of God."

Nehemiah 5:16: "Yea, also I continued in the work of this wall, neither bought we any land: and all my servants were gathered thither unto the work."

Nehemiah 5:17: "Moreover there were at my table an hundred and fifty of the Jews and rulers, beside those that came unto us from among the heathen that are about us."

Nehemiah 5:18: "Now that which was prepared for me daily was one ox and six choice sheep; also fowls were prepared for me, and once in ten days store of all sorts of wine: yet for all this required not I the bread of the governor, because the bondage was heavy upon this people."

Nehemiah 6:16: "And it came to pass, that when all our enemies heard thereof, and all the heathen that were about us saw these things, they were much cast down in their own eyes: for they perceived that this work was wrought of our God."

Nehemiah 6:18: "For there were many in Judah sworn unto him, because he was the son in law of Shechaniah the son of Arah; and his son Johanan had taken the daughter of Meshullam the son of Berechiah."

Nehemiah 7:1: "Now it came to pass, when the wall was built, and I had set up the doors, and the porters and the singers and the Levites were appointed,"

Nehemiah 7:4: "Now the city was large and great: but the people were few therein, and the houses were not builded."

Nehemiah 7:60: "All the Nethinims, and the children of Solomon's servants, were three hundred ninety and two."

Nehemiah 7:61: "And these were they which went up also from Telmelah, Telharesha, Cherub, Addon, and Immer: but they could not shew their father's house, nor their seed, whether they were of Israel."

Nehemiah 7:64: "These sought their register among those that were reckoned by genealogy, but it was not found: therefore were they, as polluted, put from the priesthood."

Nehemiah 7:67: "Beside their manservants and their maidservants, of whom there were seven thousand three hundred thirty and seven: and they had two hundred forty and five singing men and singing women."

Nehemiah 7:73: "So the priests, and the Levites, and the porters, and the singers, and some of the

people, and the Nethinims, and all Israel, dwelt in their cities; and when the seventh month came, the children of Israel were in their cities."

Nehemiah 8:3: "And he read therein before the street that was before the water gate from the morning until midday, before the men and the women, and those that could understand; and the ears of all the people were attentive unto the book of the law."

Nehemiah 8:12: "And all the people went their way to eat, and to drink, and to send portions, and to make great mirth, because they had understood the words that were declared unto them."

Nehemiah 8:13: "And on the second day were gathered together the chief of the fathers of all the people, the priests, and the Levites, unto Ezra the scribe, even to understand the words of the law."

Nehemiah 8:17: "And all the congregation of them that were come again out of the captivity made booths, and sat under the booths: for since the days of Jeshua the son of Nun unto that day had not the children of Israel done so. And there was very great gladness."

Nehemiah 9:1: "Now in the twenty and fourth day of this month the children of Israel were assembled with fasting, and with sackclothes, and earth upon them."

Nehemiah 9:17: "And refused to obey, neither were mindful of thy wonders that thou didst among them; but hardened their necks, and in their rebellion appointed a captain to return to their bondage: but thou art a God ready to pardon, gracious and merciful, slow to anger, and of great kindness, and forsookest them not."

Nehemiah 9:25: "And they took strong cities, and a fat land, and possessed houses full of all goods, wells digged, vineyards, and oliveyards, and fruit trees in abundance: so they did eat, and were filled, and became fat, and delighted themselves in thy great goodness."

Nehemiah 9:26: "Nevertheless they were disobedient, and rebelled against thee, and cast thy law behind their backs, and slew thy prophets which testified against them to turn them to thee, and they wrought great provocations."

Nehemiah 10:1: "Now those that sealed were, Nehemiah, the Tirshatha, the son of Hachaliah, and Zidkijah,"

Nehemiah 10:8: "Maaziah, Bilgai, Shemaiah: these were the priests."

Nehemiah 11:6: "All the sons of Perez that dwelt at Jerusalem were four hundred threescore and eight valiant men."

Nehemiah 11:12: "And their brethren that did the work of the house were eight hundred twenty and two: and Adaiah the son of Jeroham, the son of Pelaliah, the son of Amzi, the son of Zechariah, the son of Pashur, the son of Malchiah."

Nehemiah 11:18: "All the Levites in the holy city were two hundred fourscore and four."

Nehemiah 11:19: "Moreover the porters, Akkub, Talmon, and their brethren that kept the gates, were an hundred seventy and two."

Nehemiah 11:20: "And the residue of Israel, of the priests, and the Levites, were in all the cities of Judah, every one in his inheritance."

Nehemiah 11:21: "But the Nethinims dwelt in Ophel: and Ziha and Gispa were over the Nethinims."

Nehemiah 11:22: "The overseer also of the Levites at Jerusalem was Uzzi the son of Bani, the son of Hashabiah, the son of Mattaniah, the son of Micha. Of the sons of Asaph, the singers were over the business of the house of God."

Nehemiah 11:36: "And of the Levites were divisions in Judah, and in Benjamin."

Nehemiah 12:7: "Sallu, Amok, Hilkiyah, Jedaiah. These were the chief of the priests and of their brethren in the days of Jeshua."

Nehemiah 12:9: "Also Bakbukiah and Unni, their brethren, were over against them in the watches."

Nehemiah 12:12: "And in the days of Joiakim were priests, the chief of the fathers: of Seraiah, Meraiah; of Jeremiah, Hananiah;"

Nehemiah 12:22: "The Levites in the days of Eliashib, Joiada, and Johanan, and Jaddua, were recorded chief of the fathers: also the priests, to the reign of Darius the Persian."

Nehemiah 12:23: "The sons of Levi, the chief of the fathers, were written in the book of the chronicles, even until the days of Johanan the son of Eliashib."

Nehemiah 12:25: "Mattaniah, and Bakbukiah, Obadiah, Meshullam, Talmon, Akkub, were porters keeping the ward at the thresholds of the gates."

Nehemiah 12:26: "These were in the days of Joiakim the son of Jeshua, the son of Jozadak, and in the days of Nehemiah the governor, and of Ezra the priest, the scribe."

Nehemiah 12:44: "And at that time were some appointed over the chambers for the treasures, for the offerings, for the firstfruits, and for the tithes, to gather into them out of the fields of the cities the portions of the law for the priests and Levites: for Judah rejoiced for the priests and for the Levites that waited."

Nehemiah 12:46: "For in the days of David and Asaph of old there were chief of the singers, and songs of praise and thanksgiving unto God."

Nehemiah 13:10: "And I perceived that the portions of the Levites had not been given them: for the Levites and the singers, that did the work, were fled every one to his field."

Nehemiah 13:13: "And I made treasurers over the treasuries, Shelemiah the priest, and Zadok the scribe, and of the Levites, Pedaiah: and next to them was Hanan the son of Zaccur, the son of Mattaniah: for they were counted faithful, and their office was to distribute unto their brethren."

Esther 1:5: "And when these days were expired, the king made a feast unto all the people that were present in Shushan the palace, both unto great and small, seven days, in the court of the garden of the king's palace;"

Esther 1:6: "Where were white, green, and blue, hangings, fastened with cords of fine linen and purple to silver rings and pillars of marble: the beds were of gold and silver, upon a pavement of red, and blue, and white, and black, marble."

Esther 2:7: "And he brought up Hadassah, that is, Esther, his uncle's daughter: for she had neither father nor mother, and the maid was fair and beautiful; whom Mordecai, when her father and mother were dead, took for his own daughter."

Esther 2:8: "So it came to pass, when the king's commandment and his decree was heard, and when many maidens were gathered together unto Shushan the palace, to the custody of Hegai, that Esther was brought also unto the king's house, to the custody of Hegai, keeper of the women."

Esther 2:9: "And the maiden pleased him, and she obtained kindness of him; and he speedily gave her her things for purification, with such things as belonged to her, and seven maidens, which were meet to be given her, out of the king's house: and he preferred her and her maids unto the best place of the house of the women."

Esther 2:12: "Now when every maid's turn was come to go in to king Ahasuerus, after that she had been twelve months, according to the manner of the women, (for so were the days of their purifications accomplished, to wit, six months with oil of myrrh, and six months with sweet odours, and with other things for the purifying of the women;)"

Esther 2:14: "In the evening she went, and on the morrow she returned into the second house of the women, to the custody of Shaashgaz, the king's chamberlain, which kept the concubines: she came in unto the king no more, except the king delighted in her, and that she were called by name."

Esther 2:19: "And when the virgins were gathered together the second time, then Mordecai sat in the king's gate."

Esther 2:21: "In those days, while Mordecai sat in the king's gate, two of the king's chamberlains, Bigthan and Teresh, of those which kept the door, were wroth, and sought to lay hands on the king Ahasuerus."

Esther 2:23: "And when inquisition was made of the matter, it was found out; therefore they were both hanged on a tree: and it was written in the book of the chronicles before the king."

Esther 3:1: "After these things did king Ahasuerus promote Haman the son of Hammedatha the Agagite, and advanced him, and set his seat above all the princes that were with him."

Esther 3:2: "And all the king's servants, that were in the king's gate, bowed, and revered Haman:

for the king had so commanded concerning him. But Mordecai bowed not, nor did him reverence."

Esther 3:3: "Then the king's servants, which were in the king's gate, said unto Mordecai, Why transgressest thou the king's commandment?"

Esther 3:6: "And he thought scorn to lay hands on Mordecai alone; for they had shewed him the people of Mordecai: wherefore Haman sought to destroy all the Jews that were throughout the whole kingdom of Ahasuerus, even the people of Mordecai."

Esther 3:12: "Then were the king's scribes called on the thirteenth day of the first month, and there was written according to all that Haman had commanded unto the king's lieutenants, and to the governors that were over every province, and to the rulers of every people of every province according to the writing thereof, and to every people after their language; in the name of king Ahasuerus was it written, and sealed with the king's ring."

Esther 3:13: "And the letters were sent by posts into all the king's provinces, to destroy, to kill, and to cause to perish, all Jews, both young and old, little children and women, in one day, even upon the thirteenth day of the twelfth month, which is the month Adar, and to take the spoil of them for a prey."

Esther 6:1: "On that night could not the king sleep, and he commanded to bring the book of records of the chronicles; and they were read before the king."

Esther 6:14: "And while they were yet talking with him, came the king's chamberlains, and hasted to bring Haman unto the banquet that Esther had prepared."

Esther 8:9: "Then were the king's scribes called at that time in the third month, that is, the month Sivan, on the three and twentieth day thereof; and it was written according to all that Mordecai commanded unto the Jews, and to the lieutenants, and the deputies and rulers of the provinces which are from India unto Ethiopia, an hundred twenty and seven provinces, unto every province according to the writing thereof, and unto every people after their language, and to the Jews according to their writing, and according to their language."

Esther 8:11: "Wherein the king granted the Jews which were in every city to gather themselves together, and to stand for their life, to destroy, to slay and to cause to perish, all the power of the people and province that would assault them, both little ones and women, and to take the spoil of them for a prey,"

Esther 9:11: "On that day the number of those that were slain in Shushan the palace was brought before the king."

Esther 9:15: "For the Jews that were in Shushan gathered themselves together on the fourteenth day also of the month Adar, and slew three hundred men at Shushan; but on the prey they laid not their hand."

Esther 9:16: "But the other Jews that were in the king's provinces gathered themselves together, and stood for their lives, and had rest from their enemies, and slew of their foes seventy and five thousand, but they laid not their hands on the prey,"

Esther 9:18: "But the Jews that were at Shushan assembled together on the thirteenth day thereof, and on the fourteenth thereof; and on the fifteenth day of the same they rested, and made it a day of feasting and gladness."

Esther 9:20: "And Mordecai wrote these things, and sent letters unto all the Jews that were in all the provinces of the king Ahasuerus, both nigh and far,"

Job 1:2: "And there were born unto him seven sons and three daughters."

Job 1:5: "And it was so, when the days of their feasting were gone about, that Job sent and sanctified them, and rose up early in the morning, and offered burnt offerings according to the number of them all: for Job said, It may be that my sons have sinned, and cursed God in their hearts. Thus did Job continually."

Job 1:13: "And there was a day when his sons and his daughters were eating and drinking wine in their eldest brother's house:"

Job 1:14: "And there came a messenger unto Job, and said, The oxen were plowing, and the asses



feeding beside them:"

Job 1:18: "While he was yet speaking, there came also another, and said, Thy sons and thy daughters were eating and drinking wine in their eldest brother's house:"

Job 4:7: "Remember, I pray thee, who ever perished, being innocent? or where were the righteous cut off?"

Job 6:2: "Oh that my grief were throughly weighed, and my calamity laid in the balances together!"

Job 6:20: "They were confounded because they had hoped; they came thither, and were ashamed."

Job 9:15: "Whom, though I were righteous, yet would I not answer, but I would make supplication to my judge."

Job 9:21: "Though I were perfect, yet would I not know my soul: I would despise my life."

Job 16:4: "I also could speak as ye do: if your soul were in my soul's stead, I could heap up words against you, and shake mine head at you."

Job 18:20: "They that come after him shall be astonied at his day, as they that went before were affrighted."

Job 19:23: "Oh that my words were now written! oh that they were printed in a book!"

Job 19:24: "That they were graven with an iron pen and lead in the rock for ever!"

Job 21:4: "As for me, is my complaint to man? and if it were so, why should not my spirit be troubled?"

Job 22:16: "Which were cut down out of time, whose foundation was overflown with a flood:"

Job 28:5: "As for the earth, out of it cometh bread: and under it is turned up as it were fire."

Job 29:2: "Oh that I were as in months past, as in the days when God preserved me;"

Job 29:5: "When the Almighty was yet with me, when my children were about me;"

Job 30:3: "For want and famine they were solitary; fleeing into the wilderness in former time desolate and waste."

Job 30:5: "They were driven forth from among men, (they cried after them as after a thief;)"

Job 30:7: "Among the bushes they brayed; under the nettles they were gathered together."

Job 30:8: "They were children of fools, yea, children of base men: they were viler than the earth."

Job 31:20: "If his loins have not blessed me, and if he were not warmed with the fleece of my sheep;"

Job 31:28: "This also were an iniquity to be punished by the judge: for I should have denied the God that is above."

Job 32:4: "Now Elihu had waited till Job had spoken, because they were elder than he."

Job 32:15: "They were amazed, they answered no more: they left off speaking."

Job 33:21: "His flesh is consumed away, that it cannot be seen; and his bones that were not seen stick out."

Job 34:35: "Job hath spoken without knowledge, and his words were without wisdom."

Job 39:16: "She is hardened against her young ones, as though they were not her's: her labour is in vain without fear;"

Job 42:15: "And in all the land were no women found so fair as the daughters of Job: and their father gave them inheritance among their brethren."

Psalms 14:2: "The LORD looked down from heaven upon the children of men, to see if there were any that did understand, and seek God."

Psalms 14:5: "There were they in great fear: for God is in the generation of the righteous."

Psalms 14:7: "Oh that the salvation of Israel were come out of Zion! when the LORD bringeth back the captivity of his people, Jacob shall rejoice, and Israel shall be glad."

Psalms 17:12: "Like as a lion that is greedy of his prey, and as it were a young lion lurking in secret places."

Psalms 18:7: "Then the earth shook and trembled; the foundations also of the hills moved and were shaken, because he was wroth."

Psalms 18:8: "There went up a smoke out of his nostrils, and fire out of his mouth devoured: coals

were kindled by it."

Psalms 18:11: "He made darkness his secret place; his pavilion round about him were dark waters and thick clouds of the skies."

Psalms 18:15: "Then the channels of waters were seen, and the foundations of the world were discovered at thy rebuke, O LORD, at the blast of the breath of thy nostrils."

Psalms 18:17: "He delivered me from my strong enemy, and from them which hated me: for they were too strong for me."

Psalms 18:22: "For all his judgments were before me, and I did not put away his statutes from me."

Psalms 18:37: "I have pursued mine enemies, and overtaken them: neither did I turn again till they were consumed."

Psalms 18:38: "I have wounded them that they were not able to rise: they are fallen under my feet."

Psalms 22:5: "They cried unto thee, and were delivered: they trusted in thee, and were not confounded."

Psalms 33:6: "By the word of the LORD were the heavens made; and all the host of them by the breath of his mouth."

Psalms 34:5: "They looked unto him, and were lightened: and their faces were not ashamed."

Psalms 35:13: "But as for me, when they were sick, my clothing was sackcloth: I humbled my soul with fasting; and my prayer returned into mine own bosom."

Psalms 39:12: "Hear my prayer, O LORD, and give ear unto my cry; hold not thy peace at my tears: for I am a stranger with thee, and a sojourner, as all my fathers were."

Psalms 45:9: "Kings' daughters were among thy honourable women: upon thy right hand did stand the queen in gold of Ophir."

Psalms 46:6: "The heathen raged, the kingdoms were moved: he uttered his voice, the earth melted."

Psalms 48:4: "For, lo, the kings were assembled, they passed by together."

Psalms 48:5: "They saw it, and so they marvelled; they were troubled, and hasted away."

Psalms 50:12: "If I were hungry, I would not tell thee: for the world is mine, and the fulness thereof."

Psalms 53:2: "God looked down from heaven upon the children of men, to see if there were any that did understand, that did seek God."

Psalms 53:5: "There were they in great fear, where no fear was: for God hath scattered the bones of him that encampeth against thee: thou hast put them to shame, because God hath despised them."

Psalms 53:6: "Oh that the salvation of Israel were come out of Zion! When God bringeth back the captivity of his people, Jacob shall rejoice, and Israel shall be glad."

Psalms 55:18: "He hath delivered my soul in peace from the battle that was against me: for there were many with me."

Psalms 55:21: "The words of his mouth were smoother than butter, but war was in his heart: his words were softer than oil, yet were they drawn swords."

Psalms 68:25: "The singers went before, the players on instruments followed after; among them were the damsels playing with timbrels."

Psalms 68:33: "To him that rideth upon the heavens of heavens, which were of old; lo, he doth send out his voice, and that a mighty voice."

Psalms 73:2: "But as for me, my feet were almost gone; my steps had well nigh slipped."

Psalms 77:16: "The waters saw thee, O God, the waters saw thee; they were afraid: the depths also were troubled."

Psalms 78:29: "So they did eat, and were well filled: for he gave them their own desire;"

Psalms 78:30: "They were not estranged from their lust. But while their meat was yet in their mouths,"

Psalms 78:37: "For their heart was not right with him, neither were they stedfast in his covenant."

Psalms 78:39: "For he remembered that they were but flesh; a wind that passeth away, and cometh

not again."

Psalms 78:57: "But turned back, and dealt unfaithfully like their fathers: they were turned aside like a deceitful bow."

Psalms 78:63: "The fire consumed their young men; and their maidens were not given to marriage."

Psalms 80:10: "The hills were covered with the shadow of it, and the boughs thereof were like the goodly cedars."

Psalms 81:6: "I removed his shoulder from the burden: his hands were delivered from the pots."

Psalms 90:2: "Before the mountains were brought forth, or ever thou hadst formed the earth and the world, even from everlasting to everlasting, thou art God."

Psalms 105:12: "When they were but a few men in number; yea, very few, and strangers in it."

Psalms 106:35: "But were mingled among the heathen, and learned their works."

Psalms 106:36: "And they served their idols: which were a snare unto them."

Psalms 106:39: "Thus were they defiled with their own works, and went a whoring with their own inventions."

Psalms 106:42: "Their enemies also oppressed them, and they were brought into subjection under their hand."

Psalms 106:43: "Many times did he deliver them; but they provoked him with their counsel, and were brought low for their iniquity."

Psalms 119:5: "O that my ways were directed to keep thy statutes!"

Psalms 126:1: "When the LORD turned again the captivity of Zion, we were like them that dream."

Psalms 139:16: "Thine eyes did see my substance, yet being unperfect; and in thy book all my members were written, which in continuance were fashioned, when as yet there was none of them."

Psalms 148:5: "Let them praise the name of the LORD: for he commanded, and they were created."

Proverbs 8:24: "When there were no depths, I was brought forth; when there were no fountains abounding with water."

Proverbs 8:25: "Before the mountains were settled, before the hills was I brought forth:"

Proverbs 8:31: "Rejoicing in the habitable part of his earth; and my delights were with the sons of men."

Ecclesiastes 2:7: "I got me servants and maidens, and had servants born in my house; also I had great possessions of great and small cattle above all that were in Jerusalem before me:"

Ecclesiastes 2:9: "So I was great, and increased more than all that were before me in Jerusalem: also my wisdom remained with me."

Ecclesiastes 4:1: "So I returned, and considered all the oppressions that are done under the sun: and behold the tears of such as were oppressed, and they had no comforter; and on the side of their oppressors there was power; but they had no comforter."

Ecclesiastes 7:10: "Say not thou, What is the cause that the former days were better than these? for thou dost not enquire wisely concerning this."

Ecclesiastes 8:10: "And so I saw the wicked buried, who had come and gone from the place of the holy, and they were forgotten in the city where they had so done: this is also vanity."

Song of Solomon 1:6: "Look not upon me, because I am black, because the sun hath looked upon me: my mother's children were angry with me; they made me the keeper of the vineyards; but mine own vineyard have I not kept."

Song of Solomon 5:4: "My beloved put in his hand by the hole of the door, and my bowels were moved for him."

Song of Solomon 6:13: "Return, return, O Shulamite; return, return, that we may look upon thee. What will ye see in the Shulamite? As it were the company of two armies."

Isaiah 5:18: "Woe unto them that draw iniquity with cords of vanity, and sin as it were with a cart rope:"

Isaiah 5:25: "Therefore is the anger of the LORD kindled against his people, and he hath stretched forth his hand against them, and hath smitten them: and the hills did tremble, and their carcasses

were torn in the midst of the streets. For all this his anger is not turned away, but his hand is stretched out still."

Isaiah 7:23: "And it shall come to pass in that day, that every place shall be, where there were a thousand vines at a thousand silverlings, it shall even be for briers and thorns."

Isaiah 10:15: "Shall the axe boast itself against him that heweth therewith? or shall the saw magnify itself against him that shaketh it? as if the rod should shake itself against them that lift it up, or as if the staff should lift up itself, as if it were no wood."

Isaiah 14:2: "And the people shall take them, and bring them to their place: and the house of Israel shall possess them in the land of the LORD for servants and handmaids: and they shall take them captives, whose captives they were; and they shall rule over their oppressors."

Isaiah 26:18: "We have been with child, we have been in pain, we have as it were brought forth wind; we have not wrought any deliverance in the earth; neither have the inhabitants of the world fallen."

Isaiah 26:20: "Come, my people, enter thou into thy chambers, and shut thy doors about thee: hide thyself as it were for a little moment, until the indignation be overpast."

Isaiah 27:13: "And it shall come to pass in that day, that the great trumpet shall be blown, and they shall come which were ready to perish in the land of Assyria, and the outcasts in the land of Egypt, and shall worship the LORD in the holy mount at Jerusalem."

Isaiah 30:4: "For his princes were at Zoan, and his ambassadors came to Hanes."

Isaiah 30:5: "They were all ashamed of a people that could not profit them, nor be an help nor profit, but a shame, and also a reproach."

Isaiah 33:3: "At the noise of the tumult the people fled; at the lifting up of thyself the nations were scattered."

Isaiah 37:12: "Have the gods of the nations delivered them which my fathers have destroyed, as Gozan, and Haran, and Rezep, and the children of Eden which were in Telassar?"

Isaiah 37:19: "And have cast their gods into the fire: for they were no gods, but the work of men's hands, wood and stone: therefore they have destroyed them."

Isaiah 37:27: "Therefore their inhabitants were of small power, they were dismayed and confounded: they were as the grass of the field, and as the green herb, as the grass on the housetops, and as corn blasted before it be grown up."

Isaiah 37:36: "Then the angel of the LORD went forth, and smote in the camp of the Assyrians a hundred and fourscore and five thousand: and when they arose early in the morning, behold, they were all dead corpses."

Isaiah 41:5: "The isles saw it, and feared; the ends of the earth were afraid, drew near, and came."

Isaiah 41:11: "Behold, all they that were incensed against thee shall be ashamed and confounded: they shall be as nothing; and they that strive with thee shall perish."

Isaiah 42:24: "Who gave Jacob for a spoil, and Israel to the robbers? did not the LORD, he against whom we have sinned? for they would not walk in his ways, neither were they obedient unto his law."

Isaiah 46:1: "Bel boweth down, Nebo stoopeth, their idols were upon the beasts, and upon the cattle: your carriages were heavy loaden; they are a burden to the weary beast."

Isaiah 51:13: "And forgettest the LORD thy maker, that hath stretched forth the heavens, and laid the foundations of the earth; and hast feared continually every day because of the fury of the oppressor, as if he were ready to destroy? and where is the fury of the oppressor?"

Isaiah 52:14: "As many were astonished at thee; his visage was so marred more than any man, and his form more than the sons of men:"

Isaiah 53:3: "He is despised and rejected of men; a man of sorrows, and acquainted with grief: and we hid as it were our faces from him; he was despised, and we esteemed him not."

Isaiah 63:19: "We are thine: thou never barest rule over them; they were not called by thy name."

Jeremiah 1:1: "The words of Jeremiah the son of Hilkiah, of the priests that were in Anathoth in the

land of Benjamin:"

Jeremiah 4:25: "I beheld, and, lo, there was no man, and all the birds of the heavens were fled."

Jeremiah 4:26: "I beheld, and, lo, the fruitful place was a wilderness, and all the cities thereof were broken down at the presence of the LORD, and by his fierce anger."

Jeremiah 5:8: "They were as fed horses in the morning: every one neighed after his neighbour's wife."

Jeremiah 6:15: "Were they ashamed when they had committed abomination? nay, they were not at all ashamed, neither could they blush: therefore they shall fall among them that fall: at the time that I visit them they shall be cast down, saith the LORD."

Jeremiah 8:12: "Were they ashamed when they had committed abomination? nay, they were not at all ashamed, neither could they blush: therefore shall they fall among them that fall: in the time of their visitation they shall be cast down, saith the LORD."

Jeremiah 9:1: "Oh that my head were waters, and mine eyes a fountain of tears, that I might weep day and night for the slain of the daughter of my people!"

Jeremiah 11:13: "For according to the number of thy cities were thy gods, O Judah; and according to the number of the streets of Jerusalem have ye set up altars to that shameful thing, even altars to burn incense unto Baal."

Jeremiah 14:3: "And their nobles have sent their little ones to the waters: they came to the pits, and found no water; they returned with their vessels empty; they were ashamed and confounded, and covered their heads."

Jeremiah 14:4: "Because the ground is chapt, for there was no rain in the earth, the plowmen were ashamed, they covered their heads."

Jeremiah 15:16: "Thy words were found, and I did eat them; and thy word was unto me the joy and rejoicing of mine heart: for I am called by thy name, O LORD God of hosts."

Jeremiah 20:2: "Then Pashur smote Jeremiah the prophet, and put him in the stocks that were in the high gate of Benjamin, which was by the house of the LORD."

Jeremiah 22:24: "As I live, saith the LORD, though Coniah the son of Jehoiakim king of Judah were the signet upon my right hand, yet would I pluck thee thence;"

Jeremiah 22:26: "And I will cast thee out, and thy mother that bare thee, into another country, where ye were not born; and there shall ye die."

Jeremiah 24:1: "The LORD shewed me, and, behold, two baskets of figs were set before the temple of the LORD, after that Nebuchadrezzar king of Babylon had carried away captive Jeconiah the son of Jehoiakim king of Judah, and the princes of Judah, with the carpenters and smiths, from Jerusalem, and had brought them to Babylon."

Jeremiah 24:2: "One basket had very good figs, even like the figs that are first ripe: and the other basket had very naughty figs, which could not be eaten, they were so bad."

Jeremiah 26:9: "Why hast thou prophesied in the name of the LORD, saying, This house shall be like Shiloh, and this city shall be desolate without an inhabitant? And all the people were gathered against Jeremiah in the house of the LORD."

Jeremiah 29:1: "Now these are the words of the letter that Jeremiah the prophet sent from Jerusalem unto the residue of the elders which were carried away captives, and to the priests, and to the prophets, and to all the people whom Nebuchadnezzar had carried away captive from Jerusalem to Babylon;"

Jeremiah 29:2: "(After that Jeconiah the king, and the queen, and the eunuchs, the princes of Judah and Jerusalem, and the carpenters, and the smiths, were departed from Jerusalem;)"

Jeremiah 30:14: "All thy lovers have forgotten thee; they seek thee not; for I have wounded thee with the wound of an enemy, with the chastisement of a cruel one, for the multitude of thine iniquity; because thy sins were increased."

Jeremiah 30:15: "Why criest thou for thine affliction? thy sorrow is incurable for the multitude of thine iniquity: because thy sins were increased, I have done these things unto thee."

Jeremiah 31:2: "Thus saith the LORD, The people which were left of the sword found grace in the wilderness; even Israel, when I went to cause him to rest."

Jeremiah 31:15: "Thus saith the LORD; A voice was heard in Ramah, lamentation, and bitter weeping; Rahel weeping for her children refused to be comforted for her children, because they were not."

Jeremiah 34:5: "But thou shalt die in peace: and with the burnings of thy fathers, the former kings which were before thee, so shall they burn odours for thee; and they will lament thee, saying, Ah lord! for I have pronounced the word, saith the LORD."

Jeremiah 34:7: "When the king of Babylon's army fought against Jerusalem, and against all the cities of Judah that were left, against Lachish, and against Azekah: for these defenced cities remained of the cities of Judah."

Jeremiah 34:8: "This is the word that came unto Jeremiah from the LORD, after that the king Zedekiah had made a covenant with all the people which were at Jerusalem, to proclaim liberty unto them;"

Jeremiah 34:15: "And ye were now turned, and had done right in my sight, in proclaiming liberty every man to his neighbour; and ye had made a covenant before me in the house which is called by my name:"

Jeremiah 36:16: "Now it came to pass, when they had heard all the words, they were afraid both one and other, and said unto Baruch, We will surely tell the king of all these words."

Jeremiah 36:24: "Yet they were not afraid, nor rent their garments, neither the king, nor any of his servants that heard all these words."

Jeremiah 36:28: "Take thee again another roll, and write in it all the former words that were in the first roll, which Jehoiakim the king of Judah hath burned."

Jeremiah 36:32: "Then took Jeremiah another roll, and gave it to Baruch the scribe, the son of Neriah; who wrote therein from the mouth of Jeremiah all the words of the book which Jehoiakim king of Judah had burned in the fire: and there were added besides unto them many like words."

Jeremiah 37:15: "Wherefore the princes were wroth with Jeremiah, and smote him, and put him in prison in the house of Jonathan the scribe: for they had made that the prison."

Jeremiah 37:21: "Then Zedekiah the king commanded that they should commit Jeremiah into the court of the prison, and that they should give him daily a piece of bread out of the bakers' street, until all the bread in the city were spent. Thus Jeremiah remained in the court of the prison."

Jeremiah 40:1: "The word that came to Jeremiah from the LORD, after that Nebuzaradan the captain of the guard had let him go from Ramah, when he had taken him being bound in chains among all that were carried away captive of Jerusalem and Judah, which were carried away captive unto Babylon."

Jeremiah 40:4: "And now, behold, I loose thee this day from the chains which were upon thine hand. If it seem good unto thee to come with me into Babylon, come; and I will look well unto thee: but if it seem ill unto thee to come with me into Babylon, forbear: behold, all the land is before thee: whither it seemeth good and convenient for thee to go, thither go."

Jeremiah 40:6: "Then went Jeremiah unto Gedaliah the son of Ahikam to Mizpah; and dwelt with him among the people that were left in the land."

Jeremiah 40:7: "Now when all the captains of the forces which were in the fields, even they and their men, heard that the king of Babylon had made Gedaliah the son of Ahikam governor in the land, and had committed unto him men, and women, and children, and of the poor of the land, of them that were not carried away captive to Babylon;"

Jeremiah 40:11: "Likewise when all the Jews that were in Moab, and among the Ammonites, and in Edom, and that were in all the countries, heard that the king of Babylon had left a remnant of Judah, and that he had set over them Gedaliah the son of Ahikam the son of Shaphan;"

Jeremiah 40:12: "Even all the Jews returned out of all places whither they were driven, and came to the land of Judah, to Gedaliah, unto Mizpah, and gathered wine and summer fruits very much."

Jeremiah 40:13: "Moreover Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces that were in the fields, came to Gedaliah to Mizpah,"

Jeremiah 41:2: "Then arose Ishmael the son of Nethaniah, and the ten men that were with him, and smote Gedaliah the son of Ahikam the son of Shaphan with the sword, and slew him, whom the king of Babylon had made governor over the land."

Jeremiah 41:3: "Ishmael also slew all the Jews that were with him, even with Gedaliah, at Mizpah, and the Chaldeans that were found there, and the men of war."

Jeremiah 41:7: "And it was so, when they came into the midst of the city, that Ishmael the son of Nethaniah slew them, and cast them into the midst of the pit, he, and the men that were with him."

Jeremiah 41:8: "But ten men were found among them that said unto Ishmael, Slay us not: for we have treasures in the field, of wheat, and of barley, and of oil, and of honey. So he forbore, and slew them not among their brethren."

Jeremiah 41:9: "Now the pit wherein Ishmael had cast all the dead bodies of the men, whom he had slain because of Gedaliah, was it which Asa the king had made for fear of Baasha king of Israel: and Ishmael the son of Nethaniah filled it with them that were slain."

Jeremiah 41:10: "Then Ishmael carried away captive all the residue of the people that were in Mizpah, even the king's daughters, and all the people that remained in Mizpah, whom Nebuzaradan the captain of the guard had committed to Gedaliah the son of Ahikam: and Ishmael the son of Nethaniah carried them away captive, and departed to go over to the Ammonites."

Jeremiah 41:11: "But when Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces that were with him, heard of all the evil that Ishmael the son of Nethaniah had done,"

Jeremiah 41:13: "Now it came to pass, that when all the people which were with Ishmael saw Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces that were with him, then they were glad."

Jeremiah 41:16: "Then took Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces that were with him, all the remnant of the people whom he had recovered from Ishmael the son of Nethaniah, from Mizpah, after that he had slain Gedaliah the son of Ahikam, even mighty men of war, and the women, and the children, and the eunuchs, whom he had brought again from Gibeon:"

Jeremiah 41:18: "Because of the Chaldeans: for they were afraid of them, because Ishmael the son of Nethaniah had slain Gedaliah the son of Ahikam, whom the king of Babylon made governor in the land."

Jeremiah 42:8: "Then called he Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces which were with him, and all the people from the least even to the greatest,"

Jeremiah 42:16: "Then it shall come to pass, that the sword, which ye feared, shall overtake you there in the land of Egypt, and the famine, whereof ye were afraid, shall follow close after you there in Egypt; and there ye shall die."

Jeremiah 43:5: "But Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces, took all the remnant of Judah, that were returned from all nations, whither they had been driven, to dwell in the land of Judah;"

Jeremiah 44:17: "But we will certainly do whatsoever thing goeth forth out of our own mouth, to burn incense unto the queen of heaven, and to pour out drink offerings unto her, as we have done, we, and our fathers, our kings, and our princes, in the cities of Judah, and in the streets of Jerusalem: for then had we plenty of victuals, and were well, and saw no evil."

Jeremiah 49:2: "Therefore, behold, the days come, saith the LORD, that I will cause an alarm of war to be heard in Rabbah of the Ammonites; and it shall be a desolate heap, and her daughters shall be burned with fire: then shall Israel be heir unto them that were his heirs, saith the LORD."

Jeremiah 50:11: "Because ye were glad, because ye rejoiced, O ye destroyers of mine heritage, because ye are grown fat as the heifer at grass, and bellow as bulls;"

Jeremiah 50:33: "Thus saith the LORD of hosts; The children of Israel and the children of Judah were oppressed together: and all that took them captives held them fast; they refused to let them

go."

Jeremiah 52:7: "Then the city was broken up, and all the men of war fled, and went forth out of the city by night by the way of the gate between the two walls, which was by the king's garden; (now the Chaldeans were by the city round about:) and they went by the way of the plain."

Jeremiah 52:14: "And all the army of the Chaldeans, that were with the captain of the guard, brake down all the walls of Jerusalem round about."

Jeremiah 52:17: "Also the pillars of brass that were in the house of the LORD, and the bases, and the brasen sea that was in the house of the LORD, the Chaldeans brake, and carried all the brass of them to Babylon."

Jeremiah 52:20: "The two pillars, one sea, and twelve brasen bulls that were under the bases, which king Solomon had made in the house of the LORD: the brass of all these vessels was without weight."

Jeremiah 52:22: "And a chapiter of brass was upon it; and the height of one chapiter was five cubits, with network and pomegranates upon the chapters round about, all of brass. The second pillar also and the pomegranates were like unto these."

Jeremiah 52:23: "And there were ninety and six pomegranates on a side; and all the pomegranates upon the network were an hundred round about."

Jeremiah 52:25: "He took also out of the city an eunuch, which had the charge of the men of war; and seven men of them that were near the king's person, which were found in the city; and the principal scribe of the host, who mustered the people of the land; and threescore men of the people of the land, that were found in the midst of the city."

Jeremiah 52:30: "In the three and twentieth year of Nebuchadrezzar Nebuzaradan the captain of the guard carried away captive of the Jews seven hundred forty and five persons: all the persons were four thousand and six hundred."

Jeremiah 52:32: "And spake kindly unto him, and set his throne above the throne of the kings that were with him in Babylon,"

Lamentations 2:4: "He hath bent his bow like an enemy: he stood with his right hand as an adversary, and slew all that were pleasant to the eye in the tabernacle of the daughter of Zion: he poured out his fury like fire."

Lamentations 2:6: "And he hath violently taken away his tabernacle, as if it were of a garden: he hath destroyed his places of the assembly: the LORD hath caused the solemn feasts and sabbaths to be forgotten in Zion, and hath despised in the indignation of his anger the king and the priest."

Lamentations 4:5: "They that did feed delicately are desolate in the streets: they that were brought up in scarlet embrace dunghills."

Lamentations 4:7: "Her Nazarites were purer than snow, they were whiter than milk, they were more ruddy in body than rubies, their polishing was of sapphire:"

Lamentations 4:10: "The hands of the pitiful women have sodden their own children: they were their meat in the destruction of the daughter of my people."

Lamentations 5:12: "Princes are hanged up by their hand: the faces of elders were not honoured."

Ezekiel 1:1: "Now it came to pass in the thirtieth year, in the fourth month, in the fifth day of the month, as I was among the captives by the river of Chebar, that the heavens were opened, and I saw visions of God."

Ezekiel 1:7: "And their feet were straight feet; and the sole of their feet was like the sole of a calf's foot: and they sparkled like the colour of burnished brass."

Ezekiel 1:9: "Their wings were joined one to another; they turned not when they went; they went every one straight forward."

Ezekiel 1:11: "Thus were their faces: and their wings were stretched upward; two wings of every one were joined one to another, and two covered their bodies."

Ezekiel 1:16: "The appearance of the wheels and their work was like unto the colour of a beryl: and they four had one likeness: and their appearance and their work was as it were a wheel in the middle



of a wheel."

Ezekiel 1:18: "As for their rings, they were so high that they were dreadful; and their rings were full of eyes round about them four."

Ezekiel 1:19: "And when the living creatures went, the wheels went by them: and when the living creatures were lifted up from the earth, the wheels were lifted up."

Ezekiel 1:20: "Whithersoever the spirit was to go, they went, thither was their spirit to go; and the wheels were lifted up over against them: for the spirit of the living creature was in the wheels."

Ezekiel 1:21: "When those went, these went; and when those stood, these stood; and when those were lifted up from the earth, the wheels were lifted up over against them: for the spirit of the living creature was in the wheels."

Ezekiel 1:23: "And under the firmament were their wings straight, the one toward the other: every one had two, which covered on this side, and every one had two, which covered on that side, their bodies."

Ezekiel 1:27: "And I saw as the colour of amber, as the appearance of fire round about within it, from the appearance of his loins even upward, and from the appearance of his loins even downward, I saw as it were the appearance of fire, and it had brightness round about."

Ezekiel 7:13: "For the seller shall not return to that which is sold, although they were yet alive: for the vision is touching the whole multitude thereof, which shall not return; neither shall any strengthen himself in the iniquity of his life."

Ezekiel 8:16: "And he brought me into the inner court of the LORD's house, and, behold, at the door of the temple of the LORD, between the porch and the altar, were about five and twenty men, with their backs toward the temple of the LORD, and their faces toward the east; and they worshipped the sun toward the east."

Ezekiel 9:6: "Slay utterly old and young, both maids, and little children, and women: but come not near any man upon whom is the mark; and begin at my sanctuary. Then they began at the ancient men which were before the house."

Ezekiel 9:8: "And it came to pass, while they were slaying them, and I was left, that I fell upon my face, and cried, and said, Ah Lord GOD! wilt thou destroy all the residue of Israel in thy pouring out of thy fury upon Jerusalem?"

Ezekiel 10:1: "Then I looked, and, behold, in the firmament that was above the head of the cherubims there appeared over them as it were a sapphire stone, as the appearance of the likeness of a throne."

Ezekiel 10:12: "And their whole body, and their backs, and their hands, and their wings, and the wheels, were full of eyes round about, even the wheels that they four had."

Ezekiel 10:15: "And the cherubims were lifted up. This is the living creature that I saw by the river of Chebar."

Ezekiel 10:17: "When they stood, these stood; and when they were lifted up, these lifted up themselves also: for the spirit of the living creature was in them."

Ezekiel 10:19: "And the cherubims lifted up their wings, and mounted up from the earth in my sight: when they went out, the wheels also were beside them, and every one stood at the door of the east gate of the LORD's house; and the glory of the God of Israel was over them above."

Ezekiel 10:20: "This is the living creature that I saw under the God of Israel by the river of Chebar; and I knew that they were the cherubims."

Ezekiel 14:14: "Though these three men, Noah, Daniel, and Job, were in it, they should deliver but their own souls by their righteousness, saith the Lord GOD."

Ezekiel 14:16: "Though these three men were in it, as I live, saith the Lord GOD, they shall deliver neither sons nor daughters; they only shall be delivered, but the land shall be desolate."

Ezekiel 14:18: "Though these three men were in it, as I live, saith the Lord GOD, they shall deliver neither sons nor daughters, but they only shall be delivered themselves."

Ezekiel 14:20: "Though Noah, Daniel, and Job were in it, as I live, saith the Lord GOD, they shall

deliver neither son nor daughter; they shall but deliver their own souls by their righteousness."

Ezekiel 16:47: "Yet hast thou not walked after their ways, nor done after their abominations: but, as if that were a very little thing, thou wast corrupted more than they in all thy ways."

Ezekiel 16:50: "And they were haughty, and committed abomination before me: therefore I took them away as I saw good."

Ezekiel 17:6: "And it grew, and became a spreading vine of low stature, whose branches turned toward him, and the roots thereof were under him: so it became a vine, and brought forth branches, and shot forth sprigs."

Ezekiel 19:12: "But she was plucked up in fury, she was cast down to the ground, and the east wind dried up her fruit: her strong rods were broken and withered; the fire consumed them."

Ezekiel 20:9: "But I wrought for my name's sake, that it should not be polluted before the heathen, among whom they were, in whose sight I made myself known unto them, in bringing them forth out of the land of Egypt."

Ezekiel 20:24: "Because they had not executed my judgments, but had despised my statutes, and had polluted my sabbaths, and their eyes were after their fathers' idols."

Ezekiel 20:25: "Wherefore I gave them also statutes that were not good, and judgments whereby they should not live;"

Ezekiel 22:6: "Behold, the princes of Israel, every one were in thee to their power to shed blood."

Ezekiel 23:2: "Son of man, there were two women, the daughters of one mother:"

Ezekiel 23:3: "And they committed whoredoms in Egypt; they committed whoredoms in their youth: there were their breasts pressed, and there they bruised the teats of their virginity."

Ezekiel 23:4: "And the names of them were Aholah the elder, and Aholibah her sister: and they were mine, and they bare sons and daughters. Thus were their names; Samaria is Aholah, and Jerusalem Aholibah."

Ezekiel 23:6: "Which were clothed with blue, captains and rulers, all of them desirable young men, horsemen riding upon horses."

Ezekiel 23:7: "Thus she committed her whoredoms with them, with all them that were the chosen men of Assyria, and with all on whom she doted: with all their idols she defiled herself."

Ezekiel 23:42: "And a voice of a multitude being at ease was with her: and with the men of the common sort were brought Sabeans from the wilderness, which put bracelets upon their hands, and beautiful crowns upon their heads."

Ezekiel 27:8: "The inhabitants of Zidon and Arvad were thy mariners: thy wise men, O Tyrus, that were in thee, were thy pilots."

Ezekiel 27:9: "The ancients of Gebal and the wise men thereof were in thee thy calkers: all the ships of the sea with their mariners were in thee to occupy thy merchandise."

Ezekiel 27:10: "They of Persia and of Lud and of Phut were in thine army, thy men of war: they hanged the shield and helmet in thee; they set forth thy comeliness."

Ezekiel 27:11: "The men of Arvad with thine army were upon thy walls round about, and the Gammadims were in thy towers: they hanged their shields upon thy walls round about; they have made thy beauty perfect."

Ezekiel 27:13: "Javan, Tubal, and Meshech, they were thy merchants: they traded the persons of men and vessels of brass in thy market."

Ezekiel 27:15: "The men of Dedan were thy merchants; many isles were the merchandise of thine hand: they brought thee for a present horns of ivory and ebony."

Ezekiel 27:17: "Judah, and the land of Israel, they were thy merchants: they traded in thy market wheat of Minnith, and Pannag, and honey, and oil, and balm."

Ezekiel 27:19: "Dan also and Javan going to and fro occupied in thy fairs: bright iron, cassia, and calamus, were in thy market."

Ezekiel 27:21: "Arabia, and all the princes of Kedar, they occupied with thee in lambs, and rams, and goats: in these were they thy merchants."

Ezekiel 27:22: "The merchants of Sheba and Raamah, they were thy merchants: they occupied in thy fairs with chief of all spices, and with all precious stones, and gold."

Ezekiel 27:23: "Haran, and Canneh, and Eden, the merchants of Sheba, Asshur, and Chilmad, were thy merchants."

Ezekiel 27:24: "These were thy merchants in all sorts of things, in blue clothes, and broidered work, and in chests of rich apparel, bound with cords, and made of cedar, among thy merchandise."

Ezekiel 29:13: "Yet thus saith the Lord GOD; At the end of forty years will I gather the Egyptians from the people whither they were scattered:"

Ezekiel 31:5: "Therefore his height was exalted above all the trees of the field, and his boughs were multiplied, and his branches became long because of the multitude of waters, when he shot forth."

Ezekiel 31:8: "The cedars in the garden of God could not hide him: the fir trees were not like his boughs, and the chestnut trees were not like his branches; nor any tree in the garden of God was like unto him in his beauty."

Ezekiel 31:9: "I have made him fair by the multitude of his branches: so that all the trees of Eden, that were in the garden of God, envied him."

Ezekiel 31:15: "Thus saith the Lord GOD; In the day when he went down to the grave I caused a mourning: I covered the deep for him, and I restrained the floods thereof, and the great waters were stayed: and I caused Lebanon to mourn for him, and all the trees of the field fainted for him."

Ezekiel 31:17: "They also went down into hell with him unto them that be slain with the sword; and they that were his arm, that dwelt under his shadow in the midst of the heathen."

Ezekiel 32:27: "And they shall not lie with the mighty that are fallen of the uncircumcised, which are gone down to hell with their weapons of war: and they have laid their swords under their heads, but their iniquities shall be upon their bones, though they were the terror of the mighty in the land of the living."

Ezekiel 32:29: "There is Edom, her kings, and all her princes, which with their might are laid by them that were slain by the sword: they shall lie with the uncircumcised, and with them that go down to the pit."

Ezekiel 34:5: "And they were scattered, because there is no shepherd: and they became meat to all the beasts of the field, when they were scattered."

Ezekiel 36:19: "And I scattered them among the heathen, and they were dispersed through the countries: according to their way and according to their doings I judged them."

Ezekiel 36:31: "Then shall ye remember your own evil ways, and your doings that were not good, and shall lothe yourselves in your own sight for your iniquities and for your abominations."

Ezekiel 37:2: "And caused me to pass by them round about: and, behold, there were very many in the open valley; and, lo, they were very dry."

Ezekiel 40:7: "And every little chamber was one reed long, and one reed broad; and between the little chambers were five cubits; and the threshold of the gate by the porch of the gate within was one reed."

Ezekiel 40:10: "And the little chambers of the gate eastward were three on this side, and three on that side; they three were of one measure: and the posts had one measure on this side and on that side."

Ezekiel 40:12: "The space also before the little chambers was one cubit on this side, and the space was one cubit on that side: and the little chambers were six cubits on this side, and six cubits on that side."

Ezekiel 40:15: "And from the face of the gate of the entrance unto the face of the porch of the inner gate were fifty cubits."

Ezekiel 40:16: "And there were narrow windows to the little chambers, and to their posts within the gate round about, and likewise to the arches: and windows were round about inward: and upon each post were palm trees."

Ezekiel 40:17: "Then brought he me into the outward court, and, lo, there were chambers, and a

pavement made for the court round about: thirty chambers were upon the pavement."

Ezekiel 40:21: "And the little chambers thereof were three on this side and three on that side; and the posts thereof and the arches thereof were after the measure of the first gate: the length thereof was fifty cubits, and the breadth five and twenty cubits."

Ezekiel 40:22: "And their windows, and their arches, and their palm trees, were after the measure of the gate that looketh toward the east; and they went up unto it by seven steps; and the arches thereof were before them."

Ezekiel 40:25: "And there were windows in it and in the arches thereof round about, like those windows: the length was fifty cubits, and the breadth five and twenty cubits."

Ezekiel 40:26: "And there were seven steps to go up to it, and the arches thereof were before them: and it had palm trees, one on this side, and another on that side, upon the posts thereof."

Ezekiel 40:29: "And the little chambers thereof, and the posts thereof, and the arches thereof, according to these measures: and there were windows in it and in the arches thereof round about: it was fifty cubits long, and five and twenty cubits broad."

Ezekiel 40:30: "And the arches round about were five and twenty cubits long, and five cubits broad."

Ezekiel 40:31: "And the arches thereof were toward the utter court; and palm trees were upon the posts thereof: and the going up to it had eight steps."

Ezekiel 40:33: "And the little chambers thereof, and the posts thereof, and the arches thereof, were according to these measures: and there were windows therein and in the arches thereof round about: it was fifty cubits long, and five and twenty cubits broad."

Ezekiel 40:34: "And the arches thereof were toward the outward court; and palm trees were upon the posts thereof, on this side, and on that side: and the going up to it had eight steps."

Ezekiel 40:37: "And the posts thereof were toward the utter court; and palm trees were upon the posts thereof, on this side, and on that side: and the going up to it had eight steps."

Ezekiel 40:38: "And the chambers and the entries thereof were by the posts of the gates, where they washed the burnt offering."

Ezekiel 40:39: "And in the porch of the gate were two tables on this side, and two tables on that side, to slay thereon the burnt offering and the sin offering and the trespass offering."

Ezekiel 40:40: "And at the side without, as one goeth up to the entry of the north gate, were two tables; and on the other side, which was at the porch of the gate, were two tables."

Ezekiel 40:41: "Four tables were on this side, and four tables on that side, by the side of the gate; eight tables, whereupon they slew their sacrifices."

Ezekiel 40:42: "And the four tables were of hewn stone for the burnt offering, of a cubit and an half long, and a cubit and an half broad, and one cubit high: whereupon also they laid the instruments wherewith they slew the burnt offering and the sacrifice."

Ezekiel 40:43: "And within were hooks, an hand broad, fastened round about: and upon the tables was the flesh of the offering."

Ezekiel 40:44: "And without the inner gate were the chambers of the singers in the inner court, which was at the side of the north gate; and their prospect was toward the south: one at the side of the east gate having the prospect toward the north."

Ezekiel 40:49: "The length of the porch was twenty cubits, and the breadth eleven cubits, and he brought me by the steps whereby they went up to it: and there were pillars by the posts, one on this side, and another on that side."

Ezekiel 41:2: "And the breadth of the door was ten cubits; and the sides of the door were five cubits on the one side, and five cubits on the other side: and he measured the length thereof, forty cubits: and the breadth, twenty cubits."

Ezekiel 41:6: "And the side chambers were three, one over another, and thirty in order; and they entered into the wall which was of the house for the side chambers round about, that they might have hold, but they had not hold in the wall of the house."

Ezekiel 41:8: "I saw also the height of the house round about: the foundations of the side chambers were a full reed of six great cubits."

Ezekiel 41:9: "The thickness of the wall, which was for the side chamber without, was five cubits: and that which was left was the place of the side chambers that were within."

Ezekiel 41:11: "And the doors of the side chambers were toward the place that was left, one door toward the north, and another door toward the south: and the breadth of the place that was left was five cubits round about."

Ezekiel 41:16: "The door posts, and the narrow windows, and the galleries round about on their three stories, over against the door, cieled with wood round about, and from the ground up to the windows, and the windows were covered;"

Ezekiel 41:20: "From the ground unto above the door were cherubims and palm trees made, and on the wall of the temple."

Ezekiel 41:21: "The posts of the temple were squared, and the face of the sanctuary; the appearance of the one as the appearance of the other."

Ezekiel 41:22: "The altar of wood was three cubits high, and the length thereof two cubits; and the corners thereof, and the length thereof, and the walls thereof, were of wood: and he said unto me, This is the table that is before the LORD."

Ezekiel 41:25: "And there were made on them, on the doors of the temple, cherubims and palm trees, like as were made upon the walls; and there were thick planks upon the face of the porch without."

Ezekiel 41:26: "And there were narrow windows and palm trees on the one side and on the other side, on the sides of the porch, and upon the side chambers of the house, and thick planks."

Ezekiel 42:3: "Over against the twenty cubits which were for the inner court, and over against the pavement which was for the utter court, was gallery against gallery in three stories."

Ezekiel 42:5: "Now the upper chambers were shorter: for the galleries were higher than these, than the lower, and than the middlemost of the building."

Ezekiel 42:6: "For they were in three stories, but had not pillars as the pillars of the courts: therefore the building was straitened more than the lowest and the middlemost from the ground."

Ezekiel 42:8: "For the length of the chambers that were in the utter court was fifty cubits: and, lo, before the temple were an hundred cubits."

Ezekiel 42:10: "The chambers were in the thickness of the wall of the court toward the east, over against the separate place, and over against the building."

Ezekiel 42:11: "And the way before them was like the appearance of the chambers which were toward the north, as long as they, and as broad as they: and all their goings out were both according to their fashions, and according to their doors."

Ezekiel 42:12: "And according to the doors of the chambers that were toward the south was a door in the head of the way, even the way directly before the wall toward the east, as one entereth into them."

Ezekiel 43:3: "And it was according to the appearance of the vision which I saw, even according to the vision that I saw when I came to destroy the city: and the visions were like the vision that I saw by the river Chebar; and I fell upon my face."

Ezekiel 46:22: "In the four corners of the court there were courts joined of forty cubits long and thirty broad: these four corners were of one measure."

Ezekiel 47:3: "And when the man that had the line in his hand went forth eastward, he measured a thousand cubits, and he brought me through the waters; the waters were to the ankles."

Ezekiel 47:4: "Again he measured a thousand, and brought me through the waters; the waters were to the knees. Again he measured a thousand, and brought me through; the waters were to the loins."

Ezekiel 47:5: "Afterward he measured a thousand; and it was a river that I could not pass over: for the waters were risen, waters to swim in, a river that could not be passed over."

Ezekiel 47:7: "Now when I had returned, behold, at the bank of the river were very many trees on

the one side and on the other."

Daniel 1:6: "Now among these were of the children of Judah, Daniel, Hananiah, Mishael, and Azariah:"

Daniel 1:20: "And in all matters of wisdom and understanding, that the king enquired of them, he found them ten times better than all the magicians and astrologers that were in all his realm."

Daniel 2:34: "Thou sawest till that a stone was cut out without hands, which smote the image upon his feet that were of iron and clay, and brake them to pieces."

Daniel 2:42: "And as the toes of the feet were part of iron, and part of clay, so the kingdom shall be partly strong, and partly broken."

Daniel 3:3: "Then the princes, the governors, and captains, the judges, the treasurers, the counsellors, the sheriffs, and all the rulers of the provinces, were gathered together unto the dedication of the image that Nebuchadnezzar the king had set up; and they stood before the image that Nebuchadnezzar had set up."

Daniel 3:20: "And he commanded the most mighty men that were in his army to bind Shadrach, Meshach, and Abednego, and to cast them into the burning fiery furnace."

Daniel 3:21: "Then these men were bound in their coats, their hosen, and their hats, and their other garments, and were cast into the midst of the burning fiery furnace."

Daniel 3:27: "And the princes, governors, and captains, and the king's counsellors, being gathered together, saw these men, upon whose bodies the fire had no power, nor was an hair of their head singed, neither were their coats changed, nor the smell of fire had passed on them."

Daniel 4:10: "Thus were the visions of mine head in my bed; I saw, and behold a tree in the midst of the earth, and the height thereof was great."

Daniel 4:12: "The leaves thereof were fair, and the fruit thereof much, and in it was meat for all: the beasts of the field had shadow under it, and the fowls of the heaven dwelt in the boughs thereof, and all flesh was fed of it."

Daniel 4:21: "Whose leaves were fair, and the fruit thereof much, and in it was meat for all; under which the beasts of the field dwelt, and upon whose branches the fowls of the heaven had their habitation:"

Daniel 4:33: "The same hour was the thing fulfilled upon Nebuchadnezzar: and he was driven from men, and did eat grass as oxen, and his body was wet with the dew of heaven, till his hairs were grown like eagles' feathers, and his nails like birds' claws."

Daniel 5:3: "Then they brought the golden vessels that were taken out of the temple of the house of God which was at Jerusalem; and the king, and his princes, his wives, and his concubines, drank in them."

Daniel 5:6: "Then the king's countenance was changed, and his thoughts troubled him, so that the joints of his loins were loosed, and his knees smote one against another."

Daniel 5:9: "Then was king Belshazzar greatly troubled, and his countenance was changed in him, and his lords were astonished."

Daniel 5:12: "Forasmuch as an excellent spirit, and knowledge, and understanding, interpreting of dreams, and shewing of hard sentences, and dissolving of doubts, were found in the same Daniel, whom the king named Belteshazzar: now let Daniel be called, and he will shew the interpretation."

Daniel 6:18: "Then the king went to his palace, and passed the night fasting: neither were instruments of musick brought before him: and his sleep went from him."

Daniel 7:4: "The first was like a lion, and had eagle's wings: I beheld till the wings thereof were plucked, and it was lifted up from the earth, and made stand upon the feet as a man, and a man's heart was given to it."

Daniel 7:7: "After this I saw in the night visions, and behold a fourth beast, dreadful and terrible, and strong exceedingly; and it had great iron teeth: it devoured and brake in pieces, and stamped the residue with the feet of it: and it was diverse from all the beasts that were before it; and it had ten horns."

Daniel 7:8: "I considered the horns, and, behold, there came up among them another little horn, before whom there were three of the first horns plucked up by the roots: and, behold, in this horn were eyes like the eyes of man, and a mouth speaking great things."

Daniel 7:9: "I beheld till the thrones were cast down, and the Ancient of days did sit, whose garment was white as snow, and the hair of his head like the pure wool: his throne was like the fiery flame, and his wheels as burning fire."

Daniel 7:10: "A fiery stream issued and came forth from before him: thousand thousands ministered unto him, and ten thousand times ten thousand stood before him: the judgment was set, and the books were opened."

Daniel 7:12: "As concerning the rest of the beasts, they had their dominion taken away: yet their lives were prolonged for a season and time."

Daniel 7:19: "Then I would know the truth of the fourth beast, which was diverse from all the others, exceeding dreadful, whose teeth were of iron, and his nails of brass; which devoured, brake in pieces, and stamped the residue with his feet;"

Daniel 7:20: "And of the ten horns that were in his head, and of the other which came up, and before whom three fell; even of that horn that had eyes, and a mouth that spake very great things, whose look was more stout than his fellows."

Daniel 8:3: "Then I lifted up mine eyes, and saw, and, behold, there stood before the river a ram which had two horns: and the two horns were high; but one was higher than the other, and the higher came up last."

Daniel 10:3: "I ate no pleasant bread, neither came flesh nor wine in my mouth, neither did I anoint myself at all, till three whole weeks were fulfilled."

Daniel 10:5: "Then I lifted up mine eyes, and looked, and behold a certain man clothed in linen, whose loins were girded with fine gold of Uphaz:"

Daniel 10:7: "And I Daniel alone saw the vision: for the men that were with me saw not the vision; but a great quaking fell upon them, so that they fled to hide themselves."

Daniel 10:12: "Then said he unto me, Fear not, Daniel: for from the first day that thou didst set thine heart to understand, and to chasten thyself before thy God, thy words were heard, and I am come for thy words."

Hosea 2:23: "And I will sow her unto me in the earth; and I will have mercy upon her that had not obtained mercy; and I will say to them which were not my people, Thou art my people; and they shall say, Thou art my God."

Hosea 4:7: "As they were increased, so they sinned against me: therefore will I change their glory into shame."

Hosea 5:10: "The princes of Judah were like them that remove the bound: therefore I will pour out my wrath upon them like water."

Hosea 8:12: "I have written to him the great things of my law, but they were counted as a strange thing."

Hosea 9:10: "I found Israel like grapes in the wilderness; I saw your fathers as the firstripe in the fig tree at her first time: but they went to Baalpeor, and separated themselves unto that shame; and their abominations were according as they loved."

Hosea 12:8: "And Ephraim said, Yet I am become rich, I have found me out substance: in all my labours they shall find none iniquity in me that were sin."

Hosea 13:6: "According to their pasture, so were they filled; they were filled, and their heart was exalted; therefore have they forgotten me."

Amos 4:7: "And also I have withholden the rain from you, when there were yet three months to the harvest: and I caused it to rain upon one city, and caused it not to rain upon another city: one piece was rained upon, and the piece whereupon it rained not withered."

Amos 4:8: "So two or three cities wandered unto one city, to drink water; but they were not satisfied: yet have ye not returned unto me, saith the LORD."

Amos 4:11: "I have overthrown some of you, as God overthrew Sodom and Gomorrah, and ye were as a firebrand plucked out of the burning: yet have ye not returned unto me, saith the LORD."

Obadiah 1:7: "All the men of thy confederacy have brought thee even to the border: the men that were at peace with thee have deceived thee, and prevailed against thee; that they eat thy bread have laid a wound under thee: there is none understanding in him."

Jonah 1:5: "Then the mariners were afraid, and cried every man unto his god, and cast forth the wares that were in the ship into the sea, to lighten it of them. But Jonah was gone down into the sides of the ship; and he lay, and was fast asleep."

Jonah 1:10: "Then were the men exceedingly afraid, and said unto him. Why hast thou done this? For the men knew that he fled from the presence of the LORD, because he had told them."

Jonah 2:5: "The waters compassed me about, even to the soul: the depth closed me round about, the weeds were wrapped about my head."

Micah 1:13: "O thou inhabitant of Lachish, bind the chariot to the swift beast: she is the beginning of the sin to the daughter of Zion: for the transgressions of Israel were found in thee."

Nahum 3:9: "Ethiopia and Egypt were her strength, and it was infinite; Put and Lubim were thy helpers."

Nahum 3:10: "Yet was she carried away, she went into captivity: her young children also were dashed in pieces at the top of all the streets: and they cast lots for her honourable men, and all her great men were bound in chains."

Habakkuk 3:6: "He stood, and measured the earth: he beheld, and drove asunder the nations; and the everlasting mountains were scattered, the perpetual hills did bow: his ways are everlasting."

Haggai 2:16: "Since those days were, when one came to an heap of twenty measures, there were but ten: when one came to the pressfat for to draw out fifty vessels out of the press, there were but twenty."

Zechariah 1:8: "I saw by night, and behold a man riding upon a red horse, and he stood among the myrtle trees that were in the bottom; and behind him were there red horses, speckled, and white."

Zechariah 6:1: "And I turned, and lifted up mine eyes, and looked, and, behold, there came four chariots out from between two mountains; and the mountains were mountains of brass."

Zechariah 6:2: "In the first chariot were red horses; and in the second chariot black horses;"

Zechariah 7:3: "And to speak unto the priests which were in the house of the LORD of hosts, and to the prophets, saying, Should I weep in the fifth month, separating myself, as I have done these so many years?"

Zechariah 8:9: "Thus saith the LORD of hosts; Let your hands be strong, ye that hear in these days these words by the mouth of the prophets, which were in the day that the foundation of the house of the LORD of hosts was laid, that the temple might be built."

Zechariah 8:13: "And it shall come to pass, that as ye were a curse among the heathen, O house of Judah, and house of Israel; so will I save you, and ye shall be a blessing: fear not, but let your hands be strong."

Zechariah 10:2: "For the idols have spoken vanity, and the diviners have seen a lie, and have told false dreams; they comfort in vain: therefore they went their way as a flock, they were troubled, because there was no shepherd."

Matthew 1:11: "And Josias begat Jechonias and his brethren, about the time they were carried away to Babylon:"

Matthew 1:12: "And after they were brought to Babylon, Jechonias begat Salathiel; and Salathiel begat Zorobabel;"

Matthew 2:11: "And when they were come into the house, they saw the young child with Mary his mother, and fell down, and worshipped him: and when they had opened their treasures, they presented unto him gifts; gold, and frankincense and myrrh."

Matthew 2:13: "And when they were departed, behold, the angel of the Lord appeareth to Joseph in a dream, saying, Arise, and take the young child and his mother, and flee into Egypt, and be thou



there until I bring thee word: for Herod will seek the young child to destroy him."

Matthew 2:16: "Then Herod, when he saw that he was mocked of the wise men, was exceeding wroth, and sent forth, and slew all the children that were in Bethlehem, and in all the coasts thereof, from two years old and under, according to the time which he had diligently enquired of the wise men."

Matthew 3:6: "And were baptized of him in Jordan, confessing their sins."

Matthew 3:16: "And Jesus, when he was baptized, went up straightway out of the water: and, lo, the heavens were opened unto him, and he saw the Spirit of God descending like a dove, and lighting upon him:"

Matthew 4:18: "And Jesus, walking by the sea of Galilee, saw two brethren, Simon called Peter, and Andrew his brother, casting a net into the sea: for they were fishers."

Matthew 4:24: "And his fame went throughout all Syria: and they brought unto him all sick people that were taken with divers diseases and torments, and those which were possessed with devils, and those which were lunatick, and those that had the palsy; and he healed them."

Matthew 5:12: "Rejoice, and be exceeding glad: for great is your reward in heaven: for so persecuted they the prophets which were before you."

Matthew 7:28: "And it came to pass, when Jesus had ended these sayings, the people were astonished at his doctrine:"

Matthew 8:16: "When the even was come, they brought unto him many that were possessed with devils: and he cast out the spirits with his word, and healed all that were sick:"

Matthew 8:32: "And he said unto them, Go. And when they were come out, they went into the herd of swine: and, behold, the whole herd of swine ran violently down a steep place into the sea, and perished in the waters."

Matthew 9:25: "But when the people were put forth, he went in, and took her by the hand, and the maid arose."

Matthew 9:30: "And their eyes were opened; and Jesus straitly charged them, saying, See that no man know it."

Matthew 9:31: "But they, when they were departed, spread abroad his fame in all that country."

Matthew 9:36: "But when he saw the multitudes, he was moved with compassion on them, because they fainted, and were scattered abroad, as sheep having no shepherd."

Matthew 11:20: "Then began he to upbraid the cities wherein most of his mighty works were done, because they repented not:"

Matthew 11:21: "Woe unto thee, Chorazin! woe unto thee, Bethsaida! for if the mighty works, which were done in you, had been done in Tyre and Sidon, they would have repented long ago in sackcloth and ashes."

Matthew 12:1: "At that time Jesus went on the sabbath day through the corn; and his disciples were an hungred, and began to pluck the ears of corn and to eat."

Matthew 12:3: "But he said unto them, Have ye not read what David did, when he was an hungred, and they that were with him;"

Matthew 12:4: "How he entered into the house of God, and did eat the shewbread, which was not lawful for him to eat, neither for them which were with him, but only for the priests?"

Matthew 12:23: "And all the people were amazed, and said, Is not this the son of David?"

Matthew 13:2: "And great multitudes were gathered together unto him, so that he went into a ship, and sat; and the whole multitude stood on the shore."

Matthew 13:6: "And when the sun was up, they were scorched; and because they had no root, they withered away."

Matthew 13:54: "And when he was come into his own country, he taught them in their synagogue, insomuch that they were astonished, and said, Whence hath this man this wisdom, and these mighty works?"

Matthew 13:57: "And they were offended in him. But Jesus said unto them, A prophet is not

without honour, save in his own country, and in his own house."

Matthew 14:20: "And they did all eat, and were filled: and they took up of the fragments that remained twelve baskets full."

Matthew 14:21: "And they that had eaten were about five thousand men, beside women and children."

Matthew 14:26: "And when the disciples saw him walking on the sea, they were troubled, saying, It is a spirit; and they cried out for fear."

Matthew 14:32: "And when they were come into the ship, the wind ceased."

Matthew 14:33: "Then they that were in the ship came and worshipped him, saying, Of a truth thou art the Son of God."

Matthew 14:34: "And when they were gone over, they came into the land of Gennesaret."

Matthew 14:35: "And when the men of that place had knowledge of him, they sent out into all that country round about, and brought unto him all that were diseased;"

Matthew 14:36: "And besought him that they might only touch the hem of his garment: and as many as touched were made perfectly whole."

Matthew 15:1: "Then came to Jesus scribes and Pharisees, which were of Jerusalem, saying,"

Matthew 15:12: "Then came his disciples, and said unto him, Knowest thou that the Pharisees were offended, after they heard this saying?"

Matthew 15:30: "And great multitudes came unto him, having with them those that were lame, blind, dumb, maimed, and many others, and cast them down at Jesus' feet; and he healed them:"

Matthew 15:37: "And they did all eat, and were filled: and they took up of the broken meat that was left seven baskets full."

Matthew 15:38: "And they that did eat were four thousand men, beside women and children."

Matthew 16:5: "And when his disciples were come to the other side, they had forgotten to take bread."

Matthew 17:6: "And when the disciples heard it, they fell on their face, and were sore afraid."

Matthew 17:14: "And when they were come to the multitude, there came to him a certain man, kneeling down to him, and saying,"

Matthew 17:23: "And they shall kill him, and the third day he shall be raised again. And they were exceeding sorry."

Matthew 17:24: "And when they were come to Capernaum, they that received tribute money came to Peter, and said, Doth not your master pay tribute?"

Matthew 18:6: "But whoso shall offend one of these little ones which believe in me, it were better for him that a millstone were hanged about his neck, and that he were drowned in the depth of the sea."

Matthew 18:31: "So when his fellowservants saw what was done, they were very sorry, and came and told unto their lord all that was done."

Matthew 19:12: "For there are some eunuchs, which were so born from their mother's womb: and there are some eunuchs, which were made eunuchs of men: and there be eunuchs, which have made themselves eunuchs for the kingdom of heaven's sake. He that is able to receive it, let him receive it."

Matthew 19:13: "Then were there brought unto him little children, that he should put his hands on them, and pray: and the disciples rebuked them."

Matthew 19:25: "When his disciples heard it, they were exceedingly amazed, saying, Who then can be saved?"

Matthew 20:9: "And when they came that were hired about the eleventh hour, they received every man a penny."

Matthew 20:24: "And when the ten heard it, they were moved with indignation against the two brethren."

Matthew 21:1: "And when they drew nigh unto Jerusalem, and were come to Bethphage, unto the

mount of Olives, then sent Jesus two disciples,"

Matthew 21:15: "And when the chief priests and scribes saw the wonderful things that he did, and the children crying in the temple, and saying, Hosanna to the son of David; they were sore displeased,"

Matthew 22:3: "And sent forth his servants to call them that were bidden to the wedding: and they would not come."

Matthew 22:8: "Then saith he to his servants, The wedding is ready, but they which were bidden were not worthy."

Matthew 22:25: "Now there were with us seven brethren: and the first, when he had married a wife, deceased, and, having no issue, left his wife unto his brother:"

Matthew 22:33: "And when the multitude heard this, they were astonished at his doctrine."

Matthew 22:34: "But when the Pharisees had heard that he had put the Sadducees to silence, they were gathered together."

Matthew 22:41: "While the Pharisees were gathered together, Jesus asked them,"

Matthew 24:24: "For there shall arise false Christs, and false prophets, and shall shew great signs and wonders; insomuch that, if it were possible, they shall deceive the very elect."

Matthew 24:37: "But as the days of Noe were, so shall also the coming of the Son of man be."

Matthew 24:38: "For as in the days that were before the flood they were eating and drinking, marrying and giving in marriage, until the day that Noe entered into the ark,"

Matthew 25:2: "And five of them were wise, and five were foolish."

Matthew 25:3: "They that were foolish took their lamps, and took no oil with them:"

Matthew 25:10: "And while they went to buy, the bridegroom came; and they that were ready went in with him to the marriage: and the door was shut."

Matthew 26:22: "And they were exceeding sorrowful, and began every one of them to say unto him, Lord, is it I?"

Matthew 26:26: "And as they were eating, Jesus took bread, and blessed it, and brake it, and gave it to the disciples, and said, Take, eat; this is my body."

Matthew 26:43: "And he came and found them asleep again: for their eyes were heavy."

Matthew 26:51: "And, behold, one of them which were with Jesus stretched out his hand, and drew his sword, and struck a servant of the high priest's, and smote off his ear."

Matthew 26:57: "And they that had laid hold on Jesus led him away to Caiaphas the high priest, where the scribes and the elders were assembled."

Matthew 26:71: "And when he was gone out into the porch, another maid saw him, and said unto them that were there, This fellow was also with Jesus of Nazareth."

Matthew 27:17: "Therefore when they were gathered together, Pilate said unto them, Whom will ye that I release unto you? Barabbas, or Jesus which is called Christ?"

Matthew 27:33: "And when they were come unto a place called Golgotha, that is to say, a place of a skull,"

Matthew 27:38: "Then were there two thieves crucified with him, one on the right hand, and another on the left."

Matthew 27:44: "The thieves also, which were crucified with him, cast the same in his teeth."

Matthew 27:52: "And the graves were opened; and many bodies of the saints which slept arose,"

Matthew 27:54: "Now when the centurion, and they that were with him, watching Jesus, saw the earthquake, and those things that were done, they feared greatly, saying, Truly this was the Son of God."

Matthew 27:55: "And many women were there beholding afar off, which followed Jesus from Galilee, ministering unto him:"

Matthew 28:11: "Now when they were going, behold, some of the watch came into the city, and shewed unto the chief priests all the things that were done."

Matthew 28:12: "And when they were assembled with the elders, and had taken counsel, they gave

large money unto the soldiers,"

Matthew 28:15: "So they took the money, and did as they were taught: and this saying is commonly reported among the Jews until this day."

Mark 1:5: "And there went out unto him all the land of Judaea, and they of Jerusalem, and were all baptized of him in the river of Jordan, confessing their sins."

Mark 1:16: "Now as he walked by the sea of Galilee, he saw Simon and Andrew his brother casting a net into the sea: for they were fishers."

Mark 1:19: "And when he had gone a little farther thence, he saw James the son of Zebedee, and John his brother, who also were in the ship mending their nets."

Mark 1:22: "And they were astonished at his doctrine: for he taught them as one that had authority, and not as the scribes."

Mark 1:27: "And they were all amazed, insomuch that they questioned among themselves, saying, What thing is this? what new doctrine is this? for with authority commandeth he even the unclean spirits, and they do obey him."

Mark 1:29: "And forthwith, when they were come out of the synagogue, they entered into the house of Simon and Andrew, with James and John."

Mark 1:32: "And at even, when the sun did set, they brought unto him all that were diseased, and them that were possessed with devils."

Mark 1:34: "And he healed many that were sick of divers diseases, and cast out many devils; and suffered not the devils to speak, because they knew him."

Mark 1:36: "And Simon and they that were with him followed after him."

Mark 2:2: "And straightway many were gathered together, insomuch that there was no room to receive them, no, not so much as about the door: and he preached the word unto them."

Mark 2:12: "And immediately he arose, took up the bed, and went forth before them all; insomuch that they were all amazed, and glorified God, saying, We never saw it on this fashion."

Mark 2:15: "And it came to pass, that, as Jesus sat at meat in his house, many publicans and sinners sat also together with Jesus and his disciples: for there were many, and they followed him."

Mark 2:25: "And he said unto them, Have ye never read what David did, when he had need, and was an hungred, he, and they that were with him?"

Mark 2:26: "How he went into the house of God in the days of Abiathar the high priest, and did eat the shewbread, which is not lawful to eat but for the priests, and gave also to them which were with him?"

Mark 4:10: "And when he was alone, they that were about him with the twelve asked of him the parable."

Mark 4:33: "And with many such parables spake he the word unto them, as they were able to hear it."

Mark 4:34: "But without a parable spake he not unto them: and when they were alone, he expounded all things to his disciples."

Mark 4:36: "And when they had sent away the multitude, they took him even as he was in the ship. And there were also with him other little ships."

Mark 5:13: "And forthwith Jesus gave them leave. And the unclean spirits went out, and entered into the swine: and the herd ran violently down a steep place into the sea, (they were about two thousand;) and were choked in the sea."

Mark 5:15: "And they come to Jesus, and see him that was possessed with the devil, and had the legion, sitting, and clothed, and in his right mind: and they were afraid."

Mark 5:40: "And they laughed him to scorn. But when he had put them all out, he taketh the father and the mother of the damsel, and them that were with him, and entereth in where the damsel was lying."

Mark 5:42: "And straightway the damsel arose, and walked; for she was of the age of twelve years. And they were astonished with a great astonishment."

Mark 6:2: "And when the sabbath day was come, he began to teach in the synagogue: and many hearing him were astonished, saying, From whence hath this man these things? and what wisdom is this which is given unto him, that even such mighty works are wrought by his hands?"

Mark 6:3: "Is not this the carpenter, the son of Mary, the brother of James, and Joses, and of Juda, and Simon? and are not his sisters here with us? And they were offended at him."

Mark 6:13: "And they cast out many devils, and anointed with oil many that were sick, and healed them."

Mark 6:31: "And he said unto them, Come ye yourselves apart into a desert place, and rest a while: for there were many coming and going, and they had no leisure so much as to eat."

Mark 6:34: "And Jesus, when he came out, saw much people, and was moved with compassion toward them, because they were as sheep not having a shepherd: and he began to teach them many things."

Mark 6:42: "And they did all eat, and were filled."

Mark 6:44: "And they that did eat of the loaves were about five thousand men."

Mark 6:50: "For they all saw him, and were troubled. And immediately he talked with them, and saith unto them, Be of good cheer: it is I; be not afraid."

Mark 6:51: "And he went up unto them into the ship; and the wind ceased: and they were sore amazed in themselves beyond measure, and wondered."

Mark 6:54: "And when they were come out of the ship, straightway they knew him,"

Mark 6:55: "And ran through that whole region round about, and began to carry about in beds those that were sick, where they heard he was."

Mark 6:56: "And whithersoever he entered, into villages, or cities, or country, they laid the sick in the streets, and besought him that they might touch if it were but the border of his garment: and as many as touched him were made whole."

Mark 7:35: "And straightway his ears were opened, and the string of his tongue was loosed, and he spake plain."

Mark 7:37: "And were beyond measure astonished, saying, He hath done all things well: he maketh both the deaf to hear, and the dumb to speak."

Mark 8:8: "So they did eat, and were filled: and they took up of the broken meat that was left seven baskets."

Mark 8:9: "And they that had eaten were about four thousand: and he sent them away."

Mark 9:4: "And there appeared unto them Elias with Moses: and they were talking with Jesus."

Mark 9:6: "For he wist not what to say; for they were sore afraid."

Mark 9:9: "And as they came down from the mountain, he charged them that they should tell no man what things they had seen, till the Son of man were risen from the dead."

Mark 9:15: "And straightway all the people, when they beheld him, were greatly amazed, and running to him saluted him."

Mark 9:32: "But they understood not that saying, and were afraid to ask him."

Mark 9:42: "And whosoever shall offend one of these little ones that believe in me, it is better for him that a millstone were hanged about his neck, and he were cast into the sea."

Mark 10:24: "And the disciples were astonished at his words. But Jesus answereth again, and saith unto them, Children, how hard is it for them that trust in riches to enter into the kingdom of God!"

Mark 10:26: "And they were astonished out of measure, saying among themselves, Who then can be saved?"

Mark 10:32: "And they were in the way going up to Jerusalem; and Jesus went before them: and they were amazed; and as they followed, they were afraid. And he took again the twelve, and began to tell them what things should happen unto him,"

Mark 11:12: "And on the morrow, when they were come from Bethany, he was hungry:"

Mark 12:14: "And when they were come, they say unto him, Master, we know that thou art true, and carest for no man: for thou regardest not the person of men, but teachest the way of God in

truth: Is it lawful to give tribute to Caesar, or not?"

Mark 12:20: "Now there were seven brethren: and the first took a wife, and dying left no seed."

Mark 12:41: "And Jesus sat over against the treasury, and beheld how the people cast money into the treasury: and many that were rich cast in much."

Mark 13:22: "For false Christs and false prophets shall rise, and shall shew signs and wonders, to seduce, if it were possible, even the elect."

Mark 14:4: "And there were some that had indignation within themselves, and said, Why was this waste of the ointment made?"

Mark 14:11: "And when they heard it, they were glad, and promised to give him money. And he sought how he might conveniently betray him."

Mark 14:21: "The Son of man indeed goeth, as it is written of him: but woe to that man by whom the Son of man is betrayed! good were it for that man if he had never been born."

Mark 14:35: "And he went forward a little, and fell on the ground, and prayed that, if it were possible, the hour might pass from him."

Mark 14:40: "And when he returned, he found them asleep again, (for their eyes were heavy,) neither wist they what to answer him."

Mark 14:53: "And they led Jesus away to the high priest: and with him were assembled all the chief priests and the elders and the scribes."

Mark 15:32: "Let Christ the King of Israel descend now from the cross, that we may see and believe. And they that were crucified with him reviled him."

Mark 15:40: "There were also women looking on afar off: among whom was Mary Magdalene, and Mary the mother of James the less and of Joses, and Salome;"

Mark 15:44: "And Pilate marvelled if he were already dead: and calling unto him the centurion, he asked him whether he had been any while dead."

Mark 16:5: "And entering into the sepulchre, they saw a young man sitting on the right side, clothed in a long white garment; and they were affrighted."

Mark 16:8: "And they went out quickly, and fled from the sepulchre; for they trembled and were amazed: neither said they any thing to any man; for they were afraid."

Luke 1:2: "Even as they delivered them unto us, which from the beginning were eyewitnesses, and ministers of the word;"

Luke 1:6: "And they were both righteous before God, walking in all the commandments and ordinances of the Lord blameless."

Luke 1:7: "And they had no child, because that Elisabeth was barren, and they both were now well stricken in years."

Luke 1:10: "And the whole multitude of the people were praying without at the time of incense."

Luke 1:23: "And it came to pass, that, as soon as the days of his ministration were accomplished, he departed to his own house."

Luke 1:45: "And blessed is she that believed: for there shall be a performance of those things which were told her from the Lord."

Luke 1:65: "And fear came on all that dwelt round about them: and all these sayings were noised abroad throughout all the hill country of Judaea."

Luke 2:6: "And so it was, that, while they were there, the days were accomplished that she should be delivered."

Luke 2:8: "And there were in the same country shepherds abiding in the field, keeping watch over their flock by night."

Luke 2:9: "And, lo, the angel of the Lord came upon them, and the glory of the Lord shone round about them: and they were sore afraid."

Luke 2:15: "And it came to pass, as the angels were gone away from them into heaven, the shepherds said one to another, Let us now go even unto Bethlehem, and see this thing which is come to pass, which the Lord hath made known unto us."

Luke 2:18: "And all they that heard it wondered at those things which were told them by the shepherds."

Luke 2:21: "And when eight days were accomplished for the circumcising of the child, his name was called JESUS, which was so named of the angel before he was conceived in the womb."

Luke 2:22: "And when the days of her purification according to the law of Moses were accomplished, they brought him to Jerusalem, to present him to the Lord;"

Luke 2:33: "And Joseph and his mother marvelled at those things which were spoken of him."

Luke 2:47: "And all that heard him were astonished at his understanding and answers."

Luke 2:48: "And when they saw him, they were amazed: and his mother said unto him, Son, why hast thou thus dealt with us? behold, thy father and I have sought thee sorrowing."

Luke 3:15: "And as the people were in expectation, and all men mused in their hearts of John, whether he were the Christ, or not;"

Luke 3:21: "Now when all the people were baptized, it came to pass, that Jesus also being baptized, and praying, the heaven was opened,"

Luke 4:2: "Being forty days tempted of the devil. And in those days he did eat nothing: and when they were ended, he afterward hungered."

Luke 4:20: "And he closed the book, and he gave it again to the minister, and sat down. And the eyes of all them that were in the synagogue were fastened on him."

Luke 4:25: "But I tell you of a truth, many widows were in Israel in the days of Elias, when the heaven was shut up three years and six months, when great famine was throughout all the land;"

Luke 4:27: "And many lepers were in Israel in the time of Eliseus the prophet; and none of them was cleansed, saving Naaman the Syrian."

Luke 4:28: "And all they in the synagogue, when they heard these things, were filled with wrath,"

Luke 4:32: "And they were astonished at his doctrine: for his word was with power."

Luke 4:36: "And they were all amazed, and spake among themselves, saying, What a word is this! for with authority and power he commandeth the unclean spirits, and they come out."

Luke 5:2: "And saw two ships standing by the lake: but the fishermen were gone out of them, and were washing their nets."

Luke 5:7: "And they beckoned unto their partners, which were in the other ship, that they should come and help them. And they came, and filled both the ships, so that they began to sink."

Luke 5:9: "For he was astonished, and all that were with him, at the draught of the fishes which they had taken:"

Luke 5:10: "And so was also James, and John, the sons of Zebedee, which were partners with Simon. And Jesus said unto Simon, Fear not; from henceforth thou shalt catch men."

Luke 5:17: "And it came to pass on a certain day, as he was teaching, that there were Pharisees and doctors of the law sitting by, which were come out of every town of Galilee, and Judaea, and Jerusalem: and the power of the Lord was present to heal them."

Luke 5:26: "And they were all amazed, and they glorified God, and were filled with fear, saying, We have seen strange things to day."

Luke 6:3: "And Jesus answering them said, Have ye not read so much as this, what David did, when himself was an hungred, and they which were with him;"

Luke 6:4: "How he went into the house of God, and did take and eat the shewbread, and gave also to them that were with him; which it is not lawful to eat but for the priests alone?"

Luke 6:11: "And they were filled with madness; and communed one with another what they might do to Jesus."

Luke 6:18: "And they that were vexed with unclean spirits: and they were healed."

Luke 7:10: "And they that were sent, returning to the house, found the servant whole that had been sick."

Luke 7:20: "When the men were come unto him, they said, John Baptist hath sent us unto thee, saying, Art thou he that should come? or look we for another?"

Luke 7:21: "And in that same hour he cured many of their infirmities and plagues, and of evil spirits; and unto many that were blind he gave sight."

Luke 7:24: "And when the messengers of John were departed, he began to speak unto the people concerning John, What went ye out into the wilderness for to see? A reed shaken with the wind?"

Luke 7:39: "Now when the Pharisee which had bidden him saw it, he spake within himself, saying, This man, if he were a prophet, would have known who and what manner of woman this is that toucheth him: for she is a sinner."

Luke 8:1: "And it came to pass afterward, that he went throughout every city and village, preaching and shewing the glad tidings of the kingdom of God: and the twelve were with him,"

Luke 8:4: "And when much people were gathered together, and were come to him out of every city, he spake by a parable:"

Luke 8:23: "But as they sailed he fell asleep: and there came down a storm of wind on the lake; and they were filled with water, and were in jeopardy."

Luke 8:30: "And Jesus asked him, saying, What is thy name? And he said, Legion: because many devils were entered into him."

Luke 8:33: "Then went the devils out of the man, and entered into the swine: and the herd ran violently down a steep place into the lake, and were choked."

Luke 8:35: "Then they went out to see what was done; and came to Jesus, and found the man, out of whom the devils were departed, sitting at the feet of Jesus, clothed, and in his right mind: and they were afraid."

Luke 8:37: "Then the whole multitude of the country of the Gadarenes round about besought him to depart from them; for they were taken with great fear: and he went up into the ship, and returned back again."

Luke 8:38: "Now the man out of whom the devils were departed besought him that he might be with him: but Jesus sent him away, saying,"

Luke 8:40: "And it came to pass, that, when Jesus was returned, the people gladly received him: for they were all waiting for him."

Luke 8:45: "And Jesus said, Who touched me? When all denied, Peter and they that were with him said, Master, the multitude throng thee and press thee, and sayest thou, Who touched me?"

Luke 8:56: "And her parents were astonished: but he charged them that they should tell no man what was done."

Luke 9:10: "And the apostles, when they were returned, told him all that they had done. And he took them, and went aside privately into a desert place belonging to the city called Bethsaida."

Luke 9:14: "For they were about five thousand men. And he said to his disciples, Make them sit down by fifties in a company."

Luke 9:17: "And they did eat, and were all filled: and there was taken up of fragments that remained to them twelve baskets."

Luke 9:18: "And it came to pass, as he was alone praying, his disciples were with him: and he asked them, saying, Whom say the people that I am?"

Luke 9:30: "And, behold, there talked with him two men, which were Moses and Elias:"

Luke 9:32: "But Peter and they that were with him were heavy with sleep: and when they were awake, they saw his glory, and the two men that stood with him."

Luke 9:37: "And it came to pass, that on the next day, when they were come down from the hill, much people met him."

Luke 9:43: "And they were all amazed at the mighty power of God. But while they wondered every one at all things which Jesus did, he said unto his disciples,"

Luke 11:29: "And when the people were gathered thick together, he began to say, This is an evil generation: they seek a sign; and there shall no sign be given it, but the sign of Jonas the prophet."

Luke 11:52: "Woe unto you, lawyers! for ye have taken away the key of knowledge: ye entered not in yourselves, and them that were entering in ye hindered."



Luke 12:1: "In the mean time, when there were gathered together an innumerable multitude of people, insomuch that they trode one upon another, he began to say unto his disciples first of all, Beware ye of the leaven of the Pharisees, which is hypocrisy."

Luke 13:1: "There were present at that season some that told him of the Galilaeans, whose blood Pilate had mingled with their sacrifices."

Luke 13:2: "And Jesus answering said unto them, Suppose ye that these Galilaeans were sinners above all the Galilaeans, because they suffered such things?"

Luke 13:4: "Or those eighteen, upon whom the tower in Siloam fell, and slew them, think ye that they were sinners above all men that dwelt in Jerusalem?"

Luke 13:17: "And when he had said these things, all his adversaries were ashamed: and all the people rejoiced for all the glorious things that were done by him."

Luke 14:7: "And he put forth a parable to those which were bidden, when he marked how they chose out the chief rooms; saying unto them."

Luke 14:17: "And sent his servant at supper time to say to them that were bidden, Come; for all things are now ready."

Luke 14:24: "For I say unto you, That none of those men which were bidden shall taste of my supper."

Luke 16:14: "And the Pharisees also, who were covetous, heard all these things: and they derided him."

Luke 16:16: "The law and the prophets were until John: since that time the kingdom of God is preached, and every man presseth into it."

Luke 17:2: "It were better for him that a millstone were hanged about his neck, and he cast into the sea, than that he should offend one of these little ones."

Luke 17:9: "Doth he thank that servant because he did the things that were commanded him? I trow not."

Luke 17:12: "And as he entered into a certain village, there met him ten men that were lepers, which stood afar off:"

Luke 17:14: "And when he saw them, he said unto them, Go shew yourselves unto the priests. And it came to pass, that, as they went, they were cleansed."

Luke 17:17: "And Jesus answering said, Were there not ten cleansed? but where are the nine?"

Luke 17:27: "They did eat, they drank, they married wives, they were given in marriage, until the day that Noe entered into the ark, and the flood came, and destroyed them all."

Luke 18:9: "And he spake this parable unto certain which trusted in themselves that they were righteous, and despised others:"

Luke 18:34: "And they understood none of these things: and this saying was hid from them, neither knew they the things which were spoken."

Luke 19:32: "And they that were sent went their way, and found even as he had said unto them."

Luke 19:33: "And as they were loosing the colt, the owners thereof said unto them, Why loose ye the colt?"

Luke 19:48: "And could not find what they might do: for all the people were very attentive to hear him."

Luke 20:29: "There were therefore seven brethren: and the first took a wife, and died without children."

Luke 22:5: "And they were glad, and covenanted to give him money."

Luke 22:44: "And being in an agony he prayed more earnestly: and his sweat was as it were great drops of blood falling down to the ground."

Luke 22:49: "When they which were about him saw what would follow, they said unto him, Lord, shall we smite with the sword?"

Luke 22:52: "Then Jesus said unto the chief priests, and captains of the temple, and the elders, which were come to him, Be ye come out, as against a thief, with swords and staves?"

Luke 22:55: "And when they had kindled a fire in the midst of the hall, and were set down together, Peter sat down among them."

Luke 23:5: "And they were the more fierce, saying, He stirreth up the people, teaching throughout all Jewry, beginning from Galilee to this place."

Luke 23:6: "When Pilate heard of Galilee, he asked whether the man were a Galilaean."

Luke 23:12: "And the same day Pilate and Herod were made friends together: for before they were at enmity between themselves."

Luke 23:23: "And they were instant with loud voices, requiring that he might be crucified. And the voices of them and of the chief priests prevailed."

Luke 23:32: "And there were also two other, malefactors, led with him to be put to death."

Luke 23:33: "And when they were come to the place, which is called Calvary, there they crucified him, and the malefactors, one on the right hand, and the other on the left."

Luke 23:39: "And one of the malefactors which were hanged railed on him, saying, If thou be Christ, save thyself and us."

Luke 23:48: "And all the people that came together to that sight, beholding the things which were done, smote their breasts, and returned."

Luke 24:4: "And it came to pass, as they were much perplexed thereabout, behold, two men stood by them in shining garments:"

Luke 24:5: "And as they were afraid, and bowed down their faces to the earth, they said unto them, Why seek ye the living among the dead?"

Luke 24:10: "It was Mary Magdalene and Joanna, and Mary the mother of James, and other women that were with them, which told these things unto the apostles."

Luke 24:16: "But their eyes were holden that they should not know him."

Luke 24:21: "But we trusted that it had been he which should have redeemed Israel: and beside all this, to day is the third day since these things were done."

Luke 24:22: "Yea, and certain women also of our company made us astonished, which were early at the sepulchre;"

Luke 24:24: "And certain of them which were with us went to the sepulchre, and found it even so as the women had said: but him they saw not."

Luke 24:31: "And their eyes were opened, and they knew him; and he vanished out of their sight."

Luke 24:33: "And they rose up the same hour, and returned to Jerusalem, and found the eleven gathered together, and them that were with them,"

Luke 24:35: "And they told what things were done in the way, and how he was known of them in breaking of bread."

Luke 24:37: "But they were terrified and affrighted, and supposed that they had seen a spirit."

Luke 24:44: "And he said unto them, These are the words which I spake unto you, while I was yet with you, that all things must be fulfilled, which were written in the law of Moses, and in the prophets, and in the psalms, concerning me."

Luke 24:53: "And were continually in the temple, praising and blessing God. Amen."

John 1:3: "All things were made by him; and without him was not any thing made that was made."

John 1:13: "Which were born, not of blood, nor of the will of the flesh, nor of the will of man, but of God."

John 1:24: "And they which were sent were of the Pharisees."

John 1:28: "These things were done in Bethabara beyond Jordan, where John was baptizing."

John 2:6: "And there were set there six waterpots of stone, after the manner of the purifying of the Jews, containing two or three firkins apiece."

John 3:19: "And this is the condemnation, that light is come into the world, and men loved darkness rather than light, because their deeds were evil."

John 3:23: "And John also was baptizing in Aenon near to Salim, because there was much water there: and they came, and were baptized."

John 4:8: "(For his disciples were gone away unto the city to buy meat.)"

John 4:40: "So when the Samaritans were come unto him, they besought him that he would tarry with them: and he abode there two days."

John 5:35: "He was a burning and a shining light: and ye were willing for a season to rejoice in his light."

John 6:2: "And a great multitude followed him, because they saw his miracles which he did on them that were diseased."

John 6:11: "And Jesus took the loaves; and when he had given thanks, he distributed to the disciples, and the disciples to them that were set down; and likewise of the fishes as much as they would."

John 6:12: "When they were filled, he said unto his disciples, Gather up the fragments that remain, that nothing be lost."

John 6:19: "So when they had rowed about five and twenty or thirty furlongs, they see Jesus walking on the sea, and drawing nigh unto the ship: and they were afraid."

John 6:22: "The day following, when the people which stood on the other side of the sea saw that there was none other boat there, save that one whereinto his disciples were entered, and that Jesus went not with his disciples into the boat, but that his disciples were gone away alone;"

John 6:26: "Jesus answered them and said, Verily, verily, I say unto you, Ye seek me, not because ye saw the miracles, but because ye did eat of the loaves, and were filled."

John 6:64: "But there are some of you that believe not. For Jesus knew from the beginning who they were that believed not, and who should betray him."

John 6:65: "And he said, Therefore said I unto you, that no man can come unto me, except it were given unto him of my Father."

John 7:10: "But when his brethren were gone up, then went he also up unto the feast, not openly, but as it were in secret."

John 8:33: "They answered him, We be Abraham's seed, and were never in bondage to any man: how sayest thou, Ye shall be made free?"

John 8:39: "They answered and said unto him, Abraham is our father. Jesus saith unto them, If ye were Abraham's children, ye would do the works of Abraham."

John 8:42: "Jesus said unto them, If God were your Father, ye would love me: for I proceeded forth and came from God; neither came I of myself, but he sent me."

John 9:10: "Therefore said they unto him, How were thine eyes opened?"

John 9:33: "If this man were not of God, he could do nothing."

John 9:40: "And some of the Pharisees which were with him heard these words, and said unto him, Are we blind also?"

John 9:41: "Jesus said unto them, If ye were blind, ye should have no sin: but now ye say, We see; therefore your sin remaineth."

John 10:6: "This parable spake Jesus unto them: but they understood not what things they were which he spake unto them."

John 10:41: "And many resorted unto him, and said, John did no miracle: but all things that John spake of this man were true."

John 11:25: "Jesus said unto her, I am the resurrection, and the life: he that believeth in me, though he were dead, yet shall he live:"

John 11:31: "The Jews then which were with her in the house, and comforted her, when they saw Mary, that she rose up hastily and went out, followed her, saying, She goeth unto the grave to weep there."

John 11:52: "And not for that nation only, but that also he should gather together in one the children of God that were scattered abroad."

John 11:57: "Now both the chief priests and the Pharisees had given a commandment, that, if any man knew where he were, he should shew it, that they might take him."

John 12:12: "On the next day much people that were come to the feast, when they heard that Jesus was coming to Jerusalem,"

John 12:16: "These things understood not his disciples at the first: but when Jesus was glorified, then remembered they that these things were written of him, and that they had done these things unto him."

John 12:20: "And there were certain Greeks among them that came up to worship at the feast:"

John 13:1: "Now before the feast of the passover, when Jesus knew that his hour was come that he should depart out of this world unto the Father, having loved his own which were in the world, he loved them unto the end."

John 14:2: "In my Father's house are many mansions: if it were not so, I would have told you. I go to prepare a place for you."

John 15:19: "If ye were of the world, the world would love his own: but because ye are not of the world, but I have chosen you out of the world, therefore the world hateth you."

John 16:19: "Now Jesus knew that they were desirous to ask him, and said unto them, Do ye enquire among yourselves of that I said, A little while, and ye shall not see me: and again, a little while, and ye shall see me?"

John 17:6: "I have manifested thy name unto the men which thou gavest me out of the world: thine they were, and thou gavest them me; and they have kept thy word."

John 18:30: "They answered and said unto him, If he were not a malefactor, we would not have delivered him up unto thee."

John 18:36: "Jesus answered, My kingdom is not of this world: if my kingdom were of this world, then would my servants fight, that I should not be delivered to the Jews: but now is my kingdom not from hence."

John 19:11: "Jesus answered, Thou couldest have no power at all against me, except it were given thee from above: therefore he that delivered me unto thee hath the greater sin."

John 19:28: "After this, Jesus knowing that all things were now accomplished, that the scripture might be fulfilled, saith, I thirst."

John 19:36: "For these things were done, that the scripture should be fulfilled, A bone of him shall not be broken."

John 20:19: "Then the same day at evening, being the first day of the week, when the doors were shut where the disciples were assembled for fear of the Jews, came Jesus and stood in the midst, and saith unto them, Peace be unto you."

John 20:20: "And when he had so said, he shewed unto them his hands and his side. Then were the disciples glad, when they saw the LORD."

John 20:26: "And after eight days again his disciples were within, and Thomas with them: then came Jesus, the doors being shut, and stood in the midst, and said, Peace be unto you."

John 21:2: "There were together Simon Peter, and Thomas called Didymus, and Nathanael of Cana in Galilee, and the sons of Zebedee, and two other of his disciples."

John 21:6: "And he said unto them, Cast the net on the right side of the ship, and ye shall find. They cast therefore, and now they were not able to draw it for the multitude of fishes."

John 21:8: "And the other disciples came in a little ship; (for they were not far from land, but as it were two hundred cubits,) dragging the net with fishes."

John 21:9: "As soon then as they were come to land, they saw a fire of coals there, and fish laid thereon, and bread."

John 21:11: "Simon Peter went up, and drew the net to land full of great fishes, an hundred and fifty and three: and for all there were so many, yet was not the net broken."

Acts 1:6: "When they therefore were come together, they asked of him, saying, Lord, wilt thou at this time restore again the kingdom to Israel?"

Acts 1:13: "And when they were come in, they went up into an upper room, where abode both Peter, and James, and John, and Andrew, Philip, and Thomas, Bartholomew, and Matthew, James

the son of Alphaeus, and Simon Zelotes, and Judas the brother of James."

Acts 1:15: "And in those days Peter stood up in the midst of the disciples, and said, (the number of names together were about an hundred and twenty,)"

Acts 2:1: "And when the day of Pentecost was fully come, they were all with one accord in one place."

Acts 2:2: "And suddenly there came a sound from heaven as of a rushing mighty wind, and it filled all the house where they were sitting."

Acts 2:4: "And they were all filled with the Holy Ghost, and began to speak with other tongues, as the Spirit gave them utterance."

Acts 2:5: "And there were dwelling at Jerusalem Jews, devout men, out of every nation under heaven."

Acts 2:6: "Now when this was noised abroad, the multitude came together, and were confounded, because that every man heard them speak in his own language."

Acts 2:7: "And they were all amazed and marvelled, saying one to another, Behold, are not all these which speak Galilaeans?"

Acts 2:8: "And how hear we every man in our own tongue, wherein we were born?"

Acts 2:12: "And they were all amazed, and were in doubt, saying one to another, What meaneth this?"

Acts 2:37: "Now when they heard this, they were pricked in their heart, and said unto Peter and to the rest of the apostles, Men and brethren, what shall we do?"

Acts 2:41: "Then they that gladly received his word were baptized: and the same day there were added unto them about three thousand souls."

Acts 2:43: "And fear came upon every soul: and many wonders and signs were done by the apostles."

Acts 2:44: "And all that believed were together, and had all things common;"

Acts 3:10: "And they knew that it was he which sat for alms at the Beautiful gate of the temple: and they were filled with wonder and amazement at that which had happened unto him."

Acts 4:6: "And Annas the high priest, and Caiaphas, and John, and Alexander, and as many as were of the kindred of the high priest, were gathered together at Jerusalem."

Acts 4:13: "Now when they saw the boldness of Peter and John, and perceived that they were unlearned and ignorant men, they marvelled; and they took knowledge of them, that they had been with Jesus."

Acts 4:26: "The kings of the earth stood up, and the rulers were gathered together against the Lord, and against his Christ."

Acts 4:27: "For of a truth against thy holy child Jesus, whom thou hast anointed, both Herod, and Pontius Pilate, with the Gentiles, and the people of Israel, were gathered together,"

Acts 4:31: "And when they had prayed, the place was shaken where they were assembled together; and they were all filled with the Holy Ghost, and they spake the word of God with boldness."

Acts 4:32: "And the multitude of them that believed were of one heart and of one soul: neither said any of them that ought of the things which he possessed was his own; but they had all things common."

Acts 4:34: "Neither was there any among them that lacked: for as many as were possessors of lands or houses sold them, and brought the prices of the things that were sold,"

Acts 5:12: "And by the hands of the apostles were many signs and wonders wrought among the people; (and they were all with one accord in Solomon's porch.)"

Acts 5:14: "And believers were the more added to the Lord, multitudes both of men and women.)"

Acts 5:16: "There came also a multitude out of the cities round about unto Jerusalem, bringing sick folks, and them which were vexed with unclean spirits: and they were healed every one."

Acts 5:17: "Then the high priest rose up, and all they that were with him, (which is the sect of the Sadducees,) and were filled with indignation,"

Acts 5:21: "And when they heard that, they entered into the temple early in the morning, and taught. But the high priest came, and they that were with him, and called the council together, and all the senate of the children of Israel, and sent to the prison to have them brought."

Acts 5:33: "When they heard that, they were cut to the heart, and took counsel to slay them."

Acts 5:36: "For before these days rose up Theudas, boasting himself to be somebody; to whom a number of men, about four hundred, joined themselves: who was slain; and all, as many as obeyed him, were scattered, and brought to nought."

Acts 5:37: "After this man rose up Judas of Galilee in the days of the taxing, and drew away much people after him: he also perished; and all, even as many as obeyed him, were dispersed."

Acts 5:41: "And they departed from the presence of the council, rejoicing that they were counted worthy to suffer shame for his name."

Acts 6:1: "And in those days, when the number of the disciples was multiplied, there arose a murmuring of the Grecians against the Hebrews, because their widows were neglected in the daily ministration."

Acts 6:7: "And the word of God increased; and the number of the disciples multiplied in Jerusalem greatly; and a great company of the priests were obedient to the faith."

Acts 6:10: "And they were not able to resist the wisdom and the spirit by which he spake."

Acts 7:16: "And were carried over into Sychem, and laid in the sepulchre that Abraham bought for a sum of money of the sons of Emmor the father of Sychem."

Acts 7:30: "And when forty years were expired, there appeared to him in the wilderness of mount Sina an angel of the Lord in a flame of fire in a bush."

Acts 7:54: "When they heard these things, they were cut to the heart, and they gnashed on him with their teeth."

Acts 8:1: "And Saul was consenting unto his death. And at that time there was a great persecution against the church which was at Jerusalem; and they were all scattered abroad throughout the regions of Judaea and Samaria, except the apostles."

Acts 8:4: "Therefore they that were scattered abroad went every where preaching the word."

Acts 8:7: "For unclean spirits, crying with loud voice, came out of many that were possessed with them: and many taken with palsies, and that were lame, were healed."

Acts 8:12: "But when they believed Philip preaching the things concerning the kingdom of God, and the name of Jesus Christ, they were baptized, both men and women."

Acts 8:13: "Then Simon himself believed also: and when he was baptized, he continued with Philip, and wondered, beholding the miracles and signs which were done."

Acts 8:14: "Now when the apostles which were at Jerusalem heard that Samaria had received the word of God, they sent unto them Peter and John:"

Acts 8:15: "Who, when they were come down, prayed for them, that they might receive the Holy Ghost:"

Acts 8:16: "(For as yet he was fallen upon none of them: only they were baptized in the name of the Lord Jesus.)"

Acts 8:39: "And when they were come up out of the water, the Spirit of the Lord caught away Philip, that the eunuch saw him no more: and he went on his way rejoicing."

Acts 9:2: "And desired of him letters to Damascus to the synagogues, that if he found any of this way, whether they were men or women, he might bring them bound unto Jerusalem."

Acts 9:8: "And Saul arose from the earth; and when his eyes were opened, he saw no man: but they led him by the hand, and brought him into Damascus."

Acts 9:19: "And when he had received meat, he was strengthened. Then was Saul certain days with the disciples which were at Damascus."

Acts 9:21: "But all that heard him were amazed, and said; Is not this he that destroyed them which called on this name in Jerusalem, and came hither for that intent, that he might bring them bound unto the chief priests?"

Acts 9:23: "And after that many days were fulfilled, the Jews took counsel to kill him:"

Acts 9:26: "And when Saul was come to Jerusalem, he assayed to join himself to the disciples: but they were all afraid of him, and believed not that he was a disciple."

Acts 9:31: "Then had the churches rest throughout all Judaea and Galilee and Samaria, and were edified; and walking in the fear of the Lord, and in the comfort of the Holy Ghost, were multiplied."

Acts 10:12: "Wherein were all manner of fourfooted beasts of the earth, and wild beasts, and creeping things, and fowls of the air."

Acts 10:17: "Now while Peter doubted in himself what this vision which he had seen should mean, behold, the men which were sent from Cornelius had made enquiry for Simon's house, and stood before the gate,"

Acts 10:18: "And called, and asked whether Simon, which was surnamed Peter, were lodged there."

Acts 10:21: "Then Peter went down to the men which were sent unto him from Cornelius; and said, Behold, I am he whom ye seek: what is the cause wherefore ye are come?"

Acts 10:27: "And as he talked with him, he went in, and found many that were come together."

Acts 10:38: "How God anointed Jesus of Nazareth with the Holy Ghost and with power: who went about doing good, and healing all that were oppressed of the devil; for God was with him."

Acts 10:45: "And they of the circumcision which believed were astonished, as many as came with Peter, because that on the Gentiles also was poured out the gift of the Holy Ghost."

Acts 11:1: "And the apostles and brethren that were in Judaea heard that the Gentiles had also received the word of God."

Acts 11:2: "And when Peter was come up to Jerusalem, they that were of the circumcision contended with him,"

Acts 11:10: "And this was done three times: and all were drawn up again into heaven."

Acts 11:11: "And, behold, immediately there were three men already come unto the house where I was, sent from Caesarea unto me."

Acts 11:19: "Now they which were scattered abroad upon the persecution that arose about Stephen travelled as far as Phenice, and Cyprus, and Antioch, preaching the word to none but unto the Jews only."

Acts 11:20: "And some of them were men of Cyprus and Cyrene, which, when they were come to Antioch, spake unto the Grecians, preaching the LORD Jesus."

Acts 11:26: "And when he had found him, he brought him unto Antioch. And it came to pass, that a whole year they assembled themselves with the church, and taught much people. And the disciples were called Christians first in Antioch."

Acts 12:3: "And because he saw it pleased the Jews, he proceeded further to take Peter also. (Then were the days of unleavened bread.)"

Acts 12:10: "When they were past the first and the second ward, they came unto the iron gate that leadeth unto the city; which opened to them of his own accord: and they went out, and passed on through one street; and forthwith the angel departed from him."

Acts 12:12: "And when he had considered the thing, he came to the house of Mary the mother of John, whose surname was Mark; where many were gathered together praying."

Acts 12:16: "But Peter continued knocking: and when they had opened the door, and saw him, they were astonished."

Acts 13:1: "Now there were in the church that was at Antioch certain prophets and teachers; as Barnabas, and Simeon that was called Niger, and Lucius of Cyrene, and Manaen, which had been brought up with Herod the tetrarch, and Saul."

Acts 13:5: "And when they were at Salamis, they preached the word of God in the synagogues of the Jews: and they had also John to their minister."

Acts 13:42: "And when the Jews were gone out of the synagogue, the Gentiles besought that these words might be preached to them the next sabbath."

Acts 13:45: "But when the Jews saw the multitudes, they were filled with envy, and spake against

those things which were spoken by Paul, contradicting and blaspheming."

Acts 13:48: "And when the Gentiles heard this, they were glad, and glorified the word of the Lord: and as many as were ordained to eternal life believed."

Acts 13:52: "And the disciples were filled with joy, and with the Holy Ghost."

Acts 14:6: "They were ware of it, and fled unto Lystra and Derbe, cities of Lycaonia, and unto the region that lieth round about:"

Acts 14:27: "And when they were come, and had gathered the church together, they rehearsed all that God had done with them, and how he had opened the door of faith unto the Gentiles."

Acts 15:4: "And when they were come to Jerusalem, they were received of the church, and of the apostles and elders, and they declared all things that God had done with them."

Acts 15:10: "Now therefore why tempt ye God, to put a yoke upon the neck of the disciples, which neither our fathers nor we were able to bear?"

Acts 15:30: "So when they were dismissed, they came to Antioch: and when they had gathered the multitude together, they delivered the epistle:"

Acts 15:33: "And after they had tarried there a space, they were let go in peace from the brethren unto the apostles."

Acts 16:2: "Which was well reported of by the brethren that were at Lystra and Iconium."

Acts 16:3: "Him would Paul have to go forth with him; and took and circumcised him because of the Jews which were in those quarters: for they knew all that his father was a Greek."

Acts 16:4: "And as they went through the cities, they delivered them the decrees for to keep, that were ordained of the apostles and elders which were at Jerusalem."

Acts 16:5: "And so were the churches established in the faith, and increased in number daily."

Acts 16:6: "Now when they had gone throughout Phrygia and the region of Galatia, and were forbidden of the Holy Ghost to preach the word in Asia,"

Acts 16:7: "After they were come to Mysia, they assayed to go into Bithynia: but the Spirit suffered them not."

Acts 16:12: "And from thence to Philippi, which is the chief city of that part of Macedonia, and a colony: and we were in that city abiding certain days."

Acts 16:14: "And a certain woman named Lydia, a seller of purple, of the city of Thyatira, which worshipped God, heard us: whose heart the Lord opened, that she attended unto the things which were spoken of Paul."

Acts 16:26: "And suddenly there was a great earthquake, so that the foundations of the prison were shaken: and immediately all the doors were opened, and every one's bands were loosed."

Acts 16:32: "And they spake unto him the word of the Lord, and to all that were in his house."

Acts 16:38: "And the serjeants told these words unto the magistrates: and they feared, when they heard that they were Romans."

Acts 17:11: "These were more noble than those in Thessalonica, in that they received the word with all readiness of mind, and searched the scriptures daily, whether those things were so."

Acts 17:12: "Therefore many of them believed; also of honourable women which were Greeks, and of men, not a few."

Acts 17:14: "And then immediately the brethren sent away Paul to go as it were to the sea: but Silas and Timotheus abode there still."

Acts 17:21: "(For all the Athenians and strangers which were there spent their time in nothing else, but either to tell, or to hear some new thing.)"

Acts 18:3: "And because he was of the same craft, he abode with them, and wrought: for by their occupation they were tentmakers."

Acts 18:5: "And when Silas and Timotheus were come from Macedonia, Paul was pressed in the spirit, and testified to the Jews that Jesus was Christ."

Acts 18:8: "And Crispus, the chief ruler of the synagogue, believed on the Lord with all his house; and many of the Corinthians hearing believed, and were baptized."



Acts 18:14: "And when Paul was now about to open his mouth, Gallio said unto the Jews, If it were a matter of wrong or wicked lewdness, O ye Jews, reason would that I should bear with you:"

Acts 19:3: "And he said unto them, Unto what then were ye baptized? And they said, Unto John's baptism."

Acts 19:5: "When they heard this, they were baptized in the name of the Lord Jesus."

Acts 19:7: "And all the men were about twelve."

Acts 19:9: "But when divers were hardened, and believed not, but spake evil of that way before the multitude, he departed from them, and separated the disciples, disputing daily in the school of one Tyrannus."

Acts 19:12: "So that from his body were brought unto the sick handkerchiefs or aprons, and the diseases departed from them, and the evil spirits went out of them."

Acts 19:14: "And there were seven sons of one Sceva, a Jew, and chief of the priests, which did so."

Acts 19:21: "After these things were ended, Paul purposed in the spirit, when he had passed through Macedonia and Achaia, to go to Jerusalem, saying, After I have been there, I must also see Rome."

Acts 19:28: "And when they heard these sayings, they were full of wrath, and cried out, saying, Great is Diana of the Ephesians."

Acts 19:31: "And certain of the chief of Asia, which were his friends, sent unto him, desiring him that he would not adventure himself into the theatre."

Acts 19:32: "Some therefore cried one thing, and some another: for the assembly was confused: and the more part knew not wherefore they were come together."

Acts 20:8: "And there were many lights in the upper chamber, where they were gathered together."

Acts 20:12: "And they brought the young man alive, and were not a little comforted."

Acts 20:16: "For Paul had determined to sail by Ephesus, because he would not spend the time in Asia: for he hasted, if it were possible for him, to be at Jerusalem the day of Pentecost."

Acts 20:18: "And when they were come to him, he said unto them, Ye know, from the first day that I came into Asia, after what manner I have been with you at all seasons,"

Acts 20:34: "Yea, ye yourselves know, that these hands have ministered unto my necessities, and to them that were with me."

Acts 21:1: "And it came to pass, that after we were gotten from them, and had launched, we came with a straight course unto Coos, and the day following unto Rhodes, and from thence unto Patara:"

Acts 21:5: "And when we had accomplished those days, we departed and went our way; and they all brought us on our way, with wives and children, till we were out of the city: and we kneeled down on the shore, and prayed."

Acts 21:8: "And the next day we that were of Paul's company departed, and came unto Caesarea: and we entered into the house of Philip the evangelist, which was one of the seven; and abode with him."

Acts 21:17: "And when we were come to Jerusalem, the brethren received us gladly."

Acts 21:18: "And the day following Paul went in with us unto James; and all the elders were present."

Acts 21:24: "Them take, and purify thyself with them, and be at charges with them, that they may shave their heads: and all may know that those things, whereof they were informed concerning thee, are nothing; but that thou thyself also walkest orderly, and keepest the law."

Acts 21:27: "And when the seven days were almost ended, the Jews which were of Asia, when they saw him in the temple, stirred up all the people, and laid hands on him,"

Acts 21:30: "And all the city was moved, and the people ran together: and they took Paul, and drew him out of the temple: and forthwith the doors were shut."

Acts 21:38: "Art not thou that Egyptian, which before these days madest an uproar, and leddest out into the wilderness four thousand men that were murderers?"

Acts 22:5: "As also the high priest doth bear me witness, and all the estate of the elders: from whom also I received letters unto the brethren, and went to Damascus, to bring them which were there

bound unto Jerusalem, for to be punished."

Acts 22:9: "And they that were with me saw indeed the light, and were afraid; but they heard not the voice of him that spake to me."

Acts 22:11: "And when I could not see for the glory of that light, being led by the hand of them that were with me, I came into Damascus."

Acts 23:6: "But when Paul perceived that the one part were Sadducees, and the other Pharisees, he cried out in the council, Men and brethren, I am a Pharisee, the son of a Pharisee: of the hope and resurrection of the dead I am called in question."

Acts 23:9: "And there arose a great cry: and the scribes that were of the Pharisees' part arose, and strove, saying, We find no evil in this man: but if a spirit or an angel hath spoken to him, let us not fight against God."

Acts 23:13: "And they were more than forty which had made this conspiracy."

Acts 24:9: "And the Jews also assented, saying that these things were so."

Acts 25:17: "Therefore, when they were come hither, without any delay on the morrow I sat on the judgment seat, and commanded the man to be brought forth."

Acts 26:10: "Which thing I also did in Jerusalem: and many of the saints did I shut up in prison, having received authority from the chief priests; and when they were put to death, I gave my voice against them."

Acts 26:14: "And when we were all fallen to the earth, I heard a voice speaking unto me, and saying in the Hebrew tongue, Saul, Saul, why persecutest thou me? it is hard for thee to kick against the pricks."

Acts 26:29: "And Paul said, I would to God, that not only thou, but also all that hear me this day, were both almost, and altogether such as I am, except these bonds."

Acts 26:31: "And when they were gone aside, they talked between themselves, saying, This man doeth nothing worthy of death or of bonds."

Acts 27:4: "And when we had launched from thence, we sailed under Cyprus, because the winds were contrary."

Acts 27:7: "And when we had sailed slowly many days, and scarce were come over against Cnidus, the wind not suffering us, we sailed under Crete, over against Salmone;"

Acts 27:11: "Nevertheless the centurion believed the master and the owner of the ship, more than those things which were spoken by Paul."

Acts 27:17: "Which when they had taken up, they used helps, undergirding the ship; and, fearing lest they should fall into the quicksands, strake sail, and so were driven."

Acts 27:27: "But when the fourteenth night was come, as we were driven up and down in Adria, about midnight the shipmen deemed that they drew near to some country;"

Acts 27:30: "And as the shipmen were about to flee out of the ship, when they had let down the boat into the sea, under colour as though they would have cast anchors out of the foreship,"

Acts 27:36: "Then were they all of good cheer, and they also took some meat."

Acts 27:37: "And we were in all in the ship two hundred threescore and sixteen souls."

Acts 27:39: "And when it was day, they knew not the land: but they discovered a certain creek with a shore, into the which they were minded, if it were possible, to thrust in the ship."

Acts 28:1: "And when they were escaped, then they knew that the island was called Melita."

Acts 28:7: "In the same quarters were possessions of the chief man of the island, whose name was Publius; who received us, and lodged us three days courteously."

Acts 28:9: "So when this was done, others also, which had diseases in the island, came, and were healed:"

Acts 28:10: "Who also honoured us with many honours; and when we departed, they laded us with such things as were necessary."

Acts 28:14: "Where we found brethren, and were desired to tarry with them seven days: and so we went toward Rome."

Acts 28:17: "And it came to pass, that after three days Paul called the chief of the Jews together: and when they were come together, he said unto them, Men and brethren, though I have committed nothing against the people, or customs of our fathers, yet was I delivered prisoner from Jerusalem into the hands of the Romans."

Acts 28:24: "And some believed the things which were spoken, and some believed not."

Romans 1:21: "Because that, when they knew God, they glorified him not as God, neither were thankful; but became vain in their imaginations, and their foolish heart was darkened."

Romans 3:2: "Much every way: chiefly, because that unto them were committed the oracles of God."

Romans 4:2: "For if Abraham were justified by works, he hath whereof to glory; but not before God."

Romans 4:17: "(As it is written, I have made thee a father of many nations,) before him whom he believed, even God, who quickeneth the dead, and calleth those things which be not as though they were."

Romans 5:6: "For when we were yet without strength, in due time Christ died for the ungodly."

Romans 5:8: "But God commendeth his love toward us, in that, while we were yet sinners, Christ died for us."

Romans 5:10: "For if, when we were enemies, we were reconciled to God by the death of his Son, much more, being reconciled, we shall be saved by his life."

Romans 5:19: "For as by one man's disobedience many were made sinners, so by the obedience of one shall many be made righteous."

Romans 6:3: "Know ye not, that so many of us as were baptized into Jesus Christ were baptized into his death?"

Romans 6:17: "But God be thanked, that ye were the servants of sin, but ye have obeyed from the heart that form of doctrine which was delivered you."

Romans 6:20: "For when ye were the servants of sin, ye were free from righteousness."

Romans 7:5: "For when we were in the flesh, the motions of sins, which were by the law, did work in our members to bring forth fruit unto death."

Romans 7:6: "But now we are delivered from the law, that being dead wherein we were held; that we should serve in newness of spirit, and not in the oldness of the letter."

Romans 9:3: "For I could wish that myself were accursed from Christ for my brethren, my kinsmen according to the flesh:"

Romans 9:25: "As he saith also in Osee, I will call them my people, which were not my people; and her beloved, which was not beloved."

Romans 9:32: "Wherefore? Because they sought it not by faith, but as it were by the works of the law. For they stumbled at that stumblingstone;"

Romans 11:7: "What then? Israel hath not obtained that which he seeketh for; but the election hath obtained it, and the rest were blinded."

Romans 11:19: "Thou wilt say then, The branches were broken off, that I might be grafted in."

Romans 11:20: "Well; because of unbelief they were broken off, and thou standest by faith. Be not highminded, but fear:"

Romans 15:4: "For whatsoever things were written aforetime were written for our learning, that we through patience and comfort of the scriptures might have hope."

Romans 16:7: "Salute Andronicus and Junia, my kinsmen, and my fellow-prisoners, who are of note among the apostles, who also were in Christ before me."

1 Corinthians 1:9: "God is faithful, by whom ye were called unto the fellowship of his Son Jesus Christ our Lord."

1 Corinthians 1:13: "Is Christ divided? was Paul crucified for you? or were ye baptized in the name of Paul?"

1 Corinthians 3:2: "I have fed you with milk, and not with meat: for hitherto ye were not able to

bear it, neither yet now are ye able."

1 Corinthians 4:9: "For I think that God hath set forth us the apostles last, as it were appointed to death: for we are made a spectacle unto the world, and to angels, and to men."

1 Corinthians 5:3: "For I verily, as absent in body, but present in spirit, have judged already, as though I were present, concerning him that hath so done this deed,"

1 Corinthians 6:11: "And such were some of you: but ye are washed, but ye are sanctified, but ye are justified in the name of the Lord Jesus, and by the Spirit of our God."

1 Corinthians 7:7: "For I would that all men were even as I myself. But every man hath his proper gift of God, one after this manner, and another after that."

1 Corinthians 7:14: "For the unbelieving husband is sanctified by the wife, and the unbelieving wife is sanctified by the husband: else were your children unclean; but now are they holy."

1 Corinthians 9:15: "But I have used none of these things: neither have I written these things, that it should be so done unto me: for it were better for me to die, than that any man should make my glorying void."

1 Corinthians 10:1: "Moreover, brethren, I would not that ye should be ignorant, how that all our fathers were under the cloud, and all passed through the sea;"

1 Corinthians 10:2: "And were all baptized unto Moses in the cloud and in the sea;"

1 Corinthians 10:5: "But with many of them God was not well pleased: for they were overthrown in the wilderness."

1 Corinthians 10:6: "Now these things were our examples, to the intent we should not lust after evil things, as they also lusted."

1 Corinthians 10:7: "Neither be ye idolaters, as were some of them; as it is written, The people sat down to eat and drink, and rose up to play."

1 Corinthians 10:9: "Neither let us tempt Christ, as some of them also tempted, and were destroyed of serpents."

1 Corinthians 10:10: "Neither murmur ye, as some of them also murmured, and were destroyed of the destroyer."

1 Corinthians 11:5: "But every woman that prayeth or prophesieth with her head uncovered dishonoureth her head: for that is even all one as if she were shaven."

1 Corinthians 12:2: "Ye know that ye were Gentiles, carried away unto these dumb idols, even as ye were led."

1 Corinthians 12:17: "If the whole body were an eye, where were the hearing? If the whole were hearing, where were the smelling?"

1 Corinthians 12:19: "And if they were all one member, where were the body?"

1 Corinthians 15:11: "Therefore whether it were I or they, so we preach, and so ye believed."

2 Corinthians 1:8: "For we would not, brethren, have you ignorant of our trouble which came to us in Asia, that we were pressed out of measure, above strength, insomuch that we despaired even of life:"

2 Corinthians 3:14: "But their minds were blinded: for until this day remaineth the same vail untaken away in the reading of the old testament; which vail is done away in Christ."

2 Corinthians 5:1: "For we know that if our earthly house of this tabernacle were dissolved, we have a building of God, an house not made with hands, eternal in the heavens."

2 Corinthians 5:14: "For the love of Christ constraineth us; because we thus judge, that if one died for all, then were all dead:"

2 Corinthians 7:5: "For, when we were come into Macedonia, our flesh had no rest, but we were troubled on every side; without were fightings, within were fears."

2 Corinthians 7:8: "For though I made you sorry with a letter, I do not repent, though I did repent: for I perceive that the same epistle hath made you sorry, though it were but for a season."

2 Corinthians 7:9: "Now I rejoyce, not that ye were made sorry, but that ye sorrowed to repentance: for ye were made sorry after a godly manner, that ye might receive damage by us in nothing."

2 Corinthians 7:13: "Therefore we were comforted in your comfort: yea, and exceedingly the more joyed we for the joy of Titus, because his spirit was refreshed by you all."

2 Corinthians 8:3: "For to their power, I bear record, yea, and beyond their power they were willing of themselves;"

2 Corinthians 11:17: "That which I speak, I speak it not after the Lord, but as it were foolishly, in this confidence of boasting."

2 Corinthians 12:12: "Truly the signs of an apostle were wrought among you in all patience, in signs, and wonders, and mighty deeds."

2 Corinthians 12:13: "For what is it wherein ye were inferior to other churches, except it be that I myself was not burdensome to you? forgive me this wrong."

2 Corinthians 13:2: "I told you before, and foretell you, as if I were present, the second time; and being absent now I write to them which heretofore have sinned, and to all other, that, if I come again, I will not spare:"

Galatians 1:17: "Neither went I up to Jerusalem to them which were apostles before me; but I went into Arabia, and returned again unto Damascus."

Galatians 1:22: "And was unknown by face unto the churches of Judaea which were in Christ:"

Galatians 2:2: "And I went up by revelation, and communicated unto them that gospel which I preach among the Gentiles, but privately to them which were of reputation, lest by any means I should run, or had run, in vain."

Galatians 2:6: "But of these who seemed to be somewhat, (whatsoever they were, it maketh no matter to me: God accepteth no man's person:) for they who seemed to be somewhat in conference added nothing to me:"

Galatians 2:12: "For before that certain came from James, he did eat with the Gentiles: but when they were come, he withdrew and separated himself, fearing them which were of the circumcision."

Galatians 3:16: "Now to Abraham and his seed were the promises made. He saith not, And to seeds, as of many; but as of one, And to thy seed, which is Christ."

Galatians 3:23: "But before faith came, we were kept under the law, shut up unto the faith which should afterwards be revealed."

Galatians 4:3: "Even so we, when we were children, were in bondage under the elements of the world:"

Galatians 4:5: "To redeem them that were under the law, that we might receive the adoption of sons."

Galatians 5:12: "I would they were even cut off which trouble you."

Ephesians 1:13: "In whom ye also trusted, after that ye heard the word of truth, the gospel of your salvation: in whom also after that ye believed, ye were sealed with that holy Spirit of promise,"

Ephesians 2:1: "And you hath he quickened, who were dead in trespasses and sins;"

Ephesians 2:3: "Among whom also we all had our conversation in times past in the lusts of our flesh, fulfilling the desires of the flesh and of the mind; and were by nature the children of wrath, even as others."

Ephesians 2:5: "Even when we were dead in sins, hath quickened us together with Christ, (by grace ye are saved;)"

Ephesians 2:12: "That at that time ye were without Christ, being aliens from the commonwealth of Israel, and strangers from the covenants of promise, having no hope, and without God in the world:"

Ephesians 2:13: "But now in Christ Jesus ye who sometimes were far off are made nigh by the blood of Christ."

Ephesians 2:17: "And came and preached peace to you which were afar off, and to them that were nigh."

Ephesians 5:8: "For ye were sometimes darkness, but now are ye light in the Lord: walk as children of light:"

Philippians 3:7: "But what things were gain to me, those I counted loss for Christ."

Philippians 3:12: "Not as though I had already attained, either were already perfect: but I follow after, if that I may apprehend that for which also I am apprehended of Christ Jesus."

Philippians 4:10: "But I rejoiced in the Lord greatly, that now at the last your care of me hath flourished again; wherein ye were also careful, but ye lacked opportunity."

Philippians 4:18: "But I have all, and abound: I am full, having received of Epaphroditus the things which were sent from you, an odour of a sweet smell, a sacrifice acceptable, wellpleasing to God."

Colossians 1:16: "For by him were all things created, that are in heaven, and that are in earth, visible and invisible, whether they be thrones, or dominions, or principalities, or powers: all things were created by him, and for him:"

Colossians 1:21: "And you, that were sometime alienated and enemies in your mind by wicked works, yet now hath he reconciled"

1 Thessalonians 1:5: "For our gospel came not unto you in word only, but also in power, and in the Holy Ghost, and in much assurance; as ye know what manner of men we were among you for your sake."

1 Thessalonians 1:7: "So that ye were ensamples to all that believe in Macedonia and Achaia."

1 Thessalonians 2:2: "But even after that we had suffered before, and were shamefully entreated, as ye know, at Philippi, we were bold in our God to speak unto you the gospel of God with much contention."

1 Thessalonians 2:4: "But as we were allowed of God to be put in trust with the gospel, even so we speak; not as pleasing men, but God, which trieth our hearts."

1 Thessalonians 2:7: "But we were gentle among you, even as a nurse cherisheth her children:"

1 Thessalonians 2:8: "So being affectionately desirous of you, we were willing to have imparted unto you, not the gospel of God only, but also our own souls, because ye were dear unto us."

1 Thessalonians 3:4: "For verily, when we were with you, we told you before that we should suffer tribulation; even as it came to pass, and ye know."

1 Thessalonians 3:7: "Therefore, brethren, we were comforted over you in all our affliction and distress by your faith:"

2 Thessalonians 3:10: "For even when we were with you, this we commanded you, that if any would not work, neither should he eat."

Titus 3:3: "For we ourselves also were sometimes foolish, disobedient, deceived, serving divers lusts and pleasures, living in malice and envy, hateful, and hating one another."

Philemon 1:14: "But without thy mind would I do nothing; that thy benefit should not be as it were of necessity, but willingly."

Hebrews 2:15: "And deliver them who through fear of death were all their lifetime subject to bondage."

Hebrews 3:5: "And Moses verily was faithful in all his house, as a servant, for a testimony of those things which were to be spoken after;"

Hebrews 4:3: "For we which have believed do enter into rest, as he said, As I have sworn in my wrath, if they shall enter into my rest: although the works were finished from the foundation of the world."

Hebrews 5:8: "Though he were a Son, yet learned he obedience by the things which he suffered;"

Hebrews 6:4: "For it is impossible for those who were once enlightened, and have tasted of the heavenly gift, and were made partakers of the Holy Ghost,"

Hebrews 7:11: "If therefore perfection were by the Levitical priesthood, (for under it the people received the law,) what further need was there that another priest should rise after the order of Melchisedec, and not be called after the order of Aaron?"

Hebrews 7:21: "(For those priests were made without an oath; but this with an oath by him that said unto him, The Lord sware and will not repent, Thou art a priest for ever after the order of Melchisedec:)"

Hebrews 7:23: "And they truly were many priests, because they were not suffered to continue by

reason of death:"

Hebrews 8:4: "For if he were on earth, he should not be a priest, seeing that there are priests that offer gifts according to the law:"

Hebrews 9:6: "Now when these things were thus ordained, the priests went always into the first tabernacle, accomplishing the service of God."

Hebrews 9:9: "Which was a figure for the time then present, in which were offered both gifts and sacrifices, that could not make him that did the service perfect, as pertaining to the conscience;"

Hebrews 9:15: "And for this cause he is the mediator of the new testament, that by means of death, for the redemption of the transgressions that were under the first testament, they which are called might receive the promise of eternal inheritance."

Hebrews 10:32: "But call to remembrance the former days, in which, after ye were illuminated, ye endured a great fight of afflictions;"

Hebrews 10:33: "Partly, whilst ye were made a gazingstock both by reproaches and afflictions; and partly, whilst ye became companions of them that were so used."

Hebrews 11:3: "Through faith we understand that the worlds were framed by the word of God, so that things which are seen were not made of things which do appear."

Hebrews 11:13: "These all died in faith, not having received the promises, but having seen them afar off, and were persuaded of them, and embraced them, and confessed that they were strangers and pilgrims on the earth."

Hebrews 11:23: "By faith Moses, when he was born, was hid three months of his parents, because they saw he was a proper child; and they were not afraid of the king's commandment."

Hebrews 11:29: "By faith they passed through the Red sea as by dry land: which the Egyptians assaying to do were drowned."

Hebrews 11:30: "By faith the walls of Jericho fell down, after they were compassed about seven days."

Hebrews 11:34: "Quenched the violence of fire, escaped the edge of the sword, out of weakness were made strong, waxed valiant in fight, turned to flight the armies of the aliens."

Hebrews 11:35: "Women received their dead raised to life again: and others were tortured, not accepting deliverance; that they might obtain a better resurrection:"

Hebrews 11:37: "They were stoned, they were sawn asunder, were tempted, were slain with the sword: they wandered about in sheepskins and goatskins; being destitute, afflicted, tormented;"

James 5:3: "Your gold and silver is cankered; and the rust of them shall be a witness against you, and shall eat your flesh as it were fire. Ye have heaped treasure together for the last days."

1 Peter 1:18: "Forasmuch as ye know that ye were not redeemed with corruptible things, as silver and gold, from your vain conversation received by tradition from your fathers;"

1 Peter 2:8: "And a stone of stumbling, and a rock of offence, even to them which stumble at the word, being disobedient: whereunto also they were appointed."

1 Peter 2:10: "Which in time past were not a people, but are now the people of God: which had not obtained mercy, but now have obtained mercy."

1 Peter 2:21: "For even hereunto were ye called: because Christ also suffered for us, leaving us an example, that ye should follow his steps:"

1 Peter 2:24: "Who his own self bare our sins in his own body on the tree, that we, being dead to sins, should live unto righteousness: by whose stripes ye were healed."

1 Peter 2:25: "For ye were as sheep going astray; but are now returned unto the Shepherd and Bishop of your souls."

1 Peter 3:20: "Which sometime were disobedient, when once the longsuffering of God waited in the days of Noah, while the ark was a preparing, wherein few, that is, eight souls were saved by water."

2 Peter 1:16: "For we have not followed cunningly devised fables, when we made known unto you the power and coming of our Lord Jesus Christ, but were eyewitnesses of his majesty."

2 Peter 1:18: "And this voice which came from heaven we heard, when we were with him in the

holy mount."

2 Peter 1:21: "For the prophecy came not in old time by the will of man: but holy men of God spake as they were moved by the Holy Ghost."

2 Peter 2:1: "But there were false prophets also among the people, even as there shall be false teachers among you, who privily shall bring in damnable heresies, even denying the Lord that bought them, and bring upon themselves swift destruction."

2 Peter 2:18: "For when they speak great swelling words of vanity, they allure through the lusts of the flesh, through much wantonness, those that were clean escaped from them who live in error."

2 Peter 3:2: "That ye may be mindful of the words which were spoken before by the holy prophets, and of the commandment of us the apostles of the Lord and Saviour:"

2 Peter 3:4: "And saying, Where is the promise of his coming? for since the fathers fell asleep, all things continue as they were from the beginning of the creation."

2 Peter 3:5: "For this they willingly are ignorant of, that by the word of God the heavens were of old, and the earth standing out of the water and in the water:"

1 John 2:19: "They went out from us, but they were not of us; for if they had been of us, they would no doubt have continued with us: but they went out, that they might be made manifest that they were not all of us."

1 John 3:12: "Not as Cain, who was of that wicked one, and slew his brother. And wherefore slew he him? Because his own works were evil, and his brother's righteous."

Jude 1:4: "For there are certain men crept in unawares, who were before of old ordained to this condemnation, ungodly men, turning the grace of our God into lasciviousness, and denying the only Lord God, and our Lord Jesus Christ."

Jude 1:17: "But, beloved, remember ye the words which were spoken before of the apostles of our Lord Jesus Christ;"

Revelation 1:14: "His head and his hairs were white like wool, as white as snow; and his eyes were as a flame of fire;"

Revelation 4:1: "After this I looked, and, behold, a door was opened in heaven: and the first voice which I heard was as it were of a trumpet talking with me; which said, Come up hither, and I will shew thee things which must be hereafter."

Revelation 4:4: "And round about the throne were four and twenty seats: and upon the seats I saw four and twenty elders sitting, clothed in white raiment; and they had on their heads crowns of gold."

Revelation 4:5: "And out of the throne proceeded lightnings and thunderings and voices: and there were seven lamps of fire burning before the throne, which are the seven Spirits of God."

Revelation 4:6: "And before the throne there was a sea of glass like unto crystal: and in the midst of the throne, and round about the throne, were four beasts full of eyes before and behind."

Revelation 4:8: "And the four beasts had each of them six wings about him; and they were full of eyes within: and they rest not day and night, saying, Holy, holy, holy, LORD God Almighty, which was, and is, and is to come."

Revelation 4:11: "Thou art worthy, O Lord, to receive glory and honour and power: for thou hast created all things, and for thy pleasure they are and were created."

Revelation 6:1: "And I saw when the Lamb opened one of the seals, and I heard, as it were the noise of thunder, one of the four beasts saying, Come and see."

Revelation 6:9: "And when he had opened the fifth seal, I saw under the altar the souls of them that were slain for the word of God, and for the testimony which they held:"

Revelation 6:11: "And white robes were given unto every one of them; and it was said unto them, that they should rest yet for a little season, until their fellowservants also and their brethren, that should be killed as they were, should be fulfilled."

Revelation 6:14: "And the heaven departed as a scroll when it is rolled together; and every mountain and island were moved out of their places."



Revelation 7:4: "And I heard the number of them which were sealed: and there were sealed an hundred and forty and four thousand of all the tribes of the children of Israel."

Revelation 7:5: "Of the tribe of Juda were sealed twelve thousand. Of the tribe of Reuben were sealed twelve thousand. Of the tribe of Gad were sealed twelve thousand."

Revelation 7:6: "Of the tribe of Aser were sealed twelve thousand. Of the tribe of Nephthalim were sealed twelve thousand. Of the tribe of Manasses were sealed twelve thousand."

Revelation 7:7: "Of the tribe of Simeon were sealed twelve thousand. Of the tribe of Levi were sealed twelve thousand. Of the tribe of Issachar were sealed twelve thousand."

Revelation 7:8: "Of the tribe of Zabulon were sealed twelve thousand. Of the tribe of Joseph were sealed twelve thousand. Of the tribe of Benjamin were sealed twelve thousand."

Revelation 8:2: "And I saw the seven angels which stood before God; and to them were given seven trumpets."

Revelation 8:5: "And the angel took the censer, and filled it with fire of the altar, and cast it into the earth: and there were voices, and thunderings, and lightnings, and an earthquake."

Revelation 8:7: "The first angel sounded, and there followed hail and fire mingled with blood, and they were cast upon the earth: and the third part of trees was burnt up, and all green grass was burnt up."

Revelation 8:8: "And the second angel sounded, and as it were a great mountain burning with fire was cast into the sea: and the third part of the sea became blood;"

Revelation 8:9: "And the third part of the creatures which were in the sea, and had life, died; and the third part of the ships were destroyed."

Revelation 8:10: "And the third angel sounded, and there fell a great star from heaven, burning as it were a lamp, and it fell upon the third part of the rivers, and upon the fountains of waters;"

Revelation 8:11: "And the name of the star is called Wormwood: and the third part of the waters became wormwood; and many men died of the waters, because they were made bitter."

Revelation 9:2: "And he opened the bottomless pit; and there arose a smoke out of the pit, as the smoke of a great furnace; and the sun and the air were darkened by reason of the smoke of the pit."

Revelation 9:7: "And the shapes of the locusts were like unto horses prepared unto battle; and on their heads were as it were crowns like gold, and their faces were as the faces of men."

Revelation 9:8: "And they had hair as the hair of women, and their teeth were as the teeth of lions."

Revelation 9:9: "And they had breastplates, as it were breastplates of iron; and the sound of their wings was as the sound of chariots of many horses running to battle."

Revelation 9:10: "And they had tails like unto scorpions, and there were stings in their tails: and their power was to hurt men five months."

Revelation 9:15: "And the four angels were loosed, which were prepared for an hour, and a day, and a month, and a year, for to slay the third part of men."

Revelation 9:16: "And the number of the army of the horsemen were two hundred thousand thousand: and I heard the number of them."

Revelation 9:17: "And thus I saw the horses in the vision, and them that sat on them, having breastplates of fire, and of jacinth, and brimstone: and the heads of the horses were as the heads of lions; and out of their mouths issued fire and smoke and brimstone."

Revelation 9:19: "For their power is in their mouth, and in their tails: for their tails were like unto serpents, and had heads, and with them they do hurt."

Revelation 9:20: "And the rest of the men which were not killed by these plagues yet repented not of the works of their hands, that they should not worship devils, and idols of gold, and silver, and brass, and stone, and of wood: which neither can see, nor hear, nor walk:"

Revelation 10:1: "And I saw another mighty angel come down from heaven, clothed with a cloud: and a rainbow was upon his head, and his face was as it were the sun, and his feet as pillars of fire:"

Revelation 11:13: "And the same hour was there a great earthquake, and the tenth part of the city fell, and in the earthquake were slain of men seven thousand: and the remnant were affrighted, and

gave glory to the God of heaven."

Revelation 11:15: "And the seventh angel sounded; and there were great voices in heaven, saying, The kingdoms of this world are become the kingdoms of our Lord, and of his Christ; and he shall reign for ever and ever."

Revelation 11:18: "And the nations were angry, and thy wrath is come, and the time of the dead, that they should be judged, and that thou shouldest give reward unto thy servants the prophets, and to the saints, and them that fear thy name, small and great; and shouldest destroy them which destroy the earth."

Revelation 11:19: "And the temple of God was opened in heaven, and there was seen in his temple the ark of his testament: and there were lightnings, and voices, and thunderings, and an earthquake, and great hail."

Revelation 12:9: "And the great dragon was cast out, that old serpent, called the Devil, and Satan, which deceiveth the whole world: he was cast out into the earth, and his angels were cast out with him."

Revelation 12:14: "And to the woman were given two wings of a great eagle, that she might fly into the wilderness, into her place, where she is nourished for a time, and times, and half a time, from the face of the serpent."

Revelation 13:2: "And the beast which I saw was like unto a leopard, and his feet were as the feet of a bear, and his mouth as the mouth of a lion: and the dragon gave him his power, and his seat, and great authority."

Revelation 13:3: "And I saw one of his heads as it were wounded to death; and his deadly wound was healed: and all the world wondered after the beast."

Revelation 14:3: "And they sung as it were a new song before the throne, and before the four beasts, and the elders: and no man could learn that song but the hundred and forty and four thousand, which were redeemed from the earth."

Revelation 14:4: "These are they which were not defiled with women; for they are virgins. These are they which follow the Lamb whithersoever he goeth. These were redeemed from among men, being the firstfruits unto God and to the Lamb."

Revelation 15:2: "And I saw as it were a sea of glass mingled with fire: and them that had gotten the victory over the beast, and over his image, and over his mark, and over the number of his name, stand on the sea of glass, having the harps of God."

Revelation 15:8: "And the temple was filled with smoke from the glory of God, and from his power; and no man was able to enter into the temple, till the seven plagues of the seven angels were fulfilled."

Revelation 16:9: "And men were scorched with great heat, and blasphemed the name of God, which hath power over these plagues: and they repented not to give him glory."

Revelation 16:18: "And there were voices, and thunders, and lightnings; and there was a great earthquake, such as was not since men were upon the earth, so mighty an earthquake, and so great."

Revelation 16:20: "And every island fled away, and the mountains were not found."

Revelation 17:8: "The beast that thou sawest was, and is not; and shall ascend out of the bottomless pit, and go into perdition: and they that dwell on the earth shall wonder, whose names were not written in the book of life from the foundation of the world, when they behold the beast that was, and is not, and yet is."

Revelation 18:14: "And the fruits that thy soul lusted after are departed from thee, and all things which were dainty and goodly are departed from thee, and thou shalt find them no more at all."

Revelation 18:15: "The merchants of these things, which were made rich by her, shall stand afar off for the fear of her torment, weeping and wailing,"

Revelation 18:19: "And they cast dust on their heads, and cried, weeping and wailing, saying, Alas, alas that great city, wherein were made rich all that had ships in the sea by reason of her costliness! for in one hour is she made desolate."

Revelation 18:23: "And the light of a candle shall shine no more at all in thee; and the voice of the bridegroom and of the bride shall be heard no more at all in thee: for thy merchants were the great men of the earth; for by thy sorceries were all nations deceived."

Revelation 18:24: "And in her was found the blood of prophets, and of saints, and of all that were slain upon the earth."

Revelation 19:6: "And I heard as it were the voice of a great multitude, and as the voice of many waters, and as the voice of mighty thunderings, saying, Alleluia: for the Lord God omnipotent reigneth."

Revelation 19:12: "His eyes were as a flame of fire, and on his head were many crowns; and he had a name written, that no man knew, but he himself."

Revelation 19:14: "And the armies which were in heaven followed him upon white horses, clothed in fine linen, white and clean."

Revelation 19:20: "And the beast was taken, and with him the false prophet that wrought miracles before him, with which he deceived them that had received the mark of the beast, and them that worshipped his image. These both were cast alive into a lake of fire burning with brimstone."

Revelation 19:21: "And the remnant were slain with the sword of him that sat upon the horse, which sword proceeded out of his mouth: and all the fowls were filled with their flesh."

Revelation 20:4: "And I saw thrones, and they sat upon them, and judgment was given unto them: and I saw the souls of them that were beheaded for the witness of Jesus, and for the word of God, and which had not worshipped the beast, neither his image, neither had received his mark upon their foreheads, or in their hands; and they lived and reigned with Christ a thousand years."

Revelation 20:5: "But the rest of the dead lived not again until the thousand years were finished. This is the first resurrection."

Revelation 20:12: "And I saw the dead, small and great, stand before God; and the books were opened: and another book was opened, which is the book of life: and the dead were judged out of those things which were written in the books, according to their works."

Revelation 20:13: "And the sea gave up the dead which were in it; and death and hell delivered up the dead which were in them: and they were judged every man according to their works."

Revelation 20:14: "And death and hell were cast into the lake of fire. This is the second death."

Revelation 21:1: "And I saw a new heaven and a new earth: for the first heaven and the first earth were passed away; and there was no more sea."

Revelation 21:19: "And the foundations of the wall of the city were garnished with all manner of precious stones. The first foundation was jasper; the second, sapphire; the third, a chalcedony; the fourth, an emerald;"

Revelation 21:21: "And the twelve gates were twelve pearls: every several gate was of one pearl: and the street of the city was pure gold, as it were transparent glass."

Revelation 22:2: "In the midst of the street of it, and on either side of the river, was there the tree of life, which bare twelve manner of fruits, and yielded her fruit every month: and the leaves of the tree were for the healing of the nations."

## **WERT**

Occurrences: 5

Job 8:6: "If thou wert pure and upright; surely now he would awake for thee, and make the habitation of thy righteousness prosperous."

Song of Solomon 8:1: "O that thou wert as my brother, that sucked the breasts of my mother! when I should find thee without, I would kiss thee; yea, I should not be despised."

Romans 11:17: "And if some of the branches be broken off, and thou, being a wild olive tree, wert grafted in among them, and with them partakest of the root and fatness of the olive tree;"

Romans 11:24: "For if thou wert cut out of the olive tree which is wild by nature, and wert grafted contrary to nature into a good olive tree: how much more shall these, which be the natural branches,

be grafted into their own olive tree?"

Revelation 3:15: "I know thy works, that thou art neither cold nor hot: I would thou wert cold or hot."

## WEST

Occurrences: 65

Genesis 12:8: "And he removed from thence unto a mountain on the east of Bethel, and pitched his tent, having Bethel on the west, and Hai on the east: and there he builded an altar unto the LORD, and called upon the name of the LORD."

Genesis 28:14: "And thy seed shall be as the dust of the earth, and thou shalt spread abroad to the west, and to the east, and to the north, and to the south: and in thee and in thy seed shall all the families of the earth be blessed."

Exodus 10:19: "And the LORD turned a mighty strong west wind, which took away the locusts, and cast them into the Red sea; there remained not one locust in all the coasts of Egypt."

Exodus 27:12: "And for the breadth of the court on the west side shall be hangings of fifty cubits: their pillars ten, and their sockets ten."

Exodus 38:12: "And for the west side were hangings of fifty cubits, their pillars ten, and their sockets ten; the hooks of the pillars and their fillets of silver."

Numbers 2:18: "On the west side shall be the standard of the camp of Ephraim according to their armies: and the captain of the sons of Ephraim shall be Elishama the son of Ammihud."

Numbers 34:6: "And as for the western border, ye shall even have the great sea for a border: this shall be your west border."

Numbers 35:5: "And ye shall measure from without the city on the east side two thousand cubits, and on the south side two thousand cubits, and on the west side two thousand cubits, and on the north side two thousand cubits; and the city shall be in the midst: this shall be to them the suburbs of the cities."

Deuteronomy 33:23: "And of Naphtali he said, O Naphtali, satisfied with favour, and full with the blessing of the LORD: possess thou the west and the south."

Joshua 8:9: "Joshua therefore sent them forth: and they went to lie in ambush, and abode between Bethel and Ai, on the west side of Ai: but Joshua lodged that night among the people."

Joshua 8:12: "And he took about five thousand men, and set them to lie in ambush between Bethel and Ai, on the west side of the city."

Joshua 8:13: "And when they had set the people, even all the host that was on the north of the city, and their liers in wait on the west of the city, Joshua went that night into the midst of the valley."

Joshua 11:2: "And to the kings that were on the north of the mountains, and of the plains south of Chinneroth, and in the valley, and in the borders of Dor on the west,"

Joshua 11:3: "And to the Canaanite on the east and on the west, and to the Amorite, and the Hittite, and the Perizzite, and the Jebusite in the mountains, and to the Hivite under Hermon in the land of Mizpeh."

Joshua 12:7: "And these are the kings of the country which Joshua and the children of Israel smote on this side Jordan on the west, from Baalgad in the valley of Lebanon even unto the mount Halak, that goeth up to Seir; which Joshua gave unto the tribes of Israel for a possession according to their divisions;"

Joshua 15:12: "And the west border was to the great sea, and the coast thereof. This is the coast of the children of Judah round about according to their families."

Joshua 18:14: "And the border was drawn thence, and compassed the corner of the sea southward, from the hill that lieth before Bethhoron southward; and the goings out thereof were at Kirjathbaal, which is Kirjathjearim, a city of the children of Judah: this was the west quarter."

Joshua 18:15: "And the south quarter was from the end of Kirjathjearim, and the border went out on the west, and went out to the well of waters of Nephtoah:"

Joshua 19:34: "And then the coast turneth westward to Aznohtabor, and goeth out from thence to Hukkok, and reacheth to Zebulun on the south side, and reacheth to Asher on the west side, and to Judah upon Jordan toward the sunrising."

1 Kings 7:25: "It stood upon twelve oxen, three looking toward the north, and three looking toward the west, and three looking toward the south, and three looking toward the east: and the sea was set above upon them, and all their hinder parts were inward."

1 Chronicles 9:24: "In four quarters were the porters, toward the east, west, north, and south."

1 Chronicles 12:15: "These are they that went over Jordan in the first month, when it had overflowed all his banks; and they put to flight all them of the valleys, both toward the east, and toward the west."

2 Chronicles 4:4: "It stood upon twelve oxen, three looking toward the north, and three looking toward the west, and three looking toward the south, and three looking toward the east: and the sea was set above upon them, and all their hinder parts were inward."

2 Chronicles 32:30: "This same Hezekiah also stopped the upper watercourse of Gihon, and brought it straight down to the west side of the city of David. And Hezekiah prospered in all his works."

2 Chronicles 33:14: "Now after this he built a wall without the city of David, on the west side of Gihon, in the valley, even to the entering in at the fish gate, and compassed about Ophel, and raised it up a very great height, and put captains of war in all the fenced cities of Judah."

Psalms 75:6: "For promotion cometh neither from the east, nor from the west, nor from the south."

Psalms 103:12: "As far as the east is from the west, so far hath he removed our transgressions from us."

Psalms 107:3: "And gathered them out of the lands, from the east, and from the west, from the north, and from the south."

Isaiah 11:14: "But they shall fly upon the shoulders of the Philistines toward the west; they shall spoil them of the east together: they shall lay their hand upon Edom and Moab; and the children of Ammon shall obey them."

Isaiah 43:5: "Fear not: for I am with thee: I will bring thy seed from the east, and gather thee from the west;"

Isaiah 45:6: "That they may know from the rising of the sun, and from the west, that there is none beside me. I am the LORD, and there is none else."

Isaiah 49:12: "Behold, these shall come from far: and, lo, these from the north and from the west; and these from the land of Sinim."

Isaiah 59:19: "So shall they fear the name of the LORD from the west, and his glory from the rising of the sun. When the enemy shall come in like a flood, the Spirit of the LORD shall lift up a standard against him."

Ezekiel 41:12: "Now the building that was before the separate place at the end toward the west was seventy cubits broad; and the wall of the building was five cubits thick round about, and the length thereof ninety cubits."

Ezekiel 42:19: "He turned about to the west side, and measured five hundred reeds with the measuring reed."

Ezekiel 45:7: "And a portion shall be for the prince on the one side and on the other side of the oblation of the holy portion, and of the possession of the city, before the oblation of the holy portion, and before the possession of the city, from the west side westward, and from the east side eastward: and the length shall be over against one of the portions, from the west border unto the east border."

Ezekiel 47:20: "The west side also shall be the great sea from the border, till a man come over against Hamath. This is the west side."

Ezekiel 48:1: "Now these are the names of the tribes. From the north end to the coast of the way of Hethlon, as one goeth to Hamath, Hazarenan, the border of Damascus northward, to the coast of Hamath; for these are his sides east and west; a portion for Dan."

Ezekiel 48:2: "And by the border of Dan, from the east side unto the west side, a portion for Asher."

Ezekiel 48:3: "And by the border of Asher, from the east side even unto the west side, a portion for Naphtali."

Ezekiel 48:4: "And by the border of Naphtali, from the east side unto the west side, a portion for Manasseh."

Ezekiel 48:5: "And by the border of Manasseh, from the east side unto the west side, a portion for Ephraim."

Ezekiel 48:6: "And by the border of Ephraim, from the east side even unto the west side, a portion for Reuben."

Ezekiel 48:7: "And by the border of Reuben, from the east side unto the west side, a portion for Judah."

Ezekiel 48:8: "And by the border of Judah, from the east side unto the west side, shall be the offering which ye shall offer of five and twenty thousand reeds in breadth, and in length as one of the other parts, from the east side unto the west side: and the sanctuary shall be in the midst of it."

Ezekiel 48:10: "And for them, even for the priests, shall be this holy oblation; toward the north five and twenty thousand in length, and toward the west ten thousand in breadth, and toward the east ten thousand in breadth, and toward the south five and twenty thousand in length: and the sanctuary of the LORD shall be in the midst thereof."

Ezekiel 48:16: "And these shall be the measures thereof; the north side four thousand and five hundred, and the south side four thousand and five hundred, and on the east side four thousand and five hundred, and the west side four thousand and five hundred."

Ezekiel 48:17: "And the suburbs of the city shall be toward the north two hundred and fifty, and toward the south two hundred and fifty, and toward the east two hundred and fifty, and toward the west two hundred and fifty."

Ezekiel 48:21: "And the residue shall be for the prince, on the one side and on the other of the holy oblation, and of the possession of the city, over against the five and twenty thousand of the oblation toward the east border, and westward over against the five and twenty thousand toward the west border, over against the portions for the prince: and it shall be the holy oblation; and the sanctuary of the house shall be in the midst thereof."

Ezekiel 48:23: "As for the rest of the tribes, from the east side unto the west side, Benjamin shall have a portion."

Ezekiel 48:24: "And by the border of Benjamin, from the east side unto the west side, Simeon shall have a portion."

Ezekiel 48:25: "And by the border of Simeon, from the east side unto the west side, Issachar a portion."

Ezekiel 48:26: "And by the border of Issachar, from the east side unto the west side, Zebulun a portion."

Ezekiel 48:27: "And by the border of Zebulun, from the east side unto the west side, Gad a portion."

Ezekiel 48:34: "At the west side four thousand and five hundred, with their three gates; one gate of Gad, one gate of Asher, one gate of Naphtali."

Daniel 8:5: "And as I was considering, behold, an he goat came from the west on the face of the whole earth, and touched not the ground: and the goat had a notable horn between his eyes."

Hosea 11:10: "They shall walk after the LORD: he shall roar like a lion: when he shall roar, then the children shall tremble from the west."

Zechariah 8:7: "Thus saith the LORD of hosts; Behold, I will save my people from the east country, and from the west country;"

Zechariah 14:4: "And his feet shall stand in that day upon the mount of Olives, which is before Jerusalem on the east, and the mount of Olives shall cleave in the midst thereof toward the east and toward the west, and there shall be a very great valley; and half of the mountain shall remove toward the north, and half of it toward the south."

Matthew 8:11: "And I say unto you, That many shall come from the east and west, and shall sit down with Abraham, and Isaac, and Jacob, in the kingdom of heaven."

Matthew 24:27: "For as the lightning cometh out of the east, and shineth even unto the west; so shall also the coming of the Son of man be."

Luke 12:54: "And he said also to the people, When ye see a cloud rise out of the west, straightway ye say, There cometh a shower; and so it is."

Luke 13:29: "And they shall come from the east, and from the west, and from the north, and from the south, and shall sit down in the kingdom of God."

Acts 27:12: "And because the haven was not commodious to winter in, the more part advised to depart thence also, if by any means they might attain to Phenice, and there to winter; which is an haven of Crete, and lieth toward the south west and north west."

Revelation 21:13: "On the east three gates; on the north three gates; on the south three gates; and on the west three gates."

## **WESTERN**

Occurrences: 1

Numbers 34:6: "And as for the western border, ye shall even have the great sea for a border: this shall be your west border."

## **WESTWARD**

Occurrences: 26

Genesis 13:14: "And the LORD said unto Abram, after that Lot was separated from him, Lift up now thine eyes, and look from the place where thou art northward, and southward, and eastward, and westward:"

Exodus 26:22: "And for the sides of the tabernacle westward thou shalt make six boards."

Exodus 26:27: "And five bars for the boards of the other side of the tabernacle, and five bars for the boards of the side of the tabernacle, for the two sides westward."

Exodus 36:27: "And for the sides of the tabernacle westward he made six boards."

Exodus 36:32: "And five bars for the boards of the other side of the tabernacle, and five bars for the boards of the tabernacle for the sides westward."

Numbers 3:23: "The families of the Gershonites shall pitch behind the tabernacle westward."

Deuteronomy 3:27: "Get thee up into the top of Pisgah, and lift up thine eyes westward, and northward, and southward, and eastward, and behold it with thine eyes: for thou shalt not go over this Jordan."

Joshua 5:1: "And it came to pass, when all the kings of the Amorites, which were on the side of Jordan westward, and all the kings of the Canaanites, which were by the sea, heard that the LORD had dried up the waters of Jordan from before the children of Israel, until we were passed over, that their heart melted, neither was there spirit in them any more, because of the children of Israel."

Joshua 15:8: "And the border went up by the valley of the son of Hinnom unto the south side of the Jebusite; the same is Jerusalem: and the border went up to the top of the mountain that lieth before the valley of Hinnom westward, which is at the end of the valley of the giants northward:"

Joshua 15:10: "And the border compassed from Baalah westward unto mount Seir, and passed along unto the side of mount Jearim, which is Chesalon, on the north side, and went down to Bethshemesh, and passed on to Timnah:"

Joshua 16:3: "And goeth down westward to the coast of Japhleti, unto the coast of Bethhoron the nether, and to Gezer; and the goings out thereof are at the sea."

Joshua 16:8: "The border went out from Tappuah westward unto the river Kanah; and the goings out thereof were at the sea. This is the inheritance of the tribe of the children of Ephraim by their families."

Joshua 18:12: "And their border on the north side was from Jordan; and the border went up to the side of Jericho on the north side, and went up through the mountains westward; and the goings out thereof were at the wilderness of Bethaven."

Joshua 19:26: "And Alammelech, and Amad, and Misheal; and reacheth to Carmel westward, and to Shihorlibnath;"

Joshua 19:34: "And then the coast turneth westward to Aznohtabor, and goeth out from thence to Hukkok, and reacheth to Zebulun on the south side, and reacheth to Asher on the west side, and to Judah upon Jordan toward the sunrising."

Joshua 22:7: "Now to the one half of the tribe of Manasseh Moses had given possession in Bashan: but unto the other half thereof gave Joshua among their brethren on this side Jordan westward. And when Joshua sent them away also unto their tents, then he blessed them,"

Joshua 23:4: "Behold, I have divided unto you by lot these nations that remain, to be an inheritance for your tribes, from Jordan, with all the nations that I have cut off, even unto the great sea westward."

1 Chronicles 7:28: "And their possessions and habitations were, Bethel and the towns thereof, and eastward Naaran, and westward Gezer, with the towns thereof; Shechem also and the towns thereof, unto Gaza and the towns thereof:"

1 Chronicles 26:16: "To Shuppim and Hosah the lot came forth westward, with the gate Shallecheth, by the causeway of the going up, ward against ward."

1 Chronicles 26:18: "At Parbar westward, four at the causeway, and two at Parbar."

1 Chronicles 26:30: "And of the Hebronites, Hashabiah and his brethren, men of valour, a thousand and seven hundred, were officers among them of Israel on this side Jordan westward in all the business of the LORD, and in the service of the king."

Ezekiel 45:7: "And a portion shall be for the prince on the one side and on the other side of the oblation of the holy portion, and of the possession of the city, before the oblation of the holy portion, and before the possession of the city, from the west side westward, and from the east side eastward: and the length shall be over against one of the portions, from the west border unto the east border."

Ezekiel 46:19: "After he brought me through the entry, which was at the side of the gate, into the holy chambers of the priests, which looked toward the north: and, behold, there was a place on the two sides westward."

Ezekiel 48:18: "And the residue in length over against the oblation of the holy portion shall be ten thousand eastward, and ten thousand westward: and it shall be over against the oblation of the holy portion; and the increase thereof shall be for food unto them that serve the city."

Ezekiel 48:21: "And the residue shall be for the prince, on the one side and on the other of the holy oblation, and of the possession of the city, over against the five and twenty thousand of the oblation toward the east border, and westward over against the five and twenty thousand toward the west border, over against the portions for the prince: and it shall be the holy oblation; and the sanctuary of the house shall be in the midst thereof."

Daniel 8:4: "I saw the ram pushing westward, and northward, and southward; so that no beasts might stand before him, neither was there any that could deliver out of his hand; but he did according to his will, and became great."

## **WET**

Occurrences: 6

Job 24:8: "They are wet with the showers of the mountains, and embrace the rock for want of a shelter."

Daniel 4:15: "Nevertheless leave the stump of his roots in the earth, even with a band of iron and brass, in the tender grass of the field; and let it be wet with the dew of heaven, and let his portion be with the beasts in the grass of the earth:"



Daniel 4:23: "And whereas the king saw a watcher and an holy one coming down from heaven, and saying, Hew the tree down, and destroy it; yet leave the stump of the roots thereof in the earth, even with a band of iron and brass, in the tender grass of the field; and let it be wet with the dew of heaven, and let his portion be with the beasts of the field, till seven times pass over him;"

Daniel 4:25: "That they shall drive thee from men, and thy dwelling shall be with the beasts of the field, and they shall make thee to eat grass as oxen, and they shall wet thee with the dew of heaven, and seven times shall pass over thee, till thou know that the most High ruleth in the kingdom of men, and giveth it to whomsoever he will."

Daniel 4:33: "The same hour was the thing fulfilled upon Nebuchadnezzar: and he was driven from men, and did eat grass as oxen, and his body was wet with the dew of heaven, till his hairs were grown like eagles' feathers, and his nails like birds' claws."

Daniel 5:21: "And he was driven from the sons of men; and his heart was made like the beasts, and his dwelling was with the wild asses: they fed him with grass like oxen, and his body was wet with the dew of heaven; till he knew that the most high God ruled in the kingdom of men, and that he appointeth over it whomsoever he will."

## WHALE

Occurrences: 3

Job 7:12: "Am I a sea, or a whale, that thou settest a watch over me?"

Ezekiel 32:2: "Son of man, take up a lamentation for Pharaoh king of Egypt, and say unto him, Thou art like a young lion of the nations, and thou art as a whale in the seas: and thou camest forth with thy rivers, and troubledst the waters with thy feet, and fouledst their rivers."

Matthew 12:40: "For as Jonas was three days and three nights in the whale's belly; so shall the Son of man be three days and three nights in the heart of the earth."

## WHALES

Occurrences: 1

Genesis 1:21: "And God created great whales, and every living creature that moveth, which the waters brought forth abundantly, after their kind, and every winged fowl after his kind: and God saw that it was good."

## WHAT

Occurrences: 882

Genesis 2:19: "And out of the ground the LORD God formed every beast of the field, and every fowl of the air; and brought them unto Adam to see what he would call them: and whatsoever Adam called every living creature, that was the name thereof."

Genesis 3:13: "And the LORD God said unto the woman, What is this that thou hast done? And the woman said, The serpent beguiled me, and I did eat."

Genesis 4:10: "And he said, What hast thou done? the voice of thy brother's blood crieth unto me from the ground."

Genesis 9:24: "And Noah awoke from his wine, and knew what his younger son had done unto him."

Genesis 12:18: "And Pharaoh called Abram and said, What is this that thou hast done unto me? why didst thou not tell me that she was thy wife?"

Genesis 15:2: "And Abram said, LORD God, what wilt thou give me, seeing I go childless, and the steward of my house is this Eliezer of Damascus?"

Genesis 20:9: "Then Abimelech called Abraham, and said unto him, What hast thou done unto us? and what have I offended thee, that thou hast brought on me and on my kingdom a great sin? thou

hast done deeds unto me that ought not to be done."

Genesis 20:10: "And Abimelech said unto Abraham, What sawest thou, that thou hast done this thing?"

Genesis 21:17: "And God heard the voice of the lad; and the angel of God called to Hagar out of heaven, and said unto her, What aileth thee, Hagar? fear not; for God hath heard the voice of the lad where he is."

Genesis 21:29: "And Abimelech said unto Abraham, What mean these seven ewe lambs which thou hast set by themselves?"

Genesis 23:15: "My lord, hearken unto me: the land is worth four hundred shekels of silver; what is that betwixt me and thee? bury therefore thy dead."

Genesis 24:65: "For she had said unto the servant, What man is this that walketh in the field to meet us? And the servant had said, It is my master: therefore she took a vail, and covered herself."

Genesis 25:32: "And Esau said, Behold, I am at the point to die: and what profit shall this birthright do to me?"

Genesis 26:10: "And Abimelech said, What is this thou hast done unto us? one of the people might lightly have lien with thy wife, and thou shouldest have brought guiltiness upon us."

Genesis 27:37: "And Isaac answered and said unto Esau, Behold, I have made him thy lord, and all his brethren have I given to him for servants; and with corn and wine have I sustained him: and what shall I do now unto thee, my son?"

Genesis 27:46: "And Rebekah said to Isaac, I am weary of my life because of the daughters of Heth: if Jacob take a wife of the daughters of Heth, such as these which are of the daughters of the land, what good shall my life do me?"

Genesis 29:15: "And Laban said unto Jacob, Because thou art my brother, shouldest thou therefore serve me for nought? tell me, what shall thy wages be?"

Genesis 29:25: "And it came to pass, that in the morning, behold, it was Leah: and he said to Laban, What is this thou hast done unto me? did not I serve with thee for Rachel? wherefore then hast thou beguiled me?"

Genesis 30:31: "And he said, What shall I give thee? And Jacob said, Thou shalt not give me any thing: if thou wilt do this thing for me, I will again feed and keep thy flock."

Genesis 31:26: "And Laban said to Jacob, What hast thou done, that thou hast stolen away unawares to me, and carried away my daughters, as captives taken with the sword?"

Genesis 31:32: "With whomsoever thou findest thy gods, let him not live: before our brethren discern thou what is thine with me, and take it to thee. For Jacob knew not that Rachel had stolen them."

Genesis 31:36: "And Jacob was wroth, and chode with Laban: and Jacob answered and said to Laban, What is my trespass? what is my sin, that thou hast so hotly pursued after me?"

Genesis 31:37: "Whereas thou hast searched all my stuff, what hast thou found of all thy household stuff? set it here before my brethren and thy brethren, that they may judge betwixt us both."

Genesis 31:43: "And Laban answered and said unto Jacob, These daughters are my daughters, and these children are my children, and these cattle are my cattle, and all that thou seest is mine: and what can I do this day unto these my daughters, or unto their children which they have born?"

Genesis 32:27: "And he said unto him, What is thy name? And he said, Jacob."

Genesis 33:8: "And he said, What meanest thou by all this drove which I met? And he said, These are to find grace in the sight of my lord."

Genesis 33:15: "And Esau said, Let me now leave with thee some of the folk that are with me. And he said, What needeth it? let me find grace in the sight of my lord."

Genesis 34:11: "And Shechem said unto her father and unto her brethren, Let me find grace in your eyes, and what ye shall say unto me I will give."

Genesis 37:10: "And he told it to his father, and to his brethren: and his father rebuked him, and said unto him, What is this dream that thou hast dreamed? Shall I and thy mother and thy brethren

indeed come to bow down ourselves to thee to the earth?"

Genesis 37:15: "And a certain man found him, and, behold, he was wandering in the field: and the man asked him, saying, What seekest thou?"

Genesis 37:20: "Come now therefore, and let us slay him, and cast him into some pit, and we will say, Some evil beast hath devoured him: and we shall see what will become of his dreams."

Genesis 37:26: "And Judah said unto his brethren, What profit is it if we slay our brother, and conceal his blood?"

Genesis 38:16: "And he turned unto her by the way, and said, Go to, I pray thee, let me come in unto thee; (for he knew not that she was his daughter in law.) And she said, What wilt thou give me, that thou mayest come in unto me?"

Genesis 38:18: "And he said, What pledge shall I give thee? And she said, Thy signet, and thy bracelets, and thy staff that is in thine hand. And he gave it her, and came in unto her, and she conceived by him."

Genesis 39:8: "But he refused, and said unto his master's wife, Behold, my master wotteth not what is with me in the house, and he hath committed all that he hath to my hand;"

Genesis 41:25: "And Joseph said unto Pharaoh, The dream of Pharaoh is one: God hath shewed Pharaoh what he is about to do."

Genesis 41:28: "This is the thing which I have spoken unto Pharaoh: What God is about to do he sheweth unto Pharaoh."

Genesis 41:55: "And when all the land of Egypt was famished, the people cried to Pharaoh for bread: and Pharaoh said unto all the Egyptians, Go unto Joseph; what he saith to you, do."

Genesis 42:28: "And he said unto his brethren, My money is restored; and, lo, it is even in my sack: and their heart failed them, and they were afraid, saying one to another, What is this that God hath done unto us?"

Genesis 44:15: "And Joseph said unto them, What deed is this that ye have done? wot ye not that such a man as I can certainly divine?"

Genesis 44:16: "And Judah said, What shall we say unto my lord? what shall we speak? or how shall we clear ourselves? God hath found out the iniquity of thy servants: behold, we are my lord's servants, both we, and he also with whom the cup is found."

Genesis 46:33: "And it shall come to pass, when Pharaoh shall call you, and shall say, What is your occupation?"

Genesis 47:3: "And Pharaoh said unto his brethren, What is your occupation? And they said unto Pharaoh, Thy servants are shepherds, both we, and also our fathers."

Exodus 2:4: "And his sister stood afar off, to wit what would be done to him."

Exodus 3:13: "And Moses said unto God, Behold, when I come unto the children of Israel, and shall say unto them, The God of your fathers hath sent me unto you; and they shall say to me, What is his name? what shall I say unto them?"

Exodus 4:2: "And the LORD said unto him, What is that in thine hand? And he said, A rod."

Exodus 4:12: "Now therefore go, and I will be with thy mouth, and teach thee what thou shalt say."

Exodus 4:15: "And thou shalt speak unto him, and put words in his mouth: and I will be with thy mouth, and with his mouth, and will teach you what ye shall do."

Exodus 6:1: "Then the LORD said unto Moses, Now shalt thou see what I will do to Pharaoh: for with a strong hand shall he let them go, and with a strong hand shall he drive them out of his land."

Exodus 10:2: "And that thou mayest tell in the ears of thy son, and of thy son's son, what things I have wrought in Egypt, and my signs which I have done among them; that ye may know how that I am the LORD."

Exodus 10:26: "Our cattle also shall go with us; there shall not an hoof be left behind; for thereof must we take to serve the LORD our God; and we know not with what we must serve the LORD, until we come thither."

Exodus 12:26: "And it shall come to pass, when your children shall say unto you, What mean ye by

this service?"

Exodus 13:14: "And it shall be when thy son asketh thee in time to come, saying, What is this? that thou shalt say unto him, By strength of hand the LORD brought us out from Egypt, from the house of bondage:"

Exodus 15:24: "And the people murmured against Moses, saying, What shall we drink?"

Exodus 16:7: "And in the morning, then ye shall see the glory of the LORD; for that he heareth your murmurings against the LORD: and what are we, that ye murmur against us?"

Exodus 16:8: "And Moses said, This shall be, when the LORD shall give you in the evening flesh to eat, and in the morning bread to the full; for that the LORD heareth your murmurings which ye murmur against him: and what are we? your murmurings are not against us, but against the LORD."

Exodus 16:15: "And when the children of Israel saw it, they said one to another, It is manna: for they wist not what it was. And Moses said unto them, This is the bread which the LORD hath given you to eat."

Exodus 17:4: "And Moses cried unto the LORD, saying, What shall I do unto this people? they be almost ready to stone me."

Exodus 18:14: "And when Moses' father in law saw all that he did to the people, he said, What is this thing that thou doest to the people? why sittest thou thyself alone, and all the people stand by thee from morning unto even?"

Exodus 19:4: "Ye have seen what I did unto the Egyptians, and how I bare you on eagles' wings, and brought you unto myself."

Exodus 23:11: "But the seventh year thou shalt let it rest and lie still; that the poor of thy people may eat: and what they leave the beasts of the field shall eat. In like manner thou shalt deal with thy vineyard, and with thy oliveyard."

Exodus 32:1: "And when the people saw that Moses delayed to come down out of the mount, the people gathered themselves together unto Aaron, and said unto him, Up, make us gods, which shall go before us; for as for this Moses, the man that brought us up out of the land of Egypt, we wot not what is become of him."

Exodus 32:21: "And Moses said unto Aaron, What did this people unto thee, that thou hast brought so great a sin upon them?"

Exodus 32:23: "For they said unto me, Make us gods, which shall go before us: for as for this Moses, the man that brought us up out of the land of Egypt, we wot not what is become of him."

Exodus 33:5: "For the LORD had said unto Moses, Say unto the children of Israel, Ye are a stiffnecked people: I will come up into the midst of thee in a moment, and consume thee: therefore now put off thy ornaments from thee, that I may know what to do unto thee."

Leviticus 15:9: "And what saddle soever he rideth upon that hath the issue shall be unclean."

Leviticus 17:3: "What man soever there be of the house of Israel, that killeth an ox, or lamb, or goat, in the camp, or that killeth it out of the camp,"

Leviticus 22:4: "What man soever of the seed of Aaron is a leper, or hath a running issue; he shall not eat of the holy things, until he be clean. And whoso toucheth any thing that is unclean by the dead, or a man whose seed goeth from him;"

Leviticus 25:20: "And if ye shall say, What shall we eat the seventh year? behold, we shall not sow, nor gather in our increase:"

Numbers 9:8: "And Moses said unto them, Stand still, and I will hear what the LORD will command concerning you."

Numbers 10:32: "And it shall be, if thou go with us, yea, it shall be, that what goodness the LORD shall do unto us, the same will we do unto thee."

Numbers 13:18: "And see the land, what it is, and the people that dwelleth therein, whether they be strong or weak, few or many;"

Numbers 13:19: "And what the land is that they dwell in, whether it be good or bad; and what cities they be that they dwell in, whether in tents, or in strong holds;"

Numbers 13:20: "And what the land is, whether it be fat or lean, whether there be wood therein, or not. And be ye of good courage, and bring of the fruit of the land. Now the time was the time of the firstripe grapes."

Numbers 15:34: "And they put him in ward, because it was not declared what should be done to him."

Numbers 16:11: "For which cause both thou and all thy company are gathered together against the LORD: and what is Aaron, that ye murmur against him?"

Numbers 21:14: "Wherefore it is said in the book of the wars of the LORD, What he did in the Red sea, and in the brooks of Arnon,"

Numbers 22:9: "And God came unto Balaam, and said, What men are these with thee?"

Numbers 22:19: "Now therefore, I pray you, tarry ye also here this night, that I may know what the LORD will say unto me more."

Numbers 22:28: "And the LORD opened the mouth of the ass, and she said unto Balaam, What have I done unto thee, that thou hast smitten me these three times?"

Numbers 23:11: "And Balak said unto Balaam, What hast thou done unto me? I took thee to curse mine enemies, and, behold, thou hast blessed them altogether."

Numbers 23:17: "And when he came to him, behold, he stood by his burnt offering, and the princes of Moab with him. And Balak said unto him, What hath the LORD spoken?"

Numbers 23:23: "Surely there is no enchantment against Jacob, neither is there any divination against Israel: according to this time it shall be said of Jacob and of Israel, What hath God wrought!"

Numbers 24:13: "If Balak would give me his house full of silver and gold, I cannot go beyond the commandment of the LORD, to do either good or bad of mine own mind; but what the LORD saith, that will I speak?"

Numbers 24:14: "And now, behold, I go unto my people: come therefore, and I will advertise thee what this people shall do to thy people in the latter days."

Numbers 26:10: "And the earth opened her mouth, and swallowed them up together with Korah, when that company died, what time the fire devoured two hundred and fifty men: and they became a sign."

Numbers 31:50: "We have therefore brought an oblation for the LORD, what every man hath gotten, of jewels of gold, chains, and bracelets, rings, earrings, and tablets, to make an atonement for our souls before the LORD."

Deuteronomy 1:22: "And ye came near unto me every one of you, and said, We will send men before us, and they shall search us out the land, and bring us word again by what way we must go up, and into what cities we shall come."

Deuteronomy 1:33: "Who went in the way before you, to search you out a place to pitch your tents in, in fire by night, to shew you by what way ye should go, and in a cloud by day."

Deuteronomy 3:24: "O Lord GOD, thou hast begun to shew thy servant thy greatness, and thy mighty hand: for what God is there in heaven or in earth, that can do according to thy works, and according to thy might?"

Deuteronomy 4:3: "Your eyes have seen what the LORD did because of Baalpeor: for all the men that followed Baalpeor, the LORD thy God hath destroyed them from among you."

Deuteronomy 4:7: "For what nation is there so great, who hath God so nigh unto them, as the LORD our God is in all things that we call upon him for?"

Deuteronomy 4:8: "And what nation is there so great, that hath statutes and judgments so righteous as all this law, which I set before you this day?"

Deuteronomy 6:20: "And when thy son asketh thee in time to come, saying, What mean the testimonies, and the statutes, and the judgments, which the LORD our God hath commanded you?"

Deuteronomy 7:18: "Thou shalt not be afraid of them: but shalt well remember what the LORD thy God did unto Pharaoh, and unto all Egypt;"

Deuteronomy 8:2: "And thou shalt remember all the way which the LORD thy God led thee these forty years in the wilderness, to humble thee, and to prove thee, to know what was in thine heart, whether thou wouldest keep his commandments, or no."

Deuteronomy 10:12: "And now, Israel, what doth the LORD thy God require of thee, but to fear the LORD thy God, to walk in all his ways, and to love him, and to serve the LORD thy God with all thy heart and with all thy soul,"

Deuteronomy 11:4: "And what he did unto the army of Egypt, unto their horses, and to their chariots; how he made the water of the Red sea to overflow them as they pursued after you, and how the LORD hath destroyed them unto this day;"

Deuteronomy 11:5: "And what he did unto you in the wilderness, until ye came into this place;"

Deuteronomy 11:6: "And what he did unto Dathan and Abiram, the sons of Eliab, the son of Reuben: how the earth opened her mouth, and swallowed them up, and their households, and their tents, and all the substance that was in their possession, in the midst of all Israel:"

Deuteronomy 12:32: "What thing soever I command you, observe to do it: thou shalt not add thereto, nor diminish from it."

Deuteronomy 20:5: "And the officers shall speak unto the people, saying, What man is there that hath built a new house, and hath not dedicated it? let him go and return to his house, lest he die in the battle, and another man dedicate it."

Deuteronomy 20:6: "And what man is he that hath planted a vineyard, and hath not yet eaten of it? let him also go and return unto his house, lest he die in the battle, and another man eat of it."

Deuteronomy 20:7: "And what man is there that hath betrothed a wife, and hath not taken her? let him go and return unto his house, lest he die in the battle, and another man take her."

Deuteronomy 20:8: "And the officers shall speak further unto the people, and they shall say, What man is there that is fearful and fainthearted? let him go and return unto his house, lest his brethren's heart faint as well as his heart."

Deuteronomy 24:9: "Remember what the LORD thy God did unto Miriam by the way, after that ye were come forth out of Egypt."

Deuteronomy 25:17: "Remember what Amalek did unto thee by the way, when ye were come forth out of Egypt;"

Deuteronomy 29:24: "Even all nations shall say, Wherefore hath the LORD done thus unto this land? what meaneth the heat of this great anger?"

Deuteronomy 32:20: "And he said, I will hide my face from them, I will see what their end shall be: for they are a very froward generation, children in whom is no faith."

Joshua 2:10: "For we have heard how the LORD dried up the water of the Red sea for you, when ye came out of Egypt; and what ye did unto the two kings of the Amorites, that were on the other side Jordan, Sihon and Og, whom ye utterly destroyed."

Joshua 4:6: "That this may be a sign among you, that when your children ask their fathers in time to come, saying, What mean ye by these stones?"

Joshua 4:21: "And he spake unto the children of Israel, saying, When your children shall ask their fathers in time to come, saying, What mean these stones?"

Joshua 5:14: "And he said, Nay; but as captain of the host of the LORD am I now come. And Joshua fell on his face to the earth, and did worship, and said unto him, What saith my Lord unto his servant?"

Joshua 7:8: "O LORD, what shall I say, when Israel turneth their backs before their enemies!"

Joshua 7:9: "For the Canaanites and all the inhabitants of the land shall hear of it, and shall environ us round, and cut off our name from the earth: and what wilt thou do unto thy great name?"

Joshua 7:19: "And Joshua said unto Achan, My son, give, I pray thee, glory to the LORD God of Israel, and make confession unto him; and tell me now what thou hast done; hide it not from me."

Joshua 9:3: "And when the inhabitants of Gibeon heard what Joshua had done unto Jericho and to Ai,"

Joshua 15:18: "And it came to pass, as she came unto him, that she moved him to ask of her father a field: and she lighted off her ass; and Caleb said unto her, What wouldest thou?"

Joshua 22:16: "Thus saith the whole congregation of the LORD, What trespass is this that ye have committed against the God of Israel, to turn away this day from following the LORD, in that ye have builded you an altar, that ye might rebel this day against the LORD?"

Joshua 22:24: "And if we have not rather done it for fear of this thing, saying, In time to come your children might speak unto our children, saying, What have ye to do with the LORD God of Israel?"

Joshua 24:7: "And when they cried unto the LORD, he put darkness between you and the Egyptians, and brought the sea upon them, and covered them; and your eyes have seen what I have done in Egypt: and ye dwelt in the wilderness a long season."

Judges 1:14: "And it came to pass, when she came to him, that she moved him to ask of her father a field: and she lighted from off her ass; and Caleb said unto her, What wilt thou?"

Judges 7:11: "And thou shalt hear what they say; and afterward shall thine hands be strengthened to go down unto the host. Then went he down with Phurah his servant unto the outside of the armed men that were in the host."

Judges 8:2: "And he said unto them, What have I done now in comparison of you? Is not the gleaning of the grapes of Ephraim better than the vintage of Abiezer?"

Judges 8:3: "God hath delivered into your hands the princes of Midian, Oreb and Zeeb: and what was I able to do in comparison of you? Then their anger was abated toward him, when he had said that."

Judges 8:18: "Then said he unto Zebah and Zalmunna, What manner of men were they whom ye slew at Tabor? And they answered, As thou art, so were they; each one resembled the children of a king."

Judges 9:48: "And Abimelech gat him up to mount Zalmon, he and all the people that were with him; and Abimelech took an axe in his hand, and cut down a bough from the trees, and took it, and laid it on his shoulder, and said unto the people that were with him, What ye have seen me do, make haste, and do as I have done."

Judges 10:18: "And the people and princes of Gilead said one to another, What man is he that will begin to fight against the children of Ammon? he shall be head over all the inhabitants of Gilead."

Judges 11:12: "And Jephthah sent messengers unto the king of the children of Ammon, saying, What hast thou to do with me, that thou art come against me to fight in my land?"

Judges 13:8: "Then Manoah intreated the LORD, and said, O my Lord, let the man of God which thou didst send come again unto us, and teach us what we shall do unto the child that shall be born."

Judges 13:17: "And Manoah said unto the angel of the LORD, What is thy name, that when thy sayings come to pass we may do thee honour?"

Judges 14:6: "And the Spirit of the LORD came mightily upon him, and he rent him as he would have rent a kid, and he had nothing in his hand: but he told not his father or his mother what he had done."

Judges 14:18: "And the men of the city said unto him on the seventh day before the sun went down, What is sweeter than honey? And what is stronger than a lion? and he said unto them, If ye had not plowed with my heifer, ye had not found out my riddle."

Judges 15:11: "Then three thousand men of Judah went to the top of the rock Etam, and said to Samson, Knowest thou not that the Philistines are rulers over us? what is this that thou hast done unto us? And he said unto them, As they did unto me, so have I done unto them."

Judges 16:5: "And the lords of the Philistines came up unto her, and said unto her, Entice him, and see wherein his great strength lieth, and by what means we may prevail against him, that we may bind him to afflict him; and we will give thee every one of us eleven hundred pieces of silver."

Judges 18:3: "When they were by the house of Micah, they knew the voice of the young man the Levite: and they turned in thither, and said unto him, Who brought thee hither? and what makest thou in this place? and what hast thou here?"

Judges 18:8: "And they came unto their brethren to Zorah and Eshtaol: and their brethren said unto them, What say ye?"

Judges 18:14: "Then answered the five men that went to spy out the country of Laish, and said unto their brethren, Do ye know that there is in these houses an ephod, and teraphim, and a graven image, and a molten image? now therefore consider what ye have to do."

Judges 18:18: "And these went into Micah's house, and fetched the carved image, the ephod, and the teraphim, and the molten image. Then said the priest unto them, What do ye?"

Judges 18:23: "And they cried unto the children of Dan. And they turned their faces, and said unto Micah, What aileth thee, that thou comest with such a company?"

Judges 18:24: "And he said, Ye have taken away my gods which I made, and the priest, and ye are gone away: and what have I more? and what is this that ye say unto me, What aileth thee?"

Judges 19:24: "Behold, here is my daughter a maiden, and his concubine; them I will bring out now, and humble ye them, and do with them what seemeth good unto you: but unto this man do not so vile a thing."

Judges 20:12: "And the tribes of Israel sent men through all the tribe of Benjamin, saying, What wickedness is this that is done among you?"

Judges 21:8: "And they said, What one is there of the tribes of Israel that came not up to Mizpeh to the LORD? And, behold, there came none to the camp from Jabeshgilead to the assembly."

Ruth 2:18: "And she took it up, and went into the city: and her mother in law saw what she had gleaned: and she brought forth, and gave to her that she had reserved after she was sufficed."

Ruth 3:4: "And it shall be, when he lieth down, that thou shalt mark the place where he shall lie, and thou shalt go in, and uncover his feet, and lay thee down; and he will tell thee what thou shalt do."

Ruth 4:5: "Then said Boaz, What day thou buyest the field of the hand of Naomi, thou must buy it also of Ruth the Moabitess, the wife of the dead, to raise up the name of the dead upon his inheritance."

1 Samuel 1:23: "And Elkanah her husband said unto her, Do what seemeth thee good; tarry until thou have weaned him; only the LORD establish his word. So the woman abode, and gave her son suck until she weaned him."

1 Samuel 3:17: "And he said, What is the thing that the LORD hath said unto thee? I pray thee hide it not from me: God do so to thee, and more also, if thou hide any thing from me of all the things that he said unto thee."

1 Samuel 3:18: "And Samuel told him every whit, and hid nothing from him. And he said, It is the LORD: let him do what seemeth him good."

1 Samuel 4:6: "And when the Philistines heard the noise of the shout, they said, What meaneth the noise of this great shout in the camp of the Hebrews? And they understood that the ark of the LORD was come into the camp."

1 Samuel 4:14: "And when Eli heard the noise of the crying, he said, What meaneth the noise of this tumult? And the man came in hastily, and told Eli."

1 Samuel 4:16: "And the man said unto Eli, I am he that came out of the army, and I fled to day out of the army. And he said, What is there done, my son?"

1 Samuel 5:8: "They sent therefore and gathered all the lords of the Philistines unto them, and said, What shall we do with the ark of the God of Israel? And they answered, Let the ark of the God of Israel be carried about unto Gath. And they carried the ark of the God of Israel about thither."

1 Samuel 6:2: "And the Philistines called for the priests and the diviners, saying, What shall we do to the ark of the LORD? tell us wherewith we shall send it to his place."

1 Samuel 6:4: "Then said they, What shall be the trespass offering which we shall return to him? They answered, Five golden emerods, and five golden mice, according to the number of the lords of the Philistines: for one plague was on you all, and on your lords."

1 Samuel 9:7: "Then said Saul to his servant, But, behold, if we go, what shall we bring the man? for the bread is spent in our vessels, and there is not a present to bring to the man of God: what have



we?"

1 Samuel 10:2: "When thou art departed from me to day, then thou shalt find two men by Rachel's sepulchre in the border of Benjamin at Zelzah; and they will say unto thee, The asses which thou wentest to seek are found: and, lo, thy father hath left the care of the asses, and sorroweth for you, saying, What shall I do for my son?"

1 Samuel 10:8: "And thou shalt go down before me to Gilgal; and, behold, I will come down unto thee, to offer burnt offerings, and to sacrifice sacrifices of peace offerings: seven days shalt thou tarry, till I come to thee, and shew thee what thou shalt do."

1 Samuel 10:11: "And it came to pass, when all that knew him beforetime saw that, behold, he prophesied among the prophets, then the people said one to another, What is this that is come unto the son of Kish? Is Saul also among the prophets?"

1 Samuel 10:15: "And Saul's uncle said, Tell me, I pray thee, what Samuel said unto you."

1 Samuel 11:5: "And, behold, Saul came after the herd out of the field; and Saul said, What aileth the people that they weep? And they told him the tidings of the men of Jabesh."

1 Samuel 13:11: "And Samuel said, What hast thou done? And Saul said, Because I saw that the people were scattered from me, and that thou camest not within the days appointed, and that the Philistines gathered themselves together at Michmash;"

1 Samuel 14:40: "Then said he unto all Israel, Be ye on one side, and I and Jonathan my son will be on the other side. And the people said unto Saul, Do what seemeth good unto thee."

1 Samuel 14:43: "Then Saul said to Jonathan, Tell me what thou hast done. And Jonathan told him, and said, I did but taste a little honey with the end of the rod that was in mine hand, and, lo, I must die."

1 Samuel 15:14: "And Samuel said, What meaneth then this bleating of the sheep in mine ears, and the lowing of the oxen which I hear?"

1 Samuel 15:16: "Then Samuel said unto Saul, Stay, and I will tell thee what the LORD hath said to me this night. And he said unto him, Say on."

1 Samuel 16:3: "And call Jesse to the sacrifice, and I will shew thee what thou shalt do: and thou shalt anoint unto me him whom I name unto thee."

1 Samuel 17:26: "And David spake to the men that stood by him, saying, What shall be done to the man that killeth this Philistine, and taketh away the reproach from Israel? for who is this uncircumcised Philistine, that he should defy the armies of the living God?"

1 Samuel 17:29: "And David said, What have I now done? Is there not a cause?"

1 Samuel 18:8: "And Saul was very wroth, and the saying displeased him; and he said, They have ascribed unto David ten thousands, and to me they have ascribed but thousands: and what can he have more but the kingdom?"

1 Samuel 18:18: "And David said unto Saul, Who am I? and what is my life, or my father's family in Israel, that I should be son in law to the king?"

1 Samuel 19:3: "And I will go out and stand beside my father in the field where thou art, and I will commune with my father of thee; and what I see, that I will tell thee."

1 Samuel 20:1: "And David fled from Naioth in Ramah, and came and said before Jonathan, What have I done? what is mine iniquity? and what is my sin before thy father, that he seeketh my life?"

1 Samuel 20:10: "Then said David to Jonathan, Who shall tell me? or what if thy father answer thee roughly?"

1 Samuel 20:32: "And Jonathan answered Saul his father, and said unto him, Wherefore shall he be slain? what hath he done?"

1 Samuel 21:2: "And David said unto Ahimelech the priest, The king hath commanded me a business, and hath said unto me, Let no man know any thing of the business whereabout I send thee, and what I have commanded thee: and I have appointed my servants to such and such a place."

1 Samuel 21:3: "Now therefore what is under thine hand? give me five loaves of bread in mine hand, or what there is present."

1 Samuel 22:3: "And David went thence to Mizpeh of Moab: and he said unto the king of Moab, Let my father and my mother, I pray thee, come forth, and be with you, till I know what God will do for me."

1 Samuel 25:17: "Now therefore know and consider what thou wilt do; for evil is determined against our master, and against all his household: for he is such a son of Belial, that a man cannot speak to him."

1 Samuel 26:18: "And he said, Wherefore doth my lord thus pursue after his servant? for what have I done? or what evil is in mine hand?"

1 Samuel 28:2: "And David said to Achish, Surely thou shalt know what thy servant can do. And Achish said to David, Therefore will I make thee keeper of mine head for ever."

1 Samuel 28:9: "And the woman said unto him, Behold, thou knowest what Saul hath done, how he hath cut off those that have familiar spirits, and the wizards, out of the land: wherefore then layest thou a snare for my life, to cause me to die?"

1 Samuel 28:13: "And the king said unto her, Be not afraid: for what sawest thou? And the woman said unto Saul, I saw gods ascending out of the earth."

1 Samuel 28:14: "And he said unto her, What form is he of? And she said, An old man cometh up; and he is covered with a mantle. And Saul perceived that it was Samuel, and he stooped with his face to the ground, and bowed himself."

1 Samuel 28:15: "And Samuel said to Saul, Why hast thou disquieted me, to bring me up? And Saul answered, I am sore distressed; for the Philistines make war against me, and God is departed from me, and answereth me no more, neither by prophets, nor by dreams: therefore I have called thee, that thou mayest make known unto me what I shall do."

1 Samuel 29:3: "Then said the princes of the Philistines, What do these Hebrews here? And Achish said unto the princes of the Philistines, Is not this David, the servant of Saul the king of Israel, which hath been with me these days, or these years, and I have found no fault in him since he fell unto me unto this day?"

1 Samuel 29:8: "And David said unto Achish, But what have I done? and what hast thou found in thy servant so long as I have been with thee unto this day, that I may not go fight against the enemies of my lord the king?"

2 Samuel 3:24: "Then Joab came to the king, and said, What hast thou done? behold, Abner came unto thee; why is it that thou hast sent him away, and he is quite gone?"

2 Samuel 7:18: "Then went king David in, and sat before the LORD, and he said, Who am I, O Lord GOD? and what is my house, that thou hast brought me hitherto?"

2 Samuel 7:20: "And what can David say more unto thee? for thou, Lord GOD, knowest thy servant."

2 Samuel 7:23: "And what one nation in the earth is like thy people, even like Israel, whom God went to redeem for a people to himself, and to make him a name, and to do for you great things and terrible, for thy land, before thy people, which thou redeemedst to thee from Egypt, from the nations and their gods?"

2 Samuel 9:8: "And he bowed himself, and said, What is thy servant, that thou shouldest look upon such a dead dog as I am?"

2 Samuel 12:21: "Then said his servants unto him, What thing is this that thou hast done? thou didst fast and weep for the child, while it was alive; but when the child was dead, thou didst rise and eat bread."

2 Samuel 14:5: "And the king said unto her, What aileth thee? And she answered, I am indeed a widow woman, and mine husband is dead."

2 Samuel 15:2: "And Absalom rose up early, and stood beside the way of the gate: and it was so, that when any man that had a controversy came to the king for judgment, then Absalom called unto him, and said, Of what city art thou? And he said, Thy servant is of one of the tribes of Israel."

2 Samuel 15:21: "And Ittai answered the king, and said, As the LORD liveth, and as my lord the

king liveth, surely in what place my lord the king shall be, whether in death or life, even there also will thy servant be."

2 Samuel 15:35: "And hast thou not there with thee Zadok and Abiathar the priests? therefore it shall be, that what thing soever thou shalt hear out of the king's house, thou shalt tell it to Zadok and Abiathar the priests."

2 Samuel 16:2: "And the king said unto Ziba, What meanest thou by these? And Ziba said, The asses be for the king's household to ride on; and the bread and summer fruit for the young men to eat; and the wine, that such as be faint in the wilderness may drink."

2 Samuel 16:10: "And the king said, What have I to do with you, ye sons of Zeruiah? so let him curse, because the LORD hath said unto him, Curse David. Who shall then say, Wherefore hast thou done so?"

2 Samuel 16:20: "Then said Absalom to Ahithophel, Give counsel among you what we shall do."

2 Samuel 17:5: "Then said Absalom, Call now Hushai the Archite also, and let us hear likewise what he saith."

2 Samuel 18:4: "And the king said unto them, What seemeth you best I will do. And the king stood by the gate side, and all the people came out by hundreds and by thousands."

2 Samuel 18:21: "Then said Joab to Cushi, Go tell the king what thou hast seen. And Cushi bowed himself unto Joab, and ran."

2 Samuel 18:29: "And the king said, Is the young man Absalom safe? And Ahimaaz answered, When Joab sent the king's servant, and me thy servant, I saw a great tumult, but I knew not what it was."

2 Samuel 19:18: "And there went over a ferry boat to carry over the king's household, and to do what he thought good. And Shimei the son of Gera fell down before the king, as he was come over Jordan;"

2 Samuel 19:22: "And David said, What have I to do with you, ye sons of Zeruiah, that ye should this day be adversaries unto me? shall there any man be put to death this day in Israel? for do not I know that I am this day king over Israel?"

2 Samuel 19:27: "And he hath slandered thy servant unto my lord the king; but my lord the king is as an angel of God: do therefore what is good in thine eyes."

2 Samuel 19:28: "For all of my father's house were but dead men before my lord the king: yet didst thou set thy servant among them that did eat at thine own table. What right therefore have I yet to cry any more unto the king?"

2 Samuel 19:35: "I am this day fourscore years old: and can I discern between good and evil? can thy servant taste what I eat or what I drink? can I hear any more the voice of singing men and singing women? wherefore then should thy servant be yet a burden unto my lord the king?"

2 Samuel 19:37: "Let thy servant, I pray thee, turn back again, that I may die in mine own city, and be buried by the grave of my father and of my mother. But behold thy servant Chimham; let him go over with my lord the king; and do to him what shall seem good unto thee."

2 Samuel 21:3: "Wherefore David said unto the Gibeonites, What shall I do for you? and wherewith shall I make the atonement, that ye may bless the inheritance of the LORD?"

2 Samuel 21:4: "And the Gibeonites said unto him, We will have no silver nor gold of Saul, nor of his house; neither for us shalt thou kill any man in Israel. And he said, What ye shall say, that will I do for you."

2 Samuel 21:11: "And it was told David what Rizpah the daughter of Aiah, the concubine of Saul, had done."

2 Samuel 24:13: "So Gad came to David, and told him, and said unto him, Shall seven years of famine come unto thee in thy land? or wilt thou flee three months before thine enemies, while they pursue thee? or that there be three days' pestilence in thy land? now advise, and see what answer I shall return to him that sent me."

2 Samuel 24:17: "And David spake unto the LORD when he saw the angel that smote the people,

and said, Lo, I have sinned, and I have done wickedly: but these sheep, what have they done? let thine hand, I pray thee, be against me, and against my father's house."

2 Samuel 24:22: "And Araunah said unto David, Let my lord the king take and offer up what seemeth good unto him: behold, here be oxen for burnt sacrifice, and threshing instruments and other instruments of the oxen for wood."

1 Kings 1:16: "And Bathsheba bowed, and did obeisance unto the king. And the king said, What wouldest thou?"

1 Kings 2:5: "Moreover thou knowest also what Joab the son of Zeruah did to me, and what he did to the two captains of the hosts of Israel, unto Abner the son of Ner, and unto Amasa the son of Jether, whom he slew, and shed the blood of war in peace, and put the blood of war upon his girdle that was about his loins, and in his shoes that were on his feet."

1 Kings 2:9: "Now therefore hold him not guiltless: for thou art a wise man, and knowest what thou oughtest to do unto him; but his hoar head bring thou down to the grave with blood."

1 Kings 3:5: "In Gibeon the LORD appeared to Solomon in a dream by night: and God said, Ask what I shall give thee."

1 Kings 8:38: "What prayer and supplication soever be made by any man, or by all thy people Israel, which shall know every man the plague of his own heart, and spread forth his hands toward this house:"

1 Kings 9:13: "And he said, What cities are these which thou hast given me, my brother? And he called them the land of Cabul unto this day."

1 Kings 11:22: "Then Pharaoh said unto him, But what hast thou lacked with me, that, behold, thou seekest to go to thine own country? And he answered, Nothing: howbeit let me go in any wise."

1 Kings 12:9: "And he said unto them, What counsel give ye that we may answer this people, who have spoken to me, saying, Make the yoke which thy father did put upon us lighter?"

1 Kings 12:16: "So when all Israel saw that the king hearkened not unto them, the people answered the king, saying, What portion have we in David? neither have we inheritance in the son of Jesse: to your tents, O Israel: now see to thine own house, David. So Israel departed unto their tents."

1 Kings 13:12: "And their father said unto them, What way went he? For his sons had seen what way the man of God went, which came from Judah."

1 Kings 14:3: "And take with thee ten loaves, and cracknels, and a cruse of honey, and go to him: he shall tell thee what shall become of the child."

1 Kings 14:14: "Moreover the LORD shall raise him up a king over Israel, who shall cut off the house of Jeroboam that day: but what? even now."

1 Kings 16:5: "Now the rest of the acts of Baasha, and what he did, and his might, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

1 Kings 17:18: "And she said unto Elijah, What have I to do with thee, O thou man of God? art thou come unto me to call my sin to remembrance, and to slay my son?"

1 Kings 18:9: "And he said, What have I sinned, that thou wouldest deliver thy servant into the hand of Ahab, to slay me?"

1 Kings 18:13: "Was it not told my lord what I did when Jezebel slew the prophets of the LORD, how I hid an hundred men of the LORD's prophets by fifty in a cave, and fed them with bread and water?"

1 Kings 19:9: "And he came thither unto a cave, and lodged there; and, behold, the word of the LORD came to him, and he said unto him, What doest thou here, Elijah?"

1 Kings 19:13: "And it was so, when Elijah heard it, that he wrapped his face in his mantle, and went out, and stood in the entering in of the cave. And, behold, there came a voice unto him, and said, What doest thou here, Elijah?"

1 Kings 19:20: "And he left the oxen, and ran after Elijah, and said, Let me, I pray thee, kiss my father and my mother, and then I will follow thee. And he said unto him, Go back again: for what have I done to thee?"

1 Kings 20:22: "And the prophet came to the king of Israel, and said unto him, Go, strengthen thyself, and mark, and see what thou doest: for at the return of the year the king of Syria will come up against thee."

1 Kings 22:14: "And Micaiah said, As the LORD liveth, what the LORD saith unto me, that will I speak."

2 Kings 1:7: "And he said unto them, What manner of man was he which came up to meet you, and told you these words?"

2 Kings 2:9: "And it came to pass, when they were gone over, that Elijah said unto Elisha, Ask what I shall do for thee, before I be taken away from thee. And Elisha said, I pray thee, let a double portion of thy spirit be upon me."

2 Kings 3:13: "And Elisha said unto the king of Israel, What have I to do with thee? get thee to the prophets of thy father, and to the prophets of thy mother. And the king of Israel said unto him, Nay: for the LORD hath called these three kings together, to deliver them into the hand of Moab."

2 Kings 4:2: "And Elisha said unto her, What shall I do for thee? tell me, what hast thou in the house? And she said, Thine handmaid hath not any thing in the house, save a pot of oil."

2 Kings 4:13: "And he said unto him, Say now unto her, Behold, thou hast been careful for us with all this care; what is to be done for thee? wouldest thou be spoken for to the king, or to the captain of the host? And she answered, I dwell among mine own people."

2 Kings 4:14: "And he said, What then is to be done for her? And Gehazi answered, Verily she hath no child, and her husband is old."

2 Kings 4:43: "And his servitor said, What, should I set this before an hundred men? He said again, Give the people, that they may eat: for thus saith the LORD, They shall eat, and shall leave thereof."

2 Kings 6:28: "And the king said unto her, What aileth thee? And she answered, This woman said unto me, Give thy son, that we may eat him to day, and we will eat my son to morrow."

2 Kings 6:33: "And while he yet talked with them, behold, the messenger came down unto him: and he said, Behold, this evil is of the LORD; what should I wait for the LORD any longer?"

2 Kings 7:12: "And the king arose in the night, and said unto his servants, I will now shew you what the Syrians have done to us. They know that we be hungry; therefore are they gone out of the camp to hide themselves in the field, saying, When they come out of the city, we shall catch them alive, and get into the city."

2 Kings 8:13: "And Hazael said, But what, is thy servant a dog, that he should do this great thing? And Elisha answered, The LORD hath shewed me that thou shalt be king over Syria."

2 Kings 8:14: "So he departed from Elisha, and came to his master; who said to him, What said Elisha to thee? And he answered, He told me that thou shouldest surely recover."

2 Kings 9:18: "So there went one on horseback to meet him, and said, Thus saith the king, Is it peace? And Jehu said, What hast thou to do with peace? turn thee behind me. And the watchman told, saying, The messenger came to them, but he cometh not again."

2 Kings 9:19: "Then he sent out a second on horseback, which came to them, and said, Thus saith the king, Is it peace? And Jehu answered, What hast thou to do with peace? turn thee behind me."

2 Kings 9:22: "And it came to pass, when Joram saw Jehu, that he said, Is it peace, Jehu? And he answered, What peace, so long as the whoredoms of thy mother Jezebel and her witchcrafts are so many?"

2 Kings 18:19: "And Rabshakeh said unto them, Speak ye now to Hezekiah, Thus saith the great king, the king of Assyria, What confidence is this wherein thou trustest?"

2 Kings 19:11: "Behold, thou hast heard what the kings of Assyria have done to all lands, by destroying them utterly: and shalt thou be delivered?"

2 Kings 20:8: "And Hezekiah said unto Isaiah, What shall be the sign that the LORD will heal me, and that I shall go up into the house of the LORD the third day?"

2 Kings 20:14: "Then came Isaiah the prophet unto king Hezekiah, and said unto him, What said

these men? and from whence came they unto thee? And Hezekiah said, They are come from a far country, even from Babylon."

2 Kings 20:15: "And he said, What have they seen in thine house? And Hezekiah answered, All the things that are in mine house have they seen: there is nothing among my treasures that I have not shewed them."

2 Kings 22:19: "Because thine heart was tender, and thou hast humbled thyself before the LORD, when thou heardest what I spake against this place, and against the inhabitants thereof, that they should become a desolation and a curse, and hast rent thy clothes, and wept before me; I also have heard thee, saith the LORD."

2 Kings 23:17: "Then he said, What title is that that I see? And the men of the city told him, It is the sepulchre of the man of God, which came from Judah, and proclaimed these things that thou hast done against the altar of Bethel."

1 Chronicles 12:32: "And of the children of Issachar, which were men that had understanding of the times, to know what Israel ought to do; the heads of them were two hundred; and all their brethren were at their commandment."

1 Chronicles 17:16: "And David the king came and sat before the LORD, and said, Who am I, O LORD God, and what is mine house, that thou hast brought me hitherto?"

1 Chronicles 17:18: "What can David speak more to thee for the honour of thy servant? for thou knowest thy servant."

1 Chronicles 17:21: "And what one nation in the earth is like thy people Israel, whom God went to redeem to be his own people, to make thee a name of greatness and terribleness, by driving out nations from before thy people whom thou hast redeemed out of Egypt?"

1 Chronicles 21:12: "Either three years' famine; or three months to be destroyed before thy foes, while that the sword of thine enemies overtaketh thee; or else three days the sword of the LORD, even the pestilence, in the land, and the angel of the LORD destroying throughout all the coasts of Israel. Now therefore advise thyself what word I shall bring again to him that sent me."

1 Chronicles 21:17: "And David said unto God, Is it not I that commanded the people to be numbered? even I it is that have sinned and done evil indeed; but as for these sheep, what have they done? let thine hand, I pray thee, O LORD my God, be on me, and on my father's house; but not on thy people, that they should be plagued."

1 Chronicles 29:14: "But who am I, and what is my people, that we should be able to offer so willingly after this sort? for all things come of thee, and of thine own have we given thee."

2 Chronicles 1:7: "In that night did God appear unto Solomon, and said unto him, Ask what I shall give thee."

2 Chronicles 6:29: "Then what prayer or what supplication soever shall be made of any man, or of all thy people Israel, when every one shall know his own sore and his own grief, and shall spread forth his hands in this house:"

2 Chronicles 10:6: "And king Rehoboam took counsel with the old men that had stood before Solomon his father while he yet lived, saying, What counsel give ye me to return answer to this people?"

2 Chronicles 10:9: "And he said unto them, What advice give ye that we may return answer to this people, which have spoken to me, saying, Ease somewhat the yoke that thy father did put upon us?"

2 Chronicles 10:16: "And when all Israel saw that the king would not hearken unto them, the people answered the king, saying, What portion have we in David? and we have none inheritance in the son of Jesse: every man to your tents, O Israel: and now, David, see to thine own house. So all Israel went to their tents."

2 Chronicles 18:13: "And Micaiah said, As the LORD liveth, even what my God saith, that will I speak."

2 Chronicles 19:6: "And said to the judges, Take heed what ye do: for ye judge not for man, but for the LORD, who is with you in the judgment."

2 Chronicles 19:10: "And what cause soever shall come to you of your brethren that dwell in your cities, between blood and blood, between law and commandment, statutes and judgments, ye shall even warn them that they trespass not against the LORD, and so wrath come upon you, and upon your brethren: this do, and ye shall not trespass."

2 Chronicles 20:12: "O our God, wilt thou not judge them? for we have no might against this great company that cometh against us; neither know we what to do: but our eyes are upon thee."

2 Chronicles 24:11: "Now it came to pass, that at what time the chest was brought unto the king's office by the hand of the Levites, and when they saw that there was much money, the king's scribe and the high priest's officer came and emptied the chest, and took it, and carried it to his place again. Thus they did day by day, and gathered money in abundance."

2 Chronicles 25:9: "And Amaziah said to the man of God, But what shall we do for the hundred talents which I have given to the army of Israel? And the man of God answered, The LORD is able to give thee much more than this."

2 Chronicles 32:13: "Know ye not what I and my fathers have done unto all the people of other lands? were the gods of the nations of those lands any ways able to deliver their lands out of mine hand?"

2 Chronicles 35:21: "But he sent ambassadors to him, saying, What have I to do with thee, thou king of Judah? I come not against thee this day, but against the house wherewith I have war: for God commanded me to make haste: forbear thee from meddling with God, who is with me, that he destroy thee not."

Ezra 5:4: "Then said we unto them after this manner, What are the names of the men that make this building?"

Ezra 6:8: "Moreover I make a decree what ye shall do to the elders of these Jews for the building of this house of God: that of the king's goods, even of the tribute beyond the river, forthwith expenses be given unto these men, that they be not hindered."

Ezra 8:17: "And I sent them with commandment unto Iddo the chief at the place Casiphia, and I told them what they should say unto Iddo, and to his brethren the Nethinims, at the place Casiphia, that they should bring unto us ministers for the house of our God."

Ezra 9:10: "And now, O our God, what shall we say after this? for we have forsaken thy commandments,"

Nehemiah 2:4: "Then the king said unto me, For what dost thou make request? So I prayed to the God of heaven."

Nehemiah 2:12: "And I arose in the night, I and some few men with me; neither told I any man what my God had put in my heart to do at Jerusalem: neither was there any beast with me, save the beast that I rode upon."

Nehemiah 2:16: "And the rulers knew not whither I went, or what I did; neither had I as yet told it to the Jews, nor to the priests, nor to the nobles, nor to the rulers, nor to the rest that did the work."

Nehemiah 2:19: "But when Sanballat the Horonite, and Tobiah the servant, the Ammonite, and Geshem the Arabian, heard it, they laughed us to scorn, and despised us, and said, What is this thing that ye do? will ye rebel against the king?"

Nehemiah 4:2: "And he spake before his brethren and the army of Samaria, and said, What do these feeble Jews? will they fortify themselves? will they sacrifice? will they make an end in a day? will they revive the stones out of the heaps of the rubbish which are burned?"

Nehemiah 4:20: "In what place therefore ye hear the sound of the trumpet, resort ye thither unto us: our God shall fight for us."

Nehemiah 13:17: "Then I contended with the nobles of Judah, and said unto them, What evil thing is this that ye do, and profane the sabbath day?"

Esther 1:15: "What shall we do unto the queen Vashti according to law, because she hath not performed the commandment of the king Ahasuerus by the chamberlains?"

Esther 2:1: "After these things, when the wrath of king Ahasuerus was appeased, he remembered

Vashti, and what she had done, and what was decreed against her."

Esther 2:11: "And Mordecai walked every day before the court of the women's house, to know how Esther did, and what should become of her."

Esther 2:15: "Now when the turn of Esther, the daughter of Abihail the uncle of Mordecai, who had taken her for his daughter, was come to go in unto the king, she required nothing but what Hegai the king's chamberlain, the keeper of the women, appointed. And Esther obtained favour in the sight of all them that looked upon her."

Esther 4:5: "Then called Esther for Hatach, one of the king's chamberlains, whom he had appointed to attend upon her, and gave him a commandment to Mordecai, to know what it was, and why it was."

Esther 5:3: "Then said the king unto her, What wilt thou, queen Esther? and what is thy request? it shall be even given thee to the half of the kingdom."

Esther 5:6: "And the king said unto Esther at the banquet of wine, What is thy petition? and it shall be granted thee: and what is thy request? even to the half of the kingdom it shall be performed."

Esther 6:3: "And the king said, What honour and dignity hath been done to Mordecai for this? Then said the king's servants that ministered unto him, There is nothing done for him."

Esther 6:6: "So Haman came in. And the king said unto him, What shall be done unto the man whom the king delighteth to honour? Now Haman thought in his heart, To whom would the king delight to do honour more than to myself?"

Esther 7:2: "And the king said again unto Esther on the second day at the banquet of wine, What is thy petition, queen Esther? and it shall be granted thee: and what is thy request? and it shall be performed, even to the half of the kingdom."

Esther 8:1: "On that day did the king Ahasuerus give the house of Haman the Jews' enemy unto Esther the queen. And Mordecai came before the king; for Esther had told what he was unto her."

Esther 9:5: "Thus the Jews smote all their enemies with the stroke of the sword, and slaughter, and destruction, and did what they would unto those that hated them."

Esther 9:12: "And the king said unto Esther the queen, The Jews have slain and destroyed five hundred men in Shushan the palace, and the ten sons of Haman; what have they done in the rest of the king's provinces? now what is thy petition? and it shall be granted thee: or what is thy request further? and it shall be done."

Job 2:10: "But he said unto her, Thou speakest as one of the foolish women speaketh. What? shall we receive good at the hand of God, and shall we not receive evil? In all this did not Job sin with his lips."

Job 6:11: "What is my strength, that I should hope? and what is mine end, that I should prolong my life?"

Job 6:17: "What time they wax warm, they vanish: when it is hot, they are consumed out of their place."

Job 6:25: "How forcible are right words! but what doth your arguing reprove?"

Job 7:17: "What is man, that thou shouldest magnify him? and that thou shouldest set thine heart upon him?"

Job 7:20: "I have sinned; what shall I do unto thee, O thou preserver of men? why hast thou set me as a mark against thee, so that I am a burden to myself?"

Job 9:12: "Behold, he taketh away, who can hinder him? who will say unto him, What doest thou?"

Job 11:8: "It is as high as heaven; what canst thou do? deeper than hell; what canst thou know?"

Job 13:2: "What ye know, the same do I know also: I am not inferior unto you."

Job 13:13: "Hold your peace, let me alone, that I may speak, and let come on me what will."

Job 15:9: "What knowest thou, that we know not? what understandest thou, which is not in us?"

Job 15:12: "Why doth thine heart carry thee away? and what do thy eyes wink at,"

Job 15:14: "What is man, that he should be clean? and he which is born of a woman, that he should be righteous?"



Job 16:3: "Shall vain words have an end? or what emboldeneth thee that thou answerest?"

Job 16:6: "Though I speak, my grief is not asswaged: and though I forbear, what am I eased?"

Job 21:15: "What is the Almighty, that we should serve him? and what profit should we have, if we pray unto him?"

Job 21:21: "For what pleasure hath he in his house after him, when the number of his months is cut off in the midst?"

Job 21:31: "Who shall declare his way to his face? and who shall repay him what he hath done?"

Job 22:17: "Which said unto God, Depart from us: and what can the Almighty do for them?"

Job 23:5: "I would know the words which he would answer me, and understand what he would say unto me."

Job 23:13: "But he is in one mind, and who can turn him? and what his soul desireth, even that he doeth."

Job 27:8: "For what is the hope of the hypocrite, though he hath gained, when God taketh away his soul?"

Job 31:2: "For what portion of God is there from above? and what inheritance of the Almighty from on high?"

Job 31:14: "What then shall I do when God riseth up? and when he visiteth, what shall I answer him?"

Job 32:11: "Behold, I waited for your words; I gave ear to your reasons, whilst ye searched out what to say."

Job 34:4: "Let us choose to us judgment: let us know among ourselves what is good."

Job 34:7: "What man is like Job, who drinketh up scorning like water?"

Job 34:33: "Should it be according to thy mind? he will recompense it, whether thou refuse, or whether thou choose; and not I: therefore speak what thou knowest."

Job 35:3: "For thou saidst, What advantage will it be unto thee? and, What profit shall I have, if I be cleansed from my sin?"

Job 35:6: "If thou sinnest, what doest thou against him? or if thy transgressions be multiplied, what doest thou unto him?"

Job 35:7: "If thou be righteous, what givest thou him? or what receiveth he of thine hand?"

Job 37:19: "Teach us what we shall say unto him; for we cannot order our speech by reason of darkness."

Job 38:24: "By what way is the light parted, which scattereth the east wind upon the earth?"

Job 39:18: "What time she lifteth up herself on high, she scorneth the horse and his rider."

Job 40:4: "Behold, I am vile; what shall I answer thee? I will lay mine hand upon my mouth."

Psalms 8:4: "What is man, that thou art mindful of him? and the son of man, that thou visitest him?"

Psalms 11:3: "If the foundations be destroyed, what can the righteous do?"

Psalms 25:12: "What man is he that feareth the LORD? him shall he teach in the way that he shall choose."

Psalms 30:9: "What profit is there in my blood, when I go down to the pit? Shall the dust praise thee? shall it declare thy truth?"

Psalms 34:12: "What man is he that desireth life, and loveth many days, that he may see good?"

Psalms 39:4: "LORD, make me to know mine end, and the measure of my days, what it is: that I may know how frail I am."

Psalms 39:7: "And now, Lord, what wait I for? my hope is in thee."

Psalms 44:1: "We have heard with our ears, O God, our fathers have told us, what work thou didst in their days, in the times of old."

Psalms 46:8: "Come, behold the works of the LORD, what desolations he hath made in the earth."

Psalms 50:16: "But unto the wicked God saith, What hast thou to do to declare my statutes, or that thou shouldest take my covenant in thy mouth?"

Psalms 56:3: "What time I am afraid, I will trust in thee."

Psalms 56:4: "In God I will praise his word, in God I have put my trust; I will not fear what flesh can do unto me."

Psalms 56:11: "In God have I put my trust: I will not be afraid what man can do unto me."

Psalms 66:16: "Come and hear, all ye that fear God, and I will declare what he hath done for my soul."

Psalms 85:8: "I will hear what God the LORD will speak: for he will speak peace unto his people, and to his saints: but let them not turn again to folly."

Psalms 89:48: "What man is he that liveth, and shall not see death? shall he deliver his soul from the hand of the grave? Selah."

Psalms 114:5: "What ailed thee, O thou sea, that thou fleddest? thou Jordan, that thou wast driven back?"

Psalms 116:12: "What shall I render unto the LORD for all his benefits toward me?"

Psalms 118:6: "The LORD is on my side; I will not fear: what can man do unto me?"

Psalms 120:3: "What shall be given unto thee? or what shall be done unto thee, thou false tongue?"

Psalms 144:3: "LORD, what is man, that thou takest knowledge of him! or the son of man, that thou makest account of him!"

Proverbs 4:19: "The way of the wicked is as darkness: they know not at what they stumble."

Proverbs 10:32: "The lips of the righteous know what is acceptable: but the mouth of the wicked speaketh frowardness."

Proverbs 23:1: "When thou sittest to eat with a ruler, consider diligently what is before thee:"

Proverbs 25:8: "Go not forth hastily to strive, lest thou know not what to do in the end thereof, when thy neighbour hath put thee to shame."

Proverbs 27:1: "Boast not thyself of to morrow; for thou knowest not what a day may bring forth."

Proverbs 30:4: "Who hath ascended up into heaven, or descended? who hath gathered the wind in his fists? who hath bound the waters in a garment? who hath established all the ends of the earth? what is his name, and what is his son's name, if thou canst tell?"

Proverbs 31:2: "What, my son? and what, the son of my womb? and what, the son of my vows?"

Ecclesiastes 1:3: "What profit hath a man of all his labour which he taketh under the sun?"

Ecclesiastes 2:2: "I said of laughter, It is mad: and of mirth, What doeth it?"

Ecclesiastes 2:3: "I sought in mine heart to give myself unto wine, yet acquainting mine heart with wisdom; and to lay hold on folly, till I might see what was that good for the sons of men, which they should do under the heaven all the days of their life."

Ecclesiastes 2:12: "And I turned myself to behold wisdom, and madness, and folly: for what can the man do that cometh after the king? even that which hath been already done."

Ecclesiastes 2:22: "For what hath man of all his labour, and of the vexation of his heart, wherein he hath laboured under the sun?"

Ecclesiastes 3:9: "What profit hath he that worketh in that wherein he laboureth?"

Ecclesiastes 3:22: "Wherefore I perceive that there is nothing better, than that a man should rejoice in his own works; for that is his portion: for who shall bring him to see what shall be after him?"

Ecclesiastes 5:11: "When goods increase, they are increased that eat them: and what good is there to the owners thereof, saving the beholding of them with their eyes?"

Ecclesiastes 5:16: "And this also is a sore evil, that in all points as he came, so shall he go: and what profit hath he that hath laboured for the wind?"

Ecclesiastes 6:8: "For what hath the wise more than the fool? what hath the poor, that knoweth to walk before the living?"

Ecclesiastes 6:11: "Seeing there be many things that increase vanity, what is man the better?"

Ecclesiastes 6:12: "For who knoweth what is good for man in this life, all the days of his vain life which he spendeth as a shadow? for who can tell a man what shall be after him under the sun?"

Ecclesiastes 7:10: "Say not thou, What is the cause that the former days were better than these? for thou dost not enquire wisely concerning this."

Ecclesiastes 8:4: "Where the word of a king is, there is power: and who may say unto him, What doest thou?"

Ecclesiastes 10:14: "A fool also is full of words: a man cannot tell what shall be; and what shall be after him, who can tell him?"

Ecclesiastes 11:2: "Give a portion to seven, and also to eight; for thou knowest not what evil shall be upon the earth."

Ecclesiastes 11:5: "As thou knowest not what is the way of the spirit, nor how the bones do grow in the womb of her that is with child: even so thou knowest not the works of God who maketh all."

Song of Solomon 5:9: "What is thy beloved more than another beloved, O thou fairest among women? what is thy beloved more than another beloved, that thou dost so charge us?"

Song of Solomon 6:13: "Return, return, O Shulamite; return, return, that we may look upon thee. What will ye see in the Shulamite? As it were the company of two armies."

Song of Solomon 8:8: "We have a little sister, and she hath no breasts: what shall we do for our sister in the day when she shall be spoken for?"

Isaiah 1:11: "To what purpose is the multitude of your sacrifices unto me? saith the LORD: I am full of the burnt offerings of rams, and the fat of fed beasts; and I delight not in the blood of bullocks, or of lambs, or of he goats."

Isaiah 3:15: "What mean ye that ye beat my people to pieces, and grind the faces of the poor? saith the Lord GOD of hosts."

Isaiah 5:4: "What could have been done more to my vineyard, that I have not done in it? wherefore, when I looked that it should bring forth grapes, brought it forth wild grapes?"

Isaiah 5:5: "And now go to; I will tell you what I will do to my vineyard: I will take away the hedge thereof, and it shall be eaten up; and break down the wall thereof, and it shall be trodden down:"

Isaiah 10:3: "And what will ye do in the day of visitation, and in the desolation which shall come from far? to whom will ye flee for help? and where will ye leave your glory?"

Isaiah 14:32: "What shall one then answer the messengers of the nation? That the LORD hath founded Zion, and the poor of his people shall trust in it."

Isaiah 19:12: "Where are they? where are thy wise men? and let them tell thee now, and let them know what the LORD of hosts hath purposed upon Egypt."

Isaiah 21:6: "For thus hath the LORD said unto me, Go, set a watchman, let him declare what he seeth."

Isaiah 21:11: "The burden of Dumah. He calleth to me out of Seir, Watchman, what of the night? Watchman, what of the night?"

Isaiah 22:1: "The burden of the valley of vision. What aileth thee now, that thou art wholly gone up to the housetops?"

Isaiah 22:16: "What hast thou here? and whom hast thou here, that thou hast hewed thee out a sepulchre here, as he that heweth him out a sepulchre on high, and that graveth an habitation for himself in a rock?"

Isaiah 33:13: "Hear, ye that are far off, what I have done; and, ye that are near, acknowledge my might."

Isaiah 36:4: "And Rabshakeh said unto them, Say ye now to Hezekiah, Thus saith the great king, the king of Assyria, What confidence is this wherein thou trustest?"

Isaiah 37:11: "Behold, thou hast heard what the kings of Assyria have done to all lands by destroying them utterly; and shalt thou be delivered?"

Isaiah 38:15: "What shall I say? he hath both spoken unto me, and himself hath done it: I shall go softly all my years in the bitterness of my soul."

Isaiah 38:22: "Hezekiah also had said, What is the sign that I shall go up to the house of the LORD?"

Isaiah 39:3: "Then came Isaiah the prophet unto king Hezekiah, and said unto him, What said these men? and from whence came they unto thee? And Hezekiah said, They are come from a far country

unto me, even from Babylon."

Isaiah 39:4: "Then said he, What have they seen in thine house? And Hezekiah answered, All that is in mine house have they seen: there is nothing among my treasures that I have not shewed them."

Isaiah 40:6: "The voice said, Cry. And he said, What shall I cry? All flesh is grass, and all the goodliness thereof is as the flower of the field:"

Isaiah 40:18: "To whom then will ye liken God? or what likeness will ye compare unto him?"

Isaiah 41:22: "Let them bring them forth, and shew us what shall happen: let them shew the former things, what they be, that we may consider them, and know the latter end of them; or declare us things for to come."

Isaiah 45:9: "Woe unto him that striveth with his Maker! Let the potsherd strive with the potsherds of the earth. Shall the clay say to him that fashioneth it, What makest thou? or thy work, He hath no hands?"

Isaiah 45:10: "Woe unto him that saith unto his father, What begetteth thou? or to the woman, What hast thou brought forth?"

Isaiah 52:5: "Now therefore, what have I here, saith the LORD, that my people is taken away for nought? they that rule over them make them to howl, saith the LORD; and my name continually every day is blasphemed."

Isaiah 64:4: "For since the beginning of the world men have not heard, nor perceived by the ear, neither hath the eye seen, O God, beside thee, what he hath prepared for him that waiteth for him."

Jeremiah 1:11: "Moreover the word of the LORD came unto me, saying, Jeremiah, what seest thou? And I said, I see a rod of an almond tree."

Jeremiah 1:13: "And the word of the LORD came unto me the second time, saying, What seest thou? And I said, I see a seething pot; and the face thereof is toward the north."

Jeremiah 2:5: "Thus saith the LORD, What iniquity have your fathers found in me, that they are gone far from me, and have walked after vanity, and are become vain?"

Jeremiah 2:18: "And now what hast thou to do in the way of Egypt, to drink the waters of Sihor? or what hast thou to do in the way of Assyria, to drink the waters of the river?"

Jeremiah 2:23: "How canst thou say, I am not polluted, I have not gone after Baalim? see thy way in the valley, know what thou hast done: thou art a swift dromedary traversing her ways;"

Jeremiah 4:30: "And when thou art spoiled, what wilt thou do? Though thou clothest thyself with crimson, though thou deckest thee with ornaments of gold, though thou rentest thy face with painting, in vain shalt thou make thyself fair; thy lovers will despise thee, they will seek thy life."

Jeremiah 5:15: "Lo, I will bring a nation upon you from far, O house of Israel, saith the LORD: it is a mighty nation, it is an ancient nation, a nation whose language thou knowest not, neither understandest what they say."

Jeremiah 5:31: "The prophets prophesy falsely, and the priests bear rule by their means; and my people love to have it so: and what will ye do in the end thereof?"

Jeremiah 6:18: "Therefore hear, ye nations, and know, O congregation, what is among them."

Jeremiah 6:20: "To what purpose cometh there to me incense from Sheba, and the sweet cane from a far country? your burnt offerings are not acceptable, nor your sacrifices sweet unto me."

Jeremiah 7:12: "But go ye now unto my place which was in Shiloh, where I set my name at the first, and see what I did to it for the wickedness of my people Israel."

Jeremiah 7:17: "Seest thou not what they do in the cities of Judah and in the streets of Jerusalem?"

Jeremiah 8:6: "I hearkened and heard, but they spake not aright: no man repented him of his wickedness, saying, What have I done? every one turned to his course, as the horse rusheth into the battle."

Jeremiah 8:9: "The wise men are ashamed, they are dismayed and taken: lo, they have rejected the word of the LORD; and what wisdom is in them?"

Jeremiah 9:12: "Who is the wise man, that may understand this? and who is he to whom the mouth of the LORD hath spoken, that he may declare it, for what the land perisheth and is burned up like a

wilderness, that none passeth through?"

Jeremiah 11:15: "What hath my beloved to do in mine house, seeing she hath wrought lewdness with many, and the holy flesh is passed from thee? when thou doest evil, then thou rejoicest."

Jeremiah 13:21: "What wilt thou say when he shall punish thee? for thou hast taught them to be captains, and as chief over thee: shall not sorrows take thee, as a woman in travail?"

Jeremiah 16:10: "And it shall come to pass, when thou shalt shew this people all these words, and they shall say unto thee, Wherefore hath the LORD pronounced all this great evil against us? or what is our iniquity? or what is our sin that we have committed against the LORD our God?"

Jeremiah 18:7: "At what instant I shall speak concerning a nation, and concerning a kingdom, to pluck up, and to pull down, and to destroy it;"

Jeremiah 18:9: "And at what instant I shall speak concerning a nation, and concerning a kingdom, to build and to plant it;"

Jeremiah 23:25: "I have heard what the prophets said, that prophesy lies in my name, saying, I have dreamed, I have dreamed."

Jeremiah 23:28: "The prophet that hath a dream, let him tell a dream; and he that hath my word, let him speak my word faithfully. What is the chaff to the wheat? saith the LORD."

Jeremiah 23:33: "And when this people, or the prophet, or a priest, shall ask thee, saying, What is the burden of the LORD? thou shalt then say unto them, What burden? I will even forsake you, saith the LORD."

Jeremiah 23:35: "Thus shall ye say every one to his neighbour, and every one to his brother, What hath the LORD answered? and, What hath the LORD spoken?"

Jeremiah 23:37: "Thus shalt thou say to the prophet, What hath the LORD answered thee? and, What hath the LORD spoken?"

Jeremiah 24:3: "Then said the LORD unto me, What seest thou, Jeremiah? And I said, Figs; the good figs, very good; and the evil, very evil, that cannot be eaten, they are so evil."

Jeremiah 32:24: "Behold the mounts, they are come unto the city to take it; and the city is given into the hand of the Chaldeans, that fight against it, because of the sword, and of the famine, and of the pestilence: and what thou hast spoken is come to pass; and, behold, thou seest it."

Jeremiah 33:24: "Considerest thou not what this people have spoken, saying, The two families which the LORD hath chosen, he hath even cast them off? thus they have despised my people, that they should be no more a nation before them."

Jeremiah 37:18: "Moreover Jeremiah said unto king Zedekiah, What have I offended against thee, or against thy servants, or against this people, that ye have put me in prison?"

Jeremiah 38:25: "But if the princes hear that I have talked with thee, and they come unto thee, and say unto thee, Declare unto us now what thou hast said unto the king, hide it not from us, and we will not put thee to death; also what the king said unto thee:"

Jeremiah 48:19: "O inhabitant of Aroer, stand by the way, and espy; ask him that fleeth, and her that escapeth, and say, What is done?"

Lamentations 2:13: "What thing shall I take to witness for thee? what thing shall I liken to thee, O daughter of Jerusalem? what shall I equal to thee, that I may comfort thee, O virgin daughter of Zion? for thy breach is great like the sea: who can heal thee?"

Lamentations 5:1: "Remember, O LORD, what is come upon us: consider, and behold our reproach."

Ezekiel 2:8: "But thou, son of man, hear what I say unto thee; Be not thou rebellious like that rebellious house: open thy mouth, and eat that I give thee."

Ezekiel 8:6: "He said furthermore unto me, Son of man, seest thou what they do? even the great abominations that the house of Israel committeth here, that I should go far off from my sanctuary? but turn thee yet again, and thou shalt see greater abominations."

Ezekiel 8:12: "Then said he unto me, Son of man, hast thou seen what the ancients of the house of Israel do in the dark, every man in the chambers of his imagery? for they say, the LORD seeth us

not; the LORD hath forsaken the earth."

Ezekiel 12:9: "Son of man, hath not the house of Israel, the rebellious house, said unto thee, What doest thou?"

Ezekiel 12:22: "Son of man, what is that proverb that ye have in the land of Israel, saying, The days are prolonged, and every vision faileth?"

Ezekiel 15:2: "Son of man, what is the vine tree more than any tree, or than a branch which is among the trees of the forest?"

Ezekiel 17:12: "Say now to the rebellious house, Know ye not what these things mean? tell them, Behold, the king of Babylon is come to Jerusalem, and hath taken the king thereof, and the princes thereof, and led them with him to Babylon;"

Ezekiel 18:2: "What mean ye, that ye use this proverb concerning the land of Israel, saying, The fathers have eaten sour grapes, and the children's teeth are set on edge?"

Ezekiel 19:2: "And say, What is thy mother? A lioness: she lay down among lions, she nourished her whelps among young lions."

Ezekiel 20:29: "Then I said unto them, What is the high place whereunto ye go? And the name whereof is called Bamah unto this day."

Ezekiel 21:13: "Because it is a trial, and what if the sword contemn even the rod? it shall be no more, saith the Lord GOD."

Ezekiel 24:19: "And the people said unto me, Wilt thou not tell us what these things are to us, that thou doest so?"

Ezekiel 27:32: "And in their wailing they shall take up a lamentation for thee, and lament over thee, saying, What city is like Tyrus, like the destroyed in the midst of the sea?"

Ezekiel 33:30: "Also, thou son of man, the children of thy people still are talking against thee by the walls and in the doors of the houses, and speak one to another, every one to his brother, saying, Come, I pray you, and hear what is the word that cometh forth from the LORD."

Ezekiel 37:18: "And when the children of thy people shall speak unto thee, saying, Wilt thou not shew us what thou meanest by these?"

Ezekiel 47:23: "And it shall come to pass, that in what tribe the stranger sojourneth, there shall ye give him his inheritance, saith the Lord GOD."

Daniel 2:22: "He revealeth the deep and secret things: he knoweth what is in the darkness, and the light dwelleth with him."

Daniel 2:23: "I thank thee, and praise thee, O thou God of my fathers, who hast given me wisdom and might, and hast made known unto me now what we desired of thee: for thou hast now made known unto us the king's matter."

Daniel 2:28: "But there is a God in heaven that revealeth secrets, and maketh known to the king Nebuchadnezzar what shall be in the latter days. Thy dream, and the visions of thy head upon thy bed, are these;"

Daniel 2:29: "As for thee, O king, thy thoughts came into thy mind upon thy bed, what should come to pass hereafter: and he that revealeth secrets maketh known to thee what shall come to pass."

Daniel 2:45: "Forasmuch as thou sawest that the stone was cut out of the mountain without hands, and that it brake in pieces the iron, the brass, the clay, the silver, and the gold; the great God hath made known to the king what shall come to pass hereafter: and the dream is certain, and the interpretation thereof sure."

Daniel 3:5: "That at what time ye hear the sound of the cornet, flute, harp, sackbut, psaltery, dulcimer, and all kinds of musick, ye fall down and worship the golden image that Nebuchadnezzar the king hath set up:"

Daniel 3:15: "Now if ye be ready that at what time ye hear the sound of the cornet, flute, harp, sackbut, psaltery, and dulcimer, and all kinds of musick, ye fall down and worship the image which I have made; well: but if ye worship not, ye shall be cast the same hour into the midst of a burning fiery furnace; and who is that God that shall deliver you out of my hands?"

Daniel 4:35: "And all the inhabitants of the earth are reputed as nothing: and he doeth according to his will in the army of heaven, and among the inhabitants of the earth: and none can stay his hand, or say unto him, What doest thou?"

Daniel 8:19: "And he said, Behold, I will make thee know what shall be in the last end of the indignation: for at the time appointed the end shall be."

Daniel 10:14: "Now I am come to make thee understand what shall befall thy people in the latter days: for yet the vision is for many days."

Daniel 12:8: "And I heard, but I understood not: then said I, O my Lord, what shall be the end of these things?"

Hosea 6:4: "O Ephraim, what shall I do unto thee? O Judah, what shall I do unto thee? for your goodness is as a morning cloud, and as the early dew it goeth away."

Hosea 9:5: "What will ye do in the solemn day, and in the day of the feast of the LORD?"

Hosea 9:14: "Give them, O LORD: what wilt thou give? give them a miscarrying womb and dry breasts."

Hosea 10:3: "For now they shall say, We have no king, because we feared not the LORD; what then should a king do to us?"

Hosea 14:8: "Ephraim shall say, What have I to do any more with idols? I have heard him, and observed him: I am like a green fir tree. From me is thy fruit found."

Joel 3:4: "Yea, and what have ye to do with me, O Tyre, and Zidon, and all the coasts of Palestine? will ye render me a recompence? and if ye recompense me, swiftly and speedily will I return your recompence upon your own head;"

Amos 4:13: "For, lo, he that formeth the mountains, and createth the wind, and declareth unto man what is his thought, that maketh the morning darkness, and treadeth upon the high places of the earth, The LORD, The God of hosts, is his name."

Amos 5:18: "Woe unto you that desire the day of the LORD! to what end is it for you? the day of the LORD is darkness, and not light."

Amos 7:8: "And the LORD said unto me, Amos, what seest thou? And I said, A plumbline. Then said the LORD, Behold, I will set a plumbline in the midst of my people Israel: I will not again pass by them any more:"

Amos 8:2: "And he said, Amos, what seest thou? And I said, A basket of summer fruit. Then said the LORD unto me, The end is come upon my people of Israel; I will not again pass by them any more."

Jonah 1:6: "So the shipmaster came to him, and said unto him, What meanest thou, O sleeper? arise, call upon thy God, if so be that God will think upon us, that we perish not."

Jonah 1:8: "Then said they unto him, Tell us, we pray thee, for whose cause this evil is upon us; What is thine occupation? and whence comest thou? what is thy country? and of what people art thou?"

Jonah 1:11: "Then said they unto him, What shall we do unto thee, that the sea may be calm unto us? for the sea wrought, and was tempestuous."

Jonah 4:5: "So Jonah went out of the city, and sat on the east side of the city, and there made him a booth, and sat under it in the shadow, till he might see what would become of the city."

Micah 1:5: "For the transgression of Jacob is all this, and for the sins of the house of Israel. What is the transgression of Jacob? is it not Samaria? and what are the high places of Judah? are they not Jerusalem?"

Micah 6:1: "Hear ye now what the LORD saith; Arise, contend thou before the mountains, and let the hills hear thy voice."

Micah 6:3: "O my people, what have I done unto thee? and wherein have I wearied thee? testify against me."

Micah 6:5: "O my people, remember now what Balak king of Moab consulted, and what Balaam the son of Beor answered him from Shittim unto Gilgal; that ye may know the righteousness of the

LORD."

Micah 6:8: "He hath shewed thee, O man, what is good; and what doth the LORD require of thee, but to do justly, and to love mercy, and to walk humbly with thy God?"

Nahum 1:9: "What do ye imagine against the LORD? he will make an utter end: affliction shall not rise up the second time."

Habakkuk 2:1: "I will stand upon my watch, and set me upon the tower, and will watch to see what he will say unto me, and what I shall answer when I am reproved."

Habakkuk 2:18: "What profiteth the graven image that the maker thereof hath graven it; the molten image, and a teacher of lies, that the maker of his work trusteth therein, to make dumb idols?"

Zechariah 1:9: "Then said I, O my lord, what are these? And the angel that talked with me said unto me, I will shew thee what these be."

Zechariah 1:19: "And I said unto the angel that talked with me, What be these? And he answered me, These are the horns which have scattered Judah, Israel, and Jerusalem."

Zechariah 1:21: "Then said I, What come these to do? And he spake, saying, These are the horns which have scattered Judah, so that no man did lift up his head: but these are come to fray them, to cast out the horns of the Gentiles, which lifted up their horn over the land of Judah to scatter it."

Zechariah 2:2: "Then said I, Whither goest thou? And he said unto me, To measure Jerusalem, to see what is the breadth thereof, and what is the length thereof."

Zechariah 4:2: "And said unto me, What seest thou? And I said, I have looked, and behold a candlestick all of gold, with a bowl upon the top of it, and his seven lamps thereon, and seven pipes to the seven lamps, which are upon the top thereof:"

Zechariah 4:4: "So I answered and spake to the angel that talked with me, saying, What are these, my lord?"

Zechariah 4:5: "Then the angel that talked with me answered and said unto me, Knowest thou not what these be? And I said, No, my lord."

Zechariah 4:11: "Then answered I, and said unto him, What are these two olive trees upon the right side of the candlestick and upon the left side thereof?"

Zechariah 4:12: "And I answered again, and said unto him, What be these two olive branches which through the two golden pipes empty the golden oil out of themselves?"

Zechariah 4:13: "And he answered me and said, Knowest thou not what these be? And I said, No, my lord."

Zechariah 5:2: "And he said unto me, What seest thou? And I answered, I see a flying roll; the length thereof is twenty cubits, and the breadth thereof ten cubits."

Zechariah 5:5: "Then the angel that talked with me went forth, and said unto me, Lift up now thine eyes, and see what is this that goeth forth."

Zechariah 5:6: "And I said, What is it? And he said, This is an ephah that goeth forth. He said moreover, This is their resemblance through all the earth."

Zechariah 6:4: "Then I answered and said unto the angel that talked with me, What are these, my lord?"

Zechariah 13:6: "And one shall say unto him, What are these wounds in thine hands? Then he shall answer, Those with which I was wounded in the house of my friends."

Malachi 1:13: "Ye said also, Behold, what a weariness is it! and ye have snuffed at it, saith the LORD of hosts; and ye brought that which was torn, and the lame, and the sick; thus ye brought an offering: should I accept this of your hand? saith the LORD."

Malachi 3:13: "Your words have been stout against me, saith the LORD. Yet ye say, What have we spoken so much against thee?"

Malachi 3:14: "Ye have said, It is vain to serve God: and what profit is it that we have kept his ordinance, and that we have walked mournfully before the LORD of hosts?"

Matthew 2:7: "Then Herod, when he had privily called the wise men, enquired of them diligently what time the star appeared."



Matthew 5:46: "For if ye love them which love you, what reward have ye? do not even the publicans the same?"

Matthew 5:47: "And if ye salute your brethren only, what do ye more than others? do not even the publicans so?"

Matthew 6:3: "But when thou doest alms, let not thy left hand know what thy right hand doeth:"

Matthew 6:8: "Be not ye therefore like unto them: for your Father knoweth what things ye have need of, before ye ask him."

Matthew 6:25: "Therefore I say unto you, Take no thought for your life, what ye shall eat, or what ye shall drink; nor yet for your body, what ye shall put on. Is not the life more than meat, and the body than raiment?"

Matthew 6:31: "Therefore take no thought, saying, What shall we eat? or, What shall we drink? or, Wherewithal shall we be clothed?"

Matthew 7:2: "For with what judgment ye judge, ye shall be judged: and with what measure ye mete, it shall be measured to you again."

Matthew 7:9: "Or what man is there of you, whom if his son ask bread, will he give him a stone?"

Matthew 8:27: "But the men marvelled, saying, What manner of man is this, that even the winds and the sea obey him!"

Matthew 8:29: "And, behold, they cried out, saying, What have we to do with thee, Jesus, thou Son of God? art thou come hither to torment us before the time?"

Matthew 8:33: "And they that kept them fled, and went their ways into the city, and told every thing, and what was befallen to the possessed of the devils."

Matthew 9:13: "But go ye and learn what that meaneth, I will have mercy, and not sacrifice: for I am not come to call the righteous, but sinners to repentance."

Matthew 10:19: "But when they deliver you up, take no thought how or what ye shall speak: for it shall be given you in that same hour what ye shall speak."

Matthew 10:27: "What I tell you in darkness, that speak ye in light: and what ye hear in the ear, that preach ye upon the housetops."

Matthew 11:7: "And as they departed, Jesus began to say unto the multitudes concerning John, What went ye out into the wilderness to see? A reed shaken with the wind?"

Matthew 11:8: "But what went ye out for to see? A man clothed in soft raiment? behold, they that wear soft clothing are in kings' houses."

Matthew 11:9: "But what went ye out for to see? A prophet? yea, I say unto you, and more than a prophet."

Matthew 12:3: "But he said unto them, Have ye not read what David did, when he was an hungred, and they that were with him;"

Matthew 12:7: "But if ye had known what this meaneth, I will have mercy, and not sacrifice, ye would not have condemned the guiltless."

Matthew 12:11: "And he said unto them, What man shall there be among you, that shall have one sheep, and if it fall into a pit on the sabbath day, will he not lay hold on it, and lift it out?"

Matthew 16:26: "For what is a man profited, if he shall gain the whole world, and lose his own soul? or what shall a man give in exchange for his soul?"

Matthew 17:25: "He saith, Yes. And when he was come into the house, Jesus prevented him, saying, What thinkest thou, Simon? of whom do the kings of the earth take custom or tribute? of their own children, or of strangers?"

Matthew 18:31: "So when his fellowservants saw what was done, they were very sorry, and came and told unto their lord all that was done."

Matthew 19:6: "Wherefore they are no more twain, but one flesh. What therefore God hath joined together, let not man put asunder."

Matthew 19:16: "And, behold, one came and said unto him, Good Master, what good thing shall I do, that I may have eternal life?"

Matthew 19:20: "The young man saith unto him, All these things have I kept from my youth up: what lack I yet?"

Matthew 19:27: "Then answered Peter and said unto him, Behold, we have forsaken all, and followed thee; what shall we have therefore?"

Matthew 20:15: "Is it not lawful for me to do what I will with mine own? Is thine eye evil, because I am good?"

Matthew 20:21: "And he said unto her, What wilt thou? She saith unto him, Grant that these my two sons may sit, the one on thy right hand, and the other on the left, in thy kingdom."

Matthew 20:22: "But Jesus answered and said, Ye know not what ye ask. Are ye able to drink of the cup that I shall drink of, and to be baptized with the baptism that I am baptized with? They say unto him, We are able."

Matthew 20:32: "And Jesus stood still, and called them, and said, What will ye that I shall do unto you?"

Matthew 21:16: "And said unto him, Hearest thou what these say? And Jesus saith unto them, Yea; have ye never read, Out of the mouth of babes and sucklings thou hast perfected praise?"

Matthew 21:23: "And when he was come into the temple, the chief priests and the elders of the people came unto him as he was teaching, and said, By what authority doest thou these things? and who gave thee this authority?"

Matthew 21:24: "And Jesus answered and said unto them, I also will ask you one thing, which if ye tell me, I in like wise will tell you by what authority I do these things."

Matthew 21:27: "And they answered Jesus, and said, We cannot tell. And he said unto them, Neither tell I you by what authority I do these things."

Matthew 21:28: "But what think ye? A certain man had two sons; and he came to the first, and said, Son, go work to day in my vineyard."

Matthew 21:40: "When the lord therefore of the vineyard cometh, what will he do unto those husbandmen?"

Matthew 22:17: "Tell us therefore, What thinkest thou? Is it lawful to give tribute unto Caesar, or not?"

Matthew 22:42: "Saying, What think ye of Christ? whose son is he? They say unto him, The son of David."

Matthew 24:3: "And as he sat upon the mount of Olives, the disciples came unto him privately, saying, Tell us, when shall these things be? and what shall be the sign of thy coming, and of the end of the world?"

Matthew 24:42: "Watch therefore: for ye know not what hour your Lord doth come."

Matthew 24:43: "But know this, that if the goodman of the house had known in what watch the thief would come, he would have watched, and would not have suffered his house to be broken up."

Matthew 26:8: "But when his disciples saw it, they had indignation, saying, To what purpose is this waste?"

Matthew 26:15: "And said unto them, What will ye give me, and I will deliver him unto you? And they covenanted with him for thirty pieces of silver."

Matthew 26:40: "And he cometh unto the disciples, and findeth them asleep, and saith unto Peter, What, could ye not watch with me one hour?"

Matthew 26:62: "And the high priest arose, and said unto him, Answerest thou nothing? what is it which these witness against thee?"

Matthew 26:65: "Then the high priest rent his clothes, saying, He hath spoken blasphemy; what further need have we of witnesses? behold, now ye have heard his blasphemy."

Matthew 26:66: "What think ye? They answered and said, He is guilty of death."

Matthew 26:70: "But he denied before them all, saying, I know not what thou sayest."

Matthew 27:4: "Saying, I have sinned in that I have betrayed the innocent blood. And they said, What is that to us? see thou to that."

Matthew 27:22: "Pilate saith unto them, What shall I do then with Jesus which is called Christ? They all say unto him, Let him be crucified."

Matthew 27:23: "And the governor said, Why, what evil hath he done? But they cried out the more, saying, Let him be crucified."

Mark 1:24: "Saying, Let us alone; what have we to do with thee, thou Jesus of Nazareth? art thou come to destroy us? I know thee who thou art, the Holy One of God."

Mark 1:27: "And they were all amazed, insomuch that they questioned among themselves, saying, What thing is this? what new doctrine is this? for with authority commandeth he even the unclean spirits, and they do obey him."

Mark 2:25: "And he said unto them, Have ye never read what David did, when he had need, and was an hungred, he, and they that were with him?"

Mark 3:8: "And from Jerusalem, and from Idumaea, and from beyond Jordan; and they about Tyre and Sidon, a great multitude, when they had heard what great things he did, came unto him."

Mark 4:24: "And he said unto them, Take heed what ye hear: with what measure ye mete, it shall be measured to you: and unto you that hear shall more be given."

Mark 4:30: "And he said, Whereunto shall we liken the kingdom of God? or with what comparison shall we compare it?"

Mark 4:41: "And they feared exceedingly, and said one to another, What manner of man is this, that even the wind and the sea obey him?"

Mark 5:7: "And cried with a loud voice, and said, What have I to do with thee, Jesus, thou Son of the most high God? I adjure thee by God, that thou torment me not."

Mark 5:9: "And he asked him, What is thy name? And he answered, saying, My name is Legion: for we are many."

Mark 5:14: "And they that fed the swine fled, and told it in the city, and in the country. And they went out to see what it was that was done."

Mark 5:33: "But the woman fearing and trembling, knowing what was done in her, came and fell down before him, and told him all the truth."

Mark 6:2: "And when the sabbath day was come, he began to teach in the synagogue: and many hearing him were astonished, saying, From whence hath this man these things? and what wisdom is this which is given unto him, that even such mighty works are wrought by his hands?"

Mark 6:10: "And he said unto them, In what place soever ye enter into an house, there abide till ye depart from that place."

Mark 6:24: "And she went forth, and said unto her mother, What shall I ask? And she said, The head of John the Baptist."

Mark 6:30: "And the apostles gathered themselves together unto Jesus, and told him all things, both what they had done, and what they had taught."

Mark 8:36: "For what shall it profit a man, if he shall gain the whole world, and lose his own soul?"

Mark 8:37: "Or what shall a man give in exchange for his soul?"

Mark 9:6: "For he wist not what to say; for they were sore afraid."

Mark 9:9: "And as they came down from the mountain, he charged them that they should tell no man what things they had seen, till the Son of man were risen from the dead."

Mark 9:10: "And they kept that saying with themselves, questioning one with another what the rising from the dead should mean."

Mark 9:16: "And he asked the scribes, What question ye with them?"

Mark 9:33: "And he came to Capernaum: and being in the house he asked them, What was it that ye disputed among yourselves by the way?"

Mark 10:3: "And he answered and said unto them, What did Moses command you?"

Mark 10:9: "What therefore God hath joined together, let not man put asunder."

Mark 10:17: "And when he was gone forth into the way, there came one running, and kneeled to him, and asked him, Good Master, what shall I do that I may inherit eternal life?"

Mark 10:32: "And they were in the way going up to Jerusalem; and Jesus went before them: and they were amazed; and as they followed, they were afraid. And he took again the twelve, and began to tell them what things should happen unto him,"

Mark 10:36: "And he said unto them, What would ye that I should do for you?"

Mark 10:38: "But Jesus said unto them, Ye know not what ye ask: can ye drink of the cup that I drink of? and be baptized with the baptism that I am baptized with?"

Mark 10:51: "And Jesus answered and said unto him, What wilt thou that I should do unto thee? The blind man said unto him, Lord, that I might receive my sight."

Mark 11:5: "And certain of them that stood there said unto them, What do ye, loosing the colt?"

Mark 11:24: "Therefore I say unto you, What things soever ye desire, when ye pray, believe that ye receive them, and ye shall have them."

Mark 11:28: "And say unto him, By what authority doest thou these things? and who gave thee this authority to do these things?"

Mark 11:29: "And Jesus answered and said unto them, I will also ask of you one question, and answer me, and I will tell you by what authority I do these things."

Mark 11:33: "And they answered and said unto Jesus, We cannot tell. And Jesus answering saith unto them, Neither do I tell you by what authority I do these things."

Mark 12:9: "What shall therefore the lord of the vineyard do? he will come and destroy the husbandmen, and will give the vineyard unto others."

Mark 13:1: "And as he went out of the temple, one of his disciples saith unto him, Master, see what manner of stones and what buildings are here!"

Mark 13:4: "Tell us, when shall these things be? and what shall be the sign when all these things shall be fulfilled?"

Mark 13:11: "But when they shall lead you, and deliver you up, take no thought beforehand what ye shall speak, neither do ye premeditate: but whatsoever shall be given you in that hour, that speak ye: for it is not ye that speak, but the Holy Ghost."

Mark 13:37: "And what I say unto you I say unto all, Watch."

Mark 14:8: "She hath done what she could: she is come aforehand to anoint my body to the burying."

Mark 14:36: "And he said, Abba, Father, all things are possible unto thee; take away this cup from me: nevertheless not what I will, but what thou wilt."

Mark 14:40: "And when he returned, he found them asleep again, (for their eyes were heavy,) neither wist they what to answer him."

Mark 14:60: "And the high priest stood up in the midst, and asked Jesus, saying, Answerest thou nothing? what is it which these witness against thee?"

Mark 14:63: "Then the high priest rent his clothes, and saith, What need we any further witnesses?"

Mark 14:64: "Ye have heard the blasphemy: what think ye? And they all condemned him to be guilty of death."

Mark 14:68: "But he denied, saying, I know not, neither understand I what thou sayest. And he went out into the porch; and the cock crew."

Mark 15:12: "And Pilate answered and said again unto them, What will ye then that I shall do unto him whom ye call the King of the Jews?"

Mark 15:14: "Then Pilate said unto them, Why, what evil hath he done? And they cried out the more exceedingly, Crucify him."

Mark 15:24: "And when they had crucified him, they parted his garments, casting lots upon them, what every man should take."

Luke 1:29: "And when she saw him, she was troubled at his saying, and cast in her mind what manner of salutation this should be."

Luke 1:66: "And all they that heard them laid them up in their hearts, saying, What manner of child shall this be! And the hand of the Lord was with him."

Luke 3:10: "And the people asked him, saying, What shall we do then?"

Luke 3:12: "Then came also publicans to be baptized, and said unto him, Master, what shall we do?"

Luke 3:14: "And the soldiers likewise demanded of him, saying, And what shall we do? And he said unto them, Do violence to no man, neither accuse any falsely; and be content with your wages."

Luke 4:34: "Saying, Let us alone; what have we to do with thee, thou Jesus of Nazareth? art thou come to destroy us? I know thee who thou art; the Holy One of God."

Luke 4:36: "And they were all amazed, and spake among themselves, saying, What a word is this! for with authority and power he commandeth the unclean spirits, and they come out."

Luke 5:19: "And when they could not find by what way they might bring him in because of the multitude, they went upon the housetop, and let him down through the tiling with his couch into the midst before Jesus."

Luke 5:22: "But when Jesus perceived their thoughts, he answering said unto them, What reason ye in your hearts?"

Luke 6:3: "And Jesus answering them said, Have ye not read so much as this, what David did, when himself was an hungred, and they which were with him;"

Luke 6:11: "And they were filled with madness; and communed one with another what they might do to Jesus."

Luke 6:32: "For if ye love them which love you, what thank have ye? for sinners also love those that love them."

Luke 6:33: "And if ye do good to them which do good to you, what thank have ye? for sinners also do even the same."

Luke 6:34: "And if ye lend to them of whom ye hope to receive, what thank have ye? for sinners also lend to sinners, to receive as much again."

Luke 7:22: "Then Jesus answering said unto them, Go your way, and tell John what things ye have seen and heard; how that the blind see, the lame walk, the lepers are cleansed, the deaf hear, the dead are raised, to the poor the gospel is preached."

Luke 7:24: "And when the messengers of John were departed, he began to speak unto the people concerning John, What went ye out into the wilderness for to see? A reed shaken with the wind?"

Luke 7:25: "But what went ye out for to see? A man clothed in soft raiment? Behold, they which are gorgeously appavelled, and live delicately, are in kings' courts."

Luke 7:26: "But what went ye out for to see? A prophet? Yea, I say unto you, and much more than a prophet."

Luke 7:31: "And the Lord said, Whereunto then shall I liken the men of this generation? and to what are they like?"

Luke 7:39: "Now when the Pharisee which had bidden him saw it, he spake within himself, saying, This man, if he were a prophet, would have known who and what manner of woman this is that toucheth him: for she is a sinner."

Luke 8:9: "And his disciples asked him, saying, What might this parable be?"

Luke 8:25: "And he said unto them, Where is your faith? And they being afraid wondered, saying one to another, What manner of man is this! for he commandeth even the winds and water, and they obey him."

Luke 8:28: "When he saw Jesus, he cried out, and fell down before him, and with a loud voice said, What have I to do with thee, Jesus, thou Son of God most high? I beseech thee, torment me not."

Luke 8:30: "And Jesus asked him, saying, What is thy name? And he said, Legion: because many devils were entered into him."

Luke 8:34: "When they that fed them saw what was done, they fled, and went and told it in the city and in the country."

Luke 8:35: "Then they went out to see what was done; and came to Jesus, and found the man, out of

whom the devils were departed, sitting at the feet of Jesus, clothed, and in his right mind: and they were afraid."

Luke 8:36: "They also which saw it told them by what means he that was possessed of the devils was healed."

Luke 8:47: "And when the woman saw that she was not hid, she came trembling, and falling down before him, she declared unto him before all the people for what cause she had touched him, and how she was healed immediately."

Luke 8:56: "And her parents were astonished: but he charged them that they should tell no man what was done."

Luke 9:25: "For what is a man advantaged, if he gain the whole world, and lose himself, or be cast away?"

Luke 9:33: "And it came to pass, as they departed from him, Peter said unto Jesus, Master, it is good for us to be here: and let us make three tabernacles; one for thee, and one for Moses, and one for Elias: not knowing what he said."

Luke 9:55: "But he turned, and rebuked them, and said, Ye know not what manner of spirit ye are of."

Luke 10:25: "And, behold, a certain lawyer stood up, and tempted him, saying, Master, what shall I do to inherit eternal life?"

Luke 10:26: "He said unto him, What is written in the law? how readest thou?"

Luke 12:11: "And when they bring you unto the synagogues, and unto magistrates, and powers, take ye no thought how or what thing ye shall answer, or what ye shall say:"

Luke 12:12: "For the Holy Ghost shall teach you in the same hour what ye ought to say."

Luke 12:17: "And he thought within himself, saying, What shall I do, because I have no room where to bestow my fruits?"

Luke 12:22: "And he said unto his disciples, Therefore I say unto you, Take no thought for your life, what ye shall eat; neither for the body, what ye shall put on."

Luke 12:29: "And seek not ye what ye shall eat, or what ye shall drink, neither be ye of doubtful mind."

Luke 12:39: "And this know, that if the goodman of the house had known what hour the thief would come, he would have watched, and not have suffered his house to be broken through."

Luke 12:49: "I am come to send fire on the earth; and what will I, if it be already kindled?"

Luke 12:57: "Yea, and why even of yourselves judge ye not what is right?"

Luke 13:18: "Then said he, Unto what is the kingdom of God like? and whereunto shall I resemble it?"

Luke 14:31: "Or what king, going to make war against another king, sitteth not down first, and consulteth whether he be able with ten thousand to meet him that cometh against him with twenty thousand?"

Luke 15:4: "What man of you, having an hundred sheep, if he lose one of them, doth not leave the ninety and nine in the wilderness, and go after that which is lost, until he find it?"

Luke 15:8: "Either what woman having ten pieces of silver, if she lose one piece, doth not light a candle, and sweep the house, and seek diligently till she find it?"

Luke 15:26: "And he called one of the servants, and asked what these things meant."

Luke 16:3: "Then the steward said within himself, What shall I do? for my lord taketh away from me the stewardship: I cannot dig; to beg I am ashamed."

Luke 16:4: "I am resolved what to do, that, when I am put out of the stewardship, they may receive me into their houses."

Luke 18:6: "And the Lord said, Hear what the unjust judge saith."

Luke 18:18: "And a certain ruler asked him, saying, Good Master, what shall I do to inherit eternal life?"

Luke 18:36: "And hearing the multitude pass by, he asked what it meant."

Luke 18:41: "Saying, What wilt thou that I shall do unto thee? And he said, Lord, that I may receive my sight."

Luke 19:48: "And could not find what they might do: for all the people were very attentive to hear him."

Luke 20:2: "And spake unto him, saying, Tell us, by what authority doest thou these things? or who is he that gave thee this authority?"

Luke 20:8: "And Jesus said unto them, Neither tell I you by what authority I do these things."

Luke 20:13: "Then said the lord of the vineyard, What shall I do? I will send my beloved son: it may be they will reverence him when they see him."

Luke 20:15: "So they cast him out of the vineyard, and killed him. What therefore shall the lord of the vineyard do unto them?"

Luke 20:17: "And he beheld them, and said, What is this then that is written, The stone which the builders rejected, the same is become the head of the corner?"

Luke 21:7: "And they asked him, saying, Master, but when shall these things be? and what sign will there be when these things shall come to pass?"

Luke 21:14: "Settle it therefore in your hearts, not to meditate before what ye shall answer:"

Luke 22:49: "When they which were about him saw what would follow, they said unto him, Lord, shall we smite with the sword?"

Luke 22:60: "And Peter said, Man, I know not what thou sayest. And immediately, while he yet spake, the cock crew."

Luke 22:71: "And they said, What need we any further witness? for we ourselves have heard of his own mouth."

Luke 23:22: "And he said unto them the third time, Why, what evil hath he done? I have found no cause of death in him: I will therefore chastise him, and let him go."

Luke 23:31: "For if they do these things in a green tree, what shall be done in the dry?"

Luke 23:34: "Then said Jesus, Father, forgive them; for they know not what they do. And they parted his raiment, and cast lots."

Luke 23:47: "Now when the centurion saw what was done, he glorified God, saying, Certainly this was a righteous man."

Luke 24:17: "And he said unto them, What manner of communications are these that ye have one to another, as ye walk, and are sad?"

Luke 24:19: "And he said unto them, What things? And they said unto him, Concerning Jesus of Nazareth, which was a prophet mighty in deed and word before God and all the people:"

Luke 24:35: "And they told what things were done in the way, and how he was known of them in breaking of bread."

John 1:21: "And they asked him, What then? Art thou Elias? And he saith, I am not. Art thou that prophet? And he answered, No."

John 1:22: "Then said they unto him, Who art thou? that we may give an answer to them that sent us. What sayest thou of thyself?"

John 1:38: "Then Jesus turned, and saw them following, and saith unto them, What seek ye? They said unto him, Rabbi, (which is to say, being interpreted, Master,) where dwellest thou?"

John 2:4: "Jesus saith unto her, Woman, what have I to do with thee? mine hour is not yet come."

John 2:18: "Then answered the Jews and said unto him, What sign shewest thou unto us, seeing that thou doest these things?"

John 2:25: "And needed not that any should testify of man: for he knew what was in man."

John 3:32: "And what he hath seen and heard, that he testifieth; and no man receiveth his testimony."

John 4:22: "Ye worship ye know not what: we know what we worship: for salvation is of the Jews."

John 4:27: "And upon this came his disciples, and marvelled that he talked with the woman: yet no man said, What seekest thou? or, Why talkest thou with her?"

John 5:12: "Then asked they him, What man is that which said unto thee, Take up thy bed, and walk?"

John 5:19: "Then answered Jesus and said unto them, Verily, verily, I say unto you, The Son can do nothing of himself, but what he seeth the Father do: for what things soever he doeth, these also doeth the Son likewise."

John 6:6: "And this he said to prove him: for he himself knew what he would do."

John 6:9: "There is a lad here, which hath five barley loaves, and two small fishes: but what are they among so many?"

John 6:28: "Then said they unto him, What shall we do, that we might work the works of God?"

John 6:30: "They said therefore unto him, What sign shewest thou then, that we may see, and believe thee? what dost thou work?"

John 6:62: "What and if ye shall see the Son of man ascend up where he was before?"

John 7:36: "What manner of saying is this that he said, Ye shall seek me, and shall not find me: and where I am, thither ye cannot come?"

John 7:51: "Doth our law judge any man, before it hear him, and know what he doeth?"

John 8:5: "Now Moses in the law commanded us, that such should be stoned: but what sayest thou?"

John 9:17: "They say unto the blind man again, What sayest thou of him, that he hath opened thine eyes? He said, He is a prophet."

John 9:21: "But by what means he now seeth, we know not; or who hath opened his eyes, we know not: he is of age; ask him: he shall speak for himself."

John 9:26: "Then said they to him again, What did he to thee? how opened he thine eyes?"

John 10:6: "This parable spake Jesus unto them: but they understood not what things they were which he spake unto them."

John 11:46: "But some of them went their ways to the Pharisees, and told them what things Jesus had done."

John 11:47: "Then gathered the chief priests and the Pharisees a council, and said, What do we? for this man doeth many miracles."

John 11:56: "Then sought they for Jesus, and spake among themselves, as they stood in the temple, What think ye, that he will not come to the feast?"

John 12:6: "This he said, not that he cared for the poor; but because he was a thief, and had the bag, and bare what was put therein."

John 12:27: "Now is my soul troubled; and what shall I say? Father, save me from this hour: but for this cause came I unto this hour."

John 12:33: "This he said, signifying what death he should die."

John 12:49: "For I have not spoken of myself; but the Father which sent me, he gave me a commandment, what I should say, and what I should speak."

John 13:7: "Jesus answered and said unto him, What I do thou knowest not now; but thou shalt know hereafter."

John 13:12: "So after he had washed their feet, and had taken his garments, and was set down again, he said unto them, Know ye what I have done to you?"

John 13:28: "Now no man at the table knew for what intent he spake this unto him."

John 15:7: "If ye abide in me, and my words abide in you, ye shall ask what ye will, and it shall be done unto you."

John 15:15: "Henceforth I call you not servants; for the servant knoweth not what his lord doeth: but I have called you friends; for all things that I have heard of my Father I have made known unto you."

John 16:17: "Then said some of his disciples among themselves, What is this that he saith unto us, A little while, and ye shall not see me: and again, a little while, and ye shall see me: and, Because I go to the Father?"



John 16:18: "They said therefore, What is this that he saith, A little while? we cannot tell what he saith."

John 18:21: "Why askest thou me? ask them which heard me, what I have said unto them: behold, they know what I said."

John 18:29: "Pilate then went out unto them, and said, What accusation bring ye against this man?"

John 18:32: "That the saying of Jesus might be fulfilled, which he spake, signifying what death he should die."

John 18:35: "Pilate answered, Am I a Jew? Thine own nation and the chief priests have delivered thee unto me: what hast thou done?"

John 18:38: "Pilate saith unto him, What is truth? And when he had said this, he went out again unto the Jews, and saith unto them, I find in him no fault at all."

John 19:22: "Pilate answered, What I have written I have written."

John 21:19: "This spake he, signifying by what death he should glorify God. And when he had spoken this, he saith unto him, Follow me."

John 21:21: "Peter seeing him saith to Jesus, Lord, and what shall this man do?"

John 21:22: "Jesus saith unto him, If I will that he tarry till I come, what is that to thee? follow thou me."

John 21:23: "Then went this saying abroad among the brethren, that that disciple should not die: yet Jesus said not unto him, He shall not die; but, If I will that he tarry till I come, what is that to thee?"

Acts 2:12: "And they were all amazed, and were in doubt, saying one to another, What meaneth this?"

Acts 2:37: "Now when they heard this, they were pricked in their heart, and said unto Peter and to the rest of the apostles, Men and brethren, what shall we do?"

Acts 4:7: "And when they had set them in the midst, they asked, By what power, or by what name, have ye done this?"

Acts 4:9: "If we this day be examined of the good deed done to the impotent man, by what means he is made whole;"

Acts 4:16: "Saying, What shall we do to these men? for that indeed a notable miracle hath been done by them is manifest to all them that dwell in Jerusalem; and we cannot deny it."

Acts 5:7: "And it was about the space of three hours after, when his wife, not knowing what was done, came in."

Acts 5:35: "And said unto them, Ye men of Israel, take heed to yourselves what ye intend to do as touching these men."

Acts 7:40: "Saying unto Aaron, Make us gods to go before us: for as for this Moses, which brought us out of the land of Egypt, we wot not what is become of him."

Acts 7:49: "Heaven is my throne, and earth is my footstool: what house will ye build me? saith the Lord: or what is the place of my rest?"

Acts 8:30: "And Philip ran thither to him, and heard him read the prophet Esaias, and said, Understandest thou what thou readest?"

Acts 8:36: "And as they went on their way, they came unto a certain water: and the eunuch said, See, here is water; what doth hinder me to be baptized?"

Acts 9:6: "And he trembling and astonished said, Lord, what wilt thou have me to do? And the Lord said unto him, Arise, and go into the city, and it shall be told thee what thou must do."

Acts 10:4: "And when he looked on him, he was afraid, and said, What is it, Lord? And he said unto him, Thy prayers and thine alms are come up for a memorial before God."

Acts 10:6: "He lodgeth with one Simon a tanner, whose house is by the sea side: he shall tell thee what thou oughtest to do."

Acts 10:15: "And the voice spake unto him again the second time, What God hath cleansed, that call not thou common."

Acts 10:17: "Now while Peter doubted in himself what this vision which he had seen should mean,

behold, the men which were sent from Cornelius had made enquiry for Simon's house, and stood before the gate,"

Acts 10:21: "Then Peter went down to the men which were sent unto him from Cornelius; and said, Behold, I am he whom ye seek: what is the cause wherefore ye are come?"

Acts 10:29: "Therefore came I unto you without gainsaying, as soon as I was sent for: I ask therefore for what intent ye have sent for me?"

Acts 11:9: "But the voice answered me again from heaven, What God hath cleansed, that call not thou common."

Acts 11:17: "Forasmuch then as God gave them the like gift as he did unto us, who believed on the Lord Jesus Christ; what was I, that I could withstand God?"

Acts 12:18: "Now as soon as it was day, there was no small stir among the soldiers, what was become of Peter."

Acts 13:12: "Then the deputy, when he saw what was done, believed, being astonished at the doctrine of the Lord."

Acts 14:11: "And when the people saw what Paul had done, they lifted up their voices, saying in the speech of Lycaonia, The gods are come down to us in the likeness of men."

Acts 15:12: "Then all the multitude kept silence, and gave audience to Barnabas and Paul, declaring what miracles and wonders God had wrought among the Gentiles by them."

Acts 16:30: "And brought them out, and said, Sirs, what must I do to be saved?"

Acts 17:18: "Then certain philosophers of the Epicureans, and of the Stoicks, encountered him. And some said, What will this babblers say? other some, He seemeth to be a setter forth of strange gods: because he preached unto them Jesus, and the resurrection."

Acts 17:19: "And they took him, and brought him unto Areopagus, saying, May we know what this new doctrine, whereof thou speakest, is?"

Acts 17:20: "For thou bringest certain strange things to our ears: we would know therefore what these things mean."

Acts 19:3: "And he said unto them, Unto what then were ye baptized? And they said, Unto John's baptism."

Acts 19:35: "And when the townclerk had appeased the people, he said, Ye men of Ephesus, what man is there that knoweth not how that the city of the Ephesians is a worshipper of the great goddess Diana, and of the image which fell down from Jupiter?"

Acts 20:18: "And when they were come to him, he said unto them, Ye know, from the first day that I came into Asia, after what manner I have been with you at all seasons,"

Acts 21:13: "Then Paul answered, What mean ye to weep and to break mine heart? for I am ready not to be bound only, but also to die at Jerusalem for the name of the Lord Jesus."

Acts 21:19: "And when he had saluted them, he declared particularly what things God had wrought among the Gentiles by his ministry."

Acts 21:22: "What is it therefore? the multitude must needs come together: for they will hear that thou art come."

Acts 21:33: "Then the chief captain came near, and took him, and commanded him to be bound with two chains; and demanded who he was, and what he had done."

Acts 22:10: "And I said, What shall I do, LORD? And the Lord said unto me, Arise, and go into Damascus; and there it shall be told thee of all things which are appointed for thee to do."

Acts 22:15: "For thou shalt be his witness unto all men of what thou hast seen and heard."

Acts 22:26: "When the centurion heard that, he went and told the chief captain, saying, Take heed what thou doest: for this man is a Roman."

Acts 23:19: "Then the chief captain took him by the hand, and went with him aside privately, and asked him, What is that thou hast to tell me?"

Acts 23:30: "And when it was told me how that the Jews laid wait for the man, I sent straightway to thee, and gave commandment to his accusers also to say before thee what they had against him.

Farewell."

Acts 23:34: "And when the governor had read the letter, he asked of what province he was. And when he understood that he was of Cilicia;"

Acts 28:22: "But we desire to hear of thee what thou thinkest: for as concerning this sect, we know that every where it is spoken against."

Romans 3:1: "What advantage then hath the Jew? or what profit is there of circumcision?"

Romans 3:3: "For what if some did not believe? shall their unbelief make the faith of God without effect?"

Romans 3:5: "But if our unrighteousness commend the righteousness of God, what shall we say? Is God unrighteous who taketh vengeance? (I speak as a man)"

Romans 3:9: "What then? are we better than they? No, in no wise: for we have before proved both Jews and Gentiles, that they are all under sin;"

Romans 3:19: "Now we know that what things soever the law saith, it saith to them who are under the law: that every mouth may be stopped, and all the world may become guilty before God."

Romans 3:27: "Where is boasting then? It is excluded. By what law? of works? Nay: but by the law of faith."

Romans 4:1: "What shall we say then that Abraham our father, as pertaining to the flesh, hath found?"

Romans 4:3: "For what saith the scripture? Abraham believed God, and it was counted unto him for righteousness."

Romans 4:21: "And being fully persuaded that, what he had promised, he was able also to perform."

Romans 6:1: "What shall we say then? Shall we continue in sin, that grace may abound?"

Romans 6:15: "What then? shall we sin, because we are not under the law, but under grace? God forbid."

Romans 6:21: "What fruit had ye then in those things whereof ye are now ashamed? for the end of those things is death."

Romans 7:7: "What shall we say then? Is the law sin? God forbid. Nay, I had not known sin, but by the law: for I had not known lust, except the law had said, Thou shalt not covet."

Romans 7:15: "For that which I do I allow not: for what I would, that do I not; but what I hate, that do I."

Romans 8:3: "For what the law could not do, in that it was weak through the flesh, God sending his own Son in the likeness of sinful flesh, and for sin, condemned sin in the flesh:"

Romans 8:24: "For we are saved by hope: but hope that is seen is not hope: for what a man seeth, why doth he yet hope for?"

Romans 8:26: "Likewise the Spirit also helpeth our infirmities: for we know not what we should pray for as we ought: but the Spirit itself maketh intercession for us with groanings which cannot be uttered."

Romans 8:27: "And he that searcheth the hearts knoweth what is the mind of the Spirit, because he maketh intercession for the saints according to the will of God."

Romans 8:31: "What shall we then say to these things? If God be for us, who can be against us?"

Romans 9:14: "What shall we say then? Is there unrighteousness with God? God forbid."

Romans 9:22: "What if God, willing to shew his wrath, and to make his power known, endured with much longsuffering the vessels of wrath fitted to destruction:"

Romans 9:30: "What shall we say then? That the Gentiles, which followed not after righteousness, have attained to righteousness, even the righteousness which is of faith."

Romans 10:8: "But what saith it? The word is nigh thee, even in thy mouth, and in thy heart: that is, the word of faith, which we preach;"

Romans 11:2: "God hath not cast away his people which he foreknew. Wot ye not what the scripture saith of Elias? how he maketh intercession to God against Israel saying,"

Romans 11:4: "But what saith the answer of God unto him? I have reserved to myself seven

thousand men, who have not bowed the knee to the image of Baal."

Romans 11:7: "What then? Israel hath not obtained that which he seeketh for; but the election hath obtained it, and the rest were blinded."

Romans 11:15: "For if the casting away of them be the reconciling of the world, what shall the receiving of them be, but life from the dead?"

Romans 12:2: "And be not conformed to this world: but be ye transformed by the renewing of your mind, that ye may prove what is that good, and acceptable, and perfect, will of God."

1 Corinthians 2:11: "For what man knoweth the things of a man, save the spirit of man which is in him? even so the things of God knoweth no man, but the Spirit of God."

1 Corinthians 3:13: "Every man's work shall be made manifest: for the day shall declare it, because it shall be revealed by fire; and the fire shall try every man's work of what sort it is."

1 Corinthians 4:7: "For who maketh thee to differ from another? and what hast thou that thou didst not receive? now if thou didst receive it, why dost thou glory, as if thou hadst not received it?"

1 Corinthians 4:21: "What will ye? shall I come unto you with a rod, or in love, and in the spirit of meekness?"

1 Corinthians 5:12: "For what have I to do to judge them also that are without? do not ye judge them that are within?"

1 Corinthians 6:16: "What? know ye not that he which is joined to an harlot is one body? for two, saith he, shall be one flesh."

1 Corinthians 6:19: "What? know ye not that your body is the temple of the Holy Ghost which is in you, which ye have of God, and ye are not your own?"

1 Corinthians 7:16: "For what knowest thou, O wife, whether thou shalt save thy husband? or how knowest thou, O man, whether thou shalt save thy wife?"

1 Corinthians 7:36: "But if any man think that he behaveth himself uncomely toward his virgin, if she pass the flower of her age, and need so require, let him do what he will, he sinneth not: let them marry."

1 Corinthians 9:18: "What is my reward then? Verily that, when I preach the gospel, I may make the gospel of Christ without charge, that I abuse not my power in the gospel."

1 Corinthians 10:15: "I speak as to wise men; judge ye what I say."

1 Corinthians 10:19: "What say I then? that the idol is any thing, or that which is offered in sacrifice to idols is any thing?"

1 Corinthians 11:22: "What? have ye not houses to eat and to drink in? or despise ye the church of God, and shame them that have not? What shall I say to you? shall I praise you in this? I praise you not."

1 Corinthians 14:6: "Now, brethren, if I come unto you speaking with tongues, what shall I profit you, except I shall speak to you either by revelation, or by knowledge, or by prophesying, or by doctrine?"

1 Corinthians 14:7: "And even things without life giving sound, whether pipe or harp, except they give a distinction in the sounds, how shall it be known what is piped or harped?"

1 Corinthians 14:9: "So likewise ye, except ye utter by the tongue words easy to be understood, how shall it be known what is spoken? for ye shall speak into the air."

1 Corinthians 14:15: "What is it then? I will pray with the spirit, and I will pray with the understanding also: I will sing with the spirit, and I will sing with the understanding also."

1 Corinthians 14:16: "Else when thou shalt bless with the spirit, how shall he that occupieth the room of the unlearned say Amen at thy giving of thanks, seeing he understandeth not what thou sayest?"

1 Corinthians 14:36: "What? came the word of God out from you? or came it unto you only?"

1 Corinthians 15:2: "By which also ye are saved, if ye keep in memory what I preached unto you, unless ye have believed in vain."

1 Corinthians 15:10: "But by the grace of God I am what I am: and his grace which was bestowed

upon me was not in vain; but I laboured more abundantly than they all: yet not I, but the grace of God which was with me."

1 Corinthians 15:29: "Else what shall they do which are baptized for the dead, if the dead rise not at all? why are they then baptized for the dead?"

1 Corinthians 15:32: "If after the manner of men I have fought with beasts at Ephesus, what advantageth it me, if the dead rise not? let us eat and drink; for to morrow we die."

1 Corinthians 15:35: "But some man will say, How are the dead raised up? and with what body do they come?"

2 Corinthians 1:13: "For we write none other things unto you, than what ye read or acknowledge; and I trust ye shall acknowledge even to the end;"

2 Corinthians 6:14: "Be ye not unequally yoked together with unbelievers: for what fellowship hath righteousness with unrighteousness? and what communion hath light with darkness?"

2 Corinthians 6:15: "And what concord hath Christ with Belial? or what part hath he that believeth with an infidel?"

2 Corinthians 6:16: "And what agreement hath the temple of God with idols? for ye are the temple of the living God; as God hath said, I will dwell in them, and walk in them; and I will be their God, and they shall be my people."

2 Corinthians 7:11: "For behold this selfsame thing, that ye sorrowed after a godly sort, what carefulness it wrought in you, yea, what clearing of yourselves, yea, what indignation, yea, what fear, yea, what vehement desire, yea, what zeal, yea, what revenge! In all things ye have approved yourselves to be clear in this matter."

2 Corinthians 11:12: "But what I do, that I will do, that I may cut off occasion from them which desire occasion; that wherein they glory, they may be found even as we."

2 Corinthians 12:13: "For what is it wherein ye were inferior to other churches, except it be that I myself was not burdensome to you? forgive me this wrong."

Galatians 4:30: "Nevertheless what saith the scripture? Cast out the bondwoman and her son: for the son of the bondwoman shall not be heir with the son of the freewoman."

Ephesians 1:18: "The eyes of your understanding being enlightened; that ye may know what is the hope of his calling, and what the riches of the glory of his inheritance in the saints,"

Ephesians 1:19: "And what is the exceeding greatness of his power to us-ward who believe, according to the working of his mighty power,"

Ephesians 3:9: "And to make all men see what is the fellowship of the mystery, which from the beginning of the world hath been hid in God, who created all things by Jesus Christ:"

Ephesians 3:18: "May be able to comprehend with all saints what is the breadth, and length, and depth, and height;"

Ephesians 4:9: "(Now that he ascended, what is it but that he also descended first into the lower parts of the earth?"

Ephesians 5:10: "Proving what is acceptable unto the Lord."

Ephesians 5:17: "Wherefore be ye not unwise, but understanding what the will of the Lord is."

Philippians 1:18: "What then? notwithstanding, every way, whether in pretence, or in truth, Christ is preached; and I therein do rejoice, yea, and will rejoice."

Philippians 1:22: "But if I live in the flesh, this is the fruit of my labour: yet what I shall choose I wot not."

Philippians 3:7: "But what things were gain to me, those I counted loss for Christ."

Colossians 1:27: "To whom God would make known what is the riches of the glory of this mystery among the Gentiles; which is Christ in you, the hope of glory:"

Colossians 2:1: "For I would that ye knew what great conflict I have for you, and for them at Laodicea, and for as many as have not seen my face in the flesh;"

1 Thessalonians 1:5: "For our gospel came not unto you in word only, but also in power, and in the Holy Ghost, and in much assurance; as ye know what manner of men we were among you for your

sake."

1 Thessalonians 1:9: "For they themselves shew of us what manner of entering in we had unto you, and how ye turned to God from idols to serve the living and true God;"

1 Thessalonians 2:19: "For what is our hope, or joy, or crown of rejoicing? Are not even ye in the presence of our Lord Jesus Christ at his coming?"

1 Thessalonians 3:9: "For what thanks can we render to God again for you, for all the joy wherewith we joy for your sakes before our God;"

1 Thessalonians 4:2: "For ye know what commandments we gave you by the Lord Jesus."

2 Thessalonians 2:6: "And now ye know what withholdeth that he might be revealed in his time."

1 Timothy 1:7: "Desiring to be teachers of the law; understanding neither what they say, nor whereof they affirm."

2 Timothy 2:7: "Consider what I say; and the Lord give thee understanding in all things."

2 Timothy 3:11: "Persecutions, afflictions, which came unto me at Antioch, at Iconium, at Lystra; what persecutions I endured: but out of them all the Lord delivered me."

Hebrews 2:6: "But one in a certain place testified, saying, What is man, that thou art mindful of him? or the son of man that thou visitest him?"

Hebrews 7:11: "If therefore perfection were by the Levitical priesthood, (for under it the people received the law,) what further need was there that another priest should rise after the order of Melchisedec, and not be called after the order of Aaron?"

Hebrews 11:32: "And what shall I more say? for the time would fail me to tell of Gedeon, and of Barak, and of Samson, and of Jephthae; of David also, and Samuel, and of the prophets:"

Hebrews 12:7: "If ye endure chastening, God dealeth with you as with sons; for what son is he whom the father chasteneth not?"

Hebrews 13:6: "So that we may boldly say, The Lord is my helper, and I will not fear what man shall do unto me."

James 1:24: "For he beholdeth himself, and goeth his way, and straightway forgetteth what manner of man he was."

James 2:14: "What doth it profit, my brethren, though a man say he hath faith, and have not works? can faith save him?"

James 2:16: "And one of you say unto them, Depart in peace, be ye warmed and filled; notwithstanding ye give them not those things which are needful to the body; what doth it profit?"

James 4:14: "Whereas ye know not what shall be on the morrow. For what is your life? It is even a vapour, that appeareth for a little time, and then vanisheth away."

1 Peter 1:11: "Searching what, or what manner of time the Spirit of Christ which was in them did signify, when it testified beforehand the sufferings of Christ, and the glory that should follow."

1 Peter 2:20: "For what glory is it, if, when ye be buffeted for your faults, ye shall take it patiently? but if, when ye do well, and suffer for it, ye take it patiently, this is acceptable with God."

1 Peter 4:17: "For the time is come that judgment must begin at the house of God: and if it first begin at us, what shall the end be of them that obey not the gospel of God?"

2 Peter 3:11: "Seeing then that all these things shall be dissolved, what manner of persons ought ye to be in all holy conversation and godliness,"

1 John 3:1: "Behold, what manner of love the Father hath bestowed upon us, that we should be called the sons of God: therefore the world knoweth us not, because it knew him not."

1 John 3:2: "Beloved, now are we the sons of God, and it doth not yet appear what we shall be: but we know that, when he shall appear, we shall be like him; for we shall see him as he is."

Jude 1:10: "But these speak evil of those things which they know not: but what they know naturally, as brute beasts, in those things they corrupt themselves."

Revelation 1:11: "Saying, I am Alpha and Omega, the first and the last: and, What thou seest, write in a book, and send it unto the seven churches which are in Asia; unto Ephesus, and unto Smyrna, and unto Pergamos, and unto Thyatira, and unto Sardis, and unto Philadelphia, and unto Laodicea."

Revelation 2:7: "He that hath an ear, let him hear what the Spirit saith unto the churches; To him that overcometh will I give to eat of the tree of life, which is in the midst of the paradise of God."

Revelation 2:11: "He that hath an ear, let him hear what the Spirit saith unto the churches; He that overcometh shall not be hurt of the second death."

Revelation 2:17: "He that hath an ear, let him hear what the Spirit saith unto the churches; To him that overcometh will I give to eat of the hidden manna, and will give him a white stone, and in the stone a new name written, which no man knoweth saving he that receiveth it."

Revelation 2:29: "He that hath an ear, let him hear what the Spirit saith unto the churches."

Revelation 3:3: "Remember therefore how thou hast received and heard, and hold fast, and repent. If therefore thou shalt not watch, I will come on thee as a thief, and thou shalt not know what hour I will come upon thee."

Revelation 3:6: "He that hath an ear, let him hear what the Spirit saith unto the churches."

Revelation 3:13: "He that hath an ear, let him hear what the Spirit saith unto the churches."

Revelation 3:22: "He that hath an ear, let him hear what the Spirit saith unto the churches."

Revelation 7:13: "And one of the elders answered, saying unto me, What are these which are arrayed in white robes? and whence came they?"

Revelation 18:18: "And cried when they saw the smoke of her burning, saying, What city is like unto this great city!"

## WHATSOEVER

Occurrences: 139

Genesis 2:19: "And out of the ground the LORD God formed every beast of the field, and every fowl of the air; and brought them unto Adam to see what he would call them: and whatsoever Adam called every living creature, that was the name thereof."

Genesis 8:19: "Every beast, every creeping thing, and every fowl, and whatsoever creepeth upon the earth, after their kinds, went forth out of the ark."

Genesis 19:12: "And the men said unto Lot, Hast thou here any besides? son in law, and thy sons, and thy daughters, and whatsoever thou hast in the city, bring them out of this place:"

Genesis 31:16: "For all the riches which God hath taken from our father, that is ours, and our children's: now then, whatsoever God hath said unto thee, do."

Genesis 39:22: "And the keeper of the prison committed to Joseph's hand all the prisoners that were in the prison; and whatsoever they did there, he was the doer of it."

Exodus 13:2: "Sanctify unto me all the firstborn, whatsoever openeth the womb among the children of Israel, both of man and of beast: it is mine."

Exodus 21:30: "If there be laid on him a sum of money, then he shall give for the ransom of his life whatsoever is laid upon him."

Exodus 29:37: "Seven days thou shalt make an atonement for the altar, and sanctify it; and it shall be an altar most holy: whatsoever toucheth the altar shall be holy."

Exodus 30:29: "And thou shalt sanctify them, that they may be most holy: whatsoever toucheth them shall be holy."

Leviticus 5:3: "Or if he touch the uncleanness of man, whatsoever uncleanness it be that a man shall be defiled withal, and it be hid from him; when he knoweth of it, then he shall be guilty."

Leviticus 5:4: "Or if a soul swear, pronouncing with his lips to do evil, or to do good, whatsoever it be that a man shall pronounce with an oath, and it be hid from him; when he knoweth of it, then he shall be guilty in one of these."

Leviticus 6:27: "Whatsoever shall touch the flesh thereof shall be holy: and when there is sprinkled of the blood thereof upon any garment, thou shalt wash that whereon it was sprinkled in the holy place."

Leviticus 7:27: "Whatsoever soul it be that eateth any manner of blood, even that soul shall be cut off from his people."

Leviticus 11:3: "Whatsoever parteth the hoof, and is clovenfooted, and cheweth the cud, among the beasts, that shall ye eat."

Leviticus 11:9: "These shall ye eat of all that are in the waters: whatsoever hath fins and scales in the waters, in the seas, and in the rivers, them shall ye eat."

Leviticus 11:12: "Whatsoever hath no fins nor scales in the waters, that shall be an abomination unto you."

Leviticus 11:27: "And whatsoever goeth upon his paws, among all manner of beasts that go on all four, those are unclean unto you: whoso toucheth their carcase shall be unclean until the even."

Leviticus 11:32: "And upon whatsoever any of them, when they are dead, doth fall, it shall be unclean; whether it be any vessel of wood, or raiment, or skin, or sack, whatsoever vessel it be, wherein any work is done, it must be put into water, and it shall be unclean until the even; so it shall be cleansed."

Leviticus 11:33: "And every earthen vessel, whereinto any of them falleth, whatsoever is in it shall be unclean; and ye shall break it."

Leviticus 11:42: "Whatsoever goeth upon the belly, and whatsoever goeth upon all four, or whatsoever hath more feet among all creeping things that creep upon the earth, them ye shall not eat; for they are an abomination."

Leviticus 13:58: "And the garment, either warp, or woof, or whatsoever thing of skin it be, which thou shalt wash, if the plague be departed from them, then it shall be washed the second time, and shall be clean."

Leviticus 15:26: "Every bed whereon she lieth all the days of her issue shall be unto her as the bed of her separation: and whatsoever she sitteth upon shall be unclean, as the uncleanness of her separation."

Leviticus 17:8: "And thou shalt say unto them, Whatsoever man there be of the house of Israel, or of the strangers which sojourn among you, that offereth a burnt offering or sacrifice,"

Leviticus 17:10: "And whatsoever man there be of the house of Israel, or of the strangers that sojourn among you, that eateth any manner of blood; I will even set my face against that soul that eateth blood, and will cut him off from among his people."

Leviticus 17:13: "And whatsoever man there be of the children of Israel, or of the strangers that sojourn among you, which hunteth and catcheth any beast or fowl that may be eaten; he shall even pour out the blood thereof, and cover it with dust."

Leviticus 21:18: "For whatsoever man he be that hath a blemish, he shall not approach: a blind man, or a lame, or he that hath a flat nose, or any thing superfluous,"

Leviticus 22:5: "Or whosoever toucheth any creeping thing, whereby he may be made unclean, or a man of whom he may take uncleanness, whatsoever uncleanness he hath;"

Leviticus 22:18: "Speak unto Aaron, and to his sons, and unto all the children of Israel, and say unto them, Whatsoever he be of the house of Israel, or of the strangers in Israel, that will offer his oblation for all his vows, and for all his freewill offerings, which they will offer unto the LORD for a burnt offering;"

Leviticus 22:20: "But whatsoever hath a blemish, that shall ye not offer: for it shall not be acceptable for you."

Leviticus 23:29: "For whatsoever soul it be that shall not be afflicted in that same day, he shall be cut off from among his people."

Leviticus 23:30: "And whatsoever soul it be that doeth any work in that same day, the same soul will I destroy from among his people."

Leviticus 27:32: "And concerning the tithe of the herd, or of the flock, even of whatsoever passeth under the rod, the tenth shall be holy unto the LORD."

Numbers 5:10: "And every man's hallowed things shall be his: whatsoever any man giveth the priest, it shall be his."

Numbers 18:13: "And whatsoever is first ripe in the land, which they shall bring unto the LORD,



shall be thine; every one that is clean in thine house shall eat of it."

Numbers 19:22: "And whatsoever the unclean person toucheth shall be unclean; and the soul that toucheth it shall be unclean until even."

Numbers 22:17: "For I will promote thee unto very great honour, and I will do whatsoever thou sayest unto me: come therefore, I pray thee, curse me this people."

Numbers 23:3: "And Balaam said unto Balak, Stand by thy burnt offering, and I will go: peradventure the LORD will come to meet me: and whatsoever he sheweth me I will tell thee. And he went to an high place."

Numbers 30:12: "But if her husband hath utterly made them void on the day he heard them; then whatsoever proceeded out of her lips concerning her vows, or concerning the bond of her soul, shall not stand: her husband hath made them void; and the LORD shall forgive her."

Deuteronomy 2:37: "Only unto the land of the children of Ammon thou camest not, nor unto any place of the river Jabbok, nor unto the cities in the mountains, nor unto whatsoever the LORD our God forbad us."

Deuteronomy 12:8: "Ye shall not do after all the things that we do here this day, every man whatsoever is right in his own eyes."

Deuteronomy 12:15: "Notwithstanding thou mayest kill and eat flesh in all thy gates, whatsoever thy soul lusteth after, according to the blessing of the LORD thy God which he hath given thee: the unclean and the clean may eat thereof, as of the roebuck, and as of the hart."

Deuteronomy 12:20: "When the LORD thy God shall enlarge thy border, as he hath promised thee, and thou shalt say, I will eat flesh, because thy soul longeth to eat flesh; thou mayest eat flesh, whatsoever thy soul lusteth after."

Deuteronomy 12:21: "If the place which the LORD thy God hath chosen to put his name there be too far from thee, then thou shalt kill of thy herd and of thy flock, which the LORD hath given thee, as I have commanded thee, and thou shalt eat in thy gates whatsoever thy soul lusteth after."

Deuteronomy 14:10: "And whatsoever hath not fins and scales ye may not eat; it is unclean unto you."

Deuteronomy 14:26: "And thou shalt bestow that money for whatsoever thy soul lusteth after, for oxen, or for sheep, or for wine, or for strong drink, or for whatsoever thy soul desireth: and thou shalt eat there before the LORD thy God, and thou shalt rejoice, thou, and thine household,"

Judges 10:15: "And the children of Israel said unto the LORD, We have sinned: do thou unto us whatsoever seemeth good unto thee; deliver us only, we pray thee, this day."

Judges 11:31: "Then it shall be, that whatsoever cometh forth of the doors of my house to meet me, when I return in peace from the children of Ammon, shall surely be the LORD's, and I will offer it up for a burnt offering."

1 Samuel 14:36: "And Saul said, Let us go down after the Philistines by night, and spoil them until the morning light, and let us not leave a man of them. And they said, Do whatsoever seemeth good unto thee. Then said the priest, Let us draw near hither unto God."

1 Samuel 20:4: "Then said Jonathan unto David, Whatsoever thy soul desireth, I will even do it for thee."

1 Samuel 25:8: "Ask thy young men, and they will shew thee. Wherefore let the young men find favour in thine eyes: for we come in a good day: give, I pray thee, whatsoever cometh to thine hand unto thy servants, and to thy son David."

2 Samuel 3:36: "And all the people took notice of it, and it pleased them: as whatsoever the king did pleased all the people."

2 Samuel 15:15: "And the king's servants said unto the king, Behold, thy servants are ready to do whatsoever my lord the king shall appoint."

2 Samuel 19:38: "And the king answered, Chimham shall go over with me, and I will do to him that which shall seem good unto thee: and whatsoever thou shalt require of me, that will I do for thee."

1 Kings 8:37: "If there be in the land famine, if there be pestilence, blasting, mildew, locust, or if

there be caterpillar; if their enemy besiege them in the land of their cities; whatsoever plague, whatsoever sickness there be;"

1 Kings 10:13: "And king Solomon gave unto the queen of Sheba all her desire, whatsoever she asked, beside that which Solomon gave her of his royal bounty. So she turned and went to her own country, she and her servants."

1 Kings 20:6: "Yet I will send my servants unto thee to morrow about this time, and they shall search thine house, and the houses of thy servants; and it shall be, that whatsoever is pleasant in thine eyes, they shall put it in their hand, and take it away."

2 Chronicles 6:28: "If there be dearth in the land, if there be pestilence, if there be blasting, or mildew, locusts, or caterpillars; if their enemies besiege them in the cities of their land; whatsoever sore or whatsoever sickness there be:"

2 Chronicles 9:12: "And king Solomon gave to the queen of Sheba all her desire, whatsoever she asked, beside that which she had brought unto the king. So she turned, and went away to her own land, she and her servants."

Ezra 7:18: "And whatsoever shall seem good to thee, and to thy brethren, to do with the rest of the silver and the gold, that do after the will of your God."

Ezra 7:20: "And whatsoever more shall be needful for the house of thy God, which thou shalt have occasion to bestow, bestow it out of the king's treasure house."

Ezra 7:21: "And I, even I Artaxerxes the king, do make a decree to all the treasurers which are beyond the river, that whatsoever Ezra the priest, the scribe of the law of the God of heaven, shall require of you, it be done speedily,"

Ezra 7:23: "Whatsoever is commanded by the God of heaven, let it be diligently done for the house of the God of heaven: for why should there be wrath against the realm of the king and his sons?"

Esther 2:13: "Then thus came every maiden unto the king; whatsoever she desired was given her to go with her out of the house of the women unto the king's house."

Job 37:12: "And it is turned round about by his counsels: that they may do whatsoever he commandeth them upon the face of the world in the earth."

Job 41:11: "Who hath prevented me, that I should repay him? whatsoever is under the whole heaven is mine."

Psalms 1:3: "And he shall be like a tree planted by the rivers of water, that bringeth forth his fruit in his season; his leaf also shall not wither; and whatsoever he doeth shall prosper."

Psalms 8:8: "The fowl of the air, and the fish of the sea, and whatsoever passeth through the paths of the seas."

Psalms 115:3: "But our God is in the heavens: he hath done whatsoever he hath pleased."

Psalms 135:6: "Whatsoever the LORD pleased, that did he in heaven, and in earth, in the seas, and all deep places."

Ecclesiastes 2:10: "And whatsoever mine eyes desired I kept not from them, I withheld not my heart from any joy; for my heart rejoiced in all my labour: and this was my portion of all my labour."

Ecclesiastes 3:14: "I know that, whatsoever God doeth, it shall be for ever: nothing can be put to it, nor any thing taken from it: and God doeth it, that men should fear before him."

Ecclesiastes 8:3: "Be not hasty to go out of his sight: stand not in an evil thing; for he doeth whatsoever pleaseth him."

Ecclesiastes 9:10: "Whatsoever thy hand findeth to do, do it with thy might; for there is no work, nor device, nor knowledge, nor wisdom, in the grave, whither thou goest."

Jeremiah 1:7: "But the LORD said unto me, Say not, I am a child: for thou shalt go to all that I shall send thee, and whatsoever I command thee thou shalt speak."

Jeremiah 42:4: "Then Jeremiah the prophet said unto them, I have heard you; behold, I will pray unto the LORD your God according to your words; and it shall come to pass, that whatsoever thing the LORD shall answer you, I will declare it unto you; I will keep nothing back from you."

Jeremiah 44:17: "But we will certainly do whatsoever thing goeth forth out of our own mouth, to

burn incense unto the queen of heaven, and to pour out drink offerings unto her, as we have done, we, and our fathers, our kings, and our princes, in the cities of Judah, and in the streets of Jerusalem: for then had we plenty of victuals, and were well, and saw no evil."

Matthew 5:37: "But let your communication be, Yea, yea; Nay, nay: for whatsoever is more than these cometh of evil."

Matthew 7:12: "Therefore all things whatsoever ye would that men should do to you, do ye even so to them: for this is the law and the prophets."

Matthew 10:11: "And into whatsoever city or town ye shall enter, enquire who in it is worthy; and there abide till ye go thence."

Matthew 14:7: "Whereupon he promised with an oath to give her whatsoever she would ask."

Matthew 15:5: "But ye say, Whosoever shall say to his father or his mother, It is a gift, by whatsoever thou mightest be profited by me;"

Matthew 15:17: "Do not ye yet understand, that whatsoever entereth in at the mouth goeth into the belly, and is cast out into the draught?"

Matthew 16:19: "And I will give unto thee the keys of the kingdom of heaven: and whatsoever thou shalt bind on earth shall be bound in heaven: and whatsoever thou shalt loose on earth shall be loosed in heaven."

Matthew 17:12: "But I say unto you, That Elias is come already, and they knew him not, but have done unto him whatsoever they listed. Likewise shall also the Son of man suffer of them."

Matthew 18:18: "Verily I say unto you, Whatsoever ye shall bind on earth shall be bound in heaven: and whatsoever ye shall loose on earth shall be loosed in heaven."

Matthew 20:4: "And said unto them; Go ye also into the vineyard, and whatsoever is right I will give you. And they went their way."

Matthew 20:7: "They say unto him, Because no man hath hired us. He saith unto them, Go ye also into the vineyard; and whatsoever is right, that shall ye receive."

Matthew 21:22: "And all things, whatsoever ye shall ask in prayer, believing, ye shall receive."

Matthew 23:3: "All therefore whatsoever they bid you observe, that observe and do; but do not ye after their works: for they say, and do not."

Matthew 28:20: "Teaching them to observe all things whatsoever I have commanded you: and, lo, I am with you alway, even unto the end of the world. Amen."

Mark 6:22: "And when the daughter of the said Herodias came in, and danced, and pleased Herod and them that sat with him, the king said unto the damsel, Ask of me whatsoever thou wilt, and I will give it thee."

Mark 6:23: "And he sware unto her, Whatsoever thou shalt ask of me, I will give it thee, unto the half of my kingdom."

Mark 7:11: "But ye say, If a man shall say to his father or mother, It is Corban, that is to say, a gift, by whatsoever thou mightest be profited by me; he shall be free."

Mark 7:18: "And he saith unto them, Are ye so without understanding also? Do ye not perceive, that whatsoever thing from without entereth into the man, it cannot defile him;"

Mark 9:13: "But I say unto you, That Elias is indeed come, and they have done unto him whatsoever they listed, as it is written of him."

Mark 10:21: "Then Jesus beholding him loved him, and said unto him, One thing thou lackest: go thy way, sell whatsoever thou hast, and give to the poor, and thou shalt have treasure in heaven: and come, take up the cross, and follow me."

Mark 10:35: "And James and John, the sons of Zebedee, come unto him, saying, Master, we would that thou shouldest do for us whatsoever we shall desire."

Mark 11:23: "For verily I say unto you, That whosoever shall say unto this mountain, Be thou removed, and be thou cast into the sea; and shall not doubt in his heart, but shall believe that those things which he saith shall come to pass; he shall have whatsoever he saith."

Mark 13:11: "But when they shall lead you, and deliver you up, take no thought beforehand what ye

shall speak, neither do ye premeditate: but whatsoever shall be given you in that hour, that speak ye: for it is not ye that speak, but the Holy Ghost."

Luke 4:23: "And he said unto them, Ye will surely say unto me this proverb, Physician, heal thyself: whatsoever we have heard done in Capernaum, do also here in thy country."

Luke 9:4: "And whatsoever house ye enter into, there abide, and thence depart."

Luke 10:5: "And into whatsoever house ye enter, first say, Peace be to this house."

Luke 10:8: "And into whatsoever city ye enter, and they receive you, eat such things as are set before you:"

Luke 10:10: "But into whatsoever city ye enter, and they receive you not, go your ways out into the streets of the same, and say,"

Luke 10:35: "And on the morrow when he departed, he took out two pence, and gave them to the host, and said unto him, Take care of him; and whatsoever thou spendest more, when I come again, I will repay thee."

Luke 12:3: "Therefore whatsoever ye have spoken in darkness shall be heard in the light; and that which ye have spoken in the ear in closets shall be proclaimed upon the housetops."

John 2:5: "His mother saith unto the servants, Whatsoever he saith unto you, do it."

John 5:4: "For an angel went down at a certain season into the pool, and troubled the water: whosoever then first after the troubling of the water stepped in was made whole of whatsoever disease he had."

John 11:22: "But I know, that even now, whatsoever thou wilt ask of God, God will give it thee."

John 12:50: "And I know that his commandment is life everlasting: whatsoever I speak therefore, even as the Father said unto me, so I speak."

John 14:13: "And whatsoever ye shall ask in my name, that will I do, that the Father may be glorified in the Son."

John 14:26: "But the Comforter, which is the Holy Ghost, whom the Father will send in my name, he shall teach you all things, and bring all things to your remembrance, whatsoever I have said unto you."

John 15:14: "Ye are my friends, if ye do whatsoever I command you."

John 15:16: "Ye have not chosen me, but I have chosen you, and ordained you, that ye should go and bring forth fruit, and that your fruit should remain: that whatsoever ye shall ask of the Father in my name, he may give it you."

John 16:13: "Howbeit when he, the Spirit of truth, is come, he will guide you into all truth: for he shall not speak of himself; but whatsoever he shall hear, that shall he speak: and he will shew you things to come."

John 16:23: "And in that day ye shall ask me nothing. Verily, verily, I say unto you, Whatsoever ye shall ask the Father in my name, he will give it you."

John 17:7: "Now they have known that all things whatsoever thou hast given me are of thee."

Acts 3:22: "For Moses truly said unto the fathers, A prophet shall the Lord your God raise up unto you of your brethren, like unto me; him shall ye hear in all things whatsoever he shall say unto you."

Acts 4:28: "For to do whatsoever thy hand and thy counsel determined before to be done."

Romans 14:23: "And he that doubteth is damned if he eat, because he eateth not of faith: for whatsoever is not of faith is sin."

Romans 15:4: "For whatsoever things were written aforetime were written for our learning, that we through patience and comfort of the scriptures might have hope."

Romans 16:2: "That ye receive her in the Lord, as becometh saints, and that ye assist her in whatsoever business she hath need of you: for she hath been a succourer of many, and of myself also."

1 Corinthians 10:25: "Whatsoever is sold in the shambles, that eat, asking no question for conscience sake:"

1 Corinthians 10:27: "If any of them that believe not bid you to a feast, and ye be disposed to go; whatsoever is set before you, eat, asking no question for conscience sake."

1 Corinthians 10:31: "Whether therefore ye eat, or drink, or whatsoever ye do, do all to the glory of God."

Galatians 2:6: "But of these who seemed to be somewhat, (whatsoever they were, it maketh no matter to me: God accepteth no man's person:) for they who seemed to be somewhat in conference added nothing to me:"

Galatians 6:7: "Be not deceived; God is not mocked: for whatsoever a man soweth, that shall he also reap."

Ephesians 5:13: "But all things that are reprov'd are made manifest by the light: for whatsoever doth make manifest is light."

Ephesians 6:8: "Knowing that whatsoever good thing any man doeth, the same shall he receive of the Lord, whether he be bond or free."

Philippians 4:8: "Finally, brethren, whatsoever things are true, whatsoever things are honest, whatsoever things are just, whatsoever things are pure, whatsoever things are lovely, whatsoever things are of good report; if there be any virtue, and if there be any praise, think on these things."

Philippians 4:11: "Not that I speak in respect of want: for I have learned, in whatsoever state I am, therewith to be content."

Colossians 3:17: "And whatsoever ye do in word or deed, do all in the name of the Lord Jesus, giving thanks to God and the Father by him."

Colossians 3:23: "And whatsoever ye do, do it heartily, as to the Lord, and not unto men;"

1 John 3:22: "And whatsoever we ask, we receive of him, because we keep his commandments, and do those things that are pleasing in his sight."

1 John 5:4: "For whatsoever is born of God overcometh the world: and this is the victory that overcometh the world, even our faith."

1 John 5:15: "And if we know that he hear us, whatsoever we ask, we know that we have the petitions that we desired of him."

3 John 1:5: "Beloved, thou doest faithfully whatsoever thou doest to the brethren, and to strangers;"

Revelation 18:22: "And the voice of harpers, and musicians, and of pipers, and trumpeters, shall be heard no more at all in thee; and no craftsman, of whatsoever craft he be, shall be found any more in thee; and the sound of a millstone shall be heard no more at all in thee;"

Revelation 21:27: "And there shall in no wise enter into it any thing that defileth, neither whatsoever worketh abomination, or maketh a lie: but they which are written in the Lamb's book of life."

## **WHEAT**

Occurrences: 51

Genesis 30:14: "And Reuben went in the days of wheat harvest, and found mandrakes in the field, and brought them unto his mother Leah. Then Rachel said to Leah, Give me, I pray thee, of thy son's mandrakes."

Exodus 9:32: "But the wheat and the rye were not smitten: for they were not grown up."

Exodus 34:22: "And thou shalt observe the feast of weeks, of the firstfruits of wheat harvest, and the feast of ingathering at the year's end."

Numbers 18:12: "All the best of the oil, and all the best of the wine, and of the wheat, the firstfruits of them which they shall offer unto the LORD, them have I given thee."

Deuteronomy 8:8: "A land of wheat, and barley, and vines, and fig trees, and pomegranates; a land of oil olive, and honey;"

Deuteronomy 32:14: "Butter of kine, and milk of sheep, with fat of lambs, and rams of the breed of Bashan, and goats, with the fat of kidneys of wheat; and thou didst drink the pure blood of the grape."

Judges 6:11: "And there came an angel of the LORD, and sat under an oak which was in Ophrah, that pertained unto Joash the Abiezrite: and his son Gideon threshed wheat by the winepress, to hide it from the Midianites."

Judges 15:1: "But it came to pass within a while after, in the time of wheat harvest, that Samson visited his wife with a kid; and he said, I will go in to my wife into the chamber. But her father would not suffer him to go in."

Ruth 2:23: "So she kept fast by the maidens of Boaz to glean unto the end of barley harvest and of wheat harvest; and dwelt with her mother in law."

1 Samuel 6:13: "And they of Bethshemesh were reaping their wheat harvest in the valley: and they lifted up their eyes, and saw the ark, and rejoiced to see it."

1 Samuel 12:17: "Is it not wheat harvest to day? I will call unto the LORD, and he shall send thunder and rain; that ye may perceive and see that your wickedness is great, which ye have done in the sight of the LORD, in asking you a king."

2 Samuel 4:6: "And they came thither into the midst of the house, as though they would have fetched wheat; and they smote him under the fifth rib: and Rechab and Baanah his brother escaped."

2 Samuel 17:28: "Brought beds, and basons, and earthen vessels, and wheat, and barley, and flour, and parched corn, and beans, and lentiles, and parched pulse,"

1 Kings 5:11: "And Solomon gave Hiram twenty thousand measures of wheat for food to his household, and twenty measures of pure oil: thus gave Solomon to Hiram year by year."

1 Chronicles 21:20: "And Ornan turned back, and saw the angel; and his four sons with him hid themselves. Now Ornan was threshing wheat."

1 Chronicles 21:23: "And Ornan said unto David, Take it to thee, and let my lord the king do that which is good in his eyes: lo, I give thee the oxen also for burnt offerings, and the threshing instruments for wood, and the wheat for the meat offering; I give it all."

2 Chronicles 2:10: "And, behold, I will give to thy servants, the hewers that cut timber, twenty thousand measures of beaten wheat, and twenty thousand measures of barley, and twenty thousand baths of wine, and twenty thousand baths of oil."

2 Chronicles 2:15: "Now therefore the wheat, and the barley, the oil, and the wine, which my lord hath spoken of, let him send unto his servants:"

2 Chronicles 27:5: "He fought also with the king of the Ammonites, and prevailed against them. And the children of Ammon gave him the same year an hundred talents of silver, and ten thousand measures of wheat, and ten thousand of barley. So much did the children of Ammon pay unto him, both the second year, and the third."

Ezra 6:9: "And that which they have need of, both young bullocks, and rams, and lambs, for the burnt offerings of the God of heaven, wheat, salt, wine, and oil, according to the appointment of the priests which are at Jerusalem, let it be given them day by day without fail:"

Ezra 7:22: "Unto an hundred talents of silver, and to an hundred measures of wheat, and to an hundred baths of wine, and to an hundred baths of oil, and salt without prescribing how much."

Job 31:40: "Let thistles grow instead of wheat, and cockle instead of barley. The words of Job are ended."

Psalms 81:16: "He should have fed them also with the finest of the wheat: and with honey out of the rock should I have satisfied thee."

Psalms 147:14: "He maketh peace in thy borders, and filleth thee with the finest of the wheat."

Proverbs 27:22: "Though thou shouldest bray a fool in a mortar among wheat with a pestle, yet will not his foolishness depart from him."

Song of Solomon 7:2: "Thy navel is like a round goblet, which wanteth not liquor: thy belly is like an heap of wheat set about with lilies."

Isaiah 28:25: "When he hath made plain the face thereof, doth he not cast abroad the fitches, and scatter the cummin, and cast in the principal wheat and the appointed barley and the rie in their place?"

Jeremiah 12:13: "They have sown wheat, but shall reap thorns: they have put themselves to pain, but shall not profit: and they shall be ashamed of your revenues because of the fierce anger of the LORD."

Jeremiah 23:28: "The prophet that hath a dream, let him tell a dream; and he that hath my word, let him speak my word faithfully. What is the chaff to the wheat? saith the LORD."

Jeremiah 31:12: "Therefore they shall come and sing in the height of Zion, and shall flow together to the goodness of the LORD, for wheat, and for wine, and for oil, and for the young of the flock and of the herd: and their soul shall be as a watered garden; and they shall not sorrow any more at all."

Jeremiah 41:8: "But ten men were found among them that said unto Ishmael, Slay us not: for we have treasures in the field, of wheat, and of barley, and of oil, and of honey. So he forbore, and slew them not among their brethren."

Ezekiel 4:9: "Take thou also unto thee wheat, and barley, and beans, and lentiles, and millet, and fitches, and put them in one vessel, and make thee bread thereof, according to the number of the days that thou shalt lie upon thy side, three hundred and ninety days shalt thou eat thereof."

Ezekiel 27:17: "Judah, and the land of Israel, they were thy merchants: they traded in thy market wheat of Minnith, and Pannag, and honey, and oil, and balm."

Ezekiel 45:13: "This is the oblation that ye shall offer; the sixth part of an ephah of an homer of wheat, and ye shall give the sixth part of an ephah of an homer of barley:"

Joel 1:11: "Be ye ashamed, O ye husbandmen; howl, O ye vinedressers, for the wheat and for the barley; because the harvest of the field is perished."

Joel 2:24: "And the floors shall be full of wheat, and the vats shall overflow with wine and oil."

Amos 5:11: "Forasmuch therefore as your treading is upon the poor, and ye take from him burdens of wheat: ye have built houses of hewn stone, but ye shall not dwell in them; ye have planted pleasant vineyards, but ye shall not drink wine of them."

Amos 8:5: "Saying, When will the new moon be gone, that we may sell corn? and the sabbath, that we may set forth wheat, making the ephah small, and the shekel great, and falsifying the balances by deceit?"

Amos 8:6: "That we may buy the poor for silver, and the needy for a pair of shoes; yea, and sell the refuse of the wheat?"

Matthew 3:12: "Whose fan is in his hand, and he will thoroughly purge his floor, and gather his wheat into the garner; but he will burn up the chaff with unquenchable fire."

Matthew 13:25: "But while men slept, his enemy came and sowed tares among the wheat, and went his way."

Matthew 13:29: "But he said, Nay; lest while ye gather up the tares, ye root up also the wheat with them."

Matthew 13:30: "Let both grow together until the harvest: and in the time of harvest I will say to the reapers, Gather ye together first the tares, and bind them in bundles to burn them: but gather the wheat into my barn."

Luke 3:17: "Whose fan is in his hand, and he will thoroughly purge his floor, and will gather the wheat into his garner; but the chaff he will burn with fire unquenchable."

Luke 16:7: "Then said he to another, And how much owest thou? And he said, An hundred measures of wheat. And he said unto him, Take thy bill, and write fourscore."

Luke 22:31: "And the Lord said, Simon, Simon, behold, Satan hath desired to have you, that he may sift you as wheat:"

John 12:24: "Verily, verily, I say unto you, Except a corn of wheat fall into the ground and die, it abideth alone: but if it die, it bringeth forth much fruit."

Acts 27:38: "And when they had eaten enough, they lightened the ship, and cast out the wheat into the sea."

1 Corinthians 15:37: "And that which thou sowest, thou sowest not that body that shall be, but bare

grain, it may chance of wheat, or of some other grain:"

Revelation 6:6: "And I heard a voice in the midst of the four beasts say, A measure of wheat for a penny, and three measures of barley for a penny; and see thou hurt not the oil and the wine."

Revelation 18:13: "And cinnamon, and odours, and ointments, and frankincense, and wine, and oil, and fine flour, and wheat, and beasts, and sheep, and horses, and chariots, and slaves, and souls of men."

## **WHEATEN**

Occurrences: 1

Exodus 29:2: "And unleavened bread, and cakes unleavened tempered with oil, and wafers unleavened anointed with oil: of wheaten flour shalt thou make them."

## **WHEEL**

Occurrences: 12

1 Kings 7:32: "And under the borders were four wheels; and the axletrees of the wheels were joined to the base: and the height of a wheel was a cubit and half a cubit."

1 Kings 7:33: "And the work of the wheels was like the work of a chariot wheel: their axletrees, and their naves, and their felloes, and their spokes, were all molten."

Psalms 83:13: "O my God, make them like a wheel; as the stubble before the wind."

Proverbs 20:26: "A wise king scattereth the wicked, and bringeth the wheel over them."

Ecclesiastes 12:6: "Or ever the silver cord be loosed, or the golden bowl be broken, or the pitcher be broken at the fountain, or the wheel broken at the cistern."

Isaiah 28:27: "For the fitches are not threshed with a threshing instrument, neither is a cart wheel turned about upon the cummin; but the fitches are beaten out with a staff, and the cummin with a rod."

Isaiah 28:28: "Bread corn is bruised; because he will not ever be threshing it, nor break it with the wheel of his cart, nor bruise it with his horsemen."

Ezekiel 1:15: "Now as I beheld the living creatures, behold one wheel upon the earth by the living creatures, with his four faces."

Ezekiel 1:16: "The appearance of the wheels and their work was like unto the colour of a beryl: and they four had one likeness: and their appearance and their work was as it were a wheel in the middle of a wheel."

Ezekiel 10:9: "And when I looked, behold the four wheels by the cherubims, one wheel by one cherub, and another wheel by another cherub: and the appearance of the wheels was as the colour of a beryl stone."

Ezekiel 10:10: "And as for their appearances, they four had one likeness, as if a wheel had been in the midst of a wheel."

Ezekiel 10:13: "As for the wheels, it was cried unto them in my hearing, O wheel."

## **WHEELS**

Occurrences: 25

Exodus 14:25: "And took off their chariot wheels, that they drave them heavily: so that the Egyptians said, Let us flee from the face of Israel; for the LORD fighteth for them against the Egyptians."

Judges 5:28: "The mother of Sisera looked out at a window, and cried through the lattice, Why is his chariot so long in coming? why tarry the wheels of his chariots?"

1 Kings 7:30: "And every base had four brasen wheels, and plates of brass: and the four corners thereof had undersetters: under the laver were undersetters molten, at the side of every addition."



1 Kings 7:32: "And under the borders were four wheels; and the axletrees of the wheels were joined to the base: and the height of a wheel was a cubit and half a cubit."

1 Kings 7:33: "And the work of the wheels was like the work of a chariot wheel: their axletrees, and their naves, and their felloes, and their spokes, were all molten."

Isaiah 5:28: "Whose arrows are sharp, and all their bows bent, their horses' hoofs shall be counted like flint, and their wheels like a whirlwind:"

Jeremiah 18:3: "Then I went down to the potter's house, and, behold, he wrought a work on the wheels."

Jeremiah 47:3: "At the noise of the stamping of the hoofs of his strong horses, at the rushing of his chariots, and at the rumbling of his wheels, the fathers shall not look back to their children for feebleness of hands;"

Ezekiel 1:16: "The appearance of the wheels and their work was like unto the colour of a beryl: and they four had one likeness: and their appearance and their work was as it were a wheel in the middle of a wheel."

Ezekiel 1:19: "And when the living creatures went, the wheels went by them: and when the living creatures were lifted up from the earth, the wheels were lifted up."

Ezekiel 1:20: "Whithersoever the spirit was to go, they went, thither was their spirit to go; and the wheels were lifted up over against them: for the spirit of the living creature was in the wheels."

Ezekiel 1:21: "When those went, these went; and when those stood, these stood; and when those were lifted up from the earth, the wheels were lifted up over against them: for the spirit of the living creature was in the wheels."

Ezekiel 3:13: "I heard also the noise of the wings of the living creatures that touched one another, and the noise of the wheels over against them, and a noise of a great rushing."

Ezekiel 10:2: "And he spake unto the man clothed with linen, and said, Go in between the wheels, even under the cherub, and fill thine hand with coals of fire from between the cherubims, and scatter them over the city. And he went in in my sight."

Ezekiel 10:6: "And it came to pass, that when he had commanded the man clothed with linen, saying, Take fire from between the wheels, from between the cherubims; then he went in, and stood beside the wheels."

Ezekiel 10:9: "And when I looked, behold the four wheels by the cherubims, one wheel by one cherub, and another wheel by another cherub: and the appearance of the wheels was as the colour of a beryl stone."

Ezekiel 10:12: "And their whole body, and their backs, and their hands, and their wings, and the wheels, were full of eyes round about, even the wheels that they four had."

Ezekiel 10:13: "As for the wheels, it was cried unto them in my hearing, O wheel."

Ezekiel 10:16: "And when the cherubims went, the wheels went by them: and when the cherubims lifted up their wings to mount up from the earth, the same wheels also turned not from beside them."

Ezekiel 10:19: "And the cherubims lifted up their wings, and mounted up from the earth in my sight: when they went out, the wheels also were beside them, and every one stood at the door of the east gate of the LORD's house; and the glory of the God of Israel was over them above."

Ezekiel 11:22: "Then did the cherubims lift up their wings, and the wheels beside them; and the glory of the God of Israel was over them above."

Ezekiel 23:24: "And they shall come against thee with chariots, wagons, and wheels, and with an assembly of people, which shall set against thee buckler and shield and helmet round about: and I will set judgment before them, and they shall judge thee according to their judgments."

Ezekiel 26:10: "By reason of the abundance of his horses their dust shall cover thee: thy walls shall shake at the noise of the horsemen, and of the wheels, and of the chariots, when he shall enter into thy gates, as men enter into a city wherein is made a breach."

Daniel 7:9: "I beheld till the thrones were cast down, and the Ancient of days did sit, whose

garment was white as snow, and the hair of his head like the pure wool: his throne was like the fiery flame, and his wheels as burning fire."

Nahum 3:2: "The noise of a whip, and the noise of the rattling of the wheels, and of the prancing horses, and of the jumping chariots."

## WHELP

Occurrences: 3

Genesis 49:9: "Judah is a lion's whelp: from the prey, my son, thou art gone up: he stooped down, he couched as a lion, and as an old lion; who shall rouse him up?"

Deuteronomy 33:22: "And of Dan he said, Dan is a lion's whelp: he shall leap from Bashan."

Nahum 2:11: "Where is the dwelling of the lions, and the feedingplace of the young lions, where the lion, even the old lion, walked, and the lion's whelp, and none made them afraid?"

## WHELPS

Occurrences: 10

2 Samuel 17:8: "For, said Hushai, thou knowest thy father and his men, that they be mighty men, and they be chafed in their minds, as a bear robbed of her whelps in the field: and thy father is a man of war, and will not lodge with the people."

Job 4:11: "The old lion perisheth for lack of prey, and the stout lion's whelps are scattered abroad."

Job 28:8: "The lion's whelps have not trodden it, nor the fierce lion passed by it."

Proverbs 17:12: "Let a bear robbed of her whelps meet a man, rather than a fool in his folly."

Jeremiah 51:38: "They shall roar together like lions: they shall yell as lions' whelps."

Ezekiel 19:2: "And say, What is thy mother? A lioness: she lay down among lions, she nourished her whelps among young lions."

Ezekiel 19:3: "And she brought up one of her whelps: it became a young lion, and it learned to catch the prey; it devoured men."

Ezekiel 19:5: "Now when she saw that she had waited, and her hope was lost, then she took another of her whelps, and made him a young lion."

Hosea 13:8: "I will meet them as a bear that is bereaved of her whelps, and will rend the caul of their heart, and there will I devour them like a lion: the wild beast shall tear them."

Nahum 2:12: "The lion did tear in pieces enough for his whelps, and strangled for his lionesses, and filled his holes with prey, and his dens with ravin."

## WHEN

Occurrences: 2660

Genesis 2:4: "These are the generations of the heavens and of the earth when they were created, in the day that the LORD God made the earth and the heavens,"

Genesis 3:6: "And when the woman saw that the tree was good for food, and that it was pleasant to the eyes, and a tree to be desired to make one wise, she took of the fruit thereof, and did eat, and gave also unto her husband with her; and he did eat."

Genesis 4:8: "And Cain talked with Abel his brother: and it came to pass, when they were in the field, that Cain rose up against Abel his brother, and slew him."

Genesis 4:12: "When thou tillest the ground, it shall not henceforth yield unto thee her strength; a fugitive and a vagabond shalt thou be in the earth."

Genesis 5:2: "Male and female created he them; and blessed them, and called their name Adam, in the day when they were created."

Genesis 6:1: "And it came to pass, when men began to multiply on the face of the earth, and daughters were born unto them,"

Genesis 6:4: "There were giants in the earth in those days; and also after that, when the sons of God came in unto the daughters of men, and they bare children to them, the same became mighty men which were of old, men of renown."

Genesis 7:6: "And Noah was six hundred years old when the flood of waters was upon the earth."

Genesis 9:14: "And it shall come to pass, when I bring a cloud over the earth, that the bow shall be seen in the cloud:"

Genesis 12:4: "So Abram departed, as the LORD had spoken unto him; and Lot went with him: and Abram was seventy and five years old when he departed out of Haran."

Genesis 12:11: "And it came to pass, when he was come near to enter into Egypt, that he said unto Sarai his wife, Behold now, I know that thou art a fair woman to look upon:"

Genesis 12:12: "Therefore it shall come to pass, when the Egyptians shall see thee, that they shall say, This is his wife: and they will kill me, but they will save thee alive."

Genesis 12:14: "And it came to pass, that, when Abram was come into Egypt, the Egyptians beheld the woman that she was very fair."

Genesis 14:14: "And when Abram heard that his brother was taken captive, he armed his trained servants, born in his own house, three hundred and eighteen, and pursued them unto Dan."

Genesis 15:11: "And when the fowls came down upon the carcasses, Abram drove them away."

Genesis 15:12: "And when the sun was going down, a deep sleep fell upon Abram; and, lo, an horror of great darkness fell upon him."

Genesis 15:17: "And it came to pass, that, when the sun went down, and it was dark, behold a smoking furnace, and a burning lamp that passed between those pieces."

Genesis 16:4: "And he went in unto Hagar, and she conceived: and when she saw that she had conceived, her mistress was despised in her eyes."

Genesis 16:5: "And Sarai said unto Abram, My wrong be upon thee: I have given my maid into thy bosom; and when she saw that she had conceived, I was despised in her eyes: the LORD judge between me and thee."

Genesis 16:6: "But Abram said unto Sarai, Behold, thy maid is in thine hand; do to her as it pleaseth thee. And when Sarai dealt hardly with her, she fled from her face."

Genesis 16:16: "And Abram was fourscore and six years old, when Hagar bare Ishmael to Abram."

Genesis 17:1: "And when Abram was ninety years old and nine, the LORD appeared to Abram, and said unto him, I am the Almighty God; walk before me, and be thou perfect."

Genesis 17:24: "And Abraham was ninety years old and nine, when he was circumcised in the flesh of his foreskin."

Genesis 17:25: "And Ishmael his son was thirteen years old, when he was circumcised in the flesh of his foreskin."

Genesis 18:2: "And he lift up his eyes and looked, and, lo, three men stood by him: and when he saw them, he ran to meet them from the tent door, and bowed himself toward the ground,"

Genesis 19:15: "And when the morning arose, then the angels hastened Lot, saying, Arise, take thy wife, and thy two daughters, which are here; lest thou be consumed in the iniquity of the city."

Genesis 19:17: "And it came to pass, when they had brought them forth abroad, that he said, Escape for thy life; look not behind thee, neither stay thou in all the plain; escape to the mountain, lest thou be consumed."

Genesis 19:23: "The sun was risen upon the earth when Lot entered into Zoar."

Genesis 19:29: "And it came to pass, when God destroyed the cities of the plain, that God remembered Abraham, and sent Lot out of the midst of the overthrow, when he overthrew the cities in the which Lot dwelt."

Genesis 19:33: "And they made their father drink wine that night: and the firstborn went in, and lay with her father; and he perceived not when she lay down, nor when she arose."

Genesis 19:35: "And they made their father drink wine that night also: and the younger arose, and lay with him; and he perceived not when she lay down, nor when she arose."

Genesis 20:13: "And it came to pass, when God caused me to wander from my father's house, that I said unto her, This is thy kindness which thou shalt shew unto me; at every place whither we shall come, say of me, He is my brother."

Genesis 21:5: "And Abraham was an hundred years old, when his son Isaac was born unto him."

Genesis 24:19: "And when she had done giving him drink, she said, I will draw water for thy camels also, until they have done drinking."

Genesis 24:30: "And it came to pass, when he saw the earring and bracelets upon his sister's hands, and when he heard the words of Rebekah his sister, saying, Thus spake the man unto me; that he came unto the man; and, behold, he stood by the camels at the well."

Genesis 24:36: "And Sarah my master's wife bare a son to my master when she was old: and unto him hath he given all that he hath."

Genesis 24:41: "Then shalt thou be clear from this my oath, when thou comest to my kindred; and if they give not thee one, thou shalt be clear from my oath."

Genesis 24:43: "Behold, I stand by the well of water; and it shall come to pass, that when the virgin cometh forth to draw water, and I say to her, Give me, I pray thee, a little water of thy pitcher to drink;"

Genesis 24:52: "And it came to pass, that, when Abraham's servant heard their words, he worshipped the LORD, bowing himself to the earth."

Genesis 24:64: "And Rebekah lifted up her eyes, and when she saw Isaac, she lighted off the camel."

Genesis 25:20: "And Isaac was forty years old when he took Rebekah to wife, the daughter of Bethuel the Syrian of Padanaram, the sister to Laban the Syrian."

Genesis 25:24: "And when her days to be delivered were fulfilled, behold, there were twins in her womb."

Genesis 25:26: "And after that came his brother out, and his hand took hold on Esau's heel; and his name was called Jacob: and Isaac was threescore years old when she bare them."

Genesis 26:8: "And it came to pass, when he had been there a long time, that Abimelech king of the Philistines looked out at a window, and saw, and, behold, Isaac was sporting with Rebekah his wife."

Genesis 26:34: "And Esau was forty years old when he took to wife Judith the daughter of Beeri the Hittite, and Bashemath the daughter of Elon the Hittite:"

Genesis 27:1: "And it came to pass, that when Isaac was old, and his eyes were dim, so that he could not see, he called Esau his eldest son, and said unto him, My son: and he said unto him, Behold, here am I."

Genesis 27:5: "And Rebekah heard when Isaac spake to Esau his son. And Esau went to the field to hunt for venison, and to bring it."

Genesis 27:34: "And when Esau heard the words of his father, he cried with a great and exceeding bitter cry, and said unto his father, Bless me, even me also, O my father."

Genesis 27:40: "And by thy sword shalt thou live, and shalt serve thy brother; and it shall come to pass when thou shalt have the dominion, that thou shalt break his yoke from off thy neck."

Genesis 28:6: "When Esau saw that Isaac had blessed Jacob, and sent him away to Padanaram, to take him a wife from thence; and that as he blessed him he gave him a charge, saying, Thou shalt not take a wife of the daughters of Canaan;"

Genesis 29:10: "And it came to pass, when Jacob saw Rachel the daughter of Laban his mother's brother, and the sheep of Laban his mother's brother, that Jacob went near, and rolled the stone from the well's mouth, and watered the flock of Laban his mother's brother."

Genesis 29:13: "And it came to pass, when Laban heard the tidings of Jacob his sister's son, that he ran to meet him, and embraced him, and kissed him, and brought him to his house. And he told Laban all these things."

Genesis 29:31: "And when the LORD saw that Leah was hated, he opened her womb: but Rachel

was barren."

Genesis 30:1: "And when Rachel saw that she bare Jacob no children, Rachel envied her sister; and said unto Jacob, Give me children, or else I die."

Genesis 30:9: "When Leah saw that she had left bearing, she took Zilpah her maid, and gave her Jacob to wife."

Genesis 30:25: "And it came to pass, when Rachel had born Joseph, that Jacob said unto Laban, Send me away, that I may go unto mine own place, and to my country."

Genesis 30:30: "For it was little which thou hadst before I came, and it is now increased unto a multitude; and the LORD hath blessed thee since my coming: and now when shall I provide for mine own house also?"

Genesis 30:33: "So shall my righteousness answer for me in time to come, when it shall come for my hire before thy face: every one that is not speckled and spotted among the goats, and brown among the sheep, that shall be counted stolen with me."

Genesis 30:38: "And he set the rods which he had pilled before the flocks in the gutters in the watering troughs when the flocks came to drink, that they should conceive when they came to drink."

Genesis 30:42: "But when the cattle were feeble, he put them not in: so the feebler were Laban's, and the stronger Jacob's."

Genesis 31:49: "And Mizpah; for he said, The LORD watch between me and thee, when we are absent one from another."

Genesis 32:2: "And when Jacob saw them, he said, This is God's host: and he called the name of that place Mahanaim."

Genesis 32:17: "And he commanded the foremost, saying, When Esau my brother meeteth thee, and asketh thee, saying, Whose art thou? and whither goest thou? and whose are these before thee?"

Genesis 32:19: "And so commanded he the second, and the third, and all that followed the droves, saying, On this manner shall ye speak unto Esau, when ye find him."

Genesis 32:25: "And when he saw that he prevailed not against him, he touched the hollow of his thigh; and the hollow of Jacob's thigh was out of joint, as he wrestled with him."

Genesis 33:18: "And Jacob came to Shalem, a city of Shechem, which is in the land of Canaan, when he came from Padanaram; and pitched his tent before the city."

Genesis 34:2: "And when Shechem the son of Hamor the Hivite, prince of the country, saw her, he took her, and lay with her, and defiled her."

Genesis 34:7: "And the sons of Jacob came out of the field when they heard it: and the men were grieved, and they were very wroth, because he had wrought folly in Israel in lying with Jacob's daughter: which thing ought not to be done."

Genesis 34:25: "And it came to pass on the third day, when they were sore, that two of the sons of Jacob, Simeon and Levi, Dinah's brethren, took each man his sword, and came upon the city boldly, and slew all the males."

Genesis 35:1: "And God said unto Jacob, Arise, go up to Bethel, and dwell there: and make there an altar unto God, that appeared unto thee when thou fleddest from the face of Esau thy brother."

Genesis 35:7: "And he built there an altar, and called the place Elbethel: because there God appeared unto him, when he fled from the face of his brother."

Genesis 35:9: "And God appeared unto Jacob again, when he came out of Padanaram, and blessed him."

Genesis 35:17: "And it came to pass, when she was in hard labour, that the midwife said unto her, Fear not; thou shalt have this son also."

Genesis 35:22: "And it came to pass, when Israel dwelt in that land, that Reuben went and lay with Bilhah his father's concubine: and Israel heard it. Now the sons of Jacob were twelve:"

Genesis 37:4: "And when his brethren saw that their father loved him more than all his brethren, they hated him, and could not speak peaceably unto him."

Genesis 37:18: "And when they saw him afar off, even before he came near unto them, they conspired against him to slay him."

Genesis 37:23: "And it came to pass, when Joseph was come unto his brethren, that they stript Joseph out of his coat, his coat of many colours that was on him;"

Genesis 38:5: "And she yet again conceived, and bare a son; and called his name Shelah: and he was at Chezib, when she bare him."

Genesis 38:9: "And Onan knew that the seed should not be his; and it came to pass, when he went in unto his brother's wife, that he spilled it on the ground, lest that he should give seed to his brother."

Genesis 38:15: "When Judah saw her, he thought her to be an harlot; because she had covered her face."

Genesis 38:25: "When she was brought forth, she sent to her father in law, saying, By the man, whose these are, am I with child: and she said, Discern, I pray thee, whose are these, the signet, and bracelets, and staff."

Genesis 38:28: "And it came to pass, when she travailed, that the one put out his hand: and the midwife took and bound upon his hand a scarlet thread, saying, This came out first."

Genesis 39:13: "And it came to pass, when she saw that he had left his garment in her hand, and was fled forth,"

Genesis 39:15: "And it came to pass, when he heard that I lifted up my voice and cried, that he left his garment with me, and fled, and got him out."

Genesis 39:19: "And it came to pass, when his master heard the words of his wife, which she spake unto him, saying, After this manner did thy servant to me; that his wrath was kindled."

Genesis 40:13: "Yet within three days shall Pharaoh lift up thine head, and restore thee unto thy place: and thou shalt deliver Pharaoh's cup into his hand, after the former manner when thou wast his butler."

Genesis 40:14: "But think on me when it shall be well with thee, and shew kindness, I pray thee, unto me, and make mention of me unto Pharaoh, and bring me out of this house:"

Genesis 40:16: "When the chief baker saw that the interpretation was good, he said unto Joseph, I also was in my dream, and, behold, I had three white baskets on my head:"

Genesis 41:21: "And when they had eaten them up, it could not be known that they had eaten them; but they were still ill favoured, as at the beginning. So I awoke."

Genesis 41:46: "And Joseph was thirty years old when he stood before Pharaoh king of Egypt. And Joseph went out from the presence of Pharaoh, and went throughout all the land of Egypt."

Genesis 41:55: "And when all the land of Egypt was famished, the people cried to Pharaoh for bread: and Pharaoh said unto all the Egyptians, Go unto Joseph; what he saith to you, do."

Genesis 42:1: "Now when Jacob saw that there was corn in Egypt, Jacob said unto his sons, Why do ye look one upon another?"

Genesis 42:21: "And they said one to another, We are verily guilty concerning our brother, in that we saw the anguish of his soul, when he besought us, and we would not hear; therefore is this distress come upon us."

Genesis 42:35: "And it came to pass as they emptied their sacks, that, behold, every man's bundle of money was in his sack: and when both they and their father saw the bundles of money, they were afraid."

Genesis 43:2: "And it came to pass, when they had eaten up the corn which they had brought out of Egypt, their father said unto them, Go again, buy us a little food."

Genesis 43:16: "And when Joseph saw Benjamin with them, he said to the ruler of his house, Bring these men home, and slay, and make ready; for these men shall dine with me at noon."

Genesis 43:21: "And it came to pass, when we came to the inn, that we opened our sacks, and, behold, every man's money was in the mouth of his sack, our money in full weight: and we have brought it again in our hand."

Genesis 43:26: "And when Joseph came home, they brought him the present which was in their hand into the house, and bowed themselves to him to the earth."

Genesis 44:4: "And when they were gone out of the city, and not yet far off, Joseph said unto his steward, Up, follow after the men; and when thou dost overtake them, say unto them, Wherefore have ye rewarded evil for good?"

Genesis 44:24: "And it came to pass when we came up unto thy servant my father, we told him the words of my lord."

Genesis 44:30: "Now therefore when I come to thy servant my father, and the lad be not with us; seeing that his life is bound up in the lad's life;"

Genesis 44:31: "It shall come to pass, when he seeth that the lad is not with us, that he will die: and thy servants shall bring down the gray hairs of thy servant our father with sorrow to the grave."

Genesis 45:27: "And they told him all the words of Joseph, which he had said unto them: and when he saw the wagons which Joseph had sent to carry him, the spirit of Jacob their father revived:"

Genesis 46:33: "And it shall come to pass, when Pharaoh shall call you, and shall say, What is your occupation?"

Genesis 47:15: "And when money failed in the land of Egypt, and in the land of Canaan, all the Egyptians came unto Joseph, and said, Give us bread: for why should we die in thy presence? for the money faileth."

Genesis 47:18: "When that year was ended, they came unto him the second year, and said unto him, We will not hide it from my lord, how that our money is spent; my lord also hath our herds of cattle; there is not ought left in the sight of my lord, but our bodies, and our lands:"

Genesis 48:7: "And as for me, when I came from Padan, Rachel died by me in the land of Canaan in the way, when yet there was but a little way to come unto Ephrath: and I buried her there in the way of Ephrath; the same is Bethlehem."

Genesis 48:17: "And when Joseph saw that his father laid his right hand upon the head of Ephraim, it displeased him: and he held up his father's hand, to remove it from Ephraim's head unto Manasseh's head."

Genesis 49:33: "And when Jacob had made an end of commanding his sons, he gathered up his feet into the bed, and yielded up the ghost, and was gathered unto his people."

Genesis 50:4: "And when the days of his mourning were past, Joseph spake unto the house of Pharaoh, saying, If now I have found grace in your eyes, speak, I pray you, in the ears of Pharaoh, saying,"

Genesis 50:11: "And when the inhabitants of the land, the Canaanites, saw the mourning in the floor of Atad, they said, This is a grievous mourning to the Egyptians: wherefore the name of it was called Abelmizraim, which is beyond Jordan."

Genesis 50:15: "And when Joseph's brethren saw that their father was dead, they said, Joseph will peradventure hate us, and will certainly requite us all the evil which we did unto him."

Genesis 50:17: "So shall ye say unto Joseph, Forgive, I pray thee now, the trespass of thy brethren, and their sin; for they did unto thee evil: and now, we pray thee, forgive the trespass of the servants of the God of thy father. And Joseph wept when they spake unto him."

Exodus 1:10: "Come on, let us deal wisely with them; lest they multiply, and it come to pass, that, when there falleth out any war, they join also unto our enemies, and fight against us, and so get them up out of the land."

Exodus 1:16: "And he said, When ye do the office of a midwife to the Hebrew women, and see them upon the stools; if it be a son, then ye shall kill him: but if it be a daughter, then she shall live."

Exodus 2:2: "And the woman conceived, and bare a son: and when she saw him that he was a goodly child, she hid him three months."

Exodus 2:3: "And when she could not longer hide him, she took for him an ark of bulrushes, and daubed it with slime and with pitch, and put the child therein; and she laid it in the flags by the

river's brink."

Exodus 2:5: "And the daughter of Pharaoh came down to wash herself at the river; and her maidens walked along by the river's side; and when she saw the ark among the flags, she sent her maid to fetch it."

Exodus 2:6: "And when she had opened it, she saw the child: and, behold, the babe wept. And she had compassion on him, and said, This is one of the Hebrews' children."

Exodus 2:11: "And it came to pass in those days, when Moses was grown, that he went out unto his brethren, and looked on their burdens: and he spied an Egyptian smiting an Hebrew, one of his brethren."

Exodus 2:12: "And he looked this way and that way, and when he saw that there was no man, he slew the Egyptian, and hid him in the sand."

Exodus 2:13: "And when he went out the second day, behold, two men of the Hebrews strove together: and he said to him that did the wrong, Wherefore smitest thou thy fellow?"

Exodus 2:15: "Now when Pharaoh heard this thing, he sought to slay Moses. But Moses fled from the face of Pharaoh, and dwelt in the land of Midian: and he sat down by a well."

Exodus 2:18: "And when they came to Reuel their father, he said, How is it that ye are come so soon to day?"

Exodus 3:4: "And when the LORD saw that he turned aside to see, God called unto him out of the midst of the bush, and said, Moses, Moses. And he said, Here am I."

Exodus 3:12: "And he said, Certainly I will be with thee; and this shall be a token unto thee, that I have sent thee: When thou hast brought forth the people out of Egypt, ye shall serve God upon this mountain."

Exodus 3:13: "And Moses said unto God, Behold, when I come unto the children of Israel, and shall say unto them, The God of your fathers hath sent me unto you; and they shall say to me, What is his name? what shall I say unto them?"

Exodus 3:21: "And I will give this people favour in the sight of the Egyptians: and it shall come to pass, that, when ye go, ye shall not go empty."

Exodus 4:6: "And the LORD said furthermore unto him, Put now thine hand into thy bosom. And he put his hand into his bosom: and when he took it out, behold, his hand was leprous as snow."

Exodus 4:14: "And the anger of the LORD was kindled against Moses, and he said, Is not Aaron the Levite thy brother? I know that he can speak well. And also, behold, he cometh forth to meet thee: and when he seeth thee, he will be glad in his heart."

Exodus 4:21: "And the LORD said unto Moses, When thou goest to return into Egypt, see that thou do all those wonders before Pharaoh, which I have put in thine hand: but I will harden his heart, that he shall not let the people go."

Exodus 4:31: "And the people believed: and when they heard that the LORD had visited the children of Israel, and that he had looked upon their affliction, then they bowed their heads and worshipped."

Exodus 5:13: "And the taskmasters hastened them, saying, Fulfil your works, your daily tasks, as when there was straw."

Exodus 6:28: "And it came to pass on the day when the LORD spake unto Moses in the land of Egypt,"

Exodus 7:5: "And the Egyptians shall know that I am the LORD, when I stretch forth mine hand upon Egypt, and bring out the children of Israel from among them."

Exodus 7:7: "And Moses was fourscore years old, and Aaron fourscore and three years old, when they spake unto Pharaoh."

Exodus 7:9: "When Pharaoh shall speak unto you, saying, Shew a miracle for you: then thou shalt say unto Aaron, Take thy rod, and cast it before Pharaoh, and it shall become a serpent."

Exodus 8:9: "And Moses said unto Pharaoh, Glory over me: when shall I intreat for thee, and for thy servants, and for thy people, to destroy the frogs from thee and thy houses, that they may remain



in the river only?"

Exodus 8:15: "But when Pharaoh saw that there was respite, he hardened his heart, and hearkened not unto them; as the LORD had said."

Exodus 9:34: "And when Pharaoh saw that the rain and the hail and the thunders were ceased, he sinned yet more, and hardened his heart, he and his servants."

Exodus 10:13: "And Moses stretched forth his rod over the land of Egypt, and the LORD brought an east wind upon the land all that day, and all that night; and when it was morning, the east wind brought the locusts."

Exodus 11:1: "And the LORD said unto Moses, Yet will I bring one plague more upon Pharaoh, and upon Egypt; afterwards he will let you go hence: when he shall let you go, he shall surely thrust you out hence altogether."

Exodus 12:13: "And the blood shall be to you for a token upon the houses where ye are: and when I see the blood, I will pass over you, and the plague shall not be upon you to destroy you, when I smite the land of Egypt."

Exodus 12:23: "For the LORD will pass through to smite the Egyptians; and when he seeth the blood upon the lintel, and on the two side posts, the LORD will pass over the door, and will not suffer the destroyer to come in unto your houses to smite you."

Exodus 12:25: "And it shall come to pass, when ye be come to the land which the LORD will give you, according as he hath promised, that ye shall keep this service."

Exodus 12:26: "And it shall come to pass, when your children shall say unto you, What mean ye by this service?"

Exodus 12:27: "That ye shall say, It is the sacrifice of the LORD's passover, who passed over the houses of the children of Israel in Egypt, when he smote the Egyptians, and delivered our houses. And the people bowed the head and worshipped."

Exodus 12:44: "But every man's servant that is bought for money, when thou hast circumcised him, then shall he eat thereof."

Exodus 12:48: "And when a stranger shall sojourn with thee, and will keep the passover to the LORD, let all his males be circumcised, and then let him come near and keep it; and he shall be as one that is born in the land: for no uncircumcised person shall eat thereof."

Exodus 13:5: "And it shall be when the LORD shall bring thee into the land of the Canaanites, and the Hittites, and the Amorites, and the Hivites, and the Jebusites, which he sware unto thy fathers to give thee, a land flowing with milk and honey, that thou shalt keep this service in this month."

Exodus 13:8: "And thou shalt shew thy son in that day, saying, This is done because of that which the LORD did unto me when I came forth out of Egypt."

Exodus 13:11: "And it shall be when the LORD shall bring thee into the land of the Canaanites, as he sware unto thee and to thy fathers, and shall give it thee,"

Exodus 13:14: "And it shall be when thy son asketh thee in time to come, saying, What is this? that thou shalt say unto him, By strength of hand the LORD brought us out from Egypt, from the house of bondage:"

Exodus 13:15: "And it came to pass, when Pharaoh would hardly let us go, that the LORD slew all the firstborn in the land of Egypt, both the firstborn of man, and the firstborn of beast: therefore I sacrifice to the LORD all that openeth the matrix, being males; but all the firstborn of my children I redeem."

Exodus 13:17: "And it came to pass, when Pharaoh had let the people go, that God led them not through the way of the land of the Philistines, although that was near; for God said, Lest peradventure the people repent when they see war, and they return to Egypt:"

Exodus 14:10: "And when Pharaoh drew nigh, the children of Israel lifted up their eyes, and, behold, the Egyptians marched after them; and they were sore afraid: and the children of Israel cried out unto the LORD."

Exodus 14:18: "And the Egyptians shall know that I am the LORD, when I have gotten me honour

upon Pharaoh, upon his chariots, and upon his horsemen."

Exodus 14:27: "And Moses stretched forth his hand over the sea, and the sea returned to his strength when the morning appeared; and the Egyptians fled against it; and the LORD overthrew the Egyptians in the midst of the sea."

Exodus 15:23: "And when they came to Marah, they could not drink of the waters of Marah, for they were bitter: therefore the name of it was called Marah."

Exodus 15:25: "And he cried unto the LORD; and the LORD shewed him a tree, which when he had cast into the waters, the waters were made sweet: there he made for them a statute and an ordinance, and there he proved them,"

Exodus 16:3: "And the children of Israel said unto them, Would to God we had died by the hand of the LORD in the land of Egypt, when we sat by the flesh pots, and when we did eat bread to the full; for ye have brought us forth into this wilderness, to kill this whole assembly with hunger."

Exodus 16:8: "And Moses said, This shall be, when the LORD shall give you in the evening flesh to eat, and in the morning bread to the full; for that the LORD heareth your murmurings which ye murmur against him: and what are we? your murmurings are not against us, but against the LORD."

Exodus 16:14: "And when the dew that lay was gone up, behold, upon the face of the wilderness there lay a small round thing, as small as the hoar frost on the ground."

Exodus 16:15: "And when the children of Israel saw it, they said one to another, It is manna: for they wist not what it was. And Moses said unto them, This is the bread which the LORD hath given you to eat."

Exodus 16:18: "And when they did mete it with an omer, he that gathered much had nothing over, and he that gathered little had no lack; they gathered every man according to his eating."

Exodus 16:21: "And they gathered it every morning, every man according to his eating: and when the sun waxed hot, it melted."

Exodus 16:32: "And Moses said, This is the thing which the LORD commandeth, Fill an omer of it to be kept for your generations; that they may see the bread wherewith I have fed you in the wilderness, when I brought you forth from the land of Egypt."

Exodus 17:11: "And it came to pass, when Moses held up his hand, that Israel prevailed: and when he let down his hand, Amalek prevailed."

Exodus 18:1: "When Jethro, the priest of Midian, Moses' father in law, heard of all that God had done for Moses, and for Israel his people, and that the LORD had brought Israel out of Egypt;"

Exodus 18:14: "And when Moses' father in law saw all that he did to the people, he said, What is this thing that thou doest to the people? why sittest thou thyself alone, and all the people stand by thee from morning unto even?"

Exodus 18:16: "When they have a matter, they come unto me; and I judge between one and another, and I do make them know the statutes of God, and his laws."

Exodus 19:1: "In the third month, when the children of Israel were gone forth out of the land of Egypt, the same day came they into the wilderness of Sinai."

Exodus 19:9: "And the LORD said unto Moses, Lo, I come unto thee in a thick cloud, that the people may hear when I speak with thee, and believe thee for ever. And Moses told the words of the people unto the LORD."

Exodus 19:13: "There shall not an hand touch it, but he shall surely be stoned, or shot through; whether it be beast or man, it shall not live: when the trumpet soundeth long, they shall come up to the mount."

Exodus 19:19: "And when the voice of the trumpet sounded long, and waxed louder and louder, Moses spake, and God answered him by a voice."

Exodus 20:18: "And all the people saw the thunderings, and the lightnings, and the noise of the trumpet, and the mountain smoking: and when the people saw it, they removed, and stood afar off."

Exodus 22:27: "For that is his covering only, it is his raiment for his skin: wherein shall he sleep? and it shall come to pass, when he crieth unto me, that I will hear; for I am gracious."

Exodus 23:16: "And the feast of harvest, the firstfruits of thy labours, which thou hast sown in the field: and the feast of ingathering, which is in the end of the year, when thou hast gathered in thy labours out of the field."

Exodus 28:29: "And Aaron shall bear the names of the children of Israel in the breastplate of judgment upon his heart, when he goeth in unto the holy place, for a memorial before the LORD continually."

Exodus 28:30: "And thou shalt put in the breastplate of judgment the Urim and the Thummim; and they shall be upon Aaron's heart, when he goeth in before the LORD: and Aaron shall bear the judgment of the children of Israel upon his heart before the LORD continually."

Exodus 28:35: "And it shall be upon Aaron to minister: and his sound shall be heard when he goeth in unto the holy place before the LORD, and when he cometh out, that he die not."

Exodus 28:43: "And they shall be upon Aaron, and upon his sons, when they come in unto the tabernacle of the congregation, or when they come near unto the altar to minister in the holy place; that they bear not iniquity, and die: it shall be a statute for ever unto him and his seed after him."

Exodus 29:30: "And that son that is priest in his stead shall put them on seven days, when he cometh into the tabernacle of the congregation to minister in the holy place."

Exodus 29:36: "And thou shalt offer every day a bullock for a sin offering for atonement: and thou shalt cleanse the altar, when thou hast made an atonement for it, and thou shalt anoint it, to sanctify it."

Exodus 30:7: "And Aaron shall burn thereon sweet incense every morning: when he dresseth the lamps, he shall burn incense upon it."

Exodus 30:8: "And when Aaron lighteth the lamps at even, he shall burn incense upon it, a perpetual incense before the LORD throughout your generations."

Exodus 30:12: "When thou takest the sum of the children of Israel after their number, then shall they give every man a ransom for his soul unto the LORD, when thou numberest them; that there be no plague among them, when thou numberest them."

Exodus 30:15: "The rich shall not give more, and the poor shall not give less than half a shekel, when they give an offering unto the LORD, to make an atonement for your souls."

Exodus 30:20: "When they go into the tabernacle of the congregation, they shall wash with water, that they die not; or when they come near to the altar to minister, to burn offering made by fire unto the LORD:"

Exodus 31:18: "And he gave unto Moses, when he had made an end of communing with him upon mount Sinai, two tables of testimony, tables of stone, written with the finger of God."

Exodus 32:1: "And when the people saw that Moses delayed to come down out of the mount, the people gathered themselves together unto Aaron, and said unto him, Up, make us gods, which shall go before us; for as for this Moses, the man that brought us up out of the land of Egypt, we wot not what is become of him."

Exodus 32:5: "And when Aaron saw it, he built an altar before it; and Aaron made proclamation, and said, To morrow is a feast to the LORD."

Exodus 32:17: "And when Joshua heard the noise of the people as they shouted, he said unto Moses, There is a noise of war in the camp."

Exodus 32:25: "And when Moses saw that the people were naked; (for Aaron had made them naked unto their shame among their enemies:)"

Exodus 32:34: "Therefore now go, lead the people unto the place of which I have spoken unto thee: behold, mine Angel shall go before thee: nevertheless in the day when I visit I will visit their sin upon them."

Exodus 33:4: "And when the people heard these evil tidings, they mourned: and no man did put on him his ornaments."

Exodus 33:8: "And it came to pass, when Moses went out unto the tabernacle, that all the people rose up, and stood every man at his tent door, and looked after Moses, until he was gone into the

tabernacle."

Exodus 34:24: "For I will cast out the nations before thee, and enlarge thy borders: neither shall any man desire thy land, when thou shalt go up to appear before the LORD thy God thrice in the year."

Exodus 34:29: "And it came to pass, when Moses came down from mount Sinai with the two tables of testimony in Moses' hand, when he came down from the mount, that Moses wist not that the skin of his face shone while he talked with him."

Exodus 34:30: "And when Aaron and all the children of Israel saw Moses, behold, the skin of his face shone; and they were afraid to come nigh him."

Exodus 34:34: "But when Moses went in before the LORD to speak with him, he took the vail off, until he came out. And he came out, and spake unto the children of Israel that which he was commanded."

Exodus 40:32: "When they went into the tent of the congregation, and when they came near unto the altar, they washed; as the LORD commanded Moses."

Exodus 40:36: "And when the cloud was taken up from over the tabernacle, the children of Israel went onward in all their journeys:"

Leviticus 2:1: "And when any will offer a meat offering unto the LORD, his offering shall be of fine flour; and he shall pour oil upon it, and put frankincense thereon:"

Leviticus 2:8: "And thou shalt bring the meat offering that is made of these things unto the LORD: and when it is presented unto the priest, he shall bring it unto the altar."

Leviticus 4:14: "When the sin, which they have sinned against it, is known, then the congregation shall offer a young bullock for the sin, and bring him before the tabernacle of the congregation."

Leviticus 4:22: "When a ruler hath sinned, and done somewhat through ignorance against any of the commandments of the LORD his God concerning things which should not be done, and is guilty;"

Leviticus 5:3: "Or if he touch the uncleanness of man, whatsoever uncleanness it be that a man shall be defiled withal, and it be hid from him; when he knoweth of it, then he shall be guilty."

Leviticus 5:4: "Or if a soul swear, pronouncing with his lips to do evil, or to do good, whatsoever it be that a man shall pronounce with an oath, and it be hid from him; when he knoweth of it, then he shall be guilty in one of these."

Leviticus 5:5: "And it shall be, when he shall be guilty in one of these things, that he shall confess that he hath sinned in that thing:"

Leviticus 6:20: "This is the offering of Aaron and of his sons, which they shall offer unto the LORD in the day when he is anointed; the tenth part of an ephah of fine flour for a meat offering perpetual, half of it in the morning, and half thereof at night."

Leviticus 6:21: "In a pan it shall be made with oil; and when it is baked, thou shalt bring it in: and the baken pieces of the meat offering shalt thou offer for a sweet savour unto the LORD."

Leviticus 6:27: "Whatsoever shall touch the flesh thereof shall be holy: and when there is sprinkled of the blood thereof upon any garment, thou shalt wash that whereon it was sprinkled in the holy place."

Leviticus 7:35: "This is the portion of the anointing of Aaron, and of the anointing of his sons, out of the offerings of the LORD made by fire, in the day when he presented them to minister unto the LORD in the priest's office;"

Leviticus 9:24: "And there came a fire out from before the LORD, and consumed upon the altar the burnt offering and the fat: which when all the people saw, they shouted, and fell on their faces."

Leviticus 10:9: "Do not drink wine nor strong drink, thou, nor thy sons with thee, when ye go into the tabernacle of the congregation, lest ye die: it shall be a statute for ever throughout your generations:"

Leviticus 10:20: "And when Moses heard that, he was content."

Leviticus 11:31: "These are unclean to you among all that creep: whosoever doth touch them, when they be dead, shall be unclean until the even."

Leviticus 11:32: "And upon whatsoever any of them, when they are dead, doth fall, it shall be

unclean; whether it be any vessel of wood, or raiment, or skin, or sack, whatsoever vessel it be, wherein any work is done, it must be put into water, and it shall be unclean until the even; so it shall be cleansed."

Leviticus 12:6: "And when the days of her purifying are fulfilled, for a son, or for a daughter, she shall bring a lamb of the first year for a burnt offering, and a young pigeon, or a turtledove, for a sin offering, unto the door of the tabernacle of the congregation, unto the priest:"

Leviticus 13:2: "When a man shall have in the skin of his flesh a rising, a scab, or bright spot, and it be in the skin of his flesh like the plague of leprosy; then he shall be brought unto Aaron the priest, or unto one of his sons the priests:"

Leviticus 13:3: "And the priest shall look on the plague in the skin of the flesh: and when the hair in the plague is turned white, and the plague in sight be deeper than the skin of his flesh, it is a plague of leprosy: and the priest shall look on him, and pronounce him unclean."

Leviticus 13:9: "When the plague of leprosy is in a man, then he shall be brought unto the priest;"

Leviticus 13:14: "But when raw flesh appeareth in him, he shall be unclean."

Leviticus 13:20: "And if, when the priest seeth it, behold, it be in sight lower than the skin, and the hair thereof be turned white; the priest shall pronounce him unclean: it is a plague of leprosy broken out of the boil."

Leviticus 14:34: "When ye be come into the land of Canaan, which I give to you for a possession, and I put the plague of leprosy in a house of the land of your possession;"

Leviticus 14:57: "To teach when it is unclean, and when it is clean: this is the law of leprosy."

Leviticus 15:2: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When any man hath a running issue out of his flesh, because of his issue he is unclean."

Leviticus 15:13: "And when he that hath an issue is cleansed of his issue; then he shall number to himself seven days for his cleansing, and wash his clothes, and bathe his flesh in running water, and shall be clean."

Leviticus 15:23: "And if it be on her bed, or on any thing whereon she sitteth, when he toucheth it, he shall be unclean until the even."

Leviticus 15:31: "Thus shall ye separate the children of Israel from their uncleanness; that they die not in their uncleanness, when they defile my tabernacle that is among them."

Leviticus 16:1: "And the LORD spake unto Moses after the death of the two sons of Aaron, when they offered before the LORD, and died;"

Leviticus 16:17: "And there shall be no man in the tabernacle of the congregation when he goeth in to make an atonement in the holy place, until he come out, and have made an atonement for himself, and for his household, and for all the congregation of Israel."

Leviticus 16:20: "And when he hath made an end of reconciling the holy place, and the tabernacle of the congregation, and the altar, he shall bring the live goat:"

Leviticus 16:23: "And Aaron shall come into the tabernacle of the congregation, and shall put off the linen garments, which he put on when he went into the holy place, and shall leave them there:"

Leviticus 18:28: "That the land spue not you out also, when ye defile it, as it spued out the nations that were before you."

Leviticus 19:9: "And when ye reap the harvest of your land, thou shalt not wholly reap the corners of thy field, neither shalt thou gather the gleanings of thy harvest."

Leviticus 19:23: "And when ye shall come into the land, and shall have planted all manner of trees for food, then ye shall count the fruit thereof as uncircumcised: three years shall it be as uncircumcised unto you: it shall not be eaten of."

Leviticus 20:4: "And if the people of the land do any ways hide their eyes from the man, when he giveth of his seed unto Molech, and kill him not:"

Leviticus 22:7: "And when the sun is down, he shall be clean, and shall afterward eat of the holy things; because it is his food."

Leviticus 22:16: "Or suffer them to bear the iniquity of trespass, when they eat their holy things: for

I the LORD do sanctify them."

Leviticus 22:27: "When a bullock, or a sheep, or a goat, is brought forth, then it shall be seven days under the dam; and from the eighth day and thenceforth it shall be accepted for an offering made by fire unto the LORD."

Leviticus 22:29: "And when ye will offer a sacrifice of thanksgiving unto the LORD, offer it at your own will."

Leviticus 23:10: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When ye be come into the land which I give unto you, and shall reap the harvest thereof, then ye shall bring a sheaf of the firstfruits of your harvest unto the priest:"

Leviticus 23:12: "And ye shall offer that day when ye wave the sheaf an he lamb without blemish of the first year for a burnt offering unto the LORD."

Leviticus 23:22: "And when ye reap the harvest of your land, thou shalt not make clean riddance of the corners of thy field when thou reapest, neither shalt thou gather any gleaning of thy harvest: thou shalt leave them unto the poor, and to the stranger: I am the LORD your God."

Leviticus 23:39: "Also in the fifteenth day of the seventh month, when ye have gathered in the fruit of the land, ye shall keep a feast unto the LORD seven days: on the first day shall be a sabbath, and on the eighth day shall be a sabbath."

Leviticus 23:43: "That your generations may know that I made the children of Israel to dwell in booths, when I brought them out of the land of Egypt: I am the LORD your God."

Leviticus 24:16: "And he that blasphemeth the name of the LORD, he shall surely be put to death, and all the congregation shall certainly stone him: as well the stranger, as he that is born in the land, when he blasphemeth the name of the Lord, shall be put to death."

Leviticus 25:2: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When ye come into the land which I give you, then shall the land keep a sabbath unto the LORD."

Leviticus 26:17: "And I will set my face against you, and ye shall be slain before your enemies: they that hate you shall reign over you; and ye shall flee when none pursueth you."

Leviticus 26:25: "And I will bring a sword upon you, that shall avenge the quarrel of my covenant: and when ye are gathered together within your cities, I will send the pestilence among you; and ye shall be delivered into the hand of the enemy."

Leviticus 26:26: "And when I have broken the staff of your bread, ten women shall bake your bread in one oven, and they shall deliver you your bread again by weight: and ye shall eat, and not be satisfied."

Leviticus 26:35: "As long as it lieth desolate it shall rest; because it did not rest in your sabbaths, when ye dwelt upon it."

Leviticus 26:36: "And upon them that are left alive of you I will send a faintness into their hearts in the lands of their enemies; and the sound of a shaken leaf shall chase them; and they shall flee, as fleeing from a sword; and they shall fall when none pursueth."

Leviticus 26:37: "And they shall fall one upon another, as it were before a sword, when none pursueth: and ye shall have no power to stand before your enemies."

Leviticus 26:44: "And yet for all that, when they be in the land of their enemies, I will not cast them away, neither will I abhor them, to destroy them utterly, and to break my covenant with them: for I am the LORD their God."

Leviticus 27:2: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When a man shall make a singular vow, the persons shall be for the LORD by thy estimation."

Leviticus 27:14: "And when a man shall sanctify his house to be holy unto the LORD, then the priest shall estimate it, whether it be good or bad: as the priest shall estimate it, so shall it stand."

Leviticus 27:21: "But the field, when it goeth out in the jubile, shall be holy unto the LORD, as a field devoted; the possession thereof shall be the priest's."

Numbers 1:51: "And when the tabernacle setteth forward, the Levites shall take it down: and when the tabernacle is to be pitched, the Levites shall set it up: and the stranger that cometh nigh shall be

put to death."

Numbers 3:4: "And Nadab and Abihu died before the LORD, when they offered strange fire before the LORD, in the wilderness of Sinai, and they had no children: and Eleazar and Ithamar ministered in the priest's office in the sight of Aaron their father."

Numbers 4:5: "And when the camp setteth forward, Aaron shall come, and his sons, and they shall take down the covering vail, and cover the ark of testimony with it:"

Numbers 4:15: "And when Aaron and his sons have made an end of covering the sanctuary, and all the vessels of the sanctuary, as the camp is to set forward; after that, the sons of Kohath shall come to bear it: but they shall not touch any holy thing, lest they die. These things are the burden of the sons of Kohath in the tabernacle of the congregation."

Numbers 4:19: "But thus do unto them, that they may live, and not die, when they approach unto the most holy things: Aaron and his sons shall go in, and appoint them every one to his service and to his burden:"

Numbers 4:20: "But they shall not go in to see when the holy things are covered, lest they die."

Numbers 5:6: "Speak unto the children of Israel, When a man or woman shall commit any sin that men commit, to do a trespass against the LORD, and that person be guilty;"

Numbers 5:21: "Then the priest shall charge the woman with an oath of cursing, and the priest shall say unto the woman, The LORD make thee a curse and an oath among thy people, when the LORD doth make thy thigh to rot, and thy belly to swell;"

Numbers 5:27: "And when he hath made her to drink the water, then it shall come to pass, that, if she be defiled, and have done trespass against her husband, that the water that causeth the curse shall enter into her, and become bitter, and her belly shall swell, and her thigh shall rot: and the woman shall be a curse among her people."

Numbers 5:29: "This is the law of jealousies, when a wife goeth aside to another instead of her husband, and is defiled;"

Numbers 5:30: "Or when the spirit of jealousy cometh upon him, and he be jealous over his wife, and shall set the woman before the LORD, and the priest shall execute upon her all this law."

Numbers 6:2: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When either man or woman shall separate themselves to vow a vow of a Nazarite, to separate themselves unto the LORD:"

Numbers 6:7: "He shall not make himself unclean for his father, or for his mother, for his brother, or for his sister, when they die: because the consecration of his God is upon his head."

Numbers 6:13: "And this is the law of the Nazarite, when the days of his separation are fulfilled: he shall be brought unto the door of the tabernacle of the congregation:"

Numbers 7:84: "This was the dedication of the altar, in the day when it was anointed, by the princes of Israel: twelve chargers of silver, twelve silver bowls, twelve spoons of gold:"

Numbers 7:89: "And when Moses was gone into the tabernacle of the congregation to speak with him, then he heard the voice of one speaking unto him from off the mercy seat that was upon the ark of testimony, from between the two cherubims: and he spake unto him."

Numbers 8:2: "Speak unto Aaron and say unto him, When thou lightest the lamps, the seven lamps shall give light over against the candlestick."

Numbers 8:19: "And I have given the Levites as a gift to Aaron and to his sons from among the children of Israel, to do the service of the children of Israel in the tabernacle of the congregation, and to make an atonement for the children of Israel: that there be no plague among the children of Israel, when the children of Israel come nigh unto the sanctuary."

Numbers 9:17: "And when the cloud was taken up from the tabernacle, then after that the children of Israel journeyed: and in the place where the cloud abode, there the children of Israel pitched their tents."

Numbers 9:19: "And when the cloud tarried long upon the tabernacle many days, then the children of Israel kept the charge of the LORD, and journeyed not."

Numbers 9:20: "And so it was, when the cloud was a few days upon the tabernacle; according to the

commandment of the LORD they abode in their tents, and according to the commandment of the LORD they journeyed."

Numbers 9:21: "And so it was, when the cloud abode from even unto the morning, and that the cloud was taken up in the morning, then they journeyed: whether it was by day or by night that the cloud was taken up, they journeyed."

Numbers 9:22: "Or whether it were two days, or a month, or a year, that the cloud tarried upon the tabernacle, remaining thereon, the children of Israel abode in their tents, and journeyed not: but when it was taken up, they journeyed."

Numbers 10:3: "And when they shall blow with them, all the assembly shall assemble themselves to thee at the door of the tabernacle of the congregation."

Numbers 10:5: "When ye blow an alarm, then the camps that lie on the east parts shall go forward."

Numbers 10:6: "When ye blow an alarm the second time, then the camps that lie on the south side shall take their journey: they shall blow an alarm for their journeys."

Numbers 10:7: "But when the congregation is to be gathered together, ye shall blow, but ye shall not sound an alarm."

Numbers 10:28: "Thus were the journeyings of the children of Israel according to their armies, when they set forward."

Numbers 10:34: "And the cloud of the LORD was upon them by day, when they went out of the camp."

Numbers 10:35: "And it came to pass, when the ark set forward, that Moses said, Rise up, LORD, and let thine enemies be scattered; and let them that hate thee flee before thee."

Numbers 10:36: "And when it rested, he said, Return, O LORD, unto the many thousands of Israel."

Numbers 11:1: "And when the people complained, it displeased the LORD: and the LORD heard it; and his anger was kindled; and the fire of the LORD burnt among them, and consumed them that were in the uttermost parts of the camp."

Numbers 11:2: "And the people cried unto Moses; and when Moses prayed unto the LORD, the fire was quenched."

Numbers 11:9: "And when the dew fell upon the camp in the night, the manna fell upon it."

Numbers 11:25: "And the LORD came down in a cloud, and spake unto him, and took of the spirit that was upon him, and gave it unto the seventy elders: and it came to pass, that, when the spirit rested upon them, they prophesied, and did not cease."

Numbers 12:12: "Let her not be as one dead, of whom the flesh is half consumed when he cometh out of his mother's womb."

Numbers 15:2: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When ye be come into the land of your habitations, which I give unto you,"

Numbers 15:8: "And when thou preparest a bullock for a burnt offering, or for a sacrifice in performing a vow, or peace offerings unto the LORD:"

Numbers 15:18: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When ye come into the land whither I bring you,"

Numbers 15:19: "Then it shall be, that, when ye eat of the bread of the land, ye shall offer up an heave offering unto the LORD."

Numbers 15:28: "And the priest shall make an atonement for the soul that sinneth ignorantly, when he sinneth by ignorance before the LORD, to make an atonement for him; and it shall be forgiven him."

Numbers 16:4: "And when Moses heard it, he fell upon his face:"

Numbers 16:42: "And it came to pass, when the congregation was gathered against Moses and against Aaron, that they looked toward the tabernacle of the congregation: and, behold, the cloud covered it, and the glory of the LORD appeared."

Numbers 18:26: "Thus speak unto the Levites, and say unto them, When ye take of the children of Israel the tithes which I have given you from them for your inheritance, then ye shall offer up an



heave offering of it for the LORD, even a tenth part of the tithe."

Numbers 18:30: "Therefore thou shalt say unto them, When ye have heaved the best thereof from it, then it shall be counted unto the Levites as the increase of the threshingfloor, and as the increase of the winepress."

Numbers 18:32: "And ye shall bear no sin by reason of it, when ye have heaved from it the best of it: neither shall ye pollute the holy things of the children of Israel, lest ye die."

Numbers 19:14: "This is the law, when a man dieth in a tent: all that come into the tent, and all that is in the tent, shall be unclean seven days."

Numbers 20:3: "And the people chode with Moses, and spake, saying, Would God that we had died when our brethren died before the LORD!"

Numbers 20:16: "And when we cried unto the LORD, he heard our voice, and sent an angel, and hath brought us forth out of Egypt: and, behold, we are in Kadesh, a city in the uttermost of thy border:"

Numbers 20:29: "And when all the congregation saw that Aaron was dead, they mourned for Aaron thirty days, even all the house of Israel."

Numbers 21:1: "And when king Arad the Canaanite, which dwelt in the south, heard tell that Israel came by the way of the spies; then he fought against Israel, and took some of them prisoners."

Numbers 21:8: "And the LORD said unto Moses, Make thee a fiery serpent, and set it upon a pole: and it shall come to pass, that every one that is bitten, when he looketh upon it, shall live."

Numbers 21:9: "And Moses made a serpent of brass, and put it upon a pole, and it came to pass, that if a serpent had bitten any man, when he beheld the serpent of brass, he lived."

Numbers 22:25: "And when the ass saw the angel of the LORD, she thrust herself unto the wall, and crushed Balaam's foot against the wall: and he smote her again."

Numbers 22:27: "And when the ass saw the angel of the LORD, she fell down under Balaam: and Balaam's anger was kindled, and he smote the ass with a staff."

Numbers 22:36: "And when Balak heard that Balaam was come, he went out to meet him unto a city of Moab, which is in the border of Arnon, which is in the utmost coast."

Numbers 23:17: "And when he came to him, behold, he stood by his burnt offering, and the princes of Moab with him. And Balak said unto him, What hath the LORD spoken?"

Numbers 24:1: "And when Balaam saw that it pleased the LORD to bless Israel, he went not, as at other times, to seek for enchantments, but he set his face toward the wilderness."

Numbers 24:20: "And when he looked on Amalek, he took up his parable, and said, Amalek was the first of the nations; but his latter end shall be that he perish for ever."

Numbers 24:23: "And he took up his parable, and said, Alas, who shall live when God doeth this!"

Numbers 25:7: "And when Phinehas, the son of Eleazar, the son of Aaron the priest, saw it, he rose up from among the congregation, and took a javelin in his hand;"

Numbers 26:9: "And the sons of Eliab; Nemuel, and Dathan, and Abiram. This is that Dathan and Abiram, which were famous in the congregation, who strove against Moses and against Aaron in the company of Korah, when they strove against the LORD:"

Numbers 26:10: "And the earth opened her mouth, and swallowed them up together with Korah, when that company died, what time the fire devoured two hundred and fifty men: and they became a sign."

Numbers 26:61: "And Nadab and Abihu died, when they offered strange fire before the LORD."

Numbers 26:64: "But among these there was not a man of them whom Moses and Aaron the priest numbered, when they numbered the children of Israel in the wilderness of Sinai."

Numbers 27:13: "And when thou hast seen it, thou also shalt be gathered unto thy people, as Aaron thy brother was gathered."

Numbers 28:26: "Also in the day of the firstfruits, when ye bring a new meat offering unto the LORD, after your weeks be out, ye shall have an holy convocation; ye shall do no servile work:"

Numbers 30:6: "And if she had at all an husband, when she vowed, or uttered ought out of her lips,

wherewith she bound her soul;"

Numbers 32:1: "Now the children of Reuben and the children of Gad had a very great multitude of cattle: and when they saw the land of Jazer, and the land of Gilead, that, behold, the place was a place for cattle;"

Numbers 32:8: "Thus did your fathers, when I sent them from Kadeshbarnea to see the land."

Numbers 32:9: "For when they went up unto the valley of Eshcol, and saw the land, they discouraged the heart of the children of Israel, that they should not go into the land which the LORD had given them."

Numbers 33:39: "And Aaron was an hundred and twenty and three years old when he died in mount Hor."

Numbers 33:51: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When ye are passed over Jordan into the land of Canaan;"

Numbers 34:2: "Command the children of Israel, and say unto them, When ye come into the land of Canaan; (this is the land that shall fall unto you for an inheritance, even the land of Canaan with the coasts thereof):"

Numbers 35:10: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When ye be come over Jordan into the land of Canaan;"

Numbers 35:19: "The revenger of blood himself shall slay the murderer: when he meeteth him, he shall slay him."

Numbers 35:21: "Or in enmity smite him with his hand, that he die: he that smote him shall surely be put to death; for he is a murderer: the revenger of blood shall slay the murderer, when he meeteth him."

Numbers 36:4: "And when the jubile of the children of Israel shall be, then shall their inheritance be put unto the inheritance of the tribe whereunto they are received: so shall their inheritance be taken away from the inheritance of the tribe of our fathers."

Deuteronomy 1:19: "And when we departed from Horeb, we went through all that great and terrible wilderness, which ye saw by the way of the mountain of the Amorites, as the LORD our God commanded us; and we came to Kadeshbarnea."

Deuteronomy 1:41: "Then ye answered and said unto me, We have sinned against the LORD, we will go up and fight, according to all that the LORD our God commanded us. And when ye had girded on every man his weapons of war, ye were ready to go up into the hill."

Deuteronomy 2:8: "And when we passed by from our brethren the children of Esau, which dwelt in Seir, through the way of the plain from Elath, and from Eziongaber, we turned and passed by the way of the wilderness of Moab."

Deuteronomy 2:12: "The Horims also dwelt in Seir beforetime; but the children of Esau succeeded them, when they had destroyed them from before them, and dwelt in their stead; as Israel did unto the land of his possession, which the LORD gave unto them."

Deuteronomy 2:16: "So it came to pass, when all the men of war were consumed and dead from among the people,"

Deuteronomy 2:19: "And when thou comest nigh over against the children of Ammon, distress them not, nor meddle with them: for I will not give thee of the land of the children of Ammon any possession; because I have given it unto the children of Lot for a possession."

Deuteronomy 2:22: "As he did to the children of Esau, which dwelt in Seir, when he destroyed the Horims from before them; and they succeeded them, and dwelt in their stead even unto this day:"

Deuteronomy 4:10: "Specially the day that thou stoodest before the LORD thy God in Horeb, when the LORD said unto me, Gather me the people together, and I will make them hear my words, that they may learn to fear me all the days that they shall live upon the earth, and that they may teach their children."

Deuteronomy 4:19: "And lest thou lift up thine eyes unto heaven, and when thou seest the sun, and the moon, and the stars, even all the host of heaven, shouldest be driven to worship them, and serve

them, which the LORD thy God hath divided unto all nations under the whole heaven."

Deuteronomy 4:25: "When thou shalt beget children, and children's children, and ye shall have remained long in the land, and shall corrupt yourselves, and make a graven image, or the likeness of any thing, and shall do evil in the sight of the LORD thy God, to provoke him to anger:"

Deuteronomy 4:30: "When thou art in tribulation, and all these things are come upon thee, even in the latter days, if thou turn to the LORD thy God, and shalt be obedient unto his voice;"

Deuteronomy 5:23: "And it came to pass, when ye heard the voice out of the midst of the darkness, (for the mountain did burn with fire,) that ye came near unto me, even all the heads of your tribes, and your elders;"

Deuteronomy 5:28: "And the LORD heard the voice of your words, when ye spake unto me; and the LORD said unto me, I have heard the voice of the words of this people, which they have spoken unto thee: they have well said all that they have spoken."

Deuteronomy 6:7: "And thou shalt teach them diligently unto thy children, and shalt talk of them when thou sittest in thine house, and when thou walkest by the way, and when thou liest down, and when thou risest up."

Deuteronomy 6:10: "And it shall be, when the LORD thy God shall have brought thee into the land which he sware unto thy fathers, to Abraham, to Isaac, and to Jacob, to give thee great and goodly cities, which thou buildedst not,"

Deuteronomy 6:11: "And houses full of all good things, which thou filledst not, and wells digged, which thou diggedst not, vineyards and olive trees, which thou plantedst not; when thou shalt have eaten and be full;"

Deuteronomy 6:20: "And when thy son asketh thee in time to come, saying, What mean the testimonies, and the statutes, and the judgments, which the LORD our God hath commanded you?"

Deuteronomy 7:1: "When the LORD thy God shall bring thee into the land whither thou goest to possess it, and hath cast out many nations before thee, the Hittites, and the Girgashites, and the Amorites, and the Canaanites, and the Perizzites, and the Hivites, and the Jebusites, seven nations greater and mightier than thou;"

Deuteronomy 7:2: "And when the LORD thy God shall deliver them before thee; thou shalt smite them, and utterly destroy them; thou shalt make no covenant with them, nor shew mercy unto them:"

Deuteronomy 8:10: "When thou hast eaten and art full, then thou shalt bless the LORD thy God for the good land which he hath given thee."

Deuteronomy 8:12: "Lest when thou hast eaten and art full, and hast built goodly houses, and dwelt therein;"

Deuteronomy 8:13: "And when thy herds and thy flocks multiply, and thy silver and thy gold is multiplied, and all that thou hast is multiplied;"

Deuteronomy 9:9: "When I was gone up into the mount to receive the tables of stone, even the tables of the covenant which the LORD made with you, then I abode in the mount forty days and forty nights, I neither did eat bread nor drink water:"

Deuteronomy 9:23: "Likewise when the LORD sent you from Kadeshbarnea, saying, Go up and possess the land which I have given you; then ye rebelled against the commandment of the LORD your God, and ye believed him not, nor hearkened to his voice."

Deuteronomy 11:19: "And ye shall teach them your children, speaking of them when thou sittest in thine house, and when thou walkest by the way, when thou liest down, and when thou risest up."

Deuteronomy 11:29: "And it shall come to pass, when the LORD thy God hath brought thee in unto the land whither thou goest to possess it, that thou shalt put the blessing upon mount Gerizim, and the curse upon mount Ebal."

Deuteronomy 12:10: "But when ye go over Jordan, and dwell in the land which the LORD your God giveth you to inherit, and when he giveth you rest from all your enemies round about, so that ye dwell in safety;"

Deuteronomy 12:20: "When the LORD thy God shall enlarge thy border, as he hath promised thee, and thou shalt say, I will eat flesh, because thy soul longeth to eat flesh; thou mayest eat flesh, whatsoever thy soul lusteth after."

Deuteronomy 12:25: "Thou shalt not eat it; that it may go well with thee, and with thy children after thee, when thou shalt do that which is right in the sight of the LORD."

Deuteronomy 12:28: "Observe and hear all these words which I command thee, that it may go well with thee, and with thy children after thee for ever, when thou doest that which is good and right in the sight of the LORD thy God."

Deuteronomy 12:29: "When the LORD thy God shall cut off the nations from before thee, whither thou goest to possess them, and thou succeedest them, and dwellest in their land;"

Deuteronomy 13:18: "When thou shalt hearken to the voice of the LORD thy God, to keep all his commandments which I command thee this day, to do that which is right in the eyes of the LORD thy God."

Deuteronomy 14:24: "And if the way be too long for thee, so that thou art not able to carry it; or if the place be too far from thee, which the LORD thy God shall choose to set his name there, when the LORD thy God hath blessed thee:"

Deuteronomy 15:4: "Save when there shall be no poor among you; for the LORD shall greatly bless thee in the land which the LORD thy God giveth thee for an inheritance to possess it:"

Deuteronomy 15:10: "Thou shalt surely give him, and thine heart shall not be grieved when thou givest unto him: because that for this thing the LORD thy God shall bless thee in all thy works, and in all that thou puttest thine hand unto."

Deuteronomy 15:13: "And when thou sendest him out free from thee, thou shalt not let him go away empty:"

Deuteronomy 15:18: "It shall not seem hard unto thee, when thou sendest him away free from thee; for he hath been worth a double hired servant to thee, in serving thee six years: and the LORD thy God shall bless thee in all that thou doest."

Deuteronomy 16:3: "Thou shalt eat no leavened bread with it; seven days shalt thou eat unleavened bread therewith, even the bread of affliction; for thou camest forth out of the land of Egypt in haste: that thou mayest remember the day when thou camest forth out of the land of Egypt all the days of thy life."

Deuteronomy 17:14: "When thou art come unto the land which the LORD thy God giveth thee, and shalt possess it, and shalt dwell therein, and shalt say, I will set a king over me, like as all the nations that are about me;"

Deuteronomy 17:18: "And it shall be, when he sitteth upon the throne of his kingdom, that he shall write him a copy of this law in a book out of that which is before the priests the Levites:"

Deuteronomy 18:9: "When thou art come into the land which the LORD thy God giveth thee, thou shalt not learn to do after the abominations of those nations."

Deuteronomy 18:22: "When a prophet speaketh in the name of the LORD, if the thing follow not, nor come to pass, that is the thing which the LORD hath not spoken, but the prophet hath spoken it presumptuously: thou shalt not be afraid of him."

Deuteronomy 19:1: "When the LORD thy God hath cut off the nations, whose land the LORD thy God giveth thee, and thou succeedest them, and dwellest in their cities, and in their houses;"

Deuteronomy 19:5: "As when a man goeth into the wood with his neighbour to hew wood, and his hand fetcheth a stroke with the axe to cut down the tree, and the head slippeth from the helve, and lighteth upon his neighbour, that he die; he shall flee unto one of those cities, and live:"

Deuteronomy 20:1: "When thou goest out to battle against thine enemies, and seest horses, and chariots, and a people more than thou, be not afraid of them: for the LORD thy God is with thee, which brought thee up out of the land of Egypt."

Deuteronomy 20:2: "And it shall be, when ye are come nigh unto the battle, that the priest shall approach and speak unto the people,"

Deuteronomy 20:9: "And it shall be, when the officers have made an end of speaking unto the people that they shall make captains of the armies to lead the people."

Deuteronomy 20:10: "When thou comest nigh unto a city to fight against it, then proclaim peace unto it."

Deuteronomy 20:13: "And when the LORD thy God hath delivered it into thine hands, thou shalt smite every male thereof with the edge of the sword:"

Deuteronomy 20:19: "When thou shalt besiege a city a long time, in making war against it to take it, thou shalt not destroy the trees thereof by forcing an axe against them: for thou mayest eat of them, and thou shalt not cut them down (for the tree of the field is man's life) to employ them in the siege:"

Deuteronomy 21:9: "So shalt thou put away the guilt of innocent blood from among you, when thou shalt do that which is right in the sight of the LORD."

Deuteronomy 21:10: "When thou goest forth to war against thine enemies, and the LORD thy God hath delivered them into thine hands, and thou hast taken them captive,"

Deuteronomy 21:16: "Then it shall be, when he maketh his sons to inherit that which he hath, that he may not make the son of the beloved firstborn before the son of the hated, which is indeed the firstborn:"

Deuteronomy 21:18: "If a man have a stubborn and rebellious son, which will not obey the voice of his father, or the voice of his mother, and that, when they have chastened him, will not hearken unto them:"

Deuteronomy 22:8: "When thou buildest a new house, then thou shalt make a battlement for thy roof, that thou bring not blood upon thine house, if any man fall from thence."

Deuteronomy 22:14: "And give occasions of speech against her, and bring up an evil name upon her, and say, I took this woman, and when I came to her, I found her not a maid:"

Deuteronomy 22:26: "But unto the damsel thou shalt do nothing; there is in the damsel no sin worthy of death: for as when a man riseth against his neighbour, and slayeth him, even so is this matter:"

Deuteronomy 23:4: "Because they met you not with bread and with water in the way, when ye came forth out of Egypt; and because they hired against thee Balaam the son of Beor of Pethor of Mesopotamia, to curse thee."

Deuteronomy 23:9: "When the host goeth forth against thine enemies, then keep thee from every wicked thing."

Deuteronomy 23:11: "But it shall be, when evening cometh on, he shall wash himself with water: and when the sun is down, he shall come into the camp again."

Deuteronomy 23:13: "And thou shalt have a paddle upon thy weapon; and it shall be, when thou wilt ease thyself abroad, thou shalt dig therewith, and shalt turn back and cover that which cometh from thee:"

Deuteronomy 23:21: "When thou shalt vow a vow unto the LORD thy God, thou shalt not slack to pay it: for the LORD thy God will surely require it of thee; and it would be sin in thee."

Deuteronomy 23:24: "When thou comest into thy neighbour's vineyard, then thou mayest eat grapes thy fill at thine own pleasure; but thou shalt not put any in thy vessel."

Deuteronomy 23:25: "When thou comest into the standing corn of thy neighbour, then thou mayest pluck the ears with thine hand; but thou shalt not move a sickle unto thy neighbour's standing corn."

Deuteronomy 24:1: "When a man hath taken a wife, and married her, and it come to pass that she find no favour in his eyes, because he hath found some uncleanness in her: then let him write her a bill of divorcement, and give it in her hand, and send her out of his house."

Deuteronomy 24:2: "And when she is departed out of his house, she may go and be another man's wife."

Deuteronomy 24:5: "When a man hath taken a new wife, he shall not go out to war, neither shall he be charged with any business: but he shall be free at home one year, and shall cheer up his wife

which he hath taken."

Deuteronomy 24:10: "When thou dost lend thy brother any thing, thou shalt not go into his house to fetch his pledge."

Deuteronomy 24:13: "In any case thou shalt deliver him the pledge again when the sun goeth down, that he may sleep in his own raiment, and bless thee: and it shall be righteousness unto thee before the LORD thy God."

Deuteronomy 24:19: "When thou cuttest down thine harvest in thy field, and hast forgot a sheaf in the field, thou shalt not go again to fetch it: it shall be for the stranger, for the fatherless, and for the widow: that the LORD thy God may bless thee in all the work of thine hands."

Deuteronomy 24:20: "When thou beatest thine olive tree, thou shalt not go over the boughs again: it shall be for the stranger, for the fatherless, and for the widow."

Deuteronomy 24:21: "When thou gatherest the grapes of thy vineyard, thou shalt not glean it afterward: it shall be for the stranger, for the fatherless, and for the widow."

Deuteronomy 25:4: "Thou shalt not muzzle the ox when he treadeth out the corn."

Deuteronomy 25:11: "When men strive together one with another, and the wife of the one draweth near for to deliver her husband out of the hand of him that smiteth him, and putteth forth her hand, and taketh him by the secrets:"

Deuteronomy 25:17: "Remember what Amalek did unto thee by the way, when ye were come forth out of Egypt;"

Deuteronomy 25:18: "How he met thee by the way, and smote the hindmost of thee, even all that were feeble behind thee, when thou wast faint and weary; and he feared not God."

Deuteronomy 25:19: "Therefore it shall be, when the LORD thy God hath given thee rest from all thine enemies round about, in the land which the LORD thy God giveth thee for an inheritance to possess it, that thou shalt blot out the remembrance of Amalek from under heaven; thou shalt not forget it."

Deuteronomy 26:1: "And it shall be, when thou art come in unto the land which the LORD thy God giveth thee for an inheritance, and possessest it, and dwellest therein;"

Deuteronomy 26:7: "And when we cried unto the LORD God of our fathers, the LORD heard our voice, and looked on our affliction, and our labour, and our oppression:"

Deuteronomy 26:12: "When thou hast made an end of tithing all the tithes of thine increase the third year, which is the year of tithing, and hast given it unto the Levite, the stranger, the fatherless, and the widow, that they may eat within thy gates, and be filled;"

Deuteronomy 27:2: "And it shall be on the day when ye shall pass over Jordan unto the land which the LORD thy God giveth thee, that thou shalt set thee up great stones, and plaister them with plaister:"

Deuteronomy 27:3: "And thou shalt write upon them all the words of this law, when thou art passed over, that thou mayest go in unto the land which the LORD thy God giveth thee, a land that floweth with milk and honey; as the LORD God of thy fathers hath promised thee."

Deuteronomy 27:4: "Therefore it shall be when ye be gone over Jordan, that ye shall set up these stones, which I command you this day, in mount Ebal, and thou shalt plaister them with plaister."

Deuteronomy 27:12: "These shall stand upon mount Gerizim to bless the people, when ye are come over Jordan; Simeon, and Levi, and Judah, and Issachar, and Joseph, and Benjamin:"

Deuteronomy 28:6: "Blessed shalt thou be when thou comest in, and blessed shalt thou be when thou goest out."

Deuteronomy 28:19: "Cursed shalt thou be when thou comest in, and cursed shalt thou be when thou goest out."

Deuteronomy 29:7: "And when ye came unto this place, Sihon the king of Heshbon, and Og the king of Bashan, came out against us unto battle, and we smote them:"

Deuteronomy 29:19: "And it come to pass, when he heareth the words of this curse, that he bless himself in his heart, saying, I shall have peace, though I walk in the imagination of mine heart, to

add drunkenness to thirst:"

Deuteronomy 29:22: "So that the generation to come of your children that shall rise up after you, and the stranger that shall come from a far land, shall say, when they see the plagues of that land, and the sicknesses which the LORD hath laid upon it;"

Deuteronomy 29:25: "Then men shall say, Because they have forsaken the covenant of the LORD God of their fathers, which he made with them when he brought them forth out of the land of Egypt:"

Deuteronomy 30:1: "And it shall come to pass, when all these things are come upon thee, the blessing and the curse, which I have set before thee, and thou shalt call them to mind among all the nations, whither the LORD thy God hath driven thee,"

Deuteronomy 31:11: "When all Israel is come to appear before the LORD thy God in the place which he shall choose, thou shalt read this law before all Israel in their hearing."

Deuteronomy 31:20: "For when I shall have brought them into the land which I swear unto their fathers, that floweth with milk and honey; and they shall have eaten and filled themselves, and waxen fat; then will they turn unto other gods, and serve them, and provoke me, and break my covenant."

Deuteronomy 31:21: "And it shall come to pass, when many evils and troubles are befallen them, that this song shall testify against them as a witness; for it shall not be forgotten out of the mouths of their seed: for I know their imagination which they go about, even now, before I have brought them into the land which I swear."

Deuteronomy 31:24: "And it came to pass, when Moses had made an end of writing the words of this law in a book, until they were finished,"

Deuteronomy 32:8: "When the Most High divided to the nations their inheritance, when he separated the sons of Adam, he set the bounds of the people according to the number of the children of Israel."

Deuteronomy 32:19: "And when the LORD saw it, he abhorred them, because of the provoking of his sons, and of his daughters."

Deuteronomy 32:36: "For the LORD shall judge his people, and repent himself for his servants, when he seeth that their power is gone, and there is none shut up, or left."

Deuteronomy 33:5: "And he was king in Jeshurun, when the heads of the people and the tribes of Israel were gathered together."

Deuteronomy 34:7: "And Moses was an hundred and twenty years old when he died: his eye was not dim, nor his natural force abated."

Joshua 2:5: "And it came to pass about the time of shutting of the gate, when it was dark, that the men went out: whither the men went I wot not: pursue after them quickly; for ye shall overtake them."

Joshua 2:10: "For we have heard how the LORD dried up the water of the Red sea for you, when ye came out of Egypt; and what ye did unto the two kings of the Amorites, that were on the other side Jordan, Sihon and Og, whom ye utterly destroyed."

Joshua 2:14: "And the men answered her, Our life for yours, if ye utter not this our business. And it shall be, when the LORD hath given us the land, that we will deal kindly and truly with thee."

Joshua 2:18: "Behold, when we come into the land, thou shalt bind this line of scarlet thread in the window which thou didst let us down by: and thou shalt bring thy father, and thy mother, and thy brethren, and all thy father's household, home unto thee."

Joshua 3:3: "And they commanded the people, saying, When ye see the ark of the covenant of the LORD your God, and the priests the Levites bearing it, then ye shall remove from your place, and go after it."

Joshua 3:8: "And thou shalt command the priests that bear the ark of the covenant, saying, When ye are come to the brink of the water of Jordan, ye shall stand still in Jordan."

Joshua 3:14: "And it came to pass, when the people removed from their tents, to pass over Jordan,

and the priests bearing the ark of the covenant before the people;"

Joshua 4:1: "And it came to pass, when all the people were clean passed over Jordan, that the LORD spake unto Joshua, saying,"

Joshua 4:6: "That this may be a sign among you, that when your children ask their fathers in time to come, saying, What mean ye by these stones?"

Joshua 4:7: "Then ye shall answer them, That the waters of Jordan were cut off before the ark of the covenant of the LORD; when it passed over Jordan, the waters of Jordan were cut off: and these stones shall be for a memorial unto the children of Israel for ever."

Joshua 4:11: "And it came to pass, when all the people were clean passed over, that the ark of the LORD passed over, and the priests, in the presence of the people."

Joshua 4:18: "And it came to pass, when the priests that bare the ark of the covenant of the LORD were come up out of the midst of Jordan, and the soles of the priests' feet were lifted up unto the dry land, that the waters of Jordan returned unto their place, and flowed over all his banks, as they did before."

Joshua 4:21: "And he spake unto the children of Israel, saying, When your children shall ask their fathers in time to come, saying, What mean these stones?"

Joshua 5:1: "And it came to pass, when all the kings of the Amorites, which were on the side of Jordan westward, and all the kings of the Canaanites, which were by the sea, heard that the LORD had dried up the waters of Jordan from before the children of Israel, until we were passed over, that their heart melted, neither was there spirit in them any more, because of the children of Israel."

Joshua 5:8: "And it came to pass, when they had done circumcising all the people, that they abode in their places in the camp, till they were whole."

Joshua 5:13: "And it came to pass, when Joshua was by Jericho, that he lifted up his eyes and looked, and, behold, there stood a man over against him with his sword drawn in his hand: and Joshua went unto him, and said unto him, Art thou for us, or for our adversaries?"

Joshua 6:5: "And it shall come to pass, that when they make a long blast with the ram's horn, and when ye hear the sound of the trumpet, all the people shall shout with a great shout; and the wall of the city shall fall down flat, and the people shall ascend up every man straight before him."

Joshua 6:8: "And it came to pass, when Joshua had spoken unto the people, that the seven priests bearing the seven trumpets of rams' horns passed on before the LORD, and blew with the trumpets: and the ark of the covenant of the LORD followed them."

Joshua 6:16: "And it came to pass at the seventh time, when the priests blew with the trumpets, Joshua said unto the people, Shout; for the LORD hath given you the city."

Joshua 6:18: "And ye, in any wise keep yourselves from the accursed thing, lest ye make yourselves accursed, when ye take of the accursed thing, and make the camp of Israel a curse, and trouble it."

Joshua 6:20: "So the people shouted when the priests blew with the trumpets: and it came to pass, when the people heard the sound of the trumpet, and the people shouted with a great shout, that the wall fell down flat, so that the people went up into the city, every man straight before him, and they took the city."

Joshua 7:8: "O LORD, what shall I say, when Israel turneth their backs before their enemies!"

Joshua 7:21: "When I saw among the spoils a goodly Babylonish garment, and two hundred shekels of silver, and a wedge of gold of fifty shekels weight, then I coveted them, and took them; and, behold, they are hid in the earth in the midst of my tent, and the silver under it."

Joshua 8:5: "And I, and all the people that are with me, will approach unto the city: and it shall come to pass, when they come out against us, as at the first, that we will flee before them,"

Joshua 8:8: "And it shall be, when ye have taken the city, that ye shall set the city on fire: according to the commandment of the LORD shall ye do. See, I have commanded you."

Joshua 8:13: "And when they had set the people, even all the host that was on the north of the city, and their liers in wait on the west of the city, Joshua went that night into the midst of the valley."

Joshua 8:14: "And it came to pass, when the king of Ai saw it, that they hastened and rose up early,



and the men of the city went out against Israel to battle, he and all his people, at a time appointed, before the plain; but he wist not that there were liers in ambush against him behind the city."

Joshua 8:20: "And when the men of Ai looked behind them, they saw, and, behold, the smoke of the city ascended up to heaven, and they had no power to flee this way or that way: and the people that fled to the wilderness turned back upon the pursuers."

Joshua 8:21: "And when Joshua and all Israel saw that the ambush had taken the city, and that the smoke of the city ascended, then they turned again, and slew the men of Ai."

Joshua 8:24: "And it came to pass, when Israel had made an end of slaying all the inhabitants of Ai in the field, in the wilderness wherein they chased them, and when they were all fallen on the edge of the sword, until they were consumed, that all the Israelites returned unto Ai, and smote it with the edge of the sword."

Joshua 9:1: "And it came to pass, when all the kings which were on this side Jordan, in the hills, and in the valleys, and in all the coasts of the great sea over against Lebanon, the Hittite, and the Amorite, the Canaanite, the Perizzite, the Hivite, and the Jebusite, heard thereof;"

Joshua 9:3: "And when the inhabitants of Gibeon heard what Joshua had done unto Jericho and to Ai,"

Joshua 9:22: "And Joshua called for them, and he spake unto them, saying, Wherefore have ye beguiled us, saying, We are very far from you; when ye dwell among us?"

Joshua 10:1: "Now it came to pass, when Adonizedec king of Jerusalem had heard how Joshua had taken Ai, and had utterly destroyed it; as he had done to Jericho and her king, so he had done to Ai and her king; and how the inhabitants of Gibeon had made peace with Israel, and were among them;"

Joshua 10:12: "Then spake Joshua to the LORD in the day when the LORD delivered up the Amorites before the children of Israel, and he said in the sight of Israel, Sun, stand thou still upon Gibeon; and thou, Moon, in the valley of Ajalon."

Joshua 10:20: "And it came to pass, when Joshua and the children of Israel had made an end of slaying them with a very great slaughter, till they were consumed, that the rest which remained of them entered into fenced cities."

Joshua 10:24: "And it came to pass, when they brought out those kings unto Joshua, that Joshua called for all the men of Israel, and said unto the captains of the men of war which went with him, Come near, put your feet upon the necks of these kings. And they came near, and put their feet upon the necks of them."

Joshua 11:1: "And it came to pass, when Jabin king of Hazor had heard those things, that he sent to Jobab king of Madon, and to the king of Shimron, and to the king of Achshaph,"

Joshua 11:5: "And when all these kings were met together, they came and pitched together at the waters of Merom, to fight against Israel."

Joshua 14:7: "Forty years old was I when Moses the servant of the LORD sent me from Kadeshbarnea to espy out the land; and I brought him word again as it was in mine heart."

Joshua 17:13: "Yet it came to pass, when the children of Israel were waxen strong, that they put the Canaanites to tribute, but did not utterly drive them out."

Joshua 19:49: "When they had made an end of dividing the land for inheritance by their coasts, the children of Israel gave an inheritance to Joshua the son of Nun among them:"

Joshua 20:4: "And when he that doth flee unto one of those cities shall stand at the entering of the gate of the city, and shall declare his cause in the ears of the elders of that city, they shall take him into the city unto them, and give him a place, that he may dwell among them."

Joshua 22:7: "Now to the one half of the tribe of Manasseh Moses had given possession in Bashan: but unto the other half thereof gave Joshua among their brethren on this side Jordan westward. And when Joshua sent them away also unto their tents, then he blessed them,"

Joshua 22:10: "And when they came unto the borders of Jordan, that are in the land of Canaan, the children of Reuben and the children of Gad and the half tribe of Manasseh built there an altar by

Jordan, a great altar to see to."

Joshua 22:12: "And when the children of Israel heard of it, the whole congregation of the children of Israel gathered themselves together at Shiloh, to go up to war against them."

Joshua 22:28: "Therefore said we, that it shall be, when they should so say to us or to our generations in time to come, that we may say again, Behold the pattern of the altar of the LORD, which our fathers made, not for burnt offerings, nor for sacrifices; but it is a witness between us and you."

Joshua 22:30: "And when Phinehas the priest, and the princes of the congregation and heads of the thousands of Israel which were with him, heard the words that the children of Reuben and the children of Gad and the children of Manasseh spake, it pleased them."

Joshua 23:16: "When ye have transgressed the covenant of the LORD your God, which he commanded you, and have gone and served other gods, and bowed yourselves to them; then shall the anger of the LORD be kindled against you, and ye shall perish quickly from off the good land which he hath given unto you."

Joshua 24:7: "And when they cried unto the LORD, he put darkness between you and the Egyptians, and brought the sea upon them, and covered them; and your eyes have seen what I have done in Egypt: and ye dwelt in the wilderness a long season."

Judges 1:14: "And it came to pass, when she came to him, that she moved him to ask of her father a field: and she lighted from off her ass; and Caleb said unto her, What wilt thou?"

Judges 1:25: "And when he shewed them the entrance into the city, they smote the city with the edge of the sword; but they let go the man and all his family."

Judges 1:28: "And it came to pass, when Israel was strong, that they put the Canaanites to tribute, and did not utterly drive them out."

Judges 2:4: "And it came to pass, when the angel of the LORD spake these words unto all the children of Israel, that the people lifted up their voice, and wept."

Judges 2:6: "And when Joshua had let the people go, the children of Israel went every man unto his inheritance to possess the land."

Judges 2:18: "And when the LORD raised them up judges, then the LORD was with the judge, and delivered them out of the hand of their enemies all the days of the judge: for it repented the LORD because of their groanings by reason of them that oppressed them and vexed them."

Judges 2:19: "And it came to pass, when the judge was dead, that they returned, and corrupted themselves more than their fathers, in following other gods to serve them, and to bow down unto them; they ceased not from their own doings, nor from their stubborn way."

Judges 2:21: "I also will not henceforth drive out any from before them of the nations which Joshua left when he died:"

Judges 3:9: "And when the children of Israel cried unto the LORD, the LORD raised up a deliverer to the children of Israel, who delivered them, even Othniel the son of Kenaz, Caleb's younger brother."

Judges 3:15: "But when the children of Israel cried unto the LORD, the LORD raised them up a deliverer, Ehud the son of Gera, a Benjamite, a man lefthanded: and by him the children of Israel sent a present unto Eglon the king of Moab."

Judges 3:18: "And when he had made an end to offer the present, he sent away the people that bare the present."

Judges 3:24: "When he was gone out, his servants came; and when they saw that, behold, the doors of the parlour were locked, they said, Surely he covereth his feet in his summer chamber."

Judges 3:27: "And it came to pass, when he was come, that he blew a trumpet in the mountain of Ephraim, and the children of Israel went down with him from the mount, and he before them."

Judges 4:1: "And the children of Israel again did evil in the sight of the LORD, when Ehud was dead."

Judges 4:18: "And Jael went out to meet Sisera, and said unto him, Turn in, my lord, turn in to me;

fear not. And when he had turned in unto her into the tent, she covered him with a mantle."

Judges 4:20: "Again he said unto her, Stand in the door of the tent, and it shall be, when any man doth come and enquire of thee, and say, Is there any man here? that thou shalt say, No."

Judges 4:22: "And, behold, as Barak pursued Sisera, Jael came out to meet him, and said unto him, Come, and I will shew thee the man whom thou seekest. And when he came into her tent, behold, Sisera lay dead, and the nail was in his temples."

Judges 5:2: "Praise ye the LORD for the avenging of Israel, when the people willingly offered themselves."

Judges 5:4: "LORD, when thou wentest out of Seir, when thou marchedst out of the field of Edom, the earth trembled, and the heavens dropped, the clouds also dropped water."

Judges 5:26: "She put her hand to the nail, and her right hand to the workmen's hammer; and with the hammer she smote Sisera, she smote off his head, when she had pierced and stricken through his temples."

Judges 5:31: "So let all thine enemies perish, O LORD: but let them that love him be as the sun when he goeth forth in his might. And the land had rest forty years."

Judges 6:3: "And so it was, when Israel had sown, that the Midianites came up, and the Amalekites, and the children of the east, even they came up against them;"

Judges 6:7: "And it came to pass, when the children of Israel cried unto the LORD because of the Midianites,"

Judges 6:22: "And when Gideon perceived that he was an angel of the LORD, Gideon said, Alas, O LORD God! for because I have seen an angel of the LORD face to face."

Judges 6:28: "And when the men of the city arose early in the morning, behold, the altar of Baal was cast down, and the grove was cut down that was by it, and the second bullock was offered upon the altar that was built."

Judges 6:29: "And they said one to another, Who hath done this thing? And when they enquired and asked, they said, Gideon the son of Joash hath done this thing."

Judges 7:13: "And when Gideon was come, behold, there was a man that told a dream unto his fellow, and said, Behold, I dreamed a dream, and, lo, a cake of barley bread tumbled into the host of Midian, and came unto a tent, and smote it that it fell, and overturned it, that the tent lay along."

Judges 7:15: "And it was so, when Gideon heard the telling of the dream, and the interpretation thereof, that he worshipped, and returned into the host of Israel, and said, Arise; for the LORD hath delivered into your hand the host of Midian."

Judges 7:17: "And he said unto them, Look on me, and do likewise: and, behold, when I come to the outside of the camp, it shall be that, as I do, so shall ye do."

Judges 7:18: "When I blow with a trumpet, I and all that are with me, then blow ye the trumpets also on every side of all the camp, and say, The sword of the LORD, and of Gideon."

Judges 8:1: "And the men of Ephraim said unto him, Why hast thou served us thus, that thou calledst us not, when thou wentest to fight with the Midianites? And they did chide with him sharply."

Judges 8:3: "God hath delivered into your hands the princes of Midian, Oreb and Zeeb: and what was I able to do in comparison of you? Then their anger was abated toward him, when he had said that."

Judges 8:7: "And Gideon said, Therefore when the LORD hath delivered Zebah and Zalmunna into mine hand, then I will tear your flesh with the thorns of the wilderness and with briers."

Judges 8:9: "And he spake also unto the men of Penuel, saying, When I come again in peace, I will break down this tower."

Judges 8:12: "And when Zebah and Zalmunna fled, he pursued after them, and took the two kings of Midian, Zebah and Zalmunna, and discomfited all the host."

Judges 9:7: "And when they told it to Jotham, he went and stood in the top of mount Gerizim, and lifted up his voice, and cried, and said unto them, Hearken unto me, ye men of Shechem, that God

may hearken unto you."

Judges 9:22: "When Abimelech had reigned three years over Israel,"

Judges 9:30: "And when Zebul the ruler of the city heard the words of Gaal the son of Ebed, his anger was kindled."

Judges 9:33: "And it shall be, that in the morning, as soon as the sun is up, thou shalt rise early, and set upon the city: and, behold, when he and the people that is with him come out against thee, then mayest thou do to them as thou shalt find occasion."

Judges 9:36: "And when Gaal saw the people, he said to Zebul, Behold, there come people down from the top of the mountains. And Zebul said unto him, Thou seest the shadow of the mountains as if they were men."

Judges 9:46: "And when all the men of the tower of Shechem heard that, they entered into an hold of the house of the god Berith."

Judges 9:55: "And when the men of Israel saw that Abimelech was dead, they departed every man unto his place."

Judges 11:5: "And it was so, that when the children of Ammon made war against Israel, the elders of Gilead went to fetch Jephthah out of the land of Tob:"

Judges 11:7: "And Jephthah said unto the elders of Gilead, Did not ye hate me, and expel me out of my father's house? and why are ye come unto me now when ye are in distress?"

Judges 11:13: "And the king of the children of Ammon answered unto the messengers of Jephthah, Because Israel took away my land, when they came up out of Egypt, from Arnon even unto Jabbok, and unto Jordan: now therefore restore those lands again peaceably."

Judges 11:16: "But when Israel came up from Egypt, and walked through the wilderness unto the Red sea, and came to Kadesh;"

Judges 11:31: "Then it shall be, that whatsoever cometh forth of the doors of my house to meet me, when I return in peace from the children of Ammon, shall surely be the LORD's, and I will offer it up for a burnt offering."

Judges 11:35: "And it came to pass, when he saw her, that he rent his clothes, and said, Alas, my daughter! thou hast brought me very low, and thou art one of them that trouble me: for I have opened my mouth unto the LORD, and I cannot go back."

Judges 12:2: "And Jephthah said unto them, I and my people were at great strife with the children of Ammon; and when I called you, ye delivered me not out of their hands."

Judges 12:3: "And when I saw that ye delivered me not, I put my life in my hands, and passed over against the children of Ammon, and the LORD delivered them into my hand: wherefore then are ye come up unto me this day, to fight against me?"

Judges 12:5: "And the Gileadites took the passages of Jordan before the Ephraimites: and it was so, that when those Ephraimites which were escaped said, Let me go over; that the men of Gilead said unto him, Art thou an Ephraimite? If he said, Nay;"

Judges 13:17: "And Manoah said unto the angel of the LORD, What is thy name, that when thy sayings come to pass we may do thee honour?"

Judges 13:20: "For it came to pass, when the flame went up toward heaven from off the altar, that the angel of the LORD ascended in the flame of the altar. And Manoah and his wife looked on it, and fell on their faces to the ground."

Judges 14:11: "And it came to pass, when they saw him, that they brought thirty companions to be with him."

Judges 15:5: "And when he had set the brands on fire, he let them go into the standing corn of the Philistines, and burnt up both the shocks, and also the standing corn, with the vineyards and olives."

Judges 15:14: "And when he came unto Lehi, the Philistines shouted against him: and the Spirit of the LORD came mightily upon him, and the cords that were upon his arms became as flax that was burnt with fire, and his bands loosed from off his hands."

Judges 15:17: "And it came to pass, when he had made an end of speaking, that he cast away the

jawbone out of his hand, and called that place Ramathlehi."

Judges 15:19: "But God clave an hollow place that was in the jaw, and there came water thereout; and when he had drunk, his spirit came again, and he revived: wherefore he called the name thereof Enhakkore, which is in Lehi unto this day."

Judges 16:2: "And it was told the Gazites, saying, Samson is come hither. And they compassed him in, and laid wait for him all night in the gate of the city, and were quiet all the night, saying, In the morning, when it is day, we shall kill him."

Judges 16:9: "Now there were men lying in wait, abiding with her in the chamber. And she said unto him, The Philistines be upon thee, Samson. And he brake the withs, as a thread of tow is broken when it toucheth the fire. So his strength was not known."

Judges 16:15: "And she said unto him, How canst thou say, I love thee, when thine heart is not with me? thou hast mocked me these three times, and hast not told me wherein thy great strength lieth."

Judges 16:16: "And it came to pass, when she pressed him daily with her words, and urged him, so that his soul was vexed unto death;"

Judges 16:18: "And when Delilah saw that he had told her all his heart, she sent and called for the lords of the Philistines, saying, Come up this once, for he hath shewed me all his heart. Then the lords of the Philistines came up unto her, and brought money in their hand."

Judges 16:24: "And when the people saw him, they praised their god: for they said, Our god hath delivered into our hands our enemy, and the destroyer of our country, which slew many of us."

Judges 16:25: "And it came to pass, when their hearts were merry, that they said, Call for Samson, that he may make us sport. And they called for Samson out of the prison house; and he made them sport: and they set him between the pillars."

Judges 17:3: "And when he had restored the eleven hundred shekels of silver to his mother, his mother said, I had wholly dedicated the silver unto the LORD from my hand for my son, to make a graven image and a molten image: now therefore I will restore it unto thee."

Judges 18:2: "And the children of Dan sent of their family five men from their coasts, men of valour, from Zorah, and from Eshtaol, to spy out the land, and to search it; and they said unto them, Go, search the land: who when they came to mount Ephraim, to the house of Micah, they lodged there."

Judges 18:3: "When they were by the house of Micah, they knew the voice of the young man the Levite: and they turned in thither, and said unto him, Who brought thee hither? and what makest thou in this place? and what hast thou here?"

Judges 18:10: "When ye go, ye shall come unto a people secure, and to a large land: for God hath given it into your hands; a place where there is no want of any thing that is in the earth."

Judges 18:22: "And when they were a good way from the house of Micah, the men that were in the houses near to Micah's house were gathered together, and overtook the children of Dan."

Judges 18:26: "And the children of Dan went their way: and when Micah saw that they were too strong for him, he turned and went back unto his house."

Judges 19:1: "And it came to pass in those days, when there was no king in Israel, that there was a certain Levite sojourning on the side of mount Ephraim, who took to him a concubine out of Bethlehemjudah."

Judges 19:3: "And her husband arose, and went after her, to speak friendly unto her, and to bring her again, having his servant with him, and a couple of asses: and she brought him into her father's house: and when the father of the damsel saw him, he rejoiced to meet him."

Judges 19:5: "And it came to pass on the fourth day, when they arose early in the morning, that he rose up to depart: and the damsel's father said unto his son in law, Comfort thine heart with a morsel of bread, and afterward go your way."

Judges 19:7: "And when the man rose up to depart, his father in law urged him: therefore he lodged there again."

Judges 19:9: "And when the man rose up to depart, he, and his concubine, and his servant, his father

in law, the damsel's father, said unto him, Behold, now the day draweth toward evening, I pray you tarry all night: behold, the day groweth to an end, lodge here, that thine heart may be merry; and to morrow get you early on your way, that thou mayest go home."

Judges 19:11: "And when they were by Jebus, the day was far spent; and the servant said unto his master, Come, I pray thee, and let us turn in into this city of the Jebusites, and lodge in it."

Judges 19:14: "And they passed on and went their way; and the sun went down upon them when they were by Gibeah, which belongeth to Benjamin."

Judges 19:15: "And they turned aside thither, to go in and to lodge in Gibeah: and when he went in, he sat him down in a street of the city: for there was no man that took them into his house to lodging."

Judges 19:17: "And when he had lifted up his eyes, he saw a wayfaring man in the street of the city: and the old man said, Whither goest thou? and whence comest thou?"

Judges 19:25: "But the men would not hearken to him: so the man took his concubine, and brought her forth unto them; and they knew her, and abused her all the night until the morning: and when the day began to spring, they let her go."

Judges 19:29: "And when he was come into his house, he took a knife, and laid hold on his concubine, and divided her, together with her bones, into twelve pieces, and sent her into all the coasts of Israel."

Judges 20:10: "And we will take ten men of an hundred throughout all the tribes of Israel, and an hundred of a thousand, and a thousand out of ten thousand, to fetch victual for the people, that they may do, when they come to Gibeah of Benjamin, according to all the folly that they have wrought in Israel."

Judges 20:39: "And when the men of Israel retired in the battle, Benjamin began to smite and kill of the men of Israel about thirty persons: for they said, Surely they are smitten down before us, as in the first battle."

Judges 20:40: "But when the flame began to arise up out of the city with a pillar of smoke, the Benjamites looked behind them, and, behold, the flame of the city ascended up to heaven."

Judges 20:41: "And when the men of Israel turned again, the men of Benjamin were amazed: for they saw that evil was come upon them."

Judges 21:22: "And it shall be, when their fathers or their brethren come unto us to complain, that we will say unto them, Be favourable unto them for our sakes: because we reserved not to each man his wife in the war: for ye did not give unto them at this time, that ye should be guilty."

Ruth 1:1: "Now it came to pass in the days when the judges ruled, that there was a famine in the land. And a certain man of Bethlehemjudah went to sojourn in the country of Moab, he, and his wife, and his two sons."

Ruth 1:18: "When she saw that she was stedfastly minded to go with her, then she left speaking unto her."

Ruth 1:19: "So they two went until they came to Bethlehem. And it came to pass, when they were come to Bethlehem, that all the city was moved about them, and they said, Is this Naomi?"

Ruth 2:9: "Let thine eyes be on the field that they do reap, and go thou after them: have I not charged the young men that they shall not touch thee? and when thou art athirst, go unto the vessels, and drink of that which the young men have drawn."

Ruth 2:15: "And when she was risen up to glean, Boaz commanded his young men, saying, Let her glean even among the sheaves, and reproach her not:"

Ruth 3:4: "And it shall be, when he lieth down, that thou shalt mark the place where he shall lie, and thou shalt go in, and uncover his feet, and lay thee down; and he will tell thee what thou shalt do."

Ruth 3:7: "And when Boaz had eaten and drunk, and his heart was merry, he went to lie down at the end of the heap of corn: and she came softly, and uncovered his feet, and laid her down."

Ruth 3:15: "Also he said, Bring the vail that thou hast upon thee, and hold it. And when she held it, he measured six measures of barley, and laid it on her: and she went into the city."

Ruth 3:16: "And when she came to her mother in law, she said, Who art thou, my daughter? And she told her all that the man had done to her."

Ruth 4:13: "So Boaz took Ruth, and she was his wife: and when he went in unto her, the LORD gave her conception, and she bare a son."

1 Samuel 1:4: "And when the time was that Elkanah offered, he gave to Peninnah his wife, and to all her sons and her daughters, portions:"

1 Samuel 1:7: "And as he did so year by year, when she went up to the house of the LORD, so she provoked her; therefore she wept, and did not eat."

1 Samuel 1:20: "Wherefore it came to pass, when the time was come about after Hannah had conceived, that she bare a son, and called his name Samuel, saying, Because I have asked him of the LORD."

1 Samuel 1:24: "And when she had weaned him, she took him up with her, with three bullocks, and one ephah of flour, and a bottle of wine, and brought him unto the house of the LORD in Shiloh: and the child was young."

1 Samuel 2:13: "And the priest's custom with the people was, that, when any man offered sacrifice, the priest's servant came, while the flesh was in seething, with a fleshhook of three teeth in his hand;"

1 Samuel 2:19: "Moreover his mother made him a little coat, and brought it to him from year to year, when she came up with her husband to offer the yearly sacrifice."

1 Samuel 2:27: "And there came a man of God unto Eli, and said unto him, Thus saith the LORD, Did I plainly appear unto the house of thy father, when they were in Egypt in Pharaoh's house?"

1 Samuel 3:2: "And it came to pass at that time, when Eli was laid down in his place, and his eyes began to wax dim, that he could not see;"

1 Samuel 3:12: "In that day I will perform against Eli all things which I have spoken concerning his house: when I begin, I will also make an end."

1 Samuel 4:2: "And the Philistines put themselves in array against Israel: and when they joined battle, Israel was smitten before the Philistines: and they slew of the army in the field about four thousand men."

1 Samuel 4:3: "And when the people were come into the camp, the elders of Israel said, Wherefore hath the LORD smitten us to day before the Philistines? Let us fetch the ark of the covenant of the LORD out of Shiloh unto us, that, when it cometh among us, it may save us out of the hand of our enemies."

1 Samuel 4:5: "And when the ark of the covenant of the LORD came into the camp, all Israel shouted with a great shout, so that the earth rang again."

1 Samuel 4:6: "And when the Philistines heard the noise of the shout, they said, What meaneth the noise of this great shout in the camp of the Hebrews? And they understood that the ark of the LORD was come into the camp."

1 Samuel 4:13: "And when he came, lo, Eli sat upon a seat by the wayside watching: for his heart trembled for the ark of God. And when the man came into the city, and told it, all the city cried out."

1 Samuel 4:14: "And when Eli heard the noise of the crying, he said, What meaneth the noise of this tumult? And the man came in hastily, and told Eli."

1 Samuel 4:18: "And it came to pass, when he made mention of the ark of God, that he fell from off the seat backward by the side of the gate, and his neck brake, and he died: for he was an old man, and heavy. And he had judged Israel forty years."

1 Samuel 4:19: "And his daughter in law, Phinehas' wife, was with child, near to be delivered: and when she heard the tidings that the ark of God was taken, and that her father in law and her husband were dead, she bowed herself and travailed; for her pains came upon her."

1 Samuel 5:2: "When the Philistines took the ark of God, they brought it into the house of Dagon, and set it by Dagon."

1 Samuel 5:3: "And when they of Ashdod arose early on the morrow, behold, Dagon was fallen upon his face to the earth before the ark of the LORD. And they took Dagon, and set him in his place again."

1 Samuel 5:4: "And when they arose early on the morrow morning, behold, Dagon was fallen upon his face to the ground before the ark of the LORD; and the head of Dagon and both the palms of his hands were cut off upon the threshold; only the stump of Dagon was left to him."

1 Samuel 5:7: "And when the men of Ashdod saw that it was so, they said, The ark of the God of Israel shall not abide with us: for his hand is sore upon us, and upon Dagon our god."

1 Samuel 6:6: "Wherefore then do ye harden your hearts, as the Egyptians and Pharaoh hardened their hearts? when he had wrought wonderfully among them, did they not let the people go, and they departed?"

1 Samuel 6:16: "And when the five lords of the Philistines had seen it, they returned to Ekron the same day."

1 Samuel 7:7: "And when the Philistines heard that the children of Israel were gathered together to Mizpeh, the lords of the Philistines went up against Israel. And when the children of Israel heard it, they were afraid of the Philistines."

1 Samuel 8:1: "And it came to pass, when Samuel was old, that he made his sons judges over Israel."

1 Samuel 8:6: "But the thing displeased Samuel, when they said, Give us a king to judge us. And Samuel prayed unto the LORD."

1 Samuel 9:5: "And when they were come to the land of Zuph, Saul said to his servant that was with him, Come, and let us return; lest my father leave caring for the asses, and take thought for us."

1 Samuel 9:9: "(Beforetime in Israel, when a man went to enquire of God, thus he spake, Come, and let us go to the seer: for he that is now called a Prophet was beforetime called a Seer.)"

1 Samuel 9:14: "And they went up into the city: and when they were come into the city, behold, Samuel came out against them, for to go up to the high place."

1 Samuel 9:17: "And when Samuel saw Saul, the LORD said unto him, Behold the man whom I spake to thee of! this same shall reign over my people."

1 Samuel 9:25: "And when they were come down from the high place into the city, Samuel communed with Saul upon the top of the house."

1 Samuel 10:2: "When thou art departed from me to day, then thou shalt find two men by Rachel's sepulchre in the border of Benjamin at Zelzah; and they will say unto thee, The asses which thou wentest to seek are found: and, lo, thy father hath left the care of the asses, and sorroweth for you, saying, What shall I do for my son?"

1 Samuel 10:5: "After that thou shalt come to the hill of God, where is the garrison of the Philistines: and it shall come to pass, when thou art come thither to the city, that thou shalt meet a company of prophets coming down from the high place with a psaltery, and a tabret, and a pipe, and a harp, before them; and they shall prophesy:"

1 Samuel 10:7: "And let it be, when these signs are come unto thee, that thou do as occasion serve thee; for God is with thee."

1 Samuel 10:9: "And it was so, that when he had turned his back to go from Samuel, God gave him another heart: and all those signs came to pass that day."

1 Samuel 10:10: "And when they came thither to the hill, behold, a company of prophets met him; and the Spirit of God came upon him, and he prophesied among them."

1 Samuel 10:11: "And it came to pass, when all that knew him beforetime saw that, behold, he prophesied among the prophets, then the people said one to another, What is this that is come unto the son of Kish? Is Saul also among the prophets?"

1 Samuel 10:13: "And when he had made an end of prophesying, he came to the high place."

1 Samuel 10:14: "And Saul's uncle said unto him and to his servant, Whither went ye? And he said, To seek the asses: and when we saw that they were no where, we came to Samuel."



1 Samuel 10:20: "And when Samuel had caused all the tribes of Israel to come near, the tribe of Benjamin was taken."

1 Samuel 10:21: "When he had caused the tribe of Benjamin to come near by their families, the family of Matri was taken, and Saul the son of Kish was taken: and when they sought him, he could not be found."

1 Samuel 10:23: "And they ran and fetched him thence: and when he stood among the people, he was higher than any of the people from his shoulders and upward."

1 Samuel 11:6: "And the Spirit of God came upon Saul when he heard those tidings, and his anger was kindled greatly."

1 Samuel 11:8: "And when he numbered them in Bezek, the children of Israel were three hundred thousand, and the men of Judah thirty thousand."

1 Samuel 12:8: "When Jacob was come into Egypt, and your fathers cried unto the LORD, then the LORD sent Moses and Aaron, which brought forth your fathers out of Egypt, and made them dwell in this place."

1 Samuel 12:9: "And when they forgot the LORD their God, he sold them into the hand of Sisera, captain of the host of Hazor, and into the hand of the Philistines, and into the hand of the king of Moab, and they fought against them."

1 Samuel 12:12: "And when ye saw that Nahash the king of the children of Ammon came against you, ye said unto me, Nay; but a king shall reign over us: when the LORD your God was your king."

1 Samuel 13:1: "Saul reigned one year; and when he had reigned two years over Israel,"

1 Samuel 13:6: "When the men of Israel saw that they were in a strait, (for the people were distressed,) then the people did hide themselves in caves, and in thickets, and in rocks, and in high places, and in pits."

1 Samuel 14:17: "Then said Saul unto the people that were with him, Number now, and see who is gone from us. And when they had numbered, behold, Jonathan and his armourbearer were not there."

1 Samuel 14:22: "Likewise all the men of Israel which had hid themselves in mount Ephraim, when they heard that the Philistines fled, even they also followed hard after them in the battle."

1 Samuel 14:26: "And when the people were come into the wood, behold, the honey dropped; but no man put his hand to his mouth: for the people feared the oath."

1 Samuel 14:27: "But Jonathan heard not when his father charged the people with the oath: wherefore he put forth the end of the rod that was in his hand, and dipped it in an honeycomb, and put his hand to his mouth; and his eyes were enlightened."

1 Samuel 14:52: "And there was sore war against the Philistines all the days of Saul: and when Saul saw any strong man, or any valiant man, he took him unto him."

1 Samuel 15:2: "Thus saith the LORD of hosts, I remember that which Amalek did to Israel, how he laid wait for him in the way, when he came up from Egypt."

1 Samuel 15:6: "And Saul said unto the Kenites, Go, depart, get you down from among the Amalekites, lest I destroy you with them: for ye shewed kindness to all the children of Israel, when they came up out of Egypt. So the Kenites departed from among the Amalekites."

1 Samuel 15:12: "And when Samuel rose early to meet Saul in the morning, it was told Samuel, saying, Saul came to Carmel, and, behold, he set him up a place, and is gone about, and passed on, and gone down to Gilgal."

1 Samuel 15:17: "And Samuel said, When thou wast little in thine own sight, wast thou not made the head of the tribes of Israel, and the LORD anointed thee king over Israel?"

1 Samuel 16:6: "And it came to pass, when they were come, that he looked on Eliab, and said, Surely the LORD's anointed is before him."

1 Samuel 16:16: "Let our lord now command thy servants, which are before thee, to seek out a man, who is a cunning player on an harp: and it shall come to pass, when the evil spirit from God is upon

thee, that he shall play with his hand, and thou shalt be well."

1 Samuel 16:23: "And it came to pass, when the evil spirit from God was upon Saul, that David took an harp, and played with his hand: so Saul was refreshed, and was well, and the evil spirit departed from him."

1 Samuel 17:11: "When Saul and all Israel heard those words of the Philistine, they were dismayed, and greatly afraid."

1 Samuel 17:24: "And all the men of Israel, when they saw the man, fled from him, and were sore afraid."

1 Samuel 17:28: "And Eliab his eldest brother heard when he spake unto the men; and Eliab's anger was kindled against David, and he said, Why camest thou down hither? and with whom hast thou left those few sheep in the wilderness? I know thy pride, and the naughtiness of thine heart; for thou art come down that thou mightest see the battle."

1 Samuel 17:31: "And when the words were heard which David spake, they rehearsed them before Saul: and he sent for him."

1 Samuel 17:35: "And I went out after him, and smote him, and delivered it out of his mouth: and when he arose against me, I caught him by his beard, and smote him, and slew him."

1 Samuel 17:42: "And when the Philistine looked about, and saw David, he disdained him: for he was but a youth, and ruddy, and of a fair countenance."

1 Samuel 17:48: "And it came to pass, when the Philistine arose, and came, and drew nigh to meet David, that David hastened, and ran toward the army to meet the Philistine."

1 Samuel 17:51: "Therefore David ran, and stood upon the Philistine, and took his sword, and drew it out of the sheath thereof, and slew him, and cut off his head therewith. And when the Philistines saw their champion was dead, they fled."

1 Samuel 17:55: "And when Saul saw David go forth against the Philistine, he said unto Abner, the captain of the host, Abner, whose son is this youth? And Abner said, As thy soul liveth, O king, I cannot tell."

1 Samuel 18:1: "And it came to pass, when he had made an end of speaking unto Saul, that the soul of Jonathan was knit with the soul of David, and Jonathan loved him as his own soul."

1 Samuel 18:6: "And it came to pass as they came, when David was returned from the slaughter of the Philistine, that the women came out of all cities of Israel, singing and dancing, to meet king Saul, with tabrets, with joy, and with instruments of musick."

1 Samuel 18:15: "Wherefore when Saul saw that he behaved himself very wisely, he was afraid of him."

1 Samuel 18:19: "But it came to pass at the time when Merab Saul's daughter should have been given to David, that she was given unto Adriel the Meholathite to wife."

1 Samuel 18:26: "And when his servants told David these words, it pleased David well to be the king's son in law: and the days were not expired."

1 Samuel 19:14: "And when Saul sent messengers to take David, she said, He is sick."

1 Samuel 19:16: "And when the messengers were come in, behold, there was an image in the bed, with a pillow of goats' hair for his bolster."

1 Samuel 19:20: "And Saul sent messengers to take David: and when they saw the company of the prophets prophesying, and Samuel standing as appointed over them, the Spirit of God was upon the messengers of Saul, and they also prophesied."

1 Samuel 19:21: "And when it was told Saul, he sent other messengers, and they prophesied likewise. And Saul sent messengers again the third time, and they prophesied also."

1 Samuel 20:12: "And Jonathan said unto David, O LORD God of Israel, when I have sounded my father about to morrow any time, or the third day, and, behold, if there be good toward David, and I then send not unto thee, and shew it thee;"

1 Samuel 20:15: "But also thou shalt not cut off thy kindness from my house for ever: no, not when the LORD hath cut off the enemies of David every one from the face of the earth."

1 Samuel 20:19: "And when thou hast stayed three days, then thou shalt go down quickly, and come to the place where thou didst hide thyself when the business was in hand, and shalt remain by the stone Ezel."

1 Samuel 20:24: "So David hid himself in the field: and when the new moon was come, the king sat him down to eat meat."

1 Samuel 20:37: "And when the lad was come to the place of the arrow which Jonathan had shot, Jonathan cried after the lad, and said, Is not the arrow beyond thee?"

1 Samuel 21:6: "So the priest gave him hallowed bread: for there was no bread there but the shewbread, that was taken from before the LORD, to put hot bread in the day when it was taken away."

1 Samuel 22:1: "David therefore departed thence, and escaped to the cave Adullam: and when his brethren and all his father's house heard it, they went down thither to him."

1 Samuel 22:6: "When Saul heard that David was discovered, and the men that were with him, (now Saul abode in Gibeah under a tree in Ramah, having his spear in his hand, and all his servants were standing about him;)"

1 Samuel 22:17: "And the king said unto the footmen that stood about him, Turn, and slay the priests of the LORD: because their hand also is with David, and because they knew when he fled, and did not shew it to me. But the servants of the king would not put forth their hand to fall upon the priests of the LORD."

1 Samuel 22:22: "And David said unto Abiathar, I knew it that day, when Doeg the Edomite was there, that he would surely tell Saul: I have occasioned the death of all the persons of thy father's house."

1 Samuel 23:6: "And it came to pass, when Abiathar the son of Ahimelech fled to David to Keilah, that he came down with an ephod in his hand."

1 Samuel 23:25: "Saul also and his men went to seek him. And they told David; wherefore he came down into a rock, and abode in the wilderness of Maon. And when Saul heard that, he pursued after David in the wilderness of Maon."

1 Samuel 24:1: "And it came to pass, when Saul was returned from following the Philistines, that it was told him, saying, Behold, David is in the wilderness of Engedi."

1 Samuel 24:8: "David also arose afterward, and went out of the cave, and cried after Saul, saying, My lord the king. And when Saul looked behind him, David stooped with his face to the earth, and bowed himself."

1 Samuel 24:16: "And it came to pass, when David had made an end of speaking these words unto Saul, that Saul said, Is this thy voice, my son David? And Saul lifted up his voice, and wept."

1 Samuel 24:18: "And thou hast shewed this day how that thou hast dealt well with me: forasmuch as when the LORD had delivered me into thine hand, thou killedst me not."

1 Samuel 25:9: "And when David's young men came, they spake to Nabal according to all those words in the name of David, and ceased."

1 Samuel 25:15: "But the men were very good unto us, and we were not hurt, neither missed we any thing, as long as we were conversant with them, when we were in the fields:"

1 Samuel 25:23: "And when Abigail saw David, she hasted, and lighted off the ass, and fell before David on her face, and bowed herself to the ground,"

1 Samuel 25:30: "And it shall come to pass, when the LORD shall have done to my lord according to all the good that he hath spoken concerning thee, and shall have appointed thee ruler over Israel;"

1 Samuel 25:31: "That this shall be no grief unto thee, nor offence of heart unto my lord, either that thou hast shed blood causeless, or that my lord hath avenged himself: but when the LORD shall have dealt well with my lord, then remember thine handmaid."

1 Samuel 25:37: "But it came to pass in the morning, when the wine was gone out of Nabal, and his wife had told him these things, that his heart died within him, and he became as a stone."

1 Samuel 25:39: "And when David heard that Nabal was dead, he said, Blessed be the LORD, that

hath pleaded the cause of my reproach from the hand of Nabal, and hath kept his servant from evil: for the LORD hath returned the wickedness of Nabal upon his own head. And David sent and communed with Abigail, to take her to him to wife."

1 Samuel 25:40: "And when the servants of David were come to Abigail to Carmel, they spake unto her, saying, David sent us unto thee, to take thee to him to wife."

1 Samuel 26:20: "Now therefore, let not my blood fall to the earth before the face of the LORD: for the king of Israel is come out to seek a flea, as when one doth hunt a partridge in the mountains."

1 Samuel 28:5: "And when Saul saw the host of the Philistines, he was afraid, and his heart greatly trembled."

1 Samuel 28:6: "And when Saul enquired of the LORD, the LORD answered him not, neither by dreams, nor by Urim, nor by prophets."

1 Samuel 28:12: "And when the woman saw Samuel, she cried with a loud voice: and the woman spake to Saul, saying, Why hast thou deceived me? for thou art Saul."

1 Samuel 28:22: "Now therefore, I pray thee, hearken thou also unto the voice of thine handmaid, and let me set a morsel of bread before thee; and eat, that thou mayest have strength, when thou goest on thy way."

1 Samuel 30:1: "And it came to pass, when David and his men were come to Ziklag on the third day, that the Amalekites had invaded the south, and Ziklag, and smitten Ziklag, and burned it with fire;"

1 Samuel 30:12: "And they gave him a piece of a cake of figs, and two clusters of raisins: and when he had eaten, his spirit came again to him: for he had eaten no bread, nor drunk any water, three days and three nights."

1 Samuel 30:16: "And when he had brought him down, behold, they were spread abroad upon all the earth, eating and drinking, and dancing, because of all the great spoil that they had taken out of the land of the Philistines, and out of the land of Judah."

1 Samuel 30:21: "And David came to the two hundred men, which were so faint that they could not follow David, whom they had made also to abide at the brook Besor: and they went forth to meet David, and to meet the people that were with him: and when David came near to the people, he saluted them."

1 Samuel 30:26: "And when David came to Ziklag, he sent of the spoil unto the elders of Judah, even to his friends, saying, Behold a present for you of the spoil of the enemies of the LORD;"

1 Samuel 31:5: "And when his armourbearer saw that Saul was dead, he fell likewise upon his sword, and died with him."

1 Samuel 31:7: "And when the men of Israel that were on the other side of the valley, and they that were on the other side Jordan, saw that the men of Israel fled, and that Saul and his sons were dead, they forsook the cities, and fled; and the Philistines came and dwelt in them."

1 Samuel 31:8: "And it came to pass on the morrow, when the Philistines came to strip the slain, that they found Saul and his three sons fallen in mount Gilboa."

1 Samuel 31:11: "And when the inhabitants of Jabeshgilead heard of that which the Philistines had done to Saul;"

2 Samuel 1:1: "Now it came to pass after the death of Saul, when David was returned from the slaughter of the Amalekites, and David had abode two days in Ziklag;"

2 Samuel 1:2: "It came even to pass on the third day, that, behold, a man came out of the camp from Saul with his clothes rent, and earth upon his head: and so it was, when he came to David, that he fell to the earth, and did obeisance."

2 Samuel 1:7: "And when he looked behind him, he saw me, and called unto me. And I answered, Here am I."

2 Samuel 2:10: "Ishbosheth Saul's son was forty years old when he began to reign over Israel, and reigned two years. But the house of Judah followed David."

2 Samuel 2:24: "Joab also and Abishai pursued after Abner: and the sun went down when they were

come to the hill of Ammah, that lieth before Giah by the way of the wilderness of Gibeon."

2 Samuel 2:30: "And Joab returned from following Abner: and when he had gathered all the people together, there lacked of David's servants nineteen men and Asahel."

2 Samuel 3:13: "And he said, Well; I will make a league with thee: but one thing I require of thee, that is, Thou shalt not see my face, except thou first bring Michal Saul's daughter, when thou comest to see my face."

2 Samuel 3:23: "When Joab and all the host that was with him were come, they told Joab, saying, Abner the son of Ner came to the king, and he hath sent him away, and he is gone in peace."

2 Samuel 3:26: "And when Joab was come out from David, he sent messengers after Abner, which brought him again from the well of Sirah: but David knew it not."

2 Samuel 3:27: "And when Abner was returned to Hebron, Joab took him aside in the gate to speak with him quietly, and smote him there under the fifth rib, that he died, for the blood of Asahel his brother."

2 Samuel 3:28: "And afterward when David heard it, he said, I and my kingdom are guiltless before the LORD for ever from the blood of Abner the son of Ner:"

2 Samuel 3:35: "And when all the people came to cause David to eat meat while it was yet day, David sware, saying, So do God to me, and more also, if I taste bread, or ought else, till the sun be down."

2 Samuel 4:1: "And when Saul's son heard that Abner was dead in Hebron, his hands were feeble, and all the Israelites were troubled."

2 Samuel 4:4: "And Jonathan, Saul's son, had a son that was lame of his feet. He was five years old when the tidings came of Saul and Jonathan out of Jezreel, and his nurse took him up, and fled: and it came to pass, as she made haste to flee, that he fell, and became lame. And his name was Mephibosheth."

2 Samuel 4:7: "For when they came into the house, he lay on his bed in his bedchamber, and they smote him, and slew him, and beheaded him, and took his head, and gat them away through the plain all night."

2 Samuel 4:10: "When one told me, saying, Behold, Saul is dead, thinking to have brought good tidings, I took hold of him, and slew him in Ziklag, who thought that I would have given him a reward for his tidings:"

2 Samuel 4:11: "How much more, when wicked men have slain a righteous person in his own house upon his bed? shall I not therefore now require his blood of your hand, and take you away from the earth?"

2 Samuel 5:2: "Also in time past, when Saul was king over us, thou wast he that leddest out and broughtest in Israel: and the LORD said to thee, Thou shalt feed my people Israel, and thou shalt be a captain over Israel."

2 Samuel 5:4: "David was thirty years old when he began to reign, and he reigned forty years."

2 Samuel 5:17: "But when the Philistines heard that they had anointed David king over Israel, all the Philistines came up to seek David; and David heard of it, and went down to the hold."

2 Samuel 5:23: "And when David enquired of the LORD, he said, Thou shalt not go up; but fetch a compass behind them, and come upon them over against the mulberry trees."

2 Samuel 5:24: "And let it be, when thou hearest the sound of a going in the tops of the mulberry trees, that then thou shalt bestir thyself: for then shall the LORD go out before thee, to smite the host of the Philistines."

2 Samuel 6:6: "And when they came to Nachon's threshingfloor, Uzzah put forth his hand to the ark of God, and took hold of it; for the oxen shook it."

2 Samuel 6:13: "And it was so, that when they that bare the ark of the LORD had gone six paces, he sacrificed oxen and fatlings."

2 Samuel 7:1: "And it came to pass, when the king sat in his house, and the LORD had given him rest round about from all his enemies;"

2 Samuel 7:12: "And when thy days be fulfilled, and thou shalt sleep with thy fathers, I will set up thy seed after thee, which shall proceed out of thy bowels, and I will establish his kingdom."

2 Samuel 8:5: "And when the Syrians of Damascus came to succour Hadadezer king of Zobah, David slew of the Syrians two and twenty thousand men."

2 Samuel 8:9: "When Toi king of Hamath heard that David had smitten all the host of Hadadezer,"

2 Samuel 8:13: "And David gat him a name when he returned from smiting of the Syrians in the valley of salt, being eighteen thousand men."

2 Samuel 9:2: "And there was of the house of Saul a servant whose name was Ziba. And when they had called him unto David, the king said unto him, Art thou Ziba? And he said, Thy servant is he."

2 Samuel 9:6: "Now when Mephibosheth, the son of Jonathan, the son of Saul, was come unto David, he fell on his face, and did reverence. And David said, Mephibosheth. And he answered, Behold thy servant!"

2 Samuel 10:5: "When they told it unto David, he sent to meet them, because the men were greatly ashamed: and the king said, Tarry at Jericho until your beards be grown, and then return."

2 Samuel 10:6: "And when the children of Ammon saw that they stank before David, the children of Ammon sent and hired the Syrians of Bethrehob and the Syrians of Zoba, twenty thousand footmen, and of king Maacah a thousand men, and of Ishtob twelve thousand men."

2 Samuel 10:7: "And when David heard of it, he sent Joab, and all the host of the mighty men."

2 Samuel 10:9: "When Joab saw that the front of the battle was against him before and behind, he chose of all the choice men of Israel, and put them in array against the Syrians:"

2 Samuel 10:14: "And when the children of Ammon saw that the Syrians were fled, then fled they also before Abishai, and entered into the city. So Joab returned from the children of Ammon, and came to Jerusalem."

2 Samuel 10:15: "And when the Syrians saw that they were smitten before Israel, they gathered themselves together."

2 Samuel 10:17: "And when it was told David, he gathered all Israel together, and passed over Jordan, and came to Helam. And the Syrians set themselves in array against David, and fought with him."

2 Samuel 10:19: "And when all the kings that were servants to Hadarezer saw that they were smitten before Israel, they made peace with Israel, and served them. So the Syrians feared to help the children of Ammon any more."

2 Samuel 11:1: "And it came to pass, after the year was expired, at the time when kings go forth to battle, that David sent Joab, and his servants with him, and all Israel; and they destroyed the children of Ammon, and besieged Rabbah. But David tarried still at Jerusalem."

2 Samuel 11:7: "And when Uriah was come unto him, David demanded of him how Joab did, and how the people did, and how the war prospered."

2 Samuel 11:10: "And when they had told David, saying, Uriah went not down unto his house, David said unto Uriah, Camest thou not from thy journey? why then didst thou not go down unto thine house?"

2 Samuel 11:13: "And when David had called him, he did eat and drink before him; and he made him drunk: and at even he went out to lie on his bed with the servants of his lord, but went not down to his house."

2 Samuel 11:16: "And it came to pass, when Joab observed the city, that he assigned Uriah unto a place where he knew that valiant men were."

2 Samuel 11:19: "And charged the messenger, saying, When thou hast made an end of telling the matters of the war unto the king,"

2 Samuel 11:20: "And if so be that the king's wrath arise, and he say unto thee, Wherefore approached ye so nigh unto the city when ye did fight? knew ye not that they would shoot from the wall?"

2 Samuel 11:26: "And when the wife of Uriah heard that Uriah her husband was dead, she mourned

for her husband."

2 Samuel 11:27: "And when the mourning was past, David sent and fetched her to his house, and she became his wife, and bare him a son. But the thing that David had done displeased the LORD."

2 Samuel 12:19: "But when David saw that his servants whispered, David perceived that the child was dead: therefore David said unto his servants, Is the child dead? And they said, He is dead."

2 Samuel 12:20: "Then David arose from the earth, and washed, and anointed himself, and changed his apparel, and came into the house of the LORD, and worshipped: then he came to his own house; and when he required, they set bread before him, and he did eat."

2 Samuel 12:21: "Then said his servants unto him, What thing is this that thou hast done? thou didst fast and weep for the child, while it was alive; but when the child was dead, thou didst rise and eat bread."

2 Samuel 13:5: "And Jonadab said unto him, Lay thee down on thy bed, and make thyself sick: and when thy father cometh to see thee, say unto him, I pray thee, let my sister Tamar come, and give me meat, and dress the meat in my sight, that I may see it, and eat it at her hand."

2 Samuel 13:6: "So Amnon lay down, and made himself sick: and when the king was come to see him, Amnon said unto the king, I pray thee, let Tamar my sister come, and make me a couple of cakes in my sight, that I may eat at her hand."

2 Samuel 13:11: "And when she had brought them unto him to eat, he took hold of her, and said unto her, Come lie with me, my sister."

2 Samuel 13:21: "But when king David heard of all these things, he was very wroth."

2 Samuel 13:28: "Now Absalom had commanded his servants, saying, Mark ye now when Amnon's heart is merry with wine, and when I say unto you, Smite Amnon; then kill him, fear not: have not I commanded you? be courageous, and be valiant."

2 Samuel 14:4: "And when the woman of Tekoah spake to the king, she fell on her face to the ground, and did obeisance, and said, Help, O king."

2 Samuel 14:26: "And when he polled his head, (for it was at every year's end that he polled it: because the hair was heavy on him, therefore he polled it:) he weighed the hair of his head at two hundred shekels after the king's weight."

2 Samuel 14:29: "Therefore Absalom sent for Joab, to have sent him to the king; but he would not come to him: and when he sent again the second time, he would not come."

2 Samuel 14:33: "So Joab came to the king, and told him: and when he had called for Absalom, he came to the king, and bowed himself on his face to the ground before the king: and the king kissed Absalom."

2 Samuel 15:2: "And Absalom rose up early, and stood beside the way of the gate: and it was so, that when any man that had a controversy came to the king for judgment, then Absalom called unto him, and said, Of what city art thou? And he said, Thy servant is of one of the tribes of Israel."

2 Samuel 15:5: "And it was so, that when any man came nigh to him to do him obeisance, he put forth his hand, and took him, and kissed him."

2 Samuel 15:32: "And it came to pass, that when David was come to the top of the mount, where he worshipped God, behold, Hushai the Archite came to meet him with his coat rent, and earth upon his head:"

2 Samuel 16:1: "And when David was a little past the top of the hill, behold, Ziba the servant of Mephibosheth met him, with a couple of asses saddled, and upon them two hundred loaves of bread, and an hundred bunches of raisins, and an hundred of summer fruits, and a bottle of wine."

2 Samuel 16:5: "And when king David came to Bahurim, behold, thence came out a man of the family of the house of Saul, whose name was Shimei, the son of Gera: he came forth, and cursed still as he came."

2 Samuel 16:7: "And thus said Shimei when he cursed, Come out, come out, thou bloody man, and thou man of Belial:"

2 Samuel 16:16: "And it came to pass, when Hushai the Archite, David's friend, was come unto

Absalom, that Hushai said unto Absalom, God save the king, God save the king."

2 Samuel 17:6: "And when Hushai was come to Absalom, Absalom spake unto him, saying, Ahithophel hath spoken after this manner: shall we do after his saying? if not; speak thou."

2 Samuel 17:9: "Behold, he is hid now in some pit, or in some other place: and it will come to pass, when some of them be overthrown at the first, that whosoever heareth it will say, There is a slaughter among the people that follow Absalom."

2 Samuel 17:20: "And when Absalom's servants came to the woman to the house, they said, Where is Ahimaaz and Jonathan? And the woman said unto them, They be gone over the brook of water. And when they had sought and could not find them, they returned to Jerusalem."

2 Samuel 17:23: "And when Ahithophel saw that his counsel was not followed, he saddled his ass, and arose, and gat him home to his house, to his city, and put his household in order, and hanged himself, and died, and was buried in the sepulchre of his father."

2 Samuel 17:27: "And it came to pass, when David was come to Mahanaim, that Shobi the son of Nahash of Rabbah of the children of Ammon, and Machir the son of Ammiel of Lodebar, and Barzillai the Gileadite of Rogelim,"

2 Samuel 18:5: "And the king commanded Joab and Abishai and Ittai, saying, Deal gently for my sake with the young man, even with Absalom. And all the people heard when the king gave all the captains charge concerning Absalom."

2 Samuel 18:29: "And the king said, Is the young man Absalom safe? And Ahimaaz answered, When Joab sent the king's servant, and me thy servant, I saw a great tumult, but I knew not what it was."

2 Samuel 19:3: "And the people gat them by stealth that day into the city, as people being ashamed steal away when they flee in battle."

2 Samuel 19:25: "And it came to pass, when he was come to Jerusalem to meet the king, that the king said unto him, Wherefore wentest not thou with me, Mephibosheth?"

2 Samuel 19:39: "And all the people went over Jordan. And when the king was come over, the king kissed Barzillai, and blessed him; and he returned unto his own place."

2 Samuel 20:8: "When they were at the great stone which is in Gibeon, Amasa went before them. And Joab's garment that he had put on was girded unto him, and upon it a girdle with a sword fastened upon his loins in the sheath thereof; and as he went forth it fell out."

2 Samuel 20:12: "And Amasa wallowed in blood in the midst of the highway. And when the man saw that all the people stood still, he removed Amasa out of the highway into the field, and cast a cloth upon him, when he saw that every one that came by him stood still."

2 Samuel 20:13: "When he was removed out of the highway, all the people went on after Joab, to pursue after Sheba the son of Bichri."

2 Samuel 20:17: "And when he was come near unto her, the woman said, Art thou Joab? And he answered, I am he. Then she said unto him, Hear the words of thine handmaid. And he answered, I do hear."

2 Samuel 21:12: "And David went and took the bones of Saul and the bones of Jonathan his son from the men of Jabeshgilead, which had stolen them from the street of Bethshan, where the Philistines had hanged them, when the Philistines had slain Saul in Gilboa:"

2 Samuel 21:21: "And when he defied Israel, Jonathan the son of Shimeah the brother of David slew him."

2 Samuel 22:5: "When the waves of death compassed me, the floods of ungodly men made me afraid;"

2 Samuel 23:4: "And he shall be as the light of the morning, when the sun riseth, even a morning without clouds; as the tender grass springing out of the earth by clear shining after rain."

2 Samuel 23:9: "And after him was Eleazar the son of Dodo the Ahohite, one of the three mighty men with David, when they defied the Philistines that were there gathered together to battle, and the men of Israel were gone away:"



2 Samuel 24:8: "So when they had gone through all the land, they came to Jerusalem at the end of nine months and twenty days."

2 Samuel 24:11: "For when David was up in the morning, the word of the LORD came unto the prophet Gad, David's seer, saying,"

2 Samuel 24:16: "And when the angel stretched out his hand upon Jerusalem to destroy it, the LORD repented him of the evil, and said to the angel that destroyed the people, It is enough: stay now thine hand. And the angel of the LORD was by the threshingplace of Araunah the Jebusite."

2 Samuel 24:17: "And David spake unto the LORD when he saw the angel that smote the people, and said, Lo, I have sinned, and I have done wickedly: but these sheep, what have they done? let thine hand, I pray thee, be against me, and against my father's house."

1 Kings 1:21: "Otherwise it shall come to pass, when my lord the king shall sleep with his fathers, that I and my son Solomon shall be counted offenders."

1 Kings 1:23: "And they told the king, saying, Behold Nathan the prophet. And when he was come in before the king, he bowed himself before the king with his face to the ground."

1 Kings 1:41: "And Adonijah and all the guests that were with him heard it as they had made an end of eating. And when Joab heard the sound of the trumpet, he said, Wherefore is this noise of the city being in an uproar?"

1 Kings 2:7: "But shew kindness unto the sons of Barzillai the Gileadite, and let them be of those that eat at thy table: for so they came to me when I fled because of Absalom thy brother."

1 Kings 2:8: "And, behold, thou hast with thee Shimei the son of Gera, a Benjamite of Bahurim, which cursed me with a grievous curse in the day when I went to Mahanaim: but he came down to meet me at Jordan, and I sware to him by the LORD, saying, I will not put thee to death with the sword."

1 Kings 3:21: "And when I rose in the morning to give my child suck, behold, it was dead: but when I had considered it in the morning, behold, it was not my son, which I did bear."

1 Kings 5:7: "And it came to pass, when Hiram heard the words of Solomon, that he rejoiced greatly, and said, Blessed be the LORD this day, which hath given unto David a wise son over this great people."

1 Kings 6:7: "And the house, when it was in building, was built of stone made ready before it was brought thither: so that there was neither hammer nor axe nor any tool of iron heard in the house, while it was in building."

1 Kings 7:24: "And under the brim of it round about there were knops compassing it, ten in a cubit, compassing the sea round about: the knops were cast in two rows, when it was cast."

1 Kings 8:9: "There was nothing in the ark save the two tables of stone, which Moses put there at Horeb, when the LORD made a covenant with the children of Israel, when they came out of the land of Egypt."

1 Kings 8:10: "And it came to pass, when the priests were come out of the holy place, that the cloud filled the house of the LORD,"

1 Kings 8:21: "And I have set there a place for the ark, wherein is the covenant of the LORD, which he made with our fathers, when he brought them out of the land of Egypt."

1 Kings 8:30: "And hearken thou to the supplication of thy servant, and of thy people Israel, when they shall pray toward this place: and hear thou in heaven thy dwelling place: and when thou hearest, forgive."

1 Kings 8:33: "When thy people Israel be smitten down before the enemy, because they have sinned against thee, and shall turn again to thee, and confess thy name, and pray, and make supplication unto thee in this house:"

1 Kings 8:35: "When heaven is shut up, and there is no rain, because they have sinned against thee; if they pray toward this place, and confess thy name, and turn from their sin, when thou afflictest them:"

1 Kings 8:42: "(For they shall hear of thy great name, and of thy strong hand, and of thy stretched

out arm;) when he shall come and pray toward this house;"

1 Kings 8:53: "For thou didst separate them from among all the people of the earth, to be thine inheritance, as thou spakest by the hand of Moses thy servant, when thou broughtest our fathers out of Egypt, O LORD God."

1 Kings 8:54: "And it was so, that when Solomon had made an end of praying all this prayer and supplication unto the LORD, he arose from before the altar of the LORD, from kneeling on his knees with his hands spread up to heaven."

1 Kings 9:1: "And it came to pass, when Solomon had finished the building of the house of the LORD, and the king's house, and all Solomon's desire which he was pleased to do,"

1 Kings 9:10: "And it came to pass at the end of twenty years, when Solomon had built the two houses, the house of the LORD, and the king's house,"

1 Kings 10:1: "And when the queen of Sheba heard of the fame of Solomon concerning the name of the LORD, she came to prove him with hard questions."

1 Kings 10:2: "And she came to Jerusalem with a very great train, with camels that bare spices, and very much gold, and precious stones: and when she was come to Solomon, she communed with him of all that was in her heart."

1 Kings 10:4: "And when the queen of Sheba had seen all Solomon's wisdom, and the house that he had built,"

1 Kings 11:4: "For it came to pass, when Solomon was old, that his wives turned away his heart after other gods: and his heart was not perfect with the LORD his God, as was the heart of David his father."

1 Kings 11:15: "For it came to pass, when David was in Edom, and Joab the captain of the host was gone up to bury the slain, after he had smitten every male in Edom;"

1 Kings 11:21: "And when Hadad heard in Egypt that David slept with his fathers, and that Joab the captain of the host was dead, Hadad said to Pharaoh, Let me depart, that I may go to mine own country."

1 Kings 11:24: "And he gathered men unto him, and became captain over a band, when David slew them of Zobah: and they went to Damascus, and dwelt therein, and reigned in Damascus."

1 Kings 11:29: "And it came to pass at that time when Jeroboam went out of Jerusalem, that the prophet Ahijah the Shilonite found him in the way; and he had clad himself with a new garment; and they two were alone in the field:"

1 Kings 12:2: "And it came to pass, when Jeroboam the son of Nebat, who was yet in Egypt, heard of it, (for he was fled from the presence of king Solomon, and Jeroboam dwelt in Egypt;)"

1 Kings 12:16: "So when all Israel saw that the king hearkened not unto them, the people answered the king, saying, What portion have we in David? neither have we inheritance in the son of Jesse: to your tents, O Israel: now see to thine own house, David. So Israel departed unto their tents."

1 Kings 12:20: "And it came to pass, when all Israel heard that Jeroboam was come again, that they sent and called him unto the congregation, and made him king over all Israel: there was none that followed the house of David, but the tribe of Judah only."

1 Kings 12:21: "And when Rehoboam was come to Jerusalem, he assembled all the house of Judah, with the tribe of Benjamin, an hundred and fourscore thousand chosen men, which were warriors, to fight against the house of Israel, to bring the kingdom again to Rehoboam the son of Solomon."

1 Kings 13:4: "And it came to pass, when king Jeroboam heard the saying of the man of God, which had cried against the altar in Bethel, that he put forth his hand from the altar, saying, Lay hold on him. And his hand, which he put forth against him, dried up, so that he could not pull it in again to him."

1 Kings 13:24: "And when he was gone, a lion met him by the way, and slew him: and his carcase was cast in the way, and the ass stood by it, the lion also stood by the carcase."

1 Kings 13:26: "And when the prophet that brought him back from the way heard thereof, he said, It is the man of God, who was disobedient unto the word of the LORD: therefore the LORD hath

delivered him unto the lion, which hath torn him, and slain him, according to the word of the LORD, which he spake unto him."

1 Kings 13:31: "And it came to pass, after he had buried him, that he spake to his sons, saying, When I am dead, then bury me in the sepulchre wherein the man of God is buried; lay my bones beside his bones:"

1 Kings 14:5: "And the LORD said unto Ahijah, Behold, the wife of Jeroboam cometh to ask a thing of thee for her son; for he is sick: thus and thus shalt thou say unto her: for it shall be, when she cometh in, that she shall feign herself to be another woman."

1 Kings 14:6: "And it was so, when Ahijah heard the sound of her feet, as she came in at the door, that he said, Come in, thou wife of Jeroboam; why feignest thou thyself to be another? for I am sent to thee with heavy tidings."

1 Kings 14:12: "Arise thou therefore, get thee to thine own house: and when thy feet enter into the city, the child shall die."

1 Kings 14:17: "And Jeroboam's wife arose, and departed, and came to Tirzah: and when she came to the threshold of the door, the child died;"

1 Kings 14:21: "And Rehoboam the son of Solomon reigned in Judah. Rehoboam was forty and one years old when he began to reign, and he reigned seventeen years in Jerusalem, the city which the LORD did choose out of all the tribes of Israel, to put his name there. And his mother's name was Naamah an Ammonitess."

1 Kings 14:28: "And it was so, when the king went into the house of the LORD, that the guard bare them, and brought them back into the guard chamber."

1 Kings 15:21: "And it came to pass, when Baasha heard thereof, that he left off building of Ramah, and dwelt in Tirzah."

1 Kings 15:29: "And it came to pass, when he reigned, that he smote all the house of Jeroboam; he left not to Jeroboam any that breathed, until he had destroyed him, according unto the saying of the LORD, which he spake by his servant Ahijah the Shilonite:"

1 Kings 16:11: "And it came to pass, when he began to reign, as soon as he sat on his throne, that he slew all the house of Baasha: he left him not one that pisseth against a wall, neither of his kinsfolks, nor of his friends."

1 Kings 16:18: "And it came to pass, when Zimri saw that the city was taken, that he went into the palace of the king's house, and burnt the king's house over him with fire, and died."

1 Kings 17:10: "So he arose and went to Zarephath. And when he came to the gate of the city, behold, the widow woman was there gathering of sticks: and he called to her, and said, Fetch me, I pray thee, a little water in a vessel, that I may drink."

1 Kings 18:4: "For it was so, when Jezebel cut off the prophets of the LORD, that Obadiah took an hundred prophets, and hid them by fifty in a cave, and fed them with bread and water.)"

1 Kings 18:10: "As the LORD thy God liveth, there is no nation or kingdom, whither my lord hath not sent to seek thee: and when they said, He is not there; he took an oath of the kingdom and nation, that they found thee not."

1 Kings 18:12: "And it shall come to pass, as soon as I am gone from thee, that the Spirit of the LORD shall carry thee whither I know not; and so when I come and tell Ahab, and he cannot find thee, he shall slay me: but I thy servant fear the LORD from my youth."

1 Kings 18:13: "Was it not told my lord what I did when Jezebel slew the prophets of the LORD, how I hid an hundred men of the LORD's prophets by fifty in a cave, and fed them with bread and water?"

1 Kings 18:17: "And it came to pass, when Ahab saw Elijah, that Ahab said unto him, Art thou he that troubleth Israel?"

1 Kings 18:29: "And it came to pass, when midday was past, and they prophesied until the time of the offering of the evening sacrifice, that there was neither voice, nor any to answer, nor any that regarded."

1 Kings 18:39: "And when all the people saw it, they fell on their faces: and they said, The LORD, he is the God; the LORD, he is the God."

1 Kings 19:3: "And when he saw that, he arose, and went for his life, and came to Beersheba, which belongeth to Judah, and left his servant there."

1 Kings 19:13: "And it was so, when Elijah heard it, that he wrapped his face in his mantle, and went out, and stood in the entering in of the cave. And, behold, there came a voice unto him, and said, What doest thou here, Elijah?"

1 Kings 19:15: "And the LORD said unto him, Go, return on thy way to the wilderness of Damascus: and when thou comest, anoint Hazael to be king over Syria:"

1 Kings 20:12: "And it came to pass, when Ben-hadad heard this message, as he was drinking, he and the kings in the pavilions, that he said unto his servants, Set yourselves in array. And they set themselves in array against the city."

1 Kings 21:15: "And it came to pass, when Jezebel heard that Naboth was stoned, and was dead, that Jezebel said to Ahab, Arise, take possession of the vineyard of Naboth the Jezreelite, which he refused to give thee for money: for Naboth is not alive, but dead."

1 Kings 21:16: "And it came to pass, when Ahab heard that Naboth was dead, that Ahab rose up to go down to the vineyard of Naboth the Jezreelite, to take possession of it."

1 Kings 21:27: "And it came to pass, when Ahab heard those words, that he rent his clothes, and put sackcloth upon his flesh, and fasted, and lay in sackcloth, and went softly."

1 Kings 22:25: "And Micaiah said, Behold, thou shalt see in that day, when thou shalt go into an inner chamber to hide thyself."

1 Kings 22:32: "And it came to pass, when the captains of the chariots saw Jehoshaphat, that they said, Surely it is the king of Israel. And they turned aside to fight against him: and Jehoshaphat cried out."

1 Kings 22:33: "And it came to pass, when the captains of the chariots perceived that it was not the king of Israel, that they turned back from pursuing him."

1 Kings 22:42: "Jehoshaphat was thirty and five years old when he began to reign; and he reigned twenty and five years in Jerusalem. And his mother's name was Azubah the daughter of Shilhi."

2 Kings 1:5: "And when the messengers turned back unto him, he said unto them, Why are ye now turned back?"

2 Kings 2:1: "And it came to pass, when the LORD would take up Elijah into heaven by a whirlwind, that Elijah went with Elisha from Gilgal."

2 Kings 2:9: "And it came to pass, when they were gone over, that Elijah said unto Elisha, Ask what I shall do for thee, before I be taken away from thee. And Elisha said, I pray thee, let a double portion of thy spirit be upon me."

2 Kings 2:10: "And he said, Thou hast asked a hard thing: nevertheless, if thou see me when I am taken from thee, it shall be so unto thee; but if not, it shall not be so."

2 Kings 2:14: "And he took the mantle of Elijah that fell from him, and smote the waters, and said, Where is the LORD God of Elijah? and when he also had smitten the waters, they parted hither and thither: and Elisha went over."

2 Kings 2:15: "And when the sons of the prophets which were to view at Jericho saw him, they said, The spirit of Elijah doth rest on Elisha. And they came to meet him, and bowed themselves to the ground before him."

2 Kings 2:17: "And when they urged him till he was ashamed, he said, Send. They sent therefore fifty men; and they sought three days, but found him not."

2 Kings 2:18: "And when they came again to him, (for he tarried at Jericho,) he said unto them, Did I not say unto you, Go not?"

2 Kings 3:5: "But it came to pass, when Ahab was dead, that the king of Moab rebelled against the king of Israel."

2 Kings 3:15: "But now bring me a minstrel. And it came to pass, when the minstrel played, that the

hand of the LORD came upon him."

2 Kings 3:20: "And it came to pass in the morning, when the meat offering was offered, that, behold, there came water by the way of Edom, and the country was filled with water."

2 Kings 3:21: "And when all the Moabites heard that the kings were come up to fight against them, they gathered all that were able to put on armour, and upward, and stood in the border."

2 Kings 3:24: "And when they came to the camp of Israel, the Israelites rose up and smote the Moabites, so that they fled before them: but they went forward smiting the Moabites, even in their country."

2 Kings 3:26: "And when the king of Moab saw that the battle was too sore for him, he took with him seven hundred men that drew swords, to break through even unto the king of Edom: but they could not."

2 Kings 4:4: "And when thou art come in, thou shalt shut the door upon thee and upon thy sons, and shalt pour out into all those vessels, and thou shalt set aside that which is full."

2 Kings 4:6: "And it came to pass, when the vessels were full, that she said unto her son, Bring me yet a vessel. And he said unto her, There is not a vessel more. And the oil stayed."

2 Kings 4:10: "Let us make a little chamber, I pray thee, on the wall; and let us set for him there a bed, and a table, and a stool, and a candlestick: and it shall be, when he cometh to us, that he shall turn in thither."

2 Kings 4:12: "And he said to Gehazi his servant, Call this Shunammite. And when he had called her, she stood before him."

2 Kings 4:15: "And he said, Call her. And when he had called her, she stood in the door."

2 Kings 4:18: "And when the child was grown, it fell on a day, that he went out to his father to the reapers."

2 Kings 4:20: "And when he had taken him, and brought him to his mother, he sat on her knees till noon, and then died."

2 Kings 4:25: "So she went and came unto the man of God to mount Carmel. And it came to pass, when the man of God saw her afar off, that he said to Gehazi his servant, Behold, yonder is that Shunammite:"

2 Kings 4:27: "And when she came to the man of God to the hill, she caught him by the feet: but Gehazi came near to thrust her away. And the man of God said, Let her alone; for her soul is vexed within her: and the LORD hath hid it from me, and hath not told me."

2 Kings 4:32: "And when Elisha was come into the house, behold, the child was dead, and laid upon his bed."

2 Kings 4:36: "And he called Gehazi, and said, Call this Shunammite. So he called her. And when she was come in unto him, he said, Take up thy son."

2 Kings 5:6: "And he brought the letter to the king of Israel, saying, Now when this letter is come unto thee, behold, I have therewith sent Naaman my servant to thee, that thou mayest recover him of his leprosy."

2 Kings 5:7: "And it came to pass, when the king of Israel had read the letter, that he rent his clothes, and said, Am I God, to kill and to make alive, that this man doth send unto me to recover a man of his leprosy? wherefore consider, I pray you, and see how he seeketh a quarrel against me."

2 Kings 5:8: "And it was so, when Elisha the man of God had heard that the king of Israel had rent his clothes, that he sent to the king, saying, Wherefore hast thou rent thy clothes? let him come now to me, and he shall know that there is a prophet in Israel."

2 Kings 5:13: "And his servants came near, and spake unto him, and said, My father, if the prophet had bid thee do some great thing, wouldest thou not have done it? how much rather then, when he saith to thee, Wash, and be clean?"

2 Kings 5:18: "In this thing the LORD pardon thy servant, that when my master goeth into the house of Rimmon to worship there, and he leaneth on my hand, and I bow myself in the house of Rimmon: when I bow down myself in the house of Rimmon, the LORD pardon thy servant in this

thing."

2 Kings 5:21: "So Gehazi followed after Naaman. And when Naaman saw him running after him, he lighted down from the chariot to meet him, and said, Is all well?"

2 Kings 5:24: "And when he came to the tower, he took them from their hand, and bestowed them in the house: and he let the men go, and they departed."

2 Kings 5:26: "And he said unto him, Went not mine heart with thee, when the man turned again from his chariot to meet thee? Is it a time to receive money, and to receive garments, and oliveyards, and vineyards, and sheep, and oxen, and menservants, and maidservants?"

2 Kings 6:4: "So he went with them. And when they came to Jordan, they cut down wood."

2 Kings 6:15: "And when the servant of the man of God was risen early, and gone forth, behold, an host compassed the city both with horses and chariots. And his servant said unto him, Alas, my master! how shall we do?"

2 Kings 6:18: "And when they came down to him, Elisha prayed unto the LORD, and said, Smite this people, I pray thee, with blindness. And he smote them with blindness according to the word of Elisha."

2 Kings 6:20: "And it came to pass, when they were come into Samaria, that Elisha said, LORD, open the eyes of these men, that they may see. And the LORD opened their eyes, and they saw; and, behold, they were in the midst of Samaria."

2 Kings 6:21: "And the king of Israel said unto Elisha, when he saw them, My father, shall I smite them? shall I smite them?"

2 Kings 6:23: "And he prepared great provision for them: and when they had eaten and drunk, he sent them away, and they went to their master. So the bands of Syria came no more into the land of Israel."

2 Kings 6:30: "And it came to pass, when the king heard the words of the woman, that he rent his clothes; and he passed by upon the wall, and the people looked, and, behold, he had sackcloth within upon his flesh."

2 Kings 6:32: "But Elisha sat in his house, and the elders sat with him; and the king sent a man from before him: but ere the messenger came to him, he said to the elders, See ye how this son of a murderer hath sent to take away mine head? look, when the messenger cometh, shut the door, and hold him fast at the door: is not the sound of his master's feet behind him?"

2 Kings 7:5: "And they rose up in the twilight, to go unto the camp of the Syrians: and when they were come to the uttermost part of the camp of Syria, behold, there was no man there."

2 Kings 7:8: "And when these lepers came to the uttermost part of the camp, they went into one tent, and did eat and drink, and carried thence silver, and gold, and raiment, and went and hid it; and came again, and entered into another tent, and carried thence also, and went and hid it."

2 Kings 7:12: "And the king arose in the night, and said unto his servants, I will now shew you what the Syrians have done to us. They know that we be hungry; therefore are they gone out of the camp to hide themselves in the field, saying, When they come out of the city, we shall catch them alive, and get into the city."

2 Kings 7:17: "And the king appointed the lord on whose hand he leaned to have the charge of the gate: and the people trode upon him in the gate, and he died, as the man of God had said, who spake when the king came down to him."

2 Kings 8:6: "And when the king asked the woman, she told him. So the king appointed unto her a certain officer, saying, Restore all that was hers, and all the fruits of the field since the day that she left the land, even until now."

2 Kings 8:17: "Thirty and two years old was he when he began to reign; and he reigned eight years in Jerusalem."

2 Kings 8:26: "Two and twenty years old was Ahaziah when he began to reign; and he reigned one year in Jerusalem. And his mother's name was Athaliah, the daughter of Omri king of Israel."

2 Kings 8:29: "And king Joram went back to be healed in Jezreel of the wounds which the Syrians

had given him at Ramah, when he fought against Hazael king of Syria. And Ahaziah the son of Jehoram king of Judah went down to see Joram the son of Ahab in Jezreel, because he was sick."

2 Kings 9:2: "And when thou comest thither, look out there Jehu the son of Jehoshaphat the son of Nimshi, and go in, and make him arise up from among his brethren, and carry him to an inner chamber;"

2 Kings 9:5: "And when he came, behold, the captains of the host were sitting; and he said, I have an errand to thee, O captain. And Jehu said, Unto which of all us? And he said, To thee, O captain."

2 Kings 9:15: "But king Joram was returned to be healed in Jezreel of the wounds which the Syrians had given him, when he fought with Hazael king of Syria.) And Jehu said, If it be your minds, then let none go forth nor escape out of the city to go to tell it in Jezreel."

2 Kings 9:22: "And it came to pass, when Joram saw Jehu, that he said, Is it peace, Jehu? And he answered, What peace, so long as the whoredoms of thy mother Jezebel and her witchcrafts are so many?"

2 Kings 9:25: "Then said Jehu to Bidkar his captain, Take up, and cast him in the portion of the field of Naboth the Jezreelite: for remember how that, when I and thou rode together after Ahab his father, the LORD laid this burden upon him;"

2 Kings 9:27: "But when Ahaziah the king of Judah saw this, he fled by the way of the garden house. And Jehu followed after him, and said, Smite him also in the chariot. And they did so at the going up to Gur, which is by Ibleam. And he fled to Megiddo, and died there."

2 Kings 9:30: "And when Jehu was come to Jezreel, Jezebel heard of it; and she painted her face, and tired her head, and looked out at a window."

2 Kings 9:34: "And when he was come in, he did eat and drink, and said, Go, see now this cursed woman, and bury her: for she is a king's daughter."

2 Kings 10:7: "And it came to pass, when the letter came to them, that they took the king's sons, and slew seventy persons, and put their heads in baskets, and sent him them to Jezreel."

2 Kings 10:15: "And when he was departed thence, he lighted on Jehonadab the son of Rechab coming to meet him: and he saluted him, and said to him, Is thine heart right, as my heart is with thy heart? And Jehonadab answered, It is. If it be, give me thine hand. And he gave him his hand; and he took him up to him into the chariot."

2 Kings 10:17: "And when he came to Samaria, he slew all that remained unto Ahab in Samaria, till he had destroyed him, according to the saying of the LORD, which he spake to Elijah."

2 Kings 10:24: "And when they went in to offer sacrifices and burnt offerings, Jehu appointed fourscore men without, and said, If any of the men whom I have brought into your hands escape, he that letteth him go, his life shall be for the life of him."

2 Kings 11:1: "And when Athaliah the mother of Ahaziah saw that her son was dead, she arose and destroyed all the seed royal."

2 Kings 11:13: "And when Athaliah heard the noise of the guard and of the people, she came to the people into the temple of the LORD."

2 Kings 11:14: "And when she looked, behold, the king stood by a pillar, as the manner was, and the princes and the trumpeters by the king, and all the people of the land rejoiced, and blew with trumpets: and Athaliah rent her clothes, and cried, Treason, Treason."

2 Kings 11:21: "Seven years old was Jehoash when he began to reign."

2 Kings 12:10: "And it was so, when they saw that there was much money in the chest, that the king's scribe and the high priest came up, and they put up in bags, and told the money that was found in the house of the LORD."

2 Kings 13:21: "And it came to pass, as they were burying a man, that, behold, they spied a band of men; and they cast the man into the sepulchre of Elisha: and when the man was let down, and touched the bones of Elisha, he revived, and stood up on his feet."

2 Kings 14:2: "He was twenty and five years old when he began to reign, and reigned twenty and nine years in Jerusalem. And his mother's name was Jehoaddan of Jerusalem."

2 Kings 15:2: "Sixteen years old was he when he began to reign, and he reigned two and fifty years in Jerusalem. And his mother's name was Jecholiah of Jerusalem."

2 Kings 15:33: "Five and twenty years old was he when he began to reign, and he reigned sixteen years in Jerusalem. And his mother's name was Jerusha, the daughter of Zadok."

2 Kings 16:2: "Twenty years old was Ahaz when he began to reign, and reigned sixteen years in Jerusalem, and did not that which was right in the sight of the LORD his God, like David his father."

2 Kings 16:12: "And when the king was come from Damascus, the king saw the altar: and the king approached to the altar, and offered thereon."

2 Kings 18:2: "Twenty and five years old was he when he began to reign; and he reigned twenty and nine years in Jerusalem. His mother's name also was Abi, the daughter of Zachariah."

2 Kings 18:17: "And the king of Assyria sent Tartan and Rabsaris and Rabshakeh from Lachish to king Hezekiah with a great host against Jerusalem. And they went up and came to Jerusalem. And when they were come up, they came and stood by the conduit of the upper pool, which is in the highway of the fuller's field."

2 Kings 18:18: "And when they had called to the king, there came out to them Eliakim the son of Hilkiah, which was over the household, and Shebna the scribe, and Joah the son of Asaph the recorder."

2 Kings 18:32: "Until I come and take you away to a land like your own land, a land of corn and wine, a land of bread and vineyards, a land of oil olive and of honey, that ye may live, and not die: and hearken not unto Hezekiah, when he persuadeth you, saying, The LORD will deliver us."

2 Kings 19:1: "And it came to pass, when king Hezekiah heard it, that he rent his clothes, and covered himself with sackcloth, and went into the house of the LORD."

2 Kings 19:9: "And when he heard say of Tirhakah king of Ethiopia, Behold, he is come out to fight against thee: he sent messengers again unto Hezekiah, saying,"

2 Kings 19:35: "And it came to pass that night, that the angel of the LORD went out, and smote in the camp of the Assyrians an hundred fourscore and five thousand: and when they arose early in the morning, behold, they were all dead corpses."

2 Kings 21:1: "Manasseh was twelve years old when he began to reign, and reigned fifty and five years in Jerusalem. And his mother's name was Hephzibah."

2 Kings 21:19: "Amon was twenty and two years old when he began to reign, and he reigned two years in Jerusalem. And his mother's name was Meshullemeth, the daughter of Haruz of Jotbah."

2 Kings 22:1: "Josiah was eight years old when he began to reign, and he reigned thirty and one years in Jerusalem. And his mother's name was Jedidah, the daughter of Adaiah of Boscath."

2 Kings 22:11: "And it came to pass, when the king had heard the words of the book of the law, that he rent his clothes."

2 Kings 22:19: "Because thine heart was tender, and thou hast humbled thyself before the LORD, when thou heardest what I spake against this place, and against the inhabitants thereof, that they should become a desolation and a curse, and hast rent thy clothes, and wept before me; I also have heard thee, saith the LORD."

2 Kings 23:29: "In his days Pharaohnechoh king of Egypt went up against the king of Assyria to the river Euphrates: and king Josiah went against him; and he slew him at Megiddo, when he had seen him."

2 Kings 23:31: "Jehoahaz was twenty and three years old when he began to reign; and he reigned three months in Jerusalem. And his mother's name was Hamutal, the daughter of Jeremiah of Libnah."

2 Kings 23:36: "Jehoiakim was twenty and five years old when he began to reign; and he reigned eleven years in Jerusalem. And his mother's name was Zebudah, the daughter of Pedaiah of Rumah."

2 Kings 24:8: "Jehoiachin was eighteen years old when he began to reign, and he reigned in



Jerusalem three months. And his mother's name was Nehushta, the daughter of Elnathan of Jerusalem."

2 Kings 24:18: "Zedekiah was twenty and one years old when he began to reign, and he reigned eleven years in Jerusalem. And his mother's name was Hamutal, the daughter of Jeremiah of Libnah."

2 Kings 25:23: "And when all the captains of the armies, they and their men, heard that the king of Babylon had made Gedaliah governor, there came to Gedaliah to Mizpah, even Ishmael the son of Nethaniah, and Johanan the son of Careah, and Seraiah the son of Tanhumeth the Netophathite, and Jaazaniah the son of a Maachathite, they and their men."

1 Chronicles 1:44: "And when Bela was dead, Jobab the son of Zerah of Bozrah reigned in his stead."

1 Chronicles 1:45: "And when Jobab was dead, Husham of the land of the Temanites reigned in his stead."

1 Chronicles 1:46: "And when Husham was dead, Hadad the son of Bedad, which smote Midian in the field of Moab, reigned in his stead: and the name of his city was Avith."

1 Chronicles 1:47: "And when Hadad was dead, Samlah of Masrekah reigned in his stead."

1 Chronicles 1:48: "And when Samlah was dead, Shaul of Rehoboth by the river reigned in his stead."

1 Chronicles 1:49: "And when Shaul was dead, Baalhanan the son of Achbor reigned in his stead."

1 Chronicles 1:50: "And when Baalhanan was dead, Hadad reigned in his stead: and the name of his city was Pai; and his wife's name was Mehetabel, the daughter of Matred, the daughter of Mezahab."

1 Chronicles 2:19: "And when Azubah was dead, Caleb took unto him Ephrath, which bare him Hur."

1 Chronicles 2:21: "And afterward Hezron went in to the daughter of Machir the father of Gilead, whom he married when he was threescore years old; and she bare him Segub."

1 Chronicles 5:7: "And his brethren by their families, when the genealogy of their generations was reckoned, were the chief, Jeiel, and Zechariah,"

1 Chronicles 6:15: "And Jehozadak went into captivity, when the LORD carried away Judah and Jerusalem by the hand of Nebuchadnezzar."

1 Chronicles 7:23: "And when he went in to his wife, she conceived, and bare a son, and he called his name Beriah, because it went evil with his house."

1 Chronicles 10:5: "And when his armourbearer saw that Saul was dead, he fell likewise on the sword, and died."

1 Chronicles 10:7: "And when all the men of Israel that were in the valley saw that they fled, and that Saul and his sons were dead, then they forsook their cities, and fled: and the Philistines came and dwelt in them."

1 Chronicles 10:8: "And it came to pass on the morrow, when the Philistines came to strip the slain, that they found Saul and his sons fallen in mount Gilboa."

1 Chronicles 10:9: "And when they had stripped him, they took his head, and his armour, and sent into the land of the Philistines round about, to carry tidings unto their idols, and to the people."

1 Chronicles 10:11: "And when all Jabeshgilead heard all that the Philistines had done to Saul,"

1 Chronicles 11:2: "And moreover in time past, even when Saul was king, thou wast he that leddest out and broughtest in Israel: and the LORD thy God said unto thee, Thou shalt feed my people Israel, and thou shalt be ruler over my people Israel."

1 Chronicles 12:15: "These are they that went over Jordan in the first month, when it had overflowed all his banks; and they put to flight all them of the valleys, both toward the east, and toward the west."

1 Chronicles 12:19: "And there fell some of Manasseh to David, when he came with the Philistines against Saul to battle: but they helped them not: for the lords of the Philistines upon advisement sent

him away, saying, He will fall to his master Saul to the jeopardy of our heads."

1 Chronicles 13:9: "And when they came unto the threshingfloor of Chidon, Uzza put forth his hand to hold the ark; for the oxen stumbled."

1 Chronicles 14:8: "And when the Philistines heard that David was anointed king over all Israel, all the Philistines went up to seek David. And David heard of it, and went out against them."

1 Chronicles 14:12: "And when they had left their gods there, David gave a commandment, and they were burned with fire."

1 Chronicles 14:15: "And it shall be, when thou shalt hear a sound of going in the tops of the mulberry trees, that then thou shalt go out to battle: for God is gone forth before thee to smite the host of the Philistines."

1 Chronicles 15:26: "And it came to pass, when God helped the Levites that bare the ark of the covenant of the LORD, that they offered seven bullocks and seven rams."

1 Chronicles 16:2: "And when David had made an end of offering the burnt offerings and the peace offerings, he blessed the people in the name of the LORD."

1 Chronicles 16:19: "When ye were but few, even a few, and strangers in it."

1 Chronicles 16:20: "And when they went from nation to nation, and from one kingdom to another people;"

1 Chronicles 17:11: "And it shall come to pass, when thy days be expired that thou must go to be with thy fathers, that I will raise up thy seed after thee, which shall be of thy sons; and I will establish his kingdom."

1 Chronicles 18:5: "And when the Syrians of Damascus came to help Hadarezer king of Zobah, David slew of the Syrians two and twenty thousand men."

1 Chronicles 18:9: "Now when Tou king of Hamath heard how David had smitten all the host of Hadarezer king of Zobah;"

1 Chronicles 19:6: "And when the children of Ammon saw that they had made themselves odious to David, Hanun and the children of Ammon sent a thousand talents of silver to hire them chariots and horsemen out of Mesopotamia, and out of Syriamaachah, and out of Zobah."

1 Chronicles 19:8: "And when David heard of it, he sent Joab, and all the host of the mighty men."

1 Chronicles 19:10: "Now when Joab saw that the battle was set against him before and behind, he chose out of all the choice of Israel, and put them in array against the Syrians."

1 Chronicles 19:15: "And when the children of Ammon saw that the Syrians were fled, they likewise fled before Abishai his brother, and entered into the city. Then Joab came to Jerusalem."

1 Chronicles 19:16: "And when the Syrians saw that they were put to the worse before Israel, they sent messengers, and drew forth the Syrians that were beyond the river: and Shophach the captain of the host of Hadarezer went before them."

1 Chronicles 19:17: "And it was told David; and he gathered all Israel, and passed over Jordan, and came upon them, and set the battle in array against them. So when David had put the battle in array against the Syrians, they fought with him."

1 Chronicles 19:19: "And when the servants of Hadarezer saw that they were put to the worse before Israel, they made peace with David, and became his servants: neither would the Syrians help the children of Ammon any more."

1 Chronicles 20:7: "But when he defied Israel, Jonathan the son of Shimea David's brother slew him."

1 Chronicles 21:28: "At that time when David saw that the LORD had answered him in the threshingfloor of Ornan the Jebusite, then he sacrificed there."

1 Chronicles 23:1: "So when David was old and full of days, he made Solomon his son king over Israel."

2 Chronicles 4:3: "And under it was the similitude of oxen, which did compass it round about: ten in a cubit, compassing the sea round about. Two rows of oxen were cast, when it was cast."

2 Chronicles 5:10: "There was nothing in the ark save the two tables which Moses put therein at

Horeb, when the LORD made a covenant with the children of Israel, when they came out of Egypt."

2 Chronicles 5:11: "And it came to pass, when the priests were come out of the holy place: (for all the priests that were present were sanctified, and did not then wait by course:"

2 Chronicles 5:13: "It came even to pass, as the trumpeters and singers were as one, to make one sound to be heard in praising and thanking the LORD; and when they lifted up their voice with the trumpets and cymbals and instruments of musick, and praised the LORD, saying, For he is good; for his mercy endureth for ever: that then the house was filled with a cloud, even the house of the LORD;"

2 Chronicles 6:21: "Hearken therefore unto the supplications of thy servant, and of thy people Israel, which they shall make toward this place: hear thou from thy dwelling place, even from heaven; and when thou hearest, forgive."

2 Chronicles 6:26: "When the heaven is shut up, and there is no rain, because they have sinned against thee; yet if they pray toward this place, and confess thy name, and turn from their sin, when thou dost afflict them;"

2 Chronicles 6:27: "Then hear thou from heaven, and forgive the sin of thy servants, and of thy people Israel, when thou hast taught them the good way, wherein they should walk; and send rain upon thy land, which thou hast given unto thy people for an inheritance."

2 Chronicles 6:29: "Then what prayer or what supplication soever shall be made of any man, or of all thy people Israel, when every one shall know his own sore and his own grief, and shall spread forth his hands in this house:"

2 Chronicles 7:1: "Now when Solomon had made an end of praying, the fire came down from heaven, and consumed the burnt offering and the sacrifices; and the glory of the LORD filled the house."

2 Chronicles 7:3: "And when all the children of Israel saw how the fire came down, and the glory of the LORD upon the house, they bowed themselves with their faces to the ground upon the pavement, and worshipped, and praised the LORD, saying, For he is good; for his mercy endureth for ever."

2 Chronicles 7:6: "And the priests waited on their offices: the Levites also with instruments of musick of the LORD, which David the king had made to praise the LORD, because his mercy endureth for ever, when David praised by their ministry; and the priests sounded trumpets before them, and all Israel stood."

2 Chronicles 9:1: "And when the queen of Sheba heard of the fame of Solomon, she came to prove Solomon with hard questions at Jerusalem, with a very great company, and camels that bare spices, and gold in abundance, and precious stones: and when she was come to Solomon, she communed with him of all that was in her heart."

2 Chronicles 9:3: "And when the queen of Sheba had seen the wisdom of Solomon, and the house that he had built,"

2 Chronicles 10:2: "And it came to pass, when Jeroboam the son of Nebat, who was in Egypt, whither he fled from the presence of Solomon the king, heard it, that Jeroboam returned out of Egypt."

2 Chronicles 10:16: "And when all Israel saw that the king would not hearken unto them, the people answered the king, saying, What portion have we in David? and we have none inheritance in the son of Jesse: every man to your tents, O Israel: and now, David, see to thine own house. So all Israel went to their tents."

2 Chronicles 11:1: "And when Rehoboam was come to Jerusalem, he gathered of the house of Judah and Benjamin an hundred and fourscore thousand chosen men, which were warriors, to fight against Israel, that he might bring the kingdom again to Rehoboam."

2 Chronicles 12:1: "And it came to pass, when Rehoboam had established the kingdom, and had strengthened himself, he forsook the law of the LORD, and all Israel with him."

2 Chronicles 12:7: "And when the LORD saw that they humbled themselves, the word of the LORD

came to Shemaiah, saying, They have humbled themselves; therefore I will not destroy them, but I will grant them some deliverance; and my wrath shall not be poured out upon Jerusalem by the hand of Shishak."

2 Chronicles 12:11: "And when the king entered into the house of the LORD, the guard came and fetched them, and brought them again into the guard chamber."

2 Chronicles 12:12: "And when he humbled himself, the wrath of the LORD turned from him, that he would not destroy him altogether: and also in Judah things went well."

2 Chronicles 12:13: "So king Rehoboam strengthened himself in Jerusalem, and reigned: for Rehoboam was one and forty years old when he began to reign, and he reigned seventeen years in Jerusalem, the city which the LORD had chosen out of all the tribes of Israel, to put his name there. And his mother's name was Naamah an Ammonitess."

2 Chronicles 13:7: "And there are gathered unto him vain men, the children of Belial, and have strengthened themselves against Rehoboam the son of Solomon, when Rehoboam was young and tenderhearted, and could not withstand them."

2 Chronicles 13:14: "And when Judah looked back, behold, the battle was before and behind: and they cried unto the LORD, and the priests sounded with the trumpets."

2 Chronicles 15:4: "But when they in their trouble did turn unto the LORD God of Israel, and sought him, he was found of them."

2 Chronicles 15:8: "And when Asa heard these words, and the prophecy of Oded the prophet, he took courage, and put away the abominable idols out of all the land of Judah and Benjamin, and out of the cities which he had taken from mount Ephraim, and renewed the altar of the LORD, that was before the porch of the LORD."

2 Chronicles 15:9: "And he gathered all Judah and Benjamin, and the strangers with them out of Ephraim and Manasseh, and out of Simeon: for they fell to him out of Israel in abundance, when they saw that the LORD his God was with him."

2 Chronicles 16:5: "And it came to pass, when Baasha heard it, that he left off building of Ramah, and let his work cease."

2 Chronicles 18:14: "And when he was come to the king, the king said unto him, Micaiah, shall we go to Ramothgilead to battle, or shall I forbear? And he said, Go ye up, and prosper, and they shall be delivered into your hand."

2 Chronicles 18:24: "And Micaiah said, Behold, thou shalt see on that day when thou shalt go into an inner chamber to hide thyself."

2 Chronicles 18:31: "And it came to pass, when the captains of the chariots saw Jehoshaphat, that they said, It is the king of Israel. Therefore they compassed about him to fight: but Jehoshaphat cried out, and the LORD helped him; and God moved them to depart from him."

2 Chronicles 18:32: "For it came to pass, that, when the captains of the chariots perceived that it was not the king of Israel, they turned back again from pursuing him."

2 Chronicles 19:8: "Moreover in Jerusalem did Jehoshaphat set of the Levites, and of the priests, and of the chief of the fathers of Israel, for the judgment of the LORD, and for controversies, when they returned to Jerusalem."

2 Chronicles 20:9: "If, when evil cometh upon us, as the sword, judgment, or pestilence, or famine, we stand before this house, and in thy presence, (for thy name is in this house,) and cry unto thee in our affliction, then thou wilt hear and help."

2 Chronicles 20:10: "And now, behold, the children of Ammon and Moab and mount Seir, whom thou wouldest not let Israel invade, when they came out of the land of Egypt, but they turned from them, and destroyed them not;"

2 Chronicles 20:21: "And when he had consulted with the people, he appointed singers unto the LORD, and that should praise the beauty of holiness, as they went out before the army, and to say, Praise the LORD; for his mercy endureth for ever."

2 Chronicles 20:22: "And when they began to sing and to praise, the LORD set ambushments

against the children of Ammon, Moab, and mount Seir, which were come against Judah; and they were smitten."

2 Chronicles 20:23: "For the children of Ammon and Moab stood up against the inhabitants of mount Seir, utterly to slay and destroy them: and when they had made an end of the inhabitants of Seir, every one helped to destroy another."

2 Chronicles 20:24: "And when Judah came toward the watch tower in the wilderness, they looked unto the multitude, and, behold, they were dead bodies fallen to the earth, and none escaped."

2 Chronicles 20:25: "And when Jehoshaphat and his people came to take away the spoil of them, they found among them in abundance both riches with the dead bodies, and precious jewels, which they stripped off for themselves, more than they could carry away: and they were three days in gathering of the spoil, it was so much."

2 Chronicles 20:29: "And the fear of God was on all the kingdoms of those countries, when they had heard that the LORD fought against the enemies of Israel."

2 Chronicles 20:31: "And Jehoshaphat reigned over Judah: he was thirty and five years old when he began to reign, and he reigned twenty and five years in Jerusalem. And his mother's name was Azubah the daughter of Shilhi."

2 Chronicles 21:4: "Now when Jehoram was risen up to the kingdom of his father, he strengthened himself, and slew all his brethren with the sword, and divers also of the princes of Israel."

2 Chronicles 21:5: "Jehoram was thirty and two years old when he began to reign, and he reigned eight years in Jerusalem."

2 Chronicles 21:20: "Thirty and two years old was he when he began to reign, and he reigned in Jerusalem eight years, and departed without being desired. Howbeit they buried him in the city of David, but not in the sepulchres of the kings."

2 Chronicles 22:2: "Forty and two years old was Ahaziah when he began to reign, and he reigned one year in Jerusalem. His mother's name also was Athaliah the daughter of Omri."

2 Chronicles 22:6: "And he returned to be healed in Jezreel because of the wounds which were given him at Ramah, when he fought with Hazael king of Syria. And Azariah the son of Jehoram king of Judah went down to see Jehoram the son of Ahab at Jezreel, because he was sick."

2 Chronicles 22:7: "And the destruction of Ahaziah was of God by coming to Joram: for when he was come, he went out with Jehoram against Jehu the son of Nimshi, whom the LORD had anointed to cut off the house of Ahab."

2 Chronicles 22:8: "And it came to pass, that, when Jehu was executing judgment upon the house of Ahab, and found the princes of Judah, and the sons of the brethren of Ahaziah, that ministered to Ahaziah, he slew them."

2 Chronicles 22:9: "And he sought Ahaziah: and they caught him, (for he was hid in Samaria,) and brought him to Jehu: and when they had slain him, they buried him: Because, said they, he is the son of Jehoshaphat, who sought the LORD with all his heart. So the house of Ahaziah had no power to keep still the kingdom."

2 Chronicles 22:10: "But when Athaliah the mother of Ahaziah saw that her son was dead, she arose and destroyed all the seed royal of the house of Judah."

2 Chronicles 23:7: "And the Levites shall compass the king round about, every man with his weapons in his hand; and whosoever else cometh into the house, he shall be put to death: but be ye with the king when he cometh in, and when he goeth out."

2 Chronicles 23:12: "Now when Athaliah heard the noise of the people running and praising the king, she came to the people into the house of the LORD:"

2 Chronicles 23:15: "So they laid hands on her; and when she was come to the entering of the horse gate by the king's house, they slew her there."

2 Chronicles 24:1: "Joash was seven years old when he began to reign, and he reigned forty years in Jerusalem. His mother's name also was Zibiah of Beersheba."

2 Chronicles 24:11: "Now it came to pass, that at what time the chest was brought unto the king's

office by the hand of the Levites, and when they saw that there was much money, the king's scribe and the high priest's officer came and emptied the chest, and took it, and carried it to his place again. Thus they did day by day, and gathered money in abundance."

2 Chronicles 24:14: "And when they had finished it, they brought the rest of the money before the king and Jehoiada, whereof were made vessels for the house of the LORD, even vessels to minister, and to offer withal, and spoons, and vessels of gold and silver. And they offered burnt offerings in the house of the LORD continually all the days of Jehoiada."

2 Chronicles 24:15: "But Jehoiada waxed old, and was full of days when he died; an hundred and thirty years old was he when he died."

2 Chronicles 24:22: "Thus Joash the king remembered not the kindness which Jehoiada his father had done to him, but slew his son. And when he died, he said, The LORD look upon it, and require it."

2 Chronicles 24:25: "And when they were departed from him, (for they left him in great diseases,) his own servants conspired against him for the blood of the sons of Jehoiada the priest, and slew him on his bed, and he died: and they buried him in the city of David, but they buried him not in the sepulchres of the kings."

2 Chronicles 25:1: "Amaziah was twenty and five years old when he began to reign, and he reigned twenty and nine years in Jerusalem. And his mother's name was Jehoaddan of Jerusalem."

2 Chronicles 25:3: "Now it came to pass, when the kingdom was established to him, that he slew his servants that had killed the king his father."

2 Chronicles 26:3: "Sixteen years old was Uzziah when he began to reign, and he reigned fifty and two years in Jerusalem. His mother's name also was Jecoliah of Jerusalem."

2 Chronicles 26:16: "But when he was strong, his heart was lifted up to his destruction: for he transgressed against the LORD his God, and went into the temple of the LORD to burn incense upon the altar of incense."

2 Chronicles 27:1: "Jotham was twenty and five years old when he began to reign, and he reigned sixteen years in Jerusalem. His mother's name also was Jerushah, the daughter of Zadok."

2 Chronicles 27:8: "He was five and twenty years old when he began to reign, and reigned sixteen years in Jerusalem."

2 Chronicles 28:1: "Ahaz was twenty years old when he began to reign, and he reigned sixteen years in Jerusalem: but he did not that which was right in the sight of the LORD, like David his father:"

2 Chronicles 29:1: "Hezekiah began to reign when he was five and twenty years old, and he reigned nine and twenty years in Jerusalem. And his mother's name was Abijah, the daughter of Zechariah."

2 Chronicles 29:22: "So they killed the bullocks, and the priests received the blood, and sprinkled it on the altar: likewise, when they had killed the rams, they sprinkled the blood upon the altar: they killed also the lambs, and they sprinkled the blood upon the altar."

2 Chronicles 29:27: "And Hezekiah commanded to offer the burnt offering upon the altar. And when the burnt offering began, the song of the LORD began also with the trumpets, and with the instruments ordained by David king of Israel."

2 Chronicles 29:29: "And when they had made an end of offering, the king and all that were present with him bowed themselves, and worshipped."

2 Chronicles 31:1: "Now when all this was finished, all Israel that were present went out to the cities of Judah, and brake the images in pieces, and cut down the groves, and threw down the high places and the altars out of all Judah and Benjamin, in Ephraim also and Manasseh, until they had utterly destroyed them all. Then all the children of Israel returned, every man to his possession, into their own cities."

2 Chronicles 31:8: "And when Hezekiah and the princes came and saw the heaps, they blessed the LORD, and his people Israel."

2 Chronicles 32:2: "And when Hezekiah saw that Sennacherib was come, and that he was purposed

to fight against Jerusalem,"

2 Chronicles 32:21: "And the LORD sent an angel, which cut off all the mighty men of valour, and the leaders and captains in the camp of the king of Assyria. So he returned with shame of face to his own land. And when he was come into the house of his god, they that came forth of his own bowels slew him there with the sword."

2 Chronicles 33:1: "Manasseh was twelve years old when he began to reign, and he reigned fifty and five years in Jerusalem:"

2 Chronicles 33:12: "And when he was in affliction, he besought the LORD his God, and humbled himself greatly before the God of his fathers,"

2 Chronicles 33:21: "Amon was two and twenty years old when he began to reign, and reigned two years in Jerusalem."

2 Chronicles 34:1: "Josiah was eight years old when he began to reign, and he reigned in Jerusalem one and thirty years."

2 Chronicles 34:7: "And when he had broken down the altars and the groves, and had beaten the graven images into powder, and cut down all the idols throughout all the land of Israel, he returned to Jerusalem."

2 Chronicles 34:8: "Now in the eighteenth year of his reign, when he had purged the land, and the house, he sent Shaphan the son of Azaliah, and Maaseiah the governor of the city, and Joah the son of Joahaz the recorder, to repair the house of the LORD his God."

2 Chronicles 34:9: "And when they came to Hilkiah the high priest, they delivered the money that was brought into the house of God, which the Levites that kept the doors had gathered of the hand of Manasseh and Ephraim, and of all the remnant of Israel, and of all Judah and Benjamin; and they returned to Jerusalem."

2 Chronicles 34:14: "And when they brought out the money that was brought into the house of the LORD, Hilkiah the priest found a book of the law of the LORD given by Moses."

2 Chronicles 34:19: "And it came to pass, when the king had heard the words of the law, that he rent his clothes."

2 Chronicles 34:27: "Because thine heart was tender, and thou didst humble thyself before God, when thou heardest his words against this place, and against the inhabitants thereof, and humbledst thyself before me, and didst rend thy clothes, and weep before me; I have even heard thee also, saith the LORD."

2 Chronicles 35:20: "After all this, when Josiah had prepared the temple, Necho king of Egypt came up to fight against Charchemish by Euphrates: and Josiah went out against him."

2 Chronicles 36:2: "Jehoahaz was twenty and three years old when he began to reign, and he reigned three months in Jerusalem."

2 Chronicles 36:5: "Jehoiakim was twenty and five years old when he began to reign, and he reigned eleven years in Jerusalem: and he did that which was evil in the sight of the LORD his God."

2 Chronicles 36:9: "Jehoiachin was eight years old when he began to reign, and he reigned three months and ten days in Jerusalem: and he did that which was evil in the sight of the LORD."

2 Chronicles 36:10: "And when the year was expired, king Nebuchadnezzar sent, and brought him to Babylon, with the goodly vessels of the house of the LORD, and made Zedekiah his brother king over Judah and Jerusalem."

2 Chronicles 36:11: "Zedekiah was one and twenty years old when he began to reign, and reigned eleven years in Jerusalem."

Ezra 2:68: "And some of the chief of the fathers, when they came to the house of the LORD which is at Jerusalem, offered freely for the house of God to set it up in his place:"

Ezra 3:1: "And when the seventh month was come, and the children of Israel were in the cities, the people gathered themselves together as one man to Jerusalem."

Ezra 3:10: "And when the builders laid the foundation of the temple of the LORD, they set the

priests in their apparel with trumpets, and the Levites the sons of Asaph with cymbals, to praise the LORD, after the ordinance of David king of Israel."

Ezra 3:11: "And they sang together by course in praising and giving thanks unto the LORD; because he is good, for his mercy endureth for ever toward Israel. And all the people shouted with a great shout, when they praised the LORD, because the foundation of the house of the LORD was laid."

Ezra 3:12: "But many of the priests and Levites and chief of the fathers, who were ancient men, that had seen the first house, when the foundation of this house was laid before their eyes, wept with a loud voice; and many shouted aloud for joy:"

Ezra 4:1: "Now when the adversaries of Judah and Benjamin heard that the children of the captivity builded the temple unto the LORD God of Israel;"

Ezra 4:23: "Now when the copy of king Artaxerxes' letter was read before Rehum, and Shimshai the scribe, and their companions, they went up in haste to Jerusalem unto the Jews, and made them to cease by force and power."

Ezra 9:1: "Now when these things were done, the princes came to me, saying, The people of Israel, and the priests, and the Levites, have not separated themselves from the people of the lands, doing according to their abominations, even of the Canaanites, the Hittites, the Perizzites, the Jebusites, the Ammonites, the Moabites, the Egyptians, and the Amorites."

Ezra 9:3: "And when I heard this thing, I rent my garment and my mantle, and plucked off the hair of my head and of my beard, and sat down astonished."

Ezra 10:1: "Now when Ezra had prayed, and when he had confessed, weeping and casting himself down before the house of God, there assembled unto him out of Israel a very great congregation of men and women and children: for the people wept very sore."

Ezra 10:6: "Then Ezra rose up from before the house of God, and went into the chamber of Johanan the son of Eliashib: and when he came thither, he did eat no bread, nor drink water: for he mourned because of the transgression of them that had been carried away."

Nehemiah 1:4: "And it came to pass, when I heard these words, that I sat down and wept, and mourned certain days, and fasted, and prayed before the God of heaven,"

Nehemiah 2:3: "And said unto the king, Let the king live for ever: why should not my countenance be sad, when the city, the place of my fathers' sepulchres, lieth waste, and the gates thereof are consumed with fire?"

Nehemiah 2:6: "And the king said unto me, (the queen also sitting by him,) For how long shall thy journey be? and when wilt thou return? So it pleased the king to send me; and I set him a time."

Nehemiah 2:10: "When Sanballat the Horonite, and Tobiah the servant, the Ammonite, heard of it, it grieved them exceedingly that there was come a man to seek the welfare of the children of Israel."

Nehemiah 2:19: "But when Sanballat the Horonite, and Tobiah the servant, the Ammonite, and Geshem the Arabian, heard it, they laughed us to scorn, and despised us, and said, What is this thing that ye do? will ye rebel against the king?"

Nehemiah 4:1: "But it came to pass, that when Sanballat heard that we builded the wall, he was wroth, and took great indignation, and mocked the Jews."

Nehemiah 4:7: "But it came to pass, that when Sanballat, and Tobiah, and the Arabians, and the Ammonites, and the Ashdodites, heard that the walls of Jerusalem were made up, and that the breaches began to be stopped, then they were very wroth,"

Nehemiah 4:12: "And it came to pass, that when the Jews which dwelt by them came, they said unto us ten times, From all places whence ye shall return unto us they will be upon you."

Nehemiah 4:15: "And it came to pass, when our enemies heard that it was known unto us, and God had brought their counsel to nought, that we returned all of us to the wall, every one unto his work."

Nehemiah 5:6: "And I was very angry when I heard their cry and these words."

Nehemiah 6:1: "Now it came to pass when Sanballat, and Tobiah, and Geshem the Arabian, and the rest of our enemies, heard that I had builded the wall, and that there was no breach left therein;



(though at that time I had not set up the doors upon the gates;)"

Nehemiah 6:16: "And it came to pass, that when all our enemies heard thereof, and all the heathen that were about us saw these things, they were much cast down in their own eyes: for they perceived that this work was wrought of our God."

Nehemiah 7:1: "Now it came to pass, when the wall was built, and I had set up the doors, and the porters and the singers and the Levites were appointed,"

Nehemiah 7:73: "So the priests, and the Levites, and the porters, and the singers, and some of the people, and the Nethinims, and all Israel, dwelt in their cities; and when the seventh month came, the children of Israel were in their cities."

Nehemiah 8:5: "And Ezra opened the book in the sight of all the people; (for he was above all the people;) and when he opened it, all the people stood up:"

Nehemiah 8:9: "And Nehemiah, which is the Tirshatha, and Ezra the priest the scribe, and the Levites that taught the people, said unto all the people, This day is holy unto the LORD your God; mourn not, nor weep. For all the people wept, when they heard the words of the law."

Nehemiah 9:18: "Yea, when they had made them a molten calf, and said, This is thy God that brought thee up out of Egypt, and had wrought great provocations;"

Nehemiah 9:27: "Therefore thou deliveredst them into the hand of their enemies, who vexed them: and in the time of their trouble, when they cried unto thee, thou heardest them from heaven; and according to thy manifold mercies thou gavest them saviours, who saved them out of the hand of their enemies."

Nehemiah 9:28: "But after they had rest, they did evil again before thee: therefore leftest thou them in the land of their enemies, so that they had the dominion over them: yet when they returned, and cried unto thee, thou heardest them from heaven; and many times didst thou deliver them according to thy mercies;"

Nehemiah 10:38: "And the priest the son of Aaron shall be with the Levites, when the Levites take tithes: and the Levites shall bring up the tithe of the tithes unto the house of our God, to the chambers, into the treasure house."

Nehemiah 13:3: "Now it came to pass, when they had heard the law, that they separated from Israel all the mixed multitude."

Nehemiah 13:19: "And it came to pass, that when the gates of Jerusalem began to be dark before the sabbath, I commanded that the gates should be shut, and charged that they should not be opened till after the sabbath: and some of my servants set I at the gates, that there should no burden be brought in on the sabbath day."

Esther 1:2: "That in those days, when the king Ahasuerus sat on the throne of his kingdom, which was in Shushan the palace,"

Esther 1:4: "When he shewed the riches of his glorious kingdom and the honour of his excellent majesty many days, even an hundred and fourscore days."

Esther 1:5: "And when these days were expired, the king made a feast unto all the people that were present in Shushan the palace, both unto great and small, seven days, in the court of the garden of the king's palace;"

Esther 1:10: "On the seventh day, when the heart of the king was merry with wine, he commanded Mehuman, Biztha, Harbona, Bigtha, and Abagtha, Zethar, and Carcas, the seven chamberlains that served in the presence of Ahasuerus the king,"

Esther 1:17: "For this deed of the queen shall come abroad unto all women, so that they shall despise their husbands in their eyes, when it shall be reported, The king Ahasuerus commanded Vashti the queen to be brought in before him, but she came not."

Esther 1:20: "And when the king's decree which he shall make shall be published throughout all his empire, (for it is great,) all the wives shall give to their husbands honour, both to great and small."

Esther 2:1: "After these things, when the wrath of king Ahasuerus was appeased, he remembered Vashti, and what she had done, and what was decreed against her."

Esther 2:7: "And he brought up Hadassah, that is, Esther, his uncle's daughter: for she had neither father nor mother, and the maid was fair and beautiful; whom Mordecai, when her father and mother were dead, took for his own daughter."

Esther 2:8: "So it came to pass, when the king's commandment and his decree was heard, and when many maidens were gathered together unto Shushan the palace, to the custody of Hegai, that Esther was brought also unto the king's house, to the custody of Hegai, keeper of the women."

Esther 2:12: "Now when every maid's turn was come to go in to king Ahasuerus, after that she had been twelve months, according to the manner of the women, (for so were the days of their purifications accomplished, to wit, six months with oil of myrrh, and six months with sweet odours, and with other things for the purifying of the women;)"

Esther 2:15: "Now when the turn of Esther, the daughter of Abihail the uncle of Mordecai, who had taken her for his daughter, was come to go in unto the king, she required nothing but what Hegai the king's chamberlain, the keeper of the women, appointed. And Esther obtained favour in the sight of all them that looked upon her."

Esther 2:19: "And when the virgins were gathered together the second time, then Mordecai sat in the king's gate."

Esther 2:20: "Esther had not yet shewed her kindred nor her people; as Mordecai had charged her: for Esther did the commandment of Mordecai, like as when she was brought up with him."

Esther 2:23: "And when inquisition was made of the matter, it was found out; therefore they were both hanged on a tree: and it was written in the book of the chronicles before the king."

Esther 3:4: "Now it came to pass, when they spake daily unto him, and he hearkened not unto them, that they told Haman, to see whether Mordecai's matters would stand: for he had told them that he was a Jew."

Esther 3:5: "And when Haman saw that Mordecai bowed not, nor did him reverence, then was Haman full of wrath."

Esther 4:1: "When Mordecai perceived all that was done, Mordecai rent his clothes, and put on sackcloth with ashes, and went out into the midst of the city, and cried with a loud and a bitter cry;"

Esther 5:2: "And it was so, when the king saw Esther the queen standing in the court, that she obtained favour in his sight: and the king held out to Esther the golden sceptre that was in his hand. So Esther drew near, and touched the top of the sceptre."

Esther 5:9: "Then went Haman forth that day joyful and with a glad heart: but when Haman saw Mordecai in the king's gate, that he stood not up, nor moved for him, he was full of indignation against Mordecai."

Esther 5:10: "Nevertheless Haman refrained himself: and when he came home, he sent and called for his friends, and Zeresh his wife."

Esther 9:1: "Now in the twelfth month, that is, the month Adar, on the thirteenth day of the same, when the king's commandment and his decree drew near to be put in execution, in the day that the enemies of the Jews hoped to have power over them, (though it was turned to the contrary, that the Jews had rule over them that hated them;)"

Esther 9:25: "But when Esther came before the king, he commanded by letters that his wicked device, which he devised against the Jews, should return upon his own head, and that he and his sons should be hanged on the gallows."

Job 1:5: "And it was so, when the days of their feasting were gone about, that Job sent and sanctified them, and rose up early in the morning, and offered burnt offerings according to the number of them all: for Job said, It may be that my sons have sinned, and cursed God in their hearts. Thus did Job continually."

Job 1:6: "Now there was a day when the sons of God came to present themselves before the LORD, and Satan came also among them."

Job 1:13: "And there was a day when his sons and his daughters were eating and drinking wine in their eldest brother's house:"

Job 2:1: "Again there was a day when the sons of God came to present themselves before the LORD, and Satan came also among them to present himself before the LORD."

Job 2:11: "Now when Job's three friends heard of all this evil that was come upon him, they came every one from his own place; Eliphaz the Temanite, and Bildad the Shuhite, and Zophar the Naamathite: for they had made an appointment together to come to mourn with him and to comfort him."

Job 2:12: "And when they lifted up their eyes afar off, and knew him not, they lifted up their voice, and wept; and they rent every one his mantle, and sprinkled dust upon their heads toward heaven."

Job 3:11: "Why died I not from the womb? why did I not give up the ghost when I came out of the belly?"

Job 3:22: "Which rejoice exceedingly, and are glad, when they can find the grave?"

Job 4:13: "In thoughts from the visions of the night, when deep sleep falleth on men,"

Job 5:21: "Thou shalt be hid from the scourge of the tongue: neither shalt thou be afraid of destruction when it cometh."

Job 6:5: "Doth the wild ass bray when he hath grass? or loweth the ox over his fodder?"

Job 6:17: "What time they wax warm, they vanish: when it is hot, they are consumed out of their place."

Job 7:4: "When I lie down, I say, When shall I arise, and the night be gone? and I am full of tossings to and fro unto the dawning of the day."

Job 7:13: "When I say, My bed shall comfort me, my couch shall ease my complaints;"

Job 11:3: "Should thy lies make men hold their peace? and when thou mockest, shall no man make thee ashamed?"

Job 16:22: "When a few years are come, then I shall go the way whence I shall not return."

Job 17:16: "They shall go down to the bars of the pit, when our rest together is in the dust."

Job 20:23: "When he is about to fill his belly, God shall cast the fury of his wrath upon him, and shall rain it upon him while he is eating."

Job 21:6: "Even when I remember I am afraid, and trembling taketh hold on my flesh."

Job 21:21: "For what pleasure hath he in his house after him, when the number of his months is cut off in the midst?"

Job 22:29: "When men are cast down, then thou shalt say, There is lifting up; and he shall save the humble person."

Job 23:10: "But he knoweth the way that I take: when he hath tried me, I shall come forth as gold."

Job 23:15: "Therefore am I troubled at his presence: when I consider, I am afraid of him."

Job 27:8: "For what is the hope of the hypocrite, though he hath gained, when God taketh away his soul?"

Job 27:9: "Will God hear his cry when trouble cometh upon him?"

Job 28:26: "When he made a decree for the rain, and a way for the lightning of the thunder:"

Job 29:2: "Oh that I were as in months past, as in the days when God preserved me;"

Job 29:3: "When his candle shined upon my head, and when by his light I walked through darkness;"

Job 29:4: "As I was in the days of my youth, when the secret of God was upon my tabernacle;"

Job 29:5: "When the Almighty was yet with me, when my children were about me;"

Job 29:6: "When I washed my steps with butter, and the rock poured me out rivers of oil;"

Job 29:7: "When I went out to the gate through the city, when I prepared my seat in the street!"

Job 29:11: "When the ear heard me, then it blessed me; and when the eye saw me, it gave witness to me:"

Job 30:26: "When I looked for good, then evil came unto me: and when I waited for light, there came darkness."

Job 31:13: "If I did despise the cause of my manservant or of my maidservant, when they contended with me;"

Job 31:14: "What then shall I do when God riseth up? and when he visiteth, what shall I answer him?"

Job 31:21: "If I have lifted up my hand against the fatherless, when I saw my help in the gate:"

Job 31:26: "If I beheld the sun when it shined, or the moon walking in brightness;"

Job 31:29: "If I rejoice at the destruction of him that hated me, or lifted up myself when evil found him:"

Job 32:5: "When Elihu saw that there was no answer in the mouth of these three men, then his wrath was kindled."

Job 32:16: "When I had waited, (for they spake not, but stood still, and answered no more;)"

Job 33:15: "In a dream, in a vision of the night, when deep sleep falleth upon men, in slumberings upon the bed;"

Job 34:29: "When he giveth quietness, who then can make trouble? and when he hideth his face, who then can behold him? whether it be done against a nation, or against a man only:"

Job 36:13: "But the hypocrites in heart heap up wrath: they cry not when he bindeth them."

Job 36:20: "Desire not the night, when people are cut off in their place."

Job 37:4: "After it a voice roareth: he thundereth with the voice of his excellency; and he will not stay them when his voice is heard."

Job 37:15: "Dost thou know when God disposed them, and caused the light of his cloud to shine?"

Job 37:17: "How thy garments are warm, when he quieteth the earth by the south wind?"

Job 38:4: "Where wast thou when I laid the foundations of the earth? declare, if thou hast understanding."

Job 38:7: "When the morning stars sang together, and all the sons of God shouted for joy?"

Job 38:8: "Or who shut up the sea with doors, when it brake forth, as if it had issued out of the womb?"

Job 38:9: "When I made the cloud the garment thereof, and thick darkness a swaddlingband for it,"

Job 38:38: "When the dust groweth into hardness, and the clods cleave fast together?"

Job 38:40: "When they couch in their dens, and abide in the covert to lie in wait?"

Job 38:41: "Who provideth for the raven his food? when his young ones cry unto God, they wander for lack of meat."

Job 39:1: "Knowest thou the time when the wild goats of the rock bring forth? or canst thou mark when the hinds do calve?"

Job 39:2: "Canst thou number the months that they fulfil? or knowest thou the time when they bring forth?"

Job 41:25: "When he raiseth up himself, the mighty are afraid: by reason of breakings they purify themselves."

Job 42:10: "And the LORD turned the captivity of Job, when he prayed for his friends: also the LORD gave Job twice as much as he had before."

Psalms 2:12: "Kiss the Son, lest he be angry, and ye perish from the way, when his wrath is kindled but a little. Blessed are all they that put their trust in him."

Psalms 4:1: "Hear me when I call, O God of my righteousness: thou hast enlarged me when I was in distress; have mercy upon me, and hear my prayer."

Psalms 4:3: "But know that the LORD hath set apart him that is godly for himself: the LORD will hear when I call unto him."

Psalms 8:3: "When I consider thy heavens, the work of thy fingers, the moon and the stars, which thou hast ordained;"

Psalms 9:3: "When mine enemies are turned back, they shall fall and perish at thy presence."

Psalms 9:12: "When he maketh inquisition for blood, he remembereth them: he forgetteth not the cry of the humble."

Psalms 10:9: "He lieth in wait secretly as a lion in his den: he lieth in wait to catch the poor: he doth catch the poor, when he draweth him into his net."

Psalms 12:8: "The wicked walk on every side, when the vilest men are exalted."

Psalms 13:4: "Lest mine enemy say, I have prevailed against him; and those that trouble me rejoice when I am moved."

Psalms 14:7: "Oh that the salvation of Israel were come out of Zion! when the LORD bringeth back the captivity of his people, Jacob shall rejoice, and Israel shall be glad."

Psalms 17:15: "As for me, I will behold thy face in righteousness: I shall be satisfied, when I awake, with thy likeness."

Psalms 20:9: "Save, LORD: let the king hear us when we call."

Psalms 21:12: "Therefore shalt thou make them turn their back, when thou shalt make ready thine arrows upon thy strings against the face of them."

Psalms 22:9: "But thou art he that took me out of the womb: thou didst make me hope when I was upon my mother's breasts."

Psalms 22:24: "For he hath not despised nor abhorred the affliction of the afflicted; neither hath he hid his face from him; but when he cried unto him, he heard."

Psalms 27:2: "When the wicked, even mine enemies and my foes, came upon me to eat up my flesh, they stumbled and fell."

Psalms 27:7: "Hear, O LORD, when I cry with my voice: have mercy also upon me, and answer me."

Psalms 27:8: "When thou saidst, Seek ye my face; my heart said unto thee, Thy face, LORD, will I seek."

Psalms 27:10: "When my father and my mother forsake me, then the LORD will take me up."

Psalms 28:2: "Hear the voice of my supplications, when I cry unto thee, when I lift up my hands toward thy holy oracle."

Psalms 30:9: "What profit is there in my blood, when I go down to the pit? Shall the dust praise thee? shall it declare thy truth?"

Psalms 31:22: "For I said in my haste, I am cut off from before thine eyes: nevertheless thou heardest the voice of my supplications when I cried unto thee."

Psalms 32:3: "When I kept silence, my bones waxed old through my roaring all the day long."

Psalms 32:6: "For this shall every one that is godly pray unto thee in a time when thou mayest be found: surely in the floods of great waters they shall not come nigh unto him."

Psalms 35:13: "But as for me, when they were sick, my clothing was sackcloth: I humbled my soul with fasting; and my prayer returned into mine own bosom."

Psalms 37:33: "The LORD will not leave him in his hand, nor condemn him when he is judged."

Psalms 37:34: "Wait on the LORD, and keep his way, and he shall exalt thee to inherit the land: when the wicked are cut off, thou shalt see it."

Psalms 38:16: "For I said, Hear me, lest otherwise they should rejoice over me: when my foot slippeth, they magnify themselves against me."

Psalms 39:11: "When thou with rebukes dost correct man for iniquity, thou makest his beauty to consume away like a moth: surely every man is vanity. Selah."

Psalms 41:5: "Mine enemies speak evil of me, When shall he die, and his name perish?"

Psalms 41:6: "And if he come to see me, he speaketh vanity: his heart gathereth iniquity to itself; when he goeth abroad, he telleth it."

Psalms 42:2: "My soul thirsteth for God, for the living God: when shall I come and appear before God?"

Psalms 42:4: "When I remember these things, I pour out my soul in me: for I had gone with the multitude, I went with them to the house of God, with the voice of joy and praise, with a multitude that kept holyday."

Psalms 49:5: "Wherefore should I fear in the days of evil, when the iniquity of my heels shall compass me about?"

Psalms 49:16: "Be not thou afraid when one is made rich, when the glory of his house is increased;"

Psalms 49:17: "For when he dieth he shall carry nothing away: his glory shall not descend after him."

Psalms 49:18: "Though while he lived he blessed his soul: and men will praise thee, when thou doest well to thyself."

Psalms 50:18: "When thou sawest a thief, then thou consentedst with him, and hast been partaker with adulterers."

Psalms 51:4: "Against thee, thee only, have I sinned, and done this evil in thy sight: that thou mightest be justified when thou speakest, and be clear when thou judgest."

Psalms 53:6: "Oh that the salvation of Israel were come out of Zion! When God bringeth back the captivity of his people, Jacob shall rejoice, and Israel shall be glad."

Psalms 56:6: "They gather themselves together, they hide themselves, they mark my steps, when they wait for my soul."

Psalms 56:9: "When I cry unto thee, then shall mine enemies turn back: this I know; for God is for me."

Psalms 58:7: "Let them melt away as waters which run continually: when he bendeth his bow to shoot his arrows, let them be as cut in pieces."

Psalms 58:10: "The righteous shall rejoice when he seeth the vengeance: he shall wash his feet in the blood of the wicked."

Psalms 61:2: "From the end of the earth will I cry unto thee, when my heart is overwhelmed: lead me to the rock that is higher than I."

Psalms 63:6: "When I remember thee upon my bed, and meditate on thee in the night watches."

Psalms 65:9: "Thou visitest the earth, and waterest it: thou greatly enrichest it with the river of God, which is full of water: thou preparest them corn, when thou hast so provided for it."

Psalms 66:14: "Which my lips have uttered, and my mouth hath spoken, when I was in trouble."

Psalms 68:7: "O God, when thou wentest forth before thy people, when thou didst march through the wilderness; Selah:"

Psalms 68:9: "Thou, O God, didst send a plentiful rain, whereby thou didst confirm thine inheritance, when it was weary."

Psalms 68:14: "When the Almighty scattered kings in it, it was white as snow in Salmon."

Psalms 69:10: "When I wept, and chastened my soul with fasting, that was to my reproach."

Psalms 71:9: "Cast me not off in the time of old age; forsake me not when my strength faileth."

Psalms 71:18: "Now also when I am old and greyheaded, O God, forsake me not; until I have shewed thy strength unto this generation, and thy power to every one that is to come."

Psalms 71:23: "My lips shall greatly rejoice when I sing unto thee; and my soul, which thou hast redeemed."

Psalms 72:12: "For he shall deliver the needy when he crieth; the poor also, and him that hath no helper."

Psalms 73:3: "For I was envious at the foolish, when I saw the prosperity of the wicked."

Psalms 73:16: "When I thought to know this, it was too painful for me;"

Psalms 73:20: "As a dream when one awaketh; so, O Lord, when thou awakest, thou shalt despise their image."

Psalms 75:2: "When I shall receive the congregation I will judge uprightly."

Psalms 76:7: "Thou, even thou, art to be feared: and who may stand in thy sight when once thou art angry?"

Psalms 76:9: "When God arose to judgment, to save all the meek of the earth. Selah."

Psalms 78:34: "When he slew them, then they sought him: and they returned and enquired early after God."

Psalms 78:42: "They remembered not his hand, nor the day when he delivered them from the enemy."

Psalms 78:59: "When God heard this, he was wroth, and greatly abhorred Israel:"

Psalms 81:5: "This he ordained in Joseph for a testimony, when he went out through the land of Egypt: where I heard a language that I understood not."  
 Psalms 87:6: "The LORD shall count, when he writeth up the people, that this man was born there. Selah."  
 Psalms 89:9: "Thou rulest the raging of the sea: when the waves thereof arise, thou stillest them."  
 Psalms 90:4: "For a thousand years in thy sight are but as yesterday when it is past, and as a watch in the night."  
 Psalms 92:7: "When the wicked spring as the grass, and when all the workers of iniquity do flourish; it is that they shall be destroyed for ever:"  
 Psalms 94:8: "Understand, ye brutish among the people: and ye fools, when will ye be wise?"  
 Psalms 94:18: "When I said, My foot slippeth; thy mercy, O LORD, held me up."  
 Psalms 95:9: "When your fathers tempted me, proved me, and saw my work."  
 Psalms 101:2: "I will behave myself wisely in a perfect way. O when wilt thou come unto me? I will walk within my house with a perfect heart."  
 Psalms 102:2: "Hide not thy face from me in the day when I am in trouble; incline thine ear unto me: in the day when I call answer me speedily."  
 Psalms 102:16: "When the LORD shall build up Zion, he shall appear in his glory."  
 Psalms 102:22: "When the people are gathered together, and the kingdoms, to serve the LORD."  
 Psalms 105:12: "When they were but a few men in number; yea, very few, and strangers in it."  
 Psalms 105:13: "When they went from one nation to another, from one kingdom to another people;"  
 Psalms 105:38: "Egypt was glad when they departed: for the fear of them fell upon them."  
 Psalms 106:44: "Nevertheless he regarded their affliction, when he heard their cry:"  
 Psalms 109:7: "When he shall be judged, let him be condemned: and let his prayer become sin."  
 Psalms 109:23: "I am gone like the shadow when it declineth: I am tossed up and down as the locust."  
 Psalms 109:25: "I became also a reproach unto them: when they looked upon me they shook their heads."  
 Psalms 109:28: "Let them curse, but bless thou: when they arise, let them be ashamed; but let thy servant rejoice."  
 Psalms 114:1: "When Israel went out of Egypt, the house of Jacob from a people of strange language;"  
 Psalms 119:6: "Then shall I not be ashamed, when I have respect unto all thy commandments."  
 Psalms 119:7: "I will praise thee with uprightness of heart, when I shall have learned thy righteous judgments."  
 Psalms 119:32: "I will run the way of thy commandments, when thou shalt enlarge my heart."  
 Psalms 119:74: "They that fear thee will be glad when they see me; because I have hoped in thy word."  
 Psalms 119:82: "Mine eyes fail for thy word, saying, When wilt thou comfort me?"  
 Psalms 119:84: "How many are the days of thy servant? when wilt thou execute judgment on them that persecute me?"  
 Psalms 119:171: "My lips shall utter praise, when thou hast taught me thy statutes."  
 Psalms 120:7: "I am for peace: but when I speak, they are for war."  
 Psalms 122:1: "I was glad when they said unto me, Let us go into the house of the LORD."  
 Psalms 124:2: "If it had not been the LORD who was on our side, when men rose up against us:"  
 Psalms 124:3: "Then they had swallowed us up quick, when their wrath was kindled against us:"  
 Psalms 126:1: "When the LORD turned again the captivity of Zion, we were like them that dream."  
 Psalms 137:1: "By the rivers of Babylon, there we sat down, yea, we wept, when we remembered Zion."  
 Psalms 138:3: "In the day when I cried thou answeredst me, and strengthenedst me with strength in my soul."

Psalms 138:4: "All the kings of the earth shall praise thee, O LORD, when they hear the words of thy mouth."

Psalms 139:15: "My substance was not hid from thee, when I was made in secret, and curiously wrought in the lowest parts of the earth."

Psalms 139:16: "Thine eyes did see my substance, yet being unperfect; and in thy book all my members were written, which in continuance were fashioned, when as yet there was none of them."

Psalms 139:18: "If I should count them, they are more in number than the sand: when I awake, I am still with thee."

Psalms 141:1: "Lord, I cry unto thee: make haste unto me; give ear unto my voice, when I cry unto thee."

Psalms 141:6: "When their judges are overthrown in stony places, they shall hear my words; for they are sweet."

Psalms 141:7: "Our bones are scattered at the grave's mouth, as when one cutteth and cleaveth wood upon the earth."

Psalms 142:3: "When my spirit was overwhelmed within me, then thou knewest my path. In the way wherein I walked have they privily laid a snare for me."

Proverbs 1:26: "I also will laugh at your calamity; I will mock when your fear cometh;"

Proverbs 1:27: "When your fear cometh as desolation, and your destruction cometh as a whirlwind; when distress and anguish cometh upon you."

Proverbs 2:10: "When wisdom entereth into thine heart, and knowledge is pleasant unto thy soul;"

Proverbs 3:24: "When thou liest down, thou shalt not be afraid: yea, thou shalt lie down, and thy sleep shall be sweet."

Proverbs 3:25: "Be not afraid of sudden fear, neither of the desolation of the wicked, when it cometh."

Proverbs 3:27: "Withhold not good from them to whom it is due, when it is in the power of thine hand to do it."

Proverbs 3:28: "Say not unto thy neighbour, Go, and come again, and to morrow I will give; when thou hast it by thee."

Proverbs 4:8: "Exalt her, and she shall promote thee: she shall bring thee to honour, when thou dost embrace her."

Proverbs 4:12: "When thou goest, thy steps shall not be straitened; and when thou runnest, thou shalt not stumble."

Proverbs 5:11: "And thou mourn at the last, when thy flesh and thy body are consumed,"

Proverbs 6:3: "Do this now, my son, and deliver thyself, when thou art come into the hand of thy friend; go, humble thyself, and make sure thy friend."

Proverbs 6:9: "How long wilt thou sleep, O sluggard? when wilt thou arise out of thy sleep?"

Proverbs 6:22: "When thou goest, it shall lead thee; when thou sleepest, it shall keep thee; and when thou awakest, it shall talk with thee."

Proverbs 6:30: "Men do not despise a thief, if he steal to satisfy his soul when he is hungry;"

Proverbs 8:24: "When there were no depths, I was brought forth; when there were no fountains abounding with water."

Proverbs 8:27: "When he prepared the heavens, I was there: when he set a compass upon the face of the depth:"

Proverbs 8:28: "When he established the clouds above: when he strengthened the fountains of the deep:"

Proverbs 8:29: "When he gave to the sea his decree, that the waters should not pass his commandment: when he appointed the foundations of the earth:"

Proverbs 11:2: "When pride cometh, then cometh shame: but with the lowly is wisdom."

Proverbs 11:7: "When a wicked man dieth, his expectation shall perish: and the hope of unjust men perisheth."



Proverbs 11:10: "When it goeth well with the righteous, the city rejoiceth: and when the wicked perish, there is shouting."

Proverbs 13:12: "Hope deferred maketh the heart sick: but when the desire cometh, it is a tree of life."

Proverbs 14:7: "Go from the presence of a foolish man, when thou perceivest not in him the lips of knowledge."

Proverbs 16:7: "When a man's ways please the LORD, he maketh even his enemies to be at peace with him."

Proverbs 17:14: "The beginning of strife is as when one letteth out water: therefore leave off contention, before it be meddled with."

Proverbs 17:28: "Even a fool, when he holdeth his peace, is counted wise: and he that shutteth his lips is esteemed a man of understanding."

Proverbs 18:3: "When the wicked cometh, then cometh also contempt, and with ignominy reproach."

Proverbs 20:14: "It is naught, it is naught, saith the buyer: but when he is gone his way, then he boasteth."

Proverbs 21:11: "When the scorner is punished, the simple is made wise: and when the wise is instructed, he receiveth knowledge."

Proverbs 21:27: "The sacrifice of the wicked is abomination: how much more, when he bringeth it with a wicked mind?"

Proverbs 22:6: "Train up a child in the way he should go: and when he is old, he will not depart from it."

Proverbs 23:1: "When thou sittest to eat with a ruler, consider diligently what is before thee:"

Proverbs 23:16: "Yea, my reins shall rejoice, when thy lips speak right things."

Proverbs 23:22: "Hearken unto thy father that begat thee, and despise not thy mother when she is old."

Proverbs 23:31: "Look not thou upon the wine when it is red, when it giveth his colour in the cup, when it moveth itself aright."

Proverbs 23:35: "They have stricken me, shalt thou say, and I was not sick; they have beaten me, and I felt it not: when shall I awake? I will seek it yet again."

Proverbs 24:14: "So shall the knowledge of wisdom be unto thy soul: when thou hast found it, then there shall be a reward, and thy expectation shall not be cut off."

Proverbs 24:17: "Rejoice not when thine enemy falleth, and let not thine heart be glad when he stumbleth:"

Proverbs 25:8: "Go not forth hastily to strive, lest thou know not what to do in the end thereof, when thy neighbour hath put thee to shame."

Proverbs 26:25: "When he speaketh fair, believe him not: for there are seven abominations in his heart."

Proverbs 28:1: "The wicked flee when no man pursueth: but the righteous are bold as a lion."

Proverbs 28:12: "When righteous men do rejoice, there is great glory: but when the wicked rise, a man is hidden."

Proverbs 28:28: "When the wicked rise, men hide themselves: but when they perish, the righteous increase."

Proverbs 29:2: "When the righteous are in authority, the people rejoice: but when the wicked beareth rule, the people mourn."

Proverbs 29:16: "When the wicked are multiplied, transgression increaseth: but the righteous shall see their fall."

Proverbs 30:22: "For a servant when he reigneth; and a fool when he is filled with meat;"

Proverbs 30:23: "For an odious woman when she is married; and an handmaid that is heir to her mistress."

Proverbs 31:23: "Her husband is known in the gates, when he sitteth among the elders of the land."

Ecclesiastes 4:10: "For if they fall, the one will lift up his fellow: but woe to him that is alone when he falleth; for he hath not another to help him up."

Ecclesiastes 5:1: "Keep thy foot when thou goest to the house of God, and be more ready to hear, than to give the sacrifice of fools: for they consider not that they do evil."

Ecclesiastes 5:4: "When thou vowest a vow unto God, defer not to pay it; for he hath no pleasure in fools: pay that which thou hast vowed."

Ecclesiastes 5:11: "When goods increase, they are increased that eat them: and what good is there to the owners thereof, saving the beholding of them with their eyes?"

Ecclesiastes 8:7: "For he knoweth not that which shall be: for who can tell him when it shall be?"

Ecclesiastes 8:16: "When I applied mine heart to know wisdom, and to see the business that is done upon the earth: (for also there is that neither day nor night seeth sleep with his eyes:)"

Ecclesiastes 9:12: "For man also knoweth not his time: as the fishes that are taken in an evil net, and as the birds that are caught in the snare; so are the sons of men snared in an evil time, when it falleth suddenly upon them."

Ecclesiastes 10:3: "Yea also, when he that is a fool walketh by the way, his wisdom faileth him, and he saith to every one that he is a fool."

Ecclesiastes 10:16: "Woe to thee, O land, when thy king is a child, and thy princes eat in the morning!"

Ecclesiastes 10:17: "Blessed art thou, O land, when thy king is the son of nobles, and thy princes eat in due season, for strength, and not for drunkenness!"

Ecclesiastes 12:1: "Remember now thy Creator in the days of thy youth, while the evil days come not, nor the years draw nigh, when thou shalt say, I have no pleasure in them;"

Ecclesiastes 12:3: "In the day when the keepers of the house shall tremble, and the strong men shall bow themselves, and the grinders cease because they are few, and those that look out of the windows be darkened,"

Ecclesiastes 12:4: "And the doors shall be shut in the streets, when the sound of the grinding is low, and he shall rise up at the voice of the bird, and all the daughters of musick shall be brought low;"

Ecclesiastes 12:5: "Also when they shall be afraid of that which is high, and fears shall be in the way, and the almond tree shall flourish, and the grasshopper shall be a burden, and desire shall fail: because man goeth to his long home, and the mourners go about the streets:"

Song of Solomon 5:6: "I opened to my beloved; but my beloved had withdrawn himself, and was gone: my soul failed when he spake: I sought him, but I could not find him; I called him, but he gave me no answer."

Song of Solomon 8:1: "O that thou wert as my brother, that sucked the breasts of my mother! when I should find thee without, I would kiss thee; yea, I should not be despised."

Song of Solomon 8:8: "We have a little sister, and she hath no breasts: what shall we do for our sister in the day when she shall be spoken for?"

Isaiah 1:12: "When ye come to appear before me, who hath required this at your hand, to tread my courts?"

Isaiah 1:15: "And when ye spread forth your hands, I will hide mine eyes from you: yea, when ye make many prayers, I will not hear: your hands are full of blood."

Isaiah 2:19: "And they shall go into the holes of the rocks, and into the caves of the earth, for fear of the LORD, and for the glory of his majesty, when he ariseth to shake terribly the earth."

Isaiah 2:21: "To go into the clefts of the rocks, and into the tops of the ragged rocks, for fear of the LORD, and for the glory of his majesty, when he ariseth to shake terribly the earth."

Isaiah 3:6: "When a man shall take hold of his brother of the house of his father, saying, Thou hast clothing, be thou our ruler, and let this ruin be under thy hand:"

Isaiah 4:4: "When the Lord shall have washed away the filth of the daughters of Zion, and shall have purged the blood of Jerusalem from the midst thereof by the spirit of judgment, and by the

spirit of burning."

Isaiah 5:4: "What could have been done more to my vineyard, that I have not done in it? wherefore, when I looked that it should bring forth grapes, brought it forth wild grapes?"

Isaiah 6:13: "But yet in it shall be a tenth, and it shall return, and shall be eaten: as a teil tree, and as an oak, whose substance is in them, when they cast their leaves: so the holy seed shall be the substance thereof."

Isaiah 8:19: "And when they shall say unto you, Seek unto them that have familiar spirits, and unto wizards that peep, and that mutter: should not a people seek unto their God? for the living to the dead?"

Isaiah 8:21: "And they shall pass through it, hardly bestead and hungry: and it shall come to pass, that when they shall be hungry, they shall fret themselves, and curse their king and their God, and look upward."

Isaiah 9:1: "Nevertheless the dimness shall not be such as was in her vexation, when at the first he lightly afflicted the land of Zebulun and the land of Naphtali, and afterward did more grievously afflict her by the way of the sea, beyond Jordan, in Galilee of the nations."

Isaiah 9:3: "Thou hast multiplied the nation, and not increased the joy: they joy before thee according to the joy in harvest, and as men rejoice when they divide the spoil."

Isaiah 10:12: "Wherefore it shall come to pass, that when the Lord hath performed his whole work upon mount Zion and on Jerusalem, I will punish the fruit of the stout heart of the king of Assyria, and the glory of his high looks."

Isaiah 10:18: "And shall consume the glory of his forest, and of his fruitful field, both soul and body: and they shall be as when a standard-bearer fainteth."

Isaiah 13:19: "And Babylon, the glory of kingdoms, the beauty of the Chaldees' excellency, shall be as when God overthrew Sodom and Gomorrah."

Isaiah 16:12: "And it shall come to pass, when it is seen that Moab is weary on the high place, that he shall come to his sanctuary to pray; but he shall not prevail."

Isaiah 17:5: "And it shall be as when the harvestman gathereth the corn, and reapeth the ears with his arm; and it shall be as he that gathereth ears in the valley of Rephaim."

Isaiah 18:3: "All ye inhabitants of the world, and dwellers on the earth, see ye, when he lifteth up an ensign on the mountains; and when he bloweth a trumpet, hear ye."

Isaiah 18:5: "For afore the harvest, when the bud is perfect, and the sour grape is ripening in the flower, he shall both cut off the sprigs with pruning hooks, and take away and cut down the branches."

Isaiah 20:1: "In the year that Tartan came unto Ashdod, (when Sargon the king of Assyria sent him,) and fought against Ashdod, and took it;"

Isaiah 24:13: "When thus it shall be in the midst of the land among the people, there shall be as the shaking of an olive tree, and as the gleaning grapes when the vintage is done."

Isaiah 24:23: "Then the moon shall be confounded, and the sun ashamed, when the LORD of hosts shall reign in mount Zion, and in Jerusalem, and before his ancients gloriously."

Isaiah 25:4: "For thou hast been a strength to the poor, a strength to the needy in his distress, a refuge from the storm, a shadow from the heat, when the blast of the terrible ones is as a storm against the wall."

Isaiah 26:9: "With my soul have I desired thee in the night; yea, with my spirit within me will I seek thee early: for when thy judgments are in the earth, the inhabitants of the world will learn righteousness."

Isaiah 26:11: "LORD, when thy hand is lifted up, they will not see: but they shall see, and be ashamed for their envy at the people; yea, the fire of thine enemies shall devour them."

Isaiah 26:16: "LORD, in trouble have they visited thee, they poured out a prayer when thy chastening was upon them."

Isaiah 27:8: "In measure, when it shooteth forth, thou wilt debate with it: he stayeth his rough wind

in the day of the east wind."

Isaiah 27:9: "By this therefore shall the iniquity of Jacob be purged; and this is all the fruit to take away his sin; when he maketh all the stones of the altar as chalkstones that are beaten in sunder, the groves and images shall not stand up."

Isaiah 27:11: "When the boughs thereof are withered, they shall be broken off: the women come, and set them on fire: for it is a people of no understanding: therefore he that made them will not have mercy on them, and he that formed them will shew them no favour."

Isaiah 28:4: "And the glorious beauty, which is on the head of the fat valley, shall be a fading flower, and as the hasty fruit before the summer; which when he that looketh upon it seeth, while it is yet in his hand he eateth it up."

Isaiah 28:15: "Because ye have said, We have made a covenant with death, and with hell are we at agreement; when the overflowing scourge shall pass through, it shall not come unto us: for we have made lies our refuge, and under falsehood have we hid ourselves:"

Isaiah 28:18: "And your covenant with death shall be disannulled, and your agreement with hell shall not stand; when the overflowing scourge shall pass through, then ye shall be trodden down by it."

Isaiah 28:25: "When he hath made plain the face thereof, doth he not cast abroad the fitches, and scatter the cummin, and cast in the principal wheat and the appointed barley and the rie in their place?"

Isaiah 29:8: "It shall even be as when an hungry man dreameth, and, behold, he eateth; but he awaketh, and his soul is empty: or as when a thirsty man dreameth, and, behold, he drinketh; but he awaketh, and, behold, he is faint, and his soul hath appetite: so shall the multitude of all the nations be, that fight against mount Zion."

Isaiah 29:23: "But when he seeth his children, the work of mine hands, in the midst of him, they shall sanctify my name, and sanctify the Holy One of Jacob, and shall fear the God of Israel."

Isaiah 30:19: "For the people shall dwell in Zion at Jerusalem: thou shalt weep no more: he will be very gracious unto thee at the voice of thy cry; when he shall hear it, he will answer thee."

Isaiah 30:21: "And thine ears shall hear a word behind thee, saying, This is the way, walk ye in it, when ye turn to the right hand, and when ye turn to the left."

Isaiah 30:25: "And there shall be upon every high mountain, and upon every high hill, rivers and streams of waters in the day of the great slaughter, when the towers fall."

Isaiah 30:29: "Ye shall have a song, as in the night when a holy solemnity is kept; and gladness of heart, as when one goeth with a pipe to come into the mountain of the LORD, to the mighty One of Israel."

Isaiah 31:3: "Now the Egyptians are men, and not God; and their horses flesh, and not spirit. When the LORD shall stretch out his hand, both he that helpeth shall fall, and he that is holpen shall fall down, and they all shall fail together."

Isaiah 31:4: "For thus hath the LORD spoken unto me, Like as the lion and the young lion roaring on his prey, when a multitude of shepherds is called forth against him, he will not be afraid of their voice, nor abase himself for the noise of them: so shall the LORD of hosts come down to fight for mount Zion, and for the hill thereof."

Isaiah 32:7: "The instruments also of the churl are evil: he deviseth wicked devices to destroy the poor with lying words, even when the needy speaketh right."

Isaiah 32:19: "When it shall hail, coming down on the forest; and the city shall be low in a low place."

Isaiah 33:1: "Woe to thee that spoilest, and thou wast not spoiled; and dealest treacherously, and they dealt not treacherously with thee! when thou shalt cease to spoil, thou shalt be spoiled; and when thou shalt make an end to deal treacherously, they shall deal treacherously with thee."

Isaiah 37:1: "And it came to pass, when king Hezekiah heard it, that he rent his clothes, and covered himself with sackcloth, and went into the house of the LORD."

Isaiah 37:9: "And he heard say concerning Tirhakah king of Ethiopia, He is come forth to make war with thee. And when he heard it, he sent messengers to Hezekiah, saying,"

Isaiah 37:36: "Then the angel of the LORD went forth, and smote in the camp of the Assyrians a hundred and fourscore and five thousand: and when they arose early in the morning, behold, they were all dead corpses."

Isaiah 38:9: "The writing of Hezekiah king of Judah, when he had been sick, and was recovered of his sickness:"

Isaiah 41:17: "When the poor and needy seek water, and there is none, and their tongue faileth for thirst, I the LORD will hear them, I the God of Israel will not forsake them."

Isaiah 41:28: "For I beheld, and there was no man; even among them, and there was no counsellor, that, when I asked of them, could answer a word."

Isaiah 43:2: "When thou passest through the waters, I will be with thee; and through the rivers, they shall not overflow thee: when thou walkest through the fire, thou shalt not be burned; neither shall the flame kindle upon thee."

Isaiah 43:12: "I have declared, and have saved, and I have shewed, when there was no strange god among you: therefore ye are my witnesses, saith the LORD, that I am God."

Isaiah 48:7: "They are created now, and not from the beginning; even before the day when thou heardest them not; lest thou shouldest say, Behold, I knew them."

Isaiah 48:13: "Mine hand also hath laid the foundation of the earth, and my right hand hath spanned the heavens: when I call unto them, they stand up together."

Isaiah 48:21: "And they thirsted not when he led them through the deserts: he caused the waters to flow out of the rock for them: he clave the rock also, and the waters gushed out."

Isaiah 50:2: "Wherefore, when I came, was there no man? when I called, was there none to answer? Is my hand shortened at all, that it cannot redeem? or have I no power to deliver? behold, at my rebuke I dry up the sea, I make the rivers a wilderness: their fish stinketh, because there is no water, and dieth for thirst."

Isaiah 52:8: "Thy watchmen shall lift up the voice; with the voice together shall they sing: for they shall see eye to eye, when the LORD shall bring again Zion."

Isaiah 53:2: "For he shall grow up before him as a tender plant, and as a root out of a dry ground: he hath no form nor comeliness; and when we shall see him, there is no beauty that we should desire him."

Isaiah 53:10: "Yet it pleased the LORD to bruise him; he hath put him to grief: when thou shalt make his soul an offering for sin, he shall see his seed, he shall prolong his days, and the pleasure of the LORD shall prosper in his hand."

Isaiah 54:6: "For the LORD hath called thee as a woman forsaken and grieved in spirit, and a wife of youth, when thou wast refused, saith thy God."

Isaiah 57:13: "When thou criest, let thy companies deliver thee; but the wind shall carry them all away; vanity shall take them: but he that putteth his trust in me shall possess the land, and shall inherit my holy mountain;"

Isaiah 57:20: "But the wicked are like the troubled sea, when it cannot rest, whose waters cast up mire and dirt."

Isaiah 58:7: "Is it not to deal thy bread to the hungry, and that thou bring the poor that are cast out to thy house? when thou seest the naked, that thou cover him; and that thou hide not thyself from thine own flesh?"

Isaiah 59:19: "So shall they fear the name of the LORD from the west, and his glory from the rising of the sun. When the enemy shall come in like a flood, the Spirit of the LORD shall lift up a standard against him."

Isaiah 64:2: "As when the melting fire burneth, the fire causeth the waters to boil, to make thy name known to thine adversaries, that the nations may tremble at thy presence!"

Isaiah 64:3: "When thou didst terrible things which we looked not for, thou camest down, the

mountains flowed down at thy presence."

Isaiah 65:12: "Therefore will I number you to the sword, and ye shall all bow down to the slaughter: because when I called, ye did not answer; when I spake, ye did not hear; but did evil before mine eyes, and did choose that wherein I delighted not."

Isaiah 66:4: "I also will choose their delusions, and will bring their fears upon them; because when I called, none did answer; when I spake, they did not hear: but they did evil before mine eyes, and chose that in which I delighted not."

Isaiah 66:14: "And when ye see this, your heart shall rejoice, and your bones shall flourish like an herb: and the hand of the LORD shall be known toward his servants, and his indignation toward his enemies."

Jeremiah 2:2: "Go and cry in the ears of Jerusalem, saying, Thus saith the LORD; I remember thee, the kindness of thy youth, the love of thine espousals, when thou wentest after me in the wilderness, in a land that was not sown."

Jeremiah 2:7: "And I brought you into a plentiful country, to eat the fruit thereof and the goodness thereof; but when ye entered, ye defiled my land, and made mine heritage an abomination."

Jeremiah 2:17: "Hast thou not procured this unto thyself, in that thou hast forsaken the LORD thy God, when he led thee by the way?"

Jeremiah 2:20: "For of old time I have broken thy yoke, and burst thy bands; and thou saidst, I will not transgress; when upon every high hill and under every green tree thou wanderest, playing the harlot."

Jeremiah 2:26: "As the thief is ashamed when he is found, so is the house of Israel ashamed; they, their kings, their princes, and their priests, and their prophets."

Jeremiah 3:8: "And I saw, when for all the causes whereby backsliding Israel committed adultery I had put her away, and given her a bill of divorce; yet her treacherous sister Judah feared not, but went and played the harlot also."

Jeremiah 3:16: "And it shall come to pass, when ye be multiplied and increased in the land, in those days, saith the LORD, they shall say no more, The ark of the covenant of the LORD: neither shall it come to mind: neither shall they remember it; neither shall they visit it; neither shall that be done any more."

Jeremiah 4:30: "And when thou art spoiled, what wilt thou do? Though thou clothest thyself with crimson, though thou deckest thee with ornaments of gold, though thou rentest thy face with painting, in vain shalt thou make thyself fair; thy lovers will despise thee, they will seek thy life."

Jeremiah 5:7: "How shall I pardon thee for this? thy children have forsaken me, and sworn by them that are no gods: when I had fed them to the full, they then committed adultery, and assembled themselves by troops in the harlots' houses."

Jeremiah 5:19: "And it shall come to pass, when ye shall say, Wherefore doeth the LORD our God all these things unto us? then shalt thou answer them, Like as ye have forsaken me, and served strange gods in your land, so shall ye serve strangers in a land that is not your's."

Jeremiah 6:14: "They have healed also the hurt of the daughter of my people slightly, saying, Peace, peace; when there is no peace."

Jeremiah 6:15: "Were they ashamed when they had committed abomination? nay, they were not at all ashamed, neither could they blush: therefore they shall fall among them that fall: at the time that I visit them they shall be cast down, saith the LORD."

Jeremiah 8:11: "For they have healed the hurt of the daughter of my people slightly, saying, Peace, peace; when there is no peace."

Jeremiah 8:12: "Were they ashamed when they had committed abomination? nay, they were not at all ashamed, neither could they blush: therefore shall they fall among them that fall: in the time of their visitation they shall be cast down, saith the LORD."

Jeremiah 8:18: "When I would comfort myself against sorrow, my heart is faint in me."

Jeremiah 10:13: "When he uttereth his voice, there is a multitude of waters in the heavens, and he

causeth the vapours to ascend from the ends of the earth; he maketh lightnings with rain, and bringeth forth the wind out of his treasures."

Jeremiah 11:15: "What hath my beloved to do in mine house, seeing she hath wrought lewdness with many, and the holy flesh is passed from thee? when thou doest evil, then thou rejoicest."

Jeremiah 12:1: "Righteous art thou, O LORD, when I plead with thee: yet let me talk with thee of thy judgments: Wherefore doth the way of the wicked prosper? wherefore are all they happy that deal very treacherously?"

Jeremiah 13:21: "What wilt thou say when he shall punish thee? for thou hast taught them to be captains, and as chief over thee: shall not sorrows take thee, as a woman in travail?"

Jeremiah 13:27: "I have seen thine adulteries, and thy neighings, the lewdness of thy whoredom, and thine abominations on the hills in the fields. Woe unto thee, O Jerusalem! wilt thou not be made clean? when shall it once be?"

Jeremiah 14:12: "When they fast, I will not hear their cry; and when they offer burnt offering and an oblation, I will not accept them: but I will consume them by the sword, and by the famine, and by the pestilence."

Jeremiah 16:10: "And it shall come to pass, when thou shalt shew this people all these words, and they shall say unto thee, Wherefore hath the LORD pronounced all this great evil against us? or what is our iniquity? or what is our sin that we have committed against the LORD our God?"

Jeremiah 17:6: "For he shall be like the heath in the desert, and shall not see when good cometh; but shall inhabit the parched places in the wilderness, in a salt land and not inhabited."

Jeremiah 17:8: "For he shall be as a tree planted by the waters, and that spreadeth out her roots by the river, and shall not see when heat cometh, but her leaf shall be green; and shall not be careful in the year of drought, neither shall cease from yielding fruit."

Jeremiah 18:22: "Let a cry be heard from their houses, when thou shalt bring a troop suddenly upon them: for they have digged a pit to take me, and hid snares for my feet."

Jeremiah 21:1: "The word which came unto Jeremiah from the LORD, when king Zedekiah sent unto him Pashur the son of Melchiah, and Zephaniah the son of Maaseiah the priest, saying,"

Jeremiah 22:23: "O inhabitant of Lebanon, that makest thy nest in the cedars, how gracious shalt thou be when pangs come upon thee, the pain as of a woman in travail!"

Jeremiah 23:33: "And when this people, or the prophet, or a priest, shall ask thee, saying, What is the burden of the LORD? thou shalt then say unto them, What burden? I will even forsake you, saith the LORD."

Jeremiah 25:12: "And it shall come to pass, when seventy years are accomplished, that I will punish the king of Babylon, and that nation, saith the LORD, for their iniquity, and the land of the Chaldeans, and will make it perpetual desolations."

Jeremiah 26:8: "Now it came to pass, when Jeremiah had made an end of speaking all that the LORD had commanded him to speak unto all the people, that the priests and the prophets and all the people took him, saying, Thou shalt surely die."

Jeremiah 26:10: "When the princes of Judah heard these things, then they came up from the king's house unto the house of the LORD, and sat down in the entry of the new gate of the LORD's house."

Jeremiah 26:21: "And when Jehoiakim the king, with all his mighty men, and all the princes, heard his words, the king sought to put him to death: but when Urijah heard it, he was afraid, and fled, and went into Egypt;"

Jeremiah 27:20: "Which Nebuchadnezzar king of Babylon took not, when he carried away captive Jeconiah the son of Jehoiakim king of Judah from Jerusalem to Babylon, and all the nobles of Judah and Jerusalem;"

Jeremiah 28:9: "The prophet which prophesieth of peace, when the word of the prophet shall come to pass, then shall the prophet be known, that the LORD hath truly sent him."

Jeremiah 29:13: "And ye shall seek me, and find me, when ye shall search for me with all your

heart."

Jeremiah 31:2: "Thus saith the LORD, The people which were left of the sword found grace in the wilderness; even Israel, when I went to cause him to rest."

Jeremiah 31:23: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; As yet they shall use this speech in the land of Judah and in the cities thereof, when I shall bring again their captivity; The LORD bless thee, O habitation of justice, and mountain of holiness."

Jeremiah 31:35: "Thus saith the LORD, which giveth the sun for a light by day, and the ordinances of the moon and of the stars for a light by night, which divideth the sea when the waves thereof roar; The LORD of hosts is his name:"

Jeremiah 32:16: "Now when I had delivered the evidence of the purchase unto Baruch the son of Neriah, I prayed unto the LORD, saying,"

Jeremiah 34:1: "The word which came unto Jeremiah from the LORD, when Nebuchadnezzar king of Babylon, and all his army, and all the kingdoms of the earth of his dominion, and all the people, fought against Jerusalem, and against all the cities thereof, saying,"

Jeremiah 34:7: "When the king of Babylon's army fought against Jerusalem, and against all the cities of Judah that were left, against Lachish, and against Azekah: for these defenced cities remained of the cities of Judah."

Jeremiah 34:10: "Now when all the princes, and all the people, which had entered into the covenant, heard that every one should let his manservant, and every one his maidservant, go free, that none should serve themselves of them any more, then they obeyed, and let them go."

Jeremiah 34:14: "At the end of seven years let ye go every man his brother an Hebrew, which hath been sold unto thee; and when he hath served thee six years, thou shalt let him go free from thee: but your fathers hearkened not unto me, neither inclined their ear."

Jeremiah 34:18: "And I will give the men that have transgressed my covenant, which have not performed the words of the covenant which they had made before me, when they cut the calf in twain, and passed between the parts thereof,"

Jeremiah 35:11: "But it came to pass, when Nebuchadnezzar king of Babylon came up into the land, that we said, Come, and let us go to Jerusalem for fear of the army of the Chaldeans, and for fear of the army of the Syrians: so we dwell at Jerusalem."

Jeremiah 36:11: "When Michaiah the son of Gemariah, the son of Shaphan, had heard out of the book all the words of the LORD,"

Jeremiah 36:13: "Then Michaiah declared unto them all the words that he had heard, when Baruch read the book in the ears of the people."

Jeremiah 36:16: "Now it came to pass, when they had heard all the words, they were afraid both one and other, and said unto Baruch, We will surely tell the king of all these words."

Jeremiah 36:23: "And it came to pass, that when Jehudi had read three or four leaves, he cut it with the penknife, and cast it into the fire that was on the hearth, until all the roll was consumed in the fire that was on the hearth."

Jeremiah 37:5: "Then Pharaoh's army was come forth out of Egypt: and when the Chaldeans that besieged Jerusalem heard tidings of them, they departed from Jerusalem."

Jeremiah 37:11: "And it came to pass, that when the army of the Chaldeans was broken up from Jerusalem for fear of Pharaoh's army,"

Jeremiah 37:13: "And when he was in the gate of Benjamin, a captain of the ward was there, whose name was Irijah, the son of Shelemiah, the son of Hananiah; and he took Jeremiah the prophet, saying, Thou fallest away to the Chaldeans."

Jeremiah 37:16: "When Jeremiah was entered into the dungeon, and into the cabins, and Jeremiah had remained there many days;"

Jeremiah 38:7: "Now when Ebedmelech the Ethiopian, one of the eunuchs which was in the king's house, heard that they had put Jeremiah in the dungeon; the king then sitting in the gate of Benjamin;"



Jeremiah 38:28: "So Jeremiah abode in the court of the prison until the day that Jerusalem was taken: and he was there when Jerusalem was taken."

Jeremiah 39:4: "And it came to pass, that when Zedekiah the king of Judah saw them, and all the men of war, then they fled, and went forth out of the city by night, by the way of the king's garden, by the gate betwixt the two walls: and he went out the way of the plain."

Jeremiah 39:5: "But the Chaldeans' army pursued after them, and overtook Zedekiah in the plains of Jericho: and when they had taken him, they brought him up to Nebuchadnezzar king of Babylon to Riblah in the land of Hamath, where he gave judgment upon him."

Jeremiah 40:1: "The word that came to Jeremiah from the LORD, after that Nebuzaradan the captain of the guard had let him go from Ramah, when he had taken him being bound in chains among all that were carried away captive of Jerusalem and Judah, which were carried away captive unto Babylon."

Jeremiah 40:7: "Now when all the captains of the forces which were in the fields, even they and their men, heard that the king of Babylon had made Gedaliah the son of Ahikam governor in the land, and had committed unto him men, and women, and children, and of the poor of the land, of them that were not carried away captive to Babylon;"

Jeremiah 40:11: "Likewise when all the Jews that were in Moab, and among the Ammonites, and in Edom, and that were in all the countries, heard that the king of Babylon had left a remnant of Judah, and that he had set over them Gedaliah the son of Ahikam the son of Shaphan;"

Jeremiah 41:7: "And it was so, when they came into the midst of the city, that Ishmael the son of Nethaniah slew them, and cast them into the midst of the pit, he, and the men that were with him."

Jeremiah 41:11: "But when Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces that were with him, heard of all the evil that Ishmael the son of Nethaniah had done,"

Jeremiah 41:13: "Now it came to pass, that when all the people which were with Ishmael saw Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces that were with him, then they were glad."

Jeremiah 42:6: "Whether it be good, or whether it be evil, we will obey the voice of the LORD our God, to whom we send thee; that it may be well with us, when we obey the voice of the LORD our God."

Jeremiah 42:18: "For thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; As mine anger and my fury hath been poured forth upon the inhabitants of Jerusalem; so shall my fury be poured forth upon you, when ye shall enter into Egypt: and ye shall be an execration, and an astonishment, and a curse, and a reproach; and ye shall see this place no more."

Jeremiah 42:20: "For ye dissembled in your hearts, when ye sent me unto the LORD your God, saying, Pray for us unto the LORD our God; and according unto all that the LORD our God shall say, so declare unto us, and we will do it."

Jeremiah 43:1: "And it came to pass, that when Jeremiah had made an end of speaking unto all the people all the words of the LORD their God, for which the LORD their God had sent him to them, even all these words,"

Jeremiah 43:11: "And when he cometh, he shall smite the land of Egypt, and deliver such as are for death to death; and such as are for captivity to captivity; and such as are for the sword to the sword."

Jeremiah 44:19: "And when we burned incense to the queen of heaven, and poured out drink offerings unto her, did we make her cakes to worship her, and pour out drink offerings unto her, without our men?"

Jeremiah 45:1: "The word that Jeremiah the prophet spake unto Baruch the son of Neriah, when he had written these words in a book at the mouth of Jeremiah, in the fourth year of Jehoiakim the son of Josiah king of Judah, saying,"

Jeremiah 51:16: "When he uttereth his voice, there is a multitude of waters in the heavens; and he causeth the vapours to ascend from the ends of the earth: he maketh lightnings with rain, and

bringeth forth the wind out of his treasures."

Jeremiah 51:55: "Because the LORD hath spoiled Babylon, and destroyed out of her the great voice; when her waves do roar like great waters, a noise of their voice is uttered:"

Jeremiah 51:59: "The word which Jeremiah the prophet commanded Seraiah the son of Neriah, the son of Maaseiah, when he went with Zedekiah the king of Judah into Babylon in the fourth year of his reign. And this Seraiah was a quiet prince."

Jeremiah 51:61: "And Jeremiah said to Seraiah, When thou comest to Babylon, and shalt see, and shalt read all these words;"

Jeremiah 51:63: "And it shall be, when thou hast made an end of reading this book, that thou shalt bind a stone to it, and cast it into the midst of Euphrates:"

Jeremiah 52:1: "Zedekiah was one and twenty years old when he began to reign, and he reigned eleven years in Jerusalem. And his mother's name was Hamutal the daughter of Jeremiah of Libnah."

Lamentations 1:7: "Jerusalem remembered in the days of her affliction and of her miseries all her pleasant things that she had in the days of old, when her people fell into the hand of the enemy, and none did help her: the adversaries saw her, and did mock at her sabbaths."

Lamentations 2:12: "They say to their mothers, Where is corn and wine? when they swooned as the wounded in the streets of the city, when their soul was poured out into their mothers' bosom."

Lamentations 3:8: "Also when I cry and shout, he shutteth out my prayer."

Lamentations 3:37: "Who is he that saith, and it cometh to pass, when the Lord commandeth it not?"

Lamentations 4:15: "They cried unto them, Depart ye; it is unclean; depart, depart, touch not: when they fled away and wandered, they said among the heathen, They shall no more sojourn there."

Ezekiel 1:9: "Their wings were joined one to another; they turned not when they went; they went every one straight forward."

Ezekiel 1:12: "And they went every one straight forward: whither the spirit was to go, they went; and they turned not when they went."

Ezekiel 1:17: "When they went, they went upon their four sides: and they turned not when they went."

Ezekiel 1:19: "And when the living creatures went, the wheels went by them: and when the living creatures were lifted up from the earth, the wheels were lifted up."

Ezekiel 1:21: "When those went, these went; and when those stood, these stood; and when those were lifted up from the earth, the wheels were lifted up over against them: for the spirit of the living creature was in the wheels."

Ezekiel 1:24: "And when they went, I heard the noise of their wings, like the noise of great waters, as the voice of the Almighty, the voice of speech, as the noise of an host: when they stood, they let down their wings."

Ezekiel 1:25: "And there was a voice from the firmament that was over their heads, when they stood, and had let down their wings."

Ezekiel 1:28: "As the appearance of the bow that is in the cloud in the day of rain, so was the appearance of the brightness round about. This was the appearance of the likeness of the glory of the LORD. And when I saw it, I fell upon my face, and I heard a voice of one that spake."

Ezekiel 2:2: "And the spirit entered into me when he spake unto me, and set me upon my feet, that I heard him that spake unto me."

Ezekiel 2:9: "And when I looked, behold, an hand was sent unto me; and, lo, a roll of a book was therein;"

Ezekiel 3:18: "When I say unto the wicked, Thou shalt surely die; and thou givest him not warning, nor speakest to warn the wicked from his wicked way, to save his life; the same wicked man shall die in his iniquity; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 3:20: "Again, When a righteous man doth turn from his righteousness, and commit iniquity,

and I lay a stumbling-block before him, he shall die: because thou hast not given him warning, he shall die in his sin, and his righteousness which he hath done shall not be remembered; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 3:27: "But when I speak with thee, I will open thy mouth, and thou shalt say unto them, Thus saith the Lord GOD; He that heareth, let him hear; and he that forbeareth, let him forbear: for they are a rebellious house."

Ezekiel 4:6: "And when thou hast accomplished them, lie again on thy right side, and thou shalt bear the iniquity of the house of Judah forty days: I have appointed thee each day for a year."

Ezekiel 5:2: "Thou shalt burn with fire a third part in the midst of the city, when the days of the siege are fulfilled: and thou shalt take a third part, and smite about it with a knife: and a third part thou shalt scatter in the wind; and I will draw out a sword after them."

Ezekiel 5:13: "Thus shall mine anger be accomplished, and I will cause my fury to rest upon them, and I will be comforted: and they shall know that I the LORD have spoken it in my zeal, when I have accomplished my fury in them."

Ezekiel 5:15: "So it shall be a reproach and a taunt, an instruction and an astonishment unto the nations that are round about thee, when I shall execute judgments in thee in anger and in fury and in furious rebukes. I the LORD have spoken it."

Ezekiel 5:16: "When I shall send upon them the evil arrows of famine, which shall be for their destruction, and which I will send to destroy you: and I will increase the famine upon you, and will break your staff of bread:"

Ezekiel 6:8: "Yet will I leave a remnant, that ye may have some that shall escape the sword among the nations, when ye shall be scattered through the countries."

Ezekiel 6:13: "Then shall ye know that I am the LORD, when their slain men shall be among their idols round about their altars, upon every high hill, in all the tops of the mountains, and under every green tree, and under every thick oak, the place where they did offer sweet savour to all their idols."

Ezekiel 8:7: "And he brought me to the door of the court; and when I looked, behold a hole in the wall."

Ezekiel 8:8: "Then said he unto me, Son of man, dig now in the wall: and when I had digged in the wall, behold a door."

Ezekiel 10:3: "Now the cherubims stood on the right side of the house, when the man went in; and the cloud filled the inner court."

Ezekiel 10:5: "And the sound of the cherubims' wings was heard even to the outer court, as the voice of the Almighty God when he speaketh."

Ezekiel 10:6: "And it came to pass, that when he had commanded the man clothed with linen, saying, Take fire from between the wheels, from between the cherubims; then he went in, and stood beside the wheels."

Ezekiel 10:9: "And when I looked, behold the four wheels by the cherubims, one wheel by one cherub, and another wheel by another cherub: and the appearance of the wheels was as the colour of a beryl stone."

Ezekiel 10:11: "When they went, they went upon their four sides; they turned not as they went, but to the place whither the head looked they followed it; they turned not as they went."

Ezekiel 10:16: "And when the cherubims went, the wheels went by them: and when the cherubims lifted up their wings to mount up from the earth, the same wheels also turned not from beside them."

Ezekiel 10:17: "When they stood, these stood; and when they were lifted up, these lifted up themselves also: for the spirit of the living creature was in them."

Ezekiel 10:19: "And the cherubims lifted up their wings, and mounted up from the earth in my sight: when they went out, the wheels also were beside them, and every one stood at the door of the east gate of the LORD's house; and the glory of the God of Israel was over them above."

Ezekiel 11:13: "And it came to pass, when I prophesied, that Pelatiah the son of Benaiah died. Then

fell I down upon my face, and cried with a loud voice, and said, Ah Lord GOD! wilt thou make a full end of the remnant of Israel?"

Ezekiel 12:15: "And they shall know that I am the LORD, when I shall scatter them among the nations, and disperse them in the countries."

Ezekiel 13:12: "Lo, when the wall is fallen, shall it not be said unto you, Where is the daubing wherewith ye have daubed it?"

Ezekiel 14:9: "And if the prophet be deceived when he hath spoken a thing, I the LORD have deceived that prophet, and I will stretch out my hand upon him, and will destroy him from the midst of my people Israel."

Ezekiel 14:13: "Son of man, when the land sinneth against me by trespassing grievously, then will I stretch out mine hand upon it, and will break the staff of the bread thereof, and will send famine upon it, and will cut off man and beast from it:"

Ezekiel 14:21: "For thus saith the Lord GOD; How much more when I send my four sore judgments upon Jerusalem, the sword, and the famine, and the noisome beast, and the pestilence, to cut off from it man and beast?"

Ezekiel 14:23: "And they shall comfort you, when ye see their ways and their doings: and ye shall know that I have not done without cause all that I have done in it, saith the Lord GOD."

Ezekiel 15:5: "Behold, when it was whole, it was meet for no work: how much less shall it be meet yet for any work, when the fire hath devoured it, and it is burned?"

Ezekiel 15:7: "And I will set my face against them; they shall go out from one fire, and another fire shall devour them; and ye shall know that I am the LORD, when I set my face against them."

Ezekiel 16:6: "And when I passed by thee, and saw thee polluted in thine own blood, I said unto thee when thou wast in thy blood, Live; yea, I said unto thee when thou wast in thy blood, Live."

Ezekiel 16:8: "Now when I passed by thee, and looked upon thee, behold, thy time was the time of love; and I spread my skirt over thee, and covered thy nakedness: yea, I sware unto thee, and entered into a covenant with thee, saith the Lord GOD, and thou becamest mine."

Ezekiel 16:22: "And in all thine abominations and thy whoredoms thou hast not remembered the days of thy youth, when thou wast naked and bare, and wast polluted in thy blood."

Ezekiel 16:53: "When I shall bring again their captivity, the captivity of Sodom and her daughters, and the captivity of Samaria and her daughters, then will I bring again the captivity of thy captives in the midst of them:"

Ezekiel 16:55: "When thy sisters, Sodom and her daughters, shall return to their former estate, and Samaria and her daughters shall return to their former estate, then thou and thy daughters shall return to your former estate."

Ezekiel 16:61: "Then thou shalt remember thy ways, and be ashamed, when thou shalt receive thy sisters, thine elder and thy younger: and I will give them unto thee for daughters, but not by thy covenant."

Ezekiel 16:63: "That thou mayest remember, and be confounded, and never open thy mouth any more because of thy shame, when I am pacified toward thee for all that thou hast done, saith the Lord GOD."

Ezekiel 17:10: "Yea, behold, being planted, shall it prosper? shall it not utterly wither, when the east wind toucheth it? it shall wither in the furrows where it grew."

Ezekiel 17:18: "Seeing he despised the oath by breaking the covenant, when, lo, he had given his hand, and hath done all these things, he shall not escape."

Ezekiel 18:19: "Yet say ye, Why? doth not the son bear the iniquity of the father? When the son hath done that which is lawful and right, and hath kept all my statutes, and hath done them, he shall surely live."

Ezekiel 18:24: "But when the righteous turneth away from his righteousness, and committeth iniquity, and doeth according to all the abominations that the wicked man doeth, shall he live? All his righteousness that he hath done shall not be mentioned: in his trespass that he hath trespassed,

and in his sin that he hath sinned, in them shall he die."

Ezekiel 18:26: "When a righteous man turneth away from his righteousness, and committeth iniquity, and dieth in them; for his iniquity that he hath done shall he die."

Ezekiel 18:27: "Again, when the wicked man turneth away from his wickedness that he hath committed, and doeth that which is lawful and right, he shall save his soul alive."

Ezekiel 19:5: "Now when she saw that she had waited, and her hope was lost, then she took another of her whelps, and made him a young lion."

Ezekiel 20:5: "And say unto them, Thus saith the Lord GOD; In the day when I chose Israel, and lifted up mine hand unto the seed of the house of Jacob, and made myself known unto them in the land of Egypt, when I lifted up mine hand unto them, saying, I am the LORD your God;"

Ezekiel 20:28: "For when I had brought them into the land, for the which I lifted up mine hand to give it to them, then they saw every high hill, and all the thick trees, and they offered there their sacrifices, and there they presented the provocation of their offering: there also they made their sweet savour, and poured out there their drink offerings."

Ezekiel 20:31: "For when ye offer your gifts, when ye make your sons to pass through the fire, ye pollute yourselves with all your idols, even unto this day: and shall I be enquired of by you, O house of Israel? As I live, saith the Lord GOD, I will not be enquired of by you."

Ezekiel 20:41: "I will accept you with your sweet savour, when I bring you out from the people, and gather you out of the countries wherein ye have been scattered; and I will be sanctified in you before the heathen."

Ezekiel 20:42: "And ye shall know that I am the LORD, when I shall bring you into the land of Israel, into the country for the which I lifted up mine hand to give it to your fathers."

Ezekiel 20:44: "And ye shall know that I am the LORD when I have wrought with you for my name's sake, not according to your wicked ways, nor according to your corrupt doings, O ye house of Israel, saith the Lord GOD."

Ezekiel 21:7: "And it shall be, when they say unto thee, Wherefore sighest thou? that thou shalt answer, For the tidings; because it cometh: and every heart shall melt, and all hands shall be feeble, and every spirit shall faint, and all knees shall be weak as water: behold, it cometh, and shall be brought to pass, saith the Lord GOD."

Ezekiel 21:25: "And thou, profane wicked prince of Israel, whose day is come, when iniquity shall have an end,"

Ezekiel 21:29: "Whiles they see vanity unto thee, whiles they divine a lie unto thee, to bring thee upon the necks of them that are slain, of the wicked, whose day is come, when their iniquity shall have an end."

Ezekiel 22:28: "And her prophets have daubed them with untempered mortar, seeing vanity, and divining lies unto them, saying, Thus saith the Lord GOD, when the LORD hath not spoken."

Ezekiel 23:5: "And Aholah played the harlot when she was mine; and she doted on her lovers, on the Assyrians her neighbours,"

Ezekiel 23:11: "And when her sister Aholibah saw this, she was more corrupt in her inordinate love than she, and in her whoredoms more than her sister in her whoredoms."

Ezekiel 23:14: "And that she increased her whoredoms: for when she saw men pourtrayed upon the wall, the images of the Chaldeans pourtrayed with vermilion,"

Ezekiel 23:39: "For when they had slain their children to their idols, then they came the same day into my sanctuary to profane it; and, lo, thus have they done in the midst of mine house."

Ezekiel 24:24: "Thus Ezekiel is unto you a sign: according to all that he hath done shall ye do: and when this cometh, ye shall know that I am the Lord GOD."

Ezekiel 24:25: "Also, thou son of man, shall it not be in the day when I take from them their strength, the joy of their glory, the desire of their eyes, and that whereupon they set their minds, their sons and their daughters,"

Ezekiel 25:3: "And say unto the Ammonites, Hear the word of the Lord GOD; Thus saith the Lord

GOD; Because thou saidst, Aha, against my sanctuary, when it was profaned; and against the land of Israel, when it was desolate; and against the house of Judah, when they went into captivity;"

Ezekiel 25:17: "And I will execute great vengeance upon them with furious rebukes; and they shall know that I am the LORD, when I shall lay my vengeance upon them."

Ezekiel 26:10: "By reason of the abundance of his horses their dust shall cover thee: thy walls shall shake at the noise of the horsemen, and of the wheels, and of the chariots, when he shall enter into thy gates, as men enter into a city wherein is made a breach."

Ezekiel 26:15: "Thus saith the Lord GOD to Tyrus; Shall not the isles shake at the sound of thy fall, when the wounded cry, when the slaughter is made in the midst of thee?"

Ezekiel 26:19: "For thus saith the Lord GOD; When I shall make thee a desolate city, like the cities that are not inhabited; when I shall bring up the deep upon thee, and great waters shall cover thee;"

Ezekiel 26:20: "When I shall bring thee down with them that descend into the pit, with the people of old time, and shall set thee in the low parts of the earth, in places desolate of old, with them that go down to the pit, that thou be not inhabited; and I shall set glory in the land of the living;"

Ezekiel 27:33: "When thy wares went forth out of the seas, thou filledst many people; thou didst enrich the kings of the earth with the multitude of thy riches and of thy merchandise."

Ezekiel 27:34: "In the time when thou shalt be broken by the seas in the depths of the waters thy merchandise and all thy company in the midst of thee shall fall."

Ezekiel 28:22: "And say, Thus saith the Lord GOD; Behold, I am against thee, O Zidon; and I will be glorified in the midst of thee: and they shall know that I am the LORD, when I shall have executed judgments in her, and shall be sanctified in her."

Ezekiel 28:25: "Thus saith the Lord GOD; When I shall have gathered the house of Israel from the people among whom they are scattered, and shall be sanctified in them in the sight of the heathen, then shall they dwell in their land that I have given to my servant Jacob."

Ezekiel 28:26: "And they shall dwell safely therein, and shall build houses, and plant vineyards; yea, they shall dwell with confidence, when I have executed judgments upon all those that despise them round about them; and they shall know that I am the LORD their God."

Ezekiel 29:7: "When they took hold of thee by thy hand, thou didst break, and rend all their shoulder: and when they leaned upon thee, thou brakest, and madest all their loins to be at a stand."

Ezekiel 29:16: "And it shall be no more the confidence of the house of Israel, which bringeth their iniquity to remembrance, when they shall look after them: but they shall know that I am the Lord GOD."

Ezekiel 30:4: "And the sword shall come upon Egypt, and great pain shall be in Ethiopia, when the slain shall fall in Egypt, and they shall take away her multitude, and her foundations shall be broken down."

Ezekiel 30:8: "And they shall know that I am the LORD, when I have set a fire in Egypt, and when all her helpers shall be destroyed."

Ezekiel 30:18: "At Tehaphnehes also the day shall be darkened, when I shall break there the yokes of Egypt: and the pomp of her strength shall cease in her: as for her, a cloud shall cover her, and her daughters shall go into captivity."

Ezekiel 30:25: "But I will strengthen the arms of the king of Babylon, and the arms of Pharaoh shall fall down; and they shall know that I am the LORD, when I shall put my sword into the hand of the king of Babylon, and he shall stretch it out upon the land of Egypt."

Ezekiel 31:5: "Therefore his height was exalted above all the trees of the field, and his boughs were multiplied, and his branches became long because of the multitude of waters, when he shot forth."

Ezekiel 31:15: "Thus saith the Lord GOD; In the day when he went down to the grave I caused a mourning: I covered the deep for him, and I restrained the floods thereof, and the great waters were stayed: and I caused Lebanon to mourn for him, and all the trees of the field fainted for him."

Ezekiel 31:16: "I made the nations to shake at the sound of his fall, when I cast him down to hell with them that descend into the pit: and all the trees of Eden, the choice and best of Lebanon, all

that drink water, shall be comforted in the nether parts of the earth."

Ezekiel 32:7: "And when I shall put thee out, I will cover the heaven, and make the stars thereof dark; I will cover the sun with a cloud, and the moon shall not give her light."

Ezekiel 32:9: "I will also vex the hearts of many people, when I shall bring thy destruction among the nations, into the countries which thou hast not known."

Ezekiel 32:10: "Yea, I will make many people amazed at thee, and their kings shall be horribly afraid for thee, when I shall brandish my sword before them; and they shall tremble at every moment, every man for his own life, in the day of thy fall."

Ezekiel 32:15: "When I shall make the land of Egypt desolate, and the country shall be destitute of that whereof it was full, when I shall smite all them that dwell therein, then shall they know that I am the LORD."

Ezekiel 33:2: "Son of man, speak to the children of thy people, and say unto them, When I bring the sword upon a land, if the people of the land take a man of their coasts, and set him for their watchman:"

Ezekiel 33:3: "If when he seeth the sword come upon the land, he blow the trumpet, and warn the people;"

Ezekiel 33:8: "When I say unto the wicked, O wicked man, thou shalt surely die; if thou dost not speak to warn the wicked from his way, that wicked man shall die in his iniquity; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 33:13: "When I shall say to the righteous, that he shall surely live; if he trust to his own righteousness, and commit iniquity, all his righteousnesses shall not be remembered; but for his iniquity that he hath committed, he shall die for it."

Ezekiel 33:14: "Again, when I say unto the wicked, Thou shalt surely die; if he turn from his sin, and do that which is lawful and right;"

Ezekiel 33:18: "When the righteous turneth from his righteousness, and committeth iniquity, he shall even die thereby."

Ezekiel 33:29: "Then shall they know that I am the LORD, when I have laid the land most desolate because of all their abominations which they have committed."

Ezekiel 33:33: "And when this cometh to pass, (lo, it will come,) then shall they know that a prophet hath been among them."

Ezekiel 34:5: "And they were scattered, because there is no shepherd: and they became meat to all the beasts of the field, when they were scattered."

Ezekiel 34:27: "And the tree of the field shall yield her fruit, and the earth shall yield her increase, and they shall be safe in their land, and shall know that I am the LORD, when I have broken the bands of their yoke, and delivered them out of the hand of those that served themselves of them."

Ezekiel 35:11: "Therefore, as I live, saith the Lord GOD, I will even do according to thine anger, and according to thine envy which thou hast used out of thy hatred against them; and I will make myself known among them, when I have judged thee."

Ezekiel 35:14: "Thus saith the Lord GOD; When the whole earth rejoiceth, I will make thee desolate."

Ezekiel 36:17: "Son of man, when the house of Israel dwelt in their own land, they defiled it by their own way and by their doings: their way was before me as the uncleanness of a removed woman."

Ezekiel 36:20: "And when they entered unto the heathen, whither they went, they profaned my holy name, when they said to them, These are the people of the LORD, and are gone forth out of his land."

Ezekiel 36:23: "And I will sanctify my great name, which was profaned among the heathen, which ye have profaned in the midst of them; and the heathen shall know that I am the LORD, saith the Lord GOD, when I shall be sanctified in you before their eyes."

Ezekiel 37:8: "And when I beheld, lo, the sinews and the flesh came up upon them, and the skin

covered them above: but there was no breath in them."

Ezekiel 37:13: "And ye shall know that I am the LORD, when I have opened your graves, O my people, and brought you up out of your graves,"

Ezekiel 37:18: "And when the children of thy people shall speak unto thee, saying, Wilt thou not shew us what thou meanest by these?"

Ezekiel 37:28: "And the heathen shall know that I the LORD do sanctify Israel, when my sanctuary shall be in the midst of them for evermore."

Ezekiel 38:14: "Therefore, son of man, prophesy and say unto Gog, Thus saith the Lord GOD; In that day when my people of Israel dwelleth safely, shalt thou not know it?"

Ezekiel 38:16: "And thou shalt come up against my people of Israel, as a cloud to cover the land; it shall be in the latter days, and I will bring thee against my land, that the heathen may know me, when I shall be sanctified in thee, O Gog, before their eyes."

Ezekiel 38:18: "And it shall come to pass at the same time when Gog shall come against the land of Israel, saith the Lord GOD, that my fury shall come up in my face."

Ezekiel 39:15: "And the passengers that pass through the land, when any seeth a man's bone, then shall he set up a sign by it, till the buriers have buried it in the valley of Hamongog."

Ezekiel 39:26: "After that they have borne their shame, and all their trespasses whereby they have trespassed against me, when they dwelt safely in their land, and none made them afraid."

Ezekiel 39:27: "When I have brought them again from the people, and gathered them out of their enemies' lands, and am sanctified in them in the sight of many nations;"

Ezekiel 42:14: "When the priests enter therein, then shall they not go out of the holy place into the utter court, but there they shall lay their garments wherein they minister; for they are holy; and shall put on other garments, and shall approach to those things which are for the people."

Ezekiel 42:15: "Now when he had made an end of measuring the inner house, he brought me forth toward the gate whose prospect is toward the east, and measured it round about."

Ezekiel 43:3: "And it was according to the appearance of the vision which I saw, even according to the vision that I saw when I came to destroy the city: and the visions were like the vision that I saw by the river Chebar; and I fell upon my face."

Ezekiel 43:18: "And he said unto me, Son of man, thus saith the Lord GOD; These are the ordinances of the altar in the day when they shall make it, to offer burnt offerings thereon, and to sprinkle blood thereon."

Ezekiel 43:23: "When thou hast made an end of cleansing it, thou shalt offer a young bullock without blemish, and a ram out of the flock without blemish."

Ezekiel 43:27: "And when these days are expired, it shall be, that upon the eighth day, and so forward, the priests shall make your burnt offerings upon the altar, and your peace offerings; and I will accept you, saith the Lord GOD."

Ezekiel 44:7: "In that ye have brought into my sanctuary strangers, uncircumcised in heart, and uncircumcised in flesh, to be in my sanctuary, to pollute it, even my house, when ye offer my bread, the fat and the blood, and they have broken my covenant because of all your abominations."

Ezekiel 44:10: "And the Levites that are gone away far from me, when Israel went astray, which went astray away from me after their idols; they shall even bear their iniquity."

Ezekiel 44:15: "But the priests the Levites, the sons of Zadok, that kept the charge of my sanctuary when the children of Israel went astray from me, they shall come near to me to minister unto me, and they shall stand before me to offer unto me the fat and the blood, saith the Lord GOD:"

Ezekiel 44:17: "And it shall come to pass, that when they enter in at the gates of the inner court, they shall be clothed with linen garments; and no wool shall come upon them, whiles they minister in the gates of the inner court, and within."

Ezekiel 44:19: "And when they go forth into the utter court, even into the utter court to the people, they shall put off their garments wherein they ministered, and lay them in the holy chambers, and they shall put on other garments; and they shall not sanctify the people with their garments."



Ezekiel 44:21: "Neither shall any priest drink wine, when they enter into the inner court."

Ezekiel 45:1: "Moreover, when ye shall divide by lot the land for inheritance, ye shall offer an oblation unto the LORD, an holy portion of the land: the length shall be the length of five and twenty thousand reeds, and the breadth shall be ten thousand. This shall be holy in all the borders thereof round about."

Ezekiel 46:8: "And when the prince shall enter, he shall go in by the way of the porch of that gate, and he shall go forth by the way thereof."

Ezekiel 46:9: "But when the people of the land shall come before the LORD in the solemn feasts, he that entereth in by the way of the north gate to worship shall go out by the way of the south gate; and he that entereth by the way of the south gate shall go forth by the way of the north gate: he shall not return by the way of the gate whereby he came in, but shall go forth over against it."

Ezekiel 46:10: "And the prince in the midst of them, when they go in, shall go in; and when they go forth, shall go forth."

Ezekiel 46:12: "Now when the prince shall prepare a voluntary burnt offering or peace offerings voluntarily unto the LORD, one shall then open him the gate that looketh toward the east, and he shall prepare his burnt offering and his peace offerings, as he did on the sabbath day: then he shall go forth; and after his going forth one shall shut the gate."

Ezekiel 47:3: "And when the man that had the line in his hand went forth eastward, he measured a thousand cubits, and he brought me through the waters; the waters were to the ankles."

Ezekiel 47:7: "Now when I had returned, behold, at the bank of the river were very many trees on the one side and on the other."

Ezekiel 48:11: "It shall be for the priests that are sanctified of the sons of Zadok; which have kept my charge, which went not astray when the children of Israel went astray, as the Levites went astray."

Daniel 3:7: "Therefore at that time, when all the people heard the sound of the cornet, flute, harp, sackbut, psaltery, and all kinds of musick, all the people, the nations, and the languages, fell down and worshipped the golden image that Nebuchadnezzar the king had set up."

Daniel 5:20: "But when his heart was lifted up, and his mind hardened in pride, he was deposed from his kingly throne, and they took his glory from him:"

Daniel 6:10: "Now when Daniel knew that the writing was signed, he went into his house; and his windows being open in his chamber toward Jerusalem, he kneeled upon his knees three times a day, and prayed, and gave thanks before his God, as he did aforetime."

Daniel 6:14: "Then the king, when he heard these words, was sore displeased with himself, and set his heart on Daniel to deliver him: and he laboured till the going down of the sun to deliver him."

Daniel 6:20: "And when he came to the den, he cried with a lamentable voice unto Daniel: and the king spake and said to Daniel, O Daniel, servant of the living God, is thy God, whom thou servest continually, able to deliver thee from the lions?"

Daniel 8:2: "And I saw in a vision; and it came to pass, when I saw, that I was at Shushan in the palace, which is in the province of Elam; and I saw in a vision, and I was by the river of Ulai."

Daniel 8:8: "Therefore the he goat waxed very great: and when he was strong, the great horn was broken; and for it came up four notable ones toward the four winds of heaven."

Daniel 8:15: "And it came to pass, when I, even I Daniel, had seen the vision, and sought for the meaning, then, behold, there stood before me as the appearance of a man."

Daniel 8:17: "So he came near where I stood: and when he came, I was afraid, and fell upon my face: but he said unto me, Understand, O son of man: for at the time of the end shall be the vision."

Daniel 8:23: "And in the latter time of their kingdom, when the transgressors are come to the full, a king of fierce countenance, and understanding dark sentences, shall stand up."

Daniel 10:9: "Yet heard I the voice of his words: and when I heard the voice of his words, then was I in a deep sleep on my face, and my face toward the ground."

Daniel 10:11: "And he said unto me, O Daniel, a man greatly beloved, understand the words that I

speak unto thee, and stand upright: for unto thee am I now sent. And when he had spoken this word unto me, I stood trembling."

Daniel 10:15: "And when he had spoken such words unto me, I set my face toward the ground, and I became dumb."

Daniel 10:19: "And said, O man greatly beloved, fear not: peace be unto thee, be strong, yea, be strong. And when he had spoken unto me, I was strengthened, and said, Let my lord speak; for thou hast strengthened me."

Daniel 10:20: "Then said he, Knowest thou wherefore I come unto thee? and now will I return to fight with the prince of Persia: and when I am gone forth, lo, the prince of Grecia shall come."

Daniel 11:4: "And when he shall stand up, his kingdom shall be broken, and shall be divided toward the four winds of heaven; and not to his posterity, nor according to his dominion which he ruled: for his kingdom shall be plucked up, even for others beside those."

Daniel 11:12: "And when he hath taken away the multitude, his heart shall be lifted up; and he shall cast down many ten thousands: but he shall not be strengthened by it."

Daniel 11:34: "Now when they shall fall, they shall be holpen with a little help: but many shall cleave to them with flatteries."

Daniel 12:7: "And I heard the man clothed in linen, which was upon the waters of the river, when he held up his right hand and his left hand unto heaven, and sware by him that liveth for ever that it shall be for a time, times, and an half; and when he shall have accomplished to scatter the power of the holy people, all these things shall be finished."

Hosea 1:8: "Now when she had weaned Loruhamah, she conceived, and bare a son."

Hosea 2:15: "And I will give her her vineyards from thence, and the valley of Achor for a door of hope: and she shall sing there, as in the days of her youth, and as in the day when she came up out of the land of Egypt."

Hosea 4:14: "I will not punish your daughters when they commit whoredom, nor your spouses when they commit adultery: for themselves are separated with whores, and they sacrifice with harlots: therefore the people that doth not understand shall fall."

Hosea 5:13: "When Ephraim saw his sickness, and Judah saw his wound, then went Ephraim to the Assyrian, and sent to king Jareb: yet could he not heal you, nor cure you of your wound."

Hosea 6:11: "Also, O Judah, he hath set an harvest for thee, when I returned the captivity of my people."

Hosea 7:1: "When I would have healed Israel, then the iniquity of Ephraim was discovered, and the wickedness of Samaria: for they commit falsehood; and the thief cometh in, and the troop of robbers spoileth without."

Hosea 7:12: "When they shall go, I will spread my net upon them; I will bring them down as the fowls of the heaven; I will chastise them, as their congregation hath heard."

Hosea 7:14: "And they have not cried unto me with their heart, when they howled upon their beds: they assemble themselves for corn and wine, and they rebel against me."

Hosea 9:12: "Though they bring up their children, yet will I bereave them, that there shall not be a man left: yea, woe also to them when I depart from them!"

Hosea 10:10: "It is in my desire that I should chastise them; and the people shall be gathered against them, when they shall bind themselves in their two furrows."

Hosea 11:1: "When Israel was a child, then I loved him, and called my son out of Egypt."

Hosea 11:10: "They shall walk after the LORD: he shall roar like a lion: when he shall roar, then the children shall tremble from the west."

Hosea 13:1: "When Ephraim spake trembling, he exalted himself in Israel; but when he offended in Baal, he died."

Joel 2:8: "Neither shall one thrust another; they shall walk every one in his path: and when they fall upon the sword, they shall not be wounded."

Joel 3:1: "For, behold, in those days, and in that time, when I shall bring again the captivity of

Judah and Jerusalem,"

Amos 3:4: "Will a lion roar in the forest, when he hath no prey? will a young lion cry out of his den, if he have taken nothing?"

Amos 4:7: "And also I have withholden the rain from you, when there were yet three months to the harvest: and I caused it to rain upon one city, and caused it not to rain upon another city: one piece was rained upon, and the piece whereupon it rained not withered."

Amos 4:9: "I have smitten you with blasting and mildew: when your gardens and your vineyards and your fig trees and your olive trees increased, the palmerworm devoured them: yet have ye not returned unto me, saith the LORD."

Amos 7:2: "And it came to pass, that when they had made an end of eating the grass of the land, then I said, O Lord GOD, forgive, I beseech thee: by whom shall Jacob arise? for he is small."

Amos 8:5: "Saying, When will the new moon be gone, that we may sell corn? and the sabbath, that we may set forth wheat, making the ephah small, and the shekel great, and falsifying the balances by deceit?"

Jonah 2:7: "When my soul fainted within me I remembered the LORD: and my prayer came in unto thee, into thine holy temple."

Jonah 4:2: "And he prayed unto the LORD, and said, I pray thee, O LORD, was not this my saying, when I was yet in my country? Therefore I fled before unto Tarshish: for I knew that thou art a gracious God, and merciful, slow to anger, and of great kindness, and repentest thee of the evil."

Jonah 4:7: "But God prepared a worm when the morning rose the next day, and it smote the gourd that it withered."

Jonah 4:8: "And it came to pass, when the sun did arise, that God prepared a vehement east wind; and the sun beat upon the head of Jonah, that he fainted, and wished in himself to die, and said, It is better for me to die than to live."

Micah 2:1: "Woe to them that devise iniquity, and work evil upon their beds! when the morning is light, they practise it, because it is in the power of their hand."

Micah 5:5: "And this man shall be the peace, when the Assyrian shall come into our land: and when he shall tread in our palaces, then shall we raise against him seven shepherds, and eight principal men."

Micah 5:6: "And they shall waste the land of Assyria with the sword, and the land of Nimrod in the entrances thereof: thus shall he deliver us from the Assyrian, when he cometh into our land, and when he treadeth within our borders."

Micah 7:1: "Woe is me! for I am as when they have gathered the summer fruits, as the grape gleanings of the vintage: there is no cluster to eat: my soul desired the firstripe fruit."

Micah 7:8: "Rejoice not against me, O mine enemy: when I fall, I shall arise; when I sit in darkness, the LORD shall be a light unto me."

Nahum 1:12: "Thus saith the LORD; Though they be quiet, and likewise many, yet thus shall they be cut down, when he shall pass through. Though I have afflicted thee, I will afflict thee no more."

Nahum 3:17: "Thy crowned are as the locusts, and thy captains as the great grasshoppers, which camp in the hedges in the cold day, but when the sun ariseth they flee away, and their place is not known where they are."

Habakkuk 1:13: "Thou art of purer eyes than to behold evil, and canst not look on iniquity: wherefore lookest thou upon them that deal treacherously, and holdest thy tongue when the wicked devoureth the man that is more righteous than he?"

Habakkuk 2:1: "I will stand upon my watch, and set me upon the tower, and will watch to see what he will say unto me, and what I shall answer when I am reproved."

Habakkuk 3:16: "When I heard, my belly trembled; my lips quivered at the voice: rottenness entered into my bones, and I trembled in myself, that I might rest in the day of trouble: when he cometh up unto the people, he will invade them with his troops."

Zephaniah 3:20: "At that time will I bring you again, even in the time that I gather you: for I will

make you a name and a praise among all people of the earth, when I turn back your captivity before your eyes, saith the LORD."

Haggai 1:9: "Ye looked for much, and, lo it came to little; and when ye brought it home, I did blow upon it. Why? saith the LORD of hosts. Because of mine house that is waste, and ye run every man unto his own house."

Haggai 2:5: "According to the word that I covenanted with you when ye came out of Egypt, so my spirit remaineth among you: fear ye not."

Haggai 2:16: "Since those days were, when one came to an heap of twenty measures, there were but ten: when one came to the pressfat for to draw out fifty vessels out of the press, there were but twenty."

Zechariah 7:2: "When they had sent unto the house of God Sherezzer and Regemmelech, and their men, to pray before the LORD,"

Zechariah 7:5: "Speak unto all the people of the land, and to the priests, saying, When ye fasted and mourned in the fifth and seventh month, even those seventy years, did ye at all fast unto me, even to me?"

Zechariah 7:6: "And when ye did eat, and when ye did drink, did not ye eat for yourselves, and drink for yourselves?"

Zechariah 7:7: "Should ye not hear the words which the LORD hath cried by the former prophets, when Jerusalem was inhabited and in prosperity, and the cities thereof round about her, when men inhabited the south and the plain?"

Zechariah 8:14: "For thus saith the LORD of hosts; As I thought to punish you, when your fathers provoked me to wrath, saith the LORD of hosts, and I repented not:"

Zechariah 9:1: "The burden of the word of the LORD in the land of Hadrach, and Damascus shall be the rest thereof: when the eyes of man, as of all the tribes of Israel, shall be toward the LORD."

Zechariah 9:13: "When I have bent Judah for me, filled the bow with Ephraim, and raised up thy sons, O Zion, against thy sons, O Greece, and made thee as the sword of a mighty man."

Zechariah 12:2: "Behold, I will make Jerusalem a cup of trembling unto all the people round about, when they shall be in the siege both against Judah and against Jerusalem."

Zechariah 13:3: "And it shall come to pass, that when any shall yet prophesy, then his father and his mother that begat him shall say unto him, Thou shalt not live; for thou speakest lies in the name of the LORD: and his father and his mother that begat him shall thrust him through when he prophesieth."

Zechariah 13:4: "And it shall come to pass in that day, that the prophets shall be ashamed every one of his vision, when he hath prophesied; neither shall they wear a rough garment to deceive:"

Zechariah 14:3: "Then shall the LORD go forth, and fight against those nations, as when he fought in the day of battle."

Malachi 2:17: "Ye have wearied the LORD with your words. Yet ye say, Wherein have we wearied him? When ye say, Every one that doeth evil is good in the sight of the LORD, and he delighteth in them; or, Where is the God of judgment?"

Malachi 3:2: "But who may abide the day of his coming? and who shall stand when he appeareth? for he is like a refiner's fire, and like fullers' soap:"

Malachi 3:17: "And they shall be mine, saith the LORD of hosts, in that day when I make up my jewels; and I will spare them, as a man spareth his own son that serveth him."

Matthew 1:18: "Now the birth of Jesus Christ was on this wise: When as his mother Mary was espoused to Joseph, before they came together, she was found with child of the Holy Ghost."

Matthew 2:1: "Now when Jesus was born in Bethlehem of Judaea in the days of Herod the king, behold, there came wise men from the east to Jerusalem,"

Matthew 2:3: "When Herod the king had heard these things, he was troubled, and all Jerusalem with him."

Matthew 2:4: "And when he had gathered all the chief priests and scribes of the people together, he

demanded of them where Christ should be born."

Matthew 2:7: "Then Herod, when he had privily called the wise men, enquired of them diligently what time the star appeared."

Matthew 2:8: "And he sent them to Bethlehem, and said, Go and search diligently for the young child; and when ye have found him, bring me word again, that I may come and worship him also."

Matthew 2:9: "When they had heard the king, they departed; and, lo, the star, which they saw in the east, went before them, till it came and stood over where the young child was."

Matthew 2:10: "When they saw the star, they rejoiced with exceeding great joy."

Matthew 2:11: "And when they were come into the house, they saw the young child with Mary his mother, and fell down, and worshipped him: and when they had opened their treasures, they presented unto him gifts; gold, and frankincense and myrrh."

Matthew 2:13: "And when they were departed, behold, the angel of the Lord appeareth to Joseph in a dream, saying, Arise, and take the young child and his mother, and flee into Egypt, and be thou there until I bring thee word: for Herod will seek the young child to destroy him."

Matthew 2:14: "When he arose, he took the young child and his mother by night, and departed into Egypt:"

Matthew 2:16: "Then Herod, when he saw that he was mocked of the wise men, was exceeding wroth, and sent forth, and slew all the children that were in Bethlehem, and in all the coasts thereof, from two years old and under, according to the time which he had diligently enquired of the wise men."

Matthew 2:19: "But when Herod was dead, behold, an angel of the Lord appeareth in a dream to Joseph in Egypt,"

Matthew 2:22: "But when he heard that Archelaus did reign in Judaea in the room of his father Herod, he was afraid to go thither: notwithstanding, being warned of God in a dream, he turned aside into the parts of Galilee:"

Matthew 3:7: "But when he saw many of the Pharisees and Sadducees come to his baptism, he said unto them, O generation of vipers, who hath warned you to flee from the wrath to come?"

Matthew 3:16: "And Jesus, when he was baptized, went up straightway out of the water: and, lo, the heavens were opened unto him, and he saw the Spirit of God descending like a dove, and lighting upon him:"

Matthew 4:2: "And when he had fasted forty days and forty nights, he was afterward an hungred."

Matthew 4:3: "And when the tempter came to him, he said, If thou be the Son of God, command that these stones be made bread."

Matthew 4:12: "Now when Jesus had heard that John was cast into prison, he departed into Galilee;"

Matthew 5:1: "And seeing the multitudes, he went up into a mountain: and when he was set, his disciples came unto him:"

Matthew 5:11: "Blessed are ye, when men shall revile you, and persecute you, and shall say all manner of evil against you falsely, for my sake."

Matthew 6:2: "Therefore when thou doest thine alms, do not sound a trumpet before thee, as the hypocrites do in the synagogues and in the streets, that they may have glory of men. Verily I say unto you, They have their reward."

Matthew 6:3: "But when thou doest alms, let not thy left hand know what thy right hand doeth:"

Matthew 6:5: "And when thou prayest, thou shalt not be as the hypocrites are: for they love to pray standing in the synagogues and in the corners of the streets, that they may be seen of men. Verily I say unto you, They have their reward."

Matthew 6:6: "But thou, when thou prayest, enter into thy closet, and when thou hast shut thy door, pray to thy Father which is in secret; and thy Father which seeth in secret shall reward thee openly."

Matthew 6:7: "But when ye pray, use not vain repetitions, as the heathen do: for they think that they shall be heard for their much speaking."

Matthew 6:16: "Moreover when ye fast, be not, as the hypocrites, of a sad countenance: for they disfigure their faces, that they may appear unto men to fast. Verily I say unto you, They have their reward."

Matthew 6:17: "But thou, when thou fastest, anoint thine head, and wash thy face;"

Matthew 7:28: "And it came to pass, when Jesus had ended these sayings, the people were astonished at his doctrine:"

Matthew 8:1: "When he was come down from the mountain, great multitudes followed him."

Matthew 8:5: "And when Jesus was entered into Capernaum, there came unto him a centurion, beseeching him,"

Matthew 8:10: "When Jesus heard it, he marvelled, and said to them that followed, Verily I say unto you, I have not found so great faith, no, not in Israel."

Matthew 8:14: "And when Jesus was come into Peter's house, he saw his wife's mother laid, and sick of a fever."

Matthew 8:16: "When the even was come, they brought unto him many that were possessed with devils: and he cast out the spirits with his word, and healed all that were sick:"

Matthew 8:18: "Now when Jesus saw great multitudes about him, he gave commandment to depart unto the other side."

Matthew 8:23: "And when he was entered into a ship, his disciples followed him."

Matthew 8:28: "And when he was come to the other side into the country of the Gergesenes, there met him two possessed with devils, coming out of the tombs, exceeding fierce, so that no man might pass by that way."

Matthew 8:32: "And he said unto them, Go. And when they were come out, they went into the herd of swine: and, behold, the whole herd of swine ran violently down a steep place into the sea, and perished in the waters."

Matthew 8:34: "And, behold, the whole city came out to meet Jesus: and when they saw him, they besought him that he would depart out of their coasts."

Matthew 9:8: "But when the multitudes saw it, they marvelled, and glorified God, which had given such power unto men."

Matthew 9:11: "And when the Pharisees saw it, they said unto his disciples, Why eateth your Master with publicans and sinners?"

Matthew 9:12: "But when Jesus heard that, he said unto them, They that be whole need not a physician, but they that are sick."

Matthew 9:15: "And Jesus said unto them, Can the children of the bridechamber mourn, as long as the bridegroom is with them? but the days will come, when the bridegroom shall be taken from them, and then shall they fast."

Matthew 9:22: "But Jesus turned him about, and when he saw her, he said, Daughter, be of good comfort; thy faith hath made thee whole. And the woman was made whole from that hour."

Matthew 9:23: "And when Jesus came into the ruler's house, and saw the minstrels and the people making a noise,"

Matthew 9:25: "But when the people were put forth, he went in, and took her by the hand, and the maid arose."

Matthew 9:27: "And when Jesus departed thence, two blind men followed him, crying, and saying, Thou son of David, have mercy on us."

Matthew 9:28: "And when he was come into the house, the blind men came to him: and Jesus saith unto them, Believe ye that I am able to do this? They said unto him, Yea, Lord."

Matthew 9:31: "But they, when they were departed, spread abroad his fame in all that country."

Matthew 9:33: "And when the devil was cast out, the dumb spake: and the multitudes marvelled, saying, It was never so seen in Israel."

Matthew 9:36: "But when he saw the multitudes, he was moved with compassion on them, because they fainted, and were scattered abroad, as sheep having no shepherd."

Matthew 10:1: "And when he had called unto him his twelve disciples, he gave them power against unclean spirits, to cast them out, and to heal all manner of sickness and all manner of disease."

Matthew 10:12: "And when ye come into an house, salute it."

Matthew 10:14: "And whosoever shall not receive you, nor hear your words, when ye depart out of that house or city, shake off the dust of your feet."

Matthew 10:19: "But when they deliver you up, take no thought how or what ye shall speak: for it shall be given you in that same hour what ye shall speak."

Matthew 10:23: "But when they persecute you in this city, flee ye into another: for verily I say unto you, Ye shall not have gone over the cities of Israel, till the Son of man be come."

Matthew 11:1: "And it came to pass, when Jesus had made an end of commanding his twelve disciples, he departed thence to teach and to preach in their cities."

Matthew 11:2: "Now when John had heard in the prison the works of Christ, he sent two of his disciples,"

Matthew 12:2: "But when the Pharisees saw it, they said unto him, Behold, thy disciples do that which is not lawful to do upon the sabbath day."

Matthew 12:3: "But he said unto them, Have ye not read what David did, when he was an hungred, and they that were with him;"

Matthew 12:9: "And when he was departed thence, he went into their synagogue:"

Matthew 12:15: "But when Jesus knew it, he withdrew himself from thence: and great multitudes followed him, and he healed them all;"

Matthew 12:24: "But when the Pharisees heard it, they said, This fellow doth not cast out devils, but by Beelzebub the prince of the devils."

Matthew 12:43: "When the unclean spirit is gone out of a man, he walketh through dry places, seeking rest, and findeth none."

Matthew 12:44: "Then he saith, I will return into my house from whence I came out; and when he is come, he findeth it empty, swept, and garnished."

Matthew 13:4: "And when he sowed, some seeds fell by the way side, and the fowls came and devoured them up:"

Matthew 13:6: "And when the sun was up, they were scorched; and because they had no root, they withered away."

Matthew 13:19: "When any one heareth the word of the kingdom, and understandeth it not, then cometh the wicked one, and catcheth away that which was sown in his heart. This is he which received seed by the way side."

Matthew 13:21: "Yet hath he not root in himself, but dureth for a while: for when tribulation or persecution ariseth because of the word, by and by he is offended."

Matthew 13:26: "But when the blade was sprung up, and brought forth fruit, then appeared the tares also."

Matthew 13:32: "Which indeed is the least of all seeds: but when it is grown, it is the greatest among herbs, and becometh a tree, so that the birds of the air come and lodge in the branches thereof."

Matthew 13:44: "Again, the kingdom of heaven is like unto treasure hid in a field; the which when a man hath found, he hideth, and for joy thereof goeth and selleth all that he hath, and buyeth that field."

Matthew 13:46: "Who, when he had found one pearl of great price, went and sold all that he had, and bought it."

Matthew 13:48: "Which, when it was full, they drew to shore, and sat down, and gathered the good into vessels, but cast the bad away."

Matthew 13:53: "And it came to pass, that when Jesus had finished these parables, he departed thence."

Matthew 13:54: "And when he was come into his own country, he taught them in their synagogue,

insomuch that they were astonished, and said, Whence hath this man this wisdom, and these mighty works?"

Matthew 14:5: "And when he would have put him to death, he feared the multitude, because they counted him as a prophet."

Matthew 14:6: "But when Herod's birthday was kept, the daughter of Herodias danced before them, and pleased Herod."

Matthew 14:13: "When Jesus heard of it, he departed thence by ship into a desert place apart: and when the people had heard thereof, they followed him on foot out of the cities."

Matthew 14:15: "And when it was evening, his disciples came to him, saying, This is a desert place, and the time is now past; send the multitude away, that they may go into the villages, and buy themselves victuals."

Matthew 14:23: "And when he had sent the multitudes away, he went up into a mountain apart to pray: and when the evening was come, he was there alone."

Matthew 14:26: "And when the disciples saw him walking on the sea, they were troubled, saying, It is a spirit; and they cried out for fear."

Matthew 14:29: "And he said, Come. And when Peter was come down out of the ship, he walked on the water, to go to Jesus."

Matthew 14:30: "But when he saw the wind boisterous, he was afraid; and beginning to sink, he cried, saying, Lord, save me."

Matthew 14:32: "And when they were come into the ship, the wind ceased."

Matthew 14:34: "And when they were gone over, they came into the land of Gennesaret."

Matthew 14:35: "And when the men of that place had knowledge of him, they sent out into all that country round about, and brought unto him all that were diseased;"

Matthew 15:2: "Why do thy disciples transgress the tradition of the elders? for they wash not their hands when they eat bread."

Matthew 15:31: "Insomuch that the multitude wondered, when they saw the dumb to speak, the maimed to be whole, the lame to walk, and the blind to see: and they glorified the God of Israel."

Matthew 16:2: "He answered and said unto them, When it is evening, ye say, It will be fair weather: for the sky is red."

Matthew 16:5: "And when his disciples were come to the other side, they had forgotten to take bread."

Matthew 16:8: "Which when Jesus perceived, he said unto them, O ye of little faith, why reason ye among yourselves, because ye have brought no bread?"

Matthew 16:13: "When Jesus came into the coasts of Caesarea Philippi, he asked his disciples, saying, Whom do men say that I the Son of man am?"

Matthew 17:6: "And when the disciples heard it, they fell on their face, and were sore afraid."

Matthew 17:8: "And when they had lifted up their eyes, they saw no man, save Jesus only."

Matthew 17:14: "And when they were come to the multitude, there came to him a certain man, kneeling down to him, and saying,"

Matthew 17:24: "And when they were come to Capernaum, they that received tribute money came to Peter, and said, Doth not your master pay tribute?"

Matthew 17:25: "He saith, Yes. And when he was come into the house, Jesus prevented him, saying, What thinkest thou, Simon? of whom do the kings of the earth take custom or tribute? of their own children, or of strangers?"

Matthew 17:27: "Notwithstanding, lest we should offend them, go thou to the sea, and cast an hook, and take up the fish that first cometh up; and when thou hast opened his mouth, thou shalt find a piece of money: that take, and give unto them for me and thee."

Matthew 18:24: "And when he had begun to reckon, one was brought unto him, which owed him ten thousand talents."

Matthew 18:31: "So when his fellowservants saw what was done, they were very sorry, and came



and told unto their lord all that was done."

Matthew 19:1: "And it came to pass, that when Jesus had finished these sayings, he departed from Galilee, and came into the coasts of Judaea beyond Jordan;"

Matthew 19:22: "But when the young man heard that saying, he went away sorrowful: for he had great possessions."

Matthew 19:25: "When his disciples heard it, they were exceedingly amazed, saying, Who then can be saved?"

Matthew 19:28: "And Jesus said unto them, Verily I say unto you, That ye which have followed me, in the regeneration when the Son of man shall sit in the throne of his glory, ye also shall sit upon twelve thrones, judging the twelve tribes of Israel."

Matthew 20:2: "And when he had agreed with the labourers for a penny a day, he sent them into his vineyard."

Matthew 20:8: "So when even was come, the lord of the vineyard saith unto his steward, Call the labourers, and give them their hire, beginning from the last unto the first."

Matthew 20:9: "And when they came that were hired about the eleventh hour, they received every man a penny."

Matthew 20:10: "But when the first came, they supposed that they should have received more; and they likewise received every man a penny."

Matthew 20:11: "And when they had received it, they murmured against the goodman of the house,"

Matthew 20:24: "And when the ten heard it, they were moved with indignation against the two brethren."

Matthew 20:30: "And, behold, two blind men sitting by the way side, when they heard that Jesus passed by, cried out, saying, Have mercy on us, O Lord, thou son of David."

Matthew 21:1: "And when they drew nigh unto Jerusalem, and were come to Bethphage, unto the mount of Olives, then sent Jesus two disciples,"

Matthew 21:10: "And when he was come into Jerusalem, all the city was moved, saying, Who is this?"

Matthew 21:15: "And when the chief priests and scribes saw the wonderful things that he did, and the children crying in the temple, and saying, Hosanna to the son of David; they were sore displeased,"

Matthew 21:19: "And when he saw a fig tree in the way, he came to it, and found nothing thereon, but leaves only, and said unto it, Let no fruit grow on thee henceforward for ever. And presently the fig tree withered away."

Matthew 21:20: "And when the disciples saw it, they marvelled, saying, How soon is the fig tree withered away!"

Matthew 21:23: "And when he was come into the temple, the chief priests and the elders of the people came unto him as he was teaching, and said, By what authority doest thou these things? and who gave thee this authority?"

Matthew 21:32: "For John came unto you in the way of righteousness, and ye believed him not: but the publicans and the harlots believed him: and ye, when ye had seen it, repented not afterward, that ye might believe him."

Matthew 21:34: "And when the time of the fruit drew near, he sent his servants to the husbandmen, that they might receive the fruits of it."

Matthew 21:38: "But when the husbandmen saw the son, they said among themselves, This is the heir; come, let us kill him, and let us seize on his inheritance."

Matthew 21:40: "When the lord therefore of the vineyard cometh, what will he do unto those husbandmen?"

Matthew 21:45: "And when the chief priests and Pharisees had heard his parables, they perceived that he spake of them."

Matthew 21:46: "But when they sought to lay hands on him, they feared the multitude, because they took him for a prophet."

Matthew 22:7: "But when the king heard thereof, he was wroth: and he sent forth his armies, and destroyed those murderers, and burned up their city."

Matthew 22:11: "And when the king came in to see the guests, he saw there a man which had not on a wedding garment:"

Matthew 22:22: "When they had heard these words, they marvelled, and left him, and went their way."

Matthew 22:25: "Now there were with us seven brethren: and the first, when he had married a wife, deceased, and, having no issue, left his wife unto his brother:"

Matthew 22:33: "And when the multitude heard this, they were astonished at his doctrine."

Matthew 22:34: "But when the Pharisees had heard that he had put the Sadducees to silence, they were gathered together."

Matthew 23:15: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye compass sea and land to make one proselyte, and when he is made, ye make him twofold more the child of hell than yourselves."

Matthew 24:3: "And as he sat upon the mount of Olives, the disciples came unto him privately, saying, Tell us, when shall these things be? and what shall be the sign of thy coming, and of the end of the world?"

Matthew 24:15: "When ye therefore shall see the abomination of desolation, spoken of by Daniel the prophet, stand in the holy place, (whoso readeth, let him understand:)"

Matthew 24:32: "Now learn a parable of the fig tree; When his branch is yet tender, and putteth forth leaves, ye know that summer is nigh:"

Matthew 24:33: "So likewise ye, when ye shall see all these things, know that it is near, even at the doors."

Matthew 24:46: "Blessed is that servant, whom his lord when he cometh shall find so doing."

Matthew 24:50: "The lord of that servant shall come in a day when he looketh not for him, and in an hour that he is not aware of,"

Matthew 25:31: "When the Son of man shall come in his glory, and all the holy angels with him, then shall he sit upon the throne of his glory:"

Matthew 25:37: "Then shall the righteous answer him, saying, Lord, when saw we thee an hungred, and fed thee? or thirsty, and gave thee drink?"

Matthew 25:38: "When saw we thee a stranger, and took thee in? or naked, and clothed thee?"

Matthew 25:39: "Or when saw we thee sick, or in prison, and came unto thee?"

Matthew 25:44: "Then shall they also answer him, saying, Lord, when saw we thee an hungred, or athirst, or a stranger, or naked, or sick, or in prison, and did not minister unto thee?"

Matthew 26:1: "And it came to pass, when Jesus had finished all these sayings, he said unto his disciples,"

Matthew 26:6: "Now when Jesus was in Bethany, in the house of Simon the leper,"

Matthew 26:8: "But when his disciples saw it, they had indignation, saying, To what purpose is this waste?"

Matthew 26:10: "When Jesus understood it, he said unto them, Why trouble ye the woman? for she hath wrought a good work upon me."

Matthew 26:20: "Now when the even was come, he sat down with the twelve."

Matthew 26:29: "But I say unto you, I will not drink henceforth of this fruit of the vine, until that day when I drink it new with you in my Father's kingdom."

Matthew 26:30: "And when they had sung an hymn, they went out into the mount of Olives."

Matthew 26:71: "And when he was gone out into the porch, another maid saw him, and said unto them that were there, This fellow was also with Jesus of Nazareth."

Matthew 27:1: "When the morning was come, all the chief priests and elders of the people took

counsel against Jesus to put him to death:"

Matthew 27:2: "And when they had bound him, they led him away, and delivered him to Pontius Pilate the governor."

Matthew 27:3: "Then Judas, which had betrayed him, when he saw that he was condemned, repented himself, and brought again the thirty pieces of silver to the chief priests and elders,"

Matthew 27:12: "And when he was accused of the chief priests and elders, he answered nothing."

Matthew 27:17: "Therefore when they were gathered together, Pilate said unto them, Whom will ye that I release unto you? Barabbas, or Jesus which is called Christ?"

Matthew 27:19: "When he was set down on the judgment seat, his wife sent unto him, saying, Have thou nothing to do with that just man: for I have suffered many things this day in a dream because of him."

Matthew 27:24: "When Pilate saw that he could prevail nothing, but that rather a tumult was made, he took water, and washed his hands before the multitude, saying, I am innocent of the blood of this just person: see ye to it."

Matthew 27:26: "Then released he Barabbas unto them: and when he had scourged Jesus, he delivered him to be crucified."

Matthew 27:29: "And when they had platted a crown of thorns, they put it upon his head, and a reed in his right hand: and they bowed the knee before him, and mocked him, saying, Hail, King of the Jews!"

Matthew 27:33: "And when they were come unto a place called Golgotha, that is to say, a place of a skull,"

Matthew 27:34: "They gave him vinegar to drink mingled with gall: and when he had tasted thereof, he would not drink."

Matthew 27:47: "Some of them that stood there, when they heard that, said, This man calleth for Elias."

Matthew 27:50: "Jesus, when he had cried again with a loud voice, yielded up the ghost."

Matthew 27:54: "Now when the centurion, and they that were with him, watching Jesus, saw the earthquake, and those things that were done, they feared greatly, saying, Truly this was the Son of God."

Matthew 27:57: "When the even was come, there came a rich man of Arimathaea, named Joseph, who also himself was Jesus' disciple:"

Matthew 27:59: "And when Joseph had taken the body, he wrapped it in a clean linen cloth,"

Matthew 28:11: "Now when they were going, behold, some of the watch came into the city, and shewed unto the chief priests all the things that were done."

Matthew 28:12: "And when they were assembled with the elders, and had taken counsel, they gave large money unto the soldiers,"

Matthew 28:17: "And when they saw him, they worshipped him: but some doubted."

Mark 1:19: "And when he had gone a little farther thence, he saw James the son of Zebedee, and John his brother, who also were in the ship mending their nets."

Mark 1:26: "And when the unclean spirit had torn him, and cried with a loud voice, he came out of him."

Mark 1:29: "And forthwith, when they were come out of the synagogue, they entered into the house of Simon and Andrew, with James and John."

Mark 1:32: "And at even, when the sun did set, they brought unto him all that were diseased, and them that were possessed with devils."

Mark 1:37: "And when they had found him, they said unto him, All men seek for thee."

Mark 2:4: "And when they could not come nigh unto him for the press, they uncovered the roof where he was: and when they had broken it up, they let down the bed wherein the sick of the palsy lay."

Mark 2:5: "When Jesus saw their faith, he said unto the sick of the palsy, Son, thy sins be forgiven

thee."

Mark 2:8: "And immediately when Jesus perceived in his spirit that they so reasoned within themselves, he said unto them, Why reason ye these things in your hearts?"

Mark 2:16: "And when the scribes and Pharisees saw him eat with publicans and sinners, they said unto his disciples, How is it that he eateth and drinketh with publicans and sinners?"

Mark 2:17: "When Jesus heard it, he saith unto them, They that are whole have no need of the physician, but they that are sick: I came not to call the righteous, but sinners to repentance."

Mark 2:20: "But the days will come, when the bridegroom shall be taken away from them, and then shall they fast in those days."

Mark 2:25: "And he said unto them, Have ye never read what David did, when he had need, and was an hungred, he, and they that were with him?"

Mark 3:5: "And when he had looked round about on them with anger, being grieved for the hardness of their hearts, he saith unto the man, Stretch forth thine hand. And he stretched it out: and his hand was restored whole as the other."

Mark 3:8: "And from Jerusalem, and from Idumaea, and from beyond Jordan; and they about Tyre and Sidon, a great multitude, when they had heard what great things he did, came unto him."

Mark 3:11: "And unclean spirits, when they saw him, fell down before him, and cried, saying, Thou art the Son of God."

Mark 3:21: "And when his friends heard of it, they went out to lay hold on him: for they said, He is beside himself."

Mark 4:6: "But when the sun was up, it was scorched; and because it had no root, it withered away."

Mark 4:10: "And when he was alone, they that were about him with the twelve asked of him the parable."

Mark 4:15: "And these are they by the way side, where the word is sown; but when they have heard, Satan cometh immediately, and taketh away the word that was sown in their hearts."

Mark 4:16: "And these are they likewise which are sown on stony ground; who, when they have heard the word, immediately receive it with gladness;"

Mark 4:17: "And have no root in themselves, and so endure but for a time: afterward, when affliction or persecution ariseth for the word's sake, immediately they are offended."

Mark 4:29: "But when the fruit is brought forth, immediately he putteth in the sickle, because the harvest is come."

Mark 4:31: "It is like a grain of mustard seed, which, when it is sown in the earth, is less than all the seeds that be in the earth:"

Mark 4:32: "But when it is sown, it groweth up, and becometh greater than all herbs, and shooteth out great branches; so that the fowls of the air may lodge under the shadow of it."

Mark 4:34: "But without a parable spake he not unto them: and when they were alone, he expounded all things to his disciples."

Mark 4:35: "And the same day, when the even was come, he saith unto them, Let us pass over unto the other side."

Mark 4:36: "And when they had sent away the multitude, they took him even as he was in the ship. And there were also with him other little ships."

Mark 5:2: "And when he was come out of the ship, immediately there met him out of the tombs a man with an unclean spirit,"

Mark 5:6: "But when he saw Jesus afar off, he ran and worshipped him,"

Mark 5:18: "And when he was come into the ship, he that had been possessed with the devil prayed him that he might be with him."

Mark 5:21: "And when Jesus was passed over again by ship unto the other side, much people gathered unto him: and he was nigh unto the sea."

Mark 5:22: "And, behold, there cometh one of the rulers of the synagogue, Jairus by name; and when he saw him, he fell at his feet,"

Mark 5:27: "When she had heard of Jesus, came in the press behind, and touched his garment."

Mark 5:39: "And when he was come in, he saith unto them, Why make ye this ado, and weep? the damsel is not dead, but sleepeth."

Mark 5:40: "And they laughed him to scorn. But when he had put them all out, he taketh the father and the mother of the damsel, and them that were with him, and entereth in where the damsel was lying."

Mark 6:2: "And when the sabbath day was come, he began to teach in the synagogue: and many hearing him were astonished, saying, From whence hath this man these things? and what wisdom is this which is given unto him, that even such mighty works are wrought by his hands?"

Mark 6:11: "And whosoever shall not receive you, nor hear you, when ye depart thence, shake off the dust under your feet for a testimony against them. Verily I say unto you, It shall be more tolerable for Sodom and Gomorrha in the day of judgment, than for that city."

Mark 6:16: "But when Herod heard thereof, he said, It is John, whom I beheaded: he is risen from the dead."

Mark 6:20: "For Herod feared John, knowing that he was a just man and an holy, and observed him; and when he heard him, he did many things, and heard him gladly."

Mark 6:21: "And when a convenient day was come, that Herod on his birthday made a supper to his lords, high captains, and chief estates of Galilee;"

Mark 6:22: "And when the daughter of the said Herodias came in, and danced, and pleased Herod and them that sat with him, the king said unto the damsel, Ask of me whatsoever thou wilt, and I will give it thee."

Mark 6:29: "And when his disciples heard of it, they came and took up his corpse, and laid it in a tomb."

Mark 6:34: "And Jesus, when he came out, saw much people, and was moved with compassion toward them, because they were as sheep not having a shepherd: and he began to teach them many things."

Mark 6:35: "And when the day was now far spent, his disciples came unto him, and said, This is a desert place, and now the time is far passed:"

Mark 6:38: "He saith unto them, How many loaves have ye? go and see. And when they knew, they say, Five, and two fishes."

Mark 6:41: "And when he had taken the five loaves and the two fishes, he looked up to heaven, and blessed, and brake the loaves, and gave them to his disciples to set before them; and the two fishes divided he among them all."

Mark 6:46: "And when he had sent them away, he departed into a mountain to pray."

Mark 6:47: "And when even was come, the ship was in the midst of the sea, and he alone on the land."

Mark 6:49: "But when they saw him walking upon the sea, they supposed it had been a spirit, and cried out:"

Mark 6:53: "And when they had passed over, they came into the land of Gennesaret, and drew to the shore."

Mark 6:54: "And when they were come out of the ship, straightway they knew him,"

Mark 7:2: "And when they saw some of his disciples eat bread with defiled, that is to say, with unwashen, hands, they found fault."

Mark 7:4: "And when they come from the market, except they wash, they eat not. And many other things there be, which they have received to hold, as the washing of cups, and pots, brasen vessels, and of tables."

Mark 7:14: "And when he had called all the people unto him, he said unto them, Hearken unto me every one of you, and understand:"

Mark 7:17: "And when he was entered into the house from the people, his disciples asked him concerning the parable."

Mark 7:30: "And when she was come to her house, she found the devil gone out, and her daughter laid upon the bed."

Mark 8:17: "And when Jesus knew it, he saith unto them, Why reason ye, because ye have no bread? perceive ye not yet, neither understand? have ye your heart yet hardened?"

Mark 8:19: "When I brake the five loaves among five thousand, how many baskets full of fragments took ye up? They say unto him, Twelve."

Mark 8:20: "And when the seven among four thousand, how many baskets full of fragments took ye up? And they said, Seven."

Mark 8:23: "And he took the blind man by the hand, and led him out of the town; and when he had spit on his eyes, and put his hands upon him, he asked him if he saw ought."

Mark 8:33: "But when he had turned about and looked on his disciples, he rebuked Peter, saying, Get thee behind me, Satan: for thou savourest not the things that be of God, but the things that be of men."

Mark 8:34: "And when he had called the people unto him with his disciples also, he said unto them, Whosoever will come after me, let him deny himself, and take up his cross, and follow me."

Mark 8:38: "Whosoever therefore shall be ashamed of me and of my words in this adulterous and sinful generation; of him also shall the Son of man be ashamed, when he cometh in the glory of his Father with the holy angels."

Mark 9:8: "And suddenly, when they had looked round about, they saw no man any more, save Jesus only with themselves."

Mark 9:14: "And when he came to his disciples, he saw a great multitude about them, and the scribes questioning with them."

Mark 9:15: "And straightway all the people, when they beheld him, were greatly amazed, and running to him saluted him."

Mark 9:20: "And they brought him unto him: and when he saw him, straightway the spirit tare him; and he fell on the ground, and wallowed foaming."

Mark 9:25: "When Jesus saw that the people came running together, he rebuked the foul spirit, saying unto him, Thou dumb and deaf spirit, I charge thee, come out of him, and enter no more into him."

Mark 9:28: "And when he was come into the house, his disciples asked him privately, Why could not we cast him out?"

Mark 9:36: "And he took a child, and set him in the midst of them: and when he had taken him in his arms, he said unto them,"

Mark 10:14: "But when Jesus saw it, he was much displeased, and said unto them, Suffer the little children to come unto me, and forbid them not: for of such is the kingdom of God."

Mark 10:17: "And when he was gone forth into the way, there came one running, and kneeled to him, and asked him, Good Master, what shall I do that I may inherit eternal life?"

Mark 10:41: "And when the ten heard it, they began to be much displeased with James and John."

Mark 10:47: "And when he heard that it was Jesus of Nazareth, he began to cry out, and say, Jesus, thou son of David, have mercy on me."

Mark 11:1: "And when they came nigh to Jerusalem, unto Bethphage and Bethany, at the mount of Olives, he sendeth forth two of his disciples,"

Mark 11:11: "And Jesus entered into Jerusalem, and into the temple: and when he had looked round about upon all things, and now the eventide was come, he went out unto Bethany with the twelve."

Mark 11:12: "And on the morrow, when they were come from Bethany, he was hungry:"

Mark 11:13: "And seeing a fig tree afar off having leaves, he came, if haply he might find any thing thereon: and when he came to it, he found nothing but leaves; for the time of figs was not yet."

Mark 11:19: "And when even was come, he went out of the city."

Mark 11:24: "Therefore I say unto you, What things soever ye desire, when ye pray, believe that ye receive them, and ye shall have them."

Mark 11:25: "And when ye stand praying, forgive, if ye have ought against any: that your Father also which is in heaven may forgive you your trespasses."

Mark 12:14: "And when they were come, they say unto him, Master, we know that thou art true, and carest for no man: for thou regardest not the person of men, but teachest the way of God in truth: Is it lawful to give tribute to Caesar, or not?"

Mark 12:23: "In the resurrection therefore, when they shall rise, whose wife shall she be of them? for the seven had her to wife."

Mark 12:25: "For when they shall rise from the dead, they neither marry, nor are given in marriage; but are as the angels which are in heaven."

Mark 12:34: "And when Jesus saw that he answered discreetly, he said unto him, Thou art not far from the kingdom of God. And no man after that durst ask him any question."

Mark 13:4: "Tell us, when shall these things be? and what shall be the sign when all these things shall be fulfilled?"

Mark 13:7: "And when ye shall hear of wars and rumours of wars, be ye not troubled: for such things must needs be; but the end shall not be yet."

Mark 13:11: "But when they shall lead you, and deliver you up, take no thought beforehand what ye shall speak, neither do ye premeditate: but whatsoever shall be given you in that hour, that speak ye: for it is not ye that speak, but the Holy Ghost."

Mark 13:14: "But when ye shall see the abomination of desolation, spoken of by Daniel the prophet, standing where it ought not, (let him that readeth understand,) then let them that be in Judaea flee to the mountains:"

Mark 13:28: "Now learn a parable of the fig tree; When her branch is yet tender, and putteth forth leaves, ye know that summer is near:"

Mark 13:29: "So ye in like manner, when ye shall see these things come to pass, know that it is nigh, even at the doors."

Mark 13:33: "Take ye heed, watch and pray: for ye know not when the time is."

Mark 13:35: "Watch ye therefore: for ye know not when the master of the house cometh, at even, or at midnight, or at the cockcrowing, or in the morning:"

Mark 14:11: "And when they heard it, they were glad, and promised to give him money. And he sought how he might conveniently betray him."

Mark 14:12: "And the first day of unleavened bread, when they killed the passover, his disciples said unto him, Where wilt thou that we go and prepare that thou mayest eat the passover?"

Mark 14:23: "And he took the cup, and when he had given thanks, he gave it to them: and they all drank of it."

Mark 14:26: "And when they had sung an hymn, they went out into the mount of Olives."

Mark 14:40: "And when he returned, he found them asleep again, (for their eyes were heavy,) neither wist they what to answer him."

Mark 14:67: "And when she saw Peter warming himself, she looked upon him, and said, And thou also wast with Jesus of Nazareth."

Mark 14:72: "And the second time the cock crew. And Peter called to mind the word that Jesus said unto him, Before the cock crow twice, thou shalt deny me thrice. And when he thought thereon, he wept."

Mark 15:15: "And so Pilate, willing to content the people, released Barabbas unto them, and delivered Jesus, when he had scourged him, to be crucified."

Mark 15:20: "And when they had mocked him, they took off the purple from him, and put his own clothes on him, and led him out to crucify him."

Mark 15:24: "And when they had crucified him, they parted his garments, casting lots upon them, what every man should take."

Mark 15:33: "And when the sixth hour was come, there was darkness over the whole land until the ninth hour."

Mark 15:35: "And some of them that stood by, when they heard it, said, Behold, he calleth Elias."

Mark 15:39: "And when the centurion, which stood over against him, saw that he so cried out, and gave up the ghost, he said, Truly this man was the Son of God."

Mark 15:41: "(Who also, when he was in Galilee, followed him, and ministered unto him;) and many other women which came up with him unto Jerusalem."

Mark 15:42: "And now when the even was come, because it was the preparation, that is, the day before the sabbath,"

Mark 15:45: "And when he knew it of the centurion, he gave the body to Joseph."

Mark 16:1: "And when the sabbath was past, Mary Magdalene, and Mary the mother of James, and Salome, had bought sweet spices, that they might come and anoint him."

Mark 16:4: "And when they looked, they saw that the stone was rolled away: for it was very great."

Mark 16:9: "Now when Jesus was risen early the first day of the week, he appeared first to Mary Magdalene, out of whom he had cast seven devils."

Mark 16:11: "And they, when they had heard that he was alive, and had been seen of her, believed not."

Luke 1:9: "According to the custom of the priest's office, his lot was to burn incense when he went into the temple of the Lord."

Luke 1:12: "And when Zacharias saw him, he was troubled, and fear fell upon him."

Luke 1:22: "And when he came out, he could not speak unto them: and they perceived that he had seen a vision in the temple: for he beckoned unto them, and remained speechless."

Luke 1:29: "And when she saw him, she was troubled at his saying, and cast in her mind what manner of salutation this should be."

Luke 1:41: "And it came to pass, that, when Elisabeth heard the salutation of Mary, the babe leaped in her womb; and Elisabeth was filled with the Holy Ghost:"

Luke 2:2: "(And this taxing was first made when Cyrenius was governor of Syria.)"

Luke 2:17: "And when they had seen it, they made known abroad the saying which was told them concerning this child."

Luke 2:21: "And when eight days were accomplished for the circumcising of the child, his name was called JESUS, which was so named of the angel before he was conceived in the womb."

Luke 2:22: "And when the days of her purification according to the law of Moses were accomplished, they brought him to Jerusalem, to present him to the Lord;"

Luke 2:27: "And he came by the Spirit into the temple: and when the parents brought in the child Jesus, to do for him after the custom of the law,"

Luke 2:39: "And when they had performed all things according to the law of the Lord, they returned into Galilee, to their own city Nazareth."

Luke 2:42: "And when he was twelve years old, they went up to Jerusalem after the custom of the feast."

Luke 2:43: "And when they had fulfilled the days, as they returned, the child Jesus tarried behind in Jerusalem; and Joseph and his mother knew not of it."

Luke 2:45: "And when they found him not, they turned back again to Jerusalem, seeking him."

Luke 2:48: "And when they saw him, they were amazed: and his mother said unto him, Son, why hast thou thus dealt with us? behold, thy father and I have sought thee sorrowing."

Luke 3:21: "Now when all the people were baptized, it came to pass, that Jesus also being baptized, and praying, the heaven was opened,"

Luke 4:2: "Being forty days tempted of the devil. And in those days he did eat nothing: and when they were ended, he afterward hungered."

Luke 4:13: "And when the devil had ended all the temptation, he departed from him for a season."

Luke 4:17: "And there was delivered unto him the book of the prophet Esaias. And when he had opened the book, he found the place where it was written,"

Luke 4:25: "But I tell you of a truth, many widows were in Israel in the days of Elias, when the



heaven was shut up three years and six months, when great famine was throughout all the land;"

Luke 4:28: "And all they in the synagogue, when they heard these things, were filled with wrath,"

Luke 4:35: "And Jesus rebuked him, saying, Hold thy peace, and come out of him. And when the devil had thrown him in the midst, he came out of him, and hurt him not."

Luke 4:40: "Now when the sun was setting, all they that had any sick with divers diseases brought them unto him; and he laid his hands on every one of them, and healed them."

Luke 4:42: "And when it was day, he departed and went into a desert place: and the people sought him, and came unto him, and stayed him, that he should not depart from them."

Luke 5:4: "Now when he had left speaking, he said unto Simon, Launch out into the deep, and let down your nets for a draught."

Luke 5:6: "And when they had this done, they inclosed a great multitude of fishes: and their net brake."

Luke 5:8: "When Simon Peter saw it, he fell down at Jesus' knees, saying, Depart from me; for I am a sinful man, O Lord."

Luke 5:11: "And when they had brought their ships to land, they forsook all, and followed him."

Luke 5:12: "And it came to pass, when he was in a certain city, behold a man full of leprosy: who seeing Jesus fell on his face, and besought him, saying, Lord, if thou wilt, thou canst make me clean."

Luke 5:19: "And when they could not find by what way they might bring him in because of the multitude, they went upon the housetop, and let him down through the tiling with his couch into the midst before Jesus."

Luke 5:20: "And when he saw their faith, he said unto him, Man, thy sins are forgiven thee."

Luke 5:22: "But when Jesus perceived their thoughts, he answering said unto them, What reason ye in your hearts?"

Luke 5:35: "But the days will come, when the bridegroom shall be taken away from them, and then shall they fast in those days."

Luke 6:3: "And Jesus answering them said, Have ye not read so much as this, what David did, when himself was an hungred, and they which were with him;"

Luke 6:13: "And when it was day, he called unto him his disciples: and of them he chose twelve, whom also he named apostles;"

Luke 6:22: "Blessed are ye, when men shall hate you, and when they shall separate you from their company, and shall reproach you, and cast out your name as evil, for the Son of man's sake."

Luke 6:26: "Woe unto you, when all men shall speak well of you! for so did their fathers to the false prophets."

Luke 6:42: "Either how canst thou say to thy brother, Brother, let me pull out the mote that is in thine eye, when thou thyself beholdest not the beam that is in thine own eye? Thou hypocrite, cast out first the beam out of thine own eye, and then shalt thou see clearly to pull out the mote that is in thy brother's eye."

Luke 6:48: "He is like a man which built an house, and digged deep, and laid the foundation on a rock: and when the flood arose, the stream beat vehemently upon that house, and could not shake it: for it was founded upon a rock."

Luke 7:1: "Now when he had ended all his sayings in the audience of the people, he entered into Capernaum."

Luke 7:3: "And when he heard of Jesus, he sent unto him the elders of the Jews, beseeching him that he would come and heal his servant."

Luke 7:4: "And when they came to Jesus, they besought him instantly, saying, That he was worthy for whom he should do this:"

Luke 7:6: "Then Jesus went with them. And when he was now not far from the house, the centurion sent friends to him, saying unto him, Lord, trouble not thyself: for I am not worthy that thou shouldest enter under my roof:"

Luke 7:9: "When Jesus heard these things, he marvelled at him, and turned him about, and said unto the people that followed him, I say unto you, I have not found so great faith, no, not in Israel."

Luke 7:12: "Now when he came nigh to the gate of the city, behold, there was a dead man carried out, the only son of his mother, and she was a widow: and much people of the city was with her."

Luke 7:13: "And when the Lord saw her, he had compassion on her, and said unto her, Weep not."

Luke 7:20: "When the men were come unto him, they said, John Baptist hath sent us unto thee, saying, Art thou he that should come? or look we for another?"

Luke 7:24: "And when the messengers of John were departed, he began to speak unto the people concerning John, What went ye out into the wilderness for to see? A reed shaken with the wind?"

Luke 7:37: "And, behold, a woman in the city, which was a sinner, when she knew that Jesus sat at meat in the Pharisee's house, brought an alabaster box of ointment,"

Luke 7:39: "Now when the Pharisee which had bidden him saw it, he spake within himself, saying, This man, if he were a prophet, would have known who and what manner of woman this is that toucheth him: for she is a sinner."

Luke 7:42: "And when they had nothing to pay, he frankly forgave them both. Tell me therefore, which of them will love him most?"

Luke 8:4: "And when much people were gathered together, and were come to him out of every city, he spake by a parable:"

Luke 8:8: "And other fell on good ground, and sprang up, and bare fruit an hundredfold. And when he had said these things, he cried, He that hath ears to hear, let him hear."

Luke 8:13: "They on the rock are they, which, when they hear, receive the word with joy; and these have no root, which for a while believe, and in time of temptation fall away."

Luke 8:14: "And that which fell among thorns are they, which, when they have heard, go forth, and are choked with cares and riches and pleasures of this life, and bring no fruit to perfection."

Luke 8:16: "No man, when he hath lighted a candle, covereth it with a vessel, or putteth it under a bed; but setteth it on a candlestick, that they which enter in may see the light."

Luke 8:27: "And when he went forth to land, there met him out of the city a certain man, which had devils long time, and ware no clothes, neither abode in any house, but in the tombs."

Luke 8:28: "When he saw Jesus, he cried out, and fell down before him, and with a loud voice said, What have I to do with thee, Jesus, thou Son of God most high? I beseech thee, torment me not."

Luke 8:34: "When they that fed them saw what was done, they fled, and went and told it in the city and in the country."

Luke 8:40: "And it came to pass, that, when Jesus was returned, the people gladly received him: for they were all waiting for him."

Luke 8:45: "And Jesus said, Who touched me? When all denied, Peter and they that were with him said, Master, the multitude throng thee and press thee, and sayest thou, Who touched me?"

Luke 8:47: "And when the woman saw that she was not hid, she came trembling, and falling down before him, she declared unto him before all the people for what cause she had touched him, and how she was healed immediately."

Luke 8:50: "But when Jesus heard it, he answered him, saying, Fear not: believe only, and she shall be made whole."

Luke 8:51: "And when he came into the house, he suffered no man to go in, save Peter, and James, and John, and the father and the mother of the maiden."

Luke 9:5: "And whosoever will not receive you, when ye go out of that city, shake off the very dust from your feet for a testimony against them."

Luke 9:10: "And the apostles, when they were returned, told him all that they had done. And he took them, and went aside privately into a desert place belonging to the city called Bethsaida."

Luke 9:11: "And the people, when they knew it, followed him: and he received them, and spake unto them of the kingdom of God, and healed them that had need of healing."

Luke 9:12: "And when the day began to wear away, then came the twelve, and said unto him, Send

the multitude away, that they may go into the towns and country round about, and lodge, and get victuals: for we are here in a desert place."

Luke 9:26: "For whosoever shall be ashamed of me and of my words, of him shall the Son of man be ashamed, when he shall come in his own glory, and in his Father's, and of the holy angels."

Luke 9:32: "But Peter and they that were with him were heavy with sleep: and when they were awake, they saw his glory, and the two men that stood with him."

Luke 9:36: "And when the voice was past, Jesus was found alone. And they kept it close, and told no man in those days any of those things which they had seen."

Luke 9:37: "And it came to pass, that on the next day, when they were come down from the hill, much people met him."

Luke 9:51: "And it came to pass, when the time was come that he should be received up, he stedfastly set his face to go to Jerusalem,"

Luke 9:54: "And when his disciples James and John saw this, they said, Lord, wilt thou that we command fire to come down from heaven, and consume them, even as Elias did?"

Luke 10:31: "And by chance there came down a certain priest that way: and when he saw him, he passed by on the other side."

Luke 10:32: "And likewise a Levite, when he was at the place, came and looked on him, and passed by on the other side."

Luke 10:33: "But a certain Samaritan, as he journeyed, came where he was: and when he saw him, he had compassion on him,"

Luke 10:35: "And on the morrow when he departed, he took out two pence, and gave them to the host, and said unto him, Take care of him; and whatsoever thou spendest more, when I come again, I will repay thee."

Luke 11:1: "And it came to pass, that, as he was praying in a certain place, when he ceased, one of his disciples said unto him, Lord, teach us to pray, as John also taught his disciples."

Luke 11:2: "And he said unto them, When ye pray, say, Our Father which art in heaven, Hallowed be thy name. Thy kingdom come. Thy will be done, as in heaven, so in earth."

Luke 11:14: "And he was casting out a devil, and it was dumb. And it came to pass, when the devil was gone out, the dumb spake; and the people wondered."

Luke 11:21: "When a strong man armed keepeth his palace, his goods are in peace:"

Luke 11:22: "But when a stronger than he shall come upon him, and overcome him, he taketh from him all his armour wherein he trusted, and divideth his spoils."

Luke 11:24: "When the unclean spirit is gone out of a man, he walketh through dry places, seeking rest; and finding none, he saith, I will return unto my house whence I came out."

Luke 11:25: "And when he cometh, he findeth it swept and garnished."

Luke 11:29: "And when the people were gathered thick together, he began to say, This is an evil generation: they seek a sign; and there shall no sign be given it, but the sign of Jonas the prophet."

Luke 11:33: "No man, when he hath lighted a candle, putteth it in a secret place, neither under a bushel, but on a candlestick, that they which come in may see the light."

Luke 11:34: "The light of the body is the eye: therefore when thine eye is single, thy whole body also is full of light; but when thine eye is evil, thy body also is full of darkness."

Luke 11:36: "If thy whole body therefore be full of light, having no part dark, the whole shall be full of light, as when the bright shining of a candle doth give thee light."

Luke 11:38: "And when the Pharisee saw it, he marvelled that he had not first washed before dinner."

Luke 12:1: "In the mean time, when there were gathered together an innumerable multitude of people, insomuch that they trode one upon another, he began to say unto his disciples first of all, Beware ye of the leaven of the Pharisees, which is hypocrisy."

Luke 12:11: "And when they bring you unto the synagogues, and unto magistrates, and powers, take ye no thought how or what thing ye shall answer, or what ye shall say:"

Luke 12:36: "And ye yourselves like unto men that wait for their lord, when he will return from the wedding; that when he cometh and knocketh, they may open unto him immediately."

Luke 12:37: "Blessed are those servants, whom the lord when he cometh shall find watching: verily I say unto you, that he shall gird himself, and make them to sit down to meat, and will come forth and serve them."

Luke 12:40: "Be ye therefore ready also: for the Son of man cometh at an hour when ye think not."

Luke 12:43: "Blessed is that servant, whom his lord when he cometh shall find so doing."

Luke 12:46: "The lord of that servant will come in a day when he looketh not for him, and at an hour when he is not aware, and will cut him in sunder, and will appoint him his portion with the unbelievers."

Luke 12:54: "And he said also to the people, When ye see a cloud rise out of the west, straightway ye say, There cometh a shower; and so it is."

Luke 12:55: "And when ye see the south wind blow, ye say, There will be heat; and it cometh to pass."

Luke 12:58: "When thou goest with thine adversary to the magistrate, as thou art in the way, give diligence that thou mayest be delivered from him; lest he hale thee to the judge, and the judge deliver thee to the officer, and the officer cast thee into prison."

Luke 13:12: "And when Jesus saw her, he called her to him, and said unto her, Woman, thou art loosed from thine infirmity."

Luke 13:17: "And when he had said these things, all his adversaries were ashamed: and all the people rejoiced for all the glorious things that were done by him."

Luke 13:25: "When once the master of the house is risen up, and hath shut to the door, and ye begin to stand without, and to knock at the door, saying, Lord, Lord, open unto us; and he shall answer and say unto you, I know you not whence ye are:"

Luke 13:28: "There shall be weeping and gnashing of teeth, when ye shall see Abraham, and Isaac, and Jacob, and all the prophets, in the kingdom of God, and you yourselves thrust out."

Luke 13:35: "Behold, your house is left unto you desolate: and verily I say unto you, Ye shall not see me, until the time come when ye shall say, Blessed is he that cometh in the name of the Lord."

Luke 14:7: "And he put forth a parable to those which were bidden, when he marked how they chose out the chief rooms; saying unto them."

Luke 14:8: "When thou art bidden of any man to a wedding, sit not down in the highest room; lest a more honourable man than thou be bidden of him;"

Luke 14:10: "But when thou art bidden, go and sit down in the lowest room; that when he that bade thee cometh, he may say unto thee, Friend, go up higher: then shalt thou have worship in the presence of them that sit at meat with thee."

Luke 14:12: "Then said he also to him that bade him, When thou makest a dinner or a supper, call not thy friends, nor thy brethren, neither thy kinsmen, nor thy rich neighbours; lest they also bid thee again, and a recompence be made thee."

Luke 14:13: "But when thou makest a feast, call the poor, the maimed, the lame, the blind:"

Luke 14:15: "And when one of them that sat at meat with him heard these things, he said unto him, Blessed is he that shall eat bread in the kingdom of God."

Luke 15:5: "And when he hath found it, he layeth it on his shoulders, rejoicing."

Luke 15:6: "And when he cometh home, he calleth together his friends and neighbours, saying unto them, Rejoice with me; for I have found my sheep which was lost."

Luke 15:9: "And when she hath found it, she calleth her friends and her neighbours together, saying, Rejoice with me; for I have found the piece which I had lost."

Luke 15:14: "And when he had spent all, there arose a mighty famine in that land; and he began to be in want."

Luke 15:17: "And when he came to himself, he said, How many hired servants of my father's have bread enough and to spare, and I perish with hunger!"

Luke 15:20: "And he arose, and came to his father. But when he was yet a great way off, his father saw him, and had compassion, and ran, and fell on his neck, and kissed him."

Luke 16:4: "I am resolved what to do, that, when I am put out of the stewardship, they may receive me into their houses."

Luke 16:9: "And I say unto you, Make to yourselves friends of the mammon of unrighteousness; that, when ye fail, they may receive you into everlasting habitations."

Luke 17:7: "But which of you, having a servant plowing or feeding cattle, will say unto him by and by, when he is come from the field, Go and sit down to meat?"

Luke 17:10: "So likewise ye, when ye shall have done all those things which are commanded you, say, We are unprofitable servants: we have done that which was our duty to do."

Luke 17:14: "And when he saw them, he said unto them, Go shew yourselves unto the priests. And it came to pass, that, as they went, they were cleansed."

Luke 17:15: "And one of them, when he saw that he was healed, turned back, and with a loud voice glorified God,"

Luke 17:20: "And when he was demanded of the Pharisees, when the kingdom of God should come, he answered them and said, The kingdom of God cometh not with observation:"

Luke 17:22: "And he said unto the disciples, The days will come, when ye shall desire to see one of the days of the Son of man, and ye shall not see it."

Luke 17:30: "Even thus shall it be in the day when the Son of man is revealed."

Luke 18:8: "I tell you that he will avenge them speedily. Nevertheless when the Son of man cometh, shall he find faith on the earth?"

Luke 18:15: "And they brought unto him also infants, that he would touch them: but when his disciples saw it, they rebuked them."

Luke 18:22: "Now when Jesus heard these things, he said unto him, Yet lackest thou one thing: sell all that thou hast, and distribute unto the poor, and thou shalt have treasure in heaven: and come, follow me."

Luke 18:23: "And when he heard this, he was very sorrowful: for he was very rich."

Luke 18:24: "And when Jesus saw that he was very sorrowful, he said, How hardly shall they that have riches enter into the kingdom of God!"

Luke 18:40: "And Jesus stood, and commanded him to be brought unto him: and when he was come near, he asked him,"

Luke 18:43: "And immediately he received his sight, and followed him, glorifying God: and all the people, when they saw it, gave praise unto God."

Luke 19:5: "And when Jesus came to the place, he looked up, and saw him, and said unto him, Zacchaeus, make haste, and come down; for to day I must abide at thy house."

Luke 19:7: "And when they saw it, they all murmured, saying, That he was gone to be guest with a man that is a sinner."

Luke 19:15: "And it came to pass, that when he was returned, having received the kingdom, then he commanded these servants to be called unto him, to whom he had given the money, that he might know how much every man had gained by trading."

Luke 19:28: "And when he had thus spoken, he went before, ascending up to Jerusalem."

Luke 19:29: "And it came to pass, when he was come nigh to Bethphage and Bethany, at the mount called the mount of Olives, he sent two of his disciples,"

Luke 19:37: "And when he was come nigh, even now at the descent of the mount of Olives, the whole multitude of the disciples began to rejoice and praise God with a loud voice for all the mighty works that they had seen;"

Luke 19:41: "And when he was come near, he beheld the city, and wept over it,"

Luke 20:13: "Then said the lord of the vineyard, What shall I do? I will send my beloved son: it may be they will reverence him when they see him."

Luke 20:14: "But when the husbandmen saw him, they reasoned among themselves, saying, This is

the heir: come, let us kill him, that the inheritance may be ours."

Luke 20:16: "He shall come and destroy these husbandmen, and shall give the vineyard to others. And when they heard it, they said, God forbid."

Luke 20:37: "Now that the dead are raised, even Moses shewed at the bush, when he calleth the Lord the God of Abraham, and the God of Isaac, and the God of Jacob."

Luke 21:7: "And they asked him, saying, Master, but when shall these things be? and what sign will there be when these things shall come to pass?"

Luke 21:9: "But when ye shall hear of wars and commotions, be not terrified: for these things must first come to pass; but the end is not by and by."

Luke 21:20: "And when ye shall see Jerusalem compassed with armies, then know that the desolation thereof is nigh."

Luke 21:28: "And when these things begin to come to pass, then look up, and lift up your heads; for your redemption draweth nigh."

Luke 21:30: "When they now shoot forth, ye see and know of your own selves that summer is now nigh at hand."

Luke 21:31: "So likewise ye, when ye see these things come to pass, know ye that the kingdom of God is nigh at hand."

Luke 22:7: "Then came the day of unleavened bread, when the passover must be killed."

Luke 22:10: "And he said unto them, Behold, when ye are entered into the city, there shall a man meet you, bearing a pitcher of water; follow him into the house where he entereth in."

Luke 22:14: "And when the hour was come, he sat down, and the twelve apostles with him."

Luke 22:32: "But I have prayed for thee, that thy faith fail not: and when thou art converted, strengthen thy brethren."

Luke 22:35: "And he said unto them, When I sent you without purse, and scrip, and shoes, lacked ye any thing? And they said, Nothing."

Luke 22:40: "And when he was at the place, he said unto them, Pray that ye enter not into temptation."

Luke 22:45: "And when he rose up from prayer, and was come to his disciples, he found them sleeping for sorrow,"

Luke 22:49: "When they which were about him saw what would follow, they said unto him, Lord, shall we smite with the sword?"

Luke 22:53: "When I was daily with you in the temple, ye stretched forth no hands against me: but this is your hour, and the power of darkness."

Luke 22:55: "And when they had kindled a fire in the midst of the hall, and were set down together, Peter sat down among them."

Luke 22:64: "And when they had blindfolded him, they struck him on the face, and asked him, saying, Prophecy, who is it that smote thee?"

Luke 23:6: "When Pilate heard of Galilee, he asked whether the man were a Galilaean."

Luke 23:8: "And when Herod saw Jesus, he was exceeding glad: for he was desirous to see him of a long season, because he had heard many things of him; and he hoped to have seen some miracle done by him."

Luke 23:13: "And Pilate, when he had called together the chief priests and the rulers and the people,"

Luke 23:33: "And when they were come to the place, which is called Calvary, there they crucified him, and the malefactors, one on the right hand, and the other on the left."

Luke 23:42: "And he said unto Jesus, Lord, remember me when thou comest into thy kingdom."

Luke 23:46: "And when Jesus had cried with a loud voice, he said, Father, into thy hands I commend my spirit: and having said thus, he gave up the ghost."

Luke 23:47: "Now when the centurion saw what was done, he glorified God, saying, Certainly this was a righteous man."

Luke 24:6: "He is not here, but is risen: remember how he spake unto you when he was yet in Galilee,"

Luke 24:23: "And when they found not his body, they came, saying, that they had also seen a vision of angels, which said that he was alive."

Luke 24:40: "And when he had thus spoken, he shewed them his hands and his feet."

John 1:19: "And this is the record of John, when the Jews sent priests and Levites from Jerusalem to ask him, Who art thou?"

John 1:42: "And he brought him to Jesus. And when Jesus beheld him, he said, Thou art Simon the son of Jona: thou shalt be called Cephas, which is by interpretation, A stone."

John 1:48: "Nathanael saith unto him, Whence knowest thou me? Jesus answered and said unto him, Before that Philip called thee, when thou wast under the fig tree, I saw thee."

John 2:3: "And when they wanted wine, the mother of Jesus saith unto him, They have no wine."

John 2:9: "When the ruler of the feast had tasted the water that was made wine, and knew not whence it was: (but the servants which drew the water knew;) the governor of the feast called the bridegroom,"

John 2:10: "And saith unto him, Every man at the beginning doth set forth good wine; and when men have well drunk, then that which is worse: but thou hast kept the good wine until now."

John 2:15: "And when he had made a scourge of small cords, he drove them all out of the temple, and the sheep, and the oxen; and poured out the changers' money, and overthrew the tables;"

John 2:22: "When therefore he was risen from the dead, his disciples remembered that he had said this unto them; and they believed the scripture, and the word which Jesus had said."

John 2:23: "Now when he was in Jerusalem at the passover, in the feast day, many believed in his name, when they saw the miracles which he did."

John 3:4: "Nicodemus saith unto him, How can a man be born when he is old? can he enter the second time into his mother's womb, and be born?"

John 4:1: "When therefore the LORD knew how the Pharisees had heard that Jesus made and baptized more disciples than John,"

John 4:21: "Jesus saith unto her, Woman, believe me, the hour cometh, when ye shall neither in this mountain, nor yet at Jerusalem, worship the Father."

John 4:23: "But the hour cometh, and now is, when the true worshippers shall worship the Father in spirit and in truth: for the Father seeketh such to worship him."

John 4:25: "The woman saith unto him, I know that Messias cometh, which is called Christ: when he is come, he will tell us all things."

John 4:40: "So when the Samaritans were come unto him, they besought him that he would tarry with them: and he abode there two days."

John 4:45: "Then when he was come into Galilee, the Galilaeans received him, having seen all the things that he did at Jerusalem at the feast: for they also went unto the feast."

John 4:47: "When he heard that Jesus was come out of Judaea into Galilee, he went unto him, and besought him that he would come down, and heal his son: for he was at the point of death."

John 4:52: "Then enquired he of them the hour when he began to amend. And they said unto him, Yesterday at the seventh hour the fever left him."

John 4:54: "This is again the second miracle that Jesus did, when he was come out of Judaea into Galilee."

John 5:6: "When Jesus saw him lie, and knew that he had been now a long time in that case, he saith unto him, Wilt thou be made whole?"

John 5:7: "The impotent man answered him, Sir, I have no man, when the water is troubled, to put me into the pool: but while I am coming, another steppeth down before me."

John 5:25: "Verily, verily, I say unto you, The hour is coming, and now is, when the dead shall hear the voice of the Son of God: and they that hear shall live."

John 6:5: "When Jesus then lifted up his eyes, and saw a great company come unto him, he saith

unto Philip, Whence shall we buy bread, that these may eat?"

John 6:11: "And Jesus took the loaves; and when he had given thanks, he distributed to the disciples, and the disciples to them that were set down; and likewise of the fishes as much as they would."

John 6:12: "When they were filled, he said unto his disciples, Gather up the fragments that remain, that nothing be lost."

John 6:14: "Then those men, when they had seen the miracle that Jesus did, said, This is of a truth that prophet that should come into the world."

John 6:15: "When Jesus therefore perceived that they would come and take him by force, to make him a king, he departed again into a mountain himself alone."

John 6:16: "And when even was now come, his disciples went down unto the sea,"

John 6:19: "So when they had rowed about five and twenty or thirty furlongs, they see Jesus walking on the sea, and drawing nigh unto the ship: and they were afraid."

John 6:22: "The day following, when the people which stood on the other side of the sea saw that there was none other boat there, save that one whereinto his disciples were entered, and that Jesus went not with his disciples into the boat, but that his disciples were gone away alone;"

John 6:24: "When the people therefore saw that Jesus was not there, neither his disciples, they also took shipping, and came to Capernaum, seeking for Jesus."

John 6:25: "And when they had found him on the other side of the sea, they said unto him, Rabbi, when camest thou hither?"

John 6:60: "Many therefore of his disciples, when they had heard this, said, This is an hard saying; who can hear it?"

John 6:61: "When Jesus knew in himself that his disciples murmured at it, he said unto them, Doth this offend you?"

John 7:9: "When he had said these words unto them, he abode still in Galilee."

John 7:10: "But when his brethren were gone up, then went he also up unto the feast, not openly, but as it were in secret."

John 7:27: "Howbeit we know this man whence he is: but when Christ cometh, no man knoweth whence he is."

John 7:31: "And many of the people believed on him, and said, When Christ cometh, will he do more miracles than these which this man hath done?"

John 7:40: "Many of the people therefore, when they heard this saying, said, Of a truth this is the Prophet."

John 8:3: "And the scribes and Pharisees brought unto him a woman taken in adultery; and when they had set her in the midst,"

John 8:7: "So when they continued asking him, he lifted up himself, and said unto them, He that is without sin among you, let him first cast a stone at her."

John 8:10: "When Jesus had lifted up himself, and saw none but the woman, he said unto her, Woman, where are those thine accusers? hath no man condemned thee?"

John 8:28: "Then said Jesus unto them, When ye have lifted up the Son of man, then shall ye know that I am he, and that I do nothing of myself; but as my Father hath taught me, I speak these things."

John 8:44: "Ye are of your father the devil, and the lusts of your father ye will do. He was a murderer from the beginning, and abode not in the truth, because there is no truth in him. When he speaketh a lie, he speaketh of his own: for he is a liar, and the father of it."

John 9:4: "I must work the works of him that sent me, while it is day: the night cometh, when no man can work."

John 9:6: "When he had thus spoken, he spat on the ground, and made clay of the spittle, and he anointed the eyes of the blind man with the clay,"

John 9:14: "And it was the sabbath day when Jesus made the clay, and opened his eyes."

John 9:35: "Jesus heard that they had cast him out; and when he had found him, he said unto him,



Dost thou believe on the Son of God?"

John 10:4: "And when he putteth forth his own sheep, he goeth before them, and the sheep follow him: for they know his voice."

John 11:4: "When Jesus heard that, he said, This sickness is not unto death, but for the glory of God, that the Son of God might be glorified thereby."

John 11:6: "When he had heard therefore that he was sick, he abode two days still in the same place where he was."

John 11:17: "Then when Jesus came, he found that he had lain in the grave four days already."

John 11:28: "And when she had so said, she went her way, and called Mary her sister secretly, saying, The Master is come, and calleth for thee."

John 11:31: "The Jews then which were with her in the house, and comforted her, when they saw Mary, that she rose up hastily and went out, followed her, saying, She goeth unto the grave to weep there."

John 11:32: "Then when Mary was come where Jesus was, and saw him, she fell down at his feet, saying unto him, Lord, if thou hadst been here, my brother had not died."

John 11:33: "When Jesus therefore saw her weeping, and the Jews also weeping which came with her, he groaned in the spirit, and was troubled."

John 11:43: "And when he thus had spoken, he cried with a loud voice, Lazarus, come forth."

John 12:12: "On the next day much people that were come to the feast, when they heard that Jesus was coming to Jerusalem,"

John 12:14: "And Jesus, when he had found a young ass, sat thereon; as it is written,"

John 12:16: "These things understood not his disciples at the first: but when Jesus was glorified, then remembered they that these things were written of him, and that they had done these things unto him."

John 12:17: "The people therefore that was with him when he called Lazarus out of his grave, and raised him from the dead, bare record."

John 12:41: "These things said Esaias, when he saw his glory, and spake of him."

John 13:1: "Now before the feast of the passover, when Jesus knew that his hour was come that he should depart out of this world unto the Father, having loved his own which were in the world, he loved them unto the end."

John 13:19: "Now I tell you before it come, that, when it is come to pass, ye may believe that I am he."

John 13:21: "When Jesus had thus said, he was troubled in spirit, and testified, and said, Verily, verily, I say unto you, that one of you shall betray me."

John 13:26: "Jesus answered, He it is, to whom I shall give a sop, when I have dipped it. And when he had dipped the sop, he gave it to Judas Iscariot, the son of Simon."

John 13:31: "Therefore, when he was gone out, Jesus said, Now is the Son of man glorified, and God is glorified in him."

John 14:29: "And now I have told you before it come to pass, that, when it is come to pass, ye might believe."

John 15:26: "But when the Comforter is come, whom I will send unto you from the Father, even the Spirit of truth, which proceedeth from the Father, he shall testify of me:"

John 16:4: "But these things have I told you, that when the time shall come, ye may remember that I told you of them. And these things I said not unto you at the beginning, because I was with you."

John 16:8: "And when he is come, he will reprove the world of sin, and of righteousness, and of judgment:"

John 16:13: "Howbeit when he, the Spirit of truth, is come, he will guide you into all truth: for he shall not speak of himself; but whatsoever he shall hear, that shall he speak: and he will shew you things to come."

John 16:21: "A woman when she is in travail hath sorrow, because her hour is come: but as soon as

she is delivered of the child, she remembereth no more the anguish, for joy that a man is born into the world."

John 16:25: "These things have I spoken unto you in proverbs: but the time cometh, when I shall no more speak unto you in proverbs, but I shall shew you plainly of the Father."

John 18:1: "When Jesus had spoken these words, he went forth with his disciples over the brook Cedron, where was a garden, into the which he entered, and his disciples."

John 18:22: "And when he had thus spoken, one of the officers which stood by struck Jesus with the palm of his hand, saying, Answerest thou the high priest so?"

John 18:38: "Pilate saith unto him, What is truth? And when he had said this, he went out again unto the Jews, and saith unto them, I find in him no fault at all."

John 19:6: "When the chief priests therefore and officers saw him, they cried out, saying, Crucify him, crucify him. Pilate saith unto them, Take ye him, and crucify him: for I find no fault in him."

John 19:8: "When Pilate therefore heard that saying, he was the more afraid;"

John 19:13: "When Pilate therefore heard that saying, he brought Jesus forth, and sat down in the judgment seat in a place that is called the Pavement, but in the Hebrew, Gabbatha."

John 19:23: "Then the soldiers, when they had crucified Jesus, took his garments, and made four parts, to every soldier a part; and also his coat: now the coat was without seam, woven from the top throughout."

John 19:26: "When Jesus therefore saw his mother, and the disciple standing by, whom he loved, he saith unto his mother, Woman, behold thy son!"

John 19:30: "When Jesus therefore had received the vinegar, he said, It is finished: and he bowed his head, and gave up the ghost."

John 19:33: "But when they came to Jesus, and saw that he was dead already, they brake not his legs:"

John 20:1: "The first day of the week cometh Mary Magdalene early, when it was yet dark, unto the sepulchre, and seeth the stone taken away from the sepulchre."

John 20:14: "And when she had thus said, she turned herself back, and saw Jesus standing, and knew not that it was Jesus."

John 20:19: "Then the same day at evening, being the first day of the week, when the doors were shut where the disciples were assembled for fear of the Jews, came Jesus and stood in the midst, and saith unto them, Peace be unto you."

John 20:20: "And when he had so said, he shewed unto them his hands and his side. Then were the disciples glad, when they saw the LORD."

John 20:22: "And when he had said this, he breathed on them, and saith unto them, Receive ye the Holy Ghost:"

John 20:24: "But Thomas, one of the twelve, called Didymus, was not with them when Jesus came."

John 21:4: "But when the morning was now come, Jesus stood on the shore: but the disciples knew not that it was Jesus."

John 21:7: "Therefore that disciple whom Jesus loved saith unto Peter, It is the Lord. Now when Simon Peter heard that it was the Lord, he girt his fisher's coat unto him, (for he was naked,) and did cast himself into the sea."

John 21:15: "So when they had dined, Jesus saith to Simon Peter, Simon, son of Jonas, lovest thou me more than these? He saith unto him, Yea, Lord; thou knowest that I love thee. He saith unto him, Feed my lambs."

John 21:18: "Verily, verily, I say unto thee, When thou wast young, thou girdest thyself, and walkedst whither thou wouldest: but when thou shalt be old, thou shalt stretch forth thy hands, and another shall gird thee, and carry thee whither thou wouldest not."

John 21:19: "This spake he, signifying by what death he should glorify God. And when he had spoken this, he saith unto him, Follow me."

Acts 1:6: "When they therefore were come together, they asked of him, saying, Lord, wilt thou at

this time restore again the kingdom to Israel?"

Acts 1:9: "And when he had spoken these things, while they beheld, he was taken up; and a cloud received him out of their sight."

Acts 1:13: "And when they were come in, they went up into an upper room, where abode both Peter, and James, and John, and Andrew, Philip, and Thomas, Bartholomew, and Matthew, James the son of Alphaeus, and Simon Zelotes, and Judas the brother of James."

Acts 2:1: "And when the day of Pentecost was fully come, they were all with one accord in one place."

Acts 2:6: "Now when this was noised abroad, the multitude came together, and were confounded, because that every man heard them speak in his own language."

Acts 2:37: "Now when they heard this, they were pricked in their heart, and said unto Peter and to the rest of the apostles, Men and brethren, what shall we do?"

Acts 3:12: "And when Peter saw it, he answered unto the people, Ye men of Israel, why marvel ye at this? or why look ye so earnestly on us, as though by our own power or holiness we had made this man to walk?"

Acts 3:13: "The God of Abraham, and of Isaac, and of Jacob, the God of our fathers, hath glorified his Son Jesus; whom ye delivered up, and denied him in the presence of Pilate, when he was determined to let him go."

Acts 3:19: "Repent ye therefore, and be converted, that your sins may be blotted out, when the times of refreshing shall come from the presence of the Lord."

Acts 4:7: "And when they had set them in the midst, they asked, By what power, or by what name, have ye done this?"

Acts 4:13: "Now when they saw the boldness of Peter and John, and perceived that they were unlearned and ignorant men, they marvelled; and they took knowledge of them, that they had been with Jesus."

Acts 4:15: "But when they had commanded them to go aside out of the council, they conferred among themselves,"

Acts 4:21: "So when they had further threatened them, they let them go, finding nothing how they might punish them, because of the people: for all men glorified God for that which was done."

Acts 4:24: "And when they heard that, they lifted up their voice to God with one accord, and said, Lord, thou art God, which hast made heaven, and earth, and the sea, and all that in them is:"

Acts 4:31: "And when they had prayed, the place was shaken where they were assembled together; and they were all filled with the Holy Ghost, and they spake the word of God with boldness."

Acts 5:7: "And it was about the space of three hours after, when his wife, not knowing what was done, came in."

Acts 5:21: "And when they heard that, they entered into the temple early in the morning, and taught. But the high priest came, and they that were with him, and called the council together, and all the senate of the children of Israel, and sent to the prison to have them brought."

Acts 5:22: "But when the officers came, and found them not in the prison, they returned and told,"

Acts 5:23: "Saying, The prison truly found we shut with all safety, and the keepers standing without before the doors: but when we had opened, we found no man within."

Acts 5:24: "Now when the high priest and the captain of the temple and the chief priests heard these things, they doubted of them whereunto this would grow."

Acts 5:27: "And when they had brought them, they set them before the council: and the high priest asked them,"

Acts 5:33: "When they heard that, they were cut to the heart, and took counsel to slay them."

Acts 5:40: "And to him they agreed: and when they had called the apostles, and beaten them, they commanded that they should not speak in the name of Jesus, and let them go."

Acts 6:1: "And in those days, when the number of the disciples was multiplied, there arose a murmuring of the Grecians against the Hebrews, because their widows were neglected in the daily

ministration."

Acts 6:6: "Whom they set before the apostles: and when they had prayed, they laid their hands on them."

Acts 7:2: "And he said, Men, brethren, and fathers, hearken; The God of glory appeared unto our father Abraham, when he was in Mesopotamia, before he dwelt in Charran,"

Acts 7:4: "Then came he out of the land of the Chaldaeans, and dwelt in Charran: and from thence, when his father was dead, he removed him into this land, wherein ye now dwell."

Acts 7:5: "And he gave him none inheritance in it, no, not so much as to set his foot on: yet he promised that he would give it to him for a possession, and to his seed after him, when as yet he had no child."

Acts 7:12: "But when Jacob heard that there was corn in Egypt, he sent out our fathers first."

Acts 7:17: "But when the time of the promise drew nigh, which God had sworn to Abraham, the people grew and multiplied in Egypt,"

Acts 7:21: "And when he was cast out, Pharaoh's daughter took him up, and nourished him for her own son."

Acts 7:23: "And when he was full forty years old, it came into his heart to visit his brethren the children of Israel."

Acts 7:30: "And when forty years were expired, there appeared to him in the wilderness of mount Sina an angel of the Lord in a flame of fire in a bush."

Acts 7:31: "When Moses saw it, he wondered at the sight: and as he drew near to behold it, the voice of the LORD came unto him,"

Acts 7:54: "When they heard these things, they were cut to the heart, and they gnashed on him with their teeth."

Acts 7:60: "And he kneeled down, and cried with a loud voice, Lord, lay not this sin to their charge. And when he had said this, he fell asleep."

Acts 8:12: "But when they believed Philip preaching the things concerning the kingdom of God, and the name of Jesus Christ, they were baptized, both men and women."

Acts 8:13: "Then Simon himself believed also: and when he was baptized, he continued with Philip, and wondered, beholding the miracles and signs which were done."

Acts 8:14: "Now when the apostles which were at Jerusalem heard that Samaria had received the word of God, they sent unto them Peter and John:"

Acts 8:15: "Who, when they were come down, prayed for them, that they might receive the Holy Ghost:"

Acts 8:18: "And when Simon saw that through laying on of the apostles' hands the Holy Ghost was given, he offered them money,"

Acts 8:25: "And they, when they had testified and preached the word of the Lord, returned to Jerusalem, and preached the gospel in many villages of the Samaritans."

Acts 8:39: "And when they were come up out of the water, the Spirit of the Lord caught away Philip, that the eunuch saw him no more: and he went on his way rejoicing."

Acts 9:8: "And Saul arose from the earth; and when his eyes were opened, he saw no man: but they led him by the hand, and brought him into Damascus."

Acts 9:19: "And when he had received meat, he was strengthened. Then was Saul certain days with the disciples which were at Damascus."

Acts 9:26: "And when Saul was come to Jerusalem, he assayed to join himself to the disciples: but they were all afraid of him, and believed not that he was a disciple."

Acts 9:30: "Which when the brethren knew, they brought him down to Caesarea, and sent him forth to Tarsus."

Acts 9:37: "And it came to pass in those days, that she was sick, and died: whom when they had washed, they laid her in an upper chamber."

Acts 9:39: "Then Peter arose and went with them. When he was come, they brought him into the

upper chamber: and all the widows stood by him weeping, and shewing the coats and garments which Dorcas made, while she was with them."

Acts 9:40: "But Peter put them all forth, and kneeled down, and prayed; and turning him to the body said, Tabitha, arise. And she opened her eyes: and when she saw Peter, she sat up."

Acts 9:41: "And he gave her his hand, and lifted her up, and when he had called the saints and widows, presented her alive."

Acts 10:4: "And when he looked on him, he was afraid, and said, What is it, Lord? And he said unto him, Thy prayers and thine alms are come up for a memorial before God."

Acts 10:7: "And when the angel which spake unto Cornelius was departed, he called two of his household servants, and a devout soldier of them that waited on him continually;"

Acts 10:8: "And when he had declared all these things unto them, he sent them to Joppa."

Acts 10:32: "Send therefore to Joppa, and call hither Simon, whose surname is Peter; he is lodged in the house of one Simon a tanner by the sea side: who, when he cometh, shall speak unto thee."

Acts 11:2: "And when Peter was come up to Jerusalem, they that were of the circumcision contended with him,"

Acts 11:6: "Upon the which when I had fastened mine eyes, I considered, and saw fourfooted beasts of the earth, and wild beasts, and creeping things, and fowls of the air."

Acts 11:18: "When they heard these things, they held their peace, and glorified God, saying, Then hath God also to the Gentiles granted repentance unto life."

Acts 11:20: "And some of them were men of Cyprus and Cyrene, which, when they were come to Antioch, spake unto the Grecians, preaching the LORD Jesus."

Acts 11:23: "Who, when he came, and had seen the grace of God, was glad, and exhorted them all, that with purpose of heart they would cleave unto the Lord."

Acts 11:26: "And when he had found him, he brought him unto Antioch. And it came to pass, that a whole year they assembled themselves with the church, and taught much people. And the disciples were called Christians first in Antioch."

Acts 12:4: "And when he had apprehended him, he put him in prison, and delivered him to four quaternions of soldiers to keep him; intending after Easter to bring him forth to the people."

Acts 12:6: "And when Herod would have brought him forth, the same night Peter was sleeping between two soldiers, bound with two chains: and the keepers before the door kept the prison."

Acts 12:10: "When they were past the first and the second ward, they came unto the iron gate that leadeth unto the city; which opened to them of his own accord: and they went out, and passed on through one street; and forthwith the angel departed from him."

Acts 12:11: "And when Peter was come to himself, he said, Now I know of a surety, that the LORD hath sent his angel, and hath delivered me out of the hand of Herod, and from all the expectation of the people of the Jews."

Acts 12:12: "And when he had considered the thing, he came to the house of Mary the mother of John, whose surname was Mark; where many were gathered together praying."

Acts 12:14: "And when she knew Peter's voice, she opened not the gate for gladness, but ran in, and told how Peter stood before the gate."

Acts 12:16: "But Peter continued knocking: and when they had opened the door, and saw him, they were astonished."

Acts 12:19: "And when Herod had sought for him, and found him not, he examined the keepers, and commanded that they should be put to death. And he went down from Judaea to Caesarea, and there abode."

Acts 12:25: "And Barnabas and Saul returned from Jerusalem, when they had fulfilled their ministry, and took with them John, whose surname was Mark."

Acts 13:3: "And when they had fasted and prayed, and laid their hands on them, they sent them away."

Acts 13:5: "And when they were at Salamis, they preached the word of God in the synagogues of

the Jews: and they had also John to their minister."

Acts 13:6: "And when they had gone through the isle unto Paphos, they found a certain sorcerer, a false prophet, a Jew, whose name was Barjesus:"

Acts 13:12: "Then the deputy, when he saw what was done, believed, being astonished at the doctrine of the Lord."

Acts 13:13: "Now when Paul and his company loosed from Paphos, they came to Perga in Pamphylia: and John departing from them returned to Jerusalem."

Acts 13:14: "But when they departed from Perga, they came to Antioch in Pisidia, and went into the synagogue on the sabbath day, and sat down."

Acts 13:17: "The God of this people of Israel chose our fathers, and exalted the people when they dwelt as strangers in the land of Egypt, and with an high arm brought he them out of it."

Acts 13:19: "And when he had destroyed seven nations in the land of Chanaan, he divided their land to them by lot."

Acts 13:22: "And when he had removed him, he raised up unto them David to be their king; to whom also he gave their testimony, and said, I have found David the son of Jesse, a man after mine own heart, which shall fulfil all my will."

Acts 13:24: "When John had first preached before his coming the baptism of repentance to all the people of Israel."

Acts 13:29: "And when they had fulfilled all that was written of him, they took him down from the tree, and laid him in a sepulchre."

Acts 13:42: "And when the Jews were gone out of the synagogue, the Gentiles besought that these words might be preached to them the next sabbath."

Acts 13:43: "Now when the congregation was broken up, many of the Jews and religious proselytes followed Paul and Barnabas: who, speaking to them, persuaded them to continue in the grace of God."

Acts 13:45: "But when the Jews saw the multitudes, they were filled with envy, and spake against those things which were spoken by Paul, contradicting and blaspheming."

Acts 13:48: "And when the Gentiles heard this, they were glad, and glorified the word of the Lord: and as many as were ordained to eternal life believed."

Acts 14:5: "And when there was an assault made both of the Gentiles, and also of the Jews with their rulers, to use them despitefully, and to stone them,"

Acts 14:11: "And when the people saw what Paul had done, they lifted up their voices, saying in the speech of Lycaonia, The gods are come down to us in the likeness of men."

Acts 14:14: "Which when the apostles, Barnabas and Paul, heard of, they rent their clothes, and ran in among the people, crying out,"

Acts 14:21: "And when they had preached the gospel to that city, and had taught many, they returned again to Lystra, and to Iconium, and Antioch,"

Acts 14:23: "And when they had ordained them elders in every church, and had prayed with fasting, they commended them to the Lord, on whom they believed."

Acts 14:25: "And when they had preached the word in Perga, they went down into Attalia:"

Acts 14:27: "And when they were come, and had gathered the church together, they rehearsed all that God had done with them, and how he had opened the door of faith unto the Gentiles."

Acts 15:2: "When therefore Paul and Barnabas had no small dissension and disputation with them, they determined that Paul and Barnabas, and certain other of them, should go up to Jerusalem unto the apostles and elders about this question."

Acts 15:4: "And when they were come to Jerusalem, they were received of the church, and of the apostles and elders, and they declared all things that God had done with them."

Acts 15:7: "And when there had been much disputing, Peter rose up, and said unto them, Men and brethren, ye know how that a good while ago God made choice among us, that the Gentiles by my mouth should hear the word of the gospel, and believe."

Acts 15:30: "So when they were dismissed, they came to Antioch: and when they had gathered the multitude together, they delivered the epistle:"

Acts 15:31: "Which when they had read, they rejoiced for the consolation."

Acts 16:6: "Now when they had gone throughout Phrygia and the region of Galatia, and were forbidden of the Holy Ghost to preach the word in Asia,"

Acts 16:15: "And when she was baptized, and her household, she besought us, saying, If ye have judged me to be faithful to the Lord, come into my house, and abide there. And she constrained us."

Acts 16:19: "And when her masters saw that the hope of their gains was gone, they caught Paul and Silas, and drew them into the marketplace unto the rulers,"

Acts 16:23: "And when they had laid many stripes upon them, they cast them into prison, charging the jailor to keep them safely:"

Acts 16:34: "And when he had brought them into his house, he set meat before them, and rejoiced, believing in God with all his house."

Acts 16:35: "And when it was day, the magistrates sent the serjeants, saying, Let those men go."

Acts 16:38: "And the serjeants told these words unto the magistrates: and they feared, when they heard that they were Romans."

Acts 16:40: "And they went out of the prison, and entered into the house of Lydia: and when they had seen the brethren, they comforted them, and departed."

Acts 17:1: "Now when they had passed through Amphipolis and Apollonia, they came to Thessalonica, where was a synagogue of the Jews:"

Acts 17:6: "And when they found them not, they drew Jason and certain brethren unto the rulers of the city, crying, These that have turned the world upside down are come hither also;"

Acts 17:8: "And they troubled the people and the rulers of the city, when they heard these things."

Acts 17:9: "And when they had taken security of Jason, and of the other, they let them go."

Acts 17:13: "But when the Jews of Thessalonica had knowledge that the word of God was preached of Paul at Berea, they came thither also, and stirred up the people."

Acts 17:16: "Now while Paul waited for them at Athens, his spirit was stirred in him, when he saw the city wholly given to idolatry."

Acts 17:32: "And when they heard of the resurrection of the dead, some mocked: and others said, We will hear thee again of this matter."

Acts 18:5: "And when Silas and Timotheus were come from Macedonia, Paul was pressed in the spirit, and testified to the Jews that Jesus was Christ."

Acts 18:6: "And when they opposed themselves, and blasphemed, he shook his raiment, and said unto them, Your blood be upon your own heads; I am clean; from henceforth I will go unto the Gentiles."

Acts 18:12: "And when Gallio was the deputy of Achaia, the Jews made insurrection with one accord against Paul, and brought him to the judgment seat,"

Acts 18:14: "And when Paul was now about to open his mouth, Gallio said unto the Jews, If it were a matter of wrong or wicked lewdness, O ye Jews, reason would that I should bear with you:"

Acts 18:20: "When they desired him to tarry longer time with them, he consented not;"

Acts 18:22: "And when he had landed at Caesarea, and gone up, and saluted the church, he went down to Antioch."

Acts 18:26: "And he began to speak boldly in the synagogue: whom when Aquila and Priscilla had heard, they took him unto them, and expounded unto him the way of God more perfectly."

Acts 18:27: "And when he was disposed to pass into Achaia, the brethren wrote, exhorting the disciples to receive him: who, when he was come, helped them much which had believed through grace:"

Acts 19:5: "When they heard this, they were baptized in the name of the Lord Jesus."

Acts 19:6: "And when Paul had laid his hands upon them, the Holy Ghost came on them; and they spake with tongues, and prophesied."

Acts 19:9: "But when divers were hardened, and believed not, but spake evil of that way before the multitude, he departed from them, and separated the disciples, disputing daily in the school of one Tyrannus."

Acts 19:21: "After these things were ended, Paul purposed in the spirit, when he had passed through Macedonia and Achaia, to go to Jerusalem, saying, After I have been there, I must also see Rome."

Acts 19:28: "And when they heard these sayings, they were full of wrath, and cried out, saying, Great is Diana of the Ephesians."

Acts 19:30: "And when Paul would have entered in unto the people, the disciples suffered him not."

Acts 19:34: "But when they knew that he was a Jew, all with one voice about the space of two hours cried out, Great is Diana of the Ephesians."

Acts 19:35: "And when the townclerk had appeased the people, he said, Ye men of Ephesus, what man is there that knoweth not how that the city of the Ephesians is a worshipper of the great goddess Diana, and of the image which fell down from Jupiter?"

Acts 19:41: "And when he had thus spoken, he dismissed the assembly."

Acts 20:2: "And when he had gone over those parts, and had given them much exhortation, he came into Greece,"

Acts 20:3: "And there abode three months. And when the Jews laid wait for him, as he was about to sail into Syria, he purposed to return through Macedonia."

Acts 20:7: "And upon the first day of the week, when the disciples came together to break bread, Paul preached unto them, ready to depart on the morrow; and continued his speech until midnight."

Acts 20:11: "When he therefore was come up again, and had broken bread, and eaten, and talked a long while, even till break of day, so he departed."

Acts 20:14: "And when he met with us at Assos, we took him in, and came to Mitylene."

Acts 20:18: "And when they were come to him, he said unto them, Ye know, from the first day that I came into Asia, after what manner I have been with you at all seasons,"

Acts 20:36: "And when he had thus spoken, he kneeled down, and prayed with them all."

Acts 21:3: "Now when we had discovered Cyprus, we left it on the left hand, and sailed into Syria, and landed at Tyre: for there the ship was to unlade her burden."

Acts 21:5: "And when we had accomplished those days, we departed and went our way; and they all brought us on our way, with wives and children, till we were out of the city: and we kneeled down on the shore, and prayed."

Acts 21:6: "And when we had taken our leave one of another, we took ship; and they returned home again."

Acts 21:7: "And when we had finished our course from Tyre, we came to Ptolemais, and saluted the brethren, and abode with them one day."

Acts 21:11: "And when he was come unto us, he took Paul's girdle, and bound his own hands and feet, and said, Thus saith the Holy Ghost, So shall the Jews at Jerusalem bind the man that owneth this girdle, and shall deliver him into the hands of the Gentiles."

Acts 21:12: "And when we heard these things, both we, and they of that place, besought him not to go up to Jerusalem."

Acts 21:14: "And when he would not be persuaded, we ceased, saying, The will of the Lord be done."

Acts 21:17: "And when we were come to Jerusalem, the brethren received us gladly."

Acts 21:19: "And when he had saluted them, he declared particularly what things God had wrought among the Gentiles by his ministry."

Acts 21:20: "And when they heard it, they glorified the Lord, and said unto him, Thou seest, brother, how many thousands of Jews there are which believe; and they are all zealous of the law:"

Acts 21:27: "And when the seven days were almost ended, the Jews which were of Asia, when they saw him in the temple, stirred up all the people, and laid hands on him,"

Acts 21:32: "Who immediately took soldiers and centurions, and ran down unto them: and when



they saw the chief captain and the soldiers, they left beating of Paul."

Acts 21:34: "And some cried one thing, some another, among the multitude: and when he could not know the certainty for the tumult, he commanded him to be carried into the castle."

Acts 21:35: "And when he came upon the stairs, so it was, that he was borne of the soldiers for the violence of the people."

Acts 21:40: "And when he had given him licence, Paul stood on the stairs, and beckoned with the hand unto the people. And when there was made a great silence, he spake unto them in the Hebrew tongue, saying,"

Acts 22:2: "(And when they heard that he spake in the Hebrew tongue to them, they kept the more silence: and he saith,)"

Acts 22:11: "And when I could not see for the glory of that light, being led by the hand of them that were with me, I came into Damascus."

Acts 22:17: "And it came to pass, that, when I was come again to Jerusalem, even while I prayed in the temple, I was in a trance;"

Acts 22:20: "And when the blood of thy martyr Stephen was shed, I also was standing by, and consenting unto his death, and kept the raiment of them that slew him."

Acts 22:26: "When the centurion heard that, he went and told the chief captain, saying, Take heed what thou doest: for this man is a Roman."

Acts 23:6: "But when Paul perceived that the one part were Sadducees, and the other Pharisees, he cried out in the council, Men and brethren, I am a Pharisee, the son of a Pharisee: of the hope and resurrection of the dead I am called in question."

Acts 23:7: "And when he had so said, there arose a dissension between the Pharisees and the Sadducees: and the multitude was divided."

Acts 23:10: "And when there arose a great dissension, the chief captain, fearing lest Paul should have been pulled in pieces of them, commanded the soldiers to go down, and to take him by force from among them, and to bring him into the castle."

Acts 23:12: "And when it was day, certain of the Jews banded together, and bound themselves under a curse, saying that they would neither eat nor drink till they had killed Paul."

Acts 23:16: "And when Paul's sister's son heard of their lying in wait, he went and entered into the castle, and told Paul."

Acts 23:28: "And when I would have known the cause wherefore they accused him, I brought him forth into their council:"

Acts 23:30: "And when it was told me how that the Jews laid wait for the man, I sent straightway to thee, and gave commandment to his accusers also to say before thee what they had against him. Farewell."

Acts 23:33: "Who, when they came to Caesarea and delivered the epistle to the governor, presented Paul also before him."

Acts 23:34: "And when the governor had read the letter, he asked of what province he was. And when he understood that he was of Cilicia;"

Acts 23:35: "I will hear thee, said he, when thine accusers are also come. And he commanded him to be kept in Herod's judgment hall."

Acts 24:2: "And when he was called forth, Tertullus began to accuse him, saying, Seeing that by thee we enjoy great quietness, and that very worthy deeds are done unto this nation by thy providence,"

Acts 24:22: "And when Felix heard these things, having more perfect knowledge of that way, he deferred them, and said, When Lysias the chief captain shall come down, I will know the uttermost of your matter."

Acts 24:24: "And after certain days, when Felix came with his wife Drusilla, which was a Jewess, he sent for Paul, and heard him concerning the faith in Christ."

Acts 24:25: "And as he reasoned of righteousness, temperance, and judgment to come, Felix

trembled, and answered, Go thy way for this time; when I have a convenient season, I will call for thee."

Acts 25:1: "Now when Festus was come into the province, after three days he ascended from Caesarea to Jerusalem."

Acts 25:6: "And when he had tarried among them more than ten days, he went down unto Caesarea; and the next day sitting on the judgment seat commanded Paul to be brought."

Acts 25:7: "And when he was come, the Jews which came down from Jerusalem stood round about, and laid many and grievous complaints against Paul, which they could not prove."

Acts 25:12: "Then Festus, when he had conferred with the council, answered, Hast thou appealed unto Caesar? unto Caesar shalt thou go."

Acts 25:14: "And when they had been there many days, Festus declared Paul's cause unto the king, saying, There is a certain man left in bonds by Felix:"

Acts 25:15: "About whom, when I was at Jerusalem, the chief priests and the elders of the Jews informed me, desiring to have judgment against him."

Acts 25:17: "Therefore, when they were come hither, without any delay on the morrow I sat on the judgment seat, and commanded the man to be brought forth."

Acts 25:18: "Against whom when the accusers stood up, they brought none accusation of such things as I supposed:"

Acts 25:21: "But when Paul had appealed to be reserved unto the hearing of Augustus, I commanded him to be kept till I might send him to Caesar."

Acts 25:23: "And on the morrow, when Agrippa was come, and Bernice, with great pomp, and was entered into the place of hearing, with the chief captains, and principal men of the city, at Festus' commandment Paul was brought forth."

Acts 25:25: "But when I found that he had committed nothing worthy of death, and that he himself hath appealed to Augustus, I have determined to send him."

Acts 26:10: "Which thing I also did in Jerusalem: and many of the saints did I shut up in prison, having received authority from the chief priests; and when they were put to death, I gave my voice against them."

Acts 26:14: "And when we were all fallen to the earth, I heard a voice speaking unto me, and saying in the Hebrew tongue, Saul, Saul, why persecutest thou me? it is hard for thee to kick against the pricks."

Acts 26:30: "And when he had thus spoken, the king rose up, and the governor, and Bernice, and they that sat with them:"

Acts 26:31: "And when they were gone aside, they talked between themselves, saying, This man doeth nothing worthy of death or of bonds."

Acts 27:1: "And when it was determined that we should sail into Italy, they delivered Paul and certain other prisoners unto one named Julius, a centurion of Augustus' band."

Acts 27:4: "And when we had launched from thence, we sailed under Cyprus, because the winds were contrary."

Acts 27:5: "And when we had sailed over the sea of Cilicia and Pamphylia, we came to Myra, a city of Lycia."

Acts 27:7: "And when we had sailed slowly many days, and scarce were come over against Cnidus, the wind not suffering us, we sailed under Crete, over against Salmone;"

Acts 27:9: "Now when much time was spent, and when sailing was now dangerous, because the fast was now already past, Paul admonished them,"

Acts 27:13: "And when the south wind blew softly, supposing that they had obtained their purpose, loosing thence, they sailed close by Crete."

Acts 27:15: "And when the ship was caught, and could not bear up into the wind, we let her drive."

Acts 27:17: "Which when they had taken up, they used helps, undergirding the ship; and, fearing lest they should fall into the quicksands, strake sail, and so were driven."

Acts 27:20: "And when neither sun nor stars in many days appeared, and no small tempest lay on us, all hope that we should be saved was then taken away."

Acts 27:27: "But when the fourteenth night was come, as we were driven up and down in Adria, about midnight the shipmen deemed that they drew near to some country;"

Acts 27:28: "And sounded, and found it twenty fathoms: and when they had gone a little further, they sounded again, and found it fifteen fathoms."

Acts 27:30: "And as the shipmen were about to flee out of the ship, when they had let down the boat into the sea, under colour as though they would have cast anchors out of the foreship,"

Acts 27:35: "And when he had thus spoken, he took bread, and gave thanks to God in presence of them all: and when he had broken it, he began to eat."

Acts 27:38: "And when they had eaten enough, they lightened the ship, and cast out the wheat into the sea."

Acts 27:39: "And when it was day, they knew not the land: but they discovered a certain creek with a shore, into the which they were minded, if it were possible, to thrust in the ship."

Acts 27:40: "And when they had taken up the anchors, they committed themselves unto the sea, and loosed the rudder bands, and hoised up the mainsail to the wind, and made toward shore."

Acts 28:1: "And when they were escaped, then they knew that the island was called Melita."

Acts 28:3: "And when Paul had gathered a bundle of sticks, and laid them on the fire, there came a viper out of the heat, and fastened on his hand."

Acts 28:4: "And when the barbarians saw the venomous beast hang on his hand, they said among themselves, No doubt this man is a murderer, whom, though he hath escaped the sea, yet vengeance suffereth not to live."

Acts 28:6: "Howbeit they looked when he should have swollen, or fallen down dead suddenly: but after they had looked a great while, and saw no harm come to him, they changed their minds, and said that he was a god."

Acts 28:9: "So when this was done, others also, which had diseases in the island, came, and were healed:"

Acts 28:10: "Who also honoured us with many honours; and when we departed, they laded us with such things as were necessary."

Acts 28:15: "And from thence, when the brethren heard of us, they came to meet us as far as Appii forum, and The three taverns: whom when Paul saw, he thanked God, and took courage."

Acts 28:16: "And when we came to Rome, the centurion delivered the prisoners to the captain of the guard: but Paul was suffered to dwell by himself with a soldier that kept him."

Acts 28:17: "And it came to pass, that after three days Paul called the chief of the Jews together: and when they were come together, he said unto them, Men and brethren, though I have committed nothing against the people, or customs of our fathers, yet was I delivered prisoner from Jerusalem into the hands of the Romans."

Acts 28:18: "Who, when they had examined me, would have let me go, because there was no cause of death in me."

Acts 28:19: "But when the Jews spake against it, I was constrained to appeal unto Caesar; not that I had ought to accuse my nation of."

Acts 28:23: "And when they had appointed him a day, there came many to him into his lodging; to whom he expounded and testified the kingdom of God, persuading them concerning Jesus, both out of the law of Moses, and out of the prophets, from morning till evening."

Acts 28:25: "And when they agreed not among themselves, they departed, after that Paul had spoken one word, Well spake the Holy Ghost by Esaias the prophet unto our fathers,"

Acts 28:29: "And when he had said these words, the Jews departed, and had great reasoning among themselves."

Romans 1:21: "Because that, when they knew God, they glorified him not as God, neither were thankful; but became vain in their imaginations, and their foolish heart was darkened."

Romans 2:14: "For when the Gentiles, which have not the law, do by nature the things contained in the law, these, having not the law, are a law unto themselves:"

Romans 2:16: "In the day when God shall judge the secrets of men by Jesus Christ according to my gospel."

Romans 3:4: "God forbid: yea, let God be true, but every man a liar; as it is written, That thou mightest be justified in thy sayings, and mightest overcome when thou art judged."

Romans 4:10: "How was it then reckoned? when he was in circumcision, or in uncircumcision? Not in circumcision, but in uncircumcision."

Romans 4:19: "And being not weak in faith, he considered not his own body now dead, when he was about an hundred years old, neither yet the deadness of Sarah's womb:"

Romans 5:6: "For when we were yet without strength, in due time Christ died for the ungodly."

Romans 5:10: "For if, when we were enemies, we were reconciled to God by the death of his Son, much more, being reconciled, we shall be saved by his life."

Romans 5:13: "(For until the law sin was in the world: but sin is not imputed when there is no law."

Romans 6:20: "For when ye were the servants of sin, ye were free from righteousness."

Romans 7:5: "For when we were in the flesh, the motions of sins, which were by the law, did work in our members to bring forth fruit unto death."

Romans 7:9: "For I was alive without the law once: but when the commandment came, sin revived, and I died."

Romans 7:21: "I find then a law, that, when I would do good, evil is present with me."

Romans 9:10: "And not only this; but when Rebecca also had conceived by one, even by our father Isaac;"

Romans 11:27: "For this is my covenant unto them, when I shall take away their sins."

Romans 13:11: "And that, knowing the time, that now it is high time to awake out of sleep: for now is our salvation nearer than when we believed."

Romans 15:28: "When therefore I have performed this, and have sealed to them this fruit, I will come by you into Spain."

Romans 15:29: "And I am sure that, when I come unto you, I shall come in the fulness of the blessing of the gospel of Christ."

1 Corinthians 2:1: "And I, brethren, when I came to you, came not with excellency of speech or of wisdom, declaring unto you the testimony of God."

1 Corinthians 5:4: "In the name of our Lord Jesus Christ, when ye are gathered together, and my spirit, with the power of our Lord Jesus Christ,"

1 Corinthians 8:12: "But when ye sin so against the brethren, and wound their weak conscience, ye sin against Christ."

1 Corinthians 9:18: "What is my reward then? Verily that, when I preach the gospel, I may make the gospel of Christ without charge, that I abuse not my power in the gospel."

1 Corinthians 9:27: "But I keep under my body, and bring it into subjection: lest that by any means, when I have preached to others, I myself should be a castaway."

1 Corinthians 11:18: "For first of all, when ye come together in the church, I hear that there be divisions among you; and I partly believe it."

1 Corinthians 11:20: "When ye come together therefore into one place, this is not to eat the Lord's supper."

1 Corinthians 11:24: "And when he had given thanks, he brake it, and said, Take, eat: this is my body, which is broken for you: this do in remembrance of me."

1 Corinthians 11:25: "After the same manner also he took the cup, when he had supped, saying, This cup is the new testament in my blood: this do ye, as oft as ye drink it, in remembrance of me."

1 Corinthians 11:32: "But when we are judged, we are chastened of the Lord, that we should not be condemned with the world."

1 Corinthians 11:33: "Wherefore, my brethren, when ye come together to eat, tarry one for

another."

1 Corinthians 11:34: "And if any man hunger, let him eat at home; that ye come not together unto condemnation. And the rest will I set in order when I come."

1 Corinthians 13:10: "But when that which is perfect is come, then that which is in part shall be done away."

1 Corinthians 13:11: "When I was a child, I spake as a child, I understood as a child, I thought as a child: but when I became a man, I put away childish things."

1 Corinthians 14:16: "Else when thou shalt bless with the spirit, how shall he that occupieth the room of the unlearned say Amen at thy giving of thanks, seeing he understandeth not what thou sayest?"

1 Corinthians 14:26: "How is it then, brethren? when ye come together, every one of you hath a psalm, hath a doctrine, hath a tongue, hath a revelation, hath an interpretation. Let all things be done unto edifying."

1 Corinthians 15:24: "Then cometh the end, when he shall have delivered up the kingdom to God, even the Father; when he shall have put down all rule and all authority and power."

1 Corinthians 15:27: "For he hath put all things under his feet. But when he saith all things are put under him, it is manifest that he is excepted, which did put all things under him."

1 Corinthians 15:28: "And when all things shall be subdued unto him, then shall the Son also himself be subject unto him that put all things under him, that God may be all in all."

1 Corinthians 15:54: "So when this corruptible shall have put on incorruption, and this mortal shall have put on immortality, then shall be brought to pass the saying that is written, Death is swallowed up in victory."

1 Corinthians 16:2: "Upon the first day of the week let every one of you lay by him in store, as God hath prospered him, that there be no gatherings when I come."

1 Corinthians 16:3: "And when I come, whomsoever ye shall approve by your letters, them will I send to bring your liberality unto Jerusalem."

1 Corinthians 16:5: "Now I will come unto you, when I shall pass through Macedonia: for I do pass through Macedonia."

1 Corinthians 16:12: "As touching our brother Apollos, I greatly desired him to come unto you with the brethren: but his will was not at all to come at this time; but he will come when he shall have convenient time."

2 Corinthians 1:17: "When I therefore was thus minded, did I use lightness? or the things that I purpose, do I purpose according to the flesh, that with me there should be yea yea, and nay nay?"

2 Corinthians 2:3: "And I wrote this same unto you, lest, when I came, I should have sorrow from them of whom I ought to rejoice; having confidence in you all, that my joy is the joy of you all."

2 Corinthians 2:12: "Furthermore, when I came to Troas to preach Christ's gospel, and a door was opened unto me of the Lord,"

2 Corinthians 3:15: "But even unto this day, when Moses is read, the vail is upon their heart."

2 Corinthians 3:16: "Nevertheless when it shall turn to the Lord, the vail shall be taken away."

2 Corinthians 7:5: "For, when we were come into Macedonia, our flesh had no rest, but we were troubled on every side; without were fightings, within were fears."

2 Corinthians 7:7: "And not by his coming only, but by the consolation wherewith he was comforted in you, when he told us your earnest desire, your mourning, your fervent mind toward me; so that I rejoiced the more."

2 Corinthians 10:2: "But I beseech you, that I may not be bold when I am present with that confidence, wherewith I think to be bold against some, which think of us as if we walked according to the flesh."

2 Corinthians 10:6: "And having in a readiness to revenge all disobedience, when your obedience is fulfilled."

2 Corinthians 10:11: "Let such an one think this, that, such as we are in word by letters when we are

absent, such will we be also in deed when we are present."

2 Corinthians 10:15: "Not boasting of things without our measure, that is, of other men's labours; but having hope, when your faith is increased, that we shall be enlarged by you according to our rule abundantly,"

2 Corinthians 11:9: "And when I was present with you, and wanted, I was chargeable to no man: for that which was lacking to me the brethren which came from Macedonia supplied: and in all things I have kept myself from being burdensome unto you, and so will I keep myself."

2 Corinthians 12:10: "Therefore I take pleasure in infirmities, in reproaches, in necessities, in persecutions, in distresses for Christ's sake: for when I am weak, then am I strong."

2 Corinthians 12:20: "For I fear, lest, when I come, I shall not find you such as I would, and that I shall be found unto you such as ye would not: lest there be debates, envyings, wraths, strifes, backbitings, whisperings, swellings, tumults:"

2 Corinthians 12:21: "And lest, when I come again, my God will humble me among you, and that I shall bewail many which have sinned already, and have not repented of the uncleanness and fornication and lasciviousness which they have committed."

2 Corinthians 13:9: "For we are glad, when we are weak, and ye are strong: and this also we wish, even your perfection."

Galatians 1:15: "But when it pleased God, who separated me from my mother's womb, and called me by his grace,"

Galatians 2:7: "But contrariwise, when they saw that the gospel of the uncircumcision was committed unto me, as the gospel of the circumcision was unto Peter;"

Galatians 2:9: "And when James, Cephas, and John, who seemed to be pillars, perceived the grace that was given unto me, they gave to me and Barnabas the right hands of fellowship; that we should go unto the heathen, and they unto the circumcision."

Galatians 2:11: "But when Peter was come to Antioch, I withstood him to the face, because he was to be blamed."

Galatians 2:12: "For before that certain came from James, he did eat with the Gentiles: but when they were come, he withdrew and separated himself, fearing them which were of the circumcision."

Galatians 2:14: "But when I saw that they walked not uprightly according to the truth of the gospel, I said unto Peter before them all, If thou, being a Jew, livest after the manner of Gentiles, and not as do the Jews, why compellest thou the Gentiles to live as do the Jews?"

Galatians 4:3: "Even so we, when we were children, were in bondage under the elements of the world:"

Galatians 4:4: "But when the fulness of the time was come, God sent forth his Son, made of a woman, made under the law,"

Galatians 4:8: "Howbeit then, when ye knew not God, ye did service unto them which by nature are no gods."

Galatians 4:18: "But it is good to be zealously affected always in a good thing, and not only when I am present with you."

Galatians 6:3: "For if a man think himself to be something, when he is nothing, he deceiveth himself."

Ephesians 1:20: "Which he wrought in Christ, when he raised him from the dead, and set him at his own right hand in the heavenly places,"

Ephesians 2:5: "Even when we were dead in sins, hath quickened us together with Christ, (by grace ye are saved;)"

Ephesians 3:4: "Whereby, when ye read, ye may understand my knowledge in the mystery of Christ)"

Ephesians 4:8: "Wherefore he saith, When he ascended up on high, he led captivity captive, and gave gifts unto men."

Philippians 2:19: "But I trust in the Lord Jesus to send Timotheus shortly unto you, that I also may

be of good comfort, when I know your state."

Philippians 2:28: "I sent him therefore the more carefully, that, when ye see him again, ye may rejoice, and that I may be the less sorrowful."

Philippians 4:15: "Now ye Philippians know also, that in the beginning of the gospel, when I departed from Macedonia, no church communicated with me as concerning giving and receiving, but ye only."

Colossians 3:4: "When Christ, who is our life, shall appear, then shall ye also appear with him in glory."

Colossians 3:7: "In the which ye also walked some time, when ye lived in them."

Colossians 4:16: "And when this epistle is read among you, cause that it be read also in the church of the Laodiceans; and that ye likewise read the epistle from Laodicea."

1 Thessalonians 2:6: "Nor of men sought we glory, neither of you, nor yet of others, when we might have been burdensome, as the apostles of Christ."

1 Thessalonians 2:13: "For this cause also thank we God without ceasing, because, when ye received the word of God which ye heard of us, ye received it not as the word of men, but as it is in truth, the word of God, which effectually worketh also in you that believe."

1 Thessalonians 3:1: "Wherefore when we could no longer forbear, we thought it good to be left at Athens alone;"

1 Thessalonians 3:4: "For verily, when we were with you, we told you before that we should suffer tribulation; even as it came to pass, and ye know."

1 Thessalonians 3:5: "For this cause, when I could no longer forbear, I sent to know your faith, lest by some means the tempter have tempted you, and our labour be in vain."

1 Thessalonians 3:6: "But now when Timotheus came from you unto us, and brought us good tidings of your faith and charity, and that ye have good remembrance of us always, desiring greatly to see us, as we also to see you:"

1 Thessalonians 5:3: "For when they shall say, Peace and safety; then sudden destruction cometh upon them, as travail upon a woman with child; and they shall not escape."

2 Thessalonians 1:7: "And to you who are troubled rest with us, when the Lord Jesus shall be revealed from heaven with his mighty angels,"

2 Thessalonians 1:10: "When he shall come to be glorified in his saints, and to be admired in all them that believe (because our testimony among you was believed) in that day."

2 Thessalonians 2:5: "Remember ye not, that, when I was yet with you, I told you these things?"

2 Thessalonians 3:10: "For even when we were with you, this we commanded you, that if any would not work, neither should he eat."

1 Timothy 1:3: "As I besought thee to abide still at Ephesus, when I went into Macedonia, that thou mightest charge some that they teach no other doctrine,"

1 Timothy 5:11: "But the younger widows refuse: for when they have begun to wax wanton against Christ, they will marry;"

2 Timothy 1:5: "When I call to remembrance the unfeigned faith that is in thee, which dwelt first in thy grandmother Lois, and thy mother Eunice; and I am persuaded that in thee also."

2 Timothy 1:17: "But, when he was in Rome, he sought me out very diligently, and found me."

2 Timothy 4:3: "For the time will come when they will not endure sound doctrine; but after their own lusts shall they heap to themselves teachers, having itching ears;"

2 Timothy 4:13: "The cloke that I left at Troas with Carpus, when thou comest, bring with thee, and the books, but especially the parchments."

Titus 3:12: "When I shall send Artemas unto thee, or Tychicus, be diligent to come unto me to Nicopolis: for I have determined there to winter."

Hebrews 1:3: "Who being the brightness of his glory, and the express image of his person, and upholding all things by the word of his power, when he had by himself purged our sins, sat down on the right hand of the Majesty on high:"

Hebrews 1:6: "And again, when he bringeth in the firstbegotten into the world, he saith, And let all the angels of God worship him."

Hebrews 3:9: "When your fathers tempted me, proved me, and saw my works forty years."

Hebrews 3:16: "For some, when they had heard, did provoke: howbeit not all that came out of Egypt by Moses."

Hebrews 5:7: "Who in the days of his flesh, when he had offered up prayers and supplications with strong crying and tears unto him that was able to save him from death, and was heard in that he feared;"

Hebrews 5:12: "For when for the time ye ought to be teachers, ye have need that one teach you again which be the first principles of the oracles of God; and are become such as have need of milk, and not of strong meat."

Hebrews 6:13: "For when God made promise to Abraham, because he could swear by no greater, he sware by himself,"

Hebrews 7:10: "For he was yet in the loins of his father, when Melchisedec met him."

Hebrews 7:27: "Who needeth not daily, as those high priests, to offer up sacrifice, first for his own sins, and then for the people's: for this he did once, when he offered up himself."

Hebrews 8:5: "Who serve unto the example and shadow of heavenly things, as Moses was admonished of God when he was about to make the tabernacle: for, See, saith he, that thou make all things according to the pattern shewed to thee in the mount."

Hebrews 8:8: "For finding fault with them, he saith, Behold, the days come, saith the Lord, when I will make a new covenant with the house of Israel and with the house of Judah:"

Hebrews 8:9: "Not according to the covenant that I made with their fathers in the day when I took them by the hand to lead them out of the land of Egypt; because they continued not in my covenant, and I regarded them not, saith the Lord."

Hebrews 9:6: "Now when these things were thus ordained, the priests went always into the first tabernacle, accomplishing the service of God."

Hebrews 9:19: "For when Moses had spoken every precept to all the people according to the law, he took the blood of calves and of goats, with water, and scarlet wool, and hyssop, and sprinkled both the book, and all the people,"

Hebrews 10:5: "Wherefore when he cometh into the world, he saith, Sacrifice and offering thou wouldest not, but a body hast thou prepared me:"

Hebrews 10:8: "Above when he said, Sacrifice and offering and burnt offerings and offering for sin thou wouldest not, neither hadst pleasure therein; which are offered by the law;"

Hebrews 11:8: "By faith Abraham, when he was called to go out into a place which he should after receive for an inheritance, obeyed; and he went out, not knowing whither he went."

Hebrews 11:11: "Through faith also Sara herself received strength to conceive seed, and was delivered of a child when she was past age, because she judged him faithful who had promised."

Hebrews 11:17: "By faith Abraham, when he was tried, offered up Isaac: and he that had received the promises offered up his only begotten son,"

Hebrews 11:21: "By faith Jacob, when he was a dying, blessed both the sons of Joseph; and worshipped, leaning upon the top of his staff."

Hebrews 11:22: "By faith Joseph, when he died, made mention of the departing of the children of Israel; and gave commandment concerning his bones."

Hebrews 11:23: "By faith Moses, when he was born, was hid three months of his parents, because they saw he was a proper child; and they were not afraid of the king's commandment."

Hebrews 11:24: "By faith Moses, when he was come to years, refused to be called the son of Pharaoh's daughter;"

Hebrews 11:31: "By faith the harlot Rahab perished not with them that believed not, when she had received the spies with peace."

Hebrews 12:5: "And ye have forgotten the exhortation which speaketh unto you as unto children,



My son, despise not thou the chastening of the Lord, nor faint when thou art rebuked of him:"

Hebrews 12:17: "For ye know how that afterward, when he would have inherited the blessing, he was rejected: for he found no place of repentance, though he sought it carefully with tears."

James 1:2: "My brethren, count it all joy when ye fall into divers temptations;"

James 1:12: "Blessed is the man that endureth temptation: for when he is tried, he shall receive the crown of life, which the Lord hath promised to them that love him."

James 1:13: "Let no man say when he is tempted, I am tempted of God: for God cannot be tempted with evil, neither tempteth he any man:"

James 1:14: "But every man is tempted, when he is drawn away of his own lust, and enticed."

James 1:15: "Then when lust hath conceived, it bringeth forth sin: and sin, when it is finished, bringeth forth death."

James 2:21: "Was not Abraham our father justified by works, when he had offered Isaac his son upon the altar?"

James 2:25: "Likewise also was not Rahab the harlot justified by works, when she had received the messengers, and had sent them out another way?"

1 Peter 1:11: "Searching what, or what manner of time the Spirit of Christ which was in them did signify, when it testified beforehand the sufferings of Christ, and the glory that should follow."

1 Peter 2:20: "For what glory is it, if, when ye be buffeted for your faults, ye shall take it patiently? but if, when ye do well, and suffer for it, ye take it patiently, this is acceptable with God."

1 Peter 2:23: "Who, when he was reviled, reviled not again; when he suffered, he threatened not; but committed himself to him that judgeth righteously:"

1 Peter 3:20: "Which sometime were disobedient, when once the longsuffering of God waited in the days of Noah, while the ark was a preparing, wherein few, that is, eight souls were saved by water."

1 Peter 4:3: "For the time past of our life may suffice us to have wrought the will of the Gentiles, when we walked in lasciviousness, lusts, excess of wine, revellings, banquetings, and abominable idolatries:"

1 Peter 4:13: "But rejoice, inasmuch as ye are partakers of Christ's sufferings; that, when his glory shall be revealed, ye may be glad also with exceeding joy."

1 Peter 5:4: "And when the chief Shepherd shall appear, ye shall receive a crown of glory that fadeth not away."

2 Peter 1:16: "For we have not followed cunningly devised fables, when we made known unto you the power and coming of our Lord Jesus Christ, but were eyewitnesses of his majesty."

2 Peter 1:17: "For he received from God the Father honour and glory, when there came such a voice to him from the excellent glory, This is my beloved Son, in whom I am well pleased."

2 Peter 1:18: "And this voice which came from heaven we heard, when we were with him in the holy mount."

2 Peter 2:18: "For when they speak great swelling words of vanity, they allure through the lusts of the flesh, through much wantonness, those that were clean escaped from them who live in error."

1 John 2:28: "And now, little children, abide in him; that, when he shall appear, we may have confidence, and not be ashamed before him at his coming."

1 John 3:2: "Beloved, now are we the sons of God, and it doth not yet appear what we shall be: but we know that, when he shall appear, we shall be like him; for we shall see him as he is."

1 John 5:2: "By this we know that we love the children of God, when we love God, and keep his commandments."

3 John 1:3: "For I rejoiced greatly, when the brethren came and testified of the truth that is in thee, even as thou walkest in the truth."

Jude 1:3: "Beloved, when I gave all diligence to write unto you of the common salvation, it was needful for me to write unto you, and exhort you that ye should earnestly contend for the faith which was once delivered unto the saints."

Jude 1:9: "Yet Michael the archangel, when contending with the devil he disputed about the body of

Moses, durst not bring against him a railing accusation, but said, The Lord rebuke thee."

Jude 1:12: "These are spots in your feasts of charity, when they feast with you, feeding themselves without fear: clouds they are without water, carried about of winds; trees whose fruit withereth, without fruit, twice dead, plucked up by the roots;"

Revelation 1:17: "And when I saw him, I fell at his feet as dead. And he laid his right hand upon me, saying unto me, Fear not; I am the first and the last:"

Revelation 4:9: "And when those beasts give glory and honour and thanks to him that sat on the throne, who liveth for ever and ever,"

Revelation 5:8: "And when he had taken the book, the four beasts and four and twenty elders fell down before the Lamb, having every one of them harps, and golden vials full of odours, which are the prayers of saints."

Revelation 6:1: "And I saw when the Lamb opened one of the seals, and I heard, as it were the noise of thunder, one of the four beasts saying, Come and see."

Revelation 6:3: "And when he had opened the second seal, I heard the second beast say, Come and see."

Revelation 6:5: "And when he had opened the third seal, I heard the third beast say, Come and see. And I beheld, and lo a black horse; and he that sat on him had a pair of balances in his hand."

Revelation 6:7: "And when he had opened the fourth seal, I heard the voice of the fourth beast say, Come and see."

Revelation 6:9: "And when he had opened the fifth seal, I saw under the altar the souls of them that were slain for the word of God, and for the testimony which they held:"

Revelation 6:12: "And I beheld when he had opened the sixth seal, and, lo, there was a great earthquake; and the sun became black as sackcloth of hair, and the moon became as blood;"

Revelation 6:13: "And the stars of heaven fell unto the earth, even as a fig tree casteth her untimely figs, when she is shaken of a mighty wind."

Revelation 6:14: "And the heaven departed as a scroll when it is rolled together; and every mountain and island were moved out of their places."

Revelation 8:1: "And when he had opened the seventh seal, there was silence in heaven about the space of half an hour."

Revelation 9:5: "And to them it was given that they should not kill them, but that they should be tormented five months: and their torment was as the torment of a scorpion, when he striketh a man."

Revelation 10:3: "And cried with a loud voice, as when a lion roareth: and when he had cried, seven thunders uttered their voices."

Revelation 10:4: "And when the seven thunders had uttered their voices, I was about to write: and I heard a voice from heaven saying unto me, Seal up those things which the seven thunders uttered, and write them not."

Revelation 10:7: "But in the days of the voice of the seventh angel, when he shall begin to sound, the mystery of God should be finished, as he hath declared to his servants the prophets."

Revelation 11:7: "And when they shall have finished their testimony, the beast that ascendeth out of the bottomless pit shall make war against them, and shall overcome them, and kill them."

Revelation 12:13: "And when the dragon saw that he was cast unto the earth, he persecuted the woman which brought forth the man child."

Revelation 17:6: "And I saw the woman drunken with the blood of the saints, and with the blood of the martyrs of Jesus: and when I saw her, I wondered with great admiration."

Revelation 17:8: "The beast that thou sawest was, and is not; and shall ascend out of the bottomless pit, and go into perdition: and they that dwell on the earth shall wonder, whose names were not written in the book of life from the foundation of the world, when they behold the beast that was, and is not, and yet is."

Revelation 17:10: "And there are seven kings: five are fallen, and one is, and the other is not yet come; and when he cometh, he must continue a short space."

Revelation 18:9: "And the kings of the earth, who have committed fornication and lived deliciously with her, shall bewail her, and lament for her, when they shall see the smoke of her burning,"

Revelation 18:18: "And cried when they saw the smoke of her burning, saying, What city is like unto this great city!"

Revelation 20:7: "And when the thousand years are expired, Satan shall be loosed out of his prison,"

Revelation 22:8: "And I John saw these things, and heard them. And when I had heard and seen, I fell down to worship before the feet of the angel which shewed me these things."

## WHENCE

Occurrences: 69

Genesis 3:23: "Therefore the LORD God sent him forth from the garden of Eden, to till the ground from whence he was taken."

Genesis 16:8: "And he said, Hagar, Sarai's maid, whence camest thou? and whither wilt thou go? And she said, I flee from the face of my mistress Sarai."

Genesis 24:5: "And the servant said unto him, Peradventure the woman will not be willing to follow me unto this land: must I needs bring thy son again unto the land from whence thou camest?"

Genesis 29:4: "And Jacob said unto them, My brethren, whence be ye? And they said, Of Haran are we."

Genesis 42:7: "And Joseph saw his brethren, and he knew them, but made himself strange unto them, and spake roughly unto them; and he said unto them, Whence come ye? And they said, From the land of Canaan to buy food."

Numbers 11:13: "Whence should I have flesh to give unto all this people? for they weep unto me, saying, Give us flesh, that we may eat."

Numbers 23:13: "And Balak said unto him, Come, I pray thee, with me unto another place, from whence thou mayest see them: thou shalt see but the utmost part of them, and shalt not see them all: and curse me them from thence."

Deuteronomy 9:28: "Lest the land whence thou broughtest us out say, Because the LORD was not able to bring them into the land which he promised them, and because he hated them, he hath brought them out to slay them in the wilderness."

Deuteronomy 11:10: "For the land, whither thou goest in to possess it, is not as the land of Egypt, from whence ye came out, where thou sowedst thy seed, and wateredst it with thy foot, as a garden of herbs:"

Joshua 2:4: "And the woman took the two men, and hid them, and said thus, There came men unto me, but I wist not whence they were:"

Joshua 9:8: "And they said unto Joshua, We are thy servants. And Joshua said unto them, Who are ye? and from whence come ye?"

Joshua 20:6: "And he shall dwell in that city, until he stand before the congregation for judgment, and until the death of the high priest that shall be in those days: then shall the slayer return, and come unto his own city, and unto his own house, unto the city from whence he fled."

Judges 13:6: "Then the woman came and told her husband, saying, A man of God came unto me, and his countenance was like the countenance of an angel of God, very terrible: but I asked him not whence he was, neither told he me his name:"

Judges 17:9: "And Micah said unto him, Whence comest thou? And he said unto him, I am a Levite of Bethlehemjudah, and I go to sojourn where I may find a place."

Judges 19:17: "And when he had lifted up his eyes, he saw a wayfaring man in the street of the city: and the old man said, Whither goest thou? and whence comest thou?"

1 Samuel 25:11: "Shall I then take my bread, and my water, and my flesh that I have killed for my shearers, and give it unto men, whom I know not whence they be?"

1 Samuel 30:13: "And David said unto him, To whom belondest thou? and whence art thou? And

he said, I am a young man of Egypt, servant to an Amalekite; and my master left me, because three days ago I fell sick."

2 Samuel 1:3: "And David said unto him, From whence comest thou? And he said unto him, Out of the camp of Israel am I escaped."

2 Samuel 1:13: "And David said unto the young man that told him, Whence art thou? And he answered, I am the son of a stranger, an Amalekite."

2 Kings 5:25: "But he went in, and stood before his master. And Elisha said unto him, Whence comest thou, Gehazi? And he said, Thy servant went no whither."

2 Kings 6:27: "And he said, If the LORD do not help thee, whence shall I help thee? out of the barnfloor, or out of the winepress?"

2 Kings 20:14: "Then came Isaiah the prophet unto king Hezekiah, and said unto him, What said these men? and from whence came they unto thee? And Hezekiah said, They are come from a far country, even from Babylon."

Nehemiah 4:12: "And it came to pass, that when the Jews which dwelt by them came, they said unto us ten times, From all places whence ye shall return unto us they will be upon you."

Job 1:7: "And the LORD said unto Satan, Whence comest thou? Then Satan answered the LORD, and said, From going to and fro in the earth, and from walking up and down in it."

Job 2:2: "And the LORD said unto Satan, From whence comest thou? And Satan answered the LORD, and said, From going to and fro in the earth, and from walking up and down in it."

Job 10:21: "Before I go whence I shall not return, even to the land of darkness and the shadow of death;"

Job 16:22: "When a few years are come, then I shall go the way whence I shall not return."

Job 28:20: "Whence then cometh wisdom? and where is the place of understanding?"

Psalms 121:1: "I will lift up mine eyes unto the hills, from whence cometh my help."

Ecclesiastes 1:7: "All the rivers run into the sea; yet the sea is not full; unto the place from whence the rivers come, thither they return again."

Isaiah 30:6: "The burden of the beasts of the south: into the land of trouble and anguish, from whence come the young and old lion, the viper and fiery flying serpent, they will carry their riches upon the shoulders of young asses, and their treasures upon the bunches of camels, to a people that shall not profit them."

Isaiah 39:3: "Then came Isaiah the prophet unto king Hezekiah, and said unto him, What said these men? and from whence came they unto thee? And Hezekiah said, They are come from a far country unto me, even from Babylon."

Isaiah 47:11: "Therefore shall evil come upon thee; thou shalt not know from whence it riseth: and mischief shall fall upon thee; thou shalt not be able to put it off: and desolation shall come upon thee suddenly, which thou shalt not know."

Isaiah 51:1: "Hearken to me, ye that follow after righteousness, ye that seek the LORD: look unto the rock whence ye are hewn, and to the hole of the pit whence ye are digged."

Jeremiah 29:14: "And I will be found of you, saith the LORD: and I will turn away your captivity, and I will gather you from all the nations, and from all the places whither I have driven you, saith the LORD; and I will bring you again into the place whence I caused you to be carried away captive."

Jonah 1:8: "Then said they unto him, Tell us, we pray thee, for whose cause this evil is upon us; What is thine occupation? and whence comest thou? what is thy country? and of what people art thou?"

Nahum 3:7: "And it shall come to pass, that all they that look upon thee shall flee from thee, and say, Nineveh is laid waste: who will bemoan her? whence shall I seek comforters for thee?"

Matthew 12:44: "Then he saith, I will return into my house from whence I came out; and when he is come, he findeth it empty, swept, and garnished."

Matthew 13:27: "So the servants of the householder came and said unto him, Sir, didst not thou sow

good seed in thy field? from whence then hath it tares?"

Matthew 13:54: "And when he was come into his own country, he taught them in their synagogue, insomuch that they were astonished, and said, Whence hath this man this wisdom, and these mighty works?"

Matthew 13:56: "And his sisters, are they not all with us? Whence then hath this man all these things?"

Matthew 15:33: "And his disciples say unto him, Whence should we have so much bread in the wilderness, as to fill so great a multitude?"

Matthew 21:25: "The baptism of John, whence was it? from heaven, or of men? And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say unto us, Why did ye not then believe him?"

Mark 6:2: "And when the sabbath day was come, he began to teach in the synagogue: and many hearing him were astonished, saying, From whence hath this man these things? and what wisdom is this which is given unto him, that even such mighty works are wrought by his hands?"

Mark 8:4: "And his disciples answered him, From whence can a man satisfy these men with bread here in the wilderness?"

Mark 12:37: "David therefore himself calleth him Lord; and whence is he then his son? And the common people heard him gladly."

Luke 1:43: "And whence is this to me, that the mother of my Lord should come to me?"

Luke 11:24: "When the unclean spirit is gone out of a man, he walketh through dry places, seeking rest; and finding none, he saith, I will return unto my house whence I came out."

Luke 13:25: "When once the master of the house is risen up, and hath shut to the door, and ye begin to stand without, and to knock at the door, saying, Lord, Lord, open unto us; and he shall answer and say unto you, I know you not whence ye are:"

Luke 13:27: "But he shall say, I tell you, I know you not whence ye are; depart from me, all ye workers of iniquity."

Luke 20:7: "And they answered, that they could not tell whence it was."

John 1:48: "Nathanael saith unto him, Whence knowest thou me? Jesus answered and said unto him, Before that Philip called thee, when thou wast under the fig tree, I saw thee."

John 2:9: "When the ruler of the feast had tasted the water that was made wine, and knew not whence it was: (but the servants which drew the water knew;) the governor of the feast called the bridegroom,"

John 3:8: "The wind bloweth where it listeth, and thou hearest the sound thereof, but canst not tell whence it cometh, and whither it goeth: so is every one that is born of the Spirit."

John 4:11: "The woman saith unto him, Sir, thou hast nothing to draw with, and the well is deep: from whence then hast thou that living water?"

John 6:5: "When Jesus then lifted up his eyes, and saw a great company come unto him, he saith unto Philip, Whence shall we buy bread, that these may eat?"

John 7:27: "Howbeit we know this man whence he is: but when Christ cometh, no man knoweth whence he is."

John 7:28: "Then cried Jesus in the temple as he taught, saying, Ye both know me, and ye know whence I am: and I am not come of myself, but he that sent me is true, whom ye know not."

John 8:14: "Jesus answered and said unto them, Though I bear record of myself, yet my record is true: for I know whence I came, and whither I go; but ye cannot tell whence I come, and whither I go."

John 9:29: "We know that God spake unto Moses: as for this fellow, we know not from whence he is."

John 9:30: "The man answered and said unto them, Why herein is a marvellous thing, that ye know not from whence he is, and yet he hath opened mine eyes."

John 19:9: "And went again into the judgment hall, and saith unto Jesus, Whence art thou? But

Jesus gave him no answer."

Acts 14:26: "And thence sailed to Antioch, from whence they had been recommended to the grace of God for the work which they fulfilled."

Philippians 3:20: "For our conversation is in heaven; from whence also we look for the Saviour, the Lord Jesus Christ:"

Hebrews 11:15: "And truly, if they had been mindful of that country from whence they came out, they might have had opportunity to have returned."

Hebrews 11:19: "Accounting that God was able to raise him up, even from the dead; from whence also he received him in a figure."

James 4:1: "From whence come wars and fightings among you? come they not hence, even of your lusts that war in your members?"

Revelation 2:5: "Remember therefore from whence thou art fallen, and repent, and do the first works; or else I will come unto thee quickly, and will remove thy candlestick out of his place, except thou repent."

Revelation 7:13: "And one of the elders answered, saying unto me, What are these which are arrayed in white robes? and whence came they?"

## **WHENSOEVER**

Occurrences: 3

Genesis 30:41: "And it came to pass, whensoever the stronger cattle did conceive, that Jacob laid the rods before the eyes of the cattle in the gutters, that they might conceive among the rods."

Mark 14:7: "For ye have the poor with you always, and whensoever ye will ye may do them good: but me ye have not always."

Romans 15:24: "Whensoever I take my journey into Spain, I will come to you: for I trust to see you in my journey, and to be brought on my way thitherward by you, if first I be somewhat filled with your company."

## **WHERE**

Occurrences: 366

Genesis 2:11: "The name of the first is Pison: that is it which compasseth the whole land of Havilah, where there is gold;"

Genesis 3:9: "And the LORD God called unto Adam, and said unto him, Where art thou?"

Genesis 4:9: "And the LORD said unto Cain, Where is Abel thy brother? And he said, I know not: Am I my brother's keeper?"

Genesis 13:3: "And he went on his journeys from the south even to Bethel, unto the place where his tent had been at the beginning, between Bethel and Hai;"

Genesis 13:10: "And Lot lifted up his eyes, and beheld all the plain of Jordan, that it was well watered every where, before the LORD destroyed Sodom and Gomorrah, even as the garden of the LORD, like the land of Egypt, as thou comest unto Zoar."

Genesis 13:14: "And the LORD said unto Abram, after that Lot was separated from him, Lift up now thine eyes, and look from the place where thou art northward, and southward, and eastward, and westward:"

Genesis 18:9: "And they said unto him, Where is Sarah thy wife? And he said, Behold, in the tent."

Genesis 19:5: "And they called unto Lot, and said unto him, Where are the men which came in to thee this night? bring them out unto us, that we may know them."

Genesis 19:27: "And Abraham gat up early in the morning to the place where he stood before the LORD:"

Genesis 20:15: "And Abimelech said, Behold, my land is before thee: dwell where it pleaseth thee."

Genesis 21:17: "And God heard the voice of the lad; and the angel of God called to Hagar out of

heaven, and said unto her, What aileth thee, Hagar? fear not; for God hath heard the voice of the lad where he is."

Genesis 22:7: "And Isaac spake unto Abraham his father, and said, My father: and he said, Here am I, my son. And he said, Behold the fire and the wood: but where is the lamb for a burnt offering?"

Genesis 27:33: "And Isaac trembled very exceedingly, and said, Who? where is he that hath taken venison, and brought it me, and I have eaten of all before thou camest, and have blessed him? yea, and he shall be blessed."

Genesis 31:13: "I am the God of Bethel, where thou anointedst the pillar, and where thou vowedst a vow unto me: now arise, get thee out from this land, and return unto the land of thy kindred."

Genesis 33:19: "And he bought a parcel of a field, where he had spread his tent, at the hand of the children of Hamor, Shechem's father, for an hundred pieces of money."

Genesis 35:13: "And God went up from him in the place where he talked with him."

Genesis 35:14: "And Jacob set up a pillar in the place where he talked with him, even a pillar of stone: and he poured a drink offering thereon, and he poured oil thereon."

Genesis 35:15: "And Jacob called the name of the place where God spake with him, Bethel."

Genesis 35:27: "And Jacob came unto Isaac his father unto Mamre, unto the city of Arbah, which is Hebron, where Abraham and Isaac sojourned."

Genesis 37:16: "And he said, I seek my brethren: tell me, I pray thee, where they feed their flocks."

Genesis 38:21: "Then he asked the men of that place, saying, Where is the harlot, that was openly by the way side? And they said, There was no harlot in this place."

Genesis 39:20: "And Joseph's master took him, and put him into the prison, a place where the king's prisoners were bound: and he was there in the prison."

Genesis 40:3: "And he put them in ward in the house of the captain of the guard, into the prison, the place where Joseph was bound."

Genesis 43:30: "And Joseph made haste; for his bowels did yearn upon his brother: and he sought where to weep; and he entered into his chamber, and wept there."

Exodus 2:20: "And he said unto his daughters, And where is he? why is it that ye have left the man? call him, that he may eat bread."

Exodus 5:11: "Go ye, get you straw where ye can find it: yet not ought of your work shall be diminished."

Exodus 9:26: "Only in the land of Goshen, where the children of Israel were, was there no hail."

Exodus 12:13: "And the blood shall be to you for a token upon the houses where ye are: and when I see the blood, I will pass over you, and the plague shall not be upon you to destroy you, when I smite the land of Egypt."

Exodus 12:30: "And Pharaoh rose up in the night, he, and all his servants, and all the Egyptians; and there was a great cry in Egypt; for there was not a house where there was not one dead."

Exodus 15:27: "And they came to Elim, where were twelve wells of water, and threescore and ten palm trees: and they encamped there by the waters."

Exodus 18:5: "And Jethro, Moses' father in law, came with his sons and his wife unto Moses into the wilderness, where he encamped at the mount of God:"

Exodus 20:21: "And the people stood afar off, and Moses drew near unto the thick darkness where God was."

Exodus 20:24: "An altar of earth thou shalt make unto me, and shalt sacrifice thereon thy burnt offerings, and thy peace offerings, thy sheep, and thine oxen: in all places where I record my name I will come unto thee, and I will bless thee."

Exodus 27:18: "The length of the court shall be an hundred cubits, and the breadth fifty every where, and the height five cubits of fine twined linen, and their sockets of brass."

Exodus 29:42: "This shall be a continual burnt offering throughout your generations at the door of the tabernacle of the congregation before the LORD: where I will meet you, to speak there unto thee."

Exodus 30:6: "And thou shalt put it before the vail that is by the ark of the testimony, before the mercy seat that is over the testimony, where I will meet with thee."

Exodus 30:36: "And thou shalt beat some of it very small, and put of it before the testimony in the tabernacle of the congregation, where I will meet with thee: it shall be unto you most holy."

Leviticus 4:12: "Even the whole bullock shall he carry forth without the camp unto a clean place, where the ashes are poured out, and burn him on the wood with fire: where the ashes are poured out shall he be burnt."

Leviticus 4:24: "And he shall lay his hand upon the head of the goat, and kill it in the place where they kill the burnt offering before the LORD: it is a sin offering."

Leviticus 4:33: "And he shall lay his hand upon the head of the sin offering, and slay it for a sin offering in the place where they kill the burnt offering."

Leviticus 6:25: "Speak unto Aaron and to his sons, saying, This is the law of the sin offering: In the place where the burnt offering is killed shall the sin offering be killed before the LORD: it is most holy."

Leviticus 7:2: "In the place where they kill the burnt offering shall they kill the trespass offering: and the blood thereof shall he sprinkle round about upon the altar."

Leviticus 14:13: "And he shall slay the lamb in the place where he shall kill the sin offering and the burnt offering, in the holy place: for as the sin offering is the priest's, so is the trespass offering: it is most holy:"

Numbers 9:17: "And when the cloud was taken up from the tabernacle, then after that the children of Israel journeyed: and in the place where the cloud abode, there the children of Israel pitched their tents."

Numbers 13:22: "And they ascended by the south, and came unto Hebron; where Ahiman, Sheshai, and Talmai, the children of Anak, were. (Now Hebron was built seven years before Zoan in Egypt.)"

Numbers 17:4: "And thou shalt lay them up in the tabernacle of the congregation before the testimony, where I will meet with you."

Numbers 22:26: "And the angel of the LORD went further, and stood in a narrow place, where was no way to turn either to the right hand or to the left."

Numbers 33:14: "And they removed from Alush, and encamped at Rephidim, where was no water for the people to drink."

Numbers 33:54: "And ye shall divide the land by lot for an inheritance among your families: and to the more ye shall give the more inheritance, and to the fewer ye shall give the less inheritance: every man's inheritance shall be in the place where his lot falleth; according to the tribes of your fathers ye shall inherit."

Deuteronomy 1:31: "And in the wilderness, where thou hast seen how that the LORD thy God bare thee, as a man doth bear his son, in all the way that ye went, until ye came into this place."

Deuteronomy 8:15: "Who led thee through that great and terrible wilderness, wherein were fiery serpents, and scorpions, and drought, where there was no water; who brought thee forth water out of the rock of flint;"

Deuteronomy 11:10: "For the land, whither thou goest in to possess it, is not as the land of Egypt, from whence ye came out, where thou sowedst thy seed, and wateredst it with thy foot, as a garden of herbs:"

Deuteronomy 11:30: "Are they not on the other side Jordan, by the way where the sun goeth down, in the land of the Canaanites, which dwell in the champaign over against Gilgal, beside the plains of Moreh?"

Deuteronomy 18:6: "And if a Levite come from any of thy gates out of all Israel, where he sojourned, and come with all the desire of his mind unto the place which the LORD shall choose;"

Deuteronomy 23:16: "He shall dwell with thee, even among you, in that place which he shall choose in one of thy gates, where it liketh him best: thou shalt not oppress him."



Deuteronomy 32:37: "And he shall say, Where are their gods, their rock in whom they trusted,"

Joshua 4:3: "And command ye them, saying, Take you hence out of the midst of Jordan, out of the place where the priests' feet stood firm, twelve stones, and ye shall carry them over with you, and leave them in the lodging place, where ye shall lodge this night."

Joshua 4:8: "And the children of Israel did so as Joshua commanded, and took up twelve stones out of the midst of Jordan, as the LORD spake unto Joshua, according to the number of the tribes of the children of Israel, and carried them over with them unto the place where they lodged, and laid them down there."

Joshua 4:9: "And Joshua set up twelve stones in the midst of Jordan, in the place where the feet of the priests which bare the ark of the covenant stood: and they are there unto this day."

Judges 5:27: "At her feet he bowed, he fell, he lay down: at her feet he bowed, he fell: where he bowed, there he fell down dead."

Judges 6:13: "And Gideon said unto him, Oh my Lord, if the LORD be with us, why then is all this befallen us? and where be all his miracles which our fathers told us of, saying, Did not the LORD bring us up from Egypt? but now the LORD hath forsaken us, and delivered us into the hands of the Midianites."

Judges 9:38: "Then said Zebul unto him, Where is now thy mouth, wherewith thou saidst, Who is Abimelech, that we should serve him? is not this the people that thou hast despised? go out, I pray now, and fight with them."

Judges 17:8: "And the man departed out of the city from Bethlehemjudah to sojourn where he could find a place: and he came to mount Ephraim to the house of Micah, as he journeyed."

Judges 17:9: "And Micah said unto him, Whence comest thou? And he said unto him, I am a Levite of Bethlehemjudah, and I go to sojourn where I may find a place."

Judges 18:10: "When ye go, ye shall come unto a people secure, and to a large land: for God hath given it into your hands; a place where there is no want of any thing that is in the earth."

Judges 19:26: "Then came the woman in the dawning of the day, and fell down at the door of the man's house where her lord was, till it was light."

Judges 20:22: "And the people the men of Israel encouraged themselves, and set their battle again in array in the place where they put themselves in array the first day."

Ruth 1:7: "Wherefore she went forth out of the place where she was, and her two daughters in law with her; and they went on the way to return unto the land of Judah."

Ruth 1:16: "And Ruth said, Intreat me not to leave thee, or to return from following after thee: for whither thou goest, I will go; and where thou lodgest, I will lodge: thy people shall be my people, and thy God my God:"

Ruth 1:17: "Where thou diest, will I die, and there will I be buried: the LORD do so to me, and more also, if ought but death part thee and me."

Ruth 2:19: "And her mother in law said unto her, Where hast thou gleaned to day? and where wroughtest thou? blessed be he that did take knowledge of thee. And she shewed her mother in law with whom she had wrought, and said, The man's name with whom I wrought to day is Boaz."

Ruth 3:4: "And it shall be, when he lieth down, that thou shalt mark the place where he shall lie, and thou shalt go in, and uncover his feet, and lay thee down; and he will tell thee what thou shalt do."

1 Samuel 3:3: "And ere the lamp of God went out in the temple of the LORD, where the ark of God was, and Samuel was laid down to sleep;"

1 Samuel 6:14: "And the cart came into the field of Joshua, a Bethshemite, and stood there, where there was a great stone: and they clave the wood of the cart, and offered the kine a burnt offering unto the LORD."

1 Samuel 9:10: "Then said Saul to his servant, Well said; come, let us go. So they went unto the city where the man of God was."

1 Samuel 9:18: "Then Saul drew near to Samuel in the gate, and said, Tell me, I pray thee, where the seer's house is."

1 Samuel 10:5: "After that thou shalt come to the hill of God, where is the garrison of the Philistines: and it shall come to pass, when thou art come thither to the city, that thou shalt meet a company of prophets coming down from the high place with a psaltery, and a tabret, and a pipe, and a harp, before them; and they shall prophesy:"

1 Samuel 10:14: "And Saul's uncle said unto him and to his servant, Whither went ye? And he said, To seek the asses: and when we saw that they were no where, we came to Samuel."

1 Samuel 14:11: "And both of them discovered themselves unto the garrison of the Philistines: and the Philistines said, Behold, the Hebrews come forth out of the holes where they had hid themselves."

1 Samuel 19:3: "And I will go out and stand beside my father in the field where thou art, and I will commune with my father of thee; and what I see, that I will tell thee."

1 Samuel 19:22: "Then went he also to Ramah, and came to a great well that is in Sechu: and he asked and said, Where are Samuel and David? And one said, Behold, they be at Naioth in Ramah."

1 Samuel 20:19: "And when thou hast stayed three days, then thou shalt go down quickly, and come to the place where thou didst hide thyself when the business was in hand, and shalt remain by the stone Ezel."

1 Samuel 23:22: "Go, I pray you, prepare yet, and know and see his place where his haunt is, and who hath seen him there: for it is told me that he dealeth very subtilly."

1 Samuel 23:23: "See therefore, and take knowledge of all the lurking places where he hideth himself, and come ye again to me with the certainty, and I will go with you: and it shall come to pass, if he be in the land, that I will search him out throughout all the thousands of Judah."

1 Samuel 24:3: "And he came to the sheepcotes by the way, where was a cave; and Saul went in to cover his feet: and David and his men remained in the sides of the cave."

1 Samuel 26:5: "And David arose, and came to the place where Saul had pitched: and David beheld the place where Saul lay, and Abner the son of Ner, the captain of his host: and Saul lay in the trench, and the people pitched round about him."

1 Samuel 26:16: "This thing is not good that thou hast done. As the LORD liveth, ye are worthy to die, because ye have not kept your master, the LORD's anointed. And now see where the king's spear is, and the cruse of water that was at his bolster."

1 Samuel 30:9: "So David went, he and the six hundred men that were with him, and came to the brook Besor, where those that were left behind stayed."

1 Samuel 30:31: "And to them which were in Hebron, and to all the places where David himself and his men were wont to haunt."

2 Samuel 2:23: "Howbeit he refused to turn aside: wherefore Abner with the hinder end of the spear smote him under the fifth rib, that the spear came out behind him; and he fell down there, and died in the same place: and it came to pass, that as many as came to the place where Asahel fell down and died stood still."

2 Samuel 9:4: "And the king said unto him, Where is he? And Ziba said unto the king, Behold, he is in the house of Machir, the son of Ammiel, in Lodebar."

2 Samuel 11:16: "And it came to pass, when Joab observed the city, that he assigned Uriah unto a place where he knew that valiant men were."

2 Samuel 15:32: "And it came to pass, that when David was come to the top of the mount, where he worshipped God, behold, Hushai the Archite came to meet him with his coat rent, and earth upon his head:"

2 Samuel 16:3: "And the king said, And where is thy master's son? And Ziba said unto the king, Behold, he abideth at Jerusalem: for he said, To day shall the house of Israel restore me the kingdom of my father."

2 Samuel 17:12: "So shall we come upon him in some place where he shall be found, and we will light upon him as the dew falleth on the ground: and of him and of all the men that are with him there shall not be left so much as one."

2 Samuel 17:20: "And when Absalom's servants came to the woman to the house, they said, Where is Ahimaaz and Jonathan? And the woman said unto them, They be gone over the brook of water. And when they had sought and could not find them, they returned to Jerusalem."

2 Samuel 18:7: "Where the people of Israel were slain before the servants of David, and there was there a great slaughter that day of twenty thousand men."

2 Samuel 21:12: "And David went and took the bones of Saul and the bones of Jonathan his son from the men of Jabeshgilead, which had stolen them from the street of Bethshan, where the Philistines had hanged them, when the Philistines had slain Saul in Gilboa:"

2 Samuel 21:19: "And there was again a battle in Gob with the Philistines, where Elhanan the son of Jaareoregim, a Bethlehemite, slew the brother of Goliath the Gittite, the staff of whose spear was like a weaver's beam."

2 Samuel 21:20: "And there was yet a battle in Gath, where was a man of great stature, that had on every hand six fingers, and on every foot six toes, four and twenty in number; and he also was born to the giant."

2 Samuel 23:11: "And after him was Shammah the son of Agee the Hararite. And the Philistines were gathered together into a troop, where was a piece of ground full of lentiles: and the people fled from the Philistines."

1 Kings 4:28: "Barley also and straw for the horses and dromedaries brought they unto the place where the officers were, every man according to his charge."

1 Kings 7:7: "Then he made a porch for the throne where he might judge, even the porch of judgment: and it was covered with cedar from one side of the floor to the other."

1 Kings 7:8: "And his house where he dwelt had another court within the porch, which was of the like work. Solomon made also an house for Pharaoh's daughter, whom he had taken to wife, like unto this porch."

1 Kings 13:25: "And, behold, men passed by, and saw the carcass cast in the way, and the lion standing by the carcass: and they came and told it in the city where the old prophet dwelt."

1 Kings 17:19: "And he said unto her, Give me thy son. And he took him out of her bosom, and carried him up into a loft, where he abode, and laid him upon his own bed."

1 Kings 21:19: "And thou shalt speak unto him, saying, Thus saith the LORD, Hast thou killed, and also taken possession? And thou shalt speak unto him, saying, Thus saith the LORD, In the place where dogs licked the blood of Naboth shall dogs lick thy blood, even thine."

2 Kings 2:14: "And he took the mantle of Elijah that fell from him, and smote the waters, and said, Where is the LORD God of Elijah? and when he also had smitten the waters, they parted hither and thither: and Elisha went over."

2 Kings 4:8: "And it fell on a day, that Elisha passed to Shunem, where was a great woman; and she constrained him to eat bread. And so it was, that as oft as he passed by, he turned in thither to eat bread."

2 Kings 6:1: "And the sons of the prophets said unto Elisha, Behold now, the place where we dwell with thee is too strait for us."

2 Kings 6:2: "Let us go, we pray thee, unto Jordan, and take thence every man a beam, and let us make us a place there, where we may dwell. And he answered, Go ye."

2 Kings 6:6: "And the man of God said, Where fell it? And he shewed him the place. And he cut down a stick, and cast it in thither; and the iron did swim."

2 Kings 6:13: "And he said, Go and spy where he is, that I may send and fetch him. And it was told him, saying, Behold, he is in Dothan."

2 Kings 18:34: "Where are the gods of Hamath, and of Arpad? where are the gods of Sepharvaim, Hena, and Ivah? have they delivered Samaria out of mine hand?"

2 Kings 19:13: "Where is the king of Hamath, and the king of Arpad, and the king of the city of Sepharvaim, of Hena, and Ivah?"

2 Kings 23:7: "And he brake down the houses of the sodomites, that were by the house of the

LORD, where the women wove hangings for the grove."

2 Kings 23:8: "And he brought all the priests out of the cities of Judah, and defiled the high places where the priests had burned incense, from Geba to Beersheba, and brake down the high places of the gates that were in the entering in of the gate of Joshua the governor of the city, which were on a man's left hand at the gate of the city."

1 Chronicles 11:4: "And David and all Israel went to Jerusalem, which is Jebus; where the Jebusites were, the inhabitants of the land."

1 Chronicles 11:13: "He was with David at Paddammim, and there the Philistines were gathered together to battle, where was a parcel of ground full of barley; and the people fled from before the Philistines."

1 Chronicles 13:2: "And David said unto all the congregation of Israel, If it seem good unto you, and that it be of the LORD our God, let us send abroad unto our brethren every where, that are left in all the land of Israel, and with them also to the priests and Levites which are in their cities and suburbs, that they may gather themselves unto us:"

1 Chronicles 20:6: "And yet again there was war at Gath, where was a man of great stature, whose fingers and toes were four and twenty, six on each hand, and six on each foot and he also was the son of the giant."

2 Chronicles 3:1: "Then Solomon began to build the house of the LORD at Jerusalem in mount Moriah, where the Lord appeared unto David his father, in the place that David had prepared in the threshingfloor of Ornan the Jebusite."

2 Chronicles 25:4: "But he slew not their children, but did as it is written in the law in the book of Moses, where the LORD commanded, saying, The fathers shall not die for the children, neither shall the children die for the fathers, but every man shall die for his own sin."

2 Chronicles 36:20: "And them that had escaped from the sword carried he away to Babylon; where they were servants to him and his sons until the reign of the kingdom of Persia:"

Ezra 1:4: "And whosoever remaineth in any place where he sojourneth, let the men of his place help him with silver, and with gold, and with goods, and with beasts, beside the freewill offering for the house of God that is in Jerusalem."

Ezra 6:1: "Then Darius the king made a decree, and search was made in the house of the rolls, where the treasures were laid up in Babylon."

Ezra 6:3: "In the first year of Cyrus the king the same Cyrus the king made a decree concerning the house of God at Jerusalem, Let the house be builded, the place where they offered sacrifices, and let the foundations thereof be strongly laid; the height thereof threescore cubits, and the breadth thereof threescore cubits;"

Nehemiah 10:39: "For the children of Israel and the children of Levi shall bring the offering of the corn, of the new wine, and the oil, unto the chambers, where are the vessels of the sanctuary, and the priests that minister, and the porters, and the singers: and we will not forsake the house of our God."

Nehemiah 13:5: "And he had prepared for him a great chamber, where aforetime they laid the meat offerings, the frankincense, and the vessels, and the tithes of the corn, the new wine, and the oil, which was commanded to be given to the Levites, and the singers, and the porters; and the offerings of the priests."

Esther 1:6: "Where were white, green, and blue, hangings, fastened with cords of fine linen and purple to silver rings and pillars of marble: the beds were of gold and silver, upon a pavement of red, and blue, and white, and black, marble."

Esther 7:5: "Then the king Ahasuerus answered and said unto Esther the queen, Who is he, and where is he, that durst presume in his heart to do so?"

Job 4:7: "Remember, I pray thee, who ever perished, being innocent? or where were the righteous cut off?"

Job 9:24: "The earth is given into the hand of the wicked: he covereth the faces of the judges

thereof; if not, where, and who is he?"

Job 10:22: "A land of darkness, as darkness itself; and of the shadow of death, without any order, and where the light is as darkness."

Job 12:24: "He taketh away the heart of the chief of the people of the earth, and causeth them to wander in a wilderness where there is no way."

Job 14:10: "But man dieth, and wasteth away: yea, man giveth up the ghost, and where is he?"

Job 15:23: "He wandereth abroad for bread, saying, Where is it? he knoweth that the day of darkness is ready at his hand."

Job 17:15: "And where is now my hope? as for my hope, who shall see it?"

Job 20:7: "Yet he shall perish for ever like his own dung: they which have seen him shall say, Where is he?"

Job 21:28: "For ye say, Where is the house of the prince? and where are the dwelling places of the wicked?"

Job 23:3: "Oh that I knew where I might find him! that I might come even to his seat!"

Job 23:9: "On the left hand, where he doth work, but I cannot behold him: he hideth himself on the right hand, that I cannot see him:"

Job 28:1: "Surely there is a vein for the silver, and a place for gold where they fine it."

Job 28:12: "But where shall wisdom be found? and where is the place of understanding?"

Job 28:20: "Whence then cometh wisdom? and where is the place of understanding?"

Job 34:22: "There is no darkness, nor shadow of death, where the workers of iniquity may hide themselves."

Job 35:10: "But none saith, Where is God my maker, who giveth songs in the night;"

Job 36:16: "Even so would he have removed thee out of the strait into a broad place, where there is no straitness; and that which should be set on thy table should be full of fatness."

Job 38:4: "Where wast thou when I laid the foundations of the earth? declare, if thou hast understanding."

Job 38:19: "Where is the way where light dwelleth? and as for darkness, where is the place thereof,"

Job 38:26: "To cause it to rain on the earth, where no man is; on the wilderness, wherein there is no man;"

Job 39:30: "Her young ones also suck up blood: and where the slain are, there is she."

Job 40:20: "Surely the mountains bring him forth food, where all the beasts of the field play."

Psalms 19:3: "There is no speech nor language, where their voice is not heard."

Psalms 26:8: "LORD, I have loved the habitation of thy house, and the place where thine honour dwelleth."

Psalms 42:3: "My tears have been my meat day and night, while they continually say unto me, Where is thy God?"

Psalms 42:10: "As with a sword in my bones, mine enemies reproach me; while they say daily unto me, Where is thy God?"

Psalms 53:5: "There were they in great fear, where no fear was: for God hath scattered the bones of him that encampeth against thee: thou hast put them to shame, because God hath despised them."

Psalms 63:1: "O God, thou art my God; early will I seek thee: my soul thirsteth for thee, my flesh longeth for thee in a dry and thirsty land, where no water is;"

Psalms 69:2: "I sink in deep mire, where there is no standing: I am come into deep waters, where the floods overflow me."

Psalms 79:10: "Wherefore should the heathen say, Where is their God? let him be known among the heathen in our sight by the revenging of the blood of thy servants which is shed."

Psalms 81:5: "This he ordained in Joseph for a testimony, when he went out through the land of Egypt: where I heard a language that I understood not."

Psalms 84:3: "Yea, the sparrow hath found an house, and the swallow a nest for herself, where she may lay her young, even thine altars, O LORD of hosts, my King, and my God."

Psalms 89:49: "Lord, where are thy former lovingkindnesses, which thou swarest unto David in thy truth?"

Psalms 104:17: "Where the birds make their nests: as for the stork, the fir trees are her house."

Psalms 107:40: "He poureth contempt upon princes, and causeth them to wander in the wilderness, where there is no way."

Psalms 115:2: "Wherefore should the heathen say, Where is now their God?"

Proverbs 11:14: "Where no counsel is, the people fall: but in the multitude of counsellors there is safety."

Proverbs 14:4: "Where no oxen are, the crib is clean: but much increase is by the strength of the ox."

Proverbs 15:17: "Better is a dinner of herbs where love is, than a stalled ox and hatred therewith."

Proverbs 26:20: "Where no wood is, there the fire goeth out: so where there is no talebearer, the strife ceaseth."

Proverbs 29:18: "Where there is no vision, the people perish: but he that keepeth the law, happy is he."

Ecclesiastes 1:5: "The sun also ariseth, and the sun goeth down, and hasteth to his place where he arose."

Ecclesiastes 8:4: "Where the word of a king is, there is power: and who may say unto him, What doest thou?"

Ecclesiastes 8:10: "And so I saw the wicked buried, who had come and gone from the place of the holy, and they were forgotten in the city where they had so done: this is also vanity."

Ecclesiastes 11:3: "If the clouds be full of rain, they empty themselves upon the earth: and if the tree fall toward the south, or toward the north, in the place where the tree falleth, there it shall be."

Song of Solomon 1:7: "Tell me, O thou whom my soul loveth, where thou feedest, where thou makest thy flock to rest at noon: for why should I be as one that turneth aside by the flocks of thy companions?"

Isaiah 7:23: "And it shall come to pass in that day, that every place shall be, where there were a thousand vines at a thousand silverlings, it shall even be for briers and thorns."

Isaiah 10:3: "And what will ye do in the day of visitation, and in the desolation which shall come from far? to whom will ye flee for help? and where will ye leave your glory?"

Isaiah 19:12: "Where are they? where are thy wise men? and let them tell thee now, and let them know what the LORD of hosts hath purposed upon Egypt."

Isaiah 29:1: "Woe to Ariel, to Ariel, the city where David dwelt! add ye year to year; let them kill sacrifices."

Isaiah 30:32: "And in every place where the grounded staff shall pass, which the LORD shall lay upon him, it shall be with tabrets and harps: and in battles of shaking will he fight with it."

Isaiah 33:18: "Thine heart shall meditate terror. Where is the scribe? where is the receiver? where is he that counted the towers?"

Isaiah 35:7: "And the parched ground shall become a pool, and the thirsty land springs of water: in the habitation of dragons, where each lay, shall be grass with reeds and rushes."

Isaiah 36:19: "Where are the gods of Hamath and Arphad? where are the gods of Sepharvaim? and have they delivered Samaria out of my hand?"

Isaiah 37:13: "Where is the king of Hamath, and the king of Arphad, and the king of the city of Sepharvaim, Hena, and Ivah?"

Isaiah 49:21: "Then shalt thou say in thine heart, Who hath begotten me these, seeing I have lost my children, and am desolate, a captive, and removing to and fro? and who hath brought up these? Behold, I was left alone; these, where had they been?"

Isaiah 50:1: "Thus saith the LORD, Where is the bill of your mother's divorcement, whom I have put away? or which of my creditors is it to whom I have sold you? Behold, for your iniquities have ye sold yourselves, and for your transgressions is your mother put away."

Isaiah 51:13: "And forgettest the LORD thy maker, that hath stretched forth the heavens, and laid the foundations of the earth; and hast feared continually every day because of the fury of the oppressor, as if he were ready to destroy? and where is the fury of the oppressor?"

Isaiah 57:8: "Behind the doors also and the posts hast thou set up thy remembrance: for thou hast discovered thyself to another than me, and art gone up; thou hast enlarged thy bed, and made thee a covenant with them; thou lovedst their bed where thou sawest it."

Isaiah 63:11: "Then he remembered the days of old, Moses, and his people, saying, Where is he that brought them up out of the sea with the shepherd of his flock? where is he that put his holy Spirit within him?"

Isaiah 63:15: "Look down from heaven, and behold from the habitation of thy holiness and of thy glory: where is thy zeal and thy strength, the sounding of thy bowels and of thy mercies toward me? are they restrained?"

Isaiah 64:11: "Our holy and our beautiful house, where our fathers praised thee, is burned up with fire: and all our pleasant things are laid waste."

Isaiah 66:1: "Thus saith the LORD, The heaven is my throne, and the earth is my footstool: where is the house that ye build unto me? and where is the place of my rest?"

Jeremiah 2:6: "Neither said they, Where is the LORD that brought us up out of the land of Egypt, that led us through the wilderness, through a land of deserts and of pits, through a land of drought, and of the shadow of death, through a land that no man passed through, and where no man dwelt?"

Jeremiah 2:8: "The priests said not, Where is the LORD? and they that handle the law knew me not: the pastors also transgressed against me, and the prophets prophesied by Baal, and walked after things that do not profit."

Jeremiah 2:28: "But where are thy gods that thou hast made thee? let them arise, if they can save thee in the time of thy trouble: for according to the number of thy cities are thy gods, O Judah."

Jeremiah 3:2: "Lift up thine eyes unto the high places, and see where thou hast not been lien with. In the ways hast thou sat for them, as the Arabian in the wilderness; and thou hast polluted the land with thy whoredoms and with thy wickedness."

Jeremiah 6:16: "Thus saith the LORD, Stand ye in the ways, and see, and ask for the old paths, where is the good way, and walk therein, and ye shall find rest for your souls. But they said, We will not walk therein."

Jeremiah 7:12: "But go ye now unto my place which was in Shiloh, where I set my name at the first, and see what I did to it for the wickedness of my people Israel."

Jeremiah 13:7: "Then I went to Euphrates, and digged, and took the girdle from the place where I had hid it: and, behold, the girdle was marred, it was profitable for nothing."

Jeremiah 13:20: "Lift up your eyes, and behold them that come from the north: where is the flock that was given thee, thy beautiful flock?"

Jeremiah 16:13: "Therefore will I cast you out of this land into a land that ye know not, neither ye nor your fathers; and there shall ye serve other gods day and night; where I will not shew you favour."

Jeremiah 17:15: "Behold, they say unto me, Where is the word of the LORD? let it come now."

Jeremiah 22:26: "And I will cast thee out, and thy mother that bare thee, into another country, where ye were not born; and there shall ye die."

Jeremiah 35:7: "Neither shall ye build house, nor sow seed, nor plant vineyard, nor have any: but all your days ye shall dwell in tents; that ye may live many days in the land where ye be strangers."

Jeremiah 36:19: "Then said the princes unto Baruch, Go, hide thee, thou and Jeremiah; and let no man know where ye be."

Jeremiah 37:19: "Where are now your prophets which prophesied unto you, saying, The king of Babylon shall not come against you, nor against this land?"

Jeremiah 38:9: "My lord the king, these men have done evil in all that they have done to Jeremiah the prophet, whom they have cast into the dungeon; and he is like to die for hunger in the place

where he is: for there is no more bread in the city."

Jeremiah 39:5: "But the Chaldeans' army pursued after them, and overtook Zedekiah in the plains of Jericho: and when they had taken him, they brought him up to Nebuchadnezzar king of Babylon to Riblah in the land of Hamath, where he gave judgment upon him."

Jeremiah 42:14: "Saying, No; but we will go into the land of Egypt, where we shall see no war, nor hear the sound of the trumpet, nor have hunger of bread; and there will we dwell:"

Jeremiah 52:9: "Then they took the king, and carried him up unto the king of Babylon to Riblah in the land of Hamath; where he gave judgment upon him."

Lamentations 2:12: "They say to their mothers, Where is corn and wine? when they swooned as the wounded in the streets of the city, when their soul was poured out into their mothers' bosom."

Ezekiel 3:15: "Then I came to them of the captivity at Telabib, that dwelt by the river of Chebar, and I sat where they sat, and remained there astonished among them seven days."

Ezekiel 6:13: "Then shall ye know that I am the LORD, when their slain men shall be among their idols round about their altars, upon every high hill, in all the tops of the mountains, and under every green tree, and under every thick oak, the place where they did offer sweet savour to all their idols."

Ezekiel 8:3: "And he put forth the form of an hand, and took me by a lock of mine head; and the spirit lifted me up between the earth and the heaven, and brought me in the visions of God to Jerusalem, to the door of the inner gate that looketh toward the north; where was the seat of the image of jealousy, which provoketh to jealousy."

Ezekiel 11:16: "Therefore say, Thus saith the Lord GOD; Although I have cast them far off among the heathen, and although I have scattered them among the countries, yet will I be to them as a little sanctuary in the countries where they shall come."

Ezekiel 11:17: "Therefore say, Thus saith the Lord GOD; I will even gather you from the people, and assemble you out of the countries where ye have been scattered, and I will give you the land of Israel."

Ezekiel 13:12: "Lo, when the wall is fallen, shall it not be said unto you, Where is the daubing wherewith ye have daubed it?"

Ezekiel 17:10: "Yea, behold, being planted, shall it prosper? shall it not utterly wither, when the east wind toucheth it? it shall wither in the furrows where it grew."

Ezekiel 17:16: "As I live, saith the Lord GOD, surely in the place where the king dwelleth that made him king, whose oath he despised, and whose covenant he brake, even with him in the midst of Babylon he shall die."

Ezekiel 20:38: "And I will purge out from among you the rebels, and them that transgress against me: I will bring them forth out of the country where they sojourn, and they shall not enter into the land of Israel: and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 21:30: "Shall I cause it to return into his sheath? I will judge thee in the place where thou wast created, in the land of thy nativity."

Ezekiel 34:12: "As a shepherd seeketh out his flock in the day that he is among his sheep that are scattered; so will I seek out my sheep, and will deliver them out of all places where they have been scattered in the cloudy and dark day."

Ezekiel 40:38: "And the chambers and the entries thereof were by the posts of the gates, where they washed the burnt offering."

Ezekiel 42:13: "Then said he unto me, The north chambers and the south chambers, which are before the separate place, they be holy chambers, where the priests that approach unto the LORD shall eat the most holy things: there shall they lay the most holy things, and the meat offering, and the sin offering, and the trespass offering; for the place is holy."

Ezekiel 43:7: "And he said unto me, Son of man, the place of my throne, and the place of the soles of my feet, where I will dwell in the midst of the children of Israel for ever, and my holy name, shall the house of Israel no more defile, neither they, nor their kings, by their whoredom, nor by the carcasses of their kings in their high places."



Ezekiel 46:20: "Then said he unto me, This is the place where the priests shall boil the trespass offering and the sin offering, where they shall bake the meat offering; that they bear them not out into the utter court, to sanctify the people."

Ezekiel 46:24: "Then said he unto me, These are the places of them that boil, where the ministers of the house shall boil the sacrifice of the people."

Daniel 8:17: "So he came near where I stood: and when he came, I was afraid, and fell upon my face: but he said unto me, Understand, O son of man: for at the time of the end shall be the vision."

Hosea 1:10: "Yet the number of the children of Israel shall be as the sand of the sea, which cannot be measured nor numbered; and it shall come to pass, that in the place where it was said unto them, Ye are not my people, there it shall be said unto them, Ye are the sons of the living God."

Hosea 13:10: "I will be thy king: where is any other that may save thee in all thy cities? and thy judges of whom thou saidst, Give me a king and princes?"

Joel 2:17: "Let the priests, the ministers of the LORD, weep between the porch and the altar, and let them say, Spare thy people, O LORD, and give not thine heritage to reproach, that the heathen should rule over them: wherefore should they say among the people, Where is their God?"

Amos 3:5: "Can a bird fall in a snare upon the earth, where no gin is for him? shall one take up a snare from the earth, and have taken nothing at all?"

Micah 7:10: "Then she that is mine enemy shall see it, and shame shall cover her which said unto me, Where is the LORD thy God? mine eyes shall behold her: now shall she be trodden down as the mire of the streets."

Nahum 2:11: "Where is the dwelling of the lions, and the feedingplace of the young lions, where the lion, even the old lion, walked, and the lion's whelp, and none made them afraid?"

Nahum 3:17: "Thy crowned are as the locusts, and thy captains as the great grasshoppers, which camp in the hedges in the cold day, but when the sun ariseth they flee away, and their place is not known where they are."

Zephaniah 3:19: "Behold, at that time I will undo all that afflict thee: and I will save her that halteth, and gather her that was driven out; and I will get them praise and fame in every land where they have been put to shame."

Zechariah 1:5: "Your fathers, where are they? and the prophets, do they live for ever?"

Malachi 1:6: "A son honoureth his father, and a servant his master: if then I be a father, where is mine honour? and if I be a master, where is my fear? saith the LORD of hosts unto you, O priests, that despise my name. And ye say, Wherein have we despised thy name?"

Malachi 2:17: "Ye have wearied the LORD with your words. Yet ye say, Wherein have we wearied him? When ye say, Every one that doeth evil is good in the sight of the LORD, and he delighteth in them; or, Where is the God of judgment?"

Matthew 2:2: "Saying, Where is he that is born King of the Jews? for we have seen his star in the east, and are come to worship him."

Matthew 2:4: "And when he had gathered all the chief priests and scribes of the people together, he demanded of them where Christ should be born."

Matthew 2:9: "When they had heard the king, they departed; and, lo, the star, which they saw in the east, went before them, till it came and stood over where the young child was."

Matthew 6:19: "Lay not up for yourselves treasures upon earth, where moth and rust doth corrupt, and where thieves break through and steal:"

Matthew 6:20: "But lay up for yourselves treasures in heaven, where neither moth nor rust doth corrupt, and where thieves do not break through nor steal:"

Matthew 6:21: "For where your treasure is, there will your heart be also."

Matthew 8:20: "And Jesus saith unto him, The foxes have holes, and the birds of the air have nests; but the Son of man hath not where to lay his head."

Matthew 13:5: "Some fell upon stony places, where they had not much earth: and forthwith they sprung up, because they had no deepness of earth:"

Matthew 18:20: "For where two or three are gathered together in my name, there am I in the midst of them."

Matthew 25:24: "Then he which had received the one talent came and said, Lord, I knew thee that thou art an hard man, reaping where thou hast not sown, and gathering where thou hast not strawed:"

Matthew 25:26: "His lord answered and said unto him, Thou wicked and slothful servant, thou knewest that I reap where I sowed not, and gather where I have not strawed:"

Matthew 26:17: "Now the first day of the feast of unleavened bread the disciples came to Jesus, saying unto him, Where wilt thou that we prepare for thee to eat the passover?"

Matthew 26:57: "And they that had laid hold on Jesus led him away to Caiaphas the high priest, where the scribes and the elders were assembled."

Matthew 28:6: "He is not here: for he is risen, as he said. Come, see the place where the Lord lay."

Matthew 28:16: "Then the eleven disciples went away into Galilee, into a mountain where Jesus had appointed them."

Mark 2:4: "And when they could not come nigh unto him for the press, they uncovered the roof where he was: and when they had broken it up, they let down the bed wherein the sick of the palsy lay."

Mark 4:5: "And some fell on stony ground, where it had not much earth; and immediately it sprang up, because it had no depth of earth:"

Mark 4:15: "And these are they by the way side, where the word is sown; but when they have heard, Satan cometh immediately, and taketh away the word that was sown in their hearts."

Mark 5:40: "And they laughed him to scorn. But when he had put them all out, he taketh the father and the mother of the damsel, and them that were with him, and entereth in where the damsel was lying."

Mark 6:55: "And ran through that whole region round about, and began to carry about in beds those that were sick, where they heard he was."

Mark 9:44: "Where their worm dieth not, and the fire is not quenched."

Mark 9:46: "Where their worm dieth not, and the fire is not quenched."

Mark 9:48: "Where their worm dieth not, and the fire is not quenched."

Mark 11:4: "And they went their way, and found the colt tied by the door without in a place where two ways met; and they loose him."

Mark 13:14: "But when ye shall see the abomination of desolation, spoken of by Daniel the prophet, standing where it ought not, (let him that readeth understand,) then let them that be in Judaea flee to the mountains:"

Mark 14:12: "And the first day of unleavened bread, when they killed the passover, his disciples said unto him, Where wilt thou that we go and prepare that thou mayest eat the passover?"

Mark 14:14: "And wheresoever he shall go in, say ye to the goodman of the house, The Master saith, Where is the guestchamber, where I shall eat the passover with my disciples?"

Mark 15:47: "And Mary Magdalene and Mary the mother of Joses beheld where he was laid."

Mark 16:6: "And he saith unto them, Be not affrighted: Ye seek Jesus of Nazareth, which was crucified: he is risen; he is not here: behold the place where they laid him."

Mark 16:20: "And they went forth, and preached every where, the Lord working with them, and confirming the word with signs following. Amen."

Luke 4:16: "And he came to Nazareth, where he had been brought up: and, as his custom was, he went into the synagogue on the sabbath day, and stood up for to read."

Luke 4:17: "And there was delivered unto him the book of the prophet Esaias. And when he had opened the book, he found the place where it was written,"

Luke 8:25: "And he said unto them, Where is your faith? And they being afraid wondered, saying one to another, What manner of man is this! for he commandeth even the winds and water, and they obey him."

Luke 9:6: "And they departed, and went through the towns, preaching the gospel, and healing every where."

Luke 9:58: "And Jesus said unto him, Foxes have holes, and birds of the air have nests; but the Son of man hath not where to lay his head."

Luke 10:33: "But a certain Samaritan, as he journeyed, came where he was: and when he saw him, he had compassion on him,"

Luke 12:17: "And he thought within himself, saying, What shall I do, because I have no room where to bestow my fruits?"

Luke 12:33: "Sell that ye have, and give alms; provide yourselves bags which wax not old, a treasure in the heavens that faileth not, where no thief approacheth, neither moth corrupteth."

Luke 12:34: "For where your treasure is, there will your heart be also."

Luke 17:17: "And Jesus answering said, Were there not ten cleansed? but where are the nine?"

Luke 17:37: "And they answered and said unto him, Where, Lord? And he said unto them, Wheresoever the body is, thither will the eagles be gathered together."

Luke 22:9: "And they said unto him, Where wilt thou that we prepare?"

Luke 22:10: "And he said unto them, Behold, when ye are entered into the city, there shall a man meet you, bearing a pitcher of water; follow him into the house where he entereth in."

Luke 22:11: "And ye shall say unto the goodman of the house, The Master saith unto thee, Where is the guestchamber, where I shall eat the passover with my disciples?"

John 1:28: "These things were done in Bethabara beyond Jordan, where John was baptizing."

John 1:38: "Then Jesus turned, and saw them following, and saith unto them, What seek ye? They said unto him, Rabbi, (which is to say, being interpreted, Master,) where dwellest thou?"

John 1:39: "He saith unto them, Come and see. They came and saw where he dwelt, and abode with him that day: for it was about the tenth hour."

John 3:8: "The wind bloweth where it listeth, and thou hearest the sound thereof, but canst not tell whence it cometh, and whither it goeth: so is every one that is born of the Spirit."

John 4:20: "Our fathers worshipped in this mountain; and ye say, that in Jerusalem is the place where men ought to worship."

John 4:46: "So Jesus came again into Cana of Galilee, where he made the water wine. And there was a certain nobleman, whose son was sick at Capernaum."

John 6:23: "(Howbeit there came other boats from Tiberias nigh unto the place where they did eat bread, after that the Lord had given thanks:)"

John 6:62: "What and if ye shall see the Son of man ascend up where he was before?"

John 7:11: "Then the Jews sought him at the feast, and said, Where is he?"

John 7:34: "Ye shall seek me, and shall not find me: and where I am, thither ye cannot come."

John 7:36: "What manner of saying is this that he said, Ye shall seek me, and shall not find me: and where I am, thither ye cannot come?"

John 7:42: "Hath not the scripture said, That Christ cometh of the seed of David, and out of the town of Bethlehem, where David was?"

John 8:10: "When Jesus had lifted up himself, and saw none but the woman, he said unto her, Woman, where are those thine accusers? hath no man condemned thee?"

John 8:19: "Then said they unto him, Where is thy Father? Jesus answered, Ye neither know me, nor my Father: if ye had known me, ye should have known my Father also."

John 9:12: "Then said they unto him, Where is he? He said, I know not."

John 10:40: "And went away again beyond Jordan into the place where John at first baptized; and there he abode."

John 11:6: "When he had heard therefore that he was sick, he abode two days still in the same place where he was."

John 11:30: "Now Jesus was not yet come into the town, but was in that place where Martha met him."

John 11:32: "Then when Mary was come where Jesus was, and saw him, she fell down at his feet, saying unto him, Lord, if thou hadst been here, my brother had not died."

John 11:34: "And said, Where have ye laid him? They said unto him, Lord, come and see."

John 11:41: "Then they took away the stone from the place where the dead was laid. And Jesus lifted up his eyes, and said, Father, I thank thee that thou hast heard me."

John 11:57: "Now both the chief priests and the Pharisees had given a commandment, that, if any man knew where he were, he should shew it, that they might take him."

John 12:1: "Then Jesus six days before the passover came to Bethany, where Lazarus was, which had been dead, whom he raised from the dead."

John 12:26: "If any man serve me, let him follow me; and where I am, there shall also my servant be: if any man serve me, him will my Father honour."

John 14:3: "And if I go and prepare a place for you, I will come again, and receive you unto myself; that where I am, there ye may be also."

John 17:24: "Father, I will that they also, whom thou hast given me, be with me where I am; that they may behold my glory, which thou hast given me: for thou lovedst me before the foundation of the world."

John 18:1: "When Jesus had spoken these words, he went forth with his disciples over the brook Cedron, where was a garden, into the which he entered, and his disciples."

John 19:18: "Where they crucified him, and two other with him, on either side one, and Jesus in the midst."

John 19:20: "This title then read many of the Jews: for the place where Jesus was crucified was nigh to the city: and it was written in Hebrew, and Greek, and Latin."

John 19:41: "Now in the place where he was crucified there was a garden; and in the garden a new sepulchre, wherein was never man yet laid."

John 20:2: "Then she runneth, and cometh to Simon Peter, and to the other disciple, whom Jesus loved, and saith unto them, They have taken away the LORD out of the sepulchre, and we know not where they have laid him."

John 20:12: "And seeth two angels in white sitting, the one at the head, and the other at the feet, where the body of Jesus had lain."

John 20:13: "And they say unto her, Woman, why weepest thou? She saith unto them, Because they have taken away my LORD, and I know not where they have laid him."

John 20:15: "Jesus saith unto her, Woman, why weepest thou? whom seekest thou? She, supposing him to be the gardener, saith unto him, Sir, if thou have borne him hence, tell me where thou hast laid him, and I will take him away."

John 20:19: "Then the same day at evening, being the first day of the week, when the doors were shut where the disciples were assembled for fear of the Jews, came Jesus and stood in the midst, and saith unto them, Peace be unto you."

Acts 1:13: "And when they were come in, they went up into an upper room, where abode both Peter, and James, and John, and Andrew, Philip, and Thomas, Bartholomew, and Matthew, James the son of Alphaeus, and Simon Zelotes, and Judas the brother of James."

Acts 2:2: "And suddenly there came a sound from heaven as of a rushing mighty wind, and it filled all the house where they were sitting."

Acts 4:31: "And when they had prayed, the place was shaken where they were assembled together; and they were all filled with the Holy Ghost, and they spake the word of God with boldness."

Acts 7:29: "Then fled Moses at this saying, and was a stranger in the land of Madian, where he begat two sons."

Acts 7:33: "Then said the Lord to him, Put off thy shoes from thy feet: for the place where thou standest is holy ground."

Acts 8:4: "Therefore they that were scattered abroad went every where preaching the word."

Acts 11:11: "And, behold, immediately there were three men already come unto the house where I

was, sent from Caesarea unto me."

Acts 12:12: "And when he had considered the thing, he came to the house of Mary the mother of John, whose surname was Mark; where many were gathered together praying."

Acts 15:36: "And some days after Paul said unto Barnabas, Let us go again and visit our brethren in every city where we have preached the word of the LORD, and see how they do."

Acts 16:13: "And on the sabbath we went out of the city by a river side, where prayer was wont to be made; and we sat down, and spake unto the women which resorted thither."

Acts 17:1: "Now when they had passed through Amphipolis and Apollonia, they came to Thessalonica, where was a synagogue of the Jews:"

Acts 17:30: "And the times of this ignorance God winked at; but now commandeth all men every where to repent:"

Acts 20:6: "And we sailed away from Philippi after the days of unleavened bread, and came unto them to Troas in five days; where we abode seven days."

Acts 20:8: "And there were many lights in the upper chamber, where they were gathered together."

Acts 21:28: "Crying out, Men of Israel, help: This is the man, that teacheth all men every where against the people, and the law, and this place: and further brought Greeks also into the temple, and hath polluted this holy place."

Acts 25:10: "Then said Paul, I stand at Caesar's judgment seat, where I ought to be judged: to the Jews have I done no wrong, as thou very well knowest."

Acts 27:41: "And falling into a place where two seas met, they ran the ship aground; and the forepart stuck fast, and remained unmoveable, but the hinder part was broken with the violence of the waves."

Acts 28:14: "Where we found brethren, and were desired to tarry with them seven days: and so we went toward Rome."

Acts 28:22: "But we desire to hear of thee what thou thinkest: for as concerning this sect, we know that every where it is spoken against."

Romans 3:27: "Where is boasting then? It is excluded. By what law? of works? Nay: but by the law of faith."

Romans 4:15: "Because the law worketh wrath: for where no law is, there is no transgression."

Romans 5:20: "Moreover the law entered, that the offence might abound. But where sin abounded, grace did much more abound:"

Romans 9:26: "And it shall come to pass, that in the place where it was said unto them, Ye are not my people; there shall they be called the children of the living God."

Romans 15:20: "Yea, so have I strived to preach the gospel, not where Christ was named, lest I should build upon another man's foundation:"

1 Corinthians 1:20: "Where is the wise? where is the scribe? where is the disputer of this world? hath not God made foolish the wisdom of this world?"

1 Corinthians 4:17: "For this cause have I sent unto you Timotheus, who is my beloved son, and faithful in the Lord, who shall bring you into remembrance of my ways which be in Christ, as I teach every where in every church."

1 Corinthians 12:17: "If the whole body were an eye, where were the hearing? If the whole were hearing, where were the smelling?"

1 Corinthians 12:19: "And if they were all one member, where were the body?"

1 Corinthians 15:55: "O death, where is thy sting? O grave, where is thy victory?"

2 Corinthians 3:17: "Now the Lord is that Spirit: and where the Spirit of the Lord is, there is liberty."

Galatians 4:15: "Where is then the blessedness ye spake of? for I bear you record, that, if it had been possible, ye would have plucked out your own eyes, and have given them to me."

Philippians 4:12: "I know both how to be abased, and I know how to abound: every where and in all things I am instructed both to be full and to be hungry, both to abound and to suffer need."

Colossians 3:1: "If ye then be risen with Christ, seek those things which are above, where Christ sitteth on the right hand of God."

Colossians 3:11: "Where there is neither Greek nor Jew, circumcision nor uncircumcision, Barbarian, Scythian, bond nor free: but Christ is all, and in all."

1 Timothy 2:8: "I will therefore that men pray every where, lifting up holy hands, without wrath and doubting."

Hebrews 9:16: "For where a testament is, there must also of necessity be the death of the testator."

Hebrews 10:18: "Now where remission of these is, there is no more offering for sin."

James 3:16: "For where envying and strife is, there is confusion and every evil work."

1 Peter 4:18: "And if the righteous scarcely be saved, where shall the ungodly and the sinner appear?"

2 Peter 3:4: "And saying, Where is the promise of his coming? for since the fathers fell asleep, all things continue as they were from the beginning of the creation."

Revelation 2:13: "I know thy works, and where thou dwellest, even where Satan's seat is: and thou holdest fast my name, and hast not denied my faith, even in those days wherein Antipas was my faithful martyr, who was slain among you, where Satan dwelleth."

Revelation 11:8: "And their dead bodies shall lie in the street of the great city, which spiritually is called Sodom and Egypt, where also our Lord was crucified."

Revelation 12:6: "And the woman fled into the wilderness, where she hath a place prepared of God, that they should feed her there a thousand two hundred and threescore days."

Revelation 12:14: "And to the woman were given two wings of a great eagle, that she might fly into the wilderness, into her place, where she is nourished for a time, and times, and half a time, from the face of the serpent."

Revelation 17:15: "And he saith unto me, The waters which thou sawest, where the whore sitteth, are peoples, and multitudes, and nations, and tongues."

Revelation 20:10: "And the devil that deceived them was cast into the lake of fire and brimstone, where the beast and the false prophet are, and shall be tormented day and night for ever and ever."

## WHEREABOUT

Occurrences: 1

1 Samuel 21:2: "And David said unto Ahimelech the priest, The king hath commanded me a business, and hath said unto me, Let no man know any thing of the business whereabout I send thee, and what I have commanded thee: and I have appointed my servants to such and such a place."

## WHEREAS

Occurrences: 33

Genesis 31:37: "Whereas thou hast searched all my stuff, what hast thou found of all thy household stuff? set it here before my brethren and thy brethren, that they may judge betwixt us both."

Deuteronomy 19:6: "Lest the avenger of the blood pursue the slayer, while his heart is hot, and overtake him, because the way is long, and slay him; whereas he was not worthy of death, inasmuch as he hated him not in time past."

Deuteronomy 28:62: "And ye shall be left few in number, whereas ye were as the stars of heaven for multitude; because thou wouldest not obey the voice of the LORD thy God."

1 Samuel 24:17: "And he said to David, Thou art more righteous than I: for thou hast rewarded me good, whereas I have rewarded thee evil."

2 Samuel 7:6: "Whereas I have not dwelt in any house since the time that I brought up the children of Israel out of Egypt, even to this day, but have walked in a tent and in a tabernacle."

2 Samuel 15:20: "Whereas thou camest but yesterday, should I this day make thee go up and down with us? seeing I go whither I may, return thou, and take back thy brethren: mercy and truth be with

thee."

1 Kings 8:18: "And the LORD said unto David my father, Whereas it was in thine heart to build an house unto my name, thou didst well that it was in thine heart."

1 Kings 12:11: "And now whereas my father did lade you with a heavy yoke, I will add to your yoke: my father hath chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

2 Kings 13:19: "And the man of God was wroth with him, and said, Thou shouldest have smitten five or six times; then hadst thou smitten Syria till thou hadst consumed it: whereas now thou shalt smite Syria but thrice."

2 Chronicles 10:11: "For whereas my father put a heavy yoke upon you, I will put more to your yoke: my father chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

2 Chronicles 28:13: "And said unto them, Ye shall not bring in the captives hither: for whereas we have offended against the LORD already, ye intend to add more to our sins and to our trespass: for our trespass is great, and there is fierce wrath against Israel."

Job 22:20: "Whereas our substance is not cut down, but the remnant of them the fire consumeth."

Ecclesiastes 4:14: "For out of prison he cometh to reign; whereas also he that is born in his kingdom becometh poor."

Isaiah 37:21: "Then Isaiah the son of Amoz sent unto Hezekiah, saying, Thus saith the LORD God of Israel, Whereas thou hast prayed to me against Sennacherib king of Assyria:"

Isaiah 60:15: "Whereas thou has been forsaken and hated, so that no man went through thee, I will make thee an eternal excellency, a joy of many generations."

Jeremiah 4:10: "Then said I, Ah, Lord GOD! surely thou hast greatly deceived this people and Jerusalem, saying, Ye shall have peace; whereas the sword reacheth unto the soul."

Ezekiel 13:7: "Have ye not seen a vain vision, and have ye not spoken a lying divination, whereas ye say, The LORD saith it; albeit I have not spoken?"

Ezekiel 16:7: "I have caused thee to multiply as the bud of the field, and thou hast increased and waxen great, and thou art come to excellent ornaments: thy breasts are fashioned, and thine hair is grown, whereas thou wast naked and bare."

Ezekiel 16:34: "And the contrary is in thee from other women in thy whoredoms, whereas none followeth thee to commit whoredoms: and in that thou givest a reward, and no reward is given unto thee, therefore thou art contrary."

Ezekiel 35:10: "Because thou hast said, These two nations and these two countries shall be mine, and we will possess it; whereas the LORD was there:"

Ezekiel 36:34: "And the desolate land shall be tilled, whereas it lay desolate in the sight of all that passed by."

Daniel 2:41: "And whereas thou sawest the feet and toes, part of potters' clay, and part of iron, the kingdom shall be divided; but there shall be in it of the strength of the iron, forasmuch as thou sawest the iron mixed with miry clay."

Daniel 2:43: "And whereas thou sawest iron mixed with miry clay, they shall mingle themselves with the seed of men: but they shall not cleave one to another, even as iron is not mixed with clay."

Daniel 4:23: "And whereas the king saw a watcher and an holy one coming down from heaven, and saying, Hew the tree down, and destroy it; yet leave the stump of the roots thereof in the earth, even with a band of iron and brass, in the tender grass of the field; and let it be wet with the dew of heaven, and let his portion be with the beasts of the field, till seven times pass over him;"

Daniel 4:26: "And whereas they commanded to leave the stump of the tree roots; thy kingdom shall be sure unto thee, after that thou shalt have known that the heavens do rule."

Daniel 8:22: "Now that being broken, whereas four stood up for it, four kingdoms shall stand up out of the nation, but not in his power."

Malachi 1:4: "Whereas Edom saith, We are impoverished, but we will return and build the desolate places; thus saith the LORD of hosts, They shall build, but I will throw down; and they shall call them, The border of wickedness, and, The people against whom the LORD hath indignation for

ever."

John 9:25: "He answered and said, Whether he be a sinner or no, I know not: one thing I know, that, whereas I was blind, now I see."

1 Corinthians 3:3: "For ye are yet carnal: for whereas there is among you envying, and strife, and divisions, are ye not carnal, and walk as men?"

James 4:14: "Whereas ye know not what shall be on the morrow. For what is your life? It is even a vapour, that appeareth for a little time, and then vanisheth away."

1 Peter 2:12: "Having your conversation honest among the Gentiles: that, whereas they speak against you as evildoers, they may by your good works, which they shall behold, glorify God in the day of visitation."

1 Peter 3:16: "Having a good conscience; that, whereas they speak evil of you, as of evildoers, they may be ashamed that falsely accuse your good conversation in Christ."

2 Peter 2:11: "Whereas angels, which are greater in power and might, bring not railing accusation against them before the Lord."

## WHEREBY

Occurrences: 37

Genesis 15:8: "And he said, LORD God, whereby shall I know that I shall inherit it?"

Genesis 44:5: "Is not this it in which my lord drinketh, and whereby indeed he divineth? ye have done evil in so doing."

Leviticus 22:5: "Or whosoever toucheth any creeping thing, whereby he may be made unclean, or a man of whom he may take uncleanness, whatsoever uncleanness he hath;"

Numbers 5:8: "But if the man have no kinsman to recompense the trespass unto, let the trespass be recompensed unto the LORD, even to the priest; beside the ram of the atonement, whereby an atonement shall be made for him."

Numbers 17:5: "And it shall come to pass, that the man's rod, whom I shall choose, shall blossom: and I will make to cease from me the murmurings of the children of Israel, whereby they murmur against you."

Deuteronomy 7:19: "The great temptations which thine eyes saw, and the signs, and the wonders, and the mighty hand, and the stretched out arm, whereby the LORD thy God brought thee out: so shall the LORD thy God do unto all the people of whom thou art afraid."

Deuteronomy 28:20: "The LORD shall send upon thee cursing, vexation, and rebuke, in all that thou settest thine hand unto for to do, until thou be destroyed, and until thou perish quickly; because of the wickedness of thy doings, whereby thou hast forsaken me."

1 Samuel 20:33: "And Saul cast a javelin at him to smite him: whereby Jonathan knew that it was determined of his father to slay David."

Psalms 45:5: "Thine arrows are sharp in the heart of the king's enemies; whereby the people fall under thee."

Psalms 45:8: "All thy garments smell of myrrh, and aloes, and cassia, out of the ivory palaces, whereby they have made thee glad."

Psalms 68:9: "Thou, O God, didst send a plentiful rain, whereby thou didst confirm thine inheritance, when it was weary."

Jeremiah 3:8: "And I saw, when for all the causes whereby backsliding Israel committed adultery I had put her away, and given her a bill of divorce; yet her treacherous sister Judah feared not, but went and played the harlot also."

Jeremiah 17:19: "Thus said the LORD unto me; Go and stand in the gate of the children of the people, whereby the kings of Judah come in, and by the which they go out, and in all the gates of Jerusalem;"

Jeremiah 23:6: "In his days Judah shall be saved, and Israel shall dwell safely: and this is his name whereby he shall be called, THE LORD OUR RIGHTEOUSNESS."



Jeremiah 33:8: "And I will cleanse them from all their iniquity, whereby they have sinned against me; and I will pardon all their iniquities, whereby they have sinned, and whereby they have transgressed against me."

Ezekiel 18:31: "Cast away from you all your transgressions, whereby ye have transgressed; and make you a new heart and a new spirit: for why will ye die, O house of Israel?"

Ezekiel 20:25: "Wherefore I gave them also statutes that were not good, and judgments whereby they should not live;"

Ezekiel 39:26: "After that they have borne their shame, and all their trespasses whereby they have trespassed against me, when they dwelt safely in their land, and none made them afraid."

Ezekiel 40:49: "The length of the porch was twenty cubits, and the breadth eleven cubits, and he brought me by the steps whereby they went up to it: and there were pillars by the posts, one on this side, and another on that side."

Ezekiel 46:9: "But when the people of the land shall come before the LORD in the solemn feasts, he that entereth in by the way of the north gate to worship shall go out by the way of the south gate; and he that entereth by the way of the south gate shall go forth by the way of the north gate: he shall not return by the way of the gate whereby he came in, but shall go forth over against it."

Ezekiel 47:13: "Thus saith the Lord GOD; This shall be the border, whereby ye shall inherit the land according to the twelve tribes of Israel: Joseph shall have two portions."

Zephaniah 2:8: "I have heard the reproach of Moab, and the revilings of the children of Ammon, whereby they have reproached my people, and magnified themselves against their border."

Luke 1:18: "And Zacharias said unto the angel, Whereby shall I know this? for I am an old man, and my wife well stricken in years."

Luke 1:78: "Through the tender mercy of our God; whereby the dayspring from on high hath visited us,"

Acts 4:12: "Neither is there salvation in any other: for there is none other name under heaven given among men, whereby we must be saved."

Acts 11:14: "Who shall tell thee words, whereby thou and all thy house shall be saved."

Acts 19:40: "For we are in danger to be called in question for this day's uproar, there being no cause whereby we may give an account of this concourse."

Romans 8:15: "For ye have not received the spirit of bondage again to fear; but ye have received the Spirit of adoption, whereby we cry, Abba, Father."

Romans 14:21: "It is good neither to eat flesh, nor to drink wine, nor any thing whereby thy brother stumbleth, or is offended, or is made weak."

Ephesians 3:4: "Whereby, when ye read, ye may understand my knowledge in the mystery of Christ)"

Ephesians 4:14: "That we henceforth be no more children, tossed to and fro, and carried about with every wind of doctrine, by the sleight of men, and cunning craftiness, whereby they lie in wait to deceive;"

Ephesians 4:30: "And grieve not the holy Spirit of God, whereby ye are sealed unto the day of redemption."

Philippians 3:21: "Who shall change our vile body, that it may be fashioned like unto his glorious body, according to the working whereby he is able even to subdue all things unto himself."

Hebrews 12:28: "Wherefore we receiving a kingdom which cannot be moved, let us have grace, whereby we may serve God acceptably with reverence and godly fear:"

2 Peter 1:4: "Whereby are given unto us exceeding great and precious promises: that by these ye might be partakers of the divine nature, having escaped the corruption that is in the world through lust."

2 Peter 3:6: "Whereby the world that then was, being overflowed with water, perished:"

1 John 2:18: "Little children, it is the last time: and as ye have heard that antichrist shall come, even now are there many antichrists; whereby we know that it is the last time."

## WHEREFORE

Occurrences: 344

Genesis 10:9: "He was a mighty hunter before the LORD: wherefore it is said, Even as Nimrod the mighty hunter before the LORD."

Genesis 16:14: "Wherefore the well was called Beerlahairoi; behold, it is between Kadesh and Bered."

Genesis 18:13: "And the LORD said unto Abraham, Wherefore did Sarah laugh, saying, Shall I of a surety bear a child, which am old?"

Genesis 21:10: "Wherefore she said unto Abraham, Cast out this bondwoman and her son: for the son of this bondwoman shall not be heir with my son, even with Isaac."

Genesis 21:31: "Wherefore he called that place Beersheba; because there they swore both of them."

Genesis 24:31: "And he said, Come in, thou blessed of the LORD; wherefore standest thou without? for I have prepared the house, and room for the camels."

Genesis 26:27: "And Isaac said unto them, Wherefore come ye to me, seeing ye hate me, and have sent me away from you?"

Genesis 29:25: "And it came to pass, that in the morning, behold, it was Leah: and he said to Laban, What is this thou hast done unto me? did not I serve with thee for Rachel? wherefore then hast thou beguiled me?"

Genesis 31:27: "Wherefore didst thou flee away secretly, and steal away from me; and didst not tell me, that I might have sent thee away with mirth, and with songs, with tabret, and with harp?"

Genesis 31:30: "And now, though thou wouldest needs be gone, because thou sore longedst after thy father's house, yet wherefore hast thou stolen my gods?"

Genesis 32:29: "And Jacob asked him, and said, Tell me, I pray thee, thy name. And he said, Wherefore is it that thou dost ask after my name? And he blessed him there."

Genesis 38:10: "And the thing which he did displeased the LORD: wherefore he slew him also."

Genesis 40:7: "And he asked Pharaoh's officers that were with him in the ward of his lord's house, saying, Wherefore look ye so sadly to day?"

Genesis 43:6: "And Israel said, Wherefore dealt ye so ill with me, as to tell the man whether ye had yet a brother?"

Genesis 44:4: "And when they were gone out of the city, and not yet far off, Joseph said unto his steward, Up, follow after the men; and when thou dost overtake them, say unto them, Wherefore have ye rewarded evil for good?"

Genesis 44:7: "And they said unto him, Wherefore saith my lord these words? God forbid that thy servants should do according to this thing:"

Genesis 47:19: "Wherefore shall we die before thine eyes, both we and our land? buy us and our land for bread, and we and our land will be servants unto Pharaoh: and give us seed, that we may live, and not die, that the land be not desolate."

Genesis 47:22: "Only the land of the priests bought he not; for the priests had a portion assigned them of Pharaoh, and did eat their portion which Pharaoh gave them: wherefore they sold not their lands."

Genesis 50:11: "And when the inhabitants of the land, the Canaanites, saw the mourning in the floor of Atad, they said, This is a grievous mourning to the Egyptians: wherefore the name of it was called Abelmizraim, which is beyond Jordan."

Exodus 2:13: "And when he went out the second day, behold, two men of the Hebrews strove together: and he said to him that did the wrong, Wherefore smitest thou thy fellow?"

Exodus 5:4: "And the king of Egypt said unto them, Wherefore do ye, Moses and Aaron, let the people from their works? get you unto your burdens."

Exodus 5:14: "And the officers of the children of Israel, which Pharaoh's taskmasters had set over them, were beaten, and demanded, Wherefore have ye not fulfilled your task in making brick both

yesterday and to day, as heretofore?"

Exodus 5:15: "Then the officers of the children of Israel came and cried unto Pharaoh, saying, Wherefore dealest thou thus with thy servants?"

Exodus 5:22: "And Moses returned unto the LORD, and said, LORD, wherefore hast thou so evil entreated this people? why is it that thou hast sent me?"

Exodus 6:6: "Wherefore say unto the children of Israel, I am the LORD, and I will bring you out from under the burdens of the Egyptians, and I will rid you out of their bondage, and I will redeem you with a stretched out arm, and with great judgments."

Exodus 14:11: "And they said unto Moses, Because there were no graves in Egypt, hast thou taken us away to die in the wilderness? wherefore hast thou dealt thus with us, to carry us forth out of Egypt?"

Exodus 14:15: "And the LORD said unto Moses, Wherefore criest thou unto me? speak unto the children of Israel, that they go forward:"

Exodus 17:2: "Wherefore the people did chide with Moses, and said, Give us water that we may drink. And Moses said unto them, Why chide ye with me? wherefore do ye tempt the LORD?"

Exodus 17:3: "And the people thirsted there for water; and the people murmured against Moses, and said, Wherefore is this that thou hast brought us up out of Egypt, to kill us and our children and our cattle with thirst?"

Exodus 20:11: "For in six days the LORD made heaven and earth, the sea, and all that in them is, and rested the seventh day: wherefore the LORD blessed the sabbath day, and hallowed it."

Exodus 31:16: "Wherefore the children of Israel shall keep the sabbath, to observe the sabbath throughout their generations, for a perpetual covenant."

Exodus 32:12: "Wherefore should the Egyptians speak, and say, For mischief did he bring them out, to slay them in the mountains, and to consume them from the face of the earth? Turn from thy fierce wrath, and repent of this evil against thy people."

Leviticus 10:17: "Wherefore have ye not eaten the sin offering in the holy place, seeing it is most holy, and God hath given it you to bear the iniquity of the congregation, to make atonement for them before the LORD?"

Leviticus 13:25: "Then the priest shall look upon it: and, behold, if the hair in the bright spot be turned white, and it be in sight deeper than the skin; it is a leprosy broken out of the burning: wherefore the priest shall pronounce him unclean: it is the plague of leprosy."

Leviticus 25:18: "Wherefore ye shall do my statutes, and keep my judgments, and do them; and ye shall dwell in the land in safety."

Numbers 9:7: "And those men said unto him, We are defiled by the dead body of a man: wherefore are we kept back, that we may not offer an offering of the LORD in his appointed season among the children of Israel?"

Numbers 11:11: "And Moses said unto the LORD, Wherefore hast thou afflicted thy servant? and wherefore have I not found favour in thy sight, that thou layest the burden of all this people upon me?"

Numbers 12:8: "With him will I speak mouth to mouth, even apparently, and not in dark speeches; and the similitude of the LORD shall he behold: wherefore then were ye not afraid to speak against my servant Moses?"

Numbers 14:3: "And wherefore hath the LORD brought us unto this land, to fall by the sword, that our wives and our children should be a prey? were it not better for us to return into Egypt?"

Numbers 14:41: "And Moses said, Wherefore now do ye transgress the commandment of the LORD? but it shall not prosper."

Numbers 16:3: "And they gathered themselves together against Moses and against Aaron, and said unto them, Ye take too much upon you, seeing all the congregation are holy, every one of them, and the LORD is among them: wherefore then lift ye up yourselves above the congregation of the LORD?"

Numbers 20:5: "And wherefore have ye made us to come up out of Egypt, to bring us in unto this evil place? it is no place of seed, or of figs, or of vines, or of pomegranates; neither is there any water to drink."

Numbers 20:21: "Thus Edom refused to give Israel passage through his border: wherefore Israel turned away from him."

Numbers 21:5: "And the people spake against God, and against Moses, Wherefore have ye brought us up out of Egypt to die in the wilderness? for there is no bread, neither is there any water; and our soul loatheth this light bread."

Numbers 21:14: "Wherefore it is said in the book of the wars of the LORD, What he did in the Red sea, and in the brooks of Arnon,"

Numbers 21:27: "Wherefore they that speak in proverbs say, Come into Heshbon, let the city of Sihon be built and prepared:"

Numbers 22:32: "And the angel of the LORD said unto him, Wherefore hast thou smitten thine ass these three times? behold, I went out to withstand thee, because thy way is perverse before me:"

Numbers 22:37: "And Balak said unto Balaam, Did I not earnestly send unto thee to call thee? wherefore camest thou not unto me? am I not able indeed to promote thee to honour?"

Numbers 25:12: "Wherefore say, Behold, I give unto him my covenant of peace:"

Numbers 32:5: "Wherefore, said they, if we have found grace in thy sight, let this land be given unto thy servants for a possession, and bring us not over Jordan."

Numbers 32:7: "And wherefore discourage ye the heart of the children of Israel from going over into the land which the LORD hath given them?"

Deuteronomy 7:12: "Wherefore it shall come to pass, if ye hearken to these judgments, and keep, and do them, that the LORD thy God shall keep unto thee the covenant and the mercy which he sware unto thy fathers:"

Deuteronomy 10:9: "Wherefore Levi hath no part nor inheritance with his brethren; the LORD is his inheritance, according as the LORD thy God promised him."

Deuteronomy 19:7: "Wherefore I command thee, saying, Thou shalt separate three cities for thee."

Deuteronomy 29:24: "Even all nations shall say, Wherefore hath the LORD done thus unto this land? what meaneth the heat of this great anger?"

Joshua 5:9: "And the LORD said unto Joshua, This day have I rolled away the reproach of Egypt from off you. Wherefore the name of the place is called Gilgal unto this day."

Joshua 7:5: "And the men of Ai smote of them about thirty and six men: for they chased them from before the gate even unto Shebarim, and smote them in the going down: wherefore the hearts of the people melted, and became as water."

Joshua 7:7: "And Joshua said, Alas, O LORD God, wherefore hast thou at all brought this people over Jordan, to deliver us into the hand of the Amorites, to destroy us? would to God we had been content, and dwelt on the other side Jordan!"

Joshua 7:10: "And the LORD said unto Joshua, Get thee up; wherefore liest thou thus upon thy face?"

Joshua 7:26: "And they raised over him a great heap of stones unto this day. So the LORD turned from the fierceness of his anger. Wherefore the name of that place was called, The valley of Achor, unto this day."

Joshua 9:11: "Wherefore our elders and all the inhabitants of our country spake to us, saying, Take victuals with you for the journey, and go to meet them, and say unto them, We are your servants: therefore now make ye a league with us."

Joshua 9:22: "And Joshua called for them, and he spake unto them, saying, Wherefore have ye beguiled us, saying, We are very far from you; when ye dwell among us?"

Joshua 10:3: "Wherefore Adonizedec king of Jerusalem, sent unto Hoham king of Hebron, and unto Piram king of Jarmuth, and unto Japhia king of Lachish, and unto Debir king of Eglon, saying,"

Judges 2:3: "Wherefore I also said, I will not drive them out from before you; but they shall be as

thorns in your sides, and their gods shall be a snare unto you."

Judges 10:13: "Yet ye have forsaken me, and served other gods: wherefore I will deliver you no more."

Judges 11:27: "Wherefore I have not sinned against thee, but thou doest me wrong to war against me: the LORD the Judge be judge this day between the children of Israel and the children of Ammon."

Judges 12:1: "And the men of Ephraim gathered themselves together, and went northward, and said unto Jephthah, Wherefore passedst thou over to fight against the children of Ammon, and didst not call us to go with thee? we will burn thine house upon thee with fire."

Judges 12:3: "And when I saw that ye delivered me not, I put my life in my hands, and passed over against the children of Ammon, and the LORD delivered them into my hand: wherefore then are ye come up unto me this day, to fight against me?"

Judges 15:19: "But God clave an hollow place that was in the jaw, and there came water thereout; and when he had drunk, his spirit came again, and he revived: wherefore he called the name thereof Enhakkore, which is in Lehi unto this day."

Judges 18:12: "And they went up, and pitched in Kirjathjearim, in Judah: wherefore they called that place Mahanehdan unto this day: behold, it is behind Kirjathjearim."

Ruth 1:7: "Wherefore she went forth out of the place where she was, and her two daughters in law with her; and they went on the way to return unto the land of Judah."

1 Samuel 1:20: "Wherefore it came to pass, when the time was come about after Hannah had conceived, that she bare a son, and called his name Samuel, saying, Because I have asked him of the LORD."

1 Samuel 2:17: "Wherefore the sin of the young men was very great before the LORD: for men abhorred the offering of the LORD."

1 Samuel 2:29: "Wherefore kick ye at my sacrifice and at mine offering, which I have commanded in my habitation; and honourest thy sons above me, to make yourselves fat with the chiefest of all the offerings of Israel my people?"

1 Samuel 2:30: "Wherefore the LORD God of Israel saith, I said indeed that thy house, and the house of thy father, should walk before me for ever: but now the LORD saith, Be it far from me; for them that honour me I will honour, and they that despise me shall be lightly esteemed."

1 Samuel 4:3: "And when the people were come into the camp, the elders of Israel said, Wherefore hath the LORD smitten us to day before the Philistines? Let us fetch the ark of the covenant of the LORD out of Shiloh unto us, that, when it cometh among us, it may save us out of the hand of our enemies."

1 Samuel 6:5: "Wherefore ye shall make images of your emerods, and images of your mice that mar the land; and ye shall give glory unto the God of Israel: peradventure he will lighten his hand from off you, and from off your gods, and from off your land."

1 Samuel 6:6: "Wherefore then do ye harden your hearts, as the Egyptians and Pharaoh hardened their hearts? when he had wrought wonderfully among them, did they not let the people go, and they departed?"

1 Samuel 9:21: "And Saul answered and said, Am not I a Benjamite, of the smallest of the tribes of Israel? and my family the least of all the families of the tribe of Benjamin? wherefore then speakest thou so to me?"

1 Samuel 14:27: "But Jonathan heard not when his father charged the people with the oath: wherefore he put forth the end of the rod that was in his hand, and dipped it in an honeycomb, and put his hand to his mouth; and his eyes were enlightened."

1 Samuel 15:19: "Wherefore then didst thou not obey the voice of the LORD, but didst fly upon the spoil, and didst evil in the sight of the LORD?"

1 Samuel 16:19: "Wherefore Saul sent messengers unto Jesse, and said, Send me David thy son, which is with the sheep."

1 Samuel 18:15: "Wherefore when Saul saw that he behaved himself very wisely, he was afraid of him."

1 Samuel 18:21: "And Saul said, I will give him her, that she may be a snare to him, and that the hand of the Philistines may be against him. Wherefore Saul said to David, Thou shalt this day be my son in law in the one of the twain."

1 Samuel 18:27: "Wherefore David arose and went, he and his men, and slew of the Philistines two hundred men; and David brought their foreskins, and they gave them in full tale to the king, that he might be the king's son in law. And Saul gave him Michal his daughter to wife."

1 Samuel 19:5: "For he did put his life in his hand, and slew the Philistine, and the LORD wrought a great salvation for all Israel: thou sawest it, and didst rejoice: wherefore then wilt thou sin against innocent blood, to slay David without a cause?"

1 Samuel 19:24: "And he stripped off his clothes also, and prophesied before Samuel in like manner, and lay down naked all that day and all that night. Wherefore they say, Is Saul also among the prophets?"

1 Samuel 20:27: "And it came to pass on the morrow, which was the second day of the month, that David's place was empty: and Saul said unto Jonathan his son, Wherefore cometh not the son of Jesse to meat, neither yesterday, nor to day?"

1 Samuel 20:31: "For as long as the son of Jesse liveth upon the ground, thou shalt not be established, nor thy kingdom. Wherefore now send and fetch him unto me, for he shall surely die."

1 Samuel 20:32: "And Jonathan answered Saul his father, and said unto him, Wherefore shall he be slain? what hath he done?"

1 Samuel 21:14: "Then said Achish unto his servants, Lo, ye see the man is mad: wherefore then have ye brought him to me?"

1 Samuel 23:25: "Saul also and his men went to seek him. And they told David; wherefore he came down into a rock, and abode in the wilderness of Maon. And when Saul heard that, he pursued after David in the wilderness of Maon."

1 Samuel 23:28: "Wherefore Saul returned from pursuing after David, and went against the Philistines: therefore they called that place Selahammahlekoth."

1 Samuel 24:9: "And David said to Saul, Wherefore hearest thou men's words, saying, Behold, David seeketh thy hurt?"

1 Samuel 24:19: "For if a man find his enemy, will he let him go well away? wherefore the LORD reward thee good for that thou hast done unto me this day."

1 Samuel 25:8: "Ask thy young men, and they will shew thee. Wherefore let the young men find favour in thine eyes: for we come in a good day: give, I pray thee, whatsoever cometh to thine hand unto thy servants, and to thy son David."

1 Samuel 25:36: "And Abigail came to Nabal; and, behold, he held a feast in his house, like the feast of a king; and Nabal's heart was merry within him, for he was very drunken: wherefore she told him nothing, less or more, until the morning light."

1 Samuel 26:15: "And David said to Abner, Art not thou a valiant man? and who is like to thee in Israel? wherefore then hast thou not kept thy lord the king? for there came one of the people in to destroy the king thy lord."

1 Samuel 26:18: "And he said, Wherefore doth my lord thus pursue after his servant? for what have I done? or what evil is in mine hand?"

1 Samuel 27:6: "Then Achish gave him Ziklag that day: wherefore Ziklag pertaineth unto the kings of Judah unto this day."

1 Samuel 28:9: "And the woman said unto him, Behold, thou knowest what Saul hath done, how he hath cut off those that have familiar spirits, and the wizards, out of the land: wherefore then layest thou a snare for my life, to cause me to die?"

1 Samuel 28:16: "Then said Samuel, Wherefore then dost thou ask of me, seeing the LORD is departed from thee, and is become thine enemy?"

1 Samuel 29:7: "Wherefore now return, and go in peace, that thou displease not the lords of the Philistines."

1 Samuel 29:10: "Wherefore now rise up early in the morning with thy master's servants that are come with thee: and as soon as ye be up early in the morning, and have light, depart."

2 Samuel 2:16: "And they caught every one his fellow by the head, and thrust his sword in his fellow's side; so they fell down together: wherefore that place was called Helkathhazzurim, which is in Gibeon."

2 Samuel 2:22: "And Abner said again to Asahel, Turn thee aside from following me: wherefore should I smite thee to the ground? how then should I hold up my face to Joab thy brother?"

2 Samuel 2:23: "Howbeit he refused to turn aside: wherefore Abner with the hinder end of the spear smote him under the fifth rib, that the spear came out behind him; and he fell down there, and died in the same place: and it came to pass, that as many as came to the place where Asahel fell down and died stood still."

2 Samuel 3:7: "And Saul had a concubine, whose name was Rizpah, the daughter of Aiah: and Ishbosheth said to Abner, Wherefore hast thou gone in unto my father's concubine?"

2 Samuel 5:8: "And David said on that day, Whosoever getteth up to the gutter, and smiteth the Jebusites, and the lame and the blind that are hated of David's soul, he shall be chief and captain. Wherefore they said, The blind and the lame shall not come into the house."

2 Samuel 7:22: "Wherefore thou art great, O LORD God: for there is none like thee, neither is there any God beside thee, according to all that we have heard with our ears."

2 Samuel 10:4: "Wherefore Hanun took David's servants, and shaved off the one half of their beards, and cut off their garments in the middle, even to their buttocks, and sent them away."

2 Samuel 11:20: "And if so be that the king's wrath arise, and he say unto thee, Wherefore approached ye so nigh unto the city when ye did fight? knew ye not that they would shoot from the wall?"

2 Samuel 12:9: "Wherefore hast thou despised the commandment of the LORD, to do evil in his sight? thou hast killed Uriah the Hittite with the sword, and hast taken his wife to be thy wife, and hast slain him with the sword of the children of Ammon."

2 Samuel 12:23: "But now he is dead, wherefore should I fast? can I bring him back again? I shall go to him, but he shall not return to me."

2 Samuel 14:13: "And the woman said, Wherefore then hast thou thought such a thing against the people of God? for the king doth speak this thing as one which is faulty, in that the king doth not fetch home again his banished."

2 Samuel 14:31: "Then Joab arose, and came to Absalom unto his house, and said unto him, Wherefore have thy servants set my field on fire?"

2 Samuel 14:32: "And Absalom answered Joab, Behold, I sent unto thee, saying, Come hither, that I may send thee to the king, to say, Wherefore am I come from Geshur? it had been good for me to have been there still: now therefore let me see the king's face; and if there be any iniquity in me, let him kill me."

2 Samuel 15:19: "Then said the king to Ittai the Gittite, Wherefore goest thou also with us? return to thy place, and abide with the king: for thou art a stranger, and also an exile."

2 Samuel 16:10: "And the king said, What have I to do with you, ye sons of Zeruiah? so let him curse, because the LORD hath said unto him, Curse David. Who shall then say, Wherefore hast thou done so?"

2 Samuel 18:22: "Then said Ahimaaz the son of Zadok yet again to Joab, But howsoever, let me, I pray thee, also run after Cushai. And Joab said, Wherefore wilt thou run, my son, seeing that thou hast no tidings ready?"

2 Samuel 19:12: "Ye are my brethren, ye are my bones and my flesh: wherefore then are ye the last to bring back the king?"

2 Samuel 19:25: "And it came to pass, when he was come to Jerusalem to meet the king, that the

king said unto him, Wherefore wentest not thou with me, Mephibosheth?"

2 Samuel 19:35: "I am this day fourscore years old: and can I discern between good and evil? can thy servant taste what I eat or what I drink? can I hear any more the voice of singing men and singing women? wherefore then should thy servant be yet a burden unto my lord the king?"

2 Samuel 19:42: "And all the men of Judah answered the men of Israel, Because the king is near of kin to us: wherefore then be ye angry for this matter? have we eaten at all of the king's cost? or hath he given us any gift?"

2 Samuel 21:3: "Wherefore David said unto the Gibeonites, What shall I do for you? and wherewith shall I make the atonement, that ye may bless the inheritance of the LORD?"

2 Samuel 24:21: "And Araunah said, Wherefore is my lord the king come to his servant? And David said, To buy the threshingfloor of thee, to build an altar unto the LORD, that the plague may be stayed from the people."

1 Kings 1:2: "Wherefore his servants said unto him, Let there be sought for my lord the king a young virgin: and let her stand before the king, and let her cherish him, and let her lie in thy bosom, that my lord the king may get heat."

1 Kings 1:11: "Wherefore Nathan spake unto Bathsheba the mother of Solomon, saying, Hast thou not heard that Adonijah the son of Haggith doth reign, and David our lord knoweth it not?"

1 Kings 1:41: "And Adonijah and all the guests that were with him heard it as they had made an end of eating. And when Joab heard the sound of the trumpet, he said, Wherefore is this noise of the city being in an uproar?"

1 Kings 11:11: "Wherefore the LORD said unto Solomon, Forasmuch as this is done of thee, and thou hast not kept my covenant and my statutes, which I have commanded thee, I will surely rend the kingdom from thee, and will give it to thy servant."

1 Kings 12:15: "Wherefore the king hearkened not unto the people; for the cause was from the LORD, that he might perform his saying, which the LORD spake by Ahijah the Shilonite unto Jeroboam the son of Nebat."

1 Kings 16:16: "And the people that were encamped heard say, Zimri hath conspired, and hath also slain the king: wherefore all Israel made Omri, the captain of the host, king over Israel that day in the camp."

1 Kings 20:9: "Wherefore he said unto the messengers of Benhadad, Tell my lord the king, All that thou didst send for to thy servant at the first I will do: but this thing I may not do. And the messengers departed, and brought him word again."

1 Kings 22:34: "And a certain man drew a bow at a venture, and smote the king of Israel between the joints of the harness: wherefore he said unto the driver of his chariot, Turn thine hand, and carry me out of the host; for I am wounded."

2 Kings 4:23: "And he said, Wherefore wilt thou go to him to day? it is neither new moon, nor sabbath. And she said, It shall be well."

2 Kings 4:31: "And Gehazi passed on before them, and laid the staff upon the face of the child; but there was neither voice, nor hearing. Wherefore he went again to meet him, and told him, saying, The child is not awaked."

2 Kings 5:7: "And it came to pass, when the king of Israel had read the letter, that he rent his clothes, and said, Am I God, to kill and to make alive, that this man doth send unto me to recover a man of his leprosy? wherefore consider, I pray you, and see how he seeketh a quarrel against me."

2 Kings 5:8: "And it was so, when Elisha the man of God had heard that the king of Israel had rent his clothes, that he sent to the king, saying, Wherefore hast thou rent thy clothes? let him come now to me, and he shall know that there is a prophet in Israel."

2 Kings 7:7: "Wherefore they arose and fled in the twilight, and left their tents, and their horses, and their asses, even the camp as it was, and fled for their life."

2 Kings 9:11: "Then Jehu came forth to the servants of his lord: and one said unto him, Is all well? wherefore came this mad fellow to thee? And he said unto them, Ye know the man, and his



communication."

2 Kings 9:36: "Wherefore they came again, and told him. And he said, This is the word of the LORD, which he spake by his servant Elijah the Tishbite, saying, In the portion of Jezreel shall dogs eat the flesh of Jezebel:"

2 Kings 17:26: "Wherefore they spake to the king of Assyria, saying, The nations which thou hast removed, and placed in the cities of Samaria, know not the manner of the God of the land: therefore he hath sent lions among them, and, behold, they slay them, because they know not the manner of the God of the land."

2 Kings 19:4: "It may be the LORD thy God will hear all the words of Rabshakeh, whom the king of Assyria his master hath sent to reproach the living God; and will reprove the words which the LORD thy God hath heard: wherefore lift up thy prayer for the remnant that are left."

1 Chronicles 13:11: "And David was displeased, because the LORD had made a breach upon Uzza: wherefore that place is called Perezuzza to this day."

1 Chronicles 19:4: "Wherefore Hanun took David's servants, and shaved them, and cut off their garments in the midst hard by their buttocks, and sent them away."

1 Chronicles 21:4: "Nevertheless the king's word prevailed against Joab. Wherefore Joab departed, and went throughout all Israel, and came to Jerusalem."

1 Chronicles 29:10: "Wherefore David blessed the LORD before all the congregation: and David said, Blessed be thou, LORD God of Israel our father, for ever and ever."

2 Chronicles 5:3: "Wherefore all the men of Israel assembled themselves unto the king in the feast which was in the seventh month."

2 Chronicles 19:7: "Wherefore now let the fear of the LORD be upon you; take heed and do it: for there is no iniquity with the LORD our God, nor respect of persons, nor taking of gifts."

2 Chronicles 22:4: "Wherefore he did evil in the sight of the LORD like the house of Ahab: for they were his counsellors after the death of his father to his destruction."

2 Chronicles 25:10: "Then Amaziah separated them, to wit, the army that was come to him out of Ephraim, to go home again: wherefore their anger was greatly kindled against Judah, and they returned home in great anger."

2 Chronicles 25:15: "Wherefore the anger of the LORD was kindled against Amaziah, and he sent unto him a prophet, which said unto him, Why hast thou sought after the gods of the people, which could not deliver their own people out of thine hand?"

2 Chronicles 28:5: "Wherefore the LORD his God delivered him into the hand of the king of Syria; and they smote him, and carried away a great multitude of them captives, and brought them to Damascus. And he was also delivered into the hand of the king of Israel, who smote him with a great slaughter."

2 Chronicles 29:8: "Wherefore the wrath of the LORD was upon Judah and Jerusalem, and he hath delivered them to trouble, to astonishment, and to hissing, as ye see with your eyes."

2 Chronicles 29:34: "But the priests were too few, so that they could not flay all the burnt offerings: wherefore their brethren the Levites did help them, till the work was ended, and until the other priests had sanctified themselves: for the Levites were more upright in heart to sanctify themselves than the priests."

2 Chronicles 33:11: "Wherefore the LORD brought upon them the captains of the host of the king of Assyria, which took Manasseh among the thorns, and bound him with fetters, and carried him to Babylon."

Nehemiah 2:2: "Wherefore the king said unto me, Why is thy countenance sad, seeing thou art not sick? this is nothing else but sorrow of heart. Then I was very sore afraid,"

Esther 3:6: "And he thought scorn to lay hands on Mordecai alone; for they had shewed him the people of Mordecai: wherefore Haman sought to destroy all the Jews that were throughout the whole kingdom of Ahasuerus, even the people of Mordecai."

Esther 9:26: "Wherefore they called these days Purim after the name of Pur. Therefore for all the

words of this letter, and of that which they had seen concerning this matter, and which had come unto them,"

Job 3:20: "Wherefore is light given to him that is in misery, and life unto the bitter in soul;"

Job 10:2: "I will say unto God, Do not condemn me; shew me wherefore thou contendest with me."

Job 10:18: "Wherefore then hast thou brought me forth out of the womb? Oh that I had given up the ghost, and no eye had seen me!"

Job 13:14: "Wherefore do I take my flesh in my teeth, and put my life in mine hand?"

Job 13:24: "Wherefore hidest thou thy face, and holdest me for thine enemy?"

Job 18:3: "Wherefore are we counted as beasts, and reputed vile in your sight?"

Job 21:7: "Wherefore do the wicked live, become old, yea, are mighty in power?"

Job 32:6: "And Elihu the son of Barachel the Buzite answered and said, I am young, and ye are very old; wherefore I was afraid, and durst not shew you mine opinion."

Job 33:1: "Wherefore, Job, I pray thee, hear my speeches, and hearken to all my words."

Job 42:6: "Wherefore I abhor myself, and repent in dust and ashes."

Psalms 10:13: "Wherefore doth the wicked contemn God? he hath said in his heart, Thou wilt not require it."

Psalms 44:24: "Wherefore hidest thou thy face, and forgettest our affliction and our oppression?"

Psalms 49:5: "Wherefore should I fear in the days of evil, when the iniquity of my heels shall compass me about?"

Psalms 79:10: "Wherefore should the heathen say, Where is their God? let him be known among the heathen in our sight by the revenging of the blood of thy servants which is shed."

Psalms 89:47: "Remember how short my time is: wherefore hast thou made all men in vain?"

Psalms 115:2: "Wherefore should the heathen say, Where is now their God?"

Proverbs 17:16: "Wherefore is there a price in the hand of a fool to get wisdom, seeing he hath no heart to it?"

Ecclesiastes 3:22: "Wherefore I perceive that there is nothing better, than that a man should rejoice in his own works; for that is his portion: for who shall bring him to see what shall be after him?"

Ecclesiastes 4:2: "Wherefore I praised the dead which are already dead more than the living which are yet alive."

Ecclesiastes 5:6: "Suffer not thy mouth to cause thy flesh to sin; neither say thou before the angel, that it was an error: wherefore should God be angry at thy voice, and destroy the work of thine hands?"

Isaiah 5:4: "What could have been done more to my vineyard, that I have not done in it? wherefore, when I looked that it should bring forth grapes, brought it forth wild grapes?"

Isaiah 10:12: "Wherefore it shall come to pass, that when the Lord hath performed his whole work upon mount Zion and on Jerusalem, I will punish the fruit of the stout heart of the king of Assyria, and the glory of his high looks."

Isaiah 16:11: "Wherefore my bowels shall sound like an harp for Moab, and mine inward parts for Kirharesh."

Isaiah 24:15: "Wherefore glorify ye the LORD in the fires, even the name of the LORD God of Israel in the isles of the sea."

Isaiah 28:14: "Wherefore hear the word of the LORD, ye scornful men, that rule this people which is in Jerusalem."

Isaiah 29:13: "Wherefore the Lord said, Forasmuch as this people draw near me with their mouth, and with their lips do honour me, but have removed their heart far from me, and their fear toward me is taught by the precept of men:"

Isaiah 30:12: "Wherefore thus saith the Holy One of Israel, Because ye despise this word, and trust in oppression and perverseness, and stay thereon:"

Isaiah 37:4: "It may be the LORD thy God will hear the words of Rabshakeh, whom the king of Assyria his master hath sent to reproach the living God, and will reprove the words which the

LORD thy God hath heard: wherefore lift up thy prayer for the remnant that is left."

Isaiah 50:2: "Wherefore, when I came, was there no man? when I called, was there none to answer? Is my hand shortened at all, that it cannot redeem? or have I no power to deliver? behold, at my rebuke I dry up the sea, I make the rivers a wilderness: their fish stinketh, because there is no water, and dieth for thirst."

Isaiah 55:2: "Wherefore do ye spend money for that which is not bread? and your labour for that which satisfieth not? hearken diligently unto me, and eat ye that which is good, and let your soul delight itself in fatness."

Isaiah 58:3: "Wherefore have we fasted, say they, and thou seest not? wherefore have we afflicted our soul, and thou takest no knowledge? Behold, in the day of your fast ye find pleasure, and exact all your labours."

Isaiah 63:2: "Wherefore art thou red in thine apparel, and thy garments like him that treadeth in the winefat?"

Jeremiah 2:9: "Wherefore I will yet plead with you, saith the LORD, and with your children's children will I plead."

Jeremiah 2:29: "Wherefore will ye plead with me? ye all have transgressed against me, saith the LORD."

Jeremiah 2:31: "O generation, see ye the word of the LORD. Have I been a wilderness unto Israel? a land of darkness? wherefore say my people, We are lords; we will come no more unto thee?"

Jeremiah 5:6: "Wherefore a lion out of the forest shall slay them, and a wolf of the evenings shall spoil them, a leopard shall watch over their cities: every one that goeth out thence shall be torn in pieces: because their transgressions are many, and their backslidings are increased."

Jeremiah 5:14: "Wherefore thus saith the LORD God of hosts, Because ye speak this word, behold, I will make my words in thy mouth fire, and this people wood, and it shall devour them."

Jeremiah 5:19: "And it shall come to pass, when ye shall say, Wherefore doeth the LORD our God all these things unto us? then shalt thou answer them, Like as ye have forsaken me, and served strange gods in your land, so shall ye serve strangers in a land that is not your's."

Jeremiah 12:1: "Righteous art thou, O LORD, when I plead with thee: yet let me talk with thee of thy judgments: Wherefore doth the way of the wicked prosper? wherefore are all they happy that deal very treacherously?"

Jeremiah 13:22: "And if thou say in thine heart, Wherefore come these things upon me? For the greatness of thine iniquity are thy skirts discovered, and thy heels made bare."

Jeremiah 16:10: "And it shall come to pass, when thou shalt shew this people all these words, and they shall say unto thee, Wherefore hath the LORD pronounced all this great evil against us? or what is our iniquity? or what is our sin that we have committed against the LORD our God?"

Jeremiah 20:18: "Wherefore came I forth out of the womb to see labour and sorrow, that my days should be consumed with shame?"

Jeremiah 22:8: "And many nations shall pass by this city, and they shall say every man to his neighbour, Wherefore hath the LORD done thus unto this great city?"

Jeremiah 22:28: "Is this man Coniah a despised broken idol? is he a vessel wherein is no pleasure? wherefore are they cast out, he and his seed, and are cast into a land which they know not?"

Jeremiah 23:12: "Wherefore their way shall be unto them as slippery ways in the darkness: they shall be driven on, and fall therein: for I will bring evil upon them, even the year of their visitation, saith the LORD."

Jeremiah 27:17: "Hearken not unto them; serve the king of Babylon, and live: wherefore should this city be laid waste?"

Jeremiah 30:6: "Ask ye now, and see whether a man doth travail with child? wherefore do I see every man with his hands on his loins, as a woman in travail, and all faces are turned into paleness?"

Jeremiah 32:3: "For Zedekiah king of Judah had shut him up, saying, Wherefore dost thou

prophesy, and say, Thus saith the LORD, Behold, I will give this city into the hand of the king of Babylon, and he shall take it;"

Jeremiah 37:15: "Wherefore the princes were wroth with Jeremiah, and smote him, and put him in prison in the house of Jonathan the scribe: for they had made that the prison."

Jeremiah 40:15: "Then Johanan the son of Kareah spake to Gedaliah in Mizpah secretly saying, Let me go, I pray thee, and I will slay Ishmael the son of Nethaniah, and no man shall know it: wherefore should he slay thee, that all the Jews which are gathered unto thee should be scattered, and the remnant in Judah perish?"

Jeremiah 44:6: "Wherefore my fury and mine anger was poured forth, and was kindled in the cities of Judah and in the streets of Jerusalem; and they are wasted and desolate, as at this day."

Jeremiah 44:7: "Therefore now thus saith the LORD, the God of hosts, the God of Israel; Wherefore commit ye this great evil against your souls, to cut off from you man and woman, child and suckling, out of Judah, to leave you none to remain;"

Jeremiah 46:5: "Wherefore have I seen them dismayed and turned away back? and their mighty ones are beaten down, and are fled apace, and look not back: for fear was round about, saith the LORD."

Jeremiah 49:4: "Wherefore gloriest thou in the valleys, thy flowing valley, O backsliding daughter? that trusted in her treasures, saying, Who shall come unto me?"

Jeremiah 51:52: "Wherefore, behold, the days come, saith the LORD, that I will do judgment upon her graven images: and through all her land the wounded shall groan."

Lamentations 3:39: "Wherefore doth a living man complain, a man for the punishment of his sins?"

Lamentations 5:20: "Wherefore dost thou forget us for ever, and forsake us so long time?"

Ezekiel 5:11: "Wherefore, as I live, saith the Lord GOD; Surely, because thou hast defiled my sanctuary with all thy detestable things, and with all thine abominations, therefore will I also diminish thee; neither shall mine eye spare, neither will I have any pity."

Ezekiel 7:24: "Wherefore I will bring the worst of the heathen, and they shall possess their houses: I will also make the pomp of the strong to cease; and their holy places shall be defiled."

Ezekiel 13:20: "Wherefore thus saith the Lord GOD; Behold, I am against your pillows, wherewith ye there hunt the souls to make them fly, and I will tear them from your arms, and will let the souls go, even the souls that ye hunt to make them fly."

Ezekiel 16:35: "Wherefore, O harlot, hear the word of the LORD:"

Ezekiel 18:32: "For I have no pleasure in the death of him that dieth, saith the Lord GOD: wherefore turn yourselves, and live ye."

Ezekiel 20:10: "Wherefore I caused them to go forth out of the land of Egypt, and brought them into the wilderness."

Ezekiel 20:25: "Wherefore I gave them also statutes that were not good, and judgments whereby they should not live;"

Ezekiel 20:30: "Wherefore say unto the house of Israel, Thus saith the Lord GOD; Are ye polluted after the manner of your fathers? and commit ye whoredom after their abominations?"

Ezekiel 21:7: "And it shall be, when they say unto thee, Wherefore sighest thou? that thou shalt answer, For the tidings; because it cometh: and every heart shall melt, and all hands shall be feeble, and every spirit shall faint, and all knees shall be weak as water: behold, it cometh, and shall be brought to pass, saith the Lord GOD."

Ezekiel 23:9: "Wherefore I have delivered her into the hand of her lovers, into the hand of the Assyrians, upon whom she doted."

Ezekiel 24:6: "Wherefore thus saith the Lord GOD; Woe to the bloody city, to the pot whose scum is therein, and whose scum is not gone out of it! bring it out piece by piece; let no lot fall upon it."

Ezekiel 33:25: "Wherefore say unto them, Thus saith the Lord GOD; Ye eat with the blood, and lift up your eyes toward your idols, and shed blood: and shall ye possess the land?"

Ezekiel 36:18: "Wherefore I poured my fury upon them for the blood that they had shed upon the

land, and for their idols wherewith they had polluted it:"

Ezekiel 43:8: "In their setting of their threshold by my thresholds, and their post by my posts, and the wall between me and them, they have even defiled my holy name by their abominations that they have committed: wherefore I have consumed them in mine anger."

Daniel 3:8: "Wherefore at that time certain Chaldeans came near, and accused the Jews."

Daniel 4:27: "Wherefore, O king, let my counsel be acceptable unto thee, and break off thy sins by righteousness, and thine iniquities by shewing mercy to the poor; if it may be a lengthening of thy tranquillity."

Daniel 6:9: "Wherefore king Darius signed the writing and the decree."

Daniel 8:26: "And the vision of the evening and the morning which was told is true: wherefore shut thou up the vision; for it shall be for many days."

Daniel 10:20: "Then said he, Knowest thou wherefore I come unto thee? and now will I return to fight with the prince of Persia: and when I am gone forth, lo, the prince of Grecia shall come."

Joel 2:17: "Let the priests, the ministers of the LORD, weep between the porch and the altar, and let them say, Spare thy people, O LORD, and give not thine heritage to reproach, that the heathen should rule over them: wherefore should they say among the people, Where is their God?"

Jonah 1:14: "Wherefore they cried unto the LORD, and said, We beseech thee, O LORD, we beseech thee, let us not perish for this man's life, and lay not upon us innocent blood: for thou, O LORD, hast done as it pleased thee."

Habakkuk 1:13: "Thou art of purer eyes than to behold evil, and canst not look on iniquity: wherefore lookest thou upon them that deal treacherously, and holdest thy tongue when the wicked devoureth the man that is more righteous than he?"

Malachi 2:14: "Yet ye say, Wherefore? Because the LORD hath been witness between thee and the wife of thy youth, against whom thou hast dealt treacherously: yet is she thy companion, and the wife of thy covenant."

Malachi 2:15: "And did not he make one? Yet had he the residue of the spirit. And wherefore one? That he might seek a godly seed. Therefore take heed to your spirit, and let none deal treacherously against the wife of his youth."

Matthew 6:30: "Wherefore, if God so clothe the grass of the field, which to day is, and to morrow is cast into the oven, shall he not much more clothe you, O ye of little faith?"

Matthew 7:20: "Wherefore by their fruits ye shall know them."

Matthew 9:4: "And Jesus knowing their thoughts said, Wherefore think ye evil in your hearts?"

Matthew 12:12: "How much then is a man better than a sheep? Wherefore it is lawful to do well on the sabbath days."

Matthew 12:31: "Wherefore I say unto you, All manner of sin and blasphemy shall be forgiven unto men: but the blasphemy against the Holy Ghost shall not be forgiven unto men."

Matthew 14:31: "And immediately Jesus stretched forth his hand, and caught him, and said unto him, O thou of little faith, wherefore didst thou doubt?"

Matthew 18:8: "Wherefore if thy hand or thy foot offend thee, cut them off, and cast them from thee: it is better for thee to enter into life halt or maimed, rather than having two hands or two feet to be cast into everlasting fire."

Matthew 19:6: "Wherefore they are no more twain, but one flesh. What therefore God hath joined together, let not man put asunder."

Matthew 23:31: "Wherefore ye be witnesses unto yourselves, that ye are the children of them which killed the prophets."

Matthew 23:34: "Wherefore, behold, I send unto you prophets, and wise men, and scribes: and some of them ye shall kill and crucify; and some of them shall ye scourge in your synagogues, and persecute them from city to city:"

Matthew 24:26: "Wherefore if they shall say unto you, Behold, he is in the desert; go not forth: behold, he is in the secret chambers; believe it not."

Matthew 26:50: "And Jesus said unto him, Friend, wherefore art thou come? Then came they, and laid hands on Jesus and took him."

Matthew 27:8: "Wherefore that field was called, The field of blood, unto this day."

Luke 7:7: "Wherefore neither thought I myself worthy to come unto thee: but say in a word, and my servant shall be healed."

Luke 7:47: "Wherefore I say unto thee, Her sins, which are many, are forgiven; for she loved much: but to whom little is forgiven, the same loveth little."

Luke 19:23: "Wherefore then gavest not thou my money into the bank, that at my coming I might have required mine own with usury?"

John 9:27: "He answered them, I have told you already, and ye did not hear: wherefore would ye hear it again? will ye also be his disciples?"

Acts 1:21: "Wherefore of these men which have companied with us all the time that the Lord Jesus went in and out among us,"

Acts 6:3: "Wherefore, brethren, look ye out among you seven men of honest report, full of the Holy Ghost and wisdom, whom we may appoint over this business."

Acts 10:21: "Then Peter went down to the men which were sent unto him from Cornelius; and said, Behold, I am he whom ye seek: what is the cause wherefore ye are come?"

Acts 13:35: "Wherefore he saith also in another psalm, Thou shalt not suffer thine Holy One to see corruption."

Acts 15:19: "Wherefore my sentence is, that we trouble not them, which from among the Gentiles are turned to God:"

Acts 19:32: "Some therefore cried one thing, and some another: for the assembly was confused: and the more part knew not wherefore they were come together."

Acts 19:38: "Wherefore if Demetrius, and the craftsmen which are with him, have a matter against any man, the law is open, and there are deputies: let them implead one another."

Acts 20:26: "Wherefore I take you to record this day, that I am pure from the blood of all men."

Acts 22:24: "The chief captain commanded him to be brought into the castle, and bade that he should be examined by scourging; that he might know wherefore they cried so against him."

Acts 22:30: "On the morrow, because he would have known the certainty wherefore he was accused of the Jews, he loosed him from his bands, and commanded the chief priests and all their council to appear, and brought Paul down, and set him before them."

Acts 23:28: "And when I would have known the cause wherefore they accused him, I brought him forth into their council:"

Acts 24:26: "He hoped also that money should have been given him of Paul, that he might loose him: wherefore he sent for him the oftener, and communed with him."

Acts 25:26: "Of whom I have no certain thing to write unto my lord. Wherefore I have brought him forth before you, and specially before thee, O king Agrippa, that, after examination had, I might have somewhat to write."

Acts 26:3: "Especially because I know thee to be expert in all customs and questions which are among the Jews: wherefore I beseech thee to hear me patiently."

Acts 27:25: "Wherefore, sirs, be of good cheer: for I believe God, that it shall be even as it was told me."

Acts 27:34: "Wherefore I pray you to take some meat: for this is for your health: for there shall not an hair fall from the head of any of you."

Romans 1:24: "Wherefore God also gave them up to uncleanness through the lusts of their own hearts, to dishonour their own bodies between themselves:"

Romans 5:12: "Wherefore, as by one man sin entered into the world, and death by sin; and so death passed upon all men, for that all have sinned:"

Romans 7:4: "Wherefore, my brethren, ye also are become dead to the law by the body of Christ; that ye should be married to another, even to him who is raised from the dead, that we should bring

forth fruit unto God."

Romans 7:12: "Wherefore the law is holy, and the commandment holy, and just, and good."

Romans 9:32: "Wherefore? Because they sought it not by faith, but as it were by the works of the law. For they stumbled at that stumblingstone;"

Romans 13:5: "Wherefore ye must needs be subject, not only for wrath, but also for conscience sake."

Romans 15:7: "Wherefore receive ye one another, as Christ also received us to the glory of God."

1 Corinthians 4:16: "Wherefore I beseech you, be ye followers of me."

1 Corinthians 8:13: "Wherefore, if meat make my brother to offend, I will eat no flesh while the world standeth, lest I make my brother to offend."

1 Corinthians 10:12: "Wherefore let him that thinketh he standeth take heed lest he fall."

1 Corinthians 10:14: "Wherefore, my dearly beloved, flee from idolatry."

1 Corinthians 11:27: "Wherefore whosoever shall eat this bread, and drink this cup of the Lord, unworthily, shall be guilty of the body and blood of the Lord."

1 Corinthians 11:33: "Wherefore, my brethren, when ye come together to eat, tarry one for another."

1 Corinthians 12:3: "Wherefore I give you to understand, that no man speaking by the Spirit of God calleth Jesus accursed: and that no man can say that Jesus is the Lord, but by the Holy Ghost."

1 Corinthians 14:13: "Wherefore let him that speaketh in an unknown tongue pray that he may interpret."

1 Corinthians 14:22: "Wherefore tongues are for a sign, not to them that believe, but to them that believe not: but prophesying serveth not for them that believe not, but for them which believe."

1 Corinthians 14:39: "Wherefore, brethren, covet to prophesy, and forbid not to speak with tongues."

2 Corinthians 2:8: "Wherefore I beseech you that ye would confirm your love toward him."

2 Corinthians 5:9: "Wherefore we labour, that, whether present or absent, we may be accepted of him."

2 Corinthians 5:16: "Wherefore henceforth know we no man after the flesh: yea, though we have known Christ after the flesh, yet now henceforth know we him no more."

2 Corinthians 6:17: "Wherefore come out from among them, and be ye separate, saith the Lord, and touch not the unclean thing; and I will receive you."

2 Corinthians 7:12: "Wherefore, though I wrote unto you, I did it not for his cause that had done the wrong, nor for his cause that suffered wrong, but that our care for you in the sight of God might appear unto you."

2 Corinthians 8:24: "Wherefore shew ye to them, and before the churches, the proof of your love, and of our boasting on your behalf."

2 Corinthians 11:11: "Wherefore? because I love you not? God knoweth."

Galatians 3:19: "Wherefore then serveth the law? It was added because of transgressions, till the seed should come to whom the promise was made; and it was ordained by angels in the hand of a mediator."

Galatians 3:24: "Wherefore the law was our schoolmaster to bring us unto Christ, that we might be justified by faith."

Galatians 4:7: "Wherefore thou art no more a servant, but a son; and if a son, then an heir of God through Christ."

Ephesians 1:15: "Wherefore I also, after I heard of your faith in the Lord Jesus, and love unto all the saints,"

Ephesians 2:11: "Wherefore remember, that ye being in time past Gentiles in the flesh, who are called Uncircumcision by that which is called the Circumcision in the flesh made by hands;"

Ephesians 3:13: "Wherefore I desire that ye faint not at my tribulations for you, which is your glory."

Ephesians 4:8: "Wherefore he saith, When he ascended up on high, he led captivity captive, and gave gifts unto men."

Ephesians 4:25: "Wherefore putting away lying, speak every man truth with his neighbour: for we are members one of another."

Ephesians 5:14: "Wherefore he saith, Awake thou that sleepest, and arise from the dead, and Christ shall give thee light."

Ephesians 5:17: "Wherefore be ye not unwise, but understanding what the will of the Lord is."

Ephesians 6:13: "Wherefore take unto you the whole armour of God, that ye may be able to withstand in the evil day, and having done all, to stand."

Philippians 2:9: "Wherefore God also hath highly exalted him, and given him a name which is above every name:"

Philippians 2:12: "Wherefore, my beloved, as ye have always obeyed, not as in my presence only, but now much more in my absence, work out your own salvation with fear and trembling."

Colossians 2:20: "Wherefore if ye be dead with Christ from the rudiments of the world, why, as though living in the world, are ye subject to ordinances,"

1 Thessalonians 2:18: "Wherefore we would have come unto you, even I Paul, once and again; but Satan hindered us."

1 Thessalonians 3:1: "Wherefore when we could no longer forbear, we thought it good to be left at Athens alone;"

1 Thessalonians 4:18: "Wherefore comfort one another with these words."

1 Thessalonians 5:11: "Wherefore comfort yourselves together, and edify one another, even as also ye do."

2 Thessalonians 1:11: "Wherefore also we pray always for you, that our God would count you worthy of this calling, and fulfil all the good pleasure of his goodness, and the work of faith with power:"

2 Timothy 1:6: "Wherefore I put thee in remembrance that thou stir up the gift of God, which is in thee by the putting on of my hands."

Titus 1:13: "This witness is true. Wherefore rebuke them sharply, that they may be sound in the faith;"

Philemon 1:8: "Wherefore, though I might be much bold in Christ to enjoin thee that which is convenient,"

Hebrews 2:17: "Wherefore in all things it behoved him to be made like unto his brethren, that he might be a merciful and faithful high priest in things pertaining to God, to make reconciliation for the sins of the people."

Hebrews 3:1: "Wherefore, holy brethren, partakers of the heavenly calling, consider the Apostle and High Priest of our profession, Christ Jesus;"

Hebrews 3:7: "Wherefore (as the Holy Ghost saith, To day if ye will hear his voice,"

Hebrews 3:10: "Wherefore I was grieved with that generation, and said, They do alway err in their heart; and they have not known my ways."

Hebrews 7:25: "Wherefore he is able also to save them to the uttermost that come unto God by him, seeing he ever liveth to make intercession for them."

Hebrews 8:3: "For every high priest is ordained to offer gifts and sacrifices: wherefore it is of necessity that this man have somewhat also to offer."

Hebrews 10:5: "Wherefore when he cometh into the world, he saith, Sacrifice and offering thou wouldest not, but a body hast thou prepared me:"

Hebrews 11:16: "But now they desire a better country, that is, an heavenly: wherefore God is not ashamed to be called their God: for he hath prepared for them a city."

Hebrews 12:1: "Wherefore seeing we also are compassed about with so great a cloud of witnesses, let us lay aside every weight, and the sin which doth so easily beset us, and let us run with patience the race that is set before us,"



Hebrews 12:12: "Wherefore lift up the hands which hang down, and the feeble knees;"

Hebrews 12:28: "Wherefore we receiving a kingdom which cannot be moved, let us have grace, whereby we may serve God acceptably with reverence and godly fear:"

Hebrews 13:12: "Wherefore Jesus also, that he might sanctify the people with his own blood, suffered without the gate."

James 1:19: "Wherefore, my beloved brethren, let every man be swift to hear, slow to speak, slow to wrath:"

James 1:21: "Wherefore lay apart all filthiness and superfluity of naughtiness, and receive with meekness the engrafted word, which is able to save your souls."

James 4:6: "But he giveth more grace. Wherefore he saith, God resisteth the proud, but giveth grace unto the humble."

1 Peter 1:13: "Wherefore gird up the loins of your mind, be sober, and hope to the end for the grace that is to be brought unto you at the revelation of Jesus Christ;"

1 Peter 2:1: "Wherefore laying aside all malice, and all guile, and hypocrisies, and envies, all evil speakings,"

1 Peter 2:6: "Wherefore also it is contained in the scripture, Behold, I lay in Sion a chief corner stone, elect, precious: and he that believeth on him shall not be confounded."

1 Peter 4:19: "Wherefore let them that suffer according to the will of God commit the keeping of their souls to him in well doing, as unto a faithful Creator."

2 Peter 1:10: "Wherefore the rather, brethren, give diligence to make your calling and election sure: for if ye do these things, ye shall never fall:"

2 Peter 1:12: "Wherefore I will not be negligent to put you always in remembrance of these things, though ye know them, and be established in the present truth."

2 Peter 3:14: "Wherefore, beloved, seeing that ye look for such things, be diligent that ye may be found of him in peace, without spot, and blameless."

1 John 3:12: "Not as Cain, who was of that wicked one, and slew his brother. And wherefore slew he him? Because his own works were evil, and his brother's righteous."

3 John 1:10: "Wherefore, if I come, I will remember his deeds which he doeth, prating against us with malicious words: and not content therewith, neither doth he himself receive the brethren, and forbiddeth them that would, and casteth them out of the church."

Revelation 17:7: "And the angel said unto me, Wherefore didst thou marvel? I will tell thee the mystery of the woman, and of the beast that carrieth her, which hath the seven heads and ten horns."

## WHEREIN

Occurrences: 163

Genesis 1:30: "And to every beast of the earth, and to every fowl of the air, and to every thing that creepeth upon the earth, wherein there is life, I have given every green herb for meat: and it was so."

Genesis 6:17: "And, behold, I, even I, do bring a flood of waters upon the earth, to destroy all flesh, wherein is the breath of life, from under heaven; and every thing that is in the earth shall die."

Genesis 7:15: "And they went in unto Noah into the ark, two and two of all flesh, wherein is the breath of life."

Genesis 17:8: "And I will give unto thee, and to thy seed after thee, the land wherein thou art a stranger, all the land of Canaan, for an everlasting possession; and I will be their God."

Genesis 21:23: "Now therefore swear unto me here by God that thou wilt not deal falsely with me, nor with my son, nor with my son's son: but according to the kindness that I have done unto thee, thou shalt do unto me, and to the land wherein thou hast sojourned."

Genesis 28:4: "And give thee the blessing of Abraham, to thee, and to thy seed with thee; that thou mayest inherit the land wherein thou art a stranger, which God gave unto Abraham."

Genesis 36:7: "For their riches were more than that they might dwell together; and the land wherein

they were strangers could not bear them because of their cattle."

Genesis 37:1: "And Jacob dwelt in the land wherein his father was a stranger, in the land of Canaan."

Exodus 1:14: "And they made their lives bitter with hard bondage, in mortar, and in brick, and in all manner of service in the field: all their service, wherein they made them serve, was with rigour."

Exodus 6:4: "And I have also established my covenant with them, to give them the land of Canaan, the land of their pilgrimage, wherein they were strangers."

Exodus 12:7: "And they shall take of the blood, and strike it on the two side posts and on the upper door post of the houses, wherein they shall eat it."

Exodus 18:11: "Now I know that the LORD is greater than all gods: for in the thing wherein they dealt proudly he was above them."

Exodus 18:20: "And thou shalt teach them ordinances and laws, and shalt shew them the way wherein they must walk, and the work that they must do."

Exodus 22:27: "For that is his covering only, it is his raiment for his skin: wherein shall he sleep? and it shall come to pass, when he crieth unto me, that I will hear; for I am gracious."

Exodus 33:16: "For wherein shall it be known here that I and thy people have found grace in thy sight? is it not in that thou goest with us? so shall we be separated, I and thy people, from all the people that are upon the face of the earth."

Leviticus 4:23: "Or if his sin, wherein he hath sinned, come to his knowledge; he shall bring his offering, a kid of the goats, a male without blemish:"

Leviticus 5:18: "And he shall bring a ram without blemish out of the flock, with thy estimation, for a trespass offering, unto the priest: and the priest shall make an atonement for him concerning his ignorance wherein he erred and wist it not, and it shall be forgiven him."

Leviticus 6:28: "But the earthen vessel wherein it is sodden shall be broken: and if it be sodden in a brasen pot, it shall be both scoured, and rinsed in water."

Leviticus 11:32: "And upon whatsoever any of them, when they are dead, doth fall, it shall be unclean; whether it be any vessel of wood, or raiment, or skin, or sack, whatsoever vessel it be, wherein any work is done, it must be put into water, and it shall be unclean until the even; so it shall be cleansed."

Leviticus 11:36: "Nevertheless a fountain or pit, wherein there is plenty of water, shall be clean: but that which toucheth their carcase shall be unclean."

Leviticus 13:46: "All the days wherein the plague shall be in him he shall be defiled; he is unclean: he shall dwell alone; without the camp shall his habitation be."

Leviticus 13:52: "He shall therefore burn that garment, whether warp or woof, in woollen or in linen, or any thing of skin, wherein the plague is: for it is a fretting leprosy; it shall be burnt in the fire."

Leviticus 13:54: "Then the priest shall command that they wash the thing wherein the plague is, and he shall shut it up seven days more:"

Leviticus 13:57: "And if it appear still in the garment, either in the warp, or in the woof, or in any thing of skin; it is a spreading plague: thou shalt burn that wherein the plague is with fire."

Leviticus 18:3: "After the doings of the land of Egypt, wherein ye dwelt, shall ye not do: and after the doings of the land of Canaan, whither I bring you, shall ye not do: neither shall ye walk in their ordinances."

Numbers 12:11: "And Aaron said unto Moses, Alas, my lord, I beseech thee, lay not the sin upon us, wherein we have done foolishly, and wherein we have sinned."

Numbers 19:2: "This is the ordinance of the law which the LORD hath commanded, saying, Speak unto the children of Israel, that they bring thee a red heifer without spot, wherein is no blemish, and upon which never came yoke:"

Numbers 31:10: "And they burnt all their cities wherein they dwelt, and all their goodly castles, with fire."

Numbers 33:55: "But if ye will not drive out the inhabitants of the land from before you; then it shall come to pass, that those which ye let remain of them shall be pricks in your eyes, and thorns in your sides, and shall vex you in the land wherein ye dwell."

Numbers 35:33: "So ye shall not pollute the land wherein ye are: for blood it defileth the land: and the land cannot be cleansed of the blood that is shed therein, but by the blood of him that shed it."

Numbers 35:34: "Defile not therefore the land which ye shall inhabit, wherein I dwell: for I the LORD dwell among the children of Israel."

Deuteronomy 8:9: "A land wherein thou shalt eat bread without scarceness, thou shalt not lack any thing in it; a land whose stones are iron, and out of whose hills thou mayest dig brass."

Deuteronomy 8:15: "Who led thee through that great and terrible wilderness, wherein were fiery serpents, and scorpions, and drought, where there was no water; who brought thee forth water out of the rock of flint;"

Deuteronomy 12:2: "Ye shall utterly destroy all the places, wherein the nations which ye shall possess served their gods, upon the high mountains, and upon the hills, and under every green tree:"

Deuteronomy 12:7: "And there ye shall eat before the LORD your God, and ye shall rejoice in all that ye put your hand unto, ye and your households, wherein the LORD thy God hath blessed thee."

Deuteronomy 17:1: "Thou shalt not sacrifice unto the LORD thy God any bullock, or sheep, wherein is blemish, or any evilfavouredness: for that is an abomination unto the LORD thy God."

Deuteronomy 28:52: "And he shall besiege thee in all thy gates, until thy high and fenced walls come down, wherein thou trustedst, throughout all thy land: and he shall besiege thee in all thy gates throughout all thy land, which the LORD thy God hath given thee."

Joshua 8:24: "And it came to pass, when Israel had made an end of slaying all the inhabitants of Ai in the field, in the wilderness wherein they chased them, and when they were all fallen on the edge of the sword, until they were consumed, that all the Israelites returned unto Ai, and smote it with the edge of the sword."

Joshua 10:27: "And it came to pass at the time of the going down of the sun, that Joshua commanded, and they took them down off the trees, and cast them into the cave wherein they had been hid, and laid great stones in the cave's mouth, which remain until this very day."

Joshua 22:19: "Notwithstanding, if the land of your possession be unclean, then pass ye over unto the land of the possession of the LORD, wherein the LORD's tabernacle dwelleth, and take possession among us: but rebel not against the LORD, nor rebel against us, in building you an altar beside the altar of the LORD our God."

Joshua 22:33: "And the thing pleased the children of Israel; and the children of Israel blessed God, and did not intend to go up against them in battle, to destroy the land wherein the children of Reuben and Gad dwelt."

Joshua 24:17: "For the LORD our God, he it is that brought us up and our fathers out of the land of Egypt, from the house of bondage, and which did those great signs in our sight, and preserved us in all the way wherein we went, and among all the people through whom we passed:"

Judges 16:5: "And the lords of the Philistines came up unto her, and said unto her, Entice him, and see wherein his great strength lieth, and by what means we may prevail against him, that we may bind him to afflict him; and we will give thee every one of us eleven hundred pieces of silver."

Judges 16:6: "And Delilah said to Samson, Tell me, I pray thee, wherein thy great strength lieth, and wherewith thou mightest be bound to afflict thee."

Judges 16:15: "And she said unto him, How canst thou say, I love thee, when thine heart is not with me? thou hast mocked me these three times, and hast not told me wherein thy great strength lieth."

Judges 18:6: "And the priest said unto them, Go in peace: before the LORD is your way wherein ye go."

1 Samuel 6:15: "And the Levites took down the ark of the LORD, and the coffer that was with it, wherein the jewels of gold were, and put them on the great stone: and the men of Bethshemesh offered burnt offerings and sacrificed sacrifices the same day unto the LORD."

1 Samuel 14:38: "And Saul said, Draw ye near hither, all the chief of the people: and know and see wherein this sin hath been this day."

2 Samuel 7:7: "In all the places wherein I have walked with all the children of Israel spake I a word with any of the tribes of Israel, whom I commanded to feed my people Israel, saying, Why build ye not me an house of cedar?"

1 Kings 2:26: "And unto Abiathar the priest said the king, Get thee to Anathoth, unto thine own fields; for thou art worthy of death: but I will not at this time put thee to death, because thou barest the ark of the LORD God before David my father, and because thou hast been afflicted in all wherein my father was afflicted."

1 Kings 8:21: "And I have set there a place for the ark, wherein is the covenant of the LORD, which he made with our fathers, when he brought them out of the land of Egypt."

1 Kings 8:36: "Then hear thou in heaven, and forgive the sin of thy servants, and of thy people Israel, that thou teach them the good way wherein they should walk, and give rain upon thy land, which thou hast given to thy people for an inheritance."

1 Kings 8:50: "And forgive thy people that have sinned against thee, and all their transgressions wherein they have transgressed against thee, and give them compassion before them who carried them captive, that they may have compassion on them:"

1 Kings 13:31: "And it came to pass, after he had buried him, that he spake to his sons, saying, When I am dead, then bury me in the sepulchre wherein the man of God is buried; lay my bones beside his bones:"

2 Kings 12:2: "And Jehoash did that which was right in the sight of the LORD all his days wherein Jehoiada the priest instructed him."

2 Kings 14:6: "But the children of the murderers he slew not: according unto that which is written in the book of the law of Moses, wherein the LORD commanded, saying, The fathers shall not be put to death for the children, nor the children be put to death for the fathers; but every man shall be put to death for his own sin."

2 Kings 17:29: "Howbeit every nation made gods of their own, and put them in the houses of the high places which the Samaritans had made, every nation in their cities wherein they dwelt."

2 Kings 18:19: "And Rabshakeh said unto them, Speak ye now to Hezekiah, Thus saith the great king, the king of Assyria, What confidence is this wherein thou trustest?"

2 Kings 23:23: "But in the eighteenth year of king Josiah, wherein this passover was holden to the LORD in Jerusalem."

2 Chronicles 3:3: "Now these are the things wherein Solomon was instructed for the building of the house of God. The length by cubits after the first measure was threescore cubits, and the breadth twenty cubits."

2 Chronicles 6:11: "And in it have I put the ark, wherein is the covenant of the LORD, that he made with the children of Israel."

2 Chronicles 6:27: "Then hear thou from heaven, and forgive the sin of thy servants, and of thy people Israel, when thou hast taught them the good way, wherein they should walk; and send rain upon thy land, which thou hast given unto thy people for an inheritance."

2 Chronicles 8:1: "And it came to pass at the end of twenty years, wherein Solomon had built the house of the LORD, and his own house,"

2 Chronicles 33:19: "His prayer also, and how God was intreated of him, and all his sins, and his trespass, and the places wherein he built high places, and set up groves and graven images, before he was humbled: behold, they are written among the sayings of the seers."

Ezra 5:7: "They sent a letter unto him, wherein was written thus; Unto Darius the king, all peace."

Nehemiah 6:6: "Wherein was written, It is reported among the heathen, and Gashmu saith it, that thou and the Jews think to rebel: for which cause thou buildest the wall, that thou mayest be their king, according to these words."

Nehemiah 9:12: "Moreover thou leddest them in the day by a cloudy pillar; and in the night by a

pillar of fire, to give them light in the way wherein they should go."

Nehemiah 9:19: "Yet thou in thy manifold mercies forsookest them not in the wilderness: the pillar of the cloud departed not from them by day, to lead them in the way; neither the pillar of fire by night, to shew them light, and the way wherein they should go."

Nehemiah 13:15: "In those days saw I in Judah some treading wine presses on the sabbath, and bringing in sheaves, and lading asses; as also wine, grapes, and figs, and all manner of burdens, which they brought into Jerusalem on the sabbath day: and I testified against them in the day wherein they sold victuals."

Esther 5:11: "And Haman told them of the glory of his riches, and the multitude of his children, and all the things wherein the king had promoted him, and how he had advanced him above the princes and servants of the king."

Esther 8:11: "Wherein the king granted the Jews which were in every city to gather themselves together, and to stand for their life, to destroy, to slay and to cause to perish, all the power of the people and province that would assault them, both little ones and women, and to take the spoil of them for a prey,"

Esther 9:22: "As the days wherein the Jews rested from their enemies, and the month which was turned unto them from sorrow to joy, and from mourning into a good day: that they should make them days of feasting and joy, and of sending portions one to another, and gifts to the poor."

Job 3:3: "Let the day perish wherein I was born, and the night in which it was said, There is a man child conceived."

Job 6:16: "Which are blackish by reason of the ice, and wherein the snow is hid:"

Job 6:24: "Teach me, and I will hold my tongue: and cause me to understand wherein I have erred."

Job 38:26: "To cause it to rain on the earth, where no man is; on the wilderness, wherein there is no man;"

Psalms 74:2: "Remember thy congregation, which thou hast purchased of old; the rod of thine inheritance, which thou hast redeemed; this mount Zion, wherein thou hast dwelt."

Psalms 90:15: "Make us glad according to the days wherein thou hast afflicted us, and the years wherein we have seen evil."

Psalms 104:20: "Thou makest darkness, and it is night: wherein all the beasts of the forest do creep forth."

Psalms 104:25: "So is this great and wide sea, wherein are things creeping innumerable, both small and great beasts."

Psalms 142:3: "When my spirit was overwhelmed within me, then thou knewest my path. In the way wherein I walked have they privily laid a snare for me."

Psalms 143:8: "Cause me to hear thy lovingkindness in the morning; for in thee do I trust: cause me to know the way wherein I should walk; for I lift up my soul unto thee."

Ecclesiastes 2:19: "And who knoweth whether he shall be a wise man or a fool? yet shall he have rule over all my labour wherein I have laboured, and wherein I have shewed myself wise under the sun. This is also vanity."

Ecclesiastes 2:22: "For what hath man of all his labour, and of the vexation of his heart, wherein he hath laboured under the sun?"

Ecclesiastes 3:9: "What profit hath he that worketh in that wherein he laboureth?"

Ecclesiastes 8:9: "All this have I seen, and applied my heart unto every work that is done under the sun: there is a time wherein one man ruleth over another to his own hurt."

Isaiah 2:22: "Cease ye from man, whose breath is in his nostrils: for wherein is he to be accounted of?"

Isaiah 14:3: "And it shall come to pass in the day that the LORD shall give thee rest from thy sorrow, and from thy fear, and from the hard bondage wherein thou wast made to serve,"

Isaiah 33:21: "But there the glorious LORD will be unto us a place of broad rivers and streams; wherein shall go no galley with oars, neither shall gallant ship pass thereby."

Isaiah 36:4: "And Rabshakeh said unto them, Say ye now to Hezekiah, Thus saith the great king, the king of Assyria, What confidence is this wherein thou trustest?"

Isaiah 47:12: "Stand now with thine enchantments, and with the multitude of thy sorceries, wherein thou hast laboured from thy youth; if so be thou shalt be able to profit, if so be thou mayest prevail."

Isaiah 65:12: "Therefore will I number you to the sword, and ye shall all bow down to the slaughter: because when I called, ye did not answer; when I spake, ye did not hear; but did evil before mine eyes, and did choose that wherein I delighted not."

Jeremiah 5:17: "And they shall eat up thine harvest, and thy bread, which thy sons and thy daughters should eat: they shall eat up thy flocks and thine herds: they shall eat up thy vines and thy fig trees: they shall impoverish thy fenced cities, wherein thou trustedst, with the sword."

Jeremiah 7:14: "Therefore will I do unto this house, which is called by my name, wherein ye trust, and unto the place which I gave to you and to your fathers, as I have done to Shiloh."

Jeremiah 12:5: "If thou hast run with the footmen, and they have wearied thee, then how canst thou contend with horses? and if in the land of peace, wherein thou trustedst, they wearied thee, then how wilt thou do in the swelling of Jordan?"

Jeremiah 16:19: "O LORD, my strength, and my fortress, and my refuge in the day of affliction, the Gentiles shall come unto thee from the ends of the earth, and shall say, Surely our fathers have inherited lies, vanity, and things wherein there is no profit."

Jeremiah 20:14: "Cursed be the day wherein I was born: let not the day wherein my mother bare me be blessed."

Jeremiah 22:28: "Is this man Coniah a despised broken idol? is he a vessel wherein is no pleasure? wherefore are they cast out, he and his seed, and are cast into a land which they know not?"

Jeremiah 31:9: "They shall come with weeping, and with supplications will I lead them: I will cause them to walk by the rivers of waters in a straight way, wherein they shall not stumble: for I am a father to Israel, and Ephraim is my firstborn."

Jeremiah 36:14: "Therefore all the princes sent Jehudi the son of Nethaniah, the son of Shelemiah, the son of Cushi, unto Baruch, saying, Take in thine hand the roll wherein thou hast read in the ears of the people, and come. So Baruch the son of Neriah took the roll in his hand, and came unto them."

Jeremiah 41:9: "Now the pit wherein Ishmael had cast all the dead bodies of the men, whom he had slain because of Gedaliah, was it which Asa the king had made for fear of Baasha king of Israel: and Ishmael the son of Nethaniah filled it with them that were slain."

Jeremiah 42:3: "That the LORD thy God may shew us the way wherein we may walk, and the thing that we may do."

Jeremiah 48:38: "There shall be lamentation generally upon all the housetops of Moab, and in the streets thereof: for I have broken Moab like a vessel wherein is no pleasure, saith the LORD."

Jeremiah 51:43: "Her cities are a desolation, a dry land, and a wilderness, a land wherein no man dwelleth, neither doth any son of man pass thereby."

Ezekiel 20:34: "And I will bring you out from the people, and will gather you out of the countries wherein ye are scattered, with a mighty hand, and with a stretched out arm, and with fury poured out."

Ezekiel 20:41: "I will accept you with your sweet savour, when I bring you out from the people, and gather you out of the countries wherein ye have been scattered; and I will be sanctified in you before the heathen."

Ezekiel 20:43: "And there shall ye remember your ways, and all your doings, wherein ye have been defiled; and ye shall lothe yourselves in your own sight for all your evils that ye have committed."

Ezekiel 23:19: "Yet she multiplied her whoredoms, in calling to remembrance the days of her youth, wherein she had played the harlot in the land of Egypt."

Ezekiel 26:10: "By reason of the abundance of his horses their dust shall cover thee: thy walls shall shake at the noise of the horsemen, and of the wheels, and of the chariots, when he shall enter into

thy gates, as men enter into a city wherein is made a breach."

Ezekiel 32:6: "I will also water with thy blood the land wherein thou swimst, even to the mountains; and the rivers shall be full of thee."

Ezekiel 37:23: "Neither shall they defile themselves any more with their idols, nor with their detestable things, nor with any of their transgressions: but I will save them out of all their dwellingplaces, wherein they have sinned, and will cleanse them: so shall they be my people, and I will be their God."

Ezekiel 37:25: "And they shall dwell in the land that I have given unto Jacob my servant, wherein your fathers have dwelt; and they shall dwell therein, even they, and their children, and their children's children for ever: and my servant David shall be their prince for ever."

Ezekiel 42:14: "When the priests enter therein, then shall they not go out of the holy place into the utter court, but there they shall lay their garments wherein they minister; for they are holy; and shall put on other garments, and shall approach to those things which are for the people."

Ezekiel 44:19: "And when they go forth into the utter court, even into the utter court to the people, they shall put off their garments wherein they ministered, and lay them in the holy chambers, and they shall put on other garments; and they shall not sanctify the people with their garments."

Hosea 2:13: "And I will visit upon her the days of Baalim, wherein she burned incense to them, and she decked herself with her earrings and her jewels, and she went after her lovers, and forgat me, saith the LORD."

Hosea 8:8: "Israel is swallowed up: now shall they be among the Gentiles as a vessel wherein is no pleasure."

Jonah 4:11: "And should not I spare Nineveh, that great city, wherein are more then sixscore thousand persons that cannot discern between their right hand and their left hand; and also much cattle?"

Micah 6:3: "O my people, what have I done unto thee? and wherein have I wearied thee? testify against me."

Zephaniah 3:11: "In that day shalt thou not be ashamed for all thy doings, wherein thou hast transgressed against me: for then I will take away out of the midst of thee them that rejoice in thy pride, and thou shalt no more be haughty because of my holy mountain."

Zechariah 9:11: "As for thee also, by the blood of thy covenant I have sent forth thy prisoners out of the pit wherein is no water."

Malachi 1:2: "I have loved you, saith the LORD. Yet ye say, Wherein hast thou loved us? Was not Esau Jacob's brother? saith the LORD: yet I loved Jacob,"

Malachi 1:6: "A son honoureth his father, and a servant his master: if then I be a father, where is mine honour? and if I be a master, where is my fear? saith the LORD of hosts unto you, O priests, that despise my name. And ye say, Wherein have we despised thy name?"

Malachi 1:7: "Ye offer polluted bread upon mine altar; and ye say, Wherein have we polluted thee? In that ye say, The table of the LORD is contemptible."

Malachi 2:17: "Ye have wearied the LORD with your words. Yet ye say, Wherein have we wearied him? When ye say, Every one that doeth evil is good in the sight of the LORD, and he delighteth in them; or, Where is the God of judgment?"

Malachi 3:7: "Even from the days of your fathers ye are gone away from mine ordinances, and have not kept them. Return unto me, and I will return unto you, saith the LORD of hosts. But ye said, Wherein shall we return?"

Malachi 3:8: "Will a man rob God? Yet ye have robbed me. But ye say, Wherein have we robbed thee? In tithes and offerings."

Matthew 11:20: "Then began he to upbraid the cities wherein most of his mighty works were done, because they repented not:"

Matthew 25:13: "Watch therefore, for ye know neither the day nor the hour wherein the Son of man cometh."

Mark 2:4: "And when they could not come nigh unto him for the press, they uncovered the roof where he was: and when they had broken it up, they let down the bed wherein the sick of the palsy lay."

Luke 1:4: "That thou mightest know the certainty of those things, wherein thou hast been instructed."

Luke 1:25: "Thus hath the Lord dealt with me in the days wherein he looked on me, to take away my reproach among men."

Luke 11:22: "But when a stronger than he shall come upon him, and overcome him, he taketh from him all his armour wherein he trusted, and divideth his spoils."

Luke 23:53: "And he took it down, and wrapped it in linen, and laid it in a sepulchre that was hewn in stone, wherein never man before was laid."

John 19:41: "Now in the place where he was crucified there was a garden; and in the garden a new sepulchre, wherein was never man yet laid."

Acts 2:8: "And how hear we every man in our own tongue, wherein we were born?"

Acts 7:4: "Then came he out of the land of the Chaldaeans, and dwelt in Charran: and from thence, when his father was dead, he removed him into this land, wherein ye now dwell."

Acts 10:12: "Wherein were all manner of fourfooted beasts of the earth, and wild beasts, and creeping things, and fowls of the air."

Romans 2:1: "Therefore thou art inexcusable, O man, whosoever thou art that judgest: for wherein thou judgest another, thou condemnest thyself; for thou that judgest doest the same things."

Romans 5:2: "By whom also we have access by faith into this grace wherein we stand, and rejoice in hope of the glory of God."

Romans 7:6: "But now we are delivered from the law, that being dead wherein we were held; that we should serve in newness of spirit, and not in the oldness of the letter."

1 Corinthians 7:20: "Let every man abide in the same calling wherein he was called."

1 Corinthians 7:24: "Brethren, let every man, wherein he is called, therein abide with God."

1 Corinthians 15:1: "Moreover, brethren, I declare unto you the gospel which I preached unto you, which also ye have received, and wherein ye stand;"

2 Corinthians 11:12: "But what I do, that I will do, that I may cut off occasion from them which desire occasion; that wherein they glory, they may be found even as we."

2 Corinthians 12:13: "For what is it wherein ye were inferior to other churches, except it be that I myself was not burdensome to you? forgive me this wrong."

Ephesians 1:6: "To the praise of the glory of his grace, wherein he hath made us accepted in the beloved."

Ephesians 1:8: "Wherein he hath abounded toward us in all wisdom and prudence;"

Ephesians 2:2: "Wherein in time past ye walked according to the course of this world, according to the prince of the power of the air, the spirit that now worketh in the children of disobedience:"

Ephesians 5:18: "And be not drunk with wine, wherein is excess; but be filled with the Spirit;"

Philippians 4:10: "But I rejoiced in the Lord greatly, that now at the last your care of me hath flourished again; wherein ye were also careful, but ye lacked opportunity."

Colossians 2:12: "Buried with him in baptism, wherein also ye are risen with him through the faith of the operation of God, who hath raised him from the dead."

2 Timothy 2:9: "Wherein I suffer trouble, as an evil doer, even unto bonds; but the word of God is not bound."

Hebrews 6:17: "Wherein God, willing more abundantly to shew unto the heirs of promise the immutability of his counsel, confirmed it by an oath:"

Hebrews 9:2: "For there was a tabernacle made; the first, wherein was the candlestick, and the table, and the shewbread; which is called the sanctuary."

Hebrews 9:4: "Which had the golden censer, and the ark of the covenant overlaid round about with gold, wherein was the golden pot that had manna, and Aaron's rod that budded, and the tables of the



covenant;"

1 Peter 1:6: "Wherein ye greatly rejoice, though now for a season, if need be, ye are in heaviness through manifold temptations:"

1 Peter 3:20: "Which sometime were disobedient, when once the longsuffering of God waited in the days of Noah, while the ark was a preparing, wherein few, that is, eight souls were saved by water."

1 Peter 4:4: "Wherein they think it strange that ye run not with them to the same excess of riot, speaking evil of you:"

1 Peter 5:12: "By Silvanus, a faithful brother unto you, as I suppose, I have written briefly, exhorting, and testifying that this is the true grace of God wherein ye stand."

2 Peter 3:12: "Looking for and hasting unto the coming of the day of God, wherein the heavens being on fire shall be dissolved, and the elements shall melt with fervent heat?"

2 Peter 3:13: "Nevertheless we, according to his promise, look for new heavens and a new earth, wherein dwelleth righteousness."

Revelation 2:13: "I know thy works, and where thou dwellest, even where Satan's seat is: and thou holdest fast my name, and hast not denied my faith, even in those days wherein Antipas was my faithful martyr, who was slain among you, where Satan dwelleth."

Revelation 18:19: "And they cast dust on their heads, and cried, weeping and wailing, saying, Alas, alas that great city, wherein were made rich all that had ships in the sea by reason of her costliness! for in one hour is she made desolate."

## **WHEREINSOEVER**

Occurrences: 1

2 Corinthians 11:21: "I speak as concerning reproach, as though we had been weak. Howbeit whereinsoever any is bold, (I speak foolishly,) I am bold also."

## **WHEREINTO**

Occurrences: 3

Leviticus 11:33: "And every earthen vessel, whereinto any of them falleth, whatsoever is in it shall be unclean; and ye shall break it."

Numbers 14:24: "But my servant Caleb, because he had another spirit with him, and hath followed me fully, him will I bring into the land whereinto he went; and his seed shall possess it."

John 6:22: "The day following, when the people which stood on the other side of the sea saw that there was none other boat there, save that one whereinto his disciples were entered, and that Jesus went not with his disciples into the boat, but that his disciples were gone away alone;"

## **WHEREOF**

Occurrences: 72

Genesis 3:11: "And he said, Who told thee that thou wast naked? Hast thou eaten of the tree, whereof I commanded thee that thou shouldest not eat?"

Leviticus 6:30: "And no sin offering, whereof any of the blood is brought into the tabernacle of the congregation to reconcile withal in the holy place, shall be eaten: it shall be burnt in the fire."

Leviticus 13:24: "Or if there be any flesh, in the skin whereof there is a hot burning, and the quick flesh that burneth have a white bright spot, somewhat reddish, or white;"

Leviticus 27:9: "And if it be a beast, whereof men bring an offering unto the LORD, all that any man giveth of such unto the LORD shall be holy."

Numbers 5:3: "Both male and female shall ye put out, without the camp shall ye put them; that they defile not their camps, in the midst whereof I dwell."

Numbers 7:19: "He offered for his offering one silver charger, the weight whereof was an hundred

and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:25: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:37: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:49: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:61: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:67: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:73: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:79: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 21:16: "And from thence they went to Beer: that is the well whereof the LORD spake unto Moses, Gather the people together, and I will give them water."

Deuteronomy 13:2: "And the sign or the wonder come to pass, whereof he spake unto thee, saying, Let us go after other gods, which thou hast not known, and let us serve them;"

Deuteronomy 28:27: "The LORD will smite thee with the botch of Egypt, and with the emerods, and with the scab, and with the itch, whereof thou canst not be healed."

Deuteronomy 28:68: "And the LORD shall bring thee into Egypt again with ships, by the way whereof I spake unto thee, Thou shalt see it no more again: and there ye shall be sold unto your enemies for bondmen and bondwomen, and no man shall buy you."

Joshua 14:12: "Now therefore give me this mountain, whereof the LORD spake in that day; for thou heardest in that day how the Anakims were there, and that the cities were great and fenced: if so be the LORD will be with me, then I shall be able to drive them out, as the LORD said."

Joshua 20:2: "Speak to the children of Israel, saying, Appoint out for you cities of refuge, whereof I spake unto you by the hand of Moses:"

Joshua 22:9: "And the children of Reuben and the children of Gad and the half tribe of Manasseh returned, and departed from the children of Israel out of Shiloh, which is in the land of Canaan, to go unto the country of Gilead, to the land of their possession, whereof they were possessed, according to the word of the LORD by the hand of Moses."

1 Samuel 10:16: "And Saul said unto his uncle, He told us plainly that the asses were found. But of the matter of the kingdom, whereof Samuel spake, he told him not."

1 Samuel 13:2: "Saul chose him three thousand men of Israel; whereof two thousand were with Saul in Michmash and in mount Bethel, and a thousand were with Jonathan in Gibeah of Benjamin: and the rest of the people he sent every man to his tent."

2 Samuel 12:30: "And he took their king's crown from off his head, the weight whereof was a talent of gold with the precious stones: and it was set on David's head. And he brought forth the spoil of the city in great abundance."

2 Kings 13:14: "Now Elisha was fallen sick of his sickness whereof he died. And Joash the king of

Israel came down unto him, and wept over his face, and said, O my father, my father, the chariot of Israel, and the horsemen thereof."

2 Kings 17:12: "For they served idols, whereof the LORD had said unto them, Ye shall not do this thing."

2 Chronicles 3:8: "And he made the most holy house, the length whereof was according to the breadth of the house, twenty cubits, and the breadth thereof twenty cubits: and he overlaid it with fine gold, amounting to six hundred talents."

2 Chronicles 6:20: "That thine eyes may be open upon this house day and night, upon the place whereof thou hast said that thou wouldest put thy name there; to hearken unto the prayer which thy servant prayeth toward this place."

2 Chronicles 24:14: "And when they had finished it, they brought the rest of the money before the king and Jehoiada, whereof were made vessels for the house of the LORD, even vessels to minister, and to offer withal, and spoons, and vessels of gold and silver. And they offered burnt offerings in the house of the LORD continually all the days of Jehoiada."

2 Chronicles 33:4: "Also he built altars in the house of the LORD, whereof the LORD had said, In Jerusalem shall my name be for ever."

Nehemiah 12:31: "Then I brought up the princes of Judah upon the wall, and appointed two great companies of them that gave thanks, whereof one went on the right hand upon the wall toward the dung gate:"

Job 6:4: "For the arrows of the Almighty are within me, the poison whereof drinketh up my spirit: the terrors of God do set themselves in array against me."

Psalms 46:4: "There is a river, the streams whereof shall make glad the city of God, the holy place of the tabernacles of the most High."

Psalms 57:6: "They have prepared a net for my steps; my soul is bowed down: they have digged a pit before me, into the midst whereof they are fallen themselves. Selah."

Psalms 126:3: "The LORD hath done great things for us; whereof we are glad."

Ecclesiastes 1:10: "Is there any thing whereof it may be said, See, this is new? it hath been already of old time, which was before us."

Song of Solomon 4:2: "Thy teeth are like a flock of sheep that are even shorn, which came up from the washing; whereof every one bear twins, and none is barren among them."

Song of Solomon 6:6: "Thy teeth are as a flock of sheep which go up from the washing, whereof every one beareth twins, and there is not one barren among them."

Jeremiah 32:36: "And now therefore thus saith the LORD, the God of Israel, concerning this city, whereof ye say, It shall be delivered into the hand of the king of Babylon by the sword, and by the famine, and by the pestilence;"

Jeremiah 32:43: "And fields shall be bought in this land, whereof ye say, It is desolate without man or beast; it is given into the hand of the Chaldeans."

Jeremiah 42:16: "Then it shall come to pass, that the sword, which ye feared, shall overtake you there in the land of Egypt, and the famine, whereof ye were afraid, shall follow close after you there in Egypt; and there ye shall die."

Ezekiel 20:29: "Then I said unto them, What is the high place whereunto ye go? And the name whereof is called Bamah unto this day."

Ezekiel 32:15: "When I shall make the land of Egypt desolate, and the country shall be destitute of that whereof it was full, when I shall smite all them that dwell therein, then shall they know that I am the LORD."

Ezekiel 39:8: "Behold, it is come, and it is done, saith the Lord GOD; this is the day whereof I have spoken."

Daniel 9:2: "In the first year of his reign I Daniel understood by books the number of the years, whereof the word of the LORD came to Jeremiah the prophet, that he would accomplish seventy years in the desolations of Jerusalem."

Hosea 2:12: "And I will destroy her vines and her fig trees, whereof she hath said, These are my rewards that my lovers have given me: and I will make them a forest, and the beasts of the field shall eat them."

Luke 23:14: "Said unto them, Ye have brought this man unto me, as one that perverteth the people: and, behold, I, having examined him before you, have found no fault in this man touching those things whereof ye accuse him:"

Acts 2:32: "This Jesus hath God raised up, whereof we all are witnesses."

Acts 3:15: "And killed the Prince of life, whom God hath raised from the dead; whereof we are witnesses."

Acts 17:19: "And they took him, and brought him unto Areopagus, saying, May we know what this new doctrine, whereof thou speakest, is?"

Acts 17:31: "Because he hath appointed a day, in the which he will judge the world in righteousness by that man whom he hath ordained; whereof he hath given assurance unto all men, in that he hath raised him from the dead."

Acts 21:24: "Them take, and purify thyself with them, and be at charges with them, that they may shave their heads: and all may know that those things, whereof they were informed concerning thee, are nothing; but that thou thyself also walkest orderly, and keepest the law."

Acts 24:8: "Commanding his accusers to come unto thee: by examining of whom thyself mayest take knowledge of all these things, whereof we accuse him."

Acts 24:13: "Neither can they prove the things whereof they now accuse me."

Acts 25:11: "For if I be an offender, or have committed any thing worthy of death, I refuse not to die: but if there be none of these things whereof these accuse me, no man may deliver me unto them. I appeal unto Caesar."

Acts 26:2: "I think myself happy, king Agrippa, because I shall answer for myself this day before thee touching all the things whereof I am accused of the Jews:"

Romans 4:2: "For if Abraham were justified by works, he hath whereof to glory; but not before God."

Romans 6:21: "What fruit had ye then in those things whereof ye are now ashamed? for the end of those things is death."

Romans 15:17: "I have therefore whereof I may glory through Jesus Christ in those things which pertain to God."

1 Corinthians 7:1: "Now concerning the things whereof ye wrote unto me: It is good for a man not to touch a woman."

2 Corinthians 9:5: "Therefore I thought it necessary to exhort the brethren, that they would go before unto you, and make up beforehand your bounty, whereof ye had notice before, that the same might be ready, as a matter of bounty, and not as of covetousness."

Ephesians 3:7: "Whereof I was made a minister, according to the gift of the grace of God given unto me by the effectual working of his power."

Philippians 3:4: "Though I might also have confidence in the flesh. If any other man thinketh that he hath whereof he might trust in the flesh, I more:"

Colossians 1:5: "For the hope which is laid up for you in heaven, whereof ye heard before in the word of the truth of the gospel;"

Colossians 1:23: "If ye continue in the faith grounded and settled, and be not moved away from the hope of the gospel, which ye have heard, and which was preached to every creature which is under heaven; whereof I Paul am made a minister;"

Colossians 1:25: "Whereof I am made a minister, according to the dispensation of God which is given to me for you, to fulfil the word of God;"

1 Timothy 1:7: "Desiring to be teachers of the law; understanding neither what they say, nor whereof they affirm."

1 Timothy 6:4: "He is proud, knowing nothing, but doting about questions and strifes of words,

whereof cometh envy, strife, railings, evil surmisings,"

Hebrews 2:5: "For unto the angels hath he not put in subjection the world to come, whereof we speak."

Hebrews 10:15: "Whereof the Holy Ghost also is a witness to us: for after that he had said before,"

Hebrews 12:8: "But if ye be without chastisement, whereof all are partakers, then are ye bastards, and not sons."

Hebrews 13:10: "We have an altar, whereof they have no right to eat which serve the tabernacle."

1 John 4:3: "And every spirit that confesseth not that Jesus Christ is come in the flesh is not of God: and this is that spirit of antichrist, whereof ye have heard that it should come; and even now already is it in the world."

## WHEREON

Occurrences: 26

Genesis 28:13: "And, behold, the LORD stood above it, and said, I am the LORD God of Abraham thy father, and the God of Isaac: the land whereon thou liest, to thee will I give it, and to thy seed;"

Exodus 3:5: "And he said, Draw not nigh hither: put off thy shoes from off thy feet, for the place whereon thou standest is holy ground."

Exodus 8:21: "Else, if thou wilt not let my people go, behold, I will send swarms of flies upon thee, and upon thy servants, and upon thy people, and into thy houses: and the houses of the Egyptians shall be full of swarms of flies, and also the ground whereon they are."

Leviticus 6:27: "Whatsoever shall touch the flesh thereof shall be holy: and when there is sprinkled of the blood thereof upon any garment, thou shalt wash that whereon it was sprinkled in the holy place."

Leviticus 15:4: "Every bed, whereon he lieth that hath the issue, is unclean: and every thing, whereon he sitteth, shall be unclean."

Leviticus 15:6: "And he that sitteth on any thing whereon he sat that hath the issue shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:17: "And every garment, and every skin, whereon is the seed of copulation, shall be washed with water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:23: "And if it be on her bed, or on any thing whereon she sitteth, when he toucheth it, he shall be unclean until the even."

Leviticus 15:24: "And if any man lie with her at all, and her flowers be upon him, he shall be unclean seven days; and all the bed whereon he lieth shall be unclean."

Leviticus 15:26: "Every bed whereon she lieth all the days of her issue shall be unto her as the bed of her separation: and whatsoever she sitteth upon shall be unclean, as the uncleanness of her separation."

Deuteronomy 11:24: "Every place whereon the soles of your feet shall tread shall be yours: from the wilderness and Lebanon, from the river, the river Euphrates, even unto the uttermost sea shall your coast be."

Joshua 5:15: "And the captain of the LORD's host said unto Joshua, Loose thy shoe from off thy foot; for the place whereon thou standest is holy. And Joshua did so."

Joshua 14:9: "And Moses sware on that day, saying, Surely the land whereon thy feet have trodden shall be thine inheritance, and thy children's for ever, because thou hast wholly followed the LORD my God."

1 Samuel 6:18: "And the golden mice, according to the number of all the cities of the Philistines belonging to the five lords, both of fenced cities, and of country villages, even unto the great stone of Abel, whereon they set down the ark of the LORD: which stone remaineth unto this day in the field of Joshua, the Bethshemite."

2 Chronicles 4:19: "And Solomon made all the vessels that were for the house of God, the golden altar also, and the tables whereon the shewbread was set;"

2 Chronicles 32:10: "Thus saith Sennacherib king of Assyria, Whereon do ye trust, that ye abide in the siege in Jerusalem?"

Esther 7:8: "Then the king returned out of the palace garden into the place of the banquet of wine; and Haman was fallen upon the bed whereon Esther was. Then said the king, Will he force the queen also before me in the house? As the word went out of king's mouth, they covered Haman's face."

Job 24:23: "Though it be given him to be in safety, whereon he resteth; yet his eyes are upon their ways."

Song of Solomon 4:4: "Thy neck is like the tower of David builded for an armoury, whereon there hang a thousand bucklers, all shields of mighty men."

Isaiah 36:6: "Lo, thou trustest in the staff of this broken reed, on Egypt; whereon if a man lean, it will go into his hand, and pierce it: so is Pharaoh king of Egypt to all that trust in him."

Ezekiel 37:20: "And the sticks whereon thou writest shall be in thine hand before their eyes."

Mark 11:2: "And saith unto them, Go your way into the village over against you: and as soon as ye be entered into it, ye shall find a colt tied, whereon never man sat; loose him, and bring him."

Luke 4:29: "And rose up, and thrust him out of the city, and led him unto the brow of the hill whereon their city was built, that they might cast him down headlong."

Luke 5:25: "And immediately he rose up before them, and took up that whereon he lay, and departed to his own house, glorifying God."

Luke 19:30: "Saying, Go ye into the village over against you; in the which at your entering ye shall find a colt tied, whereon yet never man sat: loose him, and bring him hither."

John 4:38: "I sent you to reap that whereon ye bestowed no labour: other men laboured, and ye are entered into their labours."

## **WHERESOEVER**

Occurrences: 12

Leviticus 13:12: "And if a leprosy break out abroad in the skin, and the leprosy cover all the skin of him that hath the plague from his head even to his foot, wheresoever the priest looketh;"

2 Kings 8:1: "Then spake Elisha unto the woman, whose son he had restored to life, saying, Arise, and go thou and thine household, and sojourn wheresoever thou canst sojourn: for the LORD hath called for a famine; and it shall also come upon the land seven years."

2 Kings 12:5: "Let the priests take it to them, every man of his acquaintance: and let them repair the breaches of the house, wheresoever any breach shall be found."

1 Chronicles 17:6: "Wheresoever I have walked with all Israel, spake I a word to any of the judges of Israel, whom I commanded to feed my people, saying, Why have ye not built me an house of cedars?"

Jeremiah 40:5: "Now while he was not yet gone back, he said, Go back also to Gedaliah the son of Ahikam the son of Shaphan, whom the king of Babylon hath made governor over the cities of Judah, and dwell with him among the people: or go wheresoever it seemeth convenient unto thee to go. So the captain of the guard gave him victuals and a reward, and let him go."

Daniel 2:38: "And wheresoever the children of men dwell, the beasts of the field and the fowls of the heaven hath he given into thine hand, and hath made thee ruler over them all. Thou art this head of gold."

Matthew 24:28: "For wheresoever the carcass is, there will the eagles be gathered together."

Matthew 26:13: "Verily I say unto you, Wheresoever this gospel shall be preached in the whole world, there shall also this, that this woman hath done, be told for a memorial of her."

Mark 9:18: "And wheresoever he taketh him, he tearth him: and he foameth, and gnasheth with his teeth, and pineth away: and I spake to thy disciples that they should cast him out; and they could not."

Mark 14:9: "Verily I say unto you, Wheresoever this gospel shall be preached throughout the whole

world, this also that she hath done shall be spoken of for a memorial of her."

Mark 14:14: "And wheresoever he shall go in, say ye to the goodman of the house, The Master saith, Where is the guestchamber, where I shall eat the passover with my disciples?"

Luke 17:37: "And they answered and said unto him, Where, Lord? And he said unto them, Wheresoever the body is, thither will the eagles be gathered together."

## WHERE TO

Occurrences: 3

Job 30:2: "Yea, whereto might the strength of their hands profit me, in whom old age was perished?"

Isaiah 55:11: "So shall my word be that goeth forth out of my mouth: it shall not return unto me void, but it shall accomplish that which I please, and it shall prosper in the thing whereto I sent it."

Philippians 3:16: "Nevertheless, whereto we have already attained, let us walk by the same rule, let us mind the same thing."

## WHERE UNTO

Occurrences: 27

Numbers 36:3: "And if they be married to any of the sons of the other tribes of the children of Israel, then shall their inheritance be taken from the inheritance of our fathers, and shall be put to the inheritance of the tribe whereunto they are received: so shall it be taken from the lot of our inheritance."

Numbers 36:4: "And when the jubile of the children of Israel shall be, then shall their inheritance be put unto the inheritance of the tribe whereunto they are received: so shall their inheritance be taken away from the inheritance of the tribe of our fathers."

Deuteronomy 4:26: "I call heaven and earth to witness against you this day, that ye shall soon utterly perish from off the land whereunto ye go over Jordan to possess it; ye shall not prolong your days upon it, but shall utterly be destroyed."

2 Chronicles 8:11: "And Solomon brought up the daughter of Pharaoh out of the city of David unto the house that he had built for her: for he said, My wife shall not dwell in the house of David king of Israel, because the places are holy, whereunto the ark of the LORD hath come."

Esther 10:2: "And all the acts of his power and of his might, and the declaration of the greatness of Mordecai, whereunto the king advanced him, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Media and Persia?"

Psalms 71:3: "Be thou my strong habitation, whereunto I may continually resort: thou hast given commandment to save me; for thou art my rock and my fortress."

Jeremiah 22:27: "But to the land whereunto they desire to return, thither shall they not return."

Ezekiel 5:9: "And I will do in thee that which I have not done, and whereunto I will not do any more the like, because of all thine abominations."

Ezekiel 20:29: "Then I said unto them, What is the high place whereunto ye go? And the name whereof is called Bamah unto this day."

Matthew 11:16: "But whereunto shall I liken this generation? It is like unto children sitting in the markets, and calling unto their fellows,"

Mark 4:30: "And he said, Whereunto shall we liken the kingdom of God? or with what comparison shall we compare it?"

Luke 7:31: "And the Lord said, Whereunto then shall I liken the men of this generation? and to what are they like?"

Luke 13:18: "Then said he, Unto what is the kingdom of God like? and whereunto shall I resemble it?"

Luke 13:20: "And again he said, Whereunto shall I liken the kingdom of God?"

Acts 5:24: "Now when the high priest and the captain of the temple and the chief priests heard these things, they doubted of them whereunto this would grow."

Acts 13:2: "As they ministered to the Lord, and fasted, the Holy Ghost said, Separate me Barnabas and Saul for the work whereunto I have called them."

Acts 27:8: "And, hardly passing it, came unto a place which is called The fair havens; nigh whereunto was the city of Lasea."

Galatians 4:9: "But now, after that ye have known God, or rather are known of God, how turn ye again to the weak and beggarly elements, whereunto ye desire again to be in bondage?"

Colossians 1:29: "Whereunto I also labour, striving according to his working, which worketh in me mightily."

2 Thessalonians 2:14: "Whereunto he called you by our gospel, to the obtaining of the glory of our Lord Jesus Christ."

1 Timothy 2:7: "Whereunto I am ordained a preacher, and an apostle, (I speak the truth in Christ, and lie not;) a teacher of the Gentiles in faith and verity."

1 Timothy 4:6: "If thou put the brethren in remembrance of these things, thou shalt be a good minister of Jesus Christ, nourished up in the words of faith and of good doctrine, whereunto thou hast attained."

1 Timothy 6:12: "Fight the good fight of faith, lay hold on eternal life, whereunto thou art also called, and hast professed a good profession before many witnesses."

2 Timothy 1:11: "Whereunto I am appointed a preacher, and an apostle, and a teacher of the Gentiles."

1 Peter 2:8: "And a stone of stumbling, and a rock of offence, even to them which stumble at the word, being disobedient: whereunto also they were appointed."

1 Peter 3:21: "The like figure whereunto even baptism doth also now save us (not the putting away of the filth of the flesh, but the answer of a good conscience toward God,) by the resurrection of Jesus Christ:"

2 Peter 1:19: "We have also a more sure word of prophecy; whereunto ye do well that ye take heed, as unto a light that shineth in a dark place, until the day dawn, and the day star arise in your hearts:"

## WHEREUPON

Occurrences: 17

Leviticus 11:35: "And every thing whereupon any part of their carcase falleth shall be unclean; whether it be oven, or ranges for pots, they shall be broken down: for they are unclean and shall be unclean unto you."

Judges 16:26: "And Samson said unto the lad that held him by the hand, Suffer me that I may feel the pillars whereupon the house standeth, that I may lean upon them."

1 Kings 7:48: "And Solomon made all the vessels that pertained unto the house of the LORD: the altar of gold, and the table of gold, whereupon the shewbread was,"

1 Kings 12:28: "Whereupon the king took counsel, and made two calves of gold, and said unto them, It is too much for you to go up to Jerusalem: behold thy gods, O Israel, which brought thee up out of the land of Egypt."

2 Chronicles 12:6: "Whereupon the princes of Israel and the king humbled themselves; and they said, The LORD is righteous."

Job 38:6: "Whereupon are the foundations thereof fastened? or who laid the corner stone thereof?"

Ezekiel 9:3: "And the glory of the God of Israel was gone up from the cherub, whereupon he was, to the threshold of the house. And he called to the man clothed with linen, which had the writer's inkhorn by his side;"

Ezekiel 23:41: "And satest upon a stately bed, and a table prepared before it, whereupon thou hast set mine incense and mine oil."

Ezekiel 24:25: "Also, thou son of man, shall it not be in the day when I take from them their



strength, the joy of their glory, the desire of their eyes, and that whereupon they set their minds, their sons and their daughters,"

Ezekiel 40:41: "Four tables were on this side, and four tables on that side, by the side of the gate; eight tables, whereupon they slew their sacrifices."

Ezekiel 40:42: "And the four tables were of hewn stone for the burnt offering, of a cubit and an half long, and a cubit and an half broad, and one cubit high: whereupon also they laid the instruments wherewith they slew the burnt offering and the sacrifice."

Amos 4:7: "And also I have withholden the rain from you, when there were yet three months to the harvest: and I caused it to rain upon one city, and caused it not to rain upon another city: one piece was rained upon, and the piece whereupon it rained not withered."

Matthew 14:7: "Whereupon he promised with an oath to give her whatsoever she would ask."

Acts 24:18: "Whereupon certain Jews from Asia found me purified in the temple, neither with multitude, nor with tumult."

Acts 26:12: "Whereupon as I went to Damascus with authority and commission from the chief priests,"

Acts 26:19: "Whereupon, O king Agrippa, I was not disobedient unto the heavenly vision:"

Hebrews 9:18: "Whereupon neither the first testament was dedicated without blood."

## WHEREWITH

Occurrences: 107

Genesis 27:41: "And Esau hated Jacob because of the blessing wherewith his father blessed him: and Esau said in his heart, The days of mourning for my father are at hand; then will I slay my brother Jacob."

Exodus 3:9: "Now therefore, behold, the cry of the children of Israel is come unto me: and I have also seen the oppression wherewith the Egyptians oppress them."

Exodus 4:17: "And thou shalt take this rod in thine hand, wherewith thou shalt do signs."

Exodus 16:32: "And Moses said, This is the thing which the LORD commandeth, Fill an omer of it to be kept for your generations; that they may see the bread wherewith I have fed you in the wilderness, when I brought you forth from the land of Egypt."

Exodus 17:5: "And the LORD said unto Moses, Go on before the people, and take with thee of the elders of Israel; and thy rod, wherewith thou smotest the river, take in thine hand, and go."

Exodus 29:33: "And they shall eat those things wherewith the atonement was made, to consecrate and to sanctify them: but a stranger shall not eat thereof, because they are holy."

Numbers 3:31: "And their charge shall be the ark, and the table, and the candlestick, and the altars, and the vessels of the sanctuary wherewith they minister, and the hanging, and all the service thereof."

Numbers 3:48: "And thou shalt give the money, wherewith the odd number of them is to be redeemed, unto Aaron and to his sons."

Numbers 4:9: "And they shall take a cloth of blue, and cover the candlestick of the light, and his lamps, and his tongs, and his snuffdishes, and all the oil vessels thereof, wherewith they minister unto it:"

Numbers 4:12: "And they shall take all the instruments of ministry, wherewith they minister in the sanctuary, and put them in a cloth of blue, and cover them with a covering of badgers' skins, and shall put them on a bar:"

Numbers 4:14: "And they shall put upon it all the vessels thereof, wherewith they minister about it, even the censers, the fleshhooks, and the shovels, and the basons, all the vessels of the altar; and they shall spread upon it a covering of badgers' skins, and put to the staves of it."

Numbers 16:39: "And Eleazar the priest took the brasen censers, wherewith they that were burnt had offered; and they were made broad plates for a covering of the altar:"

Numbers 25:18: "For they vex you with their wiles, wherewith they have beguiled you in the matter

of Peor, and in the matter of Cozbi, the daughter of a prince of Midian, their sister, which was slain in the day of the plague for Peor's sake."

Numbers 30:4: "And her father hear her vow, and her bond wherewith she hath bound her soul, and her father shall hold his peace at her; then all her vows shall stand, and every bond wherewith she hath bound her soul shall stand."

Numbers 30:5: "But if her father disallow her in the day that he heareth; not any of her vows, or of her bonds wherewith she hath bound her soul, shall stand: and the LORD shall forgive her, because her father disallowed her."

Numbers 30:6: "And if she had at all an husband, when she vowed, or uttered ought out of her lips, wherewith she bound her soul;"

Numbers 30:7: "And her husband heard it, and held his peace at her in the day that he heard it: then her vows shall stand, and her bonds wherewith she bound her soul shall stand."

Numbers 30:8: "But if her husband disallowed her on the day that he heard it; then he shall make her vow which she vowed, and that which she uttered with her lips, wherewith she bound her soul, of none effect: and the LORD shall forgive her."

Numbers 30:9: "But every vow of a widow, and of her that is divorced, wherewith they have bound their souls, shall stand against her."

Numbers 30:11: "And her husband heard it, and held his peace at her, and disallowed her not: then all her vows shall stand, and every bond wherewith she bound her soul shall stand."

Numbers 35:17: "And if he smite him with throwing a stone, wherewith he may die, and he die, he is a murderer: the murderer shall surely be put to death."

Numbers 35:18: "Or if he smite him with an hand weapon of wood, wherewith he may die, and he die, he is a murderer: the murderer shall surely be put to death."

Numbers 35:23: "Or with any stone, wherewith a man may die, seeing him not, and cast it upon him, that he die, and was not his enemy, neither sought his harm:"

Deuteronomy 9:19: "For I was afraid of the anger and hot displeasure, wherewith the LORD was wroth against you to destroy you. But the LORD hearkened unto me at that time also."

Deuteronomy 15:14: "Thou shalt furnish him liberally out of thy flock, and out of thy floor, and out of thy winepress: of that wherewith the LORD thy God hath blessed thee thou shalt give unto him."

Deuteronomy 22:12: "Thou shalt make thee fringes upon the four quarters of thy vesture, wherewith thou coverest thyself."

Deuteronomy 28:53: "And thou shalt eat the fruit of thine own body, the flesh of thy sons and of thy daughters, which the LORD thy God hath given thee, in the siege, and in the straitness, wherewith thine enemies shall distress thee:"

Deuteronomy 28:55: "So that he will not give to any of them of the flesh of his children whom he shall eat: because he hath nothing left him in the siege, and in the straitness, wherewith thine enemies shall distress thee in all thy gates."

Deuteronomy 28:57: "And toward her young one that cometh out from between her feet, and toward her children which she shall bear: for she shall eat them for want of all things secretly in the siege and straitness, wherewith thine enemy shall distress thee in thy gates."

Deuteronomy 28:67: "In the morning thou shalt say, Would God it were even! and at even thou shalt say, Would God it were morning! for the fear of thine heart wherewith thou shalt fear, and for the sight of thine eyes which thou shalt see."

Deuteronomy 33:1: "And this is the blessing, wherewith Moses the man of God blessed the children of Israel before his death."

Joshua 8:26: "For Joshua drew not his hand back, wherewith he stretched out the spear, until he had utterly destroyed all the inhabitants of Ai."

Judges 6:15: "And he said unto him, Oh my Lord, wherewith shall I save Israel? behold, my family is poor in Manasseh, and I am the least in my father's house."

Judges 9:4: "And they gave him threescore and ten pieces of silver out of the house of Baalberith,

wherewith Abimelech hired vain and light persons, which followed him."

Judges 9:9: "But the olive tree said unto them, Should I leave my fatness, wherewith by me they honour God and man, and go to be promoted over the trees?"

Judges 9:38: "Then said Zebul unto him, Where is now thy mouth, wherewith thou saidst, Who is Abimelech, that we should serve him? is not this the people that thou hast despised? go out, I pray now, and fight with them."

Judges 16:6: "And Delilah said to Samson, Tell me, I pray thee, wherein thy great strength lieth, and wherewith thou mightest be bound to afflict thee."

Judges 16:10: "And Delilah said unto Samson, Behold, thou hast mocked me, and told me lies: now tell me, I pray thee, wherewith thou mightest be bound."

Judges 16:13: "And Delilah said unto Samson, Hitherto thou hast mocked me, and told me lies: tell me wherewith thou mightest be bound. And he said unto her, If thou weavest the seven locks of my head with the web."

1 Samuel 6:2: "And the Philistines called for the priests and the diviners, saying, What shall we do to the ark of the LORD? tell us wherewith we shall send it to his place."

1 Samuel 8:8: "According to all the works which they have done since the day that I brought them up out of Egypt even unto this day, wherewith they have forsaken me, and served other gods, so do they also unto thee."

1 Samuel 29:4: "And the princes of the Philistines were wroth with him; and the princes of the Philistines said unto him, Make this fellow return, that he may go again to his place which thou hast appointed him, and let him not go down with us to battle, lest in the battle he be an adversary to us: for wherewith should he reconcile himself unto his master? should it not be with the heads of these men?"

2 Samuel 13:15: "Then Amnon hated her exceedingly; so that the hatred wherewith he hated her was greater than the love wherewith he had loved her. And Amnon said unto her, Arise, be gone."

2 Samuel 21:3: "Wherefore David said unto the Gibeonites, What shall I do for you? and wherewith shall I make the atonement, that ye may bless the inheritance of the LORD?"

1 Kings 8:59: "And let these my words, wherewith I have made supplication before the LORD, be nigh unto the LORD our God day and night, that he maintain the cause of his servant, and the cause of his people Israel at all times, as the matter shall require:"

1 Kings 15:22: "Then king Asa made a proclamation throughout all Judah; none was exempted: and they took away the stones of Ramah, and the timber thereof, wherewith Baasha had builded; and king Asa built with them Geba of Benjamin, and Mizpah."

1 Kings 15:26: "And he did evil in the sight of the LORD, and walked in the way of his father, and in his sin wherewith he made Israel to sin."

1 Kings 15:30: "Because of the sins of Jeroboam which he sinned, and which he made Israel sin, by his provocation wherewith he provoked the LORD God of Israel to anger."

1 Kings 15:34: "And he did evil in the sight of the LORD, and walked in the way of Jeroboam, and in his sin wherewith he made Israel to sin."

1 Kings 16:26: "For he walked in all the way of Jeroboam the son of Nebat, and in his sin wherewith he made Israel to sin, to provoke the LORD God of Israel to anger with their vanities."

1 Kings 21:22: "And will make thine house like the house of Jeroboam the son of Nebat, and like the house of Baasha the son of Ahijah, for the provocation wherewith thou hast provoked me to anger, and made Israel to sin."

1 Kings 22:22: "And the LORD said unto him, Wherewith? And he said, I will go forth, and I will be a lying spirit in the mouth of all his prophets. And he said, Thou shalt persuade him, and prevail also: go forth, and do so."

2 Kings 13:12: "And the rest of the acts of Joash, and all that he did, and his might wherewith he fought against Amaziah king of Judah, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

2 Kings 21:16: "Moreover Manasseh shed innocent blood very much, till he had filled Jerusalem from one end to another; beside his sin wherewith he made Judah to sin, in doing that which was evil in the sight of the LORD."

2 Kings 23:26: "Notwithstanding the LORD turned not from the fierceness of his great wrath, wherewith his anger was kindled against Judah, because of all the provocations that Manasseh had provoked him withal."

2 Kings 25:14: "And the pots, and the shovels, and the snuffers, and the spoons, and all the vessels of brass wherewith they ministered, took they away."

1 Chronicles 18:8: "Likewise from Tibhath, and from Chun, cities of Hadarezer, brought David very much brass, wherewith Solomon made the brasen sea, and the pillars, and the vessels of brass."

2 Chronicles 2:17: "And Solomon numbered all the strangers that were in the land of Israel, after the numbering wherewith David his father had numbered them; and they were found an hundred and fifty thousand and three thousand and six hundred."

2 Chronicles 16:6: "Then Asa the king took all Judah; and they carried away the stones of Ramah, and the timber thereof, wherewith Baasha was building; and he built therewith Geba and Mizpah."

2 Chronicles 18:20: "Then there came out a spirit, and stood before the LORD, and said, I will entice him. And the LORD said unto him, Wherewith?"

2 Chronicles 35:21: "But he sent ambassadors to him, saying, What have I to do with thee, thou king of Judah? I come not against thee this day, but against the house wherewith I have war: for God commanded me to make haste: forbear thee from meddling with God, who is with me, that he destroy thee not."

Nehemiah 9:34: "Neither have our kings, our princes, our priests, nor our fathers, kept thy law, nor hearkened unto thy commandments and thy testimonies, wherewith thou didst testify against them."

Job 15:3: "Should he reason with unprofitable talk? or with speeches wherewith he can do no good?"

Psalms 79:12: "And render unto our neighbours sevenfold into their bosom their reproach, wherewith they have reproached thee, O Lord."

Psalms 89:51: "Wherewith thine enemies have reproached, O LORD; wherewith they have reproached the footsteps of thine anointed."

Psalms 93:1: "The LORD reigneth, he is clothed with majesty; the LORD is clothed with strength, wherewith he hath girded himself: the world also is stablished, that it cannot be moved."

Psalms 109:19: "Let it be unto him as the garment which covereth him, and for a girdle wherewith he is girded continually."

Psalms 119:42: "So shall I have wherewith to answer him that reproacheth me: for I trust in thy word."

Psalms 129:7: "Wherewith the mower filleth not his hand; nor he that bindeth sheaves his bosom."

Song of Solomon 3:11: "Go forth, O ye daughters of Zion, and behold king Solomon with the crown wherewith his mother crowned him in the day of his espousals, and in the day of the gladness of his heart."

Isaiah 28:12: "To whom he said, This is the rest wherewith ye may cause the weary to rest; and this is the refreshing: yet they would not hear."

Isaiah 37:6: "And Isaiah said unto them, Thus shall ye say unto your master, Thus saith the LORD, Be not afraid of the words that thou hast heard, wherewith the servants of the king of Assyria have blasphemed me."

Jeremiah 18:10: "If it do evil in my sight, that it obey not my voice, then I will repent of the good, wherewith I said I would benefit them."

Jeremiah 19:9: "And I will cause them to eat the flesh of their sons and the flesh of their daughters, and they shall eat every one the flesh of his friend in the siege and straitness, wherewith their enemies, and they that seek their lives, shall straiten them."

Jeremiah 21:4: "Thus saith the LORD God of Israel; Behold, I will turn back the weapons of war

that are in your hands, wherewith ye fight against the king of Babylon, and against the Chaldeans, which besiege you without the walls, and I will assemble them into the midst of this city."

Jeremiah 33:16: "In those days shall Judah be saved, and Jerusalem shall dwell safely: and this is the name wherewith she shall be called, The LORD our righteousness."

Jeremiah 52:18: "The caldrons also, and the shovels, and the snuffers, and the bowls, and the spoons, and all the vessels of brass wherewith they ministered, took they away."

Lamentations 1:12: "Is it nothing to you, all ye that pass by? behold, and see if there be any sorrow like unto my sorrow, which is done unto me, wherewith the LORD hath afflicted me in the day of his fierce anger."

Ezekiel 13:12: "Lo, when the wall is fallen, shall it not be said unto you, Where is the daubing wherewith ye have daubed it?"

Ezekiel 13:20: "Wherefore thus saith the Lord GOD; Behold, I am against your pillows, wherewith ye there hunt the souls to make them fly, and I will tear them from your arms, and will let the souls go, even the souls that ye hunt to make them fly."

Ezekiel 16:19: "My meat also which I gave thee, fine flour, and oil, and honey, wherewith I fed thee, thou hast even set it before them for a sweet savour: and thus it was, saith the Lord GOD."

Ezekiel 29:20: "I have given him the land of Egypt for his labour wherewith he served against it, because they wrought for me, saith the Lord GOD."

Ezekiel 32:16: "This is the lamentation wherewith they shall lament her: the daughters of the nations shall lament her: they shall lament for her, even for Egypt, and for all her multitude, saith the Lord GOD."

Ezekiel 36:18: "Wherefore I poured my fury upon them for the blood that they had shed upon the land, and for their idols wherewith they had polluted it:"

Ezekiel 40:42: "And the four tables were of hewn stone for the burnt offering, of a cubit and an half long, and a cubit and an half broad, and one cubit high: whereupon also they laid the instruments wherewith they slew the burnt offering and the sacrifice."

Daniel 2:1: "And in the second year of the reign of Nebuchadnezzar Nebuchadnezzar dreamed dreams, wherewith his spirit was troubled, and his sleep brake from him."

Micah 6:6: "Wherewith shall I come before the LORD, and bow myself before the high God? shall I come before him with burnt offerings, with calves of a year old?"

Zechariah 14:12: "And this shall be the plague wherewith the LORD will smite all the people that have fought against Jerusalem; Their flesh shall consume away while they stand upon their feet, and their eyes shall consume away in their holes, and their tongue shall consume away in their mouth."

Zechariah 14:18: "And if the family of Egypt go not up, and come not, that have no rain; there shall be the plague, wherewith the LORD will smite the heathen that come not up to keep the feast of tabernacles."

Malachi 2:5: "My covenant was with him of life and peace; and I gave them to him for the fear wherewith he feared me, and was afraid before my name."

Matthew 5:13: "Ye are the salt of the earth: but if the salt have lost his savour, wherewith shall it be salted? it is thenceforth good for nothing, but to be cast out, and to be trodden under foot of men."

Mark 3:28: "Verily I say unto you, All sins shall be forgiven unto the sons of men, and blasphemies wherewith soever they shall blaspheme:"

Mark 9:50: "Salt is good: but if the salt have lost his saltness, wherewith will ye season it? Have salt in yourselves, and have peace one with another."

Luke 14:34: "Salt is good: but if the salt have lost his savour, wherewith shall it be seasoned?"

Luke 17:8: "And will not rather say unto him, Make ready wherewith I may sup, and gird thyself, and serve me, till I have eaten and drunken; and afterward thou shalt eat and drink?"

John 13:5: "After that he poureth water into a bason, and began to wash the disciples' feet, and to wipe them with the towel wherewith he was girded."

John 17:26: "And I have declared unto them thy name, and will declare it: that the love wherewith

thou hast loved me may be in them, and I in them."

Romans 14:19: "Let us therefore follow after the things which make for peace, and things wherewith one may edify another."

2 Corinthians 1:4: "Who comforteth us in all our tribulation, that we may be able to comfort them which are in any trouble, by the comfort wherewith we ourselves are comforted of God."

2 Corinthians 7:7: "And not by his coming only, but by the consolation wherewith he was comforted in you, when he told us your earnest desire, your mourning, your fervent mind toward me; so that I rejoiced the more."

2 Corinthians 10:2: "But I beseech you, that I may not be bold when I am present with that confidence, wherewith I think to be bold against some, which think of us as if we walked according to the flesh."

Galatians 5:1: "Stand fast therefore in the liberty wherewith Christ hath made us free, and be not entangled again with the yoke of bondage."

Ephesians 2:4: "But God, who is rich in mercy, for his great love wherewith he loved us,"

Ephesians 4:1: "I therefore, the prisoner of the Lord, beseech you that ye walk worthy of the vocation wherewith ye are called,"

Ephesians 6:16: "Above all, taking the shield of faith, wherewith ye shall be able to quench all the fiery darts of the wicked."

1 Thessalonians 3:9: "For what thanks can we render to God again for you, for all the joy wherewith we joy for your sakes before our God;"

Hebrews 10:29: "Of how much sorer punishment, suppose ye, shall he be thought worthy, who hath trodden under foot the Son of God, and hath counted the blood of the covenant, wherewith he was sanctified, an unholy thing, and hath done despite unto the Spirit of grace?"

## **WHEREWITHAL**

Occurrences: 2

Psalms 119:9: "Wherewithal shall a young man cleanse his way? by taking heed thereto according to thy word."

Matthew 6:31: "Therefore take no thought, saying, What shall we eat? or, What shall we drink? or, Wherewithal shall we be clothed?"

## **WHET**

Occurrences: 4

Deuteronomy 32:41: "If I whet my glittering sword, and mine hand take hold on judgment; I will render vengeance to mine enemies, and will reward them that hate me."

Psalms 7:12: "If he turn not, he will whet his sword; he hath bent his bow, and made it ready."

Psalms 64:3: "Who whet their tongue like a sword, and bend their bows to shoot their arrows, even bitter words:"

Ecclesiastes 10:10: "If the iron be blunt, and he do not whet the edge, then must he put to more strength: but wisdom is profitable to direct."

## **WHETHER**

Occurrences: 148

Genesis 18:21: "I will go down now, and see whether they have done altogether according to the cry of it, which is come unto me; and if not, I will know."

Genesis 24:21: "And the man wondering at her held his peace, to wit whether the LORD had made his journey prosperous or not."

Genesis 27:21: "And Isaac said unto Jacob, Come near, I pray thee, that I may feel thee, my son,

whether thou be my very son Esau or not."

Genesis 31:39: "That which was torn of beasts I brought not unto thee; I bare the loss of it; of my hand didst thou require it, whether stolen by day, or stolen by night."

Genesis 37:14: "And he said to him, Go, I pray thee, see whether it be well with thy brethren, and well with the flocks; and bring me word again. So he sent him out of the vale of Hebron, and he came to Shechem."

Genesis 37:32: "And they sent the coat of many colours, and they brought it to their father; and said, This have we found: know now whether it be thy son's coat or no."

Genesis 42:16: "Send one of you, and let him fetch your brother, and ye shall be kept in prison, that your words may be proved, whether there be any truth in you: or else by the life of Pharaoh surely ye are spies."

Genesis 43:6: "And Israel said, Wherefore dealt ye so ill with me, as to tell the man whether ye had yet a brother?"

Exodus 4:18: "And Moses went and returned to Jethro his father in law, and said unto him, Let me go, I pray thee, and return unto my brethren which are in Egypt, and see whether they be yet alive. And Jethro said to Moses, Go in peace."

Exodus 12:19: "Seven days shall there be no leaven found in your houses: for whosoever eateth that which is leavened, even that soul shall be cut off from the congregation of Israel, whether he be a stranger, or born in the land."

Exodus 16:4: "Then said the LORD unto Moses, Behold, I will rain bread from heaven for you; and the people shall go out and gather a certain rate every day, that I may prove them, whether they will walk in my law, or no."

Exodus 19:13: "There shall not an hand touch it, but he shall surely be stoned, or shot through; whether it be beast or man, it shall not live: when the trumpet soundeth long, they shall come up to the mount."

Exodus 21:31: "Whether he have gored a son, or have gored a daughter, according to this judgment shall it be done unto him."

Exodus 22:4: "If the theft be certainly found in his hand alive, whether it be ox, or ass, or sheep; he shall restore double."

Exodus 22:8: "If the thief be not found, then the master of the house shall be brought unto the judges, to see whether he have put his hand unto his neighbour's goods."

Exodus 22:9: "For all manner of trespass, whether it be for ox, for ass, for sheep, for raiment, or for any manner of lost thing which another challengeth to be his, the cause of both parties shall come before the judges; and whom the judges shall condemn, he shall pay double unto his neighbour."

Exodus 34:19: "All that openeth the matrix is mine; and every firstling among thy cattle, whether ox or sheep, that is male."

Leviticus 3:1: "And if his oblation be a sacrifice of peace offering, if he offer it of the herd; whether it be a male or female, he shall offer it without blemish before the LORD."

Leviticus 5:1: "And if a soul sin, and hear the voice of swearing, and is a witness, whether he hath seen or known of it; if he do not utter it, then he shall bear his iniquity."

Leviticus 5:2: "Or if a soul touch any unclean thing, whether it be a carcase of an unclean beast, or a carcase of unclean cattle, or the carcase of unclean creeping things, and if it be hidden from him; he also shall be unclean, and guilty."

Leviticus 7:26: "Moreover ye shall eat no manner of blood, whether it be of fowl or of beast, in any of your dwellings."

Leviticus 11:32: "And upon whatsoever any of them, when they are dead, doth fall, it shall be unclean; whether it be any vessel of wood, or raiment, or skin, or sack, whatsoever vessel it be, wherein any work is done, it must be put into water, and it shall be unclean until the even; so it shall be cleansed."

Leviticus 11:35: "And every thing whereupon any part of their carcase falleth shall be unclean;

whether it be oven, or ranges for pots, they shall be broken down: for they are unclean and shall be unclean unto you."

Leviticus 13:47: "The garment also that the plague of leprosy is in, whether it be a woollen garment, or a linen garment;"

Leviticus 13:48: "Whether it be in the warp, or woof; of linen, or of woollen; whether in a skin, or in any thing made of skin;"

Leviticus 13:52: "He shall therefore burn that garment, whether warp or woof, in woollen or in linen, or any thing of skin, wherein the plague is: for it is a fretting leprosy; it shall be burnt in the fire."

Leviticus 13:55: "And the priest shall look on the plague, after that it is washed: and, behold, if the plague have not changed his colour, and the plague be not spread; it is unclean; thou shalt burn it in the fire; it is fret inward, whether it be bare within or without."

Leviticus 15:3: "And this shall be his uncleanness in his issue: whether his flesh run with his issue, or his flesh be stopped from his issue, it is his uncleanness."

Leviticus 16:29: "And this shall be a statute for ever unto you: that in the seventh month, on the tenth day of the month, ye shall afflict your souls, and do no work at all, whether it be one of your own country, or a stranger that sojourneth among you:"

Leviticus 17:15: "And every soul that eateth that which died of itself, or that which was torn with beasts, whether it be one of your own country, or a stranger, he shall both wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even: then shall he be clean."

Leviticus 18:9: "The nakedness of thy sister, the daughter of thy father, or daughter of thy mother, whether she be born at home, or born abroad, even their nakedness thou shalt not uncover."

Leviticus 22:28: "And whether it be cow, or ewe, ye shall not kill it and her young both in one day."

Leviticus 27:12: "And the priest shall value it, whether it be good or bad: as thou valuest it, who art the priest, so shall it be."

Leviticus 27:14: "And when a man shall sanctify his house to be holy unto the LORD, then the priest shall estimate it, whether it be good or bad: as the priest shall estimate it, so shall it stand."

Leviticus 27:26: "Only the firstling of the beasts, which should be the LORD's firstling, no man shall sanctify it; whether it be ox, or sheep: it is the LORD's."

Leviticus 27:30: "And all the tithes of the land, whether of the seed of the land, or of the fruit of the tree, is the LORD's: it is holy unto the LORD."

Leviticus 27:33: "He shall not search whether it be good or bad, neither shall he change it: and if he change it at all, then both it and the change thereof shall be holy; it shall not be redeemed."

Numbers 9:21: "And so it was, when the cloud abode from even unto the morning, and that the cloud was taken up in the morning, then they journeyed: whether it was by day or by night that the cloud was taken up, they journeyed."

Numbers 9:22: "Or whether it were two days, or a month, or a year, that the cloud tarried upon the tabernacle, remaining thereon, the children of Israel abode in their tents, and journeyed not: but when it was taken up, they journeyed."

Numbers 11:23: "And the LORD said unto Moses, Is the LORD's hand waxed short? thou shalt see now whether my word shall come to pass unto thee or not."

Numbers 13:18: "And see the land, what it is, and the people that dwelleth therein, whether they be strong or weak, few or many;"

Numbers 13:19: "And what the land is that they dwell in, whether it be good or bad; and what cities they be that they dwell in, whether in tents, or in strong holds;"

Numbers 13:20: "And what the land is, whether it be fat or lean, whether there be wood therein, or not. And be ye of good courage, and bring of the fruit of the land. Now the time was the time of the firstripe grapes."

Numbers 15:30: "But the soul that doeth ought presumptuously, whether he be born in the land, or a stranger, the same reproacheth the LORD; and that soul shall be cut off from among his people."



Numbers 18:15: "Every thing that openeth the matrix in all flesh, which they bring unto the LORD, whether it be of men or beasts, shall be thine: nevertheless the firstborn of man shalt thou surely redeem, and the firstling of unclean beasts shalt thou redeem."

Deuteronomy 4:32: "For ask now of the days that are past, which were before thee, since the day that God created man upon the earth, and ask from the one side of heaven unto the other, whether there hath been any such thing as this great thing is, or hath been heard like it?"

Deuteronomy 8:2: "And thou shalt remember all the way which the LORD thy God led thee these forty years in the wilderness, to humble thee, and to prove thee, to know what was in thine heart, whether thou wouldest keep his commandments, or no."

Deuteronomy 13:3: "Thou shalt not hearken unto the words of that prophet, or that dreamer of dreams: for the LORD your God proveth you, to know whether ye love the LORD your God with all your heart and with all your soul."

Deuteronomy 18:3: "And this shall be the priest's due from the people, from them that offer a sacrifice, whether it be ox or sheep; and they shall give unto the priest the shoulder, and the two cheeks, and the maw."

Deuteronomy 22:6: "If a bird's nest chance to be before thee in the way in any tree, or on the ground, whether they be young ones, or eggs, and the dam sitting upon the young, or upon the eggs, thou shalt not take the dam with the young:"

Deuteronomy 24:14: "Thou shalt not oppress an hired servant that is poor and needy, whether he be of thy brethren, or of thy strangers that are in thy land within thy gates:"

Joshua 24:15: "And if it seem evil unto you to serve the LORD, choose you this day whom ye will serve; whether the gods which your fathers served that were on the other side of the flood, or the gods of the Amorites, in whose land ye dwell: but as for me and my house, we will serve the LORD."

Judges 2:22: "That through them I may prove Israel, whether they will keep the way of the LORD to walk therein, as their fathers did keep it, or not."

Judges 3:4: "And they were to prove Israel by them, to know whether they would hearken unto the commandments of the LORD, which he commanded their fathers by the hand of Moses."

Judges 9:2: "Speak, I pray you, in the ears of all the men of Shechem, Whether is better for you, either that all the sons of Jerubbaal, which are threescore and ten persons, reign over you, or that one reign over you? remember also that I am your bone and your flesh."

Judges 18:5: "And they said unto him, Ask counsel, we pray thee, of God, that we may know whether our way which we go shall be prosperous."

Ruth 3:10: "And he said, Blessed be thou of the LORD, my daughter: for thou hast shewed more kindness in the latter end than at the beginning, inasmuch as thou followedst not young men, whether poor or rich."

2 Samuel 12:22: "And he said, While the child was yet alive, I fasted and wept: for I said, Who can tell whether GOD will be gracious to me, that the child may live?"

2 Samuel 15:21: "And Ittai answered the king, and said, As the LORD liveth, and as my lord the king liveth, surely in what place my lord the king shall be, whether in death or life, even there also will thy servant be."

1 Kings 20:18: "And he said, Whether they be come out for peace, take them alive; or whether they be come out for war, take them alive."

1 Kings 20:33: "Now the men did diligently observe whether any thing would come from him, and did hastily catch it: and they said, Thy brother Benhadad. Then he said, Go ye, bring him. Then Benhadad came forth to him; and he caused him to come up into the chariot."

2 Kings 1:2: "And Ahaziah fell down through a lattice in his upper chamber that was in Samaria, and was sick: and he sent messengers, and said unto them, Go, enquire of Baalzebub the god of Ekron whether I shall recover of this disease."

2 Chronicles 14:11: "And Asa cried unto the LORD his God, and said, LORD, it is nothing with

thee to help, whether with many, or with them that have no power: help us, O LORD our God; for we rest on thee, and in thy name we go against this multitude. O LORD, thou art our God; let no man prevail against thee."

2 Chronicles 15:13: "That whosoever would not seek the LORD God of Israel should be put to death, whether small or great, whether man or woman."

Ezra 2:59: "And these were they which went up from Telmelah, Telharsa, Cherub, Addan, and Immer: but they could not shew their father's house, and their seed, whether they were of Israel:"

Ezra 5:17: "Now therefore, if it seem good to the king, let there be search made in the king's treasure house, which is there at Babylon, whether it be so, that a decree was made of Cyrus the king to build this house of God at Jerusalem, and let the king send his pleasure to us concerning this matter."

Ezra 7:26: "And whosoever will not do the law of thy God, and the law of the king, let judgment be executed speedily upon him, whether it be unto death, or to banishment, or to confiscation of goods, or to imprisonment."

Nehemiah 7:61: "And these were they which went up also from Telmelah, Telharesha, Cherub, Addon, and Immer: but they could not shew their father's house, nor their seed, whether they were of Israel."

Esther 3:4: "Now it came to pass, when they spake daily unto him, and he hearkened not unto them, that they told Haman, to see whether Mordecai's matters would stand: for he had told them that he was a Jew."

Esther 4:11: "All the king's servants, and the people of the king's provinces, do know, that whosoever, whether man or women, shall come unto the king into the inner court, who is not called, there is one law of his to put him to death, except such to whom the king shall hold out the golden sceptre, that he may live: but I have not been called to come in unto the king these thirty days."

Esther 4:14: "For if thou altogether holdest thy peace at this time, then shall there enlargement and deliverance arise to the Jews from another place; but thou and thy father's house shall be destroyed: and who knoweth whether thou art come to the kingdom for such a time as this?"

Job 34:29: "When he giveth quietness, who then can make trouble? and when he hideth his face, who then can behold him? whether it be done against a nation, or against a man only:"

Job 34:33: "Should it be according to thy mind? he will recompense it, whether thou refuse, or whether thou choose; and not I: therefore speak what thou knowest."

Job 37:13: "He causeth it to come, whether for correction, or for his land, or for mercy."

Proverbs 20:11: "Even a child is known by his doings, whether his work be pure, and whether it be right."

Proverbs 29:9: "If a wise man contendeth with a foolish man, whether he rage or laugh, there is no rest."

Ecclesiastes 2:19: "And who knoweth whether he shall be a wise man or a fool? yet shall he have rule over all my labour wherein I have laboured, and wherein I have shewed myself wise under the sun. This is also vanity."

Ecclesiastes 5:12: "The sleep of a labouring man is sweet, whether he eat little or much: but the abundance of the rich will not suffer him to sleep."

Ecclesiastes 11:6: "In the morning sow thy seed, and in the evening withhold not thine hand: for thou knowest not whether shall prosper, either this or that, or whether they both shall be alike good."

Ecclesiastes 12:14: "For God shall bring every work into judgment, with every secret thing, whether it be good, or whether it be evil."

Song of Solomon 6:11: "I went down into the garden of nuts to see the fruits of the valley, and to see whether the vine flourished and the pomegranates budded."

Song of Solomon 7:12: "Let us get up early to the vineyards; let us see if the vine flourish, whether the tender grape appear, and the pomegranates bud forth: there will I give thee my loves."

Jeremiah 30:6: "Ask ye now, and see whether a man doth travail with child? wherefore do I see every man with his hands on his loins, as a woman in travail, and all faces are turned into paleness?"

Jeremiah 42:6: "Whether it be good, or whether it be evil, we will obey the voice of the LORD our God, to whom we send thee; that it may be well with us, when we obey the voice of the LORD our God."

Ezekiel 2:5: "And they, whether they will hear, or whether they will forbear, (for they are a rebellious house,) yet shall know that there hath been a prophet among them."

Ezekiel 2:7: "And thou shalt speak my words unto them, whether they will hear, or whether they will forbear: for they are most rebellious."

Ezekiel 3:11: "And go, get thee to them of the captivity, unto the children of thy people, and speak unto them, and tell them, Thus saith the Lord GOD; whether they will hear, or whether they will forbear."

Ezekiel 44:31: "The priests shall not eat of any thing that is dead of itself, or torn, whether it be fowl or beast."

Matthew 9:5: "For whether is easier, to say, Thy sins be forgiven thee; or to say, Arise, and walk?"

Matthew 21:31: "Whether of them twain did the will of his father? They say unto him, The first. Jesus saith unto them, Verily I say unto you, That the publicans and the harlots go into the kingdom of God before you."

Matthew 23:17: "Ye fools and blind: for whether is greater, the gold, or the temple that sanctifieth the gold?"

Matthew 23:19: "Ye fools and blind: for whether is greater, the gift, or the altar that sanctifieth the gift?"

Matthew 26:63: "But Jesus held his peace, And the high priest answered and said unto him, I adjure thee by the living God, that thou tell us whether thou be the Christ, the Son of God."

Matthew 27:21: "The governor answered and said unto them, Whether of the twain will ye that I release unto you? They said, Barabbas."

Matthew 27:49: "The rest said, Let be, let us see whether Elias will come to save him."

Mark 2:9: "Whether is it easier to say to the sick of the palsy, Thy sins be forgiven thee; or to say, Arise, and take up thy bed, and walk?"

Mark 3:2: "And they watched him, whether he would heal him on the sabbath day; that they might accuse him."

Mark 15:36: "And one ran and filled a sponge full of vinegar, and put it on a reed, and gave him to drink, saying, Let alone; let us see whether Elias will come to take him down."

Mark 15:44: "And Pilate marvelled if he were already dead: and calling unto him the centurion, he asked him whether he had been any while dead."

Luke 3:15: "And as the people were in expectation, and all men mused in their hearts of John, whether he were the Christ, or not;"

Luke 5:23: "Whether is easier, to say, Thy sins be forgiven thee; or to say, Rise up and walk?"

Luke 6:7: "And the scribes and Pharisees watched him, whether he would heal on the sabbath day; that they might find an accusation against him."

Luke 14:28: "For which of you, intending to build a tower, sitteth not down first, and counteth the cost, whether he have sufficient to finish it?"

Luke 14:31: "Or what king, going to make war against another king, sitteth not down first, and consulteth whether he be able with ten thousand to meet him that cometh against him with twenty thousand?"

Luke 22:27: "For whether is greater, he that sitteth at meat, or he that serveth? is not he that sitteth at meat? but I am among you as he that serveth."

Luke 23:6: "When Pilate heard of Galilee, he asked whether the man were a Galilaean."

John 7:17: "If any man will do his will, he shall know of the doctrine, whether it be of God, or

whether I speak of myself."

John 9:25: "He answered and said, Whether he be a sinner or no, I know not: one thing I know, that, whereas I was blind, now I see."

Acts 1:24: "And they prayed, and said, Thou, Lord, which knowest the hearts of all men, shew whether of these two thou hast chosen,"

Acts 4:19: "But Peter and John answered and said unto them, Whether it be right in the sight of God to hearken unto you more than unto God, judge ye."

Acts 5:8: "And Peter answered unto her, Tell me whether ye sold the land for so much? And she said, Yea, for so much."

Acts 9:2: "And desired of him letters to Damascus to the synagogues, that if he found any of this way, whether they were men or women, he might bring them bound unto Jerusalem."

Acts 10:18: "And called, and asked whether Simon, which was surnamed Peter, were lodged there."

Acts 17:11: "These were more noble than those in Thessalonica, in that they received the word with all readiness of mind, and searched the scriptures daily, whether those things were so."

Acts 19:2: "He said unto them, Have ye received the Holy Ghost since ye believed? And they said unto him, We have not so much as heard whether there be any Holy Ghost."

Acts 25:20: "And because I doubted of such manner of questions, I asked him whether he would go to Jerusalem, and there be judged of these matters."

Romans 6:16: "Know ye not, that to whom ye yield yourselves servants to obey, his servants ye are to whom ye obey; whether of sin unto death, or of obedience unto righteousness?"

Romans 12:6: "Having then gifts differing according to the grace that is given to us, whether prophecy, let us prophesy according to the proportion of faith;"

Romans 14:8: "For whether we live, we live unto the Lord; and whether we die, we die unto the Lord: whether we live therefore, or die, we are the Lord's."

1 Corinthians 1:16: "And I baptized also the household of Stephanas: besides, I know not whether I baptized any other."

1 Corinthians 3:22: "Whether Paul, or Apollos, or Cephas, or the world, or life, or death, or things present, or things to come; all are your's;"

1 Corinthians 7:16: "For what knowest thou, O wife, whether thou shalt save thy husband? or how knowest thou, O man, whether thou shalt save thy wife?"

1 Corinthians 8:5: "For though there be that are called gods, whether in heaven or in earth, (as there be gods many, and lords many,)"

1 Corinthians 10:31: "Whether therefore ye eat, or drink, or whatsoever ye do, do all to the glory of God."

1 Corinthians 12:13: "For by one Spirit are we all baptized into one body, whether we be Jews or Gentiles, whether we be bond or free; and have been all made to drink into one Spirit."

1 Corinthians 12:26: "And whether one member suffer, all the members suffer with it; or one member be honoured, all the members rejoice with it."

1 Corinthians 13:8: "Charity never faileth: but whether there be prophecies, they shall fail; whether there be tongues, they shall cease; whether there be knowledge, it shall vanish away."

1 Corinthians 14:7: "And even things without life giving sound, whether pipe or harp, except they give a distinction in the sounds, how shall it be known what is piped or harped?"

1 Corinthians 15:11: "Therefore whether it were I or they, so we preach, and so ye believed."

2 Corinthians 1:6: "And whether we be afflicted, it is for your consolation and salvation, which is effectual in the enduring of the same sufferings which we also suffer: or whether we be comforted, it is for your consolation and salvation."

2 Corinthians 2:9: "For to this end also did I write, that I might know the proof of you, whether ye be obedient in all things."

2 Corinthians 5:9: "Wherefore we labour, that, whether present or absent, we may be accepted of him."

2 Corinthians 5:10: "For we must all appear before the judgment seat of Christ; that every one may receive the things done in his body, according to that he hath done, whether it be good or bad."

2 Corinthians 5:13: "For whether we be beside ourselves, it is to God: or whether we be sober, it is for your cause."

2 Corinthians 8:23: "Whether any do enquire of Titus, he is my partner and fellowhelper concerning you: or our brethren be enquired of, they are the messengers of the churches, and the glory of Christ."

2 Corinthians 12:2: "I knew a man in Christ above fourteen years ago, (whether in the body, I cannot tell; or whether out of the body, I cannot tell: God knoweth;) such an one caught up to the third heaven."

2 Corinthians 12:3: "And I knew such a man, (whether in the body, or out of the body, I cannot tell: God knoweth;)"

2 Corinthians 13:5: "Examine yourselves, whether ye be in the faith; prove your own selves. Know ye not your own selves, how that Jesus Christ is in you, except ye be reprobates?"

Ephesians 6:8: "Knowing that whatsoever good thing any man doeth, the same shall he receive of the Lord, whether he be bond or free."

Philippians 1:18: "What then? notwithstanding, every way, whether in pretence, or in truth, Christ is preached; and I therein do rejoice, yea, and will rejoice."

Philippians 1:20: "According to my earnest expectation and my hope, that in nothing I shall be ashamed, but that with all boldness, as always, so now also Christ shall be magnified in my body, whether it be by life, or by death."

Philippians 1:27: "Only let your conversation be as it becometh the gospel of Christ: that whether I come and see you, or else be absent, I may hear of your affairs, that ye stand fast in one spirit, with one mind striving together for the faith of the gospel;"

Colossians 1:16: "For by him were all things created, that are in heaven, and that are in earth, visible and invisible, whether they be thrones, or dominions, or principalities, or powers: all things were created by him, and for him:"

Colossians 1:20: "And, having made peace through the blood of his cross, by him to reconcile all things unto himself; by him, I say, whether they be things in earth, or things in heaven."

1 Thessalonians 5:10: "Who died for us, that, whether we wake or sleep, we should live together with him."

2 Thessalonians 2:15: "Therefore, brethren, stand fast, and hold the traditions which ye have been taught, whether by word, or our epistle."

1 Peter 2:13: "Submit yourselves to every ordinance of man for the Lord's sake: whether it be to the king, as supreme;"

1 John 4:1: "Beloved, believe not every spirit, but try the spirits whether they are of God: because many false prophets are gone out into the world."

## WHICH

Occurrences: 3880

Genesis 1:7: "And God made the firmament, and divided the waters which were under the firmament from the waters which were above the firmament: and it was so."

Genesis 1:21: "And God created great whales, and every living creature that moveth, which the waters brought forth abundantly, after their kind, and every winged fowl after his kind: and God saw that it was good."

Genesis 1:29: "And God said, Behold, I have given you every herb bearing seed, which is upon the face of all the earth, and every tree, in the which is the fruit of a tree yielding seed; to you it shall be for meat."

Genesis 2:2: "And on the seventh day God ended his work which he had made; and he rested on the seventh day from all his work which he had made."

Genesis 2:3: "And God blessed the seventh day, and sanctified it: because that in it he had rested from all his work which God created and made."

Genesis 2:11: "The name of the first is Pison: that is it which compasseth the whole land of Havilah, where there is gold;"

Genesis 2:14: "And the name of the third river is Hiddekel: that is it which goeth toward the east of Assyria. And the fourth river is Euphrates."

Genesis 2:22: "And the rib, which the LORD God had taken from man, made he a woman, and brought her unto the man."

Genesis 3:1: "Now the serpent was more subtil than any beast of the field which the LORD God had made. And he said unto the woman, Yea, hath God said, Ye shall not eat of every tree of the garden?"

Genesis 3:3: "But of the fruit of the tree which is in the midst of the garden, God hath said, Ye shall not eat of it, neither shall ye touch it, lest ye die."

Genesis 3:17: "And unto Adam he said, Because thou hast hearkened unto the voice of thy wife, and hast eaten of the tree, of which I commanded thee, saying, Thou shalt not eat of it: cursed is the ground for thy sake; in sorrow shalt thou eat of it all the days of thy life;"

Genesis 3:24: "So he drove out the man; and he placed at the east of the garden of Eden Cherubims, and a flaming sword which turned every way, to keep the way of the tree of life."

Genesis 4:11: "And now art thou cursed from the earth, which hath opened her mouth to receive thy brother's blood from thy hand;"

Genesis 5:29: "And he called his name Noah, saying, This same shall comfort us concerning our work and toil of our hands, because of the ground which the LORD hath cursed."

Genesis 6:2: "That the sons of God saw the daughters of men that they were fair; and they took them wives of all which they chose."

Genesis 6:4: "There were giants in the earth in those days; and also after that, when the sons of God came in unto the daughters of men, and they bare children to them, the same became mighty men which were of old, men of renown."

Genesis 6:15: "And this is the fashion which thou shalt make it of: The length of the ark shall be three hundred cubits, the breadth of it fifty cubits, and the height of it thirty cubits."

Genesis 7:23: "And every living substance was destroyed which was upon the face of the ground, both man, and cattle, and the creeping things, and the fowl of the heaven; and they were destroyed from the earth: and Noah only remained alive, and they that were with him in the ark."

Genesis 8:6: "And it came to pass at the end of forty days, that Noah opened the window of the ark which he had made:"

Genesis 8:7: "And he sent forth a raven, which went forth to and fro, until the waters were dried up from off the earth."

Genesis 8:12: "And he stayed yet other seven days; and sent forth the dove; which returned not again unto him any more."

Genesis 9:4: "But flesh with the life thereof, which is the blood thereof, shall ye not eat."

Genesis 9:12: "And God said, This is the token of the covenant which I make between me and you and every living creature that is with you, for perpetual generations:"

Genesis 9:15: "And I will remember my covenant, which is between me and you and every living creature of all flesh; and the waters shall no more become a flood to destroy all flesh."

Genesis 9:17: "And God said unto Noah, This is the token of the covenant, which I have established between me and all flesh that is upon the earth."

Genesis 11:5: "And the LORD came down to see the city and the tower, which the children of men builded."

Genesis 11:6: "And the LORD said, Behold, the people is one, and they have all one language; and this they begin to do: and now nothing will be restrained from them, which they have imagined to do."

Genesis 13:4: "Unto the place of the altar, which he had make there at the first: and there Abram called on the name of the LORD."

Genesis 13:5: "And Lot also, which went with Abram, had flocks, and herds, and tents."

Genesis 13:15: "For all the land which thou seest, to thee will I give it, and to thy seed for ever."

Genesis 13:18: "Then Abram removed his tent, and came and dwelt in the plain of Mamre, which is in Hebron, and built there an altar unto the LORD."

Genesis 14:2: "That these made war with Bera king of Sodom, and with Birsha king of Gomorrah, Shinab king of Admah, and Shemeber king of Zeboiim, and the king of Bela, which is Zoar."

Genesis 14:3: "All these were joined together in the vale of Siddim, which is the salt sea."

Genesis 14:6: "And the Horites in their mount Seir, unto Elparan, which is by the wilderness."

Genesis 14:7: "And they returned, and came to Enmishpat, which is Kadesh, and smote all the country of the Amalekites, and also the Amorites, that dwelt in Hazezontamar."

Genesis 14:15: "And he divided himself against them, he and his servants, by night, and smote them, and pursued them unto Hobah, which is on the left hand of Damascus."

Genesis 14:17: "And the king of Sodom went out to meet him after his return from the slaughter of Chedorlaomer, and of the kings that were with him, at the valley of Shaveh, which is the king's dale."

Genesis 14:20: "And blessed be the most high God, which hath delivered thine enemies into thy hand. And he gave him tithes of all."

Genesis 14:24: "Save only that which the young men have eaten, and the portion of the men which went with me, Aner, Eshcol, and Mamre; let them take their portion."

Genesis 16:15: "And Hagar bare Abram a son: and Abram called his son's name, which Hagar bare, Ishmael."

Genesis 17:10: "This is my covenant, which ye shall keep, between me and you and thy seed after thee; Every man child among you shall be circumcised."

Genesis 17:12: "And he that is eight days old shall be circumcised among you, every man child in your generations, he that is born in the house, or bought with money of any stranger, which is not of thy seed."

Genesis 17:21: "But my covenant will I establish with Isaac, which Sarah shall bear unto thee at this set time in the next year."

Genesis 18:8: "And he took butter, and milk, and the calf which he had dressed, and set it before them; and he stood by them under the tree, and they did eat."

Genesis 18:10: "And he said, I will certainly return unto thee according to the time of life; and, lo, Sarah thy wife shall have a son. And Sarah heard it in the tent door, which was behind him."

Genesis 18:13: "And the LORD said unto Abraham, Wherefore did Sarah laugh, saying, Shall I of a surety bear a child, which am old?"

Genesis 18:17: "And the LORD said, Shall I hide from Abraham that thing which I do;"

Genesis 18:19: "For I know him, that he will command his children and his household after him, and they shall keep the way of the LORD, to do justice and judgment; that the LORD may bring upon Abraham that which he hath spoken of him."

Genesis 18:21: "I will go down now, and see whether they have done altogether according to the cry of it, which is come unto me; and if not, I will know."

Genesis 18:27: "And Abraham answered and said, Behold now, I have taken upon me to speak unto the LORD, which am but dust and ashes:"

Genesis 19:5: "And they called unto Lot, and said unto him, Where are the men which came in to thee this night? bring them out unto us, that we may know them."

Genesis 19:8: "Behold now, I have two daughters which have not known man; let me, I pray you, bring them out unto you, and do ye to them as is good in your eyes: only unto these men do nothing; for therefore came they under the shadow of my roof."

Genesis 19:14: "And Lot went out, and spake unto his sons in law, which married his daughters,

and said, Up, get you out of this place; for the LORD will destroy this city. But he seemed as one that mocked unto his sons in law."

Genesis 19:15: "And when the morning arose, then the angels hastened Lot, saying, Arise, take thy wife, and thy two daughters, which are here; lest thou be consumed in the iniquity of the city."

Genesis 19:19: "Behold now, thy servant hath found grace in thy sight, and thou hast magnified thy mercy, which thou hast shewed unto me in saving my life; and I cannot escape to the mountain, lest some evil take me, and I die:"

Genesis 19:21: "And he said unto him, See, I have accepted thee concerning this thing also, that I will not overthrow this city, for the which thou hast spoken."

Genesis 19:25: "And he overthrew those cities, and all the plain, and all the inhabitants of the cities, and that which grew upon the ground."

Genesis 19:29: "And it came to pass, when God destroyed the cities of the plain, that God remembered Abraham, and sent Lot out of the midst of the overthrow, when he overthrew the cities in the which Lot dwelt."

Genesis 20:3: "But God came to Abimelech in a dream by night, and said to him, Behold, thou art but a dead man, for the woman which thou hast taken; for she is a man's wife."

Genesis 20:13: "And it came to pass, when God caused me to wander from my father's house, that I said unto her, This is thy kindness which thou shalt shew unto me; at every place whither we shall come, say of me, He is my brother."

Genesis 21:2: "For Sarah conceived, and bare Abraham a son in his old age, at the set time of which God had spoken to him."

Genesis 21:9: "And Sarah saw the son of Hagar the Egyptian, which she had born unto Abraham, mocking."

Genesis 21:25: "And Abraham reprov'd Abimelech because of a well of water, which Abimelech's servants had violently taken away."

Genesis 21:29: "And Abimelech said unto Abraham, What mean these seven ewe lambs which thou hast set by themselves?"

Genesis 22:2: "And he said, Take now thy son, thine only son Isaac, whom thou lovest, and get thee into the land of Moriah; and offer him there for a burnt offering upon one of the mountains which I will tell thee of."

Genesis 22:3: "And Abraham rose up early in the morning, and saddled his ass, and took two of his young men with him, and Isaac his son, and clave the wood for the burnt offering, and rose up, and went unto the place of which God had told him."

Genesis 22:9: "And they came to the place which God had told him of; and Abraham built an altar there, and laid the wood in order, and bound Isaac his son, and laid him on the altar upon the wood."

Genesis 22:17: "That in blessing I will bless thee, and in multiplying I will multiply thy seed as the stars of the heaven, and as the sand which is upon the sea shore; and thy seed shall possess the gate of his enemies;"

Genesis 23:9: "That he may give me the cave of Machpelah, which he hath, which is in the end of his field; for as much money as it is worth he shall give it me for a possession of a buryingplace amongst you."

Genesis 23:16: "And Abraham hearkened unto Ephron; and Abraham weighed to Ephron the silver, which he had named in the audience of the sons of Heth, four hundred shekels of silver, current money with the merchant."

Genesis 23:17: "And the field of Ephron which was in Machpelah, which was before Mamre, the field, and the cave which was therein, and all the trees that were in the field, that were in all the borders round about, were made sure"

Genesis 24:7: "The LORD God of heaven, which took me from my father's house, and from the land of my kindred, and which spake unto me, and that sware unto me, saying, Unto thy seed will I



give this land; he shall send his angel before thee, and thou shalt take a wife unto my son from thence."

Genesis 24:24: "And she said unto him, I am the daughter of Bethuel the son of Milcah, which she bare unto Nahor."

Genesis 24:42: "And I came this day unto the well, and said, O LORD God of my master Abraham, if now thou do prosper my way which I go:"

Genesis 24:48: "And I bowed down my head, and worshipped the LORD, and blessed the LORD God of my master Abraham, which had led me in the right way to take my master's brother's daughter unto his son."

Genesis 24:60: "And they blessed Rebekah, and said unto her, Thou art our sister, be thou the mother of thousands of millions, and let thy seed possess the gate of those which hate them."

Genesis 25:6: "But unto the sons of the concubines, which Abraham had, Abraham gave gifts, and sent them away from Isaac his son, while he yet lived, eastward, unto the east country."

Genesis 25:7: "And these are the days of the years of Abraham's life which he lived, an hundred threescore and fifteen years."

Genesis 25:9: "And his sons Isaac and Ishmael buried him in the cave of Machpelah, in the field of Ephron the son of Zohar the Hittite, which is before Mamre;"

Genesis 25:10: "The field which Abraham purchased of the sons of Heth: there was Abraham buried, and Sarah his wife."

Genesis 26:2: "And the LORD appeared unto him, and said, Go not down into Egypt; dwell in the land which I shall tell thee of:"

Genesis 26:3: "Sojourn in this land, and I will be with thee, and will bless thee; for unto thee, and unto thy seed, I will give all these countries, and I will perform the oath which I sware unto Abraham thy father;"

Genesis 26:15: "For all the wells which his father's servants had digged in the days of Abraham his father, the Philistines had stopped them, and filled them with earth."

Genesis 26:18: "And Isaac digged again the wells of water, which they had digged in the days of Abraham his father; for the Philistines had stopped them after the death of Abraham: and he called their names after the names by which his father had called them."

Genesis 26:32: "And it came to pass the same day, that Isaac's servants came, and told him concerning the well which they had digged, and said unto him, We have found water."

Genesis 26:35: "Which were a grief of mind unto Isaac and to Rebekah."

Genesis 27:8: "Now therefore, my son, obey my voice according to that which I command thee."

Genesis 27:15: "And Rebekah took goodly raiment of her eldest son Esau, which were with her in the house, and put them upon Jacob her younger son:"

Genesis 27:17: "And she gave the savoury meat and the bread, which she had prepared, into the hand of her son Jacob."

Genesis 27:27: "And he came near, and kissed him: and he smelled the smell of his raiment, and blessed him, and said, See, the smell of my son is as the smell of a field which the LORD hath blessed:"

Genesis 27:45: "Until thy brother's anger turn away from thee, and he forget that which thou hast done to him: then I will send, and fetch thee from thence: why should I be deprived also of you both in one day?"

Genesis 27:46: "And Rebekah said to Isaac, I am weary of my life because of the daughters of Heth: if Jacob take a wife of the daughters of Heth, such as these which are of the daughters of the land, what good shall my life do me?"

Genesis 28:4: "And give thee the blessing of Abraham, to thee, and to thy seed with thee; that thou mayest inherit the land wherein thou art a stranger, which God gave unto Abraham."

Genesis 28:9: "Then went Esau unto Ishmael, and took unto the wives which he had Mahalath the daughter of Ishmael Abraham's son, the sister of Nebajoth, to be his wife."

Genesis 28:15: "And, behold, I am with thee, and will keep thee in all places whither thou goest, and will bring thee again into this land; for I will not leave thee, until I have done that which I have spoken to thee of."

Genesis 28:22: "And this stone, which I have set for a pillar, shall be God's house: and of all that thou shalt give me I will surely give the tenth unto thee."

Genesis 29:27: "Fulfil her week, and we will give thee this also for the service which thou shalt serve with me yet seven other years."

Genesis 30:26: "Give me my wives and my children, for whom I have served thee, and let me go: for thou knowest my service which I have done thee."

Genesis 30:30: "For it was little which thou hadst before I came, and it is now increased unto a multitude; and the LORD hath blessed thee since my coming: and now when shall I provide for mine own house also?"

Genesis 30:37: "And Jacob took him rods of green poplar, and of the hazel and chesnut tree; and pilled white strakes in them, and made the white appear which was in the rods."

Genesis 30:38: "And he set the rods which he had pilled before the flocks in the gutters in the watering troughs when the flocks came to drink, that they should conceive when they came to drink."

Genesis 31:1: "And he heard the words of Laban's sons, saying, Jacob hath taken away all that was our father's; and of that which was our father's hath he gotten all this glory."

Genesis 31:10: "And it came to pass at the time that the cattle conceived, that I lifted up mine eyes, and saw in a dream, and, behold, the rams which leaped upon the cattle were ringstraked, speckled, and grisled."

Genesis 31:12: "And he said, Lift up now thine eyes, and see, all the rams which leap upon the cattle are ringstraked, speckled, and grisled: for I have seen all that Laban doeth unto thee."

Genesis 31:16: "For all the riches which God hath taken from our father, that is ours, and our children's: now then, whatsoever God hath said unto thee, do."

Genesis 31:18: "And he carried away all his cattle, and all his goods which he had gotten, the cattle of his getting, which he had gotten in Padanaram, for to go to Isaac his father in the land of Canaan."

Genesis 31:39: "That which was torn of beasts I brought not unto thee; I bare the loss of it; of my hand didst thou require it, whether stolen by day, or stolen by night."

Genesis 31:43: "And Laban answered and said unto Jacob, These daughters are my daughters, and these children are my children, and these cattle are my cattle, and all that thou seest is mine: and what can I do this day unto these my daughters, or unto their children which they have born?"

Genesis 31:51: "And Laban said to Jacob, Behold this heap, and behold this pillar, which I have cast betwixt me and thee:"

Genesis 32:8: "And said, If Esau come to the one company, and smite it, then the other company which is left shall escape."

Genesis 32:9: "And Jacob said, O God of my father Abraham, and God of my father Isaac, the LORD which saidst unto me, Return unto thy country, and to thy kindred, and I will deal well with thee:"

Genesis 32:10: "I am not worthy of the least of all the mercies, and of all the truth, which thou hast shewed unto thy servant; for with my staff I passed over this Jordan; and now I am become two bands."

Genesis 32:12: "And thou saidst, I will surely do thee good, and make thy seed as the sand of the sea, which cannot be numbered for multitude."

Genesis 32:13: "And he lodged there that same night; and took of that which came to his hand a present for Esau his brother:"

Genesis 32:32: "Therefore the children of Israel eat not of the sinew which shrank, which is upon the hollow of the thigh, unto this day: because he touched the hollow of Jacob's thigh in the sinew

that shrank."

Genesis 33:5: "And he lifted up his eyes, and saw the women and the children; and said, Who are those with thee? And he said, The children which God hath graciously given thy servant."

Genesis 33:8: "And he said, What meanest thou by all this drove which I met? And he said, These are to find grace in the sight of my lord."

Genesis 33:18: "And Jacob came to Shalem, a city of Shechem, which is in the land of Canaan, when he came from Padanaram; and pitched his tent before the city."

Genesis 34:1: "And Dinah the daughter of Leah, which she bare unto Jacob, went out to see the daughters of the land."

Genesis 34:7: "And the sons of Jacob came out of the field when they heard it: and the men were grieved, and they were very wroth, because he had wrought folly in Israel in lying with Jacob's daughter: which thing ought not to be done."

Genesis 34:28: "They took their sheep, and their oxen, and their asses, and that which was in the city, and that which was in the field,"

Genesis 35:3: "And let us arise, and go up to Bethel; and I will make there an altar unto God, who answered me in the day of my distress, and was with me in the way which I went."

Genesis 35:4: "And they gave unto Jacob all the strange gods which were in their hand, and all their earrings which were in their ears; and Jacob hid them under the oak which was by Shechem."

Genesis 35:6: "So Jacob came to Luz, which is in the land of Canaan, that is, Bethel, he and all the people that were with him."

Genesis 35:12: "And the land which I gave Abraham and Isaac, to thee I will give it, and to thy seed after thee will I give the land."

Genesis 35:19: "And Rachel died, and was buried in the way to Ephrath, which is Bethlehem."

Genesis 35:26: "And the sons of Zilpah, Leah's handmaid: Gad, and Asher: these are the sons of Jacob, which were born to him in Padanaram."

Genesis 35:27: "And Jacob came unto Isaac his father unto Mamre, unto the city of Arbah, which is Hebron, where Abraham and Isaac sojourned."

Genesis 36:5: "And Aholibamah bare Jeush, and Jaalam, and Korah: these are the sons of Esau, which were born unto him in the land of Canaan."

Genesis 36:6: "And Esau took his wives, and his sons, and his daughters, and all the persons of his house, and his cattle, and all his beasts, and all his substance, which he had got in the land of Canaan; and went into the country from the face of his brother Jacob."

Genesis 37:6: "And he said unto them, Hear, I pray you, this dream which I have dreamed:"

Genesis 38:10: "And the thing which he did displeased the LORD: wherefore he slew him also."

Genesis 38:14: "And she put her widow's garments off from her, and covered her with a vail, and wrapped herself, and sat in an open place, which is by the way to Timnath; for she saw that Shelah was grown, and she was not given unto him to wife."

Genesis 39:1: "And Joseph was brought down to Egypt; and Potiphar, an officer of Pharaoh, captain of the guard, an Egyptian, bought him of the hands of the Ishmeelites, which had brought him down thither."

Genesis 39:6: "And he left all that he had in Joseph's hand; and he knew not ought he had, save the bread which he did eat. And Joseph was a goodly person, and well favoured."

Genesis 39:17: "And she spake unto him according to these words, saying, The Hebrew servant, which thou hast brought unto us, came in unto me to mock me:"

Genesis 39:19: "And it came to pass, when his master heard the words of his wife, which she spake unto him, saying, After this manner did thy servant to me; that his wrath was kindled."

Genesis 39:23: "The keeper of the prison looked not to any thing that was under his hand; because the LORD was with him, and that which he did, the LORD made it to prosper."

Genesis 40:5: "And they dreamed a dream both of them, each man his dream in one night, each man according to the interpretation of his dream, the butler and the baker of the king of Egypt, which

were bound in the prison."

Genesis 40:20: "And it came to pass the third day, which was Pharaoh's birthday, that he made a feast unto all his servants: and he lifted up the head of the chief butler and of the chief baker among his servants."

Genesis 41:28: "This is the thing which I have spoken unto Pharaoh: What God is about to do he sheweth unto Pharaoh."

Genesis 41:36: "And that food shall be for store to the land against the seven years of famine, which shall be in the land of Egypt; that the land perish not through the famine."

Genesis 41:43: "And he made him to ride in the second chariot which he had; and they cried before him, Bow the knee: and he made him ruler over all the land of Egypt."

Genesis 41:48: "And he gathered up all the food of the seven years, which were in the land of Egypt, and laid up the food in the cities: the food of the field, which was round about every city, laid he up in the same."

Genesis 41:50: "And unto Joseph were born two sons before the years of famine came, which Asenath the daughter of Potipherah priest of On bare unto him."

Genesis 42:9: "And Joseph remembered the dreams which he dreamed of them, and said unto them, Ye are spies; to see the nakedness of the land ye are come."

Genesis 42:38: "And he said, My son shall not go down with you; for his brother is dead, and he is left alone: if mischief befall him by the way in the which ye go, then shall ye bring down my gray hairs with sorrow to the grave."

Genesis 43:2: "And it came to pass, when they had eaten up the corn which they had brought out of Egypt, their father said unto them, Go again, buy us a little food."

Genesis 43:26: "And when Joseph came home, they brought him the present which was in their hand into the house, and bowed themselves to him to the earth."

Genesis 43:32: "And they set on for him by himself, and for them by themselves, and for the Egyptians, which did eat with him, by themselves: because the Egyptians might not eat bread with the Hebrews; for that is an abomination unto the Egyptians."

Genesis 44:5: "Is not this it in which my lord drinketh, and whereby indeed he divineth? ye have done evil in so doing."

Genesis 44:8: "Behold, the money, which we found in our sacks' mouths, we brought again unto thee out of the land of Canaan: how then should we steal out of thy lord's house silver or gold?"

Genesis 45:6: "For these two years hath the famine been in the land: and yet there are five years, in the which there shall neither be earing nor harvest."

Genesis 45:27: "And they told him all the words of Joseph, which he had said unto them: and when he saw the wagons which Joseph had sent to carry him, the spirit of Jacob their father revived:"

Genesis 46:5: "And Jacob rose up from Beersheba: and the sons of Israel carried Jacob their father, and their little ones, and their wives, in the wagons which Pharaoh had sent to carry him."

Genesis 46:6: "And they took their cattle, and their goods, which they had gotten in the land of Canaan, and came into Egypt, Jacob, and all his seed with him:"

Genesis 46:8: "And these are the names of the children of Israel, which came into Egypt, Jacob and his sons: Reuben, Jacob's firstborn."

Genesis 46:15: "These be the sons of Leah, which she bare unto Jacob in Padanaram, with his daughter Dinah: all the souls of his sons and his daughters were thirty and three."

Genesis 46:20: "And unto Joseph in the land of Egypt were born Manasseh and Ephraim, which Asenath the daughter of Potipherah priest of On bare unto him."

Genesis 46:22: "These are the sons of Rachel, which were born to Jacob: all the souls were fourteen."

Genesis 46:25: "These are the sons of Bilhah, which Laban gave unto Rachel his daughter, and she bare these unto Jacob: all the souls were seven."

Genesis 46:26: "All the souls that came with Jacob into Egypt, which came out of his loins, besides

Jacob's sons' wives, all the souls were threescore and six;"

Genesis 46:27: "And the sons of Joseph, which were born him in Egypt, were two souls: all the souls of the house of Jacob, which came into Egypt, were threescore and ten."

Genesis 46:31: "And Joseph said unto his brethren, and unto his father's house, I will go up, and shew Pharaoh, and say unto him, My brethren, and my father's house, which were in the land of Canaan, are come unto me;"

Genesis 47:14: "And Joseph gathered up all the money that was found in the land of Egypt, and in the land of Canaan, for the corn which they bought: and Joseph brought the money into Pharaoh's house."

Genesis 47:22: "Only the land of the priests bought he not; for the priests had a portion assigned them of Pharaoh, and did eat their portion which Pharaoh gave them: wherefore they sold not their lands."

Genesis 47:26: "And Joseph made it a law over the land of Egypt unto this day, that Pharaoh should have the fifth part, except the land of the priests only, which became not Pharaoh's."

Genesis 48:5: "And now thy two sons, Ephraim and Manasseh, which were born unto thee in the land of Egypt before I came unto thee into Egypt, are mine; as Reuben and Simeon, they shall be mine."

Genesis 48:6: "And thy issue, which thou begetteth after them, shall be thine, and shall be called after the name of their brethren in their inheritance."

Genesis 48:15: "And he blessed Joseph, and said, God, before whom my fathers Abraham and Isaac did walk, the God which fed me all my life long unto this day,"

Genesis 48:16: "The Angel which redeemed me from all evil, bless the lads; and let my name be named on them, and the name of my fathers Abraham and Isaac; and let them grow into a multitude in the midst of the earth."

Genesis 48:22: "Moreover I have given to thee one portion above thy brethren, which I took out of the hand of the Amorite with my sword and with my bow."

Genesis 49:1: "And Jacob called unto his sons, and said, Gather yourselves together, that I may tell you that which shall befall you in the last days."

Genesis 49:30: "In the cave that is in the field of Machpelah, which is before Mamre, in the land of Canaan, which Abraham bought with the field of Ephron the Hittite for a possession of a buryingplace."

Genesis 50:3: "And forty days were fulfilled for him; for so are fulfilled the days of those which are embalmed: and the Egyptians mourned for him threescore and ten days."

Genesis 50:5: "My father made me swear, saying, Lo, I die: in my grave which I have digged for me in the land of Canaan, there shalt thou bury me. Now therefore let me go up, I pray thee, and bury my father, and I will come again."

Genesis 50:10: "And they came to the threshingfloor of Atad, which is beyond Jordan, and there they mourned with a great and very sore lamentation: and he made a mourning for his father seven days."

Genesis 50:11: "And when the inhabitants of the land, the Canaanites, saw the mourning in the floor of Atad, they said, This is a grievous mourning to the Egyptians: wherefore the name of it was called Abelmizraim, which is beyond Jordan."

Genesis 50:13: "For his sons carried him into the land of Canaan, and buried him in the cave of the field of Machpelah, which Abraham bought with the field for a possession of a buryingplace of Ephron the Hittite, before Mamre."

Genesis 50:15: "And when Joseph's brethren saw that their father was dead, they said, Joseph will peradventure hate us, and will certainly requite us all the evil which we did unto him."

Genesis 50:24: "And Joseph said unto his brethren, I die: and God will surely visit you, and bring you out of this land unto the land which he sware to Abraham, to Isaac, and to Jacob."

Exodus 1:1: "Now these are the names of the children of Israel, which came into Egypt; every man

and his household came with Jacob."

Exodus 1:8: "Now there arose up a new king over Egypt, which knew not Joseph."

Exodus 1:15: "And the king of Egypt spake to the Hebrew midwives, of which the name of the one was Shiphrah, and the name of the other Puah:"

Exodus 3:7: "And the LORD said, I have surely seen the affliction of my people which are in Egypt, and have heard their cry by reason of their taskmasters; for I know their sorrows;"

Exodus 3:16: "Go, and gather the elders of Israel together, and say unto them, The LORD God of your fathers, the God of Abraham, of Isaac, and of Jacob, appeared unto me, saying, I have surely visited you, and seen that which is done to you in Egypt:"

Exodus 3:20: "And I will stretch out my hand, and smite Egypt with all my wonders which I will do in the midst thereof: and after that he will let you go."

Exodus 4:9: "And it shall come to pass, if they will not believe also these two signs, neither hearken unto thy voice, that thou shalt take of the water of the river, and pour it upon the dry land: and the water which thou takest out of the river shall become blood upon the dry land."

Exodus 4:18: "And Moses went and returned to Jethro his father in law, and said unto him, Let me go, I pray thee, and return unto my brethren which are in Egypt, and see whether they be yet alive. And Jethro said to Moses, Go in peace."

Exodus 4:19: "And the LORD said unto Moses in Midian, Go, return into Egypt: for all the men are dead which sought thy life."

Exodus 4:21: "And the LORD said unto Moses, When thou goest to return into Egypt, see that thou do all those wonders before Pharaoh, which I have put in thine hand: but I will harden his heart, that he shall not let the people go."

Exodus 4:28: "And Moses told Aaron all the words of the LORD who had sent him, and all the signs which he had commanded him."

Exodus 4:30: "And Aaron spake all the words which the LORD had spoken unto Moses, and did the signs in the sight of the people."

Exodus 5:8: "And the tale of the bricks, which they did make heretofore, ye shall lay upon them; ye shall not diminish ought thereof: for they be idle; therefore they cry, saying, Let us go and sacrifice to our God."

Exodus 5:14: "And the officers of the children of Israel, which Pharaoh's taskmasters had set over them, were beaten, and demanded, Wherefore have ye not fulfilled your task in making brick both yesterday and to day, as heretofore?"

Exodus 6:7: "And I will take you to me for a people, and I will be to you a God: and ye shall know that I am the LORD your God, which bringeth you out from under the burdens of the Egyptians."

Exodus 6:8: "And I will bring you in unto the land, concerning the which I did swear to give it to Abraham, to Isaac, and to Jacob; and I will give it you for an heritage: I am the LORD."

Exodus 6:27: "These are they which spake to Pharaoh king of Egypt, to bring out the children of Israel from Egypt: these are that Moses and Aaron."

Exodus 7:15: "Get thee unto Pharaoh in the morning; lo, he goeth out unto the water; and thou shalt stand by the river's brink against he come; and the rod which was turned to a serpent shalt thou take in thine hand."

Exodus 7:17: "Thus saith the LORD, In this thou shalt know that I am the LORD: behold, I will smite with the rod that is in mine hand upon the waters which are in the river, and they shall be turned to blood."

Exodus 8:3: "And the river shall bring forth frogs abundantly, which shall go up and come into thine house, and into thy bedchamber, and upon thy bed, and into the house of thy servants, and upon thy people, and into thine ovens, and into thy kneadingtroughs:"

Exodus 8:12: "And Moses and Aaron went out from Pharaoh: and Moses cried unto the LORD because of the frogs which he had brought against Pharaoh."

Exodus 8:22: "And I will sever in that day the land of Goshen, in which my people dwell, that no

swarms of flies shall be there; to the end thou mayest know that I am the LORD in the midst of the earth."

Exodus 9:3: "Behold, the hand of the LORD is upon thy cattle which is in the field, upon the horses, upon the asses, upon the camels, upon the oxen, and upon the sheep: there shall be a very grievous murrain."

Exodus 9:19: "Send therefore now, and gather thy cattle, and all that thou hast in the field; for upon every man and beast which shall be found in the field, and shall not be brought home, the hail shall come down upon them, and they shall die."

Exodus 10:2: "And that thou mayest tell in the ears of thy son, and of thy son's son, what things I have wrought in Egypt, and my signs which I have done among them; that ye may know how that I am the LORD."

Exodus 10:5: "And they shall cover the face of the earth, that one cannot be able to see the earth: and they shall eat the residue of that which is escaped, which remaineth unto you from the hail, and shall eat every tree which groweth for you out of the field:"

Exodus 10:6: "And they shall fill thy houses, and the houses of all thy servants, and the houses of all the Egyptians; which neither thy fathers, nor thy fathers' fathers have seen, since the day that they were upon the earth unto this day. And he turned himself, and went out from Pharaoh."

Exodus 10:15: "For they covered the face of the whole earth, so that the land was darkened; and they did eat every herb of the land, and all the fruit of the trees which the hail had left: and there remained not any green thing in the trees, or in the herbs of the field, through all the land of Egypt."

Exodus 10:19: "And the LORD turned a mighty strong west wind, which took away the locusts, and cast them into the Red sea; there remained not one locust in all the coasts of Egypt."

Exodus 10:21: "And the LORD said unto Moses, Stretch out thine hand toward heaven, that there may be darkness over the land of Egypt, even darkness which may be felt."

Exodus 12:10: "And ye shall let nothing of it remain until the morning; and that which remaineth of it until the morning ye shall burn with fire."

Exodus 12:16: "And in the first day there shall be an holy convocation, and in the seventh day there shall be an holy convocation to you; no manner of work shall be done in them, save that which every man must eat, that only may be done of you."

Exodus 12:19: "Seven days shall there be no leaven found in your houses: for whosoever eateth that which is leavened, even that soul shall be cut off from the congregation of Israel, whether he be a stranger, or born in the land."

Exodus 12:25: "And it shall come to pass, when ye be come to the land which the LORD will give you, according as he hath promised, that ye shall keep this service."

Exodus 12:39: "And they baked unleavened cakes of the dough which they brought forth out of Egypt, for it was not leavened; because they were thrust out of Egypt, and could not tarry, neither had they prepared for themselves any victual."

Exodus 13:3: "And Moses said unto the people, Remember this day, in which ye came out from Egypt, out of the house of bondage; for by strength of hand the LORD brought you out from this place: there shall no leavened bread be eaten."

Exodus 13:5: "And it shall be when the LORD shall bring thee into the land of the Canaanites, and the Hittites, and the Amorites, and the Hivites, and the Jebusites, which he sware unto thy fathers to give thee, a land flowing with milk and honey, that thou shalt keep this service in this month."

Exodus 13:8: "And thou shalt shew thy son in that day, saying, This is done because of that which the LORD did unto me when I came forth out of Egypt."

Exodus 13:12: "That thou shalt set apart unto the LORD all that openeth the matrix, and every firstling that cometh of a beast which thou hast; the males shall be the LORD's."

Exodus 14:13: "And Moses said unto the people, Fear ye not, stand still, and see the salvation of the LORD, which he will shew to you to day: for the Egyptians whom ye have seen to day, ye shall see them again no more for ever."

Exodus 14:19: "And the angel of God, which went before the camp of Israel, removed and went behind them; and the pillar of the cloud went from before their face, and stood behind them:"

Exodus 14:31: "And Israel saw that great work which the LORD did upon the Egyptians: and the people feared the LORD, and believed the LORD, and his servant Moses."

Exodus 15:7: "And in the greatness of thine excellency thou hast overthrown them that rose up against thee: thou sentest forth thy wrath, which consumed them as stubble."

Exodus 15:13: "Thou in thy mercy hast led forth the people which thou hast redeemed: thou hast guided them in thy strength unto thy holy habitation."

Exodus 15:16: "Fear and dread shall fall upon them; by the greatness of thine arm they shall be as still as a stone; till thy people pass over, O LORD, till the people pass over, which thou hast purchased."

Exodus 15:17: "Thou shalt bring them in, and plant them in the mountain of thine inheritance, in the place, O LORD, which thou hast made for thee to dwell in, in the Sanctuary, O LORD, which thy hands have established."

Exodus 15:25: "And he cried unto the LORD; and the LORD shewed him a tree, which when he had cast into the waters, the waters were made sweet: there he made for them a statute and an ordinance, and there he proved them,"

Exodus 15:26: "And said, If thou wilt diligently hearken to the voice of the LORD thy God, and wilt do that which is right in his sight, and wilt give ear to his commandments, and keep all his statutes, I will put none of these diseases upon thee, which I have brought upon the Egyptians: for I am the LORD that healeth thee."

Exodus 16:1: "And they took their journey from Elim, and all the congregation of the children of Israel came unto the wilderness of Sin, which is between Elim and Sinai, on the fifteenth day of the second month after their departing out of the land of Egypt."

Exodus 16:5: "And it shall come to pass, that on the sixth day they shall prepare that which they bring in; and it shall be twice as much as they gather daily."

Exodus 16:8: "And Moses said, This shall be, when the LORD shall give you in the evening flesh to eat, and in the morning bread to the full; for that the LORD heareth your murmurings which ye murmur against him: and what are we? your murmurings are not against us, but against the LORD."

Exodus 16:15: "And when the children of Israel saw it, they said one to another, It is manna: for they wist not what it was. And Moses said unto them, This is the bread which the LORD hath given you to eat."

Exodus 16:16: "This is the thing which the LORD hath commanded, Gather of it every man according to his eating, an omer for every man, according to the number of your persons; take ye every man for them which are in his tents."

Exodus 16:23: "And he said unto them, This is that which the LORD hath said, To morrow is the rest of the holy sabbath unto the LORD: bake that which ye will bake to day, and seethe that ye will seethe; and that which remaineth over lay up for you to be kept until the morning."

Exodus 16:26: "Six days ye shall gather it; but on the seventh day, which is the sabbath, in it there shall be none."

Exodus 16:32: "And Moses said, This is the thing which the LORD commandeth, Fill an omer of it to be kept for your generations; that they may see the bread wherewith I have fed you in the wilderness, when I brought you forth from the land of Egypt."

Exodus 18:3: "And her two sons; of which the name of the one was Gershom; for he said, I have been an alien in a strange land:"

Exodus 18:9: "And Jethro rejoiced for all the goodness which the LORD had done to Israel, whom he had delivered out of the hand of the Egyptians."

Exodus 19:6: "And ye shall be unto me a kingdom of priests, and an holy nation. These are the words which thou shalt speak unto the children of Israel."

Exodus 19:7: "And Moses came and called for the elders of the people, and laid before their faces



all these words which the LORD commanded him."

Exodus 19:22: "And let the priests also, which come near to the LORD, sanctify themselves, lest the LORD break forth upon them."

Exodus 20:2: "I am the LORD thy God, which have brought thee out of the land of Egypt, out of the house of bondage."

Exodus 20:12: "Honour thy father and thy mother: that thy days may be long upon the land which the LORD thy God giveth thee."

Exodus 21:1: "Now these are the judgments which thou shalt set before them."

Exodus 22:9: "For all manner of trespass, whether it be for ox, for ass, for sheep, for raiment, or for any manner of lost thing which another challengeth to be his, the cause of both parties shall come before the judges; and whom the judges shall condemn, he shall pay double unto his neighbour."

Exodus 22:13: "If it be torn in pieces, then let him bring it for witness, and he shall not make good that which was torn."

Exodus 23:16: "And the feast of harvest, the firstfruits of thy labours, which thou hast sown in the field: and the feast of ingathering, which is in the end of the year, when thou hast gathered in thy labours out of the field."

Exodus 23:20: "Behold, I send an Angel before thee, to keep thee in the way, and to bring thee into the place which I have prepared."

Exodus 23:28: "And I will send hornets before thee, which shall drive out the Hivite, the Canaanite, and the Hittite, from before thee."

Exodus 24:3: "And Moses came and told the people all the words of the LORD, and all the judgments: and all the people answered with one voice, and said, All the words which the LORD hath said will we do."

Exodus 24:5: "And he sent young men of the children of Israel, which offered burnt offerings, and sacrificed peace offerings of oxen unto the LORD."

Exodus 24:8: "And Moses took the blood, and sprinkled it on the people, and said, Behold the blood of the covenant, which the LORD hath made with you concerning all these words."

Exodus 24:12: "And the LORD said unto Moses, Come up to me into the mount, and be there: and I will give thee tables of stone, and a law, and commandments which I have written; that thou mayest teach them."

Exodus 25:3: "And this is the offering which ye shall take of them; gold, and silver, and brass,"

Exodus 25:16: "And thou shalt put into the ark the testimony which I shall give thee."

Exodus 25:22: "And there I will meet with thee, and I will commune with thee from above the mercy seat, from between the two cherubims which are upon the ark of the testimony, of all things which I will give thee in commandment unto the children of Israel."

Exodus 25:40: "And look that thou make them after their pattern, which was shewed thee in the mount."

Exodus 26:10: "And thou shalt make fifty loops on the edge of the one curtain that is outmost in the coupling, and fifty loops in the edge of the curtain which coupleth the second."

Exodus 26:13: "And a cubit on the one side, and a cubit on the other side of that which remaineth in the length of the curtains of the tent, it shall hang over the sides of the tabernacle on this side and on that side, to cover it."

Exodus 26:30: "And thou shalt rear up the tabernacle according to the fashion thereof which was shewed thee in the mount."

Exodus 27:21: "In the tabernacle of the congregation without the vail, which is before the testimony, Aaron and his sons shall order it from evening to morning before the LORD: it shall be a statute for ever unto their generations on the behalf of the children of Israel."

Exodus 28:4: "And these are the garments which they shall make; a breastplate, and an ephod, and a robe, and a brodered coat, a mitre, and a girdle: and they shall make holy garments for Aaron thy brother, and his sons, that he may minister unto me in the priest's office."

Exodus 28:8: "And the curious girdle of the ephod, which is upon it, shall be of the same, according to the work thereof; even of gold, of blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen."

Exodus 28:24: "And thou shalt put the two wreathen chains of gold in the two rings which are on the ends of the breastplate."

Exodus 28:26: "And thou shalt make two rings of gold, and thou shalt put them upon the two ends of the breastplate in the border thereof, which is in the side of the ephod inward."

Exodus 28:38: "And it shall be upon Aaron's forehead, that Aaron may bear the iniquity of the holy things, which the children of Israel shall hallow in all their holy gifts; and it shall be always upon his forehead, that they may be accepted before the LORD."

Exodus 29:27: "And thou shalt sanctify the breast of the wave offering, and the shoulder of the heave offering, which is waved, and which is heaved up, of the ram of the consecration, even of that which is for Aaron, and of that which is for his sons:"

Exodus 29:35: "And thus shalt thou do unto Aaron, and to his sons, according to all things which I have commanded thee: seven days shalt thou consecrate them."

Exodus 29:38: "Now this is that which thou shalt offer upon the altar; two lambs of the first year day by day continually."

Exodus 30:37: "And as for the perfume which thou shalt make, ye shall not make to yourselves according to the composition thereof: it shall be unto thee holy for the LORD."

Exodus 32:1: "And when the people saw that Moses delayed to come down out of the mount, the people gathered themselves together unto Aaron, and said unto him, Up, make us gods, which shall go before us; for as for this Moses, the man that brought us up out of the land of Egypt, we wot not what is become of him."

Exodus 32:2: "And Aaron said unto them, Break off the golden earrings, which are in the ears of your wives, of your sons, and of your daughters, and bring them unto me."

Exodus 32:3: "And all the people brake off the golden earrings which were in their ears, and brought them unto Aaron."

Exodus 32:4: "And he received them at their hand, and fashioned it with a graving tool, after he had made it a molten calf: and they said, These be thy gods, O Israel, which brought thee up out of the land of Egypt."

Exodus 32:7: "And the LORD said unto Moses, Go, get thee down; for thy people, which thou broughtest out of the land of Egypt, have corrupted themselves:"

Exodus 32:8: "They have turned aside quickly out of the way which I commanded them: they have made them a molten calf, and have worshipped it, and have sacrificed thereunto, and said, These be thy gods, O Israel, which have brought thee up out of the land of Egypt."

Exodus 32:11: "And Moses besought the LORD his God, and said, LORD, why doth thy wrath wax hot against thy people, which thou hast brought forth out of the land of Egypt with great power, and with a mighty hand?"

Exodus 32:14: "And the LORD repented of the evil which he thought to do unto his people."

Exodus 32:20: "And he took the calf which they had made, and burnt it in the fire, and ground it to powder, and strawed it upon the water, and made the children of Israel drink of it."

Exodus 32:23: "For they said unto me, Make us gods, which shall go before us: for as for this Moses, the man that brought us up out of the land of Egypt, we wot not what is become of him."

Exodus 32:32: "Yet now, if thou wilt forgive their sin--; and if not, blot me, I pray thee, out of thy book which thou hast written."

Exodus 32:34: "Therefore now go, lead the people unto the place of which I have spoken unto thee: behold, mine Angel shall go before thee: nevertheless in the day when I visit I will visit their sin upon them."

Exodus 32:35: "And the LORD plagued the people, because they made the calf, which Aaron made."

Exodus 33:1: "And the LORD said unto Moses, Depart, and go up hence, thou and the people

which thou hast brought up out of the land of Egypt, unto the land which I sware unto Abraham, to Isaac, and to Jacob, saying, Unto thy seed will I give it:"

Exodus 33:7: "And Moses took the tabernacle, and pitched it without the camp, afar off from the camp, and called it the Tabernacle of the congregation. And it came to pass, that every one which sought the LORD went out unto the tabernacle of the congregation, which was without the camp."

Exodus 34:1: "And the LORD said unto Moses, Hew thee two tables of stone like unto the first: and I will write upon these tables the words that were in the first tables, which thou brakest."

Exodus 34:10: "And he said, Behold, I make a covenant: before all thy people I will do marvels, such as have not been done in all the earth, nor in any nation: and all the people among which thou art shall see the work of the LORD: for it is a terrible thing that I will do with thee."

Exodus 34:11: "Observe thou that which I command thee this day: behold, I drive out before thee the Amorite, and the Canaanite, and the Hittite, and the Perizzite, and the Hivite, and the Jebusite."

Exodus 34:34: "But when Moses went in before the LORD to speak with him, he took the vail off, until he came out. And he came out, and spake unto the children of Israel that which he was commanded."

Exodus 35:1: "And Moses gathered all the congregation of the children of Israel together, and said unto them, These are the words which the LORD hath commanded, that ye should do them."

Exodus 35:4: "And Moses spake unto all the congregation of the children of Israel, saying, This is the thing which the LORD commanded, saying,"

Exodus 35:25: "And all the women that were wise hearted did spin with their hands, and brought that which they had spun, both of blue, and of purple, and of scarlet, and of fine linen."

Exodus 35:29: "The children of Israel brought a willing offering unto the LORD, every man and woman, whose heart made them willing to bring for all manner of work, which the LORD had commanded to be made by the hand of Moses."

Exodus 36:3: "And they received of Moses all the offering, which the children of Israel had brought for the work of the service of the sanctuary, to make it withal. And they brought yet unto him free offerings every morning."

Exodus 36:4: "And all the wise men, that wrought all the work of the sanctuary, came every man from his work which they made;"

Exodus 36:5: "And they spake unto Moses, saying, The people bring much more than enough for the service of the work, which the LORD commanded to make."

Exodus 36:12: "Fifty loops made he in one curtain, and fifty loops made he in the edge of the curtain which was in the coupling of the second: the loops held one curtain to another."

Exodus 36:17: "And he made fifty loops upon the uttermost edge of the curtain in the coupling, and fifty loops made he upon the edge of the curtain which coupleth the second."

Exodus 36:25: "And for the other side of the tabernacle, which is toward the north corner, he made twenty boards,"

Exodus 37:16: "And he made the vessels which were upon the table, his dishes, and his spoons, and his bowls, and his covers to cover withal, of pure gold."

Exodus 38:8: "And he made the laver of brass, and the foot of it of brass, of the lookingglasses of the women assembling, which assembled at the door of the tabernacle of the congregation."

Exodus 39:19: "And they made two rings of gold, and put them on the two ends of the breastplate, upon the border of it, which was on the side of the ephod inward."

Leviticus 1:8: "And the priests, Aaron's sons, shall lay the parts, the head, and the fat, in order upon the wood that is on the fire which is upon the altar:"

Leviticus 1:12: "And he shall cut it into his pieces, with his head and his fat: and the priest shall lay them in order on the wood that is on the fire which is upon the altar:"

Leviticus 2:10: "And that which is left of the meat offering shall be Aaron's and his sons': it is a thing most holy of the offerings of the LORD made by fire."

Leviticus 2:11: "No meat offering, which ye shall bring unto the LORD, shall be made with leaven:

for ye shall burn no leaven, nor any honey, in any offering of the LORD made by fire."

Leviticus 3:4: "And the two kidneys, and the fat that is on them, which is by the flanks, and the caul above the liver, with the kidneys, it shall he take away."

Leviticus 3:5: "And Aaron's sons shall burn it on the altar upon the burnt sacrifice, which is upon the wood that is on the fire: it is an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD."

Leviticus 3:10: "And the two kidneys, and the fat that is upon them, which is by the flanks, and the caul above the liver, with the kidneys, it shall he take away."

Leviticus 3:15: "And the two kidneys, and the fat that is upon them, which is by the flanks, and the caul above the liver, with the kidneys, it shall he take away."

Leviticus 4:2: "Speak unto the children of Israel, saying, If a soul shall sin through ignorance against any of the commandments of the LORD concerning things which ought not to be done, and shall do against any of them:"

Leviticus 4:3: "If the priest that is anointed do sin according to the sin of the people; then let him bring for his sin, which he hath sinned, a young bullock without blemish unto the LORD for a sin offering."

Leviticus 4:7: "And the priest shall put some of the blood upon the horns of the altar of sweet incense before the LORD, which is in the tabernacle of the congregation; and shall pour all the blood of the bullock at the bottom of the altar of the burnt offering, which is at the door of the tabernacle of the congregation."

Leviticus 4:9: "And the two kidneys, and the fat that is upon them, which is by the flanks, and the caul above the liver, with the kidneys, it shall he take away,"

Leviticus 4:13: "And if the whole congregation of Israel sin through ignorance, and the thing be hid from the eyes of the assembly, and they have done somewhat against any of the commandments of the LORD concerning things which should not be done, and are guilty;"

Leviticus 4:14: "When the sin, which they have sinned against it, is known, then the congregation shall offer a young bullock for the sin, and bring him before the tabernacle of the congregation."

Leviticus 4:18: "And he shall put some of the blood upon the horns of the altar which is before the LORD, that is in the tabernacle of the congregation, and shall pour out all the blood at the bottom of the altar of the burnt offering, which is at the door of the tabernacle of the congregation."

Leviticus 4:22: "When a ruler hath sinned, and done somewhat through ignorance against any of the commandments of the LORD his God concerning things which should not be done, and is guilty;"

Leviticus 4:27: "And if any one of the common people sin through ignorance, while he doeth somewhat against any of the commandments of the LORD concerning things which ought not to be done, and be guilty;"

Leviticus 4:28: "Or if his sin, which he hath sinned, come to his knowledge: then he shall bring his offering, a kid of the goats, a female without blemish, for his sin which he hath sinned."

Leviticus 5:6: "And he shall bring his trespass offering unto the LORD for his sin which he hath sinned, a female from the flock, a lamb or a kid of the goats, for a sin offering; and the priest shall make an atonement for him concerning his sin."

Leviticus 5:7: "And if he be not able to bring a lamb, then he shall bring for his trespass, which he hath committed, two turtledoves, or two young pigeons, unto the LORD; one for a sin offering, and the other for a burnt offering."

Leviticus 5:8: "And he shall bring them unto the priest, who shall offer that which is for the sin offering first, and wring off his head from his neck, but shall not divide it asunder:"

Leviticus 5:10: "And he shall offer the second for a burnt offering, according to the manner: and the priest shall make an atonement for him for his sin which he hath sinned, and it shall be forgiven him."

Leviticus 5:17: "And if a soul sin, and commit any of these things which are forbidden to be done by the commandments of the LORD; though he wist it not, yet is he guilty, and shall bear his iniquity."

Leviticus 6:2: "If a soul sin, and commit a trespass against the LORD, and lie unto his neighbour in that which was delivered him to keep, or in fellowship, or in a thing taken away by violence, or hath deceived his neighbour;"

Leviticus 6:3: "Or have found that which was lost, and lieth concerning it, and sweareth falsely; in any of all these that a man doeth, sinning therein:"

Leviticus 6:4: "Then it shall be, because he hath sinned, and is guilty, that he shall restore that which he took violently away, or the thing which he hath deceitfully gotten, or that which was delivered him to keep, or the lost thing which he found,"

Leviticus 6:5: "Or all that about which he hath sworn falsely; he shall even restore it in the principal, and shall add the fifth part more thereto, and give it unto him to whom it appertaineth, in the day of his trespass offering."

Leviticus 6:10: "And the priest shall put on his linen garment, and his linen breeches shall he put upon his flesh, and take up the ashes which the fire hath consumed with the burnt offering on the altar, and he shall put them beside the altar."

Leviticus 6:15: "And he shall take of it his handful, of the flour of the meat offering, and of the oil thereof, and all the frankincense which is upon the meat offering, and shall burn it upon the altar for a sweet savour, even the memorial of it, unto the LORD."

Leviticus 6:20: "This is the offering of Aaron and of his sons, which they shall offer unto the LORD in the day when he is anointed; the tenth part of an ephah of fine flour for a meat offering perpetual, half of it in the morning, and half thereof at night."

Leviticus 7:4: "And the two kidneys, and the fat that is on them, which is by the flanks, and the caul that is above the liver, with the kidneys, it shall he take away:"

Leviticus 7:8: "And the priest that offereth any man's burnt offering, even the priest shall have to himself the skin of the burnt offering which he hath offered."

Leviticus 7:11: "And this is the law of the sacrifice of peace offerings, which he shall offer unto the LORD."

Leviticus 7:21: "Moreover the soul that shall touch any unclean thing, as the uncleanness of man, or any unclean beast, or any abominable unclean thing, and eat of the flesh of the sacrifice of peace offerings, which pertain unto the LORD, even that soul shall be cut off from his people."

Leviticus 7:24: "And the fat of the beast that dieth of itself, and the fat of that which is torn with beasts, may be used in any other use: but ye shall in no wise eat of it."

Leviticus 7:25: "For whosoever eateth the fat of the beast, of which men offer an offering made by fire unto the LORD, even the soul that eateth it shall be cut off from his people."

Leviticus 7:36: "Which the LORD commanded to be given them of the children of Israel, in the day that he anointed them, by a statute for ever throughout their generations."

Leviticus 7:38: "Which the LORD commanded Moses in mount Sinai, in the day that he commanded the children of Israel to offer their oblations unto the LORD, in the wilderness of Sinai."

Leviticus 8:5: "And Moses said unto the congregation, This is the thing which the LORD commanded to be done."

Leviticus 8:30: "And Moses took of the anointing oil, and of the blood which was upon the altar, and sprinkled it upon Aaron, and upon his garments, and upon his sons, and upon his sons' garments with him; and sanctified Aaron, and his garments, and his sons, and his sons' garments with him."

Leviticus 8:32: "And that which remaineth of the flesh and of the bread shall ye burn with fire."

Leviticus 8:36: "So Aaron and his sons did all things which the LORD commanded by the hand of Moses."

Leviticus 9:5: "And they brought that which Moses commanded before the tabernacle of the congregation: and all the congregation drew near and stood before the LORD."

Leviticus 9:6: "And Moses said, This is the thing which the LORD commanded that ye should do: and the glory of the LORD shall appear unto you."

Leviticus 9:8: "Aaron therefore went unto the altar, and slew the calf of the sin offering, which was for himself."

Leviticus 9:12: "And he slew the burnt offering; and Aaron's sons presented unto him the blood, which he sprinkled round about upon the altar."

Leviticus 9:15: "And he brought the people's offering, and took the goat, which was the sin offering for the people, and slew it, and offered it for sin, as the first."

Leviticus 9:18: "He slew also the bullock and the ram for a sacrifice of peace offerings, which was for the people: and Aaron's sons presented unto him the blood, which he sprinkled upon the altar round about,"

Leviticus 9:19: "And the fat of the bullock and of the ram, the rump, and that which covereth the inwards, and the kidneys, and the caul above the liver:"

Leviticus 9:24: "And there came a fire out from before the LORD, and consumed upon the altar the burnt offering and the fat: which when all the people saw, they shouted, and fell on their faces."

Leviticus 10:1: "And Nadab and Abihu, the sons of Aaron, took either of them his censer, and put fire therein, and put incense thereon, and offered strange fire before the LORD, which he commanded them not."

Leviticus 10:6: "And Moses said unto Aaron, and unto Eleazar and unto Ithamar, his sons, Uncover not your heads, neither rend your clothes; lest ye die, and lest wrath come upon all the people: but let your brethren, the whole house of Israel, bewail the burning which the LORD hath kindled."

Leviticus 10:11: "And that ye may teach the children of Israel all the statutes which the LORD hath spoken unto them by the hand of Moses."

Leviticus 10:14: "And the wave breast and heave shoulder shall ye eat in a clean place; thou, and thy sons, and thy daughters with thee: for they be thy due, and thy sons' due, which are given out of the sacrifices of peace offerings of the children of Israel."

Leviticus 10:16: "And Moses diligently sought the goat of the sin offering, and, behold, it was burnt: and he was angry with Eleazar and Ithamar, the sons of Aaron which were left alive, saying,"

Leviticus 11:2: "Speak unto the children of Israel, saying, These are the beasts which ye shall eat among all the beasts that are on the earth."

Leviticus 11:10: "And all that have not fins and scales in the seas, and in the rivers, of all that move in the waters, and of any living thing which is in the waters, they shall be an abomination unto you:"

Leviticus 11:13: "And these are they which ye shall have in abomination among the fowls; they shall not be eaten, they are an abomination: the eagle, and the ossifrage, and the ospray,"

Leviticus 11:21: "Yet these may ye eat of every flying creeping thing that goeth upon all four, which have legs above their feet, to leap withal upon the earth;"

Leviticus 11:23: "But all other flying creeping things, which have four feet, shall be an abomination unto you."

Leviticus 11:26: "The carcasses of every beast which divideth the hoof, and is not clovenfooted, nor cheweth the cud, are unclean unto you: every one that toucheth them shall be unclean."

Leviticus 11:34: "Of all meat which may be eaten, that on which such water cometh shall be unclean: and all drink that may be drunk in every such vessel shall be unclean."

Leviticus 11:36: "Nevertheless a fountain or pit, wherein there is plenty of water, shall be clean: but that which toucheth their carcase shall be unclean."

Leviticus 11:37: "And if any part of their carcase fall upon any sowing seed which is to be sown, it shall be clean."

Leviticus 11:39: "And if any beast, of which ye may eat, die; he that toucheth the carcase thereof shall be unclean until the even."

Leviticus 13:18: "The flesh also, in which, even in the skin thereof, was a boil, and is healed,"

Leviticus 13:58: "And the garment, either warp, or woof, or whatsoever thing of skin it be, which thou shalt wash, if the plague be departed from them, then it shall be washed the second time, and shall be clean."

Leviticus 14:32: "This is the law of him in whom is the plague of leprosy, whose hand is not able to get that which pertaineth to his cleansing."

Leviticus 14:34: "When ye be come into the land of Canaan, which I give to you for a possession, and I put the plague of leprosy in a house of the land of your possession;"

Leviticus 14:37: "And he shall look on the plague, and, behold, if the plague be in the walls of the house with hollow strakes, greenish or reddish, which in sight are lower than the wall;"

Leviticus 14:40: "Then the priest shall command that they take away the stones in which the plague is, and they shall cast them into an unclean place without the city:"

Leviticus 15:12: "And the vessel of earth, that he toucheth which hath the issue, shall be broken: and every vessel of wood shall be rinsed in water."

Leviticus 16:2: "And the LORD said unto Moses, Speak unto Aaron thy brother, that he come not at all times into the holy place within the vail before the mercy seat, which is upon the ark; that he die not: for I will appear in the cloud upon the mercy seat."

Leviticus 16:6: "And Aaron shall offer his bullock of the sin offering, which is for himself, and make an atonement for himself, and for his house."

Leviticus 16:9: "And Aaron shall bring the goat upon which the LORD's lot fell, and offer him for a sin offering."

Leviticus 16:10: "But the goat, on which the lot fell to be the scapegoat, shall be presented alive before the LORD, to make an atonement with him, and to let him go for a scapegoat into the wilderness."

Leviticus 16:11: "And Aaron shall bring the bullock of the sin offering, which is for himself, and shall make an atonement for himself, and for his house, and shall kill the bullock of the sin offering which is for himself:"

Leviticus 16:23: "And Aaron shall come into the tabernacle of the congregation, and shall put off the linen garments, which he put on when he went into the holy place, and shall leave them there:"

Leviticus 17:2: "Speak unto Aaron, and unto his sons, and unto all the children of Israel, and say unto them; This is the thing which the LORD hath commanded, saying,"

Leviticus 17:5: "To the end that the children of Israel may bring their sacrifices, which they offer in the open field, even that they may bring them unto the LORD, unto the door of the tabernacle of the congregation, unto the priest, and offer them for peace offerings unto the LORD."

Leviticus 17:8: "And thou shalt say unto them, Whatsoever man there be of the house of Israel, or of the strangers which sojourn among you, that offereth a burnt offering or sacrifice,"

Leviticus 17:13: "And whatsoever man there be of the children of Israel, or of the strangers that sojourn among you, which hunteth and catcheth any beast or fowl that may be eaten; he shall even pour out the blood thereof, and cover it with dust."

Leviticus 17:15: "And every soul that eateth that which died of itself, or that which was torn with beasts, whether it be one of your own country, or a stranger, he shall both wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even: then shall he be clean."

Leviticus 18:5: "Ye shall therefore keep my statutes, and my judgments: which if a man do, he shall live in them: I am the LORD."

Leviticus 18:24: "Defile not ye yourselves in any of these things: for in all these the nations are defiled which I cast out before you:"

Leviticus 18:27: "(For all these abominations have the men of the land done, which were before you, and the land is defiled;)"

Leviticus 18:30: "Therefore shall ye keep mine ordinance, that ye commit not any one of these abominable customs, which were committed before you, and that ye defile not yourselves therein: I am the LORD your God."

Leviticus 19:22: "And the priest shall make an atonement for him with the ram of the trespass offering before the LORD for his sin which he hath done: and the sin which he hath done shall be forgiven him."

Leviticus 19:36: "Just balances, just weights, a just ephah, and a just hin, shall ye have: I am the LORD your God, which brought you out of the land of Egypt."

Leviticus 20:8: "And ye shall keep my statutes, and do them: I am the LORD which sanctify you."

Leviticus 20:23: "And ye shall not walk in the manners of the nation, which I cast out before you: for they committed all these things, and therefore I abhorred them."

Leviticus 20:24: "But I have said unto you, Ye shall inherit their land, and I will give it unto you to possess it, a land that floweth with milk and honey: I am the LORD your God, which have separated you from other people."

Leviticus 20:25: "Ye shall therefore put difference between clean beasts and unclean, and between unclean fowls and clean: and ye shall not make your souls abominable by beast, or by fowl, or by any manner of living thing that creepeth on the ground, which I have separated from you as unclean."

Leviticus 21:3: "And for his sister a virgin, that is nigh unto him, which hath had no husband; for her may he be defiled."

Leviticus 21:8: "Thou shalt sanctify him therefore; for he offereth the bread of thy God: he shall be holy unto thee: for I the LORD, which sanctify you, am holy."

Leviticus 22:2: "Speak unto Aaron and to his sons, that they separate themselves from the holy things of the children of Israel, and that they profane not my holy name in those things which they hallow unto me: I am the LORD."

Leviticus 22:3: "Say unto them, Whosoever he be of all your seed among your generations, that goeth unto the holy things, which the children of Israel hallow unto the LORD, having his uncleanness upon him, that soul shall be cut off from my presence: I am the LORD."

Leviticus 22:6: "The soul which hath touched any such shall be unclean until even, and shall not eat of the holy things, unless he wash his flesh with water."

Leviticus 22:8: "That which dieth of itself, or is torn with beasts, he shall not eat to defile himself therewith; I am the LORD."

Leviticus 22:15: "And they shall not profane the holy things of the children of Israel, which they offer unto the LORD;"

Leviticus 22:18: "Speak unto Aaron, and to his sons, and unto all the children of Israel, and say unto them, Whatsoever he be of the house of Israel, or of the strangers in Israel, that will offer his oblation for all his vows, and for all his freewill offerings, which they will offer unto the LORD for a burnt offering;"

Leviticus 22:24: "Ye shall not offer unto the LORD that which is bruised, or crushed, or broken, or cut; neither shall ye make any offering thereof in your land."

Leviticus 22:32: "Neither shall ye profane my holy name; but I will be hallowed among the children of Israel: I am the LORD which hallow you,"

Leviticus 23:2: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, Concerning the feasts of the LORD, which ye shall proclaim to be holy convocations, even these are my feasts."

Leviticus 23:4: "These are the feasts of the LORD, even holy convocations, which ye shall proclaim in their seasons."

Leviticus 23:10: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When ye be come into the land which I give unto you, and shall reap the harvest thereof, then ye shall bring a sheaf of the firstfruits of your harvest unto the priest:"

Leviticus 23:37: "These are the feasts of the LORD, which ye shall proclaim to be holy convocations, to offer an offering made by fire unto the LORD, a burnt offering, and a meat offering, a sacrifice, and drink offerings, every thing upon his day:"

Leviticus 23:38: "Beside the sabbaths of the LORD, and beside your gifts, and beside all your vows, and beside all your freewill offerings, which ye give unto the LORD."

Leviticus 25:2: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When ye come into the land which I give you, then shall the land keep a sabbath unto the LORD."



Leviticus 25:5: "That which groweth of its own accord of thy harvest thou shalt not reap, neither gather the grapes of thy vine undressed: for it is a year of rest unto the land."

Leviticus 25:11: "A jubile shall that fiftieth year be unto you: ye shall not sow, neither reap that which groweth of itself in it, nor gather the grapes in it of thy vine undressed."

Leviticus 25:25: "If thy brother be waxen poor, and hath sold away some of his possession, and if any of his kin come to redeem it, then shall he redeem that which his brother sold."

Leviticus 25:28: "But if he be not able to restore it to him, then that which is sold shall remain in the hand of him that hath bought it until the year of jubile: and in the jubile it shall go out, and he shall return unto his possession."

Leviticus 25:31: "But the houses of the villages which have no wall round about them shall be counted as the fields of the country: they may be redeemed, and they shall go out in the jubile."

Leviticus 25:38: "I am the LORD your God, which brought you forth out of the land of Egypt, to give you the land of Canaan, and to be your God."

Leviticus 25:42: "For they are my servants, which I brought forth out of the land of Egypt: they shall not be sold as bondmen."

Leviticus 25:44: "Both thy bondmen, and thy bondmaids, which thou shalt have, shall be of the heathen that are round about you; of them shall ye buy bondmen and bondmaids."

Leviticus 25:45: "Moreover of the children of the strangers that do sojourn among you, of them shall ye buy, and of their families that are with you, which they begat in your land: and they shall be your possession."

Leviticus 26:13: "I am the LORD your God, which brought you forth out of the land of Egypt, that ye should not be their bondmen; and I have broken the bands of your yoke, and made you go upright."

Leviticus 26:22: "I will also send wild beasts among you, which shall rob you of your children, and destroy your cattle, and make you few in number; and your high ways shall be desolate."

Leviticus 26:32: "And I will bring the land into desolation: and your enemies which dwell therein shall be astonished at it."

Leviticus 26:40: "If they shall confess their iniquity, and the iniquity of their fathers, with their trespass which they trespassed against me, and that also they have walked contrary unto me;"

Leviticus 26:46: "These are the statutes and judgments and laws, which the LORD made between him and the children of Israel in mount Sinai by the hand of Moses."

Leviticus 27:11: "And if it be any unclean beast, of which they do not offer a sacrifice unto the LORD, then he shall present the beast before the priest:"

Leviticus 27:22: "And if a man sanctify unto the LORD a field which he hath bought, which is not of the fields of his possession;"

Leviticus 27:26: "Only the firstling of the beasts, which should be the LORD's firstling, no man shall sanctify it; whether it be ox, or sheep: it is the LORD's."

Leviticus 27:29: "None devoted, which shall be devoted of men, shall be redeemed; but shall surely be put to death."

Leviticus 27:34: "These are the commandments, which the LORD commanded Moses for the children of Israel in mount Sinai."

Numbers 1:17: "And Moses and Aaron took these men which are expressed by their names:"

Numbers 1:44: "These are those that were numbered, which Moses and Aaron numbered, and the princes of Israel, being twelve men: each one was for the house of his fathers."

Numbers 2:12: "And those which pitch by him shall be the tribe of Simeon: and the captain of the children of Simeon shall be Shelumiel the son of Zurishaddai."

Numbers 2:32: "These are those which were numbered of the children of Israel by the house of their fathers: all those that were numbered of the camps throughout their hosts were six hundred thousand and three thousand and five hundred and fifty."

Numbers 3:3: "These are the names of the sons of Aaron, the priests which were anointed, whom he

consecrated to minister in the priest's office."

Numbers 3:26: "And the hangings of the court, and the curtain for the door of the court, which is by the tabernacle, and by the altar round about, and the cords of it for all the service thereof."

Numbers 3:39: "All that were numbered of the Levites, which Moses and Aaron numbered at the commandment of the LORD, throughout their families, all the males from a month old and upward, were twenty and two thousand."

Numbers 3:46: "And for those that are to be redeemed of the two hundred and threescore and thirteen of the firstborn of the children of Israel, which are more than the Levites;"

Numbers 4:26: "And the hangings of the court, and the hanging for the door of the gate of the court, which is by the tabernacle and by the altar round about, and their cords, and all the instruments of their service, and all that is made for them: so shall they serve."

Numbers 4:37: "These were they that were numbered of the families of the Kohathites, all that might do service in the tabernacle of the congregation, which Moses and Aaron did number according to the commandment of the LORD by the hand of Moses."

Numbers 5:7: "Then they shall confess their sin which they have done: and he shall recompense his trespass with the principal thereof, and add unto it the fifth part thereof, and give it unto him against whom he hath trespassed."

Numbers 5:9: "And every offering of all the holy things of the children of Israel, which they bring unto the priest, shall be his."

Numbers 5:18: "And the priest shall set the woman before the LORD, and uncover the woman's head, and put the offering of memorial in her hands, which is the jealousy offering: and the priest shall have in his hand the bitter water that causeth the curse:"

Numbers 6:5: "All the days of the vow of his separation there shall no razor come upon his head: until the days be fulfilled, in the which he separateth himself unto the LORD, he shall be holy, and shall let the locks of the hair of his head grow."

Numbers 6:18: "And the Nazarite shall shave the head of his separation at the door of the tabernacle of the congregation, and shall take the hair of the head of his separation, and put it in the fire which is under the sacrifice of the peace offerings."

Numbers 6:21: "This is the law of the Nazarite who hath vowed, and of his offering unto the LORD for his separation, beside that that his hand shall get: according to the vow which he vowed, so he must do after the law of his separation."

Numbers 8:4: "And this work of the candlestick was of beaten gold, unto the shaft thereof, unto the flowers thereof, was beaten work: according unto the pattern which the LORD had shewed Moses, so he made the candlestick."

Numbers 10:4: "And if they blow but with one trumpet, then the princes, which are heads of the thousands of Israel, shall gather themselves unto thee."

Numbers 10:25: "And the standard of the camp of the children of Dan set forward, which was the rereward of all the camps throughout their hosts: and over his host was Ahiezer the son of Ammishaddai."

Numbers 10:29: "And Moses said unto Hobab, the son of Raguel the Midianite, Moses' father in law, We are journeying unto the place of which the LORD said, I will give it you: come thou with us, and we will do thee good: for the LORD hath spoken good concerning Israel."

Numbers 11:5: "We remember the fish, which we did eat in Egypt freely; the cucumbers, and the melons, and the leeks, and the onions, and the garlick:"

Numbers 11:12: "Have I conceived all this people? have I begotten them, that thou shouldest say unto me, Carry them in thy bosom, as a nursing father beareth the sucking child, unto the land which thou swarest unto their fathers?"

Numbers 11:17: "And I will come down and talk with thee there: and I will take of the spirit which is upon thee, and will put it upon them; and they shall bear the burden of the people with thee, that thou bear it not thyself alone."

Numbers 11:20: "But even a whole month, until it come out at your nostrils, and it be loathsome unto you: because that ye have despised the LORD which is among you, and have wept before him, saying, Why came we forth out of Egypt?"

Numbers 12:3: "(Now the man Moses was very meek, above all the men which were upon the face of the earth.)"

Numbers 13:2: "Send thou men, that they may search the land of Canaan, which I give unto the children of Israel: of every tribe of their fathers shall ye send a man, every one a ruler among them."

Numbers 13:16: "These are the names of the men which Moses sent to spy out the land. And Moses called Oshea the son of Nun Jehoshua."

Numbers 13:24: "The place was called the brook Eshcol, because of the cluster of grapes which the children of Israel cut down from thence."

Numbers 13:32: "And they brought up an evil report of the land which they had searched unto the children of Israel, saying, The land, through which we have gone to search it, is a land that eateth up the inhabitants thereof; and all the people that we saw in it are men of a great stature."

Numbers 13:33: "And there we saw the giants, the sons of Anak, which come of the giants: and we were in our own sight as grasshoppers, and so we were in their sight."

Numbers 14:6: "And Joshua the son of Nun, and Caleb the son of Jephunneh, which were of them that searched the land, rent their clothes:"

Numbers 14:7: "And they spake unto all the company of the children of Israel, saying, The land, which we passed through to search it, is an exceeding good land."

Numbers 14:8: "If the LORD delight in us, then he will bring us into this land, and give it us; a land which floweth with milk and honey."

Numbers 14:11: "And the LORD said unto Moses, How long will this people provoke me? and how long will it be ere they believe me, for all the signs which I have shewed among them?"

Numbers 14:15: "Now if thou shalt kill all this people as one man, then the nations which have heard the fame of thee will speak, saying,"

Numbers 14:16: "Because the LORD was not able to bring this people into the land which he swore unto them, therefore he hath slain them in the wilderness."

Numbers 14:22: "Because all those men which have seen my glory, and my miracles, which I did in Egypt and in the wilderness, and have tempted me now these ten times, and have not hearkened to my voice;"

Numbers 14:23: "Surely they shall not see the land which I swore unto their fathers, neither shall any of them that provoked me see it:"

Numbers 14:27: "How long shall I bear with this evil congregation, which murmur against me? I have heard the murmurings of the children of Israel, which they murmur against me."

Numbers 14:29: "Your carcasses shall fall in this wilderness; and all that were numbered of you, according to your whole number, from twenty years old and upward which have murmured against me."

Numbers 14:30: "Doubtless ye shall not come into the land, concerning which I swore to make you dwell therein, save Caleb the son of Jephunneh, and Joshua the son of Nun."

Numbers 14:31: "But your little ones, which ye said should be a prey, them will I bring in, and they shall know the land which ye have despised."

Numbers 14:34: "After the number of the days in which ye searched the land, even forty days, each day for a year, shall ye bear your iniquities, even forty years, and ye shall know my breach of promise."

Numbers 14:36: "And the men, which Moses sent to search the land, who returned, and made all the congregation to murmur against him, by bringing up a slander upon the land,"

Numbers 14:38: "But Joshua the son of Nun, and Caleb the son of Jephunneh, which were of the men that went to search the land, lived still."

Numbers 14:40: "And they rose up early in the morning, and gat them up into the top of the

mountain, saying, Lo, we be here, and will go up unto the place which the LORD hath promised: for we have sinned."

Numbers 14:45: "Then the Amalekites came down, and the Canaanites which dwelt in that hill, and smote them, and discomfited them, even unto Hormah."

Numbers 15:2: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When ye be come into the land of your habitations, which I give unto you,"

Numbers 15:22: "And if ye have erred, and not observed all these commandments, which the LORD hath spoken unto Moses,"

Numbers 15:39: "And it shall be unto you for a fringe, that ye may look upon it, and remember all the commandments of the LORD, and do them; and that ye seek not after your own heart and your own eyes, after which ye use to go a whoring:"

Numbers 15:41: "I am the LORD your God, which brought you out of the land of Egypt, to be your God: I am the LORD your God."

Numbers 16:11: "For which cause both thou and all thy company are gathered together against the LORD: and what is Aaron, that ye murmur against him?"

Numbers 16:12: "And Moses sent to call Dathan and Abiram, the sons of Eliab: which said, We will not come up:"

Numbers 16:40: "To be a memorial unto the children of Israel, that no stranger, which is not of the seed of Aaron, come near to offer incense before the LORD; that he be not as Korah, and as his company: as the LORD said to him by the hand of Moses."

Numbers 18:9: "This shall be thine of the most holy things, reserved from the fire: every oblation of theirs, every meat offering of theirs, and every sin offering of theirs, and every trespass offering of theirs which they shall render unto me, shall be most holy for thee and for thy sons."

Numbers 18:12: "All the best of the oil, and all the best of the wine, and of the wheat, the firstfruits of them which they shall offer unto the LORD, them have I given thee."

Numbers 18:13: "And whatsoever is first ripe in the land, which they shall bring unto the LORD, shall be thine; every one that is clean in thine house shall eat of it."

Numbers 18:15: "Every thing that openeth the matrix in all flesh, which they bring unto the LORD, whether it be of men or beasts, shall be thine: nevertheless the firstborn of man shalt thou surely redeem, and the firstling of unclean beasts shalt thou redeem."

Numbers 18:16: "And those that are to be redeemed from a month old shalt thou redeem, according to thine estimation, for the money of five shekels, after the shekel of the sanctuary, which is twenty gerahs."

Numbers 18:19: "All the heave offerings of the holy things, which the children of Israel offer unto the LORD, have I given thee, and thy sons and thy daughters with thee, by a statute for ever: it is a covenant of salt for ever before the LORD unto thee and to thy seed with thee."

Numbers 18:21: "And, behold, I have given the children of Levi all the tenth in Israel for an inheritance, for their service which they serve, even the service of the tabernacle of the congregation."

Numbers 18:24: "But the tithes of the children of Israel, which they offer as an heave offering unto the LORD, I have given to the Levites to inherit: therefore I have said unto them, Among the children of Israel they shall have no inheritance."

Numbers 18:26: "Thus speak unto the Levites, and say unto them, When ye take of the children of Israel the tithes which I have given you from them for your inheritance, then ye shall offer up an heave offering of it for the LORD, even a tenth part of the tithe."

Numbers 18:28: "Thus ye also shall offer an heave offering unto the LORD of all your tithes, which ye receive of the children of Israel; and ye shall give thereof the LORD's heave offering to Aaron the priest."

Numbers 19:2: "This is the ordinance of the law which the LORD hath commanded, saying, Speak unto the children of Israel, that they bring thee a red heifer without spot, wherein is no blemish, and

upon which never came yoke:"

Numbers 19:15: "And every open vessel, which hath no covering bound upon it, is unclean."

Numbers 20:12: "And the LORD spake unto Moses and Aaron, Because ye believed me not, to sanctify me in the eyes of the children of Israel, therefore ye shall not bring this congregation into the land which I have given them."

Numbers 20:24: "Aaron shall be gathered unto his people: for he shall not enter into the land which I have given unto the children of Israel, because ye rebelled against my word at the water of Meribah."

Numbers 21:1: "And when king Arad the Canaanite, which dwelt in the south, heard tell that Israel came by the way of the spies; then he fought against Israel, and took some of them prisoners."

Numbers 21:11: "And they journeyed from Oboth, and pitched at Ijeabarim, in the wilderness which is before Moab, toward the sunrising."

Numbers 21:13: "From thence they removed, and pitched on the other side of Arnon, which is in the wilderness that cometh out of the coasts of the Amorites: for Arnon is the border of Moab, between Moab and the Amorites."

Numbers 21:20: "And from Bamoth in the valley, that is in the country of Moab, to the top of Pisgah, which looketh toward Jeshimon."

Numbers 21:30: "We have shot at them; Heshbon is perished even unto Dibon, and we have laid them waste even unto Nophah, which reacheth unto Medeba."

Numbers 21:34: "And the LORD said unto Moses, Fear him not: for I have delivered him into thy hand, and all his people, and his land; and thou shalt do to him as thou didst unto Sihon king of the Amorites, which dwelt at Heshbon."

Numbers 22:5: "He sent messengers therefore unto Balaam the son of Beor to Pethor, which is by the river of the land of the children of his people, to call him, saying, Behold, there is a people come out from Egypt: behold, they cover the face of the earth, and they abide over against me:"

Numbers 22:11: "Behold, there is a people come out of Egypt, which covereth the face of the earth: come now, curse me them; peradventure I shall be able to overcome them, and drive them out."

Numbers 22:20: "And God came unto Balaam at night, and said unto him, If the men come to call thee, rise up, and go with them; but yet the word which I shall say unto thee, that shalt thou do."

Numbers 22:30: "And the ass said unto Balaam, Am not I thine ass, upon which thou hast ridden ever since I was thine unto this day? was I ever wont to do so unto thee? And he said, Nay."

Numbers 22:36: "And when Balak heard that Balaam was come, he went out to meet him unto a city of Moab, which is in the border of Arnon, which is in the utmost coast."

Numbers 23:12: "And he answered and said, Must I not take heed to speak that which the LORD hath put in my mouth?"

Numbers 24:4: "He hath said, which heard the words of God, which saw the vision of the Almighty, falling into a trance, but having his eyes open:"

Numbers 24:6: "As the valleys are they spread forth, as gardens by the river's side, as the trees of lign aloes which the LORD hath planted, and as cedar trees beside the waters."

Numbers 24:12: "And Balaam said unto Balak, Spake I not also to thy messengers which thou sentest unto me, saying,"

Numbers 24:16: "He hath said, which heard the words of God, and knew the knowledge of the most High, which saw the vision of the Almighty, falling into a trance, but having his eyes open:"

Numbers 25:18: "For they vex you with their wiles, wherewith they have beguiled you in the matter of Peor, and in the matter of Cozbi, the daughter of a prince of Midian, their sister, which was slain in the day of the plague for Peor's sake."

Numbers 26:4: "Take the sum of the people, from twenty years old and upward; as the LORD commanded Moses and the children of Israel, which went forth out of the land of Egypt."

Numbers 26:9: "And the sons of Eliab; Nemuel, and Dathan, and Abiram. This is that Dathan and Abiram, which were famous in the congregation, who strove against Moses and against Aaron in

the company of Korah, when they strove against the LORD:"

Numbers 27:12: "And the LORD said unto Moses, Get thee up into this mount Abarim, and see the land which I have given unto the children of Israel."

Numbers 27:17: "Which may go out before them, and which may go in before them, and which may lead them out, and which may bring them in; that the congregation of the LORD be not as sheep which have no shepherd."

Numbers 28:3: "And thou shalt say unto them, This is the offering made by fire which ye shall offer unto the LORD; two lambs of the first year without spot day by day, for a continual burnt offering."

Numbers 28:6: "It is a continual burnt offering, which was ordained in mount Sinai for a sweet savour, a sacrifice made by fire unto the LORD."

Numbers 28:23: "Ye shall offer these beside the burnt offering in the morning, which is for a continual burnt offering."

Numbers 30:1: "And Moses spake unto the heads of the tribes concerning the children of Israel, saying, This is the thing which the LORD hath commanded."

Numbers 30:8: "But if her husband disallowed her on the day that he heard it; then he shall make her vow which she vowed, and that which she uttered with her lips, wherewith she bound her soul, of none effect: and the LORD shall forgive her."

Numbers 30:14: "But if her husband altogether hold his peace at her from day to day; then he establisheth all her vows, or all her bonds, which are upon her: he confirmeth them, because he held his peace at her in the day that he heard them."

Numbers 30:16: "These are the statutes, which the LORD commanded Moses, between a man and his wife, between the father and his daughter, being yet in her youth in her father's house."

Numbers 31:12: "And they brought the captives, and the prey, and the spoil, unto Moses, and Eleazar the priest, and unto the congregation of the children of Israel, unto the camp at the plains of Moab, which are by Jordan near Jericho."

Numbers 31:14: "And Moses was wroth with the officers of the host, with the captains over thousands, and captains over hundreds, which came from the battle."

Numbers 31:21: "And Eleazar the priest said unto the men of war which went to the battle, This is the ordinance of the law which the LORD commanded Moses;"

Numbers 31:28: "And levy a tribute unto the Lord of the men of war which went out to battle: one soul of five hundred, both of the persons, and of the beeves, and of the asses, and of the sheep:"

Numbers 31:30: "And of the children of Israel's half, thou shalt take one portion of fifty, of the persons, of the beeves, of the asses, and of the flocks, of all manner of beasts, and give them unto the Levites, which keep the charge of the tabernacle of the LORD."

Numbers 31:32: "And the booty, being the rest of the prey which the men of war had caught, was six hundred thousand and seventy thousand and five thousand sheep,"

Numbers 31:36: "And the half, which was the portion of them that went out to war, was in number three hundred thousand and seven and thirty thousand and five hundred sheep:"

Numbers 31:38: "And the beeves were thirty and six thousand; of which the LORD's tribute was threescore and twelve."

Numbers 31:39: "And the asses were thirty thousand and five hundred; of which the LORD's tribute was threescore and one."

Numbers 31:40: "And the persons were sixteen thousand; of which the LORD's tribute was thirty and two persons."

Numbers 31:41: "And Moses gave the tribute, which was the LORD's heave offering, unto Eleazar the priest, as the LORD commanded Moses."

Numbers 31:42: "And of the children of Israel's half, which Moses divided from the men that warred,"

Numbers 31:47: "Even of the children of Israel's half, Moses took one portion of fifty, both of man and of beast, and gave them unto the Levites, which kept the charge of the tabernacle of the LORD;

as the LORD commanded Moses."

Numbers 31:48: "And the officers which were over thousands of the host, the captains of thousands, and captains of hundreds, came near unto Moses:"

Numbers 31:49: "And they said unto Moses, Thy servants have taken the sum of the men of war which are under our charge, and there lacketh not one man of us."

Numbers 32:4: "Even the country which the LORD smote before the congregation of Israel, is a land for cattle, and thy servants have cattle:"

Numbers 32:7: "And wherefore discourage ye the heart of the children of Israel from going over into the land which the LORD hath given them?"

Numbers 32:9: "For when they went up unto the valley of Eshcol, and saw the land, they discouraged the heart of the children of Israel, that they should not go into the land which the LORD had given them."

Numbers 32:11: "Surely none of the men that came up out of Egypt, from twenty years old and upward, shall see the land which I sware unto Abraham, unto Isaac, and unto Jacob; because they have not wholly followed me:"

Numbers 32:24: "Build you cities for your little ones, and folds for your sheep; and do that which hath proceeded out of your mouth."

Numbers 32:38: "And Nebo, and Baalmeon, (their names being changed,) and Shibmah: and gave other names unto the cities which they builded."

Numbers 32:39: "And the children of Machir the son of Manasseh went to Gilead, and took it, and dispossessed the Amorite which was in it."

Numbers 33:1: "These are the journeys of the children of Israel, which went forth out of the land of Egypt with their armies under the hand of Moses and Aaron."

Numbers 33:4: "For the Egyptians buried all their firstborn, which the LORD had smitten among them: upon their gods also the LORD executed judgments."

Numbers 33:6: "And they departed from Succoth, and pitched in Etham, which is in the edge of the wilderness."

Numbers 33:7: "And they removed from Etham, and turned again unto Pihahiroth, which is before Baalzephon: and they pitched before Migdol."

Numbers 33:36: "And they removed from Eziongaber, and pitched in the wilderness of Zin, which is Kadesh."

Numbers 33:40: "And king Arad the Canaanite, which dwelt in the south in the land of Canaan, heard of the coming of the children of Israel."

Numbers 33:55: "But if ye will not drive out the inhabitants of the land from before you; then it shall come to pass, that those which ye let remain of them shall be pricks in your eyes, and thorns in your sides, and shall vex you in the land wherein ye dwell."

Numbers 34:13: "And Moses commanded the children of Israel, saying, This is the land which ye shall inherit by lot, which the LORD commanded to give unto the nine tribes, and to the half tribe:"

Numbers 34:17: "These are the names of the men which shall divide the land unto you: Eleazar the priest, and Joshua the son of Nun."

Numbers 35:4: "And the suburbs of the cities, which ye shall give unto the Levites, shall reach from the wall of the city and outward a thousand cubits round about."

Numbers 35:6: "And among the cities which ye shall give unto the Levites there shall be six cities for refuge, which ye shall appoint for the manslayer, that he may flee thither: and to them ye shall add forty and two cities."

Numbers 35:7: "So all the cities which ye shall give to the Levites shall be forty and eight cities: them shall ye give with their suburbs."

Numbers 35:8: "And the cities which ye shall give shall be of the possession of the children of Israel: from them that have many ye shall give many; but from them that have few ye shall give few: every one shall give of his cities unto the Levites according to his inheritance which he

inheriteth."

Numbers 35:11: "Then ye shall appoint you cities to be cities of refuge for you; that the slayer may flee thither, which killeth any person at unawares."

Numbers 35:13: "And of these cities which ye shall give six cities shall ye have for refuge."

Numbers 35:14: "Ye shall give three cities on this side Jordan, and three cities shall ye give in the land of Canaan, which shall be cities of refuge."

Numbers 35:25: "And the congregation shall deliver the slayer out of the hand of the revenger of blood, and the congregation shall restore him to the city of his refuge, whither he was fled: and he shall abide in it unto the death of the high priest, which was anointed with the holy oil."

Numbers 35:31: "Moreover ye shall take no satisfaction for the life of a murderer, which is guilty of death: but he shall be surely put to death."

Numbers 35:34: "Defile not therefore the land which ye shall inhabit, wherein I dwell: for I the LORD dwell among the children of Israel."

Numbers 36:6: "This is the thing which the LORD doth command concerning the daughters of Zelophehad, saying, Let them marry to whom they think best; only to the family of the tribe of their father shall they marry."

Numbers 36:13: "These are the commandments and the judgments, which the LORD commanded by the hand of Moses unto the children of Israel in the plains of Moab by Jordan near Jericho."

Deuteronomy 1:1: "These be the words which Moses spake unto all Israel on this side Jordan in the wilderness, in the plain over against the Red sea, between Paran, and Tophel, and Laban, and Hazeroth, and Dizahab."

Deuteronomy 1:4: "After he had slain Sihon the king of the Amorites, which dwelt in Heshbon, and Og the king of Bashan, which dwelt at Astaroth in Edrei:"

Deuteronomy 1:8: "Behold, I have set the land before you: go in and possess the land which the LORD sware unto your fathers, Abraham, Isaac, and Jacob, to give unto them and to their seed after them."

Deuteronomy 1:14: "And ye answered me, and said, The thing which thou hast spoken is good for us to do."

Deuteronomy 1:18: "And I commanded you at that time all the things which ye should do."

Deuteronomy 1:19: "And when we departed from Horeb, we went through all that great and terrible wilderness, which ye saw by the way of the mountain of the Amorites, as the LORD our God commanded us; and we came to Kadeshbarnea."

Deuteronomy 1:20: "And I said unto you, Ye are come unto the mountain of the Amorites, which the LORD our God doth give unto us."

Deuteronomy 1:25: "And they took of the fruit of the land in their hands, and brought it down unto us, and brought us word again, and said, It is a good land which the LORD our God doth give us."

Deuteronomy 1:30: "The LORD your God which goeth before you, he shall fight for you, according to all that he did for you in Egypt before your eyes;"

Deuteronomy 1:35: "Surely there shall not one of these men of this evil generation see that good land, which I sware to give unto your fathers."

Deuteronomy 1:38: "But Joshua the son of Nun, which standeth before thee, he shall go in thither: encourage him: for he shall cause Israel to inherit it."

Deuteronomy 1:39: "Moreover your little ones, which ye said should be a prey, and your children, which in that day had no knowledge between good and evil, they shall go in thither, and unto them will I give it, and they shall possess it."

Deuteronomy 1:44: "And the Amorites, which dwelt in that mountain, came out against you, and chased you, as bees do, and destroyed you in Seir, even unto Hormah."

Deuteronomy 2:4: "And command thou the people, saying, Ye are to pass through the coast of your brethren the children of Esau, which dwell in Seir; and they shall be afraid of you: take ye good heed unto yourselves therefore:"



Deuteronomy 2:8: "And when we passed by from our brethren the children of Esau, which dwelt in Seir, through the way of the plain from Elath, and from Eziongaber, we turned and passed by the way of the wilderness of Moab."

Deuteronomy 2:11: "Which also were accounted giants, as the Anakims; but the Moabites called them Emims."

Deuteronomy 2:12: "The Horims also dwelt in Seir beforetime; but the children of Esau succeeded them, when they had destroyed them from before them, and dwelt in their stead; as Israel did unto the land of his possession, which the LORD gave unto them."

Deuteronomy 2:14: "And the space in which we came from Kadeshbarnea, until we were come over the brook Zered, was thirty and eight years; until all the generation of the men of war were wasted out from among the host, as the LORD sware unto them."

Deuteronomy 2:22: "As he did to the children of Esau, which dwelt in Seir, when he destroyed the Horims from before them; and they succeeded them, and dwelt in their stead even unto this day:"

Deuteronomy 2:23: "And the Avims which dwelt in Hazerim, even unto Azzah, the Caphtorims, which came forth out of Caphtor, destroyed them, and dwelt in their stead.)"

Deuteronomy 2:29: "(As the children of Esau which dwell in Seir, and the Moabites which dwell in Ar, did unto me;) until I shall pass over Jordan into the land which the LORD our God giveth us."

Deuteronomy 2:35: "Only the cattle we took for a prey unto ourselves, and the spoil of the cities which we took."

Deuteronomy 2:36: "From Aroer, which is by the brink of the river of Arnon, and from the city that is by the river, even unto Gilead, there was not one city too strong for us: the LORD our God delivered all unto us:"

Deuteronomy 3:2: "And the LORD said unto me, Fear him not: for I will deliver him, and all his people, and his land, into thy hand; and thou shalt do unto him as thou didst unto Sihon king of the Amorites, which dwelt at Heshbon."

Deuteronomy 3:4: "And we took all his cities at that time, there was not a city which we took not from them, threescore cities, all the region of Argob, the kingdom of Og in Bashan."

Deuteronomy 3:9: "(Which Hermon the Sidonians call Sirion; and the Amorites call it Shenir;)"

Deuteronomy 3:12: "And this land, which we possessed at that time, from Aroer, which is by the river Arnon, and half mount Gilead, and the cities thereof, gave I unto the Reubenites and to the Gadites."

Deuteronomy 3:13: "And the rest of Gilead, and all Bashan, being the kingdom of Og, gave I unto the half tribe of Manasseh; all the region of Argob, with all Bashan, which was called the land of giants."

Deuteronomy 3:16: "And unto the Reubenites and unto the Gadites I gave from Gilead even unto the river Arnon half the valley, and the border even unto the river Jabbok, which is the border of the children of Ammon;"

Deuteronomy 3:19: "But your wives, and your little ones, and your cattle, (for I know that ye have much cattle,) shall abide in your cities which I have given you;"

Deuteronomy 3:20: "Until the LORD have given rest unto your brethren, as well as unto you, and until they also possess the land which the LORD your God hath given them beyond Jordan: and then shall ye return every man unto his possession, which I have given you."

Deuteronomy 3:28: "But charge Joshua, and encourage him, and strengthen him: for he shall go over before this people, and he shall cause them to inherit the land which thou shalt see."

Deuteronomy 4:1: "Now therefore hearken, O Israel, unto the statutes and unto the judgments, which I teach you, for to do them, that ye may live, and go in and possess the land which the LORD God of your fathers giveth you."

Deuteronomy 4:2: "Ye shall not add unto the word which I command you, neither shall ye diminish ought from it, that ye may keep the commandments of the LORD your God which I command you."

Deuteronomy 4:6: "Keep therefore and do them; for this is your wisdom and your understanding in

the sight of the nations, which shall hear all these statutes, and say, Surely this great nation is a wise and understanding people."

Deuteronomy 4:8: "And what nation is there so great, that hath statutes and judgments so righteous as all this law, which I set before you this day?"

Deuteronomy 4:9: "Only take heed to thyself, and keep thy soul diligently, lest thou forget the things which thine eyes have seen, and lest they depart from thy heart all the days of thy life: but teach them thy sons, and thy sons' sons;"

Deuteronomy 4:13: "And he declared unto you his covenant, which he commanded you to perform, even ten commandments; and he wrote them upon two tables of stone."

Deuteronomy 4:19: "And lest thou lift up thine eyes unto heaven, and when thou seest the sun, and the moon, and the stars, even all the host of heaven, shouldest be driven to worship them, and serve them, which the LORD thy God hath divided unto all nations under the whole heaven."

Deuteronomy 4:21: "Furthermore the LORD was angry with me for your sakes, and swore that I should not go over Jordan, and that I should not go in unto that good land, which the LORD thy God giveth thee for an inheritance:"

Deuteronomy 4:23: "Take heed unto yourselves, lest ye forget the covenant of the LORD your God, which he made with you, and make you a graven image, or the likeness of any thing, which the LORD thy God hath forbidden thee."

Deuteronomy 4:28: "And there ye shall serve gods, the work of men's hands, wood and stone, which neither see, nor hear, nor eat, nor smell."

Deuteronomy 4:31: "(For the LORD thy God is a merciful God;) he will not forsake thee, neither destroy thee, nor forget the covenant of thy fathers which he swore unto them."

Deuteronomy 4:32: "For ask now of the days that are past, which were before thee, since the day that God created man upon the earth, and ask from the one side of heaven unto the other, whether there hath been any such thing as this great thing is, or hath been heard like it?"

Deuteronomy 4:40: "Thou shalt keep therefore his statutes, and his commandments, which I command thee this day, that it may go well with thee, and with thy children after thee, and that thou mayest prolong thy days upon the earth, which the LORD thy God giveth thee, for ever."

Deuteronomy 4:42: "That the slayer might flee thither, which should kill his neighbour unawares, and hated him not in times past; and that fleeing unto one of these cities he might live:"

Deuteronomy 4:44: "And this is the law which Moses set before the children of Israel:"

Deuteronomy 4:45: "These are the testimonies, and the statutes, and the judgments, which Moses spake unto the children of Israel, after they came forth out of Egypt."

Deuteronomy 4:47: "And they possessed his land, and the land of Og king of Bashan, two kings of the Amorites, which were on this side Jordan toward the sunrising;"

Deuteronomy 4:48: "From Aroer, which is by the bank of the river Arnon, even unto mount Sion, which is Hermon,"

Deuteronomy 5:1: "And Moses called all Israel, and said unto them, Hear, O Israel, the statutes and judgments which I speak in your ears this day, that ye may learn them, and keep, and do them."

Deuteronomy 5:6: "I am the LORD thy God, which brought thee out of the land of Egypt, from the house of bondage."

Deuteronomy 5:16: "Honour thy father and thy mother, as the LORD thy God hath commanded thee; that thy days may be prolonged, and that it may go well with thee, in the land which the LORD thy God giveth thee."

Deuteronomy 5:28: "And the LORD heard the voice of your words, when ye spake unto me; and the LORD said unto me, I have heard the voice of the words of this people, which they have spoken unto thee: they have well said all that they have spoken."

Deuteronomy 5:31: "But as for thee, stand thou here by me, and I will speak unto thee all the commandments, and the statutes, and the judgments, which thou shalt teach them, that they may do them in the land which I give them to possess it."

Deuteronomy 5:33: "Ye shall walk in all the ways which the LORD your God hath commanded you, that ye may live, and that it may be well with you, and that ye may prolong your days in the land which ye shall possess."

Deuteronomy 6:1: "Now these are the commandments, the statutes, and the judgments, which the LORD your God commanded to teach you, that ye might do them in the land whither ye go to possess it:"

Deuteronomy 6:2: "That thou mightest fear the LORD thy God, to keep all his statutes and his commandments, which I command thee, thou, and thy son, and thy son's son, all the days of thy life; and that thy days may be prolonged."

Deuteronomy 6:6: "And these words, which I command thee this day, shall be in thine heart:"

Deuteronomy 6:10: "And it shall be, when the LORD thy God shall have brought thee into the land which he sware unto thy fathers, to Abraham, to Isaac, and to Jacob, to give thee great and goodly cities, which thou buildedst not,"

Deuteronomy 6:11: "And houses full of all good things, which thou filledst not, and wells digged, which thou diggedst not, vineyards and olive trees, which thou plantedst not; when thou shalt have eaten and be full;"

Deuteronomy 6:12: "Then beware lest thou forget the LORD, which brought thee forth out of the land of Egypt, from the house of bondage."

Deuteronomy 6:14: "Ye shall not go after other gods, of the gods of the people which are round about you;"

Deuteronomy 6:17: "Ye shall diligently keep the commandments of the LORD your God, and his testimonies, and his statutes, which he hath commanded thee."

Deuteronomy 6:18: "And thou shalt do that which is right and good in the sight of the LORD: that it may be well with thee, and that thou mayest go in and possess the good land which the LORD sware unto thy fathers."

Deuteronomy 6:20: "And when thy son asketh thee in time to come, saying, What mean the testimonies, and the statutes, and the judgments, which the LORD our God hath commanded you?"

Deuteronomy 6:23: "And he brought us out from thence, that he might bring us in, to give us the land which he sware unto our fathers."

Deuteronomy 7:8: "But because the LORD loved you, and because he would keep the oath which he had sworn unto your fathers, hath the LORD brought you out with a mighty hand, and redeemed you out of the house of bondmen, from the hand of Pharaoh king of Egypt."

Deuteronomy 7:9: "Know therefore that the LORD thy God, he is God, the faithful God, which keepeth covenant and mercy with them that love him and keep his commandments to a thousand generations;"

Deuteronomy 7:11: "Thou shalt therefore keep the commandments, and the statutes, and the judgments, which I command thee this day, to do them."

Deuteronomy 7:12: "Wherefore it shall come to pass, if ye hearken to these judgments, and keep, and do them, that the LORD thy God shall keep unto thee the covenant and the mercy which he sware unto thy fathers:"

Deuteronomy 7:13: "And he will love thee, and bless thee, and multiply thee: he will also bless the fruit of thy womb, and the fruit of thy land, thy corn, and thy wine, and thine oil, the increase of thy kine, and the flocks of thy sheep, in the land which he sware unto thy fathers to give thee."

Deuteronomy 7:15: "And the LORD will take away from thee all sickness, and will put none of the evil diseases of Egypt, which thou knowest, upon thee; but will lay them upon all them that hate thee."

Deuteronomy 7:16: "And thou shalt consume all the people which the LORD thy God shall deliver thee; thine eye shall have no pity upon them: neither shalt thou serve their gods; for that will be a snare unto thee."

Deuteronomy 7:19: "The great temptations which thine eyes saw, and the signs, and the wonders,

and the mighty hand, and the stretched out arm, whereby the LORD thy God brought thee out: so shall the LORD thy God do unto all the people of whom thou art afraid."

Deuteronomy 8:1: "All the commandments which I command thee this day shall ye observe to do, that ye may live, and multiply, and go in and possess the land which the LORD sware unto your fathers."

Deuteronomy 8:2: "And thou shalt remember all the way which the LORD thy God led thee these forty years in the wilderness, to humble thee, and to prove thee, to know what was in thine heart, whether thou wouldest keep his commandments, or no."

Deuteronomy 8:3: "And he humbled thee, and suffered thee to hunger, and fed thee with manna, which thou knewest not, neither did thy fathers know; that he might make thee know that man doth not live by bread only, but by every word that proceedeth out of the mouth of the LORD doth man live."

Deuteronomy 8:10: "When thou hast eaten and art full, then thou shalt bless the LORD thy God for the good land which he hath given thee."

Deuteronomy 8:11: "Beware that thou forget not the LORD thy God, in not keeping his commandments, and his judgments, and his statutes, which I command thee this day:"

Deuteronomy 8:14: "Then thine heart be lifted up, and thou forget the LORD thy God, which brought thee forth out of the land of Egypt, from the house of bondage;"

Deuteronomy 8:16: "Who fed thee in the wilderness with manna, which thy fathers knew not, that he might humble thee, and that he might prove thee, to do thee good at thy latter end;"

Deuteronomy 8:18: "But thou shalt remember the LORD thy God: for it is he that giveth thee power to get wealth, that he may establish his covenant which he sware unto thy fathers, as it is this day."

Deuteronomy 8:20: "As the nations which the LORD destroyeth before your face, so shall ye perish; because ye would not be obedient unto the voice of the LORD your God."

Deuteronomy 9:3: "Understand therefore this day, that the LORD thy God is he which goeth over before thee; as a consuming fire he shall destroy them, and he shall bring them down before thy face: so shalt thou drive them out, and destroy them quickly, as the LORD hath said unto thee."

Deuteronomy 9:5: "Not for thy righteousness, or for the uprightness of thine heart, dost thou go to possess their land: but for the wickedness of these nations the LORD thy God doth drive them out from before thee, and that he may perform the word which the LORD sware unto thy fathers, Abraham, Isaac, and Jacob."

Deuteronomy 9:9: "When I was gone up into the mount to receive the tables of stone, even the tables of the covenant which the LORD made with you, then I abode in the mount forty days and forty nights, I neither did eat bread nor drink water:"

Deuteronomy 9:10: "And the LORD delivered unto me two tables of stone written with the finger of God; and on them was written according to all the words, which the LORD spake with you in the mount out of the midst of the fire in the day of the assembly."

Deuteronomy 9:12: "And the LORD said unto me, Arise, get thee down quickly from hence; for thy people which thou hast brought forth out of Egypt have corrupted themselves; they are quickly turned aside out of the way which I commanded them; they have made them a molten image."

Deuteronomy 9:16: "And I looked, and, behold, ye had sinned against the LORD your God, and had made you a molten calf: ye had turned aside quickly out of the way which the LORD had commanded you."

Deuteronomy 9:18: "And I fell down before the LORD, as at the first, forty days and forty nights: I did neither eat bread, nor drink water, because of all your sins which ye sinned, in doing wickedly in the sight of the LORD, to provoke him to anger."

Deuteronomy 9:21: "And I took your sin, the calf which ye had made, and burnt it with fire, and stamped it, and ground it very small, even until it was as small as dust: and I cast the dust thereof into the brook that descended out of the mount."

Deuteronomy 9:23: "Likewise when the LORD sent you from Kadeshbarnea, saying, Go up and

possess the land which I have given you; then ye rebelled against the commandment of the LORD your God, and ye believed him not, nor hearkened to his voice."

Deuteronomy 9:26: "I prayed therefore unto the LORD, and said, O Lord GOD, destroy not thy people and thine inheritance, which thou hast redeemed through thy greatness, which thou hast brought forth out of Egypt with a mighty hand."

Deuteronomy 9:28: "Lest the land whence thou broughtest us out say, Because the LORD was not able to bring them into the land which he promised them, and because he hated them, he hath brought them out to slay them in the wilderness."

Deuteronomy 9:29: "Yet they are thy people and thine inheritance, which thou broughtest out by thy mighty power and by thy stretched out arm."

Deuteronomy 10:2: "And I will write on the tables the words that were in the first tables which thou brakest, and thou shalt put them in the ark."

Deuteronomy 10:4: "And he wrote on the tables, according to the first writing, the ten commandments, which the LORD spake unto you in the mount out of the midst of the fire in the day of the assembly: and the LORD gave them unto me."

Deuteronomy 10:5: "And I turned myself and came down from the mount, and put the tables in the ark which I had made; and there they be, as the LORD commanded me."

Deuteronomy 10:11: "And the LORD said unto me, Arise, take thy journey before the people, that they may go in and possess the land, which I swear unto their fathers to give unto them."

Deuteronomy 10:13: "To keep the commandments of the LORD, and his statutes, which I command thee this day for thy good?"

Deuteronomy 10:17: "For the LORD your God is God of gods, and Lord of lords, a great God, a mighty, and a terrible, which regardeth not persons, nor taketh reward:"

Deuteronomy 10:21: "He is thy praise, and he is thy God, that hath done for thee these great and terrible things, which thine eyes have seen."

Deuteronomy 11:2: "And know ye this day: for I speak not with your children which have not known, and which have not seen the chastisement of the LORD your God, his greatness, his mighty hand, and his stretched out arm,"

Deuteronomy 11:3: "And his miracles, and his acts, which he did in the midst of Egypt unto Pharaoh the king of Egypt, and unto all his land;"

Deuteronomy 11:7: "But your eyes have seen all the great acts of the LORD which he did."

Deuteronomy 11:8: "Therefore shall ye keep all the commandments which I command you this day, that ye may be strong, and go in and possess the land, whither ye go to possess it;"

Deuteronomy 11:9: "And that ye may prolong your days in the land, which the LORD swear unto your fathers to give unto them and to their seed, a land that floweth with milk and honey."

Deuteronomy 11:12: "A land which the LORD thy God careth for: the eyes of the LORD thy God are always upon it, from the beginning of the year even unto the end of the year."

Deuteronomy 11:13: "And it shall come to pass, if ye shall hearken diligently unto my commandments which I command you this day, to love the LORD your God, and to serve him with all your heart and with all your soul,"

Deuteronomy 11:17: "And then the LORD's wrath be kindled against you, and he shut up the heaven, that there be no rain, and that the land yield not her fruit; and lest ye perish quickly from off the good land which the LORD giveth you."

Deuteronomy 11:21: "That your days may be multiplied, and the days of your children, in the land which the LORD swear unto your fathers to give them, as the days of heaven upon the earth."

Deuteronomy 11:22: "For if ye shall diligently keep all these commandments which I command you, to do them, to love the LORD your God, to walk in all his ways, and to cleave unto him;"

Deuteronomy 11:27: "A blessing, if ye obey the commandments of the LORD your God, which I command you this day:"

Deuteronomy 11:28: "And a curse, if ye will not obey the commandments of the LORD your God,

but turn aside out of the way which I command you this day, to go after other gods, which ye have not known."

Deuteronomy 11:30: "Are they not on the other side Jordan, by the way where the sun goeth down, in the land of the Canaanites, which dwell in the champaign over against Gilgal, beside the plains of Moreh?"

Deuteronomy 11:31: "For ye shall pass over Jordan to go in to possess the land which the LORD your God giveth you, and ye shall possess it, and dwell therein."

Deuteronomy 11:32: "And ye shall observe to do all the statutes and judgments which I set before you this day."

Deuteronomy 12:1: "These are the statutes and judgments, which ye shall observe to do in the land, which the LORD God of thy fathers giveth thee to possess it, all the days that ye live upon the earth."

Deuteronomy 12:2: "Ye shall utterly destroy all the places, wherein the nations which ye shall possess served their gods, upon the high mountains, and upon the hills, and under every green tree:"

Deuteronomy 12:5: "But unto the place which the LORD your God shall choose out of all your tribes to put his name there, even unto his habitation shall ye seek, and thither thou shalt come:"

Deuteronomy 12:9: "For ye are not as yet come to the rest and to the inheritance, which the LORD your God giveth you."

Deuteronomy 12:10: "But when ye go over Jordan, and dwell in the land which the LORD your God giveth you to inherit, and when he giveth you rest from all your enemies round about, so that ye dwell in safety;"

Deuteronomy 12:11: "Then there shall be a place which the LORD your God shall choose to cause his name to dwell there; thither shall ye bring all that I command you; your burnt offerings, and your sacrifices, your tithes, and the heave offering of your hand, and all your choice vows which ye vow unto the LORD:"

Deuteronomy 12:14: "But in the place which the LORD shall choose in one of thy tribes, there thou shalt offer thy burnt offerings, and there thou shalt do all that I command thee."

Deuteronomy 12:15: "Notwithstanding thou mayest kill and eat flesh in all thy gates, whatsoever thy soul lusteth after, according to the blessing of the LORD thy God which he hath given thee: the unclean and the clean may eat thereof, as of the roebuck, and as of the hart."

Deuteronomy 12:17: "Thou mayest not eat within thy gates the tithe of thy corn, or of thy wine, or of thy oil, or the firstlings of thy herds or of thy flock, nor any of thy vows which thou vowest, nor thy freewill offerings, or heave offering of thine hand:"

Deuteronomy 12:18: "But thou must eat them before the LORD thy God in the place which the LORD thy God shall choose, thou, and thy son, and thy daughter, and thy manservant, and thy maidservant, and the Levite that is within thy gates: and thou shalt rejoice before the LORD thy God in all that thou puttest thine hands unto."

Deuteronomy 12:21: "If the place which the LORD thy God hath chosen to put his name there be too far from thee, then thou shalt kill of thy herd and of thy flock, which the LORD hath given thee, as I have commanded thee, and thou shalt eat in thy gates whatsoever thy soul lusteth after."

Deuteronomy 12:25: "Thou shalt not eat it; that it may go well with thee, and with thy children after thee, when thou shalt do that which is right in the sight of the LORD."

Deuteronomy 12:26: "Only thy holy things which thou hast, and thy vows, thou shalt take, and go unto the place which the LORD shall choose:"

Deuteronomy 12:28: "Observe and hear all these words which I command thee, that it may go well with thee, and with thy children after thee for ever, when thou doest that which is good and right in the sight of the LORD thy God."

Deuteronomy 12:31: "Thou shalt not do so unto the LORD thy God: for every abomination to the LORD, which he hateth, have they done unto their gods; for even their sons and their daughters they have burnt in the fire to their gods."

Deuteronomy 13:2: "And the sign or the wonder come to pass, whereof he spake unto thee, saying, Let us go after other gods, which thou hast not known, and let us serve them;"

Deuteronomy 13:5: "And that prophet, or that dreamer of dreams, shall be put to death; because he hath spoken to turn you away from the LORD your God, which brought you out of the land of Egypt, and redeemed you out of the house of bondage, to thrust thee out of the way which the LORD thy God commanded thee to walk in. So shalt thou put the evil away from the midst of thee."

Deuteronomy 13:6: "If thy brother, the son of thy mother, or thy son, or thy daughter, or the wife of thy bosom, or thy friend, which is as thine own soul, entice thee secretly, saying, Let us go and serve other gods, which thou hast not known, thou, nor thy fathers;"

Deuteronomy 13:7: "Namely, of the gods of the people which are round about you, nigh unto thee, or far off from thee, from the one end of the earth even unto the other end of the earth;"

Deuteronomy 13:10: "And thou shalt stone him with stones, that he die; because he hath sought to thrust thee away from the LORD thy God, which brought thee out of the land of Egypt, from the house of bondage."

Deuteronomy 13:12: "If thou shalt hear say in one of thy cities, which the LORD thy God hath given thee to dwell there, saying,"

Deuteronomy 13:13: "Certain men, the children of Belial, are gone out from among you, and have withdrawn the inhabitants of their city, saying, Let us go and serve other gods, which ye have not known;"

Deuteronomy 13:18: "When thou shalt hearken to the voice of the LORD thy God, to keep all his commandments which I command thee this day, to do that which is right in the eyes of the LORD thy God."

Deuteronomy 14:4: "These are the beasts which ye shall eat: the ox, the sheep, and the goat,"

Deuteronomy 14:12: "But these are they of which ye shall not eat: the eagle, and the ossifrage, and the ospray,"

Deuteronomy 14:23: "And thou shalt eat before the LORD thy God, in the place which he shall choose to place his name there, the tithe of thy corn, of thy wine, and of thine oil, and the firstlings of thy herds and of thy flocks; that thou mayest learn to fear the LORD thy God always."

Deuteronomy 14:24: "And if the way be too long for thee, so that thou art not able to carry it; or if the place be too far from thee, which the LORD thy God shall choose to set his name there, when the LORD thy God hath blessed thee:"

Deuteronomy 14:25: "Then shalt thou turn it into money, and bind up the money in thine hand, and shalt go unto the place which the LORD thy God shall choose:"

Deuteronomy 14:29: "And the Levite, (because he hath no part nor inheritance with thee,) and the stranger, and the fatherless, and the widow, which are within thy gates, shall come, and shall eat and be satisfied; that the LORD thy God may bless thee in all the work of thine hand which thou doest."

Deuteronomy 15:3: "Of a foreigner thou mayest exact it again: but that which is thine with thy brother thine hand shall release;"

Deuteronomy 15:4: "Save when there shall be no poor among you; for the LORD shall greatly bless thee in the land which the LORD thy God giveth thee for an inheritance to possess it:"

Deuteronomy 15:5: "Only if thou carefully hearken unto the voice of the LORD thy God, to observe to do all these commandments which I command thee this day."

Deuteronomy 15:7: "If there be among you a poor man of one of thy brethren within any of thy gates in thy land which the LORD thy God giveth thee, thou shalt not harden thine heart, nor shut thine hand from thy poor brother:"

Deuteronomy 15:8: "But thou shalt open thine hand wide unto him, and shalt surely lend him sufficient for his need, in that which he wanteth."

Deuteronomy 15:20: "Thou shalt eat it before the LORD thy God year by year in the place which the LORD shall choose, thou and thy household."

Deuteronomy 16:2: "Thou shalt therefore sacrifice the passover unto the LORD thy God, of the

flock and the herd, in the place which the LORD shall choose to place his name there."

Deuteronomy 16:4: "And there shall be no leavened bread seen with thee in all thy coast seven days; neither shall there any thing of the flesh, which thou sacrificedst the first day at even, remain all night until the morning."

Deuteronomy 16:5: "Thou mayest not sacrifice the passover within any of thy gates, which the LORD thy God giveth thee:"

Deuteronomy 16:6: "But at the place which the LORD thy God shall choose to place his name in, there thou shalt sacrifice the passover at even, at the going down of the sun, at the season that thou camest forth out of Egypt."

Deuteronomy 16:7: "And thou shalt roast and eat it in the place which the LORD thy God shall choose: and thou shalt turn in the morning, and go unto thy tents."

Deuteronomy 16:10: "And thou shalt keep the feast of weeks unto the LORD thy God with a tribute of a freewill offering of thine hand, which thou shalt give unto the LORD thy God, according as the LORD thy God hath blessed thee:"

Deuteronomy 16:11: "And thou shalt rejoice before the LORD thy God, thou, and thy son, and thy daughter, and thy manservant, and thy maidservant, and the Levite that is within thy gates, and the stranger, and the fatherless, and the widow, that are among you, in the place which the LORD thy God hath chosen to place his name there."

Deuteronomy 16:15: "Seven days shalt thou keep a solemn feast unto the LORD thy God in the place which the LORD shall choose: because the LORD thy God shall bless thee in all thine increase, and in all the works of thine hands, therefore thou shalt surely rejoice."

Deuteronomy 16:16: "Three times in a year shall all thy males appear before the LORD thy God in the place which he shall choose; in the feast of unleavened bread, and in the feast of weeks, and in the feast of tabernacles: and they shall not appear before the LORD empty:"

Deuteronomy 16:17: "Every man shall give as he is able, according to the blessing of the LORD thy God which he hath given thee."

Deuteronomy 16:18: "Judges and officers shalt thou make thee in all thy gates, which the LORD thy God giveth thee, throughout thy tribes: and they shall judge the people with just judgment."

Deuteronomy 16:20: "That which is altogether just shalt thou follow, that thou mayest live, and inherit the land which the LORD thy God giveth thee."

Deuteronomy 16:21: "Thou shalt not plant thee a grove of any trees near unto the altar of the LORD thy God, which thou shalt make thee."

Deuteronomy 16:22: "Neither shalt thou set thee up any image; which the LORD thy God hateth."

Deuteronomy 17:2: "If there be found among you, within any of thy gates which the LORD thy God giveth thee, man or woman, that hath wrought wickedness in the sight of the LORD thy God, in transgressing his covenant,"

Deuteronomy 17:3: "And hath gone and served other gods, and worshipped them, either the sun, or moon, or any of the host of heaven, which I have not commanded;"

Deuteronomy 17:5: "Then shalt thou bring forth that man or that woman, which have committed that wicked thing, unto thy gates, even that man or that woman, and shalt stone them with stones, till they die."

Deuteronomy 17:8: "If there arise a matter too hard for thee in judgment, between blood and blood, between plea and plea, and between stroke and stroke, being matters of controversy within thy gates: then shalt thou arise, and get thee up into the place which the LORD thy God shall choose;"

Deuteronomy 17:10: "And thou shalt do according to the sentence, which they of that place which the LORD shall choose shall shew thee; and thou shalt observe to do according to all that they inform thee:"

Deuteronomy 17:11: "According to the sentence of the law which they shall teach thee, and according to the judgment which they shall tell thee, thou shalt do: thou shalt not decline from the sentence which they shall shew thee, to the right hand, nor to the left."



Deuteronomy 17:14: "When thou art come unto the land which the LORD thy God giveth thee, and shalt possess it, and shalt dwell therein, and shalt say, I will set a king over me, like as all the nations that are about me;"

Deuteronomy 17:15: "Thou shalt in any wise set him king over thee, whom the LORD thy God shall choose: one from among thy brethren shalt thou set king over thee: thou mayest not set a stranger over thee, which is not thy brother."

Deuteronomy 17:18: "And it shall be, when he sitteth upon the throne of his kingdom, that he shall write him a copy of this law in a book out of that which is before the priests the Levites:"

Deuteronomy 18:6: "And if a Levite come from any of thy gates out of all Israel, where he sojourned, and come with all the desire of his mind unto the place which the LORD shall choose;"

Deuteronomy 18:7: "Then he shall minister in the name of the LORD his God, as all his brethren the Levites do, which stand there before the LORD."

Deuteronomy 18:8: "They shall have like portions to eat, beside that which cometh of the sale of his patrimony."

Deuteronomy 18:9: "When thou art come into the land which the LORD thy God giveth thee, thou shalt not learn to do after the abominations of those nations."

Deuteronomy 18:14: "For these nations, which thou shalt possess, hearkened unto observers of times, and unto diviners: but as for thee, the LORD thy God hath not suffered thee so to do."

Deuteronomy 18:17: "And the LORD said unto me, They have well spoken that which they have spoken."

Deuteronomy 18:19: "And it shall come to pass, that whosoever will not hearken unto my words which he shall speak in my name, I will require it of him."

Deuteronomy 18:20: "But the prophet, which shall presume to speak a word in my name, which I have not commanded him to speak, or that shall speak in the name of other gods, even that prophet shall die."

Deuteronomy 18:21: "And if thou say in thine heart, How shall we know the word which the LORD hath not spoken?"

Deuteronomy 18:22: "When a prophet speaketh in the name of the LORD, if the thing follow not, nor come to pass, that is the thing which the LORD hath not spoken, but the prophet hath spoken it presumptuously: thou shalt not be afraid of him."

Deuteronomy 19:2: "Thou shalt separate three cities for thee in the midst of thy land, which the LORD thy God giveth thee to possess it."

Deuteronomy 19:3: "Thou shalt prepare thee a way, and divide the coasts of thy land, which the LORD thy God giveth thee to inherit, into three parts, that every slayer may flee thither."

Deuteronomy 19:4: "And this is the case of the slayer, which shall flee thither, that he may live: Whoso killeth his neighbour ignorantly, whom he hated not in time past;"

Deuteronomy 19:8: "And if the LORD thy God enlarge thy coast, as he hath sworn unto thy fathers, and give thee all the land which he promised to give unto thy fathers;"

Deuteronomy 19:9: "If thou shalt keep all these commandments to do them, which I command thee this day, to love the LORD thy God, and to walk ever in his ways; then shalt thou add three cities more for thee, beside these three:"

Deuteronomy 19:10: "That innocent blood be not shed in thy land, which the LORD thy God giveth thee for an inheritance, and so blood be upon thee."

Deuteronomy 19:14: "Thou shalt not remove thy neighbour's landmark, which they of old time have set in thine inheritance, which thou shalt inherit in the land that the LORD thy God giveth thee to possess it."

Deuteronomy 19:16: "If a false witness rise up against any man to testify against him that which is wrong;"

Deuteronomy 19:17: "Then both the men, between whom the controversy is, shall stand before the LORD, before the priests and the judges, which shall be in those days;"

Deuteronomy 19:20: "And those which remain shall hear, and fear, and shall henceforth commit no more any such evil among you."

Deuteronomy 20:1: "When thou goest out to battle against thine enemies, and seest horses, and chariots, and a people more than thou, be not afraid of them: for the LORD thy God is with thee, which brought thee up out of the land of Egypt."

Deuteronomy 20:14: "But the women, and the little ones, and the cattle, and all that is in the city, even all the spoil thereof, shalt thou take unto thyself; and thou shalt eat the spoil of thine enemies, which the LORD thy God hath given thee."

Deuteronomy 20:15: "Thus shalt thou do unto all the cities which are very far off from thee, which are not of the cities of these nations."

Deuteronomy 20:16: "But of the cities of these people, which the LORD thy God doth give thee for an inheritance, thou shalt save alive nothing that breatheth:"

Deuteronomy 20:18: "That they teach you not to do after all their abominations, which they have done unto their gods; so should ye sin against the LORD your God."

Deuteronomy 20:20: "Only the trees which thou knowest that they be not trees for meat, thou shalt destroy and cut them down; and thou shalt build bulwarks against the city that maketh war with thee, until it be subdued."

Deuteronomy 21:1: "If one be found slain in the land which the LORD thy God giveth thee to possess it, lying in the field, and it be not known who hath slain him:"

Deuteronomy 21:2: "Then thy elders and thy judges shall come forth, and they shall measure unto the cities which are round about him that is slain:"

Deuteronomy 21:3: "And it shall be, that the city which is next unto the slain man, even the elders of that city shall take an heifer, which hath not been wrought with, and which hath not drawn in the yoke;"

Deuteronomy 21:4: "And the elders of that city shall bring down the heifer unto a rough valley, which is neither eared nor sown, and shall strike off the heifer's neck there in the valley:"

Deuteronomy 21:9: "So shalt thou put away the guilt of innocent blood from among you, when thou shalt do that which is right in the sight of the LORD."

Deuteronomy 21:16: "Then it shall be, when he maketh his sons to inherit that which he hath, that he may not make the son of the beloved firstborn before the son of the hated, which is indeed the firstborn:"

Deuteronomy 21:18: "If a man have a stubborn and rebellious son, which will not obey the voice of his father, or the voice of his mother, and that, when they have chastened him, will not hearken unto them:"

Deuteronomy 21:23: "His body shall not remain all night upon the tree, but thou shalt in any wise bury him that day; (for he that is hanged is accursed of God;) that thy land be not defiled, which the LORD thy God giveth thee for an inheritance."

Deuteronomy 22:3: "In like manner shalt thou do with his ass; and so shalt thou do with his raiment; and with all lost thing of thy brother's, which he hath lost, and thou hast found, shalt thou do likewise: thou mayest not hide thyself."

Deuteronomy 22:5: "The woman shall not wear that which pertaineth unto a man, neither shall a man put on a woman's garment: for all that do so are abomination unto the LORD thy God."

Deuteronomy 22:9: "Thou shalt not sow thy vineyard with divers seeds: lest the fruit of thy seed which thou hast sown, and the fruit of thy vineyard, be defiled."

Deuteronomy 22:28: "If a man find a damsel that is a virgin, which is not betrothed, and lay hold on her, and lie with her, and they be found;"

Deuteronomy 23:13: "And thou shalt have a paddle upon thy weapon; and it shall be, when thou wilt ease thyself abroad, thou shalt dig therewith, and shalt turn back and cover that which cometh from thee:"

Deuteronomy 23:15: "Thou shalt not deliver unto his master the servant which is escaped from his

master unto thee:"

Deuteronomy 23:16: "He shall dwell with thee, even among you, in that place which he shall choose in one of thy gates, where it liketh him best: thou shalt not oppress him."

Deuteronomy 23:23: "That which is gone out of thy lips thou shalt keep and perform; even a freewill offering, according as thou hast vowed unto the LORD thy God, which thou hast promised with thy mouth."

Deuteronomy 24:3: "And if the latter husband hate her, and write her a bill of divorcement, and giveth it in her hand, and sendeth her out of his house; or if the latter husband die, which took her to be his wife;"

Deuteronomy 24:4: "Her former husband, which sent her away, may not take her again to be his wife, after that she is defiled; for that is abomination before the LORD: and thou shalt not cause the land to sin, which the LORD thy God giveth thee for an inheritance."

Deuteronomy 24:5: "When a man hath taken a new wife, he shall not go out to war, neither shall he be charged with any business: but he shall be free at home one year, and shall cheer up his wife which he hath taken."

Deuteronomy 25:6: "And it shall be, that the firstborn which she beareth shall succeed in the name of his brother which is dead, that his name be not put out of Israel."

Deuteronomy 25:15: "But thou shalt have a perfect and just weight, a perfect and just measure shalt thou have: that thy days may be lengthened in the land which the LORD thy God giveth thee."

Deuteronomy 25:19: "Therefore it shall be, when the LORD thy God hath given thee rest from all thine enemies round about, in the land which the LORD thy God giveth thee for an inheritance to possess it, that thou shalt blot out the remembrance of Amalek from under heaven; thou shalt not forget it."

Deuteronomy 26:1: "And it shall be, when thou art come in unto the land which the LORD thy God giveth thee for an inheritance, and possessest it, and dwellest therein;"

Deuteronomy 26:2: "That thou shalt take of the first of all the fruit of the earth, which thou shalt bring of thy land that the LORD thy God giveth thee, and shalt put it in a basket, and shalt go unto the place which the LORD thy God shall choose to place his name there."

Deuteronomy 26:3: "And thou shalt go unto the priest that shall be in those days, and say unto him, I profess this day unto the LORD thy God, that I am come unto the country which the LORD sware unto our fathers for to give us."

Deuteronomy 26:10: "And now, behold, I have brought the firstfruits of the land, which thou, O LORD, hast given me. And thou shalt set it before the LORD thy God, and worship before the LORD thy God:"

Deuteronomy 26:11: "And thou shalt rejoice in every good thing which the LORD thy God hath given unto thee, and unto thine house, thou, and the Levite, and the stranger that is among you."

Deuteronomy 26:12: "When thou hast made an end of tithing all the tithes of thine increase the third year, which is the year of tithing, and hast given it unto the Levite, the stranger, the fatherless, and the widow, that they may eat within thy gates, and be filled;"

Deuteronomy 26:13: "Then thou shalt say before the LORD thy God, I have brought away the hallowed things out of mine house, and also have given them unto the Levite, and unto the stranger, to the fatherless, and to the widow, according to all thy commandments which thou hast commanded me: I have not transgressed thy commandments, neither have I forgotten them."

Deuteronomy 26:15: "Look down from thy holy habitation, from heaven, and bless thy people Israel, and the land which thou hast given us, as thou swarest unto our fathers, a land that floweth with milk and honey."

Deuteronomy 26:19: "And to make thee high above all nations which he hath made, in praise, and in name, and in honour; and that thou mayest be an holy people unto the LORD thy God, as he hath spoken."

Deuteronomy 27:1: "And Moses with the elders of Israel commanded the people, saying, Keep all

the commandments which I command you this day."

Deuteronomy 27:2: "And it shall be on the day when ye shall pass over Jordan unto the land which the LORD thy God giveth thee, that thou shalt set thee up great stones, and plaister them with plaister:"

Deuteronomy 27:3: "And thou shalt write upon them all the words of this law, when thou art passed over, that thou mayest go in unto the land which the LORD thy God giveth thee, a land that floweth with milk and honey; as the LORD God of thy fathers hath promised thee."

Deuteronomy 27:4: "Therefore it shall be when ye be gone over Jordan, that ye shall set up these stones, which I command you this day, in mount Ebal, and thou shalt plaister them with plaister."

Deuteronomy 27:10: "Thou shalt therefore obey the voice of the LORD thy God, and do his commandments and his statutes, which I command thee this day."

Deuteronomy 28:1: "And it shall come to pass, if thou shalt hearken diligently unto the voice of the LORD thy God, to observe and to do all his commandments which I command thee this day, that the LORD thy God will set thee on high above all nations of the earth:"

Deuteronomy 28:8: "The LORD shall command the blessing upon thee in thy storehouses, and in all that thou settest thine hand unto; and he shall bless thee in the land which the LORD thy God giveth thee."

Deuteronomy 28:11: "And the LORD shall make thee plenteous in goods, in the fruit of thy body, and in the fruit of thy cattle, and in the fruit of thy ground, in the land which the LORD swore unto thy fathers to give thee."

Deuteronomy 28:13: "And the LORD shall make thee the head, and not the tail; and thou shalt be above only, and thou shalt not be beneath; if that thou hearken unto the commandments of the LORD thy God, which I command thee this day, to observe and to do them:"

Deuteronomy 28:14: "And thou shalt not go aside from any of the words which I command thee this day, to the right hand, or to the left, to go after other gods to serve them."

Deuteronomy 28:15: "But it shall come to pass, if thou wilt not hearken unto the voice of the LORD thy God, to observe to do all his commandments and his statutes which I command thee this day; that all these curses shall come upon thee, and overtake thee:"

Deuteronomy 28:33: "The fruit of thy land, and all thy labours, shall a nation which thou knowest not eat up; and thou shalt be only oppressed and crushed alway:"

Deuteronomy 28:34: "So that thou shalt be mad for the sight of thine eyes which thou shalt see."

Deuteronomy 28:36: "The LORD shall bring thee, and thy king which thou shalt set over thee, unto a nation which neither thou nor thy fathers have known; and there shalt thou serve other gods, wood and stone."

Deuteronomy 28:45: "Moreover all these curses shall come upon thee, and shall pursue thee, and overtake thee, till thou be destroyed; because thou hearkenedst not unto the voice of the LORD thy God, to keep his commandments and his statutes which he commanded thee:"

Deuteronomy 28:48: "Therefore shalt thou serve thine enemies which the LORD shall send against thee, in hunger, and in thirst, and in nakedness, and in want of all things: and he shall put a yoke of iron upon thy neck, until he have destroyed thee."

Deuteronomy 28:50: "A nation of fierce countenance, which shall not regard the person of the old, nor shew favour to the young:"

Deuteronomy 28:51: "And he shall eat the fruit of thy cattle, and the fruit of thy land, until thou be destroyed: which also shall not leave thee either corn, wine, or oil, or the increase of thy kine, or flocks of thy sheep, until he have destroyed thee."

Deuteronomy 28:52: "And he shall besiege thee in all thy gates, until thy high and fenced walls come down, wherein thou trustedst, throughout all thy land: and he shall besiege thee in all thy gates throughout all thy land, which the LORD thy God hath given thee."

Deuteronomy 28:53: "And thou shalt eat the fruit of thine own body, the flesh of thy sons and of thy daughters, which the LORD thy God hath given thee, in the siege, and in the straitness, wherewith

thine enemies shall distress thee:"

Deuteronomy 28:54: "So that the man that is tender among you, and very delicate, his eye shall be evil toward his brother, and toward the wife of his bosom, and toward the remnant of his children which he shall leave:"

Deuteronomy 28:56: "The tender and delicate woman among you, which would not adventure to set the sole of her foot upon the ground for delicateness and tenderness, her eye shall be evil toward the husband of her bosom, and toward her son, and toward her daughter,"

Deuteronomy 28:57: "And toward her young one that cometh out from between her feet, and toward her children which she shall bear: for she shall eat them for want of all things secretly in the siege and straitness, wherewith thine enemy shall distress thee in thy gates."

Deuteronomy 28:60: "Moreover he will bring upon thee all the diseases of Egypt, which thou wast afraid of; and they shall cleave unto thee."

Deuteronomy 28:61: "Also every sickness, and every plague, which is not written in the book of this law, them will the LORD bring upon thee, until thou be destroyed."

Deuteronomy 28:64: "And the LORD shall scatter thee among all people, from the one end of the earth even unto the other; and there thou shalt serve other gods, which neither thou nor thy fathers have known, even wood and stone."

Deuteronomy 28:67: "In the morning thou shalt say, Would God it were even! and at even thou shalt say, Would God it were morning! for the fear of thine heart wherewith thou shalt fear, and for the sight of thine eyes which thou shalt see."

Deuteronomy 29:1: "These are the words of the covenant, which the LORD commanded Moses to make with the children of Israel in the land of Moab, beside the covenant which he made with them in Horeb."

Deuteronomy 29:3: "The great temptations which thine eyes have seen, the signs, and those great miracles:"

Deuteronomy 29:12: "That thou shouldest enter into covenant with the LORD thy God, and into his oath, which the LORD thy God maketh with thee this day:"

Deuteronomy 29:16: "(For ye know how we have dwelt in the land of Egypt; and how we came through the nations which ye passed by;"

Deuteronomy 29:17: "And ye have seen their abominations, and their idols, wood and stone, silver and gold, which were among them:)"

Deuteronomy 29:22: "So that the generation to come of your children that shall rise up after you, and the stranger that shall come from a far land, shall say, when they see the plagues of that land, and the sicknesses which the LORD hath laid upon it;"

Deuteronomy 29:23: "And that the whole land thereof is brimstone, and salt, and burning, that it is not sown, nor beareth, nor any grass groweth therein, like the overthrow of Sodom, and Gomorrah, Admah, and Zeboim, which the LORD overthrew in his anger, and in his wrath:"

Deuteronomy 29:25: "Then men shall say, Because they have forsaken the covenant of the LORD God of their fathers, which he made with them when he brought them forth out of the land of Egypt:"

Deuteronomy 29:29: "The secret things belong unto the LORD our God: but those things which are revealed belong unto us and to our children for ever, that we may do all the words of this law."

Deuteronomy 30:1: "And it shall come to pass, when all these things are come upon thee, the blessing and the curse, which I have set before thee, and thou shalt call them to mind among all the nations, whither the LORD thy God hath driven thee,"

Deuteronomy 30:5: "And the LORD thy God will bring thee into the land which thy fathers possessed, and thou shalt possess it; and he will do thee good, and multiply thee above thy fathers."

Deuteronomy 30:7: "And the LORD thy God will put all these curses upon thine enemies, and on them that hate thee, which persecuted thee."

Deuteronomy 30:8: "And thou shalt return and obey the voice of the LORD, and do all his

commandments which I command thee this day."

Deuteronomy 30:10: "If thou shalt hearken unto the voice of the LORD thy God, to keep his commandments and his statutes which are written in this book of the law, and if thou turn unto the LORD thy God with all thine heart, and with all thy soul."

Deuteronomy 30:11: "For this commandment which I command thee this day, it is not hidden from thee, neither is it far off."

Deuteronomy 30:20: "That thou mayest love the LORD thy God, and that thou mayest obey his voice, and that thou mayest cleave unto him: for he is thy life, and the length of thy days: that thou mayest dwell in the land which the LORD swore unto thy fathers, to Abraham, to Isaac, and to Jacob, to give them."

Deuteronomy 31:5: "And the LORD shall give them up before your face, that ye may do unto them according unto all the commandments which I have commanded you."

Deuteronomy 31:7: "And Moses called unto Joshua, and said unto him in the sight of all Israel, Be strong and of a good courage: for thou must go with this people unto the land which the LORD hath sworn unto their fathers to give them; and thou shalt cause them to inherit it."

Deuteronomy 31:9: "And Moses wrote this law, and delivered it unto the priests the sons of Levi, which bare the ark of the covenant of the LORD, and unto all the elders of Israel."

Deuteronomy 31:11: "When all Israel is come to appear before the LORD thy God in the place which he shall choose, thou shalt read this law before all Israel in their hearing."

Deuteronomy 31:13: "And that their children, which have not known any thing, may hear, and learn to fear the LORD your God, as long as ye live in the land whither ye go over Jordan to possess it."

Deuteronomy 31:16: "And the LORD said unto Moses, Behold, thou shalt sleep with thy fathers; and this people will rise up, and go a whoring after the gods of the strangers of the land, whither they go to be among them, and will forsake me, and break my covenant which I have made with them."

Deuteronomy 31:18: "And I will surely hide my face in that day for all the evils which they shall have wrought, in that they are turned unto other gods."

Deuteronomy 31:20: "For when I shall have brought them into the land which I swore unto their fathers, that floweth with milk and honey; and they shall have eaten and filled themselves, and waxen fat; then will they turn unto other gods, and serve them, and provoke me, and break my covenant."

Deuteronomy 31:21: "And it shall come to pass, when many evils and troubles are befallen them, that this song shall testify against them as a witness; for it shall not be forgotten out of the mouths of their seed: for I know their imagination which they go about, even now, before I have brought them into the land which I swore."

Deuteronomy 31:23: "And he gave Joshua the son of Nun a charge, and said, Be strong and of a good courage: for thou shalt bring the children of Israel into the land which I swore unto them: and I will be with thee."

Deuteronomy 31:25: "That Moses commanded the Levites, which bare the ark of the covenant of the LORD, saying,"

Deuteronomy 31:29: "For I know that after my death ye will utterly corrupt yourselves, and turn aside from the way which I have commanded you; and evil will befall you in the latter days; because ye will do evil in the sight of the LORD, to provoke him to anger through the work of your hands."

Deuteronomy 32:15: "But Jeshurun waxed fat, and kicked: thou art waxen fat, thou art grown thick, thou art covered with fatness; then he forsook God which made him, and lightly esteemed the Rock of his salvation."

Deuteronomy 32:21: "They have moved me to jealousy with that which is not God; they have provoked me to anger with their vanities: and I will move them to jealousy with those which are not a people; I will provoke them to anger with a foolish nation."

Deuteronomy 32:38: "Which did eat the fat of their sacrifices, and drank the wine of their drink offerings? let them rise up and help you, and be your protection."

Deuteronomy 32:46: "And he said unto them, Set your hearts unto all the words which I testify among you this day, which ye shall command your children to observe to do, all the words of this law."

Deuteronomy 32:49: "Get thee up into this mountain Abarim, unto mount Nebo, which is in the land of Moab, that is over against Jericho; and behold the land of Canaan, which I give unto the children of Israel for a possession:"

Deuteronomy 32:52: "Yet thou shalt see the land before thee; but thou shalt not go thither unto the land which I give the children of Israel."

Deuteronomy 34:4: "And the LORD said unto him, This is the land which I swear unto Abraham, unto Isaac, and unto Jacob, saying, I will give it unto thy seed: I have caused thee to see it with thine eyes, but thou shalt not go over thither."

Deuteronomy 34:11: "In all the signs and the wonders, which the LORD sent him to do in the land of Egypt to Pharaoh, and to all his servants, and to all his land,"

Deuteronomy 34:12: "And in all that mighty hand, and in all the great terror which Moses shewed in the sight of all Israel."

Joshua 1:2: "Moses my servant is dead; now therefore arise, go over this Jordan, thou, and all this people, unto the land which I do give to them, even to the children of Israel."

Joshua 1:6: "Be strong and of a good courage: for unto this people shalt thou divide for an inheritance the land, which I swear unto their fathers to give them."

Joshua 1:7: "Only be thou strong and very courageous, that thou mayest observe to do according to all the law, which Moses my servant commanded thee: turn not from it to the right hand or to the left, that thou mayest prosper withersoever thou goest."

Joshua 1:11: "Pass through the host, and command the people, saying, Prepare you victuals; for within three days ye shall pass over this Jordan, to go in to possess the land, which the LORD your God giveth you to possess it."

Joshua 1:13: "Remember the word which Moses the servant of the LORD commanded you, saying, The LORD your God hath given you rest, and hath given you this land."

Joshua 1:14: "Your wives, your little ones, and your cattle, shall remain in the land which Moses gave you on this side Jordan; but ye shall pass before your brethren armed, all the mighty men of valour, and help them;"

Joshua 1:15: "Until the LORD have given your brethren rest, as he hath given you, and they also have possessed the land which the LORD your God giveth them: then ye shall return unto the land of your possession, and enjoy it, which Moses the LORD's servant gave you on this side Jordan toward the sunrising."

Joshua 2:3: "And the king of Jericho sent unto Rahab, saying, Bring forth the men that are come to thee, which are entered into thine house: for they be come to search out all the country."

Joshua 2:6: "But she had brought them up to the roof of the house, and hid them with the stalks of flax, which she had laid in order upon the roof."

Joshua 2:7: "And the men pursued after them the way to Jordan unto the fords: and as soon as they which pursued after them were gone out, they shut the gate."

Joshua 2:17: "And the men said unto her, We will be blameless of this thine oath which thou hast made us swear."

Joshua 2:18: "Behold, when we come into the land, thou shalt bind this line of scarlet thread in the window which thou didst let us down by: and thou shalt bring thy father, and thy mother, and thy brethren, and all thy father's household, home unto thee."

Joshua 2:20: "And if thou utter this our business, then we will be quit of thine oath which thou hast made us to swear."

Joshua 3:4: "Yet there shall be a space between you and it, about two thousand cubits by measure:

come not near unto it, that ye may know the way by which ye must go: for ye have not passed this way heretofore."

Joshua 3:16: "That the waters which came down from above stood and rose up upon an heap very far from the city Adam, that is beside Zaretan: and those that came down toward the sea of the plain, even the salt sea, failed, and were cut off: and the people passed over right against Jericho."

Joshua 4:9: "And Joshua set up twelve stones in the midst of Jordan, in the place where the feet of the priests which bare the ark of the covenant stood: and they are there unto this day."

Joshua 4:10: "For the priests which bare the ark stood in the midst of Jordan, until everything was finished that the LORD commanded Joshua to speak unto the people, according to all that Moses commanded Joshua: and the people hastened and passed over."

Joshua 4:20: "And those twelve stones, which they took out of Jordan, did Joshua pitch in Gilgal."

Joshua 4:23: "For the LORD your God dried up the waters of Jordan from before you, until ye were passed over, as the LORD your God did to the Red sea, which he dried up from before us, until we were gone over:"

Joshua 5:1: "And it came to pass, when all the kings of the Amorites, which were on the side of Jordan westward, and all the kings of the Canaanites, which were by the sea, heard that the LORD had dried up the waters of Jordan from before the children of Israel, until we were passed over, that their heart melted, neither was there spirit in them any more, because of the children of Israel."

Joshua 5:6: "For the children of Israel walked forty years in the wilderness, till all the people that were men of war, which came out of Egypt, were consumed, because they obeyed not the voice of the LORD: unto whom the LORD sware that he would not shew them the land, which the LORD sware unto their fathers that he would give us, a land that floweth with milk and honey."

Joshua 6:25: "And Joshua saved Rahab the harlot alive, and her father's household, and all that she had; and she dwelleth in Israel even unto this day; because she hid the messengers, which Joshua sent to spy out Jericho."

Joshua 7:2: "And Joshua sent men from Jericho to Ai, which is beside Bethaven, on the east of Bethel, and spake unto them, saying, Go up and view the country. And the men went up and viewed Ai."

Joshua 7:11: "Israel hath sinned, and they have also transgressed my covenant which I commanded them: for they have even taken of the accursed thing, and have also stolen, and dissembled also, and they have put it even among their own stuff."

Joshua 7:14: "In the morning therefore ye shall be brought according to your tribes: and it shall be, that the tribe which the LORD taketh shall come according to the families thereof; and the family which the LORD shall take shall come by households; and the household which the LORD shall take shall come man by man."

Joshua 8:27: "Only the cattle and the spoil of that city Israel took for a prey unto themselves, according unto the word of the LORD which he commanded Joshua."

Joshua 8:31: "As Moses the servant of the LORD commanded the children of Israel, as it is written in the book of the law of Moses, an altar of whole stones, over which no man hath lift up any iron: and they offered thereon burnt offerings unto the LORD, and sacrificed peace offerings."

Joshua 8:32: "And he wrote there upon the stones a copy of the law of Moses, which he wrote in the presence of the children of Israel."

Joshua 8:33: "And all Israel, and their elders, and officers, and their judges, stood on this side the ark and on that side before the priests the Levites, which bare the ark of the covenant of the LORD, as well the stranger, as he that was born among them; half of them over against mount Gerizim, and half of them over against mount Ebal; as Moses the servant of the LORD had commanded before, that they should bless the people of Israel."

Joshua 8:35: "There was not a word of all that Moses commanded, which Joshua read not before all the congregation of Israel, with the women, and the little ones, and the strangers that were conversant among them."



Joshua 9:1: "And it came to pass, when all the kings which were on this side Jordan, in the hills, and in the valleys, and in all the coasts of the great sea over against Lebanon, the Hittite, and the Amorite, the Canaanite, the Perizzite, the Hivite, and the Jebusite, heard thereof;"

Joshua 9:10: "And all that he did to the two kings of the Amorites, that were beyond Jordan, to Sihon king of Heshbon, and to Og king of Bashan, which was at Ashtaroth."

Joshua 9:13: "And these bottles of wine, which we filled, were new; and, behold, they be rent: and these our garments and our shoes are become old by reason of the very long journey."

Joshua 9:20: "This we will do to them; we will even let them live, lest wrath be upon us, because of the oath which we sware unto them."

Joshua 9:27: "And Joshua made them that day hewers of wood and drawers of water for the congregation, and for the altar of the LORD, even unto this day, in the place which he should choose."

Joshua 10:11: "And it came to pass, as they fled from before Israel, and were in the going down to Bethhoron, that the LORD cast down great stones from heaven upon them unto Azekah, and they died: they were more which died with hailstones than they whom the children of Israel slew with the sword."

Joshua 10:20: "And it came to pass, when Joshua and the children of Israel had made an end of slaying them with a very great slaughter, till they were consumed, that the rest which remained of them entered into fenced cities."

Joshua 10:24: "And it came to pass, when they brought out those kings unto Joshua, that Joshua called for all the men of Israel, and said unto the captains of the men of war which went with him, Come near, put your feet upon the necks of these kings. And they came near, and put their feet upon the necks of them."

Joshua 10:27: "And it came to pass at the time of the going down of the sun, that Joshua commanded, and they took them down off the trees, and cast them into the cave wherein they had been hid, and laid great stones in the cave's mouth, which remain until this very day."

Joshua 10:32: "And the LORD delivered Lachish into the hand of Israel, which took it on the second day, and smote it with the edge of the sword, and all the souls that were therein, according to all that he had done to Libnah."

Joshua 12:1: "Now these are the kings of the land, which the children of Israel smote, and possessed their land on the other side Jordan toward the rising of the sun, from the river Arnon unto mount Hermon, and all the plain on the east:"

Joshua 12:2: "Sihon king of the Amorites, who dwelt in Heshbon, and ruled from Aroer, which is upon the bank of the river Arnon, and from the middle of the river, and from half Gilead, even unto the river Jabbok, which is the border of the children of Ammon;"

Joshua 12:4: "And the coast of Og king of Bashan, which was of the remnant of the giants, that dwelt at Ashtaroth and at Edrei,"

Joshua 12:7: "And these are the kings of the country which Joshua and the children of Israel smote on this side Jordan on the west, from Baalgad in the valley of Lebanon even unto the mount Halak, that goeth up to Seir; which Joshua gave unto the tribes of Israel for a possession according to their divisions;"

Joshua 12:9: "The king of Jericho, one; the king of Ai, which is beside Bethel, one;"

Joshua 13:3: "From Sihor, which is before Egypt, even unto the borders of Ekron northward, which is counted to the Canaanite: five lords of the Philistines; the Gazathites, and the Ashdothites, the Eshkalonites, the Gittites, and the Ekronites; also the Avites:"

Joshua 13:8: "With whom the Reubenites and the Gadites have received their inheritance, which Moses gave them, beyond Jordan eastward, even as Moses the servant of the LORD gave them;"

Joshua 13:10: "And all the cities of Sihon king of the Amorites, which reigned in Heshbon, unto the border of the children of Ammon;"

Joshua 13:12: "All the kingdom of Og in Bashan, which reigned in Ashtaroth and in Edrei, who

remained of the remnant of the giants: for these did Moses smite, and cast them out."

Joshua 13:21: "And all the cities of the plain, and all the kingdom of Sihon king of the Amorites, which reigned in Heshbon, whom Moses smote with the princes of Midian, Evi, and Rekem, and Zur, and Hur, and Reba, which were dukes of Sihon, dwelling in the country."

Joshua 13:30: "And their coast was from Mahanaim, all Bashan, all the kingdom of Og king of Bashan, and all the towns of Jair, which are in Bashan, threescore cities:"

Joshua 13:32: "These are the countries which Moses did distribute for inheritance in the plains of Moab, on the other side Jordan, by Jericho, eastward."

Joshua 14:1: "And these are the countries which the children of Israel inherited in the land of Canaan, which Eleazar the priest, and Joshua the son of Nun, and the heads of the fathers of the tribes of the children of Israel, distributed for inheritance to them."

Joshua 14:15: "And the name of Hebron before was Kirjatharba; which Arba was a great man among the Anakims. And the land had rest from war."

Joshua 15:7: "And the border went up toward Debir from the valley of Achor, and so northward, looking toward Gilgal, that is before the going up to Adummim, which is on the south side of the river: and the border passed toward the waters of Enshemesh, and the goings out thereof were at Enrogel:"

Joshua 15:8: "And the border went up by the valley of the son of Hinnom unto the south side of the Jebusite; the same is Jerusalem: and the border went up to the top of the mountain that lieth before the valley of Hinnom westward, which is at the end of the valley of the giants northward:"

Joshua 15:9: "And the border was drawn from the top of the hill unto the fountain of the water of Nephtoah, and went out to the cities of mount Ephron; and the border was drawn to Baalah, which is Kirjathjearim:"

Joshua 15:10: "And the border compassed from Baalah westward unto mount Seir, and passed along unto the side of mount Jearim, which is Chesalon, on the north side, and went down to Bethshemesh, and passed on to Timnah:"

Joshua 15:13: "And unto Caleb the son of Jephunneh he gave a part among the children of Judah, according to the commandment of the LORD to Joshua, even the city of Arba the father of Anak, which city is Hebron."

Joshua 15:25: "And Hazor, Hadattah, and Kerioth, and Hezron, which is Hazor,"

Joshua 15:49: "And Dannah, and Kirjathsannah, which is Debir,"

Joshua 15:54: "And Humtah, and Kirjatharba, which is Hebron, and Zior; nine cities with their villages:"

Joshua 15:60: "Kirjathbaal, which is Kirjathjearim, and Rabbah; two cities with their villages:"

Joshua 17:5: "And there fell ten portions to Manasseh, beside the land of Gilead and Bashan, which were on the other side Jordan;"

Joshua 18:2: "And there remained among the children of Israel seven tribes, which had not yet received their inheritance."

Joshua 18:3: "And Joshua said unto the children of Israel, How long are ye slack to go to possess the land, which the LORD God of your fathers hath given you?"

Joshua 18:7: "But the Levites have no part among you; for the priesthood of the LORD is their inheritance: and Gad, and Reuben, and half the tribe of Manasseh, have received their inheritance beyond Jordan on the east, which Moses the servant of the LORD gave them."

Joshua 18:13: "And the border went over from thence toward Luz, to the side of Luz, which is Bethel, southward; and the border descended to Atarothadar, near the hill that lieth on the south side of the nether Bethhoron."

Joshua 18:14: "And the border was drawn thence, and compassed the corner of the sea southward, from the hill that lieth before Bethhoron southward; and the goings out thereof were at Kirjathbaal, which is Kirjathjearim, a city of the children of Judah: this was the west quarter."

Joshua 18:16: "And the border came down to the end of the mountain that lieth before the valley of

the son of Hinnom, and which is in the valley of the giants on the north, and descended to the valley of Hinnom, to the side of Jebusi on the south, and descended to Enrogel,"

Joshua 18:17: "And was drawn from the north, and went forth to Enshemesh, and went forth toward Geliloth, which is over against the going up of Adummim, and descended to the stone of Bohan the son of Reuben,"

Joshua 18:28: "And Zelah, Eleph, and Jebusi, which is Jerusalem, Gibeath, and Kirjath; fourteen cities with their villages. This is the inheritance of the children of Benjamin according to their families."

Joshua 19:50: "According to the word of the LORD they gave him the city which he asked, even Timnathserah in mount Ephraim: and he built the city, and dwelt therein."

Joshua 19:51: "These are the inheritances, which Eleazar the priest, and Joshua the son of Nun, and the heads of the fathers of the tribes of the children of Israel, divided for an inheritance by lot in Shiloh before the LORD, at the door of the tabernacle of the congregation. So they made an end of dividing the country."

Joshua 20:7: "And they appointed Kedesh in Galilee in mount Naphtali, and Shechem in mount Ephraim, and Kirjatharba, which is Hebron, in the mountain of Judah."

Joshua 21:4: "And the lot came out for the families of the Kohathites: and the children of Aaron the priest, which were of the Levites, had by lot out of the tribe of Judah, and out of the tribe of Simeon, and out of the tribe of Benjamin, thirteen cities."

Joshua 21:9: "And they gave out of the tribe of the children of Judah, and out of the tribe of the children of Simeon, these cities which are here mentioned by name."

Joshua 21:10: "Which the children of Aaron, being of the families of the Kohathites, who were of the children of Levi, had: for theirs was the first lot."

Joshua 21:11: "And they gave them the city of Arba the father of Anak, which city is Hebron, in the hill country of Judah, with the suburbs thereof round about it."

Joshua 21:20: "And the families of the children of Kohath, the Levites which remained of the children of Kohath, even they had the cities of their lot out of the tribe of Ephraim."

Joshua 21:40: "So all the cities for the children of Merari by their families, which were remaining of the families of the Levites, were by their lot twelve cities."

Joshua 21:43: "And the LORD gave unto Israel all the land which he sware to give unto their fathers; and they possessed it, and dwelt therein."

Joshua 21:45: "There failed not ought of any good thing which the LORD had spoken unto the house of Israel; all came to pass."

Joshua 22:4: "And now the LORD your God hath given rest unto your brethren, as he promised them: therefore now return ye, and get you unto your tents, and unto the land of your possession, which Moses the servant of the LORD gave you on the other side Jordan."

Joshua 22:5: "But take diligent heed to do the commandment and the law, which Moses the servant of the LORD charged you, to love the LORD your God, and to walk in all his ways, and to keep his commandments, and to cleave unto him, and to serve him with all your heart and with all your soul."

Joshua 22:9: "And the children of Reuben and the children of Gad and the half tribe of Manasseh returned, and departed from the children of Israel out of Shiloh, which is in the land of Canaan, to go unto the country of Gilead, to the land of their possession, whereof they were possessed, according to the word of the LORD by the hand of Moses."

Joshua 22:17: "Is the iniquity of Peor too little for us, from which we are not cleansed until this day, although there was a plague in the congregation of the LORD,"

Joshua 22:28: "Therefore said we, that it shall be, when they should so say to us or to our generations in time to come, that we may say again, Behold the pattern of the altar of the LORD, which our fathers made, not for burnt offerings, nor for sacrifices; but it is a witness between us and you."

Joshua 22:30: "And when Phinehas the priest, and the princes of the congregation and heads of the thousands of Israel which were with him, heard the words that the children of Reuben and the children of Gad and the children of Manasseh spake, it pleased them."

Joshua 23:13: "Know for a certainty that the LORD your God will no more drive out any of these nations from before you; but they shall be snares and traps unto you, and scourges in your sides, and thorns in your eyes, until ye perish from off this good land which the LORD your God hath given you."

Joshua 23:14: "And, behold, this day I am going the way of all the earth: and ye know in all your hearts and in all your souls, that not one thing hath failed of all the good things which the LORD your God spake concerning you; all are come to pass unto you, and not one thing hath failed thereof."

Joshua 23:15: "Therefore it shall come to pass, that as all good things are come upon you, which the LORD your God promised you; so shall the LORD bring upon you all evil things, until he have destroyed you from off this good land which the LORD your God hath given you."

Joshua 23:16: "When ye have transgressed the covenant of the LORD your God, which he commanded you, and have gone and served other gods, and bowed yourselves to them; then shall the anger of the LORD be kindled against you, and ye shall perish quickly from off the good land which he hath given unto you."

Joshua 24:5: "I sent Moses also and Aaron, and I plagued Egypt, according to that which I did among them: and afterward I brought you out."

Joshua 24:8: "And I brought you into the land of the Amorites, which dwelt on the other side Jordan; and they fought with you: and I gave them into your hand, that ye might possess their land; and I destroyed them from before you."

Joshua 24:12: "And I sent the hornet before you, which drave them out from before you, even the two kings of the Amorites; but not with thy sword, nor with thy bow."

Joshua 24:13: "And I have given you a land for which ye did not labour, and cities which ye built not, and ye dwell in them; of the vineyards and oliveyards which ye planted not do ye eat."

Joshua 24:14: "Now therefore fear the LORD, and serve him in sincerity and in truth: and put away the gods which your fathers served on the other side of the flood, and in Egypt; and serve ye the LORD."

Joshua 24:15: "And if it seem evil unto you to serve the LORD, choose you this day whom ye will serve; whether the gods which your fathers served that were on the other side of the flood, or the gods of the Amorites, in whose land ye dwell: but as for me and my house, we will serve the LORD."

Joshua 24:17: "For the LORD our God, he it is that brought us up and our fathers out of the land of Egypt, from the house of bondage, and which did those great signs in our sight, and preserved us in all the way wherein we went, and among all the people through whom we passed:"

Joshua 24:18: "And the LORD drave out from before us all the people, even the Amorites which dwelt in the land: therefore will we also serve the LORD; for he is our God."

Joshua 24:23: "Now therefore put away, said he, the strange gods which are among you, and incline your heart unto the LORD God of Israel."

Joshua 24:27: "And Joshua said unto all the people, Behold, this stone shall be a witness unto us; for it hath heard all the words of the LORD which he spake unto us: it shall be therefore a witness unto you, lest ye deny your God."

Joshua 24:30: "And they buried him in the border of his inheritance in Timnathserah, which is in mount Ephraim, on the north side of the hill of Gaash."

Joshua 24:31: "And Israel served the LORD all the days of Joshua, and all the days of the elders that overlived Joshua, and which had known all the works of the LORD, that he had done for Israel."

Joshua 24:32: "And the bones of Joseph, which the children of Israel brought up out of Egypt,

buried they in Shechem, in a parcel of ground which Jacob bought of the sons of Hamor the father of Shechem for an hundred pieces of silver: and it became the inheritance of the children of Joseph."

Joshua 24:33: "And Eleazar the son of Aaron died; and they buried him in a hill that pertained to Phinehas his son, which was given him in mount Ephraim."

Judges 1:16: "And the children of the Kenite, Moses' father in law, went up out of the city of palm trees with the children of Judah into the wilderness of Judah, which lieth in the south of Arad; and they went and dwelt among the people."

Judges 1:26: "And the man went into the land of the Hittites, and built a city, and called the name thereof Luz: which is the name thereof unto this day."

Judges 2:1: "And an angel of the LORD came up from Gilgal to Bochim, and said, I made you to go up out of Egypt, and have brought you unto the land which I sware unto your fathers; and I said, I will never break my covenant with you."

Judges 2:10: "And also all that generation were gathered unto their fathers: and there arose another generation after them, which knew not the LORD, nor yet the works which he had done for Israel."

Judges 2:12: "And they forsook the LORD God of their fathers, which brought them out of the land of Egypt, and followed other gods, of the gods of the people that were round about them, and bowed themselves unto them, and provoked the LORD to anger."

Judges 2:16: "Nevertheless the LORD raised up judges, which delivered them out of the hand of those that spoiled them."

Judges 2:17: "And yet they would not hearken unto their judges, but they went a whoring after other gods, and bowed themselves unto them: they turned quickly out of the way which their fathers walked in, obeying the commandments of the LORD; but they did not so."

Judges 2:20: "And the anger of the LORD was hot against Israel; and he said, Because that this people hath transgressed my covenant which I commanded their fathers, and have not hearkened unto my voice;"

Judges 2:21: "I also will not henceforth drive out any from before them of the nations which Joshua left when he died:"

Judges 3:1: "Now these are the nations which the LORD left, to prove Israel by them, even as many of Israel as had not known all the wars of Canaan;"

Judges 3:4: "And they were to prove Israel by them, to know whether they would hearken unto the commandments of the LORD, which he commanded their fathers by the hand of Moses."

Judges 3:16: "But Ehud made him a dagger which had two edges, of a cubit length; and he did gird it under his raiment upon his right thigh."

Judges 3:20: "And Ehud came unto him; and he was sitting in a summer parlour, which he had for himself alone. And Ehud said, I have a message from God unto thee. And he arose out of his seat."

Judges 3:31: "And after him was Shamgar the son of Anath, which slew of the Philistines six hundred men with an ox goad: and he also delivered Israel."

Judges 4:2: "And the LORD sold them into the hand of Jabin king of Canaan, that reigned in Hazor; the captain of whose host was Sisera, which dwelt in Harosheth of the Gentiles."

Judges 4:11: "Now Heber the Kenite, which was of the children of Hobab the father in law of Moses, had severed himself from the Kenites, and pitched his tent unto the plain of Zaanaim, which is by Kedesh."

Judges 4:14: "And Deborah said unto Barak, Up; for this is the day in which the LORD hath delivered Sisera into thine hand: is not the LORD gone out before thee? So Barak went down from mount Tabor, and ten thousand men after him."

Judges 6:2: "And the hand of Midian prevailed against Israel: and because of the Midianites the children of Israel made them the dens which are in the mountains, and caves, and strong holds."

Judges 6:8: "That the LORD sent a prophet unto the children of Israel, which said unto them, Thus saith the LORD God of Israel, I brought you up from Egypt, and brought you forth out of the house

of bondage;"

Judges 6:11: "And there came an angel of the LORD, and sat under an oak which was in Ophrah, that pertained unto Joash the Abiezrite: and his son Gideon threshed wheat by the winepress, to hide it from the Midianites."

Judges 6:13: "And Gideon said unto him, Oh my Lord, if the LORD be with us, why then is all this befallen us? and where be all his miracles which our fathers told us of, saying, Did not the LORD bring us up from Egypt? but now the LORD hath forsaken us, and delivered us into the hands of the Midianites."

Judges 6:26: "And build an altar unto the LORD thy God upon the top of this rock, in the ordered place, and take the second bullock, and offer a burnt sacrifice with the wood of the grove which thou shalt cut down."

Judges 8:27: "And Gideon made an ephod thereof, and put it in his city, even in Ophrah: and all Israel went thither a whoring after it: which thing became a snare unto Gideon, and to his house."

Judges 8:35: "Neither shewed they kindness to the house of Jerubbaal, namely, Gideon, according to all the goodness which he had shewed unto Israel."

Judges 9:2: "Speak, I pray you, in the ears of all the men of Shechem, Whether is better for you, either that all the sons of Jerubbaal, which are threescore and ten persons, reign over you, or that one reign over you? remember also that I am your bone and your flesh."

Judges 9:4: "And they gave him threescore and ten pieces of silver out of the house of Baalberith, wherewith Abimelech hired vain and light persons, which followed him."

Judges 9:13: "And the vine said unto them, Should I leave my wine, which cheereth God and man, and go to be promoted over the trees?"

Judges 9:24: "That the cruelty done to the threescore and ten sons of Jerubbaal might come, and their blood be laid upon Abimelech their brother, which slew them; and upon the men of Shechem, which aided him in the killing of his brethren."

Judges 9:56: "Thus God rendered the wickedness of Abimelech, which he did unto his father, in slaying his seventy brethren:"

Judges 10:4: "And he had thirty sons that rode on thirty ass colts, and they had thirty cities, which are called Havothjair unto this day, which are in the land of Gilead."

Judges 10:8: "And that year they vexed and oppressed the children of Israel: eighteen years, all the children of Israel that were on the other side Jordan in the land of the Amorites, which is in Gilead."

Judges 10:14: "Go and cry unto the gods which ye have chosen; let them deliver you in the time of your tribulation."

Judges 11:24: "Wilt not thou possess that which Chemosh thy god giveth thee to possess? So whomsoever the LORD our God shall drive out from before us, them will we possess."

Judges 11:28: "Howbeit the king of the children of Ammon hearkened not unto the words of Jephthah which he sent him."

Judges 11:36: "And she said unto him, My father, if thou hast opened thy mouth unto the LORD, do to me according to that which hath proceeded out of thy mouth; forasmuch as the LORD hath taken vengeance for thee of thine enemies, even of the children of Ammon."

Judges 11:39: "And it came to pass at the end of two months, that she returned unto her father, who did with her according to his vow which he had vowed: and she knew no man. And it was a custom in Israel,"

Judges 12:5: "And the Gileadites took the passages of Jordan before the Ephraimites: and it was so, that when those Ephraimites which were escaped said, Let me go over; that the men of Gilead said unto him, Art thou an Ephraimite? If he said, Nay;"

Judges 13:8: "Then Manoah intreated the LORD, and said, O my Lord, let the man of God which thou didst send come again unto us, and teach us what we shall do unto the child that shall be born."

Judges 14:19: "And the Spirit of the LORD came upon him, and he went down to Ashkelon, and slew thirty men of them, and took their spoil, and gave change of garments unto them which

expounded the riddle. And his anger was kindled, and he went up to his father's house."

Judges 15:19: "But God clave an hollow place that was in the jaw, and there came water thereout; and when he had drunk, his spirit came again, and he revived: wherefore he called the name thereof Enhakkore, which is in Lehi unto this day."

Judges 16:8: "Then the lords of the Philistines brought up to her seven green withs which had not been dried, and she bound him with them."

Judges 16:24: "And when the people saw him, they praised their god: for they said, Our god hath delivered into our hands our enemy, and the destroyer of our country, which slew many of us."

Judges 16:29: "And Samson took hold of the two middle pillars upon which the house stood, and on which it was borne up, of the one with his right hand, and of the other with his left."

Judges 16:30: "And Samson said, Let me die with the Philistines. And he bowed himself with all his might; and the house fell upon the lords, and upon all the people that were therein. So the dead which he slew at his death were more than they which he slew in his life."

Judges 17:2: "And he said unto his mother, The eleven hundred shekels of silver that were taken from thee, about which thou cursedst, and spakest of also in mine ears, behold, the silver is with me; I took it. And his mother said, Blessed be thou of the LORD, my son."

Judges 17:6: "In those days there was no king in Israel, but every man did that which was right in his own eyes."

Judges 18:5: "And they said unto him, Ask counsel, we pray thee, of God, that we may know whether our way which we go shall be prosperous."

Judges 18:16: "And the six hundred men appointed with their weapons of war, which were of the children of Dan, stood by the entering of the gate."

Judges 18:24: "And he said, Ye have taken away my gods which I made, and the priest, and ye are gone away: and what have I more? and what is this that ye say unto me, What aileth thee?"

Judges 18:27: "And they took the things which Micah had made, and the priest which he had, and came unto Laish, unto a people that were at quiet and secure: and they smote them with the edge of the sword, and burnt the city with fire."

Judges 18:31: "And they set them up Micah's graven image, which he made, all the time that the house of God was in Shiloh."

Judges 19:10: "But the man would not tarry that night, but he rose up and departed, and came over against Jebus, which is Jerusalem; and there were with him two asses saddled, his concubine also was with him."

Judges 19:14: "And they passed on and went their way; and the sun went down upon them when they were by Gibeah, which belongeth to Benjamin."

Judges 19:16: "And, behold, there came an old man from his work out of the field at even, which was also of mount Ephraim; and he sojourned in Gibeah: but the men of the place were Benjamites."

Judges 19:19: "Yet there is both straw and provender for our asses; and there is bread and wine also for me, and for thy handmaid, and for the young man which is with thy servants: there is no want of any thing."

Judges 20:9: "But now this shall be the thing which we will do to Gibeah; we will go up by lot against it;"

Judges 20:13: "Now therefore deliver us the men, the children of Belial, which are in Gibeah, that we may put them to death, and put away evil from Israel. But the children of Benjamin would not hearken to the voice of their brethren the children of Israel."

Judges 20:15: "And the children of Benjamin were numbered at that time out of the cities twenty and six thousand men that drew sword, beside the inhabitants of Gibeah, which were numbered seven hundred chosen men."

Judges 20:18: "And the children of Israel arose, and went up to the house of God, and asked counsel of God, and said, Which of us shall go up first to the battle against the children of Benjamin? And

the LORD said, Judah shall go up first."

Judges 20:31: "And the children of Benjamin went out against the people, and were drawn away from the city; and they began to smite of the people, and kill, as at other times, in the highways, of which one goeth up to the house of God, and the other to Gibeah in the field, about thirty men of Israel."

Judges 20:36: "So the children of Benjamin saw that they were smitten: for the men of Israel gave place to the Benjamites, because they trusted unto the liers in wait which they had set beside Gibeah."

Judges 20:42: "Therefore they turned their backs before the men of Israel unto the way of the wilderness; but the battle overtook them; and them which came out of the cities they destroyed in the midst of them."

Judges 20:46: "So that all which fell that day of Benjamin were twenty and five thousand men that drew the sword; all these were men of valour."

Judges 21:12: "And they found among the inhabitants of Jabeshgilead four hundred young virgins, that had known no man by lying with any male: and they brought them unto the camp to Shiloh, which is in the land of Canaan."

Judges 21:14: "And Benjamin came again at that time; and they gave them wives which they had saved alive of the women of Jabeshgilead: and yet so they sufficed them not."

Judges 21:19: "Then they said, Behold, there is a feast of the LORD in Shiloh yearly in a place which is on the north side of Bethel, on the east side of the highway that goeth up from Bethel to Shechem, and on the south of Lebonah."

Judges 21:25: "In those days there was no king in Israel: every man did that which was right in his own eyes."

Ruth 1:22: "So Naomi returned, and Ruth the Moabitess, her daughter in law, with her, which returned out of the country of Moab: and they came to Bethlehem in the beginning of barley harvest."

Ruth 2:9: "Let thine eyes be on the field that they do reap, and go thou after them: have I not charged the young men that they shall not touch thee? and when thou art athirst, go unto the vessels, and drink of that which the young men have drawn."

Ruth 2:11: "And Boaz answered and said unto her, It hath fully been shewed me, all that thou hast done unto thy mother in law since the death of thine husband: and how thou hast left thy father and thy mother, and the land of thy nativity, and art come unto a people which thou knewest not heretofore."

Ruth 4:3: "And he said unto the kinsman, Naomi, that is come again out of the country of Moab, selleth a parcel of land, which was our brother Elimelech's:"

Ruth 4:11: "And all the people that were in the gate, and the elders, said, We are witnesses. The LORD make the woman that is come into thine house like Rachel and like Leah, which two did build the house of Israel: and do thou worthily in Ephratah, and be famous in Bethlehem:"

Ruth 4:12: "And let thy house be like the house of Pharez, whom Tamar bare unto Judah, of the seed which the LORD shall give thee of this young woman."

Ruth 4:14: "And the women said unto Naomi, Blessed be the LORD, which hath not left thee this day without a kinsman, that his name may be famous in Israel."

Ruth 4:15: "And he shall be unto thee a restorer of thy life, and a nourisher of thine old age: for thy daughter in law, which loveth thee, which is better to thee than seven sons, hath born him."

1 Samuel 1:27: "For this child I prayed; and the LORD hath given me my petition which I asked of him:"

1 Samuel 2:20: "And Eli blessed Elkanah and his wife, and said, The LORD give thee seed of this woman for the loan which is lent to the LORD. And they went unto their own home."

1 Samuel 2:29: "Wherefore kick ye at my sacrifice and at mine offering, which I have commanded in my habitation; and honourest thy sons above me, to make yourselves fat with the chiefest of all



the offerings of Israel my people?"

1 Samuel 2:32: "And thou shalt see an enemy in my habitation, in all the wealth which God shall give Israel: and there shall not be an old man in thine house for ever."

1 Samuel 2:35: "And I will raise me up a faithful priest, that shall do according to that which is in mine heart and in my mind: and I will build him a sure house; and he shall walk before mine anointed for ever."

1 Samuel 3:11: "And the LORD said to Samuel, Behold, I will do a thing in Israel, at which both the ears of every one that heareth it shall tingle."

1 Samuel 3:12: "In that day I will perform against Eli all things which I have spoken concerning his house: when I begin, I will also make an end."

1 Samuel 3:13: "For I have told him that I will judge his house for ever for the iniquity which he knoweth; because his sons made themselves vile, and he restrained them not."

1 Samuel 4:4: "So the people sent to Shiloh, that they might bring from thence the ark of the covenant of the LORD of hosts, which dwelleth between the cherubims: and the two sons of Eli, Hophni and Phinehas, were there with the ark of the covenant of God."

1 Samuel 6:4: "Then said they, What shall be the trespass offering which we shall return to him? They answered, Five golden emerods, and five golden mice, according to the number of the lords of the Philistines: for one plague was on you all, and on your lords."

1 Samuel 6:7: "Now therefore make a new cart, and take two milch kine, on which there hath come no yoke, and tie the kine to the cart, and bring their calves home from them:"

1 Samuel 6:8: "And take the ark of the LORD, and lay it upon the cart; and put the jewels of gold, which ye return him for a trespass offering, in a coffer by the side thereof; and send it away, that it may go."

1 Samuel 6:17: "And these are the golden emerods which the Philistines returned for a trespass offering unto the LORD; for Ashdod one, for Gaza one, for Askelon one, for Gath one, for Ekron one;"

1 Samuel 6:18: "And the golden mice, according to the number of all the cities of the Philistines belonging to the five lords, both of fenced cities, and of country villages, even unto the great stone of Abel, whereon they set down the ark of the LORD: which stone remaineth unto this day in the field of Joshua, the Bethshemite."

1 Samuel 7:14: "And the cities which the Philistines had taken from Israel were restored to Israel, from Ekron even unto Gath; and the coasts thereof did Israel deliver out of the hands of the Philistines. And there was peace between Israel and the Amorites."

1 Samuel 8:8: "According to all the works which they have done since the day that I brought them up out of Egypt even unto this day, wherewith they have forsaken me, and served other gods, so do they also unto thee."

1 Samuel 8:18: "And ye shall cry out in that day because of your king which ye shall have chosen you; and the LORD will not hear you in that day."

1 Samuel 9:22: "And Samuel took Saul and his servant, and brought them into the parlour, and made them sit in the chiefest place among them that were bidden, which were about thirty persons."

1 Samuel 9:23: "And Samuel said unto the cook, Bring the portion which I gave thee, of which I said unto thee, Set it by thee."

1 Samuel 9:24: "And the cook took up the shoulder, and that which was upon it, and set it before Saul. And Samuel said, Behold that which is left! set it before thee, and eat: for unto this time hath it been kept for thee since I said, I have invited the people. So Saul did eat with Samuel that day."

1 Samuel 10:2: "When thou art departed from me to day, then thou shalt find two men by Rachel's sepulchre in the border of Benjamin at Zelzah; and they will say unto thee, The asses which thou wentest to seek are found: and, lo, thy father hath left the care of the asses, and sorroweth for you, saying, What shall I do for my son?"

1 Samuel 10:4: "And they will salute thee, and give thee two loaves of bread; which thou shalt

receive of their hands."

1 Samuel 11:11: "And it was so on the morrow, that Saul put the people in three companies; and they came into the midst of the host in the morning watch, and slew the Ammonites until the heat of the day: and it came to pass, that they which remained were scattered, so that two of them were not left together."

1 Samuel 12:7: "Now therefore stand still, that I may reason with you before the LORD of all the righteous acts of the LORD, which he did to you and to your fathers."

1 Samuel 12:8: "When Jacob was come into Egypt, and your fathers cried unto the LORD, then the LORD sent Moses and Aaron, which brought forth your fathers out of Egypt, and made them dwell in this place."

1 Samuel 12:16: "Now therefore stand and see this great thing, which the LORD will do before your eyes."

1 Samuel 12:17: "Is it not wheat harvest to day? I will call unto the LORD, and he shall send thunder and rain; that ye may perceive and see that your wickedness is great, which ye have done in the sight of the LORD, in asking you a king."

1 Samuel 12:21: "And turn ye not aside: for then should ye go after vain things, which cannot profit nor deliver; for they are vain."

1 Samuel 13:5: "And the Philistines gathered themselves together to fight with Israel, thirty thousand chariots, and six thousand horsemen, and people as the sand which is on the sea shore in multitude: and they came up, and pitched in Michmash, eastward from Bethaven."

1 Samuel 13:13: "And Samuel said to Saul, Thou hast done foolishly: thou hast not kept the commandment of the LORD thy God, which he commanded thee: for now would the LORD have established thy kingdom upon Israel for ever."

1 Samuel 13:14: "But now thy kingdom shall not continue: the LORD hath sought him a man after his own heart, and the LORD hath commanded him to be captain over his people, because thou hast not kept that which the LORD commanded thee."

1 Samuel 14:2: "And Saul tarried in the uttermost part of Gibeah under a pomegranate tree which is in Migron: and the people that were with him were about six hundred men;"

1 Samuel 14:4: "And between the passages, by which Jonathan sought to go over unto the Philistines' garrison, there was a sharp rock on the one side, and a sharp rock on the other side: and the name of the one was Bozez, and the name of the other Seneh."

1 Samuel 14:14: "And that first slaughter, which Jonathan and his armourbearer made, was about twenty men, within as it were an half acre of land, which a yoke of oxen might plow."

1 Samuel 14:21: "Moreover the Hebrews that were with the Philistines before that time, which went up with them into the camp from the country round about, even they also turned to be with the Israelites that were with Saul and Jonathan."

1 Samuel 14:22: "Likewise all the men of Israel which had hid themselves in mount Ephraim, when they heard that the Philistines fled, even they also followed hard after them in the battle."

1 Samuel 14:30: "How much more, if haply the people had eaten freely to day of the spoil of their enemies which they found? for had there not been now a much greater slaughter among the Philistines?"

1 Samuel 14:39: "For, as the LORD liveth, which saveth Israel, though it be in Jonathan my son, he shall surely die. But there was not a man among all the people that answered him."

1 Samuel 15:2: "Thus saith the LORD of hosts, I remember that which Amalek did to Israel, how he laid wait for him in the way, when he came up from Egypt."

1 Samuel 15:14: "And Samuel said, What meaneth then this bleating of the sheep in mine ears, and the lowing of the oxen which I hear?"

1 Samuel 15:20: "And Saul said unto Samuel, Yea, I have obeyed the voice of the LORD, and have gone the way which the LORD sent me, and have brought Agag the king of Amalek, and have utterly destroyed the Amalekites."

1 Samuel 15:21: "But the people took of the spoil, sheep and oxen, the chief of the things which should have been utterly destroyed, to sacrifice unto the LORD thy God in Gilgal."

1 Samuel 16:4: "And Samuel did that which the LORD spake, and came to Bethlehem. And the elders of the town trembled at his coming, and said, Comest thou peaceably?"

1 Samuel 16:16: "Let our lord now command thy servants, which are before thee, to seek out a man, who is a cunning player on an harp: and it shall come to pass, when the evil spirit from God is upon thee, that he shall play with his hand, and thou shalt be well."

1 Samuel 16:19: "Wherefore Saul sent messengers unto Jesse, and said, Send me David thy son, which is with the sheep."

1 Samuel 17:1: "Now the Philistines gathered together their armies to battle, and were gathered together at Shochoh, which belongeth to Judah, and pitched between Shochoh and Azekah, in Ephesdammim."

1 Samuel 17:31: "And when the words were heard which David spake, they rehearsed them before Saul: and he sent for him."

1 Samuel 17:40: "And he took his staff in his hand, and chose him five smooth stones out of the brook, and put them in a shepherd's bag which he had, even in a scrip; and his sling was in his hand: and he drew near to the Philistine."

1 Samuel 20:23: "And as touching the matter which thou and I have spoken of, behold, the LORD be between thee and me for ever."

1 Samuel 20:27: "And it came to pass on the morrow, which was the second day of the month, that David's place was empty: and Saul said unto Jonathan his son, Wherefore cometh not the son of Jesse to meat, neither yesterday, nor to day?"

1 Samuel 20:36: "And he said unto his lad, Run, find out now the arrows which I shoot. And as the lad ran, he shot an arrow beyond him."

1 Samuel 20:37: "And when the lad was come to the place of the arrow which Jonathan had shot, Jonathan cried after the lad, and said, Is not the arrow beyond thee?"

1 Samuel 22:9: "Then answered Doeg the Edomite, which was set over the servants of Saul, and said, I saw the son of Jesse coming to Nob, to Ahimelech the son of Ahitub."

1 Samuel 22:14: "Then Ahimelech answered the king, and said, And who is so faithful among all thy servants as David, which is the king's son in law, and goeth at thy bidding, and is honourable in thine house?"

1 Samuel 23:13: "Then David and his men, which were about six hundred, arose and departed out of Keilah, and went whithersoever they could go. And it was told Saul that David was escaped from Keilah; and he forbore to go forth."

1 Samuel 23:19: "Then came up the Ziphites to Saul to Gibeah, saying, Doth not David hide himself with us in strong holds in the wood, in the hill of Hachilah, which is on the south of Jeshimon?"

1 Samuel 24:4: "And the men of David said unto him, Behold the day of which the LORD said unto thee, Behold, I will deliver thine enemy into thine hand, that thou mayest do to him as it shall seem good unto thee. Then David arose, and cut off the skirt of Saul's robe privily."

1 Samuel 25:7: "And now I have heard that thou hast shearers: now thy shepherds which were with us, we hurt them not, neither was there ought missing unto them, all the while they were in Carmel."

1 Samuel 25:27: "And now this blessing which thine handmaid hath brought unto my lord, let it even be given unto the young men that follow my lord."

1 Samuel 25:32: "And David said to Abigail, Blessed be the LORD God of Israel, which sent thee this day to meet me:"

1 Samuel 25:33: "And blessed be thy advice, and blessed be thou, which hast kept me this day from coming to shed blood, and from avenging myself with mine own hand."

1 Samuel 25:34: "For in very deed, as the LORD God of Israel liveth, which hath kept me back from hurting thee, except thou hadst hastened and come to meet me, surely there had not been left

unto Nabal by the morning light any that pisseth against the wall."

1 Samuel 25:35: "So David received of her hand that which she had brought him, and said unto her, Go up in peace to thine house; see, I have hearkened to thy voice, and have accepted thy person."

1 Samuel 25:44: "But Saul had given Michal his daughter, David's wife, to Phalti the son of Laish, which was of Gallim."

1 Samuel 26:1: "And the Ziphites came unto Saul to Gibeah, saying, Doth not David hide himself in the hill of Hachilah, which is before Jeshimon?"

1 Samuel 26:3: "And Saul pitched in the hill of Hachilah, which is before Jeshimon, by the way. But David abode in the wilderness, and he saw that Saul came after him into the wilderness."

1 Samuel 28:21: "And the woman came unto Saul, and saw that he was sore troubled, and said unto him, Behold, thine handmaid hath obeyed thy voice, and I have put my life in my hand, and have hearkened unto thy words which thou spakest unto me."

1 Samuel 29:1: "Now the Philistines gathered together all their armies to Aphek: and the Israelites pitched by a fountain which is in Jezreel."

1 Samuel 29:3: "Then said the princes of the Philistines, What do these Hebrews here? And Achish said unto the princes of the Philistines, Is not this David, the servant of Saul the king of Israel, which hath been with me these days, or these years, and I have found no fault in him since he fell unto me unto this day?"

1 Samuel 29:4: "And the princes of the Philistines were wroth with him; and the princes of the Philistines said unto him, Make this fellow return, that he may go again to his place which thou hast appointed him, and let him not go down with us to battle, lest in the battle he be an adversary to us: for wherewith should he reconcile himself unto his master? should it not be with the heads of these men?"

1 Samuel 30:10: "But David pursued, he and four hundred men: for two hundred abode behind, which were so faint that they could not go over the brook Besor."

1 Samuel 30:14: "We made an invasion upon the south of the Cherethites, and upon the coast which belongeth to Judah, and upon the south of Caleb; and we burned Ziklag with fire."

1 Samuel 30:17: "And David smote them from the twilight even unto the evening of the next day: and there escaped not a man of them, save four hundred young men, which rode upon camels, and fled."

1 Samuel 30:20: "And David took all the flocks and the herds, which they drave before those other cattle, and said, This is David's spoil."

1 Samuel 30:21: "And David came to the two hundred men, which were so faint that they could not follow David, whom they had made also to abide at the brook Besor: and they went forth to meet David, and to meet the people that were with him: and when David came near to the people, he saluted them."

1 Samuel 30:23: "Then said David, Ye shall not do so, my brethren, with that which the LORD hath given us, who hath preserved us, and delivered the company that came against us into our hand."

1 Samuel 30:27: "To them which were in Bethel, and to them which were in south Ramoth, and to them which were in Jattir,"

1 Samuel 30:28: "And to them which were in Aroer, and to them which were in Siphmoth, and to them which were in Eshtemoa,"

1 Samuel 30:29: "And to them which were in Rachal, and to them which were in the cities of the Jerahmeelites, and to them which were in the cities of the Kenites,"

1 Samuel 30:30: "And to them which were in Hormah, and to them which were in Chorashan, and to them which were in Athach,"

1 Samuel 30:31: "And to them which were in Hebron, and to all the places where David himself and his men were wont to haunt."

1 Samuel 31:11: "And when the inhabitants of Jabeshgilead heard of that which the Philistines had done to Saul;"

2 Samuel 2:15: "Then there arose and went over by number twelve of Benjamin, which pertained to Ishbosheth the son of Saul, and twelve of the servants of David."

2 Samuel 2:16: "And they caught every one his fellow by the head, and thrust his sword in his fellow's side; so they fell down together: wherefore that place was called Helkathhazzurim, which is in Gibeon."

2 Samuel 2:32: "And they took up Asahel, and buried him in the sepulchre of his father, which was in Bethlehem. And Joab and his men went all night, and they came to Hebron at break of day."

2 Samuel 3:8: "Then was Abner very wroth for the words of Ishbosheth, and said, Am I a dog's head, which against Judah do shew kindness this day unto the house of Saul thy father, to his brethren, and to his friends, and have not delivered thee into the hand of David, that thou chargest me to day with a fault concerning this woman?"

2 Samuel 3:14: "And David sent messengers to Ishbosheth Saul's son, saying, Deliver me my wife Michal, which I espoused to me for an hundred foreskins of the Philistines."

2 Samuel 3:26: "And when Joab was come out from David, he sent messengers after Abner, which brought him again from the well of Sirah: but David knew it not."

2 Samuel 4:8: "And they brought the head of Ishbosheth unto David to Hebron, and said to the king, Behold the head of Ishbosheth the son of Saul thine enemy, which sought thy life; and the LORD hath avenged my lord the king this day of Saul, and of his seed."

2 Samuel 5:6: "And the king and his men went to Jerusalem unto the Jebusites, the inhabitants of the land: which spake unto David, saying, Except thou take away the blind and the lame, thou shalt not come in hither: thinking, David cannot come in hither."

2 Samuel 6:4: "And they brought it out of the house of Abinadab which was at Gibeah, accompanying the ark of God: and Ahio went before the ark."

2 Samuel 6:21: "And David said unto Michal, It was before the LORD, which chose me before thy father, and before all his house, to appoint me ruler over the people of the LORD, over Israel: therefore will I play before the LORD."

2 Samuel 6:22: "And I will yet be more vile than thus, and will be base in mine own sight: and of the maidservants which thou hast spoken of, of them shall I be had in honour."

2 Samuel 7:12: "And when thy days be fulfilled, and thou shalt sleep with thy fathers, I will set up thy seed after thee, which shall proceed out of thy bowels, and I will establish his kingdom."

2 Samuel 7:23: "And what one nation in the earth is like thy people, even like Israel, whom God went to redeem for a people to himself, and to make him a name, and to do for you great things and terrible, for thy land, before thy people, which thou redeemedst to thee from Egypt, from the nations and their gods?"

2 Samuel 8:11: "Which also king David did dedicate unto the LORD, with the silver and gold that he had dedicated of all nations which he subdued;"

2 Samuel 9:3: "And the king said, Is there not yet any of the house of Saul, that I may shew the kindness of God unto him? And Ziba said unto the king, Jonathan hath yet a son, which is lame on his feet."

2 Samuel 10:12: "Be of good courage, and let us play the men for our people, and for the cities of our God: and the LORD do that which seemeth him good."

2 Samuel 12:3: "But the poor man had nothing, save one little ewe lamb, which he had bought and nourished up: and it grew up together with him, and with his children; it did eat of his own meat, and drank of his own cup, and lay in his bosom, and was unto him as a daughter."

2 Samuel 13:10: "And Amnon said unto Tamar, Bring the meat into the chamber, that I may eat of thine hand. And Tamar took the cakes which she had made, and brought them into the chamber to Amnon her brother."

2 Samuel 13:23: "And it came to pass after two full years, that Absalom had sheepshearers in Baalhazor, which is beside Ephraim: and Absalom invited all the king's sons."

2 Samuel 14:7: "And, behold, the whole family is risen against thine handmaid, and they said,

Deliver him that smote his brother, that we may kill him, for the life of his brother whom he slew; and we will destroy the heir also: and so they shall quench my coal which is left, and shall not leave to my husband neither name nor remainder upon the earth."

2 Samuel 14:13: "And the woman said, Wherefore then hast thou thought such a thing against the people of God? for the king doth speak this thing as one which is faulty, in that the king doth not fetch home again his banished."

2 Samuel 14:14: "For we must needs die, and are as water spilt on the ground, which cannot be gathered up again; neither doth God respect any person: yet doth he devise means, that his banished be not expelled from him."

2 Samuel 15:4: "Absalom said moreover, Oh that I were made judge in the land, that every man which hath any suit or cause might come unto me, and I would do him justice!"

2 Samuel 15:7: "And it came to pass after forty years, that Absalom said unto the king, I pray thee, let me go and pay my vow, which I have vowed unto the LORD, in Hebron."

2 Samuel 15:16: "And the king went forth, and all his household after him. And the king left ten women, which were concubines, to keep the house."

2 Samuel 15:18: "And all his servants passed on beside him; and all the Cherethites, and all the Pelethites, and all the Gittites, six hundred men which came after him from Gath, passed on before the king."

2 Samuel 16:11: "And David said to Abishai, and to all his servants, Behold, my son, which came forth of my bowels, seeketh my life: how much more now may this Benjamite do it? let him alone, and let him curse; for the LORD hath bidden him."

2 Samuel 16:21: "And Ahithophel said unto Absalom, Go in unto thy father's concubines, which he hath left to keep the house; and all Israel shall hear that thou art abhorred of thy father: then shall the hands of all that are with thee be strong."

2 Samuel 16:23: "And the counsel of Ahithophel, which he counselled in those days, was as if a man had enquired at the oracle of God: so was all the counsel of Ahithophel both with David and with Absalom."

2 Samuel 17:10: "And he also that is valiant, whose heart is as the heart of a lion, shall utterly melt: for all Israel knoweth that thy father is a mighty man, and they which be with him are valiant men."

2 Samuel 17:18: "Nevertheless a lad saw them, and told Absalom: but they went both of them away quickly, and came to a man's house in Bahurim, which had a well in his court; whither they went down."

2 Samuel 17:25: "And Absalom made Amasa captain of the host instead of Joab: which Amasa was a man's son, whose name was Ithra an Israelite, that went in to Abigail the daughter of Nahash, sister to Zeruiah Joab's mother."

2 Samuel 18:18: "Now Absalom in his lifetime had taken and reared up for himself a pillar, which is in the king's dale: for he said, I have no son to keep my name in remembrance: and he called the pillar after his own name: and it is called unto this day, Absalom's place."

2 Samuel 18:28: "And Ahimaaz called, and said unto the king, All is well. And he fell down to the earth upon his face before the king, and said, Blessed be the LORD thy God, which hath delivered up the men that lifted up their hand against my lord the king."

2 Samuel 19:5: "And Joab came into the house to the king, and said, Thou hast shamed this day the faces of all thy servants, which this day have saved thy life, and the lives of thy sons and of thy daughters, and the lives of thy wives, and the lives of thy concubines;"

2 Samuel 19:16: "And Shimei the son of Gera, a Benjamite, which was of Bahurim, hasted and came down with the men of Judah to meet king David."

2 Samuel 19:19: "And said unto the king, Let not my lord impute iniquity unto me, neither do thou remember that which thy servant did perversely the day that my lord the king went out of Jerusalem, that the king should take it to his heart."

2 Samuel 19:38: "And the king answered, Chimham shall go over with me, and I will do to him that

which shall seem good unto thee: and whatsoever thou shalt require of me, that will I do for thee."

2 Samuel 20:5: "So Amasa went to assemble the men of Judah: but he tarried longer than the set time which he had appointed him."

2 Samuel 20:8: "When they were at the great stone which is in Gibeon, Amasa went before them. And Joab's garment that he had put on was girded unto him, and upon it a girdle with a sword fastened upon his loins in the sheath thereof; and as he went forth it fell out."

2 Samuel 21:12: "And David went and took the bones of Saul and the bones of Jonathan his son from the men of Jabeshgilead, which had stolen them from the street of Bethshan, where the Philistines had hanged them, when the Philistines had slain Saul in Gilboa:"

2 Samuel 21:16: "And Ishbibenob, which was of the sons of the giant, the weight of whose spear weighed three hundred shekels of brass in weight, he being girded with a new sword, thought to have slain David."

2 Samuel 21:18: "And it came to pass after this, that there was again a battle with the Philistines at Gob: then Sibbechai the Hushathite slew Saph, which was of the sons of the giant."

2 Samuel 22:44: "Thou also hast delivered me from the strivings of my people, thou hast kept me to be head of the heathen: a people which I knew not shall serve me."

2 Samuel 23:15: "And David longed, and said, Oh that one would give me drink of the water of the well of Bethlehem, which is by the gate!"

2 Samuel 24:2: "For the king said to Joab the captain of the host, which was with him, Go now through all the tribes of Israel, from Dan even to Beersheba, and number ye the people, that I may know the number of the people."

2 Samuel 24:24: "And the king said unto Araunah, Nay; but I will surely buy it of thee at a price: neither will I offer burnt offerings unto the LORD my God of that which doth cost me nothing. So David bought the threshingfloor and the oxen for fifty shekels of silver."

1 Kings 1:8: "But Zadok the priest, and Benaiah the son of Jehoiada, and Nathan the prophet, and Shimei, and Rei, and the mighty men which belonged to David, were not with Adonijah."

1 Kings 1:9: "And Adonijah slew sheep and oxen and fat cattle by the stone of Zoheleth, which is by Enrogel, and called all his brethren the king's sons, and all the men of Judah the king's servants:"

1 Kings 1:48: "And also thus said the king, Blessed be the LORD God of Israel, which hath given one to sit on my throne this day, mine eyes even seeing it."

1 Kings 2:4: "That the LORD may continue his word which he spake concerning me, saying, If thy children take heed to their way, to walk before me in truth with all their heart and with all their soul, there shall not fail thee (said he) a man on the throne of Israel."

1 Kings 2:8: "And, behold, thou hast with thee Shimei the son of Gera, a Benjamite of Bahurim, which cursed me with a grievous curse in the day when I went to Mahanaim: but he came down to meet me at Jordan, and I sware to him by the LORD, saying, I will not put thee to death with the sword."

1 Kings 2:24: "Now therefore, as the LORD liveth, which hath established me, and set me on the throne of David my father, and who hath made me an house, as he promised, Adonijah shall be put to death this day."

1 Kings 2:27: "So Solomon thrust out Abiathar from being priest unto the LORD; that he might fulfil the word of the LORD, which he spake concerning the house of Eli in Shiloh."

1 Kings 2:31: "And the king said unto him, Do as he hath said, and fall upon him, and bury him; that thou mayest take away the innocent blood, which Joab shed, from me, and from the house of my father."

1 Kings 2:44: "The king said moreover to Shimei, Thou knowest all the wickedness which thine heart is privy to, that thou didst to David my father: therefore the LORD shall return thy wickedness upon thine own head;"

1 Kings 2:46: "So the king commanded Benaiah the son of Jehoiada; which went out, and fell upon him, that he died. And the kingdom was established in the hand of Solomon."

1 Kings 3:8: "And thy servant is in the midst of thy people which thou hast chosen, a great people, that cannot be numbered nor counted for multitude."

1 Kings 3:13: "And I have also given thee that which thou hast not asked, both riches, and honour: so that there shall not be any among the kings like unto thee all thy days."

1 Kings 3:21: "And when I rose in the morning to give my child suck, behold, it was dead: but when I had considered it in the morning, behold, it was not my son, which I did bear."

1 Kings 3:28: "And all Israel heard of the judgment which the king had judged; and they feared the king: for they saw that the wisdom of God was in him, to do judgment."

1 Kings 4:2: "And these were the princes which he had; Azariah the son of Zadok the priest,"

1 Kings 4:7: "And Solomon had twelve officers over all Israel, which provided victuals for the king and his household: each man his month in a year made provision."

1 Kings 4:11: "The son of Abinadab, in all the region of Dor; which had Taphath the daughter of Solomon to wife:"

1 Kings 4:12: "Baana the son of Ahilud; to him pertained Taanach and Megiddo, and all Bethshean, which is by Zartanah beneath Jezreel, from Bethshean to Abelmeholah, even unto the place that is beyond Jokneam:"

1 Kings 4:13: "The son of Geber, in Ramothgilead; to him pertained the towns of Jair the son of Manasseh, which are in Gilead; to him also pertained the region of Argob, which is in Bashan, threescore great cities with walls and brasen bars:"

1 Kings 4:19: "Geber the son of Uri was in the country of Gilead, in the country of Sihon king of the Amorites, and of Og king of Bashan; and he was the only officer which was in the land."

1 Kings 4:20: "Judah and Israel were many, as the sand which is by the sea in multitude, eating and drinking, and making merry."

1 Kings 4:34: "And there came of all people to hear the wisdom of Solomon, from all kings of the earth, which had heard of his wisdom."

1 Kings 5:3: "Thou knowest how that David my father could not build an house unto the name of the LORD his God for the wars which were about him on every side, until the LORD put them under the soles of his feet."

1 Kings 5:7: "And it came to pass, when Hiram heard the words of Solomon, that he rejoiced greatly, and said, Blessed be the LORD this day, which hath given unto David a wise son over this great people."

1 Kings 5:8: "And Hiram sent to Solomon, saying, I have considered the things which thou sentest to me for: and I will do all thy desire concerning timber of cedar, and concerning timber of fir."

1 Kings 5:16: "Beside the chief of Solomon's officers which were over the work, three thousand and three hundred, which ruled over the people that wrought in the work."

1 Kings 6:1: "And it came to pass in the four hundred and eightieth year after the children of Israel were come out of the land of Egypt, in the fourth year of Solomon's reign over Israel, in the month Zif, which is the second month, that he began to build the house of the LORD."

1 Kings 6:2: "And the house which king Solomon built for the LORD, the length thereof was threescore cubits, and the breadth thereof twenty cubits, and the height thereof thirty cubits."

1 Kings 6:12: "Concerning this house which thou art in building, if thou wilt walk in my statutes, and execute my judgments, and keep all my commandments to walk in them; then will I perform my word with thee, which I spake unto David thy father:"

1 Kings 6:20: "And the oracle in the forepart was twenty cubits in length, and twenty cubits in breadth, and twenty cubits in the height thereof: and he overlaid it with pure gold; and so covered the altar which was of cedar."

1 Kings 6:38: "And in the eleventh year, in the month Bul, which is the eighth month, was the house finished throughout all the parts thereof, and according to all the fashion of it. So was he seven years in building it."

1 Kings 7:8: "And his house where he dwelt had another court within the porch, which was of the



like work. Solomon made also an house for Pharaoh's daughter, whom he had taken to wife, like unto this porch."

1 Kings 7:17: "And nets of checker work, and wreaths of chain work, for the chapiters which were upon the top of the pillars; seven for the one chapter, and seven for the other chapter."

1 Kings 7:20: "And the chapiters upon the two pillars had pomegranates also above, over against the belly which was by the network: and the pomegranates were two hundred in rows round about upon the other chapter."

1 Kings 7:41: "The two pillars, and the two bowls of the chapiters that were on the top of the two pillars; and the two networks, to cover the two bowls of the chapiters which were upon the top of the pillars;"

1 Kings 7:45: "And the pots, and the shovels, and the basons: and all these vessels, which Hiram made to king Solomon for the house of the LORD, were of bright brass."

1 Kings 7:51: "So was ended all the work that king Solomon made for the house of the LORD. And Solomon brought in the things which David his father had dedicated; even the silver, and the gold, and the vessels, did he put among the treasures of the house of the LORD."

1 Kings 8:1: "Then Solomon assembled the elders of Israel, and all the heads of the tribes, the chief of the fathers of the children of Israel, unto king Solomon in Jerusalem, that they might bring up the ark of the covenant of the LORD out of the city of David, which is Zion."

1 Kings 8:2: "And all the men of Israel assembled themselves unto king Solomon at the feast in the month Ethanim, which is the seventh month."

1 Kings 8:9: "There was nothing in the ark save the two tables of stone, which Moses put there at Horeb, when the LORD made a covenant with the children of Israel, when they came out of the land of Egypt."

1 Kings 8:15: "And he said, Blessed be the LORD God of Israel, which spake with his mouth unto David my father, and hath with his hand fulfilled it, saying,"

1 Kings 8:21: "And I have set there a place for the ark, wherein is the covenant of the LORD, which he made with our fathers, when he brought them out of the land of Egypt."

1 Kings 8:26: "And now, O God of Israel, let thy word, I pray thee, be verified, which thou spakest unto thy servant David my father."

1 Kings 8:28: "Yet have thou respect unto the prayer of thy servant, and to his supplication, O LORD my God, to hearken unto the cry and to the prayer, which thy servant prayeth before thee to day:"

1 Kings 8:29: "That thine eyes may be open toward this house night and day, even toward the place of which thou hast said, My name shall be there: that thou mayest hearken unto the prayer which thy servant shall make toward this place."

1 Kings 8:34: "Then hear thou in heaven, and forgive the sin of thy people Israel, and bring them again unto the land which thou gavest unto their fathers."

1 Kings 8:36: "Then hear thou in heaven, and forgive the sin of thy servants, and of thy people Israel, that thou teach them the good way wherein they should walk, and give rain upon thy land, which thou hast given to thy people for an inheritance."

1 Kings 8:38: "What prayer and supplication soever be made by any man, or by all thy people Israel, which shall know every man the plague of his own heart, and spread forth his hands toward this house:"

1 Kings 8:40: "That they may fear thee all the days that they live in the land which thou gavest unto our fathers."

1 Kings 8:43: "Hear thou in heaven thy dwelling place, and do according to all that the stranger calleth to thee for: that all people of the earth may know thy name, to fear thee, as do thy people Israel; and that they may know that this house, which I have builded, is called by thy name."

1 Kings 8:44: "If thy people go out to battle against their enemy, whithersoever thou shalt send them, and shall pray unto the LORD toward the city which thou hast chosen, and toward the house

that I have built for thy name:"

1 Kings 8:48: "And so return unto thee with all their heart, and with all their soul, in the land of their enemies, which led them away captive, and pray unto thee toward their land, which thou gavest unto their fathers, the city which thou hast chosen, and the house which I have built for thy name:"

1 Kings 8:51: "For they be thy people, and thine inheritance, which thou broughtest forth out of Egypt, from the midst of the furnace of iron:"

1 Kings 8:56: "Blessed be the LORD, that hath given rest unto his people Israel, according to all that he promised: there hath not failed one word of all his good promise, which he promised by the hand of Moses his servant."

1 Kings 8:58: "That he may incline our hearts unto him, to walk in all his ways, and to keep his commandments, and his statutes, and his judgments, which he commanded our fathers."

1 Kings 8:63: "And Solomon offered a sacrifice of peace offerings, which he offered unto the LORD, two and twenty thousand oxen, and an hundred and twenty thousand sheep. So the king and all the children of Israel dedicated the house of the LORD."

1 Kings 9:1: "And it came to pass, when Solomon had finished the building of the house of the LORD, and the king's house, and all Solomon's desire which he was pleased to do,"

1 Kings 9:3: "And the LORD said unto him, I have heard thy prayer and thy supplication, that thou hast made before me: I have hallowed this house, which thou hast built, to put my name there for ever; and mine eyes and mine heart shall be there perpetually."

1 Kings 9:6: "But if ye shall at all turn from following me, ye or your children, and will not keep my commandments and my statutes which I have set before you, but go and serve other gods, and worship them:"

1 Kings 9:7: "Then will I cut off Israel out of the land which I have given them; and this house, which I have hallowed for my name, will I cast out of my sight; and Israel shall be a proverb and a byword among all people:"

1 Kings 9:8: "And at this house, which is high, every one that passeth by it shall be astonished, and shall hiss; and they shall say, Why hath the LORD done thus unto this land, and to this house?"

1 Kings 9:12: "And Hiram came out from Tyre to see the cities which Solomon had given him; and they pleased him not."

1 Kings 9:13: "And he said, What cities are these which thou hast given me, my brother? And he called them the land of Cabul unto this day."

1 Kings 9:15: "And this is the reason of the levy which king Solomon raised; for to build the house of the LORD, and his own house, and Millo, and the wall of Jerusalem, and Hazor, and Megiddo, and Gezer."

1 Kings 9:19: "And all the cities of store that Solomon had, and cities for his chariots, and cities for his horsemen, and that which Solomon desired to build in Jerusalem, and in Lebanon, and in all the land of his dominion."

1 Kings 9:20: "And all the people that were left of the Amorites, Hittites, Perizzites, Hivites, and Jebusites, which were not of the children of Israel,"

1 Kings 9:23: "These were the chief of the officers that were over Solomon's work, five hundred and fifty, which bare rule over the people that wrought in the work."

1 Kings 9:24: "But Pharaoh's daughter came up out of the city of David unto her house which Solomon had built for her: then did he build Millo."

1 Kings 9:25: "And three times in a year did Solomon offer burnt offerings and peace offerings upon the altar which he built unto the LORD, and he burnt incense upon the altar that was before the LORD. So he finished the house."

1 Kings 9:26: "And king Solomon made a navy of ships in Eziongeber, which is beside Eloth, on the shore of the Red sea, in the land of Edom."

1 Kings 10:3: "And Solomon told her all her questions: there was not any thing hid from the king,

which he told her not."

1 Kings 10:5: "And the meat of his table, and the sitting of his servants, and the attendance of his ministers, and their apparel, and his cupbearers, and his ascent by which he went up unto the house of the LORD; there was no more spirit in her."

1 Kings 10:7: "Howbeit I believed not the words, until I came, and mine eyes had seen it: and, behold, the half was not told me: thy wisdom and prosperity exceedeth the fame which I heard."

1 Kings 10:8: "Happy are thy men, happy are these thy servants, which stand continually before thee, and that hear thy wisdom."

1 Kings 10:9: "Blessed be the LORD thy God, which delighted in thee, to set thee on the throne of Israel: because the LORD loved Israel for ever, therefore made he thee king, to do judgment and justice."

1 Kings 10:10: "And she gave the king an hundred and twenty talents of gold, and of spices very great store, and precious stones: there came no more such abundance of spices as these which the queen of Sheba gave to king Solomon."

1 Kings 10:13: "And king Solomon gave unto the queen of Sheba all her desire, whatsoever she asked, beside that which Solomon gave her of his royal bounty. So she turned and went to her own country, she and her servants."

1 Kings 10:24: "And all the earth sought to Solomon, to hear his wisdom, which God had put in his heart."

1 Kings 11:2: "Of the nations concerning which the LORD said unto the children of Israel, Ye shall not go in to them, neither shall they come in unto you: for surely they will turn away your heart after their gods: Solomon clave unto these in love."

1 Kings 11:8: "And likewise did he for all his strange wives, which burnt incense and sacrificed unto their gods."

1 Kings 11:9: "And the LORD was angry with Solomon, because his heart was turned from the LORD God of Israel, which had appeared unto him twice,"

1 Kings 11:10: "And had commanded him concerning this thing, that he should not go after other gods: but he kept not that which the LORD commanded."

1 Kings 11:11: "Wherefore the LORD said unto Solomon, Forasmuch as this is done of thee, and thou hast not kept my covenant and my statutes, which I have commanded thee, I will surely rend the kingdom from thee, and will give it to thy servant."

1 Kings 11:13: "Howbeit I will not rend away all the kingdom; but will give one tribe to thy son for David my servant's sake, and for Jerusalem's sake which I have chosen."

1 Kings 11:18: "And they arose out of Midian, and came to Paran: and they took men with them out of Paran, and they came to Egypt, unto Pharaoh king of Egypt; which gave him an house, and appointed him victuals, and gave him land."

1 Kings 11:23: "And God stirred him up another adversary, Rezon the son of Eliadah, which fled from his lord Hadadezer king of Zobah:"

1 Kings 11:32: "(But he shall have one tribe for my servant David's sake, and for Jerusalem's sake, the city which I have chosen out of all the tribes of Israel:)"

1 Kings 11:33: "Because that they have forsaken me, and have worshipped Ashtoreth the goddess of the Zidonians, Chemosh the god of the Moabites, and Milcom the god of the children of Ammon, and have not walked in my ways, to do that which is right in mine eyes, and to keep my statutes and my judgments, as did David his father."

1 Kings 11:36: "And unto his son will I give one tribe, that David my servant may have a light always before me in Jerusalem, the city which I have chosen me to put my name there."

1 Kings 12:4: "Thy father made our yoke grievous: now therefore make thou the grievous service of thy father, and his heavy yoke which he put upon us, lighter, and we will serve thee."

1 Kings 12:8: "But he forsook the counsel of the old men, which they had given him, and consulted with the young men that were grown up with him, and which stood before him:"

1 Kings 12:9: "And he said unto them, What counsel give ye that we may answer this people, who have spoken to me, saying, Make the yoke which thy father did put upon us lighter?"

1 Kings 12:15: "Wherefore the king hearkened not unto the people; for the cause was from the LORD, that he might perform his saying, which the LORD spake by Ahijah the Shilonite unto Jeroboam the son of Nebat."

1 Kings 12:17: "But as for the children of Israel which dwelt in the cities of Judah, Rehoboam reigned over them."

1 Kings 12:21: "And when Rehoboam was come to Jerusalem, he assembled all the house of Judah, with the tribe of Benjamin, an hundred and fourscore thousand chosen men, which were warriors, to fight against the house of Israel, to bring the kingdom again to Rehoboam the son of Solomon."

1 Kings 12:28: "Whereupon the king took counsel, and made two calves of gold, and said unto them, It is too much for you to go up to Jerusalem: behold thy gods, O Israel, which brought thee up out of the land of Egypt."

1 Kings 12:31: "And he made an house of high places, and made priests of the lowest of the people, which were not of the sons of Levi."

1 Kings 12:32: "And Jeroboam ordained a feast in the eighth month, on the fifteenth day of the month, like unto the feast that is in Judah, and he offered upon the altar. So did he in Bethel, sacrificing unto the calves that he had made: and he placed in Bethel the priests of the high places which he had made."

1 Kings 12:33: "So he offered upon the altar which he had made in Bethel the fifteenth day of the eighth month, even in the month which he had devised of his own heart; and ordained a feast unto the children of Israel: and he offered upon the altar, and burnt incense."

1 Kings 13:3: "And he gave a sign the same day, saying, This is the sign which the LORD hath spoken; Behold, the altar shall be rent, and the ashes that are upon it shall be poured out."

1 Kings 13:4: "And it came to pass, when king Jeroboam heard the saying of the man of God, which had cried against the altar in Bethel, that he put forth his hand from the altar, saying, Lay hold on him. And his hand, which he put forth against him, dried up, so that he could not pull it in again to him."

1 Kings 13:5: "The altar also was rent, and the ashes poured out from the altar, according to the sign which the man of God had given by the word of the LORD."

1 Kings 13:11: "Now there dwelt an old prophet in Bethel; and his sons came and told him all the works that the man of God had done that day in Bethel: the words which he had spoken unto the king, them they told also to their father."

1 Kings 13:12: "And their father said unto them, What way went he? For his sons had seen what way the man of God went, which came from Judah."

1 Kings 13:21: "And he cried unto the man of God that came from Judah, saying, Thus saith the LORD, Forasmuch as thou hast disobeyed the mouth of the LORD, and hast not kept the commandment which the LORD thy God commanded thee,"

1 Kings 13:22: "But camest back, and hast eaten bread and drunk water in the place, of the which the Lord did say to thee, Eat no bread, and drink no water; thy carcase shall not come unto the sepulchre of thy fathers."

1 Kings 13:26: "And when the prophet that brought him back from the way heard thereof, he said, It is the man of God, who was disobedient unto the word of the LORD: therefore the LORD hath delivered him unto the lion, which hath torn him, and slain him, according to the word of the LORD, which he spake unto him."

1 Kings 13:32: "For the saying which he cried by the word of the LORD against the altar in Bethel, and against all the houses of the high places which are in the cities of Samaria, shall surely come to pass."

1 Kings 14:2: "And Jeroboam said to his wife, Arise, I pray thee, and disguise thyself, that thou be not known to be the wife of Jeroboam; and get thee to Shiloh: behold, there is Ahijah the prophet,

which told me that I should be king over this people."

1 Kings 14:8: "And rent the kingdom away from the house of David, and gave it thee: and yet thou hast not been as my servant David, who kept my commandments, and who followed me with all his heart, to do that only which was right in mine eyes;"

1 Kings 14:15: "For the LORD shall smite Israel, as a reed is shaken in the water, and he shall root up Israel out of this good land, which he gave to their fathers, and shall scatter them beyond the river, because they have made their groves, provoking the LORD to anger."

1 Kings 14:18: "And they buried him; and all Israel mourned for him, according to the word of the LORD, which he spake by the hand of his servant Ahijah the prophet."

1 Kings 14:20: "And the days which Jeroboam reigned were two and twenty years: and he slept with his fathers, and Nadab his son reigned in his stead."

1 Kings 14:21: "And Rehoboam the son of Solomon reigned in Judah. Rehoboam was forty and one years old when he began to reign, and he reigned seventeen years in Jerusalem, the city which the LORD did choose out of all the tribes of Israel, to put his name there. And his mother's name was Naamah an Ammonitess."

1 Kings 14:22: "And Judah did evil in the sight of the LORD, and they provoked him to jealousy with their sins which they had committed, above all that their fathers had done."

1 Kings 14:24: "And there were also sodomites in the land: and they did according to all the abominations of the nations which the LORD cast out before the children of Israel."

1 Kings 14:26: "And he took away the treasures of the house of the LORD, and the treasures of the king's house; he even took away all: and he took away all the shields of gold which Solomon had made."

1 Kings 14:27: "And king Rehoboam made in their stead brasen shields, and committed them unto the hands of the chief of the guard, which kept the door of the king's house."

1 Kings 15:3: "And he walked in all the sins of his father, which he had done before him: and his heart was not perfect with the LORD his God, as the heart of David his father."

1 Kings 15:5: "Because David did that which was right in the eyes of the LORD, and turned not aside from any thing that he commanded him all the days of his life, save only in the matter of Uriah the Hittite."

1 Kings 15:11: "And Asa did that which was right in the eyes of the LORD, as did David his father."

1 Kings 15:15: "And he brought in the things which his father had dedicated, and the things which himself had dedicated, into the house of the LORD, silver, and gold, and vessels."

1 Kings 15:20: "So Benhadad hearkened unto king Asa, and sent the captains of the hosts which he had against the cities of Israel, and smote Ijon, and Dan, and Abelbethmaachah, and all Cinneroth, with all the land of Naphtali."

1 Kings 15:23: "The rest of all the acts of Asa, and all his might, and all that he did, and the cities which he built, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

Nevertheless in the time of his old age he was diseased in his feet."

1 Kings 15:27: "And Baasha the son of Ahijah, of the house of Issachar, conspired against him; and Baasha smote him at Gibbethon, which belonged to the Philistines; for Nadab and all Israel laid siege to Gibbethon."

1 Kings 15:29: "And it came to pass, when he reigned, that he smote all the house of Jeroboam; he left not to Jeroboam any that breathed, until he had destroyed him, according unto the saying of the LORD, which he spake by his servant Ahijah the Shilonite:"

1 Kings 15:30: "Because of the sins of Jeroboam which he sinned, and which he made Israel sin, by his provocation wherewith he provoked the LORD God of Israel to anger."

1 Kings 16:12: "Thus did Zimri destroy all the house of Baasha, according to the word of the LORD, which he spake against Baasha by Jehu the prophet."

1 Kings 16:13: "For all the sins of Baasha, and the sins of Elah his son, by which they sinned, and

by which they made Israel to sin, in provoking the LORD God of Israel to anger with their vanities."

1 Kings 16:15: "In the twenty and seventh year of Asa king of Judah did Zimri reign seven days in Tirzah. And the people were encamped against Gibbethon, which belonged to the Philistines."

1 Kings 16:19: "For his sins which he sinned in doing evil in the sight of the LORD, in walking in the way of Jeroboam, and in his sin which he did, to make Israel to sin."

1 Kings 16:24: "And he bought the hill Samaria of Shemer for two talents of silver, and built on the hill, and called the name of the city which he built, after the name of Shemer, owner of the hill, Samaria."

1 Kings 16:27: "Now the rest of the acts of Omri which he did, and his might that he shewed, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

1 Kings 16:32: "And he reared up an altar for Baal in the house of Baal, which he had built in Samaria."

1 Kings 16:34: "In his days did Hiel the Bethelite build Jericho: he laid the foundation thereof in Abiram his firstborn, and set up the gates thereof in his youngest son Segub, according to the word of the LORD, which he spake by Joshua the son of Nun."

1 Kings 17:9: "Arise, get thee to Zarephath, which belongeth to Zidon, and dwell there: behold, I have commanded a widow woman there to sustain thee."

1 Kings 17:16: "And the barrel of meal wasted not, neither did the cruse of oil fail, according to the word of the LORD, which he spake by Elijah."

1 Kings 18:3: "And Ahab called Obadiah, which was the governor of his house. (Now Obadiah feared the LORD greatly:"

1 Kings 18:19: "Now therefore send, and gather to me all Israel unto mount Carmel, and the prophets of Baal four hundred and fifty, and the prophets of the groves four hundred, which eat at Jezebel's table."

1 Kings 18:26: "And they took the bullock which was given them, and they dressed it, and called on the name of Baal from morning even until noon, saying, O Baal, hear us. But there was no voice, nor any that answered. And they leaped upon the altar which was made."

1 Kings 19:3: "And when he saw that, he arose, and went for his life, and came to Beersheba, which belongeth to Judah, and left his servant there."

1 Kings 19:18: "Yet I have left me seven thousand in Israel, all the knees which have not bowed unto Baal, and every mouth which hath not kissed him."

1 Kings 20:19: "So these young men of the princes of the provinces came out of the city, and the army which followed them."

1 Kings 20:34: "And Ben-hadad said unto him, The cities, which my father took from thy father, I will restore; and thou shalt make streets for thee in Damascus, as my father made in Samaria. Then said Ahab, I will send thee away with this covenant. So he made a covenant with him, and sent him away."

1 Kings 21:1: "And it came to pass after these things, that Naboth the Jezreelite had a vineyard, which was in Jezreel, hard by the palace of Ahab king of Samaria."

1 Kings 21:4: "And Ahab came into his house heavy and displeased because of the word which Naboth the Jezreelite had spoken to him: for he had said, I will not give thee the inheritance of my fathers. And he laid him down upon his bed, and turned away his face, and would eat no bread."

1 Kings 21:11: "And the men of his city, even the elders and the nobles who were the inhabitants in his city, did as Jezebel had sent unto them, and as it was written in the letters which she had sent unto them."

1 Kings 21:15: "And it came to pass, when Jezebel heard that Naboth was stoned, and was dead, that Jezebel said to Ahab, Arise, take possession of the vineyard of Naboth the Jezreelite, which he refused to give thee for money: for Naboth is not alive, but dead."

1 Kings 21:18: "Arise, go down to meet Ahab king of Israel, which is in Samaria: behold, he is in

the vineyard of Naboth, whither he is gone down to possess it."

1 Kings 21:25: "But there was none like unto Ahab, which did sell himself to work wickedness in the sight of the LORD, whom Jezebel his wife stirred up."

1 Kings 22:13: "And the messenger that was gone to call Micaiah spake unto him, saying, Behold now, the words of the prophets declare good unto the king with one mouth: let thy word, I pray thee, be like the word of one of them, and speak that which is good."

1 Kings 22:16: "And the king said unto him, How many times shall I adjure thee that thou tell me nothing but that which is true in the name of the LORD?"

1 Kings 22:24: "But Zedekiah the son of Chenaanah went near, and smote Micaiah on the cheek, and said, Which way went the Spirit of the LORD from me to speak unto thee?"

1 Kings 22:38: "And one washed the chariot in the pool of Samaria; and the dogs licked up his blood; and they washed his armour; according unto the word of the LORD which he spake."

1 Kings 22:39: "Now the rest of the acts of Ahab, and all that he did, and the ivory house which he made, and all the cities that he built, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

1 Kings 22:43: "And he walked in all the ways of Asa his father; he turned not aside from it, doing that which was right in the eyes of the LORD: nevertheless the high places were not taken away; for the people offered and burnt incense yet in the high places."

1 Kings 22:46: "And the remnant of the sodomites, which remained in the days of his father Asa, he took out of the land."

2 Kings 1:4: "Now therefore thus saith the LORD, Thou shalt not come down from that bed on which thou art gone up, but shalt surely die. And Elijah departed."

2 Kings 1:6: "And they said unto him, There came a man up to meet us, and said unto us, Go, turn again unto the king that sent you, and say unto him, Thus saith the LORD, Is it not because there is not a God in Israel, that thou sendest to enquire of Baalzebub the god of Ekron? therefore thou shalt not come down from that bed on which thou art gone up, but shalt surely die."

2 Kings 1:7: "And he said unto them, What manner of man was he which came up to meet you, and told you these words?"

2 Kings 1:16: "And he said unto him, Thus saith the LORD, Forasmuch as thou hast sent messengers to enquire of Baalzebub the god of Ekron, is it not because there is no God in Israel to enquire of his word? therefore thou shalt not come down off that bed on which thou art gone up, but shalt surely die."

2 Kings 1:17: "So he died according to the word of the LORD which Elijah had spoken. And Jehoram reigned in his stead in the second year of Jehoram the son of Jehoshaphat king of Judah; because he had no son."

2 Kings 1:18: "Now the rest of the acts of Ahaziah which he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

2 Kings 2:15: "And when the sons of the prophets which were to view at Jericho saw him, they said, The spirit of Elijah doth rest on Elisha. And they came to meet him, and bowed themselves to the ground before him."

2 Kings 2:22: "So the waters were healed unto this day, according to the saying of Elisha which he spake."

2 Kings 3:3: "Nevertheless he cleaved unto the sins of Jeroboam the son of Nebat, which made Israel to sin; he departed not therefrom."

2 Kings 3:8: "And he said, Which way shall we go up? And he answered, The way through the wilderness of Edom."

2 Kings 3:11: "But Jehoshaphat said, Is there not here a prophet of the LORD, that we may enquire of the LORD by him? And one of the king of Israel's servants answered and said, Here is Elisha the son of Shaphat, which poured water on the hands of Elijah."

2 Kings 4:4: "And when thou art come in, thou shalt shut the door upon thee and upon thy sons, and

shalt pour out into all those vessels, and thou shalt set aside that which is full."

2 Kings 4:9: "And she said unto her husband, Behold now, I perceive that this is an holy man of God, which passeth by us continually."

2 Kings 5:20: "But Gehazi, the servant of Elisha the man of God, said, Behold, my master hath spared Naaman this Syrian, in not receiving at his hands that which he brought: but, as the LORD liveth, I will run after him, and take somewhat of him."

2 Kings 6:10: "And the king of Israel sent to the place which the man of God told him and warned him of, and saved himself there, not once nor twice."

2 Kings 6:11: "Therefore the heart of the king of Syria was sore troubled for this thing; and he called his servants, and said unto them, Will ye not shew me which of us is for the king of Israel?"

2 Kings 7:13: "And one of his servants answered and said, Let some take, I pray thee, five of the horses that remain, which are left in the city, (behold, they are as all the multitude of Israel that are left in it: behold, I say, they are even as all the multitude of the Israelites that are consumed:) and let us send and see."

2 Kings 7:15: "And they went after them unto Jordan: and, lo, all the way was full of garments and vessels, which the Syrians had cast away in their haste. And the messengers returned, and told the king."

2 Kings 8:21: "So Joram went over to Zair, and all the chariots with him: and he rose by night, and smote the Edomites which compassed him about, and the captains of the chariots: and the people fled into their tents."

2 Kings 8:29: "And king Joram went back to be healed in Jezreel of the wounds which the Syrians had given him at Ramah, when he fought against Hazael king of Syria. And Ahaziah the son of Jehoram king of Judah went down to see Joram the son of Ahab in Jezreel, because he was sick."

2 Kings 9:5: "And when he came, behold, the captains of the host were sitting; and he said, I have an errand to thee, O captain. And Jehu said, Unto which of all us? And he said, To thee, O captain."

2 Kings 9:15: "But king Joram was returned to be healed in Jezreel of the wounds which the Syrians had given him, when he fought with Hazael king of Syria.) And Jehu said, If it be your minds, then let none go forth nor escape out of the city to go to tell it in Jezreel."

2 Kings 9:19: "Then he sent out a second on horseback, which came to them, and said, Thus saith the king, Is it peace? And Jehu answered, What hast thou to do with peace? turn thee behind me."

2 Kings 9:27: "But when Ahaziah the king of Judah saw this, he fled by the way of the garden house. And Jehu followed after him, and said, Smite him also in the chariot. And they did so at the going up to Gur, which is by Ibleam. And he fled to Megiddo, and died there."

2 Kings 9:36: "Wherefore they came again, and told him. And he said, This is the word of the LORD, which he spake by his servant Elijah the Tishbite, saying, In the portion of Jezreel shall dogs eat the flesh of Jezebel:"

2 Kings 10:5: "And he that was over the house, and he that was over the city, the elders also, and the bringers up of the children, sent to Jehu, saying, We are thy servants, and will do all that thou shalt bid us; we will not make any king: do thou that which is good in thine eyes."

2 Kings 10:6: "Then he wrote a letter the second time to them, saying, If ye be mine, and if ye will hearken unto my voice, take ye the heads of the men your master's sons, and come to me to Jezreel by to morrow this time. Now the king's sons, being seventy persons, were with the great men of the city, which brought them up."

2 Kings 10:10: "Know now that there shall fall unto the earth nothing of the word of the LORD, which the LORD spake concerning the house of Ahab: for the LORD hath done that which he spake by his servant Elijah."

2 Kings 10:17: "And when he came to Samaria, he slew all that remained unto Ahab in Samaria, till he had destroyed him, according to the saying of the LORD, which he spake to Elijah."

2 Kings 10:30: "And the LORD said unto Jehu, Because thou hast done well in executing that which is right in mine eyes, and hast done unto the house of Ahab according to all that was in mine



heart, thy children of the fourth generation shall sit on the throne of Israel."

2 Kings 10:31: "But Jehu took no heed to walk in the law of the LORD God of Israel with all his heart: for he departed not from the sins of Jeroboam, which made Israel to sin."

2 Kings 10:33: "From Jordan eastward, all the land of Gilead, the Gadites, and the Reubenites, and the Manassites, from Aroer, which is by the river Arnon, even Gilead and Bashan."

2 Kings 11:2: "But Jehosheba, the daughter of king Joram, sister of Ahaziah, took Joash the son of Ahaziah, and stole him from among the king's sons which were slain; and they hid him, even him and his nurse, in the bedchamber from Athaliah, so that he was not slain."

2 Kings 11:16: "And they laid hands on her; and she went by the way by the which the horses came into the king's house: and there was she slain."

2 Kings 12:2: "And Jehoash did that which was right in the sight of the LORD all his days wherein Jehoiada the priest instructed him."

2 Kings 12:20: "And his servants arose, and made a conspiracy, and slew Joash in the house of Millo, which goeth down to Silla."

2 Kings 13:2: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, and followed the sins of Jeroboam the son of Nebat, which made Israel to sin; he departed not therefrom."

2 Kings 13:11: "And he did that which was evil in the sight of the LORD; he departed not from all the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel sin: but he walked therein."

2 Kings 13:25: "And Jehoash the son of Jehoahaz took again out of the hand of Benhadad the son of Hazael the cities, which he had taken out of the hand of Jehoahaz his father by war. Three times did Joash beat him, and recovered the cities of Israel."

2 Kings 14:3: "And he did that which was right in the sight of the LORD, yet not like David his father: he did according to all things as Joash his father did."

2 Kings 14:5: "And it came to pass, as soon as the kingdom was confirmed in his hand, that he slew his servants which had slain the king his father."

2 Kings 14:6: "But the children of the murderers he slew not: according unto that which is written in the book of the law of Moses, wherein the LORD commanded, saying, The fathers shall not be put to death for the children, nor the children be put to death for the fathers; but every man shall be put to death for his own sin."

2 Kings 14:11: "But Amaziah would not hear. Therefore Jehoash king of Israel went up; and he and Amaziah king of Judah looked one another in the face at Bethshemesh, which belongeth to Judah."

2 Kings 14:15: "Now the rest of the acts of Jehoash which he did, and his might, and how he fought with Amaziah king of Judah, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

2 Kings 14:21: "And all the people of Judah took Azariah, which was sixteen years old, and made him king instead of his father Amaziah."

2 Kings 14:24: "And he did that which was evil in the sight of the LORD: he departed not from all the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 14:25: "He restored the coast of Israel from the entering of Hamath unto the sea of the plain, according to the word of the LORD God of Israel, which he spake by the hand of his servant Jonah, the son of Amittai, the prophet, which was of Gathhepher."

2 Kings 14:28: "Now the rest of the acts of Jeroboam, and all that he did, and his might, how he warred, and how he recovered Damascus, and Hamath, which belonged to Judah, for Israel, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

2 Kings 15:3: "And he did that which was right in the sight of the LORD, according to all that his father Amaziah had done;"

2 Kings 15:9: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, as his fathers had done: he departed not from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 15:12: "This was the word of the LORD which he spake unto Jehu, saying, Thy sons shall sit on the throne of Israel unto the fourth generation. And so it came to pass."

2 Kings 15:15: "And the rest of the acts of Shallum, and his conspiracy which he made, behold, they are written in the book of the chronicles of the kings of Israel."

2 Kings 15:18: "And he did that which was evil in the sight of the LORD: he departed not all his days from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 15:24: "And he did that which was evil in the sight of the LORD: he departed not from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 15:28: "And he did that which was evil in the sight of the LORD: he departed not from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 15:34: "And he did that which was right in the sight of the LORD: he did according to all that his father Uzziah had done."

2 Kings 16:2: "Twenty years old was Ahaz when he began to reign, and reigned sixteen years in Jerusalem, and did not that which was right in the sight of the LORD his God, like David his father."

2 Kings 16:7: "So Ahaz sent messengers to Tiglathpileser king of Assyria, saying, I am thy servant and thy son: come up, and save me out of the hand of the king of Syria, and out of the hand of the king of Israel, which rise up against me."

2 Kings 16:14: "And he brought also the brasen altar, which was before the LORD, from the forefront of the house, from between the altar and the house of the LORD, and put it on the north side of the altar."

2 Kings 16:19: "Now the rest of the acts of Ahaz which he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 17:2: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, but not as the kings of Israel that were before him."

2 Kings 17:7: "For so it was, that the children of Israel had sinned against the LORD their God, which had brought them up out of the land of Egypt, from under the hand of Pharaoh king of Egypt, and had feared other gods,"

2 Kings 17:8: "And walked in the statutes of the heathen, whom the LORD cast out from before the children of Israel, and of the kings of Israel, which they had made."

2 Kings 17:13: "Yet the LORD testified against Israel, and against Judah, by all the prophets, and by all the seers, saying, Turn ye from your evil ways, and keep my commandments and my statutes, according to all the law which I commanded your fathers, and which I sent to you by my servants the prophets."

2 Kings 17:15: "And they rejected his statutes, and his covenant that he made with their fathers, and his testimonies which he testified against them; and they followed vanity, and became vain, and went after the heathen that were round about them, concerning whom the LORD had charged them, that they should not do like them."

2 Kings 17:19: "Also Judah kept not the commandments of the LORD their God, but walked in the statutes of Israel which they made."

2 Kings 17:22: "For the children of Israel walked in all the sins of Jeroboam which he did; they departed not from them;"

2 Kings 17:25: "And so it was at the beginning of their dwelling there, that they feared not the LORD: therefore the LORD sent lions among them, which slew some of them."

2 Kings 17:26: "Wherefore they spake to the king of Assyria, saying, The nations which thou hast removed, and placed in the cities of Samaria, know not the manner of the God of the land: therefore he hath sent lions among them, and, behold, they slay them, because they know not the manner of the God of the land."

2 Kings 17:29: "Howbeit every nation made gods of their own, and put them in the houses of the high places which the Samaritans had made, every nation in their cities wherein they dwelt."

2 Kings 17:32: "So they feared the LORD, and made unto themselves of the lowest of them priests of the high places, which sacrificed for them in the houses of the high places."

2 Kings 17:34: "Unto this day they do after the former manners: they fear not the LORD, neither do they after their statutes, or after their ordinances, or after the law and commandment which the LORD commanded the children of Jacob, whom he named Israel;"

2 Kings 17:37: "And the statutes, and the ordinances, and the law, and the commandment, which he wrote for you, ye shall observe to do for evermore; and ye shall not fear other gods."

2 Kings 18:3: "And he did that which was right in the sight of the LORD, according to all that David his father did."

2 Kings 18:6: "For he clave to the LORD, and departed not from following him, but kept his commandments, which the LORD commanded Moses."

2 Kings 18:9: "And it came to pass in the fourth year of king Hezekiah, which was the seventh year of Hoshea son of Elah king of Israel, that Shalmaneser king of Assyria came up against Samaria, and besieged it."

2 Kings 18:14: "And Hezekiah king of Judah sent to the king of Assyria to Lachish, saying, I have offended; return from me: that which thou puttest on me will I bear. And the king of Assyria appointed unto Hezekiah king of Judah three hundred talents of silver and thirty talents of gold."

2 Kings 18:16: "At that time did Hezekiah cut off the gold from the doors of the temple of the LORD, and from the pillars which Hezekiah king of Judah had overlaid, and gave it to the king of Assyria."

2 Kings 18:17: "And the king of Assyria sent Tartan and Rabsaris and Rabshakeh from Lachish to king Hezekiah with a great host against Jerusalem. And they went up and came to Jerusalem. And when they were come up, they came and stood by the conduit of the upper pool, which is in the highway of the fuller's field."

2 Kings 18:18: "And when they had called to the king, there came out to them Eliakim the son of Hilkiyah, which was over the household, and Shebna the scribe, and Joah the son of Asaph the recorder."

2 Kings 18:21: "Now, behold, thou trustest upon the staff of this bruised reed, even upon Egypt, on which if a man lean, it will go into his hand, and pierce it: so is Pharaoh king of Egypt unto all that trust on him."

2 Kings 18:27: "But Rabshakeh said unto them, Hath my master sent me to thy master, and to thee, to speak these words? hath he not sent me to the men which sit on the wall, that they may eat their own dung, and drink their own piss with you?"

2 Kings 18:37: "Then came Eliakim the son of Hilkiyah, which was over the household, and Shebna the scribe, and Joah the son of Asaph the recorder, to Hezekiah with their clothes rent, and told him the words of Rabshakeh."

2 Kings 19:2: "And he sent Eliakim, which was over the household, and Shebna the scribe, and the elders of the priests, covered with sackcloth, to Isaiah the prophet the son of Amoz."

2 Kings 19:4: "It may be the LORD thy God will hear all the words of Rabshakeh, whom the king of Assyria his master hath sent to reproach the living God; and will reprove the words which the LORD thy God hath heard: wherefore lift up thy prayer for the remnant that are left."

2 Kings 19:6: "And Isaiah said unto them, Thus shall ye say to your master, Thus saith the LORD, Be not afraid of the words which thou hast heard, with which the servants of the king of Assyria have blasphemed me."

2 Kings 19:12: "Have the gods of the nations delivered them which my fathers have destroyed; as Gozan, and Haran, and Rezep, and the children of Eden which were in Thelasar?"

2 Kings 19:15: "And Hezekiah prayed before the LORD, and said, O LORD God of Israel, which dwellest between the cherubims, thou art the God, even thou alone, of all the kingdoms of the earth; thou hast made heaven and earth."

2 Kings 19:16: "LORD, bow down thine ear, and hear: open, LORD, thine eyes, and see: and hear the words of Sennacherib, which hath sent him to reproach the living God."

2 Kings 19:20: "Then Isaiah the son of Amoz sent to Hezekiah, saying, Thus saith the LORD God

of Israel, That which thou hast prayed to me against Sennacherib king of Assyria I have heard."

2 Kings 19:28: "Because thy rage against me and thy tumult is come up into mine ears, therefore I will put my hook in thy nose, and my bridle in thy lips, and I will turn thee back by the way by which thou camest."

2 Kings 19:29: "And this shall be a sign unto thee, Ye shall eat this year such things as grow of themselves, and in the second year that which springeth of the same; and in the third year sow ye, and reap, and plant vineyards, and eat the fruits thereof."

2 Kings 20:3: "I beseech thee, O LORD, remember now how I have walked before thee in truth and with a perfect heart, and have done that which is good in thy sight. And Hezekiah wept sore."

2 Kings 20:11: "And Isaiah the prophet cried unto the LORD: and he brought the shadow ten degrees backward, by which it had gone down in the dial of Ahaz."

2 Kings 20:17: "Behold, the days come, that all that is in thine house, and that which thy fathers have laid up in store unto this day, shall be carried into Babylon: nothing shall be left, saith the LORD."

2 Kings 20:18: "And of thy sons that shall issue from thee, which thou shalt beget, shall they take away; and they shall be eunuchs in the palace of the king of Babylon."

2 Kings 20:19: "Then said Hezekiah unto Isaiah, Good is the word of the LORD which thou hast spoken. And he said, Is it not good, if peace and truth be in my days?"

2 Kings 21:2: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, after the abominations of the heathen, whom the LORD cast out before the children of Israel."

2 Kings 21:3: "For he built up again the high places which Hezekiah his father had destroyed; and he reared up altars for Baal, and made a grove, as did Ahab king of Israel; and worshipped all the host of heaven, and served them."

2 Kings 21:4: "And he built altars in the house of the LORD, of which the LORD said, In Jerusalem will I put my name."

2 Kings 21:7: "And he set a graven image of the grove that he had made in the house, of which the LORD said to David, and to Solomon his son, In this house, and in Jerusalem, which I have chosen out of all tribes of Israel, will I put my name for ever:"

2 Kings 21:8: "Neither will I make the feet of Israel move any more out of the land which I gave their fathers; only if they will observe to do according to all that I have commanded them, and according to all the law that my servant Moses commanded them."

2 Kings 21:11: "Because Manasseh king of Judah hath done these abominations, and hath done wickedly above all that the Amorites did, which were before him, and hath made Judah also to sin with his idols:"

2 Kings 21:15: "Because they have done that which was evil in my sight, and have provoked me to anger, since the day their fathers came forth out of Egypt, even unto this day."

2 Kings 21:16: "Moreover Manasseh shed innocent blood very much, till he had filled Jerusalem from one end to another; beside his sin wherewith he made Judah to sin, in doing that which was evil in the sight of the LORD."

2 Kings 21:20: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, as his father Manasseh did."

2 Kings 21:25: "Now the rest of the acts of Amon which he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 22:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, and walked in all the way of David his father, and turned not aside to the right hand or to the left."

2 Kings 22:4: "Go up to Hilkiah the high priest, that he may sum the silver which is brought into the house of the LORD, which the keepers of the door have gathered of the people:"

2 Kings 22:5: "And let them deliver it into the hand of the doers of the work, that have the oversight of the house of the LORD: and let them give it to the doers of the work which is in the house of the LORD, to repair the breaches of the house,"

2 Kings 22:13: "Go ye, enquire of the LORD for me, and for the people, and for all Judah, concerning the words of this book that is found: for great is the wrath of the LORD that is kindled against us, because our fathers have not hearkened unto the words of this book, to do according unto all that which is written concerning us."

2 Kings 22:16: "Thus saith the LORD, Behold, I will bring evil upon this place, and upon the inhabitants thereof, even all the words of the book which the king of Judah hath read:"

2 Kings 22:18: "But to the king of Judah which sent you to enquire of the LORD, thus shall ye say to him, Thus saith the LORD God of Israel, As touching the words which thou hast heard;"

2 Kings 22:20: "Behold therefore, I will gather thee unto thy fathers, and thou shalt be gathered into thy grave in peace; and thine eyes shall not see all the evil which I will bring upon this place. And they brought the king word again."

2 Kings 23:2: "And the king went up into the house of the LORD, and all the men of Judah and all the inhabitants of Jerusalem with him, and the priests, and the prophets, and all the people, both small and great: and he read in their ears all the words of the book of the covenant which was found in the house of the LORD."

2 Kings 23:8: "And he brought all the priests out of the cities of Judah, and defiled the high places where the priests had burned incense, from Geba to Beersheba, and brake down the high places of the gates that were in the entering in of the gate of Joshua the governor of the city, which were on a man's left hand at the gate of the city."

2 Kings 23:10: "And he defiled Topheth, which is in the valley of the children of Hinnom, that no man might make his son or his daughter to pass through the fire to Molech."

2 Kings 23:11: "And he took away the horses that the kings of Judah had given to the sun, at the entering in of the house of the LORD, by the chamber of Nathanmelech the chamberlain, which was in the suburbs, and burned the chariots of the sun with fire."

2 Kings 23:12: "And the altars that were on the top of the upper chamber of Ahaz, which the kings of Judah had made, and the altars which Manasseh had made in the two courts of the house of the LORD, did the king beat down, and brake them down from thence, and cast the dust of them into the brook Kidron."

2 Kings 23:13: "And the high places that were before Jerusalem, which were on the right hand of the mount of corruption, which Solomon the king of Israel had builded for Ashtoreth the abomination of the Zidonians, and for Chemosh the abomination of the Moabites, and for Milcom the abomination of the children of Ammon, did the king defile."

2 Kings 23:15: "Moreover the altar that was at Bethel, and the high place which Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin, had made, both that altar and the high place he brake down, and burned the high place, and stamped it small to powder, and burned the grove."

2 Kings 23:16: "And as Josiah turned himself, he spied the sepulchres that were there in the mount, and sent, and took the bones out of the sepulchres, and burned them upon the altar, and polluted it, according to the word of the LORD which the man of God proclaimed, who proclaimed these words."

2 Kings 23:17: "Then he said, What title is that that I see? And the men of the city told him, It is the sepulchre of the man of God, which came from Judah, and proclaimed these things that thou hast done against the altar of Bethel."

2 Kings 23:19: "And all the houses also of the high places that were in the cities of Samaria, which the kings of Israel had made to provoke the Lord to anger, Josiah took away, and did to them according to all the acts that he had done in Bethel."

2 Kings 23:24: "Moreover the workers with familiar spirits, and the wizards, and the images, and the idols, and all the abominations that were spied in the land of Judah and in Jerusalem, did Josiah put away, that he might perform the words of the law which were written in the book that Hilkiah the priest found in the house of the LORD."

2 Kings 23:27: "And the LORD said, I will remove Judah also out of my sight, as I have removed

Israel, and will cast off this city Jerusalem which I have chosen, and the house of which I said, My name shall be there."

2 Kings 23:32: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, according to all that his fathers had done."

2 Kings 23:37: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, according to all that his fathers had done."

2 Kings 24:2: "And the LORD sent against him bands of the Chaldees, and bands of the Syrians, and bands of the Moabites, and bands of the children of Ammon, and sent them against Judah to destroy it, according to the word of the LORD, which he spake by his servants the prophets."

2 Kings 24:4: "And also for the innocent blood that he shed: for he filled Jerusalem with innocent blood; which the LORD would not pardon."

2 Kings 24:9: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, according to all that his father had done."

2 Kings 24:13: "And he carried out thence all the treasures of the house of the LORD, and the treasures of the king's house, and cut in pieces all the vessels of gold which Solomon king of Israel had made in the temple of the LORD, as the LORD had said."

2 Kings 24:19: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, according to all that Jehoiakim had done."

2 Kings 25:4: "And the city was broken up, and all the men of war fled by night by the way of the gate between two walls, which is by the king's garden: (now the Chaldees were against the city round about:) and the king went the way toward the plain."

2 Kings 25:8: "And in the fifth month, on the seventh day of the month, which is the nineteenth year of king Nebuchadnezzar king of Babylon, came Nebuzaradan, captain of the guard, a servant of the king of Babylon, unto Jerusalem:"

2 Kings 25:16: "The two pillars, one sea, and the bases which Solomon had made for the house of the LORD; the brass of all these vessels was without weight."

2 Kings 25:19: "And out of the city he took an officer that was set over the men of war, and five men of them that were in the king's presence, which were found in the city, and the principal scribe of the host, which mustered the people of the land, and threescore men of the people of the land that were found in the city:"

1 Chronicles 1:46: "And when Husham was dead, Hadad the son of Bedad, which smote Midian in the field of Moab, reigned in his stead: and the name of his city was Avith."

1 Chronicles 2:3: "The sons of Judah; Er, and Onan, and Shelah: which three were born unto him of the daughter of Shua the Canaanitess. And Er, the firstborn of Judah, was evil in the sight of the LORD; and he slew him."

1 Chronicles 2:19: "And when Azubah was dead, Caleb took unto him Ephrath, which bare him Hur."

1 Chronicles 2:42: "Now the sons of Caleb the brother of Jerahmeel were, Mesha his firstborn, which was the father of Ziph; and the sons of Mareshah the father of Hebron."

1 Chronicles 2:55: "And the families of the scribes which dwelt at Jabez; the Tirathites, the Shimeathites, and Suchathites. These are the Kenites that came of Hemath, the father of the house of Rechab."

1 Chronicles 3:1: "Now these were the sons of David, which were born unto him in Hebron; the firstborn Amnon, of Ahinoam the Jezreelitess; the second Daniel, of Abigail the Carmelitess:"

1 Chronicles 4:10: "And Jabez called on the God of Israel, saying, Oh that thou wouldest bless me indeed, and enlarge my coast, and that thine hand might be with me, and that thou wouldest keep me from evil, that it may not grieve me! And God granted him that which he requested."

1 Chronicles 4:11: "And Chelub the brother of Shuah begat Mehir, which was the father of Eshton."

1 Chronicles 4:18: "And his wife Jehudijah bare Jered the father of Gedor, and Heber the father of Socho, and Jekuthiel the father of Zanoah. And these are the sons of Bithiah the daughter of

Pharaoh, which Mered took."

1 Chronicles 6:61: "And unto the sons of Kohath, which were left of the family of that tribe, were cities given out of the half tribe, namely, out of the half tribe of Manasseh, by lot, ten cities."

1 Chronicles 6:65: "And they gave by lot out of the tribe of the children of Judah, and out of the tribe of the children of Simeon, and out of the tribe of the children of Benjamin, these cities, which are called by their names."

1 Chronicles 9:22: "All these which were chosen to be porters in the gates were two hundred and twelve. These were reckoned by their genealogy in their villages, whom David and Samuel the seer did ordain in their set office."

1 Chronicles 9:25: "And their brethren, which were in their villages, were to come after seven days from time to time with them."

1 Chronicles 10:13: "So Saul died for his transgression which he committed against the LORD, even against the word of the LORD, which he kept not, and also for asking counsel of one that had a familiar spirit, to enquire of it;"

1 Chronicles 11:4: "And David and all Israel went to Jerusalem, which is Jebus; where the Jebusites were, the inhabitants of the land."

1 Chronicles 11:5: "And the inhabitants of Jebus said to David, Thou shalt not come hither. Nevertheless David took the castle of Zion, which is the city of David."

1 Chronicles 12:31: "And of the half tribe of Manasseh eighteen thousand, which were expressed by name, to come and make David king."

1 Chronicles 12:32: "And of the children of Issachar, which were men that had understanding of the times, to know what Israel ought to do; the heads of them were two hundred; and all their brethren were at their commandment."

1 Chronicles 12:33: "Of Zebulun, such as went forth to battle, expert in war, with all instruments of war, fifty thousand, which could keep rank: they were not of double heart."

1 Chronicles 13:2: "And David said unto all the congregation of Israel, If it seem good unto you, and that it be of the LORD our God, let us send abroad unto our brethren every where, that are left in all the land of Israel, and with them also to the priests and Levites which are in their cities and suburbs, that they may gather themselves unto us:"

1 Chronicles 13:6: "And David went up, and all Israel, to Baalah, that is, to Kirjathjearim, which belonged to Judah, to bring up thence the ark of God the LORD, that dwelleth between the cherubims, whose name is called on it."

1 Chronicles 14:4: "Now these are the names of his children which he had in Jerusalem; Shammua, and Shobab, Nathan, and Solomon,"

1 Chronicles 15:3: "And David gathered all Israel together to Jerusalem, to bring up the ark of the LORD unto his place, which he had prepared for it."

1 Chronicles 16:15: "Be ye mindful always of his covenant; the word which he commanded to a thousand generations;"

1 Chronicles 16:16: "Even of the covenant which he made with Abraham, and of his oath unto Isaac;"

1 Chronicles 16:40: "To offer burnt offerings unto the LORD upon the altar of the burnt offering continually morning and evening, and to do according to all that is written in the law of the LORD, which he commanded Israel;"

1 Chronicles 17:11: "And it shall come to pass, when thy days be expired that thou must go to be with thy fathers, that I will raise up thy seed after thee, which shall be of thy sons; and I will establish his kingdom."

1 Chronicles 19:13: "Be of good courage, and let us behave ourselves valiantly for our people, and for the cities of our God: and let the LORD do that which is good in his sight."

1 Chronicles 19:18: "But the Syrians fled before Israel; and David slew of the Syrians seven thousand men which fought in chariots, and forty thousand footmen, and killed Shophach the

captain of the host."

1 Chronicles 20:4: "And it came to pass after this, that there arose war at Gezer with the Philistines; at which time Sibbechai the Hushathite slew Sippai, that was of the children of the giant: and they were subdued."

1 Chronicles 21:19: "And David went up at the saying of Gad, which he spake in the name of the LORD."

1 Chronicles 21:23: "And Ornan said unto David, Take it to thee, and let my lord the king do that which is good in his eyes: lo, I give thee the oxen also for burnt offerings, and the threshing instruments for wood, and the wheat for the meat offering; I give it all."

1 Chronicles 21:24: "And king David said to Ornan, Nay; but I will verily buy it for the full price: for I will not take that which is thine for the LORD, nor offer burnt offerings without cost."

1 Chronicles 21:29: "For the tabernacle of the LORD, which Moses made in the wilderness, and the altar of the burnt offering, were at that season in the high place at Gibeon."

1 Chronicles 22:13: "Then shalt thou prosper, if thou takest heed to fulfil the statutes and judgments which the LORD charged Moses with concerning Israel: be strong, and of good courage; dread not, nor be dismayed."

1 Chronicles 23:4: "Of which, twenty and four thousand were to set forward the work of the house of the LORD; and six thousand were officers and judges:"

1 Chronicles 23:5: "Moreover four thousand were porters; and four thousand praised the LORD with the instruments which I made, said David, to praise therewith."

1 Chronicles 23:29: "Both for the shewbread, and for the fine flour for meat offering, and for the unleavened cakes, and for that which is baked in the pan, and for that which is fried, and for all manner of measure and size;"

1 Chronicles 25:2: "Of the sons of Asaph; Zaccur, and Joseph, and Nethaniah, and Asarelah, the sons of Asaph under the hands of Asaph, which prophesied according to the order of the king."

1 Chronicles 26:22: "The sons of Jehieli; Zetham, and Joel his brother, which were over the treasures of the house of the LORD."

1 Chronicles 26:26: "Which Shelomith and his brethren were over all the treasures of the dedicated things, which David the king, and the chief fathers, the captains over thousands and hundreds, and the captains of the host, had dedicated."

1 Chronicles 27:1: "Now the children of Israel after their number, to wit, the chief fathers and captains of thousands and hundreds, and their officers that served the king in any matter of the courses, which came in and went out month by month throughout all the months of the year, of every course were twenty and four thousand."

1 Chronicles 27:31: "And over the flocks was Jaziz the Hagerite. All these were the rulers of the substance which was king David's."

1 Chronicles 29:3: "Moreover, because I have set my affection to the house of my God, I have of mine own proper good, of gold and silver, which I have given to the house of my God, over and above all that I have prepared for the holy house."

1 Chronicles 29:17: "I know also, my God, that thou triest the heart, and hast pleasure in uprightness. As for me, in the uprightness of mine heart I have willingly offered all these things: and now have I seen with joy thy people, which are present here, to offer willingly unto thee."

1 Chronicles 29:19: "And give unto Solomon my son a perfect heart, to keep thy commandments, thy testimonies, and thy statutes, and to do all these things, and to build the palace, for the which I have made provision."

2 Chronicles 1:3: "So Solomon, and all the congregation with him, went to the high place that was at Gibeon; for there was the tabernacle of the congregation of God, which Moses the servant of the LORD had made in the wilderness."

2 Chronicles 1:4: "But the ark of God had David brought up from Kirjathjearim to the place which David had prepared for it: for he had pitched a tent for it at Jerusalem."



2 Chronicles 1:6: "And Solomon went up thither to the brasen altar before the LORD, which was at the tabernacle of the congregation, and offered a thousand burnt offerings upon it."

2 Chronicles 1:14: "And Solomon gathered chariots and horsemen: and he had a thousand and four hundred chariots, and twelve thousand horsemen, which he placed in the chariot cities, and with the king at Jerusalem."

2 Chronicles 2:5: "And the house which I build is great: for great is our God above all gods."

2 Chronicles 2:9: "Even to prepare me timber in abundance: for the house which I am about to build shall be wonderful great."

2 Chronicles 2:11: "Then Hiram the king of Tyre answered in writing, which he sent to Solomon, Because the LORD hath loved his people, he hath made thee king over them."

2 Chronicles 2:14: "The son of a woman of the daughters of Dan, and his father was a man of Tyre, skilful to work in gold, and in silver, in brass, in iron, in stone, and in timber, in purple, in blue, and in fine linen, and in crimson; also to grave any manner of graving, and to find out every device which shall be put to him, with thy cunning men, and with the cunning men of my lord David thy father."

2 Chronicles 2:15: "Now therefore the wheat, and the barley, the oil, and the wine, which my lord hath spoken of, let him send unto his servants:"

2 Chronicles 3:5: "And the greater house he cieled with fir tree, which he overlaid with fine gold, and set thereon palm trees and chains."

2 Chronicles 4:3: "And under it was the similitude of oxen, which did compass it round about: ten in a cubit, compassing the sea round about. Two rows of oxen were cast, when it was cast."

2 Chronicles 4:12: "To wit, the two pillars, and the pommels, and the chapiters which were on the top of the two pillars, and the two wreaths to cover the two pommels of the chapiters which were on the top of the pillars;"

2 Chronicles 4:13: "And four hundred pomegranates on the two wreaths; two rows of pomegranates on each wreath, to cover the two pommels of the chapiters which were upon the pillars."

2 Chronicles 5:2: "Then Solomon assembled the elders of Israel, and all the heads of the tribes, the chief of the fathers of the children of Israel, unto Jerusalem, to bring up the ark of the covenant of the LORD out of the city of David, which is Zion."

2 Chronicles 5:3: "Wherefore all the men of Israel assembled themselves unto the king in the feast which was in the seventh month."

2 Chronicles 5:6: "Also king Solomon, and all the congregation of Israel that were assembled unto him before the ark, sacrificed sheep and oxen, which could not be told nor numbered for multitude."

2 Chronicles 5:10: "There was nothing in the ark save the two tables which Moses put therein at Horeb, when the LORD made a covenant with the children of Israel, when they came out of Egypt."

2 Chronicles 5:12: "Also the Levites which were the singers, all of them of Asaph, of Heman, of Jeduthun, with their sons and their brethren, being arrayed in white linen, having cymbals and psalteries and harps, stood at the east end of the altar, and with them an hundred and twenty priests sounding with trumpets:)"

2 Chronicles 6:4: "And he said, Blessed be the LORD God of Israel, who hath with his hands fulfilled that which he spake with his mouth to my father David, saying,"

2 Chronicles 6:9: "Notwithstanding thou shalt not build the house; but thy son which shall come forth out of thy loins, he shall build the house for my name."

2 Chronicles 6:14: "And said, O LORD God of Israel, there is no God like thee in the heaven, nor in the earth; which keepest covenant, and shewest mercy unto thy servants, that walk before thee with all their hearts:"

2 Chronicles 6:15: "Thou which hast kept with thy servant David my father that which thou hast promised him; and spakest with thy mouth, and hast fulfilled it with thine hand, as it is this day."

2 Chronicles 6:16: "Now therefore, O LORD God of Israel, keep with thy servant David my father that which thou hast promised him, saying, There shall not fail thee a man in my sight to sit upon

the throne of Israel; yet so that thy children take heed to their way to walk in my law, as thou hast walked before me."

2 Chronicles 6:17: "Now then, O LORD God of Israel, let thy word be verified, which thou hast spoken unto thy servant David."

2 Chronicles 6:18: "But will God in very deed dwell with men on the earth? behold, heaven and the heaven of heavens cannot contain thee; how much less this house which I have built!"

2 Chronicles 6:19: "Have respect therefore to the prayer of thy servant, and to his supplication, O LORD my God, to hearken unto the cry and the prayer which thy servant prayeth before thee:"

2 Chronicles 6:20: "That thine eyes may be open upon this house day and night, upon the place whereof thou hast said that thou wouldest put thy name there; to hearken unto the prayer which thy servant prayeth toward this place."

2 Chronicles 6:21: "Hearken therefore unto the supplications of thy servant, and of thy people Israel, which they shall make toward this place: hear thou from thy dwelling place, even from heaven; and when thou hearest, forgive."

2 Chronicles 6:25: "Then hear thou from the heavens, and forgive the sin of thy people Israel, and bring them again unto the land which thou gavest to them and to their fathers."

2 Chronicles 6:27: "Then hear thou from heaven, and forgive the sin of thy servants, and of thy people Israel, when thou hast taught them the good way, wherein they should walk; and send rain upon thy land, which thou hast given unto thy people for an inheritance."

2 Chronicles 6:31: "That they may fear thee, to walk in thy ways, so long as they live in the land which thou gavest unto our fathers."

2 Chronicles 6:32: "Moreover concerning the stranger, which is not of thy people Israel, but is come from a far country for thy great name's sake, and thy mighty hand, and thy stretched out arm; if they come and pray in this house;"

2 Chronicles 6:33: "Then hear thou from the heavens, even from thy dwelling place, and do according to all that the stranger calleth to thee for; that all people of the earth may know thy name, and fear thee, as doth thy people Israel, and may know that this house which I have built is called by thy name."

2 Chronicles 6:34: "If thy people go out to war against their enemies by the way that thou shalt send them, and they pray unto thee toward this city which thou hast chosen, and the house which I have built for thy name;"

2 Chronicles 6:36: "If they sin against thee, (for there is no man which sinneth not,) and thou be angry with them, and deliver them over before their enemies, and they carry them away captives unto a land far off or near;"

2 Chronicles 6:38: "If they return to thee with all their heart and with all their soul in the land of their captivity, whither they have carried them captives, and pray toward their land, which thou gavest unto their fathers, and toward the city which thou hast chosen, and toward the house which I have built for thy name:"

2 Chronicles 6:39: "Then hear thou from the heavens, even from thy dwelling place, their prayer and their supplications, and maintain their cause, and forgive thy people which have sinned against thee."

2 Chronicles 7:6: "And the priests waited on their offices: the Levites also with instruments of musick of the LORD, which David the king had made to praise the LORD, because his mercy endureth for ever, when David praised by their ministry; and the priests sounded trumpets before them, and all Israel stood."

2 Chronicles 7:7: "Moreover Solomon hallowed the middle of the court that was before the house of the LORD: for there he offered burnt offerings, and the fat of the peace offerings, because the brasen altar which Solomon had made was not able to receive the burnt offerings, and the meat offerings, and the fat."

2 Chronicles 7:14: "If my people, which are called by my name, shall humble themselves, and pray,

and seek my face, and turn from their wicked ways; then will I hear from heaven, and will forgive their sin, and will heal their land."

2 Chronicles 7:19: "But if ye turn away, and forsake my statutes and my commandments, which I have set before you, and shall go and serve other gods, and worship them;"

2 Chronicles 7:20: "Then will I pluck them up by the roots out of my land which I have given them; and this house, which I have sanctified for my name, will I cast out of my sight, and will make it to be a proverb and a byword among all nations."

2 Chronicles 7:21: "And this house, which is high, shall be an astonishment to every one that passeth by it; so that he shall say, Why hath the LORD done thus unto this land, and unto this house?"

2 Chronicles 7:22: "And it shall be answered, Because they forsook the LORD God of their fathers, which brought them forth out of the land of Egypt, and laid hold on other gods, and worshipped them, and served them: therefore hath he brought all this evil upon them."

2 Chronicles 8:2: "That the cities which Hiram had restored to Solomon, Solomon built them, and caused the children of Israel to dwell there."

2 Chronicles 8:4: "And he built Tadmor in the wilderness, and all the store cities, which he built in Hamath."

2 Chronicles 8:7: "As for all the people that were left of the Hittites, and the Amorites, and the Perizzites, and the Hivites, and the Jebusites, which were not of Israel,"

2 Chronicles 8:12: "Then Solomon offered burnt offerings unto the LORD on the altar of the LORD, which he had built before the porch,"

2 Chronicles 9:2: "And Solomon told her all her questions: and there was nothing hid from Solomon which he told her not."

2 Chronicles 9:4: "And the meat of his table, and the sitting of his servants, and the attendance of his ministers, and their apparel; his cupbearers also, and their apparel; and his ascent by which he went up into the house of the LORD; there was no more spirit in her."

2 Chronicles 9:5: "And she said to the king, It was a true report which I heard in mine own land of thine acts, and of thy wisdom:"

2 Chronicles 9:7: "Happy are thy men, and happy are these thy servants, which stand continually before thee, and hear thy wisdom."

2 Chronicles 9:8: "Blessed be the LORD thy God, which delighted in thee to set thee on his throne, to be king for the LORD thy God: because thy God loved Israel, to establish them for ever, therefore made he thee king over them, to do judgment and justice."

2 Chronicles 9:10: "And the servants also of Hiram, and the servants of Solomon, which brought gold from Ophir, brought algum trees and precious stones."

2 Chronicles 9:12: "And king Solomon gave to the queen of Sheba all her desire, whatsoever she asked, beside that which she had brought unto the king. So she turned, and went away to her own land, she and her servants."

2 Chronicles 9:14: "Beside that which chapmen and merchants brought. And all the kings of Arabia and governors of the country brought gold and silver to Solomon."

2 Chronicles 9:18: "And there were six steps to the throne, with a footstool of gold, which were fastened to the throne, and stays on each side of the sitting place, and two lions standing by the stays:"

2 Chronicles 10:8: "But he forsook the counsel which the old men gave him, and took counsel with the young men that were brought up with him, that stood before him."

2 Chronicles 10:9: "And he said unto them, What advice give ye that we may return answer to this people, which have spoken to me, saying, Ease somewhat the yoke that thy father did put upon us?"

2 Chronicles 10:15: "So the king hearkened not unto the people: for the cause was of God, that the LORD might perform his word, which he spake by the hand of Ahijah the Shilonite to Jeroboam the son of Nebat."

2 Chronicles 11:1: "And when Rehoboam was come to Jerusalem, he gathered of the house of Judah and Benjamin an hundred and fourscore thousand chosen men, which were warriors, to fight against Israel, that he might bring the kingdom again to Rehoboam."

2 Chronicles 11:10: "And Zorah, and Aijalon, and Hebron, which are in Judah and in Benjamin fenced cities."

2 Chronicles 11:15: "And he ordained him priests for the high places, and for the devils, and for the calves which he had made."

2 Chronicles 11:19: "Which bare him children; Jeush, and Shamariah, and Zaham."

2 Chronicles 11:20: "And after her he took Maachah the daughter of Absalom; which bare him Abijah, and Attai, and Ziza, and Shelomith."

2 Chronicles 12:4: "And he took the fenced cities which pertained to Judah, and came to Jerusalem."

2 Chronicles 12:9: "So Shishak king of Egypt came up against Jerusalem, and took away the treasures of the house of the LORD, and the treasures of the king's house; he took all: he carried away also the shields of gold which Solomon had made."

2 Chronicles 12:10: "Instead of which king Rehoboam made shields of brass, and committed them to the hands of the chief of the guard, that kept the entrance of the king's house."

2 Chronicles 12:13: "So king Rehoboam strengthened himself in Jerusalem, and reigned: for Rehoboam was one and forty years old when he began to reign, and he reigned seventeen years in Jerusalem, the city which the LORD had chosen out of all the tribes of Israel, to put his name there. And his mother's name was Naamah an Ammonitess."

2 Chronicles 13:4: "And Abijah stood up upon mount Zemaraim, which is in mount Ephraim, and said, Hear me, thou Jeroboam, and all Israel;"

2 Chronicles 13:8: "And now ye think to withstand the kingdom of the LORD in the hand of the sons of David; and ye be a great multitude, and there are with your golden calves, which Jeroboam made you for gods."

2 Chronicles 13:10: "But as for us, the LORD is our God, and we have not forsaken him; and the priests, which minister unto the LORD, are the sons of Aaron, and the Levites wait upon their business:"

2 Chronicles 14:2: "And Asa did that which was good and right in the eyes of the LORD his God:"

2 Chronicles 15:8: "And when Asa heard these words, and the prophecy of Oded the prophet, he took courage, and put away the abominable idols out of all the land of Judah and Benjamin, and out of the cities which he had taken from mount Ephraim, and renewed the altar of the LORD, that was before the porch of the LORD."

2 Chronicles 15:11: "And they offered unto the LORD the same time, of the spoil which they had brought, seven hundred oxen and seven thousand sheep."

2 Chronicles 16:14: "And they buried him in his own sepulchres, which he had made for himself in the city of David, and laid him in the bed which was filled with sweet odours and divers kinds of spices prepared by the apothecaries' art: and they made a very great burning for him."

2 Chronicles 17:2: "And he placed forces in all the fenced cities of Judah, and set garrisons in the land of Judah, and in the cities of Ephraim, which Asa his father had taken."

2 Chronicles 18:23: "Then Zedekiah the son of Chenaanah came near, and smote Micaiah upon the cheek, and said, Which way went the Spirit of the LORD from me to speak unto thee?"

2 Chronicles 20:2: "Then there came some that told Jehoshaphat, saying, There cometh a great multitude against thee from beyond the sea on this side Syria; and, behold, they be in Hazazontamar, which is Engedi."

2 Chronicles 20:11: "Behold, I say, how they reward us, to come to cast us out of thy possession, which thou hast given us to inherit."

2 Chronicles 20:22: "And when they began to sing and to praise, the LORD set ambushments against the children of Ammon, Moab, and mount Seir, which were come against Judah; and they

were smitten."

2 Chronicles 20:25: "And when Jehoshaphat and his people came to take away the spoil of them, they found among them in abundance both riches with the dead bodies, and precious jewels, which they stripped off for themselves, more than they could carry away: and they were three days in gathering of the spoil, it was so much."

2 Chronicles 20:32: "And he walked in the way of Asa his father, and departed not from it, doing that which was right in the sight of the LORD."

2 Chronicles 21:6: "And he walked in the way of the kings of Israel, like as did the house of Ahab: for he had the daughter of Ahab to wife: and he wrought that which was evil in the eyes of the LORD."

2 Chronicles 21:9: "Then Jehoram went forth with his princes, and all his chariots with him: and he rose up by night, and smote the Edomites which compassed him in, and the captains of the chariots."

2 Chronicles 21:13: "But hast walked in the way of the kings of Israel, and hast made Judah and the inhabitants of Jerusalem to go a whoring, like to the whoredoms of the house of Ahab, and also hast slain thy brethren of thy father's house, which were better than thyself:"

2 Chronicles 22:6: "And he returned to be healed in Jezreel because of the wounds which were given him at Ramah, when he fought with Hazael king of Syria. And Azariah the son of Jehoram king of Judah went down to see Jehoram the son of Ahab at Jezreel, because he was sick."

2 Chronicles 23:9: "Moreover Jehoiada the priest delivered to the captains of hundreds spears, and bucklers, and shields, that had been king David's, which were in the house of God."

2 Chronicles 23:19: "And he set the porters at the gates of the house of the LORD, that none which was unclean in any thing should enter in."

2 Chronicles 24:2: "And Joash did that which was right in the sight of the LORD all the days of Jehoiada the priest."

2 Chronicles 24:20: "And the Spirit of God came upon Zechariah the son of Jehoiada the priest, which stood above the people, and said unto them, Thus saith God, Why transgress ye the commandments of the LORD, that ye cannot prosper? because ye have forsaken the LORD, he hath also forsaken you."

2 Chronicles 24:22: "Thus Joash the king remembered not the kindness which Jehoiada his father had done to him, but slew his son. And when he died, he said, The LORD look upon it, and require it."

2 Chronicles 25:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, but not with a perfect heart."

2 Chronicles 25:9: "And Amaziah said to the man of God, But what shall we do for the hundred talents which I have given to the army of Israel? And the man of God answered, The LORD is able to give thee much more than this."

2 Chronicles 25:13: "But the soldiers of the army which Amaziah sent back, that they should not go with him to battle, fell upon the cities of Judah, from Samaria even unto Bethhoron, and smote three thousand of them, and took much spoil."

2 Chronicles 25:15: "Wherefore the anger of the LORD was kindled against Amaziah, and he sent unto him a prophet, which said unto him, Why hast thou sought after the gods of the people, which could not deliver their own people out of thine hand?"

2 Chronicles 25:21: "So Joash the king of Israel went up; and they saw one another in the face, both he and Amaziah king of Judah, at Bethshemesh, which belongeth to Judah."

2 Chronicles 26:4: "And he did that which was right in the sight of the LORD, according to all that his father Amaziah did."

2 Chronicles 26:23: "So Uzziah slept with his fathers, and they buried him with his fathers in the field of the burial which belonged to the kings; for they said, He is a leper: and Jotham his son reigned in his stead."

2 Chronicles 27:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, according to all that his father Uzziah did: howbeit he entered not into the temple of the LORD. And the people did yet corruptly."

2 Chronicles 28:1: "Ahaz was twenty years old when he began to reign, and he reigned sixteen years in Jerusalem: but he did not that which was right in the sight of the LORD, like David his father:"

2 Chronicles 28:6: "For Pekah the son of Remaliah slew in Judah an hundred and twenty thousand in one day, which were all valiant men; because they had forsaken the LORD God of their fathers."

2 Chronicles 28:11: "Now hear me therefore, and deliver the captives again, which ye have taken captive of your brethren: for the fierce wrath of the LORD is upon you."

2 Chronicles 28:15: "And the men which were expressed by name rose up, and took the captives, and with the spoil clothed all that were naked among them, and arrayed them, and shod them, and gave them to eat and to drink, and anointed them, and carried all the feeble of them upon asses, and brought them to Jericho, the city of palm trees, to their brethren: then they returned to Samaria."

2 Chronicles 28:23: "For he sacrificed unto the gods of Damascus, which smote him: and he said, Because the gods of the kings of Syria help them, therefore will I sacrifice to them, that they may help me. But they were the ruin of him, and of all Israel."

2 Chronicles 29:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, according to all that David his father had done."

2 Chronicles 29:6: "For our fathers have trespassed, and done that which was evil in the eyes of the LORD our God, and have forsaken him, and have turned away their faces from the habitation of the LORD, and turned their backs."

2 Chronicles 29:19: "Moreover all the vessels, which king Ahaz in his reign did cast away in his transgression, have we prepared and sanctified, and, behold, they are before the altar of the LORD."

2 Chronicles 29:32: "And the number of the burnt offerings, which the congregation brought, was threescore and ten bullocks, an hundred rams, and two hundred lambs: all these were for a burnt offering to the LORD."

2 Chronicles 30:7: "And be not ye like your fathers, and like your brethren, which trespassed against the LORD God of their fathers, who therefore gave them up to desolation, as ye see."

2 Chronicles 30:8: "Now be ye not stiffnecked, as your fathers were, but yield yourselves unto the LORD, and enter into his sanctuary, which he hath sanctified for ever: and serve the LORD your God, that the fierceness of his wrath may turn away from you."

2 Chronicles 30:16: "And they stood in their place after their manner, according to the law of Moses the man of God: the priests sprinkled the blood, which they received of the hand of the Levites."

2 Chronicles 31:6: "And concerning the children of Israel and Judah, that dwelt in the cities of Judah, they also brought in the tithe of oxen and sheep, and the tithe of holy things which were consecrated unto the LORD their God, and laid them by heaps."

2 Chronicles 31:10: "And Azariah the chief priest of the house of Zadok answered him, and said, Since the people began to bring the offerings into the house of the LORD, we have had enough to eat, and have left plenty: for the LORD hath blessed his people; and that which is left is this great store."

2 Chronicles 31:12: "And brought in the offerings and the tithes and the dedicated things faithfully: over which Cononiah the Levite was ruler, and Shimei his brother was the next."

2 Chronicles 31:19: "Also of the sons of Aaron the priests, which were in the fields of the suburbs of their cities, in every several city, the men that were expressed by name, to give portions to all the males among the priests, and to all that were reckoned by genealogies among the Levites."

2 Chronicles 31:20: "And thus did Hezekiah throughout all Judah, and wrought that which was good and right and truth before the LORD his God."

2 Chronicles 32:3: "He took counsel with his princes and his mighty men to stop the waters of the fountains which were without the city: and they did help him."

2 Chronicles 32:19: "And they spake against the God of Jerusalem, as against the gods of the people of the earth, which were the work of the hands of man."

2 Chronicles 32:21: "And the LORD sent an angel, which cut off all the mighty men of valour, and the leaders and captains in the camp of the king of Assyria. So he returned with shame of face to his own land. And when he was come into the house of his god, they that came forth of his own bowels slew him there with the sword."

2 Chronicles 33:2: "But did that which was evil in the sight of the LORD, like unto the abominations of the heathen, whom the LORD had cast out before the children of Israel."

2 Chronicles 33:3: "For he built again the high places which Hezekiah his father had broken down, and he reared up altars for Baalim, and made groves, and worshipped all the host of heaven, and served them."

2 Chronicles 33:7: "And he set a carved image, the idol which he had made, in the house of God, of which God had said to David and to Solomon his son, In this house, and in Jerusalem, which I have chosen before all the tribes of Israel, will I put my name for ever:"

2 Chronicles 33:8: "Neither will I any more remove the foot of Israel from out of the land which I have appointed for your fathers; so that they will take heed to do all that I have commanded them, according to the whole law and the statutes and the ordinances by the hand of Moses."

2 Chronicles 33:11: "Wherefore the LORD brought upon them the captains of the host of the king of Assyria, which took Manasseh among the thorns, and bound him with fetters, and carried him to Babylon."

2 Chronicles 33:22: "But he did that which was evil in the sight of the LORD, as did Manasseh his father: for Amon sacrificed unto all the carved images which Manasseh his father had made, and served them;"

2 Chronicles 34:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, and walked in the ways of David his father, and declined neither to the right hand, nor to the left."

2 Chronicles 34:9: "And when they came to Hilkiah the high priest, they delivered the money that was brought into the house of God, which the Levites that kept the doors had gathered of the hand of Manasseh and Ephraim, and of all the remnant of Israel, and of all Judah and Benjamin; and they returned to Jerusalem."

2 Chronicles 34:11: "Even to the artificers and builders gave they it, to buy hewn stone, and timber for couplings, and to floor the houses which the kings of Judah had destroyed."

2 Chronicles 34:24: "Thus saith the LORD, Behold, I will bring evil upon this place, and upon the inhabitants thereof, even all the curses that are written in the book which they have read before the king of Judah:"

2 Chronicles 34:26: "And as for the king of Judah, who sent you to enquire of the LORD, so shall ye say unto him, Thus saith the LORD God of Israel concerning the words which thou hast heard;"

2 Chronicles 34:31: "And the king stood in his place, and made a covenant before the LORD, to walk after the LORD, and to keep his commandments, and his testimonies, and his statutes, with all his heart, and with all his soul, to perform the words of the covenant which are written in this book."

2 Chronicles 35:3: "And said unto the Levites that taught all Israel, which were holy unto the LORD, Put the holy ark in the house which Solomon the son of David king of Israel did build; it shall not be a burden upon your shoulders: serve now the LORD your God, and his people Israel,"

2 Chronicles 35:26: "Now the rest of the acts of Josiah, and his goodness, according to that which was written in the law of the LORD,"

2 Chronicles 36:5: "Jehoiakim was twenty and five years old when he began to reign, and he reigned eleven years in Jerusalem: and he did that which was evil in the sight of the LORD his God."

2 Chronicles 36:8: "Now the rest of the acts of Jehoiakim, and his abominations which he did, and that which was found in him, behold, they are written in the book of the kings of Israel and Judah:

and Jehoiachin his son reigned in his stead."

2 Chronicles 36:9: "Jehoiachin was eight years old when he began to reign, and he reigned three months and ten days in Jerusalem: and he did that which was evil in the sight of the LORD."

2 Chronicles 36:12: "And he did that which was evil in the sight of the LORD his God, and humbled not himself before Jeremiah the prophet speaking from the mouth of the LORD."

2 Chronicles 36:14: "Moreover all the chief of the priests, and the people, transgressed very much after all the abominations of the heathen; and polluted the house of the LORD which he had hallowed in Jerusalem."

2 Chronicles 36:23: "Thus saith Cyrus king of Persia, All the kingdoms of the earth hath the LORD God of heaven given me; and he hath charged me to build him an house in Jerusalem, which is in Judah. Who is there among you of all his people? The LORD his God be with him, and let him go up."

Ezra 1:2: "Thus saith Cyrus king of Persia, The LORD God of heaven hath given me all the kingdoms of the earth; and he hath charged me to build him an house at Jerusalem, which is in Judah."

Ezra 1:3: "Who is there among you of all his people? his God be with him, and let him go up to Jerusalem, which is in Judah, and build the house of the LORD God of Israel, (he is the God,) which is in Jerusalem."

Ezra 1:5: "Then rose up the chief of the fathers of Judah and Benjamin, and the priests, and the Levites, with all them whose spirit God had raised, to go up to build the house of the LORD which is in Jerusalem."

Ezra 1:7: "Also Cyrus the king brought forth the vessels of the house of the LORD, which Nebuchadnezzar had brought forth out of Jerusalem, and had put them in the house of his gods;"

Ezra 2:1: "Now these are the children of the province that went up out of the captivity, of those which had been carried away, whom Nebuchadnezzar the king of Babylon had carried away unto Babylon, and came again unto Jerusalem and Judah, every one unto his city;"

Ezra 2:2: "Which came with Zerubbabel: Jeshua, Nehemiah, Seraiah, Reelaiah, Mordecai, Bilshan, Mizpar, Bigvai, Rehum, Baanah. The number of the men of the people of Israel:"

Ezra 2:59: "And these were they which went up from Telmelah, Telharsa, Cherub, Addan, and Immer: but they could not shew their father's house, and their seed, whether they were of Israel:"

Ezra 2:61: "And of the children of the priests: the children of Habaiah, the children of Koz, the children of Barzillai; which took a wife of the daughters of Barzillai the Gileadite, and was called after their name:"

Ezra 2:68: "And some of the chief of the fathers, when they came to the house of the LORD which is at Jerusalem, offered freely for the house of God to set it up in his place:"

Ezra 4:2: "Then they came to Zerubbabel, and to the chief of the fathers, and said unto them, Let us build with you: for we seek your God, as ye do; and we do sacrifice unto him since the days of Esarhaddon king of Assur, which brought us up hither."

Ezra 4:12: "Be it known unto the king, that the Jews which came up from thee to us are come unto Jerusalem, building the rebellious and the bad city, and have set up the walls thereof, and joined the foundations."

Ezra 4:15: "That search may be made in the book of the records of thy fathers: so shalt thou find in the book of the records, and know that this city is a rebellious city, and hurtful unto kings and provinces, and that they have moved sedition within the same of old time: for which cause was this city destroyed."

Ezra 4:18: "The letter which ye sent unto us hath been plainly read before me."

Ezra 4:20: "There have been mighty kings also over Jerusalem, which have ruled over all countries beyond the river; and toll, tribute, and custom, was paid unto them."

Ezra 4:24: "Then ceased the work of the house of God which is at Jerusalem. So it ceased unto the second year of the reign of Darius king of Persia."



Ezra 5:2: "Then rose up Zerubbabel the son of Shealtiel, and Jeshua the son of Jozadak, and began to build the house of God which is at Jerusalem: and with them were the prophets of God helping them."

Ezra 5:6: "The copy of the letter that Tatnai, governor on this side the river, and Shetharboznai and his companions the Apharsachites, which were on this side the river, sent unto Darius the king:"

Ezra 5:8: "Be it known unto the king, that we went into the province of Judea, to the house of the great God, which is builded with great stones, and timber is laid in the walls, and this work goeth fast on, and prospereth in their hands."

Ezra 5:11: "And thus they returned us answer, saying, We are the servants of the God of heaven and earth, and build the house that was builded these many years ago, which a great king of Israel builded and set up."

Ezra 5:14: "And the vessels also of gold and silver of the house of God, which Nebuchadnezzar took out of the temple that was in Jerusalem, and brought them into the temple of Babylon, those did Cyrus the king take out of the temple of Babylon, and they were delivered unto one, whose name was Sheshbazzar, whom he had made governor;"

Ezra 5:16: "Then came the same Sheshbazzar, and laid the foundation of the house of God which is in Jerusalem: and since that time even until now hath it been in building, and yet it is not finished."

Ezra 5:17: "Now therefore, if it seem good to the king, let there be search made in the king's treasure house, which is there at Babylon, whether it be so, that a decree was made of Cyrus the king to build this house of God at Jerusalem, and let the king send his pleasure to us concerning this matter."

Ezra 6:5: "And also let the golden and silver vessels of the house of God, which Nebuchadnezzar took forth out of the temple which is at Jerusalem, and brought unto Babylon, be restored, and brought again unto the temple which is at Jerusalem, every one to his place, and place them in the house of God."

Ezra 6:6: "Now therefore, Tatnai, governor beyond the river, Shetharboznai, and your companions the Apharsachites, which are beyond the river, be ye far from thence:"

Ezra 6:9: "And that which they have need of, both young bullocks, and rams, and lambs, for the burnt offerings of the God of heaven, wheat, salt, wine, and oil, according to the appointment of the priests which are at Jerusalem, let it be given them day by day without fail:"

Ezra 6:12: "And the God that hath caused his name to dwell there destroy all kings and people, that shall put to their hand to alter and to destroy this house of God which is at Jerusalem. I Darius have made a decree; let it be done with speed."

Ezra 6:13: "Then Tatnai, governor on this side the river, Shetharboznai, and their companions, according to that which Darius the king had sent, so they did speedily."

Ezra 6:15: "And this house was finished on the third day of the month Adar, which was in the sixth year of the reign of Darius the king."

Ezra 6:18: "And they set the priests in their divisions, and the Levites in their courses, for the service of God, which is at Jerusalem; as it is written in the book of Moses."

Ezra 6:21: "And the children of Israel, which were come again out of captivity, and all such as had separated themselves unto them from the filthiness of the heathen of the land, to seek the LORD God of Israel, did eat,"

Ezra 7:6: "This Ezra went up from Babylon; and he was a ready scribe in the law of Moses, which the LORD God of Israel had given: and the king granted him all his request, according to the hand of the LORD his God upon him."

Ezra 7:8: "And he came to Jerusalem in the fifth month, which was in the seventh year of the king."

Ezra 7:13: "I make a decree, that all they of the people of Israel, and of his priests and Levites, in my realm, which are minded of their own freewill to go up to Jerusalem, go with thee."

Ezra 7:14: "Forasmuch as thou art sent of the king, and of his seven counsellors, to enquire concerning Judah and Jerusalem, according to the law of thy God which is in thine hand;"

Ezra 7:15: "And to carry the silver and gold, which the king and his counsellors have freely offered unto the God of Israel, whose habitation is in Jerusalem,"

Ezra 7:16: "And all the silver and gold that thou canst find in all the province of Babylon, with the freewill offering of the people, and of the priests, offering willingly for the house of their God which is in Jerusalem:"

Ezra 7:17: "That thou mayest buy speedily with this money bullocks, rams, lambs, with their meat offerings and their drink offerings, and offer them upon the altar of the house of your God which is in Jerusalem."

Ezra 7:20: "And whatsoever more shall be needful for the house of thy God, which thou shalt have occasion to bestow, bestow it out of the king's treasure house."

Ezra 7:21: "And I, even I Artaxerxes the king, do make a decree to all the treasurers which are beyond the river, that whatsoever Ezra the priest, the scribe of the law of the God of heaven, shall require of you, it be done speedily,"

Ezra 7:25: "And thou, Ezra, after the wisdom of thy God, that is in thine hand, set magistrates and judges, which may judge all the people that are beyond the river, all such as know the laws of thy God; and teach ye them that know them not."

Ezra 7:27: "Blessed be the LORD God of our fathers, which hath put such a thing as this in the king's heart, to beautify the house of the LORD which is in Jerusalem:"

Ezra 8:25: "And weighed unto them the silver, and the gold, and the vessels, even the offering of the house of our God, which the king, and his counsellors, and his lords, and all Israel there present, had offered:"

Ezra 8:35: "Also the children of those that had been carried away, which were come out of the captivity, offered burnt offerings unto the God of Israel, twelve bullocks for all Israel, ninety and six rams, seventy and seven lambs, twelve he goats for a sin offering: all this was a burnt offering unto the LORD."

Ezra 9:11: "Which thou hast commanded by thy servants the prophets, saying, The land, unto which ye go to possess it, is an unclean land with the filthiness of the people of the lands, with their abominations, which have filled it from one end to another with their uncleanness."

Ezra 10:14: "Let now our rulers of all the congregation stand, and let all them which have taken strange wives in our cities come at appointed times, and with them the elders of every city, and the judges thereof, until the fierce wrath of our God for this matter be turned from us."

Nehemiah 1:2: "That Hanani, one of my brethren, came, he and certain men of Judah; and I asked them concerning the Jews that had escaped, which were left of the captivity, and concerning Jerusalem."

Nehemiah 1:6: "Let thine ear now be attentive, and thine eyes open, that thou mayest hear the prayer of thy servant, which I pray before thee now, day and night, for the children of Israel thy servants, and confess the sins of the children of Israel, which we have sinned against thee: both I and my father's house have sinned."

Nehemiah 1:7: "We have dealt very corruptly against thee, and have not kept the commandments, nor the statutes, nor the judgments, which thou commandedst thy servant Moses."

Nehemiah 2:8: "And a letter unto Asaph the keeper of the king's forest, that he may give me timber to make beams for the gates of the palace which appertained to the house, and for the wall of the city, and for the house that I shall enter into. And the king granted me, according to the good hand of my God upon me."

Nehemiah 2:13: "And I went out by night by the gate of the valley, even before the dragon well, and to the dung port, and viewed the walls of Jerusalem, which were broken down, and the gates thereof were consumed with fire."

Nehemiah 2:18: "Then I told them of the hand of my God which was good upon me; as also the king's words that he had spoken unto me. And they said, Let us rise up and build. So they strengthened their hands for this good work."

Nehemiah 3:25: "Palal the son of Uzai, over against the turning of the wall, and the tower which lieth out from the king's high house, that was by the court of the prison. After him Pedaiah the son of Parosh."

Nehemiah 4:2: "And he spake before his brethren and the army of Samaria, and said, What do these feeble Jews? will they fortify themselves? will they sacrifice? will they make an end in a day? will they revive the stones out of the heaps of the rubbish which are burned?"

Nehemiah 4:3: "Now Tobiah the Ammonite was by him, and he said, Even that which they build, if a fox go up, he shall even break down their stone wall."

Nehemiah 4:12: "And it came to pass, that when the Jews which dwelt by them came, they said unto us ten times, From all places whence ye shall return unto us they will be upon you."

Nehemiah 4:14: "And I looked, and rose up, and said unto the nobles, and to the rulers, and to the rest of the people, Be not ye afraid of them: remember the LORD, which is great and terrible, and fight for your brethren, your sons, and your daughters, your wives, and your houses."

Nehemiah 4:17: "They which builded on the wall, and they that bare burdens, with those that laded, every one with one of his hands wrought in the work, and with the other hand held a weapon."

Nehemiah 4:23: "So neither I, nor my brethren, nor my servants, nor the men of the guard which followed me, none of us put off our clothes, saving that every one put them off for washing."

Nehemiah 5:8: "And I said unto them, We after our ability have redeemed our brethren the Jews, which were sold unto the heathen; and will ye even sell your brethren? or shall they be sold unto us? Then held they their peace, and found nothing to answer."

Nehemiah 5:18: "Now that which was prepared for me daily was one ox and six choice sheep; also fowls were prepared for me, and once in ten days store of all sorts of wine: yet for all this required not I the bread of the governor, because the bondage was heavy upon this people."

Nehemiah 6:6: "Wherein was written, It is reported among the heathen, and Gashmu saith it, that thou and the Jews think to rebel: for which cause thou buildest the wall, that thou mayest be their king, according to these words."

Nehemiah 7:5: "And my God put into mine heart to gather together the nobles, and the rulers, and the people, that they might be reckoned by genealogy. And I found a register of the genealogy of them which came up at the first, and found written therein,"

Nehemiah 7:61: "And these were they which went up also from Telmelah, Telharesha, Cherub, Addon, and Immer: but they could not shew their father's house, nor their seed, whether they were of Israel."

Nehemiah 7:63: "And of the priests: the children of Habaiah, the children of Koz, the children of Barzillai, which took one of the daughters of Barzillai the Gileadite to wife, and was called after their name."

Nehemiah 7:72: "And that which the rest of the people gave was twenty thousand drams of gold, and two thousand pound of silver, and threescore and seven priests' garments."

Nehemiah 8:1: "And all the people gathered themselves together as one man into the street that was before the water gate; and they spake unto Ezra the scribe to bring the book of the law of Moses, which the LORD had commanded to Israel."

Nehemiah 8:4: "And Ezra the scribe stood upon a pulpit of wood, which they had made for the purpose; and beside him stood Mattithiah, and Shema, and Anaiah, and Urijah, and Hilkiah, and Maaseiah, on his right hand; and on his left hand, Pedaiah, and Mishael, and Malchiah, and Hashum, and Hashbadana, Zechariah, and Meshullam."

Nehemiah 8:9: "And Nehemiah, which is the Tirshatha, and Ezra the priest the scribe, and the Levites that taught the people, said unto all the people, This day is holy unto the LORD your God; mourn not, nor weep. For all the people wept, when they heard the words of the law."

Nehemiah 8:14: "And they found written in the law which the LORD had commanded by Moses, that the children of Israel should dwell in booths in the feast of the seventh month:"

Nehemiah 9:5: "Then the Levites, Jeshua, and Kadmiel, Bani, Hashabniah, Sherebiah, Hodijah,

Shebaniah, and Pethahiah, said, Stand up and bless the LORD your God for ever and ever: and blessed be thy glorious name, which is exalted above all blessing and praise."

Nehemiah 9:15: "And gavest them bread from heaven for their hunger, and broughtest forth water for them out of the rock for their thirst, and promisedst them that they should go in to possess the land which thou hadst sworn to give them."

Nehemiah 9:23: "Their children also multipliedst thou as the stars of heaven, and broughtest them into the land, concerning which thou hadst promised to their fathers, that they should go in to possess it."

Nehemiah 9:26: "Nevertheless they were disobedient, and rebelled against thee, and cast thy law behind their backs, and slew thy prophets which testified against them to turn them to thee, and they wrought great provocations."

Nehemiah 9:29: "And testifiedst against them, that thou mightest bring them again unto thy law: yet they dealt proudly, and hearkened not unto thy commandments, but sinned against thy judgments, (which if a man do, he shall live in them;) and withdrew the shoulder, and hardened their neck, and would not hear."

Nehemiah 9:35: "For they have not served thee in their kingdom, and in thy great goodness that thou gavest them, and in the large and fat land which thou gavest before them, neither turned they from their wicked works."

Nehemiah 10:29: "They clave to their brethren, their nobles, and entered into a curse, and into an oath, to walk in God's law, which was given by Moses the servant of God, and to observe and do all the commandments of the LORD our Lord, and his judgments and his statutes;"

Nehemiah 12:8: "Moreover the Levites: Jeshua, Binnui, Kadmiel, Sherebiah, Judah, and Mattaniah, which was over the thanksgiving, he and his brethren."

Nehemiah 12:37: "And at the fountain gate, which was over against them, they went up by the stairs of the city of David, at the going up of the wall, above the house of David, even unto the water gate eastward."

Nehemiah 13:5: "And he had prepared for him a great chamber, where aforetime they laid the meat offerings, the frankincense, and the vessels, and the tithes of the corn, the new wine, and the oil, which was commanded to be given to the Levites, and the singers, and the porters; and the offerings of the priests."

Nehemiah 13:15: "In those days saw I in Judah some treading wine presses on the sabbath, and bringing in sheaves, and lading asses; as also wine, grapes, and figs, and all manner of burdens, which they brought into Jerusalem on the sabbath day: and I testified against them in the day wherein they sold victuals."

Nehemiah 13:16: "There dwelt men of Tyre also therein, which brought fish, and all manner of ware, and sold on the sabbath unto the children of Judah, and in Jerusalem."

Esther 1:1: "Now it came to pass in the days of Ahasuerus, (this is Ahasuerus which reigned, from India even unto Ethiopia, over an hundred and seven and twenty provinces:)"

Esther 1:2: "That in those days, when the king Ahasuerus sat on the throne of his kingdom, which was in Shushan the palace,"

Esther 1:9: "Also Vashti the queen made a feast for the women in the royal house which belonged to king Ahasuerus."

Esther 1:13: "Then the king said to the wise men, which knew the times, (for so was the king's manner toward all that knew law and judgment:"

Esther 1:14: "And the next unto him was Carshena, Shethar, Admatha, Tarshish, Meres, Marsena, and Memucan, the seven princes of Persia and Media, which saw the king's face, and which sat the first in the kingdom;)"

Esther 1:18: "Likewise shall the ladies of Persia and Media say this day unto all the king's princes, which have heard of the deed of the queen. Thus shall there arise too much contempt and wrath."

Esther 1:20: "And when the king's decree which he shall make shall be published throughout all his

empire, (for it is great,) all the wives shall give to their husbands honour, both to great and small."  
Esther 2:4: "And let the maiden which pleaseth the king be queen instead of Vashti. And the thing pleased the king; and he did so."

Esther 2:6: "Who had been carried away from Jerusalem with the captivity which had been carried away with Jeconiah king of Judah, whom Nebuchadnezzar the king of Babylon had carried away."

Esther 2:9: "And the maiden pleased him, and she obtained kindness of him; and he speedily gave her her things for purification, with such things as belonged to her, and seven maidens, which were meet to be given her, out of the king's house: and he preferred her and her maids unto the best place of the house of the women."

Esther 2:14: "In the evening she went, and on the morrow she returned into the second house of the women, to the custody of Shaashgaz, the king's chamberlain, which kept the concubines: she came in unto the king no more, except the king delighted in her, and that she were called by name."

Esther 2:16: "So Esther was taken unto king Ahasuerus into his house royal in the tenth month, which is the month Tebeth, in the seventh year of his reign."

Esther 2:21: "In those days, while Mordecai sat in the king's gate, two of the king's chamberlains, Bigthan and Teresh, of those which kept the door, were wroth, and sought to lay hands on the king Ahasuerus."

Esther 3:3: "Then the king's servants, which were in the king's gate, said unto Mordecai, Why transgressest thou the king's commandment?"

Esther 3:13: "And the letters were sent by posts into all the king's provinces, to destroy, to kill, and to cause to perish, all Jews, both young and old, little children and women, in one day, even upon the thirteenth day of the twelfth month, which is the month Adar, and to take the spoil of them for a prey."

Esther 4:6: "So Hatach went forth to Mordecai unto the street of the city, which was before the king's gate."

Esther 4:16: "Go, gather together all the Jews that are present in Shushan, and fast ye for me, and neither eat nor drink three days, night or day: I also and my maidens will fast likewise; and so will I go in unto the king, which is not according to the law: and if I perish, I perish."

Esther 6:8: "Let the royal apparel be brought which the king useth to wear, and the horse that the king rideth upon, and the crown royal which is set upon his head:"

Esther 7:9: "And Harbonah, one of the chamberlains, said before the king, Behold also, the gallows fifty cubits high, which Haman had made for Mordecai, who spoken good for the king, standeth in the house of Haman. Then the king said, Hang him thereon."

Esther 8:2: "And the king took off his ring, which he had taken from Haman, and gave it unto Mordecai. And Esther set Mordecai over the house of Haman."

Esther 8:5: "And said, If it please the king, and if I have favour in his sight, and the thing seem right before the king, and I be pleasing in his eyes, let it be written to reverse the letters devised by Haman the son of Hammedatha the Agagite, which he wrote to destroy the Jews which are in all the king's provinces:"

Esther 8:8: "Write ye also for the Jews, as it liketh you, in the king's name, and seal it with the king's ring: for the writing which is written in the king's name, and sealed with the king's ring, may no man reverse."

Esther 8:9: "Then were the king's scribes called at that time in the third month, that is, the month Sivan, on the three and twentieth day thereof; and it was written according to all that Mordecai commanded unto the Jews, and to the lieutenants, and the deputies and rulers of the provinces which are from India unto Ethiopia, an hundred twenty and seven provinces, unto every province according to the writing thereof, and unto every people after their language, and to the Jews according to their writing, and according to their language."

Esther 8:11: "Wherein the king granted the Jews which were in every city to gather themselves together, and to stand for their life, to destroy, to slay and to cause to perish, all the power of the

people and province that would assault them, both little ones and women, and to take the spoil of them for a prey,"

Esther 8:12: "Upon one day in all the provinces of king Ahasuerus, namely, upon the thirteenth day of the twelfth month, which is the month Adar."

Esther 9:13: "Then said Esther, If it please the king, let it be granted to the Jews which are in Shushan to do to morrow also according unto this day's decree, and let Haman's ten sons be hanged upon the gallows."

Esther 9:22: "As the days wherein the Jews rested from their enemies, and the month which was turned unto them from sorrow to joy, and from mourning into a good day: that they should make them days of feasting and joy, and of sending portions one to another, and gifts to the poor."

Esther 9:25: "But when Esther came before the king, he commanded by letters that his wicked device, which he devised against the Jews, should return upon his own head, and that he and his sons should be hanged on the gallows."

Esther 9:26: "Wherefore they called these days Purim after the name of Pur. Therefore for all the words of this letter, and of that which they had seen concerning this matter, and which had come unto them,"

Job 3:3: "Let the day perish wherein I was born, and the night in which it was said, There is a man child conceived."

Job 3:14: "With kings and counsellors of the earth, which build desolate places for themselves;"

Job 3:16: "Or as an hidden untimely birth I had not been; as infants which never saw light."

Job 3:21: "Which long for death, but it cometh not; and dig for it more than for hid treasures;"

Job 3:22: "Which rejoice exceedingly, and are glad, when they can find the grave?"

Job 3:25: "For the thing which I greatly feared is come upon me, and that which I was afraid of is come unto me."

Job 4:14: "Fear came upon me, and trembling, which made all my bones to shake."

Job 4:19: "How much less in them that dwell in houses of clay, whose foundation is in the dust, which are crushed before the moth?"

Job 4:21: "Doth not their excellency which is in them go away? they die, even without wisdom."

Job 5:1: "Call now, if there be any that will answer thee; and to which of the saints wilt thou turn?"

Job 5:9: "Which doeth great things and unsearchable; marvellous things without number:"

Job 5:11: "To set up on high those that be low; that those which mourn may be exalted to safety."

Job 6:6: "Can that which is unsavoury be eaten without salt? or is there any taste in the white of an egg?"

Job 6:16: "Which are blackish by reason of the ice, and wherein the snow is hid:"

Job 6:26: "Do ye imagine to reprove words, and the speeches of one that is desperate, which are as wind?"

Job 9:5: "Which removeth the mountains, and they know not: which overturneth them in his anger."

Job 9:6: "Which shaketh the earth out of her place, and the pillars thereof tremble."

Job 9:7: "Which commandeth the sun, and it riseth not; and sealeth up the stars."

Job 9:8: "Which alone spreadeth out the heavens, and treadeth upon the waves of the sea."

Job 9:9: "Which maketh Arcturus, Orion, and Pleiades, and the chambers of the south."

Job 9:10: "Which doeth great things past finding out; yea, and wonders without number."

Job 11:6: "And that he would shew thee the secrets of wisdom, that they are double to that which is! Know therefore that God exacteth of thee less than thine iniquity deserveth."

Job 14:19: "The waters wear the stones: thou washest away the things which grow out of the dust of the earth; and thou destroyest the hope of man."

Job 15:9: "What knowest thou, that we know not? what understandest thou, which is not in us?"

Job 15:14: "What is man, that he should be clean? and he which is born of a woman, that he should be righteous?"

Job 15:16: "How much more abominable and filthy is man, which drinketh iniquity like water?"

Job 15:17: "I will shew thee, hear me; and that which I have seen I will declare;"  
Job 15:18: "Which wise men have told from their fathers, and have not hid it:"  
Job 15:28: "And he dwelleth in desolate cities, and in houses which no man inhabiteth, which are ready to become heaps."  
Job 16:8: "And thou hast filled me with wrinkles, which is a witness against me: and my leanness rising up in me beareth witness to my face."  
Job 20:7: "Yet he shall perish for ever like his own dung: they which have seen him shall say, Where is he?"  
Job 20:9: "The eye also which saw him shall see him no more; neither shall his place any more behold him."  
Job 20:11: "His bones are full of the sin of his youth, which shall lie down with him in the dust."  
Job 20:18: "That which he laboured for shall he restore, and shall not swallow it down: according to his substance shall the restitution be, and he shall not rejoice therein."  
Job 20:19: "Because he hath oppressed and hath forsaken the poor; because he hath violently taken away an house which he builded not;"  
Job 20:20: "Surely he shall not feel quietness in his belly, he shall not save of that which he desired."  
Job 21:27: "Behold, I know your thoughts, and the devices which ye wrongfully imagine against me."  
Job 22:15: "Hast thou marked the old way which wicked men have trodden?"  
Job 22:16: "Which were cut down out of time, whose foundation was overflown with a flood:"  
Job 22:17: "Which said unto God, Depart from us: and what can the Almighty do for them?"  
Job 23:5: "I would know the words which he would answer me, and understand what he would say unto me."  
Job 24:11: "Which make oil within their walls, and tread their winepresses, and suffer thirst."  
Job 24:16: "In the dark they dig through houses, which they had marked for themselves in the daytime: they know not the light."  
Job 24:19: "Drought and heat consume the snow waters: so doth the grave those which have sinned."  
Job 25:6: "How much less man, that is a worm? and the son of man, which is a worm?"  
Job 27:11: "I will teach you by the hand of God: that which is with the Almighty will I not conceal."  
Job 27:13: "This is the portion of a wicked man with God, and the heritage of oppressors, which they shall receive of the Almighty."  
Job 28:7: "There is a path which no fowl knoweth, and which the vulture's eye hath not seen:"  
Job 29:16: "I was a father to the poor: and the cause which I knew not I searched out."  
Job 32:19: "Behold, my belly is as wine which hath no vent; it is ready to burst like new bottles."  
Job 33:27: "He looketh upon men, and if any say, I have sinned, and perverted that which was right, and it profited me not;"  
Job 34:8: "Which goeth in company with the workers of iniquity, and walketh with wicked men."  
Job 34:32: "That which I see not teach thou me: if I have done iniquity, I will do no more."  
Job 35:5: "Look unto the heavens, and see; and behold the clouds which are higher than thou."  
Job 36:16: "Even so would he have removed thee out of the strait into a broad place, where there is no straitness; and that which should be set on thy table should be full of fatness."  
Job 36:24: "Remember that thou magnify his work, which men behold."  
Job 36:28: "Which the clouds do drop and distil upon man abundantly."  
Job 37:5: "God thundereth marvellously with his voice; great things doeth he, which we cannot comprehend."  
Job 37:16: "Dost thou know the balancings of the clouds, the wondrous works of him which is perfect in knowledge?"

Job 37:18: "Hast thou with him spread out the sky, which is strong, and as a molten looking glass?"

Job 37:21: "And now men see not the bright light which is in the clouds: but the wind passeth, and cleanseth them."

Job 38:23: "Which I have reserved against the time of trouble, against the day of battle and war?"

Job 38:24: "By what way is the light parted, which scattereth the east wind upon the earth?"

Job 39:14: "Which leaveth her eggs in the earth, and warmeth them in dust,"

Job 40:15: "Behold now behemoth, which I made with thee; he eateth grass as an ox."

Job 41:1: "Canst thou draw out leviathan with an hook? or his tongue with a cord which thou lettest down?"

Job 42:3: "Who is he that hideth counsel without knowledge? therefore have I uttered that I understood not; things too wonderful for me, which I knew not."

Job 42:8: "Therefore take unto you now seven bullocks and seven rams, and go to my servant Job, and offer up for yourselves a burnt offering; and my servant Job shall pray for you: for him will I accept: lest I deal with you after your folly, in that ye have not spoken of me the thing which is right, like my servant Job."

Psalms 1:4: "The ungodly are not so: but are like the chaff which the wind driveth away."

Psalms 3:2: "Many there be which say of my soul, There is no help for him in God. Selah."

Psalms 7:10: "My defence is of God, which saveth the upright in heart."

Psalms 7:15: "He made a pit, and digged it, and is fallen into the ditch which he made."

Psalms 8:3: "When I consider thy heavens, the work of thy fingers, the moon and the stars, which thou hast ordained;"

Psalms 9:11: "Sing praises to the LORD, which dwelleth in Zion: declare among the people his doings."

Psalms 9:13: "Have mercy upon me, O LORD; consider my trouble which I suffer of them that hate me, thou that liftest me up from the gates of death:"

Psalms 9:15: "The heathen are sunk down in the pit that they made: in the net which they hid is their own foot taken."

Psalms 9:16: "The LORD is known by the judgment which he executeth: the wicked is snared in the work of his own hands. Higgaion. Selah."

Psalms 17:7: "Shew thy marvellous lovingkindness, O thou that savest by thy right hand them which put their trust in thee from those that rise up against them."

Psalms 17:13: "Arise, O LORD, disappoint him, cast him down: deliver my soul from the wicked, which is thy sword:"

Psalms 17:14: "From men which are thy hand, O LORD, from men of the world, which have their portion in this life, and whose belly thou fillest with thy hid treasure: they are full of children, and leave the rest of their substance to their babes."

Psalms 18:17: "He delivered me from my strong enemy, and from them which hated me: for they were too strong for me."

Psalms 19:5: "Which is as a bridegroom coming out of his chamber, and rejoiceth as a strong man to run a race."

Psalms 21:11: "For they intended evil against thee: they imagined a mischievous device, which they are not able to perform."

Psalms 25:3: "Yea, let none that wait on thee be ashamed: let them be ashamed which transgress without cause."

Psalms 28:3: "Draw me not away with the wicked, and with the workers of iniquity, which speak peace to their neighbours, but mischief is in their hearts."

Psalms 31:18: "Let the lying lips be put to silence; which speak grievous things proudly and contemptuously against the righteous."

Psalms 31:19: "Oh how great is thy goodness, which thou hast laid up for them that fear thee; which thou hast wrought for them that trust in thee before the sons of men!"



Psalms 32:8: "I will instruct thee and teach thee in the way which thou shalt go: I will guide thee with mine eye."

Psalms 32:9: "Be ye not as the horse, or as the mule, which have no understanding: whose mouth must be held in with bit and bridle, lest they come near unto thee."

Psalms 35:7: "For without cause have they hid for me their net in a pit, which without cause they have digged for my soul."

Psalms 35:10: "All my bones shall say, LORD, who is like unto thee, which deliverest the poor from him that is too strong for him, yea, the poor and the needy from him that spoileth him?"

Psalms 35:27: "Let them shout for joy, and be glad, that favour my righteous cause: yea, let them say continually, Let the LORD be magnified, which hath pleasure in the prosperity of his servant."

Psalms 40:5: "Many, O LORD my God, are thy wonderful works which thou hast done, and thy thoughts which are to us-ward: they cannot be reckoned up in order unto thee: if I would declare and speak of them, they are more than can be numbered."

Psalms 41:9: "Yea, mine own familiar friend, in whom I trusted, which did eat of my bread, hath lifted up his heel against me."

Psalms 44:10: "Thou makest us to turn back from the enemy: and they which hate us spoil for themselves."

Psalms 45:1: "My heart is inditing a good matter: I speak of the things which I have made touching the king: my tongue is the pen of a ready writer."

Psalms 51:8: "Make me to hear joy and gladness; that the bones which thou hast broken may rejoice."

Psalms 58:5: "Which will not hearken to the voice of charmers, charming never so wisely."

Psalms 58:7: "Let them melt away as waters which run continually: when he bendeth his bow to shoot his arrows, let them be as cut in pieces."

Psalms 58:8: "As a snail which melteth, let every one of them pass away: like the untimely birth of a woman, that they may not see the sun."

Psalms 59:12: "For the sin of their mouth and the words of their lips let them even be taken in their pride: and for cursing and lying which they speak."

Psalms 60:10: "Wilt not thou, O God, which hadst cast us off? and thou, O God, which didst not go out with our armies?"

Psalms 61:7: "He shall abide before God for ever: O prepare mercy and truth, which may preserve him."

Psalms 65:6: "Which by his strength setteth fast the mountains; being girded with power:"

Psalms 65:7: "Which stilleth the noise of the seas, the noise of their waves, and the tumult of the people."

Psalms 65:9: "Thou visitest the earth, and waterest it: thou greatly enrichest it with the river of God, which is full of water: thou preparest them corn, when thou hast so provided for it."

Psalms 66:9: "Which holdeth our soul in life, and suffereth not our feet to be moved."

Psalms 66:14: "Which my lips have uttered, and my mouth hath spoken, when I was in trouble."

Psalms 66:20: "Blessed be God, which hath not turned away my prayer, nor his mercy from me."

Psalms 68:6: "God setteth the solitary in families: he bringeth out those which are bound with chains: but the rebellious dwell in a dry land."

Psalms 68:16: "Why leap ye, ye high hills? this is the hill which God desireth to dwell in; yea, the LORD will dwell in it for ever."

Psalms 68:28: "Thy God hath commanded thy strength: strengthen, O God, that which thou hast wrought for us."

Psalms 68:33: "To him that rideth upon the heavens of heavens, which were of old; lo, he doth send out his voice, and that a mighty voice."

Psalms 69:4: "They that hate me without a cause are more than the hairs of mine head: they that would destroy me, being mine enemies wrongfully, are mighty: then I restored that which I took not

away."

Psalms 69:22: "Let their table become a snare before them: and that which should have been for their welfare, let it become a trap."

Psalms 71:20: "Thou, which hast shewed me great and sore troubles, shalt quicken me again, and shalt bring me up again from the depths of the earth."

Psalms 71:23: "My lips shall greatly rejoice when I sing unto thee; and my soul, which thou hast redeemed."

Psalms 74:2: "Remember thy congregation, which thou hast purchased of old; the rod of thine inheritance, which thou hast redeemed; this mount Zion, wherein thou hast dwelt."

Psalms 78:3: "Which we have heard and known, and our fathers have told us."

Psalms 78:5: "For he established a testimony in Jacob, and appointed a law in Israel, which he commanded our fathers, that they should make them known to their children:"

Psalms 78:6: "That the generation to come might know them, even the children which should be born; who should arise and declare them to their children:"

Psalms 78:45: "He sent divers sorts of flies among them, which devoured them; and frogs, which destroyed them."

Psalms 78:54: "And he brought them to the border of his sanctuary, even to this mountain, which his right hand had purchased."

Psalms 78:60: "So that he forsook the tabernacle of Shiloh, the tent which he placed among men;"

Psalms 78:68: "But chose the tribe of Judah, the mount Zion which he loved."

Psalms 78:69: "And he built his sanctuary like high palaces, like the earth which he hath established for ever."

Psalms 79:10: "Wherefore should the heathen say, Where is their God? let him be known among the heathen in our sight by the revenging of the blood of thy servants which is shed."

Psalms 80:12: "Why hast thou then broken down her hedges, so that all they which pass by the way do pluck her?"

Psalms 80:15: "And the vineyard which thy right hand hath planted, and the branch that thou madest strong for thyself."

Psalms 81:10: "I am the LORD thy God, which brought thee out of the land of Egypt: open thy mouth wide, and I will fill it."

Psalms 83:10: "Which perished at Endor: they became as dung for the earth."

Psalms 85:12: "Yea, the LORD shall give that which is good; and our land shall yield her increase."

Psalms 86:17: "Shew me a token for good; that they which hate me may see it, and be ashamed: because thou, LORD, hast holpen me, and comforted me."

Psalms 89:49: "Lord, where are thy former lovingkindnesses, which thou swarest unto David in thy truth?"

Psalms 90:5: "Thou carriest them away as with a flood; they are as a sleep: in the morning they are like grass which groweth up."

Psalms 91:9: "Because thou hast made the LORD, which is my refuge, even the most High, thy habitation;"

Psalms 94:20: "Shall the throne of iniquity have fellowship with thee, which frameth mischief by a law?"

Psalms 102:18: "This shall be written for the generation to come: and the people which shall be created shall praise the LORD."

Psalms 104:8: "They go up by the mountains; they go down by the valleys unto the place which thou hast founded for them."

Psalms 104:10: "He sendeth the springs into the valleys, which run among the hills."

Psalms 104:12: "By them shall the fowls of the heaven have their habitation, which sing among the branches."

Psalms 104:15: "And wine that maketh glad the heart of man, and oil to make his face to shine, and

bread which strengtheneth man's heart."

Psalms 104:16: "The trees of the LORD are full of sap; the cedars of Lebanon, which he hath planted;"

Psalms 105:8: "He hath remembered his covenant for ever, the word which he commanded to a thousand generations."

Psalms 105:9: "Which covenant he made with Abraham, and his oath unto Isaac;"

Psalms 106:21: "They forgat God their saviour, which had done great things in Egypt;"

Psalms 106:36: "And they served their idols: which were a snare unto them."

Psalms 107:25: "For he commandeth, and raiseth the stormy wind, which lifteth up the waves thereof."

Psalms 107:37: "And sow the fields, and plant vineyards, which may yield fruits of increase."

Psalms 109:19: "Let it be unto him as the garment which covereth him, and for a girdle wherewith he is girded continually."

Psalms 114:8: "Which turned the rock into a standing water, the flint into a fountain of waters."

Psalms 115:15: "Ye are blessed of the LORD which made heaven and earth."

Psalms 118:20: "This gate of the LORD, into which the righteous shall enter."

Psalms 118:22: "The stone which the builders refused is become the head stone of the corner."

Psalms 118:24: "This is the day which the LORD hath made; we will rejoice and be glad in it."

Psalms 118:27: "God is the LORD, which hath shewed us light: bind the sacrifice with cords, even unto the horns of the altar."

Psalms 119:21: "Thou hast rebuked the proud that are cursed, which do err from thy commandments."

Psalms 119:39: "Turn away my reproach which I fear: for thy judgments are good."

Psalms 119:47: "And I will delight myself in thy commandments, which I have loved."

Psalms 119:48: "My hands also will I lift up unto thy commandments, which I have loved; and I will meditate in thy statutes."

Psalms 119:49: "Remember the word unto thy servant, upon which thou hast caused me to hope."

Psalms 119:85: "The proud have digged pits for me, which are not after thy law."

Psalms 119:165: "Great peace have they which love thy law: and nothing shall offend them."

Psalms 121:2: "My help cometh from the LORD, which made heaven and earth."

Psalms 125:1: "They that trust in the LORD shall be as mount Zion, which cannot be removed, but abideth for ever."

Psalms 129:6: "Let them be as the grass upon the housetops, which withereth afore it groweth up:"

Psalms 129:8: "Neither do they which go by say, The blessing of the LORD be upon you: we bless you in the name of the LORD."

Psalms 134:1: "Behold, bless ye the LORD, all ye servants of the LORD, which by night stand in the house of the LORD."

Psalms 135:21: "Blessed be the LORD out of Zion, which dwelleth at Jerusalem. Praise ye the LORD."

Psalms 136:13: "To him which divided the Red sea into parts: for his mercy endureth for ever:"

Psalms 136:16: "To him which led his people through the wilderness: for his mercy endureth for ever."

Psalms 136:17: "To him which smote great kings: for his mercy endureth for ever:"

Psalms 138:8: "The LORD will perfect that which concerneth me: thy mercy, O LORD, endureth for ever: forsake not the works of thine own hands."

Psalms 139:16: "Thine eyes did see my substance, yet being unperfect; and in thy book all my members were written, which in continuance were fashioned, when as yet there was none of them."

Psalms 140:2: "Which imagine mischiefs in their heart; continually are they gathered together for war."

Psalms 141:5: "Let the righteous smite me; it shall be a kindness: and let him reprove me; it shall be

an excellent oil, which shall not break my head: for yet my prayer also shall be in their calamities."  
Psalms 141:9: "Keep me from the snares which they have laid for me, and the gins of the workers of iniquity."  
Psalms 144:1: "Blessed be the LORD my strength which teacheth my hands to war, and my fingers to fight:"  
Psalms 146:6: "Which made heaven, and earth, the sea, and all that therein is: which keepeth truth for ever:"  
Psalms 146:7: "Which executeth judgment for the oppressed: which giveth food to the hungry. The LORD looseth the prisoners:"  
Psalms 147:9: "He giveth to the beast his food, and to the young ravens which cry."  
Psalms 148:6: "He hath also stablished them for ever and ever: he hath made a decree which shall not pass."  
Proverbs 1:19: "So are the ways of every one that is greedy of gain; which taketh away the life of the owners thereof."  
Proverbs 2:16: "To deliver thee from the strange woman, even from the stranger which flattereth with her words;"  
Proverbs 2:17: "Which forsaketh the guide of her youth, and forgetteth the covenant of her God."  
Proverbs 6:7: "Which having no guide, overseer, or ruler,"  
Proverbs 7:5: "That they may keep thee from the strange woman, from the stranger which flattereth with her words."  
Proverbs 9:5: "Come, eat of my bread, and drink of the wine which I have mingled."  
Proverbs 11:22: "As a jewel of gold in a swine's snout, so is a fair woman which is without discretion."  
Proverbs 12:27: "The slothful man roasteth not that which he took in hunting: but the substance of a diligent man is precious."  
Proverbs 14:12: "There is a way which seemeth right unto a man, but the end thereof are the ways of death."  
Proverbs 14:33: "Wisdom resteth in the heart of him that hath understanding: but that which is in the midst of fools is made known."  
Proverbs 19:17: "He that hath pity upon the poor lendeth unto the LORD; and that which he hath given will he pay him again."  
Proverbs 20:25: "It is a snare to the man who devoureth that which is holy, and after vows to make enquiry."  
Proverbs 22:28: "Remove not the ancient landmark, which thy fathers have set."  
Proverbs 23:5: "Wilt thou set thine eyes upon that which is not? for riches certainly make themselves wings; they fly away as an eagle toward heaven."  
Proverbs 23:8: "The morsel which thou hast eaten shalt thou vomit up, and lose thy sweet words."  
Proverbs 24:13: "My son, eat thou honey, because it is good; and the honeycomb, which is sweet to thy taste:"  
Proverbs 25:1: "These are also proverbs of Solomon, which the men of Hezekiah king of Judah copied out."  
Proverbs 27:16: "Whosoever hideth her hideth the wind, and the ointment of his right hand, which bewrayeth itself."  
Proverbs 28:3: "A poor man that oppresseth the poor is like a sweeping rain which leaveth no food."  
Proverbs 30:18: "There be three things which are too wonderful for me, yea, four which I know not:"  
Proverbs 30:21: "For three things the earth is disquieted, and for four which it cannot bear:"  
Proverbs 30:24: "There be four things which are little upon the earth, but they are exceeding wise:"  
Proverbs 30:29: "There be three things which go well, yea, four are comely in going:"  
Proverbs 30:30: "A lion which is strongest among beasts, and turneth not away for any;"

Proverbs 31:3: "Give not thy strength unto women, nor thy ways to that which destroyeth kings."

Ecclesiastes 1:3: "What profit hath a man of all his labour which he taketh under the sun?"

Ecclesiastes 1:9: "The thing that hath been, it is that which shall be; and that which is done is that which shall be done: and there is no new thing under the sun."

Ecclesiastes 1:10: "Is there any thing whereof it may be said, See, this is new? it hath been already of old time, which was before us."

Ecclesiastes 1:15: "That which is crooked cannot be made straight: and that which is wanting cannot be numbered."

Ecclesiastes 2:3: "I sought in mine heart to give myself unto wine, yet acquainting mine heart with wisdom; and to lay hold on folly, till I might see what was that good for the sons of men, which they should do under the heaven all the days of their life."

Ecclesiastes 2:12: "And I turned myself to behold wisdom, and madness, and folly: for what can the man do that cometh after the king? even that which hath been already done."

Ecclesiastes 2:16: "For there is no remembrance of the wise more than of the fool for ever; seeing that which now is in the days to come shall all be forgotten. And how dieth the wise man? as the fool."

Ecclesiastes 2:18: "Yea, I hated all my labour which I had taken under the sun: because I should leave it unto the man that shall be after me."

Ecclesiastes 2:20: "Therefore I went about to cause my heart to despair of all the labour which I took under the sun."

Ecclesiastes 3:2: "A time to be born, and a time to die; a time to plant, and a time to pluck up that which is planted;"

Ecclesiastes 3:10: "I have seen the travail, which God hath given to the sons of men to be exercised in it."

Ecclesiastes 3:15: "That which hath been is now; and that which is to be hath already been; and God requireth that which is past."

Ecclesiastes 3:19: "For that which befalleth the sons of men befalleth beasts; even one thing befalleth them: as the one dieth, so dieth the other; yea, they have all one breath; so that a man hath no preeminence above a beast: for all is vanity."

Ecclesiastes 4:2: "Wherefore I praised the dead which are already dead more than the living which are yet alive."

Ecclesiastes 4:3: "Yea, better is he than both they, which hath not yet been, who hath not seen the evil work that is done under the sun."

Ecclesiastes 4:15: "I considered all the living which walk under the sun, with the second child that shall stand up in his stead."

Ecclesiastes 5:4: "When thou vowest a vow unto God, defer not to pay it; for he hath no pleasure in fools: pay that which thou hast vowed."

Ecclesiastes 5:13: "There is a sore evil which I have seen under the sun, namely, riches kept for the owners thereof to their hurt."

Ecclesiastes 5:15: "As he came forth of his mother's womb, naked shall he return to go as he came, and shall take nothing of his labour, which he may carry away in his hand."

Ecclesiastes 5:18: "Behold that which I have seen: it is good and comely for one to eat and to drink, and to enjoy the good of all his labour that he taketh under the sun all the days of his life, which God giveth him: for it is his portion."

Ecclesiastes 6:1: "There is an evil which I have seen under the sun, and it is common among men:"

Ecclesiastes 6:10: "That which hath been is named already, and it is known that it is man: neither may he contend with him that is mightier than he."

Ecclesiastes 6:12: "For who knoweth what is good for man in this life, all the days of his vain life which he spendeth as a shadow? for who can tell a man what shall be after him under the sun?"

Ecclesiastes 7:13: "Consider the work of God: for who can make that straight, which he hath made

crooked?"

Ecclesiastes 7:19: "Wisdom strengtheneth the wise more than ten mighty men which are in the city."

Ecclesiastes 7:24: "That which is far off, and exceeding deep, who can find it out?"

Ecclesiastes 7:28: "Which yet my soul seeketh, but I find not: one man among a thousand have I found; but a woman among all those have I not found."

Ecclesiastes 8:7: "For he knoweth not that which shall be: for who can tell him when it shall be?"

Ecclesiastes 8:12: "Though a sinner do evil an hundred times, and his days be prolonged, yet surely I know that it shall be well with them that fear God, which fear before him:"

Ecclesiastes 8:13: "But it shall not be well with the wicked, neither shall he prolong his days, which are as a shadow; because he feareth not before God."

Ecclesiastes 8:14: "There is a vanity which is done upon the earth; that there be just men, unto whom it happeneth according to the work of the wicked; again, there be wicked men, to whom it happeneth according to the work of the righteous: I said that this also is vanity."

Ecclesiastes 8:15: "Then I commended mirth, because a man hath no better thing under the sun, than to eat, and to drink, and to be merry: for that shall abide with him of his labour the days of his life, which God giveth him under the sun."

Ecclesiastes 9:9: "Live joyfully with the wife whom thou lovest all the days of the life of thy vanity, which he hath given thee under the sun, all the days of thy vanity: for that is thy portion in this life, and in thy labour which thou takest under the sun."

Ecclesiastes 10:5: "There is an evil which I have seen under the sun, as an error which proceedeth from the ruler:"

Ecclesiastes 10:20: "Curse not the king, no not in thy thought; and curse not the rich in thy bedchamber: for a bird of the air shall carry the voice, and that which hath wings shall tell the matter."

Ecclesiastes 12:5: "Also when they shall be afraid of that which is high, and fears shall be in the way, and the almond tree shall flourish, and the grasshopper shall be a burden, and desire shall fail: because man goeth to his long home, and the mourners go about the streets:"

Ecclesiastes 12:10: "The preacher sought to find out acceptable words: and that which was written was upright, even words of truth."

Ecclesiastes 12:11: "The words of the wise are as goads, and as nails fastened by the masters of assemblies, which are given from one shepherd."

Song of Solomon 1:1: "The song of songs, which is Solomon's."

Song of Solomon 3:7: "Behold his bed, which is Solomon's; threescore valiant men are about it, of the valiant of Israel."

Song of Solomon 4:2: "Thy teeth are like a flock of sheep that are even shorn, which came up from the washing; whereof every one bear twins, and none is barren among them."

Song of Solomon 4:5: "Thy two breasts are like two young roes that are twins, which feed among the lilies."

Song of Solomon 6:6: "Thy teeth are as a flock of sheep which go up from the washing, whereof every one beareth twins, and there is not one barren among them."

Song of Solomon 7:2: "Thy navel is like a round goblet, which wanteth not liquor: thy belly is like an heap of wheat set about with lilies."

Song of Solomon 7:4: "Thy neck is as a tower of ivory; thine eyes like the fishpools in Heshbon, by the gate of Bathrabbim: thy nose is as the tower of Lebanon which looketh toward Damascus."

Song of Solomon 7:13: "The mandrakes give a smell, and at our gates are all manner of pleasant fruits, new and old, which I have laid up for thee, O my beloved."

Song of Solomon 8:6: "Set me as a seal upon thine heart, as a seal upon thine arm: for love is strong as death; jealousy is cruel as the grave: the coals thereof are coals of fire, which hath a most vehement flame."

Song of Solomon 8:12: "My vineyard, which is mine, is before me: thou, O Solomon, must have a thousand, and those that keep the fruit thereof two hundred."

Isaiah 1:1: "The vision of Isaiah the son of Amoz, which he saw concerning Judah and Jerusalem in the days of Uzziah, Jotham, Ahaz, and Hezekiah, kings of Judah."

Isaiah 1:29: "For they shall be ashamed of the oaks which ye have desired, and ye shall be confounded for the gardens that ye have chosen."

Isaiah 2:8: "Their land also is full of idols; they worship the work of their own hands, that which their own fingers have made:"

Isaiah 2:20: "In that day a man shall cast his idols of silver, and his idols of gold, which they made each one for himself to worship, to the moles and to the bats;"

Isaiah 3:12: "As for my people, children are their oppressors, and women rule over them. O my people, they which lead thee cause thee to err, and destroy the way of thy paths."

Isaiah 5:23: "Which justify the wicked for reward, and take away the righteousness of the righteous from him!"

Isaiah 6:6: "Then flew one of the seraphims unto me, having a live coal in his hand, which he had taken with the tongs from off the altar:"

Isaiah 8:18: "Behold, I and the children whom the LORD hath given me are for signs and for wonders in Israel from the LORD of hosts, which dwelleth in mount Zion."

Isaiah 10:1: "Woe unto them that decree unrighteous decrees, and that write grievousness which they have prescribed;"

Isaiah 10:3: "And what will ye do in the day of visitation, and in the desolation which shall come from far? to whom will ye flee for help? and where will ye leave your glory?"

Isaiah 11:10: "And in that day there shall be a root of Jesse, which shall stand for an ensign of the people; to it shall the Gentiles seek: and his rest shall be glorious."

Isaiah 11:11: "And it shall come to pass in that day, that the Lord shall set his hand again the second time to recover the remnant of his people, which shall be left, from Assyria, and from Egypt, and from Pathros, and from Cush, and from Elam, and from Shinar, and from Hamath, and from the islands of the sea."

Isaiah 11:16: "And there shall be an highway for the remnant of his people, which shall be left, from Assyria; like as it was to Israel in the day that he came up out of the land of Egypt."

Isaiah 13:1: "The burden of Babylon, which Isaiah the son of Amoz did see."

Isaiah 13:17: "Behold, I will stir up the Medes against them, which shall not regard silver; and as for gold, they shall not delight in it."

Isaiah 14:12: "How art thou fallen from heaven, O Lucifer, son of the morning! how art thou cut down to the ground, which didst weaken the nations!"

Isaiah 15:7: "Therefore the abundance they have gotten, and that which they have laid up, shall they carry away to the brook of the willows."

Isaiah 17:2: "The cities of Aroer are forsaken: they shall be for flocks, which shall lie down, and none shall make them afraid."

Isaiah 17:8: "And he shall not look to the altars, the work of his hands, neither shall respect that which his fingers have made, either the groves, or the images."

Isaiah 17:9: "In that day shall his strong cities be as a forsaken bough, and an uppermost branch, which they left because of the children of Israel: and there shall be desolation."

Isaiah 17:12: "Woe to the multitude of many people, which make a noise like the noise of the seas; and to the rushing of nations, that make a rushing like the rushing of mighty waters!"

Isaiah 18:1: "Woe to the land shadowing with wings, which is beyond the rivers of Ethiopia:"

Isaiah 19:15: "Neither shall there be any work for Egypt, which the head or tail, branch or rush, may do."

Isaiah 19:16: "In that day shall Egypt be like unto women: and it shall be afraid and fear because of the shaking of the hand of the LORD of hosts, which he shaketh over it."

Isaiah 19:17: "And the land of Judah shall be a terror unto Egypt, every one that maketh mention thereof shall be afraid in himself, because of the counsel of the LORD of hosts, which he hath determined against it."

Isaiah 21:10: "O my threshing, and the corn of my floor: that which I have heard of the LORD of hosts, the God of Israel, have I declared unto you."

Isaiah 22:3: "All thy rulers are fled together, they are bound by the archers: all that are found in thee are bound together, which have fled from far."

Isaiah 22:15: "Thus saith the Lord GOD of hosts, Go, get thee unto this treasurer, even unto Shebna, which is over the house, and say,"

Isaiah 26:2: "Open ye the gates, that the righteous nation which keepeth the truth may enter in."

Isaiah 27:13: "And it shall come to pass in that day, that the great trumpet shall be blown, and they shall come which were ready to perish in the land of Assyria, and the outcasts in the land of Egypt, and shall worship the LORD in the holy mount at Jerusalem."

Isaiah 28:1: "Woe to the crown of pride, to the drunkards of Ephraim, whose glorious beauty is a fading flower, which are on the head of the fat valleys of them that are overcome with wine!"

Isaiah 28:2: "Behold, the Lord hath a mighty and strong one, which as a tempest of hail and a destroying storm, as a flood of mighty waters overflowing, shall cast down to the earth with the hand."

Isaiah 28:4: "And the glorious beauty, which is on the head of the fat valley, shall be a fading flower, and as the hasty fruit before the summer; which when he that looketh upon it seeth, while it is yet in his hand he eateth it up."

Isaiah 28:14: "Wherefore hear the word of the LORD, ye scornful men, that rule this people which is in Jerusalem."

Isaiah 28:29: "This also cometh forth from the LORD of hosts, which is wonderful in counsel, and excellent in working."

Isaiah 29:11: "And the vision of all is become unto you as the words of a book that is sealed, which men deliver to one that is learned, saying, Read this, I pray thee: and he saith, I cannot; for it is sealed:"

Isaiah 30:10: "Which say to the seers, See not; and to the prophets, Prophecy not unto us right things, speak unto us smooth things, prophesy deceits:"

Isaiah 30:24: "The oxen likewise and the young asses that ear the ground shall eat clean provender, which hath been winnowed with the shovel and with the fan."

Isaiah 30:31: "For through the voice of the LORD shall the Assyrian be beaten down, which smote with a rod."

Isaiah 30:32: "And in every place where the grounded staff shall pass, which the LORD shall lay upon him, it shall be with tabrets and harps: and in battles of shaking will he fight with it."

Isaiah 31:7: "For in that day every man shall cast away his idols of silver, and his idols of gold, which your own hands have made unto you for a sin."

Isaiah 36:3: "Then came forth unto him Eliakim, Hilkiah's son, which was over the house, and Shebna the scribe, and Joah, Asaph's son, the recorder."

Isaiah 37:4: "It may be the LORD thy God will hear the words of Rabshakeh, whom the king of Assyria his master hath sent to reproach the living God, and will reprove the words which the LORD thy God hath heard: wherefore lift up thy prayer for the remnant that is left."

Isaiah 37:12: "Have the gods of the nations delivered them which my fathers have destroyed, as Gozan, and Haran, and Rezeph, and the children of Eden which were in Telassar?"

Isaiah 37:17: "Incline thine ear, O LORD, and hear; open thine eyes, O LORD, and see: and hear all the words of Sennacherib, which hath sent to reproach the living God."

Isaiah 37:22: "This is the word which the LORD hath spoken concerning him; The virgin, the daughter of Zion, hath despised thee, and laughed thee to scorn; the daughter of Jerusalem hath shaken her head at thee."



Isaiah 37:29: "Because thy rage against me, and thy tumult, is come up into mine ears, therefore will I put my hook in thy nose, and my bridle in thy lips, and I will turn thee back by the way by which thou camest."

Isaiah 37:30: "And this shall be a sign unto thee, Ye shall eat this year such as groweth of itself; and the second year that which springeth of the same: and in the third year sow ye, and reap, and plant vineyards, and eat the fruit thereof."

Isaiah 38:3: "And said, Remember now, O LORD, I beseech thee, how I have walked before thee in truth and with a perfect heart, and have done that which is good in thy sight. And Hezekiah wept sore."

Isaiah 38:8: "Behold, I will bring again the shadow of the degrees, which is gone down in the sun dial of Ahaz, ten degrees backward. So the sun returned ten degrees, by which degrees it was gone down."

Isaiah 39:6: "Behold, the days come, that all that is in thine house, and that which thy fathers have laid up in store until this day, shall be carried to Babylon: nothing shall be left, saith the LORD."

Isaiah 39:7: "And of thy sons that shall issue from thee, which thou shalt beget, shall they take away; and they shall be eunuchs in the palace of the king of Babylon."

Isaiah 39:8: "Then said Hezekiah to Isaiah, Good is the word of the LORD which thou hast spoken. He said moreover, For there shall be peace and truth in my days."

Isaiah 42:5: "Thus saith God the LORD, he that created the heavens, and stretched them out; he that spread forth the earth, and that which cometh out of it; he that giveth breath unto the people upon it, and spirit to them that walk therein:"

Isaiah 43:16: "Thus saith the LORD, which maketh a way in the sea, and a path in the mighty waters;"

Isaiah 43:17: "Which bringeth forth the chariot and horse, the army and the power; they shall lie down together, they shall not rise: they are extinct, they are quenched as tow."

Isaiah 44:2: "Thus saith the LORD that made thee, and formed thee from the womb, which will help thee; Fear not, O Jacob, my servant; and thou, Jesurun, whom I have chosen."

Isaiah 44:14: "He heweth him down cedars, and taketh the cypress and the oak, which he strengtheneth for himself among the trees of the forest: he planteth an ash, and the rain doth nourish it."

Isaiah 45:3: "And I will give thee the treasures of darkness, and hidden riches of secret places, that thou mayest know that I, the LORD, which call thee by thy name, am the God of Israel."

Isaiah 46:3: "Hearken unto me, O house of Jacob, and all the remnant of the house of Israel, which are borne by me from the belly, which are carried from the womb:"

Isaiah 47:11: "Therefore shall evil come upon thee; thou shalt not know from whence it riseth: and mischief shall fall upon thee; thou shalt not be able to put it off: and desolation shall come upon thee suddenly, which thou shalt not know."

Isaiah 48:1: "Hear ye this, O house of Jacob, which are called by the name of Israel, and are come forth out of the waters of Judah, which swear by the name of the LORD, and make mention of the God of Israel, but not in truth, nor in righteousness."

Isaiah 48:14: "All ye, assemble yourselves, and hear; which among them hath declared these things? The LORD hath loved him: he will do his pleasure on Babylon, and his arm shall be on the Chaldeans."

Isaiah 48:17: "Thus saith the LORD, thy Redeemer, the Holy One of Israel; I am the LORD thy God which teacheth thee to profit, which leadeth thee by the way that thou shouldest go."

Isaiah 49:20: "The children which thou shalt have, after thou hast lost the other, shall say again in thine ears, The place is too strait for me: give place to me that I may dwell."

Isaiah 50:1: "Thus saith the LORD, Where is the bill of your mother's divorcement, whom I have put away? or which of my creditors is it to whom I have sold you? Behold, for your iniquities have ye sold yourselves, and for your transgressions is your mother put away."

Isaiah 51:10: "Art thou not it which hath dried the sea, the waters of the great deep; that hath made the depths of the sea a way for the ransomed to pass over?"

Isaiah 51:12: "I, even I, am he that comforteth you: who art thou, that thou shouldest be afraid of a man that shall die, and of the son of man which shall be made as grass;"

Isaiah 51:17: "Awake, awake, stand up, O Jerusalem, which hast drunk at the hand of the LORD the cup of his fury; thou hast drunken the dregs of the cup of trembling, and wrung them out."

Isaiah 51:23: "But I will put it into the hand of them that afflict thee; which have said to thy soul, Bow down, that we may go over: and thou hast laid thy body as the ground, and as the street, to them that went over."

Isaiah 52:15: "So shall he sprinkle many nations; the kings shall shut their mouths at him: for that which had not been told them shall they see; and that which they had not heard shall they consider."

Isaiah 55:2: "Wherefore do ye spend money for that which is not bread? and your labour for that which satisfieth not? hearken diligently unto me, and eat ye that which is good, and let your soul delight itself in fatness."

Isaiah 55:11: "So shall my word be that goeth forth out of my mouth: it shall not return unto me void, but it shall accomplish that which I please, and it shall prosper in the thing whereto I sent it."

Isaiah 56:8: "The Lord GOD, which gathereth the outcasts of Israel saith, Yet will I gather others to him, beside those that are gathered unto him."

Isaiah 56:11: "Yea, they are greedy dogs which can never have enough, and they are shepherds that cannot understand: they all look to their own way, every one for his gain, from his quarter."

Isaiah 57:16: "For I will not contend for ever, neither will I be always wroth: for the spirit should fail before me, and the souls which I have made."

Isaiah 59:5: "They hatch cockatrice' eggs, and weave the spider's web: he that eateth of their eggs dieth, and that which is crushed breaketh out into a viper."

Isaiah 59:21: "As for me, this is my covenant with them, saith the LORD; My spirit that is upon thee, and my words which I have put in thy mouth, shall not depart out of thy mouth, nor out of the mouth of thy seed, nor out of the mouth of thy seed's seed, saith the LORD, from henceforth and for ever."

Isaiah 61:9: "And their seed shall be known among the Gentiles, and their offspring among the people: all that see them shall acknowledge them, that they are the seed which the LORD hath blessed."

Isaiah 62:2: "And the Gentiles shall see thy righteousness, and all kings thy glory: and thou shalt be called by a new name, which the mouth of the LORD shall name."

Isaiah 62:6: "I have set watchmen upon thy walls, O Jerusalem, which shall never hold their peace day nor night: ye that make mention of the LORD, keep not silence,"

Isaiah 62:8: "The LORD hath sworn by his right hand, and by the arm of his strength, Surely I will no more give thy corn to be meat for thine enemies; and the sons of the stranger shall not drink thy wine, for the which thou hast laboured:"

Isaiah 63:7: "I will mention the lovingkindnesses of the LORD, and the praises of the LORD, according to all that the LORD hath bestowed on us, and the great goodness toward the house of Israel, which he hath bestowed on them according to his mercies, and according to the multitude of his lovingkindnesses."

Isaiah 64:3: "When thou didst terrible things which we looked not for, thou camest down, the mountains flowed down at thy presence."

Isaiah 65:2: "I have spread out my hands all the day unto a rebellious people, which walketh in a way that was not good, after their own thoughts;"

Isaiah 65:4: "Which remain among the graves, and lodge in the monuments, which eat swine's flesh, and broth of abominable things is in their vessels;"

Isaiah 65:5: "Which say, Stand by thyself, come not near to me; for I am holier than thou. These are a smoke in my nose, a fire that burneth all the day."

Isaiah 65:7: "Your iniquities, and the iniquities of your fathers together, saith the LORD, which have burned incense upon the mountains, and blasphemed me upon the hills: therefore will I measure their former work into their bosom."

Isaiah 65:18: "But be ye glad and rejoice for ever in that which I create: for, behold, I create Jerusalem a rejoicing, and her people a joy."

Isaiah 66:4: "I also will choose their delusions, and will bring their fears upon them; because when I called, none did answer; when I spake, they did not hear: but they did evil before mine eyes, and chose that in which I delighted not."

Isaiah 66:22: "For as the new heavens and the new earth, which I will make, shall remain before me, saith the LORD, so shall your seed and your name remain."

Jeremiah 2:11: "Hath a nation changed their gods, which are yet no gods? but my people have changed their glory for that which doth not profit."

Jeremiah 3:6: "The LORD said also unto me in the days of Josiah the king, Hast thou seen that which backsliding Israel hath done? she is gone up upon every high mountain and under every green tree, and there hath played the harlot."

Jeremiah 3:15: "And I will give you pastors according to mine heart, which shall feed you with knowledge and understanding."

Jeremiah 5:17: "And they shall eat up thine harvest, and thy bread, which thy sons and thy daughters should eat: they shall eat up thy flocks and thine herds: they shall eat up thy vines and thy fig trees: they shall impoverish thy fenced cities, wherein thou trustedst, with the sword."

Jeremiah 5:21: "Hear now this, O foolish people, and without understanding; which have eyes, and see not; which have ears, and hear not:"

Jeremiah 5:22: "Fear ye not me? saith the LORD: will ye not tremble at my presence, which have placed the sand for the bound of the sea by a perpetual decree, that it cannot pass it: and though the waves thereof toss themselves, yet can they not prevail; though they roar, yet can they not pass over it?"

Jeremiah 7:10: "And come and stand before me in this house, which is called by my name, and say, We are delivered to do all these abominations?"

Jeremiah 7:11: "Is this house, which is called by my name, become a den of robbers in your eyes? Behold, even I have seen it, saith the LORD."

Jeremiah 7:12: "But go ye now unto my place which was in Shiloh, where I set my name at the first, and see what I did to it for the wickedness of my people Israel."

Jeremiah 7:14: "Therefore will I do unto this house, which is called by my name, wherein ye trust, and unto the place which I gave to you and to your fathers, as I have done to Shiloh."

Jeremiah 7:30: "For the children of Judah have done evil in my sight, saith the LORD: they have set their abominations in the house which is called by my name, to pollute it."

Jeremiah 7:31: "And they have built the high places of Tophet, which is in the valley of the son of Hinnom, to burn their sons and their daughters in the fire; which I commanded them not, neither came it into my heart."

Jeremiah 8:3: "And death shall be chosen rather than life by all the residue of them that remain of this evil family, which remain in all the places whither I have driven them, saith the LORD of hosts."

Jeremiah 8:17: "For, behold, I will send serpents, cockatrices, among you, which will not be charmed, and they shall bite you, saith the LORD."

Jeremiah 9:13: "And the LORD saith, Because they have forsaken my law which I set before them, and have not obeyed my voice, neither walked therein;"

Jeremiah 9:14: "But have walked after the imagination of their own heart, and after Baalim, which their fathers taught them:"

Jeremiah 9:24: "But let him that glorieth glory in this, that he understandeth and knoweth me, that I am the LORD which exercise lovingkindness, judgment, and righteousness, in the earth: for in these

things I delight, saith the LORD."

Jeremiah 9:25: "Behold, the days come, saith the LORD, that I will punish all them which are circumcised with the uncircumcised;"

Jeremiah 10:1: "Hear ye the word which the LORD speaketh unto you, O house of Israel:"

Jeremiah 11:4: "Which I commanded your fathers in the day that I brought them forth out of the land of Egypt, from the iron furnace, saying, Obey my voice, and do them, according to all which I command you: so shall ye be my people, and I will be your God:"

Jeremiah 11:5: "That I may perform the oath which I have sworn unto your fathers, to give them a land flowing with milk and honey, as it is this day. Then answered I, and said, So be it, O LORD."

Jeremiah 11:8: "Yet they obeyed not, nor inclined their ear, but walked every one in the imagination of their evil heart: therefore I will bring upon them all the words of this covenant, which I commanded them to do: but they did them not."

Jeremiah 11:10: "They are turned back to the iniquities of their forefathers, which refused to hear my words; and they went after other gods to serve them: the house of Israel and the house of Judah have broken my covenant which I made with their fathers."

Jeremiah 11:11: "Therefore thus saith the LORD, Behold, I will bring evil upon them, which they shall not be able to escape; and though they shall cry unto me, I will not hearken unto them."

Jeremiah 11:17: "For the LORD of hosts, that planted thee, hath pronounced evil against thee, for the evil of the house of Israel and of the house of Judah, which they have done against themselves to provoke me to anger in offering incense unto Baal."

Jeremiah 12:14: "Thus saith the LORD against all mine evil neighbours, that touch the inheritance which I have caused my people Israel to inherit; Behold, I will pluck them out of their land, and pluck out the house of Judah from among them."

Jeremiah 13:4: "Take the girdle that thou hast got, which is upon thy loins, and arise, go to Euphrates, and hide it there in a hole of the rock."

Jeremiah 13:6: "And it came to pass after many days, that the LORD said unto me, Arise, go to Euphrates, and take the girdle from thence, which I commanded thee to hide there."

Jeremiah 13:10: "This evil people, which refuse to hear my words, which walk in the imagination of their heart, and walk after other gods, to serve them, and to worship them, shall even be as this girdle, which is good for nothing."

Jeremiah 15:4: "And I will cause them to be removed into all kingdoms of the earth, because of Manasseh the son of Hezekiah king of Judah, for that which he did in Jerusalem."

Jeremiah 15:14: "And I will make thee to pass with thine enemies into a land which thou knowest not: for a fire is kindled in mine anger, which shall burn upon you."

Jeremiah 15:18: "Why is my pain perpetual, and my wound incurable, which refuseth to be healed? wilt thou be altogether unto me as a liar, and as waters that fail?"

Jeremiah 17:4: "And thou, even thyself, shalt discontinue from thine heritage that I gave thee; and I will cause thee to serve thine enemies in the land which thou knowest not: for ye have kindled a fire in mine anger, which shall burn for ever."

Jeremiah 17:16: "As for me, I have not hastened from being a pastor to follow thee: neither have I desired the woeful day; thou knowest: that which came out of my lips was right before thee."

Jeremiah 17:19: "Thus said the LORD unto me; Go and stand in the gate of the children of the people, whereby the kings of Judah come in, and by the which they go out, and in all the gates of Jerusalem;"

Jeremiah 18:1: "The word which came to Jeremiah from the LORD, saying,"

Jeremiah 18:14: "Will a man leave the snow of Lebanon which cometh from the rock of the field? or shall the cold flowing waters that come from another place be forsaken?"

Jeremiah 19:2: "And go forth unto the valley of the son of Hinnom, which is by the entry of the east gate, and proclaim there the words that I shall tell thee,"

Jeremiah 19:3: "And say, Hear ye the word of the LORD, O kings of Judah, and inhabitants of

Jerusalem; Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will bring evil upon this place, the which whosoever heareth, his ears shall tingle."

Jeremiah 19:5: "They have built also the high places of Baal, to burn their sons with fire for burnt offerings unto Baal, which I commanded not, nor spake it, neither came it into my mind:"

Jeremiah 20:2: "Then Pashur smote Jeremiah the prophet, and put him in the stocks that were in the high gate of Benjamin, which was by the house of the LORD."

Jeremiah 20:5: "Moreover I will deliver all the strength of this city, and all the labours thereof, and all the precious things thereof, and all the treasures of the kings of Judah will I give into the hand of their enemies, which shall spoil them, and take them, and carry them to Babylon."

Jeremiah 20:16: "And let that man be as the cities which the LORD overthrew, and repented not: and let him hear the cry in the morning, and the shouting at noontide;"

Jeremiah 21:1: "The word which came unto Jeremiah from the LORD, when king Zedekiah sent unto him Pashur the son of Melchiah, and Zephaniah the son of Maaseiah the priest, saying,"

Jeremiah 21:4: "Thus saith the LORD God of Israel; Behold, I will turn back the weapons of war that are in your hands, wherewith ye fight against the king of Babylon, and against the Chaldeans, which besiege you without the walls, and I will assemble them into the midst of this city."

Jeremiah 21:13: "Behold, I am against thee, O inhabitant of the valley, and rock of the plain, saith the LORD; which say, Who shall come down against us? or who shall enter into our habitations?"

Jeremiah 22:6: "For thus saith the LORD unto the king's house of Judah; Thou art Gilead unto me, and the head of Lebanon: yet surely I will make thee a wilderness, and cities which are not inhabited."

Jeremiah 22:11: "For thus saith the LORD touching Shallum the son of Josiah king of Judah, which reigned instead of Josiah his father, which went forth out of this place; He shall not return thither any more:"

Jeremiah 22:28: "Is this man Coniah a despised broken idol? is he a vessel wherein is no pleasure? wherefore are they cast out, he and his seed, and are cast into a land which they know not?"

Jeremiah 23:4: "And I will set up shepherds over them which shall feed them: and they shall fear no more, nor be dismayed, neither shall they be lacking, saith the LORD."

Jeremiah 23:7: "Therefore, behold, the days come, saith the LORD, that they shall no more say, The LORD liveth, which brought up the children of Israel out of the land of Egypt;"

Jeremiah 23:8: "But, The LORD liveth, which brought up and which led the seed of the house of Israel out of the north country, and from all countries whither I had driven them; and they shall dwell in their own land."

Jeremiah 23:27: "Which think to cause my people to forget my name by their dreams which they tell every man to his neighbour, as their fathers have forgotten my name for Baal."

Jeremiah 23:40: "And I will bring an everlasting reproach upon you, and a perpetual shame, which shall not be forgotten."

Jeremiah 24:2: "One basket had very good figs, even like the figs that are first ripe: and the other basket had very naughty figs, which could not be eaten, they were so bad."

Jeremiah 24:8: "And as the evil figs, which cannot be eaten, they are so evil; surely thus saith the LORD, So will I give Zedekiah the king of Judah, and his princes, and the residue of Jerusalem, that remain in this land, and them that dwell in the land of Egypt:"

Jeremiah 25:2: "The which Jeremiah the prophet spake unto all the people of Judah, and to all the inhabitants of Jerusalem, saying,"

Jeremiah 25:13: "And I will bring upon that land all my words which I have pronounced against it, even all that is written in this book, which Jeremiah hath prophesied against all the nations."

Jeremiah 25:22: "And all the kings of Tyrus, and all the kings of Zidon, and the kings of the isles which are beyond the sea,"

Jeremiah 25:26: "And all the kings of the north, far and near, one with another, and all the kingdoms of the world, which are upon the face of the earth: and the king of Sheshach shall drink

after them."

Jeremiah 25:27: "Therefore thou shalt say unto them, Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Drink ye, and be drunken, and spue, and fall, and rise no more, because of the sword which I will send among you."

Jeremiah 25:29: "For, lo, I begin to bring evil on the city which is called by my name, and should ye be utterly unpunished? Ye shall not be unpunished: for I will call for a sword upon all the inhabitants of the earth, saith the LORD of hosts."

Jeremiah 26:2: "Thus saith the LORD; Stand in the court of the LORD's house, and speak unto all the cities of Judah, which come to worship in the LORD's house, all the words that I command thee to speak unto them; diminish not a word:"

Jeremiah 26:3: "If so be they will hearken, and turn every man from his evil way, that I may repent me of the evil, which I purpose to do unto them because of the evil of their doings."

Jeremiah 26:4: "And thou shalt say unto them, Thus saith the LORD; If ye will not hearken to me, to walk in my law, which I have set before you,"

Jeremiah 26:19: "Did Hezekiah king of Judah and all Judah put him at all to death? did he not fear the LORD, and besought the LORD, and the LORD repented him of the evil which he had pronounced against them? Thus might we procure great evil against our souls."

Jeremiah 27:3: "And send them to the king of Edom, and to the king of Moab, and to the king of the Ammonites, and to the king of Tyrus, and to the king of Zidon, by the hand of the messengers which come to Jerusalem unto Zedekiah king of Judah;"

Jeremiah 27:8: "And it shall come to pass, that the nation and kingdom which will not serve the same Nebuchadnezzar the king of Babylon, and that will not put their neck under the yoke of the king of Babylon, that nation will I punish, saith the LORD, with the sword, and with the famine, and with the pestilence, until I have consumed them by his hand."

Jeremiah 27:9: "Therefore hearken not ye to your prophets, nor to your diviners, nor to your dreamers, nor to your enchanters, nor to your sorcerers, which speak unto you, saying, Ye shall not serve the king of Babylon:"

Jeremiah 27:18: "But if they be prophets, and if the word of the LORD be with them, let them now make intercession to the LORD of hosts, that the vessels which are left in the house of the LORD, and in the house of the king of Judah, and at Jerusalem, go not to Babylon."

Jeremiah 27:20: "Which Nebuchadnezzar king of Babylon took not, when he carried away captive Jeconiah the son of Jehoiakim king of Judah from Jerusalem to Babylon, and all the nobles of Judah and Jerusalem;"

Jeremiah 28:1: "And it came to pass the same year, in the beginning of the reign of Zedekiah king of Judah, in the fourth year, and in the fifth month, that Hananiah the son of Azur the prophet, which was of Gibeon, spake unto me in the house of the LORD, in the presence of the priests and of all the people, saying,"

Jeremiah 28:6: "Even the prophet Jeremiah said, Amen: the LORD do so: the LORD perform thy words which thou hast prophesied, to bring again the vessels of the LORD's house, and all that is carried away captive, from Babylon into this place."

Jeremiah 28:9: "The prophet which prophesieth of peace, when the word of the prophet shall come to pass, then shall the prophet be known, that the LORD hath truly sent him."

Jeremiah 29:1: "Now these are the words of the letter that Jeremiah the prophet sent from Jerusalem unto the residue of the elders which were carried away captives, and to the priests, and to the prophets, and to all the people whom Nebuchadnezzar had carried away captive from Jerusalem to Babylon;"

Jeremiah 29:8: "For thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Let not your prophets and your diviners, that be in the midst of you, deceive you, neither hearken to your dreams which ye cause to be dreamed."

Jeremiah 29:19: "Because they have not hearkened to my words, saith the LORD, which I sent unto

them by my servants the prophets, rising up early and sending them; but ye would not hear, saith the LORD."

Jeremiah 29:21: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel, of Ahab the son of Kolaiah, and of Zedekiah the son of Maaseiah, which prophesy a lie unto you in my name; Behold, I will deliver them into the hand of Nebuchadrezzar king of Babylon; and he shall slay them before your eyes;"

Jeremiah 29:22: "And of them shall be taken up a curse by all the captivity of Judah which are in Babylon, saying, The LORD make thee like Zedekiah and like Ahab, whom the king of Babylon roasted in the fire;"

Jeremiah 29:23: "Because they have committed villany in Israel, and have committed adultery with their neighbours' wives, and have spoken lying words in my name, which I have not commanded them; even I know, and am a witness, saith the LORD."

Jeremiah 29:27: "Now therefore why hast thou not reproved Jeremiah of Anathoth, which maketh himself a prophet to you?"

Jeremiah 31:2: "Thus saith the LORD, The people which were left of the sword found grace in the wilderness; even Israel, when I went to cause him to rest."

Jeremiah 31:21: "Set thee up waymarks, make thee high heaps: set thine heart toward the highway, even the way which thou wentest: turn again, O virgin of Israel, turn again to these thy cities."

Jeremiah 31:32: "Not according to the covenant that I made with their fathers in the day that I took them by the hand to bring them out of the land of Egypt; which my covenant they brake, although I was an husband unto them, saith the LORD:"

Jeremiah 31:35: "Thus saith the LORD, which giveth the sun for a light by day, and the ordinances of the moon and of the stars for a light by night, which divideth the sea when the waves thereof roar; The LORD of hosts is his name:"

Jeremiah 32:1: "The word that came to Jeremiah from the LORD in the tenth year of Zedekiah king of Judah, which was the eighteenth year of Nebuchadrezzar."

Jeremiah 32:2: "For then the king of Babylon's army besieged Jerusalem: and Jeremiah the prophet was shut up in the court of the prison, which was in the king of Judah's house."

Jeremiah 32:8: "So Hanameel mine uncle's son came to me in the court of the prison according to the word of the LORD, and said unto me, Buy my field, I pray thee, that is in Anathoth, which is in the country of Benjamin: for the right of inheritance is thine, and the redemption is thine; buy it for thyself. Then I knew that this was the word of the LORD."

Jeremiah 32:11: "So I took the evidence of the purchase, both that which was sealed according to the law and custom, and that which was open:"

Jeremiah 32:14: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Take these evidences, this evidence of the purchase, both which is sealed, and this evidence which is open; and put them in an earthen vessel, that they may continue many days."

Jeremiah 32:20: "Which hast set signs and wonders in the land of Egypt, even unto this day, and in Israel, and among other men; and hast made thee a name, as at this day;"

Jeremiah 32:22: "And hast given them this land, which thou didst swear to their fathers to give them, a land flowing with milk and honey;"

Jeremiah 32:32: "Because of all the evil of the children of Israel and of the children of Judah, which they have done to provoke me to anger, they, their kings, their princes, their priests, and their prophets, and the men of Judah, and the inhabitants of Jerusalem."

Jeremiah 32:34: "But they set their abominations in the house, which is called by my name, to defile it."

Jeremiah 32:35: "And they built the high places of Baal, which are in the valley of the son of Hinnom, to cause their sons and their daughters to pass through the fire unto Molech; which I commanded them not, neither came it into my mind, that they should do this abomination, to cause Judah to sin."

Jeremiah 33:3: "Call unto me, and I will answer thee, and shew thee great and mighty things, which

thou knowest not."

Jeremiah 33:4: "For thus saith the LORD, the God of Israel, concerning the houses of this city, and concerning the houses of the kings of Judah, which are thrown down by the mounts, and by the sword;"

Jeremiah 33:9: "And it shall be to me a name of joy, a praise and an honour before all the nations of the earth, which shall hear all the good that I do unto them: and they shall fear and tremble for all the goodness and for all the prosperity that I procure unto it."

Jeremiah 33:10: "Thus saith the LORD; Again there shall be heard in this place, which ye say shall be desolate without man and without beast, even in the cities of Judah, and in the streets of Jerusalem, that are desolate, without man, and without inhabitant, and without beast,"

Jeremiah 33:12: "Thus saith the LORD of hosts; Again in this place, which is desolate without man and without beast, and in all the cities thereof, shall be an habitation of shepherds causing their flocks to lie down."

Jeremiah 33:14: "Behold, the days come, saith the LORD, that I will perform that good thing which I have promised unto the house of Israel and to the house of Judah."

Jeremiah 33:24: "Considerest thou not what this people have spoken, saying, The two families which the LORD hath chosen, he hath even cast them off? thus they have despised my people, that they should be no more a nation before them."

Jeremiah 34:1: "The word which came unto Jeremiah from the LORD, when Nebuchadnezzar king of Babylon, and all his army, and all the kingdoms of the earth of his dominion, and all the people, fought against Jerusalem, and against all the cities thereof, saying,"

Jeremiah 34:5: "But thou shalt die in peace: and with the burnings of thy fathers, the former kings which were before thee, so shall they burn odours for thee; and they will lament thee, saying, Ah lord! for I have pronounced the word, saith the LORD."

Jeremiah 34:8: "This is the word that came unto Jeremiah from the LORD, after that the king Zedekiah had made a covenant with all the people which were at Jerusalem, to proclaim liberty unto them;"

Jeremiah 34:10: "Now when all the princes, and all the people, which had entered into the covenant, heard that every one should let his manservant, and every one his maidservant, go free, that none should serve themselves of them any more, then they obeyed, and let them go."

Jeremiah 34:14: "At the end of seven years let ye go every man his brother an Hebrew, which hath been sold unto thee; and when he hath served thee six years, thou shalt let him go free from thee: but your fathers hearkened not unto me, neither inclined their ear."

Jeremiah 34:15: "And ye were now turned, and had done right in my sight, in proclaiming liberty every man to his neighbour; and ye had made a covenant before me in the house which is called by my name:"

Jeremiah 34:18: "And I will give the men that have transgressed my covenant, which have not performed the words of the covenant which they had made before me, when they cut the calf in twain, and passed between the parts thereof,"

Jeremiah 34:19: "The princes of Judah, and the princes of Jerusalem, the eunuchs, and the priests, and all the people of the land, which passed between the parts of the calf;"

Jeremiah 34:21: "And Zedekiah king of Judah and his princes will I give into the hand of their enemies, and into the hand of them that seek their life, and into the hand of the king of Babylon's army, which are gone up from you."

Jeremiah 35:1: "The word which came unto Jeremiah from the LORD in the days of Jehoiakim the son of Josiah king of Judah, saying,"

Jeremiah 35:4: "And I brought them into the house of the LORD, into the chamber of the sons of Hanan, the son of Igdaliah, a man of God, which was by the chamber of the princes, which was above the chamber of Maaseiah the son of Shallum, the keeper of the door:"

Jeremiah 35:15: "I have sent also unto you all my servants the prophets, rising up early and sending



them, saying, Return ye now every man from his evil way, and amend your doings, and go not after other gods to serve them, and ye shall dwell in the land which I have given to you and to your fathers: but ye have not inclined your ear, nor hearkened unto me."

Jeremiah 35:16: "Because the sons of Jonadab the son of Rechab have performed the commandment of their father, which he commanded them; but this people hath not hearkened unto me:"

Jeremiah 36:3: "It may be that the house of Judah will hear all the evil which I purpose to do unto them; that they may return every man from his evil way; that I may forgive their iniquity and their sin."

Jeremiah 36:4: "Then Jeremiah called Baruch the son of Neriah: and Baruch wrote from the mouth of Jeremiah all the words of the LORD, which he had spoken unto him, upon a roll of a book."

Jeremiah 36:6: "Therefore go thou, and read in the roll, which thou hast written from my mouth, the words of the LORD in the ears of the people in the LORD's house upon the fasting day: and also thou shalt read them in the ears of all Judah that come out of their cities."

Jeremiah 36:21: "So the king sent Jehudi to fetch the roll: and he took it out of Elishama the scribe's chamber. And Jehudi read it in the ears of the king, and in the ears of all the princes which stood beside the king."

Jeremiah 36:27: "Then the word of the LORD came to Jeremiah, after that the king had burned the roll, and the words which Baruch wrote at the mouth of Jeremiah, saying,"

Jeremiah 36:28: "Take thee again another roll, and write in it all the former words that were in the first roll, which Jehoiakim the king of Judah hath burned."

Jeremiah 36:32: "Then took Jeremiah another roll, and gave it to Baruch the scribe, the son of Neriah; who wrote therein from the mouth of Jeremiah all the words of the book which Jehoiakim king of Judah had burned in the fire: and there were added besides unto them many like words."

Jeremiah 37:2: "But neither he, nor his servants, nor the people of the land, did hearken unto the words of the LORD, which he spake by the prophet Jeremiah."

Jeremiah 37:7: "Thus saith the LORD, the God of Israel; Thus shall ye say to the king of Judah, that sent you unto me to enquire of me; Behold, Pharaoh's army, which is come forth to help you, shall return to Egypt into their own land."

Jeremiah 37:19: "Where are now your prophets which prophesied unto you, saying, The king of Babylon shall not come against you, nor against this land?"

Jeremiah 38:3: "Thus saith the LORD, This city shall surely be given into the hand of the king of Babylon's army, which shall take it."

Jeremiah 38:7: "Now when Ebedmelech the Ethiopian, one of the eunuchs which was in the king's house, heard that they had put Jeremiah in the dungeon; the king then sitting in the gate of Benjamin;"

Jeremiah 38:20: "But Jeremiah said, They shall not deliver thee. Obey, I beseech thee, the voice of the LORD, which I speak unto thee: so it shall be well unto thee, and thy soul shall live."

Jeremiah 39:10: "But Nebuzaradan the captain of the guard left of the poor of the people, which had nothing, in the land of Judah, and gave them vineyards and fields at the same time."

Jeremiah 40:1: "The word that came to Jeremiah from the LORD, after that Nebuzaradan the captain of the guard had let him go from Ramah, when he had taken him being bound in chains among all that were carried away captive of Jerusalem and Judah, which were carried away captive unto Babylon."

Jeremiah 40:4: "And now, behold, I loose thee this day from the chains which were upon thine hand. If it seem good unto thee to come with me into Babylon, come; and I will look well unto thee: but if it seem ill unto thee to come with me into Babylon, forbear: behold, all the land is before thee: whither it seemeth good and convenient for thee to go, thither go."

Jeremiah 40:7: "Now when all the captains of the forces which were in the fields, even they and their men, heard that the king of Babylon had made Gedaliah the son of Ahikam governor in the

land, and had committed unto him men, and women, and children, and of the poor of the land, of them that were not carried away captive to Babylon;"

Jeremiah 40:10: "As for me, behold, I will dwell at Mizpah, to serve the Chaldeans, which will come unto us: but ye, gather ye wine, and summer fruits, and oil, and put them in your vessels, and dwell in your cities that ye have taken."

Jeremiah 40:15: "Then Johanan the son of Kareah spake to Gedaliah in Mizpah secretly saying, Let me go, I pray thee, and I will slay Ishmael the son of Nethaniah, and no man shall know it: wherefore should he slay thee, that all the Jews which are gathered unto thee should be scattered, and the remnant in Judah perish?"

Jeremiah 41:9: "Now the pit wherein Ishmael had cast all the dead bodies of the men, whom he had slain because of Gedaliah, was it which Asa the king had made for fear of Baasha king of Israel: and Ishmael the son of Nethaniah filled it with them that were slain."

Jeremiah 41:13: "Now it came to pass, that when all the people which were with Ishmael saw Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces that were with him, then they were glad."

Jeremiah 41:17: "And they departed, and dwelt in the habitation of Chimham, which is by Bethlehem, to go to enter into Egypt,"

Jeremiah 42:5: "Then they said to Jeremiah, The LORD be a true and faithful witness between us, if we do not even according to all things for the which the LORD thy God shall send thee to us."

Jeremiah 42:8: "Then called he Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces which were with him, and all the people from the least even to the greatest,"

Jeremiah 42:16: "Then it shall come to pass, that the sword, which ye feared, shall overtake you there in the land of Egypt, and the famine, whereof ye were afraid, shall follow close after you there in Egypt; and there ye shall die."

Jeremiah 42:21: "And now I have this day declared it to you; but ye have not obeyed the voice of the LORD your God, nor any thing for the which he hath sent me unto you."

Jeremiah 43:1: "And it came to pass, that when Jeremiah had made an end of speaking unto all the people all the words of the LORD their God, for which the LORD their God had sent him to them, even all these words,"

Jeremiah 43:9: "Take great stones in thine hand, and hide them in the clay in the brickkiln, which is at the entry of Pharaoh's house in Tahpanhes, in the sight of the men of Judah;"

Jeremiah 44:1: "The word that came to Jeremiah concerning all the Jews which dwell in the land of Egypt, which dwell at Migdol, and at Tahpanhes, and at Noph, and in the country of Pathros, saying,"

Jeremiah 44:3: "Because of their wickedness which they have committed to provoke me to anger, in that they went to burn incense, and to serve other gods, whom they knew not, neither they, ye, nor your fathers."

Jeremiah 44:9: "Have ye forgotten the wickedness of your fathers, and the wickedness of the kings of Judah, and the wickedness of their wives, and your own wickedness, and the wickedness of your wives, which they have committed in the land of Judah, and in the streets of Jerusalem?"

Jeremiah 44:14: "So that none of the remnant of Judah, which are gone into the land of Egypt to sojourn there, shall escape or remain, that they should return into the land of Judah, to the which they have a desire to return to dwell there: for none shall return but such as shall escape."

Jeremiah 44:15: "Then all the men which knew that their wives had burned incense unto other gods, and all the women that stood by, a great multitude, even all the people that dwelt in the land of Egypt, in Pathros, answered Jeremiah, saying,"

Jeremiah 44:20: "Then Jeremiah said unto all the people, to the men, and to the women, and to all the people which had given him that answer, saying,"

Jeremiah 44:22: "So that the LORD could no longer bear, because of the evil of your doings, and because of the abominations which ye have committed; therefore is your land a desolation, and an

astonishment, and a curse, without an inhabitant, as at this day."

Jeremiah 45:4: "Thus shalt thou say unto him, The LORD saith thus; Behold, that which I have built will I break down, and that which I have planted I will pluck up, even this whole land."

Jeremiah 46:1: "The word of the LORD which came to Jeremiah the prophet against the Gentiles;"

Jeremiah 46:2: "Against Egypt, against the army of Pharaohnecho king of Egypt, which was by the river Euphrates in Carchemish, which Nebuchadrezzar king of Babylon smote in the fourth year of Jehoiakim the son of Josiah king of Judah."

Jeremiah 49:28: "Concerning Kedar, and concerning the kingdoms of Hazor, which Nebuchadrezzar king of Babylon shall smite, thus saith the LORD; Arise ye, go up to Kedar, and spoil the men of the east."

Jeremiah 49:31: "Arise, get you up unto the wealthy nation, that dwelleth without care, saith the LORD, which have neither gates nor bars, which dwell alone."

Jeremiah 50:3: "For out of the north there cometh up a nation against her, which shall make her land desolate, and none shall dwell therein: they shall remove, they shall depart, both man and beast."

Jeremiah 51:12: "Set up the standard upon the walls of Babylon, make the watch strong, set up the watchmen, prepare the ambushes: for the LORD hath both devised and done that which he spake against the inhabitants of Babylon."

Jeremiah 51:25: "Behold, I am against thee, O destroying mountain, saith the LORD, which destroyest all the earth: and I will stretch out mine hand upon thee, and roll thee down from the rocks, and will make thee a burnt mountain."

Jeremiah 51:44: "And I will punish Bel in Babylon, and I will bring forth out of his mouth that which he hath swallowed up: and the nations shall not flow together any more unto him: yea, the wall of Babylon shall fall."

Jeremiah 51:59: "The word which Jeremiah the prophet commanded Seraiah the son of Neriah, the son of Maaseiah, when he went with Zedekiah the king of Judah into Babylon in the fourth year of his reign. And this Seraiah was a quiet prince."

Jeremiah 52:2: "And he did that which was evil in the eyes of the LORD, according to all that Jehoiakim had done."

Jeremiah 52:7: "Then the city was broken up, and all the men of war fled, and went forth out of the city by night by the way of the gate between the two walls, which was by the king's garden; (now the Chaldeans were by the city round about:) and they went by the way of the plain."

Jeremiah 52:12: "Now in the fifth month, in the tenth day of the month, which was the nineteenth year of Nebuchadrezzar king of Babylon, came Nebuzaradan, captain of the guard, which served the king of Babylon, into Jerusalem,"

Jeremiah 52:19: "And the basons, and the firepans, and the bowls, and the caldrons, and the candlesticks, and the spoons, and the cups; that which was of gold in gold, and that which was of silver in silver, took the captain of the guard away."

Jeremiah 52:20: "The two pillars, one sea, and twelve brasen bulls that were under the bases, which king Solomon had made in the house of the LORD: the brass of all these vessels was without weight."

Jeremiah 52:25: "He took also out of the city an eunuch, which had the charge of the men of war; and seven men of them that were near the king's person, which were found in the city; and the principal scribe of the host, who mustered the people of the land; and threescore men of the people of the land, that were found in the midst of the city."

Lamentations 1:12: "Is it nothing to you, all ye that pass by? behold, and see if there be any sorrow like unto my sorrow, which is done unto me, wherewith the LORD hath afflicted me in the day of his fierce anger."

Lamentations 2:3: "He hath cut off in his fierce anger all the horn of Israel: he hath drawn back his right hand from before the enemy, and he burned against Jacob like a flaming fire, which devoureth round about."

Lamentations 2:17: "The LORD hath done that which he had devised; he hath fulfilled his word that he had commanded in the days of old: he hath thrown down, and hath not pitied: and he hath caused thine enemy to rejoice over thee, he hath set up the horn of thine adversaries."

Lamentations 5:18: "Because of the mountain of Zion, which is desolate, the foxes walk upon it."

Ezekiel 1:2: "In the fifth day of the month, which was the fifth year of king Jehoiachin's captivity,"

Ezekiel 1:23: "And under the firmament were their wings straight, the one toward the other: every one had two, which covered on this side, and every one had two, which covered on that side, their bodies."

Ezekiel 3:20: "Again, When a righteous man doth turn from his righteousness, and commit iniquity, and I lay a stumbling-block before him, he shall die: because thou hast not given him warning, he shall die in his sin, and his righteousness which he hath done shall not be remembered; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 3:23: "Then I arose, and went forth into the plain: and, behold, the glory of the LORD stood there, as the glory which I saw by the river of Chebar: and I fell on my face."

Ezekiel 4:10: "And thy meat which thou shalt eat shall be by weight, twenty shekels a day: from time to time shalt thou eat it."

Ezekiel 4:14: "Then said I, Ah Lord GOD! behold, my soul hath not been polluted: for from my youth up even till now have I not eaten of that which dieth of itself, or is torn in pieces; neither came there abominable flesh into my mouth."

Ezekiel 5:9: "And I will do in thee that which I have not done, and whereunto I will not do any more the like, because of all thine abominations."

Ezekiel 5:16: "When I shall send upon them the evil arrows of famine, which shall be for their destruction, and which I will send to destroy you: and I will increase the famine upon you, and will break your staff of bread:"

Ezekiel 6:9: "And they that escape of you shall remember me among the nations whither they shall be carried captives, because I am broken with their whorish heart, which hath departed from me, and with their eyes, which go a whoring after their idols: and they shall lothe themselves for the evils which they have committed in all their abominations."

Ezekiel 7:13: "For the seller shall not return to that which is sold, although they were yet alive: for the vision is touching the whole multitude thereof, which shall not return; neither shall any strengthen himself in the iniquity of his life."

Ezekiel 8:3: "And he put forth the form of an hand, and took me by a lock of mine head; and the spirit lifted me up between the earth and the heaven, and brought me in the visions of God to Jerusalem, to the door of the inner gate that looketh toward the north; where was the seat of the image of jealousy, which provoketh to jealousy."

Ezekiel 8:14: "Then he brought me to the door of the gate of the LORD's house which was toward the north; and, behold, there sat women weeping for Tammuz."

Ezekiel 8:17: "Then he said unto me, Hast thou seen this, O son of man? Is it a light thing to the house of Judah that they commit the abominations which they commit here? for they have filled the land with violence, and have returned to provoke me to anger: and, lo, they put the branch to their nose."

Ezekiel 9:2: "And, behold, six men came from the way of the higher gate, which lieth toward the north, and every man a slaughter weapon in his hand; and one man among them was clothed with linen, with a writer's inkhorn by his side: and they went in, and stood beside the brasen altar."

Ezekiel 9:3: "And the glory of the God of Israel was gone up from the cherub, whereupon he was, to the threshold of the house. And he called to the man clothed with linen, which had the writer's inkhorn by his side;"

Ezekiel 9:6: "Slay utterly old and young, both maids, and little children, and women: but come not near any man upon whom is the mark; and begin at my sanctuary. Then they began at the ancient men which were before the house."

Ezekiel 9:11: "And, behold, the man clothed with linen, which had the inkhorn by his side, reported the matter, saying, I have done as thou hast commanded me."

Ezekiel 10:22: "And the likeness of their faces was the same faces which I saw by the river of Chebar, their appearances and themselves: they went every one straight forward."

Ezekiel 11:1: "Moreover the spirit lifted me up, and brought me unto the east gate of the LORD's house, which looketh eastward: and behold at the door of the gate five and twenty men; among whom I saw Jaazaniah the son of Azur, and Pelatiah the son of Benaiah, princes of the people."

Ezekiel 11:3: "Which say, It is not near; let us build houses: this city is the caldron, and we be the flesh."

Ezekiel 11:23: "And the glory of the LORD went up from the midst of the city, and stood upon the mountain which is on the east side of the city."

Ezekiel 12:2: "Son of man, thou dwellest in the midst of a rebellious house, which have eyes to see, and see not; they have ears to hear, and hear not: for they are a rebellious house."

Ezekiel 12:28: "Therefore say unto them, Thus saith the Lord GOD; There shall none of my words be prolonged any more, but the word which I have spoken shall be done, saith the Lord GOD."

Ezekiel 13:11: "Say unto them which daub it with untempered mortar, that it shall fall: there shall be an overflowing shower; and ye, O great hailstones, shall fall; and a stormy wind shall rend it."

Ezekiel 13:16: "To wit, the prophets of Israel which prophesy concerning Jerusalem, and which see visions of peace for her, and there is no peace, saith the Lord GOD."

Ezekiel 13:17: "Likewise, thou son of man, set thy face against the daughters of thy people, which prophesy out of their own heart; and prophesy thou against them,"

Ezekiel 14:7: "For every one of the house of Israel, or of the stranger that sojourneth in Israel, which separateth himself from me, and setteth up his idols in his heart, and putteth the stumblingblock of his iniquity before his face, and cometh to a prophet to enquire of him concerning me; I the LORD will answer him by myself:"

Ezekiel 15:2: "Son of man, what is the vine tree more than any tree, or than a branch which is among the trees of the forest?"

Ezekiel 15:6: "Therefore thus saith the Lord GOD; As the vine tree among the trees of the forest, which I have given to the fire for fuel, so will I give the inhabitants of Jerusalem."

Ezekiel 16:14: "And thy renown went forth among the heathen for thy beauty: for it was perfect through my comeliness, which I had put upon thee, saith the Lord GOD."

Ezekiel 16:17: "Thou hast also taken thy fair jewels of my gold and of my silver, which I had given thee, and madest to thyself images of men, and didst commit whoredom with them,"

Ezekiel 16:19: "My meat also which I gave thee, fine flour, and oil, and honey, wherewith I fed thee, thou hast even set it before them for a sweet savour: and thus it was, saith the Lord GOD."

Ezekiel 16:27: "Behold, therefore I have stretched out my hand over thee, and have diminished thine ordinary food, and delivered thee unto the will of them that hate thee, the daughters of the Philistines, which are ashamed of thy lewd way."

Ezekiel 16:32: "But as a wife that committeth adultery, which taketh strangers instead of her husband!"

Ezekiel 16:36: "Thus saith the Lord GOD; Because thy filthiness was poured out, and thy nakedness discovered through thy whoredoms with thy lovers, and with all the idols of thy abominations, and by the blood of thy children, which thou didst give unto them;"

Ezekiel 16:45: "Thou art thy mother's daughter, that lotheth her husband and her children; and thou art the sister of thy sisters, which lothed their husbands and their children: your mother was an Hittite, and your father an Amorite."

Ezekiel 16:51: "Neither hath Samaria committed half of thy sins; but thou hast multiplied thine abominations more than they, and hast justified thy sisters in all thine abominations which thou hast done."

Ezekiel 16:52: "Thou also, which hast judged thy sisters, bear thine own shame for thy sins that

thou hast committed more abominable than they: they are more righteous than thou: yea, be thou confounded also, and bear thy shame, in that thou hast justified thy sisters."

Ezekiel 16:57: "Before thy wickedness was discovered, as at the time of thy reproach of the daughters of Syria, and all that are round about her, the daughters of the Philistines, which despise thee round about."

Ezekiel 16:59: "For thus saith the Lord GOD; I will even deal with thee as thou hast done, which hast despised the oath in breaking the covenant."

Ezekiel 17:3: "And say, Thus saith the Lord GOD; A great eagle with great wings, longwinged, full of feathers, which had divers colours, came unto Lebanon, and took the highest branch of the cedar:"

Ezekiel 18:5: "But if a man be just, and do that which is lawful and right,"

Ezekiel 18:14: "Now, lo, if he beget a son, that seeth all his father's sins which he hath done, and considereth, and doeth not such like,"

Ezekiel 18:18: "As for his father, because he cruelly oppressed, spoiled his brother by violence, and did that which is not good among his people, lo, even he shall die in his iniquity."

Ezekiel 18:19: "Yet say ye, Why? doth not the son bear the iniquity of the father? When the son hath done that which is lawful and right, and hath kept all my statutes, and hath done them, he shall surely live."

Ezekiel 18:21: "But if the wicked will turn from all his sins that he hath committed, and keep all my statutes, and do that which is lawful and right, he shall surely live, he shall not die."

Ezekiel 18:27: "Again, when the wicked man turneth away from his wickedness that he hath committed, and doeth that which is lawful and right, he shall save his soul alive."

Ezekiel 19:14: "And fire is gone out of a rod of her branches, which hath devoured her fruit, so that she hath no strong rod to be a sceptre to rule. This is a lamentation, and shall be for a lamentation."

Ezekiel 20:6: "In the day that I lifted up mine hand unto them, to bring them forth of the land of Egypt into a land that I had espied for them, flowing with milk and honey, which is the glory of all lands:"

Ezekiel 20:11: "And I gave them my statutes, and shewed them my judgments, which if a man do, he shall even live in them."

Ezekiel 20:13: "But the house of Israel rebelled against me in the wilderness: they walked not in my statutes, and they despised my judgments, which if a man do, he shall even live in them; and my sabbaths they greatly polluted: then I said, I would pour out my fury upon them in the wilderness, to consume them."

Ezekiel 20:15: "Yet also I lifted up my hand unto them in the wilderness, that I would not bring them into the land which I had given them, flowing with milk and honey, which is the glory of all lands;"

Ezekiel 20:21: "Notwithstanding the children rebelled against me: they walked not in my statutes, neither kept my judgments to do them, which if a man do, he shall even live in them; they polluted my sabbaths: then I said, I would pour out my fury upon them, to accomplish my anger against them in the wilderness."

Ezekiel 20:28: "For when I had brought them into the land, for the which I lifted up mine hand to give it to them, then they saw every high hill, and all the thick trees, and they offered there their sacrifices, and there they presented the provocation of their offering: there also they made their sweet savour, and poured out there their drink offerings."

Ezekiel 20:32: "And that which cometh into your mind shall not be at all, that ye say, We will be as the heathen, as the families of the countries, to serve wood and stone."

Ezekiel 20:42: "And ye shall know that I am the LORD, when I shall bring you into the land of Israel, into the country for the which I lifted up mine hand to give it to your fathers."

Ezekiel 21:14: "Thou therefore, son of man, prophesy, and smite thine hands together. and let the sword be doubled the third time, the sword of the slain: it is the sword of the great men that are

slain, which entereth into their privy chambers."

Ezekiel 22:4: "Thou art become guilty in thy blood that thou hast shed; and hast defiled thyself in thine idols which thou hast made; and thou hast caused thy days to draw near, and art come even unto thy years: therefore have I made thee a reproach unto the heathen, and a mocking to all countries."

Ezekiel 22:5: "Those that be near, and those that be far from thee, shall mock thee, which art infamous and much vexed."

Ezekiel 22:13: "Behold, therefore I have smitten mine hand at thy dishonest gain which thou hast made, and at thy blood which hath been in the midst of thee."

Ezekiel 23:6: "Which were clothed with blue, captains and rulers, all of them desirable young men, horsemen riding upon horses."

Ezekiel 23:24: "And they shall come against thee with chariots, wagons, and wheels, and with an assembly of people, which shall set against thee buckler and shield and helmet round about: and I will set judgment before them, and they shall judge thee according to their judgments."

Ezekiel 23:42: "And a voice of a multitude being at ease was with her: and with the men of the common sort were brought Sabeans from the wilderness, which put bracelets upon their hands, and beautiful crowns upon their heads."

Ezekiel 24:21: "Speak unto the house of Israel, Thus saith the Lord GOD; Behold, I will profane my sanctuary, the excellency of your strength, the desire of your eyes, and that which your soul pitieth; and your sons and your daughters whom ye have left shall fall by the sword."

Ezekiel 24:27: "In that day shall thy mouth be opened to him which is escaped, and thou shalt speak, and be no more dumb: and thou shalt be a sign unto them; and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 25:9: "Therefore, behold, I will open the side of Moab from the cities, from his cities which are on his frontiers, the glory of the country, Bethjeshimoth, Baalmeon, and Kiriathaim,"

Ezekiel 26:6: "And her daughters which are in the field shall be slain by the sword; and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 26:17: "And they shall take up a lamentation for thee, and say to thee, How art thou destroyed, that wast inhabited of seafaring men, the renowned city, which wast strong in the sea, she and her inhabitants, which cause their terror to be on all that haunt it!"

Ezekiel 27:3: "And say unto Tyrus, O thou that art situate at the entry of the sea, which art a merchant of the people for many isles, Thus saith the Lord GOD; O Tyrus, thou hast said, I am of perfect beauty."

Ezekiel 27:7: "Fine linen with brodered work from Egypt was that which thou spreadest forth to be thy sail; blue and purple from the isles of Elishah was that which covered thee."

Ezekiel 27:27: "Thy riches, and thy fairs, thy merchandise, thy mariners, and thy pilots, thy calkers, and the occupiers of thy merchandise, and all thy men of war, that are in thee, and in all thy company which is in the midst of thee, shall fall into the midst of the seas in the day of thy ruin."

Ezekiel 29:3: "Speak, and say, Thus saith the Lord GOD; Behold, I am against thee, Pharaoh king of Egypt, the great dragon that lieth in the midst of his rivers, which hath said, My river is mine own, and I have made it for myself."

Ezekiel 29:16: "And it shall be no more the confidence of the house of Israel, which bringeth their iniquity to remembrance, when they shall look after them: but they shall know that I am the Lord GOD."

Ezekiel 30:22: "Therefore thus saith the Lord GOD; Behold, I am against Pharaoh king of Egypt, and will break his arms, the strong, and that which was broken; and I will cause the sword to fall out of his hand."

Ezekiel 32:9: "I will also vex the hearts of many people, when I shall bring thy destruction among the nations, into the countries which thou hast not known."

Ezekiel 32:23: "Whose graves are set in the sides of the pit, and her company is round about her

grave: all of them slain, fallen by the sword, which caused terror in the land of the living."

Ezekiel 32:24: "There is Elam and all her multitude round about her grave, all of them slain, fallen by the sword, which are gone down uncircumcised into the nether parts of the earth, which caused their terror in the land of the living; yet have they borne their shame with them that go down to the pit."

Ezekiel 32:27: "And they shall not lie with the mighty that are fallen of the uncircumcised, which are gone down to hell with their weapons of war: and they have laid their swords under their heads, but their iniquities shall be upon their bones, though they were the terror of the mighty in the land of the living."

Ezekiel 32:29: "There is Edom, her kings, and all her princes, which with their might are laid by them that were slain by the sword: they shall lie with the uncircumcised, and with them that go down to the pit."

Ezekiel 32:30: "There be the princes of the north, all of them, and all the Zidonians, which are gone down with the slain; with their terror they are ashamed of their might; and they lie uncircumcised with them that be slain by the sword, and bear their shame with them that go down to the pit."

Ezekiel 33:14: "Again, when I say unto the wicked, Thou shalt surely die; if he turn from his sin, and do that which is lawful and right;"

Ezekiel 33:16: "None of his sins that he hath committed shall be mentioned unto him: he hath done that which is lawful and right; he shall surely live."

Ezekiel 33:19: "But if the wicked turn from his wickedness, and do that which is lawful and right, he shall live thereby."

Ezekiel 33:29: "Then shall they know that I am the LORD, when I have laid the land most desolate because of all their abominations which they have committed."

Ezekiel 34:4: "The diseased have ye not strengthened, neither have ye healed that which was sick, neither have ye bound up that which was broken, neither have ye brought again that which was driven away, neither have ye sought that which was lost; but with force and with cruelty have ye ruled them."

Ezekiel 34:16: "I will seek that which was lost, and bring again that which was driven away, and will bind up that which was broken, and will strengthen that which was sick: but I will destroy the fat and the strong; I will feed them with judgment."

Ezekiel 34:19: "And as for my flock, they eat that which ye have trodden with your feet; and they drink that which ye have fouled with your feet."

Ezekiel 35:11: "Therefore, as I live, saith the Lord GOD, I will even do according to thine anger, and according to thine envy which thou hast used out of thy hatred against them; and I will make myself known among them, when I have judged thee."

Ezekiel 35:12: "And thou shalt know that I am the LORD, and that I have heard all thy blasphemies which thou hast spoken against the mountains of Israel, saying, They are laid desolate, they are given us to consume."

Ezekiel 36:4: "Therefore, ye mountains of Israel, hear the word of the Lord GOD; Thus saith the Lord GOD to the mountains, and to the hills, to the rivers, and to the valleys, to the desolate wastes, and to the cities that are forsaken, which became a prey and derision to the residue of the heathen that are round about;"

Ezekiel 36:5: "Therefore thus saith the Lord GOD; Surely in the fire of my jealousy have I spoken against the residue of the heathen, and against all Idumea, which have appointed my land into their possession with the joy of all their heart, with despiteful minds, to cast it out for a prey."

Ezekiel 36:21: "But I had pity for mine holy name, which the house of Israel had profaned among the heathen, whither they went."

Ezekiel 36:22: "Therefore say unto the house of Israel, thus saith the Lord GOD; I do not this for your sakes, O house of Israel, but for mine holy name's sake, which ye have profaned among the heathen, whither ye went."



Ezekiel 36:23: "And I will sanctify my great name, which was profaned among the heathen, which ye have profaned in the midst of them; and the heathen shall know that I am the LORD, saith the Lord GOD, when I shall be sanctified in you before their eyes."

Ezekiel 37:1: "The hand of the LORD was upon me, and carried me out in the spirit of the LORD, and set me down in the midst of the valley which was full of bones,"

Ezekiel 37:19: "Say unto them, Thus saith the Lord GOD; Behold, I will take the stick of Joseph, which is in the hand of Ephraim, and the tribes of Israel his fellows, and will put them with him, even with the stick of Judah, and make them one stick, and they shall be one in mine hand."

Ezekiel 38:8: "After many days thou shalt be visited: in the latter years thou shalt come into the land that is brought back from the sword, and is gathered out of many people, against the mountains of Israel, which have been always waste: but it is brought forth out of the nations, and they shall dwell safely all of them."

Ezekiel 38:12: "To take a spoil, and to take a prey; to turn thine hand upon the desolate places that are now inhabited, and upon the people that are gathered out of the nations, which have gotten cattle and goods, that dwell in the midst of the land."

Ezekiel 38:17: "Thus saith the Lord GOD; Art thou he of whom I have spoken in old time by my servants the prophets of Israel, which prophesied in those days many years that I would bring thee against them?"

Ezekiel 39:19: "And ye shall eat fat till ye be full, and drink blood till ye be drunken, of my sacrifice which I have sacrificed for you."

Ezekiel 39:28: "Then shall they know that I am the LORD their God, which caused them to be led into captivity among the heathen: but I have gathered them unto their own land, and have left none of them any more there."

Ezekiel 40:2: "In the visions of God brought he me into the land of Israel, and set me upon a very high mountain, by which was as the frame of a city on the south."

Ezekiel 40:6: "Then came he unto the gate which looketh toward the east, and went up the stairs thereof, and measured the threshold of the gate, which was one reed broad; and the other threshold of the gate, which was one reed broad."

Ezekiel 40:40: "And at the side without, as one goeth up to the entry of the north gate, were two tables; and on the other side, which was at the porch of the gate, were two tables."

Ezekiel 40:44: "And without the inner gate were the chambers of the singers in the inner court, which was at the side of the north gate; and their prospect was toward the south: one at the side of the east gate having the prospect toward the north."

Ezekiel 40:46: "And the chamber whose prospect is toward the north is for the priests, the keepers of the charge of the altar: these are the sons of Zadok among the sons of Levi, which come near to the LORD to minister unto him."

Ezekiel 41:1: "Afterward he brought me to the temple, and measured the posts, six cubits broad on the one side, and six cubits broad on the other side, which was the breadth of the tabernacle."

Ezekiel 41:6: "And the side chambers were three, one over another, and thirty in order; and they entered into the wall which was of the house for the side chambers round about, that they might have hold, but they had not hold in the wall of the house."

Ezekiel 41:9: "The thickness of the wall, which was for the side chamber without, was five cubits: and that which was left was the place of the side chambers that were within."

Ezekiel 41:15: "And he measured the length of the building over against the separate place which was behind it, and the galleries thereof on the one side and on the other side, an hundred cubits, with the inner temple, and the porches of the court;"

Ezekiel 42:1: "Then he brought me forth into the utter court, the way toward the north: and he brought me into the chamber that was over against the separate place, and which was before the building toward the north."

Ezekiel 42:3: "Over against the twenty cubits which were for the inner court, and over against the

pavement which was for the utter court, was gallery against gallery in three stories."

Ezekiel 42:11: "And the way before them was like the appearance of the chambers which were toward the north, as long as they, and as broad as they: and all their goings out were both according to their fashions, and according to their doors."

Ezekiel 42:13: "Then said he unto me, The north chambers and the south chambers, which are before the separate place, they be holy chambers, where the priests that approach unto the LORD shall eat the most holy things: there shall they lay the most holy things, and the meat offering, and the sin offering, and the trespass offering; for the place is holy."

Ezekiel 42:14: "When the priests enter therein, then shall they not go out of the holy place into the utter court, but there they shall lay their garments wherein they minister; for they are holy; and shall put on other garments, and shall approach to those things which are for the people."

Ezekiel 43:3: "And it was according to the appearance of the vision which I saw, even according to the vision that I saw when I came to destroy the city: and the visions were like the vision that I saw by the river Chebar; and I fell upon my face."

Ezekiel 43:19: "And thou shalt give to the priests the Levites that be of the seed of Zadok, which approach unto me, to minister unto me, saith the Lord GOD, a young bullock for a sin offering."

Ezekiel 44:1: "Then he brought me back the way of the gate of the outward sanctuary which looketh toward the east; and it was shut."

Ezekiel 44:10: "And the Levites that are gone away far from me, when Israel went astray, which went astray away from me after their idols; they shall even bear their iniquity."

Ezekiel 44:13: "And they shall not come near unto me, to do the office of a priest unto me, nor to come near to any of my holy things, in the most holy place: but they shall bear their shame, and their abominations which they have committed."

Ezekiel 45:4: "The holy portion of the land shall be for the priests the ministers of the sanctuary, which shall come near to minister unto the LORD: and it shall be a place for their houses, and an holy place for the sanctuary."

Ezekiel 45:14: "Concerning the ordinance of oil, the bath of oil, ye shall offer the tenth part of a bath out of the cor, which is an homer of ten baths; for ten baths are an homer:"

Ezekiel 46:19: "After he brought me through the entry, which was at the side of the gate, into the holy chambers of the priests, which looked toward the north: and, behold, there was a place on the two sides westward."

Ezekiel 47:8: "Then said he unto me, These waters issue out toward the east country, and go down into the desert, and go into the sea: which being brought forth into the sea, the waters shall be healed."

Ezekiel 47:9: "And it shall come to pass, that every thing that liveth, which moveth, whithersoever the rivers shall come, shall live: and there shall be a very great multitude of fish, because these waters shall come thither: for they shall be healed; and every thing shall live whither the river cometh."

Ezekiel 47:14: "And ye shall inherit it, one as well as another: concerning the which I lifted up mine hand to give it unto your fathers: and this land shall fall unto you for inheritance."

Ezekiel 47:16: "Hamath, Berothah, Sibram, which is between the border of Damascus and the border of Hamath; Hazarhatticon, which is by the coast of Hauran."

Ezekiel 47:22: "And it shall come to pass, that ye shall divide it by lot for an inheritance unto you, and to the strangers that sojourn among you, which shall beget children among you: and they shall be unto you as born in the country among the children of Israel; they shall have inheritance with you among the tribes of Israel."

Ezekiel 48:8: "And by the border of Judah, from the east side unto the west side, shall be the offering which ye shall offer of five and twenty thousand reeds in breadth, and in length as one of the other parts, from the east side unto the west side: and the sanctuary shall be in the midst of it."

Ezekiel 48:11: "It shall be for the priests that are sanctified of the sons of Zadok; which have kept

my charge, which went not astray when the children of Israel went astray, as the Levites went astray."

Ezekiel 48:22: "Moreover from the possession of the Levites, and from the possession of the city, being in the midst of that which is the prince's, between the border of Judah and the border of Benjamin, shall be for the prince."

Ezekiel 48:29: "This is the land which ye shall divide by lot unto the tribes of Israel for inheritance, and these are their portions, saith the Lord GOD."

Daniel 1:2: "And the Lord gave Jehoiakim king of Judah into his hand, with part of the vessels of the house of God: which he carried into the land of Shinar to the house of his god; and he brought the vessels into the treasure house of his god."

Daniel 1:5: "And the king appointed them a daily provision of the king's meat, and of the wine which he drank: so nourishing them three years, that at the end thereof they might stand before the king."

Daniel 1:8: "But Daniel purposed in his heart that he would not defile himself with the portion of the king's meat, nor with the wine which he drank: therefore he requested of the prince of the eunuchs that he might not defile himself."

Daniel 1:10: "And the prince of the eunuchs said unto Daniel, I fear my lord the king, who hath appointed your meat and your drink: for why should he see your faces worse liking than the children which are of your sort? then shall ye make me endanger my head to the king."

Daniel 1:15: "And at the end of ten days their countenances appeared fairer and fatter in flesh than all the children which did eat the portion of the king's meat."

Daniel 2:14: "Then Daniel answered with counsel and wisdom to Arioch the captain of the king's guard, which was gone forth to slay the wise men of Babylon:"

Daniel 2:26: "The king answered and said to Daniel, whose name was Belteshazzar, Art thou able to make known unto me the dream which I have seen, and the interpretation thereof?"

Daniel 2:27: "Daniel answered in the presence of the king, and said, The secret which the king hath demanded cannot the wise men, the astrologers, the magicians, the soothsayers, shew unto the king;"

Daniel 2:34: "Thou sawest till that a stone was cut out without hands, which smote the image upon his feet that were of iron and clay, and brake them to pieces."

Daniel 2:39: "And after thee shall arise another kingdom inferior to thee, and another third kingdom of brass, which shall bear rule over all the earth."

Daniel 2:44: "And in the days of these kings shall the God of heaven set up a kingdom, which shall never be destroyed: and the kingdom shall not be left to other people, but it shall break in pieces and consume all these kingdoms, and it shall stand for ever."

Daniel 3:2: "Then Nebuchadnezzar the king sent to gather together the princes, the governors, and the captains, the judges, the treasurers, the counsellors, the sheriffs, and all the rulers of the provinces, to come to the dedication of the image which Nebuchadnezzar the king had set up."

Daniel 3:12: "There are certain Jews whom thou hast set over the affairs of the province of Babylon, Shadrach, Meshach, and Abednego; these men, O king, have not regarded thee: they serve not thy gods, nor worship the golden image which thou hast set up."

Daniel 3:14: "Nebuchadnezzar spake and said unto them, Is it true, O Shadrach, Meshach, and Abednego, do not ye serve my gods, nor worship the golden image which I have set up?"

Daniel 3:15: "Now if ye be ready that at what time ye hear the sound of the cornet, flute, harp, sackbut, psaltery, and dulcimer, and all kinds of musick, ye fall down and worship the image which I have made; well: but if ye worship not, ye shall be cast the same hour into the midst of a burning fiery furnace; and who is that God that shall deliver you out of my hands?"

Daniel 3:18: "But if not, be it known unto thee, O king, that we will not serve thy gods, nor worship the golden image which thou hast set up."

Daniel 3:29: "Therefore I make a decree, That every people, nation, and language, which speak any

thing amiss against the God of Shadrach, Meshach, and Abednego, shall be cut in pieces, and their houses shall be made a dunghill: because there is no other God that can deliver after this sort."

Daniel 4:5: "I saw a dream which made me afraid, and the thoughts upon my bed and the visions of my head troubled me."

Daniel 4:20: "The tree that thou sawest, which grew, and was strong, whose height reached unto the heaven, and the sight thereof to all the earth;"

Daniel 4:21: "Whose leaves were fair, and the fruit thereof much, and in it was meat for all; under which the beasts of the field dwelt, and upon whose branches the fowls of the heaven had their habitation:"

Daniel 4:24: "This is the interpretation, O king, and this is the decree of the most High, which is come upon my lord the king:"

Daniel 5:2: "Belshazzar, whiles he tasted the wine, commanded to bring the golden and silver vessels which his father Nebuchadnezzar had taken out of the temple which was in Jerusalem; that the king, and his princes, his wives, and his concubines, might drink therein."

Daniel 5:3: "Then they brought the golden vessels that were taken out of the temple of the house of God which was at Jerusalem; and the king, and his princes, his wives, and his concubines, drank in them."

Daniel 5:13: "Then was Daniel brought in before the king. And the king spake and said unto Daniel, Art thou that Daniel, which art of the children of the captivity of Judah, whom the king my father brought out of Jewry?"

Daniel 5:23: "But hast lifted up thyself against the Lord of heaven; and they have brought the vessels of his house before thee, and thou, and thy lords, thy wives, and thy concubines, have drunk wine in them; and thou hast praised the gods of silver, and gold, of brass, iron, wood, and stone, which see not, nor hear, nor know: and the God in whose hand thy breath is, and whose are all thy ways, hast thou not glorified:"

Daniel 6:1: "It pleased Darius to set over the kingdom an hundred and twenty princes, which should be over the whole kingdom;"

Daniel 6:8: "Now, O king, establish the decree, and sign the writing, that it be not changed, according to the law of the Medes and Persians, which altereth not."

Daniel 6:12: "Then they came near, and spake before the king concerning the king's decree; Hast thou not signed a decree, that every man that shall ask a petition of any God or man within thirty days, save of thee, O king, shall be cast into the den of lions? The king answered and said, The thing is true, according to the law of the Medes and Persians, which altereth not."

Daniel 6:13: "Then answered they and said before the king, That Daniel, which is of the children of the captivity of Judah, regardeth not thee, O king, nor the decree that thou hast signed, but maketh his petition three times a day."

Daniel 6:15: "Then these men assembled unto the king, and said unto the king, Know, O king, that the law of the Medes and Persians is, That no decree nor statute which the king establisheth may be changed."

Daniel 6:24: "And the king commanded, and they brought those men which had accused Daniel, and they cast them into the den of lions, them, their children, and their wives; and the lions had the mastery of them, and brake all their bones in pieces or ever they came at the bottom of the den."

Daniel 6:26: "I make a decree, That in every dominion of my kingdom men tremble and fear before the God of Daniel: for he is the living God, and stedfast for ever, and his kingdom that which shall not be destroyed, and his dominion shall be even unto the end."

Daniel 7:6: "After this I beheld, and lo another, like a leopard, which had upon the back of it four wings of a fowl; the beast had also four heads; and dominion was given to it."

Daniel 7:11: "I beheld then because of the voice of the great words which the horn spake: I beheld even till the beast was slain, and his body destroyed, and given to the burning flame."

Daniel 7:14: "And there was given him dominion, and glory, and a kingdom, that all people,

nations, and languages, should serve him: his dominion is an everlasting dominion, which shall not pass away, and his kingdom that which shall not be destroyed."

Daniel 7:17: "These great beasts, which are four, are four kings, which shall arise out of the earth."

Daniel 7:19: "Then I would know the truth of the fourth beast, which was diverse from all the others, exceeding dreadful, whose teeth were of iron, and his nails of brass; which devoured, brake in pieces, and stamped the residue with his feet;"

Daniel 7:20: "And of the ten horns that were in his head, and of the other which came up, and before whom three fell; even of that horn that had eyes, and a mouth that spake very great things, whose look was more stout than his fellows."

Daniel 7:23: "Thus he said, The fourth beast shall be the fourth kingdom upon earth, which shall be diverse from all kingdoms, and shall devour the whole earth, and shall tread it down, and break it in pieces."

Daniel 8:1: "In the third year of the reign of king Belshazzar a vision appeared unto me, even unto me Daniel, after that which appeared unto me at the first."

Daniel 8:2: "And I saw in a vision; and it came to pass, when I saw, that I was at Shushan in the palace, which is in the province of Elam; and I saw in a vision, and I was by the river of Ulai."

Daniel 8:3: "Then I lifted up mine eyes, and saw, and, behold, there stood before the river a ram which had two horns: and the two horns were high; but one was higher than the other, and the higher came up last."

Daniel 8:6: "And he came to the ram that had two horns, which I had seen standing before the river, and ran unto him in the fury of his power."

Daniel 8:9: "And out of one of them came forth a little horn, which waxed exceeding great, toward the south, and toward the east, and toward the pleasant land."

Daniel 8:13: "Then I heard one saint speaking, and another saint said unto that certain saint which spake, How long shall be the vision concerning the daily sacrifice, and the transgression of desolation, to give both the sanctuary and the host to be trodden under foot?"

Daniel 8:16: "And I heard a man's voice between the banks of Ulai, which called, and said, Gabriel, make this man to understand the vision."

Daniel 8:20: "The ram which thou sawest having two horns are the kings of Media and Persia."

Daniel 8:26: "And the vision of the evening and the morning which was told is true: wherefore shut thou up the vision; for it shall be for many days."

Daniel 9:1: "In the first year of Darius the son of Ahasuerus, of the seed of the Medes, which was made king over the realm of the Chaldeans;"

Daniel 9:6: "Neither have we hearkened unto thy servants the prophets, which spake in thy name to our kings, our princes, and our fathers, and to all the people of the land."

Daniel 9:10: "Neither have we obeyed the voice of the LORD our God, to walk in his laws, which he set before us by his servants the prophets."

Daniel 9:12: "And he hath confirmed his words, which he spake against us, and against our judges that judged us, by bringing upon us a great evil: for under the whole heaven hath not been done as hath been done upon Jerusalem."

Daniel 9:14: "Therefore hath the LORD watched upon the evil, and brought it upon us: for the LORD our God is righteous in all his works which he doeth: for we obeyed not his voice."

Daniel 9:18: "O my God, incline thine ear, and hear; open thine eyes, and behold our desolations, and the city which is called by thy name: for we do not present our supplications before thee for our righteousnesses, but for thy great mercies."

Daniel 10:4: "And in the four and twentieth day of the first month, as I was by the side of the great river, which is Hiddekel;"

Daniel 10:10: "And, behold, an hand touched me, which set me upon my knees and upon the palms of my hands."

Daniel 10:21: "But I will shew thee that which is noted in the scripture of truth: and there is none

that holdeth with me in these things, but Michael your prince."

Daniel 11:4: "And when he shall stand up, his kingdom shall be broken, and shall be divided toward the four winds of heaven; and not to his posterity, nor according to his dominion which he ruled: for his kingdom shall be plucked up, even for others beside those."

Daniel 11:7: "But out of a branch of her roots shall one stand up in his estate, which shall come with an army, and shall enter into the fortress of the king of the north, and shall deal against them, and shall prevail:"

Daniel 11:16: "But he that cometh against him shall do according to his own will, and none shall stand before him: and he shall stand in the glorious land, which by his hand shall be consumed."

Daniel 11:24: "He shall enter peaceably even upon the fattest places of the province; and he shall do that which his fathers have not done, nor his fathers' fathers; he shall scatter among them the prey, and spoil, and riches: yea, and he shall forecast his devices against the strong holds, even for a time."

Daniel 12:1: "And at that time shall Michael stand up, the great prince which standeth for the children of thy people: and there shall be a time of trouble, such as never was since there was a nation even to that same time: and at that time thy people shall be delivered, every one that shall be found written in the book."

Daniel 12:6: "And one said to the man clothed in linen, which was upon the waters of the river, How long shall it be to the end of these wonders?"

Daniel 12:7: "And I heard the man clothed in linen, which was upon the waters of the river, when he held up his right hand and his left hand unto heaven, and sware by him that liveth for ever that it shall be for a time, times, and an half; and when he shall have accomplished to scatter the power of the holy people, all these things shall be finished."

Hosea 1:3: "So he went and took Gomer the daughter of Diblaim; which conceived, and bare him a son."

Hosea 1:10: "Yet the number of the children of Israel shall be as the sand of the sea, which cannot be measured nor numbered; and it shall come to pass, that in the place where it was said unto them, Ye are not my people, there it shall be said unto them, Ye are the sons of the living God."

Hosea 2:8: "For she did not know that I gave her corn, and wine, and oil, and multiplied her silver and gold, which they prepared for Baal."

Hosea 2:23: "And I will sow her unto me in the earth; and I will have mercy upon her that had not obtained mercy; and I will say to them which were not my people, Thou art my people; and they shall say, Thou art my God."

Hosea 5:9: "Ephraim shall be desolate in the day of rebuke: among the tribes of Israel have I made known that which shall surely be."

Joel 1:4: "That which the palmerworm hath left hath the locust eaten; and that which the locust hath left hath the cankerworm eaten; and that which the cankerworm hath left hath the caterpillar eaten."

Joel 2:25: "And I will restore to you the years that the locust hath eaten, the cankerworm, and the caterpillar, and the palmerworm, my great army which I sent among you."

Amos 1:1: "The words of Amos, who was among the herdmen of Tekoa, which he saw concerning Israel in the days of Uzziah king of Judah, and in the days of Jeroboam the son of Joash king of Israel, two years before the earthquake."

Amos 1:4: "But I will send a fire into the house of Hazael, which shall devour the palaces of Benhadad."

Amos 1:7: "But I will send a fire on the wall of Gaza, which shall devour the palaces thereof:"

Amos 1:10: "But I will send a fire on the wall of Tyrus, which shall devour the palaces thereof."

Amos 1:12: "But I will send a fire upon Teman, which shall devour the palaces of Bozrah."

Amos 2:4: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Judah, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because they have despised the law of the LORD, and have not kept his commandments, and their lies caused them to err, after the which their fathers have walked:"

Amos 3:1: "Hear this word that the LORD hath spoken against you, O children of Israel, against the whole family which I brought up from the land of Egypt, saying,"

Amos 4:1: "Hear this word, ye kine of Bashan, that are in the mountain of Samaria, which oppress the poor, which crush the needy, which say to their masters, Bring, and let us drink."

Amos 4:3: "And ye shall go out at the breaches, every cow at that which is before her; and ye shall cast them into the palace, saith the LORD."

Amos 5:1: "Hear ye this word which I take up against you, even a lamentation, O house of Israel."

Amos 5:3: "For thus saith the Lord GOD; The city that went out by a thousand shall leave an hundred, and that which went forth by an hundred shall leave ten, to the house of Israel."

Amos 5:26: "But ye have borne the tabernacle of your Moloch and Chiun your images, the star of your god, which ye made to yourselves."

Amos 6:1: "Woe to them that are at ease in Zion, and trust in the mountain of Samaria, which are named chief of the nations, to whom the house of Israel came!"

Amos 6:13: "Ye which rejoice in a thing of nought, which say, Have we not taken to us horns by our own strength?"

Amos 9:10: "All the sinners of my people shall die by the sword, which say, The evil shall not overtake nor prevent us."

Amos 9:12: "That they may possess the remnant of Edom, and of all the heathen, which are called by my name, saith the LORD that doeth this."

Amos 9:15: "And I will plant them upon their land, and they shall no more be pulled up out of their land which I have given them, saith the LORD thy God."

Obadiah 1:20: "And the captivity of this host of the children of Israel shall possess that of the Canaanites, even unto Zarephath; and the captivity of Jerusalem, which is in Sepharad, shall possess the cities of the south."

Jonah 1:9: "And he said unto them, I am an Hebrew; and I fear the LORD, the God of heaven, which hath made the sea and the dry land."

Jonah 4:10: "Then said the LORD, Thou hast had pity on the gourd, for the which thou hast not laboured, neither madest it grow; which came up in a night, and perished in a night:"

Micah 1:1: "The word of the LORD that came to Micah the Morasthite in the days of Jotham, Ahaz, and Hezekiah, kings of Judah, which he saw concerning Samaria and Jerusalem."

Micah 2:3: "Therefore thus saith the LORD; Behold, against this family do I devise an evil, from which ye shall not remove your necks; neither shall ye go haughtily: for this time is evil."

Micah 5:3: "Therefore will he give them up, until the time that she which travaileth hath brought forth: then the remnant of his brethren shall return unto the children of Israel."

Micah 6:14: "Thou shalt eat, but not be satisfied; and thy casting down shall be in the midst of thee; and thou shalt take hold, but shalt not deliver; and that which thou deliverest will I give up to the sword."

Micah 7:10: "Then she that is mine enemy shall see it, and shame shall cover her which said unto me, Where is the LORD thy God? mine eyes shall behold her: now shall she be trodden down as the mire of the streets."

Micah 7:14: "Feed thy people with thy rod, the flock of thine heritage, which dwell solitarily in the wood, in the midst of Carmel: let them feed in Bashan and Gilead, as in the days of old."

Micah 7:20: "Thou wilt perform the truth to Jacob, and the mercy to Abraham, which thou hast sworn unto our fathers from the days of old."

Nahum 3:17: "Thy crowned are as the locusts, and thy captains as the great grasshoppers, which camp in the hedges in the cold day, but when the sun ariseth they flee away, and their place is not known where they are."

Habakkuk 1:1: "The burden which Habakkuk the prophet did see."

Habakkuk 1:5: "Behold ye among the heathen, and regard, and wonder marvelously: for I will work a work in your days which ye will not believe, though it be told you."

Habakkuk 1:6: "For, lo, I raise up the Chaldeans, that bitter and hasty nation, which shall march through the breadth of the land, to possess the dwellingplaces that are not their's."

Habakkuk 2:4: "Behold, his soul which is lifted up is not upright in him: but the just shall live by his faith."

Habakkuk 2:6: "Shall not all these take up a parable against him, and a taunting proverb against him, and say, Woe to him that increaseth that which is not his! how long? and to him that ladeth himself with thick clay!"

Habakkuk 2:17: "For the violence of Lebanon shall cover thee, and the spoil of beasts, which made them afraid, because of men's blood, and for the violence of the land, of the city, and of all that dwell therein."

Zephaniah 1:1: "The word of the LORD which came unto Zephaniah the son of Cushi, the son of Gedaliah, the son of Amariah, the son of Hizkiah, in the days of Josiah the son of Amon, king of Judah."

Zephaniah 1:9: "In the same day also will I punish all those that leap on the threshold, which fill their masters' houses with violence and deceit."

Zephaniah 2:3: "Seek ye the LORD, all ye meek of the earth, which have wrought his judgment; seek righteousness, seek meekness: it may be ye shall be hid in the day of the LORD's anger."

Haggai 1:11: "And I called for a drought upon the land, and upon the mountains, and upon the corn, and upon the new wine, and upon the oil, and upon that which the ground bringeth forth, and upon men, and upon cattle, and upon all the labour of the hands."

Haggai 2:14: "Then answered Haggai, and said, So is this people, and so is this nation before me, saith the LORD; and so is every work of their hands; and that which they offer there is unclean."

Zechariah 1:6: "But my words and my statutes, which I commanded my servants the prophets, did they not take hold of your fathers? and they returned and said, Like as the LORD of hosts thought to do unto us, according to our ways, and according to our doings, so hath he dealt with us."

Zechariah 1:7: "Upon the four and twentieth day of the eleventh month, which is the month Sebat, in the second year of Darius, came the word of the LORD unto Zechariah, the son of Berechiah, the son of Iddo the prophet, saying,"

Zechariah 1:12: "Then the angel of the LORD answered and said, O LORD of hosts, how long wilt thou not have mercy on Jerusalem and on the cities of Judah, against which thou hast had indignation these threescore and ten years?"

Zechariah 1:19: "And I said unto the angel that talked with me, What be these? And he answered me, These are the horns which have scattered Judah, Israel, and Jerusalem."

Zechariah 1:21: "Then said I, What come these to do? And he spake, saying, These are the horns which have scattered Judah, so that no man did lift up his head: but these are come to fray them, to cast out the horns of the Gentiles, which lifted up their horn over the land of Judah to scatter it."

Zechariah 2:8: "For thus saith the LORD of hosts; After the glory hath he sent me unto the nations which spoiled you: for he that toucheth you toucheth the apple of his eye."

Zechariah 4:2: "And said unto me, What seest thou? And I said, I have looked, and behold a candlestick all of gold, with a bowl upon the top of it, and his seven lamps thereon, and seven pipes to the seven lamps, which are upon the top thereof:"

Zechariah 4:10: "For who hath despised the day of small things? for they shall rejoice, and shall see the plummet in the hand of Zerubbabel with those seven; they are the eyes of the LORD, which run to and fro through the whole earth."

Zechariah 4:12: "And I answered again, and said unto him, What be these two olive branches which through the two golden pipes empty the golden oil out of themselves?"

Zechariah 6:5: "And the angel answered and said unto me, These are the four spirits of the heavens, which go forth from standing before the LORD of all the earth."

Zechariah 6:6: "The black horses which are therein go forth into the north country; and the white go forth after them; and the grisled go forth toward the south country."



Zechariah 6:10: "Take of them of the captivity, even of Heldai, of Tobijah, and of Jedaiah, which are come from Babylon, and come thou the same day, and go into the house of Josiah the son of Zephaniah;"

Zechariah 7:3: "And to speak unto the priests which were in the house of the LORD of hosts, and to the prophets, saying, Should I weep in the fifth month, separating myself, as I have done these so many years?"

Zechariah 7:7: "Should ye not hear the words which the LORD hath cried by the former prophets, when Jerusalem was inhabited and in prosperity, and the cities thereof round about her, when men inhabited the south and the plain?"

Zechariah 7:12: "Yea, they made their hearts as an adamant stone, lest they should hear the law, and the words which the LORD of hosts hath sent in his spirit by the former prophets: therefore came a great wrath from the LORD of hosts."

Zechariah 8:9: "Thus saith the LORD of hosts; Let your hands be strong, ye that hear in these days these words by the mouth of the prophets, which were in the day that the foundation of the house of the LORD of hosts was laid, that the temple might be built."

Zechariah 10:5: "And they shall be as mighty men, which tread down their enemies in the mire of the streets in the battle: and they shall fight, because the LORD is with them, and the riders on horses shall be confounded."

Zechariah 11:10: "And I took my staff, even Beauty, and cut it asunder, that I might break my covenant which I had made with all the people."

Zechariah 11:16: "For, lo, I will raise up a shepherd in the land, which shall not visit those that be cut off, neither shall seek the young one, nor heal that that is broken, nor feed that that standeth still: but he shall eat the flesh of the fat, and tear their claws in pieces."

Zechariah 12:1: "The burden of the word of the LORD for Israel, saith the LORD, which stretcheth forth the heavens, and layeth the foundation of the earth, and formeth the spirit of man within him."

Zechariah 13:6: "And one shall say unto him, What are these wounds in thine hands? Then he shall answer, Those with which I was wounded in the house of my friends."

Zechariah 14:4: "And his feet shall stand in that day upon the mount of Olives, which is before Jerusalem on the east, and the mount of Olives shall cleave in the midst thereof toward the east and toward the west, and there shall be a very great valley; and half of the mountain shall remove toward the north, and half of it toward the south."

Zechariah 14:7: "But it shall be one day which shall be known to the LORD, not day, nor night: but it shall come to pass, that at evening time it shall be light."

Zechariah 14:16: "And it shall come to pass, that every one that is left of all the nations which came against Jerusalem shall even go up from year to year to worship the King, the LORD of hosts, and to keep the feast of tabernacles."

Malachi 1:13: "Ye said also, Behold, what a weariness is it! and ye have snuffed at it, saith the LORD of hosts; and ye brought that which was torn, and the lame, and the sick; thus ye brought an offering: should I accept this of your hand? saith the LORD."

Malachi 1:14: "But cursed be the deceiver, which hath in his flock a male, and voweth, and sacrificeth unto the LORD a corrupt thing: for I am a great King, saith the LORD of hosts, and my name is dreadful among the heathen."

Malachi 2:11: "Judah hath dealt treacherously, and an abomination is committed in Israel and in Jerusalem; for Judah hath profaned the holiness of the LORD which he loved, and hath married the daughter of a strange god."

Malachi 4:4: "Remember ye the law of Moses my servant, which I commanded unto him in Horeb for all Israel, with the statutes and judgments."

Matthew 1:20: "But while he thought on these things, behold, the angel of the LORD appeared unto him in a dream, saying, Joseph, thou son of David, fear not to take unto thee Mary thy wife: for that which is conceived in her is of the Holy Ghost."

Matthew 1:22: "Now all this was done, that it might be fulfilled which was spoken of the Lord by the prophet, saying,"

Matthew 1:23: "Behold, a virgin shall be with child, and shall bring forth a son, and they shall call his name Emmanuel, which being interpreted is, God with us."

Matthew 2:9: "When they had heard the king, they departed; and, lo, the star, which they saw in the east, went before them, till it came and stood over where the young child was."

Matthew 2:15: "And was there until the death of Herod: that it might be fulfilled which was spoken of the Lord by the prophet, saying, Out of Egypt have I called my son."

Matthew 2:16: "Then Herod, when he saw that he was mocked of the wise men, was exceeding wroth, and sent forth, and slew all the children that were in Bethlehem, and in all the coasts thereof, from two years old and under, according to the time which he had diligently enquired of the wise men."

Matthew 2:17: "Then was fulfilled that which was spoken by Jeremy the prophet, saying,"

Matthew 2:20: "Saying, Arise, and take the young child and his mother, and go into the land of Israel: for they are dead which sought the young child's life."

Matthew 2:23: "And he came and dwelt in a city called Nazareth: that it might be fulfilled which was spoken by the prophets, He shall be called a Nazarene."

Matthew 3:10: "And now also the axe is laid unto the root of the trees: therefore every tree which bringeth not forth good fruit is hewn down, and cast into the fire."

Matthew 4:13: "And leaving Nazareth, he came and dwelt in Capernaum, which is upon the sea coast, in the borders of Zabulon and Nephtholim:"

Matthew 4:14: "That it might be fulfilled which was spoken by Esaias the prophet, saying,"

Matthew 4:16: "The people which sat in darkness saw great light; and to them which sat in the region and shadow of death light is sprung up."

Matthew 4:24: "And his fame went throughout all Syria: and they brought unto him all sick people that were taken with divers diseases and torments, and those which were possessed with devils, and those which were lunatick, and those that had the palsy; and he healed them."

Matthew 5:6: "Blessed are they which do hunger and thirst after righteousness: for they shall be filled."

Matthew 5:10: "Blessed are they which are persecuted for righteousness' sake: for theirs is the kingdom of heaven."

Matthew 5:12: "Rejoice, and be exceeding glad: for great is your reward in heaven: for so persecuted they the prophets which were before you."

Matthew 5:16: "Let your light so shine before men, that they may see your good works, and glorify your Father which is in heaven."

Matthew 5:44: "But I say unto you, Love your enemies, bless them that curse you, do good to them that hate you, and pray for them which despitefully use you, and persecute you;"

Matthew 5:45: "That ye may be the children of your Father which is in heaven: for he maketh his sun to rise on the evil and on the good, and sendeth rain on the just and on the unjust."

Matthew 5:46: "For if ye love them which love you, what reward have ye? do not even the publicans the same?"

Matthew 5:48: "Be ye therefore perfect, even as your Father which is in heaven is perfect."

Matthew 6:1: "Take heed that ye do not your alms before men, to be seen of them: otherwise ye have no reward of your Father which is in heaven."

Matthew 6:4: "That thine alms may be in secret: and thy Father which seeth in secret himself shall reward thee openly."

Matthew 6:6: "But thou, when thou prayest, enter into thy closet, and when thou hast shut thy door, pray to thy Father which is in secret; and thy Father which seeth in secret shall reward thee openly."

Matthew 6:9: "After this manner therefore pray ye: Our Father which art in heaven, Hallowed be thy name."

Matthew 6:18: "That thou appear not unto men to fast, but unto thy Father which is in secret: and thy Father, which seeth in secret, shall reward thee openly."

Matthew 6:27: "Which of you by taking thought can add one cubit unto his stature?"

Matthew 6:30: "Wherefore, if God so clothe the grass of the field, which to day is, and to morrow is cast into the oven, shall he not much more clothe you, O ye of little faith?"

Matthew 7:6: "Give not that which is holy unto the dogs, neither cast ye your pearls before swine, lest they trample them under their feet, and turn again and rend you."

Matthew 7:11: "If ye then, being evil, know how to give good gifts unto your children, how much more shall your Father which is in heaven give good things to them that ask him?"

Matthew 7:13: "Enter ye in at the strait gate: for wide is the gate, and broad is the way, that leadeth to destruction, and many there be which go in thereat:"

Matthew 7:14: "Because strait is the gate, and narrow is the way, which leadeth unto life, and few there be that find it."

Matthew 7:15: "Beware of false prophets, which come to you in sheep's clothing, but inwardly they are ravening wolves."

Matthew 7:21: "Not every one that saith unto me, Lord, Lord, shall enter into the kingdom of heaven; but he that doeth the will of my Father which is in heaven."

Matthew 7:24: "Therefore whosoever heareth these sayings of mine, and doeth them, I will liken him unto a wise man, which built his house upon a rock:"

Matthew 7:26: "And every one that heareth these sayings of mine, and doeth them not, shall be likened unto a foolish man, which built his house upon the sand:"

Matthew 8:17: "That it might be fulfilled which was spoken by Esaias the prophet, saying, Himself took our infirmities, and bare our sicknesses."

Matthew 9:8: "But when the multitudes saw it, they marvelled, and glorified God, which had given such power unto men."

Matthew 9:16: "No man putteth a piece of new cloth unto an old garment, for that which is put in to fill it up taketh from the garment, and the rent is made worse."

Matthew 9:20: "And, behold, a woman, which was diseased with an issue of blood twelve years, came behind him, and touched the hem of his garment:"

Matthew 10:20: "For it is not ye that speak, but the Spirit of your Father which speaketh in you."

Matthew 10:28: "And fear not them which kill the body, but are not able to kill the soul: but rather fear him which is able to destroy both soul and body in hell."

Matthew 10:32: "Whosoever therefore shall confess me before men, him will I confess also before my Father which is in heaven."

Matthew 10:33: "But whosoever shall deny me before men, him will I also deny before my Father which is in heaven."

Matthew 11:4: "Jesus answered and said unto them, Go and shew John again those things which ye do hear and see:"

Matthew 11:10: "For this is he, of whom it is written, Behold, I send my messenger before thy face, which shall prepare thy way before thee."

Matthew 11:14: "And if ye will receive it, this is Elias, which was for to come."

Matthew 11:21: "Woe unto thee, Chorazin! woe unto thee, Bethsaida! for if the mighty works, which were done in you, had been done in Tyre and Sidon, they would have repented long ago in sackcloth and ashes."

Matthew 11:23: "And thou, Capernaum, which art exalted unto heaven, shalt be brought down to hell: for if the mighty works, which have been done in thee, had been done in Sodom, it would have remained until this day."

Matthew 12:2: "But when the Pharisees saw it, they said unto him, Behold, thy disciples do that which is not lawful to do upon the sabbath day."

Matthew 12:4: "How he entered into the house of God, and did eat the shewbread, which was not

lawful for him to eat, neither for them which were with him, but only for the priests?"

Matthew 12:10: "And, behold, there was a man which had his hand withered. And they asked him, saying, Is it lawful to heal on the sabbath days? that they might accuse him."

Matthew 12:17: "That it might be fulfilled which was spoken by Esaias the prophet, saying,"

Matthew 12:50: "For whosoever shall do the will of my Father which is in heaven, the same is my brother, and sister, and mother."

Matthew 13:14: "And in them is fulfilled the prophecy of Esaias, which saith, By hearing ye shall hear, and shall not understand; and seeing ye shall see, and shall not perceive:"

Matthew 13:17: "For verily I say unto you, That many prophets and righteous men have desired to see those things which ye see, and have not seen them; and to hear those things which ye hear, and have not heard them."

Matthew 13:19: "When any one heareth the word of the kingdom, and understandeth it not, then cometh the wicked one, and catcheth away that which was sown in his heart. This is he which received seed by the way side."

Matthew 13:23: "But he that received seed into the good ground is he that heareth the word, and understandeth it; which also beareth fruit, and bringeth forth, some an hundredfold, some sixty, some thirty."

Matthew 13:24: "Another parable put he forth unto them, saying, The kingdom of heaven is likened unto a man which sowed good seed in his field:"

Matthew 13:31: "Another parable put he forth unto them, saying, The kingdom of heaven is like to a grain of mustard seed, which a man took, and sowed in his field:"

Matthew 13:32: "Which indeed is the least of all seeds: but when it is grown, it is the greatest among herbs, and becometh a tree, so that the birds of the air come and lodge in the branches thereof."

Matthew 13:33: "Another parable spake he unto them; The kingdom of heaven is like unto leaven, which a woman took, and hid in three measures of meal, till the whole was leavened."

Matthew 13:35: "That it might be fulfilled which was spoken by the prophet, saying, I will open my mouth in parables; I will utter things which have been kept secret from the foundation of the world."

Matthew 13:41: "The Son of man shall send forth his angels, and they shall gather out of his kingdom all things that offend, and them which do iniquity;"

Matthew 13:44: "Again, the kingdom of heaven is like unto treasure hid in a field; the which when a man hath found, he hideth, and for joy thereof goeth and selleth all that he hath, and buyeth that field."

Matthew 13:48: "Which, when it was full, they drew to shore, and sat down, and gathered the good into vessels, but cast the bad away."

Matthew 13:52: "Then said he unto them, Therefore every scribe which is instructed unto the kingdom of heaven is like unto a man that is an householder, which bringeth forth out of his treasure things new and old."

Matthew 14:9: "And the king was sorry: nevertheless for the oath's sake, and them which sat with him at meat, he commanded it to be given her."

Matthew 15:1: "Then came to Jesus scribes and Pharisees, which were of Jerusalem, saying,"

Matthew 15:11: "Not that which goeth into the mouth defileth a man; but that which cometh out of the mouth, this defileth a man."

Matthew 15:13: "But he answered and said, Every plant, which my heavenly Father hath not planted, shall be rooted up."

Matthew 15:18: "But those things which proceed out of the mouth come forth from the heart; and they defile the man."

Matthew 15:20: "These are the things which defile a man: but to eat with unwashen hands defileth not a man."

Matthew 15:27: "And she said, Truth, Lord: yet the dogs eat of the crumbs which fall from their masters' table."

Matthew 16:8: "Which when Jesus perceived, he said unto them, O ye of little faith, why reason ye among yourselves, because ye have brought no bread?"

Matthew 16:17: "And Jesus answered and said unto him, Blessed art thou, Simon Barjona: for flesh and blood hath not revealed it unto thee, but my Father which is in heaven."

Matthew 16:28: "Verily I say unto you, There be some standing here, which shall not taste of death, till they see the Son of man coming in his kingdom."

Matthew 17:5: "While he yet spake, behold, a bright cloud overshadowed them: and behold a voice out of the cloud, which said, This is my beloved Son, in whom I am well pleased; hear ye him."

Matthew 18:6: "But whoso shall offend one of these little ones which believe in me, it were better for him that a millstone were hanged about his neck, and that he were drowned in the depth of the sea."

Matthew 18:10: "Take heed that ye despise not one of these little ones; for I say unto you, That in heaven their angels do always behold the face of my Father which is in heaven."

Matthew 18:11: "For the Son of man is come to save that which was lost."

Matthew 18:12: "How think ye? if a man have an hundred sheep, and one of them be gone astray, doth he not leave the ninety and nine, and goeth into the mountains, and seeketh that which is gone astray?"

Matthew 18:13: "And if so be that he find it, verily I say unto you, he rejoiceth more of that sheep, than of the ninety and nine which went not astray."

Matthew 18:14: "Even so it is not the will of your Father which is in heaven, that one of these little ones should perish."

Matthew 18:19: "Again I say unto you, That if two of you shall agree on earth as touching any thing that they shall ask, it shall be done for them of my Father which is in heaven."

Matthew 18:23: "Therefore is the kingdom of heaven likened unto a certain king, which would take account of his servants."

Matthew 18:24: "And when he had begun to reckon, one was brought unto him, which owed him ten thousand talents."

Matthew 18:28: "But the same servant went out, and found one of his fellowservants, which owed him an hundred pence: and he laid hands on him, and took him by the throat, saying, Pay me that thou owest."

Matthew 19:4: "And he answered and said unto them, Have ye not read, that he which made them at the beginning made them male and female,"

Matthew 19:9: "And I say unto you, Whosoever shall put away his wife, except it be for fornication, and shall marry another, committeth adultery: and whoso marrieth her which is put away doth commit adultery."

Matthew 19:12: "For there are some eunuchs, which were so born from their mother's womb: and there are some eunuchs, which were made eunuchs of men: and there be eunuchs, which have made themselves eunuchs for the kingdom of heaven's sake. He that is able to receive it, let him receive it."

Matthew 19:18: "He saith unto him, Which? Jesus said, Thou shalt do no murder, Thou shalt not commit adultery, Thou shalt not steal, Thou shalt not bear false witness,"

Matthew 19:28: "And Jesus said unto them, Verily I say unto you, That ye which have followed me, in the regeneration when the Son of man shall sit in the throne of his glory, ye also shall sit upon twelve thrones, judging the twelve tribes of Israel."

Matthew 20:1: "For the kingdom of heaven is like unto a man that is an householder, which went out early in the morning to hire labourers into his vineyard."

Matthew 20:12: "Saying, These last have wrought but one hour, and thou hast made them equal unto us, which have borne the burden and heat of the day."

Matthew 21:4: "All this was done, that it might be fulfilled which was spoken by the prophet, saying,"

Matthew 21:21: "Jesus answered and said unto them, Verily I say unto you, If ye have faith, and doubt not, ye shall not only do this which is done to the fig tree, but also if ye shall say unto this mountain, Be thou removed, and be thou cast into the sea; it shall be done."

Matthew 21:24: "And Jesus answered and said unto them, I also will ask you one thing, which if ye tell me, I in like wise will tell you by what authority I do these things."

Matthew 21:33: "Hear another parable: There was a certain householder, which planted a vineyard, and hedged it round about, and digged a winepress in it, and built a tower, and let it out to husbandmen, and went into a far country:"

Matthew 21:41: "They say unto him, He will miserably destroy those wicked men, and will let out his vineyard unto other husbandmen, which shall render him the fruits in their seasons."

Matthew 21:42: "Jesus saith unto them, Did ye never read in the scriptures, The stone which the builders rejected, the same is become the head of the corner: this is the Lord's doing, and it is marvellous in our eyes?"

Matthew 22:2: "The kingdom of heaven is like unto a certain king, which made a marriage for his son,"

Matthew 22:4: "Again, he sent forth other servants, saying, Tell them which are bidden, Behold, I have prepared my dinner: my oxen and my fatlings are killed, and all things are ready: come unto the marriage."

Matthew 22:8: "Then saith he to his servants, The wedding is ready, but they which were bidden were not worthy."

Matthew 22:11: "And when the king came in to see the guests, he saw there a man which had not on a wedding garment:"

Matthew 22:21: "They say unto him, Caesar's. Then saith he unto them, Render therefore unto Caesar the things which are Caesar's; and unto God the things that are God's."

Matthew 22:23: "The same day came to him the Sadducees, which say that there is no resurrection, and asked him,"

Matthew 22:31: "But as touching the resurrection of the dead, have ye not read that which was spoken unto you by God, saying,"

Matthew 22:35: "Then one of them, which was a lawyer, asked him a question, tempting him, and saying,"

Matthew 22:36: "Master, which is the great commandment in the law?"

Matthew 23:9: "And call no man your father upon the earth: for one is your Father, which is in heaven."

Matthew 23:16: "Woe unto you, ye blind guides, which say, Whosoever shall swear by the temple, it is nothing; but whosoever shall swear by the gold of the temple, he is a debtor!"

Matthew 23:24: "Ye blind guides, which strain at a gnat, and swallow a camel."

Matthew 23:26: "Thou blind Pharisee, cleanse first that which is within the cup and platter, that the outside of them may be clean also."

Matthew 23:27: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye are like unto whited sepulchres, which indeed appear beautiful outward, but are within full of dead men's bones, and of all uncleanness."

Matthew 23:31: "Wherefore ye be witnesses unto yourselves, that ye are the children of them which killed the prophets."

Matthew 23:37: "O Jerusalem, Jerusalem, thou that killest the prophets, and stonest them which are sent unto thee, how often would I have gathered thy children together, even as a hen gathereth her chickens under her wings, and ye would not!"

Matthew 24:16: "Then let them which be in Judaea flee into the mountains:"

Matthew 24:17: "Let him which is on the housetop not come down to take any thing out of his

house:"

Matthew 24:18: "Neither let him which is in the field return back to take his clothes."

Matthew 25:1: "Then shall the kingdom of heaven be likened unto ten virgins, which took their lamps, and went forth to meet the bridegroom."

Matthew 25:24: "Then he which had received the one talent came and said, Lord, I knew thee that thou art an hard man, reaping where thou hast not sown, and gathering where thou hast not strawed:"

Matthew 25:28: "Take therefore the talent from him, and give it unto him which hath ten talents."

Matthew 25:29: "For unto every one that hath shall be given, and he shall have abundance: but from him that hath not shall be taken away even that which he hath."

Matthew 26:25: "Then Judas, which betrayed him, answered and said, Master, is it I? He said unto him, Thou hast said."

Matthew 26:28: "For this is my blood of the new testament, which is shed for many for the remission of sins."

Matthew 26:51: "And, behold, one of them which were with Jesus stretched out his hand, and drew his sword, and struck a servant of the high priest's, and smote off his ear."

Matthew 26:62: "And the high priest arose, and said unto him, Answerest thou nothing? what is it which these witness against thee?"

Matthew 26:75: "And Peter remembered the word of Jesus, which said unto him, Before the cock crow, thou shalt deny me thrice. And he went out, and wept bitterly."

Matthew 27:3: "Then Judas, which had betrayed him, when he saw that he was condemned, repented himself, and brought again the thirty pieces of silver to the chief priests and elders,"

Matthew 27:9: "Then was fulfilled that which was spoken by Jeremy the prophet, saying, And they took the thirty pieces of silver, the price of him that was valued, whom they of the children of Israel did value;"

Matthew 27:17: "Therefore when they were gathered together, Pilate said unto them, Whom will ye that I release unto you? Barabbas, or Jesus which is called Christ?"

Matthew 27:22: "Pilate saith unto them, What shall I do then with Jesus which is called Christ? They all say unto him, Let him be crucified."

Matthew 27:35: "And they crucified him, and parted his garments, casting lots: that it might be fulfilled which was spoken by the prophet, They parted my garments among them, and upon my vesture did they cast lots."

Matthew 27:44: "The thieves also, which were crucified with him, cast the same in his teeth."

Matthew 27:52: "And the graves were opened; and many bodies of the saints which slept arose,"

Matthew 27:55: "And many women were there beholding afar off, which followed Jesus from Galilee, ministering unto him:"

Matthew 27:56: "Among which was Mary Magdalene, and Mary the mother of James and Joses, and the mother of Zebedees children."

Matthew 27:60: "And laid it in his own new tomb, which he had hewn out in the rock: and he rolled a great stone to the door of the sepulchre, and departed."

Matthew 28:5: "And the angel answered and said unto the women, Fear not ye: for I know that ye seek Jesus, which was crucified."

Mark 1:2: "As it is written in the prophets, Behold, I send my messenger before thy face, which shall prepare thy way before thee."

Mark 1:44: "And saith unto him, See thou say nothing to any man: but go thy way, shew thyself to the priest, and offer for thy cleansing those things which Moses commanded, for a testimony unto them."

Mark 2:3: "And they come unto him, bringing one sick of the palsy, which was borne of four."

Mark 2:24: "And the Pharisees said unto him, Behold, why do they on the sabbath day that which is not lawful?"

Mark 2:26: "How he went into the house of God in the days of Abiathar the high priest, and did eat the shewbread, which is not lawful to eat but for the priests, and gave also to them which were with him?"

Mark 3:1: "And he entered again into the synagogue; and there was a man there which had a withered hand."

Mark 3:3: "And he saith unto the man which had the withered hand, Stand forth."

Mark 3:17: "And James the son of Zebedee, and John the brother of James; and he surnamed them Boanerges, which is, The sons of thunder:"

Mark 3:19: "And Judas Iscariot, which also betrayed him: and they went into an house."

Mark 3:22: "And the scribes which came down from Jerusalem said, He hath Beelzebub, and by the prince of the devils casteth he out devils."

Mark 3:34: "And he looked round about on them which sat about him, and said, Behold my mother and my brethren!"

Mark 4:16: "And these are they likewise which are sown on stony ground; who, when they have heard the word, immediately receive it with gladness;"

Mark 4:18: "And these are they which are sown among thorns; such as hear the word,"

Mark 4:20: "And these are they which are sown on good ground; such as hear the word, and receive it, and bring forth fruit, some thirtyfold, some sixty, and some an hundred."

Mark 4:22: "For there is nothing hid, which shall not be manifested; neither was any thing kept secret, but that it should come abroad."

Mark 4:25: "For he that hath, to him shall be given: and he that hath not, from him shall be taken even that which he hath."

Mark 4:31: "It is like a grain of mustard seed, which, when it is sown in the earth, is less than all the seeds that be in the earth:"

Mark 5:25: "And a certain woman, which had an issue of blood twelve years,"

Mark 5:35: "While he yet spake, there came from the ruler of the synagogue's house certain which said, Thy daughter is dead: why troublest thou the Master any further?"

Mark 5:41: "And he took the damsel by the hand, and said unto her, Talitha cumi; which is, being interpreted, Damsel, I say unto thee, arise."

Mark 6:2: "And when the sabbath day was come, he began to teach in the synagogue: and many hearing him were astonished, saying, From whence hath this man these things? and what wisdom is this which is given unto him, that even such mighty works are wrought by his hands?"

Mark 6:26: "And the king was exceeding sorry; yet for his oath's sake, and for their sakes which sat with him, he would not reject her."

Mark 7:1: "Then came together unto him the Pharisees, and certain of the scribes, which came from Jerusalem."

Mark 7:4: "And when they come from the market, except they wash, they eat not. And many other things there be, which they have received to hold, as the washing of cups, and pots, brasen vessels, and of tables."

Mark 7:13: "Making the word of God of none effect through your tradition, which ye have delivered: and many such like things do ye."

Mark 7:15: "There is nothing from without a man, that entering into him can defile him: but the things which come out of him, those are they that defile the man."

Mark 7:20: "And he said, That which cometh out of the man, that defileth the man."

Mark 9:1: "And he said unto them, Verily I say unto you, That there be some of them that stand here, which shall not taste of death, till they have seen the kingdom of God come with power."

Mark 9:17: "And one of the multitude answered and said, Master, I have brought unto thee my son, which hath a dumb spirit;"

Mark 9:39: "But Jesus said, Forbid him not: for there is no man which shall do a miracle in my name, that can lightly speak evil of me."



Mark 10:42: "But Jesus called them to him, and saith unto them, Ye know that they which are accounted to rule over the Gentiles exercise lordship over them; and their great ones exercise authority upon them."

Mark 11:21: "And Peter calling to remembrance saith unto him, Master, behold, the fig tree which thou cursedst is withered away."

Mark 11:23: "For verily I say unto you, That whosoever shall say unto this mountain, Be thou removed, and be thou cast into the sea; and shall not doubt in his heart, but shall believe that those things which he saith shall come to pass; he shall have whatsoever he saith."

Mark 11:25: "And when ye stand praying, forgive, if ye have ought against any: that your Father also which is in heaven may forgive you your trespasses."

Mark 11:26: "But if ye do not forgive, neither will your Father which is in heaven forgive your trespasses."

Mark 12:10: "And have ye not read this scripture; The stone which the builders rejected is become the head of the corner:"

Mark 12:18: "Then come unto him the Sadducees, which say there is no resurrection; and they asked him, saying,"

Mark 12:25: "For when they shall rise from the dead, they neither marry, nor are given in marriage; but are as the angels which are in heaven."

Mark 12:28: "And one of the scribes came, and having heard them reasoning together, and perceiving that he had answered them well, asked him, Which is the first commandment of all?"

Mark 12:38: "And he said unto them in his doctrine, Beware of the scribes, which love to go in long clothing, and love salutations in the marketplaces,"

Mark 12:40: "Which devour widows' houses, and for a pretence make long prayers: these shall receive greater damnation."

Mark 12:42: "And there came a certain poor widow, and she threw in two mites, which make a farthing."

Mark 12:43: "And he called unto him his disciples, and saith unto them, Verily I say unto you, That this poor widow hath cast more in, than all they which have cast into the treasury:"

Mark 13:19: "For in those days shall be affliction, such as was not from the beginning of the creation which God created unto this time, neither shall be."

Mark 13:32: "But of that day and that hour knoweth no man, no, not the angels which are in heaven, neither the Son, but the Father."

Mark 14:18: "And as they sat and did eat, Jesus said, Verily I say unto you, One of you which eateth with me shall betray me."

Mark 14:24: "And he said unto them, This is my blood of the new testament, which is shed for many."

Mark 14:32: "And they came to a place which was named Gethsemane: and he saith to his disciples, Sit ye here, while I shall pray."

Mark 14:60: "And the high priest stood up in the midst, and asked Jesus, saying, Answerest thou nothing? what is it which these witness against thee?"

Mark 15:7: "And there was one named Barabbas, which lay bound with them that had made insurrection with him, who had committed murder in the insurrection."

Mark 15:22: "And they bring him unto the place Golgotha, which is, being interpreted, The place of a skull."

Mark 15:28: "And the scripture was fulfilled, which saith, And he was numbered with the transgressors."

Mark 15:34: "And at the ninth hour Jesus cried with a loud voice, saying, Eloi, Eloi, lama sabachthani? which is, being interpreted, My God, my God, why hast thou forsaken me?"

Mark 15:39: "And when the centurion, which stood over against him, saw that he so cried out, and gave up the ghost, he said, Truly this man was the Son of God."

Mark 15:41: "(Who also, when he was in Galilee, followed him, and ministered unto him;) and many other women which came up with him unto Jerusalem."

Mark 15:43: "Joseph of Arimathaea, an honourable counsellor, which also waited for the kingdom of God, came, and went in boldly unto Pilate, and craved the body of Jesus."

Mark 15:46: "And he bought fine linen, and took him down, and wrapped him in the linen, and laid him in a sepulchre which was hewn out of a rock, and rolled a stone unto the door of the sepulchre."

Mark 16:6: "And he saith unto them, Be not affrighted: Ye seek Jesus of Nazareth, which was crucified: he is risen; he is not here: behold the place where they laid him."

Mark 16:14: "Afterward he appeared unto the eleven as they sat at meat, and upbraided them with their unbelief and hardness of heart, because they believed not them which had seen him after he was risen."

Luke 1:1: "Forasmuch as many have taken in hand to set forth in order a declaration of those things which are most surely believed among us,"

Luke 1:2: "Even as they delivered them unto us, which from the beginning were eyewitnesses, and ministers of the word;"

Luke 1:20: "And, behold, thou shalt be dumb, and not able to speak, until the day that these things shall be performed, because thou believest not my words, which shall be fulfilled in their season."

Luke 1:35: "And the angel answered and said unto her, The Holy Ghost shall come upon thee, and the power of the Highest shall overshadow thee: therefore also that holy thing which shall be born of thee shall be called the Son of God."

Luke 1:45: "And blessed is she that believed: for there shall be a performance of those things which were told her from the Lord."

Luke 1:70: "As he spake by the mouth of his holy prophets, which have been since the world began:"

Luke 1:73: "The oath which he sware to our father Abraham,"

Luke 2:4: "And Joseph also went up from Galilee, out of the city of Nazareth, into Judaea, unto the city of David, which is called Bethlehem; (because he was of the house and lineage of David:)"

Luke 2:10: "And the angel said unto them, Fear not: for, behold, I bring you good tidings of great joy, which shall be to all people."

Luke 2:11: "For unto you is born this day in the city of David a Saviour, which is Christ the Lord."

Luke 2:15: "And it came to pass, as the angels were gone away from them into heaven, the shepherds said one to another, Let us now go even unto Bethlehem, and see this thing which is come to pass, which the Lord hath made known unto us."

Luke 2:17: "And when they had seen it, they made known abroad the saying which was told them concerning this child."

Luke 2:18: "And all they that heard it wondered at those things which were told them by the shepherds."

Luke 2:21: "And when eight days were accomplished for the circumcising of the child, his name was called JESUS, which was so named of the angel before he was conceived in the womb."

Luke 2:24: "And to offer a sacrifice according to that which is said in the law of the Lord, A pair of turtledoves, or two young pigeons."

Luke 2:31: "Which thou hast prepared before the face of all people;"

Luke 2:33: "And Joseph and his mother marvelled at those things which were spoken of him."

Luke 2:34: "And Simeon blessed them, and said unto Mary his mother, Behold, this child is set for the fall and rising again of many in Israel; and for a sign which shall be spoken against;"

Luke 2:37: "And she was a widow of about fourscore and four years, which departed not from the temple, but served God with fastings and prayers night and day."

Luke 2:50: "And they understood not the saying which he spake unto them."

Luke 3:9: "And now also the axe is laid unto the root of the trees: every tree therefore which bringeth not forth good fruit is hewn down, and cast into the fire."

Luke 3:13: "And he said unto them, Exact no more than that which is appointed you."

Luke 3:19: "But Herod the tetrarch, being reproved by him for Herodias his brother Philip's wife, and for all the evils which Herod had done,"

Luke 3:22: "And the Holy Ghost descended in a bodily shape like a dove upon him, and a voice came from heaven, which said, Thou art my beloved Son; in thee I am well pleased."

Luke 3:23: "And Jesus himself began to be about thirty years of age, being (as was supposed) the son of Joseph, which was the son of Heli,"

Luke 3:24: "Which was the son of Matthat, which was the son of Levi, which was the son of Melchi, which was the son of Janna, which was the son of Joseph,"

Luke 3:25: "Which was the son of Mattathias, which was the son of Amos, which was the son of Naum, which was the son of Esli, which was the son of Nagge,"

Luke 3:26: "Which was the son of Maath, which was the son of Mattathias, which was the son of Semei, which was the son of Joseph, which was the son of Juda,"

Luke 3:27: "Which was the son of Joanna, which was the son of Rhesa, which was the son of Zorobabel, which was the son of Salathiel, which was the son of Neri,"

Luke 3:28: "Which was the son of Melchi, which was the son of Addi, which was the son of Cosam, which was the son of Elmodam, which was the son of Er,"

Luke 3:29: "Which was the son of Jose, which was the son of Eliezer, which was the son of Jorim, which was the son of Matthat, which was the son of Levi,"

Luke 3:30: "Which was the son of Simeon, which was the son of Juda, which was the son of Joseph, which was the son of Jonan, which was the son of Eliakim,"

Luke 3:31: "Which was the son of Melea, which was the son of Menan, which was the son of Mattatha, which was the son of Nathan, which was the son of David,"

Luke 3:32: "Which was the son of Jesse, which was the son of Obed, which was the son of Booz, which was the son of Salmon, which was the son of Naasson,"

Luke 3:33: "Which was the son of Aminadab, which was the son of Aram, which was the son of Esrom, which was the son of Phares, which was the son of Juda,"

Luke 3:34: "Which was the son of Jacob, which was the son of Isaac, which was the son of Abraham, which was the son of Thara, which was the son of Nachor,"

Luke 3:35: "Which was the son of Saruch, which was the son of Ragau, which was the son of Phalec, which was the son of Heber, which was the son of Sala,"

Luke 3:36: "Which was the son of Cainan, which was the son of Arphaxad, which was the son of Sem, which was the son of Noe, which was the son of Lamech,"

Luke 3:37: "Which was the son of Mathusala, which was the son of Enoch, which was the son of Jared, which was the son of Maleleel, which was the son of Cainan,"

Luke 3:38: "Which was the son of Enos, which was the son of Seth, which was the son of Adam, which was the son of God."

Luke 4:22: "And all bare him witness, and wondered at the gracious words which proceeded out of his mouth. And they said, Is not this Joseph's son?"

Luke 4:33: "And in the synagogue there was a man, which had a spirit of an unclean devil, and cried out with a loud voice,"

Luke 5:3: "And he entered into one of the ships, which was Simon's, and prayed him that he would thrust out a little from the land. And he sat down, and taught the people out of the ship."

Luke 5:7: "And they beckoned unto their partners, which were in the other ship, that they should come and help them. And they came, and filled both the ships, so that they began to sink."

Luke 5:9: "For he was astonished, and all that were with him, at the draught of the fishes which they had taken:"

Luke 5:10: "And so was also James, and John, the sons of Zebedee, which were partners with Simon. And Jesus said unto Simon, Fear not; from henceforth thou shalt catch men."

Luke 5:17: "And it came to pass on a certain day, as he was teaching, that there were Pharisees and

doctors of the law sitting by, which were come out of every town of Galilee, and Judaea, and Jerusalem: and the power of the Lord was present to heal them."

Luke 5:18: "And, behold, men brought in a bed a man which was taken with a palsy: and they sought means to bring him in, and to lay him before him."

Luke 5:21: "And the scribes and the Pharisees began to reason, saying, Who is this which speaketh blasphemies? Who can forgive sins, but God alone?"

Luke 6:2: "And certain of the Pharisees said unto them, Why do ye that which is not lawful to do on the sabbath days?"

Luke 6:3: "And Jesus answering them said, Have ye not read so much as this, what David did, when himself was an hungred, and they which were with him;"

Luke 6:4: "How he went into the house of God, and did take and eat the shewbread, and gave also to them that were with him; which it is not lawful to eat but for the priests alone?"

Luke 6:8: "But he knew their thoughts, and said to the man which had the withered hand, Rise up, and stand forth in the midst. And he arose and stood forth."

Luke 6:16: "And Judas the brother of James, and Judas Iscariot, which also was the traitor."

Luke 6:17: "And he came down with them, and stood in the plain, and the company of his disciples, and a great multitude of people out of all Judaea and Jerusalem, and from the sea coast of Tyre and Sidon, which came to hear him, and to be healed of their diseases;"

Luke 6:27: "But I say unto you which hear, Love your enemies, do good to them which hate you,"

Luke 6:28: "Bless them that curse you, and pray for them which despitefully use you."

Luke 6:32: "For if ye love them which love you, what thank have ye? for sinners also love those that love them."

Luke 6:33: "And if ye do good to them which do good to you, what thank have ye? for sinners also do even the same."

Luke 6:45: "A good man out of the good treasure of his heart bringeth forth that which is good; and an evil man out of the evil treasure of his heart bringeth forth that which is evil: for of the abundance of the heart his mouth speaketh."

Luke 6:46: "And why call ye me, Lord, Lord, and do not the things which I say?"

Luke 6:48: "He is like a man which built an house, and digged deep, and laid the foundation on a rock: and when the flood arose, the stream beat vehemently upon that house, and could not shake it: for it was founded upon a rock."

Luke 6:49: "But he that heareth, and doeth not, is like a man that without a foundation built an house upon the earth; against which the stream did beat vehemently, and immediately it fell; and the ruin of that house was great."

Luke 7:25: "But what went ye out for to see? A man clothed in soft raiment? Behold, they which are gorgeously apparelled, and live delicately, are in kings' courts."

Luke 7:27: "This is he, of whom it is written, Behold, I send my messenger before thy face, which shall prepare thy way before thee."

Luke 7:37: "And, behold, a woman in the city, which was a sinner, when she knew that Jesus sat at meat in the Pharisee's house, brought an alabaster box of ointment,"

Luke 7:39: "Now when the Pharisee which had bidden him saw it, he spake within himself, saying, This man, if he were a prophet, would have known who and what manner of woman this is that toucheth him: for she is a sinner."

Luke 7:41: "There was a certain creditor which had two debtors: the one owed five hundred pence, and the other fifty."

Luke 7:42: "And when they had nothing to pay, he frankly forgave them both. Tell me therefore, which of them will love him most?"

Luke 7:47: "Wherefore I say unto thee, Her sins, which are many, are forgiven; for she loved much: but to whom little is forgiven, the same loveth little."

Luke 8:2: "And certain women, which had been healed of evil spirits and infirmities, Mary called

Magdalene, out of whom went seven devils,"

Luke 8:3: "And Joanna the wife of Chuza Herod's steward, and Susanna, and many others, which ministered unto him of their substance."

Luke 8:13: "They on the rock are they, which, when they hear, receive the word with joy; and these have no root, which for a while believe, and in time of temptation fall away."

Luke 8:14: "And that which fell among thorns are they, which, when they have heard, go forth, and are choked with cares and riches and pleasures of this life, and bring no fruit to perfection."

Luke 8:15: "But that on the good ground are they, which in an honest and good heart, having heard the word, keep it, and bring forth fruit with patience."

Luke 8:16: "No man, when he hath lighted a candle, covereth it with a vessel, or putteth it under a bed; but setteth it on a candlestick, that they which enter in may see the light."

Luke 8:18: "Take heed therefore how ye hear: for whosoever hath, to him shall be given; and whosoever hath not, from him shall be taken even that which he seemeth to have."

Luke 8:20: "And it was told him by certain which said, Thy mother and thy brethren stand without, desiring to see thee."

Luke 8:21: "And he answered and said unto them, My mother and my brethren are these which hear the word of God, and do it."

Luke 8:26: "And they arrived at the country of the Gadarenes, which is over against Galilee."

Luke 8:27: "And when he went forth to land, there met him out of the city a certain man, which had devils long time, and ware no clothes, neither abode in any house, but in the tombs."

Luke 8:36: "They also which saw it told them by what means he that was possessed of the devils was healed."

Luke 8:43: "And a woman having an issue of blood twelve years, which had spent all her living upon physicians, neither could be healed of any,"

Luke 9:27: "But I tell you of a truth, there be some standing here, which shall not taste of death, till they see the kingdom of God."

Luke 9:30: "And, behold, there talked with him two men, which were Moses and Elias:"

Luke 9:31: "Who appeared in glory, and spake of his decease which he should accomplish at Jerusalem."

Luke 9:36: "And when the voice was past, Jesus was found alone. And they kept it close, and told no man in those days any of those things which they had seen."

Luke 9:43: "And they were all amazed at the mighty power of God. But while they wondered every one at all things which Jesus did, he said unto his disciples,"

Luke 9:46: "Then there arose a reasoning among them, which of them should be greatest."

Luke 9:61: "And another also said, Lord, I will follow thee; but let me first go bid them farewell, which are at home at my house."

Luke 10:11: "Even the very dust of your city, which cleaveth on us, we do wipe off against you: notwithstanding be ye sure of this, that the kingdom of God is come nigh unto you."

Luke 10:13: "Woe unto thee, Chorazin! woe unto thee, Bethsaida! for if the mighty works had been done in Tyre and Sidon, which have been done in you, they had a great while ago repented, sitting in sackcloth and ashes."

Luke 10:15: "And thou, Capernaum, which art exalted to heaven, shalt be thrust down to hell."

Luke 10:23: "And he turned him unto his disciples, and said privately, Blessed are the eyes which see the things that ye see:"

Luke 10:24: "For I tell you, that many prophets and kings have desired to see those things which ye see, and have not seen them; and to hear those things which ye hear, and have not heard them."

Luke 10:30: "And Jesus answering said, A certain man went down from Jerusalem to Jericho, and fell among thieves, which stripped him of his raiment, and wounded him, and departed, leaving him half dead."

Luke 10:36: "Which now of these three, thinkest thou, was neighbour unto him that fell among the

thieves?"

Luke 10:39: "And she had a sister called Mary, which also sat at Jesus' feet, and heard his word."

Luke 10:42: "But one thing is needful: and Mary hath chosen that good part, which shall not be taken away from her."

Luke 11:2: "And he said unto them, When ye pray, say, Our Father which art in heaven, Hallowed be thy name. Thy kingdom come. Thy will be done, as in heaven, so in earth."

Luke 11:5: "And he said unto them, Which of you shall have a friend, and shall go unto him at midnight, and say unto him, Friend, lend me three loaves;"

Luke 11:27: "And it came to pass, as he spake these things, a certain woman of the company lifted up her voice, and said unto him, Blessed is the womb that bare thee, and the paps which thou hast sucked."

Luke 11:33: "No man, when he hath lighted a candle, putteth it in a secret place, neither under a bushel, but on a candlestick, that they which come in may see the light."

Luke 11:35: "Take heed therefore that the light which is in thee be not darkness."

Luke 11:40: "Ye fools, did not he that made that which is without make that which is within also?"

Luke 11:44: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye are as graves which appear not, and the men that walk over them are not aware of them."

Luke 11:50: "That the blood of all the prophets, which was shed from the foundation of the world, may be required of this generation;"

Luke 11:51: "From the blood of Abel unto the blood of Zacharias which perished between the altar and the temple: verily I say unto you, It shall be required of this generation."

Luke 12:1: "In the mean time, when there were gathered together an innumerable multitude of people, insomuch that they trode one upon another, he began to say unto his disciples first of all, Beware ye of the leaven of the Pharisees, which is hypocrisy."

Luke 12:3: "Therefore whatsoever ye have spoken in darkness shall be heard in the light; and that which ye have spoken in the ear in closets shall be proclaimed upon the housetops."

Luke 12:5: "But I will forewarn you whom ye shall fear: Fear him, which after he hath killed hath power to cast into hell; yea, I say unto you, Fear him."

Luke 12:15: "And he said unto them, Take heed, and beware of covetousness: for a man's life consisteth not in the abundance of the things which he possesseth."

Luke 12:20: "But God said unto him, Thou fool, this night thy soul shall be required of thee: then whose shall those things be, which thou hast provided?"

Luke 12:24: "Consider the ravens: for they neither sow nor reap; which neither have storehouse nor barn; and God feedeth them: how much more are ye better than the fowls?"

Luke 12:25: "And which of you with taking thought can add to his stature one cubit?"

Luke 12:26: "If ye then be not able to do that thing which is least, why take ye thought for the rest?"

Luke 12:28: "If then God so clothe the grass, which is to day in the field, and to morrow is cast into the oven; how much more will he clothe you, O ye of little faith?"

Luke 12:33: "Sell that ye have, and give alms; provide yourselves bags which wax not old, a treasure in the heavens that faileth not, where no thief approacheth, neither moth corrupteth."

Luke 12:47: "And that servant, which knew his lord's will, and prepared not himself, neither did according to his will, shall be beaten with many stripes."

Luke 13:11: "And, behold, there was a woman which had a spirit of infirmity eighteen years, and was bowed together, and could in no wise lift up herself."

Luke 13:14: "And the ruler of the synagogue answered with indignation, because that Jesus had healed on the sabbath day, and said unto the people, There are six days in which men ought to work: in them therefore come and be healed, and not on the sabbath day."

Luke 13:19: "It is like a grain of mustard seed, which a man took, and cast into his garden; and it grew, and waxed a great tree; and the fowls of the air lodged in the branches of it."

Luke 13:21: "It is like leaven, which a woman took and hid in three measures of meal, till the whole

was leavened."

Luke 13:30: "And, behold, there are last which shall be first, and there are first which shall be last."

Luke 13:34: "O Jerusalem, Jerusalem, which killest the prophets, and stonest them that are sent unto thee; how often would I have gathered thy children together, as a hen doth gather her brood under her wings, and ye would not!"

Luke 14:2: "And, behold, there was a certain man before him which had the dropsy."

Luke 14:5: "And answered them, saying, Which of you shall have an ass or an ox fallen into a pit, and will not straightway pull him out on the sabbath day?"

Luke 14:7: "And he put forth a parable to those which were bidden, when he marked how they chose out the chief rooms; saying unto them."

Luke 14:24: "For I say unto you, That none of those men which were bidden shall taste of my supper."

Luke 14:28: "For which of you, intending to build a tower, sitteth not down first, and counteth the cost, whether he have sufficient to finish it?"

Luke 15:4: "What man of you, having an hundred sheep, if he lose one of them, doth not leave the ninety and nine in the wilderness, and go after that which is lost, until he find it?"

Luke 15:6: "And when he cometh home, he calleth together his friends and neighbours, saying unto them, Rejoice with me; for I have found my sheep which was lost."

Luke 15:7: "I say unto you, that likewise joy shall be in heaven over one sinner that repenteth, more than over ninety and nine just persons, which need no repentance."

Luke 15:9: "And when she hath found it, she calleth her friends and her neighbours together, saying, Rejoice with me; for I have found the piece which I had lost."

Luke 15:30: "But as soon as this thy son was come, which hath devoured thy living with harlots, thou hast killed for him the fatted calf."

Luke 16:1: "And he said also unto his disciples, There was a certain rich man, which had a steward; and the same was accused unto him that he had wasted his goods."

Luke 16:10: "He that is faithful in that which is least is faithful also in much: and he that is unjust in the least is unjust also in much."

Luke 16:12: "And if ye have not been faithful in that which is another man's, who shall give you that which is your own?"

Luke 16:15: "And he said unto them, Ye are they which justify yourselves before men; but God knoweth your hearts: for that which is highly esteemed among men is abomination in the sight of God."

Luke 16:19: "There was a certain rich man, which was clothed in purple and fine linen, and fared sumptuously every day:"

Luke 16:20: "And there was a certain beggar named Lazarus, which was laid at his gate, full of sores,"

Luke 16:21: "And desiring to be fed with the crumbs which fell from the rich man's table: moreover the dogs came and licked his sores."

Luke 16:26: "And beside all this, between us and you there is a great gulf fixed: so that they which would pass from hence to you cannot; neither can they pass to us, that would come from thence."

Luke 17:7: "But which of you, having a servant plowing or feeding cattle, will say unto him by and by, when he is come from the field, Go and sit down to meat?"

Luke 17:10: "So likewise ye, when ye shall have done all those things which are commanded you, say, We are unprofitable servants: we have done that which was our duty to do."

Luke 17:12: "And as he entered into a certain village, there met him ten men that were lepers, which stood afar off:"

Luke 17:31: "In that day, he which shall be upon the housetop, and his stuff in the house, let him not come down to take it away: and he that is in the field, let him likewise not return back."

Luke 18:2: "Saying, There was in a city a judge, which feared not God, neither regarded man:"

Luke 18:7: "And shall not God avenge his own elect, which cry day and night unto him, though he bear long with them?"

Luke 18:9: "And he spake this parable unto certain which trusted in themselves that they were righteous, and despised others:"

Luke 18:27: "And he said, The things which are impossible with men are possible with God."

Luke 18:34: "And they understood none of these things: and this saying was hid from them, neither knew they the things which were spoken."

Luke 18:39: "And they which went before rebuked him, that he should hold his peace: but he cried so much the more, Thou son of David, have mercy on me."

Luke 19:2: "And, behold, there was a man named Zacchaeus, which was the chief among the publicans, and he was rich."

Luke 19:10: "For the Son of man is come to seek and to save that which was lost."

Luke 19:20: "And another came, saying, Lord, behold, here is thy pound, which I have kept laid up in a napkin:"

Luke 19:26: "For I say unto you, That unto every one which hath shall be given; and from him that hath not, even that he hath shall be taken away from him."

Luke 19:27: "But those mine enemies, which would not that I should reign over them, bring hither, and slay them before me."

Luke 19:30: "Saying, Go ye into the village over against you; in the which at your entering ye shall find a colt tied, whereon yet never man sat: loose him, and bring him hither."

Luke 19:42: "Saying, If thou hadst known, even thou, at least in this thy day, the things which belong unto thy peace! but now they are hid from thine eyes."

Luke 20:17: "And he beheld them, and said, What is this then that is written, The stone which the builders rejected, the same is become the head of the corner?"

Luke 20:20: "And they watched him, and sent forth spies, which should feign themselves just men, that they might take hold of his words, that so they might deliver him unto the power and authority of the governor."

Luke 20:25: "And he said unto them, Render therefore unto Caesar the things which be Caesar's, and unto God the things which be God's."

Luke 20:27: "Then came to him certain of the Sadducees, which deny that there is any resurrection; and they asked him,"

Luke 20:35: "But they which shall be accounted worthy to obtain that world, and the resurrection from the dead, neither marry, nor are given in marriage:"

Luke 20:46: "Beware of the scribes, which desire to walk in long robes, and love greetings in the markets, and the highest seats in the synagogues, and the chief rooms at feasts;"

Luke 20:47: "Which devour widows' houses, and for a shew make long prayers: the same shall receive greater damnation."

Luke 21:6: "As for these things which ye behold, the days will come, in the which there shall not be left one stone upon another, that shall not be thrown down."

Luke 21:15: "For I will give you a mouth and wisdom, which all your adversaries shall not be able to gainsay nor resist."

Luke 21:21: "Then let them which are in Judaea flee to the mountains; and let them which are in the midst of it depart out; and let not them that are in the countries enter thereinto."

Luke 21:22: "For these be the days of vengeance, that all things which are written may be fulfilled."

Luke 21:26: "Men's hearts failing them for fear, and for looking after those things which are coming on the earth: for the powers of heaven shall be shaken."

Luke 22:1: "Now the feast of unleavened bread drew nigh, which is called the Passover."

Luke 22:19: "And he took bread, and gave thanks, and brake it, and gave unto them, saying, This is my body which is given for you: this do in remembrance of me."

Luke 22:20: "Likewise also the cup after supper, saying, This cup is the new testament in my blood,



which is shed for you."

Luke 22:23: "And they began to enquire among themselves, which of them it was that should do this thing."

Luke 22:24: "And there was also a strife among them, which of them should be accounted the greatest."

Luke 22:28: "Ye are they which have continued with me in my temptations."

Luke 22:49: "When they which were about him saw what would follow, they said unto him, Lord, shall we smite with the sword?"

Luke 22:52: "Then Jesus said unto the chief priests, and captains of the temple, and the elders, which were come to him, Be ye come out, as against a thief, with swords and staves?"

Luke 23:27: "And there followed him a great company of people, and of women, which also bewailed and lamented him."

Luke 23:29: "For, behold, the days are coming, in the which they shall say, Blessed are the barren, and the wombs that never bare, and the paps which never gave suck."

Luke 23:33: "And when they were come to the place, which is called Calvary, there they crucified him, and the malefactors, one on the right hand, and the other on the left."

Luke 23:39: "And one of the malefactors which were hanged railed on him, saying, If thou be Christ, save thyself and us."

Luke 23:48: "And all the people that came together to that sight, beholding the things which were done, smote their breasts, and returned."

Luke 23:55: "And the women also, which came with him from Galilee, followed after, and beheld the sepulchre, and how his body was laid."

Luke 24:1: "Now upon the first day of the week, very early in the morning, they came unto the sepulchre, bringing the spices which they had prepared, and certain others with them."

Luke 24:10: "It was Mary Magdalene and Joanna, and Mary the mother of James, and other women that were with them, which told these things unto the apostles."

Luke 24:12: "Then arose Peter, and ran unto the sepulchre; and stooping down, he beheld the linen clothes laid by themselves, and departed, wondering in himself at that which was come to pass."

Luke 24:13: "And, behold, two of them went that same day to a village called Emmaus, which was from Jerusalem about threescore furlongs."

Luke 24:14: "And they talked together of all these things which had happened."

Luke 24:18: "And the one of them, whose name was Cleopas, answering said unto him, Art thou only a stranger in Jerusalem, and hast not known the things which are come to pass there in these days?"

Luke 24:19: "And he said unto them, What things? And they said unto him, Concerning Jesus of Nazareth, which was a prophet mighty in deed and word before God and all the people:"

Luke 24:21: "But we trusted that it had been he which should have redeemed Israel: and beside all this, to day is the third day since these things were done."

Luke 24:22: "Yea, and certain women also of our company made us astonished, which were early at the sepulchre;"

Luke 24:23: "And when they found not his body, they came, saying, that they had also seen a vision of angels, which said that he was alive."

Luke 24:24: "And certain of them which were with us went to the sepulchre, and found it even so as the women had said: but him they saw not."

Luke 24:44: "And he said unto them, These are the words which I spake unto you, while I was yet with you, that all things must be fulfilled, which were written in the law of Moses, and in the prophets, and in the psalms, concerning me."

John 1:9: "That was the true Light, which lighteth every man that cometh into the world."

John 1:13: "Which were born, not of blood, nor of the will of the flesh, nor of the will of man, but of God."

John 1:18: "No man hath seen God at any time, the only begotten Son, which is in the bosom of the Father, he hath declared him."

John 1:24: "And they which were sent were of the Pharisees."

John 1:29: "The next day John seeth Jesus coming unto him, and saith, Behold the Lamb of God, which taketh away the sin of the world."

John 1:30: "This is he of whom I said, After me cometh a man which is preferred before me: for he was before me."

John 1:33: "And I knew him not: but he that sent me to baptize with water, the same said unto me, Upon whom thou shalt see the Spirit descending, and remaining on him, the same is he which baptizeth with the Holy Ghost."

John 1:38: "Then Jesus turned, and saw them following, and saith unto them, What seek ye? They said unto him, Rabbi, (which is to say, being interpreted, Master,) where dwellest thou?"

John 1:40: "One of the two which heard John speak, and followed him, was Andrew, Simon Peter's brother."

John 1:41: "He first findeth his own brother Simon, and saith unto him, We have found the Messias, which is, being interpreted, the Christ."

John 1:42: "And he brought him to Jesus. And when Jesus beheld him, he said, Thou art Simon the son of Jona: thou shalt be called Cephas, which is by interpretation, A stone."

John 2:9: "When the ruler of the feast had tasted the water that was made wine, and knew not whence it was: (but the servants which drew the water knew;) the governor of the feast called the bridegroom,"

John 2:10: "And saith unto him, Every man at the beginning doth set forth good wine; and when men have well drunk, then that which is worse: but thou hast kept the good wine until now."

John 2:22: "When therefore he was risen from the dead, his disciples remembered that he had said this unto them; and they believed the scripture, and the word which Jesus had said."

John 2:23: "Now when he was in Jerusalem at the passover, in the feast day, many believed in his name, when they saw the miracles which he did."

John 3:6: "That which is born of the flesh is flesh; and that which is born of the Spirit is spirit."

John 3:13: "And no man hath ascended up to heaven, but he that came down from heaven, even the Son of man which is in heaven."

John 3:29: "He that hath the bride is the bridegroom: but the friend of the bridegroom, which standeth and heareth him, rejoiceth greatly because of the bridegroom's voice: this my joy therefore is fulfilled."

John 4:5: "Then cometh he to a city of Samaria, which is called Sychar, near to the parcel of ground that Jacob gave to his son Joseph."

John 4:9: "Then saith the woman of Samaria unto him, How is it that thou, being a Jew, askest drink of me, which am a woman of Samaria? for the Jews have no dealings with the Samaritans."

John 4:12: "Art thou greater than our father Jacob, which gave us the well, and drank thereof himself, and his children, and his cattle?"

John 4:25: "The woman saith unto him, I know that Messias cometh, which is called Christ: when he is come, he will tell us all things."

John 4:29: "Come, see a man, which told me all things that ever I did: is not this the Christ?"

John 4:39: "And many of the Samaritans of that city believed on him for the saying of the woman, which testified, He told me all that ever I did."

John 4:53: "So the father knew that it was at the same hour, in the which Jesus said unto him, Thy son liveth: and himself believed, and his whole house."

John 5:2: "Now there is at Jerusalem by the sheep market a pool, which is called in the Hebrew tongue Bethesda, having five porches."

John 5:5: "And a certain man was there, which had an infirmity thirty and eight years."

John 5:12: "Then asked they him, What man is that which said unto thee, Take up thy bed, and

walk?"

John 5:15: "The man departed, and told the Jews that it was Jesus, which had made him whole."

John 5:23: "That all men should honour the Son, even as they honour the Father. He that honoureth not the Son honoureth not the Father which hath sent him."

John 5:28: "Marvel not at this: for the hour is coming, in the which all that are in the graves shall hear his voice,"

John 5:30: "I can of mine own self do nothing: as I hear, I judge: and my judgment is just; because I seek not mine own will, but the will of the Father which hath sent me."

John 5:32: "There is another that beareth witness of me; and I know that the witness which he witnesseth of me is true."

John 5:36: "But I have greater witness than that of John: for the works which the Father hath given me to finish, the same works that I do, bear witness of me, that the Father hath sent me."

John 5:37: "And the Father himself, which hath sent me, hath borne witness of me. Ye have neither heard his voice at any time, nor seen his shape."

John 5:39: "Search the scriptures; for in them ye think ye have eternal life: and they are they which testify of me."

John 5:44: "How can ye believe, which receive honour one of another, and seek not the honour that cometh from God only?"

John 6:1: "After these things Jesus went over the sea of Galilee, which is the sea of Tiberias."

John 6:2: "And a great multitude followed him, because they saw his miracles which he did on them that were diseased."

John 6:9: "There is a lad here, which hath five barley loaves, and two small fishes: but what are they among so many?"

John 6:13: "Therefore they gathered them together, and filled twelve baskets with the fragments of the five barley loaves, which remained over and above unto them that had eaten."

John 6:22: "The day following, when the people which stood on the other side of the sea saw that there was none other boat there, save that one whereinto his disciples were entered, and that Jesus went not with his disciples into the boat, but that his disciples were gone away alone;"

John 6:27: "Labour not for the meat which perisheth, but for that meat which endureth unto everlasting life, which the Son of man shall give unto you: for him hath God the Father sealed."

John 6:33: "For the bread of God is he which cometh down from heaven, and giveth life unto the world."

John 6:39: "And this is the Father's will which hath sent me, that of all which he hath given me I should lose nothing, but should raise it up again at the last day."

John 6:40: "And this is the will of him that sent me, that every one which seeth the Son, and believeth on him, may have everlasting life: and I will raise him up at the last day."

John 6:41: "The Jews then murmured at him, because he said, I am the bread which came down from heaven."

John 6:44: "No man can come to me, except the Father which hath sent me draw him: and I will raise him up at the last day."

John 6:46: "Not that any man hath seen the Father, save he which is of God, he hath seen the Father."

John 6:50: "This is the bread which cometh down from heaven, that a man may eat thereof, and not die."

John 6:51: "I am the living bread which came down from heaven: if any man eat of this bread, he shall live for ever: and the bread that I will give is my flesh, which I will give for the life of the world."

John 6:58: "This is that bread which came down from heaven: not as your fathers did eat manna, and are dead: he that eateth of this bread shall live for ever."

John 7:31: "And many of the people believed on him, and said, When Christ cometh, will he do

more miracles than these which this man hath done?"

John 7:39: "(But this spake he of the Spirit, which they that believe on him should receive: for the Holy Ghost was not yet given; because that Jesus was not yet glorified.)"

John 8:9: "And they which heard it, being convicted by their own conscience, went out one by one, beginning at the eldest, even unto the last: and Jesus was left alone, and the woman standing in the midst."

John 8:26: "I have many things to say and to judge of you: but he that sent me is true; and I speak to the world those things which I have heard of him."

John 8:31: "Then said Jesus to those Jews which believed on him, If ye continue in my word, then are ye my disciples indeed;"

John 8:38: "I speak that which I have seen with my Father: and ye do that which ye have seen with your father."

John 8:40: "But now ye seek to kill me, a man that hath told you the truth, which I have heard of God: this did not Abraham."

John 8:46: "Which of you convinceth me of sin? And if I say the truth, why do ye not believe me?"

John 8:53: "Art thou greater than our father Abraham, which is dead? and the prophets are dead: whom makest thou thyself?"

John 9:1: "And as Jesus passed by, he saw a man which was blind from his birth."

John 9:7: "And said unto him, Go, wash in the pool of Siloam, (which is by interpretation, Sent.) He went his way therefore, and washed, and came seeing."

John 9:8: "The neighbours therefore, and they which before had seen him that he was blind, said, Is not this he that sat and begged?"

John 9:39: "And Jesus said, For judgment I am come into this world, that they which see not might see; and that they which see might be made blind."

John 9:40: "And some of the Pharisees which were with him heard these words, and said unto him, Are we blind also?"

John 10:6: "This parable spake Jesus unto them: but they understood not what things they were which he spake unto them."

John 10:16: "And other sheep I have, which are not of this fold: them also I must bring, and they shall hear my voice; and there shall be one fold, and one shepherd."

John 10:29: "My Father, which gave them me, is greater than all; and no man is able to pluck them out of my Father's hand."

John 10:32: "Jesus answered them, Many good works have I shewed you from my Father; for which of those works do ye stone me?"

John 11:2: "(It was that Mary which anointed the Lord with ointment, and wiped his feet with her hair, whose brother Lazarus was sick.)"

John 11:16: "Then said Thomas, which is called Didymus, unto his fellowdisciples, Let us also go, that we may die with him."

John 11:27: "She saith unto him, Yea, Lord: I believe that thou art the Christ, the Son of God, which should come into the world."

John 11:31: "The Jews then which were with her in the house, and comforted her, when they saw Mary, that she rose up hastily and went out, followed her, saying, She goeth unto the grave to weep there."

John 11:33: "When Jesus therefore saw her weeping, and the Jews also weeping which came with her, he groaned in the spirit, and was troubled."

John 11:37: "And some of them said, Could not this man, which opened the eyes of the blind, have caused that even this man should not have died?"

John 11:42: "And I knew that thou hearest me always: but because of the people which stand by I said it, that they may believe that thou hast sent me."

John 11:45: "Then many of the Jews which came to Mary, and had seen the things which Jesus did,

believed on him."

John 12:1: "Then Jesus six days before the passover came to Bethany, where Lazarus was, which had been dead, whom he raised from the dead."

John 12:4: "Then saith one of his disciples, Judas Iscariot, Simon's son, which should betray him,"

John 12:21: "The same came therefore to Philip, which was of Bethsaida of Galilee, and desired him, saying, Sir, we would see Jesus."

John 12:38: "That the saying of Esaias the prophet might be fulfilled, which he spake, Lord, who hath believed our report? and to whom hath the arm of the Lord been revealed?"

John 12:49: "For I have not spoken of myself; but the Father which sent me, he gave me a commandment, what I should say, and what I should speak."

John 13:1: "Now before the feast of the passover, when Jesus knew that his hour was come that he should depart out of this world unto the Father, having loved his own which were in the world, he loved them unto the end."

John 14:24: "He that loveth me not keepeth not my sayings: and the word which ye hear is not mine, but the Father's which sent me."

John 14:26: "But the Comforter, which is the Holy Ghost, whom the Father will send in my name, he shall teach you all things, and bring all things to your remembrance, whatsoever I have said unto you."

John 15:3: "Now ye are clean through the word which I have spoken unto you."

John 15:24: "If I had not done among them the works which none other man did, they had not had sin: but now have they both seen and hated both me and my Father."

John 15:26: "But when the Comforter is come, whom I will send unto you from the Father, even the Spirit of truth, which proceedeth from the Father, he shall testify of me:"

John 17:4: "I have glorified thee on the earth: I have finished the work which thou gavest me to do."

John 17:5: "And now, O Father, glorify thou me with thine own self with the glory which I had with thee before the world was."

John 17:6: "I have manifested thy name unto the men which thou gavest me out of the world: thine they were, and thou gavest them me; and they have kept thy word."

John 17:8: "For I have given unto them the words which thou gavest me; and they have received them, and have known surely that I came out from thee, and they have believed that thou didst send me."

John 17:9: "I pray for them: I pray not for the world, but for them which thou hast given me; for they are thine."

John 17:20: "Neither pray I for these alone, but for them also which shall believe on me through their word;"

John 17:22: "And the glory which thou gavest me I have given them; that they may be one, even as we are one:"

John 17:24: "Father, I will that they also, whom thou hast given me, be with me where I am; that they may behold my glory, which thou hast given me: for thou lovedst me before the foundation of the world."

John 18:1: "When Jesus had spoken these words, he went forth with his disciples over the brook Cedron, where was a garden, into the which he entered, and his disciples."

John 18:2: "And Judas also, which betrayed him, knew the place: for Jesus oftentimes resorted thither with his disciples."

John 18:5: "They answered him, Jesus of Nazareth. Jesus saith unto them, I am he. And Judas also, which betrayed him, stood with them."

John 18:9: "That the saying might be fulfilled, which he spake, Of them which thou gavest me have I lost none."

John 18:11: "Then said Jesus unto Peter, Put up thy sword into the sheath: the cup which my Father hath given me, shall I not drink it?"

John 18:13: "And led him away to Annas first; for he was father in law to Caiaphas, which was the high priest that same year."

John 18:14: "Now Caiaphas was he, which gave counsel to the Jews, that it was expedient that one man should die for the people."

John 18:16: "But Peter stood at the door without. Then went out that other disciple, which was known unto the high priest, and spake unto her that kept the door, and brought in Peter."

John 18:21: "Why askest thou me? ask them which heard me, what I have said unto them: behold, they know what I said."

John 18:22: "And when he had thus spoken, one of the officers which stood by struck Jesus with the palm of his hand, saying, Answerest thou the high priest so?"

John 18:32: "That the saying of Jesus might be fulfilled, which he spake, signifying what death he should die."

John 19:17: "And he bearing his cross went forth into a place called the place of a skull, which is called in the Hebrew Golgotha:"

John 19:24: "They said therefore among themselves, Let us not rend it, but cast lots for it, whose it shall be: that the scripture might be fulfilled, which saith, They parted my raiment among them, and for my vesture they did cast lots. These things therefore the soldiers did."

John 19:32: "Then came the soldiers, and brake the legs of the first, and of the other which was crucified with him."

John 19:39: "And there came also Nicodemus, which at the first came to Jesus by night, and brought a mixture of myrrh and aloes, about an hundred pound weight."

John 20:8: "Then went in also that other disciple, which came first to the sepulchre, and he saw, and believed."

John 20:16: "Jesus saith unto her, Mary. She turned herself, and saith unto him, Rabboni; which is to say, Master."

John 20:30: "And many other signs truly did Jesus in the presence of his disciples, which are not written in this book:"

John 21:10: "Jesus saith unto them, Bring of the fish which ye have now caught."

John 21:20: "Then Peter, turning about, seeth the disciple whom Jesus loved following; which also leaned on his breast at supper, and said, Lord, which is he that betrayeth thee?"

John 21:24: "This is the disciple which testifieth of these things, and wrote these things: and we know that his testimony is true."

John 21:25: "And there are also many other things which Jesus did, the which, if they should be written every one, I suppose that even the world itself could not contain the books that should be written. Amen."

Acts 1:2: "Until the day in which he was taken up, after that he through the Holy Ghost had given commandments unto the apostles whom he had chosen:"

Acts 1:4: "And, being assembled together with them, commanded them that they should not depart from Jerusalem, but wait for the promise of the Father, which, saith he, ye have heard of me."

Acts 1:7: "And he said unto them, It is not for you to know the times or the seasons, which the Father hath put in his own power."

Acts 1:11: "Which also said, Ye men of Galilee, why stand ye gazing up into heaven? this same Jesus, which is taken up from you into heaven, shall so come in like manner as ye have seen him go into heaven."

Acts 1:12: "Then returned they unto Jerusalem from the mount called Olivet, which is from Jerusalem a sabbath day's journey."

Acts 1:16: "Men and brethren, this scripture must needs have been fulfilled, which the Holy Ghost by the mouth of David spake before concerning Judas, which was guide to them that took Jesus."

Acts 1:21: "Wherefore of these men which have companied with us all the time that the Lord Jesus went in and out among us,"

Acts 1:24: "And they prayed, and said, Thou, Lord, which knowest the hearts of all men, shew whether of these two thou hast chosen,"

Acts 1:25: "That he may take part of this ministry and apostleship, from which Judas by transgression fell, that he might go to his own place."

Acts 2:7: "And they were all amazed and marvelled, saying one to another, Behold, are not all these which speak Galilaeans?"

Acts 2:16: "But this is that which was spoken by the prophet Joel;"

Acts 2:22: "Ye men of Israel, hear these words; Jesus of Nazareth, a man approved of God among you by miracles and wonders and signs, which God did by him in the midst of you, as ye yourselves also know:"

Acts 2:33: "Therefore being by the right hand of God exalted, and having received of the Father the promise of the Holy Ghost, he hath shed forth this, which ye now see and hear."

Acts 3:2: "And a certain man lame from his mother's womb was carried, whom they laid daily at the gate of the temple which is called Beautiful, to ask alms of them that entered into the temple;"

Acts 3:10: "And they knew that it was he which sat for alms at the Beautiful gate of the temple: and they were filled with wonder and amazement at that which had happened unto him."

Acts 3:11: "And as the lame man which was healed held Peter and John, all the people ran together unto them in the porch that is called Solomon's, greatly wondering."

Acts 3:16: "And his name through faith in his name hath made this man strong, whom ye see and know: yea, the faith which is by him hath given him this perfect soundness in the presence of you all."

Acts 3:18: "But those things, which God before had shewed by the mouth of all his prophets, that Christ should suffer, he hath so fulfilled."

Acts 3:20: "And he shall send Jesus Christ, which before was preached unto you:"

Acts 3:21: "Whom the heaven must receive until the times of restitution of all things, which God hath spoken by the mouth of all his holy prophets since the world began."

Acts 3:23: "And it shall come to pass, that every soul, which will not hear that prophet, shall be destroyed from among the people."

Acts 3:25: "Ye are the children of the prophets, and of the covenant which God made with our fathers, saying unto Abraham, And in thy seed shall all the kindreds of the earth be blessed."

Acts 4:4: "Howbeit many of them which heard the word believed; and the number of the men was about five thousand."

Acts 4:11: "This is the stone which was set at nought of you builders, which is become the head of the corner."

Acts 4:14: "And beholding the man which was healed standing with them, they could say nothing against it."

Acts 4:20: "For we cannot but speak the things which we have seen and heard."

Acts 4:21: "So when they had further threatened them, they let them go, finding nothing how they might punish them, because of the people: for all men glorified God for that which was done."

Acts 4:24: "And when they heard that, they lifted up their voice to God with one accord, and said, Lord, thou art God, which hast made heaven, and earth, and the sea, and all that in them is:"

Acts 4:32: "And the multitude of them that believed were of one heart and of one soul: neither said any of them that ought of the things which he possessed was his own; but they had all things common."

Acts 4:36: "And Joses, who by the apostles was surnamed Barnabas, (which is, being interpreted, The son of consolation,) a Levite, and of the country of Cyprus,"

Acts 5:9: "Then Peter said unto her, How is it that ye have agreed together to tempt the Spirit of the Lord? behold, the feet of them which have buried thy husband are at the door, and shall carry thee out."

Acts 5:16: "There came also a multitude out of the cities round about unto Jerusalem, bringing sick

folks, and them which were vexed with unclean spirits: and they were healed every one."

Acts 5:17: "Then the high priest rose up, and all they that were with him, (which is the sect of the Sadducees,) and were filled with indignation,"

Acts 6:9: "Then there arose certain of the synagogue, which is called the synagogue of the Libertines, and Cyrenians, and Alexandrians, and of them of Cilicia and of Asia, disputing with Stephen."

Acts 6:10: "And they were not able to resist the wisdom and the spirit by which he spake."

Acts 6:11: "Then they suborned men, which said, We have heard him speak blasphemous words against Moses, and against God."

Acts 6:13: "And set up false witnesses, which said, This man ceaseth not to speak blasphemous words against this holy place, and the law:"

Acts 6:14: "For we have heard him say, that this Jesus of Nazareth shall destroy this place, and shall change the customs which Moses delivered us."

Acts 7:3: "And said unto him, Get thee out of thy country, and from thy kindred, and come into the land which I shall shew thee."

Acts 7:17: "But when the time of the promise drew nigh, which God had sworn to Abraham, the people grew and multiplied in Egypt,"

Acts 7:18: "Till another king arose, which knew not Joseph."

Acts 7:20: "In which time Moses was born, and was exceeding fair, and nourished up in his father's house three months:"

Acts 7:34: "I have seen, I have seen the affliction of my people which is in Egypt, and I have heard their groaning, and am come down to deliver them. And now come, I will send thee into Egypt."

Acts 7:35: "This Moses whom they refused, saying, Who made thee a ruler and a judge? the same did God send to be a ruler and a deliverer by the hand of the angel which appeared to him in the bush."

Acts 7:37: "This is that Moses, which said unto the children of Israel, A prophet shall the Lord your God raise up unto you of your brethren, like unto me; him shall ye hear."

Acts 7:38: "This is he, that was in the church in the wilderness with the angel which spake to him in the mount Sina, and with our fathers: who received the lively oracles to give unto us:"

Acts 7:40: "Saying unto Aaron, Make us gods to go before us: for as for this Moses, which brought us out of the land of Egypt, we wot not what is become of him."

Acts 7:43: "Yea, ye took up the tabernacle of Moloch, and the star of your god Remphan, figures which ye made to worship them: and I will carry you away beyond Babylon."

Acts 7:45: "Which also our fathers that came after brought in with Jesus into the possession of the Gentiles, whom God drave out before the face of our fathers, unto the days of David;"

Acts 7:52: "Which of the prophets have not your fathers persecuted? and they have slain them which shewed before of the coming of the Just One; of whom ye have been now the betrayers and murderers:"

Acts 8:1: "And Saul was consenting unto his death. And at that time there was a great persecution against the church which was at Jerusalem; and they were all scattered abroad throughout the regions of Judaea and Samaria, except the apostles."

Acts 8:6: "And the people with one accord gave heed unto those things which Philip spake, hearing and seeing the miracles which he did."

Acts 8:9: "But there was a certain man, called Simon, which beforetime in the same city used sorcery, and bewitched the people of Samaria, giving out that himself was some great one:"

Acts 8:13: "Then Simon himself believed also: and when he was baptized, he continued with Philip, and wondered, beholding the miracles and signs which were done."

Acts 8:14: "Now when the apostles which were at Jerusalem heard that Samaria had received the word of God, they sent unto them Peter and John:"

Acts 8:24: "Then answered Simon, and said, Pray ye to the LORD for me, that none of these things



which ye have spoken come upon me."

Acts 8:26: "And the angel of the Lord spake unto Philip, saying, Arise, and go toward the south unto the way that goeth down from Jerusalem unto Gaza, which is desert."

Acts 8:32: "The place of the scripture which he read was this, He was led as a sheep to the slaughter; and like a lamb dumb before his shearer, so opened he not his mouth:"

Acts 9:7: "And the men which journeyed with him stood speechless, hearing a voice, but seeing no man."

Acts 9:11: "And the Lord said unto him, Arise, and go into the street which is called Straight, and enquire in the house of Judas for one called Saul, of Tarsus: for, behold, he prayeth,"

Acts 9:19: "And when he had received meat, he was strengthened. Then was Saul certain days with the disciples which were at Damascus."

Acts 9:21: "But all that heard him were amazed, and said; Is not this he that destroyed them which called on this name in Jerusalem, and came hither for that intent, that he might bring them bound unto the chief priests?"

Acts 9:22: "But Saul increased the more in strength, and confounded the Jews which dwelt at Damascus, proving that this is very Christ."

Acts 9:30: "Which when the brethren knew, they brought him down to Caesarea, and sent him forth to Tarsus."

Acts 9:32: "And it came to pass, as Peter passed throughout all quarters, he came down also to the saints which dwelt at Lydda."

Acts 9:33: "And there he found a certain man named Aeneas, which had kept his bed eight years, and was sick of the palsy."

Acts 9:36: "Now there was at Joppa a certain disciple named Tabitha, which by interpretation is called Dorcas: this woman was full of good works and almsdeeds which she did."

Acts 9:39: "Then Peter arose and went with them. When he was come, they brought him into the upper chamber: and all the widows stood by him weeping, and shewing the coats and garments which Dorcas made, while she was with them."

Acts 10:2: "A devout man, and one that feared God with all his house, which gave much alms to the people, and prayed to God alway."

Acts 10:7: "And when the angel which spake unto Cornelius was departed, he called two of his household servants, and a devout soldier of them that waited on him continually;"

Acts 10:17: "Now while Peter doubted in himself what this vision which he had seen should mean, behold, the men which were sent from Cornelius had made enquiry for Simon's house, and stood before the gate,"

Acts 10:18: "And called, and asked whether Simon, which was surnamed Peter, were lodged there."

Acts 10:21: "Then Peter went down to the men which were sent unto him from Cornelius; and said, Behold, I am he whom ye seek: what is the cause wherefore ye are come?"

Acts 10:36: "The word which God sent unto the children of Israel, preaching peace by Jesus Christ: (he is Lord of all:)"

Acts 10:37: "That word, I say, ye know, which was published throughout all Judaea, and began from Galilee, after the baptism which John preached;"

Acts 10:39: "And we are witnesses of all things which he did both in the land of the Jews, and in Jerusalem; whom they slew and hanged on a tree:"

Acts 10:42: "And he commanded us to preach unto the people, and to testify that it is he which was ordained of God to be the Judge of quick and dead."

Acts 10:44: "While Peter yet spake these words, the Holy Ghost fell on all them which heard the word."

Acts 10:45: "And they of the circumcision which believed were astonished, as many as came with Peter, because that on the Gentiles also was poured out the gift of the Holy Ghost."

Acts 10:47: "Can any man forbid water, that these should not be baptized, which have received the

Holy Ghost as well as we?"

Acts 11:6: "Upon the which when I had fastened mine eyes, I considered, and saw fourfooted beasts of the earth, and wild beasts, and creeping things, and fowls of the air."

Acts 11:13: "And he shewed us how he had seen an angel in his house, which stood and said unto him, Send men to Joppa, and call for Simon, whose surname is Peter;"

Acts 11:19: "Now they which were scattered abroad upon the persecution that arose about Stephen travelled as far as Phenice, and Cyprus, and Antioch, preaching the word to none but unto the Jews only."

Acts 11:20: "And some of them were men of Cyprus and Cyrene, which, when they were come to Antioch, spake unto the Grecians, preaching the LORD Jesus."

Acts 11:22: "Then tidings of these things came unto the ears of the church which was in Jerusalem: and they sent forth Barnabas, that he should go as far as Antioch."

Acts 11:28: "And there stood up one of them named Agabus, and signified by the Spirit that there should be great dearth throughout all the world: which came to pass in the days of Claudius Caesar."

Acts 11:29: "Then the disciples, every man according to his ability, determined to send relief unto the brethren which dwelt in Judaea:"

Acts 11:30: "Which also they did, and sent it to the elders by the hands of Barnabas and Saul."

Acts 12:9: "And he went out, and followed him; and wist not that it was true which was done by the angel; but thought he saw a vision."

Acts 12:10: "When they were past the first and the second ward, they came unto the iron gate that leadeth unto the city; which opened to them of his own accord: and they went out, and passed on through one street; and forthwith the angel departed from him."

Acts 13:1: "Now there were in the church that was at Antioch certain prophets and teachers; as Barnabas, and Simeon that was called Niger, and Lucius of Cyrene, and Manaen, which had been brought up with Herod the tetrarch, and Saul."

Acts 13:7: "Which was with the deputy of the country, Sergius Paulus, a prudent man; who called for Barnabas and Saul, and desired to hear the word of God."

Acts 13:22: "And when he had removed him, he raised up unto them David to be their king; to whom also he gave their testimony, and said, I have found David the son of Jesse, a man after mine own heart, which shall fulfil all my will."

Acts 13:27: "For they that dwell at Jerusalem, and their rulers, because they knew him not, nor yet the voices of the prophets which are read every sabbath day, they have fulfilled them in condemning him."

Acts 13:31: "And he was seen many days of them which came up with him from Galilee to Jerusalem, who are his witnesses unto the people."

Acts 13:32: "And we declare unto you glad tidings, how that the promise which was made unto the fathers,"

Acts 13:39: "And by him all that believe are justified from all things, from which ye could not be justified by the law of Moses."

Acts 13:40: "Beware therefore, lest that come upon you, which is spoken of in the prophets;"

Acts 13:41: "Behold, ye despisers, and wonder, and perish: for I work a work in your days, a work which ye shall in no wise believe, though a man declare it unto you."

Acts 13:45: "But when the Jews saw the multitudes, they were filled with envy, and spake against those things which were spoken by Paul, contradicting and blaspheming."

Acts 14:3: "Long time therefore abode they speaking boldly in the Lord, which gave testimony unto the word of his grace, and granted signs and wonders to be done by their hands."

Acts 14:13: "Then the priest of Jupiter, which was before their city, brought oxen and garlands unto the gates, and would have done sacrifice with the people."

Acts 14:14: "Which when the apostles, Barnabas and Paul, heard of, they rent their clothes, and ran

in among the people, crying out,"

Acts 14:15: "And saying, Sirs, why do ye these things? We also are men of like passions with you, and preach unto you that ye should turn from these vanities unto the living God, which made heaven, and earth, and the sea, and all things that are therein:"

Acts 14:26: "And thence sailed to Antioch, from whence they had been recommended to the grace of God for the work which they fulfilled."

Acts 15:1: "And certain men which came down from Judaea taught the brethren, and said, Except ye be circumcised after the manner of Moses, ye cannot be saved."

Acts 15:5: "But there rose up certain of the sect of the Pharisees which believed, saying, That it was needful to circumcise them, and to command them to keep the law of Moses."

Acts 15:8: "And God, which knoweth the hearts, bare them witness, giving them the Holy Ghost, even as he did unto us;"

Acts 15:10: "Now therefore why tempt ye God, to put a yoke upon the neck of the disciples, which neither our fathers nor we were able to bear?"

Acts 15:16: "After this I will return, and will build again the tabernacle of David, which is fallen down; and I will build again the ruins thereof, and I will set it up:"

Acts 15:19: "Wherefore my sentence is, that we trouble not them, which from among the Gentiles are turned to God:"

Acts 15:23: "And they wrote letters by them after this manner; The apostles and elders and brethren send greeting unto the brethren which are of the Gentiles in Antioch and Syria and Cilicia."

Acts 15:24: "Forasmuch as we have heard, that certain which went out from us have troubled you with words, subverting your souls, saying, Ye must be circumcised, and keep the law: to whom we gave no such commandment:"

Acts 15:29: "That ye abstain from meats offered to idols, and from blood, and from things strangled, and from fornication: from which if ye keep yourselves, ye shall do well. Fare ye well."

Acts 15:31: "Which when they had read, they rejoiced for the consolation."

Acts 16:1: "Then came he to Derbe and Lystra: and, behold, a certain disciple was there, named Timotheus, the son of a certain woman, which was a Jewess, and believed; but his father was a Greek:"

Acts 16:2: "Which was well reported of by the brethren that were at Lystra and Iconium."

Acts 16:3: "Him would Paul have to go forth with him; and took and circumcised him because of the Jews which were in those quarters: for they knew all that his father was a Greek."

Acts 16:4: "And as they went through the cities, they delivered them the decrees for to keep, that were ordained of the apostles and elders which were at Jerusalem."

Acts 16:12: "And from thence to Philippi, which is the chief city of that part of Macedonia, and a colony: and we were in that city abiding certain days."

Acts 16:13: "And on the sabbath we went out of the city by a river side, where prayer was wont to be made; and we sat down, and spake unto the women which resorted thither."

Acts 16:14: "And a certain woman named Lydia, a seller of purple, of the city of Thyatira, which worshipped God, heard us: whose heart the Lord opened, that she attended unto the things which were spoken of Paul."

Acts 16:16: "And it came to pass, as we went to prayer, a certain damsel possessed with a spirit of divination met us, which brought her masters much gain by soothsaying:"

Acts 16:17: "The same followed Paul and us, and cried, saying, These men are the servants of the most high God, which shew unto us the way of salvation."

Acts 16:21: "And teach customs, which are not lawful for us to receive, neither to observe, being Romans."

Acts 17:5: "But the Jews which believed not, moved with envy, took unto them certain lewd fellows of the baser sort, and gathered a company, and set all the city on an uproar, and assaulted the house of Jason, and sought to bring them out to the people."

Acts 17:12: "Therefore many of them believed; also of honourable women which were Greeks, and of men, not a few."

Acts 17:21: "(For all the Athenians and strangers which were there spent their time in nothing else, but either to tell, or to hear some new thing.)"

Acts 17:31: "Because he hath appointed a day, in the which he will judge the world in righteousness by that man whom he hath ordained; whereof he hath given assurance unto all men, in that he hath raised him from the dead."

Acts 17:34: "Howbeit certain men clave unto him, and believed: among the which was Dionysius the Areopagite, and a woman named Damaris, and others with them."

Acts 18:27: "And when he was disposed to pass into Achaia, the brethren wrote, exhorting the disciples to receive him: who, when he was come, helped them much which had believed through grace:"

Acts 19:4: "Then said Paul, John verily baptized with the baptism of repentance, saying unto the people, that they should believe on him which should come after him, that is, on Christ Jesus."

Acts 19:10: "And this continued by the space of two years; so that all they which dwelt in Asia heard the word of the Lord Jesus, both Jews and Greeks."

Acts 19:13: "Then certain of the vagabond Jews, exorcists, took upon them to call over them which had evil spirits the name of the LORD Jesus, saying, We adjure you by Jesus whom Paul preacheth."

Acts 19:14: "And there were seven sons of one Sceva, a Jew, and chief of the priests, which did so."

Acts 19:19: "Many of them also which used curious arts brought their books together, and burned them before all men: and they counted the price of them, and found it fifty thousand pieces of silver."

Acts 19:24: "For a certain man named Demetrius, a silversmith, which made silver shrines for Diana, brought no small gain unto the craftsmen;"

Acts 19:26: "Moreover ye see and hear, that not alone at Ephesus, but almost throughout all Asia, this Paul hath persuaded and turned away much people, saying that they be no gods, which are made with hands:"

Acts 19:31: "And certain of the chief of Asia, which were his friends, sent unto him, desiring him that he would not adventure himself into the theatre."

Acts 19:35: "And when the townclerk had appeased the people, he said, Ye men of Ephesus, what man is there that knoweth not how that the city of the Ephesians is a worshipper of the great goddess Diana, and of the image which fell down from Jupiter?"

Acts 19:37: "For ye have brought hither these men, which are neither robbers of churches, nor yet blasphemers of your goddess."

Acts 19:38: "Wherefore if Demetrius, and the craftsmen which are with him, have a matter against any man, the law is open, and there are deputies: let them implead one another."

Acts 20:19: "Serving the LORD with all humility of mind, and with many tears, and temptations, which befell me by the lying in wait of the Jews:"

Acts 20:24: "But none of these things move me, neither count I my life dear unto myself, so that I might finish my course with joy, and the ministry, which I have received of the Lord Jesus, to testify the gospel of the grace of God."

Acts 20:28: "Take heed therefore unto yourselves, and to all the flock, over the which the Holy Ghost hath made you overseers, to feed the church of God, which he hath purchased with his own blood."

Acts 20:32: "And now, brethren, I commend you to God, and to the word of his grace, which is able to build you up, and to give you an inheritance among all them which are sanctified."

Acts 20:38: "Sorrowing most of all for the words which he spake, that they should see his face no more. And they accompanied him unto the ship."

Acts 21:8: "And the next day we that were of Paul's company departed, and came unto Caesarea:

and we entered into the house of Philip the evangelist, which was one of the seven; and abode with him."

Acts 21:9: "And the same man had four daughters, virgins, which did prophesy."

Acts 21:20: "And when they heard it, they glorified the Lord, and said unto him, Thou seest, brother, how many thousands of Jews there are which believe; and they are all zealous of the law:"

Acts 21:21: "And they are informed of thee, that thou teachest all the Jews which are among the Gentiles to forsake Moses, saying that they ought not to circumcise their children, neither to walk after the customs."

Acts 21:23: "Do therefore this that we say to thee: We have four men which have a vow on them;"

Acts 21:25: "As touching the Gentiles which believe, we have written and concluded that they observe no such thing, save only that they keep themselves from things offered to idols, and from blood, and from strangled, and from fornication."

Acts 21:27: "And when the seven days were almost ended, the Jews which were of Asia, when they saw him in the temple, stirred up all the people, and laid hands on him,"

Acts 21:38: "Art not thou that Egyptian, which before these days madest an uproar, and leddest out into the wilderness four thousand men that were murderers?"

Acts 21:39: "But Paul said, I am a man which am a Jew of Tarsus, a city in Cilicia, a citizen of no mean city: and, I beseech thee, suffer me to speak unto the people."

Acts 22:1: "Men, brethren, and fathers, hear ye my defence which I make now unto you."

Acts 22:3: "I am verily a man which am a Jew, born in Tarsus, a city in Cilicia, yet brought up in this city at the feet of Gamaliel, and taught according to the perfect manner of the law of the fathers, and was zealous toward God, as ye all are this day."

Acts 22:5: "As also the high priest doth bear me witness, and all the estate of the elders: from whom also I received letters unto the brethren, and went to Damascus, to bring them which were there bound unto Jerusalem, for to be punished."

Acts 22:10: "And I said, What shall I do, LORD? And the Lord said unto me, Arise, and go into Damascus; and there it shall be told thee of all things which are appointed for thee to do."

Acts 22:12: "And one Ananias, a devout man according to the law, having a good report of all the Jews which dwelt there,"

Acts 22:29: "Then straightway they departed from him which should have examined him: and the chief captain also was afraid, after he knew that he was a Roman, and because he had bound him."

Acts 23:13: "And they were more than forty which had made this conspiracy."

Acts 23:21: "But do not thou yield unto them: for there lie in wait for him of them more than forty men, which have bound themselves with an oath, that they will neither eat nor drink till they have killed him: and now are they ready, looking for a promise from thee."

Acts 24:14: "But this I confess unto thee, that after the way which they call heresy, so worship I the God of my fathers, believing all things which are written in the law and in the prophets:"

Acts 24:15: "And have hope toward God, which they themselves also allow, that there shall be a resurrection of the dead, both of the just and unjust."

Acts 24:24: "And after certain days, when Felix came with his wife Drusilla, which was a Jewess, he sent for Paul, and heard him concerning the faith in Christ."

Acts 25:5: "Let them therefore, said he, which among you are able, go down with me, and accuse this man, if there be any wickedness in him."

Acts 25:7: "And when he was come, the Jews which came down from Jerusalem stood round about, and laid many and grievous complaints against Paul, which they could not prove."

Acts 25:16: "To whom I answered, It is not the manner of the Romans to deliver any man to die, before that he which is accused have the accusers face to face, and have licence to answer for himself concerning the crime laid against him."

Acts 25:19: "But had certain questions against him of their own superstition, and of one Jesus, which was dead, whom Paul affirmed to be alive."

Acts 25:24: "And Festus said, King Agrippa, and all men which are here present with us, ye see this man, about whom all the multitude of the Jews have dealt with me, both at Jerusalem, and also here, crying that he ought not to live any longer."

Acts 26:3: "Especially because I know thee to be expert in all customs and questions which are among the Jews: wherefore I beseech thee to hear me patiently."

Acts 26:4: "My manner of life from my youth, which was at the first among mine own nation at Jerusalem, know all the Jews;"

Acts 26:5: "Which knew me from the beginning, if they would testify, that after the most straitest sect of our religion I lived a Pharisee."

Acts 26:7: "Unto which promise our twelve tribes, instantly serving God day and night, hope to come. For which hope's sake, king Agrippa, I am accused of the Jews."

Acts 26:10: "Which thing I also did in Jerusalem: and many of the saints did I shut up in prison, having received authority from the chief priests; and when they were put to death, I gave my voice against them."

Acts 26:13: "At midday, O king, I saw in the way a light from heaven, above the brightness of the sun, shining round about me and them which journeyed with me."

Acts 26:16: "But rise, and stand upon thy feet: for I have appeared unto thee for this purpose, to make thee a minister and a witness both of these things which thou hast seen, and of those things in the which I will appear unto thee;"

Acts 26:18: "To open their eyes, and to turn them from darkness to light, and from the power of Satan unto God, that they may receive forgiveness of sins, and inheritance among them which are sanctified by faith that is in me."

Acts 26:22: "Having therefore obtained help of God, I continue unto this day, witnessing both to small and great, saying none other things than those which the prophets and Moses did say should come:"

Acts 27:8: "And, hardly passing it, came unto a place which is called The fair havens; nigh whereunto was the city of Lasea."

Acts 27:11: "Nevertheless the centurion believed the master and the owner of the ship, more than those things which were spoken by Paul."

Acts 27:12: "And because the haven was not commodious to winter in, the more part advised to depart thence also, if by any means they might attain to Phenice, and there to winter; which is an haven of Crete, and lieth toward the south west and north west."

Acts 27:16: "And running under a certain island which is called Clauda, we had much work to come by the boat:"

Acts 27:17: "Which when they had taken up, they used helps, undergirding the ship; and, fearing lest they should fall into the quicksands, strake sail, and so were driven."

Acts 27:39: "And when it was day, they knew not the land: but they discovered a certain creek with a shore, into the which they were minded, if it were possible, to thrust in the ship."

Acts 27:43: "But the centurion, willing to save Paul, kept them from their purpose; and commanded that they which could swim should cast themselves first into the sea, and get to land:"

Acts 28:9: "So when this was done, others also, which had diseases in the island, came, and were healed:"

Acts 28:11: "And after three months we departed in a ship of Alexandria, which had wintered in the isle, whose sign was Castor and Pollux."

Acts 28:24: "And some believed the things which were spoken, and some believed not."

Acts 28:31: "Preaching the kingdom of God, and teaching those things which concern the Lord Jesus Christ, with all confidence, no man forbidding him."

Romans 1:2: "(Which he had promised afore by his prophets in the holy scriptures,)"

Romans 1:3: "Concerning his Son Jesus Christ our Lord, which was made of the seed of David according to the flesh;"

Romans 1:19: "Because that which may be known of God is manifest in them; for God hath shewed it unto them."

Romans 1:26: "For this cause God gave them up unto vile affections: for even their women did change the natural use into that which is against nature:"

Romans 1:27: "And likewise also the men, leaving the natural use of the woman, burned in their lust one toward another; men with men working that which is unseemly, and receiving in themselves that recompence of their error which was meet."

Romans 1:28: "And even as they did not like to retain God in their knowledge, God gave them over to a reprobate mind, to do those things which are not convenient;"

Romans 1:32: "Who knowing the judgment of God, that they which commit such things are worthy of death, not only do the same, but have pleasure in them that do them."

Romans 2:2: "But we are sure that the judgment of God is according to truth against them which commit such things."

Romans 2:3: "And thinkest thou this, O man, that judgest them which do such things, and doest the same, that thou shalt escape the judgment of God?"

Romans 2:14: "For when the Gentiles, which have not the law, do by nature the things contained in the law, these, having not the law, are a law unto themselves:"

Romans 2:15: "Which shew the work of the law written in their hearts, their conscience also bearing witness, and their thoughts the mean while accusing or else excusing one another;)"

Romans 2:19: "And art confident that thou thyself art a guide of the blind, a light of them which are in darkness,"

Romans 2:20: "An instructor of the foolish, a teacher of babes, which hast the form of knowledge and of the truth in the law."

Romans 2:21: "Thou therefore which teachest another, teachest thou not thyself? thou that preachest a man should not steal, dost thou steal?"

Romans 2:27: "And shall not uncircumcision which is by nature, if it fulfil the law, judge thee, who by the letter and circumcision dost transgress the law?"

Romans 2:28: "For he is not a Jew, which is one outwardly; neither is that circumcision, which is outward in the flesh:"

Romans 2:29: "But he is a Jew, which is one inwardly; and circumcision is that of the heart, in the spirit, and not in the letter; whose praise is not of men, but of God."

Romans 3:22: "Even the righteousness of God which is by faith of Jesus Christ unto all and upon all them that believe: for there is no difference:"

Romans 3:26: "To declare, I say, at this time his righteousness: that he might be just, and the justifier of him which believeth in Jesus."

Romans 3:30: "Seeing it is one God, which shall justify the circumcision by faith, and uncircumcision through faith."

Romans 4:11: "And he received the sign of circumcision, a seal of the righteousness of the faith which he had yet being uncircumcised: that he might be the father of all them that believe, though they be not circumcised; that righteousness might be imputed unto them also:"

Romans 4:12: "And the father of circumcision to them who are not of the circumcision only, but who also walk in the steps of that faith of our father Abraham, which he had being yet uncircumcised."

Romans 4:14: "For if they which are of the law be heirs, faith is made void, and the promise made of none effect:"

Romans 4:16: "Therefore it is of faith, that it might be by grace; to the end the promise might be sure to all the seed; not to that only which is of the law, but to that also which is of the faith of Abraham; who is the father of us all,"

Romans 4:17: "(As it is written, I have made thee a father of many nations,) before him whom he believed, even God, who quickeneth the dead, and calleth those things which be not as though they

were."

Romans 4:18: "Who against hope believed in hope, that he might become the father of many nations, according to that which was spoken, So shall thy seed be."

Romans 5:5: "And hope maketh not ashamed; because the love of God is shed abroad in our hearts by the Holy Ghost which is given unto us."

Romans 5:15: "But not as the offence, so also is the free gift. For if through the offence of one many be dead, much more the grace of God, and the gift by grace, which is by one man, Jesus Christ, hath abounded unto many."

Romans 5:17: "For if by one man's offence death reigned by one; much more they which receive abundance of grace and of the gift of righteousness shall reign in life by one, Jesus Christ.)"

Romans 6:17: "But God be thanked, that ye were the servants of sin, but ye have obeyed from the heart that form of doctrine which was delivered you."

Romans 7:2: "For the woman which hath an husband is bound by the law to her husband so long as he liveth; but if the husband be dead, she is loosed from the law of her husband."

Romans 7:5: "For when we were in the flesh, the motions of sins, which were by the law, did work in our members to bring forth fruit unto death."

Romans 7:10: "And the commandment, which was ordained to life, I found to be unto death."

Romans 7:13: "Was then that which is good made death unto me? God forbid. But sin, that it might appear sin, working death in me by that which is good; that sin by the commandment might become exceeding sinful."

Romans 7:15: "For that which I do I allow not: for what I would, that do I not; but what I hate, that do I."

Romans 7:16: "If then I do that which I would not, I consent unto the law that it is good."

Romans 7:18: "For I know that in me (that is, in my flesh,) dwelleth no good thing: for to will is present with me; but how to perform that which is good I find not."

Romans 7:19: "For the good that I would I do not: but the evil which I would not, that I do."

Romans 7:23: "But I see another law in my members, warring against the law of my mind, and bringing me into captivity to the law of sin which is in my members."

Romans 8:1: "There is therefore now no condemnation to them which are in Christ Jesus, who walk not after the flesh, but after the Spirit."

Romans 8:18: "For I reckon that the sufferings of this present time are not worthy to be compared with the glory which shall be revealed in us."

Romans 8:23: "And not only they, but ourselves also, which have the firstfruits of the Spirit, even we ourselves groan within ourselves, waiting for the adoption, to wit, the redemption of our body."

Romans 8:26: "Likewise the Spirit also helpeth our infirmities: for we know not what we should pray for as we ought: but the Spirit itself maketh intercession for us with groanings which cannot be uttered."

Romans 8:39: "Nor height, nor depth, nor any other creature, shall be able to separate us from the love of God, which is in Christ Jesus our Lord."

Romans 9:6: "Not as though the word of God hath taken none effect. For they are not all Israel, which are of Israel:"

Romans 9:8: "That is, They which are the children of the flesh, these are not the children of God: but the children of the promise are counted for the seed."

Romans 9:23: "And that he might make known the riches of his glory on the vessels of mercy, which he had afore prepared unto glory,"

Romans 9:25: "As he saith also in Osee, I will call them my people, which were not my people; and her beloved, which was not beloved."

Romans 9:30: "What shall we say then? That the Gentiles, which followed not after righteousness, have attained to righteousness, even the righteousness which is of faith."

Romans 9:31: "But Israel, which followed after the law of righteousness, hath not attained to the



law of righteousness."

Romans 10:5: "For Moses describeth the righteousness which is of the law, That the man which doeth those things shall live by them."

Romans 10:6: "But the righteousness which is of faith speaketh on this wise, Say not in thine heart, Who shall ascend into heaven? (that is, to bring Christ down from above:)"

Romans 10:8: "But what saith it? The word is nigh thee, even in thy mouth, and in thy heart: that is, the word of faith, which we preach;"

Romans 11:2: "God hath not cast away his people which he foreknew. Wot ye not what the scripture saith of Elias? how he maketh intercession to God against Israel saying,"

Romans 11:7: "What then? Israel hath not obtained that which he seeketh for; but the election hath obtained it, and the rest were blinded."

Romans 11:14: "If by any means I may provoke to emulation them which are my flesh, and might save some of them."

Romans 11:22: "Behold therefore the goodness and severity of God: on them which fell, severity; but toward thee, goodness, if thou continue in his goodness: otherwise thou also shalt be cut off."

Romans 11:24: "For if thou wert cut out of the olive tree which is wild by nature, and wert grafted contrary to nature into a good olive tree: how much more shall these, which be the natural branches, be grafted into their own olive tree?"

Romans 12:1: "I beseech you therefore, brethren, by the mercies of God, that ye present your bodies a living sacrifice, holy, acceptable unto God, which is your reasonable service."

Romans 12:9: "Let love be without dissimulation. Abhor that which is evil; cleave to that which is good."

Romans 12:14: "Bless them which persecute you: bless, and curse not."

Romans 13:3: "For rulers are not a terror to good works, but to the evil. Wilt thou then not be afraid of the power? do that which is good, and thou shalt have praise of the same:"

Romans 13:4: "For he is the minister of God to thee for good. But if thou do that which is evil, be afraid; for he beareth not the sword in vain: for he is the minister of God, a revenger to execute wrath upon him that doeth evil."

Romans 14:3: "Let not him that eateth despise him that eateth not; and let not him which eateth not judge him that eateth: for God hath received him."

Romans 14:19: "Let us therefore follow after the things which make for peace, and things wherewith one may edify another."

Romans 14:22: "Hast thou faith? have it to thyself before God. Happy is he that condemneth not himself in that thing which he alloweth."

Romans 15:17: "I have therefore whereof I may glory through Jesus Christ in those things which pertain to God."

Romans 15:18: "For I will not dare to speak of any of those things which Christ hath not wrought by me, to make the Gentiles obedient, by word and deed,"

Romans 15:22: "For which cause also I have been much hindered from coming to you."

Romans 15:26: "For it hath pleased them of Macedonia and Achaia to make a certain contribution for the poor saints which are at Jerusalem."

Romans 15:31: "That I may be delivered from them that do not believe in Judaea; and that my service which I have for Jerusalem may be accepted of the saints;"

Romans 16:1: "I commend unto you Phebe our sister, which is a servant of the church which is at Cenchrea:"

Romans 16:10: "Salute Apelles approved in Christ. Salute them which are of Aristobulus' household."

Romans 16:11: "Salute Herodion my kinsman. Greet them that be of the household of Narcissus, which are in the Lord."

Romans 16:12: "Salute Tryphena and Tryphosa, who labour in the Lord. Salute the beloved Persis,

which laboured much in the Lord."

Romans 16:14: "Salute Asyncritus, Phlegon, Hermas, Patrobas, Hermes, and the brethren which are with them."

Romans 16:15: "Salute Philologus, and Julia, Nereus, and his sister, and Olympas, and all the saints which are with them."

Romans 16:17: "Now I beseech you, brethren, mark them which cause divisions and offences contrary to the doctrine which ye have learned; and avoid them."

Romans 16:19: "For your obedience is come abroad unto all men. I am glad therefore on your behalf: but yet I would have you wise unto that which is good, and simple concerning evil."

Romans 16:25: "Now to him that is of power to stablish you according to my gospel, and the preaching of Jesus Christ, according to the revelation of the mystery, which was kept secret since the world began,"

1 Corinthians 1:2: "Unto the church of God which is at Corinth, to them that are sanctified in Christ Jesus, called to be saints, with all that in every place call upon the name of Jesus Christ our Lord, both their's and our's:"

1 Corinthians 1:4: "I thank my God always on your behalf, for the grace of God which is given you by Jesus Christ;"

1 Corinthians 1:11: "For it hath been declared unto me of you, my brethren, by them which are of the house of Chloe, that there are contentions among you."

1 Corinthians 1:18: "For the preaching of the cross is to them that perish foolishness; but unto us which are saved it is the power of God."

1 Corinthians 1:24: "But unto them which are called, both Jews and Greeks, Christ the power of God, and the wisdom of God."

1 Corinthians 1:27: "But God hath chosen the foolish things of the world to confound the wise; and God hath chosen the weak things of the world to confound the things which are mighty;"

1 Corinthians 1:28: "And base things of the world, and things which are despised, hath God chosen, yea, and things which are not, to bring to nought things that are:"

1 Corinthians 2:7: "But we speak the wisdom of God in a mystery, even the hidden wisdom, which God ordained before the world unto our glory:"

1 Corinthians 2:8: "Which none of the princes of this world knew: for had they known it, they would not have crucified the Lord of glory."

1 Corinthians 2:9: "But as it is written, Eye hath not seen, nor ear heard, neither have entered into the heart of man, the things which God hath prepared for them that love him."

1 Corinthians 2:11: "For what man knoweth the things of a man, save the spirit of man which is in him? even so the things of God knoweth no man, but the Spirit of God."

1 Corinthians 2:12: "Now we have received, not the spirit of the world, but the spirit which is of God; that we might know the things that are freely given to us of God."

1 Corinthians 2:13: "Which things also we speak, not in the words which man's wisdom teacheth, but which the Holy Ghost teacheth; comparing spiritual things with spiritual."

1 Corinthians 3:10: "According to the grace of God which is given unto me, as a wise masterbuilder, I have laid the foundation, and another buildeth thereon. But let every man take heed how he buildeth thereupon."

1 Corinthians 3:11: "For other foundation can no man lay than that is laid, which is Jesus Christ."

1 Corinthians 3:14: "If any man's work abide which he hath built thereupon, he shall receive a reward."

1 Corinthians 3:17: "If any man defile the temple of God, him shall God destroy; for the temple of God is holy, which temple ye are."

1 Corinthians 4:6: "And these things, brethren, I have in a figure transferred to myself and to Apollos for your sakes; that ye might learn in us not to think of men above that which is written, that no one of you be puffed up for one against another."

1 Corinthians 4:17: "For this cause have I sent unto you Timotheus, who is my beloved son, and faithful in the Lord, who shall bring you into remembrance of my ways which be in Christ, as I teach every where in every church."

1 Corinthians 4:19: "But I will come to you shortly, if the Lord will, and will know, not the speech of them which are puffed up, but the power."

1 Corinthians 6:16: "What? know ye not that he which is joined to an harlot is one body? for two, saith he, shall be one flesh."

1 Corinthians 6:19: "What? know ye not that your body is the temple of the Holy Ghost which is in you, which ye have of God, and ye are not your own?"

1 Corinthians 6:20: "For ye are bought with a price: therefore glorify God in your body, and in your spirit, which are God's."

1 Corinthians 7:13: "And the woman which hath an husband that believeth not, and if he be pleased to dwell with her, let her not leave him."

1 Corinthians 7:35: "And this I speak for your own profit; not that I may cast a snare upon you, but for that which is comely, and that ye may attend upon the Lord without distraction."

1 Corinthians 8:10: "For if any man see thee which hast knowledge sit at meat in the idol's temple, shall not the conscience of him which is weak be emboldened to eat those things which are offered to idols?"

1 Corinthians 9:13: "Do ye not know that they which minister about holy things live of the things of the temple? and they which wait at the altar are partakers with the altar?"

1 Corinthians 9:14: "Even so hath the Lord ordained that they which preach the gospel should live of the gospel."

1 Corinthians 9:24: "Know ye not that they which run in a race run all, but one receiveth the prize? So run, that ye may obtain."

1 Corinthians 10:16: "The cup of blessing which we bless, is it not the communion of the blood of Christ? The bread which we break, is it not the communion of the body of Christ?"

1 Corinthians 10:18: "Behold Israel after the flesh: are not they which eat of the sacrifices partakers of the altar?"

1 Corinthians 10:19: "What say I then? that the idol is any thing, or that which is offered in sacrifice to idols is any thing?"

1 Corinthians 10:20: "But I say, that the things which the Gentiles sacrifice, they sacrifice to devils, and not to God: and I would not that ye should have fellowship with devils."

1 Corinthians 10:30: "For if I by grace be a partaker, why am I evil spoken of for that for which I give thanks?"

1 Corinthians 11:19: "For there must be also heresies among you, that they which are approved may be made manifest among you."

1 Corinthians 11:23: "For I have received of the Lord that which also I delivered unto you, That the Lord Jesus the same night in which he was betrayed took bread:"

1 Corinthians 11:24: "And when he had given thanks, he brake it, and said, Take, eat: this is my body, which is broken for you: this do in remembrance of me."

1 Corinthians 12:6: "And there are diversities of operations, but it is the same God which worketh all in all."

1 Corinthians 12:22: "Nay, much more those members of the body, which seem to be more feeble, are necessary:"

1 Corinthians 12:23: "And those members of the body, which we think to be less honourable, upon these we bestow more abundant honour; and our uncomely parts have more abundant comeliness."

1 Corinthians 12:24: "For our comely parts have no need: but God hath tempered the body together, having given more abundant honour to that part which lacked."

1 Corinthians 13:10: "But when that which is perfect is come, then that which is in part shall be done away."

1 Corinthians 14:22: "Wherefore tongues are for a sign, not to them that believe, but to them that believe not: but prophesying serveth not for them that believe not, but for them which believe."

1 Corinthians 15:1: "Moreover, brethren, I declare unto you the gospel which I preached unto you, which also ye have received, and wherein ye stand;"

1 Corinthians 15:2: "By which also ye are saved, if ye keep in memory what I preached unto you, unless ye have believed in vain."

1 Corinthians 15:3: "For I delivered unto you first of all that which I also received, how that Christ died for our sins according to the scriptures;"

1 Corinthians 15:10: "But by the grace of God I am what I am: and his grace which was bestowed upon me was not in vain; but I laboured more abundantly than they all: yet not I, but the grace of God which was with me."

1 Corinthians 15:18: "Then they also which are fallen asleep in Christ are perished."

1 Corinthians 15:27: "For he hath put all things under his feet. But when he saith all things are put under him, it is manifest that he is excepted, which did put all things under him."

1 Corinthians 15:29: "Else what shall they do which are baptized for the dead, if the dead rise not at all? why are they then baptized for the dead?"

1 Corinthians 15:31: "I protest by your rejoicing which I have in Christ Jesus our LORD, I die daily."

1 Corinthians 15:36: "Thou fool, that which thou sowest is not quickened, except it die:"

1 Corinthians 15:37: "And that which thou sowest, thou sowest not that body that shall be, but bare grain, it may chance of wheat, or of some other grain:"

1 Corinthians 15:46: "Howbeit that was not first which is spiritual, but that which is natural; and afterward that which is spiritual."

1 Corinthians 15:57: "But thanks be to God, which giveth us the victory through our Lord Jesus Christ."

1 Corinthians 16:17: "I am glad of the coming of Stephanas and Fortunatus and Achaicus: for that which was lacking on your part they have supplied."

2 Corinthians 1:1: "Paul, an apostle of Jesus Christ by the will of God, and Timothy our brother, unto the church of God which is at Corinth, with all the saints which are in all Achaia:"

2 Corinthians 1:4: "Who comforteth us in all our tribulation, that we may be able to comfort them which are in any trouble, by the comfort wherewith we ourselves are comforted of God."

2 Corinthians 1:6: "And whether we be afflicted, it is for your consolation and salvation, which is effectual in the enduring of the same sufferings which we also suffer: or whether we be comforted, it is for your consolation and salvation."

2 Corinthians 1:8: "For we would not, brethren, have you ignorant of our trouble which came to us in Asia, that we were pressed out of measure, above strength, insomuch that we despaired even of life:"

2 Corinthians 1:9: "But we had the sentence of death in ourselves, that we should not trust in ourselves, but in God which raiseth the dead:"

2 Corinthians 1:21: "Now he which stablisheth us with you in Christ, and hath anointed us, is God;"

2 Corinthians 2:2: "For if I make you sorry, who is he then that maketh me glad, but the same which is made sorry by me?"

2 Corinthians 2:4: "For out of much affliction and anguish of heart I wrote unto you with many tears; not that ye should be grieved, but that ye might know the love which I have more abundantly unto you."

2 Corinthians 2:6: "Sufficient to such a man is this punishment, which was inflicted of many."

2 Corinthians 2:14: "Now thanks be unto God, which always causeth us to triumph in Christ, and maketh manifest the savour of his knowledge by us in every place."

2 Corinthians 2:17: "For we are not as many, which corrupt the word of God: but as of sincerity, but as of God, in the sight of God speak we in Christ."

2 Corinthians 3:7: "But if the ministration of death, written and engraven in stones, was glorious, so that the children of Israel could not stedfastly behold the face of Moses for the glory of his countenance; which glory was to be done away:"

2 Corinthians 3:10: "For even that which was made glorious had no glory in this respect, by reason of the glory that excelleth."

2 Corinthians 3:11: "For if that which is done away was glorious, much more that which remaineth is glorious."

2 Corinthians 3:13: "And not as Moses, which put a vail over his face, that the children of Israel could not stedfastly look to the end of that which is abolished:"

2 Corinthians 3:14: "But their minds were blinded: for until this day remaineth the same vail untaken away in the reading of the old testament; which vail is done away in Christ."

2 Corinthians 4:4: "In whom the god of this world hath blinded the minds of them which believe not, lest the light of the glorious gospel of Christ, who is the image of God, should shine unto them."

2 Corinthians 4:11: "For we which live are alway delivered unto death for Jesus' sake, that the life also of Jesus might be made manifest in our mortal flesh."

2 Corinthians 4:14: "Knowing that he which raised up the Lord Jesus shall raise up us also by Jesus, and shall present us with you."

2 Corinthians 4:16: "For which cause we faint not; but though our outward man perish, yet the inward man is renewed day by day."

2 Corinthians 4:17: "For our light affliction, which is but for a moment, worketh for us a far more exceeding and eternal weight of glory;"

2 Corinthians 4:18: "While we look not at the things which are seen, but at the things which are not seen: for the things which are seen are temporal; but the things which are not seen are eternal."

2 Corinthians 5:2: "For in this we groan, earnestly desiring to be clothed upon with our house which is from heaven:"

2 Corinthians 5:12: "For we commend not ourselves again unto you, but give you occasion to glory on our behalf, that ye may have somewhat to answer them which glory in appearance, and not in heart."

2 Corinthians 5:15: "And that he died for all, that they which live should not henceforth live unto themselves, but unto him which died for them, and rose again."

2 Corinthians 7:14: "For if I have boasted any thing to him of you, I am not ashamed; but as we spake all things to you in truth, even so our boasting, which I made before Titus, is found a truth."

2 Corinthians 8:11: "Now therefore perform the doing of it; that as there was a readiness to will, so there may be a performance also out of that which ye have."

2 Corinthians 8:16: "But thanks be to God, which put the same earnest care into the heart of Titus for you."

2 Corinthians 8:19: "And not that only, but who was also chosen of the churches to travel with us with this grace, which is administered by us to the glory of the same Lord, and declaration of your ready mind:"

2 Corinthians 8:20: "Avoiding this, that no man should blame us in this abundance which is administered by us:"

2 Corinthians 8:22: "And we have sent with them our brother, whom we have oftentimes proved diligent in many things, but now much more diligent, upon the great confidence which I have in you."

2 Corinthians 9:2: "For I know the forwardness of your mind, for which I boast of you to them of Macedonia, that Achaia was ready a year ago; and your zeal hath provoked very many."

2 Corinthians 9:6: "But this I say, He which soweth sparingly shall reap also sparingly; and he which soweth bountifully shall reap also bountifully."

2 Corinthians 9:11: "Being enriched in every thing to all bountifulness, which causeth through us

thanksgiving to God."

2 Corinthians 9:14: "And by their prayer for you, which long after you for the exceeding grace of God in you."

2 Corinthians 10:2: "But I beseech you, that I may not be bold when I am present with that confidence, wherewith I think to be bold against some, which think of us as if we walked according to the flesh."

2 Corinthians 10:8: "For though I should boast somewhat more of our authority, which the Lord hath given us for edification, and not for your destruction, I should not be ashamed:"

2 Corinthians 10:13: "But we will not boast of things without our measure, but according to the measure of the rule which God hath distributed to us, a measure to reach even unto you."

2 Corinthians 11:4: "For if he that cometh preacheth another Jesus, whom we have not preached, or if ye receive another spirit, which ye have not received, or another gospel, which ye have not accepted, ye might well bear with him."

2 Corinthians 11:9: "And when I was present with you, and wanted, I was chargeable to no man: for that which was lacking to me the brethren which came from Macedonia supplied: and in all things I have kept myself from being burdensome unto you, and so will I keep myself."

2 Corinthians 11:12: "But what I do, that I will do, that I may cut off occasion from them which desire occasion; that wherein they glory, they may be found even as we."

2 Corinthians 11:17: "That which I speak, I speak it not after the Lord, but as it were foolishly, in this confidence of boasting."

2 Corinthians 11:28: "Beside those things that are without, that which cometh upon me daily, the care of all the churches."

2 Corinthians 11:30: "If I must needs glory, I will glory of the things which concern mine infirmities."

2 Corinthians 11:31: "The God and Father of our Lord Jesus Christ, which is blessed for evermore, knoweth that I lie not."

2 Corinthians 12:4: "How that he was caught up into paradise, and heard unspeakable words, which it is not lawful for a man to utter."

2 Corinthians 12:6: "For though I would desire to glory, I shall not be a fool; for I will say the truth: but now I forbear, lest any man should think of me above that which he seeth me to be, or that he heareth of me."

2 Corinthians 12:21: "And lest, when I come again, my God will humble me among you, and that I shall bewail many which have sinned already, and have not repented of the uncleanness and fornication and lasciviousness which they have committed."

2 Corinthians 13:2: "I told you before, and foretell you, as if I were present, the second time; and being absent now I write to them which heretofore have sinned, and to all other, that, if I come again, I will not spare:"

2 Corinthians 13:3: "Since ye seek a proof of Christ speaking in me, which to you-ward is not weak, but is mighty in you."

2 Corinthians 13:7: "Now I pray to God that ye do no evil; not that we should appear approved, but that ye should do that which is honest, though we be as reprobates."

2 Corinthians 13:10: "Therefore I write these things being absent, lest being present I should use sharpness, according to the power which the Lord hath given me to edification, and not to destruction."

Galatians 1:2: "And all the brethren which are with me, unto the churches of Galatia:"

Galatians 1:7: "Which is not another; but there be some that trouble you, and would pervert the gospel of Christ."

Galatians 1:8: "But though we, or an angel from heaven, preach any other gospel unto you than that which we have preached unto you, let him be accursed."

Galatians 1:11: "But I certify you, brethren, that the gospel which was preached of me is not after

man."

Galatians 1:17: "Neither went I up to Jerusalem to them which were apostles before me; but I went into Arabia, and returned again unto Damascus."

Galatians 1:20: "Now the things which I write unto you, behold, before God, I lie not."

Galatians 1:22: "And was unknown by face unto the churches of Judaea which were in Christ:"

Galatians 1:23: "But they had heard only, That he which persecuted us in times past now preacheth the faith which once he destroyed."

Galatians 2:2: "And I went up by revelation, and communicated unto them that gospel which I preach among the Gentiles, but privately to them which were of reputation, lest by any means I should run, or had run, in vain."

Galatians 2:4: "And that because of false brethren unawares brought in, who came in privily to spy out our liberty which we have in Christ Jesus, that they might bring us into bondage:"

Galatians 2:10: "Only they would that we should remember the poor; the same which I also was forward to do."

Galatians 2:12: "For before that certain came from James, he did eat with the Gentiles: but when they were come, he withdrew and separated himself, fearing them which were of the circumcision."

Galatians 2:18: "For if I build again the things which I destroyed, I make myself a transgressor."

Galatians 2:20: "I am crucified with Christ: nevertheless I live; yet not I, but Christ liveth in me: and the life which I now live in the flesh I live by the faith of the Son of God, who loved me, and gave himself for me."

Galatians 3:7: "Know ye therefore that they which are of faith, the same are the children of Abraham."

Galatians 3:9: "So then they which be of faith are blessed with faithful Abraham."

Galatians 3:10: "For as many as are of the works of the law are under the curse: for it is written, Cursed is every one that continueth not in all things which are written in the book of the law to do them."

Galatians 3:16: "Now to Abraham and his seed were the promises made. He saith not, And to seeds, as of many; but as of one, And to thy seed, which is Christ."

Galatians 3:17: "And this I say, that the covenant, that was confirmed before of God in Christ, the law, which was four hundred and thirty years after, cannot disannul, that it should make the promise of none effect."

Galatians 3:21: "Is the law then against the promises of God? God forbid: for if there had been a law given which could have given life, verily righteousness should have been by the law."

Galatians 3:23: "But before faith came, we were kept under the law, shut up unto the faith which should afterwards be revealed."

Galatians 4:8: "Howbeit then, when ye knew not God, ye did service unto them which by nature are no gods."

Galatians 4:14: "And my temptation which was in my flesh ye despised not, nor rejected; but received me as an angel of God, even as Christ Jesus."

Galatians 4:24: "Which things are an allegory: for these are the two covenants; the one from the mount Sinai, which gendereth to bondage, which is Agar."

Galatians 4:25: "For this Agar is mount Sinai in Arabia, and answereth to Jerusalem which now is, and is in bondage with her children."

Galatians 4:26: "But Jerusalem which is above is free, which is the mother of us all."

Galatians 4:27: "For it is written, Rejoice, thou barren that bearest not; break forth and cry, thou that travailest not: for the desolate hath many more children than she which hath an husband."

Galatians 5:6: "For in Jesus Christ neither circumcision availeth any thing, nor uncircumcision; but faith which worketh by love."

Galatians 5:12: "I would they were even cut off which trouble you."

Galatians 5:19: "Now the works of the flesh are manifest, which are these; Adultery, fornication,

uncleanness, lasciviousness,"

Galatians 5:21: "Envyings, murders, drunkenness, revellings, and such like: of the which I tell you before, as I have also told you in time past, that they which do such things shall not inherit the kingdom of God."

Galatians 6:1: "Brethren, if a man be overtaken in a fault, ye which are spiritual, restore such an one in the spirit of meekness; considering thyself, lest thou also be tempted."

Ephesians 1:1: "Paul, an apostle of Jesus Christ by the will of God, to the saints which are at Ephesus, and to the faithful in Christ Jesus:"

Ephesians 1:9: "Having made known unto us the mystery of his will, according to his good pleasure which he hath purposed in himself:"

Ephesians 1:10: "That in the dispensation of the fulness of times he might gather together in one all things in Christ, both which are in heaven, and which are on earth; even in him:"

Ephesians 1:14: "Which is the earnest of our inheritance until the redemption of the purchased possession, unto the praise of his glory."

Ephesians 1:20: "Which he wrought in Christ, when he raised him from the dead, and set him at his own right hand in the heavenly places,"

Ephesians 1:21: "Far above all principality, and power, and might, and dominion, and every name that is named, not only in this world, but also in that which is to come:"

Ephesians 1:23: "Which is his body, the fulness of him that filleth all in all."

Ephesians 2:10: "For we are his workmanship, created in Christ Jesus unto good works, which God hath before ordained that we should walk in them."

Ephesians 2:11: "Wherefore remember, that ye being in time past Gentiles in the flesh, who are called Uncircumcision by that which is called the Circumcision in the flesh made by hands;"

Ephesians 2:17: "And came and preached peace to you which were afar off, and to them that were nigh."

Ephesians 3:2: "If ye have heard of the dispensation of the grace of God which is given me to you-ward:"

Ephesians 3:5: "Which in other ages was not made known unto the sons of men, as it is now revealed unto his holy apostles and prophets by the Spirit;"

Ephesians 3:9: "And to make all men see what is the fellowship of the mystery, which from the beginning of the world hath been hid in God, who created all things by Jesus Christ:"

Ephesians 3:11: "According to the eternal purpose which he purposed in Christ Jesus our Lord:"

Ephesians 3:13: "Wherefore I desire that ye faint not at my tribulations for you, which is your glory."

Ephesians 3:19: "And to know the love of Christ, which passeth knowledge, that ye might be filled with all the fulness of God."

Ephesians 4:15: "But speaking the truth in love, may grow up into him in all things, which is the head, even Christ:"

Ephesians 4:16: "From whom the whole body fitly joined together and compacted by that which every joint supplieth, according to the effectual working in the measure of every part, maketh increase of the body unto the edifying of itself in love."

Ephesians 4:22: "That ye put off concerning the former conversation the old man, which is corrupt according to the deceitful lusts;"

Ephesians 4:24: "And that ye put on the new man, which after God is created in righteousness and true holiness."

Ephesians 4:28: "Let him that stole steal no more: but rather let him labour, working with his hands the thing which is good, that he may have to give to him that needeth."

Ephesians 4:29: "Let no corrupt communication proceed out of your mouth, but that which is good to the use of edifying, that it may minister grace unto the hearers."

Ephesians 5:4: "Neither filthiness, nor foolish talking, nor jesting, which are not convenient: but



rather giving of thanks."

Ephesians 5:12: "For it is a shame even to speak of those things which are done of them in secret."

Ephesians 6:2: "Honour thy father and mother; which is the first commandment with promise;"

Ephesians 6:17: "And take the helmet of salvation, and the sword of the Spirit, which is the word of God:"

Ephesians 6:20: "For which I am an ambassador in bonds: that therein I may speak boldly, as I ought to speak."

Philippians 1:1: "Paul and Timotheus, the servants of Jesus Christ, to all the saints in Christ Jesus which are at Philippi, with the bishops and deacons:"

Philippians 1:6: "Being confident of this very thing, that he which hath begun a good work in you will perform it until the day of Jesus Christ:"

Philippians 1:11: "Being filled with the fruits of righteousness, which are by Jesus Christ, unto the glory and praise of God."

Philippians 1:12: "But I would ye should understand, brethren, that the things which happened unto me have fallen out rather unto the furtherance of the gospel;"

Philippians 1:23: "For I am in a strait betwixt two, having a desire to depart, and to be with Christ; which is far better:"

Philippians 1:28: "And in nothing terrified by your adversaries: which is to them an evident token of perdition, but to you of salvation, and that of God."

Philippians 1:30: "Having the same conflict which ye saw in me, and now hear to be in me."

Philippians 2:5: "Let this mind be in you, which was also in Christ Jesus:"

Philippians 2:9: "Wherefore God also hath highly exalted him, and given him a name which is above every name:"

Philippians 2:13: "For it is God which worketh in you both to will and to do of his good pleasure."

Philippians 2:21: "For all seek their own, not the things which are Jesus Christ's."

Philippians 3:3: "For we are the circumcision, which worship God in the spirit, and rejoice in Christ Jesus, and have no confidence in the flesh."

Philippians 3:6: "Concerning zeal, persecuting the church; touching the righteousness which is in the law, blameless."

Philippians 3:9: "And be found in him, not having mine own righteousness, which is of the law, but that which is through the faith of Christ, the righteousness which is of God by faith:"

Philippians 3:12: "Not as though I had already attained, either were already perfect: but I follow after, if that I may apprehend that for which also I am apprehended of Christ Jesus."

Philippians 3:13: "Brethren, I count not myself to have apprehended: but this one thing I do, forgetting those things which are behind, and reaching forth unto those things which are before,"

Philippians 3:17: "Brethren, be followers together of me, and mark them which walk so as ye have us for an ensample."

Philippians 4:3: "And I intreat thee also, true yokefellow, help those women which laboured with me in the gospel, with Clement also, and with other my fellowlabourers, whose names are in the book of life."

Philippians 4:7: "And the peace of God, which passeth all understanding, shall keep your hearts and minds through Christ Jesus."

Philippians 4:9: "Those things, which ye have both learned, and received, and heard, and seen in me, do: and the God of peace shall be with you."

Philippians 4:13: "I can do all things through Christ which strengtheneth me."

Philippians 4:18: "But I have all, and abound: I am full, having received of Epaphroditus the things which were sent from you, an odour of a sweet smell, a sacrifice acceptable, wellpleasing to God."

Philippians 4:21: "Salute every saint in Christ Jesus. The brethren which are with me greet you."

Colossians 1:2: "To the saints and faithful brethren in Christ which are at Colosse: Grace be unto you, and peace, from God our Father and the Lord Jesus Christ."

Colossians 1:4: "Since we heard of your faith in Christ Jesus, and of the love which ye have to all the saints,"

Colossians 1:5: "For the hope which is laid up for you in heaven, whereof ye heard before in the word of the truth of the gospel;"

Colossians 1:6: "Which is come unto you, as it is in all the world; and bringeth forth fruit, as it doth also in you, since the day ye heard of it, and knew the grace of God in truth:"

Colossians 1:12: "Giving thanks unto the Father, which hath made us meet to be partakers of the inheritance of the saints in light:"

Colossians 1:23: "If ye continue in the faith grounded and settled, and be not moved away from the hope of the gospel, which ye have heard, and which was preached to every creature which is under heaven; whereof I Paul am made a minister;"

Colossians 1:24: "Who now rejoice in my sufferings for you, and fill up that which is behind of the afflictions of Christ in my flesh for his body's sake, which is the church:"

Colossians 1:25: "Whereof I am made a minister, according to the dispensation of God which is given to me for you, to fulfil the word of God;"

Colossians 1:26: "Even the mystery which hath been hid from ages and from generations, but now is made manifest to his saints:"

Colossians 1:27: "To whom God would make known what is the riches of the glory of this mystery among the Gentiles; which is Christ in you, the hope of glory:"

Colossians 1:29: "Whereunto I also labour, striving according to his working, which worketh in me mightily."

Colossians 2:10: "And ye are complete in him, which is the head of all principality and power:"

Colossians 2:14: "Blotting out the handwriting of ordinances that was against us, which was contrary to us, and took it out of the way, nailing it to his cross;"

Colossians 2:17: "Which are a shadow of things to come; but the body is of Christ."

Colossians 2:18: "Let no man beguile you of your reward in a voluntary humility and worshipping of angels, intruding into those things which he hath not seen, vainly puffed up by his fleshly mind,"

Colossians 2:19: "And not holding the Head, from which all the body by joints and bands having nourishment ministered, and knit together, increaseth with the increase of God."

Colossians 2:22: "Which all are to perish with the using;) after the commandments and doctrines of men?"

Colossians 2:23: "Which things have indeed a shew of wisdom in will worship, and humility, and neglecting of the body: not in any honour to the satisfying of the flesh."

Colossians 3:1: "If ye then be risen with Christ, seek those things which are above, where Christ sitteth on the right hand of God."

Colossians 3:5: "Mortify therefore your members which are upon the earth; fornication, uncleanness, inordinate affection, evil concupiscence, and covetousness, which is idolatry:"

Colossians 3:6: "For which things' sake the wrath of God cometh on the children of disobedience:"

Colossians 3:7: "In the which ye also walked some time, when ye lived in them."

Colossians 3:10: "And have put on the new man, which is renewed in knowledge after the image of him that created him:"

Colossians 3:14: "And above all these things put on charity, which is the bond of perfectness."

Colossians 3:15: "And let the peace of God rule in your hearts, to the which also ye are called in one body; and be ye thankful."

Colossians 3:25: "But he that doeth wrong shall receive for the wrong which he hath done: and there is no respect of persons."

Colossians 4:1: "Masters, give unto your servants that which is just and equal; knowing that ye also have a Master in heaven."

Colossians 4:3: "Withal praying also for us, that God would open unto us a door of utterance, to speak the mystery of Christ, for which I am also in bonds:"

Colossians 4:9: "With Onesimus, a faithful and beloved brother, who is one of you. They shall make known unto you all things which are done here."

Colossians 4:11: "And Jesus, which is called Justus, who are of the circumcision. These only are my fellowworkers unto the kingdom of God, which have been a comfort unto me."

Colossians 4:15: "Salute the brethren which are in Laodicea, and Nymphas, and the church which is in his house."

Colossians 4:17: "And say to Archippus, Take heed to the ministry which thou hast received in the Lord, that thou fulfil it."

1 Thessalonians 1:1: "Paul, and Silvanus, and Timotheus, unto the church of the Thessalonians which is in God the Father and in the Lord Jesus Christ: Grace be unto you, and peace, from God our Father, and the Lord Jesus Christ."

1 Thessalonians 1:10: "And to wait for his Son from heaven, whom he raised from the dead, even Jesus, which delivered us from the wrath to come."

1 Thessalonians 2:4: "But as we were allowed of God to be put in trust with the gospel, even so we speak; not as pleasing men, but God, which trieth our hearts."

1 Thessalonians 2:13: "For this cause also thank we God without ceasing, because, when ye received the word of God which ye heard of us, ye received it not as the word of men, but as it is in truth, the word of God, which effectually worketh also in you that believe."

1 Thessalonians 2:14: "For ye, brethren, became followers of the churches of God which in Judaea are in Christ Jesus: for ye also have suffered like things of your own countrymen, even as they have of the Jews:"

1 Thessalonians 3:10: "Night and day praying exceedingly that we might see your face, and might perfect that which is lacking in your faith?"

1 Thessalonians 4:5: "Not in the lust of concupiscence, even as the Gentiles which know not God:"

1 Thessalonians 4:10: "And indeed ye do it toward all the brethren which are in all Macedonia: but we beseech you, brethren, that ye increase more and more;"

1 Thessalonians 4:13: "But I would not have you to be ignorant, brethren, concerning them which are asleep, that ye sorrow not, even as others which have no hope."

1 Thessalonians 4:14: "For if we believe that Jesus died and rose again, even so them also which sleep in Jesus will God bring with him."

1 Thessalonians 4:15: "For this we say unto you by the word of the Lord, that we which are alive and remain unto the coming of the Lord shall not prevent them which are asleep."

1 Thessalonians 4:17: "Then we which are alive and remain shall be caught up together with them in the clouds, to meet the Lord in the air: and so shall we ever be with the Lord."

1 Thessalonians 5:12: "And we beseech you, brethren, to know them which labour among you, and are over you in the Lord, and admonish you;"

1 Thessalonians 5:15: "See that none render evil for evil unto any man; but ever follow that which is good, both among yourselves, and to all men."

1 Thessalonians 5:21: "Prove all things; hold fast that which is good."

2 Thessalonians 1:5: "Which is a manifest token of the righteous judgment of God, that ye may be counted worthy of the kingdom of God, for which ye also suffer:"

2 Thessalonians 2:15: "Therefore, brethren, stand fast, and hold the traditions which ye have been taught, whether by word, or our epistle."

2 Thessalonians 2:16: "Now our Lord Jesus Christ himself, and God, even our Father, which hath loved us, and hath given us everlasting consolation and good hope through grace,"

2 Thessalonians 3:4: "And we have confidence in the Lord touching you, that ye both do and will do the things which we command you."

2 Thessalonians 3:6: "Now we command you, brethren, in the name of our Lord Jesus Christ, that ye withdraw yourselves from every brother that walketh disorderly, and not after the tradition which he received of us."

2 Thessalonians 3:11: "For we hear that there are some which walk among you disorderly, working not at all, but are busybodies."

2 Thessalonians 3:17: "The salutation of Paul with mine own hand, which is the token in every epistle: so I write."

1 Timothy 1:1: "Paul, an apostle of Jesus Christ by the commandment of God our Saviour, and Lord Jesus Christ, which is our hope;"

1 Timothy 1:4: "Neither give heed to fables and endless genealogies, which minister questions, rather than godly edifying which is in faith: so do."

1 Timothy 1:6: "From which some having swerved have turned aside unto vain jangling;"

1 Timothy 1:11: "According to the glorious gospel of the blessed God, which was committed to my trust."

1 Timothy 1:14: "And the grace of our Lord was exceeding abundant with faith and love which is in Christ Jesus."

1 Timothy 1:16: "Howbeit for this cause I obtained mercy, that in me first Jesus Christ might shew forth all longsuffering, for a pattern to them which should hereafter believe on him to life everlasting."

1 Timothy 1:18: "This charge I commit unto thee, son Timothy, according to the prophecies which went before on thee, that thou by them mightest war a good warfare;"

1 Timothy 1:19: "Holding faith, and a good conscience; which some having put away concerning faith have made shipwreck:"

1 Timothy 2:10: "But (which becometh women professing godliness) with good works."

1 Timothy 3:7: "Moreover he must have a good report of them which are without; lest he fall into reproach and the snare of the devil."

1 Timothy 3:13: "For they that have used the office of a deacon well purchase to themselves a good degree, and great boldness in the faith which is in Christ Jesus."

1 Timothy 3:15: "But if I tarry long, that thou mayest know how thou oughtest to behave thyself in the house of God, which is the church of the living God, the pillar and ground of the truth."

1 Timothy 4:3: "Forbidding to marry, and commanding to abstain from meats, which God hath created to be received with thanksgiving of them which believe and know the truth."

1 Timothy 4:8: "For bodily exercise profiteth little: but godliness is profitable unto all things, having promise of the life that now is, and of that which is to come."

1 Timothy 4:14: "Neglect not the gift that is in thee, which was given thee by prophecy, with the laying on of the hands of the presbytery."

1 Timothy 5:13: "And withal they learn to be idle, wandering about from house to house; and not only idle, but tattlers also and busybodies, speaking things which they ought not."

1 Timothy 6:3: "If any man teach otherwise, and consent not to wholesome words, even the words of our Lord Jesus Christ, and to the doctrine which is according to godliness;"

1 Timothy 6:9: "But they that will be rich fall into temptation and a snare, and into many foolish and hurtful lusts, which drown men in destruction and perdition."

1 Timothy 6:10: "For the love of money is the root of all evil: which while some coveted after, they have erred from the faith, and pierced themselves through with many sorrows."

1 Timothy 6:15: "Which in his times he shall shew, who is the blessed and only Potentate, the King of kings, and Lord of lords;"

1 Timothy 6:16: "Who only hath immortality, dwelling in the light which no man can approach unto; whom no man hath seen, nor can see: to whom be honour and power everlasting. Amen."

1 Timothy 6:20: "O Timothy, keep that which is committed to thy trust, avoiding profane and vain babblings, and oppositions of science falsely so called:"

1 Timothy 6:21: "Which some professing have erred concerning the faith. Grace be with thee. Amen."

2 Timothy 1:1: "Paul, an apostle of Jesus Christ by the will of God, according to the promise of life

which is in Christ Jesus,"

2 Timothy 1:5: "When I call to remembrance the unfeigned faith that is in thee, which dwelt first in thy grandmother Lois, and thy mother Eunice; and I am persuaded that in thee also."

2 Timothy 1:6: "Wherefore I put thee in remembrance that thou stir up the gift of God, which is in thee by the putting on of my hands."

2 Timothy 1:9: "Who hath saved us, and called us with an holy calling, not according to our works, but according to his own purpose and grace, which was given us in Christ Jesus before the world began,"

2 Timothy 1:12: "For the which cause I also suffer these things: nevertheless I am not ashamed: for I know whom I have believed, and am persuaded that he is able to keep that which I have committed unto him against that day."

2 Timothy 1:13: "Hold fast the form of sound words, which thou hast heard of me, in faith and love which is in Christ Jesus."

2 Timothy 1:14: "That good thing which was committed unto thee keep by the Holy Ghost which dwelleth in us."

2 Timothy 1:15: "This thou knowest, that all they which are in Asia be turned away from me; of whom are Phygellus and Hermogenes."

2 Timothy 2:10: "Therefore I endure all things for the elect's sakes, that they may also obtain the salvation which is in Christ Jesus with eternal glory."

2 Timothy 3:6: "For of this sort are they which creep into houses, and lead captive silly women laden with sins, led away with divers lusts,"

2 Timothy 3:11: "Persecutions, afflictions, which came unto me at Antioch, at Iconium, at Lystra; what persecutions I endured: but out of them all the Lord delivered me."

2 Timothy 3:14: "But continue thou in the things which thou hast learned and hast been assured of, knowing of whom thou hast learned them;"

2 Timothy 3:15: "And that from a child thou hast known the holy scriptures, which are able to make thee wise unto salvation through faith which is in Christ Jesus."

2 Timothy 4:8: "Henceforth there is laid up for me a crown of righteousness, which the Lord, the righteous judge, shall give me at that day: and not to me only, but unto all them also that love his appearing."

Titus 1:1: "Paul, a servant of God, and an apostle of Jesus Christ, according to the faith of God's elect, and the acknowledging of the truth which is after godliness;"

Titus 1:2: "In hope of eternal life, which God, that cannot lie, promised before the world began;"

Titus 1:3: "But hath in due times manifested his word through preaching, which is committed unto me according to the commandment of God our Saviour;"

Titus 1:11: "Whose mouths must be stopped, who subvert whole houses, teaching things which they ought not, for filthy lucre's sake."

Titus 2:1: "But speak thou the things which become sound doctrine:"

Titus 3:5: "Not by works of righteousness which we have done, but according to his mercy he saved us, by the washing of regeneration, and renewing of the Holy Ghost;"

Titus 3:6: "Which he shed on us abundantly through Jesus Christ our Saviour;"

Titus 3:8: "This is a faithful saying, and these things I will that thou affirm constantly, that they which have believed in God might be careful to maintain good works. These things are good and profitable unto men."

Philemon 1:5: "Hearing of thy love and faith, which thou hast toward the Lord Jesus, and toward all saints;"

Philemon 1:6: "That the communication of thy faith may become effectual by the acknowledging of every good thing which is in you in Christ Jesus."

Philemon 1:8: "Wherefore, though I might be much bold in Christ to enjoin thee that which is convenient,"

Philemon 1:11: "Which in time past was to thee unprofitable, but now profitable to thee and to me:"

Hebrews 1:5: "For unto which of the angels said he at any time, Thou art my Son, this day have I begotten thee? And again, I will be to him a Father, and he shall be to me a Son?"

Hebrews 1:13: "But to which of the angels said he at any time, Sit on my right hand, until I make thine enemies thy footstool?"

Hebrews 2:1: "Therefore we ought to give the more earnest heed to the things which we have heard, lest at any time we should let them slip."

Hebrews 2:3: "How shall we escape, if we neglect so great salvation; which at the first began to be spoken by the Lord, and was confirmed unto us by them that heard him;"

Hebrews 2:11: "For both he that sanctifieth and they who are sanctified are all of one: for which cause he is not ashamed to call them brethren,"

Hebrews 2:13: "And again, I will put my trust in him. And again, Behold I and the children which God hath given me."

Hebrews 3:5: "And Moses verily was faithful in all his house, as a servant, for a testimony of those things which were to be spoken after;"

Hebrews 4:3: "For we which have believed do enter into rest, as he said, As I have sworn in my wrath, if they shall enter into my rest: although the works were finished from the foundation of the world."

Hebrews 4:15: "For we have not an high priest which cannot be touched with the feeling of our infirmities; but was in all points tempted like as we are, yet without sin."

Hebrews 5:8: "Though he were a Son, yet learned he obedience by the things which he suffered;"

Hebrews 5:12: "For when for the time ye ought to be teachers, ye have need that one teach you again which be the first principles of the oracles of God; and are become such as have need of milk, and not of strong meat."

Hebrews 6:7: "For the earth which drinketh in the rain that cometh oft upon it, and bringeth forth herbs meet for them by whom it is dressed, receiveth blessing from God:"

Hebrews 6:8: "But that which beareth thorns and briers is rejected, and is nigh unto cursing; whose end is to be burned."

Hebrews 6:10: "For God is not unrighteous to forget your work and labour of love, which ye have shewed toward his name, in that ye have ministered to the saints, and do minister."

Hebrews 6:18: "That by two immutable things, in which it was impossible for God to lie, we might have a strong consolation, who have fled for refuge to lay hold upon the hope set before us:"

Hebrews 6:19: "Which hope we have as an anchor of the soul, both sure and stedfast, and which entereth into that within the veil;"

Hebrews 7:2: "To whom also Abraham gave a tenth part of all; first being by interpretation King of righteousness, and after that also King of Salem, which is, King of peace;"

Hebrews 7:13: "For he of whom these things are spoken pertaineth to another tribe, of which no man gave attendance at the altar."

Hebrews 7:14: "For it is evident that our Lord sprang out of Juda; of which tribe Moses spake nothing concerning priesthood."

Hebrews 7:19: "For the law made nothing perfect, but the bringing in of a better hope did; by the which we draw nigh unto God."

Hebrews 7:28: "For the law maketh men high priests which have infirmity; but the word of the oath, which was since the law, maketh the Son, who is consecrated for evermore."

Hebrews 8:1: "Now of the things which we have spoken this is the sum: We have such an high priest, who is set on the right hand of the throne of the Majesty in the heavens;"

Hebrews 8:2: "A minister of the sanctuary, and of the true tabernacle, which the Lord pitched, and not man."

Hebrews 8:6: "But now hath he obtained a more excellent ministry, by how much also he is the mediator of a better covenant, which was established upon better promises."

Hebrews 8:13: "In that he saith, A new covenant, he hath made the first old. Now that which decayeth and waxeth old is ready to vanish away."

Hebrews 9:2: "For there was a tabernacle made; the first, wherein was the candlestick, and the table, and the shewbread; which is called the sanctuary."

Hebrews 9:3: "And after the second veil, the tabernacle which is called the Holiest of all;"

Hebrews 9:4: "Which had the golden censer, and the ark of the covenant overlaid round about with gold, wherein was the golden pot that had manna, and Aaron's rod that budded, and the tables of the covenant;"

Hebrews 9:5: "And over it the cherubims of glory shadowing the mercyseat; of which we cannot now speak particularly."

Hebrews 9:7: "But into the second went the high priest alone once every year, not without blood, which he offered for himself, and for the errors of the people:"

Hebrews 9:9: "Which was a figure for the time then present, in which were offered both gifts and sacrifices, that could not make him that did the service perfect, as pertaining to the conscience;"

Hebrews 9:10: "Which stood only in meats and drinks, and divers washings, and carnal ordinances, imposed on them until the time of reformation."

Hebrews 9:15: "And for this cause he is the mediator of the new testament, that by means of death, for the redemption of the transgressions that were under the first testament, they which are called might receive the promise of eternal inheritance."

Hebrews 9:20: "Saying, This is the blood of the testament which God hath enjoined unto you."

Hebrews 9:24: "For Christ is not entered into the holy places made with hands, which are the figures of the true; but into heaven itself, now to appear in the presence of God for us:"

Hebrews 10:1: "For the law having a shadow of good things to come, and not the very image of the things, can never with those sacrifices which they offered year by year continually make the comers thereunto perfect."

Hebrews 10:8: "Above when he said, Sacrifice and offering and burnt offerings and offering for sin thou wouldest not, neither hadst pleasure therein; which are offered by the law;"

Hebrews 10:10: "By the which will we are sanctified through the offering of the body of Jesus Christ once for all."

Hebrews 10:11: "And every priest standeth daily ministering and offering oftentimes the same sacrifices, which can never take away sins:"

Hebrews 10:20: "By a new and living way, which he hath consecrated for us, through the veil, that is to say, his flesh;"

Hebrews 10:27: "But a certain fearful looking for of judgment and fiery indignation, which shall devour the adversaries."

Hebrews 10:32: "But call to remembrance the former days, in which, after ye were illuminated, ye endured a great fight of afflictions;"

Hebrews 10:35: "Cast not away therefore your confidence, which hath great recompence of reward."

Hebrews 11:3: "Through faith we understand that the worlds were framed by the word of God, so that things which are seen were not made of things which do appear."

Hebrews 11:4: "By faith Abel offered unto God a more excellent sacrifice than Cain, by which he obtained witness that he was righteous, God testifying of his gifts: and by it he being dead yet speaketh."

Hebrews 11:7: "By faith Noah, being warned of God of things not seen as yet, moved with fear, prepared an ark to the saving of his house; by the which he condemned the world, and became heir of the righteousness which is by faith."

Hebrews 11:8: "By faith Abraham, when he was called to go out into a place which he should after receive for an inheritance, obeyed; and he went out, not knowing whither he went."

Hebrews 11:10: "For he looked for a city which hath foundations, whose builder and maker is

God."

Hebrews 11:12: "Therefore sprang there even of one, and him as good as dead, so many as the stars of the sky in multitude, and as the sand which is by the sea shore innumerable."

Hebrews 11:29: "By faith they passed through the Red sea as by dry land: which the Egyptians assaying to do were drowned."

Hebrews 12:1: "Wherefore seeing we also are compassed about with so great a cloud of witnesses, let us lay aside every weight, and the sin which doth so easily beset us, and let us run with patience the race that is set before us,"

Hebrews 12:5: "And ye have forgotten the exhortation which speaketh unto you as unto children, My son, despise not thou the chastening of the Lord, nor faint when thou art rebuked of him:"

Hebrews 12:9: "Furthermore we have had fathers of our flesh which corrected us, and we gave them reverence: shall we not much rather be in subjection unto the Father of spirits, and live?"

Hebrews 12:11: "Now no chastening for the present seemeth to be joyous, but grievous: nevertheless afterward it yieldeth the peaceable fruit of righteousness unto them which are exercised thereby."

Hebrews 12:12: "Wherefore lift up the hands which hang down, and the feeble knees;"

Hebrews 12:13: "And make straight paths for your feet, lest that which is lame be turned out of the way; but let it rather be healed."

Hebrews 12:14: "Follow peace with all men, and holiness, without which no man shall see the Lord:"

Hebrews 12:19: "And the sound of a trumpet, and the voice of words; which voice they that heard intreated that the word should not be spoken to them any more:"

Hebrews 12:20: "(For they could not endure that which was commanded, And if so much as a beast touch the mountain, it shall be stoned, or thrust through with a dart:"

Hebrews 12:23: "To the general assembly and church of the firstborn, which are written in heaven, and to God the Judge of all, and to the spirits of just men made perfect,"

Hebrews 12:27: "And this word, Yet once more, signifieth the removing of those things that are shaken, as of things that are made, that those things which cannot be shaken may remain."

Hebrews 12:28: "Wherefore we receiving a kingdom which cannot be moved, let us have grace, whereby we may serve God acceptably with reverence and godly fear:"

Hebrews 13:3: "Remember them that are in bonds, as bound with them; and them which suffer adversity, as being yourselves also in the body."

Hebrews 13:7: "Remember them which have the rule over you, who have spoken unto you the word of God: whose faith follow, considering the end of their conversation."

Hebrews 13:9: "Be not carried about with divers and strange doctrines. For it is a good thing that the heart be established with grace; not with meats, which have not profited them that have been occupied therein."

Hebrews 13:10: "We have an altar, whereof they have no right to eat which serve the tabernacle."

Hebrews 13:21: "Make you perfect in every good work to do his will, working in you that which is wellpleasing in his sight, through Jesus Christ; to whom be glory for ever and ever. Amen."

James 1:1: "James, a servant of God and of the Lord Jesus Christ, to the twelve tribes which are scattered abroad, greeting."

James 1:12: "Blessed is the man that endureth temptation: for when he is tried, he shall receive the crown of life, which the Lord hath promised to them that love him."

James 1:21: "Wherefore lay apart all filthiness and superfluity of naughtiness, and receive with meekness the engrafted word, which is able to save your souls."

James 2:5: "Hearken, my beloved brethren, Hath not God chosen the poor of this world rich in faith, and heirs of the kingdom which he hath promised to them that love him?"

James 2:7: "Do not they blaspheme that worthy name by the which ye are called?"

James 2:16: "And one of you say unto them, Depart in peace, be ye warmed and filled;



notwithstanding ye give them not those things which are needful to the body; what doth it profit?"

James 2:23: "And the scripture was fulfilled which saith, Abraham believed God, and it was imputed unto him for righteousness: and he was called the Friend of God."

James 3:4: "Behold also the ships, which though they be so great, and are driven of fierce winds, yet are they turned about with a very small helm, whithersoever the governor listeth."

James 3:9: "Therewith bless we God, even the Father; and therewith curse we men, which are made after the similitude of God."

James 5:4: "Behold, the hire of the labourers who have reaped down your fields, which is of you kept back by fraud, crieth: and the cries of them which have reaped are entered into the ears of the Lord of sabaoth."

James 5:11: "Behold, we count them happy which endure. Ye have heard of the patience of Job, and have seen the end of the Lord; that the Lord is very pitiful, and of tender mercy."

James 5:20: "Let him know, that he which converteth the sinner from the error of his way shall save a soul from death, and shall hide a multitude of sins."

1 Peter 1:3: "Blessed be the God and Father of our Lord Jesus Christ, which according to his abundant mercy hath begotten us again unto a lively hope by the resurrection of Jesus Christ from the dead,"

1 Peter 1:10: "Of which salvation the prophets have enquired and searched diligently, who prophesied of the grace that should come unto you:"

1 Peter 1:11: "Searching what, or what manner of time the Spirit of Christ which was in them did signify, when it testified beforehand the sufferings of Christ, and the glory that should follow."

1 Peter 1:12: "Unto whom it was revealed, that not unto themselves, but unto us they did minister the things, which are now reported unto you by them that have preached the gospel unto you with the Holy Ghost sent down from heaven; which things the angels desire to look into."

1 Peter 1:15: "But as he which hath called you is holy, so be ye holy in all manner of conversation;"

1 Peter 1:23: "Being born again, not of corruptible seed, but of incorruptible, by the word of God, which liveth and abideth for ever."

1 Peter 1:25: "But the word of the Lord endureth for ever. And this is the word which by the gospel is preached unto you."

1 Peter 2:7: "Unto you therefore which believe he is precious: but unto them which be disobedient, the stone which the builders disallowed, the same is made the head of the corner,"

1 Peter 2:8: "And a stone of stumbling, and a rock of offence, even to them which stumble at the word, being disobedient: whereunto also they were appointed."

1 Peter 2:10: "Which in time past were not a people, but are now the people of God: which had not obtained mercy, but now have obtained mercy."

1 Peter 2:11: "Dearly beloved, I beseech you as strangers and pilgrims, abstain from fleshly lusts, which war against the soul;"

1 Peter 2:12: "Having your conversation honest among the Gentiles: that, whereas they speak against you as evildoers, they may by your good works, which they shall behold, glorify God in the day of visitation."

1 Peter 3:4: "But let it be the hidden man of the heart, in that which is not corruptible, even the ornament of a meek and quiet spirit, which is in the sight of God of great price."

1 Peter 3:13: "And who is he that will harm you, if ye be followers of that which is good?"

1 Peter 3:19: "By which also he went and preached unto the spirits in prison;"

1 Peter 3:20: "Which sometime were disobedient, when once the longsuffering of God waited in the days of Noah, while the ark was a preparing, wherein few, that is, eight souls were saved by water."

1 Peter 4:11: "If any man speak, let him speak as the oracles of God; if any man minister, let him do it as of the ability which God giveth: that God in all things may be glorified through Jesus Christ, to whom be praise and dominion for ever and ever. Amen."

1 Peter 4:12: "Beloved, think it not strange concerning the fiery trial which is to try you, as though

some strange thing happened unto you:"

1 Peter 5:1: "The elders which are among you I exhort, who am also an elder, and a witness of the sufferings of Christ, and also a partaker of the glory that shall be revealed:"

1 Peter 5:2: "Feed the flock of God which is among you, taking the oversight thereof, not by constraint, but willingly; not for filthy lucre, but of a ready mind;"

2 Peter 1:18: "And this voice which came from heaven we heard, when we were with him in the holy mount."

2 Peter 2:11: "Whereas angels, which are greater in power and might, bring not railing accusation against them before the Lord."

2 Peter 2:15: "Which have forsaken the right way, and are gone astray, following the way of Balaam the son of Bosor, who loved the wages of unrighteousness;"

2 Peter 3:1: "This second epistle, beloved, I now write unto you; in both which I stir up your pure minds by way of remembrance:"

2 Peter 3:2: "That ye may be mindful of the words which were spoken before by the holy prophets, and of the commandment of us the apostles of the Lord and Saviour:"

2 Peter 3:7: "But the heavens and the earth, which are now, by the same word are kept in store, reserved unto fire against the day of judgment and perdition of ungodly men."

2 Peter 3:10: "But the day of the Lord will come as a thief in the night; in the which the heavens shall pass away with a great noise, and the elements shall melt with fervent heat, the earth also and the works that are therein shall be burned up."

2 Peter 3:16: "As also in all his epistles, speaking in them of these things; in which are some things hard to be understood, which they that are unlearned and unstable wrest, as they do also the other scriptures, unto their own destruction."

1 John 1:1: "That which was from the beginning, which we have heard, which we have seen with our eyes, which we have looked upon, and our hands have handled, of the Word of life;"

1 John 1:2: "(For the life was manifested, and we have seen it, and bear witness, and shew unto you that eternal life, which was with the Father, and was manifested unto us;)"

1 John 1:3: "That which we have seen and heard declare we unto you, that ye also may have fellowship with us: and truly our fellowship is with the Father, and with his Son Jesus Christ."

1 John 1:5: "This then is the message which we have heard of him, and declare unto you, that God is light, and in him is no darkness at all."

1 John 2:7: "Brethren, I write no new commandment unto you, but an old commandment which ye had from the beginning. The old commandment is the word which ye have heard from the beginning."

1 John 2:8: "Again, a new commandment I write unto you, which thing is true in him and in you: because the darkness is past, and the true light now shineth."

1 John 2:24: "Let that therefore abide in you, which ye have heard from the beginning. If that which ye have heard from the beginning shall remain in you, ye also shall continue in the Son, and in the Father."

1 John 2:27: "But the anointing which ye have received of him abideth in you, and ye need not that any man teach you: but as the same anointing teacheth you of all things, and is truth, and is no lie, and even as it hath taught you, ye shall abide in him."

1 John 3:24: "And he that keepeth his commandments dwelleth in him, and he in him. And hereby we know that he abideth in us, by the Spirit which he hath given us."

1 John 5:9: "If we receive the witness of men, the witness of God is greater: for this is the witness of God which he hath testified of his Son."

1 John 5:16: "If any man see his brother sin a sin which is not unto death, he shall ask, and he shall give him life for them that sin not unto death. There is a sin unto death: I do not say that he shall pray for it."

2 John 1:2: "For the truth's sake, which dwelleth in us, and shall be with us for ever."

2 John 1:5: "And now I beseech thee, lady, not as though I wrote a new commandment unto thee, but that which we had from the beginning, that we love one another."

2 John 1:8: "Look to yourselves, that we lose not those things which we have wrought, but that we receive a full reward."

3 John 1:6: "Which have borne witness of thy charity before the church: whom if thou bring forward on their journey after a godly sort, thou shalt do well:"

3 John 1:10: "Wherefore, if I come, I will remember his deeds which he doeth, prating against us with malicious words: and not content therewith, neither doth he himself receive the brethren, and forbiddeth them that would, and casteth them out of the church."

3 John 1:11: "Beloved, follow not that which is evil, but that which is good. He that doeth good is of God: but he that doeth evil hath not seen God."

Jude 1:3: "Beloved, when I gave all diligence to write unto you of the common salvation, it was needful for me to write unto you, and exhort you that ye should earnestly contend for the faith which was once delivered unto the saints."

Jude 1:6: "And the angels which kept not their first estate, but left their own habitation, he hath reserved in everlasting chains under darkness unto the judgment of the great day."

Jude 1:10: "But these speak evil of those things which they know not: but what they know naturally, as brute beasts, in those things they corrupt themselves."

Jude 1:15: "To execute judgment upon all, and to convince all that are ungodly among them of all their ungodly deeds which they have ungodly committed, and of all their hard speeches which ungodly sinners have spoken against him."

Jude 1:17: "But, beloved, remember ye the words which were spoken before of the apostles of our Lord Jesus Christ;"

Revelation 1:1: "The Revelation of Jesus Christ, which God gave unto him, to shew unto his servants things which must shortly come to pass; and he sent and signified it by his angel unto his servant John:"

Revelation 1:3: "Blessed is he that readeth, and they that hear the words of this prophecy, and keep those things which are written therein: for the time is at hand."

Revelation 1:4: "John to the seven churches which are in Asia: Grace be unto you, and peace, from him which is, and which was, and which is to come; and from the seven Spirits which are before his throne;"

Revelation 1:7: "Behold, he cometh with clouds; and every eye shall see him, and they also which pierced him: and all kindreds of the earth shall wail because of him. Even so, Amen."

Revelation 1:8: "I am Alpha and Omega, the beginning and the ending, saith the Lord, which is, and which was, and which is to come, the Almighty."

Revelation 1:11: "Saying, I am Alpha and Omega, the first and the last: and, What thou seest, write in a book, and send it unto the seven churches which are in Asia; unto Ephesus, and unto Smyrna, and unto Pergamos, and unto Thyatira, and unto Sardis, and unto Philadelphia, and unto Laodicea."

Revelation 1:19: "Write the things which thou hast seen, and the things which are, and the things which shall be hereafter;"

Revelation 1:20: "The mystery of the seven stars which thou sawest in my right hand, and the seven golden candlesticks. The seven stars are the angels of the seven churches: and the seven candlesticks which thou sawest are the seven churches."

Revelation 2:2: "I know thy works, and thy labour, and thy patience, and how thou canst not bear them which are evil: and thou hast tried them which say they are apostles, and are not, and hast found them liars:"

Revelation 2:6: "But this thou hast, that thou hatest the deeds of the Nicolaitanes, which I also hate."

Revelation 2:7: "He that hath an ear, let him hear what the Spirit saith unto the churches; To him that overcometh will I give to eat of the tree of life, which is in the midst of the paradise of God."

Revelation 2:8: "And unto the angel of the church in Smyrna write; These things saith the first and the last, which was dead, and is alive;"

Revelation 2:9: "I know thy works, and tribulation, and poverty, (but thou art rich) and I know the blasphemy of them which say they are Jews, and are not, but are the synagogue of Satan."

Revelation 2:10: "Fear none of those things which thou shalt suffer: behold, the devil shall cast some of you into prison, that ye may be tried; and ye shall have tribulation ten days: be thou faithful unto death, and I will give thee a crown of life."

Revelation 2:12: "And to the angel of the church in Pergamos write; These things saith he which hath the sharp sword with two edges;"

Revelation 2:15: "So hast thou also them that hold the doctrine of the Nicolaitanes, which thing I hate."

Revelation 2:17: "He that hath an ear, let him hear what the Spirit saith unto the churches; To him that overcometh will I give to eat of the hidden manna, and will give him a white stone, and in the stone a new name written, which no man knoweth saving he that receiveth it."

Revelation 2:20: "Notwithstanding I have a few things against thee, because thou sufferest that woman Jezebel, which calleth herself a prophetess, to teach and to seduce my servants to commit fornication, and to eat things sacrificed unto idols."

Revelation 2:23: "And I will kill her children with death; and all the churches shall know that I am he which searcheth the reins and hearts: and I will give unto every one of you according to your works."

Revelation 2:24: "But unto you I say, and unto the rest in Thyatira, as many as have not this doctrine, and which have not known the depths of Satan, as they speak; I will put upon you none other burden."

Revelation 2:25: "But that which ye have already hold fast till I come."

Revelation 3:2: "Be watchful, and strengthen the things which remain, that are ready to die: for I have not found thy works perfect before God."

Revelation 3:4: "Thou hast a few names even in Sardis which have not defiled their garments; and they shall walk with me in white: for they are worthy."

Revelation 3:9: "Behold, I will make them of the synagogue of Satan, which say they are Jews, and are not, but do lie; behold, I will make them to come and worship before thy feet, and to know that I have loved thee."

Revelation 3:10: "Because thou hast kept the word of my patience, I also will keep thee from the hour of temptation, which shall come upon all the world, to try them that dwell upon the earth."

Revelation 3:11: "Behold, I come quickly: hold that fast which thou hast, that no man take thy crown."

Revelation 3:12: "Him that overcometh will I make a pillar in the temple of my God, and he shall go no more out: and I will write upon him the name of my God, and the name of the city of my God, which is new Jerusalem, which cometh down out of heaven from my God: and I will write upon him my new name."

Revelation 4:1: "After this I looked, and, behold, a door was opened in heaven: and the first voice which I heard was as it were of a trumpet talking with me; which said, Come up hither, and I will shew thee things which must be hereafter."

Revelation 4:5: "And out of the throne proceeded lightnings and thunderings and voices: and there were seven lamps of fire burning before the throne, which are the seven Spirits of God."

Revelation 4:8: "And the four beasts had each of them six wings about him; and they were full of eyes within: and they rest not day and night, saying, Holy, holy, holy, LORD God Almighty, which was, and is, and is to come."

Revelation 5:6: "And I beheld, and, lo, in the midst of the throne and of the four beasts, and in the midst of the elders, stood a Lamb as it had been slain, having seven horns and seven eyes, which are the seven Spirits of God sent forth into all the earth."

Revelation 5:8: "And when he had taken the book, the four beasts and four and twenty elders fell down before the Lamb, having every one of them harps, and golden vials full of odours, which are the prayers of saints."

Revelation 5:13: "And every creature which is in heaven, and on the earth, and under the earth, and such as are in the sea, and all that are in them, heard I saying, Blessing, and honour, and glory, and power, be unto him that sitteth upon the throne, and unto the Lamb for ever and ever."

Revelation 6:9: "And when he had opened the fifth seal, I saw under the altar the souls of them that were slain for the word of God, and for the testimony which they held:"

Revelation 7:4: "And I heard the number of them which were sealed: and there were sealed an hundred and forty and four thousand of all the tribes of the children of Israel."

Revelation 7:9: "After this I beheld, and, lo, a great multitude, which no man could number, of all nations, and kindreds, and people, and tongues, stood before the throne, and before the Lamb, clothed with white robes, and palms in their hands;"

Revelation 7:10: "And cried with a loud voice, saying, Salvation to our God which sitteth upon the throne, and unto the Lamb."

Revelation 7:13: "And one of the elders answered, saying unto me, What are these which are arrayed in white robes? and whence came they?"

Revelation 7:14: "And I said unto him, Sir, thou knowest. And he said to me, These are they which came out of great tribulation, and have washed their robes, and made them white in the blood of the Lamb."

Revelation 7:17: "For the Lamb which is in the midst of the throne shall feed them, and shall lead them unto living fountains of waters: and God shall wipe away all tears from their eyes."

Revelation 8:2: "And I saw the seven angels which stood before God; and to them were given seven trumpets."

Revelation 8:3: "And another angel came and stood at the altar, having a golden censer; and there was given unto him much incense, that he should offer it with the prayers of all saints upon the golden altar which was before the throne."

Revelation 8:4: "And the smoke of the incense, which came with the prayers of the saints, ascended up before God out of the angel's hand."

Revelation 8:6: "And the seven angels which had the seven trumpets prepared themselves to sound."

Revelation 8:9: "And the third part of the creatures which were in the sea, and had life, died; and the third part of the ships were destroyed."

Revelation 8:13: "And I beheld, and heard an angel flying through the midst of heaven, saying with a loud voice, Woe, woe, woe, to the inhabitants of the earth by reason of the other voices of the trumpet of the three angels, which are yet to sound!"

Revelation 9:4: "And it was commanded them that they should not hurt the grass of the earth, neither any green thing, neither any tree; but only those men which have not the seal of God in their foreheads."

Revelation 9:11: "And they had a king over them, which is the angel of the bottomless pit, whose name in the Hebrew tongue is Abaddon, but in the Greek tongue hath his name Apollyon."

Revelation 9:13: "And the sixth angel sounded, and I heard a voice from the four horns of the golden altar which is before God,"

Revelation 9:14: "Saying to the sixth angel which had the trumpet, Loose the four angels which are bound in the great river Euphrates."

Revelation 9:15: "And the four angels were loosed, which were prepared for an hour, and a day, and a month, and a year, for to slay the third part of men."

Revelation 9:18: "By these three was the third part of men killed, by the fire, and by the smoke, and by the brimstone, which issued out of their mouths."

Revelation 9:20: "And the rest of the men which were not killed by these plagues yet repented not

of the works of their hands, that they should not worship devils, and idols of gold, and silver, and brass, and stone, and of wood: which neither can see, nor hear, nor walk:"

Revelation 10:4: "And when the seven thunders had uttered their voices, I was about to write: and I heard a voice from heaven saying unto me, Seal up those things which the seven thunders uttered, and write them not."

Revelation 10:5: "And the angel which I saw stand upon the sea and upon the earth lifted up his hand to heaven,"

Revelation 10:6: "And swore by him that liveth for ever and ever, who created heaven, and the things that therein are, and the earth, and the things that therein are, and the sea, and the things which are therein, that there should be time no longer:"

Revelation 10:8: "And the voice which I heard from heaven spake unto me again, and said, Go and take the little book which is open in the hand of the angel which standeth upon the sea and upon the earth."

Revelation 11:2: "But the court which is without the temple leave out, and measure it not; for it is given unto the Gentiles: and the holy city shall they tread under foot forty and two months."

Revelation 11:8: "And their dead bodies shall lie in the street of the great city, which spiritually is called Sodom and Egypt, where also our Lord was crucified."

Revelation 11:11: "And after three days and an half the spirit of life from God entered into them, and they stood upon their feet; and great fear fell upon them which saw them."

Revelation 11:16: "And the four and twenty elders, which sat before God on their seats, fell upon their faces, and worshipped God,"

Revelation 11:17: "Saying, We give thee thanks, O LORD God Almighty, which art, and wast, and art to come; because thou hast taken to thee thy great power, and hast reigned."

Revelation 11:18: "And the nations were angry, and thy wrath is come, and the time of the dead, that they should be judged, and that thou shouldest give reward unto thy servants the prophets, and to the saints, and them that fear thy name, small and great; and shouldest destroy them which destroy the earth."

Revelation 12:4: "And his tail drew the third part of the stars of heaven, and did cast them to the earth: and the dragon stood before the woman which was ready to be delivered, for to devour her child as soon as it was born."

Revelation 12:9: "And the great dragon was cast out, that old serpent, called the Devil, and Satan, which deceiveth the whole world: he was cast out into the earth, and his angels were cast out with him."

Revelation 12:10: "And I heard a loud voice saying in heaven, Now is come salvation, and strength, and the kingdom of our God, and the power of his Christ: for the accuser of our brethren is cast down, which accused them before our God day and night."

Revelation 12:13: "And when the dragon saw that he was cast unto the earth, he persecuted the woman which brought forth the man child."

Revelation 12:16: "And the earth helped the woman, and the earth opened her mouth, and swallowed up the flood which the dragon cast out of his mouth."

Revelation 12:17: "And the dragon was wroth with the woman, and went to make war with the remnant of her seed, which keep the commandments of God, and have the testimony of Jesus Christ."

Revelation 13:2: "And the beast which I saw was like unto a leopard, and his feet were as the feet of a bear, and his mouth as the mouth of a lion: and the dragon gave him his power, and his seat, and great authority."

Revelation 13:4: "And they worshipped the dragon which gave power unto the beast: and they worshipped the beast, saying, Who is like unto the beast? who is able to make war with him?"

Revelation 13:12: "And he exerciseth all the power of the first beast before him, and causeth the earth and them which dwell therein to worship the first beast, whose deadly wound was healed."

Revelation 13:14: "And deceiveth them that dwell on the earth by the means of those miracles which he had power to do in the sight of the beast; saying to them that dwell on the earth, that they should make an image to the beast, which had the wound by a sword, and did live."

Revelation 14:3: "And they sung as it were a new song before the throne, and before the four beasts, and the elders: and no man could learn that song but the hundred and forty and four thousand, which were redeemed from the earth."

Revelation 14:4: "These are they which were not defiled with women; for they are virgins. These are they which follow the Lamb whithersoever he goeth. These were redeemed from among men, being the firstfruits unto God and to the Lamb."

Revelation 14:10: "The same shall drink of the wine of the wrath of God, which is poured out without mixture into the cup of his indignation; and he shall be tormented with fire and brimstone in the presence of the holy angels, and in the presence of the Lamb:"

Revelation 14:13: "And I heard a voice from heaven saying unto me, Write, Blessed are the dead which die in the Lord from henceforth: Yea, saith the Spirit, that they may rest from their labours; and their works do follow them."

Revelation 14:17: "And another angel came out of the temple which is in heaven, he also having a sharp sickle."

Revelation 14:18: "And another angel came out from the altar, which had power over fire; and cried with a loud cry to him that had the sharp sickle, saying, Thrust in thy sharp sickle, and gather the clusters of the vine of the earth; for her grapes are fully ripe."

Revelation 16:2: "And the first went, and poured out his vial upon the earth; and there fell a noisome and grievous sore upon the men which had the mark of the beast, and upon them which worshipped his image."

Revelation 16:5: "And I heard the angel of the waters say, Thou art righteous, O Lord, which art, and wast, and shalt be, because thou hast judged thus."

Revelation 16:9: "And men were scorched with great heat, and blasphemed the name of God, which hath power over these plagues: and they repented not to give him glory."

Revelation 16:14: "For they are the spirits of devils, working miracles, which go forth unto the kings of the earth and of the whole world, to gather them to the battle of that great day of God Almighty."

Revelation 17:1: "And there came one of the seven angels which had the seven vials, and talked with me, saying unto me, Come hither; I will shew unto thee the judgment of the great whore that sitteth upon many waters:"

Revelation 17:7: "And the angel said unto me, Wherefore didst thou marvel? I will tell thee the mystery of the woman, and of the beast that carrieth her, which hath the seven heads and ten horns."

Revelation 17:9: "And here is the mind which hath wisdom. The seven heads are seven mountains, on which the woman sitteth."

Revelation 17:12: "And the ten horns which thou sawest are ten kings, which have received no kingdom as yet; but receive power as kings one hour with the beast."

Revelation 17:15: "And he saith unto me, The waters which thou sawest, where the whore sitteth, are peoples, and multitudes, and nations, and tongues."

Revelation 17:16: "And the ten horns which thou sawest upon the beast, these shall hate the whore, and shall make her desolate and naked, and shall eat her flesh, and burn her with fire."

Revelation 17:18: "And the woman which thou sawest is that great city, which reigneth over the kings of the earth."

Revelation 18:6: "Reward her even as she rewarded you, and double unto her double according to her works: in the cup which she hath filled fill to her double."

Revelation 18:14: "And the fruits that thy soul lusted after are departed from thee, and all things which were dainty and goodly are departed from thee, and thou shalt find them no more at all."

Revelation 18:15: "The merchants of these things, which were made rich by her, shall stand afar off

for the fear of her torment, weeping and wailing,"

Revelation 19:2: "For true and righteous are his judgments: for he hath judged the great whore, which did corrupt the earth with her fornication, and hath avenged the blood of his servants at her hand."

Revelation 19:9: "And he saith unto me, Write, Blessed are they which are called unto the marriage supper of the Lamb. And he saith unto me, These are the true sayings of God."

Revelation 19:14: "And the armies which were in heaven followed him upon white horses, clothed in fine linen, white and clean."

Revelation 19:20: "And the beast was taken, and with him the false prophet that wrought miracles before him, with which he deceived them that had received the mark of the beast, and them that worshipped his image. These both were cast alive into a lake of fire burning with brimstone."

Revelation 19:21: "And the remnant were slain with the sword of him that sat upon the horse, which sword proceeded out of his mouth: and all the fowls were filled with their flesh."

Revelation 20:2: "And he laid hold on the dragon, that old serpent, which is the Devil, and Satan, and bound him a thousand years,"

Revelation 20:4: "And I saw thrones, and they sat upon them, and judgment was given unto them: and I saw the souls of them that were beheaded for the witness of Jesus, and for the word of God, and which had not worshipped the beast, neither his image, neither had received his mark upon their foreheads, or in their hands; and they lived and reigned with Christ a thousand years."

Revelation 20:8: "And shall go out to deceive the nations which are in the four quarters of the earth, Gog, and Magog, to gather them together to battle: the number of whom is as the sand of the sea."

Revelation 20:12: "And I saw the dead, small and great, stand before God; and the books were opened: and another book was opened, which is the book of life: and the dead were judged out of those things which were written in the books, according to their works."

Revelation 20:13: "And the sea gave up the dead which were in it; and death and hell delivered up the dead which were in them: and they were judged every man according to their works."

Revelation 21:8: "But the fearful, and unbelieving, and the abominable, and murderers, and whoremongers, and sorcerers, and idolaters, and all liars, shall have their part in the lake which burneth with fire and brimstone: which is the second death."

Revelation 21:9: "And there came unto me one of the seven angels which had the seven vials full of the seven last plagues, and talked with me, saying, Come hither, I will shew thee the bride, the Lamb's wife."

Revelation 21:12: "And had a wall great and high, and had twelve gates, and at the gates twelve angels, and names written thereon, which are the names of the twelve tribes of the children of Israel."

Revelation 21:24: "And the nations of them which are saved shall walk in the light of it: and the kings of the earth do bring their glory and honour into it."

Revelation 21:27: "And there shall in no wise enter into it any thing that defileth, neither whatsoever worketh abomination, or maketh a lie: but they which are written in the Lamb's book of life."

Revelation 22:2: "In the midst of the street of it, and on either side of the river, was there the tree of life, which bare twelve manner of fruits, and yielded her fruit every month: and the leaves of the tree were for the healing of the nations."

Revelation 22:6: "And he said unto me, These sayings are faithful and true: and the Lord God of the holy prophets sent his angel to shew unto his servants the things which must shortly be done."

Revelation 22:8: "And I John saw these things, and heard them. And when I had heard and seen, I fell down to worship before the feet of the angel which shewed me these things."

Revelation 22:9: "Then saith he unto me, See thou do it not: for I am thy fellowservant, and of thy brethren the prophets, and of them which keep the sayings of this book: worship God."

Revelation 22:11: "He that is unjust, let him be unjust still: and he which is filthy, let him be filthy



still: and he that is righteous, let him be righteous still: and he that is holy, let him be holy still."  
Revelation 22:19: "And if any man shall take away from the words of the book of this prophecy, God shall take away his part out of the book of life, and out of the holy city, and from the things which are written in this book."

Revelation 22:20: "He which testifieth these things saith, Surely I come quickly. Amen. Even so, come, Lord Jesus."

## WHILE

Occurrences: 205

Genesis 8:22: "While the earth remaineth, seedtime and harvest, and cold and heat, and summer and winter, and day and night shall not cease."

Genesis 19:16: "And while he lingered, the men laid hold upon his hand, and upon the hand of his wife, and upon the hand of his two daughters; the LORD being merciful unto him: and they brought him forth, and set him without the city."

Genesis 25:6: "But unto the sons of the concubines, which Abraham had, Abraham gave gifts, and sent them away from Isaac his son, while he yet lived, eastward, unto the east country."

Genesis 29:9: "And while he yet spake with them, Rachel came with her father's sheep; for she kept them."

Genesis 45:1: "Then Joseph could not refrain himself before all them that stood by him; and he cried, Cause every man to go out from me. And there stood no man with him, while Joseph made himself known unto his brethren."

Genesis 46:29: "And Joseph made ready his chariot, and went up to meet Israel his father, to Goshen, and presented himself unto him; and he fell on his neck, and wept on his neck a good while."

Exodus 33:22: "And it shall come to pass, while my glory passeth by, that I will put thee in a clift of the rock, and will cover thee with my hand while I pass by:"

Exodus 34:29: "And it came to pass, when Moses came down from mount Sinai with the two tables of testimony in Moses' hand, when he came down from the mount, that Moses wist not that the skin of his face shone while he talked with him."

Leviticus 4:27: "And if any one of the common people sin through ignorance, while he doeth somewhat against any of the commandments of the LORD concerning things which ought not to be done, and be guilty;"

Leviticus 14:46: "Moreover he that goeth into the house all the while that it is shut up shall be unclean until the even."

Leviticus 26:43: "The land also shall be left of them, and shall enjoy her sabbaths, while she lieth desolate without them: and they shall accept of the punishment of their iniquity: because, even because they despised my judgments, and because their soul abhorred my statutes."

Numbers 11:33: "And while the flesh was yet between their teeth, ere it was chewed, the wrath of the LORD was kindled against the people, and the LORD smote the people with a very great plague."

Numbers 15:32: "And while the children of Israel were in the wilderness, they found a man that gathered sticks upon the sabbath day."

Numbers 23:15: "And he said unto Balak, Stand here by thy burnt offering, while I meet the LORD yonder."

Numbers 25:11: "Phinehas, the son of Eleazar, the son of Aaron the priest, hath turned my wrath away from the children of Israel, while he was zealous for my sake among them, that I consumed not the children of Israel in my jealousy."

Deuteronomy 19:6: "Lest the avenger of the blood pursue the slayer, while his heart is hot, and overtake him, because the way is long, and slay him; whereas he was not worthy of death, inasmuch as he hated him not in time past."

Deuteronomy 31:27: "For I know thy rebellion, and thy stiff neck: behold, while I am yet alive with you this day, ye have been rebellious against the LORD; and how much more after my death?"

Joshua 14:10: "And now, behold, the LORD hath kept me alive, as he said, these forty and five years, even since the LORD spake this word unto Moses, while the children of Israel wandered in the wilderness: and now, lo, I am this day fourscore and five years old."

Judges 3:26: "And Ehud escaped while they tarried, and passed beyond the quarries, and escaped unto Seirath."

Judges 11:26: "While Israel dwelt in Heshbon and her towns, and in Aroer and her towns, and in all the cities that be along by the coasts of Arnon, three hundred years? why therefore did ye not recover them within that time?"

Judges 14:17: "And she wept before him the seven days, while their feast lasted: and it came to pass on the seventh day, that he told her, because she lay sore upon him: and she told the riddle to the children of her people."

Judges 15:1: "But it came to pass within a while after, in the time of wheat harvest, that Samson visited his wife with a kid; and he said, I will go in to my wife into the chamber. But her father would not suffer him to go in."

Judges 16:27: "Now the house was full of men and women; and all the lords of the Philistines were there; and there were upon the roof about three thousand men and women, that beheld while Samson made sport."

1 Samuel 2:13: "And the priest's custom with the people was, that, when any man offered sacrifice, the priest's servant came, while the flesh was in seething, with a fleshhook of three teeth in his hand;"

1 Samuel 7:2: "And it came to pass, while the ark abode in Kirjathjearim, that the time was long; for it was twenty years: and all the house of Israel lamented after the LORD."

1 Samuel 9:27: "And as they were going down to the end of the city, Samuel said to Saul, Bid the servant pass on before us, (and he passed on), but stand thou still a while, that I may shew thee the word of God."

1 Samuel 14:19: "And it came to pass, while Saul talked unto the priest, that the noise that was in the host of the Philistines went on and increased: and Saul said unto the priest, Withdraw thine hand."

1 Samuel 20:14: "And thou shalt not only while yet I live shew me the kindness of the LORD, that I die not:"

1 Samuel 22:4: "And he brought them before the king of Moab: and they dwelt with him all the while that David was in the hold."

1 Samuel 25:7: "And now I have heard that thou hast shearers: now thy shepherds which were with us, we hurt them not, neither was there ought missing unto them, all the while they were in Carmel."

1 Samuel 25:16: "They were a wall unto us both by night and day, all the while we were with them keeping the sheep."

1 Samuel 27:11: "And David saved neither man nor woman alive, to bring tidings to Gath, saying, Lest they should tell on us, saying, So did David, and so will be his manner all the while he dwelleth in the country of the Philistines."

2 Samuel 3:6: "And it came to pass, while there was war between the house of Saul and the house of David, that Abner made himself strong for the house of Saul."

2 Samuel 3:35: "And when all the people came to cause David to eat meat while it was yet day, David sware, saying, So do God to me, and more also, if I taste bread, or ought else, till the sun be down."

2 Samuel 7:19: "And this was yet a small thing in thy sight, O Lord GOD; but thou hast spoken also of thy servant's house for a great while to come. And is this the manner of man, O Lord GOD?"

2 Samuel 12:18: "And it came to pass on the seventh day, that the child died. And the servants of

David feared to tell him that the child was dead: for they said, Behold, while the child was yet alive, we spake unto him, and he would not hearken unto our voice: how will he then vex himself, if we tell him that the child is dead?"

2 Samuel 12:21: "Then said his servants unto him, What thing is this that thou hast done? thou didst fast and weep for the child, while it was alive; but when the child was dead, thou didst rise and eat bread."

2 Samuel 12:22: "And he said, While the child was yet alive, I fasted and wept: for I said, Who can tell whether GOD will be gracious to me, that the child may live?"

2 Samuel 13:30: "And it came to pass, while they were in the way, that tidings came to David, saying, Absalom hath slain all the king's sons, and there is not one of them left."

2 Samuel 15:8: "For thy servant vowed a vow while I abode at Geshur in Syria, saying, If the LORD shall bring me again indeed to Jerusalem, then I will serve the LORD."

2 Samuel 15:12: "And Absalom sent for Ahithophel the Gilonite, David's counsellor, from his city, even from Giloh, while he offered sacrifices. And the conspiracy was strong; for the people increased continually with Absalom."

2 Samuel 17:2: "And I will come upon him while he is weary and weak handed, and will make him afraid: and all the people that are with him shall flee; and I will smite the king only:"

2 Samuel 18:14: "Then said Joab, I may not tarry thus with thee. And he took three darts in his hand, and thrust them through the heart of Absalom, while he was yet alive in the midst of the oak."

2 Samuel 19:32: "Now Barzillai was a very aged man, even fourscore years old: and he had provided the king of sustenance while he lay at Mahanaim; for he was a very great man."

2 Samuel 24:13: "So Gad came to David, and told him, and said unto him, Shall seven years of famine come unto thee in thy land? or wilt thou flee three months before thine enemies, while they pursue thee? or that there be three days' pestilence in thy land? now advise, and see what answer I shall return to him that sent me."

1 Kings 1:14: "Behold, while thou yet talkest there with the king, I also will come in after thee, and confirm thy words."

1 Kings 1:22: "And, lo, while she yet talked with the king, Nathan the prophet also came in."

1 Kings 1:42: "And while he yet spake, behold, Jonathan the son of Abiathar the priest came; and Adonijah said unto him, Come in; for thou art a valiant man, and bringest good tidings."

1 Kings 3:20: "And she arose at midnight, and took my son from beside me, while thine handmaid slept, and laid it in her bosom, and laid her dead child in my bosom."

1 Kings 6:7: "And the house, when it was in building, was built of stone made ready before it was brought thither: so that there was neither hammer nor axe nor any tool of iron heard in the house, while it was in building."

1 Kings 12:6: "And king Rehoboam consulted with the old men, that stood before Solomon his father while he yet lived, and said, How do ye advise that I may answer this people?"

1 Kings 17:7: "And it came to pass after a while, that the brook dried up, because there had been no rain in the land."

1 Kings 18:45: "And it came to pass in the mean while, that the heaven was black with clouds and wind, and there was a great rain. And Ahab rode, and went to Jezreel."

2 Kings 6:33: "And while he yet talked with them, behold, the messenger came down unto him: and he said, Behold, this evil is of the LORD; what should I wait for the LORD any longer?"

1 Chronicles 12:1: "Now these are they that came to David to Ziklag, while he yet kept himself close because of Saul the son of Kish: and they were among the mighty men, helpers of the war."

1 Chronicles 17:17: "And yet this was a small thing in thine eyes, O God; for thou hast also spoken of thy servant's house for a great while to come, and hast regarded me according to the estate of a man of high degree, O LORD God."

1 Chronicles 21:12: "Either three years' famine; or three months to be destroyed before thy foes, while that the sword of thine enemies overtaketh thee; or else three days the sword of the LORD,

even the pestilence, in the land, and the angel of the LORD destroying throughout all the coasts of Israel. Now therefore advise thyself what word I shall bring again to him that sent me."

2 Chronicles 10:6: "And king Rehoboam took counsel with the old men that had stood before Solomon his father while he yet lived, saying, What counsel give ye me to return answer to this people?"

2 Chronicles 14:7: "Therefore he said unto Judah, Let us build these cities, and make about them walls, and towers, gates, and bars, while the land is yet before us; because we have sought the LORD our God, we have sought him, and he hath given us rest on every side. So they built and prospered."

2 Chronicles 15:2: "And he went out to meet Asa, and said unto him, Hear ye me, Asa, and all Judah and Benjamin; The LORD is with you, while ye be with him; and if ye seek him, he will be found of you; but if ye forsake him, he will forsake you."

2 Chronicles 26:19: "Then Uzziah was wroth, and had a censer in his hand to burn incense: and while he was wroth with the priests, the leprosy even rose up in his forehead before the priests in the house of the LORD, from beside the incense altar."

2 Chronicles 34:3: "For in the eighth year of his reign, while he was yet young, he began to seek after the God of David his father: and in the twelfth year he began to purge Judah and Jerusalem from the high places, and the groves, and the carved images, and the molten images."

Nehemiah 7:3: "And I said unto them, Let not the gates of Jerusalem be opened until the sun be hot; and while they stand by, let them shut the doors, and bar them: and appoint watches of the inhabitants of Jerusalem, every one in his watch, and every one to be over against his house."

Esther 2:21: "In those days, while Mordecai sat in the king's gate, two of the king's chamberlains, Bigthan and Teresh, of those which kept the door, were wroth, and sought to lay hands on the king Ahasuerus."

Esther 6:14: "And while they were yet talking with him, came the king's chamberlains, and hasted to bring Haman unto the banquet that Esther had prepared."

Job 1:16: "While he was yet speaking, there came also another, and said, The fire of God is fallen from heaven, and hath burned up the sheep, and the servants, and consumed them; and I only am escaped alone to tell thee."

Job 1:17: "While he was yet speaking, there came also another, and said, The Chaldeans made out three bands, and fell upon the camels, and have carried them away, yea, and slain the servants with the edge of the sword; and I only am escaped alone to tell thee."

Job 1:18: "While he was yet speaking, there came also another, and said, Thy sons and thy daughters were eating and drinking wine in their eldest brother's house:"

Job 20:23: "When he is about to fill his belly, God shall cast the fury of his wrath upon him, and shall rain it upon him while he is eating."

Job 24:24: "They are exalted for a little while, but are gone and brought low; they are taken out of the way as all other, and cut off as the tops of the ears of corn."

Job 27:3: "All the while my breath is in me, and the spirit of God is in my nostrils;"

Psalms 7:2: "Lest he tear my soul like a lion, rending it in pieces, while there is none to deliver."

Psalms 31:13: "For I have heard the slander of many: fear was on every side: while they took counsel together against me, they devised to take away my life."

Psalms 37:10: "For yet a little while, and the wicked shall not be: yea, thou shalt diligently consider his place, and it shall not be."

Psalms 39:1: "I said, I will take heed to my ways, that I sin not with my tongue: I will keep my mouth with a bridle, while the wicked is before me."

Psalms 39:3: "My heart was hot within me, while I was musing the fire burned: then spake I with my tongue,"

Psalms 42:3: "My tears have been my meat day and night, while they continually say unto me, Where is thy God?"

Psalms 42:10: "As with a sword in my bones, mine enemies reproach me; while they say daily unto me, Where is thy God?"

Psalms 49:18: "Though while he lived he blessed his soul: and men will praise thee, when thou doest well to thyself."

Psalms 63:4: "Thus will I bless thee while I live: I will lift up my hands in thy name."

Psalms 69:3: "I am weary of my crying: my throat is dried: mine eyes fail while I wait for my God."

Psalms 78:30: "They were not estranged from their lust. But while their meat was yet in their mouths,"

Psalms 88:15: "I am afflicted and ready to die from my youth up: while I suffer thy terrors I am distracted."

Psalms 104:33: "I will sing unto the LORD as long as I live: I will sing praise to my God while I have my being."

Psalms 146:2: "While I live will I praise the LORD: I will sing praises unto my God while I have any being."

Proverbs 8:26: "While as yet he had not made the earth, nor the fields, nor the highest part of the dust of the world."

Proverbs 19:18: "Chasten thy son while there is hope, and let not thy soul spare for his crying."

Proverbs 31:15: "She riseth also while it is yet night, and giveth meat to her household, and a portion to her maidens."

Ecclesiastes 9:3: "This is an evil among all things that are done under the sun, that there is one event unto all: yea, also the heart of the sons of men is full of evil, and madness is in their heart while they live, and after that they go to the dead."

Ecclesiastes 12:1: "Remember now thy Creator in the days of thy youth, while the evil days come not, nor the years draw nigh, when thou shalt say, I have no pleasure in them;"

Ecclesiastes 12:2: "While the sun, or the light, or the moon, or the stars, be not darkened, nor the clouds return after the rain:"

Song of Solomon 1:12: "While the king sitteth at his table, my spikenard sendeth forth the smell thereof."

Isaiah 10:25: "For yet a very little while, and the indignation shall cease, and mine anger in their destruction."

Isaiah 28:4: "And the glorious beauty, which is on the head of the fat valley, shall be a fading flower, and as the hasty fruit before the summer; which when he that looketh upon it seeth, while it is yet in his hand he eateth it up."

Isaiah 29:17: "Is it not yet a very little while, and Lebanon shall be turned into a fruitful field, and the fruitful field shall be esteemed as a forest?"

Isaiah 55:6: "Seek ye the LORD while he may be found, call ye upon him while he is near:"

Isaiah 63:18: "The people of thy holiness have possessed it but a little while: our adversaries have trodden down thy sanctuary."

Isaiah 65:24: "And it shall come to pass, that before they call, I will answer; and while they are yet speaking, I will hear."

Jeremiah 13:16: "Give glory to the LORD your God, before he cause darkness, and before your feet stumble upon the dark mountains, and, while ye look for light, he turn it into the shadow of death, and make it gross darkness."

Jeremiah 15:9: "She that hath borne seven languisheth: she hath given up the ghost; her sun is gone down while it was yet day: she hath been ashamed and confounded: and the residue of them will I deliver to the sword before their enemies, saith the LORD."

Jeremiah 33:1: "Moreover the word of the LORD came unto Jeremiah the second time, while he was yet shut up in the court of the prison, saying,"

Jeremiah 39:15: "Now the word of the LORD came unto Jeremiah, while he was shut up in the court of the prison, saying,"

Jeremiah 40:5: "Now while he was not yet gone back, he said, Go back also to Gedaliah the son of Ahikam the son of Shaphan, whom the king of Babylon hath made governor over the cities of Judah, and dwell with him among the people: or go wheresoever it seemeth convenient unto thee to go. So the captain of the guard gave him victuals and a reward, and let him go."

Jeremiah 51:33: "For thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; The daughter of Babylon is like a threshingfloor, it is time to thresh her: yet a little while, and the time of her harvest shall come."

Lamentations 1:19: "I called for my lovers, but they deceived me: my priests and mine elders gave up the ghost in the city, while they sought their meat to relieve their souls."

Ezekiel 9:8: "And it came to pass, while they were slaying them, and I was left, that I fell upon my face, and cried, and said, Ah Lord GOD! wilt thou destroy all the residue of Israel in thy pouring out of thy fury upon Jerusalem?"

Daniel 4:31: "While the word was in the king's mouth, there fell a voice from heaven, saying, O king Nebuchadnezzar, to thee it is spoken; The kingdom is departed from thee."

Hosea 1:4: "And the LORD said unto him, Call his name Jezreel; for yet a little while, and I will avenge the blood of Jezreel upon the house of Jehu, and will cause to cease the kingdom of the house of Israel."

Nahum 1:10: "For while they be folden together as thorns, and while they are drunken as drunkards, they shall be devoured as stubble fully dry."

Haggai 2:6: "For thus saith the LORD of hosts; Yet once, it is a little while, and I will shake the heavens, and the earth, and the sea, and the dry land;"

Zechariah 14:12: "And this shall be the plague wherewith the LORD will smite all the people that have fought against Jerusalem; Their flesh shall consume away while they stand upon their feet, and their eyes shall consume away in their holes, and their tongue shall consume away in their mouth."

Matthew 1:20: "But while he thought on these things, behold, the angel of the LORD appeared unto him in a dream, saying, Joseph, thou son of David, fear not to take unto thee Mary thy wife: for that which is conceived in her is of the Holy Ghost."

Matthew 9:18: "While he spake these things unto them, behold, there came a certain ruler, and worshipped him, saying, My daughter is even now dead: but come and lay thy hand upon her, and she shall live."

Matthew 12:46: "While he yet talked to the people, behold, his mother and his brethren stood without, desiring to speak with him."

Matthew 13:21: "Yet hath he not root in himself, but dureth for a while: for when tribulation or persecution ariseth because of the word, by and by he is offended."

Matthew 13:25: "But while men slept, his enemy came and sowed tares among the wheat, and went his way."

Matthew 13:29: "But he said, Nay; lest while ye gather up the tares, ye root up also the wheat with them."

Matthew 14:22: "And straightway Jesus constrained his disciples to get into a ship, and to go before him unto the other side, while he sent the multitudes away."

Matthew 17:5: "While he yet spake, behold, a bright cloud overshadowed them: and behold a voice out of the cloud, which said, This is my beloved Son, in whom I am well pleased; hear ye him."

Matthew 17:22: "And while they abode in Galilee, Jesus said unto them, The Son of man shall be betrayed into the hands of men:"

Matthew 22:41: "While the Pharisees were gathered together, Jesus asked them,"

Matthew 25:5: "While the bridegroom tarried, they all slumbered and slept."

Matthew 25:10: "And while they went to buy, the bridegroom came; and they that were ready went in with him to the marriage: and the door was shut."

Matthew 26:36: "Then cometh Jesus with them unto a place called Gethsemane, and saith unto the disciples, Sit ye here, while I go and pray yonder."

Matthew 26:47: "And while he yet spake, lo, Judas, one of the twelve, came, and with him a great multitude with swords and staves, from the chief priests and elders of the people."

Matthew 26:73: "And after a while came unto him they that stood by, and said to Peter, Surely thou also art one of them; for thy speech bewrayeth thee."

Matthew 27:63: "Saying, Sir, we remember that that deceiver said, while he was yet alive, After three days I will rise again."

Matthew 28:13: "Saying, Say ye, His disciples came by night, and stole him away while we slept."

Mark 1:35: "And in the morning, rising up a great while before day, he went out, and departed into a solitary place, and there prayed."

Mark 2:19: "And Jesus said unto them, Can the children of the bridechamber fast, while the bridegroom is with them? as long as they have the bridegroom with them, they cannot fast."

Mark 5:35: "While he yet spake, there came from the ruler of the synagogue's house certain which said, Thy daughter is dead: why troublest thou the Master any further?"

Mark 6:31: "And he said unto them, Come ye yourselves apart into a desert place, and rest a while: for there were many coming and going, and they had no leisure so much as to eat."

Mark 6:45: "And straightway he constrained his disciples to get into the ship, and to go to the other side before unto Bethsaida, while he sent away the people."

Mark 12:35: "And Jesus answered and said, while he taught in the temple, How say the scribes that Christ is the son of David?"

Mark 14:32: "And they came to a place which was named Gethsemane: and he saith to his disciples, Sit ye here, while I shall pray."

Mark 14:43: "And immediately, while he yet spake, cometh Judas, one of the twelve, and with him a great multitude with swords and staves, from the chief priests and the scribes and the elders."

Mark 15:44: "And Pilate marvelled if he were already dead: and calling unto him the centurion, he asked him whether he had been any while dead."

Luke 1:8: "And it came to pass, that while he executed the priest's office before God in the order of his course,"

Luke 2:6: "And so it was, that, while they were there, the days were accomplished that she should be delivered."

Luke 5:34: "And he said unto them, Can ye make the children of the bridechamber fast, while the bridegroom is with them?"

Luke 8:13: "They on the rock are they, which, when they hear, receive the word with joy; and these have no root, which for a while believe, and in time of temptation fall away."

Luke 8:49: "While he yet spake, there cometh one from the ruler of the synagogue's house, saying to him, Thy daughter is dead; trouble not the Master."

Luke 9:34: "While he thus spake, there came a cloud, and overshadowed them: and they feared as they entered into the cloud."

Luke 9:43: "And they were all amazed at the mighty power of God. But while they wondered every one at all things which Jesus did, he said unto his disciples,"

Luke 10:13: "Woe unto thee, Chorazin! woe unto thee, Bethsaida! for if the mighty works had been done in Tyre and Sidon, which have been done in you, they had a great while ago repented, sitting in sackcloth and ashes."

Luke 14:32: "Or else, while the other is yet a great way off, he sendeth an ambassage, and desireth conditions of peace."

Luke 18:4: "And he would not for a while: but afterward he said within himself, Though I fear not God, nor regard man;"

Luke 22:47: "And while he yet spake, behold a multitude, and he that was called Judas, one of the twelve, went before them, and drew near unto Jesus to kiss him."

Luke 22:58: "And after a little while another saw him, and said, Thou art also of them. And Peter said, Man, I am not."

Luke 22:60: "And Peter said, Man, I know not what thou sayest. And immediately, while he yet spake, the cock crew."

Luke 24:15: "And it came to pass, that, while they communed together and reasoned, Jesus himself drew near, and went with them."

Luke 24:32: "And they said one to another, Did not our heart burn within us, while he talked with us by the way, and while he opened to us the scriptures?"

Luke 24:41: "And while they yet believed not for joy, and wondered, he said unto them, Have ye here any meat?"

Luke 24:44: "And he said unto them, These are the words which I spake unto you, while I was yet with you, that all things must be fulfilled, which were written in the law of Moses, and in the prophets, and in the psalms, concerning me."

Luke 24:51: "And it came to pass, while he blessed them, he was parted from them, and carried up into heaven."

John 4:31: "In the mean while his disciples prayed him, saying, Master, eat."

John 5:7: "The impotent man answered him, Sir, I have no man, when the water is troubled, to put me into the pool: but while I am coming, another steppeth down before me."

John 7:33: "Then said Jesus unto them, Yet a little while am I with you, and then I go unto him that sent me."

John 9:4: "I must work the works of him that sent me, while it is day: the night cometh, when no man can work."

John 12:35: "Then Jesus said unto them, Yet a little while is the light with you. Walk while ye have the light, lest darkness come upon you: for he that walketh in darkness knoweth not whither he goeth."

John 12:36: "While ye have light, believe in the light, that ye may be the children of light. These things spake Jesus, and departed, and did hide himself from them."

John 13:33: "Little children, yet a little while I am with you. Ye shall seek me: and as I said unto the Jews, Whither I go, ye cannot come; so now I say to you."

John 14:19: "Yet a little while, and the world seeth me no more; but ye see me: because I live, ye shall live also."

John 16:16: "A little while, and ye shall not see me: and again, a little while, and ye shall see me, because I go to the Father."

John 16:17: "Then said some of his disciples among themselves, What is this that he saith unto us, A little while, and ye shall not see me: and again, a little while, and ye shall see me: and, Because I go to the Father?"

John 16:18: "They said therefore, What is this that he saith, A little while? we cannot tell what he saith."

John 16:19: "Now Jesus knew that they were desirous to ask him, and said unto them, Do ye enquire among yourselves of that I said, A little while, and ye shall not see me: and again, a little while, and ye shall see me?"

John 17:12: "While I was with them in the world, I kept them in thy name: those that thou gavest me I have kept, and none of them is lost, but the son of perdition; that the scripture might be fulfilled."

Acts 1:9: "And when he had spoken these things, while they beheld, he was taken up; and a cloud received him out of their sight."

Acts 1:10: "And while they looked stedfastly toward heaven as he went up, behold, two men stood by them in white apparel;"

Acts 9:39: "Then Peter arose and went with them. When he was come, they brought him into the upper chamber: and all the widows stood by him weeping, and shewing the coats and garments which Dorcas made, while she was with them."

Acts 10:10: "And he became very hungry, and would have eaten: but while they made ready, he fell



into a trance,"

Acts 10:17: "Now while Peter doubted in himself what this vision which he had seen should mean, behold, the men which were sent from Cornelius had made enquiry for Simon's house, and stood before the gate,"

Acts 10:19: "While Peter thought on the vision, the Spirit said unto him, Behold, three men seek thee."

Acts 10:44: "While Peter yet spake these words, the Holy Ghost fell on all them which heard the word."

Acts 15:7: "And when there had been much disputing, Peter rose up, and said unto them, Men and brethren, ye know how that a good while ago God made choice among us, that the Gentiles by my mouth should hear the word of the gospel, and believe."

Acts 17:16: "Now while Paul waited for them at Athens, his spirit was stirred in him, when he saw the city wholly given to idolatry."

Acts 18:18: "And Paul after this tarried there yet a good while, and then took his leave of the brethren, and sailed thence into Syria, and with him Priscilla and Aquila; having shorn his head in Cenchrea: for he had a vow."

Acts 19:1: "And it came to pass, that, while Apollos was at Corinth, Paul having passed through the upper coasts came to Ephesus: and finding certain disciples,"

Acts 20:11: "When he therefore was come up again, and had broken bread, and eaten, and talked a long while, even till break of day, so he departed."

Acts 22:17: "And it came to pass, that, when I was come again to Jerusalem, even while I prayed in the temple, I was in a trance;"

Acts 24:20: "Or else let these same here say, if they have found any evil doing in me, while I stood before the council,"

Acts 25:8: "While he answered for himself, Neither against the law of the Jews, neither against the temple, nor yet against Caesar, have I offended any thing at all."

Acts 27:33: "And while the day was coming on, Paul besought them all to take meat, saying, This day is the fourteenth day that ye have tarried and continued fasting, having taken nothing."

Acts 28:6: "Howbeit they looked when he should have swollen, or fallen down dead suddenly: but after they had looked a great while, and saw no harm come to him, they changed their minds, and said that he was a god."

Romans 2:15: "Which shew the work of the law written in their hearts, their conscience also bearing witness, and their thoughts the mean while accusing or else excusing one another;)"

Romans 5:8: "But God commendeth his love toward us, in that, while we were yet sinners, Christ died for us."

Romans 7:3: "So then if, while her husband liveth, she be married to another man, she shall be called an adulteress: but if her husband be dead, she is free from that law; so that she is no adulteress, though she be married to another man."

1 Corinthians 3:4: "For while one saith, I am of Paul; and another, I am of Apollos; are ye not carnal?"

1 Corinthians 8:13: "Wherefore, if meat make my brother to offend, I will eat no flesh while the world standeth, lest I make my brother to offend."

1 Corinthians 16:7: "For I will not see you now by the way; but I trust to tarry a while with you, if the Lord permit."

2 Corinthians 4:18: "While we look not at the things which are seen, but at the things which are not seen: for the things which are seen are temporal; but the things which are not seen are eternal."

Galatians 2:17: "But if, while we seek to be justified by Christ, we ourselves also are found sinners, is therefore Christ the minister of sin? God forbid."

1 Timothy 5:6: "But she that liveth in pleasure is dead while she liveth."

1 Timothy 6:10: "For the love of money is the root of all evil: which while some coveted after, they

have erred from the faith, and pierced themselves through with many sorrows."

Hebrews 3:13: "But exhort one another daily, while it is called To day; lest any of you be hardened through the deceitfulness of sin."

Hebrews 3:15: "While it is said, To day if ye will hear his voice, harden not your hearts, as in the provocation."

Hebrews 9:8: "The Holy Ghost this signifying, that the way into the holiest of all was not yet made manifest, while as the first tabernacle was yet standing:"

Hebrews 9:17: "For a testament is of force after men are dead: otherwise it is of no strength at all while the testator liveth."

Hebrews 10:37: "For yet a little while, and he that shall come will come, and will not tarry."

1 Peter 3:2: "While they behold your chaste conversation coupled with fear."

1 Peter 3:20: "Which sometime were disobedient, when once the longsuffering of God waited in the days of Noah, while the ark was a preparing, wherein few, that is, eight souls were saved by water."

1 Peter 5:10: "But the God of all grace, who hath called us unto his eternal glory by Christ Jesus, after that ye have suffered a while, make you perfect, stablish, strengthen, settle you."

2 Peter 2:13: "And shall receive the reward of unrighteousness, as they that count it pleasure to riot in the day time. Spots they are and blemishes, sporting themselves with their own deceivings while they feast with you;"

2 Peter 2:19: "While they promise them liberty, they themselves are the servants of corruption: for of whom a man is overcome, of the same is he brought in bondage."

## WHILES

Occurrences: 9

Ezekiel 21:29: "Whiles they see vanity unto thee, whiles they divine a lie unto thee, to bring thee upon the necks of them that are slain, of the wicked, whose day is come, when their iniquity shall have an end."

Ezekiel 44:17: "And it shall come to pass, that when they enter in at the gates of the inner court, they shall be clothed with linen garments; and no wool shall come upon them, whiles they minister in the gates of the inner court, and within."

Daniel 5:2: "Belshazzar, whiles he tasted the wine, commanded to bring the golden and silver vessels which his father Nebuchadnezzar had taken out of the temple which was in Jerusalem; that the king, and his princes, his wives, and his concubines, might drink therein."

Daniel 9:20: "And whiles I was speaking, and praying, and confessing my sin and the sin of my people Israel, and presenting my supplication before the LORD my God for the holy mountain of my God;"

Daniel 9:21: "Yea, whiles I was speaking in prayer, even the man Gabriel, whom I had seen in the vision at the beginning, being caused to fly swiftly, touched me about the time of the evening oblation."

Hosea 7:6: "For they have made ready their heart like an oven, whiles they lie in wait: their baker sleepeth all the night; in the morning it burneth as a flaming fire."

Matthew 5:25: "Agree with thine adversary quickly, whiles thou art in the way with him; lest at any time the adversary deliver thee to the judge, and the judge deliver thee to the officer, and thou be cast into prison."

Acts 5:4: "Whiles it remained, was it not thine own? and after it was sold, was it not in thine own power? why hast thou conceived this thing in thine heart? thou hast not lied unto men, but unto God."

2 Corinthians 9:13: "Whiles by the experiment of this ministration they glorify God for your professed subjection unto the gospel of Christ, and for your liberal distribution unto them, and unto all men;"

## WHILST

Occurrences: 9

Judges 6:31: "And Joash said unto all that stood against him, Will ye plead for Baal? will ye save him? he that will plead for him, let him be put to death whilst it is yet morning: if he be a god, let him plead for himself, because one hath cast down his altar."

Nehemiah 6:3: "And I sent messengers unto them, saying, I am doing a great work, so that I cannot come down: why should the work cease, whilst I leave it, and come down to you?"

Job 8:12: "Whilst it is yet in his greenness, and not cut down, it withereth before any other herb."

Job 32:11: "Behold, I waited for your words; I gave ear to your reasons, whilst ye searched out what to say."

Psalms 141:10: "Let the wicked fall into their own nets, whilst that I withal escape."

Jeremiah 17:2: "Whilst their children remember their altars and their groves by the green trees upon the high hills."

2 Corinthians 5:6: "Therefore we are always confident, knowing that, whilst we are at home in the body, we are absent from the Lord:"

2 Corinthians 7:15: "And his inward affection is more abundant toward you, whilst he remembereth the obedience of you all, how with fear and trembling ye received him."

Hebrews 10:33: "Partly, whilst ye were made a gazingstock both by reproaches and afflictions; and partly, whilst ye became companions of them that were so used."

## WHIP

Occurrences: 2

Proverbs 26:3: "A whip for the horse, a bridle for the ass, and a rod for the fool's back."

Nahum 3:2: "The noise of a whip, and the noise of the rattling of the wheels, and of the prancing horses, and of the jumping chariots."

## WHIPS

Occurrences: 4

1 Kings 12:11: "And now whereas my father did lade you with a heavy yoke, I will add to your yoke: my father hath chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

1 Kings 12:14: "And spake to them after the counsel of the young men, saying, My father made your yoke heavy, and I will add to your yoke: my father also chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

2 Chronicles 10:11: "For whereas my father put a heavy yoke upon you, I will put more to your yoke: my father chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

2 Chronicles 10:14: "And answered them after the advice of the young men, saying, My father made your yoke heavy, but I will add thereto: my father chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

## WHIRLETH

Occurrences: 1

Ecclesiastes 1:6: "The wind goeth toward the south, and turneth about unto the north; it whirleth about continually, and the wind returneth again according to his circuits."

## WHIRLWIND

Occurrences: 25

2 Kings 2:1: "And it came to pass, when the LORD would take up Elijah into heaven by a

whirlwind, that Elijah went with Elisha from Gilgal."

2 Kings 2:11: "And it came to pass, as they still went on, and talked, that, behold, there appeared a chariot of fire, and horses of fire, and parted them both asunder; and Elijah went up by a whirlwind into heaven."

Job 37:9: "Out of the south cometh the whirlwind: and cold out of the north."

Job 38:1: "Then the LORD answered Job out of the whirlwind, and said,"

Job 40:6: "Then answered the LORD unto Job out of the whirlwind, and said,"

Psalms 58:9: "Before your pots can feel the thorns, he shall take them away as with a whirlwind, both living, and in his wrath."

Proverbs 1:27: "When your fear cometh as desolation, and your destruction cometh as a whirlwind; when distress and anguish cometh upon you."

Proverbs 10:25: "As the whirlwind passeth, so is the wicked no more: but the righteous is an everlasting foundation."

Isaiah 5:28: "Whose arrows are sharp, and all their bows bent, their horses' hoofs shall be counted like flint, and their wheels like a whirlwind:"

Isaiah 17:13: "The nations shall rush like the rushing of many waters: but God shall rebuke them, and they shall flee far off, and shall be chased as the chaff of the mountains before the wind, and like a rolling thing before the whirlwind."

Isaiah 40:24: "Yea, they shall not be planted; yea, they shall not be sown: yea, their stock shall not take root in the earth: and he shall also blow upon them, and they shall wither, and the whirlwind shall take them away as stubble."

Isaiah 41:16: "Thou shalt fan them, and the wind shall carry them away, and the whirlwind shall scatter them: and thou shalt rejoice in the LORD, and shalt glory in the Holy One of Israel."

Isaiah 66:15: "For, behold, the LORD will come with fire, and with his chariots like a whirlwind, to render his anger with fury, and his rebuke with flames of fire."

Jeremiah 4:13: "Behold, he shall come up as clouds, and his chariots shall be as a whirlwind: his horses are swifter than eagles. Woe unto us! for we are spoiled."

Jeremiah 23:19: "Behold, a whirlwind of the LORD is gone forth in fury, even a grievous whirlwind: it shall fall grievously upon the head of the wicked."

Jeremiah 25:32: "Thus saith the LORD of hosts, Behold, evil shall go forth from nation to nation, and a great whirlwind shall be raised up from the coasts of the earth."

Jeremiah 30:23: "Behold, the whirlwind of the LORD goeth forth with fury, a continuing whirlwind: it shall fall with pain upon the head of the wicked."

Ezekiel 1:4: "And I looked, and, behold, a whirlwind came out of the north, a great cloud, and a fire infolding itself, and a brightness was about it, and out of the midst thereof as the colour of amber, out of the midst of the fire."

Daniel 11:40: "And at the time of the end shall the king of the south push at him: and the king of the north shall come against him like a whirlwind, with chariots, and with horsemen, and with many ships; and he shall enter into the countries, and shall overflow and pass over."

Hosea 8:7: "For they have sown the wind, and they shall reap the whirlwind: it hath no stalk; the bud shall yield no meal: if so be it yield, the strangers shall swallow it up."

Hosea 13:3: "Therefore they shall be as the morning cloud and as the early dew that passeth away, as the chaff that is driven with the whirlwind out of the floor, and as the smoke out of the chimney."

Amos 1:14: "But I will kindle a fire in the wall of Rabbah, and it shall devour the palaces thereof, with shouting in the day of battle, with a tempest in the day of the whirlwind:"

Nahum 1:3: "The LORD is slow to anger, and great in power, and will not at all acquit the wicked: the LORD hath his way in the whirlwind and in the storm, and the clouds are the dust of his feet."

Habakkuk 3:14: "Thou didst strike through with his staves the head of his villages: they came out as a whirlwind to scatter me: their rejoicing was as to devour the poor secretly."

Zechariah 7:14: "But I scattered them with a whirlwind among all the nations whom they knew not."

Thus the land was desolate after them, that no man passed through nor returned: for they laid the pleasant land desolate."

## **WHIRLWINDS**

Occurrences: 2

Isaiah 21:1: "The burden of the desert of the sea. As whirlwinds in the south pass through; so it cometh from the desert, from a terrible land."

Zechariah 9:14: "And the LORD shall be seen over them, and his arrow shall go forth as the lightning: and the LORD God shall blow the trumpet, and shall go with whirlwinds of the south."

## **WHISPER**

Occurrences: 2

Psalms 41:7: "All that hate me whisper together against me: against me do they devise my hurt."

Isaiah 29:4: "And thou shalt be brought down, and shalt speak out of the ground, and thy speech shall be low out of the dust, and thy voice shall be, as of one that hath a familiar spirit, out of the ground, and thy speech shall whisper out of the dust."

## **WHISPERED**

Occurrences: 1

2 Samuel 12:19: "But when David saw that his servants whispered, David perceived that the child was dead: therefore David said unto his servants, Is the child dead? And they said, He is dead."

## **WHISPERER**

Occurrences: 1

Proverbs 16:28: "A froward man soweth strife: and a whisperer separateth chief friends."

## **WHISPERERS**

Occurrences: 1

Romans 1:29: "Being filled with all unrighteousness, fornication, wickedness, covetousness, maliciousness; full of envy, murder, debate, deceit, malignity; whisperers,"

## **WHISPERINGS**

Occurrences: 1

2 Corinthians 12:20: "For I fear, lest, when I come, I shall not find you such as I would, and that I shall be found unto you such as ye would not: lest there be debates, envyings, wraths, strifes, backbitings, whisperings, swellings, tumults:"

## **WHIT**

Occurrences: 5

Deuteronomy 13:16: "And thou shalt gather all the spoil of it into the midst of the street thereof, and shalt burn with fire the city, and all the spoil thereof every whit, for the LORD thy God: and it shall be an heap for ever; it shall not be built again."

1 Samuel 3:18: "And Samuel told him every whit, and hid nothing from him. And he said, It is the LORD: let him do what seemeth him good."

John 7:23: "If a man on the sabbath day receive circumcision, that the law of Moses should not be broken; are ye angry at me, because I have made a man every whit whole on the sabbath day?"

John 13:10: "Jesus saith to him, He that is washed needeth not save to wash his feet, but is clean every whit: and ye are clean, but not all."

2 Corinthians 11:5: "For I suppose I was not a whit behind the very chiefest apostles."

## WHITE

Occurrences: 66

Genesis 30:35: "And he removed that day the he goats that were ringstraked and spotted, and all the she goats that were speckled and spotted, and every one that had some white in it, and all the brown among the sheep, and gave them into the hand of his sons."

Genesis 30:37: "And Jacob took him rods of green poplar, and of the hazel and chesnut tree; and pilled white strakes in them, and made the white appear which was in the rods."

Genesis 40:16: "When the chief baker saw that the interpretation was good, he said unto Joseph, I also was in my dream, and, behold, I had three white baskets on my head:"

Genesis 49:12: "His eyes shall be red with wine, and his teeth white with milk."

Exodus 16:31: "And the house of Israel called the name thereof Manna: and it was like coriander seed, white; and the taste of it was like wafers made with honey."

Leviticus 13:3: "And the priest shall look on the plague in the skin of the flesh: and when the hair in the plague is turned white, and the plague in sight be deeper than the skin of his flesh, it is a plague of leprosy: and the priest shall look on him, and pronounce him unclean."

Leviticus 13:4: "If the bright spot be white in the skin of his flesh, and in sight be not deeper than the skin, and the hair thereof be not turned white; then the priest shall shut up him that hath the plague seven days:"

Leviticus 13:10: "And the priest shall see him: and, behold, if the rising be white in the skin, and it have turned the hair white, and there be quick raw flesh in the rising;"

Leviticus 13:13: "Then the priest shall consider: and, behold, if the leprosy have covered all his flesh, he shall pronounce him clean that hath the plague: it is all turned white: he is clean."

Leviticus 13:16: "Or if the raw flesh turn again, and be changed unto white, he shall come unto the priest;"

Leviticus 13:17: "And the priest shall see him: and, behold, if the plague be turned into white; then the priest shall pronounce him clean that hath the plague: he is clean."

Leviticus 13:19: "And in the place of the boil there be a white rising, or a bright spot, white, and somewhat reddish, and it be shewed to the priest;"

Leviticus 13:20: "And if, when the priest seeth it, behold, it be in sight lower than the skin, and the hair thereof be turned white; the priest shall pronounce him unclean: it is a plague of leprosy broken out of the boil."

Leviticus 13:21: "But if the priest look on it, and, behold, there be no white hairs therein, and if it be not lower than the skin, but be somewhat dark; then the priest shall shut him up seven days:"

Leviticus 13:24: "Or if there be any flesh, in the skin whereof there is a hot burning, and the quick flesh that burneth have a white bright spot, somewhat reddish, or white;"

Leviticus 13:25: "Then the priest shall look upon it: and, behold, if the hair in the bright spot be turned white, and it be in sight deeper than the skin; it is a leprosy broken out of the burning: wherefore the priest shall pronounce him unclean: it is the plague of leprosy."

Leviticus 13:26: "But if the priest look on it, and, behold, there be no white hair in the bright spot, and it be no lower than the other skin, but be somewhat dark; then the priest shall shut him up seven days:"

Leviticus 13:38: "If a man also or a woman have in the skin of their flesh bright spots, even white bright spots;"

Leviticus 13:39: "Then the priest shall look: and, behold, if the bright spots in the skin of their flesh be darkish white; it is a freckled spot that groweth in the skin; he is clean."

Leviticus 13:42: "And if there be in the bald head, or bald forehead, a white reddish sore; it is a

leprosy sprung up in his bald head, or his bald forehead."

Leviticus 13:43: "Then the priest shall look upon it: and, behold, if the rising of the sore be white reddish in his bald head, or in his bald forehead, as the leprosy appeareth in the skin of the flesh;"

Numbers 12:10: "And the cloud departed from off the tabernacle; and, behold, Miriam became leprous, white as snow: and Aaron looked upon Miriam, and, behold, she was leprous."

Judges 5:10: "Speak, ye that ride on white asses, ye that sit in judgment, and walk by the way."

2 Kings 5:27: "The leprosy therefore of Naaman shall cleave unto thee, and unto thy seed for ever.

And he went out from his presence a leper as white as snow."

2 Chronicles 5:12: "Also the Levites which were the singers, all of them of Asaph, of Heman, of Jeduthun, with their sons and their brethren, being arrayed in white linen, having cymbals and psalteries and harps, stood at the east end of the altar, and with them an hundred and twenty priests sounding with trumpets:)"

Esther 1:6: "Where were white, green, and blue, hangings, fastened with cords of fine linen and purple to silver rings and pillars of marble: the beds were of gold and silver, upon a pavement of red, and blue, and white, and black, marble."

Esther 8:15: "And Mordecai went out from the presence of the king in royal apparel of blue and white, and with a great crown of gold, and with a garment of fine linen and purple: and the city of Shushan rejoiced and was glad."

Job 6:6: "Can that which is unsavoury be eaten without salt? or is there any taste in the white of an egg?"

Psalms 68:14: "When the Almighty scattered kings in it, it was white as snow in Salmon."

Ecclesiastes 9:8: "Let thy garments be always white; and let thy head lack no ointment."

Song of Solomon 5:10: "My beloved is white and ruddy, the chiefest among ten thousand."

Isaiah 1:18: "Come now, and let us reason together, saith the LORD: though your sins be as scarlet, they shall be as white as snow; though they be red like crimson, they shall be as wool."

Ezekiel 27:18: "Damascus was thy merchant in the multitude of the wares of thy making, for the multitude of all riches; in the wine of Helbon, and white wool."

Daniel 7:9: "I beheld till the thrones were cast down, and the Ancient of days did sit, whose garment was white as snow, and the hair of his head like the pure wool: his throne was like the fiery flame, and his wheels as burning fire."

Daniel 11:35: "And some of them of understanding shall fall, to try them, and to purge, and to make them white, even to the time of the end: because it is yet for a time appointed."

Daniel 12:10: "Many shall be purified, and made white, and tried; but the wicked shall do wickedly: and none of the wicked shall understand; but the wise shall understand."

Joel 1:7: "He hath laid my vine waste, and barked my fig tree: he hath made it clean bare, and cast it away; the branches thereof are made white."

Zechariah 1:8: "I saw by night, and behold a man riding upon a red horse, and he stood among the myrtle trees that were in the bottom; and behind him were there red horses, speckled, and white."

Zechariah 6:3: "And in the third chariot white horses; and in the fourth chariot grisled and bay horses."

Zechariah 6:6: "The black horses which are therein go forth into the north country; and the white go forth after them; and the grisled go forth toward the south country."

Matthew 5:36: "Neither shalt thou swear by thy head, because thou canst not make one hair white or black."

Matthew 17:2: "And was transfigured before them: and his face did shine as the sun, and his raiment was white as the light."

Matthew 28:3: "His countenance was like lightning, and his raiment white as snow:"

Mark 9:3: "And his raiment became shining, exceeding white as snow; so as no fuller on earth can white them."

Mark 16:5: "And entering into the sepulchre, they saw a young man sitting on the right side, clothed

in a long white garment; and they were affrighted."

Luke 9:29: "And as he prayed, the fashion of his countenance was altered, and his raiment was white and glistering."

John 4:35: "Say not ye, There are yet four months, and then cometh harvest? behold, I say unto you, Lift up your eyes, and look on the fields; for they are white already to harvest."

John 20:12: "And seeth two angels in white sitting, the one at the head, and the other at the feet, where the body of Jesus had lain."

Acts 1:10: "And while they looked stedfastly toward heaven as he went up, behold, two men stood by them in white apparel;"

Revelation 1:14: "His head and his hairs were white like wool, as white as snow; and his eyes were as a flame of fire;"

Revelation 2:17: "He that hath an ear, let him hear what the Spirit saith unto the churches; To him that overcometh will I give to eat of the hidden manna, and will give him a white stone, and in the stone a new name written, which no man knoweth saving he that receiveth it."

Revelation 3:4: "Thou hast a few names even in Sardis which have not defiled their garments; and they shall walk with me in white: for they are worthy."

Revelation 3:5: "He that overcometh, the same shall be clothed in white raiment; and I will not blot out his name out of the book of life, but I will confess his name before my Father, and before his angels."

Revelation 3:18: "I counsel thee to buy of me gold tried in the fire, that thou mayest be rich; and white raiment, that thou mayest be clothed, and that the shame of thy nakedness do not appear; and anoint thine eyes with eyesalve, that thou mayest see."

Revelation 4:4: "And round about the throne were four and twenty seats: and upon the seats I saw four and twenty elders sitting, clothed in white raiment; and they had on their heads crowns of gold."

Revelation 6:2: "And I saw, and behold a white horse: and he that sat on him had a bow; and a crown was given unto him: and he went forth conquering, and to conquer."

Revelation 6:11: "And white robes were given unto every one of them; and it was said unto them, that they should rest yet for a little season, until their fellowservants also and their brethren, that should be killed as they were, should be fulfilled."

Revelation 7:9: "After this I beheld, and, lo, a great multitude, which no man could number, of all nations, and kindreds, and people, and tongues, stood before the throne, and before the Lamb, clothed with white robes, and palms in their hands;"

Revelation 7:13: "And one of the elders answered, saying unto me, What are these which are arrayed in white robes? and whence came they?"

Revelation 7:14: "And I said unto him, Sir, thou knowest. And he said to me, These are they which came out of great tribulation, and have washed their robes, and made them white in the blood of the Lamb."

Revelation 14:14: "And I looked, and behold a white cloud, and upon the cloud one sat like unto the Son of man, having on his head a golden crown, and in his hand a sharp sickle."

Revelation 15:6: "And the seven angels came out of the temple, having the seven plagues, clothed in pure and white linen, and having their breasts girded with golden girdles."

Revelation 19:8: "And to her was granted that she should be arrayed in fine linen, clean and white: for the fine linen is the righteousness of saints."

Revelation 19:11: "And I saw heaven opened, and behold a white horse; and he that sat upon him was called Faithful and True, and in righteousness he doth judge and make war."

Revelation 19:14: "And the armies which were in heaven followed him upon white horses, clothed in fine linen, white and clean."

Revelation 20:11: "And I saw a great white throne, and him that sat on it, from whose face the earth and the heaven fled away; and there was found no place for them."



## WHITED

Occurrences: 2

Matthew 23:27: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye are like unto whited sepulchres, which indeed appear beautiful outward, but are within full of dead men's bones, and of all uncleanness."

Acts 23:3: "Then said Paul unto him, God shall smite thee, thou whited wall: for sittest thou to judge me after the law, and commandest me to be smitten contrary to the law?"

## WHITER

Occurrences: 2

Psalms 51:7: "Purge me with hyssop, and I shall be clean: wash me, and I shall be whiter than snow."

Lamentations 4:7: "Her Nazarites were purer than snow, they were whiter than milk, they were more ruddy in body than rubies, their polishing was of sapphire:"

## WHITHER

Occurrences: 119

Genesis 16:8: "And he said, Hagar, Sarai's maid, whence camest thou? and whither wilt thou go? And she said, I flee from the face of my mistress Sarai."

Genesis 20:13: "And it came to pass, when God caused me to wander from my father's house, that I said unto her, This is thy kindness which thou shalt shew unto me; at every place whither we shall come, say of me, He is my brother."

Genesis 28:15: "And, behold, I am with thee, and will keep thee in all places whither thou goest, and will bring thee again into this land; for I will not leave thee, until I have done that which I have spoken to thee of."

Genesis 32:17: "And he commanded the foremost, saying, When Esau my brother meeteth thee, and asketh thee, saying, Whose art thou? and whither goest thou? and whose are these before thee?"

Genesis 37:30: "And he returned unto his brethren, and said, The child is not; and I, whither shall I go?"

Exodus 21:13: "And if a man lie not in wait, but God deliver him into his hand; then I will appoint thee a place whither he shall flee."

Exodus 34:12: "Take heed to thyself, lest thou make a covenant with the inhabitants of the land whither thou goest, lest it be for a snare in the midst of thee:"

Leviticus 18:3: "After the doings of the land of Egypt, wherein ye dwelt, shall ye not do: and after the doings of the land of Canaan, whither I bring you, shall ye not do: neither shall ye walk in their ordinances."

Leviticus 20:22: "Ye shall therefore keep all my statutes, and all my judgments, and do them: that the land, whither I bring you to dwell therein, spue you not out."

Numbers 13:27: "And they told him, and said, We came unto the land whither thou sentest us, and surely it floweth with milk and honey; and this is the fruit of it."

Numbers 15:18: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When ye come into the land whither I bring you,"

Numbers 35:25: "And the congregation shall deliver the slayer out of the hand of the revenger of blood, and the congregation shall restore him to the city of his refuge, whither he was fled: and he shall abide in it unto the death of the high priest, which was anointed with the holy oil."

Numbers 35:26: "But if the slayer shall at any time come without the border of the city of his refuge, whither he was fled;"

Deuteronomy 1:28: "Whither shall we go up? our brethren have discouraged our heart, saying, The

people is greater and taller than we; the cities are great and walled up to heaven; and moreover we have seen the sons of the Anakims there."

Deuteronomy 3:21: "And I commanded Joshua at that time, saying, Thine eyes have seen all that the LORD your God hath done unto these two kings: so shall the LORD do unto all the kingdoms whither thou passest."

Deuteronomy 4:5: "Behold, I have taught you statutes and judgments, even as the LORD my God commanded me, that ye should do so in the land whither ye go to possess it."

Deuteronomy 4:14: "And the LORD commanded me at that time to teach you statutes and judgments, that ye might do them in the land whither ye go over to possess it."

Deuteronomy 4:27: "And the LORD shall scatter you among the nations, and ye shall be left few in number among the heathen, whither the LORD shall lead you."

Deuteronomy 6:1: "Now these are the commandments, the statutes, and the judgments, which the LORD your God commanded to teach you, that ye might do them in the land whither ye go to possess it:"

Deuteronomy 7:1: "When the LORD thy God shall bring thee into the land whither thou goest to possess it, and hath cast out many nations before thee, the Hittites, and the Girgashites, and the Amorites, and the Canaanites, and the Perizzites, and the Hivites, and the Jebusites, seven nations greater and mightier than thou;"

Deuteronomy 11:8: "Therefore shall ye keep all the commandments which I command you this day, that ye may be strong, and go in and possess the land, whither ye go to possess it;"

Deuteronomy 11:10: "For the land, whither thou goest in to possess it, is not as the land of Egypt, from whence ye came out, where thou sowedst thy seed, and wateredst it with thy foot, as a garden of herbs:"

Deuteronomy 11:11: "But the land, whither ye go to possess it, is a land of hills and valleys, and drinketh water of the rain of heaven:"

Deuteronomy 11:29: "And it shall come to pass, when the LORD thy God hath brought thee in unto the land whither thou goest to possess it, that thou shalt put the blessing upon mount Gerizim, and the curse upon mount Ebal."

Deuteronomy 12:29: "When the LORD thy God shall cut off the nations from before thee, whither thou goest to possess them, and thou succeedest them, and dwellest in their land;"

Deuteronomy 21:14: "And it shall be, if thou have no delight in her, then thou shalt let her go whither she will; but thou shalt not sell her at all for money, thou shalt not make merchandise of her, because thou hast humbled her."

Deuteronomy 23:12: "Thou shalt have a place also without the camp, whither thou shalt go forth abroad:"

Deuteronomy 23:20: "Unto a stranger thou mayest lend upon usury; but unto thy brother thou shalt not lend upon usury: that the LORD thy God may bless thee in all that thou settest thine hand to in the land whither thou goest to possess it."

Deuteronomy 28:21: "The LORD shall make the pestilence cleave unto thee, until he have consumed thee from off the land, whither thou goest to possess it."

Deuteronomy 28:37: "And thou shalt become an astonishment, a proverb, and a byword, among all nations whither the LORD shall lead thee."

Deuteronomy 28:63: "And it shall come to pass, that as the LORD rejoiced over you to do you good, and to multiply you; so the LORD will rejoice over you to destroy you, and to bring you to nought; and ye shall be plucked from off the land whither thou goest to possess it."

Deuteronomy 30:1: "And it shall come to pass, when all these things are come upon thee, the blessing and the curse, which I have set before thee, and thou shalt call them to mind among all the nations, whither the LORD thy God hath driven thee,"

Deuteronomy 30:3: "That then the LORD thy God will turn thy captivity, and have compassion upon thee, and will return and gather thee from all the nations, whither the LORD thy God hath

scattered thee."

Deuteronomy 30:16: "In that I command thee this day to love the LORD thy God, to walk in his ways, and to keep his commandments and his statutes and his judgments, that thou mayest live and multiply: and the LORD thy God shall bless thee in the land whither thou goest to possess it."

Deuteronomy 30:18: "I denounce unto you this day, that ye shall surely perish, and that ye shall not prolong your days upon the land, whither thou passest over Jordan to go to possess it."

Deuteronomy 31:13: "And that their children, which have not known any thing, may hear, and learn to fear the LORD your God, as long as ye live in the land whither ye go over Jordan to possess it."

Deuteronomy 31:16: "And the LORD said unto Moses, Behold, thou shalt sleep with thy fathers; and this people will rise up, and go a whoring after the gods of the strangers of the land, whither they go to be among them, and will forsake me, and break my covenant which I have made with them."

Deuteronomy 32:47: "For it is not a vain thing for you; because it is your life: and through this thing ye shall prolong your days in the land, whither ye go over Jordan to possess it."

Deuteronomy 32:50: "And die in the mount whither thou goest up, and be gathered unto thy people; as Aaron thy brother died in mount Hor, and was gathered unto his people:"

Joshua 2:5: "And it came to pass about the time of shutting of the gate, when it was dark, that the men went out: whither the men went I wot not: pursue after them quickly; for ye shall overtake them."

Judges 19:17: "And when he had lifted up his eyes, he saw a wayfaring man in the street of the city: and the old man said, Whither goest thou? and whence comest thou?"

Ruth 1:16: "And Ruth said, Intreat me not to leave thee, or to return from following after thee: for whither thou goest, I will go; and where thou lodgest, I will lodge: thy people shall be my people, and thy God my God:"

1 Samuel 10:14: "And Saul's uncle said unto him and to his servant, Whither went ye? And he said, To seek the asses: and when we saw that they were no where, we came to Samuel."

1 Samuel 27:10: "And Achish said, Whither have ye made a road to day? And David said, Against the south of Judah, and against the south of the Jerahmeelites, and against the south of the Kenites."

2 Samuel 2:1: "And it came to pass after this, that David enquired of the LORD, saying, Shall I go up into any of the cities of Judah? And the LORD said unto him, Go up. And David said, Whither shall I go up? And he said, Unto Hebron."

2 Samuel 13:13: "And I, whither shall I cause my shame to go? and as for thee, thou shalt be as one of the fools in Israel. Now therefore, I pray thee, speak unto the king; for he will not withhold me from thee."

2 Samuel 15:20: "Whereas thou camest but yesterday, should I this day make thee go up and down with us? seeing I go whither I may, return thou, and take back thy brethren: mercy and truth be with thee."

2 Samuel 17:18: "Nevertheless a lad saw them, and told Absalom: but they went both of them away quickly, and came to a man's house in Bahurim, which had a well in his court; whither they went down."

1 Kings 2:36: "And the king sent and called for Shimei, and said unto him, Build thee an house in Jerusalem, and dwell there, and go not forth thence any whither."

1 Kings 2:42: "And the king sent and called for Shimei, and said unto him, Did I not make thee to swear by the LORD, and protested unto thee, saying, Know for a certain, on the day thou goest out, and walkest abroad any whither, that thou shalt surely die? and thou saidst unto me, The word that I have heard is good."

1 Kings 8:47: "Yet if they shall bethink themselves in the land whither they were carried captives, and repent, and make supplication unto thee in the land of them that carried them captives, saying, We have sinned, and have done perversely, we have committed wickedness;"

1 Kings 18:10: "As the LORD thy God liveth, there is no nation or kingdom, whither my lord hath

not sent to seek thee: and when they said, He is not there; he took an oath of the kingdom and nation, that they found thee not."

1 Kings 18:12: "And it shall come to pass, as soon as I am gone from thee, that the Spirit of the LORD shall carry thee whither I know not; and so when I come and tell Ahab, and he cannot find thee, he shall slay me: but I thy servant fear the LORD from my youth."

1 Kings 21:18: "Arise, go down to meet Ahab king of Israel, which is in Samaria: behold, he is in the vineyard of Naboth, whither he is gone down to possess it."

2 Kings 5:25: "But he went in, and stood before his master. And Elisha said unto him, Whence comest thou, Gehazi? And he said, Thy servant went no whither."

2 Chronicles 6:37: "Yet if they bethink themselves in the land whither they are carried captive, and turn and pray unto thee in the land of their captivity, saying, We have sinned, we have done amiss, and have dealt wickedly;"

2 Chronicles 6:38: "If they return to thee with all their heart and with all their soul in the land of their captivity, whither they have carried them captives, and pray toward their land, which thou gavest unto their fathers, and toward the city which thou hast chosen, and toward the house which I have built for thy name:"

2 Chronicles 10:2: "And it came to pass, when Jeroboam the son of Nebat, who was in Egypt, whither he fled from the presence of Solomon the king, heard it, that Jeroboam returned out of Egypt."

Nehemiah 2:16: "And the rulers knew not whither I went, or what I did; neither had I as yet told it to the Jews, nor to the priests, nor to the nobles, nor to the rulers, nor to the rest that did the work."

Psalms 122:4: "Whither the tribes go up, the tribes of the LORD, unto the testimony of Israel, to give thanks unto the name of the LORD."

Psalms 139:7: "Whither shall I go from thy spirit? or whither shall I flee from thy presence?"

Ecclesiastes 9:10: "Whatsoever thy hand findeth to do, do it with thy might; for there is no work, nor device, nor knowledge, nor wisdom, in the grave, whither thou goest."

Song of Solomon 6:1: "Whither is thy beloved gone, O thou fairest among women? whither is thy beloved turned aside? that we may seek him with thee."

Isaiah 20:6: "And the inhabitant of this isle shall say in that day, Behold, such is our expectation, whither we flee for help to be delivered from the king of Assyria: and how shall we escape?"

Jeremiah 8:3: "And death shall be chosen rather than life by all the residue of them that remain of this evil family, which remain in all the places whither I have driven them, saith the LORD of hosts."

Jeremiah 15:2: "And it shall come to pass, if they say unto thee, Whither shall we go forth? then thou shalt tell them, Thus saith the LORD; Such as are for death, to death; and such as are for the sword, to the sword; and such as are for the famine, to the famine; and such as are for the captivity, to the captivity."

Jeremiah 16:15: "But, The LORD liveth, that brought up the children of Israel from the land of the north, and from all the lands whither he had driven them: and I will bring them again into their land that I gave unto their fathers."

Jeremiah 19:14: "Then came Jeremiah from Tophet, whither the LORD had sent him to prophesy; and he stood in the court of the LORD's house; and said to all the people,"

Jeremiah 22:12: "But he shall die in the place whither they have led him captive, and shall see this land no more."

Jeremiah 23:3: "And I will gather the remnant of my flock out of all countries whither I have driven them, and will bring them again to their folds; and they shall be fruitful and increase."

Jeremiah 23:8: "But, The LORD liveth, which brought up and which led the seed of the house of Israel out of the north country, and from all countries whither I had driven them; and they shall dwell in their own land."

Jeremiah 24:9: "And I will deliver them to be removed into all the kingdoms of the earth for their

hurt, to be a reproach and a proverb, a taunt and a curse, in all places whither I shall drive them."

Jeremiah 29:7: "And seek the peace of the city whither I have caused you to be carried away captives, and pray unto the LORD for it: for in the peace thereof shall ye have peace."

Jeremiah 29:14: "And I will be found of you, saith the LORD: and I will turn away your captivity, and I will gather you from all the nations, and from all the places whither I have driven you, saith the LORD; and I will bring you again into the place whence I caused you to be carried away captive."

Jeremiah 29:18: "And I will persecute them with the sword, with the famine, and with the pestilence, and will deliver them to be removed to all the kingdoms of the earth, to be a curse, and an astonishment, and an hissing, and a reproach, among all the nations whither I have driven them:"

Jeremiah 30:11: "For I am with thee, saith the LORD, to save thee: though I make a full end of all nations whither I have scattered thee, yet I will not make a full end of thee: but I will correct thee in measure, and will not leave thee altogether unpunished."

Jeremiah 32:37: "Behold, I will gather them out of all countries, whither I have driven them in mine anger, and in my fury, and in great wrath; and I will bring them again unto this place, and I will cause them to dwell safely:"

Jeremiah 40:4: "And now, behold, I loose thee this day from the chains which were upon thine hand. If it seem good unto thee to come with me into Babylon, come; and I will look well unto thee: but if it seem ill unto thee to come with me into Babylon, forbear: behold, all the land is before thee: whither it seemeth good and convenient for thee to go, thither go."

Jeremiah 40:12: "Even all the Jews returned out of all places whither they were driven, and came to the land of Judah, to Gedaliah, unto Mizpah, and gathered wine and summer fruits very much."

Jeremiah 42:22: "Now therefore know certainly that ye shall die by the sword, by the famine, and by the pestilence, in the place whither ye desire to go and to sojourn."

Jeremiah 43:5: "But Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces, took all the remnant of Judah, that were returned from all nations, whither they had been driven, to dwell in the land of Judah;"

Jeremiah 44:8: "In that ye provoke me unto wrath with the works of your hands, burning incense unto other gods in the land of Egypt, whither ye be gone to dwell, that ye might cut yourselves off, and that ye might be a curse and a reproach among all the nations of the earth?"

Jeremiah 45:5: "And seekest thou great things for thyself? seek them not: for, behold, I will bring evil upon all flesh, saith the LORD: but thy life will I give unto thee for a prey in all places whither thou goest."

Jeremiah 46:28: "Fear thou not, O Jacob my servant, saith the LORD: for I am with thee; for I will make a full end of all the nations whither I have driven thee: but I will not make a full end of thee, but correct thee in measure; yet will I not leave thee wholly unpunished."

Jeremiah 49:36: "And upon Elam will I bring the four winds from the four quarters of heaven, and will scatter them toward all those winds; and there shall be no nation whither the outcasts of Elam shall not come."

Ezekiel 1:12: "And they went every one straight forward: whither the spirit was to go, they went; and they turned not when they went."

Ezekiel 4:13: "And the LORD said, Even thus shall the children of Israel eat their defiled bread among the Gentiles, whither I will drive them."

Ezekiel 6:9: "And they that escape of you shall remember me among the nations whither they shall be carried captives, because I am broken with their whorish heart, which hath departed from me, and with their eyes, which go a whoring after their idols: and they shall lothe themselves for the evils which they have committed in all their abominations."

Ezekiel 10:11: "When they went, they went upon their four sides; they turned not as they went, but to the place whither the head looked they followed it; they turned not as they went."

Ezekiel 12:16: "But I will leave a few men of them from the sword, from the famine, and from the

pestilence; that they may declare all their abominations among the heathen whither they come; and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 29:13: "Yet thus saith the Lord GOD; At the end of forty years will I gather the Egyptians from the people whither they were scattered:"

Ezekiel 36:20: "And when they entered unto the heathen, whither they went, they profaned my holy name, when they said to them, These are the people of the LORD, and are gone forth out of his land."

Ezekiel 36:21: "But I had pity for mine holy name, which the house of Israel had profaned among the heathen, whither they went."

Ezekiel 36:22: "Therefore say unto the house of Israel, thus saith the Lord GOD; I do not this for your sakes, O house of Israel, but for mine holy name's sake, which ye have profaned among the heathen, whither ye went."

Ezekiel 37:21: "And say unto them, Thus saith the Lord GOD; Behold, I will take the children of Israel from among the heathen, whither they be gone, and will gather them on every side, and bring them into their own land:"

Ezekiel 47:9: "And it shall come to pass, that every thing that liveth, which moveth, whithersoever the rivers shall come, shall live: and there shall be a very great multitude of fish, because these waters shall come thither: for they shall be healed; and every thing shall live whither the river cometh."

Daniel 9:7: "O LORD, righteousness belongeth unto thee, but unto us confusion of faces, as at this day; to the men of Judah, and to the inhabitants of Jerusalem, and unto all Israel, that are near, and that are far off, through all the countries whither thou hast driven them, because of their trespass that they have trespassed against thee."

Joel 3:7: "Behold, I will raise them out of the place whither ye have sold them, and will return your recompence upon your own head:"

Zechariah 2:2: "Then said I, Whither goest thou? And he said unto me, To measure Jerusalem, to see what is the breadth thereof, and what is the length thereof."

Zechariah 5:10: "Then said I to the angel that talked with me, Whither do these bear the ephah?"

Luke 10:1: "After these things the LORD appointed other seventy also, and sent them two and two before his face into every city and place, whither he himself would come."

Luke 24:28: "And they drew nigh unto the village, whither they went: and he made as though he would have gone further."

John 3:8: "The wind bloweth where it listeth, and thou hearest the sound thereof, but canst not tell whence it cometh, and whither it goeth: so is every one that is born of the Spirit."

John 6:21: "Then they willingly received him into the ship: and immediately the ship was at the land whither they went."

John 7:35: "Then said the Jews among themselves, Whither will he go, that we shall not find him? will he go unto the dispersed among the Gentiles, and teach the Gentiles?"

John 8:14: "Jesus answered and said unto them, Though I bear record of myself, yet my record is true: for I know whence I came, and whither I go; but ye cannot tell whence I come, and whither I go."

John 8:21: "Then said Jesus again unto them, I go my way, and ye shall seek me, and shall die in your sins: whither I go, ye cannot come."

John 8:22: "Then said the Jews, Will he kill himself? because he saith, Whither I go, ye cannot come."

John 12:35: "Then Jesus said unto them, Yet a little while is the light with you. Walk while ye have the light, lest darkness come upon you: for he that walketh in darkness knoweth not whither he goeth."

John 13:33: "Little children, yet a little while I am with you. Ye shall seek me: and as I said unto the Jews, Whither I go, ye cannot come; so now I say to you."

John 13:36: "Simon Peter said unto him, Lord, whither goest thou? Jesus answered him, Whither I go, thou canst not follow me now; but thou shalt follow me afterwards."

John 14:4: "And whither I go ye know, and the way ye know."

John 14:5: "Thomas saith unto him, Lord, we know not whither thou goest; and how can we know the way?"

John 16:5: "But now I go my way to him that sent me; and none of you asketh me, Whither goest thou?"

John 18:20: "Jesus answered him, I spake openly to the world; I ever taught in the synagogue, and in the temple, whither the Jews always resort; and in secret have I said nothing."

John 21:18: "Verily, verily, I say unto thee, When thou wast young, thou girdest thyself, and walkedst whither thou wouldest: but when thou shalt be old, thou shalt stretch forth thy hands, and another shall gird thee, and carry thee whither thou wouldest not."

Hebrews 6:20: "Whither the forerunner is for us entered, even Jesus, made an high priest for ever after the order of Melchisedec."

Hebrews 11:8: "By faith Abraham, when he was called to go out into a place which he should after receive for an inheritance, obeyed; and he went out, not knowing whither he went."

1 John 2:11: "But he that hateth his brother is in darkness, and walketh in darkness, and knoweth not whither he goeth, because that darkness hath blinded his eyes."

## WHITHERSOEVER

Occurrences: 28

Joshua 1:9: "Have not I commanded thee? Be strong and of a good courage; be not afraid, neither be thou dismayed: for the LORD thy God is with thee whithersoever thou goest."

Joshua 1:16: "And they answered Joshua, saying, All that thou commandest us we will do, and whithersoever thou sendest us, we will go."

Judges 2:15: "Whithersoever they went out, the hand of the LORD was against them for evil, as the LORD had said, and as the LORD had sworn unto them: and they were greatly distressed."

1 Samuel 14:47: "So Saul took the kingdom over Israel, and fought against all his enemies on every side, against Moab, and against the children of Ammon, and against Edom, and against the kings of Zobah, and against the Philistines: and whithersoever he turned himself, he vexed them."

1 Samuel 18:5: "And David went out whithersoever Saul sent him, and behaved himself wisely: and Saul set him over the men of war, and he was accepted in the sight of all the people, and also in the sight of Saul's servants."

1 Samuel 23:13: "Then David and his men, which were about six hundred, arose and departed out of Keilah, and went whithersoever they could go. And it was told Saul that David was escaped from Keilah; and he forbore to go forth."

2 Samuel 7:9: "And I was with thee whithersoever thou wentest, and have cut off all thine enemies out of thy sight, and have made thee a great name, like unto the name of the great men that are in the earth."

2 Samuel 8:6: "Then David put garrisons in Syria of Damascus: and the Syrians became servants to David, and brought gifts. And the LORD preserved David whithersoever he went."

2 Samuel 8:14: "And he put garrisons in Edom; throughout all Edom put he garrisons, and all they of Edom became David's servants. And the LORD preserved David whithersoever he went."

1 Kings 2:3: "And keep the charge of the LORD thy God, to walk in his ways, to keep his statutes, and his commandments, and his judgments, and his testimonies, as it is written in the law of Moses, that thou mayest prosper in all that thou doest, and whithersoever thou turnest thyself:"

1 Kings 8:44: "If thy people go out to battle against their enemy, whithersoever thou shalt send them, and shall pray unto the LORD toward the city which thou hast chosen, and toward the house that I have built for thy name:"

2 Kings 18:7: "And the LORD was with him; and he prospered whithersoever he went forth: and he

rebelled against the king of Assyria, and served him not."

1 Chronicles 17:8: "And I have been with thee whithersoever thou hast walked, and have cut off all thine enemies from before thee, and have made thee a name like the name of the great men that are in the earth."

1 Chronicles 18:6: "Then David put garrisons in Syriadamascus; and the Syrians became David's servants, and brought gifts. Thus the LORD preserved David whithersoever he went."

1 Chronicles 18:13: "And he put garrisons in Edom; and all the Edomites became David's servants. Thus the LORD preserved David whithersoever he went."

Esther 4:3: "And in every province, whithersoever the king's commandment and his decree came, there was great mourning among the Jews, and fasting, and weeping, and wailing; and many lay in sackcloth and ashes."

Esther 8:17: "And in every province, and in every city, whithersoever the king's commandment and his decree came, the Jews had joy and gladness, a feast and a good day. And many of the people of the land became Jews; for the fear of the Jews fell upon them."

Proverbs 17:8: "A gift is as a precious stone in the eyes of him that hath it: whithersoever it turneth, it prospereth."

Proverbs 21:1: "The king's heart is in the hand of the LORD, as the rivers of water: he turneth it whithersoever he will."

Ezekiel 1:20: "Whithersoever the spirit was to go, they went, thither was their spirit to go; and the wheels were lifted up over against them: for the spirit of the living creature was in the wheels."

Ezekiel 21:16: "Go thee one way or other, either on the right hand, or on the left, whithersoever thy face is set."

Ezekiel 47:9: "And it shall come to pass, that every thing that liveth, which moveth, whithersoever the rivers shall come, shall live: and there shall be a very great multitude of fish, because these waters shall come thither: for they shall be healed; and every thing shall live whither the river cometh."

Matthew 8:19: "And a certain scribe came, and said unto him, Master, I will follow thee whithersoever thou goest."

Mark 6:56: "And whithersoever he entered, into villages, or cities, or country, they laid the sick in the streets, and besought him that they might touch if it were but the border of his garment: and as many as touched him were made whole."

Luke 9:57: "And it came to pass, that, as they went in the way, a certain man said unto him, Lord, I will follow thee whithersoever thou goest."

1 Corinthians 16:6: "And it may be that I will abide, yea, and winter with you, that ye may bring me on my journey whithersoever I go."

James 3:4: "Behold also the ships, which though they be so great, and are driven of fierce winds, yet are they turned about with a very small helm, whithersoever the governor listeth."

Revelation 14:4: "These are they which were not defiled with women; for they are virgins. These are they which follow the Lamb whithersoever he goeth. These were redeemed from among men, being the firstfruits unto God and to the Lamb."

## WHO

Occurrences: 865

Genesis 3:11: "And he said, Who told thee that thou wast naked? Hast thou eaten of the tree, whereof I commanded thee that thou shouldest not eat?"

Genesis 12:7: "And the LORD appeared unto Abram, and said, Unto thy seed will I give this land: and there builded he an altar unto the LORD, who appeared unto him."

Genesis 14:12: "And they took Lot, Abram's brother's son, who dwelt in Sodom, and his goods, and departed."

Genesis 21:7: "And she said, Who would have said unto Abraham, that Sarah should have given



children suck? for I have born him a son in his old age."

Genesis 21:26: "And Abimelech said, I wot not who hath done this thing; neither didst thou tell me, neither yet heard I of it, but to day."

Genesis 24:15: "And it came to pass, before he had done speaking, that, behold, Rebekah came out, who was born to Bethuel, son of Milcah, the wife of Nahor, Abraham's brother, with her pitcher upon her shoulder."

Genesis 24:27: "And he said, Blessed be the LORD God of my master Abraham, who hath not left destitute my master of his mercy and his truth: I being in the way, the LORD led me to the house of my master's brethren."

Genesis 27:18: "And he came unto his father, and said, My father: and he said, Here am I; who art thou, my son?"

Genesis 27:32: "And Isaac his father said unto him, Who art thou? And he said, I am thy son, thy firstborn Esau."

Genesis 27:33: "And Isaac trembled very exceedingly, and said, Who? where is he that hath taken venison, and brought it me, and I have eaten of all before thou camest, and have blessed him? yea, and he shall be blessed."

Genesis 30:2: "And Jacob's anger was kindled against Rachel: and he said, Am I in God's stead, who hath withheld from thee the fruit of the womb?"

Genesis 33:5: "And he lifted up his eyes, and saw the women and the children; and said, Who are those with thee? And he said, The children which God hath graciously given thy servant."

Genesis 35:3: "And let us arise, and go up to Bethel; and I will make there an altar unto God, who answered me in the day of my distress, and was with me in the way which I went."

Genesis 36:1: "Now these are the generations of Esau, who is Edom."

Genesis 36:19: "These are the sons of Esau, who is Edom, and these are their dukes."

Genesis 36:20: "These are the sons of Seir the Horite, who inhabited the land; Lotan, and Shobal, and Zibeon, and Anah,"

Genesis 36:35: "And Husham died, and Hadad the son of Bedad, who smote Midian in the field of Moab, reigned in his stead: and the name of his city was Avith."

Genesis 42:30: "The man, who is the lord of the land, spake roughly to us, and took us for spies of the country."

Genesis 43:22: "And other money have we brought down in our hands to buy food: we cannot tell who put our money in our sacks."

Genesis 48:8: "And Israel beheld Joseph's sons, and said, Who are these?"

Genesis 48:14: "And Israel stretched out his right hand, and laid it upon Ephraim's head, who was the younger, and his left hand upon Manasseh's head, guiding his hands wittingly; for Manasseh was the firstborn."

Genesis 49:9: "Judah is a lion's whelp: from the prey, my son, thou art gone up: he stooped down, he couched as a lion, and as an old lion; who shall rouse him up?"

Genesis 49:25: "Even by the God of thy father, who shall help thee; and by the Almighty, who shall bless thee with blessings of heaven above, blessings of the deep that lieth under, blessings of the breasts, and of the womb:"

Exodus 2:14: "And he said, Who made thee a prince and a judge over us? intendest thou to kill me, as thou killedst the Egyptian? And Moses feared, and said, Surely this thing is known."

Exodus 3:11: "And Moses said unto God, Who am I, that I should go unto Pharaoh, and that I should bring forth the children of Israel out of Egypt?"

Exodus 4:11: "And the LORD said unto him, Who hath made man's mouth? or who maketh the dumb, or deaf, or the seeing, or the blind? have not I the LORD?"

Exodus 4:28: "And Moses told Aaron all the words of the LORD who had sent him, and all the signs which he had commanded him."

Exodus 5:2: "And Pharaoh said, Who is the LORD, that I should obey his voice to let Israel go? I

know not the LORD, neither will I let Israel go."

Exodus 5:20: "And they met Moses and Aaron, who stood in the way, as they came forth from Pharaoh:"

Exodus 6:12: "And Moses spake before the LORD, saying, Behold, the children of Israel have not hearkened unto me; how then shall Pharaoh hear me, who am of uncircumcised lips?"

Exodus 10:8: "And Moses and Aaron were brought again unto Pharaoh: and he said unto them, Go, serve the LORD your God: but who are they that shall go?"

Exodus 12:27: "That ye shall say, It is the sacrifice of the LORD's passover, who passed over the houses of the children of Israel in Egypt, when he smote the Egyptians, and delivered our houses. And the people bowed the head and worshipped."

Exodus 12:40: "Now the sojourning of the children of Israel, who dwelt in Egypt, was four hundred and thirty years."

Exodus 15:11: "Who is like unto thee, O LORD, among the gods? who is like thee, glorious in holiness, fearful in praises, doing wonders?"

Exodus 18:10: "And Jethro said, Blessed be the LORD, who hath delivered you out of the hand of the Egyptians, and out of the hand of Pharaoh, who hath delivered the people from under the hand of the Egyptians."

Exodus 21:8: "If she please not her master, who hath betrothed her to himself, then shall he let her be redeemed: to sell her unto a strange nation he shall have no power, seeing he hath dealt deceitfully with her."

Exodus 32:26: "Then Moses stood in the gate of the camp, and said, Who is on the LORD's side? let him come unto me. And all the sons of Levi gathered themselves together unto him."

Leviticus 5:8: "And he shall bring them unto the priest, who shall offer that which is for the sin offering first, and wring off his head from his neck, but shall not divide it asunder:"

Leviticus 12:7: "Who shall offer it before the LORD, and make an atonement for her; and she shall be cleansed from the issue of her blood. This is the law for her that hath born a male or a female."

Leviticus 27:12: "And the priest shall value it, whether it be good or bad: as thou valuest it, who art the priest, so shall it be."

Numbers 6:21: "This is the law of the Nazarite who hath vowed, and of his offering unto the LORD for his separation, beside that that his hand shall get: according to the vow which he vowed, so he must do after the law of his separation."

Numbers 7:2: "That the princes of Israel, heads of the house of their fathers, who were the princes of the tribes, and were over them that were numbered, offered:"

Numbers 9:6: "And there were certain men, who were defiled by the dead body of a man, that they could not keep the passover on that day: and they came before Moses and before Aaron on that day:"

Numbers 11:4: "And the mixt multitude that was among them fell a lusting: and the children of Israel also wept again, and said, Who shall give us flesh to eat?"

Numbers 11:18: "And say thou unto the people, Sanctify yourselves against to morrow, and ye shall eat flesh: for ye have wept in the ears of the LORD, saying, Who shall give us flesh to eat? for it was well with us in Egypt: therefore the LORD will give you flesh, and ye shall eat."

Numbers 12:7: "My servant Moses is not so, who is faithful in all mine house."

Numbers 14:36: "And the men, which Moses sent to search the land, who returned, and made all the congregation to murmur against him, by bringing up a slander upon the land,"

Numbers 16:5: "And he spake unto Korah and unto all his company, saying, Even to morrow the LORD will shew who are his, and who is holy; and will cause him to come near unto him: even him whom he hath chosen will he cause to come near unto him."

Numbers 21:26: "For Heshbon was the city of Sihon the king of the Amorites, who had fought against the former king of Moab, and taken all his land out of his hand, even unto Arnon."

Numbers 23:10: "Who can count the dust of Jacob, and the number of the fourth part of Israel? Let

me die the death of the righteous, and let my last end be like his!"

Numbers 24:9: "He couched, he lay down as a lion, and as a great lion: who shall stir him up?

Blessed is he that blesseth thee, and cursed is he that curseth thee."

Numbers 24:23: "And he took up his parable, and said, Alas, who shall live when God doeth this!"

Numbers 25:6: "And, behold, one of the children of Israel came and brought unto his brethren a Midianitish woman in the sight of Moses, and in the sight of all the congregation of the children of Israel, who were weeping before the door of the tabernacle of the congregation."

Numbers 26:9: "And the sons of Eliab; Nemuel, and Dathan, and Abiram. This is that Dathan and Abiram, which were famous in the congregation, who strove against Moses and against Aaron in the company of Korah, when they strove against the LORD:"

Numbers 26:47: "These are the families of the sons of Asher according to those that were numbered of them; who were fifty and three thousand and four hundred."

Numbers 26:63: "These are they that were numbered by Moses and Eleazar the priest, who numbered the children of Israel in the plains of Moab by Jordan near Jericho."

Numbers 27:21: "And he shall stand before Eleazar the priest, who shall ask counsel for him after the judgment of Urim before the LORD: at his word shall they go out, and at his word they shall come in, both he, and all the children of Israel with him, even all the congregation."

Numbers 31:27: "And divide the prey into two parts; between them that took the war upon them, who went out to battle, and between all the congregation:"

Deuteronomy 1:33: "Who went in the way before you, to search you out a place to pitch your tents in, in fire by night, to shew you by what way ye should go, and in a cloud by day."

Deuteronomy 2:25: "This day will I begin to put the dread of thee and the fear of thee upon the nations that are under the whole heaven, who shall hear report of thee, and shall tremble, and be in anguish because of thee."

Deuteronomy 4:7: "For what nation is there so great, who hath God so nigh unto them, as the LORD our God is in all things that we call upon him for?"

Deuteronomy 4:46: "On this side Jordan, in the valley over against Bethpeor, in the land of Sihon king of the Amorites, who dwelt at Heshbon, whom Moses and the children of Israel smote, after they were come forth out of Egypt:"

Deuteronomy 5:3: "The LORD made not this covenant with our fathers, but with us, even us, who are all of us here alive this day."

Deuteronomy 5:26: "For who is there of all flesh, that hath heard the voice of the living God speaking out of the midst of the fire, as we have, and lived?"

Deuteronomy 8:15: "Who led thee through that great and terrible wilderness, wherein were fiery serpents, and scorpions, and drought, where there was no water; who brought thee forth water out of the rock of flint;"

Deuteronomy 8:16: "Who fed thee in the wilderness with manna, which thy fathers knew not, that he might humble thee, and that he might prove thee, to do thee good at thy latter end;"

Deuteronomy 9:2: "A people great and tall, the children of the Anakims, whom thou knowest, and of whom thou hast heard say, Who can stand before the children of Anak!"

Deuteronomy 21:1: "If one be found slain in the land which the LORD thy God giveth thee to possess it, lying in the field, and it be not known who hath slain him:"

Deuteronomy 30:12: "It is not in heaven, that thou shouldest say, Who shall go up for us to heaven, and bring it unto us, that we may hear it, and do it?"

Deuteronomy 30:13: "Neither is it beyond the sea, that thou shouldest say, Who shall go over the sea for us, and bring it unto us, that we may hear it, and do it?"

Deuteronomy 33:9: "Who said unto his father and to his mother, I have not seen him; neither did he acknowledge his brethren, nor knew his own children: for they have observed thy word, and kept thy covenant."

Deuteronomy 33:26: "There is none like unto the God of Jeshurun, who rideth upon the heaven in

thy help, and in his excellency on the sky."

Deuteronomy 33:29: "Happy art thou, O Israel: who is like unto thee, O people saved by the LORD, the shield of thy help, and who is the sword of thy excellency! and thine enemies shall be found liars unto thee; and thou shalt tread upon their high places."

Joshua 9:8: "And they said unto Joshua, We are thy servants. And Joshua said unto them, Who are ye? and from whence come ye?"

Joshua 11:8: "And the LORD delivered them into the hand of Israel, who smote them, and chased them unto great Zidon, and unto Misrephothmaim, and unto the valley of Mizpeh eastward; and they smote them, until they left them none remaining."

Joshua 12:2: "Sihon king of the Amorites, who dwelt in Heshbon, and ruled from Aroer, which is upon the bank of the river Arnon, and from the middle of the river, and from half Gilead, even unto the river Jabbok, which is the border of the children of Ammon;"

Joshua 13:12: "All the kingdom of Og in Bashan, which reigned in Ashtaroth and in Edrei, who remained of the remnant of the giants: for these did Moses smite, and cast them out."

Joshua 15:19: "Who answered, Give me a blessing; for thou hast given me a south land; give me also springs of water. And he gave her the upper springs, and the nether springs."

Joshua 17:16: "And the children of Joseph said, The hill is not enough for us: and all the Canaanites that dwell in the land of the valley have chariots of iron, both they who are of Bethshean and her towns, and they who are of the valley of Jezreel."

Joshua 21:10: "Which the children of Aaron, being of the families of the Kohathites, who were of the children of Levi, had: for theirs was the first lot."

Judges 1:1: "Now after the death of Joshua it came to pass, that the children of Israel asked the LORD, saying, Who shall go up for us against the Canaanites first, to fight against them?"

Judges 2:7: "And the people served the LORD all the days of Joshua, and all the days of the elders that outlived Joshua, who had seen all the great works of the LORD, that he did for Israel."

Judges 3:9: "And when the children of Israel cried unto the LORD, the LORD raised up a deliverer to the children of Israel, who delivered them, even Othniel the son of Kenaz, Caleb's younger brother."

Judges 3:19: "But he himself turned again from the quarries that were by Gilgal, and said, I have a secret errand unto thee, O king: who said, Keep silence. And all that stood by him went out from him."

Judges 6:29: "And they said one to another, Who hath done this thing? And when they enquired and asked, they said, Gideon the son of Joash hath done this thing."

Judges 6:35: "And he sent messengers throughout all Manasseh; who also was gathered after him: and he sent messengers unto Asher, and unto Zebulun, and unto Naphtali; and they came up to meet them."

Judges 7:1: "Then Jerubbaal, who is Gideon, and all the people that were with him, rose up early, and pitched beside the well of Harod: so that the host of the Midianites were on the north side of them, by the hill of Moreh, in the valley."

Judges 8:34: "And the children of Israel remembered not the LORD their God, who had delivered them out of the hands of all their enemies on every side:"

Judges 9:28: "And Gaal the son of Ebed said, Who is Abimelech, and who is Shechem, that we should serve him? is not he the son of Jerubbaal? and Zebul his officer? serve the men of Hamor the father of Shechem: for why should we serve him?"

Judges 9:38: "Then said Zebul unto him, Where is now thy mouth, wherewith thou saidst, Who is Abimelech, that we should serve him? is not this the people that thou hast despised? go out, I pray now, and fight with them."

Judges 11:39: "And it came to pass at the end of two months, that she returned unto her father, who did with her according to his vow which he had vowed: and she knew no man. And it was a custom in Israel,"

Judges 15:6: "Then the Philistines said, Who hath done this? And they answered, Samson, the son in law of the Timnite, because he had taken his wife, and given her to his companion. And the Philistines came up, and burnt her and her father with fire."

Judges 17:4: "Yet he restored the money unto his mother; and his mother took two hundred shekels of silver, and gave them to the founder, who made thereof a graven image and a molten image: and they were in the house of Micah."

Judges 17:5: "And the man Micah had an house of gods, and made an ephod, and teraphim, and consecrated one of his sons, who became his priest."

Judges 17:7: "And there was a young man out of Bethlehemjudah of the family of Judah, who was a Levite, and he sojourned there."

Judges 18:2: "And the children of Dan sent of their family five men from their coasts, men of valour, from Zorah, and from Eshtaol, to spy out the land, and to search it; and they said unto them, Go, search the land: who when they came to mount Ephraim, to the house of Micah, they lodged there."

Judges 18:3: "When they were by the house of Micah, they knew the voice of the young man the Levite: and they turned in thither, and said unto him, Who brought thee hither? and what makest thou in this place? and what hast thou here?"

Judges 18:29: "And they called the name of the city Dan, after the name of Dan their father, who was born unto Israel: howbeit the name of the city was Laish at the first."

Judges 19:1: "And it came to pass in those days, when there was no king in Israel, that there was a certain Levite sojourning on the side of mount Ephraim, who took to him a concubine out of Bethlehemjudah."

Judges 21:5: "And the children of Israel said, Who is there among all the tribes of Israel that came not up with the congregation unto the LORD? For they had made a great oath concerning him that came not up to the LORD to Mizpeh, saying, He shall surely be put to death."

Ruth 2:3: "And she went, and came, and gleaned in the field after the reapers: and her hap was to light on a part of the field belonging unto Boaz, who was of the kindred of Elimelech."

Ruth 2:20: "And Naomi said unto her daughter in law, Blessed be he of the LORD, who hath not left off his kindness to the living and to the dead. And Naomi said unto her, The man is near of kin unto us, one of our next kinsmen."

Ruth 3:9: "And he said, Who art thou? And she answered, I am Ruth thine handmaid: spread therefore thy skirt over thine handmaid; for thou art a near kinsman."

Ruth 3:16: "And when she came to her mother in law, she said, Who art thou, my daughter? And she told her all that the man had done to her."

1 Samuel 2:25: "If one man sin against another, the judge shall judge him: but if a man sin against the LORD, who shall intreat for him? Notwithstanding they hearkened not unto the voice of their father, because the LORD would slay them."

1 Samuel 4:8: "Woe unto us! who shall deliver us out of the hand of these mighty Gods? these are the Gods that smote the Egyptians with all the plagues in the wilderness."

1 Samuel 6:20: "And the men of Bethshemesh said, Who is able to stand before this holy LORD God? and to whom shall he go up from us?"

1 Samuel 10:12: "And one of the same place answered and said, But who is their father? Therefore it became a proverb, Is Saul also among the prophets?"

1 Samuel 10:19: "And ye have this day rejected your God, who himself saved you out of all your adversities and your tribulations; and ye have said unto him, Nay, but set a king over us. Now therefore present yourselves before the LORD by your tribes, and by your thousands."

1 Samuel 11:12: "And the people said unto Samuel, Who is he that said, Shall Saul reign over us? bring the men, that we may put them to death."

1 Samuel 14:17: "Then said Saul unto the people that were with him, Number now, and see who is gone from us. And when they had numbered, behold, Jonathan and his armourbearer were not

there."

1 Samuel 14:45: "And the people said unto Saul, Shall Jonathan die, who hath wrought this great salvation in Israel? God forbid: as the LORD liveth, there shall not one hair of his head fall to the ground; for he hath wrought with God this day. So the people rescued Jonathan, that he died not."

1 Samuel 16:16: "Let our lord now command thy servants, which are before thee, to seek out a man, who is a cunning player on an harp: and it shall come to pass, when the evil spirit from God is upon thee, that he shall play with his hand, and thou shalt be well."

1 Samuel 17:25: "And the men of Israel said, Have ye seen this man that is come up? surely to defy Israel is he come up: and it shall be, that the man who killeth him, the king will enrich him with great riches, and will give him his daughter, and make his father's house free in Israel."

1 Samuel 17:26: "And David spake to the men that stood by him, saying, What shall be done to the man that killeth this Philistine, and taketh away the reproach from Israel? for who is this uncircumcised Philistine, that he should defy the armies of the living God?"

1 Samuel 18:18: "And David said unto Saul, Who am I? and what is my life, or my father's family in Israel, that I should be son in law to the king?"

1 Samuel 20:10: "Then said David to Jonathan, Who shall tell me? or what if thy father answer thee roughly?"

1 Samuel 22:14: "Then Ahimelech answered the king, and said, And who is so faithful among all thy servants as David, which is the king's son in law, and goeth at thy bidding, and is honourable in thine house?"

1 Samuel 23:22: "Go, I pray you, prepare yet, and know and see his place where his haunt is, and who hath seen him there: for it is told me that he dealeth very subtilly."

1 Samuel 25:10: "And Nabal answered David's servants, and said, Who is David? and who is the son of Jesse? there be many servants now a days that break away every man from his master."

1 Samuel 26:6: "Then answered David and said to Ahimelech the Hittite, and to Abishai the son of Zeruiah, brother to Joab, saying, Who will go down with me to Saul to the camp? And Abishai said, I will go down with thee."

1 Samuel 26:9: "And David said to Abishai, Destroy him not: for who can stretch forth his hand against the LORD's anointed, and be guiltless?"

1 Samuel 26:14: "And David cried to the people, and to Abner the son of Ner, saying, Answerest thou not, Abner? Then Abner answered and said, Who art thou that criest to the king?"

1 Samuel 26:15: "And David said to Abner, Art not thou a valiant man? and who is like to thee in Israel? wherefore then hast thou not kept thy lord the king? for there came one of the people in to destroy the king thy lord."

1 Samuel 30:23: "Then said David, Ye shall not do so, my brethren, with that which the LORD hath given us, who hath preserved us, and delivered the company that came against us into our hand."

1 Samuel 30:24: "For who will hearken unto you in this matter? but as his part is that goeth down to the battle, so shall his part be that tarrieth by the stuff: they shall part alike."

2 Samuel 1:8: "And he said unto me, Who art thou? And I answered him, I am an Amalekite."

2 Samuel 1:24: "Ye daughters of Israel, weep over Saul, who clothed you in scarlet, with other delights, who put on ornaments of gold upon your apparel."

2 Samuel 4:5: "And the sons of Rimmon the Beerothite, Rechab and Baanah, went, and came about the heat of the day to the house of Ishbosheth, who lay on a bed at noon."

2 Samuel 4:9: "And David answered Rechab and Baanah his brother, the sons of Rimmon the Beerothite, and said unto them, As the LORD liveth, who hath redeemed my soul out of all adversity,"

2 Samuel 4:10: "When one told me, saying, Behold, Saul is dead, thinking to have brought good tidings, I took hold of him, and slew him in Ziklag, who thought that I would have given him a reward for his tidings:"

2 Samuel 6:20: "Then David returned to bless his household. And Michal the daughter of Saul came

out to meet David, and said, How glorious was the king of Israel to day, who uncovered himself to day in the eyes of the handmaids of his servants, as one of the vain fellows shamelessly uncovereth himself!"

2 Samuel 7:18: "Then went king David in, and sat before the LORD, and he said, Who am I, O Lord GOD? and what is my house, that thou hast brought me hitherto?"

2 Samuel 10:18: "And the Syrians fled before Israel; and David slew the men of seven hundred chariots of the Syrians, and forty thousand horsemen, and smote Shobach the captain of their host, who died there."

2 Samuel 11:21: "Who smote Abimelech the son of Jerubbesheth? did not a woman cast a piece of a millstone upon him from the wall, that he died in Thebez? why went ye nigh the wall? then say thou, Thy servant Uriah the Hittite is dead also."

2 Samuel 12:22: "And he said, While the child was yet alive, I fasted and wept: for I said, Who can tell whether GOD will be gracious to me, that the child may live?"

2 Samuel 16:10: "And the king said, What have I to do with you, ye sons of Zeruiah? so let him curse, because the LORD hath said unto him, Curse David. Who shall then say, Wherefore hast thou done so?"

2 Samuel 22:4: "I will call on the LORD, who is worthy to be praised: so shall I be saved from mine enemies."

2 Samuel 22:32: "For who is God, save the LORD? and who is a rock, save our God?"

2 Samuel 23:1: "Now these be the last words of David. David the son of Jesse said, and the man who was raised up on high, the anointed of the God of Jacob, and the sweet psalmist of Israel, said,"

2 Samuel 23:20: "And Benaiah the son of Jehoiada, the son of a valiant man, of Kabzeel, who had done many acts, he slew two lionlike men of Moab: he went down also and slew a lion in the midst of a pit in time of snow:"

1 Kings 1:20: "And thou, my lord, O king, the eyes of all Israel are upon thee, that thou shouldest tell them who shall sit on the throne of my lord the king after him."

1 Kings 1:27: "Is this thing done by my lord the king, and thou hast not shewed it unto thy servant, who should sit on the throne of my lord the king after him?"

1 Kings 2:24: "Now therefore, as the LORD liveth, which hath established me, and set me on the throne of David my father, and who hath made me an house, as he promised, Adonijah shall be put to death this day."

1 Kings 2:32: "And the LORD shall return his blood upon his own head, who fell upon two men more righteous and better than he, and slew them with the sword, my father David not knowing thereof, to wit, Abner the son of Ner, captain of the host of Israel, and Amasa the son of Jether, captain of the host of Judah."

1 Kings 3:9: "Give therefore thy servant an understanding heart to judge thy people, that I may discern between good and bad: for who is able to judge this thy so great a people?"

1 Kings 8:23: "And he said, LORD God of Israel, there is no God like thee, in heaven above, or on earth beneath, who keepest covenant and mercy with thy servants that walk before thee with all their heart:"

1 Kings 8:24: "Who hast kept with thy servant David my father that thou promisedst him: thou spakest also with thy mouth, and hast fulfilled it with thine hand, as it is this day."

1 Kings 8:50: "And forgive thy people that have sinned against thee, and all their transgressions wherein they have transgressed against thee, and give them compassion before them who carried them captive, that they may have compassion on them:"

1 Kings 9:9: "And they shall answer, Because they forsook the LORD their God, who brought forth their fathers out of the land of Egypt, and have taken hold upon other gods, and have worshipped them, and served them: therefore hath the LORD brought upon them all this evil."

1 Kings 12:2: "And it came to pass, when Jeroboam the son of Nebat, who was yet in Egypt, heard of it, (for he was fled from the presence of king Solomon, and Jeroboam dwelt in Egypt;)"

1 Kings 12:9: "And he said unto them, What counsel give ye that we may answer this people, who have spoken to me, saying, Make the yoke which thy father did put upon us lighter?"

1 Kings 12:18: "Then king Rehoboam sent Adoram, who was over the tribute; and all Israel stoned him with stones, that he died. Therefore king Rehoboam made speed to get him up to his chariot, to flee to Jerusalem."

1 Kings 13:26: "And when the prophet that brought him back from the way heard thereof, he said, It is the man of God, who was disobedient unto the word of the LORD: therefore the LORD hath delivered him unto the lion, which hath torn him, and slain him, according to the word of the LORD, which he spake unto him."

1 Kings 14:8: "And rent the kingdom away from the house of David, and gave it thee: and yet thou hast not been as my servant David, who kept my commandments, and who followed me with all his heart, to do that only which was right in mine eyes;"

1 Kings 14:14: "Moreover the LORD shall raise him up a king over Israel, who shall cut off the house of Jeroboam that day: but what? even now."

1 Kings 14:16: "And he shall give Israel up because of the sins of Jeroboam, who did sin, and who made Israel to sin."

1 Kings 17:1: "And Elijah the Tishbite, who was of the inhabitants of Gilead, said unto Ahab, As the LORD God of Israel liveth, before whom I stand, there shall not be dew nor rain these years, but according to my word."

1 Kings 19:19: "So he departed thence, and found Elisha the son of Shaphat, who was plowing with twelve yoke of oxen before him, and he with the twelfth: and Elijah passed by him, and cast his mantle upon him."

1 Kings 20:14: "And Ahab said, By whom? And he said, Thus saith the LORD, Even by the young men of the princes of the provinces. Then he said, Who shall order the battle? And he answered, Thou."

1 Kings 21:11: "And the men of his city, even the elders and the nobles who were the inhabitants in his city, did as Jezebel had sent unto them, and as it was written in the letters which she had sent unto them."

1 Kings 22:20: "And the LORD said, Who shall persuade Ahab, that he may go up and fall at Ramothgilead? And one said on this manner, and another said on that manner."

1 Kings 22:52: "And he did evil in the sight of the LORD, and walked in the way of his father, and in the way of his mother, and in the way of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin:"

2 Kings 4:5: "So she went from him, and shut the door upon her and upon her sons, who brought the vessels to her; and she poured out."

2 Kings 7:17: "And the king appointed the lord on whose hand he leaned to have the charge of the gate: and the people trode upon him in the gate, and he died, as the man of God had said, who spake when the king came down to him."

2 Kings 8:14: "So he departed from Elisha, and came to his master; who said to him, What said Elisha to thee? And he answered, He told me that thou shouldest surely recover."

2 Kings 9:31: "And as Jehu entered in at the gate, she said, Had Zimri peace, who slew his master?"

2 Kings 9:32: "And he lifted up his face to the window, and said, Who is on my side? who? And there looked out to him two or three eunuchs."

2 Kings 10:9: "And it came to pass in the morning, that he went out, and stood, and said to all the people, Ye be righteous: behold, I conspired against my master, and slew him: but who slew all these?"

2 Kings 10:13: "Jehu met with the brethren of Ahaziah king of Judah, and said, Who are ye? And they answered, We are the brethren of Ahaziah; and we go down to salute the children of the king and the children of the queen."

2 Kings 10:29: "Howbeit from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin, Jehu departed not from after them, to wit, the golden calves that were in Bethel, and that were in Dan."



2 Kings 13:6: "Nevertheless they departed not from the sins of the house of Jeroboam, who made Israel sin, but walked therein: and there remained the grove also in Samaria.)"

2 Kings 13:11: "And he did that which was evil in the sight of the LORD; he departed not from all the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel sin: but he walked therein."

2 Kings 14:24: "And he did that which was evil in the sight of the LORD: he departed not from all the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 15:9: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, as his fathers had done: he departed not from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 15:18: "And he did that which was evil in the sight of the LORD: he departed not all his days from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 15:24: "And he did that which was evil in the sight of the LORD: he departed not from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 15:28: "And he did that which was evil in the sight of the LORD: he departed not from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin."

2 Kings 17:36: "But the LORD, who brought you up out of the land of Egypt with great power and a stretched out arm, him shall ye fear, and him shall ye worship, and to him shall ye do sacrifice."

2 Kings 18:35: "Who are they among all the gods of the countries, that have delivered their country out of mine hand, that the LORD should deliver Jerusalem out of mine hand?"

2 Kings 23:15: "Moreover the altar that was at Bethel, and the high place which Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin, had made, both that altar and the high place he brake down, and burned the high place, and stamped it small to powder, and burned the grove."

2 Kings 23:16: "And as Josiah turned himself, he spied the sepulchres that were there in the mount, and sent, and took the bones out of the sepulchres, and burned them upon the altar, and polluted it, according to the word of the LORD which the man of God proclaimed, who proclaimed these words."

1 Chronicles 2:7: "And the sons of Carmi; Achar, the troubler of Israel, who transgressed in the thing accursed."

1 Chronicles 2:22: "And Segub begat Jair, who had three and twenty cities in the land of Gilead."

1 Chronicles 4:22: "And Jokim, and the men of Chozeba, and Joash, and Saraph, who had the dominion in Moab, and Jashubilehem. And these are ancient things."

1 Chronicles 5:8: "And Bela the son of Azaz, the son of Shema, the son of Joel, who dwelt in Aroer, even unto Nebo and Baalmeon:"

1 Chronicles 5:10: "And in the days of Saul they made war with the Hagarites, who fell by their hand: and they dwelt in their tents throughout all the east land of Gilead."

1 Chronicles 6:39: "And his brother Asaph, who stood on his right hand, even Asaph the son of Berachiah, the son of Shimea,"

1 Chronicles 7:24: "(And his daughter was Sherah, who built Bethhoron the nether, and the upper, and Uzzensherah.)"

1 Chronicles 7:31: "And the sons of Beriah; Heber, and Malchiel, who is the father of Birzavith."

1 Chronicles 8:12: "The sons of Elpaal; Eber, and Misham, and Shamed, who built Ono, and Lod, with the towns thereof:"

1 Chronicles 8:13: "Beriah also, and Shema, who were heads of the fathers of the inhabitants of Aijalon, who drove away the inhabitants of Gath:"

1 Chronicles 9:1: "So all Israel were reckoned by genealogies; and, behold, they were written in the book of the kings of Israel and Judah, who were carried away to Babylon for their transgression."

1 Chronicles 9:18: "Who hitherto waited in the king's gate eastward: they were porters in the companies of the children of Levi."

1 Chronicles 9:31: "And Mattithiah, one of the Levites, who was the firstborn of Shallum the Korahite, had the set office over the things that were made in the pans."

1 Chronicles 9:33: "And these are the singers, chief of the fathers of the Levites, who remaining in

the chambers were free: for they were employed in that work day and night."

1 Chronicles 11:10: "These also are the chief of the mighty men whom David had, who strengthened themselves with him in his kingdom, and with all Israel, to make him king, according to the word of the LORD concerning Israel."

1 Chronicles 11:12: "And after him was Eleazar the son of Dodo, the Ahohite, who was one of the three mighties."

1 Chronicles 11:22: "Benaiah the son of Jehoiada, the son of a valiant man of Kabzeel, who had done many acts; he slew two lionlike men of Moab: also he went down and slew a lion in a pit in a snowy day."

1 Chronicles 12:18: "Then the spirit came upon Amasai, who was chief of the captains, and he said, Thine are we, David, and on thy side, thou son of Jesse: peace, peace be unto thee, and peace be to thine helpers; for thy God helpeth thee. Then David received them, and made them captains of the band."

1 Chronicles 16:41: "And with them Heman and Jeduthun, and the rest that were chosen, who were expressed by name, to give thanks to the LORD, because his mercy endureth for ever;"

1 Chronicles 17:16: "And David the king came and sat before the LORD, and said, Who am I, O LORD God, and what is mine house, that thou hast brought me hitherto?"

1 Chronicles 19:7: "So they hired thirty and two thousand chariots, and the king of Maachah and his people; who came and pitched before Medeba. And the children of Ammon gathered themselves together from their cities, and came to battle."

1 Chronicles 21:16: "And David lifted up his eyes, and saw the angel of the LORD stand between the earth and the heaven, having a drawn sword in his hand stretched out over Jerusalem. Then David and the elders of Israel, who were clothed in sackcloth, fell upon their faces."

1 Chronicles 22:9: "Behold, a son shall be born to thee, who shall be a man of rest; and I will give him rest from all his enemies round about: for his name shall be Solomon, and I will give peace and quietness unto Israel in his days."

1 Chronicles 24:28: "Of Mahli came Eleazar, who had no sons."

1 Chronicles 25:1: "Moreover David and the captains of the host separated to the service of the sons of Asaph, and of Heman, and of Jeduthun, who should prophesy with harps, with psalteries, and with cymbals: and the number of the workmen according to their service was:"

1 Chronicles 25:3: "Of Jeduthun: the sons of Jeduthun; Gedaliah, and Zeri, and Jeshaiiah, Hashabiah, and Mattithiah, six, under the hands of their father Jeduthun, who prophesied with a harp, to give thanks and to praise the LORD."

1 Chronicles 25:9: "Now the first lot came forth for Asaph to Joseph: the second to Gedaliah, who with his brethren and sons were twelve:"

1 Chronicles 27:6: "This is that Benaiah, who was mighty among the thirty, and above the thirty: and in his course was Ammizabad his son."

1 Chronicles 29:5: "The gold for things of gold, and the silver for things of silver, and for all manner of work to be made by the hands of artificers. And who then is willing to consecrate his service this day unto the LORD?"

1 Chronicles 29:14: "But who am I, and what is my people, that we should be able to offer so willingly after this sort? for all things come of thee, and of thine own have we given thee."

2 Chronicles 1:10: "Give me now wisdom and knowledge, that I may go out and come in before this people: for who can judge this thy people, that is so great?"

2 Chronicles 2:6: "But who is able to build him an house, seeing the heaven and heaven of heavens cannot contain him? who am I then, that I should build him an house, save only to burn sacrifice before him?"

2 Chronicles 2:12: "Hiram said moreover, Blessed be the LORD God of Israel, that made heaven and earth, who hath given to David the king a wise son, endued with prudence and understanding, that might build an house for the LORD, and an house for his kingdom."

2 Chronicles 6:4: "And he said, Blessed be the LORD God of Israel, who hath with his hands fulfilled that which he spake with his mouth to my father David, saying,"

2 Chronicles 8:8: "But of their children, who were left after them in the land, whom the children of Israel consumed not, them did Solomon make to pay tribute until this day."

2 Chronicles 10:2: "And it came to pass, when Jeroboam the son of Nebat, who was in Egypt, whither he fled from the presence of Solomon the king, heard it, that Jeroboam returned out of Egypt."

2 Chronicles 17:16: "And next him was Amasiah the son of Zichri, who willingly offered himself unto the LORD; and with him two hundred thousand mighty men of valour."

2 Chronicles 18:19: "And the LORD said, Who shall entice Ahab king of Israel, that he may go up and fall at Ramothgilead? And one spake saying after this manner, and another saying after that manner."

2 Chronicles 19:6: "And said to the judges, Take heed what ye do: for ye judge not for man, but for the LORD, who is with you in the judgment."

2 Chronicles 20:7: "Art not thou our God, who didst drive out the inhabitants of this land before thy people Israel, and gavest it to the seed of Abraham thy friend for ever?"

2 Chronicles 20:34: "Now the rest of the acts of Jehoshaphat, first and last, behold, they are written in the book of Jehu the son of Hanani, who is mentioned in the book of the kings of Israel."

2 Chronicles 20:35: "And after this did Jehoshaphat king of Judah join himself with Ahaziah king of Israel, who did very wickedly:"

2 Chronicles 22:9: "And he sought Ahaziah: and they caught him, (for he was hid in Samaria,) and brought him to Jehu: and when they had slain him, they buried him: Because, said they, he is the son of Jehoshaphat, who sought the LORD with all his heart. So the house of Ahaziah had no power to keep still the kingdom."

2 Chronicles 26:1: "Then all the people of Judah took Uzziah, who was sixteen years old, and made him king in the room of his father Amaziah."

2 Chronicles 26:5: "And he sought God in the days of Zechariah, who had understanding in the visions of God: and as long as he sought the LORD, God made him to prosper."

2 Chronicles 28:5: "Wherefore the LORD his God delivered him into the hand of the king of Syria; and they smote him, and carried away a great multitude of them captives, and brought them to Damascus. And he was also delivered into the hand of the king of Israel, who smote him with a great slaughter."

2 Chronicles 30:7: "And be not ye like your fathers, and like your brethren, which trespassed against the LORD God of their fathers, who therefore gave them up to desolation, as ye see."

2 Chronicles 32:4: "So there was gathered much people together, who stopped all the fountains, and the brook that ran through the midst of the land, saying, Why should the kings of Assyria come, and find much water?"

2 Chronicles 32:14: "Who was there among all the gods of those nations that my fathers utterly destroyed, that could deliver his people out of mine hand, that your God should be able to deliver you out of mine hand?"

2 Chronicles 32:31: "Howbeit in the business of the ambassadors of the princes of Babylon, who sent unto him to enquire of the wonder that was done in the land, God left him, to try him, that he might know all that was in his heart."

2 Chronicles 34:26: "And as for the king of Judah, who sent you to enquire of the LORD, so shall ye say unto him, Thus saith the LORD God of Israel concerning the words which thou hast heard;"

2 Chronicles 35:21: "But he sent ambassadors to him, saying, What have I to do with thee, thou king of Judah? I come not against thee this day, but against the house wherewith I have war: for God commanded me to make haste: forbear thee from meddling with God, who is with me, that he destroy thee not."

2 Chronicles 36:13: "And he also rebelled against king Nebuchadnezzar, who had made him swear

by God: but he stiffened his neck, and hardened his heart from turning unto the LORD God of Israel."

2 Chronicles 36:17: "Therefore he brought upon them the king of the Chaldees, who slew their young men with the sword in the house of their sanctuary, and had no compassion upon young man or maiden, old man, or him that stooped for age: he gave them all into his hand."

2 Chronicles 36:23: "Thus saith Cyrus king of Persia, All the kingdoms of the earth hath the LORD God of heaven given me; and he hath charged me to build him an house in Jerusalem, which is in Judah. Who is there among you of all his people? The LORD his God be with him, and let him go up."

Ezra 1:3: "Who is there among you of all his people? his God be with him, and let him go up to Jerusalem, which is in Judah, and build the house of the LORD God of Israel, (he is the God,) which is in Jerusalem."

Ezra 3:12: "But many of the priests and Levites and chief of the fathers, who were ancient men, that had seen the first house, when the foundation of this house was laid before their eyes, wept with a loud voice; and many shouted aloud for joy:"

Ezra 5:3: "At the same time came to them Tatnai, governor on this side the river, and Shetharboznai and their companions, and said thus unto them, Who hath commanded you to build this house, and to make up this wall?"

Ezra 5:9: "Then asked we those elders, and said unto them thus, Who commanded you to build this house, and to make up these walls?"

Ezra 5:12: "But after that our fathers had provoked the God of heaven unto wrath, he gave them into the hand of Nebuchadnezzar the king of Babylon, the Chaldean, who destroyed this house, and carried the people away into Babylon."

Nehemiah 1:11: "O LORD, I beseech thee, let now thine ear be attentive to the prayer of thy servant, and to the prayer of thy servants, who desire to fear thy name: and prosper, I pray thee, thy servant this day, and grant him mercy in the sight of this man. For I was the king's cupbearer."

Nehemiah 3:3: "But the fish gate did the sons of Hassenaah build, who also laid the beams thereof, and set up the doors thereof, the locks thereof, and the bars thereof."

Nehemiah 6:10: "Afterward I came unto the house of Shemaiah the son of Delaiah the son of Mehetabeel, who was shut up; and he said, Let us meet together in the house of God, within the temple, and let us shut the doors of the temple: for they will come to slay thee; yea, in the night will they come to slay thee."

Nehemiah 6:11: "And I said, Should such a man as I flee? and who is there, that, being as I am, would go into the temple to save his life? I will not go in."

Nehemiah 7:7: "Who came with Zerubbabel, Jeshua, Nehemiah, Azariah, Raamiah, Nahamani, Mordecai, Bilshan, Mispereth, Bigvai, Nehum, Baanah. The number, I say, of the men of the people of Israel was this;"

Nehemiah 9:7: "Thou art the LORD the God, who didst choose Abram, and broughtest him forth out of Ur of the Chaldees, and gavest him the name of Abraham;"

Nehemiah 9:27: "Therefore thou deliveredst them into the hand of their enemies, who vexed them: and in the time of their trouble, when they cried unto thee, thou heardest them from heaven; and according to thy manifold mercies thou gavest them saviours, who saved them out of the hand of their enemies."

Nehemiah 9:32: "Now therefore, our God, the great, the mighty, and the terrible God, who keepest covenant and mercy, let not all the trouble seem little before thee, that hath come upon us, on our kings, on our princes, and on our priests, and on our prophets, and on our fathers, and on all thy people, since the time of the kings of Assyria unto this day."

Nehemiah 13:26: "Did not Solomon king of Israel sin by these things? yet among many nations was there no king like him, who was beloved of his God, and God made him king over all Israel: nevertheless even him did outlandish women cause to sin."

Esther 2:6: "Who had been carried away from Jerusalem with the captivity which had been carried away with Jeconiah king of Judah, whom Nebuchadnezzar the king of Babylon had carried away."

Esther 2:15: "Now when the turn of Esther, the daughter of Abihail the uncle of Mordecai, who had taken her for his daughter, was come to go in unto the king, she required nothing but what Hegai the king's chamberlain, the keeper of the women, appointed. And Esther obtained favour in the sight of all them that looked upon her."

Esther 2:22: "And the thing was known to Mordecai, who told it unto Esther the queen; and Esther certified the king thereof in Mordecai's name."

Esther 4:11: "All the king's servants, and the people of the king's provinces, do know, that whosoever, whether man or women, shall come unto the king into the inner court, who is not called, there is one law of his to put him to death, except such to whom the king shall hold out the golden sceptre, that he may live: but I have not been called to come in unto the king these thirty days."

Esther 4:14: "For if thou altogether holdest thy peace at this time, then shall there enlargement and deliverance arise to the Jews from another place; but thou and thy father's house shall be destroyed: and who knoweth whether thou art come to the kingdom for such a time as this?"

Esther 6:2: "And it was found written, that Mordecai had told of Bigthana and Teresh, two of the king's chamberlains, the keepers of the door, who sought to lay hand on the king Ahasuerus."

Esther 6:4: "And the king said, Who is in the court? Now Haman was come into the outward court of the king's house, to speak unto the king to hang Mordecai on the gallows that he had prepared for him."

Esther 7:5: "Then the king Ahasuerus answered and said unto Esther the queen, Who is he, and where is he, that durst presume in his heart to do so?"

Esther 7:9: "And Harbonah, one of the chamberlains, said before the king, Behold also, the gallows fifty cubits high, which Haman had made for Mordecai, who spoken good for the king, standeth in the house of Haman. Then the king said, Hang him thereon."

Job 3:8: "Let them curse it that curse the day, who are ready to raise up their mourning."

Job 3:15: "Or with princes that had gold, who filled their houses with silver:"

Job 4:2: "If we assay to commune with thee, wilt thou be grieved? but who can withhold himself from speaking?"

Job 4:7: "Remember, I pray thee, who ever perished, being innocent? or where were the righteous cut off?"

Job 5:10: "Who giveth rain upon the earth, and sendeth waters upon the fields:"

Job 9:4: "He is wise in heart, and mighty in strength: who hath hardened himself against him, and hath prospered?"

Job 9:12: "Behold, he taketh away, who can hinder him? who will say unto him, What doest thou?"

Job 9:19: "If I speak of strength, lo, he is strong: and if of judgment, who shall set me a time to plead?"

Job 9:24: "The earth is given into the hand of the wicked: he covereth the faces of the judges thereof; if not, where, and who is he?"

Job 11:10: "If he cut off, and shut up, or gather together, then who can hinder him?"

Job 12:3: "But I have understanding as well as you; I am not inferior to you: yea, who knoweth not such things as these?"

Job 12:4: "I am as one mocked of his neighbour, who calleth upon God, and he answereth him: the just upright man is laughed to scorn."

Job 12:9: "Who knoweth not in all these that the hand of the LORD hath wrought this?"

Job 13:19: "Who is he that will plead with me? for now, if I hold my tongue, I shall give up the ghost."

Job 14:4: "Who can bring a clean thing out of an unclean? not one."

Job 16:9: "He teareth me in his wrath, who hateth me: he gnasheth upon me with his teeth; mine enemy sharpeneth his eyes upon me."

Job 17:3: "Lay down now, put me in a surety with thee; who is he that will strike hands with me?"  
 Job 17:15: "And where is now my hope? as for my hope, who shall see it?"  
 Job 21:31: "Who shall declare his way to his face? and who shall repay him what he hath done?"  
 Job 23:13: "But he is in one mind, and who can turn him? and what his soul desireth, even that he doeth."  
 Job 24:25: "And if it be not so now, who will make me a liar, and make my speech nothing worth?"  
 Job 26:14: "Lo, these are parts of his ways: but how little a portion is heard of him? but the thunder of his power who can understand?"  
 Job 27:2: "As God liveth, who hath taken away my judgment; and the Almighty, who hath vexed my soul;"  
 Job 30:4: "Who cut up mallows by the bushes, and juniper roots for their meat."  
 Job 34:7: "What man is like Job, who drinketh up scorning like water?"  
 Job 34:13: "Who hath given him a charge over the earth? or who hath disposed the whole world?"  
 Job 34:29: "When he giveth quietness, who then can make trouble? and when he hideth his face, who then can behold him? whether it be done against a nation, or against a man only:"  
 Job 35:10: "But none saith, Where is God my maker, who giveth songs in the night;"  
 Job 35:11: "Who teacheth us more than the beasts of the earth, and maketh us wiser than the fowls of heaven?"  
 Job 36:22: "Behold, God exalteth by his power: who teacheth like him?"  
 Job 36:23: "Who hath enjoined him his way? or who can say, Thou hast wrought iniquity?"  
 Job 38:2: "Who is this that darkeneth counsel by words without knowledge?"  
 Job 38:5: "Who hath laid the measures thereof, if thou knowest? or who hath stretched the line upon it?"  
 Job 38:6: "Whereupon are the foundations thereof fastened? or who laid the corner stone thereof;"  
 Job 38:8: "Or who shut up the sea with doors, when it brake forth, as if it had issued out of the womb?"  
 Job 38:25: "Who hath divided a watercourse for the overflowing of waters, or a way for the lightning of thunder;"  
 Job 38:28: "Hath the rain a father? or who hath begotten the drops of dew?"  
 Job 38:29: "Out of whose womb came the ice? and the hoary frost of heaven, who hath gendered it?"  
 Job 38:36: "Who hath put wisdom in the inward parts? or who hath given understanding to the heart?"  
 Job 38:37: "Who can number the clouds in wisdom? or who can stay the bottles of heaven,"  
 Job 38:41: "Who provideth for the raven his food? when his young ones cry unto God, they wander for lack of meat."  
 Job 39:5: "Who hath sent out the wild ass free? or who hath loosed the bands of the wild ass?"  
 Job 41:10: "None is so fierce that dare stir him up: who then is able to stand before me?"  
 Job 41:11: "Who hath prevented me, that I should repay him? whatsoever is under the whole heaven is mine."  
 Job 41:13: "Who can discover the face of his garment? or who can come to him with his double bridle?"  
 Job 41:14: "Who can open the doors of his face? his teeth are terrible round about."  
 Job 41:33: "Upon earth there is not his like, who is made without fear."  
 Job 42:3: "Who is he that hideth counsel without knowledge? therefore have I uttered that I understood not; things too wonderful for me, which I knew not."  
 Psalms 4:6: "There be many that say, Who will shew us any good? LORD, lift thou up the light of thy countenance upon us."  
 Psalms 6:5: "For in death there is no remembrance of thee: in the grave who shall give thee thanks?"

Psalms 8:1: "O LORD, our Lord, how excellent is thy name in all the earth! who hast set thy glory above the heavens."

Psalms 12:4: "Who have said, With our tongue will we prevail; our lips are our own: who is lord over us?"

Psalms 14:4: "Have all the workers of iniquity no knowledge? who eat up my people as they eat bread, and call not upon the LORD."

Psalms 15:1: "Lord, who shall abide in thy tabernacle? who shall dwell in thy holy hill?"

Psalms 16:7: "I will bless the LORD, who hath given me counsel: my reins also instruct me in the night seasons."

Psalms 17:9: "From the wicked that oppress me, from my deadly enemies, who compass me about."

Psalms 18:3: "I will call upon the LORD, who is worthy to be praised: so shall I be saved from mine enemies."

Psalms 18:31: "For who is God save the LORD? or who is a rock save our God?"

Psalms 19:12: "Who can understand his errors? cleanse thou me from secret faults."

Psalms 24:3: "Who shall ascend into the hill of the LORD? or who shall stand in his holy place?"

Psalms 24:4: "He that hath clean hands, and a pure heart; who hath not lifted up his soul unto vanity, nor sworn deceitfully."

Psalms 24:8: "Who is this King of glory? The LORD strong and mighty, the LORD mighty in battle."

Psalms 24:10: "Who is this King of glory? The LORD of hosts, he is the King of glory. Selah."

Psalms 35:10: "All my bones shall say, LORD, who is like unto thee, which deliverest the poor from him that is too strong for him, yea, the poor and the needy from him that spoileth him?"

Psalms 37:7: "Rest in the LORD, and wait patiently for him: fret not thyself because of him who prospereth in his way, because of the man who bringeth wicked devices to pass."

Psalms 39:6: "Surely every man walketh in a vain shew: surely they are disquieted in vain: he heapeth up riches, and knoweth not who shall gather them."

Psalms 42:11: "Why art thou cast down, O my soul? and why art thou disquieted within me? hope thou in God: for I shall yet praise him, who is the health of my countenance, and my God."

Psalms 43:5: "Why art thou cast down, O my soul? and why art thou disquieted within me? hope in God: for I shall yet praise him, who is the health of my countenance, and my God."

Psalms 53:4: "Have the workers of iniquity no knowledge? who eat up my people as they eat bread: they have not called upon God."

Psalms 59:7: "Behold, they belch out with their mouth: swords are in their lips: for who, say they, doth hear?"

Psalms 60:9: "Who will bring me into the strong city? who will lead me into Edom?"

Psalms 64:3: "Who whet their tongue like a sword, and bend their bows to shoot their arrows, even bitter words:"

Psalms 64:5: "They encourage themselves in an evil matter: they commune of laying snares privily; they say, Who shall see them?"

Psalms 65:5: "By terrible things in righteousness wilt thou answer us, O God of our salvation; who art the confidence of all the ends of the earth, and of them that are afar off upon the sea:"

Psalms 68:19: "Blessed be the Lord, who daily loadeth us with benefits, even the God of our salvation. Selah."

Psalms 71:19: "Thy righteousness also, O God, is very high, who hast done great things: O God, who is like unto thee!"

Psalms 72:18: "Blessed be the LORD God, the God of Israel, who only doeth wondrous things."

Psalms 73:12: "Behold, these are the ungodly, who prosper in the world; they increase in riches."

Psalms 76:7: "Thou, even thou, art to be feared: and who may stand in thy sight when once thou art angry?"

Psalms 77:13: "Thy way, O God, is in the sanctuary: who is so great a God as our God?"

Psalms 78:6: "That the generation to come might know them, even the children which should be born; who should arise and declare them to their children:"  
 Psalms 83:12: "Who said, Let us take to ourselves the houses of God in possession."  
 Psalms 84:6: "Who passing through the valley of Baca make it a well; the rain also filleth the pools."  
 Psalms 89:6: "For who in the heaven can be compared unto the LORD? who among the sons of the mighty can be likened unto the LORD?"  
 Psalms 89:8: "O LORD God of hosts, who is a strong LORD like unto thee? or to thy faithfulness round about thee?"  
 Psalms 90:11: "Who knoweth the power of thine anger? even according to thy fear, so is thy wrath."  
 Psalms 94:16: "Who will rise up for me against the evildoers? or who will stand up for me against the workers of iniquity?"  
 Psalms 103:3: "Who forgiveth all thine iniquities; who healeth all thy diseases;"  
 Psalms 103:4: "Who redeemeth thy life from destruction; who crowneth thee with lovingkindness and tender mercies;"  
 Psalms 103:5: "Who satisfieth thy mouth with good things; so that thy youth is renewed like the eagle's."  
 Psalms 104:2: "Who coverest thyself with light as with a garment: who stretchest out the heavens like a curtain:"  
 Psalms 104:3: "Who layeth the beams of his chambers in the waters: who maketh the clouds his chariot: who walketh upon the wings of the wind:"  
 Psalms 104:4: "Who maketh his angels spirits; his ministers a flaming fire:"  
 Psalms 104:5: "Who laid the foundations of the earth, that it should not be removed for ever."  
 Psalms 105:17: "He sent a man before them, even Joseph, who was sold for a servant:"  
 Psalms 106:2: "Who can utter the mighty acts of the LORD? who can shew forth all his praise?"  
 Psalms 108:10: "Who will bring me into the strong city? who will lead me into Edom?"  
 Psalms 108:11: "Wilt not thou, O God, who hast cast us off? and wilt not thou, O God, go forth with our hosts?"  
 Psalms 113:5: "Who is like unto the LORD our God, who dwelleth on high,"  
 Psalms 113:6: "Who humbleth himself to behold the things that are in heaven, and in the earth!"  
 Psalms 119:1: "Blessed are the undefiled in the way, who walk in the law of the LORD."  
 Psalms 119:38: "Stablish thy word unto thy servant, who is devoted to thy fear."  
 Psalms 124:1: "If it had not been the LORD who was on our side, now may Israel say;"  
 Psalms 124:2: "If it had not been the LORD who was on our side, when men rose up against us:"  
 Psalms 124:6: "Blessed be the LORD, who hath not given us as a prey to their teeth."  
 Psalms 124:8: "Our help is in the name of the LORD, who made heaven and earth."  
 Psalms 130:3: "If thou, LORD, shouldest mark iniquities, O Lord, who shall stand?"  
 Psalms 135:8: "Who smote the firstborn of Egypt, both of man and beast."  
 Psalms 135:9: "Who sent tokens and wonders into the midst of thee, O Egypt, upon Pharaoh, and upon all his servants."  
 Psalms 135:10: "Who smote great nations, and slew mighty kings;"  
 Psalms 136:4: "To him who alone doeth great wonders: for his mercy endureth for ever."  
 Psalms 136:23: "Who remembered us in our low estate: for his mercy endureth for ever:"  
 Psalms 136:25: "Who giveth food to all flesh: for his mercy endureth for ever."  
 Psalms 137:7: "Remember, O LORD, the children of Edom in the day of Jerusalem; who said, Rase it, rase it, even to the foundation thereof."  
 Psalms 137:8: "O daughter of Babylon, who art to be destroyed; happy shall he be, that rewardeth thee as thou hast served us."  
 Psalms 140:4: "Keep me, O LORD, from the hands of the wicked; preserve me from the violent man; who have purposed to overthrow my goings."



Psalms 144:2: "My goodness, and my fortress; my high tower, and my deliverer; my shield, and he in whom I trust; who subdueth my people under me."  
 Psalms 144:10: "It is he that giveth salvation unto kings: who delivereth David his servant from the hurtful sword."  
 Psalms 147:8: "Who covereth the heaven with clouds, who prepareth rain for the earth, who maketh grass to grow upon the mountains."  
 Psalms 147:17: "He casteth forth his ice like morsels: who can stand before his cold?"  
 Proverbs 2:13: "Who leave the paths of uprightness, to walk in the ways of darkness;"  
 Proverbs 2:14: "Who rejoyce to do evil, and delight in the frowardness of the wicked;"  
 Proverbs 9:15: "To call passengers who go right on their ways:"  
 Proverbs 18:14: "The spirit of a man will sustain his infirmity; but a wounded spirit who can bear?"  
 Proverbs 20:6: "Most men will proclaim every one his own goodness: but a faithful man who can find?"  
 Proverbs 20:9: "Who can say, I have made my heart clean, I am pure from my sin?"  
 Proverbs 20:25: "It is a snare to the man who devoureth that which is holy, and after vows to make enquiry."  
 Proverbs 21:24: "Proud and haughty scorner is his name, who dealeth in proud wrath."  
 Proverbs 23:29: "Who hath woe? who hath sorrow? who hath contentions? who hath babbling? who hath wounds without cause? who hath redness of eyes?"  
 Proverbs 24:22: "For their calamity shall rise suddenly; and who knoweth the ruin of them both?"  
 Proverbs 26:18: "As a mad man who casteth firebrands, arrows, and death,"  
 Proverbs 27:4: "Wrath is cruel, and anger is outrageous; but who is able to stand before envy?"  
 Proverbs 30:4: "Who hath ascended up into heaven, or descended? who hath gathered the wind in his fists? who hath bound the waters in a garment? who hath established all the ends of the earth? what is his name, and what is his son's name, if thou canst tell?"  
 Proverbs 30:9: "Lest I be full, and deny thee, and say, Who is the LORD? or lest I be poor, and steal, and take the name of my God in vain."  
 Proverbs 31:10: "Who can find a virtuous woman? for her price is far above rubies."  
 Ecclesiastes 2:19: "And who knoweth whether he shall be a wise man or a fool? yet shall he have rule over all my labour wherein I have laboured, and wherein I have shewed myself wise under the sun. This is also vanity."  
 Ecclesiastes 2:25: "For who can eat, or who else can hasten hereunto, more than I?"  
 Ecclesiastes 3:21: "Who knoweth the spirit of man that goeth upward, and the spirit of the beast that goeth downward to the earth?"  
 Ecclesiastes 3:22: "Wherefore I perceive that there is nothing better, than that a man should rejoyce in his own works; for that is his portion: for who shall bring him to see what shall be after him?"  
 Ecclesiastes 4:3: "Yea, better is he than both they, which hath not yet been, who hath not seen the evil work that is done under the sun."  
 Ecclesiastes 4:13: "Better is a poor and a wise child than an old and foolish king, who will no more be admonished."  
 Ecclesiastes 6:12: "For who knoweth what is good for man in this life, all the days of his vain life which he spendeth as a shadow? for who can tell a man what shall be after him under the sun?"  
 Ecclesiastes 7:13: "Consider the work of God: for who can make that straight, which he hath made crooked?"  
 Ecclesiastes 7:24: "That which is far off, and exceeding deep, who can find it out?"  
 Ecclesiastes 8:1: "Who is as the wise man? and who knoweth the interpretation of a thing? a man's wisdom maketh his face to shine, and the boldness of his face shall be changed."  
 Ecclesiastes 8:4: "Where the word of a king is, there is power: and who may say unto him, What doest thou?"  
 Ecclesiastes 8:7: "For he knoweth not that which shall be: for who can tell him when it shall be?"

Ecclesiastes 8:10: "And so I saw the wicked buried, who had come and gone from the place of the holy, and they were forgotten in the city where they had so done: this is also vanity."

Ecclesiastes 10:14: "A fool also is full of words: a man cannot tell what shall be; and what shall be after him, who can tell him?"

Ecclesiastes 11:5: "As thou knowest not what is the way of the spirit, nor how the bones do grow in the womb of her that is with child: even so thou knowest not the works of God who maketh all."

Ecclesiastes 12:7: "Then shall the dust return to the earth as it was: and the spirit shall return unto God who gave it."

Song of Solomon 3:6: "Who is this that cometh out of the wilderness like pillars of smoke, perfumed with myrrh and frankincense, with all powders of the merchant?"

Song of Solomon 6:10: "Who is she that looketh forth as the morning, fair as the moon, clear as the sun, and terrible as an army with banners?"

Song of Solomon 8:2: "I would lead thee, and bring thee into my mother's house, who would instruct me: I would cause thee to drink of spiced wine of the juice of my pomegranate."

Song of Solomon 8:5: "Who is this that cometh up from the wilderness, leaning upon her beloved? I raised thee up under the apple tree: there thy mother brought thee forth: there she brought thee forth that bare thee."

Isaiah 1:12: "When ye come to appear before me, who hath required this at your hand, to tread my courts?"

Isaiah 6:8: "Also I heard the voice of the Lord, saying, Whom shall I send, and who will go for us? Then said I, Here am I; send me."

Isaiah 14:6: "He who smote the people in wrath with a continual stroke, he that ruled the nations in anger, is persecuted, and none hindereth."

Isaiah 14:27: "For the LORD of hosts hath purposed, and who shall disannul it? and his hand is stretched out, and who shall turn it back?"

Isaiah 23:8: "Who hath taken this counsel against Tyre, the crowning city, whose merchants are princes, whose traffickers are the honourable of the earth?"

Isaiah 24:18: "And it shall come to pass, that he who fleeth from the noise of the fear shall fall into the pit; and he that cometh up out of the midst of the pit shall be taken in the snare: for the windows from on high are open, and the foundations of the earth do shake."

Isaiah 27:4: "Fury is not in me: who would set the briers and thorns against me in battle? I would go through them, I would burn them together."

Isaiah 29:15: "Woe unto them that seek deep to hide their counsel from the LORD, and their works are in the dark, and they say, Who seeth us? and who knoweth us?"

Isaiah 29:22: "Therefore thus saith the LORD, who redeemed Abraham, concerning the house of Jacob, Jacob shall not now be ashamed, neither shall his face now wax pale."

Isaiah 33:14: "The sinners in Zion are afraid; fearfulness hath surprised the hypocrites. Who among us shall dwell with the devouring fire? who among us shall dwell with everlasting burnings?"

Isaiah 36:20: "Who are they among all the gods of these lands, that have delivered their land out of my hand, that the LORD should deliver Jerusalem out of my hand?"

Isaiah 37:2: "And he sent Eliakim, who was over the household, and Shebna the scribe, and the elders of the priests covered with sackcloth, unto Isaiah the prophet the son of Amoz."

Isaiah 40:12: "Who hath measured the waters in the hollow of his hand, and meted out heaven with the span, and comprehended the dust of the earth in a measure, and weighed the mountains in scales, and the hills in a balance?"

Isaiah 40:13: "Who hath directed the Spirit of the LORD, or being his counsellor hath taught him?"

Isaiah 40:14: "With whom took he counsel, and who instructed him, and taught him in the path of judgment, and taught him knowledge, and shewed to him the way of understanding?"

Isaiah 40:26: "Lift up your eyes on high, and behold who hath created these things, that bringeth out their host by number: he calleth them all by names by the greatness of his might, for that he is

strong in power; not one faileth."

Isaiah 41:2: "Who raised up the righteous man from the east, called him to his foot, gave the nations before him, and made him rule over kings? he gave them as the dust to his sword, and as driven stubble to his bow."

Isaiah 41:4: "Who hath wrought and done it, calling the generations from the beginning? I the LORD, the first, and with the last; I am he."

Isaiah 41:26: "Who hath declared from the beginning, that we may know? and beforetime, that we may say, He is righteous? yea, there is none that sheweth, yea, there is none that declareth, yea, there is none that heareth your words."

Isaiah 42:19: "Who is blind, but my servant? or deaf, as my messenger that I sent? who is blind as he that is perfect, and blind as the LORD's servant?"

Isaiah 42:23: "Who among you will give ear to this? who will hearken and hear for the time to come?"

Isaiah 42:24: "Who gave Jacob for a spoil, and Israel to the robbers? did not the LORD, he against whom we have sinned? for they would not walk in his ways, neither were they obedient unto his law."

Isaiah 43:9: "Let all the nations be gathered together, and let the people be assembled: who among them can declare this, and shew us former things? let them bring forth their witnesses, that they may be justified: or let them hear, and say, It is truth."

Isaiah 43:13: "Yea, before the day was I am he; and there is none that can deliver out of my hand: I will work, and who shall let it?"

Isaiah 44:7: "And who, as I, shall call, and shall declare it, and set it in order for me, since I appointed the ancient people? and the things that are coming, and shall come, let them shew unto them."

Isaiah 44:10: "Who hath formed a god, or molten a graven image that is profitable for nothing?"

Isaiah 45:21: "Tell ye, and bring them near; yea, let them take counsel together: who hath declared this from ancient time? who hath told it from that time? have not I the LORD? and there is no God else beside me; a just God and a Saviour; there is none beside me."

Isaiah 49:21: "Then shalt thou say in thine heart, Who hath begotten me these, seeing I have lost my children, and am desolate, a captive, and removing to and fro? and who hath brought up these? Behold, I was left alone; these, where had they been?"

Isaiah 50:8: "He is near that justifieth me; who will contend with me? let us stand together: who is mine adversary? let him come near to me."

Isaiah 50:9: "Behold, the Lord GOD will help me; who is he that shall condemn me? lo, they all shall wax old as a garment; the moth shall eat them up."

Isaiah 50:10: "Who is among you that feareth the LORD, that obeyeth the voice of his servant, that walketh in darkness, and hath no light? let him trust in the name of the LORD, and stay upon his God."

Isaiah 51:12: "I, even I, am he that comforteth you: who art thou, that thou shouldest be afraid of a man that shall die, and of the son of man which shall be made as grass;"

Isaiah 51:19: "These two things are come unto thee; who shall be sorry for thee? desolation, and destruction, and the famine, and the sword: by whom shall I comfort thee?"

Isaiah 53:1: "Who hath believed our report? and to whom is the arm of the LORD revealed?"

Isaiah 53:8: "He was taken from prison and from judgment: and who shall declare his generation? for he was cut off out of the land of the living: for the transgression of my people was he stricken."

Isaiah 60:8: "Who are these that fly as a cloud, and as the doves to their windows?"

Isaiah 63:1: "Who is this that cometh from Edom, with dyed garments from Bozrah? this that is glorious in his apparel, travelling in the greatness of his strength? I that speak in righteousness, mighty to save."

Isaiah 65:16: "That he who blesseth himself in the earth shall bless himself in the God of truth; and

he that sweareth in the earth shall swear by the God of truth; because the former troubles are forgotten, and because they are hid from mine eyes."

Isaiah 66:8: "Who hath heard such a thing? who hath seen such things? Shall the earth be made to bring forth in one day? or shall a nation be born at once? for as soon as Zion travailed, she brought forth her children."

Jeremiah 1:16: "And I will utter my judgments against them touching all their wickedness, who have forsaken me, and have burned incense unto other gods, and worshipped the works of their own hands."

Jeremiah 2:24: "A wild ass used to the wilderness, that snuffeth up the wind at her pleasure; in her occasion who can turn her away? all they that seek her will not weary themselves; in her month they shall find her."

Jeremiah 9:12: "Who is the wise man, that may understand this? and who is he to whom the mouth of the LORD hath spoken, that he may declare it, for what the land perisheth and is burned up like a wilderness, that none passeth through?"

Jeremiah 10:7: "Who would not fear thee, O King of nations? for to thee doth it appertain: forasmuch as among all the wise men of the nations, and in all their kingdoms, there is none like unto thee."

Jeremiah 15:5: "For who shall have pity upon thee, O Jerusalem? or who shall bemoan thee? or who shall go aside to ask how thou doest?"

Jeremiah 17:9: "The heart is deceitful above all things, and desperately wicked: who can know it?"

Jeremiah 18:13: "Therefore thus saith the LORD; Ask ye now among the heathen, who hath heard such things: the virgin of Israel hath done a very horrible thing."

Jeremiah 20:1: "Now Pashur the son of Immer the priest, who was also chief governor in the house of the LORD, heard that Jeremiah prophesied these things."

Jeremiah 20:15: "Cursed be the man who brought tidings to my father, saying, A man child is born unto thee; making him very glad."

Jeremiah 21:13: "Behold, I am against thee, O inhabitant of the valley, and rock of the plain, saith the LORD; which say, Who shall come down against us? or who shall enter into our habitations?"

Jeremiah 23:18: "For who hath stood in the counsel of the LORD, and hath perceived and heard his word? who hath marked his word, and heard it?"

Jeremiah 26:20: "And there was also a man that prophesied in the name of the LORD, Urijah the son of Shemaiah of Kirjathjearim, who prophesied against this city and against this land according to all the words of Jeremiah."

Jeremiah 26:23: "And they fetched forth Urijah out of Egypt, and brought him unto Jehoiakim the king; who slew him with the sword, and cast his dead body into the graves of the common people."

Jeremiah 30:21: "And their nobles shall be of themselves, and their governor shall proceed from the midst of them; and I will cause him to draw near, and he shall approach unto me: for who is this that engaged his heart to approach unto me? saith the LORD."

Jeremiah 36:32: "Then took Jeremiah another roll, and gave it to Baruch the scribe, the son of Neriah; who wrote therein from the mouth of Jeremiah all the words of the book which Jehoiakim king of Judah had burned in the fire: and there were added besides unto them many like words."

Jeremiah 46:7: "Who is this that cometh up as a flood, whose waters are moved as the rivers?"

Jeremiah 49:4: "Wherefore gloriest thou in the valleys, thy flowing valley, O backsliding daughter? that trusted in her treasures, saying, Who shall come unto me?"

Jeremiah 49:19: "Behold, he shall come up like a lion from the swelling of Jordan against the habitation of the strong: but I will suddenly make him run away from her: and who is a chosen man, that I may appoint over her? for who is like me? and who will appoint me the time? and who is that shepherd that will stand before me?"

Jeremiah 50:44: "Behold, he shall come up like a lion from the swelling of Jordan unto the habitation of the strong: but I will make them suddenly run away from her: and who is a chosen

man, that I may appoint over her? for who is like me? and who will appoint me the time? and who is that shepherd that will stand before me?"

Jeremiah 52:25: "He took also out of the city an eunuch, which had the charge of the men of war; and seven men of them that were near the king's person, which were found in the city; and the principal scribe of the host, who mustered the people of the land; and threescore men of the people of the land, that were found in the midst of the city."

Lamentations 2:13: "What thing shall I take to witness for thee? what thing shall I liken to thee, O daughter of Jerusalem? what shall I equal to thee, that I may comfort thee, O virgin daughter of Zion? for thy breach is great like the sea: who can heal thee?"

Lamentations 3:37: "Who is he that saith, and it cometh to pass, when the Lord commandeth it not?"

Ezekiel 10:7: "And one cherub stretched forth his hand from between the cherubims unto the fire that was between the cherubims, and took thereof, and put it into the hands of him that was clothed with linen: who took it, and went out."

Daniel 1:10: "And the prince of the eunuchs said unto Daniel, I fear my lord the king, who hath appointed your meat and your drink: for why should he see your faces worse liking than the children which are of your sort? then shall ye make me endanger my head to the king."

Daniel 2:23: "I thank thee, and praise thee, O thou God of my fathers, who hast given me wisdom and might, and hast made known unto me now what we desired of thee: for thou hast now made known unto us the king's matter."

Daniel 3:15: "Now if ye be ready that at what time ye hear the sound of the cornet, flute, harp, sackbut, psaltery, and dulcimer, and all kinds of musick, ye fall down and worship the image which I have made; well: but if ye worship not, ye shall be cast the same hour into the midst of a burning fiery furnace; and who is that God that shall deliver you out of my hands?"

Daniel 3:28: "Then Nebuchadnezzar spake, and said, Blessed be the God of Shadrach, Meshach, and Abednego, who hath sent his angel, and delivered his servants that trusted in him, and have changed the king's word, and yielded their bodies, that they might not serve nor worship any god, except their own God."

Daniel 6:27: "He delivereth and rescueth, and he worketh signs and wonders in heaven and in earth, who hath delivered Daniel from the power of the lions."

Hosea 3:1: "Then said the LORD unto me, Go yet, love a woman beloved of her friend, yet an adulteress, according to the love of the LORD toward the children of Israel, who look to other gods, and love flagons of wine."

Hosea 7:4: "They are all adulterers, as an oven heated by the baker, who ceaseth from raising after he hath kneaded the dough, until it be leavened."

Hosea 14:9: "Who is wise, and he shall understand these things? prudent, and he shall know them? for the ways of the LORD are right, and the just shall walk in them: but the transgressors shall fall therein."

Joel 2:11: "And the LORD shall utter his voice before his army: for his camp is very great: for he is strong that executeth his word: for the day of the LORD is great and very terrible; and who can abide it?"

Joel 2:14: "Who knoweth if he will return and repent, and leave a blessing behind him; even a meat offering and a drink offering unto the LORD your God?"

Amos 1:1: "The words of Amos, who was among the herdmen of Tekoa, which he saw concerning Israel in the days of Uzziah king of Judah, and in the days of Jeroboam the son of Joash king of Israel, two years before the earthquake."

Amos 3:8: "The lion hath roared, who will not fear? the Lord GOD hath spoken, who can but prophesy?"

Amos 3:10: "For they know not to do right, saith the LORD, who store up violence and robbery in their palaces."

Amos 5:7: "Ye who turn judgment to wormwood, and leave off righteousness in the earth,"

Obadiah 1:3: "The pride of thine heart hath deceived thee, thou that dwellest in the clefts of the rock, whose habitation is high; that saith in his heart, Who shall bring me down to the ground?"

Jonah 3:9: "Who can tell if God will turn and repent, and turn away from his fierce anger, that we perish not?"

Micah 3:2: "Who hate the good, and love the evil; who pluck off their skin from off them, and their flesh from off their bones;"

Micah 3:3: "Who also eat the flesh of my people, and flay their skin from off them; and they break their bones, and chop them in pieces, as for the pot, and as flesh within the caldron."

Micah 5:8: "And the remnant of Jacob shall be among the Gentiles in the midst of many people as a lion among the beasts of the forest, as a young lion among the flocks of sheep: who, if he go through, both treadeth down, and teareth in pieces, and none can deliver."

Micah 6:9: "The LORD's voice crieth unto the city, and the man of wisdom shall see thy name: hear ye the rod, and who hath appointed it."

Micah 7:18: "Who is a God like unto thee, that pardoneth iniquity, and passeth by the transgression of the remnant of his heritage? he retaineth not his anger for ever, because he delighteth in mercy."

Nahum 1:6: "Who can stand before his indignation? and who can abide in the fierceness of his anger? his fury is poured out like fire, and the rocks are thrown down by him."

Nahum 3:7: "And it shall come to pass, that all they that look upon thee shall flee from thee, and say, Nineveh is laid waste: who will bemoan her? whence shall I seek comforters for thee?"

Habakkuk 2:5: "Yea also, because he transgresseth by wine, he is a proud man, neither keepeth at home, who enlargeth his desire as hell, and is as death, and cannot be satisfied, but gathereth unto him all nations, and heapeth unto him all people:"

Zephaniah 3:18: "I will gather them that are sorrowful for the solemn assembly, who are of thee, to whom the reproach of it was a burden."

Haggai 2:3: "Who is left among you that saw this house in her first glory? and how do ye see it now? is it not in your eyes in comparison of it as nothing?"

Zechariah 4:7: "Who art thou, O great mountain? before Zerubbabel thou shalt become a plain: and he shall bring forth the headstone thereof with shoutings, crying, Grace, grace unto it."

Zechariah 4:10: "For who hath despised the day of small things? for they shall rejoice, and shall see the plummet in the hand of Zerubbabel with those seven; they are the eyes of the LORD, which run to and fro through the whole earth."

Malachi 1:10: "Who is there even among you that would shut the doors for nought? neither do ye kindle fire on mine altar for nought. I have no pleasure in you, saith the LORD of hosts, neither will I accept an offering at your hand."

Malachi 3:2: "But who may abide the day of his coming? and who shall stand when he appeareth? for he is like a refiner's fire, and like fullers' soap:"

Matthew 1:16: "And Jacob begat Joseph the husband of Mary, of whom was born Jesus, who is called Christ."

Matthew 3:7: "But when he saw many of the Pharisees and Sadducees come to his baptism, he said unto them, O generation of vipers, who hath warned you to flee from the wrath to come?"

Matthew 10:2: "Now the names of the twelve apostles are these; The first, Simon, who is called Peter, and Andrew his brother; James the son of Zebedee, and John his brother;"

Matthew 10:4: "Simon the Canaanite, and Judas Iscariot, who also betrayed him."

Matthew 10:11: "And into whatsoever city or town ye shall enter, enquire who in it is worthy; and there abide till ye go thence."

Matthew 12:48: "But he answered and said unto him that told him, Who is my mother? and who are my brethren?"

Matthew 13:9: "Who hath ears to hear, let him hear."

Matthew 13:43: "Then shall the righteous shine forth as the sun in the kingdom of their Father. Who

hath ears to hear, let him hear."

Matthew 13:46: "Who, when he had found one pearl of great price, went and sold all that he had, and bought it."

Matthew 18:1: "At the same time came the disciples unto Jesus, saying, Who is the greatest in the kingdom of heaven?"

Matthew 19:25: "When his disciples heard it, they were exceedingly amazed, saying, Who then can be saved?"

Matthew 21:10: "And when he was come into Jerusalem, all the city was moved, saying, Who is this?"

Matthew 21:23: "And when he was come into the temple, the chief priests and the elders of the people came unto him as he was teaching, and said, By what authority doest thou these things? and who gave thee this authority?"

Matthew 24:45: "Who then is a faithful and wise servant, whom his lord hath made ruler over his household, to give them meat in due season?"

Matthew 25:14: "For the kingdom of heaven is as a man travelling into a far country, who called his own servants, and delivered unto them his goods."

Matthew 26:3: "Then assembled together the chief priests, and the scribes, and the elders of the people, unto the palace of the high priest, who was called Caiaphas,"

Matthew 26:68: "Saying, Prophecy unto us, thou Christ, Who is he that smote thee?"

Matthew 27:57: "When the even was come, there came a rich man of Arimathaea, named Joseph, who also himself was Jesus' disciple:"

Mark 1:19: "And when he had gone a little farther thence, he saw James the son of Zebedee, and John his brother, who also were in the ship mending their nets."

Mark 1:24: "Saying, Let us alone; what have we to do with thee, thou Jesus of Nazareth? art thou come to destroy us? I know thee who thou art, the Holy One of God."

Mark 2:7: "Why doth this man thus speak blasphemies? who can forgive sins but God only?"

Mark 3:33: "And he answered them, saying, Who is my mother, or my brethren?"

Mark 4:16: "And these are they likewise which are sown on stony ground; who, when they have heard the word, immediately receive it with gladness;"

Mark 5:3: "Who had his dwelling among the tombs; and no man could bind him, no, not with chains:"

Mark 5:30: "And Jesus, immediately knowing in himself that virtue had gone out of him, turned him about in the press, and said, Who touched my clothes?"

Mark 5:31: "And his disciples said unto him, Thou seest the multitude thronging thee, and sayest thou, Who touched me?"

Mark 9:34: "But they held their peace: for by the way they had disputed among themselves, who should be the greatest."

Mark 10:26: "And they were astonished out of measure, saying among themselves, Who then can be saved?"

Mark 11:28: "And say unto him, By what authority doest thou these things? and who gave thee this authority to do these things?"

Mark 13:34: "For the Son of Man is as a man taking a far journey, who left his house, and gave authority to his servants, and to every man his work, and commanded the porter to watch."

Mark 15:7: "And there was one named Barabbas, which lay bound with them that had made insurrection with him, who had committed murder in the insurrection."

Mark 15:21: "And they compel one Simon a Cyrenian, who passed by, coming out of the country, the father of Alexander and Rufus, to bear his cross."

Mark 15:41: "(Who also, when he was in Galilee, followed him, and ministered unto him;) and many other women which came up with him unto Jerusalem."

Mark 16:3: "And they said among themselves, Who shall roll us away the stone from the door of

the sepulchre?"

Luke 1:36: "And, behold, thy cousin Elisabeth, she hath also conceived a son in her old age: and this is the sixth month with her, who was called barren."

Luke 3:7: "Then said he to the multitude that came forth to be baptized of him, O generation of vipers, who hath warned you to flee from the wrath to come?"

Luke 4:34: "Saying, Let us alone; what have we to do with thee, thou Jesus of Nazareth? art thou come to destroy us? I know thee who thou art; the Holy One of God."

Luke 5:12: "And it came to pass, when he was in a certain city, behold a man full of leprosy: who seeing Jesus fell on his face, and besought him, saying, Lord, if thou wilt, thou canst make me clean."

Luke 5:21: "And the scribes and the Pharisees began to reason, saying, Who is this which speaketh blasphemies? Who can forgive sins, but God alone?"

Luke 7:2: "And a certain centurion's servant, who was dear unto him, was sick, and ready to die."

Luke 7:39: "Now when the Pharisee which had bidden him saw it, he spake within himself, saying, This man, if he were a prophet, would have known who and what manner of woman this is that toucheth him: for she is a sinner."

Luke 7:49: "And they that sat at meat with him began to say within themselves, Who is this that forgiveth sins also?"

Luke 8:45: "And Jesus said, Who touched me? When all denied, Peter and they that were with him said, Master, the multitude throng thee and press thee, and sayest thou, Who touched me?"

Luke 9:9: "And Herod said, John have I beheaded: but who is this, of whom I hear such things? And he desired to see him."

Luke 9:31: "Who appeared in glory, and spake of his decease which he should accomplish at Jerusalem."

Luke 10:22: "All things are delivered to me of my Father: and no man knoweth who the Son is, but the Father; and who the Father is, but the Son, and he to whom the Son will reveal him."

Luke 10:29: "But he, willing to justify himself, said unto Jesus, And who is my neighbour?"

Luke 12:14: "And he said unto him, Man, who made me a judge or a divider over you?"

Luke 12:42: "And the Lord said, Who then is that faithful and wise steward, whom his lord shall make ruler over his household, to give them their portion of meat in due season?"

Luke 16:11: "If therefore ye have not been faithful in the unrighteous mammon, who will commit to your trust the true riches?"

Luke 16:12: "And if ye have not been faithful in that which is another man's, who shall give you that which is your own?"

Luke 16:14: "And the Pharisees also, who were covetous, heard all these things: and they derided him."

Luke 18:26: "And they that heard it said, Who then can be saved?"

Luke 18:30: "Who shall not receive manifold more in this present time, and in the world to come life everlasting."

Luke 19:3: "And he sought to see Jesus who he was; and could not for the press, because he was little of stature."

Luke 20:2: "And spake unto him, saying, Tell us, by what authority doest thou these things? or who is he that gave thee this authority?"

Luke 22:64: "And when they had blindfolded him, they struck him on the face, and asked him, saying, Prophecy, who is it that smote thee?"

Luke 23:7: "And as soon as he knew that he belonged unto Herod's jurisdiction, he sent him to Herod, who himself also was at Jerusalem at that time."

Luke 23:19: "(Who for a certain sedition made in the city, and for murder, was cast into prison.)"

Luke 23:51: "(The same had not consented to the counsel and deed of them;) he was of Arimathaea, a city of the Jews: who also himself waited for the kingdom of God."



John 1:19: "And this is the record of John, when the Jews sent priests and Levites from Jerusalem to ask him, Who art thou?"

John 1:22: "Then said they unto him, Who art thou? that we may give an answer to them that sent us. What sayest thou of thyself?"

John 1:27: "He it is, who coming after me is preferred before me, whose shoe's latchet I am not worthy to unloose."

John 4:10: "Jesus answered and said unto her, If thou knewest the gift of God, and who it is that saith to thee, Give me to drink; thou wouldest have asked of him, and he would have given thee living water."

John 5:13: "And he that was healed wist not who it was: for Jesus had conveyed himself away, a multitude being in that place."

John 6:60: "Many therefore of his disciples, when they had heard this, said, This is an hard saying; who can hear it?"

John 6:64: "But there are some of you that believe not. For Jesus knew from the beginning who they were that believed not, and who should betray him."

John 7:20: "The people answered and said, Thou hast a devil: who goeth about to kill thee?"

John 7:49: "But this people who knoweth not the law are cursed."

John 8:25: "Then said they unto him, Who art thou? And Jesus saith unto them, Even the same that I said unto you from the beginning."

John 9:2: "And his disciples asked him, saying, Master, who did sin, this man, or his parents, that he was born blind?"

John 9:19: "And they asked them, saying, Is this your son, who ye say was born blind? how then doth he now see?"

John 9:21: "But by what means he now seeth, we know not; or who hath opened his eyes, we know not: he is of age; ask him: he shall speak for himself."

John 9:36: "He answered and said, Who is he, Lord, that I might believe on him?"

John 12:34: "The people answered him, We have heard out of the law that Christ abideth for ever: and how sayest thou, The Son of man must be lifted up? who is this Son of man?"

John 12:38: "That the saying of Esaias the prophet might be fulfilled, which he spake, Lord, who hath believed our report? and to whom hath the arm of the Lord been revealed?"

John 13:11: "For he knew who should betray him; therefore said he, Ye are not all clean."

John 13:24: "Simon Peter therefore beckoned to him, that he should ask who it should be of whom he spake."

John 13:25: "He then lying on Jesus' breast saith unto him, Lord, who is it?"

John 18:18: "And the servants and officers stood there, who had made a fire of coals; for it was cold: and they warmed themselves: and Peter stood with them, and warmed himself."

John 21:12: "Jesus saith unto them, Come and dine. And none of the disciples durst ask him, Who art thou? knowing that it was the Lord."

Acts 1:23: "And they appointed two, Joseph called Barsabas, who was surnamed Justus, and Matthias."

Acts 3:3: "Who seeing Peter and John about to go into the temple asked an alms."

Acts 4:25: "Who by the mouth of thy servant David hast said, Why did the heathen rage, and the people imagine vain things?"

Acts 4:36: "And Joses, who by the apostles was surnamed Barnabas, (which is, being interpreted, The son of consolation,) a Levite, and of the country of Cyprus,"

Acts 5:36: "For before these days rose up Theudas, boasting himself to be somebody; to whom a number of men, about four hundred, joined themselves: who was slain; and all, as many as obeyed him, were scattered, and brought to nought."

Acts 7:27: "But he that did his neighbour wrong thrust him away, saying, Who made thee a ruler and a judge over us?"

Acts 7:35: "This Moses whom they refused, saying, Who made thee a ruler and a judge? the same did God send to be a ruler and a deliverer by the hand of the angel which appeared to him in the bush."

Acts 7:38: "This is he, that was in the church in the wilderness with the angel which spake to him in the mount Sina, and with our fathers: who received the lively oracles to give unto us:"

Acts 7:46: "Who found favour before God, and desired to find a tabernacle for the God of Jacob."

Acts 7:53: "Who have received the law by the disposition of angels, and have not kept it."

Acts 8:15: "Who, when they were come down, prayed for them, that they might receive the Holy Ghost:"

Acts 8:27: "And he arose and went: and, behold, a man of Ethiopia, an eunuch of great authority under Candace queen of the Ethiopians, who had the charge of all her treasure, and had come to Jerusalem for to worship,"

Acts 8:33: "In his humiliation his judgment was taken away: and who shall declare his generation? for his life is taken from the earth."

Acts 9:5: "And he said, Who art thou, Lord? And the Lord said, I am Jesus whom thou persecutest: it is hard for thee to kick against the pricks."

Acts 10:32: "Send therefore to Joppa, and call hither Simon, whose surname is Peter; he is lodged in the house of one Simon a tanner by the sea side: who, when he cometh, shall speak unto thee."

Acts 10:38: "How God anointed Jesus of Nazareth with the Holy Ghost and with power: who went about doing good, and healing all that were oppressed of the devil; for God was with him."

Acts 10:41: "Not to all the people, but unto witnesses chosen before God, even to us, who did eat and drink with him after he rose from the dead."

Acts 11:14: "Who shall tell thee words, whereby thou and all thy house shall be saved."

Acts 11:17: "Forasmuch then as God gave them the like gift as he did unto us, who believed on the Lord Jesus Christ; what was I, that I could withstand God?"

Acts 11:23: "Who, when he came, and had seen the grace of God, was glad, and exhorted them all, that with purpose of heart they would cleave unto the Lord."

Acts 13:7: "Which was with the deputy of the country, Sergius Paulus, a prudent man; who called for Barnabas and Saul, and desired to hear the word of God."

Acts 13:9: "Then Saul, (who also is called Paul,) filled with the Holy Ghost, set his eyes on him."

Acts 13:31: "And he was seen many days of them which came up with him from Galilee to Jerusalem, who are his witnesses unto the people."

Acts 13:43: "Now when the congregation was broken up, many of the Jews and religious proselytes followed Paul and Barnabas: who, speaking to them, persuaded them to continue in the grace of God."

Acts 14:8: "And there sat a certain man at Lystra, impotent in his feet, being a cripple from his mother's womb, who never had walked:"

Acts 14:9: "The same heard Paul speak: who stedfastly beholding him, and perceiving that he had faith to be healed,"

Acts 14:16: "Who in times past suffered all nations to walk in their own ways."

Acts 14:19: "And there came thither certain Jews from Antioch and Iconium, who persuaded the people, and having stoned Paul, drew him out of the city, supposing he had been dead."

Acts 15:17: "That the residue of men might seek after the Lord, and all the Gentiles, upon whom my name is called, saith the Lord, who doeth all these things."

Acts 15:27: "We have sent therefore Judas and Silas, who shall also tell you the same things by mouth."

Acts 15:38: "But Paul thought not good to take him with them, who departed from them from Pamphylia, and went not with them to the work."

Acts 16:24: "Who, having received such a charge, thrust them into the inner prison, and made their feet fast in the stocks."

Acts 17:10: "And the brethren immediately sent away Paul and Silas by night unto Berea: who coming thither went into the synagogue of the Jews."

Acts 18:27: "And when he was disposed to pass into Achaia, the brethren wrote, exhorting the disciples to receive him: who, when he was come, helped them much which had believed through grace:"

Acts 19:15: "And the evil spirit answered and said, Jesus I know, and Paul I know; but who are ye?"

Acts 21:4: "And finding disciples, we tarried there seven days: who said to Paul through the Spirit, that he should not go up to Jerusalem."

Acts 21:32: "Who immediately took soldiers and centurions, and ran down unto them: and when they saw the chief captain and the soldiers, they left beating of Paul."

Acts 21:33: "Then the chief captain came near, and took him, and commanded him to be bound with two chains; and demanded who he was, and what he had done."

Acts 21:37: "And as Paul was to be led into the castle, he said unto the chief captain, May I speak unto thee? Who said, Canst thou speak Greek?"

Acts 22:8: "And I answered, Who art thou, Lord? And he said unto me, I am Jesus of Nazareth, whom thou persecutest."

Acts 23:18: "So he took him, and brought him to the chief captain, and said, Paul the prisoner called me unto him, and prayed me to bring this young man unto thee, who hath something to say unto thee."

Acts 23:33: "Who, when they came to Caesarea and delivered the epistle to the governor, presented Paul also before him."

Acts 24:1: "And after five days Ananias the high priest descended with the elders, and with a certain orator named Tertullus, who informed the governor against Paul."

Acts 24:6: "Who also hath gone about to profane the temple: whom we took, and would have judged according to our law."

Acts 24:19: "Who ought to have been here before thee, and object, if they had ought against me."

Acts 26:15: "And I said, Who art thou, Lord? And he said, I am Jesus whom thou persecutest."

Acts 28:7: "In the same quarters were possessions of the chief man of the island, whose name was Publius; who received us, and lodged us three days courteously."

Acts 28:10: "Who also honoured us with many honours; and when we departed, they laded us with such things as were necessary."

Acts 28:18: "Who, when they had examined me, would have let me go, because there was no cause of death in me."

Romans 1:18: "For the wrath of God is revealed from heaven against all ungodliness and unrighteousness of men, who hold the truth in unrighteousness;"

Romans 1:25: "Who changed the truth of God into a lie, and worshipped and served the creature more than the Creator, who is blessed for ever. Amen."

Romans 1:32: "Who knowing the judgment of God, that they which commit such things are worthy of death, not only do the same, but have pleasure in them that do them."

Romans 2:6: "Who will render to every man according to his deeds:"

Romans 2:7: "To them who by patient continuance in well doing seek for glory and honour and immortality, eternal life:"

Romans 2:27: "And shall not uncircumcision which is by nature, if it fulfil the law, judge thee, who by the letter and circumcision dost transgress the law?"

Romans 3:5: "But if our unrighteousness commend the righteousness of God, what shall we say? Is God unrighteous who taketh vengeance? (I speak as a man)"

Romans 3:19: "Now we know that what things soever the law saith, it saith to them who are under the law: that every mouth may be stopped, and all the world may become guilty before God."

Romans 4:12: "And the father of circumcision to them who are not of the circumcision only, but who also walk in the steps of that faith of our father Abraham, which he had being yet

uncircumcised."

Romans 4:16: "Therefore it is of faith, that it might be by grace; to the end the promise might be sure to all the seed; not to that only which is of the law, but to that also which is of the faith of Abraham; who is the father of us all,"

Romans 4:17: "(As it is written, I have made thee a father of many nations,) before him whom he believed, even God, who quickeneth the dead, and calleth those things which be not as though they were."

Romans 4:18: "Who against hope believed in hope, that he might become the father of many nations, according to that which was spoken, So shall thy seed be."

Romans 4:25: "Who was delivered for our offences, and was raised again for our justification."

Romans 5:14: "Nevertheless death reigned from Adam to Moses, even over them that had not sinned after the similitude of Adam's transgression, who is the figure of him that was to come."

Romans 7:4: "Wherefore, my brethren, ye also are become dead to the law by the body of Christ; that ye should be married to another, even to him who is raised from the dead, that we should bring forth fruit unto God."

Romans 7:24: "O wretched man that I am! who shall deliver me from the body of this death?"

Romans 8:1: "There is therefore now no condemnation to them which are in Christ Jesus, who walk not after the flesh, but after the Spirit."

Romans 8:4: "That the righteousness of the law might be fulfilled in us, who walk not after the flesh, but after the Spirit."

Romans 8:20: "For the creature was made subject to vanity, not willingly, but by reason of him who hath subjected the same in hope,"

Romans 8:28: "And we know that all things work together for good to them that love God, to them who are the called according to his purpose."

Romans 8:31: "What shall we then say to these things? If God be for us, who can be against us?"

Romans 8:33: "Who shall lay any thing to the charge of God's elect? It is God that justifieth."

Romans 8:34: "Who is he that condemneth? It is Christ that died, yea rather, that is risen again, who is even at the right hand of God, who also maketh intercession for us."

Romans 8:35: "Who shall separate us from the love of Christ? shall tribulation, or distress, or persecution, or famine, or nakedness, or peril, or sword?"

Romans 9:4: "Who are Israelites; to whom pertaineth the adoption, and the glory, and the covenants, and the giving of the law, and the service of God, and the promises;"

Romans 9:5: "Whose are the fathers, and of whom as concerning the flesh Christ came, who is over all, God blessed for ever. Amen."

Romans 9:19: "Thou wilt say then unto me, Why doth he yet find fault? For who hath resisted his will?"

Romans 9:20: "Nay but, O man, who art thou that repliest against God? Shall the thing formed say to him that formed it, Why hast thou made me thus?"

Romans 10:6: "But the righteousness which is of faith speaketh on this wise, Say not in thine heart, Who shall ascend into heaven? (that is, to bring Christ down from above:)"

Romans 10:7: "Or, Who shall descend into the deep? (that is, to bring up Christ again from the dead.)"

Romans 10:16: "But they have not all obeyed the gospel. For Esaias saith, Lord, who hath believed our report?"

Romans 11:4: "But what saith the answer of God unto him? I have reserved to myself seven thousand men, who have not bowed the knee to the image of Baal."

Romans 11:34: "For who hath known the mind of the Lord? or who hath been his counsellor?"

Romans 11:35: "Or who hath first given to him, and it shall be recompensed unto him again?"

Romans 14:2: "For one believeth that he may eat all things: another, who is weak, eateth herbs."

Romans 14:4: "Who art thou that judgest another man's servant? to his own master he standeth or

falleth. Yea, he shall be holden up: for God is able to make him stand."

Romans 14:20: "For meat destroy not the work of God. All things indeed are pure; but it is evil for that man who eateth with offence."

Romans 16:4: "Who have for my life laid down their own necks: unto whom not only I give thanks, but also all the churches of the Gentiles."

Romans 16:5: "Likewise greet the church that is in their house. Salute my well-beloved Epaphroditus, who is the firstfruits of Achaia unto Christ."

Romans 16:6: "Greet Mary, who bestowed much labour on us."

Romans 16:7: "Salute Andronicus and Junia, my kinsmen, and my fellow-prisoners, who are of note among the apostles, who also were in Christ before me."

Romans 16:12: "Salute Tryphena and Tryphosa, who labour in the Lord. Salute the beloved Persis, which laboured much in the Lord."

Romans 16:22: "I Tertius, who wrote this epistle, salute you in the Lord."

1 Corinthians 1:8: "Who shall also confirm you unto the end, that ye may be blameless in the day of our Lord Jesus Christ."

1 Corinthians 1:30: "But of him are ye in Christ Jesus, who of God is made unto us wisdom, and righteousness, and sanctification, and redemption:"

1 Corinthians 2:16: "For who hath known the mind of the Lord, that he may instruct him? But we have the mind of Christ."

1 Corinthians 3:5: "Who then is Paul, and who is Apollos, but ministers by whom ye believed, even as the Lord gave to every man?"

1 Corinthians 4:5: "Therefore judge nothing before the time, until the Lord come, who both will bring to light the hidden things of darkness, and will make manifest the counsels of the hearts: and then shall every man have praise of God."

1 Corinthians 4:7: "For who maketh thee to differ from another? and what hast thou that thou didst not receive? now if thou didst receive it, why dost thou glory, as if thou hadst not received it?"

1 Corinthians 4:17: "For this cause have I sent unto you Timotheus, who is my beloved son, and faithful in the Lord, who shall bring you into remembrance of my ways which be in Christ, as I teach every where in every church."

1 Corinthians 6:4: "If then ye have judgments of things pertaining to this life, set them to judge who are least esteemed in the church."

1 Corinthians 9:7: "Who goeth a warfare any time at his own charges? who planteth a vineyard, and eateth not of the fruit thereof? or who feedeth a flock, and eateth not of the milk of the flock?"

1 Corinthians 10:13: "There hath no temptation taken you but such as is common to man: but God is faithful, who will not suffer you to be tempted above that ye are able; but will with the temptation also make a way to escape, that ye may be able to bear it."

1 Corinthians 14:8: "For if the trumpet give an uncertain sound, who shall prepare himself to the battle?"

2 Corinthians 1:4: "Who comforteth us in all our tribulation, that we may be able to comfort them which are in any trouble, by the comfort wherewith we ourselves are comforted of God."

2 Corinthians 1:10: "Who delivered us from so great a death, and doth deliver: in whom we trust that he will yet deliver us;"

2 Corinthians 1:19: "For the Son of God, Jesus Christ, who was preached among you by us, even by me and Silvanus and Timotheus, was not yea and nay, but in him was yea."

2 Corinthians 1:22: "Who hath also sealed us, and given the earnest of the Spirit in our hearts."

2 Corinthians 2:2: "For if I make you sorry, who is he then that maketh me glad, but the same which is made sorry by me?"

2 Corinthians 2:16: "To the one we are the savour of death unto death; and to the other the savour of life unto life. And who is sufficient for these things?"

2 Corinthians 3:6: "Who also hath made us able ministers of the new testament; not of the letter, but

of the spirit: for the letter killeth, but the spirit giveth life."

2 Corinthians 4:4: "In whom the god of this world hath blinded the minds of them which believe not, lest the light of the glorious gospel of Christ, who is the image of God, should shine unto them."

2 Corinthians 4:6: "For God, who commanded the light to shine out of darkness, hath shined in our hearts, to give the light of the knowledge of the glory of God in the face of Jesus Christ."

2 Corinthians 5:5: "Now he that hath wrought us for the selfsame thing is God, who also hath given unto us the earnest of the Spirit."

2 Corinthians 5:18: "And all things are of God, who hath reconciled us to himself by Jesus Christ, and hath given to us the ministry of reconciliation;"

2 Corinthians 5:21: "For he hath made him to be sin for us, who knew no sin; that we might be made the righteousness of God in him."

2 Corinthians 8:10: "And herein I give my advice: for this is expedient for you, who have begun before, not only to do, but also to be forward a year ago."

2 Corinthians 8:19: "And not that only, but who was also chosen of the churches to travel with us with this grace, which is administered by us to the glory of the same Lord, and declaration of your ready mind:"

2 Corinthians 10:1: "Now I Paul myself beseech you by the meekness and gentleness of Christ, who in presence am base among you, but being absent am bold toward you:"

2 Corinthians 11:29: "Who is weak, and I am not weak? who is offended, and I burn not?"

Galatians 1:1: "Paul, an apostle, (not of men, neither by man, but by Jesus Christ, and God the Father, who raised him from the dead;)"

Galatians 1:4: "Who gave himself for our sins, that he might deliver us from this present evil world, according to the will of God and our Father:"

Galatians 1:15: "But when it pleased God, who separated me from my mother's womb, and called me by his grace,"

Galatians 2:3: "But neither Titus, who was with me, being a Greek, was compelled to be circumcised:"

Galatians 2:4: "And that because of false brethren unawares brought in, who came in privily to spy out our liberty which we have in Christ Jesus, that they might bring us into bondage:"

Galatians 2:6: "But of these who seemed to be somewhat, (whatsoever they were, it maketh no matter to me: God accepteth no man's person:) for they who seemed to be somewhat in conference added nothing to me:"

Galatians 2:9: "And when James, Cephas, and John, who seemed to be pillars, perceived the grace that was given unto me, they gave to me and Barnabas the right hands of fellowship; that we should go unto the heathen, and they unto the circumcision."

Galatians 2:15: "We who are Jews by nature, and not sinners of the Gentiles,"

Galatians 2:20: "I am crucified with Christ: nevertheless I live; yet not I, but Christ liveth in me: and the life which I now live in the flesh I live by the faith of the Son of God, who loved me, and gave himself for me."

Galatians 3:1: "O foolish Galatians, who hath bewitched you, that ye should not obey the truth, before whose eyes Jesus Christ hath been evidently set forth, crucified among you?"

Galatians 4:23: "But he who was of the bondwoman was born after the flesh; but he of the freewoman was by promise."

Galatians 5:7: "Ye did run well; who did hinder you that ye should not obey the truth?"

Galatians 6:10: "As we have therefore opportunity, let us do good unto all men, especially unto them who are of the household of faith."

Galatians 6:13: "For neither they themselves who are circumcised keep the law; but desire to have you circumcised, that they may glory in your flesh."

Ephesians 1:3: "Blessed be the God and Father of our Lord Jesus Christ, who hath blessed us with

all spiritual blessings in heavenly places in Christ:"

Ephesians 1:11: "In whom also we have obtained an inheritance, being predestinated according to the purpose of him who worketh all things after the counsel of his own will:"

Ephesians 1:12: "That we should be to the praise of his glory, who first trusted in Christ."

Ephesians 1:19: "And what is the exceeding greatness of his power to us-ward who believe, according to the working of his mighty power,"

Ephesians 2:1: "And you hath he quickened, who were dead in trespasses and sins;"

Ephesians 2:4: "But God, who is rich in mercy, for his great love wherewith he loved us,"

Ephesians 2:11: "Wherefore remember, that ye being in time past Gentiles in the flesh, who are called Uncircumcision by that which is called the Circumcision in the flesh made by hands;"

Ephesians 2:13: "But now in Christ Jesus ye who sometimes were far off are made nigh by the blood of Christ."

Ephesians 2:14: "For he is our peace, who hath made both one, and hath broken down the middle wall of partition between us;"

Ephesians 3:8: "Unto me, who am less than the least of all saints, is this grace given, that I should preach among the Gentiles the unsearchable riches of Christ;"

Ephesians 3:9: "And to make all men see what is the fellowship of the mystery, which from the beginning of the world hath been hid in God, who created all things by Jesus Christ:"

Ephesians 4:6: "One God and Father of all, who is above all, and through all, and in you all."

Ephesians 4:19: "Who being past feeling have given themselves over unto lasciviousness, to work all uncleanness with greediness."

Ephesians 5:5: "For this ye know, that no whoremonger, nor unclean person, nor covetous man, who is an idolater, hath any inheritance in the kingdom of Christ and of God."

Philippians 2:6: "Who, being in the form of God, thought it not robbery to be equal with God:"

Philippians 2:20: "For I have no man likeminded, who will naturally care for your state."

Philippians 3:19: "Whose end is destruction, whose God is their belly, and whose glory is in their shame, who mind earthly things.)"

Philippians 3:21: "Who shall change our vile body, that it may be fashioned like unto his glorious body, according to the working whereby he is able even to subdue all things unto himself."

Colossians 1:7: "As ye also learned of Epaphras our dear fellowservant, who is for you a faithful minister of Christ;"

Colossians 1:8: "Who also declared unto us your love in the Spirit."

Colossians 1:13: "Who hath delivered us from the power of darkness, and hath translated us into the kingdom of his dear Son:"

Colossians 1:15: "Who is the image of the invisible God, the firstborn of every creature:"

Colossians 1:18: "And he is the head of the body, the church: who is the beginning, the firstborn from the dead; that in all things he might have the preeminence."

Colossians 1:24: "Who now rejoice in my sufferings for you, and fill up that which is behind of the afflictions of Christ in my flesh for his body's sake, which is the church:"

Colossians 2:12: "Buried with him in baptism, wherein also ye are risen with him through the faith of the operation of God, who hath raised him from the dead."

Colossians 3:4: "When Christ, who is our life, shall appear, then shall ye also appear with him in glory."

Colossians 4:7: "All my state shall Tychicus declare unto you, who is a beloved brother, and a faithful minister and fellowservant in the Lord:"

Colossians 4:9: "With Onesimus, a faithful and beloved brother, who is one of you. They shall make known unto you all things which are done here."

Colossians 4:11: "And Jesus, which is called Justus, who are of the circumcision. These only are my fellowworkers unto the kingdom of God, which have been a comfort unto me."

Colossians 4:12: "Epaphras, who is one of you, a servant of Christ, saluteth you, always labouring

fervently for you in prayers, that ye may stand perfect and complete in all the will of God."

1 Thessalonians 2:12: "That ye would walk worthy of God, who hath called you unto his kingdom and glory."

1 Thessalonians 2:15: "Who both killed the Lord Jesus, and their own prophets, and have persecuted us; and they please not God, and are contrary to all men:"

1 Thessalonians 4:8: "He therefore that despiseth, despiseth not man, but God, who hath also given unto us his holy Spirit."

1 Thessalonians 5:8: "But let us, who are of the day, be sober, putting on the breastplate of faith and love; and for an helmet, the hope of salvation."

1 Thessalonians 5:10: "Who died for us, that, whether we wake or sleep, we should live together with him."

1 Thessalonians 5:24: "Faithful is he that calleth you, who also will do it."

2 Thessalonians 1:7: "And to you who are troubled rest with us, when the Lord Jesus shall be revealed from heaven with his mighty angels,"

2 Thessalonians 1:9: "Who shall be punished with everlasting destruction from the presence of the Lord, and from the glory of his power;"

2 Thessalonians 2:4: "Who opposeth and exalteth himself above all that is called God, or that is worshipped; so that he as God sitteth in the temple of God, shewing himself that he is God."

2 Thessalonians 2:7: "For the mystery of iniquity doth already work: only he who now letteth will let, until he be taken out of the way."

2 Thessalonians 2:12: "That they all might be damned who believed not the truth, but had pleasure in unrighteousness."

2 Thessalonians 3:3: "But the Lord is faithful, who shall stablish you, and keep you from evil."

1 Timothy 1:12: "And I thank Christ Jesus our Lord, who hath enabled me, for that he counted me faithful, putting me into the ministry;"

1 Timothy 1:13: "Who was before a blasphemer, and a persecutor, and injurious: but I obtained mercy, because I did it ignorantly in unbelief."

1 Timothy 2:4: "Who will have all men to be saved, and to come unto the knowledge of the truth."

1 Timothy 2:6: "Who gave himself a ransom for all, to be testified in due time."

1 Timothy 4:10: "For therefore we both labour and suffer reproach, because we trust in the living God, who is the Saviour of all men, specially of those that believe."

1 Timothy 5:17: "Let the elders that rule well be counted worthy of double honour, especially they who labour in the word and doctrine."

1 Timothy 6:13: "I give thee charge in the sight of God, who quickeneth all things, and before Christ Jesus, who before Pontius Pilate witnessed a good confession;"

1 Timothy 6:15: "Which in his times he shall shew, who is the blessed and only Potentate, the King of kings, and Lord of lords;"

1 Timothy 6:16: "Who only hath immortality, dwelling in the light which no man can approach unto; whom no man hath seen, nor can see: to whom be honour and power everlasting. Amen."

1 Timothy 6:17: "Charge them that are rich in this world, that they be not highminded, nor trust in uncertain riches, but in the living God, who giveth us richly all things to enjoy;"

2 Timothy 1:9: "Who hath saved us, and called us with an holy calling, not according to our works, but according to his own purpose and grace, which was given us in Christ Jesus before the world began,"

2 Timothy 1:10: "But is now made manifest by the appearing of our Saviour Jesus Christ, who hath abolished death, and hath brought life and immortality to light through the gospel:"

2 Timothy 2:2: "And the things that thou hast heard of me among many witnesses, the same commit thou to faithful men, who shall be able to teach others also."

2 Timothy 2:4: "No man that warreth entangleth himself with the affairs of this life; that he may please him who hath chosen him to be a soldier."



2 Timothy 2:18: "Who concerning the truth have erred, saying that the resurrection is past already; and overthrow the faith of some."

2 Timothy 2:26: "And that they may recover themselves out of the snare of the devil, who are taken captive by him at his will."

2 Timothy 4:1: "I charge thee therefore before God, and the Lord Jesus Christ, who shall judge the quick and the dead at his appearing and his kingdom;"

Titus 1:11: "Whose mouths must be stopped, who subvert whole houses, teaching things which they ought not, for filthy lucre's sake."

Titus 2:14: "Who gave himself for us, that he might redeem us from all iniquity, and purify unto himself a peculiar people, zealous of good works."

Hebrews 1:1: "God, who at sundry times and in divers manners spake in time past unto the fathers by the prophets,"

Hebrews 1:3: "Who being the brightness of his glory, and the express image of his person, and upholding all things by the word of his power, when he had by himself purged our sins, sat down on the right hand of the Majesty on high:"

Hebrews 1:7: "And of the angels he saith, Who maketh his angels spirits, and his ministers a flame of fire."

Hebrews 1:14: "Are they not all ministering spirits, sent forth to minister for them who shall be heirs of salvation?"

Hebrews 2:9: "But we see Jesus, who was made a little lower than the angels for the suffering of death, crowned with glory and honour; that he by the grace of God should taste death for every man."

Hebrews 2:11: "For both he that sanctifieth and they who are sanctified are all of one: for which cause he is not ashamed to call them brethren,"

Hebrews 2:15: "And deliver them who through fear of death were all their lifetime subject to bondage."

Hebrews 3:2: "Who was faithful to him that appointed him, as also Moses was faithful in all his house."

Hebrews 3:3: "For this man was counted worthy of more glory than Moses, inasmuch as he who hath builded the house hath more honour than the house."

Hebrews 5:2: "Who can have compassion on the ignorant, and on them that are out of the way; for that he himself also is compassed with infirmity."

Hebrews 5:7: "Who in the days of his flesh, when he had offered up prayers and supplications with strong crying and tears unto him that was able to save him from death, and was heard in that he feared;"

Hebrews 5:14: "But strong meat belongeth to them that are of full age, even those who by reason of use have their senses exercised to discern both good and evil."

Hebrews 6:4: "For it is impossible for those who were once enlightened, and have tasted of the heavenly gift, and were made partakers of the Holy Ghost,"

Hebrews 6:12: "That ye be not slothful, but followers of them who through faith and patience inherit the promises."

Hebrews 6:18: "That by two immutable things, in which it was impossible for God to lie, we might have a strong consolation, who have fled for refuge to lay hold upon the hope set before us:"

Hebrews 7:1: "For this Melchisedec, king of Salem, priest of the most high God, who met Abraham returning from the slaughter of the kings, and blessed him;"

Hebrews 7:5: "And verily they that are of the sons of Levi, who receive the office of the priesthood, have a commandment to take tithes of the people according to the law, that is, of their brethren, though they come out of the loins of Abraham:"

Hebrews 7:9: "And as I may so say, Levi also, who receiveth tithes, payed tithes in Abraham."

Hebrews 7:16: "Who is made, not after the law of a carnal commandment, but after the power of an

endless life."

Hebrews 7:26: "For such an high priest became us, who is holy, harmless, undefiled, separate from sinners, and made higher than the heavens;"

Hebrews 7:27: "Who needeth not daily, as those high priests, to offer up sacrifice, first for his own sins, and then for the people's: for this he did once, when he offered up himself."

Hebrews 7:28: "For the law maketh men high priests which have infirmity; but the word of the oath, which was since the law, maketh the Son, who is consecrated for evermore."

Hebrews 8:1: "Now of the things which we have spoken this is the sum: We have such an high priest, who is set on the right hand of the throne of the Majesty in the heavens;"

Hebrews 8:5: "Who serve unto the example and shadow of heavenly things, as Moses was admonished of God when he was about to make the tabernacle: for, See, saith he, that thou make all things according to the pattern shewed to thee in the mount."

Hebrews 9:14: "How much more shall the blood of Christ, who through the eternal Spirit offered himself without spot to God, purge your conscience from dead works to serve the living God?"

Hebrews 10:29: "Of how much sorer punishment, suppose ye, shall he be thought worthy, who hath trodden under foot the Son of God, and hath counted the blood of the covenant, wherewith he was sanctified, an unholy thing, and hath done despite unto the Spirit of grace?"

Hebrews 10:39: "But we are not of them who draw back unto perdition; but of them that believe to the saving of the soul."

Hebrews 11:11: "Through faith also Sara herself received strength to conceive seed, and was delivered of a child when she was past age, because she judged him faithful who had promised."

Hebrews 11:27: "By faith he forsook Egypt, not fearing the wrath of the king: for he endured, as seeing him who is invisible."

Hebrews 11:33: "Who through faith subdued kingdoms, wrought righteousness, obtained promises, stopped the mouths of lions."

Hebrews 12:2: "Looking unto Jesus the author and finisher of our faith; who for the joy that was set before him endured the cross, despising the shame, and is set down at the right hand of the throne of God."

Hebrews 12:16: "Lest there be any fornicator, or profane person, as Esau, who for one morsel of meat sold his birthright."

Hebrews 12:25: "See that ye refuse not him that speaketh. For if they escaped not who refused him that spake on earth, much more shall not we escape, if we turn away from him that speaketh from heaven:"

Hebrews 13:7: "Remember them which have the rule over you, who have spoken unto you the word of God: whose faith follow, considering the end of their conversation."

James 3:13: "Who is a wise man and endued with knowledge among you? let him shew out of a good conversation his works with meekness of wisdom."

James 4:12: "There is one lawgiver, who is able to save and to destroy: who art thou that judgest another?"

James 5:4: "Behold, the hire of the labourers who have reaped down your fields, which is of you kept back by fraud, crieth: and the cries of them which have reaped are entered into the ears of the Lord of sabaoth."

James 5:10: "Take, my brethren, the prophets, who have spoken in the name of the Lord, for an example of suffering affliction, and of patience."

1 Peter 1:5: "Who are kept by the power of God through faith unto salvation ready to be revealed in the last time."

1 Peter 1:10: "Of which salvation the prophets have enquired and searched diligently, who prophesied of the grace that should come unto you:"

1 Peter 1:17: "And if ye call on the Father, who without respect of persons judgeth according to every man's work, pass the time of your sojourning here in fear:"

1 Peter 1:20: "Who verily was foreordained before the foundation of the world, but was manifest in these last times for you,"

1 Peter 1:21: "Who by him do believe in God, that raised him up from the dead, and gave him glory; that your faith and hope might be in God."

1 Peter 2:9: "But ye are a chosen generation, a royal priesthood, an holy nation, a peculiar people; that ye should shew forth the praises of him who hath called you out of darkness into his marvellous light;"

1 Peter 2:22: "Who did no sin, neither was guile found in his mouth:"

1 Peter 2:23: "Who, when he was reviled, reviled not again; when he suffered, he threatened not; but committed himself to him that judgeth righteously:"

1 Peter 2:24: "Who his own self bare our sins in his own body on the tree, that we, being dead to sins, should live unto righteousness: by whose stripes ye were healed."

1 Peter 3:5: "For after this manner in the old time the holy women also, who trusted in God, adorned themselves, being in subjection unto their own husbands:"

1 Peter 3:13: "And who is he that will harm you, if ye be followers of that which is good?"

1 Peter 3:22: "Who is gone into heaven, and is on the right hand of God; angels and authorities and powers being made subject unto him."

1 Peter 4:5: "Who shall give account to him that is ready to judge the quick and the dead."

1 Peter 5:1: "The elders which are among you I exhort, who am also an elder, and a witness of the sufferings of Christ, and also a partaker of the glory that shall be revealed:"

1 Peter 5:10: "But the God of all grace, who hath called us unto his eternal glory by Christ Jesus, after that ye have suffered a while, make you perfect, stablish, strengthen, settle you."

2 Peter 2:1: "But there were false prophets also among the people, even as there shall be false teachers among you, who privily shall bring in damnable heresies, even denying the Lord that bought them, and bring upon themselves swift destruction."

2 Peter 2:15: "Which have forsaken the right way, and are gone astray, following the way of Balaam the son of Bosor, who loved the wages of unrighteousness;"

2 Peter 2:18: "For when they speak great swelling words of vanity, they allure through the lusts of the flesh, through much wantonness, those that were clean escaped from them who live in error."

1 John 2:22: "Who is a liar but he that denieth that Jesus is the Christ? He is antichrist, that denieth the Father and the Son."

1 John 3:12: "Not as Cain, who was of that wicked one, and slew his brother. And wherefore slew he him? Because his own works were evil, and his brother's righteous."

1 John 4:21: "And this commandment have we from him, That he who loveth God love his brother also."

1 John 5:5: "Who is he that overcometh the world, but he that believeth that Jesus is the Son of God?"

2 John 1:7: "For many deceivers are entered into the world, who confess not that Jesus Christ is come in the flesh. This is a deceiver and an antichrist."

3 John 1:9: "I wrote unto the church: but Diotrephes, who loveth to have the preeminence among them, receiveth us not."

Jude 1:4: "For there are certain men crept in unawares, who were before of old ordained to this condemnation, ungodly men, turning the grace of our God into lasciviousness, and denying the only Lord God, and our Lord Jesus Christ."

Jude 1:18: "How that they told you there should be mockers in the last time, who should walk after their own ungodly lusts."

Jude 1:19: "These be they who separate themselves, sensual, having not the Spirit."

Revelation 1:2: "Who bare record of the word of God, and of the testimony of Jesus Christ, and of all things that he saw."

Revelation 1:5: "And from Jesus Christ, who is the faithful witness, and the first begotten of the

dead, and the prince of the kings of the earth. Unto him that loved us, and washed us from our sins in his own blood,"

Revelation 1:9: "I John, who also am your brother, and companion in tribulation, and in the kingdom and patience of Jesus Christ, was in the isle that is called Patmos, for the word of God, and for the testimony of Jesus Christ."

Revelation 2:1: "Unto the angel of the church of Ephesus write; These things saith he that holdeth the seven stars in his right hand, who walketh in the midst of the seven golden candlesticks;"

Revelation 2:13: "I know thy works, and where thou dwellest, even where Satan's seat is: and thou holdest fast my name, and hast not denied my faith, even in those days wherein Antipas was my faithful martyr, who was slain among you, where Satan dwelleth."

Revelation 2:14: "But I have a few things against thee, because thou hast there them that hold the doctrine of Balaam, who taught Balac to cast a stumblingblock before the children of Israel, to eat things sacrificed unto idols, and to commit fornication."

Revelation 2:18: "And unto the angel of the church in Thyatira write; These things saith the Son of God, who hath his eyes like unto a flame of fire, and his feet are like fine brass;"

Revelation 4:9: "And when those beasts give glory and honour and thanks to him that sat on the throne, who liveth for ever and ever,"

Revelation 5:2: "And I saw a strong angel proclaiming with a loud voice, Who is worthy to open the book, and to loose the seals thereof?"

Revelation 6:17: "For the great day of his wrath is come; and who shall be able to stand?"

Revelation 10:6: "And swore by him that liveth for ever and ever, who created heaven, and the things that therein are, and the earth, and the things that therein are, and the sea, and the things which are therein, that there should be time no longer:"

Revelation 12:5: "And she brought forth a man child, who was to rule all nations with a rod of iron: and her child was caught up unto God, and to his throne."

Revelation 13:4: "And they worshipped the dragon which gave power unto the beast: and they worshipped the beast, saying, Who is like unto the beast? who is able to make war with him?"

Revelation 14:11: "And the smoke of their torment ascendeth up for ever and ever: and they have no rest day nor night, who worship the beast and his image, and whosoever receiveth the mark of his name."

Revelation 15:4: "Who shall not fear thee, O Lord, and glorify thy name? for thou only art holy: for all nations shall come and worship before thee; for thy judgments are made manifest."

Revelation 15:7: "And one of the four beasts gave unto the seven angels seven golden vials full of the wrath of God, who liveth for ever and ever."

Revelation 18:8: "Therefore shall her plagues come in one day, death, and mourning, and famine; and she shall be utterly burned with fire: for strong is the Lord God who judgeth her."

Revelation 18:9: "And the kings of the earth, who have committed fornication and lived deliciously with her, shall bewail her, and lament for her, when they shall see the smoke of her burning,"

## WHOEVER

Occurrences: 1

2 Samuel 14:10: "And the king said, Whoever saith ought unto thee, bring him to me, and he shall not touch thee any more."

## WHOLE

Occurrences: 240

Genesis 2:6: "But there went up a mist from the earth, and watered the whole face of the ground."

Genesis 2:11: "The name of the first is Pison: that is it which compasseth the whole land of Havilah, where there is gold;"

Genesis 2:13: "And the name of the second river is Gihon: the same is it that compasseth the whole land of Ethiopia."

Genesis 7:19: "And the waters prevailed exceedingly upon the earth; and all the high hills, that were under the whole heaven, were covered."

Genesis 8:9: "But the dove found no rest for the sole of her foot, and she returned unto him into the ark, for the waters were on the face of the whole earth: then he put forth his hand, and took her, and pulled her in unto him into the ark."

Genesis 9:19: "These are the three sons of Noah: and of them was the whole earth overspread."

Genesis 11:1: "And the whole earth was of one language, and of one speech."

Genesis 11:4: "And they said, Go to, let us build us a city and a tower, whose top may reach unto heaven; and let us make us a name, lest we be scattered abroad upon the face of the whole earth."

Genesis 13:9: "Is not the whole land before thee? separate thyself, I pray thee, from me: if thou wilt take the left hand, then I will go to the right; or if thou depart to the right hand, then I will go to the left."

Genesis 47:28: "And Jacob lived in the land of Egypt seventeen years: so the whole age of Jacob was an hundred forty and seven years."

Exodus 10:15: "For they covered the face of the whole earth, so that the land was darkened; and they did eat every herb of the land, and all the fruit of the trees which the hail had left: and there remained not any green thing in the trees, or in the herbs of the field, through all the land of Egypt."

Exodus 12:6: "And ye shall keep it up until the fourteenth day of the same month: and the whole assembly of the congregation of Israel shall kill it in the evening."

Exodus 16:2: "And the whole congregation of the children of Israel murmured against Moses and Aaron in the wilderness:"

Exodus 16:3: "And the children of Israel said unto them, Would to God we had died by the hand of the LORD in the land of Egypt, when we sat by the flesh pots, and when we did eat bread to the full; for ye have brought us forth into this wilderness, to kill this whole assembly with hunger."

Exodus 16:10: "And it came to pass, as Aaron spake unto the whole congregation of the children of Israel, that they looked toward the wilderness, and, behold, the glory of the LORD appeared in the cloud."

Exodus 19:18: "And mount Sinai was altogether on a smoke, because the LORD descended upon it in fire: and the smoke thereof ascended as the smoke of a furnace, and the whole mount quaked greatly."

Exodus 29:18: "And thou shalt burn the whole ram upon the altar: it is a burnt offering unto the LORD: it is a sweet savour, an offering made by fire unto the LORD."

Leviticus 3:9: "And he shall offer of the sacrifice of the peace offering an offering made by fire unto the LORD; the fat thereof, and the whole rump, it shall he take off hard by the backbone; and the fat that covereth the inwards, and all the fat that is upon the inwards,"

Leviticus 4:12: "Even the whole bullock shall he carry forth without the camp unto a clean place, where the ashes are poured out, and burn him on the wood with fire: where the ashes are poured out shall he be burnt."

Leviticus 4:13: "And if the whole congregation of Israel sin through ignorance, and the thing be hid from the eyes of the assembly, and they have done somewhat against any of the commandments of the LORD concerning things which should not be done, and are guilty;"

Leviticus 7:14: "And of it he shall offer one out of the whole oblation for an heave offering unto the LORD, and it shall be the priest's that sprinkleth the blood of the peace offerings."

Leviticus 8:21: "And he washed the inwards and the legs in water; and Moses burnt the whole ram upon the altar: it was a burnt sacrifice for a sweet savour, and an offering made by fire unto the LORD; as the LORD commanded Moses."

Leviticus 10:6: "And Moses said unto Aaron, and unto Eleazar and unto Ithamar, his sons, Uncover not your heads, neither rend your clothes; lest ye die, and lest wrath come upon all the people: but

let your brethren, the whole house of Israel, bewail the burning which the LORD hath kindled."

Leviticus 25:29: "And if a man sell a dwelling house in a walled city, then he may redeem it within a whole year after it is sold; within a full year may he redeem it."

Numbers 3:7: "And they shall keep his charge, and the charge of the whole congregation before the tabernacle of the congregation, to do the service of the tabernacle."

Numbers 8:9: "And thou shalt bring the Levites before the tabernacle of the congregation: and thou shalt gather the whole assembly of the children of Israel together:"

Numbers 10:2: "Make thee two trumpets of silver; of a whole piece shalt thou make them: that thou mayest use them for the calling of the assembly, and for the journeying of the camps."

Numbers 11:20: "But even a whole month, until it come out at your nostrils, and it be loathsome unto you: because that ye have despised the LORD which is among you, and have wept before him, saying, Why came we forth out of Egypt?"

Numbers 11:21: "And Moses said, The people, among whom I am, are six hundred thousand footmen; and thou hast said, I will give them flesh, that they may eat a whole month."

Numbers 14:2: "And all the children of Israel murmured against Moses and against Aaron: and the whole congregation said unto them, Would God that we had died in the land of Egypt! or would God we had died in this wilderness!"

Numbers 14:29: "Your carcasses shall fall in this wilderness; and all that were numbered of you, according to your whole number, from twenty years old and upward which have murmured against me."

Numbers 20:1: "Then came the children of Israel, even the whole congregation, into the desert of Zin in the first month: and the people abode in Kadesh; and Miriam died there, and was buried there."

Numbers 20:22: "And the children of Israel, even the whole congregation, journeyed from Kadesh, and came unto mount Hor."

Deuteronomy 2:25: "This day will I begin to put the dread of thee and the fear of thee upon the nations that are under the whole heaven, who shall hear report of thee, and shall tremble, and be in anguish because of thee."

Deuteronomy 4:19: "And lest thou lift up thine eyes unto heaven, and when thou seest the sun, and the moon, and the stars, even all the host of heaven, shouldest be driven to worship them, and serve them, which the LORD thy God hath divided unto all nations under the whole heaven."

Deuteronomy 27:6: "Thou shalt build the altar of the LORD thy God of whole stones: and thou shalt offer burnt offerings thereon unto the LORD thy God:"

Deuteronomy 29:23: "And that the whole land thereof is brimstone, and salt, and burning, that it is not sown, nor beareth, nor any grass groweth therein, like the overthrow of Sodom, and Gomorrah, Admah, and Zeboim, which the LORD overthrew in his anger, and in his wrath:"

Deuteronomy 33:10: "They shall teach Jacob thy judgments, and Israel thy law: they shall put incense before thee, and whole burnt sacrifice upon thine altar."

Joshua 5:8: "And it came to pass, when they had done circumcising all the people, that they abode in their places in the camp, till they were whole."

Joshua 8:31: "As Moses the servant of the LORD commanded the children of Israel, as it is written in the book of the law of Moses, an altar of whole stones, over which no man hath lift up any iron: and they offered thereon burnt offerings unto the LORD, and sacrificed peace offerings."

Joshua 10:13: "And the sun stood still, and the moon stayed, until the people had avenged themselves upon their enemies. Is not this written in the book of Jasher? So the sun stood still in the midst of heaven, and hasted not to go down about a whole day."

Joshua 11:23: "So Joshua took the whole land, according to all that the LORD said unto Moses; and Joshua gave it for an inheritance unto Israel according to their divisions by their tribes. And the land rested from war."

Joshua 18:1: "And the whole congregation of the children of Israel assembled together at Shiloh,

and set up the tabernacle of the congregation there. And the land was subdued before them."

Joshua 22:12: "And when the children of Israel heard of it, the whole congregation of the children of Israel gathered themselves together at Shiloh, to go up to war against them."

Joshua 22:16: "Thus saith the whole congregation of the LORD, What trespass is this that ye have committed against the God of Israel, to turn away this day from following the LORD, in that ye have builded you an altar, that ye might rebel this day against the LORD?"

Joshua 22:18: "But that ye must turn away this day from following the LORD? and it will be, seeing ye rebel to day against the LORD, that to morrow he will be wroth with the whole congregation of Israel."

Judges 19:2: "And his concubine played the whore against him, and went away from him unto her father's house to Bethlehemjudah, and was there four whole months."

Judges 21:13: "And the whole congregation sent some to speak to the children of Benjamin that were in the rock Rimmon, and to call peaceably unto them."

2 Samuel 1:9: "He said unto me again, Stand, I pray thee, upon me, and slay me: for anguish is come upon me, because my life is yet whole in me."

2 Samuel 3:19: "And Abner also spake in the ears of Benjamin: and Abner went also to speak in the ears of David in Hebron all that seemed good to Israel, and that seemed good to the whole house of Benjamin."

2 Samuel 6:19: "And he dealt among all the people, even among the whole multitude of Israel, as well to the women as men, to every one a cake of bread, and a good piece of flesh, and a flagon of wine. So all the people departed every one to his house."

2 Samuel 14:7: "And, behold, the whole family is risen against thine handmaid, and they said, Deliver him that smote his brother, that we may kill him, for the life of his brother whom he slew; and we will destroy the heir also: and so they shall quench my coal which is left, and shall not leave to my husband neither name nor remainder upon the earth."

1 Kings 6:22: "And the whole house he overlaid with gold, until he had finished all the house: also the whole altar that was by the oracle he overlaid with gold."

1 Kings 11:34: "Howbeit I will not take the whole kingdom out of his hand: but I will make him prince all the days of his life for David my servant's sake, whom I chose, because he kept my commandments and my statutes:"

2 Kings 9:8: "For the whole house of Ahab shall perish: and I will cut off from Ahab him that pisseth against the wall, and him that is shut up and left in Israel:"

2 Chronicles 6:3: "And the king turned his face, and blessed the whole congregation of Israel: and all the congregation of Israel stood."

2 Chronicles 15:15: "And all Judah rejoiced at the oath: for they had sworn with all their heart, and sought him with their whole desire; and he was found of them: and the LORD gave them rest round about."

2 Chronicles 16:9: "For the eyes of the LORD run to and fro throughout the whole earth, to shew himself strong in the behalf of them whose heart is perfect toward him. Herein thou hast done foolishly: therefore from henceforth thou shalt have wars."

2 Chronicles 26:12: "The whole number of the chief of the fathers of the mighty men of valour were two thousand and six hundred."

2 Chronicles 30:23: "And the whole assembly took counsel to keep other seven days: and they kept other seven days with gladness."

2 Chronicles 33:8: "Neither will I any more remove the foot of Israel from out of the land which I have appointed for your fathers; so that they will take heed to do all that I have commanded them, according to the whole law and the statutes and the ordinances by the hand of Moses."

Ezra 2:64: "The whole congregation together was forty and two thousand three hundred and threescore,"

Nehemiah 7:66: "The whole congregation together was forty and two thousand three hundred and

threescore,"

Esther 3:6: "And he thought scorn to lay hands on Mordecai alone; for they had shewed him the people of Mordecai: wherefore Haman sought to destroy all the Jews that were throughout the whole kingdom of Ahasuerus, even the people of Mordecai."

Job 5:18: "For he maketh sore, and bindeth up: he woundeth, and his hands make whole."

Job 28:24: "For he looketh to the ends of the earth, and seeth under the whole heaven;"

Job 34:13: "Who hath given him a charge over the earth? or who hath disposed the whole world?"

Job 37:3: "He directeth it under the whole heaven, and his lightning unto the ends of the earth."

Job 41:11: "Who hath prevented me, that I should repay him? whatsoever is under the whole heaven is mine."

Psalms 9:1: "I will praise thee, O LORD, with my whole heart; I will shew forth all thy marvellous works."

Psalms 48:2: "Beautiful for situation, the joy of the whole earth, is mount Zion, on the sides of the north, the city of the great King."

Psalms 51:19: "Then shalt thou be pleased with the sacrifices of righteousness, with burnt offering and whole burnt offering: then shall they offer bullocks upon thine altar."

Psalms 72:19: "And blessed be his glorious name for ever: and let the whole earth be filled with his glory; Amen, and Amen."

Psalms 97:5: "The hills melted like wax at the presence of the LORD, at the presence of the Lord of the whole earth."

Psalms 105:16: "Moreover he called for a famine upon the land: he brake the whole staff of bread."

Psalms 111:1: "Praise ye the LORD. I will praise the LORD with my whole heart, in the assembly of the upright, and in the congregation."

Psalms 119:2: "Blessed are they that keep his testimonies, and that seek him with the whole heart."

Psalms 119:10: "With my whole heart have I sought thee: O let me not wander from thy commandments."

Psalms 119:34: "Give me understanding, and I shall keep thy law; yea, I shall observe it with my whole heart."

Psalms 119:58: "I intreated thy favour with my whole heart: be merciful unto me according to thy word."

Psalms 119:69: "The proud have forged a lie against me: but I will keep thy precepts with my whole heart."

Psalms 119:145: "I cried with my whole heart; hear me, O LORD: I will keep thy statutes."

Psalms 138:1: "I will praise thee with my whole heart: before the gods will I sing praise unto thee."

Proverbs 1:12: "Let us swallow them up alive as the grave; and whole, as those that go down into the pit:"

Proverbs 16:33: "The lot is cast into the lap; but the whole disposing thereof is of the LORD."

Proverbs 26:26: "Whose hatred is covered by deceit, his wickedness shall be shewed before the whole congregation."

Ecclesiastes 12:13: "Let us hear the conclusion of the whole matter: Fear God, and keep his commandments: for this is the whole duty of man."

Isaiah 1:5: "Why should ye be stricken any more? ye will revolt more and more: the whole head is sick, and the whole heart faint."

Isaiah 3:1: "For, behold, the Lord, the LORD of hosts, doth take away from Jerusalem and from Judah the stay and the staff, the whole stay of bread, and the whole stay of water."

Isaiah 6:3: "And one cried unto another, and said, Holy, holy, holy, is the LORD of hosts: the whole earth is full of his glory."

Isaiah 10:12: "Wherefore it shall come to pass, that when the Lord hath performed his whole work upon mount Zion and on Jerusalem, I will punish the fruit of the stout heart of the king of Assyria, and the glory of his high looks."



Isaiah 13:5: "They come from a far country, from the end of heaven, even the LORD, and the weapons of his indignation, to destroy the whole land."

Isaiah 14:7: "The whole earth is at rest, and is quiet: they break forth into singing."

Isaiah 14:26: "This is the purpose that is purposed upon the whole earth: and this is the hand that is stretched out upon all the nations."

Isaiah 14:29: "Rejoice not thou, whole Palestina, because the rod of him that smote thee is broken: for out of the serpent's root shall come forth a cockatrice, and his fruit shall be a fiery flying serpent."

Isaiah 14:31: "Howl, O gate; cry, O city; thou, whole Palestina, art dissolved: for there shall come from the north a smoke, and none shall be alone in his appointed times."

Isaiah 21:8: "And he cried, A lion: My lord, I stand continually upon the watchtower in the daytime, and I am set in my ward whole nights:"

Isaiah 28:22: "Now therefore be ye not mockers, lest your bands be made strong: for I have heard from the Lord GOD of hosts a consumption, even determined upon the whole earth."

Isaiah 54:5: "For thy Maker is thine husband; the LORD of hosts is his name; and thy Redeemer the Holy One of Israel; The God of the whole earth shall he be called."

Jeremiah 1:18: "For, behold, I have made thee this day a defenced city, and an iron pillar, and brasen walls against the whole land, against the kings of Judah, against the princes thereof, against the priests thereof, and against the people of the land."

Jeremiah 3:10: "And yet for all this her treacherous sister Judah hath not turned unto me with her whole heart, but feignedly, saith the LORD."

Jeremiah 4:20: "Destruction upon destruction is cried; for the whole land is spoiled: suddenly are my tents spoiled, and my curtains in a moment."

Jeremiah 4:27: "For thus hath the LORD said, The whole land shall be desolate; yet will I not make a full end."

Jeremiah 4:29: "The whole city shall flee for the noise of the horsemen and bowmen; they shall go into thickets, and climb up upon the rocks: every city shall be forsaken, and not a man dwell therein."

Jeremiah 7:15: "And I will cast you out of my sight, as I have cast out all your brethren, even the whole seed of Ephraim."

Jeremiah 8:16: "The snorting of his horses was heard from Dan: the whole land trembled at the sound of the neighing of his strong ones; for they are come, and have devoured the land, and all that is in it; the city, and those that dwell therein."

Jeremiah 12:11: "They have made it desolate, and being desolate it mourneth unto me; the whole land is made desolate, because no man layeth it to heart."

Jeremiah 13:11: "For as the girdle cleaveth to the loins of a man, so have I caused to cleave unto me the whole house of Israel and the whole house of Judah, saith the LORD; that they might be unto me for a people, and for a name, and for a praise, and for a glory: but they would not hear."

Jeremiah 15:10: "Woe is me, my mother, that thou hast borne me a man of strife and a man of contention to the whole earth! I have neither lent on usury, nor men have lent to me on usury; yet every one of them doth curse me."

Jeremiah 19:11: "And shalt say unto them, Thus saith the LORD of hosts; Even so will I break this people and this city, as one breaketh a potter's vessel, that cannot be made whole again: and they shall bury them in Tophet, till there be no place to bury."

Jeremiah 24:7: "And I will give them an heart to know me, that I am the LORD: and they shall be my people, and I will be their God: for they shall return unto me with their whole heart."

Jeremiah 25:11: "And this whole land shall be a desolation, and an astonishment; and these nations shall serve the king of Babylon seventy years."

Jeremiah 31:40: "And the whole valley of the dead bodies, and of the ashes, and all the fields unto the brook of Kidron, unto the corner of the horse gate toward the east, shall be holy unto the LORD;

it shall not be plucked up, nor thrown down any more for ever."

Jeremiah 32:41: "Yea, I will rejoice over them to do them good, and I will plant them in this land assuredly with my whole heart and with my whole soul."

Jeremiah 35:3: "Then I took Jaazaniah the son of Jeremiah, the son of Habaziniyah, and his brethren, and all his sons, and the whole house of the Rechabites;"

Jeremiah 37:10: "For though ye had smitten the whole army of the Chaldeans that fight against you, and there remained but wounded men among them, yet should they rise up every man in his tent, and burn this city with fire."

Jeremiah 45:4: "Thus shalt thou say unto him, The LORD saith thus; Behold, that which I have built will I break down, and that which I have planted I will pluck up, even this whole land."

Jeremiah 50:23: "How is the hammer of the whole earth cut asunder and broken! how is Babylon become a desolation among the nations!"

Jeremiah 51:41: "How is Sheshach taken! and how is the praise of the whole earth surprised! how is Babylon become an astonishment among the nations!"

Jeremiah 51:47: "Therefore, behold, the days come, that I will do judgment upon the graven images of Babylon: and her whole land shall be confounded, and all her slain shall fall in the midst of her."

Lamentations 2:15: "All that pass by clap their hands at thee; they hiss and wag their head at the daughter of Jerusalem, saying, Is this the city that men call The perfection of beauty, The joy of the whole earth?"

Ezekiel 5:10: "Therefore the fathers shall eat the sons in the midst of thee, and the sons shall eat their fathers; and I will execute judgments in thee, and the whole remnant of thee will I scatter into all the winds."

Ezekiel 7:13: "For the seller shall not return to that which is sold, although they were yet alive: for the vision is touching the whole multitude thereof, which shall not return; neither shall any strengthen himself in the iniquity of his life."

Ezekiel 10:12: "And their whole body, and their backs, and their hands, and their wings, and the wheels, were full of eyes round about, even the wheels that they four had."

Ezekiel 15:5: "Behold, when it was whole, it was meet for no work: how much less shall it be meet yet for any work, when the fire hath devoured it, and it is burned?"

Ezekiel 32:4: "Then will I leave thee upon the land, I will cast thee forth upon the open field, and will cause all the fowls of the heaven to remain upon thee, and I will fill the beasts of the whole earth with thee."

Ezekiel 35:14: "Thus saith the Lord GOD; When the whole earth rejoiceth, I will make thee desolate."

Ezekiel 37:11: "Then he said unto me, Son of man, these bones are the whole house of Israel: behold, they say, Our bones are dried, and our hope is lost: we are cut off for our parts."

Ezekiel 39:25: "Therefore thus saith the Lord GOD; Now will I bring again the captivity of Jacob, and have mercy upon the whole house of Israel, and will be jealous for my holy name;"

Ezekiel 43:11: "And if they be ashamed of all that they have done, shew them the form of the house, and the fashion thereof, and the goings out thereof, and the comings in thereof, and all the forms thereof, and all the ordinances thereof, and all the forms thereof, and all the laws thereof: and write it in their sight, that they may keep the whole form thereof, and all the ordinances thereof, and do them."

Ezekiel 43:12: "This is the law of the house; Upon the top of the mountain the whole limit thereof round about shall be most holy. Behold, this is the law of the house."

Ezekiel 45:6: "And ye shall appoint the possession of the city five thousand broad, and five and twenty thousand long, over against the oblation of the holy portion: it shall be for the whole house of Israel."

Daniel 2:35: "Then was the iron, the clay, the brass, the silver, and the gold, broken to pieces together, and became like the chaff of the summer threshingfloors; and the wind carried them away,

that no place was found for them: and the stone that smote the image became a great mountain, and filled the whole earth."

Daniel 2:48: "Then the king made Daniel a great man, and gave him many great gifts, and made him ruler over the whole province of Babylon, and chief of the governors over all the wise men of Babylon."

Daniel 6:1: "It pleased Darius to set over the kingdom an hundred and twenty princes, which should be over the whole kingdom;"

Daniel 6:3: "Then this Daniel was preferred above the presidents and princes, because an excellent spirit was in him; and the king thought to set him over the whole realm."

Daniel 7:23: "Thus he said, The fourth beast shall be the fourth kingdom upon earth, which shall be diverse from all kingdoms, and shall devour the whole earth, and shall tread it down, and break it in pieces."

Daniel 7:27: "And the kingdom and dominion, and the greatness of the kingdom under the whole heaven, shall be given to the people of the saints of the most High, whose kingdom is an everlasting kingdom, and all dominions shall serve and obey him."

Daniel 8:5: "And as I was considering, behold, an he goat came from the west on the face of the whole earth, and touched not the ground: and the goat had a notable horn between his eyes."

Daniel 9:12: "And he hath confirmed his words, which he spake against us, and against our judges that judged us, by bringing upon us a great evil: for under the whole heaven hath not been done as hath been done upon Jerusalem."

Daniel 10:3: "I ate no pleasant bread, neither came flesh nor wine in my mouth, neither did I anoint myself at all, till three whole weeks were fulfilled."

Daniel 11:17: "He shall also set his face to enter with the strength of his whole kingdom, and upright ones with him; thus shall he do: and he shall give him the daughter of women, corrupting her: but she shall not stand on his side, neither be for him."

Amos 1:6: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Gaza, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because they carried away captive the whole captivity, to deliver them up to Edom:"

Amos 1:9: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Tyrus, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because they delivered up the whole captivity to Edom, and remembered not the brotherly covenant:"

Amos 3:1: "Hear this word that the LORD hath spoken against you, O children of Israel, against the whole family which I brought up from the land of Egypt, saying,"

Micah 4:13: "Arise and thresh, O daughter of Zion: for I will make thine horn iron, and I will make thy hoofs brass: and thou shalt beat in pieces many people: and I will consecrate their gain unto the LORD, and their substance unto the Lord of the whole earth."

Zephaniah 1:18: "Neither their silver nor their gold shall be able to deliver them in the day of the LORD's wrath; but the whole land shall be devoured by the fire of his jealousy: for he shall make even a speedy riddance of all them that dwell in the land."

Zechariah 4:10: "For who hath despised the day of small things? for they shall rejoice, and shall see the plummet in the hand of Zerubbabel with those seven; they are the eyes of the LORD, which run to and fro through the whole earth."

Zechariah 4:14: "Then said he, These are the two anointed ones, that stand by the LORD of the whole earth."

Zechariah 5:3: "Then said he unto me, This is the curse that goeth forth over the face of the whole earth: for every one that stealeth shall be cut off as on this side according to it; and every one that sweareth shall be cut off as on that side according to it."

Malachi 3:9: "Ye are cursed with a curse: for ye have robbed me, even this whole nation."

Matthew 5:29: "And if thy right eye offend thee, pluck it out, and cast it from thee: for it is profitable for thee that one of thy members should perish, and not that thy whole body should be

cast into hell."

Matthew 5:30: "And if thy right hand offend thee, cut it off, and cast it from thee: for it is profitable for thee that one of thy members should perish, and not that thy whole body should be cast into hell."

Matthew 6:22: "The light of the body is the eye: if therefore thine eye be single, thy whole body shall be full of light."

Matthew 6:23: "But if thine eye be evil, thy whole body shall be full of darkness. If therefore the light that is in thee be darkness, how great is that darkness!"

Matthew 8:32: "And he said unto them, Go. And when they were come out, they went into the herd of swine: and, behold, the whole herd of swine ran violently down a steep place into the sea, and perished in the waters."

Matthew 8:34: "And, behold, the whole city came out to meet Jesus: and when they saw him, they besought him that he would depart out of their coasts."

Matthew 9:12: "But when Jesus heard that, he said unto them, They that be whole need not a physician, but they that are sick."

Matthew 9:21: "For she said within herself, If I may but touch his garment, I shall be whole."

Matthew 9:22: "But Jesus turned him about, and when he saw her, he said, Daughter, be of good comfort; thy faith hath made thee whole. And the woman was made whole from that hour."

Matthew 12:13: "Then saith he to the man, Stretch forth thine hand. And he stretched it forth; and it was restored whole, like as the other."

Matthew 13:2: "And great multitudes were gathered together unto him, so that he went into a ship, and sat; and the whole multitude stood on the shore."

Matthew 13:33: "Another parable spake he unto them; The kingdom of heaven is like unto leaven, which a woman took, and hid in three measures of meal, till the whole was leavened."

Matthew 14:36: "And besought him that they might only touch the hem of his garment: and as many as touched were made perfectly whole."

Matthew 15:28: "Then Jesus answered and said unto her, O woman, great is thy faith: be it unto thee even as thou wilt. And her daughter was made whole from that very hour."

Matthew 15:31: "Insomuch that the multitude wondered, when they saw the dumb to speak, the maimed to be whole, the lame to walk, and the blind to see: and they glorified the God of Israel."

Matthew 16:26: "For what is a man profited, if he shall gain the whole world, and lose his own soul? or what shall a man give in exchange for his soul?"

Matthew 26:13: "Verily I say unto you, Wheresoever this gospel shall be preached in the whole world, there shall also this, that this woman hath done, be told for a memorial of her."

Matthew 27:27: "Then the soldiers of the governor took Jesus into the common hall, and gathered unto him the whole band of soldiers."

Mark 2:17: "When Jesus heard it, he saith unto them, They that are whole have no need of the physician, but they that are sick: I came not to call the righteous, but sinners to repentance."

Mark 3:5: "And when he had looked round about on them with anger, being grieved for the hardness of their hearts, he saith unto the man, Stretch forth thine hand. And he stretched it out: and his hand was restored whole as the other."

Mark 4:1: "And he began again to teach by the sea side: and there was gathered unto him a great multitude, so that he entered into a ship, and sat in the sea; and the whole multitude was by the sea on the land."

Mark 5:28: "For she said, If I may touch but his clothes, I shall be whole."

Mark 5:34: "And he said unto her, Daughter, thy faith hath made thee whole; go in peace, and be whole of thy plague."

Mark 6:55: "And ran through that whole region round about, and began to carry about in beds those that were sick, where they heard he was."

Mark 6:56: "And whithersoever he entered, into villages, or cities, or country, they laid the sick in

the streets, and besought him that they might touch if it were but the border of his garment: and as many as touched him were made whole."

Mark 8:36: "For what shall it profit a man, if he shall gain the whole world, and lose his own soul?"

Mark 10:52: "And Jesus said unto him, Go thy way; thy faith hath made thee whole. And immediately he received his sight, and followed Jesus in the way."

Mark 12:33: "And to love him with all the heart, and with all the understanding, and with all the soul, and with all the strength, and to love his neighbour as himself, is more than all whole burnt offerings and sacrifices."

Mark 14:9: "Verily I say unto you, Wheresoever this gospel shall be preached throughout the whole world, this also that she hath done shall be spoken of for a memorial of her."

Mark 15:1: "And straightway in the morning the chief priests held a consultation with the elders and scribes and the whole council, and bound Jesus, and carried him away, and delivered him to Pilate."

Mark 15:16: "And the soldiers led him away into the hall, called Praetorium; and they call together the whole band."

Mark 15:33: "And when the sixth hour was come, there was darkness over the whole land until the ninth hour."

Luke 1:10: "And the whole multitude of the people were praying without at the time of incense."

Luke 5:31: "And Jesus answering said unto them, They that are whole need not a physician; but they that are sick."

Luke 6:10: "And looking round about upon them all, he said unto the man, Stretch forth thy hand. And he did so: and his hand was restored whole as the other."

Luke 6:19: "And the whole multitude sought to touch him: for there went virtue out of him, and healed them all."

Luke 7:10: "And they that were sent, returning to the house, found the servant whole that had been sick."

Luke 8:37: "Then the whole multitude of the country of the Gadarenes round about besought him to depart from them; for they were taken with great fear: and he went up into the ship, and returned back again."

Luke 8:39: "Return to thine own house, and shew how great things God hath done unto thee. And he went his way, and published throughout the whole city how great things Jesus had done unto him."

Luke 8:48: "And he said unto her, Daughter, be of good comfort: thy faith hath made thee whole; go in peace."

Luke 8:50: "But when Jesus heard it, he answered him, saying, Fear not: believe only, and she shall be made whole."

Luke 9:25: "For what is a man advantaged, if he gain the whole world, and lose himself, or be cast away?"

Luke 11:34: "The light of the body is the eye: therefore when thine eye is single, thy whole body also is full of light; but when thine eye is evil, thy body also is full of darkness."

Luke 11:36: "If thy whole body therefore be full of light, having no part dark, the whole shall be full of light, as when the bright shining of a candle doth give thee light."

Luke 13:21: "It is like leaven, which a woman took and hid in three measures of meal, till the whole was leavened."

Luke 17:19: "And he said unto him, Arise, go thy way: thy faith hath made thee whole."

Luke 19:37: "And when he was come nigh, even now at the descent of the mount of Olives, the whole multitude of the disciples began to rejoice and praise God with a loud voice for all the mighty works that they had seen;"

Luke 21:35: "For as a snare shall it come on all them that dwell on the face of the whole earth."

Luke 23:1: "And the whole multitude of them arose, and led him unto Pilate."

John 4:53: "So the father knew that it was at the same hour, in the which Jesus said unto him, Thy

son liveth: and himself believed, and his whole house."

John 5:4: "For an angel went down at a certain season into the pool, and troubled the water: whosoever then first after the troubling of the water stepped in was made whole of whatsoever disease he had."

John 5:6: "When Jesus saw him lie, and knew that he had been now a long time in that case, he saith unto him, Wilt thou be made whole?"

John 5:9: "And immediately the man was made whole, and took up his bed, and walked: and on the same day was the sabbath."

John 5:11: "He answered them, He that made me whole, the same said unto me, Take up thy bed, and walk."

John 5:14: "Afterward Jesus findeth him in the temple, and said unto him, Behold, thou art made whole: sin no more, lest a worse thing come unto thee."

John 5:15: "The man departed, and told the Jews that it was Jesus, which had made him whole."

John 7:23: "If a man on the sabbath day receive circumcision, that the law of Moses should not be broken; are ye angry at me, because I have made a man every whit whole on the sabbath day?"

John 11:50: "Nor consider that it is expedient for us, that one man should die for the people, and that the whole nation perish not."

Acts 4:9: "If we this day be examined of the good deed done to the impotent man, by what means he is made whole;"

Acts 4:10: "Be it known unto you all, and to all the people of Israel, that by the name of Jesus Christ of Nazareth, whom ye crucified, whom God raised from the dead, even by him doth this man stand here before you whole."

Acts 6:5: "And the saying pleased the whole multitude: and they chose Stephen, a man full of faith and of the Holy Ghost, and Philip, and Prochorus, and Nicanor, and Timon, and Parmenas, and Nicolas a proselyte of Antioch:"

Acts 9:34: "And Peter said unto him, Aeneas, Jesus Christ maketh thee whole: arise, and make thy bed. And he arose immediately."

Acts 11:26: "And when he had found him, he brought him unto Antioch. And it came to pass, that a whole year they assembled themselves with the church, and taught much people. And the disciples were called Christians first in Antioch."

Acts 13:44: "And the next sabbath day came almost the whole city together to hear the word of God."

Acts 15:22: "Then pleased it the apostles and elders with the whole church, to send chosen men of their own company to Antioch with Paul and Barnabas; namely, Judas surnamed Barsabas and Silas, chief men among the brethren:"

Acts 19:29: "And the whole city was filled with confusion: and having caught Gaius and Aristarchus, men of Macedonia, Paul's companions in travel, they rushed with one accord into the theatre."

Acts 28:30: "And Paul dwelt two whole years in his own hired house, and received all that came in unto him,"

Romans 1:8: "First, I thank my God through Jesus Christ for you all, that your faith is spoken of throughout the whole world."

Romans 8:22: "For we know that the whole creation groaneth and travaileth in pain together until now."

Romans 16:23: "Gaius mine host, and of the whole church, saluteth you. Erastus the chamberlain of the city saluteth you, and Quartus a brother."

1 Corinthians 5:6: "Your glorying is not good. Know ye not that a little leaven leaveneth the whole lump?"

1 Corinthians 12:17: "If the whole body were an eye, where were the hearing? If the whole were hearing, where were the smelling?"

1 Corinthians 14:23: "If therefore the whole church be come together into one place, and all speak with tongues, and there come in those that are unlearned, or unbelievers, will they not say that ye are mad?"

Galatians 5:3: "For I testify again to every man that is circumcised, that he is a debtor to do the whole law."

Galatians 5:9: "A little leaven leaveneth the whole lump."

Ephesians 3:15: "Of whom the whole family in heaven and earth is named,"

Ephesians 4:16: "From whom the whole body fitly joined together and compacted by that which every joint supplieth, according to the effectual working in the measure of every part, maketh increase of the body unto the edifying of itself in love."

Ephesians 6:11: "Put on the whole armour of God, that ye may be able to stand against the wiles of the devil."

Ephesians 6:13: "Wherefore take unto you the whole armour of God, that ye may be able to withstand in the evil day, and having done all, to stand."

1 Thessalonians 5:23: "And the very God of peace sanctify you wholly; and I pray God your whole spirit and soul and body be preserved blameless unto the coming of our Lord Jesus Christ."

Titus 1:11: "Whose mouths must be stopped, who subvert whole houses, teaching things which they ought not, for filthy lucre's sake."

James 2:10: "For whosoever shall keep the whole law, and yet offend in one point, he is guilty of all."

James 3:2: "For in many things we offend all. If any man offend not in word, the same is a perfect man, and able also to bridle the whole body."

James 3:3: "Behold, we put bits in the horses' mouths, that they may obey us; and we turn about their whole body."

James 3:6: "And the tongue is a fire, a world of iniquity: so is the tongue among our members, that it defileth the whole body, and setteth on fire the course of nature; and it is set on fire of hell."

1 John 2:2: "And he is the propitiation for our sins: and not for our's only, but also for the sins of the whole world."

1 John 5:19: "And we know that we are of God, and the whole world lieth in wickedness."

Revelation 12:9: "And the great dragon was cast out, that old serpent, called the Devil, and Satan, which deceiveth the whole world: he was cast out into the earth, and his angels were cast out with him."

Revelation 16:14: "For they are the spirits of devils, working miracles, which go forth unto the kings of the earth and of the whole world, to gather them to the battle of that great day of God Almighty."

## **WHOLESOME**

Occurrences: 2

Proverbs 15:4: "A wholesome tongue is a tree of life: but perverseness therein is a breach in the spirit."

1 Timothy 6:3: "If any man teach otherwise, and consent not to wholesome words, even the words of our Lord Jesus Christ, and to the doctrine which is according to godliness;"

## **WHOLLY**

Occurrences: 29

Leviticus 6:22: "And the priest of his sons that is anointed in his stead shall offer it: it is a statute for ever unto the LORD; it shall be wholly burnt."

Leviticus 6:23: "For every meat offering for the priest shall be wholly burnt: it shall not be eaten."

Leviticus 19:9: "And when ye reap the harvest of your land, thou shalt not wholly reap the corners

of thy field, neither shalt thou gather the gleanings of thy harvest."

Numbers 3:9: "And thou shalt give the Levites unto Aaron and to his sons: they are wholly given unto him out of the children of Israel."

Numbers 4:6: "And shall put thereon the covering of badgers' skins, and shall spread over it a cloth wholly of blue, and shall put in the staves thereof."

Numbers 8:16: "For they are wholly given unto me from among the children of Israel; instead of such as open every womb, even instead of the firstborn of all the children of Israel, have I taken them unto me."

Numbers 32:11: "Surely none of the men that came up out of Egypt, from twenty years old and upward, shall see the land which I sware unto Abraham, unto Isaac, and unto Jacob; because they have not wholly followed me:"

Numbers 32:12: "Save Caleb the son of Jephunneh the Kenezite, and Joshua the son of Nun: for they have wholly followed the LORD."

Deuteronomy 1:36: "Save Caleb the son of Jephunneh; he shall see it, and to him will I give the land that he hath trodden upon, and to his children, because he hath wholly followed the LORD."

Joshua 14:8: "Nevertheless my brethren that went up with me made the heart of the people melt: but I wholly followed the LORD my God."

Joshua 14:9: "And Moses sware on that day, saying, Surely the land whereon thy feet have trodden shall be thine inheritance, and thy children's for ever, because thou hast wholly followed the LORD my God."

Joshua 14:14: "Hebron therefore became the inheritance of Caleb the son of Jephunneh the Kenezite unto this day, because that he wholly followed the LORD God of Israel."

Judges 17:3: "And when he had restored the eleven hundred shekels of silver to his mother, his mother said, I had wholly dedicated the silver unto the LORD from my hand for my son, to make a graven image and a molten image: now therefore I will restore it unto thee."

1 Samuel 7:9: "And Samuel took a sucking lamb, and offered it for a burnt offering wholly unto the LORD: and Samuel cried unto the LORD for Israel; and the LORD heard him."

1 Chronicles 28:21: "And, behold, the courses of the priests and the Levites, even they shall be with thee for all the service of the house of God: and there shall be with thee for all manner of workmanship every willing skilful man, for any manner of service: also the princes and all the people will be wholly at thy commandment."

Job 21:23: "One dieth in his full strength, being wholly at ease and quiet."

Isaiah 22:1: "The burden of the valley of vision. What aileth thee now, that thou art wholly gone up to the housetops?"

Jeremiah 2:21: "Yet I had planted thee a noble vine, wholly a right seed: how then art thou turned into the degenerate plant of a strange vine unto me?"

Jeremiah 6:6: "For thus hath the LORD of hosts said, Hew ye down trees, and cast a mount against Jerusalem: this is the city to be visited; she is wholly oppression in the midst of her."

Jeremiah 13:19: "The cities of the south shall be shut up, and none shall open them: Judah shall be carried away captive all of it, it shall be wholly carried away captive."

Jeremiah 42:15: "And now therefore hear the word of the LORD, ye remnant of Judah; Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; If ye wholly set your faces to enter into Egypt, and go to sojourn there;"

Jeremiah 46:28: "Fear thou not, O Jacob my servant, saith the LORD: for I am with thee; for I will make a full end of all the nations whither I have driven thee: but I will not make a full end of thee, but correct thee in measure; yet will I not leave thee wholly unpunished."

Jeremiah 50:13: "Because of the wrath of the LORD it shall not be inhabited, but it shall be wholly desolate: every one that goeth by Babylon shall be astonished, and hiss at all her plagues."

Ezekiel 11:15: "Son of man, thy brethren, even thy brethren, the men of thy kindred, and all the house of Israel wholly, are they unto whom the inhabitants of Jerusalem have said, Get you far from



the LORD: unto us is this land given in possession."

Amos 8:8: "Shall not the land tremble for this, and every one mourn that dwelleth therein? and it shall rise up wholly as a flood; and it shall be cast out and drowned, as by the flood of Egypt."

Amos 9:5: "And the Lord GOD of hosts is he that toucheth the land, and it shall melt, and all that dwell therein shall mourn: and it shall rise up wholly like a flood; and shall be drowned, as by the flood of Egypt."

Acts 17:16: "Now while Paul waited for them at Athens, his spirit was stirred in him, when he saw the city wholly given to idolatry."

1 Thessalonians 5:23: "And the very God of peace sanctify you wholly; and I pray God your whole spirit and soul and body be preserved blameless unto the coming of our Lord Jesus Christ."

1 Timothy 4:15: "Meditate upon these things; give thyself wholly to them; that thy profiting may appear to all."

## WHOM

Occurrences: 697

Genesis 2:8: "And the LORD God planted a garden eastward in Eden; and there he put the man whom he had formed."

Genesis 3:12: "And the man said, The woman whom thou gavest to be with me, she gave me of the tree, and I did eat."

Genesis 4:25: "And Adam knew his wife again; and she bare a son, and called his name Seth: For God, said she, hath appointed me another seed instead of Abel, whom Cain slew."

Genesis 6:7: "And the LORD said, I will destroy man whom I have created from the face of the earth; both man, and beast, and the creeping thing, and the fowls of the air; for it repenteth me that I have made them."

Genesis 10:14: "And Pathrusim, and Casluhim, (out of whom came Philistim,) and Caphtorim."

Genesis 15:14: "And also that nation, whom they shall serve, will I judge: and afterward shall they come out with great substance."

Genesis 21:3: "And Abraham called the name of his son that was born unto him, whom Sarah bare to him, Isaac."

Genesis 22:2: "And he said, Take now thy son, thine only son Isaac, whom thou lovest, and get thee into the land of Moriah; and offer him there for a burnt offering upon one of the mountains which I will tell thee of."

Genesis 24:3: "And I will make thee swear by the LORD, the God of heaven, and the God of the earth, that thou shalt not take a wife unto my son of the daughters of the Canaanites, among whom I dwell:"

Genesis 24:14: "And let it come to pass, that the damsel to whom I shall say, Let down thy pitcher, I pray thee, that I may drink; and she shall say, Drink, and I will give thy camels drink also: let the same be she that thou hast appointed for thy servant Isaac; and thereby shall I know that thou hast shewed kindness unto my master."

Genesis 24:40: "And he said unto me, The LORD, before whom I walk, will send his angel with thee, and prosper thy way; and thou shalt take a wife for my son of my kindred, and of my father's house:"

Genesis 24:44: "And she say to me, Both drink thou, and I will also draw for thy camels: let the same be the woman whom the LORD hath appointed out for my master's son."

Genesis 24:47: "And I asked her, and said, Whose daughter art thou? And she said, the daughter of Bethuel, Nahor's son, whom Milcah bare unto him: and I put the earring upon her face, and the bracelets upon her hands."

Genesis 25:12: "Now these are the generations of Ishmael, Abraham's son, whom Hagar the Egyptian, Sarah's handmaid, bare unto Abraham:"

Genesis 30:26: "Give me my wives and my children, for whom I have served thee, and let me go:

for thou knowest my service which I have done thee."

Genesis 41:38: "And Pharaoh said unto his servants, Can we find such a one as this is, a man in whom the Spirit of God is?"

Genesis 43:27: "And he asked them of their welfare, and said, Is your father well, the old man of whom ye spake? Is he yet alive?"

Genesis 43:29: "And he lifted up his eyes, and saw his brother Benjamin, his mother's son, and said, Is this your younger brother, of whom ye spake unto me? And he said, God be gracious unto thee, my son."

Genesis 44:10: "And he said, Now also let it be according unto your words: he with whom it is found shall be my servant; and ye shall be blameless."

Genesis 44:16: "And Judah said, What shall we say unto my lord? what shall we speak? or how shall we clear ourselves? God hath found out the iniquity of thy servants: behold, we are my lord's servants, both we, and he also with whom the cup is found."

Genesis 45:4: "And Joseph said unto his brethren, Come near to me, I pray you. And they came near. And he said, I am Joseph your brother, whom ye sold into Egypt."

Genesis 46:18: "These are the sons of Zilpah, whom Laban gave to Leah his daughter, and these she bare unto Jacob, even sixteen souls."

Genesis 48:9: "And Joseph said unto his father, They are my sons, whom God hath given me in this place. And he said, Bring them, I pray thee, unto me, and I will bless them."

Genesis 48:15: "And he blessed Joseph, and said, God, before whom my fathers Abraham and Isaac did walk, the God which fed me all my life long unto this day,"

Genesis 49:8: "Judah, thou art he whom thy brethren shall praise: thy hand shall be in the neck of thine enemies; thy father's children shall bow down before thee."

Exodus 4:13: "And he said, O my LORD, send, I pray thee, by the hand of him whom thou wilt send."

Exodus 6:5: "And I have also heard the groaning of the children of Israel, whom the Egyptians keep in bondage; and I have remembered my covenant."

Exodus 6:26: "These are that Aaron and Moses, to whom the LORD said, Bring out the children of Israel from the land of Egypt according to their armies."

Exodus 14:13: "And Moses said unto the people, Fear ye not, stand still, and see the salvation of the LORD, which he will shew to you to day: for the Egyptians whom ye have seen to day, ye shall see them again no more for ever."

Exodus 18:9: "And Jethro rejoiced for all the goodness which the LORD had done to Israel, whom he had delivered out of the hand of the Egyptians."

Exodus 22:9: "For all manner of trespass, whether it be for ox, for ass, for sheep, for raiment, or for any manner of lost thing which another challengeth to be his, the cause of both parties shall come before the judges; and whom the judges shall condemn, he shall pay double unto his neighbour."

Exodus 23:27: "I will send my fear before thee, and will destroy all the people to whom thou shalt come, and I will make all thine enemies turn their backs unto thee."

Exodus 28:3: "And thou shalt speak unto all that are wise hearted, whom I have filled with the spirit of wisdom, that they may make Aaron's garments to consecrate him, that he may minister unto me in the priest's office."

Exodus 32:13: "Remember Abraham, Isaac, and Israel, thy servants, to whom thou swarest by thine own self, and saidst unto them, I will multiply your seed as the stars of heaven, and all this land that I have spoken of will I give unto your seed, and they shall inherit it for ever."

Exodus 33:12: "And Moses said unto the LORD, See, thou sayest unto me, Bring up this people: and thou hast not let me know whom thou wilt send with me. Yet thou hast said, I know thee by name, and thou hast also found grace in my sight."

Exodus 33:19: "And he said, I will make all my goodness pass before thee, and I will proclaim the name of the LORD before thee; and will be gracious to whom I will be gracious, and will shew

mercy on whom I will shew mercy."

Exodus 35:21: "And they came, every one whose heart stirred him up, and every one whom his spirit made willing, and they brought the LORD's offering to the work of the tabernacle of the congregation, and for all his service, and for the holy garments."

Exodus 35:23: "And every man, with whom was found blue, and purple, and scarlet, and fine linen, and goats' hair, and red skins of rams, and badgers' skins, brought them."

Exodus 35:24: "Every one that did offer an offering of silver and brass brought the LORD's offering: and every man, with whom was found shittim wood for any work of the service, brought it."

Exodus 36:1: "Then wrought Bezaleel and Aholiab, and every wise hearted man, in whom the LORD put wisdom and understanding to know how to work all manner of work for the service of the sanctuary, according to all that the LORD had commanded."

Leviticus 6:5: "Or all that about which he hath sworn falsely; he shall even restore it in the principal, and shall add the fifth part more thereto, and give it unto him to whom it appertaineth, in the day of his trespass offering."

Leviticus 13:45: "And the leper in whom the plague is, his clothes shall be rent, and his head bare, and he shall put a covering upon his upper lip, and shall cry, Unclean, unclean."

Leviticus 14:32: "This is the law of him in whom is the plague of leprosy, whose hand is not able to get that which pertaineth to his cleansing."

Leviticus 15:18: "The woman also with whom man shall lie with seed of copulation, they shall both bathe themselves in water, and be unclean until the even."

Leviticus 16:32: "And the priest, whom he shall anoint, and whom he shall consecrate to minister in the priest's office in his father's stead, shall make the atonement, and shall put on the linen clothes, even the holy garments:"

Leviticus 17:7: "And they shall no more offer their sacrifices unto devils, after whom they have gone a whoring. This shall be a statute for ever unto them throughout their generations."

Leviticus 22:5: "Or whosoever toucheth any creeping thing, whereby he may be made unclean, or a man of whom he may take uncleanness, whatsoever uncleanness he hath;"

Leviticus 25:27: "Then let him count the years of the sale thereof, and restore the overplus unto the man to whom he sold it; that he may return unto his possession."

Leviticus 25:55: "For unto me the children of Israel are servants; they are my servants whom I brought forth out of the land of Egypt: I am the LORD your God."

Leviticus 26:45: "But I will for their sakes remember the covenant of their ancestors, whom I brought forth out of the land of Egypt in the sight of the heathen, that I might be their God: I am the LORD."

Leviticus 27:24: "In the year of the jubile the field shall return unto him of whom it was bought, even to him to whom the possession of the land did belong."

Numbers 3:3: "These are the names of the sons of Aaron, the priests which were anointed, whom he consecrated to minister in the priest's office."

Numbers 4:41: "These are they that were numbered of the families of the sons of Gershon, of all that might do service in the tabernacle of the congregation, whom Moses and Aaron did number according to the commandment of the LORD."

Numbers 4:45: "These be those that were numbered of the families of the sons of Merari, whom Moses and Aaron numbered according to the word of the LORD by the hand of Moses."

Numbers 4:46: "All those that were numbered of the Levites, whom Moses and Aaron and the chief of Israel numbered, after their families, and after the house of their fathers,"

Numbers 5:7: "Then they shall confess their sin which they have done: and he shall recompense his trespass with the principal thereof, and add unto it the fifth part thereof, and give it unto him against whom he hath trespassed."

Numbers 11:16: "And the LORD said unto Moses, Gather unto me seventy men of the elders of

Israel, whom thou knowest to be the elders of the people, and officers over them; and bring them unto the tabernacle of the congregation, that they may stand there with thee."

Numbers 11:21: "And Moses said, The people, among whom I am, are six hundred thousand footmen; and thou hast said, I will give them flesh, that they may eat a whole month."

Numbers 12:1: "And Miriam and Aaron spake against Moses because of the Ethiopian woman whom he had married: for he had married an Ethiopian woman."

Numbers 12:12: "Let her not be as one dead, of whom the flesh is half consumed when he cometh out of his mother's womb."

Numbers 16:5: "And he spake unto Korah and unto all his company, saying, Even to morrow the LORD will shew who are his, and who is holy; and will cause him to come near unto him: even him whom he hath chosen will he cause to come near unto him."

Numbers 16:7: "And put fire therein, and put incense in them before the LORD to morrow: and it shall be that the man whom the LORD doth choose, he shall be holy: ye take too much upon you, ye sons of Levi."

Numbers 17:5: "And it shall come to pass, that the man's rod, whom I shall choose, shall blossom: and I will make to cease from me the murmurings of the children of Israel, whereby they murmur against you."

Numbers 22:6: "Come now therefore, I pray thee, curse me this people; for they are too mighty for me: peradventure I shall prevail, that we may smite them, and that I may drive them out of the land: for I wot that he whom thou blessest is blessed, and he whom thou cursest is cursed."

Numbers 23:8: "How shall I curse, whom God hath not cursed? or how shall I defy, whom the LORD hath not defied?"

Numbers 26:5: "Reuben, the eldest son of Israel: the children of Reuben; Hanoch, of whom cometh the family of the Hanochites: of Pallu, the family of the Palluites:"

Numbers 26:59: "And the name of Amram's wife was Jochebed, the daughter of Levi, whom her mother bare to Levi in Egypt: and she bare unto Amram Aaron and Moses, and Miriam their sister."

Numbers 26:64: "But among these there was not a man of them whom Moses and Aaron the priest numbered, when they numbered the children of Israel in the wilderness of Sinai."

Numbers 27:18: "And the LORD said unto Moses, Take thee Joshua the son of Nun, a man in whom is the spirit, and lay thine hand upon him;"

Numbers 34:29: "These are they whom the LORD commanded to divide the inheritance unto the children of Israel in the land of Canaan."

Numbers 36:6: "This is the thing which the LORD doth command concerning the daughters of Zelophehad, saying, Let them marry to whom they think best; only to the family of the tribe of their father shall they marry."

Deuteronomy 4:46: "On this side Jordan, in the valley over against Bethpeor, in the land of Sihon king of the Amorites, who dwelt at Heshbon, whom Moses and the children of Israel smote, after they were come forth out of Egypt:"

Deuteronomy 7:19: "The great temptations which thine eyes saw, and the signs, and the wonders, and the mighty hand, and the stretched out arm, whereby the LORD thy God brought thee out: so shall the LORD thy God do unto all the people of whom thou art afraid."

Deuteronomy 9:2: "A people great and tall, the children of the Anakims, whom thou knowest, and of whom thou hast heard say, Who can stand before the children of Anak!"

Deuteronomy 17:15: "Thou shalt in any wise set him king over thee, whom the LORD thy God shall choose: one from among thy brethren shalt thou set king over thee: thou mayest not set a stranger over thee, which is not thy brother."

Deuteronomy 19:4: "And this is the case of the slayer, which shall flee thither, that he may live: Whoso killeth his neighbour ignorantly, whom he hated not in time past;"

Deuteronomy 19:17: "Then both the men, between whom the controversy is, shall stand before the LORD, before the priests and the judges, which shall be in those days;"

Deuteronomy 21:8: "Be merciful, O LORD, unto thy people Israel, whom thou hast redeemed, and lay not innocent blood unto thy people of Israel's charge. And the blood shall be forgiven them."

Deuteronomy 24:11: "Thou shalt stand abroad, and the man to whom thou dost lend shall bring out the pledge abroad unto thee."

Deuteronomy 28:55: "So that he will not give to any of them of the flesh of his children whom he shall eat: because he hath nothing left him in the siege, and in the straitness, wherewith thine enemies shall distress thee in all thy gates."

Deuteronomy 29:26: "For they went and served other gods, and worshipped them, gods whom they knew not, and whom he had not given unto them:"

Deuteronomy 31:4: "And the LORD shall do unto them as he did to Sihon and to Og, kings of the Amorites, and unto the land of them, whom he destroyed."

Deuteronomy 32:17: "They sacrificed unto devils, not to God; to gods whom they knew not, to new gods that came newly up, whom your fathers feared not."

Deuteronomy 32:20: "And he said, I will hide my face from them, I will see what their end shall be: for they are a very froward generation, children in whom is no faith."

Deuteronomy 32:37: "And he shall say, Where are their gods, their rock in whom they trusted,"

Deuteronomy 33:8: "And of Levi he said, Let thy Thummim and thy Urim be with thy holy one, whom thou didst prove at Massah, and with whom thou didst strive at the waters of Meribah;"

Deuteronomy 34:10: "And there arose not a prophet since in Israel like unto Moses, whom the LORD knew face to face,"

Joshua 2:10: "For we have heard how the LORD dried up the water of the Red sea for you, when ye came out of Egypt; and what ye did unto the two kings of the Amorites, that were on the other side Jordan, Sihon and Og, whom ye utterly destroyed."

Joshua 4:4: "Then Joshua called the twelve men, whom he had prepared of the children of Israel, out of every tribe a man:"

Joshua 5:6: "For the children of Israel walked forty years in the wilderness, till all the people that were men of war, which came out of Egypt, were consumed, because they obeyed not the voice of the LORD: unto whom the LORD sware that he would not shew them the land, which the LORD sware unto their fathers that he would give us, a land that floweth with milk and honey."

Joshua 5:7: "And their children, whom he raised up in their stead, them Joshua circumcised: for they were uncircumcised, because they had not circumcised them by the way."

Joshua 10:11: "And it came to pass, as they fled from before Israel, and were in the going down to Bethhoron, that the LORD cast down great stones from heaven upon them unto Azekah, and they died: they were more which died with hailstones than they whom the children of Israel slew with the sword."

Joshua 10:25: "And Joshua said unto them, Fear not, nor be dismayed, be strong and of good courage: for thus shall the LORD do to all your enemies against whom ye fight."

Joshua 13:8: "With whom the Reubenites and the Gadites have received their inheritance, which Moses gave them, beyond Jordan eastward, even as Moses the servant of the LORD gave them;"

Joshua 13:21: "And all the cities of the plain, and all the kingdom of Sihon king of the Amorites, which reigned in Heshbon, whom Moses smote with the princes of Midian, Evi, and Rekem, and Zur, and Hur, and Reba, which were dukes of Sihon, dwelling in the country."

Joshua 24:15: "And if it seem evil unto you to serve the LORD, choose you this day whom ye will serve; whether the gods which your fathers served that were on the other side of the flood, or the gods of the Amorites, in whose land ye dwell: but as for me and my house, we will serve the LORD."

Joshua 24:17: "For the LORD our God, he it is that brought us up and our fathers out of the land of Egypt, from the house of bondage, and which did those great signs in our sight, and preserved us in all the way wherein we went, and among all the people through whom we passed:"

Judges 4:22: "And, behold, as Barak pursued Sisera, Jael came out to meet him, and said unto him,

Come, and I will shew thee the man whom thou seekest. And when he came into her tent, behold, Sisera lay dead, and the nail was in his temples."

Judges 7:4: "And the LORD said unto Gideon, The people are yet too many; bring them down unto the water, and I will try them for thee there: and it shall be, that of whom I say unto thee, This shall go with thee, the same shall go with thee; and of whomsoever I say unto thee, This shall not go with thee, the same shall not go."

Judges 8:15: "And he came unto the men of Succoth, and said, Behold Zebah and Zalmunna, with whom ye did upbraid me, saying, Are the hands of Zebah and Zalmunna now in thine hand, that we should give bread unto thy men that are weary?"

Judges 8:18: "Then said he unto Zebah and Zalmunna, What manner of men were they whom ye slew at Tabor? And they answered, As thou art, so were they; each one resembled the children of a king."

Judges 12:9: "And he had thirty sons, and thirty daughters, whom he sent abroad, and took in thirty daughters from abroad for his sons. And he judged Israel seven years."

Judges 14:20: "But Samson's wife was given to his companion, whom he had used as his friend."

Judges 21:23: "And the children of Benjamin did so, and took them wives, according to their number, of them that danced, whom they caught: and they went and returned unto their inheritance, and repaired the cities, and dwelt in them."

Ruth 2:19: "And her mother in law said unto her, Where hast thou gleaned to day? and where wroughtest thou? blessed be he that did take knowledge of thee. And she shewed her mother in law with whom she had wrought, and said, The man's name with whom I wrought to day is Boaz."

Ruth 4:1: "Then went Boaz up to the gate, and sat him down there: and, behold, the kinsman of whom Boaz spake came by; unto whom he said, Ho, such a one! turn aside, sit down here. And he turned aside, and sat down."

Ruth 4:12: "And let thy house be like the house of Pharez, whom Tamar bare unto Judah, of the seed which the LORD shall give thee of this young woman."

1 Samuel 2:33: "And the man of thine, whom I shall not cut off from mine altar, shall be to consume thine eyes, and to grieve thine heart: and all the increase of thine house shall die in the flower of their age."

1 Samuel 6:20: "And the men of Bethshemesh said, Who is able to stand before this holy LORD God? and to whom shall he go up from us?"

1 Samuel 9:17: "And when Samuel saw Saul, the LORD said unto him, Behold the man whom I spake to thee of! this same shall reign over my people."

1 Samuel 9:20: "And as for thine asses that were lost three days ago, set not thy mind on them; for they are found. And on whom is all the desire of Israel? Is it not on thee, and on all thy father's house?"

1 Samuel 10:24: "And Samuel said to all the people, See ye him whom the LORD hath chosen, that there is none like him among all the people? And all the people shouted, and said, God save the king."

1 Samuel 12:3: "Behold, here I am: witness against me before the LORD, and before his anointed: whose ox have I taken? or whose ass have I taken? or whom have I defrauded? whom have I oppressed? or of whose hand have I received any bribe to blind mine eyes therewith? and I will restore it you."

1 Samuel 12:13: "Now therefore behold the king whom ye have chosen, and whom ye have desired! and, behold, the LORD hath set a king over you."

1 Samuel 16:3: "And call Jesse to the sacrifice, and I will shew thee what thou shalt do: and thou shalt anoint unto me him whom I name unto thee."

1 Samuel 17:28: "And Eliab his eldest brother heard when he spake unto the men; and Eliab's anger was kindled against David, and he said, Why camest thou down hither? and with whom hast thou left those few sheep in the wilderness? I know thy pride, and the naughtiness of thine heart; for thou

art come down that thou mightest see the battle."

1 Samuel 17:45: "Then said David to the Philistine, Thou comest to me with a sword, and with a spear, and with a shield: but I come to thee in the name of the LORD of hosts, the God of the armies of Israel, whom thou hast defied."

1 Samuel 21:9: "And the priest said, The sword of Goliath the Philistine, whom thou slewest in the valley of Elah, behold, it is here wrapped in a cloth behind the ephod: if thou wilt take that, take it: for there is no other save that here. And David said, There is none like that; give it me."

1 Samuel 24:14: "After whom is the king of Israel come out? after whom dost thou pursue? after a dead dog, after a flea."

1 Samuel 25:11: "Shall I then take my bread, and my water, and my flesh that I have killed for my shearers, and give it unto men, whom I know not whence they be?"

1 Samuel 25:25: "Let not my lord, I pray thee, regard this man of Belial, even Nabal: for as his name is, so is he; Nabal is his name, and folly is with him: but I thine handmaid saw not the young men of my lord, whom thou didst send."

1 Samuel 28:8: "And Saul disguised himself, and put on other raiment, and he went, and two men with him, and they came to the woman by night: and he said, I pray thee, divine unto me by the familiar spirit, and bring me him up, whom I shall name unto thee."

1 Samuel 28:11: "Then said the woman, Whom shall I bring up unto thee? And he said, Bring me up Samuel."

1 Samuel 29:5: "Is not this David, of whom they sang one to another in dances, saying, Saul slew his thousands, and David his ten thousands?"

1 Samuel 30:13: "And David said unto him, To whom belongest thou? and whence art thou? And he said, I am a young man of Egypt, servant to an Amalekite; and my master left me, because three days ago I fell sick."

1 Samuel 30:21: "And David came to the two hundred men, which were so faint that they could not follow David, whom they had made also to abide at the brook Besor: and they went forth to meet David, and to meet the people that were with him: and when David came near to the people, he saluted them."

2 Samuel 7:7: "In all the places wherein I have walked with all the children of Israel spake I a word with any of the tribes of Israel, whom I commanded to feed my people Israel, saying, Why build ye not me an house of cedar?"

2 Samuel 7:15: "But my mercy shall not depart away from him, as I took it from Saul, whom I put away before thee."

2 Samuel 7:23: "And what one nation in the earth is like thy people, even like Israel, whom God went to redeem for a people to himself, and to make him a name, and to do for you great things and terrible, for thy land, before thy people, which thou redeemedst to thee from Egypt, from the nations and their gods?"

2 Samuel 14:7: "And, behold, the whole family is risen against thine handmaid, and they said, Deliver him that smote his brother, that we may kill him, for the life of his brother whom he slew; and we will destroy the heir also: and so they shall quench my coal which is left, and shall not leave to my husband neither name nor remainder upon the earth."

2 Samuel 15:33: "Unto whom David said, If thou passest on with me, then thou shalt be a burden unto me:"

2 Samuel 16:18: "And Hushai said unto Absalom, Nay; but whom the LORD, and this people, and all the men of Israel, choose, his will I be, and with him will I abide."

2 Samuel 16:19: "And again, whom should I serve? should I not serve in the presence of his son? as I have served in thy father's presence, so will I be in thy presence."

2 Samuel 17:3: "And I will bring back all the people unto thee: the man whom thou seekest is as if all returned: so all the people shall be in peace."

2 Samuel 19:10: "And Absalom, whom we anointed over us, is dead in battle. Now therefore why

speak ye not a word of bringing the king back?"

2 Samuel 20:3: "And David came to his house at Jerusalem; and the king took the ten women his concubines, whom he had left to keep the house, and put them in ward, and fed them, but went not in unto them. So they were shut up unto the day of their death, living in widowhood."

2 Samuel 21:6: "Let seven men of his sons be delivered unto us, and we will hang them up unto the LORD in Gibeah of Saul, whom the LORD did choose. And the king said, I will give them."

2 Samuel 21:8: "But the king took the two sons of Rizpah the daughter of Aiah, whom she bare unto Saul, Armoni and Mephibosheth; and the five sons of Michal the daughter of Saul, whom she brought up for Adriel the son of Barzillai the Meholathite:"

2 Samuel 23:8: "These be the names of the mighty men whom David had: The Tachmonite that sat in the seat, chief among the captains; the same was Adino the Eznite: he lift up his spear against eight hundred, whom he slew at one time."

1 Kings 2:5: "Moreover thou knowest also what Joab the son of Zeruiah did to me, and what he did to the two captains of the hosts of Israel, unto Abner the son of Ner, and unto Amasa the son of Jether, whom he slew, and shed the blood of war in peace, and put the blood of war upon his girdle that was about his loins, and in his shoes that were on his feet."

1 Kings 5:5: "And, behold, I purpose to build an house unto the name of the LORD my God, as the LORD spake unto David my father, saying, Thy son, whom I will set upon thy throne in thy room, he shall build an house unto my name."

1 Kings 7:8: "And his house where he dwelt had another court within the porch, which was of the like work. Solomon made also an house for Pharaoh's daughter, whom he had taken to wife, like unto this porch."

1 Kings 9:21: "Their children that were left after them in the land, whom the children of Israel also were not able utterly to destroy, upon those did Solomon levy a tribute of bondservice unto this day."

1 Kings 10:26: "And Solomon gathered together chariots and horsemen: and he had a thousand and four hundred chariots, and twelve thousand horsemen, whom he bestowed in the cities for chariots, and with the king at Jerusalem."

1 Kings 11:20: "And the sister of Tahpenes bare him Genubath his son, whom Tahpenes weaned in Pharaoh's house: and Genubath was in Pharaoh's household among the sons of Pharaoh."

1 Kings 11:34: "Howbeit I will not take the whole kingdom out of his hand: but I will make him prince all the days of his life for David my servant's sake, whom I chose, because he kept my commandments and my statutes:"

1 Kings 13:23: "And it came to pass, after he had eaten bread, and after he had drunk, that he saddled for him the ass, to wit, for the prophet whom he had brought back."

1 Kings 17:1: "And Elijah the Tishbite, who was of the inhabitants of Gilead, said unto Ahab, As the LORD God of Israel liveth, before whom I stand, there shall not be dew nor rain these years, but according to my word."

1 Kings 17:20: "And he cried unto the LORD, and said, O LORD my God, hast thou also brought evil upon the widow with whom I sojourn, by slaying her son?"

1 Kings 18:15: "And Elijah said, As the LORD of hosts liveth, before whom I stand, I will surely shew myself unto him to day."

1 Kings 18:31: "And Elijah took twelve stones, according to the number of the tribes of the sons of Jacob, unto whom the word of the LORD came, saying, Israel shall be thy name:"

1 Kings 20:14: "And Ahab said, By whom? And he said, Thus saith the LORD, Even by the young men of the princes of the provinces. Then he said, Who shall order the battle? And he answered, Thou."

1 Kings 20:42: "And he said unto him, Thus saith the LORD, Because thou hast let go out of thy hand a man whom I appointed to utter destruction, therefore thy life shall go for his life, and thy people for his people."



1 Kings 21:25: "But there was none like unto Ahab, which did sell himself to work wickedness in the sight of the LORD, whom Jezebel his wife stirred up."

1 Kings 21:26: "And he did very abominably in following idols, according to all things as did the Amorites, whom the LORD cast out before the children of Israel."

1 Kings 22:8: "And the king of Israel said unto Jehoshaphat, There is yet one man, Micaiah the son of Imlah, by whom we may enquire of the LORD: but I hate him; for he doth not prophesy good concerning me, but evil. And Jehoshaphat said, Let not the king say so."

2 Kings 3:14: "And Elisha said, As the LORD of hosts liveth, before whom I stand, surely, were it not that I regard the presence of Jehoshaphat the king of Judah, I would not look toward thee, nor see thee."

2 Kings 5:16: "But he said, As the LORD liveth, before whom I stand, I will receive none. And he urged him to take it; but he refused."

2 Kings 6:19: "And Elisha said unto them, This is not the way, neither is this the city: follow me, and I will bring you to the man whom ye seek. But he led them to Samaria."

2 Kings 6:22: "And he answered, Thou shalt not smite them: wouldest thou smite those whom thou hast taken captive with thy sword and with thy bow? set bread and water before them, that they may eat and drink, and go to their master."

2 Kings 8:5: "And it came to pass, as he was telling the king how he had restored a dead body to life, that, behold, the woman, whose son he had restored to life, cried to the king for her house and for her land. And Gehazi said, My lord, O king, this is the woman, and this is her son, whom Elisha restored to life."

2 Kings 10:24: "And when they went in to offer sacrifices and burnt offerings, Jehu appointed fourscore men without, and said, If any of the men whom I have brought into your hands escape, he that letteth him go, his life shall be for the life of him."

2 Kings 16:3: "But he walked in the way of the kings of Israel, yea, and made his son to pass through the fire, according to the abominations of the heathen, whom the LORD cast out from before the children of Israel."

2 Kings 17:8: "And walked in the statutes of the heathen, whom the LORD cast out from before the children of Israel, and of the kings of Israel, which they had made."

2 Kings 17:11: "And there they burnt incense in all the high places, as did the heathen whom the LORD carried away before them; and wrought wicked things to provoke the LORD to anger:"

2 Kings 17:15: "And they rejected his statutes, and his covenant that he made with their fathers, and his testimonies which he testified against them; and they followed vanity, and became vain, and went after the heathen that were round about them, concerning whom the LORD had charged them, that they should not do like them."

2 Kings 17:27: "Then the king of Assyria commanded, saying, Carry thither one of the priests whom ye brought from thence; and let them go and dwell there, and let him teach them the manner of the God of the land."

2 Kings 17:28: "Then one of the priests whom they had carried away from Samaria came and dwelt in Bethel, and taught them how they should fear the LORD."

2 Kings 17:33: "They feared the LORD, and served their own gods, after the manner of the nations whom they carried away from thence."

2 Kings 17:34: "Unto this day they do after the former manners: they fear not the LORD, neither do they after their statutes, or after their ordinances, or after the law and commandment which the LORD commanded the children of Jacob, whom he named Israel;"

2 Kings 17:35: "With whom the LORD had made a covenant, and charged them, saying, Ye shall not fear other gods, nor bow yourselves to them, nor serve them, nor sacrifice to them:"

2 Kings 18:20: "Thou sayest, (but they are but vain words,) I have counsel and strength for the war. Now on whom dost thou trust, that thou rebellest against me?"

2 Kings 19:4: "It may be the LORD thy God will hear all the words of Rabshakeh, whom the king

of Assyria his master hath sent to reproach the living God; and will reprove the words which the LORD thy God hath heard: wherefore lift up thy prayer for the remnant that are left."

2 Kings 19:10: "Thus shall ye speak to Hezekiah king of Judah, saying, Let not thy God in whom thou trustest deceive thee, saying, Jerusalem shall not be delivered into the hand of the king of Assyria."

2 Kings 19:22: "Whom hast thou reproached and blasphemed? and against whom hast thou exalted thy voice, and lifted up thine eyes on high? even against the Holy One of Israel."

2 Kings 21:2: "And he did that which was evil in the sight of the LORD, after the abominations of the heathen, whom the LORD cast out before the children of Israel."

2 Kings 21:9: "But they hearkened not: and Manasseh seduced them to do more evil than did the nations whom the LORD destroyed before the children of Israel."

2 Kings 23:5: "And he put down the idolatrous priests, whom the kings of Judah had ordained to burn incense in the high places in the cities of Judah, and in the places round about Jerusalem; them also that burned incense unto Baal, to the sun, and to the moon, and to the planets, and to all the host of heaven."

2 Kings 25:22: "And as for the people that remained in the land of Judah, whom Nebuchadnezzar king of Babylon had left, even over them he made Gedaliah the son of Ahikam, the son of Shaphan, ruler."

1 Chronicles 1:12: "And Pathrusim, and Casluhim, (of whom came the Philistines,) and Caphthorim."

1 Chronicles 2:21: "And afterward Hezron went in to the daughter of Machir the father of Gilead, whom he married when he was threescore years old; and she bare him Segub."

1 Chronicles 5:6: "Beerah his son, whom Tilgathpilneser king of Assyria carried away captive: he was prince of the Reubenites."

1 Chronicles 5:25: "And they transgressed against the God of their fathers, and went a whoring after the gods of the people of the land, whom God destroyed before them."

1 Chronicles 6:31: "And these are they whom David set over the service of song in the house of the LORD, after that the ark had rest."

1 Chronicles 7:14: "The sons of Manasseh; Ashriel, whom she bare: (but his concubine the Aramitess bare Machir the father of Gilead:"

1 Chronicles 7:21: "And Zabad his son, and Shuthelah his son, and Ezer, and Elead, whom the men of Gath that were born in that land slew, because they came down to take away their cattle."

1 Chronicles 9:22: "All these which were chosen to be porters in the gates were two hundred and twelve. These were reckoned by their genealogy in their villages, whom David and Samuel the seer did ordain in their set office."

1 Chronicles 11:10: "These also are the chief of the mighty men whom David had, who strengthened themselves with him in his kingdom, and with all Israel, to make him king, according to the word of the LORD concerning Israel."

1 Chronicles 11:11: "And this is the number of the mighty men whom David had; Jashobeam, an Hachmonite, the chief of the captains: he lifted up his spear against three hundred slain by him at one time."

1 Chronicles 17:6: "Wheresoever I have walked with all Israel, spake I a word to any of the judges of Israel, whom I commanded to feed my people, saying, Why have ye not built me an house of cedars?"

1 Chronicles 17:21: "And what one nation in the earth is like thy people Israel, whom God went to redeem to be his own people, to make thee a name of greatness and terribleness, by driving out nations from before thy people whom thou hast redeemed out of Egypt?"

1 Chronicles 26:32: "And his brethren, men of valour, were two thousand and seven hundred chief fathers, whom king David made rulers over the Reubenites, the Gadites, and the half tribe of Manasseh, for every matter pertaining to God, and affairs of the king."

1 Chronicles 29:1: "Furthermore David the king said unto all the congregation, Solomon my son, whom alone God hath chosen, is yet young and tender, and the work is great: for the palace is not for man, but for the LORD God."

1 Chronicles 29:8: "And they with whom precious stones were found gave them to the treasure of the house of the LORD, by the hand of Jehiel the Gershonite."

2 Chronicles 1:11: "And God said to Solomon, Because this was in thine heart, and thou hast not asked riches, wealth, or honour, nor the life of thine enemies, neither yet hast asked long life; but hast asked wisdom and knowledge for thyself, that thou mayest judge my people, over whom I have made thee king:"

2 Chronicles 2:7: "Send me now therefore a man cunning to work in gold, and in silver, and in brass, and in iron, and in purple, and crimson, and blue, and that can skill to grave with the cunning men that are with me in Judah and in Jerusalem, whom David my father did provide."

2 Chronicles 8:8: "But of their children, who were left after them in the land, whom the children of Israel consumed not, them did Solomon make to pay tribute until this day."

2 Chronicles 9:25: "And Solomon had four thousand stalls for horses and chariots, and twelve thousand horsemen; whom he bestowed in the chariot cities, and with the king at Jerusalem."

2 Chronicles 17:19: "These waited on the king, beside those whom the king put in the fenced cities throughout all Judah."

2 Chronicles 18:7: "And the king of Israel said unto Jehoshaphat, There is yet one man, by whom we may enquire of the LORD: but I hate him; for he never prophesied good unto me, but always evil: the same is Micaiah the son of Imla. And Jehoshaphat said, Let not the king say so."

2 Chronicles 20:10: "And now, behold, the children of Ammon and Moab and mount Seir, whom thou wouldest not let Israel invade, when they came out of the land of Egypt, but they turned from them, and destroyed them not;"

2 Chronicles 22:7: "And the destruction of Ahaziah was of God by coming to Joram: for when he was come, he went out with Jehoram against Jehu the son of Nimshi, whom the LORD had anointed to cut off the house of Ahab."

2 Chronicles 23:18: "Also Jehoiada appointed the offices of the house of the LORD by the hand of the priests the Levites, whom David had distributed in the house of the LORD, to offer the burnt offerings of the LORD, as it is written in the law of Moses, with rejoicing and with singing, as it was ordained by David."

2 Chronicles 28:3: "Moreover he burnt incense in the valley of the son of Hinnom, and burnt his children in the fire, after the abominations of the heathen whom the LORD had cast out before the children of Israel."

2 Chronicles 33:2: "But did that which was evil in the sight of the LORD, like unto the abominations of the heathen, whom the LORD had cast out before the children of Israel."

2 Chronicles 33:9: "So Manasseh made Judah and the inhabitants of Jerusalem to err, and to do worse than the heathen, whom the LORD had destroyed before the children of Israel."

Ezra 2:1: "Now these are the children of the province that went up out of the captivity, of those which had been carried away, whom Nebuchadnezzar the king of Babylon had carried away unto Babylon, and came again unto Jerusalem and Judah, every one unto his city;"

Ezra 2:65: "Beside their servants and their maids, of whom there were seven thousand three hundred thirty and seven: and there were among them two hundred singing men and singing women."

Ezra 4:10: "And the rest of the nations whom the great and noble Asnapper brought over, and set in the cities of Samaria, and the rest that are on this side the river, and at such a time."

Ezra 5:14: "And the vessels also of gold and silver of the house of God, which Nebuchadnezzar took out of the temple that was in Jerusalem, and brought them into the temple of Babylon, those did Cyrus the king take out of the temple of Babylon, and they were delivered unto one, whose name was Sheshbazzar, whom he had made governor;"

Ezra 8:20: "Also of the Nethinims, whom David and the princes had appointed for the service of the Levites, two hundred and twenty Nethinims: all of them were expressed by name."

Ezra 10:44: "All these had taken strange wives: and some of them had wives by whom they had children."

Nehemiah 1:10: "Now these are thy servants and thy people, whom thou hast redeemed by thy great power, and by thy strong hand."

Nehemiah 7:6: "These are the children of the province, that went up out of the captivity, of those that had been carried away, whom Nebuchadnezzar the king of Babylon had carried away, and came again to Jerusalem and to Judah, every one unto his city;"

Nehemiah 7:67: "Beside their manservants and their maidservants, of whom there were seven thousand three hundred thirty and seven: and they had two hundred forty and five singing men and singing women."

Nehemiah 8:10: "Then he said unto them, Go your way, eat the fat, and drink the sweet, and send portions unto them for whom nothing is prepared: for this day is holy unto our LORD: neither be ye sorry; for the joy of the LORD is your strength."

Nehemiah 9:37: "And it yieldeth much increase unto the kings whom thou hast set over us because of our sins: also they have dominion over our bodies, and over our cattle, at their pleasure, and we are in great distress."

Esther 2:6: "Who had been carried away from Jerusalem with the captivity which had been carried away with Jeconiah king of Judah, whom Nebuchadnezzar the king of Babylon had carried away."

Esther 2:7: "And he brought up Hadassah, that is, Esther, his uncle's daughter: for she had neither father nor mother, and the maid was fair and beautiful; whom Mordecai, when her father and mother were dead, took for his own daughter."

Esther 4:5: "Then called Esther for Hatach, one of the king's chamberlains, whom he had appointed to attend upon her, and gave him a commandment to Mordecai, to know what it was, and why it was."

Esther 4:11: "All the king's servants, and the people of the king's provinces, do know, that whosoever, whether man or women, shall come unto the king into the inner court, who is not called, there is one law of his to put him to death, except such to whom the king shall hold out the golden sceptre, that he may live: but I have not been called to come in unto the king these thirty days."

Esther 6:6: "So Haman came in. And the king said unto him, What shall be done unto the man whom the king delighteth to honour? Now Haman thought in his heart, To whom would the king delight to do honour more than to myself?"

Esther 6:7: "And Haman answered the king, For the man whom the king delighteth to honour,"

Esther 6:9: "And let this apparel and horse be delivered to the hand of one of the king's most noble princes, that they may array the man withal whom the king delighteth to honour, and bring him on horseback through the street of the city, and proclaim before him, Thus shall it be done to the man whom the king delighteth to honour."

Esther 6:11: "Then took Haman the apparel and the horse, and arrayed Mordecai, and brought him on horseback through the street of the city, and proclaimed before him, Thus shall it be done unto the man whom the king delighteth to honour."

Esther 6:13: "And Haman told Zeresh his wife and all his friends every thing that had befallen him. Then said his wise men and Zeresh his wife unto him, If Mordecai be of the seed of the Jews, before whom thou hast begun to fall, thou shalt not prevail against him, but shalt surely fall before him."

Job 3:23: "Why is light given to a man whose way is hid, and whom God hath hedged in?"

Job 5:17: "Behold, happy is the man whom God correcteth: therefore despise not thou the chastening of the Almighty:"

Job 9:15: "Whom, though I were righteous, yet would I not answer, but I would make supplication to my judge."

Job 15:19: "Unto whom alone the earth was given, and no stranger passed among them."

Job 19:19: "All my inward friends abhorred me: and they whom I loved are turned against me."

Job 19:27: "Whom I shall see for myself, and mine eyes shall behold, and not another; though my reins be consumed within me."

Job 25:3: "Is there any number of his armies? and upon whom doth not his light arise?"

Job 26:4: "To whom hast thou uttered words? and whose spirit came from thee?"

Job 30:2: "Yea, whereto might the strength of their hands profit me, in whom old age was perished?"

Psalms 10:3: "For the wicked boasteth of his heart's desire, and blesseth the covetous, whom the LORD abhorreth."

Psalms 16:3: "But to the saints that are in the earth, and to the excellent, in whom is all my delight."

Psalms 18:2: "The LORD is my rock, and my fortress, and my deliverer; my God, my strength, in whom I will trust; my buckler, and the horn of my salvation, and my high tower."

Psalms 18:43: "Thou hast delivered me from the strivings of the people; and thou hast made me the head of the heathen: a people whom I have not known shall serve me."

Psalms 27:1: "The LORD is my light and my salvation; whom shall I fear? the LORD is the strength of my life; of whom shall I be afraid?"

Psalms 32:2: "Blessed is the man unto whom the LORD imputeth not iniquity, and in whose spirit there is no guile."

Psalms 33:12: "Blessed is the nation whose God is the LORD; and the people whom he hath chosen for his own inheritance."

Psalms 41:9: "Yea, mine own familiar friend, in whom I trusted, which did eat of my bread, hath lifted up his heel against me."

Psalms 45:16: "Instead of thy fathers shall be thy children, whom thou mayest make princes in all the earth."

Psalms 47:4: "He shall choose our inheritance for us, the excellency of Jacob whom he loved. Selah."

Psalms 65:4: "Blessed is the man whom thou chooseth, and causeth to approach unto thee, that he may dwell in thy courts: we shall be satisfied with the goodness of thy house, even of thy holy temple."

Psalms 69:26: "For they persecute him whom thou hast smitten; and they talk to the grief of those whom thou hast wounded."

Psalms 73:25: "Whom have I in heaven but thee? and there is none upon earth that I desire beside thee."

Psalms 80:17: "Let thy hand be upon the man of thy right hand, upon the son of man whom thou madest strong for thyself."

Psalms 86:9: "All nations whom thou hast made shall come and worship before thee, O Lord; and shall glorify thy name."

Psalms 88:5: "Free among the dead, like the slain that lie in the grave, whom thou rememberest no more: and they are cut off from thy hand."

Psalms 89:21: "With whom my hand shall be established: mine arm also shall strengthen him."

Psalms 94:1: "O Lord God, to whom vengeance belongeth; O God, to whom vengeance belongeth, shew thyself."

Psalms 94:12: "Blessed is the man whom thou chastenest, O LORD, and teachest him out of thy law;"

Psalms 95:11: "Unto whom I swear in my wrath that they should not enter into my rest."

Psalms 104:26: "There go the ships: there is that leviathan, whom thou hast made to play therein."

Psalms 105:26: "He sent Moses his servant; and Aaron whom he had chosen."

Psalms 106:34: "They did not destroy the nations, concerning whom the LORD commanded them:"

Psalms 106:38: "And shed innocent blood, even the blood of their sons and of their daughters, whom they sacrificed unto the idols of Canaan: and the land was polluted with blood."

Psalms 107:2: "Let the redeemed of the LORD say so, whom he hath redeemed from the hand of the enemy;"

Psalms 144:2: "My goodness, and my fortress; my high tower, and my deliverer; my shield, and he in whom I trust; who subdueth my people under me."

Psalms 146:3: "Put not your trust in princes, nor in the son of man, in whom there is no help."

Proverbs 3:12: "For whom the LORD loveth he correcteth; even as a father the son in whom he delighteth."

Proverbs 3:27: "Withhold not good from them to whom it is due, when it is in the power of thine hand to do it."

Proverbs 25:7: "For better it is that it be said unto thee, Come up hither; than that thou shouldest be put lower in the presence of the prince whom thine eyes have seen."

Proverbs 30:31: "A greyhound; an he goat also; and a king, against whom there is no rising up."

Ecclesiastes 4:8: "There is one alone, and there is not a second; yea, he hath neither child nor brother: yet is there no end of all his labour; neither is his eye satisfied with riches; neither saith he, For whom do I labour, and bereave my soul of good? This is also vanity, yea, it is a sore travail."

Ecclesiastes 5:19: "Every man also to whom God hath given riches and wealth, and hath given him power to eat thereof, and to take his portion, and to rejoice in his labour; this is the gift of God."

Ecclesiastes 6:2: "A man to whom God hath given riches, wealth, and honour, so that he wanteth nothing for his soul of all that he desireth, yet God giveth him not power to eat thereof, but a stranger eateth it: this is vanity, and it is an evil disease."

Ecclesiastes 8:14: "There is a vanity which is done upon the earth; that there be just men, unto whom it happeneth according to the work of the wicked; again, there be wicked men, to whom it happeneth according to the work of the righteous: I said that this also is vanity."

Ecclesiastes 9:9: "Live joyfully with the wife whom thou lovest all the days of the life of thy vanity, which he hath given thee under the sun, all the days of thy vanity: for that is thy portion in this life, and in thy labour which thou takest under the sun."

Song of Solomon 1:7: "Tell me, O thou whom my soul loveth, where thou feedest, where thou makest thy flock to rest at noon: for why should I be as one that turneth aside by the flocks of thy companions?"

Song of Solomon 3:1: "By night on my bed I sought him whom my soul loveth: I sought him, but I found him not."

Song of Solomon 3:2: "I will rise now, and go about the city in the streets, and in the broad ways I will seek him whom my soul loveth: I sought him, but I found him not."

Song of Solomon 3:3: "The watchmen that go about the city found me: to whom I said, Saw ye him whom my soul loveth?"

Song of Solomon 3:4: "It was but a little that I passed from them, but I found him whom my soul loveth: I held him, and would not let him go, until I had brought him into my mother's house, and into the chamber of her that conceived me."

Isaiah 6:8: "Also I heard the voice of the Lord, saying, Whom shall I send, and who will go for us? Then said I, Here am I; send me."

Isaiah 8:12: "Say ye not, A confederacy, to all them to whom this people shall say, A confederacy; neither fear ye their fear, nor be afraid."

Isaiah 8:18: "Behold, I and the children whom the LORD hath given me are for signs and for wonders in Israel from the LORD of hosts, which dwelleth in mount Zion."

Isaiah 10:3: "And what will ye do in the day of visitation, and in the desolation which shall come from far? to whom will ye flee for help? and where will ye leave your glory?"

Isaiah 19:25: "Whom the LORD of hosts shall bless, saying, Blessed be Egypt my people, and Assyria the work of my hands, and Israel mine inheritance."

Isaiah 22:16: "What hast thou here? and whom hast thou here, that thou hast hewed thee out a sepulchre here, as he that heweth him out a sepulchre on high, and that graveth an habitation for

himself in a rock?"

Isaiah 23:2: "Be still, ye inhabitants of the isle; thou whom the merchants of Zidon, that pass over the sea, have replenished."

Isaiah 28:9: "Whom shall he teach knowledge? and whom shall he make to understand doctrine? them that are weaned from the milk, and drawn from the breasts."

Isaiah 28:12: "To whom he said, This is the rest wherewith ye may cause the weary to rest; and this is the refreshing: yet they would not hear."

Isaiah 31:6: "Turn ye unto him from whom the children of Israel have deeply revolted."

Isaiah 36:5: "I say, sayest thou, (but they are but vain words) I have counsel and strength for war: now on whom dost thou trust, that thou rebellest against me?"

Isaiah 37:4: "It may be the LORD thy God will hear the words of Rabshakeh, whom the king of Assyria his master hath sent to reproach the living God, and will reprove the words which the LORD thy God hath heard: wherefore lift up thy prayer for the remnant that is left."

Isaiah 37:10: "Thus shall ye speak to Hezekiah king of Judah, saying, Let not thy God, in whom thou trustest, deceive thee, saying, Jerusalem shall not be given into the hand of the king of Assyria."

Isaiah 37:23: "Whom hast thou reproached and blasphemed? and against whom hast thou exalted thy voice, and lifted up thine eyes on high? even against the Holy One of Israel."

Isaiah 40:14: "With whom took he counsel, and who instructed him, and taught him in the path of judgment, and taught him knowledge, and shewed to him the way of understanding?"

Isaiah 40:18: "To whom then will ye liken God? or what likeness will ye compare unto him?"

Isaiah 40:25: "To whom then will ye liken me, or shall I be equal? saith the Holy One."

Isaiah 41:8: "But thou, Israel, art my servant, Jacob whom I have chosen, the seed of Abraham my friend."

Isaiah 41:9: "Thou whom I have taken from the ends of the earth, and called thee from the chief men thereof, and said unto thee, Thou art my servant; I have chosen thee, and not cast thee away."

Isaiah 42:1: "Behold my servant, whom I uphold; mine elect, in whom my soul delighteth; I have put my spirit upon him: he shall bring forth judgment to the Gentiles."

Isaiah 42:24: "Who gave Jacob for a spoil, and Israel to the robbers? did not the LORD, he against whom we have sinned? for they would not walk in his ways, neither were they obedient unto his law."

Isaiah 43:10: "Ye are my witnesses, saith the LORD, and my servant whom I have chosen: that ye may know and believe me, and understand that I am he: before me there was no God formed, neither shall there be after me."

Isaiah 44:1: "Yet now hear, O Jacob my servant; and Israel, whom I have chosen:"

Isaiah 44:2: "Thus saith the LORD that made thee, and formed thee from the womb, which will help thee; Fear not, O Jacob, my servant; and thou, Jesurun, whom I have chosen."

Isaiah 46:5: "To whom will ye liken me, and make me equal, and compare me, that we may be like?"

Isaiah 47:15: "Thus shall they be unto thee with whom thou hast laboured, even thy merchants, from thy youth: they shall wander every one to his quarter; none shall save thee."

Isaiah 49:3: "And said unto me, Thou art my servant, O Israel, in whom I will be glorified."

Isaiah 49:7: "Thus saith the LORD, the Redeemer of Israel, and his Holy One, to him whom man despiseth, to him whom the nation abhorreth, to a servant of rulers, Kings shall see and arise, princes also shall worship, because of the LORD that is faithful, and the Holy One of Israel, and he shall choose thee."

Isaiah 50:1: "Thus saith the LORD, Where is the bill of your mother's divorcement, whom I have put away? or which of my creditors is it to whom I have sold you? Behold, for your iniquities have ye sold yourselves, and for your transgressions is your mother put away."

Isaiah 51:18: "There is none to guide her among all the sons whom she hath brought forth; neither is

there any that taketh her by the hand of all the sons that she hath brought up."

Isaiah 51:19: "These two things are come unto thee; who shall be sorry for thee? desolation, and destruction, and the famine, and the sword: by whom shall I comfort thee?"

Isaiah 53:1: "Who hath believed our report? and to whom is the arm of the LORD revealed?"

Isaiah 57:4: "Against whom do ye sport yourselves? against whom make ye a wide mouth, and draw out the tongue? are ye not children of transgression, a seed of falsehood?"

Isaiah 57:11: "And of whom hast thou been afraid or feared, that thou hast lied, and hast not remembered me, nor laid it to thy heart? have not I held my peace even of old, and thou fearest me not?"

Isaiah 66:13: "As one whom his mother comforteth, so will I comfort you; and ye shall be comforted in Jerusalem."

Jeremiah 1:2: "To whom the word of the LORD came in the days of Josiah the son of Amon king of Judah, in the thirteenth year of his reign."

Jeremiah 6:10: "To whom shall I speak, and give warning, that they may hear? behold, their ear is uncircumcised, and they cannot hearken: behold, the word of the LORD is unto them a reproach; they have no delight in it."

Jeremiah 7:9: "Will ye steal, murder, and commit adultery, and swear falsely, and burn incense unto Baal, and walk after other gods whom ye know not;"

Jeremiah 8:2: "And they shall spread them before the sun, and the moon, and all the host of heaven, whom they have loved, and whom they have served, and after whom they have walked, and whom they have sought, and whom they have worshipped: they shall not be gathered, nor be buried; they shall be for dung upon the face of the earth."

Jeremiah 9:12: "Who is the wise man, that may understand this? and who is he to whom the mouth of the LORD hath spoken, that he may declare it, for what the land perisheth and is burned up like a wilderness, that none passeth through?"

Jeremiah 9:16: "I will scatter them also among the heathen, whom neither they nor their fathers have known: and I will send a sword after them, till I have consumed them."

Jeremiah 11:12: "Then shall the cities of Judah and inhabitants of Jerusalem go, and cry unto the gods unto whom they offer incense: but they shall not save them at all in the time of their trouble."

Jeremiah 14:16: "And the people to whom they prophesy shall be cast out in the streets of Jerusalem because of the famine and the sword; and they shall have none to bury them, them, their wives, nor their sons, nor their daughters: for I will pour their wickedness upon them."

Jeremiah 18:8: "If that nation, against whom I have pronounced, turn from their evil, I will repent of the evil that I thought to do unto them."

Jeremiah 19:4: "Because they have forsaken me, and have estranged this place, and have burned incense in it unto other gods, whom neither they nor their fathers have known, nor the kings of Judah, and have filled this place with the blood of innocents;"

Jeremiah 20:6: "And thou, Pashur, and all that dwell in thine house shall go into captivity: and thou shalt come to Babylon, and there thou shalt die, and shalt be buried there, thou, and all thy friends, to whom thou hast prophesied lies."

Jeremiah 23:9: "Mine heart within me is broken because of the prophets; all my bones shake; I am like a drunken man, and like a man whom wine hath overcome, because of the LORD, and because of the words of his holiness."

Jeremiah 24:5: "Thus saith the LORD, the God of Israel; Like these good figs, so will I acknowledge them that are carried away captive of Judah, whom I have sent out of this place into the land of the Chaldeans for their good."

Jeremiah 25:15: "For thus saith the LORD God of Israel unto me; Take the wine cup of this fury at my hand, and cause all the nations, to whom I send thee, to drink it."

Jeremiah 25:17: "Then took I the cup at the LORD's hand, and made all the nations to drink, unto whom the LORD had sent me:"



Jeremiah 26:5: "To hearken to the words of my servants the prophets, whom I sent unto you, both rising up early, and sending them, but ye have not hearkened;"

Jeremiah 27:5: "I have made the earth, the man and the beast that are upon the ground, by my great power and by my outstretched arm, and have given it unto whom it seemed meet unto me."

Jeremiah 29:1: "Now these are the words of the letter that Jeremiah the prophet sent from Jerusalem unto the residue of the elders which were carried away captives, and to the priests, and to the prophets, and to all the people whom Nebuchadnezzar had carried away captive from Jerusalem to Babylon;"

Jeremiah 29:3: "By the hand of Elasah the son of Shaphan, and Gemariah the son of Hilkiah, (whom Zedekiah king of Judah sent unto Babylon to Nebuchadnezzar king of Babylon) saying,"

Jeremiah 29:4: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel, unto all that are carried away captives, whom I have caused to be carried away from Jerusalem unto Babylon;"

Jeremiah 29:20: "Hear ye therefore the word of the LORD, all ye of the captivity, whom I have sent from Jerusalem to Babylon:"

Jeremiah 29:22: "And of them shall be taken up a curse by all the captivity of Judah which are in Babylon, saying, The LORD make thee like Zedekiah and like Ahab, whom the king of Babylon roasted in the fire;"

Jeremiah 30:9: "But they shall serve the LORD their God, and David their king, whom I will raise up unto them."

Jeremiah 30:17: "For I will restore health unto thee, and I will heal thee of thy wounds, saith the LORD; because they called thee an Outcast, saying, This is Zion, whom no man seeketh after."

Jeremiah 33:5: "They come to fight with the Chaldeans, but it is to fill them with the dead bodies of men, whom I have slain in mine anger and in my fury, and for all whose wickedness I have hid my face from this city."

Jeremiah 34:11: "But afterward they turned, and caused the servants and the handmaids, whom they had let go free, to return, and brought them into subjection for servants and for handmaids."

Jeremiah 34:16: "But ye turned and polluted my name, and caused every man his servant, and every man his handmaid, whom he had set at liberty at their pleasure, to return, and brought them into subjection, to be unto you for servants and for handmaids."

Jeremiah 37:1: "And king Zedekiah the son of Josiah reigned instead of Coniah the son of Jehoiakim, whom Nebuchadnezzar king of Babylon made king in the land of Judah."

Jeremiah 38:9: "My lord the king, these men have done evil in all that they have done to Jeremiah the prophet, whom they have cast into the dungeon; and he is like to die for hunger in the place where he is: for there is no more bread in the city."

Jeremiah 39:17: "But I will deliver thee in that day, saith the LORD: and thou shalt not be given into the hand of the men of whom thou art afraid."

Jeremiah 40:5: "Now while he was not yet gone back, he said, Go back also to Gedaliah the son of Ahikam the son of Shaphan, whom the king of Babylon hath made governor over the cities of Judah, and dwell with him among the people: or go wheresoever it seemeth convenient unto thee to go. So the captain of the guard gave him victuals and a reward, and let him go."

Jeremiah 41:2: "Then arose Ishmael the son of Nethaniah, and the ten men that were with him, and smote Gedaliah the son of Ahikam the son of Shaphan with the sword, and slew him, whom the king of Babylon had made governor over the land."

Jeremiah 41:9: "Now the pit wherein Ishmael had cast all the dead bodies of the men, whom he had slain because of Gedaliah, was it which Asa the king had made for fear of Baasha king of Israel: and Ishmael the son of Nethaniah filled it with them that were slain."

Jeremiah 41:10: "Then Ishmael carried away captive all the residue of the people that were in Mizpah, even the king's daughters, and all the people that remained in Mizpah, whom Nebuzaradan the captain of the guard had committed to Gedaliah the son of Ahikam: and Ishmael the son of Nethaniah carried them away captive, and departed to go over to the Ammonites."

Jeremiah 41:16: "Then took Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces that were with him, all the remnant of the people whom he had recovered from Ishmael the son of Nethaniah, from Mizpah, after that he had slain Gedaliah the son of Ahikam, even mighty men of war, and the women, and the children, and the eunuchs, whom he had brought again from Gibeon."

Jeremiah 41:18: "Because of the Chaldeans: for they were afraid of them, because Ishmael the son of Nethaniah had slain Gedaliah the son of Ahikam, whom the king of Babylon made governor in the land."

Jeremiah 42:6: "Whether it be good, or whether it be evil, we will obey the voice of the LORD our God, to whom we send thee; that it may be well with us, when we obey the voice of the LORD our God."

Jeremiah 42:9: "And said unto them, Thus saith the LORD, the God of Israel, unto whom ye sent me to present your supplication before him;"

Jeremiah 42:11: "Be not afraid of the king of Babylon, of whom ye are afraid; be not afraid of him, saith the LORD: for I am with you to save you, and to deliver you from his hand."

Jeremiah 44:3: "Because of their wickedness which they have committed to provoke me to anger, in that they went to burn incense, and to serve other gods, whom they knew not, neither they, ye, nor your fathers."

Jeremiah 50:20: "In those days, and in that time, saith the LORD, the iniquity of Israel shall be sought for, and there shall be none; and the sins of Judah, and they shall not be found: for I will pardon them whom I reserve."

Jeremiah 52:28: "This is the people whom Nebuchadrezzar carried away captive: in the seventh year three thousand Jews and three and twenty:"

Lamentations 1:10: "The adversary hath spread out his hand upon all her pleasant things: for she hath seen that the heathen entered into her sanctuary, whom thou didst command that they should not enter into thy congregation."

Lamentations 1:14: "The yoke of my transgressions is bound by his hand: they are wreathed, and come up upon my neck: he hath made my strength to fall, the LORD hath delivered me into their hands, from whom I am not able to rise up."

Lamentations 2:20: "Behold, O LORD, and consider to whom thou hast done this. Shall the women eat their fruit, and children of a span long? shall the priest and the prophet be slain in the sanctuary of the Lord?"

Lamentations 4:20: "The breath of our nostrils, the anointed of the LORD, was taken in their pits, of whom we said, Under his shadow we shall live among the heathen."

Ezekiel 9:6: "Slay utterly old and young, both maids, and little children, and women: but come not near any man upon whom is the mark; and begin at my sanctuary. Then they began at the ancient men which were before the house."

Ezekiel 11:1: "Moreover the spirit lifted me up, and brought me unto the east gate of the LORD's house, which looketh eastward: and behold at the door of the gate five and twenty men; among whom I saw Jaazaniah the son of Azur, and Pelatiah the son of Benaiah, princes of the people."

Ezekiel 11:7: "Therefore thus saith the Lord GOD; Your slain whom ye have laid in the midst of it, they are the flesh, and this city is the caldron: but I will bring you forth out of the midst of it."

Ezekiel 11:15: "Son of man, thy brethren, even thy brethren, the men of thy kindred, and all the house of Israel wholly, are they unto whom the inhabitants of Jerusalem have said, Get you far from the LORD: unto us is this land given in possession."

Ezekiel 13:22: "Because with lies ye have made the heart of the righteous sad, whom I have not made sad; and strengthened the hands of the wicked, that he should not return from his wicked way, by promising him life:"

Ezekiel 16:20: "Moreover thou hast taken thy sons and thy daughters, whom thou hast borne unto me, and these hast thou sacrificed unto them to be devoured. Is this of thy whoredoms a small matter,"

Ezekiel 16:37: "Behold, therefore I will gather all thy lovers, with whom thou hast taken pleasure, and all them that thou hast loved, with all them that thou hast hated; I will even gather them round about against thee, and will discover thy nakedness unto them, that they may see all thy nakedness."

Ezekiel 20:9: "But I wrought for my name's sake, that it should not be polluted before the heathen, among whom they were, in whose sight I made myself known unto them, in bringing them forth out of the land of Egypt."

Ezekiel 23:7: "Thus she committed her whoredoms with them, with all them that were the chosen men of Assyria, and with all on whom she doted: with all their idols she defiled herself."

Ezekiel 23:9: "Wherefore I have delivered her into the hand of her lovers, into the hand of the Assyrians, upon whom she doted."

Ezekiel 23:22: "Therefore, O Aholibah, thus saith the Lord GOD; Behold, I will raise up thy lovers against thee, from whom thy mind is alienated, and I will bring them against thee on every side;"

Ezekiel 23:28: "For thus saith the Lord GOD; Behold, I will deliver thee into the hand of them whom thou hatest, into the hand of them from whom thy mind is alienated:"

Ezekiel 23:37: "That they have committed adultery, and blood is in their hands, and with their idols have they committed adultery, and have also caused their sons, whom they bare unto me, to pass for them through the fire, to devour them."

Ezekiel 23:40: "And furthermore, that ye have sent for men to come from far, unto whom a messenger was sent; and, lo, they came: for whom thou didst wash thyself, paintedst thy eyes, and deckedst thyself with ornaments,"

Ezekiel 24:21: "Speak unto the house of Israel, Thus saith the Lord GOD; Behold, I will profane my sanctuary, the excellency of your strength, the desire of your eyes, and that which your soul pitieth; and your sons and your daughters whom ye have left shall fall by the sword."

Ezekiel 28:25: "Thus saith the Lord GOD; When I shall have gathered the house of Israel from the people among whom they are scattered, and shall be sanctified in them in the sight of the heathen, then shall they dwell in their land that I have given to my servant Jacob."

Ezekiel 31:2: "Son of man, speak unto Pharaoh king of Egypt, and to his multitude; Whom art thou like in thy greatness?"

Ezekiel 31:18: "To whom art thou thus like in glory and in greatness among the trees of Eden? yet shalt thou be brought down with the trees of Eden unto the nether parts of the earth: thou shalt lie in the midst of the uncircumcised with them that be slain by the sword. This is Pharaoh and all his multitude, saith the Lord GOD."

Ezekiel 32:19: "Whom dost thou pass in beauty? go down, and be thou laid with the uncircumcised."

Ezekiel 38:17: "Thus saith the Lord GOD; Art thou he of whom I have spoken in old time by my servants the prophets of Israel, which prophesied in those days many years that I would bring thee against them?"

Daniel 1:4: "Children in whom was no blemish, but well favoured, and skilful in all wisdom, and cunning in knowledge, and understanding science, and such as had ability in them to stand in the king's palace, and whom they might teach the learning and the tongue of the Chaldeans."

Daniel 1:7: "Unto whom the prince of the eunuchs gave names: for he gave unto Daniel the name of Belteshazzar; and to Hananiah, of Shadrach; and to Mishael, of Meshach; and to Azariah, of Abednego."

Daniel 1:11: "Then said Daniel to Melzar, whom the prince of the eunuchs had set over Daniel, Hananiah, Mishael, and Azariah,"

Daniel 2:24: "Therefore Daniel went in unto Arioch, whom the king had ordained to destroy the wise men of Babylon: he went and said thus unto him; Destroy not the wise men of Babylon: bring me in before the king, and I will shew unto the king the interpretation."

Daniel 3:12: "There are certain Jews whom thou hast set over the affairs of the province of Babylon, Shadrach, Meshach, and Abednego; these men, O king, have not regarded thee: they serve

not thy gods, nor worship the golden image which thou hast set up."

Daniel 3:17: "If it be so, our God whom we serve is able to deliver us from the burning fiery furnace, and he will deliver us out of thine hand, O king."

Daniel 4:8: "But at the last Daniel came in before me, whose name was Belteshazzar, according to the name of my God, and in whom is the spirit of the holy gods: and before him I told the dream, saying,"

Daniel 5:11: "There is a man in thy kingdom, in whom is the spirit of the holy gods; and in the days of thy father light and understanding and wisdom, like the wisdom of the gods, was found in him; whom the king Nebuchadnezzar thy father, the king, I say, thy father, made master of the magicians, astrologers, Chaldeans, and soothsayers;"

Daniel 5:12: "Forasmuch as an excellent spirit, and knowledge, and understanding, interpreting of dreams, and shewing of hard sentences, and dissolving of doubts, were found in the same Daniel, whom the king named Belteshazzar: now let Daniel be called, and he will shew the interpretation."

Daniel 5:13: "Then was Daniel brought in before the king. And the king spake and said unto Daniel, Art thou that Daniel, which art of the children of the captivity of Judah, whom the king my father brought out of Jewry?"

Daniel 5:19: "And for the majesty that he gave him, all people, nations, and languages, trembled and feared before him: whom he would he slew; and whom he would he kept alive; and whom he would he set up; and whom he would he put down."

Daniel 6:2: "And over these three presidents; of whom Daniel was first: that the princes might give accounts unto them, and the king should have no damage."

Daniel 6:16: "Then the king commanded, and they brought Daniel, and cast him into the den of lions. Now the king spake and said unto Daniel, Thy God whom thou servest continually, he will deliver thee."

Daniel 6:20: "And when he came to the den, he cried with a lamentable voice unto Daniel: and the king spake and said to Daniel, O Daniel, servant of the living God, is thy God, whom thou servest continually, able to deliver thee from the lions?"

Daniel 7:8: "I considered the horns, and, behold, there came up among them another little horn, before whom there were three of the first horns plucked up by the roots: and, behold, in this horn were eyes like the eyes of man, and a mouth speaking great things."

Daniel 7:20: "And of the ten horns that were in his head, and of the other which came up, and before whom three fell; even of that horn that had eyes, and a mouth that spake very great things, whose look was more stout than his fellows."

Daniel 9:21: "Yea, whiles I was speaking in prayer, even the man Gabriel, whom I had seen in the vision at the beginning, being caused to fly swiftly, touched me about the time of the evening oblation."

Daniel 11:21: "And in his estate shall stand up a vile person, to whom they shall not give the honour of the kingdom: but he shall come in peaceably, and obtain the kingdom by flatteries."

Daniel 11:38: "But in his estate shall he honour the God of forces: and a god whom his fathers knew not shall he honour with gold, and silver, and with precious stones, and pleasant things."

Daniel 11:39: "Thus shall he do in the most strong holds with a strange god, whom he shall acknowledge and increase with glory: and he shall cause them to rule over many, and shall divide the land for gain."

Hosea 13:10: "I will be thy king: where is any other that may save thee in all thy cities? and thy judges of whom thou saidst, Give me a king and princes?"

Joel 2:32: "And it shall come to pass, that whosoever shall call on the name of the LORD shall be delivered: for in mount Zion and in Jerusalem shall be deliverance, as the LORD hath said, and in the remnant whom the LORD shall call."

Joel 3:2: "I will also gather all nations, and will bring them down into the valley of Jehoshaphat, and will plead with them there for my people and for my heritage Israel, whom they have scattered

among the nations, and parted my land."

Amos 6:1: "Woe to them that are at ease in Zion, and trust in the mountain of Samaria, which are named chief of the nations, to whom the house of Israel came!"

Amos 7:2: "And it came to pass, that when they had made an end of eating the grass of the land, then I said, O Lord GOD, forgive, I beseech thee: by whom shall Jacob arise? for he is small."

Amos 7:5: "Then said I, O Lord GOD, cease, I beseech thee: by whom shall Jacob arise? for he is small."

Nahum 3:19: "There is no healing of thy bruise; thy wound is grievous: all that hear the bruit of thee shall clap the hands over thee: for upon whom hath not thy wickedness passed continually?"

Zephaniah 3:18: "I will gather them that are sorrowful for the solemn assembly, who are of thee, to whom the reproach of it was a burden."

Zechariah 1:4: "Be ye not as your fathers, unto whom the former prophets have cried, saying, Thus saith the LORD of hosts; Turn ye now from your evil ways, and from your evil doings: but they did not hear, nor hearken unto me, saith the LORD."

Zechariah 1:10: "And the man that stood among the myrtle trees answered and said, These are they whom the LORD hath sent to walk to and fro through the earth."

Zechariah 7:14: "But I scattered them with a whirlwind among all the nations whom they knew not. Thus the land was desolate after them, that no man passed through nor returned: for they laid the pleasant land desolate."

Zechariah 12:10: "And I will pour upon the house of David, and upon the inhabitants of Jerusalem, the spirit of grace and of supplications: and they shall look upon me whom they have pierced, and they shall mourn for him, as one mourneth for his only son, and shall be in bitterness for him, as one that is in bitterness for his firstborn."

Malachi 1:4: "Whereas Edom saith, We are impoverished, but we will return and build the desolate places; thus saith the LORD of hosts, They shall build, but I will throw down; and they shall call them, The border of wickedness, and, The people against whom the LORD hath indignation for ever."

Malachi 2:14: "Yet ye say, Wherefore? Because the LORD hath been witness between thee and the wife of thy youth, against whom thou hast dealt treacherously: yet is she thy companion, and the wife of thy covenant."

Malachi 3:1: "Behold, I will send my messenger, and he shall prepare the way before me: and the LORD, whom ye seek, shall suddenly come to his temple, even the messenger of the covenant, whom ye delight in: behold, he shall come, saith the LORD of hosts."

Matthew 1:16: "And Jacob begat Joseph the husband of Mary, of whom was born Jesus, who is called Christ."

Matthew 3:17: "And lo a voice from heaven, saying, This is my beloved Son, in whom I am well pleased."

Matthew 7:9: "Or what man is there of you, whom if his son ask bread, will he give him a stone?"

Matthew 11:10: "For this is he, of whom it is written, Behold, I send my messenger before thy face, which shall prepare thy way before thee."

Matthew 12:18: "Behold my servant, whom I have chosen; my beloved, in whom my soul is well pleased: I will put my spirit upon him, and he shall shew judgment to the Gentiles."

Matthew 12:27: "And if I by Beelzebub cast out devils, by whom do your children cast them out? therefore they shall be your judges."

Matthew 16:13: "When Jesus came into the coasts of Caesarea Philippi, he asked his disciples, saying, Whom do men say that I the Son of man am?"

Matthew 16:15: "He saith unto them, But whom say ye that I am?"

Matthew 17:5: "While he yet spake, behold, a bright cloud overshadowed them: and behold a voice out of the cloud, which said, This is my beloved Son, in whom I am well pleased; hear ye him."

Matthew 17:25: "He saith, Yes. And when he was come into the house, Jesus prevented him,

saying, What thinkest thou, Simon? of whom do the kings of the earth take custom or tribute? of their own children, or of strangers?"

Matthew 18:7: "Woe unto the world because of offences! for it must needs be that offences come; but woe to that man by whom the offence cometh!"

Matthew 19:11: "But he said unto them, All men cannot receive this saying, save they to whom it is given."

Matthew 20:23: "And he saith unto them, Ye shall drink indeed of my cup, and be baptized with the baptism that I am baptized with: but to sit on my right hand, and on my left, is not mine to give, but it shall be given to them for whom it is prepared of my Father."

Matthew 23:35: "That upon you may come all the righteous blood shed upon the earth, from the blood of righteous Abel unto the blood of Zacharias son of Barachias, whom ye slew between the temple and the altar."

Matthew 24:45: "Who then is a faithful and wise servant, whom his lord hath made ruler over his household, to give them meat in due season?"

Matthew 24:46: "Blessed is that servant, whom his lord when he cometh shall find so doing."

Matthew 26:24: "The Son of man goeth as it is written of him: but woe unto that man by whom the Son of man is betrayed! it had been good for that man if he had not been born."

Matthew 27:9: "Then was fulfilled that which was spoken by Jeremy the prophet, saying, And they took the thirty pieces of silver, the price of him that was valued, whom they of the children of Israel did value;"

Matthew 27:15: "Now at that feast the governor was wont to release unto the people a prisoner, whom they would."

Matthew 27:17: "Therefore when they were gathered together, Pilate said unto them, Whom will ye that I release unto you? Barabbas, or Jesus which is called Christ?"

Mark 1:11: "And there came a voice from heaven, saying, Thou art my beloved Son, in whom I am well pleased."

Mark 3:13: "And he goeth up into a mountain, and calleth unto him whom he would: and they came unto him."

Mark 6:16: "But when Herod heard thereof, he said, It is John, whom I beheaded: he is risen from the dead."

Mark 8:27: "And Jesus went out, and his disciples, into the towns of Caesarea Philippi: and by the way he asked his disciples, saying unto them, Whom do men say that I am?"

Mark 8:29: "And he saith unto them, But whom say ye that I am? And Peter answereth and saith unto him, Thou art the Christ."

Mark 10:40: "But to sit on my right hand and on my left hand is not mine to give; but it shall be given to them for whom it is prepared."

Mark 13:20: "And except that the Lord had shortened those days, no flesh should be saved: but for the elect's sake, whom he hath chosen, he hath shortened the days."

Mark 14:21: "The Son of man indeed goeth, as it is written of him: but woe to that man by whom the Son of man is betrayed! good were it for that man if he had never been born."

Mark 14:71: "But he began to curse and to swear, saying, I know not this man of whom ye speak."

Mark 15:12: "And Pilate answered and said again unto them, What will ye then that I shall do unto him whom ye call the King of the Jews?"

Mark 15:40: "There were also women looking on afar off: among whom was Mary Magdalene, and Mary the mother of James the less and of Joses, and Salome;"

Mark 16:9: "Now when Jesus was risen early the first day of the week, he appeared first to Mary Magdalene, out of whom he had cast seven devils."

Luke 6:13: "And when it was day, he called unto him his disciples: and of them he chose twelve, whom also he named apostles;"

Luke 6:14: "Simon, (whom he also named Peter,) and Andrew his brother, James and John, Philip

and Bartholomew,"

Luke 6:34: "And if ye lend to them of whom ye hope to receive, what thank have ye? for sinners also lend to sinners, to receive as much again."

Luke 6:47: "Whosoever cometh to me, and heareth my sayings, and doeth them, I will shew you to whom he is like:"

Luke 7:4: "And when they came to Jesus, they besought him instantly, saying, That he was worthy for whom he should do this:"

Luke 7:27: "This is he, of whom it is written, Behold, I send my messenger before thy face, which shall prepare thy way before thee."

Luke 7:43: "Simon answered and said, I suppose that he, to whom he forgave most. And he said unto him, Thou hast rightly judged."

Luke 7:47: "Wherefore I say unto thee, Her sins, which are many, are forgiven; for she loved much: but to whom little is forgiven, the same loveth little."

Luke 8:2: "And certain women, which had been healed of evil spirits and infirmities, Mary called Magdalene, out of whom went seven devils,"

Luke 8:35: "Then they went out to see what was done; and came to Jesus, and found the man, out of whom the devils were departed, sitting at the feet of Jesus, clothed, and in his right mind: and they were afraid."

Luke 8:38: "Now the man out of whom the devils were departed besought him that he might be with him: but Jesus sent him away, saying,"

Luke 9:9: "And Herod said, John have I beheaded: but who is this, of whom I hear such things? And he desired to see him."

Luke 9:18: "And it came to pass, as he was alone praying, his disciples were with him: and he asked them, saying, Whom say the people that I am?"

Luke 9:20: "He said unto them, But whom say ye that I am? Peter answering said, The Christ of God."

Luke 10:22: "All things are delivered to me of my Father: and no man knoweth who the Son is, but the Father; and who the Father is, but the Son, and he to whom the Son will reveal him."

Luke 11:19: "And if I by Beelzebub cast out devils, by whom do your sons cast them out? therefore shall they be your judges."

Luke 12:5: "But I will forewarn you whom ye shall fear: Fear him, which after he hath killed hath power to cast into hell; yea, I say unto you, Fear him."

Luke 12:37: "Blessed are those servants, whom the lord when he cometh shall find watching: verily I say unto you, that he shall gird himself, and make them to sit down to meat, and will come forth and serve them."

Luke 12:42: "And the Lord said, Who then is that faithful and wise steward, whom his lord shall make ruler over his household, to give them their portion of meat in due season?"

Luke 12:43: "Blessed is that servant, whom his lord when he cometh shall find so doing."

Luke 12:48: "But he that knew not, and did commit things worthy of stripes, shall be beaten with few stripes. For unto whomsoever much is given, of him shall be much required: and to whom men have committed much, of him they will ask the more."

Luke 13:4: "Or those eighteen, upon whom the tower in Siloam fell, and slew them, think ye that they were sinners above all men that dwelt in Jerusalem?"

Luke 13:16: "And ought not this woman, being a daughter of Abraham, whom Satan hath bound, lo, these eighteen years, be loosed from this bond on the sabbath day?"

Luke 17:1: "Then said he unto the disciples, It is impossible but that offences will come: but woe unto him, through whom they come!"

Luke 19:15: "And it came to pass, that when he was returned, having received the kingdom, then he commanded these servants to be called unto him, to whom he had given the money, that he might know how much every man had gained by trading."

Luke 22:22: "And truly the Son of man goeth, as it was determined: but woe unto that man by whom he is betrayed!"

Luke 23:25: "And he released unto them him that for sedition and murder was cast into prison, whom they had desired; but he delivered Jesus to their will."

John 1:15: "John bare witness of him, and cried, saying, This was he of whom I spake, He that cometh after me is preferred before me: for he was before me."

John 1:26: "John answered them, saying, I baptize with water: but there standeth one among you, whom ye know not;"

John 1:30: "This is he of whom I said, After me cometh a man which is preferred before me: for he was before me."

John 1:33: "And I knew him not: but he that sent me to baptize with water, the same said unto me, Upon whom thou shalt see the Spirit descending, and remaining on him, the same is he which baptizeth with the Holy Ghost."

John 1:45: "Philip findeth Nathanael, and saith unto him, We have found him, of whom Moses in the law, and the prophets, did write, Jesus of Nazareth, the son of Joseph."

John 1:47: "Jesus saw Nathanael coming to him, and saith of him, Behold an Israelite indeed, in whom is no guile!"

John 3:26: "And they came unto John, and said unto him, Rabbi, he that was with thee beyond Jordan, to whom thou barest witness, behold, the same baptizeth, and all men come to him."

John 3:34: "For he whom God hath sent speaketh the words of God: for God giveth not the Spirit by measure unto him."

John 4:18: "For thou hast had five husbands; and he whom thou now hast is not thy husband: in that saidst thou truly."

John 5:21: "For as the Father raiseth up the dead, and quickeneth them; even so the Son quickeneth whom he will."

John 5:38: "And ye have not his word abiding in you: for whom he hath sent, him ye believe not."

John 5:45: "Do not think that I will accuse you to the Father: there is one that accuseth you, even Moses, in whom ye trust."

John 6:29: "Jesus answered and said unto them, This is the work of God, that ye believe on him whom he hath sent."

John 6:68: "Then Simon Peter answered him, Lord, to whom shall we go? thou hast the words of eternal life."

John 7:25: "Then said some of them of Jerusalem, Is not this he, whom they seek to kill?"

John 7:28: "Then cried Jesus in the temple as he taught, saying, Ye both know me, and ye know whence I am: and I am not come of myself, but he that sent me is true, whom ye know not."

John 8:53: "Art thou greater than our father Abraham, which is dead? and the prophets are dead: whom makest thou thyself?"

John 8:54: "Jesus answered, If I honour myself, my honour is nothing: it is my Father that honoureth me; of whom ye say, that he is your God:"

John 10:35: "If he called them gods, unto whom the word of God came, and the scripture cannot be broken;"

John 10:36: "Say ye of him, whom the Father hath sanctified, and sent into the world, Thou blasphemest; because I said, I am the Son of God?"

John 11:3: "Therefore his sisters sent unto him, saying, Lord, behold, he whom thou lovest is sick."

John 12:1: "Then Jesus six days before the passover came to Bethany, where Lazarus was, which had been dead, whom he raised from the dead."

John 12:9: "Much people of the Jews therefore knew that he was there: and they came not for Jesus' sake only, but that they might see Lazarus also, whom he had raised from the dead."

John 12:38: "That the saying of Esaias the prophet might be fulfilled, which he spake, Lord, who hath believed our report? and to whom hath the arm of the Lord been revealed?"



John 13:18: "I speak not of you all: I know whom I have chosen: but that the scripture may be fulfilled, He that eateth bread with me hath lifted up his heel against me."

John 13:22: "Then the disciples looked one on another, doubting of whom he spake."

John 13:23: "Now there was leaning on Jesus' bosom one of his disciples, whom Jesus loved."

John 13:24: "Simon Peter therefore beckoned to him, that he should ask who it should be of whom he spake."

John 13:26: "Jesus answered, He it is, to whom I shall give a sop, when I have dipped it. And when he had dipped the sop, he gave it to Judas Iscariot, the son of Simon."

John 14:17: "Even the Spirit of truth; whom the world cannot receive, because it seeth him not, neither knoweth him: but ye know him; for he dwelleth with you, and shall be in you."

John 14:26: "But the Comforter, which is the Holy Ghost, whom the Father will send in my name, he shall teach you all things, and bring all things to your remembrance, whatsoever I have said unto you."

John 15:26: "But when the Comforter is come, whom I will send unto you from the Father, even the Spirit of truth, which proceedeth from the Father, he shall testify of me:"

John 17:3: "And this is life eternal, that they might know thee the only true God, and Jesus Christ, whom thou hast sent."

John 17:11: "And now I am no more in the world, but these are in the world, and I come to thee. Holy Father, keep through thine own name those whom thou hast given me, that they may be one, as we are."

John 17:24: "Father, I will that they also, whom thou hast given me, be with me where I am; that they may behold my glory, which thou hast given me: for thou lovedst me before the foundation of the world."

John 18:4: "Jesus therefore, knowing all things that should come upon him, went forth, and said unto them, Whom seek ye?"

John 18:7: "Then asked he them again, Whom seek ye? And they said, Jesus of Nazareth."

John 19:26: "When Jesus therefore saw his mother, and the disciple standing by, whom he loved, he saith unto his mother, Woman, behold thy son!"

John 19:37: "And again another scripture saith, They shall look on him whom they pierced."

John 20:2: "Then she runneth, and cometh to Simon Peter, and to the other disciple, whom Jesus loved, and saith unto them, They have taken away the LORD out of the sepulchre, and we know not where they have laid him."

John 20:15: "Jesus saith unto her, Woman, why weepest thou? whom seekest thou? She, supposing him to be the gardener, saith unto him, Sir, if thou have borne him hence, tell me where thou hast laid him, and I will take him away."

John 21:7: "Therefore that disciple whom Jesus loved saith unto Peter, It is the Lord. Now when Simon Peter heard that it was the Lord, he girt his fisher's coat unto him, (for he was naked,) and did cast himself into the sea."

John 21:20: "Then Peter, turning about, seeth the disciple whom Jesus loved following; which also leaned on his breast at supper, and said, Lord, which is he that betrayeth thee?"

Acts 1:2: "Until the day in which he was taken up, after that he through the Holy Ghost had given commandments unto the apostles whom he had chosen:"

Acts 1:3: "To whom also he shewed himself alive after his passion by many infallible proofs, being seen of them forty days, and speaking of the things pertaining to the kingdom of God:"

Acts 2:24: "Whom God hath raised up, having loosed the pains of death: because it was not possible that he should be holden of it."

Acts 2:36: "Therefore let all the house of Israel know assuredly, that God hath made the same Jesus, whom ye have crucified, both Lord and Christ."

Acts 3:2: "And a certain man lame from his mother's womb was carried, whom they laid daily at the gate of the temple which is called Beautiful, to ask alms of them that entered into the temple;"

Acts 3:13: "The God of Abraham, and of Isaac, and of Jacob, the God of our fathers, hath glorified his Son Jesus; whom ye delivered up, and denied him in the presence of Pilate, when he was determined to let him go."

Acts 3:15: "And killed the Prince of life, whom God hath raised from the dead; whereof we are witnesses."

Acts 3:16: "And his name through faith in his name hath made this man strong, whom ye see and know: yea, the faith which is by him hath given him this perfect soundness in the presence of you all."

Acts 3:21: "Whom the heaven must receive until the times of restitution of all things, which God hath spoken by the mouth of all his holy prophets since the world began."

Acts 4:10: "Be it known unto you all, and to all the people of Israel, that by the name of Jesus Christ of Nazareth, whom ye crucified, whom God raised from the dead, even by him doth this man stand here before you whole."

Acts 4:22: "For the man was above forty years old, on whom this miracle of healing was shewed."

Acts 4:27: "For of a truth against thy holy child Jesus, whom thou hast anointed, both Herod, and Pontius Pilate, with the Gentiles, and the people of Israel, were gathered together,"

Acts 5:25: "Then came one and told them, saying, Behold, the men whom ye put in prison are standing in the temple, and teaching the people."

Acts 5:30: "The God of our fathers raised up Jesus, whom ye slew and hanged on a tree."

Acts 5:32: "And we are his witnesses of these things; and so is also the Holy Ghost, whom God hath given to them that obey him."

Acts 5:36: "For before these days rose up Theudas, boasting himself to be somebody; to whom a number of men, about four hundred, joined themselves: who was slain; and all, as many as obeyed him, were scattered, and brought to nought."

Acts 6:3: "Wherefore, brethren, look ye out among you seven men of honest report, full of the Holy Ghost and wisdom, whom we may appoint over this business."

Acts 6:6: "Whom they set before the apostles: and when they had prayed, they laid their hands on them."

Acts 7:7: "And the nation to whom they shall be in bondage will I judge, said God: and after that shall they come forth, and serve me in this place."

Acts 7:35: "This Moses whom they refused, saying, Who made thee a ruler and a judge? the same did God send to be a ruler and a deliverer by the hand of the angel which appeared to him in the bush."

Acts 7:39: "To whom our fathers would not obey, but thrust him from them, and in their hearts turned back again into Egypt,"

Acts 7:45: "Which also our fathers that came after brought in with Jesus into the possession of the Gentiles, whom God drave out before the face of our fathers, unto the days of David;"

Acts 7:52: "Which of the prophets have not your fathers persecuted? and they have slain them which shewed before of the coming of the Just One; of whom ye have been now the betrayers and murderers:"

Acts 8:10: "To whom they all gave heed, from the least to the greatest, saying, This man is the great power of God."

Acts 8:34: "And the eunuch answered Philip, and said, I pray thee, of whom speaketh the prophet this? of himself, or of some other man?"

Acts 9:5: "And he said, Who art thou, Lord? And the Lord said, I am Jesus whom thou persecutest: it is hard for thee to kick against the pricks."

Acts 9:37: "And it came to pass in those days, that she was sick, and died: whom when they had washed, they laid her in an upper chamber."

Acts 10:21: "Then Peter went down to the men which were sent unto him from Cornelius; and said, Behold, I am he whom ye seek: what is the cause wherefore ye are come?"

Acts 10:39: "And we are witnesses of all things which he did both in the land of the Jews, and in Jerusalem; whom they slew and hanged on a tree:"

Acts 13:22: "And when he had removed him, he raised up unto them David to be their king; to whom also he gave their testimony, and said, I have found David the son of Jesse, a man after mine own heart, which shall fulfil all my will."

Acts 13:25: "And as John fulfilled his course, he said, Whom think ye that I am? I am not he. But, behold, there cometh one after me, whose shoes of his feet I am not worthy to loose."

Acts 13:37: "But he, whom God raised again, saw no corruption."

Acts 14:23: "And when they had ordained them elders in every church, and had prayed with fasting, they commended them to the Lord, on whom they believed."

Acts 15:17: "That the residue of men might seek after the Lord, and all the Gentiles, upon whom my name is called, saith the Lord, who doeth all these things."

Acts 15:24: "Forasmuch as we have heard, that certain which went out from us have troubled you with words, subverting your souls, saying, Ye must be circumcised, and keep the law: to whom we gave no such commandment:"

Acts 17:3: "Opening and alleging, that Christ must needs have suffered, and risen again from the dead; and that this Jesus, whom I preach unto you, is Christ."

Acts 17:7: "Whom Jason hath received: and these all do contrary to the decrees of Caesar, saying that there is another king, one Jesus."

Acts 17:23: "For as I passed by, and beheld your devotions, I found an altar with this inscription, TO THE UNKNOWN GOD. Whom therefore ye ignorantly worship, him declare I unto you."

Acts 17:31: "Because he hath appointed a day, in the which he will judge the world in righteousness by that man whom he hath ordained; whereof he hath given assurance unto all men, in that he hath raised him from the dead."

Acts 18:26: "And he began to speak boldly in the synagogue: whom when Aquila and Priscilla had heard, they took him unto them, and expounded unto him the way of God more perfectly."

Acts 19:13: "Then certain of the vagabond Jews, exorcists, took upon them to call over them which had evil spirits the name of the LORD Jesus, saying, We adjure you by Jesus whom Paul preacheth."

Acts 19:16: "And the man in whom the evil spirit was leaped on them, and overcame them, and prevailed against them, so that they fled out of that house naked and wounded."

Acts 19:25: "Whom he called together with the workmen of like occupation, and said, Sirs, ye know that by this craft we have our wealth."

Acts 19:27: "So that not only this our craft is in danger to be set at nought; but also that the temple of the great goddess Diana should be despised, and her magnificence should be destroyed, whom all Asia and the world worshippeth."

Acts 20:25: "And now, behold, I know that ye all, among whom I have gone preaching the kingdom of God, shall see my face no more."

Acts 21:16: "There went with us also certain of the disciples of Caesarea, and brought with them one Mnason of Cyprus, an old disciple, with whom we should lodge."

Acts 21:29: "(For they had seen before with him in the city Trophimus an Ephesian, whom they supposed that Paul had brought into the temple.)"

Acts 22:5: "As also the high priest doth bear me witness, and all the estate of the elders: from whom also I received letters unto the brethren, and went to Damascus, to bring them which were there bound unto Jerusalem, for to be punished."

Acts 22:8: "And I answered, Who art thou, Lord? And he said unto me, I am Jesus of Nazareth, whom thou persecutest."

Acts 23:29: "Whom I perceived to be accused of questions of their law, but to have nothing laid to his charge worthy of death or of bonds."

Acts 24:6: "Who also hath gone about to profane the temple: whom we took, and would have

judged according to our law."

Acts 24:8: "Commanding his accusers to come unto thee: by examining of whom thyself mayest take knowledge of all these things, whereof we accuse him."

Acts 25:15: "About whom, when I was at Jerusalem, the chief priests and the elders of the Jews informed me, desiring to have judgment against him."

Acts 25:16: "To whom I answered, It is not the manner of the Romans to deliver any man to die, before that he which is accused have the accusers face to face, and have licence to answer for himself concerning the crime laid against him."

Acts 25:18: "Against whom when the accusers stood up, they brought none accusation of such things as I supposed:"

Acts 25:19: "But had certain questions against him of their own superstition, and of one Jesus, which was dead, whom Paul affirmed to be alive."

Acts 25:24: "And Festus said, King Agrippa, and all men which are here present with us, ye see this man, about whom all the multitude of the Jews have dealt with me, both at Jerusalem, and also here, crying that he ought not to live any longer."

Acts 25:26: "Of whom I have no certain thing to write unto my lord. Wherefore I have brought him forth before you, and specially before thee, O king Agrippa, that, after examination had, I might have somewhat to write."

Acts 26:15: "And I said, Who art thou, Lord? And he said, I am Jesus whom thou persecutest."

Acts 26:17: "Delivering thee from the people, and from the Gentiles, unto whom now I send thee,"

Acts 26:26: "For the king knoweth of these things, before whom also I speak freely: for I am persuaded that none of these things are hidden from him; for this thing was not done in a corner."

Acts 27:23: "For there stood by me this night the angel of God, whose I am, and whom I serve,"

Acts 28:4: "And when the barbarians saw the venomous beast hang on his hand, they said among themselves, No doubt this man is a murderer, whom, though he hath escaped the sea, yet vengeance suffereth not to live."

Acts 28:8: "And it came to pass, that the father of Publius lay sick of a fever and of a bloody flux: to whom Paul entered in, and prayed, and laid his hands on him, and healed him."

Acts 28:15: "And from thence, when the brethren heard of us, they came to meet us as far as Appii forum, and The three taverns: whom when Paul saw, he thanked God, and took courage."

Acts 28:23: "And when they had appointed him a day, there came many to him into his lodging; to whom he expounded and testified the kingdom of God, persuading them concerning Jesus, both out of the law of Moses, and out of the prophets, from morning till evening."

Romans 1:5: "By whom we have received grace and apostleship, for obedience to the faith among all nations, for his name:"

Romans 1:6: "Among whom are ye also the called of Jesus Christ:"

Romans 1:9: "For God is my witness, whom I serve with my spirit in the gospel of his Son, that without ceasing I make mention of you always in my prayers;"

Romans 3:25: "Whom God hath set forth to be a propitiation through faith in his blood, to declare his righteousness for the remission of sins that are past, through the forbearance of God;"

Romans 4:6: "Even as David also describeth the blessedness of the man, unto whom God imputeth righteousness without works,"

Romans 4:8: "Blessed is the man to whom the Lord will not impute sin."

Romans 4:17: "(As it is written, I have made thee a father of many nations,) before him whom he believed, even God, who quickeneth the dead, and calleth those things which be not as though they were."

Romans 4:24: "But for us also, to whom it shall be imputed, if we believe on him that raised up Jesus our Lord from the dead;"

Romans 5:2: "By whom also we have access by faith into this grace wherein we stand, and rejoice in hope of the glory of God."

Romans 5:11: "And not only so, but we also joy in God through our Lord Jesus Christ, by whom we have now received the atonement."

Romans 6:16: "Know ye not, that to whom ye yield yourselves servants to obey, his servants ye are to whom ye obey; whether of sin unto death, or of obedience unto righteousness?"

Romans 8:29: "For whom he did foreknow, he also did predestinate to be conformed to the image of his Son, that he might be the firstborn among many brethren."

Romans 8:30: "Moreover whom he did predestinate, them he also called: and whom he called, them he also justified: and whom he justified, them he also glorified."

Romans 9:4: "Who are Israelites; to whom pertaineth the adoption, and the glory, and the covenants, and the giving of the law, and the service of God, and the promises;"

Romans 9:5: "Whose are the fathers, and of whom as concerning the flesh Christ came, who is over all, God blessed for ever. Amen."

Romans 9:15: "For he saith to Moses, I will have mercy on whom I will have mercy, and I will have compassion on whom I will have compassion."

Romans 9:18: "Therefore hath he mercy on whom he will have mercy, and whom he will he hardeneth."

Romans 9:24: "Even us, whom he hath called, not of the Jews only, but also of the Gentiles?"

Romans 10:14: "How then shall they call on him in whom they have not believed? and how shall they believe in him of whom they have not heard? and how shall they hear without a preacher?"

Romans 11:36: "For of him, and through him, and to him, are all things: to whom be glory for ever. Amen."

Romans 13:7: "Render therefore to all their dues: tribute to whom tribute is due; custom to whom custom; fear to whom fear; honour to whom honour."

Romans 14:15: "But if thy brother be grieved with thy meat, now walkest thou not charitably. Destroy not him with thy meat, for whom Christ died."

Romans 15:21: "But as it is written, To whom he was not spoken of, they shall see: and they that have not heard shall understand."

Romans 16:4: "Who have for my life laid down their own necks: unto whom not only I give thanks, but also all the churches of the Gentiles."

1 Corinthians 1:9: "God is faithful, by whom ye were called unto the fellowship of his Son Jesus Christ our Lord."

1 Corinthians 3:5: "Who then is Paul, and who is Apollos, but ministers by whom ye believed, even as the Lord gave to every man?"

1 Corinthians 7:39: "The wife is bound by the law as long as her husband liveth; but if her husband be dead, she is at liberty to be married to whom she will; only in the Lord."

1 Corinthians 8:6: "But to us there is but one God, the Father, of whom are all things, and we in him; and one Lord Jesus Christ, by whom are all things, and we by him."

1 Corinthians 8:11: "And through thy knowledge shall the weak brother perish, for whom Christ died?"

1 Corinthians 10:11: "Now all these things happened unto them for ensamples: and they are written for our admonition, upon whom the ends of the world are come."

1 Corinthians 15:6: "After that, he was seen of above five hundred brethren at once; of whom the greater part remain unto this present, but some are fallen asleep."

1 Corinthians 15:15: "Yea, and we are found false witnesses of God; because we have testified of God that he raised up Christ: whom he raised not up, if so be that the dead rise not."

2 Corinthians 1:10: "Who delivered us from so great a death, and doth deliver: in whom we trust that he will yet deliver us;"

2 Corinthians 2:3: "And I wrote this same unto you, lest, when I came, I should have sorrow from them of whom I ought to rejoice; having confidence in you all, that my joy is the joy of you all."

2 Corinthians 2:10: "To whom ye forgive any thing, I forgive also: for if I forgave any thing, to

whom I forgave it, for your sakes forgave I it in the person of Christ;"

2 Corinthians 4:4: "In whom the god of this world hath blinded the minds of them which believe not, lest the light of the glorious gospel of Christ, who is the image of God, should shine unto them."

2 Corinthians 8:22: "And we have sent with them our brother, whom we have oftentimes proved diligent in many things, but now much more diligent, upon the great confidence which I have in you."

2 Corinthians 10:18: "For not he that commendeth himself is approved, but whom the Lord commendeth."

2 Corinthians 11:4: "For if he that cometh preacheth another Jesus, whom we have not preached, or if ye receive another spirit, which ye have not received, or another gospel, which ye have not accepted, ye might well bear with him."

2 Corinthians 12:17: "Did I make a gain of you by any of them whom I sent unto you?"

Galatians 1:5: "To whom be glory for ever and ever. Amen."

Galatians 2:5: "To whom we gave place by subjection, no, not for an hour; that the truth of the gospel might continue with you."

Galatians 3:19: "Wherefore then serveth the law? It was added because of transgressions, till the seed should come to whom the promise was made; and it was ordained by angels in the hand of a mediator."

Galatians 4:19: "My little children, of whom I travail in birth again until Christ be formed in you,"

Galatians 6:14: "But God forbid that I should glory, save in the cross of our Lord Jesus Christ, by whom the world is crucified unto me, and I unto the world."

Ephesians 1:7: "In whom we have redemption through his blood, the forgiveness of sins, according to the riches of his grace;"

Ephesians 1:11: "In whom also we have obtained an inheritance, being predestinated according to the purpose of him who worketh all things after the counsel of his own will:"

Ephesians 1:13: "In whom ye also trusted, after that ye heard the word of truth, the gospel of your salvation: in whom also after that ye believed, ye were sealed with that holy Spirit of promise,"

Ephesians 2:3: "Among whom also we all had our conversation in times past in the lusts of our flesh, fulfilling the desires of the flesh and of the mind; and were by nature the children of wrath, even as others."

Ephesians 2:21: "In whom all the building fitly framed together groweth unto an holy temple in the Lord:"

Ephesians 2:22: "In whom ye also are builded together for an habitation of God through the Spirit."

Ephesians 3:12: "In whom we have boldness and access with confidence by the faith of him."

Ephesians 3:15: "Of whom the whole family in heaven and earth is named,"

Ephesians 4:16: "From whom the whole body fitly joined together and compacted by that which every joint supplieth, according to the effectual working in the measure of every part, maketh increase of the body unto the edifying of itself in love."

Ephesians 6:22: "Whom I have sent unto you for the same purpose, that ye might know our affairs, and that he might comfort your hearts."

Philippians 2:15: "That ye may be blameless and harmless, the sons of God, without rebuke, in the midst of a crooked and perverse nation, among whom ye shine as lights in the world;"

Philippians 3:8: "Yea doubtless, and I count all things but loss for the excellency of the knowledge of Christ Jesus my Lord: for whom I have suffered the loss of all things, and do count them but dung, that I may win Christ,"

Philippians 3:18: "(For many walk, of whom I have told you often, and now tell you even weeping, that they are the enemies of the cross of Christ:"

Colossians 1:14: "In whom we have redemption through his blood, even the forgiveness of sins:"

Colossians 1:27: "To whom God would make known what is the riches of the glory of this mystery

among the Gentiles; which is Christ in you, the hope of glory:"

Colossians 1:28: "Whom we preach, warning every man, and teaching every man in all wisdom; that we may present every man perfect in Christ Jesus:"

Colossians 2:3: "In whom are hid all the treasures of wisdom and knowledge."

Colossians 2:11: "In whom also ye are circumcised with the circumcision made without hands, in putting off the body of the sins of the flesh by the circumcision of Christ:"

Colossians 4:8: "Whom I have sent unto you for the same purpose, that he might know your estate, and comfort your hearts;"

Colossians 4:10: "Aristarchus my fellowprisoner saluteth you, and Marcus, sister's son to Barnabas, (touching whom ye received commandments: if he come unto you, receive him;)"

1 Thessalonians 1:10: "And to wait for his Son from heaven, whom he raised from the dead, even Jesus, which delivered us from the wrath to come."

2 Thessalonians 2:8: "And then shall that Wicked be revealed, whom the Lord shall consume with the spirit of his mouth, and shall destroy with the brightness of his coming:"

1 Timothy 1:15: "This is a faithful saying, and worthy of all acceptance, that Christ Jesus came into the world to save sinners; of whom I am chief."

1 Timothy 1:20: "Of whom is Hymenaeus and Alexander; whom I have delivered unto Satan, that they may learn not to blaspheme."

1 Timothy 6:16: "Who only hath immortality, dwelling in the light which no man can approach unto; whom no man hath seen, nor can see: to whom be honour and power everlasting. Amen."

2 Timothy 1:3: "I thank God, whom I serve from my forefathers with pure conscience, that without ceasing I have remembrance of thee in my prayers night and day;"

2 Timothy 1:12: "For the which cause I also suffer these things: nevertheless I am not ashamed: for I know whom I have believed, and am persuaded that he is able to keep that which I have committed unto him against that day."

2 Timothy 1:15: "This thou knowest, that all they which are in Asia be turned away from me; of whom are Phygellus and Hermogenes."

2 Timothy 2:17: "And their word will eat as doth a canker: of whom is Hymenaeus and Philetus;"

2 Timothy 3:14: "But continue thou in the things which thou hast learned and hast been assured of, knowing of whom thou hast learned them;"

2 Timothy 4:15: "Of whom be thou ware also; for he hath greatly withstood our words."

2 Timothy 4:18: "And the Lord shall deliver me from every evil work, and will preserve me unto his heavenly kingdom: to whom be glory for ever and ever. Amen."

Philemon 1:10: "I beseech thee for my son Onesimus, whom I have begotten in my bonds:"

Philemon 1:12: "Whom I have sent again: thou therefore receive him, that is, mine own bowels:"

Philemon 1:13: "Whom I would have retained with me, that in thy stead he might have ministered unto me in the bonds of the gospel:"

Hebrews 1:2: "Hath in these last days spoken unto us by his Son, whom he hath appointed heir of all things, by whom also he made the worlds;"

Hebrews 2:10: "For it became him, for whom are all things, and by whom are all things, in bringing many sons unto glory, to make the captain of their salvation perfect through sufferings."

Hebrews 3:17: "But with whom was he grieved forty years? was it not with them that had sinned, whose carcasses fell in the wilderness?"

Hebrews 3:18: "And to whom sware he that they should not enter into his rest, but to them that believed not?"

Hebrews 4:6: "Seeing therefore it remaineth that some must enter therein, and they to whom it was first preached entered not in because of unbelief:"

Hebrews 4:13: "Neither is there any creature that is not manifest in his sight: but all things are naked and opened unto the eyes of him with whom we have to do."

Hebrews 5:11: "Of whom we have many things to say, and hard to be uttered, seeing ye are dull of

hearing."

Hebrews 6:7: "For the earth which drinketh in the rain that cometh oft upon it, and bringeth forth herbs meet for them by whom it is dressed, receiveth blessing from God:"

Hebrews 7:2: "To whom also Abraham gave a tenth part of all; first being by interpretation King of righteousness, and after that also King of Salem, which is, King of peace;"

Hebrews 7:4: "Now consider how great this man was, unto whom even the patriarch Abraham gave the tenth of the spoils."

Hebrews 7:8: "And here men that die receive tithes; but there he receiveth them, of whom it is witnessed that he liveth."

Hebrews 7:13: "For he of whom these things are spoken pertaineth to another tribe, of which no man gave attendance at the altar."

Hebrews 11:18: "Of whom it was said, That in Isaac shall thy seed be called:"

Hebrews 11:38: "(Of whom the world was not worthy:) they wandered in deserts, and in mountains, and in dens and caves of the earth."

Hebrews 12:6: "For whom the Lord loveth he chasteneth, and scourgeth every son whom he receiveth."

Hebrews 12:7: "If ye endure chastening, God dealeth with you as with sons; for what son is he whom the father chasteneth not?"

Hebrews 13:21: "Make you perfect in every good work to do his will, working in you that which is wellpleasing in his sight, through Jesus Christ; to whom be glory for ever and ever. Amen."

Hebrews 13:23: "Know ye that our brother Timothy is set at liberty; with whom, if he come shortly, I will see you."

James 1:17: "Every good gift and every perfect gift is from above, and cometh down from the Father of lights, with whom is no variableness, neither shadow of turning."

1 Peter 1:8: "Whom having not seen, ye love; in whom, though now ye see him not, yet believing, ye rejoice with joy unspeakable and full of glory:"

1 Peter 1:12: "Unto whom it was revealed, that not unto themselves, but unto us they did minister the things, which are now reported unto you by them that have preached the gospel unto you with the Holy Ghost sent down from heaven; which things the angels desire to look into."

1 Peter 2:4: "To whom coming, as unto a living stone, disallowed indeed of men, but chosen of God, and precious,"

1 Peter 4:11: "If any man speak, let him speak as the oracles of God; if any man minister, let him do it as of the ability which God giveth: that God in all things may be glorified through Jesus Christ, to whom be praise and dominion for ever and ever. Amen."

1 Peter 5:8: "Be sober, be vigilant; because your adversary the devil, as a roaring lion, walketh about, seeking whom he may devour:"

1 Peter 5:9: "Whom resist stedfast in the faith, knowing that the same afflictions are accomplished in your brethren that are in the world."

2 Peter 1:17: "For he received from God the Father honour and glory, when there came such a voice to him from the excellent glory, This is my beloved Son, in whom I am well pleased."

2 Peter 2:2: "And many shall follow their pernicious ways; by reason of whom the way of truth shall be evil spoken of."

2 Peter 2:17: "These are wells without water, clouds that are carried with a tempest; to whom the mist of darkness is reserved for ever."

2 Peter 2:19: "While they promise them liberty, they themselves are the servants of corruption: for of whom a man is overcome, of the same is he brought in bondage."

1 John 4:20: "If a man say, I love God, and hateth his brother, he is a liar: for he that loveth not his brother whom he hath seen, how can he love God whom he hath not seen?"

2 John 1:1: "The elder unto the elect lady and her children, whom I love in the truth; and not I only, but also all they that have known the truth;"



3 John 1:1: "The elder unto the wellbeloved Gaius, whom I love in the truth."

3 John 1:6: "Which have borne witness of thy charity before the church: whom if thou bring forward on their journey after a godly sort, thou shalt do well."

Jude 1:13: "Raging waves of the sea, foaming out their own shame; wandering stars, to whom is reserved the blackness of darkness for ever."

Revelation 7:2: "And I saw another angel ascending from the east, having the seal of the living God: and he cried with a loud voice to the four angels, to whom it was given to hurt the earth and the sea,"

Revelation 17:2: "With whom the kings of the earth have committed fornication, and the inhabitants of the earth have been made drunk with the wine of her fornication."

Revelation 20:8: "And shall go out to deceive the nations which are in the four quarters of the earth, Gog, and Magog, to gather them together to battle: the number of whom is as the sand of the sea."

## **WHOMSOEVER**

Occurrences: 20

Genesis 31:32: "With whomsoever thou findest thy gods, let him not live: before our brethren discern thou what is thine with me, and take it to thee. For Jacob knew not that Rachel had stolen them."

Genesis 44:9: "With whomsoever of thy servants it be found, both let him die, and we also will be my lord's bondmen."

Leviticus 15:11: "And whomsoever he toucheth that hath the issue, and hath not rinsed his hands in water, he shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Judges 7:4: "And the LORD said unto Gideon, The people are yet too many; bring them down unto the water, and I will try them for thee there: and it shall be, that of whom I say unto thee, This shall go with thee, the same shall go with thee; and of whomsoever I say unto thee, This shall not go with thee, the same shall not go."

Judges 11:24: "Wilt not thou possess that which Chemosh thy god giveth thee to possess? So whomsoever the LORD our God shall drive out from before us, them will we possess."

Daniel 4:17: "This matter is by the decree of the watchers, and the demand by the word of the holy ones: to the intent that the living may know that the most High ruleth in the kingdom of men, and giveth it to whomsoever he will, and setteth up over it the basest of men."

Daniel 4:25: "That they shall drive thee from men, and thy dwelling shall be with the beasts of the field, and they shall make thee to eat grass as oxen, and they shall wet thee with the dew of heaven, and seven times shall pass over thee, till thou know that the most High ruleth in the kingdom of men, and giveth it to whomsoever he will."

Daniel 4:32: "And they shall drive thee from men, and thy dwelling shall be with the beasts of the field: they shall make thee to eat grass as oxen, and seven times shall pass over thee, until thou know that the most High ruleth in the kingdom of men, and giveth it to whomsoever he will."

Daniel 5:21: "And he was driven from the sons of men; and his heart was made like the beasts, and his dwelling was with the wild asses: they fed him with grass like oxen, and his body was wet with the dew of heaven; till he knew that the most high God ruled in the kingdom of men, and that he appointeth over it whomsoever he will."

Matthew 11:27: "All things are delivered unto me of my Father: and no man knoweth the Son, but the Father; neither knoweth any man the Father, save the Son, and he to whomsoever the Son will reveal him."

Matthew 21:44: "And whosoever shall fall on this stone shall be broken: but on whomsoever it shall fall, it will grind him to powder."

Matthew 26:48: "Now he that betrayed him gave them a sign, saying, Whomsoever I shall kiss, that same is he: hold him fast."

Mark 14:44: "And he that betrayed him had given them a token, saying, Whomsoever I shall kiss,

that same is he; take him, and lead him away safely."

Mark 15:6: "Now at that feast he released unto them one prisoner, whomsoever they desired."

Luke 4:6: "And the devil said unto him, All this power will I give thee, and the glory of them: for that is delivered unto me; and to whomsoever I will I give it."

Luke 12:48: "But he that knew not, and did commit things worthy of stripes, shall be beaten with few stripes. For unto whomsoever much is given, of him shall be much required: and to whom men have committed much, of him they will ask the more."

Luke 20:18: "Whosoever shall fall upon that stone shall be broken; but on whomsoever it shall fall, it will grind him to powder."

John 13:20: "Verily, verily, I say unto you, He that receiveth whomsoever I send receiveth me; and he that receiveth me receiveth him that sent me."

Acts 8:19: "Saying, Give me also this power, that on whomsoever I lay hands, he may receive the Holy Ghost."

1 Corinthians 16:3: "And when I come, whomsoever ye shall approve by your letters, them will I send to bring your liberality unto Jerusalem."

## WHORE

Occurrences: 15

Leviticus 19:29: "Do not prostitute thy daughter, to cause her to be a whore; lest the land fall to whoredom, and the land become full of wickedness."

Leviticus 21:7: "They shall not take a wife that is a whore, or profane; neither shall they take a woman put away from her husband: for he is holy unto his God."

Leviticus 21:9: "And the daughter of any priest, if she profane herself by playing the whore, she profaneth her father: she shall be burnt with fire."

Deuteronomy 22:21: "Then they shall bring out the damsel to the door of her father's house, and the men of her city shall stone her with stones that she die: because she hath wrought folly in Israel, to play the whore in her father's house: so shalt thou put evil away from among you."

Deuteronomy 23:17: "There shall be no whore of the daughters of Israel, nor a sodomite of the sons of Israel."

Deuteronomy 23:18: "Thou shalt not bring the hire of a whore, or the price of a dog, into the house of the LORD thy God for any vow: for even both these are abomination unto the LORD thy God."

Judges 19:2: "And his concubine played the whore against him, and went away from him unto her father's house to Bethlehemjudah, and was there four whole months."

Proverbs 23:27: "For a whore is a deep ditch; and a strange woman is a narrow pit."

Isaiah 57:3: "But draw near hither, ye sons of the sorceress, the seed of the adulterer and the whore."

Jeremiah 3:3: "Therefore the showers have been withholden, and there hath been no latter rain; and thou hadst a whore's forehead, thou refusedst to be ashamed."

Ezekiel 16:28: "Thou hast played the whore also with the Assyrians, because thou wast unsatiable; yea, thou hast played the harlot with them, and yet couldest not be satisfied."

Revelation 17:1: "And there came one of the seven angels which had the seven vials, and talked with me, saying unto me, Come hither; I will shew unto thee the judgment of the great whore that sitteth upon many waters:"

Revelation 17:15: "And he saith unto me, The waters which thou sawest, where the whore sitteth, are peoples, and multitudes, and nations, and tongues."

Revelation 17:16: "And the ten horns which thou sawest upon the beast, these shall hate the whore, and shall make her desolate and naked, and shall eat her flesh, and burn her with fire."

Revelation 19:2: "For true and righteous are his judgments: for he hath judged the great whore, which did corrupt the earth with her fornication, and hath avenged the blood of his servants at her hand."

# WHOREDOME

Occurrences: 22

Genesis 38:24: "And it came to pass about three months after, that it was told Judah, saying, Tamar thy daughter in law hath played the harlot; and also, behold, she is with child by whoredome. And Judah said, Bring her forth, and let her be burnt."

Leviticus 19:29: "Do not prostitute thy daughter, to cause her to be a whore; lest the land fall to whoredome, and the land become full of wickedness."

Leviticus 20:5: "Then I will set my face against that man, and against his family, and will cut him off, and all that go a whoring after him, to commit whoredome with Molech, from among their people."

Numbers 25:1: "And Israel abode in Shittim, and the people began to commit whoredome with the daughters of Moab."

Jeremiah 3:9: "And it came to pass through the lightness of her whoredome, that she defiled the land, and committed adultery with stones and with stocks."

Jeremiah 13:27: "I have seen thine adulteries, and thy neighings, the lewdness of thy whoredome, and thine abominations on the hills in the fields. Woe unto thee, O Jerusalem! wilt thou not be made clean? when shall it once be?"

Ezekiel 16:17: "Thou hast also taken thy fair jewels of my gold and of my silver, which I had given thee, and madest to thyself images of men, and didst commit whoredome with them,"

Ezekiel 16:33: "They give gifts to all whores: but thou givest thy gifts to all thy lovers, and hirest them, that they may come unto thee on every side for thy whoredome."

Ezekiel 20:30: "Wherefore say unto the house of Israel, Thus saith the Lord GOD; Are ye polluted after the manner of your fathers? and commit ye whoredome after their abominations?"

Ezekiel 23:8: "Neither left she her whoredoms brought from Egypt: for in her youth they lay with her, and they bruised the breasts of her virginity, and poured their whoredome upon her."

Ezekiel 23:17: "And the Babylonians came to her into the bed of love, and they defiled her with their whoredome, and she was polluted with them, and her mind was alienated from them."

Ezekiel 23:27: "Thus will I make thy lewdness to cease from thee, and thy whoredome brought from the land of Egypt: so that thou shalt not lift up thine eyes unto them, nor remember Egypt any more."

Ezekiel 43:7: "And he said unto me, Son of man, the place of my throne, and the place of the soles of my feet, where I will dwell in the midst of the children of Israel for ever, and my holy name, shall the house of Israel no more defile, neither they, nor their kings, by their whoredome, nor by the carcases of their kings in their high places."

Ezekiel 43:9: "Now let them put away their whoredome, and the carcases of their kings, far from me, and I will dwell in the midst of them for ever."

Hosea 1:2: "The beginning of the word of the LORD by Hosea. And the LORD said to Hosea, Go, take unto thee a wife of whoredoms and children of whoredoms: for the land hath committed great whoredome, departing from the LORD."

Hosea 4:10: "For they shall eat, and not have enough: they shall commit whoredome, and shall not increase: because they have left off to take heed to the LORD."

Hosea 4:11: "Whoredome and wine and new wine take away the heart."

Hosea 4:13: "They sacrifice upon the tops of the mountains, and burn incense upon the hills, under oaks and poplars and elms, because the shadow thereof is good: therefore your daughters shall commit whoredome, and your spouses shall commit adultery."

Hosea 4:14: "I will not punish your daughters when they commit whoredome, nor your spouses when they commit adultery: for themselves are separated with whores, and they sacrifice with harlots: therefore the people that doth not understand shall fall."

Hosea 4:18: "Their drink is sour: they have committed whoredome continually: her rulers with

shame do love, Give ye."

Hosea 5:3: "I know Ephraim, and Israel is not hid from me: for now, O Ephraim, thou committest whoredom, and Israel is defiled."

Hosea 6:10: "I have seen an horrible thing in the house of Israel: there is the whoredom of Ephraim, Israel is defiled."

## **WHOREDOMS**

Occurrences: 26

Numbers 14:33: "And your children shall wander in the wilderness forty years, and bear your whoredoms, until your carcasses be wasted in the wilderness."

2 Kings 9:22: "And it came to pass, when Joram saw Jehu, that he said, Is it peace, Jehu? And he answered, What peace, so long as the whoredoms of thy mother Jezebel and her witchcrafts are so many?"

2 Chronicles 21:13: "But hast walked in the way of the kings of Israel, and hast made Judah and the inhabitants of Jerusalem to go a whoring, like to the whoredoms of the house of Ahab, and also hast slain thy brethren of thy father's house, which were better than thyself:"

Jeremiah 3:2: "Lift up thine eyes unto the high places, and see where thou hast not been lien with. In the ways hast thou sat for them, as the Arabian in the wilderness; and thou hast polluted the land with thy whoredoms and with thy wickedness."

Ezekiel 16:20: "Moreover thou hast taken thy sons and thy daughters, whom thou hast borne unto me, and these hast thou sacrificed unto them to be devoured. Is this of thy whoredoms a small matter,"

Ezekiel 16:22: "And in all thine abominations and thy whoredoms thou hast not remembered the days of thy youth, when thou wast naked and bare, and wast polluted in thy blood."

Ezekiel 16:25: "Thou hast built thy high place at every head of the way, and hast made thy beauty to be abhorred, and hast opened thy feet to every one that passed by, and multiplied thy whoredoms."

Ezekiel 16:26: "Thou hast also committed fornication with the Egyptians thy neighbours, great of flesh; and hast increased thy whoredoms, to provoke me to anger."

Ezekiel 16:34: "And the contrary is in thee from other women in thy whoredoms, whereas none followeth thee to commit whoredoms: and in that thou givest a reward, and no reward is given unto thee, therefore thou art contrary."

Ezekiel 16:36: "Thus saith the Lord GOD; Because thy filthiness was poured out, and thy nakedness discovered through thy whoredoms with thy lovers, and with all the idols of thy abominations, and by the blood of thy children, which thou didst give unto them;"

Ezekiel 23:3: "And they committed whoredoms in Egypt; they committed whoredoms in their youth: there were their breasts pressed, and there they bruised the teats of their virginity."

Ezekiel 23:7: "Thus she committed her whoredoms with them, with all them that were the chosen men of Assyria, and with all on whom she doted: with all their idols she defiled herself."

Ezekiel 23:8: "Neither left she her whoredoms brought from Egypt: for in her youth they lay with her, and they bruised the breasts of her virginity, and poured their whoredom upon her."

Ezekiel 23:11: "And when her sister Aholibah saw this, she was more corrupt in her inordinate love than she, and in her whoredoms more than her sister in her whoredoms."

Ezekiel 23:14: "And that she increased her whoredoms: for when she saw men pourtrayed upon the wall, the images of the Chaldeans pourtrayed with vermilion,"

Ezekiel 23:18: "So she discovered her whoredoms, and discovered her nakedness: then my mind was alienated from her, like as my mind was alienated from her sister."

Ezekiel 23:19: "Yet she multiplied her whoredoms, in calling to remembrance the days of her youth, wherein she had played the harlot in the land of Egypt."

Ezekiel 23:29: "And they shall deal with thee hatefully, and shall take away all thy labour, and shall

leave thee naked and bare: and the nakedness of thy whoredoms shall be discovered, both thy lewdness and thy whoredoms."

Ezekiel 23:35: "Therefore thus saith the Lord GOD; Because thou hast forgotten me, and cast me behind thy back, therefore bear thou also thy lewdness and thy whoredoms."

Ezekiel 23:43: "Then said I unto her that was old in adulteries, Will they now commit whoredoms with her, and she with them?"

Hosea 1:2: "The beginning of the word of the LORD by Hosea. And the LORD said to Hosea, Go, take unto thee a wife of whoredoms and children of whoredoms: for the land hath committed great whoredom, departing from the LORD."

Hosea 2:2: "Plead with your mother, plead: for she is not my wife, neither am I her husband: let her therefore put away her whoredoms out of her sight, and her adulteries from between her breasts;"

Hosea 2:4: "And I will not have mercy upon her children; for they be the children of whoredoms."

Hosea 4:12: "My people ask counsel at their stocks, and their staff declareth unto them: for the spirit of whoredoms hath caused them to err, and they have gone a whoring from under their God."

Hosea 5:4: "They will not frame their doings to turn unto their God: for the spirit of whoredoms is in the midst of them, and they have not known the LORD."

Nahum 3:4: "Because of the multitude of the whoredoms of the wellfavoured harlot, the mistress of witchcrafts, that selleth nations through her whoredoms, and families through her witchcrafts."

## **WHOREMONGER**

Occurrences: 1

Ephesians 5:5: "For this ye know, that no whoremonger, nor unclean person, nor covetous man, who is an idolater, hath any inheritance in the kingdom of Christ and of God."

## **WHOREMONGERS**

Occurrences: 4

1 Timothy 1:10: "For whoremongers, for them that defile themselves with mankind, for menstealers, for liars, for perjured persons, and if there be any other thing that is contrary to sound doctrine;"

Hebrews 13:4: "Marriage is honourable in all, and the bed undefiled: but whoremongers and adulterers God will judge."

Revelation 21:8: "But the fearful, and unbelieving, and the abominable, and murderers, and whoremongers, and sorcerers, and idolaters, and all liars, shall have their part in the lake which burneth with fire and brimstone: which is the second death."

Revelation 22:15: "For without are dogs, and sorcerers, and whoremongers, and murderers, and idolaters, and whosoever loveth and maketh a lie."

## **WHORES**

Occurrences: 2

Ezekiel 16:33: "They give gifts to all whores: but thou givest thy gifts to all thy lovers, and hirest them, that they may come unto thee on every side for thy whoredom."

Hosea 4:14: "I will not punish your daughters when they commit whoredom, nor your spouses when they commit adultery: for themselves are separated with whores, and they sacrifice with harlots: therefore the people that doth not understand shall fall."

## **WHORING**

Occurrences: 18

Exodus 34:15: "Lest thou make a covenant with the inhabitants of the land, and they go a whoring

after their gods, and do sacrifice unto their gods, and one call thee, and thou eat of his sacrifice;" Exodus 34:16: "And thou take of their daughters unto thy sons, and their daughters go a whoring after their gods, and make thy sons go a whoring after their gods."

Leviticus 17:7: "And they shall no more offer their sacrifices unto devils, after whom they have gone a whoring. This shall be a statute for ever unto them throughout their generations."

Leviticus 20:5: "Then I will set my face against that man, and against his family, and will cut him off, and all that go a whoring after him, to commit whoredom with Molech, from among their people."

Leviticus 20:6: "And the soul that turneth after such as have familiar spirits, and after wizards, to go a whoring after them, I will even set my face against that soul, and will cut him off from among his people."

Numbers 15:39: "And it shall be unto you for a fringe, that ye may look upon it, and remember all the commandments of the LORD, and do them; and that ye seek not after your own heart and your own eyes, after which ye use to go a whoring:"

Deuteronomy 31:16: "And the LORD said unto Moses, Behold, thou shalt sleep with thy fathers; and this people will rise up, and go a whoring after the gods of the strangers of the land, whither they go to be among them, and will forsake me, and break my covenant which I have made with them."

Judges 2:17: "And yet they would not hearken unto their judges, but they went a whoring after other gods, and bowed themselves unto them: they turned quickly out of the way which their fathers walked in, obeying the commandments of the LORD; but they did not so."

Judges 8:27: "And Gideon made an ephod thereof, and put it in his city, even in Ophrah: and all Israel went thither a whoring after it: which thing became a snare unto Gideon, and to his house."

Judges 8:33: "And it came to pass, as soon as Gideon was dead, that the children of Israel turned again, and went a whoring after Baalim, and made Baalberith their god."

1 Chronicles 5:25: "And they transgressed against the God of their fathers, and went a whoring after the gods of the people of the land, whom God destroyed before them."

2 Chronicles 21:13: "But hast walked in the way of the kings of Israel, and hast made Judah and the inhabitants of Jerusalem to go a whoring, like to the whoredoms of the house of Ahab, and also hast slain thy brethren of thy father's house, which were better than thyself:"

Psalms 73:27: "For, lo, they that are far from thee shall perish: thou hast destroyed all them that go a whoring from thee."

Psalms 106:39: "Thus were they defiled with their own works, and went a whoring with their own inventions."

Ezekiel 6:9: "And they that escape of you shall remember me among the nations whither they shall be carried captives, because I am broken with their whorish heart, which hath departed from me, and with their eyes, which go a whoring after their idols: and they shall lothe themselves for the evils which they have committed in all their abominations."

Ezekiel 23:30: "I will do these things unto thee, because thou hast gone a whoring after the heathen, and because thou art polluted with their idols."

Hosea 4:12: "My people ask counsel at their stocks, and their staff declareth unto them: for the spirit of whoredoms hath caused them to err, and they have gone a whoring from under their God."

Hosea 9:1: "Rejoice not, O Israel, for joy, as other people: for thou hast gone a whoring from thy God, thou hast loved a reward upon every cornfloor."

## **WHORISH**

Occurrences: 3

Proverbs 6:26: "For by means of a whorish woman a man is brought to a piece of bread: and the adulteress will hunt for the precious life."

Ezekiel 6:9: "And they that escape of you shall remember me among the nations whither they shall

be carried captives, because I am broken with their whorish heart, which hath departed from me, and with their eyes, which go a whoring after their idols: and they shall lothe themselves for the evils which they have committed in all their abominations."

Ezekiel 16:30: "How weak is thine heart, saith the LORD GOD, seeing thou doest all these things, the work of an imperious whorish woman;"

## WHOSE

Occurrences: 293

Genesis 1:11: "And God said, Let the earth bring forth grass, the herb yielding seed, and the fruit tree yielding fruit after his kind, whose seed is in itself, upon the earth: and it was so."

Genesis 1:12: "And the earth brought forth grass, and herb yielding seed after his kind, and the tree yielding fruit, whose seed was in itself, after his kind: and God saw that it was good."

Genesis 7:22: "All in whose nostrils was the breath of life, of all that was in the dry land, died."

Genesis 11:4: "And they said, Go to, let us build us a city and a tower, whose top may reach unto heaven; and let us make us a name, lest we be scattered abroad upon the face of the whole earth."

Genesis 16:1: "Now Sarai Abram's wife bare him no children: and she had an handmaid, an Egyptian, whose name was Hagar."

Genesis 17:14: "And the uncircumcised man child whose flesh of his foreskin is not circumcised, that soul shall be cut off from his people; he hath broken my covenant."

Genesis 22:24: "And his concubine, whose name was Reumah, she bare also Tebah, and Gaham, and Thahash, and Maachah."

Genesis 24:23: "And said, Whose daughter art thou? tell me, I pray thee: is there room in thy father's house for us to lodge in?"

Genesis 24:37: "And my master made me swear, saying, Thou shalt not take a wife to my son of the daughters of the Canaanites, in whose land I dwell:"

Genesis 24:47: "And I asked her, and said, Whose daughter art thou? And she said, the daughter of Bethuel, Nahor's son, whom Milcah bare unto him: and I put the earring upon her face, and the bracelets upon her hands."

Genesis 32:17: "And he commanded the foremost, saying, When Esau my brother meeteth thee, and asketh thee, saying, Whose art thou? and whither goest thou? and whose are these before thee?"

Genesis 38:1: "And it came to pass at that time, that Judah went down from his brethren, and turned in to a certain Adullamite, whose name was Hirah."

Genesis 38:2: "And Judah saw there a daughter of a certain Canaanite, whose name was Shuah; and he took her, and went in unto her."

Genesis 38:6: "And Judah took a wife for Er his firstborn, whose name was Tamar."

Genesis 38:25: "When she was brought forth, she sent to her father in law, saying, By the man, whose these are, am I with child: and she said, Discern, I pray thee, whose are these, the signet, and bracelets, and staff."

Genesis 44:17: "And he said, God forbid that I should do so: but the man in whose hand the cup is found, he shall be my servant; and as for you, get you up in peace unto your father."

Genesis 49:22: "Joseph is a fruitful bough, even a fruitful bough by a well; whose branches run over the wall:"

Exodus 34:14: "For thou shalt worship no other god: for the LORD, whose name is Jealous, is a jealous God:"

Exodus 35:21: "And they came, every one whose heart stirred him up, and every one whom his spirit made willing, and they brought the LORD's offering to the work of the tabernacle of the congregation, and for all his service, and for the holy garments."

Exodus 35:26: "And all the women whose heart stirred them up in wisdom spun goats' hair."

Exodus 35:29: "The children of Israel brought a willing offering unto the LORD, every man and woman, whose heart made them willing to bring for all manner of work, which the LORD had

commanded to be made by the hand of Moses."

Exodus 36:2: "And Moses called Bezaleel and Aholiab, and every wise hearted man, in whose heart the LORD had put wisdom, even every one whose heart stirred him up to come unto the work to do it:"

Leviticus 13:40: "And the man whose hair is fallen off his head, he is bald; yet is he clean."

Leviticus 14:32: "This is the law of him in whom is the plague of leprosy, whose hand is not able to get that which pertaineth to his cleansing."

Leviticus 15:32: "This is the law of him that hath an issue, and of him whose seed goeth from him, and is defiled therewith;"

Leviticus 16:27: "And the bullock for the sin offering, and the goat for the sin offering, whose blood was brought in to make atonement in the holy place, shall one carry forth without the camp; and they shall burn in the fire their skins, and their flesh, and their dung."

Leviticus 21:10: "And he that is the high priest among his brethren, upon whose head the anointing oil was poured, and that is consecrated to put on the garments, shall not uncover his head, nor rend his clothes;"

Leviticus 22:4: "What man soever of the seed of Aaron is a leper, or hath a running issue; he shall not eat of the holy things, until he be clean. And whoso toucheth any thing that is unclean by the dead, or a man whose seed goeth from him;"

Leviticus 24:10: "And the son of an Israelitish woman, whose father was an Egyptian, went out among the children of Israel: and this son of the Israelitish woman and a man of Israel strove together in the camp;"

Numbers 24:3: "And he took up his parable, and said, Balaam the son of Beor hath said, and the man whose eyes are open hath said:"

Numbers 24:15: "And he took up his parable, and said, Balaam the son of Beor hath said, and the man whose eyes are open hath said:"

Deuteronomy 8:9: "A land wherein thou shalt eat bread without scarceness, thou shalt not lack any thing in it; a land whose stones are iron, and out of whose hills thou mayest dig brass."

Deuteronomy 19:1: "When the LORD thy God hath cut off the nations, whose land the LORD thy God giveth thee, and thou succeedest them, and dwellest in their cities, and in their houses;"

Deuteronomy 28:49: "The LORD shall bring a nation against thee from far, from the end of the earth, as swift as the eagle flieth; a nation whose tongue thou shalt not understand;"

Deuteronomy 29:18: "Lest there should be among you man, or woman, or family, or tribe, whose heart turneth away this day from the LORD our God, to go and serve the gods of these nations; lest there should be among you a root that beareth gall and wormwood;"

Joshua 24:15: "And if it seem evil unto you to serve the LORD, choose you this day whom ye will serve; whether the gods which your fathers served that were on the other side of the flood, or the gods of the Amorites, in whose land ye dwell: but as for me and my house, we will serve the LORD."

Judges 4:2: "And the LORD sold them into the hand of Jabin king of Canaan, that reigned in Hazor; the captain of whose host was Sisera, which dwelt in Harosheth of the Gentiles."

Judges 6:10: "And I said unto you, I am the LORD your God; fear not the gods of the Amorites, in whose land ye dwell: but ye have not obeyed my voice."

Judges 8:31: "And his concubine that was in Shechem, she also bare him a son, whose name he called Abimelech."

Judges 13:2: "And there was a certain man of Zorah, of the family of the Danites, whose name was Manoah; and his wife was barren, and bare not."

Judges 16:4: "And it came to pass afterward, that he loved a woman in the valley of Sorek, whose name was Delilah."

Judges 17:1: "And there was a man of mount Ephraim, whose name was Micah."

Ruth 2:2: "And Ruth the Moabitess said unto Naomi, Let me now go to the field, and glean ears of



corn after him in whose sight I shall find grace. And she said unto her, Go, my daughter."

Ruth 2:5: "Then said Boaz unto his servant that was set over the reapers, Whose damsel is this?"

Ruth 2:12: "The LORD recompense thy work, and a full reward be given thee of the LORD God of Israel, under whose wings thou art come to trust."

Ruth 3:2: "And now is not Boaz of our kindred, with whose maidens thou wast? Behold, he winnoweth barley to night in the threshingfloor."

1 Samuel 9:1: "Now there was a man of Benjamin, whose name was Kish, the son of Abiel, the son of Zeror, the son of Bechorath, the son of Aphiah, a Benjamite, a mighty man of power."

1 Samuel 9:2: "And he had a son, whose name was Saul, a choice young man, and a goodly: and there was not among the children of Israel a goodlier person than he: from his shoulders and upward he was higher than any of the people."

1 Samuel 10:26: "And Saul also went home to Gibeah; and there went with him a band of men, whose hearts God had touched."

1 Samuel 12:3: "Behold, here I am: witness against me before the LORD, and before his anointed: whose ox have I taken? or whose ass have I taken? or whom have I defrauded? whom have I oppressed? or of whose hand have I received any bribe to blind mine eyes therewith? and I will restore it you."

1 Samuel 17:4: "And there went out a champion out of the camp of the Philistines, named Goliath, of Gath, whose height was six cubits and a span."

1 Samuel 17:12: "Now David was the son of that Ephrathite of Bethlehemjudah, whose name was Jesse; and he had eight sons: and the man went among men for an old man in the days of Saul."

1 Samuel 17:55: "And when Saul saw David go forth against the Philistine, he said unto Abner, the captain of the host, Abner, whose son is this youth? And Abner said, As thy soul liveth, O king, I cannot tell."

1 Samuel 17:56: "And the king said, Enquire thou whose son the stripling is."

1 Samuel 17:58: "And Saul said to him, Whose son art thou, thou young man? And David answered, I am the son of thy servant Jesse the Bethlehemite."

1 Samuel 25:2: "And there was a man in Maon, whose possessions were in Carmel; and the man was very great, and he had three thousand sheep, and a thousand goats: and he was shearing his sheep in Carmel."

2 Samuel 3:7: "And Saul had a concubine, whose name was Rizpah, the daughter of Aiah: and Ishbosheth said to Abner, Wherefore hast thou gone in unto my father's concubine?"

2 Samuel 3:12: "And Abner sent messengers to David on his behalf, saying, Whose is the land? saying also, Make thy league with me, and, behold, my hand shall be with thee, to bring about all Israel unto thee."

2 Samuel 6:2: "And David arose, and went with all the people that were with him from Baale of Judah, to bring up from thence the ark of God, whose name is called by the name of the LORD of hosts that dwelleth between the cherubims."

2 Samuel 9:2: "And there was of the house of Saul a servant whose name was Ziba. And when they had called him unto David, the king said unto him, Art thou Ziba? And he said, Thy servant is he."

2 Samuel 9:12: "And Mephibosheth had a young son, whose name was Micha. And all that dwelt in the house of Ziba were servants unto Mephibosheth."

2 Samuel 13:1: "And it came to pass after this, that Absalom the son of David had a fair sister, whose name was Tamar; and Amnon the son of David loved her."

2 Samuel 13:3: "But Amnon had a friend, whose name was Jonadab, the son of Shimeah David's brother: and Jonadab was a very subtil man."

2 Samuel 14:27: "And unto Absalom there were born three sons, and one daughter, whose name was Tamar: she was a woman of a fair countenance."

2 Samuel 16:5: "And when king David came to Bahurim, behold, thence came out a man of the family of the house of Saul, whose name was Shimei, the son of Gera: he came forth, and cursed

still as he came."

2 Samuel 16:8: "The LORD hath returned upon thee all the blood of the house of Saul, in whose stead thou hast reigned; and the LORD hath delivered the kingdom into the hand of Absalom thy son: and, behold, thou art taken in thy mischief, because thou art a bloody man."

2 Samuel 17:10: "And he also that is valiant, whose heart is as the heart of a lion, shall utterly melt: for all Israel knoweth that thy father is a mighty man, and they which be with him are valiant men."

2 Samuel 17:25: "And Absalom made Amasa captain of the host instead of Joab: which Amasa was a man's son, whose name was Ithra an Israelite, that went in to Abigail the daughter of Nahash, sister to Zeruah Joab's mother."

2 Samuel 20:1: "And there happened to be there a man of Belial, whose name was Sheba, the son of Bichri, a Benjamite: and he blew a trumpet, and said, We have no part in David, neither have we inheritance in the son of Jesse: every man to his tents, O Israel."

2 Samuel 21:16: "And Ishbibenob, which was of the sons of the giant, the weight of whose spear weighed three hundred shekels of brass in weight, he being girded with a new sword, thought to have slain David."

2 Samuel 21:19: "And there was again a battle in Gob with the Philistines, where Elhanan the son of Jaareoregim, a Bethlehemite, slew the brother of Goliath the Gittite, the staff of whose spear was like a weaver's beam."

1 Kings 3:26: "Then spake the woman whose the living child was unto the king, for her bowels yearned upon her son, and she said, O my lord, give her the living child, and in no wise slay it. But the other said, Let it be neither mine nor thine, but divide it."

1 Kings 8:39: "Then hear thou in heaven thy dwelling place, and forgive, and do, and give to every man according to his ways, whose heart thou knowest; (for thou, even thou only, knowest the hearts of all the children of men;)"

1 Kings 11:26: "And Jeroboam the son of Nebat, an Ephrathite of Zereda, Solomon's servant, whose mother's name was Zeruah, a widow woman, even he lifted up his hand against the king."

2 Kings 7:2: "Then a lord on whose hand the king leaned answered the man of God, and said, Behold, if the LORD would make windows in heaven, might this thing be? And he said, Behold, thou shalt see it with thine eyes, but shalt not eat thereof."

2 Kings 7:17: "And the king appointed the lord on whose hand he leaned to have the charge of the gate: and the people trode upon him in the gate, and he died, as the man of God had said, who spake when the king came down to him."

2 Kings 8:1: "Then spake Elisha unto the woman, whose son he had restored to life, saying, Arise, and go thou and thine household, and sojourn wheresoever thou canst sojourn: for the LORD hath called for a famine; and it shall also come upon the land seven years."

2 Kings 8:5: "And it came to pass, as he was telling the king how he had restored a dead body to life, that, behold, the woman, whose son he had restored to life, cried to the king for her house and for her land. And Gehazi said, My lord, O king, this is the woman, and this is her son, whom Elisha restored to life."

2 Kings 12:15: "Moreover they reckoned not with the men, into whose hand they delivered the money to be bestowed on workmen: for they dealt faithfully."

2 Kings 18:22: "But if ye say unto me, We trust in the LORD our God: is not that he, whose high places and whose altars Hezekiah hath taken away, and hath said to Judah and Jerusalem, Ye shall worship before this altar in Jerusalem?"

1 Chronicles 2:16: "Whose sisters were Zeruah, and Abigail. And the sons of Zeruah; Abishai, and Joab, and Asahel, three."

1 Chronicles 2:26: "Jerahmeel had also another wife, whose name was Atarah; she was the mother of Onam."

1 Chronicles 2:34: "Now Sheshan had no sons, but daughters. And Sheshan had a servant, an Egyptian, whose name was Jarha."

1 Chronicles 7:2: "And the sons of Tola; Uzzi, and Rephaiah, and Jeriel, and Jahmai, and Jibsam, and Shemuel, heads of their father's house, to wit, of Tola: they were valiant men of might in their generations; whose number was in the days of David two and twenty thousand and six hundred."

1 Chronicles 7:15: "And Machir took to wife the sister of Huppim and Shuppim, whose sister's name was Maachah;) and the name of the second was Zelophehad: and Zelophehad had daughters."

1 Chronicles 8:29: "And at Gibeon dwelt the father of Gibeon; whose wife's name was Maachah:"

1 Chronicles 8:38: "And Azel had six sons, whose names are these, Azrikam, Bocheru, and Ishmael, and Sheariah, and Obadiah, and Hanan. All these were the sons of Azel."

1 Chronicles 9:35: "And in Gibeon dwelt the father of Gibeon, Jehiel, whose wife's name was Maachah:"

1 Chronicles 9:44: "And Azel had six sons, whose names are these, Azrikam, Bocheru, and Ishmael, and Sheariah, and Obadiah, and Hanan: these were the sons of Azel."

1 Chronicles 12:8: "And of the Gadites there separated themselves unto David into the hold to the wilderness men of might, and men of war fit for the battle, that could handle shield and buckler, whose faces were like the faces of lions, and were as swift as the roes upon the mountains;"

1 Chronicles 13:6: "And David went up, and all Israel, to Baalah, that is, to Kirjathjearim, which belonged to Judah, to bring up thence the ark of God the LORD, that dwelleth between the cherubims, whose name is called on it."

1 Chronicles 20:5: "And there was war again with the Philistines; and Elhanan the son of Jair slew Lahmi the brother of Goliath the Gittite, whose spear staff was like a weaver's beam."

1 Chronicles 20:6: "And yet again there was war at Gath, where was a man of great stature, whose fingers and toes were four and twenty, six on each hand, and six on each foot and he also was the son of the giant."

1 Chronicles 26:7: "The sons of Shemaiah; Othni, and Rephael, and Obed, Elzabad, whose brethren were strong men, Elihu, and Semachiah."

2 Chronicles 6:30: "Then hear thou from heaven thy dwelling place, and forgive, and render unto every man according unto all his ways, whose heart thou knowest; (for thou only knowest the hearts of the children of men:)"

2 Chronicles 16:9: "For the eyes of the LORD run to and fro throughout the whole earth, to shew himself strong in the behalf of them whose heart is perfect toward him. Herein thou hast done foolishly: therefore from henceforth thou shalt have wars."

2 Chronicles 28:9: "But a prophet of the LORD was there, whose name was Oded: and he went out before the host that came to Samaria, and said unto them, Behold, because the LORD God of your fathers was wroth with Judah, he hath delivered them into your hand, and ye have slain them in a rage that reacheth up unto heaven."

Ezra 1:5: "Then rose up the chief of the fathers of Judah and Benjamin, and the priests, and the Levites, with all them whose spirit God had raised, to go up to build the house of the LORD which is in Jerusalem."

Ezra 5:14: "And the vessels also of gold and silver of the house of God, which Nebuchadnezzar took out of the temple that was in Jerusalem, and brought them into the temple of Babylon, those did Cyrus the king take out of the temple of Babylon, and they were delivered unto one, whose name was Sheshbazzar, whom he had made governor;"

Ezra 7:15: "And to carry the silver and gold, which the king and his counsellors have freely offered unto the God of Israel, whose habitation is in Jerusalem,"

Ezra 8:13: "And of the last sons of Adonikam, whose names are these, Eliphelet, Jeiel, and Shemaiah, and with them threescore males."

Esther 2:5: "Now in Shushan the palace there was a certain Jew, whose name was Mordecai, the son of Jair, the son of Shimei, the son of Kish, a Benjaminite;"

Job 1:1: "There was a man in the land of Uz, whose name was Job; and that man was perfect and upright, and one that feared God, and eschewed evil."

Job 3:23: "Why is light given to a man whose way is hid, and whom God hath hedged in?"

Job 4:19: "How much less in them that dwell in houses of clay, whose foundation is in the dust, which are crushed before the moth?"

Job 5:5: "Whose harvest the hungry eateth up, and taketh it even out of the thorns, and the robber swalloweth up their substance."

Job 8:14: "Whose hope shall be cut off, and whose trust shall be a spider's web."

Job 12:6: "The tabernacles of robbers prosper, and they that provoke God are secure; into whose hand God bringeth abundantly."

Job 12:10: "In whose hand is the soul of every living thing, and the breath of all mankind."

Job 22:16: "Which were cut down out of time, whose foundation was overflown with a flood:"

Job 26:4: "To whom hast thou uttered words? and whose spirit came from thee?"

Job 30:1: "But now they that are younger than I have me in derision, whose fathers I would have disdained to have set with the dogs of my flock."

Job 38:29: "Out of whose womb came the ice? and the hoary frost of heaven, who hath gendered it?"

Job 39:6: "Whose house I have made the wilderness, and the barren land his dwellings."

Psalms 15:4: "In whose eyes a vile person is contemned; but he honoureth them that fear the LORD. He that sweareth to his own hurt, and changeth not."

Psalms 17:14: "From men which are thy hand, O LORD, from men of the world, which have their portion in this life, and whose belly thou fillest with thy hid treasure: they are full of children, and leave the rest of their substance to their babes."

Psalms 26:10: "In whose hands is mischief, and their right hand is full of bribes."

Psalms 32:1: "Blessed is he whose transgression is forgiven, whose sin is covered."

Psalms 32:2: "Blessed is the man unto whom the LORD imputeth not iniquity, and in whose spirit there is no guile."

Psalms 32:9: "Be ye not as the horse, or as the mule, which have no understanding: whose mouth must be held in with bit and bridle, lest they come near unto thee."

Psalms 33:12: "Blessed is the nation whose God is the LORD; and the people whom he hath chosen for his own inheritance."

Psalms 38:14: "Thus I was as a man that heareth not, and in whose mouth are no reproofs."

Psalms 57:4: "My soul is among lions: and I lie even among them that are set on fire, even the sons of men, whose teeth are spears and arrows, and their tongue a sharp sword."

Psalms 78:8: "And might not be as their fathers, a stubborn and rebellious generation; a generation that set not their heart aright, and whose spirit was not stedfast with God."

Psalms 83:18: "That men may know that thou, whose name alone is JEHOVAH, art the most high over all the earth."

Psalms 84:5: "Blessed is the man whose strength is in thee; in whose heart are the ways of them."

Psalms 105:18: "Whose feet they hurt with fetters: he was laid in iron:"

Psalms 144:8: "Whose mouth speaketh vanity, and their right hand is a right hand of falsehood."

Psalms 144:11: "Rid me, and deliver me from the hand of strange children, whose mouth speaketh vanity, and their right hand is a right hand of falsehood:"

Psalms 144:15: "Happy is that people, that is in such a case: yea, happy is that people, whose God is the LORD."

Psalms 146:5: "Happy is he that hath the God of Jacob for his help, whose hope is in the LORD his God:"

Proverbs 2:15: "Whose ways are crooked, and they froward in their paths:"

Proverbs 26:26: "Whose hatred is covered by deceit, his wickedness shall be shewed before the whole congregation."

Proverbs 30:14: "There is a generation, whose teeth are as swords, and their jaw teeth as knives, to devour the poor from off the earth, and the needy from among men."

Ecclesiastes 2:21: "For there is a man whose labour is in wisdom, and in knowledge, and in equity; yet to a man that hath not laboured therein shall he leave it for his portion. This also is vanity and a great evil."

Ecclesiastes 7:26: "And I find more bitter than death the woman, whose heart is snares and nets, and her hands as bands: whoso pleaseth God shall escape from her; but the sinner shall be taken by her."

Isaiah 1:30: "For ye shall be as an oak whose leaf fadeth, and as a garden that hath no water."

Isaiah 2:22: "Cease ye from man, whose breath is in his nostrils: for wherein is he to be accounted of?"

Isaiah 5:28: "Whose arrows are sharp, and all their bows bent, their horses' hoofs shall be counted like flint, and their wheels like a whirlwind:"

Isaiah 6:13: "But yet in it shall be a tenth, and it shall return, and shall be eaten: as a teil tree, and as an oak, whose substance is in them, when they cast their leaves: so the holy seed shall be the substance thereof."

Isaiah 10:10: "As my hand hath found the kingdoms of the idols, and whose graven images did excel them of Jerusalem and of Samaria;"

Isaiah 14:2: "And the people shall take them, and bring them to their place: and the house of Israel shall possess them in the land of the LORD for servants and handmaids: and they shall take them captives, whose captives they were; and they shall rule over their oppressors."

Isaiah 18:2: "That sendeth ambassadors by the sea, even in vessels of bulrushes upon the waters, saying, Go, ye swift messengers, to a nation scattered and peeled, to a people terrible from their beginning hitherto; a nation meted out and trodden down, whose land the rivers have spoiled!"

Isaiah 18:7: "In that time shall the present be brought unto the LORD of hosts of a people scattered and peeled, and from a people terrible from their beginning hitherto; a nation meted out and trodden under foot, whose land the rivers have spoiled, to the place of the name of the LORD of hosts, the mount Zion."

Isaiah 23:7: "Is this your joyous city, whose antiquity is of ancient days? her own feet shall carry her afar off to sojourn."

Isaiah 23:8: "Who hath taken this counsel against Tyre, the crowning city, whose merchants are princes, whose traffickers are the honourable of the earth?"

Isaiah 26:3: "Thou wilt keep him in perfect peace, whose mind is stayed on thee: because he trusteth in thee."

Isaiah 28:1: "Woe to the crown of pride, to the drunkards of Ephraim, whose glorious beauty is a fading flower, which are on the head of the fat valleys of them that are overcome with wine!"

Isaiah 30:13: "Therefore this iniquity shall be to you as a breach ready to fall, swelling out in a high wall, whose breaking cometh suddenly at an instant."

Isaiah 31:9: "And he shall pass over to his strong hold for fear, and his princes shall be afraid of the ensign, saith the LORD, whose fire is in Zion, and his furnace in Jerusalem."

Isaiah 36:7: "But if thou say to me, We trust in the LORD our God: is it not he, whose high places and whose altars Hezekiah hath taken away, and said to Judah and to Jerusalem, Ye shall worship before this altar?"

Isaiah 43:14: "Thus saith the LORD, your redeemer, the Holy One of Israel; For your sake I have sent to Babylon, and have brought down all their nobles, and the Chaldeans, whose cry is in the ships."

Isaiah 45:1: "Thus saith the LORD to his anointed, to Cyrus, whose right hand I have holden, to subdue nations before him; and I will loose the loins of kings, to open before him the two leaved gates; and the gates shall not be shut;"

Isaiah 51:7: "Hearken unto me, ye that know righteousness, the people in whose heart is my law; fear ye not the reproach of men, neither be ye afraid of their revilings."

Isaiah 51:15: "But I am the LORD thy God, that divided the sea, whose waves roared: The LORD of hosts is his name."

Isaiah 57:15: "For thus saith the high and lofty One that inhabiteth eternity, whose name is Holy; I dwell in the high and holy place, with him also that is of a contrite and humble spirit, to revive the spirit of the humble, and to revive the heart of the contrite ones."

Isaiah 57:20: "But the wicked are like the troubled sea, when it cannot rest, whose waters cast up mire and dirt."

Isaiah 58:11: "And the LORD shall guide thee continually, and satisfy thy soul in drought, and make fat thy bones: and thou shalt be like a watered garden, and like a spring of water, whose waters fail not."

Jeremiah 5:15: "Lo, I will bring a nation upon you from far, O house of Israel, saith the LORD: it is a mighty nation, it is an ancient nation, a nation whose language thou knowest not, neither understandest what they say."

Jeremiah 17:5: "Thus saith the LORD; Cursed be the man that trusteth in man, and maketh flesh his arm, and whose heart departeth from the LORD."

Jeremiah 17:7: "Blessed is the man that trusteth in the LORD, and whose hope the LORD is."

Jeremiah 19:13: "And the houses of Jerusalem, and the houses of the kings of Judah, shall be defiled as the place of Tophet, because of all the houses upon whose roofs they have burned incense unto all the host of heaven, and have poured out drink offerings unto other gods."

Jeremiah 22:25: "And I will give thee into the hand of them that seek thy life, and into the hand of them whose face thou fearest, even into the hand of Nebuchadrezzar king of Babylon, and into the hand of the Chaldeans."

Jeremiah 32:29: "And the Chaldeans, that fight against this city, shall come and set fire on this city, and burn it with the houses, upon whose roofs they have offered incense unto Baal, and poured out drink offerings unto other gods, to provoke me to anger."

Jeremiah 33:5: "They come to fight with the Chaldeans, but it is to fill them with the dead bodies of men, whom I have slain in mine anger and in my fury, and for all whose wickedness I have hid my face from this city."

Jeremiah 37:13: "And when he was in the gate of Benjamin, a captain of the ward was there, whose name was Irijah, the son of Shelemiah, the son of Hananiah; and he took Jeremiah the prophet, saying, Thou fallest away to the Chaldeans."

Jeremiah 44:28: "Yet a small number that escape the sword shall return out of the land of Egypt into the land of Judah, and all the remnant of Judah, that are gone into the land of Egypt to sojourn there, shall know whose words shall stand, mine, or their's."

Jeremiah 46:7: "Who is this that cometh up as a flood, whose waters are moved as the rivers?"

Jeremiah 46:18: "As I live, saith the King, whose name is the LORD of hosts, Surely as Tabor is among the mountains, and as Carmel by the sea, so shall he come."

Jeremiah 48:15: "Moab is spoiled, and gone up out of her cities, and his chosen young men are gone down to the slaughter, saith the King, whose name is the LORD of hosts."

Jeremiah 49:12: "For thus saith the LORD; Behold, they whose judgment was not to drink of the cup have assuredly drunken; and art thou he that shall altogether go unpunished? thou shalt not go unpunished, but thou shalt surely drink of it."

Jeremiah 51:57: "And I will make drunk her princes, and her wise men, her captains, and her rulers, and her mighty men: and they shall sleep a perpetual sleep, and not wake, saith the King, whose name is the LORD of hosts."

Ezekiel 3:6: "Not to many people of a strange speech and of an hard language, whose words thou canst not understand. Surely, had I sent thee to them, they would have hearkened unto thee."

Ezekiel 11:21: "But as for them whose heart walketh after the heart of their detestable things and their abominations, I will recompense their way upon their own heads, saith the Lord GOD."

Ezekiel 17:6: "And it grew, and became a spreading vine of low stature, whose branches turned toward him, and the roots thereof were under him: so it became a vine, and brought forth branches, and shot forth sprigs."

Ezekiel 17:16: "As I live, saith the Lord GOD, surely in the place where the king dwelleth that made him king, whose oath he despised, and whose covenant he brake, even with him in the midst of Babylon he shall die."

Ezekiel 20:9: "But I wrought for my name's sake, that it should not be polluted before the heathen, among whom they were, in whose sight I made myself known unto them, in bringing them forth out of the land of Egypt."

Ezekiel 20:14: "But I wrought for my name's sake, that it should not be polluted before the heathen, in whose sight I brought them out."

Ezekiel 20:22: "Nevertheless I withdrew mine hand, and wrought for my name's sake, that it should not be polluted in the sight of the heathen, in whose sight I brought them forth."

Ezekiel 21:25: "And thou, profane wicked prince of Israel, whose day is come, when iniquity shall have an end,"

Ezekiel 21:27: "I will overturn, overturn, overturn, it: and it shall be no more, until he come whose right it is; and I will give it him."

Ezekiel 21:29: "Whiles they see vanity unto thee, whiles they divine a lie unto thee, to bring thee upon the necks of them that are slain, of the wicked, whose day is come, when their iniquity shall have an end."

Ezekiel 23:20: "For she doted upon their paramours, whose flesh is as the flesh of asses, and whose issue is like the issue of horses."

Ezekiel 24:6: "Wherefore thus saith the Lord GOD; Woe to the bloody city, to the pot whose scum is therein, and whose scum is not gone out of it! bring it out piece by piece; let no lot fall upon it."

Ezekiel 32:23: "Whose graves are set in the sides of the pit, and her company is round about her grave: all of them slain, fallen by the sword, which caused terror in the land of the living."

Ezekiel 40:3: "And he brought me thither, and, behold, there was a man, whose appearance was like the appearance of brass, with a line of flax in his hand, and a measuring reed; and he stood in the gate."

Ezekiel 40:45: "And he said unto me, This chamber, whose prospect is toward the south, is for the priests, the keepers of the charge of the house."

Ezekiel 40:46: "And the chamber whose prospect is toward the north is for the priests, the keepers of the charge of the altar: these are the sons of Zadok among the sons of Levi, which come near to the LORD to minister unto him."

Ezekiel 42:15: "Now when he had made an end of measuring the inner house, he brought me forth toward the gate whose prospect is toward the east, and measured it round about."

Ezekiel 43:4: "And the glory of the LORD came into the house by the way of the gate whose prospect is toward the east."

Ezekiel 47:12: "And by the river upon the bank thereof, on this side and on that side, shall grow all trees for meat, whose leaf shall not fade, neither shall the fruit thereof be consumed: it shall bring forth new fruit according to his months, because their waters they issued out of the sanctuary: and the fruit thereof shall be for meat, and the leaf thereof for medicine."

Daniel 2:11: "And it is a rare thing that the king requireth, and there is none other that can shew it before the king, except the gods, whose dwelling is not with flesh."

Daniel 2:26: "The king answered and said to Daniel, whose name was Belteshazzar, Art thou able to make known unto me the dream which I have seen, and the interpretation thereof?"

Daniel 2:31: "Thou, O king, sawest, and behold a great image. This great image, whose brightness was excellent, stood before thee; and the form thereof was terrible."

Daniel 3:1: "Nebuchadnezzar the king made an image of gold, whose height was threescore cubits, and the breadth thereof six cubits: he set it up in the plain of Dura, in the province of Babylon."

Daniel 3:27: "And the princes, governors, and captains, and the king's counsellors, being gathered together, saw these men, upon whose bodies the fire had no power, nor was an hair of their head singed, neither were their coats changed, nor the smell of fire had passed on them."

Daniel 4:8: "But at the last Daniel came in before me, whose name was Belteshazzar, according to the name of my God, and in whom is the spirit of the holy gods: and before him I told the dream, saying,"

Daniel 4:19: "Then Daniel, whose name was Belteshazzar, was astonished for one hour, and his thoughts troubled him. The king spake, and said, Belteshazzar, let not the dream, or the interpretation thereof, trouble thee. Belteshazzar answered and said, My lord, the dream be to them that hate thee, and the interpretation thereof to thine enemies."

Daniel 4:20: "The tree that thou sawest, which grew, and was strong, whose height reached unto the heaven, and the sight thereof to all the earth;"

Daniel 4:21: "Whose leaves were fair, and the fruit thereof much, and in it was meat for all; under which the beasts of the field dwelt, and upon whose branches the fowls of the heaven had their habitation:"

Daniel 4:34: "And at the end of the days I Nebuchadnezzar lifted up mine eyes unto heaven, and mine understanding returned unto me, and I blessed the most High, and I praised and honoured him that liveth for ever, whose dominion is an everlasting dominion, and his kingdom is from generation to generation:"

Daniel 4:37: "Now I Nebuchadnezzar praise and extol and honour the King of heaven, all whose works are truth, and his ways judgment: and those that walk in pride he is able to abase."

Daniel 5:23: "But hast lifted up thyself against the Lord of heaven; and they have brought the vessels of his house before thee, and thou, and thy lords, thy wives, and thy concubines, have drunk wine in them; and thou hast praised the gods of silver, and gold, of brass, iron, wood, and stone, which see not, nor hear, nor know: and the God in whose hand thy breath is, and whose are all thy ways, hast thou not glorified:"

Daniel 7:9: "I beheld till the thrones were cast down, and the Ancient of days did sit, whose garment was white as snow, and the hair of his head like the pure wool: his throne was like the fiery flame, and his wheels as burning fire."

Daniel 7:19: "Then I would know the truth of the fourth beast, which was diverse from all the others, exceeding dreadful, whose teeth were of iron, and his nails of brass; which devoured, brake in pieces, and stamped the residue with his feet;"

Daniel 7:20: "And of the ten horns that were in his head, and of the other which came up, and before whom three fell; even of that horn that had eyes, and a mouth that spake very great things, whose look was more stout than his fellows."

Daniel 7:27: "And the kingdom and dominion, and the greatness of the kingdom under the whole heaven, shall be given to the people of the saints of the most High, whose kingdom is an everlasting kingdom, and all dominions shall serve and obey him."

Daniel 10:1: "In the third year of Cyrus king of Persia a thing was revealed unto Daniel, whose name was called Belteshazzar; and the thing was true, but the time appointed was long: and he understood the thing, and had understanding of the vision."

Daniel 10:5: "Then I lifted up mine eyes, and looked, and behold a certain man clothed in linen, whose loins were girded with fine gold of Uphaz:"

Joel 1:6: "For a nation is come up upon my land, strong, and without number, whose teeth are the teeth of a lion, and he hath the cheek teeth of a great lion."

Amos 2:9: "Yet destroyed I the Amorite before them, whose height was like the height of the cedars, and he was strong as the oaks; yet I destroyed his fruit from above, and his roots from beneath."

Amos 5:27: "Therefore will I cause you to go into captivity beyond Damascus, saith the LORD, whose name is The God of hosts."

Obadiah 1:3: "The pride of thine heart hath deceived thee, thou that dwellest in the clefts of the rock, whose habitation is high; that saith in his heart, Who shall bring me down to the ground?"

Jonah 1:7: "And they said every one to his fellow, Come, and let us cast lots, that we may know for



whose cause this evil is upon us. So they cast lots, and the lot fell upon Jonah."

Jonah 1:8: "Then said they unto him, Tell us, we pray thee, for whose cause this evil is upon us; What is thine occupation? and whence comest thou? what is thy country? and of what people art thou?"

Micah 5:2: "But thou, Bethlehem Ephratah, though thou be little among the thousands of Judah, yet out of thee shall he come forth unto me that is to be ruler in Israel; whose goings forth have been from of old, from everlasting."

Nahum 3:8: "Art thou better than populous No, that was situate among the rivers, that had the waters round about it, whose rampart was the sea, and her wall was from the sea?"

Zechariah 6:12: "And speak unto him, saying, Thus speaketh the LORD of hosts, saying, Behold the man whose name is The BRANCH; and he shall grow up out of his place, and he shall build the temple of the LORD:"

Zechariah 11:5: "Whose possessors slay them, and hold themselves not guilty: and they that sell them say, Blessed be the LORD; for I am rich: and their own shepherds pity them not."

Matthew 3:11: "I indeed baptize you with water unto repentance. but he that cometh after me is mightier than I, whose shoes I am not worthy to bear: he shall baptize you with the Holy Ghost, and with fire:"

Matthew 3:12: "Whose fan is in his hand, and he will thoroughly purge his floor, and gather his wheat into the garner; but he will burn up the chaff with unquenchable fire."

Matthew 10:3: "Philip, and Bartholomew; Thomas, and Matthew the publican; James the son of Alphaeus, and Lebbaeus, whose surname was Thaddaeus;"

Matthew 22:20: "And he saith unto them, Whose is this image and superscription?"

Matthew 22:28: "Therefore in the resurrection whose wife shall she be of the seven? for they all had her."

Matthew 22:42: "Saying, What think ye of Christ? whose son is he? They say unto him, The son of David."

Mark 1:7: "And preached, saying, There cometh one mightier than I after me, the latchet of whose shoes I am not worthy to stoop down and unloose."

Mark 7:25: "For a certain woman, whose young daughter had an unclean spirit, heard of him, and came and fell at his feet:"

Mark 12:16: "And they brought it. And he saith unto them, Whose is this image and superscription? And they said unto him, Caesar's."

Mark 12:23: "In the resurrection therefore, when they shall rise, whose wife shall she be of them? for the seven had her to wife."

Luke 1:27: "To a virgin espoused to a man whose name was Joseph, of the house of David; and the virgin's name was Mary."

Luke 2:25: "And, behold, there was a man in Jerusalem, whose name was Simeon; and the same man was just and devout, waiting for the consolation of Israel: and the Holy Ghost was upon him."

Luke 3:16: "John answered, saying unto them all, I indeed baptize you with water; but one mightier than I cometh, the latchet of whose shoes I am not worthy to unloose: he shall baptize you with the Holy Ghost and with fire:"

Luke 3:17: "Whose fan is in his hand, and he will thoroughly purge his floor, and will gather the wheat into his garner; but the chaff he will burn with fire unquenchable."

Luke 6:6: "And it came to pass also on another sabbath, that he entered into the synagogue and taught: and there was a man whose right hand was withered."

Luke 12:20: "But God said unto him, Thou fool, this night thy soul shall be required of thee: then whose shall those things be, which thou hast provided?"

Luke 13:1: "There were present at that season some that told him of the Galilaeans, whose blood Pilate had mingled with their sacrifices."

Luke 20:24: "Shew me a penny. Whose image and superscription hath it? They answered and said,

Caesar's."

Luke 20:33: "Therefore in the resurrection whose wife of them is she? for seven had her to wife."

Luke 24:18: "And the one of them, whose name was Cleopas, answering said unto him, Art thou only a stranger in Jerusalem, and hast not known the things which are come to pass there in these days?"

John 1:6: "There was a man sent from God, whose name was John."

John 1:27: "He it is, who coming after me is preferred before me, whose shoe's latchet I am not worthy to unloose."

John 4:46: "So Jesus came again into Cana of Galilee, where he made the water wine. And there was a certain nobleman, whose son was sick at Capernaum."

John 6:42: "And they said, Is not this Jesus, the son of Joseph, whose father and mother we know? how is it then that he saith, I came down from heaven?"

John 10:12: "But he that is an hireling, and not the shepherd, whose own the sheep are not, seeth the wolf coming, and leaveth the sheep, and fleeth: and the wolf catcheth them, and scattereth the sheep."

John 11:2: "(It was that Mary which anointed the Lord with ointment, and wiped his feet with her hair, whose brother Lazarus was sick.)"

John 18:26: "One of the servants of the high priest, being his kinsman whose ear Peter cut off, saith, Did not I see thee in the garden with him?"

John 19:24: "They said therefore among themselves, Let us not rend it, but cast lots for it, whose it shall be: that the scripture might be fulfilled, which saith, They parted my raiment among them, and for my vesture they did cast lots. These things therefore the soldiers did."

John 20:23: "Whose soever sins ye remit, they are remitted unto them; and whose soever sins ye retain, they are retained."

Acts 7:58: "And cast him out of the city, and stoned him: and the witnesses laid down their clothes at a young man's feet, whose name was Saul."

Acts 10:5: "And now send men to Joppa, and call for one Simon, whose surname is Peter:"

Acts 10:6: "He lodgeth with one Simon a tanner, whose house is by the sea side: he shall tell thee what thou oughtest to do."

Acts 10:32: "Send therefore to Joppa, and call hither Simon, whose surname is Peter; he is lodged in the house of one Simon a tanner by the sea side: who, when he cometh, shall speak unto thee."

Acts 11:13: "And he shewed us how he had seen an angel in his house, which stood and said unto him, Send men to Joppa, and call for Simon, whose surname is Peter;"

Acts 12:12: "And when he had considered the thing, he came to the house of Mary the mother of John, whose surname was Mark; where many were gathered together praying."

Acts 12:25: "And Barnabas and Saul returned from Jerusalem, when they had fulfilled their ministry, and took with them John, whose surname was Mark."

Acts 13:6: "And when they had gone through the isle unto Paphos, they found a certain sorcerer, a false prophet, a Jew, whose name was Barjesus:"

Acts 13:25: "And as John fulfilled his course, he said, Whom think ye that I am? I am not he. But, behold, there cometh one after me, whose shoes of his feet I am not worthy to loose."

Acts 15:37: "And Barnabas determined to take with them John, whose surname was Mark."

Acts 16:14: "And a certain woman named Lydia, a seller of purple, of the city of Thyatira, which worshipped God, heard us: whose heart the Lord opened, that she attended unto the things which were spoken of Paul."

Acts 18:7: "And he departed thence, and entered into a certain man's house, named Justus, one that worshipped God, whose house joined hard to the synagogue."

Acts 27:23: "For there stood by me this night the angel of God, whose I am, and whom I serve,"

Acts 28:7: "In the same quarters were possessions of the chief man of the island, whose name was Publius; who received us, and lodged us three days courteously."

Acts 28:11: "And after three months we departed in a ship of Alexandria, which had wintered in the isle, whose sign was Castor and Pollux."

Romans 2:29: "But he is a Jew, which is one inwardly; and circumcision is that of the heart, in the spirit, and not in the letter; whose praise is not of men, but of God."

Romans 3:8: "And not rather, (as we be slanderously reported, and as some affirm that we say,) Let us do evil, that good may come? whose damnation is just."

Romans 3:14: "Whose mouth is full of cursing and bitterness:"

Romans 4:7: "Saying, Blessed are they whose iniquities are forgiven, and whose sins are covered."

Romans 9:5: "Whose are the fathers, and of whom as concerning the flesh Christ came, who is over all, God blessed for ever. Amen."

2 Corinthians 8:18: "And we have sent with him the brother, whose praise is in the gospel throughout all the churches;"

2 Corinthians 11:15: "Therefore it is no great thing if his ministers also be transformed as the ministers of righteousness; whose end shall be according to their works."

Galatians 3:1: "O foolish Galatians, who hath bewitched you, that ye should not obey the truth, before whose eyes Jesus Christ hath been evidently set forth, crucified among you?"

Philippians 3:19: "Whose end is destruction, whose God is their belly, and whose glory is in their shame, who mind earthly things.)"

Philippians 4:3: "And I intreat thee also, true yokefellow, help those women which laboured with me in the gospel, with Clement also, and with other my fellowlabourers, whose names are in the book of life."

2 Thessalonians 2:9: "Even him, whose coming is after the working of Satan with all power and signs and lying wonders,"

Titus 1:11: "Whose mouths must be stopped, who subvert whole houses, teaching things which they ought not, for filthy lucre's sake."

Hebrews 3:6: "But Christ as a son over his own house; whose house are we, if we hold fast the confidence and the rejoicing of the hope firm unto the end."

Hebrews 3:17: "But with whom was he grieved forty years? was it not with them that had sinned, whose carcasses fell in the wilderness?"

Hebrews 6:8: "But that which beareth thorns and briers is rejected, and is nigh unto cursing; whose end is to be burned."

Hebrews 7:6: "But he whose descent is not counted from them received tithes of Abraham, and blessed him that had the promises."

Hebrews 11:10: "For he looked for a city which hath foundations, whose builder and maker is God."

Hebrews 12:26: "Whose voice then shook the earth: but now he hath promised, saying, Yet once more I shake not the earth only, but also heaven."

Hebrews 13:7: "Remember them which have the rule over you, who have spoken unto you the word of God: whose faith follow, considering the end of their conversation."

Hebrews 13:11: "For the bodies of those beasts, whose blood is brought into the sanctuary by the high priest for sin, are burned without the camp."

1 Peter 2:24: "Who his own self bare our sins in his own body on the tree, that we, being dead to sins, should live unto righteousness: by whose stripes ye were healed."

1 Peter 3:3: "Whose adorning let it not be that outward adorning of plaiting the hair, and of wearing of gold, or of putting on of apparel;"

1 Peter 3:6: "Even as Sara obeyed Abraham, calling him lord: whose daughters ye are, as long as ye do well, and are not afraid with any amazement."

2 Peter 2:3: "And through covetousness shall they with feigned words make merchandise of you: whose judgment now of a long time lingereth not, and their damnation slumbereth not."

Jude 1:12: "These are spots in your feasts of charity, when they feast with you, feeding themselves

without fear: clouds they are without water, carried about of winds; trees whose fruit withereth, without fruit, twice dead, plucked up by the roots;"

Revelation 9:11: "And they had a king over them, which is the angel of the bottomless pit, whose name in the Hebrew tongue is Abaddon, but in the Greek tongue hath his name Apollyon."

Revelation 13:8: "And all that dwell upon the earth shall worship him, whose names are not written in the book of life of the Lamb slain from the foundation of the world."

Revelation 13:12: "And he exerciseth all the power of the first beast before him, and causeth the earth and them which dwell therein to worship the first beast, whose deadly wound was healed."

Revelation 17:8: "The beast that thou sawest was, and is not; and shall ascend out of the bottomless pit, and go into perdition: and they that dwell on the earth shall wonder, whose names were not written in the book of life from the foundation of the world, when they behold the beast that was, and is not, and yet is."

Revelation 20:11: "And I saw a great white throne, and him that sat on it, from whose face the earth and the heaven fled away; and there was found no place for them."

## WHOSO

Occurrences: 54

Genesis 9:6: "Whoso sheddeth man's blood, by man shall his blood be shed: for in the image of God made he man."

Leviticus 11:27: "And whatsoever goeth upon his paws, among all manner of beasts that go on all four, those are unclean unto you: whoso toucheth their carcase shall be unclean until the even."

Leviticus 22:4: "What man soever of the seed of Aaron is a leper, or hath a running issue; he shall not eat of the holy things, until he be clean. And whoso toucheth any thing that is unclean by the dead, or a man whose seed goeth from him;"

Numbers 35:30: "Whoso killeth any person, the murderer shall be put to death by the mouth of witnesses: but one witness shall not testify against any person to cause him to die."

Deuteronomy 19:4: "And this is the case of the slayer, which shall flee thither, that he may live: Whoso killeth his neighbour ignorantly, whom he hated not in time past;"

2 Chronicles 23:14: "Then Jehoiada the priest brought out the captains of hundreds that were set over the host, and said unto them, Have her forth of the ranges: and whoso followeth her, let him be slain with the sword. For the priest said, Slay her not in the house of the LORD."

Psalms 50:23: "Whoso offereth praise glorifieth me: and to him that ordereth his conversation aright will I shew the salvation of God."

Psalms 101:5: "Whoso privily slandereth his neighbour, him will I cut off: him that hath an high look and a proud heart will not I suffer."

Psalms 107:43: "Whoso is wise, and will observe these things, even they shall understand the lovingkindness of the LORD."

Proverbs 1:33: "But whoso hearkeneth unto me shall dwell safely, and shall be quiet from fear of evil."

Proverbs 6:32: "But whoso committeth adultery with a woman lacketh understanding: he that doeth it destroyeth his own soul."

Proverbs 8:35: "For whoso findeth me findeth life, and shall obtain favour of the LORD."

Proverbs 9:4: "Whoso is simple, let him turn in hither: as for him that wanteth understanding, she saith to him,"

Proverbs 9:16: "Whoso is simple, let him turn in hither: and as for him that wanteth understanding, she saith to him,"

Proverbs 12:1: "Whoso loveth instruction loveth knowledge: but he that hateth reproof is brutish."

Proverbs 13:13: "Whoso despiseth the word shall be destroyed: but he that feareth the commandment shall be rewarded."

Proverbs 16:20: "He that handleth a matter wisely shall find good: and whoso trusteth in the LORD,

happy is he."

Proverbs 17:5: "Whoso mocketh the poor reproacheth his Maker: and he that is glad at calamities shall not be unpunished."

Proverbs 17:13: "Whoso rewardeth evil for good, evil shall not depart from his house."

Proverbs 18:22: "Whoso findeth a wife findeth a good thing, and obtaineth favour of the LORD."

Proverbs 20:2: "The fear of a king is as the roaring of a lion: whoso provoketh him to anger sinneth against his own soul."

Proverbs 20:20: "Whoso curseth his father or his mother, his lamp shall be put out in obscure darkness."

Proverbs 21:13: "Whoso stoppeth his ears at the cry of the poor, he also shall cry himself, but shall not be heard."

Proverbs 21:23: "Whoso keepeth his mouth and his tongue keepeth his soul from troubles."

Proverbs 25:14: "Whoso boasteth himself of a false gift is like clouds and wind without rain."

Proverbs 26:27: "Whoso diggeth a pit shall fall therein: and he that rolleth a stone, it will return upon him."

Proverbs 27:18: "Whoso keepeth the fig tree shall eat the fruit thereof: so he that waiteth on his master shall be honoured."

Proverbs 28:7: "Whoso keepeth the law is a wise son: but he that is a companion of riotous men shameth his father."

Proverbs 28:10: "Whoso causeth the righteous to go astray in an evil way, he shall fall himself into his own pit: but the upright shall have good things in possession."

Proverbs 28:13: "He that covereth his sins shall not prosper: but whoso confesseth and forsaketh them shall have mercy."

Proverbs 28:18: "Whoso walketh uprightly shall be saved: but he that is perverse in his ways shall fall at once."

Proverbs 28:24: "Whoso robbeth his father or his mother, and saith, It is no transgression; the same is the companion of a destroyer."

Proverbs 28:26: "He that trusteth in his own heart is a fool: but whoso walketh wisely, he shall be delivered."

Proverbs 29:3: "Whoso loveth wisdom rejoiceth his father: but he that keepeth company with harlots spendeth his substance."

Proverbs 29:24: "Whoso is partner with a thief hateth his own soul: he heareth cursing, and bewrayeth it not."

Proverbs 29:25: "The fear of man bringeth a snare: but whoso putteth his trust in the LORD shall be safe."

Ecclesiastes 7:26: "And I find more bitter than death the woman, whose heart is snares and nets, and her hands as bands: whoso pleaseth God shall escape from her; but the sinner shall be taken by her."

Ecclesiastes 8:5: "Whoso keepeth the commandment shall feel no evil thing: and a wise man's heart discerneth both time and judgment."

Ecclesiastes 10:8: "He that diggeth a pit shall fall into it; and whoso breaketh an hedge, a serpent shall bite him."

Ecclesiastes 10:9: "Whoso removeth stones shall be hurt therewith; and he that cleaveth wood shall be endangered thereby."

Daniel 3:6: "And whoso falleth not down and worshipping shall the same hour be cast into the midst of a burning fiery furnace."

Daniel 3:11: "And whoso falleth not down and worshipping, that he should be cast into the midst of a burning fiery furnace."

Zechariah 14:17: "And it shall be, that whoso will not come up of all the families of the earth unto Jerusalem to worship the King, the LORD of hosts, even upon them shall be no rain."

Matthew 18:5: "And whoso shall receive one such little child in my name receiveth me."

Matthew 18:6: "But whoso shall offend one of these little ones which believe in me, it were better for him that a millstone were hanged about his neck, and that he were drowned in the depth of the sea."

Matthew 19:9: "And I say unto you, Whosoever shall put away his wife, except it be for fornication, and shall marry another, committeth adultery: and whoso marrieth her which is put away doth commit adultery."

Matthew 23:20: "Whoso therefore shall swear by the altar, sweareth by it, and by all things thereon."

Matthew 23:21: "And whoso shall swear by the temple, sweareth by it, and by him that dwelleth therein."

Matthew 24:15: "When ye therefore shall see the abomination of desolation, spoken of by Daniel the prophet, stand in the holy place, (whoso readeth, let him understand:)"

Mark 7:10: "For Moses said, Honour thy father and thy mother; and, Whoso curseth father or mother, let him die the death:"

John 6:54: "Whoso eateth my flesh, and drinketh my blood, hath eternal life; and I will raise him up at the last day."

James 1:25: "But whoso looketh into the perfect law of liberty, and continueth therein, he being not a forgetful hearer, but a doer of the work, this man shall be blessed in his deed."

1 John 2:5: "But whoso keepeth his word, in him verily is the love of God perfected: hereby know we that we are in him."

1 John 3:17: "But whoso hath this world's good, and seeth his brother have need, and shutteth up his bowels of compassion from him, how dwelleth the love of God in him?"

## WHOSOEVER

Occurrences: 162

Genesis 4:15: "And the LORD said unto him, Therefore whosoever slayeth Cain, vengeance shall be taken on him sevenfold. And the LORD set a mark upon Cain, lest any finding him should kill him."

Exodus 12:15: "Seven days shall ye eat unleavened bread; even the first day ye shall put away leaven out of your houses: for whosoever eateth leavened bread from the first day until the seventh day, that soul shall be cut off from Israel."

Exodus 12:19: "Seven days shall there be no leaven found in your houses: for whosoever eateth that which is leavened, even that soul shall be cut off from the congregation of Israel, whether he be a stranger, or born in the land."

Exodus 19:12: "And thou shalt set bounds unto the people round about, saying, Take heed to yourselves, that ye go not up into the mount, or touch the border of it: whosoever toucheth the mount shall be surely put to death:"

Exodus 22:19: "Whosoever lieth with a beast shall surely be put to death."

Exodus 30:33: "Whosoever compoundeth any like it, or whosoever putteth any of it upon a stranger, shall even be cut off from his people."

Exodus 30:38: "Whosoever shall make like unto that, to smell thereto, shall even be cut off from his people."

Exodus 31:14: "Ye shall keep the sabbath therefore; for it is holy unto you: every one that defileth it shall surely be put to death: for whosoever doeth any work therein, that soul shall be cut off from among his people."

Exodus 31:15: "Six days may work be done; but in the seventh is the sabbath of rest, holy to the LORD: whosoever doeth any work in the sabbath day, he shall surely be put to death."

Exodus 32:24: "And I said unto them, Whosoever hath any gold, let them break it off. So they gave it me: then I cast it into the fire, and there came out this calf."

Exodus 32:33: "And the LORD said unto Moses, Whosoever hath sinned against me, him will I blot

out of my book."

Exodus 35:2: "Six days shall work be done, but on the seventh day there shall be to you an holy day, a sabbath of rest to the LORD: whosoever doeth work therein shall be put to death."

Exodus 35:5: "Take ye from among you an offering unto the LORD: whosoever is of a willing heart, let him bring it, an offering of the LORD; gold, and silver, and brass,"

Leviticus 7:25: "For whosoever eateth the fat of the beast, of which men offer an offering made by fire unto the LORD, even the soul that eateth it shall be cut off from his people."

Leviticus 11:24: "And for these ye shall be unclean: whosoever toucheth the carcase of them shall be unclean until the even."

Leviticus 11:25: "And whosoever beareth ought of the carcase of them shall wash his clothes, and be unclean until the even."

Leviticus 11:31: "These are unclean to you among all that creep: whosoever doth touch them, when they be dead, shall be unclean until the even."

Leviticus 15:5: "And whosoever toucheth his bed shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:10: "And whosoever toucheth any thing that was under him shall be unclean until the even: and he that beareth any of those things shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:19: "And if a woman have an issue, and her issue in her flesh be blood, she shall be put apart seven days: and whosoever toucheth her shall be unclean until the even."

Leviticus 15:21: "And whosoever toucheth her bed shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:22: "And whosoever toucheth any thing that she sat upon shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:27: "And whosoever toucheth those things shall be unclean, and shall wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even."

Leviticus 17:14: "For it is the life of all flesh; the blood of it is for the life thereof: therefore I said unto the children of Israel, Ye shall eat the blood of no manner of flesh: for the life of all flesh is the blood thereof: whosoever eateth it shall be cut off."

Leviticus 18:29: "For whosoever shall commit any of these abominations, even the souls that commit them shall be cut off from among their people."

Leviticus 19:20: "And whosoever lieth carnally with a woman, that is a bondmaid, betrothed to an husband, and not at all redeemed, nor freedom given her; she shall be scourged; they shall not be put to death, because she was not free."

Leviticus 20:2: "Again, thou shalt say to the children of Israel, Whosoever he be of the children of Israel, or of the strangers that sojourn in Israel, that giveth any of his seed unto Molech; he shall surely be put to death: the people of the land shall stone him with stones."

Leviticus 21:17: "Speak unto Aaron, saying, Whosoever he be of thy seed in their generations that hath any blemish, let him not approach to offer the bread of his God."

Leviticus 22:3: "Say unto them, Whosoever he be of all your seed among your generations, that goeth unto the holy things, which the children of Israel hallow unto the LORD, having his uncleanness upon him, that soul shall be cut off from my presence: I am the LORD."

Leviticus 22:5: "Or whosoever toucheth any creeping thing, whereby he may be made unclean, or a man of whom he may take uncleanness, whatsoever uncleanness he hath;"

Leviticus 22:21: "And whosoever offereth a sacrifice of peace offerings unto the LORD to accomplish his vow, or a freewill offering in beeves or sheep, it shall be perfect to be accepted; there shall be no blemish therein."

Leviticus 24:15: "And thou shalt speak unto the children of Israel, saying, Whosoever curseth his God shall bear his sin."

Numbers 5:2: "Command the children of Israel, that they put out of the camp every leper, and every

one that hath an issue, and whosoever is defiled by the dead:"

Numbers 15:14: "And if a stranger sojourn with you, or whosoever be among you in your generations, and will offer an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD; as ye do, so he shall do."

Numbers 17:13: "Whosoever cometh any thing near unto the tabernacle of the LORD shall die: shall we be consumed with dying?"

Numbers 19:13: "Whosoever toucheth the dead body of any man that is dead, and purifieth not himself, defileth the tabernacle of the LORD; and that soul shall be cut off from Israel: because the water of separation was not sprinkled upon him, he shall be unclean; his uncleanness is yet upon him."

Numbers 19:16: "And whosoever toucheth one that is slain with a sword in the open fields, or a dead body, or a bone of a man, or a grave, shall be unclean seven days."

Numbers 31:19: "And do ye abide without the camp seven days: whosoever hath killed any person, and whosoever hath touched any slain, purify both yourselves and your captives on the third day, and on the seventh day."

Deuteronomy 18:19: "And it shall come to pass, that whosoever will not hearken unto my words which he shall speak in my name, I will require it of him."

Joshua 1:18: "Whosoever he be that doth rebel against thy commandment, and will not hearken unto thy words in all that thou commandest him, he shall be put to death: only be strong and of a good courage."

Joshua 2:19: "And it shall be, that whosoever shall go out of the doors of thy house into the street, his blood shall be upon his head, and we will be guiltless: and whosoever shall be with thee in the house, his blood shall be on our head, if any hand be upon him."

Joshua 20:9: "These were the cities appointed for all the children of Israel, and for the stranger that sojourneth among them, that whosoever killeth any person at unawares might flee thither, and not die by the hand of the avenger of blood, until he stood before the congregation."

Judges 7:3: "Now therefore go to, proclaim in the ears of the people, saying, Whosoever is fearful and afraid, let him return and depart early from mount Gilead. And there returned of the people twenty and two thousand; and there remained ten thousand."

1 Samuel 11:7: "And he took a yoke of oxen, and hewed them in pieces, and sent them throughout all the coasts of Israel by the hands of messengers, saying, Whosoever cometh not forth after Saul and after Samuel, so shall it be done unto his oxen. And the fear of the LORD fell on the people, and they came out with one consent."

2 Samuel 5:8: "And David said on that day, Whosoever getteth up to the gutter, and smiteth the Jebusites, and the lame and the blind that are hated of David's soul, he shall be chief and captain. Wherefore they said, The blind and the lame shall not come into the house."

2 Samuel 17:9: "Behold, he is hid now in some pit, or in some other place: and it will come to pass, when some of them be overthrown at the first, that whosoever heareth it will say, There is a slaughter among the people that follow Absalom."

1 Kings 13:33: "After this thing Jeroboam returned not from his evil way, but made again of the lowest of the people priests of the high places: whosoever would, he consecrated him, and he became one of the priests of the high places."

2 Kings 10:19: "Now therefore call unto me all the prophets of Baal, all his servants, and all his priests; let none be wanting: for I have a great sacrifice to do to Baal; whosoever shall be wanting, he shall not live. But Jehu did it in subtilty, to the intent that he might destroy the worshippers of Baal."

2 Kings 21:12: "Therefore thus saith the LORD God of Israel, Behold, I am bringing such evil upon Jerusalem and Judah, that whosoever heareth of it, both his ears shall tingle."

1 Chronicles 11:6: "And David said, Whosoever smiteth the Jebusites first shall be chief and captain. So Joab the son of Zeruiah went first up, and was chief."



1 Chronicles 26:28: "And all that Samuel the seer, and Saul the son of Kish, and Abner the son of Ner, and Joab the son of Zeruiah, had dedicated; and whosoever had dedicated any thing, it was under the hand of Shelomith, and of his brethren."

2 Chronicles 13:9: "Have ye not cast out the priests of the LORD, the sons of Aaron, and the Levites, and have made you priests after the manner of the nations of other lands? so that whosoever cometh to consecrate himself with a young bullock and seven rams, the same may be a priest of them that are no gods."

2 Chronicles 15:13: "That whosoever would not seek the LORD God of Israel should be put to death, whether small or great, whether man or woman."

2 Chronicles 23:7: "And the Levites shall compass the king round about, every man with his weapons in his hand; and whosoever else cometh into the house, he shall be put to death: but be ye with the king when he cometh in, and when he goeth out."

Ezra 1:4: "And whosoever remaineth in any place where he sojourneth, let the men of his place help him with silver, and with gold, and with goods, and with beasts, beside the freewill offering for the house of God that is in Jerusalem."

Ezra 6:11: "Also I have made a decree, that whosoever shall alter this word, let timber be pulled down from his house, and being set up, let him be hanged thereon; and let his house be made a dunghill for this."

Ezra 7:26: "And whosoever will not do the law of thy God, and the law of the king, let judgment be executed speedily upon him, whether it be unto death, or to banishment, or to confiscation of goods, or to imprisonment."

Ezra 10:8: "And that whosoever would not come within three days, according to the counsel of the princes and the elders, all his substance should be forfeited, and himself separated from the congregation of those that had been carried away."

Esther 4:11: "All the king's servants, and the people of the king's provinces, do know, that whosoever, whether man or women, shall come unto the king into the inner court, who is not called, there is one law of his to put him to death, except such to whom the king shall hold out the golden sceptre, that he may live: but I have not been called to come in unto the king these thirty days."

Proverbs 6:29: "So he that goeth in to his neighbour's wife; whosoever toucheth her shall not be innocent."

Proverbs 20:1: "Wine is a mocker, strong drink is raging: and whosoever is deceived thereby is not wise."

Proverbs 27:16: "Whosoever hideth her hideth the wind, and the ointment of his right hand, which bewrayeth itself."

Isaiah 54:15: "Behold, they shall surely gather together, but not by me: whosoever shall gather together against thee shall fall for thy sake."

Isaiah 59:8: "The way of peace they know not; and there is no judgment in their goings: they have made them crooked paths: whosoever goeth therein shall not know peace."

Jeremiah 19:3: "And say, Hear ye the word of the LORD, O kings of Judah, and inhabitants of Jerusalem; Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will bring evil upon this place, the which whosoever heareth, his ears shall tingle."

Ezekiel 33:4: "Then whosoever heareth the sound of the trumpet, and taketh not warning; if the sword come, and take him away, his blood shall be upon his own head."

Daniel 5:7: "The king cried aloud to bring in the astrologers, the Chaldeans, and the soothsayers. And the king spake, and said to the wise men of Babylon, Whosoever shall read this writing, and shew me the interpretation thereof, shall be clothed with scarlet, and have a chain of gold about his neck, and shall be the third ruler in the kingdom."

Daniel 6:7: "All the presidents of the kingdom, the governors, and the princes, the counsellors, and the captains, have consulted together to establish a royal statute, and to make a firm decree, that whosoever shall ask a petition of any God or man for thirty days, save of thee, O king, he shall be

cast into the den of lions."

Joel 2:32: "And it shall come to pass, that whosoever shall call on the name of the LORD shall be delivered: for in mount Zion and in Jerusalem shall be deliverance, as the LORD hath said, and in the remnant whom the LORD shall call."

Matthew 5:19: "Whosoever therefore shall break one of these least commandments, and shall teach men so, he shall be called the least in the kingdom of heaven: but whosoever shall do and teach them, the same shall be called great in the kingdom of heaven."

Matthew 5:21: "Ye have heard that it was said of them of old time, Thou shalt not kill; and whosoever shall kill shall be in danger of the judgment:"

Matthew 5:22: "But I say unto you, That whosoever is angry with his brother without a cause shall be in danger of the judgment: and whosoever shall say to his brother, Raca, shall be in danger of the council: but whosoever shall say, Thou fool, shall be in danger of hell fire."

Matthew 5:28: "But I say unto you, That whosoever looketh on a woman to lust after her hath committed adultery with her already in his heart."

Matthew 5:31: "It hath been said, Whosoever shall put away his wife, let him give her a writing of divorcement:"

Matthew 5:32: "But I say unto you, That whosoever shall put away his wife, saving for the cause of fornication, causeth her to commit adultery: and whosoever shall marry her that is divorced committeth adultery."

Matthew 5:39: "But I say unto you, That ye resist not evil: but whosoever shall smite thee on thy right cheek, turn to him the other also."

Matthew 5:41: "And whosoever shall compel thee to go a mile, go with him twain."

Matthew 7:24: "Therefore whosoever heareth these sayings of mine, and doeth them, I will liken him unto a wise man, which built his house upon a rock:"

Matthew 10:14: "And whosoever shall not receive you, nor hear your words, when ye depart out of that house or city, shake off the dust of your feet."

Matthew 10:32: "Whosoever therefore shall confess me before men, him will I confess also before my Father which is in heaven."

Matthew 10:33: "But whosoever shall deny me before men, him will I also deny before my Father which is in heaven."

Matthew 10:42: "And whosoever shall give to drink unto one of these little ones a cup of cold water only in the name of a disciple, verily I say unto you, he shall in no wise lose his reward."

Matthew 11:6: "And blessed is he, whosoever shall not be offended in me."

Matthew 12:32: "And whosoever speaketh a word against the Son of man, it shall be forgiven him: but whosoever speaketh against the Holy Ghost, it shall not be forgiven him, neither in this world, neither in the world to come."

Matthew 12:50: "For whosoever shall do the will of my Father which is in heaven, the same is my brother, and sister, and mother."

Matthew 13:12: "For whosoever hath, to him shall be given, and he shall have more abundance: but whosoever hath not, from him shall be taken away even that he hath."

Matthew 15:5: "But ye say, Whosoever shall say to his father or his mother, It is a gift, by whatsoever thou mightest be profited by me;"

Matthew 16:25: "For whosoever will save his life shall lose it: and whosoever will lose his life for my sake shall find it."

Matthew 18:4: "Whosoever therefore shall humble himself as this little child, the same is greatest in the kingdom of heaven."

Matthew 19:9: "And I say unto you, Whosoever shall put away his wife, except it be for fornication, and shall marry another, committeth adultery: and whoso marrieth her which is put away doth commit adultery."

Matthew 20:26: "But it shall not be so among you: but whosoever will be great among you, let him

be your minister;"

Matthew 20:27: "And whosoever will be chief among you, let him be your servant:"

Matthew 21:44: "And whosoever shall fall on this stone shall be broken: but on whomsoever it shall fall, it will grind him to powder."

Matthew 23:12: "And whosoever shall exalt himself shall be abased; and he that shall humble himself shall be exalted."

Matthew 23:16: "Woe unto you, ye blind guides, which say, Whosoever shall swear by the temple, it is nothing; but whosoever shall swear by the gold of the temple, he is a debtor!"

Matthew 23:18: "And, Whosoever shall swear by the altar, it is nothing; but whosoever sweareth by the gift that is upon it, he is guilty."

Mark 3:35: "For whosoever shall do the will of God, the same is my brother, and my sister, and mother."

Mark 6:11: "And whosoever shall not receive you, nor hear you, when ye depart thence, shake off the dust under your feet for a testimony against them. Verily I say unto you, It shall be more tolerable for Sodom and Gomorrha in the day of judgment, than for that city."

Mark 8:34: "And when he had called the people unto him with his disciples also, he said unto them, Whosoever will come after me, let him deny himself, and take up his cross, and follow me."

Mark 8:35: "For whosoever will save his life shall lose it; but whosoever shall lose his life for my sake and the gospel's, the same shall save it."

Mark 8:38: "Whosoever therefore shall be ashamed of me and of my words in this adulterous and sinful generation; of him also shall the Son of man be ashamed, when he cometh in the glory of his Father with the holy angels."

Mark 9:37: "Whosoever shall receive one of such children in my name, receiveth me: and whosoever shall receive me, receiveth not me, but him that sent me."

Mark 9:41: "For whosoever shall give you a cup of water to drink in my name, because ye belong to Christ, verily I say unto you, he shall not lose his reward."

Mark 9:42: "And whosoever shall offend one of these little ones that believe in me, it is better for him that a millstone were hanged about his neck, and he were cast into the sea."

Mark 10:11: "And he saith unto them, Whosoever shall put away his wife, and marry another, committeth adultery against her."

Mark 10:15: "Verily I say unto you, Whosoever shall not receive the kingdom of God as a little child, he shall not enter therein."

Mark 10:43: "But so shall it not be among you: but whosoever will be great among you, shall be your minister:"

Mark 10:44: "And whosoever of you will be the chiefest, shall be servant of all."

Mark 11:23: "For verily I say unto you, That whosoever shall say unto this mountain, Be thou removed, and be thou cast into the sea; and shall not doubt in his heart, but shall believe that those things which he saith shall come to pass; he shall have whatsoever he saith."

Luke 6:47: "Whosoever cometh to me, and heareth my sayings, and doeth them, I will shew you to whom he is like:"

Luke 7:23: "And blessed is he, whosoever shall not be offended in me."

Luke 8:18: "Take heed therefore how ye hear: for whosoever hath, to him shall be given; and whosoever hath not, from him shall be taken even that which he seemeth to have."

Luke 9:5: "And whosoever will not receive you, when ye go out of that city, shake off the very dust from your feet for a testimony against them."

Luke 9:24: "For whosoever will save his life shall lose it: but whosoever will lose his life for my sake, the same shall save it."

Luke 9:26: "For whosoever shall be ashamed of me and of my words, of him shall the Son of man be ashamed, when he shall come in his own glory, and in his Father's, and of the holy angels."

Luke 9:48: "And said unto them, Whosoever shall receive this child in my name receiveth me: and

whosoever shall receive me receiveth him that sent me: for he that is least among you all, the same shall be great."

Luke 12:8: "Also I say unto you, Whosoever shall confess me before men, him shall the Son of man also confess before the angels of God:"

Luke 12:10: "And whosoever shall speak a word against the Son of man, it shall be forgiven him: but unto him that blasphemeth against the Holy Ghost it shall not be forgiven."

Luke 14:11: "For whosoever exalteth himself shall be abased; and he that humbleth himself shall be exalted."

Luke 14:27: "And whosoever doth not bear his cross, and come after me, cannot be my disciple."

Luke 14:33: "So likewise, whosoever he be of you that forsaketh not all that he hath, he cannot be my disciple."

Luke 16:18: "Whosoever putteth away his wife, and marrieth another, committeth adultery: and whosoever marrieth her that is put away from her husband committeth adultery."

Luke 17:33: "Whosoever shall seek to save his life shall lose it; and whosoever shall lose his life shall preserve it."

Luke 18:17: "Verily I say unto you, Whosoever shall not receive the kingdom of God as a little child shall in no wise enter therein."

Luke 20:18: "Whosoever shall fall upon that stone shall be broken; but on whomsoever it shall fall, it will grind him to powder."

John 3:15: "That whosoever believeth in him should not perish, but have eternal life."

John 3:16: "For God so loved the world, that he gave his only begotten Son, that whosoever believeth in him should not perish, but have everlasting life."

John 4:13: "Jesus answered and said unto her, Whosoever drinketh of this water shall thirst again:"

John 4:14: "But whosoever drinketh of the water that I shall give him shall never thirst; but the water that I shall give him shall be in him a well of water springing up into everlasting life."

John 5:4: "For an angel went down at a certain season into the pool, and troubled the water: whosoever then first after the troubling of the water stepped in was made whole of whatsoever disease he had."

John 8:34: "Jesus answered them, Verily, verily, I say unto you, Whosoever committeth sin is the servant of sin."

John 11:26: "And whosoever liveth and believeth in me shall never die. Believest thou this?"

John 12:46: "I am come a light into the world, that whosoever believeth on me should not abide in darkness."

John 16:2: "They shall put you out of the synagogues: yea, the time cometh, that whosoever killeth you will think that he doeth God service."

John 19:12: "And from thenceforth Pilate sought to release him: but the Jews cried out, saying, If thou let this man go, thou art not Caesar's friend: whosoever maketh himself a king speaketh against Caesar."

Acts 2:21: "And it shall come to pass, that whosoever shall call on the name of the Lord shall be saved."

Acts 10:43: "To him give all the prophets witness, that through his name whosoever believeth in him shall receive remission of sins."

Acts 13:26: "Men and brethren, children of the stock of Abraham, and whosoever among you feareth God, to you is the word of this salvation sent."

Romans 2:1: "Therefore thou art inexcusable, O man, whosoever thou art that judgest: for wherein thou judgest another, thou condemnest thyself; for thou that judgest doest the same things."

Romans 9:33: "As it is written, Behold, I lay in Sion a stumblingstone and rock of offence: and whosoever believeth on him shall not be ashamed."

Romans 10:11: "For the scripture saith, Whosoever believeth on him shall not be ashamed."

Romans 10:13: "For whosoever shall call upon the name of the Lord shall be saved."

Romans 13:2: "Whosoever therefore resisteth the power, resisteth the ordinance of God: and they that resist shall receive to themselves damnation."

1 Corinthians 11:27: "Wherefore whosoever shall eat this bread, and drink this cup of the Lord, unworthily, shall be guilty of the body and blood of the Lord."

Galatians 5:4: "Christ is become of no effect unto you, whosoever of you are justified by the law; ye are fallen from grace."

Galatians 5:10: "I have confidence in you through the Lord, that ye will be none otherwise minded: but he that troubleth you shall bear his judgment, whosoever he be."

James 2:10: "For whosoever shall keep the whole law, and yet offend in one point, he is guilty of all."

James 4:4: "Ye adulterers and adulteresses, know ye not that the friendship of the world is enmity with God? whosoever therefore will be a friend of the world is the enemy of God."

1 John 2:23: "Whosoever denieth the Son, the same hath not the Father: he that acknowledgeth the Son hath the Father also."

1 John 3:4: "Whosoever committeth sin transgresseth also the law: for sin is the transgression of the law."

1 John 3:6: "Whosoever abideth in him sinneth not: whosoever sinneth hath not seen him, neither known him."

1 John 3:9: "Whosoever is born of God doth not commit sin; for his seed remaineth in him: and he cannot sin, because he is born of God."

1 John 3:10: "In this the children of God are manifest, and the children of the devil: whosoever doeth not righteousness is not of God, neither he that loveth not his brother."

1 John 3:15: "Whosoever hateth his brother is a murderer: and ye know that no murderer hath eternal life abiding in him."

1 John 4:15: "Whosoever shall confess that Jesus is the Son of God, God dwelleth in him, and he in God."

1 John 5:1: "Whosoever believeth that Jesus is the Christ is born of God: and every one that loveth him that begat loveth him also that is begotten of him."

1 John 5:18: "We know that whosoever is born of God sinneth not; but he that is begotten of God keepeth himself, and that wicked one toucheth him not."

2 John 1:9: "Whosoever transgresseth, and abideth not in the doctrine of Christ, hath not God. He that abideth in the doctrine of Christ, he hath both the Father and the Son."

Revelation 14:11: "And the smoke of their torment ascendeth up for ever and ever: and they have no rest day nor night, who worship the beast and his image, and whosoever receiveth the mark of his name."

Revelation 20:15: "And whosoever was not found written in the book of life was cast into the lake of fire."

Revelation 22:15: "For without are dogs, and sorcerers, and whoremongers, and murderers, and idolaters, and whosoever loveth and maketh a lie."

Revelation 22:17: "And the Spirit and the bride say, Come. And let him that heareth say, Come. And let him that is athirst come. And whosoever will, let him take the water of life freely."

## WHY

Occurrences: 261

Genesis 4:6: "And the LORD said unto Cain, Why art thou wroth? and why is thy countenance fallen?"

Genesis 12:18: "And Pharaoh called Abram and said, What is this that thou hast done unto me? why didst thou not tell me that she was thy wife?"

Genesis 12:19: "Why saidst thou, She is my sister? so I might have taken her to me to wife: now therefore behold thy wife, take her, and go thy way."

Genesis 25:22: "And the children struggled together within her; and she said, If it be so, why am I thus? And she went to enquire of the LORD."

Genesis 27:45: "Until thy brother's anger turn away from thee, and he forget that which thou hast done to him: then I will send, and fetch thee from thence: why should I be deprived also of you both in one day?"

Genesis 42:1: "Now when Jacob saw that there was corn in Egypt, Jacob said unto his sons, Why do ye look one upon another?"

Genesis 47:15: "And when money failed in the land of Egypt, and in the land of Canaan, all the Egyptians came unto Joseph, and said, Give us bread: for why should we die in thy presence? for the money faileth."

Exodus 1:18: "And the king of Egypt called for the midwives, and said unto them, Why have ye done this thing, and have saved the men children alive?"

Exodus 2:20: "And he said unto his daughters, And where is he? why is it that ye have left the man? call him, that he may eat bread."

Exodus 3:3: "And Moses said, I will now turn aside, and see this great sight, why the bush is not burnt."

Exodus 5:22: "And Moses returned unto the LORD, and said, LORD, wherefore hast thou so evil entreated this people? why is it that thou hast sent me?"

Exodus 14:5: "And it was told the king of Egypt that the people fled: and the heart of Pharaoh and of his servants was turned against the people, and they said, Why have we done this, that we have let Israel go from serving us?"

Exodus 17:2: "Wherefore the people did chide with Moses, and said, Give us water that we may drink. And Moses said unto them, Why chide ye with me? wherefore do ye tempt the LORD?"

Exodus 18:14: "And when Moses' father in law saw all that he did to the people, he said, What is this thing that thou doest to the people? why sittest thou thyself alone, and all the people stand by thee from morning unto even?"

Exodus 32:11: "And Moses besought the LORD his God, and said, LORD, why doth thy wrath wax hot against thy people, which thou hast brought forth out of the land of Egypt with great power, and with a mighty hand?"

Numbers 11:20: "But even a whole month, until it come out at your nostrils, and it be loathsome unto you: because that ye have despised the LORD which is among you, and have wept before him, saying, Why came we forth out of Egypt?"

Numbers 20:4: "And why have ye brought up the congregation of the LORD into this wilderness, that we and our cattle should die there?"

Numbers 27:4: "Why should the name of our father be done away from among his family, because he hath no son? Give unto us therefore a possession among the brethren of our father."

Deuteronomy 5:25: "Now therefore why should we die? for this great fire will consume us: if we hear the voice of the LORD our God any more, then we shall die."

Joshua 5:4: "And this is the cause why Joshua did circumcise: All the people that came out of Egypt, that were males, even all the men of war, died in the wilderness by the way, after they came out of Egypt."

Joshua 7:25: "And Joshua said, Why hast thou troubled us? the LORD shall trouble thee this day. And all Israel stoned him with stones, and burned them with fire, after they had stoned them with stones."

Joshua 17:14: "And the children of Joseph spake unto Joshua, saying, Why hast thou given me but one lot and one portion to inherit, seeing I am a great people, forasmuch as the LORD hath blessed me hitherto?"

Judges 2:2: "And ye shall make no league with the inhabitants of this land; ye shall throw down their altars: but ye have not obeyed my voice: why have ye done this?"

Judges 5:16: "Why abodest thou among the sheepfolds, to hear the bleatings of the flocks? For the

divisions of Reuben there were great searchings of heart."

Judges 5:17: "Gilead abode beyond Jordan: and why did Dan remain in ships? Asher continued on the sea shore, and abode in his breaches."

Judges 5:28: "The mother of Sisera looked out at a window, and cried through the lattice, Why is his chariot so long in coming? why tarry the wheels of his chariots?"

Judges 6:13: "And Gideon said unto him, Oh my Lord, if the LORD be with us, why then is all this befallen us? and where be all his miracles which our fathers told us of, saying, Did not the LORD bring us up from Egypt? but now the LORD hath forsaken us, and delivered us into the hands of the Midianites."

Judges 8:1: "And the men of Ephraim said unto him, Why hast thou served us thus, that thou calledst us not, when thou wentest to fight with the Midianites? And they did chide with him sharply."

Judges 9:28: "And Gaal the son of Ebed said, Who is Abimelech, and who is Shechem, that we should serve him? is not he the son of Jerubbaal? and Zebul his officer? serve the men of Hamor the father of Shechem: for why should we serve him?"

Judges 11:7: "And Jephthah said unto the elders of Gilead, Did not ye hate me, and expel me out of my father's house? and why are ye come unto me now when ye are in distress?"

Judges 11:26: "While Israel dwelt in Heshbon and her towns, and in Aroer and her towns, and in all the cities that be along by the coasts of Arnon, three hundred years? why therefore did ye not recover them within that time?"

Judges 13:18: "And the angel of the LORD said unto him, Why askest thou thus after my name, seeing it is secret?"

Judges 15:10: "And the men of Judah said, Why are ye come up against us? And they answered, To bind Samson are we come up, to do to him as he hath done to us."

Judges 21:3: "And said, O LORD God of Israel, why is this come to pass in Israel, that there should be to day one tribe lacking in Israel?"

Ruth 1:11: "And Naomi said, Turn again, my daughters: why will ye go with me? are there yet any more sons in my womb, that they may be your husbands?"

Ruth 1:21: "I went out full and the LORD hath brought me home again empty: why then call ye me Naomi, seeing the LORD hath testified against me, and the Almighty hath afflicted me?"

Ruth 2:10: "Then she fell on her face, and bowed herself to the ground, and said unto him, Why have I found grace in thine eyes, that thou shouldest take knowledge of me, seeing I am a stranger?"

1 Samuel 1:8: "Then said Elkanah her husband to her, Hannah, why weepest thou? and why eatest thou not? and why is thy heart grieved? am not I better to thee than ten sons?"

1 Samuel 2:23: "And he said unto them, Why do ye such things? for I hear of your evil dealings by all this people."

1 Samuel 6:3: "And they said, If ye send away the ark of the God of Israel, send it not empty; but in any wise return him a trespass offering: then ye shall be healed, and it shall be known to you why his hand is not removed from you."

1 Samuel 17:8: "And he stood and cried unto the armies of Israel, and said unto them, Why are ye come out to set your battle in array? am not I a Philistine, and ye servants to Saul? choose you a man for you, and let him come down to me."

1 Samuel 17:28: "And Eliab his eldest brother heard when he spake unto the men; and Eliab's anger was kindled against David, and he said, Why camest thou down hither? and with whom hast thou left those few sheep in the wilderness? I know thy pride, and the naughtiness of thine heart; for thou art come down that thou mightest see the battle."

1 Samuel 19:17: "And Saul said unto Michal, Why hast thou deceived me so, and sent away mine enemy, that he is escaped? And Michal answered Saul, He said unto me, Let me go; why should I kill thee?"

1 Samuel 20:2: "And he said unto him, God forbid; thou shalt not die: behold, my father will do

nothing either great or small, but that he will shew it me: and why should my father hide this thing from me? it is not so."

1 Samuel 20:8: "Therefore thou shalt deal kindly with thy servant; for thou hast brought thy servant into a covenant of the LORD with thee: notwithstanding, if there be in me iniquity, slay me thyself; for why shouldest thou bring me to thy father?"

1 Samuel 21:1: "Then came David to Nob to Ahimelech the priest: and Ahimelech was afraid at the meeting of David, and said unto him, Why art thou alone, and no man with thee?"

1 Samuel 22:13: "And Saul said unto him, Why have ye conspired against me, thou and the son of Jesse, in that thou hast given him bread, and a sword, and hast enquired of God for him, that he should rise against me, to lie in wait, as at this day?"

1 Samuel 27:5: "And David said unto Achish, If I have now found grace in thine eyes, let them give me a place in some town in the country, that I may dwell there: for why should thy servant dwell in the royal city with thee?"

1 Samuel 28:12: "And when the woman saw Samuel, she cried with a loud voice: and the woman spake to Saul, saying, Why hast thou deceived me? for thou art Saul."

1 Samuel 28:15: "And Samuel said to Saul, Why hast thou disquieted me, to bring me up? And Saul answered, I am sore distressed; for the Philistines make war against me, and God is departed from me, and answereth me no more, neither by prophets, nor by dreams: therefore I have called thee, that thou mayest make known unto me what I shall do."

2 Samuel 3:24: "Then Joab came to the king, and said, What hast thou done? behold, Abner came unto thee; why is it that thou hast sent him away, and he is quite gone?"

2 Samuel 7:7: "In all the places wherein I have walked with all the children of Israel spake I a word with any of the tribes of Israel, whom I commanded to feed my people Israel, saying, Why build ye not me an house of cedar?"

2 Samuel 11:10: "And when they had told David, saying, Uriah went not down unto his house, David said unto Uriah, Camest thou not from thy journey? why then didst thou not go down unto thine house?"

2 Samuel 11:21: "Who smote Abimelech the son of Jerubbesheth? did not a woman cast a piece of a millstone upon him from the wall, that he died in Thebez? why went ye nigh the wall? then say thou, Thy servant Uriah the Hittite is dead also."

2 Samuel 13:4: "And he said unto him, Why art thou, being the king's son, lean from day to day? wilt thou not tell me? And Amnon said unto him, I love Tamar, my brother Absalom's sister."

2 Samuel 13:26: "Then said Absalom, If not, I pray thee, let my brother Amnon go with us. And the king said unto him, Why should he go with thee?"

2 Samuel 16:9: "Then said Abishai the son of Zeruiah unto the king, Why should this dead dog curse my lord the king? let me go over, I pray thee, and take off his head."

2 Samuel 16:17: "And Absalom said to Hushai, Is this thy kindness to thy friend? why wentest thou not with thy friend?"

2 Samuel 18:11: "And Joab said unto the man that told him, And, behold, thou sawest him, and why didst thou not smite him there to the ground? and I would have given thee ten shekels of silver, and a girdle."

2 Samuel 19:10: "And Absalom, whom we anointed over us, is dead in battle. Now therefore why speak ye not a word of bringing the king back?"

2 Samuel 19:11: "And king David sent to Zadok and to Abiathar the priests, saying, Speak unto the elders of Judah, saying, Why are ye the last to bring the king back to his house? seeing the speech of all Israel is come to the king, even to his house."

2 Samuel 19:29: "And the king said unto him, Why speakest thou any more of thy matters? I have said, Thou and Ziba divide the land."

2 Samuel 19:36: "Thy servant will go a little way over Jordan with the king: and why should the king recompense it me with such a reward?"



2 Samuel 19:41: "And, behold, all the men of Israel came to the king, and said unto the king, Why have our brethren the men of Judah stolen thee away, and have brought the king, and his household, and all David's men with him, over Jordan?"

2 Samuel 19:43: "And the men of Israel answered the men of Judah, and said, We have ten parts in the king, and we have also more right in David than ye: why then did ye despise us, that our advice should not be first had in bringing back our king? And the words of the men of Judah were fiercer than the words of the men of Israel."

2 Samuel 20:19: "I am one of them that are peaceable and faithful in Israel: thou seekest to destroy a city and a mother in Israel: why wilt thou swallow up the inheritance of the LORD?"

2 Samuel 24:3: "And Joab said unto the king, Now the LORD thy God add unto the people, how many soever they be, an hundredfold, and that the eyes of my lord the king may see it: but why doth my lord the king delight in this thing?"

1 Kings 1:6: "And his father had not displeased him at any time in saying, Why hast thou done so? and he also was a very goodly man; and his mother bare him after Absalom."

1 Kings 1:13: "Go and get thee in unto king David, and say unto him, Didst not thou, my lord, O king, swear unto thine handmaid, saying, Assuredly Solomon thy son shall reign after me, and he shall sit upon my throne? why then doth Adonijah reign?"

1 Kings 2:22: "And king Solomon answered and said unto his mother, And why dost thou ask Abishag the Shunammite for Adonijah? ask for him the kingdom also; for he is mine elder brother; even for him, and for Abiathar the priest, and for Joab the son of Zeruah."

1 Kings 2:43: "Why then hast thou not kept the oath of the LORD, and the commandment that I have charged thee with?"

1 Kings 9:8: "And at this house, which is high, every one that passeth by it shall be astonished, and shall hiss; and they shall say, Why hath the LORD done thus unto this land, and to this house?"

1 Kings 14:6: "And it was so, when Ahijah heard the sound of her feet, as she came in at the door, that he said, Come in, thou wife of Jeroboam; why feignest thou thyself to be another? for I am sent to thee with heavy tidings."

1 Kings 21:5: "But Jezebel his wife came to him, and said unto him, Why is thy spirit so sad, that thou eatest no bread?"

2 Kings 1:5: "And when the messengers turned back unto him, he said unto them, Why are ye now turned back?"

2 Kings 7:3: "And there were four leprous men at the entering in of the gate: and they said one to another, Why sit we here until we die?"

2 Kings 8:12: "And Hazael said, Why weepeth my lord? And he answered, Because I know the evil that thou wilt do unto the children of Israel: their strong holds wilt thou set on fire, and their young men wilt thou slay with the sword, and wilt dash their children, and rip up their women with child."

2 Kings 12:7: "Then king Jehoash called for Jehoiada the priest, and the other priests, and said unto them, Why repair ye not the breaches of the house? now therefore receive no more money of your acquaintance, but deliver it for the breaches of the house."

2 Kings 14:10: "Thou hast indeed smitten Edom, and thine heart hath lifted thee up: glory of this, and tarry at home: for why shouldest thou meddle to thy hurt, that thou shouldest fall, even thou, and Judah with thee?"

1 Chronicles 17:6: "Wheresoever I have walked with all Israel, spake I a word to any of the judges of Israel, whom I commanded to feed my people, saying, Why have ye not built me an house of cedars?"

1 Chronicles 21:3: "And Joab answered, The LORD make his people an hundred times so many more as they be: but, my lord the king, are they not all my lord's servants? why then doth my lord require this thing? why will he be a cause of trespass to Israel?"

2 Chronicles 7:21: "And this house, which is high, shall be an astonishment to every one that passeth by it; so that he shall say, Why hath the LORD done thus unto this land, and unto this

house?"

2 Chronicles 24:6: "And the king called for Jehoiada the chief, and said unto him, Why hast thou not required of the Levites to bring in out of Judah and out of Jerusalem the collection, according to the commandment of Moses the servant of the LORD, and of the congregation of Israel, for the tabernacle of witness?"

2 Chronicles 24:20: "And the Spirit of God came upon Zechariah the son of Jehoiada the priest, which stood above the people, and said unto them, Thus saith God, Why transgress ye the commandments of the LORD, that ye cannot prosper? because ye have forsaken the LORD, he hath also forsaken you."

2 Chronicles 25:15: "Wherefore the anger of the LORD was kindled against Amaziah, and he sent unto him a prophet, which said unto him, Why hast thou sought after the gods of the people, which could not deliver their own people out of thine hand?"

2 Chronicles 25:16: "And it came to pass, as he talked with him, that the king said unto him, Art thou made of the king's counsel? forbear; why shouldest thou be smitten? Then the prophet forbore, and said, I know that God hath determined to destroy thee, because thou hast done this, and hast not hearkened unto my counsel."

2 Chronicles 25:19: "Thou sayest, Lo, thou hast smitten the Edomites; and thine heart lifteth thee up to boast: abide now at home; why shouldest thou meddle to thine hurt, that thou shouldest fall, even thou, and Judah with thee?"

2 Chronicles 32:4: "So there was gathered much people together, who stopped all the fountains, and the brook that ran through the midst of the land, saying, Why should the kings of Assyria come, and find much water?"

Ezra 4:22: "Take heed now that ye fail not to do this: why should damage grow to the hurt of the kings?"

Ezra 7:23: "Whatsoever is commanded by the God of heaven, let it be diligently done for the house of the God of heaven: for why should there be wrath against the realm of the king and his sons?"

Nehemiah 2:2: "Wherefore the king said unto me, Why is thy countenance sad, seeing thou art not sick? this is nothing else but sorrow of heart. Then I was very sore afraid,"

Nehemiah 2:3: "And said unto the king, Let the king live for ever: why should not my countenance be sad, when the city, the place of my fathers' sepulchres, lieth waste, and the gates thereof are consumed with fire?"

Nehemiah 6:3: "And I sent messengers unto them, saying, I am doing a great work, so that I cannot come down: why should the work cease, whilst I leave it, and come down to you?"

Nehemiah 13:11: "Then contended I with the rulers, and said, Why is the house of God forsaken? And I gathered them together, and set them in their place."

Nehemiah 13:21: "Then I testified against them, and said unto them, Why lodge ye about the wall? if ye do so again, I will lay hands on you. From that time forth came they no more on the sabbath."

Esther 3:3: "Then the king's servants, which were in the king's gate, said unto Mordecai, Why transgressest thou the king's commandment?"

Esther 4:5: "Then called Esther for Hatach, one of the king's chamberlains, whom he had appointed to attend upon her, and gave him a commandment to Mordecai, to know what it was, and why it was."

Job 3:11: "Why died I not from the womb? why did I not give up the ghost when I came out of the belly?"

Job 3:12: "Why did the knees prevent me? or why the breasts that I should suck?"

Job 3:23: "Why is light given to a man whose way is hid, and whom God hath hedged in?"

Job 7:20: "I have sinned; what shall I do unto thee, O thou preserver of men? why hast thou set me as a mark against thee, so that I am a burden to myself?"

Job 7:21: "And why dost thou not pardon my transgression, and take away my iniquity? for now shall I sleep in the dust; and thou shalt seek me in the morning, but I shall not be."

Job 9:29: "If I be wicked, why then labour I in vain?"

Job 15:12: "Why doth thine heart carry thee away? and what do thy eyes wink at,"

Job 19:22: "Why do ye persecute me as God, and are not satisfied with my flesh?"

Job 19:28: "But ye should say, Why persecute we him, seeing the root of the matter is found in me?"

Job 21:4: "As for me, is my complaint to man? and if it were so, why should not my spirit be troubled?"

Job 24:1: "Why, seeing times are not hidden from the Almighty, do they that know him not see his days?"

Job 27:12: "Behold, all ye yourselves have seen it; why then are ye thus altogether vain?"

Job 31:1: "I made a covenant with mine eyes; why then should I think upon a maid?"

Job 33:13: "Why dost thou strive against him? for he giveth not account of any of his matters."

Psalms 2:1: "Why do the heathen rage, and the people imagine a vain thing?"

Psalms 10:1: "Why standest thou afar off, O LORD? why hidest thou thyself in times of trouble?"

Psalms 22:1: "My God, my God, why hast thou forsaken me? why art thou so far from helping me, and from the words of my roaring?"

Psalms 42:5: "Why art thou cast down, O my soul? and why art thou disquieted in me? hope thou in God: for I shall yet praise him for the help of his countenance."

Psalms 42:9: "I will say unto God my rock, Why hast thou forgotten me? why go I mourning because of the oppression of the enemy?"

Psalms 42:11: "Why art thou cast down, O my soul? and why art thou disquieted within me? hope thou in God: for I shall yet praise him, who is the health of my countenance, and my God."

Psalms 43:2: "For thou art the God of my strength: why dost thou cast me off? why go I mourning because of the oppression of the enemy?"

Psalms 43:5: "Why art thou cast down, O my soul? and why art thou disquieted within me? hope in God: for I shall yet praise him, who is the health of my countenance, and my God."

Psalms 44:23: "Awake, why sleepest thou, O Lord? arise, cast us not off for ever."

Psalms 52:1: "Why boastest thou thyself in mischief, O mighty man? the goodness of God endureth continually."

Psalms 68:16: "Why leap ye, ye high hills? this is the hill which God desireth to dwell in; yea, the LORD will dwell in it for ever."

Psalms 74:1: "O God, why hast thou cast us off for ever? why doth thine anger smoke against the sheep of thy pasture?"

Psalms 74:11: "Why withdrawest thou thy hand, even thy right hand? pluck it out of thy bosom."

Psalms 80:12: "Why hast thou then broken down her hedges, so that all they which pass by the way do pluck her?"

Psalms 88:14: "LORD, why castest thou off my soul? why hidest thou thy face from me?"

Proverbs 5:20: "And why wilt thou, my son, be ravished with a strange woman, and embrace the bosom of a stranger?"

Proverbs 22:27: "If thou hast nothing to pay, why should he take away thy bed from under thee?"

Ecclesiastes 2:15: "Then said I in my heart, As it happeneth to the fool, so it happeneth even to me; and why was I then more wise? Then I said in my heart, that this also is vanity."

Ecclesiastes 7:16: "Be not righteous over much; neither make thyself over wise: why shouldest thou destroy thyself?"

Ecclesiastes 7:17: "Be not over much wicked, neither be thou foolish: why shouldest thou die before thy time?"

Song of Solomon 1:7: "Tell me, O thou whom my soul loveth, where thou feedest, where thou makest thy flock to rest at noon: for why should I be as one that turneth aside by the flocks of thy companions?"

Isaiah 1:5: "Why should ye be stricken any more? ye will revolt more and more: the whole head is

sick, and the whole heart faint."

Isaiah 40:27: "Why sayest thou, O Jacob, and speakest, O Israel, My way is hid from the LORD, and my judgment is passed over from my God?"

Isaiah 63:17: "O LORD, why hast thou made us to err from thy ways, and hardened our heart from thy fear? Return for thy servants' sake, the tribes of thine inheritance."

Jeremiah 2:14: "Is Israel a servant? is he a homeborn slave? why is he spoiled?"

Jeremiah 2:33: "Why trimmest thou thy way to seek love? therefore hast thou also taught the wicked ones thy ways."

Jeremiah 2:36: "Why gaddest thou about so much to change thy way? thou also shalt be ashamed of Egypt, as thou wast ashamed of Assyria."

Jeremiah 8:5: "Why then is this people of Jerusalem slidden back by a perpetual backsliding? they hold fast deceit, they refuse to return."

Jeremiah 8:14: "Why do we sit still? assemble yourselves, and let us enter into the defenced cities, and let us be silent there: for the LORD our God hath put us to silence, and given us water of gall to drink, because we have sinned against the LORD."

Jeremiah 8:19: "Behold the voice of the cry of the daughter of my people because of them that dwell in a far country: Is not the LORD in Zion? is not her king in her? Why have they provoked me to anger with their graven images, and with strange vanities?"

Jeremiah 8:22: "Is there no balm in Gilead; is there no physician there? why then is not the health of the daughter of my people recovered?"

Jeremiah 14:8: "O the hope of Israel, the saviour thereof in time of trouble, why shouldest thou be as a stranger in the land, and as a wayfaring man that turneth aside to tarry for a night?"

Jeremiah 14:9: "Why shouldest thou be as a man astonied, as a mighty man that cannot save? yet thou, O LORD, art in the midst of us, and we are called by thy name; leave us not."

Jeremiah 14:19: "Hast thou utterly rejected Judah? hath thy soul lothed Zion? why hast thou smitten us, and there is no healing for us? we looked for peace, and there is no good; and for the time of healing, and behold trouble!"

Jeremiah 15:18: "Why is my pain perpetual, and my wound incurable, which refuseth to be healed? wilt thou be altogether unto me as a liar, and as waters that fail?"

Jeremiah 26:9: "Why hast thou prophesied in the name of the LORD, saying, This house shall be like Shiloh, and this city shall be desolate without an inhabitant? And all the people were gathered against Jeremiah in the house of the LORD."

Jeremiah 27:13: "Why will ye die, thou and thy people, by the sword, by the famine, and by the pestilence, as the LORD hath spoken against the nation that will not serve the king of Babylon?"

Jeremiah 29:27: "Now therefore why hast thou not reprov'd Jeremiah of Anathoth, which maketh himself a prophet to you?"

Jeremiah 30:15: "Why criest thou for thine affliction? thy sorrow is incurable for the multitude of thine iniquity: because thy sins were increased, I have done these things unto thee."

Jeremiah 36:29: "And thou shalt say to Jehoiakim king of Judah, Thus saith the LORD; Thou hast burned this roll, saying, Why hast thou written therein, saying, The king of Babylon shall certainly come and destroy this land, and shall cause to cease from thence man and beast?"

Jeremiah 46:15: "Why are thy valiant men swept away? they stood not, because the LORD did drive them."

Jeremiah 49:1: "Concerning the Ammonites, thus saith the LORD; Hath Israel no sons? hath he no heir? why then doth their king inherit Gad, and his people dwell in his cities?"

Ezekiel 18:19: "Yet say ye, Why? doth not the son bear the iniquity of the father? When the son hath done that which is lawful and right, and hath kept all my statutes, and hath done them, he shall surely live."

Ezekiel 18:31: "Cast away from you all your transgressions, whereby ye have transgressed; and make you a new heart and a new spirit: for why will ye die, O house of Israel?"

Ezekiel 33:11: "Say unto them, As I live, saith the Lord GOD, I have no pleasure in the death of the wicked; but that the wicked turn from his way and live: turn ye, turn ye from your evil ways; for why will ye die, O house of Israel?"

Daniel 1:10: "And the prince of the eunuchs said unto Daniel, I fear my lord the king, who hath appointed your meat and your drink: for why should he see your faces worse liking than the children which are of your sort? then shall ye make me endanger my head to the king."

Daniel 2:15: "He answered and said to Arioch the king's captain, Why is the decree so hasty from the king? Then Arioch made the thing known to Daniel."

Jonah 1:10: "Then were the men exceedingly afraid, and said unto him. Why hast thou done this? For the men knew that he fled from the presence of the LORD, because he had told them."

Micah 4:9: "Now why dost thou cry out aloud? is there no king in thee? is thy counsellor perished? for pangs have taken thee as a woman in travail."

Habakkuk 1:3: "Why dost thou shew me iniquity, and cause me to behold grievance? for spoiling and violence are before me: and there are that raise up strife and contention."

Haggai 1:9: "Ye looked for much, and, lo it came to little; and when ye brought it home, I did blow upon it. Why? saith the LORD of hosts. Because of mine house that is waste, and ye run every man unto his own house."

Malachi 2:10: "Have we not all one father? hath not one God created us? why do we deal treacherously every man against his brother, by profaning the covenant of our fathers?"

Matthew 6:28: "And why take ye thought for raiment? Consider the lilies of the field, how they grow; they toil not, neither do they spin:"

Matthew 7:3: "And why beholdest thou the mote that is in thy brother's eye, but considerest not the beam that is in thine own eye?"

Matthew 8:26: "And he saith unto them, Why are ye fearful, O ye of little faith? Then he arose, and rebuked the winds and the sea; and there was a great calm."

Matthew 9:11: "And when the Pharisees saw it, they said unto his disciples, Why eateth your Master with publicans and sinners?"

Matthew 9:14: "Then came to him the disciples of John, saying, Why do we and the Pharisees fast oft, but thy disciples fast not?"

Matthew 13:10: "And the disciples came, and said unto him, Why speakest thou unto them in parables?"

Matthew 15:2: "Why do thy disciples transgress the tradition of the elders? for they wash not their hands when they eat bread."

Matthew 15:3: "But he answered and said unto them, Why do ye also transgress the commandment of God by your tradition?"

Matthew 16:8: "Which when Jesus perceived, he said unto them, O ye of little faith, why reason ye among yourselves, because ye have brought no bread?"

Matthew 17:10: "And his disciples asked him, saying, Why then say the scribes that Elias must first come?"

Matthew 17:19: "Then came the disciples to Jesus apart, and said, Why could not we cast him out?"

Matthew 19:7: "They say unto him, Why did Moses then command to give a writing of divorcement, and to put her away?"

Matthew 19:17: "And he said unto him, Why callest thou me good? there is none good but one, that is, God: but if thou wilt enter into life, keep the commandments."

Matthew 20:6: "And about the eleventh hour he went out, and found others standing idle, and saith unto them, Why stand ye here all the day idle?"

Matthew 21:25: "The baptism of John, whence was it? from heaven, or of men? And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say unto us, Why did ye not then believe him?"

Matthew 22:18: "But Jesus perceived their wickedness, and said, Why tempt ye me, ye hypocrites?"

Matthew 26:10: "When Jesus understood it, he said unto them, Why trouble ye the woman? for she hath wrought a good work upon me."

Matthew 27:23: "And the governor said, Why, what evil hath he done? But they cried out the more, saying, Let him be crucified."

Matthew 27:46: "And about the ninth hour Jesus cried with a loud voice, saying, Eli, Eli, lama sabachthani? that is to say, My God, my God, why hast thou forsaken me?"

Mark 2:7: "Why doth this man thus speak blasphemies? who can forgive sins but God only?"

Mark 2:8: "And immediately when Jesus perceived in his spirit that they so reasoned within themselves, he said unto them, Why reason ye these things in your hearts?"

Mark 2:18: "And the disciples of John and of the Pharisees used to fast: and they come and say unto him, Why do the disciples of John and of the Pharisees fast, but thy disciples fast not?"

Mark 2:24: "And the Pharisees said unto him, Behold, why do they on the sabbath day that which is not lawful?"

Mark 4:40: "And he said unto them, Why are ye so fearful? how is it that ye have no faith?"

Mark 5:35: "While he yet spake, there came from the ruler of the synagogue's house certain which said, Thy daughter is dead: why troublest thou the Master any further?"

Mark 5:39: "And when he was come in, he saith unto them, Why make ye this ado, and weep? the damsel is not dead, but sleepeth."

Mark 7:5: "Then the Pharisees and scribes asked him, Why walk not thy disciples according to the tradition of the elders, but eat bread with unwashen hands?"

Mark 8:12: "And he sighed deeply in his spirit, and saith, Why doth this generation seek after a sign? verily I say unto you, There shall no sign be given unto this generation."

Mark 8:17: "And when Jesus knew it, he saith unto them, Why reason ye, because ye have no bread? perceive ye not yet, neither understand? have ye your heart yet hardened?"

Mark 9:11: "And they asked him, saying, Why say the scribes that Elias must first come?"

Mark 9:28: "And when he was come into the house, his disciples asked him privately, Why could not we cast him out?"

Mark 10:18: "And Jesus said unto him, Why callest thou me good? there is none good but one, that is, God."

Mark 11:3: "And if any man say unto you, Why do ye this? say ye that the Lord hath need of him; and straightway he will send him hither."

Mark 11:31: "And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say, Why then did ye not believe him?"

Mark 12:15: "Shall we give, or shall we not give? But he, knowing their hypocrisy, said unto them, Why tempt ye me? bring me a penny, that I may see it."

Mark 14:4: "And there were some that had indignation within themselves, and said, Why was this waste of the ointment made?"

Mark 14:6: "And Jesus said, Let her alone; why trouble ye her? she hath wrought a good work on me."

Mark 15:14: "Then Pilate said unto them, Why, what evil hath he done? And they cried out the more exceedingly, Crucify him."

Mark 15:34: "And at the ninth hour Jesus cried with a loud voice, saying, Eloi, Eloi, lama sabachthani? which is, being interpreted, My God, my God, why hast thou forsaken me?"

Luke 2:48: "And when they saw him, they were amazed: and his mother said unto him, Son, why hast thou thus dealt with us? behold, thy father and I have sought thee sorrowing."

Luke 5:30: "But their scribes and Pharisees murmured against his disciples, saying, Why do ye eat and drink with publicans and sinners?"

Luke 5:33: "And they said unto him, Why do the disciples of John fast often, and make prayers, and likewise the disciples of the Pharisees; but thine eat and drink?"

Luke 6:2: "And certain of the Pharisees said unto them, Why do ye that which is not lawful to do on

the sabbath days?"

Luke 6:41: "And why beholdest thou the mote that is in thy brother's eye, but perceivest not the beam that is in thine own eye?"

Luke 6:46: "And why call ye me, Lord, Lord, and do not the things which I say?"

Luke 12:26: "If ye then be not able to do that thing which is least, why take ye thought for the rest?"

Luke 12:57: "Yea, and why even of yourselves judge ye not what is right?"

Luke 13:7: "Then said he unto the dresser of his vineyard, Behold, these three years I come seeking fruit on this fig tree, and find none: cut it down; why cumbereth it the ground?"

Luke 18:19: "And Jesus said unto him, Why callest thou me good? none is good, save one, that is, God."

Luke 19:31: "And if any man ask you, Why do ye loose him? thus shall ye say unto him, Because the Lord hath need of him."

Luke 19:33: "And as they were loosing the colt, the owners thereof said unto them, Why loose ye the colt?"

Luke 20:5: "And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say, Why then believed ye him not?"

Luke 20:23: "But he perceived their craftiness, and said unto them, Why tempt ye me?"

Luke 22:46: "And said unto them, Why sleep ye? rise and pray, lest ye enter into temptation."

Luke 23:22: "And he said unto them the third time, Why, what evil hath he done? I have found no cause of death in him: I will therefore chastise him, and let him go."

Luke 24:5: "And as they were afraid, and bowed down their faces to the earth, they said unto them, Why seek ye the living among the dead?"

Luke 24:38: "And he said unto them, Why are ye troubled? and why do thoughts arise in your hearts?"

John 1:25: "And they asked him, and said unto him, Why baptizest thou then, if thou be not that Christ, nor Elias, neither that prophet?"

John 4:27: "And upon this came his disciples, and marvelled that he talked with the woman: yet no man said, What seekest thou? or, Why talkest thou with her?"

John 7:19: "Did not Moses give you the law, and yet none of you keepeth the law? Why go ye about to kill me?"

John 7:45: "Then came the officers to the chief priests and Pharisees; and they said unto them, Why have ye not brought him?"

John 8:43: "Why do ye not understand my speech? even because ye cannot hear my word."

John 8:46: "Which of you convinceth me of sin? And if I say the truth, why do ye not believe me?"

John 9:30: "The man answered and said unto them, Why herein is a marvellous thing, that ye know not from whence he is, and yet he hath opened mine eyes."

John 10:20: "And many of them said, He hath a devil, and is mad; why hear ye him?"

John 12:5: "Why was not this ointment sold for three hundred pence, and given to the poor?"

John 13:37: "Peter said unto him, Lord, why cannot I follow thee now? I will lay down my life for thy sake."

John 18:21: "Why askest thou me? ask them which heard me, what I have said unto them: behold, they know what I said."

John 18:23: "Jesus answered him, If I have spoken evil, bear witness of the evil: but if well, why smitest thou me?"

John 20:13: "And they say unto her, Woman, why weepest thou? She saith unto them, Because they have taken away my LORD, and I know not where they have laid him."

John 20:15: "Jesus saith unto her, Woman, why weepest thou? whom seekest thou? She, supposing him to be the gardener, saith unto him, Sir, if thou have borne him hence, tell me where thou hast laid him, and I will take him away."

Acts 1:11: "Which also said, Ye men of Galilee, why stand ye gazing up into heaven? this same

Jesus, which is taken up from you into heaven, shall so come in like manner as ye have seen him go into heaven."

Acts 3:12: "And when Peter saw it, he answered unto the people, Ye men of Israel, why marvel ye at this? or why look ye so earnestly on us, as though by our own power or holiness we had made this man to walk?"

Acts 4:25: "Who by the mouth of thy servant David hast said, Why did the heathen rage, and the people imagine vain things?"

Acts 5:3: "But Peter said, Ananias, why hath Satan filled thine heart to lie to the Holy Ghost, and to keep back part of the price of the land?"

Acts 5:4: "Whiles it remained, was it not thine own? and after it was sold, was it not in thine own power? why hast thou conceived this thing in thine heart? thou hast not lied unto men, but unto God."

Acts 7:26: "And the next day he shewed himself unto them as they strove, and would have set them at one again, saying, Sirs, ye are brethren; why do ye wrong one to another?"

Acts 9:4: "And he fell to the earth, and heard a voice saying unto him, Saul, Saul, why persecutest thou me?"

Acts 14:15: "And saying, Sirs, why do ye these things? We also are men of like passions with you, and preach unto you that ye should turn from these vanities unto the living God, which made heaven, and earth, and the sea, and all things that are therein:"

Acts 15:10: "Now therefore why tempt ye God, to put a yoke upon the neck of the disciples, which neither our fathers nor we were able to bear?"

Acts 22:7: "And I fell unto the ground, and heard a voice saying unto me, Saul, Saul, why persecutest thou me?"

Acts 22:16: "And now why tarriest thou? arise, and be baptized, and wash away thy sins, calling on the name of the Lord."

Acts 26:8: "Why should it be thought a thing incredible with you, that God should raise the dead?"

Acts 26:14: "And when we were all fallen to the earth, I heard a voice speaking unto me, and saying in the Hebrew tongue, Saul, Saul, why persecutest thou me? it is hard for thee to kick against the pricks."

Romans 3:7: "For if the truth of God hath more abounded through my lie unto his glory; why yet am I also judged as a sinner?"

Romans 8:24: "For we are saved by hope: but hope that is seen is not hope: for what a man seeth, why doth he yet hope for?"

Romans 9:19: "Thou wilt say then unto me, Why doth he yet find fault? For who hath resisted his will?"

Romans 9:20: "Nay but, O man, who art thou that repliest against God? Shall the thing formed say to him that formed it, Why hast thou made me thus?"

Romans 14:10: "But why dost thou judge thy brother? or why dost thou set at nought thy brother? for we shall all stand before the judgment seat of Christ."

1 Corinthians 4:7: "For who maketh thee to differ from another? and what hast thou that thou didst not receive? now if thou didst receive it, why dost thou glory, as if thou hadst not received it?"

1 Corinthians 6:7: "Now therefore there is utterly a fault among you, because ye go to law one with another. Why do ye not rather take wrong? why do ye not rather suffer yourselves to be defrauded?"

1 Corinthians 10:29: "Conscience, I say, not thine own, but of the other: for why is my liberty judged of another man's conscience?"

1 Corinthians 10:30: "For if I by grace be a partaker, why am I evil spoken of for that for which I give thanks?"

1 Corinthians 15:29: "Else what shall they do which are baptized for the dead, if the dead rise not at all? why are they then baptized for the dead?"

1 Corinthians 15:30: "And why stand we in jeopardy every hour?"



Galatians 2:14: "But when I saw that they walked not uprightly according to the truth of the gospel, I said unto Peter before them all, If thou, being a Jew, livest after the manner of Gentiles, and not as do the Jews, why compellest thou the Gentiles to live as do the Jews?"

Galatians 5:11: "And I, brethren, if I yet preach circumcision, why do I yet suffer persecution? then is the offence of the cross ceased."

Colossians 2:20: "Wherefore if ye be dead with Christ from the rudiments of the world, why, as though living in the world, are ye subject to ordinances,"

## WICKED

Occurrences: 325

Genesis 13:13: "But the men of Sodom were wicked and sinners before the LORD exceedingly."

Genesis 18:23: "And Abraham drew near, and said, Wilt thou also destroy the righteous with the wicked?"

Genesis 18:25: "That be far from thee to do after this manner, to slay the righteous with the wicked: and that the righteous should be as the wicked, that be far from thee: Shall not the Judge of all the earth do right?"

Genesis 38:7: "And Er, Judah's firstborn, was wicked in the sight of the LORD; and the LORD slew him."

Exodus 9:27: "And Pharaoh sent, and called for Moses and Aaron, and said unto them, I have sinned this time: the LORD is righteous, and I and my people are wicked."

Exodus 23:1: "Thou shalt not raise a false report: put not thine hand with the wicked to be an unrighteous witness."

Exodus 23:7: "Keep thee far from a false matter; and the innocent and righteous slay thou not: for I will not justify the wicked."

Leviticus 20:17: "And if a man shall take his sister, his father's daughter, or his mother's daughter, and see her nakedness, and she see his nakedness; it is a wicked thing; and they shall be cut off in the sight of their people: he hath uncovered his sister's nakedness; he shall bear his iniquity."

Numbers 16:26: "And he spake unto the congregation, saying, Depart, I pray you, from the tents of these wicked men, and touch nothing of their's, lest ye be consumed in all their sins."

Deuteronomy 15:9: "Beware that there be not a thought in thy wicked heart, saying, The seventh year, the year of release, is at hand; and thine eye be evil against thy poor brother, and thou givest him nought; and he cry unto the LORD against thee, and it be sin unto thee."

Deuteronomy 17:5: "Then shalt thou bring forth that man or that woman, which have committed that wicked thing, unto thy gates, even that man or that woman, and shalt stone them with stones, till they die."

Deuteronomy 23:9: "When the host goeth forth against thine enemies, then keep thee from every wicked thing."

Deuteronomy 25:1: "If there be a controversy between men, and they come unto judgment, that the judges may judge them; then they shall justify the righteous, and condemn the wicked."

Deuteronomy 25:2: "And it shall be, if the wicked man be worthy to be beaten, that the judge shall cause him to lie down, and to be beaten before his face, according to his fault, by a certain number."

1 Samuel 2:9: "He will keep the feet of his saints, and the wicked shall be silent in darkness; for by strength shall no man prevail."

1 Samuel 24:13: "As saith the proverb of the ancients, Wickedness proceedeth from the wicked: but mine hand shall not be upon thee."

1 Samuel 30:22: "Then answered all the wicked men and men of Belial, of those that went with David, and said, Because they went not with us, we will not give them ought of the spoil that we have recovered, save to every man his wife and his children, that they may lead them away, and depart."

2 Samuel 3:34: "Thy hands were not bound, nor thy feet put into fetters: as a man falleth before

wicked men, so fellest thou. And all the people wept again over him."

2 Samuel 4:11: "How much more, when wicked men have slain a righteous person in his own house upon his bed? shall I not therefore now require his blood of your hand, and take you away from the earth?"

1 Kings 8:32: "Then hear thou in heaven, and do, and judge thy servants, condemning the wicked, to bring his way upon his head; and justifying the righteous, to give him according to his righteousness."

2 Kings 17:11: "And there they burnt incense in all the high places, as did the heathen whom the LORD carried away before them; and wrought wicked things to provoke the LORD to anger:"

2 Chronicles 6:23: "Then hear thou from heaven, and do, and judge thy servants, by requiting the wicked, by recompensing his way upon his own head; and by justifying the righteous, by giving him according to his righteousness."

2 Chronicles 7:14: "If my people, which are called by my name, shall humble themselves, and pray, and seek my face, and turn from their wicked ways; then will I hear from heaven, and will forgive their sin, and will heal their land."

2 Chronicles 24:7: "For the sons of Athaliah, that wicked woman, had broken up the house of God; and also all the dedicated things of the house of the LORD did they bestow upon Baalim."

Nehemiah 9:35: "For they have not served thee in their kingdom, and in thy great goodness that thou gavest them, and in the large and fat land which thou gavest before them, neither turned they from their wicked works."

Esther 7:6: "And Esther said, The adversary and enemy is this wicked Haman. Then Haman was afraid before the king and the queen."

Esther 9:25: "But when Esther came before the king, he commanded by letters that his wicked device, which he devised against the Jews, should return upon his own head, and that he and his sons should be hanged on the gallows."

Job 3:17: "There the wicked cease from troubling; and there the weary be at rest."

Job 8:22: "They that hate thee shall be clothed with shame; and the dwelling place of the wicked shall come to nought."

Job 9:22: "This is one thing, therefore I said it, He destroyeth the perfect and the wicked."

Job 9:24: "The earth is given into the hand of the wicked: he covereth the faces of the judges thereof; if not, where, and who is he?"

Job 9:29: "If I be wicked, why then labour I in vain?"

Job 10:3: "Is it good unto thee that thou shouldest oppress, that thou shouldest despise the work of thine hands, and shine upon the counsel of the wicked?"

Job 10:7: "Thou knowest that I am not wicked; and there is none that can deliver out of thine hand."

Job 10:15: "If I be wicked, woe unto me; and if I be righteous, yet will I not lift up my head. I am full of confusion; therefore see thou mine affliction;"

Job 11:20: "But the eyes of the wicked shall fail, and they shall not escape, and their hope shall be as the giving up of the ghost."

Job 15:20: "The wicked man travaileth with pain all his days, and the number of years is hidden to the oppressor."

Job 16:11: "God hath delivered me to the ungodly, and turned me over into the hands of the wicked."

Job 18:5: "Yea, the light of the wicked shall be put out, and the spark of his fire shall not shine."

Job 18:21: "Surely such are the dwellings of the wicked, and this is the place of him that knoweth not God."

Job 20:5: "That the triumphing of the wicked is short, and the joy of the hypocrite but for a moment?"

Job 20:22: "In the fulness of his sufficiency he shall be in straits: every hand of the wicked shall come upon him."

Job 20:29: "This is the portion of a wicked man from God, and the heritage appointed unto him by God."

Job 21:7: "Wherefore do the wicked live, become old, yea, are mighty in power?"

Job 21:16: "Lo, their good is not in their hand: the counsel of the wicked is far from me."

Job 21:17: "How oft is the candle of the wicked put out! and how oft cometh their destruction upon them! God distributeth sorrows in his anger."

Job 21:28: "For ye say, Where is the house of the prince? and where are the dwelling places of the wicked?"

Job 21:30: "That the wicked is reserved to the day of destruction? they shall be brought forth to the day of wrath."

Job 22:15: "Hast thou marked the old way which wicked men have trodden?"

Job 22:18: "Yet he filled their houses with good things: but the counsel of the wicked is far from me."

Job 24:6: "They reap every one his corn in the field: and they gather the vintage of the wicked."

Job 27:7: "Let mine enemy be as the wicked, and he that riseth up against me as the unrighteous."

Job 27:13: "This is the portion of a wicked man with God, and the heritage of oppressors, which they shall receive of the Almighty."

Job 29:17: "And I brake the jaws of the wicked, and plucked the spoil out of his teeth."

Job 31:3: "Is not destruction to the wicked? and a strange punishment to the workers of iniquity?"

Job 34:8: "Which goeth in company with the workers of iniquity, and walketh with wicked men."

Job 34:18: "Is it fit to say to a king, Thou art wicked? and to princes, Ye are ungodly?"

Job 34:26: "He striketh them as wicked men in the open sight of others;"

Job 34:36: "My desire is that Job may be tried unto the end because of his answers for wicked men."

Job 36:6: "He preserveth not the life of the wicked: but giveth right to the poor."

Job 36:17: "But thou hast fulfilled the judgment of the wicked: judgment and justice take hold on thee."

Job 38:13: "That it might take hold of the ends of the earth, that the wicked might be shaken out of it?"

Job 38:15: "And from the wicked their light is withholden, and the high arm shall be broken."

Job 40:12: "Look on every one that is proud, and bring him low; and tread down the wicked in their place."

Psalms 7:9: "Oh let the wickedness of the wicked come to an end; but establish the just: for the righteous God trieth the hearts and reins."

Psalms 7:11: "God judgeth the righteous, and God is angry with the wicked every day."

Psalms 9:5: "Thou hast rebuked the heathen, thou hast destroyed the wicked, thou hast put out their name for ever and ever."

Psalms 9:16: "The LORD is known by the judgment which he executeth: the wicked is snared in the work of his own hands. Higgaion. Selah."

Psalms 9:17: "The wicked shall be turned into hell, and all the nations that forget God."

Psalms 10:2: "The wicked in his pride doth persecute the poor: let them be taken in the devices that they have imagined."

Psalms 10:3: "For the wicked boasteth of his heart's desire, and blesseth the covetous, whom the LORD abhorreth."

Psalms 10:4: "The wicked, through the pride of his countenance, will not seek after God: God is not in all his thoughts."

Psalms 10:13: "Wherefore doth the wicked contemn God? he hath said in his heart, Thou wilt not require it."

Psalms 10:15: "Break thou the arm of the wicked and the evil man: seek out his wickedness till thou find none."

Psalms 11:2: "For, lo, the wicked bend their bow, they make ready their arrow upon the string, that they may privily shoot at the upright in heart."

Psalms 11:5: "The LORD trieth the righteous: but the wicked and him that loveth violence his soul hateth."

Psalms 11:6: "Upon the wicked he shall rain snares, fire and brimstone, and an horrible tempest: this shall be the portion of their cup."

Psalms 12:8: "The wicked walk on every side, when the vilest men are exalted."

Psalms 17:9: "From the wicked that oppress me, from my deadly enemies, who compass me about."

Psalms 17:13: "Arise, O LORD, disappoint him, cast him down: deliver my soul from the wicked, which is thy sword:"

Psalms 22:16: "For dogs have compassed me: the assembly of the wicked have inclosed me: they pierced my hands and my feet."

Psalms 26:5: "I have hated the congregation of evil doers; and will not sit with the wicked."

Psalms 27:2: "When the wicked, even mine enemies and my foes, came upon me to eat up my flesh, they stumbled and fell."

Psalms 28:3: "Draw me not away with the wicked, and with the workers of iniquity, which speak peace to their neighbours, but mischief is in their hearts."

Psalms 31:17: "Let me not be ashamed, O LORD; for I have called upon thee: let the wicked be ashamed, and let them be silent in the grave."

Psalms 32:10: "Many sorrows shall be to the wicked: but he that trusteth in the LORD, mercy shall compass him about."

Psalms 34:21: "Evil shall slay the wicked: and they that hate the righteous shall be desolate."

Psalms 36:1: "The transgression of the wicked saith within my heart, that there is no fear of God before his eyes."

Psalms 36:11: "Let not the foot of pride come against me, and let not the hand of the wicked remove me."

Psalms 37:7: "Rest in the LORD, and wait patiently for him: fret not thyself because of him who prospereth in his way, because of the man who bringeth wicked devices to pass."

Psalms 37:10: "For yet a little while, and the wicked shall not be: yea, thou shalt diligently consider his place, and it shall not be."

Psalms 37:12: "The wicked plotteth against the just, and gnasheth upon him with his teeth."

Psalms 37:14: "The wicked have drawn out the sword, and have bent their bow, to cast down the poor and needy, and to slay such as be of upright conversation."

Psalms 37:16: "A little that a righteous man hath is better than the riches of many wicked."

Psalms 37:17: "For the arms of the wicked shall be broken: but the LORD upholdeth the righteous."

Psalms 37:20: "But the wicked shall perish, and the enemies of the LORD shall be as the fat of lambs: they shall consume; into smoke shall they consume away."

Psalms 37:21: "The wicked borroweth, and payeth not again: but the righteous sheweth mercy, and giveth."

Psalms 37:28: "For the LORD loveth judgment, and forsaketh not his saints; they are preserved for ever: but the seed of the wicked shall be cut off."

Psalms 37:32: "The wicked watcheth the righteous, and seeketh to slay him."

Psalms 37:34: "Wait on the LORD, and keep his way, and he shall exalt thee to inherit the land: when the wicked are cut off, thou shalt see it."

Psalms 37:35: "I have seen the wicked in great power, and spreading himself like a green bay tree."

Psalms 37:38: "But the transgressors shall be destroyed together: the end of the wicked shall be cut off."

Psalms 37:40: "And the LORD shall help them, and deliver them: he shall deliver them from the wicked, and save them, because they trust in him."

Psalms 39:1: "I said, I will take heed to my ways, that I sin not with my tongue: I will keep my

mouth with a bridle, while the wicked is before me."

Psalms 50:16: "But unto the wicked God saith, What hast thou to do to declare my statutes, or that thou shouldest take my covenant in thy mouth?"

Psalms 55:3: "Because of the voice of the enemy, because of the oppression of the wicked: for they cast iniquity upon me, and in wrath they hate me."

Psalms 58:3: "The wicked are estranged from the womb: they go astray as soon as they be born, speaking lies."

Psalms 58:10: "The righteous shall rejoice when he seeth the vengeance: he shall wash his feet in the blood of the wicked."

Psalms 59:5: "Thou therefore, O LORD God of hosts, the God of Israel, awake to visit all the heathen: be not merciful to any wicked transgressors. Selah."

Psalms 64:2: "Hide me from the secret counsel of the wicked; from the insurrection of the workers of iniquity:"

Psalms 68:2: "As smoke is driven away, so drive them away: as wax melteth before the fire, so let the wicked perish at the presence of God."

Psalms 71:4: "Deliver me, O my God, out of the hand of the wicked, out of the hand of the unrighteous and cruel man."

Psalms 73:3: "For I was envious at the foolish, when I saw the prosperity of the wicked."

Psalms 74:19: "O deliver not the soul of thy turtledove unto the multitude of the wicked: forget not the congregation of thy poor for ever."

Psalms 75:4: "I said unto the fools, Deal not foolishly: and to the wicked, Lift not up the horn:"

Psalms 75:8: "For in the hand of the LORD there is a cup, and the wine is red; it is full of mixture; and he poureth out of the same: but the dregs thereof, all the wicked of the earth shall wring them out, and drink them."

Psalms 75:10: "All the horns of the wicked also will I cut off; but the horns of the righteous shall be exalted."

Psalms 82:2: "How long will ye judge unjustly, and accept the persons of the wicked? Selah."

Psalms 82:4: "Deliver the poor and needy: rid them out of the hand of the wicked."

Psalms 91:8: "Only with thine eyes shalt thou behold and see the reward of the wicked."

Psalms 92:7: "When the wicked spring as the grass, and when all the workers of iniquity do flourish; it is that they shall be destroyed for ever:"

Psalms 92:11: "Mine eye also shall see my desire on mine enemies, and mine ears shall hear my desire of the wicked that rise up against me."

Psalms 94:3: "LORD, how long shall the wicked, how long shall the wicked triumph?"

Psalms 94:13: "That thou mayest give him rest from the days of adversity, until the pit be digged for the wicked."

Psalms 97:10: "Ye that love the LORD, hate evil: he preserveth the souls of his saints; he delivereth them out of the hand of the wicked."

Psalms 101:3: "I will set no wicked thing before mine eyes: I hate the work of them that turn aside; it shall not cleave to me."

Psalms 101:4: "A froward heart shall depart from me: I will not know a wicked person."

Psalms 101:8: "I will early destroy all the wicked of the land; that I may cut off all wicked doers from the city of the LORD."

Psalms 104:35: "Let the sinners be consumed out of the earth, and let the wicked be no more. Bless thou the LORD, O my soul. Praise ye the LORD."

Psalms 106:18: "And a fire was kindled in their company; the flame burned up the wicked."

Psalms 109:2: "For the mouth of the wicked and the mouth of the deceitful are opened against me: they have spoken against me with a lying tongue."

Psalms 109:6: "Set thou a wicked man over him: and let Satan stand at his right hand."

Psalms 112:10: "The wicked shall see it, and be grieved; he shall gnash with his teeth, and melt

away: the desire of the wicked shall perish."

Psalms 119:53: "Horror hath taken hold upon me because of the wicked that forsake thy law."

Psalms 119:61: "The bands of the wicked have robbed me: but I have not forgotten thy law."

Psalms 119:95: "The wicked have waited for me to destroy me: but I will consider thy testimonies."

Psalms 119:110: "The wicked have laid a snare for me: yet I erred not from thy precepts."

Psalms 119:119: "Thou puttest away all the wicked of the earth like dross: therefore I love thy testimonies."

Psalms 119:155: "Salvation is far from the wicked: for they seek not thy statutes."

Psalms 125:3: "For the rod of the wicked shall not rest upon the lot of the righteous; lest the righteous put forth their hands unto iniquity."

Psalms 129:4: "The LORD is righteous: he hath cut asunder the cords of the wicked."

Psalms 139:19: "Surely thou wilt slay the wicked, O God: depart from me therefore, ye bloody men."

Psalms 139:24: "And see if there be any wicked way in me, and lead me in the way everlasting."

Psalms 140:4: "Keep me, O LORD, from the hands of the wicked; preserve me from the violent man; who have purposed to overthrow my goings."

Psalms 140:8: "Grant not, O LORD, the desires of the wicked: further not his wicked device; lest they exalt themselves. Selah."

Psalms 141:4: "Incline not my heart to any evil thing, to practise wicked works with men that work iniquity: and let me not eat of their dainties."

Psalms 141:10: "Let the wicked fall into their own nets, whilst that I withal escape."

Psalms 145:20: "The LORD preserveth all them that love him: but all the wicked will he destroy."

Psalms 146:9: "The LORD preserveth the strangers; he relieveth the fatherless and widow: but the way of the wicked he turneth upside down."

Psalms 147:6: "The LORD lifteth up the meek: he casteth the wicked down to the ground."

Proverbs 2:14: "Who rejoice to do evil, and delight in the frowardness of the wicked;"

Proverbs 2:22: "But the wicked shall be cut off from the earth, and the transgressors shall be rooted out of it."

Proverbs 3:25: "Be not afraid of sudden fear, neither of the desolation of the wicked, when it cometh."

Proverbs 3:33: "The curse of the LORD is in the house of the wicked: but he blesseth the habitation of the just."

Proverbs 4:14: "Enter not into the path of the wicked, and go not in the way of evil men."

Proverbs 4:19: "The way of the wicked is as darkness: they know not at what they stumble."

Proverbs 5:22: "His own iniquities shall take the wicked himself, and he shall be holden with the cords of his sins."

Proverbs 6:12: "A naughty person, a wicked man, walketh with a froward mouth."

Proverbs 6:18: "An heart that deviseth wicked imaginations, feet that be swift in running to mischief,"

Proverbs 9:7: "He that reproveth a scorner getteth to himself shame: and he that rebuketh a wicked man getteth himself a blot."

Proverbs 10:3: "The LORD will not suffer the soul of the righteous to famish: but he casteth away the substance of the wicked."

Proverbs 10:6: "Blessings are upon the head of the just: but violence covereth the mouth of the wicked."

Proverbs 10:7: "The memory of the just is blessed: but the name of the wicked shall rot."

Proverbs 10:11: "The mouth of a righteous man is a well of life: but violence covereth the mouth of the wicked."

Proverbs 10:16: "The labour of the righteous tendeth to life: the fruit of the wicked to sin."

Proverbs 10:20: "The tongue of the just is as choice silver: the heart of the wicked is little worth."

Proverbs 10:24: "The fear of the wicked, it shall come upon him: but the desire of the righteous shall be granted."

Proverbs 10:25: "As the whirlwind passeth, so is the wicked no more: but the righteous is an everlasting foundation."

Proverbs 10:27: "The fear of the LORD prolongeth days: but the years of the wicked shall be shortened."

Proverbs 10:28: "The hope of the righteous shall be gladness: but the expectation of the wicked shall perish."

Proverbs 10:30: "The righteous shall never be removed: but the wicked shall not inhabit the earth."

Proverbs 10:32: "The lips of the righteous know what is acceptable: but the mouth of the wicked speaketh frowardness."

Proverbs 11:5: "The righteousness of the perfect shall direct his way: but the wicked shall fall by his own wickedness."

Proverbs 11:7: "When a wicked man dieth, his expectation shall perish: and the hope of unjust men perisheth."

Proverbs 11:8: "The righteous is delivered out of trouble, and the wicked cometh in his stead."

Proverbs 11:10: "When it goeth well with the righteous, the city rejoiceth: and when the wicked perish, there is shouting."

Proverbs 11:11: "By the blessing of the upright the city is exalted: but it is overthrown by the mouth of the wicked."

Proverbs 11:18: "The wicked worketh a deceitful work: but to him that soweth righteousness shall be a sure reward."

Proverbs 11:21: "Though hand join in hand, the wicked shall not be unpunished: but the seed of the righteous shall be delivered."

Proverbs 11:23: "The desire of the righteous is only good: but the expectation of the wicked is wrath."

Proverbs 11:31: "Behold, the righteous shall be recompensed in the earth: much more the wicked and the sinner."

Proverbs 12:2: "A good man obtaineth favour of the LORD: but a man of wicked devices will he condemn."

Proverbs 12:5: "The thoughts of the righteous are right: but the counsels of the wicked are deceit."

Proverbs 12:6: "The words of the wicked are to lie in wait for blood: but the mouth of the upright shall deliver them."

Proverbs 12:7: "The wicked are overthrown, and are not: but the house of the righteous shall stand."

Proverbs 12:10: "A righteous man regardeth the life of his beast: but the tender mercies of the wicked are cruel."

Proverbs 12:12: "The wicked desireth the net of evil men: but the root of the righteous yieldeth fruit."

Proverbs 12:13: "The wicked is snared by the transgression of his lips: but the just shall come out of trouble."

Proverbs 12:21: "There shall no evil happen to the just: but the wicked shall be filled with mischief."

Proverbs 12:26: "The righteous is more excellent than his neighbour: but the way of the wicked seduceth them."

Proverbs 13:5: "A righteous man hateth lying: but a wicked man is loathsome, and cometh to shame."

Proverbs 13:9: "The light of the righteous rejoiceth: but the lamp of the wicked shall be put out."

Proverbs 13:17: "A wicked messenger falleth into mischief: but a faithful ambassador is health."

Proverbs 13:25: "The righteous eateth to the satisfying of his soul: but the belly of the wicked shall want."

Proverbs 14:11: "The house of the wicked shall be overthrown: but the tabernacle of the upright shall flourish."

Proverbs 14:17: "He that is soon angry dealeth foolishly: and a man of wicked devices is hated."

Proverbs 14:19: "The evil bow before the good; and the wicked at the gates of the righteous."

Proverbs 14:32: "The wicked is driven away in his wickedness: but the righteous hath hope in his death."

Proverbs 15:6: "In the house of the righteous is much treasure: but in the revenues of the wicked is trouble."

Proverbs 15:8: "The sacrifice of the wicked is an abomination to the LORD: but the prayer of the upright is his delight."

Proverbs 15:9: "The way of the wicked is an abomination unto the LORD: but he loveth him that followeth after righteousness."

Proverbs 15:26: "The thoughts of the wicked are an abomination to the LORD: but the words of the pure are pleasant words."

Proverbs 15:28: "The heart of the righteous studieth to answer: but the mouth of the wicked poureth out evil things."

Proverbs 15:29: "The LORD is far from the wicked: but he heareth the prayer of the righteous."

Proverbs 16:4: "The LORD hath made all things for himself: yea, even the wicked for the day of evil."

Proverbs 17:4: "A wicked doer giveth heed to false lips; and a liar giveth ear to a naughty tongue."

Proverbs 17:15: "He that justifieth the wicked, and he that condemneth the just, even they both are abomination to the LORD."

Proverbs 17:23: "A wicked man taketh a gift out of the bosom to pervert the ways of judgment."

Proverbs 18:3: "When the wicked cometh, then cometh also contempt, and with ignominy reproach."

Proverbs 18:5: "It is not good to accept the person of the wicked, to overthrow the righteous in judgment."

Proverbs 19:28: "An ungodly witness scorneth judgment: and the mouth of the wicked devoureth iniquity."

Proverbs 20:26: "A wise king scattereth the wicked, and bringeth the wheel over them."

Proverbs 21:4: "An high look, and a proud heart, and the plowing of the wicked, is sin."

Proverbs 21:7: "The robbery of the wicked shall destroy them; because they refuse to do judgment."

Proverbs 21:10: "The soul of the wicked desireth evil: his neighbour findeth no favour in his eyes."

Proverbs 21:12: "The righteous man wisely considereth the house of the wicked: but God overthroweth the wicked for their wickedness."

Proverbs 21:18: "The wicked shall be a ransom for the righteous, and the transgressor for the upright."

Proverbs 21:27: "The sacrifice of the wicked is abomination: how much more, when he bringeth it with a wicked mind?"

Proverbs 21:29: "A wicked man hardeneth his face: but as for the upright, he directeth his way."

Proverbs 24:15: "Lay not wait, O wicked man, against the dwelling of the righteous; spoil not his resting place:"

Proverbs 24:16: "For a just man falleth seven times, and riseth up again: but the wicked shall fall into mischief."

Proverbs 24:19: "Fret not thyself because of evil men, neither be thou envious at the wicked:"

Proverbs 24:20: "For there shall be no reward to the evil man; the candle of the wicked shall be put out."

Proverbs 24:24: "He that saith unto the wicked, Thou are righteous; him shall the people curse, nations shall abhor him:"

Proverbs 25:5: "Take away the wicked from before the king, and his throne shall be established in



righteousness."

Proverbs 25:26: "A righteous man falling down before the wicked is as a troubled fountain, and a corrupt spring."

Proverbs 26:23: "Burning lips and a wicked heart are like a potsherd covered with silver dross."

Proverbs 28:1: "The wicked flee when no man pursueth: but the righteous are bold as a lion."

Proverbs 28:4: "They that forsake the law praise the wicked: but such as keep the law contend with them."

Proverbs 28:12: "When righteous men do rejoice, there is great glory: but when the wicked rise, a man is hidden."

Proverbs 28:15: "As a roaring lion, and a ranging bear; so is a wicked ruler over the poor people."

Proverbs 28:28: "When the wicked rise, men hide themselves: but when they perish, the righteous increase."

Proverbs 29:2: "When the righteous are in authority, the people rejoice: but when the wicked beareth rule, the people mourn."

Proverbs 29:7: "The righteous considereth the cause of the poor: but the wicked regardeth not to know it."

Proverbs 29:12: "If a ruler hearken to lies, all his servants are wicked."

Proverbs 29:16: "When the wicked are multiplied, transgression increaseth: but the righteous shall see their fall."

Proverbs 29:27: "An unjust man is an abomination to the just: and he that is upright in the way is abomination to the wicked."

Ecclesiastes 3:17: "I said in mine heart, God shall judge the righteous and the wicked: for there is a time there for every purpose and for every work."

Ecclesiastes 7:15: "All things have I seen in the days of my vanity: there is a just man that perisheth in his righteousness, and there is a wicked man that prolongeth his life in his wickedness."

Ecclesiastes 7:17: "Be not over much wicked, neither be thou foolish: why shouldest thou die before thy time?"

Ecclesiastes 8:10: "And so I saw the wicked buried, who had come and gone from the place of the holy, and they were forgotten in the city where they had so done: this is also vanity."

Ecclesiastes 8:13: "But it shall not be well with the wicked, neither shall he prolong his days, which are as a shadow; because he feareth not before God."

Ecclesiastes 8:14: "There is a vanity which is done upon the earth; that there be just men, unto whom it happeneth according to the work of the wicked; again, there be wicked men, to whom it happeneth according to the work of the righteous: I said that this also is vanity."

Ecclesiastes 9:2: "All things come alike to all: there is one event to the righteous, and to the wicked; to the good and to the clean, and to the unclean; to him that sacrificeth, and to him that sacrificeth not: as is the good, so is the sinner; and he that sweareth, as he that feareth an oath."

Isaiah 3:11: "Woe unto the wicked! it shall be ill with him: for the reward of his hands shall be given him."

Isaiah 5:23: "Which justify the wicked for reward, and take away the righteousness of the righteous from him!"

Isaiah 11:4: "But with righteousness shall he judge the poor, and reprove with equity for the meek of the earth: and he shall smite the earth: with the rod of his mouth, and with the breath of his lips shall he slay the wicked."

Isaiah 13:11: "And I will punish the world for their evil, and the wicked for their iniquity; and I will cause the arrogancy of the proud to cease, and will lay low the haughtiness of the terrible."

Isaiah 14:5: "The LORD hath broken the staff of the wicked, and the sceptre of the rulers."

Isaiah 26:10: "Let favour be shewed to the wicked, yet will he not learn righteousness: in the land of uprightness will he deal unjustly, and will not behold the majesty of the LORD."

Isaiah 32:7: "The instruments also of the churl are evil: he deviseth wicked devices to destroy the

poor with lying words, even when the needy speaketh right."

Isaiah 48:22: "There is no peace, saith the LORD, unto the wicked."

Isaiah 53:9: "And he made his grave with the wicked, and with the rich in his death; because he had done no violence, neither was any deceit in his mouth."

Isaiah 55:7: "Let the wicked forsake his way, and the unrighteous man his thoughts: and let him return unto the LORD, and he will have mercy upon him; and to our God, for he will abundantly pardon."

Isaiah 57:20: "But the wicked are like the troubled sea, when it cannot rest, whose waters cast up mire and dirt."

Isaiah 57:21: "There is no peace, saith my God, to the wicked."

Jeremiah 2:33: "Why trimmest thou thy way to seek love? therefore hast thou also taught the wicked ones thy ways."

Jeremiah 5:26: "For among my people are found wicked men: they lay wait, as he that setteth snares; they set a trap, they catch men."

Jeremiah 5:28: "They are waxen fat, they shine: yea, they overpass the deeds of the wicked: they judge not the cause, the cause of the fatherless, yet they prosper; and the right of the needy do they not judge."

Jeremiah 6:29: "The bellows are burned, the lead is consumed of the fire; the founder melteth in vain: for the wicked are not plucked away."

Jeremiah 12:1: "Righteous art thou, O LORD, when I plead with thee: yet let me talk with thee of thy judgments: Wherefore doth the way of the wicked prosper? wherefore are all they happy that deal very treacherously?"

Jeremiah 15:21: "And I will deliver thee out of the hand of the wicked, and I will redeem thee out of the hand of the terrible."

Jeremiah 17:9: "The heart is deceitful above all things, and desperately wicked: who can know it?"

Jeremiah 23:19: "Behold, a whirlwind of the LORD is gone forth in fury, even a grievous whirlwind: it shall fall grievously upon the head of the wicked."

Jeremiah 25:31: "A noise shall come even to the ends of the earth; for the LORD hath a controversy with the nations, he will plead with all flesh; he will give them that are wicked to the sword, saith the LORD."

Jeremiah 30:23: "Behold, the whirlwind of the LORD goeth forth with fury, a continuing whirlwind: it shall fall with pain upon the head of the wicked."

Ezekiel 3:18: "When I say unto the wicked, Thou shalt surely die; and thou givest him not warning, nor speakest to warn the wicked from his wicked way, to save his life; the same wicked man shall die in his iniquity; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 3:19: "Yet if thou warn the wicked, and he turn not from his wickedness, nor from his wicked way, he shall die in his iniquity; but thou hast delivered thy soul."

Ezekiel 7:21: "And I will give it into the hands of the strangers for a prey, and to the wicked of the earth for a spoil; and they shall pollute it."

Ezekiel 8:9: "And he said unto me, Go in, and behold the wicked abominations that they do here."

Ezekiel 11:2: "Then said he unto me, Son of man, these are the men that devise mischief, and give wicked counsel in this city:"

Ezekiel 13:22: "Because with lies ye have made the heart of the righteous sad, whom I have not made sad; and strengthened the hands of the wicked, that he should not return from his wicked way, by promising him life:"

Ezekiel 18:20: "The soul that sinneth, it shall die. The son shall not bear the iniquity of the father, neither shall the father bear the iniquity of the son: the righteousness of the righteous shall be upon him, and the wickedness of the wicked shall be upon him."

Ezekiel 18:21: "But if the wicked will turn from all his sins that he hath committed, and keep all my statutes, and do that which is lawful and right, he shall surely live, he shall not die."

Ezekiel 18:23: "Have I any pleasure at all that the wicked should die? saith the Lord GOD: and not that he should return from his ways, and live?"

Ezekiel 18:24: "But when the righteous turneth away from his righteousness, and committeth iniquity, and doeth according to all the abominations that the wicked man doeth, shall he live? All his righteousness that he hath done shall not be mentioned: in his trespass that he hath trespassed, and in his sin that he hath sinned, in them shall he die."

Ezekiel 18:27: "Again, when the wicked man turneth away from his wickedness that he hath committed, and doeth that which is lawful and right, he shall save his soul alive."

Ezekiel 20:44: "And ye shall know that I am the LORD when I have wrought with you for my name's sake, not according to your wicked ways, nor according to your corrupt doings, O ye house of Israel, saith the Lord GOD."

Ezekiel 21:3: "And say to the land of Israel, Thus saith the LORD; Behold, I am against thee, and will draw forth my sword out of his sheath, and will cut off from thee the righteous and the wicked."

Ezekiel 21:4: "Seeing then that I will cut off from thee the righteous and the wicked, therefore shall my sword go forth out of his sheath against all flesh from the south to the north:"

Ezekiel 21:25: "And thou, profane wicked prince of Israel, whose day is come, when iniquity shall have an end,"

Ezekiel 21:29: "Whiles they see vanity unto thee, whiles they divine a lie unto thee, to bring thee upon the necks of them that are slain, of the wicked, whose day is come, when their iniquity shall have an end."

Ezekiel 30:12: "And I will make the rivers dry, and sell the land into the hand of the wicked: and I will make the land waste, and all that is therein, by the hand of strangers: I the LORD have spoken it."

Ezekiel 33:8: "When I say unto the wicked, O wicked man, thou shalt surely die; if thou dost not speak to warn the wicked from his way, that wicked man shall die in his iniquity; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 33:9: "Nevertheless, if thou warn the wicked of his way to turn from it; if he do not turn from his way, he shall die in his iniquity; but thou hast delivered thy soul."

Ezekiel 33:11: "Say unto them, As I live, saith the Lord GOD, I have no pleasure in the death of the wicked; but that the wicked turn from his way and live: turn ye, turn ye from your evil ways; for why will ye die, O house of Israel?"

Ezekiel 33:12: "Therefore, thou son of man, say unto the children of thy people, The righteousness of the righteous shall not deliver him in the day of his transgression: as for the wickedness of the wicked, he shall not fall thereby in the day that he turneth from his wickedness; neither shall the righteous be able to live for his righteousness in the day that he sinneth."

Ezekiel 33:14: "Again, when I say unto the wicked, Thou shalt surely die; if he turn from his sin, and do that which is lawful and right;"

Ezekiel 33:15: "If the wicked restore the pledge, give again that he had robbed, walk in the statutes of life, without committing iniquity; he shall surely live, he shall not die."

Ezekiel 33:19: "But if the wicked turn from his wickedness, and do that which is lawful and right, he shall live thereby."

Daniel 12:10: "Many shall be purified, and made white, and tried; but the wicked shall do wickedly: and none of the wicked shall understand; but the wise shall understand."

Micah 6:10: "Are there yet the treasures of wickedness in the house of the wicked, and the scant measure that is abominable?"

Micah 6:11: "Shall I count them pure with the wicked balances, and with the bag of deceitful weights?"

Nahum 1:3: "The LORD is slow to anger, and great in power, and will not at all acquit the wicked: the LORD hath his way in the whirlwind and in the storm, and the clouds are the dust of his feet."

Nahum 1:11: "There is one come out of thee, that imagineth evil against the LORD, a wicked counsellor."

Nahum 1:15: "Behold upon the mountains the feet of him that bringeth good tidings, that publisheth peace! O Judah, keep thy solemn feasts, perform thy vows: for the wicked shall no more pass through thee; he is utterly cut off."

Habakkuk 1:4: "Therefore the law is slacked, and judgment doth never go forth: for the wicked doth compass about the righteous; therefore wrong judgment proceedeth."

Habakkuk 1:13: "Thou art of purer eyes than to behold evil, and canst not look on iniquity: wherefore lookest thou upon them that deal treacherously, and holdest thy tongue when the wicked devoureth the man that is more righteous than he?"

Habakkuk 3:13: "Thou wentest forth for the salvation of thy people, even for salvation with thine anointed; thou woundedst the head out of the house of the wicked, by discovering the foundation unto the neck. Selah."

Zephaniah 1:3: "I will consume man and beast; I will consume the fowls of the heaven, and the fishes of the sea, and the stumbling blocks with the wicked: and I will cut off man from off the land, saith the LORD."

Malachi 3:18: "Then shall ye return, and discern between the righteous and the wicked, between him that serveth God and him that serveth him not."

Malachi 4:3: "And ye shall tread down the wicked; for they shall be ashes under the soles of your feet in the day that I shall do this, saith the LORD of hosts."

Matthew 12:45: "Then goeth he, and taketh with himself seven other spirits more wicked than himself, and they enter in and dwell there: and the last state of that man is worse than the first. Even so shall it be also unto this wicked generation."

Matthew 13:19: "When any one heareth the word of the kingdom, and understandeth it not, then cometh the wicked one, and catcheth away that which was sown in his heart. This is he which received seed by the way side."

Matthew 13:38: "The field is the world; the good seed are the children of the kingdom; but the tares are the children of the wicked one;"

Matthew 13:49: "So shall it be at the end of the world: the angels shall come forth, and sever the wicked from among the just,"

Matthew 16:4: "A wicked and adulterous generation seeketh after a sign; and there shall no sign be given unto it, but the sign of the prophet Jonas. And he left them, and departed."

Matthew 18:32: "Then his lord, after that he had called him, said unto him, O thou wicked servant, I forgave thee all that debt, because thou desiredst me:"

Matthew 21:41: "They say unto him, He will miserably destroy those wicked men, and will let out his vineyard unto other husbandmen, which shall render him the fruits in their seasons."

Matthew 25:26: "His lord answered and said unto him, Thou wicked and slothful servant, thou knewest that I reap where I sowed not, and gather where I have not strawed:"

Luke 11:26: "Then goeth he, and taketh to him seven other spirits more wicked than himself; and they enter in, and dwell there: and the last state of that man is worse than the first."

Luke 19:22: "And he saith unto him, Out of thine own mouth will I judge thee, thou wicked servant. Thou knewest that I was an austere man, taking up that I laid not down, and reaping that I did not sow:"

Acts 2:23: "Him, being delivered by the determinate counsel and foreknowledge of God, ye have taken, and by wicked hands have crucified and slain:"

Acts 18:14: "And when Paul was now about to open his mouth, Gallio said unto the Jews, If it were a matter of wrong or wicked lewdness, O ye Jews, reason would that I should bear with you:"

1 Corinthians 5:13: "But them that are without God judgeth. Therefore put away from among yourselves that wicked person."

Ephesians 6:16: "Above all, taking the shield of faith, wherewith ye shall be able to quench all the

fiery darts of the wicked."

Colossians 1:21: "And you, that were sometime alienated and enemies in your mind by wicked works, yet now hath he reconciled"

2 Thessalonians 2:8: "And then shall that Wicked be revealed, whom the Lord shall consume with the spirit of his mouth, and shall destroy with the brightness of his coming:"

2 Thessalonians 3:2: "And that we may be delivered from unreasonable and wicked men: for all men have not faith."

2 Peter 2:7: "And delivered just Lot, vexed with the filthy conversation of the wicked:"

2 Peter 3:17: "Ye therefore, beloved, seeing ye know these things before, beware lest ye also, being led away with the error of the wicked, fall from your own stedfastness."

1 John 2:13: "I write unto you, fathers, because ye have known him that is from the beginning. I write unto you, young men, because ye have overcome the wicked one. I write unto you, little children, because ye have known the Father."

1 John 2:14: "I have written unto you, fathers, because ye have known him that is from the beginning. I have written unto you, young men, because ye are strong, and the word of God abideth in you, and ye have overcome the wicked one."

1 John 3:12: "Not as Cain, who was of that wicked one, and slew his brother. And wherefore slew he him? Because his own works were evil, and his brother's righteous."

1 John 5:18: "We know that whosoever is born of God sinneth not; but he that is begotten of God keepeth himself, and that wicked one toucheth him not."

## **WICKEDLY**

Occurrences: 23

Genesis 19:7: "And said, I pray you, brethren, do not so wickedly."

Deuteronomy 9:18: "And I fell down before the LORD, as at the first, forty days and forty nights: I did neither eat bread, nor drink water, because of all your sins which ye sinned, in doing wickedly in the sight of the LORD, to provoke him to anger."

Judges 19:23: "And the man, the master of the house, went out unto them, and said unto them, Nay, my brethren, nay, I pray you, do not so wickedly; seeing that this man is come into mine house, do not this folly."

1 Samuel 12:25: "But if ye shall still do wickedly, ye shall be consumed, both ye and your king."

2 Samuel 22:22: "For I have kept the ways of the LORD, and have not wickedly departed from my God."

2 Samuel 24:17: "And David spake unto the LORD when he saw the angel that smote the people, and said, Lo, I have sinned, and I have done wickedly: but these sheep, what have they done? let thine hand, I pray thee, be against me, and against my father's house."

2 Kings 21:11: "Because Manasseh king of Judah hath done these abominations, and hath done wickedly above all that the Amorites did, which were before him, and hath made Judah also to sin with his idols:"

2 Chronicles 6:37: "Yet if they bethink themselves in the land whither they are carried captive, and turn and pray unto thee in the land of their captivity, saying, We have sinned, we have done amiss, and have dealt wickedly;"

2 Chronicles 20:35: "And after this did Jehoshaphat king of Judah join himself with Ahaziah king of Israel, who did very wickedly:"

2 Chronicles 22:3: "He also walked in the ways of the house of Ahab: for his mother was his counsellor to do wickedly."

Nehemiah 9:33: "Howbeit thou art just in all that is brought upon us; for thou hast done right, but we have done wickedly:"

Job 13:7: "Will ye speak wickedly for God? and talk deceitfully for him?"

Job 34:12: "Yea, surely God will not do wickedly, neither will the Almighty pervert judgment."

Psalms 18:21: "For I have kept the ways of the LORD, and have not wickedly departed from my God."

Psalms 73:8: "They are corrupt, and speak wickedly concerning oppression: they speak loftily."

Psalms 74:3: "Lift up thy feet unto the perpetual desolations; even all that the enemy hath done wickedly in the sanctuary."

Psalms 106:6: "We have sinned with our fathers, we have committed iniquity, we have done wickedly."

Psalms 139:20: "For they speak against thee wickedly, and thine enemies take thy name in vain."

Daniel 9:5: "We have sinned, and have committed iniquity, and have done wickedly, and have rebelled, even by departing from thy precepts and from thy judgments:"

Daniel 9:15: "And now, O Lord our God, that hast brought thy people forth out of the land of Egypt with a mighty hand, and hast gotten thee renown, as at this day; we have sinned, we have done wickedly."

Daniel 11:32: "And such as do wickedly against the covenant shall he corrupt by flatteries: but the people that do know their God shall be strong, and do exploits."

Daniel 12:10: "Many shall be purified, and made white, and tried; but the wicked shall do wickedly: and none of the wicked shall understand; but the wise shall understand."

Malachi 4:1: "For, behold, the day cometh, that shall burn as an oven; and all the proud, yea, and all that do wickedly, shall be stubble: and the day that cometh shall burn them up, saith the LORD of hosts, that it shall leave them neither root nor branch."

## **WICKEDNESS**

Occurrences: 119

Genesis 6:5: "And God saw that the wickedness of man was great in the earth, and that every imagination of the thoughts of his heart was only evil continually."

Genesis 39:9: "There is none greater in this house than I; neither hath he kept back any thing from me but thee, because thou art his wife: how then can I do this great wickedness, and sin against God?"

Leviticus 18:17: "Thou shalt not uncover the nakedness of a woman and her daughter, neither shalt thou take her son's daughter, or her daughter's daughter, to uncover her nakedness; for they are her near kinswomen: it is wickedness."

Leviticus 19:29: "Do not prostitute thy daughter, to cause her to be a whore; lest the land fall to whoredom, and the land become full of wickedness."

Leviticus 20:14: "And if a man take a wife and her mother, it is wickedness: they shall be burnt with fire, both he and they; that there be no wickedness among you."

Deuteronomy 9:4: "Speak not thou in thine heart, after that the LORD thy God hath cast them out from before thee, saying, For my righteousness the LORD hath brought me in to possess this land: but for the wickedness of these nations the LORD doth drive them out from before thee."

Deuteronomy 9:5: "Not for thy righteousness, or for the uprightness of thine heart, dost thou go to possess their land: but for the wickedness of these nations the LORD thy God doth drive them out from before thee, and that he may perform the word which the LORD sware unto thy fathers, Abraham, Isaac, and Jacob."

Deuteronomy 9:27: "Remember thy servants, Abraham, Isaac, and Jacob; look not unto the stubbornness of this people, nor to their wickedness, nor to their sin:"

Deuteronomy 13:11: "And all Israel shall hear, and fear, and shall do no more any such wickedness as this is among you."

Deuteronomy 17:2: "If there be found among you, within any of thy gates which the LORD thy God giveth thee, man or woman, that hath wrought wickedness in the sight of the LORD thy God, in transgressing his covenant,"

Deuteronomy 28:20: "The LORD shall send upon thee cursing, vexation, and rebuke, in all that

thou settest thine hand unto for to do, until thou be destroyed, and until thou perish quickly; because of the wickedness of thy doings, whereby thou hast forsaken me."

Judges 9:56: "Thus God rendered the wickedness of Abimelech, which he did unto his father, in slaying his seventy brethren:"

Judges 20:3: "(Now the children of Benjamin heard that the children of Israel were gone up to Mizpeh.) Then said the children of Israel, Tell us, how was this wickedness?"

Judges 20:12: "And the tribes of Israel sent men through all the tribe of Benjamin, saying, What wickedness is this that is done among you?"

1 Samuel 12:17: "Is it not wheat harvest to day? I will call unto the LORD, and he shall send thunder and rain; that ye may perceive and see that your wickedness is great, which ye have done in the sight of the LORD, in asking you a king."

1 Samuel 12:20: "And Samuel said unto the people, Fear not: ye have done all this wickedness: yet turn not aside from following the LORD, but serve the LORD with all your heart;"

1 Samuel 24:13: "As saith the proverb of the ancients, Wickedness proceedeth from the wicked: but mine hand shall not be upon thee."

1 Samuel 25:39: "And when David heard that Nabal was dead, he said, Blessed be the LORD, that hath pleaded the cause of my reproach from the hand of Nabal, and hath kept his servant from evil: for the LORD hath returned the wickedness of Nabal upon his own head. And David sent and communed with Abigail, to take her to him to wife."

2 Samuel 3:39: "And I am this day weak, though anointed king; and these men the sons of Zeruiah be too hard for me: the LORD shall reward the doer of evil according to his wickedness."

2 Samuel 7:10: "Moreover I will appoint a place for my people Israel, and will plant them, that they may dwell in a place of their own, and move no more; neither shall the children of wickedness afflict them any more, as beforetime,"

1 Kings 1:52: "And Solomon said, If he will shew himself a worthy man, there shall not an hair of him fall to the earth: but if wickedness shall be found in him, he shall die."

1 Kings 2:44: "The king said moreover to Shimei, Thou knowest all the wickedness which thine heart is privy to, that thou didst to David my father: therefore the LORD shall return thy wickedness upon thine own head;"

1 Kings 8:47: "Yet if they shall bethink themselves in the land whither they were carried captives, and repent, and make supplication unto thee in the land of them that carried them captives, saying, We have sinned, and have done perversely, we have committed wickedness;"

1 Kings 21:25: "But there was none like unto Ahab, which did sell himself to work wickedness in the sight of the LORD, whom Jezebel his wife stirred up."

2 Kings 21:6: "And he made his son pass through the fire, and observed times, and used enchantments, and dealt with familiar spirits and wizards: he wrought much wickedness in the sight of the LORD, to provoke him to anger."

1 Chronicles 17:9: "Also I will ordain a place for my people Israel, and will plant them, and they shall dwell in their place, and shall be moved no more; neither shall the children of wickedness waste them any more, as at the beginning,"

Job 4:8: "Even as I have seen, they that plow iniquity, and sow wickedness, reap the same."

Job 11:11: "For he knoweth vain men: he seeth wickedness also; will he not then consider it?"

Job 11:14: "If iniquity be in thine hand, put it far away, and let not wickedness dwell in thy tabernacles."

Job 20:12: "Though wickedness be sweet in his mouth, though he hide it under his tongue;"

Job 22:5: "Is not thy wickedness great? and thine iniquities infinite?"

Job 24:20: "The womb shall forget him; the worm shall feed sweetly on him; he shall be no more remembered; and wickedness shall be broken as a tree."

Job 27:4: "My lips shall not speak wickedness, nor my tongue utter deceit."

Job 34:10: "Therefore hearken unto me ye men of understanding: far be it from God, that he should

do wickedness; and from the Almighty, that he should commit iniquity."

Job 35:8: "Thy wickedness may hurt a man as thou art; and thy righteousness may profit the son of man."

Psalms 5:4: "For thou art not a God that hath pleasure in wickedness: neither shall evil dwell with thee."

Psalms 5:9: "For there is no faithfulness in their mouth; their inward part is very wickedness; their throat is an open sepulchre; they flatter with their tongue."

Psalms 7:9: "Oh let the wickedness of the wicked come to an end; but establish the just: for the righteous God trieth the hearts and reins."

Psalms 10:15: "Break thou the arm of the wicked and the evil man: seek out his wickedness till thou find none."

Psalms 28:4: "Give them according to their deeds, and according to the wickedness of their endeavours: give them after the work of their hands; render to them their desert."

Psalms 45:7: "Thou lovest righteousness, and hatest wickedness: therefore God, thy God, hath anointed thee with the oil of gladness above thy fellows."

Psalms 52:7: "Lo, this is the man that made not God his strength; but trusted in the abundance of his riches, and strengthened himself in his wickedness."

Psalms 55:11: "Wickedness is in the midst thereof: deceit and guile depart not from her streets."

Psalms 55:15: "Let death seize upon them, and let them go down quick into hell: for wickedness is in their dwellings, and among them."

Psalms 58:2: "Yea, in heart ye work wickedness; ye weigh the violence of your hands in the earth."

Psalms 84:10: "For a day in thy courts is better than a thousand. I had rather be a doorkeeper in the house of my God, than to dwell in the tents of wickedness."

Psalms 89:22: "The enemy shall not exact upon him; nor the son of wickedness afflict him."

Psalms 94:23: "And he shall bring upon them their own iniquity, and shall cut them off in their own wickedness; yea, the LORD our God shall cut them off."

Psalms 107:34: "A fruitful land into barrenness, for the wickedness of them that dwell therein."

Proverbs 4:17: "For they eat the bread of wickedness, and drink the wine of violence."

Proverbs 8:7: "For my mouth shall speak truth; and wickedness is an abomination to my lips."

Proverbs 10:2: "Treasures of wickedness profit nothing: but righteousness delivereth from death."

Proverbs 11:5: "The righteousness of the perfect shall direct his way: but the wicked shall fall by his own wickedness."

Proverbs 12:3: "A man shall not be established by wickedness: but the root of the righteous shall not be moved."

Proverbs 13:6: "Righteousness keepeth him that is upright in the way: but wickedness overthroweth the sinner."

Proverbs 14:32: "The wicked is driven away in his wickedness: but the righteous hath hope in his death."

Proverbs 16:12: "It is an abomination to kings to commit wickedness: for the throne is established by righteousness."

Proverbs 21:12: "The righteous man wisely considereth the house of the wicked: but God overthroweth the wicked for their wickedness."

Proverbs 26:26: "Whose hatred is covered by deceit, his wickedness shall be shewed before the whole congregation."

Proverbs 30:20: "Such is the way of an adulterous woman; she eateth, and wipeth her mouth, and saith, I have done no wickedness."

Ecclesiastes 3:16: "And moreover I saw under the sun the place of judgment, that wickedness was there; and the place of righteousness, that iniquity was there."

Ecclesiastes 7:15: "All things have I seen in the days of my vanity: there is a just man that perisheth in his righteousness, and there is a wicked man that prolongeth his life in his wickedness."



Ecclesiastes 7:25: "I applied mine heart to know, and to search, and to seek out wisdom, and the reason of things, and to know the wickedness of folly, even of foolishness and madness:"

Ecclesiastes 8:8: "There is no man that hath power over the spirit to retain the spirit; neither hath he power in the day of death: and there is no discharge in that war; neither shall wickedness deliver those that are given to it."

Isaiah 9:18: "For wickedness burneth as the fire: it shall devour the briers and thorns, and shall kindle in the thickets of the forest, and they shall mount up like the lifting up of smoke."

Isaiah 47:10: "For thou hast trusted in thy wickedness: thou hast said, None seeth me. Thy wisdom and thy knowledge, it hath perverted thee; and thou hast said in thine heart, I am, and none else beside me."

Isaiah 58:4: "Behold, ye fast for strife and debate, and to smite with the fist of wickedness: ye shall not fast as ye do this day, to make your voice to be heard on high."

Isaiah 58:6: "Is not this the fast that I have chosen? to loose the bands of wickedness, to undo the heavy burdens, and to let the oppressed go free, and that ye break every yoke?"

Jeremiah 1:16: "And I will utter my judgments against them touching all their wickedness, who have forsaken me, and have burned incense unto other gods, and worshipped the works of their own hands."

Jeremiah 2:19: "Thine own wickedness shall correct thee, and thy backslidings shall reprove thee: know therefore and see that it is an evil thing and bitter, that thou hast forsaken the LORD thy God, and that my fear is not in thee, saith the Lord GOD of hosts."

Jeremiah 3:2: "Lift up thine eyes unto the high places, and see where thou hast not been lien with. In the ways hast thou sat for them, as the Arabian in the wilderness; and thou hast polluted the land with thy whoredoms and with thy wickedness."

Jeremiah 4:14: "O Jerusalem, wash thine heart from wickedness, that thou mayest be saved. How long shall thy vain thoughts lodge within thee?"

Jeremiah 4:18: "Thy way and thy doings have procured these things unto thee; this is thy wickedness, because it is bitter, because it reacheth unto thine heart."

Jeremiah 6:7: "As a fountain casteth out her waters, so she casteth out her wickedness: violence and spoil is heard in her; before me continually is grief and wounds."

Jeremiah 7:12: "But go ye now unto my place which was in Shiloh, where I set my name at the first, and see what I did to it for the wickedness of my people Israel."

Jeremiah 8:6: "I hearkened and heard, but they spake not aright: no man repented him of his wickedness, saying, What have I done? every one turned to his course, as the horse rusheth into the battle."

Jeremiah 12:4: "How long shall the land mourn, and the herbs of every field wither, for the wickedness of them that dwell therein? the beasts are consumed, and the birds; because they said, He shall not see our last end."

Jeremiah 14:16: "And the people to whom they prophesy shall be cast out in the streets of Jerusalem because of the famine and the sword; and they shall have none to bury them, them, their wives, nor their sons, nor their daughters: for I will pour their wickedness upon them."

Jeremiah 14:20: "We acknowledge, O LORD, our wickedness, and the iniquity of our fathers: for we have sinned against thee."

Jeremiah 22:22: "The wind shall eat up all thy pastors, and thy lovers shall go into captivity: surely then shalt thou be ashamed and confounded for all thy wickedness."

Jeremiah 23:11: "For both prophet and priest are profane; yea, in my house have I found their wickedness, saith the LORD."

Jeremiah 23:14: "I have seen also in the prophets of Jerusalem an horrible thing: they commit adultery, and walk in lies: they strengthen also the hands of evildoers, that none doth return from his wickedness; they are all of them unto me as Sodom, and the inhabitants thereof as Gomorrah."

Jeremiah 33:5: "They come to fight with the Chaldeans, but it is to fill them with the dead bodies of

men, whom I have slain in mine anger and in my fury, and for all whose wickedness I have hid my face from this city."

Jeremiah 44:3: "Because of their wickedness which they have committed to provoke me to anger, in that they went to burn incense, and to serve other gods, whom they knew not, neither they, ye, nor your fathers."

Jeremiah 44:5: "But they hearkened not, nor inclined their ear to turn from their wickedness, to burn no incense unto other gods."

Jeremiah 44:9: "Have ye forgotten the wickedness of your fathers, and the wickedness of the kings of Judah, and the wickedness of their wives, and your own wickedness, and the wickedness of your wives, which they have committed in the land of Judah, and in the streets of Jerusalem?"

Lamentations 1:22: "Let all their wickedness come before thee; and do unto them, as thou hast done unto me for all my transgressions: for my sighs are many, and my heart is faint."

Ezekiel 3:19: "Yet if thou warn the wicked, and he turn not from his wickedness, nor from his wicked way, he shall die in his iniquity; but thou hast delivered thy soul."

Ezekiel 5:6: "And she hath changed my judgments into wickedness more than the nations, and my statutes more than the countries that are round about her: for they have refused my judgments and my statutes, they have not walked in them."

Ezekiel 7:11: "Violence is risen up into a rod of wickedness: none of them shall remain, nor of their multitude, nor of any of their's: neither shall there be wailing for them."

Ezekiel 16:23: "And it came to pass after all thy wickedness, (woe, woe unto thee! saith the LORD GOD;)"

Ezekiel 16:57: "Before thy wickedness was discovered, as at the time of thy reproach of the daughters of Syria, and all that are round about her, the daughters of the Philistines, which despise thee round about."

Ezekiel 18:20: "The soul that sinneth, it shall die. The son shall not bear the iniquity of the father, neither shall the father bear the iniquity of the son: the righteousness of the righteous shall be upon him, and the wickedness of the wicked shall be upon him."

Ezekiel 18:27: "Again, when the wicked man turneth away from his wickedness that he hath committed, and doeth that which is lawful and right, he shall save his soul alive."

Ezekiel 31:11: "I have therefore delivered him into the hand of the mighty one of the heathen; he shall surely deal with him: I have driven him out for his wickedness."

Ezekiel 33:12: "Therefore, thou son of man, say unto the children of thy people, The righteousness of the righteous shall not deliver him in the day of his transgression: as for the wickedness of the wicked, he shall not fall thereby in the day that he turneth from his wickedness; neither shall the righteous be able to live for his righteousness in the day that he sinneth."

Ezekiel 33:19: "But if the wicked turn from his wickedness, and do that which is lawful and right, he shall live thereby."

Hosea 7:1: "When I would have healed Israel, then the iniquity of Ephraim was discovered, and the wickedness of Samaria: for they commit falsehood; and the thief cometh in, and the troop of robbers spoileth without."

Hosea 7:2: "And they consider not in their hearts that I remember all their wickedness: now their own doings have beset them about; they are before my face."

Hosea 7:3: "They make the king glad with their wickedness, and the princes with their lies."

Hosea 9:15: "All their wickedness is in Gilgal: for there I hated them: for the wickedness of their doings I will drive them out of mine house, I will love them no more: all their princes are revolvers."

Hosea 10:13: "Ye have plowed wickedness, ye have reaped iniquity; ye have eaten the fruit of lies: because thou didst trust in thy way, in the multitude of thy mighty men."

Hosea 10:15: "So shall Bethel do unto you because of your great wickedness: in a morning shall the king of Israel utterly be cut off."

Joel 3:13: "Put ye in the sickle, for the harvest is ripe: come, get you down; for the press is full, the

fats overflow; for their wickedness is great."

Jonah 1:2: "Arise, go to Nineveh, that great city, and cry against it; for their wickedness is come up before me."

Micah 6:10: "Are there yet the treasures of wickedness in the house of the wicked, and the scant measure that is abominable?"

Nahum 3:19: "There is no healing of thy bruise; thy wound is grievous: all that hear the bruit of thee shall clap the hands over thee: for upon whom hath not thy wickedness passed continually?"

Zechariah 5:8: "And he said, This is wickedness. And he cast it into the midst of the ephah; and he cast the weight of lead upon the mouth thereof."

Malachi 1:4: "Whereas Edom saith, We are impoverished, but we will return and build the desolate places; thus saith the LORD of hosts, They shall build, but I will throw down; and they shall call them, The border of wickedness, and, The people against whom the LORD hath indignation for ever."

Malachi 3:15: "And now we call the proud happy; yea, they that work wickedness are set up; yea, they that tempt God are even delivered."

Matthew 22:18: "But Jesus perceived their wickedness, and said, Why tempt ye me, ye hypocrites?"

Mark 7:22: "Thefts, covetousness, wickedness, deceit, lasciviousness, an evil eye, blasphemy, pride, foolishness:"

Luke 11:39: "And the Lord said unto him, Now do ye Pharisees make clean the outside of the cup and the platter; but your inward part is full of ravening and wickedness."

Acts 8:22: "Repent therefore of this thy wickedness, and pray God, if perhaps the thought of thine heart may be forgiven thee."

Acts 25:5: "Let them therefore, said he, which among you are able, go down with me, and accuse this man, if there be any wickedness in him."

Romans 1:29: "Being filled with all unrighteousness, fornication, wickedness, covetousness, maliciousness; full of envy, murder, debate, deceit, malignity; whisperers,"

1 Corinthians 5:8: "Therefore let us keep the feast, not with old leaven, neither with the leaven of malice and wickedness; but with the unleavened bread of sincerity and truth."

Ephesians 6:12: "For we wrestle not against flesh and blood, but against principalities, against powers, against the rulers of the darkness of this world, against spiritual wickedness in high places."

1 John 5:19: "And we know that we are of God, and the whole world lieth in wickedness."

## **WIDE**

Occurrences: 15

Deuteronomy 15:8: "But thou shalt open thine hand wide unto him, and shalt surely lend him sufficient for his need, in that which he wanteth."

Deuteronomy 15:11: "For the poor shall never cease out of the land: therefore I command thee, saying, Thou shalt open thine hand wide unto thy brother, to thy poor, and to thy needy, in thy land."

1 Chronicles 4:40: "And they found fat pasture and good, and the land was wide, and quiet, and peaceable; for they of Ham had dwelt there of old."

Job 29:23: "And they waited for me as for the rain; and they opened their mouth wide as for the latter rain."

Job 30:14: "They came upon me as a wide breaking in of waters: in the desolation they rolled themselves upon me."

Psalms 35:21: "Yea, they opened their mouth wide against me, and said, Aha, aha, our eye hath seen it."

Psalms 81:10: "I am the LORD thy God, which brought thee out of the land of Egypt: open thy mouth wide, and I will fill it."

Psalms 104:25: "So is this great and wide sea, wherein are things creeping innumerable, both small

and great beasts."

Proverbs 13:3: "He that keepeth his mouth keepeth his life: but he that openeth wide his lips shall have destruction."

Proverbs 21:9: "It is better to dwell in a corner of the housetop, than with a brawling woman in a wide house."

Proverbs 25:24: "It is better to dwell in the corner of the housetop, than with a brawling woman and in a wide house."

Isaiah 57:4: "Against whom do ye sport yourselves? against whom make ye a wide mouth, and draw out the tongue? are ye not children of transgression, a seed of falsehood."

Jeremiah 22:14: "That saith, I will build me a wide house and large chambers, and cutteth him out windows; and it is cieled with cedar, and painted with vermilion."

Nahum 3:13: "Behold, thy people in the midst of thee are women: the gates of thy land shall be set wide open unto thine enemies: the fire shall devour thy bars."

Matthew 7:13: "Enter ye in at the strait gate: for wide is the gate, and broad is the way, that leadeth to destruction, and many there be which go in thereat:"

## **WIDENESS**

Occurrences: 1

Ezekiel 41:10: "And between the chambers was the wideness of twenty cubits round about the house on every side."

## **WIDOW**

Occurrences: 54

Genesis 38:11: "Then said Judah to Tamar his daughter in law, Remain a widow at thy father's house, till Shelah my son be grown: for he said, Lest peradventure he die also, as his brethren did. And Tamar went and dwelt in her father's house."

Genesis 38:14: "And she put her widow's garments off from her, and covered her with a vail, and wrapped herself, and sat in an open place, which is by the way to Timnath; for she saw that Shelah was grown, and she was not given unto him to wife."

Exodus 22:22: "Ye shall not afflict any widow, or fatherless child."

Leviticus 21:14: "A widow, or a divorced woman, or profane, or an harlot, these shall he not take: but he shall take a virgin of his own people to wife."

Leviticus 22:13: "But if the priest's daughter be a widow, or divorced, and have no child, and is returned unto her father's house, as in her youth, she shall eat of her father's meat: but there shall be no stranger eat thereof."

Numbers 30:9: "But every vow of a widow, and of her that is divorced, wherewith they have bound their souls, shall stand against her."

Deuteronomy 10:18: "He doth execute the judgment of the fatherless and widow, and loveth the stranger, in giving him food and raiment."

Deuteronomy 14:29: "And the Levite, (because he hath no part nor inheritance with thee,) and the stranger, and the fatherless, and the widow, which are within thy gates, shall come, and shall eat and be satisfied; that the LORD thy God may bless thee in all the work of thine hand which thou doest."

Deuteronomy 16:11: "And thou shalt rejoice before the LORD thy God, thou, and thy son, and thy daughter, and thy manservant, and thy maidservant, and the Levite that is within thy gates, and the stranger, and the fatherless, and the widow, that are among you, in the place which the LORD thy God hath chosen to place his name there."

Deuteronomy 16:14: "And thou shalt rejoice in thy feast, thou, and thy son, and thy daughter, and thy manservant, and thy maidservant, and the Levite, the stranger, and the fatherless, and the widow, that are within thy gates."

Deuteronomy 24:17: "Thou shalt not pervert the judgment of the stranger, nor of the fatherless; nor take a widow's raiment to pledge."

Deuteronomy 24:19: "When thou cuttest down thine harvest in thy field, and hast forgot a sheaf in the field, thou shalt not go again to fetch it: it shall be for the stranger, for the fatherless, and for the widow: that the LORD thy God may bless thee in all the work of thine hands."

Deuteronomy 24:20: "When thou beatest thine olive tree, thou shalt not go over the boughs again: it shall be for the stranger, for the fatherless, and for the widow."

Deuteronomy 24:21: "When thou gatherest the grapes of thy vineyard, thou shalt not glean it afterward: it shall be for the stranger, for the fatherless, and for the widow."

Deuteronomy 26:12: "When thou hast made an end of tithing all the tithes of thine increase the third year, which is the year of tithing, and hast given it unto the Levite, the stranger, the fatherless, and the widow, that they may eat within thy gates, and be filled;"

Deuteronomy 26:13: "Then thou shalt say before the LORD thy God, I have brought away the hallowed things out of mine house, and also have given them unto the Levite, and unto the stranger, to the fatherless, and to the widow, according to all thy commandments which thou hast commanded me: I have not transgressed thy commandments, neither have I forgotten them."

Deuteronomy 27:19: "Cursed be he that perverteth the judgment of the stranger, fatherless, and widow. And all the people shall say, Amen."

2 Samuel 14:5: "And the king said unto her, What aileth thee? And she answered, I am indeed a widow woman, and mine husband is dead."

1 Kings 7:14: "He was a widow's son of the tribe of Naphtali, and his father was a man of Tyre, a worker in brass: and he was filled with wisdom, and understanding, and cunning to work all works in brass. And he came to king Solomon, and wrought all his work."

1 Kings 11:26: "And Jeroboam the son of Nebat, an Ephrathite of Zereda, Solomon's servant, whose mother's name was Zeruah, a widow woman, even he lifted up his hand against the king."

1 Kings 17:9: "Arise, get thee to Zarephath, which belongeth to Zidon, and dwell there: behold, I have commanded a widow woman there to sustain thee."

1 Kings 17:10: "So he arose and went to Zarephath. And when he came to the gate of the city, behold, the widow woman was there gathering of sticks: and he called to her, and said, Fetch me, I pray thee, a little water in a vessel, that I may drink."

1 Kings 17:20: "And he cried unto the LORD, and said, O LORD my God, hast thou also brought evil upon the widow with whom I sojourn, by slaying her son?"

Job 24:3: "They drive away the ass of the fatherless, they take the widow's ox for a pledge."

Job 24:21: "He evil entreateth the barren that beareth not: and doeth not good to the widow."

Job 29:13: "The blessing of him that was ready to perish came upon me: and I caused the widow's heart to sing for joy."

Job 31:16: "If I have withheld the poor from their desire, or have caused the eyes of the widow to fail;"

Psalms 94:6: "They slay the widow and the stranger, and murder the fatherless."

Psalms 109:9: "Let his children be fatherless, and his wife a widow."

Psalms 146:9: "The LORD preserveth the strangers; he relieveth the fatherless and widow: but the way of the wicked he turneth upside down."

Proverbs 15:25: "The LORD will destroy the house of the proud: but he will establish the border of the widow."

Isaiah 1:17: "Learn to do well; seek judgment, relieve the oppressed, judge the fatherless, plead for the widow."

Isaiah 1:23: "Thy princes are rebellious, and companions of thieves: every one loveth gifts, and followeth after rewards: they judge not the fatherless, neither doth the cause of the widow come unto them."

Isaiah 47:8: "Therefore hear now this, thou that art given to pleasures, that dwellest carelessly, that

sayest in thine heart, I am, and none else beside me; I shall not sit as a widow, neither shall I know the loss of children:"

Jeremiah 7:6: "If ye oppress not the stranger, the fatherless, and the widow, and shed not innocent blood in this place, neither walk after other gods to your hurt:"

Jeremiah 22:3: "Thus saith the LORD; Execute ye judgment and righteousness, and deliver the spoiled out of the hand of the oppressor: and do no wrong, do no violence to the stranger, the fatherless, nor the widow, neither shed innocent blood in this place."

Lamentations 1:1: "How doth the city sit solitary, that was full of people! how is she become as a widow! she that was great among the nations, and princess among the provinces, how is she become tributary!"

Ezekiel 22:7: "In thee have they set light by father and mother: in the midst of thee have they dealt by oppression with the stranger: in thee have they vexed the fatherless and the widow."

Ezekiel 44:22: "Neither shall they take for their wives a widow, nor her that is put away: but they shall take maidens of the seed of the house of Israel, or a widow that had a priest before."

Zechariah 7:10: "And oppress not the widow, nor the fatherless, the stranger, nor the poor; and let none of you imagine evil against his brother in your heart."

Malachi 3:5: "And I will come near to you to judgment; and I will be a swift witness against the sorcerers, and against the adulterers, and against false swearers, and against those that oppress the hireling in his wages, the widow, and the fatherless, and that turn aside the stranger from his right, and fear not me, saith the LORD of hosts."

Mark 12:42: "And there came a certain poor widow, and she threw in two mites, which make a farthing."

Mark 12:43: "And he called unto him his disciples, and saith unto them, Verily I say unto you, That this poor widow hath cast more in, than all they which have cast into the treasury:"

Luke 2:37: "And she was a widow of about fourscore and four years, which departed not from the temple, but served God with fastings and prayers night and day."

Luke 4:26: "But unto none of them was Elias sent, save unto Sarepta, a city of Sidon, unto a woman that was a widow."

Luke 7:12: "Now when he came nigh to the gate of the city, behold, there was a dead man carried out, the only son of his mother, and she was a widow: and much people of the city was with her."

Luke 18:3: "And there was a widow in that city; and she came unto him, saying, Avenge me of mine adversary."

Luke 18:5: "Yet because this widow troubleth me, I will avenge her, lest by her continual coming she weary me."

Luke 21:2: "And he saw also a certain poor widow casting in thither two mites."

Luke 21:3: "And he said, Of a truth I say unto you, that this poor widow hath cast in more than they all:"

1 Timothy 5:4: "But if any widow have children or nephews, let them learn first to shew piety at home, and to requite their parents: for that is good and acceptable before God."

1 Timothy 5:5: "Now she that is a widow indeed, and desolate, trusteth in God, and continueth in supplications and prayers night and day."

1 Timothy 5:9: "Let not a widow be taken into the number under threescore years old, having been the wife of one man."

Revelation 18:7: "How much she hath glorified herself, and lived deliciously, so much torment and sorrow give her: for she saith in her heart, I sit a queen, and am no widow, and shall see no sorrow."

## **WIDOWHOOD**

Occurrences: 4

Genesis 38:19: "And she arose, and went away, and laid by her vail from her, and put on the garments of her widowhood."

2 Samuel 20:3: "And David came to his house at Jerusalem; and the king took the ten women his concubines, whom he had left to keep the house, and put them in ward, and fed them, but went not in unto them. So they were shut up unto the day of their death, living in widowhood."

Isaiah 47:9: "But these two things shall come to thee in a moment in one day, the loss of children, and widowhood: they shall come upon thee in their perfection for the multitude of thy sorceries, and for the great abundance of thine enchantments."

Isaiah 54:4: "Fear not; for thou shalt not be ashamed: neither be thou confounded; for thou shalt not be put to shame: for thou shalt forget the shame of thy youth, and shalt not remember the reproach of thy widowhood any more."

## WIDOWS

Occurrences: 24

Exodus 22:24: "And my wrath shall wax hot, and I will kill you with the sword; and your wives shall be widows, and your children fatherless."

Job 22:9: "Thou hast sent widows away empty, and the arms of the fatherless have been broken."

Job 27:15: "Those that remain of him shall be buried in death: and his widows shall not weep."

Psalms 68:5: "A father of the fatherless, and a judge of the widows, is God in his holy habitation."

Psalms 78:64: "Their priests fell by the sword; and their widows made no lamentation."

Isaiah 9:17: "Therefore the LORD shall have no joy in their young men, neither shall have mercy on their fatherless and widows: for every one is an hypocrite and an evildoer, and every mouth speaketh folly. For all this his anger is not turned away, but his hand is stretched out still."

Isaiah 10:2: "To turn aside the needy from judgment, and to take away the right from the poor of my people, that widows may be their prey, and that they may rob the fatherless!"

Jeremiah 15:8: "Their widows are increased to me above the sand of the seas: I have brought upon them against the mother of the young men a spoiler at noonday: I have caused him to fall upon it suddenly, and terrors upon the city."

Jeremiah 18:21: "Therefore deliver up their children to the famine, and pour out their blood by the force of the sword; and let their wives be bereaved of their children, and be widows; and let their men be put to death; let their young men be slain by the sword in battle."

Jeremiah 49:11: "Leave thy fatherless children, I will preserve them alive; and let thy widows trust in me."

Lamentations 5:3: "We are orphans and fatherless, our mothers are as widows."

Ezekiel 22:25: "There is a conspiracy of her prophets in the midst thereof, like a roaring lion ravening the prey; they have devoured souls; they have taken the treasure and precious things; they have made her many widows in the midst thereof."

Matthew 23:14: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye devour widows' houses, and for a pretence make long prayer: therefore ye shall receive the greater damnation."

Mark 12:40: "Which devour widows' houses, and for a pretence make long prayers: these shall receive greater damnation."

Luke 4:25: "But I tell you of a truth, many widows were in Israel in the days of Elias, when the heaven was shut up three years and six months, when great famine was throughout all the land;"

Luke 20:47: "Which devour widows' houses, and for a shew make long prayers: the same shall receive greater damnation."

Acts 6:1: "And in those days, when the number of the disciples was multiplied, there arose a murmuring of the Grecians against the Hebrews, because their widows were neglected in the daily ministration."

Acts 9:39: "Then Peter arose and went with them. When he was come, they brought him into the upper chamber: and all the widows stood by him weeping, and shewing the coats and garments which Dorcas made, while she was with them."

Acts 9:41: "And he gave her his hand, and lifted her up, and when he had called the saints and

widows, presented her alive."

1 Corinthians 7:8: "I say therefore to the unmarried and widows, It is good for them if they abide even as I."

1 Timothy 5:3: "Honour widows that are widows indeed."

1 Timothy 5:11: "But the younger widows refuse: for when they have begun to wax wanton against Christ, they will marry;"

1 Timothy 5:16: "If any man or woman that believeth have widows, let them relieve them, and let not the church be charged; that it may relieve them that are widows indeed."

James 1:27: "Pure religion and undefiled before God and the Father is this, To visit the fatherless and widows in their affliction, and to keep himself unspotted from the world."

## WIFE

Occurrences: 370

Genesis 2:24: "Therefore shall a man leave his father and his mother, and shall cleave unto his wife: and they shall be one flesh."

Genesis 2:25: "And they were both naked, the man and his wife, and were not ashamed."

Genesis 3:8: "And they heard the voice of the LORD God walking in the garden in the cool of the day: and Adam and his wife hid themselves from the presence of the LORD God amongst the trees of the garden."

Genesis 3:17: "And unto Adam he said, Because thou hast hearkened unto the voice of thy wife, and hast eaten of the tree, of which I commanded thee, saying, Thou shalt not eat of it: cursed is the ground for thy sake; in sorrow shalt thou eat of it all the days of thy life;"

Genesis 3:20: "And Adam called his wife's name Eve; because she was the mother of all living."

Genesis 3:21: "Unto Adam also and to his wife did the LORD God make coats of skins, and clothed them."

Genesis 4:1: "And Adam knew Eve his wife; and she conceived, and bare Cain, and said, I have gotten a man from the LORD."

Genesis 4:17: "And Cain knew his wife; and she conceived, and bare Enoch: and he builded a city, and called the name of the city, after the name of his son, Enoch."

Genesis 4:25: "And Adam knew his wife again; and she bare a son, and called his name Seth: For God, said she, hath appointed me another seed instead of Abel, whom Cain slew."

Genesis 6:18: "But with thee will I establish my covenant; and thou shalt come into the ark, thou, and thy sons, and thy wife, and thy sons' wives with thee."

Genesis 7:7: "And Noah went in, and his sons, and his wife, and his sons' wives with him, into the ark, because of the waters of the flood."

Genesis 7:13: "In the selfsame day entered Noah, and Shem, and Ham, and Japheth, the sons of Noah, and Noah's wife, and the three wives of his sons with them, into the ark;"

Genesis 8:16: "Go forth of the ark, thou, and thy wife, and thy sons, and thy sons' wives with thee."

Genesis 8:18: "And Noah went forth, and his sons, and his wife, and his sons' wives with him:"

Genesis 11:29: "And Abram and Nahor took them wives: the name of Abram's wife was Sarai; and the name of Nahor's wife, Milcah, the daughter of Haran, the father of Milcah, and the father of Iscah."

Genesis 11:31: "And Terah took Abram his son, and Lot the son of Haran his son's son, and Sarai his daughter in law, his son Abram's wife; and they went forth with them from Ur of the Chaldees, to go into the land of Canaan; and they came unto Haran, and dwelt there."

Genesis 12:5: "And Abram took Sarai his wife, and Lot his brother's son, and all their substance that they had gathered, and the souls that they had gotten in Haran; and they went forth to go into the land of Canaan; and into the land of Canaan they came."

Genesis 12:11: "And it came to pass, when he was come near to enter into Egypt, that he said unto Sarai his wife, Behold now, I know that thou art a fair woman to look upon:"



Genesis 12:12: "Therefore it shall come to pass, when the Egyptians shall see thee, that they shall say, This is his wife: and they will kill me, but they will save thee alive."

Genesis 12:17: "And the LORD plagued Pharaoh and his house with great plagues because of Sarai Abram's wife."

Genesis 12:18: "And Pharaoh called Abram and said, What is this that thou hast done unto me? why didst thou not tell me that she was thy wife?"

Genesis 12:19: "Why saidst thou, She is my sister? so I might have taken her to me to wife: now therefore behold thy wife, take her, and go thy way."

Genesis 12:20: "And Pharaoh commanded his men concerning him: and they sent him away, and his wife, and all that he had."

Genesis 13:1: "And Abram went up out of Egypt, he, and his wife, and all that he had, and Lot with him, into the south."

Genesis 16:1: "Now Sarai Abram's wife bare him no children: and she had an handmaid, an Egyptian, whose name was Hagar."

Genesis 16:3: "And Sarai Abram's wife took Hagar her maid the Egyptian, after Abram had dwelt ten years in the land of Canaan, and gave her to her husband Abram to be his wife."

Genesis 17:15: "And God said unto Abraham, As for Sarai thy wife, thou shalt not call her name Sarai, but Sarah shall her name be."

Genesis 17:19: "And God said, Sarah thy wife shall bear thee a son indeed; and thou shalt call his name Isaac: and I will establish my covenant with him for an everlasting covenant, and with his seed after him."

Genesis 18:9: "And they said unto him, Where is Sarah thy wife? And he said, Behold, in the tent."

Genesis 18:10: "And he said, I will certainly return unto thee according to the time of life; and, lo, Sarah thy wife shall have a son. And Sarah heard it in the tent door, which was behind him."

Genesis 19:15: "And when the morning arose, then the angels hastened Lot, saying, Arise, take thy wife, and thy two daughters, which are here; lest thou be consumed in the iniquity of the city."

Genesis 19:16: "And while he lingered, the men laid hold upon his hand, and upon the hand of his wife, and upon the hand of his two daughters; the LORD being merciful unto him: and they brought him forth, and set him without the city."

Genesis 19:26: "But his wife looked back from behind him, and she became a pillar of salt."

Genesis 20:2: "And Abraham said of Sarah his wife, She is my sister: and Abimelech king of Gerar sent, and took Sarah."

Genesis 20:3: "But God came to Abimelech in a dream by night, and said to him, Behold, thou art but a dead man, for the woman which thou hast taken; for she is a man's wife."

Genesis 20:7: "Now therefore restore the man his wife; for he is a prophet, and he shall pray for thee, and thou shalt live: and if thou restore her not, know thou that thou shalt surely die, thou, and all that are thine."

Genesis 20:11: "And Abraham said, Because I thought, Surely the fear of God is not in this place; and they will slay me for my wife's sake."

Genesis 20:12: "And yet indeed she is my sister; she is the daughter of my father, but not the daughter of my mother; and she became my wife."

Genesis 20:14: "And Abimelech took sheep, and oxen, and menservants, and womenservants, and gave them unto Abraham, and restored him Sarah his wife."

Genesis 20:17: "So Abraham prayed unto God: and God healed Abimelech, and his wife, and his maidservants; and they bare children."

Genesis 20:18: "For the LORD had fast closed up all the wombs of the house of Abimelech, because of Sarah Abraham's wife."

Genesis 21:21: "And he dwelt in the wilderness of Paran: and his mother took him a wife out of the land of Egypt."

Genesis 23:19: "And after this, Abraham buried Sarah his wife in the cave of the field of Machpelah

before Mamre: the same is Hebron in the land of Canaan."

Genesis 24:3: "And I will make thee swear by the LORD, the God of heaven, and the God of the earth, that thou shalt not take a wife unto my son of the daughters of the Canaanites, among whom I dwell:"

Genesis 24:4: "But thou shalt go unto my country, and to my kindred, and take a wife unto my son Isaac."

Genesis 24:7: "The LORD God of heaven, which took me from my father's house, and from the land of my kindred, and which spake unto me, and that sware unto me, saying, Unto thy seed will I give this land; he shall send his angel before thee, and thou shalt take a wife unto my son from thence."

Genesis 24:15: "And it came to pass, before he had done speaking, that, behold, Rebekah came out, who was born to Bethuel, son of Milcah, the wife of Nahor, Abraham's brother, with her pitcher upon her shoulder."

Genesis 24:36: "And Sarah my master's wife bare a son to my master when she was old: and unto him hath he given all that he hath."

Genesis 24:37: "And my master made me swear, saying, Thou shalt not take a wife to my son of the daughters of the Canaanites, in whose land I dwell:"

Genesis 24:38: "But thou shalt go unto my father's house, and to my kindred, and take a wife unto my son."

Genesis 24:40: "And he said unto me, The LORD, before whom I walk, will send his angel with thee, and prosper thy way; and thou shalt take a wife for my son of my kindred, and of my father's house:"

Genesis 24:51: "Behold, Rebekah is before thee, take her, and go, and let her be thy master's son's wife, as the LORD hath spoken."

Genesis 24:67: "And Isaac brought her into his mother Sarah's tent, and took Rebekah, and she became his wife; and he loved her: and Isaac was comforted after his mother's death."

Genesis 25:1: "Then again Abraham took a wife, and her name was Keturah."

Genesis 25:10: "The field which Abraham purchased of the sons of Heth: there was Abraham buried, and Sarah his wife."

Genesis 25:20: "And Isaac was forty years old when he took Rebekah to wife, the daughter of Bethuel the Syrian of Padanaram, the sister to Laban the Syrian."

Genesis 25:21: "And Isaac intreated the LORD for his wife, because she was barren: and the LORD was intreated of him, and Rebekah his wife conceived."

Genesis 26:7: "And the men of the place asked him of his wife; and he said, She is my sister: for he feared to say, She is my wife; lest, said he, the men of the place should kill me for Rebekah; because she was fair to look upon."

Genesis 26:8: "And it came to pass, when he had been there a long time, that Abimelech king of the Philistines looked out at a window, and saw, and, behold, Isaac was sporting with Rebekah his wife."

Genesis 26:9: "And Abimelech called Isaac, and said, Behold, of a surety she is thy wife; and how saidst thou, She is my sister? And Isaac said unto him, Because I said, Lest I die for her."

Genesis 26:10: "And Abimelech said, What is this thou hast done unto us? one of the people might lightly have lien with thy wife, and thou shouldest have brought guiltiness upon us."

Genesis 26:11: "And Abimelech charged all his people, saying, He that toucheth this man or his wife shall surely be put to death."

Genesis 26:34: "And Esau was forty years old when he took to wife Judith the daughter of Beerli the Hittite, and Bashemath the daughter of Elon the Hittite:"

Genesis 27:46: "And Rebekah said to Isaac, I am weary of my life because of the daughters of Heth: if Jacob take a wife of the daughters of Heth, such as these which are of the daughters of the land, what good shall my life do me?"

Genesis 28:1: "And Isaac called Jacob, and blessed him, and charged him, and said unto him, Thou shalt not take a wife of the daughters of Canaan."

Genesis 28:2: "Arise, go to Padanaram, to the house of Bethuel thy mother's father; and take thee a wife from thence of the daughters of Laban thy mother's brother."

Genesis 28:6: "When Esau saw that Isaac had blessed Jacob, and sent him away to Padanaram, to take him a wife from thence; and that as he blessed him he gave him a charge, saying, Thou shalt not take a wife of the daughters of Canaan;"

Genesis 28:9: "Then went Esau unto Ishmael, and took unto the wives which he had Mahalath the daughter of Ishmael Abraham's son, the sister of Nebajoth, to be his wife."

Genesis 29:21: "And Jacob said unto Laban, Give me my wife, for my days are fulfilled, that I may go in unto her."

Genesis 29:28: "And Jacob did so, and fulfilled her week: and he gave him Rachel his daughter to wife also."

Genesis 30:4: "And she gave him Bilhah her handmaid to wife: and Jacob went in unto her."

Genesis 30:9: "When Leah saw that she had left bearing, she took Zilpah her maid, and gave her Jacob to wife."

Genesis 34:4: "And Shechem spake unto his father Hamor, saying, Get me this damsel to wife."

Genesis 34:8: "And Hamor communed with them, saying, The soul of my son Shechem longeth for your daughter: I pray you give her him to wife."

Genesis 34:12: "Ask me never so much dowry and gift, and I will give according as ye shall say unto me: but give me the damsel to wife."

Genesis 36:10: "These are the names of Esau's sons; Eliphaz the son of Adah the wife of Esau, Reuel the son of Bashemath the wife of Esau."

Genesis 36:12: "And Timna was concubine to Eliphaz Esau's son; and she bare to Eliphaz Amalek: these were the sons of Adah Esau's wife."

Genesis 36:13: "And these are the sons of Reuel; Nahath, and Zerah, Shammah, and Mizzah: these were the sons of Bashemath Esau's wife."

Genesis 36:14: "And these were the sons of Aholibamah, the daughter of Anah the daughter of Zibeon, Esau's wife: and she bare to Esau Jeush, and Jaalam, and Korah."

Genesis 36:17: "And these are the sons of Reuel Esau's son; duke Nahath, duke Zerah, duke Shammah, duke Mizzah: these are the dukes that came of Reuel in the land of Edom; these are the sons of Bashemath Esau's wife."

Genesis 36:18: "And these are the sons of Aholibamah Esau's wife; duke Jeush, duke Jaalam, duke Korah: these were the dukes that came of Aholibamah the daughter of Anah, Esau's wife."

Genesis 36:39: "And Baalhanan the son of Achbor died, and Hadar reigned in his stead: and the name of his city was Pau; and his wife's name was Mehetabel, the daughter of Matred, the daughter of Mezahab."

Genesis 38:6: "And Judah took a wife for Er his firstborn, whose name was Tamar."

Genesis 38:8: "And Judah said unto Onan, Go in unto thy brother's wife, and marry her, and raise up seed to thy brother."

Genesis 38:9: "And Onan knew that the seed should not be his; and it came to pass, when he went in unto his brother's wife, that he spilled it on the ground, lest that he should give seed to his brother."

Genesis 38:12: "And in process of time the daughter of Shuah Judah's wife died; and Judah was comforted, and went up unto his sheepshearers to Timnath, he and his friend Hirah the Adullamite."

Genesis 38:14: "And she put her widow's garments off from her, and covered her with a vail, and wrapped herself, and sat in an open place, which is by the way to Timnath; for she saw that Shelah was grown, and she was not given unto him to wife."

Genesis 39:7: "And it came to pass after these things, that his master's wife cast her eyes upon Joseph; and she said, Lie with me."

Genesis 39:8: "But he refused, and said unto his master's wife, Behold, my master wotteth not what is with me in the house, and he hath committed all that he hath to my hand;"

Genesis 39:9: "There is none greater in this house than I; neither hath he kept back any thing from me but thee, because thou art his wife: how then can I do this great wickedness, and sin against God?"

Genesis 39:19: "And it came to pass, when his master heard the words of his wife, which she spake unto him, saying, After this manner did thy servant to me; that his wrath was kindled."

Genesis 41:45: "And Pharaoh called Joseph's name Zaphnathpaaneah; and he gave him to wife Asenath the daughter of Potipherah priest of On. And Joseph went out over all the land of Egypt."

Genesis 44:27: "And thy servant my father said unto us, Ye know that my wife bare me two sons:"

Genesis 46:19: "The sons of Rachel Jacob's wife; Joseph, and Benjamin."

Genesis 49:31: "There they buried Abraham and Sarah his wife; there they buried Isaac and Rebekah his wife; and there I buried Leah."

Exodus 2:1: "And there went a man of the house of Levi, and took to wife a daughter of Levi."

Exodus 4:20: "And Moses took his wife and his sons, and set them upon an ass, and he returned to the land of Egypt: and Moses took the rod of God in his hand."

Exodus 6:20: "And Amram took him Jochebed his father's sister to wife; and she bare him Aaron and Moses: and the years of the life of Amram were an hundred and thirty and seven years."

Exodus 6:23: "And Aaron took him Elisheba, daughter of Amminadab, sister of Naashon, to wife; and she bare him Nadab, and Abihu, Eleazar, and Ithamar."

Exodus 6:25: "And Eleazar Aaron's son took him one of the daughters of Putiel to wife; and she bare him Phinehas: these are the heads of the fathers of the Levites according to their families."

Exodus 18:2: "Then Jethro, Moses' father in law, took Zipporah, Moses' wife, after he had sent her back,"

Exodus 18:5: "And Jethro, Moses' father in law, came with his sons and his wife unto Moses into the wilderness, where he encamped at the mount of God:"

Exodus 18:6: "And he said unto Moses, I thy father in law Jethro am come unto thee, and thy wife, and her two sons with her."

Exodus 20:17: "Thou shalt not covet thy neighbour's house, thou shalt not covet thy neighbour's wife, nor his manservant, nor his maidservant, nor his ox, nor his ass, nor any thing that is thy neighbour's."

Exodus 21:3: "If he came in by himself, he shall go out by himself: if he were married, then his wife shall go out with him."

Exodus 21:4: "If his master have given him a wife, and she have born him sons or daughters; the wife and her children shall be her master's, and he shall go out by himself."

Exodus 21:5: "And if the servant shall plainly say, I love my master, my wife, and my children; I will not go out free:"

Exodus 21:10: "If he take him another wife; her food, her raiment, and her duty of marriage, shall he not diminish."

Exodus 22:16: "And if a man entice a maid that is not betrothed, and lie with her, he shall surely endow her to be his wife."

Leviticus 18:8: "The nakedness of thy father's wife shalt thou not uncover: it is thy father's nakedness."

Leviticus 18:11: "The nakedness of thy father's wife's daughter, begotten of thy father, she is thy sister, thou shalt not uncover her nakedness."

Leviticus 18:14: "Thou shalt not uncover the nakedness of thy father's brother, thou shalt not approach to his wife: she is thine aunt."

Leviticus 18:15: "Thou shalt not uncover the nakedness of thy daughter in law: she is thy son's wife; thou shalt not uncover her nakedness."

Leviticus 18:16: "Thou shalt not uncover the nakedness of thy brother's wife: it is thy brother's

nakedness."

Leviticus 18:18: "Neither shalt thou take a wife to her sister, to vex her, to uncover her nakedness, beside the other in her life time."

Leviticus 18:20: "Moreover thou shalt not lie carnally with thy neighbour's wife, to defile thyself with her."

Leviticus 20:10: "And the man that committeth adultery with another man's wife, even he that committeth adultery with his neighbour's wife, the adulterer and the adulteress shall surely be put to death."

Leviticus 20:11: "And the man that lieth with his father's wife hath uncovered his father's nakedness: both of them shall surely be put to death; their blood shall be upon them."

Leviticus 20:14: "And if a man take a wife and her mother, it is wickedness: they shall be burnt with fire, both he and they; that there be no wickedness among you."

Leviticus 20:20: "And if a man shall lie with his uncle's wife, he hath uncovered his uncle's nakedness: they shall bear their sin; they shall die childless."

Leviticus 20:21: "And if a man shall take his brother's wife, it is an unclean thing: he hath uncovered his brother's nakedness; they shall be childless."

Leviticus 21:7: "They shall not take a wife that is a whore, or profane; neither shall they take a woman put away from her husband: for he is holy unto his God."

Leviticus 21:13: "And he shall take a wife in her virginity."

Leviticus 21:14: "A widow, or a divorced woman, or profane, or an harlot, these shall he not take: but he shall take a virgin of his own people to wife."

Numbers 5:12: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, If any man's wife go aside, and commit a trespass against him,"

Numbers 5:14: "And the spirit of jealousy come upon him, and he be jealous of his wife, and she be defiled: or if the spirit of jealousy come upon him, and he be jealous of his wife, and she be not defiled:"

Numbers 5:15: "Then shall the man bring his wife unto the priest, and he shall bring her offering for her, the tenth part of an ephah of barley meal; he shall pour no oil upon it, nor put frankincense thereon; for it is an offering of jealousy, an offering of memorial, bringing iniquity to remembrance."

Numbers 5:29: "This is the law of jealousies, when a wife goeth aside to another instead of her husband, and is defiled;"

Numbers 5:30: "Or when the spirit of jealousy cometh upon him, and he be jealous over his wife, and shall set the woman before the LORD, and the priest shall execute upon her all this law."

Numbers 26:59: "And the name of Amram's wife was Jochebed, the daughter of Levi, whom her mother bare to Levi in Egypt: and she bare unto Amram Aaron and Moses, and Miriam their sister."

Numbers 30:16: "These are the statutes, which the LORD commanded Moses, between a man and his wife, between the father and his daughter, being yet in her youth in her father's house."

Numbers 36:8: "And every daughter, that possesseth an inheritance in any tribe of the children of Israel, shall be wife unto one of the family of the tribe of her father, that the children of Israel may enjoy every man the inheritance of his fathers."

Deuteronomy 5:21: "Neither shalt thou desire thy neighbour's wife, neither shalt thou covet thy neighbour's house, his field, or his manservant, or his maidservant, his ox, or his ass, or any thing that is thy neighbour's."

Deuteronomy 13:6: "If thy brother, the son of thy mother, or thy son, or thy daughter, or the wife of thy bosom, or thy friend, which is as thine own soul, entice thee secretly, saying, Let us go and serve other gods, which thou hast not known, thou, nor thy fathers;"

Deuteronomy 20:7: "And what man is there that hath betrothed a wife, and hath not taken her? let him go and return unto his house, lest he die in the battle, and another man take her."

Deuteronomy 21:11: "And seest among the captives a beautiful woman, and hast a desire unto her,

that thou wouldest have her to thy wife;"

Deuteronomy 21:13: "And she shall put the raiment of her captivity from off her, and shall remain in thine house, and bewail her father and her mother a full month: and after that thou shalt go in unto her, and be her husband, and she shall be thy wife."

Deuteronomy 22:13: "If any man take a wife, and go in unto her, and hate her,"

Deuteronomy 22:16: "And the damsel's father shall say unto the elders, I gave my daughter unto this man to wife, and he hateth her;"

Deuteronomy 22:19: "And they shall amerce him in an hundred shekels of silver, and give them unto the father of the damsel, because he hath brought up an evil name upon a virgin of Israel: and she shall be his wife; he may not put her away all his days."

Deuteronomy 22:24: "Then ye shall bring them both out unto the gate of that city, and ye shall stone them with stones that they die; the damsel, because she cried not, being in the city; and the man, because he hath humbled his neighbour's wife: so thou shalt put away evil from among you."

Deuteronomy 22:29: "Then the man that lay with her shall give unto the damsel's father fifty shekels of silver, and she shall be his wife; because he hath humbled her, he may not put her away all his days."

Deuteronomy 22:30: "A man shall not take his father's wife, nor discover his father's skirt."

Deuteronomy 24:1: "When a man hath taken a wife, and married her, and it come to pass that she find no favour in his eyes, because he hath found some uncleanness in her: then let him write her a bill of divorcement, and give it in her hand, and send her out of his house."

Deuteronomy 24:2: "And when she is departed out of his house, she may go and be another man's wife."

Deuteronomy 24:3: "And if the latter husband hate her, and write her a bill of divorcement, and giveth it in her hand, and sendeth her out of his house; or if the latter husband die, which took her to be his wife;"

Deuteronomy 24:4: "Her former husband, which sent her away, may not take her again to be his wife, after that she is defiled; for that is abomination before the LORD: and thou shalt not cause the land to sin, which the LORD thy God giveth thee for an inheritance."

Deuteronomy 24:5: "When a man hath taken a new wife, he shall not go out to war, neither shall he be charged with any business: but he shall be free at home one year, and shall cheer up his wife which he hath taken."

Deuteronomy 25:5: "If brethren dwell together, and one of them die, and have no child, the wife of the dead shall not marry without unto a stranger: her husband's brother shall go in unto her, and take her to him to wife, and perform the duty of an husband's brother unto her."

Deuteronomy 25:7: "And if the man like not to take his brother's wife, then let his brother's wife go up to the gate unto the elders, and say, My husband's brother refuseth to raise up unto his brother a name in Israel, he will not perform the duty of my husband's brother."

Deuteronomy 25:9: "Then shall his brother's wife come unto him in the presence of the elders, and loose his shoe from off his foot, and spit in his face, and shall answer and say, So shall it be done unto that man that will not build up his brother's house."

Deuteronomy 25:11: "When men strive together one with another, and the wife of the one draweth near for to deliver her husband out of the hand of him that smiteth him, and putteth forth her hand, and taketh him by the secrets:"

Deuteronomy 27:20: "Cursed be he that lieth with his father's wife; because he uncovereth his father's skirt. And all the people shall say, Amen."

Deuteronomy 28:30: "Thou shalt betroth a wife, and another man shall lie with her: thou shalt build an house, and thou shalt not dwell therein: thou shalt plant a vineyard, and shalt not gather the grapes thereof."

Deuteronomy 28:54: "So that the man that is tender among you, and very delicate, his eye shall be evil toward his brother, and toward the wife of his bosom, and toward the remnant of his children

which he shall leave:"

Joshua 15:16: "And Caleb said, He that smiteth Kirjathsepher, and taketh it, to him will I give Achsah my daughter to wife."

Joshua 15:17: "And Othniel the son of Kenaz, the brother of Caleb, took it: and he gave him Achsah his daughter to wife."

Judges 1:12: "And Caleb said, He that smiteth Kirjathsepher, and taketh it, to him will I give Achsah my daughter to wife."

Judges 1:13: "And Othniel the son of Kenaz, Caleb's younger brother, took it: and he gave him Achsah his daughter to wife."

Judges 4:4: "And Deborah, a prophetess, the wife of Lapidoth, she judged Israel at that time."

Judges 4:17: "Howbeit Sisera fled away on his feet to the tent of Jael the wife of Heber the Kenite: for there was peace between Jabin the king of Hazor and the house of Heber the Kenite."

Judges 4:21: "Then Jael Heber's wife took a nail of the tent, and took an hammer in her hand, and went softly unto him, and smote the nail into his temples, and fastened it into the ground: for he was fast asleep and weary. So he died."

Judges 5:24: "Blessed above women shall Jael the wife of Heber the Kenite be, blessed shall she be above women in the tent."

Judges 11:2: "And Gilead's wife bare him sons; and his wife's sons grew up, and they thrust out Jephthah, and said unto him, Thou shalt not inherit in our father's house; for thou art the son of a strange woman."

Judges 13:2: "And there was a certain man of Zorah, of the family of the Danites, whose name was Manoah; and his wife was barren, and bare not."

Judges 13:11: "And Manoah arose, and went after his wife, and came to the man, and said unto him, Art thou the man that spakest unto the woman? And he said, I am."

Judges 13:19: "So Manoah took a kid with a meat offering, and offered it upon a rock unto the LORD: and the angel did wonderously; and Manoah and his wife looked on."

Judges 13:20: "For it came to pass, when the flame went up toward heaven from off the altar, that the angel of the LORD ascended in the flame of the altar. And Manoah and his wife looked on it, and fell on their faces to the ground."

Judges 13:21: "But the angel of the LORD did no more appear to Manoah and to his wife. Then Manoah knew that he was an angel of the LORD."

Judges 13:22: "And Manoah said unto his wife, We shall surely die, because we have seen God."

Judges 13:23: "But his wife said unto him, If the LORD were pleased to kill us, he would not have received a burnt offering and a meat offering at our hands, neither would he have shewed us all these things, nor would as at this time have told us such things as these."

Judges 14:2: "And he came up, and told his father and his mother, and said, I have seen a woman in Timnath of the daughters of the Philistines: now therefore get her for me to wife."

Judges 14:3: "Then his father and his mother said unto him, Is there never a woman among the daughters of thy brethren, or among all my people, that thou goest to take a wife of the uncircumcised Philistines? And Samson said unto his father, Get her for me; for she pleaseth me well."

Judges 14:15: "And it came to pass on the seventh day, that they said unto Samson's wife, Entice thy husband, that he may declare unto us the riddle, lest we burn thee and thy father's house with fire: have ye called us to take that we have? is it not so?"

Judges 14:16: "And Samson's wife wept before him, and said, Thou dost but hate me, and lovest me not: thou hast put forth a riddle unto the children of my people, and hast not told it me. And he said unto her, Behold, I have not told it my father nor my mother, and shall I tell it thee?"

Judges 14:20: "But Samson's wife was given to his companion, whom he had used as his friend."

Judges 15:1: "But it came to pass within a while after, in the time of wheat harvest, that Samson visited his wife with a kid; and he said, I will go in to my wife into the chamber. But her father

would not suffer him to go in."

Judges 15:6: "Then the Philistines said, Who hath done this? And they answered, Samson, the son in law of the Timnite, because he had taken his wife, and given her to his companion. And the Philistines came up, and burnt her and her father with fire."

Judges 21:1: "Now the men of Israel had sworn in Mizpeh, saying, There shall not any of us give his daughter unto Benjamin to wife."

Judges 21:18: "Howbeit we may not give them wives of our daughters: for the children of Israel have sworn, saying, Cursed be he that giveth a wife to Benjamin."

Judges 21:21: "And see, and, behold, if the daughters of Shiloh come out to dance in dances, then come ye out of the vineyards, and catch you every man his wife of the daughters of Shiloh, and go to the land of Benjamin."

Judges 21:22: "And it shall be, when their fathers or their brethren come unto us to complain, that we will say unto them, Be favourable unto them for our sakes: because we reserved not to each man his wife in the war: for ye did not give unto them at this time, that ye should be guilty."

Ruth 1:1: "Now it came to pass in the days when the judges ruled, that there was a famine in the land. And a certain man of Bethlehemjudah went to sojourn in the country of Moab, he, and his wife, and his two sons."

Ruth 1:2: "And the name of the man was Elimelech, and the name of his wife Naomi, and the name of his two sons Mahlon and Chilion, Ephrathites of Bethlehemjudah. And they came into the country of Moab, and continued there."

Ruth 4:5: "Then said Boaz, What day thou buyest the field of the hand of Naomi, thou must buy it also of Ruth the Moabitess, the wife of the dead, to raise up the name of the dead upon his inheritance."

Ruth 4:10: "Moreover Ruth the Moabitess, the wife of Mahlon, have I purchased to be my wife, to raise up the name of the dead upon his inheritance, that the name of the dead be not cut off from among his brethren, and from the gate of his place: ye are witnesses this day."

Ruth 4:13: "So Boaz took Ruth, and she was his wife: and when he went in unto her, the LORD gave her conception, and she bare a son."

1 Samuel 1:4: "And when the time was that Elkanah offered, he gave to Peninnah his wife, and to all her sons and her daughters, portions:"

1 Samuel 1:19: "And they rose up in the morning early, and worshipped before the LORD, and returned, and came to their house to Ramah: and Elkanah knew Hannah his wife; and the LORD remembered her."

1 Samuel 2:20: "And Eli blessed Elkanah and his wife, and said, The LORD give thee seed of this woman for the loan which is lent to the LORD. And they went unto their own home."

1 Samuel 4:19: "And his daughter in law, Phinehas' wife, was with child, near to be delivered: and when she heard the tidings that the ark of God was taken, and that her father in law and her husband were dead, she bowed herself and travailed; for her pains came upon her."

1 Samuel 14:50: "And the name of Saul's wife was Ahinoam, the daughter of Ahimaaz: and the name of the captain of his host was Abner, the son of Ner, Saul's uncle."

1 Samuel 18:17: "And Saul said to David, Behold my elder daughter Merab, her will I give thee to wife: only be thou valiant for me, and fight the LORD's battles. For Saul said, Let not mine hand be upon him, but let the hand of the Philistines be upon him."

1 Samuel 18:19: "But it came to pass at the time when Merab Saul's daughter should have been given to David, that she was given unto Adriel the Meholathite to wife."

1 Samuel 18:27: "Wherefore David arose and went, he and his men, and slew of the Philistines two hundred men; and David brought their foreskins, and they gave them in full tale to the king, that he might be the king's son in law. And Saul gave him Michal his daughter to wife."

1 Samuel 19:11: "Saul also sent messengers unto David's house, to watch him, and to slay him in the morning: and Michal David's wife told him, saying, If thou save not thy life to night, to morrow



thou shalt be slain."

1 Samuel 25:3: "Now the name of the man was Nabal; and the name of his wife Abigail: and she was a woman of good understanding, and of a beautiful countenance: but the man was churlish and evil in his doings; and he was of the house of Caleb."

1 Samuel 25:14: "But one of the young men told Abigail, Nabal's wife, saying, Behold, David sent messengers out of the wilderness to salute our master; and he railed on them."

1 Samuel 25:37: "But it came to pass in the morning, when the wine was gone out of Nabal, and his wife had told him these things, that his heart died within him, and he became as a stone."

1 Samuel 25:39: "And when David heard that Nabal was dead, he said, Blessed be the LORD, that hath pleaded the cause of my reproach from the hand of Nabal, and hath kept his servant from evil: for the LORD hath returned the wickedness of Nabal upon his own head. And David sent and communed with Abigail, to take her to him to wife."

1 Samuel 25:40: "And when the servants of David were come to Abigail to Carmel, they spake unto her, saying, David sent us unto thee, to take thee to him to wife."

1 Samuel 25:42: "And Abigail hasted, and arose and rode upon an ass, with five damsels of hers that went after her; and she went after the messengers of David, and became his wife."

1 Samuel 25:44: "But Saul had given Michal his daughter, David's wife, to Phalti the son of Laish, which was of Gallim."

1 Samuel 27:3: "And David dwelt with Achish at Gath, he and his men, every man with his household, even David with his two wives, Ahinoam the Jezreelitess, and Abigail the Carmelitess, Nabal's wife."

1 Samuel 30:5: "And David's two wives were taken captives, Ahinoam the Jezreelitess, and Abigail the wife of Nabal the Carmelite."

1 Samuel 30:22: "Then answered all the wicked men and men of Belial, of those that went with David, and said, Because they went not with us, we will not give them ought of the spoil that we have recovered, save to every man his wife and his children, that they may lead them away, and depart."

2 Samuel 2:2: "So David went up thither, and his two wives also, Ahinoam the Jezreelitess, and Abigail Nabal's wife the Carmelite."

2 Samuel 3:3: "And his second, Chileab, of Abigail the wife of Nabal the Carmelite; and the third, Absalom the son of Maacah the daughter of Talmai king of Geshur;"

2 Samuel 3:5: "And the sixth, Ithream, by Eglah David's wife. These were born to David in Hebron."

2 Samuel 3:14: "And David sent messengers to Ishbosheth Saul's son, saying, Deliver me my wife Michal, which I espoused to me for an hundred foreskins of the Philistines."

2 Samuel 11:3: "And David sent and enquired after the woman. And one said, Is not this Bathsheba, the daughter of Eliam, the wife of Uriah the Hittite?"

2 Samuel 11:11: "And Uriah said unto David, The ark, and Israel, and Judah, abide in tents; and my lord Joab, and the servants of my lord, are encamped in the open fields; shall I then go into mine house, to eat and to drink, and to lie with my wife? as thou livest, and as thy soul liveth, I will not do this thing."

2 Samuel 11:26: "And when the wife of Uriah heard that Uriah her husband was dead, she mourned for her husband."

2 Samuel 11:27: "And when the mourning was past, David sent and fetched her to his house, and she became his wife, and bare him a son. But the thing that David had done displeased the LORD."

2 Samuel 12:9: "Wherefore hast thou despised the commandment of the LORD, to do evil in his sight? thou hast killed Uriah the Hittite with the sword, and hast taken his wife to be thy wife, and hast slain him with the sword of the children of Ammon."

2 Samuel 12:10: "Now therefore the sword shall never depart from thine house; because thou hast despised me, and hast taken the wife of Uriah the Hittite to be thy wife."

2 Samuel 12:15: "And Nathan departed unto his house. And the LORD struck the child that Uriah's wife bare unto David, and it was very sick."

2 Samuel 12:24: "And David comforted Bathsheba his wife, and went in unto her, and lay with her: and she bare a son, and he called his name Solomon: and the LORD loved him."

1 Kings 2:17: "And he said, Speak, I pray thee, unto Solomon the king, (for he will not say thee nay,) that he give me Abishag the Shunammite to wife."

1 Kings 2:21: "And she said, Let Abishag the Shunammite be given to Adonijah thy brother to wife."

1 Kings 4:11: "The son of Abinadab, in all the region of Dor; which had Taphath the daughter of Solomon to wife:"

1 Kings 4:15: "Ahimaaz was in Naphtali; he also took Basmath the daughter of Solomon to wife:"

1 Kings 7:8: "And his house where he dwelt had another court within the porch, which was of the like work. Solomon made also an house for Pharaoh's daughter, whom he had taken to wife, like unto this porch."

1 Kings 9:16: "For Pharaoh king of Egypt had gone up, and taken Gezer, and burnt it with fire, and slain the Canaanites that dwelt in the city, and given it for a present unto his daughter, Solomon's wife."

1 Kings 11:19: "And Hadad found great favour in the sight of Pharaoh, so that he gave him to wife the sister of his own wife, the sister of Tahpenes the queen."

1 Kings 14:2: "And Jeroboam said to his wife, Arise, I pray thee, and disguise thyself, that thou be not known to be the wife of Jeroboam; and get thee to Shiloh: behold, there is Ahijah the prophet, which told me that I should be king over this people."

1 Kings 14:4: "And Jeroboam's wife did so, and arose, and went to Shiloh, and came to the house of Ahijah. But Ahijah could not see; for his eyes were set by reason of his age."

1 Kings 14:5: "And the LORD said unto Ahijah, Behold, the wife of Jeroboam cometh to ask a thing of thee for her son; for he is sick: thus and thus shalt thou say unto her: for it shall be, when she cometh in, that she shall feign herself to be another woman."

1 Kings 14:6: "And it was so, when Ahijah heard the sound of her feet, as she came in at the door, that he said, Come in, thou wife of Jeroboam; why feignest thou thyself to be another? for I am sent to thee with heavy tidings."

1 Kings 14:17: "And Jeroboam's wife arose, and departed, and came to Tirzah: and when she came to the threshold of the door, the child died;"

1 Kings 16:31: "And it came to pass, as if it had been a light thing for him to walk in the sins of Jeroboam the son of Nebat, that he took to wife Jezebel the daughter of Ethbaal king of the Zidonians, and went and served Baal, and worshipped him."

1 Kings 21:5: "But Jezebel his wife came to him, and said unto him, Why is thy spirit so sad, that thou eatest no bread?"

1 Kings 21:7: "And Jezebel his wife said unto him, Dost thou now govern the kingdom of Israel? arise, and eat bread, and let thine heart be merry: I will give thee the vineyard of Naboth the Jezreelite."

1 Kings 21:25: "But there was none like unto Ahab, which did sell himself to work wickedness in the sight of the LORD, whom Jezebel his wife stirred up."

2 Kings 5:2: "And the Syrians had gone out by companies, and had brought away captive out of the land of Israel a little maid; and she waited on Naaman's wife."

2 Kings 8:18: "And he walked in the way of the kings of Israel, as did the house of Ahab: for the daughter of Ahab was his wife: and he did evil in the sight of the LORD."

2 Kings 14:9: "And Jehoash the king of Israel sent to Amaziah king of Judah, saying, The thistle that was in Lebanon sent to the cedar that was in Lebanon, saying, Give thy daughter to my son to wife: and there passed by a wild beast that was in Lebanon, and trode down the thistle."

2 Kings 22:14: "So Hilkiah the priest, and Ahikam, and Achbor, and Shaphan, and Asahiah, went

unto Huldah the prophetess, the wife of Shallum the son of Tikvah, the son of Harhas, keeper of the wardrobe; (now she dwelt in Jerusalem in the college;) and they communed with her."

1 Chronicles 1:50: "And when Baalhanan was dead, Hadad reigned in his stead: and the name of his city was Pai; and his wife's name was Mehetabel, the daughter of Matred, the daughter of Mezahab."

1 Chronicles 2:18: "And Caleb the son of Hezron begat children of Azubah his wife, and of Jerioth: her sons are these; Jeshur, and Shobab, and Ardon."

1 Chronicles 2:24: "And after that Hezron was dead in Calebephratah, then Abiah Hezron's wife bare him Ashur the father of Tekoa."

1 Chronicles 2:26: "Jerahmeel had also another wife, whose name was Atarah; she was the mother of Onam."

1 Chronicles 2:29: "And the name of the wife of Abishur was Abihail, and she bare him Ahban, and Molid."

1 Chronicles 2:35: "And Sheshan gave his daughter to Jarha his servant to wife; and she bare him Attai."

1 Chronicles 3:3: "The fifth, Shephatiah of Abital: the sixth, Ithream by Eglah his wife."

1 Chronicles 4:18: "And his wife Jehudijah bare Jered the father of Gedor, and Heber the father of Socho, and Jekuthiel the father of Zanoah. And these are the sons of Bithiah the daughter of Pharaoh, which Mered took."

1 Chronicles 4:19: "And the sons of his wife Hodiah the sister of Naham, the father of Keilah the Garmite, and Eshtemoa the Maachathite."

1 Chronicles 7:15: "And Machir took to wife the sister of Huppim and Shuppim, whose sister's name was Maachah;) and the name of the second was Zelophehad: and Zelophehad had daughters."

1 Chronicles 7:16: "And Maachah the wife of Machir bare a son, and she called his name Peresh; and the name of his brother was Sheresh; and his sons were Ulam and Rakem."

1 Chronicles 7:23: "And when he went in to his wife, she conceived, and bare a son, and he called his name Beriah, because it went evil with his house."

1 Chronicles 8:9: "And he begat of Hodesh his wife, Jobab, and Zibia, and Mesha, and Malcham,"

1 Chronicles 8:29: "And at Gibeon dwelt the father of Gibeon; whose wife's name was Maachah:"

1 Chronicles 9:35: "And in Gibeon dwelt the father of Gibeon, Jehiel, whose wife's name was Maachah:"

2 Chronicles 8:11: "And Solomon brought up the daughter of Pharaoh out of the city of David unto the house that he had built for her: for he said, My wife shall not dwell in the house of David king of Israel, because the places are holy, whereunto the ark of the LORD hath come."

2 Chronicles 11:18: "And Rehoboam took him Mahalath the daughter of Jerimoth the son of David to wife, and Abihail the daughter of Eliab the son of Jesse;"

2 Chronicles 21:6: "And he walked in the way of the kings of Israel, like as did the house of Ahab: for he had the daughter of Ahab to wife: and he wrought that which was evil in the eyes of the LORD."

2 Chronicles 22:11: "But Jehoshabeath, the daughter of the king, took Joash the son of Ahaziah, and stole him from among the king's sons that were slain, and put him and his nurse in a bedchamber. So Jehoshabeath, the daughter of king Jehoram, the wife of Jehoiada the priest, (for she was the sister of Ahaziah,) hid him from Athaliah, so that she slew him not."

2 Chronicles 25:18: "And Joash king of Israel sent to Amaziah king of Judah, saying, The thistle that was in Lebanon sent to the cedar that was in Lebanon, saying, Give thy daughter to my son to wife: and there passed by a wild beast that was in Lebanon, and trode down the thistle."

2 Chronicles 34:22: "And Hilkiah, and they that the king had appointed, went to Huldah the prophetess, the wife of Shallum the son of Tikvath, the son of Hasrah, keeper of the wardrobe; (now she dwelt in Jerusalem in the college;) and they spake to her to that effect."

Ezra 2:61: "And of the children of the priests: the children of Habaiah, the children of Koz, the

children of Barzillai; which took a wife of the daughters of Barzillai the Gileadite, and was called after their name:"

Nehemiah 7:63: "And of the priests: the children of Habaiah, the children of Koz, the children of Barzillai, which took one of the daughters of Barzillai the Gileadite to wife, and was called after their name."

Esther 5:10: "Nevertheless Haman refrained himself: and when he came home, he sent and called for his friends, and Zeresh his wife."

Esther 5:14: "Then said Zeresh his wife and all his friends unto him, Let a gallows be made of fifty cubits high, and to morrow speak thou unto the king that Mordecai may be hanged thereon: then go thou in merrily with the king unto the banquet. And the thing pleased Haman; and he caused the gallows to be made."

Esther 6:13: "And Haman told Zeresh his wife and all his friends every thing that had befallen him. Then said his wise men and Zeresh his wife unto him, If Mordecai be of the seed of the Jews, before whom thou hast begun to fall, thou shalt not prevail against him, but shalt surely fall before him."

Job 2:9: "Then said his wife unto him, Dost thou still retain thine integrity? curse God, and die."

Job 19:17: "My breath is strange to my wife, though I intreated for the children's sake of mine own body."

Job 31:10: "Then let my wife grind unto another, and let others bow down upon her."

Psalms 109:9: "Let his children be fatherless, and his wife a widow."

Psalms 128:3: "Thy wife shall be as a fruitful vine by the sides of thine house: thy children like olive plants round about thy table."

Proverbs 5:18: "Let thy fountain be blessed: and rejoice with the wife of thy youth."

Proverbs 6:29: "So he that goeth in to his neighbour's wife; whosoever toucheth her shall not be innocent."

Proverbs 18:22: "Whoso findeth a wife findeth a good thing, and obtaineth favour of the LORD."

Proverbs 19:13: "A foolish son is the calamity of his father: and the contentions of a wife are a continual dropping."

Proverbs 19:14: "House and riches are the inheritance of fathers: and a prudent wife is from the LORD."

Ecclesiastes 9:9: "Live joyfully with the wife whom thou lovest all the days of the life of thy vanity, which he hath given thee under the sun, all the days of thy vanity: for that is thy portion in this life, and in thy labour which thou takest under the sun."

Isaiah 54:1: "Sing, O barren, thou that didst not bear; break forth into singing, and cry aloud, thou that didst not travail with child: for more are the children of the desolate than the children of the married wife, saith the LORD."

Isaiah 54:6: "For the LORD hath called thee as a woman forsaken and grieved in spirit, and a wife of youth, when thou wast refused, saith thy God."

Jeremiah 3:1: "They say, If a man put away his wife, and she go from him, and become another man's, shall he return unto her again? shall not that land be greatly polluted? but thou hast played the harlot with many lovers; yet return again to me, saith the LORD."

Jeremiah 3:20: "Surely as a wife treacherously departeth from her husband, so have ye dealt treacherously with me, O house of Israel, saith the LORD."

Jeremiah 5:8: "They were as fed horses in the morning: every one neighed after his neighbour's wife."

Jeremiah 6:11: "Therefore I am full of the fury of the LORD; I am weary with holding in: I will pour it out upon the children abroad, and upon the assembly of young men together: for even the husband with the wife shall be taken, the aged with him that is full of days."

Jeremiah 16:2: "Thou shalt not take thee a wife, neither shalt thou have sons or daughters in this place."

Ezekiel 16:32: "But as a wife that committeth adultery, which taketh strangers instead of her

husband!"

Ezekiel 18:6: "And hath not eaten upon the mountains, neither hath lifted up his eyes to the idols of the house of Israel, neither hath defiled his neighbour's wife, neither hath come near to a menstruous woman,"

Ezekiel 18:11: "And that doeth not any of those duties, but even hath eaten upon the mountains, and defiled his neighbour's wife,"

Ezekiel 18:15: "That hath not eaten upon the mountains, neither hath lifted up his eyes to the idols of the house of Israel, hath not defiled his neighbour's wife,"

Ezekiel 22:11: "And one hath committed abomination with his neighbour's wife; and another hath lewdly defiled his daughter in law; and another in thee hath humbled his sister, his father's daughter."

Ezekiel 24:18: "So I spake unto the people in the morning: and at even my wife died; and I did in the morning as I was commanded."

Ezekiel 33:26: "Ye stand upon your sword, ye work abomination, and ye defile every one his neighbour's wife: and shall ye possess the land?"

Hosea 1:2: "The beginning of the word of the LORD by Hosea. And the LORD said to Hosea, Go, take unto thee a wife of whoredoms and children of whoredoms: for the land hath committed great whoredom, departing from the LORD."

Hosea 2:2: "Plead with your mother, plead: for she is not my wife, neither am I her husband: let her therefore put away her whoredoms out of her sight, and her adulteries from between her breasts;"

Hosea 12:12: "And Jacob fled into the country of Syria, and Israel served for a wife, and for a wife he kept sheep."

Amos 7:17: "Therefore thus saith the LORD; Thy wife shall be an harlot in the city, and thy sons and thy daughters shall fall by the sword, and thy land shall be divided by line; and thou shalt die in a polluted land: and Israel shall surely go into captivity forth of his land."

Malachi 2:14: "Yet ye say, Wherefore? Because the LORD hath been witness between thee and the wife of thy youth, against whom thou hast dealt treacherously: yet is she thy companion, and the wife of thy covenant."

Malachi 2:15: "And did not he make one? Yet had he the residue of the spirit. And wherefore one? That he might seek a godly seed. Therefore take heed to your spirit, and let none deal treacherously against the wife of his youth."

Matthew 1:6: "And Jesse begat David the king; and David the king begat Solomon of her that had been the wife of Urias;"

Matthew 1:20: "But while he thought on these things, behold, the angel of the LORD appeared unto him in a dream, saying, Joseph, thou son of David, fear not to take unto thee Mary thy wife: for that which is conceived in her is of the Holy Ghost."

Matthew 1:24: "Then Joseph being raised from sleep did as the angel of the Lord had bidden him, and took unto him his wife:"

Matthew 5:31: "It hath been said, Whosoever shall put away his wife, let him give her a writing of divorcement:"

Matthew 5:32: "But I say unto you, That whosoever shall put away his wife, saving for the cause of fornication, causeth her to commit adultery: and whosoever shall marry her that is divorced committeth adultery."

Matthew 8:14: "And when Jesus was come into Peter's house, he saw his wife's mother laid, and sick of a fever."

Matthew 14:3: "For Herod had laid hold on John, and bound him, and put him in prison for Herodias' sake, his brother Philip's wife."

Matthew 18:25: "But forasmuch as he had not to pay, his lord commanded him to be sold, and his wife, and children, and all that he had, and payment to be made."

Matthew 19:3: "The Pharisees also came unto him, tempting him, and saying unto him, Is it lawful

for a man to put away his wife for every cause?"

Matthew 19:5: "And said, For this cause shall a man leave father and mother, and shall cleave to his wife: and they twain shall be one flesh?"

Matthew 19:9: "And I say unto you, Whosoever shall put away his wife, except it be for fornication, and shall marry another, committeth adultery: and whoso marrieth her which is put away doth commit adultery."

Matthew 19:10: "His disciples say unto him, If the case of the man be so with his wife, it is not good to marry."

Matthew 19:29: "And every one that hath forsaken houses, or brethren, or sisters, or father, or mother, or wife, or children, or lands, for my name's sake, shall receive an hundredfold, and shall inherit everlasting life."

Matthew 22:24: "Saying, Master, Moses said, If a man die, having no children, his brother shall marry his wife, and raise up seed unto his brother."

Matthew 22:25: "Now there were with us seven brethren: and the first, when he had married a wife, deceased, and, having no issue, left his wife unto his brother:"

Matthew 22:28: "Therefore in the resurrection whose wife shall she be of the seven? for they all had her."

Matthew 27:19: "When he was set down on the judgment seat, his wife sent unto him, saying, Have thou nothing to do with that just man: for I have suffered many things this day in a dream because of him."

Mark 1:30: "But Simon's wife's mother lay sick of a fever, and anon they tell him of her."

Mark 6:17: "For Herod himself had sent forth and laid hold upon John, and bound him in prison for Herodias' sake, his brother Philip's wife: for he had married her."

Mark 6:18: "For John had said unto Herod, It is not lawful for thee to have thy brother's wife."

Mark 10:2: "And the Pharisees came to him, and asked him, Is it lawful for a man to put away his wife? tempting him."

Mark 10:7: "For this cause shall a man leave his father and mother, and cleave to his wife;"

Mark 10:11: "And he saith unto them, Whosoever shall put away his wife, and marry another, committeth adultery against her."

Mark 10:29: "And Jesus answered and said, Verily I say unto you, There is no man that hath left house, or brethren, or sisters, or father, or mother, or wife, or children, or lands, for my sake, and the gospel's,"

Mark 12:19: "Master, Moses wrote unto us, If a man's brother die, and leave his wife behind him, and leave no children, that his brother should take his wife, and raise up seed unto his brother."

Mark 12:20: "Now there were seven brethren: and the first took a wife, and dying left no seed."

Mark 12:23: "In the resurrection therefore, when they shall rise, whose wife shall she be of them? for the seven had her to wife."

Luke 1:5: "THERE was in the days of Herod, the king of Judaea, a certain priest named Zacharias, of the course of Abia: and his wife was of the daughters of Aaron, and her name was Elisabeth."

Luke 1:13: "But the angel said unto him, Fear not, Zacharias: for thy prayer is heard; and thy wife Elisabeth shall bear thee a son, and thou shalt call his name John."

Luke 1:18: "And Zacharias said unto the angel, Whereby shall I know this? for I am an old man, and my wife well stricken in years."

Luke 1:24: "And after those days his wife Elisabeth conceived, and hid herself five months, saying,"

Luke 2:5: "To be taxed with Mary his espoused wife, being great with child."

Luke 3:19: "But Herod the tetrarch, being reproved by him for Herodias his brother Philip's wife, and for all the evils which Herod had done,"

Luke 4:38: "And he arose out of the synagogue, and entered into Simon's house. And Simon's wife's mother was taken with a great fever; and they besought him for her."

Luke 8:3: "And Joanna the wife of Chuza Herod's steward, and Susanna, and many others, which ministered unto him of their substance."

Luke 14:20: "And another said, I have married a wife, and therefore I cannot come."

Luke 14:26: "If any man come to me, and hate not his father, and mother, and wife, and children, and brethren, and sisters, yea, and his own life also, he cannot be my disciple."

Luke 16:18: "Whosoever putteth away his wife, and marrieth another, committeth adultery: and whosoever marrieth her that is put away from her husband committeth adultery."

Luke 17:32: "Remember Lot's wife."

Luke 18:29: "And he said unto them, Verily I say unto you, There is no man that hath left house, or parents, or brethren, or wife, or children, for the kingdom of God's sake,"

Luke 20:28: "Saying, Master, Moses wrote unto us, If any man's brother die, having a wife, and he die without children, that his brother should take his wife, and raise up seed unto his brother."

Luke 20:29: "There were therefore seven brethren: and the first took a wife, and died without children."

Luke 20:30: "And the second took her to wife, and he died childless."

Luke 20:33: "Therefore in the resurrection whose wife of them is she? for seven had her to wife."

John 19:25: "Now there stood by the cross of Jesus his mother, and his mother's sister, Mary the wife of Cleophas, and Mary Magdalene."

Acts 5:1: "But a certain man named Ananias, with Sapphira his wife, sold a possession,"

Acts 5:2: "And kept back part of the price, his wife also being privy to it, and brought a certain part, and laid it at the apostles' feet."

Acts 5:7: "And it was about the space of three hours after, when his wife, not knowing what was done, came in."

Acts 18:2: "And found a certain Jew named Aquila, born in Pontus, lately come from Italy, with his wife Priscilla; (because that Claudius had commanded all Jews to depart from Rome:) and came unto them."

Acts 24:24: "And after certain days, when Felix came with his wife Drusilla, which was a Jewess, he sent for Paul, and heard him concerning the faith in Christ."

1 Corinthians 5:1: "It is reported commonly that there is fornication among you, and such fornication as is not so much as named among the Gentiles, that one should have his father's wife."

1 Corinthians 7:2: "Nevertheless, to avoid fornication, let every man have his own wife, and let every woman have her own husband."

1 Corinthians 7:3: "Let the husband render unto the wife due benevolence: and likewise also the wife unto the husband."

1 Corinthians 7:4: "The wife hath not power of her own body, but the husband: and likewise also the husband hath not power of his own body, but the wife."

1 Corinthians 7:10: "And unto the married I command, yet not I, but the Lord, Let not the wife depart from her husband:"

1 Corinthians 7:11: "But and if she depart, let her remain unmarried or be reconciled to her husband: and let not the husband put away his wife."

1 Corinthians 7:12: "But to the rest speak I, not the Lord: If any brother hath a wife that believeth not, and she be pleased to dwell with him, let him not put her away."

1 Corinthians 7:14: "For the unbelieving husband is sanctified by the wife, and the unbelieving wife is sanctified by the husband: else were your children unclean; but now are they holy."

1 Corinthians 7:16: "For what knowest thou, O wife, whether thou shalt save thy husband? or how knowest thou, O man, whether thou shalt save thy wife?"

1 Corinthians 7:27: "Art thou bound unto a wife? seek not to be loosed. Art thou loosed from a wife? seek not a wife."

1 Corinthians 7:33: "But he that is married careth for the things that are of the world, how he may please his wife."

1 Corinthians 7:34: "There is difference also between a wife and a virgin. The unmarried woman careth for the things of the Lord, that she may be holy both in body and in spirit: but she that is married careth for the things of the world, how she may please her husband."

1 Corinthians 7:39: "The wife is bound by the law as long as her husband liveth; but if her husband be dead, she is at liberty to be married to whom she will; only in the Lord."

1 Corinthians 9:5: "Have we not power to lead about a sister, a wife, as well as other apostles, and as the brethren of the Lord, and Cephas?"

Ephesians 5:23: "For the husband is the head of the wife, even as Christ is the head of the church: and he is the saviour of the body."

Ephesians 5:28: "So ought men to love their wives as their own bodies. He that loveth his wife loveth himself."

Ephesians 5:31: "For this cause shall a man leave his father and mother, and shall be joined unto his wife, and they two shall be one flesh."

Ephesians 5:33: "Nevertheless let every one of you in particular so love his wife even as himself; and the wife see that she reverence her husband."

1 Timothy 3:2: "A bishop then must be blameless, the husband of one wife, vigilant, sober, of good behaviour, given to hospitality, apt to teach;"

1 Timothy 3:12: "Let the deacons be the husbands of one wife, ruling their children and their own houses well."

1 Timothy 5:9: "Let not a widow be taken into the number under threescore years old, having been the wife of one man."

Titus 1:6: "If any be blameless, the husband of one wife, having faithful children not accused of riot or unruly."

1 Peter 3:7: "Likewise, ye husbands, dwell with them according to knowledge, giving honour unto the wife, as unto the weaker vessel, and as being heirs together of the grace of life; that your prayers be not hindered."

Revelation 19:7: "Let us be glad and rejoice, and give honour to him: for the marriage of the Lamb is come, and his wife hath made herself ready."

Revelation 21:9: "And there came unto me one of the seven angels which had the seven vials full of the seven last plagues, and talked with me, saying, Come hither, I will shew thee the bride, the Lamb's wife."

## **WILD**

Occurrences: 39

Genesis 16:12: "And he will be a wild man; his hand will be against every man, and every man's hand against him; and he shall dwell in the presence of all his brethren."

Leviticus 26:22: "I will also send wild beasts among you, which shall rob you of your children, and destroy your cattle, and make you few in number; and your high ways shall be desolate."

Deuteronomy 14:5: "The hart, and the roebuck, and the fallow deer, and the wild goat, and the pygarg, and the wild ox, and the chamois."

1 Samuel 17:46: "This day will the LORD deliver thee into mine hand; and I will smite thee, and take thine head from thee; and I will give the carcasses of the host of the Philistines this day unto the fowls of the air, and to the wild beasts of the earth; that all the earth may know that there is a God in Israel."

1 Samuel 24:2: "Then Saul took three thousand chosen men out of all Israel, and went to seek David and his men upon the rocks of the wild goats."

2 Samuel 2:18: "And there were three sons of Zeruiah there, Joab, and Abishai, and Asahel: and Asahel was as light of foot as a wild roe."

2 Kings 4:39: "And one went out into the field to gather herbs, and found a wild vine, and gathered thereof wild gourds his lap full, and came and shred them into the pot of pottage: for they knew



them not."

2 Kings 14:9: "And Jehoash the king of Israel sent to Amaziah king of Judah, saying, The thistle that was in Lebanon sent to the cedar that was in Lebanon, saying, Give thy daughter to my son to wife: and there passed by a wild beast that was in Lebanon, and trode down the thistle."

2 Chronicles 25:18: "And Joash king of Israel sent to Amaziah king of Judah, saying, Give thy daughter to my son to wife: and there passed by a wild beast that was in Lebanon, and trode down the thistle."

Job 6:5: "Doth the wild ass bray when he hath grass? or loweth the ox over his fodder?"

Job 11:12: "For vain men would be wise, though man be born like a wild ass's colt."

Job 24:5: "Behold, as wild asses in the desert, go they forth to their work; rising betimes for a prey: the wilderness yieldeth food for them and for their children."

Job 39:1: "Knowest thou the time when the wild goats of the rock bring forth? or canst thou mark when the hinds do calve?"

Job 39:5: "Who hath sent out the wild ass free? or who hath loosed the bands of the wild ass?"

Job 39:15: "And forgetteth that the foot may crush them, or that the wild beast may break them."

Psalms 50:11: "I know all the fowls of the mountains: and the wild beasts of the field are mine."

Psalms 80:13: "The boar out of the wood doth waste it, and the wild beast of the field doth devour it."

Psalms 104:11: "They give drink to every beast of the field: the wild asses quench their thirst."

Psalms 104:18: "The high hills are a refuge for the wild goats; and the rocks for the conies."

Isaiah 5:2: "And he fenced it, and gathered out the stones thereof, and planted it with the choicest vine, and built a tower in the midst of it, and also made a winepress therein: and he looked that it should bring forth grapes, and it brought forth wild grapes."

Isaiah 5:4: "What could have been done more to my vineyard, that I have not done in it? wherefore, when I looked that it should bring forth grapes, brought it forth wild grapes?"

Isaiah 13:21: "But wild beasts of the desert shall lie there; and their houses shall be full of doleful creatures; and owls shall dwell there, and satyrs shall dance there."

Isaiah 13:22: "And the wild beasts of the islands shall cry in their desolate houses, and dragons in their pleasant palaces: and her time is near to come, and her days shall not be prolonged."

Isaiah 32:14: "Because the palaces shall be forsaken; the multitude of the city shall be left; the forts and towers shall be for dens for ever, a joy of wild asses, a pasture of flocks;"

Isaiah 34:14: "The wild beasts of the desert shall also meet with the wild beasts of the island, and the satyr shall cry to his fellow; the screech owl also shall rest there, and find for herself a place of rest."

Isaiah 51:20: "Thy sons have fainted, they lie at the head of all the streets, as a wild bull in a net: they are full of the fury of the LORD, the rebuke of thy God."

Jeremiah 2:24: "A wild ass used to the wilderness, that snuffeth up the wind at her pleasure; in her occasion who can turn her away? all they that seek her will not weary themselves; in her month they shall find her."

Jeremiah 14:6: "And the wild asses did stand in the high places, they snuffed up the wind like dragons; their eyes did fail, because there was no grass."

Jeremiah 50:39: "Therefore the wild beasts of the desert with the wild beasts of the islands shall dwell there, and the owls shall dwell therein: and it shall be no more inhabited for ever; neither shall it be dwelt in from generation to generation."

Daniel 5:21: "And he was driven from the sons of men; and his heart was made like the beasts, and his dwelling was with the wild asses: they fed him with grass like oxen, and his body was wet with the dew of heaven; till he knew that the most high God ruled in the kingdom of men, and that he appointeth over it whomsoever he will."

Hosea 8:9: "For they are gone up to Assyria, a wild ass alone by himself: Ephraim hath hired lovers."

Hosea 13:8: "I will meet them as a bear that is bereaved of her whelps, and will rend the caul of their heart, and there will I devour them like a lion: the wild beast shall tear them."

Matthew 3:4: "And the same John had his raiment of camel's hair, and a leathern girdle about his loins; and his meat was locusts and wild honey."

Mark 1:6: "And John was clothed with camel's hair, and with a girdle of a skin about his loins; and he did eat locusts and wild honey;"

Mark 1:13: "And he was there in the wilderness forty days, tempted of Satan; and was with the wild beasts; and the angels ministered unto him."

Acts 10:12: "Wherein were all manner of fourfooted beasts of the earth, and wild beasts, and creeping things, and fowls of the air."

Acts 11:6: "Upon the which when I had fastened mine eyes, I considered, and saw fourfooted beasts of the earth, and wild beasts, and creeping things, and fowls of the air."

Romans 11:17: "And if some of the branches be broken off, and thou, being a wild olive tree, wert grafted in among them, and with them partakest of the root and fatness of the olive tree;"

Romans 11:24: "For if thou wert cut out of the olive tree which is wild by nature, and wert grafted contrary to nature into a good olive tree: how much more shall these, which be the natural branches, be grafted into their own olive tree?"

## **WILDERNESS**

Occurrences: 293

Genesis 14:6: "And the Horites in their mount Seir, unto Elparan, which is by the wilderness."

Genesis 16:7: "And the angel of the LORD found her by a fountain of water in the wilderness, by the fountain in the way to Shur."

Genesis 21:14: "And Abraham rose up early in the morning, and took bread, and a bottle of water, and gave it unto Hagar, putting it on her shoulder, and the child, and sent her away: and she departed, and wandered in the wilderness of Beersheba."

Genesis 21:20: "And God was with the lad; and he grew, and dwelt in the wilderness, and became an archer."

Genesis 21:21: "And he dwelt in the wilderness of Paran: and his mother took him a wife out of the land of Egypt."

Genesis 36:24: "And these are the children of Zibeon; both Ajah, and Anah: this was that Anah that found the mules in the wilderness, as he fed the asses of Zibeon his father."

Genesis 37:22: "And Reuben said unto them, Shed no blood, but cast him into this pit that is in the wilderness, and lay no hand upon him; that he might rid him out of their hands, to deliver him to his father again."

Exodus 3:18: "And they shall hearken to thy voice: and thou shalt come, thou and the elders of Israel, unto the king of Egypt, and ye shall say unto him, The LORD God of the Hebrews hath met with us: and now let us go, we beseech thee, three days' journey into the wilderness, that we may sacrifice to the LORD our God."

Exodus 4:27: "And the LORD said to Aaron, Go into the wilderness to meet Moses. And he went, and met him in the mount of God, and kissed him."

Exodus 5:1: "And afterward Moses and Aaron went in, and told Pharaoh, Thus saith the LORD God of Israel, Let my people go, that they may hold a feast unto me in the wilderness."

Exodus 7:16: "And thou shalt say unto him, The LORD God of the Hebrews hath sent me unto thee, saying, Let my people go, that they may serve me in the wilderness: and, behold, hitherto thou wouldest not hear."

Exodus 8:27: "We will go three days' journey into the wilderness, and sacrifice to the LORD our God, as he shall command us."

Exodus 8:28: "And Pharaoh said, I will let you go, that ye may sacrifice to the LORD your God in the wilderness; only ye shall not go very far away: intreat for me."

Exodus 13:18: "But God led the people about, through the way of the wilderness of the Red sea: and the children of Israel went up harnessed out of the land of Egypt."

Exodus 13:20: "And they took their journey from Succoth, and encamped in Etham, in the edge of the wilderness."

Exodus 14:3: "For Pharaoh will say of the children of Israel, They are entangled in the land, the wilderness hath shut them in."

Exodus 14:11: "And they said unto Moses, Because there were no graves in Egypt, hast thou taken us away to die in the wilderness? wherefore hast thou dealt thus with us, to carry us forth out of Egypt?"

Exodus 14:12: "Is not this the word that we did tell thee in Egypt, saying, Let us alone, that we may serve the Egyptians? For it had been better for us to serve the Egyptians, than that we should die in the wilderness."

Exodus 15:22: "So Moses brought Israel from the Red sea, and they went out into the wilderness of Shur; and they went three days in the wilderness, and found no water."

Exodus 16:1: "And they took their journey from Elim, and all the congregation of the children of Israel came unto the wilderness of Sin, which is between Elim and Sinai, on the fifteenth day of the second month after their departing out of the land of Egypt."

Exodus 16:2: "And the whole congregation of the children of Israel murmured against Moses and Aaron in the wilderness:"

Exodus 16:3: "And the children of Israel said unto them, Would to God we had died by the hand of the LORD in the land of Egypt, when we sat by the flesh pots, and when we did eat bread to the full; for ye have brought us forth into this wilderness, to kill this whole assembly with hunger."

Exodus 16:10: "And it came to pass, as Aaron spake unto the whole congregation of the children of Israel, that they looked toward the wilderness, and, behold, the glory of the LORD appeared in the cloud."

Exodus 16:14: "And when the dew that lay was gone up, behold, upon the face of the wilderness there lay a small round thing, as small as the hoar frost on the ground."

Exodus 16:32: "And Moses said, This is the thing which the LORD commandeth, Fill an omer of it to be kept for your generations; that they may see the bread wherewith I have fed you in the wilderness, when I brought you forth from the land of Egypt."

Exodus 17:1: "And all the congregation of the children of Israel journeyed from the wilderness of Sin, after their journeys, according to the commandment of the LORD, and pitched in Rephidim: and there was no water for the people to drink."

Exodus 18:5: "And Jethro, Moses' father in law, came with his sons and his wife unto Moses into the wilderness, where he encamped at the mount of God:"

Exodus 19:1: "In the third month, when the children of Israel were gone forth out of the land of Egypt, the same day came they into the wilderness of Sinai."

Exodus 19:2: "For they were departed from Rephidim, and were come to the desert of Sinai, and had pitched in the wilderness; and there Israel camped before the mount."

Leviticus 7:38: "Which the LORD commanded Moses in mount Sinai, in the day that he commanded the children of Israel to offer their oblations unto the LORD, in the wilderness of Sinai."

Leviticus 16:10: "But the goat, on which the lot fell to be the scapegoat, shall be presented alive before the LORD, to make an atonement with him, and to let him go for a scapegoat into the wilderness."

Leviticus 16:21: "And Aaron shall lay both his hands upon the head of the live goat, and confess over him all the iniquities of the children of Israel, and all their transgressions in all their sins, putting them upon the head of the goat, and shall send him away by the hand of a fit man into the wilderness:"

Leviticus 16:22: "And the goat shall bear upon him all their iniquities unto a land not inhabited: and

he shall let go the goat in the wilderness."

Numbers 1:1: "And the LORD spake unto Moses in the wilderness of Sinai, in the tabernacle of the congregation, on the first day of the second month, in the second year after they were come out of the land of Egypt, saying,"

Numbers 1:19: "As the LORD commanded Moses, so he numbered them in the wilderness of Sinai."

Numbers 3:4: "And Nadab and Abihu died before the LORD, when they offered strange fire before the LORD, in the wilderness of Sinai, and they had no children: and Eleazar and Ithamar ministered in the priest's office in the sight of Aaron their father."

Numbers 3:14: "And the LORD spake unto Moses in the wilderness of Sinai, saying,"

Numbers 9:1: "And the LORD spake unto Moses in the wilderness of Sinai, in the first month of the second year after they were come out of the land of Egypt, saying,"

Numbers 9:5: "And they kept the passover on the fourteenth day of the first month at even in the wilderness of Sinai: according to all that the LORD commanded Moses, so did the children of Israel."

Numbers 10:12: "And the children of Israel took their journeys out of the wilderness of Sinai; and the cloud rested in the wilderness of Paran."

Numbers 10:31: "And he said, Leave us not, I pray thee; forasmuch as thou knowest how we are to encamp in the wilderness, and thou mayest be to us instead of eyes."

Numbers 12:16: "And afterward the people removed from Hazeroth, and pitched in the wilderness of Paran."

Numbers 13:3: "And Moses by the commandment of the LORD sent them from the wilderness of Paran: all those men were heads of the children of Israel."

Numbers 13:21: "So they went up, and searched the land from the wilderness of Zin unto Rehob, as men come to Hamath."

Numbers 13:26: "And they went and came to Moses, and to Aaron, and to all the congregation of the children of Israel, unto the wilderness of Paran, to Kadesh; and brought back word unto them, and unto all the congregation, and shewed them the fruit of the land."

Numbers 14:2: "And all the children of Israel murmured against Moses and against Aaron: and the whole congregation said unto them, Would God that we had died in the land of Egypt! or would God we had died in this wilderness!"

Numbers 14:16: "Because the LORD was not able to bring this people into the land which he sware unto them, therefore he hath slain them in the wilderness."

Numbers 14:22: "Because all those men which have seen my glory, and my miracles, which I did in Egypt and in the wilderness, and have tempted me now these ten times, and have not hearkened to my voice;"

Numbers 14:25: "(Now the Amalekites and the Canaanites dwell in the valley.) Tomorrow turn you, and get you into the wilderness by the way of the Red sea."

Numbers 14:29: "Your carcasses shall fall in this wilderness; and all that were numbered of you, according to your whole number, from twenty years old and upward which have murmured against me."

Numbers 14:32: "But as for you, your carcasses, they shall fall in this wilderness."

Numbers 14:33: "And your children shall wander in the wilderness forty years, and bear your whoredoms, until your carcasses be wasted in the wilderness."

Numbers 14:35: "I the LORD have said, I will surely do it unto all this evil congregation, that are gathered together against me: in this wilderness they shall be consumed, and there they shall die."

Numbers 15:32: "And while the children of Israel were in the wilderness, they found a man that gathered sticks upon the sabbath day."

Numbers 16:13: "Is it a small thing that thou hast brought us up out of a land that floweth with milk and honey, to kill us in the wilderness, except thou make thyself altogether a prince over us?"

Numbers 20:4: "And why have ye brought up the congregation of the LORD into this wilderness, that we and our cattle should die there?"

Numbers 21:5: "And the people spake against God, and against Moses, Wherefore have ye brought us up out of Egypt to die in the wilderness? for there is no bread, neither is there any water; and our soul loatheth this light bread."

Numbers 21:11: "And they journeyed from Oboth, and pitched at Ijeabarim, in the wilderness which is before Moab, toward the sunrising."

Numbers 21:13: "From thence they removed, and pitched on the other side of Arnon, which is in the wilderness that cometh out of the coasts of the Amorites: for Arnon is the border of Moab, between Moab and the Amorites."

Numbers 21:18: "The princes digged the well, the nobles of the people digged it, by the direction of the lawgiver, with their staves. And from the wilderness they went to Mattanah:"

Numbers 21:23: "And Sihon would not suffer Israel to pass through his border: but Sihon gathered all his people together, and went out against Israel into the wilderness: and he came to Jahaz, and fought against Israel."

Numbers 24:1: "And when Balaam saw that it pleased the LORD to bless Israel, he went not, as at other times, to seek for enchantments, but he set his face toward the wilderness."

Numbers 26:64: "But among these there was not a man of them whom Moses and Aaron the priest numbered, when they numbered the children of Israel in the wilderness of Sinai."

Numbers 26:65: "For the LORD had said of them, They shall surely die in the wilderness. And there was not left a man of them, save Caleb the son of Jephunneh, and Joshua the son of Nun."

Numbers 27:3: "Our father died in the wilderness, and he was not in the company of them that gathered themselves together against the LORD in the company of Korah; but died in his own sin, and had no sons."

Numbers 27:14: "For ye rebelled against my commandment in the desert of Zin, in the strife of the congregation, to sanctify me at the water before their eyes: that is the water of Meribah in Kadesh in the wilderness of Zin."

Numbers 32:13: "And the LORD's anger was kindled against Israel, and he made them wander in the wilderness forty years, until all the generation, that had done evil in the sight of the LORD, was consumed."

Numbers 32:15: "For if ye turn away from after him, he will yet again leave them in the wilderness; and ye shall destroy all this people."

Numbers 33:6: "And they departed from Succoth, and pitched in Etham, which is in the edge of the wilderness."

Numbers 33:8: "And they departed from before Pihahiroth, and passed through the midst of the sea into the wilderness, and went three days' journey in the wilderness of Etham, and pitched in Marah."

Numbers 33:11: "And they removed from the Red sea, and encamped in the wilderness of Sin."

Numbers 33:12: "And they took their journey out of the wilderness of Sin, and encamped in Dophkah."

Numbers 33:15: "And they departed from Rephidim, and pitched in the wilderness of Sinai."

Numbers 33:36: "And they removed from Eziongaber, and pitched in the wilderness of Zin, which is Kadesh."

Numbers 34:3: "Then your south quarter shall be from the wilderness of Zin along by the coast of Edom, and your south border shall be the outmost coast of the salt sea eastward:"

Deuteronomy 1:1: "These be the words which Moses spake unto all Israel on this side Jordan in the wilderness, in the plain over against the Red sea, between Paran, and Tophel, and Laban, and Hazeroth, and Dizahab."

Deuteronomy 1:19: "And when we departed from Horeb, we went through all that great and terrible wilderness, which ye saw by the way of the mountain of the Amorites, as the LORD our God

commanded us; and we came to Kadeshbarnea."

Deuteronomy 1:31: "And in the wilderness, where thou hast seen how that the LORD thy God bare thee, as a man doth bear his son, in all the way that ye went, until ye came into this place."

Deuteronomy 1:40: "But as for you, turn you, and take your journey into the wilderness by the way of the Red sea."

Deuteronomy 2:1: "Then we turned, and took our journey into the wilderness by the way of the Red sea, as the LORD spake unto me: and we compassed mount Seir many days."

Deuteronomy 2:7: "For the LORD thy God hath blessed thee in all the works of thy hand: he knoweth thy walking through this great wilderness: these forty years the LORD thy God hath been with thee; thou hast lacked nothing."

Deuteronomy 2:8: "And when we passed by from our brethren the children of Esau, which dwelt in Seir, through the way of the plain from Elath, and from Eziongaber, we turned and passed by the way of the wilderness of Moab."

Deuteronomy 2:26: "And I sent messengers out of the wilderness of Kedemoth unto Sihon king of Heshbon with words of peace, saying,"

Deuteronomy 4:43: "Namely, Bezer in the wilderness, in the plain country, of the Reubenites; and Ramoth in Gilead, of the Gadites; and Golan in Bashan, of the Manassites."

Deuteronomy 8:2: "And thou shalt remember all the way which the LORD thy God led thee these forty years in the wilderness, to humble thee, and to prove thee, to know what was in thine heart, whether thou wouldest keep his commandments, or no."

Deuteronomy 8:15: "Who led thee through that great and terrible wilderness, wherein were fiery serpents, and scorpions, and drought, where there was no water; who brought thee forth water out of the rock of flint;"

Deuteronomy 8:16: "Who fed thee in the wilderness with manna, which thy fathers knew not, that he might humble thee, and that he might prove thee, to do thee good at thy latter end;"

Deuteronomy 9:7: "Remember, and forget not, how thou provokedst the LORD thy God to wrath in the wilderness: from the day that thou didst depart out of the land of Egypt, until ye came unto this place, ye have been rebellious against the LORD."

Deuteronomy 9:28: "Lest the land whence thou broughtest us out say, Because the LORD was not able to bring them into the land which he promised them, and because he hated them, he hath brought them out to slay them in the wilderness."

Deuteronomy 11:5: "And what he did unto you in the wilderness, until ye came into this place;"

Deuteronomy 11:24: "Every place whereon the soles of your feet shall tread shall be yours: from the wilderness and Lebanon, from the river, the river Euphrates, even unto the uttermost sea shall your coast be."

Deuteronomy 29:5: "And I have led you forty years in the wilderness: your clothes are not waxen old upon you, and thy shoe is not waxen old upon thy foot."

Deuteronomy 32:10: "He found him in a desert land, and in the waste howling wilderness; he led him about, he instructed him, he kept him as the apple of his eye."

Deuteronomy 32:51: "Because ye trespassed against me among the children of Israel at the waters of MeribahKadesh, in the wilderness of Zin; because ye sanctified me not in the midst of the children of Israel."

Joshua 1:4: "From the wilderness and this Lebanon even unto the great river, the river Euphrates, all the land of the Hittites, and unto the great sea toward the going down of the sun, shall be your coast."

Joshua 5:4: "And this is the cause why Joshua did circumcise: All the people that came out of Egypt, that were males, even all the men of war, died in the wilderness by the way, after they came out of Egypt."

Joshua 5:5: "Now all the people that came out were circumcised: but all the people that were born in the wilderness by the way as they came forth out of Egypt, them they had not circumcised."

Joshua 5:6: "For the children of Israel walked forty years in the wilderness, till all the people that were men of war, which came out of Egypt, were consumed, because they obeyed not the voice of the LORD: unto whom the LORD sware that he would not shew them the land, which the LORD sware unto their fathers that he would give us, a land that floweth with milk and honey."

Joshua 8:15: "And Joshua and all Israel made as if they were beaten before them, and fled by the way of the wilderness."

Joshua 8:20: "And when the men of Ai looked behind them, they saw, and, behold, the smoke of the city ascended up to heaven, and they had no power to flee this way or that way: and the people that fled to the wilderness turned back upon the pursuers."

Joshua 8:24: "And it came to pass, when Israel had made an end of slaying all the inhabitants of Ai in the field, in the wilderness wherein they chased them, and when they were all fallen on the edge of the sword, until they were consumed, that all the Israelites returned unto Ai, and smote it with the edge of the sword."

Joshua 12:8: "In the mountains, and in the valleys, and in the plains, and in the springs, and in the wilderness, and in the south country; the Hittites, the Amorites, and the Canaanites, the Perizzites, the Hivites, and the Jebusites:"

Joshua 14:10: "And now, behold, the LORD hath kept me alive, as he said, these forty and five years, even since the LORD spake this word unto Moses, while the children of Israel wandered in the wilderness: and now, lo, I am this day fourscore and five years old."

Joshua 15:1: "This then was the lot of the tribe of the children of Judah by their families; even to the border of Edom the wilderness of Zin southward was the uttermost part of the south coast."

Joshua 15:61: "In the wilderness, Betharabah, Middin, and Secacah,"

Joshua 16:1: "And the lot of the children of Joseph fell from Jordan by Jericho, unto the water of Jericho on the east, to the wilderness that goeth up from Jericho throughout mount Bethel,"

Joshua 18:12: "And their border on the north side was from Jordan; and the border went up to the side of Jericho on the north side, and went up through the mountains westward; and the goings out thereof were at the wilderness of Bethaven."

Joshua 20:8: "And on the other side Jordan by Jericho eastward, they assigned Bezer in the wilderness upon the plain out of the tribe of Reuben, and Ramoth in Gilead out of the tribe of Gad, and Golan in Bashan out of the tribe of Manasseh."

Joshua 24:7: "And when they cried unto the LORD, he put darkness between you and the Egyptians, and brought the sea upon them, and covered them; and your eyes have seen what I have done in Egypt: and ye dwelt in the wilderness a long season."

Judges 1:16: "And the children of the Kenite, Moses' father in law, went up out of the city of palm trees with the children of Judah into the wilderness of Judah, which lieth in the south of Arad; and they went and dwelt among the people."

Judges 8:7: "And Gideon said, Therefore when the LORD hath delivered Zebah and Zalmunna into mine hand, then I will tear your flesh with the thorns of the wilderness and with briers."

Judges 8:16: "And he took the elders of the city, and thorns of the wilderness and briers, and with them he taught the men of Succoth."

Judges 11:16: "But when Israel came up from Egypt, and walked through the wilderness unto the Red sea, and came to Kadesh;"

Judges 11:18: "Then they went along through the wilderness, and compassed the land of Edom, and the land of Moab, and came by the east side of the land of Moab, and pitched on the other side of Arnon, but came not within the border of Moab: for Arnon was the border of Moab."

Judges 11:22: "And they possessed all the coasts of the Amorites, from Arnon even unto Jabbok, and from the wilderness even unto Jordan."

Judges 20:42: "Therefore they turned their backs before the men of Israel unto the way of the wilderness; but the battle overtook them; and them which came out of the cities they destroyed in the midst of them."

Judges 20:45: "And they turned and fled toward the wilderness unto the rock of Rimmon: and they gleaned of them in the highways five thousand men; and pursued hard after them unto Gidom, and slew two thousand men of them."

Judges 20:47: "But six hundred men turned and fled to the wilderness unto the rock Rimmon, and abode in the rock Rimmon four months."

1 Samuel 4:8: "Woe unto us! who shall deliver us out of the hand of these mighty Gods? these are the Gods that smote the Egyptians with all the plagues in the wilderness."

1 Samuel 13:18: "And another company turned the way to Bethhoron: and another company turned to the way of the border that looketh to the valley of Zeboim toward the wilderness."

1 Samuel 17:28: "And Eliab his eldest brother heard when he spake unto the men; and Eliab's anger was kindled against David, and he said, Why camest thou down hither? and with whom hast thou left those few sheep in the wilderness? I know thy pride, and the naughtiness of thine heart; for thou art come down that thou mightest see the battle."

1 Samuel 23:14: "And David abode in the wilderness in strong holds, and remained in a mountain in the wilderness of Ziph. And Saul sought him every day, but God delivered him not into his hand."

1 Samuel 23:15: "And David saw that Saul was come out to seek his life: and David was in the wilderness of Ziph in a wood."

1 Samuel 23:24: "And they arose, and went to Ziph before Saul: but David and his men were in the wilderness of Maon, in the plain on the south of Jeshimon."

1 Samuel 23:25: "Saul also and his men went to seek him. And they told David; wherefore he came down into a rock, and abode in the wilderness of Maon. And when Saul heard that, he pursued after David in the wilderness of Maon."

1 Samuel 24:1: "And it came to pass, when Saul was returned from following the Philistines, that it was told him, saying, Behold, David is in the wilderness of Engedi."

1 Samuel 25:1: "And Samuel died; and all the Israelites were gathered together, and lamented him, and buried him in his house at Ramah. And David arose, and went down to the wilderness of Paran."

1 Samuel 25:4: "And David heard in the wilderness that Nabal did shear his sheep."

1 Samuel 25:14: "But one of the young men told Abigail, Nabal's wife, saying, Behold, David sent messengers out of the wilderness to salute our master; and he railed on them."

1 Samuel 25:21: "Now David had said, Surely in vain have I kept all that this fellow hath in the wilderness, so that nothing was missed of all that pertained unto him: and he hath requited me evil for good."

1 Samuel 26:2: "Then Saul arose, and went down to the wilderness of Ziph, having three thousand chosen men of Israel with him, to seek David in the wilderness of Ziph."

1 Samuel 26:3: "And Saul pitched in the hill of Hachilah, which is before Jeshimon, by the way. But David abode in the wilderness, and he saw that Saul came after him into the wilderness."

2 Samuel 2:24: "Joab also and Abishai pursued after Abner: and the sun went down when they were come to the hill of Ammah, that lieth before Giah by the way of the wilderness of Gibeon."

2 Samuel 15:23: "And all the country wept with a loud voice, and all the people passed over: the king also himself passed over the brook Kidron, and all the people passed over, toward the way of the wilderness."

2 Samuel 15:28: "See, I will tarry in the plain of the wilderness, until there come word from you to certify me."

2 Samuel 16:2: "And the king said unto Ziba, What meanest thou by these? And Ziba said, The asses be for the king's household to ride on; and the bread and summer fruit for the young men to eat; and the wine, that such as be faint in the wilderness may drink."

2 Samuel 17:16: "Now therefore send quickly, and tell David, saying, Lodge not this night in the plains of the wilderness, but speedily pass over; lest the king be swallowed up, and all the people



that are with him."

2 Samuel 17:29: "And honey, and butter, and sheep, and cheese of kine, for David, and for the people that were with him, to eat: for they said, The people is hungry, and weary, and thirsty, in the wilderness."

1 Kings 2:34: "So Benaiah the son of Jehoiada went up, and fell upon him, and slew him: and he was buried in his own house in the wilderness."

1 Kings 9:18: "And Baalath, and Tadmor in the wilderness, in the land,"

1 Kings 19:4: "But he himself went a day's journey into the wilderness, and came and sat down under a juniper tree: and he requested for himself that he might die; and said, It is enough; now, O LORD, take away my life; for I am not better than my fathers."

1 Kings 19:15: "And the LORD said unto him, Go, return on thy way to the wilderness of Damascus: and when thou comest, anoint Hazeael to be king over Syria:"

2 Kings 3:8: "And he said, Which way shall we go up? And he answered, The way through the wilderness of Edom."

1 Chronicles 5:9: "And eastward he inhabited unto the entering in of the wilderness from the river Euphrates: because their cattle were multiplied in the land of Gilead."

1 Chronicles 6:78: "And on the other side Jordan by Jericho, on the east side of Jordan, were given them out of the tribe of Reuben, Bezer in the wilderness with her suburbs, and Jahzah with her suburbs,"

1 Chronicles 12:8: "And of the Gadites there separated themselves unto David into the hold to the wilderness men of might, and men of war fit for the battle, that could handle shield and buckler, whose faces were like the faces of lions, and were as swift as the roes upon the mountains;"

1 Chronicles 21:29: "For the tabernacle of the LORD, which Moses made in the wilderness, and the altar of the burnt offering, were at that season in the high place at Gibeon."

2 Chronicles 1:3: "So Solomon, and all the congregation with him, went to the high place that was at Gibeon; for there was the tabernacle of the congregation of God, which Moses the servant of the LORD had made in the wilderness."

2 Chronicles 8:4: "And he built Tadmor in the wilderness, and all the store cities, which he built in Hamath."

2 Chronicles 20:16: "To morrow go ye down against them: behold, they come up by the cliff of Ziz; and ye shall find them at the end of the brook, before the wilderness of Jeruel."

2 Chronicles 20:20: "And they rose early in the morning, and went forth into the wilderness of Tekoa: and as they went forth, Jehoshaphat stood and said, Hear me, O Judah, and ye inhabitants of Jerusalem; Believe in the LORD your God, so shall ye be established; believe his prophets, so shall ye prosper."

2 Chronicles 20:24: "And when Judah came toward the watch tower in the wilderness, they looked unto the multitude, and, behold, they were dead bodies fallen to the earth, and none escaped."

2 Chronicles 24:9: "And they made a proclamation through Judah and Jerusalem, to bring in to the LORD the collection that Moses the servant of God laid upon Israel in the wilderness."

Nehemiah 9:19: "Yet thou in thy manifold mercies forsookest them not in the wilderness: the pillar of the cloud departed not from them by day, to lead them in the way; neither the pillar of fire by night, to shew them light, and the way wherein they should go."

Nehemiah 9:21: "Yea, forty years didst thou sustain them in the wilderness, so that they lacked nothing; their clothes waxed not old, and their feet swelled not."

Job 1:19: "And, behold, there came a great wind from the wilderness, and smote the four corners of the house, and it fell upon the young men, and they are dead; and I only am escaped alone to tell thee."

Job 12:24: "He taketh away the heart of the chief of the people of the earth, and causeth them to wander in a wilderness where there is no way."

Job 24:5: "Behold, as wild asses in the desert, go they forth to their work; rising betimes for a prey:

the wilderness yieldeth food for them and for their children."

Job 30:3: "For want and famine they were solitary; fleeing into the wilderness in former time desolate and waste."

Job 38:26: "To cause it to rain on the earth, where no man is; on the wilderness, wherein there is no man;"

Job 39:6: "Whose house I have made the wilderness, and the barren land his dwellings."

Psalms 29:8: "The voice of the LORD shaketh the wilderness; the LORD shaketh the wilderness of Kadesh."

Psalms 55:7: "Lo, then would I wander far off, and remain in the wilderness. Selah."

Psalms 65:12: "They drop upon the pastures of the wilderness: and the little hills rejoice on every side."

Psalms 68:7: "O God, when thou wentest forth before thy people, when thou didst march through the wilderness; Selah:"

Psalms 72:9: "They that dwell in the wilderness shall bow before him; and his enemies shall lick the dust."

Psalms 74:14: "Thou brakest the heads of leviathan in pieces, and gavest him to be meat to the people inhabiting the wilderness."

Psalms 78:15: "He clave the rocks in the wilderness, and gave them drink as out of the great depths."

Psalms 78:17: "And they sinned yet more against him by provoking the most High in the wilderness."

Psalms 78:19: "Yea, they spake against God; they said, Can God furnish a table in the wilderness?"

Psalms 78:40: "How oft did they provoke him in the wilderness, and grieve him in the desert!"

Psalms 78:52: "But made his own people to go forth like sheep, and guided them in the wilderness like a flock."

Psalms 95:8: "Harden not your heart, as in the provocation, and as in the day of temptation in the wilderness:"

Psalms 102:6: "I am like a pelican of the wilderness: I am like an owl of the desert."

Psalms 106:9: "He rebuked the Red sea also, and it was dried up: so he led them through the depths, as through the wilderness."

Psalms 106:14: "But lusted exceedingly in the wilderness, and tempted God in the desert."

Psalms 106:26: "Therefore he lifted up his hand against them, to overthrow them in the wilderness:"

Psalms 107:4: "They wandered in the wilderness in a solitary way; they found no city to dwell in."

Psalms 107:33: "He turneth rivers into a wilderness, and the watersprings into dry ground;"

Psalms 107:35: "He turneth the wilderness into a standing water, and dry ground into watersprings."

Psalms 107:40: "He poureth contempt upon princes, and causeth them to wander in the wilderness, where there is no way."

Psalms 136:16: "To him which led his people through the wilderness: for his mercy endureth for ever."

Proverbs 21:19: "It is better to dwell in the wilderness, than with a contentious and an angry woman."

Song of Solomon 3:6: "Who is this that cometh out of the wilderness like pillars of smoke, perfumed with myrrh and frankincense, with all powders of the merchant?"

Song of Solomon 8:5: "Who is this that cometh up from the wilderness, leaning upon her beloved? I raised thee up under the apple tree: there thy mother brought thee forth: there she brought thee forth that bare thee."

Isaiah 14:17: "That made the world as a wilderness, and destroyed the cities thereof; that opened not the house of his prisoners?"

Isaiah 16:1: "Send ye the lamb to the ruler of the land from Sela to the wilderness, unto the mount of the daughter of Zion."

Isaiah 16:8: "For the fields of Heshbon languish, and the vine of Sibmah: the lords of the heathen have broken down the principal plants thereof, they are come even unto Jazer, they wandered through the wilderness: her branches are stretched out, they are gone over the sea."

Isaiah 23:13: "Behold the land of the Chaldeans; this people was not, till the Assyrian founded it for them that dwell in the wilderness: they set up the towers thereof, they raised up the palaces thereof; and he brought it to ruin."

Isaiah 27:10: "Yet the defenced city shall be desolate, and the habitation forsaken, and left like a wilderness: there shall the calf feed, and there shall he lie down, and consume the branches thereof."

Isaiah 32:15: "Until the spirit be poured upon us from on high, and the wilderness be a fruitful field, and the fruitful field be counted for a forest."

Isaiah 32:16: "Then judgment shall dwell in the wilderness, and righteousness remain in the fruitful field."

Isaiah 33:9: "The earth mourneth and languisheth: Lebanon is ashamed and hewn down: Sharon is like a wilderness; and Bashan and Carmel shake off their fruits."

Isaiah 35:1: "The wilderness and the solitary place shall be glad for them; and the desert shall rejoice, and blossom as the rose."

Isaiah 35:6: "Then shall the lame man leap as an hart, and the tongue of the dumb sing: for in the wilderness shall waters break out, and streams in the desert."

Isaiah 40:3: "The voice of him that crieth in the wilderness, Prepare ye the way of the LORD, make straight in the desert a highway for our God."

Isaiah 41:18: "I will open rivers in high places, and fountains in the midst of the valleys: I will make the wilderness a pool of water, and the dry land springs of water."

Isaiah 41:19: "I will plant in the wilderness the cedar, the shittah tree, and the myrtle, and the oil tree; I will set in the desert the fir tree, and the pine, and the box tree together:"

Isaiah 42:11: "Let the wilderness and the cities thereof lift up their voice, the villages that Kedar doth inhabit: let the inhabitants of the rock sing, let them shout from the top of the mountains."

Isaiah 43:19: "Behold, I will do a new thing; now it shall spring forth; shall ye not know it? I will even make a way in the wilderness, and rivers in the desert."

Isaiah 43:20: "The beast of the field shall honour me, the dragons and the owls: because I give waters in the wilderness, and rivers in the desert, to give drink to my people, my chosen."

Isaiah 50:2: "Wherefore, when I came, was there no man? when I called, was there none to answer? Is my hand shortened at all, that it cannot redeem? or have I no power to deliver? behold, at my rebuke I dry up the sea, I make the rivers a wilderness: their fish stinketh, because there is no water, and dieth for thirst."

Isaiah 51:3: "For the LORD shall comfort Zion: he will comfort all her waste places; and he will make her wilderness like Eden, and her desert like the garden of the LORD; joy and gladness shall be found therein, thanksgiving, and the voice of melody."

Isaiah 63:13: "That led them through the deep, as an horse in the wilderness, that they should not stumble?"

Isaiah 64:10: "Thy holy cities are a wilderness, Zion is a wilderness, Jerusalem a desolation."

Jeremiah 2:2: "Go and cry in the ears of Jerusalem, saying, Thus saith the LORD; I remember thee, the kindness of thy youth, the love of thine espousals, when thou wentest after me in the wilderness, in a land that was not sown."

Jeremiah 2:6: "Neither said they, Where is the LORD that brought us up out of the land of Egypt, that led us through the wilderness, through a land of deserts and of pits, through a land of drought, and of the shadow of death, through a land that no man passed through, and where no man dwelt?"

Jeremiah 2:24: "A wild ass used to the wilderness, that snuffeth up the wind at her pleasure; in her occasion who can turn her away? all they that seek her will not weary themselves; in her month they shall find her."

Jeremiah 2:31: "O generation, see ye the word of the LORD. Have I been a wilderness unto Israel?"

a land of darkness? wherefore say my people, We are lords; we will come no more unto thee?"

Jeremiah 3:2: "Lift up thine eyes unto the high places, and see where thou hast not been lien with. In the ways hast thou sat for them, as the Arabian in the wilderness; and thou hast polluted the land with thy whoredoms and with thy wickedness."

Jeremiah 4:11: "At that time shall it be said to this people and to Jerusalem, A dry wind of the high places in the wilderness toward the daughter of my people, not to fan, nor to cleanse,"

Jeremiah 4:26: "I beheld, and, lo, the fruitful place was a wilderness, and all the cities thereof were broken down at the presence of the LORD, and by his fierce anger."

Jeremiah 9:2: "Oh that I had in the wilderness a lodging place of wayfaring men; that I might leave my people, and go from them! for they be all adulterers, an assembly of treacherous men."

Jeremiah 9:10: "For the mountains will I take up a weeping and wailing, and for the habitations of the wilderness a lamentation, because they are burned up, so that none can pass through them; neither can men hear the voice of the cattle; both the fowl of the heavens and the beast are fled; they are gone."

Jeremiah 9:12: "Who is the wise man, that may understand this? and who is he to whom the mouth of the LORD hath spoken, that he may declare it, for what the land perisheth and is burned up like a wilderness, that none passeth through?"

Jeremiah 9:26: "Egypt, and Judah, and Edom, and the children of Ammon, and Moab, and all that are in the utmost corners, that dwell in the wilderness: for all these nations are uncircumcised, and all the house of Israel are uncircumcised in the heart."

Jeremiah 12:10: "Many pastors have destroyed my vineyard, they have trodden my portion under foot, they have made my pleasant portion a desolate wilderness."

Jeremiah 12:12: "The spoilers are come upon all high places through the wilderness: for the sword of the LORD shall devour from the one end of the land even to the other end of the land: no flesh shall have peace."

Jeremiah 13:24: "Therefore will I scatter them as the stubble that passeth away by the wind of the wilderness."

Jeremiah 17:6: "For he shall be like the heath in the desert, and shall not see when good cometh; but shall inhabit the parched places in the wilderness, in a salt land and not inhabited."

Jeremiah 22:6: "For thus saith the LORD unto the king's house of Judah; Thou art Gilead unto me, and the head of Lebanon: yet surely I will make thee a wilderness, and cities which are not inhabited."

Jeremiah 23:10: "For the land is full of adulterers; for because of swearing the land mourneth; the pleasant places of the wilderness are dried up, and their course is evil, and their force is not right."

Jeremiah 31:2: "Thus saith the LORD, The people which were left of the sword found grace in the wilderness; even Israel, when I went to cause him to rest."

Jeremiah 48:6: "Flee, save your lives, and be like the heath in the wilderness."

Jeremiah 50:12: "Your mother shall be sore confounded; she that bare you shall be ashamed: behold, the hindermost of the nations shall be a wilderness, a dry land, and a desert."

Jeremiah 51:43: "Her cities are a desolation, a dry land, and a wilderness, a land wherein no man dwelleth, neither doth any son of man pass thereby."

Lamentations 4:3: "Even the sea monsters draw out the breast, they give suck to their young ones: the daughter of my people is become cruel, like the ostriches in the wilderness."

Lamentations 4:19: "Our persecutors are swifter than the eagles of the heaven: they pursued us upon the mountains, they laid wait for us in the wilderness."

Lamentations 5:9: "We gat our bread with the peril of our lives because of the sword of the wilderness."

Ezekiel 6:14: "So will I stretch out my hand upon them, and make the land desolate, yea, more desolate than the wilderness toward Diblath, in all their habitations: and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 19:13: "And now she is planted in the wilderness, in a dry and thirsty ground."

Ezekiel 20:10: "Wherefore I caused them to go forth out of the land of Egypt, and brought them into the wilderness."

Ezekiel 20:13: "But the house of Israel rebelled against me in the wilderness: they walked not in my statutes, and they despised my judgments, which if a man do, he shall even live in them; and my sabbaths they greatly polluted: then I said, I would pour out my fury upon them in the wilderness, to consume them."

Ezekiel 20:15: "Yet also I lifted up my hand unto them in the wilderness, that I would not bring them into the land which I had given them, flowing with milk and honey, which is the glory of all lands;"

Ezekiel 20:17: "Nevertheless mine eye spared them from destroying them, neither did I make an end of them in the wilderness."

Ezekiel 20:18: "But I said unto their children in the wilderness, Walk ye not in the statutes of your fathers, neither observe their judgments, nor defile yourselves with their idols:"

Ezekiel 20:21: "Notwithstanding the children rebelled against me: they walked not in my statutes, neither kept my judgments to do them, which if a man do, he shall even live in them; they polluted my sabbaths: then I said, I would pour out my fury upon them, to accomplish my anger against them in the wilderness."

Ezekiel 20:23: "I lifted up mine hand unto them also in the wilderness, that I would scatter them among the heathen, and disperse them through the countries;"

Ezekiel 20:35: "And I will bring you into the wilderness of the people, and there will I plead with you face to face."

Ezekiel 20:36: "Like as I pleaded with your fathers in the wilderness of the land of Egypt, so will I plead with you, saith the Lord GOD."

Ezekiel 23:42: "And a voice of a multitude being at ease was with her: and with the men of the common sort were brought Sabians from the wilderness, which put bracelets upon their hands, and beautiful crowns upon their heads."

Ezekiel 29:5: "And I will leave thee thrown into the wilderness, thee and all the fish of thy rivers: thou shalt fall upon the open fields; thou shalt not be brought together, nor gathered: I have given thee for meat to the beasts of the field and to the fowls of the heaven."

Ezekiel 34:25: "And I will make with them a covenant of peace, and will cause the evil beasts to cease out of the land: and they shall dwell safely in the wilderness, and sleep in the woods."

Hosea 2:3: "Lest I strip her naked, and set her as in the day that she was born, and make her as a wilderness, and set her like a dry land, and slay her with thirst."

Hosea 2:14: "Therefore, behold, I will allure her, and bring her into the wilderness, and speak comfortably unto her."

Hosea 9:10: "I found Israel like grapes in the wilderness; I saw your fathers as the firstripe in the fig tree at her first time: but they went to Baalpeor, and separated themselves unto that shame; and their abominations were according as they loved."

Hosea 13:5: "I did know thee in the wilderness, in the land of great drought."

Hosea 13:15: "Though he be fruitful among his brethren, an east wind shall come, the wind of the LORD shall come up from the wilderness, and his spring shall become dry, and his fountain shall be dried up: he shall spoil the treasure of all pleasant vessels."

Joel 1:19: "O LORD, to thee will I cry: for the fire hath devoured the pastures of the wilderness, and the flame hath burned all the trees of the field."

Joel 1:20: "The beasts of the field cry also unto thee: for the rivers of waters are dried up, and the fire hath devoured the pastures of the wilderness."

Joel 2:3: "A fire devoureth before them; and behind them a flame burneth: the land is as the garden of Eden before them, and behind them a desolate wilderness; yea, and nothing shall escape them."

Joel 2:22: "Be not afraid, ye beasts of the field: for the pastures of the wilderness do spring, for the

tree beareth her fruit, the fig tree and the vine do yield their strength."

Joel 3:19: "Egypt shall be a desolation, and Edom shall be a desolate wilderness, for the violence against the children of Judah, because they have shed innocent blood in their land."

Amos 2:10: "Also I brought you up from the land of Egypt, and led you forty years through the wilderness, to possess the land of the Amorite."

Amos 5:25: "Have ye offered unto me sacrifices and offerings in the wilderness forty years, O house of Israel?"

Amos 6:14: "But, behold, I will raise up against you a nation, O house of Israel, saith the LORD the God of hosts; and they shall afflict you from the entering in of Hemath unto the river of the wilderness."

Zephaniah 2:13: "And he will stretch out his hand against the north, and destroy Assyria; and will make Nineveh a desolation, and dry like a wilderness."

Malachi 1:3: "And I hated Esau, and laid his mountains and his heritage waste for the dragons of the wilderness."

Matthew 3:1: "In those days came John the Baptist, preaching in the wilderness of Judaea,"

Matthew 3:3: "For this is he that was spoken of by the prophet Esaias, saying, The voice of one crying in the wilderness, Prepare ye the way of the Lord, make his paths straight."

Matthew 4:1: "Then was Jesus led up of the spirit into the wilderness to be tempted of the devil."

Matthew 11:7: "And as they departed, Jesus began to say unto the multitudes concerning John, What went ye out into the wilderness to see? A reed shaken with the wind?"

Matthew 15:33: "And his disciples say unto him, Whence should we have so much bread in the wilderness, as to fill so great a multitude?"

Mark 1:3: "The voice of one crying in the wilderness, Prepare ye the way of the Lord, make his paths straight."

Mark 1:4: "John did baptize in the wilderness, and preach the baptism of repentance for the remission of sins."

Mark 1:12: "And immediately the spirit driveth him into the wilderness."

Mark 1:13: "And he was there in the wilderness forty days, tempted of Satan; and was with the wild beasts; and the angels ministered unto him."

Mark 8:4: "And his disciples answered him, From whence can a man satisfy these men with bread here in the wilderness?"

Luke 3:2: "Annas and Caiaphas being the high priests, the word of God came unto John the son of Zacharias in the wilderness."

Luke 3:4: "As it is written in the book of the words of Esaias the prophet, saying, The voice of one crying in the wilderness, Prepare ye the way of the Lord, make his paths straight."

Luke 4:1: "And Jesus being full of the Holy Ghost returned from Jordan, and was led by the Spirit into the wilderness,"

Luke 5:16: "And he withdrew himself into the wilderness, and prayed."

Luke 7:24: "And when the messengers of John were departed, he began to speak unto the people concerning John, What went ye out into the wilderness for to see? A reed shaken with the wind?"

Luke 8:29: "(For he had commanded the unclean spirit to come out of the man. For oftentimes it had caught him: and he was kept bound with chains and in fetters; and he brake the bands, and was driven of the devil into the wilderness.)"

Luke 15:4: "What man of you, having an hundred sheep, if he lose one of them, doth not leave the ninety and nine in the wilderness, and go after that which is lost, until he find it?"

John 1:23: "He said, I am the voice of one crying in the wilderness, Make straight the way of the Lord, as said the prophet Esaias."

John 3:14: "And as Moses lifted up the serpent in the wilderness, even so must the Son of man be lifted up:"

John 6:49: "Your fathers did eat manna in the wilderness, and are dead."

John 11:54: "Jesus therefore walked no more openly among the Jews; but went thence unto a country near to the wilderness, into a city called Ephraim, and there continued with his disciples."

Acts 7:30: "And when forty years were expired, there appeared to him in the wilderness of mount Sina an angel of the Lord in a flame of fire in a bush."

Acts 7:36: "He brought them out, after that he had shewed wonders and signs in the land of Egypt, and in the Red sea, and in the wilderness forty years."

Acts 7:38: "This is he, that was in the church in the wilderness with the angel which spake to him in the mount Sina, and with our fathers: who received the lively oracles to give unto us:"

Acts 7:42: "Then God turned, and gave them up to worship the host of heaven; as it is written in the book of the prophets, O ye house of Israel, have ye offered to me slain beasts and sacrifices by the space of forty years in the wilderness?"

Acts 7:44: "Our fathers had the tabernacle of witness in the wilderness, as he had appointed, speaking unto Moses, that he should make it according to the fashion that he had seen."

Acts 13:18: "And about the time of forty years suffered he their manners in the wilderness."

Acts 21:38: "Art not thou that Egyptian, which before these days madest an uproar, and leddest out into the wilderness four thousand men that were murderers?"

1 Corinthians 10:5: "But with many of them God was not well pleased: for they were overthrown in the wilderness."

2 Corinthians 11:26: "In journeyings often, in perils of waters, in perils of robbers, in perils by mine own countrymen, in perils by the heathen, in perils in the city, in perils in the wilderness, in perils in the sea, in perils among false brethren;"

Hebrews 3:8: "Harden not your hearts, as in the provocation, in the day of temptation in the wilderness:"

Hebrews 3:17: "But with whom was he grieved forty years? was it not with them that had sinned, whose carcases fell in the wilderness?"

Revelation 12:6: "And the woman fled into the wilderness, where she hath a place prepared of God, that they should feed her there a thousand two hundred and threescore days."

Revelation 12:14: "And to the woman were given two wings of a great eagle, that she might fly into the wilderness, into her place, where she is nourished for a time, and times, and half a time, from the face of the serpent."

Revelation 17:3: "So he carried me away in the spirit into the wilderness: and I saw a woman sit upon a scarlet coloured beast, full of names of blasphemy, having seven heads and ten horns."

## **WILES**

Occurrences: 2

Numbers 25:18: "For they vex you with their wiles, wherewith they have beguiled you in the matter of Peor, and in the matter of Cozbi, the daughter of a prince of Midian, their sister, which was slain in the day of the plague for Peor's sake."

Ephesians 6:11: "Put on the whole armour of God, that ye may be able to stand against the wiles of the devil."

## **WILFULLY**

Occurrences: 1

Hebrews 10:26: "For if we sin wilfully after that we have received the knowledge of the truth, there remaineth no more sacrifice for sins,"

## **WILILY**

Occurrences: 1

Joshua 9:4: "They did work wilily, and went and made as if they had been ambassadors, and took old sacks upon their asses, and wine bottles, old, and rent, and bound up;"

## **WILL**

Occurrences: 2855

Genesis 2:18: "And the LORD God said, It is not good that the man should be alone; I will make him an help meet for him."

Genesis 3:15: "And I will put enmity between thee and the woman, and between thy seed and her seed; it shall bruise thy head, and thou shalt bruise his heel."

Genesis 3:16: "Unto the woman he said, I will greatly multiply thy sorrow and thy conception; in sorrow thou shalt bring forth children; and thy desire shall be to thy husband, and he shall rule over thee."

Genesis 6:7: "And the LORD said, I will destroy man whom I have created from the face of the earth; both man, and beast, and the creeping thing, and the fowls of the air; for it repenteth me that I have made them."

Genesis 6:13: "And God said unto Noah, The end of all flesh is come before me; for the earth is filled with violence through them; and, behold, I will destroy them with the earth."

Genesis 6:18: "But with thee will I establish my covenant; and thou shalt come into the ark, thou, and thy sons, and thy wife, and thy sons' wives with thee."

Genesis 7:4: "For yet seven days, and I will cause it to rain upon the earth forty days and forty nights; and every living substance that I have made will I destroy from off the face of the earth."

Genesis 8:21: "And the LORD smelled a sweet savour; and the LORD said in his heart, I will not again curse the ground any more for man's sake; for the imagination of man's heart is evil from his youth; neither will I again smite any more every thing living, as I have done."

Genesis 9:5: "And surely your blood of your lives will I require; at the hand of every beast will I require it, and at the hand of man; at the hand of every man's brother will I require the life of man."

Genesis 9:11: "And I will establish my covenant with you, neither shall all flesh be cut off any more by the waters of a flood; neither shall there any more be a flood to destroy the earth."

Genesis 9:15: "And I will remember my covenant, which is between me and you and every living creature of all flesh; and the waters shall no more become a flood to destroy all flesh."

Genesis 9:16: "And the bow shall be in the cloud; and I will look upon it, that I may remember the everlasting covenant between God and every living creature of all flesh that is upon the earth."

Genesis 11:6: "And the LORD said, Behold, the people is one, and they have all one language; and this they begin to do: and now nothing will be restrained from them, which they have imagined to do."

Genesis 12:1: "Now the LORD had said unto Abram, Get thee out of thy country, and from thy kindred, and from thy father's house, unto a land that I will shew thee:"

Genesis 12:2: "And I will make of thee a great nation, and I will bless thee, and make thy name great; and thou shalt be a blessing:"

Genesis 12:3: "And I will bless them that bless thee, and curse him that curseth thee: and in thee shall all families of the earth be blessed."

Genesis 12:7: "And the LORD appeared unto Abram, and said, Unto thy seed will I give this land: and there builded he an altar unto the LORD, who appeared unto him."

Genesis 12:12: "Therefore it shall come to pass, when the Egyptians shall see thee, that they shall say, This is his wife: and they will kill me, but they will save thee alive."

Genesis 13:9: "Is not the whole land before thee? separate thyself, I pray thee, from me: if thou wilt take the left hand, then I will go to the right; or if thou depart to the right hand, then I will go to the left."

Genesis 13:15: "For all the land which thou seest, to thee will I give it, and to thy seed for ever."

Genesis 13:16: "And I will make thy seed as the dust of the earth: so that if a man can number the



dust of the earth, then shall thy seed also be numbered."

Genesis 13:17: "Arise, walk through the land in the length of it and in the breadth of it; for I will give it unto thee."

Genesis 14:23: "That I will not take from a thread even to a shoelatchet, and that I will not take any thing that is thine, lest thou shouldest say, I have made Abram rich:"

Genesis 15:14: "And also that nation, whom they shall serve, will I judge: and afterward shall they come out with great substance."

Genesis 16:10: "And the angel of the LORD said unto her, I will multiply thy seed exceedingly, that it shall not be numbered for multitude."

Genesis 16:12: "And he will be a wild man; his hand will be against every man, and every man's hand against him; and he shall dwell in the presence of all his brethren."

Genesis 17:2: "And I will make my covenant between me and thee, and will multiply thee exceedingly."

Genesis 17:6: "And I will make thee exceeding fruitful, and I will make nations of thee, and kings shall come out of thee."

Genesis 17:7: "And I will establish my covenant between me and thee and thy seed after thee in their generations for an everlasting covenant, to be a God unto thee, and to thy seed after thee."

Genesis 17:8: "And I will give unto thee, and to thy seed after thee, the land wherein thou art a stranger, all the land of Canaan, for an everlasting possession; and I will be their God."

Genesis 17:16: "And I will bless her, and give thee a son also of her: yea, I will bless her, and she shall be a mother of nations; kings of people shall be of her."

Genesis 17:19: "And God said, Sarah thy wife shall bear thee a son indeed; and thou shalt call his name Isaac: and I will establish my covenant with him for an everlasting covenant, and with his seed after him."

Genesis 17:20: "And as for Ishmael, I have heard thee: Behold, I have blessed him, and will make him fruitful, and will multiply him exceedingly; twelve princes shall he beget, and I will make him a great nation."

Genesis 17:21: "But my covenant will I establish with Isaac, which Sarah shall bear unto thee at this set time in the next year."

Genesis 18:5: "And I will fetch a morsel of bread, and comfort ye your hearts; after that ye shall pass on: for therefore are ye come to your servant. And they said, So do, as thou hast said."

Genesis 18:10: "And he said, I will certainly return unto thee according to the time of life; and, lo, Sarah thy wife shall have a son. And Sarah heard it in the tent door, which was behind him."

Genesis 18:14: "Is any thing too hard for the LORD? At the time appointed I will return unto thee, according to the time of life, and Sarah shall have a son."

Genesis 18:19: "For I know him, that he will command his children and his household after him, and they shall keep the way of the LORD, to do justice and judgment; that the LORD may bring upon Abraham that which he hath spoken of him."

Genesis 18:21: "I will go down now, and see whether they have done altogether according to the cry of it, which is come unto me; and if not, I will know."

Genesis 18:26: "And the LORD said, If I find in Sodom fifty righteous within the city, then I will spare all the place for their sakes."

Genesis 18:28: "Peradventure there shall lack five of the fifty righteous: wilt thou destroy all the city for lack of five? And he said, If I find there forty and five, I will not destroy it."

Genesis 18:29: "And he spake unto him yet again, and said, Peradventure there shall be forty found there. And he said, I will not do it for forty's sake."

Genesis 18:30: "And he said unto him, Oh let not the LORD be angry, and I will speak: Peradventure there shall thirty be found there. And he said, I will not do it, if I find thirty there."

Genesis 18:31: "And he said, Behold now, I have taken upon me to speak unto the LORD:

Peradventure there shall be twenty found there. And he said, I will not destroy it for twenty's sake."

Genesis 18:32: "And he said, Oh let not the LORD be angry, and I will speak yet but this once: Peradventure ten shall be found there. And he said, I will not destroy it for ten's sake."

Genesis 19:2: "And he said, Behold now, my lords, turn in, I pray you, into your servant's house, and tarry all night, and wash your feet, and ye shall rise up early, and go on your ways. And they said, Nay; but we will abide in the street all night."

Genesis 19:9: "And they said, Stand back. And they said again, This one fellow came in to sojourn, and he will needs be a judge: now will we deal worse with thee, than with them. And they pressed sore upon the man, even Lot, and came near to break the door."

Genesis 19:13: "For we will destroy this place, because the cry of them is waxen great before the face of the LORD; and the LORD hath sent us to destroy it."

Genesis 19:14: "And Lot went out, and spake unto his sons in law, which married his daughters, and said, Up, get you out of this place; for the LORD will destroy this city. But he seemed as one that mocked unto his sons in law."

Genesis 19:21: "And he said unto him, See, I have accepted thee concerning this thing also, that I will not overthrow this city, for the which thou hast spoken."

Genesis 19:32: "Come, let us make our father drink wine, and we will lie with him, that we may preserve seed of our father."

Genesis 20:11: "And Abraham said, Because I thought, Surely the fear of God is not in this place; and they will slay me for my wife's sake."

Genesis 21:6: "And Sarah said, God hath made me to laugh, so that all that hear will laugh with me."

Genesis 21:13: "And also of the son of the bondwoman will I make a nation, because he is thy seed."

Genesis 21:18: "Arise, lift up the lad, and hold him in thine hand; for I will make him a great nation."

Genesis 21:24: "And Abraham said, I will swear."

Genesis 22:2: "And he said, Take now thy son, thine only son Isaac, whom thou lovest, and get thee into the land of Moriah; and offer him there for a burnt offering upon one of the mountains which I will tell thee of."

Genesis 22:5: "And Abraham said unto his young men, Abide ye here with the ass; and I and the lad will go yonder and worship, and come again to you."

Genesis 22:8: "And Abraham said, My son, God will provide himself a lamb for a burnt offering: so they went both of them together."

Genesis 22:17: "That in blessing I will bless thee, and in multiplying I will multiply thy seed as the stars of the heaven, and as the sand which is upon the sea shore; and thy seed shall possess the gate of his enemies;"

Genesis 23:13: "And he spake unto Ephron in the audience of the people of the land, saying, But if thou wilt give it, I pray thee, hear me: I will give thee money for the field; take it of me, and I will bury my dead there."

Genesis 24:3: "And I will make thee swear by the LORD, the God of heaven, and the God of the earth, that thou shalt not take a wife unto my son of the daughters of the Canaanites, among whom I dwell:"

Genesis 24:5: "And the servant said unto him, Peradventure the woman will not be willing to follow me unto this land: must I needs bring thy son again unto the land from whence thou camest?"

Genesis 24:7: "The LORD God of heaven, which took me from my father's house, and from the land of my kindred, and which spake unto me, and that sware unto me, saying, Unto thy seed will I give this land; he shall send his angel before thee, and thou shalt take a wife unto my son from thence."

Genesis 24:8: "And if the woman will not be willing to follow thee, then thou shalt be clear from this my oath: only bring not my son thither again."

Genesis 24:14: "And let it come to pass, that the damsel to whom I shall say, Let down thy pitcher, I pray thee, that I may drink; and she shall say, Drink, and I will give thy camels drink also: let the same be she that thou hast appointed for thy servant Isaac; and thereby shall I know that thou hast shewed kindness unto my master."

Genesis 24:19: "And when she had done giving him drink, she said, I will draw water for thy camels also, until they have done drinking."

Genesis 24:33: "And there was set meat before him to eat: but he said, I will not eat, until I have told mine errand. And he said, Speak on."

Genesis 24:39: "And I said unto my master, Peradventure the woman will not follow me."

Genesis 24:40: "And he said unto me, The LORD, before whom I walk, will send his angel with thee, and prosper thy way; and thou shalt take a wife for my son of my kindred, and of my father's house:"

Genesis 24:44: "And she say to me, Both drink thou, and I will also draw for thy camels: let the same be the woman whom the LORD hath appointed out for my master's son."

Genesis 24:46: "And she made haste, and let down her pitcher from her shoulder, and said, Drink, and I will give thy camels drink also: so I drank, and she made the camels drink also."

Genesis 24:49: "And now if ye will deal kindly and truly with my master, tell me: and if not, tell me; that I may turn to the right hand, or to the left."

Genesis 24:57: "And they said, We will call the damsel, and enquire at her mouth."

Genesis 24:58: "And they called Rebekah, and said unto her, Wilt thou go with this man? And she said, I will go."

Genesis 26:3: "Sojourn in this land, and I will be with thee, and will bless thee; for unto thee, and unto thy seed, I will give all these countries, and I will perform the oath which I sware unto Abraham thy father;"

Genesis 26:4: "And I will make thy seed to multiply as the stars of heaven, and will give unto thy seed all these countries; and in thy seed shall all the nations of the earth be blessed;"

Genesis 26:24: "And the LORD appeared unto him the same night, and said, I am the God of Abraham thy father: fear not, for I am with thee, and will bless thee, and multiply thy seed for my servant Abraham's sake."

Genesis 27:9: "Go now to the flock, and fetch me from thence two good kids of the goats; and I will make them savoury meat for thy father, such as he loveth:"

Genesis 27:12: "My father peradventure will feel me, and I shall seem to him as a deceiver; and I shall bring a curse upon me, and not a blessing."

Genesis 27:25: "And he said, Bring it near to me, and I will eat of my son's venison, that my soul may bless thee. And he brought it near to him, and he did eat: and he brought him wine and he drank."

Genesis 27:41: "And Esau hated Jacob because of the blessing wherewith his father blessed him: and Esau said in his heart, The days of mourning for my father are at hand; then will I slay my brother Jacob."

Genesis 27:45: "Until thy brother's anger turn away from thee, and he forget that which thou hast done to him: then I will send, and fetch thee from thence: why should I be deprived also of you both in one day?"

Genesis 28:13: "And, behold, the LORD stood above it, and said, I am the LORD God of Abraham thy father, and the God of Isaac: the land whereon thou liest, to thee will I give it, and to thy seed;"

Genesis 28:15: "And, behold, I am with thee, and will keep thee in all places whither thou goest, and will bring thee again into this land; for I will not leave thee, until I have done that which I have spoken to thee of."

Genesis 28:20: "And Jacob vowed a vow, saying, If God will be with me, and will keep me in this way that I go, and will give me bread to eat, and raiment to put on,"

Genesis 28:22: "And this stone, which I have set for a pillar, shall be God's house: and of all that

thou shalt give me I will surely give the tenth unto thee."

Genesis 29:18: "And Jacob loved Rachel; and said, I will serve thee seven years for Rachel thy younger daughter."

Genesis 29:27: "Fulfil her week, and we will give thee this also for the service which thou shalt serve with me yet seven other years."

Genesis 29:32: "And Leah conceived, and bare a son, and she called his name Reuben: for she said, Surely the LORD hath looked upon my affliction; now therefore my husband will love me."

Genesis 29:34: "And she conceived again, and bare a son; and said, Now this time will my husband be joined unto me, because I have born him three sons: therefore was his name called Levi."

Genesis 29:35: "And she conceived again, and bare a son: and she said, Now will I praise the LORD: therefore she called his name Judah; and left bearing."

Genesis 30:13: "And Leah said, Happy am I, for the daughters will call me blessed: and she called his name Asher."

Genesis 30:20: "And Leah said, God hath endued me with a good dowry; now will my husband dwell with me, because I have born him six sons: and she called his name Zebulun."

Genesis 30:28: "And he said, Appoint me thy wages, and I will give it."

Genesis 30:31: "And he said, What shall I give thee? And Jacob said, Thou shalt not give me any thing: if thou wilt do this thing for me, I will again feed and keep thy flock."

Genesis 30:32: "I will pass through all thy flock to day, removing from thence all the speckled and spotted cattle, and all the brown cattle among the sheep, and the spotted and speckled among the goats: and of such shall be my hire."

Genesis 31:3: "And the LORD said unto Jacob, Return unto the land of thy fathers, and to thy kindred; and I will be with thee."

Genesis 31:52: "This heap be witness, and this pillar be witness, that I will not pass over this heap to thee, and that thou shalt not pass over this heap and this pillar unto me, for harm."

Genesis 32:9: "And Jacob said, O God of my father Abraham, and God of my father Isaac, the LORD which saidst unto me, Return unto thy country, and to thy kindred, and I will deal well with thee:"

Genesis 32:11: "Deliver me, I pray thee, from the hand of my brother, from the hand of Esau: for I fear him, lest he will come and smite me, and the mother with the children."

Genesis 32:12: "And thou saidst, I will surely do thee good, and make thy seed as the sand of the sea, which cannot be numbered for multitude."

Genesis 32:20: "And say ye moreover, Behold, thy servant Jacob is behind us. For he said, I will appease him with the present that goeth before me, and afterward I will see his face; peradventure he will accept of me."

Genesis 32:26: "And he said, Let me go, for the day breaketh. And he said, I will not let thee go, except thou bless me."

Genesis 33:12: "And he said, Let us take our journey, and let us go, and I will go before thee."

Genesis 33:13: "And he said unto him, My lord knoweth that the children are tender, and the flocks and herds with young are with me: and if men should overdrive them one day, all the flock will die."

Genesis 33:14: "Let my lord, I pray thee, pass over before his servant: and I will lead on softly, according as the cattle that goeth before me and the children be able to endure, until I come unto my lord unto Seir."

Genesis 34:11: "And Shechem said unto her father and unto her brethren, Let me find grace in your eyes, and what ye shall say unto me I will give."

Genesis 34:12: "Ask me never so much dowry and gift, and I will give according as ye shall say unto me: but give me the damsel to wife."

Genesis 34:15: "But in this will we consent unto you: If ye will be as we be, that every male of you be circumcised;"

Genesis 34:16: "Then will we give our daughters unto you, and we will take your daughters to us, and we will dwell with you, and we will become one people."

Genesis 34:17: "But if ye will not hearken unto us, to be circumcised; then will we take our daughter, and we will be gone."

Genesis 34:22: "Only herein will the men consent unto us for to dwell with us, to be one people, if every male among us be circumcised, as they are circumcised."

Genesis 34:23: "Shall not their cattle and their substance and every beast of their's be our's? only let us consent unto them, and they will dwell with us."

Genesis 35:3: "And let us arise, and go up to Bethel; and I will make there an altar unto God, who answered me in the day of my distress, and was with me in the way which I went."

Genesis 35:12: "And the land which I gave Abraham and Isaac, to thee I will give it, and to thy seed after thee will I give the land."

Genesis 37:13: "And Israel said unto Joseph, Do not thy brethren feed the flock in Shechem? come, and I will send thee unto them. And he said to him, Here am I."

Genesis 37:20: "Come now therefore, and let us slay him, and cast him into some pit, and we will say, Some evil beast hath devoured him: and we shall see what will become of his dreams."

Genesis 37:35: "And all his sons and all his daughters rose up to comfort him; but he refused to be comforted; and he said, For I will go down into the grave unto my son mourning. Thus his father wept for him."

Genesis 38:17: "And he said, I will send thee a kid from the flock. And she said, Wilt thou give me a pledge, till thou send it?"

Genesis 41:32: "And for that the dream was doubled unto Pharaoh twice; it is because the thing is established by God, and God will shortly bring it to pass."

Genesis 41:40: "Thou shalt be over my house, and according unto thy word shall all my people be ruled: only in the throne will I be greater than thou."

Genesis 42:34: "And bring your youngest brother unto me: then shall I know that ye are no spies, but that ye are true men: so will I deliver you your brother, and ye shall traffick in the land."

Genesis 42:36: "And Jacob their father said unto them, Me have ye bereaved of my children: Joseph is not, and Simeon is not, and ye will take Benjamin away: all these things are against me."

Genesis 42:37: "And Reuben spake unto his father, saying, Slay my two sons, if I bring him not to thee: deliver him into my hand, and I will bring him to thee again."

Genesis 43:4: "If thou wilt send our brother with us, we will go down and buy thee food:"

Genesis 43:5: "But if thou wilt not send him, we will not go down: for the man said unto us, Ye shall not see my face, except your brother be with you."

Genesis 43:8: "And Judah said unto Israel his father, Send the lad with me, and we will arise and go; that we may live, and not die, both we, and thou, and also our little ones."

Genesis 43:9: "I will be surety for him; of my hand shalt thou require him: if I bring him not unto thee, and set him before thee, then let me bear the blame for ever:"

Genesis 44:9: "With whomsoever of thy servants it be found, both let him die, and we also will be my lord's bondmen."

Genesis 44:26: "And we said, We cannot go down: if our youngest brother be with us, then will we go down: for we may not see the man's face, except our youngest brother be with us."

Genesis 44:31: "It shall come to pass, when he seeth that the lad is not with us, that he will die: and thy servants shall bring down the gray hairs of thy servant our father with sorrow to the grave."

Genesis 45:11: "And there will I nourish thee; for yet there are five years of famine; lest thou, and thy household, and all that thou hast, come to poverty."

Genesis 45:18: "And take your father and your households, and come unto me: and I will give you the good of the land of Egypt, and ye shall eat the fat of the land."

Genesis 45:28: "And Israel said, It is enough; Joseph my son is yet alive: I will go and see him before I die."

Genesis 46:3: "And he said, I am God, the God of thy father: fear not to go down into Egypt; for I will there make of thee a great nation:"

Genesis 46:4: "I will go down with thee into Egypt; and I will also surely bring thee up again: and Joseph shall put his hand upon thine eyes."

Genesis 46:31: "And Joseph said unto his brethren, and unto his father's house, I will go up, and shew Pharaoh, and say unto him, My brethren, and my father's house, which were in the land of Canaan, are come unto me;"

Genesis 47:16: "And Joseph said, Give your cattle; and I will give you for your cattle, if money fail."

Genesis 47:18: "When that year was ended, they came unto him the second year, and said unto him, We will not hide it from my lord, how that our money is spent; my lord also hath our herds of cattle; there is not ought left in the sight of my lord, but our bodies, and our lands:"

Genesis 47:19: "Wherefore shall we die before thine eyes, both we and our land? buy us and our land for bread, and we and our land will be servants unto Pharaoh: and give us seed, that we may live, and not die, that the land be not desolate."

Genesis 47:25: "And they said, Thou hast saved our lives: let us find grace in the sight of my lord, and we will be Pharaoh's servants."

Genesis 47:30: "But I will lie with my fathers, and thou shalt carry me out of Egypt, and bury me in their buryingplace. And he said, I will do as thou hast said."

Genesis 48:4: "And said unto me, Behold, I will make thee fruitful, and multiply thee, and I will make of thee a multitude of people; and will give this land to thy seed after thee for an everlasting possession."

Genesis 48:9: "And Joseph said unto his father, They are my sons, whom God hath given me in this place. And he said, Bring them, I pray thee, unto me, and I will bless them."

Genesis 49:7: "Cursed be their anger, for it was fierce; and their wrath, for it was cruel: I will divide them in Jacob, and scatter them in Israel."

Genesis 50:5: "My father made me swear, saying, Lo, I die: in my grave which I have digged for me in the land of Canaan, there shalt thou bury me. Now therefore let me go up, I pray thee, and bury my father, and I will come again."

Genesis 50:15: "And when Joseph's brethren saw that their father was dead, they said, Joseph will peradventure hate us, and will certainly requite us all the evil which we did unto him."

Genesis 50:21: "Now therefore fear ye not: I will nourish you, and your little ones. And he comforted them, and spake kindly unto them."

Genesis 50:24: "And Joseph said unto his brethren, I die: and God will surely visit you, and bring you out of this land unto the land which he sware to Abraham, to Isaac, and to Jacob."

Genesis 50:25: "And Joseph took an oath of the children of Israel, saying, God will surely visit you, and ye shall carry up my bones from hence."

Exodus 2:9: "And Pharaoh's daughter said unto her, Take this child away, and nurse it for me, and I will give thee thy wages. And the women took the child, and nursed it."

Exodus 3:3: "And Moses said, I will now turn aside, and see this great sight, why the bush is not burnt."

Exodus 3:10: "Come now therefore, and I will send thee unto Pharaoh, that thou mayest bring forth my people the children of Israel out of Egypt."

Exodus 3:12: "And he said, Certainly I will be with thee; and this shall be a token unto thee, that I have sent thee: When thou hast brought forth the people out of Egypt, ye shall serve God upon this mountain."

Exodus 3:17: "And I have said, I will bring you up out of the affliction of Egypt unto the land of the Canaanites, and the Hittites, and the Amorites, and the Perizzites, and the Hivites, and the Jebusites, unto a land flowing with milk and honey."

Exodus 3:19: "And I am sure that the king of Egypt will not let you go, no, not by a mighty hand."

Exodus 3:20: "And I will stretch out my hand, and smite Egypt with all my wonders which I will do in the midst thereof: and after that he will let you go."

Exodus 3:21: "And I will give this people favour in the sight of the Egyptians: and it shall come to pass, that, when ye go, ye shall not go empty."

Exodus 4:1: "And Moses answered and said, But, behold, they will not believe me, nor hearken unto my voice: for they will say, The LORD hath not appeared unto thee."

Exodus 4:8: "And it shall come to pass, if they will not believe thee, neither hearken to the voice of the first sign, that they will believe the voice of the latter sign."

Exodus 4:9: "And it shall come to pass, if they will not believe also these two signs, neither hearken unto thy voice, that thou shalt take of the water of the river, and pour it upon the dry land: and the water which thou takest out of the river shall become blood upon the dry land."

Exodus 4:12: "Now therefore go, and I will be with thy mouth, and teach thee what thou shalt say."

Exodus 4:14: "And the anger of the LORD was kindled against Moses, and he said, Is not Aaron the Levite thy brother? I know that he can speak well. And also, behold, he cometh forth to meet thee: and when he seeth thee, he will be glad in his heart."

Exodus 4:15: "And thou shalt speak unto him, and put words in his mouth: and I will be with thy mouth, and with his mouth, and will teach you what ye shall do."

Exodus 4:21: "And the LORD said unto Moses, When thou goest to return into Egypt, see that thou do all those wonders before Pharaoh, which I have put in thine hand: but I will harden his heart, that he shall not let the people go."

Exodus 4:23: "And I say unto thee, Let my son go, that he may serve me: and if thou refuse to let him go, behold, I will slay thy son, even thy firstborn."

Exodus 5:2: "And Pharaoh said, Who is the LORD, that I should obey his voice to let Israel go? I know not the LORD, neither will I let Israel go."

Exodus 5:10: "And the taskmasters of the people went out, and their officers, and they spake to the people, saying, Thus saith Pharaoh, I will not give you straw."

Exodus 6:1: "Then the LORD said unto Moses, Now shalt thou see what I will do to Pharaoh: for with a strong hand shall he let them go, and with a strong hand shall he drive them out of his land."

Exodus 6:6: "Wherefore say unto the children of Israel, I am the LORD, and I will bring you out from under the burdens of the Egyptians, and I will rid you out of their bondage, and I will redeem you with a stretched out arm, and with great judgments:"

Exodus 6:7: "And I will take you to me for a people, and I will be to you a God: and ye shall know that I am the LORD your God, which bringeth you out from under the burdens of the Egyptians."

Exodus 6:8: "And I will bring you in unto the land, concerning the which I did swear to give it to Abraham, to Isaac, and to Jacob; and I will give it you for an heritage: I am the LORD."

Exodus 7:3: "And I will harden Pharaoh's heart, and multiply my signs and my wonders in the land of Egypt."

Exodus 7:17: "Thus saith the LORD, In this thou shalt know that I am the LORD: behold, I will smite with the rod that is in mine hand upon the waters which are in the river, and they shall be turned to blood."

Exodus 8:2: "And if thou refuse to let them go, behold, I will smite all thy borders with frogs:"

Exodus 8:8: "Then Pharaoh called for Moses and Aaron, and said, Intreat the LORD, that he may take away the frogs from me, and from my people; and I will let the people go, that they may do sacrifice unto the LORD."

Exodus 8:21: "Else, if thou wilt not let my people go, behold, I will send swarms of flies upon thee, and upon thy servants, and upon thy people, and into thy houses: and the houses of the Egyptians shall be full of swarms of flies, and also the ground whereon they are."

Exodus 8:22: "And I will sever in that day the land of Goshen, in which my people dwell, that no swarms of flies shall be there; to the end thou mayest know that I am the LORD in the midst of the earth."

Exodus 8:23: "And I will put a division between my people and thy people: to morrow shall this sign be."

Exodus 8:26: "And Moses said, It is not meet so to do; for we shall sacrifice the abomination of the Egyptians to the LORD our God: lo, shall we sacrifice the abomination of the Egyptians before their eyes, and will they not stone us?"

Exodus 8:27: "We will go three days' journey into the wilderness, and sacrifice to the LORD our God, as he shall command us."

Exodus 8:28: "And Pharaoh said, I will let you go, that ye may sacrifice to the LORD your God in the wilderness; only ye shall not go very far away: intreat for me."

Exodus 8:29: "And Moses said, Behold, I go out from thee, and I will intreat the LORD that the swarms of flies may depart from Pharaoh, from his servants, and from his people, to morrow: but let not Pharaoh deal deceitfully any more in not letting the people go to sacrifice to the LORD."

Exodus 9:14: "For I will at this time send all my plagues upon thine heart, and upon thy servants, and upon thy people; that thou mayest know that there is none like me in all the earth."

Exodus 9:15: "For now I will stretch out my hand, that I may smite thee and thy people with pestilence; and thou shalt be cut off from the earth."

Exodus 9:18: "Behold, to morrow about this time I will cause it to rain a very grievous hail, such as hath not been in Egypt since the foundation thereof even until now."

Exodus 9:28: "Intreat the LORD (for it is enough) that there be no more mighty thunderings and hail; and I will let you go, and ye shall stay no longer."

Exodus 9:29: "And Moses said unto him, As soon as I am gone out of the city, I will spread abroad my hands unto the LORD; and the thunder shall cease, neither shall there be any more hail; that thou mayest know how that the earth is the LORD's."

Exodus 9:30: "But as for thee and thy servants, I know that ye will not yet fear the LORD God."

Exodus 10:4: "Else, if thou refuse to let my people go, behold, to morrow will I bring the locusts into thy coast:"

Exodus 10:9: "And Moses said, We will go with our young and with our old, with our sons and with our daughters, with our flocks and with our herds will we go; for we must hold a feast unto the LORD."

Exodus 10:10: "And he said unto them, Let the LORD be so with you, as I will let you go, and your little ones: look to it; for evil is before you."

Exodus 10:29: "And Moses said, Thou hast spoken well, I will see thy face again no more."

Exodus 11:1: "And the LORD said unto Moses, Yet will I bring one plague more upon Pharaoh, and upon Egypt; afterwards he will let you go hence: when he shall let you go, he shall surely thrust you out hence altogether."

Exodus 11:4: "And Moses said, Thus saith the LORD, About midnight will I go out into the midst of Egypt:"

Exodus 11:8: "And all these thy servants shall come down unto me, and bow down themselves unto me, saying, Get thee out, and all the people that follow thee: and after that I will go out. And he went out from Pharaoh in a great anger."

Exodus 12:12: "For I will pass through the land of Egypt this night, and will smite all the firstborn in the land of Egypt, both man and beast; and against all the gods of Egypt I will execute judgment: I am the LORD."

Exodus 12:13: "And the blood shall be to you for a token upon the houses where ye are: and when I see the blood, I will pass over you, and the plague shall not be upon you to destroy you, when I smite the land of Egypt."

Exodus 12:23: "For the LORD will pass through to smite the Egyptians; and when he seeth the blood upon the lintel, and on the two side posts, the LORD will pass over the door, and will not suffer the destroyer to come in unto your houses to smite you."

Exodus 12:25: "And it shall come to pass, when ye be come to the land which the LORD will give



you, according as he hath promised, that ye shall keep this service."

Exodus 12:48: "And when a stranger shall sojourn with thee, and will keep the passover to the LORD, let all his males be circumcised, and then let him come near and keep it; and he shall be as one that is born in the land: for no uncircumcised person shall eat thereof."

Exodus 13:19: "And Moses took the bones of Joseph with him: for he had straitly sworn the children of Israel, saying, God will surely visit you; and ye shall carry up my bones away hence with you."

Exodus 14:3: "For Pharaoh will say of the children of Israel, They are entangled in the land, the wilderness hath shut them in."

Exodus 14:4: "And I will harden Pharaoh's heart, that he shall follow after them; and I will be honoured upon Pharaoh, and upon all his host; that the Egyptians may know that I am the LORD. And they did so."

Exodus 14:13: "And Moses said unto the people, Fear ye not, stand still, and see the salvation of the LORD, which he will shew to you to day: for the Egyptians whom ye have seen to day, ye shall see them again no more for ever."

Exodus 14:17: "And I, behold, I will harden the hearts of the Egyptians, and they shall follow them: and I will get me honour upon Pharaoh, and upon all his host, upon his chariots, and upon his horsemen."

Exodus 15:1: "Then sang Moses and the children of Israel this song unto the LORD, and spake, saying, I will sing unto the LORD, for he hath triumphed gloriously: the horse and his rider hath he thrown into the sea."

Exodus 15:2: "The LORD is my strength and song, and he is become my salvation: he is my God, and I will prepare him an habitation; my father's God, and I will exalt him."

Exodus 15:9: "The enemy said, I will pursue, I will overtake, I will divide the spoil; my lust shall be satisfied upon them; I will draw my sword, my hand shall destroy them."

Exodus 15:26: "And said, If thou wilt diligently hearken to the voice of the LORD thy God, and wilt do that which is right in his sight, and wilt give ear to his commandments, and keep all his statutes, I will put none of these diseases upon thee, which I have brought upon the Egyptians: for I am the LORD that healeth thee."

Exodus 16:4: "Then said the LORD unto Moses, Behold, I will rain bread from heaven for you; and the people shall go out and gather a certain rate every day, that I may prove them, whether they will walk in my law, or no."

Exodus 16:23: "And he said unto them, This is that which the LORD hath said, To morrow is the rest of the holy sabbath unto the LORD: bake that which ye will bake to day, and seethe that ye will seethe; and that which remaineth over lay up for you to be kept until the morning."

Exodus 17:6: "Behold, I will stand before thee there upon the rock in Horeb; and thou shalt smite the rock, and there shall come water out of it, that the people may drink. And Moses did so in the sight of the elders of Israel."

Exodus 17:9: "And Moses said unto Joshua, Choose us out men, and go out, fight with Amalek: to morrow I will stand on the top of the hill with the rod of God in mine hand."

Exodus 17:14: "And the LORD said unto Moses, Write this for a memorial in a book, and rehearse it in the ears of Joshua: for I will utterly put out the remembrance of Amalek from under heaven."

Exodus 17:16: "For he said, Because the LORD hath sworn that the LORD will have war with Amalek from generation to generation."

Exodus 18:19: "Hearken now unto my voice, I will give thee counsel, and God shall be with thee: Be thou for the people to God-ward, that thou mayest bring the causes unto God:"

Exodus 19:5: "Now therefore, if ye will obey my voice indeed, and keep my covenant, then ye shall be a peculiar treasure unto me above all people: for all the earth is mine:"

Exodus 19:8: "And all the people answered together, and said, All that the LORD hath spoken we will do. And Moses returned the words of the people unto the LORD."

Exodus 19:11: "And be ready against the third day: for the third day the LORD will come down in the sight of all the people upon mount Sinai."

Exodus 20:7: "Thou shalt not take the name of the LORD thy God in vain; for the LORD will not hold him guiltless that taketh his name in vain."

Exodus 20:19: "And they said unto Moses, Speak thou with us, and we will hear: but let not God speak with us, lest we die."

Exodus 20:24: "An altar of earth thou shalt make unto me, and shalt sacrifice thereon thy burnt offerings, and thy peace offerings, thy sheep, and thine oxen: in all places where I record my name I will come unto thee, and I will bless thee."

Exodus 21:5: "And if the servant shall plainly say, I love my master, my wife, and my children; I will not go out free."

Exodus 21:13: "And if a man lie not in wait, but God deliver him into his hand; then I will appoint thee a place whither he shall flee."

Exodus 21:22: "If men strive, and hurt a woman with child, so that her fruit depart from her, and yet no mischief follow: he shall be surely punished, according as the woman's husband will lay upon him; and he shall pay as the judges determine."

Exodus 22:23: "If thou afflict them in any wise, and they cry at all unto me, I will surely hear their cry;"

Exodus 22:24: "And my wrath shall wax hot, and I will kill you with the sword; and your wives shall be widows, and your children fatherless."

Exodus 22:27: "For that is his covering only, it is his raiment for his skin: wherein shall he sleep? and it shall come to pass, when he crieth unto me, that I will hear; for I am gracious."

Exodus 23:7: "Keep thee far from a false matter; and the innocent and righteous slay thou not: for I will not justify the wicked."

Exodus 23:21: "Beware of him, and obey his voice, provoke him not; for he will not pardon your transgressions: for my name is in him."

Exodus 23:22: "But if thou shalt indeed obey his voice, and do all that I speak; then I will be an enemy unto thine enemies, and an adversary unto thine adversaries."

Exodus 23:23: "For mine Angel shall go before thee, and bring thee in unto the Amorites, and the Hittites, and the Perizzites, and the Canaanites, the Hivites, and the Jebusites: and I will cut them off."

Exodus 23:25: "And ye shall serve the LORD your God, and he shall bless thy bread, and thy water; and I will take sickness away from the midst of thee."

Exodus 23:26: "There shall nothing cast their young, nor be barren, in thy land: the number of thy days I will fulfil."

Exodus 23:27: "I will send my fear before thee, and will destroy all the people to whom thou shalt come, and I will make all thine enemies turn their backs unto thee."

Exodus 23:28: "And I will send hornets before thee, which shall drive out the Hivite, the Canaanite, and the Hittite, from before thee."

Exodus 23:29: "I will not drive them out from before thee in one year; lest the land become desolate, and the beast of the field multiply against thee."

Exodus 23:30: "By little and little I will drive them out from before thee, until thou be increased, and inherit the land."

Exodus 23:31: "And I will set thy bounds from the Red sea even unto the sea of the Philistines, and from the desert unto the river: for I will deliver the inhabitants of the land into your hand; and thou shalt drive them out before thee."

Exodus 23:33: "They shall not dwell in thy land, lest they make thee sin against me: for if thou serve their gods, it will surely be a snare unto thee."

Exodus 24:3: "And Moses came and told the people all the words of the LORD, and all the judgments: and all the people answered with one voice, and said, All the words which the LORD

hath said will we do."

Exodus 24:7: "And he took the book of the covenant, and read in the audience of the people: and they said, All that the LORD hath said will we do, and be obedient."

Exodus 24:12: "And the LORD said unto Moses, Come up to me into the mount, and be there: and I will give thee tables of stone, and a law, and commandments which I have written; that thou mayest teach them."

Exodus 25:22: "And there I will meet with thee, and I will commune with thee from above the mercy seat, from between the two cherubims which are upon the ark of the testimony, of all things which I will give thee in commandment unto the children of Israel."

Exodus 29:42: "This shall be a continual burnt offering throughout your generations at the door of the tabernacle of the congregation before the LORD: where I will meet you, to speak there unto thee."

Exodus 29:43: "And there I will meet with the children of Israel, and the tabernacle shall be sanctified by my glory."

Exodus 29:44: "And I will sanctify the tabernacle of the congregation, and the altar: I will sanctify also both Aaron and his sons, to minister to me in the priest's office."

Exodus 29:45: "And I will dwell among the children of Israel, and will be their God."

Exodus 30:6: "And thou shalt put it before the vail that is by the ark of the testimony, before the mercy seat that is over the testimony, where I will meet with thee."

Exodus 30:36: "And thou shalt beat some of it very small, and put of it before the testimony in the tabernacle of the congregation, where I will meet with thee: it shall be unto you most holy."

Exodus 32:10: "Now therefore let me alone, that my wrath may wax hot against them, and that I may consume them: and I will make of thee a great nation."

Exodus 32:13: "Remember Abraham, Isaac, and Israel, thy servants, to whom thou swarest by thine own self, and saidst unto them, I will multiply your seed as the stars of heaven, and all this land that I have spoken of will I give unto your seed, and they shall inherit it for ever."

Exodus 32:30: "And it came to pass on the morrow, that Moses said unto the people, Ye have sinned a great sin: and now I will go up unto the LORD; peradventure I shall make an atonement for your sin."

Exodus 32:33: "And the LORD said unto Moses, Whosoever hath sinned against me, him will I blot out of my book."

Exodus 32:34: "Therefore now go, lead the people unto the place of which I have spoken unto thee: behold, mine Angel shall go before thee: nevertheless in the day when I visit I will visit their sin upon them."

Exodus 33:1: "And the LORD said unto Moses, Depart, and go up hence, thou and the people which thou hast brought up out of the land of Egypt, unto the land which I swore unto Abraham, to Isaac, and to Jacob, saying, Unto thy seed will I give it:"

Exodus 33:2: "And I will send an angel before thee; and I will drive out the Canaanite, the Amorite, and the Hittite, and the Perizzite, the Hivite, and the Jebusite:"

Exodus 33:3: "Unto a land flowing with milk and honey: for I will not go up in the midst of thee; for thou art a stiffnecked people: lest I consume thee in the way."

Exodus 33:5: "For the LORD had said unto Moses, Say unto the children of Israel, Ye are a stiffnecked people: I will come up into the midst of thee in a moment, and consume thee: therefore now put off thy ornaments from thee, that I may know what to do unto thee."

Exodus 33:14: "And he said, My presence shall go with thee, and I will give thee rest."

Exodus 33:17: "And the LORD said unto Moses, I will do this thing also that thou hast spoken: for thou hast found grace in my sight, and I know thee by name."

Exodus 33:19: "And he said, I will make all my goodness pass before thee, and I will proclaim the name of the LORD before thee; and will be gracious to whom I will be gracious, and will shew mercy on whom I will shew mercy."

Exodus 33:22: "And it shall come to pass, while my glory passeth by, that I will put thee in a clift of the rock, and will cover thee with my hand while I pass by:"

Exodus 33:23: "And I will take away mine hand, and thou shalt see my back parts: but my face shall not be seen."

Exodus 34:1: "And the LORD said unto Moses, Hew thee two tables of stone like unto the first: and I will write upon these tables the words that were in the first tables, which thou brakest."

Exodus 34:7: "Keeping mercy for thousands, forgiving iniquity and transgression and sin, and that will by no means clear the guilty; visiting the iniquity of the fathers upon the children, and upon the children's children, unto the third and to the fourth generation."

Exodus 34:10: "And he said, Behold, I make a covenant: before all thy people I will do marvels, such as have not been done in all the earth, nor in any nation: and all the people among which thou art shall see the work of the LORD: for it is a terrible thing that I will do with thee."

Exodus 34:24: "For I will cast out the nations before thee, and enlarge thy borders: neither shall any man desire thy land, when thou shalt go up to appear before the LORD thy God thrice in the year."

Leviticus 1:3: "If his offering be a burnt sacrifice of the herd, let him offer a male without blemish: he shall offer it of his own voluntary will at the door of the tabernacle of the congregation before the LORD."

Leviticus 2:1: "And when any will offer a meat offering unto the LORD, his offering shall be of fine flour; and he shall pour oil upon it, and put frankincense thereon:"

Leviticus 9:4: "Also a bullock and a ram for peace offerings, to sacrifice before the LORD; and a meat offering mingled with oil: for to day the LORD will appear unto you."

Leviticus 10:3: "Then Moses said unto Aaron, This is it that the LORD spake, saying, I will be sanctified in them that come nigh me, and before all the people I will be glorified. And Aaron held his peace."

Leviticus 16:2: "And the LORD said unto Moses, Speak unto Aaron thy brother, that he come not at all times into the holy place within the vail before the mercy seat, which is upon the ark; that he die not: for I will appear in the cloud upon the mercy seat."

Leviticus 17:10: "And whatsoever man there be of the house of Israel, or of the strangers that sojourn among you, that eateth any manner of blood; I will even set my face against that soul that eateth blood, and will cut him off from among his people."

Leviticus 19:5: "And if ye offer a sacrifice of peace offerings unto the LORD, ye shall offer it at your own will."

Leviticus 20:3: "And I will set my face against that man, and will cut him off from among his people; because he hath given of his seed unto Molech, to defile my sanctuary, and to profane my holy name."

Leviticus 20:5: "Then I will set my face against that man, and against his family, and will cut him off, and all that go a whoring after him, to commit whoredom with Molech, from among their people."

Leviticus 20:6: "And the soul that turneth after such as have familiar spirits, and after wizards, to go a whoring after them, I will even set my face against that soul, and will cut him off from among his people."

Leviticus 20:24: "But I have said unto you, Ye shall inherit their land, and I will give it unto you to possess it, a land that floweth with milk and honey: I am the LORD your God, which have separated you from other people."

Leviticus 22:18: "Speak unto Aaron, and to his sons, and unto all the children of Israel, and say unto them, Whatsoever he be of the house of Israel, or of the strangers in Israel, that will offer his oblation for all his vows, and for all his freewill offerings, which they will offer unto the LORD for a burnt offering;"

Leviticus 22:19: "Ye shall offer at your own will a male without blemish, of the beeves, of the sheep, or of the goats."

Leviticus 22:29: "And when ye will offer a sacrifice of thanksgiving unto the LORD, offer it at your own will."

Leviticus 22:32: "Neither shall ye profane my holy name; but I will be hallowed among the children of Israel: I am the LORD which hallow you,"

Leviticus 23:30: "And whatsoever soul it be that doeth any work in that same day, the same soul will I destroy from among his people."

Leviticus 25:21: "Then I will command my blessing upon you in the sixth year, and it shall bring forth fruit for three years."

Leviticus 26:4: "Then I will give you rain in due season, and the land shall yield her increase, and the trees of the field shall yield their fruit."

Leviticus 26:6: "And I will give peace in the land, and ye shall lie down, and none shall make you afraid: and I will rid evil beasts out of the land, neither shall the sword go through your land."

Leviticus 26:9: "For I will have respect unto you, and make you fruitful, and multiply you, and establish my covenant with you."

Leviticus 26:12: "And I will walk among you, and will be your God, and ye shall be my people."

Leviticus 26:14: "But if ye will not hearken unto me, and will not do all these commandments;"

Leviticus 26:15: "And if ye shall despise my statutes, or if your soul abhor my judgments, so that ye will not do all my commandments, but that ye break my covenant:"

Leviticus 26:16: "I also will do this unto you; I will even appoint over you terror, consumption, and the burning ague, that shall consume the eyes, and cause sorrow of heart: and ye shall sow your seed in vain, for your enemies shall eat it."

Leviticus 26:17: "And I will set my face against you, and ye shall be slain before your enemies: they that hate you shall reign over you; and ye shall flee when none pursueth you."

Leviticus 26:18: "And if ye will not yet for all this hearken unto me, then I will punish you seven times more for your sins."

Leviticus 26:19: "And I will break the pride of your power; and I will make your heaven as iron, and your earth as brass:"

Leviticus 26:21: "And if ye walk contrary unto me, and will not hearken unto me; I will bring seven times more plagues upon you according to your sins."

Leviticus 26:22: "I will also send wild beasts among you, which shall rob you of your children, and destroy your cattle, and make you few in number; and your high ways shall be desolate."

Leviticus 26:23: "And if ye will not be reformed by me by these things, but will walk contrary unto me;"

Leviticus 26:24: "Then will I also walk contrary unto you, and will punish you yet seven times for your sins."

Leviticus 26:25: "And I will bring a sword upon you, that shall avenge the quarrel of my covenant: and when ye are gathered together within your cities, I will send the pestilence among you; and ye shall be delivered into the hand of the enemy."

Leviticus 26:27: "And if ye will not for all this hearken unto me, but walk contrary unto me;"

Leviticus 26:28: "Then I will walk contrary unto you also in fury; and I, even I, will chastise you seven times for your sins."

Leviticus 26:30: "And I will destroy your high places, and cut down your images, and cast your carcasses upon the carcasses of your idols, and my soul shall abhor you."

Leviticus 26:31: "And I will make your cities waste, and bring your sanctuaries unto desolation, and I will not smell the savour of your sweet odours."

Leviticus 26:32: "And I will bring the land into desolation: and your enemies which dwell therein shall be astonished at it."

Leviticus 26:33: "And I will scatter you among the heathen, and will draw out a sword after you: and your land shall be desolate, and your cities waste."

Leviticus 26:36: "And upon them that are left alive of you I will send a faintness into their hearts in

the lands of their enemies; and the sound of a shaken leaf shall chase them; and they shall flee, as fleeing from a sword; and they shall fall when none pursueth."

Leviticus 26:42: "Then will I remember my covenant with Jacob, and also my covenant with Isaac, and also my covenant with Abraham will I remember; and I will remember the land."

Leviticus 26:44: "And yet for all that, when they be in the land of their enemies, I will not cast them away, neither will I abhor them, to destroy them utterly, and to break my covenant with them: for I am the LORD their God."

Leviticus 26:45: "But I will for their sakes remember the covenant of their ancestors, whom I brought forth out of the land of Egypt in the sight of the heathen, that I might be their God: I am the LORD."

Leviticus 27:13: "But if he will at all redeem it, then he shall add a fifth part thereof unto thy estimation."

Leviticus 27:15: "And if he that sanctified it will redeem his house, then he shall add the fifth part of the money of thy estimation unto it, and it shall be his."

Leviticus 27:19: "And if he that sanctified the field will in any wise redeem it, then he shall add the fifth part of the money of thy estimation unto it, and it shall be assured to him."

Leviticus 27:20: "And if he will not redeem the field, or if he have sold the field to another man, it shall not be redeemed any more."

Leviticus 27:31: "And if a man will at all redeem ought of his tithes, he shall add thereto the fifth part thereof."

Numbers 6:27: "And they shall put my name upon the children of Israel, and I will bless them."

Numbers 9:8: "And Moses said unto them, Stand still, and I will hear what the LORD will command concerning you."

Numbers 9:14: "And if a stranger shall sojourn among you, and will keep the passover unto the LORD; according to the ordinance of the passover, and according to the manner thereof, so shall he do: ye shall have one ordinance, both for the stranger, and for him that was born in the land."

Numbers 10:29: "And Moses said unto Hobab, the son of Raguel the Midianite, Moses' father in law, We are journeying unto the place of which the LORD said, I will give it you: come thou with us, and we will do thee good: for the LORD hath spoken good concerning Israel."

Numbers 10:30: "And he said unto him, I will not go; but I will depart to mine own land, and to my kindred."

Numbers 10:32: "And it shall be, if thou go with us, yea, it shall be, that what goodness the LORD shall do unto us, the same will we do unto thee."

Numbers 11:17: "And I will come down and talk with thee there: and I will take of the spirit which is upon thee, and will put it upon them; and they shall bear the burden of the people with thee, that thou bear it not thyself alone."

Numbers 11:18: "And say thou unto the people, Sanctify yourselves against to morrow, and ye shall eat flesh: for ye have wept in the ears of the LORD, saying, Who shall give us flesh to eat? for it was well with us in Egypt: therefore the LORD will give you flesh, and ye shall eat."

Numbers 11:21: "And Moses said, The people, among whom I am, are six hundred thousand footmen; and thou hast said, I will give them flesh, that they may eat a whole month."

Numbers 12:6: "And he said, Hear now my words: If there be a prophet among you, I the LORD will make myself known unto him in a vision, and will speak unto him in a dream."

Numbers 12:8: "With him will I speak mouth to mouth, even apparently, and not in dark speeches; and the similitude of the LORD shall he behold: wherefore then were ye not afraid to speak against my servant Moses?"

Numbers 14:8: "If the LORD delight in us, then he will bring us into this land, and give it us; a land which floweth with milk and honey."

Numbers 14:11: "And the LORD said unto Moses, How long will this people provoke me? and how long will it be ere they believe me, for all the signs which I have shewed among them?"

Numbers 14:12: "I will smite them with the pestilence, and disinherit them, and will make of thee a greater nation and mightier than they."

Numbers 14:14: "And they will tell it to the inhabitants of this land: for they have heard that thou LORD art among this people, that thou LORD art seen face to face, and that thy cloud standeth over them, and that thou goest before them, by day time in a pillar of a cloud, and in a pillar of fire by night."

Numbers 14:15: "Now if thou shalt kill all this people as one man, then the nations which have heard the fame of thee will speak, saying,"

Numbers 14:24: "But my servant Caleb, because he had another spirit with him, and hath followed me fully, him will I bring into the land whereinto he went; and his seed shall possess it."

Numbers 14:28: "Say unto them, As truly as I live, saith the LORD, as ye have spoken in mine ears, so will I do to you:"

Numbers 14:31: "But your little ones, which ye said should be a prey, them will I bring in, and they shall know the land which ye have despised."

Numbers 14:35: "I the LORD have said, I will surely do it unto all this evil congregation, that are gathered together against me: in this wilderness they shall be consumed, and there they shall die."

Numbers 14:40: "And they rose up early in the morning, and gat them up into the top of the mountain, saying, Lo, we be here, and will go up unto the place which the LORD hath promised: for we have sinned."

Numbers 14:43: "For the Amalekites and the Canaanites are there before you, and ye shall fall by the sword: because ye are turned away from the LORD, therefore the LORD will not be with you."

Numbers 15:3: "And will make an offering by fire unto the LORD, a burnt offering, or a sacrifice in performing a vow, or in a freewill offering, or in your solemn feasts, to make a sweet savour unto the LORD, of the herd or of the flock:"

Numbers 15:14: "And if a stranger sojourn with you, or whosoever be among you in your generations, and will offer an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD; as ye do, so he shall do."

Numbers 16:5: "And he spake unto Korah and unto all his company, saying, Even to morrow the LORD will shew who are his, and who is holy; and will cause him to come near unto him: even him whom he hath chosen will he cause to come near unto him."

Numbers 16:12: "And Moses sent to call Dathan and Abiram, the sons of Eliab: which said, We will not come up:"

Numbers 16:14: "Moreover thou hast not brought us into a land that floweth with milk and honey, or given us inheritance of fields and vineyards: wilt thou put out the eyes of these men? we will not come up."

Numbers 17:4: "And thou shalt lay them up in the tabernacle of the congregation before the testimony, where I will meet with you."

Numbers 17:5: "And it shall come to pass, that the man's rod, whom I shall choose, shall blossom: and I will make to cease from me the murmurings of the children of Israel, whereby they murmur against you."

Numbers 20:17: "Let us pass, I pray thee, through thy country: we will not pass through the fields, or through the vineyards, neither will we drink of the water of the wells: we will go by the king's high way, we will not turn to the right hand nor to the left, until we have passed thy borders."

Numbers 20:19: "And the children of Israel said unto him, We will go by the high way: and if I and my cattle drink of thy water, then I will pay for it: I will only, without doing anything else, go through on my feet."

Numbers 21:2: "And Israel vowed a vow unto the LORD, and said, If thou wilt indeed deliver this people into my hand, then I will utterly destroy their cities."

Numbers 21:16: "And from thence they went to Beer: that is the well whereof the LORD spake unto Moses, Gather the people together, and I will give them water."

Numbers 21:22: "Let me pass through thy land: we will not turn into the fields, or into the vineyards; we will not drink of the waters of the well: but we will go along by the king's high way, until we be past thy borders."

Numbers 22:8: "And he said unto them, Lodge here this night, and I will bring you word again, as the LORD shall speak unto me: and the princes of Moab abode with Balaam."

Numbers 22:17: "For I will promote thee unto very great honour, and I will do whatsoever thou sayest unto me: come therefore, I pray thee, curse me this people."

Numbers 22:19: "Now therefore, I pray you, tarry ye also here this night, that I may know what the LORD will say unto me more."

Numbers 22:34: "And Balaam said unto the angel of the LORD, I have sinned; for I knew not that thou stoodest in the way against me: now therefore, if it displease thee, I will get me back again."

Numbers 23:3: "And Balaam said unto Balak, Stand by thy burnt offering, and I will go: peradventure the LORD will come to meet me: and whatsoever he sheweth me I will tell thee. And he went to an high place."

Numbers 23:27: "And Balak said unto Balaam, Come, I pray thee, I will bring thee unto another place; peradventure it will please God that thou mayest curse me them from thence."

Numbers 24:13: "If Balak would give me his house full of silver and gold, I cannot go beyond the commandment of the LORD, to do either good or bad of mine own mind; but what the LORD saith, that will I speak?"

Numbers 24:14: "And now, behold, I go unto my people: come therefore, and I will advertise thee what this people shall do to thy people in the latter days."

Numbers 32:15: "For if ye turn away from after him, he will yet again leave them in the wilderness; and ye shall destroy all this people."

Numbers 32:16: "And they came near unto him, and said, We will build sheepfolds here for our cattle, and cities for our little ones:"

Numbers 32:17: "But we ourselves will go ready armed before the children of Israel, until we have brought them unto their place: and our little ones shall dwell in the fenced cities because of the inhabitants of the land."

Numbers 32:18: "We will not return unto our houses, until the children of Israel have inherited every man his inheritance."

Numbers 32:19: "For we will not inherit with them on yonder side Jordan, or forward; because our inheritance is fallen to us on this side Jordan eastward."

Numbers 32:20: "And Moses said unto them, If ye will do this thing, if ye will go armed before the LORD to war,"

Numbers 32:21: "And will go all of you armed over Jordan before the LORD, until he hath driven out his enemies from before him,"

Numbers 32:23: "But if ye will not do so, behold, ye have sinned against the LORD: and be sure your sin will find you out."

Numbers 32:25: "And the children of Gad and the children of Reuben spake unto Moses, saying, Thy servants will do as my lord commandeth."

Numbers 32:27: "But thy servants will pass over, every man armed for war, before the LORD to battle, as my lord saith."

Numbers 32:29: "And Moses said unto them, If the children of Gad and the children of Reuben will pass with you over Jordan, every man armed to battle, before the LORD, and the land shall be subdued before you; then ye shall give them the land of Gilead for a possession:"

Numbers 32:30: "But if they will not pass over with you armed, they shall have possessions among you in the land of Canaan."

Numbers 32:31: "And the children of Gad and the children of Reuben answered, saying, As the LORD hath said unto thy servants, so will we do."

Numbers 32:32: "We will pass over armed before the LORD into the land of Canaan, that the



possession of our inheritance on this side Jordan may be ours."

Numbers 33:55: "But if ye will not drive out the inhabitants of the land from before you; then it shall come to pass, that those which ye let remain of them shall be pricks in your eyes, and thorns in your sides, and shall vex you in the land wherein ye dwell."

Deuteronomy 1:13: "Take you wise men, and understanding, and known among your tribes, and I will make them rulers over you."

Deuteronomy 1:17: "Ye shall not respect persons in judgment; but ye shall hear the small as well as the great; ye shall not be afraid of the face of man; for the judgment is God's: and the cause that is too hard for you, bring it unto me, and I will hear it."

Deuteronomy 1:22: "And ye came near unto me every one of you, and said, We will send men before us, and they shall search us out the land, and bring us word again by what way we must go up, and into what cities we shall come."

Deuteronomy 1:36: "Save Caleb the son of Jephunneh; he shall see it, and to him will I give the land that he hath trodden upon, and to his children, because he hath wholly followed the LORD."

Deuteronomy 1:39: "Moreover your little ones, which ye said should be a prey, and your children, which in that day had no knowledge between good and evil, they shall go in thither, and unto them will I give it, and they shall possess it."

Deuteronomy 1:41: "Then ye answered and said unto me, We have sinned against the LORD, we will go up and fight, according to all that the LORD our God commanded us. And when ye had girded on every man his weapons of war, ye were ready to go up into the hill."

Deuteronomy 2:5: "Meddle not with them; for I will not give you of their land, no, not so much as a foot breadth; because I have given mount Seir unto Esau for a possession."

Deuteronomy 2:9: "And the LORD said unto me, Distress not the Moabites, neither contend with them in battle: for I will not give thee of their land for a possession; because I have given Ar unto the children of Lot for a possession."

Deuteronomy 2:19: "And when thou comest nigh over against the children of Ammon, distress them not, nor meddle with them: for I will not give thee of the land of the children of Ammon any possession; because I have given it unto the children of Lot for a possession."

Deuteronomy 2:25: "This day will I begin to put the dread of thee and the fear of thee upon the nations that are under the whole heaven, who shall hear report of thee, and shall tremble, and be in anguish because of thee."

Deuteronomy 2:27: "Let me pass through thy land: I will go along by the high way, I will neither turn unto the right hand nor to the left."

Deuteronomy 2:28: "Thou shalt sell me meat for money, that I may eat; and give me water for money, that I may drink: only I will pass through on my feet;"

Deuteronomy 3:2: "And the LORD said unto me, Fear him not: for I will deliver him, and all his people, and his land, into thy hand; and thou shalt do unto him as thou didst unto Sihon king of the Amorites, which dwelt at Heshbon."

Deuteronomy 4:10: "Specially the day that thou stoodest before the LORD thy God in Horeb, when the LORD said unto me, Gather me the people together, and I will make them hear my words, that they may learn to fear me all the days that they shall live upon the earth, and that they may teach their children."

Deuteronomy 4:31: "(For the LORD thy God is a merciful God;) he will not forsake thee, neither destroy thee, nor forget the covenant of thy fathers which he sware unto them."

Deuteronomy 5:11: "Thou shalt not take the name of the LORD thy God in vain: for the LORD will not hold him guiltless that taketh his name in vain."

Deuteronomy 5:25: "Now therefore why should we die? for this great fire will consume us: if we hear the voice of the LORD our God any more, then we shall die."

Deuteronomy 5:27: "Go thou near, and hear all that the LORD our God shall say: and speak thou unto us all that the LORD our God shall speak unto thee; and we will hear it, and do it."

Deuteronomy 5:31: "But as for thee, stand thou here by me, and I will speak unto thee all the commandments, and the statutes, and the judgments, which thou shalt teach them, that they may do them in the land which I give them to possess it."

Deuteronomy 7:4: "For they will turn away thy son from following me, that they may serve other gods: so will the anger of the LORD be kindled against you, and destroy thee suddenly."

Deuteronomy 7:10: "And repayeth them that hate him to their face, to destroy them: he will not be slack to him that hateth him, he will repay him to his face."

Deuteronomy 7:13: "And he will love thee, and bless thee, and multiply thee: he will also bless the fruit of thy womb, and the fruit of thy land, thy corn, and thy wine, and thine oil, the increase of thy kine, and the flocks of thy sheep, in the land which he sware unto thy fathers to give thee."

Deuteronomy 7:15: "And the LORD will take away from thee all sickness, and will put none of the evil diseases of Egypt, which thou knowest, upon thee; but will lay them upon all them that hate thee."

Deuteronomy 7:16: "And thou shalt consume all the people which the LORD thy God shall deliver thee; thine eye shall have no pity upon them: neither shalt thou serve their gods; for that will be a snare unto thee."

Deuteronomy 7:20: "Moreover the LORD thy God will send the hornet among them, until they that are left, and hide themselves from thee, be destroyed."

Deuteronomy 7:22: "And the LORD thy God will put out those nations before thee by little and little: thou mayest not consume them at once, lest the beasts of the field increase upon thee."

Deuteronomy 9:14: "Let me alone, that I may destroy them, and blot out their name from under heaven: and I will make of thee a nation mightier and greater than they."

Deuteronomy 10:2: "And I will write on the tables the words that were in the first tables which thou brakest, and thou shalt put them in the ark."

Deuteronomy 11:14: "That I will give you the rain of your land in his due season, the first rain and the latter rain, that thou mayest gather in thy corn, and thy wine, and thine oil."

Deuteronomy 11:15: "And I will send grass in thy fields for thy cattle, that thou mayest eat and be full."

Deuteronomy 11:23: "Then will the LORD drive out all these nations from before you, and ye shall possess greater nations and mightier than yourselves."

Deuteronomy 11:28: "And a curse, if ye will not obey the commandments of the LORD your God, but turn aside out of the way which I command you this day, to go after other gods, which ye have not known."

Deuteronomy 12:20: "When the LORD thy God shall enlarge thy border, as he hath promised thee, and thou shalt say, I will eat flesh, because thy soul longeth to eat flesh; thou mayest eat flesh, whatsoever thy soul lusteth after."

Deuteronomy 12:30: "Take heed to thyself that thou be not snared by following them, after that they be destroyed from before thee; and that thou enquire not after their gods, saying, How did these nations serve their gods? even so will I do likewise."

Deuteronomy 15:16: "And it shall be, if he say unto thee, I will not go away from thee; because he loveth thee and thine house, because he is well with thee;"

Deuteronomy 17:12: "And the man that will do presumptuously, and will not hearken unto the priest that standeth to minister there before the LORD thy God, or unto the judge, even that man shall die: and thou shalt put away the evil from Israel."

Deuteronomy 17:14: "When thou art come unto the land which the LORD thy God giveth thee, and shalt possess it, and shalt dwell therein, and shalt say, I will set a king over me, like as all the nations that are about me;"

Deuteronomy 18:15: "The LORD thy God will raise up unto thee a Prophet from the midst of thee, of thy brethren, like unto me; unto him ye shall hearken;"

Deuteronomy 18:18: "I will raise them up a Prophet from among their brethren, like unto thee, and

will put my words in his mouth; and he shall speak unto them all that I shall command him."

Deuteronomy 18:19: "And it shall come to pass, that whosoever will not hearken unto my words which he shall speak in my name, I will require it of him."

Deuteronomy 20:12: "And if it will make no peace with thee, but will make war against thee, then thou shalt besiege it:"

Deuteronomy 21:14: "And it shall be, if thou have no delight in her, then thou shalt let her go whither she will; but thou shalt not sell her at all for money, thou shalt not make merchandise of her, because thou hast humbled her."

Deuteronomy 21:18: "If a man have a stubborn and rebellious son, which will not obey the voice of his father, or the voice of his mother, and that, when they have chastened him, will not hearken unto them:"

Deuteronomy 21:20: "And they shall say unto the elders of his city, This our son is stubborn and rebellious, he will not obey our voice; he is a glutton, and a drunkard."

Deuteronomy 23:21: "When thou shalt vow a vow unto the LORD thy God, thou shalt not slack to pay it: for the LORD thy God will surely require it of thee; and it would be sin in thee."

Deuteronomy 25:7: "And if the man like not to take his brother's wife, then let his brother's wife go up to the gate unto the elders, and say, My husband's brother refuseth to raise up unto his brother a name in Israel, he will not perform the duty of my husband's brother."

Deuteronomy 25:9: "Then shall his brother's wife come unto him in the presence of the elders, and loose his shoe from off his foot, and spit in his face, and shall answer and say, So shall it be done unto that man that will not build up his brother's house."

Deuteronomy 28:1: "And it shall come to pass, if thou shalt hearken diligently unto the voice of the LORD thy God, to observe and to do all his commandments which I command thee this day, that the LORD thy God will set thee on high above all nations of the earth:"

Deuteronomy 28:27: "The LORD will smite thee with the botch of Egypt, and with the emerods, and with the scab, and with the itch, whereof thou canst not be healed."

Deuteronomy 28:55: "So that he will not give to any of them of the flesh of his children whom he shall eat: because he hath nothing left him in the siege, and in the straitness, wherewith thine enemies shall distress thee in all thy gates."

Deuteronomy 28:59: "Then the LORD will make thy plagues wonderful, and the plagues of thy seed, even great plagues, and of long continuance, and sore sicknesses, and of long continuance."

Deuteronomy 28:60: "Moreover he will bring upon thee all the diseases of Egypt, which thou wast afraid of; and they shall cleave unto thee."

Deuteronomy 28:61: "Also every sickness, and every plague, which is not written in the book of this law, them will the LORD bring upon thee, until thou be destroyed."

Deuteronomy 28:63: "And it shall come to pass, that as the LORD rejoiced over you to do you good, and to multiply you; so the LORD will rejoice over you to destroy you, and to bring you to nought; and ye shall be plucked from off the land whither thou goest to possess it."

Deuteronomy 29:20: "The LORD will not spare him, but then the anger of the LORD and his jealousy shall smoke against that man, and all the curses that are written in this book shall lie upon him, and the LORD shall blot out his name from under heaven."

Deuteronomy 30:3: "That then the LORD thy God will turn thy captivity, and have compassion upon thee, and will return and gather thee from all the nations, whither the LORD thy God hath scattered thee."

Deuteronomy 30:4: "If any of thine be driven out unto the outmost parts of heaven, from thence will the LORD thy God gather thee, and from thence will he fetch thee:"

Deuteronomy 30:5: "And the LORD thy God will bring thee into the land which thy fathers possessed, and thou shalt possess it; and he will do thee good, and multiply thee above thy fathers."

Deuteronomy 30:6: "And the LORD thy God will circumcise thine heart, and the heart of thy seed, to love the LORD thy God with all thine heart, and with all thy soul, that thou mayest live."

Deuteronomy 30:7: "And the LORD thy God will put all these curses upon thine enemies, and on them that hate thee, which persecuted thee."

Deuteronomy 30:9: "And the LORD thy God will make thee plenteous in every work of thine hand, in the fruit of thy body, and in the fruit of thy cattle, and in the fruit of thy land, for good: for the LORD will again rejoice over thee for good, as he rejoiced over thy fathers:"

Deuteronomy 31:3: "The LORD thy God, he will go over before thee, and he will destroy these nations from before thee, and thou shalt possess them: and Joshua, he shall go over before thee, as the LORD hath said."

Deuteronomy 31:6: "Be strong and of a good courage, fear not, nor be afraid of them: for the LORD thy God, he it is that doth go with thee; he will not fail thee, nor forsake thee."

Deuteronomy 31:8: "And the LORD, he it is that doth go before thee; he will be with thee, he will not fail thee, neither forsake thee: fear not, neither be dismayed."

Deuteronomy 31:16: "And the LORD said unto Moses, Behold, thou shalt sleep with thy fathers; and this people will rise up, and go a whoring after the gods of the strangers of the land, whither they go to be among them, and will forsake me, and break my covenant which I have made with them."

Deuteronomy 31:17: "Then my anger shall be kindled against them in that day, and I will forsake them, and I will hide my face from them, and they shall be devoured, and many evils and troubles shall befall them; so that they will say in that day, Are not these evils come upon us, because our God is not among us?"

Deuteronomy 31:18: "And I will surely hide my face in that day for all the evils which they shall have wrought, in that they are turned unto other gods."

Deuteronomy 31:20: "For when I shall have brought them into the land which I swear unto their fathers, that floweth with milk and honey; and they shall have eaten and filled themselves, and waxen fat; then will they turn unto other gods, and serve them, and provoke me, and break my covenant."

Deuteronomy 31:23: "And he gave Joshua the son of Nun a charge, and said, Be strong and of a good courage: for thou shalt bring the children of Israel into the land which I swear unto them: and I will be with thee."

Deuteronomy 31:29: "For I know that after my death ye will utterly corrupt yourselves, and turn aside from the way which I have commanded you; and evil will befall you in the latter days; because ye will do evil in the sight of the LORD, to provoke him to anger through the work of your hands."

Deuteronomy 32:1: "Give ear, O ye heavens, and I will speak; and hear, O earth, the words of my mouth."

Deuteronomy 32:3: "Because I will publish the name of the LORD: ascribe ye greatness unto our God."

Deuteronomy 32:7: "Remember the days of old, consider the years of many generations: ask thy father, and he will shew thee; thy elders, and they will tell thee."

Deuteronomy 32:20: "And he said, I will hide my face from them, I will see what their end shall be: for they are a very froward generation, children in whom is no faith."

Deuteronomy 32:21: "They have moved me to jealousy with that which is not God; they have provoked me to anger with their vanities: and I will move them to jealousy with those which are not a people; I will provoke them to anger with a foolish nation."

Deuteronomy 32:23: "I will heap mischiefs upon them; I will spend mine arrows upon them."

Deuteronomy 32:24: "They shall be burnt with hunger, and devoured with burning heat, and with bitter destruction: I will also send the teeth of beasts upon them, with the poison of serpents of the dust."

Deuteronomy 32:41: "If I whet my glittering sword, and mine hand take hold on judgment; I will render vengeance to mine enemies, and will reward them that hate me."

Deuteronomy 32:42: "I will make mine arrows drunk with blood, and my sword shall devour flesh; and that with the blood of the slain and of the captives, from the beginning of revenges upon the enemy."

Deuteronomy 32:43: "Rejoice, O ye nations, with his people: for he will avenge the blood of his servants, and will render vengeance to his adversaries, and will be merciful unto his land, and to his people."

Deuteronomy 33:16: "And for the precious things of the earth and fulness thereof, and for the good will of him that dwelt in the bush: let the blessing come upon the head of Joseph, and upon the top of the head of him that was separated from his brethren."

Deuteronomy 34:4: "And the LORD said unto him, This is the land which I swore unto Abraham, unto Isaac, and unto Jacob, saying, I will give it unto thy seed: I have caused thee to see it with thine eyes, but thou shalt not go over thither."

Joshua 1:5: "There shall not any man be able to stand before thee all the days of thy life: as I was with Moses, so I will be with thee: I will not fail thee, nor forsake thee."

Joshua 1:16: "And they answered Joshua, saying, All that thou commandest us we will do, and whithersoever thou sendest us, we will go."

Joshua 1:17: "According as we hearkened unto Moses in all things, so will we hearken unto thee: only the LORD thy God be with thee, as he was with Moses."

Joshua 1:18: "Whosoever he be that doth rebel against thy commandment, and will not hearken unto thy words in all that thou commandest him, he shall be put to death: only be strong and of a good courage."

Joshua 2:12: "Now therefore, I pray you, swear unto me by the LORD, since I have shewed you kindness, that ye will also shew kindness unto my father's house, and give me a true token:"

Joshua 2:13: "And that ye will save alive my father, and my mother, and my brethren, and my sisters, and all that they have, and deliver our lives from death."

Joshua 2:14: "And the men answered her, Our life for yours, if ye utter not this our business. And it shall be, when the LORD hath given us the land, that we will deal kindly and truly with thee."

Joshua 2:17: "And the men said unto her, We will be blameless of this thine oath which thou hast made us swear."

Joshua 2:19: "And it shall be, that whosoever shall go out of the doors of thy house into the street, his blood shall be upon his head, and we will be guiltless: and whosoever shall be with thee in the house, his blood shall be on our head, if any hand be upon him."

Joshua 2:20: "And if thou utter this our business, then we will be quit of thine oath which thou hast made us to swear."

Joshua 3:5: "And Joshua said unto the people, Sanctify yourselves: for to morrow the LORD will do wonders among you."

Joshua 3:7: "And the LORD said unto Joshua, This day will I begin to magnify thee in the sight of all Israel, that they may know that, as I was with Moses, so I will be with thee."

Joshua 3:10: "And Joshua said, Hereby ye shall know that the living God is among you, and that he will without fail drive out from before you the Canaanites, and the Hittites, and the Hivites, and the Perizzites, and the Girgashites, and the Amorites, and the Jebusites."

Joshua 7:12: "Therefore the children of Israel could not stand before their enemies, but turned their backs before their enemies, because they were accursed: neither will I be with you any more, except ye destroy the accursed from among you."

Joshua 8:5: "And I, and all the people that are with me, will approach unto the city: and it shall come to pass, when they come out against us, as at the first, that we will flee before them,"

Joshua 8:6: "(For they will come out after us) till we have drawn them from the city; for they will say, They flee before us, as at the first: therefore we will flee before them."

Joshua 8:7: "Then ye shall rise up from the ambush, and seize upon the city: for the LORD your God will deliver it into your hand."

Joshua 8:18: "And the LORD said unto Joshua, Stretch out the spear that is in thy hand toward Ai; for I will give it into thine hand. And Joshua stretched out the spear that he had in his hand toward the city."

Joshua 9:20: "This we will do to them; we will even let them live, lest wrath be upon us, because of the oath which we sware unto them."

Joshua 11:6: "And the LORD said unto Joshua, Be not afraid because of them: for to morrow about this time will I deliver them up all slain before Israel: thou shalt hough their horses, and burn their chariots with fire."

Joshua 13:6: "All the inhabitants of the hill country from Lebanon unto Misrephothmaim, and all the Sidonians, them will I drive out from before the children of Israel: only divide thou it by lot unto the Israelites for an inheritance, as I have commanded thee."

Joshua 14:12: "Now therefore give me this mountain, whereof the LORD spake in that day; for thou heardest in that day how the Anakims were there, and that the cities were great and fenced: if so be the LORD will be with me, then I shall be able to drive them out, as the LORD said."

Joshua 15:16: "And Caleb said, He that smiteth Kirjathsepher, and taketh it, to him will I give Achsah my daughter to wife."

Joshua 18:4: "Give out from among you three men for each tribe: and I will send them, and they shall rise, and go through the land, and describe it according to the inheritance of them; and they shall come again to me."

Joshua 22:18: "But that ye must turn away this day from following the LORD? and it will be, seeing ye rebel to day against the LORD, that to morrow he will be wroth with the whole congregation of Israel."

Joshua 23:13: "Know for a certainty that the LORD your God will no more drive out any of these nations from before you; but they shall be snares and traps unto you, and scourges in your sides, and thorns in your eyes, until ye perish from off this good land which the LORD your God hath given you."

Joshua 24:15: "And if it seem evil unto you to serve the LORD, choose you this day whom ye will serve; whether the gods which your fathers served that were on the other side of the flood, or the gods of the Amorites, in whose land ye dwell: but as for me and my house, we will serve the LORD."

Joshua 24:18: "And the LORD drave out from before us all the people, even the Amorites which dwelt in the land: therefore will we also serve the LORD; for he is our God."

Joshua 24:19: "And Joshua said unto the people, Ye cannot serve the LORD: for he is an holy God; he is a jealous God; he will not forgive your transgressions nor your sins."

Joshua 24:20: "If ye forsake the LORD, and serve strange gods, then he will turn and do you hurt, and consume you, after that he hath done you good."

Joshua 24:21: "And the people said unto Joshua, Nay; but we will serve the LORD."

Joshua 24:24: "And the people said unto Joshua, The LORD our God will we serve, and his voice will we obey."

Judges 1:3: "And Judah said unto Simeon his brother, Come up with me into my lot, that we may fight against the Canaanites; and I likewise will go with thee into thy lot. So Simeon went with him."

Judges 1:12: "And Caleb said, He that smiteth Kirjathsepher, and taketh it, to him will I give Achsah my daughter to wife."

Judges 1:24: "And the spies saw a man come forth out of the city, and they said unto him, Shew us, we pray thee, the entrance into the city, and we will shew thee mercy."

Judges 2:1: "And an angel of the LORD came up from Gilgal to Bochim, and said, I made you to go up out of Egypt, and have brought you unto the land which I sware unto your fathers; and I said, I will never break my covenant with you."

Judges 2:3: "Wherefore I also said, I will not drive them out from before you; but they shall be as

thorns in your sides, and their gods shall be a snare unto you."

Judges 2:21: "I also will not henceforth drive out any from before them of the nations which Joshua left when he died:"

Judges 2:22: "That through them I may prove Israel, whether they will keep the way of the LORD to walk therein, as their fathers did keep it, or not."

Judges 4:7: "And I will draw unto thee to the river Kishon Sisera, the captain of Jabin's army, with his chariots and his multitude; and I will deliver him into thine hand."

Judges 4:8: "And Barak said unto her, If thou wilt go with me, then I will go: but if thou wilt not go with me, then I will not go."

Judges 4:9: "And she said, I will surely go with thee: notwithstanding the journey that thou takest shall not be for thine honour; for the LORD shall sell Sisera into the hand of a woman. And Deborah arose, and went with Barak to Kedesh."

Judges 4:22: "And, behold, as Barak pursued Sisera, Jael came out to meet him, and said unto him, Come, and I will shew thee the man whom thou seekest. And when he came into her tent, behold, Sisera lay dead, and the nail was in his temples."

Judges 5:3: "Hear, O ye kings; give ear, O ye princes; I, even I, will sing unto the LORD; I will sing praise to the LORD God of Israel."

Judges 6:16: "And the LORD said unto him, Surely I will be with thee, and thou shalt smite the Midianites as one man."

Judges 6:18: "Depart not hence, I pray thee, until I come unto thee, and bring forth my present, and set it before thee. And he said, I will tarry until thou come again."

Judges 6:31: "And Joash said unto all that stood against him, Will ye plead for Baal? will ye save him? he that will plead for him, let him be put to death whilst it is yet morning: if he be a god, let him plead for himself, because one hath cast down his altar."

Judges 6:37: "Behold, I will put a fleece of wool in the floor; and if the dew be on the fleece only, and it be dry upon all the earth beside, then shall I know that thou wilt save Israel by mine hand, as thou hast said."

Judges 6:39: "And Gideon said unto God, Let not thine anger be hot against me, and I will speak but this once: let me prove, I pray thee, but this once with the fleece; let it now be dry only upon the fleece, and upon all the ground let there be dew."

Judges 7:4: "And the LORD said unto Gideon, The people are yet too many; bring them down unto the water, and I will try them for thee there: and it shall be, that of whom I say unto thee, This shall go with thee, the same shall go with thee; and of whomsoever I say unto thee, This shall not go with thee, the same shall not go."

Judges 7:7: "And the LORD said unto Gideon, By the three hundred men that lapped will I save you, and deliver the Midianites into thine hand: and let all the other people go every man unto his place."

Judges 8:7: "And Gideon said, Therefore when the LORD hath delivered Zebah and Zalmunna into mine hand, then I will tear your flesh with the thorns of the wilderness and with briers."

Judges 8:9: "And he spake also unto the men of Penuel, saying, When I come again in peace, I will break down this tower."

Judges 8:23: "And Gideon said unto them, I will not rule over you, neither shall my son rule over you: the LORD shall rule over you."

Judges 8:25: "And they answered, We will willingly give them. And they spread a garment, and did cast therein every man the earrings of his prey."

Judges 10:13: "Yet ye have forsaken me, and served other gods: wherefore I will deliver you no more."

Judges 10:18: "And the people and princes of Gilead said one to another, What man is he that will begin to fight against the children of Ammon? he shall be head over all the inhabitants of Gilead."

Judges 11:24: "Wilt not thou possess that which Chemosh thy god giveth thee to possess? So

whomsoever the LORD our God shall drive out from before us, them will we possess."

Judges 11:31: "Then it shall be, that whatsoever cometh forth of the doors of my house to meet me, when I return in peace from the children of Ammon, shall surely be the LORD's, and I will offer it up for a burnt offering."

Judges 12:1: "And the men of Ephraim gathered themselves together, and went northward, and said unto Jephthah, Wherefore passedst thou over to fight against the children of Ammon, and didst not call us to go with thee? we will burn thine house upon thee with fire."

Judges 13:16: "And the angel of the LORD said unto Manoah, Though thou detain me, I will not eat of thy bread: and if thou wilt offer a burnt offering, thou must offer it unto the LORD. For Manoah knew not that he was an angel of the LORD."

Judges 14:12: "And Samson said unto them, I will now put forth a riddle unto you: if ye can certainly declare it me within the seven days of the feast, and find it out, then I will give you thirty sheets and thirty change of garments:"

Judges 15:1: "But it came to pass within a while after, in the time of wheat harvest, that Samson visited his wife with a kid; and he said, I will go in to my wife into the chamber. But her father would not suffer him to go in."

Judges 15:7: "And Samson said unto them, Though ye have done this, yet will I be avenged of you, and after that I will cease."

Judges 15:12: "And they said unto him, We are come down to bind thee, that we may deliver thee into the hand of the Philistines. And Samson said unto them, Swear unto me, that ye will not fall upon me yourselves."

Judges 15:13: "And they spake unto him, saying, No; but we will bind thee fast, and deliver thee into their hand: but surely we will not kill thee. And they bound him with two new cords, and brought him up from the rock."

Judges 16:5: "And the lords of the Philistines came up unto her, and said unto her, Entice him, and see wherein his great strength lieth, and by what means we may prevail against him, that we may bind him to afflict him; and we will give thee every one of us eleven hundred pieces of silver."

Judges 16:17: "That he told her all his heart, and said unto her, There hath not come a razor upon mine head; for I have been a Nazarite unto God from my mother's womb: if I be shaven, then my strength will go from me, and I shall become weak, and be like any other man."

Judges 16:20: "And she said, The Philistines be upon thee, Samson. And he awoke out of his sleep, and said, I will go out as at other times before, and shake myself. And he wist not that the LORD was departed from him."

Judges 17:3: "And when he had restored the eleven hundred shekels of silver to his mother, his mother said, I had wholly dedicated the silver unto the LORD from my hand for my son, to make a graven image and a molten image: now therefore I will restore it unto thee."

Judges 17:10: "And Micah said unto him, Dwell with me, and be unto me a father and a priest, and I will give thee ten shekels of silver by the year, and a suit of apparel, and thy victuals. So the Levite went in."

Judges 17:13: "Then said Micah, Now know I that the LORD will do me good, seeing I have a Levite to my priest."

Judges 19:12: "And his master said unto him, We will not turn aside hither into the city of a stranger, that is not of the children of Israel; we will pass over to Gibeah."

Judges 19:24: "Behold, here is my daughter a maiden, and his concubine; them I will bring out now, and humble ye them, and do with them what seemeth good unto you: but unto this man do not so vile a thing."

Judges 20:8: "And all the people arose as one man, saying, We will not any of us go to his tent, neither will we any of us turn into his house."

Judges 20:9: "But now this shall be the thing which we will do to Gibeah; we will go up by lot against it;"



Judges 20:10: "And we will take ten men of an hundred throughout all the tribes of Israel, and an hundred of a thousand, and a thousand out of ten thousand, to fetch victual for the people, that they may do, when they come to Gibeah of Benjamin, according to all the folly that they have wrought in Israel."

Judges 20:28: "And Phinehas, the son of Eleazar, the son of Aaron, stood before it in those days,) saying, Shall I yet again go out to battle against the children of Benjamin my brother, or shall I cease? And the LORD said, Go up; for to morrow I will deliver them into thine hand."

Judges 21:7: "How shall we do for wives for them that remain, seeing we have sworn by the LORD that we will not give them of our daughters to wives?"

Judges 21:22: "And it shall be, when their fathers or their brethren come unto us to complain, that we will say unto them, Be favourable unto them for our sakes: because we reserved not to each man his wife in the war: for ye did not give unto them at this time, that ye should be guilty."

Ruth 1:10: "And they said unto her, Surely we will return with thee unto thy people."

Ruth 1:11: "And Naomi said, Turn again, my daughters: why will ye go with me? are there yet any more sons in my womb, that they may be your husbands?"

Ruth 1:16: "And Ruth said, Intreat me not to leave thee, or to return from following after thee: for whither thou goest, I will go; and where thou lodgest, I will lodge: thy people shall be my people, and thy God my God:"

Ruth 1:17: "Where thou diest, will I die, and there will I be buried: the LORD do so to me, and more also, if ought but death part thee and me."

Ruth 3:4: "And it shall be, when he lieth down, that thou shalt mark the place where he shall lie, and thou shalt go in, and uncover his feet, and lay thee down; and he will tell thee what thou shalt do."

Ruth 3:5: "And she said unto her, All that thou sayest unto me I will do."

Ruth 3:11: "And now, my daughter, fear not; I will do to thee all that thou requirest: for all the city of my people doth know that thou art a virtuous woman."

Ruth 3:13: "Tarry this night, and it shall be in the morning, that if he will perform unto thee the part of a kinsman, well; let him do the kinsman's part: but if he will not do the part of a kinsman to thee, then will I do the part of a kinsman to thee, as the LORD liveth: lie down until the morning."

Ruth 3:18: "Then said she, Sit still, my daughter, until thou know how the matter will fall: for the man will not be in rest, until he have finished the thing this day."

Ruth 4:4: "And I thought to advertise thee, saying, Buy it before the inhabitants, and before the elders of my people. If thou wilt redeem it, redeem it: but if thou wilt not redeem it, then tell me, that I may know: for there is none to redeem it beside thee; and I am after thee. And he said, I will redeem it."

1 Samuel 1:11: "And she vowed a vow, and said, O LORD of hosts, if thou wilt indeed look on the affliction of thine handmaid, and remember me, and not forget thine handmaid, but wilt give unto thine handmaid a man child, then I will give him unto the LORD all the days of his life, and there shall no razor come upon his head."

1 Samuel 1:22: "But Hannah went not up; for she said unto her husband, I will not go up until the child be weaned, and then I will bring him, that he may appear before the LORD, and there abide for ever."

1 Samuel 2:9: "He will keep the feet of his saints, and the wicked shall be silent in darkness; for by strength shall no man prevail."

1 Samuel 2:15: "Also before they burnt the fat, the priest's servant came, and said to the man that sacrificed, Give flesh to roast for the priest; for he will not have sodden flesh of thee, but raw."

1 Samuel 2:16: "And if any man said unto him, Let them not fail to burn the fat presently, and then take as much as thy soul desireth; then he would answer him, Nay; but thou shalt give it me now: and if not, I will take it by force."

1 Samuel 2:30: "Wherefore the LORD God of Israel saith, I said indeed that thy house, and the house of thy father, should walk before me for ever: but now the LORD saith, Be it far from me; for

them that honour me I will honour, and they that despise me shall be lightly esteemed."

1 Samuel 2:31: "Behold, the days come, that I will cut off thine arm, and the arm of thy father's house, that there shall not be an old man in thine house."

1 Samuel 2:35: "And I will raise me up a faithful priest, that shall do according to that which is in mine heart and in my mind: and I will build him a sure house; and he shall walk before mine anointed for ever."

1 Samuel 3:11: "And the LORD said to Samuel, Behold, I will do a thing in Israel, at which both the ears of every one that heareth it shall tingle."

1 Samuel 3:12: "In that day I will perform against Eli all things which I have spoken concerning his house: when I begin, I will also make an end."

1 Samuel 3:13: "For I have told him that I will judge his house for ever for the iniquity which he knoweth; because his sons made themselves vile, and he restrained them not."

1 Samuel 6:5: "Wherefore ye shall make images of your emerods, and images of your mice that mar the land; and ye shall give glory unto the God of Israel: peradventure he will lighten his hand from off you, and from off your gods, and from off your land."

1 Samuel 7:3: "And Samuel spake unto all the house of Israel, saying, If ye do return unto the LORD with all your hearts, then put away the strange gods and Ashtaroth from among you, and prepare your hearts unto the LORD, and serve him only: and he will deliver you out of the hand of the Philistines."

1 Samuel 7:5: "And Samuel said, Gather all Israel to Mizpeh, and I will pray for you unto the LORD."

1 Samuel 7:8: "And the children of Israel said to Samuel, Cease not to cry unto the LORD our God for us, that he will save us out of the hand of the Philistines."

1 Samuel 8:11: "And he said, This will be the manner of the king that shall reign over you: He will take your sons, and appoint them for himself, for his chariots, and to be his horsemen; and some shall run before his chariots."

1 Samuel 8:12: "And he will appoint him captains over thousands, and captains over fifties; and will set them to ear his ground, and to reap his harvest, and to make his instruments of war, and instruments of his chariots."

1 Samuel 8:13: "And he will take your daughters to be confectionaries, and to be cooks, and to be bakers."

1 Samuel 8:14: "And he will take your fields, and your vineyards, and your oliveyards, even the best of them, and give them to his servants."

1 Samuel 8:15: "And he will take the tenth of your seed, and of your vineyards, and give to his officers, and to his servants."

1 Samuel 8:16: "And he will take your menservants, and your maidservants, and your goodliest young men, and your asses, and put them to his work."

1 Samuel 8:17: "He will take the tenth of your sheep: and ye shall be his servants."

1 Samuel 8:18: "And ye shall cry out in that day because of your king which ye shall have chosen you; and the LORD will not hear you in that day."

1 Samuel 8:19: "Nevertheless the people refused to obey the voice of Samuel; and they said, Nay; but we will have a king over us;"

1 Samuel 9:8: "And the servant answered Saul again, and said, Behold, I have here at hand the fourth part of a shekel of silver: that will I give to the man of God, to tell us our way."

1 Samuel 9:13: "As soon as ye be come into the city, ye shall straightway find him, before he go up to the high place to eat: for the people will not eat until he come, because he doth bless the sacrifice; and afterwards they eat that be bidden. Now therefore get you up; for about this time ye shall find him."

1 Samuel 9:16: "To morrow about this time I will send thee a man out of the land of Benjamin, and thou shalt anoint him to be captain over my people Israel, that he may save my people out of the

hand of the Philistines: for I have looked upon my people, because their cry is come unto me."

1 Samuel 9:19: "And Samuel answered Saul, and said, I am the seer: go up before me unto the high place; for ye shall eat with me to day, and to morrow I will let thee go, and will tell thee all that is in thine heart."

1 Samuel 10:2: "When thou art departed from me to day, then thou shalt find two men by Rachel's sepulchre in the border of Benjamin at Zelzah; and they will say unto thee, The asses which thou wentest to seek are found: and, lo, thy father hath left the care of the asses, and sorroweth for you, saying, What shall I do for my son?"

1 Samuel 10:4: "And they will salute thee, and give thee two loaves of bread; which thou shalt receive of their hands."

1 Samuel 10:6: "And the Spirit of the LORD will come upon thee, and thou shalt prophesy with them, and shalt be turned into another man."

1 Samuel 10:8: "And thou shalt go down before me to Gilgal; and, behold, I will come down unto thee, to offer burnt offerings, and to sacrifice sacrifices of peace offerings: seven days shalt thou tarry, till I come to thee, and shew thee what thou shalt do."

1 Samuel 11:1: "Then Nahash the Ammonite came up, and encamped against Jabeshgilead: and all the men of Jabesh said unto Nahash, Make a covenant with us, and we will serve thee."

1 Samuel 11:2: "And Nahash the Ammonite answered them, On this condition will I make a covenant with you, that I may thrust out all your right eyes, and lay it for a reproach upon all Israel."

1 Samuel 11:3: "And the elders of Jabesh said unto him, Give us seven days' respite, that we may send messengers unto all the coasts of Israel: and then, if there be no man to save us, we will come out to thee."

1 Samuel 11:10: "Therefore the men of Jabesh said, To morrow we will come out unto you, and ye shall do with us all that seemeth good unto you."

1 Samuel 12:3: "Behold, here I am: witness against me before the LORD, and before his anointed: whose ox have I taken? or whose ass have I taken? or whom have I defrauded? whom have I oppressed? or of whose hand have I received any bribe to blind mine eyes therewith? and I will restore it you."

1 Samuel 12:10: "And they cried unto the LORD, and said, We have sinned, because we have forsaken the LORD, and have served Baalim and Ashtaroth: but now deliver us out of the hand of our enemies, and we will serve thee."

1 Samuel 12:14: "If ye will fear the LORD, and serve him, and obey his voice, and not rebel against the commandment of the LORD, then shall both ye and also the king that reigneth over you continue following the LORD your God:"

1 Samuel 12:15: "But if ye will not obey the voice of the LORD, but rebel against the commandment of the LORD, then shall the hand of the LORD be against you, as it was against your fathers."

1 Samuel 12:16: "Now therefore stand and see this great thing, which the LORD will do before your eyes."

1 Samuel 12:17: "Is it not wheat harvest to day? I will call unto the LORD, and he shall send thunder and rain; that ye may perceive and see that your wickedness is great, which ye have done in the sight of the LORD, in asking you a king."

1 Samuel 12:22: "For the LORD will not forsake his people for his great name's sake: because it hath pleased the LORD to make you his people."

1 Samuel 12:23: "Moreover as for me, God forbid that I should sin against the LORD in ceasing to pray for you: but I will teach you the good and the right way:"

1 Samuel 13:12: "Therefore said I, The Philistines will come down now upon me to Gilgal, and I have not made supplication unto the LORD: I forced myself therefore, and offered a burnt offering."

1 Samuel 14:6: "And Jonathan said to the young man that bare his armour, Come, and let us go over unto the garrison of these uncircumcised: it may be that the LORD will work for us: for there is no restraint to the LORD to save by many or by few."

1 Samuel 14:8: "Then said Jonathan, Behold, we will pass over unto these men, and we will discover ourselves unto them."

1 Samuel 14:9: "If they say thus unto us, Tarry until we come to you; then we will stand still in our place, and will not go up unto them."

1 Samuel 14:10: "But if they say thus, Come up unto us; then we will go up: for the LORD hath delivered them into our hand: and this shall be a sign unto us."

1 Samuel 14:12: "And the men of the garrison answered Jonathan and his armourbearer, and said, Come up to us, and we will shew you a thing. And Jonathan said unto his armourbearer, Come up after me: for the LORD hath delivered them into the hand of Israel."

1 Samuel 14:40: "Then said he unto all Israel, Be ye on one side, and I and Jonathan my son will be on the other side. And the people said unto Saul, Do what seemeth good unto thee."

1 Samuel 15:16: "Then Samuel said unto Saul, Stay, and I will tell thee what the LORD hath said to me this night. And he said unto him, Say on."

1 Samuel 15:26: "And Samuel said unto Saul, I will not return with thee: for thou hast rejected the word of the LORD, and the LORD hath rejected thee from being king over Israel."

1 Samuel 15:29: "And also the Strength of Israel will not lie nor repent: for he is not a man, that he should repent."

1 Samuel 16:1: "And the LORD said unto Samuel, How long wilt thou mourn for Saul, seeing I have rejected him from reigning over Israel? fill thine horn with oil, and go, I will send thee to Jesse the Bethlehemite: for I have provided me a king among his sons."

1 Samuel 16:2: "And Samuel said, How can I go? if Saul hear it, he will kill me. And the LORD said, Take an heifer with thee, and say, I am come to sacrifice to the LORD."

1 Samuel 16:3: "And call Jesse to the sacrifice, and I will shew thee what thou shalt do: and thou shalt anoint unto me him whom I name unto thee."

1 Samuel 16:11: "And Samuel said unto Jesse, Are here all thy children? And he said, There remaineth yet the youngest, and, behold, he keepeth the sheep. And Samuel said unto Jesse, Send and fetch him: for we will not sit down till he come hither."

1 Samuel 17:9: "If he be able to fight with me, and to kill me, then will we be your servants: but if I prevail against him, and kill him, then shall ye be our servants, and serve us."

1 Samuel 17:25: "And the men of Israel said, Have ye seen this man that is come up? surely to defy Israel is he come up: and it shall be, that the man who killeth him, the king will enrich him with great riches, and will give him his daughter, and make his father's house free in Israel."

1 Samuel 17:32: "And David said to Saul, Let no man's heart fail because of him; thy servant will go and fight with this Philistine."

1 Samuel 17:37: "David said moreover, The LORD that delivered me out of the paw of the lion, and out of the paw of the bear, he will deliver me out of the hand of this Philistine. And Saul said unto David, Go, and the LORD be with thee."

1 Samuel 17:44: "And the Philistine said to David, Come to me, and I will give thy flesh unto the fowls of the air, and to the beasts of the field."

1 Samuel 17:46: "This day will the LORD deliver thee into mine hand; and I will smite thee, and take thine head from thee; and I will give the carcasses of the host of the Philistines this day unto the fowls of the air, and to the wild beasts of the earth; that all the earth may know that there is a God in Israel."

1 Samuel 17:47: "And all this assembly shall know that the LORD saveth not with sword and spear: for the battle is the LORD's, and he will give you into our hands."

1 Samuel 18:11: "And Saul cast the javelin; for he said, I will smite David even to the wall with it. And David avoided out of his presence twice."

1 Samuel 18:17: "And Saul said to David, Behold my elder daughter Merab, her will I give thee to wife: only be thou valiant for me, and fight the LORD's battles. For Saul said, Let not mine hand be upon him, but let the hand of the Philistines be upon him."

1 Samuel 18:21: "And Saul said, I will give him her, that she may be a snare to him, and that the hand of the Philistines may be against him. Wherefore Saul said to David, Thou shalt this day be my son in law in the one of the twain."

1 Samuel 19:3: "And I will go out and stand beside my father in the field where thou art, and I will commune with my father of thee; and what I see, that I will tell thee."

1 Samuel 20:2: "And he said unto him, God forbid; thou shalt not die: behold, my father will do nothing either great or small, but that he will shew it me: and why should my father hide this thing from me? it is not so."

1 Samuel 20:4: "Then said Jonathan unto David, Whatsoever thy soul desireth, I will even do it for thee."

1 Samuel 20:13: "The LORD do so and much more to Jonathan: but if it please my father to do thee evil, then I will shew it thee, and send thee away, that thou mayest go in peace: and the LORD be with thee, as he hath been with my father."

1 Samuel 20:18: "Then Jonathan said to David, To morrow is the new moon: and thou shalt be missed, because thy seat will be empty."

1 Samuel 20:20: "And I will shoot three arrows on the side thereof, as though I shot at a mark."

1 Samuel 20:21: "And, behold, I will send a lad, saying, Go, find out the arrows. If I expressly say unto the lad, Behold, the arrows are on this side of thee, take them; then come thou: for there is peace to thee, and no hurt; as the LORD liveth."

1 Samuel 22:3: "And David went thence to Mizpeh of Moab: and he said unto the king of Moab, Let my father and my mother, I pray thee, come forth, and be with you, till I know what God will do for me."

1 Samuel 22:7: "Then Saul said unto his servants that stood about him, Hear now, ye Benjamites; will the son of Jesse give every one of you fields and vineyards, and make you all captains of thousands, and captains of hundreds;"

1 Samuel 23:4: "Then David enquired of the LORD yet again. And the LORD answered him and said, Arise, go down to Keilah; for I will deliver the Philistines into thine hand."

1 Samuel 23:11: "Will the men of Keilah deliver me up into his hand? will Saul come down, as thy servant hath heard? O LORD God of Israel, I beseech thee, tell thy servant. And the LORD said, He will come down."

1 Samuel 23:12: "Then said David, Will the men of Keilah deliver me and my men into the hand of Saul? And the LORD said, They will deliver thee up."

1 Samuel 23:23: "See therefore, and take knowledge of all the lurking places where he hideth himself, and come ye again to me with the certainty, and I will go with you: and it shall come to pass, if he be in the land, that I will search him out throughout all the thousands of Judah."

1 Samuel 24:4: "And the men of David said unto him, Behold the day of which the LORD said unto thee, Behold, I will deliver thine enemy into thine hand, that thou mayest do to him as it shall seem good unto thee. Then David arose, and cut off the skirt of Saul's robe privily."

1 Samuel 24:10: "Behold, this day thine eyes have seen how that the LORD had delivered thee to day into mine hand in the cave: and some bade me kill thee: but mine eye spared thee; and I said, I will not put forth mine hand against my lord; for he is the LORD's anointed."

1 Samuel 24:19: "For if a man find his enemy, will he let him go well away? wherefore the LORD reward thee good for that thou hast done unto me this day."

1 Samuel 25:8: "Ask thy young men, and they will shew thee. Wherefore let the young men find favour in thine eyes: for we come in a good day: give, I pray thee, whatsoever cometh to thine hand unto thy servants, and to thy son David."

1 Samuel 25:28: "I pray thee, forgive the trespass of thine handmaid: for the LORD will certainly

make my lord a sure house; because my lord fighteth the battles of the LORD, and evil hath not been found in thee all thy days."

1 Samuel 26:6: "Then answered David and said to Ahimelech the Hittite, and to Abishai the son of Zeruah, brother to Joab, saying, Who will go down with me to Saul to the camp? And Abishai said, I will go down with thee."

1 Samuel 26:8: "Then said Abishai to David, God hath delivered thine enemy into thine hand this day: now therefore let me smite him, I pray thee, with the spear even to the earth at once, and I will not smite him the second time."

1 Samuel 26:21: "Then said Saul, I have sinned: return, my son David: for I will no more do thee harm, because my soul was precious in thine eyes this day: behold, I have played the fool, and have erred exceedingly."

1 Samuel 27:11: "And David saved neither man nor woman alive, to bring tidings to Gath, saying, Lest they should tell on us, saying, So did David, and so will be his manner all the while he dwelleth in the country of the Philistines."

1 Samuel 28:2: "And David said to Achish, Surely thou shalt know what thy servant can do. And Achish said to David, Therefore will I make thee keeper of mine head for ever."

1 Samuel 28:19: "Moreover the LORD will also deliver Israel with thee into the hand of the Philistines: and to morrow shalt thou and thy sons be with me: the LORD also shall deliver the host of Israel into the hand of the Philistines."

1 Samuel 28:23: "But he refused, and said, I will not eat. But his servants, together with the woman, compelled him; and he hearkened unto their voice. So he arose from the earth, and sat upon the bed."

1 Samuel 30:15: "And David said to him, Canst thou bring me down to this company? And he said, Swear unto me by God, that thou wilt neither kill me, nor deliver me into the hands of my master, and I will bring thee down to this company."

1 Samuel 30:22: "Then answered all the wicked men and men of Belial, of those that went with David, and said, Because they went not with us, we will not give them ought of the spoil that we have recovered, save to every man his wife and his children, that they may lead them away, and depart."

1 Samuel 30:24: "For who will hearken unto you in this matter? but as his part is that goeth down to the battle, so shall his part be that tarrieth by the stuff: they shall part alike."

2 Samuel 2:6: "And now the LORD shew kindness and truth unto you: and I also will requite you this kindness, because ye have done this thing."

2 Samuel 2:26: "Then Abner called to Joab, and said, Shall the sword devour for ever? knowest thou not that it will be bitterness in the latter end? how long shall it be then, ere thou bid the people return from following their brethren?"

2 Samuel 3:13: "And he said, Well; I will make a league with thee: but one thing I require of thee, that is, Thou shalt not see my face, except thou first bring Michal Saul's daughter, when thou comest to see my face."

2 Samuel 3:18: "Now then do it: for the LORD hath spoken of David, saying, By the hand of my servant David I will save my people Israel out of the hand of the Philistines, and out of the hand of all their enemies."

2 Samuel 3:21: "And Abner said unto David, I will arise and go, and will gather all Israel unto my lord the king, that they may make a league with thee, and that thou mayest reign over all that thine heart desireth. And David sent Abner away; and he went in peace."

2 Samuel 5:19: "And David enquired of the LORD, saying, Shall I go up to the Philistines? wilt thou deliver them into mine hand? And the LORD said unto David, Go up: for I will doubtless deliver the Philistines into thine hand."

2 Samuel 6:21: "And David said unto Michal, It was before the LORD, which chose me before thy father, and before all his house, to appoint me ruler over the people of the LORD, over Israel:

therefore will I play before the LORD."

2 Samuel 6:22: "And I will yet be more vile than thus, and will be base in mine own sight: and of the maidservants which thou hast spoken of, of them shall I be had in honour."

2 Samuel 7:10: "Moreover I will appoint a place for my people Israel, and will plant them, that they may dwell in a place of their own, and move no more; neither shall the children of wickedness afflict them any more, as beforetime,"

2 Samuel 7:11: "And as since the time that I commanded judges to be over my people Israel, and have caused thee to rest from all thine enemies. Also the LORD telleth thee that he will make thee an house."

2 Samuel 7:12: "And when thy days be fulfilled, and thou shalt sleep with thy fathers, I will set up thy seed after thee, which shall proceed out of thy bowels, and I will establish his kingdom."

2 Samuel 7:13: "He shall build an house for my name, and I will stablish the throne of his kingdom for ever."

2 Samuel 7:14: "I will be his father, and he shall be my son. If he commit iniquity, I will chasten him with the rod of men, and with the stripes of the children of men:"

2 Samuel 7:27: "For thou, O LORD of hosts, God of Israel, hast revealed to thy servant, saying, I will build thee an house: therefore hath thy servant found in his heart to pray this prayer unto thee."

2 Samuel 9:7: "And David said unto him, Fear not: for I will surely shew thee kindness for Jonathan thy father's sake, and will restore thee all the land of Saul thy father; and thou shalt eat bread at my table continually."

2 Samuel 10:2: "Then said David, I will shew kindness unto Hanun the son of Nahash, as his father shewed kindness unto me. And David sent to comfort him by the hand of his servants for his father. And David's servants came into the land of the children of Ammon."

2 Samuel 10:11: "And he said, If the Syrians be too strong for me, then thou shalt help me: but if the children of Ammon be too strong for thee, then I will come and help thee."

2 Samuel 11:11: "And Uriah said unto David, The ark, and Israel, and Judah, abide in tents; and my lord Joab, and the servants of my lord, are encamped in the open fields; shall I then go into mine house, to eat and to drink, and to lie with my wife? as thou livest, and as thy soul liveth, I will not do this thing."

2 Samuel 11:12: "And David said to Uriah, Tarry here to day also, and to morrow I will let thee depart. So Uriah abode in Jerusalem that day, and the morrow."

2 Samuel 12:11: "Thus saith the LORD, Behold, I will raise up evil against thee out of thine own house, and I will take thy wives before thine eyes, and give them unto thy neighbour, and he shall lie with thy wives in the sight of this sun."

2 Samuel 12:12: "For thou didst it secretly: but I will do this thing before all Israel, and before the sun."

2 Samuel 12:18: "And it came to pass on the seventh day, that the child died. And the servants of David feared to tell him that the child was dead: for they said, Behold, while the child was yet alive, we spake unto him, and he would not hearken unto our voice: how will he then vex himself, if we tell him that the child is dead?"

2 Samuel 12:22: "And he said, While the child was yet alive, I fasted and wept: for I said, Who can tell whether GOD will be gracious to me, that the child may live?"

2 Samuel 13:13: "And I, whither shall I cause my shame to go? and as for thee, thou shalt be as one of the fools in Israel. Now therefore, I pray thee, speak unto the king; for he will not withhold me from thee."

2 Samuel 14:7: "And, behold, the whole family is risen against thine handmaid, and they said, Deliver him that smote his brother, that we may kill him, for the life of his brother whom he slew; and we will destroy the heir also: and so they shall quench my coal which is left, and shall not leave to my husband neither name nor remainder upon the earth."

2 Samuel 14:8: "And the king said unto the woman, Go to thine house, and I will give charge

concerning thee."

2 Samuel 14:15: "Now therefore that I am come to speak of this thing unto my lord the king, it is because the people have made me afraid: and thy handmaid said, I will now speak unto the king; it may be that the king will perform the request of his handmaid."

2 Samuel 14:16: "For the king will hear, to deliver his handmaid out of the hand of the man that would destroy me and my son together out of the inheritance of God."

2 Samuel 14:17: "Then thine handmaid said, The word of my lord the king shall now be comfortable: for as an angel of God, so is my lord the king to discern good and bad: therefore the LORD thy God will be with thee."

2 Samuel 15:8: "For thy servant vowed a vow while I abode at Geshur in Syria, saying, If the LORD shall bring me again indeed to Jerusalem, then I will serve the LORD."

2 Samuel 15:21: "And Ittai answered the king, and said, As the LORD liveth, and as my lord the king liveth, surely in what place my lord the king shall be, whether in death or life, even there also will thy servant be."

2 Samuel 15:25: "And the king said unto Zadok, Carry back the ark of God into the city: if I shall find favour in the eyes of the LORD, he will bring me again, and shew me both it, and his habitation:"

2 Samuel 15:28: "See, I will tarry in the plain of the wilderness, until there come word from you to certify me."

2 Samuel 15:34: "But if thou return to the city, and say unto Absalom, I will be thy servant, O king; as I have been thy father's servant hitherto, so will I now also be thy servant: then mayest thou for me defeat the counsel of Ahithophel."

2 Samuel 16:12: "It may be that the LORD will look on mine affliction, and that the LORD will requite me good for his cursing this day."

2 Samuel 16:18: "And Hushai said unto Absalom, Nay; but whom the LORD, and this people, and all the men of Israel, choose, his will I be, and with him will I abide."

2 Samuel 16:19: "And again, whom should I serve? should I not serve in the presence of his son? as I have served in thy father's presence, so will I be in thy presence."

2 Samuel 17:1: "Moreover Ahithophel said unto Absalom, Let me now choose out twelve thousand men, and I will arise and pursue after David this night:"

2 Samuel 17:2: "And I will come upon him while he is weary and weak handed, and will make him afraid: and all the people that are with him shall flee; and I will smite the king only:"

2 Samuel 17:3: "And I will bring back all the people unto thee: the man whom thou seekest is as if all returned: so all the people shall be in peace."

2 Samuel 17:8: "For, said Hushai, thou knowest thy father and his men, that they be mighty men, and they be chafed in their minds, as a bear robbed of her whelps in the field: and thy father is a man of war, and will not lodge with the people."

2 Samuel 17:9: "Behold, he is hid now in some pit, or in some other place: and it will come to pass, when some of them be overthrown at the first, that whosoever heareth it will say, There is a slaughter among the people that follow Absalom."

2 Samuel 17:12: "So shall we come upon him in some place where he shall be found, and we will light upon him as the dew falleth on the ground: and of him and of all the men that are with him there shall not be left so much as one."

2 Samuel 17:13: "Moreover, if he be gotten into a city, then shall all Israel bring ropes to that city, and we will draw it into the river, until there be not one small stone found there."

2 Samuel 18:2: "And David sent forth a third part of the people under the hand of Joab, and a third part under the hand of Abishai the son of Zeruiah, Joab's brother, and a third part under the hand of Ittai the Gittite. And the king said unto the people, I will surely go forth with you myself also."

2 Samuel 18:3: "But the people answered, Thou shalt not go forth: for if we flee away, they will not care for us; neither if half of us die, will they care for us: but now thou art worth ten thousand of us:



therefore now it is better that thou succour us out of the city."

2 Samuel 18:4: "And the king said unto them, What seemeth you best I will do. And the king stood by the gate side, and all the people came out by hundreds and by thousands."

2 Samuel 19:7: "Now therefore arise, go forth, and speak comfortably unto thy servants: for I swear by the LORD, if thou go not forth, there will not tarry one with thee this night: and that will be worse unto thee than all the evil that befell thee from thy youth until now."

2 Samuel 19:26: "And he answered, My lord, O king, my servant deceived me: for thy servant said, I will saddle me an ass, that I may ride thereon, and go to the king; because thy servant is lame."

2 Samuel 19:33: "And the king said unto Barzillai, Come thou over with me, and I will feed thee with me in Jerusalem."

2 Samuel 19:36: "Thy servant will go a little way over Jordan with the king: and why should the king recompense it me with such a reward?"

2 Samuel 19:38: "And the king answered, Chimham shall go over with me, and I will do to him that which shall seem good unto thee: and whatsoever thou shalt require of me, that will I do for thee."

2 Samuel 20:21: "The matter is not so: but a man of mount Ephraim, Sheba the son of Bichri by name, hath lifted up his hand against the king, even against David: deliver him only, and I will depart from the city. And the woman said unto Joab, Behold, his head shall be thrown to thee over the wall."

2 Samuel 21:4: "And the Gibeonites said unto him, We will have no silver nor gold of Saul, nor of his house; neither for us shalt thou kill any man in Israel. And he said, What ye shall say, that will I do for you."

2 Samuel 21:6: "Let seven men of his sons be delivered unto us, and we will hang them up unto the LORD in Gibeah of Saul, whom the LORD did choose. And the king said, I will give them."

2 Samuel 22:3: "The God of my rock; in him will I trust: he is my shield, and the horn of my salvation, my high tower, and my refuge, my saviour; thou savest me from violence."

2 Samuel 22:4: "I will call on the LORD, who is worthy to be praised: so shall I be saved from mine enemies."

2 Samuel 22:29: "For thou art my lamp, O LORD: and the LORD will lighten my darkness."

2 Samuel 22:50: "Therefore I will give thanks unto thee, O LORD, among the heathen, and I will sing praises unto thy name."

2 Samuel 24:24: "And the king said unto Araunah, Nay; but I will surely buy it of thee at a price: neither will I offer burnt offerings unto the LORD my God of that which doth cost me nothing. So David bought the threshingfloor and the oxen for fifty shekels of silver."

1 Kings 1:5: "Then Adonijah the son of Haggith exalted himself, saying, I will be king: and he prepared him chariots and horsemen, and fifty men to run before him."

1 Kings 1:14: "Behold, while thou yet talkest there with the king, I also will come in after thee, and confirm thy words."

1 Kings 1:30: "Even as I sware unto thee by the LORD God of Israel, saying, Assuredly Solomon thy son shall reign after me, and he shall sit upon my throne in my stead; even so will I certainly do this day."

1 Kings 1:51: "And it was told Solomon, saying, Behold, Adonijah feareth king Solomon: for, lo, he hath caught hold on the horns of the altar, saying, Let king Solomon swear unto me today that he will not slay his servant with the sword."

1 Kings 1:52: "And Solomon said, If he will shew himself a worthy man, there shall not an hair of him fall to the earth: but if wickedness shall be found in him, he shall die."

1 Kings 2:8: "And, behold, thou hast with thee Shimei the son of Gera, a Benjamite of Bahurim, which cursed me with a grievous curse in the day when I went to Mahanaim: but he came down to meet me at Jordan, and I sware to him by the LORD, saying, I will not put thee to death with the sword."

1 Kings 2:17: "And he said, Speak, I pray thee, unto Solomon the king, (for he will not say thee

nay,) that he give me Abishag the Shunammite to wife."

1 Kings 2:18: "And Bathsheba said, Well; I will speak for thee unto the king."

1 Kings 2:20: "Then she said, I desire one small petition of thee; I pray thee, say me not nay. And the king said unto her, Ask on, my mother: for I will not say thee nay."

1 Kings 2:26: "And unto Abiathar the priest said the king, Get thee to Anathoth, unto thine own fields; for thou art worthy of death: but I will not at this time put thee to death, because thou barest the ark of the LORD God before David my father, and because thou hast been afflicted in all wherein my father was afflicted."

1 Kings 2:30: "And Benaiah came to the tabernacle of the LORD, and said unto him, Thus saith the king, Come forth. And he said, Nay; but I will die here. And Benaiah brought the king word again, saying, Thus said Joab, and thus he answered me."

1 Kings 2:38: "And Shimei said unto the king, The saying is good: as my lord the king hath said, so will thy servant do. And Shimei dwelt in Jerusalem many days."

1 Kings 3:14: "And if thou wilt walk in my ways, to keep my statutes and my commandments, as thy father David did walk, then I will lengthen thy days."

1 Kings 5:5: "And, behold, I purpose to build an house unto the name of the LORD my God, as the LORD spake unto David my father, saying, Thy son, whom I will set upon thy throne in thy room, he shall build an house unto my name."

1 Kings 5:6: "Now therefore command thou that they hew me cedar trees out of Lebanon; and my servants shall be with thy servants: and unto thee will I give hire for thy servants according to all that thou shalt appoint: for thou knowest that there is not among us any that can skill to hew timber like unto the Sidonians."

1 Kings 5:8: "And Hiram sent to Solomon, saying, I have considered the things which thou sentest to me for: and I will do all thy desire concerning timber of cedar, and concerning timber of fir."

1 Kings 5:9: "My servants shall bring them down from Lebanon unto the sea: and I will convey them by sea in floats unto the place that thou shalt appoint me, and will cause them to be discharged there, and thou shalt receive them: and thou shalt accomplish my desire, in giving food for my household."

1 Kings 6:12: "Concerning this house which thou art in building, if thou wilt walk in my statutes, and execute my judgments, and keep all my commandments to walk in them; then will I perform my word with thee, which I spake unto David thy father:"

1 Kings 6:13: "And I will dwell among the children of Israel, and will not forsake my people Israel."

1 Kings 8:27: "But will God indeed dwell on the earth? behold, the heaven and heaven of heavens cannot contain thee; how much less this house that I have builded?"

1 Kings 9:5: "Then I will establish the throne of thy kingdom upon Israel for ever, as I promised to David thy father, saying, There shall not fail thee a man upon the throne of Israel."

1 Kings 9:6: "But if ye shall at all turn from following me, ye or your children, and will not keep my commandments and my statutes which I have set before you, but go and serve other gods, and worship them:"

1 Kings 9:7: "Then will I cut off Israel out of the land which I have given them; and this house, which I have hallowed for my name, will I cast out of my sight; and Israel shall be a proverb and a byword among all people:"

1 Kings 11:2: "Of the nations concerning which the LORD said unto the children of Israel, Ye shall not go in to them, neither shall they come in unto you: for surely they will turn away your heart after their gods: Solomon clave unto these in love."

1 Kings 11:11: "Wherefore the LORD said unto Solomon, Forasmuch as this is done of thee, and thou hast not kept my covenant and my statutes, which I have commanded thee, I will surely rend the kingdom from thee, and will give it to thy servant."

1 Kings 11:12: "Notwithstanding in thy days I will not do it for David thy father's sake: but I will

rend it out of the hand of thy son."

1 Kings 11:13: "Howbeit I will not rend away all the kingdom; but will give one tribe to thy son for David my servant's sake, and for Jerusalem's sake which I have chosen."

1 Kings 11:31: "And he said to Jeroboam, Take thee ten pieces: for thus saith the LORD, the God of Israel, Behold, I will rend the kingdom out of the hand of Solomon, and will give ten tribes to thee:"

1 Kings 11:34: "Howbeit I will not take the whole kingdom out of his hand: but I will make him prince all the days of his life for David my servant's sake, whom I chose, because he kept my commandments and my statutes:"

1 Kings 11:35: "But I will take the kingdom out of his son's hand, and will give it unto thee, even ten tribes."

1 Kings 11:36: "And unto his son will I give one tribe, that David my servant may have a light alway before me in Jerusalem, the city which I have chosen me to put my name there."

1 Kings 11:37: "And I will take thee, and thou shalt reign according to all that thy soul desireth, and shalt be king over Israel."

1 Kings 11:38: "And it shall be, if thou wilt hearken unto all that I command thee, and wilt walk in my ways, and do that is right in my sight, to keep my statutes and my commandments, as David my servant did; that I will be with thee, and build thee a sure house, as I built for David, and will give Israel unto thee."

1 Kings 11:39: "And I will for this afflict the seed of David, but not for ever."

1 Kings 12:4: "Thy father made our yoke grievous: now therefore make thou the grievous service of thy father, and his heavy yoke which he put upon us, lighter, and we will serve thee."

1 Kings 12:7: "And they spake unto him, saying, If thou wilt be a servant unto this people this day, and wilt serve them, and answer them, and speak good words to them, then they will be thy servants for ever."

1 Kings 12:11: "And now whereas my father did lade you with a heavy yoke, I will add to your yoke: my father hath chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

1 Kings 12:14: "And spake to them after the counsel of the young men, saying, My father made your yoke heavy, and I will add to your yoke: my father also chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

1 Kings 13:7: "And the king said unto the man of God, Come home with me, and refresh thyself, and I will give thee a reward."

1 Kings 13:8: "And the man of God said unto the king, If thou wilt give me half thine house, I will not go in with thee, neither will I eat bread nor drink water in this place:"

1 Kings 13:16: "And he said, I may not return with thee, nor go in with thee: neither will I eat bread nor drink water with thee in this place:"

1 Kings 14:10: "Therefore, behold, I will bring evil upon the house of Jeroboam, and will cut off from Jeroboam him that pisseth against the wall, and him that is shut up and left in Israel, and will take away the remnant of the house of Jeroboam, as a man taketh away dung, till it be all gone."

1 Kings 16:3: "Behold, I will take away the posterity of Baasha, and the posterity of his house; and will make thy house like the house of Jeroboam the son of Nebat."

1 Kings 18:1: "And it came to pass after many days, that the word of the LORD came to Elijah in the third year, saying, Go, shew thyself unto Ahab; and I will send rain upon the earth."

1 Kings 18:15: "And Elijah said, As the LORD of hosts liveth, before whom I stand, I will surely shew myself unto him to day."

1 Kings 18:23: "Let them therefore give us two bullocks; and let them choose one bullock for themselves, and cut it in pieces, and lay it on wood, and put no fire under: and I will dress the other bullock, and lay it on wood, and put no fire under:"

1 Kings 18:24: "And call ye on the name of your gods, and I will call on the name of the LORD: and the God that answereth by fire, let him be God. And all the people answered and said, It is well spoken."

1 Kings 19:20: "And he left the oxen, and ran after Elijah, and said, Let me, I pray thee, kiss my father and my mother, and then I will follow thee. And he said unto him, Go back again: for what have I done to thee?"

1 Kings 20:6: "Yet I will send my servants unto thee to morrow about this time, and they shall search thine house, and the houses of thy servants; and it shall be, that whatsoever is pleasant in thine eyes, they shall put it in their hand, and take it away."

1 Kings 20:9: "Wherefore he said unto the messengers of Benhadad, Tell my lord the king, All that thou didst send for to thy servant at the first I will do: but this thing I may not do. And the messengers departed, and brought him word again."

1 Kings 20:13: "And, behold, there came a prophet unto Ahab king of Israel, saying, Thus saith the LORD, Hast thou seen all this great multitude? behold, I will deliver it into thine hand this day; and thou shalt know that I am the LORD."

1 Kings 20:22: "And the prophet came to the king of Israel, and said unto him, Go, strengthen thyself, and mark, and see what thou doest: for at the return of the year the king of Syria will come up against thee."

1 Kings 20:25: "And number thee an army, like the army that thou hast lost, horse for horse, and chariot for chariot: and we will fight against them in the plain, and surely we shall be stronger than they. And he hearkened unto their voice, and did so."

1 Kings 20:28: "And there came a man of God, and spake unto the king of Israel, and said, Thus saith the LORD, Because the Syrians have said, The LORD is God of the hills, but he is not God of the valleys, therefore will I deliver all this great multitude into thine hand, and ye shall know that I am the LORD."

1 Kings 20:31: "And his servants said unto him, Behold now, we have heard that the kings of the house of Israel are merciful kings: let us, I pray thee, put sackcloth on our loins, and ropes upon our heads, and go out to the king of Israel: peradventure he will save thy life."

1 Kings 20:34: "And Ben-hadad said unto him, The cities, which my father took from thy father, I will restore; and thou shalt make streets for thee in Damascus, as my father made in Samaria. Then said Ahab, I will send thee away with this covenant. So he made a covenant with him, and sent him away."

1 Kings 21:2: "And Ahab spake unto Naboth, saying, Give me thy vineyard, that I may have it for a garden of herbs, because it is near unto my house: and I will give thee for it a better vineyard than it; or, if it seem good to thee, I will give thee the worth of it in money."

1 Kings 21:4: "And Ahab came into his house heavy and displeased because of the word which Naboth the Jezreelite had spoken to him: for he had said, I will not give thee the inheritance of my fathers. And he laid him down upon his bed, and turned away his face, and would eat no bread."

1 Kings 21:6: "And he said unto her, Because I spake unto Naboth the Jezreelite, and said unto him, Give me thy vineyard for money; or else, if it please thee, I will give thee another vineyard for it: and he answered, I will not give thee my vineyard."

1 Kings 21:7: "And Jezebel his wife said unto him, Dost thou now govern the kingdom of Israel? arise, and eat bread, and let thine heart be merry: I will give thee the vineyard of Naboth the Jezreelite."

1 Kings 21:21: "Behold, I will bring evil upon thee, and will take away thy posterity, and will cut off from Ahab him that pisseth against the wall, and him that is shut up and left in Israel,"

1 Kings 21:22: "And will make thine house like the house of Jeroboam the son of Nebat, and like the house of Baasha the son of Ahijah, for the provocation wherewith thou hast provoked me to anger, and made Israel to sin."

1 Kings 21:29: "Seest thou how Ahab humbleth himself before me? because he humbleth himself before me, I will not bring the evil in his days: but in his son's days will I bring the evil upon his house."

1 Kings 22:14: "And Micaiah said, As the LORD liveth, what the LORD saith unto me, that will I

speak."

1 Kings 22:21: "And there came forth a spirit, and stood before the LORD, and said, I will persuade him."

1 Kings 22:22: "And the LORD said unto him, Wherewith? And he said, I will go forth, and I will be a lying spirit in the mouth of all his prophets. And he said, Thou shalt persuade him, and prevail also: go forth, and do so."

1 Kings 22:30: "And the king of Israel said unto Jehoshaphat, I will disguise myself, and enter into the battle; but put thou on thy robes. And the king of Israel disguised himself, and went into the battle."

2 Kings 2:2: "And Elijah said unto Elisha, Tarry here, I pray thee; for the LORD hath sent me to Bethel. And Elisha said unto him, As the LORD liveth, and as thy soul liveth, I will not leave thee. So they went down to Bethel."

2 Kings 2:3: "And the sons of the prophets that were at Bethel came forth to Elisha, and said unto him, Knowest thou that the LORD will take away thy master from thy head to day? And he said, Yea, I know it; hold ye your peace."

2 Kings 2:4: "And Elijah said unto him, Elisha, tarry here, I pray thee; for the LORD hath sent me to Jericho. And he said, As the LORD liveth, and as thy soul liveth, I will not leave thee. So they came to Jericho."

2 Kings 2:5: "And the sons of the prophets that were at Jericho came to Elisha, and said unto him, Knowest thou that the LORD will take away thy master from thy head to day? And he answered, Yea, I know it; hold ye your peace."

2 Kings 2:6: "And Elijah said unto him, Tarry, I pray thee, here; for the LORD hath sent me to Jordan. And he said, As the LORD liveth, and as thy soul liveth, I will not leave thee. And they two went on."

2 Kings 3:7: "And he went and sent to Jehoshaphat the king of Judah, saying, The king of Moab hath rebelled against me: wilt thou go with me against Moab to battle? And he said, I will go up: I am as thou art, my people as thy people, and my horses as thy horses."

2 Kings 3:18: "And this is but a light thing in the sight of the LORD: he will deliver the Moabites also into your hand."

2 Kings 4:30: "And the mother of the child said, As the LORD liveth, and as thy soul liveth, I will not leave thee. And he arose, and followed her."

2 Kings 5:5: "And the king of Syria said, Go to, go, and I will send a letter unto the king of Israel. And he departed, and took with him ten talents of silver, and six thousand pieces of gold, and ten changes of raiment."

2 Kings 5:11: "But Naaman was wroth, and went away, and said, Behold, I thought, He will surely come out to me, and stand, and call on the name of the LORD his God, and strike his hand over the place, and recover the leper."

2 Kings 5:16: "But he said, As the LORD liveth, before whom I stand, I will receive none. And he urged him to take it; but he refused."

2 Kings 5:17: "And Naaman said, Shall there not then, I pray thee, be given to thy servant two mules' burden of earth? for thy servant will henceforth offer neither burnt offering nor sacrifice unto other gods, but unto the LORD."

2 Kings 5:20: "But Gehazi, the servant of Elisha the man of God, said, Behold, my master hath spared Naaman this Syrian, in not receiving at his hands that which he brought: but, as the LORD liveth, I will run after him, and take somewhat of him."

2 Kings 6:3: "And one said, Be content, I pray thee, and go with thy servants. And he answered, I will go."

2 Kings 6:11: "Therefore the heart of the king of Syria was sore troubled for this thing; and he called his servants, and said unto them, Will ye not shew me which of us is for the king of Israel?"

2 Kings 6:19: "And Elisha said unto them, This is not the way, neither is this the city: follow me,

and I will bring you to the man whom ye seek. But he led them to Samaria."

2 Kings 6:28: "And the king said unto her, What aileth thee? And she answered, This woman said unto me, Give thy son, that we may eat him to day, and we will eat my son to morrow."

2 Kings 7:4: "If we say, We will enter into the city, then the famine is in the city, and we shall die there: and if we sit still here, we die also. Now therefore come, and let us fall unto the host of the Syrians: if they save us alive, we shall live; and if they kill us, we shall but die."

2 Kings 7:9: "Then they said one to another, We do not well: this day is a day of good tidings, and we hold our peace: if we tarry till the morning light, some mischief will come upon us: now therefore come, that we may go and tell the king's household."

2 Kings 7:12: "And the king arose in the night, and said unto his servants, I will now shew you what the Syrians have done to us. They know that we be hungry; therefore are they gone out of the camp to hide themselves in the field, saying, When they come out of the city, we shall catch them alive, and get into the city."

2 Kings 9:8: "For the whole house of Ahab shall perish: and I will cut off from Ahab him that pisseth against the wall, and him that is shut up and left in Israel:"

2 Kings 9:9: "And I will make the house of Ahab like the house of Jeroboam the son of Nebat, and like the house of Baasha the son of Ahijah:"

2 Kings 9:26: "Surely I have seen yesterday the blood of Naboth, and the blood of his sons, saith the LORD; and I will requite thee in this plat, saith the LORD. Now therefore take and cast him into the plat of ground, according to the word of the LORD."

2 Kings 10:5: "And he that was over the house, and he that was over the city, the elders also, and the bringers up of the children, sent to Jehu, saying, We are thy servants, and will do all that thou shalt bid us; we will not make any king: do thou that which is good in thine eyes."

2 Kings 10:6: "Then he wrote a letter the second time to them, saying, If ye be mine, and if ye will hearken unto my voice, take ye the heads of the men your master's sons, and come to me to Jezreel by to morrow this time. Now the king's sons, being seventy persons, were with the great men of the city, which brought them up."

2 Kings 18:14: "And Hezekiah king of Judah sent to the king of Assyria to Lachish, saying, I have offended; return from me: that which thou puttest on me will I bear. And the king of Assyria appointed unto Hezekiah king of Judah three hundred talents of silver and thirty talents of gold."

2 Kings 18:21: "Now, behold, thou trustest upon the staff of this bruised reed, even upon Egypt, on which if a man lean, it will go into his hand, and pierce it: so is Pharaoh king of Egypt unto all that trust on him."

2 Kings 18:23: "Now therefore, I pray thee, give pledges to my lord the king of Assyria, and I will deliver thee two thousand horses, if thou be able on thy part to set riders upon them."

2 Kings 18:30: "Neither let Hezekiah make you trust in the LORD, saying, The LORD will surely deliver us, and this city shall not be delivered into the hand of the king of Assyria."

2 Kings 18:32: "Until I come and take you away to a land like your own land, a land of corn and wine, a land of bread and vineyards, a land of oil olive and of honey, that ye may live, and not die: and hearken not unto Hezekiah, when he persuadeth you, saying, The LORD will deliver us."

2 Kings 19:4: "It may be the LORD thy God will hear all the words of Rabshakeh, whom the king of Assyria his master hath sent to reproach the living God; and will reprove the words which the LORD thy God hath heard: wherefore lift up thy prayer for the remnant that are left."

2 Kings 19:7: "Behold, I will send a blast upon him, and he shall hear a rumour, and shall return to his own land; and I will cause him to fall by the sword in his own land."

2 Kings 19:23: "By thy messengers thou hast reproached the LORD, and hast said, With the multitude of my chariots I am come up to the height of the mountains, to the sides of Lebanon, and will cut down the tall cedar trees thereof, and the choice fir trees thereof: and I will enter into the lodgings of his borders, and into the forest of his Carmel."

2 Kings 19:28: "Because thy rage against me and thy tumult is come up into mine ears, therefore I

will put my hook in thy nose, and my bridle in thy lips, and I will turn thee back by the way by which thou camest."

2 Kings 19:34: "For I will defend this city, to save it, for mine own sake, and for my servant David's sake."

2 Kings 20:5: "Turn again, and tell Hezekiah the captain of my people, Thus saith the LORD, the God of David thy father, I have heard thy prayer, I have seen thy tears: behold, I will heal thee: on the third day thou shalt go up unto the house of the LORD."

2 Kings 20:6: "And I will add unto thy days fifteen years; and I will deliver thee and this city out of the hand of the king of Assyria; and I will defend this city for mine own sake, and for my servant David's sake."

2 Kings 20:8: "And Hezekiah said unto Isaiah, What shall be the sign that the LORD will heal me, and that I shall go up into the house of the LORD the third day?"

2 Kings 20:9: "And Isaiah said, This sign shalt thou have of the LORD, that the LORD will do the thing that he hath spoken: shall the shadow go forward ten degrees, or go back ten degrees?"

2 Kings 21:4: "And he built altars in the house of the LORD, of which the LORD said, In Jerusalem will I put my name."

2 Kings 21:7: "And he set a graven image of the grove that he had made in the house, of which the LORD said to David, and to Solomon his son, In this house, and in Jerusalem, which I have chosen out of all tribes of Israel, will I put my name for ever:"

2 Kings 21:8: "Neither will I make the feet of Israel move any more out of the land which I gave their fathers; only if they will observe to do according to all that I have commanded them, and according to all the law that my servant Moses commanded them."

2 Kings 21:13: "And I will stretch over Jerusalem the line of Samaria, and the plummet of the house of Ahab: and I will wipe Jerusalem as a man wipeth a dish, wiping it, and turning it upside down."

2 Kings 21:14: "And I will forsake the remnant of mine inheritance, and deliver them into the hand of their enemies; and they shall become a prey and a spoil to all their enemies;"

2 Kings 22:16: "Thus saith the LORD, Behold, I will bring evil upon this place, and upon the inhabitants thereof, even all the words of the book which the king of Judah hath read:"

2 Kings 22:20: "Behold therefore, I will gather thee unto thy fathers, and thou shalt be gathered into thy grave in peace; and thine eyes shall not see all the evil which I will bring upon this place. And they brought the king word again."

2 Kings 23:27: "And the LORD said, I will remove Judah also out of my sight, as I have removed Israel, and will cast off this city Jerusalem which I have chosen, and the house of which I said, My name shall be there."

1 Chronicles 12:19: "And there fell some of Manasseh to David, when he came with the Philistines against Saul to battle: but they helped them not: for the lords of the Philistines upon advisement sent him away, saying, He will fall to his master Saul to the jeopardy of our heads."

1 Chronicles 14:10: "And David enquired of God, saying, Shall I go up against the Philistines? And wilt thou deliver them into mine hand? And the LORD said unto him, Go up; for I will deliver them into thine hand."

1 Chronicles 16:18: "Saying, Unto thee will I give the land of Canaan, the lot of your inheritance;"

1 Chronicles 17:9: "Also I will ordain a place for my people Israel, and will plant them, and they shall dwell in their place, and shall be moved no more; neither shall the children of wickedness waste them any more, as at the beginning,"

1 Chronicles 17:10: "And since the time that I commanded judges to be over my people Israel. Moreover I will subdue all thine enemies. Furthermore I tell thee that the LORD will build thee an house."

1 Chronicles 17:11: "And it shall come to pass, when thy days be expired that thou must go to be with thy fathers, that I will raise up thy seed after thee, which shall be of thy sons; and I will establish his kingdom."

1 Chronicles 17:12: "He shall build me an house, and I will stablish his throne for ever."

1 Chronicles 17:13: "I will be his father, and he shall be my son: and I will not take my mercy away from him, as I took it from him that was before thee:"

1 Chronicles 17:14: "But I will settle him in mine house and in my kingdom for ever: and his throne shall be established for evermore."

1 Chronicles 19:2: "And David said, I will shew kindness unto Hanun the son of Nahash, because his father shewed kindness to me. And David sent messengers to comfort him concerning his father. So the servants of David came into the land of the children of Ammon to Hanun, to comfort him."

1 Chronicles 19:12: "And he said, If the Syrians be too strong for me, then thou shalt help me: but if the children of Ammon be too strong for thee, then I will help thee."

1 Chronicles 21:3: "And Joab answered, The LORD make his people an hundred times so many more as they be: but, my lord the king, are they not all my lord's servants? why then doth my lord require this thing? why will he be a cause of trespass to Israel?"

1 Chronicles 21:24: "And king David said to Ornan, Nay; but I will verily buy it for the full price: for I will not take that which is thine for the LORD, nor offer burnt offerings without cost."

1 Chronicles 22:5: "And David said, Solomon my son is young and tender, and the house that is to be builded for the LORD must be exceeding magnifical, of fame and of glory throughout all countries: I will therefore now make preparation for it. So David prepared abundantly before his death."

1 Chronicles 22:9: "Behold, a son shall be born to thee, who shall be a man of rest; and I will give him rest from all his enemies round about: for his name shall be Solomon, and I will give peace and quietness unto Israel in his days."

1 Chronicles 22:10: "He shall build an house for my name; and he shall be my son, and I will be his father; and I will establish the throne of his kingdom over Israel for ever."

1 Chronicles 28:6: "And he said unto me, Solomon thy son, he shall build my house and my courts: for I have chosen him to be my son, and I will be his father."

1 Chronicles 28:7: "Moreover I will establish his kingdom for ever, if he be constant to do my commandments and my judgments, as at this day."

1 Chronicles 28:9: "And thou, Solomon my son, know thou the God of thy father, and serve him with a perfect heart and with a willing mind: for the LORD searcheth all hearts, and understandeth all the imaginations of the thoughts: if thou seek him, he will be found of thee; but if thou forsake him, he will cast thee off for ever."

1 Chronicles 28:20: "And David said to Solomon his son, Be strong and of good courage, and do it: fear not, nor be dismayed: for the LORD God, even my God, will be with thee; he will not fail thee, nor forsake thee, until thou hast finished all the work for the service of the house of the LORD."

1 Chronicles 28:21: "And, behold, the courses of the priests and the Levites, even they shall be with thee for all the service of the house of God: and there shall be with thee for all manner of workmanship every willing skilful man, for any manner of service: also the princes and all the people will be wholly at thy commandment."

2 Chronicles 1:12: "Wisdom and knowledge is granted unto thee; and I will give thee riches, and wealth, and honour, such as none of the kings have had that have been before thee, neither shall there any after thee have the like."

2 Chronicles 2:10: "And, behold, I will give to thy servants, the hewers that cut timber, twenty thousand measures of beaten wheat, and twenty thousand measures of barley, and twenty thousand baths of wine, and twenty thousand baths of oil."

2 Chronicles 2:16: "And we will cut wood out of Lebanon, as much as thou shalt need: and we will bring it to thee in floats by sea to Joppa; and thou shalt carry it up to Jerusalem."

2 Chronicles 6:18: "But will God in very deed dwell with men on the earth? behold, heaven and the heaven of heavens cannot contain thee; how much less this house which I have built!"

2 Chronicles 7:14: "If my people, which are called by my name, shall humble themselves, and pray,



and seek my face, and turn from their wicked ways; then will I hear from heaven, and will forgive their sin, and will heal their land."

2 Chronicles 7:18: "Then will I stablish the throne of thy kingdom, according as I have covenanted with David thy father, saying, There shall not fail thee a man to be ruler in Israel."

2 Chronicles 7:20: "Then will I pluck them up by the roots out of my land which I have given them; and this house, which I have sanctified for my name, will I cast out of my sight, and will make it to be a proverb and a byword among all nations."

2 Chronicles 10:4: "Thy father made our yoke grievous: now therefore ease thou somewhat the grievous servitude of thy father, and his heavy yoke that he put upon us, and we will serve thee."

2 Chronicles 10:7: "And they spake unto him, saying, If thou be kind to this people, and please them, and speak good words to them, they will be thy servants for ever."

2 Chronicles 10:11: "For whereas my father put a heavy yoke upon you, I will put more to your yoke: my father chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

2 Chronicles 10:14: "And answered them after the advice of the young men, saying, My father made your yoke heavy, but I will add thereto: my father chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

2 Chronicles 12:7: "And when the LORD saw that they humbled themselves, the word of the LORD came to Shemaiah, saying, They have humbled themselves; therefore I will not destroy them, but I will grant them some deliverance; and my wrath shall not be poured out upon Jerusalem by the hand of Shishak."

2 Chronicles 15:2: "And he went out to meet Asa, and said unto him, Hear ye me, Asa, and all Judah and Benjamin; The LORD is with you, while ye be with him; and if ye seek him, he will be found of you; but if ye forsake him, he will forsake you."

2 Chronicles 18:3: "And Ahab king of Israel said unto Jehoshaphat king of Judah, Wilt thou go with me to Ramothgilead? And he answered him, I am as thou art, and my people as thy people; and we will be with thee in the war."

2 Chronicles 18:5: "Therefore the king of Israel gathered together of prophets four hundred men, and said unto them, Shall we go to Ramothgilead to battle, or shall I forbear? And they said, Go up; for God will deliver it into the king's hand."

2 Chronicles 18:13: "And Micaiah said, As the LORD liveth, even what my God saith, that will I speak."

2 Chronicles 18:20: "Then there came out a spirit, and stood before the LORD, and said, I will entice him. And the LORD said unto him, Wherewith?"

2 Chronicles 18:21: "And he said, I will go out, and be a lying spirit in the mouth of all his prophets. And the Lord said, Thou shalt entice him, and thou shalt also prevail: go out, and do even so."

2 Chronicles 18:29: "And the king of Israel said unto Jehoshaphat, I will disguise myself, and I will go to the battle; but put thou on thy robes. So the king of Israel disguised himself; and they went to the battle."

2 Chronicles 20:17: "Ye shall not need to fight in this battle: set yourselves, stand ye still, and see the salvation of the LORD with you, O Judah and Jerusalem: fear not, nor be dismayed; to morrow go out against them: for the LORD will be with you."

2 Chronicles 21:14: "Behold, with a great plague will the LORD smite thy people, and thy children, and thy wives, and all thy goods:"

2 Chronicles 28:23: "For he sacrificed unto the gods of Damascus, which smote him: and he said, Because the gods of the kings of Syria help them, therefore will I sacrifice to them, that they may help me. But they were the ruin of him, and of all Israel."

2 Chronicles 30:6: "So the posts went with the letters from the king and his princes throughout all Israel and Judah, and according to the commandment of the king, saying, Ye children of Israel, turn again unto the LORD God of Abraham, Isaac, and Israel, and he will return to the remnant of you,

that are escaped out of the hand of the kings of Assyria."

2 Chronicles 30:9: "For if ye turn again unto the LORD, your brethren and your children shall find compassion before them that lead them captive, so that they shall come again into this land: for the LORD your God is gracious and merciful, and will not turn away his face from you, if ye return unto him."

2 Chronicles 33:7: "And he set a carved image, the idol which he had made, in the house of God, of which God had said to David and to Solomon his son, In this house, and in Jerusalem, which I have chosen before all the tribes of Israel, will I put my name for ever:"

2 Chronicles 33:8: "Neither will I any more remove the foot of Israel from out of the land which I have appointed for your fathers; so that they will take heed to do all that I have commanded them, according to the whole law and the statutes and the ordinances by the hand of Moses."

2 Chronicles 34:24: "Thus saith the LORD, Behold, I will bring evil upon this place, and upon the inhabitants thereof, even all the curses that are written in the book which they have read before the king of Judah:"

2 Chronicles 34:28: "Behold, I will gather thee to thy fathers, and thou shalt be gathered to thy grave in peace, neither shall thine eyes see all the evil that I will bring upon this place, and upon the inhabitants of the same. So they brought the king word again."

Ezra 4:3: "But Zerubbabel, and Jeshua, and the rest of the chief of the fathers of Israel, said unto them, Ye have nothing to do with us to build an house unto our God; but we ourselves together will build unto the LORD God of Israel, as king Cyrus the king of Persia hath commanded us."

Ezra 4:13: "Be it known now unto the king, that, if this city be builded, and the walls set up again, then will they not pay toll, tribute, and custom, and so thou shalt endamage the revenue of the kings."

Ezra 7:18: "And whatsoever shall seem good to thee, and to thy brethren, to do with the rest of the silver and the gold, that do after the will of your God."

Ezra 7:26: "And whosoever will not do the law of thy God, and the law of the king, let judgment be executed speedily upon him, whether it be unto death, or to banishment, or to confiscation of goods, or to imprisonment."

Ezra 10:4: "Arise; for this matter belongeth unto thee: we also will be with thee: be of good courage, and do it."

Nehemiah 1:8: "Remember, I beseech thee, the word that thou commandedst thy servant Moses, saying, If ye transgress, I will scatter you abroad among the nations:"

Nehemiah 1:9: "But if ye turn unto me, and keep my commandments, and do them; though there were of you cast out unto the uttermost part of the heaven, yet will I gather them from thence, and will bring them unto the place that I have chosen to set my name there."

Nehemiah 2:19: "But when Sanballat the Horonite, and Tobiah the servant, the Ammonite, and Geshem the Arabian, heard it, they laughed us to scorn, and despised us, and said, What is this thing that ye do? will ye rebel against the king?"

Nehemiah 2:20: "Then answered I them, and said unto them, The God of heaven, he will prosper us; therefore we his servants will arise and build: but ye have no portion, nor right, nor memorial, in Jerusalem."

Nehemiah 4:2: "And he spake before his brethren and the army of Samaria, and said, What do these feeble Jews? will they fortify themselves? will they sacrifice? will they make an end in a day? will they revive the stones out of the heaps of the rubbish which are burned?"

Nehemiah 4:12: "And it came to pass, that when the Jews which dwelt by them came, they said unto us ten times, From all places whence ye shall return unto us they will be upon you."

Nehemiah 5:8: "And I said unto them, We after our ability have redeemed our brethren the Jews, which were sold unto the heathen; and will ye even sell your brethren? or shall they be sold unto us? Then held they their peace, and found nothing to answer."

Nehemiah 5:12: "Then said they, We will restore them, and will require nothing of them; so will we

do as thou sayest. Then I called the priests, and took an oath of them, that they should do according to this promise."

Nehemiah 6:10: "Afterward I came unto the house of Shemaiah the son of Delaiah the son of Mehetabeel, who was shut up; and he said, Let us meet together in the house of God, within the temple, and let us shut the doors of the temple: for they will come to slay thee; yea, in the night will they come to slay thee."

Nehemiah 6:11: "And I said, Should such a man as I flee? and who is there, that, being as I am, would go into the temple to save his life? I will not go in."

Nehemiah 10:39: "For the children of Israel and the children of Levi shall bring the offering of the corn, of the new wine, and the oil, unto the chambers, where are the vessels of the sanctuary, and the priests that minister, and the porters, and the singers: and we will not forsake the house of our God."

Nehemiah 13:21: "Then I testified against them, and said unto them, Why lodge ye about the wall? if ye do so again, I will lay hands on you. From that time forth came they no more on the sabbath."

Esther 3:9: "If it please the king, let it be written that they may be destroyed: and I will pay ten thousand talents of silver to the hands of those that have the charge of the business, to bring it into the king's treasuries."

Esther 4:16: "Go, gather together all the Jews that are present in Shushan, and fast ye for me, and neither eat nor drink three days, night or day: I also and my maidens will fast likewise; and so will I go in unto the king, which is not according to the law: and if I perish, I perish."

Esther 5:8: "If I have found favour in the sight of the king, and if it please the king to grant my petition, and to perform my request, let the king and Haman come to the banquet that I shall prepare for them, and I will do to morrow as the king hath said."

Esther 7:8: "Then the king returned out of the palace garden into the place of the banquet of wine; and Haman was fallen upon the bed whereon Esther was. Then said the king, Will he force the queen also before me in the house? As the word went out of king's mouth, they covered Haman's face."

Job 1:11: "But put forth thine hand now, and touch all that he hath, and he will curse thee to thy face."

Job 2:4: "And Satan answered the LORD, and said, Skin for skin, yea, all that a man hath will he give for his life."

Job 2:5: "But put forth thine hand now, and touch his bone and his flesh, and he will curse thee to thy face."

Job 5:1: "Call now, if there be any that will answer thee; and to which of the saints wilt thou turn?"

Job 6:24: "Teach me, and I will hold my tongue: and cause me to understand wherein I have erred."

Job 7:11: "Therefore I will not refrain my mouth; I will speak in the anguish of my spirit; I will complain in the bitterness of my soul."

Job 8:20: "Behold, God will not cast away a perfect man, neither will he help the evil doers:"

Job 9:3: "If he will contend with him, he cannot answer him one of a thousand."

Job 9:12: "Behold, he taketh away, who can hinder him? who will say unto him, What doest thou?"

Job 9:13: "If God will not withdraw his anger, the proud helpers do stoop under him."

Job 9:18: "He will not suffer me to take my breath, but filleth me with bitterness."

Job 9:23: "If the scourge slay suddenly, he will laugh at the trial of the innocent."

Job 9:27: "If I say, I will forget my complaint, I will leave off my heaviness, and comfort myself:"

Job 10:1: "My soul is weary of my life; I will leave my complaint upon myself; I will speak in the bitterness of my soul."

Job 10:2: "I will say unto God, Do not condemn me; shew me wherefore thou contendest with me."

Job 10:15: "If I be wicked, woe unto me; and if I be righteous, yet will I not lift up my head. I am full of confusion; therefore see thou mine affliction;"

Job 11:11: "For he knoweth vain men: he seeth wickedness also; will he not then consider it?"

Job 13:7: "Will ye speak wickedly for God? and talk deceitfully for him?"  
Job 13:8: "Will ye accept his person? will ye contend for God?"  
Job 13:10: "He will surely reprove you, if ye do secretly accept persons."  
Job 13:13: "Hold your peace, let me alone, that I may speak, and let come on me what will."  
Job 13:15: "Though he slay me, yet will I trust in him: but I will maintain mine own ways before him."  
Job 13:19: "Who is he that will plead with me? for now, if I hold my tongue, I shall give up the ghost."  
Job 13:20: "Only do not two things unto me: then will I not hide myself from thee."  
Job 13:22: "Then call thou, and I will answer: or let me speak, and answer thou me."  
Job 14:7: "For there is hope of a tree, if it be cut down, that it will sprout again, and that the tender branch thereof will not cease."  
Job 14:9: "Yet through the scent of water it will bud, and bring forth boughs like a plant."  
Job 14:14: "If a man die, shall he live again? all the days of my appointed time will I wait, till my change come."  
Job 14:15: "Thou shalt call, and I will answer thee: thou wilt have a desire to the work of thine hands."  
Job 15:17: "I will shew thee, hear me; and that which I have seen I will declare;"  
Job 17:3: "Lay down now, put me in a surety with thee; who is he that will strike hands with me?"  
Job 18:2: "How long will it be ere ye make an end of words? mark, and afterwards we will speak."  
Job 19:2: "How long will ye vex my soul, and break me in pieces with words?"  
Job 19:5: "If indeed ye will magnify yourselves against me, and plead against me my reproach:"  
Job 22:4: "Will he reprove thee for fear of thee? will he enter with thee into judgment?"  
Job 23:6: "Will he plead against me with his great power? No; but he would put strength in me."  
Job 24:25: "And if it be not so now, who will make me a liar, and make my speech nothing worth?"  
Job 27:5: "God forbid that I should justify you: till I die I will not remove mine integrity from me."  
Job 27:6: "My righteousness I hold fast, and will not let it go: my heart shall not reproach me so long as I live."  
Job 27:9: "Will God hear his cry when trouble cometh upon him?"  
Job 27:10: "Will he delight himself in the Almighty? will he always call upon God?"  
Job 27:11: "I will teach you by the hand of God: that which is with the Almighty will I not conceal."  
Job 30:24: "Howbeit he will not stretch out his hand to the grave, though they cry in his destruction."  
Job 32:10: "Therefore I said, Hearken to me; I also will shew mine opinion."  
Job 32:14: "Now he hath not directed his words against me: neither will I answer him with your speeches."  
Job 32:17: "I said, I will answer also my part, I also will shew mine opinion."  
Job 32:20: "I will speak, that I may be refreshed: I will open my lips and answer."  
Job 33:12: "Behold, in this thou art not just: I will answer thee, that God is greater than man."  
Job 33:26: "He shall pray unto God, and he will be favourable unto him: and he shall see his face with joy: for he will render unto man his righteousness."  
Job 33:28: "He will deliver his soul from going into the pit, and his life shall see the light."  
Job 33:31: "Mark well, O Job, hearken unto me: hold thy peace, and I will speak."  
Job 34:12: "Yea, surely God will not do wickedly, neither will the Almighty pervert judgment."  
Job 34:23: "For he will not lay upon man more than right; that he should enter into judgment with God."  
Job 34:31: "Surely it is meet to be said unto God, I have borne chastisement, I will not offend any more:"  
Job 34:32: "That which I see not teach thou me: if I have done iniquity, I will do no more."

Job 34:33: "Should it be according to thy mind? he will recompense it, whether thou refuse, or whether thou choose; and not I: therefore speak what thou knowest."

Job 35:3: "For thou saidst, What advantage will it be unto thee? and, What profit shall I have, if I be cleansed from my sin?"

Job 35:4: "I will answer thee, and thy companions with thee."

Job 35:13: "Surely God will not hear vanity, neither will the Almighty regard it."

Job 36:2: "Suffer me a little, and I will shew thee that I have yet to speak on God's behalf."

Job 36:3: "I will fetch my knowledge from afar, and will ascribe righteousness to my Maker."

Job 36:19: "Will he esteem thy riches? no, not gold, nor all the forces of strength."

Job 37:4: "After it a voice roareth: he thundereth with the voice of his excellency; and he will not stay them when his voice is heard."

Job 37:23: "Touching the Almighty, we cannot find him out: he is excellent in power, and in judgment, and in plenty of justice: he will not afflict."

Job 38:3: "Gird up now thy loins like a man; for I will demand of thee, and answer thou me."

Job 39:9: "Will the unicorn be willing to serve thee, or abide by thy crib?"

Job 39:10: "Canst thou bind the unicorn with his band in the furrow? or will he harrow the valleys after thee?"

Job 39:12: "Wilt thou believe him, that he will bring home thy seed, and gather it into thy barn?"

Job 40:4: "Behold, I am vile; what shall I answer thee? I will lay mine hand upon my mouth."

Job 40:5: "Once have I spoken; but I will not answer: yea, twice; but I will proceed no further."

Job 40:7: "Gird up thy loins now like a man: I will demand of thee, and declare thou unto me."

Job 40:14: "Then will I also confess unto thee that thine own right hand can save thee."

Job 41:3: "Will he make many supplications unto thee? will he speak soft words unto thee?"

Job 41:4: "Will he make a covenant with thee? wilt thou take him for a servant for ever?"

Job 41:12: "I will not conceal his parts, nor his power, nor his comely proportion."

Job 42:4: "Hear, I beseech thee, and I will speak: I will demand of thee, and declare thou unto me."

Job 42:8: "Therefore take unto you now seven bullocks and seven rams, and go to my servant Job, and offer up for yourselves a burnt offering; and my servant Job shall pray for you: for him will I accept: lest I deal with you after your folly, in that ye have not spoken of me the thing which is right, like my servant Job."

Psalms 2:7: "I will declare the decree: the LORD hath said unto me, Thou art my Son; this day have I begotten thee."

Psalms 3:6: "I will not be afraid of ten thousands of people, that have set themselves against me round about."

Psalms 4:2: "O ye sons of men, how long will ye turn my glory into shame? how long will ye love vanity, and seek after leasing? Selah."

Psalms 4:3: "But know that the LORD hath set apart him that is godly for himself: the LORD will hear when I call unto him."

Psalms 4:6: "There be many that say, Who will shew us any good? LORD, lift thou up the light of thy countenance upon us."

Psalms 4:8: "I will both lay me down in peace, and sleep: for thou, LORD, only makest me dwell in safety."

Psalms 5:2: "Hearken unto the voice of my cry, my King, and my God: for unto thee will I pray."

Psalms 5:3: "My voice shalt thou hear in the morning, O LORD; in the morning will I direct my prayer unto thee, and will look up."

Psalms 5:6: "Thou shalt destroy them that speak leasing: the LORD will abhor the bloody and deceitful man."

Psalms 5:7: "But as for me, I will come into thy house in the multitude of thy mercy: and in thy fear will I worship toward thy holy temple."

Psalms 6:9: "The LORD hath heard my supplication; the LORD will receive my prayer."

Psalms 7:12: "If he turn not, he will whet his sword; he hath bent his bow, and made it ready."  
 Psalms 7:17: "I will praise the LORD according to his righteousness: and will sing praise to the name of the LORD most high."  
 Psalms 9:1: "I will praise thee, O LORD, with my whole heart; I will shew forth all thy marvellous works."  
 Psalms 9:2: "I will be glad and rejoice in thee: I will sing praise to thy name, O thou most High."  
 Psalms 9:9: "The LORD also will be a refuge for the oppressed, a refuge in times of trouble."  
 Psalms 9:10: "And they that know thy name will put their trust in thee: for thou, LORD, hast not forsaken them that seek thee."  
 Psalms 9:14: "That I may shew forth all thy praise in the gates of the daughter of Zion: I will rejoice in thy salvation."  
 Psalms 10:4: "The wicked, through the pride of his countenance, will not seek after God: God is not in all his thoughts."  
 Psalms 10:11: "He hath said in his heart, God hath forgotten: he hideth his face; he will never see it."  
 Psalms 12:4: "Who have said, With our tongue will we prevail; our lips are our own: who is lord over us?"  
 Psalms 12:5: "For the oppression of the poor, for the sighing of the needy, now will I arise, saith the LORD; I will set him in safety from him that puffeth at him."  
 Psalms 13:6: "I will sing unto the LORD, because he hath dealt bountifully with me."  
 Psalms 16:4: "Their sorrows shall be multiplied that hasten after another god: their drink offerings of blood will I not offer, nor take up their names into my lips."  
 Psalms 16:7: "I will bless the LORD, who hath given me counsel: my reins also instruct me in the night seasons."  
 Psalms 17:15: "As for me, I will behold thy face in righteousness: I shall be satisfied, when I awake, with thy likeness."  
 Psalms 18:1: "I will love thee, O LORD, my strength."  
 Psalms 18:2: "The LORD is my rock, and my fortress, and my deliverer; my God, my strength, in whom I will trust; my buckler, and the horn of my salvation, and my high tower."  
 Psalms 18:3: "I will call upon the LORD, who is worthy to be praised: so shall I be saved from mine enemies."  
 Psalms 18:28: "For thou wilt light my candle: the LORD my God will enlighten my darkness."  
 Psalms 18:49: "Therefore will I give thanks unto thee, O LORD, among the heathen, and sing praises unto thy name."  
 Psalms 20:5: "We will rejoice in thy salvation, and in the name of our God we will set up our banners: the LORD fulfil all thy petitions."  
 Psalms 20:6: "Now know I that the LORD saveth his anointed; he will hear him from his holy heaven with the saving strength of his right hand."  
 Psalms 20:7: "Some trust in chariots, and some in horses: but we will remember the name of the LORD our God."  
 Psalms 21:13: "Be thou exalted, LORD, in thine own strength: so will we sing and praise thy power."  
 Psalms 22:22: "I will declare thy name unto my brethren: in the midst of the congregation will I praise thee."  
 Psalms 22:25: "My praise shall be of thee in the great congregation: I will pay my vows before them that fear him."  
 Psalms 23:4: "Yea, though I walk through the valley of the shadow of death, I will fear no evil: for thou art with me; thy rod and thy staff they comfort me."  
 Psalms 23:6: "Surely goodness and mercy shall follow me all the days of my life: and I will dwell in the house of the LORD for ever."

Psalms 25:8: "Good and upright is the LORD: therefore will he teach sinners in the way."  
 Psalms 25:9: "The meek will he guide in judgment: and the meek will he teach his way."  
 Psalms 25:14: "The secret of the LORD is with them that fear him; and he will shew them his covenant."  
 Psalms 26:4: "I have not sat with vain persons, neither will I go in with dissemblers."  
 Psalms 26:5: "I have hated the congregation of evil doers; and will not sit with the wicked."  
 Psalms 26:6: "I will wash mine hands in innocency: so will I compass thine altar, O LORD:"  
 Psalms 26:11: "But as for me, I will walk in mine integrity: redeem me, and be merciful unto me."  
 Psalms 26:12: "My foot standeth in an even place: in the congregations will I bless the LORD."  
 Psalms 27:3: "Though an host should encamp against me, my heart shall not fear: though war should rise against me, in this will I be confident."  
 Psalms 27:4: "One thing have I desired of the LORD, that will I seek after; that I may dwell in the house of the LORD all the days of my life, to behold the beauty of the LORD, and to enquire in his temple."  
 Psalms 27:6: "And now shall mine head be lifted up above mine enemies round about me: therefore will I offer in his tabernacle sacrifices of joy; I will sing, yea, I will sing praises unto the LORD."  
 Psalms 27:8: "When thou saidst, Seek ye my face; my heart said unto thee, Thy face, LORD, will I seek."  
 Psalms 27:10: "When my father and my mother forsake me, then the LORD will take me up."  
 Psalms 27:12: "Deliver me not over unto the will of mine enemies: for false witnesses are risen up against me, and such as breathe out cruelty."  
 Psalms 28:1: "Unto thee will I cry, O LORD my rock; be not silent to me: lest, if thou be silent to me, I become like them that go down into the pit."  
 Psalms 28:7: "The LORD is my strength and my shield; my heart trusted in him, and I am helped: therefore my heart greatly rejoiceth; and with my song will I praise him."  
 Psalms 29:11: "The LORD will give strength unto his people; the LORD will bless his people with peace."  
 Psalms 30:1: "I will extol thee, O LORD; for thou hast lifted me up, and hast not made my foes to rejoice over me."  
 Psalms 30:12: "To the end that my glory may sing praise to thee, and not be silent. O LORD my God, I will give thanks unto thee for ever."  
 Psalms 31:7: "I will be glad and rejoice in thy mercy: for thou hast considered my trouble; thou hast known my soul in adversities;"  
 Psalms 32:5: "I acknowledge my sin unto thee, and mine iniquity have I not hid. I said, I will confess my transgressions unto the LORD; and thou forgavest the iniquity of my sin. Selah."  
 Psalms 32:8: "I will instruct thee and teach thee in the way which thou shalt go: I will guide thee with mine eye."  
 Psalms 34:1: "I will bless the LORD at all times: his praise shall continually be in my mouth."  
 Psalms 34:11: "Come, ye children, hearken unto me: I will teach you the fear of the LORD."  
 Psalms 35:18: "I will give thee thanks in the great congregation: I will praise thee among much people."  
 Psalms 37:33: "The LORD will not leave him in his hand, nor condemn him when he is judged."  
 Psalms 38:18: "For I will declare mine iniquity; I will be sorry for my sin."  
 Psalms 39:1: "I said, I will take heed to my ways, that I sin not with my tongue: I will keep my mouth with a bridle, while the wicked is before me."  
 Psalms 40:8: "I delight to do thy will, O my God: yea, thy law is within my heart."  
 Psalms 41:1: "Blessed is he that considereth the poor: the LORD will deliver him in time of trouble."  
 Psalms 41:2: "The LORD will preserve him, and keep him alive; and he shall be blessed upon the earth: and thou wilt not deliver him unto the will of his enemies."

Psalms 41:3: "The LORD will strengthen him upon the bed of languishing: thou wilt make all his bed in his sickness."

Psalms 42:6: "O my God, my soul is cast down within me: therefore will I remember thee from the land of Jordan, and of the Hermonites, from the hill Mizar."

Psalms 42:8: "Yet the LORD will command his lovingkindness in the day time, and in the night his song shall be with me, and my prayer unto the God of my life."

Psalms 42:9: "I will say unto God my rock, Why hast thou forgotten me? why go I mourning because of the oppression of the enemy?"

Psalms 43:4: "Then will I go unto the altar of God, unto God my exceeding joy: yea, upon the harp will I praise thee, O God my God."

Psalms 44:5: "Through thee will we push down our enemies: through thy name will we tread them under that rise up against us."

Psalms 44:6: "For I will not trust in my bow, neither shall my sword save me."

Psalms 45:17: "I will make thy name to be remembered in all generations: therefore shall the people praise thee for ever and ever."

Psalms 46:2: "Therefore will not we fear, though the earth be removed, and though the mountains be carried into the midst of the sea;"

Psalms 46:10: "Be still, and know that I am God: I will be exalted among the heathen, I will be exalted in the earth."

Psalms 48:8: "As we have heard, so have we seen in the city of the LORD of hosts, in the city of our God: God will establish it for ever. Selah."

Psalms 48:14: "For this God is our God for ever and ever: he will be our guide even unto death."

Psalms 49:4: "I will incline mine ear to a parable: I will open my dark saying upon the harp."

Psalms 49:15: "But God will redeem my soul from the power of the grave: for he shall receive me. Selah."

Psalms 49:18: "Though while he lived he blessed his soul: and men will praise thee, when thou doest well to thyself."

Psalms 50:7: "Hear, O my people, and I will speak; O Israel, and I will testify against thee: I am God, even thy God."

Psalms 50:8: "I will not reprove thee for thy sacrifices or thy burnt offerings, to have been continually before me."

Psalms 50:9: "I will take no bullock out of thy house, nor he goats out of thy folds."

Psalms 50:13: "Will I eat the flesh of bulls, or drink the blood of goats?"

Psalms 50:15: "And call upon me in the day of trouble: I will deliver thee, and thou shalt glorify me."

Psalms 50:21: "These things hast thou done, and I kept silence; thou thoughtest that I was altogether such an one as thyself: but I will reprove thee, and set them in order before thine eyes."

Psalms 50:23: "Whoso offereth praise glorifieth me: and to him that ordereth his conversation aright will I shew the salvation of God."

Psalms 51:13: "Then will I teach transgressors thy ways; and sinners shall be converted unto thee."

Psalms 52:9: "I will praise thee for ever, because thou hast done it: and I will wait on thy name; for it is good before thy saints."

Psalms 54:6: "I will freely sacrifice unto thee: I will praise thy name, O LORD; for it is good."

Psalms 55:16: "As for me, I will call upon God; and the LORD shall save me."

Psalms 55:17: "Evening, and morning, and at noon, will I pray, and cry aloud: and he shall hear my voice."

Psalms 55:23: "But thou, O God, shalt bring them down into the pit of destruction: bloody and deceitful men shall not live out half their days; but I will trust in thee."

Psalms 56:3: "What time I am afraid, I will trust in thee."

Psalms 56:4: "In God I will praise his word, in God I have put my trust; I will not fear what flesh



can do unto me."

Psalms 56:10: "In God will I praise his word: in the LORD will I praise his word."

Psalms 56:11: "In God have I put my trust: I will not be afraid what man can do unto me."

Psalms 56:12: "Thy vows are upon me, O God: I will render praises unto thee."

Psalms 57:1: "Be merciful unto me, O God, be merciful unto me: for my soul trusteth in thee: yea, in the shadow of thy wings will I make my refuge, until these calamities be overpast."

Psalms 57:2: "I will cry unto God most high; unto God that performeth all things for me."

Psalms 57:7: "My heart is fixed, O God, my heart is fixed: I will sing and give praise."

Psalms 57:8: "Awake up, my glory; awake, psaltery and harp: I myself will awake early."

Psalms 57:9: "I will praise thee, O Lord, among the people: I will sing unto thee among the nations."

Psalms 58:5: "Which will not hearken to the voice of charmers, charming never so wisely."

Psalms 59:9: "Because of his strength will I wait upon thee: for God is my defence."

Psalms 59:16: "But I will sing of thy power; yea, I will sing aloud of thy mercy in the morning: for thou hast been my defence and refuge in the day of my trouble."

Psalms 59:17: "Unto thee, O my strength, will I sing: for God is my defence, and the God of my mercy."

Psalms 60:6: "God hath spoken in his holiness; I will rejoice, I will divide Shechem, and mete out the valley of Succoth."

Psalms 60:8: "Moab is my washpot; over Edom will I cast out my shoe: Philistia, triumph thou because of me."

Psalms 60:9: "Who will bring me into the strong city? who will lead me into Edom?"

Psalms 61:2: "From the end of the earth will I cry unto thee, when my heart is overwhelmed: lead me to the rock that is higher than I."

Psalms 61:4: "I will abide in thy tabernacle for ever: I will trust in the covert of thy wings. Selah."

Psalms 61:8: "So will I sing praise unto thy name for ever, that I may daily perform my vows."

Psalms 62:3: "How long will ye imagine mischief against a man? ye shall be slain all of you: as a bowing wall shall ye be, and as a tottering fence."

Psalms 63:1: "O God, thou art my God; early will I seek thee: my soul thirsteth for thee, my flesh longeth for thee in a dry and thirsty land, where no water is;"

Psalms 63:4: "Thus will I bless thee while I live: I will lift up my hands in thy name."

Psalms 63:7: "Because thou hast been my help, therefore in the shadow of thy wings will I rejoice."

Psalms 66:13: "I will go into thy house with burnt offerings: I will pay thee my vows,"

Psalms 66:15: "I will offer unto thee burnt sacrifices of fatlings, with the incense of rams; I will offer bullocks with goats. Selah."

Psalms 66:16: "Come and hear, all ye that fear God, and I will declare what he hath done for my soul."

Psalms 66:18: "If I regard iniquity in my heart, the Lord will not hear me:"

Psalms 68:16: "Why leap ye, ye high hills? this is the hill which God desireth to dwell in; yea, the LORD will dwell in it for ever."

Psalms 68:22: "The Lord said, I will bring again from Bashan, I will bring my people again from the depths of the sea:"

Psalms 69:30: "I will praise the name of God with a song, and will magnify him with thanksgiving."

Psalms 69:35: "For God will save Zion, and will build the cities of Judah: that they may dwell there, and have it in possession."

Psalms 71:14: "But I will hope continually, and will yet praise thee more and more."

Psalms 71:16: "I will go in the strength of the Lord GOD: I will make mention of thy righteousness, even of thine only."

Psalms 71:22: "I will also praise thee with the psaltery, even thy truth, O my God: unto thee will I sing with the harp, O thou Holy One of Israel."

Psalms 73:15: "If I say, I will speak thus; behold, I should offend against the generation of thy children."

Psalms 75:2: "When I shall receive the congregation I will judge uprightly."

Psalms 75:9: "But I will declare for ever; I will sing praises to the God of Jacob."

Psalms 75:10: "All the horns of the wicked also will I cut off; but the horns of the righteous shall be exalted."

Psalms 77:7: "Will the Lord cast off for ever? and will he be favourable no more?"

Psalms 77:10: "And I said, This is my infirmity: but I will remember the years of the right hand of the most High."

Psalms 77:11: "I will remember the works of the LORD: surely I will remember thy wonders of old."

Psalms 77:12: "I will meditate also of all thy work, and talk of thy doings."

Psalms 78:2: "I will open my mouth in a parable: I will utter dark sayings of old:"

Psalms 78:4: "We will not hide them from their children, shewing to the generation to come the praises of the LORD, and his strength, and his wonderful works that he hath done."

Psalms 79:13: "So we thy people and sheep of thy pasture will give thee thanks for ever: we will shew forth thy praise to all generations."

Psalms 80:18: "So will not we go back from thee: quicken us, and we will call upon thy name."

Psalms 81:8: "Hear, O my people, and I will testify unto thee: O Israel, if thou wilt hearken unto me;"

Psalms 81:10: "I am the LORD thy God, which brought thee out of the land of Egypt: open thy mouth wide, and I will fill it."

Psalms 82:2: "How long will ye judge unjustly, and accept the persons of the wicked? Selah."

Psalms 82:5: "They know not, neither will they understand; they walk on in darkness: all the foundations of the earth are out of course."

Psalms 84:4: "Blessed are they that dwell in thy house: they will be still praising thee. Selah."

Psalms 84:11: "For the LORD God is a sun and shield: the LORD will give grace and glory: no good thing will he withhold from them that walk uprightly."

Psalms 85:8: "I will hear what God the LORD will speak: for he will speak peace unto his people, and to his saints: but let them not turn again to folly."

Psalms 86:7: "In the day of my trouble I will call upon thee: for thou wilt answer me."

Psalms 86:11: "Teach me thy way, O LORD; I will walk in thy truth: unite my heart to fear thy name."

Psalms 86:12: "I will praise thee, O Lord my God, with all my heart: and I will glorify thy name for evermore."

Psalms 87:4: "I will make mention of Rahab and Babylon to them that know me: behold Philistia, and Tyre, with Ethiopia; this man was born there."

Psalms 89:1: "I will sing of the mercies of the LORD for ever: with my mouth will I make known thy faithfulness to all generations."

Psalms 89:4: "Thy seed will I establish for ever, and build up thy throne to all generations. Selah."

Psalms 89:23: "And I will beat down his foes before his face, and plague them that hate him."

Psalms 89:25: "I will set his hand also in the sea, and his right hand in the rivers."

Psalms 89:27: "Also I will make him my firstborn, higher than the kings of the earth."

Psalms 89:28: "My mercy will I keep for him for evermore, and my covenant shall stand fast with him."

Psalms 89:29: "His seed also will I make to endure for ever, and his throne as the days of heaven."

Psalms 89:32: "Then will I visit their transgression with the rod, and their iniquity with stripes."

Psalms 89:33: "Nevertheless my lovingkindness will I not utterly take from him, nor suffer my faithfulness to fail."

Psalms 89:34: "My covenant will I not break, nor alter the thing that is gone out of my lips."

Psalms 89:35: "Once have I sworn by my holiness that I will not lie unto David."  
 Psalms 91:2: "I will say of the LORD, He is my refuge and my fortress: my God; in him will I trust."  
 Psalms 91:14: "Because he hath set his love upon me, therefore will I deliver him: I will set him on high, because he hath known my name."  
 Psalms 91:15: "He shall call upon me, and I will answer him: I will be with him in trouble; I will deliver him, and honour him."  
 Psalms 91:16: "With long life will I satisfy him, and shew him my salvation."  
 Psalms 92:4: "For thou, LORD, hast made me glad through thy work: I will triumph in the works of thy hands."  
 Psalms 94:8: "Understand, ye brutish among the people: and ye fools, when will ye be wise?"  
 Psalms 94:14: "For the LORD will not cast off his people, neither will he forsake his inheritance."  
 Psalms 94:16: "Who will rise up for me against the evildoers? or who will stand up for me against the workers of iniquity?"  
 Psalms 95:7: "For he is our God; and we are the people of his pasture, and the sheep of his hand. To day if ye will hear his voice,"  
 Psalms 101:1: "I will sing of mercy and judgment: unto thee, O LORD, will I sing."  
 Psalms 101:2: "I will behave myself wisely in a perfect way. O when wilt thou come unto me? I will walk within my house with a perfect heart."  
 Psalms 101:3: "I will set no wicked thing before mine eyes: I hate the work of them that turn aside; it shall not cleave to me."  
 Psalms 101:4: "A froward heart shall depart from me: I will not know a wicked person."  
 Psalms 101:5: "Whoso privily slandereth his neighbour, him will I cut off: him that hath an high look and a proud heart will not I suffer."  
 Psalms 101:8: "I will early destroy all the wicked of the land; that I may cut off all wicked doers from the city of the LORD."  
 Psalms 102:17: "He will regard the prayer of the destitute, and not despise their prayer."  
 Psalms 103:9: "He will not always chide: neither will he keep his anger for ever."  
 Psalms 104:33: "I will sing unto the LORD as long as I live: I will sing praise to my God while I have my being."  
 Psalms 104:34: "My meditation of him shall be sweet: I will be glad in the LORD."  
 Psalms 105:11: "Saying, Unto thee will I give the land of Canaan, the lot of your inheritance:"  
 Psalms 107:43: "Whoso is wise, and will observe these things, even they shall understand the lovingkindness of the LORD."  
 Psalms 108:1: "O god, my heart is fixed; I will sing and give praise, even with my glory."  
 Psalms 108:2: "Awake, psaltery and harp: I myself will awake early."  
 Psalms 108:3: "I will praise thee, O LORD, among the people: and I will sing praises unto thee among the nations."  
 Psalms 108:7: "God hath spoken in his holiness; I will rejoice, I will divide Shechem, and mete out the valley of Succoth."  
 Psalms 108:9: "Moab is my washpot; over Edom will I cast out my shoe; over Philistia will I triumph."  
 Psalms 108:10: "Who will bring me into the strong city? who will lead me into Edom?"  
 Psalms 109:30: "I will greatly praise the LORD with my mouth; yea, I will praise him among the multitude."  
 Psalms 110:4: "The LORD hath sworn, and will not repent, Thou art a priest for ever after the order of Melchizedek."  
 Psalms 111:1: "Praise ye the LORD. I will praise the LORD with my whole heart, in the assembly of the upright, and in the congregation."  
 Psalms 111:5: "He hath given meat unto them that fear him: he will ever be mindful of his

covenant."

Psalms 112:5: "A good man sheweth favour, and lendeth: he will guide his affairs with discretion."

Psalms 115:12: "The LORD hath been mindful of us: he will bless us; he will bless the house of Israel; he will bless the house of Aaron."

Psalms 115:13: "He will bless them that fear the LORD, both small and great."

Psalms 115:18: "But we will bless the LORD from this time forth and for evermore. Praise the LORD."

Psalms 116:2: "Because he hath inclined his ear unto me, therefore will I call upon him as long as I live."

Psalms 116:9: "I will walk before the LORD in the land of the living."

Psalms 116:13: "I will take the cup of salvation, and call upon the name of the LORD."

Psalms 116:14: "I will pay my vows unto the LORD now in the presence of all his people."

Psalms 116:17: "I will offer to thee the sacrifice of thanksgiving, and will call upon the name of the LORD."

Psalms 116:18: "I will pay my vows unto the LORD now in the presence of all his people."

Psalms 118:6: "The LORD is on my side; I will not fear: what can man do unto me?"

Psalms 118:10: "All nations compassed me about: but in the name of the LORD will I destroy them."

Psalms 118:11: "They compassed me about; yea, they compassed me about: but in the name of the LORD I will destroy them."

Psalms 118:12: "They compassed me about like bees: they are quenched as the fire of thorns: for in the name of the LORD I will destroy them."

Psalms 118:19: "Open to me the gates of righteousness: I will go into them, and I will praise the LORD:"

Psalms 118:21: "I will praise thee: for thou hast heard me, and art become my salvation."

Psalms 118:24: "This is the day which the LORD hath made; we will rejoice and be glad in it."

Psalms 118:28: "Thou art my God, and I will praise thee: thou art my God, I will exalt thee."

Psalms 119:7: "I will praise thee with uprightness of heart, when I shall have learned thy righteous judgments."

Psalms 119:8: "I will keep thy statutes: O forsake me not utterly."

Psalms 119:15: "I will meditate in thy precepts, and have respect unto thy ways."

Psalms 119:16: "I will delight myself in thy statutes: I will not forget thy word."

Psalms 119:32: "I will run the way of thy commandments, when thou shalt enlarge my heart."

Psalms 119:45: "And I will walk at liberty: for I seek thy precepts."

Psalms 119:46: "I will speak of thy testimonies also before kings, and will not be ashamed."

Psalms 119:47: "And I will delight myself in thy commandments, which I have loved."

Psalms 119:48: "My hands also will I lift up unto thy commandments, which I have loved; and I will meditate in thy statutes."

Psalms 119:62: "At midnight I will rise to give thanks unto thee because of thy righteous judgments."

Psalms 119:69: "The proud have forged a lie against me: but I will keep thy precepts with my whole heart."

Psalms 119:74: "They that fear thee will be glad when they see me; because I have hoped in thy word."

Psalms 119:78: "Let the proud be ashamed; for they dealt perversely with me without a cause: but I will meditate in thy precepts."

Psalms 119:93: "I will never forget thy precepts: for with them thou hast quickened me."

Psalms 119:95: "The wicked have waited for me to destroy me: but I will consider thy testimonies."

Psalms 119:106: "I have sworn, and I will perform it, that I will keep thy righteous judgments."

Psalms 119:115: "Depart from me, ye evildoers: for I will keep the commandments of my God."

Psalms 119:117: "Hold thou me up, and I shall be safe: and I will have respect unto thy statutes continually."  
 Psalms 119:134: "Deliver me from the oppression of man: so will I keep thy precepts."  
 Psalms 119:145: "I cried with my whole heart; hear me, O LORD: I will keep thy statutes."  
 Psalms 121:1: "I will lift up mine eyes unto the hills, from whence cometh my help."  
 Psalms 121:3: "He will not suffer thy foot to be moved: he that keepeth thee will not slumber."  
 Psalms 122:8: "For my brethren and companions' sakes, I will now say, Peace be within thee."  
 Psalms 122:9: "Because of the house of the LORD our God I will seek thy good."  
 Psalms 132:3: "Surely I will not come into the tabernacle of my house, nor go up into my bed;"  
 Psalms 132:4: "I will not give sleep to mine eyes, or slumber to mine eyelids,"  
 Psalms 132:7: "We will go into his tabernacles: we will worship at his footstool."  
 Psalms 132:11: "The LORD hath sworn in truth unto David; he will not turn from it; Of the fruit of thy body will I set upon thy throne."  
 Psalms 132:12: "If thy children will keep my covenant and my testimony that I shall teach them, their children shall also sit upon thy throne for evermore."  
 Psalms 132:14: "This is my rest for ever: here will I dwell; for I have desired it."  
 Psalms 132:15: "I will abundantly bless her provision: I will satisfy her poor with bread."  
 Psalms 132:16: "I will also clothe her priests with salvation: and her saints shall shout aloud for joy."  
 Psalms 132:17: "There will I make the horn of David to bud: I have ordained a lamp for mine anointed."  
 Psalms 132:18: "His enemies will I clothe with shame: but upon himself shall his crown flourish."  
 Psalms 135:14: "For the LORD will judge his people, and he will repent himself concerning his servants."  
 Psalms 138:1: "I will praise thee with my whole heart: before the gods will I sing praise unto thee."  
 Psalms 138:2: "I will worship toward thy holy temple, and praise thy name for thy lovingkindness and for thy truth: for thou hast magnified thy word above all thy name."  
 Psalms 138:8: "The LORD will perfect that which concerneth me: thy mercy, O LORD, endureth for ever: forsake not the works of thine own hands."  
 Psalms 139:14: "I will praise thee; for I am fearfully and wonderfully made: marvellous are thy works; and that my soul knoweth right well."  
 Psalms 140:12: "I know that the LORD will maintain the cause of the afflicted, and the right of the poor."  
 Psalms 143:10: "Teach me to do thy will; for thou art my God: thy spirit is good; lead me into the land of uprightness."  
 Psalms 144:9: "I will sing a new song unto thee, O God: upon a psaltery and an instrument of ten strings will I sing praises unto thee."  
 Psalms 145:1: "I will extol thee, my God, O king; and I will bless thy name for ever and ever."  
 Psalms 145:2: "Every day will I bless thee; and I will praise thy name for ever and ever."  
 Psalms 145:5: "I will speak of the glorious honour of thy majesty, and of thy wondrous works."  
 Psalms 145:6: "And men shall speak of the might of thy terrible acts: and I will declare thy greatness."  
 Psalms 145:19: "He will fulfil the desire of them that fear him: he also will hear their cry, and will save them."  
 Psalms 145:20: "The LORD preserveth all them that love him: but all the wicked will he destroy."  
 Psalms 146:2: "While I live will I praise the LORD: I will sing praises unto my God while I have any being."  
 Psalms 149:4: "For the LORD taketh pleasure in his people: he will beautify the meek with salvation."  
 Proverbs 1:5: "A wise man will hear, and will increase learning; and a man of understanding shall

attain unto wise counsels:"

Proverbs 1:22: "How long, ye simple ones, will ye love simplicity? and the scorers delight in their scorning, and fools hate knowledge?"

Proverbs 1:23: "Turn you at my reproof: behold, I will pour out my spirit unto you, I will make known my words unto you."

Proverbs 1:26: "I also will laugh at your calamity; I will mock when your fear cometh;"

Proverbs 1:28: "Then shall they call upon me, but I will not answer; they shall seek me early, but they shall not find me:"

Proverbs 3:28: "Say not unto thy neighbour, Go, and come again, and to morrow I will give; when thou hast it by thee."

Proverbs 6:26: "For by means of a whorish woman a man is brought to a piece of bread: and the adulteress will hunt for the precious life."

Proverbs 6:34: "For jealousy is the rage of a man: therefore he will not spare in the day of vengeance."

Proverbs 6:35: "He will not regard any ransom; neither will he rest content, though thou givest many gifts."

Proverbs 7:20: "He hath taken a bag of money with him, and will come home at the day appointed."

Proverbs 8:6: "Hear; for I will speak of excellent things; and the opening of my lips shall be right things."

Proverbs 8:21: "That I may cause those that love me to inherit substance; and I will fill their treasures."

Proverbs 9:8: "Reprove not a scorner, lest he hate thee: rebuke a wise man, and he will love thee."

Proverbs 9:9: "Give instruction to a wise man, and he will be yet wiser: teach a just man, and he will increase in learning."

Proverbs 10:3: "The LORD will not suffer the soul of the righteous to famish: but he casteth away the substance of the wicked."

Proverbs 10:8: "The wise in heart will receive commandments: but a prating fool shall fall."

Proverbs 12:2: "A good man obtaineth favour of the LORD: but a man of wicked devices will he condemn."

Proverbs 14:5: "A faithful witness will not lie: but a false witness will utter lies."

Proverbs 15:12: "A scorner loveth not one that reproveth him: neither will he go unto the wise."

Proverbs 15:25: "The LORD will destroy the house of the proud: but he will establish the border of the widow."

Proverbs 16:14: "The wrath of a king is as messengers of death: but a wise man will pacify it."

Proverbs 18:14: "The spirit of a man will sustain his infirmity; but a wounded spirit who can bear?"

Proverbs 19:6: "Many will intreat the favour of the prince: and every man is a friend to him that giveth gifts."

Proverbs 19:17: "He that hath pity upon the poor lendeth unto the LORD; and that which he hath given will he pay him again."

Proverbs 19:24: "A slothful man hideth his hand in his bosom, and will not so much as bring it to his mouth again."

Proverbs 19:25: "Smite a scorner, and the simple will beware: and reprove one that hath understanding, and he will understand knowledge."

Proverbs 20:3: "It is an honour for a man to cease from strife: but every fool will be meddling."

Proverbs 20:4: "The sluggard will not plow by reason of the cold; therefore shall he beg in harvest, and have nothing."

Proverbs 20:5: "Counsel in the heart of man is like deep water; but a man of understanding will draw it out."

Proverbs 20:6: "Most men will proclaim every one his own goodness: but a faithful man who can find?"

Proverbs 20:22: "Say not thou, I will recompense evil; but wait on the LORD, and he shall save thee."

Proverbs 21:1: "The king's heart is in the hand of the LORD, as the rivers of water: he turneth it whithersoever he will."

Proverbs 22:6: "Train up a child in the way he should go: and when he is old, he will not depart from it."

Proverbs 22:23: "For the LORD will plead their cause, and spoil the soul of those that spoiled them."

Proverbs 23:9: "Speak not in the ears of a fool: for he will despise the wisdom of thy words."

Proverbs 23:35: "They have stricken me, shalt thou say, and I was not sick; they have beaten me, and I felt it not: when shall I awake? I will seek it yet again."

Proverbs 24:29: "Say not, I will do so to him as he hath done to me: I will render to the man according to his work."

Proverbs 26:27: "Whoso diggeth a pit shall fall therein: and he that rolleth a stone, it will return upon him."

Proverbs 27:22: "Though thou shouldest bray a fool in a mortar among wheat with a pestle, yet will not his foolishness depart from him."

Proverbs 28:8: "He that by usury and unjust gain increaseth his substance, he shall gather it for him that will pity the poor."

Proverbs 28:21: "To have respect of persons is not good: for for a piece of bread that man will transgress."

Proverbs 29:19: "A servant will not be corrected by words: for though he understand he will not answer."

Proverbs 31:12: "She will do him good and not evil all the days of her life."

Ecclesiastes 2:1: "I said in mine heart, Go to now, I will prove thee with mirth, therefore enjoy pleasure: and, behold, this also is vanity."

Ecclesiastes 4:10: "For if they fall, the one will lift up his fellow: but woe to him that is alone when he falleth; for he hath not another to help him up."

Ecclesiastes 4:13: "Better is a poor and a wise child than an old and foolish king, who will no more be admonished."

Ecclesiastes 5:12: "The sleep of a labouring man is sweet, whether he eat little or much: but the abundance of the rich will not suffer him to sleep."

Ecclesiastes 7:2: "It is better to go to the house of mourning, than to go to the house of feasting: for that is the end of all men; and the living will lay it to his heart."

Ecclesiastes 7:23: "All this have I proved by wisdom: I said, I will be wise; but it was far from me."

Ecclesiastes 10:11: "Surely the serpent will bite without enchantment; and a babbler is no better."

Ecclesiastes 10:12: "The words of a wise man's mouth are gracious; but the lips of a fool will swallow up himself."

Ecclesiastes 11:9: "Rejoice, O young man, in thy youth; and let thy heart cheer thee in the days of thy youth, and walk in the ways of thine heart, and in the sight of thine eyes: but know thou, that for all these things God will bring thee into judgment."

Song of Solomon 1:4: "Draw me, we will run after thee: the king hath brought me into his chambers: we will be glad and rejoice in thee, we will remember thy love more than wine: the upright love thee."

Song of Solomon 1:11: "We will make thee borders of gold with studs of silver."

Song of Solomon 3:2: "I will rise now, and go about the city in the streets, and in the broad ways I will seek him whom my soul loveth: I sought him, but I found him not."

Song of Solomon 4:6: "Until the day break, and the shadows flee away, I will get me to the mountain of myrrh, and to the hill of frankincense."

Song of Solomon 6:13: "Return, return, O Shulamite; return, return, that we may look upon thee."

What will ye see in the Shulamite? As it were the company of two armies."

Song of Solomon 7:8: "I said, I will go up to the palm tree, I will take hold of the boughs thereof: now also thy breasts shall be as clusters of the vine, and the smell of thy nose like apples;"

Song of Solomon 7:12: "Let us get up early to the vineyards; let us see if the vine flourish, whether the tender grape appear, and the pomegranates bud forth: there will I give thee my loves."

Song of Solomon 8:9: "If she be a wall, we will build upon her a palace of silver: and if she be a door, we will inclose her with boards of cedar."

Isaiah 1:5: "Why should ye be stricken any more? ye will revolt more and more: the whole head is sick, and the whole heart faint."

Isaiah 1:15: "And when ye spread forth your hands, I will hide mine eyes from you: yea, when ye make many prayers, I will not hear: your hands are full of blood."

Isaiah 1:24: "Therefore saith the LORD, the LORD of hosts, the mighty One of Israel, Ah, I will ease me of mine adversaries, and avenge me of mine enemies:"

Isaiah 1:25: "And I will turn my hand upon thee, and purely purge away thy dross, and take away all thy tin:"

Isaiah 1:26: "And I will restore thy judges as at the first, and thy counsellors as at the beginning: afterward thou shalt be called, The city of righteousness, the faithful city."

Isaiah 2:3: "And many people shall go and say, Come ye, and let us go up to the mountain of the LORD, to the house of the God of Jacob; and he will teach us of his ways, and we will walk in his paths: for out of Zion shall go forth the law, and the word of the LORD from Jerusalem."

Isaiah 3:4: "And I will give children to be their princes, and babes shall rule over them."

Isaiah 3:7: "In that day shall he swear, saying, I will not be an healer; for in my house is neither bread nor clothing: make me not a ruler of the people."

Isaiah 3:14: "The LORD will enter into judgment with the ancients of his people, and the princes thereof: for ye have eaten up the vineyard; the spoil of the poor is in your houses."

Isaiah 3:17: "Therefore the LORD will smite with a scab the crown of the head of the daughters of Zion, and the LORD will discover their secret parts."

Isaiah 3:18: "In that day the Lord will take away the bravery of their tinkling ornaments about their feet, and their cauls, and their round tires like the moon,"

Isaiah 4:1: "And in that day seven women shall take hold of one man, saying, We will eat our own bread, and wear our own apparel: only let us be called by thy name, to take away our reproach."

Isaiah 4:5: "And the LORD will create upon every dwelling place of mount Zion, and upon her assemblies, a cloud and smoke by day, and the shining of a flaming fire by night: for upon all the glory shall be a defence."

Isaiah 5:1: "Now will I sing to my wellbeloved a song of my beloved touching his vineyard. My wellbeloved hath a vineyard in a very fruitful hill:"

Isaiah 5:5: "And now go to; I will tell you what I will do to my vineyard: I will take away the hedge thereof, and it shall be eaten up; and break down the wall thereof, and it shall be trodden down:"

Isaiah 5:6: "And I will lay it waste: it shall not be pruned, nor digged; but there shall come up briers and thorns: I will also command the clouds that they rain no rain upon it."

Isaiah 5:26: "And he will lift up an ensign to the nations from far, and will hiss unto them from the end of the earth: and, behold, they shall come with speed swiftly:"

Isaiah 6:8: "Also I heard the voice of the Lord, saying, Whom shall I send, and who will go for us? Then said I, Here am I; send me."

Isaiah 7:9: "And the head of Ephraim is Samaria, and the head of Samaria is Remaliah's son. If ye will not believe, surely ye shall not be established."

Isaiah 7:12: "But Ahaz said, I will not ask, neither will I tempt the LORD."

Isaiah 7:13: "And he said, Hear ye now, O house of David; Is it a small thing for you to weary men, but will ye weary my God also?"

Isaiah 8:17: "And I will wait upon the LORD, that hideth his face from the house of Jacob, and I



will look for him."

Isaiah 9:7: "Of the increase of his government and peace there shall be no end, upon the throne of David, and upon his kingdom, to order it, and to establish it with judgment and with justice from henceforth even for ever. The zeal of the LORD of hosts will perform this."

Isaiah 9:10: "The bricks are fallen down, but we will build with hewn stones: the sycomores are cut down, but we will change them into cedars."

Isaiah 9:14: "Therefore the LORD will cut off from Israel head and tail, branch and rush, in one day."

Isaiah 10:3: "And what will ye do in the day of visitation, and in the desolation which shall come from far? to whom will ye flee for help? and where will ye leave your glory?"

Isaiah 10:6: "I will send him against an hypocritical nation, and against the people of my wrath will I give him a charge, to take the spoil, and to take the prey, and to tread them down like the mire of the streets."

Isaiah 10:12: "Wherefore it shall come to pass, that when the Lord hath performed his whole work upon mount Zion and on Jerusalem, I will punish the fruit of the stout heart of the king of Assyria, and the glory of his high looks."

Isaiah 12:1: "And in that day thou shalt say, O LORD, I will praise thee: though thou wast angry with me, thine anger is turned away, and thou comfortedst me."

Isaiah 12:2: "Behold, God is my salvation; I will trust, and not be afraid: for the LORD JEHOVAH is my strength and my song; he also is become my salvation."

Isaiah 13:11: "And I will punish the world for their evil, and the wicked for their iniquity; and I will cause the arrogancy of the proud to cease, and will lay low the haughtiness of the terrible."

Isaiah 13:12: "I will make a man more precious than fine gold; even a man than the golden wedge of Ophir."

Isaiah 13:13: "Therefore I will shake the heavens, and the earth shall remove out of her place, in the wrath of the LORD of hosts, and in the day of his fierce anger."

Isaiah 13:17: "Behold, I will stir up the Medes against them, which shall not regard silver; and as for gold, they shall not delight in it."

Isaiah 14:1: "For the LORD will have mercy on Jacob, and will yet choose Israel, and set them in their own land: and the strangers shall be joined with them, and they shall cleave to the house of Jacob."

Isaiah 14:13: "For thou hast said in thine heart, I will ascend into heaven, I will exalt my throne above the stars of God: I will sit also upon the mount of the congregation, in the sides of the north:"

Isaiah 14:14: "I will ascend above the heights of the clouds; I will be like the most High."

Isaiah 14:22: "For I will rise up against them, saith the LORD of hosts, and cut off from Babylon the name, and remnant, and son, and nephew, saith the LORD."

Isaiah 14:23: "I will also make it a possession for the bittern, and pools of water: and I will sweep it with the besom of destruction, saith the LORD of hosts."

Isaiah 14:25: "That I will break the Assyrian in my land, and upon my mountains tread him under foot: then shall his yoke depart from off them, and his burden depart from off their shoulders."

Isaiah 14:30: "And the firstborn of the poor shall feed, and the needy shall lie down in safety: and I will kill thy root with famine, and he shall slay thy remnant."

Isaiah 15:9: "For the waters of Dimon shall be full of blood: for I will bring more upon Dimon, lions upon him that escapeth of Moab, and upon the remnant of the land."

Isaiah 16:9: "Therefore I will bewail with the weeping of Jazer the vine of Sibmah: I will water thee with my tears, O Heshbon, and Elealeh: for the shouting for thy summer fruits and for thy harvest is fallen."

Isaiah 18:4: "For so the LORD said unto me, I will take my rest, and I will consider in my dwelling place like a clear heat upon herbs, and like a cloud of dew in the heat of harvest."

Isaiah 19:2: "And I will set the Egyptians against the Egyptians: and they shall fight every one

against his brother, and every one against his neighbour; city against city, and kingdom against kingdom."

Isaiah 19:3: "And the spirit of Egypt shall fail in the midst thereof; and I will destroy the counsel thereof: and they shall seek to the idols, and to the charmors, and to them that have familiar spirits, and to the wizards."

Isaiah 19:4: "And the Egyptians will I give over into the hand of a cruel lord; and a fierce king shall rule over them, saith the Lord, the LORD of hosts."

Isaiah 21:12: "The watchman said, The morning cometh, and also the night: if ye will enquire, enquire ye: return, come."

Isaiah 22:4: "Therefore said I, Look away from me; I will weep bitterly, labour not to comfort me, because of the spoiling of the daughter of my people."

Isaiah 22:17: "Behold, the LORD will carry thee away with a mighty captivity, and will surely cover thee."

Isaiah 22:18: "He will surely violently turn and toss thee like a ball into a large country: there shalt thou die, and there the chariots of thy glory shall be the shame of thy lord's house."

Isaiah 22:19: "And I will drive thee from thy station, and from thy state shall he pull thee down."

Isaiah 22:20: "And it shall come to pass in that day, that I will call my servant Eliakim the son of Hilkiyah:"

Isaiah 22:21: "And I will clothe him with thy robe, and strengthen him with thy girdle, and I will commit thy government into his hand: and he shall be a father to the inhabitants of Jerusalem, and to the house of Judah."

Isaiah 22:22: "And the key of the house of David will I lay upon his shoulder; so he shall open, and none shall shut; and he shall shut, and none shall open."

Isaiah 22:23: "And I will fasten him as a nail in a sure place; and he shall be for a glorious throne to his father's house."

Isaiah 23:17: "And it shall come to pass after the end of seventy years, that the LORD will visit Tyre, and she shall turn to her hire, and shall commit fornication with all the kingdoms of the world upon the face of the earth."

Isaiah 25:1: "O Lord, thou art my God; I will exalt thee, I will praise thy name; for thou hast done wonderful things; thy counsels of old are faithfulness and truth."

Isaiah 25:7: "And he will destroy in this mountain the face of the covering cast over all people, and the vail that is spread over all nations."

Isaiah 25:8: "He will swallow up death in victory; and the Lord GOD will wipe away tears from off all faces; and the rebuke of his people shall he take away from off all the earth: for the LORD hath spoken it."

Isaiah 25:9: "And it shall be said in that day, Lo, this is our God; we have waited for him, and he will save us: this is the LORD; we have waited for him, we will be glad and rejoice in his salvation."

Isaiah 26:1: "In that day shall this song be sung in the land of Judah; We have a strong city; salvation will God appoint for walls and bulwarks."

Isaiah 26:9: "With my soul have I desired thee in the night; yea, with my spirit within me will I seek thee early: for when thy judgments are in the earth, the inhabitants of the world will learn righteousness."

Isaiah 26:10: "Let favour be shewed to the wicked, yet will he not learn righteousness: in the land of uprightness will he deal unjustly, and will not behold the majesty of the LORD."

Isaiah 26:11: "LORD, when thy hand is lifted up, they will not see: but they shall see, and be ashamed for their envy at the people; yea, the fire of thine enemies shall devour them."

Isaiah 26:13: "O LORD our God, other lords beside thee have had dominion over us: but by thee only will we make mention of thy name."

Isaiah 27:3: "I the LORD do keep it; I will water it every moment: lest any hurt it, I will keep it

night and day."

Isaiah 27:11: "When the boughs thereof are withered, they shall be broken off: the women come, and set them on fire: for it is a people of no understanding: therefore he that made them will not have mercy on them, and he that formed them will shew them no favour."

Isaiah 28:11: "For with stammering lips and another tongue will he speak to this people."

Isaiah 28:17: "Judgment also will I lay to the line, and righteousness to the plummet: and the hail shall sweep away the refuge of lies, and the waters shall overflow the hiding place."

Isaiah 28:28: "Bread corn is bruised; because he will not ever be threshing it, nor break it with the wheel of his cart, nor bruise it with his horsemen."

Isaiah 29:2: "Yet I will distress Ariel, and there shall be heaviness and sorrow: and it shall be unto me as Ariel."

Isaiah 29:3: "And I will camp against thee round about, and will lay siege against thee with a mount, and I will raise forts against thee."

Isaiah 29:14: "Therefore, behold, I will proceed to do a marvellous work among this people, even a marvellous work and a wonder: for the wisdom of their wise men shall perish, and the understanding of their prudent men shall be hid."

Isaiah 30:6: "The burden of the beasts of the south: into the land of trouble and anguish, from whence come the young and old lion, the viper and fiery flying serpent, they will carry their riches upon the shoulders of young asses, and their treasures upon the bunches of camels, to a people that shall not profit them."

Isaiah 30:9: "That this is a rebellious people, lying children, children that will not hear the law of the LORD:"

Isaiah 30:16: "But ye said, No; for we will flee upon horses; therefore shall ye flee: and, We will ride upon the swift; therefore shall they that pursue you be swift."

Isaiah 30:18: "And therefore will the LORD wait, that he may be gracious unto you, and therefore will he be exalted, that he may have mercy upon you: for the LORD is a God of judgment: blessed are all they that wait for him."

Isaiah 30:19: "For the people shall dwell in Zion at Jerusalem: thou shalt weep no more: he will be very gracious unto thee at the voice of thy cry; when he shall hear it, he will answer thee."

Isaiah 30:32: "And in every place where the grounded staff shall pass, which the LORD shall lay upon him, it shall be with tabrets and harps: and in battles of shaking will he fight with it."

Isaiah 31:2: "Yet he also is wise, and will bring evil, and will not call back his words: but will arise against the house of the evildoers, and against the help of them that work iniquity."

Isaiah 31:4: "For thus hath the LORD spoken unto me, Like as the lion and the young lion roaring on his prey, when a multitude of shepherds is called forth against him, he will not be afraid of their voice, nor abase himself for the noise of them: so shall the LORD of hosts come down to fight for mount Zion, and for the hill thereof."

Isaiah 31:5: "As birds flying, so will the LORD of hosts defend Jerusalem; defending also he will deliver it; and passing over he will preserve it."

Isaiah 32:6: "For the vile person will speak villany, and his heart will work iniquity, to practise hypocrisy, and to utter error against the LORD, to make empty the soul of the hungry, and he will cause the drink of the thirsty to fail."

Isaiah 33:10: "Now will I rise, saith the LORD; now will I be exalted; now will I lift up myself."

Isaiah 33:21: "But there the glorious LORD will be unto us a place of broad rivers and streams; wherein shall go no galley with oars, neither shall gallant ship pass thereby."

Isaiah 33:22: "For the LORD is our judge, the LORD is our lawgiver, the LORD is our king; he will save us."

Isaiah 35:4: "Say to them that are of a fearful heart, Be strong, fear not: behold, your God will come with vengeance, even God with a recompence; he will come and save you."

Isaiah 36:6: "Lo, thou trustest in the staff of this broken reed, on Egypt; whereon if a man lean, it

will go into his hand, and pierce it: so is Pharaoh king of Egypt to all that trust in him."

Isaiah 36:8: "Now therefore give pledges, I pray thee, to my master the king of Assyria, and I will give thee two thousand horses, if thou be able on thy part to set riders upon them."

Isaiah 36:15: "Neither let Hezekiah make you trust in the LORD, saying, The LORD will surely deliver us: this city shall not be delivered into the hand of the king of Assyria."

Isaiah 36:18: "Beware lest Hezekiah persuade you, saying, the LORD will deliver us. Hath any of the gods of the nations delivered his land out of the hand of the king of Assyria?"

Isaiah 37:4: "It may be the LORD thy God will hear the words of Rabshakeh, whom the king of Assyria his master hath sent to reproach the living God, and will reprove the words which the LORD thy God hath heard: wherefore lift up thy prayer for the remnant that is left."

Isaiah 37:7: "Behold, I will send a blast upon him, and he shall hear a rumour, and return to his own land; and I will cause him to fall by the sword in his own land."

Isaiah 37:24: "By thy servants hast thou reproached the Lord, and hast said, By the multitude of my chariots am I come up to the height of the mountains, to the sides of Lebanon; and I will cut down the tall cedars thereof, and the choice fir trees thereof: and I will enter into the height of his border, and the forest of his Carmel."

Isaiah 37:29: "Because thy rage against me, and thy tumult, is come up into mine ears, therefore will I put my hook in thy nose, and my bridle in thy lips, and I will turn thee back by the way by which thou camest."

Isaiah 37:35: "For I will defend this city to save it for mine own sake, and for my servant David's sake."

Isaiah 38:5: "Go, and say to Hezekiah, Thus saith the LORD, the God of David thy father, I have heard thy prayer, I have seen thy tears: behold, I will add unto thy days fifteen years."

Isaiah 38:6: "And I will deliver thee and this city out of the hand of the king of Assyria: and I will defend this city."

Isaiah 38:7: "And this shall be a sign unto thee from the LORD, that the LORD will do this thing that he hath spoken;"

Isaiah 38:8: "Behold, I will bring again the shadow of the degrees, which is gone down in the sun dial of Ahaz, ten degrees backward. So the sun returned ten degrees, by which degrees it was gone down."

Isaiah 38:12: "Mine age is departed, and is removed from me as a shepherd's tent: I have cut off like a weaver my life: he will cut me off with pining sickness: from day even to night wilt thou make an end of me."

Isaiah 38:13: "I reckoned till morning, that, as a lion, so will he break all my bones: from day even to night wilt thou make an end of me."

Isaiah 38:20: "The LORD was ready to save me: therefore we will sing my songs to the stringed instruments all the days of our life in the house of the LORD."

Isaiah 40:10: "Behold, the Lord GOD will come with strong hand, and his arm shall rule for him: behold, his reward is with him, and his work before him."

Isaiah 40:18: "To whom then will ye liken God? or what likeness will ye compare unto him?"

Isaiah 40:20: "He that is so impoverished that he hath no oblation chooseth a tree that will not rot; he seeketh unto him a cunning workman to prepare a graven image, that shall not be moved."

Isaiah 40:25: "To whom then will ye liken me, or shall I be equal? saith the Holy One."

Isaiah 41:10: "Fear thou not; for I am with thee: be not dismayed; for I am thy God: I will strengthen thee; yea, I will help thee; yea, I will uphold thee with the right hand of my righteousness."

Isaiah 41:13: "For I the LORD thy God will hold thy right hand, saying unto thee, Fear not; I will help thee."

Isaiah 41:14: "Fear not, thou worm Jacob, and ye men of Israel; I will help thee, saith the LORD, and thy redeemer, the Holy One of Israel."

Isaiah 41:15: "Behold, I will make thee a new sharp threshing instrument having teeth: thou shalt thresh the mountains, and beat them small, and shalt make the hills as chaff."

Isaiah 41:17: "When the poor and needy seek water, and there is none, and their tongue faileth for thirst, I the LORD will hear them, I the God of Israel will not forsake them."

Isaiah 41:18: "I will open rivers in high places, and fountains in the midst of the valleys: I will make the wilderness a pool of water, and the dry land springs of water."

Isaiah 41:19: "I will plant in the wilderness the cedar, the shittah tree, and the myrtle, and the oil tree; I will set in the desert the fir tree, and the pine, and the box tree together:"

Isaiah 41:27: "The first shall say to Zion, Behold, behold them: and I will give to Jerusalem one that bringeth good tidings."

Isaiah 42:6: "I the LORD have called thee in righteousness, and will hold thine hand, and will keep thee, and give thee for a covenant of the people, for a light of the Gentiles;"

Isaiah 42:8: "I am the LORD: that is my name: and my glory will I not give to another, neither my praise to graven images."

Isaiah 42:14: "I have long time holden my peace; I have been still, and refrained myself: now will I cry like a travailing woman; I will destroy and devour at once."

Isaiah 42:15: "I will make waste mountains and hills, and dry up all their herbs; and I will make the rivers islands, and I will dry up the pools."

Isaiah 42:16: "And I will bring the blind by a way that they knew not; I will lead them in paths that they have not known: I will make darkness light before them, and crooked things straight. These things will I do unto them, and not forsake them."

Isaiah 42:21: "The LORD is well pleased for his righteousness' sake; he will magnify the law, and make it honourable."

Isaiah 42:23: "Who among you will give ear to this? who will hearken and hear for the time to come?"

Isaiah 43:2: "When thou passest through the waters, I will be with thee; and through the rivers, they shall not overflow thee: when thou walkest through the fire, thou shalt not be burned; neither shall the flame kindle upon thee."

Isaiah 43:4: "Since thou wast precious in my sight, thou hast been honourable, and I have loved thee: therefore will I give men for thee, and people for thy life."

Isaiah 43:5: "Fear not: for I am with thee: I will bring thy seed from the east, and gather thee from the west;"

Isaiah 43:6: "I will say to the north, Give up; and to the south, Keep not back: bring my sons from far, and my daughters from the ends of the earth;"

Isaiah 43:13: "Yea, before the day was I am he; and there is none that can deliver out of my hand: I will work, and who shall let it?"

Isaiah 43:19: "Behold, I will do a new thing; now it shall spring forth; shall ye not know it? I will even make a way in the wilderness, and rivers in the desert."

Isaiah 43:25: "I, even I, am he that blotteth out thy transgressions for mine own sake, and will not remember thy sins."

Isaiah 44:2: "Thus saith the LORD that made thee, and formed thee from the womb, which will help thee; Fear not, O Jacob, my servant; and thou, Jesurun, whom I have chosen."

Isaiah 44:3: "For I will pour water upon him that is thirsty, and floods upon the dry ground: I will pour my spirit upon thy seed, and my blessing upon thine offspring:"

Isaiah 44:15: "Then shall it be for a man to burn: for he will take thereof, and warm himself; yea, he kindleth it, and baketh bread; yea, he maketh a god, and worshippeth it; he maketh it a graven image, and falleth down thereto."

Isaiah 44:26: "That confirmeth the word of his servant, and performeth the counsel of his messengers; that saith to Jerusalem, Thou shalt be inhabited; and to the cities of Judah, Ye shall be built, and I will raise up the decayed places thereof:"

Isaiah 44:27: "That saith to the deep, Be dry, and I will dry up thy rivers:"

Isaiah 45:1: "Thus saith the LORD to his anointed, to Cyrus, whose right hand I have holden, to subdue nations before him; and I will loose the loins of kings, to open before him the two leaved gates; and the gates shall not be shut;"

Isaiah 45:2: "I will go before thee, and make the crooked places straight: I will break in pieces the gates of brass, and cut in sunder the bars of iron:"

Isaiah 45:3: "And I will give thee the treasures of darkness, and hidden riches of secret places, that thou mayest know that I, the LORD, which call thee by thy name, am the God of Israel."

Isaiah 45:13: "I have raised him up in righteousness, and I will direct all his ways: he shall build my city, and he shall let go my captives, not for price nor reward, saith the LORD of hosts."

Isaiah 46:4: "And even to your old age I am he; and even to hoar hairs will I carry you: I have made, and I will bear; even I will carry, and will deliver you."

Isaiah 46:5: "To whom will ye liken me, and make me equal, and compare me, that we may be like?"

Isaiah 46:10: "Declaring the end from the beginning, and from ancient times the things that are not yet done, saying, My counsel shall stand, and I will do all my pleasure:"

Isaiah 46:11: "Calling a ravenous bird from the east, the man that executeth my counsel from a far country: yea, I have spoken it, I will also bring it to pass; I have purposed it, I will also do it."

Isaiah 46:13: "I bring near my righteousness; it shall not be far off, and my salvation shall not tarry: and I will place salvation in Zion for Israel my glory."

Isaiah 47:3: "Thy nakedness shall be uncovered, yea, thy shame shall be seen: I will take vengeance, and I will not meet thee as a man."

Isaiah 48:6: "Thou hast heard, see all this; and will not ye declare it? I have shewed thee new things from this time, even hidden things, and thou didst not know them."

Isaiah 48:9: "For my name's sake will I defer mine anger, and for my praise will I refrain for thee, that I cut thee not off."

Isaiah 48:11: "For mine own sake, even for mine own sake, will I do it: for how should my name be polluted? and I will not give my glory unto another."

Isaiah 48:14: "All ye, assemble yourselves, and hear; which among them hath declared these things? The LORD hath loved him: he will do his pleasure on Babylon, and his arm shall be on the Chaldeans."

Isaiah 49:3: "And said unto me, Thou art my servant, O Israel, in whom I will be glorified."

Isaiah 49:6: "And he said, It is a light thing that thou shouldest be my servant to raise up the tribes of Jacob, and to restore the preserved of Israel: I will also give thee for a light to the Gentiles, that thou mayest be my salvation unto the end of the earth."

Isaiah 49:8: "Thus saith the LORD, In an acceptable time have I heard thee, and in a day of salvation have I helped thee: and I will preserve thee, and give thee for a covenant of the people, to establish the earth, to cause to inherit the desolate heritages;"

Isaiah 49:11: "And I will make all my mountains a way, and my highways shall be exalted."

Isaiah 49:13: "Sing, O heavens; and be joyful, O earth; and break forth into singing, O mountains: for the LORD hath comforted his people, and will have mercy upon his afflicted."

Isaiah 49:15: "Can a woman forget her sucking child, that she should not have compassion on the son of her womb? yea, they may forget, yet will I not forget thee."

Isaiah 49:22: "Thus saith the Lord GOD, Behold, I will lift up mine hand to the Gentiles, and set up my standard to the people: and they shall bring thy sons in their arms, and thy daughters shall be carried upon their shoulders."

Isaiah 49:25: "But thus saith the LORD, Even the captives of the mighty shall be taken away, and the prey of the terrible shall be delivered: for I will contend with him that contendeth with thee, and I will save thy children."

Isaiah 49:26: "And I will feed them that oppress thee with their own flesh; and they shall be

drunken with their own blood, as with sweet wine: and all flesh shall know that I the LORD am thy Saviour and thy Redeemer, the mighty One of Jacob."

Isaiah 50:7: "For the Lord GOD will help me; therefore shall I not be confounded: therefore have I set my face like a flint, and I know that I shall not be ashamed."

Isaiah 50:8: "He is near that justifieth me; who will contend with me? let us stand together: who is mine adversary? let him come near to me."

Isaiah 50:9: "Behold, the Lord GOD will help me; who is he that shall condemn me? lo, they all shall wax old as a garment; the moth shall eat them up."

Isaiah 51:3: "For the LORD shall comfort Zion: he will comfort all her waste places; and he will make her wilderness like Eden, and her desert like the garden of the LORD; joy and gladness shall be found therein, thanksgiving, and the voice of melody."

Isaiah 51:4: "Hearken unto me, my people; and give ear unto me, O my nation: for a law shall proceed from me, and I will make my judgment to rest for a light of the people."

Isaiah 51:23: "But I will put it into the hand of them that afflict thee; which have said to thy soul, Bow down, that we may go over: and thou hast laid thy body as the ground, and as the street, to them that went over."

Isaiah 52:12: "For ye shall not go out with haste, nor go by flight: for the LORD will go before you; and the God of Israel will be your rereward."

Isaiah 53:12: "Therefore will I divide him a portion with the great, and he shall divide the spoil with the strong; because he hath poured out his soul unto death: and he was numbered with the transgressors; and he bare the sin of many, and made intercession for the transgressors."

Isaiah 54:7: "For a small moment have I forsaken thee; but with great mercies will I gather thee."

Isaiah 54:8: "In a little wrath I hid my face from thee for a moment; but with everlasting kindness will I have mercy on thee, saith the LORD thy Redeemer."

Isaiah 54:11: "O thou afflicted, tossed with tempest, and not comforted, behold, I will lay thy stones with fair colours, and lay thy foundations with sapphires."

Isaiah 54:12: "And I will make thy windows of agates, and thy gates of carbuncles, and all thy borders of pleasant stones."

Isaiah 55:3: "Incline your ear, and come unto me: hear, and your soul shall live; and I will make an everlasting covenant with you, even the sure mercies of David."

Isaiah 55:7: "Let the wicked forsake his way, and the unrighteous man his thoughts: and let him return unto the LORD, and he will have mercy upon him; and to our God, for he will abundantly pardon."

Isaiah 56:5: "Even unto them will I give in mine house and within my walls a place and a name better than of sons and of daughters: I will give them an everlasting name, that shall not be cut off."

Isaiah 56:7: "Even them will I bring to my holy mountain, and make them joyful in my house of prayer: their burnt offerings and their sacrifices shall be accepted upon mine altar; for mine house shall be called an house of prayer for all people."

Isaiah 56:8: "The Lord GOD, which gathereth the outcasts of Israel saith, Yet will I gather others to him, beside those that are gathered unto him."

Isaiah 56:12: "Come ye, say they, I will fetch wine, and we will fill ourselves with strong drink; and to morrow shall be as this day, and much more abundant."

Isaiah 57:12: "I will declare thy righteousness, and thy works; for they shall not profit thee."

Isaiah 57:16: "For I will not contend for ever, neither will I be always wroth: for the spirit should fail before me, and the souls which I have made."

Isaiah 57:18: "I have seen his ways, and will heal him: I will lead him also, and restore comforts unto him and to his mourners."

Isaiah 57:19: "I create the fruit of the lips; Peace, peace to him that is far off, and to him that is near, saith the LORD; and I will heal him."

Isaiah 58:14: "Then shalt thou delight thyself in the LORD; and I will cause thee to ride upon the

high places of the earth, and feed thee with the heritage of Jacob thy father: for the mouth of the LORD hath spoken it."

Isaiah 59:2: "But your iniquities have separated between you and your God, and your sins have hid his face from you, that he will not hear."

Isaiah 59:18: "According to their deeds, accordingly he will repay, fury to his adversaries, recompence to his enemies; to the islands he will repay recompence."

Isaiah 60:7: "All the flocks of Kedar shall be gathered together unto thee, the rams of Nebaioth shall minister unto thee: they shall come up with acceptance on mine altar, and I will glorify the house of my glory."

Isaiah 60:12: "For the nation and kingdom that will not serve thee shall perish; yea, those nations shall be utterly wasted."

Isaiah 60:13: "The glory of Lebanon shall come unto thee, the fir tree, the pine tree, and the box together, to beautify the place of my sanctuary; and I will make the place of my feet glorious."

Isaiah 60:15: "Whereas thou has been forsaken and hated, so that no man went through thee, I will make thee an eternal excellency, a joy of many generations."

Isaiah 60:17: "For brass I will bring gold, and for iron I will bring silver, and for wood brass, and for stones iron: I will also make thy officers peace, and thine exactors righteousness."

Isaiah 60:22: "A little one shall become a thousand, and a small one a strong nation: I the LORD will hasten it in his time."

Isaiah 61:8: "For I the LORD love judgment, I hate robbery for burnt offering; and I will direct their work in truth, and I will make an everlasting covenant with them."

Isaiah 61:10: "I will greatly rejoice in the LORD, my soul shall be joyful in my God; for he hath clothed me with the garments of salvation, he hath covered me with the robe of righteousness, as a bridegroom decketh himself with ornaments, and as a bride adorneth herself with her jewels."

Isaiah 61:11: "For as the earth bringeth forth her bud, and as the garden causeth the things that are sown in it to spring forth; so the Lord GOD will cause righteousness and praise to spring forth before all the nations."

Isaiah 62:1: "For Zion's sake will I not hold my peace, and for Jerusalem's sake I will not rest, until the righteousness thereof go forth as brightness, and the salvation thereof as a lamp that burneth."

Isaiah 62:8: "The LORD hath sworn by his right hand, and by the arm of his strength, Surely I will no more give thy corn to be meat for thine enemies; and the sons of the stranger shall not drink thy wine, for the which thou hast laboured:"

Isaiah 63:3: "I have trodden the winepress alone; and of the people there was none with me: for I will tread them in mine anger, and trample them in my fury; and their blood shall be sprinkled upon my garments, and I will stain all my raiment."

Isaiah 63:6: "And I will tread down the people in mine anger, and make them drunk in my fury, and I will bring down their strength to the earth."

Isaiah 63:7: "I will mention the lovingkindnesses of the LORD, and the praises of the LORD, according to all that the LORD hath bestowed on us, and the great goodness toward the house of Israel, which he hath bestowed on them according to his mercies, and according to the multitude of his lovingkindnesses."

Isaiah 63:8: "For he said, Surely they are my people, children that will not lie: so he was their Saviour."

Isaiah 65:6: "Behold, it is written before me: I will not keep silence, but will recompense, even recompense into their bosom,"

Isaiah 65:7: "Your iniquities, and the iniquities of your fathers together, saith the LORD, which have burned incense upon the mountains, and blasphemed me upon the hills: therefore will I measure their former work into their bosom."

Isaiah 65:8: "Thus saith the LORD, As the new wine is found in the cluster, and one saith, Destroy it not; for a blessing is in it: so will I do for my servants' sakes, that I may not destroy them all."



Isaiah 65:9: "And I will bring forth a seed out of Jacob, and out of Judah an inheritor of my mountains: and mine elect shall inherit it, and my servants shall dwell there."

Isaiah 65:12: "Therefore will I number you to the sword, and ye shall all bow down to the slaughter: because when I called, ye did not answer; when I spake, ye did not hear; but did evil before mine eyes, and did choose that wherein I delighted not."

Isaiah 65:19: "And I will rejoice in Jerusalem, and joy in my people: and the voice of weeping shall be no more heard in her, nor the voice of crying."

Isaiah 65:24: "And it shall come to pass, that before they call, I will answer; and while they are yet speaking, I will hear."

Isaiah 66:2: "For all those things hath mine hand made, and all those things have been, saith the LORD: but to this man will I look, even to him that is poor and of a contrite spirit, and trembleth at my word."

Isaiah 66:4: "I also will choose their delusions, and will bring their fears upon them; because when I called, none did answer; when I spake, they did not hear: but they did evil before mine eyes, and chose that in which I delighted not."

Isaiah 66:12: "For thus saith the LORD, Behold, I will extend peace to her like a river, and the glory of the Gentiles like a flowing stream: then shall ye suck, ye shall be borne upon her sides, and be dandled upon her knees."

Isaiah 66:13: "As one whom his mother comforteth, so will I comfort you; and ye shall be comforted in Jerusalem."

Isaiah 66:15: "For, behold, the LORD will come with fire, and with his chariots like a whirlwind, to render his anger with fury, and his rebuke with flames of fire."

Isaiah 66:16: "For by fire and by his sword will the LORD plead with all flesh: and the slain of the LORD shall be many."

Isaiah 66:18: "For I know their works and their thoughts: it shall come, that I will gather all nations and tongues; and they shall come, and see my glory."

Isaiah 66:19: "And I will set a sign among them, and I will send those that escape of them unto the nations, to Tarshish, Pul, and Lud, that draw the bow, to Tubal, and Javan, to the isles afar off, that have not heard my fame, neither have seen my glory; and they shall declare my glory among the Gentiles."

Isaiah 66:21: "And I will also take of them for priests and for Levites, saith the LORD."

Isaiah 66:22: "For as the new heavens and the new earth, which I will make, shall remain before me, saith the LORD, so shall your seed and your name remain."

Jeremiah 1:12: "Then said the LORD unto me, Thou hast well seen: for I will hasten my word to perform it."

Jeremiah 1:15: "For, lo, I will call all the families of the kingdoms of the north, saith the LORD; and they shall come, and they shall set every one his throne at the entering of the gates of Jerusalem, and against all the walls thereof round about, and against all the cities of Judah."

Jeremiah 1:16: "And I will utter my judgments against them touching all their wickedness, who have forsaken me, and have burned incense unto other gods, and worshipped the works of their own hands."

Jeremiah 2:9: "Wherefore I will yet plead with you, saith the LORD, and with your children's children will I plead."

Jeremiah 2:20: "For of old time I have broken thy yoke, and burst thy bands; and thou saidst, I will not transgress; when upon every high hill and under every green tree thou wanderest, playing the harlot."

Jeremiah 2:24: "A wild ass used to the wilderness, that snuffeth up the wind at her pleasure; in her occasion who can turn her away? all they that seek her will not weary themselves; in her month they shall find her."

Jeremiah 2:25: "Withhold thy foot from being unshod, and thy throat from thirst: but thou saidst,

There is no hope: no; for I have loved strangers, and after them will I go."

Jeremiah 2:27: "Saying to a stock, Thou art my father; and to a stone, Thou hast brought me forth: for they have turned their back unto me, and not their face: but in the time of their trouble they will say, Arise, and save us."

Jeremiah 2:29: "Wherefore will ye plead with me? ye all have transgressed against me, saith the LORD."

Jeremiah 2:31: "O generation, see ye the word of the LORD. Have I been a wilderness unto Israel? a land of darkness? wherefore say my people, We are lords; we will come no more unto thee?"

Jeremiah 2:35: "Yet thou sayest, Because I am innocent, surely his anger shall turn from me. Behold, I will plead with thee, because thou sayest, I have not sinned."

Jeremiah 3:5: "Will he reserve his anger for ever? will he keep it to the end? Behold, thou hast spoken and done evil things as thou couldst."

Jeremiah 3:12: "Go and proclaim these words toward the north, and say, Return, thou backsliding Israel, saith the LORD; and I will not cause mine anger to fall upon you: for I am merciful, saith the LORD, and I will not keep anger for ever."

Jeremiah 3:14: "Turn, O backsliding children, saith the LORD; for I am married unto you: and I will take you one of a city, and two of a family, and I will bring you to Zion:"

Jeremiah 3:15: "And I will give you pastors according to mine heart, which shall feed you with knowledge and understanding."

Jeremiah 3:22: "Return, ye backsliding children, and I will heal your backslidings. Behold, we come unto thee; for thou art the LORD our God."

Jeremiah 4:6: "Set up the standard toward Zion: retire, stay not: for I will bring evil from the north, and a great destruction."

Jeremiah 4:12: "Even a full wind from those places shall come unto me: now also will I give sentence against them."

Jeremiah 4:27: "For thus hath the LORD said, The whole land shall be desolate; yet will I not make a full end."

Jeremiah 4:28: "For this shall the earth mourn, and the heavens above be black; because I have spoken it, I have purposed it, and will not repent, neither will I turn back from it."

Jeremiah 4:30: "And when thou art spoiled, what wilt thou do? Though thou clothest thyself with crimson, though thou deckest thee with ornaments of gold, though thou rentest thy face with painting, in vain shalt thou make thyself fair; thy lovers will despise thee, they will seek thy life."

Jeremiah 5:1: "Run ye to and fro through the streets of Jerusalem, and see now, and know, and seek in the broad places thereof, if ye can find a man, if there be any that executeth judgment, that seeketh the truth; and I will pardon it."

Jeremiah 5:5: "I will get me unto the great men, and will speak unto them; for they have known the way of the LORD, and the judgment of their God: but these have altogether broken the yoke, and burst the bonds."

Jeremiah 5:14: "Wherefore thus saith the LORD God of hosts, Because ye speak this word, behold, I will make my words in thy mouth fire, and this people wood, and it shall devour them."

Jeremiah 5:15: "Lo, I will bring a nation upon you from far, O house of Israel, saith the LORD: it is a mighty nation, it is an ancient nation, a nation whose language thou knowest not, neither understandest what they say."

Jeremiah 5:18: "Nevertheless in those days, saith the LORD, I will not make a full end with you."

Jeremiah 5:22: "Fear ye not me? saith the LORD: will ye not tremble at my presence, which have placed the sand for the bound of the sea by a perpetual decree, that it cannot pass it: and though the waves thereof toss themselves, yet can they not prevail; though they roar, yet can they not pass over it?"

Jeremiah 5:31: "The prophets prophesy falsely, and the priests bear rule by their means; and my people love to have it so: and what will ye do in the end thereof?"

Jeremiah 6:11: "Therefore I am full of the fury of the LORD; I am weary with holding in: I will pour it out upon the children abroad, and upon the assembly of young men together: for even the husband with the wife shall be taken, the aged with him that is full of days."

Jeremiah 6:12: "And their houses shall be turned unto others, with their fields and wives together: for I will stretch out my hand upon the inhabitants of the land, saith the LORD."

Jeremiah 6:16: "Thus saith the LORD, Stand ye in the ways, and see, and ask for the old paths, where is the good way, and walk therein, and ye shall find rest for your souls. But they said, We will not walk therein."

Jeremiah 6:17: "Also I set watchmen over you, saying, Hearken to the sound of the trumpet. But they said, We will not hearken."

Jeremiah 6:19: "Hear, O earth: behold, I will bring evil upon this people, even the fruit of their thoughts, because they have not hearkened unto my words, nor to my law, but rejected it."

Jeremiah 6:21: "Therefore thus saith the LORD, Behold, I will lay stumblingblocks before this people, and the fathers and the sons together shall fall upon them; the neighbour and his friend shall perish."

Jeremiah 7:3: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel, Amend your ways and your doings, and I will cause you to dwell in this place."

Jeremiah 7:7: "Then will I cause you to dwell in this place, in the land that I gave to your fathers, for ever and ever."

Jeremiah 7:9: "Will ye steal, murder, and commit adultery, and swear falsely, and burn incense unto Baal, and walk after other gods whom ye know not?"

Jeremiah 7:14: "Therefore will I do unto this house, which is called by my name, wherein ye trust, and unto the place which I gave to you and to your fathers, as I have done to Shiloh."

Jeremiah 7:15: "And I will cast you out of my sight, as I have cast out all your brethren, even the whole seed of Ephraim."

Jeremiah 7:16: "Therefore pray not thou for this people, neither lift up cry nor prayer for them, neither make intercession to me: for I will not hear thee."

Jeremiah 7:23: "But this thing commanded I them, saying, Obey my voice, and I will be your God, and ye shall be my people: and walk ye in all the ways that I have commanded you, that it may be well unto you."

Jeremiah 7:27: "Therefore thou shalt speak all these words unto them; but they will not hearken to thee: thou shalt also call unto them; but they will not answer thee."

Jeremiah 7:34: "Then will I cause to cease from the cities of Judah, and from the streets of Jerusalem, the voice of mirth, and the voice of gladness, the voice of the bridegroom, and the voice of the bride: for the land shall be desolate."

Jeremiah 8:10: "Therefore will I give their wives unto others, and their fields to them that shall inherit them: for every one from the least even unto the greatest is given to covetousness, from the prophet even unto the priest every one dealeth falsely."

Jeremiah 8:13: "I will surely consume them, saith the LORD: there shall be no grapes on the vine, nor figs on the fig tree, and the leaf shall fade; and the things that I have given them shall pass away from them."

Jeremiah 8:17: "For, behold, I will send serpents, cockatrices, among you, which will not be charmed, and they shall bite you, saith the LORD."

Jeremiah 9:4: "Take ye heed every one of his neighbour, and trust ye not in any brother: for every brother will utterly supplant, and every neighbour will walk with slanders."

Jeremiah 9:5: "And they will deceive every one his neighbour, and will not speak the truth: they have taught their tongue to speak lies, and weary themselves to commit iniquity."

Jeremiah 9:7: "Therefore thus saith the LORD of hosts, Behold, I will melt them, and try them; for how shall I do for the daughter of my people?"

Jeremiah 9:10: "For the mountains will I take up a weeping and wailing, and for the habitations of

the wilderness a lamentation, because they are burned up, so that none can pass through them; neither can men hear the voice of the cattle; both the fowl of the heavens and the beast are fled; they are gone."

Jeremiah 9:11: "And I will make Jerusalem heaps, and a den of dragons; and I will make the cities of Judah desolate, without an inhabitant."

Jeremiah 9:15: "Therefore thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will feed them, even this people, with wormwood, and give them water of gall to drink."

Jeremiah 9:16: "I will scatter them also among the heathen, whom neither they nor their fathers have known: and I will send a sword after them, till I have consumed them."

Jeremiah 9:25: "Behold, the days come, saith the LORD, that I will punish all them which are circumcised with the uncircumcised;"

Jeremiah 10:18: "For thus saith the LORD, Behold, I will sling out the inhabitants of the land at this once, and will distress them, that they may find it so."

Jeremiah 11:4: "Which I commanded your fathers in the day that I brought them forth out of the land of Egypt, from the iron furnace, saying, Obey my voice, and do them, according to all which I command you: so shall ye be my people, and I will be your God:"

Jeremiah 11:8: "Yet they obeyed not, nor inclined their ear, but walked every one in the imagination of their evil heart: therefore I will bring upon them all the words of this covenant, which I commanded them to do: but they did them not."

Jeremiah 11:11: "Therefore thus saith the LORD, Behold, I will bring evil upon them, which they shall not be able to escape; and though they shall cry unto me, I will not hearken unto them."

Jeremiah 11:14: "Therefore pray not thou for this people, neither lift up a cry or prayer for them: for I will not hear them in the time that they cry unto me for their trouble."

Jeremiah 11:22: "Therefore thus saith the LORD of hosts, Behold, I will punish them: the young men shall die by the sword; their sons and their daughters shall die by famine:"

Jeremiah 11:23: "And there shall be no remnant of them: for I will bring evil upon the men of Anathoth, even the year of their visitation."

Jeremiah 12:14: "Thus saith the LORD against all mine evil neighbours, that touch the inheritance which I have caused my people Israel to inherit; Behold, I will pluck them out of their land, and pluck out the house of Judah from among them."

Jeremiah 12:15: "And it shall come to pass, after that I have plucked them out I will return, and have compassion on them, and will bring them again, every man to his heritage, and every man to his land."

Jeremiah 12:16: "And it shall come to pass, if they will diligently learn the ways of my people, to swear by my name, The LORD liveth; as they taught my people to swear by Baal; then shall they be built in the midst of my people."

Jeremiah 12:17: "But if they will not obey, I will utterly pluck up and destroy that nation, saith the LORD."

Jeremiah 13:9: "Thus saith the LORD, After this manner will I mar the pride of Judah, and the great pride of Jerusalem."

Jeremiah 13:13: "Then shalt thou say unto them, Thus saith the LORD, Behold, I will fill all the inhabitants of this land, even the kings that sit upon David's throne, and the priests, and the prophets, and all the inhabitants of Jerusalem, with drunkenness."

Jeremiah 13:14: "And I will dash them one against another, even the fathers and the sons together, saith the LORD: I will not pity, nor spare, nor have mercy, but destroy them."

Jeremiah 13:17: "But if ye will not hear it, my soul shall weep in secret places for your pride; and mine eye shall weep sore, and run down with tears, because the LORD's flock is carried away captive."

Jeremiah 13:24: "Therefore will I scatter them as the stubble that passeth away by the wind of the wilderness."

Jeremiah 13:26: "Therefore will I discover thy skirts upon thy face, that thy shame may appear."

Jeremiah 14:10: "Thus saith the LORD unto this people, Thus have they loved to wander, they have not refrained their feet, therefore the LORD doth not accept them; he will now remember their iniquity, and visit their sins."

Jeremiah 14:12: "When they fast, I will not hear their cry; and when they offer burnt offering and an oblation, I will not accept them: but I will consume them by the sword, and by the famine, and by the pestilence."

Jeremiah 14:13: "Then said I, Ah, Lord GOD! behold, the prophets say unto them, Ye shall not see the sword, neither shall ye have famine; but I will give you assured peace in this place."

Jeremiah 14:16: "And the people to whom they prophesy shall be cast out in the streets of Jerusalem because of the famine and the sword; and they shall have none to bury them, them, their wives, nor their sons, nor their daughters: for I will pour their wickedness upon them."

Jeremiah 14:22: "Are there any among the vanities of the Gentiles that can cause rain? or can the heavens give showers? art not thou he, O LORD our God? therefore we will wait upon thee: for thou hast made all these things."

Jeremiah 15:3: "And I will appoint over them four kinds, saith the LORD: the sword to slay, and the dogs to tear, and the fowls of the heaven, and the beasts of the earth, to devour and destroy."

Jeremiah 15:4: "And I will cause them to be removed into all kingdoms of the earth, because of Manasseh the son of Hezekiah king of Judah, for that which he did in Jerusalem."

Jeremiah 15:6: "Thou hast forsaken me, saith the LORD, thou art gone backward: therefore will I stretch out my hand against thee, and destroy thee; I am weary with repenting."

Jeremiah 15:7: "And I will fan them with a fan in the gates of the land; I will bereave them of children, I will destroy my people since they return not from their ways."

Jeremiah 15:9: "She that hath borne seven languisheth: she hath given up the ghost; her sun is gone down while it was yet day: she hath been ashamed and confounded: and the residue of them will I deliver to the sword before their enemies, saith the LORD."

Jeremiah 15:11: "The LORD said, Verily it shall be well with thy remnant; verily I will cause the enemy to entreat thee well in the time of evil and in the time of affliction."

Jeremiah 15:13: "Thy substance and thy treasures will I give to the spoil without price, and that for all thy sins, even in all thy borders."

Jeremiah 15:14: "And I will make thee to pass with thine enemies into a land which thou knowest not: for a fire is kindled in mine anger, which shall burn upon you."

Jeremiah 15:19: "Therefore thus saith the LORD, If thou return, then will I bring thee again, and thou shalt stand before me: and if thou take forth the precious from the vile, thou shalt be as my mouth: let them return unto thee; but return not thou unto them."

Jeremiah 15:20: "And I will make thee unto this people a fenced brasen wall: and they shall fight against thee, but they shall not prevail against thee: for I am with thee to save thee and to deliver thee, saith the LORD."

Jeremiah 15:21: "And I will deliver thee out of the hand of the wicked, and I will redeem thee out of the hand of the terrible."

Jeremiah 16:9: "For thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will cause to cease out of this place in your eyes, and in your days, the voice of mirth, and the voice of gladness, the voice of the bridegroom, and the voice of the bride."

Jeremiah 16:13: "Therefore will I cast you out of this land into a land that ye know not, neither ye nor your fathers; and there shall ye serve other gods day and night; where I will not shew you favour."

Jeremiah 16:15: "But, The LORD liveth, that brought up the children of Israel from the land of the north, and from all the lands whither he had driven them: and I will bring them again into their land that I gave unto their fathers."

Jeremiah 16:16: "Behold, I will send for many fishers, saith the LORD, and they shall fish them;

and after will I send for many hunters, and they shall hunt them from every mountain, and from every hill, and out of the holes of the rocks."

Jeremiah 16:18: "And first I will recompense their iniquity and their sin double; because they have defiled my land, they have filled mine inheritance with the carcasses of their detestable and abominable things."

Jeremiah 16:21: "Therefore, behold, I will this once cause them to know, I will cause them to know mine hand and my might; and they shall know that my name is The LORD."

Jeremiah 17:3: "O my mountain in the field, I will give thy substance and all thy treasures to the spoil, and thy high places for sin, throughout all thy borders."

Jeremiah 17:4: "And thou, even thyself, shalt discontinue from thine heritage that I gave thee; and I will cause thee to serve thine enemies in the land which thou knowest not: for ye have kindled a fire in mine anger, which shall burn for ever."

Jeremiah 17:27: "But if ye will not hearken unto me to hallow the sabbath day, and not to bear a burden, even entering in at the gates of Jerusalem on the sabbath day; then will I kindle a fire in the gates thereof, and it shall devour the palaces of Jerusalem, and it shall not be quenched."

Jeremiah 18:2: "Arise, and go down to the potter's house, and there I will cause thee to hear my words."

Jeremiah 18:8: "If that nation, against whom I have pronounced, turn from their evil, I will repent of the evil that I thought to do unto them."

Jeremiah 18:10: "If it do evil in my sight, that it obey not my voice, then I will repent of the good, wherewith I said I would benefit them."

Jeremiah 18:12: "And they said, There is no hope: but we will walk after our own devices, and we will every one do the imagination of his evil heart."

Jeremiah 18:14: "Will a man leave the snow of Lebanon which cometh from the rock of the field? or shall the cold flowing waters that come from another place be forsaken?"

Jeremiah 18:17: "I will scatter them as with an east wind before the enemy; I will shew them the back, and not the face, in the day of their calamity."

Jeremiah 19:3: "And say, Hear ye the word of the LORD, O kings of Judah, and inhabitants of Jerusalem; Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will bring evil upon this place, the which whosoever heareth, his ears shall tingle."

Jeremiah 19:7: "And I will make void the counsel of Judah and Jerusalem in this place; and I will cause them to fall by the sword before their enemies, and by the hands of them that seek their lives: and their carcasses will I give to be meat for the fowls of the heaven, and for the beasts of the earth."

Jeremiah 19:8: "And I will make this city desolate, and an hissing; every one that passeth thereby shall be astonished and hiss because of all the plagues thereof."

Jeremiah 19:9: "And I will cause them to eat the flesh of their sons and the flesh of their daughters, and they shall eat every one the flesh of his friend in the siege and straitness, wherewith their enemies, and they that seek their lives, shall straiten them."

Jeremiah 19:11: "And shalt say unto them, Thus saith the LORD of hosts; Even so will I break this people and this city, as one breaketh a potter's vessel, that cannot be made whole again: and they shall bury them in Tophet, till there be no place to bury."

Jeremiah 19:12: "Thus will I do unto this place, saith the LORD, and to the inhabitants thereof, and even make this city as Tophet:"

Jeremiah 19:15: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will bring upon this city and upon all her towns all the evil that I have pronounced against it, because they have hardened their necks, that they might not hear my words."

Jeremiah 20:4: "For thus saith the LORD, Behold, I will make thee a terror to thyself, and to all thy friends: and they shall fall by the sword of their enemies, and thine eyes shall behold it: and I will give all Judah into the hand of the king of Babylon, and he shall carry them captive into Babylon, and shall slay them with the sword."

Jeremiah 20:5: "Moreover I will deliver all the strength of this city, and all the labours thereof, and all the precious things thereof, and all the treasures of the kings of Judah will I give into the hand of their enemies, which shall spoil them, and take them, and carry them to Babylon."

Jeremiah 20:9: "Then I said, I will not make mention of him, nor speak any more in his name. But his word was in mine heart as a burning fire shut up in my bones, and I was weary with forbearing, and I could not stay."

Jeremiah 20:10: "For I heard the defaming of many, fear on every side. Report, say they, and we will report it. All my familiars watched for my halting, saying, Peradventure he will be enticed, and we shall prevail against him, and we shall take our revenge on him."

Jeremiah 21:2: "Enquire, I pray thee, of the LORD for us; for Nebuchadrezzar king of Babylon maketh war against us; if so be that the LORD will deal with us according to all his wondrous works, that he may go up from us."

Jeremiah 21:4: "Thus saith the LORD God of Israel; Behold, I will turn back the weapons of war that are in your hands, wherewith ye fight against the king of Babylon, and against the Chaldeans, which besiege you without the walls, and I will assemble them into the midst of this city."

Jeremiah 21:5: "And I myself will fight against you with an outstretched hand and with a strong arm, even in anger, and in fury, and in great wrath."

Jeremiah 21:6: "And I will smite the inhabitants of this city, both man and beast: they shall die of a great pestilence."

Jeremiah 21:7: "And afterward, saith the LORD, I will deliver Zedekiah king of Judah, and his servants, and the people, and such as are left in this city from the pestilence, from the sword, and from the famine, into the hand of Nebuchadrezzar king of Babylon, and into the hand of their enemies, and into the hand of those that seek their life: and he shall smite them with the edge of the sword; he shall not spare them, neither have pity, nor have mercy."

Jeremiah 21:14: "But I will punish you according to the fruit of your doings, saith the LORD: and I will kindle a fire in the forest thereof, and it shall devour all things round about it."

Jeremiah 22:5: "But if ye will not hear these words, I swear by myself, saith the LORD, that this house shall become a desolation."

Jeremiah 22:6: "For thus saith the LORD unto the king's house of Judah; Thou art Gilead unto me, and the head of Lebanon: yet surely I will make thee a wilderness, and cities which are not inhabited."

Jeremiah 22:7: "And I will prepare destroyers against thee, every one with his weapons: and they shall cut down thy choice cedars, and cast them into the fire."

Jeremiah 22:14: "That saith, I will build me a wide house and large chambers, and cutteth him out windows; and it is cieled with cedar, and painted with vermilion."

Jeremiah 22:21: "I spake unto thee in thy prosperity; but thou saidst, I will not hear. This hath been thy manner from thy youth, that thou obeyedst not my voice."

Jeremiah 22:25: "And I will give thee into the hand of them that seek thy life, and into the hand of them whose face thou fearest, even into the hand of Nebuchadrezzar king of Babylon, and into the hand of the Chaldeans."

Jeremiah 22:26: "And I will cast thee out, and thy mother that bare thee, into another country, where ye were not born; and there shall ye die."

Jeremiah 23:2: "Therefore thus saith the LORD God of Israel against the pastors that feed my people; Ye have scattered my flock, and driven them away, and have not visited them: behold, I will visit upon you the evil of your doings, saith the LORD."

Jeremiah 23:3: "And I will gather the remnant of my flock out of all countries whither I have driven them, and will bring them again to their folds; and they shall be fruitful and increase."

Jeremiah 23:4: "And I will set up shepherds over them which shall feed them: and they shall fear no more, nor be dismayed, neither shall they be lacking, saith the LORD."

Jeremiah 23:5: "Behold, the days come, saith the LORD, that I will raise unto David a righteous

Branch, and a King shall reign and prosper, and shall execute judgment and justice in the earth."

Jeremiah 23:12: "Wherefore their way shall be unto them as slippery ways in the darkness: they shall be driven on, and fall therein: for I will bring evil upon them, even the year of their visitation, saith the LORD."

Jeremiah 23:15: "Therefore thus saith the LORD of hosts concerning the prophets; Behold, I will feed them with wormwood, and make them drink the water of gall: for from the prophets of Jerusalem is profaneness gone forth into all the land."

Jeremiah 23:33: "And when this people, or the prophet, or a priest, shall ask thee, saying, What is the burden of the LORD? thou shalt then say unto them, What burden? I will even forsake you, saith the LORD."

Jeremiah 23:34: "And as for the prophet, and the priest, and the people, that shall say, The burden of the LORD, I will even punish that man and his house."

Jeremiah 23:39: "Therefore, behold, I, even I, will utterly forget you, and I will forsake you, and the city that I gave you and your fathers, and cast you out of my presence:"

Jeremiah 23:40: "And I will bring an everlasting reproach upon you, and a perpetual shame, which shall not be forgotten."

Jeremiah 24:5: "Thus saith the LORD, the God of Israel; Like these good figs, so will I acknowledge them that are carried away captive of Judah, whom I have sent out of this place into the land of the Chaldeans for their good."

Jeremiah 24:6: "For I will set mine eyes upon them for good, and I will bring them again to this land: and I will build them, and not pull them down; and I will plant them, and not pluck them up."

Jeremiah 24:7: "And I will give them an heart to know me, that I am the LORD: and they shall be my people, and I will be their God: for they shall return unto me with their whole heart."

Jeremiah 24:8: "And as the evil figs, which cannot be eaten, they are so evil; surely thus saith the LORD, So will I give Zedekiah the king of Judah, and his princes, and the residue of Jerusalem, that remain in this land, and them that dwell in the land of Egypt:"

Jeremiah 24:9: "And I will deliver them to be removed into all the kingdoms of the earth for their hurt, to be a reproach and a proverb, a taunt and a curse, in all places whither I shall drive them."

Jeremiah 24:10: "And I will send the sword, the famine, and the pestilence, among them, till they be consumed from off the land that I gave unto them and to their fathers."

Jeremiah 25:6: "And go not after other gods to serve them, and to worship them, and provoke me not to anger with the works of your hands; and I will do you no hurt."

Jeremiah 25:9: "Behold, I will send and take all the families of the north, saith the LORD, and Nebuchadrezzar the king of Babylon, my servant, and will bring them against this land, and against the inhabitants thereof, and against all these nations round about, and will utterly destroy them, and make them an astonishment, and an hissing, and perpetual desolations."

Jeremiah 25:10: "Moreover I will take from them the voice of mirth, and the voice of gladness, the voice of the bridegroom, and the voice of the bride, the sound of the millstones, and the light of the candle."

Jeremiah 25:12: "And it shall come to pass, when seventy years are accomplished, that I will punish the king of Babylon, and that nation, saith the LORD, for their iniquity, and the land of the Chaldeans, and will make it perpetual desolations."

Jeremiah 25:13: "And I will bring upon that land all my words which I have pronounced against it, even all that is written in this book, which Jeremiah hath prophesied against all the nations."

Jeremiah 25:14: "For many nations and great kings shall serve themselves of them also: and I will recompense them according to their deeds, and according to the works of their own hands."

Jeremiah 25:16: "And they shall drink, and be moved, and be mad, because of the sword that I will send among them."

Jeremiah 25:27: "Therefore thou shalt say unto them, Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Drink ye, and be drunken, and spue, and fall, and rise no more, because of the sword which I



will send among you."

Jeremiah 25:29: "For, lo, I begin to bring evil on the city which is called by my name, and should ye be utterly unpunished? Ye shall not be unpunished: for I will call for a sword upon all the inhabitants of the earth, saith the LORD of hosts."

Jeremiah 25:31: "A noise shall come even to the ends of the earth; for the LORD hath a controversy with the nations, he will plead with all flesh; he will give them that are wicked to the sword, saith the LORD."

Jeremiah 26:3: "If so be they will hearken, and turn every man from his evil way, that I may repent me of the evil, which I purpose to do unto them because of the evil of their doings."

Jeremiah 26:4: "And thou shalt say unto them, Thus saith the LORD; If ye will not hearken to me, to walk in my law, which I have set before you,"

Jeremiah 26:6: "Then will I make this house like Shiloh, and will make this city a curse to all the nations of the earth."

Jeremiah 26:13: "Therefore now amend your ways and your doings, and obey the voice of the LORD your God; and the LORD will repent him of the evil that he hath pronounced against you."

Jeremiah 27:8: "And it shall come to pass, that the nation and kingdom which will not serve the same Nebuchadnezzar the king of Babylon, and that will not put their neck under the yoke of the king of Babylon, that nation will I punish, saith the LORD, with the sword, and with the famine, and with the pestilence, until I have consumed them by his hand."

Jeremiah 27:11: "But the nations that bring their neck under the yoke of the king of Babylon, and serve him, those will I let remain still in their own land, saith the LORD; and they shall till it, and dwell therein."

Jeremiah 27:13: "Why will ye die, thou and thy people, by the sword, by the famine, and by the pestilence, as the LORD hath spoken against the nation that will not serve the king of Babylon?"

Jeremiah 27:22: "They shall be carried to Babylon, and there shall they be until the day that I visit them, saith the LORD; then will I bring them up, and restore them to this place."

Jeremiah 28:3: "Within two full years will I bring again into this place all the vessels of the LORD's house, that Nebuchadnezzar king of Babylon took away from this place, and carried them to Babylon:"

Jeremiah 28:4: "And I will bring again to this place Jeconiah the son of Jehoiakim king of Judah, with all the captives of Judah, that went into Babylon, saith the LORD: for I will break the yoke of the king of Babylon."

Jeremiah 28:11: "And Hananiah spake in the presence of all the people, saying, Thus saith the LORD; Even so will I break the yoke of Nebuchadnezzar king of Babylon from the neck of all nations within the space of two full years. And the prophet Jeremiah went his way."

Jeremiah 28:16: "Therefore thus saith the LORD; Behold, I will cast thee from off the face of the earth: this year thou shalt die, because thou hast taught rebellion against the LORD."

Jeremiah 29:10: "For thus saith the LORD, That after seventy years be accomplished at Babylon I will visit you, and perform my good word toward you, in causing you to return to this place."

Jeremiah 29:12: "Then shall ye call upon me, and ye shall go and pray unto me, and I will hearken unto you."

Jeremiah 29:14: "And I will be found of you, saith the LORD: and I will turn away your captivity, and I will gather you from all the nations, and from all the places whither I have driven you, saith the LORD; and I will bring you again into the place whence I caused you to be carried away captive."

Jeremiah 29:17: "Thus saith the LORD of hosts; Behold, I will send upon them the sword, the famine, and the pestilence, and will make them like vile figs, that cannot be eaten, they are so evil."

Jeremiah 29:18: "And I will persecute them with the sword, with the famine, and with the pestilence, and will deliver them to be removed to all the kingdoms of the earth, to be a curse, and an astonishment, and an hissing, and a reproach, among all the nations whither I have driven them:"

Jeremiah 29:21: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel, of Ahab the son of Kolaiah, and of Zedekiah the son of Maaseiah, which prophesy a lie unto you in my name; Behold, I will deliver them into the hand of Nebuchadrezzar king of Babylon; and he shall slay them before your eyes;"

Jeremiah 29:32: "Therefore thus saith the LORD; Behold, I will punish Shemaiah the Nehelamite, and his seed: he shall not have a man to dwell among this people; neither shall he behold the good that I will do for my people, saith the LORD; because he hath taught rebellion against the LORD."

Jeremiah 30:3: "For, lo, the days come, saith the LORD, that I will bring again the captivity of my people Israel and Judah, saith the LORD: and I will cause them to return to the land that I gave to their fathers, and they shall possess it."

Jeremiah 30:8: "For it shall come to pass in that day, saith the LORD of hosts, that I will break his yoke from off thy neck, and will burst thy bonds, and strangers shall no more serve themselves of him:"

Jeremiah 30:9: "But they shall serve the LORD their God, and David their king, whom I will raise up unto them."

Jeremiah 30:10: "Therefore fear thou not, O my servant Jacob, saith the LORD; neither be dismayed, O Israel: for, lo, I will save thee from afar, and thy seed from the land of their captivity; and Jacob shall return, and shall be in rest, and be quiet, and none shall make him afraid."

Jeremiah 30:11: "For I am with thee, saith the LORD, to save thee: though I make a full end of all nations whither I have scattered thee, yet I will not make a full end of thee: but I will correct thee in measure, and will not leave thee altogether unpunished."

Jeremiah 30:16: "Therefore all they that devour thee shall be devoured; and all thine adversaries, every one of them, shall go into captivity; and they that spoil thee shall be a spoil, and all that prey upon thee will I give for a prey."

Jeremiah 30:17: "For I will restore health unto thee, and I will heal thee of thy wounds, saith the LORD; because they called thee an Outcast, saying, This is Zion, whom no man seeketh after."

Jeremiah 30:18: "Thus saith the LORD; Behold, I will bring again the captivity of Jacob's tents, and have mercy on his dwellingplaces; and the city shall be builded upon her own heap, and the palace shall remain after the manner thereof."

Jeremiah 30:19: "And out of them shall proceed thanksgiving and the voice of them that make merry: and I will multiply them, and they shall not be few; I will also glorify them, and they shall not be small."

Jeremiah 30:20: "Their children also shall be as aforetime, and their congregation shall be established before me, and I will punish all that oppress them."

Jeremiah 30:21: "And their nobles shall be of themselves, and their governor shall proceed from the midst of them; and I will cause him to draw near, and he shall approach unto me: for who is this that engaged his heart to approach unto me? saith the LORD."

Jeremiah 30:22: "And ye shall be my people, and I will be your God."

Jeremiah 31:1: "At the same time, saith the LORD, will I be the God of all the families of Israel, and they shall be my people."

Jeremiah 31:4: "Again I will build thee, and thou shalt be built, O virgin of Israel: thou shalt again be adorned with thy tabrets, and shalt go forth in the dances of them that make merry."

Jeremiah 31:8: "Behold, I will bring them from the north country, and gather them from the coasts of the earth, and with them the blind and the lame, the woman with child and her that travaileth with child together: a great company shall return thither."

Jeremiah 31:9: "They shall come with weeping, and with supplications will I lead them: I will cause them to walk by the rivers of waters in a straight way, wherein they shall not stumble: for I am a father to Israel, and Ephraim is my firstborn."

Jeremiah 31:10: "Hear the word of the LORD, O ye nations, and declare it in the isles afar off, and say, He that scattered Israel will gather him, and keep him, as a shepherd doth his flock."

Jeremiah 31:13: "Then shall the virgin rejoice in the dance, both young men and old together: for I

will turn their mourning into joy, and will comfort them, and make them rejoice from their sorrow."

Jeremiah 31:14: "And I will satiate the soul of the priests with fatness, and my people shall be satisfied with my goodness, saith the LORD."

Jeremiah 31:20: "Is Ephraim my dear son? is he a pleasant child? for since I spake against him, I do earnestly remember him still: therefore my bowels are troubled for him; I will surely have mercy upon him, saith the LORD."

Jeremiah 31:27: "Behold, the days come, saith the LORD, that I will sow the house of Israel and the house of Judah with the seed of man, and with the seed of beast."

Jeremiah 31:28: "And it shall come to pass, that like as I have watched over them, to pluck up, and to break down, and to throw down, and to destroy, and to afflict; so will I watch over them, to build, and to plant, saith the LORD."

Jeremiah 31:31: "Behold, the days come, saith the LORD, that I will make a new covenant with the house of Israel, and with the house of Judah:"

Jeremiah 31:33: "But this shall be the covenant that I will make with the house of Israel; After those days, saith the LORD, I will put my law in their inward parts, and write it in their hearts; and will be their God, and they shall be my people."

Jeremiah 31:34: "And they shall teach no more every man his neighbour, and every man his brother, saying, Know the LORD: for they shall all know me, from the least of them unto the greatest of them, saith the LORD: for I will forgive their iniquity, and I will remember their sin no more."

Jeremiah 31:37: "Thus saith the LORD; If heaven above can be measured, and the foundations of the earth searched out beneath, I will also cast off all the seed of Israel for all that they have done, saith the LORD."

Jeremiah 32:3: "For Zedekiah king of Judah had shut him up, saying, Wherefore dost thou prophesy, and say, Thus saith the LORD, Behold, I will give this city into the hand of the king of Babylon, and he shall take it;"

Jeremiah 32:28: "Therefore thus saith the LORD; Behold, I will give this city into the hand of the Chaldeans, and into the hand of Nebuchadrezzar king of Babylon, and he shall take it:"

Jeremiah 32:37: "Behold, I will gather them out of all countries, whither I have driven them in mine anger, and in my fury, and in great wrath; and I will bring them again unto this place, and I will cause them to dwell safely:"

Jeremiah 32:38: "And they shall be my people, and I will be their God:"

Jeremiah 32:39: "And I will give them one heart, and one way, that they may fear me for ever, for the good of them, and of their children after them:"

Jeremiah 32:40: "And I will make an everlasting covenant with them, that I will not turn away from them, to do them good; but I will put my fear in their hearts, that they shall not depart from me."

Jeremiah 32:41: "Yea, I will rejoice over them to do them good, and I will plant them in this land assuredly with my whole heart and with my whole soul."

Jeremiah 32:42: "For thus saith the LORD; Like as I have brought all this great evil upon this people, so will I bring upon them all the good that I have promised them."

Jeremiah 32:44: "Men shall buy fields for money, and subscribe evidences, and seal them, and take witnesses in the land of Benjamin, and in the places about Jerusalem, and in the cities of Judah, and in the cities of the mountains, and in the cities of the valley, and in the cities of the south: for I will cause their captivity to return, saith the LORD."

Jeremiah 33:3: "Call unto me, and I will answer thee, and shew thee great and mighty things, which thou knowest not."

Jeremiah 33:6: "Behold, I will bring it health and cure, and I will cure them, and will reveal unto them the abundance of peace and truth."

Jeremiah 33:7: "And I will cause the captivity of Judah and the captivity of Israel to return, and will build them, as at the first."

Jeremiah 33:8: "And I will cleanse them from all their iniquity, whereby they have sinned against me; and I will pardon all their iniquities, whereby they have sinned, and whereby they have transgressed against me."

Jeremiah 33:11: "The voice of joy, and the voice of gladness, the voice of the bridegroom, and the voice of the bride, the voice of them that shall say, Praise the LORD of hosts: for the LORD is good; for his mercy endureth for ever: and of them that shall bring the sacrifice of praise into the house of the LORD. For I will cause to return the captivity of the land, as at the first, saith the LORD."

Jeremiah 33:14: "Behold, the days come, saith the LORD, that I will perform that good thing which I have promised unto the house of Israel and to the house of Judah."

Jeremiah 33:15: "In those days, and at that time, will I cause the Branch of righteousness to grow up unto David; and he shall execute judgment and righteousness in the land."

Jeremiah 33:22: "As the host of heaven cannot be numbered, neither the sand of the sea measured: so will I multiply the seed of David my servant, and the Levites that minister unto me."

Jeremiah 33:26: "Then will I cast away the seed of Jacob and David my servant, so that I will not take any of his seed to be rulers over the seed of Abraham, Isaac, and Jacob: for I will cause their captivity to return, and have mercy on them."

Jeremiah 34:2: "Thus saith the LORD, the God of Israel; Go and speak to Zedekiah king of Judah, and tell him, Thus saith the LORD; Behold, I will give this city into the hand of the king of Babylon, and he shall burn it with fire:"

Jeremiah 34:5: "But thou shalt die in peace: and with the burnings of thy fathers, the former kings which were before thee, so shall they burn odours for thee; and they will lament thee, saying, Ah lord! for I have pronounced the word, saith the LORD."

Jeremiah 34:17: "Therefore thus saith the LORD; Ye have not hearkened unto me, in proclaiming liberty, every one to his brother, and every man to his neighbour: behold, I proclaim a liberty for you, saith the LORD, to the sword, to the pestilence, and to the famine; and I will make you to be removed into all the kingdoms of the earth."

Jeremiah 34:18: "And I will give the men that have transgressed my covenant, which have not performed the words of the covenant which they had made before me, when they cut the calf in twain, and passed between the parts thereof,"

Jeremiah 34:20: "I will even give them into the hand of their enemies, and into the hand of them that seek their life: and their dead bodies shall be for meat unto the fowls of the heaven, and to the beasts of the earth."

Jeremiah 34:21: "And Zedekiah king of Judah and his princes will I give into the hand of their enemies, and into the hand of them that seek their life, and into the hand of the king of Babylon's army, which are gone up from you."

Jeremiah 34:22: "Behold, I will command, saith the LORD, and cause them to return to this city; and they shall fight against it, and take it, and burn it with fire: and I will make the cities of Judah a desolation without an inhabitant."

Jeremiah 35:6: "But they said, We will drink no wine: for Jonadab the son of Rechab our father commanded us, saying, Ye shall drink no wine, neither ye, nor your sons for ever:"

Jeremiah 35:13: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Go and tell the men of Judah and the inhabitants of Jerusalem, Will ye not receive instruction to hearken to my words? saith the LORD."

Jeremiah 35:17: "Therefore thus saith the LORD God of hosts, the God of Israel; Behold, I will bring upon Judah and upon all the inhabitants of Jerusalem all the evil that I have pronounced against them: because I have spoken unto them, but they have not heard; and I have called unto them, but they have not answered."

Jeremiah 36:3: "It may be that the house of Judah will hear all the evil which I purpose to do unto them; that they may return every man from his evil way; that I may forgive their iniquity and their

sin."

Jeremiah 36:7: "It may be they will present their supplication before the LORD, and will return every one from his evil way: for great is the anger and the fury that the LORD hath pronounced against this people."

Jeremiah 36:16: "Now it came to pass, when they had heard all the words, they were afraid both one and other, and said unto Baruch, We will surely tell the king of all these words."

Jeremiah 36:31: "And I will punish him and his seed and his servants for their iniquity; and I will bring upon them, and upon the inhabitants of Jerusalem, and upon the men of Judah, all the evil that I have pronounced against them; but they hearkened not."

Jeremiah 38:14: "Then Zedekiah the king sent, and took Jeremiah the prophet unto him into the third entry that is in the house of the LORD: and the king said unto Jeremiah, I will ask thee a thing; hide nothing from me."

Jeremiah 38:16: "So Zedekiah the king sware secretly unto Jeremiah, saying, As the LORD liveth, that made us this soul, I will not put thee to death, neither will I give thee into the hand of these men that seek thy life."

Jeremiah 38:25: "But if the princes hear that I have talked with thee, and they come unto thee, and say unto thee, Declare unto us now what thou hast said unto the king, hide it not from us, and we will not put thee to death; also what the king said unto thee:"

Jeremiah 39:16: "Go and speak to Ebedmelech the Ethiopian, saying, Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will bring my words upon this city for evil, and not for good; and they shall be accomplished in that day before thee."

Jeremiah 39:17: "But I will deliver thee in that day, saith the LORD: and thou shalt not be given into the hand of the men of whom thou art afraid."

Jeremiah 39:18: "For I will surely deliver thee, and thou shalt not fall by the sword, but thy life shall be for a prey unto thee: because thou hast put thy trust in me, saith the LORD."

Jeremiah 40:4: "And now, behold, I loose thee this day from the chains which were upon thine hand. If it seem good unto thee to come with me into Babylon, come; and I will look well unto thee: but if it seem ill unto thee to come with me into Babylon, forbear: behold, all the land is before thee: whither it seemeth good and convenient for thee to go, thither go."

Jeremiah 40:10: "As for me, behold, I will dwell at Mizpah, to serve the Chaldeans, which will come unto us: but ye, gather ye wine, and summer fruits, and oil, and put them in your vessels, and dwell in your cities that ye have taken."

Jeremiah 40:15: "Then Johanan the son of Kareah spake to Gedaliah in Mizpah secretly saying, Let me go, I pray thee, and I will slay Ishmael the son of Nethaniah, and no man shall know it: wherefore should he slay thee, that all the Jews which are gathered unto thee should be scattered, and the remnant in Judah perish?"

Jeremiah 42:4: "Then Jeremiah the prophet said unto them, I have heard you; behold, I will pray unto the LORD your God according to your words; and it shall come to pass, that whatsoever thing the LORD shall answer you, I will declare it unto you; I will keep nothing back from you."

Jeremiah 42:6: "Whether it be good, or whether it be evil, we will obey the voice of the LORD our God, to whom we send thee; that it may be well with us, when we obey the voice of the LORD our God."

Jeremiah 42:10: "If ye will still abide in this land, then will I build you, and not pull you down, and I will plant you, and not pluck you up: for I repent me of the evil that I have done unto you."

Jeremiah 42:12: "And I will shew mercies unto you, that he may have mercy upon you, and cause you to return to your own land."

Jeremiah 42:13: "But if ye say, We will not dwell in this land, neither obey the voice of the LORD your God,"

Jeremiah 42:14: "Saying, No; but we will go into the land of Egypt, where we shall see no war, nor hear the sound of the trumpet, nor have hunger of bread; and there will we dwell:"

Jeremiah 42:17: "So shall it be with all the men that set their faces to go into Egypt to sojourn there; they shall die by the sword, by the famine, and by the pestilence: and none of them shall remain or escape from the evil that I will bring upon them."

Jeremiah 42:20: "For ye dissembled in your hearts, when ye sent me unto the LORD your God, saying, Pray for us unto the LORD our God; and according unto all that the LORD our God shall say, so declare unto us, and we will do it."

Jeremiah 43:10: "And say unto them, Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will send and take Nebuchadrezzar the king of Babylon, my servant, and will set his throne upon these stones that I have hid; and he shall spread his royal pavilion over them."

Jeremiah 43:12: "And I will kindle a fire in the houses of the gods of Egypt; and he shall burn them, and carry them away captives: and he shall array himself with the land of Egypt, as a shepherd putteth on his garment; and he shall go forth from thence in peace."

Jeremiah 44:11: "Therefore thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will set my face against you for evil, and to cut off all Judah."

Jeremiah 44:12: "And I will take the remnant of Judah, that have set their faces to go into the land of Egypt to sojourn there, and they shall all be consumed, and fall in the land of Egypt; they shall even be consumed by the sword and by the famine: they shall die, from the least even unto the greatest, by the sword and by the famine: and they shall be an execration, and an astonishment, and a curse, and a reproach."

Jeremiah 44:13: "For I will punish them that dwell in the land of Egypt, as I have punished Jerusalem, by the sword, by the famine, and by the pestilence:"

Jeremiah 44:16: "As for the word that thou hast spoken unto us in the name of the LORD, we will not hearken unto thee."

Jeremiah 44:17: "But we will certainly do whatsoever thing goeth forth out of our own mouth, to burn incense unto the queen of heaven, and to pour out drink offerings unto her, as we have done, we, and our fathers, our kings, and our princes, in the cities of Judah, and in the streets of Jerusalem: for then had we plenty of victuals, and were well, and saw no evil."

Jeremiah 44:25: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel, saying; Ye and your wives have both spoken with your mouths, and fulfilled with your hand, saying, We will surely perform our vows that we have vowed, to burn incense to the queen of heaven, and to pour out drink offerings unto her: ye will surely accomplish your vows, and surely perform your vows."

Jeremiah 44:27: "Behold, I will watch over them for evil, and not for good: and all the men of Judah that are in the land of Egypt shall be consumed by the sword and by the famine, until there be an end of them."

Jeremiah 44:29: "And this shall be a sign unto you, saith the LORD, that I will punish you in this place, that ye may know that my words shall surely stand against you for evil:"

Jeremiah 44:30: "Thus saith the LORD; Behold, I will give Pharaohhophra king of Egypt into the hand of his enemies, and into the hand of them that seek his life; as I gave Zedekiah king of Judah into the hand of Nebuchadrezzar king of Babylon, his enemy, and that sought his life."

Jeremiah 45:4: "Thus shalt thou say unto him, The LORD saith thus; Behold, that which I have built will I break down, and that which I have planted I will pluck up, even this whole land."

Jeremiah 45:5: "And seekest thou great things for thyself? seek them not: for, behold, I will bring evil upon all flesh, saith the LORD: but thy life will I give unto thee for a prey in all places whither thou goest."

Jeremiah 46:8: "Egypt riseth up like a flood, and his waters are moved like the rivers; and he saith, I will go up, and will cover the earth; I will destroy the city and the inhabitants thereof."

Jeremiah 46:25: "The LORD of hosts, the God of Israel, saith; Behold, I will punish the multitude of No, and Pharaoh, and Egypt, with their gods, and their kings; even Pharaoh, and all them that trust in him:"

Jeremiah 46:26: "And I will deliver them into the hand of those that seek their lives, and into the

hand of Nebuchadrezzar king of Babylon, and into the hand of his servants: and afterward it shall be inhabited, as in the days of old, saith the LORD."

Jeremiah 46:27: "But fear not thou, O my servant Jacob, and be not dismayed, O Israel: for, behold, I will save thee from afar off, and thy seed from the land of their captivity; and Jacob shall return, and be in rest and at ease, and none shall make him afraid."

Jeremiah 46:28: "Fear thou not, O Jacob my servant, saith the LORD: for I am with thee; for I will make a full end of all the nations whither I have driven thee: but I will not make a full end of thee, but correct thee in measure; yet will I not leave thee wholly unpunished."

Jeremiah 47:4: "Because of the day that cometh to spoil all the Philistines, and to cut off from Tyrus and Sidon every helper that remaineth: for the LORD will spoil the Philistines, the remnant of the country of Caphtor."

Jeremiah 47:6: "O thou sword of the LORD, how long will it be ere thou be quiet? put up thyself into thy scabbard, rest, and be still."

Jeremiah 48:12: "Therefore, behold, the days come, saith the LORD, that I will send unto him wanderers, that shall cause him to wander, and shall empty his vessels, and break their bottles."

Jeremiah 48:31: "Therefore will I howl for Moab, and I will cry out for all Moab; mine heart shall mourn for the men of Kirheres."

Jeremiah 48:32: "O vine of Sibmah, I will weep for thee with the weeping of Jazer: thy plants are gone over the sea, they reach even to the sea of Jazer: the spoiler is fallen upon thy summer fruits and upon thy vintage."

Jeremiah 48:35: "Moreover I will cause to cease in Moab, saith the LORD, him that offereth in the high places, and him that burneth incense to his gods."

Jeremiah 48:44: "He that fleeth from the fear shall fall into the pit; and he that getteth up out of the pit shall be taken in the snare: for I will bring upon it, even upon Moab, the year of their visitation, saith the LORD."

Jeremiah 48:47: "Yet will I bring again the captivity of Moab in the latter days, saith the LORD. Thus far is the judgment of Moab."

Jeremiah 49:2: "Therefore, behold, the days come, saith the LORD, that I will cause an alarm of war to be heard in Rabbah of the Ammonites; and it shall be a desolate heap, and her daughters shall be burned with fire: then shall Israel be heir unto them that were his heirs, saith the LORD."

Jeremiah 49:5: "Behold, I will bring a fear upon thee, saith the Lord GOD of hosts, from all those that be about thee; and ye shall be driven out every man right forth; and none shall gather up him that wandereth."

Jeremiah 49:6: "And afterward I will bring again the captivity of the children of Ammon, saith the LORD."

Jeremiah 49:8: "Flee ye, turn back, dwell deep, O inhabitants of Dedan; for I will bring the calamity of Esau upon him, the time that I will visit him."

Jeremiah 49:9: "If grapegatherers come to thee, would they not leave some gleanings? if thieves by night, they will destroy till they have enough."

Jeremiah 49:11: "Leave thy fatherless children, I will preserve them alive; and let thy widows trust in me."

Jeremiah 49:15: "For, lo, I will make thee small among the heathen, and despised among men."

Jeremiah 49:16: "Thy terribleness hath deceived thee, and the pride of thine heart, O thou that dwellest in the clefts of the rock, that holdest the height of the hill: though thou shouldst make thy nest as high as the eagle, I will bring thee down from thence, saith the LORD."

Jeremiah 49:19: "Behold, he shall come up like a lion from the swelling of Jordan against the habitation of the strong: but I will suddenly make him run away from her: and who is a chosen man, that I may appoint over her? for who is like me? and who will appoint me the time? and who is that shepherd that will stand before me?"

Jeremiah 49:27: "And I will kindle a fire in the wall of Damascus, and it shall consume the palaces

of Benhadad."

Jeremiah 49:32: "And their camels shall be a booty, and the multitude of their cattle a spoil: and I will scatter into all winds them that are in the utmost corners; and I will bring their calamity from all sides thereof, saith the LORD."

Jeremiah 49:35: "Thus saith the LORD of hosts; Behold, I will break the bow of Elam, the chief of their might."

Jeremiah 49:36: "And upon Elam will I bring the four winds from the four quarters of heaven, and will scatter them toward all those winds; and there shall be no nation whither the outcasts of Elam shall not come."

Jeremiah 49:37: "For I will cause Elam to be dismayed before their enemies, and before them that seek their life: and I will bring evil upon them, even my fierce anger, saith the LORD; and I will send the sword after them, till I have consumed them:"

Jeremiah 49:38: "And I will set my throne in Elam, and will destroy from thence the king and the princes, saith the LORD."

Jeremiah 49:39: "But it shall come to pass in the latter days, that I will bring again the captivity of Elam, saith the LORD."

Jeremiah 50:9: "For, lo, I will raise and cause to come up against Babylon an assembly of great nations from the north country: and they shall set themselves in array against her; from thence she shall be taken: their arrows shall be as of a mighty expert man; none shall return in vain."

Jeremiah 50:18: "Therefore thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will punish the king of Babylon and his land, as I have punished the king of Assyria."

Jeremiah 50:19: "And I will bring Israel again to his habitation, and he shall feed on Carmel and Bashan, and his soul shall be satisfied upon mount Ephraim and Gilead."

Jeremiah 50:20: "In those days, and in that time, saith the LORD, the iniquity of Israel shall be sought for, and there shall be none; and the sins of Judah, and they shall not be found: for I will pardon them whom I reserve."

Jeremiah 50:31: "Behold, I am against thee, O thou most proud, saith the Lord GOD of hosts: for thy day is come, the time that I will visit thee."

Jeremiah 50:32: "And the most proud shall stumble and fall, and none shall raise him up: and I will kindle a fire in his cities, and it shall devour all round about him."

Jeremiah 50:42: "They shall hold the bow and the lance: they are cruel, and will not shew mercy: their voice shall roar like the sea, and they shall ride upon horses, every one put in array, like a man to the battle, against thee, O daughter of Babylon."

Jeremiah 50:44: "Behold, he shall come up like a lion from the swelling of Jordan unto the habitation of the strong: but I will make them suddenly run away from her: and who is a chosen man, that I may appoint over her? for who is like me? and who will appoint me the time? and who is that shepherd that will stand before me?"

Jeremiah 51:1: "Thus saith the LORD; Behold, I will raise up against Babylon, and against them that dwell in the midst of them that rise up against me, a destroying wind;"

Jeremiah 51:2: "And will send unto Babylon fanners, that shall fan her, and shall empty her land: for in the day of trouble they shall be against her round about."

Jeremiah 51:6: "Flee out of the midst of Babylon, and deliver every man his soul: be not cut off in her iniquity; for this is the time of the LORD's vengeance; he will render unto her a recompense."

Jeremiah 51:14: "The LORD of hosts hath sworn by himself, saying, Surely I will fill thee with men, as with caterpillers; and they shall lift up a shout against thee."

Jeremiah 51:20: "Thou art my battle axe and weapons of war: for with thee will I break in pieces the nations, and with thee will I destroy kingdoms;"

Jeremiah 51:21: "And with thee will I break in pieces the horse and his rider; and with thee will I break in pieces the chariot and his rider;"

Jeremiah 51:22: "With thee also will I break in pieces man and woman; and with thee will I break in



pieces old and young; and with thee will I break in pieces the young man and the maid;"

Jeremiah 51:23: "I will also break in pieces with thee the shepherd and his flock; and with thee will I break in pieces the husbandman and his yoke of oxen; and with thee will I break in pieces captains and rulers."

Jeremiah 51:24: "And I will render unto Babylon and to all the inhabitants of Chaldea all their evil that they have done in Zion in your sight, saith the LORD."

Jeremiah 51:25: "Behold, I am against thee, O destroying mountain, saith the LORD, which destroyest all the earth: and I will stretch out mine hand upon thee, and roll thee down from the rocks, and will make thee a burnt mountain."

Jeremiah 51:36: "Therefore thus saith the LORD; Behold, I will plead thy cause, and take vengeance for thee; and I will dry up her sea, and make her springs dry."

Jeremiah 51:39: "In their heat I will make their feasts, and I will make them drunken, that they may rejoice, and sleep a perpetual sleep, and not wake, saith the LORD."

Jeremiah 51:40: "I will bring them down like lambs to the slaughter, like rams with he goats."

Jeremiah 51:44: "And I will punish Bel in Babylon, and I will bring forth out of his mouth that which he hath swallowed up: and the nations shall not flow together any more unto him: yea, the wall of Babylon shall fall."

Jeremiah 51:47: "Therefore, behold, the days come, that I will do judgment upon the graven images of Babylon: and her whole land shall be confounded, and all her slain shall fall in the midst of her."

Jeremiah 51:52: "Wherefore, behold, the days come, saith the LORD, that I will do judgment upon her graven images: and through all her land the wounded shall groan."

Jeremiah 51:57: "And I will make drunk her princes, and her wise men, her captains, and her rulers, and her mighty men: and they shall sleep a perpetual sleep, and not wake, saith the King, whose name is the LORD of hosts."

Jeremiah 51:64: "And thou shalt say, Thus shall Babylon sink, and shall not rise from the evil that I will bring upon her: and they shall be weary. Thus far are the words of Jeremiah."

Lamentations 3:24: "The LORD is my portion, saith my soul; therefore will I hope in him."

Lamentations 3:31: "For the LORD will not cast off for ever:"

Lamentations 3:32: "But though he cause grief, yet will he have compassion according to the multitude of his mercies."

Lamentations 4:16: "The anger of the LORD hath divided them; he will no more regard them: they respected not the persons of the priests, they favoured not the elders."

Lamentations 4:22: "The punishment of thine iniquity is accomplished, O daughter of Zion; he will no more carry thee away into captivity: he will visit thine iniquity, O daughter of Edom; he will discover thy sins."

Ezekiel 2:1: "And he said unto me, Son of man, stand upon thy feet, and I will speak unto thee."

Ezekiel 2:5: "And they, whether they will hear, or whether they will forbear, (for they are a rebellious house,) yet shall know that there hath been a prophet among them."

Ezekiel 2:7: "And thou shalt speak my words unto them, whether they will hear, or whether they will forbear: for they are most rebellious."

Ezekiel 3:7: "But the house of Israel will not hearken unto thee; for they will not hearken unto me: for all the house of Israel are impudent and hardhearted."

Ezekiel 3:11: "And go, get thee to them of the captivity, unto the children of thy people, and speak unto them, and tell them, Thus saith the Lord GOD; whether they will hear, or whether they will forbear."

Ezekiel 3:18: "When I say unto the wicked, Thou shalt surely die; and thou givest him not warning, nor speakest to warn the wicked from his wicked way, to save his life; the same wicked man shall die in his iniquity; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 3:20: "Again, When a righteous man doth turn from his righteousness, and commit iniquity, and I lay a stumbling-block before him, he shall die: because thou hast not given him warning, he

shall die in his sin, and his righteousness which he hath done shall not be remembered; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 3:22: "And the hand of the LORD was there upon me; and he said unto me, Arise, go forth into the plain, and I will there talk with thee."

Ezekiel 3:26: "And I will make thy tongue cleave to the roof of thy mouth, that thou shalt be dumb, and shalt not be to them a reprover: for they are a rebellious house."

Ezekiel 3:27: "But when I speak with thee, I will open thy mouth, and thou shalt say unto them, Thus saith the Lord GOD; He that heareth, let him hear; and he that forbeareth, let him forbear: for they are a rebellious house."

Ezekiel 4:8: "And, behold, I will lay bands upon thee, and thou shalt not turn thee from one side to another, till thou hast ended the days of thy siege."

Ezekiel 4:13: "And the LORD said, Even thus shall the children of Israel eat their defiled bread among the Gentiles, whither I will drive them."

Ezekiel 4:16: "Moreover he said unto me, Son of man, behold, I will break the staff of bread in Jerusalem: and they shall eat bread by weight, and with care; and they shall drink water by measure, and with astonishment:"

Ezekiel 5:2: "Thou shalt burn with fire a third part in the midst of the city, when the days of the siege are fulfilled: and thou shalt take a third part, and smite about it with a knife: and a third part thou shalt scatter in the wind; and I will draw out a sword after them."

Ezekiel 5:8: "Therefore thus saith the Lord GOD; Behold, I, even I, am against thee, and will execute judgments in the midst of thee in the sight of the nations."

Ezekiel 5:9: "And I will do in thee that which I have not done, and whereunto I will not do any more the like, because of all thine abominations."

Ezekiel 5:10: "Therefore the fathers shall eat the sons in the midst of thee, and the sons shall eat their fathers; and I will execute judgments in thee, and the whole remnant of thee will I scatter into all the winds."

Ezekiel 5:11: "Wherefore, as I live, saith the Lord GOD; Surely, because thou hast defiled my sanctuary with all thy detestable things, and with all thine abominations, therefore will I also diminish thee; neither shall mine eye spare, neither will I have any pity."

Ezekiel 5:12: "A third part of thee shall die with the pestilence, and with famine shall they be consumed in the midst of thee: and a third part shall fall by the sword round about thee; and I will scatter a third part into all the winds, and I will draw out a sword after them."

Ezekiel 5:13: "Thus shall mine anger be accomplished, and I will cause my fury to rest upon them, and I will be comforted: and they shall know that I the LORD have spoken it in my zeal, when I have accomplished my fury in them."

Ezekiel 5:14: "Moreover I will make thee waste, and a reproach among the nations that are round about thee, in the sight of all that pass by."

Ezekiel 5:16: "When I shall send upon them the evil arrows of famine, which shall be for their destruction, and which I will send to destroy you: and I will increase the famine upon you, and will break your staff of bread:"

Ezekiel 5:17: "So will I send upon you famine and evil beasts, and they shall bereave thee: and pestilence and blood shall pass through thee; and I will bring the sword upon thee. I the LORD have spoken it."

Ezekiel 6:3: "And say, Ye mountains of Israel, hear the word of the Lord GOD; Thus saith the Lord GOD to the mountains, and to the hills, to the rivers, and to the valleys; Behold, I, even I, will bring a sword upon you, and I will destroy your high places."

Ezekiel 6:4: "And your altars shall be desolate, and your images shall be broken: and I will cast down your slain men before your idols."

Ezekiel 6:5: "And I will lay the dead carcasses of the children of Israel before their idols; and I will scatter your bones round about your altars."

Ezekiel 6:8: "Yet will I leave a remnant, that ye may have some that shall escape the sword among the nations, when ye shall be scattered through the countries."

Ezekiel 6:12: "He that is far off shall die of the pestilence; and he that is near shall fall by the sword; and he that remaineth and is besieged shall die by the famine: thus will I accomplish my fury upon them."

Ezekiel 6:14: "So will I stretch out my hand upon them, and make the land desolate, yea, more desolate than the wilderness toward Diblath, in all their habitations: and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 7:3: "Now is the end come upon thee, and I will send mine anger upon thee, and will judge thee according to thy ways, and will recompense upon thee all thine abominations."

Ezekiel 7:4: "And mine eye shall not spare thee, neither will I have pity: but I will recompense thy ways upon thee, and thine abominations shall be in the midst of thee: and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 7:8: "Now will I shortly pour out my fury upon thee, and accomplish mine anger upon thee: and I will judge thee according to thy ways, and will recompense thee for all thine abominations."

Ezekiel 7:9: "And mine eye shall not spare, neither will I have pity: I will recompense thee according to thy ways and thine abominations that are in the midst of thee; and ye shall know that I am the LORD that smiteth."

Ezekiel 7:21: "And I will give it into the hands of the strangers for a prey, and to the wicked of the earth for a spoil; and they shall pollute it."

Ezekiel 7:22: "My face will I turn also from them, and they shall pollute my secret place: for the robbers shall enter into it, and defile it."

Ezekiel 7:24: "Wherefore I will bring the worst of the heathen, and they shall possess their houses: I will also make the pomp of the strong to cease; and their holy places shall be defiled."

Ezekiel 7:27: "The king shall mourn, and the prince shall be clothed with desolation, and the hands of the people of the land shall be troubled: I will do unto them after their way, and according to their deserts will I judge them; and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 8:18: "Therefore will I also deal in fury: mine eye shall not spare, neither will I have pity: and though they cry in mine ears with a loud voice, yet will I not hear them."

Ezekiel 9:10: "And as for me also, mine eye shall not spare, neither will I have pity, but I will recompense their way upon their head."

Ezekiel 11:7: "Therefore thus saith the Lord GOD; Your slain whom ye have laid in the midst of it, they are the flesh, and this city is the caldron: but I will bring you forth out of the midst of it."

Ezekiel 11:8: "Ye have feared the sword; and I will bring a sword upon you, saith the Lord GOD."

Ezekiel 11:9: "And I will bring you out of the midst thereof, and deliver you into the hands of strangers, and will execute judgments among you."

Ezekiel 11:10: "Ye shall fall by the sword; I will judge you in the border of Israel; and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 11:11: "This city shall not be your caldron, neither shall ye be the flesh in the midst thereof; but I will judge you in the border of Israel:"

Ezekiel 11:16: "Therefore say, Thus saith the Lord GOD; Although I have cast them far off among the heathen, and although I have scattered them among the countries, yet will I be to them as a little sanctuary in the countries where they shall come."

Ezekiel 11:17: "Therefore say, Thus saith the Lord GOD; I will even gather you from the people, and assemble you out of the countries where ye have been scattered, and I will give you the land of Israel."

Ezekiel 11:19: "And I will give them one heart, and I will put a new spirit within you; and I will take the stony heart out of their flesh, and will give them an heart of flesh:"

Ezekiel 11:20: "That they may walk in my statutes, and keep mine ordinances, and do them: and they shall be my people, and I will be their God."

Ezekiel 11:21: "But as for them whose heart walketh after the heart of their detestable things and their abominations, I will recompense their way upon their own heads, saith the Lord GOD."

Ezekiel 12:3: "Therefore, thou son of man, prepare thee stuff for removing, and remove by day in their sight; and thou shalt remove from thy place to another place in their sight: it may be they will consider, though they be a rebellious house."

Ezekiel 12:13: "My net also will I spread upon him, and he shall be taken in my snare: and I will bring him to Babylon to the land of the Chaldeans; yet shall he not see it, though he shall die there."

Ezekiel 12:14: "And I will scatter toward every wind all that are about him to help him, and all his bands; and I will draw out the sword after them."

Ezekiel 12:16: "But I will leave a few men of them from the sword, from the famine, and from the pestilence; that they may declare all their abominations among the heathen whither they come; and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 12:23: "Tell them therefore, Thus saith the Lord GOD; I will make this proverb to cease, and they shall no more use it as a proverb in Israel; but say unto them, The days are at hand, and the effect of every vision."

Ezekiel 12:25: "For I am the LORD: I will speak, and the word that I shall speak shall come to pass; it shall be no more prolonged: for in your days, O rebellious house, will I say the word, and will perform it, saith the Lord GOD."

Ezekiel 13:13: "Therefore thus saith the Lord GOD; I will even rend it with a stormy wind in my fury; and there shall be an overflowing shower in mine anger, and great hailstones in my fury to consume it."

Ezekiel 13:14: "So will I break down the wall that ye have daubed with untempered mortar, and bring it down to the ground, so that the foundation thereof shall be discovered, and it shall fall, and ye shall be consumed in the midst thereof: and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 13:15: "Thus will I accomplish my wrath upon the wall, and upon them that have daubed it with untempered mortar, and will say unto you, The wall is no more, neither they that daubed it;"

Ezekiel 13:18: "And say, Thus saith the Lord GOD; Woe to the women that sew pillows to all armholes, and make kerchiefs upon the head of every stature to hunt souls! Will ye hunt the souls of my people, and will ye save the souls alive that come unto you?"

Ezekiel 13:19: "And will ye pollute me among my people for handfuls of barley and for pieces of bread, to slay the souls that should not die, and to save the souls alive that should not live, by your lying to my people that hear your lies?"

Ezekiel 13:20: "Wherefore thus saith the Lord GOD; Behold, I am against your pillows, wherewith ye there hunt the souls to make them fly, and I will tear them from your arms, and will let the souls go, even the souls that ye hunt to make them fly."

Ezekiel 13:21: "Your kerchiefs also will I tear, and deliver my people out of your hand, and they shall be no more in your hand to be hunted; and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 13:23: "Therefore ye shall see no more vanity, nor divine divinations: for I will deliver my people out of your hand: and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 14:4: "Therefore speak unto them, and say unto them, Thus saith the Lord GOD; Every man of the house of Israel that setteth up his idols in his heart, and putteth the stumblingblock of his iniquity before his face, and cometh to the prophet; I the LORD will answer him that cometh according to the multitude of his idols;"

Ezekiel 14:7: "For every one of the house of Israel, or of the stranger that sojourneth in Israel, which separateth himself from me, and setteth up his idols in his heart, and putteth the stumblingblock of his iniquity before his face, and cometh to a prophet to enquire of him concerning me; I the LORD will answer him by myself:"

Ezekiel 14:8: "And I will set my face against that man, and will make him a sign and a proverb, and I will cut him off from the midst of my people; and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 14:9: "And if the prophet be deceived when he hath spoken a thing, I the LORD have

deceived that prophet, and I will stretch out my hand upon him, and will destroy him from the midst of my people Israel."

Ezekiel 14:13: "Son of man, when the land sinneth against me by trespassing grievously, then will I stretch out mine hand upon it, and will break the staff of the bread thereof, and will send famine upon it, and will cut off man and beast from it:"

Ezekiel 15:3: "Shall wood be taken thereof to do any work? or will men take a pin of it to hang any vessel thereon?"

Ezekiel 15:6: "Therefore thus saith the Lord GOD; As the vine tree among the trees of the forest, which I have given to the fire for fuel, so will I give the inhabitants of Jerusalem."

Ezekiel 15:7: "And I will set my face against them; they shall go out from one fire, and another fire shall devour them; and ye shall know that I am the LORD, when I set my face against them."

Ezekiel 15:8: "And I will make the land desolate, because they have committed a trespass, saith the Lord GOD."

Ezekiel 16:27: "Behold, therefore I have stretched out my hand over thee, and have diminished thine ordinary food, and delivered thee unto the will of them that hate thee, the daughters of the Philistines, which are ashamed of thy lewd way."

Ezekiel 16:37: "Behold, therefore I will gather all thy lovers, with whom thou hast taken pleasure, and all them that thou hast loved, with all them that thou hast hated; I will even gather them round about against thee, and will discover thy nakedness unto them, that they may see all thy nakedness."

Ezekiel 16:38: "And I will judge thee, as women that break wedlock and shed blood are judged; and I will give thee blood in fury and jealousy."

Ezekiel 16:39: "And I will also give thee into their hand, and they shall throw down thine eminent place, and shall break down thy high places: they shall strip thee also of thy clothes, and shall take thy fair jewels, and leave thee naked and bare."

Ezekiel 16:41: "And they shall burn thine houses with fire, and execute judgments upon thee in the sight of many women: and I will cause thee to cease from playing the harlot, and thou also shalt give no hire any more."

Ezekiel 16:42: "So will I make my fury toward thee to rest, and my jealousy shall depart from thee, and I will be quiet, and will be no more angry."

Ezekiel 16:43: "Because thou hast not remembered the days of thy youth, but hast fretted me in all these things; behold, therefore I also will recompense thy way upon thine head, saith the Lord GOD: and thou shalt not commit this lewdness above all thine abominations."

Ezekiel 16:53: "When I shall bring again their captivity, the captivity of Sodom and her daughters, and the captivity of Samaria and her daughters, then will I bring again the captivity of thy captives in the midst of them:"

Ezekiel 16:59: "For thus saith the Lord GOD; I will even deal with thee as thou hast done, which hast despised the oath in breaking the covenant."

Ezekiel 16:60: "Nevertheless I will remember my covenant with thee in the days of thy youth, and I will establish unto thee an everlasting covenant."

Ezekiel 16:61: "Then thou shalt remember thy ways, and be ashamed, when thou shalt receive thy sisters, thine elder and thy younger: and I will give them unto thee for daughters, but not by thy covenant."

Ezekiel 16:62: "And I will establish my covenant with thee; and thou shalt know that I am the LORD:"

Ezekiel 17:19: "Therefore thus saith the Lord GOD; As I live, surely mine oath that he hath despised, and my covenant that he hath broken, even it will I recompense upon his own head."

Ezekiel 17:20: "And I will spread my net upon him, and he shall be taken in my snare, and I will bring him to Babylon, and will plead with him there for his trespass that he hath trespassed against me."

Ezekiel 17:22: "Thus saith the Lord GOD; I will also take of the highest branch of the high cedar,

and will set it; I will crop off from the top of his young twigs a tender one, and will plant it upon an high mountain and eminent:"

Ezekiel 17:23: "In the mountain of the height of Israel will I plant it: and it shall bring forth boughs, and bear fruit, and be a goodly cedar: and under it shall dwell all fowl of every wing; in the shadow of the branches thereof shall they dwell."

Ezekiel 18:21: "But if the wicked will turn from all his sins that he hath committed, and keep all my statutes, and do that which is lawful and right, he shall surely live, he shall not die."

Ezekiel 18:30: "Therefore I will judge you, O house of Israel, every one according to his ways, saith the Lord GOD. Repent, and turn yourselves from all your transgressions; so iniquity shall not be your ruin."

Ezekiel 18:31: "Cast away from you all your transgressions, whereby ye have transgressed; and make you a new heart and a new spirit: for why will ye die, O house of Israel?"

Ezekiel 20:3: "Son of man, speak unto the elders of Israel, and say unto them, Thus saith the Lord GOD; Are ye come to enquire of me? As I live, saith the Lord GOD, I will not be enquired of by you."

Ezekiel 20:8: "But they rebelled against me, and would not hearken unto me: they did not every man cast away the abominations of their eyes, neither did they forsake the idols of Egypt: then I said, I will pour out my fury upon them, to accomplish my anger against them in the midst of the land of Egypt."

Ezekiel 20:31: "For when ye offer your gifts, when ye make your sons to pass through the fire, ye pollute yourselves with all your idols, even unto this day: and shall I be enquired of by you, O house of Israel? As I live, saith the Lord GOD, I will not be enquired of by you."

Ezekiel 20:32: "And that which cometh into your mind shall not be at all, that ye say, We will be as the heathen, as the families of the countries, to serve wood and stone."

Ezekiel 20:33: "As I live, saith the Lord GOD, surely with a mighty hand, and with a stretched out arm, and with fury poured out, will I rule over you:"

Ezekiel 20:34: "And I will bring you out from the people, and will gather you out of the countries wherein ye are scattered, with a mighty hand, and with a stretched out arm, and with fury poured out."

Ezekiel 20:35: "And I will bring you into the wilderness of the people, and there will I plead with you face to face."

Ezekiel 20:36: "Like as I pleaded with your fathers in the wilderness of the land of Egypt, so will I plead with you, saith the Lord GOD."

Ezekiel 20:37: "And I will cause you to pass under the rod, and I will bring you into the bond of the covenant:"

Ezekiel 20:38: "And I will purge out from among you the rebels, and them that transgress against me: I will bring them forth out of the country where they sojourn, and they shall not enter into the land of Israel: and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 20:39: "As for you, O house of Israel, thus saith the Lord GOD; Go ye, serve ye every one his idols, and hereafter also, if ye will not hearken unto me: but pollute ye my holy name no more with your gifts, and with your idols."

Ezekiel 20:40: "For in mine holy mountain, in the mountain of the height of Israel, saith the Lord GOD, there shall all the house of Israel, all of them in the land, serve me: there will I accept them, and there will I require your offerings, and the firstfruits of your oblations, with all your holy things."

Ezekiel 20:41: "I will accept you with your sweet savour, when I bring you out from the people, and gather you out of the countries wherein ye have been scattered; and I will be sanctified in you before the heathen."

Ezekiel 20:47: "And say to the forest of the south, Hear the word of the LORD; Thus saith the Lord GOD; Behold, I will kindle a fire in thee, and it shall devour every green tree in thee, and every dry

tree: the flaming flame shall not be quenched, and all faces from the south to the north shall be burned therein."

Ezekiel 21:3: "And say to the land of Israel, Thus saith the LORD; Behold, I am against thee, and will draw forth my sword out of his sheath, and will cut off from thee the righteous and the wicked."

Ezekiel 21:4: "Seeing then that I will cut off from thee the righteous and the wicked, therefore shall my sword go forth out of his sheath against all flesh from the south to the north:"

Ezekiel 21:17: "I will also smite mine hands together, and I will cause my fury to rest: I the LORD have said it."

Ezekiel 21:23: "And it shall be unto them as a false divination in their sight, to them that have sworn oaths: but he will call to remembrance the iniquity, that they may be taken."

Ezekiel 21:27: "I will overturn, overturn, overturn, it: and it shall be no more, until he come whose right it is; and I will give it him."

Ezekiel 21:30: "Shall I cause it to return into his sheath? I will judge thee in the place where thou wast created, in the land of thy nativity."

Ezekiel 21:31: "And I will pour out mine indignation upon thee, I will blow against thee in the fire of my wrath, and deliver thee into the hand of brutish men, and skilful to destroy."

Ezekiel 22:14: "Can thine heart endure, or can thine hands be strong, in the days that I shall deal with thee? I the LORD have spoken it, and will do it."

Ezekiel 22:15: "And I will scatter thee among the heathen, and disperse thee in the countries, and will consume thy filthiness out of thee."

Ezekiel 22:19: "Therefore thus saith the Lord GOD; Because ye are all become dross, behold, therefore I will gather you into the midst of Jerusalem."

Ezekiel 22:20: "As they gather silver, and brass, and iron, and lead, and tin, into the midst of the furnace, to blow the fire upon it, to melt it; so will I gather you in mine anger and in my fury, and I will leave you there, and melt you."

Ezekiel 22:21: "Yea, I will gather you, and blow upon you in the fire of my wrath, and ye shall be melted in the midst thereof."

Ezekiel 23:22: "Therefore, O Aholibah, thus saith the Lord GOD; Behold, I will raise up thy lovers against thee, from whom thy mind is alienated, and I will bring them against thee on every side;"

Ezekiel 23:24: "And they shall come against thee with chariots, wagons, and wheels, and with an assembly of people, which shall set against thee buckler and shield and helmet round about: and I will set judgment before them, and they shall judge thee according to their judgments."

Ezekiel 23:25: "And I will set my jealousy against thee, and they shall deal furiously with thee: they shall take away thy nose and thine ears; and thy remnant shall fall by the sword: they shall take thy sons and thy daughters; and thy residue shall be devoured by the fire."

Ezekiel 23:27: "Thus will I make thy lewdness to cease from thee, and thy whoredom brought from the land of Egypt: so that thou shalt not lift up thine eyes unto them, nor remember Egypt any more."

Ezekiel 23:28: "For thus saith the Lord GOD; Behold, I will deliver thee into the hand of them whom thou hatest, into the hand of them from whom thy mind is alienated:"

Ezekiel 23:30: "I will do these things unto thee, because thou hast gone a whoring after the heathen, and because thou art polluted with their idols."

Ezekiel 23:31: "Thou hast walked in the way of thy sister; therefore will I give her cup into thine hand."

Ezekiel 23:43: "Then said I unto her that was old in adulteries, Will they now commit whoredoms with her, and she with them?"

Ezekiel 23:46: "For thus saith the Lord GOD; I will bring up a company upon them, and will give them to be removed and spoiled."

Ezekiel 23:48: "Thus will I cause lewdness to cease out of the land, that all women may be taught

not to do after your lewdness."

Ezekiel 24:9: "Therefore thus saith the Lord GOD; Woe to the bloody city! I will even make the pile for fire great."

Ezekiel 24:14: "I the LORD have spoken it: it shall come to pass, and I will do it; I will not go back, neither will I spare, neither will I repent; according to thy ways, and according to thy doings, shall they judge thee, saith the Lord GOD."

Ezekiel 24:21: "Speak unto the house of Israel, Thus saith the Lord GOD; Behold, I will profane my sanctuary, the excellency of your strength, the desire of your eyes, and that which your soul pitieth; and your sons and your daughters whom ye have left shall fall by the sword."

Ezekiel 25:4: "Behold, therefore I will deliver thee to the men of the east for a possession, and they shall set their palaces in thee, and make their dwellings in thee: they shall eat thy fruit, and they shall drink thy milk."

Ezekiel 25:5: "And I will make Rabbah a stable for camels, and the Ammonites a couching place for flocks: and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 25:7: "Behold, therefore I will stretch out mine hand upon thee, and will deliver thee for a spoil to the heathen; and I will cut thee off from the people, and I will cause thee to perish out of the countries: I will destroy thee; and thou shalt know that I am the LORD."

Ezekiel 25:9: "Therefore, behold, I will open the side of Moab from the cities, from his cities which are on his frontiers, the glory of the country, Bethjeshimoth, Baalmeon, and Kiriathaim,"

Ezekiel 25:10: "Unto the men of the east with the Ammonites, and will give them in possession, that the Ammonites may not be remembered among the nations."

Ezekiel 25:11: "And I will execute judgments upon Moab; and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 25:13: "Therefore thus saith the Lord GOD; I will also stretch out mine hand upon Edom, and will cut off man and beast from it; and I will make it desolate from Teman; and they of Dedan shall fall by the sword."

Ezekiel 25:14: "And I will lay my vengeance upon Edom by the hand of my people Israel: and they shall do in Edom according to mine anger and according to my fury; and they shall know my vengeance, saith the Lord GOD."

Ezekiel 25:16: "Therefore thus saith the Lord GOD; Behold, I will stretch out mine hand upon the Philistines, and I will cut off the Cherethims, and destroy the remnant of the sea coast."

Ezekiel 25:17: "And I will execute great vengeance upon them with furious rebukes; and they shall know that I am the LORD, when I shall lay my vengeance upon them."

Ezekiel 26:3: "Therefore thus saith the Lord GOD; Behold, I am against thee, O Tyrus, and will cause many nations to come up against thee, as the sea causeth his waves to come up."

Ezekiel 26:4: "And they shall destroy the walls of Tyrus, and break down her towers: I will also scrape her dust from her, and make her like the top of a rock."

Ezekiel 26:7: "For thus saith the Lord GOD; Behold, I will bring upon Tyrus Nebuchadrezzar king of Babylon, a king of kings, from the north, with horses, and with chariots, and with horsemen, and companies, and much people."

Ezekiel 26:13: "And I will cause the noise of thy songs to cease; and the sound of thy harps shall be no more heard."

Ezekiel 26:14: "And I will make thee like the top of a rock: thou shalt be a place to spread nets upon; thou shalt be built no more: for I the LORD have spoken it, saith the Lord GOD."

Ezekiel 26:21: "I will make thee a terror, and thou shalt be no more: though thou be sought for, yet shalt thou never be found again, saith the Lord GOD."

Ezekiel 28:7: "Behold, therefore I will bring strangers upon thee, the terrible of the nations: and they shall draw their swords against the beauty of thy wisdom, and they shall defile thy brightness."

Ezekiel 28:16: "By the multitude of thy merchandise they have filled the midst of thee with violence, and thou hast sinned: therefore I will cast thee as profane out of the mountain of God: and



I will destroy thee, O covering cherub, from the midst of the stones of fire."

Ezekiel 28:17: "Thine heart was lifted up because of thy beauty, thou hast corrupted thy wisdom by reason of thy brightness: I will cast thee to the ground, I will lay thee before kings, that they may behold thee."

Ezekiel 28:18: "Thou hast defiled thy sanctuaries by the multitude of thine iniquities, by the iniquity of thy traffick; therefore will I bring forth a fire from the midst of thee, it shall devour thee, and I will bring thee to ashes upon the earth in the sight of all them that behold thee."

Ezekiel 28:22: "And say, Thus saith the Lord GOD; Behold, I am against thee, O Zidon; and I will be glorified in the midst of thee: and they shall know that I am the LORD, when I shall have executed judgments in her, and shall be sanctified in her."

Ezekiel 28:23: "For I will send into her pestilence, and blood into her streets; and the wounded shall be judged in the midst of her by the sword upon her on every side; and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 29:4: "But I will put hooks in thy jaws, and I will cause the fish of thy rivers to stick unto thy scales, and I will bring thee up out of the midst of thy rivers, and all the fish of thy rivers shall stick unto thy scales."

Ezekiel 29:5: "And I will leave thee thrown into the wilderness, thee and all the fish of thy rivers: thou shalt fall upon the open fields; thou shalt not be brought together, nor gathered: I have given thee for meat to the beasts of the field and to the fowls of the heaven."

Ezekiel 29:8: "Therefore thus saith the Lord GOD; Behold, I will bring a sword upon thee, and cut off man and beast out of thee."

Ezekiel 29:10: "Behold, therefore I am against thee, and against thy rivers, and I will make the land of Egypt utterly waste and desolate, from the tower of Syene even unto the border of Ethiopia."

Ezekiel 29:12: "And I will make the land of Egypt desolate in the midst of the countries that are desolate, and her cities among the cities that are laid waste shall be desolate forty years: and I will scatter the Egyptians among the nations, and will disperse them through the countries."

Ezekiel 29:13: "Yet thus saith the Lord GOD; At the end of forty years will I gather the Egyptians from the people whither they were scattered:"

Ezekiel 29:14: "And I will bring again the captivity of Egypt, and will cause them to return into the land of Pathros, into the land of their habitation; and they shall be there a base kingdom."

Ezekiel 29:15: "It shall be the basest of the kingdoms; neither shall it exalt itself any more above the nations: for I will diminish them, that they shall no more rule over the nations."

Ezekiel 29:19: "Therefore thus saith the Lord GOD; Behold, I will give the land of Egypt unto Nebuchadrezzar king of Babylon; and he shall take her multitude, and take her spoil, and take her prey; and it shall be the wages for his army."

Ezekiel 29:21: "In that day will I cause the horn of the house of Israel to bud forth, and I will give thee the opening of the mouth in the midst of them; and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 30:10: "Thus saith the Lord GOD; I will also make the multitude of Egypt to cease by the hand of Nebuchadrezzar king of Babylon."

Ezekiel 30:12: "And I will make the rivers dry, and sell the land into the hand of the wicked: and I will make the land waste, and all that is therein, by the hand of strangers: I the LORD have spoken it."

Ezekiel 30:13: "Thus saith the Lord GOD; I will also destroy the idols, and I will cause their images to cease out of Noph; and there shall be no more a prince of the land of Egypt: and I will put a fear in the land of Egypt."

Ezekiel 30:14: "And I will make Pathros desolate, and will set fire in Zoan, and will execute judgments in No."

Ezekiel 30:15: "And I will pour my fury upon Sin, the strength of Egypt; and I will cut off the multitude of No."

Ezekiel 30:16: "And I will set fire in Egypt: Sin shall have great pain, and No shall be rent asunder,

and Noph shall have distresses daily."

Ezekiel 30:19: "Thus will I execute judgments in Egypt: and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 30:22: "Therefore thus saith the Lord GOD; Behold, I am against Pharaoh king of Egypt, and will break his arms, the strong, and that which was broken; and I will cause the sword to fall out of his hand."

Ezekiel 30:23: "And I will scatter the Egyptians among the nations, and will disperse them through the countries."

Ezekiel 30:24: "And I will strengthen the arms of the king of Babylon, and put my sword in his hand: but I will break Pharaoh's arms, and he shall groan before him with the groanings of a deadly wounded man."

Ezekiel 30:25: "But I will strengthen the arms of the king of Babylon, and the arms of Pharaoh shall fall down; and they shall know that I am the LORD, when I shall put my sword into the hand of the king of Babylon, and he shall stretch it out upon the land of Egypt."

Ezekiel 30:26: "And I will scatter the Egyptians among the nations, and disperse them among the countries; and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 32:3: "Thus saith the Lord GOD; I will therefore spread out my net over thee with a company of many people; and they shall bring thee up in my net."

Ezekiel 32:4: "Then will I leave thee upon the land, I will cast thee forth upon the open field, and will cause all the fowls of the heaven to remain upon thee, and I will fill the beasts of the whole earth with thee."

Ezekiel 32:5: "And I will lay thy flesh upon the mountains, and fill the valleys with thy height."

Ezekiel 32:6: "I will also water with thy blood the land wherein thou swimst, even to the mountains; and the rivers shall be full of thee."

Ezekiel 32:7: "And when I shall put thee out, I will cover the heaven, and make the stars thereof dark; I will cover the sun with a cloud, and the moon shall not give her light."

Ezekiel 32:8: "All the bright lights of heaven will I make dark over thee, and set darkness upon thy land, saith the Lord GOD."

Ezekiel 32:9: "I will also vex the hearts of many people, when I shall bring thy destruction among the nations, into the countries which thou hast not known."

Ezekiel 32:10: "Yea, I will make many people amazed at thee, and their kings shall be horribly afraid for thee, when I shall brandish my sword before them; and they shall tremble at every moment, every man for his own life, in the day of thy fall."

Ezekiel 32:12: "By the swords of the mighty will I cause thy multitude to fall, the terrible of the nations, all of them: and they shall spoil the pomp of Egypt, and all the multitude thereof shall be destroyed."

Ezekiel 32:13: "I will destroy also all the beasts thereof from beside the great waters; neither shall the foot of man trouble them any more, nor the hoofs of beasts trouble them."

Ezekiel 32:14: "Then will I make their waters deep, and cause their rivers to run like oil, saith the Lord GOD."

Ezekiel 33:6: "But if the watchman see the sword come, and blow not the trumpet, and the people be not warned; if the sword come, and take any person from among them, he is taken away in his iniquity; but his blood will I require at the watchman's hand."

Ezekiel 33:8: "When I say unto the wicked, O wicked man, thou shalt surely die; if thou dost not speak to warn the wicked from his way, that wicked man shall die in his iniquity; but his blood will I require at thine hand."

Ezekiel 33:11: "Say unto them, As I live, saith the Lord GOD, I have no pleasure in the death of the wicked; but that the wicked turn from his way and live: turn ye, turn ye from your evil ways; for why will ye die, O house of Israel?"

Ezekiel 33:20: "Yet ye say, The way of the Lord is not equal. O ye house of Israel, I will judge you every one after his ways."

Ezekiel 33:27: "Say thou thus unto them, Thus saith the Lord GOD; As I live, surely they that are in the wastes shall fall by the sword, and him that is in the open field will I give to the beasts to be devoured, and they that be in the forts and in the caves shall die of the pestilence."

Ezekiel 33:28: "For I will lay the land most desolate, and the pomp of her strength shall cease; and the mountains of Israel shall be desolate, that none shall pass through."

Ezekiel 33:31: "And they come unto thee as the people cometh, and they sit before thee as my people, and they hear thy words, but they will not do them: for with their mouth they shew much love, but their heart goeth after their covetousness."

Ezekiel 33:33: "And when this cometh to pass, (lo, it will come,) then shall they know that a prophet hath been among them."

Ezekiel 34:10: "Thus saith the Lord GOD; Behold, I am against the shepherds; and I will require my flock at their hand, and cause them to cease from feeding the flock; neither shall the shepherds feed themselves any more; for I will deliver my flock from their mouth, that they may not be meat for them."

Ezekiel 34:11: "For thus saith the Lord GOD; Behold, I, even I, will both search my sheep, and seek them out."

Ezekiel 34:12: "As a shepherd seeketh out his flock in the day that he is among his sheep that are scattered; so will I seek out my sheep, and will deliver them out of all places where they have been scattered in the cloudy and dark day."

Ezekiel 34:13: "And I will bring them out from the people, and gather them from the countries, and will bring them to their own land, and feed them upon the mountains of Israel by the rivers, and in all the inhabited places of the country."

Ezekiel 34:14: "I will feed them in a good pasture, and upon the high mountains of Israel shall their fold be: there shall they lie in a good fold, and in a fat pasture shall they feed upon the mountains of Israel."

Ezekiel 34:15: "I will feed my flock, and I will cause them to lie down, saith the Lord GOD."

Ezekiel 34:16: "I will seek that which was lost, and bring again that which was driven away, and will bind up that which was broken, and will strengthen that which was sick: but I will destroy the fat and the strong; I will feed them with judgment."

Ezekiel 34:20: "Therefore thus saith the Lord GOD unto them; Behold, I, even I, will judge between the fat cattle and between the lean cattle."

Ezekiel 34:22: "Therefore will I save my flock, and they shall no more be a prey; and I will judge between cattle and cattle."

Ezekiel 34:23: "And I will set up one shepherd over them, and he shall feed them, even my servant David; he shall feed them, and he shall be their shepherd."

Ezekiel 34:24: "And I the LORD will be their God, and my servant David a prince among them; I the LORD have spoken it."

Ezekiel 34:25: "And I will make with them a covenant of peace, and will cause the evil beasts to cease out of the land: and they shall dwell safely in the wilderness, and sleep in the woods."

Ezekiel 34:26: "And I will make them and the places round about my hill a blessing; and I will cause the shower to come down in his season; there shall be showers of blessing."

Ezekiel 34:29: "And I will raise up for them a plant of renown, and they shall be no more consumed with hunger in the land, neither bear the shame of the heathen any more."

Ezekiel 35:3: "And say unto it, Thus saith the Lord GOD; Behold, O mount Seir, I am against thee, and I will stretch out mine hand against thee, and I will make thee most desolate."

Ezekiel 35:4: "I will lay thy cities waste, and thou shalt be desolate, and thou shalt know that I am the LORD."

Ezekiel 35:6: "Therefore, as I live, saith the Lord GOD, I will prepare thee unto blood, and blood shall pursue thee: sith thou hast not hated blood, even blood shall pursue thee."

Ezekiel 35:7: "Thus will I make mount Seir most desolate, and cut off from it him that passeth out

and him that returneth."

Ezekiel 35:8: "And I will fill his mountains with his slain men: in thy hills, and in thy valleys, and in all thy rivers, shall they fall that are slain with the sword."

Ezekiel 35:9: "I will make thee perpetual desolations, and thy cities shall not return: and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 35:10: "Because thou hast said, These two nations and these two countries shall be mine, and we will possess it; whereas the LORD was there:"

Ezekiel 35:11: "Therefore, as I live, saith the Lord GOD, I will even do according to thine anger, and according to thine envy which thou hast used out of thy hatred against them; and I will make myself known among them, when I have judged thee."

Ezekiel 35:14: "Thus saith the Lord GOD; When the whole earth rejoiceth, I will make thee desolate."

Ezekiel 35:15: "As thou didst rejoice at the inheritance of the house of Israel, because it was desolate, so will I do unto thee: thou shalt be desolate, O mount Seir, and all Idumea, even all of it: and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 36:9: "For, behold, I am for you, and I will turn unto you, and ye shall be tilled and sown:"

Ezekiel 36:10: "And I will multiply men upon you, all the house of Israel, even all of it: and the cities shall be inhabited, and the wastes shall be builded:"

Ezekiel 36:11: "And I will multiply upon you man and beast; and they shall increase and bring fruit: and I will settle you after your old estates, and will do better unto you than at your beginnings: and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 36:12: "Yea, I will cause men to walk upon you, even my people Israel; and they shall possess thee, and thou shalt be their inheritance, and thou shalt no more henceforth bereave them of men."

Ezekiel 36:15: "Neither will I cause men to hear in thee the shame of the heathen any more, neither shalt thou bear the reproach of the people any more, neither shalt thou cause thy nations to fall any more, saith the Lord GOD."

Ezekiel 36:23: "And I will sanctify my great name, which was profaned among the heathen, which ye have profaned in the midst of them; and the heathen shall know that I am the LORD, saith the Lord GOD, when I shall be sanctified in you before their eyes."

Ezekiel 36:24: "For I will take you from among the heathen, and gather you out of all countries, and will bring you into your own land."

Ezekiel 36:25: "Then will I sprinkle clean water upon you, and ye shall be clean: from all your filthiness, and from all your idols, will I cleanse you."

Ezekiel 36:26: "A new heart also will I give you, and a new spirit will I put within you: and I will take away the stony heart out of your flesh, and I will give you an heart of flesh."

Ezekiel 36:27: "And I will put my spirit within you, and cause you to walk in my statutes, and ye shall keep my judgments, and do them."

Ezekiel 36:28: "And ye shall dwell in the land that I gave to your fathers; and ye shall be my people, and I will be your God."

Ezekiel 36:29: "I will also save you from all your uncleannesses: and I will call for the corn, and will increase it, and lay no famine upon you."

Ezekiel 36:30: "And I will multiply the fruit of the tree, and the increase of the field, that ye shall receive no more reproach of famine among the heathen."

Ezekiel 36:33: "Thus saith the Lord GOD; In the day that I shall have cleansed you from all your iniquities I will also cause you to dwell in the cities, and the wastes shall be builded."

Ezekiel 36:36: "Then the heathen that are left round about you shall know that I the LORD build the ruined places, and plant that that was desolate: I the LORD have spoken it, and I will do it."

Ezekiel 36:37: "Thus saith the Lord GOD; I will yet for this be enquired of by the house of Israel, to do it for them; I will increase them with men like a flock."

Ezekiel 37:5: "Thus saith the Lord GOD unto these bones; Behold, I will cause breath to enter into you, and ye shall live:"

Ezekiel 37:6: "And I will lay sinews upon you, and will bring up flesh upon you, and cover you with skin, and put breath in you, and ye shall live; and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 37:12: "Therefore prophesy and say unto them, Thus saith the Lord GOD; Behold, O my people, I will open your graves, and cause you to come up out of your graves, and bring you into the land of Israel."

Ezekiel 37:19: "Say unto them, Thus saith the Lord GOD; Behold, I will take the stick of Joseph, which is in the hand of Ephraim, and the tribes of Israel his fellows, and will put them with him, even with the stick of Judah, and make them one stick, and they shall be one in mine hand."

Ezekiel 37:21: "And say unto them, Thus saith the Lord GOD; Behold, I will take the children of Israel from among the heathen, whither they be gone, and will gather them on every side, and bring them into their own land:"

Ezekiel 37:22: "And I will make them one nation in the land upon the mountains of Israel; and one king shall be king to them all: and they shall be no more two nations, neither shall they be divided into two kingdoms any more at all."

Ezekiel 37:23: "Neither shall they defile themselves any more with their idols, nor with their detestable things, nor with any of their transgressions: but I will save them out of all their dwellingplaces, wherein they have sinned, and will cleanse them: so shall they be my people, and I will be their God."

Ezekiel 37:26: "Moreover I will make a covenant of peace with them; it shall be an everlasting covenant with them: and I will place them, and multiply them, and will set my sanctuary in the midst of them for evermore."

Ezekiel 37:27: "My tabernacle also shall be with them: yea, I will be their God, and they shall be my people."

Ezekiel 38:4: "And I will turn thee back, and put hooks into thy jaws, and I will bring thee forth, and all thine army, horses and horsemen, all of them clothed with all sorts of armour, even a great company with bucklers and shields, all of them handling swords:"

Ezekiel 38:11: "And thou shalt say, I will go up to the land of unwalled villages; I will go to them that are at rest, that dwell safely, all of them dwelling without walls, and having neither bars nor gates,"

Ezekiel 38:16: "And thou shalt come up against my people of Israel, as a cloud to cover the land; it shall be in the latter days, and I will bring thee against my land, that the heathen may know me, when I shall be sanctified in thee, O Gog, before their eyes."

Ezekiel 38:21: "And I will call for a sword against him throughout all my mountains, saith the Lord GOD: every man's sword shall be against his brother."

Ezekiel 38:22: "And I will plead against him with pestilence and with blood; and I will rain upon him, and upon his bands, and upon the many people that are with him, an overflowing rain, and great hailstones, fire, and brimstone."

Ezekiel 38:23: "Thus will I magnify myself, and sanctify myself; and I will be known in the eyes of many nations, and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 39:2: "And I will turn thee back, and leave but the sixth part of thee, and will cause thee to come up from the north parts, and will bring thee upon the mountains of Israel:"

Ezekiel 39:3: "And I will smite thy bow out of thy left hand, and will cause thine arrows to fall out of thy right hand."

Ezekiel 39:4: "Thou shalt fall upon the mountains of Israel, thou, and all thy bands, and the people that is with thee: I will give thee unto the ravenous birds of every sort, and to the beasts of the field to be devoured."

Ezekiel 39:6: "And I will send a fire on Magog, and among them that dwell carelessly in the isles: and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 39:7: "So will I make my holy name known in the midst of my people Israel; and I will not let them pollute my holy name any more: and the heathen shall know that I am the LORD, the Holy One in Israel."

Ezekiel 39:11: "And it shall come to pass in that day, that I will give unto Gog a place there of graves in Israel, the valley of the passengers on the east of the sea: and it shall stop the noses of the passengers: and there shall they bury Gog and all his multitude: and they shall call it The valley of Hamongog."

Ezekiel 39:21: "And I will set my glory among the heathen, and all the heathen shall see my judgment that I have executed, and my hand that I have laid upon them."

Ezekiel 39:25: "Therefore thus saith the Lord GOD; Now will I bring again the captivity of Jacob, and have mercy upon the whole house of Israel, and will be jealous for my holy name;"

Ezekiel 39:29: "Neither will I hide my face any more from them: for I have poured out my spirit upon the house of Israel, saith the Lord GOD."

Ezekiel 43:7: "And he said unto me, Son of man, the place of my throne, and the place of the soles of my feet, where I will dwell in the midst of the children of Israel for ever, and my holy name, shall the house of Israel no more defile, neither they, nor their kings, by their whoredom, nor by the carcasses of their kings in their high places."

Ezekiel 43:9: "Now let them put away their whoredom, and the carcasses of their kings, far from me, and I will dwell in the midst of them for ever."

Ezekiel 43:27: "And when these days are expired, it shall be, that upon the eighth day, and so forward, the priests shall make your burnt offerings upon the altar, and your peace offerings; and I will accept you, saith the Lord GOD."

Ezekiel 44:14: "But I will make them keepers of the charge of the house, for all the service thereof, and for all that shall be done therein."

Daniel 2:4: "Then spake the Chaldeans to the king in Syriack, O king, live for ever: tell thy servants the dream, and we will shew the interpretation."

Daniel 2:5: "The king answered and said to the Chaldeans, The thing is gone from me: if ye will not make known unto me the dream, with the interpretation thereof, ye shall be cut in pieces, and your houses shall be made a dunghill."

Daniel 2:7: "They answered again and said, Let the king tell his servants the dream, and we will shew the interpretation of it."

Daniel 2:9: "But if ye will not make known unto me the dream, there is but one decree for you: for ye have prepared lying and corrupt words to speak before me, till the time be changed: therefore tell me the dream, and I shall know that ye can shew me the interpretation thereof."

Daniel 2:24: "Therefore Daniel went in unto Arioch, whom the king had ordained to destroy the wise men of Babylon: he went and said thus unto him; Destroy not the wise men of Babylon: bring me in before the king, and I will shew unto the king the interpretation."

Daniel 2:25: "Then Arioch brought in Daniel before the king in haste, and said thus unto him, I have found a man of the captives of Judah, that will make known unto the king the interpretation."

Daniel 2:36: "This is the dream; and we will tell the interpretation thereof before the king."

Daniel 3:17: "If it be so, our God whom we serve is able to deliver us from the burning fiery furnace, and he will deliver us out of thine hand, O king."

Daniel 3:18: "But if not, be it known unto thee, O king, that we will not serve thy gods, nor worship the golden image which thou hast set up."

Daniel 4:17: "This matter is by the decree of the watchers, and the demand by the word of the holy ones: to the intent that the living may know that the most High ruleth in the kingdom of men, and giveth it to whomsoever he will, and setteth up over it the basest of men."

Daniel 4:25: "That they shall drive thee from men, and thy dwelling shall be with the beasts of the field, and they shall make thee to eat grass as oxen, and they shall wet thee with the dew of heaven, and seven times shall pass over thee, till thou know that the most High ruleth in the kingdom of

men, and giveth it to whomsoever he will."

Daniel 4:32: "And they shall drive thee from men, and thy dwelling shall be with the beasts of the field: they shall make thee to eat grass as oxen, and seven times shall pass over thee, until thou know that the most High ruleth in the kingdom of men, and giveth it to whomsoever he will."

Daniel 4:35: "And all the inhabitants of the earth are reputed as nothing: and he doeth according to his will in the army of heaven, and among the inhabitants of the earth: and none can stay his hand, or say unto him, What doest thou?"

Daniel 5:12: "Forasmuch as an excellent spirit, and knowledge, and understanding, interpreting of dreams, and shewing of hard sentences, and dissolving of doubts, were found in the same Daniel, whom the king named Belteshazzar: now let Daniel be called, and he will shew the interpretation."

Daniel 5:17: "Then Daniel answered and said before the king, Let thy gifts be to thyself, and give thy rewards to another; yet I will read the writing unto the king, and make known to him the interpretation."

Daniel 5:21: "And he was driven from the sons of men; and his heart was made like the beasts, and his dwelling was with the wild asses: they fed him with grass like oxen, and his body was wet with the dew of heaven; till he knew that the most high God ruled in the kingdom of men, and that he appointeth over it whomsoever he will."

Daniel 6:16: "Then the king commanded, and they brought Daniel, and cast him into the den of lions. Now the king spake and said unto Daniel, Thy God whom thou servest continually, he will deliver thee."

Daniel 8:4: "I saw the ram pushing westward, and northward, and southward; so that no beasts might stand before him, neither was there any that could deliver out of his hand; but he did according to his will, and became great."

Daniel 8:19: "And he said, Behold, I will make thee know what shall be in the last end of the indignation: for at the time appointed the end shall be."

Daniel 10:20: "Then said he, Knowest thou wherefore I come unto thee? and now will I return to fight with the prince of Persia: and when I am gone forth, lo, the prince of Grecia shall come."

Daniel 10:21: "But I will shew thee that which is noted in the scripture of truth: and there is none that holdeth with me in these things, but Michael your prince."

Daniel 11:2: "And now will I shew thee the truth. Behold, there shall stand up yet three kings in Persia; and the fourth shall be far richer than they all: and by his strength through his riches he shall stir up all against the realm of Grecia."

Daniel 11:3: "And a mighty king shall stand up, that shall rule with great dominion, and do according to his will."

Daniel 11:16: "But he that cometh against him shall do according to his own will, and none shall stand before him: and he shall stand in the glorious land, which by his hand shall be consumed."

Daniel 11:36: "And the king shall do according to his will; and he shall exalt himself, and magnify himself above every god, and shall speak marvellous things against the God of gods, and shall prosper till the indignation be accomplished: for that that is determined shall be done."

Hosea 1:4: "And the LORD said unto him, Call his name Jezreel; for yet a little while, and I will avenge the blood of Jezreel upon the house of Jehu, and will cause to cease the kingdom of the house of Israel."

Hosea 1:5: "And it shall come to pass at that day, that I will break the bow of Israel, in the valley of Jezreel."

Hosea 1:6: "And she conceived again, and bare a daughter. And God said unto him, Call her name Loruhamah: for I will no more have mercy upon the house of Israel; but I will utterly take them away."

Hosea 1:7: "But I will have mercy upon the house of Judah, and will save them by the LORD their God, and will not save them by bow, nor by sword, nor by battle, by horses, nor by horsemen."

Hosea 1:9: "Then said God, Call his name Loammi: for ye are not my people, and I will not be your

God."

Hosea 2:4: "And I will not have mercy upon her children; for they be the children of whoredoms."

Hosea 2:5: "For their mother hath played the harlot: she that conceived them hath done shamefully: for she said, I will go after my lovers, that give me my bread and my water, my wool and my flax, mine oil and my drink."

Hosea 2:6: "Therefore, behold, I will hedge up thy way with thorns, and make a wall, that she shall not find her paths."

Hosea 2:7: "And she shall follow after her lovers, but she shall not overtake them; and she shall seek them, but shall not find them: then shall she say, I will go and return to my first husband; for then was it better with me than now."

Hosea 2:9: "Therefore will I return, and take away my corn in the time thereof, and my wine in the season thereof, and will recover my wool and my flax given to cover her nakedness."

Hosea 2:10: "And now will I discover her lewdness in the sight of her lovers, and none shall deliver her out of mine hand."

Hosea 2:11: "I will also cause all her mirth to cease, her feast days, her new moons, and her sabbaths, and all her solemn feasts."

Hosea 2:12: "And I will destroy her vines and her fig trees, whereof she hath said, These are my rewards that my lovers have given me: and I will make them a forest, and the beasts of the field shall eat them."

Hosea 2:13: "And I will visit upon her the days of Baalim, wherein she burned incense to them, and she decked herself with her earrings and her jewels, and she went after her lovers, and forgot me, saith the LORD."

Hosea 2:14: "Therefore, behold, I will allure her, and bring her into the wilderness, and speak comfortably unto her."

Hosea 2:15: "And I will give her her vineyards from thence, and the valley of Achor for a door of hope: and she shall sing there, as in the days of her youth, and as in the day when she came up out of the land of Egypt."

Hosea 2:17: "For I will take away the names of Baalim out of her mouth, and they shall no more be remembered by their name."

Hosea 2:18: "And in that day will I make a covenant for them with the beasts of the field and with the fowls of heaven, and with the creeping things of the ground: and I will break the bow and the sword and the battle out of the earth, and will make them to lie down safely."

Hosea 2:19: "And I will betroth thee unto me for ever; yea, I will betroth thee unto me in righteousness, and in judgment, and in lovingkindness, and in mercies."

Hosea 2:20: "I will even betroth thee unto me in faithfulness: and thou shalt know the LORD."

Hosea 2:21: "And it shall come to pass in that day, I will hear, saith the LORD, I will hear the heavens, and they shall hear the earth;"

Hosea 2:23: "And I will sow her unto me in the earth; and I will have mercy upon her that had not obtained mercy; and I will say to them which were not my people, Thou art my people; and they shall say, Thou art my God."

Hosea 3:3: "And I said unto her, Thou shalt abide for me many days; thou shalt not play the harlot, and thou shalt not be for another man: so will I also be for thee."

Hosea 4:5: "Therefore shalt thou fall in the day, and the prophet also shall fall with thee in the night, and I will destroy thy mother."

Hosea 4:6: "My people are destroyed for lack of knowledge: because thou hast rejected knowledge, I will also reject thee, that thou shalt be no priest to me: seeing thou hast forgotten the law of thy God, I will also forget thy children."

Hosea 4:7: "As they were increased, so they sinned against me: therefore will I change their glory into shame."

Hosea 4:9: "And there shall be, like people, like priest: and I will punish them for their ways, and



reward them their doings."

Hosea 4:14: "I will not punish your daughters when they commit whoredom, nor your spouses when they commit adultery: for themselves are separated with whores, and they sacrifice with harlots: therefore the people that doth not understand shall fall."

Hosea 4:16: "For Israel slideth back as a backsliding heifer: now the LORD will feed them as a lamb in a large place."

Hosea 5:4: "They will not frame their doings to turn unto their God: for the spirit of whoredoms is in the midst of them, and they have not known the LORD."

Hosea 5:10: "The princes of Judah were like them that remove the bound: therefore I will pour out my wrath upon them like water."

Hosea 5:12: "Therefore will I be unto Ephraim as a moth, and to the house of Judah as rottenness."

Hosea 5:14: "For I will be unto Ephraim as a lion, and as a young lion to the house of Judah: I, even I, will tear and go away; I will take away, and none shall rescue him."

Hosea 5:15: "I will go and return to my place, till they acknowledge their offence, and seek my face: in their affliction they will seek me early."

Hosea 6:1: "Come, and let us return unto the LORD: for he hath torn, and he will heal us; he hath smitten, and he will bind us up."

Hosea 6:2: "After two days will he revive us: in the third day he will raise us up, and we shall live in his sight."

Hosea 7:12: "When they shall go, I will spread my net upon them; I will bring them down as the fowls of the heaven; I will chastise them, as their congregation hath heard."

Hosea 8:5: "Thy calf, O Samaria, hath cast thee off; mine anger is kindled against them: how long will it be ere they attain to innocency?"

Hosea 8:10: "Yea, though they have hired among the nations, now will I gather them, and they shall sorrow a little for the burden of the king of princes."

Hosea 8:13: "They sacrifice flesh for the sacrifices of mine offerings, and eat it; but the LORD accepteth them not; now will he remember their iniquity, and visit their sins: they shall return to Egypt."

Hosea 8:14: "For Israel hath forgotten his Maker, and buildeth temples; and Judah hath multiplied fenced cities: but I will send a fire upon his cities, and it shall devour the palaces thereof."

Hosea 9:5: "What will ye do in the solemn day, and in the day of the feast of the LORD?"

Hosea 9:9: "They have deeply corrupted themselves, as in the days of Gibeah: therefore he will remember their iniquity, he will visit their sins."

Hosea 9:12: "Though they bring up their children, yet will I bereave them, that there shall not be a man left: yea, woe also to them when I depart from them!"

Hosea 9:15: "All their wickedness is in Gilgal: for there I hated them: for the wickedness of their doings I will drive them out of mine house, I will love them no more: all their princes are revolvers."

Hosea 9:16: "Ephraim is smitten, their root is dried up, they shall bear no fruit: yea, though they bring forth, yet will I slay even the beloved fruit of their womb."

Hosea 9:17: "My God will cast them away, because they did not hearken unto him: and they shall be wanderers among the nations."

Hosea 10:11: "And Ephraim is as an heifer that is taught, and loveth to tread out the corn; but I passed over upon her fair neck: I will make Ephraim to ride; Judah shall plow, and Jacob shall break his clods."

Hosea 11:9: "I will not execute the fierceness of mine anger, I will not return to destroy Ephraim: for I am God, and not man; the Holy One in the midst of thee: and I will not enter into the city."

Hosea 11:11: "They shall tremble as a bird out of Egypt, and as a dove out of the land of Assyria: and I will place them in their houses, saith the LORD."

Hosea 12:2: "The LORD hath also a controversy with Judah, and will punish Jacob according to his ways; according to his doings will he recompense him."

Hosea 12:9: "And I that am the LORD thy God from the land of Egypt will yet make thee to dwell in tabernacles, as in the days of the solemn feast."

Hosea 13:7: "Therefore I will be unto them as a lion: as a leopard by the way will I observe them:"

Hosea 13:8: "I will meet them as a bear that is bereaved of her whelps, and will rend the caul of their heart, and there will I devour them like a lion: the wild beast shall tear them."

Hosea 13:10: "I will be thy king: where is any other that may save thee in all thy cities? and thy judges of whom thou saidst, Give me a king and princes?"

Hosea 13:14: "I will ransom them from the power of the grave; I will redeem them from death: O death, I will be thy plagues; O grave, I will be thy destruction: repentance shall be hid from mine eyes."

Hosea 14:2: "Take with you words, and turn to the LORD: say unto him, Take away all iniquity, and receive us graciously: so will we render the calves of our lips."

Hosea 14:3: "Asshur shall not save us; we will not ride upon horses: neither will we say any more to the work of our hands, Ye are our gods: for in thee the fatherless findeth mercy."

Hosea 14:4: "I will heal their backsliding, I will love them freely: for mine anger is turned away from him."

Hosea 14:5: "I will be as the dew unto Israel: he shall grow as the lily, and cast forth his roots as Lebanon."

Joel 1:19: "O LORD, to thee will I cry: for the fire hath devoured the pastures of the wilderness, and the flame hath burned all the trees of the field."

Joel 2:14: "Who knoweth if he will return and repent, and leave a blessing behind him; even a meat offering and a drink offering unto the LORD your God?"

Joel 2:18: "Then will the LORD be jealous for his land, and pity his people."

Joel 2:19: "Yea, the LORD will answer and say unto his people, Behold, I will send you corn, and wine, and oil, and ye shall be satisfied therewith: and I will no more make you a reproach among the heathen:"

Joel 2:20: "But I will remove far off from you the northern army, and will drive him into a land barren and desolate, with his face toward the east sea, and his hinder part toward the utmost sea, and his stink shall come up, and his ill savour shall come up, because he hath done great things."

Joel 2:21: "Fear not, O land; be glad and rejoice: for the LORD will do great things."

Joel 2:23: "Be glad then, ye children of Zion, and rejoice in the LORD your God: for he hath given you the former rain moderately, and he will cause to come down for you the rain, the former rain, and the latter rain in the first month."

Joel 2:25: "And I will restore to you the years that the locust hath eaten, the cankerworm, and the caterpillar, and the palmerworm, my great army which I sent among you."

Joel 2:28: "And it shall come to pass afterward, that I will pour out my spirit upon all flesh; and your sons and your daughters shall prophesy, your old men shall dream dreams, your young men shall see visions:"

Joel 2:29: "And also upon the servants and upon the handmaids in those days will I pour out my spirit."

Joel 2:30: "And I will shew wonders in the heavens and in the earth, blood, and fire, and pillars of smoke."

Joel 3:2: "I will also gather all nations, and will bring them down into the valley of Jehoshaphat, and will plead with them there for my people and for my heritage Israel, whom they have scattered among the nations, and parted my land."

Joel 3:4: "Yea, and what have ye to do with me, O Tyre, and Zidon, and all the coasts of Palestine? will ye render me a recompence? and if ye recompense me, swiftly and speedily will I return your recompence upon your own head;"

Joel 3:7: "Behold, I will raise them out of the place whither ye have sold them, and will return your recompence upon your own head:"

Joel 3:8: "And I will sell your sons and your daughters into the hand of the children of Judah, and they shall sell them to the Sabeans, to a people far off: for the LORD hath spoken it."

Joel 3:12: "Let the heathen be wakened, and come up to the valley of Jehoshaphat: for there will I sit to judge all the heathen round about."

Joel 3:16: "The LORD also shall roar out of Zion, and utter his voice from Jerusalem; and the heavens and the earth shall shake: but the LORD will be the hope of his people, and the strength of the children of Israel."

Joel 3:21: "For I will cleanse their blood that I have not cleansed: for the LORD dwelleth in Zion."

Amos 1:2: "And he said, The LORD will roar from Zion, and utter his voice from Jerusalem; and the habitations of the shepherds shall mourn, and the top of Carmel shall wither."

Amos 1:3: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Damascus, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because they have threshed Gilead with threshing instruments of iron:"

Amos 1:4: "But I will send a fire into the house of Hazael, which shall devour the palaces of Benhadad."

Amos 1:5: "I will break also the bar of Damascus, and cut off the inhabitant from the plain of Aven, and him that holdeth the sceptre from the house of Eden: and the people of Syria shall go into captivity unto Kir, saith the LORD."

Amos 1:6: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Gaza, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because they carried away captive the whole captivity, to deliver them up to Edom:"

Amos 1:7: "But I will send a fire on the wall of Gaza, which shall devour the palaces thereof:"

Amos 1:8: "And I will cut off the inhabitant from Ashdod, and him that holdeth the sceptre from Ashkelon, and I will turn mine hand against Ekron: and the remnant of the Philistines shall perish, saith the Lord GOD."

Amos 1:9: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Tyrus, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because they delivered up the whole captivity to Edom, and remembered not the brotherly covenant:"

Amos 1:10: "But I will send a fire on the wall of Tyrus, which shall devour the palaces thereof."

Amos 1:11: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Edom, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because he did pursue his brother with the sword, and did cast off all pity, and his anger did tear perpetually, and he kept his wrath for ever:"

Amos 1:12: "But I will send a fire upon Teman, which shall devour the palaces of Bozrah."

Amos 1:13: "Thus saith the LORD; For three transgressions of the children of Ammon, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because they have ripped up the women with child of Gilead, that they might enlarge their border:"

Amos 1:14: "But I will kindle a fire in the wall of Rabbah, and it shall devour the palaces thereof, with shouting in the day of battle, with a tempest in the day of the whirlwind:"

Amos 2:1: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Moab, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because he burned the bones of the king of Edom into lime:"

Amos 2:2: "But I will send a fire upon Moab, and it shall devour the palaces of Kirioth: and Moab shall die with tumult, with shouting, and with the sound of the trumpet:"

Amos 2:3: "And I will cut off the judge from the midst thereof, and will slay all the princes thereof with him, saith the LORD."

Amos 2:4: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Judah, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because they have despised the law of the LORD, and have not kept his commandments, and their lies caused them to err, after the which their fathers have walked:"

Amos 2:5: "But I will send a fire upon Judah, and it shall devour the palaces of Jerusalem."

Amos 2:6: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Israel, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because they sold the righteous for silver, and the poor for a pair of

shoes;"

Amos 2:7: "That pant after the dust of the earth on the head of the poor, and turn aside the way of the meek: and a man and his father will go in unto the same maid, to profane my holy name:"

Amos 3:2: "You only have I known of all the families of the earth: therefore I will punish you for all your iniquities."

Amos 3:4: "Will a lion roar in the forest, when he hath no prey? will a young lion cry out of his den, if he have taken nothing?"

Amos 3:7: "Surely the Lord GOD will do nothing, but he revealeth his secret unto his servants the prophets."

Amos 3:8: "The lion hath roared, who will not fear? the Lord GOD hath spoken, who can but prophesy?"

Amos 3:14: "That in the day that I shall visit the transgressions of Israel upon him I will also visit the altars of Bethel: and the horns of the altar shall be cut off, and fall to the ground."

Amos 3:15: "And I will smite the winter house with the summer house; and the houses of ivory shall perish, and the great houses shall have an end, saith the LORD."

Amos 4:2: "The Lord GOD hath sworn by his holiness, that, lo, the days shall come upon you, that he will take you away with hooks, and your posterity with fishhooks."

Amos 4:12: "Therefore thus will I do unto thee, O Israel: and because I will do this unto thee, prepare to meet thy God, O Israel."

Amos 5:15: "Hate the evil, and love the good, and establish judgment in the gate: it may be that the LORD God of hosts will be gracious unto the remnant of Joseph."

Amos 5:17: "And in all vineyards shall be wailing: for I will pass through thee, saith the LORD."

Amos 5:21: "I hate, I despise your feast days, and I will not smell in your solemn assemblies."

Amos 5:22: "Though ye offer me burnt offerings and your meat offerings, I will not accept them: neither will I regard the peace offerings of your fat beasts."

Amos 5:23: "Take thou away from me the noise of thy songs; for I will not hear the melody of thy viols."

Amos 5:27: "Therefore will I cause you to go into captivity beyond Damascus, saith the LORD, whose name is The God of hosts."

Amos 6:8: "The Lord GOD hath sworn by himself, saith the LORD the God of hosts, I abhor the excellency of Jacob, and hate his palaces: therefore will I deliver up the city with all that is therein."

Amos 6:11: "For, behold, the LORD commandeth, and he will smite the great house with breaches, and the little house with clefts."

Amos 6:12: "Shall horses run upon the rock? will one plow there with oxen? for ye have turned judgment into gall, and the fruit of righteousness into hemlock:"

Amos 6:14: "But, behold, I will raise up against you a nation, O house of Israel, saith the LORD the God of hosts; and they shall afflict you from the entering in of Hemath unto the river of the wilderness."

Amos 7:8: "And the LORD said unto me, Amos, what seest thou? And I said, A plumbline. Then said the LORD, Behold, I will set a plumbline in the midst of my people Israel: I will not again pass by them any more:"

Amos 7:9: "And the high places of Isaac shall be desolate, and the sanctuaries of Israel shall be laid waste; and I will rise against the house of Jeroboam with the sword."

Amos 8:2: "And he said, Amos, what seest thou? And I said, A basket of summer fruit. Then said the LORD unto me, The end is come upon my people of Israel; I will not again pass by them any more."

Amos 8:5: "Saying, When will the new moon be gone, that we may sell corn? and the sabbath, that we may set forth wheat, making the ephah small, and the shekel great, and falsifying the balances by deceit?"

Amos 8:7: "The LORD hath sworn by the excellency of Jacob, Surely I will never forget any of

their works."

Amos 8:9: "And it shall come to pass in that day, saith the Lord GOD, that I will cause the sun to go down at noon, and I will darken the earth in the clear day:"

Amos 8:10: "And I will turn your feasts into mourning, and all your songs into lamentation; and I will bring up sackcloth upon all loins, and baldness upon every head; and I will make it as the mourning of an only son, and the end thereof as a bitter day."

Amos 8:11: "Behold, the days come, saith the Lord GOD, that I will send a famine in the land, not a famine of bread, nor a thirst for water, but of hearing the words of the LORD:"

Amos 9:1: "I saw the LORD standing upon the altar: and he said, Smite the lintel of the door, that the posts may shake: and cut them in the head, all of them; and I will slay the last of them with the sword: he that fleeth of them shall not flee away, and he that escapeth of them shall not be delivered."

Amos 9:2: "Though they dig into hell, thence shall mine hand take them; though they climb up to heaven, thence will I bring them down:"

Amos 9:3: "And though they hide themselves in the top of Carmel, I will search and take them out thence; and though they be hid from my sight in the bottom of the sea, thence will I command the serpent, and he shall bite them:"

Amos 9:4: "And though they go into captivity before their enemies, thence will I command the sword, and it shall slay them: and I will set mine eyes upon them for evil, and not for good."

Amos 9:8: "Behold, the eyes of the Lord GOD are upon the sinful kingdom, and I will destroy it from off the face of the earth; saving that I will not utterly destroy the house of Jacob, saith the LORD."

Amos 9:9: "For, lo, I will command, and I will sift the house of Israel among all nations, like as corn is sifted in a sieve, yet shall not the least grain fall upon the earth."

Amos 9:11: "In that day will I raise up the tabernacle of David that is fallen, and close up the breaches thereof; and I will raise up his ruins, and I will build it as in the days of old:"

Amos 9:14: "And I will bring again the captivity of my people of Israel, and they shall build the waste cities, and inhabit them; and they shall plant vineyards, and drink the wine thereof; they shall also make gardens, and eat the fruit of them."

Amos 9:15: "And I will plant them upon their land, and they shall no more be pulled up out of their land which I have given them, saith the LORD thy God."

Obadiah 1:4: "Though thou exalt thyself as the eagle, and though thou set thy nest among the stars, thence will I bring thee down, saith the LORD."

Jonah 1:6: "So the shipmaster came to him, and said unto him, What meanest thou, O sleeper? arise, call upon thy God, if so be that God will think upon us, that we perish not."

Jonah 2:4: "Then I said, I am cast out of thy sight; yet I will look again toward thy holy temple."

Jonah 2:9: "But I will sacrifice unto thee with the voice of thanksgiving; I will pay that that I have vowed. Salvation is of the LORD."

Jonah 3:9: "Who can tell if God will turn and repent, and turn away from his fierce anger, that we perish not?"

Micah 1:3: "For, behold, the LORD cometh forth out of his place, and will come down, and tread upon the high places of the earth."

Micah 1:6: "Therefore I will make Samaria as an heap of the field, and as plantings of a vineyard: and I will pour down the stones thereof into the valley, and I will discover the foundations thereof."

Micah 1:7: "And all the graven images thereof shall be beaten to pieces, and all the hires thereof shall be burned with the fire, and all the idols thereof will I lay desolate: for she gathered it of the hire of an harlot, and they shall return to the hire of an harlot."

Micah 1:8: "Therefore I will wail and howl, I will go stripped and naked: I will make a wailing like the dragons, and mourning as the owls."

Micah 1:15: "Yet will I bring an heir unto thee, O inhabitant of Mareshah: he shall come unto

Adullam the glory of Israel."

Micah 2:11: "If a man walking in the spirit and falsehood do lie, saying, I will prophesy unto thee of wine and of strong drink; he shall even be the prophet of this people."

Micah 2:12: "I will surely assemble, O Jacob, all of thee; I will surely gather the remnant of Israel; I will put them together as the sheep of Bozrah, as the flock in the midst of their fold: they shall make great noise by reason of the multitude of men."

Micah 3:4: "Then shall they cry unto the LORD, but he will not hear them: he will even hide his face from them at that time, as they have behaved themselves ill in their doings."

Micah 3:11: "The heads thereof judge for reward, and the priests thereof teach for hire, and the prophets thereof divine for money: yet will they lean upon the LORD, and say, Is not the LORD among us? none evil can come upon us."

Micah 4:2: "And many nations shall come, and say, Come, and let us go up to the mountain of the LORD, and to the house of the God of Jacob; and he will teach us of his ways, and we will walk in his paths: for the law shall go forth of Zion, and the word of the LORD from Jerusalem."

Micah 4:5: "For all people will walk every one in the name of his god, and we will walk in the name of the LORD our God for ever and ever."

Micah 4:6: "In that day, saith the LORD, will I assemble her that halteth, and I will gather her that is driven out, and her that I have afflicted;"

Micah 4:7: "And I will make her that halted a remnant, and her that was cast far off a strong nation: and the LORD shall reign over them in mount Zion from henceforth, even for ever."

Micah 4:13: "Arise and thresh, O daughter of Zion: for I will make thine horn iron, and I will make thy hoofs brass: and thou shalt beat in pieces many people: and I will consecrate their gain unto the LORD, and their substance unto the Lord of the whole earth."

Micah 5:3: "Therefore will he give them up, until the time that she which travaileth hath brought forth: then the remnant of his brethren shall return unto the children of Israel."

Micah 5:10: "And it shall come to pass in that day, saith the LORD, that I will cut off thy horses out of the midst of thee, and I will destroy thy chariots:"

Micah 5:11: "And I will cut off the cities of thy land, and throw down all thy strong holds:"

Micah 5:12: "And I will cut off witchcrafts out of thine hand; and thou shalt have no more soothsayers:"

Micah 5:13: "Thy graven images also will I cut off, and thy standing images out of the midst of thee; and thou shalt no more worship the work of thine hands."

Micah 5:14: "And I will pluck up thy groves out of the midst of thee: so will I destroy thy cities."

Micah 5:15: "And I will execute vengeance in anger and fury upon the heathen, such as they have not heard."

Micah 6:2: "Hear ye, O mountains, the LORD's controversy, and ye strong foundations of the earth: for the LORD hath a controversy with his people, and he will plead with Israel."

Micah 6:7: "Will the LORD be pleased with thousands of rams, or with ten thousands of rivers of oil? shall I give my firstborn for my transgression, the fruit of my body for the sin of my soul?"

Micah 6:13: "Therefore also will I make thee sick in smiting thee, in making thee desolate because of thy sins."

Micah 6:14: "Thou shalt eat, but not be satisfied; and thy casting down shall be in the midst of thee; and thou shalt take hold, but shalt not deliver; and that which thou deliverest will I give up to the sword."

Micah 7:7: "Therefore I will look unto the LORD; I will wait for the God of my salvation: my God will hear me."

Micah 7:9: "I will bear the indignation of the LORD, because I have sinned against him, until he plead my cause, and execute judgment for me: he will bring me forth to the light, and I shall behold his righteousness."

Micah 7:15: "According to the days of thy coming out of the land of Egypt will I shew unto him

marvellous things."

Micah 7:19: "He will turn again, he will have compassion upon us; he will subdue our iniquities; and thou wilt cast all their sins into the depths of the sea."

Nahum 1:2: "God is jealous, and the LORD revengeth; the LORD revengeth, and is furious; the LORD will take vengeance on his adversaries, and he reserveth wrath for his enemies."

Nahum 1:3: "The LORD is slow to anger, and great in power, and will not at all acquit the wicked: the LORD hath his way in the whirlwind and in the storm, and the clouds are the dust of his feet."

Nahum 1:8: "But with an overrunning flood he will make an utter end of the place thereof, and darkness shall pursue his enemies."

Nahum 1:9: "What do ye imagine against the LORD? he will make an utter end: affliction shall not rise up the second time."

Nahum 1:12: "Thus saith the LORD; Though they be quiet, and likewise many, yet thus shall they be cut down, when he shall pass through. Though I have afflicted thee, I will afflict thee no more."

Nahum 1:13: "For now will I break his yoke from off thee, and will burst thy bonds in sunder."

Nahum 1:14: "And the LORD hath given a commandment concerning thee, that no more of thy name be sown: out of the house of thy gods will I cut off the graven image and the molten image: I will make thy grave; for thou art vile."

Nahum 2:13: "Behold, I am against thee, saith the LORD of hosts, and I will burn her chariots in the smoke, and the sword shall devour thy young lions: and I will cut off thy prey from the earth, and the voice of thy messengers shall no more be heard."

Nahum 3:5: "Behold, I am against thee, saith the LORD of hosts; and I will discover thy skirts upon thy face, and I will shew the nations thy nakedness, and the kingdoms thy shame."

Nahum 3:6: "And I will cast abominable filth upon thee, and make thee vile, and will set thee as a gazingstock."

Nahum 3:7: "And it shall come to pass, that all they that look upon thee shall flee from thee, and say, Nineveh is laid waste: who will bemoan her? whence shall I seek comforters for thee?"

Habakkuk 1:5: "Behold ye among the heathen, and regard, and wonder marvelously: for I will work a work in your days which ye will not believe, though it be told you."

Habakkuk 2:1: "I will stand upon my watch, and set me upon the tower, and will watch to see what he will say unto me, and what I shall answer when I am reproved."

Habakkuk 2:3: "For the vision is yet for an appointed time, but at the end it shall speak, and not lie: though it tarry, wait for it; because it will surely come, it will not tarry."

Habakkuk 3:16: "When I heard, my belly trembled; my lips quivered at the voice: rottenness entered into my bones, and I trembled in myself, that I might rest in the day of trouble: when he cometh up unto the people, he will invade them with his troops."

Habakkuk 3:18: "Yet I will rejoice in the LORD, I will joy in the God of my salvation."

Habakkuk 3:19: "The LORD God is my strength, and he will make my feet like hinds' feet, and he will make me to walk upon mine high places. To the chief singer on my stringed instruments."

Zephaniah 1:2: "I will utterly consume all things from off the land, saith the LORD."

Zephaniah 1:3: "I will consume man and beast; I will consume the fowls of the heaven, and the fishes of the sea, and the stumbling blocks with the wicked: and I will cut off man from off the land, saith the LORD."

Zephaniah 1:4: "I will also stretch out mine hand upon Judah, and upon all the inhabitants of Jerusalem; and I will cut off the remnant of Baal from this place, and the name of the Chemarims with the priests;"

Zephaniah 1:8: "And it shall come to pass in the day of the LORD's sacrifice, that I will punish the princes, and the king's children, and all such as are clothed with strange apparel."

Zephaniah 1:9: "In the same day also will I punish all those that leap on the threshold, which fill their masters' houses with violence and deceit."

Zephaniah 1:12: "And it shall come to pass at that time, that I will search Jerusalem with candles,

and punish the men that are settled on their lees: that say in their heart, The LORD will not do good, neither will he do evil."

Zephaniah 1:17: "And I will bring distress upon men, that they shall walk like blind men, because they have sinned against the LORD: and their blood shall be poured out as dust, and their flesh as the dung."

Zephaniah 2:5: "Woe unto the inhabitants of the sea coast, the nation of the Cherethites! the word of the LORD is against you; O Canaan, the land of the Philistines, I will even destroy thee, that there shall be no inhabitant."

Zephaniah 2:11: "The LORD will be terrible unto them: for he will famish all the gods of the earth; and men shall worship him, every one from his place, even all the isles of the heathen."

Zephaniah 2:13: "And he will stretch out his hand against the north, and destroy Assyria; and will make Nineveh a desolation, and dry like a wilderness."

Zephaniah 3:5: "The just LORD is in the midst thereof; he will not do iniquity: every morning doth he bring his judgment to light, he faileth not; but the unjust knoweth no shame."

Zephaniah 3:9: "For then will I turn to the people a pure language, that they may all call upon the name of the LORD, to serve him with one consent."

Zephaniah 3:11: "In that day shalt thou not be ashamed for all thy doings, wherein thou hast transgressed against me: for then I will take away out of the midst of thee them that rejoice in thy pride, and thou shalt no more be haughty because of my holy mountain."

Zephaniah 3:12: "I will also leave in the midst of thee an afflicted and poor people, and they shall trust in the name of the LORD."

Zephaniah 3:17: "The LORD thy God in the midst of thee is mighty; he will save, he will rejoice over thee with joy; he will rest in his love, he will joy over thee with singing."

Zephaniah 3:18: "I will gather them that are sorrowful for the solemn assembly, who are of thee, to whom the reproach of it was a burden."

Zephaniah 3:19: "Behold, at that time I will undo all that afflict thee: and I will save her that halteth, and gather her that was driven out; and I will get them praise and fame in every land where they have been put to shame."

Zephaniah 3:20: "At that time will I bring you again, even in the time that I gather you: for I will make you a name and a praise among all people of the earth, when I turn back your captivity before your eyes, saith the LORD."

Haggai 1:8: "Go up to the mountain, and bring wood, and build the house; and I will take pleasure in it, and I will be glorified, saith the LORD."

Haggai 2:6: "For thus saith the LORD of hosts; Yet once, it is a little while, and I will shake the heavens, and the earth, and the sea, and the dry land;"

Haggai 2:7: "And I will shake all nations, and the desire of all nations shall come: and I will fill this house with glory, saith the LORD of hosts."

Haggai 2:9: "The glory of this latter house shall be greater than of the former, saith the LORD of hosts: and in this place will I give peace, saith the LORD of hosts."

Haggai 2:19: "Is the seed yet in the barn? yea, as yet the vine, and the fig tree, and the pomegranate, and the olive tree, hath not brought forth: from this day will I bless you."

Haggai 2:21: "Speak to Zerubbabel, governor of Judah, saying, I will shake the heavens and the earth;"

Haggai 2:22: "And I will overthrow the throne of kingdoms, and I will destroy the strength of the kingdoms of the heathen; and I will overthrow the chariots, and those that ride in them; and the horses and their riders shall come down, every one by the sword of his brother."

Haggai 2:23: "In that day, saith the LORD of hosts, will I take thee, O Zerubbabel, my servant, the son of Shealtiel, saith the LORD, and will make thee as a signet: for I have chosen thee, saith the LORD of hosts."

Zechariah 1:3: "Therefore say thou unto them, Thus saith the LORD of hosts; Turn ye unto me,



saith the LORD of hosts, and I will turn unto you, saith the LORD of hosts."

Zechariah 1:9: "Then said I, O my lord, what are these? And the angel that talked with me said unto me, I will shew thee what these be."

Zechariah 2:5: "For I, saith the LORD, will be unto her a wall of fire round about, and will be the glory in the midst of her."

Zechariah 2:9: "For, behold, I will shake mine hand upon them, and they shall be a spoil to their servants: and ye shall know that the LORD of hosts hath sent me."

Zechariah 2:10: "Sing and rejoice, O daughter of Zion: for, lo, I come, and I will dwell in the midst of thee, saith the LORD."

Zechariah 2:11: "And many nations shall be joined to the LORD in that day, and shall be my people: and I will dwell in the midst of thee, and thou shalt know that the LORD of hosts hath sent me unto thee."

Zechariah 3:4: "And he answered and spake unto those that stood before him, saying, Take away the filthy garments from him. And unto him he said, Behold, I have caused thine iniquity to pass from thee, and I will clothe thee with change of raiment."

Zechariah 3:7: "Thus saith the LORD of hosts; If thou wilt walk in my ways, and if thou wilt keep my charge, then thou shalt also judge my house, and shalt also keep my courts, and I will give thee places to walk among these that stand by."

Zechariah 3:8: "Hear now, O Joshua the high priest, thou, and thy fellows that sit before thee: for they are men wondered at: for, behold, I will bring forth my servant the BRANCH."

Zechariah 3:9: "For behold the stone that I have laid before Joshua; upon one stone shall be seven eyes: behold, I will engrave the graving thereof, saith the LORD of hosts, and I will remove the iniquity of that land in one day."

Zechariah 5:4: "I will bring it forth, saith the LORD of hosts, and it shall enter into the house of the thief, and into the house of him that sweareth falsely by my name: and it shall remain in the midst of his house, and shall consume it with the timber thereof and the stones thereof."

Zechariah 6:15: "And they that are far off shall come and build in the temple of the LORD, and ye shall know that the LORD of hosts hath sent me unto you. And this shall come to pass, if ye will diligently obey the voice of the LORD your God."

Zechariah 8:3: "Thus saith the LORD; I am returned unto Zion, and will dwell in the midst of Jerusalem: and Jerusalem shall be called a city of truth; and the mountain of the LORD of hosts the holy mountain."

Zechariah 8:7: "Thus saith the LORD of hosts; Behold, I will save my people from the east country, and from the west country;"

Zechariah 8:8: "And I will bring them, and they shall dwell in the midst of Jerusalem: and they shall be my people, and I will be their God, in truth and in righteousness."

Zechariah 8:11: "But now I will not be unto the residue of this people as in the former days, saith the LORD of hosts."

Zechariah 8:12: "For the seed shall be prosperous; the vine shall give her fruit, and the ground shall give her increase, and the heavens shall give their dew; and I will cause the remnant of this people to possess all these things."

Zechariah 8:13: "And it shall come to pass, that as ye were a curse among the heathen, O house of Judah, and house of Israel; so will I save you, and ye shall be a blessing: fear not, but let your hands be strong."

Zechariah 8:21: "And the inhabitants of one city shall go to another, saying, Let us go speedily to pray before the LORD, and to seek the LORD of hosts: I will go also."

Zechariah 8:23: "Thus saith the LORD of hosts; In those days it shall come to pass, that ten men shall take hold out of all languages of the nations, even shall take hold of the skirt of him that is a Jew, saying, We will go with you: for we have heard that God is with you."

Zechariah 9:4: "Behold, the LORD will cast her out, and he will smite her power in the sea; and she

shall be devoured with fire."

Zechariah 9:6: "And a bastard shall dwell in Ashdod, and I will cut off the pride of the Philistines."

Zechariah 9:7: "And I will take away his blood out of his mouth, and his abominations from between his teeth: but he that remaineth, even he, shall be for our God, and he shall be as a governor in Judah, and Ekron as a Jebusite."

Zechariah 9:8: "And I will encamp about mine house because of the army, because of him that passeth by, and because of him that returneth: and no oppressor shall pass through them any more: for now have I seen with mine eyes."

Zechariah 9:10: "And I will cut off the chariot from Ephraim, and the horse from Jerusalem, and the battle bow shall be cut off: and he shall speak peace unto the heathen: and his dominion shall be from sea even to sea, and from the river even to the ends of the earth."

Zechariah 9:12: "Turn you to the strong hold, ye prisoners of hope: even to day do I declare that I will render double unto thee;"

Zechariah 10:6: "And I will strengthen the house of Judah, and I will save the house of Joseph, and I will bring them again to place them; for I have mercy upon them: and they shall be as though I had not cast them off: for I am the LORD their God, and will hear them."

Zechariah 10:8: "I will hiss for them, and gather them; for I have redeemed them: and they shall increase as they have increased."

Zechariah 10:9: "And I will sow them among the people: and they shall remember me in far countries; and they shall live with their children, and turn again."

Zechariah 10:10: "I will bring them again also out of the land of Egypt, and gather them out of Assyria; and I will bring them into the land of Gilead and Lebanon; and place shall not be found for them."

Zechariah 10:12: "And I will strengthen them in the LORD; and they shall walk up and down in his name, saith the LORD."

Zechariah 11:6: "For I will no more pity the inhabitants of the land, saith the LORD: but, lo, I will deliver the men every one into his neighbour's hand, and into the hand of his king: and they shall smite the land, and out of their hand I will not deliver them."

Zechariah 11:7: "And I will feed the flock of slaughter, even you, O poor of the flock. And I took unto me two staves; the one I called Beauty, and the other I called Bands; and I fed the flock."

Zechariah 11:9: "Then said I, I will not feed you: that that dieth, let it die; and that that is to be cut off, let it be cut off; and let the rest eat every one the flesh of another."

Zechariah 11:16: "For, lo, I will raise up a shepherd in the land, which shall not visit those that be cut off, neither shall seek the young one, nor heal that that is broken, nor feed that that standeth still: but he shall eat the flesh of the fat, and tear their claws in pieces."

Zechariah 12:2: "Behold, I will make Jerusalem a cup of trembling unto all the people round about, when they shall be in the siege both against Judah and against Jerusalem."

Zechariah 12:3: "And in that day will I make Jerusalem a burdensome stone for all people: all that burden themselves with it shall be cut in pieces, though all the people of the earth be gathered together against it."

Zechariah 12:4: "In that day, saith the LORD, I will smite every horse with astonishment, and his rider with madness: and I will open mine eyes upon the house of Judah, and will smite every horse of the people with blindness."

Zechariah 12:6: "In that day will I make the governors of Judah like an hearth of fire among the wood, and like a torch of fire in a sheaf; and they shall devour all the people round about, on the right hand and on the left: and Jerusalem shall be inhabited again in her own place, even in Jerusalem."

Zechariah 12:9: "And it shall come to pass in that day, that I will seek to destroy all the nations that come against Jerusalem."

Zechariah 12:10: "And I will pour upon the house of David, and upon the inhabitants of Jerusalem,

the spirit of grace and of supplications: and they shall look upon me whom they have pierced, and they shall mourn for him, as one mourneth for his only son, and shall be in bitterness for him, as one that is in bitterness for his firstborn."

Zechariah 13:2: "And it shall come to pass in that day, saith the LORD of hosts, that I will cut off the names of the idols out of the land, and they shall no more be remembered: and also I will cause the prophets and the unclean spirit to pass out of the land."

Zechariah 13:7: "Awake, O sword, against my shepherd, and against the man that is my fellow, saith the LORD of hosts: smite the shepherd, and the sheep shall be scattered: and I will turn mine hand upon the little ones."

Zechariah 13:9: "And I will bring the third part through the fire, and will refine them as silver is refined, and will try them as gold is tried: they shall call on my name, and I will hear them: I will say, It is my people: and they shall say, The LORD is my God."

Zechariah 14:2: "For I will gather all nations against Jerusalem to battle; and the city shall be taken, and the houses rifled, and the women ravished; and half of the city shall go forth into captivity, and the residue of the people shall not be cut off from the city."

Zechariah 14:12: "And this shall be the plague wherewith the LORD will smite all the people that have fought against Jerusalem; Their flesh shall consume away while they stand upon their feet, and their eyes shall consume away in their holes, and their tongue shall consume away in their mouth."

Zechariah 14:17: "And it shall be, that whoso will not come up of all the families of the earth unto Jerusalem to worship the King, the LORD of hosts, even upon them shall be no rain."

Zechariah 14:18: "And if the family of Egypt go not up, and come not, that have no rain; there shall be the plague, wherewith the LORD will smite the heathen that come not up to keep the feast of tabernacles."

Malachi 1:4: "Whereas Edom saith, We are impoverished, but we will return and build the desolate places; thus saith the LORD of hosts, They shall build, but I will throw down; and they shall call them, The border of wickedness, and, The people against whom the LORD hath indignation for ever."

Malachi 1:5: "And your eyes shall see, and ye shall say, The LORD will be magnified from the border of Israel."

Malachi 1:8: "And if ye offer the blind for sacrifice, is it not evil? and if ye offer the lame and sick, is it not evil? offer it now unto thy governor; will he be pleased with thee, or accept thy person? saith the LORD of hosts."

Malachi 1:9: "And now, I pray you, beseech God that he will be gracious unto us: this hath been by your means: will he regard your persons? saith the LORD of hosts."

Malachi 1:10: "Who is there even among you that would shut the doors for nought? neither do ye kindle fire on mine altar for nought. I have no pleasure in you, saith the LORD of hosts, neither will I accept an offering at your hand."

Malachi 2:2: "If ye will not hear, and if ye will not lay it to heart, to give glory unto my name, saith the LORD of hosts, I will even send a curse upon you, and I will curse your blessings: yea, I have cursed them already, because ye do not lay it to heart."

Malachi 2:3: "Behold, I will corrupt your seed, and spread dung upon your faces, even the dung of your solemn feasts; and one shall take you away with it."

Malachi 2:12: "The LORD will cut off the man that doeth this, the master and the scholar, out of the tabernacles of Jacob, and him that offereth an offering unto the LORD of hosts."

Malachi 2:13: "And this have ye done again, covering the altar of the LORD with tears, with weeping, and with crying out, insomuch that he regardeth not the offering any more, or receiveth it with good will at your hand."

Malachi 3:1: "Behold, I will send my messenger, and he shall prepare the way before me: and the LORD, whom ye seek, shall suddenly come to his temple, even the messenger of the covenant, whom ye delight in: behold, he shall come, saith the LORD of hosts."

Malachi 3:5: "And I will come near to you to judgment; and I will be a swift witness against the sorcerers, and against the adulterers, and against false swearers, and against those that oppress the hireling in his wages, the widow, and the fatherless, and that turn aside the stranger from his right, and fear not me, saith the LORD of hosts."

Malachi 3:7: "Even from the days of your fathers ye are gone away from mine ordinances, and have not kept them. Return unto me, and I will return unto you, saith the LORD of hosts. But ye said, Wherein shall we return?"

Malachi 3:8: "Will a man rob God? Yet ye have robbed me. But ye say, Wherein have we robbed thee? In tithes and offerings."

Malachi 3:10: "Bring ye all the tithes into the storehouse, that there may be meat in mine house, and prove me now herewith, saith the LORD of hosts, if I will not open you the windows of heaven, and pour you out a blessing, that there shall not be room enough to receive it."

Malachi 3:11: "And I will rebuke the devourer for your sakes, and he shall not destroy the fruits of your ground; neither shall your vine cast her fruit before the time in the field, saith the LORD of hosts."

Malachi 3:17: "And they shall be mine, saith the LORD of hosts, in that day when I make up my jewels; and I will spare them, as a man spareth his own son that serveth him."

Malachi 4:5: "Behold, I will send you Elijah the prophet before the coming of the great and dreadful day of the LORD:"

Matthew 2:13: "And when they were departed, behold, the angel of the Lord appeareth to Joseph in a dream, saying, Arise, and take the young child and his mother, and flee into Egypt, and be thou there until I bring thee word: for Herod will seek the young child to destroy him."

Matthew 3:12: "Whose fan is in his hand, and he will thoroughly purge his floor, and gather his wheat into the garner; but he will burn up the chaff with unquenchable fire."

Matthew 4:9: "And saith unto him, All these things will I give thee, if thou wilt fall down and worship me."

Matthew 4:19: "And he saith unto them, Follow me, and I will make you fishers of men."

Matthew 5:40: "And if any man will sue thee at the law, and take away thy coat, let him have thy cloak also."

Matthew 6:10: "Thy kingdom come, Thy will be done in earth, as it is in heaven."

Matthew 6:14: "For if ye forgive men their trespasses, your heavenly Father will also forgive you:"

Matthew 6:15: "But if ye forgive not men their trespasses, neither will your Father forgive your trespasses."

Matthew 6:21: "For where your treasure is, there will your heart be also."

Matthew 6:24: "No man can serve two masters: for either he will hate the one, and love the other; or else he will hold to the one, and despise the other. Ye cannot serve God and mammon."

Matthew 7:9: "Or what man is there of you, whom if his son ask bread, will he give him a stone?"

Matthew 7:10: "Or if he ask a fish, will he give him a serpent?"

Matthew 7:21: "Not every one that saith unto me, Lord, Lord, shall enter into the kingdom of heaven; but he that doeth the will of my Father which is in heaven."

Matthew 7:22: "Many will say to me in that day, Lord, Lord, have we not prophesied in thy name? and in thy name have cast out devils? and in thy name done many wonderful works?"

Matthew 7:23: "And then will I profess unto them, I never knew you: depart from me, ye that work iniquity."

Matthew 7:24: "Therefore whosoever heareth these sayings of mine, and doeth them, I will liken him unto a wise man, which built his house upon a rock:"

Matthew 8:3: "And Jesus put forth his hand, and touched him, saying, I will; be thou clean. And immediately his leprosy was cleansed."

Matthew 8:7: "And Jesus saith unto him, I will come and heal him."

Matthew 8:19: "And a certain scribe came, and said unto him, Master, I will follow thee

whithersoever thou goest."

Matthew 9:13: "But go ye and learn what that meaneth, I will have mercy, and not sacrifice: for I am not come to call the righteous, but sinners to repentance."

Matthew 9:15: "And Jesus said unto them, Can the children of the bridechamber mourn, as long as the bridegroom is with them? but the days will come, when the bridegroom shall be taken from them, and then shall they fast."

Matthew 9:38: "Pray ye therefore the Lord of the harvest, that he will send forth labourers into his harvest."

Matthew 10:17: "But beware of men: for they will deliver you up to the councils, and they will scourge you in their synagogues;"

Matthew 10:32: "Whosoever therefore shall confess me before men, him will I confess also before my Father which is in heaven."

Matthew 10:33: "But whosoever shall deny me before men, him will I also deny before my Father which is in heaven."

Matthew 11:14: "And if ye will receive it, this is Elias, which was for to come."

Matthew 11:27: "All things are delivered unto me of my Father: and no man knoweth the Son, but the Father; neither knoweth any man the Father, save the Son, and he to whomsoever the Son will reveal him."

Matthew 11:28: "Come unto me, all ye that labour and are heavy laden, and I will give you rest."

Matthew 12:7: "But if ye had known what this meaneth, I will have mercy, and not sacrifice, ye would not have condemned the guiltless."

Matthew 12:11: "And he said unto them, What man shall there be among you, that shall have one sheep, and if it fall into a pit on the sabbath day, will he not lay hold on it, and lift it out?"

Matthew 12:18: "Behold my servant, whom I have chosen; my beloved, in whom my soul is well pleased: I will put my spirit upon him, and he shall shew judgment to the Gentiles."

Matthew 12:29: "Or else how can one enter into a strong man's house, and spoil his goods, except he first bind the strong man? and then he will spoil his house."

Matthew 12:44: "Then he saith, I will return into my house from whence I came out; and when he is come, he findeth it empty, swept, and garnished."

Matthew 12:50: "For whosoever shall do the will of my Father which is in heaven, the same is my brother, and sister, and mother."

Matthew 13:30: "Let both grow together until the harvest: and in the time of harvest I will say to the reapers, Gather ye together first the tares, and bind them in bundles to burn them: but gather the wheat into my barn."

Matthew 13:35: "That it might be fulfilled which was spoken by the prophet, saying, I will open my mouth in parables; I will utter things which have been kept secret from the foundation of the world."

Matthew 15:32: "Then Jesus called his disciples unto him, and said, I have compassion on the multitude, because they continue with me now three days, and have nothing to eat: and I will not send them away fasting, lest they faint in the way."

Matthew 16:2: "He answered and said unto them, When it is evening, ye say, It will be fair weather: for the sky is red."

Matthew 16:3: "And in the morning, It will be foul weather to day: for the sky is red and lowering. O ye hypocrites, ye can discern the face of the sky; but can ye not discern the signs of the times?"

Matthew 16:18: "And I say also unto thee, That thou art Peter, and upon this rock I will build my church; and the gates of hell shall not prevail against it."

Matthew 16:19: "And I will give unto thee the keys of the kingdom of heaven: and whatsoever thou shalt bind on earth shall be bound in heaven: and whatsoever thou shalt loose on earth shall be loosed in heaven."

Matthew 16:24: "Then said Jesus unto his disciples, If any man will come after me, let him deny

himself, and take up his cross, and follow me."

Matthew 16:25: "For whosoever will save his life shall lose it: and whosoever will lose his life for my sake shall find it."

Matthew 18:14: "Even so it is not the will of your Father which is in heaven, that one of these little ones should perish."

Matthew 18:16: "But if he will not hear thee, then take with thee one or two more, that in the mouth of two or three witnesses every word may be established."

Matthew 18:26: "The servant therefore fell down, and worshipped him, saying, Lord, have patience with me, and I will pay thee all."

Matthew 18:29: "And his fellowservant fell down at his feet, and besought him, saying, Have patience with me, and I will pay thee all."

Matthew 20:4: "And said unto them; Go ye also into the vineyard, and whatsoever is right I will give you. And they went their way."

Matthew 20:14: "Take that thine is, and go thy way: I will give unto this last, even as unto thee."

Matthew 20:15: "Is it not lawful for me to do what I will with mine own? Is thine eye evil, because I am good?"

Matthew 20:26: "But it shall not be so among you: but whosoever will be great among you, let him be your minister;"

Matthew 20:27: "And whosoever will be chief among you, let him be your servant:"

Matthew 20:32: "And Jesus stood still, and called them, and said, What will ye that I shall do unto you?"

Matthew 21:3: "And if any man say ought unto you, ye shall say, The Lord hath need of them; and straightway he will send them."

Matthew 21:24: "And Jesus answered and said unto them, I also will ask you one thing, which if ye tell me, I in like wise will tell you by what authority I do these things."

Matthew 21:25: "The baptism of John, whence was it? from heaven, or of men? And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say unto us, Why did ye not then believe him?"

Matthew 21:29: "He answered and said, I will not: but afterward he repented, and went."

Matthew 21:31: "Whether of them twain did the will of his father? They say unto him, The first. Jesus saith unto them, Verily I say unto you, That the publicans and the harlots go into the kingdom of God before you."

Matthew 21:37: "But last of all he sent unto them his son, saying, They will reverence my son."

Matthew 21:40: "When the lord therefore of the vineyard cometh, what will he do unto those husbandmen?"

Matthew 21:41: "They say unto him, He will miserably destroy those wicked men, and will let out his vineyard unto other husbandmen, which shall render him the fruits in their seasons."

Matthew 21:44: "And whosoever shall fall on this stone shall be broken: but on whomsoever it shall fall, it will grind him to powder."

Matthew 23:4: "For they bind heavy burdens and grievous to be borne, and lay them on men's shoulders; but they themselves will not move them with one of their fingers."

Matthew 24:28: "For wheresoever the carcass is, there will the eagles be gathered together."

Matthew 25:21: "His lord said unto him, Well done, thou good and faithful servant: thou hast been faithful over a few things, I will make thee ruler over many things: enter thou into the joy of thy lord."

Matthew 25:23: "His lord said unto him, Well done, good and faithful servant; thou hast been faithful over a few things, I will make thee ruler over many things: enter thou into the joy of thy lord."

Matthew 26:15: "And said unto them, What will ye give me, and I will deliver him unto you? And they covenanted with him for thirty pieces of silver."

Matthew 26:18: "And he said, Go into the city to such a man, and say unto him, The Master saith, My time is at hand; I will keep the passover at thy house with my disciples."

Matthew 26:29: "But I say unto you, I will not drink henceforth of this fruit of the vine, until that day when I drink it new with you in my Father's kingdom."

Matthew 26:31: "Then saith Jesus unto them, All ye shall be offended because of me this night: for it is written, I will smite the shepherd, and the sheep of the flock shall be scattered abroad."

Matthew 26:32: "But after I am risen again, I will go before you into Galilee."

Matthew 26:33: "Peter answered and said unto him, Though all men shall be offended because of thee, yet will I never be offended."

Matthew 26:35: "Peter said unto him, Though I should die with thee, yet will I not deny thee. Likewise also said all the disciples."

Matthew 26:39: "And he went a little farther, and fell on his face, and prayed, saying, O my Father, if it be possible, let this cup pass from me: nevertheless not as I will, but as thou wilt."

Matthew 26:42: "He went away again the second time, and prayed, saying, O my Father, if this cup may not pass away from me, except I drink it, thy will be done."

Matthew 27:17: "Therefore when they were gathered together, Pilate said unto them, Whom will ye that I release unto you? Barabbas, or Jesus which is called Christ?"

Matthew 27:21: "The governor answered and said unto them, Whether of the twain will ye that I release unto you? They said, Barabbas."

Matthew 27:42: "He saved others; himself he cannot save. If he be the King of Israel, let him now come down from the cross, and we will believe him."

Matthew 27:43: "He trusted in God; let him deliver him now, if he will have him: for he said, I am the Son of God."

Matthew 27:49: "The rest said, Let be, let us see whether Elias will come to save him."

Matthew 27:63: "Saying, Sir, we remember that that deceiver said, while he was yet alive, After three days I will rise again."

Matthew 28:14: "And if this come to the governor's ears, we will persuade him, and secure you."

Mark 1:17: "And Jesus said unto them, Come ye after me, and I will make you to become fishers of men."

Mark 1:41: "And Jesus, moved with compassion, put forth his hand, and touched him, and saith unto him, I will; be thou clean."

Mark 2:20: "But the days will come, when the bridegroom shall be taken away from them, and then shall they fast in those days."

Mark 2:22: "And no man putteth new wine into old bottles: else the new wine doth burst the bottles, and the wine is spilled, and the bottles will be marred: but new wine must be put into new bottles."

Mark 3:27: "No man can enter into a strong man's house, and spoil his goods, except he will first bind the strong man; and then he will spoil his house."

Mark 3:35: "For whosoever shall do the will of God, the same is my brother, and my sister, and mother."

Mark 4:13: "And he said unto them, Know ye not this parable? and how then will ye know all parables?"

Mark 6:22: "And when the daughter of the said Herodias came in, and danced, and pleased Herod and them that sat with him, the king said unto the damsel, Ask of me whatsoever thou wilt, and I will give it thee."

Mark 6:23: "And he sware unto her, Whatsoever thou shalt ask of me, I will give it thee, unto the half of my kingdom."

Mark 6:25: "And she came in straightway with haste unto the king, and asked, saying, I will that thou give me by and by in a charger the head of John the Baptist."

Mark 8:3: "And if I send them away fasting to their own houses, they will faint by the way: for divers of them came from far."

Mark 8:34: "And when he had called the people unto him with his disciples also, he said unto them, Whosoever will come after me, let him deny himself, and take up his cross, and follow me."

Mark 8:35: "For whosoever will save his life shall lose it; but whosoever shall lose his life for my sake and the gospel's, the same shall save it."

Mark 9:50: "Salt is good: but if the salt have lost his saltness, wherewith will ye season it? Have salt in yourselves, and have peace one with another."

Mark 10:43: "But so shall it not be among you: but whosoever will be great among you, shall be your minister:"

Mark 10:44: "And whosoever of you will be the chiefest, shall be servant of all."

Mark 11:3: "And if any man say unto you, Why do ye this? say ye that the Lord hath need of him; and straightway he will send him hither."

Mark 11:26: "But if ye do not forgive, neither will your Father which is in heaven forgive your trespasses."

Mark 11:29: "And Jesus answered and said unto them, I will also ask of you one question, and answer me, and I will tell you by what authority I do these things."

Mark 11:31: "And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say, Why then did ye not believe him?"

Mark 12:6: "Having yet therefore one son, his wellbeloved, he sent him also last unto them, saying, They will reverence my son."

Mark 12:9: "What shall therefore the lord of the vineyard do? he will come and destroy the husbandmen, and will give the vineyard unto others."

Mark 14:7: "For ye have the poor with you always, and whensoever ye will ye may do them good: but me ye have not always."

Mark 14:15: "And he will shew you a large upper room furnished and prepared: there make ready for us."

Mark 14:25: "Verily I say unto you, I will drink no more of the fruit of the vine, until that day that I drink it new in the kingdom of God."

Mark 14:27: "And Jesus saith unto them, All ye shall be offended because of me this night: for it is written, I will smite the shepherd, and the sheep shall be scattered."

Mark 14:28: "But after that I am risen, I will go before you into Galilee."

Mark 14:29: "But Peter said unto him, Although all shall be offended, yet will not I."

Mark 14:31: "But he spake the more vehemently, If I should die with thee, I will not deny thee in any wise. Likewise also said they all."

Mark 14:36: "And he said, Abba, Father, all things are possible unto thee; take away this cup from me: nevertheless not what I will, but what thou wilt."

Mark 14:58: "We heard him say, I will destroy this temple that is made with hands, and within three days I will build another made without hands."

Mark 15:9: "But Pilate answered them, saying, Will ye that I release unto you the King of the Jews?"

Mark 15:12: "And Pilate answered and said again unto them, What will ye then that I shall do unto him whom ye call the King of the Jews?"

Mark 15:36: "And one ran and filled a sponge full of vinegar, and put it on a reed, and gave him to drink, saying, Let alone; let us see whether Elias will come to take him down."

Luke 2:14: "Glory to God in the highest, and on earth peace, good will toward men."

Luke 3:17: "Whose fan is in his hand, and he will thoroughly purge his floor, and will gather the wheat into his garner; but the chaff he will burn with fire unquenchable."

Luke 4:6: "And the devil said unto him, All this power will I give thee, and the glory of them: for that is delivered unto me; and to whomsoever I will I give it."

Luke 4:23: "And he said unto them, Ye will surely say unto me this proverb, Physician, heal thyself: whatsoever we have heard done in Capernaum, do also here in thy country."



Luke 5:5: "And Simon answering said unto him, Master, we have toiled all the night, and have taken nothing: nevertheless at thy word I will let down the net."

Luke 5:13: "And he put forth his hand, and touched him, saying, I will: be thou clean. And immediately the leprosy departed from him."

Luke 5:35: "But the days will come, when the bridegroom shall be taken away from them, and then shall they fast in those days."

Luke 5:37: "And no man putteth new wine into old bottles; else the new wine will burst the bottles, and be spilled, and the bottles shall perish."

Luke 6:9: "Then said Jesus unto them, I will ask you one thing; Is it lawful on the sabbath days to do good, or to do evil? to save life, or to destroy it?"

Luke 6:47: "Whosoever cometh to me, and heareth my sayings, and doeth them, I will shew you to whom he is like:"

Luke 7:42: "And when they had nothing to pay, he frankly forgave them both. Tell me therefore, which of them will love him most?"

Luke 9:5: "And whosoever will not receive you, when ye go out of that city, shake off the very dust from your feet for a testimony against them."

Luke 9:23: "And he said to them all, If any man will come after me, let him deny himself, and take up his cross daily, and follow me."

Luke 9:24: "For whosoever will save his life shall lose it: but whosoever will lose his life for my sake, the same shall save it."

Luke 9:57: "And it came to pass, that, as they went in the way, a certain man said unto him, Lord, I will follow thee whithersoever thou goest."

Luke 9:61: "And another also said, Lord, I will follow thee; but let me first go bid them farewell, which are at home at my house."

Luke 10:22: "All things are delivered to me of my Father: and no man knoweth who the Son is, but the Father; and who the Father is, but the Son, and he to whom the Son will reveal him."

Luke 10:35: "And on the morrow when he departed, he took out two pence, and gave them to the host, and said unto him, Take care of him; and whatsoever thou spendest more, when I come again, I will repay thee."

Luke 11:2: "And he said unto them, When ye pray, say, Our Father which art in heaven, Hallowed be thy name. Thy kingdom come. Thy will be done, as in heaven, so in earth."

Luke 11:8: "I say unto you, Though he will not rise and give him, because he is his friend, yet because of his importunity he will rise and give him as many as he needeth."

Luke 11:11: "If a son shall ask bread of any of you that is a father, will he give him a stone? or if he ask a fish, will he for a fish give him a serpent?"

Luke 11:12: "Or if he shall ask an egg, will he offer him a scorpion?"

Luke 11:24: "When the unclean spirit is gone out of a man, he walketh through dry places, seeking rest; and finding none, he saith, I will return unto my house whence I came out."

Luke 11:49: "Therefore also said the wisdom of God, I will send them prophets and apostles, and some of them they shall slay and persecute:"

Luke 12:5: "But I will forewarn you whom ye shall fear: Fear him, which after he hath killed hath power to cast into hell; yea, I say unto you, Fear him."

Luke 12:18: "And he said, This will I do: I will pull down my barns, and build greater; and there will I bestow all my fruits and my goods."

Luke 12:19: "And I will say to my soul, Soul, thou hast much goods laid up for many years; take thine ease, eat, drink, and be merry."

Luke 12:28: "If then God so clothe the grass, which is to day in the field, and to morrow is cast into the oven; how much more will he clothe you, O ye of little faith?"

Luke 12:34: "For where your treasure is, there will your heart be also."

Luke 12:36: "And ye yourselves like unto men that wait for their lord, when he will return from the

wedding; that when he cometh and knocketh, they may open unto him immediately."

Luke 12:37: "Blessed are those servants, whom the lord when he cometh shall find watching: verily I say unto you, that he shall gird himself, and make them to sit down to meat, and will come forth and serve them."

Luke 12:44: "Of a truth I say unto you, that he will make him ruler over all that he hath."

Luke 12:46: "The lord of that servant will come in a day when he looketh not for him, and at an hour when he is not aware, and will cut him in sunder, and will appoint him his portion with the unbelievers."

Luke 12:47: "And that servant, which knew his lord's will, and prepared not himself, neither did according to his will, shall be beaten with many stripes."

Luke 12:48: "But he that knew not, and did commit things worthy of stripes, shall be beaten with few stripes. For unto whomsoever much is given, of him shall be much required: and to whom men have committed much, of him they will ask the more."

Luke 12:49: "I am come to send fire on the earth; and what will I, if it be already kindled?"

Luke 12:55: "And when ye see the south wind blow, ye say, There will be heat; and it cometh to pass."

Luke 13:24: "Strive to enter in at the strait gate: for many, I say unto you, will seek to enter in, and shall not be able."

Luke 13:31: "The same day there came certain of the Pharisees, saying unto him, Get thee out, and depart hence: for Herod will kill thee."

Luke 14:5: "And answered them, saying, Which of you shall have an ass or an ox fallen into a pit, and will not straightway pull him out on the sabbath day?"

Luke 15:18: "I will arise and go to my father, and will say unto him, Father, I have sinned against heaven, and before thee,"

Luke 16:11: "If therefore ye have not been faithful in the unrighteous mammon, who will commit to your trust the true riches?"

Luke 16:13: "No servant can serve two masters: for either he will hate the one, and love the other; or else he will hold to the one, and despise the other. Ye cannot serve God and mammon."

Luke 16:30: "And he said, Nay, father Abraham: but if one went unto them from the dead, they will repent."

Luke 16:31: "And he said unto him, If they hear not Moses and the prophets, neither will they be persuaded, though one rose from the dead."

Luke 17:1: "Then said he unto the disciples, It is impossible but that offences will come: but woe unto him, through whom they come!"

Luke 17:7: "But which of you, having a servant plowing or feeding cattle, will say unto him by and by, when he is come from the field, Go and sit down to meat?"

Luke 17:8: "And will not rather say unto him, Make ready wherewith I may sup, and gird thyself, and serve me, till I have eaten and drunken; and afterward thou shalt eat and drink?"

Luke 17:22: "And he said unto the disciples, The days will come, when ye shall desire to see one of the days of the Son of man, and ye shall not see it."

Luke 17:37: "And they answered and said unto him, Where, Lord? And he said unto them, Wheresoever the body is, thither will the eagles be gathered together."

Luke 18:5: "Yet because this widow troubleth me, I will avenge her, lest by her continual coming she weary me."

Luke 18:8: "I tell you that he will avenge them speedily. Nevertheless when the Son of man cometh, shall he find faith on the earth?"

Luke 19:14: "But his citizens hated him, and sent a message after him, saying, We will not have this man to reign over us."

Luke 19:22: "And he saith unto him, Out of thine own mouth will I judge thee, thou wicked servant. Thou knewest that I was an austere man, taking up that I laid not down, and reaping that I did not

sow:"

Luke 20:3: "And he answered and said unto them, I will also ask you one thing; and answer me:"

Luke 20:5: "And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say, Why then believed ye him not?"

Luke 20:6: "But and if we say, Of men; all the people will stone us: for they be persuaded that John was a prophet."

Luke 20:13: "Then said the lord of the vineyard, What shall I do? I will send my beloved son: it may be they will reverence him when they see him."

Luke 20:18: "Whosoever shall fall upon that stone shall be broken; but on whomsoever it shall fall, it will grind him to powder."

Luke 21:6: "As for these things which ye behold, the days will come, in the which there shall not be left one stone upon another, that shall not be thrown down."

Luke 21:7: "And they asked him, saying, Master, but when shall these things be? and what sign will there be when these things shall come to pass?"

Luke 21:15: "For I will give you a mouth and wisdom, which all your adversaries shall not be able to gainsay nor resist."

Luke 22:16: "For I say unto you, I will not any more eat thereof, until it be fulfilled in the kingdom of God."

Luke 22:18: "For I say unto you, I will not drink of the fruit of the vine, until the kingdom of God shall come."

Luke 22:42: "Saying, Father, if thou be willing, remove this cup from me: nevertheless not my will, but thine, be done."

Luke 22:67: "Art thou the Christ? tell us. And he said unto them, If I tell you, ye will not believe:"

Luke 22:68: "And if I also ask you, ye will not answer me, nor let me go."

Luke 23:16: "I will therefore chastise him, and release him."

Luke 23:22: "And he said unto them the third time, Why, what evil hath he done? I have found no cause of death in him: I will therefore chastise him, and let him go."

Luke 23:25: "And he released unto them him that for sedition and murder was cast into prison, whom they had desired; but he delivered Jesus to their will."

John 1:13: "Which were born, not of blood, nor of the will of the flesh, nor of the will of man, but of God."

John 2:19: "Jesus answered and said unto them, Destroy this temple, and in three days I will raise it up."

John 4:25: "The woman saith unto him, I know that Messiah cometh, which is called Christ: when he is come, he will tell us all things."

John 4:34: "Jesus saith unto them, My meat is to do the will of him that sent me, and to finish his work."

John 4:48: "Then said Jesus unto him, Except ye see signs and wonders, ye will not believe."

John 5:20: "For the Father loveth the Son, and sheweth him all things that himself doeth: and he will shew him greater works than these, that ye may marvel."

John 5:21: "For as the Father raiseth up the dead, and quickeneth them; even so the Son quickeneth whom he will."

John 5:30: "I can of mine own self do nothing: as I hear, I judge: and my judgment is just; because I seek not mine own will, but the will of the Father which hath sent me."

John 5:40: "And ye will not come to me, that ye might have life."

John 5:43: "I am come in my Father's name, and ye receive me not: if another shall come in his own name, him ye will receive."

John 5:45: "Do not think that I will accuse you to the Father: there is one that accuseth you, even Moses, in whom ye trust."

John 6:37: "All that the Father giveth me shall come to me; and him that cometh to me I will in no

wise cast out."

John 6:38: "For I came down from heaven, not to do mine own will, but the will of him that sent me."

John 6:39: "And this is the Father's will which hath sent me, that of all which he hath given me I should lose nothing, but should raise it up again at the last day."

John 6:40: "And this is the will of him that sent me, that every one which seeth the Son, and believeth on him, may have everlasting life: and I will raise him up at the last day."

John 6:44: "No man can come to me, except the Father which hath sent me draw him: and I will raise him up at the last day."

John 6:51: "I am the living bread which came down from heaven: if any man eat of this bread, he shall live for ever: and the bread that I will give is my flesh, which I will give for the life of the world."

John 6:54: "Whoso eateth my flesh, and drinketh my blood, hath eternal life; and I will raise him up at the last day."

John 6:67: "Then said Jesus unto the twelve, Will ye also go away?"

John 7:17: "If any man will do his will, he shall know of the doctrine, whether it be of God, or whether I speak of myself."

John 7:31: "And many of the people believed on him, and said, When Christ cometh, will he do more miracles than these which this man hath done?"

John 7:35: "Then said the Jews among themselves, Whither will he go, that we shall not find him? will he go unto the dispersed among the Gentiles, and teach the Gentiles?"

John 8:22: "Then said the Jews, Will he kill himself? because he saith, Whither I go, ye cannot come."

John 8:44: "Ye are of your father the devil, and the lusts of your father ye will do. He was a murderer from the beginning, and abode not in the truth, because there is no truth in him. When he speaketh a lie, he speaketh of his own: for he is a liar, and the father of it."

John 9:27: "He answered them, I have told you already, and ye did not hear: wherefore would ye hear it again? will ye also be his disciples?"

John 9:31: "Now we know that God heareth not sinners: but if any man be a worshipper of God, and doeth his will, him he heareth."

John 10:5: "And a stranger will they not follow, but will flee from him: for they know not the voice of strangers."

John 11:22: "But I know, that even now, whatsoever thou wilt ask of God, God will give it thee."

John 11:48: "If we let him thus alone, all men will believe on him: and the Romans shall come and take away both our place and nation."

John 11:56: "Then sought they for Jesus, and spake among themselves, as they stood in the temple, What think ye, that he will not come to the feast?"

John 12:26: "If any man serve me, let him follow me; and where I am, there shall also my servant be: if any man serve me, him will my Father honour."

John 12:28: "Father, glorify thy name. Then came there a voice from heaven, saying, I have both glorified it, and will glorify it again."

John 12:32: "And I, if I be lifted up from the earth, will draw all men unto me."

John 13:37: "Peter said unto him, Lord, why cannot I follow thee now? I will lay down my life for thy sake."

John 14:3: "And if I go and prepare a place for you, I will come again, and receive you unto myself; that where I am, there ye may be also."

John 14:13: "And whatsoever ye shall ask in my name, that will I do, that the Father may be glorified in the Son."

John 14:14: "If ye shall ask any thing in my name, I will do it."

John 14:16: "And I will pray the Father, and he shall give you another Comforter, that he may abide

with you for ever;"

John 14:18: "I will not leave you comfortless: I will come to you."

John 14:21: "He that hath my commandments, and keepeth them, he it is that loveth me: and he that loveth me shall be loved of my Father, and I will love him, and will manifest myself to him."

John 14:23: "Jesus answered and said unto him, If a man love me, he will keep my words: and my Father will love him, and we will come unto him, and make our abode with him."

John 14:26: "But the Comforter, which is the Holy Ghost, whom the Father will send in my name, he shall teach you all things, and bring all things to your remembrance, whatsoever I have said unto you."

John 14:30: "Hereafter I will not talk much with you: for the prince of this world cometh, and hath nothing in me."

John 15:7: "If ye abide in me, and my words abide in you, ye shall ask what ye will, and it shall be done unto you."

John 15:20: "Remember the word that I said unto you, The servant is not greater than his lord. If they have persecuted me, they will also persecute you; if they have kept my saying, they will keep yours also."

John 15:21: "But all these things will they do unto you for my name's sake, because they know not him that sent me."

John 15:26: "But when the Comforter is come, whom I will send unto you from the Father, even the Spirit of truth, which proceedeth from the Father, he shall testify of me:"

John 16:2: "They shall put you out of the synagogues: yea, the time cometh, that whosoever killeth you will think that he doeth God service."

John 16:3: "And these things will they do unto you, because they have not known the Father, nor me."

John 16:7: "Nevertheless I tell you the truth; It is expedient for you that I go away: for if I go not away, the Comforter will not come unto you; but if I depart, I will send him unto you."

John 16:8: "And when he is come, he will reprove the world of sin, and of righteousness, and of judgment:"

John 16:13: "Howbeit when he, the Spirit of truth, is come, he will guide you into all truth: for he shall not speak of himself; but whatsoever he shall hear, that shall he speak: and he will shew you things to come."

John 16:22: "And ye now therefore have sorrow: but I will see you again, and your heart shall rejoice, and your joy no man taketh from you."

John 16:23: "And in that day ye shall ask me nothing. Verily, verily, I say unto you, Whatsoever ye shall ask the Father in my name, he will give it you."

John 16:26: "At that day ye shall ask in my name: and I say not unto you, that I will pray the Father for you:"

John 17:24: "Father, I will that they also, whom thou hast given me, be with me where I am; that they may behold my glory, which thou hast given me: for thou lovedst me before the foundation of the world."

John 17:26: "And I have declared unto them thy name, and will declare it: that the love wherewith thou hast loved me may be in them, and I in them."

John 18:39: "But ye have a custom, that I should release unto you one at the passover: will ye therefore that I release unto you the King of the Jews?"

John 20:15: "Jesus saith unto her, Woman, why weepest thou? whom seekest thou? She, supposing him to be the gardener, saith unto him, Sir, if thou have borne him hence, tell me where thou hast laid him, and I will take him away."

John 20:25: "The other disciples therefore said unto him, We have seen the LORD. But he said unto them, Except I shall see in his hands the print of the nails, and put my finger into the print of the nails, and thrust my hand into his side, I will not believe."

John 21:22: "Jesus saith unto him, If I will that he tarry till I come, what is that to thee? follow thou me."

John 21:23: "Then went this saying abroad among the brethren, that that disciple should not die: yet Jesus said not unto him, He shall not die; but, If I will that he tarry till I come, what is that to thee?"

Acts 2:17: "And it shall come to pass in the last days, saith God, I will pour out of my Spirit upon all flesh: and your sons and your daughters shall prophesy, and your young men shall see visions, and your old men shall dream dreams:"

Acts 2:18: "And on my servants and on my handmaidens I will pour out in those days of my Spirit; and they shall prophesy:"

Acts 2:19: "And I will shew wonders in heaven above, and signs in the earth beneath; blood, and fire, and vapour of smoke:"

Acts 3:23: "And it shall come to pass, that every soul, which will not hear that prophet, shall be destroyed from among the people."

Acts 5:38: "And now I say unto you, Refrain from these men, and let them alone: for if this counsel or this work be of men, it will come to nought:"

Acts 6:4: "But we will give ourselves continually to prayer, and to the ministry of the word."

Acts 7:7: "And the nation to whom they shall be in bondage will I judge, said God: and after that shall they come forth, and serve me in this place."

Acts 7:34: "I have seen, I have seen the affliction of my people which is in Egypt, and I have heard their groaning, and am come down to deliver them. And now come, I will send thee into Egypt."

Acts 7:43: "Yea, ye took up the tabernacle of Moloch, and the star of your god Remphan, figures which ye made to worship them: and I will carry you away beyond Babylon."

Acts 7:49: "Heaven is my throne, and earth is my footstool: what house will ye build me? saith the Lord: or what is the place of my rest?"

Acts 9:16: "For I will shew him how great things he must suffer for my name's sake."

Acts 13:22: "And when he had removed him, he raised up unto them David to be their king; to whom also he gave their testimony, and said, I have found David the son of Jesse, a man after mine own heart, which shall fulfil all my will."

Acts 13:34: "And as concerning that he raised him up from the dead, now no more to return to corruption, he said on this wise, I will give you the sure mercies of David."

Acts 13:36: "For David, after he had served his own generation by the will of God, fell on sleep, and was laid unto his fathers, and saw corruption:"

Acts 15:16: "After this I will return, and will build again the tabernacle of David, which is fallen down; and I will build again the ruins thereof, and I will set it up:"

Acts 17:18: "Then certain philosophers of the Epicureans, and of the Stoicks, encountered him. And some said, What will this babbler say? other some, He seemeth to be a setter forth of strange gods: because he preached unto them Jesus, and the resurrection."

Acts 17:31: "Because he hath appointed a day, in the which he will judge the world in righteousness by that man whom he hath ordained; whereof he hath given assurance unto all men, in that he hath raised him from the dead."

Acts 17:32: "And when they heard of the resurrection of the dead, some mocked: and others said, We will hear thee again of this matter."

Acts 18:6: "And when they opposed themselves, and blasphemed, he shook his raiment, and said unto them, Your blood be upon your own heads; I am clean; from henceforth I will go unto the Gentiles."

Acts 18:15: "But if it be a question of words and names, and of your law, look ye to it; for I will be no judge of such matters."

Acts 18:21: "But bade them farewell, saying, I must by all means keep this feast that cometh in Jerusalem: but I will return again unto you, if God will. And he sailed from Ephesus."

Acts 21:14: "And when he would not be persuaded, we ceased, saying, The will of the Lord be

done."

Acts 21:22: "What is it therefore? the multitude must needs come together: for they will hear that thou art come."

Acts 22:14: "And he said, The God of our fathers hath chosen thee, that thou shouldest know his will, and see that Just One, and shouldest hear the voice of his mouth."

Acts 22:18: "And saw him saying unto me, Make haste, and get thee quickly out of Jerusalem: for they will not receive thy testimony concerning me."

Acts 22:21: "And he said unto me, Depart: for I will send thee far hence unto the Gentiles."

Acts 23:14: "And they came to the chief priests and elders, and said, We have bound ourselves under a great curse, that we will eat nothing until we have slain Paul."

Acts 23:21: "But do not thou yield unto them: for there lie in wait for him of them more than forty men, which have bound themselves with an oath, that they will neither eat nor drink till they have killed him: and now are they ready, looking for a promise from thee."

Acts 23:35: "I will hear thee, said he, when thine accusers are also come. And he commanded him to be kept in Herod's judgment hall."

Acts 24:22: "And when Felix heard these things, having more perfect knowledge of that way, he deferred them, and said, When Lysias the chief captain shall come down, I will know the uttermost of your matter."

Acts 24:25: "And as he reasoned of righteousness, temperance, and judgment to come, Felix trembled, and answered, Go thy way for this time; when I have a convenient season, I will call for thee."

Acts 26:16: "But rise, and stand upon thy feet: for I have appeared unto thee for this purpose, to make thee a minister and a witness both of these things which thou hast seen, and of those things in the which I will appear unto thee;"

Acts 27:10: "And said unto them, Sirs, I perceive that this voyage will be with hurt and much damage, not only of the lading and ship, but also of our lives."

Acts 28:28: "Be it known therefore unto you, that the salvation of God is sent unto the Gentiles, and that they will hear it."

Romans 1:10: "Making request, if by any means now at length I might have a prosperous journey by the will of God to come unto you."

Romans 2:6: "Who will render to every man according to his deeds:"

Romans 2:18: "And knowest his will, and approvest the things that are more excellent, being instructed out of the law;"

Romans 4:8: "Blessed is the man to whom the Lord will not impute sin."

Romans 5:7: "For scarcely for a righteous man will one die: yet peradventure for a good man some would even dare to die."

Romans 7:18: "For I know that in me (that is, in my flesh,) dwelleth no good thing: for to will is present with me; but how to perform that which is good I find not."

Romans 8:27: "And he that searcheth the hearts knoweth what is the mind of the Spirit, because he maketh intercession for the saints according to the will of God."

Romans 9:9: "For this is the word of promise, At this time will I come, and Sarah shall have a son."

Romans 9:15: "For he saith to Moses, I will have mercy on whom I will have mercy, and I will have compassion on whom I will have compassion."

Romans 9:18: "Therefore hath he mercy on whom he will have mercy, and whom he will he hardeneth."

Romans 9:19: "Thou wilt say then unto me, Why doth he yet find fault? For who hath resisted his will?"

Romans 9:25: "As he saith also in Osee, I will call them my people, which were not my people; and her beloved, which was not beloved."

Romans 9:28: "For he will finish the work, and cut it short in righteousness: because a short work

will the Lord make upon the earth."

Romans 10:19: "But I say, Did not Israel know? First Moses saith, I will provoke you to jealousy by them that are no people, and by a foolish nation I will anger you."

Romans 12:2: "And be not conformed to this world: but be ye transformed by the renewing of your mind, that ye may prove what is that good, and acceptable, and perfect, will of God."

Romans 12:19: "Dearly beloved, avenge not yourselves, but rather give place unto wrath: for it is written, Vengeance is mine; I will repay, saith the Lord."

Romans 15:9: "And that the Gentiles might glorify God for his mercy; as it is written, For this cause I will confess to thee among the Gentiles, and sing unto thy name."

Romans 15:18: "For I will not dare to speak of any of those things which Christ hath not wrought by me, to make the Gentiles obedient, by word and deed,"

Romans 15:24: "Whensoever I take my journey into Spain, I will come to you: for I trust to see you in my journey, and to be brought on my way thitherward by you, if first I be somewhat filled with your company."

Romans 15:28: "When therefore I have performed this, and have sealed to them this fruit, I will come by you into Spain."

Romans 15:32: "That I may come unto you with joy by the will of God, and may with you be refreshed."

1 Corinthians 1:1: "Paul called to be an apostle of Jesus Christ through the will of God, and Sosthenes our brother,"

1 Corinthians 1:19: "For it is written, I will destroy the wisdom of the wise, and will bring to nothing the understanding of the prudent."

1 Corinthians 4:5: "Therefore judge nothing before the time, until the Lord come, who both will bring to light the hidden things of darkness, and will make manifest the counsels of the hearts: and then shall every man have praise of God."

1 Corinthians 4:19: "But I will come to you shortly, if the Lord will, and will know, not the speech of them which are puffed up, but the power."

1 Corinthians 4:21: "What will ye? shall I come unto you with a rod, or in love, and in the spirit of meekness?"

1 Corinthians 6:12: "All things are lawful unto me, but all things are not expedient: all things are lawful for me, but I will not be brought under the power of any."

1 Corinthians 6:14: "And God hath both raised up the Lord, and will also raise up us by his own power."

1 Corinthians 7:36: "But if any man think that he behaveth himself uncomely toward his virgin, if she pass the flower of her age, and need so require, let him do what he will, he sinneth not: let them marry."

1 Corinthians 7:37: "Nevertheless he that standeth stedfast in his heart, having no necessity, but hath power over his own will, and hath so decreed in his heart that he will keep his virgin, doeth well."

1 Corinthians 7:39: "The wife is bound by the law as long as her husband liveth; but if her husband be dead, she is at liberty to be married to whom she will; only in the Lord."

1 Corinthians 8:13: "Wherefore, if meat make my brother to offend, I will eat no flesh while the world standeth, lest I make my brother to offend."

1 Corinthians 9:17: "For if I do this thing willingly, I have a reward: but if against my will, a dispensation of the gospel is committed unto me."

1 Corinthians 10:13: "There hath no temptation taken you but such as is common to man: but God is faithful, who will not suffer you to be tempted above that ye are able; but will with the temptation also make a way to escape, that ye may be able to bear it."

1 Corinthians 11:34: "And if any man hunger, let him eat at home; that ye come not together unto condemnation. And the rest will I set in order when I come."



1 Corinthians 12:11: "But all these worketh that one and the selfsame Spirit, dividing to every man severally as he will."

1 Corinthians 14:15: "What is it then? I will pray with the spirit, and I will pray with the understanding also: I will sing with the spirit, and I will sing with the understanding also."

1 Corinthians 14:21: "In the law it is written, With men of other tongues and other lips will I speak unto this people; and yet for all that will they not hear me, saith the LORD."

1 Corinthians 14:23: "If therefore the whole church be come together into one place, and all speak with tongues, and there come in those that are unlearned, or unbelievers, will they not say that ye are mad?"

1 Corinthians 14:25: "And thus are the secrets of his heart made manifest; and so falling down on his face he will worship God, and report that God is in you of a truth."

1 Corinthians 14:35: "And if they will learn any thing, let them ask their husbands at home: for it is a shame for women to speak in the church."

1 Corinthians 15:35: "But some man will say, How are the dead raised up? and with what body do they come?"

1 Corinthians 16:3: "And when I come, whomsoever ye shall approve by your letters, them will I send to bring your liberality unto Jerusalem."

1 Corinthians 16:5: "Now I will come unto you, when I shall pass through Macedonia: for I do pass through Macedonia."

1 Corinthians 16:6: "And it may be that I will abide, yea, and winter with you, that ye may bring me on my journey whithersoever I go."

1 Corinthians 16:7: "For I will not see you now by the way; but I trust to tarry a while with you, if the Lord permit."

1 Corinthians 16:8: "But I will tarry at Ephesus until Pentecost."

1 Corinthians 16:12: "As touching our brother Apollos, I greatly desired him to come unto you with the brethren: but his will was not at all to come at this time; but he will come when he shall have convenient time."

2 Corinthians 1:1: "Paul, an apostle of Jesus Christ by the will of God, and Timothy our brother, unto the church of God which is at Corinth, with all the saints which are in all Achaia:"

2 Corinthians 1:10: "Who delivered us from so great a death, and doth deliver: in whom we trust that he will yet deliver us;"

2 Corinthians 6:16: "And what agreement hath the temple of God with idols? for ye are the temple of the living God; as God hath said, I will dwell in them, and walk in them; and I will be their God, and they shall be my people."

2 Corinthians 6:17: "Wherefore come out from among them, and be ye separate, saith the Lord, and touch not the unclean thing; and I will receive you."

2 Corinthians 6:18: "And will be a Father unto you, and ye shall be my sons and daughters, saith the Lord Almighty."

2 Corinthians 8:5: "And this they did, not as we hoped, but first gave their own selves to the Lord, and unto us by the will of God."

2 Corinthians 8:11: "Now therefore perform the doing of it; that as there was a readiness to will, so there may be a performance also out of that which ye have."

2 Corinthians 10:11: "Let such an one think this, that, such as we are in word by letters when we are absent, such will we be also in deed when we are present."

2 Corinthians 10:13: "But we will not boast of things without our measure, but according to the measure of the rule which God hath distributed to us, a measure to reach even unto you."

2 Corinthians 11:9: "And when I was present with you, and wanted, I was chargeable to no man: for that which was lacking to me the brethren which came from Macedonia supplied: and in all things I have kept myself from being burdensome unto you, and so will I keep myself."

2 Corinthians 11:12: "But what I do, that I will do, that I may cut off occasion from them which

desire occasion; that wherein they glory, they may be found even as we."

2 Corinthians 11:18: "Seeing that many glory after the flesh, I will glory also."

2 Corinthians 11:30: "If I must needs glory, I will glory of the things which concern mine infirmities."

2 Corinthians 12:1: "It is not expedient for me doubtless to glory. I will come to visions and revelations of the Lord."

2 Corinthians 12:5: "Of such an one will I glory: yet of myself I will not glory, but in mine infirmities."

2 Corinthians 12:6: "For though I would desire to glory, I shall not be a fool; for I will say the truth: but now I forbear, lest any man should think of me above that which he seeth me to be, or that he heareth of me."

2 Corinthians 12:9: "And he said unto me, My grace is sufficient for thee: for my strength is made perfect in weakness. Most gladly therefore will I rather glory in my infirmities, that the power of Christ may rest upon me."

2 Corinthians 12:14: "Behold, the third time I am ready to come to you; and I will not be burdensome to you: for I seek not your's but you: for the children ought not to lay up for the parents, but the parents for the children."

2 Corinthians 12:15: "And I will very gladly spend and be spent for you; though the more abundantly I love you, the less I be loved."

2 Corinthians 12:21: "And lest, when I come again, my God will humble me among you, and that I shall bewail many which have sinned already, and have not repented of the uncleanness and fornication and lasciviousness which they have committed."

2 Corinthians 13:2: "I told you before, and foretell you, as if I were present, the second time; and being absent now I write to them which heretofore have sinned, and to all other, that, if I come again, I will not spare:"

Galatians 1:4: "Who gave himself for our sins, that he might deliver us from this present evil world, according to the will of God and our Father:"

Galatians 5:10: "I have confidence in you through the Lord, that ye will be none otherwise minded: but he that troubleth you shall bear his judgment, whosoever he be."

Ephesians 1:1: "Paul, an apostle of Jesus Christ by the will of God, to the saints which are at Ephesus, and to the faithful in Christ Jesus:"

Ephesians 1:5: "Having predestinated us unto the adoption of children by Jesus Christ to himself, according to the good pleasure of his will,"

Ephesians 1:9: "Having made known unto us the mystery of his will, according to his good pleasure which he hath purposed in himself:"

Ephesians 1:11: "In whom also we have obtained an inheritance, being predestinated according to the purpose of him who worketh all things after the counsel of his own will:"

Ephesians 5:17: "Wherefore be ye not unwise, but understanding what the will of the Lord is."

Ephesians 6:6: "Not with eyeservice, as menpleasers; but as the servants of Christ, doing the will of God from the heart;"

Ephesians 6:7: "With good will doing service, as to the Lord, and not to men:"

Philippians 1:6: "Being confident of this very thing, that he which hath begun a good work in you will perform it until the day of Jesus Christ:"

Philippians 1:15: "Some indeed preach Christ even of envy and strife; and some also of good will:"

Philippians 1:18: "What then? notwithstanding, every way, whether in pretence, or in truth, Christ is preached; and I therein do rejoice, yea, and will rejoice."

Philippians 2:13: "For it is God which worketh in you both to will and to do of his good pleasure."

Philippians 2:20: "For I have no man likeminded, who will naturally care for your state."

Philippians 2:23: "Him therefore I hope to send presently, so soon as I shall see how it will go with me."

Colossians 1:1: "Paul, an apostle of Jesus Christ by the will of God, and Timotheus our brother,"

Colossians 1:9: "For this cause we also, since the day we heard it, do not cease to pray for you, and to desire that ye might be filled with the knowledge of his will in all wisdom and spiritual understanding;"

Colossians 2:23: "Which things have indeed a shew of wisdom in will worship, and humility, and neglecting of the body: not in any honour to the satisfying of the flesh."

Colossians 4:12: "Epaphras, who is one of you, a servant of Christ, saluteth you, always labouring fervently for you in prayers, that ye may stand perfect and complete in all the will of God."

1 Thessalonians 4:3: "For this is the will of God, even your sanctification, that ye should abstain from fornication:"

1 Thessalonians 4:14: "For if we believe that Jesus died and rose again, even so them also which sleep in Jesus will God bring with him."

1 Thessalonians 5:18: "In every thing give thanks: for this is the will of God in Christ Jesus concerning you."

1 Thessalonians 5:24: "Faithful is he that calleth you, who also will do it."

2 Thessalonians 2:7: "For the mystery of iniquity doth already work: only he who now letteth will let, until he be taken out of the way."

2 Thessalonians 3:4: "And we have confidence in the Lord touching you, that ye both do and will do the things which we command you."

1 Timothy 2:4: "Who will have all men to be saved, and to come unto the knowledge of the truth."

1 Timothy 2:8: "I will therefore that men pray every where, lifting up holy hands, without wrath and doubting."

1 Timothy 5:11: "But the younger widows refuse: for when they have begun to wax wanton against Christ, they will marry;"

1 Timothy 5:14: "I will therefore that the younger women marry, bear children, guide the house, give none occasion to the adversary to speak reproachfully."

1 Timothy 6:9: "But they that will be rich fall into temptation and a snare, and into many foolish and hurtful lusts, which drown men in destruction and perdition."

2 Timothy 1:1: "Paul, an apostle of Jesus Christ by the will of God, according to the promise of life which is in Christ Jesus,"

2 Timothy 2:12: "If we suffer, we shall also reign with him: if we deny him, he also will deny us:"

2 Timothy 2:16: "But shun profane and vain babblings: for they will increase unto more ungodliness."

2 Timothy 2:17: "And their word will eat as doth a canker: of whom is Hymenaeus and Philetus;"

2 Timothy 2:25: "In meekness instructing those that oppose themselves; if God peradventure will give them repentance to the acknowledging of the truth;"

2 Timothy 2:26: "And that they may recover themselves out of the snare of the devil, who are taken captive by him at his will."

2 Timothy 3:12: "Yea, and all that will live godly in Christ Jesus shall suffer persecution."

2 Timothy 4:3: "For the time will come when they will not endure sound doctrine; but after their own lusts shall they heap to themselves teachers, having itching ears;"

2 Timothy 4:18: "And the Lord shall deliver me from every evil work, and will preserve me unto his heavenly kingdom: to whom be glory for ever and ever. Amen."

Titus 3:8: "This is a faithful saying, and these things I will that thou affirm constantly, that they which have believed in God might be careful to maintain good works. These things are good and profitable unto men."

Philemon 1:19: "I Paul have written it with mine own hand, I will repay it: albeit I do not say to thee how thou owest unto me even thine own self besides."

Hebrews 1:5: "For unto which of the angels said he at any time, Thou art my Son, this day have I begotten thee? And again, I will be to him a Father, and he shall be to me a Son?"

Hebrews 2:4: "God also bearing them witness, both with signs and wonders, and with divers miracles, and gifts of the Holy Ghost, according to his own will?"

Hebrews 2:12: "Saying, I will declare thy name unto my brethren, in the midst of the church will I sing praise unto thee."

Hebrews 2:13: "And again, I will put my trust in him. And again, Behold I and the children which God hath given me."

Hebrews 3:7: "Wherefore (as the Holy Ghost saith, To day if ye will hear his voice,"

Hebrews 3:15: "While it is said, To day if ye will hear his voice, harden not your hearts, as in the provocation."

Hebrews 4:7: "Again, he limiteth a certain day, saying in David, To day, after so long a time; as it is said, To day if ye will hear his voice, harden not your hearts."

Hebrews 6:3: "And this will we do, if God permit."

Hebrews 6:14: "Saying, Surely blessing I will bless thee, and multiplying I will multiply thee."

Hebrews 7:21: "(For those priests were made without an oath; but this with an oath by him that said unto him, The Lord sware and will not repent, Thou art a priest for ever after the order of Melchisedec:)"

Hebrews 8:8: "For finding fault with them, he saith, Behold, the days come, saith the Lord, when I will make a new covenant with the house of Israel and with the house of Judah:"

Hebrews 8:10: "For this is the covenant that I will make with the house of Israel after those days, saith the Lord; I will put my laws into their mind, and write them in their hearts: and I will be to them a God, and they shall be to me a people:"

Hebrews 8:12: "For I will be merciful to their unrighteousness, and their sins and their iniquities will I remember no more."

Hebrews 10:7: "Then said I, Lo, I come (in the volume of the book it is written of me,) to do thy will, O God."

Hebrews 10:9: "Then said he, Lo, I come to do thy will, O God. He taketh away the first, that he may establish the second."

Hebrews 10:10: "By the which will we are sanctified through the offering of the body of Jesus Christ once for all."

Hebrews 10:16: "This is the covenant that I will make with them after those days, saith the Lord, I will put my laws into their hearts, and in their minds will I write them;"

Hebrews 10:17: "And their sins and iniquities will I remember no more."

Hebrews 10:30: "For we know him that hath said, Vengeance belongeth unto me, I will recompense, saith the Lord. And again, The Lord shall judge his people."

Hebrews 10:36: "For ye have need of patience, that, after ye have done the will of God, ye might receive the promise."

Hebrews 10:37: "For yet a little while, and he that shall come will come, and will not tarry."

Hebrews 13:4: "Marriage is honourable in all, and the bed undefiled: but whoremongers and adulterers God will judge."

Hebrews 13:5: "Let your conversation be without covetousness; and be content with such things as ye have: for he hath said, I will never leave thee, nor forsake thee."

Hebrews 13:6: "So that we may boldly say, The Lord is my helper, and I will not fear what man shall do unto me."

Hebrews 13:21: "Make you perfect in every good work to do his will, working in you that which is wellpleasing in his sight, through Jesus Christ; to whom be glory for ever and ever. Amen."

Hebrews 13:23: "Know ye that our brother Timothy is set at liberty; with whom, if he come shortly, I will see you."

James 1:18: "Of his own will begat he us with the word of truth, that we should be a kind of firstfruits of his creatures."

James 2:18: "Yea, a man may say, Thou hast faith, and I have works: shew me thy faith without thy

works, and I will shew thee my faith by my works."

James 4:4: "Ye adulterers and adulteresses, know ye not that the friendship of the world is enmity with God? whosoever therefore will be a friend of the world is the enemy of God."

James 4:7: "Submit yourselves therefore to God. Resist the devil, and he will flee from you."

James 4:8: "Draw nigh to God, and he will draw nigh to you. Cleanse your hands, ye sinners; and purify your hearts, ye double minded."

James 4:13: "Go to now, ye that say, To day or to morrow we will go into such a city, and continue there a year, and buy and sell, and get gain:"

James 4:15: "For that ye ought to say, If the Lord will, we shall live, and do this, or that."

1 Peter 2:15: "For so is the will of God, that with well doing ye may put to silence the ignorance of foolish men:"

1 Peter 3:10: "For he that will love life, and see good days, let him refrain his tongue from evil, and his lips that they speak no guile:"

1 Peter 3:13: "And who is he that will harm you, if ye be followers of that which is good?"

1 Peter 3:17: "For it is better, if the will of God be so, that ye suffer for well doing, than for evil doing."

1 Peter 4:2: "That he no longer should live the rest of his time in the flesh to the lusts of men, but to the will of God."

1 Peter 4:3: "For the time past of our life may suffice us to have wrought the will of the Gentiles, when we walked in lasciviousness, lusts, excess of wine, revellings, banquetings, and abominable idolatries:"

1 Peter 4:19: "Wherefore let them that suffer according to the will of God commit the keeping of their souls to him in well doing, as unto a faithful Creator."

2 Peter 1:12: "Wherefore I will not be negligent to put you always in remembrance of these things, though ye know them, and be established in the present truth."

2 Peter 1:15: "Moreover I will endeavour that ye may be able after my decease to have these things always in remembrance."

2 Peter 1:21: "For the prophecy came not in old time by the will of man: but holy men of God spake as they were moved by the Holy Ghost."

2 Peter 3:10: "But the day of the Lord will come as a thief in the night; in the which the heavens shall pass away with a great noise, and the elements shall melt with fervent heat, the earth also and the works that are therein shall be burned up."

1 John 2:17: "And the world passeth away, and the lust thereof: but he that doeth the will of God abideth for ever."

1 John 5:14: "And this is the confidence that we have in him, that, if we ask any thing according to his will, he heareth us:"

3 John 1:10: "Wherefore, if I come, I will remember his deeds which he doeth, prating against us with malicious words: and not content therewith, neither doth he himself receive the brethren, and forbiddeth them that would, and casteth them out of the church."

3 John 1:13: "I had many things to write, but I will not with ink and pen write unto thee:"

Jude 1:5: "I will therefore put you in remembrance, though ye once knew this, how that the Lord, having saved the people out of the land of Egypt, afterward destroyed them that believed not."

Revelation 2:5: "Remember therefore from whence thou art fallen, and repent, and do the first works; or else I will come unto thee quickly, and will remove thy candlestick out of his place, except thou repent."

Revelation 2:7: "He that hath an ear, let him hear what the Spirit saith unto the churches; To him that overcometh will I give to eat of the tree of life, which is in the midst of the paradise of God."

Revelation 2:10: "Fear none of those things which thou shalt suffer: behold, the devil shall cast some of you into prison, that ye may be tried; and ye shall have tribulation ten days: be thou faithful unto death, and I will give thee a crown of life."

Revelation 2:16: "Repent; or else I will come unto thee quickly, and will fight against them with the sword of my mouth."

Revelation 2:17: "He that hath an ear, let him hear what the Spirit saith unto the churches; To him that overcometh will I give to eat of the hidden manna, and will give him a white stone, and in the stone a new name written, which no man knoweth saving he that receiveth it."

Revelation 2:22: "Behold, I will cast her into a bed, and them that commit adultery with her into great tribulation, except they repent of their deeds."

Revelation 2:23: "And I will kill her children with death; and all the churches shall know that I am he which searcheth the reins and hearts: and I will give unto every one of you according to your works."

Revelation 2:24: "But unto you I say, and unto the rest in Thyatira, as many as have not this doctrine, and which have not known the depths of Satan, as they speak; I will put upon you none other burden."

Revelation 2:26: "And he that overcometh, and keepeth my works unto the end, to him will I give power over the nations:"

Revelation 2:28: "And I will give him the morning star."

Revelation 3:3: "Remember therefore how thou hast received and heard, and hold fast, and repent. If therefore thou shalt not watch, I will come on thee as a thief, and thou shalt not know what hour I will come upon thee."

Revelation 3:5: "He that overcometh, the same shall be clothed in white raiment; and I will not blot out his name out of the book of life, but I will confess his name before my Father, and before his angels."

Revelation 3:9: "Behold, I will make them of the synagogue of Satan, which say they are Jews, and are not, but do lie; behold, I will make them to come and worship before thy feet, and to know that I have loved thee."

Revelation 3:10: "Because thou hast kept the word of my patience, I also will keep thee from the hour of temptation, which shall come upon all the world, to try them that dwell upon the earth."

Revelation 3:12: "Him that overcometh will I make a pillar in the temple of my God, and he shall go no more out: and I will write upon him the name of my God, and the name of the city of my God, which is new Jerusalem, which cometh down out of heaven from my God: and I will write upon him my new name."

Revelation 3:16: "So then because thou art lukewarm, and neither cold nor hot, I will spue thee out of my mouth."

Revelation 3:20: "Behold, I stand at the door, and knock: if any man hear my voice, and open the door, I will come in to him, and will sup with him, and he with me."

Revelation 3:21: "To him that overcometh will I grant to sit with me in my throne, even as I also overcame, and am set down with my Father in his throne."

Revelation 4:1: "After this I looked, and, behold, a door was opened in heaven: and the first voice which I heard was as it were of a trumpet talking with me; which said, Come up hither, and I will shew thee things which must be hereafter."

Revelation 11:3: "And I will give power unto my two witnesses, and they shall prophesy a thousand two hundred and threescore days, clothed in sackcloth."

Revelation 11:5: "And if any man will hurt them, fire proceedeth out of their mouth, and devoureth their enemies: and if any man will hurt them, he must in this manner be killed."

Revelation 11:6: "These have power to shut heaven, that it rain not in the days of their prophecy: and have power over waters to turn them to blood, and to smite the earth with all plagues, as often as they will."

Revelation 17:1: "And there came one of the seven angels which had the seven vials, and talked with me, saying unto me, Come hither; I will shew unto thee the judgment of the great whore that sitteth upon many waters:"

Revelation 17:7: "And the angel said unto me, Wherefore didst thou marvel? I will tell thee the mystery of the woman, and of the beast that carrieth her, which hath the seven heads and ten horns."

Revelation 17:17: "For God hath put in their hearts to fulfil his will, and to agree, and give their kingdom unto the beast, until the words of God shall be fulfilled."

Revelation 21:3: "And I heard a great voice out of heaven saying, Behold, the tabernacle of God is with men, and he will dwell with them, and they shall be his people, and God himself shall be with them, and be their God."

Revelation 21:6: "And he said unto me, It is done. I am Alpha and Omega, the beginning and the end. I will give unto him that is athirst of the fountain of the water of life freely."

Revelation 21:7: "He that overcometh shall inherit all things; and I will be his God, and he shall be my son."

Revelation 21:9: "And there came unto me one of the seven angels which had the seven vials full of the seven last plagues, and talked with me, saying, Come hither, I will shew thee the bride, the Lamb's wife."

Revelation 22:17: "And the Spirit and the bride say, Come. And let him that heareth say, Come. And let him that is athirst come. And whosoever will, let him take the water of life freely."

## **WILLETH**

Occurrences: 1

Romans 9:16: "So then it is not of him that willeth, nor of him that runneth, but of God that sheweth mercy."

## **WILLING**

Occurrences: 31

Genesis 24:5: "And the servant said unto him, Peradventure the woman will not be willing to follow me unto this land: must I needs bring thy son again unto the land from whence thou camest?"

Genesis 24:8: "And if the woman will not be willing to follow thee, then thou shalt be clear from this my oath: only bring not my son thither again."

Exodus 35:5: "Take ye from among you an offering unto the LORD: whosoever is of a willing heart, let him bring it, an offering of the LORD; gold, and silver, and brass,"

Exodus 35:21: "And they came, every one whose heart stirred him up, and every one whom his spirit made willing, and they brought the LORD's offering to the work of the tabernacle of the congregation, and for all his service, and for the holy garments."

Exodus 35:22: "And they came, both men and women, as many as were willing hearted, and brought bracelets, and earrings, and rings, and tablets, all jewels of gold: and every man that offered offered an offering of gold unto the LORD."

Exodus 35:29: "The children of Israel brought a willing offering unto the LORD, every man and woman, whose heart made them willing to bring for all manner of work, which the LORD had commanded to be made by the hand of Moses."

1 Chronicles 28:9: "And thou, Solomon my son, know thou the God of thy father, and serve him with a perfect heart and with a willing mind: for the LORD searcheth all hearts, and understandeth all the imaginations of the thoughts: if thou seek him, he will be found of thee; but if thou forsake him, he will cast thee off for ever."

1 Chronicles 28:21: "And, behold, the courses of the priests and the Levites, even they shall be with thee for all the service of the house of God: and there shall be with thee for all manner of workmanship every willing skilful man, for any manner of service: also the princes and all the people will be wholly at thy commandment."

1 Chronicles 29:5: "The gold for things of gold, and the silver for things of silver, and for all manner of work to be made by the hands of artificers. And who then is willing to consecrate his

service this day unto the LORD?"

Job 39:9: "Will the unicorn be willing to serve thee, or abide by thy crib?"

Psalms 110:3: "Thy people shall be willing in the day of thy power, in the beauties of holiness from the womb of the morning: thou hast the dew of thy youth."

Isaiah 1:19: "If ye be willing and obedient, ye shall eat the good of the land:"

Matthew 1:19: "Then Joseph her husband, being a just man, and not willing to make her a publick example, was minded to put her away privily."

Matthew 26:41: "Watch and pray, that ye enter not into temptation: the spirit indeed is willing, but the flesh is weak."

Mark 15:15: "And so Pilate, willing to content the people, released Barabbas unto them, and delivered Jesus, when he had scourged him, to be crucified."

Luke 10:29: "But he, willing to justify himself, said unto Jesus, And who is my neighbour?"

Luke 22:42: "Saying, Father, if thou be willing, remove this cup from me: nevertheless not my will, but thine, be done."

Luke 23:20: "Pilate therefore, willing to release Jesus, spake again to them."

John 5:35: "He was a burning and a shining light: and ye were willing for a season to rejoice in his light."

Acts 24:27: "But after two years Porcius Festus came into Felix' room: and Felix, willing to shew the Jews a pleasure, left Paul bound."

Acts 25:9: "But Festus, willing to do the Jews a pleasure, answered Paul, and said, Wilt thou go up to Jerusalem, and there be judged of these things before me?"

Acts 27:43: "But the centurion, willing to save Paul, kept them from their purpose; and commanded that they which could swim should cast themselves first into the sea, and get to land:"

Romans 9:22: "What if God, willing to shew his wrath, and to make his power known, endured with much longsuffering the vessels of wrath fitted to destruction:"

2 Corinthians 5:8: "We are confident, I say, and willing rather to be absent from the body, and to be present with the Lord."

2 Corinthians 8:3: "For to their power, I bear record, yea, and beyond their power they were willing of themselves;"

2 Corinthians 8:12: "For if there be first a willing mind, it is accepted according to that a man hath, and not according to that he hath not."

1 Thessalonians 2:8: "So being affectionately desirous of you, we were willing to have imparted unto you, not the gospel of God only, but also our own souls, because ye were dear unto us."

1 Timothy 6:18: "That they do good, that they be rich in good works, ready to distribute, willing to communicate;"

Hebrews 6:17: "Wherein God, willing more abundantly to shew unto the heirs of promise the immutability of his counsel, confirmed it by an oath:"

Hebrews 13:18: "Pray for us: for we trust we have a good conscience, in all things willing to live honestly."

2 Peter 3:9: "The Lord is not slack concerning his promise, as some men count slackness; but is longsuffering to us-ward, not willing that any should perish, but that all should come to repentance."

## **WILLINGLY**

Occurrences: 23

Exodus 25:2: "Speak unto the children of Israel, that they bring me an offering: of every man that giveth it willingly with his heart ye shall take my offering."

Judges 5:2: "Praise ye the LORD for the avenging of Israel, when the people willingly offered themselves."

Judges 5:9: "My heart is toward the governors of Israel, that offered themselves willingly among



the people. Bless ye the LORD."

Judges 8:25: "And they answered, We will willingly give them. And they spread a garment, and did cast therein every man the earrings of his prey."

1 Chronicles 29:6: "Then the chief of the fathers and princes of the tribes of Israel and the captains of thousands and of hundreds, with the rulers of the king's work, offered willingly,"

1 Chronicles 29:9: "Then the people rejoiced, for that they offered willingly, because with perfect heart they offered willingly to the LORD: and David the king also rejoiced with great joy."

1 Chronicles 29:14: "But who am I, and what is my people, that we should be able to offer so willingly after this sort? for all things come of thee, and of thine own have we given thee."

1 Chronicles 29:17: "I know also, my God, that thou triest the heart, and hast pleasure in uprightness. As for me, in the uprightness of mine heart I have willingly offered all these things: and now have I seen with joy thy people, which are present here, to offer willingly unto thee."

2 Chronicles 17:16: "And next him was Amasiah the son of Zichri, who willingly offered himself unto the LORD; and with him two hundred thousand mighty men of valour."

2 Chronicles 35:8: "And his princes gave willingly unto the people, to the priests, and to the Levites: Hilkiah and Zechariah and Jehiel, rulers of the house of God, gave unto the priests for the passover offerings two thousand and six hundred small cattle and three hundred oxen."

Ezra 1:6: "And all they that were about them strengthened their hands with vessels of silver, with gold, with goods, and with beasts, and with precious things, beside all that was willingly offered."

Ezra 3:5: "And afterward offered the continual burnt offering, both of the new moons, and of all the set feasts of the LORD that were consecrated, and of every one that willingly offered a freewill offering unto the LORD."

Ezra 7:16: "And all the silver and gold that thou canst find in all the province of Babylon, with the freewill offering of the people, and of the priests, offering willingly for the house of their God which is in Jerusalem:"

Nehemiah 11:2: "And the people blessed all the men, that willingly offered themselves to dwell at Jerusalem."

Proverbs 31:13: "She seeketh wool, and flax, and worketh willingly with her hands."

Lamentations 3:33: "For he doth not afflict willingly nor grieve the children of men."

Hosea 5:11: "Ephraim is oppressed and broken in judgment, because he willingly walked after the commandment."

John 6:21: "Then they willingly received him into the ship: and immediately the ship was at the land whither they went."

Romans 8:20: "For the creature was made subject to vanity, not willingly, but by reason of him who hath subjected the same in hope,"

1 Corinthians 9:17: "For if I do this thing willingly, I have a reward: but if against my will, a dispensation of the gospel is committed unto me."

Philemon 1:14: "But without thy mind would I do nothing; that thy benefit should not be as it were of necessity, but willingly."

1 Peter 5:2: "Feed the flock of God which is among you, taking the oversight thereof, not by constraint, but willingly; not for filthy lucre, but of a ready mind;"

2 Peter 3:5: "For this they willingly are ignorant of, that by the word of God the heavens were of old, and the earth standing out of the water and in the water:"

## **WILLOW**

Occurrences: 1

Ezekiel 17:5: "He took also of the seed of the land, and planted it in a fruitful field; he placed it by great waters, and set it as a willow tree."

## WILLOWS

Occurrences: 5

Leviticus 23:40: "And ye shall take you on the first day the boughs of goodly trees, branches of palm trees, and the boughs of thick trees, and willows of the brook; and ye shall rejoice before the LORD your God seven days."

Job 40:22: "The shady trees cover him with their shadow; the willows of the brook compass him about."

Psalms 137:2: "We hanged our harps upon the willows in the midst thereof."

Isaiah 15:7: "Therefore the abundance they have gotten, and that which they have laid up, shall they carry away to the brook of the willows."

Isaiah 44:4: "And they shall spring up as among the grass, as willows by the water courses."

## WILT

Occurrences: 208

Genesis 13:9: "Is not the whole land before thee? separate thyself, I pray thee, from me: if thou wilt take the left hand, then I will go to the right; or if thou depart to the right hand, then I will go to the left."

Genesis 15:2: "And Abram said, LORD God, what wilt thou give me, seeing I go childless, and the steward of my house is this Eliezer of Damascus?"

Genesis 16:8: "And he said, Hagar, Sarai's maid, whence camest thou? and whither wilt thou go? And she said, I flee from the face of my mistress Sarai."

Genesis 18:23: "And Abraham drew near, and said, Wilt thou also destroy the righteous with the wicked?"

Genesis 18:24: "Peradventure there be fifty righteous within the city: wilt thou also destroy and not spare the place for the fifty righteous that are therein?"

Genesis 18:28: "Peradventure there shall lack five of the fifty righteous: wilt thou destroy all the city for lack of five? And he said, If I find there forty and five, I will not destroy it."

Genesis 20:4: "But Abimelech had not come near her: and he said, LORD, wilt thou slay also a righteous nation?"

Genesis 21:23: "Now therefore swear unto me here by God that thou wilt not deal falsely with me, nor with my son, nor with my son's son: but according to the kindness that I have done unto thee, thou shalt do unto me, and to the land wherein thou hast sojourned."

Genesis 23:13: "And he spake unto Ephron in the audience of the people of the land, saying, But if thou wilt give it, I pray thee, hear me: I will give thee money for the field; take it of me, and I will bury my dead there."

Genesis 24:58: "And they called Rebekah, and said unto her, Wilt thou go with this man? And she said, I will go."

Genesis 26:29: "That thou wilt do us no hurt, as we have not touched thee, and as we have done unto thee nothing but good, and have sent thee away in peace: thou art now the blessed of the LORD."

Genesis 30:31: "And he said, What shall I give thee? And Jacob said, Thou shalt not give me any thing: if thou wilt do this thing for me, I will again feed and keep thy flock."

Genesis 38:16: "And he turned unto her by the way, and said, Go to, I pray thee, let me come in unto thee; (for he knew not that she was his daughter in law.) And she said, What wilt thou give me, that thou mayest come in unto me?"

Genesis 38:17: "And he said, I will send thee a kid from the flock. And she said, Wilt thou give me a pledge, till thou send it?"

Genesis 43:4: "If thou wilt send our brother with us, we will go down and buy thee food:"

Genesis 43:5: "But if thou wilt not send him, we will not go down: for the man said unto us, Ye

shall not see my face, except your brother be with you."

Exodus 4:13: "And he said, O my LORD, send, I pray thee, by the hand of him whom thou wilt send."

Exodus 8:21: "Else, if thou wilt not let my people go, behold, I will send swarms of flies upon thee, and upon thy servants, and upon thy people, and into thy houses: and the houses of the Egyptians shall be full of swarms of flies, and also the ground whereon they are."

Exodus 9:2: "For if thou refuse to let them go, and wilt hold them still,"

Exodus 9:17: "As yet exaltest thou thyself against my people, that thou wilt not let them go?"

Exodus 10:3: "And Moses and Aaron came in unto Pharaoh, and said unto him, Thus saith the LORD God of the Hebrews, How long wilt thou refuse to humble thyself before me? let my people go, that they may serve me."

Exodus 13:13: "And every firstling of an ass thou shalt redeem with a lamb; and if thou wilt not redeem it, then thou shalt break his neck: and all the firstborn of man among thy children shalt thou redeem."

Exodus 15:26: "And said, If thou wilt diligently hearken to the voice of the LORD thy God, and wilt do that which is right in his sight, and wilt give ear to his commandments, and keep all his statutes, I will put none of these diseases upon thee, which I have brought upon the Egyptians: for I am the LORD that healeth thee."

Exodus 18:18: "Thou wilt surely wear away, both thou, and this people that is with thee: for this thing is too heavy for thee; thou art not able to perform it thyself alone."

Exodus 20:25: "And if thou wilt make me an altar of stone, thou shalt not build it of hewn stone: for if thou lift up thy tool upon it, thou hast polluted it."

Exodus 32:32: "Yet now, if thou wilt forgive their sin--; and if not, blot me, I pray thee, out of thy book which thou hast written."

Exodus 33:12: "And Moses said unto the LORD, See, thou sayest unto me, Bring up this people: and thou hast not let me know whom thou wilt send with me. Yet thou hast said, I know thee by name, and thou hast also found grace in my sight."

Numbers 16:14: "Moreover thou hast not brought us into a land that floweth with milk and honey, or given us inheritance of fields and vineyards: wilt thou put out the eyes of these men? we will not come up."

Numbers 16:22: "And they fell upon their faces, and said, O God, the God of the spirits of all flesh, shall one man sin, and wilt thou be wroth with all the congregation?"

Numbers 21:2: "And Israel vowed a vow unto the LORD, and said, If thou wilt indeed deliver this people into my hand, then I will utterly destroy their cities."

Deuteronomy 23:13: "And thou shalt have a paddle upon thy weapon; and it shall be, when thou wilt ease thyself abroad, thou shalt dig therewith, and shalt turn back and cover that which cometh from thee:"

Deuteronomy 28:15: "But it shall come to pass, if thou wilt not hearken unto the voice of the LORD thy God, to observe to do all his commandments and his statutes which I command thee this day; that all these curses shall come upon thee, and overtake thee:"

Deuteronomy 28:58: "If thou wilt not observe to do all the words of this law that are written in this book, that thou mayest fear this glorious and fearful name, THE LORD THY GOD;"

Deuteronomy 30:17: "But if thine heart turn away, so that thou wilt not hear, but shalt be drawn away, and worship other gods, and serve them;"

Joshua 7:9: "For the Canaanites and all the inhabitants of the land shall hear of it, and shall environ us round, and cut off our name from the earth: and what wilt thou do unto thy great name?"

Judges 1:14: "And it came to pass, when she came to him, that she moved him to ask of her father a field: and she lighted from off her ass; and Caleb said unto her, What wilt thou?"

Judges 4:8: "And Barak said unto her, If thou wilt go with me, then I will go: but if thou wilt not go with me, then I will not go."

Judges 6:36: "And Gideon said unto God, If thou wilt save Israel by mine hand, as thou hast said,"  
Judges 6:37: "Behold, I will put a fleece of wool in the floor; and if the dew be on the fleece only, and it be dry upon all the earth beside, then shall I know that thou wilt save Israel by mine hand, as thou hast said."

Judges 11:24: "Wilt not thou possess that which Chemosh thy god giveth thee to possess? So whomsoever the LORD our God shall drive out from before us, them will we possess."

Judges 13:16: "And the angel of the LORD said unto Manoah, Though thou detain me, I will not eat of thy bread: and if thou wilt offer a burnt offering, thou must offer it unto the LORD. For Manoah knew not that he was an angel of the LORD."

Ruth 4:4: "And I thought to advertise thee, saying, Buy it before the inhabitants, and before the elders of my people. If thou wilt redeem it, redeem it: but if thou wilt not redeem it, then tell me, that I may know: for there is none to redeem it beside thee; and I am after thee. And he said, I will redeem it."

1 Samuel 1:11: "And she vowed a vow, and said, O LORD of hosts, if thou wilt indeed look on the affliction of thine handmaid, and remember me, and not forget thine handmaid, but wilt give unto thine handmaid a man child, then I will give him unto the LORD all the days of his life, and there shall no razor come upon his head."

1 Samuel 1:14: "And Eli said unto her, How long wilt thou be drunken? put away thy wine from thee."

1 Samuel 14:37: "And Saul asked counsel of God, Shall I go down after the Philistines? wilt thou deliver them into the hand of Israel? But he answered him not that day."

1 Samuel 16:1: "And the LORD said unto Samuel, How long wilt thou mourn for Saul, seeing I have rejected him from reigning over Israel? fill thine horn with oil, and go, I will send thee to Jesse the Bethlehemite: for I have provided me a king among his sons."

1 Samuel 19:5: "For he did put his life in his hand, and slew the Philistine, and the LORD wrought a great salvation for all Israel: thou sawest it, and didst rejoice: wherefore then wilt thou sin against innocent blood, to slay David without a cause?"

1 Samuel 21:9: "And the priest said, The sword of Goliath the Philistine, whom thou slewest in the valley of Elah, behold, it is here wrapped in a cloth behind the ephod: if thou wilt take that, take it: for there is no other save that here. And David said, There is none like that; give it me."

1 Samuel 24:21: "Swear now therefore unto me by the LORD, that thou wilt not cut off my seed after me, and that thou wilt not destroy my name out of my father's house."

1 Samuel 25:17: "Now therefore know and consider what thou wilt do; for evil is determined against our master, and against all his household: for he is such a son of Belial, that a man cannot speak to him."

1 Samuel 30:15: "And David said to him, Canst thou bring me down to this company? And he said, Swear unto me by God, that thou wilt neither kill me, nor deliver me into the hands of my master, and I will bring thee down to this company."

2 Samuel 5:19: "And David enquired of the LORD, saying, Shall I go up to the Philistines? wilt thou deliver them into mine hand? And the LORD said unto David, Go up: for I will doubtless deliver the Philistines into thine hand."

2 Samuel 13:4: "And he said unto him, Why art thou, being the king's son, lean from day to day? wilt thou not tell me? And Amnon said unto him, I love Tamar, my brother Absalom's sister."

2 Samuel 18:22: "Then said Ahimaaz the son of Zadok yet again to Joab, But howsoever, let me, I pray thee, also run after Cushai. And Joab said, Wherefore wilt thou run, my son, seeing that thou hast no tidings ready?"

2 Samuel 20:19: "I am one of them that are peaceable and faithful in Israel: thou seekest to destroy a city and a mother in Israel: why wilt thou swallow up the inheritance of the LORD?"

2 Samuel 22:26: "With the merciful thou wilt shew thyself merciful, and with the upright man thou wilt shew thyself upright."

2 Samuel 22:27: "With the pure thou wilt shew thyself pure; and with the froward thou wilt shew thyself unsavoury."

2 Samuel 22:28: "And the afflicted people thou wilt save: but thine eyes are upon the haughty, that thou mayest bring them down."

2 Samuel 24:13: "So Gad came to David, and told him, and said unto him, Shall seven years of famine come unto thee in thy land? or wilt thou flee three months before thine enemies, while they pursue thee? or that there be three days' pestilence in thy land? now advise, and see what answer I shall return to him that sent me."

1 Kings 3:14: "And if thou wilt walk in my ways, to keep my statutes and my commandments, as thy father David did walk, then I will lengthen thy days."

1 Kings 6:12: "Concerning this house which thou art in building, if thou wilt walk in my statutes, and execute my judgments, and keep all my commandments to walk in them; then will I perform my word with thee, which I spake unto David thy father:"

1 Kings 9:4: "And if thou wilt walk before me, as David thy father walked, in integrity of heart, and in uprightness, to do according to all that I have commanded thee, and wilt keep my statutes and my judgments:"

1 Kings 11:38: "And it shall be, if thou wilt hearken unto all that I command thee, and wilt walk in my ways, and do that is right in my sight, to keep my statutes and my commandments, as David my servant did; that I will be with thee, and build thee a sure house, as I built for David, and will give Israel unto thee."

1 Kings 12:7: "And they spake unto him, saying, If thou wilt be a servant unto this people this day, and wilt serve them, and answer them, and speak good words to them, then they will be thy servants for ever."

1 Kings 13:8: "And the man of God said unto the king, If thou wilt give me half thine house, I will not go in with thee, neither will I eat bread nor drink water in this place:"

1 Kings 22:4: "And he said unto Jehoshaphat, Wilt thou go with me to battle to Ramothgilead? And Jehoshaphat said to the king of Israel, I am as thou art, my people as thy people, my horses as thy horses."

2 Kings 3:7: "And he went and sent to Jehoshaphat the king of Judah, saying, The king of Moab hath rebelled against me: wilt thou go with me against Moab to battle? And he said, I will go up: I am as thou art, my people as thy people, and my horses as thy horses."

2 Kings 4:23: "And he said, Wherefore wilt thou go to him to day? it is neither new moon, nor sabbath. And she said, It shall be well."

2 Kings 8:12: "And Hazael said, Why weepeth my lord? And he answered, Because I know the evil that thou wilt do unto the children of Israel: their strong holds wilt thou set on fire, and their young men wilt thou slay with the sword, and wilt dash their children, and rip up their women with child."

2 Kings 18:24: "How then wilt thou turn away the face of one captain of the least of my master's servants, and put thy trust on Egypt for chariots and for horsemen?"

1 Chronicles 14:10: "And David enquired of God, saying, Shall I go up against the Philistines? And wilt thou deliver them into mine hand? And the LORD said unto him, Go up; for I will deliver them into thine hand."

1 Chronicles 17:25: "For thou, O my God, hast told thy servant that thou wilt build him an house: therefore thy servant hath found in his heart to pray before thee."

2 Chronicles 7:17: "And as for thee, if thou wilt walk before me, as David thy father walked, and do according to all that I have commanded thee, and shalt observe my statutes and my judgments;"

2 Chronicles 18:3: "And Ahab king of Israel said unto Jehoshaphat king of Judah, Wilt thou go with me to Ramothgilead? And he answered him, I am as thou art, and my people as thy people; and we will be with thee in the war."

2 Chronicles 20:9: "If, when evil cometh upon us, as the sword, judgment, or pestilence, or famine, we stand before this house, and in thy presence, (for thy name is in this house,) and cry unto thee in

our affliction, then thou wilt hear and help."

2 Chronicles 20:12: "O our God, wilt thou not judge them? for we have no might against this great company that cometh against us; neither know we what to do: but our eyes are upon thee."

2 Chronicles 25:8: "But if thou wilt go, do it; be strong for the battle: God shall make thee fall before the enemy: for God hath power to help, and to cast down."

Nehemiah 2:6: "And the king said unto me, (the queen also sitting by him,) For how long shall thy journey be? and when wilt thou return? So it pleased the king to send me; and I set him a time."

Esther 5:3: "Then said the king unto her, What wilt thou, queen Esther? and what is thy request? it shall be even given thee to the half of the kingdom."

Job 4:2: "If we assay to commune with thee, wilt thou be grieved? but who can withhold himself from speaking?"

Job 5:1: "Call now, if there be any that will answer thee; and to which of the saints wilt thou turn?"

Job 7:19: "How long wilt thou not depart from me, nor let me alone till I swallow down my spittle?"

Job 8:2: "How long wilt thou speak these things? and how long shall the words of thy mouth be like a strong wind?"

Job 9:28: "I am afraid of all my sorrows, I know that thou wilt not hold me innocent."

Job 10:9: "Remember, I beseech thee, that thou hast made me as the clay; and wilt thou bring me into dust again?"

Job 10:14: "If I sin, then thou markest me, and thou wilt not acquit me from mine iniquity."

Job 13:25: "Wilt thou break a leaf driven to and fro? and wilt thou pursue the dry stubble?"

Job 14:15: "Thou shalt call, and I will answer thee: thou wilt have a desire to the work of thine hands."

Job 30:23: "For I know that thou wilt bring me to death, and to the house appointed for all living."

Job 34:17: "Shall even he that hateth right govern? and wilt thou condemn him that is most just?"

Job 38:39: "Wilt thou hunt the prey for the lion? or fill the appetite of the young lions,"

Job 39:11: "Wilt thou trust him, because his strength is great? or wilt thou leave thy labour to him?"

Job 39:12: "Wilt thou believe him, that he will bring home thy seed, and gather it into thy barn?"

Job 40:8: "Wilt thou also disannul my judgment? wilt thou condemn me, that thou mayest be righteous?"

Job 41:4: "Will he make a covenant with thee? wilt thou take him for a servant for ever?"

Job 41:5: "Wilt thou play with him as with a bird? or wilt thou bind him for thy maidens?"

Psalms 5:12: "For thou, LORD, wilt bless the righteous; with favour wilt thou compass him as with a shield."

Psalms 10:13: "Wherefore doth the wicked contemn God? he hath said in his heart, Thou wilt not require it."

Psalms 10:17: "LORD, thou hast heard the desire of the humble: thou wilt prepare their heart, thou wilt cause thine ear to hear:"

Psalms 13:1: "How long wilt thou forget me, O LORD? for ever? how long wilt thou hide thy face from me?"

Psalms 16:10: "For thou wilt not leave my soul in hell; neither wilt thou suffer thine Holy One to see corruption."

Psalms 16:11: "Thou wilt shew me the path of life: in thy presence is fulness of joy; at thy right hand there are pleasures for evermore."

Psalms 17:6: "I have called upon thee, for thou wilt hear me, O God: incline thine ear unto me, and hear my speech."

Psalms 18:25: "With the merciful thou wilt shew thyself merciful; with an upright man thou wilt shew thyself upright;"

Psalms 18:26: "With the pure thou wilt shew thyself pure; and with the froward thou wilt shew thyself froward."

Psalms 18:27: "For thou wilt save the afflicted people; but wilt bring down high looks."

Psalms 18:28: "For thou wilt light my candle: the LORD my God will enlighten my darkness."  
 Psalms 35:17: "Lord, how long wilt thou look on? rescue my soul from their destructions, my darling from the lions."  
 Psalms 38:15: "For in thee, O LORD, do I hope: thou wilt hear, O Lord my God."  
 Psalms 41:2: "The LORD will preserve him, and keep him alive; and he shall be blessed upon the earth: and thou wilt not deliver him unto the will of his enemies."  
 Psalms 41:3: "The LORD will strengthen him upon the bed of languishing: thou wilt make all his bed in his sickness."  
 Psalms 51:17: "The sacrifices of God are a broken spirit: a broken and a contrite heart, O God, thou wilt not despise."  
 Psalms 56:13: "For thou hast delivered my soul from death: wilt not thou deliver my feet from falling, that I may walk before God in the light of the living?"  
 Psalms 60:10: "Wilt not thou, O God, which hadst cast us off? and thou, O God, which didst not go out with our armies?"  
 Psalms 61:6: "Thou wilt prolong the king's life: and his years as many generations."  
 Psalms 65:5: "By terrible things in righteousness wilt thou answer us, O God of our salvation; who art the confidence of all the ends of the earth, and of them that are afar off upon the sea:"  
 Psalms 79:5: "How long, LORD? wilt thou be angry for ever? shall thy jealousy burn like fire?"  
 Psalms 80:4: "O LORD God of hosts, how long wilt thou be angry against the prayer of thy people?"  
 Psalms 81:8: "Hear, O my people, and I will testify unto thee: O Israel, if thou wilt hearken unto me;"  
 Psalms 85:5: "Wilt thou be angry with us for ever? wilt thou draw out thine anger to all generations?"  
 Psalms 85:6: "Wilt thou not revive us again: that thy people may rejoice in thee?"  
 Psalms 86:7: "In the day of my trouble I will call upon thee: for thou wilt answer me."  
 Psalms 88:10: "Wilt thou shew wonders to the dead? shall the dead arise and praise thee? Selah."  
 Psalms 89:46: "How long, LORD? wilt thou hide thyself for ever? shall thy wrath burn like fire?"  
 Psalms 101:2: "I will behave myself wisely in a perfect way. O when wilt thou come unto me? I will walk within my house with a perfect heart."  
 Psalms 108:11: "Wilt not thou, O God, who hast cast us off? and wilt not thou, O God, go forth with our hosts?"  
 Psalms 119:82: "Mine eyes fail for thy word, saying, When wilt thou comfort me?"  
 Psalms 119:84: "How many are the days of thy servant? when wilt thou execute judgment on them that persecute me?"  
 Psalms 138:7: "Though I walk in the midst of trouble, thou wilt revive me: thou shalt stretch forth thine hand against the wrath of mine enemies, and thy right hand shall save me."  
 Psalms 139:19: "Surely thou wilt slay the wicked, O God: depart from me therefore, ye bloody men."  
 Proverbs 2:1: "My son, if thou wilt receive my words, and hide my commandments with thee;"  
 Proverbs 5:20: "And why wilt thou, my son, be ravished with a strange woman, and embrace the bosom of a stranger?"  
 Proverbs 6:9: "How long wilt thou sleep, O sluggard? when wilt thou arise out of thy sleep?"  
 Proverbs 23:5: "Wilt thou set thine eyes upon that which is not? for riches certainly make themselves wings; they fly away as an eagle toward heaven."  
 Isaiah 26:3: "Thou wilt keep him in perfect peace, whose mind is stayed on thee: because he trusteth in thee."  
 Isaiah 26:12: "LORD, thou wilt ordain peace for us: for thou also hast wrought all our works in us."  
 Isaiah 27:8: "In measure, when it shooteth forth, thou wilt debate with it: he stayeth his rough wind in the day of the east wind."

Isaiah 36:9: "How then wilt thou turn away the face of one captain of the least of my master's servants, and put thy trust on Egypt for chariots and for horsemen?"

Isaiah 38:12: "Mine age is departed, and is removed from me as a shepherd's tent: I have cut off like a weaver my life: he will cut me off with pining sickness: from day even to night wilt thou make an end of me."

Isaiah 38:13: "I reckoned till morning, that, as a lion, so will he break all my bones: from day even to night wilt thou make an end of me."

Isaiah 38:16: "O LORD, by these things men live, and in all these things is the life of my spirit: so wilt thou recover me, and make me to live."

Isaiah 58:5: "Is it such a fast that I have chosen? a day for a man to afflict his soul? is it to bow down his head as a bulrush, and to spread sackcloth and ashes under him? wilt thou call this a fast, and an acceptable day to the LORD?"

Isaiah 64:12: "Wilt thou refrain thyself for these things, O LORD? wilt thou hold thy peace, and afflict us very sore?"

Jeremiah 3:4: "Wilt thou not from this time cry unto me, My father, thou art the guide of my youth?"

Jeremiah 4:1: "If thou wilt return, O Israel, saith the LORD, return unto me: and if thou wilt put away thine abominations out of my sight, then shalt thou not remove."

Jeremiah 4:30: "And when thou art spoiled, what wilt thou do? Though thou clothest thyself with crimson, though thou deckest thee with ornaments of gold, though thou rentest thy face with painting, in vain shalt thou make thyself fair; thy lovers will despise thee, they will seek thy life."

Jeremiah 12:5: "If thou hast run with the footmen, and they have wearied thee, then how canst thou contend with horses? and if in the land of peace, wherein thou trustedst, they wearied thee, then how wilt thou do in the swelling of Jordan?"

Jeremiah 13:21: "What wilt thou say when he shall punish thee? for thou hast taught them to be captains, and as chief over thee: shall not sorrows take thee, as a woman in travail?"

Jeremiah 13:27: "I have seen thine adulteries, and thy neighings, the lewdness of thy whoredom, and thine abominations on the hills in the fields. Woe unto thee, O Jerusalem! wilt thou not be made clean? when shall it once be?"

Jeremiah 15:18: "Why is my pain perpetual, and my wound incurable, which refuseth to be healed? wilt thou be altogether unto me as a liar, and as waters that fail?"

Jeremiah 31:22: "How long wilt thou go about, O thou backsliding daughter? for the LORD hath created a new thing in the earth, A woman shall compass a man."

Jeremiah 38:15: "Then Jeremiah said unto Zedekiah, If I declare it unto thee, wilt thou not surely put me to death? and if I give thee counsel, wilt thou not hearken unto me?"

Jeremiah 38:17: "Then said Jeremiah unto Zedekiah, Thus saith the LORD, the God of hosts, the God of Israel; If thou wilt assuredly go forth unto the king of Babylon's princes, then thy soul shall live, and this city shall not be burned with fire; and thou shalt live, and thine house:"

Jeremiah 38:18: "But if thou wilt not go forth to the king of Babylon's princes, then shall this city be given into the hand of the Chaldeans, and they shall burn it with fire, and thou shalt not escape out of their hand."

Jeremiah 47:5: "Baldness is come upon Gaza; Ashkelon is cut off with the remnant of their valley: how long wilt thou cut thyself?"

Lamentations 1:21: "They have heard that I sigh: there is none to comfort me: all mine enemies have heard of my trouble; they are glad that thou hast done it: thou wilt bring the day that thou hast called, and they shall be like unto me."

Ezekiel 9:8: "And it came to pass, while they were slaying them, and I was left, that I fell upon my face, and cried, and said, Ah Lord GOD! wilt thou destroy all the residue of Israel in thy pouring out of thy fury upon Jerusalem?"

Ezekiel 11:13: "And it came to pass, when I prophesied, that Pelatiah the son of Benaiah died. Then



fell I down upon my face, and cried with a loud voice, and said, Ah Lord GOD! wilt thou make a full end of the remnant of Israel?"

Ezekiel 20:4: "Wilt thou judge them, son of man, wilt thou judge them? cause them to know the abominations of their fathers:"

Ezekiel 22:2: "Now, thou son of man, wilt thou judge, wilt thou judge the bloody city? yea, thou shalt shew her all her abominations."

Ezekiel 23:36: "The LORD said moreover unto me; Son of man, wilt thou judge Aholah and Aholibah? yea, declare unto them their abominations;"

Ezekiel 24:19: "And the people said unto me, Wilt thou not tell us what these things are to us, that thou doest so?"

Ezekiel 28:9: "Wilt thou yet say before him that slayeth thee, I am God? but thou shalt be a man, and no God, in the hand of him that slayeth thee."

Ezekiel 37:18: "And when the children of thy people shall speak unto thee, saying, Wilt thou not shew us what thou meanest by these?"

Hosea 9:14: "Give them, O LORD: what wilt thou give? give them a miscarrying womb and dry breasts."

Micah 7:19: "He will turn again, he will have compassion upon us; he will subdue our iniquities; and thou wilt cast all their sins into the depths of the sea."

Micah 7:20: "Thou wilt perform the truth to Jacob, and the mercy to Abraham, which thou hast sworn unto our fathers from the days of old."

Habakkuk 1:2: "O LORD, how long shall I cry, and thou wilt not hear! even cry out unto thee of violence, and thou wilt not save!"

Zephaniah 3:7: "I said, Surely thou wilt fear me, thou wilt receive instruction; so their dwelling should not be cut off, howsoever I punished them: but they rose early, and corrupted all their doings."

Zechariah 1:12: "Then the angel of the LORD answered and said, O LORD of hosts, how long wilt thou not have mercy on Jerusalem and on the cities of Judah, against which thou hast had indignation these threescore and ten years?"

Zechariah 3:7: "Thus saith the LORD of hosts; If thou wilt walk in my ways, and if thou wilt keep my charge, then thou shalt also judge my house, and shalt also keep my courts, and I will give thee places to walk among these that stand by."

Matthew 4:9: "And saith unto him, All these things will I give thee, if thou wilt fall down and worship me."

Matthew 7:4: "Or how wilt thou say to thy brother, Let me pull out the mote out of thine eye; and, behold, a beam is in thine own eye?"

Matthew 8:2: "And, behold, there came a leper and worshipped him, saying, Lord, if thou wilt, thou canst make me clean."

Matthew 13:28: "He said unto them, An enemy hath done this. The servants said unto him, Wilt thou then that we go and gather them up?"

Matthew 15:28: "Then Jesus answered and said unto her, O woman, great is thy faith: be it unto thee even as thou wilt. And her daughter was made whole from that very hour."

Matthew 17:4: "Then answered Peter, and said unto Jesus, Lord, it is good for us to be here: if thou wilt, let us make here three tabernacles; one for thee, and one for Moses, and one for Elias."

Matthew 19:17: "And he said unto him, Why callest thou me good? there is none good but one, that is, God: but if thou wilt enter into life, keep the commandments."

Matthew 19:21: "Jesus said unto him, If thou wilt be perfect, go and sell that thou hast, and give to the poor, and thou shalt have treasure in heaven: and come and follow me."

Matthew 20:21: "And he said unto her, What wilt thou? She saith unto him, Grant that these my two sons may sit, the one on thy right hand, and the other on the left, in thy kingdom."

Matthew 26:17: "Now the first day of the feast of unleavened bread the disciples came to Jesus,

saying unto him, Where wilt thou that we prepare for thee to eat the passover?"

Matthew 26:39: "And he went a little farther, and fell on his face, and prayed, saying, O my Father, if it be possible, let this cup pass from me: nevertheless not as I will, but as thou wilt."

Mark 1:40: "And there came a leper to him, beseeching him, and kneeling down to him, and saying unto him, If thou wilt, thou canst make me clean."

Mark 6:22: "And when the daughter of the said Herodias came in, and danced, and pleased Herod and them that sat with him, the king said unto the damsel, Ask of me whatsoever thou wilt, and I will give it thee."

Mark 10:51: "And Jesus answered and said unto him, What wilt thou that I should do unto thee? The blind man said unto him, Lord, that I might receive my sight."

Mark 14:12: "And the first day of unleavened bread, when they killed the passover, his disciples said unto him, Where wilt thou that we go and prepare that thou mayest eat the passover?"

Mark 14:36: "And he said, Abba, Father, all things are possible unto thee; take away this cup from me: nevertheless not what I will, but what thou wilt."

Luke 4:7: "If thou therefore wilt worship me, all shall be thine."

Luke 5:12: "And it came to pass, when he was in a certain city, behold a man full of leprosy: who seeing Jesus fell on his face, and besought him, saying, Lord, if thou wilt, thou canst make me clean."

Luke 9:54: "And when his disciples James and John saw this, they said, Lord, wilt thou that we command fire to come down from heaven, and consume them, even as Elias did?"

Luke 18:41: "Saying, What wilt thou that I shall do unto thee? And he said, Lord, that I may receive my sight."

Luke 22:9: "And they said unto him, Where wilt thou that we prepare?"

John 2:20: "Then said the Jews, Forty and six years was this temple in building, and wilt thou rear it up in three days?"

John 5:6: "When Jesus saw him lie, and knew that he had been now a long time in that case, he saith unto him, Wilt thou be made whole?"

John 11:22: "But I know, that even now, whatsoever thou wilt ask of God, God will give it thee."

John 13:38: "Jesus answered him, Wilt thou lay down thy life for my sake? Verily, verily, I say unto thee, The cock shall not crow, till thou hast denied me thrice."

John 14:22: "Judas saith unto him, not Iscariot, Lord, how is it that thou wilt manifest thyself unto us, and not unto the world?"

Acts 1:6: "When they therefore were come together, they asked of him, saying, Lord, wilt thou at this time restore again the kingdom to Israel?"

Acts 2:27: "Because thou wilt not leave my soul in hell, neither wilt thou suffer thine Holy One to see corruption."

Acts 7:28: "Wilt thou kill me, as thou diddest the Egyptian yesterday?"

Acts 9:6: "And he trembling and astonished said, Lord, what wilt thou have me to do? And the Lord said unto him, Arise, and go into the city, and it shall be told thee what thou must do."

Acts 13:10: "And said, O full of all subtilty and all mischief, thou child of the devil, thou enemy of all righteousness, wilt thou not cease to pervert the right ways of the Lord?"

Acts 25:9: "But Festus, willing to do the Jews a pleasure, answered Paul, and said, Wilt thou go up to Jerusalem, and there be judged of these things before me?"

Romans 9:19: "Thou wilt say then unto me, Why doth he yet find fault? For who hath resisted his will?"

Romans 11:19: "Thou wilt say then, The branches were broken off, that I might be grafted in."

Romans 13:3: "For rulers are not a terror to good works, but to the evil. Wilt thou then not be afraid of the power? do that which is good, and thou shalt have praise of the same:"

Philemon 1:21: "Having confidence in thy obedience I wrote unto thee, knowing that thou wilt also do more than I say."

James 2:20: "But wilt thou know, O vain man, that faith without works is dead?"

## WIMPLES

Occurrences: 1

Isaiah 3:22: "The changeable suits of apparel, and the mantles, and the wimples, and the cringing pins,"

## WIN

Occurrences: 2

2 Chronicles 32:1: "After these things, and the establishment thereof, Sennacherib king of Assyria came, and entered into Judah, and encamped against the fenced cities, and thought to win them for himself."

Philippians 3:8: "Yea doubtless, and I count all things but loss for the excellency of the knowledge of Christ Jesus my Lord: for whom I have suffered the loss of all things, and do count them but dung, that I may win Christ,"

## WIND

Occurrences: 113

Genesis 8:1: "And God remembered Noah, and every living thing, and all the cattle that was with him in the ark: and God made a wind to pass over the earth, and the waters asswaged;"

Genesis 41:6: "And, behold, seven thin ears and blasted with the east wind sprung up after them."

Genesis 41:23: "And, behold, seven ears, withered, thin, and blasted with the east wind, sprung up after them:"

Genesis 41:27: "And the seven thin and ill favoured kine that came up after them are seven years; and the seven empty ears blasted with the east wind shall be seven years of famine."

Exodus 10:13: "And Moses stretched forth his rod over the land of Egypt, and the LORD brought an east wind upon the land all that day, and all that night; and when it was morning, the east wind brought the locusts."

Exodus 10:19: "And the LORD turned a mighty strong west wind, which took away the locusts, and cast them into the Red sea; there remained not one locust in all the coasts of Egypt."

Exodus 14:21: "And Moses stretched out his hand over the sea; and the LORD caused the sea to go back by a strong east wind all that night, and made the sea dry land, and the waters were divided."

Exodus 15:10: "Thou didst blow with thy wind, the sea covered them: they sank as lead in the mighty waters."

Numbers 11:31: "And there went forth a wind from the LORD, and brought quails from the sea, and let them fall by the camp, as it were a day's journey on this side, and as it were a day's journey on the other side, round about the camp, and as it were two cubits high upon the face of the earth."

2 Samuel 22:11: "And he rode upon a cherub, and did fly: and he was seen upon the wings of the wind."

1 Kings 18:45: "And it came to pass in the mean while, that the heaven was black with clouds and wind, and there was a great rain. And Ahab rode, and went to Jezreel."

1 Kings 19:11: "And he said, Go forth, and stand upon the mount before the LORD. And, behold, the LORD passed by, and a great and strong wind rent the mountains, and brake in pieces the rocks before the LORD; but the LORD was not in the wind: and after the wind an earthquake; but the LORD was not in the earthquake:"

2 Kings 3:17: "For thus saith the LORD, Ye shall not see wind, neither shall ye see rain; yet that valley shall be filled with water, that ye may drink, both ye, and your cattle, and your beasts."

Job 1:19: "And, behold, there came a great wind from the wilderness, and smote the four corners of

the house, and it fell upon the young men, and they are dead; and I only am escaped alone to tell thee."

Job 6:26: "Do ye imagine to reprove words, and the speeches of one that is desperate, which are as wind?"

Job 7:7: "O remember that my life is wind: mine eye shall no more see good."

Job 8:2: "How long wilt thou speak these things? and how long shall the words of thy mouth be like a strong wind?"

Job 15:2: "Should a wise man utter vain knowledge, and fill his belly with the east wind?"

Job 21:18: "They are as stubble before the wind, and as chaff that the storm carrieth away."

Job 27:21: "The east wind carrieth him away, and he departeth: and as a storm hurleth him out of his place."

Job 30:15: "Terrors are turned upon me: they pursue my soul as the wind: and my welfare passeth away as a cloud."

Job 30:22: "Thou liftest me up to the wind; thou causest me to ride upon it, and dissolvest my substance."

Job 37:17: "How thy garments are warm, when he quieteth the earth by the south wind?"

Job 37:21: "And now men see not the bright light which is in the clouds: but the wind passeth, and cleanseth them."

Job 38:24: "By what way is the light parted, which scattereth the east wind upon the earth?"

Psalms 1:4: "The ungodly are not so: but are like the chaff which the wind driveth away."

Psalms 18:10: "And he rode upon a cherub, and did fly: yea, he did fly upon the wings of the wind."

Psalms 18:42: "Then did I beat them small as the dust before the wind: I did cast them out as the dirt in the streets."

Psalms 35:5: "Let them be as chaff before the wind: and let the angel of the LORD chase them."

Psalms 48:7: "Thou breakest the ships of Tarshish with an east wind."

Psalms 78:26: "He caused an east wind to blow in the heaven: and by his power he brought in the south wind."

Psalms 78:39: "For he remembered that they were but flesh; a wind that passeth away, and cometh not again."

Psalms 83:13: "O my God, make them like a wheel; as the stubble before the wind."

Psalms 103:16: "For the wind passeth over it, and it is gone; and the place thereof shall know it no more."

Psalms 104:3: "Who layeth the beams of his chambers in the waters: who maketh the clouds his chariot: who walketh upon the wings of the wind:"

Psalms 107:25: "For he commandeth, and raiseth the stormy wind, which lifteth up the waves thereof."

Psalms 135:7: "He causeth the vapours to ascend from the ends of the earth; he maketh lightnings for the rain; he bringeth the wind out of his treasures."

Psalms 147:18: "He sendeth out his word, and melteth them: he causeth his wind to blow, and the waters flow."

Psalms 148:8: "Fire, and hail; snow, and vapours; stormy wind fulfilling his word:"

Proverbs 11:29: "He that troubleth his own house shall inherit the wind: and the fool shall be servant to the wise of heart."

Proverbs 25:14: "Whoso boasteth himself of a false gift is like clouds and wind without rain."

Proverbs 25:23: "The north wind driveth away rain: so doth an angry countenance a backbiting tongue."

Proverbs 27:16: "Whosoever hideth her hideth the wind, and the ointment of his right hand, which bewrayeth itself."

Proverbs 30:4: "Who hath ascended up into heaven, or descended? who hath gathered the wind in his fists? who hath bound the waters in a garment? who hath established all the ends of the earth?"

what is his name, and what is his son's name, if thou canst tell?"

Ecclesiastes 1:6: "The wind goeth toward the south, and turneth about unto the north; it whirleth about continually, and the wind returneth again according to his circuits."

Ecclesiastes 5:16: "And this also is a sore evil, that in all points as he came, so shall he go: and what profit hath he that hath laboured for the wind?"

Ecclesiastes 11:4: "He that observeth the wind shall not sow; and he that regardeth the clouds shall not reap."

Song of Solomon 4:16: "Awake, O north wind; and come, thou south; blow upon my garden, that the spices thereof may flow out. Let my beloved come into his garden, and eat his pleasant fruits."

Isaiah 7:2: "And it was told the house of David, saying, Syria is confederate with Ephraim. And his heart was moved, and the heart of his people, as the trees of the wood are moved with the wind."

Isaiah 11:15: "And the LORD shall utterly destroy the tongue of the Egyptian sea; and with his mighty wind shall he shake his hand over the river, and shall smite it in the seven streams, and make men go over dryshod."

Isaiah 17:13: "The nations shall rush like the rushing of many waters: but God shall rebuke them, and they shall flee far off, and shall be chased as the chaff of the mountains before the wind, and like a rolling thing before the whirlwind."

Isaiah 26:18: "We have been with child, we have been in pain, we have as it were brought forth wind; we have not wrought any deliverance in the earth; neither have the inhabitants of the world fallen."

Isaiah 27:8: "In measure, when it shooteth forth, thou wilt debate with it: he stayeth his rough wind in the day of the east wind."

Isaiah 32:2: "And a man shall be as an hiding place from the wind, and a covert from the tempest; as rivers of water in a dry place, as the shadow of a great rock in a weary land."

Isaiah 41:16: "Thou shalt fan them, and the wind shall carry them away, and the whirlwind shall scatter them: and thou shalt rejoice in the LORD, and shalt glory in the Holy One of Israel."

Isaiah 41:29: "Behold, they are all vanity; their works are nothing: their molten images are wind and confusion."

Isaiah 57:13: "When thou criest, let thy companies deliver thee; but the wind shall carry them all away; vanity shall take them: but he that putteth his trust in me shall possess the land, and shall inherit my holy mountain;"

Isaiah 64:6: "But we are all as an unclean thing, and all our righteousnesses are as filthy rags; and we all do fade as a leaf; and our iniquities, like the wind, have taken us away."

Jeremiah 2:24: "A wild ass used to the wilderness, that snuffeth up the wind at her pleasure; in her occasion who can turn her away? all they that seek her will not weary themselves; in her month they shall find her."

Jeremiah 4:11: "At that time shall it be said to this people and to Jerusalem, A dry wind of the high places in the wilderness toward the daughter of my people, not to fan, nor to cleanse,"

Jeremiah 4:12: "Even a full wind from those places shall come unto me: now also will I give sentence against them."

Jeremiah 5:13: "And the prophets shall become wind, and the word is not in them: thus shall it be done unto them."

Jeremiah 10:13: "When he uttereth his voice, there is a multitude of waters in the heavens, and he causeth the vapours to ascend from the ends of the earth; he maketh lightnings with rain, and bringeth forth the wind out of his treasures."

Jeremiah 13:24: "Therefore will I scatter them as the stubble that passeth away by the wind of the wilderness."

Jeremiah 14:6: "And the wild asses did stand in the high places, they snuffed up the wind like dragons; their eyes did fail, because there was no grass."

Jeremiah 18:17: "I will scatter them as with an east wind before the enemy; I will shew them the

back, and not the face, in the day of their calamity."

Jeremiah 22:22: "The wind shall eat up all thy pastors, and thy lovers shall go into captivity: surely then shalt thou be ashamed and confounded for all thy wickedness."

Jeremiah 51:1: "Thus saith the LORD; Behold, I will raise up against Babylon, and against them that dwell in the midst of them that rise up against me, a destroying wind;"

Jeremiah 51:16: "When he uttereth his voice, there is a multitude of waters in the heavens; and he causeth the vapours to ascend from the ends of the earth: he maketh lightnings with rain, and bringeth forth the wind out of his treasures."

Ezekiel 5:2: "Thou shalt burn with fire a third part in the midst of the city, when the days of the siege are fulfilled: and thou shalt take a third part, and smite about it with a knife: and a third part thou shalt scatter in the wind; and I will draw out a sword after them."

Ezekiel 12:14: "And I will scatter toward every wind all that are about him to help him, and all his bands; and I will draw out the sword after them."

Ezekiel 13:11: "Say unto them which daub it with untempered mortar, that it shall fall: there shall be an overflowing shower; and ye, O great hailstones, shall fall; and a stormy wind shall rend it."

Ezekiel 13:13: "Therefore thus saith the Lord GOD; I will even rend it with a stormy wind in my fury; and there shall be an overflowing shower in mine anger, and great hailstones in my fury to consume it."

Ezekiel 17:10: "Yea, behold, being planted, shall it prosper? shall it not utterly wither, when the east wind toucheth it? it shall wither in the furrows where it grew."

Ezekiel 19:12: "But she was plucked up in fury, she was cast down to the ground, and the east wind dried up her fruit: her strong rods were broken and withered; the fire consumed them."

Ezekiel 27:26: "Thy rowers have brought thee into great waters: the east wind hath broken thee in the midst of the seas."

Ezekiel 37:9: "Then said he unto me, Prophecy unto the wind, prophesy, son of man, and say to the wind, Thus saith the Lord GOD; Come from the four winds, O breath, and breathe upon these slain, that they may live."

Daniel 2:35: "Then was the iron, the clay, the brass, the silver, and the gold, broken to pieces together, and became like the chaff of the summer threshingfloors; and the wind carried them away, that no place was found for them: and the stone that smote the image became a great mountain, and filled the whole earth."

Hosea 4:19: "The wind hath bound her up in her wings, and they shall be ashamed because of their sacrifices."

Hosea 8:7: "For they have sown the wind, and they shall reap the whirlwind: it hath no stalk; the bud shall yield no meal: if so be it yield, the strangers shall swallow it up."

Hosea 12:1: "Ephraim feedeth on wind, and followeth after the east wind: he daily increaseth lies and desolation; and they do make a covenant with the Assyrians, and oil is carried into Egypt."

Hosea 13:15: "Though he be fruitful among his brethren, an east wind shall come, the wind of the LORD shall come up from the wilderness, and his spring shall become dry, and his fountain shall be dried up: he shall spoil the treasure of all pleasant vessels."

Amos 4:13: "For, lo, he that formeth the mountains, and createth the wind, and declareth unto man what is his thought, that maketh the morning darkness, and treadeth upon the high places of the earth, The LORD, The God of hosts, is his name."

Jonah 1:4: "But the LORD sent out a great wind into the sea, and there was a mighty tempest in the sea, so that the ship was like to be broken."

Jonah 4:8: "And it came to pass, when the sun did arise, that God prepared a vehement east wind; and the sun beat upon the head of Jonah, that he fainted, and wished in himself to die, and said, It is better for me to die than to live."

Habakkuk 1:9: "They shall come all for violence: their faces shall sup up as the east wind, and they shall gather the captivity as the sand."

Zechariah 5:9: "Then lifted I up mine eyes, and looked, and, behold, there came out two women, and the wind was in their wings; for they had wings like the wings of a stork: and they lifted up the ephah between the earth and the heaven."

Matthew 11:7: "And as they departed, Jesus began to say unto the multitudes concerning John, What went ye out into the wilderness to see? A reed shaken with the wind?"

Matthew 14:24: "But the ship was now in the midst of the sea, tossed with waves: for the wind was contrary."

Matthew 14:30: "But when he saw the wind boisterous, he was afraid; and beginning to sink, he cried, saying, Lord, save me."

Matthew 14:32: "And when they were come into the ship, the wind ceased."

Mark 4:37: "And there arose a great storm of wind, and the waves beat into the ship, so that it was now full."

Mark 4:39: "And he arose, and rebuked the wind, and said unto the sea, Peace, be still. And the wind ceased, and there was a great calm."

Mark 4:41: "And they feared exceedingly, and said one to another, What manner of man is this, that even the wind and the sea obey him?"

Mark 6:48: "And he saw them toiling in rowing; for the wind was contrary unto them: and about the fourth watch of the night he cometh unto them, walking upon the sea, and would have passed by them."

Mark 6:51: "And he went up unto them into the ship; and the wind ceased: and they were sore amazed in themselves beyond measure, and wondered."

Luke 7:24: "And when the messengers of John were departed, he began to speak unto the people concerning John, What went ye out into the wilderness for to see? A reed shaken with the wind?"

Luke 8:23: "But as they sailed he fell asleep: and there came down a storm of wind on the lake; and they were filled with water, and were in jeopardy."

Luke 8:24: "And they came to him, and awoke him, saying, Master, master, we perish. Then he arose, and rebuked the wind and the raging of the water: and they ceased, and there was a calm."

Luke 12:55: "And when ye see the south wind blow, ye say, There will be heat; and it cometh to pass."

John 3:8: "The wind bloweth where it listeth, and thou hearest the sound thereof, but canst not tell whence it cometh, and whither it goeth: so is every one that is born of the Spirit."

John 6:18: "And the sea arose by reason of a great wind that blew."

Acts 2:2: "And suddenly there came a sound from heaven as of a rushing mighty wind, and it filled all the house where they were sitting."

Acts 27:7: "And when we had sailed slowly many days, and scarce were come over against Cnidus, the wind not suffering us, we sailed under Crete, over against Salmone;"

Acts 27:13: "And when the south wind blew softly, supposing that they had obtained their purpose, loosing thence, they sailed close by Crete."

Acts 27:14: "But not long after there arose against it a tempestuous wind, called Euroclydon."

Acts 27:15: "And when the ship was caught, and could not bear up into the wind, we let her drive."

Acts 27:40: "And when they had taken up the anchors, they committed themselves unto the sea, and loosed the rudder bands, and hoised up the mainsail to the wind, and made toward shore."

Acts 28:13: "And from thence we fetched a compass, and came to Rhegium: and after one day the south wind blew, and we came the next day to Puteoli:"

Ephesians 4:14: "That we henceforth be no more children, tossed to and fro, and carried about with every wind of doctrine, by the sleight of men, and cunning craftiness, whereby they lie in wait to deceive;"

James 1:6: "But let him ask in faith, nothing wavering. For he that wavereth is like a wave of the sea driven with the wind and tossed."

Revelation 6:13: "And the stars of heaven fell unto the earth, even as a fig tree casteth her untimely

figs, when she is shaken of a mighty wind."

Revelation 7:1: "And after these things I saw four angels standing on the four corners of the earth, holding the four winds of the earth, that the wind should not blow on the earth, nor on the sea, nor on any tree."

## WINDING

Occurrences: 2

1 Kings 6:8: "The door for the middle chamber was in the right side of the house: and they went up with winding stairs into the middle chamber, and out of the middle into the third."

Ezekiel 41:7: "And there was an enlarging, and a winding about still upward to the side chambers: for the winding about of the house went still upward round about the house: therefore the breadth of the house was still upward, and so increased from the lowest chamber to the highest by the midst."

## WINDOW

Occurrences: 16

Genesis 6:16: "A window shalt thou make to the ark, and in a cubit shalt thou finish it above; and the door of the ark shalt thou set in the side thereof; with lower, second, and third stories shalt thou make it."

Genesis 8:6: "And it came to pass at the end of forty days, that Noah opened the window of the ark which he had made:"

Genesis 26:8: "And it came to pass, when he had been there a long time, that Abimelech king of the Philistines looked out at a window, and saw, and, behold, Isaac was sporting with Rebekah his wife."

Joshua 2:15: "Then she let them down by a cord through the window: for her house was upon the town wall, and she dwelt upon the wall."

Joshua 2:18: "Behold, when we come into the land, thou shalt bind this line of scarlet thread in the window which thou didst let us down by: and thou shalt bring thy father, and thy mother, and thy brethren, and all thy father's household, home unto thee."

Joshua 2:21: "And she said, According unto your words, so be it. And she sent them away, and they departed: and she bound the scarlet line in the window."

Judges 5:28: "The mother of Sisera looked out at a window, and cried through the lattice, Why is his chariot so long in coming? why tarry the wheels of his chariots?"

1 Samuel 19:12: "So Michal let David down through a window: and he went, and fled, and escaped."

2 Samuel 6:16: "And as the ark of the LORD came into the city of David, Michal Saul's daughter looked through a window, and saw king David leaping and dancing before the LORD; and she despised him in her heart."

2 Kings 9:30: "And when Jehu was come to Jezreel, Jezebel heard of it; and she painted her face, and tired her head, and looked out at a window."

2 Kings 9:32: "And he lifted up his face to the window, and said, Who is on my side? who? And there looked out to him two or three eunuchs."

2 Kings 13:17: "And he said, Open the window eastward. And he opened it. Then Elisha said, Shoot. And he shot. And he said, The arrow of the LORD's deliverance, and the arrow of deliverance from Syria: for thou shalt smite the Syrians in Aphek, till thou have consumed them."

1 Chronicles 15:29: "And it came to pass, as the ark of the covenant of the LORD came to the city of David, that Michal, the daughter of Saul looking out at a window saw king David dancing and playing: and she despised him in her heart."

Proverbs 7:6: "For at the window of my house I looked through my casement,"

Acts 20:9: "And there sat in a window a certain young man named Eutychus, being fallen into a



deep sleep: and as Paul was long preaching, he sunk down with sleep, and fell down from the third loft, and was taken up dead."

2 Corinthians 11:33: "And through a window in a basket was I let down by the wall, and escaped his hands."

## WINDOWS

Occurrences: 26

Genesis 7:11: "In the six hundredth year of Noah's life, in the second month, the seventeenth day of the month, the same day were all the fountains of the great deep broken up, and the windows of heaven were opened."

Genesis 8:2: "The fountains also of the deep and the windows of heaven were stopped, and the rain from heaven was restrained;"

1 Kings 6:4: "And for the house he made windows of narrow lights."

1 Kings 7:4: "And there were windows in three rows, and light was against light in three ranks."

1 Kings 7:5: "And all the doors and posts were square, with the windows: and light was against light in three ranks."

2 Kings 7:2: "Then a lord on whose hand the king leaned answered the man of God, and said, Behold, if the LORD would make windows in heaven, might this thing be? And he said, Behold, thou shalt see it with thine eyes, but shalt not eat thereof."

2 Kings 7:19: "And that lord answered the man of God, and said, Now, behold, if the LORD should make windows in heaven, might such a thing be? And he said, Behold, thou shalt see it with thine eyes, but shalt not eat thereof."

Ecclesiastes 12:3: "In the day when the keepers of the house shall tremble, and the strong men shall bow themselves, and the grinders cease because they are few, and those that look out of the windows be darkened,"

Song of Solomon 2:9: "My beloved is like a roe or a young hart: behold, he standeth behind our wall, he looketh forth at the windows, shewing himself through the lattice."

Isaiah 24:18: "And it shall come to pass, that he who fleeth from the noise of the fear shall fall into the pit; and he that cometh up out of the midst of the pit shall be taken in the snare: for the windows from on high are open, and the foundations of the earth do shake."

Isaiah 54:12: "And I will make thy windows of agates, and thy gates of carbuncles, and all thy borders of pleasant stones."

Isaiah 60:8: "Who are these that fly as a cloud, and as the doves to their windows?"

Jeremiah 9:21: "For death is come up into our windows, and is entered into our palaces, to cut off the children from without, and the young men from the streets."

Jeremiah 22:14: "That saith, I will build me a wide house and large chambers, and cutteth him out windows; and it is cieled with cedar, and painted with vermilion."

Ezekiel 40:16: "And there were narrow windows to the little chambers, and to their posts within the gate round about, and likewise to the arches: and windows were round about inward: and upon each post were palm trees."

Ezekiel 40:22: "And their windows, and their arches, and their palm trees, were after the measure of the gate that looketh toward the east; and they went up unto it by seven steps; and the arches thereof were before them."

Ezekiel 40:25: "And there were windows in it and in the arches thereof round about, like those windows: the length was fifty cubits, and the breadth five and twenty cubits."

Ezekiel 40:29: "And the little chambers thereof, and the posts thereof, and the arches thereof, according to these measures: and there were windows in it and in the arches thereof round about: it was fifty cubits long, and five and twenty cubits broad."

Ezekiel 40:33: "And the little chambers thereof, and the posts thereof, and the arches thereof, were according to these measures: and there were windows therein and in the arches thereof round about:

it was fifty cubits long, and five and twenty cubits broad."

Ezekiel 40:36: "The little chambers thereof, the posts thereof, and the arches thereof, and the windows to it round about: the length was fifty cubits, and the breadth five and twenty cubits."

Ezekiel 41:16: "The door posts, and the narrow windows, and the galleries round about on their three stories, over against the door, cieled with wood round about, and from the ground up to the windows, and the windows were covered;"

Ezekiel 41:26: "And there were narrow windows and palm trees on the one side and on the other side, on the sides of the porch, and upon the side chambers of the house, and thick planks."

Daniel 6:10: "Now when Daniel knew that the writing was signed, he went into his house; and his windows being open in his chamber toward Jerusalem, he kneeled upon his knees three times a day, and prayed, and gave thanks before his God, as he did aforetime."

Joel 2:9: "They shall run to and fro in the city; they shall run upon the wall, they shall climb up upon the houses; they shall enter in at the windows like a thief."

Zephaniah 2:14: "And flocks shall lie down in the midst of her, all the beasts of the nations: both the cormorant and the bittern shall lodge in the upper lintels of it; their voice shall sing in the windows; desolation shall be in the thresholds; for he shall uncover the cedar work."

Malachi 3:10: "Bring ye all the tithes into the storehouse, that there may be meat in mine house, and prove me now herewith, saith the LORD of hosts, if I will not open you the windows of heaven, and pour you out a blessing, that there shall not be room enough to receive it."

## WINDS

Occurrences: 22

Job 28:25: "To make the weight for the winds; and he weigheth the waters by measure."

Jeremiah 49:32: "And their camels shall be a booty, and the multitude of their cattle a spoil: and I will scatter into all winds them that are in the utmost corners; and I will bring their calamity from all sides thereof, saith the LORD."

Jeremiah 49:36: "And upon Elam will I bring the four winds from the four quarters of heaven, and will scatter them toward all those winds; and there shall be no nation whither the outcasts of Elam shall not come."

Ezekiel 5:10: "Therefore the fathers shall eat the sons in the midst of thee, and the sons shall eat their fathers; and I will execute judgments in thee, and the whole remnant of thee will I scatter into all the winds."

Ezekiel 5:12: "A third part of thee shall die with the pestilence, and with famine shall they be consumed in the midst of thee: and a third part shall fall by the sword round about thee; and I will scatter a third part into all the winds, and I will draw out a sword after them."

Ezekiel 17:21: "And all his fugitives with all his bands shall fall by the sword, and they that remain shall be scattered toward all winds: and ye shall know that I the LORD have spoken it."

Ezekiel 37:9: "Then said he unto me, Prophecy unto the wind, prophecy, son of man, and say to the wind, Thus saith the Lord GOD; Come from the four winds, O breath, and breathe upon these slain, that they may live."

Daniel 7:2: "Daniel spake and said, I saw in my vision by night, and, behold, the four winds of the heaven strove upon the great sea."

Daniel 8:8: "Therefore the he goat waxed very great: and when he was strong, the great horn was broken; and for it came up four notable ones toward the four winds of heaven."

Daniel 11:4: "And when he shall stand up, his kingdom shall be broken, and shall be divided toward the four winds of heaven; and not to his posterity, nor according to his dominion which he ruled: for his kingdom shall be plucked up, even for others beside those."

Zechariah 2:6: "Ho, ho, come forth, and flee from the land of the north, saith the LORD: for I have spread you abroad as the four winds of the heaven, saith the LORD."

Matthew 7:25: "And the rain descended, and the floods came, and the winds blew, and beat upon

that house; and it fell not: for it was founded upon a rock."

Matthew 7:27: "And the rain descended, and the floods came, and the winds blew, and beat upon that house; and it fell: and great was the fall of it."

Matthew 8:26: "And he saith unto them, Why are ye fearful, O ye of little faith? Then he arose, and rebuked the winds and the sea; and there was a great calm."

Matthew 8:27: "But the men marvelled, saying, What manner of man is this, that even the winds and the sea obey him!"

Matthew 24:31: "And he shall send his angels with a great sound of a trumpet, and they shall gather together his elect from the four winds, from one end of heaven to the other."

Mark 13:27: "And then shall he send his angels, and shall gather together his elect from the four winds, from the uttermost part of the earth to the uttermost part of heaven."

Luke 8:25: "And he said unto them, Where is your faith? And they being afraid wondered, saying one to another, What manner of man is this! for he commandeth even the winds and water, and they obey him."

Acts 27:4: "And when we had launched from thence, we sailed under Cyprus, because the winds were contrary."

James 3:4: "Behold also the ships, which though they be so great, and are driven of fierce winds, yet are they turned about with a very small helm, whithersoever the governor listeth."

Jude 1:12: "These are spots in your feasts of charity, when they feast with you, feeding themselves without fear: clouds they are without water, carried about of winds; trees whose fruit withereth, without fruit, twice dead, plucked up by the roots;"

Revelation 7:1: "And after these things I saw four angels standing on the four corners of the earth, holding the four winds of the earth, that the wind should not blow on the earth, nor on the sea, nor on any tree."

## **WINDY**

Occurrences: 1

Psalms 55:8: "I would hasten my escape from the windy storm and tempest."

## **WINE**

Occurrences: 212

Genesis 9:21: "And he drank of the wine, and was drunken; and he was uncovered within his tent."

Genesis 9:24: "And Noah awoke from his wine, and knew what his younger son had done unto him."

Genesis 14:18: "And Melchizedek king of Salem brought forth bread and wine: and he was the priest of the most high God."

Genesis 19:32: "Come, let us make our father drink wine, and we will lie with him, that we may preserve seed of our father."

Genesis 19:33: "And they made their father drink wine that night: and the firstborn went in, and lay with her father; and he perceived not when she lay down, nor when she arose."

Genesis 19:34: "And it came to pass on the morrow, that the firstborn said unto the younger, Behold, I lay yesternight with my father: let us make him drink wine this night also; and go thou in, and lie with him, that we may preserve seed of our father."

Genesis 19:35: "And they made their father drink wine that night also: and the younger arose, and lay with him; and he perceived not when she lay down, nor when she arose."

Genesis 27:25: "And he said, Bring it near to me, and I will eat of my son's venison, that my soul may bless thee. And he brought it near to him, and he did eat: and he brought him wine and he drank."

Genesis 27:28: "Therefore God give thee of the dew of heaven, and the fatness of the earth, and

plenty of corn and wine:"

Genesis 27:37: "And Isaac answered and said unto Esau, Behold, I have made him thy lord, and all his brethren have I given to him for servants; and with corn and wine have I sustained him: and what shall I do now unto thee, my son?"

Genesis 49:11: "Binding his foal unto the vine, and his ass's colt unto the choice vine; he washed his garments in wine, and his clothes in the blood of grapes:"

Genesis 49:12: "His eyes shall be red with wine, and his teeth white with milk."

Exodus 29:40: "And with the one lamb a tenth deal of flour mingled with the fourth part of an hin of beaten oil; and the fourth part of an hin of wine for a drink offering."

Leviticus 10:9: "Do not drink wine nor strong drink, thou, nor thy sons with thee, when ye go into the tabernacle of the congregation, lest ye die: it shall be a statute for ever throughout your generations:"

Leviticus 23:13: "And the meat offering thereof shall be two tenth deals of fine flour mingled with oil, an offering made by fire unto the LORD for a sweet savour: and the drink offering thereof shall be of wine, the fourth part of an hin."

Numbers 6:3: "He shall separate himself from wine and strong drink, and shall drink no vinegar of wine, or vinegar of strong drink, neither shall he drink any liquor of grapes, nor eat moist grapes, or dried."

Numbers 6:20: "And the priest shall wave them for a wave offering before the LORD: this is holy for the priest, with the wave breast and heave shoulder: and after that the Nazarite may drink wine."

Numbers 15:5: "And the fourth part of an hin of wine for a drink offering shalt thou prepare with the burnt offering or sacrifice, for one lamb."

Numbers 15:7: "And for a drink offering thou shalt offer the third part of an hin of wine, for a sweet savour unto the LORD."

Numbers 15:10: "And thou shalt bring for a drink offering half an hin of wine, for an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD."

Numbers 18:12: "All the best of the oil, and all the best of the wine, and of the wheat, the firstfruits of them which they shall offer unto the LORD, them have I given thee."

Numbers 28:7: "And the drink offering thereof shall be the fourth part of an hin for the one lamb: in the holy place shalt thou cause the strong wine to be poured unto the LORD for a drink offering."

Numbers 28:14: "And their drink offerings shall be half an hin of wine unto a bullock, and the third part of an hin unto a ram, and a fourth part of an hin unto a lamb: this is the burnt offering of every month throughout the months of the year."

Deuteronomy 7:13: "And he will love thee, and bless thee, and multiply thee: he will also bless the fruit of thy womb, and the fruit of thy land, thy corn, and thy wine, and thine oil, the increase of thy kine, and the flocks of thy sheep, in the land which he sware unto thy fathers to give thee."

Deuteronomy 11:14: "That I will give you the rain of your land in his due season, the first rain and the latter rain, that thou mayest gather in thy corn, and thy wine, and thine oil."

Deuteronomy 12:17: "Thou mayest not eat within thy gates the tithe of thy corn, or of thy wine, or of thy oil, or the firstlings of thy herds or of thy flock, nor any of thy vows which thou vowest, nor thy freewill offerings, or heave offering of thine hand:"

Deuteronomy 14:23: "And thou shalt eat before the LORD thy God, in the place which he shall choose to place his name there, the tithe of thy corn, of thy wine, and of thine oil, and the firstlings of thy herds and of thy flocks; that thou mayest learn to fear the LORD thy God always."

Deuteronomy 14:26: "And thou shalt bestow that money for whatsoever thy soul lusteth after, for oxen, or for sheep, or for wine, or for strong drink, or for whatsoever thy soul desireth: and thou shalt eat there before the LORD thy God, and thou shalt rejoice, thou, and thine household,"

Deuteronomy 16:13: "Thou shalt observe the feast of tabernacles seven days, after that thou hast gathered in thy corn and thy wine:"

Deuteronomy 18:4: "The firstfruit also of thy corn, of thy wine, and of thine oil, and the first of the

fleece of thy sheep, shalt thou give him."

Deuteronomy 28:39: "Thou shalt plant vineyards, and dress them, but shalt neither drink of the wine, nor gather the grapes; for the worms shall eat them."

Deuteronomy 28:51: "And he shall eat the fruit of thy cattle, and the fruit of thy land, until thou be destroyed: which also shall not leave thee either corn, wine, or oil, or the increase of thy kine, or flocks of thy sheep, until he have destroyed thee."

Deuteronomy 29:6: "Ye have not eaten bread, neither have ye drunk wine or strong drink: that ye might know that I am the LORD your God."

Deuteronomy 32:33: "Their wine is the poison of dragons, and the cruel venom of asps."

Deuteronomy 32:38: "Which did eat the fat of their sacrifices, and drank the wine of their drink offerings? let them rise up and help you, and be your protection."

Deuteronomy 33:28: "Israel then shall dwell in safety alone: the fountain of Jacob shall be upon a land of corn and wine; also his heavens shall drop down dew."

Joshua 9:4: "They did work wilily, and went and made as if they had been ambassadors, and took old sacks upon their asses, and wine bottles, old, and rent, and bound up;"

Joshua 9:13: "And these bottles of wine, which we filled, were new; and, behold, they be rent: and these our garments and our shoes are become old by reason of the very long journey."

Judges 9:13: "And the vine said unto them, Should I leave my wine, which cheereth God and man, and go to be promoted over the trees?"

Judges 13:4: "Now therefore beware, I pray thee, and drink not wine nor strong drink, and eat not any unclean thing:"

Judges 13:7: "But he said unto me, Behold, thou shalt conceive, and bear a son; and now drink no wine nor strong drink, neither eat any unclean thing: for the child shall be a Nazarite to God from the womb to the day of his death."

Judges 13:14: "She may not eat of any thing that cometh of the vine, neither let her drink wine or strong drink, nor eat any unclean thing: all that I commanded her let her observe."

Judges 19:19: "Yet there is both straw and provender for our asses; and there is bread and wine also for me, and for thy handmaid, and for the young man which is with thy servants: there is no want of any thing."

1 Samuel 1:14: "And Eli said unto her, How long wilt thou be drunken? put away thy wine from thee."

1 Samuel 1:15: "And Hannah answered and said, No, my lord, I am a woman of a sorrowful spirit: I have drunk neither wine nor strong drink, but have poured out my soul before the LORD."

1 Samuel 1:24: "And when she had weaned him, she took him up with her, with three bullocks, and one ephah of flour, and a bottle of wine, and brought him unto the house of the LORD in Shiloh: and the child was young."

1 Samuel 10:3: "Then shalt thou go on forward from thence, and thou shalt come to the plain of Tabor, and there shall meet thee three men going up to God to Bethel, one carrying three kids, and another carrying three loaves of bread, and another carrying a bottle of wine:"

1 Samuel 16:20: "And Jesse took an ass laden with bread, and a bottle of wine, and a kid, and sent them by David his son unto Saul."

1 Samuel 25:18: "Then Abigail made haste, and took two hundred loaves, and two bottles of wine, and five sheep ready dressed, and five measures of parched corn, and an hundred clusters of raisins, and two hundred cakes of figs, and laid them on asses."

1 Samuel 25:37: "But it came to pass in the morning, when the wine was gone out of Nabal, and his wife had told him these things, that his heart died within him, and he became as a stone."

2 Samuel 6:19: "And he dealt among all the people, even among the whole multitude of Israel, as well to the women as men, to every one a cake of bread, and a good piece of flesh, and a flagon of wine. So all the people departed every one to his house."

2 Samuel 13:28: "Now Absalom had commanded his servants, saying, Mark ye now when Amnon's

heart is merry with wine, and when I say unto you, Smite Amnon; then kill him, fear not: have not I commanded you? be courageous, and be valiant."

2 Samuel 16:1: "And when David was a little past the top of the hill, behold, Ziba the servant of Mephibosheth met him, with a couple of asses saddled, and upon them two hundred loaves of bread, and an hundred bunches of raisins, and an hundred of summer fruits, and a bottle of wine."

2 Samuel 16:2: "And the king said unto Ziba, What meanest thou by these? And Ziba said, The asses be for the king's household to ride on; and the bread and summer fruit for the young men to eat; and the wine, that such as be faint in the wilderness may drink."

2 Kings 18:32: "Until I come and take you away to a land like your own land, a land of corn and wine, a land of bread and vineyards, a land of oil olive and of honey, that ye may live, and not die: and hearken not unto Hezekiah, when he persuadeth you, saying, The LORD will deliver us."

1 Chronicles 9:29: "Some of them also were appointed to oversee the vessels, and all the instruments of the sanctuary, and the fine flour, and the wine, and the oil, and the frankincense, and the spices."

1 Chronicles 12:40: "Moreover they that were nigh them, even unto Issachar and Zebulun and Naphtali, brought bread on asses, and on camels, and on mules, and on oxen, and meat, meal, cakes of figs, and bunches of raisins, and wine, and oil, and oxen, and sheep abundantly: for there was joy in Israel."

1 Chronicles 16:3: "And he dealt to every one of Israel, both man and woman, to every one a loaf of bread, and a good piece of flesh, and a flagon of wine."

1 Chronicles 27:27: "And over the vineyards was Shimei the Ramathite: over the increase of the vineyards for the wine cellars was Zabdi the Shiphmite:"

2 Chronicles 2:10: "And, behold, I will give to thy servants, the hewers that cut timber, twenty thousand measures of beaten wheat, and twenty thousand measures of barley, and twenty thousand baths of wine, and twenty thousand baths of oil."

2 Chronicles 2:15: "Now therefore the wheat, and the barley, the oil, and the wine, which my lord hath spoken of, let him send unto his servants:"

2 Chronicles 11:11: "And he fortified the strong holds, and put captains in them, and store of victual, and of oil and wine."

2 Chronicles 31:5: "And as soon as the commandment came abroad, the children of Israel brought in abundance the firstfruits of corn, wine, and oil, and honey, and of all the increase of the field; and the tithe of all things brought they in abundantly."

2 Chronicles 32:28: "Storehouses also for the increase of corn, and wine, and oil; and stalls for all manner of beasts, and cotes for flocks."

Ezra 6:9: "And that which they have need of, both young bullocks, and rams, and lambs, for the burnt offerings of the God of heaven, wheat, salt, wine, and oil, according to the appointment of the priests which are at Jerusalem, let it be given them day by day without fail:"

Ezra 7:22: "Unto an hundred talents of silver, and to an hundred measures of wheat, and to an hundred baths of wine, and to an hundred baths of oil, and salt without prescribing how much."

Nehemiah 2:1: "And it came to pass in the month Nisan, in the twentieth year of Artaxerxes the king, that wine was before him: and I took up the wine, and gave it unto the king. Now I had not been beforetime sad in his presence."

Nehemiah 5:11: "Restore, I pray you, to them, even this day, their lands, their vineyards, their oliveyards, and their houses, also the hundredth part of the money, and of the corn, the wine, and the oil, that ye exact of them."

Nehemiah 5:15: "But the former governors that had been before me were chargeable unto the people, and had taken of them bread and wine, beside forty shekels of silver; yea, even their servants bare rule over the people: but so did not I, because of the fear of God."

Nehemiah 5:18: "Now that which was prepared for me daily was one ox and six choice sheep; also fowls were prepared for me, and once in ten days store of all sorts of wine: yet for all this required

not I the bread of the governor, because the bondage was heavy upon this people."

Nehemiah 10:37: "And that we should bring the firstfruits of our dough, and our offerings, and the fruit of all manner of trees, of wine and of oil, unto the priests, to the chambers of the house of our God; and the tithes of our ground unto the Levites, that the same Levites might have the tithes in all the cities of our tillage."

Nehemiah 10:39: "For the children of Israel and the children of Levi shall bring the offering of the corn, of the new wine, and the oil, unto the chambers, where are the vessels of the sanctuary, and the priests that minister, and the porters, and the singers: and we will not forsake the house of our God."

Nehemiah 13:5: "And he had prepared for him a great chamber, where aforetime they laid the meat offerings, the frankincense, and the vessels, and the tithes of the corn, the new wine, and the oil, which was commanded to be given to the Levites, and the singers, and the porters; and the offerings of the priests."

Nehemiah 13:12: "Then brought all Judah the tithe of the corn and the new wine and the oil unto the treasuries."

Nehemiah 13:15: "In those days saw I in Judah some treading wine presses on the sabbath, and bringing in sheaves, and lading asses; as also wine, grapes, and figs, and all manner of burdens, which they brought into Jerusalem on the sabbath day: and I testified against them in the day wherein they sold victuals."

Esther 1:7: "And they gave them drink in vessels of gold, (the vessels being diverse one from another,) and royal wine in abundance, according to the state of the king."

Esther 1:10: "On the seventh day, when the heart of the king was merry with wine, he commanded Mehuman, Biztha, Harbona, Bigtha, and Abagtha, Zethar, and Carcas, the seven chamberlains that served in the presence of Ahasuerus the king,"

Esther 5:6: "And the king said unto Esther at the banquet of wine, What is thy petition? and it shall be granted thee: and what is thy request? even to the half of the kingdom it shall be performed."

Esther 7:2: "And the king said again unto Esther on the second day at the banquet of wine, What is thy petition, queen Esther? and it shall be granted thee: and what is thy request? and it shall be performed, even to the half of the kingdom."

Esther 7:7: "And the king arising from the banquet of wine in his wrath went into the palace garden: and Haman stood up to make request for his life to Esther the queen; for he saw that there was evil determined against him by the king."

Esther 7:8: "Then the king returned out of the palace garden into the place of the banquet of wine; and Haman was fallen upon the bed whereon Esther was. Then said the king, Will he force the queen also before me in the house? As the word went out of king's mouth, they covered Haman's face."

Job 1:13: "And there was a day when his sons and his daughters were eating and drinking wine in their eldest brother's house:"

Job 1:18: "While he was yet speaking, there came also another, and said, Thy sons and thy daughters were eating and drinking wine in their eldest brother's house:"

Job 32:19: "Behold, my belly is as wine which hath no vent; it is ready to burst like new bottles."

Psalms 4:7: "Thou hast put gladness in my heart, more than in the time that their corn and their wine increased."

Psalms 60:3: "Thou hast shewed thy people hard things: thou hast made us to drink the wine of astonishment."

Psalms 75:8: "For in the hand of the LORD there is a cup, and the wine is red; it is full of mixture; and he poureth out of the same: but the dregs thereof, all the wicked of the earth shall wring them out, and drink them."

Psalms 78:65: "Then the LORD awaked as one out of sleep, and like a mighty man that shouteth by reason of wine."

Psalms 104:15: "And wine that maketh glad the heart of man, and oil to make his face to shine, and bread which strengtheneth man's heart."

Proverbs 3:10: "So shall thy barns be filled with plenty, and thy presses shall burst out with new wine."

Proverbs 4:17: "For they eat the bread of wickedness, and drink the wine of violence."

Proverbs 9:2: "She hath killed her beasts; she hath mingled her wine; she hath also furnished her table."

Proverbs 9:5: "Come, eat of my bread, and drink of the wine which I have mingled."

Proverbs 20:1: "Wine is a mocker, strong drink is raging: and whosoever is deceived thereby is not wise."

Proverbs 21:17: "He that loveth pleasure shall be a poor man: he that loveth wine and oil shall not be rich."

Proverbs 23:30: "They that tarry long at the wine; they that go to seek mixed wine."

Proverbs 23:31: "Look not thou upon the wine when it is red, when it giveth his colour in the cup, when it moveth itself aright."

Proverbs 31:4: "It is not for kings, O Lemuel, it is not for kings to drink wine; nor for princes strong drink:"

Proverbs 31:6: "Give strong drink unto him that is ready to perish, and wine unto those that be of heavy hearts."

Ecclesiastes 2:3: "I sought in mine heart to give myself unto wine, yet acquainting mine heart with wisdom; and to lay hold on folly, till I might see what was that good for the sons of men, which they should do under the heaven all the days of their life."

Ecclesiastes 9:7: "Go thy way, eat thy bread with joy, and drink thy wine with a merry heart; for God now accepteth thy works."

Ecclesiastes 10:19: "A feast is made for laughter, and wine maketh merry: but money answereth all things."

Song of Solomon 1:2: "Let him kiss me with the kisses of his mouth: for thy love is better than wine."

Song of Solomon 1:4: "Draw me, we will run after thee: the king hath brought me into his chambers: we will be glad and rejoice in thee, we will remember thy love more than wine: the upright love thee."

Song of Solomon 4:10: "How fair is thy love, my sister, my spouse! how much better is thy love than wine! and the smell of thine ointments than all spices!"

Song of Solomon 5:1: "I am come into my garden, my sister, my spouse: I have gathered my myrrh with my spice; I have eaten my honeycomb with my honey; I have drunk my wine with my milk: eat, O friends; drink, yea, drink abundantly, O beloved."

Song of Solomon 7:9: "And the roof of thy mouth like the best wine for my beloved, that goeth down sweetly, causing the lips of those that are asleep to speak."

Song of Solomon 8:2: "I would lead thee, and bring thee into my mother's house, who would instruct me: I would cause thee to drink of spiced wine of the juice of my pomegranate."

Isaiah 1:22: "Thy silver is become dross, thy wine mixed with water:"

Isaiah 5:11: "Woe unto them that rise up early in the morning, that they may follow strong drink; that continue until night, till wine inflame them!"

Isaiah 5:12: "And the harp, and the viol, the tabret, and pipe, and wine, are in their feasts: but they regard not the work of the LORD, neither consider the operation of his hands."

Isaiah 5:22: "Woe unto them that are mighty to drink wine, and men of strength to mingle strong drink:"

Isaiah 16:10: "And gladness is taken away, and joy out of the plentiful field; and in the vineyards there shall be no singing, neither shall there be shouting: the treaders shall tread out no wine in their presses; I have made their vintage shouting to cease."



Isaiah 22:13: "And behold joy and gladness, slaying oxen, and killing sheep, eating flesh, and drinking wine: let us eat and drink; for to morrow we shall die."

Isaiah 24:7: "The new wine mourneth, the vine languisheth, all the merryhearted do sigh."

Isaiah 24:9: "They shall not drink wine with a song; strong drink shall be bitter to them that drink it."

Isaiah 24:11: "There is a crying for wine in the streets; all joy is darkened, the mirth of the land is gone."

Isaiah 27:2: "In that day sing ye unto her, A vineyard of red wine."

Isaiah 28:1: "Woe to the crown of pride, to the drunkards of Ephraim, whose glorious beauty is a fading flower, which are on the head of the fat valleys of them that are overcome with wine!"

Isaiah 28:7: "But they also have erred through wine, and through strong drink are out of the way; the priest and the prophet have erred through strong drink, they are swallowed up of wine, they are out of the way through strong drink; they err in vision, they stumble in judgment."

Isaiah 29:9: "Stay yourselves, and wonder; cry ye out, and cry: they are drunken, but not with wine; they stagger, but not with strong drink."

Isaiah 36:17: "Until I come and take you away to a land like your own land, a land of corn and wine, a land of bread and vineyards."

Isaiah 49:26: "And I will feed them that oppress thee with their own flesh; and they shall be drunken with their own blood, as with sweet wine: and all flesh shall know that I the LORD am thy Saviour and thy Redeemer, the mighty One of Jacob."

Isaiah 51:21: "Therefore hear now this, thou afflicted, and drunken, but not with wine:"

Isaiah 55:1: "Ho, every one that thirsteth, come ye to the waters, and he that hath no money; come ye, buy, and eat; yea, come, buy wine and milk without money and without price."

Isaiah 56:12: "Come ye, say they, I will fetch wine, and we will fill ourselves with strong drink; and to morrow shall be as this day, and much more abundant."

Isaiah 62:8: "The LORD hath sworn by his right hand, and by the arm of his strength, Surely I will no more give thy corn to be meat for thine enemies; and the sons of the stranger shall not drink thy wine, for the which thou hast laboured:"

Isaiah 65:8: "Thus saith the LORD, As the new wine is found in the cluster, and one saith, Destroy it not; for a blessing is in it: so will I do for my servants' sakes, that I may not destroy them all."

Jeremiah 13:12: "Therefore thou shalt speak unto them this word; Thus saith the LORD God of Israel, Every bottle shall be filled with wine: and they shall say unto thee, Do we not certainly know that every bottle shall be filled with wine?"

Jeremiah 23:9: "Mine heart within me is broken because of the prophets; all my bones shake; I am like a drunken man, and like a man whom wine hath overcome, because of the LORD, and because of the words of his holiness."

Jeremiah 25:15: "For thus saith the LORD God of Israel unto me; Take the wine cup of this fury at my hand, and cause all the nations, to whom I send thee, to drink it."

Jeremiah 31:12: "Therefore they shall come and sing in the height of Zion, and shall flow together to the goodness of the LORD, for wheat, and for wine, and for oil, and for the young of the flock and of the herd: and their soul shall be as a watered garden; and they shall not sorrow any more at all."

Jeremiah 35:2: "Go unto the house of the Rechabites, and speak unto them, and bring them into the house of the LORD, into one of the chambers, and give them wine to drink."

Jeremiah 35:5: "And I set before the sons of the house of the Rechabites pots full of wine, and cups, and I said unto them, Drink ye wine."

Jeremiah 35:6: "But they said, We will drink no wine: for Jonadab the son of Rechab our father commanded us, saying, Ye shall drink no wine, neither ye, nor your sons for ever:"

Jeremiah 35:8: "Thus have we obeyed the voice of Jonadab the son of Rechab our father in all that he hath charged us, to drink no wine all our days, we, our wives, our sons, nor our daughters;"

Jeremiah 35:14: "The words of Jonadab the son of Rechab, that he commanded his sons not to drink wine, are performed; for unto this day they drink none, but obey their father's commandment: notwithstanding I have spoken unto you, rising early and speaking; but ye hearkened not unto me."

Jeremiah 40:10: "As for me, behold, I will dwell at Mizpah, to serve the Chaldeans, which will come unto us: but ye, gather ye wine, and summer fruits, and oil, and put them in your vessels, and dwell in your cities that ye have taken."

Jeremiah 40:12: "Even all the Jews returned out of all places whither they were driven, and came to the land of Judah, to Gedaliah, unto Mizpah, and gathered wine and summer fruits very much."

Jeremiah 48:33: "And joy and gladness is taken from the plentiful field, and from the land of Moab, and I have caused wine to fail from the winepresses: none shall tread with shouting; their shouting shall be no shouting."

Jeremiah 51:7: "Babylon hath been a golden cup in the LORD's hand, that made all the earth drunken: the nations have drunken of her wine; therefore the nations are mad."

Lamentations 2:12: "They say to their mothers, Where is corn and wine? when they swooned as the wounded in the streets of the city, when their soul was poured out into their mothers' bosom."

Ezekiel 27:18: "Damascus was thy merchant in the multitude of the wares of thy making, for the multitude of all riches; in the wine of Helbon, and white wool."

Ezekiel 44:21: "Neither shall any priest drink wine, when they enter into the inner court."

Daniel 1:5: "And the king appointed them a daily provision of the king's meat, and of the wine which he drank: so nourishing them three years, that at the end thereof they might stand before the king."

Daniel 1:8: "But Daniel purposed in his heart that he would not defile himself with the portion of the king's meat, nor with the wine which he drank: therefore he requested of the prince of the eunuchs that he might not defile himself."

Daniel 1:16: "Thus Melzar took away the portion of their meat, and the wine that they should drink; and gave them pulse."

Daniel 5:1: "Belshazzar the king made a great feast to a thousand of his lords, and drank wine before the thousand."

Daniel 5:2: "Belshazzar, whiles he tasted the wine, commanded to bring the golden and silver vessels which his father Nebuchadnezzar had taken out of the temple which was in Jerusalem; that the king, and his princes, his wives, and his concubines, might drink therein."

Daniel 5:4: "They drank wine, and praised the gods of gold, and of silver, of brass, of iron, of wood, and of stone."

Daniel 5:23: "But hast lifted up thyself against the Lord of heaven; and they have brought the vessels of his house before thee, and thou, and thy lords, thy wives, and thy concubines, have drunk wine in them; and thou hast praised the gods of silver, and gold, of brass, iron, wood, and stone, which see not, nor hear, nor know: and the God in whose hand thy breath is, and whose are all thy ways, hast thou not glorified?"

Daniel 10:3: "I ate no pleasant bread, neither came flesh nor wine in my mouth, neither did I anoint myself at all, till three whole weeks were fulfilled."

Hosea 2:8: "For she did not know that I gave her corn, and wine, and oil, and multiplied her silver and gold, which they prepared for Baal."

Hosea 2:9: "Therefore will I return, and take away my corn in the time thereof, and my wine in the season thereof, and will recover my wool and my flax given to cover her nakedness."

Hosea 2:22: "And the earth shall hear the corn, and the wine, and the oil; and they shall hear Jezreel."

Hosea 3:1: "Then said the LORD unto me, Go yet, love a woman beloved of her friend, yet an adulteress, according to the love of the LORD toward the children of Israel, who look to other gods, and love flagons of wine."

Hosea 4:11: "Whoredom and wine and new wine take away the heart."

Hosea 7:5: "In the day of our king the princes have made him sick with bottles of wine; he stretched out his hand with scorers."

Hosea 7:14: "And they have not cried unto me with their heart, when they howled upon their beds: they assemble themselves for corn and wine, and they rebel against me."

Hosea 9:2: "The floor and the winepress shall not feed them, and the new wine shall fail in her."

Hosea 9:4: "They shall not offer wine offerings to the LORD, neither shall they be pleasing unto him: their sacrifices shall be unto them as the bread of mourners; all that eat thereof shall be polluted: for their bread for their soul shall not come into the house of the LORD."

Hosea 14:7: "They that dwell under his shadow shall return; they shall revive as the corn, and grow as the vine: the scent thereof shall be as the wine of Lebanon."

Joel 1:5: "Awake, ye drunkards, and weep; and howl, all ye drinkers of wine, because of the new wine; for it is cut off from your mouth."

Joel 1:10: "The field is wasted, the land mourneth; for the corn is wasted: the new wine is dried up, the oil languisheth."

Joel 2:19: "Yea, the LORD will answer and say unto his people, Behold, I will send you corn, and wine, and oil, and ye shall be satisfied therewith: and I will no more make you a reproach among the heathen:"

Joel 2:24: "And the floors shall be full of wheat, and the vats shall overflow with wine and oil."

Joel 3:3: "And they have cast lots for my people; and have given a boy for an harlot, and sold a girl for wine, that they might drink."

Joel 3:18: "And it shall come to pass in that day, that the mountains shall drop down new wine, and the hills shall flow with milk, and all the rivers of Judah shall flow with waters, and a fountain shall come forth out of the house of the LORD, and shall water the valley of Shittim."

Amos 2:8: "And they lay themselves down upon clothes laid to pledge by every altar, and they drink the wine of the condemned in the house of their god."

Amos 2:12: "But ye gave the Nazarites wine to drink; and commanded the prophets, saying, Prophecy not."

Amos 5:11: "Forasmuch therefore as your treading is upon the poor, and ye take from him burdens of wheat: ye have built houses of hewn stone, but ye shall not dwell in them; ye have planted pleasant vineyards, but ye shall not drink wine of them."

Amos 6:6: "That drink wine in bowls, and anoint themselves with the chief ointments: but they are not grieved for the affliction of Joseph."

Amos 9:13: "Behold, the days come, saith the LORD, that the plowman shall overtake the reaper, and the treader of grapes him that soweth seed; and the mountains shall drop sweet wine, and all the hills shall melt."

Amos 9:14: "And I will bring again the captivity of my people of Israel, and they shall build the waste cities, and inhabit them; and they shall plant vineyards, and drink the wine thereof; they shall also make gardens, and eat the fruit of them."

Micah 2:11: "If a man walking in the spirit and falsehood do lie, saying, I will prophesy unto thee of wine and of strong drink; he shall even be the prophet of this people."

Micah 6:15: "Thou shalt sow, but thou shalt not reap; thou shalt tread the olives, but thou shalt not anoint thee with oil; and sweet wine, but shalt not drink wine."

Habakkuk 2:5: "Yea also, because he transgresseth by wine, he is a proud man, neither keepeth at home, who enlargeth his desire as hell, and is as death, and cannot be satisfied, but gathereth unto him all nations, and heapeth unto him all people:"

Zephaniah 1:13: "Therefore their goods shall become a booty, and their houses a desolation: they shall also build houses, but not inhabit them; and they shall plant vineyards, but not drink the wine thereof."

Haggai 1:11: "And I called for a drought upon the land, and upon the mountains, and upon the corn, and upon the new wine, and upon the oil, and upon that which the ground bringeth forth, and upon

men, and upon cattle, and upon all the labour of the hands."

Haggai 2:12: "If one bear holy flesh in the skirt of his garment, and with his skirt do touch bread, or pottage, or wine, or oil, or any meat, shall it be holy? And the priests answered and said, No."

Zechariah 9:15: "The LORD of hosts shall defend them; and they shall devour, and subdue with sling stones; and they shall drink, and make a noise as through wine; and they shall be filled like bowls, and as the corners of the altar."

Zechariah 9:17: "For how great is his goodness, and how great is his beauty! corn shall make the young men cheerful, and new wine the maids."

Zechariah 10:7: "And they of Ephraim shall be like a mighty man, and their heart shall rejoice as through wine: yea, their children shall see it, and be glad; their heart shall rejoice in the LORD."

Matthew 9:17: "Neither do men put new wine into old bottles: else the bottles break, and the wine runneth out, and the bottles perish: but they put new wine into new bottles, and both are preserved."

Mark 2:22: "And no man putteth new wine into old bottles: else the new wine doth burst the bottles, and the wine is spilled, and the bottles will be marred: but new wine must be put into new bottles."

Mark 15:23: "And they gave him to drink wine mingled with myrrh: but he received it not."

Luke 1:15: "For he shall be great in the sight of the Lord, and shall drink neither wine nor strong drink; and he shall be filled with the Holy Ghost, even from his mother's womb."

Luke 5:37: "And no man putteth new wine into old bottles; else the new wine will burst the bottles, and be spilled, and the bottles shall perish."

Luke 5:38: "But new wine must be put into new bottles; and both are preserved."

Luke 5:39: "No man also having drunk old wine straightway desireth new: for he saith, The old is better."

Luke 7:33: "For John the Baptist came neither eating bread nor drinking wine; and ye say, He hath a devil."

Luke 10:34: "And went to him, and bound up his wounds, pouring in oil and wine, and set him on his own beast, and brought him to an inn, and took care of him."

John 2:3: "And when they wanted wine, the mother of Jesus saith unto him, They have no wine."

John 2:9: "When the ruler of the feast had tasted the water that was made wine, and knew not whence it was: (but the servants which drew the water knew;) the governor of the feast called the bridegroom,"

John 2:10: "And saith unto him, Every man at the beginning doth set forth good wine; and when men have well drunk, then that which is worse: but thou hast kept the good wine until now."

John 4:46: "So Jesus came again into Cana of Galilee, where he made the water wine. And there was a certain nobleman, whose son was sick at Capernaum."

Acts 2:13: "Others mocking said, These men are full of new wine."

Romans 14:21: "It is good neither to eat flesh, nor to drink wine, nor any thing whereby thy brother stumbleth, or is offended, or is made weak."

Ephesians 5:18: "And be not drunk with wine, wherein is excess; but be filled with the Spirit;"

1 Timothy 3:3: "Not given to wine, no striker, not greedy of filthy lucre; but patient, not a brawler, not covetous;"

1 Timothy 3:8: "Likewise must the deacons be grave, not doubletongued, not given to much wine, not greedy of filthy lucre;"

1 Timothy 5:23: "Drink no longer water, but use a little wine for thy stomach's sake and thine often infirmities."

Titus 1:7: "For a bishop must be blameless, as the steward of God; not selfwilled, not soon angry, not given to wine, no striker, not given to filthy lucre;"

Titus 2:3: "The aged women likewise, that they be in behaviour as becometh holiness, not false accusers, not given to much wine, teachers of good things;"

1 Peter 4:3: "For the time past of our life may suffice us to have wrought the will of the Gentiles, when we walked in lasciviousness, lusts, excess of wine, revellings, banquetings, and abominable

idolatries:"

Revelation 6:6: "And I heard a voice in the midst of the four beasts say, A measure of wheat for a penny, and three measures of barley for a penny; and see thou hurt not the oil and the wine."

Revelation 14:8: "And there followed another angel, saying, Babylon is fallen, is fallen, that great city, because she made all nations drink of the wine of the wrath of her fornication."

Revelation 14:10: "The same shall drink of the wine of the wrath of God, which is poured out without mixture into the cup of his indignation; and he shall be tormented with fire and brimstone in the presence of the holy angels, and in the presence of the Lamb:"

Revelation 16:19: "And the great city was divided into three parts, and the cities of the nations fell: and great Babylon came in remembrance before God, to give unto her the cup of the wine of the fierceness of his wrath."

Revelation 17:2: "With whom the kings of the earth have committed fornication, and the inhabitants of the earth have been made drunk with the wine of her fornication."

Revelation 18:3: "For all nations have drunk of the wine of the wrath of her fornication, and the kings of the earth have committed fornication with her, and the merchants of the earth are waxed rich through the abundance of her delicacies."

Revelation 18:13: "And cinnamon, and odours, and ointments, and frankincense, and wine, and oil, and fine flour, and wheat, and beasts, and sheep, and horses, and chariots, and slaves, and souls of men."

## **WINEBIBBER**

Occurrences: 2

Matthew 11:19: "The Son of man came eating and drinking, and they say, Behold a man gluttonous, and a winebibber, a friend of publicans and sinners. But wisdom is justified of her children."

Luke 7:34: "The Son of man is come eating and drinking; and ye say, Behold a gluttonous man, and a winebibber, a friend of publicans and sinners!"

## **WINEBIBBERS**

Occurrences: 1

Proverbs 23:20: "Be not among winebibbers; among riotous eaters of flesh:"

## **WINEFAT**

Occurrences: 2

Isaiah 63:2: "Wherefore art thou red in thine apparel, and thy garments like him that treadeth in the winefat?"

Mark 12:1: "And he began to speak unto them by parables. A certain man planted a vineyard, and set an hedge about it, and digged a place for the winefat, and built a tower, and let it out to husbandmen, and went into a far country."

## **WINEPRESS**

Occurrences: 14

Numbers 18:27: "And this your heave offering shall be reckoned unto you, as though it were the corn of the threshingfloor, and as the fulness of the winepress."

Numbers 18:30: "Therefore thou shalt say unto them, When ye have heaved the best thereof from it, then it shall be counted unto the Levites as the increase of the threshingfloor, and as the increase of the winepress."

Deuteronomy 15:14: "Thou shalt furnish him liberally out of thy flock, and out of thy floor, and out of thy winepress: of that wherewith the LORD thy God hath blessed thee thou shalt give unto him."

Judges 6:11: "And there came an angel of the LORD, and sat under an oak which was in Ophrah, that pertained unto Joash the Abiezrite: and his son Gideon threshed wheat by the winepress, to hide it from the Midianites."

Judges 7:25: "And they took two princes of the Midianites, Oreb and Zeeb; and they slew Oreb upon the rock Oreb, and Zeeb they slew at the winepress of Zeeb, and pursued Midian, and brought the heads of Oreb and Zeeb to Gideon on the other side Jordan."

2 Kings 6:27: "And he said, If the LORD do not help thee, whence shall I help thee? out of the barnfloor, or out of the winepress?"

Isaiah 5:2: "And he fenced it, and gathered out the stones thereof, and planted it with the choicest vine, and built a tower in the midst of it, and also made a winepress therein: and he looked that it should bring forth grapes, and it brought forth wild grapes."

Isaiah 63:3: "I have trodden the winepress alone; and of the people there was none with me: for I will tread them in mine anger, and trample them in my fury; and their blood shall be sprinkled upon my garments, and I will stain all my raiment."

Lamentations 1:15: "The LORD hath trodden under foot all my mighty men in the midst of me: he hath called an assembly against me to crush my young men: the LORD hath trodden the virgin, the daughter of Judah, as in a winepress."

Hosea 9:2: "The floor and the winepress shall not feed them, and the new wine shall fail in her."

Matthew 21:33: "Hear another parable: There was a certain householder, which planted a vineyard, and hedged it round about, and digged a winepress in it, and built a tower, and let it out to husbandmen, and went into a far country:"

Revelation 14:19: "And the angel thrust in his sickle into the earth, and gathered the vine of the earth, and cast it into the great winepress of the wrath of God."

Revelation 14:20: "And the winepress was trodden without the city, and blood came out of the winepress, even unto the horse bridles, by the space of a thousand and six hundred furlongs."

Revelation 19:15: "And out of his mouth goeth a sharp sword, that with it he should smite the nations: and he shall rule them with a rod of iron: and he treadeth the winepress of the fierceness and wrath of Almighty God."

## **WINEPRESSES**

Occurrences: 3

Job 24:11: "Which make oil within their walls, and tread their winepresses, and suffer thirst."

Jeremiah 48:33: "And joy and gladness is taken from the plentiful field, and from the land of Moab, and I have caused wine to fail from the winepresses: none shall tread with shouting; their shouting shall be no shouting."

Zechariah 14:10: "All the land shall be turned as a plain from Geba to Rimmon south of Jerusalem: and it shall be lifted up, and inhabited in her place, from Benjamin's gate unto the place of the first gate, unto the corner gate, and from the tower of Hananeel unto the king's winepresses."

## **WINES**

Occurrences: 1

Isaiah 25:6: "And in this mountain shall the LORD of hosts make unto all people a feast of fat things, a feast of wines on the lees, of fat things full of marrow, of wines on the lees well refined."

## **WING**

Occurrences: 6

1 Kings 6:24: "And five cubits was the one wing of the cherub, and five cubits the other wing of the cherub: from the uttermost part of the one wing unto the uttermost part of the other were ten cubits."

1 Kings 6:27: "And he set the cherubims within the inner house: and they stretched forth the wings of the cherubims, so that the wing of the one touched the one wall, and the wing of the other cherub touched the other wall; and their wings touched one another in the midst of the house."

2 Chronicles 3:11: "And the wings of the cherubims were twenty cubits long: one wing of the one cherub was five cubits, reaching to the wall of the house: and the other wing was likewise five cubits, reaching to the wing of the other cherub."

2 Chronicles 3:12: "And one wing of the other cherub was five cubits, reaching to the wall of the house: and the other wing was five cubits also, joining to the wing of the other cherub."

Isaiah 10:14: "And my hand hath found as a nest the riches of the people: and as one gathereth eggs that are left, have I gathered all the earth; and there was none that moved the wing, or opened the mouth, or peeped."

Ezekiel 17:23: "In the mountain of the height of Israel will I plant it: and it shall bring forth boughs, and bear fruit, and be a goodly cedar: and under it shall dwell all fowl of every wing; in the shadow of the branches thereof shall they dwell."

## WINGED

Occurrences: 2

Genesis 1:21: "And God created great whales, and every living creature that moveth, which the waters brought forth abundantly, after their kind, and every winged fowl after his kind: and God saw that it was good."

Deuteronomy 4:17: "The likeness of any beast that is on the earth, the likeness of any winged fowl that flieth in the air,"

## WINGS

Occurrences: 64

Exodus 19:4: "Ye have seen what I did unto the Egyptians, and how I bare you on eagles' wings, and brought you unto myself."

Exodus 25:20: "And the cherubims shall stretch forth their wings on high, covering the mercy seat with their wings, and their faces shall look one to another; toward the mercy seat shall the faces of the cherubims be."

Exodus 37:9: "And the cherubims spread out their wings on high, and covered with their wings over the mercy seat, with their faces one to another; even to the mercy seatward were the faces of the cherubims."

Leviticus 1:17: "And he shall cleave it with the wings thereof, but shall not divide it asunder: and the priest shall burn it upon the altar, upon the wood that is upon the fire: it is a burnt sacrifice, an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD."

Deuteronomy 32:11: "As an eagle stirreth up her nest, fluttereth over her young, spreadeth abroad her wings, taketh them, beareth them on her wings:"

Ruth 2:12: "The LORD recompense thy work, and a full reward be given thee of the LORD God of Israel, under whose wings thou art come to trust."

2 Samuel 22:11: "And he rode upon a cherub, and did fly: and he was seen upon the wings of the wind."

1 Kings 6:27: "And he set the cherubims within the inner house: and they stretched forth the wings of the cherubims, so that the wing of the one touched the one wall, and the wing of the other cherub touched the other wall; and their wings touched one another in the midst of the house."

1 Kings 8:6: "And the priests brought in the ark of the covenant of the LORD unto his place, into the oracle of the house, to the most holy place, even under the wings of the cherubims."

1 Kings 8:7: "For the cherubims spread forth their two wings over the place of the ark, and the cherubims covered the ark and the staves thereof above."

1 Chronicles 28:18: "And for the altar of incense refined gold by weight; and gold for the pattern of the chariot of the cherubims, that spread out their wings, and covered the ark of the covenant of the LORD."

2 Chronicles 3:11: "And the wings of the cherubims were twenty cubits long: one wing of the one cherub was five cubits, reaching to the wall of the house: and the other wing was likewise five cubits, reaching to the wing of the other cherub."

2 Chronicles 3:13: "The wings of these cherubims spread themselves forth twenty cubits: and they stood on their feet, and their faces were inward."

2 Chronicles 5:7: "And the priests brought in the ark of the covenant of the LORD unto his place, to the oracle of the house, into the most holy place, even under the wings of the cherubims:"

2 Chronicles 5:8: "For the cherubims spread forth their wings over the place of the ark, and the cherubims covered the ark and the staves thereof above."

Job 39:13: "Gavest thou the goodly wings unto the peacocks? or wings and feathers unto the ostrich?"

Job 39:26: "Doth the hawk fly by thy wisdom, and stretch her wings toward the south?"

Psalms 17:8: "Keep me as the apple of the eye, hide me under the shadow of thy wings,"

Psalms 18:10: "And he rode upon a cherub, and did fly: yea, he did fly upon the wings of the wind."

Psalms 36:7: "How excellent is thy lovingkindness, O God! therefore the children of men put their trust under the shadow of thy wings."

Psalms 55:6: "And I said, Oh that I had wings like a dove! for then would I fly away, and be at rest."

Psalms 57:1: "Be merciful unto me, O God, be merciful unto me: for my soul trusteth in thee: yea, in the shadow of thy wings will I make my refuge, until these calamities be overpast."

Psalms 61:4: "I will abide in thy tabernacle for ever: I will trust in the covert of thy wings. Selah."

Psalms 63:7: "Because thou hast been my help, therefore in the shadow of thy wings will I rejoice."

Psalms 68:13: "Though ye have lien among the pots, yet shall ye be as the wings of a dove covered with silver, and her feathers with yellow gold."

Psalms 91:4: "He shall cover thee with his feathers, and under his wings shalt thou trust: his truth shall be thy shield and buckler."

Psalms 104:3: "Who layeth the beams of his chambers in the waters: who maketh the clouds his chariot: who walketh upon the wings of the wind:"

Psalms 139:9: "If I take the wings of the morning, and dwell in the uttermost parts of the sea;"

Proverbs 23:5: "Wilt thou set thine eyes upon that which is not? for riches certainly make themselves wings; they fly away as an eagle toward heaven."

Ecclesiastes 10:20: "Curse not the king, no not in thy thought; and curse not the rich in thy bedchamber: for a bird of the air shall carry the voice, and that which hath wings shall tell the matter."

Isaiah 6:2: "Above it stood the seraphims: each one had six wings; with twain he covered his face, and with twain he covered his feet, and with twain he did fly."

Isaiah 8:8: "And he shall pass through Judah; he shall overflow and go over, he shall reach even to the neck; and the stretching out of his wings shall fill the breadth of thy land, O Immanuel."

Isaiah 18:1: "Woe to the land shadowing with wings, which is beyond the rivers of Ethiopia:"

Isaiah 40:31: "But they that wait upon the LORD shall renew their strength; they shall mount up with wings as eagles; they shall run, and not be weary; and they shall walk, and not faint."

Jeremiah 48:9: "Give wings unto Moab, that it may flee and get away: for the cities thereof shall be desolate, without any to dwell therein."

Jeremiah 48:40: "For thus saith the LORD; Behold, he shall fly as an eagle, and shall spread his wings over Moab."

Jeremiah 49:22: "Behold, he shall come up and fly as the eagle, and spread his wings over Bozrah: and at that day shall the heart of the mighty men of Edom be as the heart of a woman in her pangs."



Ezekiel 1:6: "And every one had four faces, and every one had four wings."

Ezekiel 1:8: "And they had the hands of a man under their wings on their four sides; and they four had their faces and their wings."

Ezekiel 1:9: "Their wings were joined one to another; they turned not when they went; they went every one straight forward."

Ezekiel 1:11: "Thus were their faces: and their wings were stretched upward; two wings of every one were joined one to another, and two covered their bodies."

Ezekiel 1:23: "And under the firmament were their wings straight, the one toward the other: every one had two, which covered on this side, and every one had two, which covered on that side, their bodies."

Ezekiel 1:24: "And when they went, I heard the noise of their wings, like the noise of great waters, as the voice of the Almighty, the voice of speech, as the noise of an host: when they stood, they let down their wings."

Ezekiel 1:25: "And there was a voice from the firmament that was over their heads, when they stood, and had let down their wings."

Ezekiel 3:13: "I heard also the noise of the wings of the living creatures that touched one another, and the noise of the wheels over against them, and a noise of a great rushing."

Ezekiel 10:5: "And the sound of the cherubims' wings was heard even to the outer court, as the voice of the Almighty God when he speaketh."

Ezekiel 10:8: "And there appeared in the cherubims the form of a man's hand under their wings."

Ezekiel 10:12: "And their whole body, and their backs, and their hands, and their wings, and the wheels, were full of eyes round about, even the wheels that they four had."

Ezekiel 10:16: "And when the cherubims went, the wheels went by them: and when the cherubims lifted up their wings to mount up from the earth, the same wheels also turned not from beside them."

Ezekiel 10:19: "And the cherubims lifted up their wings, and mounted up from the earth in my sight: when they went out, the wheels also were beside them, and every one stood at the door of the east gate of the LORD's house; and the glory of the God of Israel was over them above."

Ezekiel 10:21: "Every one had four faces apiece, and every one four wings; and the likeness of the hands of a man was under their wings."

Ezekiel 11:22: "Then did the cherubims lift up their wings, and the wheels beside them; and the glory of the God of Israel was over them above."

Ezekiel 17:3: "And say, Thus saith the Lord GOD; A great eagle with great wings, longwinged, full of feathers, which had divers colours, came unto Lebanon, and took the highest branch of the cedar:"

Ezekiel 17:7: "There was also another great eagle with great wings and many feathers: and, behold, this vine did bend her roots toward him, and shot forth her branches toward him, that he might water it by the furrows of her plantation."

Daniel 7:4: "The first was like a lion, and had eagle's wings: I beheld till the wings thereof were plucked, and it was lifted up from the earth, and made stand upon the feet as a man, and a man's heart was given to it."

Daniel 7:6: "After this I beheld, and lo another, like a leopard, which had upon the back of it four wings of a fowl; the beast had also four heads; and dominion was given to it."

Hosea 4:19: "The wind hath bound her up in her wings, and they shall be ashamed because of their sacrifices."

Zechariah 5:9: "Then lifted I up mine eyes, and looked, and, behold, there came out two women, and the wind was in their wings; for they had wings like the wings of a stork: and they lifted up the ephah between the earth and the heaven."

Malachi 4:2: "But unto you that fear my name shall the Sun of righteousness arise with healing in his wings; and ye shall go forth, and grow up as calves of the stall."

Matthew 23:37: "O Jerusalem, Jerusalem, thou that killest the prophets, and stonest them which are sent unto thee, how often would I have gathered thy children together, even as a hen gathereth her chickens under her wings, and ye would not!"

Luke 13:34: "O Jerusalem, Jerusalem, which killest the prophets, and stonest them that are sent unto thee; how often would I have gathered thy children together, as a hen doth gather her brood under her wings, and ye would not!"

Revelation 4:8: "And the four beasts had each of them six wings about him; and they were full of eyes within: and they rest not day and night, saying, Holy, holy, holy, LORD God Almighty, which was, and is, and is to come."

Revelation 9:9: "And they had breastplates, as it were breastplates of iron; and the sound of their wings was as the sound of chariots of many horses running to battle."

Revelation 12:14: "And to the woman were given two wings of a great eagle, that she might fly into the wilderness, into her place, where she is nourished for a time, and times, and half a time, from the face of the serpent."

## **WINK**

Occurrences: 2

Job 15:12: "Why doth thine heart carry thee away? and what do thy eyes wink at,"

Psalms 35:19: "Let not them that are mine enemies wrongfully rejoice over me: neither let them wink with the eye that hate me without a cause."

## **WINKED**

Occurrences: 1

Acts 17:30: "And the times of this ignorance God winked at; but now commandeth all men every where to repent:"

## **WINKETH**

Occurrences: 2

Proverbs 6:13: "He winketh with his eyes, he speaketh with his feet, he teacheth with his fingers;"

Proverbs 10:10: "He that winketh with the eye causeth sorrow: but a prating fool shall fall."

## **WINNETH**

Occurrences: 1

Proverbs 11:30: "The fruit of the righteous is a tree of life; and he that winneth souls is wise."

## **WINNOWED**

Occurrences: 1

Isaiah 30:24: "The oxen likewise and the young asses that ear the ground shall eat clean provender, which hath been winnowed with the shovel and with the fan."

## **WINNOWETH**

Occurrences: 1

Ruth 3:2: "And now is not Boaz of our kindred, with whose maidens thou wast? Behold, he winnoweth barley to night in the threshingfloor."

## WINTER

Occurrences: 13

Genesis 8:22: "While the earth remaineth, seedtime and harvest, and cold and heat, and summer and winter, and day and night shall not cease."

Psalms 74:17: "Thou hast set all the borders of the earth: thou hast made summer and winter."

Song of Solomon 2:11: "For, lo, the winter is past, the rain is over and gone;"

Isaiah 18:6: "They shall be left together unto the fowls of the mountains, and to the beasts of the earth: and the fowls shall summer upon them, and all the beasts of the earth shall winter upon them."

Amos 3:15: "And I will smite the winter house with the summer house; and the houses of ivory shall perish, and the great houses shall have an end, saith the LORD."

Zechariah 14:8: "And it shall be in that day, that living waters shall go out from Jerusalem; half of them toward the former sea, and half of them toward the hinder sea: in summer and in winter shall it be."

Matthew 24:20: "But pray ye that your flight be not in the winter, neither on the sabbath day:"

Mark 13:18: "And pray ye that your flight be not in the winter."

John 10:22: "And it was at Jerusalem the feast of the dedication, and it was winter."

Acts 27:12: "And because the haven was not commodious to winter in, the more part advised to depart thence also, if by any means they might attain to Phenice, and there to winter; which is an haven of Crete, and lieth toward the south west and north west."

1 Corinthians 16:6: "And it may be that I will abide, yea, and winter with you, that ye may bring me on my journey whithersoever I go."

2 Timothy 4:21: "Do thy diligence to come before winter. Eubulus greeteth thee, and Pudens, and Linus, and Claudia, and all the brethren."

Titus 3:12: "When I shall send Artemas unto thee, or Tychicus, be diligent to come unto me to Nicopolis: for I have determined there to winter."

## WINTERED

Occurrences: 1

Acts 28:11: "And after three months we departed in a ship of Alexandria, which had wintered in the isle, whose sign was Castor and Pollux."

## WINTERHOUSE

Occurrences: 1

Jeremiah 36:22: "Now the king sat in the winterhouse in the ninth month: and there was a fire on the hearth burning before him."

## WIPE

Occurrences: 8

2 Kings 21:13: "And I will stretch over Jerusalem the line of Samaria, and the plummet of the house of Ahab: and I will wipe Jerusalem as a man wipeth a dish, wiping it, and turning it upside down."

Nehemiah 13:14: "Remember me, O my God, concerning this, and wipe not out my good deeds that I have done for the house of my God, and for the offices thereof."

Isaiah 25:8: "He will swallow up death in victory; and the Lord GOD will wipe away tears from off all faces; and the rebuke of his people shall he take away from off all the earth: for the LORD hath spoken it."

Luke 7:38: "And stood at his feet behind him weeping, and began to wash his feet with tears, and did wipe them with the hairs of her head, and kissed his feet, and anointed them with the ointment."

Luke 10:11: "Even the very dust of your city, which cleaveth on us, we do wipe off against you: notwithstanding be ye sure of this, that the kingdom of God is come nigh unto you."

John 13:5: "After that he poureth water into a bason, and began to wash the disciples' feet, and to wipe them with the towel wherewith he was girded."

Revelation 7:17: "For the Lamb which is in the midst of the throne shall feed them, and shall lead them unto living fountains of waters: and God shall wipe away all tears from their eyes."

Revelation 21:4: "And God shall wipe away all tears from their eyes; and there shall be no more death, neither sorrow, nor crying, neither shall there be any more pain: for the former things are passed away."

## **WIPE**

Occurrences: 4

Proverbs 6:33: "A wound and dishonour shall he get; and his reproach shall not be wiped away."

Luke 7:44: "And he turned to the woman, and said unto Simon, Seest thou this woman? I entered into thine house, thou gavest me no water for my feet: but she hath washed my feet with tears, and wiped them with the hairs of her head."

John 11:2: "(It was that Mary which anointed the Lord with ointment, and wiped his feet with her hair, whose brother Lazarus was sick.)"

John 12:3: "Then took Mary a pound of ointment of spikenard, very costly, and anointed the feet of Jesus, and wiped his feet with her hair: and the house was filled with the odour of the ointment."

## **WIPETH**

Occurrences: 2

2 Kings 21:13: "And I will stretch over Jerusalem the line of Samaria, and the plummet of the house of Ahab: and I will wipe Jerusalem as a man wipeth a dish, wiping it, and turning it upside down."

Proverbs 30:20: "Such is the way of an adulterous woman; she eateth, and wipeth her mouth, and saith, I have done no wickedness."

## **WIPING**

Occurrences: 1

2 Kings 21:13: "And I will stretch over Jerusalem the line of Samaria, and the plummet of the house of Ahab: and I will wipe Jerusalem as a man wipeth a dish, wiping it, and turning it upside down."

## **WIRES**

Occurrences: 1

Exodus 39:3: "And they did beat the gold into thin plates, and cut it into wires, to work it in the blue, and in the purple, and in the scarlet, and in the fine linen, with cunning work."

## **WISDOM**

Occurrences: 222

Exodus 28:3: "And thou shalt speak unto all that are wise hearted, whom I have filled with the spirit of wisdom, that they may make Aaron's garments to consecrate him, that he may minister unto me in the priest's office."

Exodus 31:3: "And I have filled him with the spirit of God, in wisdom, and in understanding, and in knowledge, and in all manner of workmanship,"

Exodus 31:6: "And I, behold, I have given with him Aholiab, the son of Ahisamach, of the tribe of Dan: and in the hearts of all that are wise hearted I have put wisdom, that they may make all that I

have commanded thee;"

Exodus 35:26: "And all the women whose heart stirred them up in wisdom spun goats' hair."

Exodus 35:31: "And he hath filled him with the spirit of God, in wisdom, in understanding, and in knowledge, and in all manner of workmanship;"

Exodus 35:35: "Them hath he filled with wisdom of heart, to work all manner of work, of the engraver, and of the cunning workman, and of the embroiderer, in blue, and in purple, in scarlet, and in fine linen, and of the weaver, even of them that do any work, and of those that devise cunning work."

Exodus 36:1: "Then wrought Bezaleel and Aholiab, and every wise hearted man, in whom the LORD put wisdom and understanding to know how to work all manner of work for the service of the sanctuary, according to all that the LORD had commanded."

Exodus 36:2: "And Moses called Bezaleel and Aholiab, and every wise hearted man, in whose heart the LORD had put wisdom, even every one whose heart stirred him up to come unto the work to do it:"

Deuteronomy 4:6: "Keep therefore and do them; for this is your wisdom and your understanding in the sight of the nations, which shall hear all these statutes, and say, Surely this great nation is a wise and understanding people."

Deuteronomy 34:9: "And Joshua the son of Nun was full of the spirit of wisdom; for Moses had laid his hands upon him: and the children of Israel hearkened unto him, and did as the LORD commanded Moses."

2 Samuel 14:20: "To fetch about this form of speech hath thy servant Joab done this thing: and my lord is wise, according to the wisdom of an angel of God, to know all things that are in the earth."

2 Samuel 20:22: "Then the woman went unto all the people in her wisdom. And they cut off the head of Sheba the son of Bichri, and cast it out to Joab. And he blew a trumpet, and they retired from the city, every man to his tent. And Joab returned to Jerusalem unto the king."

1 Kings 2:6: "Do therefore according to thy wisdom, and let not his hoar head go down to the grave in peace."

1 Kings 3:28: "And all Israel heard of the judgment which the king had judged; and they feared the king: for they saw that the wisdom of God was in him, to do judgment."

1 Kings 4:29: "And God gave Solomon wisdom and understanding exceeding much, and largeness of heart, even as the sand that is on the sea shore."

1 Kings 4:30: "And Solomon's wisdom excelled the wisdom of all the children of the east country, and all the wisdom of Egypt."

1 Kings 4:34: "And there came of all people to hear the wisdom of Solomon, from all kings of the earth, which had heard of his wisdom."

1 Kings 5:12: "And the LORD gave Solomon wisdom, as he promised him: and there was peace between Hiram and Solomon; and they two made a league together."

1 Kings 7:14: "He was a widow's son of the tribe of Naphtali, and his father was a man of Tyre, a worker in brass: and he was filled with wisdom, and understanding, and cunning to work all works in brass. And he came to king Solomon, and wrought all his work."

1 Kings 10:4: "And when the queen of Sheba had seen all Solomon's wisdom, and the house that he had built,"

1 Kings 10:6: "And she said to the king, It was a true report that I heard in mine own land of thy acts and of thy wisdom."

1 Kings 10:7: "Howbeit I believed not the words, until I came, and mine eyes had seen it: and, behold, the half was not told me: thy wisdom and prosperity exceedeth the fame which I heard."

1 Kings 10:8: "Happy are thy men, happy are these thy servants, which stand continually before thee, and that hear thy wisdom."

1 Kings 10:23: "So king Solomon exceeded all the kings of the earth for riches and for wisdom."

1 Kings 10:24: "And all the earth sought to Solomon, to hear his wisdom, which God had put in his

heart."

1 Kings 11:41: "And the rest of the acts of Solomon, and all that he did, and his wisdom, are they not written in the book of the acts of Solomon?"

1 Chronicles 22:12: "Only the LORD give thee wisdom and understanding, and give thee charge concerning Israel, that thou mayest keep the law of the LORD thy God."

2 Chronicles 1:10: "Give me now wisdom and knowledge, that I may go out and come in before this people: for who can judge this thy people, that is so great?"

2 Chronicles 1:11: "And God said to Solomon, Because this was in thine heart, and thou hast not asked riches, wealth, or honour, nor the life of thine enemies, neither yet hast asked long life; but hast asked wisdom and knowledge for thyself, that thou mayest judge my people, over whom I have made thee king:"

2 Chronicles 1:12: "Wisdom and knowledge is granted unto thee; and I will give thee riches, and wealth, and honour, such as none of the kings have had that have been before thee, neither shall there any after thee have the like."

2 Chronicles 9:3: "And when the queen of Sheba had seen the wisdom of Solomon, and the house that he had built,"

2 Chronicles 9:5: "And she said to the king, It was a true report which I heard in mine own land of thine acts, and of thy wisdom:"

2 Chronicles 9:6: "Howbeit I believed not their words, until I came, and mine eyes had seen it: and, behold, the one half of the greatness of thy wisdom was not told me: for thou exceedest the fame that I heard."

2 Chronicles 9:7: "Happy are thy men, and happy are these thy servants, which stand continually before thee, and hear thy wisdom."

2 Chronicles 9:22: "And king Solomon passed all the kings of the earth in riches and wisdom."

2 Chronicles 9:23: "And all the kings of the earth sought the presence of Solomon, to hear his wisdom, that God had put in his heart."

Ezra 7:25: "And thou, Ezra, after the wisdom of thy God, that is in thine hand, set magistrates and judges, which may judge all the people that are beyond the river, all such as know the laws of thy God; and teach ye them that know them not."

Job 4:21: "Doth not their excellency which is in them go away? they die, even without wisdom."

Job 6:13: "Is not my help in me? and is wisdom driven quite from me?"

Job 11:6: "And that he would shew thee the secrets of wisdom, that they are double to that which is! Know therefore that God exacteth of thee less than thine iniquity deserveth."

Job 12:2: "No doubt but ye are the people, and wisdom shall die with you."

Job 12:12: "With the ancient is wisdom; and in length of days understanding."

Job 12:13: "With him is wisdom and strength, he hath counsel and understanding."

Job 12:16: "With him is strength and wisdom: the deceived and the deceiver are his."

Job 13:5: "O that ye would altogether hold your peace! and it should be your wisdom."

Job 15:8: "Hast thou heard the secret of God? and dost thou restrain wisdom to thyself?"

Job 26:3: "How hast thou counselled him that hath no wisdom? and how hast thou plentifully declared the thing as it is?"

Job 28:12: "But where shall wisdom be found? and where is the place of understanding?"

Job 28:18: "No mention shall be made of coral, or of pearls: for the price of wisdom is above rubies."

Job 28:20: "Whence then cometh wisdom? and where is the place of understanding?"

Job 28:28: "And unto man he said, Behold, the fear of the LORD, that is wisdom; and to depart from evil is understanding."

Job 32:7: "I said, Days should speak, and multitude of years should teach wisdom."

Job 32:13: "Lest ye should say, We have found out wisdom: God thrusteth him down, not man."

Job 33:33: "If not, hearken unto me: hold thy peace, and I shall teach thee wisdom."

Job 34:35: "Job hath spoken without knowledge, and his words were without wisdom."

Job 36:5: "Behold, God is mighty, and despiseth not any: he is mighty in strength and wisdom."

Job 38:36: "Who hath put wisdom in the inward parts? or who hath given understanding to the heart?"

Job 38:37: "Who can number the clouds in wisdom? or who can stay the bottles of heaven,"

Job 39:17: "Because God hath deprived her of wisdom, neither hath he imparted to her understanding."

Job 39:26: "Doth the hawk fly by thy wisdom, and stretch her wings toward the south?"

Psalms 37:30: "The mouth of the righteous speaketh wisdom, and his tongue talketh of judgment."

Psalms 49:3: "My mouth shall speak of wisdom; and the meditation of my heart shall be of understanding."

Psalms 51:6: "Behold, thou desirest truth in the inward parts: and in the hidden part thou shalt make me to know wisdom."

Psalms 90:12: "So teach us to number our days, that we may apply our hearts unto wisdom."

Psalms 104:24: "O LORD, how manifold are thy works! in wisdom hast thou made them all: the earth is full of thy riches."

Psalms 105:22: "To bind his princes at his pleasure; and teach his senators wisdom."

Psalms 111:10: "The fear of the LORD is the beginning of wisdom: a good understanding have all they that do his commandments: his praise endureth for ever."

Psalms 136:5: "To him that by wisdom made the heavens: for his mercy endureth for ever."

Proverbs 1:2: "To know wisdom and instruction; to perceive the words of understanding;"

Proverbs 1:3: "To receive the instruction of wisdom, justice, and judgment, and equity;"

Proverbs 1:7: "The fear of the LORD is the beginning of knowledge: but fools despise wisdom and instruction."

Proverbs 1:20: "Wisdom crieth without; she uttereth her voice in the streets:"

Proverbs 2:2: "So that thou incline thine ear unto wisdom, and apply thine heart to understanding;"

Proverbs 2:6: "For the LORD giveth wisdom: out of his mouth cometh knowledge and understanding."

Proverbs 2:7: "He layeth up sound wisdom for the righteous: he is a buckler to them that walk uprightly."

Proverbs 2:10: "When wisdom entereth into thine heart, and knowledge is pleasant unto thy soul;"

Proverbs 3:13: "Happy is the man that findeth wisdom, and the man that getteth understanding."

Proverbs 3:19: "The LORD by wisdom hath founded the earth; by understanding hath he established the heavens."

Proverbs 3:21: "My son, let not them depart from thine eyes: keep sound wisdom and discretion:"

Proverbs 4:5: "Get wisdom, get understanding: forget it not; neither decline from the words of my mouth."

Proverbs 4:7: "Wisdom is the principal thing; therefore get wisdom: and with all thy getting get understanding."

Proverbs 4:11: "I have taught thee in the way of wisdom; I have led thee in right paths."

Proverbs 5:1: "My son, attend unto my wisdom, and bow thine ear to my understanding:"

Proverbs 7:4: "Say unto wisdom, Thou art my sister; and call understanding thy kinswoman:"

Proverbs 8:1: "Doth not wisdom cry? and understanding put forth her voice?"

Proverbs 8:5: "O ye simple, understand wisdom: and, ye fools, be ye of an understanding heart."

Proverbs 8:11: "For wisdom is better than rubies; and all the things that may be desired are not to be compared to it."

Proverbs 8:12: "I wisdom dwell with prudence, and find out knowledge of witty inventions."

Proverbs 8:14: "Counsel is mine, and sound wisdom: I am understanding; I have strength."

Proverbs 9:1: "Wisdom hath builded her house, she hath hewn out her seven pillars:"

Proverbs 9:10: "The fear of the LORD is the beginning of wisdom: and the knowledge of the holy is

understanding."

Proverbs 10:13: "In the lips of him that hath understanding wisdom is found: but a rod is for the back of him that is void of understanding."

Proverbs 10:21: "The lips of the righteous feed many: but fools die for want of wisdom."

Proverbs 10:23: "It is as sport to a fool to do mischief: but a man of understanding hath wisdom."

Proverbs 10:31: "The mouth of the just bringeth forth wisdom: but the froward tongue shall be cut out."

Proverbs 11:2: "When pride cometh, then cometh shame: but with the lowly is wisdom."

Proverbs 11:12: "He that is void of wisdom despiseth his neighbour: but a man of understanding holdeth his peace."

Proverbs 12:8: "A man shall be commended according to his wisdom: but he that is of a perverse heart shall be despised."

Proverbs 13:10: "Only by pride cometh contention: but with the well advised is wisdom."

Proverbs 14:6: "A scorner seeketh wisdom, and findeth it not: but knowledge is easy unto him that understandeth."

Proverbs 14:8: "The wisdom of the prudent is to understand his way: but the folly of fools is deceit."

Proverbs 14:33: "Wisdom resteth in the heart of him that hath understanding: but that which is in the midst of fools is made known."

Proverbs 15:21: "Folly is joy to him that is destitute of wisdom: but a man of understanding walketh uprightly."

Proverbs 15:33: "The fear of the LORD is the instruction of wisdom; and before honour is humility."

Proverbs 16:16: "How much better is it to get wisdom than gold! and to get understanding rather to be chosen than silver!"

Proverbs 17:16: "Wherefore is there a price in the hand of a fool to get wisdom, seeing he hath no heart to it?"

Proverbs 17:24: "Wisdom is before him that hath understanding; but the eyes of a fool are in the ends of the earth."

Proverbs 18:1: "Through desire a man, having separated himself, seeketh and intermeddeth with all wisdom."

Proverbs 18:4: "The words of a man's mouth are as deep waters, and the wellspring of wisdom as a flowing brook."

Proverbs 19:8: "He that getteth wisdom loveth his own soul: he that keepeth understanding shall find good."

Proverbs 21:30: "There is no wisdom nor understanding nor counsel against the LORD."

Proverbs 23:4: "Labour not to be rich: cease from thine own wisdom."

Proverbs 23:9: "Speak not in the ears of a fool: for he will despise the wisdom of thy words."

Proverbs 23:23: "Buy the truth, and sell it not; also wisdom, and instruction, and understanding."

Proverbs 24:3: "Through wisdom is an house builded; and by understanding it is established."

Proverbs 24:7: "Wisdom is too high for a fool: he openeth not his mouth in the gate."

Proverbs 24:14: "So shall the knowledge of wisdom be unto thy soul: when thou hast found it, then there shall be a reward, and thy expectation shall not be cut off."

Proverbs 29:3: "Whoso loveth wisdom rejoiceth his father: but he that keepeth company with harlots spendeth his substance."

Proverbs 29:15: "The rod and reproof give wisdom: but a child left to himself bringeth his mother to shame."

Proverbs 30:3: "I neither learned wisdom, nor have the knowledge of the holy."

Proverbs 31:26: "She openeth her mouth with wisdom; and in her tongue is the law of kindness."

Ecclesiastes 1:13: "And I gave my heart to seek and search out by wisdom concerning all things that



are done under heaven: this sore travail hath God given to the sons of man to be exercised therewith."

Ecclesiastes 1:16: "I communed with mine own heart, saying, Lo, I am come to great estate, and have gotten more wisdom than all they that have been before me in Jerusalem: yea, my heart had great experience of wisdom and knowledge."

Ecclesiastes 1:17: "And I gave my heart to know wisdom, and to know madness and folly: I perceived that this also is vexation of spirit."

Ecclesiastes 1:18: "For in much wisdom is much grief: and he that increaseth knowledge increaseth sorrow."

Ecclesiastes 2:3: "I sought in mine heart to give myself unto wine, yet acquainting mine heart with wisdom; and to lay hold on folly, till I might see what was that good for the sons of men, which they should do under the heaven all the days of their life."

Ecclesiastes 2:9: "So I was great, and increased more than all that were before me in Jerusalem: also my wisdom remained with me."

Ecclesiastes 2:12: "And I turned myself to behold wisdom, and madness, and folly: for what can the man do that cometh after the king? even that which hath been already done."

Ecclesiastes 2:13: "Then I saw that wisdom excelleth folly, as far as light excelleth darkness."

Ecclesiastes 2:21: "For there is a man whose labour is in wisdom, and in knowledge, and in equity; yet to a man that hath not laboured therein shall he leave it for his portion. This also is vanity and a great evil."

Ecclesiastes 2:26: "For God giveth to a man that is good in his sight wisdom, and knowledge, and joy: but to the sinner he giveth travail, to gather and to heap up, that he may give to him that is good before God. This also is vanity and vexation of spirit."

Ecclesiastes 7:11: "Wisdom is good with an inheritance: and by it there is profit to them that see the sun."

Ecclesiastes 7:12: "For wisdom is a defence, and money is a defence: but the excellency of knowledge is, that wisdom giveth life to them that have it."

Ecclesiastes 7:19: "Wisdom strengtheneth the wise more than ten mighty men which are in the city."

Ecclesiastes 7:23: "All this have I proved by wisdom: I said, I will be wise; but it was far from me."

Ecclesiastes 7:25: "I applied mine heart to know, and to search, and to seek out wisdom, and the reason of things, and to know the wickedness of folly, even of foolishness and madness:"

Ecclesiastes 8:1: "Who is as the wise man? and who knoweth the interpretation of a thing? a man's wisdom maketh his face to shine, and the boldness of his face shall be changed."

Ecclesiastes 8:16: "When I applied mine heart to know wisdom, and to see the business that is done upon the earth: (for also there is that neither day nor night seeth sleep with his eyes:)"

Ecclesiastes 9:10: "Whatsoever thy hand findeth to do, do it with thy might; for there is no work, nor device, nor knowledge, nor wisdom, in the grave, whither thou goest."

Ecclesiastes 9:13: "This wisdom have I seen also under the sun, and it seemed great unto me:"

Ecclesiastes 9:15: "Now there was found in it a poor wise man, and he by his wisdom delivered the city; yet no man remembered that same poor man."

Ecclesiastes 9:16: "Then said I, Wisdom is better than strength: nevertheless the poor man's wisdom is despised, and his words are not heard."

Ecclesiastes 9:18: "Wisdom is better than weapons of war: but one sinner destroyeth much good."

Ecclesiastes 10:1: "Dead flies cause the ointment of the apothecary to send forth a stinking savour: so doth a little folly him that is in reputation for wisdom and honour."

Ecclesiastes 10:3: "Yea also, when he that is a fool walketh by the way, his wisdom faileth him, and he saith to every one that he is a fool."

Ecclesiastes 10:10: "If the iron be blunt, and he do not whet the edge, then must he put to more strength: but wisdom is profitable to direct."

Isaiah 10:13: "For he saith, By the strength of my hand I have done it, and by my wisdom; for I am prudent: and I have removed the bounds of the people, and have robbed their treasures, and I have put down the inhabitants like a valiant man:"

Isaiah 11:2: "And the spirit of the LORD shall rest upon him, the spirit of wisdom and understanding, the spirit of counsel and might, the spirit of knowledge and of the fear of the LORD;"

Isaiah 29:14: "Therefore, behold, I will proceed to do a marvellous work among this people, even a marvellous work and a wonder: for the wisdom of their wise men shall perish, and the understanding of their prudent men shall be hid."

Isaiah 33:6: "And wisdom and knowledge shall be the stability of thy times, and strength of salvation: the fear of the LORD is his treasure."

Isaiah 47:10: "For thou hast trusted in thy wickedness: thou hast said, None seeth me. Thy wisdom and thy knowledge, it hath perverted thee; and thou hast said in thine heart, I am, and none else beside me."

Jeremiah 8:9: "The wise men are ashamed, they are dismayed and taken: lo, they have rejected the word of the LORD; and what wisdom is in them?"

Jeremiah 9:23: "Thus saith the LORD, Let not the wise man glory in his wisdom, neither let the mighty man glory in his might, let not the rich man glory in his riches:"

Jeremiah 10:12: "He hath made the earth by his power, he hath established the world by his wisdom, and hath stretched out the heavens by his discretion."

Jeremiah 49:7: "Concerning Edom, thus saith the LORD of hosts; Is wisdom no more in Teman? is counsel perished from the prudent? is their wisdom vanished?"

Jeremiah 51:15: "He hath made the earth by his power, he hath established the world by his wisdom, and hath stretched out the heaven by his understanding."

Ezekiel 28:4: "With thy wisdom and with thine understanding thou hast gotten thee riches, and hast gotten gold and silver into thy treasures:"

Ezekiel 28:5: "By thy great wisdom and by thy traffick hast thou increased thy riches, and thine heart is lifted up because of thy riches:"

Ezekiel 28:7: "Behold, therefore I will bring strangers upon thee, the terrible of the nations: and they shall draw their swords against the beauty of thy wisdom, and they shall defile thy brightness."

Ezekiel 28:12: "Son of man, take up a lamentation upon the king of Tyrus, and say unto him, Thus saith the Lord GOD; Thou sealest up the sum, full of wisdom, and perfect in beauty."

Ezekiel 28:17: "Thine heart was lifted up because of thy beauty, thou hast corrupted thy wisdom by reason of thy brightness: I will cast thee to the ground, I will lay thee before kings, that they may behold thee."

Daniel 1:4: "Children in whom was no blemish, but well favoured, and skilful in all wisdom, and cunning in knowledge, and understanding science, and such as had ability in them to stand in the king's palace, and whom they might teach the learning and the tongue of the Chaldeans."

Daniel 1:17: "As for these four children, God gave them knowledge and skill in all learning and wisdom: and Daniel had understanding in all visions and dreams."

Daniel 1:20: "And in all matters of wisdom and understanding, that the king enquired of them, he found them ten times better than all the magicians and astrologers that were in all his realm."

Daniel 2:14: "Then Daniel answered with counsel and wisdom to Arioch the captain of the king's guard, which was gone forth to slay the wise men of Babylon:"

Daniel 2:20: "Daniel answered and said, Blessed be the name of God for ever and ever: for wisdom and might are his:"

Daniel 2:21: "And he changeth the times and the seasons: he removeth kings, and setteth up kings: he giveth wisdom unto the wise, and knowledge to them that know understanding:"

Daniel 2:23: "I thank thee, and praise thee, O thou God of my fathers, who hast given me wisdom and might, and hast made known unto me now what we desired of thee: for thou hast now made

known unto us the king's matter."

Daniel 2:30: "But as for me, this secret is not revealed to me for any wisdom that I have more than any living, but for their sakes that shall make known the interpretation to the king, and that thou mightest know the thoughts of thy heart."

Daniel 5:11: "There is a man in thy kingdom, in whom is the spirit of the holy gods; and in the days of thy father light and understanding and wisdom, like the wisdom of the gods, was found in him; whom the king Nebuchadnezzar thy father, the king, I say, thy father, made master of the magicians, astrologers, Chaldeans, and soothsayers;"

Daniel 5:14: "I have even heard of thee, that the spirit of the gods is in thee, and that light and understanding and excellent wisdom is found in thee."

Micah 6:9: "The LORD's voice crieth unto the city, and the man of wisdom shall see thy name: hear ye the rod, and who hath appointed it."

Matthew 11:19: "The Son of man came eating and drinking, and they say, Behold a man gluttonous, and a winebibber, a friend of publicans and sinners. But wisdom is justified of her children."

Matthew 12:42: "The queen of the south shall rise up in the judgment with this generation, and shall condemn it: for she came from the uttermost parts of the earth to hear the wisdom of Solomon; and, behold, a greater than Solomon is here."

Matthew 13:54: "And when he was come into his own country, he taught them in their synagogue, insomuch that they were astonished, and said, Whence hath this man this wisdom, and these mighty works?"

Mark 6:2: "And when the sabbath day was come, he began to teach in the synagogue: and many hearing him were astonished, saying, From whence hath this man these things? and what wisdom is this which is given unto him, that even such mighty works are wrought by his hands?"

Luke 1:17: "And he shall go before him in the spirit and power of Elias, to turn the hearts of the fathers to the children, and the disobedient to the wisdom of the just; to make ready a people prepared for the Lord."

Luke 2:40: "And the child grew, and waxed strong in spirit, filled with wisdom: and the grace of God was upon him."

Luke 2:52: "And Jesus increased in wisdom and stature, and in favour with God and man."

Luke 7:35: "But wisdom is justified of all her children."

Luke 11:31: "The queen of the south shall rise up in the judgment with the men of this generation, and condemn them: for she came from the utmost parts of the earth to hear the wisdom of Solomon; and, behold, a greater than Solomon is here."

Luke 11:49: "Therefore also said the wisdom of God, I will send them prophets and apostles, and some of them they shall slay and persecute:"

Luke 21:15: "For I will give you a mouth and wisdom, which all your adversaries shall not be able to gainsay nor resist."

Acts 6:3: "Wherefore, brethren, look ye out among you seven men of honest report, full of the Holy Ghost and wisdom, whom we may appoint over this business."

Acts 6:10: "And they were not able to resist the wisdom and the spirit by which he spake."

Acts 7:10: "And delivered him out of all his afflictions, and gave him favour and wisdom in the sight of Pharaoh king of Egypt; and he made him governor over Egypt and all his house."

Acts 7:22: "And Moses was learned in all the wisdom of the Egyptians, and was mighty in words and in deeds."

Romans 11:33: "O the depth of the riches both of the wisdom and knowledge of God! how unsearchable are his judgments, and his ways past finding out!"

1 Corinthians 1:17: "For Christ sent me not to baptize, but to preach the gospel: not with wisdom of words, lest the cross of Christ should be made of none effect."

1 Corinthians 1:19: "For it is written, I will destroy the wisdom of the wise, and will bring to nothing the understanding of the prudent."

1 Corinthians 1:20: "Where is the wise? where is the scribe? where is the disputer of this world? hath not God made foolish the wisdom of this world?"

1 Corinthians 1:21: "For after that in the wisdom of God the world by wisdom knew not God, it pleased God by the foolishness of preaching to save them that believe."

1 Corinthians 1:22: "For the Jews require a sign, and the Greeks seek after wisdom:"

1 Corinthians 1:24: "But unto them which are called, both Jews and Greeks, Christ the power of God, and the wisdom of God."

1 Corinthians 1:30: "But of him are ye in Christ Jesus, who of God is made unto us wisdom, and righteousness, and sanctification, and redemption:"

1 Corinthians 2:1: "And I, brethren, when I came to you, came not with excellency of speech or of wisdom, declaring unto you the testimony of God."

1 Corinthians 2:4: "And my speech and my preaching was not with enticing words of man's wisdom, but in demonstration of the Spirit and of power:"

1 Corinthians 2:5: "That your faith should not stand in the wisdom of men, but in the power of God."

1 Corinthians 2:6: "Howbeit we speak wisdom among them that are perfect: yet not the wisdom of this world, nor of the princes of this world, that come to nought:"

1 Corinthians 2:7: "But we speak the wisdom of God in a mystery, even the hidden wisdom, which God ordained before the world unto our glory:"

1 Corinthians 2:13: "Which things also we speak, not in the words which man's wisdom teacheth, but which the Holy Ghost teacheth; comparing spiritual things with spiritual."

1 Corinthians 3:19: "For the wisdom of this world is foolishness with God. For it is written, He taketh the wise in their own craftiness."

1 Corinthians 12:8: "For to one is given by the Spirit the word of wisdom; to another the word of knowledge by the same Spirit;"

2 Corinthians 1:12: "For our rejoicing is this, the testimony of our conscience, that in simplicity and godly sincerity, not with fleshly wisdom, but by the grace of God, we have had our conversation in the world, and more abundantly to you-ward."

Ephesians 1:8: "Wherein he hath abounded toward us in all wisdom and prudence;"

Ephesians 1:17: "That the God of our Lord Jesus Christ, the Father of glory, may give unto you the spirit of wisdom and revelation in the knowledge of him:"

Ephesians 3:10: "To the intent that now unto the principalities and powers in heavenly places might be known by the church the manifold wisdom of God,"

Colossians 1:9: "For this cause we also, since the day we heard it, do not cease to pray for you, and to desire that ye might be filled with the knowledge of his will in all wisdom and spiritual understanding;"

Colossians 1:28: "Whom we preach, warning every man, and teaching every man in all wisdom; that we may present every man perfect in Christ Jesus:"

Colossians 2:3: "In whom are hid all the treasures of wisdom and knowledge."

Colossians 2:23: "Which things have indeed a shew of wisdom in will worship, and humility, and neglecting of the body: not in any honour to the satisfying of the flesh."

Colossians 3:16: "Let the word of Christ dwell in you richly in all wisdom; teaching and admonishing one another in psalms and hymns and spiritual songs, singing with grace in your hearts to the Lord."

Colossians 4:5: "Walk in wisdom toward them that are without, redeeming the time."

James 1:5: "If any of you lack wisdom, let him ask of God, that giveth to all men liberally, and upbraideth not; and it shall be given him."

James 3:13: "Who is a wise man and endued with knowledge among you? let him shew out of a good conversation his works with meekness of wisdom."

James 3:15: "This wisdom descendeth not from above, but is earthly, sensual, devilish."

James 3:17: "But the wisdom that is from above is first pure, then peaceable, gentle, and easy to be intreated, full of mercy and good fruits, without partiality, and without hypocrisy."

2 Peter 3:15: "And account that the longsuffering of our Lord is salvation; even as our beloved brother Paul also according to the wisdom given unto him hath written unto you;"

Revelation 5:12: "Saying with a loud voice, Worthy is the Lamb that was slain to receive power, and riches, and wisdom, and strength, and honour, and glory, and blessing."

Revelation 7:12: "Saying, Amen: Blessing, and glory, and wisdom, and thanksgiving, and honour, and power, and might, be unto our God for ever and ever. Amen."

Revelation 13:18: "Here is wisdom. Let him that hath understanding count the number of the beast: for it is the number of a man; and his number is Six hundred threescore and six."

Revelation 17:9: "And here is the mind which hath wisdom. The seven heads are seven mountains, on which the woman sitteth."

## WISE

Occurrences: 237

Genesis 3:6: "And when the woman saw that the tree was good for food, and that it was pleasant to the eyes, and a tree to be desired to make one wise, she took of the fruit thereof, and did eat, and gave also unto her husband with her; and he did eat."

Genesis 41:8: "And it came to pass in the morning that his spirit was troubled; and he sent and called for all the magicians of Egypt, and all the wise men thereof: and Pharaoh told them his dream; but there was none that could interpret them unto Pharaoh."

Genesis 41:33: "Now therefore let Pharaoh look out a man discreet and wise, and set him over the land of Egypt."

Genesis 41:39: "And Pharaoh said unto Joseph, Forasmuch as God hath shewed thee all this, there is none so discreet and wise as thou art:"

Exodus 7:11: "Then Pharaoh also called the wise men and the sorcerers: now the magicians of Egypt, they also did in like manner with their enchantments."

Exodus 22:23: "If thou afflict them in any wise, and they cry at all unto me, I will surely hear their cry;"

Exodus 23:8: "And thou shalt take no gift: for the gift blindeth the wise, and perverteth the words of the righteous."

Exodus 28:3: "And thou shalt speak unto all that are wise hearted, whom I have filled with the spirit of wisdom, that they may make Aaron's garments to consecrate him, that he may minister unto me in the priest's office."

Exodus 31:6: "And I, behold, I have given with him Aholiab, the son of Ahisamach, of the tribe of Dan: and in the hearts of all that are wise hearted I have put wisdom, that they may make all that I have commanded thee;"

Exodus 35:10: "And every wise hearted among you shall come, and make all that the LORD hath commanded;"

Exodus 35:25: "And all the women that were wise hearted did spin with their hands, and brought that which they had spun, both of blue, and of purple, and of scarlet, and of fine linen."

Exodus 36:1: "Then wrought Bezaleel and Aholiab, and every wise hearted man, in whom the LORD put wisdom and understanding to know how to work all manner of work for the service of the sanctuary, according to all that the LORD had commanded."

Exodus 36:2: "And Moses called Bezaleel and Aholiab, and every wise hearted man, in whose heart the LORD had put wisdom, even every one whose heart stirred him up to come unto the work to do it:"

Exodus 36:4: "And all the wise men, that wrought all the work of the sanctuary, came every man from his work which they made;"

Exodus 36:8: "And every wise hearted man among them that wrought the work of the tabernacle

made ten curtains of fine twined linen, and blue, and purple, and scarlet: with cherubims of cunning work made he them."

Leviticus 7:24: "And the fat of the beast that dieth of itself, and the fat of that which is torn with beasts, may be used in any other use: but ye shall in no wise eat of it."

Leviticus 19:17: "Thou shalt not hate thy brother in thine heart: thou shalt in any wise rebuke thy neighbour, and not suffer sin upon him."

Leviticus 27:19: "And if he that sanctified the field will in any wise redeem it, then he shall add the fifth part of the money of thy estimation unto it, and it shall be assured to him."

Numbers 6:23: "Speak unto Aaron and unto his sons, saying, On this wise ye shall bless the children of Israel, saying unto them,"

Deuteronomy 1:13: "Take you wise men, and understanding, and known among your tribes, and I will make them rulers over you."

Deuteronomy 1:15: "So I took the chief of your tribes, wise men, and known, and made them heads over you, captains over thousands, and captains over hundreds, and captains over fifties, and captains over tens, and officers among your tribes."

Deuteronomy 4:6: "Keep therefore and do them; for this is your wisdom and your understanding in the sight of the nations, which shall hear all these statutes, and say, Surely this great nation is a wise and understanding people."

Deuteronomy 16:19: "Thou shalt not wrest judgment; thou shalt not respect persons, neither take a gift: for a gift doth blind the eyes of the wise, and pervert the words of the righteous."

Deuteronomy 17:15: "Thou shalt in any wise set him king over thee, whom the LORD thy God shall choose: one from among thy brethren shalt thou set king over thee: thou mayest not set a stranger over thee, which is not thy brother."

Deuteronomy 21:23: "His body shall not remain all night upon the tree, but thou shalt in any wise bury him that day; (for he that is hanged is accursed of God;) that thy land be not defiled, which the LORD thy God giveth thee for an inheritance."

Deuteronomy 22:7: "But thou shalt in any wise let the dam go, and take the young to thee; that it may be well with thee, and that thou mayest prolong thy days."

Deuteronomy 32:29: "O that they were wise, that they understood this, that they would consider their latter end!"

Joshua 6:18: "And ye, in any wise keep yourselves from the accursed thing, lest ye make yourselves accursed, when ye take of the accursed thing, and make the camp of Israel a curse, and trouble it."

Joshua 23:12: "Else if ye do in any wise go back, and cleave unto the remnant of these nations, even these that remain among you, and shall make marriages with them, and go in unto them, and they to you:"

Judges 5:29: "Her wise ladies answered her, yea, she returned answer to herself,"

1 Samuel 6:3: "And they said, If ye send away the ark of the God of Israel, send it not empty; but in any wise return him a trespass offering: then ye shall be healed, and it shall be known to you why his hand is not removed from you."

2 Samuel 14:2: "And Joab sent to Tekoah, and fetched thence a wise woman, and said unto her, I pray thee, feign thyself to be a mourner, and put on now mourning apparel, and anoint not thyself with oil, but be as a woman that had a long time mourned for the dead:"

2 Samuel 14:20: "To fetch about this form of speech hath thy servant Joab done this thing: and my lord is wise, according to the wisdom of an angel of God, to know all things that are in the earth."

2 Samuel 20:16: "Then cried a wise woman out of the city, Hear, hear; say, I pray you, unto Joab, Come near hither, that I may speak with thee."

1 Kings 2:9: "Now therefore hold him not guiltless: for thou art a wise man, and knowest what thou oughtest to do unto him; but his hoar head bring thou down to the grave with blood."

1 Kings 3:12: "Behold, I have done according to thy words: lo, I have given thee a wise and an understanding heart; so that there was none like thee before thee, neither after thee shall any arise

like unto thee."

1 Kings 3:26: "Then spake the woman whose the living child was unto the king, for her bowels yearned upon her son, and she said, O my lord, give her the living child, and in no wise slay it. But the other said, Let it be neither mine nor thine, but divide it."

1 Kings 3:27: "Then the king answered and said, Give her the living child, and in no wise slay it: she is the mother thereof."

1 Kings 5:7: "And it came to pass, when Hiram heard the words of Solomon, that he rejoiced greatly, and said, Blessed be the LORD this day, which hath given unto David a wise son over this great people."

1 Kings 11:22: "Then Pharaoh said unto him, But what hast thou lacked with me, that, behold, thou seekest to go to thine own country? And he answered, Nothing: howbeit let me go in any wise."

1 Chronicles 26:14: "And the lot eastward fell to Shelemiah. Then for Zechariah his son, a wise counsellor, they cast lots; and his lot came out northward."

1 Chronicles 27:32: "Also Jonathan David's uncle was a counsellor, a wise man, and a scribe: and Jehiel the son of Hachmoni was with the king's sons:"

2 Chronicles 2:12: "Hiram said moreover, Blessed be the LORD God of Israel, that made heaven and earth, who hath given to David the king a wise son, endued with prudence and understanding, that might build an house for the LORD, and an house for his kingdom."

Esther 1:13: "Then the king said to the wise men, which knew the times, (for so was the king's manner toward all that knew law and judgment:"

Esther 6:13: "And Haman told Zeresh his wife and all his friends every thing that had befallen him. Then said his wise men and Zeresh his wife unto him, If Mordecai be of the seed of the Jews, before whom thou hast begun to fall, thou shalt not prevail against him, but shalt surely fall before him."

Job 5:13: "He taketh the wise in their own craftiness: and the counsel of the froward is carried headlong."

Job 9:4: "He is wise in heart, and mighty in strength: who hath hardened himself against him, and hath prospered?"

Job 11:12: "For vain men would be wise, though man be born like a wild ass's colt."

Job 15:2: "Should a wise man utter vain knowledge, and fill his belly with the east wind?"

Job 15:18: "Which wise men have told from their fathers, and have not hid it:"

Job 17:10: "But as for you all, do ye return, and come now: for I cannot find one wise man among you."

Job 22:2: "Can a man be profitable unto God, as he that is wise may be profitable unto himself?"

Job 32:9: "Great men are not always wise: neither do the aged understand judgment."

Job 34:2: "Hear my words, O ye wise men; and give ear unto me, ye that have knowledge."

Job 34:34: "Let men of understanding tell me, and let a wise man hearken unto me."

Job 37:24: "Men do therefore fear him: he respecteth not any that are wise of heart."

Psalms 2:10: "Be wise now therefore, O ye kings: be instructed, ye judges of the earth."

Psalms 19:7: "The law of the LORD is perfect, converting the soul: the testimony of the LORD is sure, making wise the simple."

Psalms 36:3: "The words of his mouth are iniquity and deceit: he hath left off to be wise, and to do good."

Psalms 37:8: "Cease from anger, and forsake wrath: fret not thyself in any wise to do evil."

Psalms 49:10: "For he seeth that wise men die, likewise the fool and the brutish person perish, and leave their wealth to others."

Psalms 94:8: "Understand, ye brutish among the people: and ye fools, when will ye be wise?"

Psalms 107:43: "Whoso is wise, and will observe these things, even they shall understand the lovingkindness of the LORD."

Proverbs 1:5: "A wise man will hear, and will increase learning; and a man of understanding shall attain unto wise counsels:"

Proverbs 1:6: "To understand a proverb, and the interpretation; the words of the wise, and their dark sayings."

Proverbs 3:7: "Be not wise in thine own eyes: fear the LORD, and depart from evil."

Proverbs 3:35: "The wise shall inherit glory: but shame shall be the promotion of fools."

Proverbs 6:6: "Go to the ant, thou sluggard; consider her ways, and be wise:"

Proverbs 8:33: "Hear instruction, and be wise, and refuse it not."

Proverbs 9:8: "Reprove not a scorner, lest he hate thee: rebuke a wise man, and he will love thee."

Proverbs 9:9: "Give instruction to a wise man, and he will be yet wiser: teach a just man, and he will increase in learning."

Proverbs 9:12: "If thou be wise, thou shalt be wise for thyself: but if thou scornest, thou alone shalt bear it."

Proverbs 10:1: "The proverbs of Solomon. A wise son maketh a glad father: but a foolish son is the heaviness of his mother."

Proverbs 10:5: "He that gathereth in summer is a wise son: but he that sleepeth in harvest is a son that causeth shame."

Proverbs 10:8: "The wise in heart will receive commandments: but a prating fool shall fall."

Proverbs 10:14: "Wise men lay up knowledge: but the mouth of the foolish is near destruction."

Proverbs 10:19: "In the multitude of words there wanteth not sin: but he that refraineth his lips is wise."

Proverbs 11:29: "He that troubleth his own house shall inherit the wind: and the fool shall be servant to the wise of heart."

Proverbs 11:30: "The fruit of the righteous is a tree of life; and he that winneth souls is wise."

Proverbs 12:15: "The way of a fool is right in his own eyes: but he that hearkeneth unto counsel is wise."

Proverbs 12:18: "There is that speaketh like the piercings of a sword: but the tongue of the wise is health."

Proverbs 13:1: "A wise son heareth his father's instruction: but a scorner heareth not rebuke."

Proverbs 13:14: "The law of the wise is a fountain of life, to depart from the snares of death."

Proverbs 13:20: "He that walketh with wise men shall be wise: but a companion of fools shall be destroyed."

Proverbs 14:1: "Every wise woman buildeth her house: but the foolish plucketh it down with her hands."

Proverbs 14:3: "In the mouth of the foolish is a rod of pride: but the lips of the wise shall preserve them."

Proverbs 14:16: "A wise man feareth, and departeth from evil: but the fool rageth, and is confident."

Proverbs 14:24: "The crown of the wise is their riches: but the foolishness of fools is folly."

Proverbs 14:35: "The king's favour is toward a wise servant: but his wrath is against him that causeth shame."

Proverbs 15:2: "The tongue of the wise useth knowledge aright: but the mouth of fools poureth out foolishness."

Proverbs 15:7: "The lips of the wise disperse knowledge: but the heart of the foolish doeth not so."

Proverbs 15:12: "A scorner loveth not one that reproveth him: neither will he go unto the wise."

Proverbs 15:20: "A wise son maketh a glad father: but a foolish man despiseth his mother."

Proverbs 15:24: "The way of life is above to the wise, that he may depart from hell beneath."

Proverbs 15:31: "The ear that heareth the reproof of life abideth among the wise."

Proverbs 16:14: "The wrath of a king is as messengers of death: but a wise man will pacify it."

Proverbs 16:21: "The wise in heart shall be called prudent: and the sweetness of the lips increaseth learning."

Proverbs 16:23: "The heart of the wise teacheth his mouth, and addeth learning to his lips."

Proverbs 17:2: "A wise servant shall have rule over a son that causeth shame, and shall have part of



the inheritance among the brethren."

Proverbs 17:10: "A reproof entereth more into a wise man than an hundred stripes into a fool."

Proverbs 17:28: "Even a fool, when he holdeth his peace, is counted wise: and he that shutteth his lips is esteemed a man of understanding."

Proverbs 18:15: "The heart of the prudent getteth knowledge; and the ear of the wise seeketh knowledge."

Proverbs 19:20: "Hear counsel, and receive instruction, that thou mayest be wise in thy latter end."

Proverbs 20:1: "Wine is a mocker, strong drink is raging: and whosoever is deceived thereby is not wise."

Proverbs 20:26: "A wise king scattereth the wicked, and bringeth the wheel over them."

Proverbs 21:11: "When the scorner is punished, the simple is made wise: and when the wise is instructed, he receiveth knowledge."

Proverbs 21:20: "There is treasure to be desired and oil in the dwelling of the wise; but a foolish man spendeth it up."

Proverbs 21:22: "A wise man scaleth the city of the mighty, and casteth down the strength of the confidence thereof."

Proverbs 22:17: "Bow down thine ear, and hear the words of the wise, and apply thine heart unto my knowledge."

Proverbs 23:15: "My son, if thine heart be wise, my heart shall rejoice, even mine."

Proverbs 23:19: "Hear thou, my son, and be wise, and guide thine heart in the way."

Proverbs 23:24: "The father of the righteous shall greatly rejoice: and he that begetteth a wise child shall have joy of him."

Proverbs 24:5: "A wise man is strong; yea, a man of knowledge increaseth strength."

Proverbs 24:6: "For by wise counsel thou shalt make thy war: and in multitude of counsellors there is safety."

Proverbs 24:23: "These things also belong to the wise. It is not good to have respect of persons in judgment."

Proverbs 25:12: "As an earring of gold, and an ornament of fine gold, so is a wise reprove upon an obedient ear."

Proverbs 26:5: "Answer a fool according to his folly, lest he be wise in his own conceit."

Proverbs 26:12: "Seest thou a man wise in his own conceit? there is more hope of a fool than of him."

Proverbs 27:11: "My son, be wise, and make my heart glad, that I may answer him that reproacheth me."

Proverbs 28:7: "Whoso keepeth the law is a wise son: but he that is a companion of riotous men shameth his father."

Proverbs 28:11: "The rich man is wise in his own conceit; but the poor that hath understanding searcheth him out."

Proverbs 29:8: "Scornful men bring a city into a snare: but wise men turn away wrath."

Proverbs 29:9: "If a wise man contendeth with a foolish man, whether he rage or laugh, there is no rest."

Proverbs 29:11: "A fool uttereth all his mind: but a wise man keepeth it in till afterwards."

Proverbs 30:24: "There be four things which are little upon the earth, but they are exceeding wise:"

Ecclesiastes 2:14: "The wise man's eyes are in his head; but the fool walketh in darkness: and I myself perceived also that one event happeneth to them all."

Ecclesiastes 2:15: "Then said I in my heart, As it happeneth to the fool, so it happeneth even to me; and why was I then more wise? Then I said in my heart, that this also is vanity."

Ecclesiastes 2:16: "For there is no remembrance of the wise more than of the fool for ever; seeing that which now is in the days to come shall all be forgotten. And how dieth the wise man? as the fool."

Ecclesiastes 2:19: "And who knoweth whether he shall be a wise man or a fool? yet shall he have rule over all my labour wherein I have laboured, and wherein I have shewed myself wise under the sun. This is also vanity."

Ecclesiastes 4:13: "Better is a poor and a wise child than an old and foolish king, who will no more be admonished."

Ecclesiastes 6:8: "For what hath the wise more than the fool? what hath the poor, that knoweth to walk before the living?"

Ecclesiastes 7:4: "The heart of the wise is in the house of mourning; but the heart of fools is in the house of mirth."

Ecclesiastes 7:5: "It is better to hear the rebuke of the wise, than for a man to hear the song of fools."

Ecclesiastes 7:7: "Surely oppression maketh a wise man mad; and a gift destroyeth the heart."

Ecclesiastes 7:16: "Be not righteous over much; neither make thyself over wise: why shouldest thou destroy thyself?"

Ecclesiastes 7:19: "Wisdom strengtheneth the wise more than ten mighty men which are in the city."

Ecclesiastes 7:23: "All this have I proved by wisdom: I said, I will be wise; but it was far from me."

Ecclesiastes 8:1: "Who is as the wise man? and who knoweth the interpretation of a thing? a man's wisdom maketh his face to shine, and the boldness of his face shall be changed."

Ecclesiastes 8:5: "Whoso keepeth the commandment shall feel no evil thing; and a wise man's heart discerneth both time and judgment."

Ecclesiastes 8:17: "Then I beheld all the work of God, that a man cannot find out the work that is done under the sun: because though a man labour to seek it out, yet he shall not find it; yea farther; though a wise man think to know it, yet shall he not be able to find it."

Ecclesiastes 9:1: "For all this I considered in my heart even to declare all this, that the righteous, and the wise, and their works, are in the hand of God: no man knoweth either love or hatred by all that is before them."

Ecclesiastes 9:11: "I returned, and saw under the sun, that the race is not to the swift, nor the battle to the strong, neither yet bread to the wise, nor yet riches to men of understanding, nor yet favour to men of skill; but time and chance happeneth to them all."

Ecclesiastes 9:15: "Now there was found in it a poor wise man, and he by his wisdom delivered the city; yet no man remembered that same poor man."

Ecclesiastes 9:17: "The words of wise men are heard in quiet more than the cry of him that ruleth among fools."

Ecclesiastes 10:2: "A wise man's heart is at his right hand; but a fool's heart at his left."

Ecclesiastes 10:12: "The words of a wise man's mouth are gracious; but the lips of a fool will swallow up himself."

Ecclesiastes 12:9: "And moreover, because the preacher was wise, he still taught the people knowledge; yea, he gave good heed, and sought out, and set in order many proverbs."

Ecclesiastes 12:11: "The words of the wise are as goads, and as nails fastened by the masters of assemblies, which are given from one shepherd."

Isaiah 5:21: "Woe unto them that are wise in their own eyes, and prudent in their own sight!"

Isaiah 19:11: "Surely the princes of Zoan are fools, the counsel of the wise counsellors of Pharaoh is become brutish: how say ye unto Pharaoh, I am the son of the wise, the son of ancient kings?"

Isaiah 19:12: "Where are they? where are thy wise men? and let them tell thee now, and let them know what the LORD of hosts hath purposed upon Egypt."

Isaiah 29:14: "Therefore, behold, I will proceed to do a marvellous work among this people, even a marvellous work and a wonder: for the wisdom of their wise men shall perish, and the understanding of their prudent men shall be hid."

Isaiah 31:2: "Yet he also is wise, and will bring evil, and will not call back his words: but will arise

against the house of the evildoers, and against the help of them that work iniquity."

Isaiah 44:25: "That frustrateth the tokens of the liars, and maketh diviners mad; that turneth wise men backward, and maketh their knowledge foolish;"

Jeremiah 4:22: "For my people is foolish, they have not known me; they are sottish children, and they have none understanding: they are wise to do evil, but to do good they have no knowledge."

Jeremiah 8:8: "How do ye say, We are wise, and the law of the LORD is with us? Lo, certainly in vain made he it; the pen of the scribes is in vain."

Jeremiah 8:9: "The wise men are ashamed, they are dismayed and taken: lo, they have rejected the word of the LORD; and what wisdom is in them?"

Jeremiah 9:12: "Who is the wise man, that may understand this? and who is he to whom the mouth of the LORD hath spoken, that he may declare it, for what the land perisheth and is burned up like a wilderness, that none passeth through?"

Jeremiah 9:23: "Thus saith the LORD, Let not the wise man glory in his wisdom, neither let the mighty man glory in his might, let not the rich man glory in his riches:"

Jeremiah 10:7: "Who would not fear thee, O King of nations? for to thee doth it appertain: forasmuch as among all the wise men of the nations, and in all their kingdoms, there is none like unto thee."

Jeremiah 18:18: "Then said they, Come and let us devise devices against Jeremiah; for the law shall not perish from the priest, nor counsel from the wise, nor the word from the prophet. Come, and let us smite him with the tongue, and let us not give heed to any of his words."

Jeremiah 50:35: "A sword is upon the Chaldeans, saith the LORD, and upon the inhabitants of Babylon, and upon her princes, and upon her wise men."

Jeremiah 51:57: "And I will make drunk her princes, and her wise men, her captains, and her rulers, and her mighty men: and they shall sleep a perpetual sleep, and not wake, saith the King, whose name is the LORD of hosts."

Ezekiel 27:8: "The inhabitants of Zidon and Arvad were thy mariners: thy wise men, O Tyrus, that were in thee, were thy pilots."

Ezekiel 27:9: "The ancients of Gebal and the wise men thereof were in thee thy calkers: all the ships of the sea with their mariners were in thee to occupy thy merchandise."

Daniel 2:12: "For this cause the king was angry and very furious, and commanded to destroy all the wise men of Babylon."

Daniel 2:13: "And the decree went forth that the wise men should be slain; and they sought Daniel and his fellows to be slain."

Daniel 2:14: "Then Daniel answered with counsel and wisdom to Arioch the captain of the king's guard, which was gone forth to slay the wise men of Babylon:"

Daniel 2:18: "That they would desire mercies of the God of heaven concerning this secret; that Daniel and his fellows should not perish with the rest of the wise men of Babylon."

Daniel 2:21: "And he changeth the times and the seasons: he removeth kings, and setteth up kings: he giveth wisdom unto the wise, and knowledge to them that know understanding:"

Daniel 2:24: "Therefore Daniel went in unto Arioch, whom the king had ordained to destroy the wise men of Babylon: he went and said thus unto him; Destroy not the wise men of Babylon: bring me in before the king, and I will shew unto the king the interpretation."

Daniel 2:27: "Daniel answered in the presence of the king, and said, The secret which the king hath demanded cannot the wise men, the astrologers, the magicians, the soothsayers, shew unto the king;"

Daniel 2:48: "Then the king made Daniel a great man, and gave him many great gifts, and made him ruler over the whole province of Babylon, and chief of the governors over all the wise men of Babylon."

Daniel 4:6: "Therefore made I a decree to bring in all the wise men of Babylon before me, that they might make known unto me the interpretation of the dream."

Daniel 4:18: "This dream I king Nebuchadnezzar have seen. Now thou, O Belteshazzar, declare the interpretation thereof, forasmuch as all the wise men of my kingdom are not able to make known unto me the interpretation: but thou art able; for the spirit of the holy gods is in thee."

Daniel 5:7: "The king cried aloud to bring in the astrologers, the Chaldeans, and the soothsayers. And the king spake, and said to the wise men of Babylon, Whosoever shall read this writing, and shew me the interpretation thereof, shall be clothed with scarlet, and have a chain of gold about his neck, and shall be the third ruler in the kingdom."

Daniel 5:8: "Then came in all the king's wise men: but they could not read the writing, nor make known to the king the interpretation thereof."

Daniel 5:15: "And now the wise men, the astrologers, have been brought in before me, that they should read this writing, and make known unto me the interpretation thereof: but they could not shew the interpretation of the thing:"

Daniel 12:3: "And they that be wise shall shine as the brightness of the firmament; and they that turn many to righteousness as the stars for ever and ever."

Daniel 12:10: "Many shall be purified, and made white, and tried; but the wicked shall do wickedly: and none of the wicked shall understand; but the wise shall understand."

Hosea 14:9: "Who is wise, and he shall understand these things? prudent, and he shall know them? for the ways of the LORD are right, and the just shall walk in them: but the transgressors shall fall therein."

Obadiah 1:8: "Shall I not in that day, saith the LORD, even destroy the wise men out of Edom, and understanding out of the mount of Esau?"

Zechariah 9:2: "And Hamath also shall border thereby; Tyrus, and Zidon, though it be very wise."

Matthew 1:18: "Now the birth of Jesus Christ was on this wise: When as his mother Mary was espoused to Joseph, before they came together, she was found with child of the Holy Ghost."

Matthew 2:1: "Now when Jesus was born in Bethlehem of Judaea in the days of Herod the king, behold, there came wise men from the east to Jerusalem,"

Matthew 2:7: "Then Herod, when he had privily called the wise men, enquired of them diligently what time the star appeared."

Matthew 2:16: "Then Herod, when he saw that he was mocked of the wise men, was exceeding wroth, and sent forth, and slew all the children that were in Bethlehem, and in all the coasts thereof, from two years old and under, according to the time which he had diligently enquired of the wise men."

Matthew 5:18: "For verily I say unto you, Till heaven and earth pass, one jot or one tittle shall in no wise pass from the law, till all be fulfilled."

Matthew 7:24: "Therefore whosoever heareth these sayings of mine, and doeth them, I will liken him unto a wise man, which built his house upon a rock:"

Matthew 10:16: "Behold, I send you forth as sheep in the midst of wolves: be ye therefore wise as serpents, and harmless as doves."

Matthew 10:42: "And whosoever shall give to drink unto one of these little ones a cup of cold water only in the name of a disciple, verily I say unto you, he shall in no wise lose his reward."

Matthew 11:25: "At that time Jesus answered and said, I thank thee, O Father, Lord of heaven and earth, because thou hast hid these things from the wise and prudent, and hast revealed them unto babes."

Matthew 21:24: "And Jesus answered and said unto them, I also will ask you one thing, which if ye tell me, I in like wise will tell you by what authority I do these things."

Matthew 23:34: "Wherefore, behold, I send unto you prophets, and wise men, and scribes: and some of them ye shall kill and crucify; and some of them shall ye scourge in your synagogues, and persecute them from city to city:"

Matthew 24:45: "Who then is a faithful and wise servant, whom his lord hath made ruler over his household, to give them meat in due season?"

Matthew 25:2: "And five of them were wise, and five were foolish."

Matthew 25:4: "But the wise took oil in their vessels with their lamps."

Matthew 25:8: "And the foolish said unto the wise, Give us of your oil; for our lamps are gone out."

Matthew 25:9: "But the wise answered, saying, Not so; lest there be not enough for us and you: but go ye rather to them that sell, and buy for yourselves."

Mark 14:31: "But he spake the more vehemently, If I should die with thee, I will not deny thee in any wise. Likewise also said they all."

Luke 10:21: "In that hour Jesus rejoiced in spirit, and said, I thank thee, O Father, Lord of heaven and earth, that thou hast hid these things from the wise and prudent, and hast revealed them unto babes: even so, Father; for so it seemed good in thy sight."

Luke 12:42: "And the Lord said, Who then is that faithful and wise steward, whom his lord shall make ruler over his household, to give them their portion of meat in due season?"

Luke 13:11: "And, behold, there was a woman which had a spirit of infirmity eighteen years, and was bowed together, and could in no wise lift up herself."

Luke 18:17: "Verily I say unto you, Whosoever shall not receive the kingdom of God as a little child shall in no wise enter therein."

John 6:37: "All that the Father giveth me shall come to me; and him that cometh to me I will in no wise cast out."

John 21:1: "After these things Jesus shewed himself again to the disciples at the sea of Tiberias; and on this wise shewed he himself."

Acts 7:6: "And God spake on this wise, That his seed should sojourn in a strange land; and that they should bring them into bondage, and entreat them evil four hundred years."

Acts 13:34: "And as concerning that he raised him up from the dead, now no more to return to corruption, he said on this wise, I will give you the sure mercies of David."

Acts 13:41: "Behold, ye despisers, and wonder, and perish: for I work a work in your days, a work which ye shall in no wise believe, though a man declare it unto you."

Romans 1:14: "I am debtor both to the Greeks, and to the Barbarians; both to the wise, and to the unwise."

Romans 1:22: "Professing themselves to be wise, they became fools,"

Romans 3:9: "What then? are we better than they? No, in no wise: for we have before proved both Jews and Gentiles, that they are all under sin;"

Romans 10:6: "But the righteousness which is of faith speaketh on this wise, Say not in thine heart, Who shall ascend into heaven? (that is, to bring Christ down from above:)"

Romans 11:25: "For I would not, brethren, that ye should be ignorant of this mystery, lest ye should be wise in your own conceits; that blindness in part is happened to Israel, until the fulness of the Gentiles be come in."

Romans 12:16: "Be of the same mind one toward another. Mind not high things, but condescend to men of low estate. Be not wise in your own conceits."

Romans 16:19: "For your obedience is come abroad unto all men. I am glad therefore on your behalf: but yet I would have you wise unto that which is good, and simple concerning evil."

Romans 16:27: "To God only wise, be glory through Jesus Christ for ever. Amen."

1 Corinthians 1:19: "For it is written, I will destroy the wisdom of the wise, and will bring to nothing the understanding of the prudent."

1 Corinthians 1:20: "Where is the wise? where is the scribe? where is the disputer of this world? hath not God made foolish the wisdom of this world?"

1 Corinthians 1:26: "For ye see your calling, brethren, how that not many wise men after the flesh, not many mighty, not many noble, are called:"

1 Corinthians 1:27: "But God hath chosen the foolish things of the world to confound the wise; and God hath chosen the weak things of the world to confound the things which are mighty;"

1 Corinthians 3:10: "According to the grace of God which is given unto me, as a wise

masterbuilder, I have laid the foundation, and another buildeth thereon. But let every man take heed how he buildeth thereupon."

1 Corinthians 3:18: "Let no man deceive himself. If any man among you seemeth to be wise in this world, let him become a fool, that he may be wise."

1 Corinthians 3:19: "For the wisdom of this world is foolishness with God. For it is written, He taketh the wise in their own craftiness."

1 Corinthians 3:20: "And again, The Lord knoweth the thoughts of the wise, that they are vain."

1 Corinthians 4:10: "We are fools for Christ's sake, but ye are wise in Christ; we are weak, but ye are strong; ye are honourable, but we are despised."

1 Corinthians 6:5: "I speak to your shame. Is it so, that there is not a wise man among you? no, not one that shall be able to judge between his brethren?"

1 Corinthians 10:15: "I speak as to wise men; judge ye what I say."

2 Corinthians 10:12: "For we dare not make ourselves of the number, or compare ourselves with some that commend themselves: but they measuring themselves by themselves, and comparing themselves among themselves, are not wise."

2 Corinthians 11:19: "For ye suffer fools gladly, seeing ye yourselves are wise."

Ephesians 5:15: "See then that ye walk circumspectly, not as fools, but as wise,"

1 Timothy 1:17: "Now unto the King eternal, immortal, invisible, the only wise God, be honour and glory for ever and ever. Amen."

2 Timothy 3:15: "And that from a child thou hast known the holy scriptures, which are able to make thee wise unto salvation through faith which is in Christ Jesus."

Hebrews 4:4: "For he spake in a certain place of the seventh day on this wise, And God did rest the seventh day from all his works."

James 3:13: "Who is a wise man and endued with knowledge among you? let him shew out of a good conversation his works with meekness of wisdom."

Jude 1:25: "To the only wise God our Saviour, be glory and majesty, dominion and power, both now and ever. Amen."

Revelation 21:27: "And there shall in no wise enter into it any thing that defileth, neither whatsoever worketh abomination, or maketh a lie: but they which are written in the Lamb's book of life."

## **WISELY**

Occurrences: 14

Exodus 1:10: "Come on, let us deal wisely with them; lest they multiply, and it come to pass, that, when there falleth out any war, they join also unto our enemies, and fight against us, and so get them up out of the land."

1 Samuel 18:5: "And David went out whithersoever Saul sent him, and behaved himself wisely: and Saul set him over the men of war, and he was accepted in the sight of all the people, and also in the sight of Saul's servants."

1 Samuel 18:14: "And David behaved himself wisely in all his ways; and the LORD was with him."

1 Samuel 18:15: "Wherefore when Saul saw that he behaved himself very wisely, he was afraid of him."

1 Samuel 18:30: "Then the princes of the Philistines went forth: and it came to pass, after they went forth, that David behaved himself more wisely than all the servants of Saul; so that his name was much set by."

2 Chronicles 11:23: "And he dealt wisely, and dispersed of all his children throughout all the countries of Judah and Benjamin, unto every fenced city: and he gave them victual in abundance. And he desired many wives."

Psalms 58:5: "Which will not hearken to the voice of charmers, charming never so wisely."

Psalms 64:9: "And all men shall fear, and shall declare the work of God; for they shall wisely

consider of his doing."

Psalms 101:2: "I will behave myself wisely in a perfect way. O when wilt thou come unto me? I will walk within my house with a perfect heart."

Proverbs 16:20: "He that handleth a matter wisely shall find good: and whoso trusteth in the LORD, happy is he."

Proverbs 21:12: "The righteous man wisely considereth the house of the wicked: but God overthroweth the wicked for their wickedness."

Proverbs 28:26: "He that trusteth in his own heart is a fool: but whoso walketh wisely, he shall be delivered."

Ecclesiastes 7:10: "Say not thou, What is the cause that the former days were better than these? for thou dost not enquire wisely concerning this."

Luke 16:8: "And the lord commended the unjust steward, because he had done wisely: for the children of this world are in their generation wiser than the children of light."

## **WISER**

Occurrences: 8

1 Kings 4:31: "For he was wiser than all men; than Ethan the Ezrahite, and Heman, and Chalcol, and Darda, the sons of Mahol: and his fame was in all nations round about."

Job 35:11: "Who teacheth us more than the beasts of the earth, and maketh us wiser than the fowls of heaven?"

Psalms 119:98: "Thou through thy commandments hast made me wiser than mine enemies: for they are ever with me."

Proverbs 9:9: "Give instruction to a wise man, and he will be yet wiser: teach a just man, and he will increase in learning."

Proverbs 26:16: "The sluggard is wiser in his own conceit than seven men that can render a reason."

Ezekiel 28:3: "Behold, thou art wiser than Daniel; there is no secret that they can hide from thee:"

Luke 16:8: "And the lord commended the unjust steward, because he had done wisely: for the children of this world are in their generation wiser than the children of light."

1 Corinthians 1:25: "Because the foolishness of God is wiser than men; and the weakness of God is stronger than men."

## **WISH**

Occurrences: 6

Job 33:6: "Behold, I am according to thy wish in God's stead: I also am formed out of the clay."

Psalms 40:14: "Let them be ashamed and confounded together that seek after my soul to destroy it; let them be driven backward and put to shame that wish me evil."

Psalms 73:7: "Their eyes stand out with fatness: they have more than heart could wish."

Romans 9:3: "For I could wish that myself were accursed from Christ for my brethren, my kinsmen according to the flesh:"

2 Corinthians 13:9: "For we are glad, when we are weak, and ye are strong: and this also we wish, even your perfection."

3 John 1:2: "Beloved, I wish above all things that thou mayest prosper and be in health, even as thy soul prospereth."

## **WISHED**

Occurrences: 2

Jonah 4:8: "And it came to pass, when the sun did arise, that God prepared a vehement east wind; and the sun beat upon the head of Jonah, that he fainted, and wished in himself to die, and said, It is

better for me to die than to live."

Acts 27:29: "Then fearing lest we should have fallen upon rocks, they cast four anchors out of the stern, and wished for the day."

## WISHING

Occurrences: 1

Job 31:30: "Neither have I suffered my mouth to sin by wishing a curse to his soul."

## WIST

Occurrences: 13

Exodus 16:15: "And when the children of Israel saw it, they said one to another, It is manna: for they wist not what it was. And Moses said unto them, This is the bread which the LORD hath given you to eat."

Exodus 34:29: "And it came to pass, when Moses came down from mount Sinai with the two tables of testimony in Moses' hand, when he came down from the mount, that Moses wist not that the skin of his face shone while he talked with him."

Leviticus 5:17: "And if a soul sin, and commit any of these things which are forbidden to be done by the commandments of the LORD; though he wist it not, yet is he guilty, and shall bear his iniquity."

Leviticus 5:18: "And he shall bring a ram without blemish out of the flock, with thy estimation, for a trespass offering, unto the priest: and the priest shall make an atonement for him concerning his ignorance wherein he erred and wist it not, and it shall be forgiven him."

Joshua 2:4: "And the woman took the two men, and hid them, and said thus, There came men unto me, but I wist not whence they were:"

Joshua 8:14: "And it came to pass, when the king of Ai saw it, that they hasted and rose up early, and the men of the city went out against Israel to battle, he and all his people, at a time appointed, before the plain; but he wist not that there were liers in ambush against him behind the city."

Judges 16:20: "And she said, The Philistines be upon thee, Samson. And he awoke out of his sleep, and said, I will go out as at other times before, and shake myself. And he wist not that the LORD was departed from him."

Mark 9:6: "For he wist not what to say; for they were sore afraid."

Mark 14:40: "And when he returned, he found them asleep again, (for their eyes were heavy,) neither wist they what to answer him."

Luke 2:49: "And he said unto them, How is it that ye sought me? wist ye not that I must be about my Father's business?"

John 5:13: "And he that was healed wist not who it was: for Jesus had conveyed himself away, a multitude being in that place."

Acts 12:9: "And he went out, and followed him; and wist not that it was true which was done by the angel; but thought he saw a vision."

Acts 23:5: "Then said Paul, I wist not, brethren, that he was the high priest: for it is written, Thou shalt not speak evil of the ruler of thy people."

## WIT

Occurrences: 22

Genesis 24:21: "And the man wondering at her held his peace, to wit whether the LORD had made his journey prosperous or not."

Exodus 2:4: "And his sister stood afar off, to wit what would be done to him."

Joshua 17:1: "There was also a lot for the tribe of Manasseh; for he was the firstborn of Joseph; to



wit, for Machir the firstborn of Manasseh, the father of Gilead: because he was a man of war, therefore he had Gilead and Bashan."

1 Kings 2:32: "And the LORD shall return his blood upon his own head, who fell upon two men more righteous and better than he, and slew them with the sword, my father David not knowing thereof, to wit, Abner the son of Ner, captain of the host of Israel, and Amasa the son of Jether, captain of the host of Judah."

1 Kings 7:50: "And the bowls, and the snuffers, and the basons, and the spoons, and the censers of pure gold; and the hinges of gold, both for the doors of the inner house, the most holy place, and for the doors of the house, to wit, of the temple."

1 Kings 13:23: "And it came to pass, after he had eaten bread, and after he had drunk, that he saddled for him the ass, to wit, for the prophet whom he had brought back."

2 Kings 10:29: "Howbeit from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel to sin, Jehu departed not from after them, to wit, the golden calves that were in Bethel, and that were in Dan."

1 Chronicles 7:2: "And the sons of Tola; Uzzi, and Rephaiah, and Jeriel, and Jahmai, and Jibsam, and Shemuel, heads of their father's house, to wit, of Tola: they were valiant men of might in their generations; whose number was in the days of David two and twenty thousand and six hundred."

1 Chronicles 27:1: "Now the children of Israel after their number, to wit, the chief fathers and captains of thousands and hundreds, and their officers that served the king in any matter of the courses, which came in and went out month by month throughout all the months of the year, of every course were twenty and four thousand."

2 Chronicles 4:12: "To wit, the two pillars, and the pommels, and the chapiters which were on the top of the two pillars, and the two wreaths to cover the two pommels of the chapiters which were on the top of the pillars;"

2 Chronicles 25:7: "But there came a man of God to him, saying, O king, let not the army of Israel go with thee; for the LORD is not with Israel, to wit, with all the children of Ephraim."

2 Chronicles 25:10: "Then Amaziah separated them, to wit, the army that was come to him out of Ephraim, to go home again: wherefore their anger was greatly kindled against Judah, and they returned home in great anger."

2 Chronicles 31:3: "He appointed also the king's portion of his substance for the burnt offerings, to wit, for the morning and evening burnt offerings, and the burnt offerings for the sabbaths, and for the new moons, and for the set feasts, as it is written in the law of the LORD."

Nehemiah 11:3: "Now these are the chief of the province that dwelt in Jerusalem: but in the cities of Judah dwelt every one in his possession in their cities, to wit, Israel, the priests, and the Levites, and the Nethinims, and the children of Solomon's servants."

Esther 2:12: "Now when every maid's turn was come to go in to king Ahasuerus, after that she had been twelve months, according to the manner of the women, (for so were the days of their purifications accomplished, to wit, six months with oil of myrrh, and six months with sweet odours, and with other things for the purifying of the women;)"

Psalms 107:27: "They reel to and fro, and stagger like a drunken man, and are at their wit's end."

Jeremiah 25:18: "To wit, Jerusalem, and the cities of Judah, and the kings thereof, and the princes thereof, to make them a desolation, an astonishment, an hissing, and a curse; as it is this day;"

Jeremiah 34:9: "That every man should let his manservant, and every man his maidservant, being an Hebrew or an Hebrewess, go free; that none should serve himself of them, to wit, of a Jew his brother."

Ezekiel 13:16: "To wit, the prophets of Israel which prophesy concerning Jerusalem, and which see visions of peace for her, and there is no peace, saith the Lord GOD."

Romans 8:23: "And not only they, but ourselves also, which have the firstfruits of the Spirit, even we ourselves groan within ourselves, waiting for the adoption, to wit, the redemption of our body."

2 Corinthians 5:19: "To wit, that God was in Christ, reconciling the world unto himself, not imputing their trespasses unto them; and hath committed unto us the word of reconciliation."

2 Corinthians 8:1: "Moreover, brethren, we do you to wit of the grace of God bestowed on the churches of Macedonia;"

## **WITCH**

Occurrences: 2

Exodus 22:18: "Thou shalt not suffer a witch to live."

Deuteronomy 18:10: "There shall not be found among you any one that maketh his son or his daughter to pass through the fire, or that useth divination, or an observer of times, or an enchanter, or a witch."

## **WITCHCRAFT**

Occurrences: 3

1 Samuel 15:23: "For rebellion is as the sin of witchcraft, and stubbornness is as iniquity and idolatry. Because thou hast rejected the word of the LORD, he hath also rejected thee from being king."

2 Chronicles 33:6: "And he caused his children to pass through the fire in the valley of the son of Hinnom: also he observed times, and used enchantments, and used witchcraft, and dealt with a familiar spirit, and with wizards: he wrought much evil in the sight of the LORD, to provoke him to anger."

Galatians 5:20: "Idolatry, witchcraft, hatred, variance, emulations, wrath, strife, seditions, heresies,"

## **WITCHCRAFTS**

Occurrences: 3

2 Kings 9:22: "And it came to pass, when Joram saw Jehu, that he said, Is it peace, Jehu? And he answered, What peace, so long as the whoredoms of thy mother Jezebel and her witchcrafts are so many?"

Micah 5:12: "And I will cut off witchcrafts out of thine hand; and thou shalt have no more soothsayers:"

Nahum 3:4: "Because of the multitude of the whoredoms of the wellfavoured harlot, the mistress of witchcrafts, that selleth nations through her whoredoms, and families through her witchcrafts."

## **WITH**

Occurrences: 4854

Genesis 3:6: "And when the woman saw that the tree was good for food, and that it was pleasant to the eyes, and a tree to be desired to make one wise, she took of the fruit thereof, and did eat, and gave also unto her husband with her; and he did eat."

Genesis 3:12: "And the man said, The woman whom thou gavest to be with me, she gave me of the tree, and I did eat."

Genesis 4:8: "And Cain talked with Abel his brother: and it came to pass, when they were in the field, that Cain rose up against Abel his brother, and slew him."

Genesis 5:22: "And Enoch walked with God after he begat Methuselah three hundred years, and begat sons and daughters:"

Genesis 5:24: "And Enoch walked with God: and he was not; for God took him."

Genesis 6:3: "And the LORD said, My spirit shall not always strive with man, for that he also is flesh: yet his days shall be an hundred and twenty years."

Genesis 6:9: "These are the generations of Noah: Noah was a just man and perfect in his generations, and Noah walked with God."

Genesis 6:11: "The earth also was corrupt before God, and the earth was filled with violence."

Genesis 6:13: "And God said unto Noah, The end of all flesh is come before me; for the earth is filled with violence through them; and, behold, I will destroy them with the earth."

Genesis 6:14: "Make thee an ark of gopher wood; rooms shalt thou make in the ark, and shalt pitch it within and without with pitch."

Genesis 6:16: "A window shalt thou make to the ark, and in a cubit shalt thou finish it above; and the door of the ark shalt thou set in the side thereof; with lower, second, and third stories shalt thou make it."

Genesis 6:18: "But with thee will I establish my covenant; and thou shalt come into the ark, thou, and thy sons, and thy wife, and thy sons' wives with thee."

Genesis 6:19: "And of every living thing of all flesh, two of every sort shalt thou bring into the ark, to keep them alive with thee; they shall be male and female."

Genesis 7:7: "And Noah went in, and his sons, and his wife, and his sons' wives with him, into the ark, because of the waters of the flood."

Genesis 7:13: "In the selfsame day entered Noah, and Shem, and Ham, and Japheth, the sons of Noah, and Noah's wife, and the three wives of his sons with them, into the ark;"

Genesis 7:23: "And every living substance was destroyed which was upon the face of the ground, both man, and cattle, and the creeping things, and the fowl of the heaven; and they were destroyed from the earth: and Noah only remained alive, and they that were with him in the ark."

Genesis 8:1: "And God remembered Noah, and every living thing, and all the cattle that was with him in the ark: and God made a wind to pass over the earth, and the waters asswaged;"

Genesis 8:16: "Go forth of the ark, thou, and thy wife, and thy sons, and thy sons' wives with thee."

Genesis 8:17: "Bring forth with thee every living thing that is with thee, of all flesh, both of fowl, and of cattle, and of every creeping thing that creepeth upon the earth; that they may breed abundantly in the earth, and be fruitful, and multiply upon the earth."

Genesis 8:18: "And Noah went forth, and his sons, and his wife, and his sons' wives with him:"

Genesis 9:4: "But flesh with the life thereof, which is the blood thereof, shall ye not eat."

Genesis 9:8: "And God spake unto Noah, and to his sons with him, saying,"

Genesis 9:9: "And I, behold, I establish my covenant with you, and with your seed after you;"

Genesis 9:10: "And with every living creature that is with you, of the fowl, of the cattle, and of every beast of the earth with you; from all that go out of the ark, to every beast of the earth."

Genesis 9:11: "And I will establish my covenant with you, neither shall all flesh be cut off any more by the waters of a flood; neither shall there any more be a flood to destroy the earth."

Genesis 9:12: "And God said, This is the token of the covenant which I make between me and you and every living creature that is with you, for perpetual generations:"

Genesis 11:31: "And Terah took Abram his son, and Lot the son of Haran his son's son, and Sarai his daughter in law, his son Abram's wife; and they went forth with them from Ur of the Chaldees, to go into the land of Canaan; and they came unto Haran, and dwelt there."

Genesis 12:4: "So Abram departed, as the LORD had spoken unto him; and Lot went with him: and Abram was seventy and five years old when he departed out of Haran."

Genesis 12:13: "Say, I pray thee, thou art my sister: that it may be well with me for thy sake; and my soul shall live because of thee."

Genesis 12:17: "And the LORD plagued Pharaoh and his house with great plagues because of Sarai Abram's wife."

Genesis 13:1: "And Abram went up out of Egypt, he, and his wife, and all that he had, and Lot with him, into the south."

Genesis 13:5: "And Lot also, which went with Abram, had flocks, and herds, and tents."

Genesis 14:2: "That these made war with Bera king of Sodom, and with Birsha king of Gomorrah, Shinab king of Admah, and Shemeber king of Zeboim, and the king of Bela, which is Zoar."

Genesis 14:5: "And in the fourteenth year came Chedorlaomer, and the kings that were with him, and smote the Rephaims in Ashteroth Karnaim, and the Zuzims in Ham, and the Emims in Shaveh

Kiriathaim,"

Genesis 14:8: "And there went out the king of Sodom, and the king of Gomorrah, and the king of Admah, and the king of Zeboiim, and the king of Bela (the same is Zoar;) and they joined battle with them in the vale of Siddim;"

Genesis 14:9: "With Chedorlaomer the king of Elam, and with Tidal king of nations, and Amraphel king of Shinar, and Arioch king of Ellasar; four kings with five."

Genesis 14:13: "And there came one that had escaped, and told Abram the Hebrew; for he dwelt in the plain of Mamre the Amorite, brother of Eshcol, and brother of Aner: and these were confederate with Abram."

Genesis 14:17: "And the king of Sodom went out to meet him after his return from the slaughter of Chedorlaomer, and of the kings that were with him, at the valley of Shaveh, which is the king's dale."

Genesis 14:24: "Save only that which the young men have eaten, and the portion of the men which went with me, Aner, Eshcol, and Mamre; let them take their portion."

Genesis 15:14: "And also that nation, whom they shall serve, will I judge: and afterward shall they come out with great substance."

Genesis 15:18: "In the same day the LORD made a covenant with Abram, saying, Unto thy seed have I given this land, from the river of Egypt unto the great river, the river Euphrates:"

Genesis 16:6: "But Abram said unto Sarai, Behold, thy maid is in thine hand; do to her as it pleaseth thee. And when Sarai dealt hardly with her, she fled from her face."

Genesis 16:11: "And the angel of the LORD said unto her, Behold, thou art with child and shalt bear a son, and shalt call his name Ishmael; because the LORD hath heard thy affliction."

Genesis 17:3: "And Abram fell on his face: and God talked with him, saying,"

Genesis 17:4: "As for me, behold, my covenant is with thee, and thou shalt be a father of many nations."

Genesis 17:12: "And he that is eight days old shall be circumcised among you, every man child in your generations, he that is born in the house, or bought with money of any stranger, which is not of thy seed."

Genesis 17:13: "He that is born in thy house, and he that is bought with thy money, must needs be circumcised: and my covenant shall be in your flesh for an everlasting covenant."

Genesis 17:19: "And God said, Sarah thy wife shall bear thee a son indeed; and thou shalt call his name Isaac: and I will establish my covenant with him for an everlasting covenant, and with his seed after him."

Genesis 17:21: "But my covenant will I establish with Isaac, which Sarah shall bear unto thee at this set time in the next year."

Genesis 17:22: "And he left off talking with him, and God went up from Abraham."

Genesis 17:23: "And Abraham took Ishmael his son, and all that were born in his house, and all that were bought with his money, every male among the men of Abraham's house; and circumcised the flesh of their foreskin in the selfsame day, as God had said unto him."

Genesis 17:27: "And all the men of his house, born in the house, and bought with money of the stranger, were circumcised with him."

Genesis 18:11: "Now Abraham and Sarah were old and well stricken in age; and it ceased to be with Sarah after the manner of women."

Genesis 18:16: "And the men rose up from thence, and looked toward Sodom: and Abraham went with them to bring them on the way."

Genesis 18:23: "And Abraham drew near, and said, Wilt thou also destroy the righteous with the wicked?"

Genesis 18:25: "That be far from thee to do after this manner, to slay the righteous with the wicked: and that the righteous should be as the wicked, that be far from thee: Shall not the Judge of all the earth do right?"

Genesis 18:33: "And the LORD went his way, as soon as he had left communing with Abraham: and Abraham returned unto his place."

Genesis 19:1: "And there came two angels to Sodom at even; and Lot sat in the gate of Sodom: and Lot seeing them rose up to meet them; and he bowed himself with his face toward the ground;"

Genesis 19:9: "And they said, Stand back. And they said again, This one fellow came in to sojourn, and he will needs be a judge: now will we deal worse with thee, than with them. And they pressed sore upon the man, even Lot, and came near to break the door."

Genesis 19:11: "And they smote the men that were at the door of the house with blindness, both small and great: so that they wearied themselves to find the door."

Genesis 19:30: "And Lot went up out of Zoar, and dwelt in the mountain, and his two daughters with him; for he feared to dwell in Zoar: and he dwelt in a cave, he and his two daughters."

Genesis 19:32: "Come, let us make our father drink wine, and we will lie with him, that we may preserve seed of our father."

Genesis 19:33: "And they made their father drink wine that night: and the firstborn went in, and lay with her father; and he perceived not when she lay down, nor when she arose."

Genesis 19:34: "And it came to pass on the morrow, that the firstborn said unto the younger, Behold, I lay yesternight with my father: let us make him drink wine this night also; and go thou in, and lie with him, that we may preserve seed of our father."

Genesis 19:35: "And they made their father drink wine that night also: and the younger arose, and lay with him; and he perceived not when she lay down, nor when she arose."

Genesis 19:36: "Thus were both the daughters of Lot with child by their father."

Genesis 20:16: "And unto Sarah he said, Behold, I have given thy brother a thousand pieces of silver: behold, he is to thee a covering of the eyes, unto all that are with thee, and with all other: thus she was reproved."

Genesis 21:6: "And Sarah said, God hath made me to laugh, so that all that hear will laugh with me."

Genesis 21:10: "Wherefore she said unto Abraham, Cast out this bondwoman and her son: for the son of this bondwoman shall not be heir with my son, even with Isaac."

Genesis 21:19: "And God opened her eyes, and she saw a well of water; and she went, and filled the bottle with water, and gave the lad drink."

Genesis 21:20: "And God was with the lad; and he grew, and dwelt in the wilderness, and became an archer."

Genesis 21:22: "And it came to pass at that time, that Abimelech and Phichol the chief captain of his host spake unto Abraham, saying, God is with thee in all that thou doest:"

Genesis 21:23: "Now therefore swear unto me here by God that thou wilt not deal falsely with me, nor with my son, nor with my son's son: but according to the kindness that I have done unto thee, thou shalt do unto me, and to the land wherein thou hast sojourned."

Genesis 22:3: "And Abraham rose up early in the morning, and saddled his ass, and took two of his young men with him, and Isaac his son, and clave the wood for the burnt offering, and rose up, and went unto the place of which God had told him."

Genesis 22:5: "And Abraham said unto his young men, Abide ye here with the ass; and I and the lad will go yonder and worship, and come again to you."

Genesis 23:4: "I am a stranger and a sojourner with you: give me a possession of a buryingplace with you, that I may bury my dead out of my sight."

Genesis 23:8: "And he communed with them, saying, If it be your mind that I should bury my dead out of my sight; hear me, and intreat for me to Ephron the son of Zohar,"

Genesis 23:16: "And Abraham hearkened unto Ephron; and Abraham weighed to Ephron the silver, which he had named in the audience of the sons of Heth, four hundred shekels of silver, current money with the merchant."

Genesis 24:15: "And it came to pass, before he had done speaking, that, behold, Rebekah came out,

who was born to Bethuel, son of Milcah, the wife of Nahor, Abraham's brother, with her pitcher upon her shoulder."

Genesis 24:32: "And the man came into the house: and he ungirded his camels, and gave straw and provender for the camels, and water to wash his feet, and the men's feet that were with him."

Genesis 24:40: "And he said unto me, The LORD, before whom I walk, will send his angel with thee, and prosper thy way; and thou shalt take a wife for my son of my kindred, and of my father's house:"

Genesis 24:45: "And before I had done speaking in mine heart, behold, Rebekah came forth with her pitcher on her shoulder; and she went down unto the well, and drew water: and I said unto her, Let me drink, I pray thee."

Genesis 24:49: "And now if ye will deal kindly and truly with my master, tell me: and if not, tell me; that I may turn to the right hand, or to the left."

Genesis 24:54: "And they did eat and drink, he and the men that were with him, and tarried all night; and they rose up in the morning, and he said, Send me away unto my master."

Genesis 24:55: "And her brother and her mother said, Let the damsel abide with us a few days, at the least ten; after that she shall go."

Genesis 24:58: "And they called Rebekah, and said unto her, Wilt thou go with this man? And she said, I will go."

Genesis 25:30: "And Esau said to Jacob, Feed me, I pray thee, with that same red pottage; for I am faint: therefore was his name called Edom."

Genesis 26:3: "Sojourn in this land, and I will be with thee, and will bless thee; for unto thee, and unto thy seed, I will give all these countries, and I will perform the oath which I swore unto Abraham thy father;"

Genesis 26:8: "And it came to pass, when he had been there a long time, that Abimelech king of the Philistines looked out at a window, and saw, and, behold, Isaac was sporting with Rebekah his wife."

Genesis 26:10: "And Abimelech said, What is this thou hast done unto us? one of the people might lightly have lien with thy wife, and thou shouldest have brought guiltiness upon us."

Genesis 26:15: "For all the wells which his father's servants had digged in the days of Abraham his father, the Philistines had stopped them, and filled them with earth."

Genesis 26:20: "And the herdmen of Gerar did strive with Isaac's herdmen, saying, The water is ours: and he called the name of the well Esek; because they strove with him."

Genesis 26:24: "And the LORD appeared unto him the same night, and said, I am the God of Abraham thy father: fear not, for I am with thee, and will bless thee, and multiply thy seed for my servant Abraham's sake."

Genesis 26:28: "And they said, We saw certainly that the LORD was with thee: and we said, Let there be now an oath betwixt us, even betwixt us and thee, and let us make a covenant with thee;"

Genesis 27:15: "And Rebekah took goodly raiment of her eldest son Esau, which were with her in the house, and put them upon Jacob her younger son:"

Genesis 27:34: "And when Esau heard the words of his father, he cried with a great and exceeding bitter cry, and said unto his father, Bless me, even me also, O my father."

Genesis 27:35: "And he said, Thy brother came with subtilty, and hath taken away thy blessing."

Genesis 27:37: "And Isaac answered and said unto Esau, Behold, I have made him thy lord, and all his brethren have I given to him for servants; and with corn and wine have I sustained him: and what shall I do now unto thee, my son?"

Genesis 27:44: "And tarry with him a few days, until thy brother's fury turn away;"

Genesis 28:4: "And give thee the blessing of Abraham, to thee, and to thy seed with thee; that thou mayest inherit the land wherein thou art a stranger, which God gave unto Abraham."

Genesis 28:15: "And, behold, I am with thee, and will keep thee in all places whither thou goest, and will bring thee again into this land; for I will not leave thee, until I have done that which I have

spoken to thee of."

Genesis 28:20: "And Jacob vowed a vow, saying, If God will be with me, and will keep me in this way that I go, and will give me bread to eat, and raiment to put on,"

Genesis 29:6: "And he said unto them, Is he well? And they said, He is well: and, behold, Rachel his daughter cometh with the sheep."

Genesis 29:9: "And while he yet spake with them, Rachel came with her father's sheep; for she kept them."

Genesis 29:14: "And Laban said to him, Surely thou art my bone and my flesh. And he abode with him the space of a month."

Genesis 29:19: "And Laban said, It is better that I give her to thee, than that I should give her to another man: abide with me."

Genesis 29:25: "And it came to pass, that in the morning, behold, it was Leah: and he said to Laban, What is this thou hast done unto me? did not I serve with thee for Rachel? wherefore then hast thou beguiled me?"

Genesis 29:27: "Fulfil her week, and we will give thee this also for the service which thou shalt serve with me yet seven other years."

Genesis 29:30: "And he went in also unto Rachel, and he loved also Rachel more than Leah, and served with him yet seven other years."

Genesis 30:8: "And Rachel said, With great wrestlings have I wrestled with my sister, and I have prevailed: and she called his name Naphtali."

Genesis 30:15: "And she said unto her, Is it a small matter that thou hast taken my husband? and wouldest thou take away my son's mandrakes also? And Rachel said, Therefore he shall lie with thee to night for thy son's mandrakes."

Genesis 30:16: "And Jacob came out of the field in the evening, and Leah went out to meet him, and said, Thou must come in unto me; for surely I have hired thee with my son's mandrakes. And he lay with her that night."

Genesis 30:20: "And Leah said, God hath endued me with a good dowry; now will my husband dwell with me, because I have born him six sons: and she called his name Zebulun."

Genesis 30:29: "And he said unto him, Thou knowest how I have served thee, and how thy cattle was with me."

Genesis 30:33: "So shall my righteousness answer for me in time to come, when it shall come for my hire before thy face: every one that is not speckled and spotted among the goats, and brown among the sheep, that shall be counted stolen with me."

Genesis 31:3: "And the LORD said unto Jacob, Return unto the land of thy fathers, and to thy kindred; and I will be with thee."

Genesis 31:5: "And said unto them, I see your father's countenance, that it is not toward me as before; but the God of my father hath been with me."

Genesis 31:6: "And ye know that with all my power I have served your father."

Genesis 31:21: "So he fled with all that he had; and he rose up, and passed over the river, and set his face toward the mount Gilead."

Genesis 31:23: "And he took his brethren with him, and pursued after him seven days' journey; and they overtook him in the mount Gilead."

Genesis 31:25: "Then Laban overtook Jacob. Now Jacob had pitched his tent in the mount: and Laban with his brethren pitched in the mount of Gilead."

Genesis 31:26: "And Laban said to Jacob, What hast thou done, that thou hast stolen away unawares to me, and carried away my daughters, as captives taken with the sword?"

Genesis 31:27: "Wherefore didst thou flee away secretly, and steal away from me; and didst not tell me, that I might have sent thee away with mirth, and with songs, with tabret, and with harp?"

Genesis 31:32: "With whomsoever thou findest thy gods, let him not live: before our brethren discern thou what is thine with me, and take it to thee. For Jacob knew not that Rachel had stolen

them."

Genesis 31:36: "And Jacob was wrath, and chode with Laban: and Jacob answered and said to Laban, What is my trespass? what is my sin, that thou hast so hotly pursued after me?"

Genesis 31:38: "This twenty years have I been with thee; thy ewes and thy she goats have not cast their young, and the rams of thy flock have I not eaten."

Genesis 31:42: "Except the God of my father, the God of Abraham, and the fear of Isaac, had been with me, surely thou hadst sent me away now empty. God hath seen mine affliction and the labour of my hands, and rebuked thee yesternight."

Genesis 31:50: "If thou shalt afflict my daughters, or if thou shalt take other wives beside my daughters, no man is with us; see, God is witness betwixt me and thee."

Genesis 32:4: "And he commanded them, saying, Thus shall ye speak unto my lord Esau; Thy servant Jacob saith thus, I have sojourned with Laban, and stayed there until now:"

Genesis 32:6: "And the messengers returned to Jacob, saying, We came to thy brother Esau, and also he cometh to meet thee, and four hundred men with him."

Genesis 32:7: "Then Jacob was greatly afraid and distressed: and he divided the people that was with him, and the flocks, and herds, and the camels, into two bands;"

Genesis 32:9: "And Jacob said, O God of my father Abraham, and God of my father Isaac, the LORD which saidst unto me, Return unto thy country, and to thy kindred, and I will deal well with thee:"

Genesis 32:10: "I am not worthy of the least of all the mercies, and of all the truth, which thou hast shewed unto thy servant; for with my staff I passed over this Jordan; and now I am become two bands."

Genesis 32:11: "Deliver me, I pray thee, from the hand of my brother, from the hand of Esau: for I fear him, lest he will come and smite me, and the mother with the children."

Genesis 32:15: "Thirty milch camels with their colts, forty kine, and ten bulls, twenty she asses, and ten foals."

Genesis 32:20: "And say ye moreover, Behold, thy servant Jacob is behind us. For he said, I will appease him with the present that goeth before me, and afterward I will see his face; peradventure he will accept of me."

Genesis 32:24: "And Jacob was left alone; and there wrestled a man with him until the breaking of the day."

Genesis 32:25: "And when he saw that he prevailed not against him, he touched the hollow of his thigh; and the hollow of Jacob's thigh was out of joint, as he wrestled with him."

Genesis 32:28: "And he said, Thy name shall be called no more Jacob, but Israel: for as a prince hast thou power with God and with men, and hast prevailed."

Genesis 33:1: "And Jacob lifted up his eyes, and looked, and, behold, Esau came, and with him four hundred men. And he divided the children unto Leah, and unto Rachel, and unto the two handmaids."

Genesis 33:5: "And he lifted up his eyes, and saw the women and the children; and said, Who are those with thee? And he said, The children which God hath graciously given thy servant."

Genesis 33:7: "And Leah also with her children came near, and bowed themselves: and after came Joseph near and Rachel, and they bowed themselves."

Genesis 33:10: "And Jacob said, Nay, I pray thee, if now I have found grace in thy sight, then receive my present at my hand: for therefore I have seen thy face, as though I had seen the face of God, and thou wast pleased with me."

Genesis 33:11: "Take, I pray thee, my blessing that is brought to thee; because God hath dealt graciously with me, and because I have enough. And he urged him, and he took it."

Genesis 33:13: "And he said unto him, My lord knoweth that the children are tender, and the flocks and herds with young are with me: and if men should overdrive them one day, all the flock will die."



Genesis 33:15: "And Esau said, Let me now leave with thee some of the folk that are with me. And he said, What needeth it? let me find grace in the sight of my lord."

Genesis 34:2: "And when Shechem the son of Hamor the Hivite, prince of the country, saw her, he took her, and lay with her, and defiled her."

Genesis 34:5: "And Jacob heard that he had defiled Dinah his daughter: now his sons were with his cattle in the field: and Jacob held his peace until they were come."

Genesis 34:6: "And Hamor the father of Shechem went out unto Jacob to commune with him."

Genesis 34:7: "And the sons of Jacob came out of the field when they heard it: and the men were grieved, and they were very wroth, because he had wrought folly in Israel in lying with Jacob's daughter: which thing ought not to be done."

Genesis 34:8: "And Hamor communed with them, saying, The soul of my son Shechem longeth for your daughter: I pray you give her him to wife."

Genesis 34:9: "And make ye marriages with us, and give your daughters unto us, and take our daughters unto you."

Genesis 34:10: "And ye shall dwell with us: and the land shall be before you; dwell and trade ye therein, and get you possessions therein."

Genesis 34:16: "Then will we give our daughters unto you, and we will take your daughters to us, and we will dwell with you, and we will become one people."

Genesis 34:20: "And Hamor and Shechem his son came unto the gate of their city, and communed with the men of their city, saying,"

Genesis 34:21: "These men are peaceable with us; therefore let them dwell in the land, and trade therein; for the land, behold, it is large enough for them; let us take their daughters to us for wives, and let us give them our daughters."

Genesis 34:22: "Only herein will the men consent unto us for to dwell with us, to be one people, if every male among us be circumcised, as they are circumcised."

Genesis 34:23: "Shall not their cattle and their substance and every beast of their's be our's? only let us consent unto them, and they will dwell with us."

Genesis 34:26: "And they slew Hamor and Shechem his son with the edge of the sword, and took Dinah out of Shechem's house, and went out."

Genesis 34:31: "And they said, Should he deal with our sister as with an harlot?"

Genesis 35:2: "Then Jacob said unto his household, and to all that were with him, Put away the strange gods that are among you, and be clean, and change your garments:"

Genesis 35:3: "And let us arise, and go up to Bethel; and I will make there an altar unto God, who answered me in the day of my distress, and was with me in the way which I went."

Genesis 35:6: "So Jacob came to Luz, which is in the land of Canaan, that is, Bethel, he and all the people that were with him."

Genesis 35:13: "And God went up from him in the place where he talked with him."

Genesis 35:14: "And Jacob set up a pillar in the place where he talked with him, even a pillar of stone: and he poured a drink offering thereon, and he poured oil thereon."

Genesis 35:15: "And Jacob called the name of the place where God spake with him, Bethel."

Genesis 35:22: "And it came to pass, when Israel dwelt in that land, that Reuben went and lay with Bilhah his father's concubine: and Israel heard it. Now the sons of Jacob were twelve:"

Genesis 37:2: "These are the generations of Jacob. Joseph, being seventeen years old, was feeding the flock with his brethren; and the lad was with the sons of Bilhah, and with the sons of Zilpah, his father's wives: and Joseph brought unto his father their evil report."

Genesis 37:14: "And he said to him, Go, I pray thee, see whether it be well with thy brethren, and well with the flocks; and bring me word again. So he sent him out of the vale of Hebron, and he came to Shechem."

Genesis 37:25: "And they sat down to eat bread: and they lifted up their eyes and looked, and, behold, a company of Ishmeelites came from Gilead with their camels bearing spicery and balm and

myrrh, going to carry it down to Egypt."

Genesis 38:14: "And she put her widow's garments off from her, and covered her with a vail, and wrapped herself, and sat in an open place, which is by the way to Timnath; for she saw that Shelah was grown, and she was not given unto him to wife."

Genesis 38:24: "And it came to pass about three months after, that it was told Judah, saying, Tamar thy daughter in law hath played the harlot; and also, behold, she is with child by whoredom. And Judah said, Bring her forth, and let her be burnt."

Genesis 38:25: "When she was brought forth, she sent to her father in law, saying, By the man, whose these are, am I with child: and she said, Discern, I pray thee, whose are these, the signet, and bracelets, and staff."

Genesis 39:2: "And the LORD was with Joseph, and he was a prosperous man; and he was in the house of his master the Egyptian."

Genesis 39:3: "And his master saw that the LORD was with him, and that the LORD made all that he did to prosper in his hand."

Genesis 39:7: "And it came to pass after these things, that his master's wife cast her eyes upon Joseph; and she said, Lie with me."

Genesis 39:8: "But he refused, and said unto his master's wife, Behold, my master wotteth not what is with me in the house, and he hath committed all that he hath to my hand;"

Genesis 39:10: "And it came to pass, as she spake to Joseph day by day, that he hearkened not unto her, to lie by her, or to be with her."

Genesis 39:12: "And she caught him by his garment, saying, Lie with me: and he left his garment in her hand, and fled, and got him out."

Genesis 39:14: "That she called unto the men of her house, and spake unto them, saying, See, he hath brought in an Hebrew unto us to mock us; he came in unto me to lie with me, and I cried with a loud voice:"

Genesis 39:15: "And it came to pass, when he heard that I lifted up my voice and cried, that he left his garment with me, and fled, and got him out."

Genesis 39:18: "And it came to pass, as I lifted up my voice and cried, that he left his garment with me, and fled out."

Genesis 39:21: "But the LORD was with Joseph, and shewed him mercy, and gave him favour in the sight of the keeper of the prison."

Genesis 39:23: "The keeper of the prison looked not to any thing that was under his hand; because the LORD was with him, and that which he did, the LORD made it to prosper."

Genesis 40:4: "And the captain of the guard charged Joseph with them, and he served them: and they continued a season in ward."

Genesis 40:7: "And he asked Pharaoh's officers that were with him in the ward of his lord's house, saying, Wherefore look ye so sadly to day?"

Genesis 40:14: "But think on me when it shall be well with thee, and shew kindness, I pray thee, unto me, and make mention of me unto Pharaoh, and bring me out of this house:"

Genesis 41:6: "And, behold, seven thin ears and blasted with the east wind sprung up after them."

Genesis 41:10: "Pharaoh was wroth with his servants, and put me in ward in the captain of the guard's house, both me and the chief baker:"

Genesis 41:12: "And there was there with us a young man, an Hebrew, servant to the captain of the guard; and we told him, and he interpreted to us our dreams; to each man according to his dream he did interpret."

Genesis 41:23: "And, behold, seven ears, withered, thin, and blasted with the east wind, sprung up after them:"

Genesis 41:27: "And the seven thin and ill favoured kine that came up after them are seven years; and the seven empty ears blasted with the east wind shall be seven years of famine."

Genesis 42:4: "But Benjamin, Joseph's brother, Jacob sent not with his brethren; for he said, Lest

peradventure mischief befall him."

Genesis 42:6: "And Joseph was the governor over the land, and he it was that sold to all the people of the land: and Joseph's brethren came, and bowed down themselves before him with their faces to the earth."

Genesis 42:13: "And they said, Thy servants are twelve brethren, the sons of one man in the land of Canaan; and, behold, the youngest is this day with our father, and one is not."

Genesis 42:24: "And he turned himself about from them, and wept; and returned to them again, and communed with them, and took from them Simeon, and bound him before their eyes."

Genesis 42:25: "Then Joseph commanded to fill their sacks with corn, and to restore every man's money into his sack, and to give them provision for the way: and thus did he unto them."

Genesis 42:26: "And they laded their asses with the corn, and departed thence."

Genesis 42:32: "We be twelve brethren, sons of our father; one is not, and the youngest is this day with our father in the land of Canaan."

Genesis 42:33: "And the man, the lord of the country, said unto us, Hereby shall I know that ye are true men; leave one of your brethren here with me, and take food for the famine of your households, and be gone:"

Genesis 42:38: "And he said, My son shall not go down with you; for his brother is dead, and he is left alone: if mischief befall him by the way in the which ye go, then shall ye bring down my gray hairs with sorrow to the grave."

Genesis 43:3: "And Judah spake unto him, saying, The man did solemnly protest unto us, saying, Ye shall not see my face, except your brother be with you."

Genesis 43:4: "If thou wilt send our brother with us, we will go down and buy thee food:"

Genesis 43:5: "But if thou wilt not send him, we will not go down: for the man said unto us, Ye shall not see my face, except your brother be with you."

Genesis 43:6: "And Israel said, Wherefore dealt ye so ill with me, as to tell the man whether ye had yet a brother?"

Genesis 43:8: "And Judah said unto Israel his father, Send the lad with me, and we will arise and go; that we may live, and not die, both we, and thou, and also our little ones."

Genesis 43:16: "And when Joseph saw Benjamin with them, he said to the ruler of his house, Bring these men home, and slay, and make ready; for these men shall dine with me at noon."

Genesis 43:19: "And they came near to the steward of Joseph's house, and they communed with him at the door of the house,"

Genesis 43:32: "And they set on for him by himself, and for them by themselves, and for the Egyptians, which did eat with him, by themselves: because the Egyptians might not eat bread with the Hebrews; for that is an abomination unto the Egyptians."

Genesis 43:34: "And he took and sent messes unto them from before him: but Benjamin's mess was five times so much as any of their's. And they drank, and were merry with him."

Genesis 44:1: "And he commanded the steward of his house, saying, Fill the men's sacks with food, as much as they can carry, and put every man's money in his sack's mouth."

Genesis 44:9: "With whomsoever of thy servants it be found, both let him die, and we also will be my lord's bondmen."

Genesis 44:10: "And he said, Now also let it be according unto your words: he with whom it is found shall be my servant; and ye shall be blameless."

Genesis 44:16: "And Judah said, What shall we say unto my lord? what shall we speak? or how shall we clear ourselves? God hath found out the iniquity of thy servants: behold, we are my lord's servants, both we, and he also with whom the cup is found."

Genesis 44:23: "And thou saidst unto thy servants, Except your youngest brother come down with you, ye shall see my face no more."

Genesis 44:26: "And we said, We cannot go down: if our youngest brother be with us, then will we go down: for we may not see the man's face, except our youngest brother be with us."

Genesis 44:29: "And if ye take this also from me, and mischief befall him, ye shall bring down my gray hairs with sorrow to the grave."

Genesis 44:30: "Now therefore when I come to thy servant my father, and the lad be not with us; seeing that his life is bound up in the lad's life;"

Genesis 44:31: "It shall come to pass, when he seeth that the lad is not with us, that he will die: and thy servants shall bring down the gray hairs of thy servant our father with sorrow to the grave."

Genesis 44:33: "Now therefore, I pray thee, let thy servant abide instead of the lad a bondman to my lord; and let the lad go up with his brethren."

Genesis 44:34: "For how shall I go up to my father, and the lad be not with me? lest peradventure I see the evil that shall come on my father."

Genesis 45:1: "Then Joseph could not refrain himself before all them that stood by him; and he cried, Cause every man to go out from me. And there stood no man with him, while Joseph made himself known unto his brethren."

Genesis 45:5: "Now therefore be not grieved, nor angry with yourselves, that ye sold me hither: for God did send me before you to preserve life."

Genesis 45:15: "Moreover he kissed all his brethren, and wept upon them: and after that his brethren talked with him."

Genesis 45:23: "And to his father he sent after this manner; ten asses laden with the good things of Egypt, and ten she asses laden with corn and bread and meat for his father by the way."

Genesis 46:1: "And Israel took his journey with all that he had, and came to Beersheba, and offered sacrifices unto the God of his father Isaac."

Genesis 46:4: "I will go down with thee into Egypt; and I will also surely bring thee up again: and Joseph shall put his hand upon thine eyes."

Genesis 46:6: "And they took their cattle, and their goods, which they had gotten in the land of Canaan, and came into Egypt, Jacob, and all his seed with him:"

Genesis 46:7: "His sons, and his sons' sons with him, his daughters, and his sons' daughters, and all his seed brought he with him into Egypt."

Genesis 46:15: "These be the sons of Leah, which she bare unto Jacob in Padanaram, with his daughter Dinah: all the souls of his sons and his daughters were thirty and three."

Genesis 46:26: "All the souls that came with Jacob into Egypt, which came out of his loins, besides Jacob's sons' wives, all the souls were threescore and six;"

Genesis 47:12: "And Joseph nourished his father, and his brethren, and all his father's household, with bread, according to their families."

Genesis 47:17: "And they brought their cattle unto Joseph: and Joseph gave them bread in exchange for horses, and for the flocks, and for the cattle of the herds, and for the asses: and he fed them with bread for all their cattle for that year."

Genesis 47:29: "And the time drew nigh that Israel must die: and he called his son Joseph, and said unto him, If now I have found grace in thy sight, put, I pray thee, thy hand under my thigh, and deal kindly and truly with me; bury me not, I pray thee, in Egypt:"

Genesis 47:30: "But I will lie with my fathers, and thou shalt carry me out of Egypt, and bury me in their buryingplace. And he said, I will do as thou hast said."

Genesis 48:1: "And it came to pass after these things, that one told Joseph, Behold, thy father is sick: and he took with him his two sons, Manasseh and Ephraim."

Genesis 48:12: "And Joseph brought them out from between his knees, and he bowed himself with his face to the earth."

Genesis 48:21: "And Israel said unto Joseph, Behold, I die: but God shall be with you, and bring you again unto the land of your fathers."

Genesis 48:22: "Moreover I have given to thee one portion above thy brethren, which I took out of the hand of the Amorite with my sword and with my bow."

Genesis 49:12: "His eyes shall be red with wine, and his teeth white with milk."

Genesis 49:25: "Even by the God of thy father, who shall help thee; and by the Almighty, who shall bless thee with blessings of heaven above, blessings of the deep that lieth under, blessings of the breasts, and of the womb:"

Genesis 49:29: "And he charged them, and said unto them, I am to be gathered unto my people: bury me with my fathers in the cave that is in the field of Ephron the Hittite,"

Genesis 49:30: "In the cave that is in the field of Machpelah, which is before Mamre, in the land of Canaan, which Abraham bought with the field of Ephron the Hittite for a possession of a buryingplace."

Genesis 50:7: "And Joseph went up to bury his father: and with him went up all the servants of Pharaoh, the elders of his house, and all the elders of the land of Egypt,"

Genesis 50:9: "And there went up with him both chariots and horsemen: and it was a very great company."

Genesis 50:10: "And they came to the threshingfloor of Atad, which is beyond Jordan, and there they mourned with a great and very sore lamentation: and he made a mourning for his father seven days."

Genesis 50:13: "For his sons carried him into the land of Canaan, and buried him in the cave of the field of Machpelah, which Abraham bought with the field for a possession of a buryingplace of Ephron the Hittite, before Mamre."

Genesis 50:14: "And Joseph returned into Egypt, he, and his brethren, and all that went up with him to bury his father, after he had buried his father."

Exodus 1:1: "Now these are the names of the children of Israel, which came into Egypt; every man and his household came with Jacob."

Exodus 1:7: "And the children of Israel were fruitful, and increased abundantly, and multiplied, and waxed exceeding mighty; and the land was filled with them."

Exodus 1:10: "Come on, let us deal wisely with them; lest they multiply, and it come to pass, that, when there falleth out any war, they join also unto our enemies, and fight against us, and so get them up out of the land."

Exodus 1:11: "Therefore they did set over them taskmasters to afflict them with their burdens. And they built for Pharaoh treasure cities, Pithom and Raamses."

Exodus 1:13: "And the Egyptians made the children of Israel to serve with rigour:"

Exodus 1:14: "And they made their lives bitter with hard bondage, in mortar, and in brick, and in all manner of service in the field: all their service, wherein they made them serve, was with rigour."

Exodus 1:20: "Therefore God dealt well with the midwives: and the people multiplied, and waxed very mighty."

Exodus 2:3: "And when she could not longer hide him, she took for him an ark of bulrushes, and daubed it with slime and with pitch, and put the child therein; and she laid it in the flags by the river's brink."

Exodus 2:21: "And Moses was content to dwell with the man: and he gave Moses Zipporah his daughter."

Exodus 2:24: "And God heard their groaning, and God remembered his covenant with Abraham, with Isaac, and with Jacob."

Exodus 3:2: "And the angel of the LORD appeared unto him in a flame of fire out of the midst of a bush: and he looked, and, behold, the bush burned with fire, and the bush was not consumed."

Exodus 3:8: "And I am come down to deliver them out of the hand of the Egyptians, and to bring them up out of that land unto a good land and a large, unto a land flowing with milk and honey; unto the place of the Canaanites, and the Hittites, and the Amorites, and the Perizzites, and the Hivites, and the Jebusites."

Exodus 3:12: "And he said, Certainly I will be with thee; and this shall be a token unto thee, that I have sent thee: When thou hast brought forth the people out of Egypt, ye shall serve God upon this mountain."

Exodus 3:17: "And I have said, I will bring you up out of the affliction of Egypt unto the land of the Canaanites, and the Hittites, and the Amorites, and the Perizzites, and the Hivites, and the Jebusites, unto a land flowing with milk and honey."

Exodus 3:18: "And they shall hearken to thy voice: and thou shalt come, thou and the elders of Israel, unto the king of Egypt, and ye shall say unto him, The LORD God of the Hebrews hath met with us: and now let us go, we beseech thee, three days' journey into the wilderness, that we may sacrifice to the LORD our God."

Exodus 3:20: "And I will stretch out my hand, and smite Egypt with all my wonders which I will do in the midst thereof: and after that he will let you go."

Exodus 4:12: "Now therefore go, and I will be with thy mouth, and teach thee what thou shalt say."

Exodus 4:15: "And thou shalt speak unto him, and put words in his mouth: and I will be with thy mouth, and with his mouth, and will teach you what ye shall do."

Exodus 5:3: "And they said, The God of the Hebrews hath met with us: let us go, we pray thee, three days' journey into the desert, and sacrifice unto the LORD our God; lest he fall upon us with pestilence, or with the sword."

Exodus 5:15: "Then the officers of the children of Israel came and cried unto Pharaoh, saying, Wherefore dealest thou thus with thy servants?"

Exodus 6:1: "Then the LORD said unto Moses, Now shalt thou see what I will do to Pharaoh: for with a strong hand shall he let them go, and with a strong hand shall he drive them out of his land."

Exodus 6:4: "And I have also established my covenant with them, to give them the land of Canaan, the land of their pilgrimage, wherein they were strangers."

Exodus 6:6: "Wherefore say unto the children of Israel, I am the LORD, and I will bring you out from under the burdens of the Egyptians, and I will rid you out of their bondage, and I will redeem you with a stretched out arm, and with great judgments:"

Exodus 7:11: "Then Pharaoh also called the wise men and the sorcerers: now the magicians of Egypt, they also did in like manner with their enchantments."

Exodus 7:17: "Thus saith the LORD, In this thou shalt know that I am the LORD: behold, I will smite with the rod that is in mine hand upon the waters which are in the river, and they shall be turned to blood."

Exodus 7:22: "And the magicians of Egypt did so with their enchantments: and Pharaoh's heart was hardened, neither did he hearken unto them; as the LORD had said."

Exodus 8:2: "And if thou refuse to let them go, behold, I will smite all thy borders with frogs:"

Exodus 8:5: "And the LORD spake unto Moses, Say unto Aaron, Stretch forth thine hand with thy rod over the streams, over the rivers, and over the ponds, and cause frogs to come up upon the land of Egypt."

Exodus 8:7: "And the magicians did so with their enchantments, and brought up frogs upon the land of Egypt."

Exodus 8:17: "And they did so; for Aaron stretched out his hand with his rod, and smote the dust of the earth, and it became lice in man, and in beast; all the dust of the land became lice throughout all the land of Egypt."

Exodus 8:18: "And the magicians did so with their enchantments to bring forth lice, but they could not: so there were lice upon man, and upon beast."

Exodus 9:9: "And it shall become small dust in all the land of Egypt, and shall be a boil breaking forth with blains upon man, and upon beast, throughout all the land of Egypt."

Exodus 9:10: "And they took ashes of the furnace, and stood before Pharaoh; and Moses sprinkled it up toward heaven; and it became a boil breaking forth with blains upon man, and upon beast."

Exodus 9:15: "For now I will stretch out my hand, that I may smite thee and thy people with pestilence; and thou shalt be cut off from the earth."

Exodus 9:24: "So there was hail, and fire mingled with the hail, very grievous, such as there was none like it in all the land of Egypt since it became a nation."

Exodus 10:9: "And Moses said, We will go with our young and with our old, with our sons and with our daughters, with our flocks and with our herds will we go; for we must hold a feast unto the LORD."

Exodus 10:10: "And he said unto them, Let the LORD be so with you, as I will let you go, and your little ones: look to it; for evil is before you."

Exodus 10:24: "And Pharaoh called unto Moses, and said, Go ye, serve the LORD; only let your flocks and your herds be stayed: let your little ones also go with you."

Exodus 10:26: "Our cattle also shall go with us; there shall not an hoof be left behind; for thereof must we take to serve the LORD our God; and we know not with what we must serve the LORD, until we come thither."

Exodus 12:8: "And they shall eat the flesh in that night, roast with fire, and unleavened bread; and with bitter herbs they shall eat it."

Exodus 12:9: "Eat not of it raw, nor sodden at all with water, but roast with fire; his head with his legs, and with the purtenance thereof."

Exodus 12:10: "And ye shall let nothing of it remain until the morning; and that which remaineth of it until the morning ye shall burn with fire."

Exodus 12:11: "And thus shall ye eat it; with your loins girded, your shoes on your feet, and your staff in your hand; and ye shall eat it in haste: it is the LORD's passover."

Exodus 12:22: "And ye shall take a bunch of hyssop, and dip it in the blood that is in the bason, and strike the lintel and the two side posts with the blood that is in the bason; and none of you shall go out at the door of his house until the morning."

Exodus 12:38: "And a mixed multitude went up also with them; and flocks, and herds, even very much cattle."

Exodus 12:48: "And when a stranger shall sojourn with thee, and will keep the passover to the LORD, let all his males be circumcised, and then let him come near and keep it; and he shall be as one that is born in the land: for no uncircumcised person shall eat thereof."

Exodus 13:5: "And it shall be when the LORD shall bring thee into the land of the Canaanites, and the Hittites, and the Amorites, and the Hivites, and the Jebusites, which he sware unto thy fathers to give thee, a land flowing with milk and honey, that thou shalt keep this service in this month."

Exodus 13:7: "Unleavened bread shall be eaten seven days; and there shall no leavened bread be seen with thee, neither shall there be leaven seen with thee in all thy quarters."

Exodus 13:9: "And it shall be for a sign unto thee upon thine hand, and for a memorial between thine eyes, that the LORD's law may be in thy mouth: for with a strong hand hath the LORD brought thee out of Egypt."

Exodus 13:13: "And every firstling of an ass thou shalt redeem with a lamb; and if thou wilt not redeem it, then thou shalt break his neck: and all the firstborn of man among thy children shalt thou redeem."

Exodus 13:19: "And Moses took the bones of Joseph with him: for he had straitly sworn the children of Israel, saying, God will surely visit you; and ye shall carry up my bones away hence with you."

Exodus 14:6: "And he made ready his chariot, and took his people with him:"

Exodus 14:8: "And the LORD hardened the heart of Pharaoh king of Egypt, and he pursued after the children of Israel: and the children of Israel went out with an high hand."

Exodus 14:11: "And they said unto Moses, Because there were no graves in Egypt, hast thou taken us away to die in the wilderness? wherefore hast thou dealt thus with us, to carry us forth out of Egypt?"

Exodus 15:8: "And with the blast of thy nostrils the waters were gathered together, the floods stood upright as an heap, and the depths were congealed in the heart of the sea."

Exodus 15:10: "Thou didst blow with thy wind, the sea covered them: they sank as lead in the mighty waters."

Exodus 15:19: "For the horse of Pharaoh went in with his chariots and with his horsemen into the sea, and the LORD brought again the waters of the sea upon them; but the children of Israel went on dry land in the midst of the sea."

Exodus 15:20: "And Miriam the prophetess, the sister of Aaron, took a timbrel in her hand; and all the women went out after her with timbrels and with dances."

Exodus 16:3: "And the children of Israel said unto them, Would to God we had died by the hand of the LORD in the land of Egypt, when we sat by the flesh pots, and when we did eat bread to the full; for ye have brought us forth into this wilderness, to kill this whole assembly with hunger."

Exodus 16:12: "I have heard the murmurings of the children of Israel: speak unto them, saying, At even ye shall eat flesh, and in the morning ye shall be filled with bread; and ye shall know that I am the LORD your God."

Exodus 16:18: "And when they did mete it with an omer, he that gathered much had nothing over, and he that gathered little had no lack; they gathered every man according to his eating."

Exodus 16:20: "Notwithstanding they hearkened not unto Moses; but some of them left of it until the morning, and it bred worms, and stank: and Moses was wroth with them."

Exodus 16:31: "And the house of Israel called the name thereof Manna: and it was like coriander seed, white; and the taste of it was like wafers made with honey."

Exodus 17:2: "Wherefore the people did chide with Moses, and said, Give us water that we may drink. And Moses said unto them, Why chide ye with me? wherefore do ye tempt the LORD?"

Exodus 17:3: "And the people thirsted there for water; and the people murmured against Moses, and said, Wherefore is this that thou hast brought us up out of Egypt, to kill us and our children and our cattle with thirst?"

Exodus 17:5: "And the LORD said unto Moses, Go on before the people, and take with thee of the elders of Israel; and thy rod, wherewith thou smotest the river, take in thine hand, and go."

Exodus 17:8: "Then came Amalek, and fought with Israel in Rephidim."

Exodus 17:9: "And Moses said unto Joshua, Choose us out men, and go out, fight with Amalek: to morrow I will stand on the top of the hill with the rod of God in mine hand."

Exodus 17:10: "So Joshua did as Moses had said to him, and fought with Amalek: and Moses, Aaron, and Hur went up to the top of the hill."

Exodus 17:13: "And Joshua discomfited Amalek and his people with the edge of the sword."

Exodus 17:16: "For he said, Because the LORD hath sworn that the LORD will have war with Amalek from generation to generation."

Exodus 18:5: "And Jethro, Moses' father in law, came with his sons and his wife unto Moses into the wilderness, where he encamped at the mount of God:"

Exodus 18:6: "And he said unto Moses, I thy father in law Jethro am come unto thee, and thy wife, and her two sons with her."

Exodus 18:12: "And Jethro, Moses' father in law, took a burnt offering and sacrifices for God: and Aaron came, and all the elders of Israel, to eat bread with Moses' father in law before God."

Exodus 18:18: "Thou wilt surely wear away, both thou, and this people that is with thee: for this thing is too heavy for thee; thou art not able to perform it thyself alone."

Exodus 18:19: "Hearken now unto my voice, I will give thee counsel, and God shall be with thee: Be thou for the people to God-ward, that thou mayest bring the causes unto God:"

Exodus 18:22: "And let them judge the people at all seasons: and it shall be, that every great matter they shall bring unto thee, but every small matter they shall judge: so shall it be easier for thyself, and they shall bear the burden with thee."

Exodus 19:9: "And the LORD said unto Moses, Lo, I come unto thee in a thick cloud, that the people may hear when I speak with thee, and believe thee for ever. And Moses told the words of the people unto the LORD."

Exodus 19:17: "And Moses brought forth the people out of the camp to meet with God; and they stood at the nether part of the mount."



Exodus 19:24: "And the LORD said unto him, Away, get thee down, and thou shalt come up, thou, and Aaron with thee: but let not the priests and the people break through to come up unto the LORD, lest he break forth upon them."

Exodus 20:19: "And they said unto Moses, Speak thou with us, and we will hear: but let not God speak with us, lest we die."

Exodus 20:22: "And the LORD said unto Moses, Thus thou shalt say unto the children of Israel, Ye have seen that I have talked with you from heaven."

Exodus 20:23: "Ye shall not make with me gods of silver, neither shall ye make unto you gods of gold."

Exodus 21:3: "If he came in by himself, he shall go out by himself: if he were married, then his wife shall go out with him."

Exodus 21:6: "Then his master shall bring him unto the judges; he shall also bring him to the door, or unto the door post; and his master shall bore his ear through with an aul; and he shall serve him for ever."

Exodus 21:8: "If she please not her master, who hath betrothed her to himself, then shall he let her be redeemed: to sell her unto a strange nation he shall have no power, seeing he hath dealt deceitfully with her."

Exodus 21:9: "And if he have betrothed her unto his son, he shall deal with her after the manner of daughters."

Exodus 21:14: "But if a man come presumptuously upon his neighbour, to slay him with guile; thou shalt take him from mine altar, that he may die."

Exodus 21:18: "And if men strive together, and one smite another with a stone, or with his fist, and he die not, but keepeth his bed:"

Exodus 21:20: "And if a man smite his servant, or his maid, with a rod, and he die under his hand; he shall be surely punished."

Exodus 21:22: "If men strive, and hurt a woman with child, so that her fruit depart from her, and yet no mischief follow: he shall be surely punished, according as the woman's husband will lay upon him; and he shall pay as the judges determine."

Exodus 21:29: "But if the ox were wont to push with his horn in time past, and it hath been testified to his owner, and he hath not kept him in, but that he hath killed a man or a woman; the ox shall be stoned, and his owner also shall be put to death."

Exodus 22:14: "And if a man borrow ought of his neighbour, and it be hurt, or die, the owner thereof being not with it, he shall surely make it good."

Exodus 22:15: "But if the owner thereof be with it, he shall not make it good: if it be an hired thing, it came for his hire."

Exodus 22:16: "And if a man entice a maid that is not betrothed, and lie with her, he shall surely endow her to be his wife."

Exodus 22:19: "Whosoever lieth with a beast shall surely be put to death."

Exodus 22:24: "And my wrath shall wax hot, and I will kill you with the sword; and your wives shall be widows, and your children fatherless."

Exodus 22:30: "Likewise shalt thou do with thine oxen, and with thy sheep: seven days it shall be with his dam; on the eighth day thou shalt give it me."

Exodus 23:1: "Thou shalt not raise a false report: put not thine hand with the wicked to be an unrighteous witness."

Exodus 23:5: "If thou see the ass of him that hateth thee lying under his burden, and wouldest forbear to help him, thou shalt surely help with him."

Exodus 23:11: "But the seventh year thou shalt let it rest and lie still; that the poor of thy people may eat: and what they leave the beasts of the field shall eat. In like manner thou shalt deal with thy vineyard, and with thy oliveyard."

Exodus 23:18: "Thou shalt not offer the blood of my sacrifice with leavened bread; neither shall the

fat of my sacrifice remain until the morning."

Exodus 23:32: "Thou shalt make no covenant with them, nor with their gods."

Exodus 24:2: "And Moses alone shall come near the LORD: but they shall not come nigh; neither shall the people go up with him."

Exodus 24:3: "And Moses came and told the people all the words of the LORD, and all the judgments: and all the people answered with one voice, and said, All the words which the LORD hath said will we do."

Exodus 24:8: "And Moses took the blood, and sprinkled it on the people, and said, Behold the blood of the covenant, which the LORD hath made with you concerning all these words."

Exodus 24:14: "And he said unto the elders, Tarry ye here for us, until we come again unto you: and, behold, Aaron and Hur are with you: if any man have any matters to do, let him come unto them."

Exodus 25:2: "Speak unto the children of Israel, that they bring me an offering: of every man that giveth it willingly with his heart ye shall take my offering."

Exodus 25:11: "And thou shalt overlay it with pure gold, within and without shalt thou overlay it, and shalt make upon it a crown of gold round about."

Exodus 25:13: "And thou shalt make staves of shittim wood, and overlay them with gold."

Exodus 25:14: "And thou shalt put the staves into the rings by the sides of the ark, that the ark may be borne with them."

Exodus 25:20: "And the cherubims shall stretch forth their wings on high, covering the mercy seat with their wings, and their faces shall look one to another; toward the mercy seat shall the faces of the cherubims be."

Exodus 25:22: "And there I will meet with thee, and I will commune with thee from above the mercy seat, from between the two cherubims which are upon the ark of the testimony, of all things which I will give thee in commandment unto the children of Israel."

Exodus 25:24: "And thou shalt overlay it with pure gold, and make thereto a crown of gold round about."

Exodus 25:28: "And thou shalt make the staves of shittim wood, and overlay them with gold, that the table may be borne with them."

Exodus 25:33: "Three bowls made like unto almonds, with a knop and a flower in one branch; and three bowls made like almonds in the other branch, with a knop and a flower: so in the six branches that come out of the candlestick."

Exodus 25:34: "And in the candlesticks shall be four bowls made like unto almonds, with their knops and their flowers."

Exodus 25:39: "Of a talent of pure gold shall he make it, with all these vessels."

Exodus 26:1: "Moreover thou shalt make the tabernacle with ten curtains of fine twined linen, and blue, and purple, and scarlet: with cherubims of cunning work shalt thou make them."

Exodus 26:6: "And thou shalt make fifty taches of gold, and couple the curtains together with the taches: and it shall be one tabernacle."

Exodus 26:29: "And thou shalt overlay the boards with gold, and make their rings of gold for places for the bars: and thou shalt overlay the bars with gold."

Exodus 26:31: "And thou shalt make a vail of blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen of cunning work: with cherubims shall it be made:"

Exodus 26:32: "And thou shalt hang it upon four pillars of shittim wood overlaid with gold: their hooks shall be of gold, upon the four sockets of silver."

Exodus 26:36: "And thou shalt make an hanging for the door of the tent, of blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen, wrought with needlework."

Exodus 26:37: "And thou shalt make for the hanging five pillars of shittim wood, and overlay them with gold, and their hooks shall be of gold: and thou shalt cast five sockets of brass for them."

Exodus 27:2: "And thou shalt make the horns of it upon the four corners thereof: his horns shall be

of the same: and thou shalt overlay it with brass."

Exodus 27:6: "And thou shalt make staves for the altar, staves of shittim wood, and overlay them with brass."

Exodus 27:8: "Hollow with boards shalt thou make it: as it was shewed thee in the mount, so shall they make it."

Exodus 27:16: "And for the gate of the court shall be an hanging of twenty cubits, of blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen, wrought with needlework: and their pillars shall be four, and their sockets four."

Exodus 27:17: "All the pillars round about the court shall be filleted with silver; their hooks shall be of silver, and their sockets of brass."

Exodus 28:1: "And take thou unto thee Aaron thy brother, and his sons with him, from among the children of Israel, that he may minister unto me in the priest's office, even Aaron, Nadab and Abihu, Eleazar and Ithamar, Aaron's sons."

Exodus 28:3: "And thou shalt speak unto all that are wise hearted, whom I have filled with the spirit of wisdom, that they may make Aaron's garments to consecrate him, that he may minister unto me in the priest's office."

Exodus 28:6: "And they shall make the ephod of gold, of blue, and of purple, of scarlet, and fine twined linen, with cunning work."

Exodus 28:11: "With the work of an engraver in stone, like the engravings of a signet, shalt thou engrave the two stones with the names of the children of Israel: thou shalt make them to be set in ouches of gold."

Exodus 28:15: "And thou shalt make the breastplate of judgment with cunning work; after the work of the ephod thou shalt make it; of gold, of blue, and of purple, and of scarlet, and of fine twined linen, shalt thou make it."

Exodus 28:21: "And the stones shall be with the names of the children of Israel, twelve, according to their names, like the engravings of a signet; every one with his name shall they be according to the twelve tribes."

Exodus 28:28: "And they shall bind the breastplate by the rings thereof unto the rings of the ephod with a lace of blue, that it may be above the curious girdle of the ephod, and that the breastplate be not loosed from the ephod."

Exodus 28:41: "And thou shalt put them upon Aaron thy brother, and his sons with him; and shalt anoint them, and consecrate them, and sanctify them, that they may minister unto me in the priest's office."

Exodus 29:2: "And unleavened bread, and cakes unleavened tempered with oil, and wafers unleavened anointed with oil: of wheaten flour shalt thou make them."

Exodus 29:3: "And thou shalt put them into one basket, and bring them in the basket, with the bullock and the two rams."

Exodus 29:4: "And Aaron and his sons thou shalt bring unto the door of the tabernacle of the congregation, and shalt wash them with water."

Exodus 29:5: "And thou shalt take the garments, and put upon Aaron the coat, and the robe of the ephod, and the ephod, and the breastplate, and gird him with the curious girdle of the ephod:"

Exodus 29:9: "And thou shalt gird them with girdles, Aaron and his sons, and put the bonnets on them: and the priest's office shall be theirs for a perpetual statute: and thou shalt consecrate Aaron and his sons."

Exodus 29:12: "And thou shalt take of the blood of the bullock, and put it upon the horns of the altar with thy finger, and pour all the blood beside the bottom of the altar."

Exodus 29:14: "But the flesh of the bullock, and his skin, and his dung, shalt thou burn with fire without the camp: it is a sin offering."

Exodus 29:21: "And thou shalt take of the blood that is upon the altar, and of the anointing oil, and sprinkle it upon Aaron, and upon his garments, and upon his sons, and upon the garments of his

sons with him: and he shall be hallowed, and his garments, and his sons, and his sons' garments with him."

Exodus 29:34: "And if ought of the flesh of the consecrations, or of the bread, remain unto the morning, then thou shalt burn the remainder with fire: it shall not be eaten, because it is holy."

Exodus 29:40: "And with the one lamb a tenth deal of flour mingled with the fourth part of an hin of beaten oil; and the fourth part of an hin of wine for a drink offering."

Exodus 29:43: "And there I will meet with the children of Israel, and the tabernacle shall be sanctified by my glory."

Exodus 30:3: "And thou shalt overlay it with pure gold, the top thereof, and the sides thereof round about, and the horns thereof; and thou shalt make unto it a crown of gold round about."

Exodus 30:5: "And thou shalt make the staves of shittim wood, and overlay them with gold."

Exodus 30:6: "And thou shalt put it before the vail that is by the ark of the testimony, before the mercy seat that is over the testimony, where I will meet with thee."

Exodus 30:10: "And Aaron shall make an atonement upon the horns of it once in a year with the blood of the sin offering of atonements: once in the year shall he make atonement upon it throughout your generations: it is most holy unto the LORD."

Exodus 30:20: "When they go into the tabernacle of the congregation, they shall wash with water, that they die not; or when they come near to the altar to minister, to burn offering made by fire unto the LORD:"

Exodus 30:28: "And the altar of burnt offering with all his vessels, and the laver and his foot."

Exodus 30:34: "And the LORD said unto Moses, Take unto thee sweet spices, stacte, and onycha, and galbanum; these sweet spices with pure frankincense: of each shall there be a like weight:"

Exodus 30:36: "And thou shalt beat some of it very small, and put of it before the testimony in the tabernacle of the congregation, where I will meet with thee: it shall be unto you most holy."

Exodus 31:3: "And I have filled him with the spirit of God, in wisdom, and in understanding, and in knowledge, and in all manner of workmanship,"

Exodus 31:6: "And I, behold, I have given with him Aholiab, the son of Ahisamach, of the tribe of Dan: and in the hearts of all that are wise hearted I have put wisdom, that they may make all that I have commanded thee;"

Exodus 31:8: "And the table and his furniture, and the pure candlestick with all his furniture, and the altar of incense,"

Exodus 31:9: "And the altar of burnt offering with all his furniture, and the laver and his foot,"

Exodus 31:18: "And he gave unto Moses, when he had made an end of communing with him upon mount Sinai, two tables of testimony, tables of stone, written with the finger of God."

Exodus 32:4: "And he received them at their hand, and fashioned it with a graving tool, after he had made it a molten calf: and they said, These be thy gods, O Israel, which brought thee up out of the land of Egypt."

Exodus 32:11: "And Moses besought the LORD his God, and said, LORD, why doth thy wrath wax hot against thy people, which thou hast brought forth out of the land of Egypt with great power, and with a mighty hand?"

Exodus 33:3: "Unto a land flowing with milk and honey: for I will not go up in the midst of thee; for thou art a stiffnecked people: lest I consume thee in the way."

Exodus 33:9: "And it came to pass, as Moses entered into the tabernacle, the cloudy pillar descended, and stood at the door of the tabernacle, and the Lord talked with Moses."

Exodus 33:12: "And Moses said unto the LORD, See, thou sayest unto me, Bring up this people: and thou hast not let me know whom thou wilt send with me. Yet thou hast said, I know thee by name, and thou hast also found grace in my sight."

Exodus 33:14: "And he said, My presence shall go with thee, and I will give thee rest."

Exodus 33:15: "And he said unto him, If thy presence go not with me, carry us not up hence."

Exodus 33:16: "For wherein shall it be known here that I and thy people have found grace in thy

sight? is it not in that thou goest with us? so shall we be separated, I and thy people, from all the people that are upon the face of the earth."

Exodus 33:22: "And it shall come to pass, while my glory passeth by, that I will put thee in a clift of the rock, and will cover thee with my hand while I pass by:"

Exodus 34:3: "And no man shall come up with thee, neither let any man be seen throughout all the mount; neither let the flocks nor herds feed before that mount."

Exodus 34:5: "And the LORD descended in the cloud, and stood with him there, and proclaimed the name of the LORD."

Exodus 34:10: "And he said, Behold, I make a covenant: before all thy people I will do marvels, such as have not been done in all the earth, nor in any nation: and all the people among which thou art shall see the work of the LORD: for it is a terrible thing that I will do with thee."

Exodus 34:12: "Take heed to thyself, lest thou make a covenant with the inhabitants of the land whither thou goest, lest it be for a snare in the midst of thee:"

Exodus 34:15: "Lest thou make a covenant with the inhabitants of the land, and they go a whoring after their gods, and do sacrifice unto their gods, and one call thee, and thou eat of his sacrifice;"

Exodus 34:20: "But the firstling of an ass thou shalt redeem with a lamb: and if thou redeem him not, then shalt thou break his neck. All the firstborn of thy sons thou shalt redeem. And none shall appear before me empty."

Exodus 34:25: "Thou shalt not offer the blood of my sacrifice with leaven; neither shall the sacrifice of the feast of the passover be left unto the morning."

Exodus 34:27: "And the LORD said unto Moses, Write thou these words: for after the tenor of these words I have made a covenant with thee and with Israel."

Exodus 34:28: "And he was there with the LORD forty days and forty nights; he did neither eat bread, nor drink water. And he wrote upon the tables the words of the covenant, the ten commandments."

Exodus 34:29: "And it came to pass, when Moses came down from mount Sinai with the two tables of testimony in Moses' hand, when he came down from the mount, that Moses wist not that the skin of his face shone while he talked with him."

Exodus 34:31: "And Moses called unto them; and Aaron and all the rulers of the congregation returned unto him: and Moses talked with them."

Exodus 34:32: "And afterward all the children of Israel came nigh: and he gave them in commandment all that the LORD had spoken with him in mount Sinai."

Exodus 34:33: "And till Moses had done speaking with them, he put a vail on his face."

Exodus 34:34: "But when Moses went in before the LORD to speak with him, he took the vail off, until he came out. And he came out, and spake unto the children of Israel that which he was commanded."

Exodus 34:35: "And the children of Israel saw the face of Moses, that the skin of Moses' face shone: and Moses put the vail upon his face again, until he went in to speak with him."

Exodus 35:12: "The ark, and the staves thereof, with the mercy seat, and the vail of the covering,"

Exodus 35:14: "The candlestick also for the light, and his furniture, and his lamps, with the oil for the light,"

Exodus 35:16: "The altar of burnt offering, with his brasen grate, his staves, and all his vessels, the laver and his foot,"

Exodus 35:23: "And every man, with whom was found blue, and purple, and scarlet, and fine linen, and goats' hair, and red skins of rams, and badgers' skins, brought them."

Exodus 35:24: "Every one that did offer an offering of silver and brass brought the LORD's offering: and every man, with whom was found shittim wood for any work of the service, brought it."

Exodus 35:25: "And all the women that were wise hearted did spin with their hands, and brought that which they had spun, both of blue, and of purple, and of scarlet, and of fine linen."

Exodus 35:31: "And he hath filled him with the spirit of God, in wisdom, in understanding, and in knowledge, and in all manner of workmanship;"

Exodus 35:35: "Them hath he filled with wisdom of heart, to work all manner of work, of the engraver, and of the cunning workman, and of the embroiderer, in blue, and in purple, in scarlet, and in fine linen, and of the weaver, even of them that do any work, and of those that devise cunning work."

Exodus 36:8: "And every wise hearted man among them that wrought the work of the tabernacle made ten curtains of fine twined linen, and blue, and purple, and scarlet: with cherubims of cunning work made he them."

Exodus 36:13: "And he made fifty taches of gold, and coupled the curtains one unto another with the taches: so it became one tabernacle."

Exodus 36:34: "And he overlaid the boards with gold, and made their rings of gold to be places for the bars, and overlaid the bars with gold."

Exodus 36:35: "And he made a vail of blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen: with cherubims made he it of cunning work."

Exodus 36:36: "And he made thereunto four pillars of shittim wood, and overlaid them with gold: their hooks were of gold; and he cast for them four sockets of silver."

Exodus 36:38: "And the five pillars of it with their hooks: and he overlaid their chapiters and their fillets with gold: but their five sockets were of brass."

Exodus 37:2: "And he overlaid it with pure gold within and without, and made a crown of gold to it round about."

Exodus 37:4: "And he made staves of shittim wood, and overlaid them with gold."

Exodus 37:9: "And the cherubims spread out their wings on high, and covered with their wings over the mercy seat, with their faces one to another; even to the mercy seatward were the faces of the cherubims."

Exodus 37:11: "And he overlaid it with pure gold, and made thereunto a crown of gold round about."

Exodus 37:15: "And he made the staves of shittim wood, and overlaid them with gold, to bear the table."

Exodus 37:26: "And he overlaid it with pure gold, both the top of it, and the sides thereof round about, and the horns of it: also he made unto it a crown of gold round about."

Exodus 37:28: "And he made the staves of shittim wood, and overlaid them with gold."

Exodus 38:2: "And he made the horns thereof on the four corners of it; the horns thereof were of the same: and he overlaid it with brass."

Exodus 38:6: "And he made the staves of shittim wood, and overlaid them with brass."

Exodus 38:7: "And he put the staves into the rings on the sides of the altar, to bear it withal; he made the altar hollow with boards."

Exodus 38:17: "And the sockets for the pillars were of brass; the hooks of the pillars and their fillets of silver; and the overlaying of their chapiters of silver; and all the pillars of the court were filleted with silver."

Exodus 38:23: "And with him was Aholiab, son of Ahisamach, of the tribe of Dan, an engraver, and a cunning workman, and an embroiderer in blue, and in purple, and in scarlet, and fine linen."

Exodus 39:3: "And they did beat the gold into thin plates, and cut it into wires, to work it in the blue, and in the purple, and in the scarlet, and in the fine linen, with cunning work."

Exodus 39:6: "And they wrought onyx stones inclosed in ouches of gold, graven, as signets are graven, with the names of the children of Israel."

Exodus 39:14: "And the stones were according to the names of the children of Israel, twelve, according to their names, like the engravings of a signet, every one with his name, according to the twelve tribes."

Exodus 39:21: "And they did bind the breastplate by his rings unto the rings of the ephod with a

lace of blue, that it might be above the curious girdle of the ephod, and that the breastplate might not be loosed from the ephod; as the LORD commanded Moses."

Exodus 39:23: "And there was an hole in the midst of the robe, as the hole of an habergeon, with a band round about the hole, that it should not rend."

Exodus 39:37: "The pure candlestick, with the lamps thereof, even with the lamps to be set in order, and all the vessels thereof, and the oil for light,"

Exodus 40:3: "And thou shalt put therein the ark of the testimony, and cover the ark with the vail."

Exodus 40:12: "And thou shalt bring Aaron and his sons unto the door of the tabernacle of the congregation, and wash them with water."

Exodus 40:14: "And thou shalt bring his sons, and clothe them with coats:"

Leviticus 1:12: "And he shall cut it into his pieces, with his head and his fat: and the priest shall lay them in order on the wood that is on the fire which is upon the altar:"

Leviticus 1:13: "But he shall wash the inwards and the legs with water: and the priest shall bring it all, and burn it upon the altar: it is a burnt sacrifice, an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD."

Leviticus 1:16: "And he shall pluck away his crop with his feathers, and cast it beside the altar on the east part, by the place of the ashes:"

Leviticus 1:17: "And he shall cleave it with the wings thereof, but shall not divide it asunder: and the priest shall burn it upon the altar, upon the wood that is upon the fire: it is a burnt sacrifice, an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD."

Leviticus 2:2: "And he shall bring it to Aaron's sons the priests: and he shall take thereout his handful of the flour thereof, and of the oil thereof, with all the frankincense thereof; and the priest shall burn the memorial of it upon the altar, to be an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD:"

Leviticus 2:4: "And if thou bring an oblation of a meat offering baken in the oven, it shall be unleavened cakes of fine flour mingled with oil, or unleavened wafers anointed with oil."

Leviticus 2:5: "And if thy oblation be a meat offering baken in a pan, it shall be of fine flour unleavened, mingled with oil."

Leviticus 2:7: "And if thy oblation be a meat offering baken in the fryingpan, it shall be made of fine flour with oil."

Leviticus 2:11: "No meat offering, which ye shall bring unto the LORD, shall be made with leaven: for ye shall burn no leaven, nor any honey, in any offering of the LORD made by fire."

Leviticus 2:13: "And every oblation of thy meat offering shalt thou season with salt; neither shalt thou suffer the salt of the covenant of thy God to be lacking from thy meat offering: with all thine offerings thou shalt offer salt."

Leviticus 2:16: "And the priest shall burn the memorial of it, part of the beaten corn thereof, and part of the oil thereof, with all the frankincense thereof: it is an offering made by fire unto the LORD."

Leviticus 3:4: "And the two kidneys, and the fat that is on them, which is by the flanks, and the caul above the liver, with the kidneys, it shall he take away."

Leviticus 3:10: "And the two kidneys, and the fat that is upon them, which is by the flanks, and the caul above the liver, with the kidneys, it shall he take away."

Leviticus 3:15: "And the two kidneys, and the fat that is upon them, which is by the flanks, and the caul above the liver, with the kidneys, it shall he take away."

Leviticus 4:9: "And the two kidneys, and the fat that is upon them, which is by the flanks, and the caul above the liver, with the kidneys, it shall he take away,"

Leviticus 4:11: "And the skin of the bullock, and all his flesh, with his head, and with his legs, and his inwards, and his dung,"

Leviticus 4:12: "Even the whole bullock shall he carry forth without the camp unto a clean place, where the ashes are poured out, and burn him on the wood with fire: where the ashes are poured out

shall he be burnt."

Leviticus 4:20: "And he shall do with the bullock as he did with the bullock for a sin offering, so shall he do with this: and the priest shall make an atonement for them, and it shall be forgiven them."

Leviticus 4:25: "And the priest shall take of the blood of the sin offering with his finger, and put it upon the horns of the altar of burnt offering, and shall pour out his blood at the bottom of the altar of burnt offering."

Leviticus 4:30: "And the priest shall take of the blood thereof with his finger, and put it upon the horns of the altar of burnt offering, and shall pour out all the blood thereof at the bottom of the altar."

Leviticus 4:34: "And the priest shall take of the blood of the sin offering with his finger, and put it upon the horns of the altar of burnt offering, and shall pour out all the blood thereof at the bottom of the altar:"

Leviticus 5:4: "Or if a soul swear, pronouncing with his lips to do evil, or to do good, whatsoever it be that a man shall pronounce with an oath, and it be hid from him; when he knoweth of it, then he shall be guilty in one of these."

Leviticus 5:15: "If a soul commit a trespass, and sin through ignorance, in the holy things of the LORD; then he shall bring for his trespass unto the LORD a ram without blemish out of the flocks, with thy estimation by shekels of silver, after the shekel of the sanctuary, for a trespass offering."

Leviticus 5:16: "And he shall make amends for the harm that he hath done in the holy thing, and shall add the fifth part thereto, and give it unto the priest: and the priest shall make an atonement for him with the ram of the trespass offering, and it shall be forgiven him."

Leviticus 5:18: "And he shall bring a ram without blemish out of the flock, with thy estimation, for a trespass offering, unto the priest: and the priest shall make an atonement for him concerning his ignorance wherein he erred and wist it not, and it shall be forgiven him."

Leviticus 6:6: "And he shall bring his trespass offering unto the LORD, a ram without blemish out of the flock, with thy estimation, for a trespass offering, unto the priest:"

Leviticus 6:10: "And the priest shall put on his linen garment, and his linen breeches shall he put upon his flesh, and take up the ashes which the fire hath consumed with the burnt offering on the altar, and he shall put them beside the altar."

Leviticus 6:16: "And the remainder thereof shall Aaron and his sons eat: with unleavened bread shall it be eaten in the holy place; in the court of the tabernacle of the congregation they shall eat it."

Leviticus 6:17: "It shall not be baken with leaven. I have given it unto them for their portion of my offerings made by fire; it is most holy, as is the sin offering, and as the trespass offering."

Leviticus 6:21: "In a pan it shall be made with oil; and when it is baken, thou shalt bring it in: and the baken pieces of the meat offering shalt thou offer for a sweet savour unto the LORD."

Leviticus 7:4: "And the two kidneys, and the fat that is on them, which is by the flanks, and the caul that is above the liver, with the kidneys, it shall he take away:"

Leviticus 7:10: "And every meat offering, mingled with oil, and dry, shall all the sons of Aaron have, one as much as another."

Leviticus 7:12: "If he offer it for a thanksgiving, then he shall offer with the sacrifice of thanksgiving unleavened cakes mingled with oil, and unleavened wafers anointed with oil, and cakes mingled with oil, of fine flour, fried."

Leviticus 7:13: "Besides the cakes, he shall offer for his offering leavened bread with the sacrifice of thanksgiving of his peace offerings."

Leviticus 7:17: "But the remainder of the flesh of the sacrifice on the third day shall be burnt with fire."

Leviticus 7:19: "And the flesh that toucheth any unclean thing shall not be eaten; it shall be burnt with fire: and as for the flesh, all that be clean shall eat thereof."

Leviticus 7:24: "And the fat of the beast that dieth of itself, and the fat of that which is torn with



beasts, may be used in any other use: but ye shall in no wise eat of it."

Leviticus 7:30: "His own hands shall bring the offerings of the LORD made by fire, the fat with the breast, it shall he bring, that the breast may be waved for a wave offering before the LORD."

Leviticus 8:2: "Take Aaron and his sons with him, and the garments, and the anointing oil, and a bullock for the sin offering, and two rams, and a basket of unleavened bread;"

Leviticus 8:6: "And Moses brought Aaron and his sons, and washed them with water."

Leviticus 8:7: "And he put upon him the coat, and girded him with the girdle, and clothed him with the robe, and put the ephod upon him, and he girded him with the curious girdle of the ephod, and bound it unto him therewith."

Leviticus 8:13: "And Moses brought Aaron's sons, and put coats upon them, and girded them with girdles, and put bonnets upon them; as the LORD commanded Moses."

Leviticus 8:15: "And he slew it; and Moses took the blood, and put it upon the horns of the altar round about with his finger, and purified the altar, and poured the blood at the bottom of the altar, and sanctified it, to make reconciliation upon it."

Leviticus 8:17: "But the bullock, and his hide, his flesh, and his dung, he burnt with fire without the camp; as the LORD commanded Moses."

Leviticus 8:30: "And Moses took of the anointing oil, and of the blood which was upon the altar, and sprinkled it upon Aaron, and upon his garments, and upon his sons, and upon his sons' garments with him; and sanctified Aaron, and his garments, and his sons, and his sons' garments with him."

Leviticus 8:31: "And Moses said unto Aaron and to his sons, Boil the flesh at the door of the tabernacle of the congregation: and there eat it with the bread that is in the basket of consecrations, as I commanded, saying, Aaron and his sons shall eat it."

Leviticus 8:32: "And that which remaineth of the flesh and of the bread shall ye burn with fire."

Leviticus 9:4: "Also a bullock and a ram for peace offerings, to sacrifice before the LORD; and a meat offering mingled with oil: for to day the LORD will appear unto you."

Leviticus 9:11: "And the flesh and the hide he burnt with fire without the camp."

Leviticus 9:13: "And they presented the burnt offering unto him, with the pieces thereof, and the head: and he burnt them upon the altar."

Leviticus 10:9: "Do not drink wine nor strong drink, thou, nor thy sons with thee, when ye go into the tabernacle of the congregation, lest ye die: it shall be a statute for ever throughout your generations:"

Leviticus 10:14: "And the wave breast and heave shoulder shall ye eat in a clean place; thou, and thy sons, and thy daughters with thee: for they be thy due, and thy sons' due, which are given out of the sacrifices of peace offerings of the children of Israel."

Leviticus 10:15: "The heave shoulder and the wave breast shall they bring with the offerings made by fire of the fat, to wave it for a wave offering before the LORD; and it shall be thine, and thy sons' with thee, by a statute for ever; as the LORD hath commanded."

Leviticus 10:16: "And Moses diligently sought the goat of the sin offering, and, behold, it was burnt: and he was angry with Eleazar and Ithamar, the sons of Aaron which were left alive, saying,"

Leviticus 11:43: "Ye shall not make yourselves abominable with any creeping thing that creepeth, neither shall ye make yourselves unclean with them, that ye should be defiled thereby."

Leviticus 11:44: "For I am the LORD your God: ye shall therefore sanctify yourselves, and ye shall be holy; for I am holy: neither shall ye defile yourselves with any manner of creeping thing that creepeth upon the earth."

Leviticus 13:57: "And if it appear still in the garment, either in the warp, or in the woof, or in any thing of skin; it is a spreading plague: thou shalt burn that wherein the plague is with fire."

Leviticus 14:10: "And on the eighth day he shall take two he lambs without blemish, and one ewe lamb of the first year without blemish, and three tenth deals of fine flour for a meat offering, mingled with oil, and one log of oil."

Leviticus 14:16: "And the priest shall dip his right finger in the oil that is in his left hand, and shall

sprinkle of the oil with his finger seven times before the LORD:"

Leviticus 14:21: "And if he be poor, and cannot get so much; then he shall take one lamb for a trespass offering to be waved, to make an atonement for him, and one tenth deal of fine flour mingled with oil for a meat offering, and a log of oil;"

Leviticus 14:27: "And the priest shall sprinkle with his right finger some of the oil that is in his left hand seven times before the LORD:"

Leviticus 14:31: "Even such as he is able to get, the one for a sin offering, and the other for a burnt offering, with the meat offering: and the priest shall make an atonement for him that is to be cleansed before the LORD."

Leviticus 14:37: "And he shall look on the plague, and, behold, if the plague be in the walls of the house with hollow strakes, greenish or reddish, which in sight are lower than the wall;"

Leviticus 14:52: "And he shall cleanse the house with the blood of the bird, and with the running water, and with the living bird, and with the cedar wood, and with the hyssop, and with the scarlet:"

Leviticus 15:3: "And this shall be his uncleanness in his issue: whether his flesh run with his issue, or his flesh be stopped from his issue, it is his uncleanness."

Leviticus 15:17: "And every garment, and every skin, whereon is the seed of copulation, shall be washed with water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:18: "The woman also with whom man shall lie with seed of copulation, they shall both bathe themselves in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:24: "And if any man lie with her at all, and her flowers be upon him, he shall be unclean seven days; and all the bed whereon he lieth shall be unclean."

Leviticus 15:33: "And of her that is sick of her flowers, and of him that hath an issue, of the man, and of the woman, and of him that lieth with her that is unclean."

Leviticus 16:3: "Thus shall Aaron come into the holy place: with a young bullock for a sin offering, and a ram for a burnt offering."

Leviticus 16:4: "He shall put on the holy linen coat, and he shall have the linen breeches upon his flesh, and shall be girded with a linen girdle, and with the linen mitre shall he be attired: these are holy garments; therefore shall he wash his flesh in water, and so put them on."

Leviticus 16:10: "But the goat, on which the lot fell to be the scapegoat, shall be presented alive before the LORD, to make an atonement with him, and to let him go for a scapegoat into the wilderness."

Leviticus 16:14: "And he shall take of the blood of the bullock, and sprinkle it with his finger upon the mercy seat eastward; and before the mercy seat shall he sprinkle of the blood with his finger seven times."

Leviticus 16:15: "Then shall he kill the goat of the sin offering, that is for the people, and bring his blood within the vail, and do with that blood as he did with the blood of the bullock, and sprinkle it upon the mercy seat, and before the mercy seat:"

Leviticus 16:19: "And he shall sprinkle of the blood upon it with his finger seven times, and cleanse it, and hallow it from the uncleanness of the children of Israel."

Leviticus 16:24: "And he shall wash his flesh with water in the holy place, and put on his garments, and come forth, and offer his burnt offering, and the burnt offering of the people, and make an atonement for himself, and for the people."

Leviticus 17:13: "And whatsoever man there be of the children of Israel, or of the strangers that sojourn among you, which hunteth and catcheth any beast or fowl that may be eaten; he shall even pour out the blood thereof, and cover it with dust."

Leviticus 17:15: "And every soul that eateth that which died of itself, or that which was torn with beasts, whether it be one of your own country, or a stranger, he shall both wash his clothes, and bathe himself in water, and be unclean until the even: then shall he be clean."

Leviticus 18:20: "Moreover thou shalt not lie carnally with thy neighbour's wife, to defile thyself with her."

Leviticus 18:22: "Thou shalt not lie with mankind, as with womankind: it is abomination."

Leviticus 18:23: "Neither shalt thou lie with any beast to defile thyself therewith: neither shall any woman stand before a beast to lie down thereto: it is confusion."

Leviticus 19:13: "Thou shalt not defraud thy neighbour, neither rob him: the wages of him that is hired shall not abide with thee all night until the morning."

Leviticus 19:19: "Ye shall keep my statutes. Thou shalt not let thy cattle gender with a diverse kind: thou shalt not sow thy field with mingled seed: neither shall a garment mingled of linen and woollen come upon thee."

Leviticus 19:20: "And whosoever lieth carnally with a woman, that is a bondmaid, betrothed to an husband, and not at all redeemed, nor freedom given her; she shall be scourged; they shall not be put to death, because she was not free."

Leviticus 19:22: "And the priest shall make an atonement for him with the ram of the trespass offering before the LORD for his sin which he hath done: and the sin which he hath done shall be forgiven him."

Leviticus 19:26: "Ye shall not eat any thing with the blood: neither shall ye use enchantment, nor observe times."

Leviticus 19:33: "And if a stranger sojourn with thee in your land, ye shall not vex him."

Leviticus 19:34: "But the stranger that dwelleth with you shall be unto you as one born among you, and thou shalt love him as thyself; for ye were strangers in the land of Egypt: I am the LORD your God."

Leviticus 20:2: "Again, thou shalt say to the children of Israel, Whosoever he be of the children of Israel, or of the strangers that sojourn in Israel, that giveth any of his seed unto Molech; he shall surely be put to death: the people of the land shall stone him with stones."

Leviticus 20:5: "Then I will set my face against that man, and against his family, and will cut him off, and all that go a whoring after him, to commit whoredom with Molech, from among their people."

Leviticus 20:10: "And the man that committeth adultery with another man's wife, even he that committeth adultery with his neighbour's wife, the adulterer and the adulteress shall surely be put to death."

Leviticus 20:11: "And the man that lieth with his father's wife hath uncovered his father's nakedness: both of them shall surely be put to death; their blood shall be upon them."

Leviticus 20:12: "And if a man lie with his daughter in law, both of them shall surely be put to death: they have wrought confusion; their blood shall be upon them."

Leviticus 20:13: "If a man also lie with mankind, as he lieth with a woman, both of them have committed an abomination: they shall surely be put to death; their blood shall be upon them."

Leviticus 20:14: "And if a man take a wife and her mother, it is wickedness: they shall be burnt with fire, both he and they; that there be no wickedness among you."

Leviticus 20:15: "And if a man lie with a beast, he shall surely be put to death: and ye shall slay the beast."

Leviticus 20:18: "And if a man shall lie with a woman having her sickness, and shall uncover her nakedness; he hath discovered her fountain, and she hath uncovered the fountain of her blood: and both of them shall be cut off from among their people."

Leviticus 20:20: "And if a man shall lie with his uncle's wife, he hath uncovered his uncle's nakedness: they shall bear their sin; they shall die childless."

Leviticus 20:24: "But I have said unto you, Ye shall inherit their land, and I will give it unto you to possess it, a land that floweth with milk and honey: I am the LORD your God, which have separated you from other people."

Leviticus 20:27: "A man also or woman that hath a familiar spirit, or that is a wizard, shall surely be put to death: they shall stone them with stones: their blood shall be upon them."

Leviticus 21:9: "And the daughter of any priest, if she profane herself by playing the whore, she

profaneth her father: she shall be burnt with fire."

Leviticus 22:6: "The soul which hath touched any such shall be unclean until even, and shall not eat of the holy things, unless he wash his flesh with water."

Leviticus 22:8: "That which dieth of itself, or is torn with beasts, he shall not eat to defile himself therewith; I am the LORD."

Leviticus 22:11: "But if the priest buy any soul with his money, he shall eat of it, and he that is born in his house: they shall eat of his meat."

Leviticus 22:14: "And if a man eat of the holy thing unwittingly, then he shall put the fifth part thereof unto it, and shall give it unto the priest with the holy thing."

Leviticus 23:13: "And the meat offering thereof shall be two tenth deals of fine flour mingled with oil, an offering made by fire unto the LORD for a sweet savour: and the drink offering thereof shall be of wine, the fourth part of an hin."

Leviticus 23:17: "Ye shall bring out of your habitations two wave loaves of two tenth deals; they shall be of fine flour; they shall be baked with leaven; they are the firstfruits unto the LORD."

Leviticus 23:18: "And ye shall offer with the bread seven lambs without blemish of the first year, and one young bullock, and two rams: they shall be for a burnt offering unto the LORD, with their meat offering, and their drink offerings, even an offering made by fire, of sweet savour unto the LORD."

Leviticus 23:20: "And the priest shall wave them with the bread of the firstfruits for a wave offering before the LORD, with the two lambs: they shall be holy to the LORD for the priest."

Leviticus 24:23: "And Moses spake to the children of Israel, that they should bring forth him that had cursed out of the camp, and stone him with stones. And the children of Israel did as the LORD commanded Moses."

Leviticus 25:6: "And the sabbath of the land shall be meat for you; for thee, and for thy servant, and for thy maid, and for thy hired servant, and for thy stranger that sojourneth with thee."

Leviticus 25:23: "The land shall not be sold for ever: for the land is mine, for ye are strangers and sojourners with me."

Leviticus 25:35: "And if thy brother be waxen poor, and fallen in decay with thee; then thou shalt relieve him: yea, though he be a stranger, or a sojourner; that he may live with thee."

Leviticus 25:36: "Take thou no usury of him, or increase: but fear thy God; that thy brother may live with thee."

Leviticus 25:40: "But as an hired servant, and as a sojourner, he shall be with thee, and shall serve thee unto the year of jubile."

Leviticus 25:41: "And then shall he depart from thee, both he and his children with him, and shall return unto his own family, and unto the possession of his fathers shall he return."

Leviticus 25:43: "Thou shalt not rule over him with rigour; but shalt fear thy God."

Leviticus 25:45: "Moreover of the children of the strangers that do sojourn among you, of them shall ye buy, and of their families that are with you, which they begat in your land: and they shall be your possession."

Leviticus 25:46: "And ye shall take them as an inheritance for your children after you, to inherit them for a possession; they shall be your bondmen for ever: but over your brethren the children of Israel, ye shall not rule one over another with rigour."

Leviticus 25:50: "And he shall reckon with him that bought him from the year that he was sold to him unto the year of jubile: and the price of his sale shall be according unto the number of years, according to the time of an hired servant shall it be with him."

Leviticus 25:52: "And if there remain but few years unto the year of jubile, then he shall count with him, and according unto his years shall he give him again the price of his redemption."

Leviticus 25:53: "And as a yearly hired servant shall he be with him: and the other shall not rule with rigour over him in thy sight."

Leviticus 25:54: "And if he be not redeemed in these years, then he shall go out in the year of

jubile, both he, and his children with him."

Leviticus 26:9: "For I will have respect unto you, and make you fruitful, and multiply you, and establish my covenant with you."

Leviticus 26:39: "And they that are left of you shall pine away in their iniquity in your enemies' lands; and also in the iniquities of their fathers shall they pine away with them."

Leviticus 26:40: "If they shall confess their iniquity, and the iniquity of their fathers, with their trespass which they trespassed against me, and that also they have walked contrary unto me;"

Leviticus 26:42: "Then will I remember my covenant with Jacob, and also my covenant with Isaac, and also my covenant with Abraham will I remember; and I will remember the land."

Leviticus 26:44: "And yet for all that, when they be in the land of their enemies, I will not cast them away, neither will I abhor them, to destroy them utterly, and to break my covenant with them: for I am the LORD their God."

Numbers 1:2: "Take ye the sum of all the congregation of the children of Israel, after their families, by the house of their fathers, with the number of their names, every male by their polls;"

Numbers 1:4: "And with you there shall be a man of every tribe; every one head of the house of his fathers."

Numbers 1:5: "And these are the names of the men that shall stand with you: of the tribe of Reuben; Elizur the son of Shedeur."

Numbers 2:2: "Every man of the children of Israel shall pitch by his own standard, with the ensign of their father's house: far off about the tabernacle of the congregation shall they pitch."

Numbers 2:17: "Then the tabernacle of the congregation shall set forward with the camp of the Levites in the midst of the camp: as they encamp, so shall they set forward, every man in his place by their standards."

Numbers 2:31: "All they that were numbered in the camp of Dan were an hundred thousand and fifty and seven thousand and six hundred. They shall go hindmost with their standards."

Numbers 3:1: "These also are the generations of Aaron and Moses in the day that the LORD spake with Moses in mount Sinai."

Numbers 4:5: "And when the camp setteth forward, Aaron shall come, and his sons, and they shall take down the covering vail, and cover the ark of testimony with it:"

Numbers 4:8: "And they shall spread upon them a cloth of scarlet, and cover the same with a covering of badgers' skins, and shall put in the staves thereof."

Numbers 4:11: "And upon the golden altar they shall spread a cloth of blue, and cover it with a covering of badgers' skins, and shall put to the staves thereof:"

Numbers 4:12: "And they shall take all the instruments of ministry, wherewith they minister in the sanctuary, and put them in a cloth of blue, and cover them with a covering of badgers' skins, and shall put them on a bar:"

Numbers 4:32: "And the pillars of the court round about, and their sockets, and their pins, and their cords, with all their instruments, and with all their service: and by name ye shall reckon the instruments of the charge of their burden."

Numbers 5:7: "Then they shall confess their sin which they have done: and he shall recompense his trespass with the principal thereof, and add unto it the fifth part thereof, and give it unto him against whom he hath trespassed."

Numbers 5:13: "And a man lie with her carnally, and it be hid from the eyes of her husband, and be kept close, and she be defiled, and there be no witness against her, neither she be taken with the manner;"

Numbers 5:19: "And the priest shall charge her by an oath, and say unto the woman, If no man have lain with thee, and if thou hast not gone aside to uncleanness with another instead of thy husband, be thou free from this bitter water that causeth the curse:"

Numbers 5:20: "But if thou hast gone aside to another instead of thy husband, and if thou be defiled, and some man have lain with thee beside thine husband:"

Numbers 5:21: "Then the priest shall charge the woman with an oath of cursing, and the priest shall say unto the woman, The LORD make thee a curse and an oath among thy people, when the LORD doth make thy thigh to rot, and thy belly to swell;"

Numbers 5:23: "And the priest shall write these curses in a book, and he shall blot them out with the bitter water:"

Numbers 6:15: "And a basket of unleavened bread, cakes of fine flour mingled with oil, and wafers of unleavened bread anointed with oil, and their meat offering, and their drink offerings."

Numbers 6:17: "And he shall offer the ram for a sacrifice of peace offerings unto the LORD, with the basket of unleavened bread: the priest shall offer also his meat offering, and his drink offering."

Numbers 6:20: "And the priest shall wave them for a wave offering before the LORD: this is holy for the priest, with the wave breast and heave shoulder: and after that the Nazarite may drink wine."

Numbers 7:13: "And his offering was one silver charger, the weight thereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them were full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:19: "He offered for his offering one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:25: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:31: "His offering was one silver charger of the weight of an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:37: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:43: "His offering was one silver charger of the weight of an hundred and thirty shekels, a silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:49: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:55: "His offering was one silver charger of the weight of an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:61: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:67: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:73: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:79: "His offering was one silver charger, the weight whereof was an hundred and thirty shekels, one silver bowl of seventy shekels, after the shekel of the sanctuary; both of them full of fine flour mingled with oil for a meat offering:"

Numbers 7:87: "All the oxen for the burnt offering were twelve bullocks, the rams twelve, the lambs of the first year twelve, with their meat offering: and the kids of the goats for sin offering twelve."

Numbers 7:89: "And when Moses was gone into the tabernacle of the congregation to speak with him, then he heard the voice of one speaking unto him from off the mercy seat that was upon the ark of testimony, from between the two cherubims: and he spake unto him."

Numbers 8:8: "Then let them take a young bullock with his meat offering, even fine flour mingled with oil, and another young bullock shalt thou take for a sin offering."

Numbers 8:26: "But shall minister with their brethren in the tabernacle of the congregation, to keep the charge, and shall do no service. Thus shalt thou do unto the Levites touching their charge."

Numbers 9:11: "The fourteenth day of the second month at even they shall keep it, and eat it with unleavened bread and bitter herbs."

Numbers 10:3: "And when they shall blow with them, all the assembly shall assemble themselves to thee at the door of the tabernacle of the congregation."

Numbers 10:4: "And if they blow but with one trumpet, then the princes, which are heads of the thousands of Israel, shall gather themselves unto thee."

Numbers 10:8: "And the sons of Aaron, the priests, shall blow with the trumpets; and they shall be to you for an ordinance for ever throughout your generations."

Numbers 10:9: "And if ye go to war in your land against the enemy that oppresseth you, then ye shall blow an alarm with the trumpets; and ye shall be remembered before the LORD your God, and ye shall be saved from your enemies."

Numbers 10:10: "Also in the day of your gladness, and in your solemn days, and in the beginnings of your months, ye shall blow with the trumpets over your burnt offerings, and over the sacrifices of your peace offerings; that they may be to you for a memorial before your God: I am the LORD your God."

Numbers 10:29: "And Moses said unto Hobab, the son of Raguel the Midianite, Moses' father in law, We are journeying unto the place of which the LORD said, I will give it you: come thou with us, and we will do thee good: for the LORD hath spoken good concerning Israel."

Numbers 10:32: "And it shall be, if thou go with us, yea, it shall be, that what goodness the LORD shall do unto us, the same will we do unto thee."

Numbers 11:15: "And if thou deal thus with me, kill me, I pray thee, out of hand, if I have found favour in thy sight; and let me not see my wretchedness."

Numbers 11:16: "And the LORD said unto Moses, Gather unto me seventy men of the elders of Israel, whom thou knowest to be the elders of the people, and officers over them; and bring them unto the tabernacle of the congregation, that they may stand there with thee."

Numbers 11:17: "And I will come down and talk with thee there: and I will take of the spirit which is upon thee, and will put it upon them; and they shall bear the burden of the people with thee, that thou bear it not thyself alone."

Numbers 11:18: "And say thou unto the people, Sanctify yourselves against to morrow, and ye shall eat flesh: for ye have wept in the ears of the LORD, saying, Who shall give us flesh to eat? for it was well with us in Egypt: therefore the LORD will give you flesh, and ye shall eat."

Numbers 11:33: "And while the flesh was yet between their teeth, ere it was chewed, the wrath of the LORD was kindled against the people, and the LORD smote the people with a very great plague."

Numbers 12:8: "With him will I speak mouth to mouth, even apparently, and not in dark speeches; and the similitude of the LORD shall he behold: wherefore then were ye not afraid to speak against my servant Moses?"

Numbers 13:23: "And they came unto the brook of Eshcol, and cut down from thence a branch with one cluster of grapes, and they bare it between two upon a staff; and they brought of the pomegranates, and of the figs."

Numbers 13:27: "And they told him, and said, We came unto the land whither thou sentest us, and surely it floweth with milk and honey; and this is the fruit of it."

Numbers 13:31: "But the men that went up with him said, We be not able to go up against the

people; for they are stronger than we."

Numbers 14:8: "If the LORD delight in us, then he will bring us into this land, and give it us; a land which floweth with milk and honey."

Numbers 14:9: "Only rebel not ye against the LORD, neither fear ye the people of the land; for they are bread for us: their defence is departed from them, and the LORD is with us: fear them not."

Numbers 14:10: "But all the congregation bade stone them with stones. And the glory of the LORD appeared in the tabernacle of the congregation before all the children of Israel."

Numbers 14:12: "I will smite them with the pestilence, and disinherit them, and will make of thee a greater nation and mightier than they."

Numbers 14:21: "But as truly as I live, all the earth shall be filled with the glory of the LORD."

Numbers 14:24: "But my servant Caleb, because he had another spirit with him, and hath followed me fully, him will I bring into the land whereinto he went; and his seed shall possess it."

Numbers 14:27: "How long shall I bear with this evil congregation, which murmur against me? I have heard the murmurings of the children of Israel, which they murmur against me."

Numbers 14:43: "For the Amalekites and the Canaanites are there before you, and ye shall fall by the sword: because ye are turned away from the LORD, therefore the LORD will not be with you."

Numbers 15:4: "Then shall he that offereth his offering unto the LORD bring a meat offering of a tenth deal of flour mingled with the fourth part of an hin of oil."

Numbers 15:5: "And the fourth part of an hin of wine for a drink offering shalt thou prepare with the burnt offering or sacrifice, for one lamb."

Numbers 15:6: "Or for a ram, thou shalt prepare for a meat offering two tenth deals of flour mingled with the third part of an hin of oil."

Numbers 15:9: "Then shall he bring with a bullock a meat offering of three tenth deals of flour mingled with half an hin of oil."

Numbers 15:14: "And if a stranger sojourn with you, or whosoever be among you in your generations, and will offer an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD; as ye do, so he shall do."

Numbers 15:15: "One ordinance shall be both for you of the congregation, and also for the stranger that sojourneth with you, an ordinance for ever in your generations: as ye are, so shall the stranger be before the LORD."

Numbers 15:16: "One law and one manner shall be for you, and for the stranger that sojourneth with you."

Numbers 15:24: "Then it shall be, if ought be committed by ignorance without the knowledge of the congregation, that all the congregation shall offer one young bullock for a burnt offering, for a sweet savour unto the LORD, with his meat offering, and his drink offering, according to the manner, and one kid of the goats for a sin offering."

Numbers 15:35: "And the LORD said unto Moses, The man shall be surely put to death: all the congregation shall stone him with stones without the camp."

Numbers 15:36: "And all the congregation brought him without the camp, and stoned him with stones, and he died; as the LORD commanded Moses."

Numbers 16:2: "And they rose up before Moses, with certain of the children of Israel, two hundred and fifty princes of the assembly, famous in the congregation, men of renown:"

Numbers 16:10: "And he hath brought thee near to him, and all thy brethren the sons of Levi with thee: and seek ye the priesthood also?"

Numbers 16:13: "Is it a small thing that thou hast brought us up out of a land that floweth with milk and honey, to kill us in the wilderness, except thou make thyself altogether a prince over us?"

Numbers 16:14: "Moreover thou hast not brought us into a land that floweth with milk and honey, or given us inheritance of fields and vineyards: wilt thou put out the eyes of these men? we will not come up."

Numbers 16:18: "And they took every man his censer, and put fire in them, and laid incense



thereon, and stood in the door of the tabernacle of the congregation with Moses and Aaron."

Numbers 16:22: "And they fell upon their faces, and said, O God, the God of the spirits of all flesh, shall one man sin, and wilt thou be wroth with all the congregation?"

Numbers 16:30: "But if the LORD make a new thing, and the earth open her mouth, and swallow them up, with all that appertain unto them, and they go down quick into the pit; then ye shall understand that these men have provoked the LORD."

Numbers 17:4: "And thou shalt lay them up in the tabernacle of the congregation before the testimony, where I will meet with you."

Numbers 17:13: "Whosoever cometh any thing near unto the tabernacle of the LORD shall die: shall we be consumed with dying?"

Numbers 18:1: "And the LORD said unto Aaron, Thou and thy sons and thy father's house with thee shall bear the iniquity of the sanctuary: and thou and thy sons with thee shall bear the iniquity of your priesthood."

Numbers 18:2: "And thy brethren also of the tribe of Levi, the tribe of thy father, bring thou with thee, that they may be joined unto thee, and minister unto thee: but thou and thy sons with thee shall minister before the tabernacle of witness."

Numbers 18:7: "Therefore thou and thy sons with thee shall keep your priest's office for everything of the altar, and within the vail; and ye shall serve: I have given your priest's office unto you as a service of gift: and the stranger that cometh nigh shall be put to death."

Numbers 18:11: "And this is thine; the heave offering of their gift, with all the wave offerings of the children of Israel: I have given them unto thee, and to thy sons and to thy daughters with thee, by a statute for ever: every one that is clean in thy house shall eat of it."

Numbers 18:19: "All the heave offerings of the holy things, which the children of Israel offer unto the LORD, have I given thee, and thy sons and thy daughters with thee, by a statute for ever: it is a covenant of salt for ever before the LORD unto thee and to thy seed with thee."

Numbers 19:4: "And Eleazar the priest shall take of her blood with his finger, and sprinkle of her blood directly before the tabernacle of the congregation seven times:"

Numbers 19:5: "And one shall burn the heifer in his sight; her skin, and her flesh, and her blood, with her dung, shall he burn:"

Numbers 19:12: "He shall purify himself with it on the third day, and on the seventh day he shall be clean: but if he purify not himself the third day, then the seventh day he shall not be clean."

Numbers 19:16: "And whosoever toucheth one that is slain with a sword in the open fields, or a dead body, or a bone of a man, or a grave, shall be unclean seven days."

Numbers 20:3: "And the people chode with Moses, and spake, saying, Would God that we had died when our brethren died before the LORD!"

Numbers 20:11: "And Moses lifted up his hand, and with his rod he smote the rock twice: and the water came out abundantly, and the congregation drank, and their beasts also."

Numbers 20:13: "This is the water of Meribah; because the children of Israel strove with the LORD, and he was sanctified in them."

Numbers 20:18: "And Edom said unto him, Thou shalt not pass by me, lest I come out against thee with the sword."

Numbers 20:20: "And he said, Thou shalt not go through. And Edom came out against him with much people, and with a strong hand."

Numbers 21:18: "The princes digged the well, the nobles of the people digged it, by the direction of the lawgiver, with their staves. And from the wilderness they went to Mattanah:"

Numbers 21:24: "And Israel smote him with the edge of the sword, and possessed his land from Arnon unto Jabbok, even unto the children of Ammon: for the border of the children of Ammon was strong."

Numbers 22:7: "And the elders of Moab and the elders of Midian departed with the rewards of divination in their hand; and they came unto Balaam, and spake unto him the words of Balak."

Numbers 22:8: "And he said unto them, Lodge here this night, and I will bring you word again, as the LORD shall speak unto me: and the princes of Moab abode with Balaam."

Numbers 22:9: "And God came unto Balaam, and said, What men are these with thee?"

Numbers 22:12: "And God said unto Balaam, Thou shalt not go with them; thou shalt not curse the people: for they are blessed."

Numbers 22:13: "And Balaam rose up in the morning, and said unto the princes of Balak, Get you into your land: for the LORD refuseth to give me leave to go with you."

Numbers 22:14: "And the princes of Moab rose up, and they went unto Balak, and said, Balaam refuseth to come with us."

Numbers 22:20: "And God came unto Balaam at night, and said unto him, If the men come to call thee, rise up, and go with them; but yet the word which I shall say unto thee, that shalt thou do."

Numbers 22:21: "And Balaam rose up in the morning, and saddled his ass, and went with the princes of Moab."

Numbers 22:22: "And God's anger was kindled because he went: and the angel of the LORD stood in the way for an adversary against him. Now he was riding upon his ass, and his two servants were with him."

Numbers 22:27: "And when the ass saw the angel of the LORD, she fell down under Balaam: and Balaam's anger was kindled, and he smote the ass with a staff."

Numbers 22:35: "And the angel of the LORD said unto Balaam, Go with the men: but only the word that I shall speak unto thee, that thou shalt speak. So Balaam went with the princes of Balak."

Numbers 22:39: "And Balaam went with Balak, and they came unto Kirjathhuzoth."

Numbers 22:40: "And Balak offered oxen and sheep, and sent to Balaam, and to the princes that were with him."

Numbers 23:13: "And Balak said unto him, Come, I pray thee, with me unto another place, from whence thou mayest see them: thou shalt see but the utmost part of them, and shalt not see them all: and curse me them from thence."

Numbers 23:17: "And when he came to him, behold, he stood by his burnt offering, and the princes of Moab with him. And Balak said unto him, What hath the LORD spoken?"

Numbers 23:21: "He hath not beheld iniquity in Jacob, neither hath he seen perverseness in Israel: the LORD his God is with him, and the shout of a king is among them."

Numbers 24:8: "God brought him forth out of Egypt; he hath as it were the strength of an unicorn: he shall eat up the nations his enemies, and shall break their bones, and pierce them through with his arrows."

Numbers 25:1: "And Israel abode in Shittim, and the people began to commit whoredom with the daughters of Moab."

Numbers 25:14: "Now the name of the Israelite that was slain, even that was slain with the Midianitish woman, was Zimri, the son of Salu, a prince of a chief house among the Simeonites."

Numbers 25:18: "For they vex you with their wives, wherewith they have beguiled you in the matter of Peor, and in the matter of Cozbi, the daughter of a prince of Midian, their sister, which was slain in the day of the plague for Peor's sake."

Numbers 26:3: "And Moses and Eleazar the priest spake with them in the plains of Moab by Jordan near Jericho, saying,"

Numbers 26:10: "And the earth opened her mouth, and swallowed them up together with Korah, when that company died, what time the fire devoured two hundred and fifty men: and they became a sign."

Numbers 27:21: "And he shall stand before Eleazar the priest, who shall ask counsel for him after the judgment of Urim before the LORD: at his word shall they go out, and at his word they shall come in, both he, and all the children of Israel with him, even all the congregation."

Numbers 28:5: "And a tenth part of an ephah of flour for a meat offering, mingled with the fourth part of an hin of beaten oil."

Numbers 28:9: "And on the sabbath day two lambs of the first year without spot, and two tenth deals of flour for a meat offering, mingled with oil, and the drink offering thereof:"

Numbers 28:12: "And three tenth deals of flour for a meat offering, mingled with oil, for one bullock; and two tenth deals of flour for a meat offering, mingled with oil, for one ram;"

Numbers 28:13: "And a several tenth deal of flour mingled with oil for a meat offering unto one lamb; for a burnt offering of a sweet savour, a sacrifice made by fire unto the LORD."

Numbers 28:20: "And their meat offering shall be of flour mingled with oil: three tenth deals shall ye offer for a bullock, and two tenth deals for a ram;"

Numbers 28:28: "And their meat offering of flour mingled with oil, three tenth deals unto one bullock, two tenth deals unto one ram,"

Numbers 29:3: "And their meat offering shall be of flour mingled with oil, three tenth deals for a bullock, and two tenth deals for a ram,"

Numbers 29:9: "And their meat offering shall be of flour mingled with oil, three tenth deals to a bullock, and two tenth deals to one ram,"

Numbers 29:14: "And their meat offering shall be of flour mingled with oil, three tenth deals unto every bullock of the thirteen bullocks, two tenth deals to each ram of the two rams,"

Numbers 30:2: "If a man vow a vow unto the LORD, or swear an oath to bind his soul with a bond; he shall not break his word, he shall do according to all that proceedeth out of his mouth."

Numbers 30:8: "But if her husband disallowed her on the day that he heard it; then he shall make her vow which she vowed, and that which she uttered with her lips, wherewith she bound her soul, of none effect: and the LORD shall forgive her."

Numbers 30:10: "And if she vowed in her husband's house, or bound her soul by a bond with an oath;"

Numbers 31:6: "And Moses sent them to the war, a thousand of every tribe, them and Phinehas the son of Eleazar the priest, to the war, with the holy instruments, and the trumpets to blow in his hand."

Numbers 31:8: "And they slew the kings of Midian, beside the rest of them that were slain; namely, Evi, and Rekem, and Zur, and Hur, and Reba, five kings of Midian: Balaam also the son of Beor they slew with the sword."

Numbers 31:10: "And they burnt all their cities wherein they dwelt, and all their goodly castles, with fire."

Numbers 31:14: "And Moses was wroth with the officers of the host, with the captains over thousands, and captains over hundreds, which came from the battle."

Numbers 31:17: "Now therefore kill every male among the little ones, and kill every woman that hath known man by lying with him."

Numbers 31:18: "But all the women children, that have not known a man by lying with him, keep alive for yourselves."

Numbers 31:23: "Every thing that may abide the fire, ye shall make it go through the fire, and it shall be clean: nevertheless it shall be purified with the water of separation: and all that abideth not the fire ye shall make go through the water."

Numbers 31:35: "And thirty and two thousand persons in all, of women that had not known man by lying with him."

Numbers 32:19: "For we will not inherit with them on yonder side Jordan, or forward; because our inheritance is fallen to us on this side Jordan eastward."

Numbers 32:29: "And Moses said unto them, If the children of Gad and the children of Reuben will pass with you over Jordan, every man armed to battle, before the LORD, and the land shall be subdued before you; then ye shall give them the land of Gilead for a possession:"

Numbers 32:30: "But if they will not pass over with you armed, they shall have possessions among you in the land of Canaan."

Numbers 32:33: "And Moses gave unto them, even to the children of Gad, and to the children of

Reuben, and unto half the tribe of Manasseh the son of Joseph, the kingdom of Sihon king of the Amorites, and the kingdom of Og king of Bashan, the land, with the cities thereof in the coasts, even the cities of the country round about."

Numbers 33:1: "These are the journeys of the children of Israel, which went forth out of the land of Egypt with their armies under the hand of Moses and Aaron."

Numbers 33:3: "And they departed from Rameses in the first month, on the fifteenth day of the first month; on the morrow after the passover the children of Israel went out with an high hand in the sight of all the Egyptians."

Numbers 34:2: "Command the children of Israel, and say unto them, When ye come into the land of Canaan; (this is the land that shall fall unto you for an inheritance, even the land of Canaan with the coasts thereof:)"

Numbers 34:12: "And the border shall go down to Jordan, and the goings out of it shall be at the salt sea: this shall be your land with the coasts thereof round about."

Numbers 35:7: "So all the cities which ye shall give to the Levites shall be forty and eight cities: them shall ye give with their suburbs."

Numbers 35:16: "And if he smite him with an instrument of iron, so that he die, he is a murderer: the murderer shall surely be put to death."

Numbers 35:17: "And if he smite him with throwing a stone, wherewith he may die, and he die, he is a murderer: the murderer shall surely be put to death."

Numbers 35:18: "Or if he smite him with an hand weapon of wood, wherewith he may die, and he die, he is a murderer: the murderer shall surely be put to death."

Numbers 35:21: "Or in enmity smite him with his hand, that he die: he that smote him shall surely be put to death; for he is a murderer: the revenger of blood shall slay the murderer, when he meeteth him."

Numbers 35:23: "Or with any stone, wherewith a man may die, seeing him not, and cast it upon him, that he die, and was not his enemy, neither sought his harm:"

Numbers 35:25: "And the congregation shall deliver the slayer out of the hand of the revenger of blood, and the congregation shall restore him to the city of his refuge, whither he was fled: and he shall abide in it unto the death of the high priest, which was anointed with the holy oil."

Deuteronomy 1:16: "And I charged your judges at that time, saying, Hear the causes between your brethren, and judge righteously between every man and his brother, and the stranger that is with him."

Deuteronomy 1:37: "Also the LORD was angry with me for your sakes, saying, Thou also shalt not go in thither."

Deuteronomy 2:5: "Meddle not with them; for I will not give you of their land, no, not so much as a foot breadth; because I have given mount Seir unto Esau for a possession."

Deuteronomy 2:7: "For the LORD thy God hath blessed thee in all the works of thy hand: he knoweth thy walking through this great wilderness: these forty years the LORD thy God hath been with thee; thou hast lacked nothing."

Deuteronomy 2:9: "And the LORD said unto me, Distress not the Moabites, neither contend with them in battle: for I will not give thee of their land for a possession; because I have given Ar unto the children of Lot for a possession."

Deuteronomy 2:19: "And when thou comest nigh over against the children of Ammon, distress them not, nor meddle with them: for I will not give thee of the land of the children of Ammon any possession; because I have given it unto the children of Lot for a possession."

Deuteronomy 2:24: "Rise ye up, take your journey, and pass over the river Arnon: behold, I have given into thine hand Sihon the Amorite, king of Heshbon, and his land: begin to possess it, and contend with him in battle."

Deuteronomy 2:26: "And I sent messengers out of the wilderness of Kedemoth unto Sihon king of Heshbon with words of peace, saying,"

Deuteronomy 3:5: "All these cities were fenced with high walls, gates, and bars; beside unwalled towns a great many."

Deuteronomy 3:13: "And the rest of Gilead, and all Bashan, being the kingdom of Og, gave I unto the half tribe of Manasseh; all the region of Argob, with all Bashan, which was called the land of giants."

Deuteronomy 3:26: "But the LORD was wroth with me for your sakes, and would not hear me: and the LORD said unto me, Let it suffice thee; speak no more unto me of this matter."

Deuteronomy 3:27: "Get thee up into the top of Pisgah, and lift up thine eyes westward, and northward, and southward, and eastward, and behold it with thine eyes: for thou shalt not go over this Jordan."

Deuteronomy 4:11: "And ye came near and stood under the mountain; and the mountain burned with fire unto the midst of heaven, with darkness, clouds, and thick darkness."

Deuteronomy 4:21: "Furthermore the LORD was angry with me for your sakes, and swore that I should not go over Jordan, and that I should not go in unto that good land, which the LORD thy God giveth thee for an inheritance:"

Deuteronomy 4:23: "Take heed unto yourselves, lest ye forget the covenant of the LORD your God, which he made with you, and make you a graven image, or the likeness of any thing, which the LORD thy God hath forbidden thee."

Deuteronomy 4:29: "But if from thence thou shalt seek the LORD thy God, thou shalt find him, if thou seek him with all thy heart and with all thy soul."

Deuteronomy 4:37: "And because he loved thy fathers, therefore he chose their seed after them, and brought thee out in his sight with his mighty power out of Egypt;"

Deuteronomy 4:40: "Thou shalt keep therefore his statutes, and his commandments, which I command thee this day, that it may go well with thee, and with thy children after thee, and that thou mayest prolong thy days upon the earth, which the LORD thy God giveth thee, for ever."

Deuteronomy 5:2: "The LORD our God made a covenant with us in Horeb."

Deuteronomy 5:3: "The LORD made not this covenant with our fathers, but with us, even us, who are all of us here alive this day."

Deuteronomy 5:4: "The LORD talked with you face to face in the mount out of the midst of the fire,"

Deuteronomy 5:16: "Honour thy father and thy mother, as the LORD thy God hath commanded thee; that thy days may be prolonged, and that it may go well with thee, in the land which the LORD thy God giveth thee."

Deuteronomy 5:22: "These words the LORD spake unto all your assembly in the mount out of the midst of the fire, of the cloud, and of the thick darkness, with a great voice: and he added no more. And he wrote them in two tables of stone, and delivered them unto me."

Deuteronomy 5:23: "And it came to pass, when ye heard the voice out of the midst of the darkness, (for the mountain did burn with fire,) that ye came near unto me, even all the heads of your tribes, and your elders;"

Deuteronomy 5:24: "And ye said, Behold, the LORD our God hath shewed us his glory and his greatness, and we have heard his voice out of the midst of the fire: we have seen this day that God doth talk with man, and he liveth."

Deuteronomy 5:29: "O that there were such an heart in them, that they would fear me, and keep all my commandments always, that it might be well with them, and with their children for ever!"

Deuteronomy 5:33: "Ye shall walk in all the ways which the LORD your God hath commanded you, that ye may live, and that it may be well with you, and that ye may prolong your days in the land which ye shall possess."

Deuteronomy 6:3: "Hear therefore, O Israel, and observe to do it; that it may be well with thee, and that ye may increase mightily, as the LORD God of thy fathers hath promised thee, in the land that floweth with milk and honey."

Deuteronomy 6:5: "And thou shalt love the LORD thy God with all thine heart, and with all thy soul, and with all thy might."

Deuteronomy 6:18: "And thou shalt do that which is right and good in the sight of the LORD: that it may be well with thee, and that thou mayest go in and possess the good land which the LORD swore unto thy fathers."

Deuteronomy 6:21: "Then thou shalt say unto thy son, We were Pharaoh's bondmen in Egypt; and the LORD brought us out of Egypt with a mighty hand:"

Deuteronomy 7:2: "And when the LORD thy God shall deliver them before thee; thou shalt smite them, and utterly destroy them; thou shalt make no covenant with them, nor shew mercy unto them:"

Deuteronomy 7:3: "Neither shalt thou make marriages with them; thy daughter thou shalt not give unto his son, nor his daughter shalt thou take unto thy son."

Deuteronomy 7:5: "But thus shall ye deal with them; ye shall destroy their altars, and break down their images, and cut down their groves, and burn their graven images with fire."

Deuteronomy 7:8: "But because the LORD loved you, and because he would keep the oath which he had sworn unto your fathers, hath the LORD brought you out with a mighty hand, and redeemed you out of the house of bondmen, from the hand of Pharaoh king of Egypt."

Deuteronomy 7:9: "Know therefore that the LORD thy God, he is God, the faithful God, which keepeth covenant and mercy with them that love him and keep his commandments to a thousand generations;"

Deuteronomy 7:23: "But the LORD thy God shall deliver them unto thee, and shall destroy them with a mighty destruction, until they be destroyed."

Deuteronomy 7:25: "The graven images of their gods shall ye burn with fire: thou shalt not desire the silver or gold that is on them, nor take it unto thee, lest thou be snared therein: for it is an abomination to the LORD thy God."

Deuteronomy 8:3: "And he humbled thee, and suffered thee to hunger, and fed thee with manna, which thou knewest not, neither did thy fathers know; that he might make thee know that man doth not live by bread only, but by every word that proceedeth out of the mouth of the LORD doth man live."

Deuteronomy 8:16: "Who fed thee in the wilderness with manna, which thy fathers knew not, that he might humble thee, and that he might prove thee, to do thee good at thy latter end;"

Deuteronomy 9:8: "Also in Horeb ye provoked the LORD to wrath, so that the LORD was angry with you to have destroyed you."

Deuteronomy 9:9: "When I was gone up into the mount to receive the tables of stone, even the tables of the covenant which the LORD made with you, then I abode in the mount forty days and forty nights, I neither did eat bread nor drink water:"

Deuteronomy 9:10: "And the LORD delivered unto me two tables of stone written with the finger of God; and on them was written according to all the words, which the LORD spake with you in the mount out of the midst of the fire in the day of the assembly."

Deuteronomy 9:15: "So I turned and came down from the mount, and the mount burned with fire: and the two tables of the covenant were in my two hands."

Deuteronomy 9:20: "And the LORD was very angry with Aaron to have destroyed him: and I prayed for Aaron also the same time."

Deuteronomy 9:21: "And I took your sin, the calf which ye had made, and burnt it with fire, and stamped it, and ground it very small, even until it was as small as dust: and I cast the dust thereof into the brook that descended out of the mount."

Deuteronomy 9:26: "I prayed therefore unto the LORD, and said, O Lord GOD, destroy not thy people and thine inheritance, which thou hast redeemed through thy greatness, which thou hast brought forth out of Egypt with a mighty hand."

Deuteronomy 10:9: "Wherefore Levi hath no part nor inheritance with his brethren; the LORD is

his inheritance, according as the LORD thy God promised him."

Deuteronomy 10:12: "And now, Israel, what doth the LORD thy God require of thee, but to fear the LORD thy God, to walk in all his ways, and to love him, and to serve the LORD thy God with all thy heart and with all thy soul,"

Deuteronomy 10:14: "Behold, the heaven and the heaven of heavens is the LORD's thy God, the earth also, with all that therein is."

Deuteronomy 10:22: "Thy fathers went down into Egypt with threescore and ten persons; and now the LORD thy God hath made thee as the stars of heaven for multitude."

Deuteronomy 11:2: "And know ye this day: for I speak not with your children which have not known, and which have not seen the chastisement of the LORD your God, his greatness, his mighty hand, and his stretched out arm,"

Deuteronomy 11:9: "And that ye may prolong your days in the land, which the LORD swore unto your fathers to give unto them and to their seed, a land that floweth with milk and honey."

Deuteronomy 11:10: "For the land, whither thou goest in to possess it, is not as the land of Egypt, from whence ye came out, where thou sowedst thy seed, and wateredst it with thy foot, as a garden of herbs:"

Deuteronomy 11:13: "And it shall come to pass, if ye shall hearken diligently unto my commandments which I command you this day, to love the LORD your God, and to serve him with all your heart and with all your soul,"

Deuteronomy 12:3: "And ye shall overthrow their altars, and break their pillars, and burn their groves with fire; and ye shall hew down the graven images of their gods, and destroy the names of them out of that place."

Deuteronomy 12:12: "And ye shall rejoice before the LORD your God, ye, and your sons, and your daughters, and your menservants, and your maidservants, and the Levite that is within your gates; forasmuch as he hath no part nor inheritance with you."

Deuteronomy 12:23: "Only be sure that thou eat not the blood: for the blood is the life; and thou mayest not eat the life with the flesh."

Deuteronomy 12:25: "Thou shalt not eat it; that it may go well with thee, and with thy children after thee, when thou shalt do that which is right in the sight of the LORD."

Deuteronomy 12:28: "Observe and hear all these words which I command thee, that it may go well with thee, and with thy children after thee for ever, when thou doest that which is good and right in the sight of the LORD thy God."

Deuteronomy 13:3: "Thou shalt not hearken unto the words of that prophet, or that dreamer of dreams: for the LORD your God proveth you, to know whether ye love the LORD your God with all your heart and with all your soul."

Deuteronomy 13:10: "And thou shalt stone him with stones, that he die; because he hath sought to thrust thee away from the LORD thy God, which brought thee out of the land of Egypt, from the house of bondage."

Deuteronomy 13:15: "Thou shalt surely smite the inhabitants of that city with the edge of the sword, destroying it utterly, and all that is therein, and the cattle thereof, with the edge of the sword."

Deuteronomy 13:16: "And thou shalt gather all the spoil of it into the midst of the street thereof, and shalt burn with fire the city, and all the spoil thereof every whit, for the LORD thy God: and it shall be an heap for ever; it shall not be built again."

Deuteronomy 14:27: "And the Levite that is within thy gates; thou shalt not forsake him; for he hath no part nor inheritance with thee."

Deuteronomy 14:29: "And the Levite, (because he hath no part nor inheritance with thee,) and the stranger, and the fatherless, and the widow, which are within thy gates, shall come, and shall eat and be satisfied; that the LORD thy God may bless thee in all the work of thine hand which thou doest."

Deuteronomy 15:3: "Of a foreigner thou mayest exact it again: but that which is thine with thy brother thine hand shall release;"

Deuteronomy 15:16: "And it shall be, if he say unto thee, I will not go away from thee; because he loveth thee and thine house, because he is well with thee;"

Deuteronomy 15:19: "All the firstling males that come of thy herd and of thy flock thou shalt sanctify unto the LORD thy God: thou shalt do no work with the firstling of thy bullock, nor shear the firstling of thy sheep."

Deuteronomy 16:3: "Thou shalt eat no leavened bread with it; seven days shalt thou eat unleavened bread therewith, even the bread of affliction; for thou camest forth out of the land of Egypt in haste: that thou mayest remember the day when thou camest forth out of the land of Egypt all the days of thy life."

Deuteronomy 16:4: "And there shall be no leavened bread seen with thee in all thy coast seven days; neither shall there any thing of the flesh, which thou sacrificedst the first day at even, remain all night until the morning."

Deuteronomy 16:10: "And thou shalt keep the feast of weeks unto the LORD thy God with a tribute of a freewill offering of thine hand, which thou shalt give unto the LORD thy God, according as the LORD thy God hath blessed thee:"

Deuteronomy 16:18: "Judges and officers shalt thou make thee in all thy gates, which the LORD thy God giveth thee, throughout thy tribes: and they shall judge the people with just judgment."

Deuteronomy 17:5: "Then shalt thou bring forth that man or that woman, which have committed that wicked thing, unto thy gates, even that man or that woman, and shalt stone them with stones, till they die."

Deuteronomy 17:19: "And it shall be with him, and he shall read therein all the days of his life: that he may learn to fear the LORD his God, to keep all the words of this law and these statutes, to do them:"

Deuteronomy 18:1: "The priests the Levites, and all the tribe of Levi, shall have no part nor inheritance with Israel: they shall eat the offerings of the LORD made by fire, and his inheritance."

Deuteronomy 18:6: "And if a Levite come from any of thy gates out of all Israel, where he sojourned, and come with all the desire of his mind unto the place which the LORD shall choose;"

Deuteronomy 18:11: "Or a charmer, or a consulter with familiar spirits, or a wizard, or a necromancer."

Deuteronomy 18:13: "Thou shalt be perfect with the LORD thy God."

Deuteronomy 19:5: "As when a man goeth into the wood with his neighbour to hew wood, and his hand fetcheth a stroke with the axe to cut down the tree, and the head slippeth from the helve, and lighteth upon his neighbour, that he die; he shall flee unto one of those cities, and live:"

Deuteronomy 19:13: "Thine eye shall not pity him, but thou shalt put away the guilt of innocent blood from Israel, that it may go well with thee."

Deuteronomy 20:1: "When thou goest out to battle against thine enemies, and seest horses, and chariots, and a people more than thou, be not afraid of them: for the LORD thy God is with thee, which brought thee up out of the land of Egypt."

Deuteronomy 20:4: "For the LORD your God is he that goeth with you, to fight for you against your enemies, to save you."

Deuteronomy 20:12: "And if it will make no peace with thee, but will make war against thee, then thou shalt besiege it:"

Deuteronomy 20:13: "And when the LORD thy God hath delivered it into thine hands, thou shalt smite every male thereof with the edge of the sword:"

Deuteronomy 20:20: "Only the trees which thou knowest that they be not trees for meat, thou shalt destroy and cut them down; and thou shalt build bulwarks against the city that maketh war with thee, until it be subdued."

Deuteronomy 21:3: "And it shall be, that the city which is next unto the slain man, even the elders of that city shall take an heifer, which hath not been wrought with, and which hath not drawn in the yoke;"



Deuteronomy 21:21: "And all the men of his city shall stone him with stones, that he die: so shalt thou put evil away from among you; and all Israel shall hear, and fear."

Deuteronomy 22:2: "And if thy brother be not nigh unto thee, or if thou know him not, then thou shalt bring it unto thine own house, and it shall be with thee until thy brother seek after it, and thou shalt restore it to him again."

Deuteronomy 22:3: "In like manner shalt thou do with his ass; and so shalt thou do with his raiment; and with all lost thing of thy brother's, which he hath lost, and thou hast found, shalt thou do likewise: thou mayest not hide thyself."

Deuteronomy 22:6: "If a bird's nest chance to be before thee in the way in any tree, or on the ground, whether they be young ones, or eggs, and the dam sitting upon the young, or upon the eggs, thou shalt not take the dam with the young."

Deuteronomy 22:7: "But thou shalt in any wise let the dam go, and take the young to thee; that it may be well with thee, and that thou mayest prolong thy days."

Deuteronomy 22:9: "Thou shalt not sow thy vineyard with divers seeds: lest the fruit of thy seed which thou hast sown, and the fruit of thy vineyard, be defiled."

Deuteronomy 22:10: "Thou shalt not plow with an ox and an ass together."

Deuteronomy 22:21: "Then they shall bring out the damsel to the door of her father's house, and the men of her city shall stone her with stones that she die: because she hath wrought folly in Israel, to play the whore in her father's house: so shalt thou put evil away from among you."

Deuteronomy 22:22: "If a man be found lying with a woman married to an husband, then they shall both of them die, both the man that lay with the woman, and the woman: so shalt thou put away evil from Israel."

Deuteronomy 22:23: "If a damsel that is a virgin be betrothed unto an husband, and a man find her in the city, and lie with her;"

Deuteronomy 22:24: "Then ye shall bring them both out unto the gate of that city, and ye shall stone them with stones that they die; the damsel, because she cried not, being in the city; and the man, because he hath humbled his neighbour's wife: so thou shalt put away evil from among you."

Deuteronomy 22:25: "But if a man find a betrothed damsel in the field, and the man force her, and lie with her: then the man only that lay with her shall die."

Deuteronomy 22:28: "If a man find a damsel that is a virgin, which is not betrothed, and lay hold on her, and lie with her, and they be found;"

Deuteronomy 22:29: "Then the man that lay with her shall give unto the damsel's father fifty shekels of silver, and she shall be his wife; because he hath humbled her, he may not put her away all his days."

Deuteronomy 23:4: "Because they met you not with bread and with water in the way, when ye came forth out of Egypt; and because they hired against thee Balaam the son of Beor of Pethor of Mesopotamia, to curse thee."

Deuteronomy 23:11: "But it shall be, when evening cometh on, he shall wash himself with water: and when the sun is down, he shall come into the camp again."

Deuteronomy 23:16: "He shall dwell with thee, even among you, in that place which he shall choose in one of thy gates, where it liketh him best: thou shalt not oppress him."

Deuteronomy 23:23: "That which is gone out of thy lips thou shalt keep and perform; even a freewill offering, according as thou hast vowed unto the LORD thy God, which thou hast promised with thy mouth."

Deuteronomy 23:25: "When thou comest into the standing corn of thy neighbour, then thou mayest pluck the ears with thine hand; but thou shalt not move a sickle unto thy neighbour's standing corn."

Deuteronomy 24:5: "When a man hath taken a new wife, he shall not go out to war, neither shall he be charged with any business: but he shall be free at home one year, and shall cheer up his wife which he hath taken."

Deuteronomy 24:12: "And if the man be poor, thou shalt not sleep with his pledge:"

Deuteronomy 25:3: "Forty stripes he may give him, and not exceed: lest, if he should exceed, and beat him above these with many stripes, then thy brother should seem vile unto thee."

Deuteronomy 25:11: "When men strive together one with another, and the wife of the one draweth near for to deliver her husband out of the hand of him that smiteth him, and putteth forth her hand, and taketh him by the secrets:"

Deuteronomy 26:5: "And thou shalt speak and say before the LORD thy God, A Syrian ready to perish was my father, and he went down into Egypt, and sojourned there with a few, and became there a nation, great, mighty, and populous:"

Deuteronomy 26:8: "And the LORD brought us forth out of Egypt with a mighty hand, and with an outstretched arm, and with great terribleness, and with signs, and with wonders:"

Deuteronomy 26:9: "And he hath brought us into this place, and hath given us this land, even a land that floweth with milk and honey."

Deuteronomy 26:15: "Look down from thy holy habitation, from heaven, and bless thy people Israel, and the land which thou hast given us, as thou swarest unto our fathers, a land that floweth with milk and honey."

Deuteronomy 26:16: "This day the LORD thy God hath commanded thee to do these statutes and judgments: thou shalt therefore keep and do them with all thine heart, and with all thy soul."

Deuteronomy 27:1: "And Moses with the elders of Israel commanded the people, saying, Keep all the commandments which I command you this day."

Deuteronomy 27:2: "And it shall be on the day when ye shall pass over Jordan unto the land which the LORD thy God giveth thee, that thou shalt set thee up great stones, and plaister them with plaister:"

Deuteronomy 27:3: "And thou shalt write upon them all the words of this law, when thou art passed over, that thou mayest go in unto the land which the LORD thy God giveth thee, a land that floweth with milk and honey; as the LORD God of thy fathers hath promised thee."

Deuteronomy 27:4: "Therefore it shall be when ye be gone over Jordan, that ye shall set up these stones, which I command you this day, in mount Ebal, and thou shalt plaister them with plaister."

Deuteronomy 27:14: "And the Levites shall speak, and say unto all the men of Israel with a loud voice,"

Deuteronomy 27:20: "Cursed be he that lieth with his father's wife; because he uncovereth his father's skirt. And all the people shall say, Amen."

Deuteronomy 27:21: "Cursed be he that lieth with any manner of beast. And all the people shall say, Amen."

Deuteronomy 27:22: "Cursed be he that lieth with his sister, the daughter of his father, or the daughter of his mother. And all the people shall say, Amen."

Deuteronomy 27:23: "Cursed be he that lieth with his mother in law. And all the people shall say, Amen."

Deuteronomy 28:22: "The LORD shall smite thee with a consumption, and with a fever, and with an inflammation, and with an extreme burning, and with the sword, and with blasting, and with mildew; and they shall pursue thee until thou perish."

Deuteronomy 28:27: "The LORD will smite thee with the botch of Egypt, and with the emerods, and with the scab, and with the itch, whereof thou canst not be healed."

Deuteronomy 28:28: "The LORD shall smite thee with madness, and blindness, and astonishment of heart:"

Deuteronomy 28:30: "Thou shalt betroth a wife, and another man shall lie with her: thou shalt build an house, and thou shalt not dwell therein: thou shalt plant a vineyard, and shalt not gather the grapes thereof."

Deuteronomy 28:32: "Thy sons and thy daughters shall be given unto another people, and thine eyes shall look, and fail with longing for them all the day long; and there shall be no might in thine hand."

Deuteronomy 28:35: "The LORD shall smite thee in the knees, and in the legs, with a sore botch that cannot be healed, from the sole of thy foot unto the top of thy head."

Deuteronomy 28:40: "Thou shalt have olive trees throughout all thy coasts, but thou shalt not anoint thyself with the oil; for thine olive shall cast his fruit."

Deuteronomy 28:47: "Because thou servedst not the LORD thy God with joyfulness, and with gladness of heart, for the abundance of all things;"

Deuteronomy 28:68: "And the LORD shall bring thee into Egypt again with ships, by the way whereof I spake unto thee, Thou shalt see it no more again: and there ye shall be sold unto your enemies for bondmen and bondwomen, and no man shall buy you."

Deuteronomy 29:1: "These are the words of the covenant, which the LORD commanded Moses to make with the children of Israel in the land of Moab, beside the covenant which he made with them in Horeb."

Deuteronomy 29:10: "Ye stand this day all of you before the LORD your God; your captains of your tribes, your elders, and your officers, with all the men of Israel,"

Deuteronomy 29:12: "That thou shouldest enter into covenant with the LORD thy God, and into his oath, which the LORD thy God maketh with thee this day:"

Deuteronomy 29:14: "Neither with you only do I make this covenant and this oath;"

Deuteronomy 29:15: "But with him that standeth here with us this day before the LORD our God, and also with him that is not here with us this day:"

Deuteronomy 29:25: "Then men shall say, Because they have forsaken the covenant of the LORD God of their fathers, which he made with them when he brought them forth out of the land of Egypt:"

Deuteronomy 30:2: "And shalt return unto the LORD thy God, and shalt obey his voice according to all that I command thee this day, thou and thy children, with all thine heart, and with all thy soul;"

Deuteronomy 30:6: "And the LORD thy God will circumcise thine heart, and the heart of thy seed, to love the LORD thy God with all thine heart, and with all thy soul, that thou mayest live."

Deuteronomy 30:10: "If thou shalt hearken unto the voice of the LORD thy God, to keep his commandments and his statutes which are written in this book of the law, and if thou turn unto the LORD thy God with all thine heart, and with all thy soul."

Deuteronomy 31:6: "Be strong and of a good courage, fear not, nor be afraid of them: for the LORD thy God, he it is that doth go with thee; he will not fail thee, nor forsake thee."

Deuteronomy 31:7: "And Moses called unto Joshua, and said unto him in the sight of all Israel, Be strong and of a good courage: for thou must go with this people unto the land which the LORD hath sworn unto their fathers to give them; and thou shalt cause them to inherit it."

Deuteronomy 31:8: "And the LORD, he it is that doth go before thee; he will be with thee, he will not fail thee, neither forsake thee: fear not, neither be dismayed."

Deuteronomy 31:16: "And the LORD said unto Moses, Behold, thou shalt sleep with thy fathers; and this people will rise up, and go a whoring after the gods of the strangers of the land, whither they go to be among them, and will forsake me, and break my covenant which I have made with them."

Deuteronomy 31:20: "For when I shall have brought them into the land which I sware unto their fathers, that floweth with milk and honey; and they shall have eaten and filled themselves, and waxen fat; then will they turn unto other gods, and serve them, and provoke me, and break my covenant."

Deuteronomy 31:23: "And he gave Joshua the son of Nun a charge, and said, Be strong and of a good courage: for thou shalt bring the children of Israel into the land which I sware unto them: and I will be with thee."

Deuteronomy 31:27: "For I know thy rebellion, and thy stiff neck: behold, while I am yet alive with you this day, ye have been rebellious against the LORD; and how much more after my death?"

Deuteronomy 32:12: "So the LORD alone did lead him, and there was no strange god with him."

Deuteronomy 32:14: "Butter of kine, and milk of sheep, with fat of lambs, and rams of the breed of Bashan, and goats, with the fat of kidneys of wheat; and thou didst drink the pure blood of the grape."

Deuteronomy 32:15: "But Jeshurun waxed fat, and kicked: thou art waxen fat, thou art grown thick, thou art covered with fatness; then he forsook God which made him, and lightly esteemed the Rock of his salvation."

Deuteronomy 32:16: "They provoked him to jealousy with strange gods, with abominations provoked they him to anger."

Deuteronomy 32:21: "They have moved me to jealousy with that which is not God; they have provoked me to anger with their vanities: and I will move them to jealousy with those which are not a people; I will provoke them to anger with a foolish nation."

Deuteronomy 32:22: "For a fire is kindled in mine anger, and shall burn unto the lowest hell, and shall consume the earth with her increase, and set on fire the foundations of the mountains."

Deuteronomy 32:24: "They shall be burnt with hunger, and devoured with burning heat, and with bitter destruction: I will also send the teeth of beasts upon them, with the poison of serpents of the dust."

Deuteronomy 32:25: "The sword without, and terror within, shall destroy both the young man and the virgin, the suckling also with the man of gray hairs."

Deuteronomy 32:34: "Is not this laid up in store with me, and sealed up among my treasures?"

Deuteronomy 32:39: "See now that I, even I, am he, and there is no god with me: I kill, and I make alive; I wound, and I heal: neither is there any that can deliver out of my hand."

Deuteronomy 32:42: "I will make mine arrows drunk with blood, and my sword shall devour flesh; and that with the blood of the slain and of the captives, from the beginning of revenges upon the enemy."

Deuteronomy 32:43: "Rejoice, O ye nations, with his people: for he will avenge the blood of his servants, and will render vengeance to his adversaries, and will be merciful unto his land, and to his people."

Deuteronomy 33:2: "And he said, The LORD came from Sinai, and rose up from Seir unto them; he shined forth from mount Paran, and he came with ten thousands of saints: from his right hand went a fiery law for them."

Deuteronomy 33:8: "And of Levi he said, Let thy Thummim and thy Urim be with thy holy one, whom thou didst prove at Massah, and with whom thou didst strive at the waters of Meribah;"

Deuteronomy 33:17: "His glory is like the firstling of his bullock, and his horns are like the horns of unicorns: with them he shall push the people together to the ends of the earth: and they are the ten thousands of Ephraim, and they are the thousands of Manasseh."

Deuteronomy 33:20: "And of Gad he said, Blessed be he that enlargeth Gad: he dwelleth as a lion, and teareth the arm with the crown of the head."

Deuteronomy 33:21: "And he provided the first part for himself, because there, in a portion of the lawgiver, was he seated; and he came with the heads of the people, he executed the justice of the LORD, and his judgments with Israel."

Deuteronomy 33:23: "And of Naphtali he said, O Naphtali, satisfied with favour, and full with the blessing of the LORD: possess thou the west and the south."

Deuteronomy 33:24: "And of Asher he said, Let Asher be blessed with children; let him be acceptable to his brethren, and let him dip his foot in oil."

Deuteronomy 34:4: "And the LORD said unto him, This is the land which I swore unto Abraham, unto Isaac, and unto Jacob, saying, I will give it unto thy seed: I have caused thee to see it with thine eyes, but thou shalt not go over thither."

Joshua 1:5: "There shall not any man be able to stand before thee all the days of thy life: as I was with Moses, so I will be with thee: I will not fail thee, nor forsake thee."

Joshua 1:9: "Have not I commanded thee? Be strong and of a good courage; be not afraid, neither be thou dismayed: for the LORD thy God is with thee whithersoever thou goest."

Joshua 1:17: "According as we hearkened unto Moses in all things, so will we hearken unto thee: only the LORD thy God be with thee, as he was with Moses."

Joshua 2:6: "But she had brought them up to the roof of the house, and hid them with the stalks of flax, which she had laid in order upon the roof."

Joshua 2:14: "And the men answered her, Our life for yours, if ye utter not this our business. And it shall be, when the LORD hath given us the land, that we will deal kindly and truly with thee."

Joshua 2:19: "And it shall be, that whosoever shall go out of the doors of thy house into the street, his blood shall be upon his head, and we will be guiltless: and whosoever shall be with thee in the house, his blood shall be on our head, if any hand be upon him."

Joshua 3:7: "And the LORD said unto Joshua, This day will I begin to magnify thee in the sight of all Israel, that they may know that, as I was with Moses, so I will be with thee."

Joshua 4:3: "And command ye them, saying, Take you hence out of the midst of Jordan, out of the place where the priests' feet stood firm, twelve stones, and ye shall carry them over with you, and leave them in the lodging place, where ye shall lodge this night."

Joshua 4:8: "And the children of Israel did so as Joshua commanded, and took up twelve stones out of the midst of Jordan, as the LORD spake unto Joshua, according to the number of the tribes of the children of Israel, and carried them over with them unto the place where they lodged, and laid them down there."

Joshua 5:6: "For the children of Israel walked forty years in the wilderness, till all the people that were men of war, which came out of Egypt, were consumed, because they obeyed not the voice of the LORD: unto whom the LORD sware that he would not shew them the land, which the LORD sware unto their fathers that he would give us, a land that floweth with milk and honey."

Joshua 5:13: "And it came to pass, when Joshua was by Jericho, that he lifted up his eyes and looked, and, behold, there stood a man over against him with his sword drawn in his hand: and Joshua went unto him, and said unto him, Art thou for us, or for our adversaries?"

Joshua 6:4: "And seven priests shall bear before the ark seven trumpets of rams' horns: and the seventh day ye shall compass the city seven times, and the priests shall blow with the trumpets."

Joshua 6:5: "And it shall come to pass, that when they make a long blast with the ram's horn, and when ye hear the sound of the trumpet, all the people shall shout with a great shout; and the wall of the city shall fall down flat, and the people shall ascend up every man straight before him."

Joshua 6:8: "And it came to pass, when Joshua had spoken unto the people, that the seven priests bearing the seven trumpets of rams' horns passed on before the LORD, and blew with the trumpets: and the ark of the covenant of the LORD followed them."

Joshua 6:9: "And the armed men went before the priests that blew with the trumpets, and the rereward came after the ark, the priests going on, and blowing with the trumpets."

Joshua 6:10: "And Joshua had commanded the people, saying, Ye shall not shout, nor make any noise with your voice, neither shall any word proceed out of your mouth, until the day I bid you shout; then shall ye shout."

Joshua 6:13: "And seven priests bearing seven trumpets of rams' horns before the ark of the LORD went on continually, and blew with the trumpets: and the armed men went before them; but the rereward came after the ark of the LORD, the priests going on, and blowing with the trumpets."

Joshua 6:16: "And it came to pass at the seventh time, when the priests blew with the trumpets, Joshua said unto the people, Shout; for the LORD hath given you the city."

Joshua 6:17: "And the city shall be accursed, even it, and all that are therein, to the LORD: only Rahab the harlot shall live, she and all that are with her in the house, because she hid the messengers that we sent."

Joshua 6:20: "So the people shouted when the priests blew with the trumpets: and it came to pass, when the people heard the sound of the trumpet, and the people shouted with a great shout, that the

wall fell down flat, so that the people went up into the city, every man straight before him, and they took the city."

Joshua 6:21: "And they utterly destroyed all that was in the city, both man and woman, young and old, and ox, and sheep, and ass, with the edge of the sword."

Joshua 6:24: "And they burnt the city with fire, and all that was therein: only the silver, and the gold, and the vessels of brass and of iron, they put into the treasury of the house of the LORD."

Joshua 6:27: "So the LORD was with Joshua; and his fame was noised throughout all the country."

Joshua 7:12: "Therefore the children of Israel could not stand before their enemies, but turned their backs before their enemies, because they were accursed: neither will I be with you any more, except ye destroy the accursed from among you."

Joshua 7:15: "And it shall be, that he that is taken with the accursed thing shall be burnt with fire, he and all that he hath: because he hath transgressed the covenant of the LORD, and because he hath wrought folly in Israel."

Joshua 7:24: "And Joshua, and all Israel with him, took Achan the son of Zerah, and the silver, and the garment, and the wedge of gold, and his sons, and his daughters, and his oxen, and his asses, and his sheep, and his tent, and all that he had: and they brought them unto the valley of Achor."

Joshua 7:25: "And Joshua said, Why hast thou troubled us? the LORD shall trouble thee this day. And all Israel stoned him with stones, and burned them with fire, after they had stoned them with stones."

Joshua 8:1: "And the LORD said unto Joshua, Fear not, neither be thou dismayed: take all the people of war with thee, and arise, go up to Ai: see, I have given into thy hand the king of Ai, and his people, and his city, and his land:"

Joshua 8:5: "And I, and all the people that are with me, will approach unto the city: and it shall come to pass, when they come out against us, as at the first, that we will flee before them,"

Joshua 8:11: "And all the people, even the people of war that were with him, went up, and drew nigh, and came before the city, and pitched on the north side of Ai: now there was a valley between them and Ai."

Joshua 8:24: "And it came to pass, when Israel had made an end of slaying all the inhabitants of Ai in the field, in the wilderness wherein they chased them, and when they were all fallen on the edge of the sword, until they were consumed, that all the Israelites returned unto Ai, and smote it with the edge of the sword."

Joshua 8:35: "There was not a word of all that Moses commanded, which Joshua read not before all the congregation of Israel, with the women, and the little ones, and the strangers that were conversant among them."

Joshua 9:2: "That they gathered themselves together, to fight with Joshua and with Israel, with one accord."

Joshua 9:6: "And they went to Joshua unto the camp at Gilgal, and said unto him, and to the men of Israel, We be come from a far country: now therefore make ye a league with us."

Joshua 9:7: "And the men of Israel said unto the Hivites, Peradventure ye dwell among us; and how shall we make a league with you?"

Joshua 9:11: "Wherefore our elders and all the inhabitants of our country spake to us, saying, Take victuals with you for the journey, and go to meet them, and say unto them, We are your servants: therefore now make ye a league with us."

Joshua 9:15: "And Joshua made peace with them, and made a league with them, to let them live: and the princes of the congregation sware unto them."

Joshua 9:16: "And it came to pass at the end of three days after they had made a league with them, that they heard that they were their neighbours, and that they dwelt among them."

Joshua 10:1: "Now it came to pass, when Adonizedec king of Jerusalem had heard how Joshua had taken Ai, and had utterly destroyed it; as he had done to Jericho and her king, so he had done to Ai and her king; and how the inhabitants of Gibeon had made peace with Israel, and were among

them;"

Joshua 10:4: "Come up unto me, and help me, that we may smite Gibeon: for it hath made peace with Joshua and with the children of Israel."

Joshua 10:7: "So Joshua ascended from Gilgal, he, and all the people of war with him, and all the mighty men of valour."

Joshua 10:10: "And the LORD discomfited them before Israel, and slew them with a great slaughter at Gibeon, and chased them along the way that goeth up to Bethhoron, and smote them to Azekah, and unto Makkedah."

Joshua 10:11: "And it came to pass, as they fled from before Israel, and were in the going down to Bethhoron, that the LORD cast down great stones from heaven upon them unto Azekah, and they died: they were more which died with hailstones than they whom the children of Israel slew with the sword."

Joshua 10:15: "And Joshua returned, and all Israel with him, unto the camp to Gilgal."

Joshua 10:20: "And it came to pass, when Joshua and the children of Israel had made an end of slaying them with a very great slaughter, till they were consumed, that the rest which remained of them entered into fenced cities."

Joshua 10:24: "And it came to pass, when they brought out those kings unto Joshua, that Joshua called for all the men of Israel, and said unto the captains of the men of war which went with him, Come near, put your feet upon the necks of these kings. And they came near, and put their feet upon the necks of them."

Joshua 10:28: "And that day Joshua took Makkedah, and smote it with the edge of the sword, and the king thereof he utterly destroyed, them, and all the souls that were therein; he let none remain: and he did to the king of Makkedah as he did unto the king of Jericho."

Joshua 10:29: "Then Joshua passed from Makkedah, and all Israel with him, unto Libnah, and fought against Libnah:"

Joshua 10:30: "And the LORD delivered it also, and the king thereof, into the hand of Israel; and he smote it with the edge of the sword, and all the souls that were therein; he let none remain in it; but did unto the king thereof as he did unto the king of Jericho."

Joshua 10:31: "And Joshua passed from Libnah, and all Israel with him, unto Lachish, and encamped against it, and fought against it:"

Joshua 10:32: "And the LORD delivered Lachish into the hand of Israel, which took it on the second day, and smote it with the edge of the sword, and all the souls that were therein, according to all that he had done to Libnah."

Joshua 10:34: "And from Lachish Joshua passed unto Eglon, and all Israel with him; and they encamped against it, and fought against it:"

Joshua 10:35: "And they took it on that day, and smote it with the edge of the sword, and all the souls that were therein he utterly destroyed that day, according to all that he had done to Lachish."

Joshua 10:36: "And Joshua went up from Eglon, and all Israel with him, unto Hebron; and they fought against it:"

Joshua 10:37: "And they took it, and smote it with the edge of the sword, and the king thereof, and all the cities thereof, and all the souls that were therein; he left none remaining, according to all that he had done to Eglon; but destroyed it utterly, and all the souls that were therein."

Joshua 10:38: "And Joshua returned, and all Israel with him, to Debir; and fought against it:"

Joshua 10:39: "And he took it, and the king thereof, and all the cities thereof; and they smote them with the edge of the sword, and utterly destroyed all the souls that were therein; he left none remaining: as he had done to Hebron, so he did to Debir, and to the king thereof; as he had done also to Libnah, and to her king."

Joshua 10:43: "And Joshua returned, and all Israel with him, unto the camp to Gilgal."

Joshua 11:4: "And they went out, they and all their hosts with them, much people, even as the sand that is upon the sea shore in multitude, with horses and chariots very many."

Joshua 11:6: "And the LORD said unto Joshua, Be not afraid because of them: for to morrow about this time will I deliver them up all slain before Israel: thou shalt hough their horses, and burn their chariots with fire."

Joshua 11:7: "So Joshua came, and all the people of war with him, against them by the waters of Merom suddenly; and they fell upon them."

Joshua 11:9: "And Joshua did unto them as the LORD bade him: he houghed their horses, and burnt their chariots with fire."

Joshua 11:10: "And Joshua at that time turned back, and took Hazor, and smote the king thereof with the sword: for Hazor beforetime was the head of all those kingdoms."

Joshua 11:11: "And they smote all the souls that were therein with the edge of the sword, utterly destroying them: there was not any left to breathe: and he burnt Hazor with fire."

Joshua 11:12: "And all the cities of those kings, and all the kings of them, did Joshua take, and smote them with the edge of the sword, and he utterly destroyed them, as Moses the servant of the LORD commanded."

Joshua 11:14: "And all the spoil of these cities, and the cattle, the children of Israel took for a prey unto themselves; but every man they smote with the edge of the sword, until they had destroyed them, neither left they any to breathe."

Joshua 11:18: "Joshua made war a long time with all those kings."

Joshua 11:19: "There was not a city that made peace with the children of Israel, save the Hivites the inhabitants of Gibeon: all other they took in battle."

Joshua 11:21: "And at that time came Joshua, and cut off the Anakims from the mountains, from Hebron, from Debir, from Anab, and from all the mountains of Judah, and from all the mountains of Israel: Joshua destroyed them utterly with their cities."

Joshua 13:8: "With whom the Reubenites and the Gadites have received their inheritance, which Moses gave them, beyond Jordan eastward, even as Moses the servant of the LORD gave them;"

Joshua 13:21: "And all the cities of the plain, and all the kingdom of Sihon king of the Amorites, which reigned in Heshbon, whom Moses smote with the princes of Midian, Evi, and Rekem, and Zur, and Hur, and Reba, which were dukes of Sihon, dwelling in the country."

Joshua 13:22: "Balaam also the son of Beor, the soothsayer, did the children of Israel slay with the sword among them that were slain by them."

Joshua 14:4: "For the children of Joseph were two tribes, Manasseh and Ephraim: therefore they gave no part unto the Levites in the land, save cities to dwell in, with their suburbs for their cattle and for their substance."

Joshua 14:8: "Nevertheless my brethren that went up with me made the heart of the people melt: but I wholly followed the LORD my God."

Joshua 14:12: "Now therefore give me this mountain, whereof the LORD spake in that day; for thou heardest in that day how the Anakims were there, and that the cities were great and fenced: if so be the LORD will be with me, then I shall be able to drive them out, as the LORD said."

Joshua 15:32: "And Lebaath, and Shilhim, and Ain, and Rimmon: all the cities are twenty and nine, with their villages:"

Joshua 15:36: "And Sharaim, and Adithaim, and Gederah, and Gederothaim; fourteen cities with their villages:"

Joshua 15:41: "And Gederoth, Bethdagon, and Naamah, and Makkedah; sixteen cities with their villages:"

Joshua 15:44: "And Keilah, and Achzib, and Mareshah; nine cities with their villages:"

Joshua 15:45: "Ekron, with her towns and her villages:"

Joshua 15:46: "From Ekron even unto the sea, all that lay near Ashdod, with their villages:"

Joshua 15:47: "Ashdod with her towns and her villages, Gaza with her towns and her villages, unto the river of Egypt, and the great sea, and the border thereof:"

Joshua 15:51: "And Goshen, and Holon, and Giloh; eleven cities with their villages:"



Joshua 15:54: "And Humtah, and Kirjatharba, which is Hebron, and Zior; nine cities with their villages:"

Joshua 15:57: "Cain, Gibeah, and Timnah; ten cities with their villages:"

Joshua 15:59: "And Maarath, and Bethanath, and Eltekon; six cities with their villages:"

Joshua 15:60: "Kirjathbaal, which is Kirjathjearim, and Rabbah; two cities with their villages:"

Joshua 15:62: "And Nibshan, and the city of Salt, and Engedi; six cities with their villages."

Joshua 15:63: "As for the Jebusites the inhabitants of Jerusalem, the children of Judah could not drive them out; but the Jebusites dwell with the children of Judah at Jerusalem unto this day."

Joshua 16:9: "And the separate cities for the children of Ephraim were among the inheritance of the children of Manasseh, all the cities with their villages."

Joshua 18:24: "And Chepharhaammonai, and Ophni, and Gaba; twelve cities with their villages:"

Joshua 18:28: "And Zelah, Eleph, and Jebusi, which is Jerusalem, Gibeath, and Kirjath; fourteen cities with their villages. This is the inheritance of the children of Benjamin according to their families."

Joshua 19:15: "And Kattath, and Nahallal, and Shimron, and Idalah, and Bethlehem: twelve cities with their villages."

Joshua 19:16: "This is the inheritance of the children of Zebulun according to their families, these cities with their villages."

Joshua 19:22: "And the coast reacheth to Tabor, and Shahazimah, and Bethshemesh; and the outgoings of their border were at Jordan: sixteen cities with their villages."

Joshua 19:30: "Ummah also, and Aphek, and Rehob: twenty and two cities with their villages."

Joshua 19:31: "This is the inheritance of the tribe of the children of Asher according to their families, these cities with their villages."

Joshua 19:38: "And Iron, and Migdalel, Horem, and Bethanath, and Bethshemesh; nineteen cities with their villages."

Joshua 19:46: "And Mejarkon, and Rakkon, with the border before Japho."

Joshua 19:47: "And the coast of the children of Dan went out too little for them: therefore the children of Dan went up to fight against Leshem, and took it, and smote it with the edge of the sword, and possessed it, and dwelt therein, and called Leshem, Dan, after the name of Dan their father."

Joshua 19:48: "This is the inheritance of the tribe of the children of Dan according to their families, these cities with their villages."

Joshua 21:2: "And they spake unto them at Shiloh in the land of Canaan, saying, The LORD commanded by the hand of Moses to give us cities to dwell in, with the suburbs thereof for our cattle."

Joshua 21:8: "And the children of Israel gave by lot unto the Levites these cities with their suburbs, as the LORD commanded by the hand of Moses."

Joshua 21:11: "And they gave them the city of Arba the father of Anak, which city is Hebron, in the hill country of Judah, with the suburbs thereof round about it."

Joshua 21:13: "Thus they gave to the children of Aaron the priest Hebron with her suburbs, to be a city of refuge for the slayer; and Libnah with her suburbs,"

Joshua 21:14: "And Jattir with her suburbs, and Eshtemoa with her suburbs,"

Joshua 21:15: "And Holon with her suburbs, and Debir with her suburbs,"

Joshua 21:16: "And Ain with her suburbs, and Juttah with her suburbs, and Bethshemesh with her suburbs; nine cities out of those two tribes."

Joshua 21:17: "And out of the tribe of Benjamin, Gibeon with her suburbs, Geba with her suburbs,"

Joshua 21:18: "Anathoth with her suburbs, and Almon with her suburbs; four cities."

Joshua 21:19: "All the cities of the children of Aaron, the priests, were thirteen cities with their suburbs."

Joshua 21:21: "For they gave them Shechem with her suburbs in mount Ephraim, to be a city of

refuge for the slayer; and Gezer with her suburbs,"

Joshua 21:22: "And Kibzaim with her suburbs, and Bethhoron with her suburbs; four cities."

Joshua 21:23: "And out of the tribe of Dan, Eltekeh with her suburbs, Gibbethon with her suburbs,"

Joshua 21:24: "Aijalon with her suburbs, Gathrimmon with her suburbs; four cities."

Joshua 21:25: "And out of the half tribe of Manasseh, Tanach with her suburbs, and Gathrimmon with her suburbs; two cities."

Joshua 21:26: "All the cities were ten with their suburbs for the families of the children of Kohath that remained."

Joshua 21:27: "And unto the children of Gershon, of the families of the Levites, out of the other half tribe of Manasseh they gave Golan in Bashan with her suburbs, to be a city of refuge for the slayer; and Beeshterah with her suburbs; two cities."

Joshua 21:28: "And out of the tribe of Issachar, Kishon with her suburbs, Dabareh with her suburbs,"

Joshua 21:29: "Jarmuth with her suburbs, Engannim with her suburbs; four cities."

Joshua 21:30: "And out of the tribe of Asher, Mishal with her suburbs, Abdon with her suburbs,"

Joshua 21:31: "Helkath with her suburbs, and Rehob with her suburbs; four cities."

Joshua 21:32: "And out of the tribe of Naphtali, Kedesh in Galilee with her suburbs, to be a city of refuge for the slayer; and Hammothdor with her suburbs, and Kartan with her suburbs; three cities."

Joshua 21:33: "All the cities of the Gershonites according to their families were thirteen cities with their suburbs."

Joshua 21:34: "And unto the families of the children of Merari, the rest of the Levites, out of the tribe of Zebulun, Jokneam with her suburbs, and Kartah with her suburbs,"

Joshua 21:35: "Dimnah with her suburbs, Nahalal with her suburbs; four cities."

Joshua 21:36: "And out of the tribe of Reuben, Bezer with her suburbs, and Jahazah with her suburbs,"

Joshua 21:37: "Kedemoth with her suburbs, and Mephaath with her suburbs; four cities."

Joshua 21:38: "And out of the tribe of Gad, Ramoth in Gilead with her suburbs, to be a city of refuge for the slayer; and Mahanaim with her suburbs,"

Joshua 21:39: "Heshbon with her suburbs, Jazer with her suburbs; four cities in all."

Joshua 21:41: "All the cities of the Levites within the possession of the children of Israel were forty and eight cities with their suburbs."

Joshua 21:42: "These cities were every one with their suburbs round about them: thus were all these cities."

Joshua 22:5: "But take diligent heed to do the commandment and the law, which Moses the servant of the LORD charged you, to love the LORD your God, and to walk in all his ways, and to keep his commandments, and to cleave unto him, and to serve him with all your heart and with all your soul."

Joshua 22:8: "And he spake unto them, saying, Return with much riches unto your tents, and with very much cattle, with silver, and with gold, and with brass, and with iron, and with very much raiment: divide the spoil of your enemies with your brethren."

Joshua 22:14: "And with him ten princes, of each chief house a prince throughout all the tribes of Israel; and each one was an head of the house of their fathers among the thousands of Israel."

Joshua 22:15: "And they came unto the children of Reuben, and to the children of Gad, and to the half tribe of Manasseh, unto the land of Gilead, and they spake with them, saying,"

Joshua 22:18: "But that ye must turn away this day from following the LORD? and it will be, seeing ye rebel to day against the LORD, that to morrow he will be wroth with the whole congregation of Israel."

Joshua 22:24: "And if we have not rather done it for fear of this thing, saying, In time to come your children might speak unto our children, saying, What have ye to do with the LORD God of Israel?"

Joshua 22:27: "But that it may be a witness between us, and you, and our generations after us, that

we might do the service of the LORD before him with our burnt offerings, and with our sacrifices, and with our peace offerings; that your children may not say to our children in time to come, Ye have no part in the LORD."

Joshua 22:30: "And when Phinehas the priest, and the princes of the congregation and heads of the thousands of Israel which were with him, heard the words that the children of Reuben and the children of Gad and the children of Manasseh spake, it pleased them."

Joshua 23:4: "Behold, I have divided unto you by lot these nations that remain, to be an inheritance for your tribes, from Jordan, with all the nations that I have cut off, even unto the great sea westward."

Joshua 23:12: "Else if ye do in any wise go back, and cleave unto the remnant of these nations, even these that remain among you, and shall make marriages with them, and go in unto them, and they to you:"

Joshua 24:6: "And I brought your fathers out of Egypt: and ye came unto the sea; and the Egyptians pursued after your fathers with chariots and horsemen unto the Red sea."

Joshua 24:8: "And I brought you into the land of the Amorites, which dwelt on the other side Jordan; and they fought with you: and I gave them into your hand, that ye might possess their land; and I destroyed them from before you."

Joshua 24:12: "And I sent the hornet before you, which drave them out from before you, even the two kings of the Amorites; but not with thy sword, nor with thy bow."

Joshua 24:25: "So Joshua made a covenant with the people that day, and set them a statute and an ordinance in Shechem."

Judges 1:3: "And Judah said unto Simeon his brother, Come up with me into my lot, that we may fight against the Canaanites; and I likewise will go with thee into thy lot. So Simeon went with him."

Judges 1:8: "Now the children of Judah had fought against Jerusalem, and had taken it, and smitten it with the edge of the sword, and set the city on fire."

Judges 1:16: "And the children of the Kenite, Moses' father in law, went up out of the city of palm trees with the children of Judah into the wilderness of Judah, which lieth in the south of Arad; and they went and dwelt among the people."

Judges 1:17: "And Judah went with Simeon his brother, and they slew the Canaanites that inhabited Zephath, and utterly destroyed it. And the name of the city was called Hormah."

Judges 1:18: "Also Judah took Gaza with the coast thereof, and Askelon with the coast thereof, and Ekron with the coast thereof."

Judges 1:19: "And the LORD was with Judah; and he drave out the inhabitants of the mountain; but could not drive out the inhabitants of the valley, because they had chariots of iron."

Judges 1:21: "And the children of Benjamin did not drive out the Jebusites that inhabited Jerusalem; but the Jebusites dwell with the children of Benjamin in Jerusalem unto this day."

Judges 1:22: "And the house of Joseph, they also went up against Bethel: and the LORD was with them."

Judges 1:25: "And when he shewed them the entrance into the city, they smote the city with the edge of the sword; but they let go the man and all his family."

Judges 2:1: "And an angel of the LORD came up from Gilgal to Bochim, and said, I made you to go up out of Egypt, and have brought you unto the land which I swore unto your fathers; and I said, I will never break my covenant with you."

Judges 2:2: "And ye shall make no league with the inhabitants of this land; ye shall throw down their altars: but ye have not obeyed my voice: why have ye done this?"

Judges 2:18: "And when the LORD raised them up judges, then the LORD was with the judge, and delivered them out of the hand of their enemies all the days of the judge: for it repented the LORD because of their groanings by reason of them that oppressed them and vexed them."

Judges 3:27: "And it came to pass, when he was come, that he blew a trumpet in the mountain of

Ephraim, and the children of Israel went down with him from the mount, and he before them."

Judges 3:31: "And after him was Shamgar the son of Anath, which slew of the Philistines six hundred men with an ox goad: and he also delivered Israel."

Judges 4:6: "And she sent and called Barak the son of Abinoam out of Kedeshnaphtali, and said unto him, Hath not the LORD God of Israel commanded, saying, Go and draw toward mount Tabor, and take with thee ten thousand men of the children of Naphtali and of the children of Zebulun?"

Judges 4:7: "And I will draw unto thee to the river Kishon Sisera, the captain of Jabin's army, with his chariots and his multitude; and I will deliver him into thine hand."

Judges 4:8: "And Barak said unto her, If thou wilt go with me, then I will go: but if thou wilt not go with me, then I will not go."

Judges 4:9: "And she said, I will surely go with thee: notwithstanding the journey that thou takest shall not be for thine honour; for the LORD shall sell Sisera into the hand of a woman. And Deborah arose, and went with Barak to Kedesh."

Judges 4:10: "And Barak called Zebulun and Naphtali to Kedesh; and he went up with ten thousand men at his feet: and Deborah went up with him."

Judges 4:13: "And Sisera gathered together all his chariots, even nine hundred chariots of iron, and all the people that were with him, from Harosheth of the Gentiles unto the river of Kishon."

Judges 4:15: "And the LORD discomfited Sisera, and all his chariots, and all his host, with the edge of the sword before Barak; so that Sisera lighted down off his chariot, and fled away on his feet."

Judges 4:18: "And Jael went out to meet Sisera, and said unto him, Turn in, my lord, turn in to me; fear not. And when he had turned in unto her into the tent, she covered him with a mantle."

Judges 5:15: "And the princes of Issachar were with Deborah; even Issachar, and also Barak: he was sent on foot into the valley. For the divisions of Reuben there were great thoughts of heart."

Judges 5:26: "She put her hand to the nail, and her right hand to the workmen's hammer; and with the hammer she smote Sisera, she smote off his head, when she had pierced and stricken through his temples."

Judges 6:5: "For they came up with their cattle and their tents, and they came as grasshoppers for multitude; for both they and their camels were without number: and they entered into the land to destroy it."

Judges 6:12: "And the angel of the LORD appeared unto him, and said unto him, The LORD is with thee, thou mighty man of valour."

Judges 6:13: "And Gideon said unto him, Oh my Lord, if the LORD be with us, why then is all this befallen us? and where be all his miracles which our fathers told us of, saying, Did not the LORD bring us up from Egypt? but now the LORD hath forsaken us, and delivered us into the hands of the Midianites."

Judges 6:16: "And the LORD said unto him, Surely I will be with thee, and thou shalt smite the Midianites as one man."

Judges 6:17: "And he said unto him, If now I have found grace in thy sight, then shew me a sign that thou talkest with me."

Judges 6:26: "And build an altar unto the LORD thy God upon the top of this rock, in the ordered place, and take the second bullock, and offer a burnt sacrifice with the wood of the grove which thou shalt cut down."

Judges 6:39: "And Gideon said unto God, Let not thine anger be hot against me, and I will speak but this once: let me prove, I pray thee, but this once with the fleece; let it now be dry only upon the fleece, and upon all the ground let there be dew."

Judges 7:1: "Then Jerubbaal, who is Gideon, and all the people that were with him, rose up early, and pitched beside the well of Harod: so that the host of the Midianites were on the north side of them, by the hill of Moreh, in the valley."

Judges 7:2: "And the LORD said unto Gideon, The people that are with thee are too many for me to

give the Midianites into their hands, lest Israel vaunt themselves against me, saying, Mine own hand hath saved me."

Judges 7:4: "And the LORD said unto Gideon, The people are yet too many; bring them down unto the water, and I will try them for thee there: and it shall be, that of whom I say unto thee, This shall go with thee, the same shall go with thee; and of whomsoever I say unto thee, This shall not go with thee, the same shall not go."

Judges 7:5: "So he brought down the people unto the water: and the LORD said unto Gideon, Every one that lappeth of the water with his tongue, as a dog lappeth, him shalt thou set by himself; likewise every one that boweth down upon his knees to drink."

Judges 7:10: "But if thou fear to go down, go thou with Phurah thy servant down to the host:"

Judges 7:11: "And thou shalt hear what they say; and afterward shall thine hands be strengthened to go down unto the host. Then went he down with Phurah his servant unto the outside of the armed men that were in the host."

Judges 7:16: "And he divided the three hundred men into three companies, and he put a trumpet in every man's hand, with empty pitchers, and lamps within the pitchers."

Judges 7:18: "When I blow with a trumpet, I and all that are with me, then blow ye the trumpets also on every side of all the camp, and say, The sword of the LORD, and of Gideon."

Judges 7:19: "So Gideon, and the hundred men that were with him, came unto the outside of the camp in the beginning of the middle watch; and they had but newly set the watch: and they blew the trumpets, and brake the pitchers that were in their hands."

Judges 8:1: "And the men of Ephraim said unto him, Why hast thou served us thus, that thou calledst us not, when thou wentest to fight with the Midianites? And they did chide with him sharply."

Judges 8:4: "And Gideon came to Jordan, and passed over, he, and the three hundred men that were with him, faint, yet pursuing them."

Judges 8:7: "And Gideon said, Therefore when the LORD hath delivered Zebah and Zalmunna into mine hand, then I will tear your flesh with the thorns of the wilderness and with briers."

Judges 8:10: "Now Zebah and Zalmunna were in Karkor, and their hosts with them, about fifteen thousand men, all that were left of all the hosts of the children of the east: for there fell an hundred and twenty thousand men that drew sword."

Judges 8:15: "And he came unto the men of Succoth, and said, Behold Zebah and Zalmunna, with whom ye did upbraid me, saying, Are the hands of Zebah and Zalmunna now in thine hand, that we should give bread unto thy men that are weary?"

Judges 8:16: "And he took the elders of the city, and thorns of the wilderness and briers, and with them he taught the men of Succoth."

Judges 9:1: "And Abimelech the son of Jerubbaal went to Shechem unto his mother's brethren, and communed with them, and with all the family of the house of his mother's father, saying,"

Judges 9:16: "Now therefore, if ye have done truly and sincerely, in that ye have made Abimelech king, and if ye have dealt well with Jerubbaal and his house, and have done unto him according to the deserving of his hands;"

Judges 9:19: "If ye then have dealt truly and sincerely with Jerubbaal and with his house this day, then rejoice ye in Abimelech, and let him also rejoice in you:"

Judges 9:23: "Then God sent an evil spirit between Abimelech and the men of Shechem; and the men of Shechem dealt treacherously with Abimelech:"

Judges 9:26: "And Gaal the son of Ebed came with his brethren, and went over to Shechem: and the men of Shechem put their confidence in him."

Judges 9:32: "Now therefore up by night, thou and the people that is with thee, and lie in wait in the field:"

Judges 9:33: "And it shall be, that in the morning, as soon as the sun is up, thou shalt rise early, and set upon the city: and, behold, when he and the people that is with him come out against thee, then

mayest thou do to them as thou shalt find occasion."

Judges 9:34: "And Abimelech rose up, and all the people that were with him, by night, and they laid wait against Shechem in four companies."

Judges 9:35: "And Gaal the son of Ebed went out, and stood in the entering of the gate of the city: and Abimelech rose up, and the people that were with him, from lying in wait."

Judges 9:38: "Then said Zebul unto him, Where is now thy mouth, wherewith thou saidst, Who is Abimelech, that we should serve him? is not this the people that thou hast despised? go out, I pray now, and fight with them."

Judges 9:39: "And Gaal went out before the men of Shechem, and fought with Abimelech."

Judges 9:44: "And Abimelech, and the company that was with him, rushed forward, and stood in the entering of the gate of the city: and the two other companies ran upon all the people that were in the fields, and slew them."

Judges 9:45: "And Abimelech fought against the city all that day; and he took the city, and slew the people that was therein, and beat down the city, and sowed it with salt."

Judges 9:48: "And Abimelech gat him up to mount Zalmon, he and all the people that were with him; and Abimelech took an axe in his hand, and cut down a bough from the trees, and took it, and laid it on his shoulder, and said unto the people that were with him, What ye have seen me do, make haste, and do as I have done."

Judges 9:52: "And Abimelech came unto the tower, and fought against it, and went hard unto the door of the tower to burn it with fire."

Judges 11:3: "Then Jephthah fled from his brethren, and dwelt in the land of Tob: and there were gathered vain men to Jephthah, and went out with him."

Judges 11:6: "And they said unto Jephthah, Come, and be our captain, that we may fight with the children of Ammon."

Judges 11:8: "And the elders of Gilead said unto Jephthah, Therefore we turn again to thee now, that thou mayest go with us, and fight against the children of Ammon, and be our head over all the inhabitants of Gilead."

Judges 11:11: "Then Jephthah went with the elders of Gilead, and the people made him head and captain over them: and Jephthah uttered all his words before the LORD in Mizpeh."

Judges 11:12: "And Jephthah sent messengers unto the king of the children of Ammon, saying, What hast thou to do with me, that thou art come against me to fight in my land?"

Judges 11:33: "And he smote them from Aroer, even till thou come to Minnith, even twenty cities, and unto the plain of the vineyards, with a very great slaughter. Thus the children of Ammon were subdued before the children of Israel."

Judges 11:34: "And Jephthah came to Mizpeh unto his house, and, behold, his daughter came out to meet him with timbrels and with dances: and she was his only child; beside her he had neither son nor daughter."

Judges 11:38: "And he said, Go. And he sent her away for two months: and she went with her companions, and bewailed her virginity upon the mountains."

Judges 11:39: "And it came to pass at the end of two months, that she returned unto her father, who did with her according to his vow which he had vowed: and she knew no man. And it was a custom in Israel,"

Judges 12:1: "And the men of Ephraim gathered themselves together, and went northward, and said unto Jephthah, Wherefore passedst thou over to fight against the children of Ammon, and didst not call us to go with thee? we will burn thine house upon thee with fire."

Judges 12:2: "And Jephthah said unto them, I and my people were at great strife with the children of Ammon; and when I called you, ye delivered me not out of their hands."

Judges 12:4: "Then Jephthah gathered together all the men of Gilead, and fought with Ephraim: and the men of Gilead smote Ephraim, because they said, Ye Gileadites are fugitives of Ephraim among the Ephraimites, and among the Manassites."

Judges 13:9: "And God hearkened to the voice of Manoah; and the angel of God came again unto the woman as she sat in the field: but Manoah her husband was not with her."

Judges 13:19: "So Manoah took a kid with a meat offering, and offered it upon a rock unto the LORD: and the angel did wonderously; and Manoah and his wife looked on."

Judges 14:7: "And he went down, and talked with the woman; and she pleased Samson well."

Judges 14:11: "And it came to pass, when they saw him, that they brought thirty companions to be with him."

Judges 14:15: "And it came to pass on the seventh day, that they said unto Samson's wife, Entice thy husband, that he may declare unto us the riddle, lest we burn thee and thy father's house with fire: have ye called us to take that we have? is it not so?"

Judges 14:18: "And the men of the city said unto him on the seventh day before the sun went down, What is sweeter than honey? And what is stronger than a lion? and he said unto them, If ye had not plowed with my heifer, ye had not found out my riddle."

Judges 15:1: "But it came to pass within a while after, in the time of wheat harvest, that Samson visited his wife with a kid; and he said, I will go in to my wife into the chamber. But her father would not suffer him to go in."

Judges 15:5: "And when he had set the brands on fire, he let them go into the standing corn of the Philistines, and burnt up both the shocks, and also the standing corn, with the vineyards and olives."

Judges 15:6: "Then the Philistines said, Who hath done this? And they answered, Samson, the son in law of the Timnite, because he had taken his wife, and given her to his companion. And the Philistines came up, and burnt her and her father with fire."

Judges 15:8: "And he smote them hip and thigh with a great slaughter: and he went down and dwelt in the top of the rock Etam."

Judges 15:13: "And they spake unto him, saying, No; but we will bind thee fast, and deliver thee into their hand: but surely we will not kill thee. And they bound him with two new cords, and brought him up from the rock."

Judges 15:14: "And when he came unto Lehi, the Philistines shouted against him: and the Spirit of the LORD came mightily upon him, and the cords that were upon his arms became as flax that was burnt with fire, and his bands loosed from off his hands."

Judges 15:16: "And Samson said, With the jawbone of an ass, heaps upon heaps, with the jaw of an ass have I slain a thousand men."

Judges 16:3: "And Samson lay till midnight, and arose at midnight, and took the doors of the gate of the city, and the two posts, and went away with them, bar and all, and put them upon his shoulders, and carried them up to the top of an hill that is before Hebron."

Judges 16:7: "And Samson said unto her, If they bind me with seven green withs that were never dried, then shall I be weak, and be as another man."

Judges 16:8: "Then the lords of the Philistines brought up to her seven green withs which had not been dried, and she bound him with them."

Judges 16:9: "Now there were men lying in wait, abiding with her in the chamber. And she said unto him, The Philistines be upon thee, Samson. And he brake the withs, as a thread of tow is broken when it toucheth the fire. So his strength was not known."

Judges 16:11: "And he said unto her, If they bind me fast with new ropes that never were occupied, then shall I be weak, and be as another man."

Judges 16:13: "And Delilah said unto Samson, Hitherto thou hast mocked me, and told me lies: tell me wherewith thou mightest be bound. And he said unto her, If thou weavest the seven locks of my head with the web."

Judges 16:14: "And she fastened it with the pin, and said unto him, The Philistines be upon thee, Samson. And he awaked out of his sleep, and went away with the pin of the beam, and with the web."

Judges 16:15: "And she said unto him, How canst thou say, I love thee, when thine heart is not with

me? thou hast mocked me these three times, and hast not told me wherein thy great strength lieth."

Judges 16:16: "And it came to pass, when she pressed him daily with her words, and urged him, so that his soul was vexed unto death;"

Judges 16:21: "But the Philistines took him, and put out his eyes, and brought him down to Gaza, and bound him with fetters of brass; and he did grind in the prison house."

Judges 16:29: "And Samson took hold of the two middle pillars upon which the house stood, and on which it was borne up, of the one with his right hand, and of the other with his left."

Judges 16:30: "And Samson said, Let me die with the Philistines. And he bowed himself with all his might; and the house fell upon the lords, and upon all the people that were therein. So the dead which he slew at his death were more than they which he slew in his life."

Judges 17:2: "And he said unto his mother, The eleven hundred shekels of silver that were taken from thee, about which thou cursedst, and spakest of also in mine ears, behold, the silver is with me; I took it. And his mother said, Blessed be thou of the LORD, my son."

Judges 17:10: "And Micah said unto him, Dwell with me, and be unto me a father and a priest, and I will give thee ten shekels of silver by the year, and a suit of apparel, and thy victuals. So the Levite went in."

Judges 17:11: "And the Levite was content to dwell with the man; and the young man was unto him as one of his sons."

Judges 18:4: "And he said unto them, Thus and thus dealeth Micah with me, and hath hired me, and I am his priest."

Judges 18:7: "Then the five men departed, and came to Laish, and saw the people that were therein, how they dwelt careless, after the manner of the Zidonians, quiet and secure; and there was no magistrate in the land, that might put them to shame in any thing; and they were far from the Zidonians, and had no business with any man."

Judges 18:11: "And there went from thence of the family of the Danites, out of Zorah and out of Eshtaol, six hundred men appointed with weapons of war."

Judges 18:16: "And the six hundred men appointed with their weapons of war, which were of the children of Dan, stood by the entering of the gate."

Judges 18:17: "And the five men that went to spy out the land went up, and came in thither, and took the graven image, and the ephod, and the teraphim, and the molten image: and the priest stood in the entering of the gate with the six hundred men that were appointed with weapons of war."

Judges 18:19: "And they said unto him, Hold thy peace, lay thine hand upon thy mouth, and go with us, and be to us a father and a priest: is it better for thee to be a priest unto the house of one man, or that thou be a priest unto a tribe and a family in Israel?"

Judges 18:23: "And they cried unto the children of Dan. And they turned their faces, and said unto Micah, What aileth thee, that thou comest with such a company?"

Judges 18:25: "And the children of Dan said unto him, Let not thy voice be heard among us, lest angry fellows run upon thee, and thou lose thy life, with the lives of thy household."

Judges 18:27: "And they took the things which Micah had made, and the priest which he had, and came unto Laish, unto a people that were at quiet and secure: and they smote them with the edge of the sword, and burnt the city with fire."

Judges 18:28: "And there was no deliverer, because it was far from Zidon, and they had no business with any man; and it was in the valley that lieth by Bethrehob. And they built a city, and dwelt therein."

Judges 19:3: "And her husband arose, and went after her, to speak friendly unto her, and to bring her again, having his servant with him, and a couple of asses: and she brought him into her father's house: and when the father of the damsel saw him, he rejoiced to meet him."

Judges 19:4: "And his father in law, the damsel's father, retained him; and he abode with him three days: so they did eat and drink, and lodged there."

Judges 19:5: "And it came to pass on the fourth day, when they arose early in the morning, that he



rose up to depart: and the damsel's father said unto his son in law, Comfort thine heart with a morsel of bread, and afterward go your way."

Judges 19:10: "But the man would not tarry that night, but he rose up and departed, and came over against Jebus, which is Jerusalem; and there were with him two asses saddled, his concubine also was with him."

Judges 19:19: "Yet there is both straw and provender for our asses; and there is bread and wine also for me, and for thy handmaid, and for the young man which is with thy servants: there is no want of any thing."

Judges 19:20: "And the old man said, Peace be with thee; howsoever let all thy wants lie upon me; only lodge not in the street."

Judges 19:24: "Behold, here is my daughter a maiden, and his concubine; them I will bring out now, and humble ye them, and do with them what seemeth good unto you: but unto this man do not so vile a thing."

Judges 19:29: "And when he was come into his house, he took a knife, and laid hold on his concubine, and divided her, together with her bones, into twelve pieces, and sent her into all the coasts of Israel."

Judges 20:1: "Then all the children of Israel went out, and the congregation was gathered together as one man, from Dan even to Beersheba, with the land of Gilead, unto the LORD in Mizpeh."

Judges 20:37: "And the liers in wait hasted, and rushed upon Gibeah; and the liers in wait drew themselves along, and smote all the city with the edge of the sword."

Judges 20:38: "Now there was an appointed sign between the men of Israel and the liers in wait, that they should make a great flame with smoke rise up out of the city."

Judges 20:40: "But when the flame began to arise up out of the city with a pillar of smoke, the Benjamites looked behind them, and, behold, the flame of the city ascended up to heaven."

Judges 20:43: "Thus they inclosed the Benjamites round about, and chased them, and trode them down with ease over against Gibeah toward the sunrising."

Judges 20:48: "And the men of Israel turned again upon the children of Benjamin, and smote them with the edge of the sword, as well the men of every city, as the beast, and all that came to hand: also they set on fire all the cities that they came to."

Judges 21:5: "And the children of Israel said, Who is there among all the tribes of Israel that came not up with the congregation unto the LORD? For they had made a great oath concerning him that came not up to the LORD to Mizpeh, saying, He shall surely be put to death."

Judges 21:10: "And the congregation sent thither twelve thousand men of the valiantest, and commanded them, saying, Go and smite the inhabitants of Jabeshgilead with the edge of the sword, with the women and the children."

Judges 21:12: "And they found among the inhabitants of Jabeshgilead four hundred young virgins, that had known no man by lying with any male: and they brought them unto the camp to Shiloh, which is in the land of Canaan."

Ruth 1:6: "Then she arose with her daughters in law, that she might return from the country of Moab: for she had heard in the country of Moab how that the LORD had visited his people in giving them bread."

Ruth 1:7: "Wherefore she went forth out of the place where she was, and her two daughters in law with her; and they went on the way to return unto the land of Judah."

Ruth 1:8: "And Naomi said unto her two daughters in law, Go, return each to her mother's house: the LORD deal kindly with you, as ye have dealt with the dead, and with me."

Ruth 1:10: "And they said unto her, Surely we will return with thee unto thy people."

Ruth 1:11: "And Naomi said, Turn again, my daughters: why will ye go with me? are there yet any more sons in my womb, that they may be your husbands?"

Ruth 1:18: "When she saw that she was stedfastly minded to go with her, then she left speaking unto her."

Ruth 1:20: "And she said unto them, Call me not Naomi, call me Mara: for the Almighty hath dealt very bitterly with me."

Ruth 1:22: "So Naomi returned, and Ruth the Moabitess, her daughter in law, with her, which returned out of the country of Moab: and they came to Bethlehem in the beginning of barley harvest."

Ruth 2:4: "And, behold, Boaz came from Bethlehem, and said unto the reapers, The LORD be with you. And they answered him, The LORD bless thee."

Ruth 2:6: "And the servant that was set over the reapers answered and said, It is the Moabitish damsel that came back with Naomi out of the country of Moab:"

Ruth 2:19: "And her mother in law said unto her, Where hast thou gleaned to day? and where wroughtest thou? blessed be he that did take knowledge of thee. And she shewed her mother in law with whom she had wrought, and said, The man's name with whom I wrought to day is Boaz."

Ruth 2:22: "And Naomi said unto Ruth her daughter in law, It is good, my daughter, that thou go out with his maidens, that they meet thee not in any other field."

Ruth 2:23: "So she kept fast by the maidens of Boaz to glean unto the end of barley harvest and of wheat harvest; and dwelt with her mother in law."

Ruth 3:1: "Then Naomi her mother in law said unto her, My daughter, shall I not seek rest for thee, that it may be well with thee?"

Ruth 3:2: "And now is not Boaz of our kindred, with whose maidens thou wast? Behold, he winnoweth barley to night in the threshingfloor."

1 Samuel 1:24: "And when she had weaned him, she took him up with her, with three bullocks, and one ephah of flour, and a bottle of wine, and brought him unto the house of the LORD in Shiloh: and the child was young."

1 Samuel 2:4: "The bows of the mighty men are broken, and they that stumbled are girded with strength."

1 Samuel 2:13: "And the priest's custom with the people was, that, when any man offered sacrifice, the priest's servant came, while the flesh was in seething, with a fleshhook of three teeth in his hand;"

1 Samuel 2:18: "But Samuel ministered before the LORD, being a child, girded with a linen ephod."

1 Samuel 2:19: "Moreover his mother made him a little coat, and brought it to him from year to year, when she came up with her husband to offer the yearly sacrifice."

1 Samuel 2:22: "Now Eli was very old, and heard all that his sons did unto all Israel; and how they lay with the women that assembled at the door of the tabernacle of the congregation."

1 Samuel 2:26: "And the child Samuel grew on, and was in favour both with the LORD, and also with men."

1 Samuel 2:29: "Wherefore kick ye at my sacrifice and at mine offering, which I have commanded in my habitation; and honourest thy sons above me, to make yourselves fat with the chiefest of all the offerings of Israel my people?"

1 Samuel 3:14: "And therefore I have sworn unto the house of Eli, that the iniquity of Eli's house shall not be purged with sacrifice nor offering for ever."

1 Samuel 3:19: "And Samuel grew, and the LORD was with him, and did let none of his words fall to the ground."

1 Samuel 4:4: "So the people sent to Shiloh, that they might bring from thence the ark of the covenant of the LORD of hosts, which dwelleth between the cherubims: and the two sons of Eli, Hophni and Phinehas, were there with the ark of the covenant of God."

1 Samuel 4:5: "And when the ark of the covenant of the LORD came into the camp, all Israel shouted with a great shout, so that the earth rang again."

1 Samuel 4:8: "Woe unto us! who shall deliver us out of the hand of these mighty Gods? these are the Gods that smote the Egyptians with all the plagues in the wilderness."

1 Samuel 4:12: "And there ran a man of Benjamin out of the army, and came to Shiloh the same day with his clothes rent, and with earth upon his head."

1 Samuel 4:19: "And his daughter in law, Phinehas' wife, was with child, near to be delivered: and when she heard the tidings that the ark of God was taken, and that her father in law and her husband were dead, she bowed herself and travailed; for her pains came upon her."

1 Samuel 5:6: "But the hand of the LORD was heavy upon them of Ashdod, and he destroyed them, and smote them with emerods, even Ashdod and the coasts thereof."

1 Samuel 5:7: "And when the men of Ashdod saw that it was so, they said, The ark of the God of Israel shall not abide with us: for his hand is sore upon us, and upon Dagon our god."

1 Samuel 5:8: "They sent therefore and gathered all the lords of the Philistines unto them, and said, What shall we do with the ark of the God of Israel? And they answered, Let the ark of the God of Israel be carried about unto Gath. And they carried the ark of the God of Israel about thither."

1 Samuel 5:9: "And it was so, that, after they had carried it about, the hand of the LORD was against the city with a very great destruction: and he smote the men of the city, both small and great, and they had emerods in their secret parts."

1 Samuel 5:12: "And the men that died not were smitten with the emerods: and the cry of the city went up to heaven."

1 Samuel 6:11: "And they laid the ark of the LORD upon the cart, and the coffer with the mice of gold and the images of their emerods."

1 Samuel 6:15: "And the Levites took down the ark of the LORD, and the coffer that was with it, wherein the jewels of gold were, and put them on the great stone: and the men of Bethshemesh offered burnt offerings and sacrificed sacrifices the same day unto the LORD."

1 Samuel 6:19: "And he smote the men of Bethshemesh, because they had looked into the ark of the LORD, even he smote of the people fifty thousand and threescore and ten men: and the people lamented, because the LORD had smitten many of the people with a great slaughter."

1 Samuel 7:3: "And Samuel spake unto all the house of Israel, saying, If ye do return unto the LORD with all your hearts, then put away the strange gods and Ashtaroth from among you, and prepare your hearts unto the LORD, and serve him only: and he will deliver you out of the hand of the Philistines."

1 Samuel 7:10: "And as Samuel was offering up the burnt offering, the Philistines drew near to battle against Israel: but the LORD thundered with a great thunder on that day upon the Philistines, and discomfited them; and they were smitten before Israel."

1 Samuel 9:3: "And the asses of Kish Saul's father were lost. And Kish said to Saul his son, Take now one of the servants with thee, and arise, go seek the asses."

1 Samuel 9:5: "And when they were come to the land of Zuph, Saul said to his servant that was with him, Come, and let us return; lest my father leave caring for the asses, and take thought for us."

1 Samuel 9:19: "And Samuel answered Saul, and said, I am the seer: go up before me unto the high place; for ye shall eat with me to day, and to morrow I will let thee go, and will tell thee all that is in thine heart."

1 Samuel 9:24: "And the cook took up the shoulder, and that which was upon it, and set it before Saul. And Samuel said, Behold that which is left! set it before thee, and eat: for unto this time hath it been kept for thee since I said, I have invited the people. So Saul did eat with Samuel that day."

1 Samuel 9:25: "And when they were come down from the high place into the city, Samuel communed with Saul upon the top of the house."

1 Samuel 10:5: "After that thou shalt come to the hill of God, where is the garrison of the Philistines: and it shall come to pass, when thou art come thither to the city, that thou shalt meet a company of prophets coming down from the high place with a psaltery, and a tabret, and a pipe, and a harp, before them; and they shall prophesy:"

1 Samuel 10:6: "And the Spirit of the LORD will come upon thee, and thou shalt prophesy with them, and shalt be turned into another man."

1 Samuel 10:7: "And let it be, when these signs are come unto thee, that thou do as occasion serve thee; for God is with thee."

1 Samuel 10:26: "And Saul also went home to Gibeah; and there went with him a band of men, whose hearts God had touched."

1 Samuel 11:1: "Then Nahash the Ammonite came up, and encamped against Jabeshgilead: and all the men of Jabesh said unto Nahash, Make a covenant with us, and we will serve thee."

1 Samuel 11:2: "And Nahash the Ammonite answered them, On this condition will I make a covenant with you, that I may thrust out all your right eyes, and lay it for a reproach upon all Israel."

1 Samuel 11:7: "And he took a yoke of oxen, and hewed them in pieces, and sent them throughout all the coasts of Israel by the hands of messengers, saying, Whosoever cometh not forth after Saul and after Samuel, so shall it be done unto his oxen. And the fear of the LORD fell on the people, and they came out with one consent."

1 Samuel 11:10: "Therefore the men of Jabesh said, To morrow we will come out unto you, and ye shall do with us all that seemeth good unto you."

1 Samuel 12:2: "And now, behold, the king walketh before you: and I am old and grayheaded; and, behold, my sons are with you: and I have walked before you from my childhood unto this day."

1 Samuel 12:7: "Now therefore stand still, that I may reason with you before the LORD of all the righteous acts of the LORD, which he did to you and to your fathers."

1 Samuel 12:20: "And Samuel said unto the people, Fear not: ye have done all this wickedness: yet turn not aside from following the LORD, but serve the LORD with all your heart;"

1 Samuel 12:24: "Only fear the LORD, and serve him in truth with all your heart: for consider how great things he hath done for you."

1 Samuel 13:2: "Saul chose him three thousand men of Israel; whereof two thousand were with Saul in Michmash and in mount Bethel, and a thousand were with Jonathan in Gibeah of Benjamin: and the rest of the people he sent every man to his tent."

1 Samuel 13:4: "And all Israel heard say that Saul had smitten a garrison of the Philistines, and that Israel also was had in abomination with the Philistines. And the people were called together after Saul to Gilgal."

1 Samuel 13:5: "And the Philistines gathered themselves together to fight with Israel, thirty thousand chariots, and six thousand horsemen, and people as the sand which is on the sea shore in multitude: and they came up, and pitched in Michmash, eastward from Bethaven."

1 Samuel 13:15: "And Samuel arose, and gat him up from Gilgal unto Gibeah of Benjamin. And Saul numbered the people that were present with him, about six hundred men."

1 Samuel 13:16: "And Saul, and Jonathan his son, and the people that were present with them, abode in Gibeah of Benjamin: but the Philistines encamped in Michmash."

1 Samuel 13:22: "So it came to pass in the day of battle, that there was neither sword nor spear found in the hand of any of the people that were with Saul and Jonathan: but with Saul and with Jonathan his son was there found."

1 Samuel 14:2: "And Saul tarried in the uttermost part of Gibeah under a pomegranate tree which is in Migron: and the people that were with him were about six hundred men;"

1 Samuel 14:7: "And his armourbearer said unto him, Do all that is in thine heart: turn thee; behold, I am with thee according to thy heart."

1 Samuel 14:17: "Then said Saul unto the people that were with him, Number now, and see who is gone from us. And when they had numbered, behold, Jonathan and his armourbearer were not there."

1 Samuel 14:18: "And Saul said unto Ahiah, Bring hither the ark of God. For the ark of God was at that time with the children of Israel."

1 Samuel 14:20: "And Saul and all the people that were with him assembled themselves, and they came to the battle: and, behold, every man's sword was against his fellow, and there was a very

great discomfiture."

1 Samuel 14:21: "Moreover the Hebrews that were with the Philistines before that time, which went up with them into the camp from the country round about, even they also turned to be with the Israelites that were with Saul and Jonathan."

1 Samuel 14:27: "But Jonathan heard not when his father charged the people with the oath: wherefore he put forth the end of the rod that was in his hand, and dipped it in an honeycomb, and put his hand to his mouth; and his eyes were enlightened."

1 Samuel 14:28: "Then answered one of the people, and said, Thy father straitly charged the people with an oath, saying, Cursed be the man that eateth any food this day. And the people were faint."

1 Samuel 14:32: "And the people flew upon the spoil, and took sheep, and oxen, and calves, and slew them on the ground: and the people did eat them with the blood."

1 Samuel 14:33: "Then they told Saul, saying, Behold, the people sin against the LORD, in that they eat with the blood. And he said, Ye have transgressed: roll a great stone unto me this day."

1 Samuel 14:34: "And Saul said, Disperse yourselves among the people, and say unto them, Bring me hither every man his ox, and every man his sheep, and slay them here, and eat; and sin not against the LORD in eating with the blood. And all the people brought every man his ox with him that night, and slew them there."

1 Samuel 14:43: "Then Saul said to Jonathan, Tell me what thou hast done. And Jonathan told him, and said, I did but taste a little honey with the end of the rod that was in mine hand, and, lo, I must die."

1 Samuel 14:45: "And the people said unto Saul, Shall Jonathan die, who hath wrought this great salvation in Israel? God forbid: as the LORD liveth, there shall not one hair of his head fall to the ground; for he hath wrought with God this day. So the people rescued Jonathan, that he died not."

1 Samuel 15:6: "And Saul said unto the Kenites, Go, depart, get you down from among the Amalekites, lest I destroy you with them: for ye shewed kindness to all the children of Israel, when they came up out of Egypt. So the Kenites departed from among the Amalekites."

1 Samuel 15:8: "And he took Agag the king of the Amalekites alive, and utterly destroyed all the people with the edge of the sword."

1 Samuel 15:25: "Now therefore, I pray thee, pardon my sin, and turn again with me, that I may worship the LORD."

1 Samuel 15:26: "And Samuel said unto Saul, I will not return with thee: for thou hast rejected the word of the LORD, and the LORD hath rejected thee from being king over Israel."

1 Samuel 15:30: "Then he said, I have sinned: yet honour me now, I pray thee, before the elders of my people, and before Israel, and turn again with me, that I may worship the LORD thy God."

1 Samuel 16:1: "And the LORD said unto Samuel, How long wilt thou mourn for Saul, seeing I have rejected him from reigning over Israel? fill thine horn with oil, and go, I will send thee to Jesse the Bethlehemite: for I have provided me a king among his sons."

1 Samuel 16:2: "And Samuel said, How can I go? if Saul hear it, he will kill me. And the LORD said, Take an heifer with thee, and say, I am come to sacrifice to the LORD."

1 Samuel 16:5: "And he said, Peaceably: I am come to sacrifice unto the LORD: sanctify yourselves, and come with me to the sacrifice. And he sanctified Jesse and his sons, and called them to the sacrifice."

1 Samuel 16:16: "Let our lord now command thy servants, which are before thee, to seek out a man, who is a cunning player on an harp: and it shall come to pass, when the evil spirit from God is upon thee, that he shall play with his hand, and thou shalt be well."

1 Samuel 16:18: "Then answered one of the servants, and said, Behold, I have seen a son of Jesse the Bethlehemite, that is cunning in playing, and a mighty valiant man, and a man of war, and prudent in matters, and a comely person, and the LORD is with him."

1 Samuel 16:19: "Wherefore Saul sent messengers unto Jesse, and said, Send me David thy son, which is with the sheep."

1 Samuel 16:20: "And Jesse took an ass laden with bread, and a bottle of wine, and a kid, and sent them by David his son unto Saul."

1 Samuel 16:23: "And it came to pass, when the evil spirit from God was upon Saul, that David took an harp, and played with his hand: so Saul was refreshed, and was well, and the evil spirit departed from him."

1 Samuel 17:5: "And he had an helmet of brass upon his head, and he was armed with a coat of mail; and the weight of the coat was five thousand shekels of brass."

1 Samuel 17:9: "If he be able to fight with me, and to kill me, then will we be your servants: but if I prevail against him, and kill him, then shall ye be our servants, and serve us."

1 Samuel 17:19: "Now Saul, and they, and all the men of Israel, were in the valley of Elah, fighting with the Philistines."

1 Samuel 17:20: "And David rose up early in the morning, and left the sheep with a keeper, and took, and went, as Jesse had commanded him; and he came to the trench, as the host was going forth to the fight, and shouted for the battle."

1 Samuel 17:23: "And as he talked with them, behold, there came up the champion, the Philistine of Gath, Goliath by name, out of the armies of the Philistines, and spake according to the same words: and David heard them."

1 Samuel 17:25: "And the men of Israel said, Have ye seen this man that is come up? surely to defy Israel is he come up: and it shall be, that the man who killeth him, the king will enrich him with great riches, and will give him his daughter, and make his father's house free in Israel."

1 Samuel 17:28: "And Eliab his eldest brother heard when he spake unto the men; and Eliab's anger was kindled against David, and he said, Why camest thou down hither? and with whom hast thou left those few sheep in the wilderness? I know thy pride, and the naughtiness of thine heart; for thou art come down that thou mightest see the battle."

1 Samuel 17:32: "And David said to Saul, Let no man's heart fail because of him; thy servant will go and fight with this Philistine."

1 Samuel 17:33: "And Saul said to David, Thou art not able to go against this Philistine to fight with him: for thou art but a youth, and he a man of war from his youth."

1 Samuel 17:37: "David said moreover, The LORD that delivered me out of the paw of the lion, and out of the paw of the bear, he will deliver me out of the hand of this Philistine. And Saul said unto David, Go, and the LORD be with thee."

1 Samuel 17:38: "And Saul armed David with his armour, and he put an helmet of brass upon his head; also he armed him with a coat of mail."

1 Samuel 17:39: "And David girded his sword upon his armour, and he assayed to go; for he had not proved it. And David said unto Saul, I cannot go with these; for I have not proved them. And David put them off him."

1 Samuel 17:43: "And the Philistine said unto David, Am I a dog, that thou comest to me with staves? And the Philistine cursed David by his gods."

1 Samuel 17:45: "Then said David to the Philistine, Thou comest to me with a sword, and with a spear, and with a shield: but I come to thee in the name of the LORD of hosts, the God of the armies of Israel, whom thou hast defied."

1 Samuel 17:47: "And all this assembly shall know that the LORD saveth not with sword and spear: for the battle is the LORD's, and he will give you into our hands."

1 Samuel 17:50: "So David prevailed over the Philistine with a sling and with a stone, and smote the Philistine, and slew him; but there was no sword in the hand of David."

1 Samuel 17:57: "And as David returned from the slaughter of the Philistine, Abner took him, and brought him before Saul with the head of the Philistine in his hand."

1 Samuel 18:1: "And it came to pass, when he had made an end of speaking unto Saul, that the soul of Jonathan was knit with the soul of David, and Jonathan loved him as his own soul."

1 Samuel 18:6: "And it came to pass as they came, when David was returned from the slaughter of

the Philistine, that the women came out of all cities of Israel, singing and dancing, to meet king Saul, with tabrets, with joy, and with instruments of musick."

1 Samuel 18:10: "And it came to pass on the morrow, that the evil spirit from God came upon Saul, and he prophesied in the midst of the house: and David played with his hand, as at other times: and there was a javelin in Saul's hand."

1 Samuel 18:11: "And Saul cast the javelin; for he said, I will smite David even to the wall with it. And David avoided out of his presence twice."

1 Samuel 18:12: "And Saul was afraid of David, because the LORD was with him, and was departed from Saul."

1 Samuel 18:14: "And David behaved himself wisely in all his ways; and the LORD was with him."

1 Samuel 18:22: "And Saul commanded his servants, saying, Commune with David secretly, and say, Behold, the king hath delight in thee, and all his servants love thee: now therefore be the king's son in law."

1 Samuel 18:28: "And Saul saw and knew that the LORD was with David, and that Michal Saul's daughter loved him."

1 Samuel 19:3: "And I will go out and stand beside my father in the field where thou art, and I will commune with my father of thee; and what I see, that I will tell thee."

1 Samuel 19:8: "And there was war again: and David went out, and fought with the Philistines, and slew them with a great slaughter; and they fled from him."

1 Samuel 19:9: "And the evil spirit from the LORD was upon Saul, as he sat in his house with his javelin in his hand: and David played with his hand."

1 Samuel 19:10: "And Saul sought to smite David even to the wall with the javelin: but he slipped away out of Saul's presence, and he smote the javelin into the wall: and David fled, and escaped that night."

1 Samuel 19:13: "And Michal took an image, and laid it in the bed, and put a pillow of goats' hair for his bolster, and covered it with a cloth."

1 Samuel 19:16: "And when the messengers were come in, behold, there was an image in the bed, with a pillow of goats' hair for his bolster."

1 Samuel 20:5: "And David said unto Jonathan, Behold, to morrow is the new moon, and I should not fail to sit with the king at meat: but let me go, that I may hide myself in the field unto the third day at even."

1 Samuel 20:8: "Therefore thou shalt deal kindly with thy servant; for thou hast brought thy servant into a covenant of the LORD with thee: notwithstanding, if there be in me iniquity, slay me thyself; for why shouldest thou bring me to thy father?"

1 Samuel 20:13: "The LORD do so and much more to Jonathan: but if it please my father to do thee evil, then I will shew it thee, and send thee away, that thou mayest go in peace: and the LORD be with thee, as he hath been with my father."

1 Samuel 20:16: "So Jonathan made a covenant with the house of David, saying, Let the LORD even require it at the hand of David's enemies."

1 Samuel 20:35: "And it came to pass in the morning, that Jonathan went out into the field at the time appointed with David, and a little lad with him."

1 Samuel 20:41: "And as soon as the lad was gone, David arose out of a place toward the south, and fell on his face to the ground, and bowed himself three times: and they kissed one another, and wept one with another, until David exceeded."

1 Samuel 21:1: "Then came David to Nob to Ahimelech the priest: and Ahimelech was afraid at the meeting of David, and said unto him, Why art thou alone, and no man with thee?"

1 Samuel 21:8: "And David said unto Ahimelech, And is there not here under thine hand spear or sword? for I have neither brought my sword nor my weapons with me, because the king's business required haste."

1 Samuel 22:2: "And every one that was in distress, and every one that was in debt, and every one

that was discontented, gathered themselves unto him; and he became a captain over them: and there were with him about four hundred men."

1 Samuel 22:3: "And David went thence to Mizpeh of Moab: and he said unto the king of Moab, Let my father and my mother, I pray thee, come forth, and be with you, till I know what God will do for me."

1 Samuel 22:4: "And he brought them before the king of Moab: and they dwelt with him all the while that David was in the hold."

1 Samuel 22:6: "When Saul heard that David was discovered, and the men that were with him, (now Saul abode in Gibeah under a tree in Ramah, having his spear in his hand, and all his servants were standing about him;)"

1 Samuel 22:8: "That all of you have conspired against me, and there is none that sheweth me that my son hath made a league with the son of Jesse, and there is none of you that is sorry for me, or sheweth unto me that my son hath stirred up my servant against me, to lie in wait, as at this day?"

1 Samuel 22:17: "And the king said unto the footmen that stood about him, Turn, and slay the priests of the LORD: because their hand also is with David, and because they knew when he fled, and did not shew it to me. But the servants of the king would not put forth their hand to fall upon the priests of the LORD."

1 Samuel 22:19: "And Nob, the city of the priests, smote he with the edge of the sword, both men and women, children and sucklings, and oxen, and asses, and sheep, with the edge of the sword."

1 Samuel 22:23: "Abide thou with me, fear not: for he that seeketh my life seeketh thy life: but with me thou shalt be in safeguard."

1 Samuel 23:5: "So David and his men went to Keilah, and fought with the Philistines, and brought away their cattle, and smote them with a great slaughter. So David saved the inhabitants of Keilah."

1 Samuel 23:6: "And it came to pass, when Abiathar the son of Ahimelech fled to David to Keilah, that he came down with an ephod in his hand."

1 Samuel 23:19: "Then came up the Ziphites to Saul to Gibeah, saying, Doth not David hide himself with us in strong holds in the wood, in the hill of Hachilah, which is on the south of Jeshimon?"

1 Samuel 23:23: "See therefore, and take knowledge of all the lurking places where he hideth himself, and come ye again to me with the certainty, and I will go with you: and it shall come to pass, if he be in the land, that I will search him out throughout all the thousands of Judah."

1 Samuel 24:7: "So David stayed his servants with these words, and suffered them not to rise against Saul. But Saul rose up out of the cave, and went on his way."

1 Samuel 24:8: "David also arose afterward, and went out of the cave, and cried after Saul, saying, My lord the king. And when Saul looked behind him, David stooped with his face to the earth, and bowed himself."

1 Samuel 24:18: "And thou hast shewed this day how that thou hast dealt well with me: forasmuch as when the LORD had delivered me into thine hand, thou killedst me not."

1 Samuel 25:7: "And now I have heard that thou hast shearers: now thy shepherds which were with us, we hurt them not, neither was there ought missing unto them, all the while they were in Carmel."

1 Samuel 25:15: "But the men were very good unto us, and we were not hurt, neither missed we any thing, as long as we were conversant with them, when we were in the fields:"

1 Samuel 25:16: "They were a wall unto us both by night and day, all the while we were with them keeping the sheep."

1 Samuel 25:25: "Let not my lord, I pray thee, regard this man of Belial, even Nabal: for as his name is, so is he; Nabal is his name, and folly is with him: but I thine handmaid saw not the young men of my lord, whom thou didst send."

1 Samuel 25:26: "Now therefore, my lord, as the LORD liveth, and as thy soul liveth, seeing the LORD hath withholden thee from coming to shed blood, and from avenging thyself with thine own hand, now let thine enemies, and they that seek evil to my lord, be as Nabal."



1 Samuel 25:29: "Yet a man is risen to pursue thee, and to seek thy soul: but the soul of my lord shall be bound in the bundle of life with the LORD thy God; and the souls of thine enemies, them shall he sling out, as out of the middle of a sling."

1 Samuel 25:31: "That this shall be no grief unto thee, nor offence of heart unto my lord, either that thou hast shed blood causeless, or that my lord hath avenged himself: but when the LORD shall have dealt well with my lord, then remember thine handmaid."

1 Samuel 25:33: "And blessed be thy advice, and blessed be thou, which hast kept me this day from coming to shed blood, and from avenging myself with mine own hand."

1 Samuel 25:39: "And when David heard that Nabal was dead, he said, Blessed be the LORD, that hath pleaded the cause of my reproach from the hand of Nabal, and hath kept his servant from evil: for the LORD hath returned the wickedness of Nabal upon his own head. And David sent and communed with Abigail, to take her to him to wife."

1 Samuel 25:42: "And Abigail hasted, and arose and rode upon an ass, with five damsels of hers that went after her; and she went after the messengers of David, and became his wife."

1 Samuel 26:2: "Then Saul arose, and went down to the wilderness of Ziph, having three thousand chosen men of Israel with him, to seek David in the wilderness of Ziph."

1 Samuel 26:6: "Then answered David and said to Ahimelech the Hittite, and to Abishai the son of Zeruiah, brother to Joab, saying, Who will go down with me to Saul to the camp? And Abishai said, I will go down with thee."

1 Samuel 26:8: "Then said Abishai to David, God hath delivered thine enemy into thine hand this day: now therefore let me smite him, I pray thee, with the spear even to the earth at once, and I will not smite him the second time."

1 Samuel 27:2: "And David arose, and he passed over with the six hundred men that were with him unto Achish, the son of Maach, king of Gath."

1 Samuel 27:3: "And David dwelt with Achish at Gath, he and his men, every man with his household, even David with his two wives, Ahinoam the Jezreelitess, and Abigail the Carmelitess, Nabal's wife."

1 Samuel 27:5: "And David said unto Achish, If I have now found grace in thine eyes, let them give me a place in some town in the country, that I may dwell there: for why should thy servant dwell in the royal city with thee?"

1 Samuel 28:1: "And it came to pass in those days, that the Philistines gathered their armies together for warfare, to fight with Israel. And Achish said unto David, Know thou assuredly, that thou shalt go out with me to battle, thou and thy men."

1 Samuel 28:8: "And Saul disguised himself, and put on other raiment, and he went, and two men with him, and they came to the woman by night: and he said, I pray thee, divine unto me by the familiar spirit, and bring me him up, whom I shall name unto thee."

1 Samuel 28:12: "And when the woman saw Samuel, she cried with a loud voice: and the woman spake to Saul, saying, Why hast thou deceived me? for thou art Saul."

1 Samuel 28:14: "And he said unto her, What form is he of? And she said, An old man cometh up; and he is covered with a mantle. And Saul perceived that it was Samuel, and he stooped with his face to the ground, and bowed himself."

1 Samuel 28:19: "Moreover the LORD will also deliver Israel with thee into the hand of the Philistines: and to morrow shalt thou and thy sons be with me: the LORD also shall deliver the host of Israel into the hand of the Philistines."

1 Samuel 28:23: "But he refused, and said, I will not eat. But his servants, together with the woman, compelled him; and he hearkened unto their voice. So he arose from the earth, and sat upon the bed."

1 Samuel 29:2: "And the lords of the Philistines passed on by hundreds, and by thousands: but David and his men passed on in the rereward with Achish."

1 Samuel 29:3: "Then said the princes of the Philistines, What do these Hebrews here? And Achish

said unto the princes of the Philistines, Is not this David, the servant of Saul the king of Israel, which hath been with me these days, or these years, and I have found no fault in him since he fell unto me unto this day?"

1 Samuel 29:4: "And the princes of the Philistines were wroth with him; and the princes of the Philistines said unto him, Make this fellow return, that he may go again to his place which thou hast appointed him, and let him not go down with us to battle, lest in the battle he be an adversary to us: for wherewith should he reconcile himself unto his master? should it not be with the heads of these men?"

1 Samuel 29:6: "Then Achish called David, and said unto him, Surely, as the LORD liveth, thou hast been upright, and thy going out and thy coming in with me in the host is good in my sight: for I have not found evil in thee since the day of thy coming unto me unto this day: nevertheless the lords favour thee not."

1 Samuel 29:8: "And David said unto Achish, But what have I done? and what hast thou found in thy servant so long as I have been with thee unto this day, that I may not go fight against the enemies of my lord the king?"

1 Samuel 29:9: "And Achish answered and said to David, I know that thou art good in my sight, as an angel of God: notwithstanding the princes of the Philistines have said, He shall not go up with us to the battle."

1 Samuel 29:10: "Wherefore now rise up early in the morning with thy master's servants that are come with thee: and as soon as ye be up early in the morning, and have light, depart."

1 Samuel 30:1: "And it came to pass, when David and his men were come to Ziklag on the third day, that the Amalekites had invaded the south, and Ziklag, and smitten Ziklag, and burned it with fire;"

1 Samuel 30:3: "So David and his men came to the city, and, behold, it was burned with fire; and their wives, and their sons, and their daughters, were taken captives."

1 Samuel 30:4: "Then David and the people that were with him lifted up their voice and wept, until they had no more power to weep."

1 Samuel 30:9: "So David went, he and the six hundred men that were with him, and came to the brook Besor, where those that were left behind stayed."

1 Samuel 30:14: "We made an invasion upon the south of the Cherethites, and upon the coast which belongeth to Judah, and upon the south of Caleb; and we burned Ziklag with fire."

1 Samuel 30:21: "And David came to the two hundred men, which were so faint that they could not follow David, whom they had made also to abide at the brook Besor: and they went forth to meet David, and to meet the people that were with him: and when David came near to the people, he saluted them."

1 Samuel 30:22: "Then answered all the wicked men and men of Belial, of those that went with David, and said, Because they went not with us, we will not give them ought of the spoil that we have recovered, save to every man his wife and his children, that they may lead them away, and depart."

1 Samuel 30:23: "Then said David, Ye shall not do so, my brethren, with that which the LORD hath given us, who hath preserved us, and delivered the company that came against us into our hand."

1 Samuel 31:5: "And when his armourbearer saw that Saul was dead, he fell likewise upon his sword, and died with him."

2 Samuel 1:2: "It came even to pass on the third day, that, behold, a man came out of the camp from Saul with his clothes rent, and earth upon his head: and so it was, when he came to David, that he fell to the earth, and did obeisance."

2 Samuel 1:11: "Then David took hold on his clothes, and rent them; and likewise all the men that were with him:"

2 Samuel 1:17: "And David lamented with this lamentation over Saul and over Jonathan his son:"

2 Samuel 1:21: "Ye mountains of Gilboa, let there be no dew, neither let there be rain, upon you,

nor fields of offerings: for there the shield of the mighty is vilely cast away, the shield of Saul, as though he had not been anointed with oil."

2 Samuel 1:24: "Ye daughters of Israel, weep over Saul, who clothed you in scarlet, with other delights, who put on ornaments of gold upon your apparel."

2 Samuel 2:3: "And his men that were with him did David bring up, every man with his household: and they dwelt in the cities of Hebron."

2 Samuel 2:23: "Howbeit he refused to turn aside: wherefore Abner with the hinder end of the spear smote him under the fifth rib, that the spear came out behind him; and he fell down there, and died in the same place: and it came to pass, that as many as came to the place where Asahel fell down and died stood still."

2 Samuel 3:8: "Then was Abner very wroth for the words of Ishbosheth, and said, Am I a dog's head, which against Judah do shew kindness this day unto the house of Saul thy father, to his brethren, and to his friends, and have not delivered thee into the hand of David, that thou chargest me to day with a fault concerning this woman?"

2 Samuel 3:12: "And Abner sent messengers to David on his behalf, saying, Whose is the land? saying also, Make thy league with me, and, behold, my hand shall be with thee, to bring about all Israel unto thee."

2 Samuel 3:13: "And he said, Well; I will make a league with thee: but one thing I require of thee, that is, Thou shalt not see my face, except thou first bring Michal Saul's daughter, when thou comest to see my face."

2 Samuel 3:16: "And her husband went with her along weeping behind her to Bahurim. Then said Abner unto him, Go, return. And he returned."

2 Samuel 3:17: "And Abner had communication with the elders of Israel, saying, Ye sought for David in times past to be king over you:"

2 Samuel 3:20: "So Abner came to David to Hebron, and twenty men with him. And David made Abner and the men that were with him a feast."

2 Samuel 3:21: "And Abner said unto David, I will arise and go, and will gather all Israel unto my lord the king, that they may make a league with thee, and that thou mayest reign over all that thine heart desireth. And David sent Abner away; and he went in peace."

2 Samuel 3:22: "And, behold, the servants of David and Joab came from pursuing a troop, and brought in a great spoil with them: but Abner was not with David in Hebron; for he had sent him away, and he was gone in peace."

2 Samuel 3:23: "When Joab and all the host that was with him were come, they told Joab, saying, Abner the son of Ner came to the king, and he hath sent him away, and he is gone in peace."

2 Samuel 3:27: "And when Abner was returned to Hebron, Joab took him aside in the gate to speak with him quietly, and smote him there under the fifth rib, that he died, for the blood of Asahel his brother."

2 Samuel 3:31: "And David said to Joab, and to all the people that were with him, Rend your clothes, and gird you with sackcloth, and mourn before Abner. And king David himself followed the bier."

2 Samuel 5:3: "So all the elders of Israel came to the king to Hebron; and king David made a league with them in Hebron before the LORD: and they anointed David king over Israel."

2 Samuel 5:10: "And David went on, and grew great, and the LORD God of hosts was with him."

2 Samuel 6:2: "And David arose, and went with all the people that were with him from Baale of Judah, to bring up from thence the ark of God, whose name is called by the name of the LORD of hosts that dwelleth between the cherubims."

2 Samuel 6:12: "And it was told king David, saying, The LORD hath blessed the house of Obededom, and all that pertaineth unto him, because of the ark of God. So David went and brought up the ark of God from the house of Obededom into the city of David with gladness."

2 Samuel 6:14: "And David danced before the LORD with all his might; and David was girded with

a linen ephod."

2 Samuel 6:15: "So David and all the house of Israel brought up the ark of the LORD with shouting, and with the sound of the trumpet."

2 Samuel 7:3: "And Nathan said to the king, Go, do all that is in thine heart; for the LORD is with thee."

2 Samuel 7:7: "In all the places wherein I have walked with all the children of Israel spake I a word with any of the tribes of Israel, whom I commanded to feed my people Israel, saying, Why build ye not me an house of cedar?"

2 Samuel 7:9: "And I was with thee whithersoever thou wentest, and have cut off all thine enemies out of thy sight, and have made thee a great name, like unto the name of the great men that are in the earth."

2 Samuel 7:12: "And when thy days be fulfilled, and thou shalt sleep with thy fathers, I will set up thy seed after thee, which shall proceed out of thy bowels, and I will establish his kingdom."

2 Samuel 7:14: "I will be his father, and he shall be my son. If he commit iniquity, I will chasten him with the rod of men, and with the stripes of the children of men:"

2 Samuel 7:22: "Wherefore thou art great, O LORD God: for there is none like thee, neither is there any God beside thee, according to all that we have heard with our ears."

2 Samuel 7:29: "Therefore now let it please thee to bless the house of thy servant, that it may continue for ever before thee: for thou, O Lord GOD, hast spoken it: and with thy blessing let the house of thy servant be blessed for ever."

2 Samuel 8:2: "And he smote Moab, and measured them with a line, casting them down to the ground; even with two lines measured he to put to death, and with one full line to keep alive. And so the Moabites became David's servants, and brought gifts."

2 Samuel 8:10: "Then Toi sent Joram his son unto king David, to salute him, and to bless him, because he had fought against Hadadezer, and smitten him: for Hadadezer had wars with Toi. And Joram brought with him vessels of silver, and vessels of gold, and vessels of brass:"

2 Samuel 8:11: "Which also king David did dedicate unto the LORD, with the silver and gold that he had dedicated of all nations which he subdued;"

2 Samuel 10:13: "And Joab drew nigh, and the people that were with him, unto the battle against the Syrians: and they fled before him."

2 Samuel 10:17: "And when it was told David, he gathered all Israel together, and passed over Jordan, and came to Helam. And the Syrians set themselves in array against David, and fought with him."

2 Samuel 10:19: "And when all the kings that were servants to Hadarezer saw that they were smitten before Israel, they made peace with Israel, and served them. So the Syrians feared to help the children of Ammon any more."

2 Samuel 11:1: "And it came to pass, after the year was expired, at the time when kings go forth to battle, that David sent Joab, and his servants with him, and all Israel; and they destroyed the children of Ammon, and besieged Rabbah. But David tarried still at Jerusalem."

2 Samuel 11:4: "And David sent messengers, and took her; and she came in unto him, and he lay with her; for she was purified from her uncleanness: and she returned unto her house."

2 Samuel 11:5: "And the woman conceived, and sent and told David, and said, I am with child."

2 Samuel 11:9: "But Uriah slept at the door of the king's house with all the servants of his lord, and went not down to his house."

2 Samuel 11:11: "And Uriah said unto David, The ark, and Israel, and Judah, abide in tents; and my lord Joab, and the servants of my lord, are encamped in the open fields; shall I then go into mine house, to eat and to drink, and to lie with my wife? as thou livest, and as thy soul liveth, I will not do this thing."

2 Samuel 11:13: "And when David had called him, he did eat and drink before him; and he made him drunk: and at even he went out to lie on his bed with the servants of his lord, but went not down

to his house."

2 Samuel 11:17: "And the men of the city went out, and fought with Joab: and there fell some of the people of the servants of David; and Uriah the Hittite died also."

2 Samuel 12:3: "But the poor man had nothing, save one little ewe lamb, which he had bought and nourished up: and it grew up together with him, and with his children; it did eat of his own meat, and drank of his own cup, and lay in his bosom, and was unto him as a daughter."

2 Samuel 12:9: "Wherefore hast thou despised the commandment of the LORD, to do evil in his sight? thou hast killed Uriah the Hittite with the sword, and hast taken his wife to be thy wife, and hast slain him with the sword of the children of Ammon."

2 Samuel 12:11: "Thus saith the LORD, Behold, I will raise up evil against thee out of thine own house, and I will take thy wives before thine eyes, and give them unto thy neighbour, and he shall lie with thy wives in the sight of this sun."

2 Samuel 12:17: "And the elders of his house arose, and went to him, to raise him up from the earth: but he would not, neither did he eat bread with them."

2 Samuel 12:24: "And David comforted Bathsheba his wife, and went in unto her, and lay with her: and she bare a son, and he called his name Solomon: and the LORD loved him."

2 Samuel 12:30: "And he took their king's crown from off his head, the weight whereof was a talent of gold with the precious stones: and it was set on David's head. And he brought forth the spoil of the city in great abundance."

2 Samuel 13:11: "And when she had brought them unto him to eat, he took hold of her, and said unto her, Come lie with me, my sister."

2 Samuel 13:14: "Howbeit he would not hearken unto her voice: but, being stronger than she, forced her, and lay with her."

2 Samuel 13:18: "And she had a garment of divers colours upon her: for with such robes were the king's daughters that were virgins apparelled. Then his servant brought her out, and bolted the door after her."

2 Samuel 13:20: "And Absalom her brother said unto her, Hath Amnon thy brother been with thee? but hold now thy peace, my sister: he is thy brother; regard not this thing. So Tamar remained desolate in her brother Absalom's house."

2 Samuel 13:24: "And Absalom came to the king, and said, Behold now, thy servant hath sheepshearers; let the king, I beseech thee, and his servants go with thy servant."

2 Samuel 13:26: "Then said Absalom, If not, I pray thee, let my brother Amnon go with us. And the king said unto him, Why should he go with thee?"

2 Samuel 13:27: "But Absalom pressed him, that he let Amnon and all the king's sons go with him."

2 Samuel 13:28: "Now Absalom had commanded his servants, saying, Mark ye now when Amnon's heart is merry with wine, and when I say unto you, Smite Amnon; then kill him, fear not: have not I commanded you? be courageous, and be valiant."

2 Samuel 13:31: "Then the king arose, and tare his garments, and lay on the earth; and all his servants stood by with their clothes rent."

2 Samuel 14:2: "And Joab sent to Tekoah, and fetched thence a wise woman, and said unto her, I pray thee, feign thyself to be a mourner, and put on now mourning apparel, and anoint not thyself with oil, but be as a woman that had a long time mourned for the dead:"

2 Samuel 14:17: "Then thine handmaid said, The word of my lord the king shall now be comfortable: for as an angel of God, so is my lord the king to discern good and bad: therefore the LORD thy God will be with thee."

2 Samuel 14:19: "And the king said, Is not the hand of Joab with thee in all this? And the woman answered and said, As thy soul liveth, my lord the king, none can turn to the right hand or to the left from ought that my lord the king hath spoken: for thy servant Joab, he bade me, and he put all these words in the mouth of thine handmaid:"

2 Samuel 15:11: "And with Absalom went two hundred men out of Jerusalem, that were called; and

they went in their simplicity, and they knew not any thing."

2 Samuel 15:12: "And Absalom sent for Ahithophel the Gilonite, David's counsellor, from his city, even from Giloh, while he offered sacrifices. And the conspiracy was strong; for the people increased continually with Absalom."

2 Samuel 15:14: "And David said unto all his servants that were with him at Jerusalem, Arise, and let us flee; for we shall not else escape from Absalom: make speed to depart, lest he overtake us suddenly, and bring evil upon us, and smite the city with the edge of the sword."

2 Samuel 15:19: "Then said the king to Ittai the Gittite, Wherefore goest thou also with us? return to thy place, and abide with the king: for thou art a stranger, and also an exile."

2 Samuel 15:20: "Whereas thou camest but yesterday, should I this day make thee go up and down with us? seeing I go whither I may, return thou, and take back thy brethren: mercy and truth be with thee."

2 Samuel 15:22: "And David said to Ittai, Go and pass over. And Ittai the Gittite passed over, and all his men, and all the little ones that were with him."

2 Samuel 15:23: "And all the country wept with a loud voice, and all the people passed over: the king also himself passed over the brook Kidron, and all the people passed over, toward the way of the wilderness."

2 Samuel 15:24: "And lo Zadok also, and all the Levites were with him, bearing the ark of the covenant of God: and they set down the ark of God; and Abiathar went up, until all the people had done passing out of the city."

2 Samuel 15:27: "The king said also unto Zadok the priest, Art not thou a seer? return into the city in peace, and your two sons with you, Ahimaaz thy son, and Jonathan the son of Abiathar."

2 Samuel 15:30: "And David went up by the ascent of mount Olivet, and wept as he went up, and had his head covered, and he went barefoot: and all the people that was with him covered every man his head, and they went up, weeping as they went up."

2 Samuel 15:31: "And one told David, saying, Ahithophel is among the conspirators with Absalom. And David said, O LORD, I pray thee, turn the counsel of Ahithophel into foolishness."

2 Samuel 15:32: "And it came to pass, that when David was come to the top of the mount, where he worshipped God, behold, Hushai the Archite came to meet him with his coat rent, and earth upon his head:"

2 Samuel 15:33: "Unto whom David said, If thou passest on with me, then thou shalt be a burden unto me:"

2 Samuel 15:35: "And hast thou not there with thee Zadok and Abiathar the priests? therefore it shall be, that what thing soever thou shalt hear out of the king's house, thou shalt tell it to Zadok and Abiathar the priests."

2 Samuel 15:36: "Behold, they have there with them their two sons, Ahimaaz Zadok's son, and Jonathan Abiathar's son; and by them ye shall send unto me every thing that ye can hear."

2 Samuel 16:1: "And when David was a little past the top of the hill, behold, Ziba the servant of Mephibosheth met him, with a couple of asses saddled, and upon them two hundred loaves of bread, and an hundred bunches of raisins, and an hundred of summer fruits, and a bottle of wine."

2 Samuel 16:10: "And the king said, What have I to do with you, ye sons of Zeruiah? so let him curse, because the LORD hath said unto him, Curse David. Who shall then say, Wherefore hast thou done so?"

2 Samuel 16:14: "And the king, and all the people that were with him, came weary, and refreshed themselves there."

2 Samuel 16:15: "And Absalom, and all the people the men of Israel, came to Jerusalem, and Ahithophel with him."

2 Samuel 16:17: "And Absalom said to Hushai, Is this thy kindness to thy friend? why wentest thou not with thy friend?"

2 Samuel 16:18: "And Hushai said unto Absalom, Nay; but whom the LORD, and this people, and

all the men of Israel, choose, his will I be, and with him will I abide."

2 Samuel 16:21: "And Ahithophel said unto Absalom, Go in unto thy father's concubines, which he hath left to keep the house; and all Israel shall hear that thou art abhorred of thy father: then shall the hands of all that are with thee be strong."

2 Samuel 16:23: "And the counsel of Ahithophel, which he counselled in those days, was as if a man had enquired at the oracle of God: so was all the counsel of Ahithophel both with David and with Absalom."

2 Samuel 17:2: "And I will come upon him while he is weary and weak handed, and will make him afraid: and all the people that are with him shall flee; and I will smite the king only:"

2 Samuel 17:8: "For, said Hushai, thou knowest thy father and his men, that they be mighty men, and they be chafed in their minds, as a bear robbed of her whelps in the field: and thy father is a man of war, and will not lodge with the people."

2 Samuel 17:10: "And he also that is valiant, whose heart is as the heart of a lion, shall utterly melt: for all Israel knoweth that thy father is a mighty man, and they which be with him are valiant men."

2 Samuel 17:12: "So shall we come upon him in some place where he shall be found, and we will light upon him as the dew falleth on the ground: and of him and of all the men that are with him there shall not be left so much as one."

2 Samuel 17:16: "Now therefore send quickly, and tell David, saying, Lodge not this night in the plains of the wilderness, but speedily pass over; lest the king be swallowed up, and all the people that are with him."

2 Samuel 17:22: "Then David arose, and all the people that were with him, and they passed over Jordan: by the morning light there lacked not one of them that was not gone over Jordan."

2 Samuel 17:24: "Then David came to Mahanaim. And Absalom passed over Jordan, he and all the men of Israel with him."

2 Samuel 17:29: "And honey, and butter, and sheep, and cheese of kine, for David, and for the people that were with him, to eat: for they said, The people is hungry, and weary, and thirsty, in the wilderness."

2 Samuel 18:1: "And David numbered the people that were with him, and set captains of thousands, and captains of hundreds over them."

2 Samuel 18:2: "And David sent forth a third part of the people under the hand of Joab, and a third part under the hand of Abishai the son of Zeruiah, Joab's brother, and a third part under the hand of Ittai the Gittite. And the king said unto the people, I will surely go forth with you myself also."

2 Samuel 18:5: "And the king commanded Joab and Abishai and Ittai, saying, Deal gently for my sake with the young man, even with Absalom. And all the people heard when the king gave all the captains charge concerning Absalom."

2 Samuel 18:14: "Then said Joab, I may not tarry thus with thee. And he took three darts in his hand, and thrust them through the heart of Absalom, while he was yet alive in the midst of the oak."

2 Samuel 18:27: "And the watchman said, Me thinketh the running of the foremost is like the running of Ahimaaz the son of Zadok. And the king said, He is a good man, and cometh with good tidings."

2 Samuel 19:4: "But the king covered his face, and the king cried with a loud voice, O my son Absalom, O Absalom, my son, my son!"

2 Samuel 19:7: "Now therefore arise, go forth, and speak comfortably unto thy servants: for I swear by the LORD, if thou go not forth, there will not tarry one with thee this night: and that will be worse unto thee than all the evil that befell thee from thy youth until now."

2 Samuel 19:16: "And Shimei the son of Gera, a Benjamite, which was of Bahurim, hasted and came down with the men of Judah to meet king David."

2 Samuel 19:17: "And there were a thousand men of Benjamin with him, and Ziba the servant of the house of Saul, and his fifteen sons and his twenty servants with him; and they went over Jordan before the king."

2 Samuel 19:22: "And David said, What have I to do with you, ye sons of Zeruiah, that ye should this day be adversaries unto me? shall there any man be put to death this day in Israel? for do not I know that I am this day king over Israel?"

2 Samuel 19:25: "And it came to pass, when he was come to Jerusalem to meet the king, that the king said unto him, Wherefore wentest not thou with me, Mephibosheth?"

2 Samuel 19:31: "And Barzillai the Gileadite came down from Rogelim, and went over Jordan with the king, to conduct him over Jordan."

2 Samuel 19:33: "And the king said unto Barzillai, Come thou over with me, and I will feed thee with me in Jerusalem."

2 Samuel 19:34: "And Barzillai said unto the king, How long have I to live, that I should go up with the king unto Jerusalem?"

2 Samuel 19:36: "Thy servant will go a little way over Jordan with the king: and why should the king recompense it me with such a reward?"

2 Samuel 19:37: "Let thy servant, I pray thee, turn back again, that I may die in mine own city, and be buried by the grave of my father and of my mother. But behold thy servant Chimham; let him go over with my lord the king; and do to him what shall seem good unto thee."

2 Samuel 19:38: "And the king answered, Chimham shall go over with me, and I will do to him that which shall seem good unto thee: and whatsoever thou shalt require of me, that will I do for thee."

2 Samuel 19:40: "Then the king went on to Gilgal, and Chimham went on with him: and all the people of Judah conducted the king, and also half the people of Israel."

2 Samuel 19:41: "And, behold, all the men of Israel came to the king, and said unto the king, Why have our brethren the men of Judah stolen thee away, and have brought the king, and his household, and all David's men with him, over Jordan?"

2 Samuel 20:8: "When they were at the great stone which is in Gibeon, Amasa went before them. And Joab's garment that he had put on was girded unto him, and upon it a girdle with a sword fastened upon his loins in the sheath thereof; and as he went forth it fell out."

2 Samuel 20:9: "And Joab said to Amasa, Art thou in health, my brother? And Joab took Amasa by the beard with the right hand to kiss him."

2 Samuel 20:15: "And they came and besieged him in Abel of Bethmaachah, and they cast up a bank against the city, and it stood in the trench: and all the people that were with Joab battered the wall, to throw it down."

2 Samuel 20:16: "Then cried a wise woman out of the city, Hear, hear; say, I pray you, unto Joab, Come near hither, that I may speak with thee."

2 Samuel 21:15: "Moreover the Philistines had yet war again with Israel; and David went down, and his servants with him, and fought against the Philistines: and David waxed faint."

2 Samuel 21:16: "And Ishbibenob, which was of the sons of the giant, the weight of whose spear weighed three hundred shekels of brass in weight, he being girded with a new sword, thought to have slain David."

2 Samuel 21:17: "But Abishai the son of Zeruiah succoured him, and smote the Philistine, and killed him. Then the men of David sware unto him, saying, Thou shalt go no more out with us to battle, that thou quench not the light of Israel."

2 Samuel 21:18: "And it came to pass after this, that there was again a battle with the Philistines at Gob: then Sibbechai the Hushathite slew Saph, which was of the sons of the giant."

2 Samuel 21:19: "And there was again a battle in Gob with the Philistines, where Elhanan the son of Jaareoregim, a Bethlehemite, slew the brother of Goliath the Gittite, the staff of whose spear was like a weaver's beam."

2 Samuel 22:26: "With the merciful thou wilt shew thyself merciful, and with the upright man thou wilt shew thyself upright."

2 Samuel 22:27: "With the pure thou wilt shew thyself pure; and with the froward thou wilt shew thyself unsavoury."



2 Samuel 22:40: "For thou hast girded me with strength to battle: them that rose up against me hast thou subdued under me."

2 Samuel 23:5: "Although my house be not so with God; yet he hath made with me an everlasting covenant, ordered in all things, and sure: for this is all my salvation, and all my desire, although he make it not to grow."

2 Samuel 23:6: "But the sons of Belial shall be all of them as thorns thrust away, because they cannot be taken with hands:"

2 Samuel 23:7: "But the man that shall touch them must be fenced with iron and the staff of a spear; and they shall be utterly burned with fire in the same place."

2 Samuel 23:9: "And after him was Eleazar the son of Dodo the Ahohite, one of the three mighty men with David, when they defied the Philistines that were there gathered together to battle, and the men of Israel were gone away:"

2 Samuel 23:21: "And he slew an Egyptian, a goodly man: and the Egyptian had a spear in his hand; but he went down to him with a staff, and plucked the spear out of the Egyptian's hand, and slew him with his own spear."

2 Samuel 24:2: "For the king said to Joab the captain of the host, which was with him, Go now through all the tribes of Israel, from Dan even to Beersheba, and number ye the people, that I may know the number of the people."

1 Kings 1:1: "Now king David was old and stricken in years; and they covered him with clothes, but he gat no heat."

1 Kings 1:7: "And he conferred with Joab the son of Zeruiah, and with Abiathar the priest: and they following Adonijah helped him."

1 Kings 1:8: "But Zadok the priest, and Benaiah the son of Jehoiada, and Nathan the prophet, and Shimei, and Rei, and the mighty men which belonged to David, were not with Adonijah."

1 Kings 1:14: "Behold, while thou yet talkest there with the king, I also will come in after thee, and confirm thy words."

1 Kings 1:21: "Otherwise it shall come to pass, when my lord the king shall sleep with his fathers, that I and my son Solomon shall be counted offenders."

1 Kings 1:22: "And, lo, while she yet talked with the king, Nathan the prophet also came in."

1 Kings 1:23: "And they told the king, saying, Behold Nathan the prophet. And when he was come in before the king, he bowed himself before the king with his face to the ground."

1 Kings 1:31: "Then Bathsheba bowed with her face to the earth, and did reverence to the king, and said, Let my lord king David live for ever."

1 Kings 1:33: "The king also said unto them, Take with you the servants of your lord, and cause Solomon my son to ride upon mine own mule, and bring him down to Gihon:"

1 Kings 1:34: "And let Zadok the priest and Nathan the prophet anoint him there king over Israel: and blow ye with the trumpet, and say, God save king Solomon."

1 Kings 1:37: "As the LORD hath been with my lord the king, even so be he with Solomon, and make his throne greater than the throne of my lord king David."

1 Kings 1:40: "And all the people came up after him, and the people piped with pipes, and rejoiced with great joy, so that the earth rent with the sound of them."

1 Kings 1:41: "And Adonijah and all the guests that were with him heard it as they had made an end of eating. And when Joab heard the sound of the trumpet, he said, Wherefore is this noise of the city being in an uproar?"

1 Kings 1:44: "And the king hath sent with him Zadok the priest, and Nathan the prophet, and Benaiah the son of Jehoiada, and the Cherethites, and the Pelethites, and they have caused him to ride upon the king's mule:"

1 Kings 1:49: "And all the guests that were with Adonijah were afraid, and rose up, and went every man his way."

1 Kings 1:51: "And it was told Solomon, saying, Behold, Adonijah feareth king Solomon: for, lo,

he hath caught hold on the horns of the altar, saying, Let king Solomon swear unto me today that he will not slay his servant with the sword."

1 Kings 2:4: "That the LORD may continue his word which he spake concerning me, saying, If thy children take heed to their way, to walk before me in truth with all their heart and with all their soul, there shall not fail thee (said he) a man on the throne of Israel."

1 Kings 2:8: "And, behold, thou hast with thee Shimei the son of Gera, a Benjamite of Bahurim, which cursed me with a grievous curse in the day when I went to Mahanaim: but he came down to meet me at Jordan, and I swore to him by the LORD, saying, I will not put thee to death with the sword."

1 Kings 2:9: "Now therefore hold him not guiltless: for thou art a wise man, and knowest what thou oughtest to do unto him; but his hoar head bring thou down to the grave with blood."

1 Kings 2:10: "So David slept with his fathers, and was buried in the city of David."

1 Kings 2:32: "And the LORD shall return his blood upon his own head, who fell upon two men more righteous and better than he, and slew them with the sword, my father David not knowing thereof, to wit, Abner the son of Ner, captain of the host of Israel, and Amasa the son of Jether, captain of the host of Judah."

1 Kings 2:43: "Why then hast thou not kept the oath of the LORD, and the commandment that I have charged thee with?"

1 Kings 3:1: "And Solomon made affinity with Pharaoh king of Egypt, and took Pharaoh's daughter, and brought her into the city of David, until he had made an end of building his own house, and the house of the LORD, and the wall of Jerusalem round about."

1 Kings 3:6: "And Solomon said, Thou hast shewed unto thy servant David my father great mercy, according as he walked before thee in truth, and in righteousness, and in uprightness of heart with thee; and thou hast kept for him this great kindness, that thou hast given him a son to sit on his throne, as it is this day."

1 Kings 3:17: "And the one woman said, O my lord, I and this woman dwell in one house; and I was delivered of a child with her in the house."

1 Kings 3:18: "And it came to pass the third day after that I was delivered, that this woman was delivered also: and we were together; there was no stranger with us in the house, save we two in the house."

1 Kings 4:13: "The son of Geber, in Ramothgilead; to him pertained the towns of Jair the son of Manasseh, which are in Gilead; to him also pertained the region of Argob, which is in Bashan, threescore great cities with walls and brasen bars:"

1 Kings 5:6: "Now therefore command thou that they hew me cedar trees out of Lebanon; and my servants shall be with thy servants: and unto thee will I give hire for thy servants according to all that thou shalt appoint: for thou knowest that there is not among us any that can skill to hew timber like unto the Sidonians."

1 Kings 6:8: "The door for the middle chamber was in the right side of the house: and they went up with winding stairs into the middle chamber, and out of the middle into the third."

1 Kings 6:9: "So he built the house, and finished it; and covered the house with beams and boards of cedar."

1 Kings 6:10: "And then he built chambers against all the house, five cubits high: and they rested on the house with timber of cedar."

1 Kings 6:12: "Concerning this house which thou art in building, if thou wilt walk in my statutes, and execute my judgments, and keep all my commandments to walk in them; then will I perform my word with thee, which I spake unto David thy father:"

1 Kings 6:15: "And he built the walls of the house within with boards of cedar, both the floor of the house, and the walls of the ceiling: and he covered them on the inside with wood, and covered the floor of the house with planks of fir."

1 Kings 6:16: "And he built twenty cubits on the sides of the house, both the floor and the walls

with boards of cedar: he even built them for it within, even for the oracle, even for the most holy place."

1 Kings 6:18: "And the cedar of the house within was carved with knops and open flowers: all was cedar; there was no stone seen."

1 Kings 6:20: "And the oracle in the forepart was twenty cubits in length, and twenty cubits in breadth, and twenty cubits in the height thereof: and he overlaid it with pure gold; and so covered the altar which was of cedar."

1 Kings 6:21: "So Solomon overlaid the house within with pure gold: and he made a partition by the chains of gold before the oracle; and he overlaid it with gold."

1 Kings 6:22: "And the whole house he overlaid with gold, until he had finished all the house: also the whole altar that was by the oracle he overlaid with gold."

1 Kings 6:28: "And he overlaid the cherubims with gold."

1 Kings 6:29: "And he carved all the walls of the house round about with carved figures of cherubims and palm trees and open flowers, within and without."

1 Kings 6:30: "And the floors of the house he overlaid with gold, within and without."

1 Kings 6:32: "The two doors also were of olive tree; and he carved upon them carvings of cherubims and palm trees and open flowers, and overlaid them with gold, and spread gold upon the cherubims, and upon the palm trees."

1 Kings 6:35: "And he carved thereon cherubims and palm trees and open flowers: and covered them with gold fitted upon the carved work."

1 Kings 6:36: "And he built the inner court with three rows of hewed stone, and a row of cedar beams."

1 Kings 7:2: "He built also the house of the forest of Lebanon; the length thereof was an hundred cubits, and the breadth thereof fifty cubits, and the height thereof thirty cubits, upon four rows of cedar pillars, with cedar beams upon the pillars."

1 Kings 7:3: "And it was covered with cedar above upon the beams, that lay on forty five pillars, fifteen in a row."

1 Kings 7:5: "And all the doors and posts were square, with the windows: and light was against light in three ranks."

1 Kings 7:7: "Then he made a porch for the throne where he might judge, even the porch of judgment: and it was covered with cedar from one side of the floor to the other."

1 Kings 7:9: "All these were of costly stones, according to the measures of hewed stones, sawed with saws, within and without, even from the foundation unto the coping, and so on the outside toward the great court."

1 Kings 7:12: "And the great court round about was with three rows of hewed stones, and a row of cedar beams, both for the inner court of the house of the LORD, and for the porch of the house."

1 Kings 7:14: "He was a widow's son of the tribe of Naphtali, and his father was a man of Tyre, a worker in brass: and he was filled with wisdom, and understanding, and cunning to work all works in brass. And he came to king Solomon, and wrought all his work."

1 Kings 7:18: "And he made the pillars, and two rows round about upon the one network, to cover the chapiters that were upon the top, with pomegranates: and so did he for the other chapter."

1 Kings 7:26: "And it was an hand breadth thick, and the brim thereof was wrought like the brim of a cup, with flowers of lilies: it contained two thousand baths."

1 Kings 7:31: "And the mouth of it within the chapter and above was a cubit: but the mouth thereof was round after the work of the base, a cubit and an half: and also upon the mouth of it were gravings with their borders, foursquare, not round."

1 Kings 7:49: "And the candlesticks of pure gold, five on the right side, and five on the left, before the oracle, with the flowers, and the lamps, and the tongs of gold,"

1 Kings 8:5: "And king Solomon, and all the congregation of Israel, that were assembled unto him, were with him before the ark, sacrificing sheep and oxen, that could not be told nor numbered for

multitude."

1 Kings 8:9: "There was nothing in the ark save the two tables of stone, which Moses put there at Horeb, when the LORD made a covenant with the children of Israel, when they came out of the land of Egypt."

1 Kings 8:15: "And he said, Blessed be the LORD God of Israel, which spake with his mouth unto David my father, and hath with his hand fulfilled it, saying,"

1 Kings 8:21: "And I have set there a place for the ark, wherein is the covenant of the LORD, which he made with our fathers, when he brought them out of the land of Egypt."

1 Kings 8:23: "And he said, LORD God of Israel, there is no God like thee, in heaven above, or on earth beneath, who keepest covenant and mercy with thy servants that walk before thee with all their heart:"

1 Kings 8:24: "Who hast kept with thy servant David my father that thou promisedst him: thou spakest also with thy mouth, and hast fulfilled it with thine hand, as it is this day."

1 Kings 8:25: "Therefore now, LORD God of Israel, keep with thy servant David my father that thou promisedst him, saying, There shall not fail thee a man in my sight to sit on the throne of Israel; so that thy children take heed to their way, that they walk before me as thou hast walked before me."

1 Kings 8:46: "If they sin against thee, (for there is no man that sinneth not,) and thou be angry with them, and deliver them to the enemy, so that they carry them away captives unto the land of the enemy, far or near;"

1 Kings 8:48: "And so return unto thee with all their heart, and with all their soul, in the land of their enemies, which led them away captive, and pray unto thee toward their land, which thou gavest unto their fathers, the city which thou hast chosen, and the house which I have built for thy name:"

1 Kings 8:54: "And it was so, that when Solomon had made an end of praying all this prayer and supplication unto the LORD, he arose from before the altar of the LORD, from kneeling on his knees with his hands spread up to heaven."

1 Kings 8:55: "And he stood, and blessed all the congregation of Israel with a loud voice, saying,"

1 Kings 8:57: "The LORD our God be with us, as he was with our fathers: let him not leave us, nor forsake us:"

1 Kings 8:61: "Let your heart therefore be perfect with the LORD our God, to walk in his statutes, and to keep his commandments, as at this day."

1 Kings 8:62: "And the king, and all Israel with him, offered sacrifice before the LORD."

1 Kings 8:65: "And at that time Solomon held a feast, and all Israel with him, a great congregation, from the entering in of Hamath unto the river of Egypt, before the LORD our God, seven days and seven days, even fourteen days."

1 Kings 9:11: "(Now Hiram the king of Tyre had furnished Solomon with cedar trees and fir trees, and with gold, according to all his desire,) that then king Solomon gave Hiram twenty cities in the land of Galilee."

1 Kings 9:16: "For Pharaoh king of Egypt had gone up, and taken Gezer, and burnt it with fire, and slain the Canaanites that dwelt in the city, and given it for a present unto his daughter, Solomon's wife."

1 Kings 9:27: "And Hiram sent in the navy his servants, shipmen that had knowledge of the sea, with the servants of Solomon."

1 Kings 10:1: "And when the queen of Sheba heard of the fame of Solomon concerning the name of the LORD, she came to prove him with hard questions."

1 Kings 10:2: "And she came to Jerusalem with a very great train, with camels that bare spices, and very much gold, and precious stones: and when she was come to Solomon, she communed with him of all that was in her heart."

1 Kings 10:18: "Moreover the king made a great throne of ivory, and overlaid it with the best gold."

1 Kings 10:22: "For the king had at sea a navy of Tharshish with the navy of Hiram: once in three years came the navy of Tharshish, bringing gold, and silver, ivory, and apes, and peacocks."

1 Kings 10:26: "And Solomon gathered together chariots and horsemen: and he had a thousand and four hundred chariots, and twelve thousand horsemen, whom he bestowed in the cities for chariots, and with the king at Jerusalem."

1 Kings 11:1: "But king Solomon loved many strange women, together with the daughter of Pharaoh, women of the Moabites, Ammonites, Edomites, Zidonians, and Hittites:"

1 Kings 11:4: "For it came to pass, when Solomon was old, that his wives turned away his heart after other gods: and his heart was not perfect with the LORD his God, as was the heart of David his father."

1 Kings 11:9: "And the LORD was angry with Solomon, because his heart was turned from the LORD God of Israel, which had appeared unto him twice,"

1 Kings 11:16: "(For six months did Joab remain there with all Israel, until he had cut off every male in Edom:)"

1 Kings 11:17: "That Hadad fled, he and certain Edomites of his father's servants with him, to go into Egypt; Hadad being yet a little child."

1 Kings 11:18: "And they arose out of Midian, and came to Paran: and they took men with them out of Paran, and they came to Egypt, unto Pharaoh king of Egypt; which gave him an house, and appointed him victuals, and gave him land."

1 Kings 11:21: "And when Hadad heard in Egypt that David slept with his fathers, and that Joab the captain of the host was dead, Hadad said to Pharaoh, Let me depart, that I may go to mine own country."

1 Kings 11:22: "Then Pharaoh said unto him, But what hast thou lacked with me, that, behold, thou seekest to go to thine own country? And he answered, Nothing: howbeit let me go in any wise."

1 Kings 11:29: "And it came to pass at that time when Jeroboam went out of Jerusalem, that the prophet Ahijah the Shilonite found him in the way; and he had clad himself with a new garment; and they two were alone in the field:"

1 Kings 11:38: "And it shall be, if thou wilt hearken unto all that I command thee, and wilt walk in my ways, and do that is right in my sight, to keep my statutes and my commandments, as David my servant did; that I will be with thee, and build thee a sure house, as I built for David, and will give Israel unto thee."

1 Kings 11:43: "And Solomon slept with his fathers, and was buried in the city of David his father: and Rehoboam his son reigned in his stead."

1 Kings 12:6: "And king Rehoboam consulted with the old men, that stood before Solomon his father while he yet lived, and said, How do ye advise that I may answer this people?"

1 Kings 12:8: "But he forsook the counsel of the old men, which they had given him, and consulted with the young men that were grown up with him, and which stood before him:"

1 Kings 12:10: "And the young men that were grown up with him spake unto him, saying, Thus shalt thou speak unto this people that spake unto thee, saying, Thy father made our yoke heavy, but make thou it lighter unto us; thus shalt thou say unto them, My little finger shall be thicker than my father's loins."

1 Kings 12:11: "And now whereas my father did lade you with a heavy yoke, I will add to your yoke: my father hath chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

1 Kings 12:14: "And spake to them after the counsel of the young men, saying, My father made your yoke heavy, and I will add to your yoke: my father also chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

1 Kings 12:18: "Then king Rehoboam sent Adoram, who was over the tribute; and all Israel stoned him with stones, that he died. Therefore king Rehoboam made speed to get him up to his chariot, to flee to Jerusalem."

1 Kings 12:21: "And when Rehoboam was come to Jerusalem, he assembled all the house of Judah,

with the tribe of Benjamin, an hundred and fourscore thousand chosen men, which were warriors, to fight against the house of Israel, to bring the kingdom again to Rehoboam the son of Solomon."

1 Kings 13:7: "And the king said unto the man of God, Come home with me, and refresh thyself, and I will give thee a reward."

1 Kings 13:8: "And the man of God said unto the king, If thou wilt give me half thine house, I will not go in with thee, neither will I eat bread nor drink water in this place:"

1 Kings 13:15: "Then he said unto him, Come home with me, and eat bread."

1 Kings 13:16: "And he said, I may not return with thee, nor go in with thee: neither will I eat bread nor drink water with thee in this place:"

1 Kings 13:18: "He said unto him, I am a prophet also as thou art; and an angel spake unto me by the word of the LORD, saying, Bring him back with thee into thine house, that he may eat bread and drink water. But he lied unto him."

1 Kings 13:19: "So he went back with him, and did eat bread in his house, and drank water."

1 Kings 14:3: "And take with thee ten loaves, and cracknels, and a cruse of honey, and go to him: he shall tell thee what shall become of the child."

1 Kings 14:6: "And it was so, when Ahijah heard the sound of her feet, as she came in at the door, that he said, Come in, thou wife of Jeroboam; why feignest thou thyself to be another? for I am sent to thee with heavy tidings."

1 Kings 14:8: "And rent the kingdom away from the house of David, and gave it thee: and yet thou hast not been as my servant David, who kept my commandments, and who followed me with all his heart, to do that only which was right in mine eyes;"

1 Kings 14:20: "And the days which Jeroboam reigned were two and twenty years: and he slept with his fathers, and Nadab his son reigned in his stead."

1 Kings 14:22: "And Judah did evil in the sight of the LORD, and they provoked him to jealousy with their sins which they had committed, above all that their fathers had done."

1 Kings 14:31: "And Rehoboam slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David. And his mother's name was Naamah an Ammonitess. And Abijam his son reigned in his stead."

1 Kings 15:3: "And he walked in all the sins of his father, which he had done before him: and his heart was not perfect with the LORD his God, as the heart of David his father."

1 Kings 15:8: "And Abijam slept with his fathers; and they buried him in the city of David: and Asa his son reigned in his stead."

1 Kings 15:14: "But the high places were not removed: nevertheless Asa's heart was perfect with the LORD all his days."

1 Kings 15:19: "There is a league between me and thee, and between my father and thy father: behold, I have sent unto thee a present of silver and gold; come and break thy league with Baasha king of Israel, that he may depart from me."

1 Kings 15:20: "So Benhadad hearkened unto king Asa, and sent the captains of the hosts which he had against the cities of Israel, and smote Ijon, and Dan, and Abelbethmaachah, and all Cinneroth, with all the land of Naphtali."

1 Kings 15:22: "Then king Asa made a proclamation throughout all Judah; none was exempted: and they took away the stones of Ramah, and the timber thereof, wherewith Baasha had builded; and king Asa built with them Geba of Benjamin, and Mizpah."

1 Kings 15:24: "And Asa slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David his father: and Jehoshaphat his son reigned in his stead."

1 Kings 16:2: "Forasmuch as I exalted thee out of the dust, and made thee prince over my people Israel; and thou hast walked in the way of Jeroboam, and hast made my people Israel to sin, to provoke me to anger with their sins;"

1 Kings 16:6: "So Baasha slept with his fathers, and was buried in Tirzah: and Elah his son reigned in his stead."

1 Kings 16:7: "And also by the hand of the prophet Jehu the son of Hanani came the word of the LORD against Baasha, and against his house, even for all the evil that he did in the sight of the LORD, in provoking him to anger with the work of his hands, in being like the house of Jeroboam; and because he killed him."

1 Kings 16:13: "For all the sins of Baasha, and the sins of Elah his son, by which they sinned, and by which they made Israel to sin, in provoking the LORD God of Israel to anger with their vanities."

1 Kings 16:17: "And Omri went up from Gibbethon, and all Israel with him, and they besieged Tirzah."

1 Kings 16:18: "And it came to pass, when Zimri saw that the city was taken, that he went into the palace of the king's house, and burnt the king's house over him with fire, and died."

1 Kings 16:26: "For he walked in all the way of Jeroboam the son of Nebat, and in his sin wherewith he made Israel to sin, to provoke the LORD God of Israel to anger with their vanities."

1 Kings 16:28: "So Omri slept with his fathers, and was buried in Samaria: and Ahab his son reigned in his stead."

1 Kings 17:18: "And she said unto Elijah, What have I to do with thee, O thou man of God? art thou come unto me to call my sin to remembrance, and to slay my son?"

1 Kings 17:20: "And he cried unto the LORD, and said, O LORD my God, hast thou also brought evil upon the widow with whom I sojourn, by slaying her son?"

1 Kings 18:4: "For it was so, when Jezebel cut off the prophets of the LORD, that Obadiah took an hundred prophets, and hid them by fifty in a cave, and fed them with bread and water.)"

1 Kings 18:13: "Was it not told my lord what I did when Jezebel slew the prophets of the LORD, how I hid an hundred men of the LORD's prophets by fifty in a cave, and fed them with bread and water?"

1 Kings 18:28: "And they cried aloud, and cut themselves after their manner with knives and lancets, till the blood gushed out upon them."

1 Kings 18:32: "And with the stones he built an altar in the name of the LORD: and he made a trench about the altar, as great as would contain two measures of seed."

1 Kings 18:33: "And he put the wood in order, and cut the bullock in pieces, and laid him on the wood, and said, Fill four barrels with water, and pour it on the burnt sacrifice, and on the wood."

1 Kings 18:35: "And the water ran round about the altar; and he filled the trench also with water."

1 Kings 18:45: "And it came to pass in the mean while, that the heaven was black with clouds and wind, and there was a great rain. And Ahab rode, and went to Jezreel."

1 Kings 19:1: "And Ahab told Jezebel all that Elijah had done, and withal how he had slain all the prophets with the sword."

1 Kings 19:10: "And he said, I have been very jealous for the LORD God of hosts: for the children of Israel have forsaken thy covenant, thrown down thine altars, and slain thy prophets with the sword; and I, even I only, am left; and they seek my life, to take it away."

1 Kings 19:14: "And he said, I have been very jealous for the LORD God of hosts: because the children of Israel have forsaken thy covenant, thrown down thine altars, and slain thy prophets with the sword; and I, even I only, am left; and they seek my life, to take it away."

1 Kings 19:19: "So he departed thence, and found Elisha the son of Shaphat, who was plowing with twelve yoke of oxen before him, and he with the twelfth: and Elijah passed by him, and cast his mantle upon him."

1 Kings 19:21: "And he returned back from him, and took a yoke of oxen, and slew them, and boiled their flesh with the instruments of the oxen, and gave unto the people, and they did eat. Then he arose, and went after Elijah, and ministered unto him."

1 Kings 20:1: "And Benhadad the king of Syria gathered all his host together: and there were thirty and two kings with him, and horses, and chariots; and he went up and besieged Samaria, and warred against it."

1 Kings 20:20: "And they slew every one his man: and the Syrians fled; and Israel pursued them: and Benhadad the king of Syria escaped on an horse with the horsemen."

1 Kings 20:21: "And the king of Israel went out, and smote the horses and chariots, and slew the Syrians with a great slaughter."

1 Kings 20:34: "And Ben-hadad said unto him, The cities, which my father took from thy father, I will restore; and thou shalt make streets for thee in Damascus, as my father made in Samaria. Then said Ahab, I will send thee away with this covenant. So he made a covenant with him, and sent him away."

1 Kings 20:38: "So the prophet departed, and waited for the king by the way, and disguised himself with ashes upon his face."

1 Kings 21:8: "So she wrote letters in Ahab's name, and sealed them with his seal, and sent the letters unto the elders and to the nobles that were in his city, dwelling with Naboth."

1 Kings 21:13: "And there came in two men, children of Belial, and sat before him: and the men of Belial witnessed against him, even against Naboth, in the presence of the people, saying, Naboth did blaspheme God and the king. Then they carried him forth out of the city, and stoned him with stones, that he died."

1 Kings 22:4: "And he said unto Jehoshaphat, Wilt thou go with me to battle to Ramothgilead? And Jehoshaphat said to the king of Israel, I am as thou art, my people as thy people, my horses as thy horses."

1 Kings 22:11: "And Zedekiah the son of Chenaanah made him horns of iron: and he said, Thus saith the LORD, With these shalt thou push the Syrians, until thou have consumed them."

1 Kings 22:13: "And the messenger that was gone to call Micaiah spake unto him, saying, Behold now, the words of the prophets declare good unto the king with one mouth: let thy word, I pray thee, be like the word of one of them, and speak that which is good."

1 Kings 22:27: "And say, Thus saith the king, Put this fellow in the prison, and feed him with bread of affliction and with water of affliction, until I come in peace."

1 Kings 22:31: "But the king of Syria commanded his thirty and two captains that had rule over his chariots, saying, Fight neither with small nor great, save only with the king of Israel."

1 Kings 22:40: "So Ahab slept with his fathers; and Ahaziah his son reigned in his stead."

1 Kings 22:44: "And Jehoshaphat made peace with the king of Israel."

1 Kings 22:49: "Then said Ahaziah the son of Ahab unto Jehoshaphat, Let my servants go with thy servants in the ships. But Jehoshaphat would not."

1 Kings 22:50: "And Jehoshaphat slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David his father: and Jehoram his son reigned in his stead."

2 Kings 1:8: "And they answered him, He was an hairy man, and girt with a girdle of leather about his loins. And he said, It is Elijah the Tishbite."

2 Kings 1:9: "Then the king sent unto him a captain of fifty with his fifty. And he went up to him: and, behold, he sat on the top of an hill. And he spake unto him, Thou man of God, the king hath said, Come down."

2 Kings 1:11: "Again also he sent unto him another captain of fifty with his fifty. And he answered and said unto him, O man of God, thus hath the king said, Come down quickly."

2 Kings 1:13: "And he sent again a captain of the third fifty with his fifty. And the third captain of fifty went up, and came and fell on his knees before Elijah, and besought him, and said unto him, O man of God, I pray thee, let my life, and the life of these fifty thy servants, be precious in thy sight."

2 Kings 1:14: "Behold, there came fire down from heaven, and burnt up the two captains of the former fifties with their fifties: therefore let my life now be precious in thy sight."

2 Kings 1:15: "And the angel of the LORD said unto Elijah, Go down with him: be not afraid of him. And he arose, and went down with him unto the king."

2 Kings 2:1: "And it came to pass, when the LORD would take up Elijah into heaven by a whirlwind, that Elijah went with Elisha from Gilgal."



2 Kings 2:16: "And they said unto him, Behold now, there be with thy servants fifty strong men; let them go, we pray thee, and seek thy master: lest peradventure the Spirit of the LORD hath taken him up, and cast him upon some mountain, or into some valley. And he said, Ye shall not send."

2 Kings 3:4: "And Mesha king of Moab was a sheepmaster, and rendered unto the king of Israel an hundred thousand lambs, and an hundred thousand rams, with the wool."

2 Kings 3:7: "And he went and sent to Jehoshaphat the king of Judah, saying, The king of Moab hath rebelled against me: wilt thou go with me against Moab to battle? And he said, I will go up: I am as thou art, my people as thy people, and my horses as thy horses."

2 Kings 3:12: "And Jehoshaphat said, The word of the LORD is with him. So the king of Israel and Jehoshaphat and the king of Edom went down to him."

2 Kings 3:13: "And Elisha said unto the king of Israel, What have I to do with thee? get thee to the prophets of thy father, and to the prophets of thy mother. And the king of Israel said unto him, Nay: for the LORD hath called these three kings together, to deliver them into the hand of Moab."

2 Kings 3:17: "For thus saith the LORD, Ye shall not see wind, neither shall ye see rain; yet that valley shall be filled with water, that ye may drink, both ye, and your cattle, and your beasts."

2 Kings 3:19: "And ye shall smite every fenced city, and every choice city, and shall fell every good tree, and stop all wells of water, and mar every good piece of land with stones."

2 Kings 3:20: "And it came to pass in the morning, when the meat offering was offered, that, behold, there came water by the way of Edom, and the country was filled with water."

2 Kings 3:26: "And when the king of Moab saw that the battle was too sore for him, he took with him seven hundred men that drew swords, to break through even unto the king of Edom: but they could not."

2 Kings 4:13: "And he said unto him, Say now unto her, Behold, thou hast been careful for us with all this care; what is to be done for thee? wouldest thou be spoken for to the king, or to the captain of the host? And she answered, I dwell among mine own people."

2 Kings 4:26: "Run now, I pray thee, to meet her, and say unto her, Is it well with thee? is it well with thy husband? is it well with the child? And she answered, It is well:"

2 Kings 5:1: "Now Naaman, captain of the host of the king of Syria, was a great man with his master, and honourable, because by him the LORD had given deliverance unto Syria: he was also a mighty man in valour, but he was a leper."

2 Kings 5:3: "And she said unto her mistress, Would God my lord were with the prophet that is in Samaria! for he would recover him of his leprosy."

2 Kings 5:5: "And the king of Syria said, Go to, go, and I will send a letter unto the king of Israel. And he departed, and took with him ten talents of silver, and six thousand pieces of gold, and ten changes of raiment."

2 Kings 5:9: "So Naaman came with his horses and with his chariot, and stood at the door of the house of Elisha."

2 Kings 5:23: "And Naaman said, Be content, take two talents. And he urged him, and bound two talents of silver in two bags, with two changes of garments, and laid them upon two of his servants; and they bare them before him."

2 Kings 5:26: "And he said unto him, Went not mine heart with thee, when the man turned again from his chariot to meet thee? Is it a time to receive money, and to receive garments, and oliveyards, and vineyards, and sheep, and oxen, and menservants, and maidservants?"

2 Kings 6:1: "And the sons of the prophets said unto Elisha, Behold now, the place where we dwell with thee is too strait for us."

2 Kings 6:3: "And one said, Be content, I pray thee, and go with thy servants. And he answered, I will go."

2 Kings 6:4: "So he went with them. And when they came to Jordan, they cut down wood."

2 Kings 6:8: "Then the king of Syria warred against Israel, and took counsel with his servants, saying, In such and such a place shall be my camp."

2 Kings 6:15: "And when the servant of the man of God was risen early, and gone forth, behold, an host compassed the city both with horses and chariots. And his servant said unto him, Alas, my master! how shall we do?"

2 Kings 6:16: "And he answered, Fear not: for they that be with us are more than they that be with them."

2 Kings 6:18: "And when they came down to him, Elisha prayed unto the LORD, and said, Smite this people, I pray thee, with blindness. And he smote them with blindness according to the word of Elisha."

2 Kings 6:22: "And he answered, Thou shalt not smite them: wouldest thou smite those whom thou hast taken captive with thy sword and with thy bow? set bread and water before them, that they may eat and drink, and go to their master."

2 Kings 6:32: "But Elisha sat in his house, and the elders sat with him; and the king sent a man from before him: but ere the messenger came to him, he said to the elders, See ye how this son of a murderer hath sent to take away mine head? look, when the messenger cometh, shut the door, and hold him fast at the door: is not the sound of his master's feet behind him?"

2 Kings 6:33: "And while he yet talked with them, behold, the messenger came down unto him: and he said, Behold, this evil is of the LORD; what should I wait for the LORD any longer?"

2 Kings 7:2: "Then a lord on whose hand the king leaned answered the man of God, and said, Behold, if the LORD would make windows in heaven, might this thing be? And he said, Behold, thou shalt see it with thine eyes, but shalt not eat thereof."

2 Kings 7:19: "And that lord answered the man of God, and said, Now, behold, if the LORD should make windows in heaven, might such a thing be? And he said, Behold, thou shalt see it with thine eyes, but shalt not eat thereof."

2 Kings 8:2: "And the woman arose, and did after the saying of the man of God: and she went with her household, and sojourned in the land of the Philistines seven years."

2 Kings 8:4: "And the king talked with Gehazi the servant of the man of God, saying, Tell me, I pray thee, all the great things that Elisha hath done."

2 Kings 8:9: "So Hazael went to meet him, and took a present with him, even of every good thing of Damascus, forty camels' burden, and came and stood before him, and said, Thy son Benhadad king of Syria hath sent me to thee, saying, Shall I recover of this disease?"

2 Kings 8:12: "And Hazael said, Why weepeth my lord? And he answered, Because I know the evil that thou wilt do unto the children of Israel: their strong holds wilt thou set on fire, and their young men wilt thou slay with the sword, and wilt dash their children, and rip up their women with child."

2 Kings 8:21: "So Joram went over to Zair, and all the chariots with him: and he rose by night, and smote the Edomites which compassed him about, and the captains of the chariots: and the people fled into their tents."

2 Kings 8:24: "And Joram slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David: and Ahaziah his son reigned in his stead."

2 Kings 8:28: "And he went with Joram the son of Ahab to the war against Hazael king of Syria in Ramothgilead; and the Syrians wounded Joram."

2 Kings 9:13: "Then they hasted, and took every man his garment, and put it under him on the top of the stairs, and blew with trumpets, saying, Jehu is king."

2 Kings 9:15: "But king Joram was returned to be healed in Jezreel of the wounds which the Syrians had given him, when he fought with Hazael king of Syria.) And Jehu said, If it be your minds, then let none go forth nor escape out of the city to go to tell it in Jezreel."

2 Kings 9:18: "So there went one on horseback to meet him, and said, Thus saith the king, Is it peace? And Jehu said, What hast thou to do with peace? turn thee behind me. And the watchman told, saying, The messenger came to them, but he cometh not again."

2 Kings 9:19: "Then he sent out a second on horseback, which came to them, and said, Thus saith the king, Is it peace? And Jehu answered, What hast thou to do with peace? turn thee behind me."

2 Kings 9:24: "And Jehu drew a bow with his full strength, and smote Jehoram between his arms, and the arrow went out at his heart, and he sunk down in his chariot."

2 Kings 9:28: "And his servants carried him in a chariot to Jerusalem, and buried him in his sepulchre with his fathers in the city of David."

2 Kings 10:2: "Now as soon as this letter cometh to you, seeing your master's sons are with you, and there are with you chariots and horses, a fenced city also, and armour;"

2 Kings 10:6: "Then he wrote a letter the second time to them, saying, If ye be mine, and if ye will hearken unto my voice, take ye the heads of the men your master's sons, and come to me to Jezreel by to morrow this time. Now the king's sons, being seventy persons, were with the great men of the city, which brought them up."

2 Kings 10:13: "Jehu met with the brethren of Ahaziah king of Judah, and said, Who are ye? And they answered, We are the brethren of Ahaziah; and we go down to salute the children of the king and the children of the queen."

2 Kings 10:15: "And when he was departed thence, he lighted on Jehonadab the son of Rechab coming to meet him: and he saluted him, and said to him, Is thine heart right, as my heart is with thy heart? And Jehonadab answered, It is. If it be, give me thine hand. And he gave him his hand; and he took him up to him into the chariot."

2 Kings 10:16: "And he said, Come with me, and see my zeal for the LORD. So they made him ride in his chariot."

2 Kings 10:23: "And Jehu went, and Jehonadab the son of Rechab, into the house of Baal, and said unto the worshippers of Baal, Search, and look that there be here with you none of the servants of the LORD, but the worshippers of Baal only."

2 Kings 10:25: "And it came to pass, as soon as he had made an end of offering the burnt offering, that Jehu said to the guard and to the captains, Go in, and slay them; let none come forth. And they smote them with the edge of the sword; and the guard and the captains cast them out, and went to the city of the house of Baal."

2 Kings 10:31: "But Jehu took no heed to walk in the law of the LORD God of Israel with all his heart: for he departed not from the sins of Jeroboam, which made Israel to sin."

2 Kings 10:35: "And Jehu slept with his fathers: and they buried him in Samaria. And Jehoahaz his son reigned in his stead."

2 Kings 11:3: "And he was with her hid in the house of the LORD six years. And Athaliah did reign over the land."

2 Kings 11:4: "And the seventh year Jehoiada sent and fetched the rulers over hundreds, with the captains and the guard, and brought them to him into the house of the LORD, and made a covenant with them, and took an oath of them in the house of the LORD, and shewed them the king's son."

2 Kings 11:8: "And ye shall compass the king round about, every man with his weapons in his hand: and he that cometh within the ranges, let him be slain: and be ye with the king as he goeth out and as he cometh in."

2 Kings 11:9: "And the captains over the hundreds did according to all things that Jehoiada the priest commanded: and they took every man his men that were to come in on the sabbath, with them that should go out on the sabbath, and came to Jehoiada the priest."

2 Kings 11:11: "And the guard stood, every man with his weapons in his hand, round about the king, from the right corner of the temple to the left corner of the temple, along by the altar and the temple."

2 Kings 11:14: "And when she looked, behold, the king stood by a pillar, as the manner was, and the princes and the trumpeters by the king, and all the people of the land rejoiced, and blew with trumpets: and Athaliah rent her clothes, and cried, Treason, Treason."

2 Kings 11:15: "But Jehoiada the priest commanded the captains of the hundreds, the officers of the host, and said unto them, Have her forth without the ranges: and him that followeth her kill with the sword. For the priest had said, Let her not be slain in the house of the LORD."

2 Kings 11:20: "And all the people of the land rejoiced, and the city was in quiet: and they slew Athaliah with the sword beside the king's house."

2 Kings 12:15: "Moreover they reckoned not with the men, into whose hand they delivered the money to be bestowed on workmen: for they dealt faithfully."

2 Kings 12:21: "For Jozachar the son of Shimeath, and Jehozabad the son of Shomer, his servants, smote him, and he died; and they buried him with his fathers in the city of David: and Amaziah his son reigned in his stead."

2 Kings 13:9: "And Jehoahaz slept with his fathers; and they buried him in Samaria: and Joash his son reigned in his stead."

2 Kings 13:13: "And Joash slept with his fathers; and Jeroboam sat upon his throne: and Joash was buried in Samaria with the kings of Israel."

2 Kings 13:19: "And the man of God was wroth with him, and said, Thou shouldest have smitten five or six times; then hadst thou smitten Syria till thou hadst consumed it: whereas now thou shalt smite Syria but thrice."

2 Kings 13:23: "And the LORD was gracious unto them, and had compassion on them, and had respect unto them, because of his covenant with Abraham, Isaac, and Jacob, and would not destroy them, neither cast he them from his presence as yet."

2 Kings 14:10: "Thou hast indeed smitten Edom, and thine heart hath lifted thee up: glory of this, and tarry at home: for why shouldest thou meddle to thy hurt, that thou shouldest fall, even thou, and Judah with thee?"

2 Kings 14:15: "Now the rest of the acts of Jehoash which he did, and his might, and how he fought with Amaziah king of Judah, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

2 Kings 14:16: "And Jehoash slept with his fathers, and was buried in Samaria with the kings of Israel; and Jeroboam his son reigned in his stead."

2 Kings 14:20: "And they brought him on horses: and he was buried at Jerusalem with his fathers in the city of David."

2 Kings 14:22: "He built Elath, and restored it to Judah, after that the king slept with his fathers."

2 Kings 14:29: "And Jeroboam slept with his fathers, even with the kings of Israel; and Zachariah his son reigned in his stead."

2 Kings 15:7: "So Azariah slept with his fathers; and they buried him with his fathers in the city of David: and Jotham his son reigned in his stead."

2 Kings 15:16: "Then Menahem smote Tiphshah, and all that were therein, and the coasts thereof from Tirzah: because they opened not to him, therefore he smote it; and all the women therein that were with child he ripped up."

2 Kings 15:19: "And Pul the king of Assyria came against the land: and Menahem gave Pul a thousand talents of silver, that his hand might be with him to confirm the kingdom in his hand."

2 Kings 15:22: "And Menahem slept with his fathers; and Pekahiah his son reigned in his stead."

2 Kings 15:25: "But Pekah the son of Remaliah, a captain of his, conspired against him, and smote him in Samaria, in the palace of the king's house, with Argob and Arieah, and with him fifty men of the Gileadites: and he killed him, and reigned in his room."

2 Kings 15:38: "And Jotham slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David his father: and Ahaz his son reigned in his stead."

2 Kings 16:15: "And king Ahaz commanded Urijah the priest, saying, Upon the great altar burn the morning burnt offering, and the evening meat offering, and the king's burnt sacrifice, and his meat offering, with the burnt offering of all the people of the land, and their meat offering, and their drink offerings; and sprinkle upon it all the blood of the burnt offering, and all the blood of the sacrifice: and the brasen altar shall be for me to enquire by."

2 Kings 16:20: "And Ahaz slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David: and Hezekiah his son reigned in his stead."

2 Kings 17:15: "And they rejected his statutes, and his covenant that he made with their fathers, and his testimonies which he testified against them; and they followed vanity, and became vain, and went after the heathen that were round about them, concerning whom the LORD had charged them, that they should not do like them."

2 Kings 17:18: "Therefore the LORD was very angry with Israel, and removed them out of his sight: there was none left but the tribe of Judah only."

2 Kings 17:35: "With whom the LORD had made a covenant, and charged them, saying, Ye shall not fear other gods, nor bow yourselves to them, nor serve them, nor sacrifice to them:"

2 Kings 17:36: "But the LORD, who brought you up out of the land of Egypt with great power and a stretched out arm, him shall ye fear, and him shall ye worship, and to him shall ye do sacrifice."

2 Kings 17:38: "And the covenant that I have made with you ye shall not forget; neither shall ye fear other gods."

2 Kings 18:7: "And the LORD was with him; and he prospered whithersoever he went forth: and he rebelled against the king of Assyria, and served him not."

2 Kings 18:17: "And the king of Assyria sent Tartan and Rabsharis and Rabshakeh from Lachish to king Hezekiah with a great host against Jerusalem. And they went up and came to Jerusalem. And when they were come up, they came and stood by the conduit of the upper pool, which is in the highway of the fuller's field."

2 Kings 18:26: "Then said Eliakim the son of Hilkiyah, and Shebna, and Joah, unto Rabshakeh, Speak, I pray thee, to thy servants in the Syrian language; for we understand it: and talk not with us in the Jews' language in the ears of the people that are on the wall."

2 Kings 18:27: "But Rabshakeh said unto them, Hath my master sent me to thy master, and to thee, to speak these words? hath he not sent me to the men which sit on the wall, that they may eat their own dung, and drink their own piss with you?"

2 Kings 18:28: "Then Rabshakeh stood and cried with a loud voice in the Jews' language, and spake, saying, Hear the word of the great king, the king of Assyria:"

2 Kings 18:31: "Hearken not to Hezekiah: for thus saith the king of Assyria, Make an agreement with me by a present, and come out to me, and then eat ye every man of his own vine, and every one of his fig tree, and drink ye every one the waters of his cistern:"

2 Kings 18:37: "Then came Eliakim the son of Hilkiyah, which was over the household, and Shebna the scribe, and Joah the son of Asaph the recorder, to Hezekiah with their clothes rent, and told him the words of Rabshakeh."

2 Kings 19:1: "And it came to pass, when king Hezekiah heard it, that he rent his clothes, and covered himself with sackcloth, and went into the house of the LORD."

2 Kings 19:2: "And he sent Eliakim, which was over the household, and Shebna the scribe, and the elders of the priests, covered with sackcloth, to Isaiah the prophet the son of Amoz."

2 Kings 19:6: "And Isaiah said unto them, Thus shall ye say to your master, Thus saith the LORD, Be not afraid of the words which thou hast heard, with which the servants of the king of Assyria have blasphemed me."

2 Kings 19:23: "By thy messengers thou hast reproached the LORD, and hast said, With the multitude of my chariots I am come up to the height of the mountains, to the sides of Lebanon, and will cut down the tall cedar trees thereof, and the choice fir trees thereof: and I will enter into the lodgings of his borders, and into the forest of his Carmel."

2 Kings 19:24: "I have digged and drunk strange waters, and with the sole of my feet have I dried up all the rivers of besieged places."

2 Kings 19:32: "Therefore thus saith the LORD concerning the king of Assyria, He shall not come into this city, nor shoot an arrow there, nor come before it with shield, nor cast a bank against it."

2 Kings 19:37: "And it came to pass, as he was worshipping in the house of Nisroch his god, that Adrammelech and Sharezer his sons smote him with the sword: and they escaped into the land of Armenia. And Esarhaddon his son reigned in his stead."

2 Kings 20:3: "I beseech thee, O LORD, remember now how I have walked before thee in truth and with a perfect heart, and have done that which is good in thy sight. And Hezekiah wept sore."

2 Kings 20:21: "And Hezekiah slept with his fathers: and Manasseh his son reigned in his stead."

2 Kings 21:6: "And he made his son pass through the fire, and observed times, and used enchantments, and dealt with familiar spirits and wizards: he wrought much wickedness in the sight of the LORD, to provoke him to anger."

2 Kings 21:11: "Because Manasseh king of Judah hath done these abominations, and hath done wickedly above all that the Amorites did, which were before him, and hath made Judah also to sin with his idols:"

2 Kings 21:18: "And Manasseh slept with his fathers, and was buried in the garden of his own house, in the garden of Uzza: and Amon his son reigned in his stead."

2 Kings 22:7: "Howbeit there was no reckoning made with them of the money that was delivered into their hand, because they dealt faithfully."

2 Kings 22:14: "So Hilkiah the priest, and Ahikam, and Achbor, and Shaphan, and Asahiah, went unto Huldah the prophetess, the wife of Shallum the son of Tikvah, the son of Harhas, keeper of the wardrobe; (now she dwelt in Jerusalem in the college;) and they communed with her."

2 Kings 22:17: "Because they have forsaken me, and have burned incense unto other gods, that they might provoke me to anger with all the works of their hands; therefore my wrath shall be kindled against this place, and shall not be quenched."

2 Kings 23:2: "And the king went up into the house of the LORD, and all the men of Judah and all the inhabitants of Jerusalem with him, and the priests, and the prophets, and all the people, both small and great: and he read in their ears all the words of the book of the covenant which was found in the house of the LORD."

2 Kings 23:3: "And the king stood by a pillar, and made a covenant before the LORD, to walk after the LORD, and to keep his commandments and his testimonies and his statutes with all their heart and all their soul, to perform the words of this covenant that were written in this book. And all the people stood to the covenant."

2 Kings 23:11: "And he took away the horses that the kings of Judah had given to the sun, at the entering in of the house of the LORD, by the chamber of Nathanmelech the chamberlain, which was in the suburbs, and burned the chariots of the sun with fire."

2 Kings 23:14: "And he brake in pieces the images, and cut down the groves, and filled their places with the bones of men."

2 Kings 23:18: "And he said, Let him alone; let no man move his bones. So they let his bones alone, with the bones of the prophet that came out of Samaria."

2 Kings 23:24: "Moreover the workers with familiar spirits, and the wizards, and the images, and the idols, and all the abominations that were spied in the land of Judah and in Jerusalem, did Josiah put away, that he might perform the words of the law which were written in the book that Hilkiah the priest found in the house of the LORD."

2 Kings 23:25: "And like unto him was there no king before him, that turned to the LORD with all his heart, and with all his soul, and with all his might, according to all the law of Moses; neither after him arose there any like him."

2 Kings 24:4: "And also for the innocent blood that he shed: for he filled Jerusalem with innocent blood; which the LORD would not pardon."

2 Kings 24:6: "So Jehoiakim slept with his fathers: and Jehoiachin his son reigned in his stead."

2 Kings 25:7: "And they slew the sons of Zedekiah before his eyes, and put out the eyes of Zedekiah, and bound him with fetters of brass, and carried him to Babylon."

2 Kings 25:9: "And he burnt the house of the LORD, and the king's house, and all the houses of Jerusalem, and every great man's house burnt he with fire."

2 Kings 25:10: "And all the army of the Chaldees, that were with the captain of the guard, brake down the walls of Jerusalem round about."

2 Kings 25:11: "Now the rest of the people that were left in the city, and the fugitives that fell away to the king of Babylon, with the remnant of the multitude, did Nebuzaradan the captain of the guard carry away."

2 Kings 25:17: "The height of the one pillar was eighteen cubits, and the chapter upon it was brass: and the height of the chapter three cubits; and the wreathen work, and pomegranates upon the chapter round about, all of brass: and like unto these had the second pillar with wreathen work."

2 Kings 25:24: "And Gedaliah sware to them, and to their men, and said unto them, Fear not to be the servants of the Chaldees: dwell in the land, and serve the king of Babylon; and it shall be well with you."

2 Kings 25:25: "But it came to pass in the seventh month, that Ishmael the son of Nethaniah, the son of Elishama, of the seed royal, came, and ten men with him, and smote Gedaliah, that he died, and the Jews and the Chaldees that were with him at Mizpah."

2 Kings 25:28: "And he spake kindly to him, and set his throne above the throne of the kings that were with him in Babylon;"

1 Chronicles 2:23: "And he took Geshur, and Aram, with the towns of Jair, from them, with Kenath, and the towns thereof, even threescore cities. All these belonged to the sons of Machir the father of Gilead."

1 Chronicles 4:9: "And Jabez was more honourable than his brethren: and his mother called his name Jabez, saying, Because I bare him with sorrow."

1 Chronicles 4:10: "And Jabez called on the God of Israel, saying, Oh that thou wouldest bless me indeed, and enlarge my coast, and that thine hand might be with me, and that thou wouldest keep me from evil, that it may not grieve me! And God granted him that which he requested."

1 Chronicles 4:23: "These were the potters, and those that dwelt among plants and hedges: there they dwelt with the king for his work."

1 Chronicles 5:10: "And in the days of Saul they made war with the Hagarites, who fell by their hand: and they dwelt in their tents throughout all the east land of Gilead."

1 Chronicles 5:18: "The sons of Reuben, and the Gadites, and half the tribe of Manasseh, of valiant men, men able to bear buckler and sword, and to shoot with bow, and skilful in war, were four and forty thousand seven hundred and threescore, that went out to the war."

1 Chronicles 5:19: "And they made war with the Hagarites, with Jetur, and Nephish, and Nodab."

1 Chronicles 5:20: "And they were helped against them, and the Hagarites were delivered into their hand, and all that were with them: for they cried to God in the battle, and he was intreated of them; because they put their trust in him."

1 Chronicles 6:32: "And they ministered before the dwelling place of the tabernacle of the congregation with singing, until Solomon had built the house of the LORD in Jerusalem: and then they waited on their office according to their order."

1 Chronicles 6:33: "And these are they that waited with their children. Of the sons of the Kohathites: Heman a singer, the son of Joel, the son of Shemuel,"

1 Chronicles 6:57: "And to the sons of Aaron they gave the cities of Judah, namely, Hebron, the city of refuge, and Libnah with her suburbs, and Jattir, and Eshtemoa, with their suburbs,"

1 Chronicles 6:58: "And Hilen with her suburbs, Debir with her suburbs,"

1 Chronicles 6:59: "And Ashan with her suburbs, and Bethshemesh with her suburbs:"

1 Chronicles 6:60: "And out of the tribe of Benjamin; Geba with her suburbs, and Alemeth with her suburbs, and Anathoth with her suburbs. All their cities throughout their families were thirteen cities."

1 Chronicles 6:64: "And the children of Israel gave to the Levites these cities with their suburbs."

1 Chronicles 6:67: "And they gave unto them, of the cities of refuge, Shechem in mount Ephraim with her suburbs; they gave also Gezer with her suburbs,"

1 Chronicles 6:68: "And Jokmeam with her suburbs, and Bethhoron with her suburbs,"

1 Chronicles 6:69: "And Aijalon with her suburbs, and Gathrimmon with her suburbs:"

1 Chronicles 6:70: "And out of the half tribe of Manasseh; Aner with her suburbs, and Bileam with her suburbs, for the family of the remnant of the sons of Kohath."

1 Chronicles 6:71: "Unto the sons of Gershom were given out of the family of the half tribe of Manasseh, Golan in Bashan with her suburbs, and Ashtaroth with her suburbs:"

1 Chronicles 6:72: "And out of the tribe of Issachar; Kedesh with her suburbs, Daberath with her suburbs,"

1 Chronicles 6:73: "And Ramoth with her suburbs, and Anem with her suburbs:"

1 Chronicles 6:74: "And out of the tribe of Asher; Mashal with her suburbs, and Abdon with her suburbs,"

1 Chronicles 6:75: "And Hukok with her suburbs, and Rehob with her suburbs:"

1 Chronicles 6:76: "And out of the tribe of Naphtali; Kedesh in Galilee with her suburbs, and Hammon with her suburbs, and Kirjathaim with her suburbs."

1 Chronicles 6:77: "Unto the rest of the children of Merari were given out of the tribe of Zebulun, Rimmon with her suburbs, Tabor with her suburbs:"

1 Chronicles 6:78: "And on the other side Jordan by Jericho, on the east side of Jordan, were given them out of the tribe of Reuben, Bezer in the wilderness with her suburbs, and Jahzah with her suburbs,"

1 Chronicles 6:79: "Kedemoth also with her suburbs, and Mephaath with her suburbs:"

1 Chronicles 6:80: "And out of the tribe of Gad; Ramoth in Gilead with her suburbs, and Mahanaim with her suburbs,"

1 Chronicles 6:81: "And Heshbon with her suburbs, and Jazer with her suburbs."

1 Chronicles 7:4: "And with them, by their generations, after the house of their fathers, were bands of soldiers for war, six and thirty thousand men: for they had many wives and sons."

1 Chronicles 7:23: "And when he went in to his wife, she conceived, and bare a son, and he called his name Beriah, because it went evil with his house."

1 Chronicles 7:28: "And their possessions and habitations were, Bethel and the towns thereof, and eastward Naaran, and westward Gezer, with the towns thereof; Shechem also and the towns thereof, unto Gaza and the towns thereof:"

1 Chronicles 8:12: "The sons of Elpaal; Eber, and Misham, and Shamed, who built Ono, and Lod, with the towns thereof:"

1 Chronicles 8:32: "And Mikloth begat Shimeah. And these also dwelt with their brethren in Jerusalem, over against them."

1 Chronicles 9:20: "And Phinehas the son of Eleazar was the ruler over them in time past, and the LORD was with him."

1 Chronicles 9:25: "And their brethren, which were in their villages, were to come after seven days from time to time with them."

1 Chronicles 9:38: "And Mikloth begat Shimeam. And they also dwelt with their brethren at Jerusalem, over against their brethren."

1 Chronicles 11:3: "Therefore came all the elders of Israel to the king to Hebron; and David made a covenant with them in Hebron before the LORD; and they anointed David king over Israel, according to the word of the LORD by Samuel."

1 Chronicles 11:9: "So David waxed greater and greater: for the LORD of hosts was with him."

1 Chronicles 11:10: "These also are the chief of the mighty men whom David had, who strengthened themselves with him in his kingdom, and with all Israel, to make him king, according to the word of the LORD concerning Israel."

1 Chronicles 11:13: "He was with David at Paddanaram, and there the Philistines were gathered together to battle, where was a parcel of ground full of barley; and the people fled from before the Philistines."

1 Chronicles 11:19: "And said, My God forbid it me, that I should do this thing: shall I drink the blood of these men that have put their lives in jeopardy? for with the jeopardy of their lives they



brought it. Therefore he would not drink it. These things did these three mightiest."

1 Chronicles 11:23: "And he slew an Egyptian, a man of great stature, five cubits high; and in the Egyptian's hand was a spear like a weaver's beam; and he went down to him with a staff, and plucked the spear out of the Egyptian's hand, and slew him with his own spear."

1 Chronicles 11:42: "Adina the son of Shiza the Reubenite, a captain of the Reubenites, and thirty with him,"

1 Chronicles 12:2: "They were armed with bows, and could use both the right hand and the left in hurling stones and shooting arrows out of a bow, even of Saul's brethren of Benjamin."

1 Chronicles 12:19: "And there fell some of Manasseh to David, when he came with the Philistines against Saul to battle: but they helped them not: for the lords of the Philistines upon advisement sent him away, saying, He will fall to his master Saul to the jeopardy of our heads."

1 Chronicles 12:27: "And Jehoiada was the leader of the Aaronites, and with him were three thousand and seven hundred;"

1 Chronicles 12:33: "Of Zebulun, such as went forth to battle, expert in war, with all instruments of war, fifty thousand, which could keep rank: they were not of double heart."

1 Chronicles 12:34: "And of Naphtali a thousand captains, and with them with shield and spear thirty and seven thousand."

1 Chronicles 12:37: "And on the other side of Jordan, of the Reubenites, and the Gadites, and of the half tribe of Manasseh, with all manner of instruments of war for the battle, an hundred and twenty thousand."

1 Chronicles 12:38: "All these men of war, that could keep rank, came with a perfect heart to Hebron, to make David king over all Israel: and all the rest also of Israel were of one heart to make David king."

1 Chronicles 12:39: "And there they were with David three days, eating and drinking: for their brethren had prepared for them."

1 Chronicles 13:1: "And David consulted with the captains of thousands and hundreds, and with every leader."

1 Chronicles 13:2: "And David said unto all the congregation of Israel, If it seem good unto you, and that it be of the LORD our God, let us send abroad unto our brethren every where, that are left in all the land of Israel, and with them also to the priests and Levites which are in their cities and suburbs, that they may gather themselves unto us:"

1 Chronicles 13:8: "And David and all Israel played before God with all their might, and with singing, and with harps, and with psalteries, and with timbrels, and with cymbals, and with trumpets."

1 Chronicles 13:14: "And the ark of God remained with the family of Obededom in his house three months. And the LORD blessed the house of Obededom, and all that he had."

1 Chronicles 14:1: "Now Hiram king of Tyre sent messengers to David, and timber of cedars, with masons and carpenters, to build him an house."

1 Chronicles 14:12: "And when they had left their gods there, David gave a commandment, and they were burned with fire."

1 Chronicles 15:15: "And the children of the Levites bare the ark of God upon their shoulders with the staves thereon, as Moses commanded according to the word of the LORD."

1 Chronicles 15:16: "And David spake to the chief of the Levites to appoint their brethren to be the singers with instruments of musick, psalteries and harps and cymbals, sounding, by lifting up the voice with joy."

1 Chronicles 15:18: "And with them their brethren of the second degree, Zechariah, Ben, and Jaaziel, and Shemiramoth, and Jehiel, and Unni, Eliab, and Benaiah, and Maaseiah, and Mattithiah, and Elipheleh, and Mikneiah, and Obededom, and Jeiel, the porters."

1 Chronicles 15:19: "So the singers, Heman, Asaph, and Ethan, were appointed to sound with cymbals of brass;"

1 Chronicles 15:20: "And Zechariah, and Aziel, and Shemiramoth, and Jehiel, and Unni, and Eliab, and Maaseiah, and Benaiah, with psalteries on Alamoth;"

1 Chronicles 15:21: "And Mattithiah, and Elipheleh, and Mikneiah, and Obedom, and Jeiel, and Azariah, with harps on the Sheminith to excel."

1 Chronicles 15:24: "And Shebaniah, and Jehoshaphat, and Nethaneel, and Amasai, and Zechariah, and Benaiah, and Eliezer, the priests, did blow with the trumpets before the ark of God: and Obedom and Jehiah were doorkeepers for the ark."

1 Chronicles 15:25: "So David, and the elders of Israel, and the captains over thousands, went to bring up the ark of the covenant of the LORD out of the house of Obedom with joy."

1 Chronicles 15:27: "And David was clothed with a robe of fine linen, and all the Levites that bare the ark, and the singers, and Chenaniah the master of the song with the singers: David also had upon him an ephod of linen."

1 Chronicles 15:28: "Thus all Israel brought up the ark of the covenant of the LORD with shouting, and with sound of the cornet, and with trumpets, and with cymbals, making a noise with psalteries and harps."

1 Chronicles 16:5: "Asaph the chief, and next to him Zechariah, Jeiel, and Shemiramoth, and Jehiel, and Mattithiah, and Eliab, and Benaiah, and Obedom: and Jeiel with psalteries and with harps; but Asaph made a sound with cymbals;"

1 Chronicles 16:6: "Benaiah also and Jahaziel the priests with trumpets continually before the ark of the covenant of God."

1 Chronicles 16:16: "Even of the covenant which he made with Abraham, and of his oath unto Isaac;"

1 Chronicles 16:38: "And Obedom with their brethren, threescore and eight; Obedom also the son of Jeduthun and Hosah to be porters:"

1 Chronicles 16:41: "And with them Heman and Jeduthun, and the rest that were chosen, who were expressed by name, to give thanks to the LORD, because his mercy endureth for ever;"

1 Chronicles 16:42: "And with them Heman and Jeduthun with trumpets and cymbals for those that should make a sound, and with musical instruments of God. And the sons of Jeduthun were porters."

1 Chronicles 17:2: "Then Nathan said unto David, Do all that is in thine heart; for God is with thee."

1 Chronicles 17:6: "Wheresoever I have walked with all Israel, spake I a word to any of the judges of Israel, whom I commanded to feed my people, saying, Why have ye not built me an house of cedars?"

1 Chronicles 17:8: "And I have been with thee whithersoever thou hast walked, and have cut off all thine enemies from before thee, and have made thee a name like the name of the great men that are in the earth."

1 Chronicles 17:11: "And it shall come to pass, when thy days be expired that thou must go to be with thy fathers, that I will raise up thy seed after thee, which shall be of thy sons; and I will establish his kingdom."

1 Chronicles 17:20: "O LORD, there is none like thee, neither is there any God beside thee, according to all that we have heard with our ears."

1 Chronicles 18:10: "He sent Hadoram his son to king David, to enquire of his welfare, and to congratulate him, because he had fought against Hadarezer, and smitten him; (for Hadarezer had war with Tou;) and with him all manner of vessels of gold and silver and brass."

1 Chronicles 18:11: "Them also king David dedicated unto the LORD, with the silver and the gold that he brought from all these nations; from Edom, and from Moab, and from the children of Ammon, and from the Philistines, and from Amalek."

1 Chronicles 19:14: "So Joab and the people that were with him drew nigh before the Syrians unto the battle; and they fled before him."

1 Chronicles 19:17: "And it was told David; and he gathered all Israel, and passed over Jordan, and came upon them, and set the battle in array against them. So when David had put the battle in array against the Syrians, they fought with him."

1 Chronicles 19:19: "And when the servants of Hadarezer saw that they were put to the worse before Israel, they made peace with David, and became his servants: neither would the Syrians help the children of Ammon any more."

1 Chronicles 20:3: "And he brought out the people that were in it, and cut them with saws, and with harrows of iron, and with axes. Even so dealt David with all the cities of the children of Ammon. And David and all the people returned to Jerusalem."

1 Chronicles 20:4: "And it came to pass after this, that there arose war at Gezer with the Philistines; at which time Sibbechai the Hushathite slew Sippai, that was of the children of the giant: and they were subdued."

1 Chronicles 20:5: "And there was war again with the Philistines; and Elhanan the son of Jair slew Lahmi the brother of Goliath the Gittite, whose spear staff was like a weaver's beam."

1 Chronicles 21:7: "And God was displeased with this thing; therefore he smote Israel."

1 Chronicles 21:20: "And Ornan turned back, and saw the angel; and his four sons with him hid themselves. Now Ornan was threshing wheat."

1 Chronicles 21:21: "And as David came to Ornan, Ornan looked and saw David, and went out of the threshingfloor, and bowed himself to David with his face to the ground."

1 Chronicles 22:11: "Now, my son, the LORD be with thee; and prosper thou, and build the house of the LORD thy God, as he hath said of thee."

1 Chronicles 22:13: "Then shalt thou prosper, if thou takest heed to fulfil the statutes and judgments which the LORD charged Moses with concerning Israel: be strong, and of good courage; dread not, nor be dismayed."

1 Chronicles 22:15: "Moreover there are workmen with thee in abundance, hewers and workers of stone and timber, and all manner of cunning men for every manner of work."

1 Chronicles 22:16: "Of the gold, the silver, and the brass, and the iron, there is no number. Arise therefore, and be doing, and the LORD be with thee."

1 Chronicles 22:18: "Is not the LORD your God with you? and hath he not given you rest on every side? for he hath given the inhabitants of the land into mine hand; and the land is subdued before the LORD, and before his people."

1 Chronicles 23:2: "And he gathered together all the princes of Israel, with the priests and the Levites."

1 Chronicles 23:5: "Moreover four thousand were porters; and four thousand praised the LORD with the instruments which I made, said David, to praise therewith."

1 Chronicles 24:5: "Thus were they divided by lot, one sort with another; for the governors of the sanctuary, and governors of the house of God, were of the sons of Eleazar, and of the sons of Ithamar."

1 Chronicles 25:1: "Moreover David and the captains of the host separated to the service of the sons of Asaph, and of Heman, and of Jeduthun, who should prophesy with harps, with psalteries, and with cymbals: and the number of the workmen according to their service was:"

1 Chronicles 25:3: "Of Jeduthun: the sons of Jeduthun; Gedaliah, and Zeri, and Jeshaiiah, Hashabiah, and Mattithiah, six, under the hands of their father Jeduthun, who prophesied with a harp, to give thanks and to praise the LORD."

1 Chronicles 25:6: "All these were under the hands of their father for song in the house of the LORD, with cymbals, psalteries, and harps, for the service of the house of God, according to the king's order to Asaph, Jeduthun, and Heman."

1 Chronicles 25:7: "So the number of them, with their brethren that were instructed in the songs of the LORD, even all that were cunning, was two hundred fourscore and eight."

1 Chronicles 25:9: "Now the first lot came forth for Asaph to Joseph: the second to Gedaliah, who

with his brethren and sons were twelve:"

1 Chronicles 26:16: "To Shuppim and Hosah the lot came forth westward, with the gate Shallecheth, by the causeway of the going up, ward against ward."

1 Chronicles 27:32: "Also Jonathan David's uncle was a counsellor, a wise man, and a scribe: and Jehiel the son of Hachmoni was with the king's sons:"

1 Chronicles 28:1: "And David assembled all the princes of Israel, the princes of the tribes, and the captains of the companies that ministered to the king by course, and the captains over the thousands, and captains over the hundreds, and the stewards over all the substance and possession of the king, and of his sons, with the officers, and with the mighty men, and with all the valiant men, unto Jerusalem."

1 Chronicles 28:9: "And thou, Solomon my son, know thou the God of thy father, and serve him with a perfect heart and with a willing mind: for the LORD searcheth all hearts, and understandeth all the imaginations of the thoughts: if thou seek him, he will be found of thee; but if thou forsake him, he will cast thee off for ever."

1 Chronicles 28:20: "And David said to Solomon his son, Be strong and of good courage, and do it: fear not, nor be dismayed: for the LORD God, even my God, will be with thee; he will not fail thee, nor forsake thee, until thou hast finished all the work for the service of the house of the LORD."

1 Chronicles 28:21: "And, behold, the courses of the priests and the Levites, even they shall be with thee for all the service of the house of God: and there shall be with thee for all manner of workmanship every willing skilful man, for any manner of service: also the princes and all the people will be wholly at thy commandment."

1 Chronicles 29:2: "Now I have prepared with all my might for the house of my God the gold for things to be made of gold, and the silver for things of silver, and the brass for things of brass, the iron for things of iron, and wood for things of wood; onyx stones, and stones to be set, glistening stones, and of divers colours, and all manner of precious stones, and marble stones in abundance."

1 Chronicles 29:6: "Then the chief of the fathers and princes of the tribes of Israel and the captains of thousands and of hundreds, with the rulers of the king's work, offered willingly,"

1 Chronicles 29:8: "And they with whom precious stones were found gave them to the treasure of the house of the LORD, by the hand of Jehiel the Gershonite."

1 Chronicles 29:9: "Then the people rejoiced, for that they offered willingly, because with perfect heart they offered willingly to the LORD: and David the king also rejoiced with great joy."

1 Chronicles 29:17: "I know also, my God, that thou triest the heart, and hast pleasure in uprightness. As for me, in the uprightness of mine heart I have willingly offered all these things: and now have I seen with joy thy people, which are present here, to offer willingly unto thee."

1 Chronicles 29:21: "And they sacrificed sacrifices unto the LORD, and offered burnt offerings unto the LORD, on the morrow after that day, even a thousand bullocks, a thousand rams, and a thousand lambs, with their drink offerings, and sacrifices in abundance for all Israel:"

1 Chronicles 29:22: "And did eat and drink before the LORD on that day with great gladness. And they made Solomon the son of David king the second time, and anointed him unto the LORD to be the chief governor, and Zadok to be priest."

1 Chronicles 29:30: "With all his reign and his might, and the times that went over him, and over Israel, and over all the kingdoms of the countries."

2 Chronicles 1:1: "And Solomon the son of David was strengthened in his kingdom, and the LORD his God was with him, and magnified him exceedingly."

2 Chronicles 1:3: "So Solomon, and all the congregation with him, went to the high place that was at Gibeon; for there was the tabernacle of the congregation of God, which Moses the servant of the LORD had made in the wilderness."

2 Chronicles 1:14: "And Solomon gathered chariots and horsemen: and he had a thousand and four hundred chariots, and twelve thousand horsemen, which he placed in the chariot cities, and with the king at Jerusalem."

2 Chronicles 2:3: "And Solomon sent to Hiram the king of Tyre, saying, As thou didst deal with David my father, and didst send him cedars to build him an house to dwell therein, even so deal with me."

2 Chronicles 2:7: "Send me now therefore a man cunning to work in gold, and in silver, and in brass, and in iron, and in purple, and crimson, and blue, and that can skill to grave with the cunning men that are with me in Judah and in Jerusalem, whom David my father did provide."

2 Chronicles 2:8: "Send me also cedar trees, fir trees, and algum trees, out of Lebanon: for I know that thy servants can skill to cut timber in Lebanon; and, behold, my servants shall be with thy servants,"

2 Chronicles 2:12: "Hiram said moreover, Blessed be the LORD God of Israel, that made heaven and earth, who hath given to David the king a wise son, endued with prudence and understanding, that might build an house for the LORD, and an house for his kingdom."

2 Chronicles 2:13: "And now I have sent a cunning man, endued with understanding, of Hiram my father's,"

2 Chronicles 2:14: "The son of a woman of the daughters of Dan, and his father was a man of Tyre, skilful to work in gold, and in silver, in brass, in iron, in stone, and in timber, in purple, in blue, and in fine linen, and in crimson; also to grave any manner of graving, and to find out every device which shall be put to him, with thy cunning men, and with the cunning men of my lord David thy father."

2 Chronicles 3:4: "And the porch that was in the front of the house, the length of it was according to the breadth of the house, twenty cubits, and the height was an hundred and twenty: and he overlaid it within with pure gold."

2 Chronicles 3:5: "And the greater house he cieled with fir tree, which he overlaid with fine gold, and set thereon palm trees and chains."

2 Chronicles 3:6: "And he garnished the house with precious stones for beauty: and the gold was gold of Parvaim."

2 Chronicles 3:7: "He overlaid also the house, the beams, the posts, and the walls thereof, and the doors thereof, with gold; and graved cherubims on the walls."

2 Chronicles 3:8: "And he made the most holy house, the length whereof was according to the breadth of the house, twenty cubits, and the breadth thereof twenty cubits: and he overlaid it with fine gold, amounting to six hundred talents."

2 Chronicles 3:9: "And the weight of the nails was fifty shekels of gold. And he overlaid the upper chambers with gold."

2 Chronicles 3:10: "And in the most holy house he made two cherubims of image work, and overlaid them with gold."

2 Chronicles 4:5: "And the thickness of it was an handbreadth, and the brim of it like the work of the brim of a cup, with flowers of lilies; and it received and held three thousand baths."

2 Chronicles 4:9: "Furthermore he made the court of the priests, and the great court, and doors for the court, and overlaid the doors of them with brass."

2 Chronicles 4:20: "Moreover the candlesticks with their lamps, that they should burn after the manner before the oracle, of pure gold;"

2 Chronicles 5:10: "There was nothing in the ark save the two tables which Moses put therein at Horeb, when the LORD made a covenant with the children of Israel, when they came out of Egypt."

2 Chronicles 5:12: "Also the Levites which were the singers, all of them of Asaph, of Heman, of Jeduthun, with their sons and their brethren, being arrayed in white linen, having cymbals and psalteries and harps, stood at the east end of the altar, and with them an hundred and twenty priests sounding with trumpets:)"

2 Chronicles 5:13: "It came even to pass, as the trumpeters and singers were as one, to make one sound to be heard in praising and thanking the LORD; and when they lifted up their voice with the trumpets and cymbals and instruments of musick, and praised the LORD, saying, For he is good;

for his mercy endureth for ever: that then the house was filled with a cloud, even the house of the LORD;"

2 Chronicles 6:4: "And he said, Blessed be the LORD God of Israel, who hath with his hands fulfilled that which he spake with his mouth to my father David, saying,"

2 Chronicles 6:11: "And in it have I put the ark, wherein is the covenant of the LORD, that he made with the children of Israel."

2 Chronicles 6:14: "And said, O LORD God of Israel, there is no God like thee in the heaven, nor in the earth; which keepest covenant, and shewest mercy unto thy servants, that walk before thee with all their hearts:"

2 Chronicles 6:15: "Thou which hast kept with thy servant David my father that which thou hast promised him; and spakest with thy mouth, and hast fulfilled it with thine hand, as it is this day."

2 Chronicles 6:16: "Now therefore, O LORD God of Israel, keep with thy servant David my father that which thou hast promised him, saying, There shall not fail thee a man in my sight to sit upon the throne of Israel; yet so that thy children take heed to their way to walk in my law, as thou hast walked before me."

2 Chronicles 6:18: "But will God in very deed dwell with men on the earth? behold, heaven and the heaven of heavens cannot contain thee; how much less this house which I have built!"

2 Chronicles 6:36: "If they sin against thee, (for there is no man which sinneth not,) and thou be angry with them, and deliver them over before their enemies, and they carry them away captives unto a land far off or near;"

2 Chronicles 6:38: "If they return to thee with all their heart and with all their soul in the land of their captivity, whither they have carried them captives, and pray toward their land, which thou gavest unto their fathers, and toward the city which thou hast chosen, and toward the house which I have built for thy name:"

2 Chronicles 6:41: "Now therefore arise, O LORD God, into thy resting place, thou, and the ark of thy strength: let thy priests, O LORD God, be clothed with salvation, and let thy saints rejoice in goodness."

2 Chronicles 7:3: "And when all the children of Israel saw how the fire came down, and the glory of the LORD upon the house, they bowed themselves with their faces to the ground upon the pavement, and worshipped, and praised the LORD, saying, For he is good; for his mercy endureth for ever."

2 Chronicles 7:6: "And the priests waited on their offices: the Levites also with instruments of musick of the LORD, which David the king had made to praise the LORD, because his mercy endureth for ever, when David praised by their ministry; and the priests sounded trumpets before them, and all Israel stood."

2 Chronicles 7:8: "Also at the same time Solomon kept the feast seven days, and all Israel with him, a very great congregation, from the entering in of Hamath unto the river of Egypt."

2 Chronicles 7:18: "Then will I stablish the throne of thy kingdom, according as I have covenanted with David thy father, saying, There shall not fail thee a man to be ruler in Israel."

2 Chronicles 8:5: "Also he built Bethhoron the upper, and Bethhoron the nether, fenced cities, with walls, gates, and bars;"

2 Chronicles 8:18: "And Hiram sent him by the hands of his servants ships, and servants that had knowledge of the sea; and they went with the servants of Solomon to Ophir, and took thence four hundred and fifty talents of gold, and brought them to king Solomon."

2 Chronicles 9:1: "And when the queen of Sheba heard of the fame of Solomon, she came to prove Solomon with hard questions at Jerusalem, with a very great company, and camels that bare spices, and gold in abundance, and precious stones: and when she was come to Solomon, she communed with him of all that was in her heart."

2 Chronicles 9:17: "Moreover the king made a great throne of ivory, and overlaid it with pure gold."

2 Chronicles 9:18: "And there were six steps to the throne, with a footstool of gold, which were

fastened to the throne, and stays on each side of the sitting place, and two lions standing by the stays:"

2 Chronicles 9:21: "For the king's ships went to Tarshish with the servants of Hiram: every three years once came the ships of Tarshish bringing gold, and silver, ivory, and apes, and peacocks."

2 Chronicles 9:25: "And Solomon had four thousand stalls for horses and chariots, and twelve thousand horsemen; whom he bestowed in the chariot cities, and with the king at Jerusalem."

2 Chronicles 9:31: "And Solomon slept with his fathers, and he was buried in the city of David his father: and Rehoboam his son reigned in his stead."

2 Chronicles 10:6: "And king Rehoboam took counsel with the old men that had stood before Solomon his father while he yet lived, saying, What counsel give ye me to return answer to this people?"

2 Chronicles 10:8: "But he forsook the counsel which the old men gave him, and took counsel with the young men that were brought up with him, that stood before him."

2 Chronicles 10:10: "And the young men that were brought up with him spake unto him, saying, Thus shalt thou answer the people that spake unto thee, saying, Thy father made our yoke heavy, but make thou it somewhat lighter for us; thus shalt thou say unto them, My little finger shall be thicker than my father's loins."

2 Chronicles 10:11: "For whereas my father put a heavy yoke upon you, I will put more to your yoke: my father chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

2 Chronicles 10:14: "And answered them after the advice of the young men, saying, My father made your yoke heavy, but I will add thereto: my father chastised you with whips, but I will chastise you with scorpions."

2 Chronicles 10:18: "Then king Rehoboam sent Hadoram that was over the tribute; and the children of Israel stoned him with stones, that he died. But king Rehoboam made speed to get him up to his chariot, to flee to Jerusalem."

2 Chronicles 12:1: "And it came to pass, when Rehoboam had established the kingdom, and had strengthened himself, he forsook the law of the LORD, and all Israel with him."

2 Chronicles 12:3: "With twelve hundred chariots, and threescore thousand horsemen: and the people were without number that came with him out of Egypt; the Lubims, the Sukkiims, and the Ethiopians."

2 Chronicles 12:16: "And Rehoboam slept with his fathers, and was buried in the city of David: and Abijah his son reigned in his stead."

2 Chronicles 13:3: "And Abijah set the battle in array with an army of valiant men of war, even four hundred thousand chosen men: Jeroboam also set the battle in array against him with eight hundred thousand chosen men, being mighty men of valour."

2 Chronicles 13:8: "And now ye think to withstand the kingdom of the LORD in the hand of the sons of David; and ye be a great multitude, and there are with your golden calves, which Jeroboam made you for gods."

2 Chronicles 13:9: "Have ye not cast out the priests of the LORD, the sons of Aaron, and the Levites, and have made you priests after the manner of the nations of other lands? so that whosoever cometh to consecrate himself with a young bullock and seven rams, the same may be a priest of them that are no gods."

2 Chronicles 13:11: "And they burn unto the LORD every morning and every evening burnt sacrifices and sweet incense: the shewbread also set they in order upon the pure table; and the candlestick of gold with the lamps thereof, to burn every evening: for we keep the charge of the LORD our God; but ye have forsaken him."

2 Chronicles 13:12: "And, behold, God himself is with us for our captain, and his priests with sounding trumpets to cry alarm against you. O children of Israel, fight ye not against the LORD God of your fathers; for ye shall not prosper."

2 Chronicles 13:14: "And when Judah looked back, behold, the battle was before and behind: and

they cried unto the LORD, and the priests sounded with the trumpets."

2 Chronicles 13:17: "And Abijah and his people slew them with a great slaughter: so there fell down slain of Israel five hundred thousand chosen men."

2 Chronicles 13:19: "And Abijah pursued after Jeroboam, and took cities from him, Bethel with the towns thereof, and Jeshanah with the towns thereof, and Ephraim with the towns thereof."

2 Chronicles 14:1: "So Abijah slept with his fathers, and they buried him in the city of David: and Asa his son reigned in his stead. In his days the land was quiet ten years."

2 Chronicles 14:9: "And there came out against them Zerah the Ethiopian with an host of a thousand thousand, and three hundred chariots; and came unto Mareshah."

2 Chronicles 14:11: "And Asa cried unto the LORD his God, and said, LORD, it is nothing with thee to help, whether with many, or with them that have no power: help us, O LORD our God; for we rest on thee, and in thy name we go against this multitude. O LORD, thou art our God; let no man prevail against thee."

2 Chronicles 14:13: "And Asa and the people that were with him pursued them unto Gerar: and the Ethiopians were overthrown, that they could not recover themselves; for they were destroyed before the LORD, and before his host; and they carried away very much spoil."

2 Chronicles 15:2: "And he went out to meet Asa, and said unto him, Hear ye me, Asa, and all Judah and Benjamin; The LORD is with you, while ye be with him; and if ye seek him, he will be found of you; but if ye forsake him, he will forsake you."

2 Chronicles 15:6: "And nation was destroyed of nation, and city of city: for God did vex them with all adversity."

2 Chronicles 15:9: "And he gathered all Judah and Benjamin, and the strangers with them out of Ephraim and Manasseh, and out of Simeon: for they fell to him out of Israel in abundance, when they saw that the LORD his God was with him."

2 Chronicles 15:12: "And they entered into a covenant to seek the LORD God of their fathers with all their heart and with all their soul;"

2 Chronicles 15:14: "And they swear unto the LORD with a loud voice, and with shouting, and with trumpets, and with cornets."

2 Chronicles 15:15: "And all Judah rejoiced at the oath: for they had sworn with all their heart, and sought him with their whole desire; and he was found of them: and the LORD gave them rest round about."

2 Chronicles 16:3: "There is a league between me and thee, as there was between my father and thy father: behold, I have sent thee silver and gold; go, break thy league with Baasha king of Israel, that he may depart from me."

2 Chronicles 16:8: "Were not the Ethiopians and the Lubims a huge host, with very many chariots and horsemen? yet, because thou didst rely on the LORD, he delivered them into thine hand."

2 Chronicles 16:10: "Then Asa was wroth with the seer, and put him in a prison house; for he was in a rage with him because of this thing. And Asa oppressed some of the people the same time."

2 Chronicles 16:13: "And Asa slept with his fathers, and died in the one and fortieth year of his reign."

2 Chronicles 16:14: "And they buried him in his own sepulchres, which he had made for himself in the city of David, and laid him in the bed which was filled with sweet odours and divers kinds of spices prepared by the apothecaries' art: and they made a very great burning for him."

2 Chronicles 17:3: "And the LORD was with Jehoshaphat, because he walked in the first ways of his father David, and sought not unto Baalim;"

2 Chronicles 17:8: "And with them he sent Levites, even Shemaiah, and Nethaniah, and Zebadiah, and Asahel, and Shemiramoth, and Jehonathan, and Adonijah, and Tobijah, and Tobadonijah, Levites; and with them Elishama and Jehoram, priests."

2 Chronicles 17:9: "And they taught in Judah, and had the book of the law of the LORD with them, and went about throughout all the cities of Judah, and taught the people."



2 Chronicles 17:14: "And these are the numbers of them according to the house of their fathers: Of Judah, the captains of thousands; Adnah the chief, and with him mighty men of valour three hundred thousand."

2 Chronicles 17:15: "And next to him was Jehohanan the captain, and with him two hundred and fourscore thousand."

2 Chronicles 17:16: "And next him was Amasiah the son of Zichri, who willingly offered himself unto the LORD; and with him two hundred thousand mighty men of valour."

2 Chronicles 17:17: "And of Benjamin; Eliada a mighty man of valour, and with him armed men with bow and shield two hundred thousand."

2 Chronicles 17:18: "And next him was Jehozabad, and with him an hundred and fourscore thousand ready prepared for the war."

2 Chronicles 18:1: "Now Jehoshaphat had riches and honour in abundance, and joined affinity with Ahab."

2 Chronicles 18:2: "And after certain years he went down to Ahab to Samaria. And Ahab killed sheep and oxen for him in abundance, and for the people that he had with him, and persuaded him to go up with him to Ramothgilead."

2 Chronicles 18:3: "And Ahab king of Israel said unto Jehoshaphat king of Judah, Wilt thou go with me to Ramothgilead? And he answered him, I am as thou art, and my people as thy people; and we will be with thee in the war."

2 Chronicles 18:10: "And Zedekiah the son of Chenaanah had made him horns of iron, and said, Thus saith the LORD, With these thou shalt push Syria until they be consumed."

2 Chronicles 18:12: "And the messenger that went to call Micaiah spake to him, saying, Behold, the words of the prophets declare good to the king with one assent; let thy word therefore, I pray thee, be like one of their's, and speak thou good."

2 Chronicles 18:26: "And say, Thus saith the king, Put this fellow in the prison, and feed him with bread of affliction and with water of affliction, until I return in peace."

2 Chronicles 18:30: "Now the king of Syria had commanded the captains of the chariots that were with him, saying, Fight ye not with small or great, save only with the king of Israel."

2 Chronicles 19:6: "And said to the judges, Take heed what ye do: for ye judge not for man, but for the LORD, who is with you in the judgment."

2 Chronicles 19:7: "Wherefore now let the fear of the LORD be upon you; take heed and do it: for there is no iniquity with the LORD our God, nor respect of persons, nor taking of gifts."

2 Chronicles 19:9: "And he charged them, saying, Thus shall ye do in the fear of the LORD, faithfully, and with a perfect heart."

2 Chronicles 19:11: "And, behold, Amariah the chief priest is over you in all matters of the LORD; and Zebadiah the son of Ishmael, the ruler of the house of Judah, for all the king's matters: also the Levites shall be officers before you. Deal courageously, and the LORD shall be with the good."

2 Chronicles 20:1: "It came to pass after this also, that the children of Moab, and the children of Ammon, and with them other beside the Ammonites, came against Jehoshaphat to battle."

2 Chronicles 20:13: "And all Judah stood before the LORD, with their little ones, their wives, and their children."

2 Chronicles 20:17: "Ye shall not need to fight in this battle: set yourselves, stand ye still, and see the salvation of the LORD with you, O Judah and Jerusalem: fear not, nor be dismayed; to morrow go out against them: for the LORD will be with you."

2 Chronicles 20:18: "And Jehoshaphat bowed his head with his face to the ground: and all Judah and the inhabitants of Jerusalem fell before the LORD, worshipping the LORD."

2 Chronicles 20:19: "And the Levites, of the children of the Kohathites, and of the children of the Korhites, stood up to praise the LORD God of Israel with a loud voice on high."

2 Chronicles 20:21: "And when he had consulted with the people, he appointed singers unto the LORD, and that should praise the beauty of holiness, as they went out before the army, and to say,

Praise the LORD; for his mercy endureth for ever."

2 Chronicles 20:25: "And when Jehoshaphat and his people came to take away the spoil of them, they found among them in abundance both riches with the dead bodies, and precious jewels, which they stripped off for themselves, more than they could carry away: and they were three days in gathering of the spoil, it was so much."

2 Chronicles 20:27: "Then they returned, every man of Judah and Jerusalem, and Jehoshaphat in the forefront of them, to go again to Jerusalem with joy; for the LORD had made them to rejoice over their enemies."

2 Chronicles 20:28: "And they came to Jerusalem with psalteries and harps and trumpets unto the house of the LORD."

2 Chronicles 20:35: "And after this did Jehoshaphat king of Judah join himself with Ahaziah king of Israel, who did very wickedly:"

2 Chronicles 20:36: "And he joined himself with him to make ships to go to Tarshish: and they made the ships in Eziongaber."

2 Chronicles 20:37: "Then Eliezer the son of Dodavah of Mareshah prophesied against Jehoshaphat, saying, Because thou hast joined thyself with Ahaziah, the LORD hath broken thy works. And the ships were broken, that they were not able to go to Tarshish."

2 Chronicles 21:1: "Now Jehoshaphat slept with his fathers, and was buried with his fathers in the city of David. And Jehoram his son reigned in his stead."

2 Chronicles 21:3: "And their father gave them great gifts of silver, and of gold, and of precious things, with fenced cities in Judah: but the kingdom gave he to Jehoram; because he was the firstborn."

2 Chronicles 21:4: "Now when Jehoram was risen up to the kingdom of his father, he strengthened himself, and slew all his brethren with the sword, and divers also of the princes of Israel."

2 Chronicles 21:7: "Howbeit the LORD would not destroy the house of David, because of the covenant that he had made with David, and as he promised to give a light to him and to his sons for ever."

2 Chronicles 21:9: "Then Jehoram went forth with his princes, and all his chariots with him: and he rose up by night, and smote the Edomites which compassed him in, and the captains of the chariots."

2 Chronicles 21:14: "Behold, with a great plague will the LORD smite thy people, and thy children, and thy wives, and all thy goods:"

2 Chronicles 21:18: "And after all this the LORD smote him in his bowels with an incurable disease."

2 Chronicles 22:1: "And the inhabitants of Jerusalem made Ahaziah his youngest son king in his stead: for the band of men that came with the Arabians to the camp had slain all the eldest. So Ahaziah the son of Jehoram king of Judah reigned."

2 Chronicles 22:5: "He walked also after their counsel, and went with Jehoram the son of Ahab king of Israel to war against Hazael king of Syria at Ramothgilead: and the Syrians smote Joram."

2 Chronicles 22:6: "And he returned to be healed in Jezreel because of the wounds which were given him at Ramah, when he fought with Hazael king of Syria. And Azariah the son of Jehoram king of Judah went down to see Jehoram the son of Ahab at Jezreel, because he was sick."

2 Chronicles 22:7: "And the destruction of Ahaziah was of God by coming to Joram: for when he was come, he went out with Jehoram against Jehu the son of Nimshi, whom the LORD had anointed to cut off the house of Ahab."

2 Chronicles 22:9: "And he sought Ahaziah: and they caught him, (for he was hid in Samaria,) and brought him to Jehu: and when they had slain him, they buried him: Because, said they, he is the son of Jehoshaphat, who sought the LORD with all his heart. So the house of Ahaziah had no power to keep still the kingdom."

2 Chronicles 22:12: "And he was with them hid in the house of God six years: and Athaliah reigned

over the land."

2 Chronicles 23:1: "And in the seventh year Jehoiada strengthened himself, and took the captains of hundreds, Azariah the son of Jeroham, and Ishmael the son of Jehohanan, and Azariah the son of Obed, and Maaseiah the son of Adaiah, and Elishaphat the son of Zichri, into covenant with him."

2 Chronicles 23:3: "And all the congregation made a covenant with the king in the house of God. And he said unto them, Behold, the king's son shall reign, as the LORD hath said of the sons of David."

2 Chronicles 23:7: "And the Levites shall compass the king round about, every man with his weapons in his hand; and whosoever else cometh into the house, he shall be put to death: but be ye with the king when he cometh in, and when he goeth out."

2 Chronicles 23:8: "So the Levites and all Judah did according to all things that Jehoiada the priest had commanded, and took every man his men that were to come in on the sabbath, with them that were to go out on the sabbath: for Jehoiada the priest dismissed not the courses."

2 Chronicles 23:13: "And she looked, and, behold, the king stood at his pillar at the entering in, and the princes and the trumpets by the king: and all the people of the land rejoiced, and sounded with trumpets, also the singers with instruments of musick, and such as taught to sing praise. Then Athaliah rent her clothes, and said, Treason, Treason."

2 Chronicles 23:14: "Then Jehoiada the priest brought out the captains of hundreds that were set over the host, and said unto them, Have her forth of the ranges: and whoso followeth her, let him be slain with the sword. For the priest said, Slay her not in the house of the LORD."

2 Chronicles 23:18: "Also Jehoiada appointed the offices of the house of the LORD by the hand of the priests the Levites, whom David had distributed in the house of the LORD, to offer the burnt offerings of the LORD, as it is written in the law of Moses, with rejoicing and with singing, as it was ordained by David."

2 Chronicles 23:21: "And all the people of the land rejoiced: and the city was quiet, after that they had slain Athaliah with the sword."

2 Chronicles 24:21: "And they conspired against him, and stoned him with stones at the commandment of the king in the court of the house of the LORD."

2 Chronicles 24:24: "For the army of the Syrians came with a small company of men, and the LORD delivered a very great host into their hand, because they had forsaken the LORD God of their fathers. So they executed judgment against Joash."

2 Chronicles 25:2: "And he did that which was right in the sight of the LORD, but not with a perfect heart."

2 Chronicles 25:7: "But there came a man of God to him, saying, O king, let not the army of Israel go with thee; for the LORD is not with Israel, to wit, with all the children of Ephraim."

2 Chronicles 25:13: "But the soldiers of the army which Amaziah sent back, that they should not go with him to battle, fell upon the cities of Judah, from Samaria even unto Bethhoron, and smote three thousand of them, and took much spoil."

2 Chronicles 25:16: "And it came to pass, as he talked with him, that the king said unto him, Art thou made of the king's counsel? forbear; why shouldest thou be smitten? Then the prophet forbore, and said, I know that God hath determined to destroy thee, because thou hast done this, and hast not hearkened unto my counsel."

2 Chronicles 25:19: "Thou sayest, Lo, thou hast smitten the Edomites; and thine heart lifteth thee up to boast: abide now at home; why shouldest thou meddle to thine hurt, that thou shouldest fall, even thou, and Judah with thee?"

2 Chronicles 25:24: "And he took all the gold and the silver, and all the vessels that were found in the house of God with Obedom, and the treasures of the king's house, the hostages also, and returned to Samaria."

2 Chronicles 25:28: "And they brought him upon horses, and buried him with his fathers in the city of Judah."

2 Chronicles 26:2: "He built Eloth, and restored it to Judah, after that the king slept with his fathers."

2 Chronicles 26:13: "And under their hand was an army, three hundred thousand and seven thousand and five hundred, that made war with mighty power, to help the king against the enemy."

2 Chronicles 26:17: "And Azariah the priest went in after him, and with him fourscore priests of the LORD, that were valiant men:"

2 Chronicles 26:19: "Then Uzziah was wroth, and had a censer in his hand to burn incense: and while he was wroth with the priests, the leprosy even rose up in his forehead before the priests in the house of the LORD, from beside the incense altar."

2 Chronicles 26:23: "So Uzziah slept with his fathers, and they buried him with his fathers in the field of the burial which belonged to the kings; for they said, He is a leper: and Jotham his son reigned in his stead."

2 Chronicles 27:5: "He fought also with the king of the Ammonites, and prevailed against them. And the children of Ammon gave him the same year an hundred talents of silver, and ten thousand measures of wheat, and ten thousand of barley. So much did the children of Ammon pay unto him, both the second year, and the third."

2 Chronicles 27:9: "And Jotham slept with his fathers, and they buried him in the city of David: and Ahaz his son reigned in his stead."

2 Chronicles 28:5: "Wherefore the LORD his God delivered him into the hand of the king of Syria; and they smote him, and carried away a great multitude of them captives, and brought them to Damascus. And he was also delivered into the hand of the king of Israel, who smote him with a great slaughter."

2 Chronicles 28:9: "But a prophet of the LORD was there, whose name was Oded: and he went out before the host that came to Samaria, and said unto them, Behold, because the LORD God of your fathers was wroth with Judah, he hath delivered them into your hand, and ye have slain them in a rage that reacheth up unto heaven."

2 Chronicles 28:10: "And now ye purpose to keep under the children of Judah and Jerusalem for bondmen and bondwomen unto you: but are there not with you, even with you, sins against the LORD your God?"

2 Chronicles 28:15: "And the men which were expressed by name rose up, and took the captives, and with the spoil clothed all that were naked among them, and arrayed them, and shod them, and gave them to eat and to drink, and anointed them, and carried all the feeble of them upon asses, and brought them to Jericho, the city of palm trees, to their brethren: then they returned to Samaria."

2 Chronicles 28:18: "The Philistines also had invaded the cities of the low country, and of the south of Judah, and had taken Bethshemesh, and Ajalon, and Gederoth, and Shocho with the villages thereof, and Timnah with the villages thereof, Gimzo also and the villages thereof: and they dwelt there."

2 Chronicles 28:27: "And Ahaz slept with his fathers, and they buried him in the city, even in Jerusalem: but they brought him not into the sepulchres of the kings of Israel: and Hezekiah his son reigned in his stead."

2 Chronicles 29:8: "Wherefore the wrath of the LORD was upon Judah and Jerusalem, and he hath delivered them to trouble, to astonishment, and to hissing, as ye see with your eyes."

2 Chronicles 29:10: "Now it is in mine heart to make a covenant with the LORD God of Israel, that his fierce wrath may turn away from us."

2 Chronicles 29:18: "Then they went in to Hezekiah the king, and said, We have cleansed all the house of the LORD, and the altar of burnt offering, with all the vessels thereof, and the shewbread table, with all the vessels thereof."

2 Chronicles 29:24: "And the priests killed them, and they made reconciliation with their blood upon the altar, to make an atonement for all Israel: for the king commanded that the burnt offering and the sin offering should be made for all Israel."

2 Chronicles 29:25: "And he set the Levites in the house of the LORD with cymbals, with psalteries, and with harps, according to the commandment of David, and of Gad the king's seer, and Nathan the prophet: for so was the commandment of the LORD by his prophets."

2 Chronicles 29:26: "And the Levites stood with the instruments of David, and the priests with the trumpets."

2 Chronicles 29:27: "And Hezekiah commanded to offer the burnt offering upon the altar. And when the burnt offering began, the song of the LORD began also with the trumpets, and with the instruments ordained by David king of Israel."

2 Chronicles 29:29: "And when they had made an end of offering, the king and all that were present with him bowed themselves, and worshipped."

2 Chronicles 29:30: "Moreover Hezekiah the king and the princes commanded the Levites to sing praise unto the LORD with the words of David, and of Asaph the seer. And they sang praises with gladness, and they bowed their heads and worshipped."

2 Chronicles 29:35: "And also the burnt offerings were in abundance, with the fat of the peace offerings, and the drink offerings for every burnt offering. So the service of the house of the LORD was set in order."

2 Chronicles 30:6: "So the posts went with the letters from the king and his princes throughout all Israel and Judah, and according to the commandment of the king, saying, Ye children of Israel, turn again unto the LORD God of Abraham, Isaac, and Israel, and he will return to the remnant of you, that are escaped out of the hand of the kings of Assyria."

2 Chronicles 30:21: "And the children of Israel that were present at Jerusalem kept the feast of unleavened bread seven days with great gladness: and the Levites and the priests praised the LORD day by day, singing with loud instruments unto the LORD."

2 Chronicles 30:23: "And the whole assembly took counsel to keep other seven days: and they kept other seven days with gladness."

2 Chronicles 30:25: "And all the congregation of Judah, with the priests and the Levites, and all the congregation that came out of Israel, and the strangers that came out of the land of Israel, and that dwelt in Judah, rejoiced."

2 Chronicles 31:9: "Then Hezekiah questioned with the priests and the Levites concerning the heaps."

2 Chronicles 31:21: "And in every work that he began in the service of the house of God, and in the law, and in the commandments, to seek his God, he did it with all his heart, and prospered."

2 Chronicles 32:3: "He took counsel with his princes and his mighty men to stop the waters of the fountains which were without the city: and they did help him."

2 Chronicles 32:7: "Be strong and courageous, be not afraid nor dismayed for the king of Assyria, nor for all the multitude that is with him: for there be more with us than with him:"

2 Chronicles 32:8: "With him is an arm of flesh; but with us is the LORD our God to help us, and to fight our battles. And the people rested themselves upon the words of Hezekiah king of Judah."

2 Chronicles 32:9: "After this did Sennacherib king of Assyria send his servants to Jerusalem, (but he himself laid siege against Lachish, and all his power with him,) unto Hezekiah king of Judah, and unto all Judah that were at Jerusalem, saying,"

2 Chronicles 32:18: "Then they cried with a loud voice in the Jews' speech unto the people of Jerusalem that were on the wall, to affright them, and to trouble them; that they might take the city."

2 Chronicles 32:21: "And the LORD sent an angel, which cut off all the mighty men of valour, and the leaders and captains in the camp of the king of Assyria. So he returned with shame of face to his own land. And when he was come into the house of his god, they that came forth of his own bowels slew him there with the sword."

2 Chronicles 32:33: "And Hezekiah slept with his fathers, and they buried him in the chiefest of the sepulchres of the sons of David: and all Judah and the inhabitants of Jerusalem did him honour at his death. And Manasseh his son reigned in his stead."

2 Chronicles 33:6: "And he caused his children to pass through the fire in the valley of the son of Hinnom: also he observed times, and used enchantments, and used witchcraft, and dealt with a familiar spirit, and with wizards: he wrought much evil in the sight of the LORD, to provoke him to anger."

2 Chronicles 33:11: "Wherefore the LORD brought upon them the captains of the host of the king of Assyria, which took Manasseh among the thorns, and bound him with fetters, and carried him to Babylon."

2 Chronicles 33:20: "So Manasseh slept with his fathers, and they buried him in his own house: and Amon his son reigned in his stead."

2 Chronicles 34:6: "And so did he in the cities of Manasseh, and Ephraim, and Simeon, even unto Naphtali, with their mattocks round about."

2 Chronicles 34:25: "Because they have forsaken me, and have burned incense unto other gods, that they might provoke me to anger with all the works of their hands; therefore my wrath shall be poured out upon this place, and shall not be quenched."

2 Chronicles 34:31: "And the king stood in his place, and made a covenant before the LORD, to walk after the LORD, and to keep his commandments, and his testimonies, and his statutes, with all his heart, and with all his soul, to perform the words of the covenant which are written in this book."

2 Chronicles 35:12: "And they removed the burnt offerings, that they might give according to the divisions of the families of the people, to offer unto the LORD, as it is written in the book of Moses. And so did they with the oxen."

2 Chronicles 35:13: "And they roasted the passover with fire according to the ordinance: but the other holy offerings sod they in pots, and in caldrons, and in pans, and divided them speedily among all the people."

2 Chronicles 35:21: "But he sent ambassadors to him, saying, What have I to do with thee, thou king of Judah? I come not against thee this day, but against the house wherewith I have war: for God commanded me to make haste: forbear thee from meddling with God, who is with me, that he destroy thee not."

2 Chronicles 35:22: "Nevertheless Josiah would not turn his face from him, but disguised himself, that he might fight with him, and hearkened not unto the words of Necho from the mouth of God, and came to fight in the valley of Megiddo."

2 Chronicles 36:10: "And when the year was expired, king Nebuchadnezzar sent, and brought him to Babylon, with the goodly vessels of the house of the LORD, and made Zedekiah his brother king over Judah and Jerusalem."

2 Chronicles 36:17: "Therefore he brought upon them the king of the Chaldees, who slew their young men with the sword in the house of their sanctuary, and had no compassion upon young man or maiden, old man, or him that stooped for age: he gave them all into his hand."

2 Chronicles 36:19: "And they burnt the house of God, and brake down the wall of Jerusalem, and burnt all the palaces thereof with fire, and destroyed all the goodly vessels thereof."

2 Chronicles 36:23: "Thus saith Cyrus king of Persia, All the kingdoms of the earth hath the LORD God of heaven given me; and he hath charged me to build him an house in Jerusalem, which is in Judah. Who is there among you of all his people? The LORD his God be with him, and let him go up."

Ezra 1:3: "Who is there among you of all his people? his God be with him, and let him go up to Jerusalem, which is in Judah, and build the house of the LORD God of Israel, (he is the God,) which is in Jerusalem."

Ezra 1:4: "And whosoever remaineth in any place where he sojourneth, let the men of his place help him with silver, and with gold, and with goods, and with beasts, beside the freewill offering for the house of God that is in Jerusalem."

Ezra 1:5: "Then rose up the chief of the fathers of Judah and Benjamin, and the priests, and the

Levites, with all them whose spirit God had raised, to go up to build the house of the LORD which is in Jerusalem."

Ezra 1:6: "And all they that were about them strengthened their hands with vessels of silver, with gold, with goods, and with beasts, and with precious things, beside all that was willingly offered."

Ezra 1:11: "All the vessels of gold and of silver were five thousand and four hundred. All these did Sheshbazzar bring up with them of the captivity that were brought up from Babylon unto Jerusalem."

Ezra 2:2: "Which came with Zerubbabel: Jeshua, Nehemiah, Seraiah, Reelaiah, Mordecai, Bilshan, Mizpar, Bigvai, Rehum, Baanah. The number of the men of the people of Israel:"

Ezra 2:63: "And the Tirshatha said unto them, that they should not eat of the most holy things, till there stood up a priest with Urim and with Thummim."

Ezra 3:9: "Then stood Jeshua with his sons and his brethren, Kadmiel and his sons, the sons of Judah, together, to set forward the workmen in the house of God: the sons of Henadad, with their sons and their brethren the Levites."

Ezra 3:10: "And when the builders laid the foundation of the temple of the LORD, they set the priests in their apparel with trumpets, and the Levites the sons of Asaph with cymbals, to praise the LORD, after the ordinance of David king of Israel."

Ezra 3:11: "And they sang together by course in praising and giving thanks unto the LORD; because he is good, for his mercy endureth for ever toward Israel. And all the people shouted with a great shout, when they praised the LORD, because the foundation of the house of the LORD was laid."

Ezra 3:12: "But many of the priests and Levites and chief of the fathers, who were ancient men, that had seen the first house, when the foundation of this house was laid before their eyes, wept with a loud voice; and many shouted aloud for joy:"

Ezra 3:13: "So that the people could not discern the noise of the shout of joy from the noise of the weeping of the people: for the people shouted with a loud shout, and the noise was heard afar off."

Ezra 4:2: "Then they came to Zerubbabel, and to the chief of the fathers, and said unto them, Let us build with you: for we seek your God, as ye do; and we do sacrifice unto him since the days of Esarhaddon king of Assur, which brought us up hither."

Ezra 4:3: "But Zerubbabel, and Jeshua, and the rest of the chief of the fathers of Israel, said unto them, Ye have nothing to do with us to build an house unto our God; but we ourselves together will build unto the LORD God of Israel, as king Cyrus the king of Persia hath commanded us."

Ezra 5:2: "Then rose up Zerubbabel the son of Shealtiel, and Jeshua the son of Jozadak, and began to build the house of God which is at Jerusalem: and with them were the prophets of God helping them."

Ezra 5:8: "Be it known unto the king, that we went into the province of Judea, to the house of the great God, which is builded with great stones, and timber is laid in the walls, and this work goeth fast on, and prospereth in their hands."

Ezra 6:4: "With three rows of great stones, and a row of new timber: and let the expenses be given out of the king's house:"

Ezra 6:12: "And the God that hath caused his name to dwell there destroy all kings and people, that shall put to their hand to alter and to destroy this house of God which is at Jerusalem. I Darius have made a decree; let it be done with speed."

Ezra 6:16: "And the children of Israel, the priests, and the Levites, and the rest of the children of the captivity, kept the dedication of this house of God with joy."

Ezra 6:22: "And kept the feast of unleavened bread seven days with joy: for the LORD had made them joyful, and turned the heart of the king of Assyria unto them, to strengthen their hands in the work of the house of God, the God of Israel."

Ezra 7:13: "I make a decree, that all they of the people of Israel, and of his priests and Levites, in my realm, which are minded of their own freewill to go up to Jerusalem, go with thee."

Ezra 7:16: "And all the silver and gold that thou canst find in all the province of Babylon, with the freewill offering of the people, and of the priests, offering willingly for the house of their God which is in Jerusalem:"

Ezra 7:17: "That thou mayest buy speedily with this money bullocks, rams, lambs, with their meat offerings and their drink offerings, and offer them upon the altar of the house of your God which is in Jerusalem."

Ezra 7:18: "And whatsoever shall seem good to thee, and to thy brethren, to do with the rest of the silver and the gold, that do after the will of your God."

Ezra 7:28: "And hath extended mercy unto me before the king, and his counsellors, and before all the king's mighty princes. And I was strengthened as the hand of the LORD my God was upon me, and I gathered together out of Israel chief men to go up with me."

Ezra 8:1: "These are now the chief of their fathers, and this is the genealogy of them that went up with me from Babylon, in the reign of Artaxerxes the king."

Ezra 8:3: "Of the sons of Shechaniah, of the sons of Pharosh; Zechariah: and with him were reckoned by genealogy of the males an hundred and fifty."

Ezra 8:4: "Of the sons of Pahathmoab; Elihoenai the son of Zerariah, and with him two hundred males."

Ezra 8:5: "Of the sons of Shechaniah; the son of Jahaziel, and with him three hundred males."

Ezra 8:6: "Of the sons also of Adin; Ebed the son of Jonathan, and with him fifty males."

Ezra 8:7: "And of the sons of Elam; Jeshaiah the son of Athaliah, and with him seventy males."

Ezra 8:8: "And of the sons of Shephatiah; Zebadiah the son of Michael, and with him fourscore males."

Ezra 8:9: "Of the sons of Joab; Obadiah the son of Jehiel, and with him two hundred and eighteen males."

Ezra 8:10: "And of the sons of Shelomith; the son of Josiphiah, and with him an hundred and threescore males."

Ezra 8:11: "And of the sons of Bebai; Zechariah the son of Bebai, and with him twenty and eight males."

Ezra 8:12: "And of the sons of Azgad; Johanan the son of Hakkatan, and with him an hundred and ten males."

Ezra 8:13: "And of the last sons of Adonikam, whose names are these, Eliphelet, Jeiel, and Shemaiah, and with them threescore males."

Ezra 8:14: "Of the sons also of Bigvai; Uthai, and Zabbud, and with them seventy males."

Ezra 8:17: "And I sent them with commandment unto Iddo the chief at the place Casiphia, and I told them what they should say unto Iddo, and to his brethren the Nethinims, at the place Casiphia, that they should bring unto us ministers for the house of our God."

Ezra 8:18: "And by the good hand of our God upon us they brought us a man of understanding, of the sons of Mahli, the son of Levi, the son of Israel; and Sherebiah, with his sons and his brethren, eighteen;"

Ezra 8:19: "And Hashabiah, and with him Jeshaiah of the sons of Merari, his brethren and their sons, twenty;"

Ezra 8:24: "Then I separated twelve of the chief of the priests, Sherebiah, Hashabiah, and ten of their brethren with them,"

Ezra 8:33: "Now on the fourth day was the silver and the gold and the vessels weighed in the house of our God by the hand of Meremoth the son of Uriah the priest; and with him was Eleazar the son of Phinehas; and with them was Jozabad the son of Jeshua, and Noadiah the son of Binnui, Levites;"

Ezra 9:2: "For they have taken of their daughters for themselves, and for their sons: so that the holy seed have mingled themselves with the people of those lands: yea, the hand of the princes and rulers hath been chief in this trespass."



Ezra 9:11: "Which thou hast commanded by thy servants the prophets, saying, The land, unto which ye go to possess it, is an unclean land with the filthiness of the people of the lands, with their abominations, which have filled it from one end to another with their uncleanness."

Ezra 9:14: "Should we again break thy commandments, and join in affinity with the people of these abominations? wouldest not thou be angry with us till thou hadst consumed us, so that there should be no remnant nor escaping?"

Ezra 10:3: "Now therefore let us make a covenant with our God to put away all the wives, and such as are born of them, according to the counsel of my lord, and of those that tremble at the commandment of our God; and let it be done according to the law."

Ezra 10:4: "Arise; for this matter belongeth unto thee: we also will be with thee: be of good courage, and do it."

Ezra 10:12: "Then all the congregation answered and said with a loud voice, As thou hast said, so must we do."

Ezra 10:14: "Let now our rulers of all the congregation stand, and let all them which have taken strange wives in our cities come at appointed times, and with them the elders of every city, and the judges thereof, until the fierce wrath of our God for this matter be turned from us."

Ezra 10:16: "And the children of the captivity did so. And Ezra the priest, with certain chief of the fathers, after the house of their fathers, and all of them by their names, were separated, and sat down in the first day of the tenth month to examine the matter."

Ezra 10:17: "And they made an end with all the men that had taken strange wives by the first day of the first month."

Nehemiah 1:3: "And they said unto me, The remnant that are left of the captivity there in the province are in great affliction and reproach: the wall of Jerusalem also is broken down, and the gates thereof are burned with fire."

Nehemiah 2:3: "And said unto the king, Let the king live for ever: why should not my countenance be sad, when the city, the place of my fathers' sepulchres, lieth waste, and the gates thereof are consumed with fire?"

Nehemiah 2:9: "Then I came to the governors beyond the river, and gave them the king's letters. Now the king had sent captains of the army and horsemen with me."

Nehemiah 2:12: "And I arose in the night, I and some few men with me; neither told I any man what my God had put in my heart to do at Jerusalem: neither was there any beast with me, save the beast that I rode upon."

Nehemiah 2:13: "And I went out by night by the gate of the valley, even before the dragon well, and to the dung port, and viewed the walls of Jerusalem, which were broken down, and the gates thereof were consumed with fire."

Nehemiah 2:17: "Then said I unto them, Ye see the distress that we are in, how Jerusalem lieth waste, and the gates thereof are burned with fire: come, and let us build up the wall of Jerusalem, that we be no more a reproach."

Nehemiah 3:1: "Then Eliashib the high priest rose up with his brethren the priests, and they builded the sheep gate; they sanctified it, and set up the doors of it; even unto the tower of Meah they sanctified it, unto the tower of Hananeel."

Nehemiah 4:13: "Therefore set I in the lower places behind the wall, and on the higher places, I even set the people after their families with their swords, their spears, and their bows."

Nehemiah 4:17: "They which builded on the wall, and they that bare burdens, with those that laded, every one with one of his hands wrought in the work, and with the other hand held a weapon."

Nehemiah 4:22: "Likewise at the same time said I unto the people, Let every one with his servant lodge within Jerusalem, that in the night they may be a guard to us, and labour on the day."

Nehemiah 5:7: "Then I consulted with myself, and I rebuked the nobles, and the rulers, and said unto them, Ye exact usury, every one of his brother. And I set a great assembly against them."

Nehemiah 6:5: "Then sent Sanballat his servant unto me in like manner the fifth time with an open

letter in his hand;"

Nehemiah 7:7: "Who came with Zerubbabel, Jeshua, Nehemiah, Azariah, Raamiah, Nahamani, Mordecai, Bilshan, Mispereth, Bigvai, Nehum, Baanah. The number, I say, of the men of the people of Israel was this;"

Nehemiah 7:65: "And the Tirshatha said unto them, that they should not eat of the most holy things, till there stood up a priest with Urim and Thummim."

Nehemiah 8:2: "And Ezra the priest brought the law before the congregation both of men and women, and all that could hear with understanding, upon the first day of the seventh month."

Nehemiah 8:6: "And Ezra blessed the LORD, the great God. And all the people answered, Amen, Amen, with lifting up their hands: and they bowed their heads, and worshipped the LORD with their faces to the ground."

Nehemiah 9:1: "Now in the twenty and fourth day of this month the children of Israel were assembled with fasting, and with sackclothes, and earth upon them."

Nehemiah 9:4: "Then stood up upon the stairs, of the Levites, Jeshua, and Bani, Kadmiel, Shebaniah, Bunni, Sherebiah, Bani, and Chenani, and cried with a loud voice unto the LORD their God."

Nehemiah 9:6: "Thou, even thou, art LORD alone; thou hast made heaven, the heaven of heavens, with all their host, the earth, and all things that are therein, the seas, and all that is therein, and thou preservest them all; and the host of heaven worshippeth thee."

Nehemiah 9:8: "And foundest his heart faithful before thee, and madest a covenant with him to give the land of the Canaanites, the Hittites, the Amorites, and the Perizzites, and the Jebusites, and the Girgashites, to give it, I say, to his seed, and hast performed thy words; for thou art righteous:"

Nehemiah 9:13: "Thou camest down also upon mount Sinai, and spakest with them from heaven, and gavest them right judgments, and true laws, good statutes and commandments:"

Nehemiah 9:24: "So the children went in and possessed the land, and thou subduedst before them the inhabitants of the land, the Canaanites, and gavest them into their hands, with their kings, and the people of the land, that they might do with them as they would."

Nehemiah 10:32: "Also we made ordinances for us, to charge ourselves yearly with the third part of a shekel for the service of the house of our God;"

Nehemiah 10:38: "And the priest the son of Aaron shall be with the Levites, when the Levites take tithes: and the Levites shall bring up the tithe of the tithes unto the house of our God, to the chambers, into the treasure house."

Nehemiah 11:25: "And for the villages, with their fields, some of the children of Judah dwelt at Kirjatharba, and in the villages thereof, and at Dibon, and in the villages thereof, and at Jekabzeel, and in the villages thereof,"

Nehemiah 12:1: "Now these are the priests and the Levites that went up with Zerubbabel the son of Shealtiel, and Jeshua: Seraiah, Jeremiah, Ezra,"

Nehemiah 12:24: "And the chief of the Levites: Hashabiah, Sherebiah, and Jeshua the son of Kadmiel, with their brethren over against them, to praise and to give thanks, according to the commandment of David the man of God, ward over against ward."

Nehemiah 12:27: "And at the dedication of the wall of Jerusalem they sought the Levites out of all their places, to bring them to Jerusalem, to keep the dedication with gladness, both with thanksgivings, and with singing, with cymbals, psalteries, and with harps."

Nehemiah 12:35: "And certain of the priests' sons with trumpets; namely, Zechariah the son of Jonathan, the son of Shemaiah, the son of Mattaniah, the son of Michaiah, the son of Zaccur, the son of Asaph:"

Nehemiah 12:36: "And his brethren, Shemaiah, and Azarael, Milalai, Gilalai, Maai, Nethaneel, and Judah, Hanani, with the musical instruments of David the man of God, and Ezra the scribe before them."

Nehemiah 12:40: "So stood the two companies of them that gave thanks in the house of God, and I,

and the half of the rulers with me:"

Nehemiah 12:41: "And the priests; Eliakim, Maaseiah, Miniamin, Michaiah, Elioenai, Zechariah, and Hananiah, with trumpets;"

Nehemiah 12:42: "And Maaseiah, and Shemaiah, and Eleazar, and Uzzi, and Jehohanan, and Malchijah, and Elam, and Ezer. And the singers sang loud, with Jezrahiah their overseer."

Nehemiah 12:43: "Also that day they offered great sacrifices, and rejoiced: for God had made them rejoice with great joy: the wives also and the children rejoiced: so that the joy of Jerusalem was heard even afar off."

Nehemiah 13:2: "Because they met not the children of Israel with bread and with water, but hired Balaam against them, that he should curse them: howbeit our God turned the curse into a blessing."

Nehemiah 13:9: "Then I commanded, and they cleansed the chambers: and thither brought I again the vessels of the house of God, with the meat offering and the frankincense."

Nehemiah 13:11: "Then contended I with the rulers, and said, Why is the house of God forsaken? And I gathered them together, and set them in their place."

Nehemiah 13:17: "Then I contended with the nobles of Judah, and said unto them, What evil thing is this that ye do, and profane the sabbath day?"

Nehemiah 13:25: "And I contended with them, and cursed them, and smote certain of them, and plucked off their hair, and made them swear by God, saying, Ye shall not give your daughters unto their sons, nor take their daughters unto your sons, or for yourselves."

Esther 1:6: "Where were white, green, and blue, hangings, fastened with cords of fine linen and purple to silver rings and pillars of marble: the beds were of gold and silver, upon a pavement of red, and blue, and white, and black, marble."

Esther 1:10: "On the seventh day, when the heart of the king was merry with wine, he commanded Mehuman, Biztha, Harbona, Bigtha, and Abagtha, Zethar, and Carcas, the seven chamberlains that served in the presence of Ahasuerus the king,"

Esther 1:11: "To bring Vashti the queen before the king with the crown royal, to shew the people and the princes her beauty: for she was fair to look on."

Esther 2:6: "Who had been carried away from Jerusalem with the captivity which had been carried away with Jeconiah king of Judah, whom Nebuchadnezzar the king of Babylon had carried away."

Esther 2:9: "And the maiden pleased him, and she obtained kindness of him; and he speedily gave her her things for purification, with such things as belonged to her, and seven maidens, which were meet to be given her, out of the king's house: and he preferred her and her maids unto the best place of the house of the women."

Esther 2:12: "Now when every maid's turn was come to go in to king Ahasuerus, after that she had been twelve months, according to the manner of the women, (for so were the days of their purifications accomplished, to wit, six months with oil of myrrh, and six months with sweet odours, and with other things for the purifying of the women;)"

Esther 2:13: "Then thus came every maiden unto the king; whatsoever she desired was given her to go with her out of the house of the women unto the king's house."

Esther 2:20: "Esther had not yet shewed her kindred nor her people; as Mordecai had charged her: for Esther did the commandment of Mordecai, like as when she was brought up with him."

Esther 3:1: "After these things did king Ahasuerus promote Haman the son of Hammedatha the Agagite, and advanced him, and set his seat above all the princes that were with him."

Esther 3:11: "And the king said unto Haman, The silver is given to thee, the people also, to do with them as it seemeth good to thee."

Esther 3:12: "Then were the king's scribes called on the thirteenth day of the first month, and there was written according to all that Haman had commanded unto the king's lieutenants, and to the governors that were over every province, and to the rulers of every people of every province according to the writing thereof, and to every people after their language; in the name of king Ahasuerus was it written, and sealed with the king's ring."

Esther 4:1: "When Mordecai perceived all that was done, Mordecai rent his clothes, and put on sackcloth with ashes, and went out into the midst of the city, and cried with a loud and a bitter cry;"

Esther 4:2: "And came even before the king's gate: for none might enter into the king's gate clothed with sackcloth."

Esther 4:13: "Then Mordecai commanded to answer Esther, Think not with thyself that thou shalt escape in the king's house, more than all the Jews."

Esther 5:9: "Then went Haman forth that day joyful and with a glad heart: but when Haman saw Mordecai in the king's gate, that he stood not up, nor moved for him, he was full of indignation against Mordecai."

Esther 5:12: "Haman said moreover, Yea, Esther the queen did let no man come in with the king unto the banquet that she had prepared but myself; and to morrow am I invited unto her also with the king."

Esther 5:14: "Then said Zeresh his wife and all his friends unto him, Let a gallows be made of fifty cubits high, and to morrow speak thou unto the king that Mordecai may be hanged thereon: then go thou in merrily with the king unto the banquet. And the thing pleased Haman; and he caused the gallows to be made."

Esther 6:14: "And while they were yet talking with him, came the king's chamberlains, and hastened to bring Haman unto the banquet that Esther had prepared."

Esther 7:1: "So the king and Haman came to banquet with Esther the queen."

Esther 8:3: "And Esther spake yet again before the king, and fell down at his feet, and besought him with tears to put away the mischief of Haman the Agagite, and his device that he had devised against the Jews."

Esther 8:8: "Write ye also for the Jews, as it liketh you, in the king's name, and seal it with the king's ring: for the writing which is written in the king's name, and sealed with the king's ring, may no man reverse."

Esther 8:10: "And he wrote in the king Ahasuerus' name, and sealed it with the king's ring, and sent letters by posts on horseback, and riders on mules, camels, and young dromedaries:"

Esther 8:15: "And Mordecai went out from the presence of the king in royal apparel of blue and white, and with a great crown of gold, and with a garment of fine linen and purple: and the city of Shushan rejoiced and was glad."

Esther 9:5: "Thus the Jews smote all their enemies with the stroke of the sword, and slaughter, and destruction, and did what they would unto those that hated them."

Esther 9:29: "Then Esther the queen, the daughter of Abihail, and Mordecai the Jew, wrote with all authority, to confirm this second letter of Purim."

Esther 9:30: "And he sent the letters unto all the Jews, to the hundred twenty and seven provinces of the kingdom of Ahasuerus, with words of peace and truth,"

Job 1:4: "And his sons went and feasted in their houses, every one his day; and sent and called for their three sisters to eat and to drink with them."

Job 1:15: "And the Sabeans fell upon them, and took them away; yea, they have slain the servants with the edge of the sword; and I only am escaped alone to tell thee."

Job 1:17: "While he was yet speaking, there came also another, and said, The Chaldeans made out three bands, and fell upon the camels, and have carried them away, yea, and slain the servants with the edge of the sword; and I only am escaped alone to tell thee."

Job 2:7: "So went Satan forth from the presence of the LORD, and smote Job with sore boils from the sole of his foot unto his crown."

Job 2:10: "But he said unto her, Thou speakest as one of the foolish women speaketh. What? shall we receive good at the hand of God, and shall we not receive evil? In all this did not Job sin with his lips."

Job 2:11: "Now when Job's three friends heard of all this evil that was come upon him, they came every one from his own place; Eliphaz the Temanite, and Bildad the Shuhite, and Zophar the

Naamathite: for they had made an appointment together to come to mourn with him and to comfort him."

Job 2:13: "So they sat down with him upon the ground seven days and seven nights, and none spake a word unto him: for they saw that his grief was very great."

Job 3:14: "With kings and counsellors of the earth, which build desolate places for themselves;"

Job 3:15: "Or with princes that had gold, who filled their houses with silver:"

Job 4:2: "If we assay to commune with thee, wilt thou be grieved? but who can withhold himself from speaking?"

Job 4:18: "Behold, he put no trust in his servants; and his angels he charged with folly:"

Job 5:14: "They meet with darkness in the day time, and grope in the noonday as in the night."

Job 5:23: "For thou shalt be in league with the stones of the field: and the beasts of the field shall be at peace with thee."

Job 7:5: "My flesh is clothed with worms and clods of dust; my skin is broken, and become loathsome."

Job 7:14: "Then thou scarest me with dreams, and terrifiest me through visions:"

Job 8:21: "Till he fill thy mouth with laughing, and thy lips with rejoicing."

Job 8:22: "They that hate thee shall be clothed with shame; and the dwelling place of the wicked shall come to nought."

Job 9:2: "I know it is so of a truth: but how should man be just with God?"

Job 9:3: "If he will contend with him, he cannot answer him one of a thousand."

Job 9:14: "How much less shall I answer him, and choose out my words to reason with him?"

Job 9:17: "For he breaketh me with a tempest, and multiplieth my wounds without cause."

Job 9:18: "He will not suffer me to take my breath, but filleth me with bitterness."

Job 9:30: "If I wash myself with snow water, and make my hands never so clean;"

Job 9:35: "Then would I speak, and not fear him; but it is not so with me."

Job 10:2: "I will say unto God, Do not condemn me; shew me wherefore thou contendest with me."

Job 10:11: "Thou hast clothed me with skin and flesh, and hast fenced me with bones and sinews."

Job 10:13: "And these things hast thou hid in thine heart: I know that this is with thee."

Job 12:2: "No doubt but ye are the people, and wisdom shall die with you."

Job 12:5: "He that is ready to slip with his feet is as a lamp despised in the thought of him that is at ease."

Job 12:12: "With the ancient is wisdom; and in length of days understanding."

Job 12:13: "With him is wisdom and strength, he hath counsel and understanding."

Job 12:16: "With him is strength and wisdom: the deceived and the deceiver are his."

Job 12:18: "He looseth the bond of kings, and girdeth their loins with a girdle."

Job 13:3: "Surely I would speak to the Almighty, and I desire to reason with God."

Job 13:17: "Hear diligently my speech, and my declaration with your ears."

Job 13:19: "Who is he that will plead with me? for now, if I hold my tongue, I shall give up the ghost."

Job 14:3: "And doth thou open thine eyes upon such an one, and bringest me into judgment with thee?"

Job 14:5: "Seeing his days are determined, the number of his months are with thee, thou hast appointed his bounds that he cannot pass;"

Job 15:2: "Should a wise man utter vain knowledge, and fill his belly with the east wind?"

Job 15:3: "Should he reason with unprofitable talk? or with speeches wherewith he can do no good?"

Job 15:10: "With us are both the grayheaded and very aged men, much elder than thy father."

Job 15:11: "Are the consolations of God small with thee? is there any secret thing with thee?"

Job 15:20: "The wicked man travaileth with pain all his days, and the number of years is hidden to the oppressor."

Job 15:27: "Because he covereth his face with his fatness, and maketh collops of fat on his flanks."

Job 16:5: "But I would strengthen you with my mouth, and the moving of my lips should assuage your grief."

Job 16:8: "And thou hast filled me with wrinkles, which is a witness against me: and my leanness rising up in me beareth witness to my face."

Job 16:9: "He teareth me in his wrath, who hateth me: he gnasheth upon me with his teeth; mine enemy sharpeneth his eyes upon me."

Job 16:10: "They have gaped upon me with their mouth; they have smitten me upon the cheek reproachfully; they have gathered themselves together against me."

Job 16:14: "He breaketh me with breach upon breach, he runneth upon me like a giant."

Job 16:16: "My face is foul with weeping, and on my eyelids is the shadow of death;"

Job 16:21: "O that one might plead for a man with God, as a man pleadeth for his neighbour!"

Job 17:2: "Are there not mockers with me? and doth not mine eye continue in their provocation?"

Job 17:3: "Lay down now, put me in a surety with thee; who is he that will strike hands with me?"

Job 18:6: "The light shall be dark in his tabernacle, and his candle shall be put out with him."

Job 19:2: "How long will ye vex my soul, and break me in pieces with words?"

Job 19:4: "And be it indeed that I have erred, mine error remaineth with myself."

Job 19:6: "Know now that God hath overthrown me, and hath compassed me with his net."

Job 19:16: "I called my servant, and he gave me no answer; I intreated him with my mouth."

Job 19:20: "My bone cleaveth to my skin and to my flesh, and I am escaped with the skin of my teeth."

Job 19:22: "Why do ye persecute me as God, and are not satisfied with my flesh?"

Job 19:24: "That they were graven with an iron pen and lead in the rock for ever!"

Job 20:11: "His bones are full of the sin of his youth, which shall lie down with him in the dust."

Job 20:26: "All darkness shall be hid in his secret places: a fire not blown shall consume him; it shall go ill with him that is left in his tabernacle."

Job 21:8: "Their seed is established in their sight with them, and their offspring before their eyes."

Job 21:24: "His breasts are full of milk, and his bones are moistened with marrow."

Job 21:25: "And another dieth in the bitterness of his soul, and never eateth with pleasure."

Job 22:4: "Will he reprove thee for fear of thee? will he enter with thee into judgment?"

Job 22:16: "Which were cut down out of time, whose foundation was overflown with a flood:"

Job 22:18: "Yet he filled their houses with good things: but the counsel of the wicked is far from me."

Job 22:21: "Acquaint now thyself with him, and be at peace: thereby good shall come unto thee."

Job 23:4: "I would order my cause before him, and fill my mouth with arguments."

Job 23:6: "Will he plead against me with his great power? No; but he would put strength in me."

Job 23:7: "There the righteous might dispute with him; so should I be delivered for ever from my judge."

Job 23:14: "For he performeth the thing that is appointed for me: and many such things are with him."

Job 24:8: "They are wet with the showers of the mountains, and embrace the rock for want of a shelter."

Job 24:14: "The murderer rising with the light killeth the poor and needy, and in the night is as a thief."

Job 24:22: "He draweth also the mighty with his power: he riseth up, and no man is sure of life."

Job 25:2: "Dominion and fear are with him, he maketh peace in his high places."

Job 25:4: "How then can man be justified with God? or how can he be clean that is born of a woman?"

Job 26:10: "He hath compassed the waters with bounds, until the day and night come to an end."

Job 26:12: "He divideth the sea with his power, and by his understanding he smiteth through the

proud."

Job 27:11: "I will teach you by the hand of God: that which is with the Almighty will I not conceal."

Job 27:13: "This is the portion of a wicked man with God, and the heritage of oppressors, which they shall receive of the Almighty."

Job 27:14: "If his children be multiplied, it is for the sword: and his offspring shall not be satisfied with bread."

Job 28:14: "The depth saith, It is not in me: and the sea saith, It is not with me."

Job 28:16: "It cannot be valued with the gold of Ophir, with the precious onyx, or the sapphire."

Job 28:19: "The topaz of Ethiopia shall not equal it, neither shall it be valued with pure gold."

Job 28:22: "Destruction and death say, We have heard the fame thereof with our ears."

Job 29:5: "When the Almighty was yet with me, when my children were about me;"

Job 29:6: "When I washed my steps with butter, and the rock poured me out rivers of oil;"

Job 30:1: "But now they that are younger than I have me in derision, whose fathers I would have disdained to have set with the dogs of my flock."

Job 30:21: "Thou art become cruel to me: with thy strong hand thou opposest thyself against me."

Job 30:30: "My skin is black upon me, and my bones are burned with heat."

Job 31:1: "I made a covenant with mine eyes; why then should I think upon a maid?"

Job 31:5: "If I have walked with vanity, or if my foot hath hastened to deceit;"

Job 31:13: "If I did despise the cause of my manservant or of my maidservant, when they contended with me;"

Job 31:18: "(For from my youth he was brought up with me, as with a father, and I have guided her from my mother's womb;)"

Job 31:20: "If his loins have not blessed me, and if he were not warmed with the fleece of my sheep;"

Job 32:14: "Now he hath not directed his words against me: neither will I answer him with your speeches."

Job 33:19: "He is chastened also with pain upon his bed, and the multitude of his bones with strong pain:"

Job 33:23: "If there be a messenger with him, an interpreter, one among a thousand, to shew unto man his uprightness:"

Job 33:26: "He shall pray unto God, and he will be favourable unto him: and he shall see his face with joy: for he will render unto man his righteousness."

Job 33:29: "Lo, all these things worketh God oftentimes with man,"

Job 33:30: "To bring back his soul from the pit, to be enlightened with the light of the living."

Job 34:8: "Which goeth in company with the workers of iniquity, and walketh with wicked men."

Job 34:9: "For he hath said, It profiteth a man nothing that he should delight himself with God."

Job 34:23: "For he will not lay upon man more than right; that he should enter into judgment with God."

Job 35:4: "I will answer thee, and thy companions with thee."

Job 36:4: "For truly my words shall not be false: he that is perfect in knowledge is with thee."

Job 36:7: "He withdraweth not his eyes from the righteous: but with kings are they on the throne; yea, he doth establish them for ever, and they are exalted."

Job 36:18: "Because there is wrath, beware lest he take thee away with his stroke: then a great ransom cannot deliver thee."

Job 36:32: "With clouds he covereth the light; and commandeth it not to shine by the cloud that cometh betwixt."

Job 37:4: "After it a voice roareth: he thundereth with the voice of his excellency; and he will not stay them when his voice is heard."

Job 37:5: "God thundereth marvellously with his voice; great things doeth he, which we cannot

comprehend."

Job 37:18: "Hast thou with him spread out the sky, which is strong, and as a molten looking glass?"

Job 37:22: "Fair weather cometh out of the north: with God is terrible majesty."

Job 38:8: "Or who shut up the sea with doors, when it brake forth, as if it had issued out of the womb?"

Job 38:30: "The waters are hid as with a stone, and the face of the deep is frozen."

Job 38:32: "Canst thou bring forth Mazzaroth in his season? or canst thou guide Arcturus with his sons?"

Job 39:4: "Their young ones are in good liking, they grow up with corn; they go forth, and return not unto them."

Job 39:10: "Canst thou bind the unicorn with his band in the furrow? or will he harrow the valleys after thee?"

Job 39:19: "Hast thou given the horse strength? hast thou clothed his neck with thunder?"

Job 39:24: "He swalloweth the ground with fierceness and rage: neither believeth he that it is the sound of the trumpet."

Job 40:2: "Shall he that contendeth with the Almighty instruct him? he that reproveth God, let him answer it."

Job 40:9: "Hast thou an arm like God? or canst thou thunder with a voice like him?"

Job 40:10: "Deck thyself now with majesty and excellency; and array thyself with glory and beauty."

Job 40:15: "Behold now behemoth, which I made with thee; he eateth grass as an ox."

Job 40:22: "The shady trees cover him with their shadow; the willows of the brook compass him about."

Job 40:24: "He taketh it with his eyes: his nose pierceth through snares."

Job 41:1: "Canst thou draw out leviathan with an hook? or his tongue with a cord which thou lettest down?"

Job 41:2: "Canst thou put an hook into his nose? or bore his jaw through with a thorn?"

Job 41:4: "Will he make a covenant with thee? wilt thou take him for a servant for ever?"

Job 41:5: "Wilt thou play with him as with a bird? or wilt thou bind him for thy maidens?"

Job 41:7: "Canst thou fill his skin with barbed irons? or his head with fish spears?"

Job 41:13: "Who can discover the face of his garment? or who can come to him with his double bridle?"

Job 41:15: "His scales are his pride, shut up together as with a close seal."

Job 41:28: "The arrow cannot make him flee: slingstones are turned with him into stubble."

Job 42:8: "Therefore take unto you now seven bullocks and seven rams, and go to my servant Job, and offer up for yourselves a burnt offering; and my servant Job shall pray for you: for him will I accept: lest I deal with you after your folly, in that ye have not spoken of me the thing which is right, like my servant Job."

Job 42:11: "Then came there unto him all his brethren, and all his sisters, and all they that had been of his acquaintance before, and did eat bread with him in his house: and they bemoaned him, and comforted him over all the evil that the LORD had brought upon him: every man also gave him a piece of money, and every one an earring of gold."

Psalms 2:9: "Thou shalt break them with a rod of iron; thou shalt dash them in pieces like a potter's vessel."

Psalms 2:11: "Serve the LORD with fear, and rejoice with trembling."

Psalms 3:4: "I cried unto the LORD with my voice, and he heard me out of his holy hill. Selah."

Psalms 4:4: "Stand in awe, and sin not: commune with your own heart upon your bed, and be still. Selah."

Psalms 5:4: "For thou art not a God that hath pleasure in wickedness: neither shall evil dwell with thee."



Psalms 5:9: "For there is no faithfulness in their mouth; their inward part is very wickedness; their throat is an open sepulchre; they flatter with their tongue."

Psalms 5:12: "For thou, LORD, wilt bless the righteous; with favour wilt thou compass him as with a shield."

Psalms 6:6: "I am weary with my groaning; all the night make I my bed to swim; I water my couch with my tears."

Psalms 7:4: "If I have rewarded evil unto him that was at peace with me; (yea, I have delivered him that without cause is mine enemy:)"

Psalms 7:11: "God judgeth the righteous, and God is angry with the wicked every day."

Psalms 7:14: "Behold, he travaileth with iniquity, and hath conceived mischief, and brought forth falsehood."

Psalms 8:5: "For thou hast made him a little lower than the angels, and hast crowned him with glory and honour."

Psalms 9:1: "I will praise thee, O LORD, with my whole heart; I will shew forth all thy marvellous works."

Psalms 9:6: "O thou enemy, destructions are come to a perpetual end: and thou hast destroyed cities; their memorial is perished with them."

Psalms 10:14: "Thou hast seen it; for thou beholdest mischief and spite, to requite it with thy hand: the poor committeth himself unto thee; thou art the helper of the fatherless."

Psalms 12:2: "They speak vanity every one with his neighbour: with flattering lips and with a double heart do they speak."

Psalms 12:4: "Who have said, With our tongue will we prevail; our lips are our own: who is lord over us?"

Psalms 13:6: "I will sing unto the LORD, because he hath dealt bountifully with me."

Psalms 15:3: "He that backbiteth not with his tongue, nor doeth evil to his neighbour, nor taketh up a reproach against his neighbour."

Psalms 17:10: "They are inclosed in their own fat: with their mouth they speak proudly."

Psalms 17:14: "From men which are thy hand, O LORD, from men of the world, which have their portion in this life, and whose belly thou fillest with thy hid treasure: they are full of children, and leave the rest of their substance to their babes."

Psalms 17:15: "As for me, I will behold thy face in righteousness: I shall be satisfied, when I awake, with thy likeness."

Psalms 18:25: "With the merciful thou wilt shew thyself merciful; with an upright man thou wilt shew thyself upright;"

Psalms 18:26: "With the pure thou wilt shew thyself pure; and with the froward thou wilt shew thyself froward."

Psalms 18:32: "It is God that girdeth me with strength, and maketh my way perfect."

Psalms 18:39: "For thou hast girded me with strength unto the battle: thou hast subdued under me those that rose up against me."

Psalms 20:6: "Now know I that the LORD saveth his anointed; he will hear him from his holy heaven with the saving strength of his right hand."

Psalms 21:3: "For thou preventest him with the blessings of goodness: thou settest a crown of pure gold on his head."

Psalms 21:6: "For thou hast made him most blessed for ever: thou hast made him exceeding glad with thy countenance."

Psalms 22:13: "They gaped upon me with their mouths, as a ravening and a roaring lion."

Psalms 23:4: "Yea, though I walk through the valley of the shadow of death, I will fear no evil: for thou art with me; thy rod and thy staff they comfort me."

Psalms 23:5: "Thou preparest a table before me in the presence of mine enemies: thou anointest my head with oil; my cup runneth over."

Psalms 25:14: "The secret of the LORD is with them that fear him; and he will shew them his covenant."

Psalms 25:19: "Consider mine enemies; for they are many; and they hate me with cruel hatred."

Psalms 26:4: "I have not sat with vain persons, neither will I go in with dissemblers."

Psalms 26:5: "I have hated the congregation of evil doers; and will not sit with the wicked."

Psalms 26:7: "That I may publish with the voice of thanksgiving, and tell of all thy wondrous works."

Psalms 26:9: "Gather not my soul with sinners, nor my life with bloody men:"

Psalms 27:7: "Hear, O LORD, when I cry with my voice: have mercy also upon me, and answer me."

Psalms 28:3: "Draw me not away with the wicked, and with the workers of iniquity, which speak peace to their neighbours, but mischief is in their hearts."

Psalms 28:7: "The LORD is my strength and my shield; my heart trusted in him, and I am helped: therefore my heart greatly rejoiceth; and with my song will I praise him."

Psalms 29:11: "The LORD will give strength unto his people; the LORD will bless his people with peace."

Psalms 30:11: "Thou hast turned for me my mourning into dancing: thou hast put off my sackcloth, and girded me with gladness;"

Psalms 31:9: "Have mercy upon me, O LORD, for I am in trouble: mine eye is consumed with grief, yea, my soul and my belly."

Psalms 31:10: "For my life is spent with grief, and my years with sighing: my strength faileth because of mine iniquity, and my bones are consumed."

Psalms 32:7: "Thou art my hiding place; thou shalt preserve me from trouble; thou shalt compass me about with songs of deliverance. Selah."

Psalms 32:8: "I will instruct thee and teach thee in the way which thou shalt go: I will guide thee with mine eye."

Psalms 32:9: "Be ye not as the horse, or as the mule, which have no understanding: whose mouth must be held in with bit and bridle, lest they come near unto thee."

Psalms 33:2: "Praise the LORD with harp: sing unto him with the psaltery and an instrument of ten strings."

Psalms 33:3: "Sing unto him a new song; play skilfully with a loud noise."

Psalms 34:3: "O magnify the LORD with me, and let us exalt his name together."

Psalms 35:1: "Plead my cause, O LORD, with them that strive with me: fight against them that fight against me."

Psalms 35:13: "But as for me, when they were sick, my clothing was sackcloth: I humbled my soul with fasting; and my prayer returned into mine own bosom."

Psalms 35:16: "With hypocritical mockers in feasts, they gnashed upon me with their teeth."

Psalms 35:19: "Let not them that are mine enemies wrongfully rejoice over me: neither let them wink with the eye that hate me without a cause."

Psalms 35:26: "Let them be ashamed and brought to confusion together that rejoice at mine hurt: let them be clothed with shame and dishonour that magnify themselves against me."

Psalms 36:8: "They shall be abundantly satisfied with the fatness of thy house; and thou shalt make them drink of the river of thy pleasures."

Psalms 36:9: "For with thee is the fountain of life: in thy light shall we see light."

Psalms 37:12: "The wicked plotteth against the just, and gnasheth upon him with his teeth."

Psalms 37:24: "Though he fall, he shall not be utterly cast down: for the LORD upholdeth him with his hand."

Psalms 38:7: "For my loins are filled with a loathsome disease: and there is no soundness in my flesh."

Psalms 39:1: "I said, I will take heed to my ways, that I sin not with my tongue: I will keep my

mouth with a bridle, while the wicked is before me."

Psalms 39:2: "I was dumb with silence, I held my peace, even from good; and my sorrow was stirred."

Psalms 39:3: "My heart was hot within me, while I was musing the fire burned: then spake I with my tongue,"

Psalms 39:11: "When thou with rebukes dost correct man for iniquity, thou makest his beauty to consume away like a moth: surely every man is vanity. Selah."

Psalms 39:12: "Hear my prayer, O LORD, and give ear unto my cry; hold not thy peace at my tears: for I am a stranger with thee, and a sojourner, as all my fathers were."

Psalms 42:4: "When I remember these things, I pour out my soul in me: for I had gone with the multitude, I went with them to the house of God, with the voice of joy and praise, with a multitude that kept holyday."

Psalms 42:8: "Yet the LORD will command his lovingkindness in the day time, and in the night his song shall be with me, and my prayer unto the God of my life."

Psalms 42:10: "As with a sword in my bones, mine enemies reproach me; while they say daily unto me, Where is thy God?"

Psalms 44:1: "We have heard with our ears, O God, our fathers have told us, what work thou didst in their days, in the times of old."

Psalms 44:2: "How thou didst drive out the heathen with thy hand, and plantedst them; how thou didst afflict the people, and cast them out."

Psalms 44:9: "But thou hast cast off, and put us to shame; and goest not forth with our armies."

Psalms 44:19: "Though thou hast sore broken us in the place of dragons, and covered us with the shadow of death."

Psalms 45:3: "Gird thy sword upon thy thigh, O most mighty, with thy glory and thy majesty."

Psalms 45:7: "Thou lovest righteousness, and hatest wickedness: therefore God, thy God, hath anointed thee with the oil of gladness above thy fellows."

Psalms 45:12: "And the daughter of Tyre shall be there with a gift; even the rich among the people shall intreat thy favour."

Psalms 45:15: "With gladness and rejoicing shall they be brought: they shall enter into the king's palace."

Psalms 46:3: "Though the waters thereof roar and be troubled, though the mountains shake with the swelling thereof. Selah."

Psalms 46:7: "The LORD of hosts is with us; the God of Jacob is our refuge. Selah."

Psalms 46:11: "The LORD of hosts is with us; the God of Jacob is our refuge. Selah."

Psalms 47:1: "O clap your hands, all ye people; shout unto God with the voice of triumph."

Psalms 47:5: "God is gone up with a shout, the LORD with the sound of a trumpet."

Psalms 47:7: "For God is the King of all the earth: sing ye praises with understanding."

Psalms 48:7: "Thou breakest the ships of Tarshish with an east wind."

Psalms 50:5: "Gather my saints together unto me; those that have made a covenant with me by sacrifice."

Psalms 50:18: "When thou sawest a thief, then thou consentedst with him, and hast been partaker with adulterers."

Psalms 51:7: "Purge me with hyssop, and I shall be clean: wash me, and I shall be whiter than snow."

Psalms 51:12: "Restore unto me the joy of thy salvation; and uphold me with thy free spirit."

Psalms 51:19: "Then shalt thou be pleased with the sacrifices of righteousness, with burnt offering and whole burnt offering: then shall they offer bullocks upon thine altar."

Psalms 54:4: "Behold, God is mine helper: the Lord is with them that uphold my soul."

Psalms 55:18: "He hath delivered my soul in peace from the battle that was against me: for there were many with me."

Psalms 55:20: "He hath put forth his hands against such as be at peace with him: he hath broken his covenant."

Psalms 58:9: "Before your pots can feel the thorns, he shall take them away as with a whirlwind, both living, and in his wrath."

Psalms 59:7: "Behold, they belch out with their mouth: swords are in their lips: for who, say they, doth hear?"

Psalms 60:5: "That thy beloved may be delivered; save with thy right hand, and hear me."

Psalms 60:10: "Wilt not thou, O God, which hadst cast us off? and thou, O God, which didst not go out with our armies?"

Psalms 62:4: "They only consult to cast him down from his excellency: they delight in lies: they bless with their mouth, but they curse inwardly. Selah."

Psalms 63:5: "My soul shall be satisfied as with marrow and fatness; and my mouth shall praise thee with joyful lips:"

Psalms 64:7: "But God shall shoot at them with an arrow; suddenly shall they be wounded."

Psalms 65:4: "Blessed is the man whom thou chooseth, and causeth to approach unto thee, that he may dwell in thy courts: we shall be satisfied with the goodness of thy house, even of thy holy temple."

Psalms 65:6: "Which by his strength setteth fast the mountains; being girded with power:"

Psalms 65:9: "Thou visitest the earth, and waterest it: thou greatly enrichest it with the river of God, which is full of water: thou preparest them corn, when thou hast so provided for it."

Psalms 65:10: "Thou waterest the ridges thereof abundantly: thou settlest the furrows thereof: thou makest it soft with showers: thou blessest the springing thereof."

Psalms 65:11: "Thou crownest the year with thy goodness; and thy paths drop fatness."

Psalms 65:13: "The pastures are clothed with flocks; the valleys also are covered over with corn; they shout for joy, they also sing."

Psalms 66:13: "I will go into thy house with burnt offerings: I will pay thee my vows,"

Psalms 66:15: "I will offer unto thee burnt sacrifices of fatlings, with the incense of rams; I will offer bullocks with goats. Selah."

Psalms 66:17: "I cried unto him with my mouth, and he was extolled with my tongue."

Psalms 68:6: "God setteth the solitary in families: he bringeth out those which are bound with chains: but the rebellious dwell in a dry land."

Psalms 68:13: "Though ye have lien among the pots, yet shall ye be as the wings of a dove covered with silver, and her feathers with yellow gold."

Psalms 68:19: "Blessed be the Lord, who daily loadeth us with benefits, even the God of our salvation. Selah."

Psalms 68:25: "The singers went before, the players on instruments followed after; among them were the damsels playing with timbrels."

Psalms 68:27: "There is little Benjamin with their ruler, the princes of Judah and their council, the princes of Zebulun, and the princes of Naphtali."

Psalms 68:30: "Rebuke the company of spearmen, the multitude of the bulls, with the calves of the people, till every one submit himself with pieces of silver: scatter thou the people that delight in war."

Psalms 69:10: "When I wept, and chastened my soul with fasting, that was to my reproach."

Psalms 69:28: "Let them be blotted out of the book of the living, and not be written with the righteous."

Psalms 69:30: "I will praise the name of God with a song, and will magnify him with thanksgiving."

Psalms 71:8: "Let my mouth be filled with thy praise and with thy honour all the day."

Psalms 71:13: "Let them be confounded and consumed that are adversaries to my soul; let them be covered with reproach and dishonour that seek my hurt."

Psalms 71:22: "I will also praise thee with the psaltery, even thy truth, O my God: unto thee will I

sing with the harp, O thou Holy One of Israel."

Psalms 72:2: "He shall judge thy people with righteousness, and thy poor with judgment."

Psalms 72:19: "And blessed be his glorious name for ever: and let the whole earth be filled with his glory; Amen, and Amen."

Psalms 73:7: "Their eyes stand out with fatness: they have more than heart could wish."

Psalms 73:19: "How are they brought into desolation, as in a moment! they are utterly consumed with terrors."

Psalms 73:23: "Nevertheless I am continually with thee: thou hast holden me by my right hand."

Psalms 73:24: "Thou shalt guide me with thy counsel, and afterward receive me to glory."

Psalms 74:6: "But now they break down the carved work thereof at once with axes and hammers."

Psalms 75:5: "Lift not up your horn on high: speak not with a stiff neck."

Psalms 77:1: "I cried unto God with my voice, even unto God with my voice; and he gave ear unto me."

Psalms 77:6: "I call to remembrance my song in the night: I commune with mine own heart: and my spirit made diligent search."

Psalms 77:15: "Thou hast with thine arm redeemed thy people, the sons of Jacob and Joseph. Selah."

Psalms 78:8: "And might not be as their fathers, a stubborn and rebellious generation; a generation that set not their heart aright, and whose spirit was not stedfast with God."

Psalms 78:14: "In the daytime also he led them with a cloud, and all the night with a light of fire."

Psalms 78:36: "Nevertheless they did flatter him with their mouth, and they lied unto him with their tongues."

Psalms 78:37: "For their heart was not right with him, neither were they stedfast in his covenant."

Psalms 78:47: "He destroyed their vines with hail, and their sycomore trees with frost."

Psalms 78:58: "For they provoked him to anger with their high places, and moved him to jealousy with their graven images."

Psalms 78:62: "He gave his people over also unto the sword; and was wroth with his inheritance."

Psalms 78:71: "From following the ewes great with young he brought him to feed Jacob his people, and Israel his inheritance."

Psalms 80:5: "Thou feedest them with the bread of tears; and givest them tears to drink in great measure."

Psalms 80:10: "The hills were covered with the shadow of it, and the boughs thereof were like the goodly cedars."

Psalms 80:16: "It is burned with fire, it is cut down: they perish at the rebuke of thy countenance."

Psalms 81:2: "Take a psalm, and bring hither the timbrel, the pleasant harp with the psaltery."

Psalms 81:16: "He should have fed them also with the finest of the wheat: and with honey out of the rock should I have satisfied thee."

Psalms 83:5: "For they have consulted together with one consent: they are confederate against thee:"

Psalms 83:7: "Geba, and Ammon, and Amalek; the Philistines with the inhabitants of Tyre;"

Psalms 83:8: "Assur also is joined with them: they have holpen the children of Lot. Selah."

Psalms 83:15: "So persecute them with thy tempest, and make them afraid with thy storm."

Psalms 83:16: "Fill their faces with shame; that they may seek thy name, O LORD."

Psalms 85:5: "Wilt thou be angry with us for ever? wilt thou draw out thine anger to all generations?"

Psalms 86:12: "I will praise thee, O Lord my God, with all my heart: and I will glorify thy name for evermore."

Psalms 87:4: "I will make mention of Rahab and Babylon to them that know me: behold Philistia, and Tyre, with Ethiopia; this man was born there."

Psalms 88:4: "I am counted with them that go down into the pit: I am as a man that hath no

strength:"

Psalms 88:7: "Thy wrath lieth hard upon me, and thou hast afflicted me with all thy waves. Selah."

Psalms 89:1: "I will sing of the mercies of the LORD for ever: with my mouth will I make known thy faithfulness to all generations."

Psalms 89:3: "I have made a covenant with my chosen, I have sworn unto David my servant,"

Psalms 89:10: "Thou hast broken Rahab in pieces, as one that is slain; thou hast scattered thine enemies with thy strong arm."

Psalms 89:20: "I have found David my servant; with my holy oil have I anointed him:"

Psalms 89:21: "With whom my hand shall be established: mine arm also shall strengthen him."

Psalms 89:24: "But my faithfulness and my mercy shall be with him: and in my name shall his horn be exalted."

Psalms 89:28: "My mercy will I keep for him for evermore, and my covenant shall stand fast with him."

Psalms 89:32: "Then will I visit their transgression with the rod, and their iniquity with stripes."

Psalms 89:38: "But thou hast cast off and abhorred, thou hast been wroth with thine anointed."

Psalms 89:45: "The days of his youth hast thou shortened: thou hast covered him with shame. Selah."

Psalms 90:5: "Thou carriest them away as with a flood; they are as a sleep: in the morning they are like grass which groweth up."

Psalms 90:14: "O satisfy us early with thy mercy; that we may rejoice and be glad all our days."

Psalms 91:4: "He shall cover thee with his feathers, and under his wings shalt thou trust: his truth shall be thy shield and buckler."

Psalms 91:8: "Only with thine eyes shalt thou behold and see the reward of the wicked."

Psalms 91:15: "He shall call upon me, and I will answer him: I will be with him in trouble; I will deliver him, and honour him."

Psalms 91:16: "With long life will I satisfy him, and shew him my salvation."

Psalms 92:3: "Upon an instrument of ten strings, and upon the psaltery; upon the harp with a solemn sound."

Psalms 92:10: "But my horn shalt thou exalt like the horn of an unicorn: I shall be anointed with fresh oil."

Psalms 93:1: "The LORD reigneth, he is clothed with majesty; the LORD is clothed with strength, wherewith he hath girded himself: the world also is stablished, that it cannot be moved."

Psalms 94:20: "Shall the throne of iniquity have fellowship with thee, which frameth mischief by a law?"

Psalms 95:2: "Let us come before his presence with thanksgiving, and make a joyful noise unto him with psalms."

Psalms 95:10: "Forty years long was I grieved with this generation, and said, It is a people that do err in their heart, and they have not known my ways:"

Psalms 96:13: "Before the LORD: for he cometh, for he cometh to judge the earth: he shall judge the world with righteousness, and the people with his truth."

Psalms 98:5: "Sing unto the LORD with the harp; with the harp, and the voice of a psalm."

Psalms 98:6: "With trumpets and sound of cornet make a joyful noise before the LORD, the King."

Psalms 98:9: "Before the LORD; for he cometh to judge the earth: with righteousness shall he judge the world, and the people with equity."

Psalms 100:2: "Serve the LORD with gladness: come before his presence with singing."

Psalms 100:4: "Enter into his gates with thanksgiving, and into his courts with praise: be thankful unto him, and bless his name."

Psalms 101:2: "I will behave myself wisely in a perfect way. O when wilt thou come unto me? I will walk within my house with a perfect heart."

Psalms 101:6: "Mine eyes shall be upon the faithful of the land, that they may dwell with me: he

that walketh in a perfect way, he shall serve me."

Psalms 102:9: "For I have eaten ashes like bread, and mingled my drink with weeping."

Psalms 103:4: "Who redeemeth thy life from destruction; who crowneth thee with lovingkindness and tender mercies;"

Psalms 103:5: "Who satisfieth thy mouth with good things; so that thy youth is renewed like the eagle's."

Psalms 103:10: "He hath not dealt with us after our sins; nor rewarded us according to our iniquities."

Psalms 104:1: "Bless the LORD, O my soul. O LORD my God, thou art very great; thou art clothed with honour and majesty."

Psalms 104:2: "Who coverest thyself with light as with a garment: who stretchest out the heavens like a curtain:"

Psalms 104:6: "Thou coveredst it with the deep as with a garment: the waters stood above the mountains."

Psalms 104:13: "He watereth the hills from his chambers: the earth is satisfied with the fruit of thy works."

Psalms 104:28: "That thou givest them they gather: thou openest thine hand, they are filled with good."

Psalms 105:9: "Which covenant he made with Abraham, and his oath unto Isaac;"

Psalms 105:18: "Whose feet they hurt with fetters: he was laid in iron:"

Psalms 105:25: "He turned their heart to hate his people, to deal subtilly with his servants."

Psalms 105:37: "He brought them forth also with silver and gold: and there was not one feeble person among their tribes."

Psalms 105:40: "The people asked, and he brought quails, and satisfied them with the bread of heaven."

Psalms 105:43: "And he brought forth his people with joy, and his chosen with gladness:"

Psalms 106:4: "Remember me, O LORD, with the favour that thou bearest unto thy people: O visit me with thy salvation;"

Psalms 106:5: "That I may see the good of thy chosen, that I may rejoice in the gladness of thy nation, that I may glory with thine inheritance."

Psalms 106:6: "We have sinned with our fathers, we have committed iniquity, we have done wickedly."

Psalms 106:29: "Thus they provoked him to anger with their inventions: and the plague brake in upon them."

Psalms 106:32: "They angered him also at the waters of strife, so that it went ill with Moses for their sakes:"

Psalms 106:33: "Because they provoked his spirit, so that he spake unadvisedly with his lips."

Psalms 106:38: "And shed innocent blood, even the blood of their sons and of their daughters, whom they sacrificed unto the idols of Canaan: and the land was polluted with blood."

Psalms 106:39: "Thus were they defiled with their own works, and went a whoring with their own inventions."

Psalms 106:43: "Many times did he deliver them; but they provoked him with their counsel, and were brought low for their iniquity."

Psalms 107:9: "For he satisfieth the longing soul, and filleth the hungry soul with goodness."

Psalms 107:12: "Therefore he brought down their heart with labour; they fell down, and there was none to help."

Psalms 107:22: "And let them sacrifice the sacrifices of thanksgiving, and declare his works with rejoicing."

Psalms 108:1: "O god, my heart is fixed; I will sing and give praise, even with my glory."

Psalms 108:6: "That thy beloved may be delivered: save with thy right hand, and answer me."

Psalms 108:11: "Wilt not thou, O God, who hast cast us off? and wilt not thou, O God, go forth with our hosts?"

Psalms 109:2: "For the mouth of the wicked and the mouth of the deceitful are opened against me: they have spoken against me with a lying tongue."

Psalms 109:3: "They compassed me about also with words of hatred; and fought against me without a cause."

Psalms 109:14: "Let the iniquity of his fathers be remembered with the LORD; and let not the sin of his mother be blotted out."

Psalms 109:18: "As he clothed himself with cursing like as with his garment, so let it come into his bowels like water, and like oil into his bones."

Psalms 109:29: "Let mine adversaries be clothed with shame, and let them cover themselves with their own confusion, as with a mantle."

Psalms 109:30: "I will greatly praise the LORD with my mouth; yea, I will praise him among the multitude."

Psalms 110:6: "He shall judge among the heathen, he shall fill the places with the dead bodies; he shall wound the heads over many countries."

Psalms 111:1: "Praise ye the LORD. I will praise the LORD with my whole heart, in the assembly of the upright, and in the congregation."

Psalms 112:5: "A good man sheweth favour, and lendeth: he will guide his affairs with discretion."

Psalms 112:9: "He hath dispersed, he hath given to the poor; his righteousness endureth for ever; his horn shall be exalted with honour."

Psalms 112:10: "The wicked shall see it, and be grieved; he shall gnash with his teeth, and melt away: the desire of the wicked shall perish."

Psalms 113:8: "That he may set him with princes, even with the princes of his people."

Psalms 116:7: "Return unto thy rest, O my soul; for the LORD hath dealt bountifully with thee."

Psalms 118:7: "The LORD taketh my part with them that help me: therefore shall I see my desire upon them that hate me."

Psalms 118:27: "God is the LORD, which hath shewed us light: bind the sacrifice with cords, even unto the horns of the altar."

Psalms 119:2: "Blessed are they that keep his testimonies, and that seek him with the whole heart."

Psalms 119:7: "I will praise thee with uprightness of heart, when I shall have learned thy righteous judgments."

Psalms 119:10: "With my whole heart have I sought thee: O let me not wander from thy commandments."

Psalms 119:13: "With my lips have I declared all the judgments of thy mouth."

Psalms 119:17: "Deal bountifully with thy servant, that I may live, and keep thy word."

Psalms 119:34: "Give me understanding, and I shall keep thy law; yea, I shall observe it with my whole heart."

Psalms 119:58: "I intreated thy favour with my whole heart: be merciful unto me according to thy word."

Psalms 119:65: "Thou hast dealt well with thy servant, O LORD, according unto thy word."

Psalms 119:69: "The proud have forged a lie against me: but I will keep thy precepts with my whole heart."

Psalms 119:78: "Let the proud be ashamed; for they dealt perversely with me without a cause: but I will meditate in thy precepts."

Psalms 119:93: "I will never forget thy precepts: for with them thou hast quickened me."

Psalms 119:98: "Thou through thy commandments hast made me wiser than mine enemies: for they are ever with me."

Psalms 119:124: "Deal with thy servant according unto thy mercy, and teach me thy statutes."

Psalms 119:145: "I cried with my whole heart; hear me, O LORD: I will keep thy statutes."



Psalms 120:4: "Sharp arrows of the mighty, with coals of juniper."  
 Psalms 120:6: "My soul hath long dwelt with him that hateth peace."  
 Psalms 123:3: "Have mercy upon us, O LORD, have mercy upon us: for we are exceedingly filled with contempt."  
 Psalms 123:4: "Our soul is exceedingly filled with the scorning of those that are at ease, and with the contempt of the proud."  
 Psalms 125:5: "As for such as turn aside unto their crooked ways, the LORD shall lead them forth with the workers of iniquity: but peace shall be upon Israel."  
 Psalms 126:2: "Then was our mouth filled with laughter, and our tongue with singing: then said they among the heathen, The LORD hath done great things for them."  
 Psalms 126:6: "He that goeth forth and weepeth, bearing precious seed, shall doubtless come again with rejoicing, bringing his sheaves with him."  
 Psalms 127:5: "Happy is the man that hath his quiver full of them: they shall not be ashamed, but they shall speak with the enemies in the gate."  
 Psalms 128:2: "For thou shalt eat the labour of thine hands: happy shalt thou be, and it shall be well with thee."  
 Psalms 130:4: "But there is forgiveness with thee, that thou mayest be feared."  
 Psalms 130:7: "Let Israel hope in the LORD: for with the LORD there is mercy, and with him is plenteous redemption."  
 Psalms 132:9: "Let thy priests be clothed with righteousness; and let thy saints shout for joy."  
 Psalms 132:15: "I will abundantly bless her provision: I will satisfy her poor with bread."  
 Psalms 132:16: "I will also clothe her priests with salvation: and her saints shall shout aloud for joy."  
 Psalms 132:18: "His enemies will I clothe with shame: but upon himself shall his crown flourish."  
 Psalms 136:12: "With a strong hand, and with a stretched out arm: for his mercy endureth for ever."  
 Psalms 138:1: "I will praise thee with my whole heart: before the gods will I sing praise unto thee."  
 Psalms 138:3: "In the day when I cried thou answeredst me, and strengthenedst me with strength in my soul."  
 Psalms 139:3: "Thou compassedst my path and my lying down, and art acquainted with all my ways."  
 Psalms 139:18: "If I should count them, they are more in number than the sand: when I awake, I am still with thee."  
 Psalms 139:21: "Do not I hate them, O LORD, that hate thee? and am not I grieved with those that rise up against thee?"  
 Psalms 139:22: "I hate them with perfect hatred: I count them mine enemies."  
 Psalms 141:4: "Incline not my heart to any evil thing, to practise wicked works with men that work iniquity: and let me not eat of their dainties."  
 Psalms 142:1: "I cried unto the LORD with my voice; with my voice unto the LORD did I make my supplication."  
 Psalms 142:7: "Bring my soul out of prison, that I may praise thy name: the righteous shall compass me about; for thou shalt deal bountifully with me."  
 Psalms 143:2: "And enter not into judgment with thy servant: for in thy sight shall no man living be justified."  
 Psalms 147:7: "Sing unto the LORD with thanksgiving; sing praise upon the harp unto our God:"  
 Psalms 147:8: "Who covereth the heaven with clouds, who prepareth rain for the earth, who maketh grass to grow upon the mountains."  
 Psalms 147:14: "He maketh peace in thy borders, and filleth thee with the finest of the wheat."  
 Psalms 147:20: "He hath not dealt so with any nation: and as for his judgments, they have not known them. Praise ye the LORD."  
 Psalms 149:3: "Let them praise his name in the dance: let them sing praises unto him with the

timbrel and harp."

Psalms 149:4: "For the LORD taketh pleasure in his people: he will beautify the meek with salvation."

Psalms 149:8: "To bind their kings with chains, and their nobles with fetters of iron;"

Psalms 150:3: "Praise him with the sound of the trumpet: praise him with the psaltery and harp."

Psalms 150:4: "Praise him with the timbrel and dance: praise him with stringed instruments and organs."

Proverbs 1:11: "If they say, Come with us, let us lay wait for blood, let us lurk privily for the innocent without cause:"

Proverbs 1:13: "We shall find all precious substance, we shall fill our houses with spoil:"

Proverbs 1:15: "My son, walk not thou in the way with them; refrain thy foot from their path:"

Proverbs 1:31: "Therefore shall they eat of the fruit of their own way, and be filled with their own devices."

Proverbs 2:1: "My son, if thou wilt receive my words, and hide my commandments with thee;"

Proverbs 2:16: "To deliver thee from the strange woman, even from the stranger which flattereth with her words;"

Proverbs 3:5: "Trust in the LORD with all thine heart; and lean not unto thine own understanding."

Proverbs 3:9: "Honour the LORD with thy substance, and with the firstfruits of all thine increase:"

Proverbs 3:10: "So shall thy barns be filled with plenty, and thy presses shall burst out with new wine."

Proverbs 3:30: "Strive not with a man without cause, if he have done thee no harm."

Proverbs 3:32: "For the froward is abomination to the LORD: but his secret is with the righteous."

Proverbs 4:7: "Wisdom is the principal thing; therefore get wisdom: and with all thy getting get understanding."

Proverbs 4:23: "Keep thy heart with all diligence; for out of it are the issues of life."

Proverbs 5:10: "Lest strangers be filled with thy wealth; and thy labours be in the house of a stranger;"

Proverbs 5:17: "Let them be only thine own, and not strangers' with thee."

Proverbs 5:18: "Let thy fountain be blessed: and rejoice with the wife of thy youth."

Proverbs 5:19: "Let her be as the loving hind and pleasant roe; let her breasts satisfy thee at all times; and be thou ravished always with her love."

Proverbs 5:20: "And why wilt thou, my son, be ravished with a strange woman, and embrace the bosom of a stranger?"

Proverbs 5:22: "His own iniquities shall take the wicked himself, and he shall be holden with the cords of his sins."

Proverbs 6:1: "My son, if thou be surety for thy friend, if thou hast stricken thy hand with a stranger,"

Proverbs 6:2: "Thou art snared with the words of thy mouth, thou art taken with the words of thy mouth."

Proverbs 6:12: "A naughty person, a wicked man, walketh with a froward mouth."

Proverbs 6:13: "He winketh with his eyes, he speaketh with his feet, he teacheth with his fingers;"

Proverbs 6:22: "When thou goest, it shall lead thee; when thou sleepest, it shall keep thee; and when thou awakest, it shall talk with thee."

Proverbs 6:25: "Lust not after her beauty in thine heart; neither let her take thee with her eyelids."

Proverbs 6:32: "But whoso committeth adultery with a woman lacketh understanding: he that doeth it destroyeth his own soul."

Proverbs 7:1: "My son, keep my words, and lay up my commandments with thee."

Proverbs 7:5: "That they may keep thee from the strange woman, from the stranger which flattereth with her words."

Proverbs 7:10: "And, behold, there met him a woman with the attire of an harlot, and subtil of

heart."

Proverbs 7:13: "So she caught him, and kissed him, and with an impudent face said unto him,"

Proverbs 7:14: "I have peace offerings with me; this day have I payed my vows."

Proverbs 7:16: "I have decked my bed with coverings of tapestry, with carved works, with fine linen of Egypt."

Proverbs 7:17: "I have perfumed my bed with myrrh, aloes, and cinnamon."

Proverbs 7:18: "Come, let us take our fill of love until the morning: let us solace ourselves with loves."

Proverbs 7:20: "He hath taken a bag of money with him, and will come home at the day appointed."

Proverbs 7:21: "With her much fair speech she caused him to yield, with the flattering of her lips she forced him."

Proverbs 8:12: "I wisdom dwell with prudence, and find out knowledge of witty inventions."

Proverbs 8:18: "Riches and honour are with me; yea, durable riches and righteousness."

Proverbs 8:24: "When there were no depths, I was brought forth; when there were no fountains abounding with water."

Proverbs 8:30: "Then I was by him, as one brought up with him: and I was daily his delight, rejoicing always before him;"

Proverbs 8:31: "Rejoicing in the habitable part of his earth; and my delights were with the sons of men."

Proverbs 10:4: "He becometh poor that dealeth with a slack hand: but the hand of the diligent maketh rich."

Proverbs 10:10: "He that winketh with the eye causeth sorrow: but a prating fool shall fall."

Proverbs 10:18: "He that hideth hatred with lying lips, and he that uttereth a slander, is a fool."

Proverbs 10:22: "The blessing of the LORD, it maketh rich, and he addeth no sorrow with it."

Proverbs 11:2: "When pride cometh, then cometh shame: but with the lowly is wisdom."

Proverbs 11:9: "An hypocrite with his mouth destroyeth his neighbour: but through knowledge shall the just be delivered."

Proverbs 11:10: "When it goeth well with the righteous, the city rejoiceth: and when the wicked perish, there is shouting."

Proverbs 12:11: "He that tilleth his land shall be satisfied with bread: but he that followeth vain persons is void of understanding."

Proverbs 12:14: "A man shall be satisfied with good by the fruit of his mouth: and the recompence of a man's hands shall be rendered unto him."

Proverbs 12:21: "There shall no evil happen to the just: but the wicked shall be filled with mischief."

Proverbs 13:10: "Only by pride cometh contention: but with the well advised is wisdom."

Proverbs 13:16: "Every prudent man dealeth with knowledge: but a fool layeth open his folly."

Proverbs 13:20: "He that walketh with wise men shall be wise: but a companion of fools shall be destroyed."

Proverbs 14:1: "Every wise woman buildeth her house: but the foolish plucketh it down with her hands."

Proverbs 14:10: "The heart knoweth his own bitterness; and a stranger doth not intermeddle with his joy."

Proverbs 14:14: "The backslider in heart shall be filled with his own ways: and a good man shall be satisfied from himself."

Proverbs 14:18: "The simple inherit folly: but the prudent are crowned with knowledge."

Proverbs 15:16: "Better is little with the fear of the LORD than great treasure and trouble therewith."

Proverbs 16:7: "When a man's ways please the LORD, he maketh even his enemies to be at peace with him."

Proverbs 16:8: "Better is a little with righteousness than great revenues without right."

Proverbs 16:19: "Better it is to be of an humble spirit with the lowly, than to divide the spoil with the proud."

Proverbs 17:1: "Better is a dry morsel, and quietness therewith, than an house full of sacrifices with strife."

Proverbs 17:14: "The beginning of strife is as when one letteth out water: therefore leave off contention, before it be meddled with."

Proverbs 18:1: "Through desire a man, having separated himself, seeketh and intermeddleth with all wisdom."

Proverbs 18:3: "When the wicked cometh, then cometh also contempt, and with ignominy reproach."

Proverbs 18:20: "A man's belly shall be satisfied with the fruit of his mouth; and with the increase of his lips shall he be filled."

Proverbs 19:2: "Also, that the soul be without knowledge, it is not good; and he that hasteth with his feet sinneth."

Proverbs 19:7: "All the brethren of the poor do hate him: how much more do his friends go far from him? he pursueth them with words, yet they are wanting to him."

Proverbs 19:23: "The fear of the LORD tendeth to life: and he that hath it shall abide satisfied; he shall not be visited with evil."

Proverbs 20:8: "A king that sitteth in the throne of judgment scattereth away all evil with his eyes."

Proverbs 20:13: "Love not sleep, lest thou come to poverty; open thine eyes, and thou shalt be satisfied with bread."

Proverbs 20:17: "Bread of deceit is sweet to a man; but afterwards his mouth shall be filled with gravel."

Proverbs 20:18: "Every purpose is established by counsel: and with good advice make war."

Proverbs 20:19: "He that goeth about as a talebearer revealeth secrets: therefore meddle not with him that flattereth with his lips."

Proverbs 21:9: "It is better to dwell in a corner of the housetop, than with a brawling woman in a wide house."

Proverbs 21:19: "It is better to dwell in the wilderness, than with a contentious and an angry woman."

Proverbs 21:27: "The sacrifice of the wicked is abomination: how much more, when he bringeth it with a wicked mind?"

Proverbs 22:24: "Make no friendship with an angry man; and with a furious man thou shalt not go:"

Proverbs 23:1: "When thou sittest to eat with a ruler, consider diligently what is before thee:"

Proverbs 23:7: "For as he thinketh in his heart, so is he: Eat and drink, saith he to thee; but his heart is not with thee."

Proverbs 23:11: "For their redeemer is mighty; he shall plead their cause with thee."

Proverbs 23:13: "Withhold not correction from the child: for if thou beatest him with the rod, he shall not die."

Proverbs 23:14: "Thou shalt beat him with the rod, and shalt deliver his soul from hell."

Proverbs 23:21: "For the drunkard and the glutton shall come to poverty: and drowsiness shall clothe a man with rags."

Proverbs 24:1: "Be not thou envious against evil men, neither desire to be with them."

Proverbs 24:4: "And by knowledge shall the chambers be filled with all precious and pleasant riches."

Proverbs 24:21: "My son, fear thou the LORD and the king: and meddle not with them that are given to change:"

Proverbs 24:28: "Be not a witness against thy neighbour without cause; and deceive not with thy lips."

Proverbs 24:31: "And, lo, it was all grown over with thorns, and nettles had covered the face thereof, and the stone wall thereof was broken down."

Proverbs 25:9: "Debate thy cause with thy neighbour himself; and discover not a secret to another:"

Proverbs 25:24: "It is better to dwell in the corner of the housetop, than with a brawling woman and in a wide house."

Proverbs 26:17: "He that passeth by, and meddleth with strife belonging not to him, is like one that taketh a dog by the ears."

Proverbs 26:23: "Burning lips and a wicked heart are like a potsherd covered with silver dross."

Proverbs 26:24: "He that hateth dissembleth with his lips, and layeth up deceit within him;"

Proverbs 27:14: "He that blesseth his friend with a loud voice, rising early in the morning, it shall be counted a curse to him."

Proverbs 27:22: "Though thou shouldest bray a fool in a mortar among wheat with a pestle, yet will not his foolishness depart from him."

Proverbs 28:4: "They that forsake the law praise the wicked: but such as keep the law contend with them."

Proverbs 28:20: "A faithful man shall abound with blessings: but he that maketh haste to be rich shall not be innocent."

Proverbs 28:23: "He that rebuketh a man afterwards shall find more favour than he that flattereth with the tongue."

Proverbs 29:3: "Whoso loveth wisdom rejoiceth his father: but he that keepeth company with harlots spendeth his substance."

Proverbs 29:9: "If a wise man contendeth with a foolish man, whether he rage or laugh, there is no rest."

Proverbs 29:24: "Whoso is partner with a thief hateth his own soul: he heareth cursing, and bewrayeth it not."

Proverbs 30:8: "Remove far from me vanity and lies: give me neither poverty nor riches; feed me with food convenient for me:"

Proverbs 30:16: "The grave; and the barren womb; the earth that is not filled with water; and the fire that saith not, It is enough."

Proverbs 30:19: "The way of an eagle in the air; the way of a serpent upon a rock; the way of a ship in the midst of the sea; and the way of a man with a maid."

Proverbs 30:22: "For a servant when he reigneth; and a fool when he is filled with meat;"

Proverbs 30:28: "The spider taketh hold with her hands, and is in kings' palaces."

Proverbs 31:13: "She seeketh wool, and flax, and worketh willingly with her hands."

Proverbs 31:16: "She considereth a field, and buyeth it: with the fruit of her hands she planteth a vineyard."

Proverbs 31:17: "She girdeth her loins with strength, and strengtheneth her arms."

Proverbs 31:21: "She is not afraid of the snow for her household: for all her household are clothed with scarlet."

Proverbs 31:26: "She openeth her mouth with wisdom; and in her tongue is the law of kindness."

Ecclesiastes 1:8: "All things are full of labour; man cannot utter it: the eye is not satisfied with seeing, nor the ear filled with hearing."

Ecclesiastes 1:11: "There is no remembrance of former things; neither shall there be any remembrance of things that are to come with those that shall come after."

Ecclesiastes 1:16: "I communed with mine own heart, saying, Lo, I am come to great estate, and have gotten more wisdom than all they that have been before me in Jerusalem: yea, my heart had great experience of wisdom and knowledge."

Ecclesiastes 2:1: "I said in mine heart, Go to now, I will prove thee with mirth, therefore enjoy pleasure: and, behold, this also is vanity."

Ecclesiastes 2:3: "I sought in mine heart to give myself unto wine, yet acquainting mine heart with

wisdom; and to lay hold on folly, till I might see what was that good for the sons of men, which they should do under the heaven all the days of their life."

Ecclesiastes 2:9: "So I was great, and increased more than all that were before me in Jerusalem: also my wisdom remained with me."

Ecclesiastes 4:6: "Better is an handful with quietness, than both the hands full with travail and vexation of spirit."

Ecclesiastes 4:8: "There is one alone, and there is not a second; yea, he hath neither child nor brother: yet is there no end of all his labour; neither is his eye satisfied with riches; neither saith he, For whom do I labour, and bereave my soul of good? This is also vanity, yea, it is a sore travail."

Ecclesiastes 4:15: "I considered all the living which walk under the sun, with the second child that shall stand up in his stead."

Ecclesiastes 5:2: "Be not rash with thy mouth, and let not thine heart be hasty to utter any thing before God: for God is in heaven, and thou upon earth: therefore let thy words be few."

Ecclesiastes 5:10: "He that loveth silver shall not be satisfied with silver; nor he that loveth abundance with increase: this is also vanity."

Ecclesiastes 5:11: "When goods increase, they are increased that eat them: and what good is there to the owners thereof, saving the beholding of them with their eyes?"

Ecclesiastes 5:17: "All his days also he eateth in darkness, and he hath much sorrow and wrath with his sickness."

Ecclesiastes 6:3: "If a man beget an hundred children, and live many years, so that the days of his years be many, and his soul be not filled with good, and also that he have no burial; I say, that an untimely birth is better than he."

Ecclesiastes 6:4: "For he cometh in with vanity, and departeth in darkness, and his name shall be covered with darkness."

Ecclesiastes 6:10: "That which hath been is named already, and it is known that it is man: neither may he contend with him that is mightier than he."

Ecclesiastes 7:11: "Wisdom is good with an inheritance: and by it there is profit to them that see the sun."

Ecclesiastes 8:12: "Though a sinner do evil an hundred times, and his days be prolonged, yet surely I know that it shall be well with them that fear God, which fear before him:"

Ecclesiastes 8:13: "But it shall not be well with the wicked, neither shall he prolong his days, which are as a shadow; because he feareth not before God."

Ecclesiastes 8:15: "Then I commended mirth, because a man hath no better thing under the sun, than to eat, and to drink, and to be merry: for that shall abide with him of his labour the days of his life, which God giveth him under the sun."

Ecclesiastes 8:16: "When I applied mine heart to know wisdom, and to see the business that is done upon the earth: (for also there is that neither day nor night seeth sleep with his eyes:)"

Ecclesiastes 9:7: "Go thy way, eat thy bread with joy, and drink thy wine with a merry heart; for God now accepteth thy works."

Ecclesiastes 9:9: "Live joyfully with the wife whom thou lovest all the days of the life of thy vanity, which he hath given thee under the sun, all the days of thy vanity: for that is thy portion in this life, and in thy labour which thou takest under the sun."

Ecclesiastes 9:10: "Whatsoever thy hand findeth to do, do it with thy might; for there is no work, nor device, nor knowledge, nor wisdom, in the grave, whither thou goest."

Ecclesiastes 11:5: "As thou knowest not what is the way of the spirit, nor how the bones do grow in the womb of her that is with child: even so thou knowest not the works of God who maketh all."

Ecclesiastes 12:14: "For God shall bring every work into judgment, with every secret thing, whether it be good, or whether it be evil."

Song of Solomon 1:2: "Let him kiss me with the kisses of his mouth: for thy love is better than wine."

Song of Solomon 1:6: "Look not upon me, because I am black, because the sun hath looked upon me: my mother's children were angry with me; they made me the keeper of the vineyards; but mine own vineyard have I not kept."

Song of Solomon 1:10: "Thy cheeks are comely with rows of jewels, thy neck with chains of gold."

Song of Solomon 1:11: "We will make thee borders of gold with studs of silver."

Song of Solomon 2:3: "As the apple tree among the trees of the wood, so is my beloved among the sons. I sat down under his shadow with great delight, and his fruit was sweet to my taste."

Song of Solomon 2:5: "Stay me with flagons, comfort me with apples: for I am sick of love."

Song of Solomon 2:13: "The fig tree putteth forth her green figs, and the vines with the tender grape give a good smell. Arise, my love, my fair one, and come away."

Song of Solomon 3:6: "Who is this that cometh out of the wilderness like pillars of smoke, perfumed with myrrh and frankincense, with all powders of the merchant?"

Song of Solomon 3:10: "He made the pillars thereof of silver, the bottom thereof of gold, the covering of it of purple, the midst thereof being paved with love, for the daughters of Jerusalem."

Song of Solomon 3:11: "Go forth, O ye daughters of Zion, and behold king Solomon with the crown wherewith his mother crowned him in the day of his espousals, and in the day of the gladness of his heart."

Song of Solomon 4:8: "Come with me from Lebanon, my spouse, with me from Lebanon: look from the top of Amana, from the top of Shenir and Hermon, from the lions' dens, from the mountains of the leopards."

Song of Solomon 4:9: "Thou hast ravished my heart, my sister, my spouse; thou hast ravished my heart with one of thine eyes, with one chain of thy neck."

Song of Solomon 4:13: "Thy plants are an orchard of pomegranates, with pleasant fruits; camphire, with spikenard,"

Song of Solomon 4:14: "Spikenard and saffron; calamus and cinnamon, with all trees of frankincense; myrrh and aloes, with all the chief spices:"

Song of Solomon 5:1: "I am come into my garden, my sister, my spouse: I have gathered my myrrh with my spice; I have eaten my honeycomb with my honey; I have drunk my wine with my milk: eat, O friends; drink, yea, drink abundantly, O beloved."

Song of Solomon 5:2: "I sleep, but my heart waketh: it is the voice of my beloved that knocketh, saying, Open to me, my sister, my love, my dove, my undefiled: for my head is filled with dew, and my locks with the drops of the night."

Song of Solomon 5:5: "I rose up to open to my beloved; and my hands dropped with myrrh, and my fingers with sweet smelling myrrh, upon the handles of the lock."

Song of Solomon 5:12: "His eyes are as the eyes of doves by the rivers of waters, washed with milk, and fitly set."

Song of Solomon 5:14: "His hands are as gold rings set with the beryl: his belly is as bright ivory overlaid with sapphires."

Song of Solomon 6:1: "Whither is thy beloved gone, O thou fairest among women? whither is thy beloved turned aside? that we may seek him with thee."

Song of Solomon 6:4: "Thou art beautiful, O my love, as Tirzah, comely as Jerusalem, terrible as an army with banners."

Song of Solomon 6:10: "Who is she that looketh forth as the morning, fair as the moon, clear as the sun, and terrible as an army with banners?"

Song of Solomon 7:1: "How beautiful are thy feet with shoes, O prince's daughter! the joints of thy thighs are like jewels, the work of the hands of a cunning workman."

Song of Solomon 7:2: "Thy navel is like a round goblet, which wanteth not liquor: thy belly is like an heap of wheat set about with lilies."

Song of Solomon 8:9: "If she be a wall, we will build upon her a palace of silver: and if she be a door, we will inclose her with boards of cedar."

Isaiah 1:4: "Ah sinful nation, a people laden with iniquity, a seed of evildoers, children that are corrupters: they have forsaken the LORD, they have provoked the Holy One of Israel unto anger, they are gone away backward."

Isaiah 1:6: "From the sole of the foot even unto the head there is no soundness in it; but wounds, and bruises, and putrifying sores: they have not been closed, neither bound up, neither mollified with ointment."

Isaiah 1:7: "Your country is desolate, your cities are burned with fire: your land, strangers devour it in your presence, and it is desolate, as overthrown by strangers."

Isaiah 1:13: "Bring no more vain oblations; incense is an abomination unto me; the new moons and sabbaths, the calling of assemblies, I cannot away with; it is iniquity, even the solemn meeting."

Isaiah 1:20: "But if ye refuse and rebel, ye shall be devoured with the sword: for the mouth of the LORD hath spoken it."

Isaiah 1:22: "Thy silver is become dross, thy wine mixed with water:"

Isaiah 1:27: "Zion shall be redeemed with judgment, and her converts with righteousness."

Isaiah 3:10: "Say ye to the righteous, that it shall be well with him: for they shall eat the fruit of their doings."

Isaiah 3:11: "Woe unto the wicked! it shall be ill with him: for the reward of his hands shall be given him."

Isaiah 3:14: "The LORD will enter into judgment with the ancients of his people, and the princes thereof: for ye have eaten up the vineyard; the spoil of the poor is in your houses."

Isaiah 3:16: "Moreover the LORD saith, Because the daughters of Zion are haughty, and walk with stretched forth necks and wanton eyes, walking and mincing as they go, and making a tinkling with their feet:"

Isaiah 3:17: "Therefore the LORD will smite with a scab the crown of the head of the daughters of Zion, and the LORD will discover their secret parts."

Isaiah 5:2: "And he fenced it, and gathered out the stones thereof, and planted it with the choicest vine, and built a tower in the midst of it, and also made a winepress therein: and he looked that it should bring forth grapes, and it brought forth wild grapes."

Isaiah 5:13: "Therefore my people are gone into captivity, because they have no knowledge: and their honourable men are famished, and their multitude dried up with thirst."

Isaiah 5:18: "Woe unto them that draw iniquity with cords of vanity, and sin as it were with a cart rope:"

Isaiah 5:26: "And he will lift up an ensign to the nations from far, and will hiss unto them from the end of the earth: and, behold, they shall come with speed swiftly:"

Isaiah 6:2: "Above it stood the seraphims: each one had six wings; with twain he covered his face, and with twain he covered his feet, and with twain he did fly."

Isaiah 6:4: "And the posts of the door moved at the voice of him that cried, and the house was filled with smoke."

Isaiah 6:6: "Then flew one of the seraphims unto me, having a live coal in his hand, which he had taken with the tongs from off the altar:"

Isaiah 6:10: "Make the heart of this people fat, and make their ears heavy, and shut their eyes; lest they see with their eyes, and hear with their ears, and understand with their heart, and convert, and be healed."

Isaiah 7:2: "And it was told the house of David, saying, Syria is confederate with Ephraim. And his heart was moved, and the heart of his people, as the trees of the wood are moved with the wind."

Isaiah 7:4: "And say unto him, Take heed, and be quiet; fear not, neither be fainthearted for the two tails of these smoking firebrands, for the fierce anger of Rezin with Syria, and of the son of Remaliah."

Isaiah 7:20: "In the same day shall the Lord shave with a razor that is hired, namely, by them beyond the river, by the king of Assyria, the head, and the hair of the feet: and it shall also consume



the beard."

Isaiah 7:24: "With arrows and with bows shall men come thither; because all the land shall become briers and thorns."

Isaiah 7:25: "And on all hills that shall be digged with the mattock, there shall not come thither the fear of briers and thorns: but it shall be for the sending forth of oxen, and for the treading of lesser cattle."

Isaiah 8:1: "Moreover the LORD said unto me, Take thee a great roll, and write in it with a man's pen concerning Mahershalalhashbaz."

Isaiah 8:10: "Take counsel together, and it shall come to nought; speak the word, and it shall not stand: for God is with us."

Isaiah 8:11: "For the LORD spake thus to me with a strong hand, and instructed me that I should not walk in the way of this people, saying,"

Isaiah 9:5: "For every battle of the warrior is with confused noise, and garments rolled in blood; but this shall be with burning and fuel of fire."

Isaiah 9:7: "Of the increase of his government and peace there shall be no end, upon the throne of David, and upon his kingdom, to order it, and to establish it with judgment and with justice from henceforth even for ever. The zeal of the LORD of hosts will perform this."

Isaiah 9:10: "The bricks are fallen down, but we will build with hewn stones: the sycomores are cut down, but we will change them into cedars."

Isaiah 9:12: "The Syrians before, and the Philistines behind; and they shall devour Israel with open mouth. For all this his anger is not turned away, but his hand is stretched out still."

Isaiah 10:22: "For though thy people Israel be as the sand of the sea, yet a remnant of them shall return: the consumption decreed shall overflow with righteousness."

Isaiah 10:24: "Therefore thus saith the Lord GOD of hosts, O my people that dwellest in Zion, be not afraid of the Assyrian: he shall smite thee with a rod, and shall lift up his staff against thee, after the manner of Egypt."

Isaiah 10:33: "Behold, the Lord, the LORD of hosts, shall lop the bough with terror: and the high ones of stature shall be hewn down, and the haughty shall be humbled."

Isaiah 10:34: "And he shall cut down the thickets of the forest with iron, and Lebanon shall fall by a mighty one."

Isaiah 11:4: "But with righteousness shall he judge the poor, and reprove with equity for the meek of the earth: and he shall smite the earth: with the rod of his mouth, and with the breath of his lips shall he slay the wicked."

Isaiah 11:6: "The wolf also shall dwell with the lamb, and the leopard shall lie down with the kid; and the calf and the young lion and the fatling together; and a little child shall lead them."

Isaiah 11:15: "And the LORD shall utterly destroy the tongue of the Egyptian sea; and with his mighty wind shall he shake his hand over the river, and shall smite it in the seven streams, and make men go over dryshod."

Isaiah 12:1: "And in that day thou shalt say, O LORD, I will praise thee: though thou wast angry with me, thine anger is turned away, and thou comfortedst me."

Isaiah 12:3: "Therefore with joy shall ye draw water out of the wells of salvation."

Isaiah 13:9: "Behold, the day of the LORD cometh, cruel both with wrath and fierce anger, to lay the land desolate: and he shall destroy the sinners thereof out of it."

Isaiah 14:1: "For the LORD will have mercy on Jacob, and will yet choose Israel, and set them in their own land: and the strangers shall be joined with them, and they shall cleave to the house of Jacob."

Isaiah 14:6: "He who smote the people in wrath with a continual stroke, he that ruled the nations in anger, is persecuted, and none hindereth."

Isaiah 14:19: "But thou art cast out of thy grave like an abominable branch, and as the raiment of those that are slain, thrust through with a sword, that go down to the stones of the pit; as a carcase

trodden under feet."

Isaiah 14:20: "Thou shalt not be joined with them in burial, because thou hast destroyed thy land, and slain thy people: the seed of evildoers shall never be renowned."

Isaiah 14:21: "Prepare slaughter for his children for the iniquity of their fathers; that they do not rise, nor possess the land, nor fill the face of the world with cities."

Isaiah 14:23: "I will also make it a possession for the bittern, and pools of water: and I will sweep it with the besom of destruction, saith the LORD of hosts."

Isaiah 14:30: "And the firstborn of the poor shall feed, and the needy shall lie down in safety: and I will kill thy root with famine, and he shall slay thy remnant."

Isaiah 15:3: "In their streets they shall gird themselves with sackcloth: on the tops of their houses, and in their streets, every one shall howl, weeping abundantly."

Isaiah 15:5: "My heart shall cry out for Moab; his fugitives shall flee unto Zoar, an heifer of three years old: for by the mounting up of Luhith with weeping shall they go it up; for in the way of Horonaim they shall raise up a cry of destruction."

Isaiah 16:4: "Let mine outcasts dwell with thee, Moab; be thou a covert to them from the face of the spoiler: for the extortioner is at an end, the spoiler ceaseth, the oppressors are consumed out of the land."

Isaiah 16:9: "Therefore I will bewail with the weeping of Jazer the vine of Sibmah: I will water thee with my tears, O Heshbon, and Elealeh: for the shouting for thy summer fruits and for thy harvest is fallen."

Isaiah 16:14: "But now the LORD hath spoken, saying, Within three years, as the years of an hireling, and the glory of Moab shall be contemned, with all that great multitude; and the remnant shall be very small and feeble."

Isaiah 17:5: "And it shall be as when the harvestman gathereth the corn, and reapeth the ears with his arm; and it shall be as he that gathereth ears in the valley of Rephaim."

Isaiah 17:10: "Because thou hast forgotten the God of thy salvation, and hast not been mindful of the rock of thy strength, therefore shalt thou plant pleasant plants, and shalt set it with strange slips:"

Isaiah 18:1: "Woe to the land shadowing with wings, which is beyond the rivers of Ethiopia:"

Isaiah 18:5: "For afore the harvest, when the bud is perfect, and the sour grape is ripening in the flower, he shall both cut off the sprigs with pruning hooks, and take away and cut down the branches."

Isaiah 19:23: "In that day shall there be a highway out of Egypt to Assyria, and the Assyrian shall come into Egypt, and the Egyptian into Assyria, and the Egyptians shall serve with the Assyrians."

Isaiah 19:24: "In that day shall Israel be the third with Egypt and with Assyria, even a blessing in the midst of the land:"

Isaiah 20:4: "So shall the king of Assyria lead away the Egyptians prisoners, and the Ethiopians captives, young and old, naked and barefoot, even with their buttocks uncovered, to the shame of Egypt."

Isaiah 21:3: "Therefore are my loins filled with pain: pangs have taken hold upon me, as the pangs of a woman that travaileth: I was bowed down at the hearing of it; I was dismayed at the seeing of it."

Isaiah 21:7: "And he saw a chariot with a couple of horsemen, a chariot of asses, and a chariot of camels; and he hearkened diligently with much heed:"

Isaiah 21:9: "And, behold, here cometh a chariot of men, with a couple of horsemen. And he answered and said, Babylon is fallen, is fallen; and all the graven images of her gods he hath broken unto the ground."

Isaiah 21:14: "The inhabitants of the land of Tema brought water to him that was thirsty, they prevented with their bread him that fled."

Isaiah 22:2: "Thou that art full of stirs, a tumultuous city, joyous city: thy slain men are not slain

with the sword, nor dead in battle."

Isaiah 22:6: "And Elam bare the quiver with chariots of men and horsemen, and Kir uncovered the shield."

Isaiah 22:12: "And in that day did the Lord GOD of hosts call to weeping, and to mourning, and to baldness, and to girding with sackcloth:"

Isaiah 22:17: "Behold, the LORD will carry thee away with a mighty captivity, and will surely cover thee."

Isaiah 22:21: "And I will clothe him with thy robe, and strengthen him with thy girdle, and I will commit thy government into his hand: and he shall be a father to the inhabitants of Jerusalem, and to the house of Judah."

Isaiah 23:17: "And it shall come to pass after the end of seventy years, that the LORD will visit Tyre, and she shall turn to her hire, and shall commit fornication with all the kingdoms of the world upon the face of the earth."

Isaiah 24:2: "And it shall be, as with the people, so with the priest; as with the servant, so with his master; as with the maid, so with her mistress; as with the buyer, so with the seller; as with the lender, so with the borrower; as with the taker of usury, so with the giver of usury to him."

Isaiah 24:9: "They shall not drink wine with a song; strong drink shall be bitter to them that drink it."

Isaiah 24:12: "In the city is left desolation, and the gate is smitten with destruction."

Isaiah 25:5: "Thou shalt bring down the noise of strangers, as the heat in a dry place; even the heat with the shadow of a cloud: the branch of the terrible ones shall be brought low."

Isaiah 25:11: "And he shall spread forth his hands in the midst of them, as he that swimmeth spreadeth forth his hands to swim: and he shall bring down their pride together with the spoils of their hands."

Isaiah 26:9: "With my soul have I desired thee in the night; yea, with my spirit within me will I seek thee early: for when thy judgments are in the earth, the inhabitants of the world will learn righteousness."

Isaiah 26:17: "Like as a woman with child, that draweth near the time of her delivery, is in pain, and crieth out in her pangs; so have we been in thy sight, O LORD."

Isaiah 26:18: "We have been with child, we have been in pain, we have as it were brought forth wind; we have not wrought any deliverance in the earth; neither have the inhabitants of the world fallen."

Isaiah 26:19: "Thy dead men shall live, together with my dead body shall they arise. Awake and sing, ye that dwell in dust: for thy dew is as the dew of herbs, and the earth shall cast out the dead."

Isaiah 27:1: "In that day the LORD with his sore and great and strong sword shall punish leviathan the piercing serpent, even leviathan that crooked serpent; and he shall slay the dragon that is in the sea."

Isaiah 27:5: "Or let him take hold of my strength, that he may make peace with me; and he shall make peace with me."

Isaiah 27:6: "He shall cause them that come of Jacob to take root: Israel shall blossom and bud, and fill the face of the world with fruit."

Isaiah 27:8: "In measure, when it shooteth forth, thou wilt debate with it: he stayeth his rough wind in the day of the east wind."

Isaiah 28:1: "Woe to the crown of pride, to the drunkards of Ephraim, whose glorious beauty is a fading flower, which are on the head of the fat valleys of them that are overcome with wine!"

Isaiah 28:2: "Behold, the Lord hath a mighty and strong one, which as a tempest of hail and a destroying storm, as a flood of mighty waters overflowing, shall cast down to the earth with the hand."

Isaiah 28:11: "For with stammering lips and another tongue will he speak to this people."

Isaiah 28:15: "Because ye have said, We have made a covenant with death, and with hell are we at

agreement; when the overflowing scourge shall pass through, it shall not come unto us: for we have made lies our refuge, and under falsehood have we hid ourselves:"

Isaiah 28:18: "And your covenant with death shall be disannulled, and your agreement with hell shall not stand; when the overflowing scourge shall pass through, then ye shall be trodden down by it."

Isaiah 28:27: "For the fitches are not threshed with a threshing instrument, neither is a cart wheel turned about upon the cummin; but the fitches are beaten out with a staff, and the cummin with a rod."

Isaiah 28:28: "Bread corn is bruised; because he will not ever be threshing it, nor break it with the wheel of his cart, nor bruise it with his horsemen."

Isaiah 29:3: "And I will camp against thee round about, and will lay siege against thee with a mount, and I will raise forts against thee."

Isaiah 29:6: "Thou shalt be visited of the LORD of hosts with thunder, and with earthquake, and great noise, with storm and tempest, and the flame of devouring fire."

Isaiah 29:9: "Stay yourselves, and wonder; cry ye out, and cry: they are drunken, but not with wine; they stagger, but not with strong drink."

Isaiah 29:13: "Wherefore the Lord said, Forasmuch as this people draw near me with their mouth, and with their lips do honour me, but have removed their heart far from me, and their fear toward me is taught by the precept of men:"

Isaiah 30:1: "Woe to the rebellious children, saith the LORD, that take counsel, but not of me; and that cover with a covering, but not of my spirit, that they may add sin to sin:"

Isaiah 30:24: "The oxen likewise and the young asses that ear the ground shall eat clean provender, which hath been winnowed with the shovel and with the fan."

Isaiah 30:27: "Behold, the name of the LORD cometh from far, burning with his anger, and the burden thereof is heavy: his lips are full of indignation, and his tongue as a devouring fire:"

Isaiah 30:28: "And his breath, as an overflowing stream, shall reach to the midst of the neck, to sift the nations with the sieve of vanity: and there shall be a bridle in the jaws of the people, causing them to err."

Isaiah 30:29: "Ye shall have a song, as in the night when a holy solemnity is kept; and gladness of heart, as when one goeth with a pipe to come into the mountain of the LORD, to the mighty One of Israel."

Isaiah 30:30: "And the LORD shall cause his glorious voice to be heard, and shall shew the lighting down of his arm, with the indignation of his anger, and with the flame of a devouring fire, with scattering, and tempest, and hailstones."

Isaiah 30:31: "For through the voice of the LORD shall the Assyrian be beaten down, which smote with a rod."

Isaiah 30:32: "And in every place where the grounded staff shall pass, which the LORD shall lay upon him, it shall be with tabrets and harps: and in battles of shaking will he fight with it."

Isaiah 31:8: "Then shall the Assyrian fall with the sword, not of a mighty man; and the sword, not of a mean man, shall devour him: but he shall flee from the sword, and his young men shall be discomfited."

Isaiah 32:7: "The instruments also of the churl are evil: he deviseth wicked devices to destroy the poor with lying words, even when the needy speaketh right."

Isaiah 33:1: "Woe to thee that spoilest, and thou wast not spoiled; and dealest treacherously, and they dealt not treacherously with thee! when thou shalt cease to spoil, thou shalt be spoiled; and when thou shalt make an end to deal treacherously, they shall deal treacherously with thee."

Isaiah 33:5: "The LORD is exalted; for he dwelleth on high: he hath filled Zion with judgment and righteousness."

Isaiah 33:14: "The sinners in Zion are afraid; fearfulness hath surprised the hypocrites. Who among us shall dwell with the devouring fire? who among us shall dwell with everlasting burnings?"

Isaiah 33:21: "But there the glorious LORD will be unto us a place of broad rivers and streams; wherein shall go no galley with oars, neither shall gallant ship pass thereby."

Isaiah 34:3: "Their slain also shall be cast out, and their stink shall come up out of their carcasses, and the mountains shall be melted with their blood."

Isaiah 34:6: "The sword of the LORD is filled with blood, it is made fat with fatness, and with the blood of lambs and goats, with the fat of the kidneys of rams: for the LORD hath a sacrifice in Bozrah, and a great slaughter in the land of Idumea."

Isaiah 34:7: "And the unicorns shall come down with them, and the bullocks with the bulls; and their land shall be soaked with blood, and their dust made fat with fatness."

Isaiah 34:14: "The wild beasts of the desert shall also meet with the wild beasts of the island, and the satyr shall cry to his fellow; the screech owl also shall rest there, and find for herself a place of rest."

Isaiah 34:15: "There shall the great owl make her nest, and lay, and hatch, and gather under her shadow: there shall the vultures also be gathered, every one with her mate."

Isaiah 35:2: "It shall blossom abundantly, and rejoice even with joy and singing: the glory of Lebanon shall be given unto it, the excellency of Carmel and Sharon, they shall see the glory of the LORD, and the excellency of our God."

Isaiah 35:4: "Say to them that are of a fearful heart, Be strong, fear not: behold, your God will come with vengeance, even God with a recompence; he will come and save you."

Isaiah 35:7: "And the parched ground shall become a pool, and the thirsty land springs of water: in the habitation of dragons, where each lay, shall be grass with reeds and rushes."

Isaiah 35:10: "And the ransomed of the LORD shall return, and come to Zion with songs and everlasting joy upon their heads: they shall obtain joy and gladness, and sorrow and sighing shall flee away."

Isaiah 36:2: "And the king of Assyria sent Rabshakeh from Lachish to Jerusalem unto king Hezekiah with a great army. And he stood by the conduit of the upper pool in the highway of the fuller's field."

Isaiah 36:12: "But Rabshakeh said, Hath my master sent me to thy master and to thee to speak these words? hath he not sent me to the men that sit upon the wall, that they may eat their own dung, and drink their own piss with you?"

Isaiah 36:13: "Then Rabshakeh stood, and cried with a loud voice in the Jews' language, and said, Hear ye the words of the great king, the king of Assyria."

Isaiah 36:16: "Hearken not to Hezekiah: for thus saith the king of Assyria, Make an agreement with me by a present, and come out to me: and eat ye every one of his vine, and every one of his fig tree, and drink ye every one the waters of his own cistern;"

Isaiah 36:22: "Then came Eliakim, the son of Hilkiyah, that was over the household, and Shebna the scribe, and Joah, the son of Asaph, the recorder, to Hezekiah with their clothes rent, and told him the words of Rabshakeh."

Isaiah 37:1: "And it came to pass, when king Hezekiah heard it, that he rent his clothes, and covered himself with sackcloth, and went into the house of the LORD."

Isaiah 37:2: "And he sent Eliakim, who was over the household, and Shebna the scribe, and the elders of the priests covered with sackcloth, unto Isaiah the prophet the son of Amoz."

Isaiah 37:9: "And he heard say concerning Tirhakah king of Ethiopia, He is come forth to make war with thee. And when he heard it, he sent messengers to Hezekiah, saying,"

Isaiah 37:25: "I have digged, and drunk water; and with the sole of my feet have I dried up all the rivers of the besieged places."

Isaiah 37:33: "Therefore thus saith the LORD concerning the king of Assyria, He shall not come into this city, nor shoot an arrow there, nor come before it with shields, nor cast a bank against it."

Isaiah 37:38: "And it came to pass, as he was worshipping in the house of Nisroch his god, that Adrammelech and Sharezer his sons smote him with the sword; and they escaped into the land of

Armenia: and Esarhaddon his son reigned in his stead."

Isaiah 38:3: "And said, Remember now, O LORD, I beseech thee, how I have walked before thee in truth and with a perfect heart, and have done that which is good in thy sight. And Hezekiah wept sore."

Isaiah 38:11: "I said, I shall not see the LORD, even the LORD, in the land of the living: I shall behold man no more with the inhabitants of the world."

Isaiah 38:12: "Mine age is departed, and is removed from me as a shepherd's tent: I have cut off like a weaver my life: he will cut me off with pining sickness: from day even to night wilt thou make an end of me."

Isaiah 38:14: "Like a crane or a swallow, so did I chatter: I did mourn as a dove: mine eyes fail with looking upward: O LORD, I am oppressed; undertake for me."

Isaiah 40:9: "O Zion, that bringest good tidings, get thee up into the high mountain; O Jerusalem, that bringest good tidings, lift up thy voice with strength; lift it up, be not afraid; say unto the cities of Judah, Behold your God!"

Isaiah 40:10: "Behold, the Lord GOD will come with strong hand, and his arm shall rule for him: behold, his reward is with him, and his work before him."

Isaiah 40:11: "He shall feed his flock like a shepherd: he shall gather the lambs with his arm, and carry them in his bosom, and shall gently lead those that are with young."

Isaiah 40:12: "Who hath measured the waters in the hollow of his hand, and meted out heaven with the span, and comprehended the dust of the earth in a measure, and weighed the mountains in scales, and the hills in a balance?"

Isaiah 40:14: "With whom took he counsel, and who instructed him, and taught him in the path of judgment, and taught him knowledge, and shewed to him the way of understanding?"

Isaiah 40:19: "The workman melteth a graven image, and the goldsmith spreadeth it over with gold, and casteth silver chains."

Isaiah 40:31: "But they that wait upon the LORD shall renew their strength; they shall mount up with wings as eagles; they shall run, and not be weary; and they shall walk, and not faint."

Isaiah 41:3: "He pursued them, and passed safely; even by the way that he had not gone with his feet."

Isaiah 41:4: "Who hath wrought and done it, calling the generations from the beginning? I the LORD, the first, and with the last; I am he."

Isaiah 41:7: "So the carpenter encouraged the goldsmith, and he that smootheth with the hammer him that smote the anvil, saying, It is ready for the sodering: and he fastened it with nails, that it should not be moved."

Isaiah 41:10: "Fear thou not; for I am with thee: be not dismayed; for I am thy God: I will strengthen thee; yea, I will help thee; yea, I will uphold thee with the right hand of my righteousness."

Isaiah 41:11: "Behold, all they that were incensed against thee shall be ashamed and confounded: they shall be as nothing; and they that strive with thee shall perish."

Isaiah 41:12: "Thou shalt seek them, and shalt not find them, even them that contended with thee: they that war against thee shall be as nothing, and as a thing of nought."

Isaiah 43:2: "When thou passest through the waters, I will be with thee; and through the rivers, they shall not overflow thee: when thou walkest through the fire, thou shalt not be burned; neither shall the flame kindle upon thee."

Isaiah 43:5: "Fear not: for I am with thee: I will bring thy seed from the east, and gather thee from the west;"

Isaiah 43:23: "Thou hast not brought me the small cattle of thy burnt offerings; neither hast thou honoured me with thy sacrifices. I have not caused thee to serve with an offering, nor wearied thee with incense."

Isaiah 43:24: "Thou hast bought me no sweet cane with money, neither hast thou filled me with the

fat of thy sacrifices: but thou hast made me to serve with thy sins, thou hast wearied me with thine iniquities."

Isaiah 44:5: "One shall say, I am the LORD's; and another shall call himself by the name of Jacob; and another shall subscribe with his hand unto the LORD, and surname himself by the name of Israel."

Isaiah 44:12: "The smith with the tongs both worketh in the coals, and fashioneth it with hammers, and worketh it with the strength of his arms: yea, he is hungry, and his strength faileth: he drinketh no water, and is faint."

Isaiah 44:13: "The carpenter stretcheth out his rule; he marketh it out with a line; he fitteth it with planes, and he marketh it out with the compass, and maketh it after the figure of a man, according to the beauty of a man; that it may remain in the house."

Isaiah 44:16: "He burneth part thereof in the fire; with part thereof he eateth flesh; he roasteth roast, and is satisfied: yea, he warmeth himself, and saith, Aha, I am warm, I have seen the fire:"

Isaiah 45:9: "Woe unto him that striveth with his Maker! Let the potsherd strive with the potsherd of the earth. Shall the clay say to him that fashioneth it, What makest thou? or thy work, He hath no hands?"

Isaiah 45:17: "But Israel shall be saved in the LORD with an everlasting salvation: ye shall not be ashamed nor confounded world without end."

Isaiah 47:6: "I was wroth with my people, I have polluted mine inheritance, and given them into thine hand: thou didst shew them no mercy; upon the ancient hast thou very heavily laid thy yoke."

Isaiah 47:12: "Stand now with thine enchantments, and with the multitude of thy sorceries, wherein thou hast laboured from thy youth; if so be thou shalt be able to profit, if so be thou mayest prevail."

Isaiah 47:15: "Thus shall they be unto thee with whom thou hast laboured, even thy merchants, from thy youth: they shall wander every one to his quarter; none shall save thee."

Isaiah 48:10: "Behold, I have refined thee, but not with silver; I have chosen thee in the furnace of affliction."

Isaiah 48:20: "Go ye forth of Babylon, flee ye from the Chaldeans, with a voice of singing declare ye, tell this, utter it even to the end of the earth; say ye, The LORD hath redeemed his servant Jacob."

Isaiah 49:4: "Then I said, I have laboured in vain, I have spent my strength for nought, and in vain: yet surely my judgment is with the LORD, and my work with my God."

Isaiah 49:18: "Lift up thine eyes round about, and behold: all these gather themselves together, and come to thee. As I live, saith the LORD, thou shalt surely clothe thee with them all, as with an ornament, and bind them on thee, as a bride doeth."

Isaiah 49:23: "And kings shall be thy nursing fathers, and their queens thy nursing mothers: they shall bow down to thee with their face toward the earth, and lick up the dust of thy feet; and thou shalt know that I am the LORD: for they shall not be ashamed that wait for me."

Isaiah 49:25: "But thus saith the LORD, Even the captives of the mighty shall be taken away, and the prey of the terrible shall be delivered: for I will contend with him that contendeth with thee, and I will save thy children."

Isaiah 49:26: "And I will feed them that oppress thee with their own flesh; and they shall be drunken with their own blood, as with sweet wine: and all flesh shall know that I the LORD am thy Saviour and thy Redeemer, the mighty One of Jacob."

Isaiah 50:3: "I clothe the heavens with blackness, and I make sackcloth their covering."

Isaiah 50:8: "He is near that justifieth me; who will contend with me? let us stand together: who is mine adversary? let him come near to me."

Isaiah 50:11: "Behold, all ye that kindle a fire, that compass yourselves about with sparks: walk in the light of your fire, and in the sparks that ye have kindled. This shall ye have of mine hand; ye shall lie down in sorrow."

Isaiah 51:11: "Therefore the redeemed of the LORD shall return, and come with singing unto Zion;

and everlasting joy shall be upon their head: they shall obtain gladness and joy; and sorrow and mourning shall flee away."

Isaiah 51:21: "Therefore hear now this, thou afflicted, and drunken, but not with wine:"

Isaiah 52:8: "Thy watchmen shall lift up the voice; with the voice together shall they sing: for they shall see eye to eye, when the LORD shall bring again Zion."

Isaiah 52:12: "For ye shall not go out with haste, nor go by flight: for the LORD will go before you; and the God of Israel will be your rereward."

Isaiah 53:3: "He is despised and rejected of men; a man of sorrows, and acquainted with grief: and we hid as it were our faces from him; he was despised, and we esteemed him not."

Isaiah 53:5: "But he was wounded for our transgressions, he was bruised for our iniquities: the chastisement of our peace was upon him; and with his stripes we are healed."

Isaiah 53:9: "And he made his grave with the wicked, and with the rich in his death; because he had done no violence, neither was any deceit in his mouth."

Isaiah 53:12: "Therefore will I divide him a portion with the great, and he shall divide the spoil with the strong; because he hath poured out his soul unto death: and he was numbered with the transgressors; and he bare the sin of many, and made intercession for the transgressors."

Isaiah 54:1: "Sing, O barren, thou that didst not bear; break forth into singing, and cry aloud, thou that didst not travail with child: for more are the children of the desolate than the children of the married wife, saith the LORD."

Isaiah 54:7: "For a small moment have I forsaken thee; but with great mercies will I gather thee."

Isaiah 54:8: "In a little wrath I hid my face from thee for a moment; but with everlasting kindness will I have mercy on thee, saith the LORD thy Redeemer."

Isaiah 54:9: "For this is as the waters of Noah unto me: for as I have sworn that the waters of Noah should no more go over the earth; so have I sworn that I would not be wroth with thee, nor rebuke thee."

Isaiah 54:11: "O thou afflicted, tossed with tempest, and not comforted, behold, I will lay thy stones with fair colours, and lay thy foundations with sapphires."

Isaiah 55:3: "Incline your ear, and come unto me: hear, and your soul shall live; and I will make an everlasting covenant with you, even the sure mercies of David."

Isaiah 55:12: "For ye shall go out with joy, and be led forth with peace: the mountains and the hills shall break forth before you into singing, and all the trees of the field shall clap their hands."

Isaiah 56:12: "Come ye, say they, I will fetch wine, and we will fill ourselves with strong drink; and to morrow shall be as this day, and much more abundant."

Isaiah 57:5: "Enflaming yourselves with idols under every green tree, slaying the children in the valleys under the cliffs of the rocks?"

Isaiah 57:8: "Behind the doors also and the posts hast thou set up thy remembrance: for thou hast discovered thyself to another than me, and art gone up; thou hast enlarged thy bed, and made thee a covenant with them; thou lovedst their bed where thou sawest it."

Isaiah 57:9: "And thou wentest to the king with ointment, and didst increase thy perfumes, and didst send thy messengers far off, and didst debase thyself even unto hell."

Isaiah 57:15: "For thus saith the high and lofty One that inhabiteth eternity, whose name is Holy; I dwell in the high and holy place, with him also that is of a contrite and humble spirit, to revive the spirit of the humble, and to revive the heart of the contrite ones."

Isaiah 58:4: "Behold, ye fast for strife and debate, and to smite with the fist of wickedness: ye shall not fast as ye do this day, to make your voice to be heard on high."

Isaiah 58:14: "Then shalt thou delight thyself in the LORD; and I will cause thee to ride upon the high places of the earth, and feed thee with the heritage of Jacob thy father: for the mouth of the LORD hath spoken it."

Isaiah 59:3: "For your hands are defiled with blood, and your fingers with iniquity; your lips have spoken lies, your tongue hath muttered perverseness."



Isaiah 59:6: "Their webs shall not become garments, neither shall they cover themselves with their works: their works are works of iniquity, and the act of violence is in their hands."

Isaiah 59:12: "For our transgressions are multiplied before thee, and our sins testify against us: for our transgressions are with us; and as for our iniquities, we know them;"

Isaiah 59:17: "For he put on righteousness as a breastplate, and an helmet of salvation upon his head; and he put on the garments of vengeance for clothing, and was clad with zeal as a cloak."

Isaiah 59:21: "As for me, this is my covenant with them, saith the LORD; My spirit that is upon thee, and my words which I have put in thy mouth, shall not depart out of thy mouth, nor out of the mouth of thy seed, nor out of the mouth of thy seed's seed, saith the LORD, from henceforth and for ever."

Isaiah 60:7: "All the flocks of Kedar shall be gathered together unto thee, the rams of Nebaioth shall minister unto thee: they shall come up with acceptance on mine altar, and I will glorify the house of my glory."

Isaiah 60:9: "Surely the isles shall wait for me, and the ships of Tarshish first, to bring thy sons from far, their silver and their gold with them, unto the name of the LORD thy God, and to the Holy One of Israel, because he hath glorified thee."

Isaiah 61:8: "For I the LORD love judgment, I hate robbery for burnt offering; and I will direct their work in truth, and I will make an everlasting covenant with them."

Isaiah 61:10: "I will greatly rejoice in the LORD, my soul shall be joyful in my God; for he hath clothed me with the garments of salvation, he hath covered me with the robe of righteousness, as a bridegroom decketh himself with ornaments, and as a bride adorneth herself with her jewels."

Isaiah 62:11: "Behold, the LORD hath proclaimed unto the end of the world, Say ye to the daughter of Zion, Behold, thy salvation cometh; behold, his reward is with him, and his work before him."

Isaiah 63:1: "Who is this that cometh from Edom, with dyed garments from Bozrah? this that is glorious in his apparel, travelling in the greatness of his strength? I that speak in righteousness, mighty to save."

Isaiah 63:3: "I have trodden the winepress alone; and of the people there was none with me: for I will tread them in mine anger, and trample them in my fury; and their blood shall be sprinkled upon my garments, and I will stain all my raiment."

Isaiah 63:11: "Then he remembered the days of old, Moses, and his people, saying, Where is he that brought them up out of the sea with the shepherd of his flock? where is he that put his holy Spirit within him?"

Isaiah 63:12: "That led them by the right hand of Moses with his glorious arm, dividing the water before them, to make himself an everlasting name?"

Isaiah 64:11: "Our holy and our beautiful house, where our fathers praised thee, is burned up with fire: and all our pleasant things are laid waste."

Isaiah 65:23: "They shall not labour in vain, nor bring forth for trouble; for they are the seed of the blessed of the LORD, and their offspring with them."

Isaiah 66:10: "Rejoice ye with Jerusalem, and be glad with her, all ye that love her: rejoice for joy with her, all ye that mourn for her:"

Isaiah 66:11: "That ye may suck, and be satisfied with the breasts of her consolations; that ye may milk out, and be delighted with the abundance of her glory."

Isaiah 66:15: "For, behold, the LORD will come with fire, and with his chariots like a whirlwind, to render his anger with fury, and his rebuke with flames of fire."

Isaiah 66:16: "For by fire and by his sword will the LORD plead with all flesh: and the slain of the LORD shall be many."

Jeremiah 1:8: "Be not afraid of their faces: for I am with thee to deliver thee, saith the LORD."

Jeremiah 1:19: "And they shall fight against thee; but they shall not prevail against thee; for I am with thee, saith the LORD, to deliver thee."

Jeremiah 2:9: "Wherefore I will yet plead with you, saith the LORD, and with your children's

children will I plead."

Jeremiah 2:22: "For though thou wash thee with nitre, and take thee much soap, yet thine iniquity is marked before me, saith the Lord GOD."

Jeremiah 2:29: "Wherefore will ye plead with me? ye all have transgressed against me, saith the LORD."

Jeremiah 2:35: "Yet thou sayest, Because I am innocent, surely his anger shall turn from me. Behold, I will plead with thee, because thou sayest, I have not sinned."

Jeremiah 3:1: "They say, If a man put away his wife, and she go from him, and become another man's, shall he return unto her again? shall not that land be greatly polluted? but thou hast played the harlot with many lovers; yet return again to me, saith the LORD."

Jeremiah 3:2: "Lift up thine eyes unto the high places, and see where thou hast not been lien with. In the ways hast thou sat for them, as the Arabian in the wilderness; and thou hast polluted the land with thy whoredoms and with thy wickedness."

Jeremiah 3:9: "And it came to pass through the lightness of her whoredom, that she defiled the land, and committed adultery with stones and with stocks."

Jeremiah 3:10: "And yet for all this her treacherous sister Judah hath not turned unto me with her whole heart, but feignedly, saith the LORD."

Jeremiah 3:15: "And I will give you pastors according to mine heart, which shall feed you with knowledge and understanding."

Jeremiah 3:18: "In those days the house of Judah shall walk with the house of Israel, and they shall come together out of the land of the north to the land that I have given for an inheritance unto your fathers."

Jeremiah 3:20: "Surely as a wife treacherously departeth from her husband, so have ye dealt treacherously with me, O house of Israel, saith the LORD."

Jeremiah 4:8: "For this gird you with sackcloth, lament and howl: for the fierce anger of the LORD is not turned back from us."

Jeremiah 4:30: "And when thou art spoiled, what wilt thou do? Though thou clothest thyself with crimson, though thou deckest thee with ornaments of gold, though thou rentest thy face with painting, in vain shalt thou make thyself fair; thy lovers will despise thee, they will seek thy life."

Jeremiah 5:17: "And they shall eat up thine harvest, and thy bread, which thy sons and thy daughters should eat: they shall eat up thy flocks and thine herds: they shall eat up thy vines and thy fig trees: they shall impoverish thy fenced cities, wherein thou trustedst, with the sword."

Jeremiah 5:18: "Nevertheless in those days, saith the LORD, I will not make a full end with you."

Jeremiah 6:3: "The shepherds with their flocks shall come unto her; they shall pitch their tents against her round about; they shall feed every one in his place."

Jeremiah 6:11: "Therefore I am full of the fury of the LORD; I am weary with holding in: I will pour it out upon the children abroad, and upon the assembly of young men together: for even the husband with the wife shall be taken, the aged with him that is full of days."

Jeremiah 6:12: "And their houses shall be turned unto others, with their fields and wives together: for I will stretch out my hand upon the inhabitants of the land, saith the LORD."

Jeremiah 6:26: "O daughter of my people, gird thee with sackcloth, and wallow thyself in ashes: make thee mourning, as for an only son, most bitter lamentation: for the spoiler shall suddenly come upon us."

Jeremiah 6:28: "They are all grievous revolters, walking with slanders: they are brass and iron; they are all corrupters."

Jeremiah 8:8: "How do ye say, We are wise, and the law of the LORD is with us? Lo, certainly in vain made he it; the pen of the scribes is in vain."

Jeremiah 8:19: "Behold the voice of the cry of the daughter of my people because of them that dwell in a far country: Is not the LORD in Zion? is not her king in her? Why have they provoked me to anger with their graven images, and with strange vanities?"

Jeremiah 9:4: "Take ye heed every one of his neighbour, and trust ye not in any brother: for every brother will utterly supplant, and every neighbour will walk with slanders."

Jeremiah 9:8: "Their tongue is as an arrow shot out; it speaketh deceit: one speaketh peaceably to his neighbour with his mouth, but in heart he layeth his wait."

Jeremiah 9:15: "Therefore thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will feed them, even this people, with wormwood, and give them water of gall to drink."

Jeremiah 9:18: "And let them make haste, and take up a wailing for us, that our eyes may run down with tears, and our eyelids gush out with waters."

Jeremiah 9:25: "Behold, the days come, saith the LORD, that I will punish all them which are circumcised with the uncircumcised;"

Jeremiah 10:3: "For the customs of the people are vain: for one cutteth a tree out of the forest, the work of the hands of the workman, with the axe."

Jeremiah 10:4: "They deck it with silver and with gold; they fasten it with nails and with hammers, that it move not."

Jeremiah 10:13: "When he uttereth his voice, there is a multitude of waters in the heavens, and he causeth the vapours to ascend from the ends of the earth; he maketh lightnings with rain, and bringeth forth the wind out of his treasures."

Jeremiah 10:24: "O LORD, correct me, but with judgment; not in thine anger, lest thou bring me to nothing."

Jeremiah 11:5: "That I may perform the oath which I have sworn unto your fathers, to give them a land flowing with milk and honey, as it is this day. Then answered I, and said, So be it, O LORD."

Jeremiah 11:10: "They are turned back to the iniquities of their forefathers, which refused to hear my words; and they went after other gods to serve them: the house of Israel and the house of Judah have broken my covenant which I made with their fathers."

Jeremiah 11:15: "What hath my beloved to do in mine house, seeing she hath wrought lewdness with many, and the holy flesh is passed from thee? when thou doest evil, then thou rejoicest."

Jeremiah 11:16: "The LORD called thy name, A green olive tree, fair, and of goodly fruit: with the noise of a great tumult he hath kindled fire upon it, and the branches of it are broken."

Jeremiah 11:19: "But I was like a lamb or an ox that is brought to the slaughter; and I knew not that they had devised devices against me, saying, Let us destroy the tree with the fruit thereof, and let us cut him off from the land of the living, that his name may be no more remembered."

Jeremiah 12:1: "Righteous art thou, O LORD, when I plead with thee: yet let me talk with thee of thy judgments: Wherefore doth the way of the wicked prosper? wherefore are all they happy that deal very treacherously?"

Jeremiah 12:5: "If thou hast run with the footmen, and they have wearied thee, then how canst thou contend with horses? and if in the land of peace, wherein thou trustedst, they wearied thee, then how wilt thou do in the swelling of Jordan?"

Jeremiah 12:6: "For even thy brethren, and the house of thy father, even they have dealt treacherously with thee; yea, they have called a multitude after thee: believe them not, though they speak fair words unto thee."

Jeremiah 13:12: "Therefore thou shalt speak unto them this word; Thus saith the LORD God of Israel, Every bottle shall be filled with wine: and they shall say unto thee, Do we not certainly know that every bottle shall be filled with wine?"

Jeremiah 13:13: "Then shalt thou say unto them, Thus saith the LORD, Behold, I will fill all the inhabitants of this land, even the kings that sit upon David's throne, and the priests, and the prophets, and all the inhabitants of Jerusalem, with drunkenness."

Jeremiah 13:17: "But if ye will not hear it, my soul shall weep in secret places for your pride; and mine eye shall weep sore, and run down with tears, because the LORD's flock is carried away captive."

Jeremiah 14:3: "And their nobles have sent their little ones to the waters: they came to the pits, and

found no water; they returned with their vessels empty; they were ashamed and confounded, and covered their heads."

Jeremiah 14:17: "Therefore thou shalt say this word unto them; Let mine eyes run down with tears night and day, and let them not cease: for the virgin daughter of my people is broken with a great breach, with a very grievous blow."

Jeremiah 14:18: "If I go forth into the field, then behold the slain with the sword! and if I enter into the city, then behold them that are sick with famine! yea, both the prophet and the priest go about into a land that they know not."

Jeremiah 14:21: "Do not abhor us, for thy name's sake, do not disgrace the throne of thy glory: remember, break not thy covenant with us."

Jeremiah 15:6: "Thou hast forsaken me, saith the LORD, thou art gone backward: therefore will I stretch out my hand against thee, and destroy thee; I am weary with repenting."

Jeremiah 15:7: "And I will fan them with a fan in the gates of the land; I will bereave them of children, I will destroy my people since they return not from their ways."

Jeremiah 15:11: "The LORD said, Verily it shall be well with thy remnant; verily I will cause the enemy to entreat thee well in the time of evil and in the time of affliction."

Jeremiah 15:14: "And I will make thee to pass with thine enemies into a land which thou knowest not: for a fire is kindled in mine anger, which shall burn upon you."

Jeremiah 15:17: "I sat not in the assembly of the mockers, nor rejoiced; I sat alone because of thy hand: for thou hast filled me with indignation."

Jeremiah 15:20: "And I will make thee unto this people a fenced brasen wall: and they shall fight against thee, but they shall not prevail against thee: for I am with thee to save thee and to deliver thee, saith the LORD."

Jeremiah 16:8: "Thou shalt not also go into the house of feasting, to sit with them to eat and to drink."

Jeremiah 16:18: "And first I will recompense their iniquity and their sin double; because they have defiled my land, they have filled mine inheritance with the carcasses of their detestable and abominable things."

Jeremiah 17:1: "The sin of Judah is written with a pen of iron, and with the point of a diamond: it is graven upon the table of their heart, and upon the horns of your altars;"

Jeremiah 17:18: "Let them be confounded that persecute me, but let not me be confounded: let them be dismayed, but let not me be dismayed: bring upon them the day of evil, and destroy them with double destruction."

Jeremiah 18:6: "O house of Israel, cannot I do with you as this potter? saith the LORD. Behold, as the clay is in the potter's hand, so are ye in mine hand, O house of Israel."

Jeremiah 18:17: "I will scatter them as with an east wind before the enemy; I will shew them the back, and not the face, in the day of their calamity."

Jeremiah 18:18: "Then said they, Come and let us devise devices against Jeremiah; for the law shall not perish from the priest, nor counsel from the wise, nor the word from the prophet. Come, and let us smite him with the tongue, and let us not give heed to any of his words."

Jeremiah 18:19: "Give heed to me, O LORD, and hearken to the voice of them that contend with me."

Jeremiah 18:23: "Yet, LORD, thou knowest all their counsel against me to slay me: forgive not their iniquity, neither blot out their sin from thy sight, but let them be overthrown before thee; deal thus with them in the time of thine anger."

Jeremiah 19:4: "Because they have forsaken me, and have estranged this place, and have burned incense in it unto other gods, whom neither they nor their fathers have known, nor the kings of Judah, and have filled this place with the blood of innocents;"

Jeremiah 19:5: "They have built also the high places of Baal, to burn their sons with fire for burnt offerings unto Baal, which I commanded not, nor spake it, neither came it into my mind:"

Jeremiah 19:10: "Then shalt thou break the bottle in the sight of the men that go with thee,"

Jeremiah 20:4: "For thus saith the LORD, Behold, I will make thee a terror to thyself, and to all thy friends: and they shall fall by the sword of their enemies, and thine eyes shall behold it: and I will give all Judah into the hand of the king of Babylon, and he shall carry them captive into Babylon, and shall slay them with the sword."

Jeremiah 20:9: "Then I said, I will not make mention of him, nor speak any more in his name. But his word was in mine heart as a burning fire shut up in my bones, and I was weary with forbearing, and I could not stay."

Jeremiah 20:11: "But the LORD is with me as a mighty terrible one: therefore my persecutors shall stumble, and they shall not prevail: they shall be greatly ashamed; for they shall not prosper: their everlasting confusion shall never be forgotten."

Jeremiah 20:17: "Because he slew me not from the womb; or that my mother might have been my grave, and her womb to be always great with me."

Jeremiah 20:18: "Wherefore came I forth out of the womb to see labour and sorrow, that my days should be consumed with shame?"

Jeremiah 21:2: "Enquire, I pray thee, of the LORD for us; for Nebuchadrezzar king of Babylon maketh war against us; if so be that the LORD will deal with us according to all his wondrous works, that he may go up from us."

Jeremiah 21:5: "And I myself will fight against you with an outstretched hand and with a strong arm, even in anger, and in fury, and in great wrath."

Jeremiah 21:7: "And afterward, saith the LORD, I will deliver Zedekiah king of Judah, and his servants, and the people, and such as are left in this city from the pestilence, from the sword, and from the famine, into the hand of Nebuchadrezzar king of Babylon, and into the hand of their enemies, and into the hand of those that seek their life: and he shall smite them with the edge of the sword; he shall not spare them, neither have pity, nor have mercy."

Jeremiah 21:10: "For I have set my face against this city for evil, and not for good, saith the LORD: it shall be given into the hand of the king of Babylon, and he shall burn it with fire."

Jeremiah 22:7: "And I will prepare destroyers against thee, every one with his weapons: and they shall cut down thy choice cedars, and cast them into the fire."

Jeremiah 22:14: "That saith, I will build me a wide house and large chambers, and cutteth him out windows; and it is cieled with cedar, and painted with vermilion."

Jeremiah 22:15: "Shalt thou reign, because thou closest thyself in cedar? did not thy father eat and drink, and do judgment and justice, and then it was well with him?"

Jeremiah 22:16: "He judged the cause of the poor and needy; then it was well with him: was not this to know me? saith the LORD."

Jeremiah 22:19: "He shall be buried with the burial of an ass, drawn and cast forth beyond the gates of Jerusalem."

Jeremiah 23:15: "Therefore thus saith the LORD of hosts concerning the prophets; Behold, I will feed them with wormwood, and make them drink the water of gall: for from the prophets of Jerusalem is profaneness gone forth into all the land."

Jeremiah 24:1: "The LORD shewed me, and, behold, two baskets of figs were set before the temple of the LORD, after that Nebuchadrezzar king of Babylon had carried away captive Jeconiah the son of Jehoiakim king of Judah, and the princes of Judah, with the carpenters and smiths, from Jerusalem, and had brought them to Babylon."

Jeremiah 24:7: "And I will give them an heart to know me, that I am the LORD: and they shall be my people, and I will be their God: for they shall return unto me with their whole heart."

Jeremiah 25:6: "And go not after other gods to serve them, and to worship them, and provoke me not to anger with the works of your hands; and I will do you no hurt."

Jeremiah 25:7: "Yet ye have not hearkened unto me, saith the LORD; that ye might provoke me to anger with the works of your hands to your own hurt."

Jeremiah 25:26: "And all the kings of the north, far and near, one with another, and all the kingdoms of the world, which are upon the face of the earth: and the king of Sheshach shall drink after them."

Jeremiah 25:31: "A noise shall come even to the ends of the earth; for the LORD hath a controversy with the nations, he will plead with all flesh; he will give them that are wicked to the sword, saith the LORD."

Jeremiah 26:11: "Then spake the priests and the prophets unto the princes and to all the people, saying, This man is worthy to die; for he hath prophesied against this city, as ye have heard with your ears."

Jeremiah 26:14: "As for me, behold, I am in your hand: do with me as seemeth good and meet unto you."

Jeremiah 26:21: "And when Jehoiakim the king, with all his mighty men, and all the princes, heard his words, the king sought to put him to death: but when Urijah heard it, he was afraid, and fled, and went into Egypt;"

Jeremiah 26:22: "And Jehoiakim the king sent men into Egypt, namely, Elnathan the son of Achbor, and certain men with him into Egypt."

Jeremiah 26:23: "And they fetched forth Urijah out of Egypt, and brought him unto Jehoiakim the king; who slew him with the sword, and cast his dead body into the graves of the common people."

Jeremiah 26:24: "Nevertheless the hand of Ahikam the son of Shaphan was with Jeremiah, that they should not give him into the hand of the people to put him to death."

Jeremiah 27:8: "And it shall come to pass, that the nation and kingdom which will not serve the same Nebuchadnezzar the king of Babylon, and that will not put their neck under the yoke of the king of Babylon, that nation will I punish, saith the LORD, with the sword, and with the famine, and with the pestilence, until I have consumed them by his hand."

Jeremiah 27:18: "But if they be prophets, and if the word of the LORD be with them, let them now make intercession to the LORD of hosts, that the vessels which are left in the house of the LORD, and in the house of the king of Judah, and at Jerusalem, go not to Babylon."

Jeremiah 28:4: "And I will bring again to this place Jeconiah the son of Jehoiakim king of Judah, with all the captives of Judah, that went into Babylon, saith the LORD: for I will break the yoke of the king of Babylon."

Jeremiah 29:13: "And ye shall seek me, and find me, when ye shall search for me with all your heart."

Jeremiah 29:16: "Know that thus saith the LORD of the king that sitteth upon the throne of David, and of all the people that dwelleth in this city, and of your brethren that are not gone forth with you into captivity;"

Jeremiah 29:18: "And I will persecute them with the sword, with the famine, and with the pestilence, and will deliver them to be removed to all the kingdoms of the earth, to be a curse, and an astonishment, and an hissing, and a reproach, among all the nations whither I have driven them:"

Jeremiah 29:23: "Because they have committed villany in Israel, and have committed adultery with their neighbours' wives, and have spoken lying words in my name, which I have not commanded them; even I know, and am a witness, saith the LORD."

Jeremiah 30:6: "Ask ye now, and see whether a man doth travail with child? wherefore do I see every man with his hands on his loins, as a woman in travail, and all faces are turned into paleness?"

Jeremiah 30:11: "For I am with thee, saith the LORD, to save thee: though I make a full end of all nations whither I have scattered thee, yet I will not make a full end of thee: but I will correct thee in measure, and will not leave thee altogether unpunished."

Jeremiah 30:14: "All thy lovers have forgotten thee; they seek thee not; for I have wounded thee with the wound of an enemy, with the chastisement of a cruel one, for the multitude of thine iniquity; because thy sins were increased."

Jeremiah 30:23: "Behold, the whirlwind of the LORD goeth forth with fury, a continuing whirlwind: it shall fall with pain upon the head of the wicked."

Jeremiah 31:3: "The LORD hath appeared of old unto me, saying, Yea, I have loved thee with an everlasting love: therefore with lovingkindness have I drawn thee."

Jeremiah 31:4: "Again I will build thee, and thou shalt be built, O virgin of Israel: thou shalt again be adorned with thy tabrets, and shalt go forth in the dances of them that make merry."

Jeremiah 31:7: "For thus saith the LORD; Sing with gladness for Jacob, and shout among the chief of the nations: publish ye, praise ye, and say, O LORD, save thy people, the remnant of Israel."

Jeremiah 31:8: "Behold, I will bring them from the north country, and gather them from the coasts of the earth, and with them the blind and the lame, the woman with child and her that travaileth with child together: a great company shall return thither."

Jeremiah 31:9: "They shall come with weeping, and with supplications will I lead them: I will cause them to walk by the rivers of waters in a straight way, wherein they shall not stumble: for I am a father to Israel, and Ephraim is my firstborn."

Jeremiah 31:14: "And I will satiate the soul of the priests with fatness, and my people shall be satisfied with my goodness, saith the LORD."

Jeremiah 31:24: "And there shall dwell in Judah itself, and in all the cities thereof together, husbandmen, and they that go forth with flocks."

Jeremiah 31:27: "Behold, the days come, saith the LORD, that I will sow the house of Israel and the house of Judah with the seed of man, and with the seed of beast."

Jeremiah 31:31: "Behold, the days come, saith the LORD, that I will make a new covenant with the house of Israel, and with the house of Judah:"

Jeremiah 31:32: "Not according to the covenant that I made with their fathers in the day that I took them by the hand to bring them out of the land of Egypt; which my covenant they brake, although I was an husband unto them, saith the LORD:"

Jeremiah 31:33: "But this shall be the covenant that I will make with the house of Israel; After those days, saith the LORD, I will put my law in their inward parts, and write it in their hearts; and will be their God, and they shall be my people."

Jeremiah 32:4: "And Zedekiah king of Judah shall not escape out of the hand of the Chaldeans, but shall surely be delivered into the hand of the king of Babylon, and shall speak with him mouth to mouth, and his eyes shall behold his eyes;"

Jeremiah 32:5: "And he shall lead Zedekiah to Babylon, and there shall he be until I visit him, saith the LORD: though ye fight with the Chaldeans, ye shall not prosper."

Jeremiah 32:21: "And hast brought forth thy people Israel out of the land of Egypt with signs, and with wonders, and with a strong hand, and with a stretched out arm, and with great terror;"

Jeremiah 32:22: "And hast given them this land, which thou didst swear to their fathers to give them, a land flowing with milk and honey;"

Jeremiah 32:29: "And the Chaldeans, that fight against this city, shall come and set fire on this city, and burn it with the houses, upon whose roofs they have offered incense unto Baal, and poured out drink offerings unto other gods, to provoke me to anger."

Jeremiah 32:30: "For the children of Israel and the children of Judah have only done evil before me from their youth: for the children of Israel have only provoked me to anger with the work of their hands, saith the LORD."

Jeremiah 32:40: "And I will make an everlasting covenant with them, that I will not turn away from them, to do them good; but I will put my fear in their hearts, that they shall not depart from me."

Jeremiah 32:41: "Yea, I will rejoice over them to do them good, and I will plant them in this land assuredly with my whole heart and with my whole soul."

Jeremiah 33:5: "They come to fight with the Chaldeans, but it is to fill them with the dead bodies of men, whom I have slain in mine anger and in my fury, and for all whose wickedness I have hid my face from this city."

Jeremiah 33:21: "Then may also my covenant be broken with David my servant, that he should not have a son to reign upon his throne; and with the Levites the priests, my ministers."

Jeremiah 33:25: "Thus saith the LORD; If my covenant be not with day and night, and if I have not appointed the ordinances of heaven and earth;"

Jeremiah 34:2: "Thus saith the LORD, the God of Israel; Go and speak to Zedekiah king of Judah, and tell him, Thus saith the LORD; Behold, I will give this city into the hand of the king of Babylon, and he shall burn it with fire:"

Jeremiah 34:3: "And thou shalt not escape out of his hand, but shalt surely be taken, and delivered into his hand; and thine eyes shall behold the eyes of the king of Babylon, and he shall speak with thee mouth to mouth, and thou shalt go to Babylon."

Jeremiah 34:5: "But thou shalt die in peace: and with the burnings of thy fathers, the former kings which were before thee, so shall they burn odours for thee; and they will lament thee, saying, Ah lord! for I have pronounced the word, saith the LORD."

Jeremiah 34:8: "This is the word that came unto Jeremiah from the LORD, after that the king Zedekiah had made a covenant with all the people which were at Jerusalem, to proclaim liberty unto them;"

Jeremiah 34:13: "Thus saith the LORD, the God of Israel; I made a covenant with your fathers in the day that I brought them forth out of the land of Egypt, out of the house of bondmen, saying,"

Jeremiah 34:22: "Behold, I will command, saith the LORD, and cause them to return to this city; and they shall fight against it, and take it, and burn it with fire: and I will make the cities of Judah a desolation without an inhabitant."

Jeremiah 36:18: "Then Baruch answered them, He pronounced all these words unto me with his mouth, and I wrote them with ink in the book."

Jeremiah 36:23: "And it came to pass, that when Jehudi had read three or four leaves, he cut it with the penknife, and cast it into the fire that was on the hearth, until all the roll was consumed in the fire that was on the hearth."

Jeremiah 37:8: "And the Chaldeans shall come again, and fight against this city, and take it, and burn it with fire."

Jeremiah 37:10: "For though ye had smitten the whole army of the Chaldeans that fight against you, and there remained but wounded men among them, yet should they rise up every man in his tent, and burn this city with fire."

Jeremiah 37:15: "Wherefore the princes were wroth with Jeremiah, and smote him, and put him in prison in the house of Jonathan the scribe: for they had made that the prison."

Jeremiah 38:6: "Then took they Jeremiah, and cast him into the dungeon of Malchiah the son of Hammelech, that was in the court of the prison: and they let down Jeremiah with cords. And in the dungeon there was no water, but mire: so Jeremiah sunk in the mire."

Jeremiah 38:10: "Then the king commanded Ebedmelech the Ethiopian, saying, Take from hence thirty men with thee, and take up Jeremiah the prophet out of the dungeon, before he die."

Jeremiah 38:11: "So Ebedmelech took the men with him, and went into the house of the king under the treasury, and took thence old cast clouts and old rotten rags, and let them down by cords into the dungeon to Jeremiah."

Jeremiah 38:13: "So they drew up Jeremiah with cords, and took him up out of the dungeon: and Jeremiah remained in the court of the prison."

Jeremiah 38:17: "Then said Jeremiah unto Zedekiah, Thus saith the LORD, the God of hosts, the God of Israel; If thou wilt assuredly go forth unto the king of Babylon's princes, then thy soul shall live, and this city shall not be burned with fire; and thou shalt live, and thine house:"

Jeremiah 38:18: "But if thou wilt not go forth to the king of Babylon's princes, then shall this city be given into the hand of the Chaldeans, and they shall burn it with fire, and thou shalt not escape out of their hand."

Jeremiah 38:23: "So they shall bring out all thy wives and thy children to the Chaldeans: and thou



shalt not escape out of their hand, but shalt be taken by the hand of the king of Babylon: and thou shalt cause this city to be burned with fire."

Jeremiah 38:25: "But if the princes hear that I have talked with thee, and they come unto thee, and say unto thee, Declare unto us now what thou hast said unto the king, hide it not from us, and we will not put thee to death; also what the king said unto thee:"

Jeremiah 38:27: "Then came all the princes unto Jeremiah, and asked him: and he told them according to all these words that the king had commanded. So they left off speaking with him; for the matter was not perceived."

Jeremiah 39:3: "And all the princes of the king of Babylon came in, and sat in the middle gate, even Nergalsharezer, Samgarnebo, Sarsechim, Rabsaris, Nergalsharezer, Rabmag, with all the residue of the princes of the king of Babylon."

Jeremiah 39:7: "Moreover he put out Zedekiah's eyes, and bound him with chains, to carry him to Babylon."

Jeremiah 39:8: "And the Chaldeans burned the king's house, and the houses of the people, with fire, and brake down the walls of Jerusalem."

Jeremiah 39:9: "Then Nebuzaradan the captain of the guard carried away captive into Babylon the remnant of the people that remained in the city, and those that fell away, that fell to him, with the rest of the people that remained."

Jeremiah 40:4: "And now, behold, I loose thee this day from the chains which were upon thine hand. If it seem good unto thee to come with me into Babylon, come; and I will look well unto thee: but if it seem ill unto thee to come with me into Babylon, forbear: behold, all the land is before thee: whither it seemeth good and convenient for thee to go, thither go."

Jeremiah 40:5: "Now while he was not yet gone back, he said, Go back also to Gedaliah the son of Ahikam the son of Shaphan, whom the king of Babylon hath made governor over the cities of Judah, and dwell with him among the people: or go wheresoever it seemeth convenient unto thee to go. So the captain of the guard gave him victuals and a reward, and let him go."

Jeremiah 40:6: "Then went Jeremiah unto Gedaliah the son of Ahikam to Mizpah; and dwelt with him among the people that were left in the land."

Jeremiah 40:9: "And Gedaliah the son of Ahikam the son of Shaphan sware unto them and to their men, saying, Fear not to serve the Chaldeans: dwell in the land, and serve the king of Babylon, and it shall be well with you."

Jeremiah 41:1: "Now it came to pass in the seventh month, that Ishmael the son of Nethaniah the son of Elishama, of the seed royal, and the princes of the king, even ten men with him, came unto Gedaliah the son of Ahikam to Mizpah; and there they did eat bread together in Mizpah."

Jeremiah 41:2: "Then arose Ishmael the son of Nethaniah, and the ten men that were with him, and smote Gedaliah the son of Ahikam the son of Shaphan with the sword, and slew him, whom the king of Babylon had made governor over the land."

Jeremiah 41:3: "Ishmael also slew all the Jews that were with him, even with Gedaliah, at Mizpah, and the Chaldeans that were found there, and the men of war."

Jeremiah 41:5: "That there came certain from Shechem, from Shiloh, and from Samaria, even fourscore men, having their beards shaven, and their clothes rent, and having cut themselves, with offerings and incense in their hand, to bring them to the house of the LORD."

Jeremiah 41:7: "And it was so, when they came into the midst of the city, that Ishmael the son of Nethaniah slew them, and cast them into the midst of the pit, he, and the men that were with him."

Jeremiah 41:9: "Now the pit wherein Ishmael had cast all the dead bodies of the men, whom he had slain because of Gedaliah, was it which Asa the king had made for fear of Baasha king of Israel: and Ishmael the son of Nethaniah filled it with them that were slain."

Jeremiah 41:11: "But when Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces that were with him, heard of all the evil that Ishmael the son of Nethaniah had done,"

Jeremiah 41:12: "Then they took all the men, and went to fight with Ishmael the son of Nethaniah,

and found him by the great waters that are in Gibeon."

Jeremiah 41:13: "Now it came to pass, that when all the people which were with Ishmael saw Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces that were with him, then they were glad."

Jeremiah 41:15: "But Ishmael the son of Nethaniah escaped from Johanan with eight men, and went to the Ammonites."

Jeremiah 41:16: "Then took Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces that were with him, all the remnant of the people whom he had recovered from Ishmael the son of Nethaniah, from Mizpah, after that he had slain Gedaliah the son of Ahikam, even mighty men of war, and the women, and the children, and the eunuchs, whom he had brought again from Gibeon:"

Jeremiah 42:6: "Whether it be good, or whether it be evil, we will obey the voice of the LORD our God, to whom we send thee; that it may be well with us, when we obey the voice of the LORD our God."

Jeremiah 42:8: "Then called he Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces which were with him, and all the people from the least even to the greatest,"

Jeremiah 42:11: "Be not afraid of the king of Babylon, of whom ye are afraid; be not afraid of him, saith the LORD: for I am with you to save you, and to deliver you from his hand."

Jeremiah 42:17: "So shall it be with all the men that set their faces to go into Egypt to sojourn there; they shall die by the sword, by the famine, and by the pestilence: and none of them shall remain or escape from the evil that I will bring upon them."

Jeremiah 43:6: "Even men, and women, and children, and the king's daughters, and every person that Nebuzaradan the captain of the guard had left with Gedaliah the son of Ahikam the son of Shaphan, and Jeremiah the prophet, and Baruch the son of Neriah."

Jeremiah 43:12: "And I will kindle a fire in the houses of the gods of Egypt; and he shall burn them, and carry them away captives: and he shall array himself with the land of Egypt, as a shepherd putteth on his garment; and he shall go forth from thence in peace."

Jeremiah 43:13: "He shall break also the images of Bethshemesh, that is in the land of Egypt; and the houses of the gods of the Egyptians shall he burn with fire."

Jeremiah 44:8: "In that ye provoke me unto wrath with the works of your hands, burning incense unto other gods in the land of Egypt, whither ye be gone to dwell, that ye might cut yourselves off, and that ye might be a curse and a reproach among all the nations of the earth?"

Jeremiah 44:25: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel, saying; Ye and your wives have both spoken with your mouths, and fulfilled with your hand, saying, We will surely perform our vows that we have vowed, to burn incense to the queen of heaven, and to pour out drink offerings unto her: ye will surely accomplish your vows, and surely perform your vows."

Jeremiah 46:4: "Harness the horses; and get up, ye horsemen, and stand forth with your helmets; furbish the spears, and put on the brigandines."

Jeremiah 46:10: "For this is the day of the Lord GOD of hosts, a day of vengeance, that he may avenge him of his adversaries: and the sword shall devour, and it shall be satiate and made drunk with their blood: for the Lord GOD of hosts hath a sacrifice in the north country by the river Euphrates."

Jeremiah 46:22: "The voice thereof shall go like a serpent; for they shall march with an army, and come against her with axes, as hewers of wood."

Jeremiah 46:25: "The LORD of hosts, the God of Israel, saith; Behold, I will punish the multitude of No, and Pharaoh, and Egypt, with their gods, and their kings; even Pharaoh, and all them that trust in him:"

Jeremiah 46:28: "Fear thou not, O Jacob my servant, saith the LORD: for I am with thee; for I will make a full end of all the nations whither I have driven thee: but I will not make a full end of thee, but correct thee in measure; yet will I not leave thee wholly unpunished."

Jeremiah 47:5: "Baldness is come upon Gaza; Ashkelon is cut off with the remnant of their valley:

how long wilt thou cut thyself?"

Jeremiah 48:7: "For because thou hast trusted in thy works and in thy treasures, thou shalt also be taken: and Chemosh shall go forth into captivity with his priests and his princes together."

Jeremiah 48:32: "O vine of Sibmah, I will weep for thee with the weeping of Jazer: thy plants are gone over the sea, they reach even to the sea of Jazer: the spoiler is fallen upon thy summer fruits and upon thy vintage."

Jeremiah 48:33: "And joy and gladness is taken from the plentiful field, and from the land of Moab, and I have caused wine to fail from the winepresses: none shall tread with shouting; their shouting shall be no shouting."

Jeremiah 48:39: "They shall howl, saying, How is it broken down! how hath Moab turned the back with shame! so shall Moab be a derision and a dismaying to all them about him."

Jeremiah 49:2: "Therefore, behold, the days come, saith the LORD, that I will cause an alarm of war to be heard in Rabbah of the Ammonites; and it shall be a desolate heap, and her daughters shall be burned with fire: then shall Israel be heir unto them that were his heirs, saith the LORD."

Jeremiah 49:3: "Howl, O Heshbon, for Ai is spoiled: cry, ye daughters of Rabbah, gird you with sackcloth; lament, and run to and fro by the hedges; for their king shall go into captivity, and his priests and his princes together."

Jeremiah 49:20: "Therefore hear the counsel of the LORD, that he hath taken against Edom; and his purposes, that he hath purposed against the inhabitants of Teman: Surely the least of the flock shall draw them out: surely he shall make their habitations desolate with them."

Jeremiah 50:5: "They shall ask the way to Zion with their faces thitherward, saying, Come, and let us join ourselves to the LORD in a perpetual covenant that shall not be forgotten."

Jeremiah 50:39: "Therefore the wild beasts of the desert with the wild beasts of the islands shall dwell there, and the owls shall dwell therein: and it shall be no more inhabited for ever; neither shall it be dwelt in from generation to generation."

Jeremiah 50:45: "Therefore hear ye the counsel of the LORD, that he hath taken against Babylon; and his purposes, that he hath purposed against the land of the Chaldeans: Surely the least of the flock shall draw them out: surely he shall make their habitation desolate with them."

Jeremiah 51:5: "For Israel hath not been forsaken, nor Judah of his God, of the LORD of hosts; though their land was filled with sin against the Holy One of Israel."

Jeremiah 51:14: "The LORD of hosts hath sworn by himself, saying, Surely I will fill thee with men, as with caterpillers; and they shall lift up a shout against thee."

Jeremiah 51:16: "When he uttereth his voice, there is a multitude of waters in the heavens; and he causeth the vapours to ascend from the ends of the earth: he maketh lightnings with rain, and bringeth forth the wind out of his treasures."

Jeremiah 51:20: "Thou art my battle axe and weapons of war: for with thee will I break in pieces the nations, and with thee will I destroy kingdoms;"

Jeremiah 51:21: "And with thee will I break in pieces the horse and his rider; and with thee will I break in pieces the chariot and his rider;"

Jeremiah 51:22: "With thee also will I break in pieces man and woman; and with thee will I break in pieces old and young; and with thee will I break in pieces the young man and the maid;"

Jeremiah 51:23: "I will also break in pieces with thee the shepherd and his flock; and with thee will I break in pieces the husbandman and his yoke of oxen; and with thee will I break in pieces captains and rulers."

Jeremiah 51:28: "Prepare against her the nations with the kings of the Medes, the captains thereof, and all the rulers thereof, and all the land of his dominion."

Jeremiah 51:32: "And that the passages are stopped, and the reeds they have burned with fire, and the men of war are affrighted."

Jeremiah 51:34: "Nebuchadrezzar the king of Babylon hath devoured me, he hath crushed me, he hath made me an empty vessel, he hath swallowed me up like a dragon, he hath filled his belly with

my delicates, he hath cast me out."

Jeremiah 51:40: "I will bring them down like lambs to the slaughter, like rams with he goats."

Jeremiah 51:42: "The sea is come up upon Babylon: she is covered with the multitude of the waves thereof."

Jeremiah 51:58: "Thus saith the LORD of hosts; The broad walls of Babylon shall be utterly broken, and her high gates shall be burned with fire; and the people shall labour in vain, and the folk in the fire, and they shall be weary."

Jeremiah 51:59: "The word which Jeremiah the prophet commanded Seraiah the son of Neriah, the son of Maaseiah, when he went with Zedekiah the king of Judah into Babylon in the fourth year of his reign. And this Seraiah was a quiet prince."

Jeremiah 52:13: "And burned the house of the LORD, and the king's house; and all the houses of Jerusalem, and all the houses of the great men, burned he with fire:"

Jeremiah 52:14: "And all the army of the Chaldeans, that were with the captain of the guard, brake down all the walls of Jerusalem round about."

Jeremiah 52:22: "And a chapiter of brass was upon it; and the height of one chapiter was five cubits, with network and pomegranates upon the chapiters round about, all of brass. The second pillar also and the pomegranates were like unto these."

Jeremiah 52:32: "And spake kindly unto him, and set his throne above the throne of the kings that were with him in Babylon,"

Lamentations 1:2: "She weepeth sore in the night, and her tears are on her cheeks: among all her lovers she hath none to comfort her: all her friends have dealt treacherously with her, they are become her enemies."

Lamentations 1:16: "For these things I weep; mine eye, mine eye runneth down with water, because the comforter that should relieve my soul is far from me: my children are desolate, because the enemy prevailed."

Lamentations 2:1: "How hath the LORD covered the daughter of Zion with a cloud in his anger, and cast down from heaven unto the earth the beauty of Israel, and remembered not his footstool in the day of his anger!"

Lamentations 2:4: "He hath bent his bow like an enemy: he stood with his right hand as an adversary, and slew all that were pleasant to the eye in the tabernacle of the daughter of Zion: he poured out his fury like fire."

Lamentations 2:10: "The elders of the daughter of Zion sit upon the ground, and keep silence: they have cast up dust upon their heads; they have girded themselves with sackcloth: the virgins of Jerusalem hang down their heads to the ground."

Lamentations 2:11: "Mine eyes do fail with tears, my bowels are troubled, my liver is poured upon the earth, for the destruction of the daughter of my people; because the children and the sucklings swoon in the streets of the city."

Lamentations 3:5: "He hath builded against me, and compassed me with gall and travail."

Lamentations 3:9: "He hath inclosed my ways with hewn stone, he hath made my paths crooked."

Lamentations 3:15: "He hath filled me with bitterness, he hath made me drunken with wormwood."

Lamentations 3:16: "He hath also broken my teeth with gravel stones, he hath covered me with ashes."

Lamentations 3:30: "He giveth his cheek to him that smiteth him: he is filled full with reproach."

Lamentations 3:41: "Let us lift up our heart with our hands unto God in the heavens."

Lamentations 3:43: "Thou hast covered with anger, and persecuted us: thou hast slain, thou hast not pitied."

Lamentations 3:44: "Thou hast covered thyself with a cloud, that our prayer should not pass through."

Lamentations 3:48: "Mine eye runneth down with rivers of water for the destruction of the daughter of my people."

Lamentations 4:9: "They that be slain with the sword are better than they that be slain with hunger: for these pine away, stricken through for want of the fruits of the field."

Lamentations 4:14: "They have wandered as blind men in the streets, they have polluted themselves with blood, so that men could not touch their garments."

Lamentations 5:6: "We have given the hand to the Egyptians, and to the Assyrians, to be satisfied with bread."

Lamentations 5:9: "We gat our bread with the peril of our lives because of the sword of the wilderness."

Ezekiel 1:15: "Now as I beheld the living creatures, behold one wheel upon the earth by the living creatures, with his four faces."

Ezekiel 2:6: "And thou, son of man, be not afraid of them, neither be afraid of their words, though briars and thorns be with thee, and thou dost dwell among scorpions: be not afraid of their words, nor be dismayed at their looks, though they be a rebellious house."

Ezekiel 3:3: "And he said unto me, Son of man, cause thy belly to eat, and fill thy bowels with this roll that I give thee. Then did I eat it; and it was in my mouth as honey for sweetness."

Ezekiel 3:4: "And he said unto me, Son of man, go, get thee unto the house of Israel, and speak with my words unto them."

Ezekiel 3:10: "Moreover he said unto me, Son of man, all my words that I shall speak unto thee receive in thine heart, and hear with thine ears."

Ezekiel 3:22: "And the hand of the LORD was there upon me; and he said unto me, Arise, go forth into the plain, and I will there talk with thee."

Ezekiel 3:24: "Then the spirit entered into me, and set me upon my feet, and spake with me, and said unto me, Go, shut thyself within thine house."

Ezekiel 3:25: "But thou, O son of man, behold, they shall put bands upon thee, and shall bind thee with them, and thou shalt not go out among them:"

Ezekiel 3:27: "But when I speak with thee, I will open thy mouth, and thou shalt say unto them, Thus saith the Lord GOD; He that heareth, let him hear; and he that forbeareth, let him forbear: for they are a rebellious house."

Ezekiel 4:12: "And thou shalt eat it as barley cakes, and thou shalt bake it with dung that cometh out of man, in their sight."

Ezekiel 4:16: "Moreover he said unto me, Son of man, behold, I will break the staff of bread in Jerusalem: and they shall eat bread by weight, and with care; and they shall drink water by measure, and with astonishment:"

Ezekiel 4:17: "That they may want bread and water, and be astonished one with another, and consume away for their iniquity."

Ezekiel 5:2: "Thou shalt burn with fire a third part in the midst of the city, when the days of the siege are fulfilled: and thou shalt take a third part, and smite about it with a knife: and a third part thou shalt scatter in the wind; and I will draw out a sword after them."

Ezekiel 5:11: "Wherefore, as I live, saith the Lord GOD; Surely, because thou hast defiled my sanctuary with all thy detestable things, and with all thine abominations, therefore will I also diminish thee; neither shall mine eye spare, neither will I have any pity."

Ezekiel 5:12: "A third part of thee shall die with the pestilence, and with famine shall they be consumed in the midst of thee: and a third part shall fall by the sword round about thee; and I will scatter a third part into all the winds, and I will draw out a sword after them."

Ezekiel 6:9: "And they that escape of you shall remember me among the nations whither they shall be carried captives, because I am broken with their whorish heart, which hath departed from me, and with their eyes, which go a whoring after their idols: and they shall lothe themselves for the evils which they have committed in all their abominations."

Ezekiel 6:11: "Thus saith the Lord GOD; Smite with thine hand, and stamp with thy foot, and say, Alas for all the evil abominations of the house of Israel! for they shall fall by the sword, by the

famine, and by the pestilence."

Ezekiel 7:15: "The sword is without, and the pestilence and the famine within: he that is in the field shall die with the sword; and he that is in the city, famine and pestilence shall devour him."

Ezekiel 7:18: "They shall also gird themselves with sackcloth, and horror shall cover them; and shame shall be upon all faces, and baldness upon all their heads."

Ezekiel 7:27: "The king shall mourn, and the prince shall be clothed with desolation, and the hands of the people of the land shall be troubled: I will do unto them after their way, and according to their deserts will I judge them; and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 8:11: "And there stood before them seventy men of the ancients of the house of Israel, and in the midst of them stood Jaazaniah the son of Shaphan, with every man his censer in his hand; and a thick cloud of incense went up."

Ezekiel 8:16: "And he brought me into the inner court of the LORD's house, and, behold, at the door of the temple of the LORD, between the porch and the altar, were about five and twenty men, with their backs toward the temple of the LORD, and their faces toward the east; and they worshipped the sun toward the east."

Ezekiel 8:17: "Then he said unto me, Hast thou seen this, O son of man? Is it a light thing to the house of Judah that they commit the abominations which they commit here? for they have filled the land with violence, and have returned to provoke me to anger: and, lo, they put the branch to their nose."

Ezekiel 8:18: "Therefore will I also deal in fury: mine eye shall not spare, neither will I have pity: and though they cry in mine ears with a loud voice, yet will I not hear them."

Ezekiel 9:1: "He cried also in mine ears with a loud voice, saying, Cause them that have charge over the city to draw near, even every man with his destroying weapon in his hand."

Ezekiel 9:2: "And, behold, six men came from the way of the higher gate, which lieth toward the north, and every man a slaughter weapon in his hand; and one man among them was clothed with linen, with a writer's inkhorn by his side: and they went in, and stood beside the brasen altar."

Ezekiel 9:3: "And the glory of the God of Israel was gone up from the cherub, whereupon he was, to the threshold of the house. And he called to the man clothed with linen, which had the writer's inkhorn by his side;"

Ezekiel 9:7: "And he said unto them, Defile the house, and fill the courts with the slain: go ye forth. And they went forth, and slew in the city."

Ezekiel 9:11: "And, behold, the man clothed with linen, which had the inkhorn by his side, reported the matter, saying, I have done as thou hast commanded me."

Ezekiel 10:2: "And he spake unto the man clothed with linen, and said, Go in between the wheels, even under the cherub, and fill thine hand with coals of fire from between the cherubims, and scatter them over the city. And he went in in my sight."

Ezekiel 10:4: "Then the glory of the LORD went up from the cherub, and stood over the threshold of the house; and the house was filled with the cloud, and the court was full of the brightness of the LORD's glory."

Ezekiel 10:6: "And it came to pass, that when he had commanded the man clothed with linen, saying, Take fire from between the wheels, from between the cherubims; then he went in, and stood beside the wheels."

Ezekiel 10:7: "And one cherub stretched forth his hand from between the cherubims unto the fire that was between the cherubims, and took thereof, and put it into the hands of him that was clothed with linen: who took it, and went out."

Ezekiel 11:6: "Ye have multiplied your slain in this city, and ye have filled the streets thereof with the slain."

Ezekiel 11:13: "And it came to pass, when I prophesied, that Pelatiah the son of Benaiah died. Then fell I down upon my face, and cried with a loud voice, and said, Ah Lord GOD! wilt thou make a full end of the remnant of Israel?"

Ezekiel 12:7: "And I did so as I was commanded: I brought forth my stuff by day, as stuff for captivity, and in the even I digged through the wall with mine hand; I brought it forth in the twilight, and I bare it upon my shoulder in their sight."

Ezekiel 12:12: "And the prince that is among them shall bear upon his shoulder in the twilight, and shall go forth: they shall dig through the wall to carry out thereby: he shall cover his face, that he see not the ground with his eyes."

Ezekiel 12:18: "Son of man, eat thy bread with quaking, and drink thy water with trembling and with carefulness;"

Ezekiel 12:19: "And say unto the people of the land, Thus saith the Lord GOD of the inhabitants of Jerusalem, and of the land of Israel; They shall eat their bread with carefulness, and drink their water with astonishment, that her land may be desolate from all that is therein, because of the violence of all them that dwell therein."

Ezekiel 13:10: "Because, even because they have seduced my people, saying, Peace; and there was no peace; and one built up a wall, and, lo, others daubed it with untempered mortar:"

Ezekiel 13:11: "Say unto them which daub it with untempered mortar, that it shall fall: there shall be an overflowing shower; and ye, O great hailstones, shall fall; and a stormy wind shall rend it."

Ezekiel 13:13: "Therefore thus saith the Lord GOD; I will even rend it with a stormy wind in my fury; and there shall be an overflowing shower in mine anger, and great hailstones in my fury to consume it."

Ezekiel 13:14: "So will I break down the wall that ye have daubed with untempered mortar, and bring it down to the ground, so that the foundation thereof shall be discovered, and it shall fall, and ye shall be consumed in the midst thereof: and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 13:15: "Thus will I accomplish my wrath upon the wall, and upon them that have daubed it with untempered mortar, and will say unto you, The wall is no more, neither they that daubed it;"

Ezekiel 13:22: "Because with lies ye have made the heart of the righteous sad, whom I have not made sad; and strengthened the hands of the wicked, that he should not return from his wicked way, by promising him life:"

Ezekiel 14:11: "That the house of Israel may go no more astray from me, neither be polluted any more with all their transgressions; but that they may be my people, and I may be their God, saith the Lord GOD."

Ezekiel 16:8: "Now when I passed by thee, and looked upon thee, behold, thy time was the time of love; and I spread my skirt over thee, and covered thy nakedness: yea, I swore unto thee, and entered into a covenant with thee, saith the Lord GOD, and thou becamest mine."

Ezekiel 16:9: "Then washed I thee with water; yea, I thoroughly washed away thy blood from thee, and I anointed thee with oil."

Ezekiel 16:10: "I clothed thee also with brodered work, and shod thee with badgers' skin, and I girded thee about with fine linen, and I covered thee with silk."

Ezekiel 16:11: "I decked thee also with ornaments, and I put bracelets upon thy hands, and a chain on thy neck."

Ezekiel 16:13: "Thus wast thou decked with gold and silver; and thy raiment was of fine linen, and silk, and brodered work; thou didst eat fine flour, and honey, and oil: and thou wast exceeding beautiful, and thou didst prosper into a kingdom."

Ezekiel 16:16: "And of thy garments thou didst take, and deckedst thy high places with divers colours, and playedst the harlot thereupon: the like things shall not come, neither shall it be so."

Ezekiel 16:17: "Thou hast also taken thy fair jewels of my gold and of my silver, which I had given thee, and madest to thyself images of men, and didst commit whoredom with them,"

Ezekiel 16:26: "Thou hast also committed fornication with the Egyptians thy neighbours, great of flesh; and hast increased thy whoredoms, to provoke me to anger."

Ezekiel 16:28: "Thou hast played the whore also with the Assyrians, because thou wast unsatiable; yea, thou hast played the harlot with them, and yet couldest not be satisfied."

Ezekiel 16:36: "Thus saith the Lord GOD; Because thy filthiness was poured out, and thy nakedness discovered through thy whoredoms with thy lovers, and with all the idols of thy abominations, and by the blood of thy children, which thou didst give unto them;"

Ezekiel 16:37: "Behold, therefore I will gather all thy lovers, with whom thou hast taken pleasure, and all them that thou hast loved, with all them that thou hast hated; I will even gather them round about against thee, and will discover thy nakedness unto them, that they may see all thy nakedness."

Ezekiel 16:40: "They shall also bring up a company against thee, and they shall stone thee with stones, and thrust thee through with their swords."

Ezekiel 16:41: "And they shall burn thine houses with fire, and execute judgments upon thee in the sight of many women: and I will cause thee to cease from playing the harlot, and thou also shalt give no hire any more."

Ezekiel 16:59: "For thus saith the Lord GOD; I will even deal with thee as thou hast done, which hast despised the oath in breaking the covenant."

Ezekiel 16:60: "Nevertheless I will remember my covenant with thee in the days of thy youth, and I will establish unto thee an everlasting covenant."

Ezekiel 16:62: "And I will establish my covenant with thee; and thou shalt know that I am the LORD:"

Ezekiel 17:3: "And say, Thus saith the Lord GOD; A great eagle with great wings, longwinged, full of feathers, which had divers colours, came unto Lebanon, and took the highest branch of the cedar:"

Ezekiel 17:7: "There was also another great eagle with great wings and many feathers: and, behold, this vine did bend her roots toward him, and shot forth her branches toward him, that he might water it by the furrows of her plantation."

Ezekiel 17:12: "Say now to the rebellious house, Know ye not what these things mean? tell them, Behold, the king of Babylon is come to Jerusalem, and hath taken the king thereof, and the princes thereof, and led them with him to Babylon;"

Ezekiel 17:13: "And hath taken of the king's seed, and made a covenant with him, and hath taken an oath of him: he hath also taken the mighty of the land:"

Ezekiel 17:16: "As I live, saith the Lord GOD, surely in the place where the king dwelleth that made him king, whose oath he despised, and whose covenant he brake, even with him in the midst of Babylon he shall die."

Ezekiel 17:17: "Neither shall Pharaoh with his mighty army and great company make for him in the war, by casting up mounts, and building forts, to cut off many persons:"

Ezekiel 17:20: "And I will spread my net upon him, and he shall be taken in my snare, and I will bring him to Babylon, and will plead with him there for his trespass that he hath trespassed against me."

Ezekiel 17:21: "And all his fugitives with all his bands shall fall by the sword, and they that remain shall be scattered toward all winds: and ye shall know that I the LORD have spoken it."

Ezekiel 18:7: "And hath not oppressed any, but hath restored to the debtor his pledge, hath spoiled none by violence, hath given his bread to the hungry, and hath covered the naked with a garment;"

Ezekiel 18:16: "Neither hath oppressed any, hath not withholden the pledge, neither hath spoiled by violence, but hath given his bread to the hungry, and hath covered the naked with a garment,"

Ezekiel 19:4: "The nations also heard of him; he was taken in their pit, and they brought him with chains unto the land of Egypt."

Ezekiel 19:11: "And she had strong rods for the sceptres of them that bare rule, and her stature was exalted among the thick branches, and she appeared in her height with the multitude of her branches."

Ezekiel 20:6: "In the day that I lifted up mine hand unto them, to bring them forth of the land of Egypt into a land that I had espied for them, flowing with milk and honey, which is the glory of all lands:"



Ezekiel 20:7: "Then said I unto them, Cast ye away every man the abominations of his eyes, and defile not yourselves with the idols of Egypt: I am the LORD your God."

Ezekiel 20:15: "Yet also I lifted up my hand unto them in the wilderness, that I would not bring them into the land which I had given them, flowing with milk and honey, which is the glory of all lands;"

Ezekiel 20:18: "But I said unto their children in the wilderness, Walk ye not in the statutes of your fathers, neither observe their judgments, nor defile yourselves with their idols:"

Ezekiel 20:31: "For when ye offer your gifts, when ye make your sons to pass through the fire, ye pollute yourselves with all your idols, even unto this day: and shall I be enquired of by you, O house of Israel? As I live, saith the Lord GOD, I will not be enquired of by you."

Ezekiel 20:33: "As I live, saith the Lord GOD, surely with a mighty hand, and with a stretched out arm, and with fury poured out, will I rule over you:"

Ezekiel 20:34: "And I will bring you out from the people, and will gather you out of the countries wherein ye are scattered, with a mighty hand, and with a stretched out arm, and with fury poured out."

Ezekiel 20:35: "And I will bring you into the wilderness of the people, and there will I plead with you face to face."

Ezekiel 20:36: "Like as I pleaded with your fathers in the wilderness of the land of Egypt, so will I plead with you, saith the Lord GOD."

Ezekiel 20:39: "As for you, O house of Israel, thus saith the Lord GOD; Go ye, serve ye every one his idols, and hereafter also, if ye will not hearken unto me: but pollute ye my holy name no more with your gifts, and with your idols."

Ezekiel 20:40: "For in mine holy mountain, in the mountain of the height of Israel, saith the Lord GOD, there shall all the house of Israel, all of them in the land, serve me: there will I accept them, and there will I require your offerings, and the firstfruits of your oblations, with all your holy things."

Ezekiel 20:41: "I will accept you with your sweet savour, when I bring you out from the people, and gather you out of the countries wherein ye have been scattered; and I will be sanctified in you before the heathen."

Ezekiel 20:44: "And ye shall know that I am the LORD when I have wrought with you for my name's sake, not according to your wicked ways, nor according to your corrupt doings, O ye house of Israel, saith the Lord GOD."

Ezekiel 21:6: "Sigh therefore, thou son of man, with the breaking of thy loins; and with bitterness sigh before their eyes."

Ezekiel 21:21: "For the king of Babylon stood at the parting of the way, at the head of the two ways, to use divination: he made his arrows bright, he consulted with images, he looked in the liver."

Ezekiel 21:22: "At his right hand was the divination for Jerusalem, to appoint captains, to open the mouth in the slaughter, to lift up the voice with shouting, to appoint battering rams against the gates, to cast a mount, and to build a fort."

Ezekiel 21:24: "Therefore thus saith the Lord GOD; Because ye have made your iniquity to be remembered, in that your transgressions are discovered, so that in all your doings your sins do appear; because, I say, that ye are come to remembrance, ye shall be taken with the hand."

Ezekiel 22:7: "In thee have they set light by father and mother: in the midst of thee have they dealt by oppression with the stranger: in thee have they vexed the fatherless and the widow."

Ezekiel 22:11: "And one hath committed abomination with his neighbour's wife; and another hath lewdly defiled his daughter in law; and another in thee hath humbled his sister, his father's daughter."

Ezekiel 22:14: "Can thine heart endure, or can thine hands be strong, in the days that I shall deal with thee? I the LORD have spoken it, and will do it."

Ezekiel 22:28: "And her prophets have daubed them with untempered mortar, seeing vanity, and divining lies unto them, saying, Thus saith the Lord GOD, when the LORD hath not spoken."

Ezekiel 22:31: "Therefore have I poured out mine indignation upon them; I have consumed them with the fire of my wrath: their own way have I recompensed upon their heads, saith the Lord GOD."

Ezekiel 23:6: "Which were clothed with blue, captains and rulers, all of them desirable young men, horsemen riding upon horses."

Ezekiel 23:7: "Thus she committed her whoredoms with them, with all them that were the chosen men of Assyria, and with all on whom she doted: with all their idols she defiled herself."

Ezekiel 23:8: "Neither left she her whoredoms brought from Egypt: for in her youth they lay with her, and they bruised the breasts of her virginity, and poured their whoredom upon her."

Ezekiel 23:10: "These discovered her nakedness: they took her sons and her daughters, and slew her with the sword: and she became famous among women; for they had executed judgment upon her."

Ezekiel 23:14: "And that she increased her whoredoms: for when she saw men pourtrayed upon the wall, the images of the Chaldeans pourtrayed with vermilion,"

Ezekiel 23:15: "Girded with girdles upon their loins, exceeding in dyed attire upon their heads, all of them princes to look to, after the manner of the Babylonians of Chaldea, the land of their nativity:"

Ezekiel 23:16: "And as soon as she saw them with her eyes, she doted upon them, and sent messengers unto them into Chaldea."

Ezekiel 23:17: "And the Babylonians came to her into the bed of love, and they defiled her with their whoredom, and she was polluted with them, and her mind was alienated from them."

Ezekiel 23:23: "The Babylonians, and all the Chaldeans, Pekod, and Shoa, and Koa, and all the Assyrians with them: all of them desirable young men, captains and rulers, great lords and renowned, all of them riding upon horses."

Ezekiel 23:24: "And they shall come against thee with chariots, wagons, and wheels, and with an assembly of people, which shall set against thee buckler and shield and helmet round about: and I will set judgment before them, and they shall judge thee according to their judgments."

Ezekiel 23:25: "And I will set my jealousy against thee, and they shall deal furiously with thee: they shall take away thy nose and thine ears; and thy remnant shall fall by the sword: they shall take thy sons and thy daughters; and thy residue shall be devoured by the fire."

Ezekiel 23:29: "And they shall deal with thee hatefully, and shall take away all thy labour, and shall leave thee naked and bare: and the nakedness of thy whoredoms shall be discovered, both thy lewdness and thy whoredoms."

Ezekiel 23:30: "I will do these things unto thee, because thou hast gone a whoring after the heathen, and because thou art polluted with their idols."

Ezekiel 23:33: "Thou shalt be filled with drunkenness and sorrow, with the cup of astonishment and desolation, with the cup of thy sister Samaria."

Ezekiel 23:37: "That they have committed adultery, and blood is in their hands, and with their idols have they committed adultery, and have also caused their sons, whom they bare unto me, to pass for them through the fire, to devour them."

Ezekiel 23:40: "And furthermore, that ye have sent for men to come from far, unto whom a messenger was sent; and, lo, they came: for whom thou didst wash thyself, paintedst thy eyes, and deckedst thyself with ornaments,"

Ezekiel 23:42: "And a voice of a multitude being at ease was with her: and with the men of the common sort were brought Sabeans from the wilderness, which put bracelets upon their hands, and beautiful crowns upon their heads."

Ezekiel 23:43: "Then said I unto her that was old in adulteries, Will they now commit whoredoms with her, and she with them?"

Ezekiel 23:47: "And the company shall stone them with stones, and dispatch them with their

swords; they shall slay their sons and their daughters, and burn up their houses with fire."

Ezekiel 24:4: "Gather the pieces thereof into it, even every good piece, the thigh, and the shoulder; fill it with the choice bones."

Ezekiel 24:7: "For her blood is in the midst of her; she set it upon the top of a rock; she poured it not upon the ground, to cover it with dust;"

Ezekiel 24:12: "She hath wearied herself with lies, and her great scum went not forth out of her: her scum shall be in the fire."

Ezekiel 24:16: "Son of man, behold, I take away from thee the desire of thine eyes with a stroke: yet neither shalt thou mourn nor weep, neither shall thy tears run down."

Ezekiel 24:26: "That he that escapeth in that day shall come unto thee, to cause thee to hear it with thine ears?"

Ezekiel 25:6: "For thus saith the Lord GOD; Because thou hast clapped thine hands, and stamped with the feet, and rejoiced in heart with all thy despite against the land of Israel;"

Ezekiel 25:10: "Unto the men of the east with the Ammonites, and will give them in possession, that the Ammonites may not be remembered among the nations."

Ezekiel 25:15: "Thus saith the Lord GOD; Because the Philistines have dealt by revenge, and have taken vengeance with a despiteful heart, to destroy it for the old hatred;"

Ezekiel 25:17: "And I will execute great vengeance upon them with furious rebukes; and they shall know that I am the LORD, when I shall lay my vengeance upon them."

Ezekiel 26:7: "For thus saith the Lord GOD; Behold, I will bring upon Tyrus Nebuchadrezzar king of Babylon, a king of kings, from the north, with horses, and with chariots, and with horsemen, and companies, and much people."

Ezekiel 26:8: "He shall slay with the sword thy daughters in the field: and he shall make a fort against thee, and cast a mount against thee, and lift up the buckler against thee."

Ezekiel 26:9: "And he shall set engines of war against thy walls, and with his axes he shall break down thy towers."

Ezekiel 26:11: "With the hoofs of his horses shall he tread down all thy streets: he shall slay thy people by the sword, and thy strong garrisons shall go down to the ground."

Ezekiel 26:16: "Then all the princes of the sea shall come down from their thrones, and lay away their robes, and put off their brodered garments: they shall clothe themselves with trembling; they shall sit upon the ground, and shall tremble at every moment, and be astonished at thee."

Ezekiel 26:20: "When I shall bring thee down with them that descend into the pit, with the people of old time, and shall set thee in the low parts of the earth, in places desolate of old, with them that go down to the pit, that thou be not inhabited; and I shall set glory in the land of the living;"

Ezekiel 27:7: "Fine linen with brodered work from Egypt was that which thou spreadest forth to be thy sail; blue and purple from the isles of Elishah was that which covered thee."

Ezekiel 27:9: "The ancients of Gebal and the wise men thereof were in thee thy calkers: all the ships of the sea with their mariners were in thee to occupy thy merchandise."

Ezekiel 27:11: "The men of Arvad with thine army were upon thy walls round about, and the Gammadims were in thy towers: they hanged their shields upon thy walls round about; they have made thy beauty perfect."

Ezekiel 27:12: "Tarshish was thy merchant by reason of the multitude of all kind of riches; with silver, iron, tin, and lead, they traded in thy fairs."

Ezekiel 27:14: "They of the house of Togarmah traded in thy fairs with horses and horsemen and mules."

Ezekiel 27:16: "Syria was thy merchant by reason of the multitude of the wares of thy making: they occupied in thy fairs with emeralds, purple, and brodered work, and fine linen, and coral, and agate."

Ezekiel 27:21: "Arabia, and all the princes of Kedar, they occupied with thee in lambs, and rams, and goats: in these were they thy merchants."

Ezekiel 27:22: "The merchants of Sheba and Raamah, they were thy merchants: they occupied in thy fairs with chief of all spices, and with all precious stones, and gold."

Ezekiel 27:24: "These were thy merchants in all sorts of things, in blue clothes, and brodered work, and in chests of rich apparel, bound with cords, and made of cedar, among thy merchandise."

Ezekiel 27:31: "And they shall make themselves utterly bald for thee, and gird them with sackcloth, and they shall weep for thee with bitterness of heart and bitter wailing."

Ezekiel 27:33: "When thy wares went forth out of the seas, thou filledst many people; thou didst enrich the kings of the earth with the multitude of thy riches and of thy merchandise."

Ezekiel 28:4: "With thy wisdom and with thine understanding thou hast gotten thee riches, and hast gotten gold and silver into thy treasures:"

Ezekiel 28:16: "By the multitude of thy merchandise they have filled the midst of thee with violence, and thou hast sinned: therefore I will cast thee as profane out of the mountain of God: and I will destroy thee, O covering cherub, from the midst of the stones of fire."

Ezekiel 28:26: "And they shall dwell safely therein, and shall build houses, and plant vineyards; yea, they shall dwell with confidence, when I have executed judgments upon all those that despise them round about them; and they shall know that I am the LORD their God."

Ezekiel 30:5: "Ethiopia, and Libya, and Lydia, and all the mingled people, and Chub, and the men of the land that is in league, shall fall with them by the sword."

Ezekiel 30:11: "He and his people with him, the terrible of the nations, shall be brought to destroy the land: and they shall draw their swords against Egypt, and fill the land with the slain."

Ezekiel 30:24: "And I will strengthen the arms of the king of Babylon, and put my sword in his hand: but I will break Pharaoh's arms, and he shall groan before him with the groanings of a deadly wounded man."

Ezekiel 31:3: "Behold, the Assyrian was a cedar in Lebanon with fair branches, and with a shadowing shroud, and of an high stature; and his top was among the thick boughs."

Ezekiel 31:4: "The waters made him great, the deep set him up on high with her rivers running round about his plants, and sent her little rivers unto all the trees of the field."

Ezekiel 31:11: "I have therefore delivered him into the hand of the mighty one of the heathen; he shall surely deal with him: I have driven him out for his wickedness."

Ezekiel 31:14: "To the end that none of all the trees by the waters exalt themselves for their height, neither shoot up their top among the thick boughs, neither their trees stand up in their height, all that drink water: for they are all delivered unto death, to the nether parts of the earth, in the midst of the children of men, with them that go down to the pit."

Ezekiel 31:16: "I made the nations to shake at the sound of his fall, when I cast him down to hell with them that descend into the pit: and all the trees of Eden, the choice and best of Lebanon, all that drink water, shall be comforted in the nether parts of the earth."

Ezekiel 31:17: "They also went down into hell with him unto them that be slain with the sword; and they that were his arm, that dwelt under his shadow in the midst of the heathen."

Ezekiel 31:18: "To whom art thou thus like in glory and in greatness among the trees of Eden? yet shalt thou be brought down with the trees of Eden unto the nether parts of the earth: thou shalt lie in the midst of the uncircumcised with them that be slain by the sword. This is Pharaoh and all his multitude, saith the Lord GOD."

Ezekiel 32:2: "Son of man, take up a lamentation for Pharaoh king of Egypt, and say unto him, Thou art like a young lion of the nations, and thou art as a whale in the seas: and thou camest forth with thy rivers, and troubledst the waters with thy feet, and fouledst their rivers."

Ezekiel 32:3: "Thus saith the Lord GOD; I will therefore spread out my net over thee with a company of many people; and they shall bring thee up in my net."

Ezekiel 32:4: "Then will I leave thee upon the land, I will cast thee forth upon the open field, and will cause all the fowls of the heaven to remain upon thee, and I will fill the beasts of the whole earth with thee."

Ezekiel 32:5: "And I will lay thy flesh upon the mountains, and fill the valleys with thy height."

Ezekiel 32:6: "I will also water with thy blood the land wherein thou swimmest, even to the mountains; and the rivers shall be full of thee."

Ezekiel 32:7: "And when I shall put thee out, I will cover the heaven, and make the stars thereof dark; I will cover the sun with a cloud, and the moon shall not give her light."

Ezekiel 32:18: "Son of man, wail for the multitude of Egypt, and cast them down, even her, and the daughters of the famous nations, unto the nether parts of the earth, with them that go down into the pit."

Ezekiel 32:19: "Whom dost thou pass in beauty? go down, and be thou laid with the uncircumcised."

Ezekiel 32:21: "The strong among the mighty shall speak to him out of the midst of hell with them that help him: they are gone down, they lie uncircumcised, slain by the sword."

Ezekiel 32:24: "There is Elam and all her multitude round about her grave, all of them slain, fallen by the sword, which are gone down uncircumcised into the nether parts of the earth, which caused their terror in the land of the living; yet have they borne their shame with them that go down to the pit."

Ezekiel 32:25: "They have set her a bed in the midst of the slain with all her multitude: her graves are round about him: all of them uncircumcised, slain by the sword: though their terror was caused in the land of the living, yet have they borne their shame with them that go down to the pit: he is put in the midst of them that be slain."

Ezekiel 32:27: "And they shall not lie with the mighty that are fallen of the uncircumcised, which are gone down to hell with their weapons of war: and they have laid their swords under their heads, but their iniquities shall be upon their bones, though they were the terror of the mighty in the land of the living."

Ezekiel 32:28: "Yea, thou shalt be broken in the midst of the uncircumcised, and shalt lie with them that are slain with the sword."

Ezekiel 32:29: "There is Edom, her kings, and all her princes, which with their might are laid by them that were slain by the sword: they shall lie with the uncircumcised, and with them that go down to the pit."

Ezekiel 32:30: "There be the princes of the north, all of them, and all the Zidonians, which are gone down with the slain; with their terror they are ashamed of their might; and they lie uncircumcised with them that be slain by the sword, and bear their shame with them that go down to the pit."

Ezekiel 32:32: "For I have caused my terror in the land of the living: and he shall be laid in the midst of the uncircumcised with them that are slain with the sword, even Pharaoh and all his multitude, saith the Lord GOD."

Ezekiel 33:25: "Wherefore say unto them, Thus saith the Lord GOD; Ye eat with the blood, and lift up your eyes toward your idols, and shed blood: and shall ye possess the land?"

Ezekiel 33:31: "And they come unto thee as the people cometh, and they sit before thee as my people, and they hear thy words, but they will not do them: for with their mouth they shew much love, but their heart goeth after their covetousness."

Ezekiel 34:3: "Ye eat the fat, and ye clothe you with the wool, ye kill them that are fed: but ye feed not the flock."

Ezekiel 34:4: "The diseased have ye not strengthened, neither have ye healed that which was sick, neither have ye bound up that which was broken, neither have ye brought again that which was driven away, neither have ye sought that which was lost; but with force and with cruelty have ye ruled them."

Ezekiel 34:16: "I will seek that which was lost, and bring again that which was driven away, and will bind up that which was broken, and will strengthen that which was sick: but I will destroy the fat and the strong; I will feed them with judgment."

Ezekiel 34:18: "Seemeth it a small thing unto you to have eaten up the good pasture, but ye must

tread down with your feet the residue of your pastures? and to have drunk of the deep waters, but ye must foul the residue with your feet?"

Ezekiel 34:19: "And as for my flock, they eat that which ye have trodden with your feet; and they drink that which ye have fouled with your feet."

Ezekiel 34:21: "Because ye have thrust with side and with shoulder, and pushed all the diseased with your horns, till ye have scattered them abroad;"

Ezekiel 34:25: "And I will make with them a covenant of peace, and will cause the evil beasts to cease out of the land: and they shall dwell safely in the wilderness, and sleep in the woods."

Ezekiel 34:29: "And I will raise up for them a plant of renown, and they shall be no more consumed with hunger in the land, neither bear the shame of the heathen any more."

Ezekiel 34:30: "Thus shall they know that I the LORD their God am with them, and that they, even the house of Israel, are my people, saith the Lord GOD."

Ezekiel 35:8: "And I will fill his mountains with his slain men: in thy hills, and in thy valleys, and in all thy rivers, shall they fall that are slain with the sword."

Ezekiel 35:13: "Thus with your mouth ye have boasted against me, and have multiplied your words against me: I have heard them."

Ezekiel 36:5: "Therefore thus saith the Lord GOD; Surely in the fire of my jealousy have I spoken against the residue of the heathen, and against all Idumea, which have appointed my land into their possession with the joy of all their heart, with despiteful minds, to cast it out for a prey."

Ezekiel 36:37: "Thus saith the Lord GOD; I will yet for this be enquired of by the house of Israel, to do it for them; I will increase them with men like a flock."

Ezekiel 36:38: "As the holy flock, as the flock of Jerusalem in her solemn feasts; so shall the waste cities be filled with flocks of men: and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 37:6: "And I will lay sinews upon you, and will bring up flesh upon you, and cover you with skin, and put breath in you, and ye shall live; and ye shall know that I am the LORD."

Ezekiel 37:19: "Say unto them, Thus saith the Lord GOD; Behold, I will take the stick of Joseph, which is in the hand of Ephraim, and the tribes of Israel his fellows, and will put them with him, even with the stick of Judah, and make them one stick, and they shall be one in mine hand."

Ezekiel 37:23: "Neither shall they defile themselves any more with their idols, nor with their detestable things, nor with any of their transgressions: but I will save them out of all their dwellingplaces, wherein they have sinned, and will cleanse them: so shall they be my people, and I will be their God."

Ezekiel 37:26: "Moreover I will make a covenant of peace with them; it shall be an everlasting covenant with them: and I will place them, and multiply them, and will set my sanctuary in the midst of them for evermore."

Ezekiel 37:27: "My tabernacle also shall be with them: yea, I will be their God, and they shall be my people."

Ezekiel 38:4: "And I will turn thee back, and put hooks into thy jaws, and I will bring thee forth, and all thine army, horses and horsemen, all of them clothed with all sorts of armour, even a great company with bucklers and shields, all of them handling swords:"

Ezekiel 38:5: "Persia, Ethiopia, and Libya with them; all of them with shield and helmet:"

Ezekiel 38:6: "Gomer, and all his bands; the house of Togarmah of the north quarters, and all his bands: and many people with thee."

Ezekiel 38:9: "Thou shalt ascend and come like a storm, thou shalt be like a cloud to cover the land, thou, and all thy bands, and many people with thee."

Ezekiel 38:13: "Sheba, and Dedan, and the merchants of Tarshish, with all the young lions thereof, shall say unto thee, Art thou come to take a spoil? hast thou gathered thy company to take a prey? to carry away silver and gold, to take away cattle and goods, to take a great spoil?"

Ezekiel 38:15: "And thou shalt come from thy place out of the north parts, thou, and many people with thee, all of them riding upon horses, a great company, and a mighty army:"

Ezekiel 38:22: "And I will plead against him with pestilence and with blood; and I will rain upon him, and upon his bands, and upon the many people that are with him, an overflowing rain, and great hailstones, fire, and brimstone."

Ezekiel 39:4: "Thou shalt fall upon the mountains of Israel, thou, and all thy bands, and the people that is with thee: I will give thee unto the ravenous birds of every sort, and to the beasts of the field to be devoured."

Ezekiel 39:9: "And they that dwell in the cities of Israel shall go forth, and shall set on fire and burn the weapons, both the shields and the bucklers, the bows and the arrows, and the handstaves, and the spears, and they shall burn them with fire seven years:"

Ezekiel 39:10: "So that they shall take no wood out of the field, neither cut down any out of the forests; for they shall burn the weapons with fire: and they shall spoil those that spoiled them, and rob those that robbed them, saith the Lord GOD."

Ezekiel 39:14: "And they shall sever out men of continual employment, passing through the land to bury with the passengers those that remain upon the face of the earth, to cleanse it: after the end of seven months shall they search."

Ezekiel 39:20: "Thus ye shall be filled at my table with horses and chariots, with mighty men, and with all men of war, saith the Lord GOD."

Ezekiel 40:3: "And he brought me thither, and, behold, there was a man, whose appearance was like the appearance of brass, with a line of flax in his hand, and a measuring reed; and he stood in the gate."

Ezekiel 40:4: "And the man said unto me, Son of man, behold with thine eyes, and hear with thine ears, and set thine heart upon all that I shall shew thee; for to the intent that I might shew them unto thee art thou brought hither: declare all that thou seest to the house of Israel."

Ezekiel 41:13: "So he measured the house, an hundred cubits long; and the separate place, and the building, with the walls thereof, an hundred cubits long;"

Ezekiel 41:15: "And he measured the length of the building over against the separate place which was behind it, and the galleries thereof on the one side and on the other side, an hundred cubits, with the inner temple, and the porches of the court;"

Ezekiel 41:16: "The door posts, and the narrow windows, and the galleries round about on their three stories, over against the door, cieled with wood round about, and from the ground up to the windows, and the windows were covered;"

Ezekiel 41:18: "And it was made with cherubims and palm trees, so that a palm tree was between a cherub and a cherub; and every cherub had two faces;"

Ezekiel 42:16: "He measured the east side with the measuring reed, five hundred reeds, with the measuring reed round about."

Ezekiel 42:17: "He measured the north side, five hundred reeds, with the measuring reed round about."

Ezekiel 42:18: "He measured the south side, five hundred reeds, with the measuring reed."

Ezekiel 42:19: "He turned about to the west side, and measured five hundred reeds with the measuring reed."

Ezekiel 43:2: "And, behold, the glory of the God of Israel came from the way of the east: and his voice was like a noise of many waters: and the earth shined with his glory."

Ezekiel 43:22: "And on the second day thou shalt offer a kid of the goats without blemish for a sin offering; and they shall cleanse the altar, as they did cleanse it with the bullock."

Ezekiel 44:5: "And the LORD said unto me, Son of man, mark well, and behold with thine eyes, and hear with thine ears all that I say unto thee concerning all the ordinances of the house of the LORD, and all the laws thereof; and mark well the entering in of the house, with every going forth of the sanctuary."

Ezekiel 44:17: "And it shall come to pass, that when they enter in at the gates of the inner court, they shall be clothed with linen garments; and no wool shall come upon them, whiles they minister

in the gates of the inner court, and within."

Ezekiel 44:18: "They shall have linen bonnets upon their heads, and shall have linen breeches upon their loins; they shall not gird themselves with any thing that causeth sweat."

Ezekiel 44:19: "And when they go forth into the utter court, even into the utter court to the people, they shall put off their garments wherein they ministered, and lay them in the holy chambers, and they shall put on other garments; and they shall not sanctify the people with their garments."

Ezekiel 45:2: "Of this there shall be for the sanctuary five hundred in length, with five hundred in breadth, square round about; and fifty cubits round about for the suburbs thereof."

Ezekiel 46:14: "And thou shalt prepare a meat offering for it every morning, the sixth part of an ephah, and the third part of an hin of oil, to temper with the fine flour; a meat offering continually by a perpetual ordinance unto the LORD."

Ezekiel 46:23: "And there was a row of building round about in them, round about them four, and it was made with boiling places under the rows round about."

Ezekiel 47:22: "And it shall come to pass, that ye shall divide it by lot for an inheritance unto you, and to the strangers that sojourn among you, which shall beget children among you: and they shall be unto you as born in the country among the children of Israel; they shall have inheritance with you among the tribes of Israel."

Ezekiel 48:20: "All the oblation shall be five and twenty thousand by five and twenty thousand: ye shall offer the holy oblation foursquare, with the possession of the city."

Ezekiel 48:34: "At the west side four thousand and five hundred, with their three gates; one gate of Gad, one gate of Asher, one gate of Naphtali."

Daniel 1:2: "And the Lord gave Jehoiakim king of Judah into his hand, with part of the vessels of the house of God: which he carried into the land of Shinar to the house of his god; and he brought the vessels into the treasure house of his god."

Daniel 1:8: "But Daniel purposed in his heart that he would not defile himself with the portion of the king's meat, nor with the wine which he drank: therefore he requested of the prince of the eunuchs that he might not defile himself."

Daniel 1:9: "Now God had brought Daniel into favour and tender love with the prince of the eunuchs."

Daniel 1:13: "Then let our countenances be looked upon before thee, and the countenance of the children that eat of the portion of the king's meat: and as thou seest, deal with thy servants."

Daniel 1:19: "And the king communed with them; and among them all was found none like Daniel, Hananiah, Mishael, and Azariah: therefore stood they before the king."

Daniel 2:5: "The king answered and said to the Chaldeans, The thing is gone from me: if ye will not make known unto me the dream, with the interpretation thereof, ye shall be cut in pieces, and your houses shall be made a dunghill."

Daniel 2:11: "And it is a rare thing that the king requireth, and there is none other that can shew it before the king, except the gods, whose dwelling is not with flesh."

Daniel 2:14: "Then Daniel answered with counsel and wisdom to Arioch the captain of the king's guard, which was gone forth to slay the wise men of Babylon:"

Daniel 2:18: "That they would desire mercies of the God of heaven concerning this secret; that Daniel and his fellows should not perish with the rest of the wise men of Babylon."

Daniel 2:22: "He revealeth the deep and secret things: he knoweth what is in the darkness, and the light dwelleth with him."

Daniel 2:41: "And whereas thou sawest the feet and toes, part of potters' clay, and part of iron, the kingdom shall be divided; but there shall be in it of the strength of the iron, forasmuch as thou sawest the iron mixed with miry clay."

Daniel 2:43: "And whereas thou sawest iron mixed with miry clay, they shall mingle themselves with the seed of men: but they shall not cleave one to another, even as iron is not mixed with clay."

Daniel 4:15: "Nevertheless leave the stump of his roots in the earth, even with a band of iron and



brass, in the tender grass of the field; and let it be wet with the dew of heaven, and let his portion be with the beasts in the grass of the earth:"

Daniel 4:23: "And whereas the king saw a watcher and an holy one coming down from heaven, and saying, Hew the tree down, and destroy it; yet leave the stump of the roots thereof in the earth, even with a band of iron and brass, in the tender grass of the field; and let it be wet with the dew of heaven, and let his portion be with the beasts of the field, till seven times pass over him;"

Daniel 4:25: "That they shall drive thee from men, and thy dwelling shall be with the beasts of the field, and they shall make thee to eat grass as oxen, and they shall wet thee with the dew of heaven, and seven times shall pass over thee, till thou know that the most High ruleth in the kingdom of men, and giveth it to whomsoever he will."

Daniel 4:32: "And they shall drive thee from men, and thy dwelling shall be with the beasts of the field: they shall make thee to eat grass as oxen, and seven times shall pass over thee, until thou know that the most High ruleth in the kingdom of men, and giveth it to whomsoever he will."

Daniel 4:33: "The same hour was the thing fulfilled upon Nebuchadnezzar: and he was driven from men, and did eat grass as oxen, and his body was wet with the dew of heaven, till his hairs were grown like eagles' feathers, and his nails like birds' claws."

Daniel 5:7: "The king cried aloud to bring in the astrologers, the Chaldeans, and the soothsayers. And the king spake, and said to the wise men of Babylon, Whosoever shall read this writing, and shew me the interpretation thereof, shall be clothed with scarlet, and have a chain of gold about his neck, and shall be the third ruler in the kingdom."

Daniel 5:16: "And I have heard of thee, that thou canst make interpretations, and dissolve doubts: now if thou canst read the writing, and make known to me the interpretation thereof, thou shalt be clothed with scarlet, and have a chain of gold about thy neck, and shalt be the third ruler in the kingdom."

Daniel 5:21: "And he was driven from the sons of men; and his heart was made like the beasts, and his dwelling was with the wild asses: they fed him with grass like oxen, and his body was wet with the dew of heaven; till he knew that the most high God ruled in the kingdom of men, and that he appointeth over it whomsoever he will."

Daniel 5:29: "Then commanded Belshazzar, and they clothed Daniel with scarlet, and put a chain of gold about his neck, and made a proclamation concerning him, that he should be the third ruler in the kingdom."

Daniel 6:14: "Then the king, when he heard these words, was sore displeased with himself, and set his heart on Daniel to deliver him: and he laboured till the going down of the sun to deliver him."

Daniel 6:17: "And a stone was brought, and laid upon the mouth of the den; and the king sealed it with his own signet, and with the signet of his lords; that the purpose might not be changed concerning Daniel."

Daniel 6:20: "And when he came to the den, he cried with a lamentable voice unto Daniel: and the king spake and said to Daniel, O Daniel, servant of the living God, is thy God, whom thou servest continually, able to deliver thee from the lions?"

Daniel 7:7: "After this I saw in the night visions, and behold a fourth beast, dreadful and terrible, and strong exceedingly; and it had great iron teeth: it devoured and brake in pieces, and stamped the residue with the feet of it: and it was diverse from all the beasts that were before it; and it had ten horns."

Daniel 7:13: "I saw in the night visions, and, behold, one like the Son of man came with the clouds of heaven, and came to the Ancient of days, and they brought him near before him."

Daniel 7:19: "Then I would know the truth of the fourth beast, which was diverse from all the others, exceeding dreadful, whose teeth were of iron, and his nails of brass; which devoured, brake in pieces, and stamped the residue with his feet;"

Daniel 7:21: "I beheld, and the same horn made war with the saints, and prevailed against them;"

Daniel 8:7: "And I saw him come close unto the ram, and he was moved with choler against him,

and smote the ram, and brake his two horns: and there was no power in the ram to stand before him, but he cast him down to the ground, and stamped upon him: and there was none that could deliver the ram out of his hand."

Daniel 8:18: "Now as he was speaking with me, I was in a deep sleep on my face toward the ground: but he touched me, and set me upright."

Daniel 9:3: "And I set my face unto the Lord God, to seek by prayer and supplications, with fasting, and sackcloth, and ashes:"

Daniel 9:15: "And now, O Lord our God, that hast brought thy people forth out of the land of Egypt with a mighty hand, and hast gotten thee renown, as at this day; we have sinned, we have done wickedly."

Daniel 9:22: "And he informed me, and talked with me, and said, O Daniel, I am now come forth to give thee skill and understanding."

Daniel 9:26: "And after threescore and two weeks shall Messiah be cut off, but not for himself: and the people of the prince that shall come shall destroy the city and the sanctuary; and the end thereof shall be with a flood, and unto the end of the war desolations are determined."

Daniel 9:27: "And he shall confirm the covenant with many for one week: and in the midst of the week he shall cause the sacrifice and the oblation to cease, and for the overspreading of abominations he shall make it desolate, even until the consummation, and that determined shall be poured upon the desolate."

Daniel 10:5: "Then I lifted up mine eyes, and looked, and behold a certain man clothed in linen, whose loins were girded with fine gold of Uphaz:"

Daniel 10:7: "And I Daniel alone saw the vision: for the men that were with me saw not the vision; but a great quaking fell upon them, so that they fled to hide themselves."

Daniel 10:13: "But the prince of the kingdom of Persia withstood me one and twenty days: but, lo, Michael, one of the chief princes, came to help me; and I remained there with the kings of Persia."

Daniel 10:17: "For how can the servant of this my lord talk with this my lord? for as for me, straightway there remained no strength in me, neither is there breath left in me."

Daniel 10:20: "Then said he, Knowest thou wherefore I come unto thee? and now will I return to fight with the prince of Persia: and when I am gone forth, lo, the prince of Grecia shall come."

Daniel 10:21: "But I will shew thee that which is noted in the scripture of truth: and there is none that holdeth with me in these things, but Michael your prince."

Daniel 11:3: "And a mighty king shall stand up, that shall rule with great dominion, and do according to his will."

Daniel 11:7: "But out of a branch of her roots shall one stand up in his estate, which shall come with an army, and shall enter into the fortress of the king of the north, and shall deal against them, and shall prevail:"

Daniel 11:8: "And shall also carry captives into Egypt their gods, with their princes, and with their precious vessels of silver and of gold; and he shall continue more years than the king of the north."

Daniel 11:11: "And the king of the south shall be moved with choler, and shall come forth and fight with him, even with the king of the north: and he shall set forth a great multitude; but the multitude shall be given into his hand."

Daniel 11:13: "For the king of the north shall return, and shall set forth a multitude greater than the former, and shall certainly come after certain years with a great army and with much riches."

Daniel 11:17: "He shall also set his face to enter with the strength of his whole kingdom, and upright ones with him; thus shall he do: and he shall give him the daughter of women, corrupting her: but she shall not stand on his side, neither be for him."

Daniel 11:22: "And with the arms of a flood shall they be overflowed from before him, and shall be broken; yea, also the prince of the covenant."

Daniel 11:23: "And after the league made with him he shall work deceitfully: for he shall come up, and shall become strong with a small people."

Daniel 11:25: "And he shall stir up his power and his courage against the king of the south with a great army; and the king of the south shall be stirred up to battle with a very great and mighty army; but he shall not stand: for they shall forecast devices against him."

Daniel 11:28: "Then shall he return into his land with great riches; and his heart shall be against the holy covenant; and he shall do exploits, and return to his own land."

Daniel 11:30: "For the ships of Chittim shall come against him: therefore he shall be grieved, and return, and have indignation against the holy covenant: so shall he do; he shall even return, and have intelligence with them that forsake the holy covenant."

Daniel 11:34: "Now when they shall fall, they shall be holpen with a little help: but many shall cleave to them with flatteries."

Daniel 11:38: "But in his estate shall he honour the God of forces: and a god whom his fathers knew not shall he honour with gold, and silver, and with precious stones, and pleasant things."

Daniel 11:39: "Thus shall he do in the most strong holds with a strange god, whom he shall acknowledge and increase with glory: and he shall cause them to rule over many, and shall divide the land for gain."

Daniel 11:40: "And at the time of the end shall the king of the south push at him: and the king of the north shall come against him like a whirlwind, with chariots, and with horsemen, and with many ships; and he shall enter into the countries, and shall overflow and pass over."

Daniel 11:44: "But tidings out of the east and out of the north shall trouble him: therefore he shall go forth with great fury to destroy, and utterly to make away many."

Hosea 2:2: "Plead with your mother, plead: for she is not my wife, neither am I her husband: let her therefore put away her whoredoms out of her sight, and her adulteries from between her breasts;"

Hosea 2:3: "Lest I strip her naked, and set her as in the day that she was born, and make her as a wilderness, and set her like a dry land, and slay her with thirst."

Hosea 2:6: "Therefore, behold, I will hedge up thy way with thorns, and make a wall, that she shall not find her paths."

Hosea 2:7: "And she shall follow after her lovers, but she shall not overtake them; and she shall seek them, but shall not find them: then shall she say, I will go and return to my first husband; for then was it better with me than now."

Hosea 2:13: "And I will visit upon her the days of Baalim, wherein she burned incense to them, and she decked herself with her earrings and her jewels, and she went after her lovers, and forgat me, saith the LORD."

Hosea 2:18: "And in that day will I make a covenant for them with the beasts of the field and with the fowls of heaven, and with the creeping things of the ground: and I will break the bow and the sword and the battle out of the earth, and will make them to lie down safely."

Hosea 4:1: "Hear the word of the LORD, ye children of Israel: for the LORD hath a controversy with the inhabitants of the land, because there is no truth, nor mercy, nor knowledge of God in the land."

Hosea 4:3: "Therefore shall the land mourn, and every one that dwelleth therein shall languish, with the beasts of the field, and with the fowls of heaven; yea, the fishes of the sea also shall be taken away."

Hosea 4:4: "Yet let no man strive, nor reprove another: for thy people are as they that strive with the priest."

Hosea 4:5: "Therefore shalt thou fall in the day, and the prophet also shall fall with thee in the night, and I will destroy thy mother."

Hosea 4:14: "I will not punish your daughters when they commit whoredom, nor your spouses when they commit adultery: for themselves are separated with whores, and they sacrifice with harlots: therefore the people that doth not understand shall fall."

Hosea 4:18: "Their drink is sour: they have committed whoredom continually: her rulers with shame do love, Give ye."

Hosea 5:5: "And the pride of Israel doth testify to his face: therefore shall Israel and Ephraim fall in their iniquity: Judah also shall fall with them."

Hosea 5:6: "They shall go with their flocks and with their herds to seek the LORD; but they shall not find him; he hath withdrawn himself from them."

Hosea 5:7: "They have dealt treacherously against the LORD: for they have begotten strange children: now shall a month devour them with their portions."

Hosea 6:8: "Gilead is a city of them that work iniquity, and is polluted with blood."

Hosea 7:3: "They make the king glad with their wickedness, and the princes with their lies."

Hosea 7:5: "In the day of our king the princes have made him sick with bottles of wine; he stretched out his hand with scorners."

Hosea 7:14: "And they have not cried unto me with their heart, when they howled upon their beds: they assemble themselves for corn and wine, and they rebel against me."

Hosea 9:8: "The watchman of Ephraim was with my God: but the prophet is a snare of a fowler in all his ways, and hatred in the house of his God."

Hosea 11:4: "I drew them with cords of a man, with bands of love: and I was to them as they that take off the yoke on their jaws, and I laid meat unto them."

Hosea 11:12: "Ephraim compasseth me about with lies, and the house of Israel with deceit: but Judah yet ruleth with God, and is faithful with the saints."

Hosea 12:1: "Ephraim feedeth on wind, and followeth after the east wind: he daily increaseth lies and desolation; and they do make a covenant with the Assyrians, and oil is carried into Egypt."

Hosea 12:2: "The LORD hath also a controversy with Judah, and will punish Jacob according to his ways; according to his doings will he recompense him."

Hosea 12:3: "He took his brother by the heel in the womb, and by his strength he had power with God:"

Hosea 12:4: "Yea, he had power over the angel, and prevailed: he wept, and made supplication unto him: he found him in Bethel, and there he spake with us;"

Hosea 13:3: "Therefore they shall be as the morning cloud and as the early dew that passeth away, as the chaff that is driven with the whirlwind out of the floor, and as the smoke out of the chimney."

Hosea 13:16: "Samaria shall become desolate; for she hath rebelled against her God: they shall fall by the sword: their infants shall be dashed in pieces, and their women with child shall be ripped up."

Hosea 14:2: "Take with you words, and turn to the LORD: say unto him, Take away all iniquity, and receive us graciously: so will we render the calves of our lips."

Hosea 14:8: "Ephraim shall say, What have I to do any more with idols? I have heard him, and observed him: I am like a green fir tree. From me is thy fruit found."

Joel 1:8: "Lament like a virgin girded with sackcloth for the husband of her youth."

Joel 2:12: "Therefore also now, saith the LORD, turn ye even to me with all your heart, and with fasting, and with weeping, and with mourning:"

Joel 2:20: "But I will remove far off from you the northern army, and will drive him into a land barren and desolate, with his face toward the east sea, and his hinder part toward the utmost sea, and his stink shall come up, and his ill savour shall come up, because he hath done great things."

Joel 2:24: "And the floors shall be full of wheat, and the vats shall overflow with wine and oil."

Joel 2:26: "And ye shall eat in plenty, and be satisfied, and praise the name of the LORD your God, that hath dealt wondrously with you: and my people shall never be ashamed."

Joel 3:2: "I will also gather all nations, and will bring them down into the valley of Jehoshaphat, and will plead with them there for my people and for my heritage Israel, whom they have scattered among the nations, and parted my land."

Joel 3:4: "Yea, and what have ye to do with me, O Tyre, and Zidon, and all the coasts of Palestine? will ye render me a recompence? and if ye recompense me, swiftly and speedily will I return your recompence upon your own head;"

Joel 3:18: "And it shall come to pass in that day, that the mountains shall drop down new wine, and the hills shall flow with milk, and all the rivers of Judah shall flow with waters, and a fountain shall come forth out of the house of the LORD, and shall water the valley of Shittim."

Amos 1:3: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Damascus, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because they have threshed Gilead with threshing instruments of iron:"

Amos 1:11: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Edom, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because he did pursue his brother with the sword, and did cast off all pity, and his anger did tear perpetually, and he kept his wrath for ever:"

Amos 1:13: "Thus saith the LORD; For three transgressions of the children of Ammon, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because they have ripped up the women with child of Gilead, that they might enlarge their border:"

Amos 1:14: "But I will kindle a fire in the wall of Rabbah, and it shall devour the palaces thereof, with shouting in the day of battle, with a tempest in the day of the whirlwind:"

Amos 2:2: "But I will send a fire upon Moab, and it shall devour the palaces of Kirioth: and Moab shall die with tumult, with shouting, and with the sound of the trumpet:"

Amos 2:3: "And I will cut off the judge from the midst thereof, and will slay all the princes thereof with him, saith the LORD."

Amos 3:15: "And I will smite the winter house with the summer house; and the houses of ivory shall perish, and the great houses shall have an end, saith the LORD."

Amos 4:2: "The Lord GOD hath sworn by his holiness, that, lo, the days shall come upon you, that he will take you away with hooks, and your posterity with fishhooks."

Amos 4:5: "And offer a sacrifice of thanksgiving with leaven, and proclaim and publish the free offerings: for this liketh you, O ye children of Israel, saith the Lord GOD."

Amos 4:9: "I have smitten you with blasting and mildew: when your gardens and your vineyards and your fig trees and your olive trees increased, the palmerworm devoured them: yet have ye not returned unto me, saith the LORD."

Amos 4:10: "I have sent among you the pestilence after the manner of Egypt: your young men have I slain with the sword, and have taken away your horses; and I have made the stink of your camps to come up unto your nostrils: yet have ye not returned unto me, saith the LORD."

Amos 5:8: "Seek him that maketh the seven stars and Orion, and turneth the shadow of death into the morning, and maketh the day dark with night: that calleth for the waters of the sea, and poureth them out upon the face of the earth: The LORD is his name:"

Amos 5:14: "Seek good, and not evil, that ye may live: and so the LORD, the God of hosts, shall be with you, as ye have spoken."

Amos 6:6: "That drink wine in bowls, and anoint themselves with the chief ointments: but they are not grieved for the affliction of Joseph."

Amos 6:7: "Therefore now shall they go captive with the first that go captive, and the banquet of them that stretched themselves shall be removed."

Amos 6:8: "The Lord GOD hath sworn by himself, saith the LORD the God of hosts, I abhor the excellency of Jacob, and hate his palaces: therefore will I deliver up the city with all that is therein."

Amos 6:10: "And a man's uncle shall take him up, and he that burneth him, to bring out the bones out of the house, and shall say unto him that is by the sides of the house, Is there yet any with thee? and he shall say, No. Then shall he say, Hold thy tongue: for we may not make mention of the name of the LORD."

Amos 6:11: "For, behold, the LORD commandeth, and he will smite the great house with breaches, and the little house with clefts."

Amos 6:12: "Shall horses run upon the rock? will one plow there with oxen? for ye have turned judgment into gall, and the fruit of righteousness into hemlock:"

Amos 7:7: "Thus he shewed me: and, behold, the LORD stood upon a wall made by a plumbline,

with a plumbline in his hand."

Amos 7:9: "And the high places of Isaac shall be desolate, and the sanctuaries of Israel shall be laid waste; and I will rise against the house of Jeroboam with the sword."

Amos 8:3: "And the songs of the temple shall be howlings in that day, saith the Lord GOD: there shall be many dead bodies in every place; they shall cast them forth with silence."

Amos 9:1: "I saw the LORD standing upon the altar: and he said, Smite the lintel of the door, that the posts may shake: and cut them in the head, all of them; and I will slay the last of them with the sword: he that fleeth of them shall not flee away, and he that escapeth of them shall not be delivered."

Obadiah 1:7: "All the men of thy confederacy have brought thee even to the border: the men that were at peace with thee have deceived thee, and prevailed against thee; that they eat thy bread have laid a wound under thee: there is none understanding in him."

Jonah 1:3: "But Jonah rose up to flee unto Tarshish from the presence of the LORD, and went down to Joppa; and he found a ship going to Tarshish: so he paid the fare thereof, and went down into it, to go with them unto Tarshish from the presence of the LORD."

Jonah 2:6: "I went down to the bottoms of the mountains; the earth with her bars was about me for ever: yet hast thou brought up my life from corruption, O LORD my God."

Jonah 2:9: "But I will sacrifice unto thee with the voice of thanksgiving; I will pay that that I have vowed. Salvation is of the LORD."

Jonah 3:6: "For word came unto the king of Nineveh, and he arose from his throne, and he laid his robe from him, and covered him with sackcloth, and sat in ashes."

Jonah 3:8: "But let man and beast be covered with sackcloth, and cry mightily unto God: yea, let them turn every one from his evil way, and from the violence that is in their hands."

Micah 1:7: "And all the graven images thereof shall be beaten to pieces, and all the hires thereof shall be burned with the fire, and all the idols thereof will I lay desolate: for she gathered it of the hire of an harlot, and they shall return to the hire of an harlot."

Micah 2:4: "In that day shall one take up a parable against you, and lament with a doleful lamentation, and say, We be utterly spoiled: he hath changed the portion of my people: how hath he removed it from me! turning away he hath divided our fields."

Micah 2:8: "Even of late my people is risen up as an enemy: ye pull off the robe with the garment from them that pass by securely as men averse from war."

Micah 2:10: "Arise ye, and depart; for this is not your rest: because it is polluted, it shall destroy you, even with a sore destruction."

Micah 3:5: "Thus saith the LORD concerning the prophets that make my people err, that bite with their teeth, and cry, Peace; and he that putteth not into their mouths, they even prepare war against him."

Micah 3:10: "They build up Zion with blood, and Jerusalem with iniquity."

Micah 5:1: "Now gather thyself in troops, O daughter of troops: he hath laid siege against us: they shall smite the judge of Israel with a rod upon the cheek."

Micah 5:6: "And they shall waste the land of Assyria with the sword, and the land of Nimrod in the entrances thereof: thus shall he deliver us from the Assyrian, when he cometh into our land, and when he treadeth within our borders."

Micah 6:2: "Hear ye, O mountains, the LORD's controversy, and ye strong foundations of the earth: for the LORD hath a controversy with his people, and he will plead with Israel."

Micah 6:6: "Wherewith shall I come before the LORD, and bow myself before the high God? shall I come before him with burnt offerings, with calves of a year old?"

Micah 6:7: "Will the LORD be pleased with thousands of rams, or with ten thousands of rivers of oil? shall I give my firstborn for my transgression, the fruit of my body for the sin of my soul?"

Micah 6:8: "He hath shewed thee, O man, what is good; and what doth the LORD require of thee, but to do justly, and to love mercy, and to walk humbly with thy God?"

Micah 6:11: "Shall I count them pure with the wicked balances, and with the bag of deceitful weights?"

Micah 6:15: "Thou shalt sow, but thou shalt not reap; thou shalt tread the olives, but thou shalt not anoint thee with oil; and sweet wine, but shalt not drink wine."

Micah 7:2: "The good man is perished out of the earth: and there is none upright among men: they all lie in wait for blood; they hunt every man his brother with a net."

Micah 7:3: "That they may do evil with both hands earnestly, the prince asketh, and the judge asketh for a reward; and the great man, he uttereth his mischievous desire: so they wrap it up."

Micah 7:14: "Feed thy people with thy rod, the flock of thine heritage, which dwell solitarily in the wood, in the midst of Carmel: let them feed in Bashan and Gilead, as in the days of old."

Nahum 1:8: "But with an overrunning flood he will make an utter end of the place thereof, and darkness shall pursue his enemies."

Nahum 2:3: "The shield of his mighty men is made red, the valiant men are in scarlet: the chariots shall be with flaming torches in the day of his preparation, and the fir trees shall be terribly shaken."

Nahum 2:7: "And Huzzab shall be led away captive, she shall be brought up, and her maids shall lead her as with the voice of doves, tabering upon their breasts."

Nahum 2:12: "The lion did tear in pieces enough for his whelps, and strangled for his lionesses, and filled his holes with prey, and his dens with ravin."

Nahum 3:12: "All thy strong holds shall be like fig trees with the firstripe figs: if they be shaken, they shall even fall into the mouth of the eater."

Habakkuk 1:15: "They take up all of them with the angle, they catch them in their net, and gather them in their drag: therefore they rejoice and are glad."

Habakkuk 2:6: "Shall not all these take up a parable against him, and a taunting proverb against him, and say, Woe to him that increaseth that which is not his! how long? and to him that ladeth himself with thick clay!"

Habakkuk 2:12: "Woe to him that buildeth a town with blood, and stablisheth a city by iniquity!"

Habakkuk 2:14: "For the earth shall be filled with the knowledge of the glory of the LORD, as the waters cover the sea."

Habakkuk 2:16: "Thou art filled with shame for glory: drink thou also, and let thy foreskin be uncovered: the cup of the LORD's right hand shall be turned unto thee, and shameful spewing shall be on thy glory."

Habakkuk 2:19: "Woe unto him that saith to the wood, Awake; to the dumb stone, Arise, it shall teach! Behold, it is laid over with gold and silver, and there is no breath at all in the midst of it."

Habakkuk 3:9: "Thy bow was made quite naked, according to the oaths of the tribes, even thy word. Selah. Thou didst cleave the earth with rivers."

Habakkuk 3:13: "Thou wentest forth for the salvation of thy people, even for salvation with thine anointed; thou woundedst the head out of the house of the wicked, by discovering the foundation unto the neck. Selah."

Habakkuk 3:14: "Thou didst strike through with his staves the head of his villages: they came out as a whirlwind to scatter me: their rejoicing was as to devour the poor secretly."

Habakkuk 3:15: "Thou didst walk through the sea with thine horses, through the heap of great waters."

Habakkuk 3:16: "When I heard, my belly trembled; my lips quivered at the voice: rottenness entered into my bones, and I trembled in myself, that I might rest in the day of trouble: when he cometh up unto the people, he will invade them with his troops."

Zephaniah 1:3: "I will consume man and beast; I will consume the fowls of the heaven, and the fishes of the sea, and the stumbling blocks with the wicked: and I will cut off man from off the land, saith the LORD."

Zephaniah 1:4: "I will also stretch out mine hand upon Judah, and upon all the inhabitants of Jerusalem; and I will cut off the remnant of Baal from this place, and the name of the Chemarims

with the priests;"

Zephaniah 1:8: "And it shall come to pass in the day of the LORD's sacrifice, that I will punish the princes, and the king's children, and all such as are clothed with strange apparel."

Zephaniah 1:9: "In the same day also will I punish all those that leap on the threshold, which fill their masters' houses with violence and deceit."

Zephaniah 1:12: "And it shall come to pass at that time, that I will search Jerusalem with candles, and punish the men that are settled on their lees: that say in their heart, The LORD will not do good, neither will he do evil."

Zephaniah 3:8: "Therefore wait ye upon me, saith the LORD, until the day that I rise up to the prey: for my determination is to gather the nations, that I may assemble the kingdoms, to pour upon them mine indignation, even all my fierce anger: for all the earth shall be devoured with the fire of my jealousy."

Zephaniah 3:9: "For then will I turn to the people a pure language, that they may all call upon the name of the LORD, to serve him with one consent."

Zephaniah 3:14: "Sing, O daughter of Zion; shout, O Israel; be glad and rejoice with all the heart, O daughter of Jerusalem."

Zephaniah 3:17: "The LORD thy God in the midst of thee is mighty; he will save, he will rejoice over thee with joy; he will rest in his love, he will joy over thee with singing."

Haggai 1:6: "Ye have sown much, and bring in little; ye eat, but ye have not enough; ye drink, but ye are not filled with drink; ye clothe you, but there is none warm; and he that earneth wages earneth wages to put it into a bag with holes."

Haggai 1:12: "Then Zerubbabel the son of Shealtiel, and Joshua the son of Josedech, the high priest, with all the remnant of the people, obeyed the voice of the LORD their God, and the words of Haggai the prophet, as the LORD their God had sent him, and the people did fear before the LORD."

Haggai 1:13: "Then spake Haggai the LORD's messenger in the LORD's message unto the people, saying, I am with you, saith the LORD."

Haggai 2:4: "Yet now be strong, O Zerubbabel, saith the LORD; and be strong, O Joshua, son of Josedech, the high priest; and be strong, all ye people of the land, saith the LORD, and work: for I am with you, saith the LORD of hosts:"

Haggai 2:5: "According to the word that I covenanted with you when ye came out of Egypt, so my spirit remaineth among you: fear ye not."

Haggai 2:7: "And I will shake all nations, and the desire of all nations shall come: and I will fill this house with glory, saith the LORD of hosts."

Haggai 2:12: "If one bear holy flesh in the skirt of his garment, and with his skirt do touch bread, or pottage, or wine, or oil, or any meat, shall it be holy? And the priests answered and said, No."

Haggai 2:17: "I smote you with blasting and with mildew and with hail in all the labours of your hands; yet ye turned not to me, saith the LORD."

Zechariah 1:2: "The LORD hath been sore displeased with your fathers."

Zechariah 1:6: "But my words and my statutes, which I commanded my servants the prophets, did they not take hold of your fathers? and they returned and said, Like as the LORD of hosts thought to do unto us, according to our ways, and according to our doings, so hath he dealt with us."

Zechariah 1:9: "Then said I, O my lord, what are these? And the angel that talked with me said unto me, I will shew thee what these be."

Zechariah 1:13: "And the LORD answered the angel that talked with me with good words and comfortable words."

Zechariah 1:14: "So the angel that communed with me said unto me, Cry thou, saying, Thus saith the LORD of hosts; I am jealous for Jerusalem and for Zion with a great jealousy."

Zechariah 1:15: "And I am very sore displeased with the heathen that are at ease: for I was but a little displeased, and they helped forward the affliction."



Zechariah 1:16: "Therefore thus saith the LORD; I am returned to Jerusalem with mercies: my house shall be built in it, saith the LORD of hosts, and a line shall be stretched forth upon Jerusalem."

Zechariah 1:19: "And I said unto the angel that talked with me, What be these? And he answered me, These are the horns which have scattered Judah, Israel, and Jerusalem."

Zechariah 2:1: "I lifted up mine eyes again, and looked, and behold a man with a measuring line in his hand."

Zechariah 2:3: "And, behold, the angel that talked with me went forth, and another angel went out to meet him,"

Zechariah 2:7: "Deliver thyself, O Zion, that dwellest with the daughter of Babylon."

Zechariah 3:3: "Now Joshua was clothed with filthy garments, and stood before the angel."

Zechariah 3:4: "And he answered and spake unto those that stood before him, saying, Take away the filthy garments from him. And unto him he said, Behold, I have caused thine iniquity to pass from thee, and I will clothe thee with change of raiment."

Zechariah 3:5: "And I said, Let them set a fair mitre upon his head. So they set a fair mitre upon his head, and clothed him with garments. And the angel of the LORD stood by."

Zechariah 4:1: "And the angel that talked with me came again, and waked me, as a man that is wakened out of his sleep."

Zechariah 4:2: "And said unto me, What seest thou? And I said, I have looked, and behold a candlestick all of gold, with a bowl upon the top of it, and his seven lamps thereon, and seven pipes to the seven lamps, which are upon the top thereof:"

Zechariah 4:4: "So I answered and spake to the angel that talked with me, saying, What are these, my lord?"

Zechariah 4:5: "Then the angel that talked with me answered and said unto me, Knowest thou not what these be? And I said, No, my lord."

Zechariah 4:7: "Who art thou, O great mountain? before Zerubbabel thou shalt become a plain: and he shall bring forth the headstone thereof with shoutings, crying, Grace, grace unto it."

Zechariah 4:10: "For who hath despised the day of small things? for they shall rejoice, and shall see the plummet in the hand of Zerubbabel with those seven; they are the eyes of the LORD, which run to and fro through the whole earth."

Zechariah 5:4: "I will bring it forth, saith the LORD of hosts, and it shall enter into the house of the thief, and into the house of him that sweareth falsely by my name: and it shall remain in the midst of his house, and shall consume it with the timber thereof and the stones thereof."

Zechariah 5:5: "Then the angel that talked with me went forth, and said unto me, Lift up now thine eyes, and see what is this that goeth forth."

Zechariah 5:10: "Then said I to the angel that talked with me, Whither do these bear the ephah?"

Zechariah 6:4: "Then I answered and said unto the angel that talked with me, What are these, my lord?"

Zechariah 7:14: "But I scattered them with a whirlwind among all the nations whom they knew not. Thus the land was desolate after them, that no man passed through nor returned: for they laid the pleasant land desolate."

Zechariah 8:2: "Thus saith the LORD of hosts; I was jealous for Zion with great jealousy, and I was jealous for her with great fury."

Zechariah 8:4: "Thus saith the LORD of hosts; There shall yet old men and old women dwell in the streets of Jerusalem, and every man with his staff in his hand for very age."

Zechariah 8:23: "Thus saith the LORD of hosts; In those days it shall come to pass, that ten men shall take hold out of all languages of the nations, even shall take hold of the skirt of him that is a Jew, saying, We will go with you: for we have heard that God is with you."

Zechariah 9:4: "Behold, the LORD will cast her out, and he will smite her power in the sea; and she shall be devoured with fire."

Zechariah 9:8: "And I will encamp about mine house because of the army, because of him that passeth by, and because of him that returneth: and no oppressor shall pass through them any more: for now have I seen with mine eyes."

Zechariah 9:13: "When I have bent Judah for me, filled the bow with Ephraim, and raised up thy sons, O Zion, against thy sons, O Greece, and made thee as the sword of a mighty man."

Zechariah 9:14: "And the LORD shall be seen over them, and his arrow shall go forth as the lightning: and the LORD God shall blow the trumpet, and shall go with whirlwinds of the south."

Zechariah 9:15: "The LORD of hosts shall defend them; and they shall devour, and subdue with sling stones; and they shall drink, and make a noise as through wine; and they shall be filled like bowls, and as the corners of the altar."

Zechariah 10:5: "And they shall be as mighty men, which tread down their enemies in the mire of the streets in the battle: and they shall fight, because the LORD is with them, and the riders on horses shall be confounded."

Zechariah 10:9: "And I will sow them among the people: and they shall remember me in far countries; and they shall live with their children, and turn again."

Zechariah 10:11: "And he shall pass through the sea with affliction, and shall smite the waves in the sea, and all the deeps of the river shall dry up: and the pride of Assyria shall be brought down, and the sceptre of Egypt shall depart away."

Zechariah 11:10: "And I took my staff, even Beauty, and cut it asunder, that I might break my covenant which I had made with all the people."

Zechariah 12:3: "And in that day will I make Jerusalem a burdensome stone for all people: all that burden themselves with it shall be cut in pieces, though all the people of the earth be gathered together against it."

Zechariah 12:4: "In that day, saith the LORD, I will smite every horse with astonishment, and his rider with madness: and I will open mine eyes upon the house of Judah, and will smite every horse of the people with blindness."

Zechariah 13:6: "And one shall say unto him, What are these wounds in thine hands? Then he shall answer, Those with which I was wounded in the house of my friends."

Zechariah 14:5: "And ye shall flee to the valley of the mountains; for the valley of the mountains shall reach unto Azal: yea, ye shall flee, like as ye fled from before the earthquake in the days of Uzziah king of Judah: and the LORD my God shall come, and all the saints with thee."

Malachi 1:8: "And if ye offer the blind for sacrifice, is it not evil? and if ye offer the lame and sick, is it not evil? offer it now unto thy governor; will he be pleased with thee, or accept thy person? saith the LORD of hosts."

Malachi 2:3: "Behold, I will corrupt your seed, and spread dung upon your faces, even the dung of your solemn feasts; and one shall take you away with it."

Malachi 2:4: "And ye shall know that I have sent this commandment unto you, that my covenant might be with Levi, saith the LORD of hosts."

Malachi 2:5: "My covenant was with him of life and peace; and I gave them to him for the fear wherewith he feared me, and was afraid before my name."

Malachi 2:6: "The law of truth was in his mouth, and iniquity was not found in his lips: he walked with me in peace and equity, and did turn many away from iniquity."

Malachi 2:13: "And this have ye done again, covering the altar of the LORD with tears, with weeping, and with crying out, insomuch that he regardeth not the offering any more, or receiveth it with good will at your hand."

Malachi 2:16: "For the LORD, the God of Israel, saith that he hateth putting away: for one covereth violence with his garment, saith the LORD of hosts: therefore take heed to your spirit, that ye deal not treacherously."

Malachi 2:17: "Ye have wearied the LORD with your words. Yet ye say, Wherein have we wearied him? When ye say, Every one that doeth evil is good in the sight of the LORD, and he delighteth in

them; or, Where is the God of judgment?"

Malachi 3:9: "Ye are cursed with a curse: for ye have robbed me, even this whole nation."

Malachi 4:2: "But unto you that fear my name shall the Sun of righteousness arise with healing in his wings; and ye shall go forth, and grow up as calves of the stall."

Malachi 4:4: "Remember ye the law of Moses my servant, which I commanded unto him in Horeb for all Israel, with the statutes and judgments."

Malachi 4:6: "And he shall turn the heart of the fathers to the children, and the heart of the children to their fathers, lest I come and smite the earth with a curse."

Matthew 1:18: "Now the birth of Jesus Christ was on this wise: When as his mother Mary was espoused to Joseph, before they came together, she was found with child of the Holy Ghost."

Matthew 1:23: "Behold, a virgin shall be with child, and shall bring forth a son, and they shall call his name Emmanuel, which being interpreted is, God with us."

Matthew 2:3: "When Herod the king had heard these things, he was troubled, and all Jerusalem with him."

Matthew 2:10: "When they saw the star, they rejoiced with exceeding great joy."

Matthew 2:11: "And when they were come into the house, they saw the young child with Mary his mother, and fell down, and worshipped him: and when they had opened their treasures, they presented unto him gifts; gold, and frankincense and myrrh."

Matthew 3:11: "I indeed baptize you with water unto repentance. but he that cometh after me is mightier than I, whose shoes I am not worthy to bear: he shall baptize you with the Holy Ghost, and with fire:"

Matthew 3:12: "Whose fan is in his hand, and he will thoroughly purge his floor, and gather his wheat into the garner; but he will burn up the chaff with unquenchable fire."

Matthew 4:21: "And going on from thence, he saw other two brethren, James the son of Zebedee, and John his brother, in a ship with Zebedee their father, mending their nets; and he called them."

Matthew 4:24: "And his fame went throughout all Syria: and they brought unto him all sick people that were taken with divers diseases and torments, and those which were possessed with devils, and those which were lunatick, and those that had the palsy; and he healed them."

Matthew 5:22: "But I say unto you, That whosoever is angry with his brother without a cause shall be in danger of the judgment: and whosoever shall say to his brother, Raca, shall be in danger of the council: but whosoever shall say, Thou fool, shall be in danger of hell fire."

Matthew 5:25: "Agree with thine adversary quickly, whiles thou art in the way with him; lest at any time the adversary deliver thee to the judge, and the judge deliver thee to the officer, and thou be cast into prison."

Matthew 5:28: "But I say unto you, That whosoever looketh on a woman to lust after her hath committed adultery with her already in his heart."

Matthew 5:41: "And whosoever shall compel thee to go a mile, go with him twain."

Matthew 7:2: "For with what judgment ye judge, ye shall be judged: and with what measure ye mete, it shall be measured to you again."

Matthew 8:11: "And I say unto you, That many shall come from the east and west, and shall sit down with Abraham, and Isaac, and Jacob, in the kingdom of heaven."

Matthew 8:16: "When the even was come, they brought unto him many that were possessed with devils: and he cast out the spirits with his word, and healed all that were sick:"

Matthew 8:24: "And, behold, there arose a great tempest in the sea, insomuch that the ship was covered with the waves: but he was asleep."

Matthew 8:28: "And when he was come to the other side into the country of the Gergesenes, there met him two possessed with devils, coming out of the tombs, exceeding fierce, so that no man might pass by that way."

Matthew 8:29: "And, behold, they cried out, saying, What have we to do with thee, Jesus, thou Son of God? art thou come hither to torment us before the time?"

Matthew 9:10: "And it came to pass, as Jesus sat at meat in the house, behold, many publicans and sinners came and sat down with him and his disciples."

Matthew 9:11: "And when the Pharisees saw it, they said unto his disciples, Why eateth your Master with publicans and sinners?"

Matthew 9:15: "And Jesus said unto them, Can the children of the bridechamber mourn, as long as the bridegroom is with them? but the days will come, when the bridegroom shall be taken from them, and then shall they fast."

Matthew 9:20: "And, behold, a woman, which was diseased with an issue of blood twelve years, came behind him, and touched the hem of his garment:"

Matthew 9:32: "As they went out, behold, they brought to him a dumb man possessed with a devil."

Matthew 9:36: "But when he saw the multitudes, he was moved with compassion on them, because they fainted, and were scattered abroad, as sheep having no shepherd."

Matthew 11:7: "And as they departed, Jesus began to say unto the multitudes concerning John, What went ye out into the wilderness to see? A reed shaken with the wind?"

Matthew 12:3: "But he said unto them, Have ye not read what David did, when he was an hungred, and they that were with him;"

Matthew 12:4: "How he entered into the house of God, and did eat the shewbread, which was not lawful for him to eat, neither for them which were with him, but only for the priests?"

Matthew 12:22: "Then was brought unto him one possessed with a devil, blind, and dumb: and he healed him, insomuch that the blind and dumb both spake and saw."

Matthew 12:30: "He that is not with me is against me; and he that gathereth not with me scattereth abroad."

Matthew 12:41: "The men of Nineveh shall rise in judgment with this generation, and shall condemn it: because they repented at the preaching of Jonas; and, behold, a greater than Jonas is here."

Matthew 12:42: "The queen of the south shall rise up in the judgment with this generation, and shall condemn it: for she came from the uttermost parts of the earth to hear the wisdom of Solomon; and, behold, a greater than Solomon is here."

Matthew 12:45: "Then goeth he, and taketh with himself seven other spirits more wicked than himself, and they enter in and dwell there: and the last state of that man is worse than the first. Even so shall it be also unto this wicked generation."

Matthew 12:46: "While he yet talked to the people, behold, his mother and his brethren stood without, desiring to speak with him."

Matthew 12:47: "Then one said unto him, Behold, thy mother and thy brethren stand without, desiring to speak with thee."

Matthew 13:15: "For this people's heart is waxed gross, and their ears are dull of hearing, and their eyes they have closed; lest at any time they should see with their eyes and hear with their ears, and should understand with their heart, and should be converted, and I should heal them."

Matthew 13:20: "But he that received the seed into stony places, the same is he that heareth the word, and anon with joy receiveth it;"

Matthew 13:29: "But he said, Nay; lest while ye gather up the tares, ye root up also the wheat with them."

Matthew 13:56: "And his sisters, are they not all with us? Whence then hath this man all these things?"

Matthew 14:7: "Whereupon he promised with an oath to give her whatsoever she would ask."

Matthew 14:9: "And the king was sorry: nevertheless for the oath's sake, and them which sat with him at meat, he commanded it to be given her."

Matthew 14:14: "And Jesus went forth, and saw a great multitude, and was moved with compassion toward them, and he healed their sick."

Matthew 14:24: "But the ship was now in the midst of the sea, tossed with waves: for the wind was

contrary."

Matthew 15:8: "This people draweth nigh unto me with their mouth, and honoureth me with their lips; but their heart is far from me."

Matthew 15:20: "These are the things which defile a man: but to eat with unwashen hands defileth not a man."

Matthew 15:22: "And, behold, a woman of Canaan came out of the same coasts, and cried unto him, saying, Have mercy on me, O Lord, thou son of David; my daughter is grievously vexed with a devil."

Matthew 15:30: "And great multitudes came unto him, having with them those that were lame, blind, dumb, maimed, and many others, and cast them down at Jesus' feet; and he healed them:"

Matthew 15:32: "Then Jesus called his disciples unto him, and said, I have compassion on the multitude, because they continue with me now three days, and have nothing to eat: and I will not send them away fasting, lest they faint in the way."

Matthew 16:1: "The Pharisees also with the Sadducees came, and tempting desired him that he would shew them a sign from heaven."

Matthew 16:27: "For the Son of man shall come in the glory of his Father with his angels; and then he shall reward every man according to his works."

Matthew 17:3: "And, behold, there appeared unto them Moses and Elias talking with him."

Matthew 17:17: "Then Jesus answered and said, O faithless and perverse generation, how long shall I be with you? how long shall I suffer you? bring him hither to me."

Matthew 18:9: "And if thine eye offend thee, pluck it out, and cast it from thee: it is better for thee to enter into life with one eye, rather than having two eyes to be cast into hell fire."

Matthew 18:16: "But if he will not hear thee, then take with thee one or two more, that in the mouth of two or three witnesses every word may be established."

Matthew 18:26: "The servant therefore fell down, and worshipped him, saying, Lord, have patience with me, and I will pay thee all."

Matthew 18:27: "Then the lord of that servant was moved with compassion, and loosed him, and forgave him the debt."

Matthew 18:29: "And his fellowservant fell down at his feet, and besought him, saying, Have patience with me, and I will pay thee all."

Matthew 19:10: "His disciples say unto him, If the case of the man be so with his wife, it is not good to marry."

Matthew 19:26: "But Jesus beheld them, and said unto them, With men this is impossible; but with God all things are possible."

Matthew 20:2: "And when he had agreed with the labourers for a penny a day, he sent them into his vineyard."

Matthew 20:13: "But he answered one of them, and said, Friend, I do thee no wrong: didst not thou agree with me for a penny?"

Matthew 20:15: "Is it not lawful for me to do what I will with mine own? Is thine eye evil, because I am good?"

Matthew 20:20: "Then came to him the mother of Zebedees children with her sons, worshipping him, and desiring a certain thing of him."

Matthew 20:22: "But Jesus answered and said, Ye know not what ye ask. Are ye able to drink of the cup that I shall drink of, and to be baptized with the baptism that I am baptized with? They say unto him, We are able."

Matthew 20:23: "And he saith unto them, Ye shall drink indeed of my cup, and be baptized with the baptism that I am baptized with: but to sit on my right hand, and on my left, is not mine to give, but it shall be given to them for whom it is prepared of my Father."

Matthew 20:24: "And when the ten heard it, they were moved with indignation against the two brethren."

Matthew 21:2: "Saying unto them, Go into the village over against you, and straightway ye shall find an ass tied, and a colt with her: loose them, and bring them unto me."

Matthew 21:25: "The baptism of John, whence was it? from heaven, or of men? And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say unto us, Why did ye not then believe him?"

Matthew 22:10: "So those servants went out into the highways, and gathered together all as many as they found, both bad and good: and the wedding was furnished with guests."

Matthew 22:16: "And they sent out unto him their disciples with the Herodians, saying, Master, we know that thou art true, and teachest the way of God in truth, neither carest thou for any man: for thou regardest not the person of men."

Matthew 22:25: "Now there were with us seven brethren: and the first, when he had married a wife, deceased, and, having no issue, left his wife unto his brother:"

Matthew 22:37: "Jesus said unto him, Thou shalt love the Lord thy God with all thy heart, and with all thy soul, and with all thy mind."

Matthew 23:4: "For they bind heavy burdens and grievous to be borne, and lay them on men's shoulders; but they themselves will not move them with one of their fingers."

Matthew 23:30: "And say, If we had been in the days of our fathers, we would not have been partakers with them in the blood of the prophets."

Matthew 24:19: "And woe unto them that are with child, and to them that give suck in those days!"

Matthew 24:30: "And then shall appear the sign of the Son of man in heaven: and then shall all the tribes of the earth mourn, and they shall see the Son of man coming in the clouds of heaven with power and great glory."

Matthew 24:31: "And he shall send his angels with a great sound of a trumpet, and they shall gather together his elect from the four winds, from one end of heaven to the other."

Matthew 24:49: "And shall begin to smite his fellowservants, and to eat and drink with the drunken;"

Matthew 24:51: "And shall cut him asunder, and appoint him his portion with the hypocrites: there shall be weeping and gnashing of teeth."

Matthew 25:3: "They that were foolish took their lamps, and took no oil with them:"

Matthew 25:4: "But the wise took oil in their vessels with their lamps."

Matthew 25:10: "And while they went to buy, the bridegroom came; and they that were ready went in with him to the marriage: and the door was shut."

Matthew 25:16: "Then he that had received the five talents went and traded with the same, and made them other five talents."

Matthew 25:19: "After a long time the lord of those servants cometh, and reckoneth with them."

Matthew 25:27: "Thou oughtest therefore to have put my money to the exchangers, and then at my coming I should have received mine own with usury."

Matthew 25:31: "When the Son of man shall come in his glory, and all the holy angels with him, then shall he sit upon the throne of his glory:"

Matthew 26:11: "For ye have the poor always with you; but me ye have not always."

Matthew 26:15: "And said unto them, What will ye give me, and I will deliver him unto you? And they covenanted with him for thirty pieces of silver."

Matthew 26:18: "And he said, Go into the city to such a man, and say unto him, The Master saith, My time is at hand; I will keep the passover at thy house with my disciples."

Matthew 26:20: "Now when the even was come, he sat down with the twelve."

Matthew 26:23: "And he answered and said, He that dippeth his hand with me in the dish, the same shall betray me."

Matthew 26:29: "But I say unto you, I will not drink henceforth of this fruit of the vine, until that day when I drink it new with you in my Father's kingdom."

Matthew 26:35: "Peter said unto him, Though I should die with thee, yet will I not deny thee."

Likewise also said all the disciples."

Matthew 26:36: "Then cometh Jesus with them unto a place called Gethsemane, and saith unto the disciples, Sit ye here, while I go and pray yonder."

Matthew 26:37: "And he took with him Peter and the two sons of Zebedee, and began to be sorrowful and very heavy."

Matthew 26:38: "Then saith he unto them, My soul is exceeding sorrowful, even unto death: tarry ye here, and watch with me."

Matthew 26:40: "And he cometh unto the disciples, and findeth them asleep, and saith unto Peter, What, could ye not watch with me one hour?"

Matthew 26:47: "And while he yet spake, lo, Judas, one of the twelve, came, and with him a great multitude with swords and staves, from the chief priests and elders of the people."

Matthew 26:51: "And, behold, one of them which were with Jesus stretched out his hand, and drew his sword, and struck a servant of the high priest's, and smote off his ear."

Matthew 26:52: "Then said Jesus unto him, Put up again thy sword into his place: for all they that take the sword shall perish with the sword."

Matthew 26:55: "In that same hour said Jesus to the multitudes, Are ye come out as against a thief with swords and staves for to take me? I sat daily with you teaching in the temple, and ye laid no hold on me."

Matthew 26:58: "But Peter followed him afar off unto the high priest's palace, and went in, and sat with the servants, to see the end."

Matthew 26:67: "Then did they spit in his face, and buffeted him; and others smote him with the palms of their hands,"

Matthew 26:69: "Now Peter sat without in the palace: and a damsel came unto him, saying, Thou also wast with Jesus of Galilee."

Matthew 26:71: "And when he was gone out into the porch, another maid saw him, and said unto them that were there, This fellow was also with Jesus of Nazareth."

Matthew 26:72: "And again he denied with an oath, I do not know the man."

Matthew 27:7: "And they took counsel, and bought with them the potter's field, to bury strangers in."

Matthew 27:19: "When he was set down on the judgment seat, his wife sent unto him, saying, Have thou nothing to do with that just man: for I have suffered many things this day in a dream because of him."

Matthew 27:22: "Pilate saith unto them, What shall I do then with Jesus which is called Christ? They all say unto him, Let him be crucified."

Matthew 27:34: "They gave him vinegar to drink mingled with gall: and when he had tasted thereof, he would not drink."

Matthew 27:38: "Then were there two thieves crucified with him, one on the right hand, and another on the left."

Matthew 27:41: "Likewise also the chief priests mocking him, with the scribes and elders, said,"

Matthew 27:44: "The thieves also, which were crucified with him, cast the same in his teeth."

Matthew 27:46: "And about the ninth hour Jesus cried with a loud voice, saying, Eli, Eli, lama sabachthani? that is to say, My God, my God, why hast thou forsaken me?"

Matthew 27:48: "And straightway one of them ran, and took a sponge, and filled it with vinegar, and put it on a reed, and gave him to drink."

Matthew 27:50: "Jesus, when he had cried again with a loud voice, yielded up the ghost."

Matthew 27:54: "Now when the centurion, and they that were with him, watching Jesus, saw the earthquake, and those things that were done, they feared greatly, saying, Truly this was the Son of God."

Matthew 28:8: "And they departed quickly from the sepulchre with fear and great joy; and did run to bring his disciples word."

Matthew 28:12: "And when they were assembled with the elders, and had taken counsel, they gave large money unto the soldiers,"

Matthew 28:20: "Teaching them to observe all things whatsoever I have commanded you: and, lo, I am with you alway, even unto the end of the world. Amen."

Mark 1:6: "And John was clothed with camel's hair, and with a girdle of a skin about his loins; and he did eat locusts and wild honey;"

Mark 1:8: "I indeed have baptized you with water: but he shall baptize you with the Holy Ghost."

Mark 1:13: "And he was there in the wilderness forty days, tempted of Satan; and was with the wild beasts; and the angels ministered unto him."

Mark 1:20: "And straightway he called them: and they left their father Zebedee in the ship with the hired servants, and went after him."

Mark 1:23: "And there was in their synagogue a man with an unclean spirit; and he cried out,"

Mark 1:24: "Saying, Let us alone; what have we to do with thee, thou Jesus of Nazareth? art thou come to destroy us? I know thee who thou art, the Holy One of God."

Mark 1:26: "And when the unclean spirit had torn him, and cried with a loud voice, he came out of him."

Mark 1:27: "And they were all amazed, insomuch that they questioned among themselves, saying, What thing is this? what new doctrine is this? for with authority commandeth he even the unclean spirits, and they do obey him."

Mark 1:29: "And forthwith, when they were come out of the synagogue, they entered into the house of Simon and Andrew, with James and John."

Mark 1:32: "And at even, when the sun did set, they brought unto him all that were diseased, and them that were possessed with devils."

Mark 1:36: "And Simon and they that were with him followed after him."

Mark 1:41: "And Jesus, moved with compassion, put forth his hand, and touched him, and saith unto him, I will; be thou clean."

Mark 2:15: "And it came to pass, that, as Jesus sat at meat in his house, many publicans and sinners sat also together with Jesus and his disciples: for there were many, and they followed him."

Mark 2:16: "And when the scribes and Pharisees saw him eat with publicans and sinners, they said unto his disciples, How is it that he eateth and drinketh with publicans and sinners?"

Mark 2:19: "And Jesus said unto them, Can the children of the bridechamber fast, while the bridegroom is with them? as long as they have the bridegroom with them, they cannot fast."

Mark 2:25: "And he said unto them, Have ye never read what David did, when he had need, and was an hungred, he, and they that were with him?"

Mark 2:26: "How he went into the house of God in the days of Abiathar the high priest, and did eat the shewbread, which is not lawful to eat but for the priests, and gave also to them which were with him?"

Mark 3:5: "And when he had looked round about on them with anger, being grieved for the hardness of their hearts, he saith unto the man, Stretch forth thine hand. And he stretched it out: and his hand was restored whole as the other."

Mark 3:6: "And the Pharisees went forth, and straightway took counsel with the Herodians against him, how they might destroy him."

Mark 3:7: "But Jesus withdrew himself with his disciples to the sea: and a great multitude from Galilee followed him, and from Judaea,"

Mark 3:14: "And he ordained twelve, that they should be with him, and that he might send them forth to preach,"

Mark 4:10: "And when he was alone, they that were about him with the twelve asked of him the parable."

Mark 4:16: "And these are they likewise which are sown on stony ground; who, when they have heard the word, immediately receive it with gladness;"



Mark 4:24: "And he said unto them, Take heed what ye hear: with what measure ye mete, it shall be measured to you: and unto you that hear shall more be given."

Mark 4:30: "And he said, Whereunto shall we liken the kingdom of God? or with what comparison shall we compare it?"

Mark 4:33: "And with many such parables spake he the word unto them, as they were able to hear it."

Mark 4:36: "And when they had sent away the multitude, they took him even as he was in the ship. And there were also with him other little ships."

Mark 5:2: "And when he was come out of the ship, immediately there met him out of the tombs a man with an unclean spirit,"

Mark 5:3: "Who had his dwelling among the tombs; and no man could bind him, no, not with chains:"

Mark 5:4: "Because that he had been often bound with fetters and chains, and the chains had been plucked asunder by him, and the fetters broken in pieces: neither could any man tame him."

Mark 5:5: "And always, night and day, he was in the mountains, and in the tombs, crying, and cutting himself with stones."

Mark 5:7: "And cried with a loud voice, and said, What have I to do with thee, Jesus, thou Son of the most high God? I adjure thee by God, that thou torment me not."

Mark 5:15: "And they come to Jesus, and see him that was possessed with the devil, and had the legion, sitting, and clothed, and in his right mind: and they were afraid."

Mark 5:16: "And they that saw it told them how it befell to him that was possessed with the devil, and also concerning the swine."

Mark 5:18: "And when he was come into the ship, he that had been possessed with the devil prayed him that he might be with him."

Mark 5:24: "And Jesus went with him; and much people followed him, and thronged him."

Mark 5:40: "And they laughed him to scorn. But when he had put them all out, he taketh the father and the mother of the damsel, and them that were with him, and entereth in where the damsel was lying."

Mark 5:42: "And straightway the damsel arose, and walked; for she was of the age of twelve years. And they were astonished with a great astonishment."

Mark 6:3: "Is not this the carpenter, the son of Mary, the brother of James, and Joses, and of Juda, and Simon? and are not his sisters here with us? And they were offended at him."

Mark 6:9: "But be shod with sandals; and not put on two coats."

Mark 6:13: "And they cast out many devils, and anointed with oil many that were sick, and healed them."

Mark 6:22: "And when the daughter of the said Herodias came in, and danced, and pleased Herod and them that sat with him, the king said unto the damsel, Ask of me whatsoever thou wilt, and I will give it thee."

Mark 6:25: "And she came in straightway with haste unto the king, and asked, saying, I will that thou give me by and by in a charger the head of John the Baptist."

Mark 6:26: "And the king was exceeding sorry; yet for his oath's sake, and for their sakes which sat with him, he would not reject her."

Mark 6:34: "And Jesus, when he came out, saw much people, and was moved with compassion toward them, because they were as sheep not having a shepherd: and he began to teach them many things."

Mark 6:50: "For they all saw him, and were troubled. And immediately he talked with them, and saith unto them, Be of good cheer: it is I; be not afraid."

Mark 7:2: "And when they saw some of his disciples eat bread with defiled, that is to say, with unwashen, hands, they found fault."

Mark 7:5: "Then the Pharisees and scribes asked him, Why walk not thy disciples according to the

tradition of the elders, but eat bread with unwashed hands?"

Mark 7:6: "He answered and said unto them, Well hath Esaias prophesied of you hypocrites, as it is written, This people honoureth me with their lips, but their heart is far from me."

Mark 8:2: "I have compassion on the multitude, because they have now been with me three days, and have nothing to eat:"

Mark 8:4: "And his disciples answered him, From whence can a man satisfy these men with bread here in the wilderness?"

Mark 8:10: "And straightway he entered into a ship with his disciples, and came into the parts of Dalmanutha."

Mark 8:11: "And the Pharisees came forth, and began to question with him, seeking of him a sign from heaven, tempting him."

Mark 8:14: "Now the disciples had forgotten to take bread, neither had they in the ship with them more than one loaf."

Mark 8:34: "And when he had called the people unto him with his disciples also, he said unto them, Whosoever will come after me, let him deny himself, and take up his cross, and follow me."

Mark 8:38: "Whosoever therefore shall be ashamed of me and of my words in this adulterous and sinful generation; of him also shall the Son of man be ashamed, when he cometh in the glory of his Father with the holy angels."

Mark 9:1: "And he said unto them, Verily I say unto you, That there be some of them that stand here, which shall not taste of death, till they have seen the kingdom of God come with power."

Mark 9:2: "And after six days Jesus taketh with him Peter, and James, and John, and leadeth them up into an high mountain apart by themselves: and he was transfigured before them."

Mark 9:4: "And there appeared unto them Elias with Moses: and they were talking with Jesus."

Mark 9:8: "And suddenly, when they had looked round about, they saw no man any more, save Jesus only with themselves."

Mark 9:10: "And they kept that saying with themselves, questioning one with another what the rising from the dead should mean."

Mark 9:14: "And when he came to his disciples, he saw a great multitude about them, and the scribes questioning with them."

Mark 9:16: "And he asked the scribes, What question ye with them?"

Mark 9:18: "And wheresoever he taketh him, he teareth him: and he foameth, and gnasheth with his teeth, and pineth away: and I spake to thy disciples that they should cast him out; and they could not."

Mark 9:19: "He answereth him, and saith, O faithless generation, how long shall I be with you? how long shall I suffer you? bring him unto me."

Mark 9:24: "And straightway the father of the child cried out, and said with tears, Lord, I believe; help thou mine unbelief."

Mark 9:47: "And if thine eye offend thee, pluck it out: it is better for thee to enter into the kingdom of God with one eye, than having two eyes to be cast into hell fire:"

Mark 9:49: "For every one shall be salted with fire, and every sacrifice shall be salted with salt."

Mark 9:50: "Salt is good: but if the salt have lost his saltness, wherewith will ye season it? Have salt in yourselves, and have peace one with another."

Mark 10:27: "And Jesus looking upon them saith, With men it is impossible, but not with God: for with God all things are possible."

Mark 10:30: "But he shall receive an hundredfold now in this time, houses, and brethren, and sisters, and mothers, and children, and lands, with persecutions; and in the world to come eternal life."

Mark 10:38: "But Jesus said unto them, Ye know not what ye ask: can ye drink of the cup that I drink of? and be baptized with the baptism that I am baptized with?"

Mark 10:39: "And they said unto him, We can. And Jesus said unto them, Ye shall indeed drink of

the cup that I drink of; and with the baptism that I am baptized withal shall ye be baptized:"

Mark 10:41: "And when the ten heard it, they began to be much displeased with James and John."

Mark 10:46: "And they came to Jericho: and as he went out of Jericho with his disciples and a great number of people, blind Bartimaeus, the son of Timaeus, sat by the highway side begging."

Mark 11:11: "And Jesus entered into Jerusalem, and into the temple: and when he had looked round about upon all things, and now the eventide was come, he went out unto Bethany with the twelve."

Mark 11:31: "And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say, Why then did ye not believe him?"

Mark 12:30: "And thou shalt love the Lord thy God with all thy heart, and with all thy soul, and with all thy mind, and with all thy strength: this is the first commandment."

Mark 12:33: "And to love him with all the heart, and with all the understanding, and with all the soul, and with all the strength, and to love his neighbour as himself, is more than all whole burnt offerings and sacrifices."

Mark 13:17: "But woe to them that are with child, and to them that give suck in those days!"

Mark 13:26: "And then shall they see the Son of man coming in the clouds with great power and glory."

Mark 14:7: "For ye have the poor with you always, and whensoever ye will ye may do them good: but me ye have not always."

Mark 14:14: "And wheresoever he shall go in, say ye to the goodman of the house, The Master saith, Where is the guestchamber, where I shall eat the passover with my disciples?"

Mark 14:17: "And in the evening he cometh with the twelve."

Mark 14:18: "And as they sat and did eat, Jesus said, Verily I say unto you, One of you which eateth with me shall betray me."

Mark 14:20: "And he answered and said unto them, It is one of the twelve, that dippeth with me in the dish."

Mark 14:31: "But he spake the more vehemently, If I should die with thee, I will not deny thee in any wise. Likewise also said they all."

Mark 14:33: "And he taketh with him Peter and James and John, and began to be sore amazed, and to be very heavy;"

Mark 14:43: "And immediately, while he yet spake, cometh Judas, one of the twelve, and with him a great multitude with swords and staves, from the chief priests and the scribes and the elders."

Mark 14:48: "And Jesus answered and said unto them, Are ye come out, as against a thief, with swords and with staves to take me?"

Mark 14:49: "I was daily with you in the temple teaching, and ye took me not: but the scriptures must be fulfilled."

Mark 14:53: "And they led Jesus away to the high priest: and with him were assembled all the chief priests and the elders and the scribes."

Mark 14:54: "And Peter followed him afar off, even into the palace of the high priest: and he sat with the servants, and warmed himself at the fire."

Mark 14:58: "We heard him say, I will destroy this temple that is made with hands, and within three days I will build another made without hands."

Mark 14:65: "And some began to spit on him, and to cover his face, and to buffet him, and to say unto him, Prophecy: and the servants did strike him with the palms of their hands."

Mark 14:67: "And when she saw Peter warming himself, she looked upon him, and said, And thou also wast with Jesus of Nazareth."

Mark 15:1: "And straightway in the morning the chief priests held a consultation with the elders and scribes and the whole council, and bound Jesus, and carried him away, and delivered him to Pilate."

Mark 15:7: "And there was one named Barabbas, which lay bound with them that had made insurrection with him, who had committed murder in the insurrection."

Mark 15:17: "And they clothed him with purple, and platted a crown of thorns, and put it about his

head,"

Mark 15:19: "And they smote him on the head with a reed, and did spit upon him, and bowing their knees worshipped him."

Mark 15:23: "And they gave him to drink wine mingled with myrrh: but he received it not."

Mark 15:27: "And with him they crucify two thieves; the one on his right hand, and the other on his left."

Mark 15:28: "And the scripture was fulfilled, which saith, And he was numbered with the transgressors."

Mark 15:31: "Likewise also the chief priests mocking said among themselves with the scribes, He saved others; himself he cannot save."

Mark 15:32: "Let Christ the King of Israel descend now from the cross, that we may see and believe. And they that were crucified with him reviled him."

Mark 15:34: "And at the ninth hour Jesus cried with a loud voice, saying, Eloi, Eloi, lama sabachthani? which is, being interpreted, My God, my God, why hast thou forsaken me?"

Mark 15:37: "And Jesus cried with a loud voice, and gave up the ghost."

Mark 15:41: "(Who also, when he was in Galilee, followed him, and ministered unto him;) and many other women which came up with him unto Jerusalem."

Mark 16:10: "And she went and told them that had been with him, as they mourned and wept."

Mark 16:14: "Afterward he appeared unto the eleven as they sat at meat, and upbraided them with their unbelief and hardness of heart, because they believed not them which had seen him after he was risen."

Mark 16:17: "And these signs shall follow them that believe; In my name shall they cast out devils; they shall speak with new tongues;"

Mark 16:20: "And they went forth, and preached every where, the Lord working with them, and confirming the word with signs following. Amen."

Luke 1:15: "For he shall be great in the sight of the Lord, and shall drink neither wine nor strong drink; and he shall be filled with the Holy Ghost, even from his mother's womb."

Luke 1:25: "Thus hath the Lord dealt with me in the days wherein he looked on me, to take away my reproach among men."

Luke 1:28: "And the angel came in unto her, and said, Hail, thou that art highly favoured, the Lord is with thee: blessed art thou among women."

Luke 1:30: "And the angel said unto her, Fear not, Mary: for thou hast found favour with God."

Luke 1:36: "And, behold, thy cousin Elisabeth, she hath also conceived a son in her old age: and this is the sixth month with her, who was called barren."

Luke 1:37: "For with God nothing shall be impossible."

Luke 1:39: "And Mary arose in those days, and went into the hill country with haste, into a city of Juda;"

Luke 1:41: "And it came to pass, that, when Elisabeth heard the salutation of Mary, the babe leaped in her womb; and Elisabeth was filled with the Holy Ghost:"

Luke 1:42: "And she spake out with a loud voice, and said, Blessed art thou among women, and blessed is the fruit of thy womb."

Luke 1:51: "He hath shewed strength with his arm; he hath scattered the proud in the imagination of their hearts."

Luke 1:53: "He hath filled the hungry with good things; and the rich he hath sent empty away."

Luke 1:56: "And Mary abode with her about three months, and returned to her own house."

Luke 1:58: "And her neighbours and her cousins heard how the Lord had shewed great mercy upon her; and they rejoiced with her."

Luke 1:66: "And all they that heard them laid them up in their hearts, saying, What manner of child shall this be! And the hand of the Lord was with him."

Luke 1:67: "And his father Zacharias was filled with the Holy Ghost, and prophesied, saying,"

Luke 2:5: "To be taxed with Mary his espoused wife, being great with child."

Luke 2:13: "And suddenly there was with the angel a multitude of the heavenly host praising God, and saying,"

Luke 2:16: "And they came with haste, and found Mary, and Joseph, and the babe lying in a manger."

Luke 2:36: "And there was one Anna, a prophetess, the daughter of Phanuel, of the tribe of Aser: she was of a great age, and had lived with an husband seven years from her virginity;"

Luke 2:37: "And she was a widow of about fourscore and four years, which departed not from the temple, but served God with fastings and prayers night and day."

Luke 2:40: "And the child grew, and waxed strong in spirit, filled with wisdom: and the grace of God was upon him."

Luke 2:48: "And when they saw him, they were amazed: and his mother said unto him, Son, why hast thou thus dealt with us? behold, thy father and I have sought thee sorrowing."

Luke 2:51: "And he went down with them, and came to Nazareth, and was subject unto them: but his mother kept all these sayings in her heart."

Luke 2:52: "And Jesus increased in wisdom and stature, and in favour with God and man."

Luke 3:14: "And the soldiers likewise demanded of him, saying, And what shall we do? And he said unto them, Do violence to no man, neither accuse any falsely; and be content with your wages."

Luke 3:16: "John answered, saying unto them all, I indeed baptize you with water; but one mightier than I cometh, the latchet of whose shoes I am not worthy to unloose: he shall baptize you with the Holy Ghost and with fire:"

Luke 3:17: "Whose fan is in his hand, and he will thoroughly purge his floor, and will gather the wheat into his garner; but the chaff he will burn with fire unquenchable."

Luke 4:28: "And all they in the synagogue, when they heard these things, were filled with wrath,"

Luke 4:32: "And they were astonished at his doctrine: for his word was with power."

Luke 4:33: "And in the synagogue there was a man, which had a spirit of an unclean devil, and cried out with a loud voice,"

Luke 4:34: "Saying, Let us alone; what have we to do with thee, thou Jesus of Nazareth? art thou come to destroy us? I know thee who thou art; the Holy One of God."

Luke 4:36: "And they were all amazed, and spake among themselves, saying, What a word is this! for with authority and power he commandeth the unclean spirits, and they come out."

Luke 4:38: "And he arose out of the synagogue, and entered into Simon's house. And Simon's wife's mother was taken with a great fever; and they besought him for her."

Luke 4:40: "Now when the sun was setting, all they that had any sick with divers diseases brought them unto him; and he laid his hands on every one of them, and healed them."

Luke 5:9: "For he was astonished, and all that were with him, at the draught of the fishes which they had taken:"

Luke 5:10: "And so was also James, and John, the sons of Zebedee, which were partners with Simon. And Jesus said unto Simon, Fear not; from henceforth thou shalt catch men."

Luke 5:18: "And, behold, men brought in a bed a man which was taken with a palsy: and they sought means to bring him in, and to lay him before him."

Luke 5:19: "And when they could not find by what way they might bring him in because of the multitude, they went upon the housetop, and let him down through the tiling with his couch into the midst before Jesus."

Luke 5:26: "And they were all amazed, and they glorified God, and were filled with fear, saying, We have seen strange things to day."

Luke 5:29: "And Levi made him a great feast in his own house: and there was a great company of publicans and of others that sat down with them."

Luke 5:30: "But their scribes and Pharisees murmured against his disciples, saying, Why do ye eat

and drink with publicans and sinners?"

Luke 5:34: "And he said unto them, Can ye make the children of the bridechamber fast, while the bridegroom is with them?"

Luke 5:36: "And he spake also a parable unto them; No man putteth a piece of a new garment upon an old; if otherwise, then both the new maketh a rent, and the piece that was taken out of the new agreeth not with the old."

Luke 6:3: "And Jesus answering them said, Have ye not read so much as this, what David did, when himself was an hungred, and they which were with him;"

Luke 6:4: "How he went into the house of God, and did take and eat the shewbread, and gave also to them that were with him; which it is not lawful to eat but for the priests alone?"

Luke 6:11: "And they were filled with madness; and communed one with another what they might do to Jesus."

Luke 6:17: "And he came down with them, and stood in the plain, and the company of his disciples, and a great multitude of people out of all Judaea and Jerusalem, and from the sea coast of Tyre and Sidon, which came to hear him, and to be healed of their diseases;"

Luke 6:18: "And they that were vexed with unclean spirits: and they were healed."

Luke 6:38: "Give, and it shall be given unto you; good measure, pressed down, and shaken together, and running over, shall men give into your bosom. For with the same measure that ye mete withal it shall be measured to you again."

Luke 7:6: "Then Jesus went with them. And when he was now not far from the house, the centurion sent friends to him, saying unto him, Lord, trouble not thyself: for I am not worthy that thou shouldest enter under my roof:"

Luke 7:11: "And it came to pass the day after, that he went into a city called Nain; and many of his disciples went with him, and much people."

Luke 7:12: "Now when he came nigh to the gate of the city, behold, there was a dead man carried out, the only son of his mother, and she was a widow: and much people of the city was with her."

Luke 7:24: "And when the messengers of John were departed, he began to speak unto the people concerning John, What went ye out into the wilderness for to see? A reed shaken with the wind?"

Luke 7:29: "And all the people that heard him, and the publicans, justified God, being baptized with the baptism of John."

Luke 7:36: "And one of the Pharisees desired him that he would eat with him. And he went into the Pharisee's house, and sat down to meat."

Luke 7:38: "And stood at his feet behind him weeping, and began to wash his feet with tears, and did wipe them with the hairs of her head, and kissed his feet, and anointed them with the ointment."

Luke 7:44: "And he turned to the woman, and said unto Simon, Seest thou this woman? I entered into thine house, thou gavest me no water for my feet: but she hath washed my feet with tears, and wiped them with the hairs of her head."

Luke 7:46: "My head with oil thou didst not anoint: but this woman hath anointed my feet with ointment."

Luke 7:49: "And they that sat at meat with him began to say within themselves, Who is this that forgiveth sins also?"

Luke 8:1: "And it came to pass afterward, that he went throughout every city and village, preaching and shewing the glad tidings of the kingdom of God: and the twelve were with him,"

Luke 8:7: "And some fell among thorns; and the thorns sprang up with it, and choked it."

Luke 8:13: "They on the rock are they, which, when they hear, receive the word with joy; and these have no root, which for a while believe, and in time of temptation fall away."

Luke 8:14: "And that which fell among thorns are they, which, when they have heard, go forth, and are choked with cares and riches and pleasures of this life, and bring no fruit to perfection."

Luke 8:15: "But that on the good ground are they, which in an honest and good heart, having heard the word, keep it, and bring forth fruit with patience."

Luke 8:16: "No man, when he hath lighted a candle, covereth it with a vessel, or putteth it under a bed; but setteth it on a candlestick, that they which enter in may see the light."

Luke 8:22: "Now it came to pass on a certain day, that he went into a ship with his disciples: and he said unto them, Let us go over unto the other side of the lake. And they launched forth."

Luke 8:23: "But as they sailed he fell asleep: and there came down a storm of wind on the lake; and they were filled with water, and were in jeopardy."

Luke 8:28: "When he saw Jesus, he cried out, and fell down before him, and with a loud voice said, What have I to do with thee, Jesus, thou Son of God most high? I beseech thee, torment me not."

Luke 8:29: "(For he had commanded the unclean spirit to come out of the man. For oftentimes it had caught him: and he was kept bound with chains and in fetters; and he brake the bands, and was driven of the devil into the wilderness.)"

Luke 8:37: "Then the whole multitude of the country of the Gadarenes round about besought him to depart from them; for they were taken with great fear: and he went up into the ship, and returned back again."

Luke 8:38: "Now the man out of whom the devils were departed besought him that he might be with him: but Jesus sent him away, saying,"

Luke 8:45: "And Jesus said, Who touched me? When all denied, Peter and they that were with him said, Master, the multitude throng thee and press thee, and sayest thou, Who touched me?"

Luke 9:18: "And it came to pass, as he was alone praying, his disciples were with him: and he asked them, saying, Whom say the people that I am?"

Luke 9:30: "And, behold, there talked with him two men, which were Moses and Elias:"

Luke 9:32: "But Peter and they that were with him were heavy with sleep: and when they were awake, they saw his glory, and the two men that stood with him."

Luke 9:41: "And Jesus answering said, O faithless and perverse generation, how long shall I be with you, and suffer you? Bring thy son hither."

Luke 9:49: "And John answered and said, Master, we saw one casting out devils in thy name; and we forbid him, because he followeth not with us."

Luke 10:17: "And the seventy returned again with joy, saying, Lord, even the devils are subject unto us through thy name."

Luke 10:27: "And he answering said, Thou shalt love the Lord thy God with all thy heart, and with all thy soul, and with all thy strength, and with all thy mind; and thy neighbour as thyself."

Luke 11:7: "And he from within shall answer and say, Trouble me not: the door is now shut, and my children are with me in bed; I cannot rise and give thee."

Luke 11:20: "But if I with the finger of God cast out devils, no doubt the kingdom of God is come upon you."

Luke 11:23: "He that is not with me is against me: and he that gathereth not with me scattereth."

Luke 11:31: "The queen of the south shall rise up in the judgment with the men of this generation, and condemn them: for she came from the utmost parts of the earth to hear the wisdom of Solomon; and, behold, a greater than Solomon is here."

Luke 11:32: "The men of Nineve shall rise up in the judgment with this generation, and shall condemn it: for they repented at the preaching of Jonas; and, behold, a greater than Jonas is here."

Luke 11:37: "And as he spake, a certain Pharisee besought him to dine with him: and he went in, and sat down to meat."

Luke 11:46: "And he said, Woe unto you also, ye lawyers! for ye lade men with burdens grievous to be borne, and ye yourselves touch not the burdens with one of your fingers."

Luke 12:13: "And one of the company said unto him, Master, speak to my brother, that he divide the inheritance with me."

Luke 12:25: "And which of you with taking thought can add to his stature one cubit?"

Luke 12:46: "The lord of that servant will come in a day when he looketh not for him, and at an hour when he is not aware, and will cut him in sunder, and will appoint him his portion with the

unbelievers."

Luke 12:47: "And that servant, which knew his lord's will, and prepared not himself, neither did according to his will, shall be beaten with many stripes."

Luke 12:48: "But he that knew not, and did commit things worthy of stripes, shall be beaten with few stripes. For unto whomsoever much is given, of him shall be much required: and to whom men have committed much, of him they will ask the more."

Luke 12:50: "But I have a baptism to be baptized with; and how am I straitened till it be accomplished!"

Luke 12:58: "When thou goest with thine adversary to the magistrate, as thou art in the way, give diligence that thou mayest be delivered from him; lest he hale thee to the judge, and the judge deliver thee to the officer, and the officer cast thee into prison."

Luke 13:1: "There were present at that season some that told him of the Galilaeans, whose blood Pilate had mingled with their sacrifices."

Luke 13:14: "And the ruler of the synagogue answered with indignation, because that Jesus had healed on the sabbath day, and said unto the people, There are six days in which men ought to work: in them therefore come and be healed, and not on the sabbath day."

Luke 14:9: "And he that bade thee and him come and say to thee, Give this man place; and thou begin with shame to take the lowest room."

Luke 14:10: "But when thou art bidden, go and sit down in the lowest room; that when he that bade thee cometh, he may say unto thee, Friend, go up higher: then shalt thou have worship in the presence of them that sit at meat with thee."

Luke 14:15: "And when one of them that sat at meat with him heard these things, he said unto him, Blessed is he that shall eat bread in the kingdom of God."

Luke 14:18: "And they all with one consent began to make excuse. The first said unto him, I have bought a piece of ground, and I must needs go and see it: I pray thee have me excused."

Luke 14:25: "And there went great multitudes with him: and he turned, and said unto them,"

Luke 14:31: "Or what king, going to make war against another king, sitteth not down first, and consulteth whether he be able with ten thousand to meet him that cometh against him with twenty thousand?"

Luke 15:2: "And the Pharisees and scribes murmured, saying, This man receiveth sinners, and eateth with them."

Luke 15:6: "And when he cometh home, he calleth together his friends and neighbours, saying unto them, Rejoice with me; for I have found my sheep which was lost."

Luke 15:9: "And when she hath found it, she calleth her friends and her neighbours together, saying, Rejoice with me; for I have found the piece which I had lost."

Luke 15:13: "And not many days after the younger son gathered all together, and took his journey into a far country, and there wasted his substance with riotous living."

Luke 15:16: "And he would fain have filled his belly with the husks that the swine did eat: and no man gave unto him."

Luke 15:17: "And when he came to himself, he said, How many hired servants of my father's have bread enough and to spare, and I perish with hunger!"

Luke 15:29: "And he answering said to his father, Lo, these many years do I serve thee, neither transgressed I at any time thy commandment: and yet thou never gavest me a kid, that I might make merry with my friends:"

Luke 15:30: "But as soon as this thy son was come, which hath devoured thy living with harlots, thou hast killed for him the fatted calf."

Luke 15:31: "And he said unto him, Son, thou art ever with me, and all that I have is thine."

Luke 16:21: "And desiring to be fed with the crumbs which fell from the rich man's table: moreover the dogs came and licked his sores."

Luke 17:15: "And one of them, when he saw that he was healed, turned back, and with a loud voice



glorified God,"

Luke 17:20: "And when he was demanded of the Pharisees, when the kingdom of God should come, he answered them and said, The kingdom of God cometh not with observation:"

Luke 18:7: "And shall not God avenge his own elect, which cry day and night unto him, though he bear long with them?"

Luke 18:11: "The Pharisee stood and prayed thus with himself, God, I thank thee, that I am not as other men are, extortioners, unjust, adulterers, or even as this publican."

Luke 18:27: "And he said, The things which are impossible with men are possible with God."

Luke 19:7: "And when they saw it, they all murmured, saying, That he was gone to be guest with a man that is a sinner."

Luke 19:23: "Wherefore then gavest not thou my money into the bank, that at my coming I might have required mine own with usury?"

Luke 19:37: "And when he was come nigh, even now at the descent of the mount of Olives, the whole multitude of the disciples began to rejoice and praise God with a loud voice for all the mighty works that they had seen;"

Luke 19:44: "And shall lay thee even with the ground, and thy children within thee; and they shall not leave in thee one stone upon another; because thou knewest not the time of thy visitation."

Luke 20:1: "And it came to pass, that on one of those days, as he taught the people in the temple, and preached the gospel, the chief priests and the scribes came upon him with the elders,"

Luke 20:5: "And they reasoned with themselves, saying, If we shall say, From heaven; he will say, Why then believed ye him not?"

Luke 21:5: "And as some spake of the temple, how it was adorned with goodly stones and gifts, he said,"

Luke 21:20: "And when ye shall see Jerusalem compassed with armies, then know that the desolation thereof is nigh."

Luke 21:23: "But woe unto them that are with child, and to them that give suck, in those days! for there shall be great distress in the land, and wrath upon this people."

Luke 21:25: "And there shall be signs in the sun, and in the moon, and in the stars; and upon the earth distress of nations, with perplexity; the sea and the waves roaring;"

Luke 21:27: "And then shall they see the Son of man coming in a cloud with power and great glory."

Luke 21:34: "And take heed to yourselves, lest at any time your hearts be overcharged with surfeiting, and drunkenness, and cares of this life, and so that day come upon you unawares."

Luke 22:4: "And he went his way, and communed with the chief priests and captains, how he might betray him unto them."

Luke 22:11: "And ye shall say unto the goodman of the house, The Master saith unto thee, Where is the guestchamber, where I shall eat the passover with my disciples?"

Luke 22:14: "And when the hour was come, he sat down, and the twelve apostles with him."

Luke 22:15: "And he said unto them, With desire I have desired to eat this passover with you before I suffer:"

Luke 22:21: "But, behold, the hand of him that betrayeth me is with me on the table."

Luke 22:28: "Ye are they which have continued with me in my temptations."

Luke 22:33: "And he said unto him, Lord, I am ready to go with thee, both into prison, and to death."

Luke 22:48: "But Jesus said unto him, Judas, betrayest thou the Son of man with a kiss?"

Luke 22:49: "When they which were about him saw what would follow, they said unto him, Lord, shall we smite with the sword?"

Luke 22:52: "Then Jesus said unto the chief priests, and captains of the temple, and the elders, which were come to him, Be ye come out, as against a thief, with swords and staves?"

Luke 22:53: "When I was daily with you in the temple, ye stretched forth no hands against me: but

this is your hour, and the power of darkness."

Luke 22:56: "But a certain maid beheld him as he sat by the fire, and earnestly looked upon him, and said, This man was also with him."

Luke 22:59: "And about the space of one hour after another confidently affirmed, saying, Of a truth this fellow also was with him: for he is a Galilaean."

Luke 23:9: "Then he questioned with him in many words; but he answered him nothing."

Luke 23:11: "And Herod with his men of war set him at nought, and mocked him, and arrayed him in a gorgeous robe, and sent him again to Pilate."

Luke 23:18: "And they cried out all at once, saying, Away with this man, and release unto us Barabbas:"

Luke 23:23: "And they were instant with loud voices, requiring that he might be crucified. And the voices of them and of the chief priests prevailed."

Luke 23:32: "And there were also two other, malefactors, led with him to be put to death."

Luke 23:35: "And the people stood beholding. And the rulers also with them derided him, saying, He saved others; let him save himself, if he be Christ, the chosen of God."

Luke 23:43: "And Jesus said unto him, Verily I say unto thee, To day shalt thou be with me in paradise."

Luke 23:46: "And when Jesus had cried with a loud voice, he said, Father, into thy hands I commend my spirit: and having said thus, he gave up the ghost."

Luke 23:55: "And the women also, which came with him from Galilee, followed after, and beheld the sepulchre, and how his body was laid."

Luke 24:1: "Now upon the first day of the week, very early in the morning, they came unto the sepulchre, bringing the spices which they had prepared, and certain others with them."

Luke 24:10: "It was Mary Magdalene and Joanna, and Mary the mother of James, and other women that were with them, which told these things unto the apostles."

Luke 24:15: "And it came to pass, that, while they communed together and reasoned, Jesus himself drew near, and went with them."

Luke 24:24: "And certain of them which were with us went to the sepulchre, and found it even so as the women had said: but him they saw not."

Luke 24:29: "But they constrained him, saying, Abide with us: for it is toward evening, and the day is far spent. And he went in to tarry with them."

Luke 24:30: "And it came to pass, as he sat at meat with them, he took bread, and blessed it, and brake, and gave to them."

Luke 24:32: "And they said one to another, Did not our heart burn within us, while he talked with us by the way, and while he opened to us the scriptures?"

Luke 24:33: "And they rose up the same hour, and returned to Jerusalem, and found the eleven gathered together, and them that were with them,"

Luke 24:44: "And he said unto them, These are the words which I spake unto you, while I was yet with you, that all things must be fulfilled, which were written in the law of Moses, and in the prophets, and in the psalms, concerning me."

Luke 24:49: "And, behold, I send the promise of my Father upon you: but tarry ye in the city of Jerusalem, until ye be endued with power from on high."

Luke 24:52: "And they worshipped him, and returned to Jerusalem with great joy:"

John 1:1: "In the beginning was the Word, and the Word was with God, and the Word was God."

John 1:2: "The same was in the beginning with God."

John 1:26: "John answered them, saying, I baptize with water: but there standeth one among you, whom ye know not;"

John 1:31: "And I knew him not: but that he should be made manifest to Israel, therefore am I come baptizing with water."

John 1:33: "And I knew him not: but he that sent me to baptize with water, the same said unto me,

Upon whom thou shalt see the Spirit descending, and remaining on him, the same is he which baptizeth with the Holy Ghost."

John 1:39: "He saith unto them, Come and see. They came and saw where he dwelt, and abode with him that day: for it was about the tenth hour."

John 2:4: "Jesus saith unto her, Woman, what have I to do with thee? mine hour is not yet come."

John 2:7: "Jesus saith unto them, Fill the waterpots with water. And they filled them up to the brim."

John 3:2: "The same came to Jesus by night, and said unto him, Rabbi, we know that thou art a teacher come from God: for no man can do these miracles that thou doest, except God be with him."

John 3:22: "After these things came Jesus and his disciples into the land of Judaea; and there he tarried with them, and baptized."

John 3:26: "And they came unto John, and said unto him, Rabbi, he that was with thee beyond Jordan, to whom thou barest witness, behold, the same baptizeth, and all men come to him."

John 4:6: "Now Jacob's well was there. Jesus therefore, being wearied with his journey, sat thus on the well: and it was about the sixth hour."

John 4:9: "Then saith the woman of Samaria unto him, How is it that thou, being a Jew, askest drink of me, which am a woman of Samaria? for the Jews have no dealings with the Samaritans."

John 4:11: "The woman saith unto him, Sir, thou hast nothing to draw with, and the well is deep: from whence then hast thou that living water?"

John 4:27: "And upon this came his disciples, and marvelled that he talked with the woman: yet no man said, What seekest thou? or, Why talkest thou with her?"

John 4:40: "So when the Samaritans were come unto him, they besought him that he would tarry with them: and he abode there two days."

John 5:18: "Therefore the Jews sought the more to kill him, because he not only had broken the sabbath, but said also that God was his Father, making himself equal with God."

John 6:3: "And Jesus went up into a mountain, and there he sat with his disciples."

John 6:13: "Therefore they gathered them together, and filled twelve baskets with the fragments of the five barley loaves, which remained over and above unto them that had eaten."

John 6:22: "The day following, when the people which stood on the other side of the sea saw that there was none other boat there, save that one whereinto his disciples were entered, and that Jesus went not with his disciples into the boat, but that his disciples were gone away alone;"

John 6:66: "From that time many of his disciples went back, and walked no more with him."

John 7:33: "Then said Jesus unto them, Yet a little while am I with you, and then I go unto him that sent me."

John 8:6: "This they said, tempting him, that they might have to accuse him. But Jesus stooped down, and with his finger wrote on the ground, as though he heard them not."

John 8:29: "And he that sent me is with me: the Father hath not left me alone; for I do always those things that please him."

John 8:38: "I speak that which I have seen with my Father: and ye do that which ye have seen with your father."

John 9:6: "When he had thus spoken, he spat on the ground, and made clay of the spittle, and he anointed the eyes of the blind man with the clay,"

John 9:37: "And Jesus said unto him, Thou hast both seen him, and it is he that talketh with thee."

John 9:40: "And some of the Pharisees which were with him heard these words, and said unto him, Are we blind also?"

John 11:2: "(It was that Mary which anointed the Lord with ointment, and wiped his feet with her hair, whose brother Lazarus was sick.)"

John 11:16: "Then said Thomas, which is called Didymus, unto his fellowdisciples, Let us also go, that we may die with him."

John 11:31: "The Jews then which were with her in the house, and comforted her, when they saw

Mary, that she rose up hastily and went out, followed her, saying, She goeth unto the grave to weep there."

John 11:33: "When Jesus therefore saw her weeping, and the Jews also weeping which came with her, he groaned in the spirit, and was troubled."

John 11:43: "And when he thus had spoken, he cried with a loud voice, Lazarus, come forth."

John 11:44: "And he that was dead came forth, bound hand and foot with graveclothes: and his face was bound about with a napkin. Jesus saith unto them, Loose him, and let him go."

John 11:54: "Jesus therefore walked no more openly among the Jews; but went thence unto a country near to the wilderness, into a city called Ephraim, and there continued with his disciples."

John 12:2: "There they made him a supper; and Martha served: but Lazarus was one of them that sat at the table with him."

John 12:3: "Then took Mary a pound of ointment of spikenard, very costly, and anointed the feet of Jesus, and wiped his feet with her hair: and the house was filled with the odour of the ointment."

John 12:8: "For the poor always ye have with you; but me ye have not always."

John 12:17: "The people therefore that was with him when he called Lazarus out of his grave, and raised him from the dead, bare record."

John 12:35: "Then Jesus said unto them, Yet a little while is the light with you. Walk while ye have the light, lest darkness come upon you: for he that walketh in darkness knoweth not whither he goeth."

John 12:40: "He hath blinded their eyes, and hardened their heart; that they should not see with their eyes, nor understand with their heart, and be converted, and I should heal them."

John 13:5: "After that he poureth water into a bason, and began to wash the disciples' feet, and to wipe them with the towel wherewith he was girded."

John 13:8: "Peter saith unto him, Thou shalt never wash my feet. Jesus answered him, If I wash thee not, thou hast no part with me."

John 13:18: "I speak not of you all: I know whom I have chosen: but that the scripture may be fulfilled, He that eateth bread with me hath lifted up his heel against me."

John 13:33: "Little children, yet a little while I am with you. Ye shall seek me: and as I said unto the Jews, Whither I go, ye cannot come; so now I say to you."

John 14:9: "Jesus saith unto him, Have I been so long time with you, and yet hast thou not known me, Philip? he that hath seen me hath seen the Father; and how sayest thou then, Shew us the Father?"

John 14:16: "And I will pray the Father, and he shall give you another Comforter, that he may abide with you for ever;"

John 14:17: "Even the Spirit of truth; whom the world cannot receive, because it seeth him not, neither knoweth him: but ye know him; for he dwelleth with you, and shall be in you."

John 14:23: "Jesus answered and said unto him, If a man love me, he will keep my words: and my Father will love him, and we will come unto him, and make our abode with him."

John 14:25: "These things have I spoken unto you, being yet present with you."

John 14:27: "Peace I leave with you, my peace I give unto you: not as the world giveth, give I unto you. Let not your heart be troubled, neither let it be afraid."

John 14:30: "Hereafter I will not talk much with you: for the prince of this world cometh, and hath nothing in me."

John 15:27: "And ye also shall bear witness, because ye have been with me from the beginning."

John 16:4: "But these things have I told you, that when the time shall come, ye may remember that I told you of them. And these things I said not unto you at the beginning, because I was with you."

John 16:32: "Behold, the hour cometh, yea, is now come, that ye shall be scattered, every man to his own, and shall leave me alone: and yet I am not alone, because the Father is with me."

John 17:5: "And now, O Father, glorify thou me with thine own self with the glory which I had with thee before the world was."

John 17:12: "While I was with them in the world, I kept them in thy name: those that thou gavest me I have kept, and none of them is lost, but the son of perdition; that the scripture might be fulfilled."

John 17:24: "Father, I will that they also, whom thou hast given me, be with me where I am; that they may behold my glory, which thou hast given me: for thou lovedst me before the foundation of the world."

John 18:1: "When Jesus had spoken these words, he went forth with his disciples over the brook Cedron, where was a garden, into the which he entered, and his disciples."

John 18:2: "And Judas also, which betrayed him, knew the place: for Jesus oftentimes resorted thither with his disciples."

John 18:3: "Judas then, having received a band of men and officers from the chief priests and Pharisees, cometh thither with lanterns and torches and weapons."

John 18:5: "They answered him, Jesus of Nazareth. Jesus saith unto them, I am he. And Judas also, which betrayed him, stood with them."

John 18:15: "And Simon Peter followed Jesus, and so did another disciple: that disciple was known unto the high priest, and went in with Jesus into the palace of the high priest."

John 18:18: "And the servants and officers stood there, who had made a fire of coals; for it was cold: and they warmed themselves: and Peter stood with them, and warmed himself."

John 18:22: "And when he had thus spoken, one of the officers which stood by struck Jesus with the palm of his hand, saying, Answerest thou the high priest so?"

John 18:26: "One of the servants of the high priest, being his kinsman whose ear Peter cut off, saith, Did not I see thee in the garden with him?"

John 19:3: "And said, Hail, King of the Jews! and they smote him with their hands."

John 19:15: "But they cried out, Away with him, away with him, crucify him. Pilate saith unto them, Shall I crucify your King? The chief priests answered, We have no king but Caesar."

John 19:18: "Where they crucified him, and two other with him, on either side one, and Jesus in the midst."

John 19:29: "Now there was set a vessel full of vinegar: and they filled a sponge with vinegar, and put it upon hyssop, and put it to his mouth."

John 19:32: "Then came the soldiers, and brake the legs of the first, and of the other which was crucified with him."

John 19:34: "But one of the soldiers with a spear pierced his side, and forthwith came there out blood and water."

John 19:40: "Then took they the body of Jesus, and wound it in linen clothes with the spices, as the manner of the Jews is to bury."

John 20:7: "And the napkin, that was about his head, not lying with the linen clothes, but wrapped together in a place by itself."

John 20:24: "But Thomas, one of the twelve, called Didymus, was not with them when Jesus came."

John 20:26: "And after eight days again his disciples were within, and Thomas with them: then came Jesus, the doors being shut, and stood in the midst, and said, Peace be unto you."

John 21:3: "Simon Peter saith unto them, I go a fishing. They say unto him, We also go with thee. They went forth, and entered into a ship immediately; and that night they caught nothing."

John 21:8: "And the other disciples came in a little ship; (for they were not far from land, but as it were two hundred cubits,) dragging the net with fishes."

Acts 1:4: "And, being assembled together with them, commanded them that they should not depart from Jerusalem, but wait for the promise of the Father, which, saith he, ye have heard of me."

Acts 1:5: "For John truly baptized with water; but ye shall be baptized with the Holy Ghost not many days hence."

Acts 1:14: "These all continued with one accord in prayer and supplication, with the women, and Mary the mother of Jesus, and with his brethren."

Acts 1:17: "For he was numbered with us, and had obtained part of this ministry."

Acts 1:18: "Now this man purchased a field with the reward of iniquity; and falling headlong, he burst asunder in the midst, and all his bowels gushed out."

Acts 1:21: "Wherefore of these men which have companied with us all the time that the Lord Jesus went in and out among us,"

Acts 1:22: "Beginning from the baptism of John, unto that same day that he was taken up from us, must one be ordained to be a witness with us of his resurrection."

Acts 1:26: "And they gave forth their lots; and the lot fell upon Matthias; and he was numbered with the eleven apostles."

Acts 2:1: "And when the day of Pentecost was fully come, they were all with one accord in one place."

Acts 2:4: "And they were all filled with the Holy Ghost, and began to speak with other tongues, as the Spirit gave them utterance."

Acts 2:14: "But Peter, standing up with the eleven, lifted up his voice, and said unto them, Ye men of Judaea, and all ye that dwell at Jerusalem, be this known unto you, and hearken to my words:"

Acts 2:28: "Thou hast made known to me the ways of life; thou shalt make me full of joy with thy countenance."

Acts 2:29: "Men and brethren, let me freely speak unto you of the patriarch David, that he is both dead and buried, and his sepulchre is with us unto this day."

Acts 2:30: "Therefore being a prophet, and knowing that God had sworn with an oath to him, that of the fruit of his loins, according to the flesh, he would raise up Christ to sit on his throne;"

Acts 2:40: "And with many other words did he testify and exhort, saying, Save yourselves from this untoward generation."

Acts 2:46: "And they, continuing daily with one accord in the temple, and breaking bread from house to house, did eat their meat with gladness and singleness of heart,"

Acts 2:47: "Praising God, and having favour with all the people. And the Lord added to the church daily such as should be saved."

Acts 3:4: "And Peter, fastening his eyes upon him with John, said, Look on us."

Acts 3:8: "And he leaping up stood, and walked, and entered with them into the temple, walking, and leaping, and praising God."

Acts 3:10: "And they knew that it was he which sat for alms at the Beautiful gate of the temple: and they were filled with wonder and amazement at that which had happened unto him."

Acts 3:25: "Ye are the children of the prophets, and of the covenant which God made with our fathers, saying unto Abraham, And in thy seed shall all the kindreds of the earth be blessed."

Acts 4:8: "Then Peter, filled with the Holy Ghost, said unto them, Ye rulers of the people, and elders of Israel,"

Acts 4:13: "Now when they saw the boldness of Peter and John, and perceived that they were unlearned and ignorant men, they marvelled; and they took knowledge of them, that they had been with Jesus."

Acts 4:14: "And beholding the man which was healed standing with them, they could say nothing against it."

Acts 4:24: "And when they heard that, they lifted up their voice to God with one accord, and said, Lord, thou art God, which hast made heaven, and earth, and the sea, and all that in them is:"

Acts 4:27: "For of a truth against thy holy child Jesus, whom thou hast anointed, both Herod, and Pontius Pilate, with the Gentiles, and the people of Israel, were gathered together,"

Acts 4:29: "And now, Lord, behold their threatenings: and grant unto thy servants, that with all boldness they may speak thy word,"

Acts 4:31: "And when they had prayed, the place was shaken where they were assembled together; and they were all filled with the Holy Ghost, and they spake the word of God with boldness."

Acts 4:33: "And with great power gave the apostles witness of the resurrection of the Lord Jesus:"

and great grace was upon them all."

Acts 5:1: "But a certain man named Ananias, with Sapphira his wife, sold a possession,"

Acts 5:12: "And by the hands of the apostles were many signs and wonders wrought among the people; (and they were all with one accord in Solomon's porch."

Acts 5:16: "There came also a multitude out of the cities round about unto Jerusalem, bringing sick folks, and them which were vexed with unclean spirits: and they were healed every one."

Acts 5:17: "Then the high priest rose up, and all they that were with him, (which is the sect of the Sadducees,) and were filled with indignation,"

Acts 5:21: "And when they heard that, they entered into the temple early in the morning, and taught. But the high priest came, and they that were with him, and called the council together, and all the senate of the children of Israel, and sent to the prison to have them brought."

Acts 5:23: "Saying, The prison truly found we shut with all safety, and the keepers standing without before the doors: but when we had opened, we found no man within."

Acts 5:26: "Then went the captain with the officers, and brought them without violence: for they feared the people, lest they should have been stoned."

Acts 5:28: "Saying, Did not we straitly command you that ye should not teach in this name? and, behold, ye have filled Jerusalem with your doctrine, and intend to bring this man's blood upon us."

Acts 5:31: "Him hath God exalted with his right hand to be a Prince and a Saviour, for to give repentance to Israel, and forgiveness of sins."

Acts 6:9: "Then there arose certain of the synagogue, which is called the synagogue of the Libertines, and Cyrenians, and Alexandrians, and of them of Cilicia and of Asia, disputing with Stephen."

Acts 7:9: "And the patriarchs, moved with envy, sold Joseph into Egypt: but God was with him,"

Acts 7:19: "The same dealt subtilly with our kindred, and evil entreated our fathers, so that they cast out their young children, to the end they might not live."

Acts 7:38: "This is he, that was in the church in the wilderness with the angel which spake to him in the mount Sina, and with our fathers: who received the lively oracles to give unto us:"

Acts 7:45: "Which also our fathers that came after brought in with Jesus into the possession of the Gentiles, whom God drave out before the face of our fathers, unto the days of David;"

Acts 7:48: "Howbeit the most High dwelleth not in temples made with hands; as saith the prophet,"

Acts 7:54: "When they heard these things, they were cut to the heart, and they gnashed on him with their teeth."

Acts 7:57: "Then they cried out with a loud voice, and stopped their ears, and ran upon him with one accord,"

Acts 7:60: "And he kneeled down, and cried with a loud voice, Lord, lay not this sin to their charge. And when he had said this, he fell asleep."

Acts 8:6: "And the people with one accord gave heed unto those things which Philip spake, hearing and seeing the miracles which he did."

Acts 8:7: "For unclean spirits, crying with loud voice, came out of many that were possessed with them: and many taken with palsies, and that were lame, were healed."

Acts 8:11: "And to him they had regard, because that of long time he had bewitched them with sorceries."

Acts 8:13: "Then Simon himself believed also: and when he was baptized, he continued with Philip, and wondered, beholding the miracles and signs which were done."

Acts 8:20: "But Peter said unto him, Thy money perish with thee, because thou hast thought that the gift of God may be purchased with money."

Acts 8:31: "And he said, How can I, except some man should guide me? And he desired Philip that he would come up and sit with him."

Acts 8:37: "And Philip said, If thou believest with all thine heart, thou mayest. And he answered and said, I believe that Jesus Christ is the Son of God."

Acts 9:7: "And the men which journeyed with him stood speechless, hearing a voice, but seeing no man."

Acts 9:17: "And Ananias went his way, and entered into the house; and putting his hands on him said, Brother Saul, the Lord, even Jesus, that appeared unto thee in the way as thou camest, hath sent me, that thou mightest receive thy sight, and be filled with the Holy Ghost."

Acts 9:19: "And when he had received meat, he was strengthened. Then was Saul certain days with the disciples which were at Damascus."

Acts 9:28: "And he was with them coming in and going out at Jerusalem."

Acts 9:39: "Then Peter arose and went with them. When he was come, they brought him into the upper chamber: and all the widows stood by him weeping, and shewing the coats and garments which Dorcas made, while she was with them."

Acts 9:43: "And it came to pass, that he tarried many days in Joppa with one Simon a tanner."

Acts 10:2: "A devout man, and one that feared God with all his house, which gave much alms to the people, and prayed to God alway."

Acts 10:6: "He lodgeth with one Simon a tanner, whose house is by the sea side: he shall tell thee what thou oughtest to do."

Acts 10:20: "Arise therefore, and get thee down, and go with them, doubting nothing: for I have sent them."

Acts 10:23: "Then called he them in, and lodged them. And on the morrow Peter went away with them, and certain brethren from Joppa accompanied him."

Acts 10:27: "And as he talked with him, he went in, and found many that were come together."

Acts 10:35: "But in every nation he that feareth him, and worketh righteousness, is accepted with him."

Acts 10:38: "How God anointed Jesus of Nazareth with the Holy Ghost and with power: who went about doing good, and healing all that were oppressed of the devil; for God was with him."

Acts 10:41: "Not to all the people, but unto witnesses chosen before God, even to us, who did eat and drink with him after he rose from the dead."

Acts 10:45: "And they of the circumcision which believed were astonished, as many as came with Peter, because that on the Gentiles also was poured out the gift of the Holy Ghost."

Acts 10:46: "For they heard them speak with tongues, and magnify God. Then answered Peter,"

Acts 11:2: "And when Peter was come up to Jerusalem, they that were of the circumcision contended with him,"

Acts 11:3: "Saying, Thou wentest in to men uncircumcised, and didst eat with them."

Acts 11:12: "And the Spirit bade me go with them, nothing doubting. Moreover these six brethren accompanied me, and we entered into the man's house:"

Acts 11:16: "Then remembered I the word of the Lord, how that he said, John indeed baptized with water; but ye shall be baptized with the Holy Ghost."

Acts 11:21: "And the hand of the Lord was with them: and a great number believed, and turned unto the Lord."

Acts 11:23: "Who, when he came, and had seen the grace of God, was glad, and exhorted them all, that with purpose of heart they would cleave unto the Lord."

Acts 11:26: "And when he had found him, he brought him unto Antioch. And it came to pass, that a whole year they assembled themselves with the church, and taught much people. And the disciples were called Christians first in Antioch."

Acts 12:2: "And he killed James the brother of John with the sword."

Acts 12:6: "And when Herod would have brought him forth, the same night Peter was sleeping between two soldiers, bound with two chains: and the keepers before the door kept the prison."

Acts 12:17: "But he, beckoning unto them with the hand to hold their peace, declared unto them how the Lord had brought him out of the prison. And he said, Go shew these things unto James, and to the brethren. And he departed, and went into another place."



Acts 12:20: "And Herod was highly displeased with them of Tyre and Sidon: but they came with one accord to him, and, having made Blastus the king's chamberlain their friend, desired peace; because their country was nourished by the king's country."

Acts 12:25: "And Barnabas and Saul returned from Jerusalem, when they had fulfilled their ministry, and took with them John, whose surname was Mark."

Acts 13:1: "Now there were in the church that was at Antioch certain prophets and teachers; as Barnabas, and Simeon that was called Niger, and Lucius of Cyrene, and Manaen, which had been brought up with Herod the tetrarch, and Saul."

Acts 13:7: "Which was with the deputy of the country, Sergius Paulus, a prudent man; who called for Barnabas and Saul, and desired to hear the word of God."

Acts 13:9: "Then Saul, (who also is called Paul,) filled with the Holy Ghost, set his eyes on him."

Acts 13:16: "Then Paul stood up, and beckoning with his hand said, Men of Israel, and ye that fear God, give audience."

Acts 13:17: "The God of this people of Israel chose our fathers, and exalted the people when they dwelt as strangers in the land of Egypt, and with an high arm brought he them out of it."

Acts 13:31: "And he was seen many days of them which came up with him from Galilee to Jerusalem, who are his witnesses unto the people."

Acts 13:45: "But when the Jews saw the multitudes, they were filled with envy, and spake against those things which were spoken by Paul, contradicting and blaspheming."

Acts 13:52: "And the disciples were filled with joy, and with the Holy Ghost."

Acts 14:4: "But the multitude of the city was divided: and part held with the Jews, and part with the apostles."

Acts 14:5: "And when there was an assault made both of the Gentiles, and also of the Jews with their rulers, to use them despitefully, and to stone them,"

Acts 14:10: "Said with a loud voice, Stand upright on thy feet. And he leaped and walked."

Acts 14:13: "Then the priest of Jupiter, which was before their city, brought oxen and garlands unto the gates, and would have done sacrifice with the people."

Acts 14:15: "And saying, Sirs, why do ye these things? We also are men of like passions with you, and preach unto you that ye should turn from these vanities unto the living God, which made heaven, and earth, and the sea, and all things that are therein:"

Acts 14:17: "Nevertheless he left not himself without witness, in that he did good, and gave us rain from heaven, and fruitful seasons, filling our hearts with food and gladness."

Acts 14:18: "And with these sayings scarce restrained they the people, that they had not done sacrifice unto them."

Acts 14:20: "Howbeit, as the disciples stood round about him, he rose up, and came into the city: and the next day he departed with Barnabas to Derbe."

Acts 14:23: "And when they had ordained them elders in every church, and had prayed with fasting, they commended them to the Lord, on whom they believed."

Acts 14:27: "And when they were come, and had gathered the church together, they rehearsed all that God had done with them, and how he had opened the door of faith unto the Gentiles."

Acts 14:28: "And there they abode long time with the disciples."

Acts 15:2: "When therefore Paul and Barnabas had no small dissension and disputation with them, they determined that Paul and Barnabas, and certain other of them, should go up to Jerusalem unto the apostles and elders about this question."

Acts 15:4: "And when they were come to Jerusalem, they were received of the church, and of the apostles and elders, and they declared all things that God had done with them."

Acts 15:22: "Then pleased it the apostles and elders with the whole church, to send chosen men of their own company to Antioch with Paul and Barnabas; namely, Judas surnamed Barsabas and Silas, chief men among the brethren:"

Acts 15:24: "Forasmuch as we have heard, that certain which went out from us have troubled you

with words, subverting your souls, saying, Ye must be circumcised, and keep the law: to whom we gave no such commandment:"

Acts 15:25: "It seemed good unto us, being assembled with one accord, to send chosen men unto you with our beloved Barnabas and Paul,"

Acts 15:32: "And Judas and Silas, being prophets also themselves, exhorted the brethren with many words, and confirmed them."

Acts 15:35: "Paul also and Barnabas continued in Antioch, teaching and preaching the word of the Lord, with many others also."

Acts 15:37: "And Barnabas determined to take with them John, whose surname was Mark."

Acts 15:38: "But Paul thought not good to take him with them, who departed from them from Pamphylia, and went not with them to the work."

Acts 16:3: "Him would Paul have to go forth with him; and took and circumcised him because of the Jews which were in those quarters: for they knew all that his father was a Greek."

Acts 16:11: "Therefore loosing from Troas, we came with a straight course to Samothracia, and the next day to Neapolis;"

Acts 16:16: "And it came to pass, as we went to prayer, a certain damsel possessed with a spirit of divination met us, which brought her masters much gain by soothsaying:"

Acts 16:28: "But Paul cried with a loud voice, saying, Do thyself no harm: for we are all here."

Acts 16:34: "And when he had brought them into his house, he set meat before them, and rejoiced, believing in God with all his house."

Acts 17:2: "And Paul, as his manner was, went in unto them, and three sabbath days reasoned with them out of the scriptures,"

Acts 17:4: "And some of them believed, and consorted with Paul and Silas; and of the devout Greeks a great multitude, and of the chief women not a few."

Acts 17:5: "But the Jews which believed not, moved with envy, took unto them certain lewd fellows of the baser sort, and gathered a company, and set all the city on an uproar, and assaulted the house of Jason, and sought to bring them out to the people."

Acts 17:11: "These were more noble than those in Thessalonica, in that they received the word with all readiness of mind, and searched the scriptures daily, whether those things were so."

Acts 17:15: "And they that conducted Paul brought him unto Athens: and receiving a commandment unto Silas and Timotheus for to come to him with all speed, they departed."

Acts 17:17: "Therefore disputed he in the synagogue with the Jews, and with the devout persons, and in the market daily with them that met with him."

Acts 17:23: "For as I passed by, and beheld your devotions, I found an altar with this inscription, TO THE UNKNOWN GOD. Whom therefore ye ignorantly worship, him declare I unto you."

Acts 17:24: "God that made the world and all things therein, seeing that he is Lord of heaven and earth, dwelleth not in temples made with hands;"

Acts 17:25: "Neither is worshipped with men's hands, as though he needed any thing, seeing he giveth to all life, and breath, and all things;"

Acts 17:34: "Howbeit certain men clave unto him, and believed: among the which was Dionysius the Areopagite, and a woman named Damaris, and others with them."

Acts 18:2: "And found a certain Jew named Aquila, born in Pontus, lately come from Italy, with his wife Priscilla; (because that Claudius had commanded all Jews to depart from Rome:) and came unto them."

Acts 18:3: "And because he was of the same craft, he abode with them, and wrought: for by their occupation they were tentmakers."

Acts 18:8: "And Crispus, the chief ruler of the synagogue, believed on the Lord with all his house; and many of the Corinthians hearing believed, and were baptized."

Acts 18:10: "For I am with thee, and no man shall set on thee to hurt thee: for I have much people in this city."

Acts 18:12: "And when Gallio was the deputy of Achaia, the Jews made insurrection with one accord against Paul, and brought him to the judgment seat,"

Acts 18:14: "And when Paul was now about to open his mouth, Gallio said unto the Jews, If it were a matter of wrong or wicked lewdness, O ye Jews, reason would that I should bear with you:"

Acts 18:18: "And Paul after this tarried there yet a good while, and then took his leave of the brethren, and sailed thence into Syria, and with him Priscilla and Aquila; having shorn his head in Cenchrea: for he had a vow."

Acts 18:19: "And he came to Ephesus, and left them there: but he himself entered into the synagogue, and reasoned with the Jews."

Acts 18:20: "When they desired him to tarry longer time with them, he consented not;"

Acts 19:4: "Then said Paul, John verily baptized with the baptism of repentance, saying unto the people, that they should believe on him which should come after him, that is, on Christ Jesus."

Acts 19:6: "And when Paul had laid his hands upon them, the Holy Ghost came on them; and they spake with tongues, and prophesied."

Acts 19:25: "Whom he called together with the workmen of like occupation, and said, Sirs, ye know that by this craft we have our wealth."

Acts 19:26: "Moreover ye see and hear, that not alone at Ephesus, but almost throughout all Asia, this Paul hath persuaded and turned away much people, saying that they be no gods, which are made with hands:"

Acts 19:29: "And the whole city was filled with confusion: and having caught Gaius and Aristarchus, men of Macedonia, Paul's companions in travel, they rushed with one accord into the theatre."

Acts 19:33: "And they drew Alexander out of the multitude, the Jews putting him forward. And Alexander beckoned with the hand, and would have made his defence unto the people."

Acts 19:34: "But when they knew that he was a Jew, all with one voice about the space of two hours cried out, Great is Diana of the Ephesians."

Acts 19:38: "Wherefore if Demetrius, and the craftsmen which are with him, have a matter against any man, the law is open, and there are deputies: let them implead one another."

Acts 20:9: "And there sat in a window a certain young man named Eutychus, being fallen into a deep sleep: and as Paul was long preaching, he sunk down with sleep, and fell down from the third loft, and was taken up dead."

Acts 20:14: "And when he met with us at Assos, we took him in, and came to Mitylene."

Acts 20:18: "And when they were come to him, he said unto them, Ye know, from the first day that I came into Asia, after what manner I have been with you at all seasons,"

Acts 20:19: "Serving the LORD with all humility of mind, and with many tears, and temptations, which befell me by the lying in wait of the Jews:"

Acts 20:24: "But none of these things move me, neither count I my life dear unto myself, so that I might finish my course with joy, and the ministry, which I have received of the Lord Jesus, to testify the gospel of the grace of God."

Acts 20:28: "Take heed therefore unto yourselves, and to all the flock, over the which the Holy Ghost hath made you overseers, to feed the church of God, which he hath purchased with his own blood."

Acts 20:31: "Therefore watch, and remember, that by the space of three years I ceased not to warn every one night and day with tears."

Acts 20:34: "Yea, ye yourselves know, that these hands have ministered unto my necessities, and to them that were with me."

Acts 20:36: "And when he had thus spoken, he kneeled down, and prayed with them all."

Acts 21:1: "And it came to pass, that after we were gotten from them, and had launched, we came with a straight course unto Coos, and the day following unto Rhodes, and from thence unto Patara:"

Acts 21:5: "And when we had accomplished those days, we departed and went our way; and they

all brought us on our way, with wives and children, till we were out of the city: and we kneeled down on the shore, and prayed."

Acts 21:7: "And when we had finished our course from Tyre, we came to Ptolemais, and saluted the brethren, and abode with them one day."

Acts 21:8: "And the next day we that were of Paul's company departed, and came unto Caesarea: and we entered into the house of Philip the evangelist, which was one of the seven; and abode with him."

Acts 21:16: "There went with us also certain of the disciples of Caesarea, and brought with them one Mnason of Cyprus, an old disciple, with whom we should lodge."

Acts 21:18: "And the day following Paul went in with us unto James; and all the elders were present."

Acts 21:24: "Them take, and purify thyself with them, and be at charges with them, that they may shave their heads: and all may know that those things, whereof they were informed concerning thee, are nothing; but that thou thyself also walkest orderly, and keepest the law."

Acts 21:26: "Then Paul took the men, and the next day purifying himself with them entered into the temple, to signify the accomplishment of the days of purification, until that an offering should be offered for every one of them."

Acts 21:29: "(For they had seen before with him in the city Trophimus an Ephesian, whom they supposed that Paul had brought into the temple.)"

Acts 21:33: "Then the chief captain came near, and took him, and commanded him to be bound with two chains; and demanded who he was, and what he had done."

Acts 21:36: "For the multitude of the people followed after, crying, Away with him."

Acts 21:40: "And when he had given him licence, Paul stood on the stairs, and beckoned with the hand unto the people. And when there was made a great silence, he spake unto them in the Hebrew tongue, saying,"

Acts 22:9: "And they that were with me saw indeed the light, and were afraid; but they heard not the voice of him that spake to me."

Acts 22:11: "And when I could not see for the glory of that light, being led by the hand of them that were with me, I came into Damascus."

Acts 22:22: "And they gave him audience unto this word, and then lifted up their voices, and said, Away with such a fellow from the earth: for it is not fit that he should live."

Acts 22:25: "And as they bound him with thongs, Paul said unto the centurion that stood by, Is it lawful for you to scourge a man that is a Roman, and uncondemned?"

Acts 22:28: "And the chief captain answered, With a great sum obtained I this freedom. And Paul said, But I was free born."

Acts 23:15: "Now therefore ye with the council signify to the chief captain that he bring him down unto you to morrow, as though ye would enquire something more perfectly concerning him: and we, or ever he come near, are ready to kill him."

Acts 23:19: "Then the chief captain took him by the hand, and went with him aside privately, and asked him, What is that thou hast to tell me?"

Acts 23:21: "But do not thou yield unto them: for there lie in wait for him of them more than forty men, which have bound themselves with an oath, that they will neither eat nor drink till they have killed him: and now are they ready, looking for a promise from thee."

Acts 23:27: "This man was taken of the Jews, and should have been killed of them: then came I with an army, and rescued him, having understood that he was a Roman."

Acts 23:32: "On the morrow they left the horsemen to go with him, and returned to the castle:"

Acts 24:1: "And after five days Ananias the high priest descended with the elders, and with a certain orator named Tertullus, who informed the governor against Paul."

Acts 24:3: "We accept it always, and in all places, most noble Felix, with all thankfulness."

Acts 24:7: "But the chief captain Lysias came upon us, and with great violence took him away out

of our hands,"

Acts 24:12: "And they neither found me in the temple disputing with any man, neither raising up the people, neither in the synagogues, nor in the city:"

Acts 24:18: "Whereupon certain Jews from Asia found me purified in the temple, neither with multitude, nor with tumult."

Acts 24:24: "And after certain days, when Felix came with his wife Drusilla, which was a Jewess, he sent for Paul, and heard him concerning the faith in Christ."

Acts 24:26: "He hoped also that money should have been given him of Paul, that he might loose him: wherefore he sent for him the oftener, and communed with him."

Acts 25:5: "Let them therefore, said he, which among you are able, go down with me, and accuse this man, if there be any wickedness in him."

Acts 25:12: "Then Festus, when he had conferred with the council, answered, Hast thou appealed unto Caesar? unto Caesar shalt thou go."

Acts 25:23: "And on the morrow, when Agrippa was come, and Bernice, with great pomp, and was entered into the place of hearing, with the chief captains, and principal men of the city, at Festus' commandment Paul was brought forth."

Acts 25:24: "And Festus said, King Agrippa, and all men which are here present with us, ye see this man, about whom all the multitude of the Jews have dealt with me, both at Jerusalem, and also here, crying that he ought not to live any longer."

Acts 26:8: "Why should it be thought a thing incredible with you, that God should raise the dead?"

Acts 26:9: "I verily thought with myself, that I ought to do many things contrary to the name of Jesus of Nazareth."

Acts 26:12: "Whereupon as I went to Damascus with authority and commission from the chief priests,"

Acts 26:13: "At midday, O king, I saw in the way a light from heaven, above the brightness of the sun, shining round about me and them which journeyed with me."

Acts 26:24: "And as he thus spake for himself, Festus said with a loud voice, Paul, thou art beside thyself; much learning doth make thee mad."

Acts 26:30: "And when he had thus spoken, the king rose up, and the governor, and Bernice, and they that sat with them:"

Acts 27:2: "And entering into a ship of Adramyttium, we launched, meaning to sail by the coasts of Asia; one Aristarchus, a Macedonian of Thessalonica, being with us."

Acts 27:10: "And said unto them, Sirs, I perceive that this voyage will be with hurt and much damage, not only of the lading and ship, but also of our lives."

Acts 27:18: "And we being exceedingly tossed with a tempest, the next day they lightened the ship;"

Acts 27:19: "And the third day we cast out with our own hands the tackling of the ship."

Acts 27:24: "Saying, Fear not, Paul; thou must be brought before Caesar: and, lo, God hath given thee all them that sail with thee."

Acts 27:39: "And when it was day, they knew not the land: but they discovered a certain creek with a shore, into the which they were minded, if it were possible, to thrust in the ship."

Acts 27:41: "And falling into a place where two seas met, they ran the ship aground; and the forepart stuck fast, and remained unmoveable, but the hinder part was broken with the violence of the waves."

Acts 28:10: "Who also honoured us with many honours; and when we departed, they laded us with such things as were necessary."

Acts 28:14: "Where we found brethren, and were desired to tarry with them seven days: and so we went toward Rome."

Acts 28:16: "And when we came to Rome, the centurion delivered the prisoners to the captain of the guard: but Paul was suffered to dwell by himself with a soldier that kept him."

Acts 28:20: "For this cause therefore have I called for you, to see you, and to speak with you: because that for the hope of Israel I am bound with this chain."

Acts 28:27: "For the heart of this people is waxed gross, and their ears are dull of hearing, and their eyes have they closed; lest they should see with their eyes, and hear with their ears, and understand with their heart, and should be converted, and I should heal them."

Acts 28:31: "Preaching the kingdom of God, and teaching those things which concern the Lord Jesus Christ, with all confidence, no man forbidding him."

Romans 1:4: "And declared to be the Son of God with power, according to the spirit of holiness, by the resurrection from the dead:"

Romans 1:9: "For God is my witness, whom I serve with my spirit in the gospel of his Son, that without ceasing I make mention of you always in my prayers;"

Romans 1:12: "That is, that I may be comforted together with you by the mutual faith both of you and me."

Romans 1:27: "And likewise also the men, leaving the natural use of the woman, burned in their lust one toward another; men with men working that which is unseemly, and receiving in themselves that recompence of their error which was meet."

Romans 1:29: "Being filled with all unrighteousness, fornication, wickedness, covetousness, maliciousness; full of envy, murder, debate, deceit, malignity; whisperers,"

Romans 2:11: "For there is no respect of persons with God."

Romans 3:13: "Their throat is an open sepulchre; with their tongues they have used deceit; the poison of asps is under their lips:"

Romans 5:1: "Therefore being justified by faith, we have peace with God through our Lord Jesus Christ:"

Romans 6:4: "Therefore we are buried with him by baptism into death: that like as Christ was raised up from the dead by the glory of the Father, even so we also should walk in newness of life."

Romans 6:6: "Knowing this, that our old man is crucified with him, that the body of sin might be destroyed, that henceforth we should not serve sin."

Romans 6:8: "Now if we be dead with Christ, we believe that we shall also live with him:"

Romans 7:18: "For I know that in me (that is, in my flesh,) dwelleth no good thing: for to will is present with me; but how to perform that which is good I find not."

Romans 7:21: "I find then a law, that, when I would do good, evil is present with me."

Romans 7:25: "I thank God through Jesus Christ our Lord. So then with the mind I myself serve the law of God; but with the flesh the law of sin."

Romans 8:16: "The Spirit itself beareth witness with our spirit, that we are the children of God:"

Romans 8:17: "And if children, then heirs; heirs of God, and joint-heirs with Christ; if so be that we suffer with him, that we may be also glorified together."

Romans 8:18: "For I reckon that the sufferings of this present time are not worthy to be compared with the glory which shall be revealed in us."

Romans 8:25: "But if we hope for that we see not, then do we with patience wait for it."

Romans 8:26: "Likewise the Spirit also helpeth our infirmities: for we know not what we should pray for as we ought: but the Spirit itself maketh intercession for us with groanings which cannot be uttered."

Romans 8:32: "He that spared not his own Son, but delivered him up for us all, how shall he not with him also freely give us all things?"

Romans 9:14: "What shall we say then? Is there unrighteousness with God? God forbid."

Romans 9:22: "What if God, willing to shew his wrath, and to make his power known, endured with much longsuffering the vessels of wrath fitted to destruction:"

Romans 10:9: "That if thou shalt confess with thy mouth the Lord Jesus, and shalt believe in thine heart that God hath raised him from the dead, thou shalt be saved."

Romans 10:10: "For with the heart man believeth unto righteousness; and with the mouth

confession is made unto salvation."

Romans 11:17: "And if some of the branches be broken off, and thou, being a wild olive tree, wert grafted in among them, and with them partakest of the root and fatness of the olive tree;"

Romans 12:8: "Or he that exhorteth, on exhortation: he that giveth, let him do it with simplicity; he that ruleth, with diligence; he that sheweth mercy, with cheerfulness."

Romans 12:10: "Be kindly affectioned one to another with brotherly love; in honour preferring one another;"

Romans 12:15: "Rejoice with them that do rejoice, and weep with them that weep."

Romans 12:18: "If it be possible, as much as lieth in you, live peaceably with all men."

Romans 12:21: "Be not overcome of evil, but overcome evil with good."

Romans 14:15: "But if thy brother be grieved with thy meat, now walkest thou not charitably. Destroy not him with thy meat, for whom Christ died."

Romans 14:20: "For meat destroy not the work of God. All things indeed are pure; but it is evil for that man who eateth with offence."

Romans 15:6: "That ye may with one mind and one mouth glorify God, even the Father of our Lord Jesus Christ."

Romans 15:10: "And again he saith, Rejoice, ye Gentiles, with his people."

Romans 15:13: "Now the God of hope fill you with all joy and peace in believing, that ye may abound in hope, through the power of the Holy Ghost."

Romans 15:14: "And I myself also am persuaded of you, my brethren, that ye also are full of goodness, filled with all knowledge, able also to admonish one another."

Romans 15:24: "Whensoever I take my journey into Spain, I will come to you: for I trust to see you in my journey, and to be brought on my way thitherward by you, if first I be somewhat filled with your company."

Romans 15:30: "Now I beseech you, brethren, for the Lord Jesus Christ's sake, and for the love of the Spirit, that ye strive together with me in your prayers to God for me;"

Romans 15:32: "That I may come unto you with joy by the will of God, and may with you be refreshed."

Romans 15:33: "Now the God of peace be with you all. Amen."

Romans 16:14: "Salute Asyncritus, Phlegon, Hermas, Patrobas, Hermes, and the brethren which are with them."

Romans 16:15: "Salute Philologus, and Julia, Nereus, and his sister, and Olympas, and all the saints which are with them."

Romans 16:16: "Salute one another with an holy kiss. The churches of Christ salute you."

Romans 16:20: "And the God of peace shall bruise Satan under your feet shortly. The grace of our Lord Jesus Christ be with you. Amen."

Romans 16:24: "The grace of our Lord Jesus Christ be with you all. Amen."

1 Corinthians 1:2: "Unto the church of God which is at Corinth, to them that are sanctified in Christ Jesus, called to be saints, with all that in every place call upon the name of Jesus Christ our Lord, both their's and our's:"

1 Corinthians 1:17: "For Christ sent me not to baptize, but to preach the gospel: not with wisdom of words, lest the cross of Christ should be made of none effect."

1 Corinthians 2:1: "And I, brethren, when I came to you, came not with excellency of speech or of wisdom, declaring unto you the testimony of God."

1 Corinthians 2:3: "And I was with you in weakness, and in fear, and in much trembling."

1 Corinthians 2:4: "And my speech and my preaching was not with enticing words of man's wisdom, but in demonstration of the Spirit and of power:"

1 Corinthians 2:13: "Which things also we speak, not in the words which man's wisdom teacheth, but which the Holy Ghost teacheth; comparing spiritual things with spiritual."

1 Corinthians 3:2: "I have fed you with milk, and not with meat: for hitherto ye were not able to

bear it, neither yet now are ye able."

1 Corinthians 3:9: "For we are labourers together with God: ye are God's husbandry, ye are God's building."

1 Corinthians 3:19: "For the wisdom of this world is foolishness with God. For it is written, He taketh the wise in their own craftiness."

1 Corinthians 4:3: "But with me it is a very small thing that I should be judged of you, or of man's judgment: yea, I judge not mine own self."

1 Corinthians 4:8: "Now ye are full, now ye are rich, ye have reigned as kings without us: and I would to God ye did reign, that we also might reign with you."

1 Corinthians 4:12: "And labour, working with our own hands: being reviled, we bless; being persecuted, we suffer it:"

1 Corinthians 4:21: "What will ye? shall I come unto you with a rod, or in love, and in the spirit of meekness?"

1 Corinthians 5:4: "In the name of our Lord Jesus Christ, when ye are gathered together, and my spirit, with the power of our Lord Jesus Christ,"

1 Corinthians 5:8: "Therefore let us keep the feast, not with old leaven, neither with the leaven of malice and wickedness; but with the unleavened bread of sincerity and truth."

1 Corinthians 5:9: "I wrote unto you in an epistle not to company with fornicators:"

1 Corinthians 5:10: "Yet not altogether with the fornicators of this world, or with the covetous, or extortioners, or with idolaters; for then must ye needs go out of the world."

1 Corinthians 5:11: "But now I have written unto you not to keep company, if any man that is called a brother be a fornicator, or covetous, or an idolater, or a railer, or a drunkard, or an extortioner; with such an one no not to eat."

1 Corinthians 6:6: "But brother goeth to law with brother, and that before the unbelievers."

1 Corinthians 6:7: "Now therefore there is utterly a fault among you, because ye go to law one with another. Why do ye not rather take wrong? why do ye not rather suffer yourselves to be defrauded?"

1 Corinthians 6:9: "Know ye not that the unrighteous shall not inherit the kingdom of God? Be not deceived: neither fornicators, nor idolaters, nor adulterers, nor effeminate, nor abusers of themselves with mankind,"

1 Corinthians 6:20: "For ye are bought with a price: therefore glorify God in your body, and in your spirit, which are God's."

1 Corinthians 7:5: "Defraud ye not one the other, except it be with consent for a time, that ye may give yourselves to fasting and prayer; and come together again, that Satan tempt you not for your incontinency."

1 Corinthians 7:12: "But to the rest speak I, not the Lord: If any brother hath a wife that believeth not, and she be pleased to dwell with him, let him not put her away."

1 Corinthians 7:13: "And the woman which hath an husband that believeth not, and if he be pleased to dwell with her, let her not leave him."

1 Corinthians 7:23: "Ye are bought with a price; be not ye the servants of men."

1 Corinthians 7:24: "Brethren, let every man, wherein he is called, therein abide with God."

1 Corinthians 8:7: "Howbeit there is not in every man that knowledge: for some with conscience of the idol unto this hour eat it as a thing offered unto an idol; and their conscience being weak is defiled."

1 Corinthians 9:13: "Do ye not know that they which minister about holy things live of the things of the temple? and they which wait at the altar are partakers with the altar?"

1 Corinthians 9:23: "And this I do for the gospel's sake, that I might be partaker thereof with you."

1 Corinthians 10:5: "But with many of them God was not well pleased: for they were overthrown in the wilderness."

1 Corinthians 10:13: "There hath no temptation taken you but such as is common to man: but God is faithful, who will not suffer you to be tempted above that ye are able; but will with the temptation



also make a way to escape, that ye may be able to bear it."

1 Corinthians 10:20: "But I say, that the things which the Gentiles sacrifice, they sacrifice to devils, and not to God: and I would not that ye should have fellowship with devils."

1 Corinthians 11:5: "But every woman that prayeth or prophesieth with her head uncovered dishonoureth her head: for that is even all one as if she were shaven."

1 Corinthians 11:32: "But when we are judged, we are chastened of the Lord, that we should not be condemned with the world."

1 Corinthians 12:26: "And whether one member suffer, all the members suffer with it; or one member be honoured, all the members rejoice with it."

1 Corinthians 12:30: "Have all the gifts of healing? do all speak with tongues? do all interpret?"

1 Corinthians 13:1: "Though I speak with the tongues of men and of angels, and have not charity, I am become as sounding brass, or a tinkling cymbal."

1 Corinthians 14:5: "I would that ye all spake with tongues but rather that ye prophesied: for greater is he that prophesieth than he that speaketh with tongues, except he interpret, that the church may receive edifying."

1 Corinthians 14:6: "Now, brethren, if I come unto you speaking with tongues, what shall I profit you, except I shall speak to you either by revelation, or by knowledge, or by prophesying, or by doctrine?"

1 Corinthians 14:15: "What is it then? I will pray with the spirit, and I will pray with the understanding also: I will sing with the spirit, and I will sing with the understanding also."

1 Corinthians 14:16: "Else when thou shalt bless with the spirit, how shall he that occupieth the room of the unlearned say Amen at thy giving of thanks, seeing he understandeth not what thou sayest?"

1 Corinthians 14:18: "I thank my God, I speak with tongues more than ye all:"

1 Corinthians 14:19: "Yet in the church I had rather speak five words with my understanding, that by my voice I might teach others also, than ten thousand words in an unknown tongue."

1 Corinthians 14:21: "In the law it is written, With men of other tongues and other lips will I speak unto this people; and yet for all that will they not hear me, saith the LORD."

1 Corinthians 14:23: "If therefore the whole church be come together into one place, and all speak with tongues, and there come in those that are unlearned, or unbelievers, will they not say that ye are mad?"

1 Corinthians 14:39: "Wherefore, brethren, covet to prophesy, and forbid not to speak with tongues."

1 Corinthians 15:10: "But by the grace of God I am what I am: and his grace which was bestowed upon me was not in vain; but I laboured more abundantly than they all: yet not I, but the grace of God which was with me."

1 Corinthians 15:32: "If after the manner of men I have fought with beasts at Ephesus, what advantageth it me, if the dead rise not? let us eat and drink; for to morrow we die."

1 Corinthians 15:35: "But some man will say, How are the dead raised up? and with what body do they come?"

1 Corinthians 16:4: "And if it be meet that I go also, they shall go with me."

1 Corinthians 16:6: "And it may be that I will abide, yea, and winter with you, that ye may bring me on my journey whithersoever I go."

1 Corinthians 16:7: "For I will not see you now by the way; but I trust to tarry a while with you, if the Lord permit."

1 Corinthians 16:10: "Now if Timotheus come, see that he may be with you without fear: for he worketh the work of the Lord, as I also do."

1 Corinthians 16:11: "Let no man therefore despise him: but conduct him forth in peace, that he may come unto me: for I look for him with the brethren."

1 Corinthians 16:12: "As touching our brother Apollos, I greatly desired him to come unto you with

the brethren: but his will was not at all to come at this time; but he will come when he shall have convenient time."

1 Corinthians 16:14: "Let all your things be done with charity."

1 Corinthians 16:16: "That ye submit yourselves unto such, and to every one that helpeth with us, and laboureth."

1 Corinthians 16:19: "The churches of Asia salute you. Aquila and Priscilla salute you much in the Lord, with the church that is in their house."

1 Corinthians 16:20: "All the brethren greet you. Greet ye one another with an holy kiss."

1 Corinthians 16:21: "The salutation of me Paul with mine own hand."

1 Corinthians 16:23: "The grace of our Lord Jesus Christ be with you."

1 Corinthians 16:24: "My love be with you all in Christ Jesus. Amen."

2 Corinthians 1:1: "Paul, an apostle of Jesus Christ by the will of God, and Timothy our brother, unto the church of God which is at Corinth, with all the saints which are in all Achaia:"

2 Corinthians 1:12: "For our rejoicing is this, the testimony of our conscience, that in simplicity and godly sincerity, not with fleshly wisdom, but by the grace of God, we have had our conversation in the world, and more abundantly to you-ward."

2 Corinthians 1:17: "When I therefore was thus minded, did I use lightness? or the things that I purpose, do I purpose according to the flesh, that with me there should be yea yea, and nay nay?"

2 Corinthians 1:21: "Now he which stablisheth us with you in Christ, and hath anointed us, is God;"

2 Corinthians 2:1: "But I determined this with myself, that I would not come again to you in heaviness."

2 Corinthians 2:4: "For out of much affliction and anguish of heart I wrote unto you with many tears; not that ye should be grieved, but that ye might know the love which I have more abundantly unto you."

2 Corinthians 2:7: "So that contrariwise ye ought rather to forgive him, and comfort him, lest perhaps such a one should be swallowed up with overmuch sorrow."

2 Corinthians 3:3: "Forasmuch as ye are manifestly declared to be the epistle of Christ ministered by us, written not with ink, but with the Spirit of the living God; not in tables of stone, but in fleshy tables of the heart."

2 Corinthians 3:18: "But we all, with open face beholding as in a glass the glory of the Lord, are changed into the same image from glory to glory, even as by the Spirit of the LORD."

2 Corinthians 4:14: "Knowing that he which raised up the Lord Jesus shall raise up us also by Jesus, and shall present us with you."

2 Corinthians 5:1: "For we know that if our earthly house of this tabernacle were dissolved, we have a building of God, an house not made with hands, eternal in the heavens."

2 Corinthians 5:2: "For in this we groan, earnestly desiring to be clothed upon with our house which is from heaven:"

2 Corinthians 5:8: "We are confident, I say, and willing rather to be absent from the body, and to be present with the Lord."

2 Corinthians 6:1: "We then, as workers together with him, beseech you also that ye receive not the grace of God in vain."

2 Corinthians 6:14: "Be ye not unequally yoked together with unbelievers: for what fellowship hath righteousness with unrighteousness? and what communion hath light with darkness?"

2 Corinthians 6:15: "And what concord hath Christ with Belial? or what part hath he that believeth with an infidel?"

2 Corinthians 6:16: "And what agreement hath the temple of God with idols? for ye are the temple of the living God; as God hath said, I will dwell in them, and walk in them; and I will be their God, and they shall be my people."

2 Corinthians 7:3: "I speak not this to condemn you: for I have said before, that ye are in our hearts to die and live with you."

2 Corinthians 7:4: "Great is my boldness of speech toward you, great is my glorying of you: I am filled with comfort, I am exceeding joyful in all our tribulation."

2 Corinthians 7:8: "For though I made you sorry with a letter, I do not repent, though I did repent: for I perceive that the same epistle hath made you sorry, though it were but for a season."

2 Corinthians 7:15: "And his inward affection is more abundant toward you, whilst he remembereth the obedience of you all, how with fear and trembling ye received him."

2 Corinthians 8:4: "Praying us with much intreaty that we would receive the gift, and take upon us the fellowship of the ministering to the saints."

2 Corinthians 8:18: "And we have sent with him the brother, whose praise is in the gospel throughout all the churches;"

2 Corinthians 8:19: "And not that only, but who was also chosen of the churches to travel with us with this grace, which is administered by us to the glory of the same Lord, and declaration of your ready mind:"

2 Corinthians 8:22: "And we have sent with them our brother, whom we have oftentimes proved diligent in many things, but now much more diligent, upon the great confidence which I have in you."

2 Corinthians 9:4: "Lest haply if they of Macedonia come with me, and find you unprepared, we (that we say not, ye) should be ashamed in this same confident boasting."

2 Corinthians 10:2: "But I beseech you, that I may not be bold when I am present with that confidence, wherewith I think to be bold against some, which think of us as if we walked according to the flesh."

2 Corinthians 10:12: "For we dare not make ourselves of the number, or compare ourselves with some that commend themselves: but they measuring themselves by themselves, and comparing themselves among themselves, are not wise."

2 Corinthians 11:1: "Would to God ye could bear with me a little in my folly: and indeed bear with me."

2 Corinthians 11:2: "For I am jealous over you with godly jealousy: for I have espoused you to one husband, that I may present you as a chaste virgin to Christ."

2 Corinthians 11:4: "For if he that cometh preacheth another Jesus, whom we have not preached, or if ye receive another spirit, which ye have not received, or another gospel, which ye have not accepted, ye might well bear with him."

2 Corinthians 11:9: "And when I was present with you, and wanted, I was chargeable to no man: for that which was lacking to me the brethren which came from Macedonia supplied: and in all things I have kept myself from being burdensome unto you, and so will I keep myself."

2 Corinthians 11:25: "Thrice was I beaten with rods, once was I stoned, thrice I suffered shipwreck, a night and a day I have been in the deep;"

2 Corinthians 11:32: "In Damascus the governor under Aretas the king kept the city of the Damascenes with a garrison, desirous to apprehend me:"

2 Corinthians 12:16: "But be it so, I did not burden you: nevertheless, being crafty, I caught you with guile."

2 Corinthians 12:18: "I desired Titus, and with him I sent a brother. Did Titus make a gain of you? walked we not in the same spirit? walked we not in the same steps?"

2 Corinthians 13:4: "For though he was crucified through weakness, yet he liveth by the power of God. For we also are weak in him, but we shall live with him by the power of God toward you."

2 Corinthians 13:11: "Finally, brethren, farewell. Be perfect, be of good comfort, be of one mind, live in peace; and the God of love and peace shall be with you."

2 Corinthians 13:12: "Greet one another with an holy kiss."

2 Corinthians 13:14: "The grace of the Lord Jesus Christ, and the love of God, and the communion of the Holy Ghost, be with you all. Amen."

Galatians 1:2: "And all the brethren which are with me, unto the churches of Galatia:"

Galatians 1:16: "To reveal his Son in me, that I might preach him among the heathen; immediately I conferred not with flesh and blood:"

Galatians 1:18: "Then after three years I went up to Jerusalem to see Peter, and abode with him fifteen days."

Galatians 2:1: "Then fourteen years after I went up again to Jerusalem with Barnabas, and took Titus with me also."

Galatians 2:3: "But neither Titus, who was with me, being a Greek, was compelled to be circumcised:"

Galatians 2:5: "To whom we gave place by subjection, no, not for an hour; that the truth of the gospel might continue with you."

Galatians 2:12: "For before that certain came from James, he did eat with the Gentiles: but when they were come, he withdrew and separated himself, fearing them which were of the circumcision."

Galatians 2:13: "And the other Jews dissembled likewise with him; insomuch that Barnabas also was carried away with their dissimulation."

Galatians 2:20: "I am crucified with Christ: nevertheless I live; yet not I, but Christ liveth in me: and the life which I now live in the flesh I live by the faith of the Son of God, who loved me, and gave himself for me."

Galatians 3:9: "So then they which be of faith are blessed with faithful Abraham."

Galatians 4:18: "But it is good to be zealously affected always in a good thing, and not only when I am present with you."

Galatians 4:20: "I desire to be present with you now, and to change my voice; for I stand in doubt of you."

Galatians 4:25: "For this Agar is mount Sinai in Arabia, and answereth to Jerusalem which now is, and is in bondage with her children."

Galatians 4:30: "Nevertheless what saith the scripture? Cast out the bondwoman and her son: for the son of the bondwoman shall not be heir with the son of the freewoman."

Galatians 5:1: "Stand fast therefore in the liberty wherewith Christ hath made us free, and be not entangled again with the yoke of bondage."

Galatians 5:24: "And they that are Christ's have crucified the flesh with the affections and lusts."

Galatians 6:11: "Ye see how large a letter I have written unto you with mine own hand."

Galatians 6:18: "Brethren, the grace of our Lord Jesus Christ be with your spirit. Amen."

Ephesians 1:3: "Blessed be the God and Father of our Lord Jesus Christ, who hath blessed us with all spiritual blessings in heavenly places in Christ:"

Ephesians 1:13: "In whom ye also trusted, after that ye heard the word of truth, the gospel of your salvation: in whom also after that ye believed, ye were sealed with that holy Spirit of promise,"

Ephesians 2:5: "Even when we were dead in sins, hath quickened us together with Christ, (by grace ye are saved;)"

Ephesians 2:19: "Now therefore ye are no more strangers and foreigners, but fellowcitizens with the saints, and of the household of God;"

Ephesians 3:12: "In whom we have boldness and access with confidence by the faith of him."

Ephesians 3:16: "That he would grant you, according to the riches of his glory, to be strengthened with might by his Spirit in the inner man;"

Ephesians 3:18: "May be able to comprehend with all saints what is the breadth, and length, and depth, and height;"

Ephesians 3:19: "And to know the love of Christ, which passeth knowledge, that ye might be filled with all the fulness of God."

Ephesians 4:2: "With all lowliness and meekness, with longsuffering, forbearing one another in love;"

Ephesians 4:14: "That we henceforth be no more children, tossed to and fro, and carried about with every wind of doctrine, by the sleight of men, and cunning craftiness, whereby they lie in wait to

deceive;"

Ephesians 4:19: "Who being past feeling have given themselves over unto lasciviousness, to work all uncleanness with greediness."

Ephesians 4:25: "Wherefore putting away lying, speak every man truth with his neighbour: for we are members one of another."

Ephesians 4:28: "Let him that stole steal no more: but rather let him labour, working with his hands the thing which is good, that he may have to give to him that needeth."

Ephesians 4:31: "Let all bitterness, and wrath, and anger, and clamour, and evil speaking, be put away from you, with all malice:"

Ephesians 5:6: "Let no man deceive you with vain words: for because of these things cometh the wrath of God upon the children of disobedience."

Ephesians 5:7: "Be not ye therefore partakers with them."

Ephesians 5:11: "And have no fellowship with the unfruitful works of darkness, but rather reprove them."

Ephesians 5:18: "And be not drunk with wine, wherein is excess; but be filled with the Spirit;"

Ephesians 5:26: "That he might sanctify and cleanse it with the washing of water by the word,"

Ephesians 6:2: "Honour thy father and mother; which is the first commandment with promise;"

Ephesians 6:3: "That it may be well with thee, and thou mayest live long on the earth."

Ephesians 6:5: "Servants, be obedient to them that are your masters according to the flesh, with fear and trembling, in singleness of your heart, as unto Christ;"

Ephesians 6:6: "Not with eyeservice, as menpleasers; but as the servants of Christ, doing the will of God from the heart;"

Ephesians 6:7: "With good will doing service, as to the Lord, and not to men:"

Ephesians 6:9: "And, ye masters, do the same things unto them, forbearing threatening: knowing that your Master also is in heaven; neither is there respect of persons with him."

Ephesians 6:14: "Stand therefore, having your loins girt about with truth, and having on the breastplate of righteousness;"

Ephesians 6:15: "And your feet shod with the preparation of the gospel of peace;"

Ephesians 6:18: "Praying always with all prayer and supplication in the Spirit, and watching thereunto with all perseverance and supplication for all saints;"

Ephesians 6:23: "Peace be to the brethren, and love with faith, from God the Father and the Lord Jesus Christ."

Ephesians 6:24: "Grace be with all them that love our Lord Jesus Christ in sincerity. Amen."

Philippians 1:1: "Paul and Timotheus, the servants of Jesus Christ, to all the saints in Christ Jesus which are at Philippi, with the bishops and deacons:"

Philippians 1:4: "Always in every prayer of mine for you all making request with joy,"

Philippians 1:11: "Being filled with the fruits of righteousness, which are by Jesus Christ, unto the glory and praise of God."

Philippians 1:20: "According to my earnest expectation and my hope, that in nothing I shall be ashamed, but that with all boldness, as always, so now also Christ shall be magnified in my body, whether it be by life, or by death."

Philippians 1:23: "For I am in a strait betwixt two, having a desire to depart, and to be with Christ; which is far better:"

Philippians 1:25: "And having this confidence, I know that I shall abide and continue with you all for your furtherance and joy of faith;"

Philippians 1:27: "Only let your conversation be as it becometh the gospel of Christ: that whether I come and see you, or else be absent, I may hear of your affairs, that ye stand fast in one spirit, with one mind striving together for the faith of the gospel;"

Philippians 2:6: "Who, being in the form of God, thought it not robbery to be equal with God:"

Philippians 2:12: "Wherefore, my beloved, as ye have always obeyed, not as in my presence only,

but now much more in my absence, work out your own salvation with fear and trembling."

Philippians 2:17: "Yea, and if I be offered upon the sacrifice and service of your faith, I joy, and rejoice with you all."

Philippians 2:18: "For the same cause also do ye joy, and rejoice with me."

Philippians 2:22: "But ye know the proof of him, that, as a son with the father, he hath served with me in the gospel."

Philippians 2:23: "Him therefore I hope to send presently, so soon as I shall see how it will go with me."

Philippians 2:29: "Receive him therefore in the Lord with all gladness; and hold such in reputation:"

Philippians 4:3: "And I intreat thee also, true yokefellow, help those women which laboured with me in the gospel, with Clement also, and with other my fellowlabourers, whose names are in the book of life."

Philippians 4:6: "Be careful for nothing; but in every thing by prayer and supplication with thanksgiving let your requests be made known unto God."

Philippians 4:9: "Those things, which ye have both learned, and received, and heard, and seen in me, do: and the God of peace shall be with you."

Philippians 4:14: "Notwithstanding ye have well done, that ye did communicate with my affliction."

Philippians 4:15: "Now ye Philippians know also, that in the beginning of the gospel, when I departed from Macedonia, no church communicated with me as concerning giving and receiving, but ye only."

Philippians 4:21: "Salute every saint in Christ Jesus. The brethren which are with me greet you."

Philippians 4:23: "The grace of our Lord Jesus Christ be with you all. Amen."

Colossians 1:9: "For this cause we also, since the day we heard it, do not cease to pray for you, and to desire that ye might be filled with the knowledge of his will in all wisdom and spiritual understanding;"

Colossians 1:11: "Strengthened with all might, according to his glorious power, unto all patience and longsuffering with joyfulness;"

Colossians 2:4: "And this I say, lest any man should beguile you with enticing words."

Colossians 2:5: "For though I be absent in the flesh, yet am I with you in the spirit, joying and beholding your order, and the stedfastness of your faith in Christ."

Colossians 2:7: "Rooted and built up in him, and stablished in the faith, as ye have been taught, abounding therein with thanksgiving."

Colossians 2:11: "In whom also ye are circumcised with the circumcision made without hands, in putting off the body of the sins of the flesh by the circumcision of Christ:"

Colossians 2:12: "Buried with him in baptism, wherein also ye are risen with him through the faith of the operation of God, who hath raised him from the dead."

Colossians 2:13: "And you, being dead in your sins and the uncircumcision of your flesh, hath he quickened together with him, having forgiven you all trespasses;"

Colossians 2:19: "And not holding the Head, from which all the body by joints and bands having nourishment ministered, and knit together, increaseth with the increase of God."

Colossians 2:20: "Wherefore if ye be dead with Christ from the rudiments of the world, why, as though living in the world, are ye subject to ordinances,"

Colossians 2:22: "Which all are to perish with the using;) after the commandments and doctrines of men?"

Colossians 3:1: "If ye then be risen with Christ, seek those things which are above, where Christ sitteth on the right hand of God."

Colossians 3:3: "For ye are dead, and your life is hid with Christ in God."

Colossians 3:4: "When Christ, who is our life, shall appear, then shall ye also appear with him in glory."

Colossians 3:9: "Lie not one to another, seeing that ye have put off the old man with his deeds;"

Colossians 3:16: "Let the word of Christ dwell in you richly in all wisdom; teaching and admonishing one another in psalms and hymns and spiritual songs, singing with grace in your hearts to the Lord."

Colossians 3:22: "Servants, obey in all things your masters according to the flesh; not with eyeservice, as menpleasers; but in singleness of heart, fearing God;"

Colossians 4:2: "Continue in prayer, and watch in the same with thanksgiving;"

Colossians 4:6: "Let your speech be always with grace, seasoned with salt, that ye may know how ye ought to answer every man."

Colossians 4:9: "With Onesimus, a faithful and beloved brother, who is one of you. They shall make known unto you all things which are done here."

Colossians 4:18: "The salutation by the hand of me Paul. Remember my bonds. Grace be with you. Amen."

1 Thessalonians 1:6: "And ye became followers of us, and of the Lord, having received the word in much affliction, with joy of the Holy Ghost."

1 Thessalonians 2:2: "But even after that we had suffered before, and were shamefully entreated, as ye know, at Philippi, we were bold in our God to speak unto you the gospel of God with much contention."

1 Thessalonians 2:4: "But as we were allowed of God to be put in trust with the gospel, even so we speak; not as pleasing men, but God, which trieth our hearts."

1 Thessalonians 2:17: "But we, brethren, being taken from you for a short time in presence, not in heart, endeavoured the more abundantly to see your face with great desire."

1 Thessalonians 3:4: "For verily, when we were with you, we told you before that we should suffer tribulation; even as it came to pass, and ye know."

1 Thessalonians 3:13: "To the end he may stablish your hearts unblameable in holiness before God, even our Father, at the coming of our Lord Jesus Christ with all his saints."

1 Thessalonians 4:11: "And that ye study to be quiet, and to do your own business, and to work with your own hands, as we commanded you;"

1 Thessalonians 4:14: "For if we believe that Jesus died and rose again, even so them also which sleep in Jesus will God bring with him."

1 Thessalonians 4:16: "For the Lord himself shall descend from heaven with a shout, with the voice of the archangel, and with the trump of God: and the dead in Christ shall rise first:"

1 Thessalonians 4:17: "Then we which are alive and remain shall be caught up together with them in the clouds, to meet the Lord in the air: and so shall we ever be with the Lord."

1 Thessalonians 4:18: "Wherefore comfort one another with these words."

1 Thessalonians 5:3: "For when they shall say, Peace and safety; then sudden destruction cometh upon them, as travail upon a woman with child; and they shall not escape."

1 Thessalonians 5:10: "Who died for us, that, whether we wake or sleep, we should live together with him."

1 Thessalonians 5:26: "Greet all the brethren with an holy kiss."

1 Thessalonians 5:28: "The grace of our Lord Jesus Christ be with you. Amen."

2 Thessalonians 1:6: "Seeing it is a righteous thing with God to recompense tribulation to them that trouble you;"

2 Thessalonians 1:7: "And to you who are troubled rest with us, when the Lord Jesus shall be revealed from heaven with his mighty angels,"

2 Thessalonians 1:9: "Who shall be punished with everlasting destruction from the presence of the Lord, and from the glory of his power;"

2 Thessalonians 1:11: "Wherefore also we pray always for you, that our God would count you worthy of this calling, and fulfil all the good pleasure of his goodness, and the work of faith with power:"

2 Thessalonians 2:5: "Remember ye not, that, when I was yet with you, I told you these things?"

2 Thessalonians 2:8: "And then shall that Wicked be revealed, whom the Lord shall consume with the spirit of his mouth, and shall destroy with the brightness of his coming:"

2 Thessalonians 2:9: "Even him, whose coming is after the working of Satan with all power and signs and lying wonders,"

2 Thessalonians 2:10: "And with all deceivableness of unrighteousness in them that perish; because they received not the love of the truth, that they might be saved."

2 Thessalonians 3:1: "Finally, brethren, pray for us, that the word of the Lord may have free course, and be glorified, even as it is with you:"

2 Thessalonians 3:8: "Neither did we eat any man's bread for nought; but wrought with labour and travail night and day, that we might not be chargeable to any of you:"

2 Thessalonians 3:10: "For even when we were with you, this we commanded you, that if any would not work, neither should he eat."

2 Thessalonians 3:12: "Now them that are such we command and exhort by our Lord Jesus Christ, that with quietness they work, and eat their own bread."

2 Thessalonians 3:14: "And if any man obey not our word by this epistle, note that man, and have no company with him, that he may be ashamed."

2 Thessalonians 3:16: "Now the Lord of peace himself give you peace always by all means. The Lord be with you all."

2 Thessalonians 3:17: "The salutation of Paul with mine own hand, which is the token in every epistle: so I write."

2 Thessalonians 3:18: "The grace of our Lord Jesus Christ be with you all. Amen."

1 Timothy 1:10: "For whoremongers, for them that defile themselves with mankind, for menstealers, for liars, for perjured persons, and if there be any other thing that is contrary to sound doctrine;"

1 Timothy 1:14: "And the grace of our Lord was exceeding abundant with faith and love which is in Christ Jesus."

1 Timothy 2:9: "In like manner also, that women adorn themselves in modest apparel, with shamefacedness and sobriety; not with broided hair, or gold, or pearls, or costly array;"

1 Timothy 2:10: "But (which becometh women professing godliness) with good works."

1 Timothy 2:11: "Let the woman learn in silence with all subjection."

1 Timothy 2:15: "Notwithstanding she shall be saved in childbearing, if they continue in faith and charity and holiness with sobriety."

1 Timothy 3:4: "One that ruleth well his own house, having his children in subjection with all gravity;"

1 Timothy 3:6: "Not a novice, lest being lifted up with pride he fall into the condemnation of the devil."

1 Timothy 4:2: "Speaking lies in hypocrisy; having their conscience seared with a hot iron;"

1 Timothy 4:3: "Forbidding to marry, and commanding to abstain from meats, which God hath created to be received with thanksgiving of them which believe and know the truth."

1 Timothy 4:4: "For every creature of God is good, and nothing to be refused, if it be received with thanksgiving:"

1 Timothy 4:14: "Neglect not the gift that is in thee, which was given thee by prophecy, with the laying on of the hands of the presbytery."

1 Timothy 5:2: "The elder women as mothers; the younger as sisters, with all purity."

1 Timothy 6:6: "But godliness with contentment is great gain."

1 Timothy 6:10: "For the love of money is the root of all evil: which while some coveted after, they have erred from the faith, and pierced themselves through with many sorrows."

1 Timothy 6:21: "Which some professing have erred concerning the faith. Grace be with thee. Amen."

2 Timothy 1:3: "I thank God, whom I serve from my forefathers with pure conscience, that without



ceasing I have remembrance of thee in my prayers night and day;"

2 Timothy 1:4: "Greatly desiring to see thee, being mindful of thy tears, that I may be filled with joy;"

2 Timothy 1:9: "Who hath saved us, and called us with an holy calling, not according to our works, but according to his own purpose and grace, which was given us in Christ Jesus before the world began,"

2 Timothy 2:4: "No man that warreth entangleth himself with the affairs of this life; that he may please him who hath chosen him to be a soldier."

2 Timothy 2:10: "Therefore I endure all things for the elect's sakes, that they may also obtain the salvation which is in Christ Jesus with eternal glory."

2 Timothy 2:11: "It is a faithful saying: For if we be dead with him, we shall also live with him:"

2 Timothy 2:12: "If we suffer, we shall also reign with him: if we deny him, he also will deny us:"

2 Timothy 2:22: "Flee also youthful lusts: but follow righteousness, faith, charity, peace, with them that call on the Lord out of a pure heart."

2 Timothy 3:6: "For of this sort are they which creep into houses, and lead captive silly women laden with sins, led away with divers lusts,"

2 Timothy 4:2: "Preach the word; be instant in season, out of season; reprove, rebuke, exhort with all longsuffering and doctrine."

2 Timothy 4:11: "Only Luke is with me. Take Mark, and bring him with thee: for he is profitable to me for the ministry."

2 Timothy 4:13: "The cloke that I left at Troas with Carpus, when thou comest, bring with thee, and the books, but especially the parchments."

2 Timothy 4:16: "At my first answer no man stood with me, but all men forsook me: I pray God that it may not be laid to their charge."

2 Timothy 4:17: "Notwithstanding the Lord stood with me, and strengthened me; that by me the preaching might be fully known, and that all the Gentiles might hear: and I was delivered out of the mouth of the lion."

2 Timothy 4:22: "The Lord Jesus Christ be with thy spirit. Grace be with you. Amen."

Titus 2:15: "These things speak, and exhort, and rebuke with all authority. Let no man despise thee."

Titus 3:15: "All that are with me salute thee. Greet them that love us in the faith. Grace be with you all. Amen."

Philemon 1:13: "Whom I would have retained with me, that in thy stead he might have ministered unto me in the bonds of the gospel:"

Philemon 1:19: "I Paul have written it with mine own hand, I will repay it: albeit I do not say to thee how thou owest unto me even thine own self besides."

Philemon 1:25: "The grace of our Lord Jesus Christ be with your spirit. Amen."

Hebrews 1:9: "Thou hast loved righteousness, and hated iniquity; therefore God, even thy God, hath anointed thee with the oil of gladness above thy fellows."

Hebrews 2:4: "God also bearing them witness, both with signs and wonders, and with divers miracles, and gifts of the Holy Ghost, according to his own will?"

Hebrews 2:7: "Thou madest him a little lower than the angels; thou crownedst him with glory and honour, and didst set him over the works of thy hands:"

Hebrews 2:9: "But we see Jesus, who was made a little lower than the angels for the suffering of death, crowned with glory and honour; that he by the grace of God should taste death for every man."

Hebrews 3:10: "Wherefore I was grieved with that generation, and said, They do alway err in their heart; and they have not known my ways."

Hebrews 3:17: "But with whom was he grieved forty years? was it not with them that had sinned, whose carcasses fell in the wilderness?"

Hebrews 4:2: "For unto us was the gospel preached, as well as unto them: but the word preached did not profit them, not being mixed with faith in them that heard it."

Hebrews 4:13: "Neither is there any creature that is not manifest in his sight: but all things are naked and opened unto the eyes of him with whom we have to do."

Hebrews 4:15: "For we have not an high priest which cannot be touched with the feeling of our infirmities; but was in all points tempted like as we are, yet without sin."

Hebrews 5:2: "Who can have compassion on the ignorant, and on them that are out of the way; for that he himself also is compassed with infirmity."

Hebrews 5:7: "Who in the days of his flesh, when he had offered up prayers and supplications with strong crying and tears unto him that was able to save him from death, and was heard in that he feared;"

Hebrews 7:21: "(For those priests were made without an oath; but this with an oath by him that said unto him, The Lord sware and will not repent, Thou art a priest for ever after the order of Melchisedec:)"

Hebrews 8:8: "For finding fault with them, he saith, Behold, the days come, saith the Lord, when I will make a new covenant with the house of Israel and with the house of Judah:"

Hebrews 8:9: "Not according to the covenant that I made with their fathers in the day when I took them by the hand to lead them out of the land of Egypt; because they continued not in my covenant, and I regarded them not, saith the Lord."

Hebrews 8:10: "For this is the covenant that I will make with the house of Israel after those days, saith the Lord; I will put my laws into their mind, and write them in their hearts: and I will be to them a God, and they shall be to me a people:"

Hebrews 9:4: "Which had the golden censer, and the ark of the covenant overlaid round about with gold, wherein was the golden pot that had manna, and Aaron's rod that budded, and the tables of the covenant;"

Hebrews 9:11: "But Christ being come an high priest of good things to come, by a greater and more perfect tabernacle, not made with hands, that is to say, not of this building;"

Hebrews 9:19: "For when Moses had spoken every precept to all the people according to the law, he took the blood of calves and of goats, with water, and scarlet wool, and hyssop, and sprinkled both the book, and all the people,"

Hebrews 9:21: "Moreover he sprinkled with blood both the tabernacle, and all the vessels of the ministry."

Hebrews 9:22: "And almost all things are by the law purged with blood; and without shedding of blood is no remission."

Hebrews 9:23: "It was therefore necessary that the patterns of things in the heavens should be purified with these; but the heavenly things themselves with better sacrifices than these."

Hebrews 9:24: "For Christ is not entered into the holy places made with hands, which are the figures of the true; but into heaven itself, now to appear in the presence of God for us:"

Hebrews 9:25: "Nor yet that he should offer himself often, as the high priest entereth into the holy place every year with blood of others;"

Hebrews 10:1: "For the law having a shadow of good things to come, and not the very image of the things, can never with those sacrifices which they offered year by year continually make the comers thereunto perfect."

Hebrews 10:16: "This is the covenant that I will make with them after those days, saith the Lord, I will put my laws into their hearts, and in their minds will I write them;"

Hebrews 10:22: "Let us draw near with a true heart in full assurance of faith, having our hearts sprinkled from an evil conscience, and our bodies washed with pure water."

Hebrews 11:7: "By faith Noah, being warned of God of things not seen as yet, moved with fear, prepared an ark to the saving of his house; by the which he condemned the world, and became heir of the righteousness which is by faith."

Hebrews 11:9: "By faith he sojourned in the land of promise, as in a strange country, dwelling in tabernacles with Isaac and Jacob, the heirs with him of the same promise:"

Hebrews 11:25: "Choosing rather to suffer affliction with the people of God, than to enjoy the pleasures of sin for a season;"

Hebrews 11:31: "By faith the harlot Rahab perished not with them that believed not, when she had received the spies with peace."

Hebrews 11:37: "They were stoned, they were sawn asunder, were tempted, were slain with the sword: they wandered about in sheepskins and goatskins; being destitute, afflicted, tormented;"

Hebrews 12:1: "Wherefore seeing we also are compassed about with so great a cloud of witnesses, let us lay aside every weight, and the sin which doth so easily beset us, and let us run with patience the race that is set before us,"

Hebrews 12:7: "If ye endure chastening, God dealeth with you as with sons; for what son is he whom the father chasteneth not?"

Hebrews 12:14: "Follow peace with all men, and holiness, without which no man shall see the Lord:"

Hebrews 12:17: "For ye know how that afterward, when he would have inherited the blessing, he was rejected: for he found no place of repentance, though he sought it carefully with tears."

Hebrews 12:18: "For ye are not come unto the mount that might be touched, and that burned with fire, nor unto blackness, and darkness, and tempest,"

Hebrews 12:20: "(For they could not endure that which was commanded, And if so much as a beast touch the mountain, it shall be stoned, or thrust through with a dart:"

Hebrews 12:28: "Wherefore we receiving a kingdom which cannot be moved, let us have grace, whereby we may serve God acceptably with reverence and godly fear:"

Hebrews 13:3: "Remember them that are in bonds, as bound with them; and them which suffer adversity, as being yourselves also in the body."

Hebrews 13:5: "Let your conversation be without covetousness; and be content with such things as ye have: for he hath said, I will never leave thee, nor forsake thee."

Hebrews 13:9: "Be not carried about with divers and strange doctrines. For it is a good thing that the heart be established with grace; not with meats, which have not profited them that have been occupied therein."

Hebrews 13:12: "Wherefore Jesus also, that he might sanctify the people with his own blood, suffered without the gate."

Hebrews 13:16: "But to do good and to communicate forget not: for with such sacrifices God is well pleased."

Hebrews 13:17: "Obey them that have the rule over you, and submit yourselves: for they watch for your souls, as they that must give account, that they may do it with joy, and not with grief: for that is unprofitable for you."

Hebrews 13:23: "Know ye that our brother Timothy is set at liberty; with whom, if he come shortly, I will see you."

Hebrews 13:25: "Grace be with you all. Amen."

James 1:6: "But let him ask in faith, nothing wavering. For he that wavereth is like a wave of the sea driven with the wind and tossed."

James 1:11: "For the sun is no sooner risen with a burning heat, but it withereth the grass, and the flower thereof falleth, and the grace of the fashion of it perisheth: so also shall the rich man fade away in his ways."

James 1:13: "Let no man say when he is tempted, I am tempted of God: for God cannot be tempted with evil, neither tempteth he any man:"

James 1:17: "Every good gift and every perfect gift is from above, and cometh down from the Father of lights, with whom is no variableness, neither shadow of turning."

James 1:18: "Of his own will begat he us with the word of truth, that we should be a kind of

firstfruits of his creatures."

James 1:21: "Wherefore lay apart all filthiness and superfluity of naughtiness, and receive with meekness the engrafted word, which is able to save your souls."

James 2:1: "My brethren, have not the faith of our Lord Jesus Christ, the Lord of glory, with respect of persons."

James 2:2: "For if there come unto your assembly a man with a gold ring, in goodly apparel, and there come in also a poor man in vile raiment;"

James 2:22: "Seest thou how faith wrought with his works, and by works was faith made perfect?"

James 3:4: "Behold also the ships, which though they be so great, and are driven of fierce winds, yet are they turned about with a very small helm, whithersoever the governor listeth."

James 3:13: "Who is a wise man and endued with knowledge among you? let him shew out of a good conversation his works with meekness of wisdom."

James 4:4: "Ye adulterers and adulteresses, know ye not that the friendship of the world is enmity with God? whosoever therefore will be a friend of the world is the enemy of God."

James 5:14: "Is any sick among you? let him call for the elders of the church; and let them pray over him, anointing him with oil in the name of the Lord:"

1 Peter 1:7: "That the trial of your faith, being much more precious than of gold that perisheth, though it be tried with fire, might be found unto praise and honour and glory at the appearing of Jesus Christ:"

1 Peter 1:8: "Whom having not seen, ye love; in whom, though now ye see him not, yet believing, ye rejoice with joy unspeakable and full of glory:"

1 Peter 1:12: "Unto whom it was revealed, that not unto themselves, but unto us they did minister the things, which are now reported unto you by them that have preached the gospel unto you with the Holy Ghost sent down from heaven; which things the angels desire to look into."

1 Peter 1:18: "Forasmuch as ye know that ye were not redeemed with corruptible things, as silver and gold, from your vain conversation received by tradition from your fathers;"

1 Peter 1:19: "But with the precious blood of Christ, as of a lamb without blemish and without spot:"

1 Peter 1:22: "Seeing ye have purified your souls in obeying the truth through the Spirit unto unfeigned love of the brethren, see that ye love one another with a pure heart fervently:"

1 Peter 2:15: "For so is the will of God, that with well doing ye may put to silence the ignorance of foolish men:"

1 Peter 2:18: "Servants, be subject to your masters with all fear; not only to the good and gentle, but also to the froward."

1 Peter 2:20: "For what glory is it, if, when ye be buffeted for your faults, ye shall take it patiently? but if, when ye do well, and suffer for it, ye take it patiently, this is acceptable with God."

1 Peter 3:2: "While they behold your chaste conversation coupled with fear."

1 Peter 3:6: "Even as Sara obeyed Abraham, calling him lord: whose daughters ye are, as long as ye do well, and are not afraid with any amazement."

1 Peter 3:7: "Likewise, ye husbands, dwell with them according to knowledge, giving honour unto the wife, as unto the weaker vessel, and as being heirs together of the grace of life; that your prayers be not hindered."

1 Peter 3:15: "But sanctify the Lord God in your hearts: and be ready always to give an answer to every man that asketh you a reason of the hope that is in you with meekness and fear:"

1 Peter 4:1: "Forasmuch then as Christ hath suffered for us in the flesh, arm yourselves likewise with the same mind: for he that hath suffered in the flesh hath ceased from sin;"

1 Peter 4:4: "Wherein they think it strange that ye run not with them to the same excess of riot, speaking evil of you:"

1 Peter 4:13: "But rejoice, inasmuch as ye are partakers of Christ's sufferings; that, when his glory shall be revealed, ye may be glad also with exceeding joy."

1 Peter 5:5: "Likewise, ye younger, submit yourselves unto the elder. Yea, all of you be subject one to another, and be clothed with humility: for God resisteth the proud, and giveth grace to the humble."

1 Peter 5:13: "The church that is at Babylon, elected together with you, saluteth you; and so doth Marcus my son."

1 Peter 5:14: "Greet ye one another with a kiss of charity. Peace be with you all that are in Christ Jesus. Amen."

2 Peter 1:1: "Simon Peter, a servant and an apostle of Jesus Christ, to them that have obtained like precious faith with us through the righteousness of God and our Saviour Jesus Christ:"

2 Peter 1:18: "And this voice which came from heaven we heard, when we were with him in the holy mount."

2 Peter 2:3: "And through covetousness shall they with feigned words make merchandise of you: whose judgment now of a long time lingereth not, and their damnation slumbereth not."

2 Peter 2:6: "And turning the cities of Sodom and Gomorrah into ashes condemned them with an overthrow, making them an ensample unto those that after should live ungodly;"

2 Peter 2:7: "And delivered just Lot, vexed with the filthy conversation of the wicked:"

2 Peter 2:8: "(For that righteous man dwelling among them, in seeing and hearing, vexed his righteous soul from day to day with their unlawful deeds;)"

2 Peter 2:13: "And shall receive the reward of unrighteousness, as they that count it pleasure to riot in the day time. Spots they are and blemishes, sporting themselves with their own deceivings while they feast with you;"

2 Peter 2:14: "Having eyes full of adultery, and that cannot cease from sin; beguiling unstable souls: an heart they have exercised with covetous practices; cursed children:"

2 Peter 2:16: "But was rebuked for his iniquity: the dumb ass speaking with man's voice forbad the madness of the prophet."

2 Peter 2:17: "These are wells without water, clouds that are carried with a tempest; to whom the mist of darkness is reserved for ever."

2 Peter 2:20: "For if after they have escaped the pollutions of the world through the knowledge of the Lord and Saviour Jesus Christ, they are again entangled therein, and overcome, the latter end is worse with them than the beginning."

2 Peter 3:6: "Whereby the world that then was, being overflowed with water, perished:"

2 Peter 3:8: "But, beloved, be not ignorant of this one thing, that one day is with the Lord as a thousand years, and a thousand years as one day."

2 Peter 3:10: "But the day of the Lord will come as a thief in the night; in the which the heavens shall pass away with a great noise, and the elements shall melt with fervent heat, the earth also and the works that are therein shall be burned up."

2 Peter 3:12: "Looking for and hasting unto the coming of the day of God, wherein the heavens being on fire shall be dissolved, and the elements shall melt with fervent heat?"

2 Peter 3:17: "Ye therefore, beloved, seeing ye know these things before, beware lest ye also, being led away with the error of the wicked, fall from your own stedfastness."

1 John 1:1: "That which was from the beginning, which we have heard, which we have seen with our eyes, which we have looked upon, and our hands have handled, of the Word of life;"

1 John 1:2: "(For the life was manifested, and we have seen it, and bear witness, and shew unto you that eternal life, which was with the Father, and was manifested unto us;)"

1 John 1:3: "That which we have seen and heard declare we unto you, that ye also may have fellowship with us: and truly our fellowship is with the Father, and with his Son Jesus Christ."

1 John 1:6: "If we say that we have fellowship with him, and walk in darkness, we lie, and do not the truth:"

1 John 1:7: "But if we walk in the light, as he is in the light, we have fellowship one with another, and the blood of Jesus Christ his Son cleanseth us from all sin."

1 John 2:1: "My little children, these things write I unto you, that ye sin not. And if any man sin, we have an advocate with the Father, Jesus Christ the righteous:"

1 John 2:19: "They went out from us, but they were not of us; for if they had been of us, they would no doubt have continued with us: but they went out, that they might be made manifest that they were not all of us."

2 John 1:2: "For the truth's sake, which dwelleth in us, and shall be with us for ever."

2 John 1:3: "Grace be with you, mercy, and peace, from God the Father, and from the Lord Jesus Christ, the Son of the Father, in truth and love."

2 John 1:12: "Having many things to write unto you, I would not write with paper and ink: but I trust to come unto you, and speak face to face, that our joy may be full."

3 John 1:10: "Wherefore, if I come, I will remember his deeds which he doeth, prating against us with malicious words: and not content therewith, neither doth he himself receive the brethren, and forbiddeth them that would, and casteth them out of the church."

3 John 1:13: "I had many things to write, but I will not with ink and pen write unto thee:"

Jude 1:9: "Yet Michael the archangel, when contending with the devil he disputed about the body of Moses, durst not bring against him a railing accusation, but said, The Lord rebuke thee."

Jude 1:12: "These are spots in your feasts of charity, when they feast with you, feeding themselves without fear: clouds they are without water, carried about of winds; trees whose fruit withereth, without fruit, twice dead, plucked up by the roots;"

Jude 1:14: "And Enoch also, the seventh from Adam, prophesied of these, saying, Behold, the Lord cometh with ten thousands of his saints,"

Jude 1:23: "And others save with fear, pulling them out of the fire; hating even the garment spotted by the flesh."

Jude 1:24: "Now unto him that is able to keep you from falling, and to present you faultless before the presence of his glory with exceeding joy,"

Revelation 1:7: "Behold, he cometh with clouds; and every eye shall see him, and they also which pierced him: and all kindreds of the earth shall wail because of him. Even so, Amen."

Revelation 1:12: "And I turned to see the voice that spake with me. And being turned, I saw seven golden candlesticks;"

Revelation 1:13: "And in the midst of the seven candlesticks one like unto the Son of man, clothed with a garment down to the foot, and girt about the paps with a golden girdle."

Revelation 2:12: "And to the angel of the church in Pergamos write; These things saith he which hath the sharp sword with two edges;"

Revelation 2:16: "Repent; or else I will come unto thee quickly, and will fight against them with the sword of my mouth."

Revelation 2:22: "Behold, I will cast her into a bed, and them that commit adultery with her into great tribulation, except they repent of their deeds."

Revelation 2:23: "And I will kill her children with death; and all the churches shall know that I am he which searcheth the reins and hearts: and I will give unto every one of you according to your works."

Revelation 2:27: "And he shall rule them with a rod of iron; as the vessels of a potter shall they be broken to shivers: even as I received of my Father."

Revelation 3:4: "Thou hast a few names even in Sardis which have not defiled their garments; and they shall walk with me in white: for they are worthy."

Revelation 3:17: "Because thou sayest, I am rich, and increased with goods, and have need of nothing; and knowest not that thou art wretched, and miserable, and poor, and blind, and naked:"

Revelation 3:18: "I counsel thee to buy of me gold tried in the fire, that thou mayest be rich; and white raiment, that thou mayest be clothed, and that the shame of thy nakedness do not appear; and anoint thine eyes with eyesalve, that thou mayest see."

Revelation 3:20: "Behold, I stand at the door, and knock: if any man hear my voice, and open the

door, I will come in to him, and will sup with him, and he with me."

Revelation 3:21: "To him that overcometh will I grant to sit with me in my throne, even as I also overcame, and am set down with my Father in his throne."

Revelation 4:1: "After this I looked, and, behold, a door was opened in heaven: and the first voice which I heard was as it were of a trumpet talking with me; which said, Come up hither, and I will shew thee things which must be hereafter."

Revelation 5:1: "And I saw in the right hand of him that sat on the throne a book written within and on the backside, sealed with seven seals."

Revelation 5:2: "And I saw a strong angel proclaiming with a loud voice, Who is worthy to open the book, and to loose the seals thereof?"

Revelation 5:12: "Saying with a loud voice, Worthy is the Lamb that was slain to receive power, and riches, and wisdom, and strength, and honour, and glory, and blessing."

Revelation 6:8: "And I looked, and behold a pale horse: and his name that sat on him was Death, and Hell followed with him. And power was given unto them over the fourth part of the earth, to kill with sword, and with hunger, and with death, and with the beasts of the earth."

Revelation 6:10: "And they cried with a loud voice, saying, How long, O Lord, holy and true, dost thou not judge and avenge our blood on them that dwell on the earth?"

Revelation 7:2: "And I saw another angel ascending from the east, having the seal of the living God: and he cried with a loud voice to the four angels, to whom it was given to hurt the earth and the sea,"

Revelation 7:9: "After this I beheld, and, lo, a great multitude, which no man could number, of all nations, and kindreds, and people, and tongues, stood before the throne, and before the Lamb, clothed with white robes, and palms in their hands;"

Revelation 7:10: "And cried with a loud voice, saying, Salvation to our God which sitteth upon the throne, and unto the Lamb."

Revelation 8:3: "And another angel came and stood at the altar, having a golden censer; and there was given unto him much incense, that he should offer it with the prayers of all saints upon the golden altar which was before the throne."

Revelation 8:4: "And the smoke of the incense, which came with the prayers of the saints, ascended up before God out of the angel's hand."

Revelation 8:5: "And the angel took the censer, and filled it with fire of the altar, and cast it into the earth: and there were voices, and thunderings, and lightnings, and an earthquake."

Revelation 8:7: "The first angel sounded, and there followed hail and fire mingled with blood, and they were cast upon the earth: and the third part of trees was burnt up, and all green grass was burnt up."

Revelation 8:8: "And the second angel sounded, and as it were a great mountain burning with fire was cast into the sea: and the third part of the sea became blood;"

Revelation 8:13: "And I beheld, and heard an angel flying through the midst of heaven, saying with a loud voice, Woe, woe, woe, to the inhabitants of the earth by reason of the other voices of the trumpet of the three angels, which are yet to sound!"

Revelation 9:19: "For their power is in their mouth, and in their tails: for their tails were like unto serpents, and had heads, and with them they do hurt."

Revelation 10:1: "And I saw another mighty angel come down from heaven, clothed with a cloud: and a rainbow was upon his head, and his face was as it were the sun, and his feet as pillars of fire:"

Revelation 10:3: "And cried with a loud voice, as when a lion roareth: and when he had cried, seven thunders uttered their voices."

Revelation 11:6: "These have power to shut heaven, that it rain not in the days of their prophecy: and have power over waters to turn them to blood, and to smite the earth with all plagues, as often as they will."

Revelation 12:1: "And there appeared a great wonder in heaven; a woman clothed with the sun, and

the moon under her feet, and upon her head a crown of twelve stars:"

Revelation 12:2: "And she being with child cried, travailing in birth, and pained to be delivered."

Revelation 12:5: "And she brought forth a man child, who was to rule all nations with a rod of iron: and her child was caught up unto God, and to his throne."

Revelation 12:9: "And the great dragon was cast out, that old serpent, called the Devil, and Satan, which deceiveth the whole world: he was cast out into the earth, and his angels were cast out with him."

Revelation 12:17: "And the dragon was wroth with the woman, and went to make war with the remnant of her seed, which keep the commandments of God, and have the testimony of Jesus Christ."

Revelation 13:4: "And they worshipped the dragon which gave power unto the beast: and they worshipped the beast, saying, Who is like unto the beast? who is able to make war with him?"

Revelation 13:7: "And it was given unto him to make war with the saints, and to overcome them: and power was given him over all kindreds, and tongues, and nations."

Revelation 13:10: "He that leadeth into captivity shall go into captivity: he that killeth with the sword must be killed with the sword. Here is the patience and the faith of the saints."

Revelation 14:1: "And I looked, and, lo, a Lamb stood on the mount Sion, and with him an hundred forty and four thousand, having his Father's name written in their foreheads."

Revelation 14:2: "And I heard a voice from heaven, as the voice of many waters, and as the voice of a great thunder: and I heard the voice of harpers harping with their harps:"

Revelation 14:4: "These are they which were not defiled with women; for they are virgins. These are they which follow the Lamb whithersoever he goeth. These were redeemed from among men, being the firstfruits unto God and to the Lamb."

Revelation 14:7: "Saying with a loud voice, Fear God, and give glory to him; for the hour of his judgment is come: and worship him that made heaven, and earth, and the sea, and the fountains of waters."

Revelation 14:9: "And the third angel followed them, saying with a loud voice, If any man worship the beast and his image, and receive his mark in his forehead, or in his hand,"

Revelation 14:10: "The same shall drink of the wine of the wrath of God, which is poured out without mixture into the cup of his indignation; and he shall be tormented with fire and brimstone in the presence of the holy angels, and in the presence of the Lamb:"

Revelation 14:15: "And another angel came out of the temple, crying with a loud voice to him that sat on the cloud, Thrust in thy sickle, and reap: for the time is come for thee to reap; for the harvest of the earth is ripe."

Revelation 14:18: "And another angel came out from the altar, which had power over fire; and cried with a loud cry to him that had the sharp sickle, saying, Thrust in thy sharp sickle, and gather the clusters of the vine of the earth; for her grapes are fully ripe."

Revelation 15:2: "And I saw as it were a sea of glass mingled with fire: and them that had gotten the victory over the beast, and over his image, and over his mark, and over the number of his name, stand on the sea of glass, having the harps of God."

Revelation 15:6: "And the seven angels came out of the temple, having the seven plagues, clothed in pure and white linen, and having their breasts girded with golden girdles."

Revelation 15:8: "And the temple was filled with smoke from the glory of God, and from his power; and no man was able to enter into the temple, till the seven plagues of the seven angels were fulfilled."

Revelation 16:8: "And the fourth angel poured out his vial upon the sun; and power was given unto him to scorch men with fire."

Revelation 16:9: "And men were scorched with great heat, and blasphemed the name of God, which hath power over these plagues: and they repented not to give him glory."

Revelation 17:1: "And there came one of the seven angels which had the seven vials, and talked



with me, saying unto me, Come hither; I will shew unto thee the judgment of the great whore that sitteth upon many waters:"

Revelation 17:2: "With whom the kings of the earth have committed fornication, and the inhabitants of the earth have been made drunk with the wine of her fornication."

Revelation 17:4: "And the woman was arrayed in purple and scarlet colour, and decked with gold and precious stones and pearls, having a golden cup in her hand full of abominations and filthiness of her fornication:"

Revelation 17:6: "And I saw the woman drunken with the blood of the saints, and with the blood of the martyrs of Jesus: and when I saw her, I wondered with great admiration."

Revelation 17:12: "And the ten horns which thou sawest are ten kings, which have received no kingdom as yet; but receive power as kings one hour with the beast."

Revelation 17:14: "These shall make war with the Lamb, and the Lamb shall overcome them: for he is Lord of lords, and King of kings: and they that are with him are called, and chosen, and faithful."

Revelation 17:16: "And the ten horns which thou sawest upon the beast, these shall hate the whore, and shall make her desolate and naked, and shall eat her flesh, and burn her with fire."

Revelation 18:1: "And after these things I saw another angel come down from heaven, having great power; and the earth was lightened with his glory."

Revelation 18:2: "And he cried mightily with a strong voice, saying, Babylon the great is fallen, is fallen, and is become the habitation of devils, and the hold of every foul spirit, and a cage of every unclean and hateful bird."

Revelation 18:3: "For all nations have drunk of the wine of the wrath of her fornication, and the kings of the earth have committed fornication with her, and the merchants of the earth are waxed rich through the abundance of her delicacies."

Revelation 18:8: "Therefore shall her plagues come in one day, death, and mourning, and famine; and she shall be utterly burned with fire: for strong is the Lord God who judgeth her."

Revelation 18:9: "And the kings of the earth, who have committed fornication and lived deliciously with her, shall bewail her, and lament for her, when they shall see the smoke of her burning,"

Revelation 18:16: "And saying, Alas, alas that great city, that was clothed in fine linen, and purple, and scarlet, and decked with gold, and precious stones, and pearls!"

Revelation 18:21: "And a mighty angel took up a stone like a great millstone, and cast it into the sea, saying, Thus with violence shall that great city Babylon be thrown down, and shall be found no more at all."

Revelation 19:2: "For true and righteous are his judgments: for he hath judged the great whore, which did corrupt the earth with her fornication, and hath avenged the blood of his servants at her hand."

Revelation 19:13: "And he was clothed with a vesture dipped in blood: and his name is called The Word of God."

Revelation 19:15: "And out of his mouth goeth a sharp sword, that with it he should smite the nations: and he shall rule them with a rod of iron: and he treadeth the winepress of the fierceness and wrath of Almighty God."

Revelation 19:17: "And I saw an angel standing in the sun; and he cried with a loud voice, saying to all the fowls that fly in the midst of heaven, Come and gather yourselves together unto the supper of the great God;"

Revelation 19:20: "And the beast was taken, and with him the false prophet that wrought miracles before him, with which he deceived them that had received the mark of the beast, and them that worshipped his image. These both were cast alive into a lake of fire burning with brimstone."

Revelation 19:21: "And the remnant were slain with the sword of him that sat upon the horse, which sword proceeded out of his mouth: and all the fowls were filled with their flesh."

Revelation 20:4: "And I saw thrones, and they sat upon them, and judgment was given unto them: and I saw the souls of them that were beheaded for the witness of Jesus, and for the word of God,

and which had not worshipped the beast, neither his image, neither had received his mark upon their foreheads, or in their hands; and they lived and reigned with Christ a thousand years."

Revelation 20:6: "Blessed and holy is he that hath part in the first resurrection: on such the second death hath no power, but they shall be priests of God and of Christ, and shall reign with him a thousand years."

Revelation 21:3: "And I heard a great voice out of heaven saying, Behold, the tabernacle of God is with men, and he will dwell with them, and they shall be his people, and God himself shall be with them, and be their God."

Revelation 21:8: "But the fearful, and unbelieving, and the abominable, and murderers, and whoremongers, and sorcerers, and idolaters, and all liars, shall have their part in the lake which burneth with fire and brimstone: which is the second death."

Revelation 21:9: "And there came unto me one of the seven angels which had the seven vials full of the seven last plagues, and talked with me, saying, Come hither, I will shew thee the bride, the Lamb's wife."

Revelation 21:15: "And he that talked with me had a golden reed to measure the city, and the gates thereof, and the wall thereof."

Revelation 21:16: "And the city lieth foursquare, and the length is as large as the breadth: and he measured the city with the reed, twelve thousand furlongs. The length and the breadth and the height of it are equal."

Revelation 21:19: "And the foundations of the wall of the city were garnished with all manner of precious stones. The first foundation was jasper; the second, sapphire; the third, a chalcedony; the fourth, an emerald;"

Revelation 22:12: "And, behold, I come quickly; and my reward is with me, to give every man according as his work shall be."

Revelation 22:21: "The grace of our Lord Jesus Christ be with you all. Amen."

## **WITHAL**

Occurrences: 33

Exodus 25:29: "And thou shalt make the dishes thereof, and spoons thereof, and covers thereof, and bowls thereof, to cover withal: of pure gold shalt thou make them."

Exodus 30:4: "And two golden rings shalt thou make to it under the crown of it, by the two corners thereof, upon the two sides of it shalt thou make it; and they shall be for places for the staves to bear it withal."

Exodus 30:18: "Thou shalt also make a laver of brass, and his foot also of brass, to wash withal: and thou shalt put it between the tabernacle of the congregation and the altar, and thou shalt put water therein."

Exodus 36:3: "And they received of Moses all the offering, which the children of Israel had brought for the work of the service of the sanctuary, to make it withal. And they brought yet unto him free offerings every morning."

Exodus 37:16: "And he made the vessels which were upon the table, his dishes, and his spoons, and his bowls, and his covers to cover withal, of pure gold."

Exodus 37:27: "And he made two rings of gold for it under the crown thereof, by the two corners of it, upon the two sides thereof, to be places for the staves to bear it withal."

Exodus 38:7: "And he put the staves into the rings on the sides of the altar, to bear it withal; he made the altar hollow with boards."

Exodus 40:30: "And he set the laver between the tent of the congregation and the altar, and put water there, to wash withal."

Leviticus 5:3: "Or if he touch the uncleanness of man, whatsoever uncleanness it be that a man shall be defiled withal, and it be hid from him; when he knoweth of it, then he shall be guilty."

Leviticus 6:30: "And no sin offering, whereof any of the blood is brought into the tabernacle of the

congregation to reconcile withal in the holy place, shall be eaten: it shall be burnt in the fire."

Leviticus 11:21: "Yet these may ye eat of every flying creeping thing that goeth upon all four, which have legs above their feet, to leap withal upon the earth;"

Leviticus 19:24: "But in the fourth year all the fruit thereof shall be holy to praise the LORD withal."

Numbers 4:7: "And upon the table of shewbread they shall spread a cloth of blue, and put thereon the dishes, and the spoons, and the bowls, and covers to cover withal: and the continual bread shall be thereon:"

Judges 7:20: "And the three companies blew the trumpets, and brake the pitchers, and held the lamps in their left hands, and the trumpets in their right hands to blow withal: and they cried, The sword of the LORD, and of Gideon."

1 Samuel 16:12: "And he sent, and brought him in. Now he was ruddy, and withal of a beautiful countenance, and goodly to look to. And the LORD said, Arise, anoint him: for this is he."

1 Kings 19:1: "And Ahab told Jezebel all that Elijah had done, and withal how he had slain all the prophets with the sword."

2 Kings 23:26: "Notwithstanding the LORD turned not from the fierceness of his great wrath, wherewith his anger was kindled against Judah, because of all the provocations that Manasseh had provoked him withal."

1 Chronicles 29:4: "Even three thousand talents of gold, of the gold of Ophir, and seven thousand talents of refined silver, to overlay the walls of the houses withal:"

2 Chronicles 24:14: "And when they had finished it, they brought the rest of the money before the king and Jehoiada, whereof were made vessels for the house of the LORD, even vessels to minister, and to offer withal, and spoons, and vessels of gold and silver. And they offered burnt offerings in the house of the LORD continually all the days of Jehoiada."

2 Chronicles 26:15: "And he made in Jerusalem engines, invented by cunning men, to be on the towers and upon the bulwarks, to shoot arrows and great stones withal. And his name spread far abroad; for he was marvellously helped, till he was strong."

Esther 6:9: "And let this apparel and horse be delivered to the hand of one of the king's most noble princes, that they may array the man withal whom the king delighteth to honour, and bring him on horseback through the street of the city, and proclaim before him, Thus shall it be done to the man whom the king delighteth to honour."

Job 2:8: "And he took him a potsherd to scrape himself withal; and he sat down among the ashes."

Psalms 141:10: "Let the wicked fall into their own nets, whilst that I withal escape."

Proverbs 22:18: "For it is a pleasant thing if thou keep them within thee; they shall withal be fitted in thy lips."

Isaiah 30:14: "And he shall break it as the breaking of the potters' vessel that is broken in pieces; he shall not spare: so that there shall not be found in the bursting of it a sherd to take fire from the hearth, or to take water withal out of the pit."

Isaiah 30:23: "Then shall he give the rain of thy seed, that thou shalt sow the ground withal; and bread of the increase of the earth, and it shall be fat and plenteous: in that day shall thy cattle feed in large pastures."

Mark 10:39: "And they said unto him, We can. And Jesus said unto them, Ye shall indeed drink of the cup that I drink of; and with the baptism that I am baptized withal shall ye be baptized:"

Luke 6:38: "Give, and it shall be given unto you; good measure, pressed down, and shaken together, and running over, shall men give into your bosom. For with the same measure that ye mete withal it shall be measured to you again."

Acts 25:27: "For it seemeth to me unreasonable to send a prisoner, and not withal to signify the crimes laid against him."

1 Corinthians 12:7: "But the manifestation of the Spirit is given to every man to profit withal."

Colossians 4:3: "Withal praying also for us, that God would open unto us a door of utterance, to

1 Timothy 5:13: "And withal they learn to be idle, wandering about from house to house; and not only idle, but tattlers also and busybodies, speaking things which they ought not."

Philemon 1:22: "But withal prepare me also a lodging: for I trust that through your prayers I shall be given unto you."

## **WITHDRAW**

Occurrences: 11

1 Samuel 14:19: "And it came to pass, while Saul talked unto the priest, that the noise that was in the host of the Philistines went on and increased: and Saul said unto the priest, Withdraw thine hand."

Job 9:13: "If God will not withdraw his anger, the proud helpers do stoop under him."

Job 13:21: "Withdraw thine hand far from me: and let not thy dread make me afraid."

Job 33:17: "That he may withdraw man from his purpose, and hide pride from man."

Proverbs 25:17: "Withdraw thy foot from thy neighbour's house; lest he be weary of thee, and so hate thee."

Ecclesiastes 7:18: "It is good that thou shouldest take hold of this; yea, also from this withdraw not thine hand: for he that feareth God shall come forth of them all."

Isaiah 60:20: "Thy sun shall no more go down; neither shall thy moon withdraw itself: for the LORD shall be thine everlasting light, and the days of thy mourning shall be ended."

Joel 2:10: "The earth shall quake before them; the heavens shall tremble: the sun and the moon shall be dark, and the stars shall withdraw their shining:"

Joel 3:15: "The sun and the moon shall be darkened, and the stars shall withdraw their shining."

2 Thessalonians 3:6: "Now we command you, brethren, in the name of our Lord Jesus Christ, that ye withdraw yourselves from every brother that walketh disorderly, and not after the tradition which he received of us."

1 Timothy 6:5: "Perverse disputings of men of corrupt minds, and destitute of the truth, supposing that gain is godliness: from such withdraw thyself."

## **WITHDRAWEST**

Occurrences: 1

Psalms 74:11: "Why withdrawest thou thy hand, even thy right hand? pluck it out of thy bosom."

## **WITHDRAWETH**

Occurrences: 1

Job 36:7: "He withdraweth not his eyes from the righteous: but with kings are they on the throne; yea, he doth establish them for ever, and they are exalted."

## **WITHDRAWN**

Occurrences: 6

Deuteronomy 13:13: "Certain men, the children of Belial, are gone out from among you, and have withdrawn the inhabitants of their city, saying, Let us go and serve other gods, which ye have not known;"

Song of Solomon 5:6: "I opened to my beloved; but my beloved had withdrawn himself, and was gone: my soul failed when he spake: I sought him, but I could not find him; I called him, but he gave me no answer."

Lamentations 2:8: "The LORD hath purposed to destroy the wall of the daughter of Zion: he hath stretched out a line, he hath not withdrawn his hand from destroying: therefore he made the rampart

and the wall to lament; they languished together."

Ezekiel 18:8: "He that hath not given forth upon usury, neither hath taken any increase, that hath withdrawn his hand from iniquity, hath executed true judgment between man and man,"

Hosea 5:6: "They shall go with their flocks and with their herds to seek the LORD; but they shall not find him; he hath withdrawn himself from them."

Luke 22:41: "And he was withdrawn from them about a stone's cast, and kneeled down, and prayed,"

## **WITHDREW**

Occurrences: 6

Nehemiah 9:29: "And testifiedst against them, that thou mightest bring them again unto thy law: yet they dealt proudly, and hearkened not unto thy commandments, but sinned against thy judgments, (which if a man do, he shall live in them;) and withdrew the shoulder, and hardened their neck, and would not hear."

Ezekiel 20:22: "Nevertheless I withdrew mine hand, and wrought for my name's sake, that it should not be polluted in the sight of the heathen, in whose sight I brought them forth."

Matthew 12:15: "But when Jesus knew it, he withdrew himself from thence: and great multitudes followed him, and he healed them all;"

Mark 3:7: "But Jesus withdrew himself with his disciples to the sea: and a great multitude from Galilee followed him, and from Judaea,"

Luke 5:16: "And he withdrew himself into the wilderness, and prayed."

Galatians 2:12: "For before that certain came from James, he did eat with the Gentiles: but when they were come, he withdrew and separated himself, fearing them which were of the circumcision."

## **WITHER**

Occurrences: 9

Psalms 1:3: "And he shall be like a tree planted by the rivers of water, that bringeth forth his fruit in his season; his leaf also shall not wither; and whatsoever he doeth shall prosper."

Psalms 37:2: "For they shall soon be cut down like the grass, and wither as the green herb."

Isaiah 19:6: "And they shall turn the rivers far away; and the brooks of defence shall be emptied and dried up: the reeds and flags shall wither."

Isaiah 19:7: "The paper reeds by the brooks, by the mouth of the brooks, and every thing sown by the brooks, shall wither, be driven away, and be no more."

Isaiah 40:24: "Yea, they shall not be planted; yea, they shall not be sown: yea, their stock shall not take root in the earth: and he shall also blow upon them, and they shall wither, and the whirlwind shall take them away as stubble."

Jeremiah 12:4: "How long shall the land mourn, and the herbs of every field wither, for the wickedness of them that dwell therein? the beasts are consumed, and the birds; because they said, He shall not see our last end."

Ezekiel 17:9: "Say thou, Thus saith the Lord GOD; Shall it prosper? shall he not pull up the roots thereof, and cut off the fruit thereof, that it wither? it shall wither in all the leaves of her spring, even without great power or many people to pluck it up by the roots thereof."

Ezekiel 17:10: "Yea, behold, being planted, shall it prosper? shall it not utterly wither, when the east wind toucheth it? it shall wither in the furrows where it grew."

Amos 1:2: "And he said, The LORD will roar from Zion, and utter his voice from Jerusalem; and the habitations of the shepherds shall mourn, and the top of Carmel shall wither."

## WITHERED

Occurrences: 24

Genesis 41:23: "And, behold, seven ears, withered, thin, and blasted with the east wind, sprung up after them:"

Psalms 102:4: "My heart is smitten, and withered like grass; so that I forget to eat my bread."

Psalms 102:11: "My days are like a shadow that declineth; and I am withered like grass."

Isaiah 15:6: "For the waters of Nimrim shall be desolate: for the hay is withered away, the grass faileth, there is no green thing."

Isaiah 27:11: "When the boughs thereof are withered, they shall be broken off: the women come, and set them on fire: for it is a people of no understanding: therefore he that made them will not have mercy on them, and he that formed them will shew them no favour."

Lamentations 4:8: "Their visage is blacker than a coal; they are not known in the streets: their skin cleaveth to their bones; it is withered, it is become like a stick."

Ezekiel 19:12: "But she was plucked up in fury, she was cast down to the ground, and the east wind dried up her fruit: her strong rods were broken and withered; the fire consumed them."

Joel 1:12: "The vine is dried up, and the fig tree languisheth; the pomegranate tree, the palm tree also, and the apple tree, even all the trees of the field, are withered: because joy is withered away from the sons of men."

Joel 1:17: "The seed is rotten under their clods, the garners are laid desolate, the barns are broken down; for the corn is withered."

Amos 4:7: "And also I have withholden the rain from you, when there were yet three months to the harvest: and I caused it to rain upon one city, and caused it not to rain upon another city: one piece was rained upon, and the piece whereupon it rained not withered."

Jonah 4:7: "But God prepared a worm when the morning rose the next day, and it smote the gourd that it withered."

Matthew 12:10: "And, behold, there was a man which had his hand withered. And they asked him, saying, Is it lawful to heal on the sabbath days? that they might accuse him."

Matthew 13:6: "And when the sun was up, they were scorched; and because they had no root, they withered away."

Matthew 21:19: "And when he saw a fig tree in the way, he came to it, and found nothing thereon, but leaves only, and said unto it, Let no fruit grow on thee henceforward for ever. And presently the fig tree withered away."

Matthew 21:20: "And when the disciples saw it, they marvelled, saying, How soon is the fig tree withered away!"

Mark 3:1: "And he entered again into the synagogue; and there was a man there which had a withered hand."

Mark 3:3: "And he saith unto the man which had the withered hand, Stand forth."

Mark 4:6: "But when the sun was up, it was scorched; and because it had no root, it withered away."

Mark 11:21: "And Peter calling to remembrance saith unto him, Master, behold, the fig tree which thou cursedst is withered away."

Luke 6:6: "And it came to pass also on another sabbath, that he entered into the synagogue and taught: and there was a man whose right hand was withered."

Luke 6:8: "But he knew their thoughts, and said to the man which had the withered hand, Rise up, and stand forth in the midst. And he arose and stood forth."

Luke 8:6: "And some fell upon a rock; and as soon as it was sprung up, it withered away, because it lacked moisture."

John 5:3: "In these lay a great multitude of impotent folk, of blind, halt, withered, waiting for the moving of the water."

John 15:6: "If a man abide not in me, he is cast forth as a branch, and is withered; and men gather

them, and cast them into the fire, and they are burned."

## **WITHERETH**

Occurrences: 8

Job 8:12: "Whilst it is yet in his greenness, and not cut down, it withereth before any other herb."

Psalms 90:6: "In the morning it flourisheth, and groweth up; in the evening it is cut down, and withereth."

Psalms 129:6: "Let them be as the grass upon the housetops, which withereth afore it groweth up:"

Isaiah 40:7: "The grass withereth, the flower fadeth: because the spirit of the LORD bloweth upon it: surely the people is grass."

Isaiah 40:8: "The grass withereth, the flower fadeth: but the word of our God shall stand for ever."

James 1:11: "For the sun is no sooner risen with a burning heat, but it withereth the grass, and the flower thereof falleth, and the grace of the fashion of it perisheth: so also shall the rich man fade away in his ways."

1 Peter 1:24: "For all flesh is as grass, and all the glory of man as the flower of grass. The grass withereth, and the flower thereof falleth away:"

Jude 1:12: "These are spots in your feasts of charity, when they feast with you, feeding themselves without fear: clouds they are without water, carried about of winds; trees whose fruit withereth, without fruit, twice dead, plucked up by the roots;"

## **WITHERSOEVER**

Occurrences: 1

Joshua 1:7: "Only be thou strong and very courageous, that thou mayest observe to do according to all the law, which Moses my servant commanded thee: turn not from it to the right hand or to the left, that thou mayest prosper withersoever thou goest."

## **WITHHELD**

Occurrences: 6

Genesis 20:6: "And God said unto him in a dream, Yea, I know that thou didst this in the integrity of thy heart; for I also withheld thee from sinning against me: therefore suffered I thee not to touch her."

Genesis 22:12: "And he said, Lay not thine hand upon the lad, neither do thou any thing unto him: for now I know that thou fearest God, seeing thou hast not withheld thy son, thine only son from me."

Genesis 22:16: "And said, By myself have I sworn, saith the LORD, for because thou hast done this thing, and hast not withheld thy son, thine only son:"

Genesis 30:2: "And Jacob's anger was kindled against Rachel: and he said, Am I in God's stead, who hath withheld from thee the fruit of the womb?"

Job 31:16: "If I have withheld the poor from their desire, or have caused the eyes of the widow to fail;"

Ecclesiastes 2:10: "And whatsoever mine eyes desired I kept not from them, I withheld not my heart from any joy; for my heart rejoiced in all my labour: and this was my portion of all my labour."

## **WITHHELDEST**

Occurrences: 1

Nehemiah 9:20: "Thou gavest also thy good spirit to instruct them, and withheldest not thy manna from their mouth, and gavest them water for their thirst."

## **WITHHOLD**

Occurrences: 9

Genesis 23:6: "Hear us, my lord: thou art a mighty prince among us: in the choice of our sepulchres bury thy dead; none of us shall withhold from thee his sepulchre, but that thou mayest bury thy dead."

2 Samuel 13:13: "And I, whither shall I cause my shame to go? and as for thee, thou shalt be as one of the fools in Israel. Now therefore, I pray thee, speak unto the king; for he will not withhold me from thee."

Job 4:2: "If we assay to commune with thee, wilt thou be grieved? but who can withhold himself from speaking?"

Psalms 40:11: "Withhold not thou thy tender mercies from me, O LORD: let thy lovingkindness and thy truth continually preserve me."

Psalms 84:11: "For the LORD God is a sun and shield: the LORD will give grace and glory: no good thing will he withhold from them that walk uprightly."

Proverbs 3:27: "Withhold not good from them to whom it is due, when it is in the power of thine hand to do it."

Proverbs 23:13: "Withhold not correction from the child: for if thou beatest him with the rod, he shall not die."

Ecclesiastes 11:6: "In the morning sow thy seed, and in the evening withhold not thine hand: for thou knowest not whether shall prosper, either this or that, or whether they both shall be alike good."

Jeremiah 2:25: "Withhold thy foot from being unshod, and thy throat from thirst: but thou saidst, There is no hope: no; for I have loved strangers, and after them will I go."

## **WITHHOLDEN**

Occurrences: 10

1 Samuel 25:26: "Now therefore, my lord, as the LORD liveth, and as thy soul liveth, seeing the LORD hath withholden thee from coming to shed blood, and from avenging thyself with thine own hand, now let thine enemies, and they that seek evil to my lord, be as Nabal."

Job 22:7: "Thou hast not given water to the weary to drink, and thou hast withholden bread from the hungry."

Job 38:15: "And from the wicked their light is withholden, and the high arm shall be broken."

Job 42:2: "I know that thou canst do every thing, and that no thought can be withholden from thee."

Psalms 21:2: "Thou hast given him his heart's desire, and hast not withholden the request of his lips. Selah."

Jeremiah 3:3: "Therefore the showers have been withholden, and there hath been no latter rain; and thou hadst a whore's forehead, thou refusedst to be ashamed."

Jeremiah 5:25: "Your iniquities have turned away these things, and your sins have withholden good things from you."

Ezekiel 18:16: "Neither hath oppressed any, hath not withholden the pledge, neither hath spoiled by violence, but hath given his bread to the hungry, and hath covered the naked with a garment,"

Joel 1:13: "Gird yourselves, and lament, ye priests: howl, ye ministers of the altar: come, lie all night in sackcloth, ye ministers of my God: for the meat offering and the drink offering is withholden from the house of your God."

Amos 4:7: "And also I have withholden the rain from you, when there were yet three months to the harvest: and I caused it to rain upon one city, and caused it not to rain upon another city: one piece was rained upon, and the piece whereupon it rained not withered."



## WITHHOLDETH

Occurrences: 4

Job 12:15: "Behold, he withholdeth the waters, and they dry up: also he sendeth them out, and they overturn the earth."

Proverbs 11:24: "There is that scattereth, and yet increaseth; and there is that withholdeth more than is meet, but it tendeth to poverty."

Proverbs 11:26: "He that withholdeth corn, the people shall curse him: but blessing shall be upon the head of him that selleth it."

2 Thessalonians 2:6: "And now ye know what withholdeth that he might be revealed in his time."

## WITHIN

Occurrences: 183

Genesis 6:14: "Make thee an ark of gopher wood; rooms shalt thou make in the ark, and shalt pitch it within and without with pitch."

Genesis 9:21: "And he drank of the wine, and was drunken; and he was uncovered within his tent."

Genesis 18:12: "Therefore Sarah laughed within herself, saying, After I am waxed old shall I have pleasure, my lord being old also?"

Genesis 18:24: "Peradventure there be fifty righteous within the city: wilt thou also destroy and not spare the place for the fifty righteous that are therein?"

Genesis 18:26: "And the LORD said, If I find in Sodom fifty righteous within the city, then I will spare all the place for their sakes."

Genesis 25:22: "And the children struggled together within her; and she said, If it be so, why am I thus? And she went to enquire of the LORD."

Genesis 39:11: "And it came to pass about this time, that Joseph went into the house to do his business; and there was none of the men of the house there within."

Genesis 40:13: "Yet within three days shall Pharaoh lift up thine head, and restore thee unto thy place: and thou shalt deliver Pharaoh's cup into his hand, after the former manner when thou wast his butler."

Genesis 40:19: "Yet within three days shall Pharaoh lift up thy head from off thee, and shall hang thee on a tree; and the birds shall eat thy flesh from off thee."

Exodus 20:10: "But the seventh day is the sabbath of the LORD thy God: in it thou shalt not do any work, thou, nor thy son, nor thy daughter, thy manservant, nor thy maidservant, nor thy cattle, nor thy stranger that is within thy gates:"

Exodus 25:11: "And thou shalt overlay it with pure gold, within and without shalt thou overlay it, and shalt make upon it a crown of gold round about."

Exodus 26:33: "And thou shalt hang up the vail under the taches, that thou mayest bring in thither within the vail the ark of the testimony: and the vail shall divide unto you between the holy place and the most holy."

Exodus 37:2: "And he overlaid it with pure gold within and without, and made a crown of gold to it round about."

Leviticus 10:18: "Behold, the blood of it was not brought in within the holy place: ye should indeed have eaten it in the holy place, as I commanded."

Leviticus 13:55: "And the priest shall look on the plague, after that it is washed: and, behold, if the plague have not changed his colour, and the plague be not spread; it is unclean; thou shalt burn it in the fire; it is fret inward, whether it be bare within or without."

Leviticus 14:41: "And he shall cause the house to be scraped within round about, and they shall pour out the dust that they scrape off without the city into an unclean place:"

Leviticus 16:2: "And the LORD said unto Moses, Speak unto Aaron thy brother, that he come not at all times into the holy place within the vail before the mercy seat, which is upon the ark; that he die

not: for I will appear in the cloud upon the mercy seat."

Leviticus 16:12: "And he shall take a censer full of burning coals of fire from off the altar before the LORD, and his hands full of sweet incense beaten small, and bring it within the veil:"

Leviticus 16:15: "Then shall he kill the goat of the sin offering, that is for the people, and bring his blood within the veil, and do with that blood as he did with the blood of the bullock, and sprinkle it upon the mercy seat, and before the mercy seat:"

Leviticus 25:29: "And if a man sell a dwelling house in a walled city, then he may redeem it within a whole year after it is sold; within a full year may he redeem it."

Leviticus 25:30: "And if it be not redeemed within the space of a full year, then the house that is in the walled city shall be established for ever to him that bought it throughout his generations: it shall not go out in the jubile."

Leviticus 26:25: "And I will bring a sword upon you, that shall avenge the quarrel of my covenant: and when ye are gathered together within your cities, I will send the pestilence among you; and ye shall be delivered into the hand of the enemy."

Numbers 4:10: "And they shall put it and all the vessels thereof within a covering of badgers' skins, and shall put it upon a bar."

Numbers 18:7: "Therefore thou and thy sons with thee shall keep your priest's office for everything of the altar, and within the veil; and ye shall serve: I have given your priest's office unto you as a service of gift: and the stranger that cometh nigh shall be put to death."

Deuteronomy 5:14: "But the seventh day is the sabbath of the LORD thy God: in it thou shalt not do any work, thou, nor thy son, nor thy daughter, nor thy manservant, nor thy maidservant, nor thine ox, nor thine ass, nor any of thy cattle, nor thy stranger that is within thy gates; that thy manservant and thy maidservant may rest as well as thou."

Deuteronomy 12:12: "And ye shall rejoice before the LORD your God, ye, and your sons, and your daughters, and your menservants, and your maidservants, and the Levite that is within your gates; forasmuch as he hath no part nor inheritance with you."

Deuteronomy 12:17: "Thou mayest not eat within thy gates the tithe of thy corn, or of thy wine, or of thy oil, or the firstlings of thy herds or of thy flock, nor any of thy vows which thou vowest, nor thy freewill offerings, or heave offering of thine hand:"

Deuteronomy 12:18: "But thou must eat them before the LORD thy God in the place which the LORD thy God shall choose, thou, and thy son, and thy daughter, and thy manservant, and thy maidservant, and the Levite that is within thy gates: and thou shalt rejoice before the LORD thy God in all that thou puttest thine hands unto."

Deuteronomy 14:27: "And the Levite that is within thy gates; thou shalt not forsake him; for he hath no part nor inheritance with thee."

Deuteronomy 14:28: "At the end of three years thou shalt bring forth all the tithe of thine increase the same year, and shalt lay it up within thy gates:"

Deuteronomy 14:29: "And the Levite, (because he hath no part nor inheritance with thee,) and the stranger, and the fatherless, and the widow, which are within thy gates, shall come, and shall eat and be satisfied; that the LORD thy God may bless thee in all the work of thine hand which thou doest."

Deuteronomy 15:7: "If there be among you a poor man of one of thy brethren within any of thy gates in thy land which the LORD thy God giveth thee, thou shalt not harden thine heart, nor shut thine hand from thy poor brother:"

Deuteronomy 15:22: "Thou shalt eat it within thy gates: the unclean and the clean person shall eat it alike, as the roebuck, and as the hart."

Deuteronomy 16:5: "Thou mayest not sacrifice the passover within any of thy gates, which the LORD thy God giveth thee:"

Deuteronomy 16:11: "And thou shalt rejoice before the LORD thy God, thou, and thy son, and thy daughter, and thy manservant, and thy maidservant, and the Levite that is within thy gates, and the stranger, and the fatherless, and the widow, that are among you, in the place which the LORD thy

God hath chosen to place his name there."

Deuteronomy 16:14: "And thou shalt rejoice in thy feast, thou, and thy son, and thy daughter, and thy manservant, and thy maidservant, and the Levite, the stranger, and the fatherless, and the widow, that are within thy gates."

Deuteronomy 17:2: "If there be found among you, within any of thy gates which the LORD thy God giveth thee, man or woman, that hath wrought wickedness in the sight of the LORD thy God, in transgressing his covenant,"

Deuteronomy 17:8: "If there arise a matter too hard for thee in judgment, between blood and blood, between plea and plea, and between stroke and stroke, being matters of controversy within thy gates: then shalt thou arise, and get thee up into the place which the LORD thy God shall choose;"

Deuteronomy 23:10: "If there be among you any man, that is not clean by reason of uncleanness that chanceth him by night, then shall he go abroad out of the camp, he shall not come within the camp:"

Deuteronomy 24:14: "Thou shalt not oppress an hired servant that is poor and needy, whether he be of thy brethren, or of thy strangers that are in thy land within thy gates:"

Deuteronomy 26:12: "When thou hast made an end of tithing all the tithes of thine increase the third year, which is the year of tithing, and hast given it unto the Levite, the stranger, the fatherless, and the widow, that they may eat within thy gates, and be filled;"

Deuteronomy 28:43: "The stranger that is within thee shall get up above thee very high; and thou shalt come down very low."

Deuteronomy 31:12: "Gather the people together, men and women, and children, and thy stranger that is within thy gates, that they may hear, and that they may learn, and fear the LORD your God, and observe to do all the words of this law:"

Deuteronomy 32:25: "The sword without, and terror within, shall destroy both the young man and the virgin, the suckling also with the man of gray hairs."

Joshua 1:11: "Pass through the host, and command the people, saying, Prepare you victuals; for within three days ye shall pass over this Jordan, to go in to possess the land, which the LORD your God giveth you to possess it."

Joshua 19:1: "And the second lot came forth to Simeon, even for the tribe of the children of Simeon according to their families: and their inheritance was within the inheritance of the children of Judah."

Joshua 19:9: "Out of the portion of the children of Judah was the inheritance of the children of Simeon: for the part of the children of Judah was too much for them: therefore the children of Simeon had their inheritance within the inheritance of them."

Joshua 21:41: "All the cities of the Levites within the possession of the children of Israel were forty and eight cities with their suburbs."

Judges 7:16: "And he divided the three hundred men into three companies, and he put a trumpet in every man's hand, with empty pitchers, and lamps within the pitchers."

Judges 9:51: "But there was a strong tower within the city, and thither fled all the men and women, and all they of the city, and shut it to them, and gat them up to the top of the tower."

Judges 11:18: "Then they went along through the wilderness, and compassed the land of Edom, and the land of Moab, and came by the east side of the land of Moab, and pitched on the other side of Arnon, but came not within the border of Moab: for Arnon was the border of Moab."

Judges 11:26: "While Israel dwelt in Heshbon and her towns, and in Aroer and her towns, and in all the cities that be along by the coasts of Arnon, three hundred years? why therefore did ye not recover them within that time?"

Judges 14:12: "And Samson said unto them, I will now put forth a riddle unto you: if ye can certainly declare it me within the seven days of the feast, and find it out, then I will give you thirty sheets and thirty change of garments:"

Judges 15:1: "But it came to pass within a while after, in the time of wheat harvest, that Samson

visited his wife with a kid; and he said, I will go in to my wife into the chamber. But her father would not suffer him to go in."

1 Samuel 13:11: "And Samuel said, What hast thou done? And Saul said, Because I saw that the people were scattered from me, and that thou camest not within the days appointed, and that the Philistines gathered themselves together at Michmash;"

1 Samuel 14:14: "And that first slaughter, which Jonathan and his armourbearer made, was about twenty men, within as it were an half acre of land, which a yoke of oxen might plow."

1 Samuel 25:36: "And Abigail came to Nabal; and, behold, he held a feast in his house, like the feast of a king; and Nabal's heart was merry within him, for he was very drunken: wherefore she told him nothing, less or more, until the morning light."

1 Samuel 25:37: "But it came to pass in the morning, when the wine was gone out of Nabal, and his wife had told him these things, that his heart died within him, and he became as a stone."

1 Samuel 26:7: "So David and Abishai came to the people by night: and, behold, Saul lay sleeping within the trench, and his spear stuck in the ground at his bolster: but Abner and the people lay round about him."

2 Samuel 7:2: "That the king said unto Nathan the prophet, See now, I dwell in an house of cedar, but the ark of God dwelleth within curtains."

2 Samuel 20:4: "Then said the king to Amasa, Assemble me the men of Judah within three days, and be thou here present."

1 Kings 6:15: "And he built the walls of the house within with boards of cedar, both the floor of the house, and the walls of the ceiling: and he covered them on the inside with wood, and covered the floor of the house with planks of fir."

1 Kings 6:16: "And he built twenty cubits on the sides of the house, both the floor and the walls with boards of cedar: he even built them for it within, even for the oracle, even for the most holy place."

1 Kings 6:18: "And the cedar of the house within was carved with knops and open flowers: all was cedar; there was no stone seen."

1 Kings 6:19: "And the oracle he prepared in the house within, to set there the ark of the covenant of the LORD."

1 Kings 6:21: "So Solomon overlaid the house within with pure gold: and he made a partition by the chains of gold before the oracle; and he overlaid it with gold."

1 Kings 6:23: "And within the oracle he made two cherubims of olive tree, each ten cubits high."

1 Kings 6:27: "And he set the cherubims within the inner house: and they stretched forth the wings of the cherubims, so that the wing of the one touched the one wall, and the wing of the other cherub touched the other wall; and their wings touched one another in the midst of the house."

1 Kings 6:29: "And he carved all the walls of the house round about with carved figures of cherubims and palm trees and open flowers, within and without."

1 Kings 6:30: "And the floors of the house he overlaid with gold, within and without."

1 Kings 7:8: "And his house where he dwelt had another court within the porch, which was of the like work. Solomon made also an house for Pharaoh's daughter, whom he had taken to wife, like unto this porch."

1 Kings 7:9: "All these were of costly stones, according to the measures of hewed stones, sawed with saws, within and without, even from the foundation unto the coping, and so on the outside toward the great court."

1 Kings 7:31: "And the mouth of it within the chapiter and above was a cubit: but the mouth thereof was round after the work of the base, a cubit and an half: and also upon the mouth of it were gravings with their borders, foursquare, not round."

2 Kings 4:27: "And when she came to the man of God to the hill, she caught him by the feet: but Gehazi came near to thrust her away. And the man of God said, Let her alone; for her soul is vexed within her: and the LORD hath hid it from me, and hath not told me."

2 Kings 6:30: "And it came to pass, when the king heard the words of the woman, that he rent his clothes; and he passed by upon the wall, and the people looked, and, behold, he had sackcloth within upon his flesh."

2 Kings 7:11: "And he called the porters; and they told it to the king's house within."

2 Kings 11:8: "And ye shall compass the king round about, every man with his weapons in his hand: and he that cometh within the ranges, let him be slain: and be ye with the king as he goeth out and as he cometh in."

2 Chronicles 3:4: "And the porch that was in the front of the house, the length of it was according to the breadth of the house, twenty cubits, and the height was an hundred and twenty: and he overlaid it within with pure gold."

Ezra 4:15: "That search may be made in the book of the records of thy fathers: so shalt thou find in the book of the records, and know that this city is a rebellious city, and hurtful unto kings and provinces, and that they have moved sedition within the same of old time: for which cause was this city destroyed."

Ezra 10:8: "And that whosoever would not come within three days, according to the counsel of the princes and the elders, all his substance should be forfeited, and himself separated from the congregation of those that had been carried away."

Ezra 10:9: "Then all the men of Judah and Benjamin gathered themselves together unto Jerusalem within three days. It was the ninth month, on the twentieth day of the month; and all the people sat in the street of the house of God, trembling because of this matter, and for the great rain."

Nehemiah 4:22: "Likewise at the same time said I unto the people, Let every one with his servant lodge within Jerusalem, that in the night they may be a guard to us, and labour on the day."

Nehemiah 6:10: "Afterward I came unto the house of Shemaiah the son of Delaiah the son of Mehetabeel, who was shut up; and he said, Let us meet together in the house of God, within the temple, and let us shut the doors of the temple: for they will come to slay thee; yea, in the night will they come to slay thee."

Job 6:4: "For the arrows of the Almighty are within me, the poison whereof drinketh up my spirit: the terrors of God do set themselves in array against me."

Job 14:22: "But his flesh upon him shall have pain, and his soul within him shall mourn."

Job 19:27: "Whom I shall see for myself, and mine eyes shall behold, and not another; though my reins be consumed within me."

Job 20:13: "Though he spare it, and forsake it not; but keep it still within his mouth:"

Job 20:14: "Yet his meat in his bowels is turned, it is the gall of asps within him."

Job 24:11: "Which make oil within their walls, and tread their winepresses, and suffer thirst."

Job 32:18: "For I am full of matter, the spirit within me constraineth me."

Psalms 36:1: "The transgression of the wicked saith within my heart, that there is no fear of God before his eyes."

Psalms 39:3: "My heart was hot within me, while I was musing the fire burned: then spake I with my tongue,"

Psalms 40:8: "I delight to do thy will, O my God: yea, thy law is within my heart."

Psalms 40:10: "I have not hid thy righteousness within my heart; I have declared thy faithfulness and thy salvation: I have not concealed thy lovingkindness and thy truth from the great congregation."

Psalms 42:6: "O my God, my soul is cast down within me: therefore will I remember thee from the land of Jordan, and of the Hermonites, from the hill Mizar."

Psalms 42:11: "Why art thou cast down, O my soul? and why art thou disquieted within me? hope thou in God: for I shall yet praise him, who is the health of my countenance, and my God."

Psalms 43:5: "Why art thou cast down, O my soul? and why art thou disquieted within me? hope in God: for I shall yet praise him, who is the health of my countenance, and my God."

Psalms 45:13: "The king's daughter is all glorious within: her clothing is of wrought gold."

Psalms 51:10: "Create in me a clean heart, O God; and renew a right spirit within me."  
 Psalms 55:4: "My heart is sore pained within me: and the terrors of death are fallen upon me."  
 Psalms 94:19: "In the multitude of my thoughts within me thy comforts delight my soul."  
 Psalms 101:2: "I will behave myself wisely in a perfect way. O when wilt thou come unto me? I will walk within my house with a perfect heart."  
 Psalms 101:7: "He that worketh deceit shall not dwell within my house: he that telleth lies shall not tarry in my sight."  
 Psalms 103:1: "Bless the LORD, O my soul: and all that is within me, bless his holy name."  
 Psalms 109:22: "For I am poor and needy, and my heart is wounded within me."  
 Psalms 122:2: "Our feet shall stand within thy gates, O Jerusalem."  
 Psalms 122:7: "Peace be within thy walls, and prosperity within thy palaces."  
 Psalms 122:8: "For my brethren and companions' sakes, I will now say, Peace be within thee."  
 Psalms 142:3: "When my spirit was overwhelmed within me, then thou knewest my path. In the way wherein I walked have they privily laid a snare for me."  
 Psalms 143:4: "Therefore is my spirit overwhelmed within me; my heart within me is desolate."  
 Psalms 147:13: "For he hath strengthened the bars of thy gates; he hath blessed thy children within thee."  
 Proverbs 22:18: "For it is a pleasant thing if thou keep them within thee; they shall withal be fitted in thy lips."  
 Proverbs 26:24: "He that hateth dissembleth with his lips, and layeth up deceit within him;"  
 Ecclesiastes 9:14: "There was a little city, and few men within it; and there came a great king against it, and besieged it, and built great bulwarks against it:"  
 Song of Solomon 4:1: "Behold, thou art fair, my love; behold, thou art fair; thou hast doves' eyes within thy locks: thy hair is as a flock of goats, that appear from mount Gilead."  
 Song of Solomon 4:3: "Thy lips are like a thread of scarlet, and thy speech is comely: thy temples are like a piece of a pomegranate within thy locks."  
 Song of Solomon 6:7: "As a piece of a pomegranate are thy temples within thy locks."  
 Isaiah 7:8: "For the head of Syria is Damascus, and the head of Damascus is Rezin; and within threescore and five years shall Ephraim be broken, that it be not a people."  
 Isaiah 16:14: "But now the LORD hath spoken, saying, Within three years, as the years of an hireling, and the glory of Moab shall be contemned, with all that great multitude; and the remnant shall be very small and feeble."  
 Isaiah 21:16: "For thus hath the LORD said unto me, Within a year, according to the years of an hireling, and all the glory of Kedar shall fail:"  
 Isaiah 26:9: "With my soul have I desired thee in the night; yea, with my spirit within me will I seek thee early: for when thy judgments are in the earth, the inhabitants of the world will learn righteousness."  
 Isaiah 56:5: "Even unto them will I give in mine house and within my walls a place and a name better than of sons and of daughters: I will give them an everlasting name, that shall not be cut off."  
 Isaiah 60:18: "Violence shall no more be heard in thy land, wasting nor destruction within thy borders; but thou shalt call thy walls Salvation, and thy gates Praise."  
 Isaiah 63:11: "Then he remembered the days of old, Moses, and his people, saying, Where is he that brought them up out of the sea with the shepherd of his flock? where is he that put his holy Spirit within him?"  
 Jeremiah 4:14: "O Jerusalem, wash thine heart from wickedness, that thou mayest be saved. How long shall thy vain thoughts lodge within thee?"  
 Jeremiah 23:9: "Mine heart within me is broken because of the prophets; all my bones shake; I am like a drunken man, and like a man whom wine hath overcome, because of the LORD, and because of the words of his holiness."  
 Jeremiah 28:3: "Within two full years will I bring again into this place all the vessels of the LORD's

house, that Nebuchadnezzar king of Babylon took away from this place, and carried them to Babylon:"

Jeremiah 28:11: "And Hananiah spake in the presence of all the people, saying, Thus saith the LORD; Even so will I break the yoke of Nebuchadnezzar king of Babylon from the neck of all nations within the space of two full years. And the prophet Jeremiah went his way."

Lamentations 1:20: "Behold, O LORD; for I am in distress: my bowels are troubled; mine heart is turned within me; for I have grievously rebelled: abroad the sword bereaveth, at home there is as death."

Ezekiel 1:27: "And I saw as the colour of amber, as the appearance of fire round about within it, from the appearance of his loins even upward, and from the appearance of his loins even downward, I saw as it were the appearance of fire, and it had brightness round about."

Ezekiel 2:10: "And he spread it before me; and it was written within and without: and there was written therein lamentations, and mourning, and woe."

Ezekiel 3:24: "Then the spirit entered into me, and set me upon my feet, and spake with me, and said unto me, Go, shut thyself within thine house."

Ezekiel 7:15: "The sword is without, and the pestilence and the famine within: he that is in the field shall die with the sword; and he that is in the city, famine and pestilence shall devour him."

Ezekiel 11:19: "And I will give them one heart, and I will put a new spirit within you; and I will take the stony heart out of their flesh, and will give them an heart of flesh:"

Ezekiel 12:24: "For there shall be no more any vain vision nor flattering divination within the house of Israel."

Ezekiel 36:26: "A new heart also will I give you, and a new spirit will I put within you: and I will take away the stony heart out of your flesh, and I will give you an heart of flesh."

Ezekiel 36:27: "And I will put my spirit within you, and cause you to walk in my statutes, and ye shall keep my judgments, and do them."

Ezekiel 40:7: "And every little chamber was one reed long, and one reed broad; and between the little chambers were five cubits; and the threshold of the gate by the porch of the gate within was one reed."

Ezekiel 40:8: "He measured also the porch of the gate within, one reed."

Ezekiel 40:16: "And there were narrow windows to the little chambers, and to their posts within the gate round about, and likewise to the arches: and windows were round about inward: and upon each post were palm trees."

Ezekiel 40:43: "And within were hooks, an hand broad, fastened round about: and upon the tables was the flesh of the offering."

Ezekiel 41:9: "The thickness of the wall, which was for the side chamber without, was five cubits: and that which was left was the place of the side chambers that were within."

Ezekiel 41:17: "To that above the door, even unto the inner house, and without, and by all the wall round about within and without, by measure."

Ezekiel 44:17: "And it shall come to pass, that when they enter in at the gates of the inner court, they shall be clothed with linen garments; and no wool shall come upon them, whiles they minister in the gates of the inner court, and within."

Daniel 6:12: "Then they came near, and spake before the king concerning the king's decree; Hast thou not signed a decree, that every man that shall ask a petition of any God or man within thirty days, save of thee, O king, shall be cast into the den of lions? The king answered and said, The thing is true, according to the law of the Medes and Persians, which altereth not."

Daniel 11:20: "Then shall stand up in his estate a raiser of taxes in the glory of the kingdom: but within few days he shall be destroyed, neither in anger, nor in battle."

Hosea 11:8: "How shall I give thee up, Ephraim? how shall I deliver thee, Israel? how shall I make thee as Admah? how shall I set thee as Zeboim? mine heart is turned within me, my repentings are kindled together."

Jonah 2:7: "When my soul fainted within me I remembered the LORD: and my prayer came in unto thee, into thine holy temple."

Micah 3:3: "Who also eat the flesh of my people, and flay their skin from off them; and they break their bones, and chop them in pieces, as for the pot, and as flesh within the caldron."

Micah 5:6: "And they shall waste the land of Assyria with the sword, and the land of Nimrod in the entrances thereof: thus shall he deliver us from the Assyrian, when he cometh into our land, and when he treadeth within our borders."

Zephaniah 3:3: "Her princes within her are roaring lions; her judges are evening wolves; they gnaw not the bones till the morrow."

Zechariah 12:1: "The burden of the word of the LORD for Israel, saith the LORD, which stretcheth forth the heavens, and layeth the foundation of the earth, and formeth the spirit of man within him."

Matthew 3:9: "And think not to say within yourselves, We have Abraham to our father: for I say unto you, that God is able of these stones to raise up children unto Abraham."

Matthew 9:3: "And, behold, certain of the scribes said within themselves, This man blasphemeth."

Matthew 9:21: "For she said within herself, If I may but touch his garment, I shall be whole."

Matthew 23:25: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye make clean the outside of the cup and of the platter, but within they are full of extortion and excess."

Matthew 23:26: "Thou blind Pharisee, cleanse first that which is within the cup and platter, that the outside of them may be clean also."

Matthew 23:27: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye are like unto whited sepulchres, which indeed appear beautiful outward, but are within full of dead men's bones, and of all uncleanness."

Matthew 23:28: "Even so ye also outwardly appear righteous unto men, but within ye are full of hypocrisy and iniquity."

Mark 2:8: "And immediately when Jesus perceived in his spirit that they so reasoned within themselves, he said unto them, Why reason ye these things in your hearts?"

Mark 7:21: "For from within, out of the heart of men, proceed evil thoughts, adulteries, fornications, murders,"

Mark 7:23: "All these evil things come from within, and defile the man."

Mark 14:4: "And there were some that had indignation within themselves, and said, Why was this waste of the ointment made?"

Mark 14:58: "We heard him say, I will destroy this temple that is made with hands, and within three days I will build another made without hands."

Luke 3:8: "Bring forth therefore fruits worthy of repentance, and begin not to say within yourselves, We have Abraham to our father: for I say unto you, That God is able of these stones to raise up children unto Abraham."

Luke 7:39: "Now when the Pharisee which had bidden him saw it, he spake within himself, saying, This man, if he were a prophet, would have known who and what manner of woman this is that toucheth him: for she is a sinner."

Luke 7:49: "And they that sat at meat with him began to say within themselves, Who is this that forgiveth sins also?"

Luke 11:7: "And he from within shall answer and say, Trouble me not: the door is now shut, and my children are with me in bed; I cannot rise and give thee."

Luke 11:40: "Ye fools, did not he that made that which is without make that which is within also?"

Luke 12:17: "And he thought within himself, saying, What shall I do, because I have no room where to bestow my fruits?"

Luke 16:3: "Then the steward said within himself, What shall I do? for my lord taketh away from me the stewardship: I cannot dig; to beg I am ashamed."

Luke 17:21: "Neither shall they say, Lo here! or, lo there! for, behold, the kingdom of God is within you."



Luke 18:4: "And he would not for a while: but afterward he said within himself, Though I fear not God, nor regard man;"

Luke 19:44: "And shall lay thee even with the ground, and thy children within thee; and they shall not leave in thee one stone upon another; because thou knewest not the time of thy visitation."

Luke 24:32: "And they said one to another, Did not our heart burn within us, while he talked with us by the way, and while he opened to us the scriptures?"

John 20:26: "And after eight days again his disciples were within, and Thomas with them: then came Jesus, the doors being shut, and stood in the midst, and said, Peace be unto you."

Acts 5:23: "Saying, The prison truly found we shut with all safety, and the keepers standing without before the doors: but when we had opened, we found no man within."

Romans 8:23: "And not only they, but ourselves also, which have the firstfruits of the Spirit, even we ourselves groan within ourselves, waiting for the adoption, to wit, the redemption of our body."

1 Corinthians 5:12: "For what have I to do to judge them also that are without? do not ye judge them that are within?"

2 Corinthians 7:5: "For, when we were come into Macedonia, our flesh had no rest, but we were troubled on every side; without were fightings, within were fears."

Hebrews 6:19: "Which hope we have as an anchor of the soul, both sure and stedfast, and which entereth into that within the veil;"

Revelation 4:8: "And the four beasts had each of them six wings about him; and they were full of eyes within: and they rest not day and night, saying, Holy, holy, holy, LORD God Almighty, which was, and is, and is to come."

Revelation 5:1: "And I saw in the right hand of him that sat on the throne a book written within and on the backside, sealed with seven seals."

## **WITHOUT**

Occurrences: 385

Genesis 1:2: "And the earth was without form, and void; and darkness was upon the face of the deep. And the Spirit of God moved upon the face of the waters."

Genesis 6:14: "Make thee an ark of gopher wood; rooms shalt thou make in the ark, and shalt pitch it within and without with pitch."

Genesis 9:22: "And Ham, the father of Canaan, saw the nakedness of his father, and told his two brethren without."

Genesis 19:16: "And while he lingered, the men laid hold upon his hand, and upon the hand of his wife, and upon the hand of his two daughters; the LORD being merciful unto him: and they brought him forth, and set him without the city."

Genesis 24:11: "And he made his camels to kneel down without the city by a well of water at the time of the evening, even the time that women go out to draw water."

Genesis 24:31: "And he said, Come in, thou blessed of the LORD; wherefore standest thou without? for I have prepared the house, and room for the camels."

Genesis 37:33: "And he knew it, and said, It is my son's coat; an evil beast hath devoured him; Joseph is without doubt rent in pieces."

Genesis 41:44: "And Pharaoh said unto Joseph, I am Pharaoh, and without thee shall no man lift up his hand or foot in all the land of Egypt."

Genesis 41:49: "And Joseph gathered corn as the sand of the sea, very much, until he left numbering; for it was without number."

Exodus 12:5: "Your lamb shall be without blemish, a male of the first year: ye shall take it out from the sheep, or from the goats:"

Exodus 21:11: "And if he do not these three unto her, then shall she go out free without money."

Exodus 25:11: "And thou shalt overlay it with pure gold, within and without shalt thou overlay it, and shalt make upon it a crown of gold round about."

Exodus 26:35: "And thou shalt set the table without the vail, and the candlestick over against the table on the side of the tabernacle toward the south: and thou shalt put the table on the north side."

Exodus 27:21: "In the tabernacle of the congregation without the vail, which is before the testimony, Aaron and his sons shall order it from evening to morning before the LORD: it shall be a statute for ever unto their generations on the behalf of the children of Israel."

Exodus 29:1: "And this is the thing that thou shalt do unto them to hallow them, to minister unto me in the priest's office: Take one young bullock, and two rams without blemish,"

Exodus 29:14: "But the flesh of the bullock, and his skin, and his dung, shalt thou burn with fire without the camp: it is a sin offering."

Exodus 33:7: "And Moses took the tabernacle, and pitched it without the camp, afar off from the camp, and called it the Tabernacle of the congregation. And it came to pass, that every one which sought the LORD went out unto the tabernacle of the congregation, which was without the camp."

Exodus 37:2: "And he overlaid it with pure gold within and without, and made a crown of gold to it round about."

Exodus 40:22: "And he put the table in the tent of the congregation, upon the side of the tabernacle northward, without the vail."

Leviticus 1:3: "If his offering be a burnt sacrifice of the herd, let him offer a male without blemish: he shall offer it of his own voluntary will at the door of the tabernacle of the congregation before the LORD."

Leviticus 1:10: "And if his offering be of the flocks, namely, of the sheep, or of the goats, for a burnt sacrifice; he shall bring it a male without blemish."

Leviticus 3:1: "And if his oblation be a sacrifice of peace offering, if he offer it of the herd; whether it be a male or female, he shall offer it without blemish before the LORD."

Leviticus 3:6: "And if his offering for a sacrifice of peace offering unto the LORD be of the flock; male or female, he shall offer it without blemish."

Leviticus 4:3: "If the priest that is anointed do sin according to the sin of the people; then let him bring for his sin, which he hath sinned, a young bullock without blemish unto the LORD for a sin offering."

Leviticus 4:12: "Even the whole bullock shall he carry forth without the camp unto a clean place, where the ashes are poured out, and burn him on the wood with fire: where the ashes are poured out shall he be burnt."

Leviticus 4:21: "And he shall carry forth the bullock without the camp, and burn him as he burned the first bullock: it is a sin offering for the congregation."

Leviticus 4:23: "Or if his sin, wherein he hath sinned, come to his knowledge; he shall bring his offering, a kid of the goats, a male without blemish:"

Leviticus 4:28: "Or if his sin, which he hath sinned, come to his knowledge: then he shall bring his offering, a kid of the goats, a female without blemish, for his sin which he hath sinned."

Leviticus 4:32: "And if he bring a lamb for a sin offering, he shall bring it a female without blemish."

Leviticus 5:15: "If a soul commit a trespass, and sin through ignorance, in the holy things of the LORD; then he shall bring for his trespass unto the LORD a ram without blemish out of the flocks, with thy estimation by shekels of silver, after the shekel of the sanctuary, for a trespass offering."

Leviticus 5:18: "And he shall bring a ram without blemish out of the flock, with thy estimation, for a trespass offering, unto the priest: and the priest shall make an atonement for him concerning his ignorance wherein he erred and wist it not, and it shall be forgiven him."

Leviticus 6:6: "And he shall bring his trespass offering unto the LORD, a ram without blemish out of the flock, with thy estimation, for a trespass offering, unto the priest:"

Leviticus 6:11: "And he shall put off his garments, and put on other garments, and carry forth the ashes without the camp unto a clean place."

Leviticus 8:17: "But the bullock, and his hide, his flesh, and his dung, he burnt with fire without the

camp; as the LORD commanded Moses."

Leviticus 9:2: "And he said unto Aaron, Take thee a young calf for a sin offering, and a ram for a burnt offering, without blemish, and offer them before the LORD."

Leviticus 9:3: "And unto the children of Israel thou shalt speak, saying, Take ye a kid of the goats for a sin offering; and a calf and a lamb, both of the first year, without blemish, for a burnt offering;"

Leviticus 9:11: "And the flesh and the hide he burnt with fire without the camp."

Leviticus 10:12: "And Moses spake unto Aaron, and unto Eleazar and unto Ithamar, his sons that were left, Take the meat offering that remaineth of the offerings of the LORD made by fire, and eat it without leaven beside the altar: for it is most holy:"

Leviticus 13:46: "All the days wherein the plague shall be in him he shall be defiled; he is unclean: he shall dwell alone; without the camp shall his habitation be."

Leviticus 13:55: "And the priest shall look on the plague, after that it is washed: and, behold, if the plague have not changed his colour, and the plague be not spread; it is unclean; thou shalt burn it in the fire; it is fret inward, whether it be bare within or without."

Leviticus 14:10: "And on the eighth day he shall take two he lambs without blemish, and one ewe lamb of the first year without blemish, and three tenth deals of fine flour for a meat offering, mingled with oil, and one log of oil."

Leviticus 14:40: "Then the priest shall command that they take away the stones in which the plague is, and they shall cast them into an unclean place without the city:"

Leviticus 14:41: "And he shall cause the house to be scraped within round about, and they shall pour out the dust that they scrape off without the city into an unclean place:"

Leviticus 16:27: "And the bullock for the sin offering, and the goat for the sin offering, whose blood was brought in to make atonement in the holy place, shall one carry forth without the camp; and they shall burn in the fire their skins, and their flesh, and their dung."

Leviticus 22:19: "Ye shall offer at your own will a male without blemish, of the beeves, of the sheep, or of the goats."

Leviticus 23:12: "And ye shall offer that day when ye wave the sheaf an he lamb without blemish of the first year for a burnt offering unto the LORD."

Leviticus 23:18: "And ye shall offer with the bread seven lambs without blemish of the first year, and one young bullock, and two rams: they shall be for a burnt offering unto the LORD, with their meat offering, and their drink offerings, even an offering made by fire, of sweet savour unto the LORD."

Leviticus 24:3: "Without the vail of the testimony, in the tabernacle of the congregation, shall Aaron order it from the evening unto the morning before the LORD continually: it shall be a statute for ever in your generations."

Leviticus 24:14: "Bring forth him that hath cursed without the camp; and let all that heard him lay their hands upon his head, and let all the congregation stone him."

Leviticus 26:43: "The land also shall be left of them, and shall enjoy her sabbaths, while she lieth desolate without them: and they shall accept of the punishment of their iniquity: because, even because they despised my judgments, and because their soul abhorred my statutes."

Numbers 5:3: "Both male and female shall ye put out, without the camp shall ye put them; that they defile not their camps, in the midst whereof I dwell."

Numbers 5:4: "And the children of Israel did so, and put them out without the camp: as the LORD spake unto Moses, so did the children of Israel."

Numbers 6:14: "And he shall offer his offering unto the LORD, one he lamb of the first year without blemish for a burnt offering, and one ewe lamb of the first year without blemish for a sin offering, and one ram without blemish for peace offerings,"

Numbers 15:24: "Then it shall be, if ought be committed by ignorance without the knowledge of the congregation, that all the congregation shall offer one young bullock for a burnt offering, for a

sweet savour unto the LORD, with his meat offering, and his drink offering, according to the manner, and one kid of the goats for a sin offering."

Numbers 15:35: "And the LORD said unto Moses, The man shall be surely put to death: all the congregation shall stone him with stones without the camp."

Numbers 15:36: "And all the congregation brought him without the camp, and stoned him with stones, and he died; as the LORD commanded Moses."

Numbers 19:2: "This is the ordinance of the law which the LORD hath commanded, saying, Speak unto the children of Israel, that they bring thee a red heifer without spot, wherein is no blemish, and upon which never came yoke:"

Numbers 19:3: "And ye shall give her unto Eleazar the priest, that he may bring her forth without the camp, and one shall slay her before his face:"

Numbers 19:9: "And a man that is clean shall gather up the ashes of the heifer, and lay them up without the camp in a clean place, and it shall be kept for the congregation of the children of Israel for a water of separation: it is a purification for sin."

Numbers 20:19: "And the children of Israel said unto him, We will go by the high way: and if I and my cattle drink of thy water, then I will pay for it: I will only, without doing anything else, go through on my feet."

Numbers 28:3: "And thou shalt say unto them, This is the offering made by fire which ye shall offer unto the LORD; two lambs of the first year without spot day by day, for a continual burnt offering."

Numbers 28:9: "And on the sabbath day two lambs of the first year without spot, and two tenth deals of flour for a meat offering, mingled with oil, and the drink offering thereof:"

Numbers 28:11: "And in the beginnings of your months ye shall offer a burnt offering unto the LORD; two young bullocks, and one ram, seven lambs of the first year without spot;"

Numbers 28:19: "But ye shall offer a sacrifice made by fire for a burnt offering unto the LORD; two young bullocks, and one ram, and seven lambs of the first year: they shall be unto you without blemish:"

Numbers 28:31: "Ye shall offer them beside the continual burnt offering, and his meat offering, (they shall be unto you without blemish) and their drink offerings."

Numbers 29:2: "And ye shall offer a burnt offering for a sweet savour unto the LORD; one young bullock, one ram, and seven lambs of the first year without blemish:"

Numbers 29:8: "But ye shall offer a burnt offering unto the LORD for a sweet savour; one young bullock, one ram, and seven lambs of the first year; they shall be unto you without blemish:"

Numbers 29:13: "And ye shall offer a burnt offering, a sacrifice made by fire, of a sweet savour unto the LORD; thirteen young bullocks, two rams, and fourteen lambs of the first year; they shall be without blemish:"

Numbers 29:17: "And on the second day ye shall offer twelve young bullocks, two rams, fourteen lambs of the first year without spot:"

Numbers 29:20: "And on the third day eleven bullocks, two rams, fourteen lambs of the first year without blemish;"

Numbers 29:23: "And on the fourth day ten bullocks, two rams, and fourteen lambs of the first year without blemish:"

Numbers 29:26: "And on the fifth day nine bullocks, two rams, and fourteen lambs of the first year without spot:"

Numbers 29:29: "And on the sixth day eight bullocks, two rams, and fourteen lambs of the first year without blemish:"

Numbers 29:32: "And on the seventh day seven bullocks, two rams, and fourteen lambs of the first year without blemish:"

Numbers 29:36: "But ye shall offer a burnt offering, a sacrifice made by fire, of a sweet savour unto the LORD: one bullock, one ram, seven lambs of the first year without blemish:"

Numbers 31:13: "And Moses, and Eleazar the priest, and all the princes of the congregation, went

forth to meet them without the camp."

Numbers 31:19: "And do ye abide without the camp seven days: whosoever hath killed any person, and whosoever hath touched any slain, purify both yourselves and your captives on the third day, and on the seventh day."

Numbers 35:5: "And ye shall measure from without the city on the east side two thousand cubits, and on the south side two thousand cubits, and on the west side two thousand cubits, and on the north side two thousand cubits; and the city shall be in the midst: this shall be to them the suburbs of the cities."

Numbers 35:22: "But if he thrust him suddenly without enmity, or have cast upon him any thing without laying of wait,"

Numbers 35:26: "But if the slayer shall at any time come without the border of the city of his refuge, whither he was fled;"

Numbers 35:27: "And the revenger of blood find him without the borders of the city of his refuge, and the revenger of blood kill the slayer; he shall not be guilty of blood."

Deuteronomy 8:9: "A land wherein thou shalt eat bread without scarceness, thou shalt not lack any thing in it; a land whose stones are iron, and out of whose hills thou mayest dig brass."

Deuteronomy 23:12: "Thou shalt have a place also without the camp, whither thou shalt go forth abroad:"

Deuteronomy 25:5: "If brethren dwell together, and one of them die, and have no child, the wife of the dead shall not marry without unto a stranger: her husband's brother shall go in unto her, and take her to him to wife, and perform the duty of an husband's brother unto her."

Deuteronomy 32:4: "He is the Rock, his work is perfect: for all his ways are judgment: a God of truth and without iniquity, just and right is he."

Deuteronomy 32:25: "The sword without, and terror within, shall destroy both the young man and the virgin, the suckling also with the man of gray hairs."

Joshua 3:10: "And Joshua said, Hereby ye shall know that the living God is among you, and that he will without fail drive out from before you the Canaanites, and the Hittites, and the Hivites, and the Perizzites, and the Girgashites, and the Amorites, and the Jebusites."

Joshua 6:23: "And the young men that were spies went in, and brought out Rahab, and her father, and her mother, and her brethren, and all that she had; and they brought out all her kindred, and left them without the camp of Israel."

Judges 2:23: "Therefore the LORD left those nations, without driving them out hastily; neither delivered he them into the hand of Joshua."

Judges 6:5: "For they came up with their cattle and their tents, and they came as grasshoppers for multitude; for both they and their camels were without number: and they entered into the land to destroy it."

Judges 7:12: "And the Midianites and the Amalekites and all the children of the east lay along in the valley like grasshoppers for multitude; and their camels were without number, as the sand by the sea side for multitude."

Judges 11:30: "And Jephthah vowed a vow unto the LORD, and said, If thou shalt without fail deliver the children of Ammon into mine hands,"

Ruth 4:14: "And the women said unto Naomi, Blessed be the LORD, which hath not left thee this day without a kinsman, that his name may be famous in Israel."

1 Samuel 19:5: "For he did put his life in his hand, and slew the Philistine, and the LORD wrought a great salvation for all Israel: thou sawest it, and didst rejoice: wherefore then wilt thou sin against innocent blood, to slay David without a cause?"

1 Samuel 30:8: "And David enquired at the LORD, saying, Shall I pursue after this troop? shall I overtake them? And he answered him, Pursue: for thou shalt surely overtake them, and without fail recover all."

2 Samuel 23:4: "And he shall be as the light of the morning, when the sun riseth, even a morning

without clouds; as the tender grass springing out of the earth by clear shining after rain."

1 Kings 6:6: "The nethermost chamber was five cubits broad, and the middle was six cubits broad, and the third was seven cubits broad: for without in the wall of the house he made narrowed rests round about, that the beams should not be fastened in the walls of the house."

1 Kings 6:29: "And he carved all the walls of the house round about with carved figures of cherubims and palm trees and open flowers, within and without."

1 Kings 6:30: "And the floors of the house he overlaid with gold, within and without."

1 Kings 7:9: "All these were of costly stones, according to the measures of hewed stones, sawed with saws, within and without, even from the foundation unto the coping, and so on the outside toward the great court."

1 Kings 8:8: "And they drew out the staves, that the ends of the staves were seen out in the holy place before the oracle, and they were not seen without: and there they are unto this day."

1 Kings 22:1: "And they continued three years without war between Syria and Israel."

2 Kings 10:24: "And when they went in to offer sacrifices and burnt offerings, Jehu appointed fourscore men without, and said, If any of the men whom I have brought into your hands escape, he that letteth him go, his life shall be for the life of him."

2 Kings 11:15: "But Jehoiada the priest commanded the captains of the hundreds, the officers of the host, and said unto them, Have her forth without the ranges: and him that followeth her kill with the sword. For the priest had said, Let her not be slain in the house of the LORD."

2 Kings 16:18: "And the covert for the sabbath that they had built in the house, and the king's entry without, turned he from the house of the LORD for the king of Assyria."

2 Kings 18:25: "Am I now come up without the LORD against this place to destroy it? The LORD said to me, Go up against this land, and destroy it."

2 Kings 23:4: "And the king commanded Hilkiah the high priest, and the priests of the second order, and the keepers of the door, to bring forth out of the temple of the LORD all the vessels that were made for Baal, and for the grove, and for all the host of heaven: and he burned them without Jerusalem in the fields of Kidron, and carried the ashes of them unto Bethel."

2 Kings 23:6: "And he brought out the grove from the house of the LORD, without Jerusalem, unto the brook Kidron, and burned it at the brook Kidron, and stamped it small to powder, and cast the powder thereof upon the graves of the children of the people."

2 Kings 25:16: "The two pillars, one sea, and the bases which Solomon had made for the house of the LORD; the brass of all these vessels was without weight."

1 Chronicles 2:30: "And the sons of Nadab; Seled, and Appaim: but Seled died without children."

1 Chronicles 2:32: "And the sons of Jada the brother of Shammai; Jether, and Jonathan: and Jether died without children."

1 Chronicles 21:24: "And king David said to Ornan, Nay; but I will verily buy it for the full price: for I will not take that which is thine for the LORD, nor offer burnt offerings without cost."

1 Chronicles 22:3: "And David prepared iron in abundance for the nails for the doors of the gates, and for the joinings; and brass in abundance without weight;"

1 Chronicles 22:14: "Now, behold, in my trouble I have prepared for the house of the LORD an hundred thousand talents of gold, and a thousand thousand talents of silver; and of brass and iron without weight; for it is in abundance: timber also and stone have I prepared; and thou mayest add thereto."

2 Chronicles 5:9: "And they drew out the staves of the ark, that the ends of the staves were seen from the ark before the oracle; but they were not seen without. And there it is unto this day."

2 Chronicles 12:3: "With twelve hundred chariots, and threescore thousand horsemen: and the people were without number that came with him out of Egypt; the Lubims, the Sukkiims, and the Ethiopians."

2 Chronicles 15:3: "Now for a long season Israel hath been without the true God, and without a teaching priest, and without law."

2 Chronicles 21:20: "Thirty and two years old was he when he began to reign, and he reigned in Jerusalem eight years, and departed without being desired. Howbeit they buried him in the city of David, but not in the sepulchres of the kings."

2 Chronicles 24:8: "And at the king's commandment they made a chest, and set it without at the gate of the house of the LORD."

2 Chronicles 32:3: "He took counsel with his princes and his mighty men to stop the waters of the fountains which were without the city: and they did help him."

2 Chronicles 32:5: "Also he strengthened himself, and built up all the wall that was broken, and raised it up to the towers, and another wall without, and repaired Millo in the city of David, and made darts and shields in abundance."

2 Chronicles 33:14: "Now after this he built a wall without the city of David, on the west side of Gihon, in the valley, even to the entering in at the fish gate, and compassed about Ophel, and raised it up a very great height, and put captains of war in all the fenced cities of Judah."

Ezra 6:9: "And that which they have need of, both young bullocks, and rams, and lambs, for the burnt offerings of the God of heaven, wheat, salt, wine, and oil, according to the appointment of the priests which are at Jerusalem, let it be given them day by day without fail:"

Ezra 7:22: "Unto an hundred talents of silver, and to an hundred measures of wheat, and to an hundred baths of wine, and to an hundred baths of oil, and salt without prescribing how much."

Ezra 10:13: "But the people are many, and it is a time of much rain, and we are not able to stand without, neither is this a work of one day or two: for we are many that have transgressed in this thing."

Nehemiah 13:20: "So the merchants and sellers of all kind of ware lodged without Jerusalem once or twice."

Job 2:3: "And the LORD said unto Satan, Hast thou considered my servant Job, that there is none like him in the earth, a perfect and an upright man, one that feareth God, and escheweth evil? and still he holdeth fast his integrity, although thou movedst me against him, to destroy him without cause."

Job 4:20: "They are destroyed from morning to evening: they perish for ever without any regarding it."

Job 4:21: "Doth not their excellency which is in them go away? they die, even without wisdom."

Job 5:9: "Which doeth great things and unsearchable; marvellous things without number:"

Job 6:6: "Can that which is unsavoury be eaten without salt? or is there any taste in the white of an egg?"

Job 7:6: "My days are swifter than a weaver's shuttle, and are spent without hope."

Job 8:11: "Can the rush grow up without mire? can the flag grow without water?"

Job 9:10: "Which doeth great things past finding out; yea, and wonders without number."

Job 9:17: "For he breaketh me with a tempest, and multiplieth my wounds without cause."

Job 10:22: "A land of darkness, as darkness itself; and of the shadow of death, without any order, and where the light is as darkness."

Job 11:15: "For then shalt thou lift up thy face without spot; yea, thou shalt be stedfast, and shalt not fear:"

Job 12:25: "They grope in the dark without light, and he maketh them to stagger like a drunken man."

Job 24:7: "They cause the naked to lodge without clothing, that they have no covering in the cold."

Job 24:10: "They cause him to go naked without clothing, and they take away the sheaf from the hungry;"

Job 26:2: "How hast thou helped him that is without power? how savest thou the arm that hath no strength?"

Job 30:28: "I went mourning without the sun: I stood up, and I cried in the congregation."

Job 31:19: "If I have seen any perish for want of clothing, or any poor without covering;"

Job 31:39: "If I have eaten the fruits thereof without money, or have caused the owners thereof to lose their life:"

Job 33:9: "I am clean without transgression, I am innocent; neither is there iniquity in me."

Job 34:6: "Should I lie against my right? my wound is incurable without transgression."

Job 34:20: "In a moment shall they die, and the people shall be troubled at midnight, and pass away: and the mighty shall be taken away without hand."

Job 34:24: "He shall break in pieces mighty men without number, and set others in their stead."

Job 34:35: "Job hath spoken without knowledge, and his words were without wisdom."

Job 35:16: "Therefore doth Job open his mouth in vain; he multiplieth words without knowledge."

Job 36:12: "But if they obey not, they shall perish by the sword, and they shall die without knowledge."

Job 38:2: "Who is this that darkeneth counsel by words without knowledge?"

Job 39:16: "She is hardened against her young ones, as though they were not her's: her labour is in vain without fear;"

Job 41:33: "Upon earth there is not his like, who is made without fear."

Job 42:3: "Who is he that hideth counsel without knowledge? therefore have I uttered that I understood not; things too wonderful for me, which I knew not."

Psalms 7:4: "If I have rewarded evil unto him that was at peace with me; (yea, I have delivered him that without cause is mine enemy:)"

Psalms 25:3: "Yea, let none that wait on thee be ashamed: let them be ashamed which transgress without cause."

Psalms 31:11: "I was a reproach among all mine enemies, but especially among my neighbours, and a fear to mine acquaintance: they that did see me without fled from me."

Psalms 35:7: "For without cause have they hid for me their net in a pit, which without cause they have digged for my soul."

Psalms 35:19: "Let not them that are mine enemies wrongfully rejoice over me: neither let them wink with the eye that hate me without a cause."

Psalms 59:4: "They run and prepare themselves without my fault: awake to help me, and behold."

Psalms 69:4: "They that hate me without a cause are more than the hairs of mine head: they that would destroy me, being mine enemies wrongfully, are mighty: then I restored that which I took not away."

Psalms 105:34: "He spake, and the locusts came, and caterpillers, and that without number,"

Psalms 109:3: "They compassed me about also with words of hatred; and fought against me without a cause."

Psalms 119:78: "Let the proud be ashamed; for they dealt perversely with me without a cause: but I will meditate in thy precepts."

Psalms 119:161: "Princes have persecuted me without a cause: but my heart standeth in awe of thy word."

Proverbs 1:11: "If they say, Come with us, let us lay wait for blood, let us lurk privily for the innocent without cause:"

Proverbs 1:20: "Wisdom crieth without; she uttereth her voice in the streets:"

Proverbs 3:30: "Strive not with a man without cause, if he have done thee no harm."

Proverbs 5:23: "He shall die without instruction; and in the greatness of his folly he shall go astray."

Proverbs 6:15: "Therefore shall his calamity come suddenly; suddenly shall he be broken without remedy."

Proverbs 7:12: "Now is she without, now in the streets, and lieth in wait at every corner.)"

Proverbs 11:22: "As a jewel of gold in a swine's snout, so is a fair woman which is without discretion."

Proverbs 15:22: "Without counsel purposes are disappointed: but in the multitude of counsellors they are established."



Proverbs 16:8: "Better is a little with righteousness than great revenues without right."

Proverbs 19:2: "Also, that the soul be without knowledge, it is not good; and he that hasteth with his feet sinneth."

Proverbs 22:13: "The slothful man saith, There is a lion without, I shall be slain in the streets."

Proverbs 23:29: "Who hath woe? who hath sorrow? who hath contentions? who hath babbling? who hath wounds without cause? who hath redness of eyes?"

Proverbs 24:27: "Prepare thy work without, and make it fit for thyself in the field; and afterwards build thine house."

Proverbs 24:28: "Be not a witness against thy neighbour without cause; and deceive not with thy lips."

Proverbs 25:14: "Whoso boasteth himself of a false gift is like clouds and wind without rain."

Proverbs 25:28: "He that hath no rule over his own spirit is like a city that is broken down, and without walls."

Proverbs 29:1: "He, that being often reprov'd hardeneth his neck, shall suddenly be destroyed, and that without remedy."

Ecclesiastes 10:11: "Surely the serpent will bite without enchantment; and a babbler is no better."

Song of Solomon 6:8: "There are threescore queens, and fourscore concubines, and virgins without number."

Song of Solomon 8:1: "O that thou wert as my brother, that sucked the breasts of my mother! when I should find thee without, I would kiss thee; yea, I should not be despised."

Isaiah 5:9: "In mine ears said the LORD of hosts, Of a truth many houses shall be desolate, even great and fair, without inhabitant."

Isaiah 5:14: "Therefore hell hath enlarged herself, and opened her mouth without measure: and their glory, and their multitude, and their pomp, and he that rejoiceth, shall descend into it."

Isaiah 6:11: "Then said I, Lord, how long? And he answered, Until the cities be wasted without inhabitant, and the houses without man, and the land be utterly desolate,"

Isaiah 10:4: "Without me they shall bow down under the prisoners, and they shall fall under the slain. For all this his anger is not turned away, but his hand is stretched out still."

Isaiah 33:7: "Behold, their valiant ones shall cry without: the ambassadors of peace shall weep bitterly."

Isaiah 36:10: "And am I now come up without the LORD against this land to destroy it? the LORD said unto me, Go up against this land, and destroy it."

Isaiah 45:17: "But Israel shall be saved in the LORD with an everlasting salvation: ye shall not be ashamed nor confounded world without end."

Isaiah 52:3: "For thus saith the LORD, Ye have sold yourselves for nought; and ye shall be redeemed without money."

Isaiah 52:4: "For thus saith the Lord GOD, My people went down aforetime into Egypt to sojourn there; and the Assyrian oppressed them without cause."

Isaiah 55:1: "Ho, every one that thirsteth, come ye to the waters, and he that hath no money; come ye, buy, and eat; yea, come, buy wine and milk without money and without price."

Jeremiah 2:15: "The young lions roared upon him, and yelled, and they made his land waste: his cities are burned without inhabitant."

Jeremiah 2:32: "Can a maid forget her ornaments, or a bride her attire? yet my people have forgotten me days without number."

Jeremiah 4:7: "The lion is come up from his thicket, and the destroyer of the Gentiles is on his way; he is gone forth from his place to make thy land desolate; and thy cities shall be laid waste, without an inhabitant."

Jeremiah 4:23: "I beheld the earth, and, lo, it was without form, and void; and the heavens, and they had no light."

Jeremiah 5:21: "Hear now this, O foolish people, and without understanding; which have eyes, and

see not; which have ears, and hear not:"

Jeremiah 9:11: "And I will make Jerusalem heaps, and a den of dragons; and I will make the cities of Judah desolate, without an inhabitant."

Jeremiah 9:21: "For death is come up into our windows, and is entered into our palaces, to cut off the children from without, and the young men from the streets."

Jeremiah 15:13: "Thy substance and thy treasures will I give to the spoil without price, and that for all thy sins, even in all thy borders."

Jeremiah 21:4: "Thus saith the LORD God of Israel; Behold, I will turn back the weapons of war that are in your hands, wherewith ye fight against the king of Babylon, and against the Chaldeans, which besiege you without the walls, and I will assemble them into the midst of this city."

Jeremiah 22:13: "Woe unto him that buildeth his house by unrighteousness, and his chambers by wrong; that useth his neighbour's service without wages, and giveth him not for his work;"

Jeremiah 26:9: "Why hast thou prophesied in the name of the LORD, saying, This house shall be like Shiloh, and this city shall be desolate without an inhabitant? And all the people were gathered against Jeremiah in the house of the LORD."

Jeremiah 32:43: "And fields shall be bought in this land, whereof ye say, It is desolate without man or beast; it is given into the hand of the Chaldeans."

Jeremiah 33:10: "Thus saith the LORD; Again there shall be heard in this place, which ye say shall be desolate without man and without beast, even in the cities of Judah, and in the streets of Jerusalem, that are desolate, without man, and without inhabitant, and without beast,"

Jeremiah 33:12: "Thus saith the LORD of hosts; Again in this place, which is desolate without man and without beast, and in all the cities thereof, shall be an habitation of shepherds causing their flocks to lie down."

Jeremiah 34:22: "Behold, I will command, saith the LORD, and cause them to return to this city; and they shall fight against it, and take it, and burn it with fire: and I will make the cities of Judah a desolation without an inhabitant."

Jeremiah 44:19: "And when we burned incense to the queen of heaven, and poured out drink offerings unto her, did we make her cakes to worship her, and pour out drink offerings unto her, without our men?"

Jeremiah 44:22: "So that the LORD could no longer bear, because of the evil of your doings, and because of the abominations which ye have committed; therefore is your land a desolation, and an astonishment, and a curse, without an inhabitant, as at this day."

Jeremiah 46:19: "O thou daughter dwelling in Egypt, furnish thyself to go into captivity: for Noph shall be waste and desolate without an inhabitant."

Jeremiah 48:9: "Give wings unto Moab, that it may flee and get away: for the cities thereof shall be desolate, without any to dwell therein."

Jeremiah 49:31: "Arise, get you up unto the wealthy nation, that dwelleth without care, saith the LORD, which have neither gates nor bars, which dwell alone."

Jeremiah 51:29: "And the land shall tremble and sorrow: for every purpose of the LORD shall be performed against Babylon, to make the land of Babylon a desolation without an inhabitant."

Jeremiah 51:37: "And Babylon shall become heaps, a dwellingplace for dragons, an astonishment, and an hissing, without an inhabitant."

Jeremiah 52:20: "The two pillars, one sea, and twelve brasen bulls that were under the bases, which king Solomon had made in the house of the LORD: the brass of all these vessels was without weight."

Lamentations 1:6: "And from the daughter of Zion all her beauty is departed: her princes are become like harts that find no pasture, and they are gone without strength before the pursuer."

Lamentations 3:49: "Mine eye trickleth down, and ceaseth not, without any intermission."

Lamentations 3:52: "Mine enemies chased me sore, like a bird, without cause."

Ezekiel 2:10: "And he spread it before me; and it was written within and without: and there was

written therein lamentations, and mourning, and woe."

Ezekiel 7:15: "The sword is without, and the pestilence and the famine within: he that is in the field shall die with the sword; and he that is in the city, famine and pestilence shall devour him."

Ezekiel 14:23: "And they shall comfort you, when ye see their ways and their doings: and ye shall know that I have not done without cause all that I have done in it, saith the Lord GOD."

Ezekiel 17:9: "Say thou, Thus saith the Lord GOD; Shall it prosper? shall he not pull up the roots thereof, and cut off the fruit thereof, that it wither? it shall wither in all the leaves of her spring, even without great power or many people to pluck it up by the roots thereof."

Ezekiel 33:15: "If the wicked restore the pledge, give again that he had robbed, walk in the statutes of life, without committing iniquity; he shall surely live, he shall not die."

Ezekiel 38:11: "And thou shalt say, I will go up to the land of unwalled villages; I will go to them that are at rest, that dwell safely, all of them dwelling without walls, and having neither bars nor gates,"

Ezekiel 40:19: "Then he measured the breadth from the forefront of the lower gate unto the forefront of the inner court without, an hundred cubits eastward and northward."

Ezekiel 40:40: "And at the side without, as one goeth up to the entry of the north gate, were two tables; and on the other side, which was at the porch of the gate, were two tables."

Ezekiel 40:44: "And without the inner gate were the chambers of the singers in the inner court, which was at the side of the north gate; and their prospect was toward the south: one at the side of the east gate having the prospect toward the north."

Ezekiel 41:9: "The thickness of the wall, which was for the side chamber without, was five cubits: and that which was left was the place of the side chambers that were within."

Ezekiel 41:17: "To that above the door, even unto the inner house, and without, and by all the wall round about within and without, by measure."

Ezekiel 41:25: "And there were made on them, on the doors of the temple, cherubims and palm trees, like as were made upon the walls; and there were thick planks upon the face of the porch without."

Ezekiel 42:7: "And the wall that was without over against the chambers, toward the utter court on the forepart of the chambers, the length thereof was fifty cubits."

Ezekiel 43:21: "Thou shalt take the bullock also of the sin offering, and he shall burn it in the appointed place of the house, without the sanctuary."

Ezekiel 43:22: "And on the second day thou shalt offer a kid of the goats without blemish for a sin offering; and they shall cleanse the altar, as they did cleanse it with the bullock."

Ezekiel 43:23: "When thou hast made an end of cleansing it, thou shalt offer a young bullock without blemish, and a ram out of the flock without blemish."

Ezekiel 43:25: "Seven days shalt thou prepare every day a goat for a sin offering: they shall also prepare a young bullock, and a ram out of the flock, without blemish."

Ezekiel 45:18: "Thus saith the Lord GOD; In the first month, in the first day of the month, thou shalt take a young bullock without blemish, and cleanse the sanctuary:"

Ezekiel 45:23: "And seven days of the feast he shall prepare a burnt offering to the LORD, seven bullocks and seven rams without blemish daily the seven days; and a kid of the goats daily for a sin offering."

Ezekiel 46:2: "And the prince shall enter by the way of the porch of that gate without, and shall stand by the post of the gate, and the priests shall prepare his burnt offering and his peace offerings, and he shall worship at the threshold of the gate: then he shall go forth; but the gate shall not be shut until the evening."

Ezekiel 46:4: "And the burnt offering that the prince shall offer unto the LORD in the sabbath day shall be six lambs without blemish, and a ram without blemish."

Ezekiel 46:6: "And in the day of the new moon it shall be a young bullock without blemish, and six lambs, and a ram: they shall be without blemish."

Ezekiel 46:13: "Thou shalt daily prepare a burnt offering unto the LORD of a lamb of the first year without blemish: thou shalt prepare it every morning."

Ezekiel 47:2: "Then brought he me out of the way of the gate northward, and led me about the way without unto the utter gate by the way that looketh eastward; and, behold, there ran out waters on the right side."

Daniel 2:34: "Thou sawest till that a stone was cut out without hands, which smote the image upon his feet that were of iron and clay, and brake them to pieces."

Daniel 2:45: "Forasmuch as thou sawest that the stone was cut out of the mountain without hands, and that it brake in pieces the iron, the brass, the clay, the silver, and the gold; the great God hath made known to the king what shall come to pass hereafter: and the dream is certain, and the interpretation thereof sure."

Daniel 8:25: "And through his policy also he shall cause craft to prosper in his hand; and he shall magnify himself in his heart, and by peace shall destroy many: he shall also stand up against the Prince of princes; but he shall be broken without hand."

Daniel 11:18: "After this shall he turn his face unto the isles, and shall take many: but a prince for his own behalf shall cause the reproach offered by him to cease; without his own reproach he shall cause it to turn upon him."

Hosea 3:4: "For the children of Israel shall abide many days without a king, and without a prince, and without a sacrifice, and without an image, and without an ephod, and without teraphim:"

Hosea 7:1: "When I would have healed Israel, then the iniquity of Ephraim was discovered, and the wickedness of Samaria: for they commit falsehood; and the thief cometh in, and the troop of robbers spoileth without."

Hosea 7:11: "Ephraim also is like a silly dove without heart: they call to Egypt, they go to Assyria."

Joel 1:6: "For a nation is come up upon my land, strong, and without number, whose teeth are the teeth of a lion, and he hath the cheek teeth of a great lion."

Zechariah 2:4: "And said unto him, Run, speak to this young man, saying, Jerusalem shall be inhabited as towns without walls for the multitude of men and cattle therein:"

Matthew 5:22: "But I say unto you, That whosoever is angry with his brother without a cause shall be in danger of the judgment: and whosoever shall say to his brother, Raca, shall be in danger of the council: but whosoever shall say, Thou fool, shall be in danger of hell fire."

Matthew 10:29: "Are not two sparrows sold for a farthing? and one of them shall not fall on the ground without your Father."

Matthew 12:46: "While he yet talked to the people, behold, his mother and his brethren stood without, desiring to speak with him."

Matthew 12:47: "Then one said unto him, Behold, thy mother and thy brethren stand without, desiring to speak with thee."

Matthew 13:34: "All these things spake Jesus unto the multitude in parables; and without a parable spake he not unto them:"

Matthew 13:57: "And they were offended in him. But Jesus said unto them, A prophet is not without honour, save in his own country, and in his own house."

Matthew 15:16: "And Jesus said, Are ye also yet without understanding?"

Matthew 26:69: "Now Peter sat without in the palace: and a damsel came unto him, saying, Thou also wast with Jesus of Galilee."

Mark 1:45: "But he went out, and began to publish it much, and to blaze abroad the matter, insomuch that Jesus could no more openly enter into the city, but was without in desert places: and they came to him from every quarter."

Mark 3:31: "There came then his brethren and his mother, and, standing without, sent unto him, calling him."

Mark 3:32: "And the multitude sat about him, and they said unto him, Behold, thy mother and thy brethren without seek for thee."

Mark 4:11: "And he said unto them, Unto you it is given to know the mystery of the kingdom of God: but unto them that are without, all these things are done in parables:"

Mark 4:34: "But without a parable spake he not unto them: and when they were alone, he expounded all things to his disciples."

Mark 6:4: "But Jesus, said unto them, A prophet is not without honour, but in his own country, and among his own kin, and in his own house."

Mark 7:15: "There is nothing from without a man, that entering into him can defile him: but the things which come out of him, those are they that defile the man."

Mark 7:18: "And he saith unto them, Are ye so without understanding also? Do ye not perceive, that whatsoever thing from without entereth into the man, it cannot defile him;"

Mark 11:4: "And they went their way, and found the colt tied by the door without in a place where two ways met; and they loose him."

Mark 14:58: "We heard him say, I will destroy this temple that is made with hands, and within three days I will build another made without hands."

Luke 1:10: "And the whole multitude of the people were praying without at the time of incense."

Luke 1:74: "That he would grant unto us, that we being delivered out of the hand of our enemies might serve him without fear,"

Luke 6:49: "But he that heareth, and doeth not, is like a man that without a foundation built an house upon the earth; against which the stream did beat vehemently, and immediately it fell; and the ruin of that house was great."

Luke 8:20: "And it was told him by certain which said, Thy mother and thy brethren stand without, desiring to see thee."

Luke 11:40: "Ye fools, did not he that made that which is without make that which is within also?"

Luke 13:25: "When once the master of the house is risen up, and hath shut to the door, and ye begin to stand without, and to knock at the door, saying, Lord, Lord, open unto us; and he shall answer and say unto you, I know you not whence ye are:"

Luke 20:28: "Saying, Master, Moses wrote unto us, If any man's brother die, having a wife, and he die without children, that his brother should take his wife, and raise up seed unto his brother."

Luke 20:29: "There were therefore seven brethren: and the first took a wife, and died without children."

Luke 22:35: "And he said unto them, When I sent you without purse, and scrip, and shoes, lacked ye any thing? And they said, Nothing."

John 1:3: "All things were made by him; and without him was not any thing made that was made."

John 8:7: "So when they continued asking him, he lifted up himself, and said unto them, He that is without sin among you, let him first cast a stone at her."

John 15:5: "I am the vine, ye are the branches: He that abideth in me, and I in him, the same bringeth forth much fruit: for without me ye can do nothing."

John 15:25: "But this cometh to pass, that the word might be fulfilled that is written in their law, They hated me without a cause."

John 18:16: "But Peter stood at the door without. Then went out that other disciple, which was known unto the high priest, and spake unto her that kept the door, and brought in Peter."

John 19:23: "Then the soldiers, when they had crucified Jesus, took his garments, and made four parts, to every soldier a part; and also his coat: now the coat was without seam, woven from the top throughout."

John 20:11: "But Mary stood without at the sepulchre weeping: and as she wept, she stooped down, and looked into the sepulchre,"

Acts 5:23: "Saying, The prison truly found we shut with all safety, and the keepers standing without before the doors: but when we had opened, we found no man within."

Acts 5:26: "Then went the captain with the officers, and brought them without violence: for they feared the people, lest they should have been stoned."

Acts 9:9: "And he was three days without sight, and neither did eat nor drink."

Acts 10:29: "Therefore came I unto you without gainsaying, as soon as I was sent for: I ask therefore for what intent ye have sent for me?"

Acts 12:5: "Peter therefore was kept in prison: but prayer was made without ceasing of the church unto God for him."

Acts 14:17: "Nevertheless he left not himself without witness, in that he did good, and gave us rain from heaven, and fruitful seasons, filling our hearts with food and gladness."

Acts 25:17: "Therefore, when they were come hither, without any delay on the morrow I sat on the judgment seat, and commanded the man to be brought forth."

Romans 1:9: "For God is my witness, whom I serve with my spirit in the gospel of his Son, that without ceasing I make mention of you always in my prayers;"

Romans 1:20: "For the invisible things of him from the creation of the world are clearly seen, being understood by the things that are made, even his eternal power and Godhead; so that they are without excuse:"

Romans 1:31: "Without understanding, covenantbreakers, without natural affection, implacable, unmerciful:"

Romans 2:12: "For as many as have sinned without law shall also perish without law: and as many as have sinned in the law shall be judged by the law;"

Romans 3:3: "For what if some did not believe? shall their unbelief make the faith of God without effect?"

Romans 3:21: "But now the righteousness of God without the law is manifested, being witnessed by the law and the prophets;"

Romans 3:28: "Therefore we conclude that a man is justified by faith without the deeds of the law."

Romans 4:6: "Even as David also describeth the blessedness of the man, unto whom God imputeth righteousness without works,"

Romans 5:6: "For when we were yet without strength, in due time Christ died for the ungodly."

Romans 7:8: "But sin, taking occasion by the commandment, wrought in me all manner of concupiscence. For without the law sin was dead."

Romans 7:9: "For I was alive without the law once: but when the commandment came, sin revived, and I died."

Romans 10:14: "How then shall they call on him in whom they have not believed? and how shall they believe in him of whom they have not heard? and how shall they hear without a preacher?"

Romans 11:29: "For the gifts and calling of God are without repentance."

Romans 12:9: "Let love be without dissimulation. Abhor that which is evil; cleave to that which is good."

1 Corinthians 4:8: "Now ye are full, now ye are rich, ye have reigned as kings without us: and I would to God ye did reign, that we also might reign with you."

1 Corinthians 5:12: "For what have I to do to judge them also that are without? do not ye judge them that are within?"

1 Corinthians 5:13: "But them that are without God judgeth. Therefore put away from among yourselves that wicked person."

1 Corinthians 6:18: "Flee fornication. Every sin that a man doeth is without the body; but he that committeth fornication sinneth against his own body."

1 Corinthians 7:32: "But I would have you without carefulness. He that is unmarried careth for the things that belong to the Lord, how he may please the Lord:"

1 Corinthians 7:35: "And this I speak for your own profit; not that I may cast a snare upon you, but for that which is comely, and that ye may attend upon the Lord without distraction."

1 Corinthians 9:18: "What is my reward then? Verily that, when I preach the gospel, I may make the gospel of Christ without charge, that I abuse not my power in the gospel."

1 Corinthians 9:21: "To them that are without law, as without law, (being not without law to God,

but under the law to Christ,) that I might gain them that are without law."

1 Corinthians 11:11: "Nevertheless neither is the man without the woman, neither the woman without the man, in the Lord."

1 Corinthians 14:7: "And even things without life giving sound, whether pipe or harp, except they give a distinction in the sounds, how shall it be known what is piped or harped?"

1 Corinthians 14:10: "There are, it may be, so many kinds of voices in the world, and none of them is without signification."

1 Corinthians 16:10: "Now if Timotheus come, see that he may be with you without fear: for he worketh the work of the Lord, as I also do."

2 Corinthians 7:5: "For, when we were come into Macedonia, our flesh had no rest, but we were troubled on every side; without were fightings, within were fears."

2 Corinthians 10:13: "But we will not boast of things without our measure, but according to the measure of the rule which God hath distributed to us, a measure to reach even unto you."

2 Corinthians 10:15: "Not boasting of things without our measure, that is, of other men's labours; but having hope, when your faith is increased, that we shall be enlarged by you according to our rule abundantly,"

2 Corinthians 11:28: "Beside those things that are without, that which cometh upon me daily, the care of all the churches."

Ephesians 1:4: "According as he hath chosen us in him before the foundation of the world, that we should be holy and without blame before him in love:"

Ephesians 2:12: "That at that time ye were without Christ, being aliens from the commonwealth of Israel, and strangers from the covenants of promise, having no hope, and without God in the world:"

Ephesians 3:21: "Unto him be glory in the church by Christ Jesus throughout all ages, world without end. Amen."

Ephesians 5:27: "That he might present it to himself a glorious church, not having spot, or wrinkle, or any such thing; but that it should be holy and without blemish."

Philippians 1:10: "That ye may approve things that are excellent; that ye may be sincere and without offence till the day of Christ."

Philippians 1:14: "And many of the brethren in the Lord, waxing confident by my bonds, are much more bold to speak the word without fear."

Philippians 2:14: "Do all things without murmurings and disputings:"

Philippians 2:15: "That ye may be blameless and harmless, the sons of God, without rebuke, in the midst of a crooked and perverse nation, among whom ye shine as lights in the world;"

Colossians 2:11: "In whom also ye are circumcised with the circumcision made without hands, in putting off the body of the sins of the flesh by the circumcision of Christ:"

Colossians 4:5: "Walk in wisdom toward them that are without, redeeming the time."

1 Thessalonians 1:3: "Remembering without ceasing your work of faith, and labour of love, and patience of hope in our Lord Jesus Christ, in the sight of God and our Father;"

1 Thessalonians 2:13: "For this cause also thank we God without ceasing, because, when ye received the word of God which ye heard of us, ye received it not as the word of men, but as it is in truth, the word of God, which effectually worketh also in you that believe."

1 Thessalonians 4:12: "That ye may walk honestly toward them that are without, and that ye may have lack of nothing."

1 Thessalonians 5:17: "Pray without ceasing."

1 Timothy 2:8: "I will therefore that men pray every where, lifting up holy hands, without wrath and doubting."

1 Timothy 3:7: "Moreover he must have a good report of them which are without; lest he fall into reproach and the snare of the devil."

1 Timothy 3:16: "And without controversy great is the mystery of godliness: God was manifest in the flesh, justified in the Spirit, seen of angels, preached unto the Gentiles, believed on in the world,

received up into glory."

1 Timothy 5:21: "I charge thee before God, and the Lord Jesus Christ, and the elect angels, that thou observe these things without preferring one before another, doing nothing by partiality."

1 Timothy 6:14: "That thou keep this commandment without spot, unrebukable, until the appearing of our Lord Jesus Christ:"

2 Timothy 1:3: "I thank God, whom I serve from my forefathers with pure conscience, that without ceasing I have remembrance of thee in my prayers night and day;"

2 Timothy 3:3: "Without natural affection, trucebreakers, false accusers, incontinent, fierce, despisers of those that are good,"

Philemon 1:14: "But without thy mind would I do nothing; that thy benefit should not be as it were of necessity, but willingly."

Hebrews 4:15: "For we have not an high priest which cannot be touched with the feeling of our infirmities; but was in all points tempted like as we are, yet without sin."

Hebrews 7:3: "Without father, without mother, without descent, having neither beginning of days, nor end of life; but made like unto the Son of God; abideth a priest continually."

Hebrews 7:7: "And without all contradiction the less is blessed of the better."

Hebrews 7:20: "And inasmuch as not without an oath he was made priest:"

Hebrews 7:21: "(For those priests were made without an oath; but this with an oath by him that said unto him, The Lord sware and will not repent, Thou art a priest for ever after the order of Melchisedec:)"

Hebrews 9:7: "But into the second went the high priest alone once every year, not without blood, which he offered for himself, and for the errors of the people:"

Hebrews 9:14: "How much more shall the blood of Christ, who through the eternal Spirit offered himself without spot to God, purge your conscience from dead works to serve the living God?"

Hebrews 9:18: "Whereupon neither the first testament was dedicated without blood."

Hebrews 9:22: "And almost all things are by the law purged with blood; and without shedding of blood is no remission."

Hebrews 9:28: "So Christ was once offered to bear the sins of many; and unto them that look for him shall he appear the second time without sin unto salvation."

Hebrews 10:23: "Let us hold fast the profession of our faith without wavering; (for he is faithful that promised;)"

Hebrews 10:28: "He that despised Moses' law died without mercy under two or three witnesses:"

Hebrews 11:6: "But without faith it is impossible to please him: for he that cometh to God must believe that he is, and that he is a rewarder of them that diligently seek him."

Hebrews 11:40: "God having provided some better thing for us, that they without us should not be made perfect."

Hebrews 12:8: "But if ye be without chastisement, whereof all are partakers, then are ye bastards, and not sons."

Hebrews 12:14: "Follow peace with all men, and holiness, without which no man shall see the Lord:"

Hebrews 13:5: "Let your conversation be without covetousness; and be content with such things as ye have: for he hath said, I will never leave thee, nor forsake thee."

Hebrews 13:11: "For the bodies of those beasts, whose blood is brought into the sanctuary by the high priest for sin, are burned without the camp."

Hebrews 13:12: "Wherefore Jesus also, that he might sanctify the people with his own blood, suffered without the gate."

Hebrews 13:13: "Let us go forth therefore unto him without the camp, bearing his reproach."

James 2:13: "For he shall have judgment without mercy, that hath shewed no mercy; and mercy rejoiceth against judgment."

James 2:18: "Yea, a man may say, Thou hast faith, and I have works: shew me thy faith without thy



works, and I will shew thee my faith by my works."

James 2:20: "But wilt thou know, O vain man, that faith without works is dead?"

James 2:26: "For as the body without the spirit is dead, so faith without works is dead also."

James 3:17: "But the wisdom that is from above is first pure, then peaceable, gentle, and easy to be intreated, full of mercy and good fruits, without partiality, and without hypocrisy."

1 Peter 1:17: "And if ye call on the Father, who without respect of persons judgeth according to every man's work, pass the time of your sojourning here in fear:"

1 Peter 1:19: "But with the precious blood of Christ, as of a lamb without blemish and without spot:"

1 Peter 3:1: "Likewise, ye wives, be in subjection to your own husbands; that, if any obey not the word, they also may without the word be won by the conversation of the wives;"

1 Peter 4:9: "Use hospitality one to another without grudging."

2 Peter 2:17: "These are wells without water, clouds that are carried with a tempest; to whom the mist of darkness is reserved for ever."

2 Peter 3:14: "Wherefore, beloved, seeing that ye look for such things, be diligent that ye may be found of him in peace, without spot, and blameless."

Jude 1:12: "These are spots in your feasts of charity, when they feast with you, feeding themselves without fear: clouds they are without water, carried about of winds; trees whose fruit withereth, without fruit, twice dead, plucked up by the roots;"

Revelation 11:2: "But the court which is without the temple leave out, and measure it not; for it is given unto the Gentiles: and the holy city shall they tread under foot forty and two months."

Revelation 14:5: "And in their mouth was found no guile: for they are without fault before the throne of God."

Revelation 14:10: "The same shall drink of the wine of the wrath of God, which is poured out without mixture into the cup of his indignation; and he shall be tormented with fire and brimstone in the presence of the holy angels, and in the presence of the Lamb:"

Revelation 14:20: "And the winepress was trodden without the city, and blood came out of the winepress, even unto the horse bridles, by the space of a thousand and six hundred furlongs."

Revelation 22:15: "For without are dogs, and sorcerers, and whoremongers, and murderers, and idolaters, and whosoever loveth and maketh a lie."

## **WITHS**

Occurrences: 3

Judges 16:7: "And Samson said unto her, If they bind me with seven green withs that were never dried, then shall I be weak, and be as another man."

Judges 16:8: "Then the lords of the Philistines brought up to her seven green withs which had not been dried, and she bound him with them."

Judges 16:9: "Now there were men lying in wait, abiding with her in the chamber. And she said unto him, The Philistines be upon thee, Samson. And he brake the withs, as a thread of tow is broken when it toucheth the fire. So his strength was not known."

## **WITHSTAND**

Occurrences: 9

Numbers 22:32: "And the angel of the LORD said unto him, Wherefore hast thou smitten thine ass these three times? behold, I went out to withstand thee, because thy way is perverse before me:"

2 Chronicles 13:7: "And there are gathered unto him vain men, the children of Belial, and have strengthened themselves against Rehoboam the son of Solomon, when Rehoboam was young and tenderhearted, and could not withstand them."

2 Chronicles 13:8: "And now ye think to withstand the kingdom of the LORD in the hand of the

sons of David; and ye be a great multitude, and there are with your golden calves, which Jeroboam made you for gods."

2 Chronicles 20:6: "And said, O LORD God of our fathers, art not thou God in heaven? and rulest not thou over all the kingdoms of the heathen? and in thine hand is there not power and might, so that none is able to withstand thee?"

Esther 9:2: "The Jews gathered themselves together in their cities throughout all the provinces of the king Ahasuerus, to lay hand on such as sought their hurt: and no man could withstand them; for the fear of them fell upon all people."

Ecclesiastes 4:12: "And if one prevail against him, two shall withstand him; and a threefold cord is not quickly broken."

Daniel 11:15: "So the king of the north shall come, and cast up a mount, and take the most fenced cities: and the arms of the south shall not withstand, neither his chosen people, neither shall there be any strength to withstand."

Acts 11:17: "Forasmuch then as God gave them the like gift as he did unto us, who believed on the Lord Jesus Christ; what was I, that I could withstand God?"

Ephesians 6:13: "Wherefore take unto you the whole armour of God, that ye may be able to withstand in the evil day, and having done all, to stand."

## **WITHSTOOD**

Occurrences: 6

2 Chronicles 26:18: "And they withstood Uzziah the king, and said unto him, It appertaineth not unto thee, Uzziah, to burn incense unto the LORD, but to the priests the sons of Aaron, that are consecrated to burn incense: go out of the sanctuary; for thou hast trespassed; neither shall it be for thine honour from the LORD God."

Daniel 10:13: "But the prince of the kingdom of Persia withstood me one and twenty days: but, lo, Michael, one of the chief princes, came to help me; and I remained there with the kings of Persia."

Acts 13:8: "But Elymas the sorcerer (for so is his name by interpretation) withstood them, seeking to turn away the deputy from the faith."

Galatians 2:11: "But when Peter was come to Antioch, I withstood him to the face, because he was to be blamed."

2 Timothy 3:8: "Now as Jannes and Jambres withstood Moses, so do these also resist the truth: men of corrupt minds, reprobate concerning the faith."

2 Timothy 4:15: "Of whom be thou ware also; for he hath greatly withstood our words."

## **WITNESS**

Occurrences: 119

Genesis 21:30: "And he said, For these seven ewe lambs shalt thou take of my hand, that they may be a witness unto me, that I have digged this well."

Genesis 31:44: "Now therefore come thou, let us make a covenant, I and thou; and let it be for a witness between me and thee."

Genesis 31:48: "And Laban said, This heap is a witness between me and thee this day. Therefore was the name of it called Galeed;"

Genesis 31:50: "If thou shalt afflict my daughters, or if thou shalt take other wives beside my daughters, no man is with us; see, God is witness betwixt me and thee."

Genesis 31:52: "This heap be witness, and this pillar be witness, that I will not pass over this heap to thee, and that thou shalt not pass over this heap and this pillar unto me, for harm."

Exodus 20:16: "Thou shalt not bear false witness against thy neighbour."

Exodus 22:13: "If it be torn in pieces, then let him bring it for witness, and he shall not make good that which was torn."

Exodus 23:1: "Thou shalt not raise a false report: put not thine hand with the wicked to be an unrighteous witness."

Leviticus 5:1: "And if a soul sin, and hear the voice of swearing, and is a witness, whether he hath seen or known of it; if he do not utter it, then he shall bear his iniquity."

Numbers 5:13: "And a man lie with her carnally, and it be hid from the eyes of her husband, and be kept close, and she be defiled, and there be no witness against her, neither she be taken with the manner;"

Numbers 17:7: "And Moses laid up the rods before the LORD in the tabernacle of witness."

Numbers 17:8: "And it came to pass, that on the morrow Moses went into the tabernacle of witness; and, behold, the rod of Aaron for the house of Levi was budded, and brought forth buds, and bloomed blossoms, and yielded almonds."

Numbers 18:2: "And thy brethren also of the tribe of Levi, the tribe of thy father, bring thou with thee, that they may be joined unto thee, and minister unto thee: but thou and thy sons with thee shall minister before the tabernacle of witness."

Numbers 35:30: "Whoso killeth any person, the murderer shall be put to death by the mouth of witnesses: but one witness shall not testify against any person to cause him to die."

Deuteronomy 4:26: "I call heaven and earth to witness against you this day, that ye shall soon utterly perish from off the land whereunto ye go over Jordan to possess it; ye shall not prolong your days upon it, but shall utterly be destroyed."

Deuteronomy 5:20: "Neither shalt thou bear false witness against thy neighbour."

Deuteronomy 17:6: "At the mouth of two witnesses, or three witnesses, shall he that is worthy of death be put to death; but at the mouth of one witness he shall not be put to death."

Deuteronomy 19:15: "One witness shall not rise up against a man for any iniquity, or for any sin, in any sin that he sinneth: at the mouth of two witnesses, or at the mouth of three witnesses, shall the matter be established."

Deuteronomy 19:16: "If a false witness rise up against any man to testify against him that which is wrong;"

Deuteronomy 19:18: "And the judges shall make diligent inquisition: and, behold, if the witness be a false witness, and hath testified falsely against his brother;"

Deuteronomy 31:19: "Now therefore write ye this song for you, and teach it the children of Israel: put it in their mouths, that this song may be a witness for me against the children of Israel."

Deuteronomy 31:21: "And it shall come to pass, when many evils and troubles are befallen them, that this song shall testify against them as a witness; for it shall not be forgotten out of the mouths of their seed: for I know their imagination which they go about, even now, before I have brought them into the land which I swear."

Deuteronomy 31:26: "Take this book of the law, and put it in the side of the ark of the covenant of the LORD your God, that it may be there for a witness against thee."

Joshua 22:27: "But that it may be a witness between us, and you, and our generations after us, that we might do the service of the LORD before him with our burnt offerings, and with our sacrifices, and with our peace offerings; that your children may not say to our children in time to come, Ye have no part in the LORD."

Joshua 22:28: "Therefore said we, that it shall be, when they should so say to us or to our generations in time to come, that we may say again, Behold the pattern of the altar of the LORD, which our fathers made, not for burnt offerings, nor for sacrifices; but it is a witness between us and you."

Joshua 22:34: "And the children of Reuben and the children of Gad called the altar Ed: for it shall be a witness between us that the LORD is God."

Joshua 24:27: "And Joshua said unto all the people, Behold, this stone shall be a witness unto us; for it hath heard all the words of the LORD which he spake unto us: it shall be therefore a witness unto you, lest ye deny your God."

Judges 11:10: "And the elders of Gilead said unto Jephthah, The LORD be witness between us, if we do not so according to thy words."

1 Samuel 12:3: "Behold, here I am: witness against me before the LORD, and before his anointed: whose ox have I taken? or whose ass have I taken? or whom have I defrauded? whom have I oppressed? or of whose hand have I received any bribe to blind mine eyes therewith? and I will restore it you."

1 Samuel 12:5: "And he said unto them, The LORD is witness against you, and his anointed is witness this day, that ye have not found ought in my hand. And they answered, He is witness."

1 Kings 21:10: "And set two men, sons of Belial, before him, to bear witness against him, saying, Thou didst blaspheme God and the king. And then carry him out, and stone him, that he may die."

2 Chronicles 24:6: "And the king called for Jehoiada the chief, and said unto him, Why hast thou not required of the Levites to bring in out of Judah and out of Jerusalem the collection, according to the commandment of Moses the servant of the LORD, and of the congregation of Israel, for the tabernacle of witness?"

Job 16:8: "And thou hast filled me with wrinkles, which is a witness against me: and my leanness rising up in me beareth witness to my face."

Job 16:19: "Also now, behold, my witness is in heaven, and my record is on high."

Job 29:11: "When the ear heard me, then it blessed me; and when the eye saw me, it gave witness to me:"

Psalms 89:37: "It shall be established for ever as the moon, and as a faithful witness in heaven. Selah."

Proverbs 6:19: "A false witness that speaketh lies, and he that soweth discord among brethren."

Proverbs 12:17: "He that speaketh truth sheweth forth righteousness: but a false witness deceit."

Proverbs 14:5: "A faithful witness will not lie: but a false witness will utter lies."

Proverbs 14:25: "A true witness delivereth souls: but a deceitful witness speaketh lies."

Proverbs 19:5: "A false witness shall not be unpunished, and he that speaketh lies shall not escape."

Proverbs 19:9: "A false witness shall not be unpunished, and he that speaketh lies shall perish."

Proverbs 19:28: "An ungodly witness scorneth judgment: and the mouth of the wicked devoureth iniquity."

Proverbs 21:28: "A false witness shall perish: but the man that heareth speaketh constantly."

Proverbs 24:28: "Be not a witness against thy neighbour without cause; and deceive not with thy lips."

Proverbs 25:18: "A man that beareth false witness against his neighbour is a maul, and a sword, and a sharp arrow."

Isaiah 3:9: "The shew of their countenance doth witness against them; and they declare their sin as Sodom, they hide it not. Woe unto their soul! for they have rewarded evil unto themselves."

Isaiah 19:20: "And it shall be for a sign and for a witness unto the LORD of hosts in the land of Egypt: for they shall cry unto the LORD because of the oppressors, and he shall send them a saviour, and a great one, and he shall deliver them."

Isaiah 55:4: "Behold, I have given him for a witness to the people, a leader and commander to the people."

Jeremiah 29:23: "Because they have committed villany in Israel, and have committed adultery with their neighbours' wives, and have spoken lying words in my name, which I have not commanded them; even I know, and am a witness, saith the LORD."

Jeremiah 42:5: "Then they said to Jeremiah, The LORD be a true and faithful witness between us, if we do not even according to all things for the which the LORD thy God shall send thee to us."

Lamentations 2:13: "What thing shall I take to witness for thee? what thing shall I liken to thee, O daughter of Jerusalem? what shall I equal to thee, that I may comfort thee, O virgin daughter of Zion? for thy breach is great like the sea: who can heal thee?"

Micah 1:2: "Hear, all ye people; hearken, O earth, and all that therein is: and let the Lord GOD be

witness against you, the LORD from his holy temple."

Malachi 2:14: "Yet ye say, Wherefore? Because the LORD hath been witness between thee and the wife of thy youth, against whom thou hast dealt treacherously: yet is she thy companion, and the wife of thy covenant."

Malachi 3:5: "And I will come near to you to judgment; and I will be a swift witness against the sorcerers, and against the adulterers, and against false swearers, and against those that oppress the hireling in his wages, the widow, and the fatherless, and that turn aside the stranger from his right, and fear not me, saith the LORD of hosts."

Matthew 15:19: "For out of the heart proceed evil thoughts, murders, adulteries, fornications, thefts, false witness, blasphemies:"

Matthew 19:18: "He saith unto him, Which? Jesus said, Thou shalt do no murder, Thou shalt not commit adultery, Thou shalt not steal, Thou shalt not bear false witness,"

Matthew 24:14: "And this gospel of the kingdom shall be preached in all the world for a witness unto all nations; and then shall the end come."

Matthew 26:59: "Now the chief priests, and elders, and all the council, sought false witness against Jesus, to put him to death;"

Matthew 26:62: "And the high priest arose, and said unto him, Answerest thou nothing? what is it which these witness against thee?"

Matthew 27:13: "Then said Pilate unto him, Hearest thou not how many things they witness against thee?"

Mark 10:19: "Thou knowest the commandments, Do not commit adultery, Do not kill, Do not steal, Do not bear false witness, Defraud not, Honour thy father and mother."

Mark 14:55: "And the chief priests and all the council sought for witness against Jesus to put him to death; and found none."

Mark 14:56: "For many bare false witness against him, but their witness agreed not together."

Mark 14:57: "And there arose certain, and bare false witness against him, saying,"

Mark 14:59: "But neither so did their witness agree together."

Mark 14:60: "And the high priest stood up in the midst, and asked Jesus, saying, Answerest thou nothing? what is it which these witness against thee?"

Mark 15:4: "And Pilate asked him again, saying, Answerest thou nothing? behold how many things they witness against thee."

Luke 4:22: "And all bare him witness, and wondered at the gracious words which proceeded out of his mouth. And they said, Is not this Joseph's son?"

Luke 11:48: "Truly ye bear witness that ye allow the deeds of your fathers: for they indeed killed them, and ye build their sepulchres."

Luke 18:20: "Thou knowest the commandments, Do not commit adultery, Do not kill, Do not steal, Do not bear false witness, Honour thy father and thy mother."

Luke 22:71: "And they said, What need we any further witness? for we ourselves have heard of his own mouth."

John 1:7: "The same came for a witness, to bear witness of the Light, that all men through him might believe."

John 1:8: "He was not that Light, but was sent to bear witness of that Light."

John 1:15: "John bare witness of him, and cried, saying, This was he of whom I spake, He that cometh after me is preferred before me: for he was before me."

John 3:11: "Verily, verily, I say unto thee, We speak that we do know, and testify that we have seen; and ye receive not our witness."

John 3:26: "And they came unto John, and said unto him, Rabbi, he that was with thee beyond Jordan, to whom thou barest witness, behold, the same baptizeth, and all men come to him."

John 3:28: "Ye yourselves bear me witness, that I said, I am not the Christ, but that I am sent before him."

John 5:31: "If I bear witness of myself, my witness is not true."

John 5:32: "There is another that beareth witness of me; and I know that the witness which he witnesseth of me is true."

John 5:33: "Ye sent unto John, and he bare witness unto the truth."

John 5:36: "But I have greater witness than that of John: for the works which the Father hath given me to finish, the same works that I do, bear witness of me, that the Father hath sent me."

John 5:37: "And the Father himself, which hath sent me, hath borne witness of me. Ye have neither heard his voice at any time, nor seen his shape."

John 8:18: "I am one that bear witness of myself, and the Father that sent me beareth witness of me."

John 10:25: "Jesus answered them, I told you, and ye believed not: the works that I do in my Father's name, they bear witness of me."

John 15:27: "And ye also shall bear witness, because ye have been with me from the beginning."

John 18:23: "Jesus answered him, If I have spoken evil, bear witness of the evil: but if well, why smitest thou me?"

John 18:37: "Pilate therefore said unto him, Art thou a king then? Jesus answered, Thou sayest that I am a king. To this end was I born, and for this cause came I into the world, that I should bear witness unto the truth. Every one that is of the truth heareth my voice."

Acts 1:22: "Beginning from the baptism of John, unto that same day that he was taken up from us, must one be ordained to be a witness with us of his resurrection."

Acts 4:33: "And with great power gave the apostles witness of the resurrection of the Lord Jesus: and great grace was upon them all."

Acts 7:44: "Our fathers had the tabernacle of witness in the wilderness, as he had appointed, speaking unto Moses, that he should make it according to the fashion that he had seen."

Acts 10:43: "To him give all the prophets witness, that through his name whosoever believeth in him shall receive remission of sins."

Acts 14:17: "Nevertheless he left not himself without witness, in that he did good, and gave us rain from heaven, and fruitful seasons, filling our hearts with food and gladness."

Acts 15:8: "And God, which knoweth the hearts, bare them witness, giving them the Holy Ghost, even as he did unto us;"

Acts 22:5: "As also the high priest doth bear me witness, and all the estate of the elders: from whom also I received letters unto the brethren, and went to Damascus, to bring them which were there bound unto Jerusalem, for to be punished."

Acts 22:15: "For thou shalt be his witness unto all men of what thou hast seen and heard."

Acts 23:11: "And the night following the Lord stood by him, and said, Be of good cheer, Paul: for as thou hast testified of me in Jerusalem, so must thou bear witness also at Rome."

Acts 26:16: "But rise, and stand upon thy feet: for I have appeared unto thee for this purpose, to make thee a minister and a witness both of these things which thou hast seen, and of those things in the which I will appear unto thee;"

Romans 1:9: "For God is my witness, whom I serve with my spirit in the gospel of his Son, that without ceasing I make mention of you always in my prayers;"

Romans 2:15: "Which shew the work of the law written in their hearts, their conscience also bearing witness, and their thoughts the mean while accusing or else excusing one another;)"

Romans 8:16: "The Spirit itself beareth witness with our spirit, that we are the children of God:"

Romans 9:1: "I say the truth in Christ, I lie not, my conscience also bearing me witness in the Holy Ghost,"

Romans 13:9: "For this, Thou shalt not commit adultery, Thou shalt not kill, Thou shalt not steal, Thou shalt not bear false witness, Thou shalt not covet; and if there be any other commandment, it is briefly comprehended in this saying, namely, Thou shalt love thy neighbour as thyself."

1 Thessalonians 2:5: "For neither at any time used we flattering words, as ye know, nor a cloke of

covetousness; God is witness:"

Titus 1:13: "This witness is true. Wherefore rebuke them sharply, that they may be sound in the faith;"

Hebrews 2:4: "God also bearing them witness, both with signs and wonders, and with divers miracles, and gifts of the Holy Ghost, according to his own will?"

Hebrews 10:15: "Whereof the Holy Ghost also is a witness to us: for after that he had said before,"

Hebrews 11:4: "By faith Abel offered unto God a more excellent sacrifice than Cain, by which he obtained witness that he was righteous, God testifying of his gifts: and by it he being dead yet speaketh."

James 5:3: "Your gold and silver is cankered; and the rust of them shall be a witness against you, and shall eat your flesh as it were fire. Ye have heaped treasure together for the last days."

1 Peter 5:1: "The elders which are among you I exhort, who am also an elder, and a witness of the sufferings of Christ, and also a partaker of the glory that shall be revealed:"

1 John 1:2: "(For the life was manifested, and we have seen it, and bear witness, and shew unto you that eternal life, which was with the Father, and was manifested unto us;)"

1 John 5:6: "This is he that came by water and blood, even Jesus Christ; not by water only, but by water and blood. And it is the Spirit that beareth witness, because the Spirit is truth."

1 John 5:8: "And there are three that bear witness in earth, the Spirit, and the water, and the blood: and these three agree in one."

1 John 5:9: "If we receive the witness of men, the witness of God is greater: for this is the witness of God which he hath testified of his Son."

1 John 5:10: "He that believeth on the Son of God hath the witness in himself: he that believeth not God hath made him a liar; because he believeth not the record that God gave of his Son."

3 John 1:6: "Which have borne witness of thy charity before the church: whom if thou bring forward on their journey after a godly sort, thou shalt do well:"

Revelation 1:5: "And from Jesus Christ, who is the faithful witness, and the first begotten of the dead, and the prince of the kings of the earth. Unto him that loved us, and washed us from our sins in his own blood,"

Revelation 3:14: "And unto the angel of the church of the Laodiceans write; These things saith the Amen, the faithful and true witness, the beginning of the creation of God;"

Revelation 20:4: "And I saw thrones, and they sat upon them, and judgment was given unto them: and I saw the souls of them that were beheaded for the witness of Jesus, and for the word of God, and which had not worshipped the beast, neither his image, neither had received his mark upon their foreheads, or in their hands; and they lived and reigned with Christ a thousand years."

## WITNESSED

Occurrences: 4

1 Kings 21:13: "And there came in two men, children of Belial, and sat before him: and the men of Belial witnessed against him, even against Naboth, in the presence of the people, saying, Naboth did blaspheme God and the king. Then they carried him forth out of the city, and stoned him with stones, that he died."

Romans 3:21: "But now the righteousness of God without the law is manifested, being witnessed by the law and the prophets;"

1 Timothy 6:13: "I give thee charge in the sight of God, who quickeneth all things, and before Christ Jesus, who before Pontius Pilate witnessed a good confession;"

Hebrews 7:8: "And here men that die receive tithes; but there he receiveth them, of whom it is witnessed that he liveth."

## WITNESSES

Occurrences: 45

Numbers 35:30: "Whoso killeth any person, the murderer shall be put to death by the mouth of witnesses: but one witness shall not testify against any person to cause him to die."

Deuteronomy 17:6: "At the mouth of two witnesses, or three witnesses, shall he that is worthy of death be put to death; but at the mouth of one witness he shall not be put to death."

Deuteronomy 17:7: "The hands of the witnesses shall be first upon him to put him to death, and afterward the hands of all the people. So thou shalt put the evil away from among you."

Deuteronomy 19:15: "One witness shall not rise up against a man for any iniquity, or for any sin, in any sin that he sinneth: at the mouth of two witnesses, or at the mouth of three witnesses, shall the matter be established."

Joshua 24:22: "And Joshua said unto the people, Ye are witnesses against yourselves that ye have chosen you the LORD, to serve him. And they said, We are witnesses."

Ruth 4:9: "And Boaz said unto the elders, and unto all the people, Ye are witnesses this day, that I have bought all that was Elimelech's, and all that was Chilion's and Mahlon's, of the hand of Naomi."

Ruth 4:10: "Moreover Ruth the Moabite, the wife of Mahlon, have I purchased to be my wife, to raise up the name of the dead upon his inheritance, that the name of the dead be not cut off from among his brethren, and from the gate of his place: ye are witnesses this day."

Ruth 4:11: "And all the people that were in the gate, and the elders, said, We are witnesses. The LORD make the woman that is come into thine house like Rachel and like Leah, which two did build the house of Israel: and do thou worthily in Ephrath, and be famous in Bethlehem:"

Job 10:17: "Thou renewest thy witnesses against me, and increasest thine indignation upon me; changes and war are against me."

Psalms 27:12: "Deliver me not over unto the will of mine enemies: for false witnesses are risen up against me, and such as breathe out cruelty."

Psalms 35:11: "False witnesses did rise up; they laid to my charge things that I knew not."

Isaiah 8:2: "And I took unto me faithful witnesses to record, Uriah the priest, and Zechariah the son of Jeberechiah."

Isaiah 43:9: "Let all the nations be gathered together, and let the people be assembled: who among them can declare this, and shew us former things? let them bring forth their witnesses, that they may be justified: or let them hear, and say, It is truth."

Isaiah 43:10: "Ye are my witnesses, saith the LORD, and my servant whom I have chosen: that ye may know and believe me, and understand that I am he: before me there was no God formed, neither shall there be after me."

Isaiah 43:12: "I have declared, and have saved, and I have shewed, when there was no strange god among you: therefore ye are my witnesses, saith the LORD, that I am God."

Isaiah 44:8: "Fear ye not, neither be afraid: have not I told thee from that time, and have declared it? ye are even my witnesses. Is there a God beside me? yea, there is no God; I know not any."

Isaiah 44:9: "They that make a graven image are all of them vanity; and their delectable things shall not profit; and they are their own witnesses; they see not, nor know; that they may be ashamed."

Jeremiah 32:10: "And I subscribed the evidence, and sealed it, and took witnesses, and weighed him the money in the balances."

Jeremiah 32:12: "And I gave the evidence of the purchase unto Baruch the son of Neriah, the son of Maaseiah, in the sight of Hanameel mine uncle's son, and in the presence of the witnesses that subscribed the book of the purchase, before all the Jews that sat in the court of the prison."

Jeremiah 32:25: "And thou hast said unto me, O Lord GOD, Buy thee the field for money, and take witnesses; for the city is given into the hand of the Chaldeans."

Jeremiah 32:44: "Men shall buy fields for money, and subscribe evidences, and seal them, and take



witnesses in the land of Benjamin, and in the places about Jerusalem, and in the cities of Judah, and in the cities of the mountains, and in the cities of the valley, and in the cities of the south: for I will cause their captivity to return, saith the LORD."

Matthew 18:16: "But if he will not hear thee, then take with thee one or two more, that in the mouth of two or three witnesses every word may be established."

Matthew 23:31: "Wherefore ye be witnesses unto yourselves, that ye are the children of them which killed the prophets."

Matthew 26:60: "But found none: yea, though many false witnesses came, yet found they none. At the last came two false witnesses,"

Matthew 26:65: "Then the high priest rent his clothes, saying, He hath spoken blasphemy; what further need have we of witnesses? behold, now ye have heard his blasphemy."

Mark 14:63: "Then the high priest rent his clothes, and saith, What need we any further witnesses?"

Luke 24:48: "And ye are witnesses of these things."

Acts 1:8: "But ye shall receive power, after that the Holy Ghost is come upon you: and ye shall be witnesses unto me both in Jerusalem, and in all Judaea, and in Samaria, and unto the uttermost part of the earth."

Acts 2:32: "This Jesus hath God raised up, whereof we all are witnesses."

Acts 3:15: "And killed the Prince of life, whom God hath raised from the dead; whereof we are witnesses."

Acts 5:32: "And we are his witnesses of these things; and so is also the Holy Ghost, whom God hath given to them that obey him."

Acts 6:13: "And set up false witnesses, which said, This man ceaseth not to speak blasphemous words against this holy place, and the law:"

Acts 7:58: "And cast him out of the city, and stoned him: and the witnesses laid down their clothes at a young man's feet, whose name was Saul."

Acts 10:39: "And we are witnesses of all things which he did both in the land of the Jews, and in Jerusalem; whom they slew and hanged on a tree:"

Acts 10:41: "Not to all the people, but unto witnesses chosen before God, even to us, who did eat and drink with him after he rose from the dead."

Acts 13:31: "And he was seen many days of them which came up with him from Galilee to Jerusalem, who are his witnesses unto the people."

1 Corinthians 15:15: "Yea, and we are found false witnesses of God; because we have testified of God that he raised up Christ: whom he raised not up, if so be that the dead rise not."

2 Corinthians 13:1: "This is the third time I am coming to you. In the mouth of two or three witnesses shall every word be established."

1 Thessalonians 2:10: "Ye are witnesses, and God also, how holily and justly and unblameably we behaved ourselves among you that believe:"

1 Timothy 5:19: "Against an elder receive not an accusation, but before two or three witnesses."

1 Timothy 6:12: "Fight the good fight of faith, lay hold on eternal life, whereunto thou art also called, and hast professed a good profession before many witnesses."

2 Timothy 2:2: "And the things that thou hast heard of me among many witnesses, the same commit thou to faithful men, who shall be able to teach others also."

Hebrews 10:28: "He that despised Moses' law died without mercy under two or three witnesses:"

Hebrews 12:1: "Wherefore seeing we also are compassed about with so great a cloud of witnesses, let us lay aside every weight, and the sin which doth so easily beset us, and let us run with patience the race that is set before us,"

Revelation 11:3: "And I will give power unto my two witnesses, and they shall prophesy a thousand two hundred and threescore days, clothed in sackcloth."

## WITNESSETH

Occurrences: 2

John 5:32: "There is another that beareth witness of me; and I know that the witness which he witnesseth of me is true."

Acts 20:23: "Save that the Holy Ghost witnesseth in every city, saying that bonds and afflictions abide me."

## WITNESSING

Occurrences: 1

Acts 26:22: "Having therefore obtained help of God, I continue unto this day, witnessing both to small and great, saying none other things than those which the prophets and Moses did say should come:"

## WITTINGLY

Occurrences: 1

Genesis 48:14: "And Israel stretched out his right hand, and laid it upon Ephraim's head, who was the younger, and his left hand upon Manasseh's head, guiding his hands wittingly; for Manasseh was the firstborn."

## WITTY

Occurrences: 1

Proverbs 8:12: "I wisdom dwell with prudence, and find out knowledge of witty inventions."

## WIVES

Occurrences: 122

Genesis 4:19: "And Lamech took unto him two wives: the name of the one was Adah, and the name of the other Zillah."

Genesis 4:23: "And Lamech said unto his wives, Adah and Zillah, Hear my voice; ye wives of Lamech, hearken unto my speech: for I have slain a man to my wounding, and a young man to my hurt."

Genesis 6:2: "That the sons of God saw the daughters of men that they were fair; and they took them wives of all which they chose."

Genesis 6:18: "But with thee will I establish my covenant; and thou shalt come into the ark, thou, and thy sons, and thy wife, and thy sons' wives with thee."

Genesis 7:7: "And Noah went in, and his sons, and his wife, and his sons' wives with him, into the ark, because of the waters of the flood."

Genesis 7:13: "In the selfsame day entered Noah, and Shem, and Ham, and Japheth, the sons of Noah, and Noah's wife, and the three wives of his sons with them, into the ark;"

Genesis 8:16: "Go forth of the ark, thou, and thy wife, and thy sons, and thy sons' wives with thee."

Genesis 8:18: "And Noah went forth, and his sons, and his wife, and his sons' wives with him:"

Genesis 11:29: "And Abram and Nahor took them wives: the name of Abram's wife was Sarai; and the name of Nahor's wife, Milcah, the daughter of Haran, the father of Milcah, and the father of Iscah."

Genesis 28:9: "Then went Esau unto Ishmael, and took unto the wives which he had Mahalath the daughter of Ishmael Abraham's son, the sister of Nebajoth, to be his wife."

Genesis 30:26: "Give me my wives and my children, for whom I have served thee, and let me go: for thou knowest my service which I have done thee."

Genesis 31:17: "Then Jacob rose up, and set his sons and his wives upon camels;"

Genesis 31:50: "If thou shalt afflict my daughters, or if thou shalt take other wives beside my daughters, no man is with us; see, God is witness betwixt me and thee."

Genesis 32:22: "And he rose up that night, and took his two wives, and his two womenservants, and his eleven sons, and passed over the ford Jabbok."

Genesis 34:21: "These men are peaceable with us; therefore let them dwell in the land, and trade therein; for the land, behold, it is large enough for them; let us take their daughters to us for wives, and let us give them our daughters."

Genesis 34:29: "And all their wealth, and all their little ones, and their wives took they captive, and spoiled even all that was in the house."

Genesis 36:2: "Esau took his wives of the daughters of Canaan; Adah the daughter of Elon the Hittite, and Aholibamah the daughter of Anah the daughter of Zibeon the Hivite;"

Genesis 36:6: "And Esau took his wives, and his sons, and his daughters, and all the persons of his house, and his cattle, and all his beasts, and all his substance, which he had got in the land of Canaan; and went into the country from the face of his brother Jacob."

Genesis 37:2: "These are the generations of Jacob. Joseph, being seventeen years old, was feeding the flock with his brethren; and the lad was with the sons of Bilhah, and with the sons of Zilpah, his father's wives: and Joseph brought unto his father their evil report."

Genesis 45:19: "Now thou art commanded, this do ye; take you wagons out of the land of Egypt for your little ones, and for your wives, and bring your father, and come."

Genesis 46:5: "And Jacob rose up from Beersheba: and the sons of Israel carried Jacob their father, and their little ones, and their wives, in the wagons which Pharaoh had sent to carry him."

Genesis 46:26: "All the souls that came with Jacob into Egypt, which came out of his loins, besides Jacob's sons' wives, all the souls were threescore and six;"

Exodus 19:15: "And he said unto the people, Be ready against the third day: come not at your wives."

Exodus 22:24: "And my wrath shall wax hot, and I will kill you with the sword; and your wives shall be widows, and your children fatherless."

Exodus 32:2: "And Aaron said unto them, Break off the golden earrings, which are in the ears of your wives, of your sons, and of your daughters, and bring them unto me."

Numbers 14:3: "And wherefore hath the LORD brought us unto this land, to fall by the sword, that our wives and our children should be a prey? were it not better for us to return into Egypt?"

Numbers 16:27: "So they gat up from the tabernacle of Korah, Dathan, and Abiram, on every side: and Dathan and Abiram came out, and stood in the door of their tents, and their wives, and their sons, and their little children."

Numbers 32:26: "Our little ones, our wives, our flocks, and all our cattle, shall be there in the cities of Gilead:"

Deuteronomy 3:19: "But your wives, and your little ones, and your cattle, (for I know that ye have much cattle,) shall abide in your cities which I have given you;"

Deuteronomy 17:17: "Neither shall he multiply wives to himself, that his heart turn not away: neither shall he greatly multiply to himself silver and gold."

Deuteronomy 21:15: "If a man have two wives, one beloved, and another hated, and they have born him children, both the beloved and the hated; and if the firstborn son be hers that was hated:"

Deuteronomy 29:11: "Your little ones, your wives, and thy stranger that is in thy camp, from the hewer of thy wood unto the drawer of thy water:"

Joshua 1:14: "Your wives, your little ones, and your cattle, shall remain in the land which Moses gave you on this side Jordan; but ye shall pass before your brethren armed, all the mighty men of valour, and help them;"

Judges 3:6: "And they took their daughters to be their wives, and gave their daughters to their sons, and served their gods."

Judges 8:30: "And Gideon had threescore and ten sons of his body begotten: for he had many wives."

Judges 21:7: "How shall we do for wives for them that remain, seeing we have sworn by the LORD that we will not give them of our daughters to wives?"

Judges 21:14: "And Benjamin came again at that time; and they gave them wives which they had saved alive of the women of Jabeshgilead: and yet so they sufficed them not."

Judges 21:16: "Then the elders of the congregation said, How shall we do for wives for them that remain, seeing the women are destroyed out of Benjamin?"

Judges 21:18: "Howbeit we may not give them wives of our daughters: for the children of Israel have sworn, saying, Cursed be he that giveth a wife to Benjamin."

Judges 21:23: "And the children of Benjamin did so, and took them wives, according to their number, of them that danced, whom they caught: and they went and returned unto their inheritance, and repaired the cities, and dwelt in them."

Ruth 1:4: "And they took them wives of the women of Moab; the name of the one was Orpah, and the name of the other Ruth: and they dwelled there about ten years."

1 Samuel 1:2: "And he had two wives; the name of the one was Hannah, and the name of the other Peninnah: and Peninnah had children, but Hannah had no children."

1 Samuel 25:43: "David also took Ahinoam of Jezreel; and they were also both of them his wives."

1 Samuel 27:3: "And David dwelt with Achish at Gath, he and his men, every man with his household, even David with his two wives, Ahinoam the Jezreelitess, and Abigail the Carmelitess, Nabal's wife."

1 Samuel 30:3: "So David and his men came to the city, and, behold, it was burned with fire; and their wives, and their sons, and their daughters, were taken captives."

1 Samuel 30:5: "And David's two wives were taken captives, Ahinoam the Jezreelitess, and Abigail the wife of Nabal the Carmelite."

1 Samuel 30:18: "And David recovered all that the Amalekites had carried away: and David rescued his two wives."

2 Samuel 2:2: "So David went up thither, and his two wives also, Ahinoam the Jezreelitess, and Abigail Nabal's wife the Carmelite."

2 Samuel 5:13: "And David took him more concubines and wives out of Jerusalem, after he was come from Hebron: and there were yet sons and daughters born to David."

2 Samuel 12:8: "And I gave thee thy master's house, and thy master's wives into thy bosom, and gave thee the house of Israel and of Judah; and if that had been too little, I would moreover have given unto thee such and such things."

2 Samuel 12:11: "Thus saith the LORD, Behold, I will raise up evil against thee out of thine own house, and I will take thy wives before thine eyes, and give them unto thy neighbour, and he shall lie with thy wives in the sight of this sun."

2 Samuel 19:5: "And Joab came into the house to the king, and said, Thou hast shamed this day the faces of all thy servants, which this day have saved thy life, and the lives of thy sons and of thy daughters, and the lives of thy wives, and the lives of thy concubines;"

1 Kings 11:3: "And he had seven hundred wives, princesses, and three hundred concubines: and his wives turned away his heart."

1 Kings 11:4: "For it came to pass, when Solomon was old, that his wives turned away his heart after other gods: and his heart was not perfect with the LORD his God, as was the heart of David his father."

1 Kings 11:8: "And likewise did he for all his strange wives, which burnt incense and sacrificed unto their gods."

1 Kings 20:3: "Thy silver and thy gold is mine; thy wives also and thy children, even the goodliest, are mine."

1 Kings 20:5: "And the messengers came again, and said, Thus speaketh Benhadad, saying,

Although I have sent unto thee, saying, Thou shalt deliver me thy silver, and thy gold, and thy wives, and thy children;"

1 Kings 20:7: "Then the king of Israel called all the elders of the land, and said, Mark, I pray you, and see how this man seeketh mischief: for he sent unto me for my wives, and for my children, and for my silver, and for my gold; and I denied him not."

2 Kings 4:1: "Now there cried a certain woman of the wives of the sons of the prophets unto Elisha, saying, Thy servant my husband is dead; and thou knowest that thy servant did fear the LORD: and the creditor is come to take unto him my two sons to be bondmen."

2 Kings 24:15: "And he carried away Jehoiachin to Babylon, and the king's mother, and the king's wives, and his officers, and the mighty of the land, those carried he into captivity from Jerusalem to Babylon."

1 Chronicles 4:5: "And Ashur the father of Tekoa had two wives, Helah and Naarah."

1 Chronicles 7:4: "And with them, by their generations, after the house of their fathers, were bands of soldiers for war, six and thirty thousand men: for they had many wives and sons."

1 Chronicles 8:8: "And Shaharaim begat children in the country of Moab, after he had sent them away; Hushim and Baara were his wives."

1 Chronicles 14:3: "And David took more wives at Jerusalem: and David begat more sons and daughters."

2 Chronicles 11:21: "And Rehoboam loved Maachah the daughter of Absalom above all his wives and his concubines: (for he took eighteen wives, and threescore concubines; and begat twenty and eight sons, and threescore daughters.)"

2 Chronicles 11:23: "And he dealt wisely, and dispersed of all his children throughout all the countries of Judah and Benjamin, unto every fenced city: and he gave them victual in abundance. And he desired many wives."

2 Chronicles 13:21: "But Abijah waxed mighty, and married fourteen wives, and begat twenty and two sons, and sixteen daughters."

2 Chronicles 20:13: "And all Judah stood before the LORD, with their little ones, their wives, and their children."

2 Chronicles 21:14: "Behold, with a great plague will the LORD smite thy people, and thy children, and thy wives, and all thy goods:"

2 Chronicles 21:17: "And they came up into Judah, and brake into it, and carried away all the substance that was found in the king's house, and his sons also, and his wives; so that there was never a son left him, save Jehoahaz, the youngest of his sons."

2 Chronicles 24:3: "And Jehoiada took for him two wives; and he begat sons and daughters."

2 Chronicles 29:9: "For, lo, our fathers have fallen by the sword, and our sons and our daughters and our wives are in captivity for this."

2 Chronicles 31:18: "And to the genealogy of all their little ones, their wives, and their sons, and their daughters, through all the congregation: for in their set office they sanctified themselves in holiness:"

Ezra 10:2: "And Shechaniah the son of Jehiel, one of the sons of Elam, answered and said unto Ezra, We have trespassed against our God, and have taken strange wives of the people of the land: yet now there is hope in Israel concerning this thing."

Ezra 10:3: "Now therefore let us make a covenant with our God to put away all the wives, and such as are born of them, according to the counsel of my lord, and of those that tremble at the commandment of our God; and let it be done according to the law."

Ezra 10:10: "And Ezra the priest stood up, and said unto them, Ye have transgressed, and have taken strange wives, to increase the trespass of Israel."

Ezra 10:11: "Now therefore make confession unto the LORD God of your fathers, and do his pleasure: and separate yourselves from the people of the land, and from the strange wives."

Ezra 10:14: "Let now our rulers of all the congregation stand, and let all them which have taken

strange wives in our cities come at appointed times, and with them the elders of every city, and the judges thereof, until the fierce wrath of our God for this matter be turned from us."

Ezra 10:17: "And they made an end with all the men that had taken strange wives by the first day of the first month."

Ezra 10:18: "And among the sons of the priests there were found that had taken strange wives: namely, of the sons of Jeshua the son of Jozadak, and his brethren; Maaseiah, and Eliezer, and Jarib, and Gedaliah."

Ezra 10:19: "And they gave their hands that they would put away their wives; and being guilty, they offered a ram of the flock for their trespass."

Ezra 10:44: "All these had taken strange wives: and some of them had wives by whom they had children."

Nehemiah 4:14: "And I looked, and rose up, and said unto the nobles, and to the rulers, and to the rest of the people, Be not ye afraid of them: remember the LORD, which is great and terrible, and fight for your brethren, your sons, and your daughters, your wives, and your houses."

Nehemiah 5:1: "And there was a great cry of the people and of their wives against their brethren the Jews."

Nehemiah 10:28: "And the rest of the people, the priests, the Levites, the porters, the singers, the Nethinims, and all they that had separated themselves from the people of the lands unto the law of God, their wives, their sons, and their daughters, every one having knowledge, and having understanding;"

Nehemiah 12:43: "Also that day they offered great sacrifices, and rejoiced: for God had made them rejoice with great joy: the wives also and the children rejoiced: so that the joy of Jerusalem was heard even afar off."

Nehemiah 13:23: "In those days also saw I Jews that had married wives of Ashdod, of Ammon, and of Moab:"

Nehemiah 13:27: "Shall we then hearken unto you to do all this great evil, to transgress against our God in marrying strange wives?"

Esther 1:20: "And when the king's decree which he shall make shall be published throughout all his empire, (for it is great,) all the wives shall give to their husbands honour, both to great and small."

Isaiah 13:16: "Their children also shall be dashed to pieces before their eyes; their houses shall be spoiled, and their wives ravished."

Jeremiah 6:12: "And their houses shall be turned unto others, with their fields and wives together: for I will stretch out my hand upon the inhabitants of the land, saith the LORD."

Jeremiah 8:10: "Therefore will I give their wives unto others, and their fields to them that shall inherit them: for every one from the least even unto the greatest is given to covetousness, from the prophet even unto the priest every one dealeth falsely."

Jeremiah 14:16: "And the people to whom they prophesy shall be cast out in the streets of Jerusalem because of the famine and the sword; and they shall have none to bury them, them, their wives, nor their sons, nor their daughters: for I will pour their wickedness upon them."

Jeremiah 18:21: "Therefore deliver up their children to the famine, and pour out their blood by the force of the sword; and let their wives be bereaved of their children, and be widows; and let their men be put to death; let their young men be slain by the sword in battle."

Jeremiah 29:6: "Take ye wives, and beget sons and daughters; and take wives for your sons, and give your daughters to husbands, that they may bear sons and daughters; that ye may be increased there, and not diminished."

Jeremiah 29:23: "Because they have committed villany in Israel, and have committed adultery with their neighbours' wives, and have spoken lying words in my name, which I have not commanded them; even I know, and am a witness, saith the LORD."

Jeremiah 35:8: "Thus have we obeyed the voice of Jonadab the son of Rechab our father in all that he hath charged us, to drink no wine all our days, we, our wives, our sons, nor our daughters;"

Jeremiah 38:23: "So they shall bring out all thy wives and thy children to the Chaldeans: and thou shalt not escape out of their hand, but shalt be taken by the hand of the king of Babylon: and thou shalt cause this city to be burned with fire."

Jeremiah 44:9: "Have ye forgotten the wickedness of your fathers, and the wickedness of the kings of Judah, and the wickedness of their wives, and your own wickedness, and the wickedness of your wives, which they have committed in the land of Judah, and in the streets of Jerusalem?"

Jeremiah 44:15: "Then all the men which knew that their wives had burned incense unto other gods, and all the women that stood by, a great multitude, even all the people that dwelt in the land of Egypt, in Pathros, answered Jeremiah, saying,"

Jeremiah 44:25: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel, saying; Ye and your wives have both spoken with your mouths, and fulfilled with your hand, saying, We will surely perform our vows that we have vowed, to burn incense to the queen of heaven, and to pour out drink offerings unto her: ye will surely accomplish your vows, and surely perform your vows."

Ezekiel 44:22: "Neither shall they take for their wives a widow, nor her that is put away: but they shall take maidens of the seed of the house of Israel, or a widow that had a priest before."

Daniel 5:2: "Belshazzar, while he tasted the wine, commanded to bring the golden and silver vessels which his father Nebuchadnezzar had taken out of the temple which was in Jerusalem; that the king, and his princes, his wives, and his concubines, might drink therein."

Daniel 5:3: "Then they brought the golden vessels that were taken out of the temple of the house of God which was at Jerusalem; and the king, and his princes, his wives, and his concubines, drank in them."

Daniel 5:23: "But hast lifted up thyself against the Lord of heaven; and they have brought the vessels of his house before thee, and thou, and thy lords, thy wives, and thy concubines, have drunk wine in them; and thou hast praised the gods of silver, and gold, of brass, iron, wood, and stone, which see not, nor hear, nor know: and the God in whose hand thy breath is, and whose are all thy ways, hast thou not glorified:"

Daniel 6:24: "And the king commanded, and they brought those men which had accused Daniel, and they cast them into the den of lions, them, their children, and their wives; and the lions had the mastery of them, and brake all their bones in pieces or ever they came at the bottom of the den."

Zechariah 12:12: "And the land shall mourn, every family apart; the family of the house of David apart, and their wives apart; the family of the house of Nathan apart, and their wives apart;"

Zechariah 12:13: "The family of the house of Levi apart, and their wives apart; the family of Shimei apart, and their wives apart;"

Zechariah 12:14: "All the families that remain, every family apart, and their wives apart."

Matthew 19:8: "He saith unto them, Moses because of the hardness of your hearts suffered you to put away your wives: but from the beginning it was not so."

Luke 17:27: "They did eat, they drank, they married wives, they were given in marriage, until the day that Noe entered into the ark, and the flood came, and destroyed them all."

Acts 21:5: "And when we had accomplished those days, we departed and went our way; and they all brought us on our way, with wives and children, till we were out of the city: and we kneeled down on the shore, and prayed."

1 Corinthians 7:29: "But this I say, brethren, the time is short: it remaineth, that both they that have wives be as though they had none;"

Ephesians 5:22: "Wives, submit yourselves unto your own husbands, as unto the Lord."

Ephesians 5:24: "Therefore as the church is subject unto Christ, so let the wives be to their own husbands in every thing."

Ephesians 5:25: "Husbands, love your wives, even as Christ also loved the church, and gave himself for it;"

Ephesians 5:28: "So ought men to love their wives as their own bodies. He that loveth his wife loveth himself."

Colossians 3:18: "Wives, submit yourselves unto your own husbands, as it is fit in the Lord."

Colossians 3:19: "Husbands, love your wives, and be not bitter against them."

1 Timothy 3:11: "Even so must their wives be grave, not slanderers, sober, faithful in all things."

1 Timothy 4:7: "But refuse profane and old wives' fables, and exercise thyself rather unto godliness."

1 Peter 3:1: "Likewise, ye wives, be in subjection to your own husbands; that, if any obey not the word, they also may without the word be won by the conversation of the wives;"

## **WIZARD**

Occurrences: 2

Leviticus 20:27: "A man also or woman that hath a familiar spirit, or that is a wizard, shall surely be put to death: they shall stone them with stones: their blood shall be upon them."

Deuteronomy 18:11: "Or a charmer, or a consulter with familiar spirits, or a wizard, or a necromancer."

## **WIZARDS**

Occurrences: 9

Leviticus 19:31: "Regard not them that have familiar spirits, neither seek after wizards, to be defiled by them: I am the LORD your God."

Leviticus 20:6: "And the soul that turneth after such as have familiar spirits, and after wizards, to go a whoring after them, I will even set my face against that soul, and will cut him off from among his people."

1 Samuel 28:3: "Now Samuel was dead, and all Israel had lamented him, and buried him in Ramah, even in his own city. And Saul had put away those that had familiar spirits, and the wizards, out of the land."

1 Samuel 28:9: "And the woman said unto him, Behold, thou knowest what Saul hath done, how he hath cut off those that have familiar spirits, and the wizards, out of the land: wherefore then layest thou a snare for my life, to cause me to die?"

2 Kings 21:6: "And he made his son pass through the fire, and observed times, and used enchantments, and dealt with familiar spirits and wizards: he wrought much wickedness in the sight of the LORD, to provoke him to anger."

2 Kings 23:24: "Moreover the workers with familiar spirits, and the wizards, and the images, and the idols, and all the abominations that were spied in the land of Judah and in Jerusalem, did Josiah put away, that he might perform the words of the law which were written in the book that Hilkiah the priest found in the house of the LORD."

2 Chronicles 33:6: "And he caused his children to pass through the fire in the valley of the son of Hinnom: also he observed times, and used enchantments, and used witchcraft, and dealt with a familiar spirit, and with wizards: he wrought much evil in the sight of the LORD, to provoke him to anger."

Isaiah 8:19: "And when they shall say unto you, Seek unto them that have familiar spirits, and unto wizards that peep, and that mutter: should not a people seek unto their God? for the living to the dead?"

Isaiah 19:3: "And the spirit of Egypt shall fail in the midst thereof; and I will destroy the counsel thereof: and they shall seek to the idols, and to the charmers, and to them that have familiar spirits, and to the wizards."

## **WOE**

Occurrences: 98



Numbers 21:29: "Woe to thee, Moab! thou art undone, O people of Chemosh: he hath given his sons that escaped, and his daughters, into captivity unto Sihon king of the Amorites."

1 Samuel 4:7: "And the Philistines were afraid, for they said, God is come into the camp. And they said, Woe unto us! for there hath not been such a thing heretofore."

1 Samuel 4:8: "Woe unto us! who shall deliver us out of the hand of these mighty Gods? these are the Gods that smote the Egyptians with all the plagues in the wilderness."

Job 10:15: "If I be wicked, woe unto me; and if I be righteous, yet will I not lift up my head. I am full of confusion; therefore see thou mine affliction;"

Psalms 120:5: "Woe is me, that I sojourn in Mesech, that I dwell in the tents of Kedar!"

Proverbs 23:29: "Who hath woe? who hath sorrow? who hath contentions? who hath babbling? who hath wounds without cause? who hath redness of eyes?"

Ecclesiastes 4:10: "For if they fall, the one will lift up his fellow: but woe to him that is alone when he falleth; for he hath not another to help him up."

Ecclesiastes 10:16: "Woe to thee, O land, when thy king is a child, and thy princes eat in the morning!"

Isaiah 3:9: "The shew of their countenance doth witness against them; and they declare their sin as Sodom, they hide it not. Woe unto their soul! for they have rewarded evil unto themselves."

Isaiah 3:11: "Woe unto the wicked! it shall be ill with him: for the reward of his hands shall be given him."

Isaiah 5:8: "Woe unto them that join house to house, that lay field to field, till there be no place, that they may be placed alone in the midst of the earth!"

Isaiah 5:11: "Woe unto them that rise up early in the morning, that they may follow strong drink; that continue until night, till wine inflame them!"

Isaiah 5:18: "Woe unto them that draw iniquity with cords of vanity, and sin as it were with a cart rope:"

Isaiah 5:20: "Woe unto them that call evil good, and good evil; that put darkness for light, and light for darkness; that put bitter for sweet, and sweet for bitter!"

Isaiah 5:21: "Woe unto them that are wise in their own eyes, and prudent in their own sight!"

Isaiah 5:22: "Woe unto them that are mighty to drink wine, and men of strength to mingle strong drink:"

Isaiah 6:5: "Then said I, Woe is me! for I am undone; because I am a man of unclean lips, and I dwell in the midst of a people of unclean lips: for mine eyes have seen the King, the LORD of hosts."

Isaiah 10:1: "Woe unto them that decree unrighteous decrees, and that write grievousness which they have prescribed;"

Isaiah 17:12: "Woe to the multitude of many people, which make a noise like the noise of the seas; and to the rushing of nations, that make a rushing like the rushing of mighty waters!"

Isaiah 18:1: "Woe to the land shadowing with wings, which is beyond the rivers of Ethiopia:"

Isaiah 24:16: "From the uttermost part of the earth have we heard songs, even glory to the righteous. But I said, My leanness, my leanness, woe unto me! the treacherous dealers have dealt treacherously; yea, the treacherous dealers have dealt very treacherously."

Isaiah 28:1: "Woe to the crown of pride, to the drunkards of Ephraim, whose glorious beauty is a fading flower, which are on the head of the fat valleys of them that are overcome with wine!"

Isaiah 29:1: "Woe to Ariel, to Ariel, the city where David dwelt! add ye year to year; let them kill sacrifices."

Isaiah 29:15: "Woe unto them that seek deep to hide their counsel from the LORD, and their works are in the dark, and they say, Who seeth us? and who knoweth us?"

Isaiah 30:1: "Woe to the rebellious children, saith the LORD, that take counsel, but not of me; and that cover with a covering, but not of my spirit, that they may add sin to sin:"

Isaiah 31:1: "Woe to them that go down to Egypt for help; and stay on horses, and trust in chariots,

because they are many; and in horsemen, because they are very strong; but they look not unto the Holy One of Israel, neither seek the LORD!"

Isaiah 33:1: "Woe to thee that spoilest, and thou wast not spoiled; and dealest treacherously, and they dealt not treacherously with thee! when thou shalt cease to spoil, thou shalt be spoiled; and when thou shalt make an end to deal treacherously, they shall deal treacherously with thee."

Isaiah 45:9: "Woe unto him that striveth with his Maker! Let the potsherd strive with the potsherd of the earth. Shall the clay say to him that fashioneth it, What makest thou? or thy work, He hath no hands?"

Isaiah 45:10: "Woe unto him that saith unto his father, What begetteth thou? or to the woman, What hast thou brought forth?"

Jeremiah 4:13: "Behold, he shall come up as clouds, and his chariots shall be as a whirlwind: his horses are swifter than eagles. Woe unto us! for we are spoiled."

Jeremiah 4:31: "For I have heard a voice as of a woman in travail, and the anguish as of her that bringeth forth her first child, the voice of the daughter of Zion, that bewaileth herself, that spreadeth her hands, saying, Woe is me now! for my soul is wearied because of murderers."

Jeremiah 6:4: "Prepare ye war against her; arise, and let us go up at noon. Woe unto us! for the day goeth away, for the shadows of the evening are stretched out."

Jeremiah 10:19: "Woe is me for my hurt! my wound is grievous; but I said, Truly this is a grief, and I must bear it."

Jeremiah 13:27: "I have seen thine adulteries, and thy neighings, the lewdness of thy whoredom, and thine abominations on the hills in the fields. Woe unto thee, O Jerusalem! wilt thou not be made clean? when shall it once be?"

Jeremiah 15:10: "Woe is me, my mother, that thou hast borne me a man of strife and a man of contention to the whole earth! I have neither lent on usury, nor men have lent to me on usury; yet every one of them doth curse me."

Jeremiah 22:13: "Woe unto him that buildeth his house by unrighteousness, and his chambers by wrong; that useth his neighbour's service without wages, and giveth him not for his work;"

Jeremiah 23:1: "Woe be unto the pastors that destroy and scatter the sheep of my pasture! saith the LORD."

Jeremiah 45:3: "Thou didst say, Woe is me now! for the LORD hath added grief to my sorrow; I fainted in my sighing, and I find no rest."

Jeremiah 48:1: "Against Moab thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Woe unto Nebo! for it is spoiled: Kiriathaim is confounded and taken: Misgab is confounded and dismayed."

Jeremiah 48:46: "Woe be unto thee, O Moab! the people of Chemosh perisheth: for thy sons are taken captives, and thy daughters captives."

Jeremiah 50:27: "Slay all her bullocks; let them go down to the slaughter: woe unto them! for their day is come, the time of their visitation."

Lamentations 5:16: "The crown is fallen from our head: woe unto us, that we have sinned!"

Ezekiel 2:10: "And he spread it before me; and it was written within and without: and there was written therein lamentations, and mourning, and woe."

Ezekiel 13:3: "Thus saith the Lord GOD; Woe unto the foolish prophets, that follow their own spirit, and have seen nothing!"

Ezekiel 13:18: "And say, Thus saith the Lord GOD; Woe to the women that sew pillows to all armholes, and make kerchiefs upon the head of every stature to hunt souls! Will ye hunt the souls of my people, and will ye save the souls alive that come unto you?"

Ezekiel 16:23: "And it came to pass after all thy wickedness, (woe, woe unto thee! saith the LORD GOD;)"

Ezekiel 24:6: "Wherefore thus saith the Lord GOD; Woe to the bloody city, to the pot whose scum is therein, and whose scum is not gone out of it! bring it out piece by piece; let no lot fall upon it."

Ezekiel 24:9: "Therefore thus saith the Lord GOD; Woe to the bloody city! I will even make the

pile for fire great."

Ezekiel 30:2: "Son of man, prophesy and say, Thus saith the Lord GOD; Howl ye, Woe worth the day!"

Ezekiel 34:2: "Son of man, prophesy against the shepherds of Israel, prophesy, and say unto them, Thus saith the Lord GOD unto the shepherds; Woe be to the shepherds of Israel that do feed themselves! should not the shepherds feed the flocks?"

Hosea 7:13: "Woe unto them! for they have fled from me: destruction unto them! because they have transgressed against me: though I have redeemed them, yet they have spoken lies against me."

Hosea 9:12: "Though they bring up their children, yet will I bereave them, that there shall not be a man left: yea, woe also to them when I depart from them!"

Amos 5:18: "Woe unto you that desire the day of the LORD! to what end is it for you? the day of the LORD is darkness, and not light."

Amos 6:1: "Woe to them that are at ease in Zion, and trust in the mountain of Samaria, which are named chief of the nations, to whom the house of Israel came!"

Micah 2:1: "Woe to them that devise iniquity, and work evil upon their beds! when the morning is light, they practise it, because it is in the power of their hand."

Micah 7:1: "Woe is me! for I am as when they have gathered the summer fruits, as the grape gleanings of the vintage: there is no cluster to eat: my soul desired the firstripe fruit."

Nahum 3:1: "Woe to the bloody city! it is all full of lies and robbery; the prey departeth not;"

Habakkuk 2:6: "Shall not all these take up a parable against him, and a taunting proverb against him, and say, Woe to him that increaseth that which is not his! how long? and to him that ladeth himself with thick clay!"

Habakkuk 2:9: "Woe to him that coveteth an evil covetousness to his house, that he may set his nest on high, that he may be delivered from the power of evil!"

Habakkuk 2:12: "Woe to him that buildeth a town with blood, and stablisheth a city by iniquity!"

Habakkuk 2:15: "Woe unto him that giveth his neighbour drink, that putteth thy bottle to him, and maketh him drunken also, that thou mayest look on their nakedness!"

Habakkuk 2:19: "Woe unto him that saith to the wood, Awake; to the dumb stone, Arise, it shall teach! Behold, it is laid over with gold and silver, and there is no breath at all in the midst of it."

Zephaniah 2:5: "Woe unto the inhabitants of the sea coast, the nation of the Cherethites! the word of the LORD is against you; O Canaan, the land of the Philistines, I will even destroy thee, that there shall be no inhabitant."

Zephaniah 3:1: "Woe to her that is filthy and polluted, to the oppressing city!"

Zechariah 11:17: "Woe to the idol shepherd that leaveth the flock! the sword shall be upon his arm, and upon his right eye: his arm shall be clean dried up, and his right eye shall be utterly darkened."

Matthew 11:21: "Woe unto thee, Chorazin! woe unto thee, Bethsaida! for if the mighty works, which were done in you, had been done in Tyre and Sidon, they would have repented long ago in sackcloth and ashes."

Matthew 18:7: "Woe unto the world because of offences! for it must needs be that offences come; but woe to that man by whom the offence cometh!"

Matthew 23:13: "But woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye shut up the kingdom of heaven against men: for ye neither go in yourselves, neither suffer ye them that are entering to go in."

Matthew 23:14: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye devour widows' houses, and for a pretence make long prayer: therefore ye shall receive the greater damnation."

Matthew 23:15: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye compass sea and land to make one proselyte, and when he is made, ye make him twofold more the child of hell than yourselves."

Matthew 23:16: "Woe unto you, ye blind guides, which say, Whosoever shall swear by the temple, it is nothing; but whosoever shall swear by the gold of the temple, he is a debtor!"

Matthew 23:23: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye pay tithe of mint and anise and cummin, and have omitted the weightier matters of the law, judgment, mercy, and faith: these ought ye to have done, and not to leave the other undone."

Matthew 23:25: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye make clean the outside of the cup and of the platter, but within they are full of extortion and excess."

Matthew 23:27: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye are like unto whited sepulchres, which indeed appear beautiful outward, but are within full of dead men's bones, and of all uncleanness."

Matthew 23:29: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! because ye build the tombs of the prophets, and garnish the sepulchres of the righteous,"

Matthew 24:19: "And woe unto them that are with child, and to them that give suck in those days!"

Matthew 26:24: "The Son of man goeth as it is written of him: but woe unto that man by whom the Son of man is betrayed! it had been good for that man if he had not been born."

Mark 13:17: "But woe to them that are with child, and to them that give suck in those days!"

Mark 14:21: "The Son of man indeed goeth, as it is written of him: but woe to that man by whom the Son of man is betrayed! good were it for that man if he had never been born."

Luke 6:24: "But woe unto you that are rich! for ye have received your consolation."

Luke 6:25: "Woe unto you that are full! for ye shall hunger. Woe unto you that laugh now! for ye shall mourn and weep."

Luke 6:26: "Woe unto you, when all men shall speak well of you! for so did their fathers to the false prophets."

Luke 10:13: "Woe unto thee, Chorazin! woe unto thee, Bethsaida! for if the mighty works had been done in Tyre and Sidon, which have been done in you, they had a great while ago repented, sitting in sackcloth and ashes."

Luke 11:42: "But woe unto you, Pharisees! for ye tithe mint and rue and all manner of herbs, and pass over judgment and the love of God: these ought ye to have done, and not to leave the other undone."

Luke 11:43: "Woe unto you, Pharisees! for ye love the uppermost seats in the synagogues, and greetings in the markets."

Luke 11:44: "Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye are as graves which appear not, and the men that walk over them are not aware of them."

Luke 11:46: "And he said, Woe unto you also, ye lawyers! for ye lade men with burdens grievous to be borne, and ye yourselves touch not the burdens with one of your fingers."

Luke 11:47: "Woe unto you! for ye build the sepulchres of the prophets, and your fathers killed them."

Luke 11:52: "Woe unto you, lawyers! for ye have taken away the key of knowledge: ye entered not in yourselves, and them that were entering in ye hindered."

Luke 17:1: "Then said he unto the disciples, It is impossible but that offences will come: but woe unto him, through whom they come!"

Luke 21:23: "But woe unto them that are with child, and to them that give suck, in those days! for there shall be great distress in the land, and wrath upon this people."

Luke 22:22: "And truly the Son of man goeth, as it was determined: but woe unto that man by whom he is betrayed!"

1 Corinthians 9:16: "For though I preach the gospel, I have nothing to glory of: for necessity is laid upon me; yea, woe is unto me, if I preach not the gospel!"

Jude 1:11: "Woe unto them! for they have gone in the way of Cain, and ran greedily after the error of Balaam for reward, and perished in the gainsaying of Core."

Revelation 8:13: "And I beheld, and heard an angel flying through the midst of heaven, saying with a loud voice, Woe, woe, woe, to the inhabitants of the earth by reason of the other voices of the trumpet of the three angels, which are yet to sound!"

Revelation 9:12: "One woe is past; and, behold, there come two woes more hereafter."  
Revelation 11:14: "The second woe is past; and, behold, the third woe cometh quickly."  
Revelation 12:12: "Therefore rejoice, ye heavens, and ye that dwell in them. Woe to the inhabitants of the earth and of the sea! for the devil is come down unto you, having great wrath, because he knoweth that he hath but a short time."

## WOEFUL

Occurrences: 1

Jeremiah 17:16: "As for me, I have not hastened from being a pastor to follow thee: neither have I desired the woeful day; thou knowest: that which came out of my lips was right before thee."

## WOES

Occurrences: 1

Revelation 9:12: "One woe is past; and, behold, there come two woes more hereafter."

## WOLF

Occurrences: 5

Genesis 49:27: "Benjamin shall ravin as a wolf: in the morning he shall devour the prey, and at night he shall divide the spoil."

Isaiah 11:6: "The wolf also shall dwell with the lamb, and the leopard shall lie down with the kid; and the calf and the young lion and the fatling together; and a little child shall lead them."

Isaiah 65:25: "The wolf and the lamb shall feed together, and the lion shall eat straw like the bullock: and dust shall be the serpent's meat. They shall not hurt nor destroy in all my holy mountain, saith the LORD."

Jeremiah 5:6: "Wherefore a lion out of the forest shall slay them, and a wolf of the evenings shall spoil them, a leopard shall watch over their cities: every one that goeth out thence shall be torn in pieces: because their transgressions are many, and their backslidings are increased."

John 10:12: "But he that is an hireling, and not the shepherd, whose own the sheep are not, seeth the wolf coming, and leaveth the sheep, and fleeth: and the wolf catcheth them, and scattereth the sheep."

## WOLVES

Occurrences: 7

Ezekiel 22:27: "Her princes in the midst thereof are like wolves ravening the prey, to shed blood, and to destroy souls, to get dishonest gain."

Habakkuk 1:8: "Their horses also are swifter than the leopards, and are more fierce than the evening wolves: and their horsemen shall spread themselves, and their horsemen shall come from far; they shall fly as the eagle that hasteth to eat."

Zephaniah 3:3: "Her princes within her are roaring lions; her judges are evening wolves; they gnaw not the bones till the morrow."

Matthew 7:15: "Beware of false prophets, which come to you in sheep's clothing, but inwardly they are ravening wolves."

Matthew 10:16: "Behold, I send you forth as sheep in the midst of wolves: be ye therefore wise as serpents, and harmless as doves."

Luke 10:3: "Go your ways: behold, I send you forth as lambs among wolves."

Acts 20:29: "For I know this, that after my departing shall grievous wolves enter in among you, not sparing the flock."

## WOMAN

Occurrences: 336

Genesis 2:22: "And the rib, which the LORD God had taken from man, made he a woman, and brought her unto the man."

Genesis 2:23: "And Adam said, This is now bone of my bones, and flesh of my flesh: she shall be called Woman, because she was taken out of Man."

Genesis 3:1: "Now the serpent was more subtil than any beast of the field which the LORD God had made. And he said unto the woman, Yea, hath God said, Ye shall not eat of every tree of the garden?"

Genesis 3:2: "And the woman said unto the serpent, We may eat of the fruit of the trees of the garden:"

Genesis 3:4: "And the serpent said unto the woman, Ye shall not surely die:"

Genesis 3:6: "And when the woman saw that the tree was good for food, and that it was pleasant to the eyes, and a tree to be desired to make one wise, she took of the fruit thereof, and did eat, and gave also unto her husband with her; and he did eat."

Genesis 3:12: "And the man said, The woman whom thou gavest to be with me, she gave me of the tree, and I did eat."

Genesis 3:13: "And the LORD God said unto the woman, What is this that thou hast done? And the woman said, The serpent beguiled me, and I did eat."

Genesis 3:15: "And I will put enmity between thee and the woman, and between thy seed and her seed; it shall bruise thy head, and thou shalt bruise his heel."

Genesis 3:16: "Unto the woman he said, I will greatly multiply thy sorrow and thy conception; in sorrow thou shalt bring forth children; and thy desire shall be to thy husband, and he shall rule over thee."

Genesis 12:11: "And it came to pass, when he was come near to enter into Egypt, that he said unto Sarai his wife, Behold now, I know that thou art a fair woman to look upon:"

Genesis 12:14: "And it came to pass, that, when Abram was come into Egypt, the Egyptians beheld the woman that she was very fair."

Genesis 12:15: "The princes also of Pharaoh saw her, and commended her before Pharaoh: and the woman was taken into Pharaoh's house."

Genesis 20:3: "But God came to Abimelech in a dream by night, and said to him, Behold, thou art but a dead man, for the woman which thou hast taken; for she is a man's wife."

Genesis 24:5: "And the servant said unto him, Peradventure the woman will not be willing to follow me unto this land: must I needs bring thy son again unto the land from whence thou camest?"

Genesis 24:8: "And if the woman will not be willing to follow thee, then thou shalt be clear from this my oath: only bring not my son thither again."

Genesis 24:39: "And I said unto my master, Peradventure the woman will not follow me."

Genesis 24:44: "And she say to me, Both drink thou, and I will also draw for thy camels: let the same be the woman whom the LORD hath appointed out for my master's son."

Genesis 38:20: "And Judah sent the kid by the hand of his friend the Adullamite, to receive his pledge from the woman's hand: but he found her not."

Genesis 46:10: "And the sons of Simeon; Jemuel, and Jamin, and Ohad, and Jachin, and Zohar, and Shaul the son of a Canaanitish woman."

Exodus 2:2: "And the woman conceived, and bare a son: and when she saw him that he was a goodly child, she hid him three months."

Exodus 3:22: "But every woman shall borrow of her neighbour, and of her that sojourneth in her house, jewels of silver, and jewels of gold, and raiment: and ye shall put them upon your sons, and upon your daughters; and ye shall spoil the Egyptians."

Exodus 6:15: "And the sons of Simeon; Jemuel, and Jamin, and Ohad, and Jachin, and Zohar, and

Shaul the son of a Canaanitish woman: these are the families of Simeon."

Exodus 11:2: "Speak now in the ears of the people, and let every man borrow of his neighbour, and every woman of her neighbour, jewels of silver and jewels of gold."

Exodus 21:22: "If men strive, and hurt a woman with child, so that her fruit depart from her, and yet no mischief follow: he shall be surely punished, according as the woman's husband will lay upon him; and he shall pay as the judges determine."

Exodus 21:28: "If an ox gore a man or a woman, that they die: then the ox shall be surely stoned, and his flesh shall not be eaten; but the owner of the ox shall be quit."

Exodus 21:29: "But if the ox were wont to push with his horn in time past, and it hath been testified to his owner, and he hath not kept him in, but that he hath killed a man or a woman; the ox shall be stoned, and his owner also shall be put to death."

Exodus 35:29: "The children of Israel brought a willing offering unto the LORD, every man and woman, whose heart made them willing to bring for all manner of work, which the LORD had commanded to be made by the hand of Moses."

Exodus 36:6: "And Moses gave commandment, and they caused it to be proclaimed throughout the camp, saying, Let neither man nor woman make any more work for the offering of the sanctuary. So the people were restrained from bringing."

Leviticus 12:2: "Speak unto the children of Israel, saying, If a woman have conceived seed, and born a man child: then she shall be unclean seven days; according to the days of the separation for her infirmity shall she be unclean."

Leviticus 13:29: "If a man or woman have a plague upon the head or the beard;"

Leviticus 13:38: "If a man also or a woman have in the skin of their flesh bright spots, even white bright spots;"

Leviticus 15:18: "The woman also with whom man shall lie with seed of copulation, they shall both bathe themselves in water, and be unclean until the even."

Leviticus 15:19: "And if a woman have an issue, and her issue in her flesh be blood, she shall be put apart seven days: and whosoever toucheth her shall be unclean until the even."

Leviticus 15:25: "And if a woman have an issue of her blood many days out of the time of her separation, or if it run beyond the time of her separation; all the days of the issue of her uncleanness shall be as the days of her separation: she shall be unclean."

Leviticus 15:33: "And of her that is sick of her flowers, and of him that hath an issue, of the man, and of the woman, and of him that lieth with her that is unclean."

Leviticus 18:17: "Thou shalt not uncover the nakedness of a woman and her daughter, neither shalt thou take her son's daughter, or her daughter's daughter, to uncover her nakedness; for they are her near kinswomen: it is wickedness."

Leviticus 18:19: "Also thou shalt not approach unto a woman to uncover her nakedness, as long as she is put apart for her uncleanness."

Leviticus 18:23: "Neither shalt thou lie with any beast to defile thyself therewith: neither shall any woman stand before a beast to lie down thereto: it is confusion."

Leviticus 19:20: "And whosoever lieth carnally with a woman, that is a bondmaid, betrothed to an husband, and not at all redeemed, nor freedom given her; she shall be scourged; they shall not be put to death, because she was not free."

Leviticus 20:13: "If a man also lie with mankind, as he lieth with a woman, both of them have committed an abomination: they shall surely be put to death; their blood shall be upon them."

Leviticus 20:16: "And if a woman approach unto any beast, and lie down thereto, thou shalt kill the woman, and the beast: they shall surely be put to death; their blood shall be upon them."

Leviticus 20:18: "And if a man shall lie with a woman having her sickness, and shall uncover her nakedness; he hath discovered her fountain, and she hath uncovered the fountain of her blood: and both of them shall be cut off from among their people."

Leviticus 20:27: "A man also or woman that hath a familiar spirit, or that is a wizard, shall surely be

put to death: they shall stone them with stones: their blood shall be upon them."

Leviticus 21:7: "They shall not take a wife that is a whore, or profane; neither shall they take a woman put away from her husband: for he is holy unto his God."

Leviticus 21:14: "A widow, or a divorced woman, or profane, or an harlot, these shall he not take: but he shall take a virgin of his own people to wife."

Leviticus 24:10: "And the son of an Israelitish woman, whose father was an Egyptian, went out among the children of Israel: and this son of the Israelitish woman and a man of Israel strove together in the camp;"

Leviticus 24:11: "And the Israelitish woman's son blasphemed the name of the Lord, and cursed. And they brought him unto Moses: (and his mother's name was Shelomith, the daughter of Dibri, of the tribe of Dan:)"

Numbers 5:6: "Speak unto the children of Israel, When a man or woman shall commit any sin that men commit, to do a trespass against the LORD, and that person be guilty;"

Numbers 5:18: "And the priest shall set the woman before the LORD, and uncover the woman's head, and put the offering of memorial in her hands, which is the jealousy offering: and the priest shall have in his hand the bitter water that causeth the curse:"

Numbers 5:19: "And the priest shall charge her by an oath, and say unto the woman, If no man have lain with thee, and if thou hast not gone aside to uncleanness with another instead of thy husband, be thou free from this bitter water that causeth the curse:"

Numbers 5:21: "Then the priest shall charge the woman with an oath of cursing, and the priest shall say unto the woman, The LORD make thee a curse and an oath among thy people, when the LORD doth make thy thigh to rot, and thy belly to swell;"

Numbers 5:22: "And this water that causeth the curse shall go into thy bowels, to make thy belly to swell, and thy thigh to rot: And the woman shall say, Amen, amen."

Numbers 5:24: "And he shall cause the woman to drink the bitter water that causeth the curse: and the water that causeth the curse shall enter into her, and become bitter."

Numbers 5:25: "Then the priest shall take the jealousy offering out of the woman's hand, and shall wave the offering before the LORD, and offer it upon the altar:"

Numbers 5:26: "And the priest shall take an handful of the offering, even the memorial thereof, and burn it upon the altar, and afterward shall cause the woman to drink the water."

Numbers 5:27: "And when he hath made her to drink the water, then it shall come to pass, that, if she be defiled, and have done trespass against her husband, that the water that causeth the curse shall enter into her, and become bitter, and her belly shall swell, and her thigh shall rot: and the woman shall be a curse among her people."

Numbers 5:28: "And if the woman be not defiled, but be clean; then she shall be free, and shall conceive seed."

Numbers 5:30: "Or when the spirit of jealousy cometh upon him, and he be jealous over his wife, and shall set the woman before the LORD, and the priest shall execute upon her all this law."

Numbers 5:31: "Then shall the man be guiltless from iniquity, and this woman shall bear her iniquity."

Numbers 6:2: "Speak unto the children of Israel, and say unto them, When either man or woman shall separate themselves to vow a vow of a Nazarite, to separate themselves unto the LORD:"

Numbers 12:1: "And Miriam and Aaron spake against Moses because of the Ethiopian woman whom he had married: for he had married an Ethiopian woman."

Numbers 25:6: "And, behold, one of the children of Israel came and brought unto his brethren a Midianitish woman in the sight of Moses, and in the sight of all the congregation of the children of Israel, who were weeping before the door of the tabernacle of the congregation."

Numbers 25:8: "And he went after the man of Israel into the tent, and thrust both of them through, the man of Israel, and the woman through her belly. So the plague was stayed from the children of Israel."



Numbers 25:14: "Now the name of the Israelite that was slain, even that was slain with the Midianitish woman, was Zimri, the son of Salu, a prince of a chief house among the Simeonites."

Numbers 25:15: "And the name of the Midianitish woman that was slain was Cozbi, the daughter of Zur; he was head over a people, and of a chief house in Midian."

Numbers 30:3: "If a woman also vow a vow unto the LORD, and bind herself by a bond, being in her father's house in her youth;"

Numbers 31:17: "Now therefore kill every male among the little ones, and kill every woman that hath known man by lying with him."

Deuteronomy 15:12: "And if thy brother, an Hebrew man, or an Hebrew woman, be sold unto thee, and serve thee six years; then in the seventh year thou shalt let him go free from thee."

Deuteronomy 17:2: "If there be found among you, within any of thy gates which the LORD thy God giveth thee, man or woman, that hath wrought wickedness in the sight of the LORD thy God, in transgressing his covenant,"

Deuteronomy 17:5: "Then shalt thou bring forth that man or that woman, which have committed that wicked thing, unto thy gates, even that man or that woman, and shalt stone them with stones, till they die."

Deuteronomy 21:11: "And seest among the captives a beautiful woman, and hast a desire unto her, that thou wouldest have her to thy wife;"

Deuteronomy 22:5: "The woman shall not wear that which pertaineth unto a man, neither shall a man put on a woman's garment: for all that do so are abomination unto the LORD thy God."

Deuteronomy 22:14: "And give occasions of speech against her, and bring up an evil name upon her, and say, I took this woman, and when I came to her, I found her not a maid:"

Deuteronomy 22:22: "If a man be found lying with a woman married to an husband, then they shall both of them die, both the man that lay with the woman, and the woman: so shalt thou put away evil from Israel."

Deuteronomy 28:56: "The tender and delicate woman among you, which would not adventure to set the sole of her foot upon the ground for delicateness and tenderness, her eye shall be evil toward the husband of her bosom, and toward her son, and toward her daughter,"

Deuteronomy 29:18: "Lest there should be among you man, or woman, or family, or tribe, whose heart turneth away this day from the LORD our God, to go and serve the gods of these nations; lest there should be among you a root that beareth gall and wormwood;"

Joshua 2:4: "And the woman took the two men, and hid them, and said thus, There came men unto me, but I wist not whence they were:"

Joshua 6:21: "And they utterly destroyed all that was in the city, both man and woman, young and old, and ox, and sheep, and ass, with the edge of the sword."

Joshua 6:22: "But Joshua had said unto the two men that had spied out the country, Go into the harlot's house, and bring out thence the woman, and all that she hath, as ye sware unto her."

Judges 4:9: "And she said, I will surely go with thee: notwithstanding the journey that thou takest shall not be for thine honour; for the LORD shall sell Sisera into the hand of a woman. And Deborah arose, and went with Barak to Kedesh."

Judges 9:53: "And a certain woman cast a piece of a millstone upon Abimelech's head, and all to brake his skull."

Judges 11:2: "And Gilead's wife bare him sons; and his wife's sons grew up, and they thrust out Jephthah, and said unto him, Thou shalt not inherit in our father's house; for thou art the son of a strange woman."

Judges 13:3: "And the angel of the LORD appeared unto the woman, and said unto her, Behold now, thou art barren, and bearest not: but thou shalt conceive, and bear a son."

Judges 13:6: "Then the woman came and told her husband, saying, A man of God came unto me, and his countenance was like the countenance of an angel of God, very terrible: but I asked him not whence he was, neither told he me his name:"

Judges 13:9: "And God hearkened to the voice of Manoah; and the angel of God came again unto the woman as she sat in the field: but Manoah her husband was not with her."

Judges 13:10: "And the woman made haste, and ran, and shewed her husband, and said unto him, Behold, the man hath appeared unto me, that came unto me the other day."

Judges 13:11: "And Manoah arose, and went after his wife, and came to the man, and said unto him, Art thou the man that spakest unto the woman? And he said, I am."

Judges 13:13: "And the angel of the LORD said unto Manoah, Of all that I said unto the woman let her beware."

Judges 13:24: "And the woman bare a son, and called his name Samson: and the child grew, and the LORD blessed him."

Judges 14:1: "And Samson went down to Timnath, and saw a woman in Timnath of the daughters of the Philistines."

Judges 14:2: "And he came up, and told his father and his mother, and said, I have seen a woman in Timnath of the daughters of the Philistines: now therefore get her for me to wife."

Judges 14:3: "Then his father and his mother said unto him, Is there never a woman among the daughters of thy brethren, or among all my people, that thou goest to take a wife of the uncircumcised Philistines? And Samson said unto his father, Get her for me; for she pleaseth me well."

Judges 14:7: "And he went down, and talked with the woman; and she pleased Samson well."

Judges 14:10: "So his father went down unto the woman: and Samson made there a feast; for so used the young men to do."

Judges 16:4: "And it came to pass afterward, that he loved a woman in the valley of Sorek, whose name was Delilah."

Judges 19:26: "Then came the woman in the dawning of the day, and fell down at the door of the man's house where her lord was, till it was light."

Judges 19:27: "And her lord rose up in the morning, and opened the doors of the house, and went out to go his way: and, behold, the woman his concubine was fallen down at the door of the house, and her hands were upon the threshold."

Judges 20:4: "And the Levite, the husband of the woman that was slain, answered and said, I came into Gibeah that belongeth to Benjamin, I and my concubine, to lodge."

Judges 21:11: "And this is the thing that ye shall do, Ye shall utterly destroy every male, and every woman that hath lain by man."

Ruth 1:5: "And Mahlon and Chilion died also both of them; and the woman was left of her two sons and her husband."

Ruth 3:8: "And it came to pass at midnight, that the man was afraid, and turned himself: and, behold, a woman lay at his feet."

Ruth 3:11: "And now, my daughter, fear not; I will do to thee all that thou requirest: for all the city of my people doth know that thou art a virtuous woman."

Ruth 3:14: "And she lay at his feet until the morning: and she rose up before one could know another. And he said, Let it not be known that a woman came into the floor."

Ruth 4:11: "And all the people that were in the gate, and the elders, said, We are witnesses. The LORD make the woman that is come into thine house like Rachel and like Leah, which two did build the house of Israel: and do thou worthily in Ephratah, and be famous in Bethlehem:"

Ruth 4:12: "And let thy house be like the house of Pharez, whom Tamar bare unto Judah, of the seed which the LORD shall give thee of this young woman."

1 Samuel 1:15: "And Hannah answered and said, No, my lord, I am a woman of a sorrowful spirit: I have drunk neither wine nor strong drink, but have poured out my soul before the LORD."

1 Samuel 1:18: "And she said, Let thine handmaid find grace in thy sight. So the woman went her way, and did eat, and her countenance was no more sad."

1 Samuel 1:23: "And Elkanah her husband said unto her, Do what seemeth thee good; tarry until

thou have weaned him; only the LORD establish his word. So the woman abode, and gave her son suck until she weaned him."

1 Samuel 1:26: "And she said, Oh my lord, as thy soul liveth, my lord, I am the woman that stood by thee here, praying unto the LORD."

1 Samuel 2:20: "And Eli blessed Elkanah and his wife, and said, The LORD give thee seed of this woman for the loan which is lent to the LORD. And they went unto their own home."

1 Samuel 15:3: "Now go and smite Amalek, and utterly destroy all that they have, and spare them not; but slay both man and woman, infant and suckling, ox and sheep, camel and ass."

1 Samuel 20:30: "Then Saul's anger was kindled against Jonathan, and he said unto him, Thou son of the perverse rebellious woman, do not I know that thou hast chosen the son of Jesse to thine own confusion, and unto the confusion of thy mother's nakedness?"

1 Samuel 25:3: "Now the name of the man was Nabal; and the name of his wife Abigail: and she was a woman of good understanding, and of a beautiful countenance: but the man was churlish and evil in his doings; and he was of the house of Caleb."

1 Samuel 27:9: "And David smote the land, and left neither man nor woman alive, and took away the sheep, and the oxen, and the asses, and the camels, and the apparel, and returned, and came to Achish."

1 Samuel 27:11: "And David saved neither man nor woman alive, to bring tidings to Gath, saying, Lest they should tell on us, saying, So did David, and so will be his manner all the while he dwelleth in the country of the Philistines."

1 Samuel 28:7: "Then said Saul unto his servants, Seek me a woman that hath a familiar spirit, that I may go to her, and enquire of her. And his servants said to him, Behold, there is a woman that hath a familiar spirit at Endor."

1 Samuel 28:8: "And Saul disguised himself, and put on other raiment, and he went, and two men with him, and they came to the woman by night: and he said, I pray thee, divine unto me by the familiar spirit, and bring me him up, whom I shall name unto thee."

1 Samuel 28:9: "And the woman said unto him, Behold, thou knowest what Saul hath done, how he hath cut off those that have familiar spirits, and the wizards, out of the land: wherefore then layest thou a snare for my life, to cause me to die?"

1 Samuel 28:11: "Then said the woman, Whom shall I bring up unto thee? And he said, Bring me up Samuel."

1 Samuel 28:12: "And when the woman saw Samuel, she cried with a loud voice: and the woman spake to Saul, saying, Why hast thou deceived me? for thou art Saul."

1 Samuel 28:13: "And the king said unto her, Be not afraid: for what sawest thou? And the woman said unto Saul, I saw gods ascending out of the earth."

1 Samuel 28:21: "And the woman came unto Saul, and saw that he was sore troubled, and said unto him, Behold, thine handmaid hath obeyed thy voice, and I have put my life in my hand, and have hearkened unto thy words which thou spakest unto me."

1 Samuel 28:23: "But he refused, and said, I will not eat. But his servants, together with the woman, compelled him; and he hearkened unto their voice. So he arose from the earth, and sat upon the bed."

1 Samuel 28:24: "And the woman had a fat calf in the house; and she hasted, and killed it, and took flour, and kneaded it, and did bake unleavened bread thereof:"

2 Samuel 3:8: "Then was Abner very wroth for the words of Ishbosheth, and said, Am I a dog's head, which against Judah do shew kindness this day unto the house of Saul thy father, to his brethren, and to his friends, and have not delivered thee into the hand of David, that thou chargest me to day with a fault concerning this woman?"

2 Samuel 11:2: "And it came to pass in an eveningtide, that David arose from off his bed, and walked upon the roof of the king's house: and from the roof he saw a woman washing herself; and the woman was very beautiful to look upon."

2 Samuel 11:3: "And David sent and enquired after the woman. And one said, Is not this Bathsheba, the daughter of Eliam, the wife of Uriah the Hittite?"

2 Samuel 11:5: "And the woman conceived, and sent and told David, and said, I am with child."

2 Samuel 11:21: "Who smote Abimelech the son of Jerubbesheth? did not a woman cast a piece of a millstone upon him from the wall, that he died in Thebez? why went ye nigh the wall? then say thou, Thy servant Uriah the Hittite is dead also."

2 Samuel 13:17: "Then he called his servant that ministered unto him, and said, Put now this woman out from me, and bolt the door after her."

2 Samuel 14:2: "And Joab sent to Tekoah, and fetched thence a wise woman, and said unto her, I pray thee, feign thyself to be a mourner, and put on now mourning apparel, and anoint not thyself with oil, but be as a woman that had a long time mourned for the dead:"

2 Samuel 14:4: "And when the woman of Tekoah spake to the king, she fell on her face to the ground, and did obeisance, and said, Help, O king."

2 Samuel 14:5: "And the king said unto her, What aileth thee? And she answered, I am indeed a widow woman, and mine husband is dead."

2 Samuel 14:8: "And the king said unto the woman, Go to thine house, and I will give charge concerning thee."

2 Samuel 14:9: "And the woman of Tekoah said unto the king, My lord, O king, the iniquity be on me, and on my father's house: and the king and his throne be guiltless."

2 Samuel 14:12: "Then the woman said, Let thine handmaid, I pray thee, speak one word unto my lord the king. And he said, Say on."

2 Samuel 14:13: "And the woman said, Wherefore then hast thou thought such a thing against the people of God? for the king doth speak this thing as one which is faulty, in that the king doth not fetch home again his banished."

2 Samuel 14:18: "Then the king answered and said unto the woman, Hide not from me, I pray thee, the thing that I shall ask thee. And the woman said, Let my lord the king now speak."

2 Samuel 14:19: "And the king said, Is not the hand of Joab with thee in all this? And the woman answered and said, As thy soul liveth, my lord the king, none can turn to the right hand or to the left from ought that my lord the king hath spoken: for thy servant Joab, he bade me, and he put all these words in the mouth of thine handmaid:"

2 Samuel 14:27: "And unto Absalom there were born three sons, and one daughter, whose name was Tamar: she was a woman of a fair countenance."

2 Samuel 17:19: "And the woman took and spread a covering over the well's mouth, and spread ground corn thereon; and the thing was not known."

2 Samuel 17:20: "And when Absalom's servants came to the woman to the house, they said, Where is Ahimaaz and Jonathan? And the woman said unto them, They be gone over the brook of water. And when they had sought and could not find them, they returned to Jerusalem."

2 Samuel 20:16: "Then cried a wise woman out of the city, Hear, hear; say, I pray you, unto Joab, Come near hither, that I may speak with thee."

2 Samuel 20:17: "And when he was come near unto her, the woman said, Art thou Joab? And he answered, I am he. Then she said unto him, Hear the words of thine handmaid. And he answered, I do hear."

2 Samuel 20:21: "The matter is not so: but a man of mount Ephraim, Sheba the son of Bichri by name, hath lifted up his hand against the king, even against David: deliver him only, and I will depart from the city. And the woman said unto Joab, Behold, his head shall be thrown to thee over the wall."

2 Samuel 20:22: "Then the woman went unto all the people in her wisdom. And they cut off the head of Sheba the son of Bichri, and cast it out to Joab. And he blew a trumpet, and they retired from the city, every man to his tent. And Joab returned to Jerusalem unto the king."

1 Kings 3:17: "And the one woman said, O my lord, I and this woman dwell in one house; and I

was delivered of a child with her in the house."

1 Kings 3:18: "And it came to pass the third day after that I was delivered, that this woman was delivered also: and we were together; there was no stranger with us in the house, save we two in the house."

1 Kings 3:19: "And this woman's child died in the night; because she overlaid it."

1 Kings 3:22: "And the other woman said, Nay; but the living is my son, and the dead is thy son. And this said, No; but the dead is thy son, and the living is my son. Thus they spake before the king."

1 Kings 3:26: "Then spake the woman whose the living child was unto the king, for her bowels yearned upon her son, and she said, O my lord, give her the living child, and in no wise slay it. But the other said, Let it be neither mine nor thine, but divide it."

1 Kings 11:26: "And Jeroboam the son of Nebat, an Ephrathite of Zereda, Solomon's servant, whose mother's name was Zeruah, a widow woman, even he lifted up his hand against the king."

1 Kings 14:5: "And the LORD said unto Ahijah, Behold, the wife of Jeroboam cometh to ask a thing of thee for her son; for he is sick: thus and thus shalt thou say unto her: for it shall be, when she cometh in, that she shall feign herself to be another woman."

1 Kings 17:9: "Arise, get thee to Zarephath, which belongeth to Zidon, and dwell there: behold, I have commanded a widow woman there to sustain thee."

1 Kings 17:10: "So he arose and went to Zarephath. And when he came to the gate of the city, behold, the widow woman was there gathering of sticks: and he called to her, and said, Fetch me, I pray thee, a little water in a vessel, that I may drink."

1 Kings 17:17: "And it came to pass after these things, that the son of the woman, the mistress of the house, fell sick; and his sickness was so sore, that there was no breath left in him."

1 Kings 17:24: "And the woman said to Elijah, Now by this I know that thou art a man of God, and that the word of the LORD in thy mouth is truth."

2 Kings 4:1: "Now there cried a certain woman of the wives of the sons of the prophets unto Elisha, saying, Thy servant my husband is dead; and thou knowest that thy servant did fear the LORD: and the creditor is come to take unto him my two sons to be bondmen."

2 Kings 4:8: "And it fell on a day, that Elisha passed to Shunem, where was a great woman; and she constrained him to eat bread. And so it was, that as oft as he passed by, he turned in thither to eat bread."

2 Kings 4:17: "And the woman conceived, and bare a son at that season that Elisha had said unto her, according to the time of life."

2 Kings 6:26: "And as the king of Israel was passing by upon the wall, there cried a woman unto him, saying, Help, my lord, O king."

2 Kings 6:28: "And the king said unto her, What aileth thee? And she answered, This woman said unto me, Give thy son, that we may eat him to day, and we will eat my son to morrow."

2 Kings 6:30: "And it came to pass, when the king heard the words of the woman, that he rent his clothes; and he passed by upon the wall, and the people looked, and, behold, he had sackcloth within upon his flesh."

2 Kings 8:1: "Then spake Elisha unto the woman, whose son he had restored to life, saying, Arise, and go thou and thine household, and sojourn wheresoever thou canst sojourn: for the LORD hath called for a famine; and it shall also come upon the land seven years."

2 Kings 8:2: "And the woman arose, and did after the saying of the man of God: and she went with her household, and sojourned in the land of the Philistines seven years."

2 Kings 8:3: "And it came to pass at the seven years' end, that the woman returned out of the land of the Philistines: and she went forth to cry unto the king for her house and for her land."

2 Kings 8:5: "And it came to pass, as he was telling the king how he had restored a dead body to life, that, behold, the woman, whose son he had restored to life, cried to the king for her house and for her land. And Gehazi said, My lord, O king, this is the woman, and this is her son, whom Elisha

restored to life."

2 Kings 8:6: "And when the king asked the woman, she told him. So the king appointed unto her a certain officer, saying, Restore all that was hers, and all the fruits of the field since the day that she left the land, even until now."

2 Kings 9:34: "And when he was come in, he did eat and drink, and said, Go, see now this cursed woman, and bury her: for she is a king's daughter."

1 Chronicles 16:3: "And he dealt to every one of Israel, both man and woman, to every one a loaf of bread, and a good piece of flesh, and a flagon of wine."

2 Chronicles 2:14: "The son of a woman of the daughters of Dan, and his father was a man of Tyre, skilful to work in gold, and in silver, in brass, in iron, in stone, and in timber, in purple, in blue, and in fine linen, and in crimson; also to grave any manner of graving, and to find out every device which shall be put to him, with thy cunning men, and with the cunning men of my lord David thy father."

2 Chronicles 15:13: "That whosoever would not seek the LORD God of Israel should be put to death, whether small or great, whether man or woman."

2 Chronicles 24:7: "For the sons of Athaliah, that wicked woman, had broken up the house of God; and also all the dedicated things of the house of the LORD did they bestow upon Baalim."

Job 14:1: "Man that is born of a woman is of few days and full of trouble."

Job 15:14: "What is man, that he should be clean? and he which is born of a woman, that he should be righteous?"

Job 25:4: "How then can man be justified with God? or how can he be clean that is born of a woman?"

Job 31:9: "If mine heart have been deceived by a woman, or if I have laid wait at my neighbour's door;"

Psalms 48:6: "Fear took hold upon them there, and pain, as of a woman in travail."

Psalms 58:8: "As a snail which melteth, let every one of them pass away: like the untimely birth of a woman, that they may not see the sun."

Psalms 113:9: "He maketh the barren woman to keep house, and to be a joyful mother of children. Praise ye the LORD."

Proverbs 2:16: "To deliver thee from the strange woman, even from the stranger which flattereth with her words;"

Proverbs 5:3: "For the lips of a strange woman drop as an honeycomb, and her mouth is smoother than oil:"

Proverbs 5:20: "And why wilt thou, my son, be ravished with a strange woman, and embrace the bosom of a stranger?"

Proverbs 6:24: "To keep thee from the evil woman, from the flattery of the tongue of a strange woman."

Proverbs 6:26: "For by means of a whorish woman a man is brought to a piece of bread: and the adulteress will hunt for the precious life."

Proverbs 6:32: "But whoso committeth adultery with a woman lacketh understanding: he that doeth it destroyeth his own soul."

Proverbs 7:5: "That they may keep thee from the strange woman, from the stranger which flattereth with her words."

Proverbs 7:10: "And, behold, there met him a woman with the attire of an harlot, and subtil of heart."

Proverbs 9:13: "A foolish woman is clamorous: she is simple, and knoweth nothing."

Proverbs 11:16: "A gracious woman retaineth honour: and strong men retain riches."

Proverbs 11:22: "As a jewel of gold in a swine's snout, so is a fair woman which is without discretion."

Proverbs 12:4: "A virtuous woman is a crown to her husband: but she that maketh ashamed is as

rotteness in his bones."

Proverbs 14:1: "Every wise woman buildeth her house: but the foolish plucketh it down with her hands."

Proverbs 20:16: "Take his garment that is surety for a stranger: and take a pledge of him for a strange woman."

Proverbs 21:9: "It is better to dwell in a corner of the housetop, than with a brawling woman in a wide house."

Proverbs 21:19: "It is better to dwell in the wilderness, than with a contentious and an angry woman."

Proverbs 23:27: "For a whore is a deep ditch; and a strange woman is a narrow pit."

Proverbs 25:24: "It is better to dwell in the corner of the housetop, than with a brawling woman and in a wide house."

Proverbs 27:13: "Take his garment that is surety for a stranger, and take a pledge of him for a strange woman."

Proverbs 27:15: "A continual dropping in a very rainy day and a contentious woman are alike."

Proverbs 30:20: "Such is the way of an adulterous woman; she eateth, and wipeth her mouth, and saith, I have done no wickedness."

Proverbs 30:23: "For an odious woman when she is married; and an handmaid that is heir to her mistress."

Proverbs 31:10: "Who can find a virtuous woman? for her price is far above rubies."

Proverbs 31:30: "Favour is deceitful, and beauty is vain: but a woman that feareth the LORD, she shall be praised."

Ecclesiastes 7:26: "And I find more bitter than death the woman, whose heart is snares and nets, and her hands as bands: whoso pleaseth God shall escape from her; but the sinner shall be taken by her."

Ecclesiastes 7:28: "Which yet my soul seeketh, but I find not: one man among a thousand have I found; but a woman among all those have I not found."

Isaiah 13:8: "And they shall be afraid: pangs and sorrows shall take hold of them; they shall be in pain as a woman that travaileth: they shall be amazed one at another; their faces shall be as flames."

Isaiah 21:3: "Therefore are my loins filled with pain: pangs have taken hold upon me, as the pangs of a woman that travaileth: I was bowed down at the hearing of it; I was dismayed at the seeing of it."

Isaiah 26:17: "Like as a woman with child, that draweth near the time of her delivery, is in pain, and crieth out in her pangs; so have we been in thy sight, O LORD."

Isaiah 42:14: "I have long time holden my peace; I have been still, and refrained myself: now will I cry like a travailing woman; I will destroy and devour at once."

Isaiah 45:10: "Woe unto him that saith unto his father, What begetteth thou? or to the woman, What hast thou brought forth?"

Isaiah 49:15: "Can a woman forget her sucking child, that she should not have compassion on the son of her womb? yea, they may forget, yet will I not forget thee."

Isaiah 54:6: "For the LORD hath called thee as a woman forsaken and grieved in spirit, and a wife of youth, when thou wast refused, saith thy God."

Jeremiah 4:31: "For I have heard a voice as of a woman in travail, and the anguish as of her that bringeth forth her first child, the voice of the daughter of Zion, that bewaileth herself, that spreadeth her hands, saying, Woe is me now! for my soul is wearied because of murderers."

Jeremiah 6:2: "I have likened the daughter of Zion to a comely and delicate woman."

Jeremiah 6:24: "We have heard the fame thereof: our hands wax feeble: anguish hath taken hold of us, and pain, as of a woman in travail."

Jeremiah 13:21: "What wilt thou say when he shall punish thee? for thou hast taught them to be captains, and as chief over thee: shall not sorrows take thee, as a woman in travail?"

Jeremiah 22:23: "O inhabitant of Lebanon, that makest thy nest in the cedars, how gracious shalt

thou be when pangs come upon thee, the pain as of a woman in travail!"

Jeremiah 30:6: "Ask ye now, and see whether a man doth travail with child? wherefore do I see every man with his hands on his loins, as a woman in travail, and all faces are turned into paleness?"

Jeremiah 31:8: "Behold, I will bring them from the north country, and gather them from the coasts of the earth, and with them the blind and the lame, the woman with child and her that travaileth with child together: a great company shall return thither."

Jeremiah 31:22: "How long wilt thou go about, O thou backsliding daughter? for the LORD hath created a new thing in the earth, A woman shall compass a man."

Jeremiah 44:7: "Therefore now thus saith the LORD, the God of hosts, the God of Israel; Wherefore commit ye this great evil against your souls, to cut off from you man and woman, child and suckling, out of Judah, to leave you none to remain;"

Jeremiah 48:41: "Kerioth is taken, and the strong holds are surprised, and the mighty men's hearts in Moab at that day shall be as the heart of a woman in her pangs."

Jeremiah 49:22: "Behold, he shall come up and fly as the eagle, and spread his wings over Bozrah: and at that day shall the heart of the mighty men of Edom be as the heart of a woman in her pangs."

Jeremiah 49:24: "Damascus is waxed feeble, and turneth herself to flee, and fear hath seized on her: anguish and sorrows have taken her, as a woman in travail."

Jeremiah 50:43: "The king of Babylon hath heard the report of them, and his hands waxed feeble: anguish took hold of him, and pangs as of a woman in travail."

Jeremiah 51:22: "With thee also will I break in pieces man and woman; and with thee will I break in pieces old and young; and with thee will I break in pieces the young man and the maid;"

Lamentations 1:17: "Zion spreadeth forth her hands, and there is none to comfort her: the LORD hath commanded concerning Jacob, that his adversaries should be round about him: Jerusalem is as a menstruous woman among them."

Ezekiel 16:30: "How weak is thine heart, saith the LORD GOD, seeing thou doest all these things, the work of an imperious whorish woman;"

Ezekiel 18:6: "And hath not eaten upon the mountains, neither hath lifted up his eyes to the idols of the house of Israel, neither hath defiled his neighbour's wife, neither hath come near to a menstruous woman,"

Ezekiel 23:44: "Yet they went in unto her, as they go in unto a woman that playeth the harlot: so went they in unto Aholah and unto Aholibah, the lewd women."

Ezekiel 36:17: "Son of man, when the house of Israel dwelt in their own land, they defiled it by their own way and by their doings: their way was before me as the uncleanness of a removed woman."

Hosea 3:1: "Then said the LORD unto me, Go yet, love a woman beloved of her friend, yet an adulteress, according to the love of the LORD toward the children of Israel, who look to other gods, and love flagons of wine."

Hosea 13:13: "The sorrows of a travailing woman shall come upon him: he is an unwise son; for he should not stay long in the place of the breaking forth of children."

Micah 4:9: "Now why dost thou cry out aloud? is there no king in thee? is thy counsellor perished? for pangs have taken thee as a woman in travail."

Micah 4:10: "Be in pain, and labour to bring forth, O daughter of Zion, like a woman in travail: for now shalt thou go forth out of the city, and thou shalt dwell in the field, and thou shalt go even to Babylon; there shalt thou be delivered; there the LORD shall redeem thee from the hand of thine enemies."

Zechariah 5:7: "And, behold, there was lifted up a talent of lead: and this is a woman that sitteth in the midst of the ephah."

Matthew 5:28: "But I say unto you, That whosoever looketh on a woman to lust after her hath committed adultery with her already in his heart."



Matthew 9:20: "And, behold, a woman, which was diseased with an issue of blood twelve years, came behind him, and touched the hem of his garment:"

Matthew 9:22: "But Jesus turned him about, and when he saw her, he said, Daughter, be of good comfort; thy faith hath made thee whole. And the woman was made whole from that hour."

Matthew 13:33: "Another parable spake he unto them; The kingdom of heaven is like unto leaven, which a woman took, and hid in three measures of meal, till the whole was leavened."

Matthew 15:22: "And, behold, a woman of Canaan came out of the same coasts, and cried unto him, saying, Have mercy on me, O Lord, thou son of David; my daughter is grievously vexed with a devil."

Matthew 15:28: "Then Jesus answered and said unto her, O woman, great is thy faith: be it unto thee even as thou wilt. And her daughter was made whole from that very hour."

Matthew 22:27: "And last of all the woman died also."

Matthew 26:7: "There came unto him a woman having an alabaster box of very precious ointment, and poured it on his head, as he sat at meat."

Matthew 26:10: "When Jesus understood it, he said unto them, Why trouble ye the woman? for she hath wrought a good work upon me."

Matthew 26:13: "Verily I say unto you, Wheresoever this gospel shall be preached in the whole world, there shall also this, that this woman hath done, be told for a memorial of her."

Mark 5:25: "And a certain woman, which had an issue of blood twelve years,"

Mark 5:33: "But the woman fearing and trembling, knowing what was done in her, came and fell down before him, and told him all the truth."

Mark 7:25: "For a certain woman, whose young daughter had an unclean spirit, heard of him, and came and fell at his feet:"

Mark 7:26: "The woman was a Greek, a Syrophenician by nation; and she besought him that he would cast forth the devil out of her daughter."

Mark 10:12: "And if a woman shall put away her husband, and be married to another, she committeth adultery."

Mark 12:22: "And the seven had her, and left no seed: last of all the woman died also."

Mark 14:3: "And being in Bethany in the house of Simon the leper, as he sat at meat, there came a woman having an alabaster box of ointment of spikenard very precious; and she brake the box, and poured it on his head."

Luke 4:26: "But unto none of them was Elias sent, save unto Sarepta, a city of Sidon, unto a woman that was a widow."

Luke 7:37: "And, behold, a woman in the city, which was a sinner, when she knew that Jesus sat at meat in the Pharisee's house, brought an alabaster box of ointment,"

Luke 7:39: "Now when the Pharisee which had bidden him saw it, he spake within himself, saying, This man, if he were a prophet, would have known who and what manner of woman this is that toucheth him: for she is a sinner."

Luke 7:44: "And he turned to the woman, and said unto Simon, Seest thou this woman? I entered into thine house, thou gavest me no water for my feet: but she hath washed my feet with tears, and wiped them with the hairs of her head."

Luke 7:45: "Thou gavest me no kiss: but this woman since the time I came in hath not ceased to kiss my feet."

Luke 7:46: "My head with oil thou didst not anoint: but this woman hath anointed my feet with ointment."

Luke 7:50: "And he said to the woman, Thy faith hath saved thee; go in peace."

Luke 8:43: "And a woman having an issue of blood twelve years, which had spent all her living upon physicians, neither could be healed of any,"

Luke 8:47: "And when the woman saw that she was not hid, she came trembling, and falling down before him, she declared unto him before all the people for what cause she had touched him, and

how she was healed immediately."

Luke 10:38: "Now it came to pass, as they went, that he entered into a certain village: and a certain woman named Martha received him into her house."

Luke 11:27: "And it came to pass, as he spake these things, a certain woman of the company lifted up her voice, and said unto him, Blessed is the womb that bare thee, and the paps which thou hast sucked."

Luke 13:11: "And, behold, there was a woman which had a spirit of infirmity eighteen years, and was bowed together, and could in no wise lift up herself."

Luke 13:12: "And when Jesus saw her, he called her to him, and said unto her, Woman, thou art loosed from thine infirmity."

Luke 13:16: "And ought not this woman, being a daughter of Abraham, whom Satan hath bound, lo, these eighteen years, be loosed from this bond on the sabbath day?"

Luke 13:21: "It is like leaven, which a woman took and hid in three measures of meal, till the whole was leavened."

Luke 15:8: "Either what woman having ten pieces of silver, if she lose one piece, doth not light a candle, and sweep the house, and seek diligently till she find it?"

Luke 20:32: "Last of all the woman died also."

Luke 22:57: "And he denied him, saying, Woman, I know him not."

John 2:4: "Jesus saith unto her, Woman, what have I to do with thee? mine hour is not yet come."

John 4:7: "There cometh a woman of Samaria to draw water: Jesus saith unto her, Give me to drink."

John 4:9: "Then saith the woman of Samaria unto him, How is it that thou, being a Jew, askest drink of me, which am a woman of Samaria? for the Jews have no dealings with the Samaritans."

John 4:11: "The woman saith unto him, Sir, thou hast nothing to draw with, and the well is deep: from whence then hast thou that living water?"

John 4:15: "The woman saith unto him, Sir, give me this water, that I thirst not, neither come hither to draw."

John 4:17: "The woman answered and said, I have no husband. Jesus said unto her, Thou hast well said, I have no husband:"

John 4:19: "The woman saith unto him, Sir, I perceive that thou art a prophet."

John 4:21: "Jesus saith unto her, Woman, believe me, the hour cometh, when ye shall neither in this mountain, nor yet at Jerusalem, worship the Father."

John 4:25: "The woman saith unto him, I know that Messias cometh, which is called Christ: when he is come, he will tell us all things."

John 4:27: "And upon this came his disciples, and marvelled that he talked with the woman: yet no man said, What seekest thou? or, Why talkest thou with her?"

John 4:28: "The woman then left her waterpot, and went her way into the city, and saith to the men,"

John 4:39: "And many of the Samaritans of that city believed on him for the saying of the woman, which testified, He told me all that ever I did."

John 4:42: "And said unto the woman, Now we believe, not because of thy saying: for we have heard him ourselves, and know that this is indeed the Christ, the Saviour of the world."

John 8:3: "And the scribes and Pharisees brought unto him a woman taken in adultery; and when they had set her in the midst,"

John 8:4: "They say unto him, Master, this woman was taken in adultery, in the very act."

John 8:9: "And they which heard it, being convicted by their own conscience, went out one by one, beginning at the eldest, even unto the last: and Jesus was left alone, and the woman standing in the midst."

John 8:10: "When Jesus had lifted up himself, and saw none but the woman, he said unto her, Woman, where are those thine accusers? hath no man condemned thee?"

John 16:21: "A woman when she is in travail hath sorrow, because her hour is come: but as soon as she is delivered of the child, she remembereth no more the anguish, for joy that a man is born into the world."

John 19:26: "When Jesus therefore saw his mother, and the disciple standing by, whom he loved, he saith unto his mother, Woman, behold thy son!"

John 20:13: "And they say unto her, Woman, why weepest thou? She saith unto them, Because they have taken away my LORD, and I know not where they have laid him."

John 20:15: "Jesus saith unto her, Woman, why weepest thou? whom seekest thou? She, supposing him to be the gardener, saith unto him, Sir, if thou have borne him hence, tell me where thou hast laid him, and I will take him away."

Acts 9:36: "Now there was at Joppa a certain disciple named Tabitha, which by interpretation is called Dorcas: this woman was full of good works and almsdeeds which she did."

Acts 16:1: "Then came he to Derbe and Lystra: and, behold, a certain disciple was there, named Timotheus, the son of a certain woman, which was a Jewess, and believed; but his father was a Greek:"

Acts 16:14: "And a certain woman named Lydia, a seller of purple, of the city of Thyatira, which worshipped God, heard us: whose heart the Lord opened, that she attended unto the things which were spoken of Paul."

Acts 17:34: "Howbeit certain men clave unto him, and believed: among the which was Dionysius the Areopagite, and a woman named Damaris, and others with them."

Romans 1:27: "And likewise also the men, leaving the natural use of the woman, burned in their lust one toward another; men with men working that which is unseemly, and receiving in themselves that recompence of their error which was meet."

Romans 7:2: "For the woman which hath an husband is bound by the law to her husband so long as he liveth; but if the husband be dead, she is loosed from the law of her husband."

1 Corinthians 7:1: "Now concerning the things whereof ye wrote unto me: It is good for a man not to touch a woman."

1 Corinthians 7:2: "Nevertheless, to avoid fornication, let every man have his own wife, and let every woman have her own husband."

1 Corinthians 7:13: "And the woman which hath an husband that believeth not, and if he be pleased to dwell with her, let her not leave him."

1 Corinthians 7:34: "There is difference also between a wife and a virgin. The unmarried woman careth for the things of the Lord, that she may be holy both in body and in spirit: but she that is married careth for the things of the world, how she may please her husband."

1 Corinthians 11:3: "But I would have you know, that the head of every man is Christ; and the head of the woman is the man; and the head of Christ is God."

1 Corinthians 11:5: "But every woman that prayeth or prophesieth with her head uncovered dishonoureth her head: for that is even all one as if she were shaven."

1 Corinthians 11:6: "For if the woman be not covered, let her also be shorn: but if it be a shame for a woman to be shorn or shaven, let her be covered."

1 Corinthians 11:7: "For a man indeed ought not to cover his head, forasmuch as he is the image and glory of God: but the woman is the glory of the man."

1 Corinthians 11:8: "For the man is not of the woman: but the woman of the man."

1 Corinthians 11:9: "Neither was the man created for the woman; but the woman for the man."

1 Corinthians 11:10: "For this cause ought the woman to have power on her head because of the angels."

1 Corinthians 11:11: "Nevertheless neither is the man without the woman, neither the woman without the man, in the Lord."

1 Corinthians 11:12: "For as the woman is of the man, even so is the man also by the woman; but all things of God."

1 Corinthians 11:13: "Judge in yourselves: is it comely that a woman pray unto God uncovered?"

1 Corinthians 11:15: "But if a woman have long hair, it is a glory to her: for her hair is given her for a covering."

Galatians 4:4: "But when the fulness of the time was come, God sent forth his Son, made of a woman, made under the law,"

1 Thessalonians 5:3: "For when they shall say, Peace and safety; then sudden destruction cometh upon them, as travail upon a woman with child; and they shall not escape."

1 Timothy 2:11: "Let the woman learn in silence with all subjection."

1 Timothy 2:12: "But I suffer not a woman to teach, nor to usurp authority over the man, but to be in silence."

1 Timothy 2:14: "And Adam was not deceived, but the woman being deceived was in the transgression."

1 Timothy 5:16: "If any man or woman that believeth have widows, let them relieve them, and let not the church be charged; that it may relieve them that are widows indeed."

Revelation 2:20: "Notwithstanding I have a few things against thee, because thou sufferest that woman Jezebel, which calleth herself a prophetess, to teach and to seduce my servants to commit fornication, and to eat things sacrificed unto idols."

Revelation 12:1: "And there appeared a great wonder in heaven; a woman clothed with the sun, and the moon under her feet, and upon her head a crown of twelve stars:"

Revelation 12:4: "And his tail drew the third part of the stars of heaven, and did cast them to the earth: and the dragon stood before the woman which was ready to be delivered, for to devour her child as soon as it was born."

Revelation 12:6: "And the woman fled into the wilderness, where she hath a place prepared of God, that they should feed her there a thousand two hundred and threescore days."

Revelation 12:13: "And when the dragon saw that he was cast unto the earth, he persecuted the woman which brought forth the man child."

Revelation 12:14: "And to the woman were given two wings of a great eagle, that she might fly into the wilderness, into her place, where she is nourished for a time, and times, and half a time, from the face of the serpent."

Revelation 12:15: "And the serpent cast out of his mouth water as a flood after the woman, that he might cause her to be carried away of the flood."

Revelation 12:16: "And the earth helped the woman, and the earth opened her mouth, and swallowed up the flood which the dragon cast out of his mouth."

Revelation 12:17: "And the dragon was wroth with the woman, and went to make war with the remnant of her seed, which keep the commandments of God, and have the testimony of Jesus Christ."

Revelation 17:3: "So he carried me away in the spirit into the wilderness: and I saw a woman sit upon a scarlet coloured beast, full of names of blasphemy, having seven heads and ten horns."

Revelation 17:4: "And the woman was arrayed in purple and scarlet colour, and decked with gold and precious stones and pearls, having a golden cup in her hand full of abominations and filthiness of her fornication:"

Revelation 17:6: "And I saw the woman drunken with the blood of the saints, and with the blood of the martyrs of Jesus: and when I saw her, I wondered with great admiration."

Revelation 17:7: "And the angel said unto me, Wherefore didst thou marvel? I will tell thee the mystery of the woman, and of the beast that carrieth her, which hath the seven heads and ten horns."

Revelation 17:9: "And here is the mind which hath wisdom. The seven heads are seven mountains, on which the woman sitteth."

Revelation 17:18: "And the woman which thou sawest is that great city, which reigneth over the kings of the earth."

## WOMANKIND

Occurrences: 1

Leviticus 18:22: "Thou shalt not lie with mankind, as with womankind: it is abomination."

## WOMB

Occurrences: 69

Genesis 25:23: "And the LORD said unto her, Two nations are in thy womb, and two manner of people shall be separated from thy bowels; and the one people shall be stronger than the other people; and the elder shall serve the younger."

Genesis 25:24: "And when her days to be delivered were fulfilled, behold, there were twins in her womb."

Genesis 29:31: "And when the LORD saw that Leah was hated, he opened her womb: but Rachel was barren."

Genesis 30:2: "And Jacob's anger was kindled against Rachel: and he said, Am I in God's stead, who hath withheld from thee the fruit of the womb?"

Genesis 30:22: "And God remembered Rachel, and God hearkened to her, and opened her womb."

Genesis 38:27: "And it came to pass in the time of her travail, that, behold, twins were in her womb."

Genesis 49:25: "Even by the God of thy father, who shall help thee; and by the Almighty, who shall bless thee with blessings of heaven above, blessings of the deep that lieth under, blessings of the breasts, and of the womb:"

Exodus 13:2: "Sanctify unto me all the firstborn, whatsoever openeth the womb among the children of Israel, both of man and of beast: it is mine."

Numbers 8:16: "For they are wholly given unto me from among the children of Israel; instead of such as open every womb, even instead of the firstborn of all the children of Israel, have I taken them unto me."

Numbers 12:12: "Let her not be as one dead, of whom the flesh is half consumed when he cometh out of his mother's womb."

Deuteronomy 7:13: "And he will love thee, and bless thee, and multiply thee: he will also bless the fruit of thy womb, and the fruit of thy land, thy corn, and thy wine, and thine oil, the increase of thy kine, and the flocks of thy sheep, in the land which he swore unto thy fathers to give thee."

Judges 13:5: "For, lo, thou shalt conceive, and bear a son; and no razor shall come on his head: for the child shall be a Nazarite unto God from the womb: and he shall begin to deliver Israel out of the hand of the Philistines."

Judges 13:7: "But he said unto me, Behold, thou shalt conceive, and bear a son; and now drink no wine nor strong drink, neither eat any unclean thing: for the child shall be a Nazarite to God from the womb to the day of his death."

Judges 16:17: "That he told her all his heart, and said unto her, There hath not come a razor upon mine head; for I have been a Nazarite unto God from my mother's womb: if I be shaven, then my strength will go from me, and I shall become weak, and be like any other man."

Ruth 1:11: "And Naomi said, Turn again, my daughters: why will ye go with me? are there yet any more sons in my womb, that they may be your husbands?"

1 Samuel 1:5: "But unto Hannah he gave a worthy portion; for he loved Hannah: but the LORD had shut up her womb."

1 Samuel 1:6: "And her adversary also provoked her sore, for to make her fret, because the LORD had shut up her womb."

Job 1:21: "And said, Naked came I out of my mother's womb, and naked shall I return thither: the LORD gave, and the LORD hath taken away; blessed be the name of the LORD."

Job 3:10: "Because it shut not up the doors of my mother's womb, nor hid sorrow from mine eyes."

Job 3:11: "Why died I not from the womb? why did I not give up the ghost when I came out of the belly?"

Job 10:18: "Wherefore then hast thou brought me forth out of the womb? Oh that I had given up the ghost, and no eye had seen me!"

Job 10:19: "I should have been as though I had not been; I should have been carried from the womb to the grave."

Job 24:20: "The womb shall forget him; the worm shall feed sweetly on him; he shall be no more remembered; and wickedness shall be broken as a tree."

Job 31:15: "Did not he that made me in the womb make him? and did not one fashion us in the womb?"

Job 31:18: "(For from my youth he was brought up with me, as with a father, and I have guided her from my mother's womb;)"

Job 38:8: "Or who shut up the sea with doors, when it brake forth, as if it had issued out of the womb?"

Job 38:29: "Out of whose womb came the ice? and the hoary frost of heaven, who hath gendered it?"

Psalms 22:9: "But thou art he that took me out of the womb: thou didst make me hope when I was upon my mother's breasts."

Psalms 22:10: "I was cast upon thee from the womb: thou art my God from my mother's belly."

Psalms 58:3: "The wicked are estranged from the womb: they go astray as soon as they be born, speaking lies."

Psalms 71:6: "By thee have I been holden up from the womb: thou art he that took me out of my mother's bowels: my praise shall be continually of thee."

Psalms 110:3: "Thy people shall be willing in the day of thy power, in the beauties of holiness from the womb of the morning: thou hast the dew of thy youth."

Psalms 127:3: "Lo, children are an heritage of the LORD: and the fruit of the womb is his reward."

Psalms 139:13: "For thou hast possessed my reins: thou hast covered me in my mother's womb."

Proverbs 30:16: "The grave; and the barren womb; the earth that is not filled with water; and the fire that saith not, It is enough."

Proverbs 31:2: "What, my son? and what, the son of my womb? and what, the son of my vows?"

Ecclesiastes 5:15: "As he came forth of his mother's womb, naked shall he return to go as he came, and shall take nothing of his labour, which he may carry away in his hand."

Ecclesiastes 11:5: "As thou knowest not what is the way of the spirit, nor how the bones do grow in the womb of her that is with child: even so thou knowest not the works of God who maketh all."

Isaiah 13:18: "Their bows also shall dash the young men to pieces; and they shall have no pity on the fruit of the womb; their eyes shall not spare children."

Isaiah 44:2: "Thus saith the LORD that made thee, and formed thee from the womb, which will help thee; Fear not, O Jacob, my servant; and thou, Jesurun, whom I have chosen."

Isaiah 44:24: "Thus saith the LORD, thy redeemer, and he that formed thee from the womb, I am the LORD that maketh all things; that stretcheth forth the heavens alone; that spreadeth abroad the earth by myself;"

Isaiah 46:3: "Hearken unto me, O house of Jacob, and all the remnant of the house of Israel, which are borne by me from the belly, which are carried from the womb:"

Isaiah 48:8: "Yea, thou heardest not; yea, thou knewest not; yea, from that time that thine ear was not opened: for I knew that thou wouldest deal very treacherously, and wast called a transgressor from the womb."

Isaiah 49:1: "Listen, O isles, unto me; and hearken, ye people, from far; The LORD hath called me from the womb; from the bowels of my mother hath he made mention of my name."

Isaiah 49:5: "And now, saith the LORD that formed me from the womb to be his servant, to bring Jacob again to him, Though Israel be not gathered, yet shall I be glorious in the eyes of the LORD,

and my God shall be my strength."

Isaiah 49:15: "Can a woman forget her sucking child, that she should not have compassion on the son of her womb? yea, they may forget, yet will I not forget thee."

Isaiah 66:9: "Shall I bring to the birth, and not cause to bring forth? saith the LORD: shall I cause to bring forth, and shut the womb? saith thy God."

Jeremiah 1:5: "Before I formed thee in the belly I knew thee; and before thou camest forth out of the womb I sanctified thee, and I ordained thee a prophet unto the nations."

Jeremiah 20:17: "Because he slew me not from the womb; or that my mother might have been my grave, and her womb to be always great with me."

Jeremiah 20:18: "Wherefore came I forth out of the womb to see labour and sorrow, that my days should be consumed with shame?"

Ezekiel 20:26: "And I polluted them in their own gifts, in that they caused to pass through the fire all that openeth the womb, that I might make them desolate, to the end that they might know that I am the LORD."

Hosea 9:11: "As for Ephraim, their glory shall fly away like a bird, from the birth, and from the womb, and from the conception."

Hosea 9:14: "Give them, O LORD: what wilt thou give? give them a miscarrying womb and dry breasts."

Hosea 9:16: "Ephraim is smitten, their root is dried up, they shall bear no fruit: yea, though they bring forth, yet will I slay even the beloved fruit of their womb."

Hosea 12:3: "He took his brother by the heel in the womb, and by his strength he had power with God:"

Matthew 19:12: "For there are some eunuchs, which were so born from their mother's womb: and there are some eunuchs, which were made eunuchs of men: and there be eunuchs, which have made themselves eunuchs for the kingdom of heaven's sake. He that is able to receive it, let him receive it."

Luke 1:15: "For he shall be great in the sight of the Lord, and shall drink neither wine nor strong drink; and he shall be filled with the Holy Ghost, even from his mother's womb."

Luke 1:31: "And, behold, thou shalt conceive in thy womb, and bring forth a son, and shalt call his name JESUS."

Luke 1:41: "And it came to pass, that, when Elisabeth heard the salutation of Mary, the babe leaped in her womb; and Elisabeth was filled with the Holy Ghost:"

Luke 1:42: "And she spake out with a loud voice, and said, Blessed art thou among women, and blessed is the fruit of thy womb."

Luke 1:44: "For, lo, as soon as the voice of thy salutation sounded in mine ears, the babe leaped in my womb for joy."

Luke 2:21: "And when eight days were accomplished for the circumcising of the child, his name was called JESUS, which was so named of the angel before he was conceived in the womb."

Luke 2:23: "(As it is written in the law of the LORD, Every male that openeth the womb shall be called holy to the Lord;)"

Luke 11:27: "And it came to pass, as he spake these things, a certain woman of the company lifted up her voice, and said unto him, Blessed is the womb that bare thee, and the paps which thou hast sucked."

John 3:4: "Nicodemus saith unto him, How can a man be born when he is old? can he enter the second time into his mother's womb, and be born?"

Acts 3:2: "And a certain man lame from his mother's womb was carried, whom they laid daily at the gate of the temple which is called Beautiful, to ask alms of them that entered into the temple;"

Acts 14:8: "And there sat a certain man at Lystra, impotent in his feet, being a cripple from his mother's womb, who never had walked:"

Romans 4:19: "And being not weak in faith, he considered not his own body now dead, when he

was about an hundred years old, neither yet the deadness of Sarah's womb:"

Galatians 1:15: "But when it pleased God, who separated me from my mother's womb, and called me by his grace,"

## WOMBS

Occurrences: 2

Genesis 20:18: "For the LORD had fast closed up all the wombs of the house of Abimelech, because of Sarah Abraham's wife."

Luke 23:29: "For, behold, the days are coming, in the which they shall say, Blessed are the barren, and the wombs that never bare, and the paps which never gave suck."

## WOMEN

Occurrences: 173

Genesis 14:16: "And he brought back all the goods, and also brought again his brother Lot, and his goods, and the women also, and the people."

Genesis 18:11: "Now Abraham and Sarah were old and well stricken in age; and it ceased to be with Sarah after the manner of women."

Genesis 24:11: "And he made his camels to kneel down without the city by a well of water at the time of the evening, even the time that women go out to draw water."

Genesis 31:35: "And she said to her father, Let it not displease my lord that I cannot rise up before thee; for the custom of women is upon me. And he searched but found not the images."

Genesis 33:5: "And he lifted up his eyes, and saw the women and the children; and said, Who are those with thee? And he said, The children which God hath graciously given thy servant."

Exodus 1:16: "And he said, When ye do the office of a midwife to the Hebrew women, and see them upon the stools; if it be a son, then ye shall kill him: but if it be a daughter, then she shall live."

Exodus 1:19: "And the midwives said unto Pharaoh, Because the Hebrew women are not as the Egyptian women; for they are lively, and are delivered ere the midwives come in unto them."

Exodus 2:7: "Then said his sister to Pharaoh's daughter, Shall I go and call to thee a nurse of the Hebrew women, that she may nurse the child for thee?"

Exodus 2:9: "And Pharaoh's daughter said unto her, Take this child away, and nurse it for me, and I will give thee thy wages. And the women took the child, and nursed it."

Exodus 15:20: "And Miriam the prophetess, the sister of Aaron, took a timbrel in her hand; and all the women went out after her with timbrels and with dances."

Exodus 35:22: "And they came, both men and women, as many as were willing hearted, and brought bracelets, and earrings, and rings, and tablets, all jewels of gold: and every man that offered offered an offering of gold unto the LORD."

Exodus 35:25: "And all the women that were wise hearted did spin with their hands, and brought that which they had spun, both of blue, and of purple, and of scarlet, and of fine linen."

Exodus 35:26: "And all the women whose heart stirred them up in wisdom spun goats' hair."

Exodus 38:8: "And he made the laver of brass, and the foot of it of brass, of the lookingglasses of the women assembling, which assembled at the door of the tabernacle of the congregation."

Leviticus 26:26: "And when I have broken the staff of your bread, ten women shall bake your bread in one oven, and they shall deliver you your bread again by weight: and ye shall eat, and not be satisfied."

Numbers 31:9: "And the children of Israel took all the women of Midian captives, and their little ones, and took the spoil of all their cattle, and all their flocks, and all their goods."

Numbers 31:15: "And Moses said unto them, Have ye saved all the women alive?"

Numbers 31:18: "But all the women children, that have not known a man by lying with him, keep



alive for yourselves."

Numbers 31:35: "And thirty and two thousand persons in all, of women that had not known man by lying with him."

Deuteronomy 2:34: "And we took all his cities at that time, and utterly destroyed the men, and the women, and the little ones, of every city, we left none to remain!"

Deuteronomy 3:6: "And we utterly destroyed them, as we did unto Sihon king of Heshbon, utterly destroying the men, women, and children, of every city."

Deuteronomy 20:14: "But the women, and the little ones, and the cattle, and all that is in the city, even all the spoil thereof, shalt thou take unto thyself; and thou shalt eat the spoil of thine enemies, which the LORD thy God hath given thee."

Deuteronomy 31:12: "Gather the people together, men and women, and children, and thy stranger that is within thy gates, that they may hear, and that they may learn, and fear the LORD your God, and observe to do all the words of this law:"

Joshua 8:25: "And so it was, that all that fell that day, both of men and women, were twelve thousand, even all the men of Ai."

Joshua 8:35: "There was not a word of all that Moses commanded, which Joshua read not before all the congregation of Israel, with the women, and the little ones, and the strangers that were conversant among them."

Judges 5:24: "Blessed above women shall Jael the wife of Heber the Kenite be, blessed shall she be above women in the tent."

Judges 9:49: "And all the people likewise cut down every man his bough, and followed Abimelech, and put them to the hold, and set the hold on fire upon them; so that all the men of the tower of Shechem died also, about a thousand men and women."

Judges 9:51: "But there was a strong tower within the city, and thither fled all the men and women, and all they of the city, and shut it to them, and gat them up to the top of the tower."

Judges 9:54: "Then he called hastily unto the young man his armourbearer, and said unto him, Draw thy sword, and slay me, that men say not of me, A women slew him. And his young man thrust him through, and he died."

Judges 16:27: "Now the house was full of men and women; and all the lords of the Philistines were there; and there were upon the roof about three thousand men and women, that beheld while Samson made sport."

Judges 21:10: "And the congregation sent thither twelve thousand men of the valiantest, and commanded them, saying, Go and smite the inhabitants of Jabeshgilead with the edge of the sword, with the women and the children."

Judges 21:14: "And Benjamin came again at that time; and they gave them wives which they had saved alive of the women of Jabeshgilead: and yet so they sufficed them not."

Judges 21:16: "Then the elders of the congregation said, How shall we do for wives for them that remain, seeing the women are destroyed out of Benjamin?"

Ruth 1:4: "And they took them wives of the women of Moab; the name of the one was Orpah, and the name of the other Ruth: and they dwelled there about ten years."

Ruth 4:14: "And the women said unto Naomi, Blessed be the LORD, which hath not left thee this day without a kinsman, that his name may be famous in Israel."

Ruth 4:17: "And the women her neighbours gave it a name, saying, There is a son born to Naomi; and they called his name Obed: he is the father of Jesse, the father of David."

1 Samuel 2:22: "Now Eli was very old, and heard all that his sons did unto all Israel; and how they lay with the women that assembled at the door of the tabernacle of the congregation."

1 Samuel 4:20: "And about the time of her death the women that stood by her said unto her, Fear not; for thou hast born a son. But she answered not, neither did she regard it."

1 Samuel 15:33: "And Samuel said, As the sword hath made women childless, so shall thy mother be childless among women. And Samuel hewed Agag in pieces before the LORD in Gilgal."

1 Samuel 18:6: "And it came to pass as they came, when David was returned from the slaughter of the Philistine, that the women came out of all cities of Israel, singing and dancing, to meet king Saul, with tabrets, with joy, and with instruments of musick."

1 Samuel 18:7: "And the women answered one another as they played, and said, Saul hath slain his thousands, and David his ten thousands."

1 Samuel 21:4: "And the priest answered David, and said, There is no common bread under mine hand, but there is hallowed bread; if the young men have kept themselves at least from women."

1 Samuel 21:5: "And David answered the priest, and said unto him, Of a truth women have been kept from us about these three days, since I came out, and the vessels of the young men are holy, and the bread is in a manner common, yea, though it were sanctified this day in the vessel."

1 Samuel 22:19: "And Nob, the city of the priests, smote he with the edge of the sword, both men and women, children and sucklings, and oxen, and asses, and sheep, with the edge of the sword."

1 Samuel 30:2: "And had taken the women captives, that were therein: they slew not any, either great or small, but carried them away, and went on their way."

2 Samuel 1:26: "I am distressed for thee, my brother Jonathan: very pleasant hast thou been unto me: thy love to me was wonderful, passing the love of women."

2 Samuel 6:19: "And he dealt among all the people, even among the whole multitude of Israel, as well to the women as men, to every one a cake of bread, and a good piece of flesh, and a flagon of wine. So all the people departed every one to his house."

2 Samuel 15:16: "And the king went forth, and all his household after him. And the king left ten women, which were concubines, to keep the house."

2 Samuel 19:35: "I am this day fourscore years old: and can I discern between good and evil? can thy servant taste what I eat or what I drink? can I hear any more the voice of singing men and singing women? wherefore then should thy servant be yet a burden unto my lord the king?"

2 Samuel 20:3: "And David came to his house at Jerusalem; and the king took the ten women his concubines, whom he had left to keep the house, and put them in ward, and fed them, but went not in unto them. So they were shut up unto the day of their death, living in widowhood."

1 Kings 3:16: "Then came there two women, that were harlots, unto the king, and stood before him."

1 Kings 11:1: "But king Solomon loved many strange women, together with the daughter of Pharaoh, women of the Moabites, Ammonites, Edomites, Zidonians, and Hittites:"

2 Kings 8:12: "And Hazael said, Why weepeth my lord? And he answered, Because I know the evil that thou wilt do unto the children of Israel: their strong holds wilt thou set on fire, and their young men wilt thou slay with the sword, and wilt dash their children, and rip up their women with child."

2 Kings 15:16: "Then Menahem smote Tiphseh, and all that were therein, and the coasts thereof from Tirzah: because they opened not to him, therefore he smote it; and all the women therein that were with child he ripped up."

2 Kings 23:7: "And he brake down the houses of the sodomites, that were by the house of the LORD, where the women wove hangings for the grove."

2 Chronicles 28:8: "And the children of Israel carried away captive of their brethren two hundred thousand, women, sons, and daughters, and took also away much spoil from them, and brought the spoil to Samaria."

2 Chronicles 35:25: "And Jeremiah lamented for Josiah: and all the singing men and the singing women spake of Josiah in their lamentations to this day, and made them an ordinance in Israel: and, behold, they are written in the lamentations."

Ezra 2:65: "Beside their servants and their maids, of whom there were seven thousand three hundred thirty and seven: and there were among them two hundred singing men and singing women."

Ezra 10:1: "Now when Ezra had prayed, and when he had confessed, weeping and casting himself down before the house of God, there assembled unto him out of Israel a very great congregation of

men and women and children: for the people wept very sore."

Nehemiah 7:67: "Beside their manservants and their maidservants, of whom there were seven thousand three hundred thirty and seven: and they had two hundred forty and five singing men and singing women."

Nehemiah 8:2: "And Ezra the priest brought the law before the congregation both of men and women, and all that could hear with understanding, upon the first day of the seventh month."

Nehemiah 8:3: "And he read therein before the street that was before the water gate from the morning until midday, before the men and the women, and those that could understand; and the ears of all the people were attentive unto the book of the law."

Nehemiah 13:26: "Did not Solomon king of Israel sin by these things? yet among many nations was there no king like him, who was beloved of his God, and God made him king over all Israel: nevertheless even him did outlandish women cause to sin."

Esther 1:9: "Also Vashti the queen made a feast for the women in the royal house which belonged to king Ahasuerus."

Esther 1:17: "For this deed of the queen shall come abroad unto all women, so that they shall despise their husbands in their eyes, when it shall be reported, The king Ahasuerus commanded Vashti the queen to be brought in before him, but she came not."

Esther 2:3: "And let the king appoint officers in all the provinces of his kingdom, that they may gather together all the fair young virgins unto Shushan the palace, to the house of the women, unto the custody of Hege the king's chamberlain, keeper of the women; and let their things for purification be given them:"

Esther 2:8: "So it came to pass, when the king's commandment and his decree was heard, and when many maidens were gathered together unto Shushan the palace, to the custody of Hegai, that Esther was brought also unto the king's house, to the custody of Hegai, keeper of the women."

Esther 2:9: "And the maiden pleased him, and she obtained kindness of him; and he speedily gave her her things for purification, with such things as belonged to her, and seven maidens, which were meet to be given her, out of the king's house: and he preferred her and her maids unto the best place of the house of the women."

Esther 2:11: "And Mordecai walked every day before the court of the women's house, to know how Esther did, and what should become of her."

Esther 2:12: "Now when every maid's turn was come to go in to king Ahasuerus, after that she had been twelve months, according to the manner of the women, (for so were the days of their purifications accomplished, to wit, six months with oil of myrrh, and six months with sweet odours, and with other things for the purifying of the women;)"

Esther 2:13: "Then thus came every maiden unto the king; whatsoever she desired was given her to go with her out of the house of the women unto the king's house."

Esther 2:14: "In the evening she went, and on the morrow she returned into the second house of the women, to the custody of Shaashgaz, the king's chamberlain, which kept the concubines: she came in unto the king no more, except the king delighted in her, and that she were called by name."

Esther 2:15: "Now when the turn of Esther, the daughter of Abihail the uncle of Mordecai, who had taken her for his daughter, was come to go in unto the king, she required nothing but what Hegai the king's chamberlain, the keeper of the women, appointed. And Esther obtained favour in the sight of all them that looked upon her."

Esther 2:17: "And the king loved Esther above all the women, and she obtained grace and favour in his sight more than all the virgins; so that he set the royal crown upon her head, and made her queen instead of Vashti."

Esther 3:13: "And the letters were sent by posts into all the king's provinces, to destroy, to kill, and to cause to perish, all Jews, both young and old, little children and women, in one day, even upon the thirteenth day of the twelfth month, which is the month Adar, and to take the spoil of them for a prey."

Esther 4:11: "All the king's servants, and the people of the king's provinces, do know, that whosoever, whether man or women, shall come unto the king into the inner court, who is not called, there is one law of his to put him to death, except such to whom the king shall hold out the golden sceptre, that he may live: but I have not been called to come in unto the king these thirty days."

Esther 8:11: "Wherein the king granted the Jews which were in every city to gather themselves together, and to stand for their life, to destroy, to slay and to cause to perish, all the power of the people and province that would assault them, both little ones and women, and to take the spoil of them for a prey,"

Job 2:10: "But he said unto her, Thou speakest as one of the foolish women speaketh. What? shall we receive good at the hand of God, and shall we not receive evil? In all this did not Job sin with his lips."

Job 42:15: "And in all the land were no women found so fair as the daughters of Job: and their father gave them inheritance among their brethren."

Psalms 45:9: "Kings' daughters were among thy honourable women: upon thy right hand did stand the queen in gold of Ophir."

Proverbs 22:14: "The mouth of strange women is a deep pit: he that is abhorred of the LORD shall fall therein."

Proverbs 23:33: "Thine eyes shall behold strange women, and thine heart shall utter perverse things."

Proverbs 31:3: "Give not thy strength unto women, nor thy ways to that which destroyeth kings."

Ecclesiastes 2:8: "I gathered me also silver and gold, and the peculiar treasure of kings and of the provinces: I gat me men singers and women singers, and the delights of the sons of men, as musical instruments, and that of all sorts."

Song of Solomon 1:8: "If thou know not, O thou fairest among women, go thy way forth by the footsteps of the flock, and feed thy kids beside the shepherds' tents."

Song of Solomon 5:9: "What is thy beloved more than another beloved, O thou fairest among women? what is thy beloved more than another beloved, that thou dost so charge us?"

Song of Solomon 6:1: "Whither is thy beloved gone, O thou fairest among women? whither is thy beloved turned aside? that we may seek him with thee."

Isaiah 3:12: "As for my people, children are their oppressors, and women rule over them. O my people, they which lead thee cause thee to err, and destroy the way of thy paths."

Isaiah 4:1: "And in that day seven women shall take hold of one man, saying, We will eat our own bread, and wear our own apparel: only let us be called by thy name, to take away our reproach."

Isaiah 19:16: "In that day shall Egypt be like unto women: and it shall be afraid and fear because of the shaking of the hand of the LORD of hosts, which he shaketh over it."

Isaiah 27:11: "When the boughs thereof are withered, they shall be broken off: the women come, and set them on fire: for it is a people of no understanding: therefore he that made them will not have mercy on them, and he that formed them will shew them no favour."

Isaiah 32:9: "Rise up, ye women that are at ease; hear my voice, ye careless daughters; give ear unto my speech."

Isaiah 32:10: "Many days and years shall ye be troubled, ye careless women: for the vintage shall fail, the gathering shall not come."

Isaiah 32:11: "Tremble, ye women that are at ease; be troubled, ye careless ones: strip you, and make you bare, and gird sackcloth upon your loins."

Jeremiah 7:18: "The children gather wood, and the fathers kindle the fire, and the women knead their dough, to make cakes to the queen of heaven, and to pour out drink offerings unto other gods, that they may provoke me to anger."

Jeremiah 9:17: "Thus saith the LORD of hosts, Consider ye, and call for the mourning women, that they may come; and send for cunning women, that they may come:"

Jeremiah 9:20: "Yet hear the word of the LORD, O ye women, and let your ear receive the word of

his mouth, and teach your daughters wailing, and every one her neighbour lamentation."

Jeremiah 38:22: "And, behold, all the women that are left in the king of Judah's house shall be brought forth to the king of Babylon's princes, and those women shall say, Thy friends have set thee on, and have prevailed against thee: thy feet are sunk in the mire, and they are turned away back."

Jeremiah 40:7: "Now when all the captains of the forces which were in the fields, even they and their men, heard that the king of Babylon had made Gedaliah the son of Ahikam governor in the land, and had committed unto him men, and women, and children, and of the poor of the land, of them that were not carried away captive to Babylon;"

Jeremiah 41:16: "Then took Johanan the son of Kareah, and all the captains of the forces that were with him, all the remnant of the people whom he had recovered from Ishmael the son of Nethaniah, from Mizpah, after that he had slain Gedaliah the son of Ahikam, even mighty men of war, and the women, and the children, and the eunuchs, whom he had brought again from Gibeon:"

Jeremiah 43:6: "Even men, and women, and children, and the king's daughters, and every person that Nebuzaradan the captain of the guard had left with Gedaliah the son of Ahikam the son of Shaphan, and Jeremiah the prophet, and Baruch the son of Neriah."

Jeremiah 44:15: "Then all the men which knew that their wives had burned incense unto other gods, and all the women that stood by, a great multitude, even all the people that dwelt in the land of Egypt, in Pathros, answered Jeremiah, saying,"

Jeremiah 44:20: "Then Jeremiah said unto all the people, to the men, and to the women, and to all the people which had given him that answer, saying,"

Jeremiah 44:24: "Moreover Jeremiah said unto all the people, and to all the women, Hear the word of the LORD, all Judah that are in the land of Egypt:"

Jeremiah 50:37: "A sword is upon their horses, and upon their chariots, and upon all the mingled people that are in the midst of her; and they shall become as women: a sword is upon her treasures; and they shall be robbed."

Jeremiah 51:30: "The mighty men of Babylon have forbore to fight, they have remained in their holds: their might hath failed; they became as women: they have burned her dwellingplaces; her bars are broken."

Lamentations 2:20: "Behold, O LORD, and consider to whom thou hast done this. Shall the women eat their fruit, and children of a span long? shall the priest and the prophet be slain in the sanctuary of the Lord?"

Lamentations 4:10: "The hands of the pitiful women have sodden their own children: they were their meat in the destruction of the daughter of my people."

Lamentations 5:11: "They ravished the women in Zion, and the maids in the cities of Judah."

Ezekiel 8:14: "Then he brought me to the door of the gate of the LORD's house which was toward the north; and, behold, there sat women weeping for Tammuz."

Ezekiel 9:6: "Slay utterly old and young, both maids, and little children, and women: but come not near any man upon whom is the mark; and begin at my sanctuary. Then they began at the ancient men which were before the house."

Ezekiel 13:18: "And say, Thus saith the Lord GOD; Woe to the women that sew pillows to all armholes, and make kerchiefs upon the head of every stature to hunt souls! Will ye hunt the souls of my people, and will ye save the souls alive that come unto you?"

Ezekiel 16:34: "And the contrary is in thee from other women in thy whoredoms, whereas none followeth thee to commit whoredoms: and in that thou givest a reward, and no reward is given unto thee, therefore thou art contrary."

Ezekiel 16:38: "And I will judge thee, as women that break wedlock and shed blood are judged; and I will give thee blood in fury and jealousy."

Ezekiel 16:41: "And they shall burn thine houses with fire, and execute judgments upon thee in the sight of many women: and I will cause thee to cease from playing the harlot, and thou also shalt give no hire any more."

Ezekiel 23:2: "Son of man, there were two women, the daughters of one mother:"

Ezekiel 23:10: "These discovered her nakedness: they took her sons and her daughters, and slew her with the sword: and she became famous among women; for they had executed judgment upon her."

Ezekiel 23:44: "Yet they went in unto her, as they go in unto a woman that playeth the harlot: so went they in unto Aholah and unto Aholibah, the lewd women."

Ezekiel 23:45: "And the righteous men, they shall judge them after the manner of adulteresses, and after the manner of women that shed blood; because they are adulteresses, and blood is in their hands."

Ezekiel 23:48: "Thus will I cause lewdness to cease out of the land, that all women may be taught not to do after your lewdness."

Daniel 11:17: "He shall also set his face to enter with the strength of his whole kingdom, and upright ones with him; thus shall he do: and he shall give him the daughter of women, corrupting her: but she shall not stand on his side, neither be for him."

Daniel 11:37: "Neither shall he regard the God of his fathers, nor the desire of women, nor regard any god: for he shall magnify himself above all."

Hosea 13:16: "Samaria shall become desolate; for she hath rebelled against her God: they shall fall by the sword: their infants shall be dashed in pieces, and their women with child shall be ripped up."

Amos 1:13: "Thus saith the LORD; For three transgressions of the children of Ammon, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because they have ripped up the women with child of Gilead, that they might enlarge their border:"

Micah 2:9: "The women of my people have ye cast out from their pleasant houses; from their children have ye taken away my glory for ever."

Nahum 3:13: "Behold, thy people in the midst of thee are women: the gates of thy land shall be set wide open unto thine enemies: the fire shall devour thy bars."

Zechariah 5:9: "Then lifted I up mine eyes, and looked, and, behold, there came out two women, and the wind was in their wings; for they had wings like the wings of a stork: and they lifted up the ephah between the earth and the heaven."

Zechariah 8:4: "Thus saith the LORD of hosts; There shall yet old men and old women dwell in the streets of Jerusalem, and every man with his staff in his hand for very age."

Zechariah 14:2: "For I will gather all nations against Jerusalem to battle; and the city shall be taken, and the houses rifled, and the women ravished; and half of the city shall go forth into captivity, and the residue of the people shall not be cut off from the city."

Matthew 11:11: "Verily I say unto you, Among them that are born of women there hath not risen a greater than John the Baptist: notwithstanding he that is least in the kingdom of heaven is greater than he."

Matthew 14:21: "And they that had eaten were about five thousand men, beside women and children."

Matthew 15:38: "And they that did eat were four thousand men, beside women and children."

Matthew 24:41: "Two women shall be grinding at the mill; the one shall be taken, and the other left."

Matthew 27:55: "And many women were there beholding afar off, which followed Jesus from Galilee, ministering unto him:"

Matthew 28:5: "And the angel answered and said unto the women, Fear not ye: for I know that ye seek Jesus, which was crucified."

Mark 15:40: "There were also women looking on afar off: among whom was Mary Magdalene, and Mary the mother of James the less and of Joses, and Salome;"

Mark 15:41: "(Who also, when he was in Galilee, followed him, and ministered unto him;) and many other women which came up with him unto Jerusalem."

Luke 1:28: "And the angel came in unto her, and said, Hail, thou that art highly favoured, the Lord

is with thee: blessed art thou among women."

Luke 1:42: "And she spake out with a loud voice, and said, Blessed art thou among women, and blessed is the fruit of thy womb."

Luke 7:28: "For I say unto you, Among those that are born of women there is not a greater prophet than John the Baptist: but he that is least in the kingdom of God is greater than he."

Luke 8:2: "And certain women, which had been healed of evil spirits and infirmities, Mary called Magdalene, out of whom went seven devils,"

Luke 17:35: "Two women shall be grinding together; the one shall be taken, and the other left."

Luke 23:27: "And there followed him a great company of people, and of women, which also bewailed and lamented him."

Luke 23:49: "And all his acquaintance, and the women that followed him from Galilee, stood afar off, beholding these things."

Luke 23:55: "And the women also, which came with him from Galilee, followed after, and beheld the sepulchre, and how his body was laid."

Luke 24:10: "It was Mary Magdalene and Joanna, and Mary the mother of James, and other women that were with them, which told these things unto the apostles."

Luke 24:22: "Yea, and certain women also of our company made us astonished, which were early at the sepulchre;"

Luke 24:24: "And certain of them which were with us went to the sepulchre, and found it even so as the women had said: but him they saw not."

Acts 1:14: "These all continued with one accord in prayer and supplication, with the women, and Mary the mother of Jesus, and with his brethren."

Acts 5:14: "And believers were the more added to the Lord, multitudes both of men and women.)"

Acts 8:3: "As for Saul, he made havock of the church, entering into every house, and haling men and women committed them to prison."

Acts 8:12: "But when they believed Philip preaching the things concerning the kingdom of God, and the name of Jesus Christ, they were baptized, both men and women."

Acts 9:2: "And desired of him letters to Damascus to the synagogues, that if he found any of this way, whether they were men or women, he might bring them bound unto Jerusalem."

Acts 13:50: "But the Jews stirred up the devout and honourable women, and the chief men of the city, and raised persecution against Paul and Barnabas, and expelled them out of their coasts."

Acts 16:13: "And on the sabbath we went out of the city by a river side, where prayer was wont to be made; and we sat down, and spake unto the women which resorted thither."

Acts 17:4: "And some of them believed, and consorted with Paul and Silas; and of the devout Greeks a great multitude, and of the chief women not a few."

Acts 17:12: "Therefore many of them believed; also of honourable women which were Greeks, and of men, not a few."

Acts 22:4: "And I persecuted this way unto the death, binding and delivering into prisons both men and women."

Romans 1:26: "For this cause God gave them up unto vile affections: for even their women did change the natural use into that which is against nature:"

1 Corinthians 14:34: "Let your women keep silence in the churches: for it is not permitted unto them to speak; but they are commanded to be under obedience as also saith the law."

1 Corinthians 14:35: "And if they will learn any thing, let them ask their husbands at home: for it is a shame for women to speak in the church."

Philippians 4:3: "And I intreat thee also, true yokefellow, help those women which laboured with me in the gospel, with Clement also, and with other my fellowlabourers, whose names are in the book of life."

1 Timothy 2:9: "In like manner also, that women adorn themselves in modest apparel, with shamefacedness and sobriety; not with broided hair, or gold, or pearls, or costly array;"

1 Timothy 2:10: "But (which becometh women professing godliness) with good works."  
1 Timothy 5:2: "The elder women as mothers; the younger as sisters, with all purity."  
1 Timothy 5:14: "I will therefore that the younger women marry, bear children, guide the house, give none occasion to the adversary to speak reproachfully."  
2 Timothy 3:6: "For of this sort are they which creep into houses, and lead captive silly women laden with sins, led away with divers lusts,"  
Titus 2:3: "The aged women likewise, that they be in behaviour as becometh holiness, not false accusers, not given to much wine, teachers of good things;"  
Titus 2:4: "That they may teach the young women to be sober, to love their husbands, to love their children,"  
Hebrews 11:35: "Women received their dead raised to life again: and others were tortured, not accepting deliverance; that they might obtain a better resurrection:"  
1 Peter 3:5: "For after this manner in the old time the holy women also, who trusted in God, adorned themselves, being in subjection unto their own husbands:"  
Revelation 9:8: "And they had hair as the hair of women, and their teeth were as the teeth of lions."  
Revelation 14:4: "These are they which were not defiled with women; for they are virgins. These are they which follow the Lamb whithersoever he goeth. These were redeemed from among men, being the firstfruits unto God and to the Lamb."

## **WOMENSERVANTS**

Occurrences: 3

Genesis 20:14: "And Abimelech took sheep, and oxen, and menservants, and womenservants, and gave them unto Abraham, and restored him Sarah his wife."  
Genesis 32:5: "And I have oxen, and asses, flocks, and menservants, and womenservants: and I have sent to tell my lord, that I may find grace in thy sight."  
Genesis 32:22: "And he rose up that night, and took his two wives, and his two womenservants, and his eleven sons, and passed over the ford Jabbok."

## **WON**

Occurrences: 3

1 Chronicles 26:27: "Out of the spoils won in battles did they dedicate to maintain the house of the LORD."  
Proverbs 18:19: "A brother offended is harder to be won than a strong city: and their contentions are like the bars of a castle."  
1 Peter 3:1: "Likewise, ye wives, be in subjection to your own husbands; that, if any obey not the word, they also may without the word be won by the conversation of the wives;"

## **WONDER**

Occurrences: 15

Deuteronomy 13:1: "If there arise among you a prophet, or a dreamer of dreams, and giveth thee a sign or a wonder,"  
Deuteronomy 13:2: "And the sign or the wonder come to pass, whereof he spake unto thee, saying, Let us go after other gods, which thou hast not known, and let us serve them;"  
Deuteronomy 28:46: "And they shall be upon thee for a sign and for a wonder, and upon thy seed for ever."  
2 Chronicles 32:31: "Howbeit in the business of the ambassadors of the princes of Babylon, who sent unto him to enquire of the wonder that was done in the land, God left him, to try him, that he might know all that was in his heart."



Psalms 71:7: "I am as a wonder unto many; but thou art my strong refuge."  
 Isaiah 20:3: "And the LORD said, Like as my servant Isaiah hath walked naked and barefoot three years for a sign and wonder upon Egypt and upon Ethiopia;"  
 Isaiah 29:9: "Stay yourselves, and wonder; cry ye out, and cry: they are drunken, but not with wine; they stagger, but not with strong drink."  
 Isaiah 29:14: "Therefore, behold, I will proceed to do a marvellous work among this people, even a marvellous work and a wonder: for the wisdom of their wise men shall perish, and the understanding of their prudent men shall be hid."  
 Jeremiah 4:9: "And it shall come to pass at that day, saith the LORD, that the heart of the king shall perish, and the heart of the princes; and the priests shall be astonished, and the prophets shall wonder."  
 Habakkuk 1:5: "Behold ye among the heathen, and regard, and wonder marvelously: for I will work a work in your days which ye will not believe, though it be told you."  
 Acts 3:10: "And they knew that it was he which sat for alms at the Beautiful gate of the temple: and they were filled with wonder and amazement at that which had happened unto him."  
 Acts 13:41: "Behold, ye despisers, and wonder, and perish: for I work a work in your days, a work which ye shall in no wise believe, though a man declare it unto you."  
 Revelation 12:1: "And there appeared a great wonder in heaven; a woman clothed with the sun, and the moon under her feet, and upon her head a crown of twelve stars:"  
 Revelation 12:3: "And there appeared another wonder in heaven; and behold a great red dragon, having seven heads and ten horns, and seven crowns upon his heads."  
 Revelation 17:8: "The beast that thou sawest was, and is not; and shall ascend out of the bottomless pit, and go into perdition: and they that dwell on the earth shall wonder, whose names were not written in the book of life from the foundation of the world, when they behold the beast that was, and is not, and yet is."

## WONDERED

Occurrences: 15

Isaiah 59:16: "And he saw that there was no man, and wondered that there was no intercessor: therefore his arm brought salvation unto him; and his righteousness, it sustained him."  
 Isaiah 63:5: "And I looked, and there was none to help; and I wondered that there was none to uphold: therefore mine own arm brought salvation unto me; and my fury, it upheld me."  
 Zechariah 3:8: "Hear now, O Joshua the high priest, thou, and thy fellows that sit before thee: for they are men wondered at: for, behold, I will bring forth my servant the BRANCH."  
 Matthew 15:31: "Insomuch that the multitude wondered, when they saw the dumb to speak, the maimed to be whole, the lame to walk, and the blind to see: and they glorified the God of Israel."  
 Mark 6:51: "And he went up unto them into the ship; and the wind ceased: and they were sore amazed in themselves beyond measure, and wondered."  
 Luke 2:18: "And all they that heard it wondered at those things which were told them by the shepherds."  
 Luke 4:22: "And all bare him witness, and wondered at the gracious words which proceeded out of his mouth. And they said, Is not this Joseph's son?"  
 Luke 8:25: "And he said unto them, Where is your faith? And they being afraid wondered, saying one to another, What manner of man is this! for he commandeth even the winds and water, and they obey him."  
 Luke 9:43: "And they were all amazed at the mighty power of God. But while they wondered every one at all things which Jesus did, he said unto his disciples,"  
 Luke 11:14: "And he was casting out a devil, and it was dumb. And it came to pass, when the devil was gone out, the dumb spake; and the people wondered."  
 Luke 24:41: "And while they yet believed not for joy, and wondered, he said unto them, Have ye

here any meat?"

Acts 7:31: "When Moses saw it, he wondered at the sight: and as he drew near to behold it, the voice of the LORD came unto him,"

Acts 8:13: "Then Simon himself believed also: and when he was baptized, he continued with Philip, and wondered, beholding the miracles and signs which were done."

Revelation 13:3: "And I saw one of his heads as it were wounded to death; and his deadly wound was healed: and all the world wondered after the beast."

Revelation 17:6: "And I saw the woman drunken with the blood of the saints, and with the blood of the martyrs of Jesus: and when I saw her, I wondered with great admiration."

## WONDERFUL

Occurrences: 21

Deuteronomy 28:59: "Then the LORD will make thy plagues wonderful, and the plagues of thy seed, even great plagues, and of long continuance, and sore sicknesses, and of long continuance."

2 Samuel 1:26: "I am distressed for thee, my brother Jonathan: very pleasant hast thou been unto me: thy love to me was wonderful, passing the love of women."

2 Chronicles 2:9: "Even to prepare me timber in abundance: for the house which I am about to build shall be wonderful great."

Job 42:3: "Who is he that hideth counsel without knowledge? therefore have I uttered that I understood not; things too wonderful for me, which I knew not."

Psalms 40:5: "Many, O LORD my God, are thy wonderful works which thou hast done, and thy thoughts which are to us-ward: they cannot be reckoned up in order unto thee: if I would declare and speak of them, they are more than can be numbered."

Psalms 78:4: "We will not hide them from their children, shewing to the generation to come the praises of the LORD, and his strength, and his wonderful works that he hath done."

Psalms 107:8: "Oh that men would praise the LORD for his goodness, and for his wonderful works to the children of men!"

Psalms 107:15: "Oh that men would praise the LORD for his goodness, and for his wonderful works to the children of men!"

Psalms 107:21: "Oh that men would praise the LORD for his goodness, and for his wonderful works to the children of men!"

Psalms 107:31: "Oh that men would praise the LORD for his goodness, and for his wonderful works to the children of men!"

Psalms 111:4: "He hath made his wonderful works to be remembered: the LORD is gracious and full of compassion."

Psalms 119:129: "Thy testimonies are wonderful: therefore doth my soul keep them."

Psalms 139:6: "Such knowledge is too wonderful for me; it is high, I cannot attain unto it."

Proverbs 30:18: "There be three things which are too wonderful for me, yea, four which I know not:"

Isaiah 9:6: "For unto us a child is born, unto us a son is given: and the government shall be upon his shoulder: and his name shall be called Wonderful, Counsellor, The mighty God, The everlasting Father, The Prince of Peace."

Isaiah 25:1: "O Lord, thou art my God; I will exalt thee, I will praise thy name; for thou hast done wonderful things; thy counsels of old are faithfulness and truth."

Isaiah 28:29: "This also cometh forth from the LORD of hosts, which is wonderful in counsel, and excellent in working."

Jeremiah 5:30: "A wonderful and horrible thing is committed in the land;"

Matthew 7:22: "Many will say to me in that day, Lord, Lord, have we not prophesied in thy name? and in thy name have cast out devils? and in thy name done many wonderful works?"

Matthew 21:15: "And when the chief priests and scribes saw the wonderful things that he did, and

the children crying in the temple, and saying, Hosanna to the son of David; they were sore displeased,"

Acts 2:11: "Cretes and Arabians, we do hear them speak in our tongues the wonderful works of God."

## WONDERFULLY

Occurrences: 4

1 Samuel 6:6: "Wherefore then do ye harden your hearts, as the Egyptians and Pharaoh hardened their hearts? when he had wrought wonderfully among them, did they not let the people go, and they departed?"

Psalms 139:14: "I will praise thee; for I am fearfully and wonderfully made: marvellous are thy works; and that my soul knoweth right well."

Lamentations 1:9: "Her filthiness is in her skirts; she remembereth not her last end; therefore she came down wonderfully: she had no comforter. O LORD, behold my affliction: for the enemy hath magnified himself."

Daniel 8:24: "And his power shall be mighty, but not by his own power: and he shall destroy wonderfully, and shall prosper, and practise, and shall destroy the mighty and the holy people."

## WONDERING

Occurrences: 3

Genesis 24:21: "And the man wondering at her held his peace, to wit whether the LORD had made his journey prosperous or not."

Luke 24:12: "Then arose Peter, and ran unto the sepulchre; and stooping down, he beheld the linen clothes laid by themselves, and departed, wondering in himself at that which was come to pass."

Acts 3:11: "And as the lame man which was healed held Peter and John, all the people ran together unto them in the porch that is called Solomon's, greatly wondering."

## WONDEROUSLY

Occurrences: 1

Judges 13:19: "So Manoah took a kid with a meat offering, and offered it upon a rock unto the LORD: and the angel did wonderously; and Manoah and his wife looked on."

## WONDERS

Occurrences: 55

Exodus 3:20: "And I will stretch out my hand, and smite Egypt with all my wonders which I will do in the midst thereof: and after that he will let you go."

Exodus 4:21: "And the LORD said unto Moses, When thou goest to return into Egypt, see that thou do all those wonders before Pharaoh, which I have put in thine hand: but I will harden his heart, that he shall not let the people go."

Exodus 7:3: "And I will harden Pharaoh's heart, and multiply my signs and my wonders in the land of Egypt."

Exodus 11:9: "And the LORD said unto Moses, Pharaoh shall not hearken unto you; that my wonders may be multiplied in the land of Egypt."

Exodus 11:10: "And Moses and Aaron did all these wonders before Pharaoh: and the LORD hardened Pharaoh's heart, so that he would not let the children of Israel go out of his land."

Exodus 15:11: "Who is like unto thee, O LORD, among the gods? who is like thee, glorious in holiness, fearful in praises, doing wonders?"

Deuteronomy 4:34: "Or hath God assayed to go and take him a nation from the midst of another

nation, by temptations, by signs, and by wonders, and by war, and by a mighty hand, and by a stretched out arm, and by great terrors, according to all that the LORD your God did for you in Egypt before your eyes?"

Deuteronomy 6:22: "And the LORD shewed signs and wonders, great and sore, upon Egypt, upon Pharaoh, and upon all his household, before our eyes:"

Deuteronomy 7:19: "The great temptations which thine eyes saw, and the signs, and the wonders, and the mighty hand, and the stretched out arm, whereby the LORD thy God brought thee out: so shall the LORD thy God do unto all the people of whom thou art afraid."

Deuteronomy 26:8: "And the LORD brought us forth out of Egypt with a mighty hand, and with an outstretched arm, and with great terribleness, and with signs, and with wonders:"

Deuteronomy 34:11: "In all the signs and the wonders, which the LORD sent him to do in the land of Egypt to Pharaoh, and to all his servants, and to all his land,"

Joshua 3:5: "And Joshua said unto the people, Sanctify yourselves: for to morrow the LORD will do wonders among you."

1 Chronicles 16:12: "Remember his marvellous works that he hath done, his wonders, and the judgments of his mouth;"

Nehemiah 9:10: "And shewedst signs and wonders upon Pharaoh, and on all his servants, and on all the people of his land: for thou knewest that they dealt proudly against them. So didst thou get thee a name, as it is this day."

Nehemiah 9:17: "And refused to obey, neither were mindful of thy wonders that thou didst among them; but hardened their necks, and in their rebellion appointed a captain to return to their bondage: but thou art a God ready to pardon, gracious and merciful, slow to anger, and of great kindness, and forsookest them not."

Job 9:10: "Which doeth great things past finding out; yea, and wonders without number."

Psalms 77:11: "I will remember the works of the LORD: surely I will remember thy wonders of old."

Psalms 77:14: "Thou art the God that doest wonders: thou hast declared thy strength among the people."

Psalms 78:11: "And forgot his works, and his wonders that he had shewed them."

Psalms 78:43: "How he had wrought his signs in Egypt, and his wonders in the field of Zoan."

Psalms 88:10: "Wilt thou shew wonders to the dead? shall the dead arise and praise thee? Selah."

Psalms 88:12: "Shall thy wonders be known in the dark? and thy righteousness in the land of forgetfulness?"

Psalms 89:5: "And the heavens shall praise thy wonders, O LORD: thy faithfulness also in the congregation of the saints."

Psalms 96:3: "Declare his glory among the heathen, his wonders among all people."

Psalms 105:5: "Remember his marvellous works that he hath done; his wonders, and the judgments of his mouth;"

Psalms 105:27: "They shewed his signs among them, and wonders in the land of Ham."

Psalms 106:7: "Our fathers understood not thy wonders in Egypt; they remembered not the multitude of thy mercies; but provoked him at the sea, even at the Red sea."

Psalms 107:24: "These see the works of the LORD, and his wonders in the deep."

Psalms 135:9: "Who sent tokens and wonders into the midst of thee, O Egypt, upon Pharaoh, and upon all his servants."

Psalms 136:4: "To him who alone doeth great wonders: for his mercy endureth for ever."

Isaiah 8:18: "Behold, I and the children whom the LORD hath given me are for signs and for wonders in Israel from the LORD of hosts, which dwelleth in mount Zion."

Jeremiah 32:20: "Which hast set signs and wonders in the land of Egypt, even unto this day, and in Israel, and among other men; and hast made thee a name, as at this day;"

Jeremiah 32:21: "And hast brought forth thy people Israel out of the land of Egypt with signs, and

with wonders, and with a strong hand, and with a stretched out arm, and with great terror;"

Daniel 4:2: "I thought it good to shew the signs and wonders that the high God hath wrought toward me."

Daniel 4:3: "How great are his signs! and how mighty are his wonders! his kingdom is an everlasting kingdom, and his dominion is from generation to generation."

Daniel 6:27: "He delivereth and rescueth, and he worketh signs and wonders in heaven and in earth, who hath delivered Daniel from the power of the lions."

Daniel 12:6: "And one said to the man clothed in linen, which was upon the waters of the river, How long shall it be to the end of these wonders?"

Joel 2:30: "And I will shew wonders in the heavens and in the earth, blood, and fire, and pillars of smoke."

Matthew 24:24: "For there shall arise false Christs, and false prophets, and shall shew great signs and wonders; insomuch that, if it were possible, they shall deceive the very elect."

Mark 13:22: "For false Christs and false prophets shall rise, and shall shew signs and wonders, to seduce, if it were possible, even the elect."

John 4:48: "Then said Jesus unto him, Except ye see signs and wonders, ye will not believe."

Acts 2:19: "And I will shew wonders in heaven above, and signs in the earth beneath; blood, and fire, and vapour of smoke:"

Acts 2:22: "Ye men of Israel, hear these words; Jesus of Nazareth, a man approved of God among you by miracles and wonders and signs, which God did by him in the midst of you, as ye yourselves also know:"

Acts 2:43: "And fear came upon every soul: and many wonders and signs were done by the apostles."

Acts 4:30: "By stretching forth thine hand to heal; and that signs and wonders may be done by the name of thy holy child Jesus."

Acts 5:12: "And by the hands of the apostles were many signs and wonders wrought among the people; (and they were all with one accord in Solomon's porch."

Acts 6:8: "And Stephen, full of faith and power, did great wonders and miracles among the people."

Acts 7:36: "He brought them out, after that he had shewed wonders and signs in the land of Egypt, and in the Red sea, and in the wilderness forty years."

Acts 14:3: "Long time therefore abode they speaking boldly in the Lord, which gave testimony unto the word of his grace, and granted signs and wonders to be done by their hands."

Acts 15:12: "Then all the multitude kept silence, and gave audience to Barnabas and Paul, declaring what miracles and wonders God had wrought among the Gentiles by them."

Romans 15:19: "Through mighty signs and wonders, by the power of the Spirit of God; so that from Jerusalem, and round about unto Illyricum, I have fully preached the gospel of Christ."

2 Corinthians 12:12: "Truly the signs of an apostle were wrought among you in all patience, in signs, and wonders, and mighty deeds."

2 Thessalonians 2:9: "Even him, whose coming is after the working of Satan with all power and signs and lying wonders,"

Hebrews 2:4: "God also bearing them witness, both with signs and wonders, and with divers miracles, and gifts of the Holy Ghost, according to his own will?"

Revelation 13:13: "And he doeth great wonders, so that he maketh fire come down from heaven on the earth in the sight of men,"

## **WONDROUS**

Occurrences: 15

1 Chronicles 16:9: "Sing unto him, sing psalms unto him, talk ye of all his wondrous works."

Job 37:14: "Hearken unto this, O Job: stand still, and consider the wondrous works of God."

Job 37:16: "Dost thou know the balancings of the clouds, the wondrous works of him which is

perfect in knowledge?"

Psalms 26:7: "That I may publish with the voice of thanksgiving, and tell of all thy wondrous works."

Psalms 71:17: "O God, thou hast taught me from my youth: and hitherto have I declared thy wondrous works."

Psalms 72:18: "Blessed be the LORD God, the God of Israel, who only doeth wondrous things."

Psalms 75:1: "Unto thee, O God, do we give thanks, unto thee do we give thanks: for that thy name is near thy wondrous works declare."

Psalms 78:32: "For all this they sinned still, and believed not for his wondrous works."

Psalms 86:10: "For thou art great, and doest wondrous things: thou art God alone."

Psalms 105:2: "Sing unto him, sing psalms unto him: talk ye of all his wondrous works."

Psalms 106:22: "Wondrous works in the land of Ham, and terrible things by the Red sea."

Psalms 119:18: "Open thou mine eyes, that I may behold wondrous things out of thy law."

Psalms 119:27: "Make me to understand the way of thy precepts: so shall I talk of thy wondrous works."

Psalms 145:5: "I will speak of the glorious honour of thy majesty, and of thy wondrous works."

Jeremiah 21:2: "Enquire, I pray thee, of the LORD for us; for Nebuchadrezzar king of Babylon maketh war against us; if so be that the LORD will deal with us according to all his wondrous works, that he may go up from us."

## WONDROUSLY

Occurrences: 1

Joel 2:26: "And ye shall eat in plenty, and be satisfied, and praise the name of the LORD your God, that hath dealt wondrously with you: and my people shall never be ashamed."

## WONT

Occurrences: 9

Exodus 21:29: "But if the ox were wont to push with his horn in time past, and it hath been testified to his owner, and he hath not kept him in, but that he hath killed a man or a woman; the ox shall be stoned, and his owner also shall be put to death."

Numbers 22:30: "And the ass said unto Balaam, Am not I thine ass, upon which thou hast ridden ever since I was thine unto this day? was I ever wont to do so unto thee? And he said, Nay."

1 Samuel 30:31: "And to them which were in Hebron, and to all the places where David himself and his men were wont to haunt."

2 Samuel 20:18: "Then she spake, saying, They were wont to speak in old time, saying, They shall surely ask counsel at Abel: and so they ended the matter."

Daniel 3:19: "Then was Nebuchadnezzar full of fury, and the form of his visage was changed against Shadrach, Meshach, and Abednego: therefore he spake, and commanded that they should heat the furnace one seven times more than it was wont to be heated."

Matthew 27:15: "Now at that feast the governor was wont to release unto the people a prisoner, whom they would."

Mark 10:1: "And he arose from thence, and cometh into the coasts of Judaea by the farther side of Jordan: and the people resort unto him again; and, as he was wont, he taught them again."

Luke 22:39: "And he came out, and went, as he was wont, to the mount of Olives; and his disciples also followed him."

Acts 16:13: "And on the sabbath we went out of the city by a river side, where prayer was wont to be made; and we sat down, and spake unto the women which resorted thither."

## WOOD

Occurrences: 132

Genesis 6:14: "Make thee an ark of gopher wood; rooms shalt thou make in the ark, and shalt pitch it within and without with pitch."

Genesis 22:3: "And Abraham rose up early in the morning, and saddled his ass, and took two of his young men with him, and Isaac his son, and clave the wood for the burnt offering, and rose up, and went unto the place of which God had told him."

Genesis 22:6: "And Abraham took the wood of the burnt offering, and laid it upon Isaac his son; and he took the fire in his hand, and a knife; and they went both of them together."

Genesis 22:7: "And Isaac spake unto Abraham his father, and said, My father: and he said, Here am I, my son. And he said, Behold the fire and the wood: but where is the lamb for a burnt offering?"

Genesis 22:9: "And they came to the place which God had told him of; and Abraham built an altar there, and laid the wood in order, and bound Isaac his son, and laid him on the altar upon the wood."

Exodus 7:19: "And the LORD spake unto Moses, Say unto Aaron, Take thy rod, and stretch out thine hand upon the waters of Egypt, upon their streams, upon their rivers, and upon their ponds, and upon all their pools of water, that they may become blood; and that there may be blood throughout all the land of Egypt, both in vessels of wood, and in vessels of stone."

Exodus 25:5: "And rams' skins dyed red, and badgers' skins, and shittim wood,"

Exodus 25:10: "And they shall make an ark of shittim wood: two cubits and a half shall be the length thereof, and a cubit and a half the breadth thereof, and a cubit and a half the height thereof."

Exodus 25:13: "And thou shalt make staves of shittim wood, and overlay them with gold."

Exodus 25:23: "Thou shalt also make a table of shittim wood: two cubits shall be the length thereof, and a cubit the breadth thereof, and a cubit and a half the height thereof."

Exodus 25:28: "And thou shalt make the staves of shittim wood, and overlay them with gold, that the table may be borne with them."

Exodus 26:15: "And thou shalt make boards for the tabernacle of shittim wood standing up."

Exodus 26:26: "And thou shalt make bars of shittim wood; five for the boards of the one side of the tabernacle,"

Exodus 26:32: "And thou shalt hang it upon four pillars of shittim wood overlaid with gold: their hooks shall be of gold, upon the four sockets of silver."

Exodus 26:37: "And thou shalt make for the hanging five pillars of shittim wood, and overlay them with gold, and their hooks shall be of gold: and thou shalt cast five sockets of brass for them."

Exodus 27:1: "And thou shalt make an altar of shittim wood, five cubits long, and five cubits broad; the altar shall be foursquare: and the height thereof shall be three cubits."

Exodus 27:6: "And thou shalt make staves for the altar, staves of shittim wood, and overlay them with brass."

Exodus 30:1: "And thou shalt make an altar to burn incense upon: of shittim wood shalt thou make it."

Exodus 30:5: "And thou shalt make the staves of shittim wood, and overlay them with gold."

Exodus 35:7: "And rams' skins dyed red, and badgers' skins, and shittim wood,"

Exodus 35:24: "Every one that did offer an offering of silver and brass brought the LORD's offering: and every man, with whom was found shittim wood for any work of the service, brought it."

Exodus 35:33: "And in the cutting of stones, to set them, and in carving of wood, to make any manner of cunning work."

Exodus 36:20: "And he made boards for the tabernacle of shittim wood, standing up."

Exodus 36:31: "And he made bars of shittim wood; five for the boards of the one side of the tabernacle,"

Exodus 36:36: "And he made thereunto four pillars of shittim wood, and overlaid them with gold: their hooks were of gold; and he cast for them four sockets of silver."

Exodus 37:1: "And Bezaleel made the ark of shittim wood: two cubits and a half was the length of it, and a cubit and a half the breadth of it, and a cubit and a half the height of it:"

Exodus 37:4: "And he made staves of shittim wood, and overlaid them with gold."

Exodus 37:10: "And he made the table of shittim wood: two cubits was the length thereof, and a cubit the breadth thereof, and a cubit and a half the height thereof:"

Exodus 37:15: "And he made the staves of shittim wood, and overlaid them with gold, to bear the table."

Exodus 37:25: "And he made the incense altar of shittim wood: the length of it was a cubit, and the breadth of it a cubit; it was foursquare; and two cubits was the height of it; the horns thereof were of the same."

Exodus 37:28: "And he made the staves of shittim wood, and overlaid them with gold."

Exodus 38:1: "And he made the altar of burnt offering of shittim wood: five cubits was the length thereof, and five cubits the breadth thereof; it was foursquare; and three cubits the height thereof."

Exodus 38:6: "And he made the staves of shittim wood, and overlaid them with brass."

Leviticus 1:7: "And the sons of Aaron the priest shall put fire upon the altar, and lay the wood in order upon the fire:"

Leviticus 1:8: "And the priests, Aaron's sons, shall lay the parts, the head, and the fat, in order upon the wood that is on the fire which is upon the altar:"

Leviticus 1:12: "And he shall cut it into his pieces, with his head and his fat: and the priest shall lay them in order on the wood that is on the fire which is upon the altar:"

Leviticus 1:17: "And he shall cleave it with the wings thereof, but shall not divide it asunder: and the priest shall burn it upon the altar, upon the wood that is upon the fire: it is a burnt sacrifice, an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD."

Leviticus 3:5: "And Aaron's sons shall burn it on the altar upon the burnt sacrifice, which is upon the wood that is on the fire: it is an offering made by fire, of a sweet savour unto the LORD."

Leviticus 4:12: "Even the whole bullock shall he carry forth without the camp unto a clean place, where the ashes are poured out, and burn him on the wood with fire: where the ashes are poured out shall he be burnt."

Leviticus 6:12: "And the fire upon the altar shall be burning in it; it shall not be put out: and the priest shall burn wood on it every morning, and lay the burnt offering in order upon it; and he shall burn thereon the fat of the peace offerings."

Leviticus 11:32: "And upon whatsoever any of them, when they are dead, doth fall, it shall be unclean; whether it be any vessel of wood, or raiment, or skin, or sack, whatsoever vessel it be, wherein any work is done, it must be put into water, and it shall be unclean until the even; so it shall be cleansed."

Leviticus 14:4: "Then shall the priest command to take for him that is to be cleansed two birds alive and clean, and cedar wood, and scarlet, and hyssop:"

Leviticus 14:6: "As for the living bird, he shall take it, and the cedar wood, and the scarlet, and the hyssop, and shall dip them and the living bird in the blood of the bird that was killed over the running water:"

Leviticus 14:49: "And he shall take to cleanse the house two birds, and cedar wood, and scarlet, and hyssop:"

Leviticus 14:51: "And he shall take the cedar wood, and the hyssop, and the scarlet, and the living bird, and dip them in the blood of the slain bird, and in the running water, and sprinkle the house seven times:"

Leviticus 14:52: "And he shall cleanse the house with the blood of the bird, and with the running water, and with the living bird, and with the cedar wood, and with the hyssop, and with the scarlet:"

Leviticus 15:12: "And the vessel of earth, that he toucheth which hath the issue, shall be broken:



and every vessel of wood shall be rinsed in water."

Numbers 13:20: "And what the land is, whether it be fat or lean, whether there be wood therein, or not. And be ye of good courage, and bring of the fruit of the land. Now the time was the time of the firstripe grapes."

Numbers 19:6: "And the priest shall take cedar wood, and hyssop, and scarlet, and cast it into the midst of the burning of the heifer."

Numbers 31:20: "And purify all your raiment, and all that is made of skins, and all work of goats' hair, and all things made of wood."

Numbers 35:18: "Or if he smite him with an hand weapon of wood, wherewith he may die, and he die, he is a murderer: the murderer shall surely be put to death."

Deuteronomy 4:28: "And there ye shall serve gods, the work of men's hands, wood and stone, which neither see, nor hear, nor eat, nor smell."

Deuteronomy 10:1: "At that time the LORD said unto me, Hew thee two tables of stone like unto the first, and come up unto me into the mount, and make thee an ark of wood."

Deuteronomy 10:3: "And I made an ark of shittim wood, and hewed two tables of stone like unto the first, and went up into the mount, having the two tables in mine hand."

Deuteronomy 19:5: "As when a man goeth into the wood with his neighbour to hew wood, and his hand fetcheth a stroke with the axe to cut down the tree, and the head slippeth from the helve, and lighteth upon his neighbour, that he die; he shall flee unto one of those cities, and live:"

Deuteronomy 28:36: "The LORD shall bring thee, and thy king which thou shalt set over thee, unto a nation which neither thou nor thy fathers have known; and there shalt thou serve other gods, wood and stone."

Deuteronomy 28:64: "And the LORD shall scatter thee among all people, from the one end of the earth even unto the other; and there thou shalt serve other gods, which neither thou nor thy fathers have known, even wood and stone."

Deuteronomy 29:11: "Your little ones, your wives, and thy stranger that is in thy camp, from the hewer of thy wood unto the drawer of thy water:"

Deuteronomy 29:17: "And ye have seen their abominations, and their idols, wood and stone, silver and gold, which were among them:)"

Joshua 9:21: "And the princes said unto them, Let them live; but let them be hewers of wood and drawers of water unto all the congregation; as the princes had promised them."

Joshua 9:23: "Now therefore ye are cursed, and there shall none of you be freed from being bondmen, and hewers of wood and drawers of water for the house of my God."

Joshua 9:27: "And Joshua made them that day hewers of wood and drawers of water for the congregation, and for the altar of the LORD, even unto this day, in the place which he should choose."

Joshua 17:15: "And Joshua answered them, If thou be a great people, then get thee up to the wood country, and cut down for thyself there in the land of the Perizzites and of the giants, if mount Ephraim be too narrow for thee."

Joshua 17:18: "But the mountain shall be thine; for it is a wood, and thou shalt cut it down: and the outgoings of it shall be thine: for thou shalt drive out the Canaanites, though they have iron chariots, and though they be strong."

Judges 6:26: "And build an altar unto the LORD thy God upon the top of this rock, in the ordered place, and take the second bullock, and offer a burnt sacrifice with the wood of the grove which thou shalt cut down."

1 Samuel 6:14: "And the cart came into the field of Joshua, a Bethshemite, and stood there, where there was a great stone: and they clave the wood of the cart, and offered the kine a burnt offering unto the LORD."

1 Samuel 14:25: "And all they of the land came to a wood; and there was honey upon the ground."

1 Samuel 14:26: "And when the people were come into the wood, behold, the honey dropped; but

no man put his hand to his mouth: for the people feared the oath."

1 Samuel 23:15: "And David saw that Saul was come out to seek his life: and David was in the wilderness of Ziph in a wood."

1 Samuel 23:16: "And Jonathan Saul's son arose, and went to David into the wood, and strengthened his hand in God."

1 Samuel 23:18: "And they two made a covenant before the LORD: and David abode in the wood, and Jonathan went to his house."

1 Samuel 23:19: "Then came up the Ziphites to Saul to Gibeah, saying, Doth not David hide himself with us in strong holds in the wood, in the hill of Hachilah, which is on the south of Jeshimon?"

2 Samuel 6:5: "And David and all the house of Israel played before the LORD on all manner of instruments made of fir wood, even on harps, and on psalteries, and on timbrels, and on cornets, and on cymbals."

2 Samuel 18:6: "So the people went out into the field against Israel: and the battle was in the wood of Ephraim;"

2 Samuel 18:8: "For the battle was there scattered over the face of all the country: and the wood devoured more people that day than the sword devoured."

2 Samuel 18:17: "And they took Absalom, and cast him into a great pit in the wood, and laid a very great heap of stones upon him: and all Israel fled every one to his tent."

2 Samuel 24:22: "And Araunah said unto David, Let my lord the king take and offer up what seemeth good unto him: behold, here be oxen for burnt sacrifice, and threshing instruments and other instruments of the oxen for wood."

1 Kings 6:15: "And he built the walls of the house within with boards of cedar, both the floor of the house, and the walls of the ceiling: and he covered them on the inside with wood, and covered the floor of the house with planks of fir."

1 Kings 18:23: "Let them therefore give us two bullocks; and let them choose one bullock for themselves, and cut it in pieces, and lay it on wood, and put no fire under: and I will dress the other bullock, and lay it on wood, and put no fire under:"

1 Kings 18:33: "And he put the wood in order, and cut the bullock in pieces, and laid him on the wood, and said, Fill four barrels with water, and pour it on the burnt sacrifice, and on the wood."

1 Kings 18:38: "Then the fire of the LORD fell, and consumed the burnt sacrifice, and the wood, and the stones, and the dust, and licked up the water that was in the trench."

2 Kings 2:24: "And he turned back, and looked on them, and cursed them in the name of the LORD. And there came forth two she bears out of the wood, and tare forty and two children of them."

2 Kings 6:4: "So he went with them. And when they came to Jordan, they cut down wood."

2 Kings 19:18: "And have cast their gods into the fire: for they were no gods, but the work of men's hands, wood and stone: therefore they have destroyed them."

1 Chronicles 16:33: "Then shall the trees of the wood sing out at the presence of the LORD, because he cometh to judge the earth."

1 Chronicles 21:23: "And Ornan said unto David, Take it to thee, and let my lord the king do that which is good in his eyes: lo, I give thee the oxen also for burnt offerings, and the threshing instruments for wood, and the wheat for the meat offering; I give it all."

1 Chronicles 22:4: "Also cedar trees in abundance: for the Zidonians and they of Tyre brought much cedar wood to David."

1 Chronicles 29:2: "Now I have prepared with all my might for the house of my God the gold for things to be made of gold, and the silver for things of silver, and the brass for things of brass, the iron for things of iron, and wood for things of wood; onyx stones, and stones to be set, glistening stones, and of divers colours, and all manner of precious stones, and marble stones in abundance."

2 Chronicles 2:16: "And we will cut wood out of Lebanon, as much as thou shalt need: and we will bring it to thee in floats by sea to Joppa; and thou shalt carry it up to Jerusalem."

Nehemiah 8:4: "And Ezra the scribe stood upon a pulpit of wood, which they had made for the

purpose; and beside him stood Mattithiah, and Shema, and Anaiah, and Urijah, and Hilkiah, and Maaseiah, on his right hand; and on his left hand, Pedaiah, and Mishael, and Malchiah, and Hashum, and Hashbadana, Zechariah, and Meshullam."

Nehemiah 10:34: "And we cast the lots among the priests, the Levites, and the people, for the wood offering, to bring it into the house of our God, after the houses of our fathers, at times appointed year by year, to burn upon the altar of the LORD our God, as it is written in the law:"

Nehemiah 13:31: "And for the wood offering, at times appointed, and for the firstfruits. Remember me, O my God, for good."

Job 41:27: "He esteemeth iron as straw, and brass as rotten wood."

Psalms 80:13: "The boar out of the wood doth waste it, and the wild beast of the field doth devour it."

Psalms 83:14: "As the fire burneth a wood, and as the flame setteth the mountains on fire;"

Psalms 96:12: "Let the field be joyful, and all that is therein: then shall all the trees of the wood rejoice"

Psalms 132:6: "Lo, we heard of it at Ephratah: we found it in the fields of the wood."

Psalms 141:7: "Our bones are scattered at the grave's mouth, as when one cutteth and cleaveth wood upon the earth."

Proverbs 26:20: "Where no wood is, there the fire goeth out: so where there is no talebearer, the strife ceaseth."

Proverbs 26:21: "As coals are to burning coals, and wood to fire; so is a contentious man to kindle strife."

Ecclesiastes 2:6: "I made me pools of water, to water therewith the wood that bringeth forth trees:"

Ecclesiastes 10:9: "Whoso removeth stones shall be hurt therewith; and he that cleaveth wood shall be endangered thereby."

Song of Solomon 2:3: "As the apple tree among the trees of the wood, so is my beloved among the sons. I sat down under his shadow with great delight, and his fruit was sweet to my taste."

Song of Solomon 3:9: "King Solomon made himself a chariot of the wood of Lebanon."

Isaiah 7:2: "And it was told the house of David, saying, Syria is confederate with Ephraim. And his heart was moved, and the heart of his people, as the trees of the wood are moved with the wind."

Isaiah 10:15: "Shall the axe boast itself against him that heweth therewith? or shall the saw magnify itself against him that shaketh it? as if the rod should shake itself against them that lift it up, or as if the staff should lift up itself, as if it were no wood."

Isaiah 30:33: "For Tophet is ordained of old; yea, for the king it is prepared; he hath made it deep and large: the pile thereof is fire and much wood; the breath of the LORD, like a stream of brimstone, doth kindle it."

Isaiah 37:19: "And have cast their gods into the fire: for they were no gods, but the work of men's hands, wood and stone: therefore they have destroyed them."

Isaiah 45:20: "Assemble yourselves and come; draw near together, ye that are escaped of the nations: they have no knowledge that set up the wood of their graven image, and pray unto a god that cannot save."

Isaiah 60:17: "For brass I will bring gold, and for iron I will bring silver, and for wood brass, and for stones iron: I will also make thy officers peace, and thine exactors righteousness."

Jeremiah 5:14: "Wherefore thus saith the LORD God of hosts, Because ye speak this word, behold, I will make my words in thy mouth fire, and this people wood, and it shall devour them."

Jeremiah 7:18: "The children gather wood, and the fathers kindle the fire, and the women knead their dough, to make cakes to the queen of heaven, and to pour out drink offerings unto other gods, that they may provoke me to anger."

Jeremiah 28:13: "Go and tell Hananiah, saying, Thus saith the LORD; Thou hast broken the yokes of wood; but thou shalt make for them yokes of iron."

Jeremiah 46:22: "The voice thereof shall go like a serpent; for they shall march with an army, and

come against her with axes, as hewers of wood."

Lamentations 5:4: "We have drunken our water for money; our wood is sold unto us."

Lamentations 5:13: "They took the young men to grind, and the children fell under the wood."

Ezekiel 15:3: "Shall wood be taken thereof to do any work? or will men take a pin of it to hang any vessel thereon?"

Ezekiel 20:32: "And that which cometh into your mind shall not be at all, that ye say, We will be as the heathen, as the families of the countries, to serve wood and stone."

Ezekiel 24:10: "Heap on wood, kindle the fire, consume the flesh, and spice it well, and let the bones be burned."

Ezekiel 39:10: "So that they shall take no wood out of the field, neither cut down any out of the forests; for they shall burn the weapons with fire: and they shall spoil those that spoiled them, and rob those that robbed them, saith the Lord GOD."

Ezekiel 41:16: "The door posts, and the narrow windows, and the galleries round about on their three stories, over against the door, cieled with wood round about, and from the ground up to the windows, and the windows were covered;"

Ezekiel 41:22: "The altar of wood was three cubits high, and the length thereof two cubits; and the corners thereof, and the length thereof, and the walls thereof, were of wood: and he said unto me, This is the table that is before the LORD."

Daniel 5:4: "They drank wine, and praised the gods of gold, and of silver, of brass, of iron, of wood, and of stone."

Daniel 5:23: "But hast lifted up thyself against the Lord of heaven; and they have brought the vessels of his house before thee, and thou, and thy lords, thy wives, and thy concubines, have drunk wine in them; and thou hast praised the gods of silver, and gold, of brass, iron, wood, and stone, which see not, nor hear, nor know: and the God in whose hand thy breath is, and whose are all thy ways, hast thou not glorified:"

Micah 7:14: "Feed thy people with thy rod, the flock of thine heritage, which dwell solitarily in the wood, in the midst of Carmel: let them feed in Bashan and Gilead, as in the days of old."

Habakkuk 2:19: "Woe unto him that saith to the wood, Awake; to the dumb stone, Arise, it shall teach! Behold, it is laid over with gold and silver, and there is no breath at all in the midst of it."

Haggai 1:8: "Go up to the mountain, and bring wood, and build the house; and I will take pleasure in it, and I will be glorified, saith the LORD."

Zechariah 12:6: "In that day will I make the governors of Judah like an hearth of fire among the wood, and like a torch of fire in a sheaf; and they shall devour all the people round about, on the right hand and on the left: and Jerusalem shall be inhabited again in her own place, even in Jerusalem."

1 Corinthians 3:12: "Now if any man build upon this foundation gold, silver, precious stones, wood, hay, stubble;"

2 Timothy 2:20: "But in a great house there are not only vessels of gold and of silver, but also of wood and of earth; and some to honour, and some to dishonour."

Revelation 9:20: "And the rest of the men which were not killed by these plagues yet repented not of the works of their hands, that they should not worship devils, and idols of gold, and silver, and brass, and stone, and of wood: which neither can see, nor hear, nor walk:"

Revelation 18:12: "The merchandise of gold, and silver, and precious stones, and of pearls, and fine linen, and purple, and silk, and scarlet, and all thyine wood, and all manner vessels of ivory, and all manner vessels of most precious wood, and of brass, and iron, and marble,"

## WOODS

Occurrences: 1

Ezekiel 34:25: "And I will make with them a covenant of peace, and will cause the evil beasts to cease out of the land: and they shall dwell safely in the wilderness, and sleep in the woods."

## WOOF

Occurrences: 9

Leviticus 13:48: "Whether it be in the warp, or woof; of linen, or of woollen; whether in a skin, or in any thing made of skin;"

Leviticus 13:49: "And if the plague be greenish or reddish in the garment, or in the skin, either in the warp, or in the woof, or in any thing of skin; it is a plague of leprosy, and shall be shewed unto the priest:"

Leviticus 13:51: "And he shall look on the plague on the seventh day: if the plague be spread in the garment, either in the warp, or in the woof, or in a skin, or in any work that is made of skin; the plague is a fretting leprosy; it is unclean."

Leviticus 13:52: "He shall therefore burn that garment, whether warp or woof, in woollen or in linen, or any thing of skin, wherein the plague is: for it is a fretting leprosy; it shall be burnt in the fire."

Leviticus 13:53: "And if the priest shall look, and, behold, the plague be not spread in the garment, either in the warp, or in the woof, or in any thing of skin;"

Leviticus 13:56: "And if the priest look, and, behold, the plague be somewhat dark after the washing of it; then he shall rend it out of the garment, or out of the skin, or out of the warp, or out of the woof:"

Leviticus 13:57: "And if it appear still in the garment, either in the warp, or in the woof, or in any thing of skin; it is a spreading plague: thou shalt burn that wherein the plague is with fire."

Leviticus 13:58: "And the garment, either warp, or woof, or whatsoever thing of skin it be, which thou shalt wash, if the plague be departed from them, then it shall be washed the second time, and shall be clean."

Leviticus 13:59: "This is the law of the plague of leprosy in a garment of woollen or linen, either in the warp, or woof, or any thing of skins, to pronounce it clean, or to pronounce it unclean."

## WOOL

Occurrences: 14

Judges 6:37: "Behold, I will put a fleece of wool in the floor; and if the dew be on the fleece only, and it be dry upon all the earth beside, then shall I know that thou wilt save Israel by mine hand, as thou hast said."

2 Kings 3:4: "And Mesha king of Moab was a sheepmaster, and rendered unto the king of Israel an hundred thousand lambs, and an hundred thousand rams, with the wool."

Psalms 147:16: "He giveth snow like wool: he scattereth the hoarfrost like ashes."

Proverbs 31:13: "She seeketh wool, and flax, and worketh willingly with her hands."

Isaiah 1:18: "Come now, and let us reason together, saith the LORD: though your sins be as scarlet, they shall be as white as snow; though they be red like crimson, they shall be as wool."

Isaiah 51:8: "For the moth shall eat them up like a garment, and the worm shall eat them like wool: but my righteousness shall be for ever, and my salvation from generation to generation."

Ezekiel 27:18: "Damascus was thy merchant in the multitude of the wares of thy making, for the multitude of all riches; in the wine of Helbon, and white wool."

Ezekiel 34:3: "Ye eat the fat, and ye clothe you with the wool, ye kill them that are fed: but ye feed not the flock."

Ezekiel 44:17: "And it shall come to pass, that when they enter in at the gates of the inner court, they shall be clothed with linen garments; and no wool shall come upon them, whiles they minister in the gates of the inner court, and within."

Daniel 7:9: "I beheld till the thrones were cast down, and the Ancient of days did sit, whose garment was white as snow, and the hair of his head like the pure wool: his throne was like the fiery flame, and his wheels as burning fire."

Hosea 2:5: "For their mother hath played the harlot: she that conceived them hath done shamefully: for she said, I will go after my lovers, that give me my bread and my water, my wool and my flax, mine oil and my drink."

Hosea 2:9: "Therefore will I return, and take away my corn in the time thereof, and my wine in the season thereof, and will recover my wool and my flax given to cover her nakedness."

Hebrews 9:19: "For when Moses had spoken every precept to all the people according to the law, he took the blood of calves and of goats, with water, and scarlet wool, and hyssop, and sprinkled both the book, and all the people,"

Revelation 1:14: "His head and his hairs were white like wool, as white as snow; and his eyes were as a flame of fire;"

## WOOLLEN

Occurrences: 6

Leviticus 13:47: "The garment also that the plague of leprosy is in, whether it be a woollen garment, or a linen garment;"

Leviticus 13:48: "Whether it be in the warp, or woof; of linen, or of woollen; whether in a skin, or in any thing made of skin;"

Leviticus 13:52: "He shall therefore burn that garment, whether warp or woof, in woollen or in linen, or any thing of skin, wherein the plague is: for it is a fretting leprosy; it shall be burnt in the fire."

Leviticus 13:59: "This is the law of the plague of leprosy in a garment of woollen or linen, either in the warp, or woof, or any thing of skins, to pronounce it clean, or to pronounce it unclean."

Leviticus 19:19: "Ye shall keep my statutes. Thou shalt not let thy cattle gender with a diverse kind: thou shalt not sow thy field with mingled seed: neither shall a garment mingled of linen and woollen come upon thee."

Deuteronomy 22:11: "Thou shalt not wear a garment of divers sorts, as of woollen and linen together."

## WORD

Occurrences: 675

Genesis 15:1: "After these things the word of the LORD came unto Abram in a vision, saying, Fear not, Abram: I am thy shield, and thy exceeding great reward."

Genesis 15:4: "And, behold, the word of the LORD came unto him, saying, This shall not be thine heir; but he that shall come forth out of thine own bowels shall be thine heir."

Genesis 30:34: "And Laban said, Behold, I would it might be according to thy word."

Genesis 37:14: "And he said to him, Go, I pray thee, see whether it be well with thy brethren, and well with the flocks; and bring me word again. So he sent him out of the vale of Hebron, and he came to Shechem."

Genesis 41:40: "Thou shalt be over my house, and according unto thy word shall all my people be ruled: only in the throne will I be greater than thou."

Genesis 44:2: "And put my cup, the silver cup, in the sack's mouth of the youngest, and his corn money. And he did according to the word that Joseph had spoken."

Genesis 44:18: "Then Judah came near unto him, and said, Oh my lord, let thy servant, I pray thee, speak a word in my lord's ears, and let not thine anger burn against thy servant: for thou art even as Pharaoh."

Exodus 8:10: "And he said, To morrow. And he said, Be it according to thy word: that thou mayest know that there is none like unto the LORD our God."

Exodus 8:13: "And the LORD did according to the word of Moses; and the frogs died out of the houses, out of the villages, and out of the fields."

Exodus 8:31: "And the LORD did according to the word of Moses; and he removed the swarms of flies from Pharaoh, from his servants, and from his people; there remained not one."

Exodus 9:20: "He that feared the word of the LORD among the servants of Pharaoh made his servants and his cattle flee into the houses:"

Exodus 9:21: "And he that regarded not the word of the LORD left his servants and his cattle in the field."

Exodus 12:35: "And the children of Israel did according to the word of Moses; and they borrowed of the Egyptians jewels of silver, and jewels of gold, and raiment:"

Exodus 14:12: "Is not this the word that we did tell thee in Egypt, saying, Let us alone, that we may serve the Egyptians? For it had been better for us to serve the Egyptians, than that we should die in the wilderness."

Exodus 32:28: "And the children of Levi did according to the word of Moses: and there fell of the people that day about three thousand men."

Leviticus 10:7: "And ye shall not go out from the door of the tabernacle of the congregation, lest ye die: for the anointing oil of the LORD is upon you. And they did according to the word of Moses."

Numbers 3:16: "And Moses numbered them according to the word of the LORD, as he was commanded."

Numbers 3:51: "And Moses gave the money of them that were redeemed unto Aaron and to his sons, according to the word of the LORD, as the LORD commanded Moses."

Numbers 4:45: "These be those that were numbered of the families of the sons of Merari, whom Moses and Aaron numbered according to the word of the LORD by the hand of Moses."

Numbers 11:23: "And the LORD said unto Moses, Is the LORD's hand waxed short? thou shalt see now whether my word shall come to pass unto thee or not."

Numbers 13:26: "And they went and came to Moses, and to Aaron, and to all the congregation of the children of Israel, unto the wilderness of Paran, to Kadesh; and brought back word unto them, and unto all the congregation, and shewed them the fruit of the land."

Numbers 14:20: "And the LORD said, I have pardoned according to thy word:"

Numbers 15:31: "Because he hath despised the word of the LORD, and hath broken his commandment, that soul shall utterly be cut off; his iniquity shall be upon him."

Numbers 20:24: "Aaron shall be gathered unto his people: for he shall not enter into the land which I have given unto the children of Israel, because ye rebelled against my word at the water of Meribah."

Numbers 22:8: "And he said unto them, Lodge here this night, and I will bring you word again, as the LORD shall speak unto me: and the princes of Moab abode with Balaam."

Numbers 22:18: "And Balaam answered and said unto the servants of Balak, If Balak would give me his house full of silver and gold, I cannot go beyond the word of the LORD my God, to do less or more."

Numbers 22:20: "And God came unto Balaam at night, and said unto him, If the men come to call thee, rise up, and go with them; but yet the word which I shall say unto thee, that shalt thou do."

Numbers 22:35: "And the angel of the LORD said unto Balaam, Go with the men: but only the word that I shall speak unto thee, that thou shalt speak. So Balaam went with the princes of Balak."

Numbers 22:38: "And Balaam said unto Balak, Lo, I am come unto thee: have I now any power at all to say any thing? the word that God putteth in my mouth, that shall I speak."

Numbers 23:5: "And the LORD put a word in Balaam's mouth, and said, Return unto Balak, and thus thou shalt speak."

Numbers 23:16: "And the LORD met Balaam, and put a word in his mouth, and said, Go again unto Balak, and say thus."

Numbers 27:21: "And he shall stand before Eleazar the priest, who shall ask counsel for him after the judgment of Urim before the LORD: at his word shall they go out, and at his word they shall come in, both he, and all the children of Israel with him, even all the congregation."

Numbers 30:2: "If a man vow a vow unto the LORD, or swear an oath to bind his soul with a bond; he shall not break his word, he shall do according to all that proceedeth out of his mouth."

Numbers 36:5: "And Moses commanded the children of Israel according to the word of the LORD, saying, The tribe of the sons of Joseph hath said well."

Deuteronomy 1:22: "And ye came near unto me every one of you, and said, We will send men before us, and they shall search us out the land, and bring us word again by what way we must go up, and into what cities we shall come."

Deuteronomy 1:25: "And they took of the fruit of the land in their hands, and brought it down unto us, and brought us word again, and said, It is a good land which the LORD our God doth give us."

Deuteronomy 4:2: "Ye shall not add unto the word which I command you, neither shall ye diminish ought from it, that ye may keep the commandments of the LORD your God which I command you."

Deuteronomy 5:5: "(I stood between the LORD and you at that time, to shew you the word of the LORD: for ye were afraid by reason of the fire, and went not up into the mount;) saying,"

Deuteronomy 8:3: "And he humbled thee, and suffered thee to hunger, and fed thee with manna, which thou knewest not, neither did thy fathers know; that he might make thee know that man doth not live by bread only, but by every word that proceedeth out of the mouth of the LORD doth man live."

Deuteronomy 9:5: "Not for thy righteousness, or for the uprightness of thine heart, dost thou go to possess their land: but for the wickedness of these nations the LORD thy God doth drive them out from before thee, and that he may perform the word which the LORD sware unto thy fathers, Abraham, Isaac, and Jacob."

Deuteronomy 18:20: "But the prophet, which shall presume to speak a word in my name, which I have not commanded him to speak, or that shall speak in the name of other gods, even that prophet shall die."

Deuteronomy 18:21: "And if thou say in thine heart, How shall we know the word which the LORD hath not spoken?"

Deuteronomy 21:5: "And the priests the sons of Levi shall come near; for them the LORD thy God hath chosen to minister unto him, and to bless in the name of the LORD; and by their word shall every controversy and every stroke be tried:"

Deuteronomy 30:14: "But the word is very nigh unto thee, in thy mouth, and in thy heart, that thou mayest do it."

Deuteronomy 33:9: "Who said unto his father and to his mother, I have not seen him; neither did he acknowledge his brethren, nor knew his own children: for they have observed thy word, and kept thy covenant."

Deuteronomy 34:5: "So Moses the servant of the LORD died there in the land of Moab, according to the word of the LORD."

Joshua 1:13: "Remember the word which Moses the servant of the LORD commanded you, saying, The LORD your God hath given you rest, and hath given you this land."

Joshua 6:10: "And Joshua had commanded the people, saying, Ye shall not shout, nor make any noise with your voice, neither shall any word proceed out of your mouth, until the day I bid you shout; then shall ye shout."

Joshua 8:27: "Only the cattle and the spoil of that city Israel took for a prey unto themselves, according unto the word of the LORD which he commanded Joshua."

Joshua 8:35: "There was not a word of all that Moses commanded, which Joshua read not before all the congregation of Israel, with the women, and the little ones, and the strangers that were conversant among them."

Joshua 14:7: "Forty years old was I when Moses the servant of the LORD sent me from Kadeshbarnea to espy out the land; and I brought him word again as it was in mine heart."

Joshua 14:10: "And now, behold, the LORD hath kept me alive, as he said, these forty and five years, even since the LORD spake this word unto Moses, while the children of Israel wandered in



the wilderness: and now, lo, I am this day fourscore and five years old."

Joshua 19:50: "According to the word of the LORD they gave him the city which he asked, even Timnathserah in mount Ephraim: and he built the city, and dwelt therein."

Joshua 22:9: "And the children of Reuben and the children of Gad and the half tribe of Manasseh returned, and departed from the children of Israel out of Shiloh, which is in the land of Canaan, to go unto the country of Gilead, to the land of their possession, whereof they were possessed, according to the word of the LORD by the hand of Moses."

Joshua 22:32: "And Phinehas the son of Eleazar the priest, and the princes, returned from the children of Reuben, and from the children of Gad, out of the land of Gilead, unto the land of Canaan, to the children of Israel, and brought them word again."

1 Samuel 1:23: "And Elkanah her husband said unto her, Do what seemeth thee good; tarry until thou have weaned him; only the LORD establish his word. So the woman abode, and gave her son suck until she weaned him."

1 Samuel 3:1: "And the child Samuel ministered unto the LORD before Eli. And the word of the LORD was precious in those days; there was no open vision."

1 Samuel 3:7: "Now Samuel did not yet know the LORD, neither was the word of the LORD yet revealed unto him."

1 Samuel 3:21: "And the LORD appeared again in Shiloh: for the LORD revealed himself to Samuel in Shiloh by the word of the LORD."

1 Samuel 4:1: "And the word of Samuel came to all Israel. Now Israel went out against the Philistines to battle, and pitched beside Ebenezer: and the Philistines pitched in Aphek."

1 Samuel 9:27: "And as they were going down to the end of the city, Samuel said to Saul, Bid the servant pass on before us, (and he passed on), but stand thou still a while, that I may shew thee the word of God."

1 Samuel 15:10: "Then came the word of the LORD unto Samuel, saying,"

1 Samuel 15:23: "For rebellion is as the sin of witchcraft, and stubbornness is as iniquity and idolatry. Because thou hast rejected the word of the LORD, he hath also rejected thee from being king."

1 Samuel 15:26: "And Samuel said unto Saul, I will not return with thee: for thou hast rejected the word of the LORD, and the LORD hath rejected thee from being king over Israel."

2 Samuel 3:11: "And he could not answer Abner a word again, because he feared him."

2 Samuel 7:4: "And it came to pass that night, that the word of the LORD came unto Nathan, saying,"

2 Samuel 7:7: "In all the places wherein I have walked with all the children of Israel spake I a word with any of the tribes of Israel, whom I commanded to feed my people Israel, saying, Why build ye not me an house of cedar?"

2 Samuel 7:21: "For thy word's sake, and according to thine own heart, hast thou done all these great things, to make thy servant know them."

2 Samuel 7:25: "And now, O LORD God, the word that thou hast spoken concerning thy servant, and concerning his house, establish it for ever, and do as thou hast said."

2 Samuel 14:12: "Then the woman said, Let thine handmaid, I pray thee, speak one word unto my lord the king. And he said, Say on."

2 Samuel 14:17: "Then thine handmaid said, The word of my lord the king shall now be comfortable: for as an angel of God, so is my lord the king to discern good and bad: therefore the LORD thy God will be with thee."

2 Samuel 15:28: "See, I will tarry in the plain of the wilderness, until there come word from you to certify me."

2 Samuel 19:10: "And Absalom, whom we anointed over us, is dead in battle. Now therefore why speak ye not a word of bringing the king back?"

2 Samuel 19:14: "And he bowed the heart of all the men of Judah, even as the heart of one man; so

that they sent this word unto the king, Return thou, and all thy servants."

2 Samuel 22:31: "As for God, his way is perfect; the word of the LORD is tried: he is a buckler to all them that trust in him."

2 Samuel 23:2: "The Spirit of the LORD spake by me, and his word was in my tongue."

2 Samuel 24:4: "Notwithstanding the king's word prevailed against Joab, and against the captains of the host. And Joab and the captains of the host went out from the presence of the king, to number the people of Israel."

2 Samuel 24:11: "For when David was up in the morning, the word of the LORD came unto the prophet Gad, David's seer, saying,"

1 Kings 2:4: "That the LORD may continue his word which he spake concerning me, saying, If thy children take heed to their way, to walk before me in truth with all their heart and with all their soul, there shall not fail thee (said he) a man on the throne of Israel."

1 Kings 2:23: "Then king Solomon sware by the LORD, saying, God do so to me, and more also, if Adonijah have not spoken this word against his own life."

1 Kings 2:27: "So Solomon thrust out Abiathar from being priest unto the LORD; that he might fulfil the word of the LORD, which he spake concerning the house of Eli in Shiloh."

1 Kings 2:30: "And Benaiah came to the tabernacle of the LORD, and said unto him, Thus saith the king, Come forth. And he said, Nay; but I will die here. And Benaiah brought the king word again, saying, Thus said Joab, and thus he answered me."

1 Kings 2:42: "And the king sent and called for Shimei, and said unto him, Did I not make thee to swear by the LORD, and protested unto thee, saying, Know for a certain, on the day thou goest out, and walkest abroad any whither, that thou shalt surely die? and thou saidst unto me, The word that I have heard is good."

1 Kings 6:11: "And the word of the LORD came to Solomon, saying,"

1 Kings 6:12: "Concerning this house which thou art in building, if thou wilt walk in my statutes, and execute my judgments, and keep all my commandments to walk in them; then will I perform my word with thee, which I spake unto David thy father:"

1 Kings 8:20: "And the LORD hath performed his word that he spake, and I am risen up in the room of David my father, and sit on the throne of Israel, as the LORD promised, and have built an house for the name of the LORD God of Israel."

1 Kings 8:26: "And now, O God of Israel, let thy word, I pray thee, be verified, which thou spakest unto thy servant David my father."

1 Kings 8:56: "Blessed be the LORD, that hath given rest unto his people Israel, according to all that he promised: there hath not failed one word of all his good promise, which he promised by the hand of Moses his servant."

1 Kings 12:22: "But the word of God came unto Shemaiah the man of God, saying,"

1 Kings 12:24: "Thus saith the LORD, Ye shall not go up, nor fight against your brethren the children of Israel: return every man to his house; for this thing is from me. They hearkened therefore to the word of the LORD, and returned to depart, according to the word of the LORD."

1 Kings 13:1: "And, behold, there came a man of God out of Judah by the word of the LORD unto Bethel: and Jeroboam stood by the altar to burn incense."

1 Kings 13:2: "And he cried against the altar in the word of the LORD, and said, O altar, altar, thus saith the LORD; Behold, a child shall be born unto the house of David, Josiah by name; and upon thee shall he offer the priests of the high places that burn incense upon thee, and men's bones shall be burnt upon thee."

1 Kings 13:5: "The altar also was rent, and the ashes poured out from the altar, according to the sign which the man of God had given by the word of the LORD."

1 Kings 13:9: "For so was it charged me by the word of the LORD, saying, Eat no bread, nor drink water, nor turn again by the same way that thou camest."

1 Kings 13:17: "For it was said to me by the word of the LORD, Thou shalt eat no bread nor drink

water there, nor turn again to go by the way that thou camest."

1 Kings 13:18: "He said unto him, I am a prophet also as thou art; and an angel spake unto me by the word of the LORD, saying, Bring him back with thee into thine house, that he may eat bread and drink water. But he lied unto him."

1 Kings 13:20: "And it came to pass, as they sat at the table, that the word of the LORD came unto the prophet that brought him back:"

1 Kings 13:26: "And when the prophet that brought him back from the way heard thereof, he said, It is the man of God, who was disobedient unto the word of the LORD: therefore the LORD hath delivered him unto the lion, which hath torn him, and slain him, according to the word of the LORD, which he spake unto him."

1 Kings 13:32: "For the saying which he cried by the word of the LORD against the altar in Bethel, and against all the houses of the high places which are in the cities of Samaria, shall surely come to pass."

1 Kings 14:18: "And they buried him; and all Israel mourned for him, according to the word of the LORD, which he spake by the hand of his servant Ahijah the prophet."

1 Kings 16:1: "Then the word of the LORD came to Jehu the son of Hanani against Baasha, saying,"

1 Kings 16:7: "And also by the hand of the prophet Jehu the son of Hanani came the word of the LORD against Baasha, and against his house, even for all the evil that he did in the sight of the LORD, in provoking him to anger with the work of his hands, in being like the house of Jeroboam; and because he killed him."

1 Kings 16:12: "Thus did Zimri destroy all the house of Baasha, according to the word of the LORD, which he spake against Baasha by Jehu the prophet."

1 Kings 16:34: "In his days did Hiel the Bethelite build Jericho: he laid the foundation thereof in Abiram his firstborn, and set up the gates thereof in his youngest son Segub, according to the word of the LORD, which he spake by Joshua the son of Nun."

1 Kings 17:1: "And Elijah the Tishbite, who was of the inhabitants of Gilead, said unto Ahab, As the LORD God of Israel liveth, before whom I stand, there shall not be dew nor rain these years, but according to my word."

1 Kings 17:2: "And the word of the LORD came unto him, saying,"

1 Kings 17:5: "So he went and did according unto the word of the LORD: for he went and dwelt by the brook Cherith, that is before Jordan."

1 Kings 17:8: "And the word of the LORD came unto him, saying,"

1 Kings 17:16: "And the barrel of meal wasted not, neither did the cruse of oil fail, according to the word of the LORD, which he spake by Elijah."

1 Kings 17:24: "And the woman said to Elijah, Now by this I know that thou art a man of God, and that the word of the LORD in thy mouth is truth."

1 Kings 18:1: "And it came to pass after many days, that the word of the LORD came to Elijah in the third year, saying, Go, shew thyself unto Ahab; and I will send rain upon the earth."

1 Kings 18:21: "And Elijah came unto all the people, and said, How long halt ye between two opinions? if the LORD be God, follow him: but if Baal, then follow him. And the people answered him not a word."

1 Kings 18:31: "And Elijah took twelve stones, according to the number of the tribes of the sons of Jacob, unto whom the word of the LORD came, saying, Israel shall be thy name:"

1 Kings 18:36: "And it came to pass at the time of the offering of the evening sacrifice, that Elijah the prophet came near, and said, LORD God of Abraham, Isaac, and of Israel, let it be known this day that thou art God in Israel, and that I am thy servant, and that I have done all these things at thy word."

1 Kings 19:9: "And he came thither unto a cave, and lodged there; and, behold, the word of the LORD came to him, and he said unto him, What doest thou here, Elijah?"

1 Kings 20:9: "Wherefore he said unto the messengers of Benhadad, Tell my lord the king, All that thou didst send for to thy servant at the first I will do: but this thing I may not do. And the messengers departed, and brought him word again."

1 Kings 20:35: "And a certain man of the sons of the prophets said unto his neighbour in the word of the LORD, Smite me, I pray thee. And the man refused to smite him."

1 Kings 21:4: "And Ahab came into his house heavy and displeased because of the word which Naboth the Jezreelite had spoken to him: for he had said, I will not give thee the inheritance of my fathers. And he laid him down upon his bed, and turned away his face, and would eat no bread."

1 Kings 21:17: "And the word of the LORD came to Elijah the Tishbite, saying,"

1 Kings 21:28: "And the word of the LORD came to Elijah the Tishbite, saying,"

1 Kings 22:5: "And Jehoshaphat said unto the king of Israel, Enquire, I pray thee, at the word of the LORD to day."

1 Kings 22:13: "And the messenger that was gone to call Micaiah spake unto him, saying, Behold now, the words of the prophets declare good unto the king with one mouth: let thy word, I pray thee, be like the word of one of them, and speak that which is good."

1 Kings 22:19: "And he said, Hear thou therefore the word of the LORD: I saw the LORD sitting on his throne, and all the host of heaven standing by him on his right hand and on his left."

1 Kings 22:38: "And one washed the chariot in the pool of Samaria; and the dogs licked up his blood; and they washed his armour; according unto the word of the LORD which he spake."

2 Kings 1:16: "And he said unto him, Thus saith the LORD, Forasmuch as thou hast sent messengers to enquire of Baalzebub the god of Ekron, is it not because there is no God in Israel to enquire of his word? therefore thou shalt not come down off that bed on which thou art gone up, but shalt surely die."

2 Kings 1:17: "So he died according to the word of the LORD which Elijah had spoken. And Jehoram reigned in his stead in the second year of Jehoram the son of Jehoshaphat king of Judah; because he had no son."

2 Kings 3:12: "And Jehoshaphat said, The word of the LORD is with him. So the king of Israel and Jehoshaphat and the king of Edom went down to him."

2 Kings 4:44: "So he set it before them, and they did eat, and left thereof, according to the word of the LORD."

2 Kings 6:18: "And when they came down to him, Elisha prayed unto the LORD, and said, Smite this people, I pray thee, with blindness. And he smote them with blindness according to the word of Elisha."

2 Kings 7:1: "Then Elisha said, Hear ye the word of the LORD; Thus saith the LORD, To morrow about this time shall a measure of fine flour be sold for a shekel, and two measures of barley for a shekel, in the gate of Samaria."

2 Kings 7:16: "And the people went out, and spoiled the tents of the Syrians. So a measure of fine flour was sold for a shekel, and two measures of barley for a shekel, according to the word of the LORD."

2 Kings 9:26: "Surely I have seen yesterday the blood of Naboth, and the blood of his sons, saith the LORD; and I will requite thee in this plat, saith the LORD. Now therefore take and cast him into the plat of ground, according to the word of the LORD."

2 Kings 9:36: "Wherefore they came again, and told him. And he said, This is the word of the LORD, which he spake by his servant Elijah the Tishbite, saying, In the portion of Jezreel shall dogs eat the flesh of Jezebel:"

2 Kings 10:10: "Know now that there shall fall unto the earth nothing of the word of the LORD, which the LORD spake concerning the house of Ahab: for the LORD hath done that which he spake by his servant Elijah."

2 Kings 14:25: "He restored the coast of Israel from the entering of Hamath unto the sea of the plain, according to the word of the LORD God of Israel, which he spake by the hand of his servant

Jonah, the son of Amittai, the prophet, which was of Gathhepher."

2 Kings 15:12: "This was the word of the LORD which he spake unto Jehu, saying, Thy sons shall sit on the throne of Israel unto the fourth generation. And so it came to pass."

2 Kings 18:28: "Then Rabshakeh stood and cried with a loud voice in the Jews' language, and spake, saying, Hear the word of the great king, the king of Assyria:"

2 Kings 18:36: "But the people held their peace, and answered him not a word: for the king's commandment was, saying, Answer him not."

2 Kings 19:21: "This is the word that the LORD hath spoken concerning him; The virgin the daughter of Zion hath despised thee, and laughed thee to scorn; the daughter of Jerusalem hath shaken her head at thee."

2 Kings 20:4: "And it came to pass, afore Isaiah was gone out into the middle court, that the word of the LORD came to him, saying,"

2 Kings 20:16: "And Isaiah said unto Hezekiah, Hear the word of the LORD."

2 Kings 20:19: "Then said Hezekiah unto Isaiah, Good is the word of the LORD which thou hast spoken. And he said, Is it not good, if peace and truth be in my days?"

2 Kings 22:9: "And Shaphan the scribe came to the king, and brought the king word again, and said, Thy servants have gathered the money that was found in the house, and have delivered it into the hand of them that do the work, that have the oversight of the house of the LORD."

2 Kings 22:20: "Behold therefore, I will gather thee unto thy fathers, and thou shalt be gathered into thy grave in peace; and thine eyes shall not see all the evil which I will bring upon this place. And they brought the king word again."

2 Kings 23:16: "And as Josiah turned himself, he spied the sepulchres that were there in the mount, and sent, and took the bones out of the sepulchres, and burned them upon the altar, and polluted it, according to the word of the LORD which the man of God proclaimed, who proclaimed these words."

2 Kings 24:2: "And the LORD sent against him bands of the Chaldees, and bands of the Syrians, and bands of the Moabites, and bands of the children of Ammon, and sent them against Judah to destroy it, according to the word of the LORD, which he spake by his servants the prophets."

1 Chronicles 10:13: "So Saul died for his transgression which he committed against the LORD, even against the word of the LORD, which he kept not, and also for asking counsel of one that had a familiar spirit, to enquire of it;"

1 Chronicles 11:3: "Therefore came all the elders of Israel to the king to Hebron; and David made a covenant with them in Hebron before the LORD; and they anointed David king over Israel, according to the word of the LORD by Samuel."

1 Chronicles 11:10: "These also are the chief of the mighty men whom David had, who strengthened themselves with him in his kingdom, and with all Israel, to make him king, according to the word of the LORD concerning Israel."

1 Chronicles 12:23: "And these are the numbers of the bands that were ready armed to the war, and came to David to Hebron, to turn the kingdom of Saul to him, according to the word of the LORD."

1 Chronicles 15:15: "And the children of the Levites bare the ark of God upon their shoulders with the staves thereon, as Moses commanded according to the word of the LORD."

1 Chronicles 16:15: "Be ye mindful always of his covenant; the word which he commanded to a thousand generations;"

1 Chronicles 17:3: "And it came to pass the same night, that the word of God came to Nathan, saying,"

1 Chronicles 17:6: "Wheresoever I have walked with all Israel, spake I a word to any of the judges of Israel, whom I commanded to feed my people, saying, Why have ye not built me an house of cedars?"

1 Chronicles 21:4: "Nevertheless the king's word prevailed against Joab. Wherefore Joab departed, and went throughout all Israel, and came to Jerusalem."

1 Chronicles 21:6: "But Levi and Benjamin counted he not among them: for the king's word was abominable to Joab."

1 Chronicles 21:12: "Either three years' famine; or three months to be destroyed before thy foes, while that the sword of thine enemies overtaketh thee; or else three days the sword of the LORD, even the pestilence, in the land, and the angel of the LORD destroying throughout all the coasts of Israel. Now therefore advise thyself what word I shall bring again to him that sent me."

1 Chronicles 22:8: "But the word of the LORD came to me, saying, Thou hast shed blood abundantly, and hast made great wars: thou shalt not build an house unto my name, because thou hast shed much blood upon the earth in my sight."

2 Chronicles 6:10: "The LORD therefore hath performed his word that he hath spoken: for I am risen up in the room of David my father, and am set on the throne of Israel, as the LORD promised, and have built the house for the name of the LORD God of Israel."

2 Chronicles 6:17: "Now then, O LORD God of Israel, let thy word be verified, which thou hast spoken unto thy servant David."

2 Chronicles 10:15: "So the king hearkened not unto the people: for the cause was of God, that the LORD might perform his word, which he spake by the hand of Ahijah the Shilonite to Jeroboam the son of Nebat."

2 Chronicles 11:2: "But the word of the LORD came to Shemaiah the man of God, saying,"

2 Chronicles 12:7: "And when the LORD saw that they humbled themselves, the word of the LORD came to Shemaiah, saying, They have humbled themselves; therefore I will not destroy them, but I will grant them some deliverance; and my wrath shall not be poured out upon Jerusalem by the hand of Shishak."

2 Chronicles 18:4: "And Jehoshaphat said unto the king of Israel, Enquire, I pray thee, at the word of the LORD to day."

2 Chronicles 18:12: "And the messenger that went to call Micaiah spake to him, saying, Behold, the words of the prophets declare good to the king with one assent; let thy word therefore, I pray thee, be like one of their's, and speak thou good."

2 Chronicles 18:18: "Again he said, Therefore hear the word of the LORD; I saw the LORD sitting upon his throne, and all the host of heaven standing on his right hand and on his left."

2 Chronicles 30:12: "Also in Judah the hand of God was to give them one heart to do the commandment of the king and of the princes, by the word of the LORD."

2 Chronicles 34:16: "And Shaphan carried the book to the king, and brought the king word back again, saying, All that was committed to thy servants, they do it."

2 Chronicles 34:21: "Go, enquire of the LORD for me, and for them that are left in Israel and in Judah, concerning the words of the book that is found: for great is the wrath of the LORD that is poured out upon us, because our fathers have not kept the word of the LORD, to do after all that is written in this book."

2 Chronicles 34:28: "Behold, I will gather thee to thy fathers, and thou shalt be gathered to thy grave in peace, neither shall thine eyes see all the evil that I will bring upon this place, and upon the inhabitants of the same. So they brought the king word again."

2 Chronicles 35:6: "So kill the passover, and sanctify yourselves, and prepare your brethren, that they may do according to the word of the LORD by the hand of Moses."

2 Chronicles 36:21: "To fulfil the word of the LORD by the mouth of Jeremiah, until the land had enjoyed her sabbaths: for as long as she lay desolate she kept sabbath, to fulfil threescore and ten years."

2 Chronicles 36:22: "Now in the first year of Cyrus king of Persia, that the word of the LORD spoken by the mouth of Jeremiah might be accomplished, the LORD stirred up the spirit of Cyrus king of Persia, that he made a proclamation throughout all his kingdom, and put it also in writing, saying,"

Ezra 1:1: "Now in the first year of Cyrus king of Persia, that the word of the LORD by the mouth of

Jeremiah might be fulfilled, the LORD stirred up the spirit of Cyrus king of Persia, that he made a proclamation throughout all his kingdom, and put it also in writing, saying,"

Ezra 6:11: "Also I have made a decree, that whosoever shall alter this word, let timber be pulled down from his house, and being set up, let him be hanged thereon; and let his house be made a dunghill for this."

Ezra 10:5: "Then arose Ezra, and made the chief priests, the Levites, and all Israel, to swear that they should do according to this word. And they sware."

Nehemiah 1:8: "Remember, I beseech thee, the word that thou commandedst thy servant Moses, saying, If ye transgress, I will scatter you abroad among the nations:"

Esther 1:21: "And the saying pleased the king and the princes; and the king did according to the word of Memucan:"

Esther 7:8: "Then the king returned out of the palace garden into the place of the banquet of wine; and Haman was fallen upon the bed whereon Esther was. Then said the king, Will he force the queen also before me in the house? As the word went out of king's mouth, they covered Haman's face."

Job 2:13: "So they sat down with him upon the ground seven days and seven nights, and none spake a word unto him: for they saw that his grief was very great."

Psalms 17:4: "Concerning the works of men, by the word of thy lips I have kept me from the paths of the destroyer."

Psalms 18:30: "As for God, his way is perfect: the word of the LORD is tried: he is a buckler to all those that trust in him."

Psalms 33:4: "For the word of the LORD is right; and all his works are done in truth."

Psalms 33:6: "By the word of the LORD were the heavens made; and all the host of them by the breath of his mouth."

Psalms 56:4: "In God I will praise his word, in God I have put my trust; I will not fear what flesh can do unto me."

Psalms 56:10: "In God will I praise his word: in the LORD will I praise his word."

Psalms 68:11: "The Lord gave the word: great was the company of those that published it."

Psalms 103:20: "Bless the LORD, ye his angels, that excel in strength, that do his commandments, hearkening unto the voice of his word."

Psalms 105:8: "He hath remembered his covenant for ever, the word which he commanded to a thousand generations."

Psalms 105:19: "Until the time that his word came: the word of the LORD tried him."

Psalms 105:28: "He sent darkness, and made it dark; and they rebelled not against his word."

Psalms 106:24: "Yea, they despised the pleasant land, they believed not his word:"

Psalms 107:20: "He sent his word, and healed them, and delivered them from their destructions."

Psalms 119:9: "Wherewithal shall a young man cleanse his way? by taking heed thereto according to thy word."

Psalms 119:11: "Thy word have I hid in mine heart, that I might not sin against thee."

Psalms 119:16: "I will delight myself in thy statutes: I will not forget thy word."

Psalms 119:17: "Deal bountifully with thy servant, that I may live, and keep thy word."

Psalms 119:25: "My soul cleaveth unto the dust: quicken thou me according to thy word."

Psalms 119:28: "My soul melteth for heaviness: strengthen thou me according unto thy word."

Psalms 119:38: "Stablish thy word unto thy servant, who is devoted to thy fear."

Psalms 119:41: "Let thy mercies come also unto me, O LORD, even thy salvation, according to thy word."

Psalms 119:42: "So shall I have wherewith to answer him that reproacheth me: for I trust in thy word."

Psalms 119:43: "And take not the word of truth utterly out of my mouth; for I have hoped in thy judgments."

Psalms 119:49: "Remember the word unto thy servant, upon which thou hast caused me to hope."  
 Psalms 119:50: "This is my comfort in my affliction: for thy word hath quickened me."  
 Psalms 119:58: "I intreated thy favour with my whole heart: be merciful unto me according to thy word."  
 Psalms 119:65: "Thou hast dealt well with thy servant, O LORD, according unto thy word."  
 Psalms 119:67: "Before I was afflicted I went astray: but now have I kept thy word."  
 Psalms 119:74: "They that fear thee will be glad when they see me; because I have hoped in thy word."  
 Psalms 119:76: "Let, I pray thee, thy merciful kindness be for my comfort, according to thy word unto thy servant."  
 Psalms 119:81: "My soul fainteth for thy salvation: but I hope in thy word."  
 Psalms 119:82: "Mine eyes fail for thy word, saying, When wilt thou comfort me?"  
 Psalms 119:89: "For ever, O LORD, thy word is settled in heaven."  
 Psalms 119:101: "I have refrained my feet from every evil way, that I might keep thy word."  
 Psalms 119:105: "Thy word is a lamp unto my feet, and a light unto my path."  
 Psalms 119:107: "I am afflicted very much: quicken me, O LORD, according unto thy word."  
 Psalms 119:114: "Thou art my hiding place and my shield: I hope in thy word."  
 Psalms 119:116: "Uphold me according unto thy word, that I may live: and let me not be ashamed of my hope."  
 Psalms 119:123: "Mine eyes fail for thy salvation, and for the word of thy righteousness."  
 Psalms 119:133: "Order my steps in thy word: and let not any iniquity have dominion over me."  
 Psalms 119:140: "Thy word is very pure: therefore thy servant loveth it."  
 Psalms 119:147: "I prevented the dawning of the morning, and cried: I hoped in thy word."  
 Psalms 119:148: "Mine eyes prevent the night watches, that I might meditate in thy word."  
 Psalms 119:154: "Plead my cause, and deliver me: quicken me according to thy word."  
 Psalms 119:158: "I beheld the transgressors, and was grieved; because they kept not thy word."  
 Psalms 119:160: "Thy word is true from the beginning: and every one of thy righteous judgments endureth for ever."  
 Psalms 119:161: "Princes have persecuted me without a cause: but my heart standeth in awe of thy word."  
 Psalms 119:162: "I rejoice at thy word, as one that findeth great spoil."  
 Psalms 119:169: "Let my cry come near before thee, O LORD: give me understanding according to thy word."  
 Psalms 119:170: "Let my supplication come before thee: deliver me according to thy word."  
 Psalms 119:172: "My tongue shall speak of thy word: for all thy commandments are righteousness."  
 Psalms 130:5: "I wait for the LORD, my soul doth wait, and in his word do I hope."  
 Psalms 138:2: "I will worship toward thy holy temple, and praise thy name for thy lovingkindness and for thy truth: for thou hast magnified thy word above all thy name."  
 Psalms 139:4: "For there is not a word in my tongue, but, lo, O LORD, thou knowest it altogether."  
 Psalms 147:15: "He sendeth forth his commandment upon earth: his word runneth very swiftly."  
 Psalms 147:18: "He sendeth out his word, and melteth them: he causeth his wind to blow, and the waters flow."  
 Psalms 147:19: "He sheweth his word unto Jacob, his statutes and his judgments unto Israel."  
 Psalms 148:8: "Fire, and hail; snow, and vapours; stormy wind fulfilling his word:"  
 Proverbs 12:25: "Heaviness in the heart of man maketh it stoop: but a good word maketh it glad."  
 Proverbs 13:13: "Whoso despiseth the word shall be destroyed: but he that feareth the commandment shall be rewarded."  
 Proverbs 14:15: "The simple believeth every word: but the prudent man looketh well to his going."  
 Proverbs 15:23: "A man hath joy by the answer of his mouth: and a word spoken in due season, how good is it!"



Proverbs 25:11: "A word fitly spoken is like apples of gold in pictures of silver."

Proverbs 30:5: "Every word of God is pure: he is a shield unto them that put their trust in him."

Ecclesiastes 8:4: "Where the word of a king is, there is power: and who may say unto him, What doest thou?"

Isaiah 1:10: "Hear the word of the LORD, ye rulers of Sodom; give ear unto the law of our God, ye people of Gomorrah."

Isaiah 2:1: "The word that Isaiah the son of Amoz saw concerning Judah and Jerusalem."

Isaiah 2:3: "And many people shall go and say, Come ye, and let us go up to the mountain of the LORD, to the house of the God of Jacob; and he will teach us of his ways, and we will walk in his paths: for out of Zion shall go forth the law, and the word of the LORD from Jerusalem."

Isaiah 5:24: "Therefore as the fire devoureth the stubble, and the flame consumeth the chaff, so their root shall be as rottenness, and their blossom shall go up as dust: because they have cast away the law of the LORD of hosts, and despised the word of the Holy One of Israel."

Isaiah 8:10: "Take counsel together, and it shall come to nought; speak the word, and it shall not stand: for God is with us."

Isaiah 8:20: "To the law and to the testimony: if they speak not according to this word, it is because there is no light in them."

Isaiah 9:8: "The Lord sent a word into Jacob, and it hath lighted upon Israel."

Isaiah 16:13: "This is the word that the LORD hath spoken concerning Moab since that time."

Isaiah 24:3: "The land shall be utterly emptied, and utterly spoiled: for the LORD hath spoken this word."

Isaiah 28:13: "But the word of the LORD was unto them precept upon precept, precept upon precept; line upon line, line upon line; here a little, and there a little; that they might go, and fall backward, and be broken, and snared, and taken."

Isaiah 28:14: "Wherefore hear the word of the LORD, ye scornful men, that rule this people which is in Jerusalem."

Isaiah 29:21: "That make a man an offender for a word, and lay a snare for him that reproveth in the gate, and turn aside the just for a thing of nought."

Isaiah 30:12: "Wherefore thus saith the Holy One of Israel, Because ye despise this word, and trust in oppression and perverseness, and stay thereon:"

Isaiah 30:21: "And thine ears shall hear a word behind thee, saying, This is the way, walk ye in it, when ye turn to the right hand, and when ye turn to the left."

Isaiah 36:21: "But they held their peace, and answered him not a word: for the king's commandment was, saying, Answer him not."

Isaiah 37:22: "This is the word which the LORD hath spoken concerning him; The virgin, the daughter of Zion, hath despised thee, and laughed thee to scorn; the daughter of Jerusalem hath shaken her head at thee."

Isaiah 38:4: "Then came the word of the LORD to Isaiah, saying,"

Isaiah 39:5: "Then said Isaiah to Hezekiah, Hear the word of the LORD of hosts:"

Isaiah 39:8: "Then said Hezekiah to Isaiah, Good is the word of the LORD which thou hast spoken. He said moreover, For there shall be peace and truth in my days."

Isaiah 40:8: "The grass withereth, the flower fadeth: but the word of our God shall stand for ever."

Isaiah 41:28: "For I beheld, and there was no man; even among them, and there was no counsellor, that, when I asked of them, could answer a word."

Isaiah 44:26: "That confirmeth the word of his servant, and performeth the counsel of his messengers; that saith to Jerusalem, Thou shalt be inhabited; and to the cities of Judah, Ye shall be built, and I will raise up the decayed places thereof:"

Isaiah 45:23: "I have sworn by myself, the word is gone out of my mouth in righteousness, and shall not return, That unto me every knee shall bow, every tongue shall swear."

Isaiah 50:4: "The Lord GOD hath given me the tongue of the learned, that I should know how to

speaking a word in season to him that is weary: he wakeneth morning by morning, he wakeneth mine ear to hear as the learned."

Isaiah 55:11: "So shall my word be that goeth forth out of my mouth: it shall not return unto me void, but it shall accomplish that which I please, and it shall prosper in the thing whereto I sent it."

Isaiah 66:2: "For all those things hath mine hand made, and all those things have been, saith the LORD: but to this man will I look, even to him that is poor and of a contrite spirit, and trembleth at my word."

Isaiah 66:5: "Hear the word of the LORD, ye that tremble at his word; Your brethren that hated you, that cast you out for my name's sake, said, Let the LORD be glorified: but he shall appear to your joy, and they shall be ashamed."

Jeremiah 1:2: "To whom the word of the LORD came in the days of Josiah the son of Amon king of Judah, in the thirteenth year of his reign."

Jeremiah 1:4: "Then the word of the LORD came unto me, saying,"

Jeremiah 1:11: "Moreover the word of the LORD came unto me, saying, Jeremiah, what seest thou? And I said, I see a rod of an almond tree."

Jeremiah 1:12: "Then said the LORD unto me, Thou hast well seen: for I will hasten my word to perform it."

Jeremiah 1:13: "And the word of the LORD came unto me the second time, saying, What seest thou? And I said, I see a seething pot; and the face thereof is toward the north."

Jeremiah 2:1: "Moreover the word of the LORD came to me, saying,"

Jeremiah 2:4: "Hear ye the word of the LORD, O house of Jacob, and all the families of the house of Israel:"

Jeremiah 2:31: "O generation, see ye the word of the LORD. Have I been a wilderness unto Israel? a land of darkness? wherefore say my people, We are lords; we will come no more unto thee?"

Jeremiah 5:13: "And the prophets shall become wind, and the word is not in them: thus shall it be done unto them."

Jeremiah 5:14: "Wherefore thus saith the LORD God of hosts, Because ye speak this word, behold, I will make my words in thy mouth fire, and this people wood, and it shall devour them."

Jeremiah 6:10: "To whom shall I speak, and give warning, that they may hear? behold, their ear is uncircumcised, and they cannot hearken: behold, the word of the LORD is unto them a reproach; they have no delight in it."

Jeremiah 7:1: "The word that came to Jeremiah from the LORD, saying,"

Jeremiah 7:2: "Stand in the gate of the LORD's house, and proclaim there this word, and say, Hear the word of the LORD, all ye of Judah, that enter in at these gates to worship the LORD."

Jeremiah 8:9: "The wise men are ashamed, they are dismayed and taken: lo, they have rejected the word of the LORD; and what wisdom is in them?"

Jeremiah 9:20: "Yet hear the word of the LORD, O ye women, and let your ear receive the word of his mouth, and teach your daughters wailing, and every one her neighbour lamentation."

Jeremiah 10:1: "Hear ye the word which the LORD speaketh unto you, O house of Israel:"

Jeremiah 11:1: "The word that came to Jeremiah from the LORD saying,"

Jeremiah 13:2: "So I got a girdle according to the word of the LORD, and put it on my loins."

Jeremiah 13:3: "And the word of the LORD came unto me the second time, saying,"

Jeremiah 13:8: "Then the word of the LORD came unto me, saying,"

Jeremiah 13:12: "Therefore thou shalt speak unto them this word; Thus saith the LORD God of Israel, Every bottle shall be filled with wine: and they shall say unto thee, Do we not certainly know that every bottle shall be filled with wine?"

Jeremiah 14:1: "The word of the LORD that came to Jeremiah concerning the dearth."

Jeremiah 14:17: "Therefore thou shalt say this word unto them; Let mine eyes run down with tears night and day, and let them not cease: for the virgin daughter of my people is broken with a great breach, with a very grievous blow."

Jeremiah 15:16: "Thy words were found, and I did eat them; and thy word was unto me the joy and rejoicing of mine heart: for I am called by thy name, O LORD God of hosts."

Jeremiah 16:1: "The word of the LORD came also unto me, saying,"

Jeremiah 17:15: "Behold, they say unto me, Where is the word of the LORD? let it come now."

Jeremiah 17:20: "And say unto them, Hear ye the word of the LORD, ye kings of Judah, and all Judah, and all the inhabitants of Jerusalem, that enter in by these gates:"

Jeremiah 18:1: "The word which came to Jeremiah from the LORD, saying,"

Jeremiah 18:5: "Then the word of the LORD came to me, saying,"

Jeremiah 18:18: "Then said they, Come and let us devise devices against Jeremiah; for the law shall not perish from the priest, nor counsel from the wise, nor the word from the prophet. Come, and let us smite him with the tongue, and let us not give heed to any of his words."

Jeremiah 19:3: "And say, Hear ye the word of the LORD, O kings of Judah, and inhabitants of Jerusalem; Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will bring evil upon this place, the which whosoever heareth, his ears shall tingle."

Jeremiah 20:8: "For since I spake, I cried out, I cried violence and spoil; because the word of the LORD was made a reproach unto me, and a derision, daily."

Jeremiah 20:9: "Then I said, I will not make mention of him, nor speak any more in his name. But his word was in mine heart as a burning fire shut up in my bones, and I was weary with forbearing, and I could not stay."

Jeremiah 21:1: "The word which came unto Jeremiah from the LORD, when king Zedekiah sent unto him Pashur the son of Melchiah, and Zephaniah the son of Maaseiah the priest, saying,"

Jeremiah 21:11: "And touching the house of the king of Judah, say, Hear ye the word of the LORD;"

Jeremiah 22:1: "Thus saith the LORD; Go down to the house of the king of Judah, and speak there this word,"

Jeremiah 22:2: "And say, Hear the word of the LORD, O king of Judah, that sittest upon the throne of David, thou, and thy servants, and thy people that enter in by these gates:"

Jeremiah 22:29: "O earth, earth, earth, hear the word of the LORD."

Jeremiah 23:18: "For who hath stood in the counsel of the LORD, and hath perceived and heard his word? who hath marked his word, and heard it?"

Jeremiah 23:28: "The prophet that hath a dream, let him tell a dream; and he that hath my word, let him speak my word faithfully. What is the chaff to the wheat? saith the LORD."

Jeremiah 23:29: "Is not my word like as a fire? saith the LORD; and like a hammer that breaketh the rock in pieces?"

Jeremiah 23:36: "And the burden of the LORD shall ye mention no more: for every man's word shall be his burden; for ye have perverted the words of the living God, of the LORD of hosts our God."

Jeremiah 23:38: "But since ye say, The burden of the LORD; therefore thus saith the LORD; Because ye say this word, The burden of the LORD, and I have sent unto you, saying, Ye shall not say, The burden of the LORD;"

Jeremiah 24:4: "Again the word of the LORD came unto me, saying,"

Jeremiah 25:1: "The word that came to Jeremiah concerning all the people of Judah in the fourth year of Jehoiakim the son of Josiah king of Judah, that was the first year of Nebuchadrezzar king of Babylon;"

Jeremiah 25:3: "From the thirteenth year of Josiah the son of Amon king of Judah, even unto this day, that is the three and twentieth year, the word of the LORD hath come unto me, and I have spoken unto you, rising early and speaking; but ye have not hearkened."

Jeremiah 26:1: "In the beginning of the reign of Jehoiakim the son of Josiah king of Judah came this word from the LORD, saying,"

Jeremiah 26:2: "Thus saith the LORD; Stand in the court of the LORD's house, and speak unto all

the cities of Judah, which come to worship in the LORD's house, all the words that I command thee to speak unto them; diminish not a word:"

Jeremiah 27:1: "In the beginning of the reign of Jehoiakim the son of Josiah king of Judah came this word unto Jeremiah from the LORD, saying,"

Jeremiah 27:18: "But if they be prophets, and if the word of the LORD be with them, let them now make intercession to the LORD of hosts, that the vessels which are left in the house of the LORD, and in the house of the king of Judah, and at Jerusalem, go not to Babylon."

Jeremiah 28:7: "Nevertheless hear thou now this word that I speak in thine ears, and in the ears of all the people;"

Jeremiah 28:9: "The prophet which prophesieth of peace, when the word of the prophet shall come to pass, then shall the prophet be known, that the LORD hath truly sent him."

Jeremiah 28:12: "Then the word of the LORD came unto Jeremiah the prophet, after that Hananiah the prophet had broken the yoke from off the neck of the prophet Jeremiah, saying,"

Jeremiah 29:10: "For thus saith the LORD, That after seventy years be accomplished at Babylon I will visit you, and perform my good word toward you, in causing you to return to this place."

Jeremiah 29:20: "Hear ye therefore the word of the LORD, all ye of the captivity, whom I have sent from Jerusalem to Babylon:"

Jeremiah 29:30: "Then came the word of the LORD unto Jeremiah, saying,"

Jeremiah 30:1: "The word that came to Jeremiah from the LORD, saying,"

Jeremiah 31:10: "Hear the word of the LORD, O ye nations, and declare it in the isles afar off, and say, He that scattered Israel will gather him, and keep him, as a shepherd doth his flock."

Jeremiah 32:1: "The word that came to Jeremiah from the LORD in the tenth year of Zedekiah king of Judah, which was the eighteenth year of Nebuchadrezzar."

Jeremiah 32:6: "And Jeremiah said, The word of the LORD came unto me, saying,"

Jeremiah 32:8: "So Hanameel mine uncle's son came to me in the court of the prison according to the word of the LORD, and said unto me, Buy my field, I pray thee, that is in Anathoth, which is in the country of Benjamin: for the right of inheritance is thine, and the redemption is thine; buy it for thyself. Then I knew that this was the word of the LORD."

Jeremiah 32:26: "Then came the word of the LORD unto Jeremiah, saying,"

Jeremiah 33:1: "Moreover the word of the LORD came unto Jeremiah the second time, while he was yet shut up in the court of the prison, saying,"

Jeremiah 33:19: "And the word of the LORD came unto Jeremiah, saying,"

Jeremiah 33:23: "Moreover the word of the LORD came to Jeremiah, saying,"

Jeremiah 34:1: "The word which came unto Jeremiah from the LORD, when Nebuchadnezzar king of Babylon, and all his army, and all the kingdoms of the earth of his dominion, and all the people, fought against Jerusalem, and against all the cities thereof, saying,"

Jeremiah 34:4: "Yet hear the word of the LORD, O Zedekiah king of Judah; Thus saith the LORD of thee, Thou shalt not die by the sword:"

Jeremiah 34:5: "But thou shalt die in peace: and with the burnings of thy fathers, the former kings which were before thee, so shall they burn odours for thee; and they will lament thee, saying, Ah lord! for I have pronounced the word, saith the LORD."

Jeremiah 34:8: "This is the word that came unto Jeremiah from the LORD, after that the king Zedekiah had made a covenant with all the people which were at Jerusalem, to proclaim liberty unto them;"

Jeremiah 34:12: "Therefore the word of the LORD came to Jeremiah from the LORD, saying,"

Jeremiah 35:1: "The word which came unto Jeremiah from the LORD in the days of Jehoiakim the son of Josiah king of Judah, saying,"

Jeremiah 35:12: "Then came the word of the LORD unto Jeremiah, saying,"

Jeremiah 36:1: "And it came to pass in the fourth year of Jehoiakim the son of Josiah king of Judah, that this word came unto Jeremiah from the LORD, saying,"

Jeremiah 36:27: "Then the word of the LORD came to Jeremiah, after that the king had burned the roll, and the words which Baruch wrote at the mouth of Jeremiah, saying,"

Jeremiah 37:6: "Then came the word of the LORD unto the prophet Jeremiah saying,"

Jeremiah 37:17: "Then Zedekiah the king sent, and took him out: and the king asked him secretly in his house, and said, Is there any word from the LORD? And Jeremiah said, There is: for, said he, thou shalt be delivered into the hand of the king of Babylon."

Jeremiah 38:21: "But if thou refuse to go forth, this is the word that the LORD hath shewed me:"

Jeremiah 39:15: "Now the word of the LORD came unto Jeremiah, while he was shut up in the court of the prison, saying,"

Jeremiah 40:1: "The word that came to Jeremiah from the LORD, after that Nebuzaradan the captain of the guard had let him go from Ramah, when he had taken him being bound in chains among all that were carried away captive of Jerusalem and Judah, which were carried away captive unto Babylon."

Jeremiah 42:7: "And it came to pass after ten days, that the word of the LORD came unto Jeremiah."

Jeremiah 42:15: "And now therefore hear the word of the LORD, ye remnant of Judah; Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; If ye wholly set your faces to enter into Egypt, and go to sojourn there;"

Jeremiah 43:8: "Then came the word of the LORD unto Jeremiah in Tahpanhes, saying,"

Jeremiah 44:1: "The word that came to Jeremiah concerning all the Jews which dwell in the land of Egypt, which dwell at Migdol, and at Tahpanhes, and at Noph, and in the country of Pathros, saying,"

Jeremiah 44:16: "As for the word that thou hast spoken unto us in the name of the LORD, we will not hearken unto thee."

Jeremiah 44:24: "Moreover Jeremiah said unto all the people, and to all the women, Hear the word of the LORD, all Judah that are in the land of Egypt:"

Jeremiah 44:26: "Therefore hear ye the word of the LORD, all Judah that dwell in the land of Egypt; Behold, I have sworn by my great name, saith the LORD, that my name shall no more be named in the mouth of any man of Judah in all the land of Egypt, saying, The Lord GOD liveth."

Jeremiah 45:1: "The word that Jeremiah the prophet spake unto Baruch the son of Neriah, when he had written these words in a book at the mouth of Jeremiah, in the fourth year of Jehoiakim the son of Josiah king of Judah, saying,"

Jeremiah 46:1: "The word of the LORD which came to Jeremiah the prophet against the Gentiles;"

Jeremiah 46:13: "The word that the LORD spake to Jeremiah the prophet, how Nebuchadrezzar king of Babylon should come and smite the land of Egypt."

Jeremiah 47:1: "The word of the LORD that came to Jeremiah the prophet against the Philistines, before that Pharaoh smote Gaza."

Jeremiah 49:34: "The word of the LORD that came to Jeremiah the prophet against Elam in the beginning of the reign of Zedekiah king of Judah, saying,"

Jeremiah 50:1: "The word that the LORD spake against Babylon and against the land of the Chaldeans by Jeremiah the prophet."

Jeremiah 51:59: "The word which Jeremiah the prophet commanded Seraiah the son of Neriah, the son of Maaseiah, when he went with Zedekiah the king of Judah into Babylon in the fourth year of his reign. And this Seraiah was a quiet prince."

Lamentations 2:17: "The LORD hath done that which he had devised; he hath fulfilled his word that he had commanded in the days of old: he hath thrown down, and hath not pitied: and he hath caused thine enemy to rejoice over thee, he hath set up the horn of thine adversaries."

Ezekiel 1:3: "The word of the LORD came expressly unto Ezekiel the priest, the son of Buzi, in the land of the Chaldeans by the river Chebar; and the hand of the LORD was there upon him."

Ezekiel 3:16: "And it came to pass at the end of seven days, that the word of the LORD came unto

me, saying,"

Ezekiel 3:17: "Son of man, I have made thee a watchman unto the house of Israel: therefore hear the word at my mouth, and give them warning from me."

Ezekiel 6:1: "And the word of the LORD came unto me, saying, "

Ezekiel 6:3: "And say, Ye mountains of Israel, hear the word of the Lord GOD; Thus saith the Lord GOD to the mountains, and to the hills, to the rivers, and to the valleys; Behold, I, even I, will bring a sword upon you, and I will destroy your high places."

Ezekiel 7:1: "Moreover the word of the LORD came unto me, saying,"

Ezekiel 11:14: "Again the word of the LORD came unto me, saying,"

Ezekiel 12:1: "The word of the LORD also came unto me, saying,"

Ezekiel 12:8: "And in the morning came the word of the LORD unto me, saying,"

Ezekiel 12:17: "Moreover the word of the LORD came to me, saying,"

Ezekiel 12:21: "And the word of the LORD came unto me, saying, "

Ezekiel 12:25: "For I am the LORD: I will speak, and the word that I shall speak shall come to pass; it shall be no more prolonged: for in your days, O rebellious house, will I say the word, and will perform it, saith the Lord GOD."

Ezekiel 12:26: "Again the word of the LORD came to me, saying."

Ezekiel 12:28: "Therefore say unto them, Thus saith the Lord GOD; There shall none of my words be prolonged any more, but the word which I have spoken shall be done, saith the Lord GOD."

Ezekiel 13:1: "And the word of the LORD came unto me, saying, "

Ezekiel 13:2: "Son of man, prophesy against the prophets of Israel that prophesy, and say thou unto them that prophesy out of their own hearts, Hear ye the word of the LORD;"

Ezekiel 13:6: "They have seen vanity and lying divination, saying, The LORD saith: and the LORD hath not sent them: and they have made others to hope that they would confirm the word."

Ezekiel 14:2: "And the word of the LORD came unto me, saying, "

Ezekiel 14:12: "The word of the LORD came again to me, saying,"

Ezekiel 15:1: "And the word of the LORD came unto me, saying, "

Ezekiel 16:1: "Again the word of the LORD came unto me, saying,"

Ezekiel 16:35: "Wherefore, O harlot, hear the word of the LORD:"

Ezekiel 17:1: "And the word of the LORD came unto me, saying, "

Ezekiel 17:11: "Moreover the word of the LORD came unto me, saying,"

Ezekiel 18:1: "The word of the LORD came unto me again, saying,"

Ezekiel 20:2: "Then came the word of the LORD unto me, saying,"

Ezekiel 20:45: "Moreover the word of the LORD came unto me, saying,"

Ezekiel 20:46: "Son of man, set thy face toward the south, and drop thy word toward the south, and prophesy against the forest of the south field;"

Ezekiel 20:47: "And say to the forest of the south, Hear the word of the LORD; Thus saith the Lord GOD; Behold, I will kindle a fire in thee, and it shall devour every green tree in thee, and every dry tree: the flaming flame shall not be quenched, and all faces from the south to the north shall be burned therein."

Ezekiel 21:1: "And the word of the LORD came unto me, saying, "

Ezekiel 21:2: "Son of man, set thy face toward Jerusalem, and drop thy word toward the holy places, and prophesy against the land of Israel,"

Ezekiel 21:8: "Again the word of the LORD came unto me, saying,"

Ezekiel 21:18: "The word of the LORD came unto me again, saying,"

Ezekiel 22:1: "Moreover the word of the LORD came unto me, saying,"

Ezekiel 22:17: "And the word of the LORD came unto me, saying, "

Ezekiel 22:23: "And the word of the LORD came unto me, saying, "

Ezekiel 23:1: "The word of the LORD came again unto me, saying,"

Ezekiel 24:1: "Again in the ninth year, in the tenth month, in the tenth day of the month, the word of

the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 24:15: "Also the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 24:20: "Then I answered them, The word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 25:1: "The word of the LORD came again unto me, saying,"  
 Ezekiel 25:3: "And say unto the Ammonites, Hear the word of the Lord GOD; Thus saith the Lord GOD; Because thou saidst, Aha, against my sanctuary, when it was profaned; and against the land of Israel, when it was desolate; and against the house of Judah, when they went into captivity;"  
 Ezekiel 26:1: "And it came to pass in the eleventh year, in the first day of the month, that the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 27:1: "The word of the LORD came again unto me, saying,"  
 Ezekiel 28:1: "The word of the LORD came again unto me, saying,"  
 Ezekiel 28:11: "Moreover the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 28:20: "Again the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 29:1: "In the tenth year, in the tenth month, in the twelfth day of the month, the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 29:17: "And it came to pass in the seven and twentieth year, in the first month, in the first day of the month, the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 30:1: "The word of the LORD came again unto me, saying,"  
 Ezekiel 30:20: "And it came to pass in the eleventh year, in the first month, in the seventh day of the month, that the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 31:1: "And it came to pass in the eleventh year, in the third month, in the first day of the month, that the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 32:1: "And it came to pass in the twelfth year, in the twelfth month, in the first day of the month, that the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 32:17: "It came to pass also in the twelfth year, in the fifteenth day of the month, that the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 33:1: "Again the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 33:7: "So thou, O son of man, I have set thee a watchman unto the house of Israel; therefore thou shalt hear the word at my mouth, and warn them from me."  
 Ezekiel 33:23: "Then the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 33:30: "Also, thou son of man, the children of thy people still are talking against thee by the walls and in the doors of the houses, and speak one to another, every one to his brother, saying, Come, I pray you, and hear what is the word that cometh forth from the LORD."  
 Ezekiel 34:1: "And the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 34:7: "Therefore, ye shepherds, hear the word of the LORD;"  
 Ezekiel 34:9: "Therefore, O ye shepherds, hear the word of the LORD;"  
 Ezekiel 35:1: "Moreover the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 36:1: "Also, thou son of man, prophesy unto the mountains of Israel, and say, Ye mountains of Israel, hear the word of the LORD:"  
 Ezekiel 36:4: "Therefore, ye mountains of Israel, hear the word of the Lord GOD; Thus saith the Lord GOD to the mountains, and to the hills, to the rivers, and to the valleys, to the desolate wastes, and to the cities that are forsaken, which became a prey and derision to the residue of the heathen that are round about;"  
 Ezekiel 36:16: "Moreover the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Ezekiel 37:4: "Again he said unto me, Prophesy upon these bones, and say unto them, O ye dry bones, hear the word of the LORD."  
 Ezekiel 37:15: "The word of the LORD came again unto me, saying,"  
 Ezekiel 38:1: "And the word of the LORD came unto me, saying,"  
 Daniel 3:28: "Then Nebuchadnezzar spake, and said, Blessed be the God of Shadrach, Meshach, and Abednego, who hath sent his angel, and delivered his servants that trusted in him, and have

changed the king's word, and yielded their bodies, that they might not serve nor worship any god, except their own God."

Daniel 4:17: "This matter is by the decree of the watchers, and the demand by the word of the holy ones: to the intent that the living may know that the most High ruleth in the kingdom of men, and giveth it to whomsoever he will, and setteth up over it the basest of men."

Daniel 4:31: "While the word was in the king's mouth, there fell a voice from heaven, saying, O king Nebuchadnezzar, to thee it is spoken; The kingdom is departed from thee."

Daniel 9:2: "In the first year of his reign I Daniel understood by books the number of the years, whereof the word of the LORD came to Jeremiah the prophet, that he would accomplish seventy years in the desolations of Jerusalem."

Daniel 10:11: "And he said unto me, O Daniel, a man greatly beloved, understand the words that I speak unto thee, and stand upright: for unto thee am I now sent. And when he had spoken this word unto me, I stood trembling."

Hosea 1:1: "The word of the LORD that came unto Hosea, the son of Beerai, in the days of Uzziah, Jotham, Ahaz, and Hezekiah, kings of Judah, and in the days of Jeroboam the son of Joash, king of Israel."

Hosea 1:2: "The beginning of the word of the LORD by Hosea. And the LORD said to Hosea, Go, take unto thee a wife of whoredoms and children of whoredoms: for the land hath committed great whoredom, departing from the LORD."

Hosea 4:1: "Hear the word of the LORD, ye children of Israel: for the LORD hath a controversy with the inhabitants of the land, because there is no truth, nor mercy, nor knowledge of God in the land."

Joel 1:1: "The word of the LORD that came to Joel the son of Pethuel."

Joel 2:11: "And the LORD shall utter his voice before his army: for his camp is very great: for he is strong that executeth his word: for the day of the LORD is great and very terrible; and who can abide it?"

Amos 3:1: "Hear this word that the LORD hath spoken against you, O children of Israel, against the whole family which I brought up from the land of Egypt, saying,"

Amos 4:1: "Hear this word, ye kine of Bashan, that are in the mountain of Samaria, which oppress the poor, which crush the needy, which say to their masters, Bring, and let us drink."

Amos 5:1: "Hear ye this word which I take up against you, even a lamentation, O house of Israel."

Amos 7:16: "Now therefore hear thou the word of the LORD: Thou sayest, Prophesy not against Israel, and drop not thy word against the house of Isaac."

Amos 8:12: "And they shall wander from sea to sea, and from the north even to the east, they shall run to and fro to seek the word of the LORD, and shall not find it."

Jonah 1:1: "Now the word of the LORD came unto Jonah the son of Amittai, saying,"

Jonah 3:1: "And the word of the LORD came unto Jonah the second time, saying,"

Jonah 3:3: "So Jonah arose, and went unto Nineveh, according to the word of the LORD. Now Nineveh was an exceeding great city of three days' journey."

Jonah 3:6: "For word came unto the king of Nineveh, and he arose from his throne, and he laid his robe from him, and covered him with sackcloth, and sat in ashes."

Micah 1:1: "The word of the LORD that came to Micah the Morasthite in the days of Jotham, Ahaz, and Hezekiah, kings of Judah, which he saw concerning Samaria and Jerusalem."

Micah 4:2: "And many nations shall come, and say, Come, and let us go up to the mountain of the LORD, and to the house of the God of Jacob; and he will teach us of his ways, and we will walk in his paths: for the law shall go forth of Zion, and the word of the LORD from Jerusalem."

Habakkuk 3:9: "Thy bow was made quite naked, according to the oaths of the tribes, even thy word. Selah. Thou didst cleave the earth with rivers."

Zephaniah 1:1: "The word of the LORD which came unto Zephaniah the son of Cushi, the son of Gedaliah, the son of Amariah, the son of Hizkiah, in the days of Josiah the son of Amon, king of



Judah."

Zephaniah 2:5: "Woe unto the inhabitants of the sea coast, the nation of the Cherethites! the word of the LORD is against you; O Canaan, the land of the Philistines, I will even destroy thee, that there shall be no inhabitant."

Haggai 1:1: "In the second year of Darius the king, in the sixth month, in the first day of the month, came the word of the LORD by Haggai the prophet unto Zerubbabel the son of Shealtiel, governor of Judah, and to Joshua the son of Josedech, the high priest, saying,"

Haggai 1:3: "Then came the word of the LORD by Haggai the prophet, saying,"

Haggai 2:1: "In the seventh month, in the one and twentieth day of the month, came the word of the LORD by the prophet Haggai, saying,"

Haggai 2:5: "According to the word that I covenanted with you when ye came out of Egypt, so my spirit remaineth among you: fear ye not."

Haggai 2:10: "In the four and twentieth day of the ninth month, in the second year of Darius, came the word of the LORD by Haggai the prophet, saying,"

Haggai 2:20: "And again the word of the LORD came unto Haggai in the four and twentieth day of the month, saying,"

Zechariah 1:1: "In the eighth month, in the second year of Darius, came the word of the LORD unto Zechariah, the son of Berechiah, the son of Iddo the prophet, saying,"

Zechariah 1:7: "Upon the four and twentieth day of the eleventh month, which is the month Sebat, in the second year of Darius, came the word of the LORD unto Zechariah, the son of Berechiah, the son of Iddo the prophet, saying,"

Zechariah 4:6: "Then he answered and spake unto me, saying, This is the word of the LORD unto Zerubbabel, saying, Not by might, nor by power, but by my spirit, saith the LORD of hosts."

Zechariah 4:8: "Moreover the word of the LORD came unto me, saying,"

Zechariah 6:9: "And the word of the LORD came unto me, saying,"

Zechariah 7:1: "And it came to pass in the fourth year of king Darius, that the word of the LORD came unto Zechariah in the fourth day of the ninth month, even in Chisleu;"

Zechariah 7:4: "Then came the word of the LORD of hosts unto me, saying,"

Zechariah 7:8: "And the word of the LORD came unto Zechariah, saying,"

Zechariah 8:1: "Again the word of the LORD of hosts came to me, saying,"

Zechariah 8:18: "And the word of the LORD of hosts came unto me, saying,"

Zechariah 9:1: "The burden of the word of the LORD in the land of Hadrach, and Damascus shall be the rest thereof: when the eyes of man, as of all the tribes of Israel, shall be toward the LORD."

Zechariah 11:11: "And it was broken in that day: and so the poor of the flock that waited upon me knew that it was the word of the LORD."

Zechariah 12:1: "The burden of the word of the LORD for Israel, saith the LORD, which stretcheth forth the heavens, and layeth the foundation of the earth, and formeth the spirit of man within him."

Malachi 1:1: "The burden of the word of the LORD to Israel by Malachi."

Matthew 2:8: "And he sent them to Bethlehem, and said, Go and search diligently for the young child; and when ye have found him, bring me word again, that I may come and worship him also."

Matthew 2:13: "And when they were departed, behold, the angel of the Lord appeareth to Joseph in a dream, saying, Arise, and take the young child and his mother, and flee into Egypt, and be thou there until I bring thee word: for Herod will seek the young child to destroy him."

Matthew 4:4: "But he answered and said, It is written, Man shall not live by bread alone, but by every word that proceedeth out of the mouth of God."

Matthew 8:8: "The centurion answered and said, Lord, I am not worthy that thou shouldest come under my roof: but speak the word only, and my servant shall be healed."

Matthew 8:16: "When the even was come, they brought unto him many that were possessed with devils: and he cast out the spirits with his word, and healed all that were sick:"

Matthew 12:32: "And whosoever speaketh a word against the Son of man, it shall be forgiven him:

but whosoever speaketh against the Holy Ghost, it shall not be forgiven him, neither in this world, neither in the world to come."

Matthew 12:36: "But I say unto you, That every idle word that men shall speak, they shall give account thereof in the day of judgment."

Matthew 13:19: "When any one heareth the word of the kingdom, and understandeth it not, then cometh the wicked one, and catcheth away that which was sown in his heart. This is he which received seed by the way side."

Matthew 13:20: "But he that received the seed into stony places, the same is he that heareth the word, and anon with joy receiveth it;"

Matthew 13:21: "Yet hath he not root in himself, but dureth for a while: for when tribulation or persecution ariseth because of the word, by and by he is offended."

Matthew 13:22: "He also that received seed among the thorns is he that heareth the word; and the care of this world, and the deceitfulness of riches, choke the word, and he becometh unfruitful."

Matthew 13:23: "But he that received seed into the good ground is he that heareth the word, and understandeth it; which also beareth fruit, and bringeth forth, some an hundredfold, some sixty, some thirty."

Matthew 15:23: "But he answered her not a word. And his disciples came and besought him, saying, Send her away; for she crieth after us."

Matthew 18:16: "But if he will not hear thee, then take with thee one or two more, that in the mouth of two or three witnesses every word may be established."

Matthew 22:46: "And no man was able to answer him a word, neither durst any man from that day forth ask him any more questions."

Matthew 26:75: "And Peter remembered the word of Jesus, which said unto him, Before the cock crow, thou shalt deny me thrice. And he went out, and wept bitterly."

Matthew 27:14: "And he answered him to never a word; insomuch that the governor marvelled greatly."

Matthew 28:8: "And they departed quickly from the sepulchre with fear and great joy; and did run to bring his disciples word."

Mark 2:2: "And straightway many were gathered together, insomuch that there was no room to receive them, no, not so much as about the door: and he preached the word unto them."

Mark 4:14: "The sower soweth the word."

Mark 4:15: "And these are they by the way side, where the word is sown; but when they have heard, Satan cometh immediately, and taketh away the word that was sown in their hearts."

Mark 4:16: "And these are they likewise which are sown on stony ground; who, when they have heard the word, immediately receive it with gladness;"

Mark 4:17: "And have no root in themselves, and so endure but for a time: afterward, when affliction or persecution ariseth for the word's sake, immediately they are offended."

Mark 4:18: "And these are they which are sown among thorns; such as hear the word,"

Mark 4:19: "And the cares of this world, and the deceitfulness of riches, and the lusts of other things entering in, choke the word, and it becometh unfruitful."

Mark 4:20: "And these are they which are sown on good ground; such as hear the word, and receive it, and bring forth fruit, some thirtyfold, some sixty, and some an hundred."

Mark 4:33: "And with many such parables spake he the word unto them, as they were able to hear it."

Mark 5:36: "As soon as Jesus heard the word that was spoken, he saith unto the ruler of the synagogue, Be not afraid, only believe."

Mark 7:13: "Making the word of God of none effect through your tradition, which ye have delivered: and many such like things do ye."

Mark 14:72: "And the second time the cock crew. And Peter called to mind the word that Jesus said unto him, Before the cock crew twice, thou shalt deny me thrice. And when he thought thereon, he

wept."

Mark 16:20: "And they went forth, and preached every where, the Lord working with them, and confirming the word with signs following. Amen."

Luke 1:2: "Even as they delivered them unto us, which from the beginning were eyewitnesses, and ministers of the word;"

Luke 1:38: "And Mary said, Behold the handmaid of the Lord; be it unto me according to thy word. And the angel departed from her."

Luke 2:29: "Lord, now lettest thou thy servant depart in peace, according to thy word:"

Luke 3:2: "Annas and Caiaphas being the high priests, the word of God came unto John the son of Zacharias in the wilderness."

Luke 4:4: "And Jesus answered him, saying, It is written, That man shall not live by bread alone, but by every word of God."

Luke 4:32: "And they were astonished at his doctrine: for his word was with power."

Luke 4:36: "And they were all amazed, and spake among themselves, saying, What a word is this! for with authority and power he commandeth the unclean spirits, and they come out."

Luke 5:1: "And it came to pass, that, as the people pressed upon him to hear the word of God, he stood by the lake of Gennesaret,"

Luke 5:5: "And Simon answering said unto him, Master, we have toiled all the night, and have taken nothing: nevertheless at thy word I will let down the net."

Luke 7:7: "Wherefore neither thought I myself worthy to come unto thee: but say in a word, and my servant shall be healed."

Luke 8:11: "Now the parable is this: The seed is the word of God."

Luke 8:12: "Those by the way side are they that hear; then cometh the devil, and taketh away the word out of their hearts, lest they should believe and be saved."

Luke 8:13: "They on the rock are they, which, when they hear, receive the word with joy; and these have no root, which for a while believe, and in time of temptation fall away."

Luke 8:15: "But that on the good ground are they, which in an honest and good heart, having heard the word, keep it, and bring forth fruit with patience."

Luke 8:21: "And he answered and said unto them, My mother and my brethren are these which hear the word of God, and do it."

Luke 10:39: "And she had a sister called Mary, which also sat at Jesus' feet, and heard his word."

Luke 11:28: "But he said, Yea rather, blessed are they that hear the word of God, and keep it."

Luke 12:10: "And whosoever shall speak a word against the Son of man, it shall be forgiven him: but unto him that blasphemeth against the Holy Ghost it shall not be forgiven."

Luke 22:61: "And the Lord turned, and looked upon Peter. And Peter remembered the word of the Lord, how he had said unto him, Before the cock crow, thou shalt deny me thrice."

Luke 24:19: "And he said unto them, What things? And they said unto him, Concerning Jesus of Nazareth, which was a prophet mighty in deed and word before God and all the people:"

John 1:1: "In the beginning was the Word, and the Word was with God, and the Word was God."

John 1:14: "And the Word was made flesh, and dwelt among us, (and we beheld his glory, the glory as of the only begotten of the Father,) full of grace and truth."

John 2:22: "When therefore he was risen from the dead, his disciples remembered that he had said this unto them; and they believed the scripture, and the word which Jesus had said."

John 4:41: "And many more believed because of his own word;"

John 4:50: "Jesus saith unto him, Go thy way; thy son liveth. And the man believed the word that Jesus had spoken unto him, and he went his way."

John 5:24: "Verily, verily, I say unto you, He that heareth my word, and believeth on him that sent me, hath everlasting life, and shall not come into condemnation; but is passed from death unto life."

John 5:38: "And ye have not his word abiding in you: for whom he hath sent, him ye believe not."

John 8:31: "Then said Jesus to those Jews which believed on him, If ye continue in my word, then

are ye my disciples indeed;"

John 8:37: "I know that ye are Abraham's seed; but ye seek to kill me, because my word hath no place in you."

John 8:43: "Why do ye not understand my speech? even because ye cannot hear my word."

John 10:35: "If he called them gods, unto whom the word of God came, and the scripture cannot be broken;"

John 12:48: "He that rejecteth me, and receiveth not my words, hath one that judgeth him: the word that I have spoken, the same shall judge him in the last day."

John 14:24: "He that loveth me not keepeth not my sayings: and the word which ye hear is not mine, but the Father's which sent me."

John 15:3: "Now ye are clean through the word which I have spoken unto you."

John 15:20: "Remember the word that I said unto you, The servant is not greater than his lord. If they have persecuted me, they will also persecute you; if they have kept my saying, they will keep yours also."

John 15:25: "But this cometh to pass, that the word might be fulfilled that is written in their law, They hated me without a cause."

John 17:6: "I have manifested thy name unto the men which thou gavest me out of the world: thine they were, and thou gavest them me; and they have kept thy word."

John 17:14: "I have given them thy word; and the world hath hated them, because they are not of the world, even as I am not of the world."

John 17:17: "Sanctify them through thy truth: thy word is truth."

John 17:20: "Neither pray I for these alone, but for them also which shall believe on me through their word;"

Acts 2:41: "Then they that gladly received his word were baptized: and the same day there were added unto them about three thousand souls."

Acts 4:4: "Howbeit many of them which heard the word believed; and the number of the men was about five thousand."

Acts 4:29: "And now, Lord, behold their threatenings: and grant unto thy servants, that with all boldness they may speak thy word,"

Acts 4:31: "And when they had prayed, the place was shaken where they were assembled together; and they were all filled with the Holy Ghost, and they spake the word of God with boldness."

Acts 6:2: "Then the twelve called the multitude of the disciples unto them, and said, It is not reason that we should leave the word of God, and serve tables."

Acts 6:4: "But we will give ourselves continually to prayer, and to the ministry of the word."

Acts 6:7: "And the word of God increased; and the number of the disciples multiplied in Jerusalem greatly; and a great company of the priests were obedient to the faith."

Acts 8:4: "Therefore they that were scattered abroad went every where preaching the word."

Acts 8:14: "Now when the apostles which were at Jerusalem heard that Samaria had received the word of God, they sent unto them Peter and John:"

Acts 8:25: "And they, when they had testified and preached the word of the Lord, returned to Jerusalem, and preached the gospel in many villages of the Samaritans."

Acts 10:36: "The word which God sent unto the children of Israel, preaching peace by Jesus Christ: (he is Lord of all:)"

Acts 10:37: "That word, I say, ye know, which was published throughout all Judaea, and began from Galilee, after the baptism which John preached;"

Acts 10:44: "While Peter yet spake these words, the Holy Ghost fell on all them which heard the word."

Acts 11:1: "And the apostles and brethren that were in Judaea heard that the Gentiles had also received the word of God."

Acts 11:16: "Then remembered I the word of the Lord, how that he said, John indeed baptized with

water; but ye shall be baptized with the Holy Ghost."

Acts 11:19: "Now they which were scattered abroad upon the persecution that arose about Stephen travelled as far as Phenice, and Cyprus, and Antioch, preaching the word to none but unto the Jews only."

Acts 12:24: "But the word of God grew and multiplied."

Acts 13:5: "And when they were at Salamis, they preached the word of God in the synagogues of the Jews: and they had also John to their minister."

Acts 13:7: "Which was with the deputy of the country, Sergius Paulus, a prudent man; who called for Barnabas and Saul, and desired to hear the word of God."

Acts 13:15: "And after the reading of the law and the prophets the rulers of the synagogue sent unto them, saying, Ye men and brethren, if ye have any word of exhortation for the people, say on."

Acts 13:26: "Men and brethren, children of the stock of Abraham, and whosoever among you feareth God, to you is the word of this salvation sent."

Acts 13:44: "And the next sabbath day came almost the whole city together to hear the word of God."

Acts 13:46: "Then Paul and Barnabas waxed bold, and said, It was necessary that the word of God should first have been spoken to you: but seeing ye put it from you, and judge yourselves unworthy of everlasting life, lo, we turn to the Gentiles."

Acts 13:48: "And when the Gentiles heard this, they were glad, and glorified the word of the Lord: and as many as were ordained to eternal life believed."

Acts 13:49: "And the word of the Lord was published throughout all the region."

Acts 14:3: "Long time therefore abode they speaking boldly in the Lord, which gave testimony unto the word of his grace, and granted signs and wonders to be done by their hands."

Acts 14:25: "And when they had preached the word in Perga, they went down into Attalia:"

Acts 15:7: "And when there had been much disputing, Peter rose up, and said unto them, Men and brethren, ye know how that a good while ago God made choice among us, that the Gentiles by my mouth should hear the word of the gospel, and believe."

Acts 15:35: "Paul also and Barnabas continued in Antioch, teaching and preaching the word of the Lord, with many others also."

Acts 15:36: "And some days after Paul said unto Barnabas, Let us go again and visit our brethren in every city where we have preached the word of the LORD, and see how they do."

Acts 16:6: "Now when they had gone throughout Phrygia and the region of Galatia, and were forbidden of the Holy Ghost to preach the word in Asia,"

Acts 16:32: "And they spake unto him the word of the Lord, and to all that were in his house."

Acts 17:11: "These were more noble than those in Thessalonica, in that they received the word with all readiness of mind, and searched the scriptures daily, whether those things were so."

Acts 17:13: "But when the Jews of Thessalonica had knowledge that the word of God was preached of Paul at Berea, they came thither also, and stirred up the people."

Acts 18:11: "And he continued there a year and six months, teaching the word of God among them."

Acts 19:10: "And this continued by the space of two years; so that all they which dwelt in Asia heard the word of the Lord Jesus, both Jews and Greeks."

Acts 19:20: "So mightily grew the word of God and prevailed."

Acts 20:32: "And now, brethren, I commend you to God, and to the word of his grace, which is able to build you up, and to give you an inheritance among all them which are sanctified."

Acts 22:22: "And they gave him audience unto this word, and then lifted up their voices, and said, Away with such a fellow from the earth: for it is not fit that he should live."

Acts 28:25: "And when they agreed not among themselves, they departed, after that Paul had spoken one word, Well spake the Holy Ghost by Esaias the prophet unto our fathers,"

Romans 9:6: "Not as though the word of God hath taken none effect. For they are not all Israel,

which are of Israel:"

Romans 9:9: "For this is the word of promise, At this time will I come, and Sarah shall have a son."

Romans 10:8: "But what saith it? The word is nigh thee, even in thy mouth, and in thy heart: that is, the word of faith, which we preach;"

Romans 10:17: "So then faith cometh by hearing, and hearing by the word of God."

Romans 15:18: "For I will not dare to speak of any of those things which Christ hath not wrought by me, to make the Gentiles obedient, by word and deed,"

1 Corinthians 4:20: "For the kingdom of God is not in word, but in power."

1 Corinthians 12:8: "For to one is given by the Spirit the word of wisdom; to another the word of knowledge by the same Spirit;"

1 Corinthians 14:36: "What? came the word of God out from you? or came it unto you only?"

2 Corinthians 1:18: "But as God is true, our word toward you was not yea and nay."

2 Corinthians 2:17: "For we are not as many, which corrupt the word of God: but as of sincerity, but as of God, in the sight of God speak we in Christ."

2 Corinthians 4:2: "But have renounced the hidden things of dishonesty, not walking in craftiness, nor handling the word of God deceitfully; but by manifestation of the truth commending ourselves to every man's conscience in the sight of God."

2 Corinthians 5:19: "To wit, that God was in Christ, reconciling the world unto himself, not imputing their trespasses unto them; and hath committed unto us the word of reconciliation."

2 Corinthians 6:7: "By the word of truth, by the power of God, by the armour of righteousness on the right hand and on the left,"

2 Corinthians 10:11: "Let such an one think this, that, such as we are in word by letters when we are absent, such will we be also in deed when we are present."

2 Corinthians 13:1: "This is the third time I am coming to you. In the mouth of two or three witnesses shall every word be established."

Galatians 5:14: "For all the law is fulfilled in one word, even in this; Thou shalt love thy neighbour as thyself."

Galatians 6:6: "Let him that is taught in the word communicate unto him that teacheth in all good things."

Ephesians 1:13: "In whom ye also trusted, after that ye heard the word of truth, the gospel of your salvation: in whom also after that ye believed, ye were sealed with that holy Spirit of promise,"

Ephesians 5:26: "That he might sanctify and cleanse it with the washing of water by the word,"

Ephesians 6:17: "And take the helmet of salvation, and the sword of the Spirit, which is the word of God:"

Philippians 1:14: "And many of the brethren in the Lord, waxing confident by my bonds, are much more bold to speak the word without fear."

Philippians 2:16: "Holding forth the word of life; that I may rejoice in the day of Christ, that I have not run in vain, neither laboured in vain."

Colossians 1:5: "For the hope which is laid up for you in heaven, whereof ye heard before in the word of the truth of the gospel;"

Colossians 1:25: "Whereof I am made a minister, according to the dispensation of God which is given to me for you, to fulfil the word of God;"

Colossians 3:16: "Let the word of Christ dwell in you richly in all wisdom; teaching and admonishing one another in psalms and hymns and spiritual songs, singing with grace in your hearts to the Lord."

Colossians 3:17: "And whatsoever ye do in word or deed, do all in the name of the Lord Jesus, giving thanks to God and the Father by him."

1 Thessalonians 1:5: "For our gospel came not unto you in word only, but also in power, and in the Holy Ghost, and in much assurance; as ye know what manner of men we were among you for your sake."

1 Thessalonians 1:6: "And ye became followers of us, and of the Lord, having received the word in much affliction, with joy of the Holy Ghost."

1 Thessalonians 1:8: "For from you sounded out the word of the Lord not only in Macedonia and Achaia, but also in every place your faith to God-ward is spread abroad; so that we need not to speak any thing."

1 Thessalonians 2:13: "For this cause also thank we God without ceasing, because, when ye received the word of God which ye heard of us, ye received it not as the word of men, but as it is in truth, the word of God, which effectually worketh also in you that believe."

1 Thessalonians 4:15: "For this we say unto you by the word of the Lord, that we which are alive and remain unto the coming of the Lord shall not prevent them which are asleep."

2 Thessalonians 2:2: "That ye be not soon shaken in mind, or be troubled, neither by spirit, nor by word, nor by letter as from us, as that the day of Christ is at hand."

2 Thessalonians 2:15: "Therefore, brethren, stand fast, and hold the traditions which ye have been taught, whether by word, or our epistle."

2 Thessalonians 2:17: "Comfort your hearts, and stablish you in every good word and work."

2 Thessalonians 3:1: "Finally, brethren, pray for us, that the word of the Lord may have free course, and be glorified, even as it is with you:"

2 Thessalonians 3:14: "And if any man obey not our word by this epistle, note that man, and have no company with him, that he may be ashamed."

1 Timothy 4:5: "For it is sanctified by the word of God and prayer."

1 Timothy 4:12: "Let no man despise thy youth; but be thou an example of the believers, in word, in conversation, in charity, in spirit, in faith, in purity."

1 Timothy 5:17: "Let the elders that rule well be counted worthy of double honour, especially they who labour in the word and doctrine."

2 Timothy 2:9: "Wherein I suffer trouble, as an evil doer, even unto bonds; but the word of God is not bound."

2 Timothy 2:15: "Study to shew thyself approved unto God, a workman that needeth not to be ashamed, rightly dividing the word of truth."

2 Timothy 2:17: "And their word will eat as doth a canker: of whom is Hymenaeus and Philetus;"

2 Timothy 4:2: "Preach the word; be instant in season, out of season; reprove, rebuke, exhort with all longsuffering and doctrine."

Titus 1:3: "But hath in due times manifested his word through preaching, which is committed unto me according to the commandment of God our Saviour;"

Titus 1:9: "Holding fast the faithful word as he hath been taught, that he may be able by sound doctrine both to exhort and to convince the gainsayers."

Titus 2:5: "To be discreet, chaste, keepers at home, good, obedient to their own husbands, that the word of God be not blasphemed."

Hebrews 1:3: "Who being the brightness of his glory, and the express image of his person, and upholding all things by the word of his power, when he had by himself purged our sins, sat down on the right hand of the Majesty on high:"

Hebrews 2:2: "For if the word spoken by angels was stedfast, and every transgression and disobedience received a just recompence of reward;"

Hebrews 4:2: "For unto us was the gospel preached, as well as unto them: but the word preached did not profit them, not being mixed with faith in them that heard it."

Hebrews 4:12: "For the word of God is quick, and powerful, and sharper than any twoedged sword, piercing even to the dividing asunder of soul and spirit, and of the joints and marrow, and is a discerner of the thoughts and intents of the heart."

Hebrews 5:13: "For every one that useth milk is unskilful in the word of righteousness: for he is a babe."

Hebrews 6:5: "And have tasted the good word of God, and the powers of the world to come,"

Hebrews 7:28: "For the law maketh men high priests which have infirmity; but the word of the oath, which was since the law, maketh the Son, who is consecrated for evermore."

Hebrews 11:3: "Through faith we understand that the worlds were framed by the word of God, so that things which are seen were not made of things which do appear."

Hebrews 12:19: "And the sound of a trumpet, and the voice of words; which voice they that heard intreated that the word should not be spoken to them any more:"

Hebrews 12:27: "And this word, Yet once more, signifieth the removing of those things that are shaken, as of things that are made, that those things which cannot be shaken may remain."

Hebrews 13:7: "Remember them which have the rule over you, who have spoken unto you the word of God: whose faith follow, considering the end of their conversation."

Hebrews 13:22: "And I beseech you, brethren, suffer the word of exhortation: for I have written a letter unto you in few words."

James 1:18: "Of his own will begat he us with the word of truth, that we should be a kind of firstfruits of his creatures."

James 1:21: "Wherefore lay apart all filthiness and superfluity of naughtiness, and receive with meekness the engrafted word, which is able to save your souls."

James 1:22: "But be ye doers of the word, and not hearers only, deceiving your own selves."

James 1:23: "For if any be a hearer of the word, and not a doer, he is like unto a man beholding his natural face in a glass:"

James 3:2: "For in many things we offend all. If any man offend not in word, the same is a perfect man, and able also to bridle the whole body."

1 Peter 1:23: "Being born again, not of corruptible seed, but of incorruptible, by the word of God, which liveth and abideth for ever."

1 Peter 1:25: "But the word of the Lord endureth for ever. And this is the word which by the gospel is preached unto you."

1 Peter 2:2: "As newborn babes, desire the sincere milk of the word, that ye may grow thereby:"

1 Peter 2:8: "And a stone of stumbling, and a rock of offence, even to them which stumble at the word, being disobedient: whereunto also they were appointed."

1 Peter 3:1: "Likewise, ye wives, be in subjection to your own husbands; that, if any obey not the word, they also may without the word be won by the conversation of the wives;"

2 Peter 1:19: "We have also a more sure word of prophecy; whereunto ye do well that ye take heed, as unto a light that shineth in a dark place, until the day dawn, and the day star arise in your hearts:"

2 Peter 3:5: "For this they willingly are ignorant of, that by the word of God the heavens were of old, and the earth standing out of the water and in the water:"

2 Peter 3:7: "But the heavens and the earth, which are now, by the same word are kept in store, reserved unto fire against the day of judgment and perdition of ungodly men."

1 John 1:1: "That which was from the beginning, which we have heard, which we have seen with our eyes, which we have looked upon, and our hands have handled, of the Word of life;"

1 John 1:10: "If we say that we have not sinned, we make him a liar, and his word is not in us."

1 John 2:5: "But whoso keepeth his word, in him verily is the love of God perfected: hereby know we that we are in him."

1 John 2:7: "Brethren, I write no new commandment unto you, but an old commandment which ye had from the beginning. The old commandment is the word which ye have heard from the beginning."

1 John 2:14: "I have written unto you, fathers, because ye have known him that is from the beginning. I have written unto you, young men, because ye are strong, and the word of God abideth in you, and ye have overcome the wicked one."

1 John 3:18: "My little children, let us not love in word, neither in tongue; but in deed and in truth."

1 John 5:7: "For there are three that bear record in heaven, the Father, the Word, and the Holy Ghost: and these three are one."



Revelation 1:2: "Who bare record of the word of God, and of the testimony of Jesus Christ, and of all things that he saw."

Revelation 1:9: "I John, who also am your brother, and companion in tribulation, and in the kingdom and patience of Jesus Christ, was in the isle that is called Patmos, for the word of God, and for the testimony of Jesus Christ."

Revelation 3:8: "I know thy works: behold, I have set before thee an open door, and no man can shut it: for thou hast a little strength, and hast kept my word, and hast not denied my name."

Revelation 3:10: "Because thou hast kept the word of my patience, I also will keep thee from the hour of temptation, which shall come upon all the world, to try them that dwell upon the earth."

Revelation 6:9: "And when he had opened the fifth seal, I saw under the altar the souls of them that were slain for the word of God, and for the testimony which they held:"

Revelation 12:11: "And they overcame him by the blood of the Lamb, and by the word of their testimony; and they loved not their lives unto the death."

Revelation 19:13: "And he was clothed with a vesture dipped in blood: and his name is called The Word of God."

Revelation 20:4: "And I saw thrones, and they sat upon them, and judgment was given unto them: and I saw the souls of them that were beheaded for the witness of Jesus, and for the word of God, and which had not worshipped the beast, neither his image, neither had received his mark upon their foreheads, or in their hands; and they lived and reigned with Christ a thousand years."

## WORDS

Occurrences: 521

Genesis 24:30: "And it came to pass, when he saw the earring and bracelets upon his sister's hands, and when he heard the words of Rebekah his sister, saying, Thus spake the man unto me; that he came unto the man; and, behold, he stood by the camels at the well."

Genesis 24:52: "And it came to pass, that, when Abraham's servant heard their words, he worshipped the LORD, bowing himself to the earth."

Genesis 27:34: "And when Esau heard the words of his father, he cried with a great and exceeding bitter cry, and said unto his father, Bless me, even me also, O my father."

Genesis 27:42: "And these words of Esau her elder son were told to Rebekah: and she sent and called Jacob her younger son, and said unto him, Behold, thy brother Esau, as touching thee, doth comfort himself, purposing to kill thee."

Genesis 31:1: "And he heard the words of Laban's sons, saying, Jacob hath taken away all that was our father's; and of that which was our father's hath he gotten all this glory."

Genesis 34:18: "And their words pleased Hamor, and Shechem Hamor's son."

Genesis 37:8: "And his brethren said to him, Shalt thou indeed reign over us? or shalt thou indeed have dominion over us? And they hated him yet the more for his dreams, and for his words."

Genesis 39:17: "And she spake unto him according to these words, saying, The Hebrew servant, which thou hast brought unto us, came in unto me to mock me:"

Genesis 39:19: "And it came to pass, when his master heard the words of his wife, which she spake unto him, saying, After this manner did thy servant to me; that his wrath was kindled."

Genesis 42:16: "Send one of you, and let him fetch your brother, and ye shall be kept in prison, that your words may be proved, whether there be any truth in you: or else by the life of Pharaoh surely ye are spies."

Genesis 42:20: "But bring your youngest brother unto me; so shall your words be verified, and ye shall not die. And they did so."

Genesis 43:7: "And they said, The man asked us straitly of our state, and of our kindred, saying, Is your father yet alive? have ye another brother? and we told him according to the tenor of these words: could we certainly know that he would say, Bring your brother down?"

Genesis 44:6: "And he overtook them, and he spake unto them these same words."

Genesis 44:7: "And they said unto him, Wherefore saith my lord these words? God forbid that thy servants should do according to this thing:"

Genesis 44:10: "And he said, Now also let it be according unto your words: he with whom it is found shall be my servant; and ye shall be blameless."

Genesis 44:24: "And it came to pass when we came up unto thy servant my father, we told him the words of my lord."

Genesis 45:27: "And they told him all the words of Joseph, which he had said unto them: and when he saw the wagons which Joseph had sent to carry him, the spirit of Jacob their father revived:"

Genesis 49:21: "Naphtali is a hind let loose: he giveth goodly words."

Exodus 4:15: "And thou shalt speak unto him, and put words in his mouth: and I will be with thy mouth, and with his mouth, and will teach you what ye shall do."

Exodus 4:28: "And Moses told Aaron all the words of the LORD who had sent him, and all the signs which he had commanded him."

Exodus 4:30: "And Aaron spake all the words which the LORD had spoken unto Moses, and did the signs in the sight of the people."

Exodus 5:9: "Let there more work be laid upon the men, that they may labour therein; and let them not regard vain words."

Exodus 19:6: "And ye shall be unto me a kingdom of priests, and an holy nation. These are the words which thou shalt speak unto the children of Israel."

Exodus 19:7: "And Moses came and called for the elders of the people, and laid before their faces all these words which the LORD commanded him."

Exodus 19:8: "And all the people answered together, and said, All that the LORD hath spoken we will do. And Moses returned the words of the people unto the LORD."

Exodus 19:9: "And the LORD said unto Moses, Lo, I come unto thee in a thick cloud, that the people may hear when I speak with thee, and believe thee for ever. And Moses told the words of the people unto the LORD."

Exodus 20:1: "And God spake all these words, saying,"

Exodus 23:8: "And thou shalt take no gift: for the gift blindeth the wise, and perverteth the words of the righteous."

Exodus 24:3: "And Moses came and told the people all the words of the LORD, and all the judgments: and all the people answered with one voice, and said, All the words which the LORD hath said will we do."

Exodus 24:4: "And Moses wrote all the words of the LORD, and rose up early in the morning, and builded an altar under the hill, and twelve pillars, according to the twelve tribes of Israel."

Exodus 24:8: "And Moses took the blood, and sprinkled it on the people, and said, Behold the blood of the covenant, which the LORD hath made with you concerning all these words."

Exodus 34:1: "And the LORD said unto Moses, Hew thee two tables of stone like unto the first: and I will write upon these tables the words that were in the first tables, which thou brakest."

Exodus 34:27: "And the LORD said unto Moses, Write thou these words: for after the tenor of these words I have made a covenant with thee and with Israel."

Exodus 34:28: "And he was there with the LORD forty days and forty nights; he did neither eat bread, nor drink water. And he wrote upon the tables the words of the covenant, the ten commandments."

Exodus 35:1: "And Moses gathered all the congregation of the children of Israel together, and said unto them, These are the words which the LORD hath commanded, that ye should do them."

Numbers 11:24: "And Moses went out, and told the people the words of the LORD, and gathered the seventy men of the elders of the people, and set them round about the tabernacle."

Numbers 12:6: "And he said, Hear now my words: If there be a prophet among you, I the LORD will make myself known unto him in a vision, and will speak unto him in a dream."

Numbers 16:31: "And it came to pass, as he had made an end of speaking all these words, that the

ground clave asunder that was under them:"

Numbers 22:7: "And the elders of Moab and the elders of Midian departed with the rewards of divination in their hand; and they came unto Balaam, and spake unto him the words of Balak."

Numbers 24:4: "He hath said, which heard the words of God, which saw the vision of the Almighty, falling into a trance, but having his eyes open:"

Numbers 24:16: "He hath said, which heard the words of God, and knew the knowledge of the most High, which saw the vision of the Almighty, falling into a trance, but having his eyes open:"

Deuteronomy 1:1: "These be the words which Moses spake unto all Israel on this side Jordan in the wilderness, in the plain over against the Red sea, between Paran, and Tophel, and Laban, and Hazeroth, and Dizahab."

Deuteronomy 1:34: "And the LORD heard the voice of your words, and was wroth, and sware, saying,"

Deuteronomy 2:26: "And I sent messengers out of the wilderness of Kedemoth unto Sihon king of Heshbon with words of peace, saying,"

Deuteronomy 4:10: "Specially the day that thou stoodest before the LORD thy God in Horeb, when the LORD said unto me, Gather me the people together, and I will make them hear my words, that they may learn to fear me all the days that they shall live upon the earth, and that they may teach their children."

Deuteronomy 4:12: "And the LORD spake unto you out of the midst of the fire: ye heard the voice of the words, but saw no similitude; only ye heard a voice."

Deuteronomy 4:36: "Out of heaven he made thee to hear his voice, that he might instruct thee: and upon earth he shewed thee his great fire; and thou heardest his words out of the midst of the fire."

Deuteronomy 5:22: "These words the LORD spake unto all your assembly in the mount out of the midst of the fire, of the cloud, and of the thick darkness, with a great voice: and he added no more. And he wrote them in two tables of stone, and delivered them unto me."

Deuteronomy 5:28: "And the LORD heard the voice of your words, when ye spake unto me; and the LORD said unto me, I have heard the voice of the words of this people, which they have spoken unto thee: they have well said all that they have spoken."

Deuteronomy 6:6: "And these words, which I command thee this day, shall be in thine heart:"

Deuteronomy 9:10: "And the LORD delivered unto me two tables of stone written with the finger of God; and on them was written according to all the words, which the LORD spake with you in the mount out of the midst of the fire in the day of the assembly."

Deuteronomy 10:2: "And I will write on the tables the words that were in the first tables which thou brakest, and thou shalt put them in the ark."

Deuteronomy 11:18: "Therefore shall ye lay up these my words in your heart and in your soul, and bind them for a sign upon your hand, that they may be as frontlets between your eyes."

Deuteronomy 12:28: "Observe and hear all these words which I command thee, that it may go well with thee, and with thy children after thee for ever, when thou doest that which is good and right in the sight of the LORD thy God."

Deuteronomy 13:3: "Thou shalt not hearken unto the words of that prophet, or that dreamer of dreams: for the LORD your God proveth you, to know whether ye love the LORD your God with all your heart and with all your soul."

Deuteronomy 16:19: "Thou shalt not wrest judgment; thou shalt not respect persons, neither take a gift: for a gift doth blind the eyes of the wise, and pervert the words of the righteous."

Deuteronomy 17:19: "And it shall be with him, and he shall read therein all the days of his life: that he may learn to fear the LORD his God, to keep all the words of this law and these statutes, to do them:"

Deuteronomy 18:18: "I will raise them up a Prophet from among their brethren, like unto thee, and will put my words in his mouth; and he shall speak unto them all that I shall command him."

Deuteronomy 18:19: "And it shall come to pass, that whosoever will not hearken unto my words

which he shall speak in my name, I will require it of him."

Deuteronomy 27:3: "And thou shalt write upon them all the words of this law, when thou art passed over, that thou mayest go in unto the land which the LORD thy God giveth thee, a land that floweth with milk and honey; as the LORD God of thy fathers hath promised thee."

Deuteronomy 27:8: "And thou shalt write upon the stones all the words of this law very plainly."

Deuteronomy 27:26: "Cursed be he that confirmeth not all the words of this law to do them. And all the people shall say, Amen."

Deuteronomy 28:14: "And thou shalt not go aside from any of the words which I command thee this day, to the right hand, or to the left, to go after other gods to serve them."

Deuteronomy 28:58: "If thou wilt not observe to do all the words of this law that are written in this book, that thou mayest fear this glorious and fearful name, THE LORD THY GOD;"

Deuteronomy 29:1: "These are the words of the covenant, which the LORD commanded Moses to make with the children of Israel in the land of Moab, beside the covenant which he made with them in Horeb."

Deuteronomy 29:9: "Keep therefore the words of this covenant, and do them, that ye may prosper in all that ye do."

Deuteronomy 29:19: "And it come to pass, when he heareth the words of this curse, that he bless himself in his heart, saying, I shall have peace, though I walk in the imagination of mine heart, to add drunkenness to thirst:"

Deuteronomy 29:29: "The secret things belong unto the LORD our God: but those things which are revealed belong unto us and to our children for ever, that we may do all the words of this law."

Deuteronomy 31:1: "And Moses went and spake these words unto all Israel."

Deuteronomy 31:12: "Gather the people together, men and women, and children, and thy stranger that is within thy gates, that they may hear, and that they may learn, and fear the LORD your God, and observe to do all the words of this law:"

Deuteronomy 31:24: "And it came to pass, when Moses had made an end of writing the words of this law in a book, until they were finished,"

Deuteronomy 31:28: "Gather unto me all the elders of your tribes, and your officers, that I may speak these words in their ears, and call heaven and earth to record against them."

Deuteronomy 31:30: "And Moses spake in the ears of all the congregation of Israel the words of this song, until they were ended."

Deuteronomy 32:1: "Give ear, O ye heavens, and I will speak; and hear, O earth, the words of my mouth."

Deuteronomy 32:44: "And Moses came and spake all the words of this song in the ears of the people, he, and Hoshea the son of Nun."

Deuteronomy 32:45: "And Moses made an end of speaking all these words to all Israel:"

Deuteronomy 32:46: "And he said unto them, Set your hearts unto all the words which I testify among you this day, which ye shall command your children to observe to do, all the words of this law."

Deuteronomy 33:3: "Yea, he loved the people; all his saints are in thy hand: and they sat down at thy feet; every one shall receive of thy words."

Joshua 1:18: "Whosoever he be that doth rebel against thy commandment, and will not hearken unto thy words in all that thou commandest him, he shall be put to death: only be strong and of a good courage."

Joshua 2:21: "And she said, According unto your words, so be it. And she sent them away, and they departed: and she bound the scarlet line in the window."

Joshua 3:9: "And Joshua said unto the children of Israel, Come hither, and hear the words of the LORD your God."

Joshua 8:34: "And afterward he read all the words of the law, the blessings and cursings, according to all that is written in the book of the law."

Joshua 22:30: "And when Phinehas the priest, and the princes of the congregation and heads of the thousands of Israel which were with him, heard the words that the children of Reuben and the children of Gad and the children of Manasseh spake, it pleased them."

Joshua 24:26: "And Joshua wrote these words in the book of the law of God, and took a great stone, and set it up there under an oak, that was by the sanctuary of the LORD."

Joshua 24:27: "And Joshua said unto all the people, Behold, this stone shall be a witness unto us; for it hath heard all the words of the LORD which he spake unto us: it shall be therefore a witness unto you, lest ye deny your God."

Judges 2:4: "And it came to pass, when the angel of the LORD spake these words unto all the children of Israel, that the people lifted up their voice, and wept."

Judges 9:3: "And his mother's brethren spake of him in the ears of all the men of Shechem all these words: and their hearts inclined to follow Abimelech; for they said, He is our brother."

Judges 9:30: "And when Zebul the ruler of the city heard the words of Gaal the son of Ebed, his anger was kindled."

Judges 11:10: "And the elders of Gilead said unto Jephthah, The LORD be witness between us, if we do not so according to thy words."

Judges 11:11: "Then Jephthah went with the elders of Gilead, and the people made him head and captain over them: and Jephthah uttered all his words before the LORD in Mizpeh."

Judges 11:28: "Howbeit the king of the children of Ammon hearkened not unto the words of Jephthah which he sent him."

Judges 13:12: "And Manoah said, Now let thy words come to pass. How shall we order the child, and how shall we do unto him?"

Judges 16:16: "And it came to pass, when she pressed him daily with her words, and urged him, so that his soul was vexed unto death;"

1 Samuel 3:19: "And Samuel grew, and the LORD was with him, and did let none of his words fall to the ground."

1 Samuel 8:10: "And Samuel told all the words of the LORD unto the people that asked of him a king."

1 Samuel 8:21: "And Samuel heard all the words of the people, and he rehearsed them in the ears of the LORD."

1 Samuel 15:1: "Samuel also said unto Saul, The LORD sent me to anoint thee to be king over his people, over Israel: now therefore hearken thou unto the voice of the words of the LORD."

1 Samuel 15:24: "And Saul said unto Samuel, I have sinned: for I have transgressed the commandment of the LORD, and thy words: because I feared the people, and obeyed their voice."

1 Samuel 17:11: "When Saul and all Israel heard those words of the Philistine, they were dismayed, and greatly afraid."

1 Samuel 17:23: "And as he talked with them, behold, there came up the champion, the Philistine of Gath, Goliath by name, out of the armies of the Philistines, and spake according to the same words: and David heard them."

1 Samuel 17:31: "And when the words were heard which David spake, they rehearsed them before Saul: and he sent for him."

1 Samuel 18:23: "And Saul's servants spake those words in the ears of David. And David said, Seemeth it to you a light thing to be a king's son in law, seeing that I am a poor man, and lightly esteemed?"

1 Samuel 18:26: "And when his servants told David these words, it pleased David well to be the king's son in law: and the days were not expired."

1 Samuel 21:12: "And David laid up these words in his heart, and was sore afraid of Achish the king of Gath."

1 Samuel 24:7: "So David stayed his servants with these words, and suffered them not to rise against Saul. But Saul rose up out of the cave, and went on his way."

1 Samuel 24:9: "And David said to Saul, Wherefore hearest thou men's words, saying, Behold, David seeketh thy hurt?"

1 Samuel 24:16: "And it came to pass, when David had made an end of speaking these words unto Saul, that Saul said, Is this thy voice, my son David? And Saul lifted up his voice, and wept."

1 Samuel 25:9: "And when David's young men came, they spake to Nabal according to all those words in the name of David, and ceased."

1 Samuel 25:24: "And fell at his feet, and said, Upon me, my lord, upon me let this iniquity be: and let thine handmaid, I pray thee, speak in thine audience, and hear the words of thine handmaid."

1 Samuel 26:19: "Now therefore, I pray thee, let my lord the king hear the words of his servant. If the LORD have stirred thee up against me, let him accept an offering: but if they be the children of men, cursed be they before the LORD; for they have driven me out this day from abiding in the inheritance of the LORD, saying, Go, serve other gods."

1 Samuel 28:20: "Then Saul fell straightway all along on the earth, and was sore afraid, because of the words of Samuel: and there was no strength in him; for he had eaten no bread all the day, nor all the night."

1 Samuel 28:21: "And the woman came unto Saul, and saw that he was sore troubled, and said unto him, Behold, thine handmaid hath obeyed thy voice, and I have put my life in my hand, and have hearkened unto thy words which thou spakest unto me."

2 Samuel 3:8: "Then was Abner very wroth for the words of Ishbosheth, and said, Am I a dog's head, which against Judah do shew kindness this day unto the house of Saul thy father, to his brethren, and to his friends, and have not delivered thee into the hand of David, that thou chargest me to day with a fault concerning this woman?"

2 Samuel 7:17: "According to all these words, and according to all this vision, so did Nathan speak unto David."

2 Samuel 7:28: "And now, O Lord GOD, thou art that God, and thy words be true, and thou hast promised this goodness unto thy servant:"

2 Samuel 14:3: "And come to the king, and speak on this manner unto him. So Joab put the words in her mouth."

2 Samuel 14:19: "And the king said, Is not the hand of Joab with thee in all this? And the woman answered and said, As thy soul liveth, my lord the king, none can turn to the right hand or to the left from ought that my lord the king hath spoken: for thy servant Joab, he bade me, and he put all these words in the mouth of thine handmaid:"

2 Samuel 19:43: "And the men of Israel answered the men of Judah, and said, We have ten parts in the king, and we have also more right in David than ye: why then did ye despise us, that our advice should not be first had in bringing back our king? And the words of the men of Judah were fiercer than the words of the men of Israel."

2 Samuel 20:17: "And when he was come near unto her, the woman said, Art thou Joab? And he answered, I am he. Then she said unto him, Hear the words of thine handmaid. And he answered, I do hear."

2 Samuel 22:1: "And David spake unto the LORD the words of this song in the day that the LORD had delivered him out of the hand of all his enemies, and out of the hand of Saul:"

2 Samuel 23:1: "Now these be the last words of David. David the son of Jesse said, and the man who was raised up on high, the anointed of the God of Jacob, and the sweet psalmist of Israel, said,"

1 Kings 1:14: "Behold, while thou yet talkest there with the king, I also will come in after thee, and confirm thy words."

1 Kings 3:12: "Behold, I have done according to thy words: lo, I have given thee a wise and an understanding heart; so that there was none like thee before thee, neither after thee shall any arise like unto thee."

1 Kings 5:7: "And it came to pass, when Hiram heard the words of Solomon, that he rejoiced greatly, and said, Blessed be the LORD this day, which hath given unto David a wise son over this

great people."

1 Kings 8:59: "And let these my words, wherewith I have made supplication before the LORD, be nigh unto the LORD our God day and night, that he maintain the cause of his servant, and the cause of his people Israel at all times, as the matter shall require:"

1 Kings 10:7: "Howbeit I believed not the words, until I came, and mine eyes had seen it: and, behold, the half was not told me: thy wisdom and prosperity exceedeth the fame which I heard."

1 Kings 12:7: "And they spake unto him, saying, If thou wilt be a servant unto this people this day, and wilt serve them, and answer them, and speak good words to them, then they will be thy servants for ever."

1 Kings 13:11: "Now there dwelt an old prophet in Bethel; and his sons came and told him all the works that the man of God had done that day in Bethel: the words which he had spoken unto the king, them they told also to their father."

1 Kings 21:27: "And it came to pass, when Ahab heard those words, that he rent his clothes, and put sackcloth upon his flesh, and fasted, and lay in sackcloth, and went softly."

1 Kings 22:13: "And the messenger that was gone to call Micaiah spake unto him, saying, Behold now, the words of the prophets declare good unto the king with one mouth: let thy word, I pray thee, be like the word of one of them, and speak that which is good."

2 Kings 1:7: "And he said unto them, What manner of man was he which came up to meet you, and told you these words?"

2 Kings 6:12: "And one of his servants said, None, my lord, O king: but Elisha, the prophet that is in Israel, telleth the king of Israel the words that thou speakest in thy bedchamber."

2 Kings 6:30: "And it came to pass, when the king heard the words of the woman, that he rent his clothes; and he passed by upon the wall, and the people looked, and, behold, he had sackcloth within upon his flesh."

2 Kings 18:20: "Thou sayest, (but they are but vain words,) I have counsel and strength for the war. Now on whom dost thou trust, that thou rebellest against me?"

2 Kings 18:27: "But Rabshakeh said unto them, Hath my master sent me to thy master, and to thee, to speak these words? hath he not sent me to the men which sit on the wall, that they may eat their own dung, and drink their own piss with you?"

2 Kings 18:37: "Then came Eliakim the son of Hilkiah, which was over the household, and Shebna the scribe, and Joah the son of Asaph the recorder, to Hezekiah with their clothes rent, and told him the words of Rabshakeh."

2 Kings 19:4: "It may be the LORD thy God will hear all the words of Rabshakeh, whom the king of Assyria his master hath sent to reproach the living God; and will reprove the words which the LORD thy God hath heard: wherefore lift up thy prayer for the remnant that are left."

2 Kings 19:6: "And Isaiah said unto them, Thus shall ye say to your master, Thus saith the LORD, Be not afraid of the words which thou hast heard, with which the servants of the king of Assyria have blasphemed me."

2 Kings 19:16: "LORD, bow down thine ear, and hear: open, LORD, thine eyes, and see: and hear the words of Sennacherib, which hath sent him to reproach the living God."

2 Kings 22:11: "And it came to pass, when the king had heard the words of the book of the law, that he rent his clothes."

2 Kings 22:13: "Go ye, enquire of the LORD for me, and for the people, and for all Judah, concerning the words of this book that is found: for great is the wrath of the LORD that is kindled against us, because our fathers have not hearkened unto the words of this book, to do according unto all that which is written concerning us."

2 Kings 22:16: "Thus saith the LORD, Behold, I will bring evil upon this place, and upon the inhabitants thereof, even all the words of the book which the king of Judah hath read:"

2 Kings 22:18: "But to the king of Judah which sent you to enquire of the LORD, thus shall ye say to him, Thus saith the LORD God of Israel, As touching the words which thou hast heard;"

2 Kings 23:2: "And the king went up into the house of the LORD, and all the men of Judah and all the inhabitants of Jerusalem with him, and the priests, and the prophets, and all the people, both small and great: and he read in their ears all the words of the book of the covenant which was found in the house of the LORD."

2 Kings 23:3: "And the king stood by a pillar, and made a covenant before the LORD, to walk after the LORD, and to keep his commandments and his testimonies and his statutes with all their heart and all their soul, to perform the words of this covenant that were written in this book. And all the people stood to the covenant."

2 Kings 23:16: "And as Josiah turned himself, he spied the sepulchres that were there in the mount, and sent, and took the bones out of the sepulchres, and burned them upon the altar, and polluted it, according to the word of the LORD which the man of God proclaimed, who proclaimed these words."

2 Kings 23:24: "Moreover the workers with familiar spirits, and the wizards, and the images, and the idols, and all the abominations that were spied in the land of Judah and in Jerusalem, did Josiah put away, that he might perform the words of the law which were written in the book that Hilkiah the priest found in the house of the LORD."

1 Chronicles 17:15: "According to all these words, and according to all this vision, so did Nathan speak unto David."

1 Chronicles 23:27: "For by the last words of David the Levites were numbered from twenty years old and above:"

1 Chronicles 25:5: "All these were the sons of Heman the king's seer in the words of God, to lift up the horn. And God gave to Heman fourteen sons and three daughters."

2 Chronicles 9:6: "Howbeit I believed not their words, until I came, and mine eyes had seen it: and, behold, the one half of the greatness of thy wisdom was not told me: for thou exceedest the fame that I heard."

2 Chronicles 10:7: "And they spake unto him, saying, If thou be kind to this people, and please them, and speak good words to them, they will be thy servants for ever."

2 Chronicles 11:4: "Thus saith the LORD, Ye shall not go up, nor fight against your brethren: return every man to his house: for this thing is done of me. And they obeyed the words of the LORD, and returned from going against Jeroboam."

2 Chronicles 15:8: "And when Asa heard these words, and the prophecy of Oded the prophet, he took courage, and put away the abominable idols out of all the land of Judah and Benjamin, and out of the cities which he had taken from mount Ephraim, and renewed the altar of the LORD, that was before the porch of the LORD."

2 Chronicles 18:12: "And the messenger that went to call Micaiah spake to him, saying, Behold, the words of the prophets declare good to the king with one assent; let thy word therefore, I pray thee, be like one of their's, and speak thou good."

2 Chronicles 29:15: "And they gathered their brethren, and sanctified themselves, and came, according to the commandment of the king, by the words of the LORD, to cleanse the house of the LORD."

2 Chronicles 29:30: "Moreover Hezekiah the king and the princes commanded the Levites to sing praise unto the LORD with the words of David, and of Asaph the seer. And they sang praises with gladness, and they bowed their heads and worshipped."

2 Chronicles 32:8: "With him is an arm of flesh; but with us is the LORD our God to help us, and to fight our battles. And the people rested themselves upon the words of Hezekiah king of Judah."

2 Chronicles 33:18: "Now the rest of the acts of Manasseh, and his prayer unto his God, and the words of the seers that spake to him in the name of the LORD God of Israel, behold, they are written in the book of the kings of Israel."

2 Chronicles 34:19: "And it came to pass, when the king had heard the words of the law, that he rent his clothes."



2 Chronicles 34:21: "Go, enquire of the LORD for me, and for them that are left in Israel and in Judah, concerning the words of the book that is found: for great is the wrath of the LORD that is poured out upon us, because our fathers have not kept the word of the LORD, to do after all that is written in this book."

2 Chronicles 34:26: "And as for the king of Judah, who sent you to enquire of the LORD, so shall ye say unto him, Thus saith the LORD God of Israel concerning the words which thou hast heard;"

2 Chronicles 34:27: "Because thine heart was tender, and thou didst humble thyself before God, when thou heardest his words against this place, and against the inhabitants thereof, and humbledst thyself before me, and didst rend thy clothes, and weep before me; I have even heard thee also, saith the LORD."

2 Chronicles 34:30: "And the king went up into the house of the LORD, and all the men of Judah, and the inhabitants of Jerusalem, and the priests, and the Levites, and all the people, great and small: and he read in their ears all the words of the book of the covenant that was found in the house of the LORD."

2 Chronicles 34:31: "And the king stood in his place, and made a covenant before the LORD, to walk after the LORD, and to keep his commandments, and his testimonies, and his statutes, with all his heart, and with all his soul, to perform the words of the covenant which are written in this book."

2 Chronicles 35:22: "Nevertheless Josiah would not turn his face from him, but disguised himself, that he might fight with him, and hearkened not unto the words of Necho from the mouth of God, and came to fight in the valley of Megiddo."

2 Chronicles 36:16: "But they mocked the messengers of God, and despised his words, and misused his prophets, until the wrath of the LORD arose against his people, till there was no remedy."

Ezra 7:11: "Now this is the copy of the letter that the king Artaxerxes gave unto Ezra the priest, the scribe, even a scribe of the words of the commandments of the LORD, and of his statutes to Israel."

Ezra 9:4: "Then were assembled unto me every one that trembled at the words of the God of Israel, because of the transgression of those that had been carried away; and I sat astonished until the evening sacrifice."

Nehemiah 1:1: "The words of Nehemiah the son of Hachaliah. And it came to pass in the month Chisleu, in the twentieth year, as I was in Shushan the palace,"

Nehemiah 1:4: "And it came to pass, when I heard these words, that I sat down and wept, and mourned certain days, and fasted, and prayed before the God of heaven,"

Nehemiah 2:18: "Then I told them of the hand of my God which was good upon me; as also the king's words that he had spoken unto me. And they said, Let us rise up and build. So they strengthened their hands for this good work."

Nehemiah 5:6: "And I was very angry when I heard their cry and these words."

Nehemiah 6:6: "Wherein was written, It is reported among the heathen, and Gashmu saith it, that thou and the Jews think to rebel: for which cause thou buildest the wall, that thou mayest be their king, according to these words."

Nehemiah 6:7: "And thou hast also appointed prophets to preach of thee at Jerusalem, saying, There is a king in Judah: and now shall it be reported to the king according to these words. Come now therefore, and let us take counsel together."

Nehemiah 6:19: "Also they reported his good deeds before me, and uttered my words to him. And Tobiah sent letters to put me in fear."

Nehemiah 8:9: "And Nehemiah, which is the Tirshatha, and Ezra the priest the scribe, and the Levites that taught the people, said unto all the people, This day is holy unto the LORD your God; mourn not, nor weep. For all the people wept, when they heard the words of the law."

Nehemiah 8:12: "And all the people went their way to eat, and to drink, and to send portions, and to make great mirth, because they had understood the words that were declared unto them."

Nehemiah 8:13: "And on the second day were gathered together the chief of the fathers of all the

people, the priests, and the Levites, unto Ezra the scribe, even to understand the words of the law." Nehemiah 9:8: "And foundest his heart faithful before thee, and madest a covenant with him to give the land of the Canaanites, the Hittites, the Amorites, and the Perizzites, and the Jebusites, and the Girgashites, to give it, I say, to his seed, and hast performed thy words; for thou art righteous:" Esther 4:9: "And Hatach came and told Esther the words of Mordecai." Esther 4:12: "And they told to Mordecai Esther's words." Esther 9:26: "Wherefore they called these days Purim after the name of Pur. Therefore for all the words of this letter, and of that which they had seen concerning this matter, and which had come unto them," Esther 9:30: "And he sent the letters unto all the Jews, to the hundred twenty and seven provinces of the kingdom of Ahasuerus, with words of peace and truth," Job 4:4: "Thy words have upholden him that was falling, and thou hast strengthened the feeble knees." Job 6:3: "For now it would be heavier than the sand of the sea: therefore my words are swallowed up." Job 6:10: "Then should I yet have comfort; yea, I would harden myself in sorrow: let him not spare; for I have not concealed the words of the Holy One." Job 6:25: "How forcible are right words! but what doth your arguing reprove?" Job 6:26: "Do ye imagine to reprove words, and the speeches of one that is desperate, which are as wind?" Job 8:2: "How long wilt thou speak these things? and how long shall the words of thy mouth be like a strong wind?" Job 8:10: "Shall not they teach thee, and tell thee, and utter words out of their heart?" Job 9:14: "How much less shall I answer him, and choose out my words to reason with him?" Job 11:2: "Should not the multitude of words be answered? and should a man full of talk be justified?" Job 12:11: "Doth not the ear try words? and the mouth taste his meat?" Job 15:13: "That thou turnest thy spirit against God, and lettest such words go out of thy mouth?" Job 16:3: "Shall vain words have an end? or what emboldeneth thee that thou answerest?" Job 16:4: "I also could speak as ye do: if your soul were in my soul's stead, I could heap up words against you, and shake mine head at you." Job 18:2: "How long will it be ere ye make an end of words? mark, and afterwards we will speak." Job 19:2: "How long will ye vex my soul, and break me in pieces with words?" Job 19:23: "Oh that my words were now written! oh that they were printed in a book!" Job 22:22: "Receive, I pray thee, the law from his mouth, and lay up his words in thine heart." Job 23:5: "I would know the words which he would answer me, and understand what he would say unto me." Job 23:12: "Neither have I gone back from the commandment of his lips; I have esteemed the words of his mouth more than my necessary food." Job 26:4: "To whom hast thou uttered words? and whose spirit came from thee?" Job 29:22: "After my words they spake not again; and my speech dropped upon them." Job 31:40: "Let thistles grow instead of wheat, and cockle instead of barley. The words of Job are ended." Job 32:11: "Behold, I waited for your words; I gave ear to your reasons, whilst ye searched out what to say." Job 32:12: "Yea, I attended unto you, and, behold, there was none of you that convinced Job, or that answered his words:" Job 32:14: "Now he hath not directed his words against me: neither will I answer him with your speeches." Job 33:1: "Wherefore, Job, I pray thee, hear my speeches, and hearken to all my words."

Job 33:3: "My words shall be of the uprightness of my heart: and my lips shall utter knowledge clearly."

Job 33:5: "If thou canst answer me, set thy words in order before me, stand up."

Job 33:8: "Surely thou hast spoken in mine hearing, and I have heard the voice of thy words, saying,"

Job 34:2: "Hear my words, O ye wise men; and give ear unto me, ye that have knowledge."

Job 34:3: "For the ear trieth words, as the mouth tasteth meat."

Job 34:16: "If now thou hast understanding, hear this: hearken to the voice of my words."

Job 34:35: "Job hath spoken without knowledge, and his words were without wisdom."

Job 34:37: "For he addeth rebellion unto his sin, he clappeth his hands among us, and multiplieth his words against God."

Job 35:16: "Therefore doth Job open his mouth in vain; he multiplieth words without knowledge."

Job 36:4: "For truly my words shall not be false: he that is perfect in knowledge is with thee."

Job 38:2: "Who is this that darkeneth counsel by words without knowledge?"

Job 41:3: "Will he make many supplications unto thee? will he speak soft words unto thee?"

Job 42:7: "And it was so, that after the LORD had spoken these words unto Job, the LORD said to Eliphaz the Temanite, My wrath is kindled against thee, and against thy two friends: for ye have not spoken of me the thing that is right, as my servant Job hath."

Psalms 5:1: "Give ear to my words, O LORD, consider my meditation."

Psalms 12:6: "The words of the LORD are pure words: as silver tried in a furnace of earth, purified seven times."

Psalms 19:4: "Their line is gone out through all the earth, and their words to the end of the world. In them hath he set a tabernacle for the sun,"

Psalms 19:14: "Let the words of my mouth, and the meditation of my heart, be acceptable in thy sight, O LORD, my strength, and my redeemer."

Psalms 22:1: "My God, my God, why hast thou forsaken me? why art thou so far from helping me, and from the words of my roaring?"

Psalms 36:3: "The words of his mouth are iniquity and deceit: he hath left off to be wise, and to do good."

Psalms 50:17: "Seeing thou hatest instruction, and casteth my words behind thee."

Psalms 52:4: "Thou lovest all devouring words, O thou deceitful tongue."

Psalms 54:2: "Hear my prayer, O God; give ear to the words of my mouth."

Psalms 55:21: "The words of his mouth were smoother than butter, but war was in his heart: his words were softer than oil, yet were they drawn swords."

Psalms 56:5: "Every day they wrest my words: all their thoughts are against me for evil."

Psalms 59:12: "For the sin of their mouth and the words of their lips let them even be taken in their pride: and for cursing and lying which they speak."

Psalms 64:3: "Who whet their tongue like a sword, and bend their bows to shoot their arrows, even bitter words:"

Psalms 78:1: "Give ear, O my people, to my law: incline your ears to the words of my mouth."

Psalms 106:12: "Then believed they his words; they sang his praise."

Psalms 107:11: "Because they rebelled against the words of God, and contemned the counsel of the most High:"

Psalms 109:3: "They compassed me about also with words of hatred; and fought against me without a cause."

Psalms 119:57: "Thou art my portion, O LORD: I have said that I would keep thy words."

Psalms 119:103: "How sweet are thy words unto my taste! yea, sweeter than honey to my mouth!"

Psalms 119:130: "The entrance of thy words giveth light; it giveth understanding unto the simple."

Psalms 119:139: "My zeal hath consumed me, because mine enemies have forgotten thy words."

Psalms 138:4: "All the kings of the earth shall praise thee, O LORD, when they hear the words of

thy mouth."

Psalms 141:6: "When their judges are overthrown in stony places, they shall hear my words; for they are sweet."

Proverbs 1:2: "To know wisdom and instruction; to perceive the words of understanding;"

Proverbs 1:6: "To understand a proverb, and the interpretation; the words of the wise, and their dark sayings."

Proverbs 1:21: "She crieth in the chief place of concourse, in the openings of the gates: in the city she uttereth her words, saying,"

Proverbs 1:23: "Turn you at my reproof: behold, I will pour out my spirit unto you, I will make known my words unto you."

Proverbs 2:1: "My son, if thou wilt receive my words, and hide my commandments with thee;"

Proverbs 2:16: "To deliver thee from the strange woman, even from the stranger which flattereth with her words;"

Proverbs 4:4: "He taught me also, and said unto me, Let thine heart retain my words: keep my commandments, and live."

Proverbs 4:5: "Get wisdom, get understanding: forget it not; neither decline from the words of my mouth."

Proverbs 4:20: "My son, attend to my words; incline thine ear unto my sayings."

Proverbs 5:7: "Hear me now therefore, O ye children, and depart not from the words of my mouth."

Proverbs 6:2: "Thou art snared with the words of thy mouth, thou art taken with the words of thy mouth."

Proverbs 7:1: "My son, keep my words, and lay up my commandments with thee."

Proverbs 7:5: "That they may keep thee from the strange woman, from the stranger which flattereth with her words."

Proverbs 7:24: "Hearken unto me now therefore, O ye children, and attend to the words of my mouth."

Proverbs 8:8: "All the words of my mouth are in righteousness; there is nothing froward or perverse in them."

Proverbs 10:19: "In the multitude of words there wanteth not sin: but he that refraineth his lips is wise."

Proverbs 12:6: "The words of the wicked are to lie in wait for blood: but the mouth of the upright shall deliver them."

Proverbs 15:1: "A soft answer turneth away wrath: but grievous words stir up anger."

Proverbs 15:26: "The thoughts of the wicked are an abomination to the LORD: but the words of the pure are pleasant words."

Proverbs 16:24: "Pleasant words are as an honeycomb, sweet to the soul, and health to the bones."

Proverbs 17:27: "He that hath knowledge spareth his words: and a man of understanding is of an excellent spirit."

Proverbs 18:4: "The words of a man's mouth are as deep waters, and the wellspring of wisdom as a flowing brook."

Proverbs 18:8: "The words of a talebearer are as wounds, and they go down into the innermost parts of the belly."

Proverbs 19:7: "All the brethren of the poor do hate him: how much more do his friends go far from him? he pursueth them with words, yet they are wanting to him."

Proverbs 19:27: "Cease, my son, to hear the instruction that causeth to err from the words of knowledge."

Proverbs 22:12: "The eyes of the LORD preserve knowledge, and he overthroweth the words of the transgressor."

Proverbs 22:17: "Bow down thine ear, and hear the words of the wise, and apply thine heart unto my knowledge."

Proverbs 22:21: "That I might make thee know the certainty of the words of truth; that thou mightest answer the words of truth to them that send unto thee?"

Proverbs 23:8: "The morsel which thou hast eaten shalt thou vomit up, and lose thy sweet words."

Proverbs 23:9: "Speak not in the ears of a fool: for he will despise the wisdom of thy words."

Proverbs 23:12: "Apply thine heart unto instruction, and thine ears to the words of knowledge."

Proverbs 26:22: "The words of a talebearer are as wounds, and they go down into the innermost parts of the belly."

Proverbs 29:19: "A servant will not be corrected by words: for though he understand he will not answer."

Proverbs 29:20: "Seest thou a man that is hasty in his words? there is more hope of a fool than of him."

Proverbs 30:1: "The words of Agur the son of Jakeh, even the prophecy: the man spake unto Ithiel, even unto Ithiel and Ucal,"

Proverbs 30:6: "Add thou not unto his words, lest he reprove thee, and thou be found a liar."

Proverbs 31:1: "The words of king Lemuel, the prophecy that his mother taught him."

Ecclesiastes 1:1: "The words of the Preacher, the son of David, king in Jerusalem."

Ecclesiastes 5:2: "Be not rash with thy mouth, and let not thine heart be hasty to utter any thing before God: for God is in heaven, and thou upon earth: therefore let thy words be few."

Ecclesiastes 5:3: "For a dream cometh through the multitude of business; and a fool's voice is known by multitude of words."

Ecclesiastes 5:7: "For in the multitude of dreams and many words there are also divers vanities: but fear thou God."

Ecclesiastes 7:21: "Also take no heed unto all words that are spoken; lest thou hear thy servant curse thee:"

Ecclesiastes 9:16: "Then said I, Wisdom is better than strength: nevertheless the poor man's wisdom is despised, and his words are not heard."

Ecclesiastes 9:17: "The words of wise men are heard in quiet more than the cry of him that ruleth among fools."

Ecclesiastes 10:12: "The words of a wise man's mouth are gracious; but the lips of a fool will swallow up himself."

Ecclesiastes 10:13: "The beginning of the words of his mouth is foolishness: and the end of his talk is mischievous madness."

Ecclesiastes 10:14: "A fool also is full of words: a man cannot tell what shall be; and what shall be after him, who can tell him?"

Ecclesiastes 12:10: "The preacher sought to find out acceptable words: and that which was written was upright, even words of truth."

Ecclesiastes 12:11: "The words of the wise are as goads, and as nails fastened by the masters of assemblies, which are given from one shepherd."

Isaiah 29:11: "And the vision of all is become unto you as the words of a book that is sealed, which men deliver to one that is learned, saying, Read this, I pray thee: and he saith, I cannot; for it is sealed:"

Isaiah 29:18: "And in that day shall the deaf hear the words of the book, and the eyes of the blind shall see out of obscurity, and out of darkness."

Isaiah 31:2: "Yet he also is wise, and will bring evil, and will not call back his words: but will arise against the house of the evildoers, and against the help of them that work iniquity."

Isaiah 32:7: "The instruments also of the churl are evil: he deviseth wicked devices to destroy the poor with lying words, even when the needy speaketh right."

Isaiah 36:5: "I say, sayest thou, (but they are but vain words) I have counsel and strength for war: now on whom dost thou trust, that thou rebellest against me?"

Isaiah 36:12: "But Rabshakeh said, Hath my master sent me to thy master and to thee to speak these

words? hath he not sent me to the men that sit upon the wall, that they may eat their own dung, and drink their own piss with you?"

Isaiah 36:13: "Then Rabshakeh stood, and cried with a loud voice in the Jews' language, and said, Hear ye the words of the great king, the king of Assyria."

Isaiah 36:22: "Then came Eliakim, the son of Hilkiyah, that was over the household, and Shebna the scribe, and Joah, the son of Asaph, the recorder, to Hezekiah with their clothes rent, and told him the words of Rabshakeh."

Isaiah 37:4: "It may be the LORD thy God will hear the words of Rabshakeh, whom the king of Assyria his master hath sent to reproach the living God, and will reprove the words which the LORD thy God hath heard: wherefore lift up thy prayer for the remnant that is left."

Isaiah 37:6: "And Isaiah said unto them, Thus shall ye say unto your master, Thus saith the LORD, Be not afraid of the words that thou hast heard, wherewith the servants of the king of Assyria have blasphemed me."

Isaiah 37:17: "Incline thine ear, O LORD, and hear; open thine eyes, O LORD, and see: and hear all the words of Sennacherib, which hath sent to reproach the living God."

Isaiah 41:26: "Who hath declared from the beginning, that we may know? and beforetime, that we may say, He is righteous? yea, there is none that sheweth, yea, there is none that declareth, yea, there is none that heareth your words."

Isaiah 51:16: "And I have put my words in thy mouth, and I have covered thee in the shadow of mine hand, that I may plant the heavens, and lay the foundations of the earth, and say unto Zion, Thou art my people."

Isaiah 58:13: "If thou turn away thy foot from the sabbath, from doing thy pleasure on my holy day; and call the sabbath a delight, the holy of the LORD, honourable; and shalt honour him, not doing thine own ways, nor finding thine own pleasure, nor speaking thine own words:"

Isaiah 59:13: "In transgressing and lying against the LORD, and departing away from our God, speaking oppression and revolt, conceiving and uttering from the heart words of falsehood."

Isaiah 59:21: "As for me, this is my covenant with them, saith the LORD; My spirit that is upon thee, and my words which I have put in thy mouth, shall not depart out of thy mouth, nor out of the mouth of thy seed, nor out of the mouth of thy seed's seed, saith the LORD, from henceforth and for ever."

Jeremiah 1:1: "The words of Jeremiah the son of Hilkiyah, of the priests that were in Anathoth in the land of Benjamin:"

Jeremiah 1:9: "Then the LORD put forth his hand, and touched my mouth. And the LORD said unto me, Behold, I have put my words in thy mouth."

Jeremiah 3:12: "Go and proclaim these words toward the north, and say, Return, thou backsliding Israel, saith the LORD; and I will not cause mine anger to fall upon you: for I am merciful, saith the LORD, and I will not keep anger for ever."

Jeremiah 5:14: "Wherefore thus saith the LORD God of hosts, Because ye speak this word, behold, I will make my words in thy mouth fire, and this people wood, and it shall devour them."

Jeremiah 6:19: "Hear, O earth: behold, I will bring evil upon this people, even the fruit of their thoughts, because they have not hearkened unto my words, nor to my law, but rejected it."

Jeremiah 7:4: "Trust ye not in lying words, saying, The temple of the LORD, The temple of the LORD, The temple of the LORD, are these."

Jeremiah 7:8: "Behold, ye trust in lying words, that cannot profit."

Jeremiah 7:27: "Therefore thou shalt speak all these words unto them; but they will not hearken to thee: thou shalt also call unto them; but they will not answer thee."

Jeremiah 11:2: "Hear ye the words of this covenant, and speak unto the men of Judah, and to the inhabitants of Jerusalem;"

Jeremiah 11:3: "And say thou unto them, Thus saith the LORD God of Israel; Cursed be the man that obeyeth not the words of this covenant,"

Jeremiah 11:6: "Then the LORD said unto me, Proclaim all these words in the cities of Judah, and in the streets of Jerusalem, saying, Hear ye the words of this covenant, and do them."

Jeremiah 11:8: "Yet they obeyed not, nor inclined their ear, but walked every one in the imagination of their evil heart: therefore I will bring upon them all the words of this covenant, which I commanded them to do: but they did them not."

Jeremiah 11:10: "They are turned back to the iniquities of their forefathers, which refused to hear my words; and they went after other gods to serve them: the house of Israel and the house of Judah have broken my covenant which I made with their fathers."

Jeremiah 12:6: "For even thy brethren, and the house of thy father, even they have dealt treacherously with thee; yea, they have called a multitude after thee: believe them not, though they speak fair words unto thee."

Jeremiah 13:10: "This evil people, which refuse to hear my words, which walk in the imagination of their heart, and walk after other gods, to serve them, and to worship them, shall even be as this girdle, which is good for nothing."

Jeremiah 15:16: "Thy words were found, and I did eat them; and thy word was unto me the joy and rejoicing of mine heart: for I am called by thy name, O LORD God of hosts."

Jeremiah 16:10: "And it shall come to pass, when thou shalt shew this people all these words, and they shall say unto thee, Wherefore hath the LORD pronounced all this great evil against us? or what is our iniquity? or what is our sin that we have committed against the LORD our God?"

Jeremiah 18:2: "Arise, and go down to the potter's house, and there I will cause thee to hear my words."

Jeremiah 18:18: "Then said they, Come and let us devise devices against Jeremiah; for the law shall not perish from the priest, nor counsel from the wise, nor the word from the prophet. Come, and let us smite him with the tongue, and let us not give heed to any of his words."

Jeremiah 19:2: "And go forth unto the valley of the son of Hinnom, which is by the entry of the east gate, and proclaim there the words that I shall tell thee,"

Jeremiah 19:15: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will bring upon this city and upon all her towns all the evil that I have pronounced against it, because they have hardened their necks, that they might not hear my words."

Jeremiah 22:5: "But if ye will not hear these words, I swear by myself, saith the LORD, that this house shall become a desolation."

Jeremiah 23:9: "Mine heart within me is broken because of the prophets; all my bones shake; I am like a drunken man, and like a man whom wine hath overcome, because of the LORD, and because of the words of his holiness."

Jeremiah 23:16: "Thus saith the LORD of hosts, Hearken not unto the words of the prophets that prophesy unto you: they make you vain: they speak a vision of their own heart, and not out of the mouth of the LORD."

Jeremiah 23:22: "But if they had stood in my counsel, and had caused my people to hear my words, then they should have turned them from their evil way, and from the evil of their doings."

Jeremiah 23:30: "Therefore, behold, I am against the prophets, saith the LORD, that steal my words every one from his neighbour."

Jeremiah 23:36: "And the burden of the LORD shall ye mention no more: for every man's word shall be his burden; for ye have perverted the words of the living God, of the LORD of hosts our God."

Jeremiah 25:8: "Therefore thus saith the LORD of hosts; Because ye have not heard my words,"

Jeremiah 25:13: "And I will bring upon that land all my words which I have pronounced against it, even all that is written in this book, which Jeremiah hath prophesied against all the nations."

Jeremiah 25:30: "Therefore prophesy thou against them all these words, and say unto them, The LORD shall roar from on high, and utter his voice from his holy habitation; he shall mightily roar upon his habitation; he shall give a shout, as they that tread the grapes, against all the inhabitants of

the earth."

Jeremiah 26:2: "Thus saith the LORD; Stand in the court of the LORD's house, and speak unto all the cities of Judah, which come to worship in the LORD's house, all the words that I command thee to speak unto them; diminish not a word:"

Jeremiah 26:5: "To hearken to the words of my servants the prophets, whom I sent unto you, both rising up early, and sending them, but ye have not hearkened;"

Jeremiah 26:7: "So the priests and the prophets and all the people heard Jeremiah speaking these words in the house of the LORD."

Jeremiah 26:12: "Then spake Jeremiah unto all the princes and to all the people, saying, The LORD sent me to prophesy against this house and against this city all the words that ye have heard."

Jeremiah 26:15: "But know ye for certain, that if ye put me to death, ye shall surely bring innocent blood upon yourselves, and upon this city, and upon the inhabitants thereof: for of a truth the LORD hath sent me unto you to speak all these words in your ears."

Jeremiah 26:20: "And there was also a man that prophesied in the name of the LORD, Urijah the son of Shemaiah of Kirjathjearim, who prophesied against this city and against this land according to all the words of Jeremiah."

Jeremiah 26:21: "And when Jehoiakim the king, with all his mighty men, and all the princes, heard his words, the king sought to put him to death: but when Urijah heard it, he was afraid, and fled, and went into Egypt;"

Jeremiah 27:12: "I spake also to Zedekiah king of Judah according to all these words, saying, Bring your necks under the yoke of the king of Babylon, and serve him and his people, and live."

Jeremiah 27:14: "Therefore hearken not unto the words of the prophets that speak unto you, saying, Ye shall not serve the king of Babylon: for they prophesy a lie unto you."

Jeremiah 27:16: "Also I spake to the priests and to all this people, saying, Thus saith the LORD; Hearken not to the words of your prophets that prophesy unto you, saying, Behold, the vessels of the LORD's house shall now shortly be brought again from Babylon: for they prophesy a lie unto you."

Jeremiah 28:6: "Even the prophet Jeremiah said, Amen: the LORD do so: the LORD perform thy words which thou hast prophesied, to bring again the vessels of the LORD's house, and all that is carried away captive, from Babylon into this place."

Jeremiah 29:1: "Now these are the words of the letter that Jeremiah the prophet sent from Jerusalem unto the residue of the elders which were carried away captives, and to the priests, and to the prophets, and to all the people whom Nebuchadnezzar had carried away captive from Jerusalem to Babylon;"

Jeremiah 29:19: "Because they have not hearkened to my words, saith the LORD, which I sent unto them by my servants the prophets, rising up early and sending them; but ye would not hear, saith the LORD."

Jeremiah 29:23: "Because they have committed villany in Israel, and have committed adultery with their neighbours' wives, and have spoken lying words in my name, which I have not commanded them; even I know, and am a witness, saith the LORD."

Jeremiah 30:2: "Thus speaketh the LORD God of Israel, saying, Write thee all the words that I have spoken unto thee in a book."

Jeremiah 30:4: "And these are the words that the LORD spake concerning Israel and concerning Judah."

Jeremiah 34:6: "Then Jeremiah the prophet spake all these words unto Zedekiah king of Judah in Jerusalem,"

Jeremiah 34:18: "And I will give the men that have transgressed my covenant, which have not performed the words of the covenant which they had made before me, when they cut the calf in twain, and passed between the parts thereof,"

Jeremiah 35:13: "Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Go and tell the men of Judah and



the inhabitants of Jerusalem, Will ye not receive instruction to hearken to my words? saith the LORD."

Jeremiah 35:14: "The words of Jonadab the son of Rechab, that he commanded his sons not to drink wine, are performed; for unto this day they drink none, but obey their father's commandment: notwithstanding I have spoken unto you, rising early and speaking; but ye hearkened not unto me."

Jeremiah 36:2: "Take thee a roll of a book, and write therein all the words that I have spoken unto thee against Israel, and against Judah, and against all the nations, from the day I spake unto thee, from the days of Josiah, even unto this day."

Jeremiah 36:4: "Then Jeremiah called Baruch the son of Neriah: and Baruch wrote from the mouth of Jeremiah all the words of the LORD, which he had spoken unto him, upon a roll of a book."

Jeremiah 36:6: "Therefore go thou, and read in the roll, which thou hast written from my mouth, the words of the LORD in the ears of the people in the LORD's house upon the fasting day: and also thou shalt read them in the ears of all Judah that come out of their cities."

Jeremiah 36:8: "And Baruch the son of Neriah did according to all that Jeremiah the prophet commanded him, reading in the book the words of the LORD in the LORD's house."

Jeremiah 36:10: "Then read Baruch in the book the words of Jeremiah in the house of the LORD, in the chamber of Gemariah the son of Shaphan the scribe, in the higher court, at the entry of the new gate of the LORD's house, in the ears of all the people."

Jeremiah 36:11: "When Michaiah the son of Gemariah, the son of Shaphan, had heard out of the book all the words of the LORD,"

Jeremiah 36:13: "Then Michaiah declared unto them all the words that he had heard, when Baruch read the book in the ears of the people."

Jeremiah 36:16: "Now it came to pass, when they had heard all the words, they were afraid both one and other, and said unto Baruch, We will surely tell the king of all these words."

Jeremiah 36:17: "And they asked Baruch, saying, Tell us now, How didst thou write all these words at his mouth?"

Jeremiah 36:18: "Then Baruch answered them, He pronounced all these words unto me with his mouth, and I wrote them with ink in the book."

Jeremiah 36:20: "And they went in to the king into the court, but they laid up the roll in the chamber of Elishama the scribe, and told all the words in the ears of the king."

Jeremiah 36:24: "Yet they were not afraid, nor rent their garments, neither the king, nor any of his servants that heard all these words."

Jeremiah 36:27: "Then the word of the LORD came to Jeremiah, after that the king had burned the roll, and the words which Baruch wrote at the mouth of Jeremiah, saying,"

Jeremiah 36:28: "Take thee again another roll, and write in it all the former words that were in the first roll, which Jehoiakim the king of Judah hath burned."

Jeremiah 36:32: "Then took Jeremiah another roll, and gave it to Baruch the scribe, the son of Neriah; who wrote therein from the mouth of Jeremiah all the words of the book which Jehoiakim king of Judah had burned in the fire: and there were added besides unto them many like words."

Jeremiah 37:2: "But neither he, nor his servants, nor the people of the land, did hearken unto the words of the LORD, which he spake by the prophet Jeremiah."

Jeremiah 38:1: "Then Shephatiah the son of Mattan, and Gedaliah the son of Pashur, and Jucal the son of Shelemiah, and Pashur the son of Malchiah, heard the words that Jeremiah had spoken unto all the people, saying,"

Jeremiah 38:4: "Therefore the princes said unto the king, We beseech thee, let this man be put to death: for thus he weakeneth the hands of the men of war that remain in this city, and the hands of all the people, in speaking such words unto them: for this man seeketh not the welfare of this people, but the hurt."

Jeremiah 38:24: "Then said Zedekiah unto Jeremiah, Let no man know of these words, and thou shalt not die."

Jeremiah 38:27: "Then came all the princes unto Jeremiah, and asked him: and he told them according to all these words that the king had commanded. So they left off speaking with him; for the matter was not perceived."

Jeremiah 39:16: "Go and speak to Ebedmelech the Ethiopian, saying, Thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will bring my words upon this city for evil, and not for good; and they shall be accomplished in that day before thee."

Jeremiah 42:4: "Then Jeremiah the prophet said unto them, I have heard you; behold, I will pray unto the LORD your God according to your words; and it shall come to pass, that whatsoever thing the LORD shall answer you, I will declare it unto you; I will keep nothing back from you."

Jeremiah 43:1: "And it came to pass, that when Jeremiah had made an end of speaking unto all the people all the words of the LORD their God, for which the LORD their God had sent him to them, even all these words,"

Jeremiah 44:28: "Yet a small number that escape the sword shall return out of the land of Egypt into the land of Judah, and all the remnant of Judah, that are gone into the land of Egypt to sojourn there, shall know whose words shall stand, mine, or their's."

Jeremiah 44:29: "And this shall be a sign unto you, saith the LORD, that I will punish you in this place, that ye may know that my words shall surely stand against you for evil:"

Jeremiah 45:1: "The word that Jeremiah the prophet spake unto Baruch the son of Neriah, when he had written these words in a book at the mouth of Jeremiah, in the fourth year of Jehoiakim the son of Josiah king of Judah, saying,"

Jeremiah 51:60: "So Jeremiah wrote in a book all the evil that should come upon Babylon, even all these words that are written against Babylon."

Jeremiah 51:61: "And Jeremiah said to Seraiah, When thou comest to Babylon, and shalt see, and shalt read all these words;"

Jeremiah 51:64: "And thou shalt say, Thus shall Babylon sink, and shall not rise from the evil that I will bring upon her: and they shall be weary. Thus far are the words of Jeremiah."

Ezekiel 2:6: "And thou, son of man, be not afraid of them, neither be afraid of their words, though briars and thorns be with thee, and thou dost dwell among scorpions: be not afraid of their words, nor be dismayed at their looks, though they be a rebellious house."

Ezekiel 2:7: "And thou shalt speak my words unto them, whether they will hear, or whether they will forbear: for they are most rebellious."

Ezekiel 3:4: "And he said unto me, Son of man, go, get thee unto the house of Israel, and speak with my words unto them."

Ezekiel 3:6: "Not to many people of a strange speech and of an hard language, whose words thou canst not understand. Surely, had I sent thee to them, they would have hearkened unto thee."

Ezekiel 3:10: "Moreover he said unto me, Son of man, all my words that I shall speak unto thee receive in thine heart, and hear with thine ears."

Ezekiel 12:28: "Therefore say unto them, Thus saith the Lord GOD; There shall none of my words be prolonged any more, but the word which I have spoken shall be done, saith the Lord GOD."

Ezekiel 33:31: "And they come unto thee as the people cometh, and they sit before thee as my people, and they hear thy words, but they will not do them: for with their mouth they shew much love, but their heart goeth after their covetousness."

Ezekiel 33:32: "And, lo, thou art unto them as a very lovely song of one that hath a pleasant voice, and can play well on an instrument: for they hear thy words, but they do them not."

Ezekiel 35:13: "Thus with your mouth ye have boasted against me, and have multiplied your words against me: I have heard them."

Daniel 2:9: "But if ye will not make known unto me the dream, there is but one decree for you: for ye have prepared lying and corrupt words to speak before me, till the time be changed: therefore tell me the dream, and I shall know that ye can shew me the interpretation thereof."

Daniel 5:10: "Now the queen by reason of the words of the king and his lords came into the banquet

house: and the queen spake and said, O king, live for ever: let not thy thoughts trouble thee, nor let thy countenance be changed:"

Daniel 6:14: "Then the king, when he heard these words, was sore displeased with himself, and set his heart on Daniel to deliver him: and he laboured till the going down of the sun to deliver him."

Daniel 7:11: "I beheld then because of the voice of the great words which the horn spake: I beheld even till the beast was slain, and his body destroyed, and given to the burning flame."

Daniel 7:25: "And he shall speak great words against the most High, and shall wear out the saints of the most High, and think to change times and laws: and they shall be given into his hand until a time and times and the dividing of time."

Daniel 9:12: "And he hath confirmed his words, which he spake against us, and against our judges that judged us, by bringing upon us a great evil: for under the whole heaven hath not been done as hath been done upon Jerusalem."

Daniel 10:6: "His body also was like the beryl, and his face as the appearance of lightning, and his eyes as lamps of fire, and his arms and his feet like in colour to polished brass, and the voice of his words like the voice of a multitude."

Daniel 10:9: "Yet heard I the voice of his words: and when I heard the voice of his words, then was I in a deep sleep on my face, and my face toward the ground."

Daniel 10:11: "And he said unto me, O Daniel, a man greatly beloved, understand the words that I speak unto thee, and stand upright: for unto thee am I now sent. And when he had spoken this word unto me, I stood trembling."

Daniel 10:12: "Then said he unto me, Fear not, Daniel: for from the first day that thou didst set thine heart to understand, and to chasten thyself before thy God, thy words were heard, and I am come for thy words."

Daniel 10:15: "And when he had spoken such words unto me, I set my face toward the ground, and I became dumb."

Daniel 12:4: "But thou, O Daniel, shut up the words, and seal the book, even to the time of the end: many shall run to and fro, and knowledge shall be increased."

Daniel 12:9: "And he said, Go thy way, Daniel: for the words are closed up and sealed till the time of the end."

Hosea 6:5: "Therefore have I hewed them by the prophets; I have slain them by the words of my mouth: and thy judgments are as the light that goeth forth."

Hosea 10:4: "They have spoken words, swearing falsely in making a covenant: thus judgment springeth up as hemlock in the furrows of the field."

Hosea 14:2: "Take with you words, and turn to the LORD: say unto him, Take away all iniquity, and receive us graciously: so will we render the calves of our lips."

Amos 1:1: "The words of Amos, who was among the herdmen of Tekoa, which he saw concerning Israel in the days of Uzziah king of Judah, and in the days of Jeroboam the son of Joash king of Israel, two years before the earthquake."

Amos 7:10: "Then Amaziah the priest of Bethel sent to Jeroboam king of Israel, saying, Amos hath conspired against thee in the midst of the house of Israel: the land is not able to bear all his words."

Amos 8:11: "Behold, the days come, saith the Lord GOD, that I will send a famine in the land, not a famine of bread, nor a thirst for water, but of hearing the words of the LORD:"

Micah 2:7: "O thou that art named the house of Jacob, is the spirit of the LORD straitened? are these his doings? do not my words do good to him that walketh uprightly?"

Haggai 1:12: "Then Zerubbabel the son of Shealtiel, and Joshua the son of Josedech, the high priest, with all the remnant of the people, obeyed the voice of the LORD their God, and the words of Haggai the prophet, as the LORD their God had sent him, and the people did fear before the LORD."

Zechariah 1:6: "But my words and my statutes, which I commanded my servants the prophets, did they not take hold of your fathers? and they returned and said, Like as the LORD of hosts thought

to do unto us, according to our ways, and according to our doings, so hath he dealt with us."

Zechariah 1:13: "And the LORD answered the angel that talked with me with good words and comfortable words."

Zechariah 7:7: "Should ye not hear the words which the LORD hath cried by the former prophets, when Jerusalem was inhabited and in prosperity, and the cities thereof round about her, when men inhabited the south and the plain?"

Zechariah 7:12: "Yea, they made their hearts as an adamant stone, lest they should hear the law, and the words which the LORD of hosts hath sent in his spirit by the former prophets: therefore came a great wrath from the LORD of hosts."

Zechariah 8:9: "Thus saith the LORD of hosts; Let your hands be strong, ye that hear in these days these words by the mouth of the prophets, which were in the day that the foundation of the house of the LORD of hosts was laid, that the temple might be built."

Malachi 2:17: "Ye have wearied the LORD with your words. Yet ye say, Wherein have we wearied him? When ye say, Every one that doeth evil is good in the sight of the LORD, and he delighteth in them; or, Where is the God of judgment?"

Malachi 3:13: "Your words have been stout against me, saith the LORD. Yet ye say, What have we spoken so much against thee?"

Matthew 10:14: "And whosoever shall not receive you, nor hear your words, when ye depart out of that house or city, shake off the dust of your feet."

Matthew 12:37: "For by thy words thou shalt be justified, and by thy words thou shalt be condemned."

Matthew 22:22: "When they had heard these words, they marvelled, and left him, and went their way."

Matthew 24:35: "Heaven and earth shall pass away, but my words shall not pass away."

Matthew 26:44: "And he left them, and went away again, and prayed the third time, saying the same words."

Mark 8:38: "Whosoever therefore shall be ashamed of me and of my words in this adulterous and sinful generation; of him also shall the Son of man be ashamed, when he cometh in the glory of his Father with the holy angels."

Mark 10:24: "And the disciples were astonished at his words. But Jesus answereth again, and saith unto them, Children, how hard is it for them that trust in riches to enter into the kingdom of God!"

Mark 12:13: "And they send unto him certain of the Pharisees and of the Herodians, to catch him in his words."

Mark 13:31: "Heaven and earth shall pass away: but my words shall not pass away."

Mark 14:39: "And again he went away, and prayed, and spake the same words."

Luke 1:20: "And, behold, thou shalt be dumb, and not able to speak, until the day that these things shall be performed, because thou believest not my words, which shall be fulfilled in their season."

Luke 3:4: "As it is written in the book of the words of Esaias the prophet, saying, The voice of one crying in the wilderness, Prepare ye the way of the Lord, make his paths straight."

Luke 4:22: "And all bare him witness, and wondered at the gracious words which proceeded out of his mouth. And they said, Is not this Joseph's son?"

Luke 9:26: "For whosoever shall be ashamed of me and of my words, of him shall the Son of man be ashamed, when he shall come in his own glory, and in his Father's, and of the holy angels."

Luke 20:20: "And they watched him, and sent forth spies, which should feign themselves just men, that they might take hold of his words, that so they might deliver him unto the power and authority of the governor."

Luke 20:26: "And they could not take hold of his words before the people: and they marvelled at his answer, and held their peace."

Luke 21:33: "Heaven and earth shall pass away: but my words shall not pass away."

Luke 23:9: "Then he questioned with him in many words; but he answered him nothing."

Luke 24:8: "And they remembered his words,"

Luke 24:11: "And their words seemed to them as idle tales, and they believed them not."

Luke 24:44: "And he said unto them, These are the words which I spake unto you, while I was yet with you, that all things must be fulfilled, which were written in the law of Moses, and in the prophets, and in the psalms, concerning me."

John 3:34: "For he whom God hath sent speaketh the words of God: for God giveth not the Spirit by measure unto him."

John 5:47: "But if ye believe not his writings, how shall ye believe my words?"

John 6:63: "It is the spirit that quickeneth; the flesh profiteth nothing: the words that I speak unto you, they are spirit, and they are life."

John 6:68: "Then Simon Peter answered him, Lord, to whom shall we go? thou hast the words of eternal life."

John 7:9: "When he had said these words unto them, he abode still in Galilee."

John 8:20: "These words spake Jesus in the treasury, as he taught in the temple: and no man laid hands on him; for his hour was not yet come."

John 8:30: "As he spake these words, many believed on him."

John 8:47: "He that is of God heareth God's words: ye therefore hear them not, because ye are not of God."

John 9:22: "These words spake his parents, because they feared the Jews: for the Jews had agreed already, that if any man did confess that he was Christ, he should be put out of the synagogue."

John 9:40: "And some of the Pharisees which were with him heard these words, and said unto him, Are we blind also?"

John 10:21: "Others said, These are not the words of him that hath a devil. Can a devil open the eyes of the blind?"

John 12:47: "And if any man hear my words, and believe not, I judge him not: for I came not to judge the world, but to save the world."

John 12:48: "He that rejecteth me, and receiveth not my words, hath one that judgeth him: the word that I have spoken, the same shall judge him in the last day."

John 14:10: "Believest thou not that I am in the Father, and the Father in me? the words that I speak unto you I speak not of myself: but the Father that dwelleth in me, he doeth the works."

John 14:23: "Jesus answered and said unto him, If a man love me, he will keep my words: and my Father will love him, and we will come unto him, and make our abode with him."

John 15:7: "If ye abide in me, and my words abide in you, ye shall ask what ye will, and it shall be done unto you."

John 17:1: "These words spake Jesus, and lifted up his eyes to heaven, and said, Father, the hour is come; glorify thy Son, that thy Son also may glorify thee:"

John 17:8: "For I have given unto them the words which thou gavest me; and they have received them, and have known surely that I came out from thee, and they have believed that thou didst send me."

John 18:1: "When Jesus had spoken these words, he went forth with his disciples over the brook Cedron, where was a garden, into the which he entered, and his disciples."

Acts 2:14: "But Peter, standing up with the eleven, lifted up his voice, and said unto them, Ye men of Judaea, and all ye that dwell at Jerusalem, be this known unto you, and hearken to my words:"

Acts 2:22: "Ye men of Israel, hear these words; Jesus of Nazareth, a man approved of God among you by miracles and wonders and signs, which God did by him in the midst of you, as ye yourselves also know:"

Acts 2:40: "And with many other words did he testify and exhort, saying, Save yourselves from this untoward generation."

Acts 5:5: "And Ananias hearing these words fell down, and gave up the ghost: and great fear came on all them that heard these things."

Acts 5:20: "Go, stand and speak in the temple to the people all the words of this life."

Acts 6:11: "Then they suborned men, which said, We have heard him speak blasphemous words against Moses, and against God."

Acts 6:13: "And set up false witnesses, which said, This man ceaseth not to speak blasphemous words against this holy place, and the law:"

Acts 7:22: "And Moses was learned in all the wisdom of the Egyptians, and was mighty in words and in deeds."

Acts 10:22: "And they said, Cornelius the centurion, a just man, and one that feareth God, and of good report among all the nation of the Jews, was warned from God by an holy angel to send for thee into his house, and to hear words of thee."

Acts 10:44: "While Peter yet spake these words, the Holy Ghost fell on all them which heard the word."

Acts 11:14: "Who shall tell thee words, whereby thou and all thy house shall be saved."

Acts 13:42: "And when the Jews were gone out of the synagogue, the Gentiles besought that these words might be preached to them the next sabbath."

Acts 15:15: "And to this agree the words of the prophets; as it is written,"

Acts 15:24: "Forasmuch as we have heard, that certain which went out from us have troubled you with words, subverting your souls, saying, Ye must be circumcised, and keep the law: to whom we gave no such commandment:"

Acts 15:32: "And Judas and Silas, being prophets also themselves, exhorted the brethren with many words, and confirmed them."

Acts 16:38: "And the serjeants told these words unto the magistrates: and they feared, when they heard that they were Romans."

Acts 18:15: "But if it be a question of words and names, and of your law, look ye to it; for I will be no judge of such matters."

Acts 20:35: "I have shewed you all things, how that so labouring ye ought to support the weak, and to remember the words of the Lord Jesus, how he said, It is more blessed to give than to receive."

Acts 20:38: "Sorrowing most of all for the words which he spake, that they should see his face no more. And they accompanied him unto the ship."

Acts 24:4: "Notwithstanding, that I be not further tedious unto thee, I pray thee that thou wouldest hear us of thy clemency a few words."

Acts 26:25: "But he said, I am not mad, most noble Festus; but speak forth the words of truth and soberness."

Acts 28:29: "And when he had said these words, the Jews departed, and had great reasoning among themselves."

Romans 10:18: "But I say, Have they not heard? Yes verily, their sound went into all the earth, and their words unto the ends of the world."

Romans 16:18: "For they that are such serve not our Lord Jesus Christ, but their own belly; and by good words and fair speeches deceive the hearts of the simple."

1 Corinthians 1:17: "For Christ sent me not to baptize, but to preach the gospel: not with wisdom of words, lest the cross of Christ should be made of none effect."

1 Corinthians 2:4: "And my speech and my preaching was not with enticing words of man's wisdom, but in demonstration of the Spirit and of power:"

1 Corinthians 2:13: "Which things also we speak, not in the words which man's wisdom teacheth, but which the Holy Ghost teacheth; comparing spiritual things with spiritual."

1 Corinthians 14:9: "So likewise ye, except ye utter by the tongue words easy to be understood, how shall it be known what is spoken? for ye shall speak into the air."

1 Corinthians 14:19: "Yet in the church I had rather speak five words with my understanding, that by my voice I might teach others also, than ten thousand words in an unknown tongue."

2 Corinthians 12:4: "How that he was caught up into paradise, and heard unspeakable words, which

it is not lawful for a man to utter."

Ephesians 3:3: "How that by revelation he made known unto me the mystery; (as I wrote afore in few words,"

Ephesians 5:6: "Let no man deceive you with vain words: for because of these things cometh the wrath of God upon the children of disobedience."

Colossians 2:4: "And this I say, lest any man should beguile you with enticing words."

1 Thessalonians 2:5: "For neither at any time used we flattering words, as ye know, nor a cloke of covetousness; God is witness:"

1 Thessalonians 4:18: "Wherefore comfort one another with these words."

1 Timothy 4:6: "If thou put the brethren in remembrance of these things, thou shalt be a good minister of Jesus Christ, nourished up in the words of faith and of good doctrine, whereunto thou hast attained."

1 Timothy 6:3: "If any man teach otherwise, and consent not to wholesome words, even the words of our Lord Jesus Christ, and to the doctrine which is according to godliness;"

1 Timothy 6:4: "He is proud, knowing nothing, but doting about questions and strifes of words, whereof cometh envy, strife, railings, evil surmisings,"

2 Timothy 1:13: "Hold fast the form of sound words, which thou hast heard of me, in faith and love which is in Christ Jesus."

2 Timothy 2:14: "Of these things put them in remembrance, charging them before the Lord that they strive not about words to no profit, but to the subverting of the hearers."

2 Timothy 4:15: "Of whom be thou ware also; for he hath greatly withstood our words."

Hebrews 12:19: "And the sound of a trumpet, and the voice of words; which voice they that heard intreated that the word should not be spoken to them any more:"

Hebrews 13:22: "And I beseech you, brethren, suffer the word of exhortation: for I have written a letter unto you in few words."

2 Peter 2:3: "And through covetousness shall they with feigned words make merchandise of you: whose judgment now of a long time lingereth not, and their damnation slumbereth not."

2 Peter 2:18: "For when they speak great swelling words of vanity, they allure through the lusts of the flesh, through much wantonness, those that were clean escaped from them who live in error."

2 Peter 3:2: "That ye may be mindful of the words which were spoken before by the holy prophets, and of the commandment of us the apostles of the Lord and Saviour:"

3 John 1:10: "Wherefore, if I come, I will remember his deeds which he doeth, prating against us with malicious words: and not content therewith, neither doth he himself receive the brethren, and forbiddeth them that would, and casteth them out of the church."

Jude 1:16: "These are murmurers, complainers, walking after their own lusts; and their mouth speaketh great swelling words, having men's persons in admiration because of advantage."

Jude 1:17: "But, beloved, remember ye the words which were spoken before of the apostles of our Lord Jesus Christ;"

Revelation 1:3: "Blessed is he that readeth, and they that hear the words of this prophecy, and keep those things which are written therein: for the time is at hand."

Revelation 17:17: "For God hath put in their hearts to fulfil his will, and to agree, and give their kingdom unto the beast, until the words of God shall be fulfilled."

Revelation 21:5: "And he that sat upon the throne said, Behold, I make all things new. And he said unto me, Write: for these words are true and faithful."

Revelation 22:18: "For I testify unto every man that heareth the words of the prophecy of this book, If any man shall add unto these things, God shall add unto him the plagues that are written in this book:"

Revelation 22:19: "And if any man shall take away from the words of the book of this prophecy, God shall take away his part out of the book of life, and out of the holy city, and from the things which are written in this book."

## WORK

Occurrences: 380

Genesis 2:2: "And on the seventh day God ended his work which he had made; and he rested on the seventh day from all his work which he had made."

Genesis 2:3: "And God blessed the seventh day, and sanctified it: because that in it he had rested from all his work which God created and made."

Genesis 5:29: "And he called his name Noah, saying, This same shall comfort us concerning our work and toil of our hands, because of the ground which the LORD hath cursed."

Exodus 5:9: "Let there more work be laid upon the men, that they may labour therein; and let them not regard vain words."

Exodus 5:11: "Go ye, get you straw where ye can find it: yet not ought of your work shall be diminished."

Exodus 5:18: "Go therefore now, and work; for there shall no straw be given you, yet shall ye deliver the tale of bricks."

Exodus 12:16: "And in the first day there shall be an holy convocation, and in the seventh day there shall be an holy convocation to you; no manner of work shall be done in them, save that which every man must eat, that only may be done of you."

Exodus 14:31: "And Israel saw that great work which the LORD did upon the Egyptians: and the people feared the LORD, and believed the LORD, and his servant Moses."

Exodus 18:20: "And thou shalt teach them ordinances and laws, and shalt shew them the way wherein they must walk, and the work that they must do."

Exodus 20:9: "Six days shalt thou labour, and do all thy work:"

Exodus 20:10: "But the seventh day is the sabbath of the LORD thy God: in it thou shalt not do any work, thou, nor thy son, nor thy daughter, thy manservant, nor thy maidservant, nor thy cattle, nor thy stranger that is within thy gates:"

Exodus 23:12: "Six days thou shalt do thy work, and on the seventh day thou shalt rest: that thine ox and thine ass may rest, and the son of thy handmaid, and the stranger, may be refreshed."

Exodus 24:10: "And they saw the God of Israel: and there was under his feet as it were a paved work of a sapphire stone, and as it were the body of heaven in his clearness."

Exodus 25:18: "And thou shalt make two cherubims of gold, of beaten work shalt thou make them, in the two ends of the mercy seat."

Exodus 25:31: "And thou shalt make a candlestick of pure gold: of beaten work shall the candlestick be made: his shaft, and his branches, his bowls, his knops, and his flowers, shall be of the same."

Exodus 25:36: "Their knops and their branches shall be of the same: all it shall be one beaten work of pure gold."

Exodus 26:1: "Moreover thou shalt make the tabernacle with ten curtains of fine twined linen, and blue, and purple, and scarlet: with cherubims of cunning work shalt thou make them."

Exodus 26:31: "And thou shalt make a vail of blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen of cunning work: with cherubims shall it be made:"

Exodus 28:6: "And they shall make the ephod of gold, of blue, and of purple, of scarlet, and fine twined linen, with cunning work."

Exodus 28:8: "And the curious girdle of the ephod, which is upon it, shall be of the same, according to the work thereof; even of gold, of blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen."

Exodus 28:11: "With the work of an engraver in stone, like the engravings of a signet, shalt thou engrave the two stones with the names of the children of Israel: thou shalt make them to be set in ouches of gold."

Exodus 28:14: "And two chains of pure gold at the ends; of wreathen work shalt thou make them, and fasten the wreathen chains to the ouches."



Exodus 28:15: "And thou shalt make the breastplate of judgment with cunning work; after the work of the ephod thou shalt make it; of gold, of blue, and of purple, and of scarlet, and of fine twined linen, shalt thou make it."

Exodus 28:22: "And thou shalt make upon the breastplate chains at the ends of wreathen work of pure gold."

Exodus 28:32: "And there shall be an hole in the top of it, in the midst thereof: it shall have a binding of woven work round about the hole of it, as it were the hole of an habergeon, that it be not rent."

Exodus 31:4: "To devise cunning works, to work in gold, and in silver, and in brass,"

Exodus 31:5: "And in cutting of stones, to set them, and in carving of timber, to work in all manner of workmanship."

Exodus 31:14: "Ye shall keep the sabbath therefore; for it is holy unto you: every one that defileth it shall surely be put to death: for whosoever doeth any work therein, that soul shall be cut off from among his people."

Exodus 31:15: "Six days may work be done; but in the seventh is the sabbath of rest, holy to the LORD: whosoever doeth any work in the sabbath day, he shall surely be put to death."

Exodus 32:16: "And the tables were the work of God, and the writing was the writing of God, graven upon the tables."

Exodus 34:10: "And he said, Behold, I make a covenant: before all thy people I will do marvels, such as have not been done in all the earth, nor in any nation: and all the people among which thou art shall see the work of the LORD: for it is a terrible thing that I will do with thee."

Exodus 34:21: "Six days thou shalt work, but on the seventh day thou shalt rest: in earing time and in harvest thou shalt rest."

Exodus 35:2: "Six days shall work be done, but on the seventh day there shall be to you an holy day, a sabbath of rest to the LORD: whosoever doeth work therein shall be put to death."

Exodus 35:21: "And they came, every one whose heart stirred him up, and every one whom his spirit made willing, and they brought the LORD's offering to the work of the tabernacle of the congregation, and for all his service, and for the holy garments."

Exodus 35:24: "Every one that did offer an offering of silver and brass brought the LORD's offering: and every man, with whom was found shittim wood for any work of the service, brought it."

Exodus 35:29: "The children of Israel brought a willing offering unto the LORD, every man and woman, whose heart made them willing to bring for all manner of work, which the LORD had commanded to be made by the hand of Moses."

Exodus 35:32: "And to devise curious works, to work in gold, and in silver, and in brass,"

Exodus 35:33: "And in the cutting of stones, to set them, and in carving of wood, to make any manner of cunning work."

Exodus 35:35: "Them hath he filled with wisdom of heart, to work all manner of work, of the engraver, and of the cunning workman, and of the embroiderer, in blue, and in purple, in scarlet, and in fine linen, and of the weaver, even of them that do any work, and of those that devise cunning work."

Exodus 36:1: "Then wrought Bezaleel and Aholiab, and every wise hearted man, in whom the LORD put wisdom and understanding to know how to work all manner of work for the service of the sanctuary, according to all that the LORD had commanded."

Exodus 36:2: "And Moses called Bezaleel and Aholiab, and every wise hearted man, in whose heart the LORD had put wisdom, even every one whose heart stirred him up to come unto the work to do it:"

Exodus 36:3: "And they received of Moses all the offering, which the children of Israel had brought for the work of the service of the sanctuary, to make it withal. And they brought yet unto him free offerings every morning."

Exodus 36:4: "And all the wise men, that wrought all the work of the sanctuary, came every man from his work which they made;"

Exodus 36:5: "And they spake unto Moses, saying, The people bring much more than enough for the service of the work, which the LORD commanded to make."

Exodus 36:6: "And Moses gave commandment, and they caused it to be proclaimed throughout the camp, saying, Let neither man nor woman make any more work for the offering of the sanctuary. So the people were restrained from bringing."

Exodus 36:7: "For the stuff they had was sufficient for all the work to make it, and too much."

Exodus 36:8: "And every wise hearted man among them that wrought the work of the tabernacle made ten curtains of fine twined linen, and blue, and purple, and scarlet: with cherubims of cunning work made he them."

Exodus 36:35: "And he made a vail of blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen: with cherubims made he it of cunning work."

Exodus 37:17: "And he made the candlestick of pure gold: of beaten work made he the candlestick; his shaft, and his branch, his bowls, his knops, and his flowers, were of the same:"

Exodus 37:22: "Their knops and their branches were of the same: all of it was one beaten work of pure gold."

Exodus 37:29: "And he made the holy anointing oil, and the pure incense of sweet spices, according to the work of the apothecary."

Exodus 38:24: "All the gold that was occupied for the work in all the work of the holy place, even the gold of the offering, was twenty and nine talents, and seven hundred and thirty shekels, after the shekel of the sanctuary."

Exodus 39:3: "And they did beat the gold into thin plates, and cut it into wires, to work it in the blue, and in the purple, and in the scarlet, and in the fine linen, with cunning work."

Exodus 39:5: "And the curious girdle of his ephod, that was upon it, was of the same, according to the work thereof; of gold, blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen; as the LORD commanded Moses."

Exodus 39:8: "And he made the breastplate of cunning work, like the work of the ephod; of gold, blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen."

Exodus 39:15: "And they made upon the breastplate chains at the ends, of wreathen work of pure gold."

Exodus 39:22: "And he made the robe of the ephod of woven work, all of blue."

Exodus 39:27: "And they made coats of fine linen of woven work for Aaron, and for his sons,"

Exodus 39:32: "Thus was all the work of the tabernacle of the tent of the congregation finished: and the children of Israel did according to all that the LORD commanded Moses, so did they."

Exodus 39:42: "According to all that the LORD commanded Moses, so the children of Israel made all the work."

Exodus 39:43: "And Moses did look upon all the work, and, behold, they had done it as the LORD had commanded, even so had they done it: and Moses blessed them."

Exodus 40:33: "And he reared up the court round about the tabernacle and the altar, and set up the hanging of the court gate. So Moses finished the work."

Leviticus 11:32: "And upon whatsoever any of them, when they are dead, doth fall, it shall be unclean; whether it be any vessel of wood, or raiment, or skin, or sack, whatsoever vessel it be, wherein any work is done, it must be put into water, and it shall be unclean until the even; so it shall be cleansed."

Leviticus 13:51: "And he shall look on the plague on the seventh day: if the plague be spread in the garment, either in the warp, or in the woof, or in a skin, or in any work that is made of skin; the plague is a fretting leprosy; it is unclean."

Leviticus 16:29: "And this shall be a statute for ever unto you: that in the seventh month, on the tenth day of the month, ye shall afflict your souls, and do no work at all, whether it be one of your

own country, or a stranger that sojourneth among you:"

Leviticus 23:3: "Six days shall work be done: but the seventh day is the sabbath of rest, an holy convocation; ye shall do no work therein: it is the sabbath of the LORD in all your dwellings."

Leviticus 23:7: "In the first day ye shall have an holy convocation: ye shall do no servile work therein."

Leviticus 23:8: "But ye shall offer an offering made by fire unto the LORD seven days: in the seventh day is an holy convocation: ye shall do no servile work therein."

Leviticus 23:21: "And ye shall proclaim on the selfsame day, that it may be an holy convocation unto you: ye shall do no servile work therein: it shall be a statute for ever in all your dwellings throughout your generations."

Leviticus 23:25: "Ye shall do no servile work therein: but ye shall offer an offering made by fire unto the LORD."

Leviticus 23:28: "And ye shall do no work in that same day: for it is a day of atonement, to make an atonement for you before the LORD your God."

Leviticus 23:30: "And whatsoever soul it be that doeth any work in that same day, the same soul will I destroy from among his people."

Leviticus 23:31: "Ye shall do no manner of work: it shall be a statute for ever throughout your generations in all your dwellings."

Leviticus 23:35: "On the first day shall be an holy convocation: ye shall do no servile work therein."

Leviticus 23:36: "Seven days ye shall offer an offering made by fire unto the LORD: on the eighth day shall be an holy convocation unto you; and ye shall offer an offering made by fire unto the LORD: it is a solemn assembly; and ye shall do no servile work therein."

Numbers 4:3: "From thirty years old and upward even until fifty years old, all that enter into the host, to do the work in the tabernacle of the congregation."

Numbers 4:23: "From thirty years old and upward until fifty years old shalt thou number them; all that enter in to perform the service, to do the work in the tabernacle of the congregation."

Numbers 4:30: "From thirty years old and upward even unto fifty years old shalt thou number them, every one that entereth into the service, to do the work of the tabernacle of the congregation."

Numbers 4:35: "From thirty years old and upward even unto fifty years old, every one that entereth into the service, for the work in the tabernacle of the congregation:"

Numbers 4:39: "From thirty years old and upward even unto fifty years old, every one that entereth into the service, for the work in the tabernacle of the congregation,"

Numbers 4:43: "From thirty years old and upward even unto fifty years old, every one that entereth into the service, for the work in the tabernacle of the congregation,"

Numbers 8:4: "And this work of the candlestick was of beaten gold, unto the shaft thereof, unto the flowers thereof, was beaten work: according unto the pattern which the LORD had shewed Moses, so he made the candlestick."

Numbers 28:18: "In the first day shall be an holy convocation; ye shall do no manner of servile work therein:"

Numbers 28:25: "And on the seventh day ye shall have an holy convocation; ye shall do no servile work."

Numbers 28:26: "Also in the day of the firstfruits, when ye bring a new meat offering unto the LORD, after your weeks be out, ye shall have an holy convocation; ye shall do no servile work:"

Numbers 29:1: "And in the seventh month, on the first day of the month, ye shall have an holy convocation; ye shall do no servile work: it is a day of blowing the trumpets unto you."

Numbers 29:7: "And ye shall have on the tenth day of this seventh month an holy convocation; and ye shall afflict your souls: ye shall not do any work therein:"

Numbers 29:12: "And on the fifteenth day of the seventh month ye shall have an holy convocation; ye shall do no servile work, and ye shall keep a feast unto the LORD seven days:"

Numbers 29:35: "On the eighth day ye shall have a solemn assembly: ye shall do no servile work

therein:"

Numbers 31:20: "And purify all your raiment, and all that is made of skins, and all work of goats' hair, and all things made of wood."

Deuteronomy 4:28: "And there ye shall serve gods, the work of men's hands, wood and stone, which neither see, nor hear, nor eat, nor smell."

Deuteronomy 5:13: "Six days thou shalt labour, and do all thy work:"

Deuteronomy 5:14: "But the seventh day is the sabbath of the LORD thy God: in it thou shalt not do any work, thou, nor thy son, nor thy daughter, nor thy manservant, nor thy maidservant, nor thine ox, nor thine ass, nor any of thy cattle, nor thy stranger that is within thy gates; that thy manservant and thy maidservant may rest as well as thou."

Deuteronomy 14:29: "And the Levite, (because he hath no part nor inheritance with thee,) and the stranger, and the fatherless, and the widow, which are within thy gates, shall come, and shall eat and be satisfied; that the LORD thy God may bless thee in all the work of thine hand which thou doest."

Deuteronomy 15:19: "All the firstling males that come of thy herd and of thy flock thou shalt sanctify unto the LORD thy God: thou shalt do no work with the firstling of thy bullock, nor shear the firstling of thy sheep."

Deuteronomy 16:8: "Six days thou shalt eat unleavened bread: and on the seventh day shall be a solemn assembly to the LORD thy God: thou shalt do no work therein."

Deuteronomy 24:19: "When thou cuttest down thine harvest in thy field, and hast forgot a sheaf in the field, thou shalt not go again to fetch it: it shall be for the stranger, for the fatherless, and for the widow: that the LORD thy God may bless thee in all the work of thine hands."

Deuteronomy 27:15: "Cursed be the man that maketh any graven or molten image, an abomination unto the LORD, the work of the hands of the craftsman, and putteth it in a secret place. And all the people shall answer and say, Amen."

Deuteronomy 28:12: "The LORD shall open unto thee his good treasure, the heaven to give the rain unto thy land in his season, and to bless all the work of thine hand: and thou shalt lend unto many nations, and thou shalt not borrow."

Deuteronomy 30:9: "And the LORD thy God will make thee plenteous in every work of thine hand, in the fruit of thy body, and in the fruit of thy cattle, and in the fruit of thy land, for good: for the LORD will again rejoice over thee for good, as he rejoiced over thy fathers:"

Deuteronomy 31:29: "For I know that after my death ye will utterly corrupt yourselves, and turn aside from the way which I have commanded you; and evil will befall you in the latter days; because ye will do evil in the sight of the LORD, to provoke him to anger through the work of your hands."

Deuteronomy 32:4: "He is the Rock, his work is perfect: for all his ways are judgment: a God of truth and without iniquity, just and right is he."

Deuteronomy 33:11: "Bless, LORD, his substance, and accept the work of his hands; smite through the loins of them that rise against him, and of them that hate him, that they rise not again."

Joshua 9:4: "They did work wilily, and went and made as if they had been ambassadors, and took old sacks upon their asses, and wine bottles, old, and rent, and bound up;"

Judges 19:16: "And, behold, there came an old man from his work out of the field at even, which was also of mount Ephraim; and he sojourned in Gibeah: but the men of the place were Benjamites."

Ruth 2:12: "The LORD recompense thy work, and a full reward be given thee of the LORD God of Israel, under whose wings thou art come to trust."

1 Samuel 8:16: "And he will take your menservants, and your maidservants, and your goodliest young men, and your asses, and put them to his work."

1 Samuel 14:6: "And Jonathan said to the young man that bare his armour, Come, and let us go over unto the garrison of these uncircumcised: it may be that the LORD will work for us: for there is no restraint to the LORD to save by many or by few."

1 Kings 5:16: "Beside the chief of Solomon's officers which were over the work, three thousand and three hundred, which ruled over the people that wrought in the work."

1 Kings 6:35: "And he carved thereon cherubims and palm trees and open flowers: and covered them with gold fitted upon the carved work."

1 Kings 7:8: "And his house where he dwelt had another court within the porch, which was of the like work. Solomon made also an house for Pharaoh's daughter, whom he had taken to wife, like unto this porch."

1 Kings 7:14: "He was a widow's son of the tribe of Naphtali, and his father was a man of Tyre, a worker in brass: and he was filled with wisdom, and understanding, and cunning to work all works in brass. And he came to king Solomon, and wrought all his work."

1 Kings 7:17: "And nets of checker work, and wreaths of chain work, for the chapiters which were upon the top of the pillars; seven for the one chapter, and seven for the other chapter."

1 Kings 7:19: "And the chapiters that were upon the top of the pillars were of lily work in the porch, four cubits."

1 Kings 7:22: "And upon the top of the pillars was lily work: so was the work of the pillars finished."

1 Kings 7:28: "And the work of the bases was on this manner: they had borders, and the borders were between the ledges:"

1 Kings 7:29: "And on the borders that were between the ledges were lions, oxen, and cherubims: and upon the ledges there was a base above: and beneath the lions and oxen were certain additions made of thin work."

1 Kings 7:31: "And the mouth of it within the chapter and above was a cubit: but the mouth thereof was round after the work of the base, a cubit and an half: and also upon the mouth of it were gravings with their borders, foursquare, not round."

1 Kings 7:33: "And the work of the wheels was like the work of a chariot wheel: their axletrees, and their naves, and their felloes, and their spokes, were all molten."

1 Kings 7:40: "And Hiram made the lavers, and the shovels, and the basons. So Hiram made an end of doing all the work that he made king Solomon for the house of the LORD:"

1 Kings 7:51: "So was ended all the work that king Solomon made for the house of the LORD. And Solomon brought in the things which David his father had dedicated; even the silver, and the gold, and the vessels, did he put among the treasures of the house of the LORD."

1 Kings 9:23: "These were the chief of the officers that were over Solomon's work, five hundred and fifty, which bare rule over the people that wrought in the work."

1 Kings 16:7: "And also by the hand of the prophet Jehu the son of Hanani came the word of the LORD against Baasha, and against his house, even for all the evil that he did in the sight of the LORD, in provoking him to anger with the work of his hands, in being like the house of Jeroboam; and because he killed him."

1 Kings 21:20: "And Ahab said to Elijah, Hast thou found me, O mine enemy? And he answered, I have found thee: because thou hast sold thyself to work evil in the sight of the LORD."

1 Kings 21:25: "But there was none like unto Ahab, which did sell himself to work wickedness in the sight of the LORD, whom Jezebel his wife stirred up."

2 Kings 12:11: "And they gave the money, being told, into the hands of them that did the work, that had the oversight of the house of the LORD: and they laid it out to the carpenters and builders, that wrought upon the house of the LORD,"

2 Kings 19:18: "And have cast their gods into the fire: for they were no gods, but the work of men's hands, wood and stone: therefore they have destroyed them."

2 Kings 22:5: "And let them deliver it into the hand of the doers of the work, that have the oversight of the house of the LORD: and let them give it to the doers of the work which is in the house of the LORD, to repair the breaches of the house,"

2 Kings 22:9: "And Shaphan the scribe came to the king, and brought the king word again, and said,

Thy servants have gathered the money that was found in the house, and have delivered it into the hand of them that do the work, that have the oversight of the house of the LORD."

2 Kings 25:17: "The height of the one pillar was eighteen cubits, and the chapter upon it was brass: and the height of the chapter three cubits; and the wreathen work, and pomegranates upon the chapter round about, all of brass: and like unto these had the second pillar with wreathen work."

1 Chronicles 4:23: "These were the potters, and those that dwelt among plants and hedges: there they dwelt with the king for his work."

1 Chronicles 6:49: "But Aaron and his sons offered upon the altar of the burnt offering, and on the altar of incense, and were appointed for all the work of the place most holy, and to make an atonement for Israel, according to all that Moses the servant of God had commanded."

1 Chronicles 9:13: "And their brethren, heads of the house of their fathers, a thousand and seven hundred and threescore; very able men for the work of the service of the house of God."

1 Chronicles 9:19: "And Shallum the son of Kore, the son of Ebiasaph, the son of Korah, and his brethren, of the house of his father, the Korahites, were over the work of the service, keepers of the gates of the tabernacle: and their fathers, being over the host of the LORD, were keepers of the entry."

1 Chronicles 9:33: "And these are the singers, chief of the fathers of the Levites, who remaining in the chambers were free: for they were employed in that work day and night."

1 Chronicles 16:37: "So he left there before the ark of the covenant of the LORD Asaph and his brethren, to minister before the ark continually, as every day's work required:"

1 Chronicles 22:15: "Moreover there are workmen with thee in abundance, hewers and workers of stone and timber, and all manner of cunning men for every manner of work."

1 Chronicles 23:4: "Of which, twenty and four thousand were to set forward the work of the house of the LORD; and six thousand were officers and judges:"

1 Chronicles 23:24: "These were the sons of Levi after the house of their fathers; even the chief of the fathers, as they were counted by number of names by their polls, that did the work for the service of the house of the LORD, from the age of twenty years and upward."

1 Chronicles 23:28: "Because their office was to wait on the sons of Aaron for the service of the house of the LORD, in the courts, and in the chambers, and in the purifying of all holy things, and the work of the service of the house of God;"

1 Chronicles 27:26: "And over them that did the work of the field for tillage of the ground was Ezri the son of Chelub:"

1 Chronicles 28:13: "Also for the courses of the priests and the Levites, and for all the work of the service of the house of the LORD, and for all the vessels of service in the house of the LORD."

1 Chronicles 28:20: "And David said to Solomon his son, Be strong and of good courage, and do it: fear not, nor be dismayed: for the LORD God, even my God, will be with thee; he will not fail thee, nor forsake thee, until thou hast finished all the work for the service of the house of the LORD."

1 Chronicles 29:1: "Furthermore David the king said unto all the congregation, Solomon my son, whom alone God hath chosen, is yet young and tender, and the work is great: for the palace is not for man, but for the LORD God."

1 Chronicles 29:5: "The gold for things of gold, and the silver for things of silver, and for all manner of work to be made by the hands of artificers. And who then is willing to consecrate his service this day unto the LORD?"

1 Chronicles 29:6: "Then the chief of the fathers and princes of the tribes of Israel and the captains of thousands and of hundreds, with the rulers of the king's work, offered willingly,"

2 Chronicles 2:7: "Send me now therefore a man cunning to work in gold, and in silver, and in brass, and in iron, and in purple, and crimson, and blue, and that can skill to grave with the cunning men that are with me in Judah and in Jerusalem, whom David my father did provide."

2 Chronicles 2:14: "The son of a woman of the daughters of Dan, and his father was a man of Tyre, skilful to work in gold, and in silver, in brass, in iron, in stone, and in timber, in purple, in blue, and

in fine linen, and in crimson; also to grave any manner of graving, and to find out every device which shall be put to him, with thy cunning men, and with the cunning men of my lord David thy father."

2 Chronicles 2:18: "And he set threescore and ten thousand of them to be bearers of burdens, and fourscore thousand to be hewers in the mountain, and three thousand and six hundred overseers to set the people a work."

2 Chronicles 3:10: "And in the most holy house he made two cherubims of image work, and overlaid them with gold."

2 Chronicles 4:5: "And the thickness of it was an handbreadth, and the brim of it like the work of the brim of a cup, with flowers of lilies; and it received and held three thousand baths."

2 Chronicles 4:11: "And Hiram made the pots, and the shovels, and the basons. And Hiram finished the work that he was to make for king Solomon for the house of God;"

2 Chronicles 5:1: "Thus all the work that Solomon made for the house of the LORD was finished: and Solomon brought in all the things that David his father had dedicated; and the silver, and the gold, and all the instruments, put he among the treasures of the house of God."

2 Chronicles 8:9: "But of the children of Israel did Solomon make no servants for his work; but they were men of war, and chief of his captains, and captains of his chariots and horsemen."

2 Chronicles 8:16: "Now all the work of Solomon was prepared unto the day of the foundation of the house of the LORD, and until it was finished. So the house of the LORD was perfected."

2 Chronicles 15:7: "Be ye strong therefore, and let not your hands be weak: for your work shall be rewarded."

2 Chronicles 16:5: "And it came to pass, when Baasha heard it, that he left off building of Ramah, and let his work cease."

2 Chronicles 24:12: "And the king and Jehoiada gave it to such as did the work of the service of the house of the LORD, and hired masons and carpenters to repair the house of the LORD, and also such as wrought iron and brass to mend the house of the LORD."

2 Chronicles 24:13: "So the workmen wrought, and the work was perfected by them, and they set the house of God in his state, and strengthened it."

2 Chronicles 29:34: "But the priests were too few, so that they could not flay all the burnt offerings: wherefore their brethren the Levites did help them, till the work was ended, and until the other priests had sanctified themselves: for the Levites were more upright in heart to sanctify themselves than the priests."

2 Chronicles 31:21: "And in every work that he began in the service of the house of God, and in the law, and in the commandments, to seek his God, he did it with all his heart, and prospered."

2 Chronicles 32:19: "And they spake against the God of Jerusalem, as against the gods of the people of the earth, which were the work of the hands of man."

2 Chronicles 34:12: "And the men did the work faithfully: and the overseers of them were Jahath and Obadiah, the Levites, of the sons of Merari; and Zechariah and Meshullam, of the sons of the Kohathites, to set it forward; and other of the Levites, all that could skill of instruments of musick."

2 Chronicles 34:13: "Also they were over the bearers of burdens, and were overseers of all that wrought the work in any manner of service: and of the Levites there were scribes, and officers, and porters."

Ezra 2:69: "They gave after their ability unto the treasure of the work threescore and one thousand drams of gold, and five thousand pound of silver, and one hundred priests' garments."

Ezra 3:8: "Now in the second year of their coming unto the house of God at Jerusalem, in the second month, began Zerubbabel the son of Shealtiel, and Jeshua the son of Jozadak, and the remnant of their brethren the priests and the Levites, and all they that were come out of the captivity unto Jerusalem; and appointed the Levites, from twenty years old and upward, to set forward the work of the house of the LORD."

Ezra 4:24: "Then ceased the work of the house of God which is at Jerusalem. So it ceased unto the

second year of the reign of Darius king of Persia."

Ezra 5:8: "Be it known unto the king, that we went into the province of Judea, to the house of the great God, which is builded with great stones, and timber is laid in the walls, and this work goeth fast on, and prospereth in their hands."

Ezra 6:7: "Let the work of this house of God alone; let the governor of the Jews and the elders of the Jews build this house of God in his place."

Ezra 6:22: "And kept the feast of unleavened bread seven days with joy: for the LORD had made them joyful, and turned the heart of the king of Assyria unto them, to strengthen their hands in the work of the house of God, the God of Israel."

Ezra 10:13: "But the people are many, and it is a time of much rain, and we are not able to stand without, neither is this a work of one day or two: for we are many that have transgressed in this thing."

Nehemiah 2:16: "And the rulers knew not whither I went, or what I did; neither had I as yet told it to the Jews, nor to the priests, nor to the nobles, nor to the rulers, nor to the rest that did the work."

Nehemiah 2:18: "Then I told them of the hand of my God which was good upon me; as also the king's words that he had spoken unto me. And they said, Let us rise up and build. So they strengthened their hands for this good work."

Nehemiah 3:5: "And next unto them the Tekoites repaired; but their nobles put not their necks to the work of their LORD."

Nehemiah 4:6: "So built we the wall; and all the wall was joined together unto the half thereof: for the people had a mind to work."

Nehemiah 4:11: "And our adversaries said, They shall not know, neither see, till we come in the midst among them, and slay them, and cause the work to cease."

Nehemiah 4:15: "And it came to pass, when our enemies heard that it was known unto us, and God had brought their counsel to nought, that we returned all of us to the wall, every one unto his work."

Nehemiah 4:16: "And it came to pass from that time forth, that the half of my servants wrought in the work, and the other half of them held both the spears, the shields, and the bows, and the habergeons; and the rulers were behind all the house of Judah."

Nehemiah 4:17: "They which builded on the wall, and they that bare burdens, with those that laded, every one with one of his hands wrought in the work, and with the other hand held a weapon."

Nehemiah 4:19: "And I said unto the nobles, and to the rulers, and to the rest of the people, The work is great and large, and we are separated upon the wall, one far from another."

Nehemiah 4:21: "So we laboured in the work: and half of them held the spears from the rising of the morning till the stars appeared."

Nehemiah 5:16: "Yea, also I continued in the work of this wall, neither bought we any land: and all my servants were gathered thither unto the work."

Nehemiah 6:3: "And I sent messengers unto them, saying, I am doing a great work, so that I cannot come down: why should the work cease, whilst I leave it, and come down to you?"

Nehemiah 6:9: "For they all made us afraid, saying, Their hands shall be weakened from the work, that it be not done. Now therefore, O God, strengthen my hands."

Nehemiah 6:16: "And it came to pass, that when all our enemies heard thereof, and all the heathen that were about us saw these things, they were much cast down in their own eyes: for they perceived that this work was wrought of our God."

Nehemiah 7:70: "And some of the chief of the fathers gave unto the work. The Tirshatha gave to the treasure a thousand drams of gold, fifty basons, five hundred and thirty priests' garments."

Nehemiah 7:71: "And some of the chief of the fathers gave to the treasure of the work twenty thousand drams of gold, and two thousand and two hundred pound of silver."

Nehemiah 10:33: "For the shewbread, and for the continual meat offering, and for the continual burnt offering, of the sabbaths, of the new moons, for the set feasts, and for the holy things, and for the sin offerings to make an atonement for Israel, and for all the work of the house of our God."



Nehemiah 11:12: "And their brethren that did the work of the house were eight hundred twenty and two: and Adaiah the son of Jeroham, the son of Pelaliah, the son of Amzi, the son of Zechariah, the son of Pashur, the son of Malchiah."

Nehemiah 13:10: "And I perceived that the portions of the Levites had not been given them: for the Levites and the singers, that did the work, were fled every one to his field."

Job 1:10: "Hast not thou made an hedge about him, and about his house, and about all that he hath on every side? thou hast blessed the work of his hands, and his substance is increased in the land."

Job 7:2: "As a servant earnestly desireth the shadow, and as an hireling looketh for the reward of his work:"

Job 10:3: "Is it good unto thee that thou shouldest oppress, that thou shouldest despise the work of thine hands, and shine upon the counsel of the wicked?"

Job 14:15: "Thou shalt call, and I will answer thee: thou wilt have a desire to the work of thine hands."

Job 23:9: "On the left hand, where he doth work, but I cannot behold him: he hideth himself on the right hand, that I cannot see him:"

Job 24:5: "Behold, as wild asses in the desert, go they forth to their work; rising betimes for a prey: the wilderness yieldeth food for them and for their children."

Job 34:11: "For the work of a man shall he render unto him, and cause every man to find according to his ways."

Job 34:19: "How much less to him that accepteth not the persons of princes, nor regardeth the rich more than the poor? for they all are the work of his hands."

Job 36:9: "Then he sheweth them their work, and their transgressions that they have exceeded."

Job 36:24: "Remember that thou magnify his work, which men behold."

Job 37:7: "He sealet up the hand of every man; that all men may know his work."

Psalms 8:3: "When I consider thy heavens, the work of thy fingers, the moon and the stars, which thou hast ordained;"

Psalms 9:16: "The LORD is known by the judgment which he executeth: the wicked is snared in the work of his own hands. Higgaion. Selah."

Psalms 28:4: "Give them according to their deeds, and according to the wickedness of their endeavours: give them after the work of their hands; render to them their desert."

Psalms 44:1: "We have heard with our ears, O God, our fathers have told us, what work thou didst in their days, in the times of old."

Psalms 58:2: "Yea, in heart ye work wickedness; ye weigh the violence of your hands in the earth."

Psalms 62:12: "Also unto thee, O Lord, belongeth mercy: for thou renderest to every man according to his work."

Psalms 64:9: "And all men shall fear, and shall declare the work of God; for they shall wisely consider of his doing."

Psalms 74:6: "But now they break down the carved work thereof at once with axes and hammers."

Psalms 77:12: "I will meditate also of all thy work, and talk of thy doings."

Psalms 90:16: "Let thy work appear unto thy servants, and thy glory unto their children."

Psalms 90:17: "And let the beauty of the LORD our God be upon us: and establish thou the work of our hands upon us; yea, the work of our hands establish thou it."

Psalms 92:4: "For thou, LORD, hast made me glad through thy work: I will triumph in the works of thy hands."

Psalms 95:9: "When your fathers tempted me, proved me, and saw my work."

Psalms 101:3: "I will set no wicked thing before mine eyes: I hate the work of them that turn aside; it shall not cleave to me."

Psalms 102:25: "Of old hast thou laid the foundation of the earth: and the heavens are the work of thy hands."

Psalms 104:23: "Man goeth forth unto his work and to his labour until the evening."

Psalms 111:3: "His work is honourable and glorious: and his righteousness endureth for ever."  
 Psalms 115:4: "Their idols are silver and gold, the work of men's hands."  
 Psalms 119:126: "It is time for thee, LORD, to work: for they have made void thy law."  
 Psalms 135:15: "The idols of the heathen are silver and gold, the work of men's hands."  
 Psalms 141:4: "Incline not my heart to any evil thing, to practise wicked works with men that work iniquity: and let me not eat of their dainties."  
 Psalms 143:5: "I remember the days of old; I meditate on all thy works; I muse on the work of thy hands."  
 Proverbs 11:18: "The wicked worketh a deceitful work: but to him that soweth righteousness shall be a sure reward."  
 Proverbs 16:11: "A just weight and balance are the LORD's: all the weights of the bag are his work."  
 Proverbs 18:9: "He also that is slothful in his work is brother to him that is a great waster."  
 Proverbs 20:11: "Even a child is known by his doings, whether his work be pure, and whether it be right."  
 Proverbs 21:8: "The way of man is froward and strange: but as for the pure, his work is right."  
 Proverbs 24:27: "Prepare thy work without, and make it fit for thyself in the field; and afterwards build thine house."  
 Proverbs 24:29: "Say not, I will do so to him as he hath done to me: I will render to the man according to his work."  
 Ecclesiastes 2:17: "Therefore I hated life; because the work that is wrought under the sun is grievous unto me: for all is vanity and vexation of spirit."  
 Ecclesiastes 3:11: "He hath made every thing beautiful in his time: also he hath set the world in their heart, so that no man can find out the work that God maketh from the beginning to the end."  
 Ecclesiastes 3:17: "I said in mine heart, God shall judge the righteous and the wicked: for there is a time there for every purpose and for every work."  
 Ecclesiastes 4:3: "Yea, better is he than both they, which hath not yet been, who hath not seen the evil work that is done under the sun."  
 Ecclesiastes 4:4: "Again, I considered all travail, and every right work, that for this a man is envied of his neighbour. This is also vanity and vexation of spirit."  
 Ecclesiastes 5:6: "Suffer not thy mouth to cause thy flesh to sin; neither say thou before the angel, that it was an error: wherefore should God be angry at thy voice, and destroy the work of thine hands?"  
 Ecclesiastes 7:13: "Consider the work of God: for who can make that straight, which he hath made crooked?"  
 Ecclesiastes 8:9: "All this have I seen, and applied my heart unto every work that is done under the sun: there is a time wherein one man ruleth over another to his own hurt."  
 Ecclesiastes 8:11: "Because sentence against an evil work is not executed speedily, therefore the heart of the sons of men is fully set in them to do evil."  
 Ecclesiastes 8:14: "There is a vanity which is done upon the earth; that there be just men, unto whom it happeneth according to the work of the wicked; again, there be wicked men, to whom it happeneth according to the work of the righteous: I said that this also is vanity."  
 Ecclesiastes 8:17: "Then I beheld all the work of God, that a man cannot find out the work that is done under the sun: because though a man labour to seek it out, yet he shall not find it; yea farther; though a wise man think to know it, yet shall he not be able to find it."  
 Ecclesiastes 9:10: "Whatsoever thy hand findeth to do, do it with thy might; for there is no work, nor device, nor knowledge, nor wisdom, in the grave, whither thou goest."  
 Ecclesiastes 12:14: "For God shall bring every work into judgment, with every secret thing, whether it be good, or whether it be evil."  
 Song of Solomon 7:1: "How beautiful are thy feet with shoes, O prince's daughter! the joints of thy

thighs are like jewels, the work of the hands of a cunning workman."

Isaiah 2:8: "Their land also is full of idols; they worship the work of their own hands, that which their own fingers have made:"

Isaiah 5:12: "And the harp, and the viol, the tabret, and pipe, and wine, are in their feasts: but they regard not the work of the LORD, neither consider the operation of his hands."

Isaiah 5:19: "That say, Let him make speed, and hasten his work, that we may see it: and let the counsel of the Holy One of Israel draw nigh and come, that we may know it!"

Isaiah 10:12: "Wherefore it shall come to pass, that when the Lord hath performed his whole work upon mount Zion and on Jerusalem, I will punish the fruit of the stout heart of the king of Assyria, and the glory of his high looks."

Isaiah 17:8: "And he shall not look to the altars, the work of his hands, neither shall respect that which his fingers have made, either the groves, or the images."

Isaiah 19:9: "Moreover they that work in fine flax, and they that weave networks, shall be confounded."

Isaiah 19:14: "The LORD hath mingled a perverse spirit in the midst thereof: and they have caused Egypt to err in every work thereof, as a drunken man staggereth in his vomit."

Isaiah 19:15: "Neither shall there be any work for Egypt, which the head or tail, branch or rush, may do."

Isaiah 19:25: "Whom the LORD of hosts shall bless, saying, Blessed be Egypt my people, and Assyria the work of my hands, and Israel mine inheritance."

Isaiah 28:21: "For the LORD shall rise up as in mount Perazim, he shall be wroth as in the valley of Gibeon, that he may do his work, his strange work; and bring to pass his act, his strange act."

Isaiah 29:14: "Therefore, behold, I will proceed to do a marvellous work among this people, even a marvellous work and a wonder: for the wisdom of their wise men shall perish, and the understanding of their prudent men shall be hid."

Isaiah 29:16: "Surely your turning of things upside down shall be esteemed as the potter's clay: for shall the work say of him that made it, He made me not? or shall the thing framed say of him that framed it, He had no understanding?"

Isaiah 29:23: "But when he seeth his children, the work of mine hands, in the midst of him, they shall sanctify my name, and sanctify the Holy One of Jacob, and shall fear the God of Israel."

Isaiah 31:2: "Yet he also is wise, and will bring evil, and will not call back his words: but will arise against the house of the evildoers, and against the help of them that work iniquity."

Isaiah 32:6: "For the vile person will speak villany, and his heart will work iniquity, to practise hypocrisy, and to utter error against the LORD, to make empty the soul of the hungry, and he will cause the drink of the thirsty to fail."

Isaiah 32:17: "And the work of righteousness shall be peace; and the effect of righteousness quietness and assurance for ever."

Isaiah 37:19: "And have cast their gods into the fire: for they were no gods, but the work of men's hands, wood and stone: therefore they have destroyed them."

Isaiah 40:10: "Behold, the Lord GOD will come with strong hand, and his arm shall rule for him: behold, his reward is with him, and his work before him."

Isaiah 41:24: "Behold, ye are of nothing, and your work of nought: an abomination is he that chooseth you."

Isaiah 43:13: "Yea, before the day was I am he; and there is none that can deliver out of my hand: I will work, and who shall let it?"

Isaiah 45:9: "Woe unto him that striveth with his Maker! Let the potsherd strive with the potsherds of the earth. Shall the clay say to him that fashioneth it, What makest thou? or thy work, He hath no hands?"

Isaiah 45:11: "Thus saith the LORD, the Holy One of Israel, and his Maker, Ask me of things to come concerning my sons, and concerning the work of my hands command ye me."

Isaiah 49:4: "Then I said, I have laboured in vain, I have spent my strength for nought, and in vain: yet surely my judgment is with the LORD, and my work with my God."

Isaiah 54:16: "Behold, I have created the smith that bloweth the coals in the fire, and that bringeth forth an instrument for his work; and I have created the waster to destroy."

Isaiah 60:21: "Thy people also shall be all righteous: they shall inherit the land for ever, the branch of my planting, the work of my hands, that I may be glorified."

Isaiah 61:8: "For I the LORD love judgment, I hate robbery for burnt offering; and I will direct their work in truth, and I will make an everlasting covenant with them."

Isaiah 62:11: "Behold, the LORD hath proclaimed unto the end of the world, Say ye to the daughter of Zion, Behold, thy salvation cometh; behold, his reward is with him, and his work before him."

Isaiah 64:8: "But now, O LORD, thou art our father; we are the clay, and thou our potter; and we all are the work of thy hand."

Isaiah 65:7: "Your iniquities, and the iniquities of your fathers together, saith the LORD, which have burned incense upon the mountains, and blasphemed me upon the hills: therefore will I measure their former work into their bosom."

Isaiah 65:22: "They shall not build, and another inhabit; they shall not plant, and another eat: for as the days of a tree are the days of my people, and mine elect shall long enjoy the work of their hands."

Jeremiah 10:3: "For the customs of the people are vain: for one cutteth a tree out of the forest, the work of the hands of the workman, with the axe."

Jeremiah 10:9: "Silver spread into plates is brought from Tarshish, and gold from Uphaz, the work of the workman, and of the hands of the founder: blue and purple is their clothing: they are all the work of cunning men."

Jeremiah 10:15: "They are vanity, and the work of errors: in the time of their visitation they shall perish."

Jeremiah 17:22: "Neither carry forth a burden out of your houses on the sabbath day, neither do ye any work, but hallow ye the sabbath day, as I commanded your fathers."

Jeremiah 17:24: "And it shall come to pass, if ye diligently hearken unto me, saith the LORD, to bring in no burden through the gates of this city on the sabbath day, but hallow the sabbath day, to do no work therein;"

Jeremiah 18:3: "Then I went down to the potter's house, and, behold, he wrought a work on the wheels."

Jeremiah 22:13: "Woe unto him that buildeth his house by unrighteousness, and his chambers by wrong; that useth his neighbour's service without wages, and giveth him not for his work;"

Jeremiah 31:16: "Thus saith the LORD; Refrain thy voice from weeping, and thine eyes from tears: for thy work shall be rewarded, saith the LORD; and they shall come again from the land of the enemy."

Jeremiah 32:19: "Great in counsel, and mighty in work: for thine eyes are open upon all the ways of the sons of men: to give every one according to his ways, and according to the fruit of his doings:"

Jeremiah 32:30: "For the children of Israel and the children of Judah have only done evil before me from their youth: for the children of Israel have only provoked me to anger with the work of their hands, saith the LORD."

Jeremiah 48:10: "Cursed be he that doeth the work of the LORD deceitfully, and cursed be he that keepeth back his sword from blood."

Jeremiah 50:25: "The LORD hath opened his armoury, and hath brought forth the weapons of his indignation: for this is the work of the Lord GOD of hosts in the land of the Chaldeans."

Jeremiah 50:29: "Call together the archers against Babylon: all ye that bend the bow, camp against it round about; let none thereof escape: recompense her according to her work; according to all that she hath done, do unto her: for she hath been proud against the LORD, against the Holy One of Israel."

Jeremiah 51:10: "The LORD hath brought forth our righteousness: come, and let us declare in Zion the work of the LORD our God."

Jeremiah 51:18: "They are vanity, the work of errors: in the time of their visitation they shall perish."

Lamentations 3:64: "Render unto them a recompence, O LORD, according to the work of their hands."

Lamentations 4:2: "The precious sons of Zion, comparable to fine gold, how are they esteemed as earthen pitchers, the work of the hands of the potter!"

Ezekiel 1:16: "The appearance of the wheels and their work was like unto the colour of a beryl: and they four had one likeness: and their appearance and their work was as it were a wheel in the middle of a wheel."

Ezekiel 15:3: "Shall wood be taken thereof to do any work? or will men take a pin of it to hang any vessel thereon?"

Ezekiel 15:4: "Behold, it is cast into the fire for fuel; the fire devoureth both the ends of it, and the midst of it is burned. Is it meet for any work?"

Ezekiel 15:5: "Behold, when it was whole, it was meet for no work: how much less shall it be meet yet for any work, when the fire hath devoured it, and it is burned?"

Ezekiel 16:10: "I clothed thee also with brodered work, and shod thee with badgers' skin, and I girded thee about with fine linen, and I covered thee with silk."

Ezekiel 16:13: "Thus wast thou decked with gold and silver; and thy raiment was of fine linen, and silk, and brodered work; thou didst eat fine flour, and honey, and oil: and thou wast exceeding beautiful, and thou didst prosper into a kingdom."

Ezekiel 16:30: "How weak is thine heart, saith the LORD GOD, seeing thou doest all these things, the work of an imperious whorish woman;"

Ezekiel 27:7: "Fine linen with brodered work from Egypt was that which thou spreadest forth to be thy sail; blue and purple from the isles of Elishah was that which covered thee."

Ezekiel 27:16: "Syria was thy merchant by reason of the multitude of the wares of thy making: they occupied in thy fairs with emeralds, purple, and brodered work, and fine linen, and coral, and agate."

Ezekiel 27:24: "These were thy merchants in all sorts of things, in blue clothes, and brodered work, and in chests of rich apparel, bound with cords, and made of cedar, among thy merchandise."

Ezekiel 33:26: "Ye stand upon your sword, ye work abomination, and ye defile every one his neighbour's wife: and shall ye possess the land?"

Daniel 11:23: "And after the league made with him he shall work deceitfully: for he shall come up, and shall become strong with a small people."

Hosea 6:8: "Gilead is a city of them that work iniquity, and is polluted with blood."

Hosea 13:2: "And now they sin more and more, and have made them molten images of their silver, and idols according to their own understanding, all of it the work of the craftsmen: they say of them, Let the men that sacrifice kiss the calves."

Hosea 14:3: "Asshur shall not save us; we will not ride upon horses: neither will we say any more to the work of our hands, Ye are our gods: for in thee the fatherless findeth mercy."

Micah 2:1: "Woe to them that devise iniquity, and work evil upon their beds! when the morning is light, they practise it, because it is in the power of their hand."

Micah 5:13: "Thy graven images also will I cut off, and thy standing images out of the midst of thee; and thou shalt no more worship the work of thine hands."

Habakkuk 1:5: "Behold ye among the heathen, and regard, and wonder marvelously: for I will work a work in your days which ye will not believe, though it be told you."

Habakkuk 2:18: "What profiteth the graven image that the maker thereof hath graven it; the molten image, and a teacher of lies, that the maker of his work trusteth therein, to make dumb idols?"

Habakkuk 3:2: "O LORD, I have heard thy speech, and was afraid: O LORD, revive thy work in the

midst of the years, in the midst of the years make known; in wrath remember mercy."

Zephaniah 2:14: "And flocks shall lie down in the midst of her, all the beasts of the nations: both the cormorant and the bittern shall lodge in the upper lintels of it; their voice shall sing in the windows; desolation shall be in the thresholds; for he shall uncover the cedar work."

Haggai 1:14: "And the LORD stirred up the spirit of Zerubbabel the son of Shealtiel, governor of Judah, and the spirit of Joshua the son of Josedech, the high priest, and the spirit of all the remnant of the people; and they came and did work in the house of the LORD of hosts, their God,"

Haggai 2:4: "Yet now be strong, O Zerubbabel, saith the LORD; and be strong, O Joshua, son of Josedech, the high priest; and be strong, all ye people of the land, saith the LORD, and work: for I am with you, saith the LORD of hosts:"

Haggai 2:14: "Then answered Haggai, and said, So is this people, and so is this nation before me, saith the LORD; and so is every work of their hands; and that which they offer there is unclean."

Malachi 3:15: "And now we call the proud happy; yea, they that work wickedness are set up; yea, they that tempt God are even delivered."

Matthew 7:23: "And then will I profess unto them, I never knew you: depart from me, ye that work iniquity."

Matthew 21:28: "But what think ye? A certain man had two sons; and he came to the first, and said, Son, go work to day in my vineyard."

Matthew 26:10: "When Jesus understood it, he said unto them, Why trouble ye the woman? for she hath wrought a good work upon me."

Mark 6:5: "And he could there do no mighty work, save that he laid his hands upon a few sick folk, and healed them."

Mark 13:34: "For the Son of Man is as a man taking a far journey, who left his house, and gave authority to his servants, and to every man his work, and commanded the porter to watch."

Mark 14:6: "And Jesus said, Let her alone; why trouble ye her? she hath wrought a good work on me."

Luke 13:14: "And the ruler of the synagogue answered with indignation, because that Jesus had healed on the sabbath day, and said unto the people, There are six days in which men ought to work: in them therefore come and be healed, and not on the sabbath day."

John 4:34: "Jesus saith unto them, My meat is to do the will of him that sent me, and to finish his work."

John 5:17: "But Jesus answered them, My Father worketh hitherto, and I work."

John 6:28: "Then said they unto him, What shall we do, that we might work the works of God?"

John 6:29: "Jesus answered and said unto them, This is the work of God, that ye believe on him whom he hath sent."

John 6:30: "They said therefore unto him, What sign shewest thou then, that we may see, and believe thee? what dost thou work?"

John 7:21: "Jesus answered and said unto them, I have done one work, and ye all marvel."

John 9:4: "I must work the works of him that sent me, while it is day: the night cometh, when no man can work."

John 10:33: "The Jews answered him, saying, For a good work we stone thee not; but for blasphemy; and because that thou, being a man, makest thyself God."

John 17:4: "I have glorified thee on the earth: I have finished the work which thou gavest me to do."

Acts 5:38: "And now I say unto you, Refrain from these men, and let them alone: for if this counsel or this work be of men, it will come to nought:"

Acts 13:2: "As they ministered to the Lord, and fasted, the Holy Ghost said, Separate me Barnabas and Saul for the work whereunto I have called them."

Acts 13:41: "Behold, ye despisers, and wonder, and perish: for I work a work in your days, a work which ye shall in no wise believe, though a man declare it unto you."

Acts 14:26: "And thence sailed to Antioch, from whence they had been recommended to the grace

of God for the work which they fulfilled."

Acts 15:38: "But Paul thought not good to take him with them, who departed from them from Pamphylia, and went not with them to the work."

Acts 27:16: "And running under a certain island which is called Clauda, we had much work to come by the boat:"

Romans 2:15: "Which shew the work of the law written in their hearts, their conscience also bearing witness, and their thoughts the mean while accusing or else excusing one another;)"

Romans 7:5: "For when we were in the flesh, the motions of sins, which were by the law, did work in our members to bring forth fruit unto death."

Romans 8:28: "And we know that all things work together for good to them that love God, to them who are the called according to his purpose."

Romans 9:28: "For he will finish the work, and cut it short in righteousness: because a short work will the Lord make upon the earth."

Romans 11:6: "And if by grace, then is it no more of works: otherwise grace is no more grace. But if it be of works, then it is no more grace: otherwise work is no more work."

Romans 14:20: "For meat destroy not the work of God. All things indeed are pure; but it is evil for that man who eateth with offence."

1 Corinthians 3:13: "Every man's work shall be made manifest: for the day shall declare it, because it shall be revealed by fire; and the fire shall try every man's work of what sort it is."

1 Corinthians 3:14: "If any man's work abide which he hath built thereupon, he shall receive a reward."

1 Corinthians 3:15: "If any man's work shall be burned, he shall suffer loss: but he himself shall be saved; yet so as by fire."

1 Corinthians 9:1: "Am I not an apostle? am I not free? have I not seen Jesus Christ our Lord? are not ye my work in the Lord?"

1 Corinthians 15:58: "Therefore, my beloved brethren, be ye stedfast, unmoveable, always abounding in the work of the Lord, forasmuch as ye know that your labour is not in vain in the Lord."

1 Corinthians 16:10: "Now if Timotheus come, see that he may be with you without fear: for he worketh the work of the Lord, as I also do."

2 Corinthians 9:8: "And God is able to make all grace abound toward you; that ye, always having all sufficiency in all things, may abound to every good work:"

Galatians 6:4: "But let every man prove his own work, and then shall he have rejoicing in himself alone, and not in another."

Ephesians 4:12: "For the perfecting of the saints, for the work of the ministry, for the edifying of the body of Christ:"

Ephesians 4:19: "Who being past feeling have given themselves over unto lasciviousness, to work all uncleanness with greediness."

Philippians 1:6: "Being confident of this very thing, that he which hath begun a good work in you will perform it until the day of Jesus Christ:"

Philippians 2:12: "Wherefore, my beloved, as ye have always obeyed, not as in my presence only, but now much more in my absence, work out your own salvation with fear and trembling."

Philippians 2:30: "Because for the work of Christ he was nigh unto death, not regarding his life, to supply your lack of service toward me."

Colossians 1:10: "That ye might walk worthy of the Lord unto all pleasing, being fruitful in every good work, and increasing in the knowledge of God;"

1 Thessalonians 1:3: "Remembering without ceasing your work of faith, and labour of love, and patience of hope in our Lord Jesus Christ, in the sight of God and our Father;"

1 Thessalonians 4:11: "And that ye study to be quiet, and to do your own business, and to work with your own hands, as we commanded you;"

1 Thessalonians 5:13: "And to esteem them very highly in love for their work's sake. And be at peace among yourselves."

2 Thessalonians 1:11: "Wherefore also we pray always for you, that our God would count you worthy of this calling, and fulfil all the good pleasure of his goodness, and the work of faith with power:"

2 Thessalonians 2:7: "For the mystery of iniquity doth already work: only he who now letteth will let, until he be taken out of the way."

2 Thessalonians 2:17: "Comfort your hearts, and stablish you in every good word and work."

2 Thessalonians 3:10: "For even when we were with you, this we commanded you, that if any would not work, neither should he eat."

2 Thessalonians 3:12: "Now them that are such we command and exhort by our Lord Jesus Christ, that with quietness they work, and eat their own bread."

1 Timothy 3:1: "This is a true saying, If a man desire the office of a bishop, he desireth a good work."

1 Timothy 5:10: "Well reported of for good works; if she have brought up children, if she have lodged strangers, if she have washed the saints' feet, if she have relieved the afflicted, if she have diligently followed every good work."

2 Timothy 2:21: "If a man therefore purge himself from these, he shall be a vessel unto honour, sanctified, and meet for the master's use, and prepared unto every good work."

2 Timothy 4:5: "But watch thou in all things, endure afflictions, do the work of an evangelist, make full proof of thy ministry."

2 Timothy 4:18: "And the Lord shall deliver me from every evil work, and will preserve me unto his heavenly kingdom: to whom be glory for ever and ever. Amen."

Titus 1:16: "They profess that they know God; but in works they deny him, being abominable, and disobedient, and unto every good work reprobate."

Titus 3:1: "Put them in mind to be subject to principalities and powers, to obey magistrates, to be ready to every good work,"

Hebrews 6:10: "For God is not unrighteous to forget your work and labour of love, which ye have shewed toward his name, in that ye have ministered to the saints, and do minister."

Hebrews 13:21: "Make you perfect in every good work to do his will, working in you that which is wellpleasing in his sight, through Jesus Christ; to whom be glory for ever and ever. Amen."

James 1:4: "But let patience have her perfect work, that ye may be perfect and entire, wanting nothing."

James 1:25: "But whoso looketh into the perfect law of liberty, and continueth therein, he being not a forgetful hearer, but a doer of the work, this man shall be blessed in his deed."

James 3:16: "For where envying and strife is, there is confusion and every evil work."

1 Peter 1:17: "And if ye call on the Father, who without respect of persons judgeth according to every man's work, pass the time of your sojourning here in fear:"

Revelation 22:12: "And, behold, I come quickly; and my reward is with me, to give every man according as his work shall be."

## **WORKER**

Occurrences: 1

1 Kings 7:14: "He was a widow's son of the tribe of Naphtali, and his father was a man of Tyre, a worker in brass: and he was filled with wisdom, and understanding, and cunning to work all works in brass. And he came to king Solomon, and wrought all his work."

## **WORKERS**

Occurrences: 27



2 Kings 23:24: "Moreover the workers with familiar spirits, and the wizards, and the images, and the idols, and all the abominations that were spied in the land of Judah and in Jerusalem, did Josiah put away, that he might perform the words of the law which were written in the book that Hilkiah the priest found in the house of the LORD."

1 Chronicles 22:15: "Moreover there are workmen with thee in abundance, hewers and workers of stone and timber, and all manner of cunning men for every manner of work."

Job 31:3: "Is not destruction to the wicked? and a strange punishment to the workers of iniquity?"

Job 34:8: "Which goeth in company with the workers of iniquity, and walketh with wicked men."

Job 34:22: "There is no darkness, nor shadow of death, where the workers of iniquity may hide themselves."

Psalms 5:5: "The foolish shall not stand in thy sight: thou hatest all workers of iniquity."

Psalms 6:8: "Depart from me, all ye workers of iniquity; for the LORD hath heard the voice of my weeping."

Psalms 14:4: "Have all the workers of iniquity no knowledge? who eat up my people as they eat bread, and call not upon the LORD."

Psalms 28:3: "Draw me not away with the wicked, and with the workers of iniquity, which speak peace to their neighbours, but mischief is in their hearts."

Psalms 36:12: "There are the workers of iniquity fallen: they are cast down, and shall not be able to rise."

Psalms 37:1: "Fret not thyself because of evildoers, neither be thou envious against the workers of iniquity."

Psalms 53:4: "Have the workers of iniquity no knowledge? who eat up my people as they eat bread: they have not called upon God."

Psalms 59:2: "Deliver me from the workers of iniquity, and save me from bloody men."

Psalms 64:2: "Hide me from the secret counsel of the wicked; from the insurrection of the workers of iniquity:"

Psalms 92:7: "When the wicked spring as the grass, and when all the workers of iniquity do flourish; it is that they shall be destroyed for ever:"

Psalms 92:9: "For, lo, thine enemies, O LORD, for, lo, thine enemies shall perish; all the workers of iniquity shall be scattered."

Psalms 94:4: "How long shall they utter and speak hard things? and all the workers of iniquity boast themselves?"

Psalms 94:16: "Who will rise up for me against the evildoers? or who will stand up for me against the workers of iniquity?"

Psalms 125:5: "As for such as turn aside unto their crooked ways, the LORD shall lead them forth with the workers of iniquity: but peace shall be upon Israel."

Psalms 141:9: "Keep me from the snares which they have laid for me, and the gins of the workers of iniquity."

Proverbs 10:29: "The way of the LORD is strength to the upright: but destruction shall be to the workers of iniquity."

Proverbs 21:15: "It is joy to the just to do judgment: but destruction shall be to the workers of iniquity."

Luke 13:27: "But he shall say, I tell you, I know you not whence ye are; depart from me, all ye workers of iniquity."

1 Corinthians 12:29: "Are all apostles? are all prophets? are all teachers? are all workers of miracles?"

2 Corinthians 6:1: "We then, as workers together with him, beseech you also that ye receive not the grace of God in vain."

2 Corinthians 11:13: "For such are false apostles, deceitful workers, transforming themselves into the apostles of Christ."

Philippians 3:2: "Beware of dogs, beware of evil workers, beware of the concision."

## WORKETH

Occurrences: 35

Job 33:29: "Lo, all these things worketh God oftentimes with man,"

Psalms 15:2: "He that walketh uprightly, and worketh righteousness, and speaketh the truth in his heart."

Psalms 101:7: "He that worketh deceit shall not dwell within my house: he that telleth lies shall not tarry in my sight."

Proverbs 11:18: "The wicked worketh a deceitful work: but to him that soweth righteousness shall be a sure reward."

Proverbs 26:28: "A lying tongue hateth those that are afflicted by it; and a flattering mouth worketh ruin."

Proverbs 31:13: "She seeketh wool, and flax, and worketh willingly with her hands."

Ecclesiastes 3:9: "What profit hath he that worketh in that wherein he laboureth?"

Isaiah 44:12: "The smith with the tongs both worketh in the coals, and fashioneth it with hammers, and worketh it with the strength of his arms: yea, he is hungry, and his strength faileth: he drinketh no water, and is faint."

Isaiah 64:5: "Thou meetest him that rejoiceth and worketh righteousness, those that remember thee in thy ways: behold, thou art wroth; for we have sinned: in those is continuance, and we shall be saved."

Daniel 6:27: "He delivereth and rescueth, and he worketh signs and wonders in heaven and in earth, who hath delivered Daniel from the power of the lions."

John 5:17: "But Jesus answered them, My Father worketh hitherto, and I work."

Acts 10:35: "But in every nation he that feareth him, and worketh righteousness, is accepted with him."

Romans 2:10: "But glory, honour, and peace, to every man that worketh good, to the Jew first, and also to the Gentile:"

Romans 4:4: "Now to him that worketh is the reward not reckoned of grace, but of debt."

Romans 4:5: "But to him that worketh not, but believeth on him that justifieth the ungodly, his faith is counted for righteousness."

Romans 4:15: "Because the law worketh wrath: for where no law is, there is no transgression."

Romans 5:3: "And not only so, but we glory in tribulations also: knowing that tribulation worketh patience;"

Romans 13:10: "Love worketh no ill to his neighbour: therefore love is the fulfilling of the law."

1 Corinthians 12:6: "And there are diversities of operations, but it is the same God which worketh all in all."

1 Corinthians 12:11: "But all these worketh that one and the selfsame Spirit, dividing to every man severally as he will."

1 Corinthians 16:10: "Now if Timotheus come, see that he may be with you without fear: for he worketh the work of the Lord, as I also do."

2 Corinthians 4:12: "So then death worketh in us, but life in you."

2 Corinthians 4:17: "For our light affliction, which is but for a moment, worketh for us a far more exceeding and eternal weight of glory;"

2 Corinthians 7:10: "For godly sorrow worketh repentance to salvation not to be repented of: but the sorrow of the world worketh death."

Galatians 3:5: "He therefore that ministereth to you the Spirit, and worketh miracles among you, doeth he it by the works of the law, or by the hearing of faith?"

Galatians 5:6: "For in Jesus Christ neither circumcision availeth any thing, nor uncircumcision; but faith which worketh by love."

Ephesians 1:11: "In whom also we have obtained an inheritance, being predestinated according to the purpose of him who worketh all things after the counsel of his own will:"  
Ephesians 2:2: "Wherein in time past ye walked according to the course of this world, according to the prince of the power of the air, the spirit that now worketh in the children of disobedience:"  
Ephesians 3:20: "Now unto him that is able to do exceeding abundantly above all that we ask or think, according to the power that worketh in us,"  
Philippians 2:13: "For it is God which worketh in you both to will and to do of his good pleasure."  
Colossians 1:29: "Whereunto I also labour, striving according to his working, which worketh in me mightily."  
1 Thessalonians 2:13: "For this cause also thank we God without ceasing, because, when ye received the word of God which ye heard of us, ye received it not as the word of men, but as it is in truth, the word of God, which effectually worketh also in you that believe."  
James 1:3: "Knowing this, that the trying of your faith worketh patience."  
James 1:20: "For the wrath of man worketh not the righteousness of God."  
Revelation 21:27: "And there shall in no wise enter into it any thing that defileth, neither whatsoever worketh abomination, or maketh a lie: but they which are written in the Lamb's book of life."

## **WORKFELLOW**

Occurrences: 1

Romans 16:21: "Timotheus my workfellow, and Lucius, and Jason, and Sosipater, my kinsmen, salute you."

## **WORKING**

Occurrences: 20

Psalms 52:2: "The tongue deviseth mischiefs; like a sharp razor, working deceitfully."

Psalms 74:12: "For God is my King of old, working salvation in the midst of the earth."

Isaiah 28:29: "This also cometh forth from the LORD of hosts, which is wonderful in counsel, and excellent in working."

Ezekiel 46:1: "Thus saith the Lord GOD; The gate of the inner court that looketh toward the east shall be shut the six working days; but on the sabbath it shall be opened, and in the day of the new moon it shall be opened."

Mark 16:20: "And they went forth, and preached every where, the Lord working with them, and confirming the word with signs following. Amen."

Romans 1:27: "And likewise also the men, leaving the natural use of the woman, burned in their lust one toward another; men with men working that which is unseemly, and receiving in themselves that recompence of their error which was meet."

Romans 7:13: "Was then that which is good made death unto me? God forbid. But sin, that it might appear sin, working death in me by that which is good; that sin by the commandment might become exceeding sinful."

1 Corinthians 4:12: "And labour, working with our own hands: being reviled, we bless; being persecuted, we suffer it:"

1 Corinthians 9:6: "Or I only and Barnabas, have not we power to forbear working?"

1 Corinthians 12:10: "To another the working of miracles; to another prophecy; to another discerning of spirits; to another divers kinds of tongues; to another the interpretation of tongues:"

Ephesians 1:19: "And what is the exceeding greatness of his power to us-ward who believe, according to the working of his mighty power,"

Ephesians 3:7: "Whereof I was made a minister, according to the gift of the grace of God given unto me by the effectual working of his power."

Ephesians 4:16: "From whom the whole body fitly joined together and compacted by that which every joint supplieth, according to the effectual working in the measure of every part, maketh increase of the body unto the edifying of itself in love."

Ephesians 4:28: "Let him that stole steal no more: but rather let him labour, working with his hands the thing which is good, that he may have to give to him that needeth."

Philippians 3:21: "Who shall change our vile body, that it may be fashioned like unto his glorious body, according to the working whereby he is able even to subdue all things unto himself."

Colossians 1:29: "Whereunto I also labour, striving according to his working, which worketh in me mightily."

2 Thessalonians 2:9: "Even him, whose coming is after the working of Satan with all power and signs and lying wonders,"

2 Thessalonians 3:11: "For we hear that there are some which walk among you disorderly, working not at all, but are busybodies."

Hebrews 13:21: "Make you perfect in every good work to do his will, working in you that which is wellpleasing in his sight, through Jesus Christ; to whom be glory for ever and ever. Amen."

Revelation 16:14: "For they are the spirits of devils, working miracles, which go forth unto the kings of the earth and of the whole world, to gather them to the battle of that great day of God Almighty."

## **WORKMAN**

Occurrences: 10

Exodus 35:35: "Them hath he filled with wisdom of heart, to work all manner of work, of the engraver, and of the cunning workman, and of the embroiderer, in blue, and in purple, in scarlet, and in fine linen, and of the weaver, even of them that do any work, and of those that devise cunning work."

Exodus 38:23: "And with him was Aholiab, son of Ahisamach, of the tribe of Dan, an engraver, and a cunning workman, and an embroiderer in blue, and in purple, and in scarlet, and fine linen."

Song of Solomon 7:1: "How beautiful are thy feet with shoes, O prince's daughter! the joints of thy thighs are like jewels, the work of the hands of a cunning workman."

Isaiah 40:19: "The workman melteth a graven image, and the goldsmith spreadeth it over with gold, and casteth silver chains."

Isaiah 40:20: "He that is so impoverished that he hath no oblation chooseth a tree that will not rot; he seeketh unto him a cunning workman to prepare a graven image, that shall not be moved."

Jeremiah 10:3: "For the customs of the people are vain: for one cutteth a tree out of the forest, the work of the hands of the workman, with the axe."

Jeremiah 10:9: "Silver spread into plates is brought from Tarshish, and gold from Uphaz, the work of the workman, and of the hands of the founder: blue and purple is their clothing: they are all the work of cunning men."

Hosea 8:6: "For from Israel was it also: the workman made it; therefore it is not God: but the calf of Samaria shall be broken in pieces."

Matthew 10:10: "Nor scrip for your journey, neither two coats, neither shoes, nor yet staves: for the workman is worthy of his meat."

2 Timothy 2:15: "Study to shew thyself approved unto God, a workman that needeth not to be ashamed, rightly dividing the word of truth."

## **WORKMANSHIP**

Occurrences: 7

Exodus 31:3: "And I have filled him with the spirit of God, in wisdom, and in understanding, and in knowledge, and in all manner of workmanship,"

Exodus 31:5: "And in cutting of stones, to set them, and in carving of timber, to work in all manner of workmanship."

Exodus 35:31: "And he hath filled him with the spirit of God, in wisdom, in understanding, and in knowledge, and in all manner of workmanship;"

2 Kings 16:10: "And king Ahaz went to Damascus to meet Tiglathpileser king of Assyria, and saw an altar that was at Damascus: and king Ahaz sent to Urijah the priest the fashion of the altar, and the pattern of it, according to all the workmanship thereof."

1 Chronicles 28:21: "And, behold, the courses of the priests and the Levites, even they shall be with thee for all the service of the house of God: and there shall be with thee for all manner of workmanship every willing skilful man, for any manner of service: also the princes and all the people will be wholly at thy commandment."

Ezekiel 28:13: "Thou hast been in Eden the garden of God; every precious stone was thy covering, the sardius, topaz, and the diamond, the beryl, the onyx, and the jasper, the sapphire, the emerald, and the carbuncle, and gold: the workmanship of thy tabrets and of thy pipes was prepared in thee in the day that thou wast created."

Ephesians 2:10: "For we are his workmanship, created in Christ Jesus unto good works, which God hath before ordained that we should walk in them."

## WORKMEN

Occurrences: 11

Judges 5:26: "She put her hand to the nail, and her right hand to the workmen's hammer; and with the hammer she smote Sisera, she smote off his head, when she had pierced and stricken through his temples."

2 Kings 12:14: "But they gave that to the workmen, and repaired therewith the house of the LORD."

2 Kings 12:15: "Moreover they reckoned not with the men, into whose hand they delivered the money to be bestowed on workmen: for they dealt faithfully."

1 Chronicles 22:15: "Moreover there are workmen with thee in abundance, hewers and workers of stone and timber, and all manner of cunning men for every manner of work."

1 Chronicles 25:1: "Moreover David and the captains of the host separated to the service of the sons of Asaph, and of Heman, and of Jeduthun, who should prophesy with harps, with psalteries, and with cymbals: and the number of the workmen according to their service was:"

2 Chronicles 24:13: "So the workmen wrought, and the work was perfected by them, and they set the house of God in his state, and strengthened it."

2 Chronicles 34:10: "And they put it in the hand of the workmen that had the oversight of the house of the LORD, and they gave it to the workmen that wrought in the house of the LORD, to repair and amend the house:"

2 Chronicles 34:17: "And they have gathered together the money that was found in the house of the LORD, and have delivered it into the hand of the overseers, and to the hand of the workmen."

Ezra 3:9: "Then stood Jeshua with his sons and his brethren, Kadmiel and his sons, the sons of Judah, together, to set forward the workmen in the house of God: the sons of Henadad, with their sons and their brethren the Levites."

Isaiah 44:11: "Behold, all his fellows shall be ashamed: and the workmen, they are of men: let them all be gathered together, let them stand up; yet they shall fear, and they shall be ashamed together."

Acts 19:25: "Whom he called together with the workmen of like occupation, and said, Sirs, ye know that by this craft we have our wealth."

## WORKS

Occurrences: 224

Exodus 5:4: "And the king of Egypt said unto them, Wherefore do ye, Moses and Aaron, let the people from their works? get you unto your burdens."

Exodus 5:13: "And the taskmasters hastened them, saying, Fulfil your works, your daily tasks, as when there was straw."

Exodus 23:24: "Thou shalt not bow down to their gods, nor serve them, nor do after their works: but thou shalt utterly overthrow them, and quite break down their images."

Exodus 31:4: "To devise cunning works, to work in gold, and in silver, and in brass,"

Exodus 35:32: "And to devise curious works, to work in gold, and in silver, and in brass,"

Numbers 16:28: "And Moses said, Hereby ye shall know that the LORD hath sent me to do all these works; for I have not done them of mine own mind."

Deuteronomy 2:7: "For the LORD thy God hath blessed thee in all the works of thy hand: he knoweth thy walking through this great wilderness: these forty years the LORD thy God hath been with thee; thou hast lacked nothing."

Deuteronomy 3:24: "O Lord GOD, thou hast begun to shew thy servant thy greatness, and thy mighty hand: for what God is there in heaven or in earth, that can do according to thy works, and according to thy might?"

Deuteronomy 15:10: "Thou shalt surely give him, and thine heart shall not be grieved when thou givest unto him: because that for this thing the LORD thy God shall bless thee in all thy works, and in all that thou puttest thine hand unto."

Deuteronomy 16:15: "Seven days shalt thou keep a solemn feast unto the LORD thy God in the place which the LORD shall choose: because the LORD thy God shall bless thee in all thine increase, and in all the works of thine hands, therefore thou shalt surely rejoice."

Joshua 24:31: "And Israel served the LORD all the days of Joshua, and all the days of the elders that overlived Joshua, and which had known all the works of the LORD, that he had done for Israel."

Judges 2:7: "And the people served the LORD all the days of Joshua, and all the days of the elders that outlived Joshua, who had seen all the great works of the LORD, that he did for Israel."

Judges 2:10: "And also all that generation were gathered unto their fathers: and there arose another generation after them, which knew not the LORD, nor yet the works which he had done for Israel."

1 Samuel 8:8: "According to all the works which they have done since the day that I brought them up out of Egypt even unto this day, wherewith they have forsaken me, and served other gods, so do they also unto thee."

1 Samuel 19:4: "And Jonathan spake good of David unto Saul his father, and said unto him, Let not the king sin against his servant, against David; because he hath not sinned against thee, and because his works have been to thee-ward very good:"

1 Kings 7:14: "He was a widow's son of the tribe of Naphtali, and his father was a man of Tyre, a worker in brass: and he was filled with wisdom, and understanding, and cunning to work all works in brass. And he came to king Solomon, and wrought all his work."

1 Kings 13:11: "Now there dwelt an old prophet in Bethel; and his sons came and told him all the works that the man of God had done that day in Bethel: the words which he had spoken unto the king, them they told also to their father."

2 Kings 22:17: "Because they have forsaken me, and have burned incense unto other gods, that they might provoke me to anger with all the works of their hands; therefore my wrath shall be kindled against this place, and shall not be quenched."

1 Chronicles 16:9: "Sing unto him, sing psalms unto him, talk ye of all his wondrous works."

1 Chronicles 16:12: "Remember his marvellous works that he hath done, his wonders, and the judgments of his mouth;"

1 Chronicles 16:24: "Declare his glory among the heathen; his marvellous works among all nations."

1 Chronicles 28:19: "All this, said David, the LORD made me understand in writing by his hand

upon me, even all the works of this pattern."

2 Chronicles 20:37: "Then Eliezer the son of Dodavah of Mareshah prophesied against Jehoshaphat, saying, Because thou hast joined thyself with Ahaziah, the LORD hath broken thy works. And the ships were broken, that they were not able to go to Tarshish."

2 Chronicles 32:30: "This same Hezekiah also stopped the upper watercourse of Gihon, and brought it straight down to the west side of the city of David. And Hezekiah prospered in all his works."

2 Chronicles 34:25: "Because they have forsaken me, and have burned incense unto other gods, that they might provoke me to anger with all the works of their hands; therefore my wrath shall be poured out upon this place, and shall not be quenched."

Nehemiah 6:14: "My God, think thou upon Tobiah and Sanballat according to these their works, and on the prophetess Noadiah, and the rest of the prophets, that would have put me in fear."

Nehemiah 9:35: "For they have not served thee in their kingdom, and in thy great goodness that thou gavest them, and in the large and fat land which thou gavest before them, neither turned they from their wicked works."

Job 34:25: "Therefore he knoweth their works, and he overturneth them in the night, so that they are destroyed."

Job 37:14: "Hearken unto this, O Job: stand still, and consider the wondrous works of God."

Job 37:16: "Dost thou know the balancings of the clouds, the wondrous works of him which is perfect in knowledge?"

Psalms 8:6: "Thou madest him to have dominion over the works of thy hands; thou hast put all things under his feet:"

Psalms 9:1: "I will praise thee, O LORD, with my whole heart; I will shew forth all thy marvellous works."

Psalms 14:1: "The fool hath said in his heart, There is no God. They are corrupt, they have done abominable works, there is none that doeth good."

Psalms 17:4: "Concerning the works of men, by the word of thy lips I have kept me from the paths of the destroyer."

Psalms 26:7: "That I may publish with the voice of thanksgiving, and tell of all thy wondrous works."

Psalms 28:5: "Because they regard not the works of the LORD, nor the operation of his hands, he shall destroy them, and not build them up."

Psalms 33:4: "For the word of the LORD is right; and all his works are done in truth."

Psalms 33:15: "He fashioneth their hearts alike; he considereth all their works."

Psalms 40:5: "Many, O LORD my God, are thy wonderful works which thou hast done, and thy thoughts which are to us-ward: they cannot be reckoned up in order unto thee: if I would declare and speak of them, they are more than can be numbered."

Psalms 46:8: "Come, behold the works of the LORD, what desolations he hath made in the earth."

Psalms 66:3: "Say unto God, How terrible art thou in thy works! through the greatness of thy power shall thine enemies submit themselves unto thee."

Psalms 66:5: "Come and see the works of God: he is terrible in his doing toward the children of men."

Psalms 71:17: "O God, thou hast taught me from my youth: and hitherto have I declared thy wondrous works."

Psalms 73:28: "But it is good for me to draw near to God: I have put my trust in the Lord GOD, that I may declare all thy works."

Psalms 75:1: "Unto thee, O God, do we give thanks, unto thee do we give thanks: for that thy name is near thy wondrous works declare."

Psalms 77:11: "I will remember the works of the LORD: surely I will remember thy wonders of old."

Psalms 78:4: "We will not hide them from their children, shewing to the generation to come the

praises of the LORD, and his strength, and his wonderful works that he hath done."  
Psalms 78:7: "That they might set their hope in God, and not forget the works of God, but keep his commandments:"  
Psalms 78:11: "And forgat his works, and his wonders that he had shewed them."  
Psalms 78:32: "For all this they sinned still, and believed not for his wondrous works."  
Psalms 86:8: "Among the gods there is none like unto thee, O Lord; neither are there any works like unto thy works."  
Psalms 92:4: "For thou, LORD, hast made me glad through thy work: I will triumph in the works of thy hands."  
Psalms 92:5: "O LORD, how great are thy works! and thy thoughts are very deep."  
Psalms 103:22: "Bless the LORD, all his works in all places of his dominion: bless the LORD, O my soul."  
Psalms 104:13: "He watereth the hills from his chambers: the earth is satisfied with the fruit of thy works."  
Psalms 104:24: "O LORD, how manifold are thy works! in wisdom hast thou made them all: the earth is full of thy riches."  
Psalms 104:31: "The glory of the LORD shall endure for ever: the LORD shall rejoice in his works."  
Psalms 105:2: "Sing unto him, sing psalms unto him: talk ye of all his wondrous works."  
Psalms 105:5: "Remember his marvellous works that he hath done; his wonders, and the judgments of his mouth;"  
Psalms 106:13: "They soon forgat his works; they waited not for his counsel:"  
Psalms 106:22: "Wondrous works in the land of Ham, and terrible things by the Red sea."  
Psalms 106:35: "But were mingled among the heathen, and learned their works."  
Psalms 106:39: "Thus were they defiled with their own works, and went a whoring with their own inventions."  
Psalms 107:8: "Oh that men would praise the LORD for his goodness, and for his wonderful works to the children of men!"  
Psalms 107:15: "Oh that men would praise the LORD for his goodness, and for his wonderful works to the children of men!"  
Psalms 107:21: "Oh that men would praise the LORD for his goodness, and for his wonderful works to the children of men!"  
Psalms 107:22: "And let them sacrifice the sacrifices of thanksgiving, and declare his works with rejoicing."  
Psalms 107:24: "These see the works of the LORD, and his wonders in the deep."  
Psalms 107:31: "Oh that men would praise the LORD for his goodness, and for his wonderful works to the children of men!"  
Psalms 111:2: "The works of the LORD are great, sought out of all them that have pleasure therein."  
Psalms 111:4: "He hath made his wonderful works to be remembered: the LORD is gracious and full of compassion."  
Psalms 111:6: "He hath shewed his people the power of his works, that he may give them the heritage of the heathen."  
Psalms 111:7: "The works of his hands are verity and judgment; all his commandments are sure."  
Psalms 118:17: "I shall not die, but live, and declare the works of the LORD."  
Psalms 119:27: "Make me to understand the way of thy precepts: so shall I talk of thy wondrous works."  
Psalms 138:8: "The LORD will perfect that which concerneth me: thy mercy, O LORD, endureth for ever: forsake not the works of thine own hands."  
Psalms 139:14: "I will praise thee; for I am fearfully and wonderfully made: marvellous are thy



works; and that my soul knoweth right well."

Psalms 141:4: "Incline not my heart to any evil thing, to practise wicked works with men that work iniquity: and let me not eat of their dainties."

Psalms 143:5: "I remember the days of old; I meditate on all thy works; I muse on the work of thy hands."

Psalms 145:4: "One generation shall praise thy works to another, and shall declare thy mighty acts."

Psalms 145:5: "I will speak of the glorious honour of thy majesty, and of thy wondrous works."

Psalms 145:9: "The LORD is good to all: and his tender mercies are over all his works."

Psalms 145:10: "All thy works shall praise thee, O LORD; and thy saints shall bless thee."

Psalms 145:17: "The LORD is righteous in all his ways, and holy in all his works."

Proverbs 7:16: "I have decked my bed with coverings of tapestry, with carved works, with fine linen of Egypt."

Proverbs 8:22: "The LORD possessed me in the beginning of his way, before his works of old."

Proverbs 16:3: "Commit thy works unto the LORD, and thy thoughts shall be established."

Proverbs 24:12: "If thou sayest, Behold, we knew it not; doth not he that pondereth the heart consider it? and he that keepeth thy soul, doth not he know it? and shall not he render to every man according to his works?"

Proverbs 31:31: "Give her of the fruit of her hands; and let her own works praise her in the gates."

Ecclesiastes 1:14: "I have seen all the works that are done under the sun; and, behold, all is vanity and vexation of spirit."

Ecclesiastes 2:4: "I made me great works; I builded me houses; I planted me vineyards:"

Ecclesiastes 2:11: "Then I looked on all the works that my hands had wrought, and on the labour that I had laboured to do: and, behold, all was vanity and vexation of spirit, and there was no profit under the sun."

Ecclesiastes 3:22: "Wherefore I perceive that there is nothing better, than that a man should rejoice in his own works; for that is his portion: for who shall bring him to see what shall be after him?"

Ecclesiastes 9:1: "For all this I considered in my heart even to declare all this, that the righteous, and the wise, and their works, are in the hand of God: no man knoweth either love or hatred by all that is before them."

Ecclesiastes 9:7: "Go thy way, eat thy bread with joy, and drink thy wine with a merry heart; for God now accepteth thy works."

Ecclesiastes 11:5: "As thou knowest not what is the way of the spirit, nor how the bones do grow in the womb of her that is with child: even so thou knowest not the works of God who maketh all."

Isaiah 26:12: "LORD, thou wilt ordain peace for us: for thou also hast wrought all our works in us."

Isaiah 29:15: "Woe unto them that seek deep to hide their counsel from the LORD, and their works are in the dark, and they say, Who seeth us? and who knoweth us?"

Isaiah 41:29: "Behold, they are all vanity; their works are nothing: their molten images are wind and confusion."

Isaiah 57:12: "I will declare thy righteousness, and thy works; for they shall not profit thee."

Isaiah 59:6: "Their webs shall not become garments, neither shall they cover themselves with their works: their works are works of iniquity, and the act of violence is in their hands."

Isaiah 66:18: "For I know their works and their thoughts: it shall come, that I will gather all nations and tongues; and they shall come, and see my glory."

Jeremiah 1:16: "And I will utter my judgments against them touching all their wickedness, who have forsaken me, and have burned incense unto other gods, and worshipped the works of their own hands."

Jeremiah 7:13: "And now, because ye have done all these works, saith the LORD, and I spake unto you, rising up early and speaking, but ye heard not; and I called you, but ye answered not;"

Jeremiah 21:2: "Enquire, I pray thee, of the LORD for us; for Nebuchadrezzar king of Babylon maketh war against us; if so be that the LORD will deal with us according to all his wondrous

works, that he may go up from us."

Jeremiah 25:6: "And go not after other gods to serve them, and to worship them, and provoke me not to anger with the works of your hands; and I will do you no hurt."

Jeremiah 25:7: "Yet ye have not hearkened unto me, saith the LORD; that ye might provoke me to anger with the works of your hands to your own hurt."

Jeremiah 25:14: "For many nations and great kings shall serve themselves of them also: and I will recompense them according to their deeds, and according to the works of their own hands."

Jeremiah 44:8: "In that ye provoke me unto wrath with the works of your hands, burning incense unto other gods in the land of Egypt, whither ye be gone to dwell, that ye might cut yourselves off, and that ye might be a curse and a reproach among all the nations of the earth?"

Jeremiah 48:7: "For because thou hast trusted in thy works and in thy treasures, thou shalt also be taken: and Chemosh shall go forth into captivity with his priests and his princes together."

Ezekiel 6:6: "In all your dwellingplaces the cities shall be laid waste, and the high places shall be desolate; that your altars may be laid waste and made desolate, and your idols may be broken and cease, and your images may be cut down, and your works may be abolished."

Daniel 4:37: "Now I Nebuchadnezzar praise and extol and honour the King of heaven, all whose works are truth, and his ways judgment: and those that walk in pride he is able to abase."

Daniel 9:14: "Therefore hath the LORD watched upon the evil, and brought it upon us: for the LORD our God is righteous in all his works which he doeth: for we obeyed not his voice."

Amos 8:7: "The LORD hath sworn by the excellency of Jacob, Surely I will never forget any of their works."

Jonah 3:10: "And God saw their works, that they turned from their evil way; and God repented of the evil, that he had said that he would do unto them; and he did it not."

Micah 6:16: "For the statutes of Omri are kept, and all the works of the house of Ahab, and ye walk in their counsels; that I should make thee a desolation, and the inhabitants thereof an hissing: therefore ye shall bear the reproach of my people."

Matthew 5:16: "Let your light so shine before men, that they may see your good works, and glorify your Father which is in heaven."

Matthew 7:22: "Many will say to me in that day, Lord, Lord, have we not prophesied in thy name? and in thy name have cast out devils? and in thy name done many wonderful works?"

Matthew 11:2: "Now when John had heard in the prison the works of Christ, he sent two of his disciples,"

Matthew 11:20: "Then began he to upbraid the cities wherein most of his mighty works were done, because they repented not:"

Matthew 11:21: "Woe unto thee, Chorazin! woe unto thee, Bethsaida! for if the mighty works, which were done in you, had been done in Tyre and Sidon, they would have repented long ago in sackcloth and ashes."

Matthew 11:23: "And thou, Capernaum, which art exalted unto heaven, shalt be brought down to hell: for if the mighty works, which have been done in thee, had been done in Sodom, it would have remained until this day."

Matthew 13:54: "And when he was come into his own country, he taught them in their synagogue, insomuch that they were astonished, and said, Whence hath this man this wisdom, and these mighty works?"

Matthew 13:58: "And he did not many mighty works there because of their unbelief."

Matthew 14:2: "And said unto his servants, This is John the Baptist; he is risen from the dead; and therefore mighty works do shew forth themselves in him."

Matthew 16:27: "For the Son of man shall come in the glory of his Father with his angels; and then he shall reward every man according to his works."

Matthew 23:3: "All therefore whatsoever they bid you observe, that observe and do; but do not ye after their works: for they say, and do not."

Matthew 23:5: "But all their works they do for to be seen of men: they make broad their phylacteries, and enlarge the borders of their garments,"

Mark 6:2: "And when the sabbath day was come, he began to teach in the synagogue: and many hearing him were astonished, saying, From whence hath this man these things? and what wisdom is this which is given unto him, that even such mighty works are wrought by his hands?"

Mark 6:14: "And king Herod heard of him; (for his name was spread abroad:) and he said, That John the Baptist was risen from the dead, and therefore mighty works do shew forth themselves in him."

Luke 10:13: "Woe unto thee, Chorazin! woe unto thee, Bethsaida! for if the mighty works had been done in Tyre and Sidon, which have been done in you, they had a great while ago repented, sitting in sackcloth and ashes."

Luke 19:37: "And when he was come nigh, even now at the descent of the mount of Olives, the whole multitude of the disciples began to rejoice and praise God with a loud voice for all the mighty works that they had seen;"

John 5:20: "For the Father loveth the Son, and sheweth him all things that himself doeth: and he will shew him greater works than these, that ye may marvel."

John 5:36: "But I have greater witness than that of John: for the works which the Father hath given me to finish, the same works that I do, bear witness of me, that the Father hath sent me."

John 6:28: "Then said they unto him, What shall we do, that we might work the works of God?"

John 7:3: "His brethren therefore said unto him, Depart hence, and go into Judaea, that thy disciples also may see the works that thou doest."

John 7:7: "The world cannot hate you; but me it hateth, because I testify of it, that the works thereof are evil."

John 8:39: "They answered and said unto him, Abraham is our father. Jesus saith unto them, If ye were Abraham's children, ye would do the works of Abraham."

John 9:3: "Jesus answered, Neither hath this man sinned, nor his parents: but that the works of God should be made manifest in him."

John 9:4: "I must work the works of him that sent me, while it is day: the night cometh, when no man can work."

John 10:25: "Jesus answered them, I told you, and ye believed not: the works that I do in my Father's name, they bear witness of me."

John 10:32: "Jesus answered them, Many good works have I shewed you from my Father; for which of those works do ye stone me?"

John 10:37: "If I do not the works of my Father, believe me not."

John 10:38: "But if I do, though ye believe not me, believe the works: that ye may know, and believe, that the Father is in me, and I in him."

John 14:10: "Believest thou not that I am in the Father, and the Father in me? the words that I speak unto you I speak not of myself: but the Father that dwelleth in me, he doeth the works."

John 14:11: "Believe me that I am in the Father, and the Father in me: or else believe me for the very works' sake."

John 14:12: "Verily, verily, I say unto you, He that believeth on me, the works that I do shall he do also; and greater works than these shall he do; because I go unto my Father."

John 15:24: "If I had not done among them the works which none other man did, they had not had sin: but now have they both seen and hated both me and my Father."

Acts 2:11: "Cretes and Arabians, we do hear them speak in our tongues the wonderful works of God."

Acts 7:41: "And they made a calf in those days, and offered sacrifice unto the idol, and rejoiced in the works of their own hands."

Acts 9:36: "Now there was at Joppa a certain disciple named Tabitha, which by interpretation is called Dorcas: this woman was full of good works and almsdeeds which she did."

Acts 15:18: "Known unto God are all his works from the beginning of the world."

Acts 26:20: "But shewed first unto them of Damascus, and at Jerusalem, and throughout all the coasts of Judaea, and then to the Gentiles, that they should repent and turn to God, and do works meet for repentance."

Romans 3:27: "Where is boasting then? It is excluded. By what law? of works? Nay: but by the law of faith."

Romans 4:2: "For if Abraham were justified by works, he hath whereof to glory; but not before God."

Romans 4:6: "Even as David also describeth the blessedness of the man, unto whom God imputeth righteousness without works,"

Romans 9:11: "(For the children being not yet born, neither having done any good or evil, that the purpose of God according to election might stand, not of works, but of him that calleth;)"

Romans 9:32: "Wherefore? Because they sought it not by faith, but as it were by the works of the law. For they stumbled at that stumblingstone;"

Romans 11:6: "And if by grace, then is it no more of works: otherwise grace is no more grace. But if it be of works, then it is no more grace: otherwise work is no more work."

Romans 13:3: "For rulers are not a terror to good works, but to the evil. Wilt thou then not be afraid of the power? do that which is good, and thou shalt have praise of the same:"

Romans 13:12: "The night is far spent, the day is at hand: let us therefore cast off the works of darkness, and let us put on the armour of light."

2 Corinthians 11:15: "Therefore it is no great thing if his ministers also be transformed as the ministers of righteousness; whose end shall be according to their works."

Galatians 2:16: "Knowing that a man is not justified by the works of the law, but by the faith of Jesus Christ, even we have believed in Jesus Christ, that we might be justified by the faith of Christ, and not by the works of the law: for by the works of the law shall no flesh be justified."

Galatians 3:2: "This only would I learn of you, Received ye the Spirit by the works of the law, or by the hearing of faith?"

Galatians 3:5: "He therefore that ministereth to you the Spirit, and worketh miracles among you, doeth he it by the works of the law, or by the hearing of faith?"

Galatians 3:10: "For as many as are of the works of the law are under the curse: for it is written, Cursed is every one that continueth not in all things which are written in the book of the law to do them."

Galatians 5:19: "Now the works of the flesh are manifest, which are these; Adultery, fornication, uncleanness, lasciviousness,"

Ephesians 2:9: "Not of works, lest any man should boast."

Ephesians 2:10: "For we are his workmanship, created in Christ Jesus unto good works, which God hath before ordained that we should walk in them."

Ephesians 5:11: "And have no fellowship with the unfruitful works of darkness, but rather reprove them."

Colossians 1:21: "And you, that were sometime alienated and enemies in your mind by wicked works, yet now hath he reconciled"

1 Timothy 2:10: "But (which becometh women professing godliness) with good works."

1 Timothy 5:10: "Well reported of for good works; if she have brought up children, if she have lodged strangers, if she have washed the saints' feet, if she have relieved the afflicted, if she have diligently followed every good work."

1 Timothy 5:25: "Likewise also the good works of some are manifest beforehand; and they that are otherwise cannot be hid."

1 Timothy 6:18: "That they do good, that they be rich in good works, ready to distribute, willing to communicate;"

2 Timothy 1:9: "Who hath saved us, and called us with an holy calling, not according to our works,

but according to his own purpose and grace, which was given us in Christ Jesus before the world began,"

2 Timothy 3:17: "That the man of God may be perfect, throughly furnished unto all good works."

2 Timothy 4:14: "Alexander the coppersmith did me much evil: the Lord reward him according to his works:"

Titus 1:16: "They profess that they know God; but in works they deny him, being abominable, and disobedient, and unto every good work reprobate."

Titus 2:7: "In all things shewing thyself a pattern of good works: in doctrine shewing uncorruptness, gravity, sincerity,"

Titus 2:14: "Who gave himself for us, that he might redeem us from all iniquity, and purify unto himself a peculiar people, zealous of good works."

Titus 3:5: "Not by works of righteousness which we have done, but according to his mercy he saved us, by the washing of regeneration, and renewing of the Holy Ghost;"

Titus 3:8: "This is a faithful saying, and these things I will that thou affirm constantly, that they which have believed in God might be careful to maintain good works. These things are good and profitable unto men."

Titus 3:14: "And let our's also learn to maintain good works for necessary uses, that they be not unfruitful."

Hebrews 1:10: "And, Thou, Lord, in the beginning hast laid the foundation of the earth; and the heavens are the works of thine hands:"

Hebrews 2:7: "Thou madest him a little lower than the angels; thou crownedst him with glory and honour, and didst set him over the works of thy hands:"

Hebrews 3:9: "When your fathers tempted me, proved me, and saw my works forty years."

Hebrews 4:3: "For we which have believed do enter into rest, as he said, As I have sworn in my wrath, if they shall enter into my rest: although the works were finished from the foundation of the world."

Hebrews 4:4: "For he spake in a certain place of the seventh day on this wise, And God did rest the seventh day from all his works."

Hebrews 4:10: "For he that is entered into his rest, he also hath ceased from his own works, as God did from his."

Hebrews 6:1: "Therefore leaving the principles of the doctrine of Christ, let us go on unto perfection; not laying again the foundation of repentance from dead works, and of faith toward God,"

Hebrews 9:14: "How much more shall the blood of Christ, who through the eternal Spirit offered himself without spot to God, purge your conscience from dead works to serve the living God?"

Hebrews 10:24: "And let us consider one another to provoke unto love and to good works:"

James 2:14: "What doth it profit, my brethren, though a man say he hath faith, and have not works? can faith save him?"

James 2:17: "Even so faith, if it hath not works, is dead, being alone."

James 2:18: "Yea, a man may say, Thou hast faith, and I have works: shew me thy faith without thy works, and I will shew thee my faith by my works."

James 2:20: "But wilt thou know, O vain man, that faith without works is dead?"

James 2:21: "Was not Abraham our father justified by works, when he had offered Isaac his son upon the altar?"

James 2:22: "Seest thou how faith wrought with his works, and by works was faith made perfect?"

James 2:24: "Ye see then how that by works a man is justified, and not by faith only."

James 2:25: "Likewise also was not Rahab the harlot justified by works, when she had received the messengers, and had sent them out another way?"

James 2:26: "For as the body without the spirit is dead, so faith without works is dead also."

James 3:13: "Who is a wise man and endued with knowledge among you? let him shew out of a

good conversation his works with meekness of wisdom."

1 Peter 2:12: "Having your conversation honest among the Gentiles: that, whereas they speak against you as evildoers, they may by your good works, which they shall behold, glorify God in the day of visitation."

2 Peter 3:10: "But the day of the Lord will come as a thief in the night; in the which the heavens shall pass away with a great noise, and the elements shall melt with fervent heat, the earth also and the works that are therein shall be burned up."

1 John 3:8: "He that committeth sin is of the devil; for the devil sinneth from the beginning. For this purpose the Son of God was manifested, that he might destroy the works of the devil."

1 John 3:12: "Not as Cain, who was of that wicked one, and slew his brother. And wherefore slew he him? Because his own works were evil, and his brother's righteous."

Revelation 2:2: "I know thy works, and thy labour, and thy patience, and how thou canst not bear them which are evil: and thou hast tried them which say they are apostles, and are not, and hast found them liars:"

Revelation 2:5: "Remember therefore from whence thou art fallen, and repent, and do the first works; or else I will come unto thee quickly, and will remove thy candlestick out of his place, except thou repent."

Revelation 2:9: "I know thy works, and tribulation, and poverty, (but thou art rich) and I know the blasphemy of them which say they are Jews, and are not, but are the synagogue of Satan."

Revelation 2:13: "I know thy works, and where thou dwellest, even where Satan's seat is: and thou holdest fast my name, and hast not denied my faith, even in those days wherein Antipas was my faithful martyr, who was slain among you, where Satan dwelleth."

Revelation 2:19: "I know thy works, and charity, and service, and faith, and thy patience, and thy works; and the last to be more than the first."

Revelation 2:23: "And I will kill her children with death; and all the churches shall know that I am he which searcheth the reins and hearts: and I will give unto every one of you according to your works."

Revelation 2:26: "And he that overcometh, and keepeth my works unto the end, to him will I give power over the nations:"

Revelation 3:1: "And unto the angel of the church in Sardis write; These things saith he that hath the seven Spirits of God, and the seven stars; I know thy works, that thou hast a name that thou livest, and art dead."

Revelation 3:2: "Be watchful, and strengthen the things which remain, that are ready to die: for I have not found thy works perfect before God."

Revelation 3:8: "I know thy works: behold, I have set before thee an open door, and no man can shut it: for thou hast a little strength, and hast kept my word, and hast not denied my name."

Revelation 3:15: "I know thy works, that thou art neither cold nor hot: I would thou wert cold or hot."

Revelation 9:20: "And the rest of the men which were not killed by these plagues yet repented not of the works of their hands, that they should not worship devils, and idols of gold, and silver, and brass, and stone, and of wood: which neither can see, nor hear, nor walk:"

Revelation 14:13: "And I heard a voice from heaven saying unto me, Write, Blessed are the dead which die in the Lord from henceforth: Yea, saith the Spirit, that they may rest from their labours; and their works do follow them."

Revelation 15:3: "And they sing the song of Moses the servant of God, and the song of the Lamb, saying, Great and marvellous are thy works, Lord God Almighty; just and true are thy ways, thou King of saints."

Revelation 18:6: "Reward her even as she rewarded you, and double unto her double according to her works: in the cup which she hath filled fill to her double."

Revelation 20:12: "And I saw the dead, small and great, stand before God; and the books were

opened: and another book was opened, which is the book of life: and the dead were judged out of those things which were written in the books, according to their works."

Revelation 20:13: "And the sea gave up the dead which were in it; and death and hell delivered up the dead which were in them: and they were judged every man according to their works."

## **WORLD**

Occurrences: 249

1 Samuel 2:8: "He raiseth up the poor out of the dust, and lifteth up the beggar from the dunghill, to set them among princes, and to make them inherit the throne of glory: for the pillars of the earth are the LORD's, and he hath set the world upon them."

2 Samuel 22:16: "And the channels of the sea appeared, the foundations of the world were discovered, at the rebuking of the LORD, at the blast of the breath of his nostrils."

1 Chronicles 16:30: "Fear before him, all the earth: the world also shall be stable, that it be not moved."

Job 18:18: "He shall be driven from light into darkness, and chased out of the world."

Job 34:13: "Who hath given him a charge over the earth? or who hath disposed the whole world?"

Job 37:12: "And it is turned round about by his counsels: that they may do whatsoever he commandeth them upon the face of the world in the earth."

Psalms 9:8: "And he shall judge the world in righteousness, he shall minister judgment to the people in uprightness."

Psalms 17:14: "From men which are thy hand, O LORD, from men of the world, which have their portion in this life, and whose belly thou fillest with thy hid treasure: they are full of children, and leave the rest of their substance to their babes."

Psalms 18:15: "Then the channels of waters were seen, and the foundations of the world were discovered at thy rebuke, O LORD, at the blast of the breath of thy nostrils."

Psalms 19:4: "Their line is gone out through all the earth, and their words to the end of the world. In them hath he set a tabernacle for the sun,"

Psalms 22:27: "All the ends of the world shall remember and turn unto the LORD: and all the kindreds of the nations shall worship before thee."

Psalms 24:1: "The earth is the LORD's, and the fulness thereof; the world, and they that dwell therein."

Psalms 33:8: "Let all the earth fear the LORD: let all the inhabitants of the world stand in awe of him."

Psalms 49:1: "Hear this, all ye people; give ear, all ye inhabitants of the world:"

Psalms 50:12: "If I were hungry, I would not tell thee: for the world is mine, and the fulness thereof."

Psalms 73:12: "Behold, these are the ungodly, who prosper in the world; they increase in riches."

Psalms 77:18: "The voice of thy thunder was in the heaven: the lightnings lightened the world: the earth trembled and shook."

Psalms 89:11: "The heavens are thine, the earth also is thine: as for the world and the fulness thereof, thou hast founded them."

Psalms 90:2: "Before the mountains were brought forth, or ever thou hadst formed the earth and the world, even from everlasting to everlasting, thou art God."

Psalms 93:1: "The LORD reigneth, he is clothed with majesty; the LORD is clothed with strength, wherewith he hath girded himself: the world also is stablished, that it cannot be moved."

Psalms 96:10: "Say among the heathen that the LORD reigneth: the world also shall be established that it shall not be moved: he shall judge the people righteously."

Psalms 96:13: "Before the LORD: for he cometh, for he cometh to judge the earth: he shall judge the world with righteousness, and the people with his truth."

Psalms 97:4: "His lightnings enlightened the world: the earth saw, and trembled."

Psalms 98:7: "Let the sea roar, and the fulness thereof; the world, and they that dwell therein."  
Psalms 98:9: "Before the LORD; for he cometh to judge the earth: with righteousness shall he judge the world, and the people with equity."  
Proverbs 8:26: "While as yet he had not made the earth, nor the fields, nor the highest part of the dust of the world."  
Ecclesiastes 3:11: "He hath made every thing beautiful in his time: also he hath set the world in their heart, so that no man can find out the work that God maketh from the beginning to the end."  
Isaiah 13:11: "And I will punish the world for their evil, and the wicked for their iniquity; and I will cause the arrogancy of the proud to cease, and will lay low the haughtiness of the terrible."  
Isaiah 14:17: "That made the world as a wilderness, and destroyed the cities thereof; that opened not the house of his prisoners?"  
Isaiah 14:21: "Prepare slaughter for his children for the iniquity of their fathers; that they do not rise, nor possess the land, nor fill the face of the world with cities."  
Isaiah 18:3: "All ye inhabitants of the world, and dwellers on the earth, see ye, when he lifteth up an ensign on the mountains; and when he bloweth a trumpet, hear ye."  
Isaiah 23:17: "And it shall come to pass after the end of seventy years, that the LORD will visit Tyre, and she shall turn to her hire, and shall commit fornication with all the kingdoms of the world upon the face of the earth."  
Isaiah 24:4: "The earth mourneth and fadeth away, the world languisheth and fadeth away, the haughty people of the earth do languish."  
Isaiah 26:9: "With my soul have I desired thee in the night; yea, with my spirit within me will I seek thee early: for when thy judgments are in the earth, the inhabitants of the world will learn righteousness."  
Isaiah 26:18: "We have been with child, we have been in pain, we have as it were brought forth wind; we have not wrought any deliverance in the earth; neither have the inhabitants of the world fallen."  
Isaiah 27:6: "He shall cause them that come of Jacob to take root: Israel shall blossom and bud, and fill the face of the world with fruit."  
Isaiah 34:1: "Come near, ye nations, to hear; and hearken, ye people: let the earth hear, and all that is therein; the world, and all things that come forth of it."  
Isaiah 38:11: "I said, I shall not see the LORD, even the LORD, in the land of the living: I shall behold man no more with the inhabitants of the world."  
Isaiah 45:17: "But Israel shall be saved in the LORD with an everlasting salvation: ye shall not be ashamed nor confounded world without end."  
Isaiah 62:11: "Behold, the LORD hath proclaimed unto the end of the world, Say ye to the daughter of Zion, Behold, thy salvation cometh; behold, his reward is with him, and his work before him."  
Isaiah 64:4: "For since the beginning of the world men have not heard, nor perceived by the ear, neither hath the eye seen, O God, beside thee, what he hath prepared for him that waiteth for him."  
Jeremiah 10:12: "He hath made the earth by his power, he hath established the world by his wisdom, and hath stretched out the heavens by his discretion."  
Jeremiah 25:26: "And all the kings of the north, far and near, one with another, and all the kingdoms of the world, which are upon the face of the earth: and the king of Sheshach shall drink after them."  
Jeremiah 51:15: "He hath made the earth by his power, he hath established the world by his wisdom, and hath stretched out the heaven by his understanding."  
Lamentations 4:12: "The kings of the earth, and all the inhabitants of the world, would not have believed that the adversary and the enemy should have entered into the gates of Jerusalem."  
Nahum 1:5: "The mountains quake at him, and the hills melt, and the earth is burned at his presence, yea, the world, and all that dwell therein."  
Matthew 4:8: "Again, the devil taketh him up into an exceeding high mountain, and sheweth him all



the kingdoms of the world, and the glory of them;"

Matthew 5:14: "Ye are the light of the world. A city that is set on an hill cannot be hid."

Matthew 12:32: "And whosoever speaketh a word against the Son of man, it shall be forgiven him: but whosoever speaketh against the Holy Ghost, it shall not be forgiven him, neither in this world, neither in the world to come."

Matthew 13:22: "He also that received seed among the thorns is he that heareth the word; and the care of this world, and the deceitfulness of riches, choke the word, and he becometh unfruitful."

Matthew 13:35: "That it might be fulfilled which was spoken by the prophet, saying, I will open my mouth in parables; I will utter things which have been kept secret from the foundation of the world."

Matthew 13:38: "The field is the world; the good seed are the children of the kingdom; but the tares are the children of the wicked one;"

Matthew 13:39: "The enemy that sowed them is the devil; the harvest is the end of the world; and the reapers are the angels."

Matthew 13:40: "As therefore the tares are gathered and burned in the fire; so shall it be in the end of this world."

Matthew 13:49: "So shall it be at the end of the world: the angels shall come forth, and sever the wicked from among the just,"

Matthew 16:26: "For what is a man profited, if he shall gain the whole world, and lose his own soul? or what shall a man give in exchange for his soul?"

Matthew 18:7: "Woe unto the world because of offences! for it must needs be that offences come; but woe to that man by whom the offence cometh!"

Matthew 24:3: "And as he sat upon the mount of Olives, the disciples came unto him privately, saying, Tell us, when shall these things be? and what shall be the sign of thy coming, and of the end of the world?"

Matthew 24:14: "And this gospel of the kingdom shall be preached in all the world for a witness unto all nations; and then shall the end come."

Matthew 24:21: "For then shall be great tribulation, such as was not since the beginning of the world to this time, no, nor ever shall be."

Matthew 25:34: "Then shall the King say unto them on his right hand, Come, ye blessed of my Father, inherit the kingdom prepared for you from the foundation of the world:"

Matthew 26:13: "Verily I say unto you, Wheresoever this gospel shall be preached in the whole world, there shall also this, that this woman hath done, be told for a memorial of her."

Matthew 28:20: "Teaching them to observe all things whatsoever I have commanded you: and, lo, I am with you alway, even unto the end of the world. Amen."

Mark 4:19: "And the cares of this world, and the deceitfulness of riches, and the lusts of other things entering in, choke the word, and it becometh unfruitful."

Mark 8:36: "For what shall it profit a man, if he shall gain the whole world, and lose his own soul?"

Mark 10:30: "But he shall receive an hundredfold now in this time, houses, and brethren, and sisters, and mothers, and children, and lands, with persecutions; and in the world to come eternal life."

Mark 14:9: "Verily I say unto you, Wheresoever this gospel shall be preached throughout the whole world, this also that she hath done shall be spoken of for a memorial of her."

Mark 16:15: "And he said unto them, Go ye into all the world, and preach the gospel to every creature."

Luke 1:70: "As he spake by the mouth of his holy prophets, which have been since the world began:"

Luke 2:1: "And it came to pass in those days, that there went out a decree from Caesar Augustus that all the world should be taxed."

Luke 4:5: "And the devil, taking him up into an high mountain, shewed unto him all the kingdoms

of the world in a moment of time."

Luke 9:25: "For what is a man advantaged, if he gain the whole world, and lose himself, or be cast away?"

Luke 11:50: "That the blood of all the prophets, which was shed from the foundation of the world, may be required of this generation;"

Luke 12:30: "For all these things do the nations of the world seek after: and your Father knoweth that ye have need of these things."

Luke 16:8: "And the lord commended the unjust steward, because he had done wisely: for the children of this world are in their generation wiser than the children of light."

Luke 18:30: "Who shall not receive manifold more in this present time, and in the world to come life everlasting."

Luke 20:34: "And Jesus answering said unto them, The children of this world marry, and are given in marriage:"

Luke 20:35: "But they which shall be accounted worthy to obtain that world, and the resurrection from the dead, neither marry, nor are given in marriage:"

John 1:9: "That was the true Light, which lighteth every man that cometh into the world."

John 1:10: "He was in the world, and the world was made by him, and the world knew him not."

John 1:29: "The next day John seeth Jesus coming unto him, and saith, Behold the Lamb of God, which taketh away the sin of the world."

John 3:16: "For God so loved the world, that he gave his only begotten Son, that whosoever believeth in him should not perish, but have everlasting life."

John 3:17: "For God sent not his Son into the world to condemn the world; but that the world through him might be saved."

John 3:19: "And this is the condemnation, that light is come into the world, and men loved darkness rather than light, because their deeds were evil."

John 4:42: "And said unto the woman, Now we believe, not because of thy saying: for we have heard him ourselves, and know that this is indeed the Christ, the Saviour of the world."

John 6:14: "Then those men, when they had seen the miracle that Jesus did, said, This is of a truth that prophet that should come into the world."

John 6:33: "For the bread of God is he which cometh down from heaven, and giveth life unto the world."

John 6:51: "I am the living bread which came down from heaven: if any man eat of this bread, he shall live for ever: and the bread that I will give is my flesh, which I will give for the life of the world."

John 7:4: "For there is no man that doeth any thing in secret, and he himself seeketh to be known openly. If thou do these things, shew thyself to the world."

John 7:7: "The world cannot hate you; but me it hateth, because I testify of it, that the works thereof are evil."

John 8:12: "Then spake Jesus again unto them, saying, I am the light of the world: he that followeth me shall not walk in darkness, but shall have the light of life."

John 8:23: "And he said unto them, Ye are from beneath; I am from above: ye are of this world; I am not of this world."

John 8:26: "I have many things to say and to judge of you: but he that sent me is true; and I speak to the world those things which I have heard of him."

John 9:5: "As long as I am in the world, I am the light of the world."

John 9:32: "Since the world began was it not heard that any man opened the eyes of one that was born blind."

John 9:39: "And Jesus said, For judgment I am come into this world, that they which see not might see; and that they which see might be made blind."

John 10:36: "Say ye of him, whom the Father hath sanctified, and sent into the world, Thou

blasphemest; because I said, I am the Son of God?"

John 11:9: "Jesus answered, Are there not twelve hours in the day? If any man walk in the day, he stumbleth not, because he seeth the light of this world."

John 11:27: "She saith unto him, Yea, Lord: I believe that thou art the Christ, the Son of God, which should come into the world."

John 12:19: "The Pharisees therefore said among themselves, Perceive ye how ye prevail nothing? behold, the world is gone after him."

John 12:25: "He that loveth his life shall lose it; and he that hateth his life in this world shall keep it unto life eternal."

John 12:31: "Now is the judgment of this world: now shall the prince of this world be cast out."

John 12:46: "I am come a light into the world, that whosoever believeth on me should not abide in darkness."

John 12:47: "And if any man hear my words, and believe not, I judge him not: for I came not to judge the world, but to save the world."

John 13:1: "Now before the feast of the passover, when Jesus knew that his hour was come that he should depart out of this world unto the Father, having loved his own which were in the world, he loved them unto the end."

John 14:17: "Even the Spirit of truth; whom the world cannot receive, because it seeth him not, neither knoweth him: but ye know him; for he dwelleth with you, and shall be in you."

John 14:19: "Yet a little while, and the world seeth me no more; but ye see me: because I live, ye shall live also."

John 14:22: "Judas saith unto him, not Iscariot, Lord, how is it that thou wilt manifest thyself unto us, and not unto the world?"

John 14:27: "Peace I leave with you, my peace I give unto you: not as the world giveth, give I unto you. Let not your heart be troubled, neither let it be afraid."

John 14:30: "Hereafter I will not talk much with you: for the prince of this world cometh, and hath nothing in me."

John 14:31: "But that the world may know that I love the Father; and as the Father gave me commandment, even so I do. Arise, let us go hence."

John 15:18: "If the world hate you, ye know that it hated me before it hated you."

John 15:19: "If ye were of the world, the world would love his own: but because ye are not of the world, but I have chosen you out of the world, therefore the world hateth you."

John 16:8: "And when he is come, he will reprove the world of sin, and of righteousness, and of judgment:"

John 16:11: "Of judgment, because the prince of this world is judged."

John 16:20: "Verily, verily, I say unto you, That ye shall weep and lament, but the world shall rejoice: and ye shall be sorrowful, but your sorrow shall be turned into joy."

John 16:21: "A woman when she is in travail hath sorrow, because her hour is come: but as soon as she is delivered of the child, she remembereth no more the anguish, for joy that a man is born into the world."

John 16:28: "I came forth from the Father, and am come into the world: again, I leave the world, and go to the Father."

John 16:33: "These things I have spoken unto you, that in me ye might have peace. In the world ye shall have tribulation: but be of good cheer; I have overcome the world."

John 17:5: "And now, O Father, glorify thou me with thine own self with the glory which I had with thee before the world was."

John 17:6: "I have manifested thy name unto the men which thou gavest me out of the world: thine they were, and thou gavest them me; and they have kept thy word."

John 17:9: "I pray for them: I pray not for the world, but for them which thou hast given me; for they are thine."

John 17:11: "And now I am no more in the world, but these are in the world, and I come to thee. Holy Father, keep through thine own name those whom thou hast given me, that they may be one, as we are."

John 17:12: "While I was with them in the world, I kept them in thy name: those that thou gavest me I have kept, and none of them is lost, but the son of perdition; that the scripture might be fulfilled."

John 17:13: "And now come I to thee; and these things I speak in the world, that they might have my joy fulfilled in themselves."

John 17:14: "I have given them thy word; and the world hath hated them, because they are not of the world, even as I am not of the world."

John 17:15: "I pray not that thou shouldest take them out of the world, but that thou shouldest keep them from the evil."

John 17:16: "They are not of the world, even as I am not of the world."

John 17:18: "As thou hast sent me into the world, even so have I also sent them into the world."

John 17:21: "That they all may be one; as thou, Father, art in me, and I in thee, that they also may be one in us: that the world may believe that thou hast sent me."

John 17:23: "I in them, and thou in me, that they may be made perfect in one; and that the world may know that thou hast sent me, and hast loved them, as thou hast loved me."

John 17:24: "Father, I will that they also, whom thou hast given me, be with me where I am; that they may behold my glory, which thou hast given me: for thou lovedst me before the foundation of the world."

John 17:25: "O righteous Father, the world hath not known thee: but I have known thee, and these have known that thou hast sent me."

John 18:20: "Jesus answered him, I spake openly to the world; I ever taught in the synagogue, and in the temple, whither the Jews always resort; and in secret have I said nothing."

John 18:36: "Jesus answered, My kingdom is not of this world: if my kingdom were of this world, then would my servants fight, that I should not be delivered to the Jews: but now is my kingdom not from hence."

John 18:37: "Pilate therefore said unto him, Art thou a king then? Jesus answered, Thou sayest that I am a king. To this end was I born, and for this cause came I into the world, that I should bear witness unto the truth. Every one that is of the truth heareth my voice."

John 21:25: "And there are also many other things which Jesus did, the which, if they should be written every one, I suppose that even the world itself could not contain the books that should be written. Amen."

Acts 3:21: "Whom the heaven must receive until the times of restitution of all things, which God hath spoken by the mouth of all his holy prophets since the world began."

Acts 11:28: "And there stood up one of them named Agabus, and signified by the Spirit that there should be great dearth throughout all the world: which came to pass in the days of Claudius Caesar."

Acts 15:18: "Known unto God are all his works from the beginning of the world."

Acts 17:6: "And when they found them not, they drew Jason and certain brethren unto the rulers of the city, crying, These that have turned the world upside down are come hither also;"

Acts 17:24: "God that made the world and all things therein, seeing that he is Lord of heaven and earth, dwelleth not in temples made with hands;"

Acts 17:31: "Because he hath appointed a day, in the which he will judge the world in righteousness by that man whom he hath ordained; whereof he hath given assurance unto all men, in that he hath raised him from the dead."

Acts 19:27: "So that not only this our craft is in danger to be set at nought; but also that the temple of the great goddess Diana should be despised, and her magnificence should be destroyed, whom all Asia and the world worshippeth."

Acts 24:5: "For we have found this man a pestilent fellow, and a mover of sedition among all the Jews throughout the world, and a ringleader of the sect of the Nazarenes:"

Romans 1:8: "First, I thank my God through Jesus Christ for you all, that your faith is spoken of throughout the whole world."

Romans 1:20: "For the invisible things of him from the creation of the world are clearly seen, being understood by the things that are made, even his eternal power and Godhead; so that they are without excuse:"

Romans 3:6: "God forbid: for then how shall God judge the world?"

Romans 3:19: "Now we know that what things soever the law saith, it saith to them who are under the law: that every mouth may be stopped, and all the world may become guilty before God."

Romans 4:13: "For the promise, that he should be the heir of the world, was not to Abraham, or to his seed, through the law, but through the righteousness of faith."

Romans 5:12: "Wherefore, as by one man sin entered into the world, and death by sin; and so death passed upon all men, for that all have sinned:"

Romans 5:13: "(For until the law sin was in the world: but sin is not imputed when there is no law."

Romans 10:18: "But I say, Have they not heard? Yes verily, their sound went into all the earth, and their words unto the ends of the world."

Romans 11:12: "Now if the fall of them be the riches of the world, and the diminishing of them the riches of the Gentiles; how much more their fulness?"

Romans 11:15: "For if the casting away of them be the reconciling of the world, what shall the receiving of them be, but life from the dead?"

Romans 12:2: "And be not conformed to this world: but be ye transformed by the renewing of your mind, that ye may prove what is that good, and acceptable, and perfect, will of God."

Romans 16:25: "Now to him that is of power to stablish you according to my gospel, and the preaching of Jesus Christ, according to the revelation of the mystery, which was kept secret since the world began,"

1 Corinthians 1:20: "Where is the wise? where is the scribe? where is the disputer of this world? hath not God made foolish the wisdom of this world?"

1 Corinthians 1:21: "For after that in the wisdom of God the world by wisdom knew not God, it pleased God by the foolishness of preaching to save them that believe."

1 Corinthians 1:27: "But God hath chosen the foolish things of the world to confound the wise; and God hath chosen the weak things of the world to confound the things which are mighty;"

1 Corinthians 1:28: "And base things of the world, and things which are despised, hath God chosen, yea, and things which are not, to bring to nought things that are:"

1 Corinthians 2:6: "Howbeit we speak wisdom among them that are perfect: yet not the wisdom of this world, nor of the princes of this world, that come to nought:"

1 Corinthians 2:7: "But we speak the wisdom of God in a mystery, even the hidden wisdom, which God ordained before the world unto our glory:"

1 Corinthians 2:8: "Which none of the princes of this world knew: for had they known it, they would not have crucified the Lord of glory."

1 Corinthians 2:12: "Now we have received, not the spirit of the world, but the spirit which is of God; that we might know the things that are freely given to us of God."

1 Corinthians 3:18: "Let no man deceive himself. If any man among you seemeth to be wise in this world, let him become a fool, that he may be wise."

1 Corinthians 3:19: "For the wisdom of this world is foolishness with God. For it is written, He taketh the wise in their own craftiness."

1 Corinthians 3:22: "Whether Paul, or Apollos, or Cephas, or the world, or life, or death, or things present, or things to come; all are your's;"

1 Corinthians 4:9: "For I think that God hath set forth us the apostles last, as it were appointed to death: for we are made a spectacle unto the world, and to angels, and to men."

1 Corinthians 4:13: "Being defamed, we intreat: we are made as the filth of the world, and are the offscouring of all things unto this day."

1 Corinthians 5:10: "Yet not altogether with the fornicators of this world, or with the covetous, or extortioners, or with idolaters; for then must ye needs go out of the world."

1 Corinthians 6:2: "Do ye not know that the saints shall judge the world? and if the world shall be judged by you, are ye unworthy to judge the smallest matters?"

1 Corinthians 7:31: "And they that use this world, as not abusing it: for the fashion of this world passeth away."

1 Corinthians 7:33: "But he that is married careth for the things that are of the world, how he may please his wife."

1 Corinthians 7:34: "There is difference also between a wife and a virgin. The unmarried woman careth for the things of the Lord, that she may be holy both in body and in spirit: but she that is married careth for the things of the world, how she may please her husband."

1 Corinthians 8:4: "As concerning therefore the eating of those things that are offered in sacrifice unto idols, we know that an idol is nothing in the world, and that there is none other God but one."

1 Corinthians 8:13: "Wherefore, if meat make my brother to offend, I will eat no flesh while the world standeth, lest I make my brother to offend."

1 Corinthians 10:11: "Now all these things happened unto them for ensamples: and they are written for our admonition, upon whom the ends of the world are come."

1 Corinthians 11:32: "But when we are judged, we are chastened of the Lord, that we should not be condemned with the world."

1 Corinthians 14:10: "There are, it may be, so many kinds of voices in the world, and none of them is without signification."

2 Corinthians 1:12: "For our rejoicing is this, the testimony of our conscience, that in simplicity and godly sincerity, not with fleshly wisdom, but by the grace of God, we have had our conversation in the world, and more abundantly to you-ward."

2 Corinthians 4:4: "In whom the god of this world hath blinded the minds of them which believe not, lest the light of the glorious gospel of Christ, who is the image of God, should shine unto them."

2 Corinthians 5:19: "To wit, that God was in Christ, reconciling the world unto himself, not imputing their trespasses unto them; and hath committed unto us the word of reconciliation."

2 Corinthians 7:10: "For godly sorrow worketh repentance to salvation not to be repented of: but the sorrow of the world worketh death."

Galatians 1:4: "Who gave himself for our sins, that he might deliver us from this present evil world, according to the will of God and our Father:"

Galatians 4:3: "Even so we, when we were children, were in bondage under the elements of the world:"

Galatians 6:14: "But God forbid that I should glory, save in the cross of our Lord Jesus Christ, by whom the world is crucified unto me, and I unto the world."

Ephesians 1:4: "According as he hath chosen us in him before the foundation of the world, that we should be holy and without blame before him in love:"

Ephesians 1:21: "Far above all principality, and power, and might, and dominion, and every name that is named, not only in this world, but also in that which is to come:"

Ephesians 2:2: "Wherein in time past ye walked according to the course of this world, according to the prince of the power of the air, the spirit that now worketh in the children of disobedience:"

Ephesians 2:12: "That at that time ye were without Christ, being aliens from the commonwealth of Israel, and strangers from the covenants of promise, having no hope, and without God in the world:"

Ephesians 3:9: "And to make all men see what is the fellowship of the mystery, which from the beginning of the world hath been hid in God, who created all things by Jesus Christ:"

Ephesians 3:21: "Unto him be glory in the church by Christ Jesus throughout all ages, world

without end. Amen."

Ephesians 6:12: "For we wrestle not against flesh and blood, but against principalities, against powers, against the rulers of the darkness of this world, against spiritual wickedness in high places."

Philippians 2:15: "That ye may be blameless and harmless, the sons of God, without rebuke, in the midst of a crooked and perverse nation, among whom ye shine as lights in the world;"

Colossians 1:6: "Which is come unto you, as it is in all the world; and bringeth forth fruit, as it doth also in you, since the day ye heard of it, and knew the grace of God in truth:"

Colossians 2:8: "Beware lest any man spoil you through philosophy and vain deceit, after the tradition of men, after the rudiments of the world, and not after Christ."

Colossians 2:20: "Wherefore if ye be dead with Christ from the rudiments of the world, why, as though living in the world, are ye subject to ordinances,"

1 Timothy 1:15: "This is a faithful saying, and worthy of all acceptance, that Christ Jesus came into the world to save sinners; of whom I am chief."

1 Timothy 3:16: "And without controversy great is the mystery of godliness: God was manifest in the flesh, justified in the Spirit, seen of angels, preached unto the Gentiles, believed on in the world, received up into glory."

1 Timothy 6:7: "For we brought nothing into this world, and it is certain we can carry nothing out."

1 Timothy 6:17: "Charge them that are rich in this world, that they be not highminded, nor trust in uncertain riches, but in the living God, who giveth us richly all things to enjoy;"

2 Timothy 1:9: "Who hath saved us, and called us with an holy calling, not according to our works, but according to his own purpose and grace, which was given us in Christ Jesus before the world began,"

2 Timothy 4:10: "For Demas hath forsaken me, having loved this present world, and is departed unto Thessalonica; Crescens to Galatia, Titus unto Dalmatia."

Titus 1:2: "In hope of eternal life, which God, that cannot lie, promised before the world began;"

Titus 2:12: "Teaching us that, denying ungodliness and worldly lusts, we should live soberly, righteously, and godly, in this present world;"

Hebrews 1:6: "And again, when he bringeth in the firstbegotten into the world, he saith, And let all the angels of God worship him."

Hebrews 2:5: "For unto the angels hath he not put in subjection the world to come, whereof we speak."

Hebrews 4:3: "For we which have believed do enter into rest, as he said, As I have sworn in my wrath, if they shall enter into my rest: although the works were finished from the foundation of the world."

Hebrews 6:5: "And have tasted the good word of God, and the powers of the world to come,"

Hebrews 9:26: "For then must he often have suffered since the foundation of the world: but now once in the end of the world hath he appeared to put away sin by the sacrifice of himself."

Hebrews 10:5: "Wherefore when he cometh into the world, he saith, Sacrifice and offering thou wouldest not, but a body hast thou prepared me:"

Hebrews 11:7: "By faith Noah, being warned of God of things not seen as yet, moved with fear, prepared an ark to the saving of his house; by the which he condemned the world, and became heir of the righteousness which is by faith."

Hebrews 11:38: "(Of whom the world was not worthy:) they wandered in deserts, and in mountains, and in dens and caves of the earth."

James 1:27: "Pure religion and undefiled before God and the Father is this, To visit the fatherless and widows in their affliction, and to keep himself unspotted from the world."

James 2:5: "Hearken, my beloved brethren, Hath not God chosen the poor of this world rich in faith, and heirs of the kingdom which he hath promised to them that love him?"

James 3:6: "And the tongue is a fire, a world of iniquity: so is the tongue among our members, that it defileth the whole body, and setteth on fire the course of nature; and it is set on fire of hell."

James 4:4: "Ye adulterers and adulteresses, know ye not that the friendship of the world is enmity with God? whosoever therefore will be a friend of the world is the enemy of God."

1 Peter 1:20: "Who verily was foreordained before the foundation of the world, but was manifest in these last times for you,"

1 Peter 5:9: "Whom resist stedfast in the faith, knowing that the same afflictions are accomplished in your brethren that are in the world."

2 Peter 1:4: "Whereby are given unto us exceeding great and precious promises: that by these ye might be partakers of the divine nature, having escaped the corruption that is in the world through lust."

2 Peter 2:5: "And spared not the old world, but saved Noah the eighth person, a preacher of righteousness, bringing in the flood upon the world of the ungodly;"

2 Peter 2:20: "For if after they have escaped the pollutions of the world through the knowledge of the Lord and Saviour Jesus Christ, they are again entangled therein, and overcome, the latter end is worse with them than the beginning."

2 Peter 3:6: "Whereby the world that then was, being overflowed with water, perished:"

1 John 2:2: "And he is the propitiation for our sins: and not for our's only, but also for the sins of the whole world."

1 John 2:15: "Love not the world, neither the things that are in the world. If any man love the world, the love of the Father is not in him."

1 John 2:16: "For all that is in the world, the lust of the flesh, and the lust of the eyes, and the pride of life, is not of the Father, but is of the world."

1 John 2:17: "And the world passeth away, and the lust thereof: but he that doeth the will of God abideth for ever."

1 John 3:1: "Behold, what manner of love the Father hath bestowed upon us, that we should be called the sons of God: therefore the world knoweth us not, because it knew him not."

1 John 3:13: "Marvel not, my brethren, if the world hate you."

1 John 3:17: "But whoso hath this world's good, and seeth his brother have need, and shutteth up his bowels of compassion from him, how dwelleth the love of God in him?"

1 John 4:1: "Beloved, believe not every spirit, but try the spirits whether they are of God: because many false prophets are gone out into the world."

1 John 4:3: "And every spirit that confesseth not that Jesus Christ is come in the flesh is not of God: and this is that spirit of antichrist, whereof ye have heard that it should come; and even now already is it in the world."

1 John 4:4: "Ye are of God, little children, and have overcome them: because greater is he that is in you, than he that is in the world."

1 John 4:5: "They are of the world: therefore speak they of the world, and the world heareth them."

1 John 4:9: "In this was manifested the love of God toward us, because that God sent his only begotten Son into the world, that we might live through him."

1 John 4:14: "And we have seen and do testify that the Father sent the Son to be the Saviour of the world."

1 John 4:17: "Herein is our love made perfect, that we may have boldness in the day of judgment: because as he is, so are we in this world."

1 John 5:4: "For whatsoever is born of God overcometh the world: and this is the victory that overcometh the world, even our faith."

1 John 5:5: "Who is he that overcometh the world, but he that believeth that Jesus is the Son of God?"

1 John 5:19: "And we know that we are of God, and the whole world lieth in wickedness."

2 John 1:7: "For many deceivers are entered into the world, who confess not that Jesus Christ is come in the flesh. This is a deceiver and an antichrist."

Revelation 3:10: "Because thou hast kept the word of my patience, I also will keep thee from the



hour of temptation, which shall come upon all the world, to try them that dwell upon the earth."  
Revelation 11:15: "And the seventh angel sounded; and there were great voices in heaven, saying, The kingdoms of this world are become the kingdoms of our Lord, and of his Christ; and he shall reign for ever and ever."

Revelation 12:9: "And the great dragon was cast out, that old serpent, called the Devil, and Satan, which deceiveth the whole world: he was cast out into the earth, and his angels were cast out with him."

Revelation 13:3: "And I saw one of his heads as it were wounded to death; and his deadly wound was healed: and all the world wondered after the beast."

Revelation 13:8: "And all that dwell upon the earth shall worship him, whose names are not written in the book of life of the Lamb slain from the foundation of the world."

Revelation 16:14: "For they are the spirits of devils, working miracles, which go forth unto the kings of the earth and of the whole world, to gather them to the battle of that great day of God Almighty."

Revelation 17:8: "The beast that thou sawest was, and is not; and shall ascend out of the bottomless pit, and go into perdition: and they that dwell on the earth shall wonder, whose names were not written in the book of life from the foundation of the world, when they behold the beast that was, and is not, and yet is."

## **WORLDLY**

Occurrences: 2

Titus 2:12: "Teaching us that, denying ungodliness and worldly lusts, we should live soberly, righteously, and godly, in this present world;"

Hebrews 9:1: "Then verily the first covenant had also ordinances of divine service, and a worldly sanctuary."

## **WORLDS**

Occurrences: 2

Hebrews 1:2: "Hath in these last days spoken unto us by his Son, whom he hath appointed heir of all things, by whom also he made the worlds;"

Hebrews 11:3: "Through faith we understand that the worlds were framed by the word of God, so that things which are seen were not made of things which do appear."

## **WORM**

Occurrences: 13

Exodus 16:24: "And they laid it up till the morning, as Moses bade: and it did not stink, neither was there any worm therein."

Job 17:14: "I have said to corruption, Thou art my father: to the worm, Thou art my mother, and my sister."

Job 24:20: "The womb shall forget him; the worm shall feed sweetly on him; he shall be no more remembered; and wickedness shall be broken as a tree."

Job 25:6: "How much less man, that is a worm? and the son of man, which is a worm?"

Psalms 22:6: "But I am a worm, and no man; a reproach of men, and despised of the people."

Isaiah 14:11: "Thy pomp is brought down to the grave, and the noise of thy viols: the worm is spread under thee, and the worms cover thee."

Isaiah 41:14: "Fear not, thou worm Jacob, and ye men of Israel; I will help thee, saith the LORD, and thy redeemer, the Holy One of Israel."

Isaiah 51:8: "For the moth shall eat them up like a garment, and the worm shall eat them like wool:

but my righteousness shall be for ever, and my salvation from generation to generation."  
Isaiah 66:24: "And they shall go forth, and look upon the carcasses of the men that have transgressed against me: for their worm shall not die, neither shall their fire be quenched; and they shall be an abhorring unto all flesh."  
Jonah 4:7: "But God prepared a worm when the morning rose the next day, and it smote the gourd that it withered."  
Mark 9:44: "Where their worm dieth not, and the fire is not quenched."  
Mark 9:46: "Where their worm dieth not, and the fire is not quenched."  
Mark 9:48: "Where their worm dieth not, and the fire is not quenched."

## **WORMS**

Occurrences: 8

Exodus 16:20: "Notwithstanding they hearkened not unto Moses; but some of them left of it until the morning, and it bred worms, and stank: and Moses was wroth with them."  
Deuteronomy 28:39: "Thou shalt plant vineyards, and dress them, but shalt neither drink of the wine, nor gather the grapes; for the worms shall eat them."  
Job 7:5: "My flesh is clothed with worms and clods of dust; my skin is broken, and become loathsome."  
Job 19:26: "And though after my skin worms destroy this body, yet in my flesh shall I see God:"  
Job 21:26: "They shall lie down alike in the dust, and the worms shall cover them."  
Isaiah 14:11: "Thy pomp is brought down to the grave, and the noise of thy viols: the worm is spread under thee, and the worms cover thee."  
Micah 7:17: "They shall lick the dust like a serpent, they shall move out of their holes like worms of the earth: they shall be afraid of the LORD our God, and shall fear because of thee."  
Acts 12:23: "And immediately the angel of the Lord smote him, because he gave not God the glory: and he was eaten of worms, and gave up the ghost."

## **WORMWOOD**

Occurrences: 8

Deuteronomy 29:18: "Lest there should be among you man, or woman, or family, or tribe, whose heart turneth away this day from the LORD our God, to go and serve the gods of these nations; lest there should be among you a root that beareth gall and wormwood;"  
Proverbs 5:4: "But her end is bitter as wormwood, sharp as a two-edged sword."  
Jeremiah 9:15: "Therefore thus saith the LORD of hosts, the God of Israel; Behold, I will feed them, even this people, with wormwood, and give them water of gall to drink."  
Jeremiah 23:15: "Therefore thus saith the LORD of hosts concerning the prophets; Behold, I will feed them with wormwood, and make them drink the water of gall: for from the prophets of Jerusalem is profaneness gone forth into all the land."  
Lamentations 3:15: "He hath filled me with bitterness, he hath made me drunken with wormwood."  
Lamentations 3:19: "Remembering mine affliction and my misery, the wormwood and the gall."  
Amos 5:7: "Ye who turn judgment to wormwood, and leave off righteousness in the earth,"  
Revelation 8:11: "And the name of the star is called Wormwood: and the third part of the waters became wormwood; and many men died of the waters, because they were made bitter."

## **WORSE**

Occurrences: 25

Genesis 19:9: "And they said, Stand back. And they said again, This one fellow came in to sojourn, and he will needs be a judge: now will we deal worse with thee, than with them. And they pressed

sore upon the man, even Lot, and came near to break the door."

2 Samuel 19:7: "Now therefore arise, go forth, and speak comfortably unto thy servants: for I swear by the LORD, if thou go not forth, there will not tarry one with thee this night: and that will be worse unto thee than all the evil that befell thee from thy youth until now."

1 Kings 16:25: "But Omri wrought evil in the eyes of the LORD, and did worse than all that were before him."

2 Kings 14:12: "And Judah was put to the worse before Israel; and they fled every man to their tents."

1 Chronicles 19:16: "And when the Syrians saw that they were put to the worse before Israel, they sent messengers, and drew forth the Syrians that were beyond the river: and Shophach the captain of the host of Hadarezer went before them."

1 Chronicles 19:19: "And when the servants of Hadarezer saw that they were put to the worse before Israel, they made peace with David, and became his servants: neither would the Syrians help the children of Ammon any more."

2 Chronicles 6:24: "And if thy people Israel be put to the worse before the enemy, because they have sinned against thee; and shall return and confess thy name, and pray and make supplication before thee in this house;"

2 Chronicles 25:22: "And Judah was put to the worse before Israel, and they fled every man to his tent."

2 Chronicles 33:9: "So Manasseh made Judah and the inhabitants of Jerusalem to err, and to do worse than the heathen, whom the LORD had destroyed before the children of Israel."

Jeremiah 7:26: "Yet they hearkened not unto me, nor inclined their ear, but hardened their neck: they did worse than their fathers."

Jeremiah 16:12: "And ye have done worse than your fathers; for, behold, ye walk every one after the imagination of his evil heart, that they may not hearken unto me:"

Daniel 1:10: "And the prince of the eunuchs said unto Daniel, I fear my lord the king, who hath appointed your meat and your drink: for why should he see your faces worse liking than the children which are of your sort? then shall ye make me endanger my head to the king."

Matthew 9:16: "No man putteth a piece of new cloth unto an old garment, for that which is put in to fill it up taketh from the garment, and the rent is made worse."

Matthew 12:45: "Then goeth he, and taketh with himself seven other spirits more wicked than himself, and they enter in and dwell there: and the last state of that man is worse than the first. Even so shall it be also unto this wicked generation."

Matthew 27:64: "Command therefore that the sepulchre be made sure until the third day, lest his disciples come by night, and steal him away, and say unto the people, He is risen from the dead: so the last error shall be worse than the first."

Mark 2:21: "No man also seweth a piece of new cloth on an old garment: else the new piece that filled it up taketh away from the old, and the rent is made worse."

Mark 5:26: "And had suffered many things of many physicians, and had spent all that she had, and was nothing bettered, but rather grew worse,"

Luke 11:26: "Then goeth he, and taketh to him seven other spirits more wicked than himself; and they enter in, and dwell there: and the last state of that man is worse than the first."

John 2:10: "And saith unto him, Every man at the beginning doth set forth good wine; and when men have well drunk, then that which is worse: but thou hast kept the good wine until now."

John 5:14: "Afterward Jesus findeth him in the temple, and said unto him, Behold, thou art made whole: sin no more, lest a worse thing come unto thee."

1 Corinthians 8:8: "But meat commendeth us not to God: for neither, if we eat, are we the better; neither, if we eat not, are we the worse."

1 Corinthians 11:17: "Now in this that I declare unto you I praise you not, that ye come together not for the better, but for the worse."

1 Timothy 5:8: "But if any provide not for his own, and specially for those of his own house, he hath denied the faith, and is worse than an infidel."

2 Timothy 3:13: "But evil men and seducers shall wax worse and worse, deceiving, and being deceived."

2 Peter 2:20: "For if after they have escaped the pollutions of the world through the knowledge of the Lord and Saviour Jesus Christ, they are again entangled therein, and overcome, the latter end is worse with them than the beginning."

## WORSHIP

Occurrences: 102

Genesis 22:5: "And Abraham said unto his young men, Abide ye here with the ass; and I and the lad will go yonder and worship, and come again to you."

Exodus 24:1: "And he said unto Moses, Come up unto the LORD, thou, and Aaron, Nadab, and Abihu, and seventy of the elders of Israel; and worship ye afar off."

Exodus 34:14: "For thou shalt worship no other god: for the LORD, whose name is Jealous, is a jealous God:"

Deuteronomy 4:19: "And lest thou lift up thine eyes unto heaven, and when thou seest the sun, and the moon, and the stars, even all the host of heaven, shouldest be driven to worship them, and serve them, which the LORD thy God hath divided unto all nations under the whole heaven."

Deuteronomy 8:19: "And it shall be, if thou do at all forget the LORD thy God, and walk after other gods, and serve them, and worship them, I testify against you this day that ye shall surely perish."

Deuteronomy 11:16: "Take heed to yourselves, that your heart be not deceived, and ye turn aside, and serve other gods, and worship them;"

Deuteronomy 26:10: "And now, behold, I have brought the firstfruits of the land, which thou, O LORD, hast given me. And thou shalt set it before the LORD thy God, and worship before the LORD thy God:"

Deuteronomy 30:17: "But if thine heart turn away, so that thou wilt not hear, but shalt be drawn away, and worship other gods, and serve them;"

Joshua 5:14: "And he said, Nay; but as captain of the host of the LORD am I now come. And Joshua fell on his face to the earth, and did worship, and said unto him, What saith my Lord unto his servant?"

1 Samuel 1:3: "And this man went up out of his city yearly to worship and to sacrifice unto the LORD of hosts in Shiloh. And the two sons of Eli, Hophni and Phinehas, the priests of the LORD, were there."

1 Samuel 15:25: "Now therefore, I pray thee, pardon my sin, and turn again with me, that I may worship the LORD."

1 Samuel 15:30: "Then he said, I have sinned: yet honour me now, I pray thee, before the elders of my people, and before Israel, and turn again with me, that I may worship the LORD thy God."

1 Kings 9:6: "But if ye shall at all turn from following me, ye or your children, and will not keep my commandments and my statutes which I have set before you, but go and serve other gods, and worship them:"

1 Kings 12:30: "And this thing became a sin: for the people went to worship before the one, even unto Dan."

2 Kings 5:18: "In this thing the LORD pardon thy servant, that when my master goeth into the house of Rimmon to worship there, and he leaneth on my hand, and I bow myself in the house of Rimmon: when I bow down myself in the house of Rimmon, the LORD pardon thy servant in this thing."

2 Kings 17:36: "But the LORD, who brought you up out of the land of Egypt with great power and a stretched out arm, him shall ye fear, and him shall ye worship, and to him shall ye do sacrifice."

2 Kings 18:22: "But if ye say unto me, We trust in the LORD our God: is not that he, whose high

places and whose altars Hezekiah hath taken away, and hath said to Judah and Jerusalem, Ye shall worship before this altar in Jerusalem?"

1 Chronicles 16:29: "Give unto the LORD the glory due unto his name: bring an offering, and come before him: worship the LORD in the beauty of holiness."

2 Chronicles 7:19: "But if ye turn away, and forsake my statutes and my commandments, which I have set before you, and shall go and serve other gods, and worship them;"

2 Chronicles 32:12: "Hath not the same Hezekiah taken away his high places and his altars, and commanded Judah and Jerusalem, saying, Ye shall worship before one altar, and burn incense upon it?"

Psalms 5:7: "But as for me, I will come into thy house in the multitude of thy mercy: and in thy fear will I worship toward thy holy temple."

Psalms 22:27: "All the ends of the world shall remember and turn unto the LORD: and all the kindreds of the nations shall worship before thee."

Psalms 22:29: "All they that be fat upon earth shall eat and worship: all they that go down to the dust shall bow before him: and none can keep alive his own soul."

Psalms 29:2: "Give unto the LORD the glory due unto his name; worship the LORD in the beauty of holiness."

Psalms 45:11: "So shall the king greatly desire thy beauty: for he is thy Lord; and worship thou him."

Psalms 66:4: "All the earth shall worship thee, and shall sing unto thee; they shall sing to thy name. Selah."

Psalms 81:9: "There shall no strange god be in thee; neither shalt thou worship any strange god."

Psalms 86:9: "All nations whom thou hast made shall come and worship before thee, O Lord; and shall glorify thy name."

Psalms 95:6: "O come, let us worship and bow down: let us kneel before the LORD our maker."

Psalms 96:9: "O worship the LORD in the beauty of holiness: fear before him, all the earth."

Psalms 97:7: "Confounded be all they that serve graven images, that boast themselves of idols: worship him, all ye gods."

Psalms 99:5: "Exalt ye the LORD our God, and worship at his footstool; for he is holy."

Psalms 99:9: "Exalt the LORD our God, and worship at his holy hill; for the LORD our God is holy."

Psalms 132:7: "We will go into his tabernacles: we will worship at his footstool."

Psalms 138:2: "I will worship toward thy holy temple, and praise thy name for thy lovingkindness and for thy truth: for thou hast magnified thy word above all thy name."

Isaiah 2:8: "Their land also is full of idols; they worship the work of their own hands, that which their own fingers have made:"

Isaiah 2:20: "In that day a man shall cast his idols of silver, and his idols of gold, which they made each one for himself to worship, to the moles and to the bats;"

Isaiah 27:13: "And it shall come to pass in that day, that the great trumpet shall be blown, and they shall come which were ready to perish in the land of Assyria, and the outcasts in the land of Egypt, and shall worship the LORD in the holy mount at Jerusalem."

Isaiah 36:7: "But if thou say to me, We trust in the LORD our God: is it not he, whose high places and whose altars Hezekiah hath taken away, and said to Judah and to Jerusalem, Ye shall worship before this altar?"

Isaiah 46:6: "They lavish gold out of the bag, and weigh silver in the balance, and hire a goldsmith; and he maketh it a god: they fall down, yea, they worship."

Isaiah 49:7: "Thus saith the LORD, the Redeemer of Israel, and his Holy One, to him whom man despiseth, to him whom the nation abhorreth, to a servant of rulers, Kings shall see and arise, princes also shall worship, because of the LORD that is faithful, and the Holy One of Israel, and he shall choose thee."

Isaiah 66:23: "And it shall come to pass, that from one new moon to another, and from one sabbath to another, shall all flesh come to worship before me, saith the LORD."

Jeremiah 7:2: "Stand in the gate of the LORD's house, and proclaim there this word, and say, Hear the word of the LORD, all ye of Judah, that enter in at these gates to worship the LORD."

Jeremiah 13:10: "This evil people, which refuse to hear my words, which walk in the imagination of their heart, and walk after other gods, to serve them, and to worship them, shall even be as this girdle, which is good for nothing."

Jeremiah 25:6: "And go not after other gods to serve them, and to worship them, and provoke me not to anger with the works of your hands; and I will do you no hurt."

Jeremiah 26:2: "Thus saith the LORD; Stand in the court of the LORD's house, and speak unto all the cities of Judah, which come to worship in the LORD's house, all the words that I command thee to speak unto them; diminish not a word!"

Jeremiah 44:19: "And when we burned incense to the queen of heaven, and poured out drink offerings unto her, did we make her cakes to worship her, and pour out drink offerings unto her, without our men?"

Ezekiel 46:2: "And the prince shall enter by the way of the porch of that gate without, and shall stand by the post of the gate, and the priests shall prepare his burnt offering and his peace offerings, and he shall worship at the threshold of the gate: then he shall go forth; but the gate shall not be shut until the evening."

Ezekiel 46:3: "Likewise the people of the land shall worship at the door of this gate before the LORD in the sabbaths and in the new moons."

Ezekiel 46:9: "But when the people of the land shall come before the LORD in the solemn feasts, he that entereth in by the way of the north gate to worship shall go out by the way of the south gate; and he that entereth by the way of the south gate shall go forth by the way of the north gate: he shall not return by the way of the gate whereby he came in, but shall go forth over against it."

Daniel 3:5: "That at what time ye hear the sound of the cornet, flute, harp, sackbut, psaltery, dulcimer, and all kinds of musick, ye fall down and worship the golden image that Nebuchadnezzar the king hath set up:"

Daniel 3:10: "Thou, O king, hast made a decree, that every man that shall hear the sound of the cornet, flute, harp, sackbut, psaltery, and dulcimer, and all kinds of musick, shall fall down and worship the golden image:"

Daniel 3:12: "There are certain Jews whom thou hast set over the affairs of the province of Babylon, Shadrach, Meshach, and Abednego; these men, O king, have not regarded thee: they serve not thy gods, nor worship the golden image which thou hast set up."

Daniel 3:14: "Nebuchadnezzar spake and said unto them, Is it true, O Shadrach, Meshach, and Abednego, do not ye serve my gods, nor worship the golden image which I have set up?"

Daniel 3:15: "Now if ye be ready that at what time ye hear the sound of the cornet, flute, harp, sackbut, psaltery, and dulcimer, and all kinds of musick, ye fall down and worship the image which I have made; well: but if ye worship not, ye shall be cast the same hour into the midst of a burning fiery furnace; and who is that God that shall deliver you out of my hands?"

Daniel 3:18: "But if not, be it known unto thee, O king, that we will not serve thy gods, nor worship the golden image which thou hast set up."

Daniel 3:28: "Then Nebuchadnezzar spake, and said, Blessed be the God of Shadrach, Meshach, and Abednego, who hath sent his angel, and delivered his servants that trusted in him, and have changed the king's word, and yielded their bodies, that they might not serve nor worship any god, except their own God."

Micah 5:13: "Thy graven images also will I cut off, and thy standing images out of the midst of thee; and thou shalt no more worship the work of thine hands."

Zephaniah 1:5: "And them that worship the host of heaven upon the housetops; and them that worship and that swear by the LORD, and that swear by Malcham;"

Zephaniah 2:11: "The LORD will be terrible unto them: for he will famish all the gods of the earth; and men shall worship him, every one from his place, even all the isles of the heathen."

Zechariah 14:16: "And it shall come to pass, that every one that is left of all the nations which came against Jerusalem shall even go up from year to year to worship the King, the LORD of hosts, and to keep the feast of tabernacles."

Zechariah 14:17: "And it shall be, that whoso will not come up of all the families of the earth unto Jerusalem to worship the King, the LORD of hosts, even upon them shall be no rain."

Matthew 2:2: "Saying, Where is he that is born King of the Jews? for we have seen his star in the east, and are come to worship him."

Matthew 2:8: "And he sent them to Bethlehem, and said, Go and search diligently for the young child; and when ye have found him, bring me word again, that I may come and worship him also."

Matthew 4:9: "And saith unto him, All these things will I give thee, if thou wilt fall down and worship me."

Matthew 4:10: "Then saith Jesus unto him, Get thee hence, Satan: for it is written, Thou shalt worship the Lord thy God, and him only shalt thou serve."

Matthew 15:9: "But in vain they do worship me, teaching for doctrines the commandments of men."

Mark 7:7: "Howbeit in vain do they worship me, teaching for doctrines the commandments of men."

Luke 4:7: "If thou therefore wilt worship me, all shall be thine."

Luke 4:8: "And Jesus answered and said unto him, Get thee behind me, Satan: for it is written, Thou shalt worship the Lord thy God, and him only shalt thou serve."

Luke 14:10: "But when thou art bidden, go and sit down in the lowest room; that when he that bade thee cometh, he may say unto thee, Friend, go up higher: then shalt thou have worship in the presence of them that sit at meat with thee."

John 4:20: "Our fathers worshipped in this mountain; and ye say, that in Jerusalem is the place where men ought to worship."

John 4:21: "Jesus saith unto her, Woman, believe me, the hour cometh, when ye shall neither in this mountain, nor yet at Jerusalem, worship the Father."

John 4:22: "Ye worship ye know not what: we know what we worship: for salvation is of the Jews."

John 4:23: "But the hour cometh, and now is, when the true worshippers shall worship the Father in spirit and in truth: for the Father seeketh such to worship him."

John 4:24: "God is a Spirit: and they that worship him must worship him in spirit and in truth."

John 12:20: "And there were certain Greeks among them that came up to worship at the feast:"

Acts 7:42: "Then God turned, and gave them up to worship the host of heaven; as it is written in the book of the prophets, O ye house of Israel, have ye offered to me slain beasts and sacrifices by the space of forty years in the wilderness?"

Acts 7:43: "Yea, ye took up the tabernacle of Moloch, and the star of your god Remphan, figures which ye made to worship them: and I will carry you away beyond Babylon."

Acts 8:27: "And he arose and went: and, behold, a man of Ethiopia, an eunuch of great authority under Candace queen of the Ethiopians, who had the charge of all her treasure, and had come to Jerusalem for to worship,"

Acts 17:23: "For as I passed by, and beheld your devotions, I found an altar with this inscription, TO THE UNKNOWN GOD. Whom therefore ye ignorantly worship, him declare I unto you."

Acts 18:13: "Saying, This fellow persuadeth men to worship God contrary to the law."

Acts 24:11: "Because that thou mayest understand, that there are yet but twelve days since I went up to Jerusalem for to worship."

Acts 24:14: "But this I confess unto thee, that after the way which they call heresy, so worship I the God of my fathers, believing all things which are written in the law and in the prophets:"

1 Corinthians 14:25: "And thus are the secrets of his heart made manifest; and so falling down on his face he will worship God, and report that God is in you of a truth."

Philippians 3:3: "For we are the circumcision, which worship God in the spirit, and rejoice in Christ Jesus, and have no confidence in the flesh."

Colossians 2:23: "Which things have indeed a shew of wisdom in will worship, and humility, and neglecting of the body: not in any honour to the satisfying of the flesh."

Hebrews 1:6: "And again, when he bringeth in the firstbegotten into the world, he saith, And let all the angels of God worship him."

Revelation 3:9: "Behold, I will make them of the synagogue of Satan, which say they are Jews, and are not, but do lie; behold, I will make them to come and worship before thy feet, and to know that I have loved thee."

Revelation 4:10: "The four and twenty elders fall down before him that sat on the throne, and worship him that liveth for ever and ever, and cast their crowns before the throne, saying,"

Revelation 9:20: "And the rest of the men which were not killed by these plagues yet repented not of the works of their hands, that they should not worship devils, and idols of gold, and silver, and brass, and stone, and of wood: which neither can see, nor hear, nor walk:"

Revelation 11:1: "And there was given me a reed like unto a rod: and the angel stood, saying, Rise, and measure the temple of God, and the altar, and them that worship therein."

Revelation 13:8: "And all that dwell upon the earth shall worship him, whose names are not written in the book of life of the Lamb slain from the foundation of the world."

Revelation 13:12: "And he exerciseth all the power of the first beast before him, and causeth the earth and them which dwell therein to worship the first beast, whose deadly wound was healed."

Revelation 13:15: "And he had power to give life unto the image of the beast, that the image of the beast should both speak, and cause that as many as would not worship the image of the beast should be killed."

Revelation 14:7: "Saying with a loud voice, Fear God, and give glory to him; for the hour of his judgment is come: and worship him that made heaven, and earth, and the sea, and the fountains of waters."

Revelation 14:9: "And the third angel followed them, saying with a loud voice, If any man worship the beast and his image, and receive his mark in his forehead, or in his hand,"

Revelation 14:11: "And the smoke of their torment ascendeth up for ever and ever: and they have no rest day nor night, who worship the beast and his image, and whosoever receiveth the mark of his name."

Revelation 15:4: "Who shall not fear thee, O Lord, and glorify thy name? for thou only art holy: for all nations shall come and worship before thee; for thy judgments are made manifest."

Revelation 19:10: "And I fell at his feet to worship him. And he said unto me, See thou do it not: I am thy fellowservant, and of thy brethren that have the testimony of Jesus: worship God: for the testimony of Jesus is the spirit of prophecy."

Revelation 22:8: "And I John saw these things, and heard them. And when I had heard and seen, I fell down to worship before the feet of the angel which shewed me these things."

Revelation 22:9: "Then saith he unto me, See thou do it not: for I am thy fellowservant, and of thy brethren the prophets, and of them which keep the sayings of this book: worship God."

## **WORSHIPPED**

Occurrences: 69

Genesis 24:26: "And the man bowed down his head, and worshipped the LORD."

Genesis 24:48: "And I bowed down my head, and worshipped the LORD, and blessed the LORD God of my master Abraham, which had led me in the right way to take my master's brother's daughter unto his son."

Genesis 24:52: "And it came to pass, that, when Abraham's servant heard their words, he worshipped the LORD, bowing himself to the earth."

Exodus 4:31: "And the people believed: and when they heard that the LORD had visited the



children of Israel, and that he had looked upon their affliction, then they bowed their heads and worshipped."

Exodus 12:27: "That ye shall say, It is the sacrifice of the LORD's passover, who passed over the houses of the children of Israel in Egypt, when he smote the Egyptians, and delivered our houses. And the people bowed the head and worshipped."

Exodus 32:8: "They have turned aside quickly out of the way which I commanded them: they have made them a molten calf, and have worshipped it, and have sacrificed thereunto, and said, These be thy gods, O Israel, which have brought thee up out of the land of Egypt."

Exodus 33:10: "And all the people saw the cloudy pillar stand at the tabernacle door: and all the people rose up and worshipped, every man in his tent door."

Exodus 34:8: "And Moses made haste, and bowed his head toward the earth, and worshipped."

Deuteronomy 17:3: "And hath gone and served other gods, and worshipped them, either the sun, or moon, or any of the host of heaven, which I have not commanded;"

Deuteronomy 29:26: "For they went and served other gods, and worshipped them, gods whom they knew not, and whom he had not given unto them:"

Judges 7:15: "And it was so, when Gideon heard the telling of the dream, and the interpretation thereof, that he worshipped, and returned into the host of Israel, and said, Arise; for the LORD hath delivered into your hand the host of Midian."

1 Samuel 1:19: "And they rose up in the morning early, and worshipped before the LORD, and returned, and came to their house to Ramah: and Elkanah knew Hannah his wife; and the LORD remembered her."

1 Samuel 1:28: "Therefore also I have lent him to the LORD; as long as he liveth he shall be lent to the LORD. And he worshipped the LORD there."

1 Samuel 15:31: "So Samuel turned again after Saul; and Saul worshipped the LORD."

2 Samuel 12:20: "Then David arose from the earth, and washed, and anointed himself, and changed his apparel, and came into the house of the LORD, and worshipped: then he came to his own house; and when he required, they set bread before him, and he did eat."

2 Samuel 15:32: "And it came to pass, that when David was come to the top of the mount, where he worshipped God, behold, Hushai the Archite came to meet him with his coat rent, and earth upon his head:"

1 Kings 9:9: "And they shall answer, Because they forsook the LORD their God, who brought forth their fathers out of the land of Egypt, and have taken hold upon other gods, and have worshipped them, and served them: therefore hath the LORD brought upon them all this evil."

1 Kings 11:33: "Because that they have forsaken me, and have worshipped Ashtoreth the goddess of the Zidonians, Chemosh the god of the Moabites, and Milcom the god of the children of Ammon, and have not walked in my ways, to do that which is right in mine eyes, and to keep my statutes and my judgments, as did David his father."

1 Kings 16:31: "And it came to pass, as if it had been a light thing for him to walk in the sins of Jeroboam the son of Nebat, that he took to wife Jezebel the daughter of Ethbaal king of the Zidonians, and went and served Baal, and worshipped him."

1 Kings 22:53: "For he served Baal, and worshipped him, and provoked to anger the LORD God of Israel, according to all that his father had done."

2 Kings 17:16: "And they left all the commandments of the LORD their God, and made them molten images, even two calves, and made a grove, and worshipped all the host of heaven, and served Baal."

2 Kings 21:3: "For he built up again the high places which Hezekiah his father had destroyed; and he reared up altars for Baal, and made a grove, as did Ahab king of Israel; and worshipped all the host of heaven, and served them."

2 Kings 21:21: "And he walked in all the way that his father walked in, and served the idols that his father served, and worshipped them:"

1 Chronicles 29:20: "And David said to all the congregation, Now bless the LORD your God. And all the congregation blessed the LORD God of their fathers, and bowed down their heads, and worshipped the LORD, and the king."

2 Chronicles 7:3: "And when all the children of Israel saw how the fire came down, and the glory of the LORD upon the house, they bowed themselves with their faces to the ground upon the pavement, and worshipped, and praised the LORD, saying, For he is good; for his mercy endureth for ever."

2 Chronicles 7:22: "And it shall be answered, Because they forsook the LORD God of their fathers, which brought them forth out of the land of Egypt, and laid hold on other gods, and worshipped them, and served them: therefore hath he brought all this evil upon them."

2 Chronicles 29:28: "And all the congregation worshipped, and the singers sang, and the trumpeters sounded: and all this continued until the burnt offering was finished."

2 Chronicles 29:29: "And when they had made an end of offering, the king and all that were present with him bowed themselves, and worshipped."

2 Chronicles 29:30: "Moreover Hezekiah the king and the princes commanded the Levites to sing praise unto the LORD with the words of David, and of Asaph the seer. And they sang praises with gladness, and they bowed their heads and worshipped."

2 Chronicles 33:3: "For he built again the high places which Hezekiah his father had broken down, and he reared up altars for Baalim, and made groves, and worshipped all the host of heaven, and served them."

Nehemiah 8:6: "And Ezra blessed the LORD, the great God. And all the people answered, Amen, Amen, with lifting up their hands: and they bowed their heads, and worshipped the LORD with their faces to the ground."

Nehemiah 9:3: "And they stood up in their place, and read in the book of the law of the LORD their God one fourth part of the day; and another fourth part they confessed, and worshipped the LORD their God."

Job 1:20: "Then Job arose, and rent his mantle, and shaved his head, and fell down upon the ground, and worshipped,"

Psalms 106:19: "They made a calf in Horeb, and worshipped the molten image."

Jeremiah 1:16: "And I will utter my judgments against them touching all their wickedness, who have forsaken me, and have burned incense unto other gods, and worshipped the works of their own hands."

Jeremiah 8:2: "And they shall spread them before the sun, and the moon, and all the host of heaven, whom they have loved, and whom they have served, and after whom they have walked, and whom they have sought, and whom they have worshipped: they shall not be gathered, nor be buried; they shall be for dung upon the face of the earth."

Jeremiah 16:11: "Then shalt thou say unto them, Because your fathers have forsaken me, saith the LORD, and have walked after other gods, and have served them, and have worshipped them, and have forsaken me, and have not kept my law;"

Jeremiah 22:9: "Then they shall answer, Because they have forsaken the covenant of the LORD their God, and worshipped other gods, and served them."

Ezekiel 8:16: "And he brought me into the inner court of the LORD's house, and, behold, at the door of the temple of the LORD, between the porch and the altar, were about five and twenty men, with their backs toward the temple of the LORD, and their faces toward the east; and they worshipped the sun toward the east."

Daniel 2:46: "Then the king Nebuchadnezzar fell upon his face, and worshipped Daniel, and commanded that they should offer an oblation and sweet odours unto him."

Daniel 3:7: "Therefore at that time, when all the people heard the sound of the cornet, flute, harp, sackbut, psaltery, and all kinds of musick, all the people, the nations, and the languages, fell down and worshipped the golden image that Nebuchadnezzar the king had set up."

Matthew 2:11: "And when they were come into the house, they saw the young child with Mary his mother, and fell down, and worshipped him: and when they had opened their treasures, they presented unto him gifts; gold, and frankincense and myrrh."

Matthew 8:2: "And, behold, there came a leper and worshipped him, saying, Lord, if thou wilt, thou canst make me clean."

Matthew 9:18: "While he spake these things unto them, behold, there came a certain ruler, and worshipped him, saying, My daughter is even now dead: but come and lay thy hand upon her, and she shall live."

Matthew 14:33: "Then they that were in the ship came and worshipped him, saying, Of a truth thou art the Son of God."

Matthew 15:25: "Then came she and worshipped him, saying, Lord, help me."

Matthew 18:26: "The servant therefore fell down, and worshipped him, saying, Lord, have patience with me, and I will pay thee all."

Matthew 28:9: "And as they went to tell his disciples, behold, Jesus met them, saying, All hail. And they came and held him by the feet, and worshipped him."

Matthew 28:17: "And when they saw him, they worshipped him: but some doubted."

Mark 5:6: "But when he saw Jesus afar off, he ran and worshipped him,"

Mark 15:19: "And they smote him on the head with a reed, and did spit upon him, and bowing their knees worshipped him."

Luke 24:52: "And they worshipped him, and returned to Jerusalem with great joy:"

John 4:20: "Our fathers worshipped in this mountain; and ye say, that in Jerusalem is the place where men ought to worship."

John 9:38: "And he said, Lord, I believe. And he worshipped him."

Acts 10:25: "And as Peter was coming in, Cornelius met him, and fell down at his feet, and worshipped him."

Acts 16:14: "And a certain woman named Lydia, a seller of purple, of the city of Thyatira, which worshipped God, heard us: whose heart the Lord opened, that she attended unto the things which were spoken of Paul."

Acts 17:25: "Neither is worshipped with men's hands, as though he needed any thing, seeing he giveth to all life, and breath, and all things;"

Acts 18:7: "And he departed thence, and entered into a certain man's house, named Justus, one that worshipped God, whose house joined hard to the synagogue."

Romans 1:25: "Who changed the truth of God into a lie, and worshipped and served the creature more than the Creator, who is blessed for ever. Amen."

2 Thessalonians 2:4: "Who opposeth and exalteth himself above all that is called God, or that is worshipped; so that he as God sitteth in the temple of God, shewing himself that he is God."

Hebrews 11:21: "By faith Jacob, when he was a dying, blessed both the sons of Joseph; and worshipped, leaning upon the top of his staff."

Revelation 5:14: "And the four beasts said, Amen. And the four and twenty elders fell down and worshipped him that liveth for ever and ever."

Revelation 7:11: "And all the angels stood round about the throne, and about the elders and the four beasts, and fell before the throne on their faces, and worshipped God,"

Revelation 11:16: "And the four and twenty elders, which sat before God on their seats, fell upon their faces, and worshipped God,"

Revelation 13:4: "And they worshipped the dragon which gave power unto the beast: and they worshipped the beast, saying, Who is like unto the beast? who is able to make war with him?"

Revelation 16:2: "And the first went, and poured out his vial upon the earth; and there fell a noisome and grievous sore upon the men which had the mark of the beast, and upon them which worshipped his image."

Revelation 19:4: "And the four and twenty elders and the four beasts fell down and worshipped God

that sat on the throne, saying, Amen; Alleluia."

Revelation 19:20: "And the beast was taken, and with him the false prophet that wrought miracles before him, with which he deceived them that had received the mark of the beast, and them that worshipped his image. These both were cast alive into a lake of fire burning with brimstone."

Revelation 20:4: "And I saw thrones, and they sat upon them, and judgment was given unto them: and I saw the souls of them that were beheaded for the witness of Jesus, and for the word of God, and which had not worshipped the beast, neither his image, neither had received his mark upon their foreheads, or in their hands; and they lived and reigned with Christ a thousand years."

## **WORSHIPPER**

Occurrences: 2

John 9:31: "Now we know that God heareth not sinners: but if any man be a worshipper of God, and doeth his will, him he heareth."

Acts 19:35: "And when the townclerk had appeased the people, he said, Ye men of Ephesus, what man is there that knoweth not how that the city of the Ephesians is a worshipper of the great goddess Diana, and of the image which fell down from Jupiter?"

## **WORSHIPPERS**

Occurrences: 6

2 Kings 10:19: "Now therefore call unto me all the prophets of Baal, all his servants, and all his priests; let none be wanting: for I have a great sacrifice to do to Baal; whosoever shall be wanting, he shall not live. But Jehu did it in subtilty, to the intent that he might destroy the worshippers of Baal."

2 Kings 10:21: "And Jehu sent through all Israel: and all the worshippers of Baal came, so that there was not a man left that came not. And they came into the house of Baal; and the house of Baal was full from one end to another."

2 Kings 10:22: "And he said unto him that was over the vestry, Bring forth vestments for all the worshippers of Baal. And he brought them forth vestments."

2 Kings 10:23: "And Jehu went, and Jehonadab the son of Rechab, into the house of Baal, and said unto the worshippers of Baal, Search, and look that there be here with you none of the servants of the LORD, but the worshippers of Baal only."

John 4:23: "But the hour cometh, and now is, when the true worshippers shall worship the Father in spirit and in truth: for the Father seeketh such to worship him."

Hebrews 10:2: "For then would they not have ceased to be offered? because that the worshippers once purged should have had no more conscience of sins."

## **WORSHIPPETH**

Occurrences: 6

Nehemiah 9:6: "Thou, even thou, art LORD alone; thou hast made heaven, the heaven of heavens, with all their host, the earth, and all things that are therein, the seas, and all that is therein, and thou preservest them all; and the host of heaven worshippeth thee."

Isaiah 44:15: "Then shall it be for a man to burn: for he will take thereof, and warm himself; yea, he kindleth it, and baketh bread; yea, he maketh a god, and worshippeth it; he maketh it a graven image, and falleth down thereto."

Isaiah 44:17: "And the residue thereof he maketh a god, even his graven image: he falleth down unto it, and worshippeth it, and prayeth unto it, and saith, Deliver me; for thou art my god."

Daniel 3:6: "And whoso falleth not down and worshippeth shall the same hour be cast into the midst of a burning fiery furnace."

Daniel 3:11: "And whoso falleth not down and worshipping, that he should be cast into the midst of a burning fiery furnace."

Acts 19:27: "So that not only this our craft is in danger to be set at nought; but also that the temple of the great goddess Diana should be despised, and her magnificence should be destroyed, whom all Asia and the world worshippeth."

## **WORSHIPPING**

Occurrences: 5

2 Kings 19:37: "And it came to pass, as he was worshipping in the house of Nisroch his god, that Adrammelech and Sharezer his sons smote him with the sword: and they escaped into the land of Armenia. And Esarhaddon his son reigned in his stead."

2 Chronicles 20:18: "And Jehoshaphat bowed his head with his face to the ground: and all Judah and the inhabitants of Jerusalem fell before the LORD, worshipping the LORD."

Isaiah 37:38: "And it came to pass, as he was worshipping in the house of Nisroch his god, that Adrammelech and Sharezer his sons smote him with the sword; and they escaped into the land of Armenia: and Esarhaddon his son reigned in his stead."

Matthew 20:20: "Then came to him the mother of Zebedees children with her sons, worshipping him, and desiring a certain thing of him."

Colossians 2:18: "Let no man beguile you of your reward in a voluntary humility and worshipping of angels, intruding into those things which he hath not seen, vainly puffed up by his fleshly mind,"

## **WORST**

Occurrences: 1

Ezekiel 7:24: "Wherefore I will bring the worst of the heathen, and they shall possess their houses: I will also make the pomp of the strong to cease; and their holy places shall be defiled."

## **WORTH**

Occurrences: 9

Genesis 23:9: "That he may give me the cave of Machpelah, which he hath, which is in the end of his field; for as much money as it is worth he shall give it me for a possession of a buryingplace amongst you."

Genesis 23:15: "My lord, hearken unto me: the land is worth four hundred shekels of silver; what is that betwixt me and thee? bury therefore thy dead."

Leviticus 27:23: "Then the priest shall reckon unto him the worth of thy estimation, even unto the year of the jubile: and he shall give thine estimation in that day, as a holy thing unto the LORD."

Deuteronomy 15:18: "It shall not seem hard unto thee, when thou sendest him away free from thee; for he hath been worth a double hired servant to thee, in serving thee six years: and the LORD thy God shall bless thee in all that thou doest."

2 Samuel 18:3: "But the people answered, Thou shalt not go forth: for if we flee away, they will not care for us; neither if half of us die, will they care for us: but now thou art worth ten thousand of us: therefore now it is better that thou succour us out of the city."

1 Kings 21:2: "And Ahab spake unto Naboth, saying, Give me thy vineyard, that I may have it for a garden of herbs, because it is near unto my house: and I will give thee for it a better vineyard than it; or, if it seem good to thee, I will give thee the worth of it in money."

Job 24:25: "And if it be not so now, who will make me a liar, and make my speech nothing worth?"

Proverbs 10:20: "The tongue of the just is as choice silver: the heart of the wicked is little worth."

Ezekiel 30:2: "Son of man, prophesy and say, Thus saith the Lord GOD; Howl ye, Woe worth the day!"

## WORTHIES

Occurrences: 1

Nahum 2:5: "He shall recount his worthies: they shall stumble in their walk; they shall make haste to the wall thereof, and the defence shall be prepared."

## WORTHILY

Occurrences: 1

Ruth 4:11: "And all the people that were in the gate, and the elders, said, We are witnesses. The LORD make the woman that is come into thine house like Rachel and like Leah, which two did build the house of Israel: and do thou worthily in Ephratah, and be famous in Bethlehem."

## WORTHY

Occurrences: 66

Genesis 32:10: "I am not worthy of the least of all the mercies, and of all the truth, which thou hast shewed unto thy servant; for with my staff I passed over this Jordan; and now I am become two bands."

Deuteronomy 17:6: "At the mouth of two witnesses, or three witnesses, shall he that is worthy of death be put to death; but at the mouth of one witness he shall not be put to death."

Deuteronomy 19:6: "Lest the avenger of the blood pursue the slayer, while his heart is hot, and overtake him, because the way is long, and slay him; whereas he was not worthy of death, inasmuch as he hated him not in time past."

Deuteronomy 21:22: "And if a man have committed a sin worthy of death, and he be to be put to death, and thou hang him on a tree:"

Deuteronomy 22:26: "But unto the damsel thou shalt do nothing; there is in the damsel no sin worthy of death: for as when a man riseth against his neighbour, and slayeth him, even so is this matter:"

Deuteronomy 25:2: "And it shall be, if the wicked man be worthy to be beaten, that the judge shall cause him to lie down, and to be beaten before his face, according to his fault, by a certain number."

1 Samuel 1:5: "But unto Hannah he gave a worthy portion; for he loved Hannah: but the LORD had shut up her womb."

1 Samuel 26:16: "This thing is not good that thou hast done. As the LORD liveth, ye are worthy to die, because ye have not kept your master, the LORD's anointed. And now see where the king's spear is, and the cruse of water that was at his bolster."

2 Samuel 22:4: "I will call on the LORD, who is worthy to be praised: so shall I be saved from mine enemies."

1 Kings 1:52: "And Solomon said, If he will shew himself a worthy man, there shall not an hair of him fall to the earth: but if wickedness shall be found in him, he shall die."

1 Kings 2:26: "And unto Abiathar the priest said the king, Get thee to Anathoth, unto thine own fields; for thou art worthy of death: but I will not at this time put thee to death, because thou barest the ark of the LORD God before David my father, and because thou hast been afflicted in all wherein my father was afflicted."

Psalms 18:3: "I will call upon the LORD, who is worthy to be praised: so shall I be saved from mine enemies."

Jeremiah 26:11: "Then spake the priests and the prophets unto the princes and to all the people, saying, This man is worthy to die; for he hath prophesied against this city, as ye have heard with your ears."

Jeremiah 26:16: "Then said the princes and all the people unto the priests and to the prophets; This man is not worthy to die: for he hath spoken to us in the name of the LORD our God."

Matthew 3:11: "I indeed baptize you with water unto repentance. but he that cometh after me is mightier than I, whose shoes I am not worthy to bear: he shall baptize you with the Holy Ghost, and with fire:"

Matthew 8:8: "The centurion answered and said, Lord, I am not worthy that thou shouldest come under my roof: but speak the word only, and my servant shall be healed."

Matthew 10:10: "Nor scrip for your journey, neither two coats, neither shoes, nor yet staves: for the workman is worthy of his meat."

Matthew 10:11: "And into whatsoever city or town ye shall enter, enquire who in it is worthy; and there abide till ye go thence."

Matthew 10:13: "And if the house be worthy, let your peace come upon it: but if it be not worthy, let your peace return to you."

Matthew 10:37: "He that loveth father or mother more than me is not worthy of me: and he that loveth son or daughter more than me is not worthy of me."

Matthew 10:38: "And he that taketh not his cross, and followeth after me, is not worthy of me."

Matthew 22:8: "Then saith he to his servants, The wedding is ready, but they which were bidden were not worthy."

Mark 1:7: "And preached, saying, There cometh one mightier than I after me, the latchet of whose shoes I am not worthy to stoop down and unloose."

Luke 3:8: "Bring forth therefore fruits worthy of repentance, and begin not to say within yourselves, We have Abraham to our father: for I say unto you, That God is able of these stones to raise up children unto Abraham."

Luke 3:16: "John answered, saying unto them all, I indeed baptize you with water; but one mightier than I cometh, the latchet of whose shoes I am not worthy to unloose: he shall baptize you with the Holy Ghost and with fire:"

Luke 7:4: "And when they came to Jesus, they besought him instantly, saying, That he was worthy for whom he should do this:"

Luke 7:6: "Then Jesus went with them. And when he was now not far from the house, the centurion sent friends to him, saying unto him, Lord, trouble not thyself: for I am not worthy that thou shouldest enter under my roof:"

Luke 7:7: "Wherefore neither thought I myself worthy to come unto thee: but say in a word, and my servant shall be healed."

Luke 10:7: "And in the same house remain, eating and drinking such things as they give: for the labourer is worthy of his hire. Go not from house to house."

Luke 12:48: "But he that knew not, and did commit things worthy of stripes, shall be beaten with few stripes. For unto whomsoever much is given, of him shall be much required: and to whom men have committed much, of him they will ask the more."

Luke 15:19: "And am no more worthy to be called thy son: make me as one of thy hired servants."

Luke 15:21: "And the son said unto him, Father, I have sinned against heaven, and in thy sight, and am no more worthy to be called thy son."

Luke 20:35: "But they which shall be accounted worthy to obtain that world, and the resurrection from the dead, neither marry, nor are given in marriage:"

Luke 21:36: "Watch ye therefore, and pray always, that ye may be accounted worthy to escape all these things that shall come to pass, and to stand before the Son of man."

Luke 23:15: "No, nor yet Herod: for I sent you to him; and, lo, nothing worthy of death is done unto him."

John 1:27: "He it is, who coming after me is preferred before me, whose shoe's latchet I am not worthy to unloose."

Acts 5:41: "And they departed from the presence of the council, rejoicing that they were counted worthy to suffer shame for his name."

Acts 13:25: "And as John fulfilled his course, he said, Whom think ye that I am? I am not he. But,

behold, there cometh one after me, whose shoes of his feet I am not worthy to loose."

Acts 23:29: "Whom I perceived to be accused of questions of their law, but to have nothing laid to his charge worthy of death or of bonds."

Acts 24:2: "And when he was called forth, Tertullus began to accuse him, saying, Seeing that by thee we enjoy great quietness, and that very worthy deeds are done unto this nation by thy providence,"

Acts 25:11: "For if I be an offender, or have committed any thing worthy of death, I refuse not to die: but if there be none of these things whereof these accuse me, no man may deliver me unto them. I appeal unto Caesar."

Acts 25:25: "But when I found that he had committed nothing worthy of death, and that he himself hath appealed to Augustus, I have determined to send him."

Acts 26:31: "And when they were gone aside, they talked between themselves, saying, This man doeth nothing worthy of death or of bonds."

Romans 1:32: "Who knowing the judgment of God, that they which commit such things are worthy of death, not only do the same, but have pleasure in them that do them."

Romans 8:18: "For I reckon that the sufferings of this present time are not worthy to be compared with the glory which shall be revealed in us."

Ephesians 4:1: "I therefore, the prisoner of the Lord, beseech you that ye walk worthy of the vocation wherewith ye are called,"

Colossians 1:10: "That ye might walk worthy of the Lord unto all pleasing, being fruitful in every good work, and increasing in the knowledge of God;"

1 Thessalonians 2:12: "That ye would walk worthy of God, who hath called you unto his kingdom and glory."

2 Thessalonians 1:5: "Which is a manifest token of the righteous judgment of God, that ye may be counted worthy of the kingdom of God, for which ye also suffer:"

2 Thessalonians 1:11: "Wherefore also we pray always for you, that our God would count you worthy of this calling, and fulfil all the good pleasure of his goodness, and the work of faith with power:"

1 Timothy 1:15: "This is a faithful saying, and worthy of all acceptation, that Christ Jesus came into the world to save sinners; of whom I am chief."

1 Timothy 4:9: "This is a faithful saying and worthy of all acceptation."

1 Timothy 5:17: "Let the elders that rule well be counted worthy of double honour, especially they who labour in the word and doctrine."

1 Timothy 5:18: "For the scripture saith, Thou shalt not muzzle the ox that treadeth out the corn. And, The labourer is worthy of his reward."

1 Timothy 6:1: "Let as many servants as are under the yoke count their own masters worthy of all honour, that the name of God and his doctrine be not blasphemed."

Hebrews 3:3: "For this man was counted worthy of more glory than Moses, inasmuch as he who hath builded the house hath more honour than the house."

Hebrews 10:29: "Of how much sorer punishment, suppose ye, shall he be thought worthy, who hath trodden under foot the Son of God, and hath counted the blood of the covenant, wherewith he was sanctified, an unholy thing, and hath done despite unto the Spirit of grace?"

Hebrews 11:38: "(Of whom the world was not worthy:) they wandered in deserts, and in mountains, and in dens and caves of the earth."

James 2:7: "Do not they blaspheme that worthy name by the which ye are called?"

Revelation 3:4: "Thou hast a few names even in Sardis which have not defiled their garments; and they shall walk with me in white: for they are worthy."

Revelation 4:11: "Thou art worthy, O Lord, to receive glory and honour and power: for thou hast created all things, and for thy pleasure they are and were created."

Revelation 5:2: "And I saw a strong angel proclaiming with a loud voice, Who is worthy to open the



book, and to loose the seals thereof?"

Revelation 5:4: "And I wept much, because no man was found worthy to open and to read the book, neither to look thereon."

Revelation 5:9: "And they sung a new song, saying, Thou art worthy to take the book, and to open the seals thereof: for thou wast slain, and hast redeemed us to God by thy blood out of every kindred, and tongue, and people, and nation;"

Revelation 5:12: "Saying with a loud voice, Worthy is the Lamb that was slain to receive power, and riches, and wisdom, and strength, and honour, and glory, and blessing."

Revelation 16:6: "For they have shed the blood of saints and prophets, and thou hast given them blood to drink; for they are worthy."

## **WOT**

Occurrences: 10

Genesis 21:26: "And Abimelech said, I wot not who hath done this thing; neither didst thou tell me, neither yet heard I of it, but to day."

Genesis 44:15: "And Joseph said unto them, What deed is this that ye have done? wot ye not that such a man as I can certainly divine?"

Exodus 32:1: "And when the people saw that Moses delayed to come down out of the mount, the people gathered themselves together unto Aaron, and said unto him, Up, make us gods, which shall go before us; for as for this Moses, the man that brought us up out of the land of Egypt, we wot not what is become of him."

Exodus 32:23: "For they said unto me, Make us gods, which shall go before us: for as for this Moses, the man that brought us up out of the land of Egypt, we wot not what is become of him."

Numbers 22:6: "Come now therefore, I pray thee, curse me this people; for they are too mighty for me: peradventure I shall prevail, that we may smite them, and that I may drive them out of the land: for I wot that he whom thou blessest is blessed, and he whom thou cursest is cursed."

Joshua 2:5: "And it came to pass about the time of shutting of the gate, when it was dark, that the men went out: whither the men went I wot not: pursue after them quickly; for ye shall overtake them."

Acts 3:17: "And now, brethren, I wot that through ignorance ye did it, as did also your rulers."

Acts 7:40: "Saying unto Aaron, Make us gods to go before us: for as for this Moses, which brought us out of the land of Egypt, we wot not what is become of him."

Romans 11:2: "God hath not cast away his people which he foreknew. Wot ye not what the scripture saith of Elias? how he maketh intercession to God against Israel saying,"

Philippians 1:22: "But if I live in the flesh, this is the fruit of my labour: yet what I shall choose I wot not."

## **WOTTETH**

Occurrences: 1

Genesis 39:8: "But he refused, and said unto his master's wife, Behold, my master wotteth not what is with me in the house, and he hath committed all that he hath to my hand;"

## **WOULD**

Occurrences: 406

Genesis 2:19: "And out of the ground the LORD God formed every beast of the field, and every fowl of the air; and brought them unto Adam to see what he would call them: and whatsoever Adam called every living creature, that was the name thereof."

Genesis 21:7: "And she said, Who would have said unto Abraham, that Sarah should have given

children suck? for I have born him a son in his old age."

Genesis 30:34: "And Laban said, Behold, I would it might be according to thy word."

Genesis 42:21: "And they said one to another, We are verily guilty concerning our brother, in that we saw the anguish of his soul, when he besought us, and we would not hear; therefore is this distress come upon us."

Genesis 42:22: "And Reuben answered them, saying, Spake I not unto you, saying, Do not sin against the child; and ye would not hear? therefore, behold, also his blood is required."

Genesis 43:7: "And they said, The man asked us straitly of our state, and of our kindred, saying, Is your father yet alive? have ye another brother? and we told him according to the tenor of these words: could we certainly know that he would say, Bring your brother down?"

Genesis 44:22: "And we said unto my lord, The lad cannot leave his father: for if he should leave his father, his father would die."

Exodus 2:4: "And his sister stood afar off, to wit what would be done to him."

Exodus 8:32: "And Pharaoh hardened his heart at this time also, neither would he let the people go."

Exodus 9:35: "And the heart of Pharaoh was hardened, neither would he let the children of Israel go; as the LORD had spoken by Moses."

Exodus 10:20: "But the LORD hardened Pharaoh's heart, so that he would not let the children of Israel go."

Exodus 10:27: "But the LORD hardened Pharaoh's heart, and he would not let them go."

Exodus 11:10: "And Moses and Aaron did all these wonders before Pharaoh: and the LORD hardened Pharaoh's heart, so that he would not let the children of Israel go out of his land."

Exodus 13:15: "And it came to pass, when Pharaoh would hardly let us go, that the LORD slew all the firstborn in the land of Egypt, both the firstborn of man, and the firstborn of beast: therefore I sacrifice to the LORD all that openeth the matrix, being males; but all the firstborn of my children I redeem."

Exodus 16:3: "And the children of Israel said unto them, Would to God we had died by the hand of the LORD in the land of Egypt, when we sat by the flesh pots, and when we did eat bread to the full; for ye have brought us forth into this wilderness, to kill this whole assembly with hunger."

Numbers 11:29: "And Moses said unto him, Enviest thou for my sake? would God that all the LORD's people were prophets, and that the LORD would put his spirit upon them!"

Numbers 14:2: "And all the children of Israel murmured against Moses and against Aaron: and the whole congregation said unto them, Would God that we had died in the land of Egypt! or would God we had died in this wilderness!"

Numbers 20:3: "And the people chode with Moses, and spake, saying, Would God that we had died when our brethren died before the LORD!"

Numbers 21:23: "And Sihon would not suffer Israel to pass through his border: but Sihon gathered all his people together, and went out against Israel into the wilderness: and he came to Jahaz, and fought against Israel."

Numbers 22:18: "And Balaam answered and said unto the servants of Balak, If Balak would give me his house full of silver and gold, I cannot go beyond the word of the LORD my God, to do less or more."

Numbers 22:29: "And Balaam said unto the ass, Because thou hast mocked me: I would there were a sword in mine hand, for now would I kill thee."

Numbers 24:13: "If Balak would give me his house full of silver and gold, I cannot go beyond the commandment of the LORD, to do either good or bad of mine own mind; but what the LORD saith, that will I speak?"

Deuteronomy 1:26: "Notwithstanding ye would not go up, but rebelled against the commandment of the LORD your God:"

Deuteronomy 1:43: "So I spake unto you; and ye would not hear, but rebelled against the commandment of the LORD, and went presumptuously up into the hill."

Deuteronomy 1:45: "And ye returned and wept before the LORD; but the LORD would not hearken to your voice, nor give ear unto you."

Deuteronomy 2:30: "But Sihon king of Heshbon would not let us pass by him: for the LORD thy God hardened his spirit, and made his heart obstinate, that he might deliver him into thy hand, as appeareth this day."

Deuteronomy 3:26: "But the LORD was wroth with me for your sakes, and would not hear me: and the LORD said unto me, Let it suffice thee; speak no more unto me of this matter."

Deuteronomy 5:29: "O that there were such an heart in them, that they would fear me, and keep all my commandments always, that it might be well with them, and with their children for ever!"

Deuteronomy 7:8: "But because the LORD loved you, and because he would keep the oath which he had sworn unto your fathers, hath the LORD brought you out with a mighty hand, and redeemed you out of the house of bondmen, from the hand of Pharaoh king of Egypt."

Deuteronomy 8:20: "As the nations which the LORD destroyeth before your face, so shall ye perish; because ye would not be obedient unto the voice of the LORD your God."

Deuteronomy 9:25: "Thus I fell down before the LORD forty days and forty nights, as I fell down at the first; because the LORD had said he would destroy you."

Deuteronomy 10:10: "And I stayed in the mount, according to the first time, forty days and forty nights; and the LORD hearkened unto me at that time also, and the LORD would not destroy thee."

Deuteronomy 23:5: "Nevertheless the LORD thy God would not hearken unto Balaam; but the LORD thy God turned the curse into a blessing unto thee, because the LORD thy God loved thee."

Deuteronomy 23:21: "When thou shalt vow a vow unto the LORD thy God, thou shalt not slack to pay it: for the LORD thy God will surely require it of thee; and it would be sin in thee."

Deuteronomy 28:56: "The tender and delicate woman among you, which would not adventure to set the sole of her foot upon the ground for delicateness and tenderness, her eye shall be evil toward the husband of her bosom, and toward her son, and toward her daughter,"

Deuteronomy 28:67: "In the morning thou shalt say, Would God it were even! and at even thou shalt say, Would God it were morning! for the fear of thine heart wherewith thou shalt fear, and for the sight of thine eyes which thou shalt see."

Deuteronomy 32:26: "I said, I would scatter them into corners, I would make the remembrance of them to cease from among men:"

Deuteronomy 32:29: "O that they were wise, that they understood this, that they would consider their latter end!"

Joshua 5:6: "For the children of Israel walked forty years in the wilderness, till all the people that were men of war, which came out of Egypt, were consumed, because they obeyed not the voice of the LORD: unto whom the LORD sware that he would not shew them the land, which the LORD sware unto their fathers that he would give us, a land that floweth with milk and honey."

Joshua 7:7: "And Joshua said, Alas, O LORD God, wherefore hast thou at all brought this people over Jordan, to deliver us into the hand of the Amorites, to destroy us? would to God we had been content, and dwelt on the other side Jordan!"

Joshua 17:12: "Yet the children of Manasseh could not drive out the inhabitants of those cities; but the Canaanites would dwell in that land."

Joshua 24:10: "But I would not hearken unto Balaam; therefore he blessed you still: so I delivered you out of his hand."

Judges 1:27: "Neither did Manasseh drive out the inhabitants of Bethshean and her towns, nor Taanach and her towns, nor the inhabitants of Dor and her towns, nor the inhabitants of Ibleam and her towns, nor the inhabitants of Megiddo and her towns: but the Canaanites would dwell in that land."

Judges 1:34: "And the Amorites forced the children of Dan into the mountain: for they would not suffer them to come down to the valley:"

Judges 1:35: "But the Amorites would dwell in mount Heres in Aijalon, and in Shaalbim: yet the

hand of the house of Joseph prevailed, so that they became tributaries."

Judges 2:17: "And yet they would not hearken unto their judges, but they went a whoring after other gods, and bowed themselves unto them: they turned quickly out of the way which their fathers walked in, obeying the commandments of the LORD; but they did not so."

Judges 3:4: "And they were to prove Israel by them, to know whether they would hearken unto the commandments of the LORD, which he commanded their fathers by the hand of Moses."

Judges 8:19: "And he said, They were my brethren, even the sons of my mother: as the LORD liveth, if ye had saved them alive, I would not slay you."

Judges 8:24: "And Gideon said unto them, I would desire a request of you, that ye would give me every man the earrings of his prey. (For they had golden earrings, because they were Ishmaelites.)"

Judges 9:29: "And would to God this people were under my hand! then would I remove Abimelech. And he said to Abimelech, Increase thine army, and come out."

Judges 11:17: "Then Israel sent messengers unto the king of Edom, saying, Let me, I pray thee, pass through thy land: but the king of Edom would not hearken thereto. And in like manner they sent unto the king of Moab: but he would not consent: and Israel abode in Kadesh."

Judges 13:23: "But his wife said unto him, If the LORD were pleased to kill us, he would not have received a burnt offering and a meat offering at our hands, neither would he have shewed us all these things, nor would as at this time have told us such things as these."

Judges 14:6: "And the Spirit of the LORD came mightily upon him, and he rent him as he would have rent a kid, and he had nothing in his hand: but he told not his father or his mother what he had done."

Judges 15:1: "But it came to pass within a while after, in the time of wheat harvest, that Samson visited his wife with a kid; and he said, I will go in to my wife into the chamber. But her father would not suffer him to go in."

Judges 19:10: "But the man would not tarry that night, but he rose up and departed, and came over against Jebus, which is Jerusalem; and there were with him two asses saddled, his concubine also was with him."

Judges 19:25: "But the men would not hearken to him: so the man took his concubine, and brought her forth unto them; and they knew her, and abused her all the night until the morning: and when the day began to spring, they let her go."

Judges 20:13: "Now therefore deliver us the men, the children of Belial, which are in Gibeah, that we may put them to death, and put away evil from Israel. But the children of Benjamin would not hearken to the voice of their brethren the children of Israel."

Ruth 1:13: "Would ye tarry for them till they were grown? would ye stay for them from having husbands? nay, my daughters; for it grieveth me much for your sakes that the hand of the LORD is gone out against me."

1 Samuel 2:16: "And if any man said unto him, Let them not fail to burn the fat presently, and then take as much as thy soul desireth; then he would answer him, Nay; but thou shalt give it me now: and if not, I will take it by force."

1 Samuel 2:25: "If one man sin against another, the judge shall judge him: but if a man sin against the LORD, who shall intreat for him? Notwithstanding they hearkened not unto the voice of their father, because the LORD would slay them."

1 Samuel 13:13: "And Samuel said to Saul, Thou hast done foolishly: thou hast not kept the commandment of the LORD thy God, which he commanded thee: for now would the LORD have established thy kingdom upon Israel for ever."

1 Samuel 15:9: "But Saul and the people spared Agag, and the best of the sheep, and of the oxen, and of the fatlings, and the lambs, and all that was good, and would not utterly destroy them: but every thing that was vile and refuse, that they destroyed utterly."

1 Samuel 18:2: "And Saul took him that day, and would let him go no more home to his father's house."

1 Samuel 20:9: "And Jonathan said, Far be it from thee: for if I knew certainly that evil were determined by my father to come upon thee, then would not I tell it thee?"

1 Samuel 22:17: "And the king said unto the footmen that stood about him, Turn, and slay the priests of the LORD: because their hand also is with David, and because they knew when he fled, and did not shew it to me. But the servants of the king would not put forth their hand to fall upon the priests of the LORD."

1 Samuel 22:22: "And David said unto Abiathar, I knew it that day, when Doeg the Edomite was there, that he would surely tell Saul: I have occasioned the death of all the persons of thy father's house."

1 Samuel 26:23: "The LORD render to every man his righteousness and his faithfulness; for the LORD delivered thee into my hand to day, but I would not stretch forth mine hand against the LORD's anointed."

1 Samuel 31:4: "Then said Saul unto his armourbearer, Draw thy sword, and thrust me through therewith; lest these uncircumcised come and thrust me through, and abuse me. But his armourbearer would not; for he was sore afraid. Therefore Saul took a sword, and fell upon it."

2 Samuel 2:21: "And Abner said to him, Turn thee aside to thy right hand or to thy left, and lay thee hold on one of the young men, and take thee his armour. But Asahel would not turn aside from following of him."

2 Samuel 4:6: "And they came thither into the midst of the house, as though they would have fetched wheat; and they smote him under the fifth rib: and Rechab and Baanah his brother escaped."

2 Samuel 4:10: "When one told me, saying, Behold, Saul is dead, thinking to have brought good tidings, I took hold of him, and slew him in Ziklag, who thought that I would have given him a reward for his tidings:"

2 Samuel 6:10: "So David would not remove the ark of the LORD unto him into the city of David: but David carried it aside into the house of Obededom the Gittite."

2 Samuel 11:20: "And if so be that the king's wrath arise, and he say unto thee, Wherefore approached ye so nigh unto the city when ye did fight? knew ye not that they would shoot from the wall?"

2 Samuel 12:8: "And I gave thee thy master's house, and thy master's wives into thy bosom, and gave thee the house of Israel and of Judah; and if that had been too little, I would moreover have given unto thee such and such things."

2 Samuel 12:17: "And the elders of his house arose, and went to him, to raise him up from the earth: but he would not, neither did he eat bread with them."

2 Samuel 12:18: "And it came to pass on the seventh day, that the child died. And the servants of David feared to tell him that the child was dead: for they said, Behold, while the child was yet alive, we spake unto him, and he would not hearken unto our voice: how will he then vex himself, if we tell him that the child is dead?"

2 Samuel 13:14: "Howbeit he would not hearken unto her voice: but, being stronger than she, forced her, and lay with her."

2 Samuel 13:16: "And she said unto him, There is no cause: this evil in sending me away is greater than the other that thou didst unto me. But he would not hearken unto her."

2 Samuel 13:25: "And the king said to Absalom, Nay, my son, let us not all now go, lest we be chargeable unto thee. And he pressed him: howbeit he would not go, but blessed him."

2 Samuel 14:16: "For the king will hear, to deliver his handmaid out of the hand of the man that would destroy me and my son together out of the inheritance of God."

2 Samuel 14:29: "Therefore Absalom sent for Joab, to have sent him to the king; but he would not come to him: and when he sent again the second time, he would not come."

2 Samuel 15:4: "Absalom said moreover, Oh that I were made judge in the land, that every man which hath any suit or cause might come unto me, and I would do him justice!"

2 Samuel 18:11: "And Joab said unto the man that told him, And, behold, thou sawest him, and why

didst thou not smite him there to the ground? and I would have given thee ten shekels of silver, and a girdle."

2 Samuel 18:12: "And the man said unto Joab, Though I should receive a thousand shekels of silver in mine hand, yet would I not put forth mine hand against the king's son: for in our hearing the king charged thee and Abishai and Ittai, saying, Beware that none touch the young man Absalom."

2 Samuel 18:33: "And the king was much moved, and went up to the chamber over the gate, and wept: and as he went, thus he said, O my son Absalom, my son, my son Absalom! would God I had died for thee, O Absalom, my son, my son!"

2 Samuel 23:15: "And David longed, and said, Oh that one would give me drink of the water of the well of Bethlehem, which is by the gate!"

2 Samuel 23:16: "And the three mighty men brake through the host of the Philistines, and drew water out of the well of Bethlehem, that was by the gate, and took it, and brought it to David: nevertheless he would not drink thereof, but poured it out unto the LORD."

2 Samuel 23:17: "And he said, Be it far from me, O LORD, that I should do this: is not this the blood of the men that went in jeopardy of their lives? therefore he would not drink it. These things did these three mighty men."

1 Kings 8:12: "Then spake Solomon, The LORD said that he would dwell in the thick darkness."

1 Kings 13:33: "After this thing Jeroboam returned not from his evil way, but made again of the lowest of the people priests of the high places: whosoever would, he consecrated him, and he became one of the priests of the high places."

1 Kings 18:32: "And with the stones he built an altar in the name of the LORD: and he made a trench about the altar, as great as would contain two measures of seed."

1 Kings 20:33: "Now the men did diligently observe whether any thing would come from him, and did hastily catch it: and they said, Thy brother Benhadad. Then he said, Go ye, bring him. Then Benhadad came forth to him; and he caused him to come up into the chariot."

1 Kings 21:4: "And Ahab came into his house heavy and displeased because of the word which Naboth the Jezreelite had spoken to him: for he had said, I will not give thee the inheritance of my fathers. And he laid him down upon his bed, and turned away his face, and would eat no bread."

1 Kings 22:18: "And the king of Israel said unto Jehoshaphat, Did I not tell thee that he would prophesy no good concerning me, but evil?"

1 Kings 22:49: "Then said Ahaziah the son of Ahab unto Jehoshaphat, Let my servants go with thy servants in the ships. But Jehoshaphat would not."

2 Kings 2:1: "And it came to pass, when the LORD would take up Elijah into heaven by a whirlwind, that Elijah went with Elisha from Gilgal."

2 Kings 3:14: "And Elisha said, As the LORD of hosts liveth, before whom I stand, surely, were it not that I regard the presence of Jehoshaphat the king of Judah, I would not look toward thee, nor see thee."

2 Kings 5:3: "And she said unto her mistress, Would God my lord were with the prophet that is in Samaria! for he would recover him of his leprosy."

2 Kings 7:2: "Then a lord on whose hand the king leaned answered the man of God, and said, Behold, if the LORD would make windows in heaven, might this thing be? And he said, Behold, thou shalt see it with thine eyes, but shalt not eat thereof."

2 Kings 8:19: "Yet the LORD would not destroy Judah for David his servant's sake, as he promised him to give him alway a light, and to his children."

2 Kings 13:23: "And the LORD was gracious unto them, and had compassion on them, and had respect unto them, because of his covenant with Abraham, Isaac, and Jacob, and would not destroy them, neither cast he them from his presence as yet."

2 Kings 14:11: "But Amaziah would not hear. Therefore Jehoash king of Israel went up; and he and Amaziah king of Judah looked one another in the face at Bethshemesh, which belongeth to Judah."

2 Kings 14:27: "And the LORD said not that he would blot out the name of Israel from under

heaven: but he saved them by the hand of Jeroboam the son of Joash."

2 Kings 17:14: "Notwithstanding they would not hear, but hardened their necks, like to the neck of their fathers, that did not believe in the LORD their God."

2 Kings 18:12: "Because they obeyed not the voice of the LORD their God, but transgressed his covenant, and all that Moses the servant of the LORD commanded, and would not hear them, nor do them."

2 Kings 24:4: "And also for the innocent blood that he shed: for he filled Jerusalem with innocent blood; which the LORD would not pardon."

1 Chronicles 10:4: "Then said Saul to his armourbearer, Draw thy sword, and thrust me through therewith; lest these uncircumcised come and abuse me. But his armourbearer would not; for he was sore afraid. So Saul took a sword, and fell upon it."

1 Chronicles 11:17: "And David longed, and said, Oh that one would give me drink of the water of the well of Bethlehem, that is at the gate!"

1 Chronicles 11:18: "And the three brake through the host of the Philistines, and drew water out of the well of Bethlehem, that was by the gate, and took it, and brought it to David: but David would not drink of it, but poured it out to the LORD."

1 Chronicles 11:19: "And said, My God forbid it me, that I should do this thing: shall I drink the blood of these men that have put their lives in jeopardy? for with the jeopardy of their lives they brought it. Therefore he would not drink it. These things did these three mightiest."

1 Chronicles 13:4: "And all the congregation said that they would do so: for the thing was right in the eyes of all the people."

1 Chronicles 19:19: "And when the servants of Hadarezer saw that they were put to the worse before Israel, they made peace with David, and became his servants: neither would the Syrians help the children of Ammon any more."

1 Chronicles 27:23: "But David took not the number of them from twenty years old and under: because the LORD had said he would increase Israel like to the stars of the heavens."

2 Chronicles 6:1: "Then said Solomon, The LORD hath said that he would dwell in the thick darkness."

2 Chronicles 10:16: "And when all Israel saw that the king would not hearken unto them, the people answered the king, saying, What portion have we in David? and we have none inheritance in the son of Jesse: every man to your tents, O Israel: and now, David, see to thine own house. So all Israel went to their tents."

2 Chronicles 12:12: "And when he humbled himself, the wrath of the LORD turned from him, that he would not destroy him altogether: and also in Judah things went well."

2 Chronicles 15:13: "That whosoever would not seek the LORD God of Israel should be put to death, whether small or great, whether man or woman."

2 Chronicles 18:17: "And the king of Israel said to Jehoshaphat, Did I not tell thee that he would not prophesy good unto me, but evil?"

2 Chronicles 21:7: "Howbeit the LORD would not destroy the house of David, because of the covenant that he had made with David, and as he promised to give a light to him and to his sons for ever."

2 Chronicles 24:19: "Yet he sent prophets to them, to bring them again unto the LORD; and they testified against them: but they would not give ear."

2 Chronicles 25:20: "But Amaziah would not hear; for it came of God, that he might deliver them into the hand of their enemies, because they sought after the gods of Edom."

2 Chronicles 33:10: "And the LORD spake to Manasseh, and to his people: but they would not hearken."

2 Chronicles 35:22: "Nevertheless Josiah would not turn his face from him, but disguised himself, that he might fight with him, and hearkened not unto the words of Necho from the mouth of God, and came to fight in the valley of Megiddo."

Ezra 10:8: "And that whosoever would not come within three days, according to the counsel of the princes and the elders, all his substance should be forfeited, and himself separated from the congregation of those that had been carried away."

Ezra 10:19: "And they gave their hands that they would put away their wives; and being guilty, they offered a ram of the flock for their trespass."

Nehemiah 6:11: "And I said, Should such a man as I flee? and who is there, that, being as I am, would go into the temple to save his life? I will not go in."

Nehemiah 6:14: "My God, think thou upon Tobiah and Sanballat according to these their works, and on the prophetess Noadiah, and the rest of the prophets, that would have put me in fear."

Nehemiah 9:24: "So the children went in and possessed the land, and thou subduedst before them the inhabitants of the land, the Canaanites, and gavest them into their hands, with their kings, and the people of the land, that they might do with them as they would."

Nehemiah 9:29: "And testifiedst against them, that thou mightest bring them again unto thy law: yet they dealt proudly, and hearkened not unto thy commandments, but sinned against thy judgments, (which if a man do, he shall live in them;) and withdrew the shoulder, and hardened their neck, and would not hear."

Nehemiah 9:30: "Yet many years didst thou forbear them, and testifiedst against them by thy spirit in thy prophets: yet would they not give ear: therefore gavest thou them into the hand of the people of the lands."

Nehemiah 10:30: "And that we would not give our daughters unto the people of the land, not take their daughters for our sons:"

Nehemiah 10:31: "And if the people of the land bring ware or any victuals on the sabbath day to sell, that we would not buy it of them on the sabbath, or on the holy day: and that we would leave the seventh year, and the exaction of every debt."

Esther 3:4: "Now it came to pass, when they spake daily unto him, and he hearkened not unto them, that they told Haman, to see whether Mordecai's matters would stand: for he had told them that he was a Jew."

Esther 6:6: "So Haman came in. And the king said unto him, What shall be done unto the man whom the king delighteth to honour? Now Haman thought in his heart, To whom would the king delight to do honour more than to myself?"

Esther 8:11: "Wherein the king granted the Jews which were in every city to gather themselves together, and to stand for their life, to destroy, to slay and to cause to perish, all the power of the people and province that would assault them, both little ones and women, and to take the spoil of them for a prey,"

Esther 9:5: "Thus the Jews smote all their enemies with the stroke of the sword, and slaughter, and destruction, and did what they would unto those that hated them."

Esther 9:27: "The Jews ordained, and took upon them, and upon their seed, and upon all such as joined themselves unto them, so as it should not fail, that they would keep these two days according to their writing, and according to their appointed time every year;"

Job 5:8: "I would seek unto God, and unto God would I commit my cause:"

Job 6:3: "For now it would be heavier than the sand of the sea: therefore my words are swallowed up."

Job 6:8: "Oh that I might have my request; and that God would grant me the thing that I long for!"

Job 6:9: "Even that it would please God to destroy me; that he would let loose his hand, and cut me off!"

Job 6:10: "Then should I yet have comfort; yea, I would harden myself in sorrow: let him not spare; for I have not concealed the words of the Holy One."

Job 7:16: "I loathe it; I would not live alway: let me alone; for my days are vanity."

Job 8:6: "If thou wert pure and upright; surely now he would awake for thee, and make the habitation of thy righteousness prosperous."



Job 9:15: "Whom, though I were righteous, yet would I not answer, but I would make supplication to my judge."

Job 9:16: "If I had called, and he had answered me; yet would I not believe that he had hearkened unto my voice."

Job 9:21: "Though I were perfect, yet would I not know my soul: I would despise my life."

Job 9:35: "Then would I speak, and not fear him; but it is not so with me."

Job 11:5: "But oh that God would speak, and open his lips against thee;"

Job 11:6: "And that he would shew thee the secrets of wisdom, that they are double to that which is! Know therefore that God exacteth of thee less than thine iniquity deserveth."

Job 11:12: "For vain men would be wise, though man be born like a wild ass's colt."

Job 13:3: "Surely I would speak to the Almighty, and I desire to reason with God."

Job 13:5: "O that ye would altogether hold your peace! and it should be your wisdom."

Job 16:5: "But I would strengthen you with my mouth, and the moving of my lips should assuage your grief."

Job 23:4: "I would order my cause before him, and fill my mouth with arguments."

Job 23:5: "I would know the words which he would answer me, and understand what he would say unto me."

Job 23:6: "Will he plead against me with his great power? No; but he would put strength in me."

Job 27:22: "For God shall cast upon him, and not spare: he would fain flee out of his hand."

Job 30:1: "But now they that are younger than I have me in derision, whose fathers I would have disdained to have set with the dogs of my flock."

Job 31:12: "For it is a fire that consumeth to destruction, and would root out all mine increase."

Job 31:35: "Oh that one would hear me! behold, my desire is, that the Almighty would answer me, and that mine adversary had written a book."

Job 31:36: "Surely I would take it upon my shoulder, and bind it as a crown to me."

Job 31:37: "I would declare unto him the number of my steps; as a prince would I go near unto him."

Job 32:22: "For I know not to give flattering titles; in so doing my maker would soon take me away."

Job 34:27: "Because they turned back from him, and would not consider any of his ways:"

Job 36:16: "Even so would he have removed thee out of the strait into a broad place, where there is no straitness; and that which should be set on thy table should be full of fatness."

Job 41:32: "He maketh a path to shine after him; one would think the deep to be hoary."

Psalms 22:8: "He trusted on the LORD that he would deliver him: let him deliver him, seeing he delighted in him."

Psalms 35:25: "Let them not say in their hearts, Ah, so would we have it: let them not say, We have swallowed him up."

Psalms 40:5: "Many, O LORD my God, are thy wonderful works which thou hast done, and thy thoughts which are to us-ward: they cannot be reckoned up in order unto thee: if I would declare and speak of them, they are more than can be numbered."

Psalms 50:12: "If I were hungry, I would not tell thee: for the world is mine, and the fulness thereof."

Psalms 51:16: "For thou desirest not sacrifice; else would I give it: thou delightest not in burnt offering."

Psalms 55:6: "And I said, Oh that I had wings like a dove! for then would I fly away, and be at rest."

Psalms 55:7: "Lo, then would I wander far off, and remain in the wilderness. Selah."

Psalms 55:8: "I would hasten my escape from the windy storm and tempest."

Psalms 55:12: "For it was not an enemy that reproached me; then I could have borne it: neither was it he that hated me that did magnify himself against me; then I would have hid myself from him:"

Psalms 56:1: "Be merciful unto me, O God: for man would swallow me up; he fighting daily oppresseth me."

Psalms 56:2: "Mine enemies would daily swallow me up: for they be many that fight against me, O thou most High."

Psalms 57:3: "He shall send from heaven, and save me from the reproach of him that would swallow me up. Selah. God shall send forth his mercy and his truth."

Psalms 69:4: "They that hate me without a cause are more than the hairs of mine head: they that would destroy me, being mine enemies wrongfully, are mighty: then I restored that which I took not away."

Psalms 81:11: "But my people would not hearken to my voice; and Israel would none of me."

Psalms 106:23: "Therefore he said that he would destroy them, had not Moses his chosen stood before him in the breach, to turn away his wrath, lest he should destroy them."

Psalms 107:8: "Oh that men would praise the LORD for his goodness, and for his wonderful works to the children of men!"

Psalms 107:15: "Oh that men would praise the LORD for his goodness, and for his wonderful works to the children of men!"

Psalms 107:21: "Oh that men would praise the LORD for his goodness, and for his wonderful works to the children of men!"

Psalms 107:31: "Oh that men would praise the LORD for his goodness, and for his wonderful works to the children of men!"

Psalms 119:57: "Thou art my portion, O LORD: I have said that I would keep thy words."

Psalms 142:4: "I looked on my right hand, and beheld, but there was no man that would know me: refuge failed me; no man cared for my soul."

Proverbs 1:25: "But ye have set at nought all my counsel, and would none of my reproof:"

Proverbs 1:30: "They would none of my counsel: they despised all my reproof."

Song of Solomon 3:4: "It was but a little that I passed from them, but I found him whom my soul loveth: I held him, and would not let him go, until I had brought him into my mother's house, and into the chamber of her that conceived me."

Song of Solomon 8:1: "O that thou wert as my brother, that sucked the breasts of my mother! when I should find thee without, I would kiss thee; yea, I should not be despised."

Song of Solomon 8:2: "I would lead thee, and bring thee into my mother's house, who would instruct me: I would cause thee to drink of spiced wine of the juice of my pomegranate."

Song of Solomon 8:7: "Many waters cannot quench love, neither can the floods drown it: if a man would give all the substance of his house for love, it would utterly be contemned."

Isaiah 27:4: "Fury is not in me: who would set the briars and thorns against me in battle? I would go through them, I would burn them together."

Isaiah 28:12: "To whom he said, This is the rest wherewith ye may cause the weary to rest; and this is the refreshing: yet they would not hear."

Isaiah 30:15: "For thus saith the Lord GOD, the Holy One of Israel; In returning and rest shall ye be saved; in quietness and in confidence shall be your strength: and ye would not."

Isaiah 42:24: "Who gave Jacob for a spoil, and Israel to the robbers? did not the LORD, he against whom we have sinned? for they would not walk in his ways, neither were they obedient unto his law."

Isaiah 54:9: "For this is as the waters of Noah unto me: for as I have sworn that the waters of Noah should no more go over the earth; so have I sworn that I would not be wroth with thee, nor rebuke thee."

Jeremiah 8:18: "When I would comfort myself against sorrow, my heart is faint in me."

Jeremiah 10:7: "Who would not fear thee, O King of nations? for to thee doth it appertain: forasmuch as among all the wise men of the nations, and in all their kingdoms, there is none like unto thee."

Jeremiah 13:11: "For as the girdle cleaveth to the loins of a man, so have I caused to cleave unto me the whole house of Israel and the whole house of Judah, saith the LORD; that they might be unto me for a people, and for a name, and for a praise, and for a glory: but they would not hear."

Jeremiah 18:10: "If it do evil in my sight, that it obey not my voice, then I will repent of the good, wherewith I said I would benefit them."

Jeremiah 22:24: "As I live, saith the LORD, though Coniah the son of Jehoiakim king of Judah were the signet upon my right hand, yet would I pluck thee thence;"

Jeremiah 29:19: "Because they have not hearkened to my words, saith the LORD, which I sent unto them by my servants the prophets, rising up early and sending them; but ye would not hear, saith the LORD."

Jeremiah 36:25: "Nevertheless Elnathan and Delaiah and Gemariah had made intercession to the king that he would not burn the roll: but he would not hear them."

Jeremiah 38:26: "Then thou shalt say unto them, I presented my supplication before the king, that he would not cause me to return to Jonathan's house, to die there."

Jeremiah 49:9: "If grapegatherers come to thee, would they not leave some gleaning grapes? if thieves by night, they will destroy till they have enough."

Jeremiah 51:9: "We would have healed Babylon, but she is not healed: forsake her, and let us go every one into his own country: for her judgment reacheth unto heaven, and is lifted up even to the skies."

Lamentations 4:12: "The kings of the earth, and all the inhabitants of the world, would not have believed that the adversary and the enemy should have entered into the gates of Jerusalem."

Ezekiel 3:6: "Not to many people of a strange speech and of an hard language, whose words thou canst not understand. Surely, had I sent thee to them, they would have hearkened unto thee."

Ezekiel 6:10: "And they shall know that I am the LORD, and that I have not said in vain that I would do this evil unto them."

Ezekiel 13:6: "They have seen vanity and lying divination, saying, The LORD saith: and the LORD hath not sent them: and they have made others to hope that they would confirm the word."

Ezekiel 20:8: "But they rebelled against me, and would not hearken unto me: they did not every man cast away the abominations of their eyes, neither did they forsake the idols of Egypt: then I said, I will pour out my fury upon them, to accomplish my anger against them in the midst of the land of Egypt."

Ezekiel 20:13: "But the house of Israel rebelled against me in the wilderness: they walked not in my statutes, and they despised my judgments, which if a man do, he shall even live in them; and my sabbaths they greatly polluted: then I said, I would pour out my fury upon them in the wilderness, to consume them."

Ezekiel 20:15: "Yet also I lifted up my hand unto them in the wilderness, that I would not bring them into the land which I had given them, flowing with milk and honey, which is the glory of all lands;"

Ezekiel 20:21: "Notwithstanding the children rebelled against me: they walked not in my statutes, neither kept my judgments to do them, which if a man do, he shall even live in them; they polluted my sabbaths: then I said, I would pour out my fury upon them, to accomplish my anger against them in the wilderness."

Ezekiel 20:23: "I lifted up mine hand unto them also in the wilderness, that I would scatter them among the heathen, and disperse them through the countries;"

Ezekiel 38:17: "Thus saith the Lord GOD; Art thou he of whom I have spoken in old time by my servants the prophets of Israel, which prophesied in those days many years that I would bring thee against them?"

Daniel 1:8: "But Daniel purposed in his heart that he would not defile himself with the portion of the king's meat, nor with the wine which he drank: therefore he requested of the prince of the eunuchs that he might not defile himself."

Daniel 2:8: "The king answered and said, I know of certainty that ye would gain the time, because ye see the thing is gone from me."

Daniel 2:16: "Then Daniel went in, and desired of the king that he would give him time, and that he would shew the king the interpretation."

Daniel 2:18: "That they would desire mercies of the God of heaven concerning this secret; that Daniel and his fellows should not perish with the rest of the wise men of Babylon."

Daniel 5:19: "And for the majesty that he gave him, all people, nations, and languages, trembled and feared before him: whom he would he slew; and whom he would he kept alive; and whom he would he set up; and whom he would he put down."

Daniel 7:19: "Then I would know the truth of the fourth beast, which was diverse from all the others, exceeding dreadful, whose teeth were of iron, and his nails of brass; which devoured, brake in pieces, and stamped the residue with his feet;"

Daniel 9:2: "In the first year of his reign I Daniel understood by books the number of the years, whereof the word of the LORD came to Jeremiah the prophet, that he would accomplish seventy years in the desolations of Jerusalem."

Hosea 7:1: "When I would have healed Israel, then the iniquity of Ephraim was discovered, and the wickedness of Samaria: for they commit falsehood; and the thief cometh in, and the troop of robbers spoileth without."

Hosea 11:7: "And my people are bent to backsliding from me: though they called them to the most High, none at all would exalt him."

Obadiah 1:5: "If thieves came to thee, if robbers by night, (how art thou cut off!) would they not have stolen till they had enough? if the grapegatherers came to thee, would they not leave some grapes?"

Jonah 3:10: "And God saw their works, that they turned from their evil way; and God repented of the evil, that he had said that he would do unto them; and he did it not."

Jonah 4:5: "So Jonah went out of the city, and sat on the east side of the city, and there made him a booth, and sat under it in the shadow, till he might see what would become of the city."

Zechariah 7:13: "Therefore it is come to pass, that as he cried, and they would not hear; so they cried, and I would not hear, saith the LORD of hosts:"

Malachi 1:10: "Who is there even among you that would shut the doors for nought? neither do ye kindle fire on mine altar for nought. I have no pleasure in you, saith the LORD of hosts, neither will I accept an offering at your hand."

Matthew 2:18: "In Rama was there a voice heard, lamentation, and weeping, and great mourning, Rachel weeping for her children, and would not be comforted, because they are not."

Matthew 5:42: "Give to him that asketh thee, and from him that would borrow of thee turn not thou away."

Matthew 7:12: "Therefore all things whatsoever ye would that men should do to you, do ye even so to them: for this is the law and the prophets."

Matthew 8:34: "And, behold, the whole city came out to meet Jesus: and when they saw him, they besought him that he would depart out of their coasts."

Matthew 11:21: "Woe unto thee, Chorazin! woe unto thee, Bethsaida! for if the mighty works, which were done in you, had been done in Tyre and Sidon, they would have repented long ago in sackcloth and ashes."

Matthew 11:23: "And thou, Capernaum, which art exalted unto heaven, shalt be brought down to hell: for if the mighty works, which have been done in thee, had been done in Sodom, it would have remained until this day."

Matthew 12:7: "But if ye had known what this meaneth, I will have mercy, and not sacrifice, ye would not have condemned the guiltless."

Matthew 12:38: "Then certain of the scribes and of the Pharisees answered, saying, Master, we would see a sign from thee."

Matthew 14:5: "And when he would have put him to death, he feared the multitude, because they counted him as a prophet."

Matthew 14:7: "Whereupon he promised with an oath to give her whatsoever she would ask."

Matthew 16:1: "The Pharisees also with the Sadducees came, and tempting desired him that he would shew them a sign from heaven."

Matthew 18:23: "Therefore is the kingdom of heaven likened unto a certain king, which would take account of his servants."

Matthew 18:30: "And he would not: but went and cast him into prison, till he should pay the debt."

Matthew 22:3: "And sent forth his servants to call them that were bidden to the wedding: and they would not come."

Matthew 23:30: "And say, If we had been in the days of our fathers, we would not have been partakers with them in the blood of the prophets."

Matthew 23:37: "O Jerusalem, Jerusalem, thou that killest the prophets, and stonest them which are sent unto thee, how often would I have gathered thy children together, even as a hen gathereth her chickens under her wings, and ye would not!"

Matthew 24:43: "But know this, that if the goodman of the house had known in what watch the thief would come, he would have watched, and would not have suffered his house to be broken up."

Matthew 27:15: "Now at that feast the governor was wont to release unto the people a prisoner, whom they would."

Matthew 27:34: "They gave him vinegar to drink mingled with gall: and when he had tasted thereof, he would not drink."

Mark 3:2: "And they watched him, whether he would heal him on the sabbath day; that they might accuse him."

Mark 3:13: "And he goeth up into a mountain, and calleth unto him whom he would: and they came unto him."

Mark 5:10: "And he besought him much that he would not send them away out of the country."

Mark 6:19: "Therefore Herodias had a quarrel against him, and would have killed him; but she could not:"

Mark 6:26: "And the king was exceeding sorry; yet for his oath's sake, and for their sakes which sat with him, he would not reject her."

Mark 6:48: "And he saw them toiling in rowing; for the wind was contrary unto them: and about the fourth watch of the night he cometh unto them, walking upon the sea, and would have passed by them."

Mark 7:24: "And from thence he arose, and went into the borders of Tyre and Sidon, and entered into an house, and would have no man know it: but he could not be hid."

Mark 7:26: "The woman was a Greek, a Syrophenician by nation; and she besought him that he would cast forth the devil out of her daughter."

Mark 9:30: "And they departed thence, and passed through Galilee; and he would not that any man should know it."

Mark 10:35: "And James and John, the sons of Zebedee, come unto him, saying, Master, we would that thou shouldest do for us whatsoever we shall desire."

Mark 10:36: "And he said unto them, What would ye that I should do for you?"

Mark 11:16: "And would not suffer that any man should carry any vessel through the temple."

Luke 1:62: "And they made signs to his father, how he would have him called."

Luke 1:74: "That he would grant unto us, that we being delivered out of the hand of our enemies might serve him without fear,"

Luke 5:3: "And he entered into one of the ships, which was Simon's, and prayed him that he would thrust out a little from the land. And he sat down, and taught the people out of the ship."

Luke 6:7: "And the scribes and Pharisees watched him, whether he would heal on the sabbath day; that they might find an accusation against him."

Luke 6:31: "And as ye would that men should do to you, do ye also to them likewise."

Luke 7:3: "And when he heard of Jesus, he sent unto him the elders of the Jews, beseeching him that he would come and heal his servant."

Luke 7:36: "And one of the Pharisees desired him that he would eat with him. And he went into the Pharisee's house, and sat down to meat."

Luke 7:39: "Now when the Pharisee which had bidden him saw it, he spake within himself, saying, This man, if he were a prophet, would have known who and what manner of woman this is that toucheth him: for she is a sinner."

Luke 8:31: "And they besought him that he would not command them to go out into the deep."

Luke 8:32: "And there was there an herd of many swine feeding on the mountain: and they besought him that he would suffer them to enter into them. And he suffered them."

Luke 8:41: "And, behold, there came a man named Jairus, and he was a ruler of the synagogue: and he fell down at Jesus' feet, and besought him that he would come into his house:"

Luke 9:53: "And they did not receive him, because his face was as though he would go to Jerusalem."

Luke 10:1: "After these things the LORD appointed other seventy also, and sent them two and two before his face into every city and place, whither he himself would come."

Luke 10:2: "Therefore said he unto them, The harvest truly is great, but the labourers are few: pray ye therefore the Lord of the harvest, that he would send forth labourers into his harvest."

Luke 12:39: "And this know, that if the goodman of the house had known what hour the thief would come, he would have watched, and not have suffered his house to be broken through."

Luke 13:34: "O Jerusalem, Jerusalem, which killest the prophets, and stonest them that are sent unto thee; how often would I have gathered thy children together, as a hen doth gather her brood under her wings, and ye would not!"

Luke 15:16: "And he would fain have filled his belly with the husks that the swine did eat: and no man gave unto him."

Luke 15:28: "And he was angry, and would not go in: therefore came his father out, and intreated him."

Luke 16:26: "And beside all this, between us and you there is a great gulf fixed: so that they which would pass from hence to you cannot; neither can they pass to us, that would come from thence."

Luke 18:4: "And he would not for a while: but afterward he said within himself, Though I fear not God, nor regard man;"

Luke 18:13: "And the publican, standing afar off, would not lift up so much as his eyes unto heaven, but smote upon his breast, saying, God be merciful to me a sinner."

Luke 18:15: "And they brought unto him also infants, that he would touch them: but when his disciples saw it, they rebuked them."

Luke 19:27: "But those mine enemies, which would not that I should reign over them, bring hither, and slay them before me."

Luke 19:40: "And he answered and said unto them, I tell you that, if these should hold their peace, the stones would immediately cry out."

Luke 22:49: "When they which were about him saw what would follow, they said unto him, Lord, shall we smite with the sword?"

Luke 24:28: "And they drew nigh unto the village, whither they went: and he made as though he would have gone further."

John 1:43: "The day following Jesus would go forth into Galilee, and findeth Philip, and saith unto him, Follow me."

John 4:10: "Jesus answered and said unto her, If thou knewest the gift of God, and who it is that saith to thee, Give me to drink; thou wouldest have asked of him, and he would have given thee living water."

John 4:40: "So when the Samaritans were come unto him, they besought him that he would tarry

with them: and he abode there two days."

John 4:47: "When he heard that Jesus was come out of Judaea into Galilee, he went unto him, and besought him that he would come down, and heal his son: for he was at the point of death."

John 5:46: "For had ye believed Moses, ye would have believed me; for he wrote of me."

John 6:6: "And this he said to prove him: for he himself knew what he would do."

John 6:11: "And Jesus took the loaves; and when he had given thanks, he distributed to the disciples, and the disciples to them that were set down; and likewise of the fishes as much as they would."

John 6:15: "When Jesus therefore perceived that they would come and take him by force, to make him a king, he departed again into a mountain himself alone."

John 7:1: "After these things Jesus walked in Galilee: for he would not walk in Jewry, because the Jews sought to kill him."

John 7:44: "And some of them would have taken him; but no man laid hands on him."

John 8:39: "They answered and said unto him, Abraham is our father. Jesus saith unto them, If ye were Abraham's children, ye would do the works of Abraham."

John 8:42: "Jesus said unto them, If God were your Father, ye would love me: for I proceeded forth and came from God; neither came I of myself, but he sent me."

John 9:27: "He answered them, I have told you already, and ye did not hear: wherefore would ye hear it again? will ye also be his disciples?"

John 12:21: "The same came therefore to Philip, which was of Bethsaida of Galilee, and desired him, saying, Sir, we would see Jesus."

John 14:2: "In my Father's house are many mansions: if it were not so, I would have told you. I go to prepare a place for you."

John 14:28: "Ye have heard how I said unto you, I go away, and come again unto you. If ye loved me, ye would rejoice, because I said, I go unto the Father: for my Father is greater than I."

John 15:19: "If ye were of the world, the world would love his own: but because ye are not of the world, but I have chosen you out of the world, therefore the world hateth you."

John 18:30: "They answered and said unto him, If he were not a malefactor, we would not have delivered him up unto thee."

John 18:36: "Jesus answered, My kingdom is not of this world: if my kingdom were of this world, then would my servants fight, that I should not be delivered to the Jews: but now is my kingdom not from hence."

Acts 2:30: "Therefore being a prophet, and knowing that God had sworn with an oath to him, that of the fruit of his loins, according to the flesh, he would raise up Christ to sit on his throne;"

Acts 5:24: "Now when the high priest and the captain of the temple and the chief priests heard these things, they doubted of them whereunto this would grow."

Acts 7:5: "And he gave him none inheritance in it, no, not so much as to set his foot on: yet he promised that he would give it to him for a possession, and to his seed after him, when as yet he had no child."

Acts 7:25: "For he supposed his brethren would have understood how that God by his hand would deliver them: but they understood not."

Acts 7:26: "And the next day he shewed himself unto them as they strove, and would have set them at one again, saying, Sirs, ye are brethren; why do ye wrong one to another?"

Acts 7:39: "To whom our fathers would not obey, but thrust him from them, and in their hearts turned back again into Egypt,"

Acts 8:31: "And he said, How can I, except some man should guide me? And he desired Philip that he would come up and sit with him."

Acts 9:38: "And forasmuch as Lydda was nigh to Joppa, and the disciples had heard that Peter was there, they sent unto him two men, desiring him that he would not delay to come to them."

Acts 10:10: "And he became very hungry, and would have eaten: but while they made ready, he fell

into a trance,"

Acts 11:23: "Who, when he came, and had seen the grace of God, was glad, and exhorted them all, that with purpose of heart they would cleave unto the Lord."

Acts 12:6: "And when Herod would have brought him forth, the same night Peter was sleeping between two soldiers, bound with two chains: and the keepers before the door kept the prison."

Acts 14:13: "Then the priest of Jupiter, which was before their city, brought oxen and garlands unto the gates, and would have done sacrifice with the people."

Acts 16:3: "Him would Paul have to go forth with him; and took and circumcised him because of the Jews which were in those quarters: for they knew all that his father was a Greek."

Acts 16:27: "And the keeper of the prison awaking out of his sleep, and seeing the prison doors open, he drew out his sword, and would have killed himself, supposing that the prisoners had been fled."

Acts 17:20: "For thou bringest certain strange things to our ears: we would know therefore what these things mean."

Acts 18:14: "And when Paul was now about to open his mouth, Gallio said unto the Jews, If it were a matter of wrong or wicked lewdness, O ye Jews, reason would that I should bear with you:"

Acts 19:30: "And when Paul would have entered in unto the people, the disciples suffered him not."

Acts 19:31: "And certain of the chief of Asia, which were his friends, sent unto him, desiring him that he would not adventure himself into the theatre."

Acts 19:33: "And they drew Alexander out of the multitude, the Jews putting him forward. And Alexander beckoned with the hand, and would have made his defence unto the people."

Acts 20:16: "For Paul had determined to sail by Ephesus, because he would not spend the time in Asia: for he hasted, if it were possible for him, to be at Jerusalem the day of Pentecost."

Acts 21:14: "And when he would not be persuaded, we ceased, saying, The will of the Lord be done."

Acts 22:30: "On the morrow, because he would have known the certainty wherefore he was accused of the Jews, he loosed him from his bands, and commanded the chief priests and all their council to appear, and brought Paul down, and set him before them."

Acts 23:12: "And when it was day, certain of the Jews banded together, and bound themselves under a curse, saying that they would neither eat nor drink till they had killed Paul."

Acts 23:15: "Now therefore ye with the council signify to the chief captain that he bring him down unto you to morrow, as though ye would enquire something more perfectly concerning him: and we, or ever he come near, are ready to kill him."

Acts 23:20: "And he said, The Jews have agreed to desire thee that thou wouldest bring down Paul to morrow into the council, as though they would enquire somewhat of him more perfectly."

Acts 23:28: "And when I would have known the cause wherefore they accused him, I brought him forth into their council:"

Acts 24:6: "Who also hath gone about to profane the temple: whom we took, and would have judged according to our law."

Acts 25:3: "And desired favour against him, that he would send for him to Jerusalem, laying wait in the way to kill him."

Acts 25:4: "But Festus answered, that Paul should be kept at Caesarea, and that he himself would depart shortly thither."

Acts 25:20: "And because I doubted of such manner of questions, I asked him whether he would go to Jerusalem, and there be judged of these matters."

Acts 25:22: "Then Agrippa said unto Festus, I would also hear the man myself. To morrow, said he, thou shalt hear him."

Acts 26:5: "Which knew me from the beginning, if they would testify, that after the most straitest sect of our religion I lived a Pharisee."

Acts 26:29: "And Paul said, I would to God, that not only thou, but also all that hear me this day,



were both almost, and altogether such as I am, except these bonds."

Acts 27:30: "And as the shipmen were about to flee out of the ship, when they had let down the boat into the sea, under colour as though they would have cast anchors out of the foreship,"

Acts 28:18: "Who, when they had examined me, would have let me go, because there was no cause of death in me."

Romans 1:13: "Now I would not have you ignorant, brethren, that oftentimes I purposed to come unto you, (but was let hitherto,) that I might have some fruit among you also, even as among other Gentiles."

Romans 5:7: "For scarcely for a righteous man will one die: yet peradventure for a good man some would even dare to die."

Romans 7:15: "For that which I do I allow not: for what I would, that do I not; but what I hate, that do I."

Romans 7:16: "If then I do that which I would not, I consent unto the law that it is good."

Romans 7:19: "For the good that I would I do not: but the evil which I would not, that I do."

Romans 7:20: "Now if I do that I would not, it is no more I that do it, but sin that dwelleth in me."

Romans 7:21: "I find then a law, that, when I would do good, evil is present with me."

Romans 11:25: "For I would not, brethren, that ye should be ignorant of this mystery, lest ye should be wise in your own conceits; that blindness in part is happened to Israel, until the fulness of the Gentiles be come in."

Romans 16:19: "For your obedience is come abroad unto all men. I am glad therefore on your behalf: but yet I would have you wise unto that which is good, and simple concerning evil."

1 Corinthians 2:8: "Which none of the princes of this world knew: for had they known it, they would not have crucified the Lord of glory."

1 Corinthians 4:8: "Now ye are full, now ye are rich, ye have reigned as kings without us: and I would to God ye did reign, that we also might reign with you."

1 Corinthians 4:18: "Now some are puffed up, as though I would not come to you."

1 Corinthians 7:7: "For I would that all men were even as I myself. But every man hath his proper gift of God, one after this manner, and another after that."

1 Corinthians 7:32: "But I would have you without carefulness. He that is unmarried careth for the things that belong to the Lord, how he may please the Lord:"

1 Corinthians 10:1: "Moreover, brethren, I would not that ye should be ignorant, how that all our fathers were under the cloud, and all passed through the sea;"

1 Corinthians 10:20: "But I say, that the things which the Gentiles sacrifice, they sacrifice to devils, and not to God: and I would not that ye should have fellowship with devils."

1 Corinthians 11:3: "But I would have you know, that the head of every man is Christ; and the head of the woman is the man; and the head of Christ is God."

1 Corinthians 11:31: "For if we would judge ourselves, we should not be judged."

1 Corinthians 12:1: "Now concerning spiritual gifts, brethren, I would not have you ignorant."

1 Corinthians 14:5: "I would that ye all spake with tongues but rather that ye prophesied: for greater is he that prophesieth than he that speaketh with tongues, except he interpret, that the church may receive edifying."

2 Corinthians 1:8: "For we would not, brethren, have you ignorant of our trouble which came to us in Asia, that we were pressed out of measure, above strength, insomuch that we despaired even of life:"

2 Corinthians 2:1: "But I determined this with myself, that I would not come again to you in heaviness."

2 Corinthians 2:8: "Wherefore I beseech you that ye would confirm your love toward him."

2 Corinthians 5:4: "For we that are in this tabernacle do groan, being burdened: not for that we would be unclothed, but clothed upon, that mortality might be swallowed up of life."

2 Corinthians 8:4: "Praying us with much intreaty that we would receive the gift, and take upon us

the fellowship of the ministering to the saints."

2 Corinthians 8:6: "Insomuch that we desired Titus, that as he had begun, so he would also finish in you the same grace also."

2 Corinthians 9:5: "Therefore I thought it necessary to exhort the brethren, that they would go before unto you, and make up beforehand your bounty, whereof ye had notice before, that the same might be ready, as a matter of bounty, and not as of covetousness."

2 Corinthians 10:9: "That I may not seem as if I would terrify you by letters."

2 Corinthians 11:1: "Would to God ye could bear with me a little in my folly: and indeed bear with me."

2 Corinthians 12:6: "For though I would desire to glory, I shall not be a fool; for I will say the truth: but now I forbear, lest any man should think of me above that which he seeth me to be, or that he heareth of me."

2 Corinthians 12:20: "For I fear, lest, when I come, I shall not find you such as I would, and that I shall be found unto you such as ye would not: lest there be debates, envyings, wraths, strifes, backbitings, whisperings, swellings, tumults:"

Galatians 1:7: "Which is not another; but there be some that trouble you, and would pervert the gospel of Christ."

Galatians 2:10: "Only they would that we should remember the poor; the same which I also was forward to do."

Galatians 3:2: "This only would I learn of you, Received ye the Spirit by the works of the law, or by the hearing of faith?"

Galatians 3:8: "And the scripture, foreseeing that God would justify the heathen through faith, preached before the gospel unto Abraham, saying, In thee shall all nations be blessed."

Galatians 4:15: "Where is then the blessedness ye spake of? for I bear you record, that, if it had been possible, ye would have plucked out your own eyes, and have given them to me."

Galatians 4:17: "They zealously affect you, but not well; yea, they would exclude you, that ye might affect them."

Galatians 5:12: "I would they were even cut off which trouble you."

Galatians 5:17: "For the flesh lusteth against the Spirit, and the Spirit against the flesh: and these are contrary the one to the other: so that ye cannot do the things that ye would."

Ephesians 3:16: "That he would grant you, according to the riches of his glory, to be strengthened with might by his Spirit in the inner man;"

Philippians 1:12: "But I would ye should understand, brethren, that the things which happened unto me have fallen out rather unto the furtherance of the gospel;"

Colossians 1:27: "To whom God would make known what is the riches of the glory of this mystery among the Gentiles; which is Christ in you, the hope of glory:"

Colossians 2:1: "For I would that ye knew what great conflict I have for you, and for them at Laodicea, and for as many as have not seen my face in the flesh;"

Colossians 4:3: "Withal praying also for us, that God would open unto us a door of utterance, to speak the mystery of Christ, for which I am also in bonds:"

1 Thessalonians 2:9: "For ye remember, brethren, our labour and travail: for labouring night and day, because we would not be chargeable unto any of you, we preached unto you the gospel of God."

1 Thessalonians 2:12: "That ye would walk worthy of God, who hath called you unto his kingdom and glory."

1 Thessalonians 2:18: "Wherefore we would have come unto you, even I Paul, once and again; but Satan hindered us."

1 Thessalonians 4:1: "Furthermore then we beseech you, brethren, and exhort you by the Lord Jesus, that as ye have received of us how ye ought to walk and to please God, so ye would abound more and more."

1 Thessalonians 4:13: "But I would not have you to be ignorant, brethren, concerning them which are asleep, that ye sorrow not, even as others which have no hope."

2 Thessalonians 1:11: "Wherefore also we pray always for you, that our God would count you worthy of this calling, and fulfil all the good pleasure of his goodness, and the work of faith with power:"

2 Thessalonians 3:10: "For even when we were with you, this we commanded you, that if any would not work, neither should he eat."

Philemon 1:13: "Whom I would have retained with me, that in thy stead he might have ministered unto me in the bonds of the gospel:"

Philemon 1:14: "But without thy mind would I do nothing; that thy benefit should not be as it were of necessity, but willingly."

Hebrews 4:8: "For if Jesus had given them rest, then would he not afterward have spoken of another day."

Hebrews 10:2: "For then would they not have ceased to be offered? because that the worshippers once purged should have had no more conscience of sins."

Hebrews 11:32: "And what shall I more say? for the time would fail me to tell of Gedeon, and of Barak, and of Samson, and of Jephthae; of David also, and Samuel, and of the prophets:"

Hebrews 12:17: "For ye know how that afterward, when he would have inherited the blessing, he was rejected: for he found no place of repentance, though he sought it carefully with tears."

1 John 2:19: "They went out from us, but they were not of us; for if they had been of us, they would no doubt have continued with us: but they went out, that they might be made manifest that they were not all of us."

2 John 1:12: "Having many things to write unto you, I would not write with paper and ink: but I trust to come unto you, and speak face to face, that our joy may be full."

3 John 1:10: "Wherefore, if I come, I will remember his deeds which he doeth, prating against us with malicious words: and not content therewith, neither doth he himself receive the brethren, and forbiddeth them that would, and casteth them out of the church."

Revelation 3:15: "I know thy works, that thou art neither cold nor hot: I would thou wert cold or hot."

Revelation 13:15: "And he had power to give life unto the image of the beast, that the image of the beast should both speak, and cause that as many as would not worship the image of the beast should be killed."

## WOULDEST

Occurrences: 33

Genesis 30:15: "And she said unto her, Is it a small matter that thou hast taken my husband? and wouldest thou take away my son's mandrakes also? And Rachel said, Therefore he shall lie with thee to night for thy son's mandrakes."

Genesis 31:30: "And now, though thou wouldest needs be gone, because thou sore longedst after thy father's house, yet wherefore hast thou stolen my gods?"

Genesis 31:31: "And Jacob answered and said to Laban, Because I was afraid: for I said, Peradventure thou wouldest take by force thy daughters from me."

Exodus 7:16: "And thou shalt say unto him, The LORD God of the Hebrews hath sent me unto thee, saying, Let my people go, that they may serve me in the wilderness: and, behold, hitherto thou wouldest not hear."

Exodus 23:5: "If thou see the ass of him that hateth thee lying under his burden, and wouldest forbear to help him, thou shalt surely help with him."

Deuteronomy 8:2: "And thou shalt remember all the way which the LORD thy God led thee these forty years in the wilderness, to humble thee, and to prove thee, to know what was in thine heart, whether thou wouldest keep his commandments, or no."

Deuteronomy 21:11: "And seest among the captives a beautiful woman, and hast a desire unto her, that thou wouldest have her to thy wife;"

Deuteronomy 28:62: "And ye shall be left few in number, whereas ye were as the stars of heaven for multitude; because thou wouldest not obey the voice of the LORD thy God."

Joshua 15:18: "And it came to pass, as she came unto him, that she moved him to ask of her father a field: and she lighted off her ass; and Caleb said unto her, What wouldest thou?"

2 Samuel 14:11: "Then said she, I pray thee, let the king remember the LORD thy God, that thou wouldest not suffer the revengers of blood to destroy any more, lest they destroy my son. And he said, As the LORD liveth, there shall not one hair of thy son fall to the earth."

2 Samuel 18:13: "Otherwise I should have wrought falsehood against mine own life: for there is no matter hid from the king, and thou thyself wouldest have set thyself against me."

1 Kings 1:16: "And Bathsheba bowed, and did obeisance unto the king. And the king said, What wouldest thou?"

1 Kings 18:9: "And he said, What have I sinned, that thou wouldest deliver thy servant into the hand of Ahab, to slay me?"

2 Kings 4:13: "And he said unto him, Say now unto her, Behold, thou hast been careful for us with all this care; what is to be done for thee? wouldest thou be spoken for to the king, or to the captain of the host? And she answered, I dwell among mine own people."

2 Kings 5:13: "And his servants came near, and spake unto him, and said, My father, if the prophet had bid thee do some great thing, wouldest thou not have done it? how much rather then, when he saith to thee, Wash, and be clean?"

2 Kings 6:22: "And he answered, Thou shalt not smite them: wouldest thou smite those whom thou hast taken captive with thy sword and with thy bow? set bread and water before them, that they may eat and drink, and go to their master."

1 Chronicles 4:10: "And Jabez called on the God of Israel, saying, Oh that thou wouldest bless me indeed, and enlarge my coast, and that thine hand might be with me, and that thou wouldest keep me from evil, that it may not grieve me! And God granted him that which he requested."

2 Chronicles 6:20: "That thine eyes may be open upon this house day and night, upon the place whereof thou hast said that thou wouldest put thy name there; to hearken unto the prayer which thy servant prayeth toward this place."

2 Chronicles 20:10: "And now, behold, the children of Ammon and Moab and mount Seir, whom thou wouldest not let Israel invade, when they came out of the land of Egypt, but they turned from them, and destroyed them not;"

Ezra 9:14: "Should we again break thy commandments, and join in affinity with the people of these abominations? wouldest not thou be angry with us till thou hadst consumed us, so that there should be no remnant nor escaping?"

Nehemiah 2:5: "And I said unto the king, If it please the king, and if thy servant have found favour in thy sight, that thou wouldest send me unto Judah, unto the city of my fathers' sepulchres, that I may build it."

Job 8:5: "If thou wouldest seek unto God betimes, and make thy supplication to the Almighty;"

Job 14:13: "O that thou wouldest hide me in the grave, that thou wouldest keep me secret, until thy wrath be past, that thou wouldest appoint me a set time, and remember me!"

Isaiah 48:8: "Yea, thou heardest not; yea, thou knewest not; yea, from that time that thine ear was not opened: for I knew that thou wouldest deal very treacherously, and wast called a transgressor from the womb."

Isaiah 64:1: "Oh that thou wouldest rend the heavens, that thou wouldest come down, that the mountains might flow down at thy presence,"

Luke 16:27: "Then he said, I pray thee therefore, father, that thou wouldest send him to my father's house:"

John 4:10: "Jesus answered and said unto her, If thou knewest the gift of God, and who it is that

saith to thee, Give me to drink; thou wouldest have asked of him, and he would have given thee living water."

John 11:40: "Jesus saith unto her, Said I not unto thee, that, if thou wouldest believe, thou shouldest see the glory of God?"

John 21:18: "Verily, verily, I say unto thee, When thou wast young, thou girdest thyself, and walkedst whither thou wouldest: but when thou shalt be old, thou shalt stretch forth thy hands, and another shall gird thee, and carry thee whither thou wouldest not."

Acts 23:20: "And he said, The Jews have agreed to desire thee that thou wouldest bring down Paul to morrow into the council, as though they would enquire somewhat of him more perfectly."

Acts 24:4: "Notwithstanding, that I be not further tedious unto thee, I pray thee that thou wouldest hear us of thy clemency a few words."

Hebrews 10:5: "Wherefore when he cometh into the world, he saith, Sacrifice and offering thou wouldest not, but a body hast thou prepared me:"

Hebrews 10:8: "Above when he said, Sacrifice and offering and burnt offerings and offering for sin thou wouldest not, neither hadst pleasure therein; which are offered by the law;"

## WOUND

Occurrences: 23

Exodus 21:25: "Burning for burning, wound for wound, stripe for stripe."

Deuteronomy 32:39: "See now that I, even I, am he, and there is no god with me: I kill, and I make alive; I wound, and I heal: neither is there any that can deliver out of my hand."

1 Kings 22:35: "And the battle increased that day: and the king was stayed up in his chariot against the Syrians, and died at even: and the blood ran out of the wound into the midst of the chariot."

Job 34:6: "Should I lie against my right? my wound is incurable without transgression."

Psalms 68:21: "But God shall wound the head of his enemies, and the hairy scalp of such an one as goeth on still in his trespasses."

Psalms 110:6: "He shall judge among the heathen, he shall fill the places with the dead bodies; he shall wound the heads over many countries."

Proverbs 6:33: "A wound and dishonour shall he get; and his reproach shall not be wiped away."

Proverbs 20:30: "The blueness of a wound cleanseth away evil: so do stripes the inward parts of the belly."

Isaiah 30:26: "Moreover the light of the moon shall be as the light of the sun, and the light of the sun shall be sevenfold, as the light of seven days, in the day that the LORD bindeth up the breach of his people, and healeth the stroke of their wound."

Jeremiah 10:19: "Woe is me for my hurt! my wound is grievous; but I said, Truly this is a grief, and I must bear it."

Jeremiah 15:18: "Why is my pain perpetual, and my wound incurable, which refuseth to be healed? wilt thou be altogether unto me as a liar, and as waters that fail?"

Jeremiah 30:12: "For thus saith the LORD, Thy bruise is incurable, and thy wound is grievous."

Jeremiah 30:14: "All thy lovers have forgotten thee; they seek thee not; for I have wounded thee with the wound of an enemy, with the chastisement of a cruel one, for the multitude of thine iniquity; because thy sins were increased."

Hosea 5:13: "When Ephraim saw his sickness, and Judah saw his wound, then went Ephraim to the Assyrian, and sent to king Jareb: yet could he not heal you, nor cure you of your wound."

Obadiah 1:7: "All the men of thy confederacy have brought thee even to the border: the men that were at peace with thee have deceived thee, and prevailed against thee; that they eat thy bread have laid a wound under thee: there is none understanding in him."

Micah 1:9: "For her wound is incurable; for it is come unto Judah; he is come unto the gate of my people, even to Jerusalem."

Nahum 3:19: "There is no healing of thy bruise; thy wound is grievous: all that hear the bruit of thee

shall clap the hands over thee: for upon whom hath not thy wickedness passed continually?"

John 19:40: "Then took they the body of Jesus, and wound it in linen clothes with the spices, as the manner of the Jews is to bury."

Acts 5:6: "And the young men arose, wound him up, and carried him out, and buried him."

1 Corinthians 8:12: "But when ye sin so against the brethren, and wound their weak conscience, ye sin against Christ."

Revelation 13:3: "And I saw one of his heads as it were wounded to death; and his deadly wound was healed: and all the world wondered after the beast."

Revelation 13:12: "And he exerciseth all the power of the first beast before him, and causeth the earth and them which dwell therein to worship the first beast, whose deadly wound was healed."

Revelation 13:14: "And deceiveth them that dwell on the earth by the means of those miracles which he had power to do in the sight of the beast; saying to them that dwell on the earth, that they should make an image to the beast, which had the wound by a sword, and did live."

## WOUNDED

Occurrences: 35

Deuteronomy 23:1: "He that is wounded in the stones, or hath his privy member cut off, shall not enter into the congregation of the LORD."

Judges 9:40: "And Abimelech chased him, and he fled before him, and many were overthrown and wounded, even unto the entering of the gate."

1 Samuel 17:52: "And the men of Israel and of Judah arose, and shouted, and pursued the Philistines, until thou come to the valley, and to the gates of Ekron. And the wounded of the Philistines fell down by the way to Shaaraim, even unto Gath, and unto Ekron."

1 Samuel 31:3: "And the battle went sore against Saul, and the archers hit him; and he was sore wounded of the archers."

2 Samuel 22:39: "And I have consumed them, and wounded them, that they could not arise: yea, they are fallen under my feet."

1 Kings 20:37: "Then he found another man, and said, Smite me, I pray thee. And the man smote him, so that in smiting he wounded him."

1 Kings 22:34: "And a certain man drew a bow at a venture, and smote the king of Israel between the joints of the harness: wherefore he said unto the driver of his chariot, Turn thine hand, and carry me out of the host; for I am wounded."

2 Kings 8:28: "And he went with Joram the son of Ahab to the war against Hazael king of Syria in Ramothgilead; and the Syrians wounded Joram."

1 Chronicles 10:3: "And the battle went sore against Saul, and the archers hit him, and he was wounded of the archers."

2 Chronicles 18:33: "And a certain man drew a bow at a venture, and smote the king of Israel between the joints of the harness: therefore he said to his chariot man, Turn thine hand, that thou mayest carry me out of the host; for I am wounded."

2 Chronicles 35:23: "And the archers shot at king Josiah; and the king said to his servants, Have me away; for I am sore wounded."

Job 24:12: "Men groan from out of the city, and the soul of the wounded crieth out: yet God layeth not folly to them."

Psalms 18:38: "I have wounded them that they were not able to rise: they are fallen under my feet."

Psalms 64:7: "But God shall shoot at them with an arrow; suddenly shall they be wounded."

Psalms 69:26: "For they persecute him whom thou hast smitten; and they talk to the grief of those whom thou hast wounded."

Psalms 109:22: "For I am poor and needy, and my heart is wounded within me."

Proverbs 7:26: "For she hath cast down many wounded: yea, many strong men have been slain by her."

Proverbs 18:14: "The spirit of a man will sustain his infirmity; but a wounded spirit who can bear?"

Song of Solomon 5:7: "The watchmen that went about the city found me, they smote me, they wounded me; the keepers of the walls took away my veil from me."

Isaiah 51:9: "Awake, awake, put on strength, O arm of the LORD; awake, as in the ancient days, in the generations of old. Art thou not it that hath cut Rahab, and wounded the dragon?"

Isaiah 53:5: "But he was wounded for our transgressions, he was bruised for our iniquities: the chastisement of our peace was upon him; and with his stripes we are healed."

Jeremiah 30:14: "All thy lovers have forgotten thee; they seek thee not; for I have wounded thee with the wound of an enemy, with the chastisement of a cruel one, for the multitude of thine iniquity; because thy sins were increased."

Jeremiah 37:10: "For though ye had smitten the whole army of the Chaldeans that fight against you, and there remained but wounded men among them, yet should they rise up every man in his tent, and burn this city with fire."

Jeremiah 51:52: "Wherefore, behold, the days come, saith the LORD, that I will do judgment upon her graven images: and through all her land the wounded shall groan."

Lamentations 2:12: "They say to their mothers, Where is corn and wine? when they swooned as the wounded in the streets of the city, when their soul was poured out into their mothers' bosom."

Ezekiel 26:15: "Thus saith the Lord GOD to Tyrus; Shall not the isles shake at the sound of thy fall, when the wounded cry, when the slaughter is made in the midst of thee?"

Ezekiel 28:23: "For I will send into her pestilence, and blood into her streets; and the wounded shall be judged in the midst of her by the sword upon her on every side; and they shall know that I am the LORD."

Ezekiel 30:24: "And I will strengthen the arms of the king of Babylon, and put my sword in his hand: but I will break Pharaoh's arms, and he shall groan before him with the groanings of a deadly wounded man."

Joel 2:8: "Neither shall one thrust another; they shall walk every one in his path: and when they fall upon the sword, they shall not be wounded."

Zechariah 13:6: "And one shall say unto him, What are these wounds in thine hands? Then he shall answer, Those with which I was wounded in the house of my friends."

Mark 12:4: "And again he sent unto them another servant; and at him they cast stones, and wounded him in the head, and sent him away shamefully handled."

Luke 10:30: "And Jesus answering said, A certain man went down from Jerusalem to Jericho, and fell among thieves, which stripped him of his raiment, and wounded him, and departed, leaving him half dead."

Luke 20:12: "And again he sent a third: and they wounded him also, and cast him out."

Acts 19:16: "And the man in whom the evil spirit was leaped on them, and overcame them, and prevailed against them, so that they fled out of that house naked and wounded."

Revelation 13:3: "And I saw one of his heads as it were wounded to death; and his deadly wound was healed: and all the world wondered after the beast."

## **WOUNDEDST**

Occurrences: 1

Habakkuk 3:13: "Thou wentest forth for the salvation of thy people, even for salvation with thine anointed; thou woundedst the head out of the house of the wicked, by discovering the foundation unto the neck. Selah."

## **WOUNDETH**

Occurrences: 1

Job 5:18: "For he maketh sore, and bindeth up: he woundeth, and his hands make whole."

## WOUNDING

Occurrences: 1

Genesis 4:23: "And Lamech said unto his wives, Adah and Zillah, Hear my voice; ye wives of Lamech, hearken unto my speech: for I have slain a man to my wounding, and a young man to my hurt."

## WOUNDS

Occurrences: 15

2 Kings 8:29: "And king Joram went back to be healed in Jezreel of the wounds which the Syrians had given him at Ramah, when he fought against Hazael king of Syria. And Ahaziah the son of Jehoram king of Judah went down to see Joram the son of Ahab in Jezreel, because he was sick."

2 Kings 9:15: "But king Joram was returned to be healed in Jezreel of the wounds which the Syrians had given him, when he fought with Hazael king of Syria.) And Jehu said, If it be your minds, then let none go forth nor escape out of the city to go to tell it in Jezreel."

2 Chronicles 22:6: "And he returned to be healed in Jezreel because of the wounds which were given him at Ramah, when he fought with Hazael king of Syria. And Azariah the son of Jehoram king of Judah went down to see Jehoram the son of Ahab at Jezreel, because he was sick."

Job 9:17: "For he breaketh me with a tempest, and multiplieth my wounds without cause."

Psalms 38:5: "My wounds stink and are corrupt because of my foolishness."

Psalms 147:3: "He healeth the broken in heart, and bindeth up their wounds."

Proverbs 18:8: "The words of a talebearer are as wounds, and they go down into the innermost parts of the belly."

Proverbs 23:29: "Who hath woe? who hath sorrow? who hath contentions? who hath babbling? who hath wounds without cause? who hath redness of eyes?"

Proverbs 26:22: "The words of a talebearer are as wounds, and they go down into the innermost parts of the belly."

Proverbs 27:6: "Faithful are the wounds of a friend; but the kisses of an enemy are deceitful."

Isaiah 1:6: "From the sole of the foot even unto the head there is no soundness in it; but wounds, and bruises, and putrifying sores: they have not been closed, neither bound up, neither mollified with ointment."

Jeremiah 6:7: "As a fountain casteth out her waters, so she casteth out her wickedness: violence and spoil is heard in her; before me continually is grief and wounds."

Jeremiah 30:17: "For I will restore health unto thee, and I will heal thee of thy wounds, saith the LORD; because they called thee an Outcast, saying, This is Zion, whom no man seeketh after."

Zechariah 13:6: "And one shall say unto him, What are these wounds in thine hands? Then he shall answer, Those with which I was wounded in the house of my friends."

Luke 10:34: "And went to him, and bound up his wounds, pouring in oil and wine, and set him on his own beast, and brought him to an inn, and took care of him."

## WOVE

Occurrences: 1

2 Kings 23:7: "And he brake down the houses of the sodomites, that were by the house of the LORD, where the women wove hangings for the grove."

## WOVEN

Occurrences: 4

Exodus 28:32: "And there shall be an hole in the top of it, in the midst thereof: it shall have a binding of woven work round about the hole of it, as it were the hole of an habergeon, that it be not



rent."

Exodus 39:22: "And he made the robe of the ephod of woven work, all of blue."

Exodus 39:27: "And they made coats of fine linen of woven work for Aaron, and for his sons,"

John 19:23: "Then the soldiers, when they had crucified Jesus, took his garments, and made four parts, to every soldier a part; and also his coat: now the coat was without seam, woven from the top throughout."

## **WRAP**

Occurrences: 2

Isaiah 28:20: "For the bed is shorter than that a man can stretch himself on it: and the covering narrower than that he can wrap himself in it."

Micah 7:3: "That they may do evil with both hands earnestly, the prince asketh, and the judge asketh for a reward; and the great man, he uttereth his mischievous desire: so they wrap it up."

## **WRAPPED**

Occurrences: 14

Genesis 38:14: "And she put her widow's garments off from her, and covered her with a vail, and wrapped herself, and sat in an open place, which is by the way to Timnath; for she saw that Shelah was grown, and she was not given unto him to wife."

1 Samuel 21:9: "And the priest said, The sword of Goliath the Philistine, whom thou slewest in the valley of Elah, behold, it is here wrapped in a cloth behind the ephod: if thou wilt take that, take it: for there is no other save that here. And David said, There is none like that; give it me."

1 Kings 19:13: "And it was so, when Elijah heard it, that he wrapped his face in his mantle, and went out, and stood in the entering in of the cave. And, behold, there came a voice unto him, and said, What doest thou here, Elijah?"

2 Kings 2:8: "And Elijah took his mantle, and wrapped it together, and smote the waters, and they were divided hither and thither, so that they two went over on dry ground."

Job 8:17: "His roots are wrapped about the heap, and seeth the place of stones."

Job 40:17: "He moveth his tail like a cedar: the sinews of his stones are wrapped together."

Ezekiel 21:15: "I have set the point of the sword against all their gates, that their heart may faint, and their ruins be multiplied: ah! it is made bright, it is wrapped up for the slaughter."

Jonah 2:5: "The waters compassed me about, even to the soul: the depth closed me round about, the weeds were wrapped about my head."

Matthew 27:59: "And when Joseph had taken the body, he wrapped it in a clean linen cloth,"

Mark 15:46: "And he bought fine linen, and took him down, and wrapped him in the linen, and laid him in a sepulchre which was hewn out of a rock, and rolled a stone unto the door of the sepulchre."

Luke 2:7: "And she brought forth her firstborn son, and wrapped him in swaddling clothes, and laid him in a manger; because there was no room for them in the inn."

Luke 2:12: "And this shall be a sign unto you; Ye shall find the babe wrapped in swaddling clothes, lying in a manger."

Luke 23:53: "And he took it down, and wrapped it in linen, and laid it in a sepulchre that was hewn in stone, wherein never man before was laid."

John 20:7: "And the napkin, that was about his head, not lying with the linen clothes, but wrapped together in a place by itself."

## **WRATH**

Occurrences: 194

Genesis 39:19: "And it came to pass, when his master heard the words of his wife, which she spake

unto him, saying, After this manner did thy servant to me; that his wrath was kindled."

Genesis 49:7: "Cursed be their anger, for it was fierce; and their wrath, for it was cruel: I will divide them in Jacob, and scatter them in Israel."

Exodus 15:7: "And in the greatness of thine excellency thou hast overthrown them that rose up against thee: thou sentest forth thy wrath, which consumed them as stubble."

Exodus 22:24: "And my wrath shall wax hot, and I will kill you with the sword; and your wives shall be widows, and your children fatherless."

Exodus 32:10: "Now therefore let me alone, that my wrath may wax hot against them, and that I may consume them: and I will make of thee a great nation."

Exodus 32:11: "And Moses besought the LORD his God, and said, LORD, why doth thy wrath wax hot against thy people, which thou hast brought forth out of the land of Egypt with great power, and with a mighty hand?"

Exodus 32:12: "Wherefore should the Egyptians speak, and say, For mischief did he bring them out, to slay them in the mountains, and to consume them from the face of the earth? Turn from thy fierce wrath, and repent of this evil against thy people."

Leviticus 10:6: "And Moses said unto Aaron, and unto Eleazar and unto Ithamar, his sons, Uncover not your heads, neither rend your clothes; lest ye die, and lest wrath come upon all the people: but let your brethren, the whole house of Israel, bewail the burning which the LORD hath kindled."

Numbers 1:53: "But the Levites shall pitch round about the tabernacle of testimony, that there be no wrath upon the congregation of the children of Israel: and the Levites shall keep the charge of the tabernacle of testimony."

Numbers 11:33: "And while the flesh was yet between their teeth, ere it was chewed, the wrath of the LORD was kindled against the people, and the LORD smote the people with a very great plague."

Numbers 16:46: "And Moses said unto Aaron, Take a censer, and put fire therein from off the altar, and put on incense, and go quickly unto the congregation, and make an atonement for them: for there is wrath gone out from the LORD; the plague is begun."

Numbers 18:5: "And ye shall keep the charge of the sanctuary, and the charge of the altar: that there be no wrath any more upon the children of Israel."

Numbers 25:11: "Phinehas, the son of Eleazar, the son of Aaron the priest, hath turned my wrath away from the children of Israel, while he was zealous for my sake among them, that I consumed not the children of Israel in my jealousy."

Deuteronomy 9:7: "Remember, and forget not, how thou provokedst the LORD thy God to wrath in the wilderness: from the day that thou didst depart out of the land of Egypt, until ye came unto this place, ye have been rebellious against the LORD."

Deuteronomy 9:8: "Also in Horeb ye provoked the LORD to wrath, so that the LORD was angry with you to have destroyed you."

Deuteronomy 9:22: "And at Taberah, and at Massah, and at Kibrothhattaavah, ye provoked the LORD to wrath."

Deuteronomy 11:17: "And then the LORD's wrath be kindled against you, and he shut up the heaven, that there be no rain, and that the land yield not her fruit; and lest ye perish quickly from off the good land which the LORD giveth you."

Deuteronomy 29:23: "And that the whole land thereof is brimstone, and salt, and burning, that it is not sown, nor beareth, nor any grass groweth therein, like the overthrow of Sodom, and Gomorrah, Admah, and Zeboim, which the LORD overthrew in his anger, and in his wrath:"

Deuteronomy 29:28: "And the LORD rooted them out of their land in anger, and in wrath, and in great indignation, and cast them into another land, as it is this day."

Deuteronomy 32:27: "Were it not that I feared the wrath of the enemy, lest their adversaries should behave themselves strangely, and lest they should say, Our hand is high, and the LORD hath not done all this."

Joshua 9:20: "This we will do to them; we will even let them live, lest wrath be upon us, because of the oath which we swore unto them."

Joshua 22:20: "Did not Achan the son of Zerah commit a trespass in the accursed thing, and wrath fell on all the congregation of Israel? and that man perished not alone in his iniquity."

1 Samuel 28:18: "Because thou obeyedst not the voice of the LORD, nor executedst his fierce wrath upon Amalek, therefore hath the LORD done this thing unto thee this day."

2 Samuel 11:20: "And if so be that the king's wrath arise, and he say unto thee, Wherefore approached ye so nigh unto the city when ye did fight? knew ye not that they would shoot from the wall?"

2 Kings 22:13: "Go ye, enquire of the LORD for me, and for the people, and for all Judah, concerning the words of this book that is found: for great is the wrath of the LORD that is kindled against us, because our fathers have not hearkened unto the words of this book, to do according unto all that which is written concerning us."

2 Kings 22:17: "Because they have forsaken me, and have burned incense unto other gods, that they might provoke me to anger with all the works of their hands; therefore my wrath shall be kindled against this place, and shall not be quenched."

2 Kings 23:26: "Notwithstanding the LORD turned not from the fierceness of his great wrath, wherewith his anger was kindled against Judah, because of all the provocations that Manasseh had provoked him withal."

1 Chronicles 27:24: "Joab the son of Zeruiah began to number, but he finished not, because there fell wrath for it against Israel; neither was the number put in the account of the chronicles of king David."

2 Chronicles 12:7: "And when the LORD saw that they humbled themselves, the word of the LORD came to Shemaiah, saying, They have humbled themselves; therefore I will not destroy them, but I will grant them some deliverance; and my wrath shall not be poured out upon Jerusalem by the hand of Shishak."

2 Chronicles 12:12: "And when he humbled himself, the wrath of the LORD turned from him, that he would not destroy him altogether: and also in Judah things went well."

2 Chronicles 19:2: "And Jehu the son of Hanani the seer went out to meet him, and said to king Jehoshaphat, Shouldest thou help the ungodly, and love them that hate the LORD? therefore is wrath upon thee from before the LORD."

2 Chronicles 19:10: "And what cause soever shall come to you of your brethren that dwell in your cities, between blood and blood, between law and commandment, statutes and judgments, ye shall even warn them that they trespass not against the LORD, and so wrath come upon you, and upon your brethren: this do, and ye shall not trespass."

2 Chronicles 24:18: "And they left the house of the LORD God of their fathers, and served groves and idols: and wrath came upon Judah and Jerusalem for this their trespass."

2 Chronicles 28:11: "Now hear me therefore, and deliver the captives again, which ye have taken captive of your brethren: for the fierce wrath of the LORD is upon you."

2 Chronicles 28:13: "And said unto them, Ye shall not bring in the captives hither: for whereas we have offended against the LORD already, ye intend to add more to our sins and to our trespass: for our trespass is great, and there is fierce wrath against Israel."

2 Chronicles 29:8: "Wherefore the wrath of the LORD was upon Judah and Jerusalem, and he hath delivered them to trouble, to astonishment, and to hissing, as ye see with your eyes."

2 Chronicles 29:10: "Now it is in mine heart to make a covenant with the LORD God of Israel, that his fierce wrath may turn away from us."

2 Chronicles 30:8: "Now be ye not stiffnecked, as your fathers were, but yield yourselves unto the LORD, and enter into his sanctuary, which he hath sanctified for ever: and serve the LORD your God, that the fierceness of his wrath may turn away from you."

2 Chronicles 32:25: "But Hezekiah rendered not again according to the benefit done unto him; for

his heart was lifted up: therefore there was wrath upon him, and upon Judah and Jerusalem."

2 Chronicles 32:26: "Notwithstanding Hezekiah humbled himself for the pride of his heart, both he and the inhabitants of Jerusalem, so that the wrath of the LORD came not upon them in the days of Hezekiah."

2 Chronicles 34:21: "Go, enquire of the LORD for me, and for them that are left in Israel and in Judah, concerning the words of the book that is found: for great is the wrath of the LORD that is poured out upon us, because our fathers have not kept the word of the LORD, to do after all that is written in this book."

2 Chronicles 34:25: "Because they have forsaken me, and have burned incense unto other gods, that they might provoke me to anger with all the works of their hands; therefore my wrath shall be poured out upon this place, and shall not be quenched."

2 Chronicles 36:16: "But they mocked the messengers of God, and despised his words, and misused his prophets, until the wrath of the LORD arose against his people, till there was no remedy."

Ezra 5:12: "But after that our fathers had provoked the God of heaven unto wrath, he gave them into the hand of Nebuchadnezzar the king of Babylon, the Chaldean, who destroyed this house, and carried the people away into Babylon."

Ezra 7:23: " whatsoever is commanded by the God of heaven, let it be diligently done for the house of the God of heaven: for why should there be wrath against the realm of the king and his sons?"

Ezra 8:22: "For I was ashamed to require of the king a band of soldiers and horsemen to help us against the enemy in the way: because we had spoken unto the king, saying, The hand of our God is upon all them for good that seek him; but his power and his wrath is against all them that forsake him."

Ezra 10:14: "Let now our rulers of all the congregation stand, and let all them which have taken strange wives in our cities come at appointed times, and with them the elders of every city, and the judges thereof, until the fierce wrath of our God for this matter be turned from us."

Nehemiah 13:18: "Did not your fathers thus, and did not our God bring all this evil upon us, and upon this city? yet ye bring more wrath upon Israel by profaning the sabbath."

Esther 1:18: "Likewise shall the ladies of Persia and Media say this day unto all the king's princes, which have heard of the deed of the queen. Thus shall there arise too much contempt and wrath."

Esther 2:1: "After these things, when the wrath of king Ahasuerus was appeased, he remembered Vashti, and what she had done, and what was decreed against her."

Esther 3:5: "And when Haman saw that Mordecai bowed not, nor did him reverence, then was Haman full of wrath."

Esther 7:7: "And the king arising from the banquet of wine in his wrath went into the palace garden: and Haman stood up to make request for his life to Esther the queen; for he saw that there was evil determined against him by the king."

Esther 7:10: "So they hanged Haman on the gallows that he had prepared for Mordecai. Then was the king's wrath pacified."

Job 5:2: "For wrath killeth the foolish man, and envy slayeth the silly one."

Job 14:13: "O that thou wouldest hide me in the grave, that thou wouldest keep me secret, until thy wrath be past, that thou wouldest appoint me a set time, and remember me!"

Job 16:9: "He teareth me in his wrath, who hateth me: he gnasheth upon me with his teeth; mine enemy sharpeneth his eyes upon me."

Job 19:11: "He hath also kindled his wrath against me, and he counteth me unto him as one of his enemies."

Job 19:29: "Be ye afraid of the sword: for wrath bringeth the punishments of the sword, that ye may know there is a judgment."

Job 20:23: "When he is about to fill his belly, God shall cast the fury of his wrath upon him, and shall rain it upon him while he is eating."

Job 20:28: "The increase of his house shall depart, and his goods shall flow away in the day of his

wrath."

Job 21:20: "His eyes shall see his destruction, and he shall drink of the wrath of the Almighty."

Job 21:30: "That the wicked is reserved to the day of destruction? they shall be brought forth to the day of wrath."

Job 32:2: "Then was kindled the wrath of Elihu the son of Barachel the Buzite, of the kindred of Ram: against Job was his wrath kindled, because he justified himself rather than God."

Job 32:3: "Also against his three friends was his wrath kindled, because they had found no answer, and yet had condemned Job."

Job 32:5: "When Elihu saw that there was no answer in the mouth of these three men, then his wrath was kindled."

Job 36:13: "But the hypocrites in heart heap up wrath: they cry not when he bindeth them."

Job 36:18: "Because there is wrath, beware lest he take thee away with his stroke: then a great ransom cannot deliver thee."

Job 40:11: "Cast abroad the rage of thy wrath: and behold every one that is proud, and abase him."

Job 42:7: "And it was so, that after the LORD had spoken these words unto Job, the LORD said to Eliphaz the Temanite, My wrath is kindled against thee, and against thy two friends: for ye have not spoken of me the thing that is right, as my servant Job hath."

Psalms 2:5: "Then shall he speak unto them in his wrath, and vex them in his sore displeasure."

Psalms 2:12: "Kiss the Son, lest he be angry, and ye perish from the way, when his wrath is kindled but a little. Blessed are all they that put their trust in him."

Psalms 21:9: "Thou shalt make them as a fiery oven in the time of thine anger: the LORD shall swallow them up in his wrath, and the fire shall devour them."

Psalms 37:8: "Cease from anger, and forsake wrath: fret not thyself in any wise to do evil."

Psalms 38:1: "O lord, rebuke me not in thy wrath: neither chasten me in thy hot displeasure."

Psalms 55:3: "Because of the voice of the enemy, because of the oppression of the wicked: for they cast iniquity upon me, and in wrath they hate me."

Psalms 58:9: "Before your pots can feel the thorns, he shall take them away as with a whirlwind, both living, and in his wrath."

Psalms 59:13: "Consume them in wrath, consume them, that they may not be: and let them know that God ruleth in Jacob unto the ends of the earth. Selah."

Psalms 76:10: "Surely the wrath of man shall praise thee: the remainder of wrath shalt thou restrain."

Psalms 78:31: "The wrath of God came upon them, and slew the fattest of them, and smote down the chosen men of Israel."

Psalms 78:38: "But he, being full of compassion, forgave their iniquity, and destroyed them not: yea, many a time turned he his anger away, and did not stir up all his wrath."

Psalms 78:49: "He cast upon them the fierceness of his anger, wrath, and indignation, and trouble, by sending evil angels among them."

Psalms 79:6: "Pour out thy wrath upon the heathen that have not known thee, and upon the kingdoms that have not called upon thy name."

Psalms 85:3: "Thou hast taken away all thy wrath: thou hast turned thyself from the fierceness of thine anger."

Psalms 88:7: "Thy wrath lieth hard upon me, and thou hast afflicted me with all thy waves. Selah."

Psalms 88:16: "Thy fierce wrath goeth over me; thy terrors have cut me off."

Psalms 89:46: "How long, LORD? wilt thou hide thyself for ever? shall thy wrath burn like fire?"

Psalms 90:7: "For we are consumed by thine anger, and by thy wrath are we troubled."

Psalms 90:9: "For all our days are passed away in thy wrath: we spend our years as a tale that is told."

Psalms 90:11: "Who knoweth the power of thine anger? even according to thy fear, so is thy wrath."

Psalms 95:11: "Unto whom I swear in my wrath that they should not enter into my rest."

Psalms 102:10: "Because of thine indignation and thy wrath: for thou hast lifted me up, and cast me down."

Psalms 106:23: "Therefore he said that he would destroy them, had not Moses his chosen stood before him in the breach, to turn away his wrath, lest he should destroy them."

Psalms 106:40: "Therefore was the wrath of the LORD kindled against his people, insomuch that he abhorred his own inheritance."

Psalms 110:5: "The Lord at thy right hand shall strike through kings in the day of his wrath."

Psalms 124:3: "Then they had swallowed us up quick, when their wrath was kindled against us:"

Psalms 138:7: "Though I walk in the midst of trouble, thou wilt revive me: thou shalt stretch forth thine hand against the wrath of mine enemies, and thy right hand shall save me."

Proverbs 11:4: "Riches profit not in the day of wrath: but righteousness delivereth from death."

Proverbs 11:23: "The desire of the righteous is only good: but the expectation of the wicked is wrath."

Proverbs 12:16: "A fool's wrath is presently known: but a prudent man covereth shame."

Proverbs 14:29: "He that is slow to wrath is of great understanding: but he that is hasty of spirit exalteth folly."

Proverbs 14:35: "The king's favour is toward a wise servant: but his wrath is against him that causeth shame."

Proverbs 15:1: "A soft answer turneth away wrath: but grievous words stir up anger."

Proverbs 16:14: "The wrath of a king is as messengers of death: but a wise man will pacify it."

Proverbs 19:12: "The king's wrath is as the roaring of a lion; but his favour is as dew upon the grass."

Proverbs 19:19: "A man of great wrath shall suffer punishment: for if thou deliver him, yet thou must do it again."

Proverbs 21:14: "A gift in secret pacifieth anger: and a reward in the bosom strong wrath."

Proverbs 21:24: "Proud and haughty scorner is his name, who dealeth in proud wrath."

Proverbs 24:18: "Lest the LORD see it, and it displease him, and he turn away his wrath from him."

Proverbs 27:3: "A stone is heavy, and the sand weighty; but a fool's wrath is heavier than them both."

Proverbs 27:4: "Wrath is cruel, and anger is outrageous; but who is able to stand before envy?"

Proverbs 29:8: "Scornful men bring a city into a snare: but wise men turn away wrath."

Proverbs 30:33: "Surely the churning of milk bringeth forth butter, and the wringing of the nose bringeth forth blood: so the forcing of wrath bringeth forth strife."

Ecclesiastes 5:17: "All his days also he eateth in darkness, and he hath much sorrow and wrath with his sickness."

Isaiah 9:19: "Through the wrath of the LORD of hosts is the land darkened, and the people shall be as the fuel of the fire: no man shall spare his brother."

Isaiah 10:6: "I will send him against an hypocritical nation, and against the people of my wrath will I give him a charge, to take the spoil, and to take the prey, and to tread them down like the mire of the streets."

Isaiah 13:9: "Behold, the day of the LORD cometh, cruel both with wrath and fierce anger, to lay the land desolate: and he shall destroy the sinners thereof out of it."

Isaiah 13:13: "Therefore I will shake the heavens, and the earth shall remove out of her place, in the wrath of the LORD of hosts, and in the day of his fierce anger."

Isaiah 14:6: "He who smote the people in wrath with a continual stroke, he that ruled the nations in anger, is persecuted, and none hindereth."

Isaiah 16:6: "We have heard of the pride of Moab; he is very proud: even of his haughtiness, and his pride, and his wrath: but his lies shall not be so."

Isaiah 54:8: "In a little wrath I hid my face from thee for a moment; but with everlasting kindness will I have mercy on thee, saith the LORD thy Redeemer."

Isaiah 60:10: "And the sons of strangers shall build up thy walls, and their kings shall minister unto thee: for in my wrath I smote thee, but in my favour have I had mercy on thee."

Jeremiah 7:29: "Cut off thine hair, O Jerusalem, and cast it away, and take up a lamentation on high places; for the LORD hath rejected and forsaken the generation of his wrath."

Jeremiah 10:10: "But the LORD is the true God, he is the living God, and an everlasting king: at his wrath the earth shall tremble, and the nations shall not be able to abide his indignation."

Jeremiah 18:20: "Shall evil be recompensed for good? for they have digged a pit for my soul. Remember that I stood before thee to speak good for them, and to turn away thy wrath from them."

Jeremiah 21:5: "And I myself will fight against you with an outstretched hand and with a strong arm, even in anger, and in fury, and in great wrath."

Jeremiah 32:37: "Behold, I will gather them out of all countries, whither I have driven them in mine anger, and in my fury, and in great wrath; and I will bring them again unto this place, and I will cause them to dwell safely:"

Jeremiah 44:8: "In that ye provoke me unto wrath with the works of your hands, burning incense unto other gods in the land of Egypt, whither ye be gone to dwell, that ye might cut yourselves off, and that ye might be a curse and a reproach among all the nations of the earth?"

Jeremiah 48:30: "I know his wrath, saith the LORD; but it shall not be so; his lies shall not so effect it."

Jeremiah 50:13: "Because of the wrath of the LORD it shall not be inhabited, but it shall be wholly desolate: every one that goeth by Babylon shall be astonished, and hiss at all her plagues."

Lamentations 2:2: "The LORD hath swallowed up all the habitations of Jacob, and hath not pitied: he hath thrown down in his wrath the strong holds of the daughter of Judah; he hath brought them down to the ground: he hath polluted the kingdom and the princes thereof."

Lamentations 3:1: "I AM the man that hath seen affliction by the rod of his wrath."

Ezekiel 7:12: "The time is come, the day draweth near: let not the buyer rejoice, nor the seller mourn: for wrath is upon all the multitude thereof."

Ezekiel 7:14: "They have blown the trumpet, even to make all ready; but none goeth to the battle: for my wrath is upon all the multitude thereof."

Ezekiel 7:19: "They shall cast their silver in the streets, and their gold shall be removed: their silver and their gold shall not be able to deliver them in the day of the wrath of the LORD: they shall not satisfy their souls, neither fill their bowels: because it is the stumblingblock of their iniquity."

Ezekiel 13:15: "Thus will I accomplish my wrath upon the wall, and upon them that have daubed it with untempered mortar, and will say unto you, The wall is no more, neither they that daubed it;"

Ezekiel 21:31: "And I will pour out mine indignation upon thee, I will blow against thee in the fire of my wrath, and deliver thee into the hand of brutish men, and skilful to destroy."

Ezekiel 22:21: "Yea, I will gather you, and blow upon you in the fire of my wrath, and ye shall be melted in the midst thereof."

Ezekiel 22:31: "Therefore have I poured out mine indignation upon them; I have consumed them with the fire of my wrath: their own way have I recompensed upon their heads, saith the Lord GOD."

Ezekiel 38:19: "For in my jealousy and in the fire of my wrath have I spoken, Surely in that day there shall be a great shaking in the land of Israel;"

Hosea 5:10: "The princes of Judah were like them that remove the bound: therefore I will pour out my wrath upon them like water."

Hosea 13:11: "I gave thee a king in mine anger, and took him away in my wrath."

Amos 1:11: "Thus saith the LORD; For three transgressions of Edom, and for four, I will not turn away the punishment thereof; because he did pursue his brother with the sword, and did cast off all pity, and his anger did tear perpetually, and he kept his wrath for ever:"

Nahum 1:2: "God is jealous, and the LORD revengeth; the LORD revengeth, and is furious; the LORD will take vengeance on his adversaries, and he reserveth wrath for his enemies."

Habakkuk 3:2: "O LORD, I have heard thy speech, and was afraid: O LORD, revive thy work in the midst of the years, in the midst of the years make known; in wrath remember mercy."

Habakkuk 3:8: "Was the LORD displeased against the rivers? was thine anger against the rivers? was thy wrath against the sea, that thou didst ride upon thine horses and thy chariots of salvation?"

Zephaniah 1:15: "That day is a day of wrath, a day of trouble and distress, a day of wasteness and desolation, a day of darkness and gloominess, a day of clouds and thick darkness,"

Zephaniah 1:18: "Neither their silver nor their gold shall be able to deliver them in the day of the LORD's wrath; but the whole land shall be devoured by the fire of his jealousy: for he shall make even a speedy riddance of all them that dwell in the land."

Zechariah 7:12: "Yea, they made their hearts as an adamant stone, lest they should hear the law, and the words which the LORD of hosts hath sent in his spirit by the former prophets: therefore came a great wrath from the LORD of hosts."

Zechariah 8:14: "For thus saith the LORD of hosts; As I thought to punish you, when your fathers provoked me to wrath, saith the LORD of hosts, and I repented not:"

Matthew 3:7: "But when he saw many of the Pharisees and Sadducees come to his baptism, he said unto them, O generation of vipers, who hath warned you to flee from the wrath to come?"

Luke 3:7: "Then said he to the multitude that came forth to be baptized of him, O generation of vipers, who hath warned you to flee from the wrath to come?"

Luke 4:28: "And all they in the synagogue, when they heard these things, were filled with wrath,"

Luke 21:23: "But woe unto them that are with child, and to them that give suck, in those days! for there shall be great distress in the land, and wrath upon this people."

John 3:36: "He that believeth on the Son hath everlasting life: and he that believeth not the Son shall not see life; but the wrath of God abideth on him."

Acts 19:28: "And when they heard these sayings, they were full of wrath, and cried out, saying, Great is Diana of the Ephesians."

Romans 1:18: "For the wrath of God is revealed from heaven against all ungodliness and unrighteousness of men, who hold the truth in unrighteousness;"

Romans 2:5: "But after thy hardness and impenitent heart treasurest up unto thyself wrath against the day of wrath and revelation of the righteous judgment of God;"

Romans 2:8: "But unto them that are contentious, and do not obey the truth, but obey unrighteousness, indignation and wrath,"

Romans 4:15: "Because the law worketh wrath: for where no law is, there is no transgression."

Romans 5:9: "Much more then, being now justified by his blood, we shall be saved from wrath through him."

Romans 9:22: "What if God, willing to shew his wrath, and to make his power known, endured with much longsuffering the vessels of wrath fitted to destruction:"

Romans 12:19: "Dearly beloved, avenge not yourselves, but rather give place unto wrath: for it is written, Vengeance is mine; I will repay, saith the Lord."

Romans 13:4: "For he is the minister of God to thee for good. But if thou do that which is evil, be afraid; for he beareth not the sword in vain: for he is the minister of God, a revenger to execute wrath upon him that doeth evil."

Romans 13:5: "Wherefore ye must needs be subject, not only for wrath, but also for conscience sake."

Galatians 5:20: "Idolatry, witchcraft, hatred, variance, emulations, wrath, strife, seditions, heresies,"

Ephesians 2:3: "Among whom also we all had our conversation in times past in the lusts of our flesh, fulfilling the desires of the flesh and of the mind; and were by nature the children of wrath, even as others."

Ephesians 4:26: "Be ye angry, and sin not: let not the sun go down upon your wrath:"

Ephesians 4:31: "Let all bitterness, and wrath, and anger, and clamour, and evil speaking, be put away from you, with all malice:"



Ephesians 5:6: "Let no man deceive you with vain words: for because of these things cometh the wrath of God upon the children of disobedience."

Ephesians 6:4: "And, ye fathers, provoke not your children to wrath: but bring them up in the nurture and admonition of the Lord."

Colossians 3:6: "For which things' sake the wrath of God cometh on the children of disobedience:"

Colossians 3:8: "But now ye also put off all these; anger, wrath, malice, blasphemy, filthy communication out of your mouth."

1 Thessalonians 1:10: "And to wait for his Son from heaven, whom he raised from the dead, even Jesus, which delivered us from the wrath to come."

1 Thessalonians 2:16: "Forbidding us to speak to the Gentiles that they might be saved, to fill up their sins alway: for the wrath is come upon them to the uttermost."

1 Thessalonians 5:9: "For God hath not appointed us to wrath, but to obtain salvation by our Lord Jesus Christ,"

1 Timothy 2:8: "I will therefore that men pray every where, lifting up holy hands, without wrath and doubting."

Hebrews 3:11: "So I swear in my wrath, They shall not enter into my rest.)"

Hebrews 4:3: "For we which have believed do enter into rest, as he said, As I have sworn in my wrath, if they shall enter into my rest: although the works were finished from the foundation of the world."

Hebrews 11:27: "By faith he forsook Egypt, not fearing the wrath of the king: for he endured, as seeing him who is invisible."

James 1:19: "Wherefore, my beloved brethren, let every man be swift to hear, slow to speak, slow to wrath:"

James 1:20: "For the wrath of man worketh not the righteousness of God."

Revelation 6:16: "And said to the mountains and rocks, Fall on us, and hide us from the face of him that sitteth on the throne, and from the wrath of the Lamb:"

Revelation 6:17: "For the great day of his wrath is come; and who shall be able to stand?"

Revelation 11:18: "And the nations were angry, and thy wrath is come, and the time of the dead, that they should be judged, and that thou shouldest give reward unto thy servants the prophets, and to the saints, and them that fear thy name, small and great; and shouldest destroy them which destroy the earth."

Revelation 12:12: "Therefore rejoice, ye heavens, and ye that dwell in them. Woe to the inhabitants of the earth and of the sea! for the devil is come down unto you, having great wrath, because he knoweth that he hath but a short time."

Revelation 14:8: "And there followed another angel, saying, Babylon is fallen, is fallen, that great city, because she made all nations drink of the wine of the wrath of her fornication."

Revelation 14:10: "The same shall drink of the wine of the wrath of God, which is poured out without mixture into the cup of his indignation; and he shall be tormented with fire and brimstone in the presence of the holy angels, and in the presence of the Lamb:"

Revelation 14:19: "And the angel thrust in his sickle into the earth, and gathered the vine of the earth, and cast it into the great winepress of the wrath of God."

Revelation 15:1: "And I saw another sign in heaven, great and marvellous, seven angels having the seven last plagues; for in them is filled up the wrath of God."

Revelation 15:7: "And one of the four beasts gave unto the seven angels seven golden vials full of the wrath of God, who liveth for ever and ever."

Revelation 16:1: "And I heard a great voice out of the temple saying to the seven angels, Go your ways, and pour out the vials of the wrath of God upon the earth."

Revelation 16:19: "And the great city was divided into three parts, and the cities of the nations fell: and great Babylon came in remembrance before God, to give unto her the cup of the wine of the fierceness of his wrath."

Revelation 18:3: "For all nations have drunk of the wine of the wrath of her fornication, and the kings of the earth have committed fornication with her, and the merchants of the earth are waxed rich through the abundance of her delicacies."

Revelation 19:15: "And out of his mouth goeth a sharp sword, that with it he should smite the nations: and he shall rule them with a rod of iron: and he treadeth the winepress of the fierceness and wrath of Almighty God."

## **WRATHFUL**

Occurrences: 2

Psalms 69:24: "Pour out thine indignation upon them, and let thy wrathful anger take hold of them."

Proverbs 15:18: "A wrathful man stirreth up strife: but he that is slow to anger appeaseth strife."

## **WRATHS**

Occurrences: 1

2 Corinthians 12:20: "For I fear, lest, when I come, I shall not find you such as I would, and that I shall be found unto you such as ye would not: lest there be debates, envyings, wraths, strifes, backbitings, whisperings, swellings, tumults:"

## **WREATH**

Occurrences: 1

2 Chronicles 4:13: "And four hundred pomegranates on the two wreaths; two rows of pomegranates on each wreath, to cover the two pommels of the chapiters which were upon the pillars."

## **WREATHED**

Occurrences: 1

Lamentations 1:14: "The yoke of my transgressions is bound by his hand: they are wreathed, and come up upon my neck: he hath made my strength to fall, the LORD hath delivered me into their hands, from whom I am not able to rise up."

## **WREATHEN**

Occurrences: 8

Exodus 28:14: "And two chains of pure gold at the ends; of wreathen work shalt thou make them, and fasten the wreathen chains to the ouches."

Exodus 28:22: "And thou shalt make upon the breastplate chains at the ends of wreathen work of pure gold."

Exodus 28:24: "And thou shalt put the two wreathen chains of gold in the two rings which are on the ends of the breastplate."

Exodus 28:25: "And the other two ends of the two wreathen chains thou shalt fasten in the two ouches, and put them on the shoulderpieces of the ephod before it."

Exodus 39:15: "And they made upon the breastplate chains at the ends, of wreathen work of pure gold."

Exodus 39:17: "And they put the two wreathen chains of gold in the two rings on the ends of the breastplate."

Exodus 39:18: "And the two ends of the two wreathen chains they fastened in the two ouches, and put them on the shoulderpieces of the ephod, before it."

2 Kings 25:17: "The height of the one pillar was eighteen cubits, and the chapter upon it was brass: and the height of the chapter three cubits; and the wreathen work, and pomegranates upon the

chapter round about, all of brass: and like unto these had the second pillar with wreathen work."

## **WREATHS**

Occurrences: 3

1 Kings 7:17: "And nets of checker work, and wreaths of chain work, for the chapters which were upon the top of the pillars; seven for the one chapter, and seven for the other chapter."

2 Chronicles 4:12: "To wit, the two pillars, and the pommels, and the chapters which were on the top of the two pillars, and the two wreaths to cover the two pommels of the chapters which were on the top of the pillars;"

2 Chronicles 4:13: "And four hundred pomegranates on the two wreaths; two rows of pomegranates on each wreath, to cover the two pommels of the chapters which were upon the pillars."

## **WREST**

Occurrences: 5

Exodus 23:2: "Thou shalt not follow a multitude to do evil; neither shalt thou speak in a cause to decline after many to wrest judgment:"

Exodus 23:6: "Thou shalt not wrest the judgment of thy poor in his cause."

Deuteronomy 16:19: "Thou shalt not wrest judgment; thou shalt not respect persons, neither take a gift: for a gift doth blind the eyes of the wise, and pervert the words of the righteous."

Psalms 56:5: "Every day they wrest my words: all their thoughts are against me for evil."

2 Peter 3:16: "As also in all his epistles, speaking in them of these things; in which are some things hard to be understood, which they that are unlearned and unstable wrest, as they do also the other scriptures, unto their own destruction."

## **WRESTLE**

Occurrences: 1

Ephesians 6:12: "For we wrestle not against flesh and blood, but against principalities, against powers, against the rulers of the darkness of this world, against spiritual wickedness in high places."

## **WRESTLED**

Occurrences: 3

Genesis 30:8: "And Rachel said, With great wrestlings have I wrestled with my sister, and I have prevailed: and she called his name Naphtali."

Genesis 32:24: "And Jacob was left alone; and there wrestled a man with him until the breaking of the day."

Genesis 32:25: "And when he saw that he prevailed not against him, he touched the hollow of his thigh; and the hollow of Jacob's thigh was out of joint, as he wrestled with him."

## **WRESTLINGS**

Occurrences: 1

Genesis 30:8: "And Rachel said, With great wrestlings have I wrestled with my sister, and I have prevailed: and she called his name Naphtali."

## **WRETCHED**

Occurrences: 2

Romans 7:24: "O wretched man that I am! who shall deliver me from the body of this death?"

Revelation 3:17: "Because thou sayest, I am rich, and increased with goods, and have need of nothing; and knowest not that thou art wretched, and miserable, and poor, and blind, and naked:"

## **WRETCHEDNESS**

Occurrences: 1

Numbers 11:15: "And if thou deal thus with me, kill me, I pray thee, out of hand, if I have found favour in thy sight; and let me not see my wretchedness."

## **WRING**

Occurrences: 3

Leviticus 1:15: "And the priest shall bring it unto the altar, and wring off his head, and burn it on the altar; and the blood thereof shall be wrung out at the side of the altar:"

Leviticus 5:8: "And he shall bring them unto the priest, who shall offer that which is for the sin offering first, and wring off his head from his neck, but shall not divide it asunder:"

Psalms 75:8: "For in the hand of the LORD there is a cup, and the wine is red; it is full of mixture; and he poureth out of the same: but the dregs thereof, all the wicked of the earth shall wring them out, and drink them."

## **WRINGED**

Occurrences: 1

Judges 6:38: "And it was so: for he rose up early on the morrow, and thrust the fleece together, and wringed the dew out of the fleece, a bowl full of water."

## **WRINGING**

Occurrences: 1

Proverbs 30:33: "Surely the churning of milk bringeth forth butter, and the wringing of the nose bringeth forth blood: so the forcing of wrath bringeth forth strife."

## **WRINKLE**

Occurrences: 1

Ephesians 5:27: "That he might present it to himself a glorious church, not having spot, or wrinkle, or any such thing; but that it should be holy and without blemish."

## **WRINKLES**

Occurrences: 1

Job 16:8: "And thou hast filled me with wrinkles, which is a witness against me: and my leanness rising up in me beareth witness to my face."

## **WRITE**

Occurrences: 82

Exodus 17:14: "And the LORD said unto Moses, Write this for a memorial in a book, and rehearse it in the ears of Joshua: for I will utterly put out the remembrance of Amalek from under heaven."

Exodus 34:1: "And the LORD said unto Moses, Hew thee two tables of stone like unto the first: and I will write upon these tables the words that were in the first tables, which thou brakest."

Exodus 34:27: "And the LORD said unto Moses, Write thou these words: for after the tenor of these words I have made a covenant with thee and with Israel."

Numbers 5:23: "And the priest shall write these curses in a book, and he shall blot them out with the bitter water:"

Numbers 17:2: "Speak unto the children of Israel, and take of every one of them a rod according to the house of their fathers, of all their princes according to the house of their fathers twelve rods: write thou every man's name upon his rod."

Numbers 17:3: "And thou shalt write Aaron's name upon the rod of Levi: for one rod shall be for the head of the house of their fathers."

Deuteronomy 6:9: "And thou shalt write them upon the posts of thy house, and on thy gates."

Deuteronomy 10:2: "And I will write on the tables the words that were in the first tables which thou brakest, and thou shalt put them in the ark."

Deuteronomy 11:20: "And thou shalt write them upon the door posts of thine house, and upon thy gates:"

Deuteronomy 17:18: "And it shall be, when he sitteth upon the throne of his kingdom, that he shall write him a copy of this law in a book out of that which is before the priests the Levites:"

Deuteronomy 24:1: "When a man hath taken a wife, and married her, and it come to pass that she find no favour in his eyes, because he hath found some uncleanness in her: then let him write her a bill of divorcement, and give it in her hand, and send her out of his house."

Deuteronomy 24:3: "And if the latter husband hate her, and write her a bill of divorcement, and giveth it in her hand, and sendeth her out of his house; or if the latter husband die, which took her to be his wife;"

Deuteronomy 27:3: "And thou shalt write upon them all the words of this law, when thou art passed over, that thou mayest go in unto the land which the LORD thy God giveth thee, a land that floweth with milk and honey; as the LORD God of thy fathers hath promised thee."

Deuteronomy 27:8: "And thou shalt write upon the stones all the words of this law very plainly."

Deuteronomy 31:19: "Now therefore write ye this song for you, and teach it the children of Israel: put it in their mouths, that this song may be a witness for me against the children of Israel."

2 Chronicles 26:22: "Now the rest of the acts of Uzziah, first and last, did Isaiah the prophet, the son of Amoz, write."

Ezra 5:10: "We asked their names also, to certify thee, that we might write the names of the men that were the chief of them."

Nehemiah 9:38: "And because of all this we make a sure covenant, and write it; and our princes, Levites, and priests, seal unto it."

Esther 8:8: "Write ye also for the Jews, as it liketh you, in the king's name, and seal it with the king's ring: for the writing which is written in the king's name, and sealed with the king's ring, may no man reverse."

Proverbs 3:3: "Let not mercy and truth forsake thee: bind them about thy neck; write them upon the table of thine heart:"

Proverbs 7:3: "Bind them upon thy fingers, write them upon the table of thine heart."

Isaiah 8:1: "Moreover the LORD said unto me, Take thee a great roll, and write in it with a man's pen concerning Mahershalalhashbaz."

Isaiah 10:1: "Woe unto them that decree unrighteous decrees, and that write grievousness which they have prescribed;"

Isaiah 10:19: "And the rest of the trees of his forest shall be few, that a child may write them."

Isaiah 30:8: "Now go, write it before them in a table, and note it in a book, that it may be for the time to come for ever and ever:"

Jeremiah 22:30: "Thus saith the LORD, Write ye this man childless, a man that shall not prosper in his days: for no man of his seed shall prosper, sitting upon the throne of David, and ruling any more in Judah."

Jeremiah 30:2: "Thus speaketh the LORD God of Israel, saying, Write thee all the words that I have spoken unto thee in a book."

Jeremiah 31:33: "But this shall be the covenant that I will make with the house of Israel; After those days, saith the LORD, I will put my law in their inward parts, and write it in their hearts; and will be their God, and they shall be my people."

Jeremiah 36:2: "Take thee a roll of a book, and write therein all the words that I have spoken unto thee against Israel, and against Judah, and against all the nations, from the day I spake unto thee, from the days of Josiah, even unto this day."

Jeremiah 36:17: "And they asked Baruch, saying, Tell us now, How didst thou write all these words at his mouth?"

Jeremiah 36:28: "Take thee again another roll, and write in it all the former words that were in the first roll, which Jehoiakim the king of Judah hath burned."

Ezekiel 24:2: "Son of man, write thee the name of the day, even of this same day: the king of Babylon set himself against Jerusalem this same day."

Ezekiel 37:16: "Moreover, thou son of man, take thee one stick, and write upon it, For Judah, and for the children of Israel his companions: then take another stick, and write upon it, For Joseph, the stick of Ephraim and for all the house of Israel his companions:"

Ezekiel 43:11: "And if they be ashamed of all that they have done, shew them the form of the house, and the fashion thereof, and the goings out thereof, and the comings in thereof, and all the forms thereof, and all the ordinances thereof, and all the forms thereof, and all the laws thereof: and write it in their sight, that they may keep the whole form thereof, and all the ordinances thereof, and do them."

Habakkuk 2:2: "And the LORD answered me, and said, Write the vision, and make it plain upon tables, that he may run that readeth it."

Mark 10:4: "And they said, Moses suffered to write a bill of divorcement, and to put her away."

Luke 1:3: "It seemed good to me also, having had perfect understanding of all things from the very first, to write unto thee in order, most excellent Theophilus,"

Luke 16:6: "And he said, An hundred measures of oil. And he said unto him, Take thy bill, and sit down quickly, and write fifty."

Luke 16:7: "Then said he to another, And how much owest thou? And he said, An hundred measures of wheat. And he said unto him, Take thy bill, and write fourscore."

John 1:45: "Philip findeth Nathanael, and saith unto him, We have found him, of whom Moses in the law, and the prophets, did write, Jesus of Nazareth, the son of Joseph."

John 19:21: "Then said the chief priests of the Jews to Pilate, Write not, The King of the Jews; but that he said, I am King of the Jews."

Acts 15:20: "But that we write unto them, that they abstain from pollutions of idols, and from fornication, and from things strangled, and from blood."

Acts 25:26: "Of whom I have no certain thing to write unto my lord. Wherefore I have brought him forth before you, and specially before thee, O king Agrippa, that, after examination had, I might have somewhat to write."

1 Corinthians 4:14: "I write not these things to shame you, but as my beloved sons I warn you."

1 Corinthians 14:37: "If any man think himself to be a prophet, or spiritual, let him acknowledge that the things that I write unto you are the commandments of the Lord."

2 Corinthians 1:13: "For we write none other things unto you, than what ye read or acknowledge; and I trust ye shall acknowledge even to the end;"

2 Corinthians 2:9: "For to this end also did I write, that I might know the proof of you, whether ye be obedient in all things."

2 Corinthians 9:1: "For as touching the ministering to the saints, it is superfluous for me to write to you:"

2 Corinthians 13:2: "I told you before, and foretell you, as if I were present, the second time; and being absent now I write to them which heretofore have sinned, and to all other, that, if I come again, I will not spare:"

2 Corinthians 13:10: "Therefore I write these things being absent, lest being present I should use sharpness, according to the power which the Lord hath given me to edification, and not to destruction."

Galatians 1:20: "Now the things which I write unto you, behold, before God, I lie not."

Philippians 3:1: "Finally, my brethren, rejoice in the Lord. To write the same things to you, to me indeed is not grievous, but for you it is safe."

1 Thessalonians 4:9: "But as touching brotherly love ye need not that I write unto you: for ye yourselves are taught of God to love one another."

1 Thessalonians 5:1: "But of the times and the seasons, brethren, ye have no need that I write unto you."

2 Thessalonians 3:17: "The salutation of Paul with mine own hand, which is the token in every epistle: so I write."

1 Timothy 3:14: "These things write I unto thee, hoping to come unto thee shortly:"

Hebrews 8:10: "For this is the covenant that I will make with the house of Israel after those days, saith the Lord; I will put my laws into their mind, and write them in their hearts: and I will be to them a God, and they shall be to me a people:"

Hebrews 10:16: "This is the covenant that I will make with them after those days, saith the Lord, I will put my laws into their hearts, and in their minds will I write them;"

2 Peter 3:1: "This second epistle, beloved, I now write unto you; in both which I stir up your pure minds by way of remembrance:"

1 John 1:4: "And these things write we unto you, that your joy may be full."

1 John 2:1: "My little children, these things write I unto you, that ye sin not. And if any man sin, we have an advocate with the Father, Jesus Christ the righteous:"

1 John 2:7: "Brethren, I write no new commandment unto you, but an old commandment which ye had from the beginning. The old commandment is the word which ye have heard from the beginning."

1 John 2:8: "Again, a new commandment I write unto you, which thing is true in him and in you: because the darkness is past, and the true light now shineth."

1 John 2:12: "I write unto you, little children, because your sins are forgiven you for his name's sake."

1 John 2:13: "I write unto you, fathers, because ye have known him that is from the beginning. I write unto you, young men, because ye have overcome the wicked one. I write unto you, little children, because ye have known the Father."

2 John 1:12: "Having many things to write unto you, I would not write with paper and ink: but I trust to come unto you, and speak face to face, that our joy may be full."

3 John 1:13: "I had many things to write, but I will not with ink and pen write unto thee:"

Jude 1:3: "Beloved, when I gave all diligence to write unto you of the common salvation, it was needful for me to write unto you, and exhort you that ye should earnestly contend for the faith which was once delivered unto the saints."

Revelation 1:11: "Saying, I am Alpha and Omega, the first and the last: and, What thou seest, write in a book, and send it unto the seven churches which are in Asia; unto Ephesus, and unto Smyrna, and unto Pergamos, and unto Thyatira, and unto Sardis, and unto Philadelphia, and unto Laodicea."

Revelation 1:19: "Write the things which thou hast seen, and the things which are, and the things which shall be hereafter;"

Revelation 2:1: "Unto the angel of the church of Ephesus write; These things saith he that holdeth the seven stars in his right hand, who walketh in the midst of the seven golden candlesticks;"

Revelation 2:8: "And unto the angel of the church in Smyrna write; These things saith the first and the last, which was dead, and is alive;"

Revelation 2:12: "And to the angel of the church in Pergamos write; These things saith he which hath the sharp sword with two edges;"

Revelation 2:18: "And unto the angel of the church in Thyatira write; These things saith the Son of God, who hath his eyes like unto a flame of fire, and his feet are like fine brass;"

Revelation 3:1: "And unto the angel of the church in Sardis write; These things saith he that hath the seven Spirits of God, and the seven stars; I know thy works, that thou hast a name that thou livest, and art dead."

Revelation 3:7: "And to the angel of the church in Philadelphia write; These things saith he that is holy, he that is true, he that hath the key of David, he that openeth, and no man shutteth; and shutteth, and no man openeth;"

Revelation 3:12: "Him that overcometh will I make a pillar in the temple of my God, and he shall go no more out: and I will write upon him the name of my God, and the name of the city of my God, which is new Jerusalem, which cometh down out of heaven from my God: and I will write upon him my new name."

Revelation 3:14: "And unto the angel of the church of the Laodiceans write; These things saith the Amen, the faithful and true witness, the beginning of the creation of God;"

Revelation 10:4: "And when the seven thunders had uttered their voices, I was about to write: and I heard a voice from heaven saying unto me, Seal up those things which the seven thunders uttered, and write them not."

Revelation 14:13: "And I heard a voice from heaven saying unto me, Write, Blessed are the dead which die in the Lord from henceforth: Yea, saith the Spirit, that they may rest from their labours; and their works do follow them."

Revelation 19:9: "And he saith unto me, Write, Blessed are they which are called unto the marriage supper of the Lamb. And he saith unto me, These are the true sayings of God."

Revelation 21:5: "And he that sat upon the throne said, Behold, I make all things new. And he said unto me, Write: for these words are true and faithful."

## **WRITER**

Occurrences: 4

Judges 5:14: "Out of Ephraim was there a root of them against Amalek; after thee, Benjamin, among thy people; out of Machir came down governors, and out of Zebulun they that handle the pen of the writer."

Psalms 45:1: "My heart is inditing a good matter: I speak of the things which I have made touching the king: my tongue is the pen of a ready writer."

Ezekiel 9:2: "And, behold, six men came from the way of the higher gate, which lieth toward the north, and every man a slaughter weapon in his hand; and one man among them was clothed with linen, with a writer's inkhorn by his side: and they went in, and stood beside the brasen altar."

Ezekiel 9:3: "And the glory of the God of Israel was gone up from the cherub, whereupon he was, to the threshold of the house. And he called to the man clothed with linen, which had the writer's inkhorn by his side;"

## **WRITEST**

Occurrences: 2

Job 13:26: "For thou writest bitter things against me, and makest me to possess the iniquities of my youth."

Ezekiel 37:20: "And the sticks whereon thou writest shall be in thine hand before their eyes."

## **WRITETH**

Occurrences: 1

Psalms 87:6: "The LORD shall count, when he writeth up the people, that this man was born there."



Selah."

## WRITING

Occurrences: 35

Exodus 32:16: "And the tables were the work of God, and the writing was the writing of God, graven upon the tables."

Exodus 39:30: "And they made the plate of the holy crown of pure gold, and wrote upon it a writing, like to the engravings of a signet, HOLINESS TO THE LORD."

Deuteronomy 10:4: "And he wrote on the tables, according to the first writing, the ten commandments, which the LORD spake unto you in the mount out of the midst of the fire in the day of the assembly: and the LORD gave them unto me."

Deuteronomy 31:24: "And it came to pass, when Moses had made an end of writing the words of this law in a book, until they were finished,"

1 Chronicles 28:19: "All this, said David, the LORD made me understand in writing by his hand upon me, even all the works of this pattern."

2 Chronicles 2:11: "Then Hiram the king of Tyre answered in writing, which he sent to Solomon, Because the LORD hath loved his people, he hath made thee king over them."

2 Chronicles 21:12: "And there came a writing to him from Elijah the prophet, saying, Thus saith the LORD God of David thy father, Because thou hast not walked in the ways of Jehoshaphat thy father, nor in the ways of Asa king of Judah,"

2 Chronicles 35:4: "And prepare yourselves by the houses of your fathers, after your courses, according to the writing of David king of Israel, and according to the writing of Solomon his son."

2 Chronicles 36:22: "Now in the first year of Cyrus king of Persia, that the word of the LORD spoken by the mouth of Jeremiah might be accomplished, the LORD stirred up the spirit of Cyrus king of Persia, that he made a proclamation throughout all his kingdom, and put it also in writing, saying,"

Ezra 1:1: "Now in the first year of Cyrus king of Persia, that the word of the LORD by the mouth of Jeremiah might be fulfilled, the LORD stirred up the spirit of Cyrus king of Persia, that he made a proclamation throughout all his kingdom, and put it also in writing, saying,"

Ezra 4:7: "And in the days of Artaxerxes wrote Bishlam, Mithredath, Tabeel, and the rest of their companions, unto Artaxerxes king of Persia; and the writing of the letter was written in the Syrian tongue, and interpreted in the Syrian tongue."

Esther 1:22: "For he sent letters into all the king's provinces, into every province according to the writing thereof, and to every people after their language, that every man should bear rule in his own house, and that it should be published according to the language of every people."

Esther 3:12: "Then were the king's scribes called on the thirteenth day of the first month, and there was written according to all that Haman had commanded unto the king's lieutenants, and to the governors that were over every province, and to the rulers of every people of every province according to the writing thereof, and to every people after their language; in the name of king Ahasuerus was it written, and sealed with the king's ring."

Esther 3:14: "The copy of the writing for a commandment to be given in every province was published unto all people, that they should be ready against that day."

Esther 4:8: "Also he gave him the copy of the writing of the decree that was given at Shushan to destroy them, to shew it unto Esther, and to declare it unto her, and to charge her that she should go in unto the king, to make supplication unto him, and to make request before him for her people."

Esther 8:8: "Write ye also for the Jews, as it liketh you, in the king's name, and seal it with the king's ring: for the writing which is written in the king's name, and sealed with the king's ring, may no man reverse."

Esther 8:9: "Then were the king's scribes called at that time in the third month, that is, the month Sivan, on the three and twentieth day thereof; and it was written according to all that Mordecai

commanded unto the Jews, and to the lieutenants, and the deputies and rulers of the provinces which are from India unto Ethiopia, an hundred twenty and seven provinces, unto every province according to the writing thereof, and unto every people after their language, and to the Jews according to their writing, and according to their language."

Esther 8:13: "The copy of the writing for a commandment to be given in every province was published unto all people, and that the Jews should be ready against that day to avenge themselves on their enemies."

Esther 9:27: "The Jews ordained, and took upon them, and upon their seed, and upon all such as joined themselves unto them, so as it should not fail, that they would keep these two days according to their writing, and according to their appointed time every year;"

Isaiah 38:9: "The writing of Hezekiah king of Judah, when he had been sick, and was recovered of his sickness:"

Ezekiel 13:9: "And mine hand shall be upon the prophets that see vanity, and that divine lies: they shall not be in the assembly of my people, neither shall they be written in the writing of the house of Israel, neither shall they enter into the land of Israel; and ye shall know that I am the Lord GOD."

Daniel 5:7: "The king cried aloud to bring in the astrologers, the Chaldeans, and the soothsayers. And the king spake, and said to the wise men of Babylon, Whosoever shall read this writing, and shew me the interpretation thereof, shall be clothed with scarlet, and have a chain of gold about his neck, and shall be the third ruler in the kingdom."

Daniel 5:8: "Then came in all the king's wise men: but they could not read the writing, nor make known to the king the interpretation thereof."

Daniel 5:15: "And now the wise men, the astrologers, have been brought in before me, that they should read this writing, and make known unto me the interpretation thereof: but they could not shew the interpretation of the thing:"

Daniel 5:16: "And I have heard of thee, that thou canst make interpretations, and dissolve doubts: now if thou canst read the writing, and make known to me the interpretation thereof, thou shalt be clothed with scarlet, and have a chain of gold about thy neck, and shalt be the third ruler in the kingdom."

Daniel 5:17: "Then Daniel answered and said before the king, Let thy gifts be to thyself, and give thy rewards to another; yet I will read the writing unto the king, and make known to him the interpretation."

Daniel 5:24: "Then was the part of the hand sent from him; and this writing was written."

Daniel 5:25: "And this is the writing that was written, MENE, MENE, TEKEL, UPHARSIN."

Daniel 6:8: "Now, O king, establish the decree, and sign the writing, that it be not changed, according to the law of the Medes and Persians, which altereth not."

Daniel 6:9: "Wherefore king Darius signed the writing and the decree."

Daniel 6:10: "Now when Daniel knew that the writing was signed, he went into his house; and his windows being open in his chamber toward Jerusalem, he kneeled upon his knees three times a day, and prayed, and gave thanks before his God, as he did aforetime."

Matthew 5:31: "It hath been said, Whosoever shall put away his wife, let him give her a writing of divorcement:"

Matthew 19:7: "They say unto him, Why did Moses then command to give a writing of divorcement, and to put her away?"

Luke 1:63: "And he asked for a writing table, and wrote, saying, His name is John. And they marvelled all."

John 19:19: "And Pilate wrote a title, and put it on the cross. And the writing was JESUS OF NAZARETH THE KING OF THE JEWS."

## **WRITINGS**

Occurrences: 1

John 5:47: "But if ye believe not his writings, how shall ye believe my words?"

## WRITTEN

Occurrences: 268

Exodus 24:12: "And the LORD said unto Moses, Come up to me into the mount, and be there: and I will give thee tables of stone, and a law, and commandments which I have written; that thou mayest teach them."

Exodus 31:18: "And he gave unto Moses, when he had made an end of communing with him upon mount Sinai, two tables of testimony, tables of stone, written with the finger of God."

Exodus 32:15: "And Moses turned, and went down from the mount, and the two tables of the testimony were in his hand: the tables were written on both their sides; on the one side and on the other were they written."

Exodus 32:32: "Yet now, if thou wilt forgive their sin--; and if not, blot me, I pray thee, out of thy book which thou hast written."

Numbers 11:26: "But there remained two of the men in the camp, the name of the one was Eldad, and the name of the other Medad: and the spirit rested upon them; and they were of them that were written, but went not out unto the tabernacle: and they prophesied in the camp."

Deuteronomy 9:10: "And the LORD delivered unto me two tables of stone written with the finger of God; and on them was written according to all the words, which the LORD spake with you in the mount out of the midst of the fire in the day of the assembly."

Deuteronomy 28:58: "If thou wilt not observe to do all the words of this law that are written in this book, that thou mayest fear this glorious and fearful name, THE LORD THY GOD;"

Deuteronomy 28:61: "Also every sickness, and every plague, which is not written in the book of this law, them will the LORD bring upon thee, until thou be destroyed."

Deuteronomy 29:20: "The LORD will not spare him, but then the anger of the LORD and his jealousy shall smoke against that man, and all the curses that are written in this book shall lie upon him, and the LORD shall blot out his name from under heaven."

Deuteronomy 29:21: "And the LORD shall separate him unto evil out of all the tribes of Israel, according to all the curses of the covenant that are written in this book of the law:"

Deuteronomy 29:27: "And the anger of the LORD was kindled against this land, to bring upon it all the curses that are written in this book:"

Deuteronomy 30:10: "If thou shalt hearken unto the voice of the LORD thy God, to keep his commandments and his statutes which are written in this book of the law, and if thou turn unto the LORD thy God with all thine heart, and with all thy soul."

Joshua 1:8: "This book of the law shall not depart out of thy mouth; but thou shalt meditate therein day and night, that thou mayest observe to do according to all that is written therein: for then thou shalt make thy way prosperous, and then thou shalt have good success."

Joshua 8:31: "As Moses the servant of the LORD commanded the children of Israel, as it is written in the book of the law of Moses, an altar of whole stones, over which no man hath lift up any iron: and they offered thereon burnt offerings unto the LORD, and sacrificed peace offerings."

Joshua 8:34: "And afterward he read all the words of the law, the blessings and cursings, according to all that is written in the book of the law."

Joshua 10:13: "And the sun stood still, and the moon stayed, until the people had avenged themselves upon their enemies. Is not this written in the book of Jasher? So the sun stood still in the midst of heaven, and hasted not to go down about a whole day."

Joshua 23:6: "Be ye therefore very courageous to keep and to do all that is written in the book of the law of Moses, that ye turn not aside therefrom to the right hand or to the left;"

2 Samuel 1:18: "(Also he bade them teach the children of Judah the use of the bow: behold, it is written in the book of Jasher.)"

1 Kings 2:3: "And keep the charge of the LORD thy God, to walk in his ways, to keep his statutes,

and his commandments, and his judgments, and his testimonies, as it is written in the law of Moses, that thou mayest prosper in all that thou doest, and whithersoever thou turnest thyself:"

1 Kings 11:41: "And the rest of the acts of Solomon, and all that he did, and his wisdom, are they not written in the book of the acts of Solomon?"

1 Kings 14:19: "And the rest of the acts of Jeroboam, how he warred, and how he reigned, behold, they are written in the book of the chronicles of the kings of Israel."

1 Kings 14:29: "Now the rest of the acts of Rehoboam, and all that he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

1 Kings 15:7: "Now the rest of the acts of Abijam, and all that he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? And there was war between Abijam and Jeroboam."

1 Kings 15:23: "The rest of all the acts of Asa, and all his might, and all that he did, and the cities which he built, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

Nevertheless in the time of his old age he was diseased in his feet."

1 Kings 15:31: "Now the rest of the acts of Nadab, and all that he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

1 Kings 16:5: "Now the rest of the acts of Baasha, and what he did, and his might, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

1 Kings 16:14: "Now the rest of the acts of Elah, and all that he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

1 Kings 16:20: "Now the rest of the acts of Zimri, and his treason that he wrought, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

1 Kings 16:27: "Now the rest of the acts of Omri which he did, and his might that he shewed, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

1 Kings 21:11: "And the men of his city, even the elders and the nobles who were the inhabitants in his city, did as Jezebel had sent unto them, and as it was written in the letters which she had sent unto them."

1 Kings 22:39: "Now the rest of the acts of Ahab, and all that he did, and the ivory house which he made, and all the cities that he built, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

1 Kings 22:45: "Now the rest of the acts of Jehoshaphat, and his might that he shewed, and how he warred, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 1:18: "Now the rest of the acts of Ahaziah which he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

2 Kings 8:23: "And the rest of the acts of Joram, and all that he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 10:34: "Now the rest of the acts of Jehu, and all that he did, and all his might, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

2 Kings 12:19: "And the rest of the acts of Joash, and all that he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 13:8: "Now the rest of the acts of Jehoahaz, and all that he did, and his might, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

2 Kings 13:12: "And the rest of the acts of Joash, and all that he did, and his might wherewith he fought against Amaziah king of Judah, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

2 Kings 14:6: "But the children of the murderers he slew not: according unto that which is written in the book of the law of Moses, wherein the LORD commanded, saying, The fathers shall not be put to death for the children, nor the children be put to death for the fathers; but every man shall be put to death for his own sin."

2 Kings 14:15: "Now the rest of the acts of Jehoash which he did, and his might, and how he fought with Amaziah king of Judah, are they not written in the book of the chronicles of the kings of

Israel?"

2 Kings 14:18: "And the rest of the acts of Amaziah, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 14:28: "Now the rest of the acts of Jeroboam, and all that he did, and his might, how he warred, and how he recovered Damascus, and Hamath, which belonged to Judah, for Israel, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

2 Kings 15:6: "And the rest of the acts of Azariah, and all that he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 15:11: "And the rest of the acts of Zachariah, behold, they are written in the book of the chronicles of the kings of Israel."

2 Kings 15:15: "And the rest of the acts of Shallum, and his conspiracy which he made, behold, they are written in the book of the chronicles of the kings of Israel."

2 Kings 15:21: "And the rest of the acts of Menahem, and all that he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

2 Kings 15:26: "And the rest of the acts of Pekahiah, and all that he did, behold, they are written in the book of the chronicles of the kings of Israel."

2 Kings 15:31: "And the rest of the acts of Pekah, and all that he did, behold, they are written in the book of the chronicles of the kings of Israel."

2 Kings 15:36: "Now the rest of the acts of Jotham, and all that he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 16:19: "Now the rest of the acts of Ahaz which he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 20:20: "And the rest of the acts of Hezekiah, and all his might, and how he made a pool, and a conduit, and brought water into the city, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 21:17: "Now the rest of the acts of Manasseh, and all that he did, and his sin that he sinned, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 21:25: "Now the rest of the acts of Amon which he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 22:13: "Go ye, enquire of the LORD for me, and for the people, and for all Judah, concerning the words of this book that is found: for great is the wrath of the LORD that is kindled against us, because our fathers have not hearkened unto the words of this book, to do according unto all that which is written concerning us."

2 Kings 23:3: "And the king stood by a pillar, and made a covenant before the LORD, to walk after the LORD, and to keep his commandments and his testimonies and his statutes with all their heart and all their soul, to perform the words of this covenant that were written in this book. And all the people stood to the covenant."

2 Kings 23:21: "And the king commanded all the people, saying, Keep the passover unto the LORD your God, as it is written in the book of this covenant."

2 Kings 23:24: "Moreover the workers with familiar spirits, and the wizards, and the images, and the idols, and all the abominations that were spied in the land of Judah and in Jerusalem, did Josiah put away, that he might perform the words of the law which were written in the book that Hilkiah the priest found in the house of the LORD."

2 Kings 23:28: "Now the rest of the acts of Josiah, and all that he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

2 Kings 24:5: "Now the rest of the acts of Jehoiakim, and all that he did, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah?"

1 Chronicles 4:41: "And these written by name came in the days of Hezekiah king of Judah, and smote their tents, and the habitations that were found there, and destroyed them utterly unto this day, and dwelt in their rooms: because there was pasture there for their flocks."

1 Chronicles 9:1: "So all Israel were reckoned by genealogies; and, behold, they were written in the book of the kings of Israel and Judah, who were carried away to Babylon for their transgression."

1 Chronicles 16:40: "To offer burnt offerings unto the LORD upon the altar of the burnt offering continually morning and evening, and to do according to all that is written in the law of the LORD, which he commanded Israel;"

1 Chronicles 29:29: "Now the acts of David the king, first and last, behold, they are written in the book of Samuel the seer, and in the book of Nathan the prophet, and in the book of Gad the seer,"

2 Chronicles 9:29: "Now the rest of the acts of Solomon, first and last, are they not written in the book of Nathan the prophet, and in the prophecy of Ahijah the Shilonite, and in the visions of Iddo the seer against Jeroboam the son of Nebat?"

2 Chronicles 12:15: "Now the acts of Rehoboam, first and last, are they not written in the book of Shemaiah the prophet, and of Iddo the seer concerning genealogies? And there were wars between Rehoboam and Jeroboam continually."

2 Chronicles 13:22: "And the rest of the acts of Abijah, and his ways, and his sayings, are written in the story of the prophet Iddo."

2 Chronicles 16:11: "And, behold, the acts of Asa, first and last, lo, they are written in the book of the kings of Judah and Israel."

2 Chronicles 20:34: "Now the rest of the acts of Jehoshaphat, first and last, behold, they are written in the book of Jehu the son of Hanani, who is mentioned in the book of the kings of Israel."

2 Chronicles 23:18: "Also Jehoiada appointed the offices of the house of the LORD by the hand of the priests the Levites, whom David had distributed in the house of the LORD, to offer the burnt offerings of the LORD, as it is written in the law of Moses, with rejoicing and with singing, as it was ordained by David."

2 Chronicles 24:27: "Now concerning his sons, and the greatness of the burdens laid upon him, and the repairing of the house of God, behold, they are written in the story of the book of the kings. And Amaziah his son reigned in his stead."

2 Chronicles 25:4: "But he slew not their children, but did as it is written in the law in the book of Moses, where the LORD commanded, saying, The fathers shall not die for the children, neither shall the children die for the fathers, but every man shall die for his own sin."

2 Chronicles 25:26: "Now the rest of the acts of Amaziah, first and last, behold, are they not written in the book of the kings of Judah and Israel?"

2 Chronicles 27:7: "Now the rest of the acts of Jotham, and all his wars, and his ways, lo, they are written in the book of the kings of Israel and Judah."

2 Chronicles 28:26: "Now the rest of his acts and of all his ways, first and last, behold, they are written in the book of the kings of Judah and Israel."

2 Chronicles 30:5: "So they established a decree to make proclamation throughout all Israel, from Beersheba even to Dan, that they should come to keep the passover unto the LORD God of Israel at Jerusalem: for they had not done it of a long time in such sort as it was written."

2 Chronicles 30:18: "For a multitude of the people, even many of Ephraim, and Manasseh, Issachar, and Zebulun, had not cleansed themselves, yet did they eat the passover otherwise than it was written. But Hezekiah prayed for them, saying, The good LORD pardon every one"

2 Chronicles 31:3: "He appointed also the king's portion of his substance for the burnt offerings, to wit, for the morning and evening burnt offerings, and the burnt offerings for the sabbaths, and for the new moons, and for the set feasts, as it is written in the law of the LORD."

2 Chronicles 32:32: "Now the rest of the acts of Hezekiah, and his goodness, behold, they are written in the vision of Isaiah the prophet, the son of Amoz, and in the book of the kings of Judah and Israel."

2 Chronicles 33:18: "Now the rest of the acts of Manasseh, and his prayer unto his God, and the words of the seers that spake to him in the name of the LORD God of Israel, behold, they are written in the book of the kings of Israel."

2 Chronicles 33:19: "His prayer also, and how God was intreated of him, and all his sins, and his trespass, and the places wherein he built high places, and set up groves and graven images, before he was humbled: behold, they are written among the sayings of the seers."

2 Chronicles 34:21: "Go, enquire of the LORD for me, and for them that are left in Israel and in Judah, concerning the words of the book that is found: for great is the wrath of the LORD that is poured out upon us, because our fathers have not kept the word of the LORD, to do after all that is written in this book."

2 Chronicles 34:24: "Thus saith the LORD, Behold, I will bring evil upon this place, and upon the inhabitants thereof, even all the curses that are written in the book which they have read before the king of Judah:"

2 Chronicles 34:31: "And the king stood in his place, and made a covenant before the LORD, to walk after the LORD, and to keep his commandments, and his testimonies, and his statutes, with all his heart, and with all his soul, to perform the words of the covenant which are written in this book."

2 Chronicles 35:12: "And they removed the burnt offerings, that they might give according to the divisions of the families of the people, to offer unto the LORD, as it is written in the book of Moses. And so did they with the oxen."

2 Chronicles 35:25: "And Jeremiah lamented for Josiah: and all the singing men and the singing women spake of Josiah in their lamentations to this day, and made them an ordinance in Israel: and, behold, they are written in the lamentations."

2 Chronicles 35:26: "Now the rest of the acts of Josiah, and his goodness, according to that which was written in the law of the LORD,"

2 Chronicles 35:27: "And his deeds, first and last, behold, they are written in the book of the kings of Israel and Judah."

2 Chronicles 36:8: "Now the rest of the acts of Jehoiakim, and his abominations which he did, and that which was found in him, behold, they are written in the book of the kings of Israel and Judah: and Jehoiachin his son reigned in his stead."

Ezra 3:2: "Then stood up Jeshua the son of Jozadak, and his brethren the priests, and Zerubbabel the son of Shealtiel, and his brethren, and builded the altar of the God of Israel, to offer burnt offerings thereon, as it is written in the law of Moses the man of God."

Ezra 3:4: "They kept also the feast of tabernacles, as it is written, and offered the daily burnt offerings by number, according to the custom, as the duty of every day required;"

Ezra 4:7: "And in the days of Artaxerxes wrote Bishlam, Mithredath, Tabeel, and the rest of their companions, unto Artaxerxes king of Persia; and the writing of the letter was written in the Syrian tongue, and interpreted in the Syrian tongue."

Ezra 5:7: "They sent a letter unto him, wherein was written thus; Unto Darius the king, all peace."

Ezra 6:2: "And there was found at Achmetha, in the palace that is in the province of the Medes, a roll, and therein was a record thus written:"

Ezra 6:18: "And they set the priests in their divisions, and the Levites in their courses, for the service of God, which is at Jerusalem; as it is written in the book of Moses."

Ezra 8:34: "By number and by weight of every one: and all the weight was written at that time."

Nehemiah 6:6: "Wherein was written, It is reported among the heathen, and Gashmu saith it, that thou and the Jews think to rebel: for which cause thou buildest the wall, that thou mayest be their king, according to these words."

Nehemiah 7:5: "And my God put into mine heart to gather together the nobles, and the rulers, and the people, that they might be reckoned by genealogy. And I found a register of the genealogy of them which came up at the first, and found written therein,"

Nehemiah 8:14: "And they found written in the law which the LORD had commanded by Moses, that the children of Israel should dwell in booths in the feast of the seventh month:"

Nehemiah 8:15: "And that they should publish and proclaim in all their cities, and in Jerusalem,

saying, Go forth unto the mount, and fetch olive branches, and pine branches, and myrtle branches, and palm branches, and branches of thick trees, to make booths, as it is written."

Nehemiah 10:34: "And we cast the lots among the priests, the Levites, and the people, for the wood offering, to bring it into the house of our God, after the houses of our fathers, at times appointed year by year, to burn upon the altar of the LORD our God, as it is written in the law:"

Nehemiah 10:36: "Also the firstborn of our sons, and of our cattle, as it is written in the law, and the firstlings of our herds and of our flocks, to bring to the house of our God, unto the priests that minister in the house of our God:"

Nehemiah 12:23: "The sons of Levi, the chief of the fathers, were written in the book of the chronicles, even until the days of Johanan the son of Eliashib."

Nehemiah 13:1: "On that day they read in the book of Moses in the audience of the people; and therein was found written, that the Ammonite and the Moabite should not come into the congregation of God for ever;"

Esther 1:19: "If it please the king, let there go a royal commandment from him, and let it be written among the laws of the Persians and the Medes, that it be not altered, That Vashti come no more before king Ahasuerus; and let the king give her royal estate unto another that is better than she."

Esther 2:23: "And when inquisition was made of the matter, it was found out; therefore they were both hanged on a tree: and it was written in the book of the chronicles before the king."

Esther 3:9: "If it please the king, let it be written that they may be destroyed: and I will pay ten thousand talents of silver to the hands of those that have the charge of the business, to bring it into the king's treasuries."

Esther 3:12: "Then were the king's scribes called on the thirteenth day of the first month, and there was written according to all that Haman had commanded unto the king's lieutenants, and to the governors that were over every province, and to the rulers of every people of every province according to the writing thereof, and to every people after their language; in the name of king Ahasuerus was it written, and sealed with the king's ring."

Esther 6:2: "And it was found written, that Mordecai had told of Bigthana and Teresh, two of the king's chamberlains, the keepers of the door, who sought to lay hand on the king Ahasuerus."

Esther 8:5: "And said, If it please the king, and if I have favour in his sight, and the thing seem right before the king, and I be pleasing in his eyes, let it be written to reverse the letters devised by Haman the son of Hammedatha the Agagite, which he wrote to destroy the Jews which are in all the king's provinces:"

Esther 8:8: "Write ye also for the Jews, as it liketh you, in the king's name, and seal it with the king's ring: for the writing which is written in the king's name, and sealed with the king's ring, may no man reverse."

Esther 8:9: "Then were the king's scribes called at that time in the third month, that is, the month Sivan, on the three and twentieth day thereof; and it was written according to all that Mordecai commanded unto the Jews, and to the lieutenants, and the deputies and rulers of the provinces which are from India unto Ethiopia, an hundred twenty and seven provinces, unto every province according to the writing thereof, and unto every people after their language, and to the Jews according to their writing, and according to their language."

Esther 9:23: "And the Jews undertook to do as they had begun, and as Mordecai had written unto them;"

Esther 9:32: "And the decree of Esther confirmed these matters of Purim; and it was written in the book."

Esther 10:2: "And all the acts of his power and of his might, and the declaration of the greatness of Mordecai, whereunto the king advanced him, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Media and Persia?"

Job 19:23: "Oh that my words were now written! oh that they were printed in a book!"

Job 31:35: "Oh that one would hear me! behold, my desire is, that the Almighty would answer me,



and that mine adversary had written a book."

Psalms 40:7: "Then said I, Lo, I come: in the volume of the book it is written of me,"

Psalms 69:28: "Let them be blotted out of the book of the living, and not be written with the righteous."

Psalms 102:18: "This shall be written for the generation to come: and the people which shall be created shall praise the LORD."

Psalms 139:16: "Thine eyes did see my substance, yet being unperfect; and in thy book all my members were written, which in continuance were fashioned, when as yet there was none of them."

Psalms 149:9: "To execute upon them the judgment written: this honour have all his saints. Praise ye the LORD."

Proverbs 22:20: "Have not I written to thee excellent things in counsels and knowledge,"

Ecclesiastes 12:10: "The preacher sought to find out acceptable words: and that which was written was upright, even words of truth."

Isaiah 4:3: "And it shall come to pass, that he that is left in Zion, and he that remaineth in Jerusalem, shall be called holy, even every one that is written among the living in Jerusalem:"

Isaiah 65:6: "Behold, it is written before me: I will not keep silence, but will recompense, even recompense into their bosom,"

Jeremiah 17:1: "The sin of Judah is written with a pen of iron, and with the point of a diamond: it is graven upon the table of their heart, and upon the horns of your altars;"

Jeremiah 17:13: "O LORD, the hope of Israel, all that forsake thee shall be ashamed, and they that depart from me shall be written in the earth, because they have forsaken the LORD, the fountain of living waters."

Jeremiah 25:13: "And I will bring upon that land all my words which I have pronounced against it, even all that is written in this book, which Jeremiah hath prophesied against all the nations."

Jeremiah 36:6: "Therefore go thou, and read in the roll, which thou hast written from my mouth, the words of the LORD in the ears of the people in the LORD's house upon the fasting day: and also thou shalt read them in the ears of all Judah that come out of their cities."

Jeremiah 36:29: "And thou shalt say to Jehoiakim king of Judah, Thus saith the LORD; Thou hast burned this roll, saying, Why hast thou written therein, saying, The king of Babylon shall certainly come and destroy this land, and shall cause to cease from thence man and beast?"

Jeremiah 45:1: "The word that Jeremiah the prophet spake unto Baruch the son of Neriah, when he had written these words in a book at the mouth of Jeremiah, in the fourth year of Jehoiakim the son of Josiah king of Judah, saying,"

Jeremiah 51:60: "So Jeremiah wrote in a book all the evil that should come upon Babylon, even all these words that are written against Babylon."

Ezekiel 2:10: "And he spread it before me; and it was written within and without: and there was written therein lamentations, and mourning, and woe."

Ezekiel 13:9: "And mine hand shall be upon the prophets that see vanity, and that divine lies: they shall not be in the assembly of my people, neither shall they be written in the writing of the house of Israel, neither shall they enter into the land of Israel; and ye shall know that I am the Lord GOD."

Daniel 5:24: "Then was the part of the hand sent from him; and this writing was written."

Daniel 5:25: "And this is the writing that was written, MENE, MENE, TEKEL, UPHARSIN."

Daniel 9:11: "Yea, all Israel have transgressed thy law, even by departing, that they might not obey thy voice; therefore the curse is poured upon us, and the oath that is written in the law of Moses the servant of God, because we have sinned against him."

Daniel 9:13: "As it is written in the law of Moses, all this evil is come upon us: yet made we not our prayer before the LORD our God, that we might turn from our iniquities, and understand thy truth."

Daniel 12:1: "And at that time shall Michael stand up, the great prince which standeth for the children of thy people: and there shall be a time of trouble, such as never was since there was a nation even to that same time: and at that time thy people shall be delivered, every one that shall be

found written in the book."

Hosea 8:12: "I have written to him the great things of my law, but they were counted as a strange thing."

Malachi 3:16: "Then they that feared the LORD spake often one to another: and the LORD hearkened, and heard it, and a book of remembrance was written before him for them that feared the LORD, and that thought upon his name."

Matthew 2:5: "And they said unto him, In Bethlehem of Judaea: for thus it is written by the prophet,"

Matthew 4:4: "But he answered and said, It is written, Man shall not live by bread alone, but by every word that proceedeth out of the mouth of God."

Matthew 4:6: "And saith unto him, If thou be the Son of God, cast thyself down: for it is written, He shall give his angels charge concerning thee: and in their hands they shall bear thee up, lest at any time thou dash thy foot against a stone."

Matthew 4:7: "Jesus said unto him, It is written again, Thou shalt not tempt the Lord thy God."

Matthew 4:10: "Then saith Jesus unto him, Get thee hence, Satan: for it is written, Thou shalt worship the Lord thy God, and him only shalt thou serve."

Matthew 11:10: "For this is he, of whom it is written, Behold, I send my messenger before thy face, which shall prepare thy way before thee."

Matthew 21:13: "And said unto them, It is written, My house shall be called the house of prayer; but ye have made it a den of thieves."

Matthew 26:24: "The Son of man goeth as it is written of him: but woe unto that man by whom the Son of man is betrayed! it had been good for that man if he had not been born."

Matthew 26:31: "Then saith Jesus unto them, All ye shall be offended because of me this night: for it is written, I will smite the shepherd, and the sheep of the flock shall be scattered abroad."

Matthew 27:37: "And set up over his head his accusation written, THIS IS JESUS THE KING OF THE JEWS."

Mark 1:2: "As it is written in the prophets, Behold, I send my messenger before thy face, which shall prepare thy way before thee."

Mark 7:6: "He answered and said unto them, Well hath Esaias prophesied of you hypocrites, as it is written, This people honoureth me with their lips, but their heart is far from me."

Mark 9:12: "And he answered and told them, Elias verily cometh first, and restoreth all things; and how it is written of the Son of man, that he must suffer many things, and be set at nought."

Mark 9:13: "But I say unto you, That Elias is indeed come, and they have done unto him whatsoever they listed, as it is written of him."

Mark 11:17: "And he taught, saying unto them, Is it not written, My house shall be called of all nations the house of prayer? but ye have made it a den of thieves."

Mark 14:21: "The Son of man indeed goeth, as it is written of him: but woe to that man by whom the Son of man is betrayed! good were it for that man if he had never been born."

Mark 14:27: "And Jesus saith unto them, All ye shall be offended because of me this night: for it is written, I will smite the shepherd, and the sheep shall be scattered."

Mark 15:26: "And the superscription of his accusation was written over, THE KING OF THE JEWS."

Luke 2:23: "(As it is written in the law of the LORD, Every male that openeth the womb shall be called holy to the Lord;)"

Luke 3:4: "As it is written in the book of the words of Esaias the prophet, saying, The voice of one crying in the wilderness, Prepare ye the way of the Lord, make his paths straight."

Luke 4:4: "And Jesus answered him, saying, It is written, That man shall not live by bread alone, but by every word of God."

Luke 4:8: "And Jesus answered and said unto him, Get thee behind me, Satan: for it is written, Thou shalt worship the Lord thy God, and him only shalt thou serve."

Luke 4:10: "For it is written, He shall give his angels charge over thee, to keep thee:"

Luke 4:17: "And there was delivered unto him the book of the prophet Esaias. And when he had opened the book, he found the place where it was written,"

Luke 7:27: "This is he, of whom it is written, Behold, I send my messenger before thy face, which shall prepare thy way before thee."

Luke 10:20: "Notwithstanding in this rejoice not, that the spirits are subject unto you; but rather rejoice, because your names are written in heaven."

Luke 10:26: "He said unto him, What is written in the law? how readest thou?"

Luke 18:31: "Then he took unto him the twelve, and said unto them, Behold, we go up to Jerusalem, and all things that are written by the prophets concerning the Son of man shall be accomplished."

Luke 19:46: "Saying unto them, It is written, My house is the house of prayer: but ye have made it a den of thieves."

Luke 20:17: "And he beheld them, and said, What is this then that is written, The stone which the builders rejected, the same is become the head of the corner?"

Luke 21:22: "For these be the days of vengeance, that all things which are written may be fulfilled."

Luke 22:37: "For I say unto you, that this that is written must yet be accomplished in me, And he was reckoned among the transgressors: for the things concerning me have an end."

Luke 23:38: "And a superscription also was written over him in letters of Greek, and Latin, and Hebrew, THIS IS THE KING OF THE JEWS."

Luke 24:44: "And he said unto them, These are the words which I spake unto you, while I was yet with you, that all things must be fulfilled, which were written in the law of Moses, and in the prophets, and in the psalms, concerning me."

Luke 24:46: "And said unto them, Thus it is written, and thus it behoved Christ to suffer, and to rise from the dead the third day:"

John 2:17: "And his disciples remembered that it was written, The zeal of thine house hath eaten me up."

John 6:31: "Our fathers did eat manna in the desert; as it is written, He gave them bread from heaven to eat."

John 6:45: "It is written in the prophets, And they shall be all taught of God. Every man therefore that hath heard, and hath learned of the Father, cometh unto me."

John 8:17: "It is also written in your law, that the testimony of two men is true."

John 10:34: "Jesus answered them, Is it not written in your law, I said, Ye are gods?"

John 12:14: "And Jesus, when he had found a young ass, sat thereon; as it is written,"

John 12:16: "These things understood not his disciples at the first: but when Jesus was glorified, then remembered they that these things were written of him, and that they had done these things unto him."

John 15:25: "But this cometh to pass, that the word might be fulfilled that is written in their law, They hated me without a cause."

John 19:20: "This title then read many of the Jews: for the place where Jesus was crucified was nigh to the city: and it was written in Hebrew, and Greek, and Latin."

John 19:22: "Pilate answered, What I have written I have written."

John 20:30: "And many other signs truly did Jesus in the presence of his disciples, which are not written in this book:"

John 20:31: "But these are written, that ye might believe that Jesus is the Christ, the Son of God; and that believing ye might have life through his name."

John 21:25: "And there are also many other things which Jesus did, the which, if they should be written every one, I suppose that even the world itself could not contain the books that should be written. Amen."

Acts 1:20: "For it is written in the book of Psalms, Let his habitation be desolate, and let no man

dwell therein: and his bishoprick let another take."

Acts 7:42: "Then God turned, and gave them up to worship the host of heaven; as it is written in the book of the prophets, O ye house of Israel, have ye offered to me slain beasts and sacrifices by the space of forty years in the wilderness?"

Acts 13:29: "And when they had fulfilled all that was written of him, they took him down from the tree, and laid him in a sepulchre."

Acts 13:33: "God hath fulfilled the same unto us their children, in that he hath raised up Jesus again; as it is also written in the second psalm, Thou art my Son, this day have I begotten thee."

Acts 15:15: "And to this agree the words of the prophets; as it is written,"

Acts 21:25: "As touching the Gentiles which believe, we have written and concluded that they observe no such thing, save only that they keep themselves from things offered to idols, and from blood, and from strangled, and from fornication."

Acts 23:5: "Then said Paul, I wist not, brethren, that he was the high priest: for it is written, Thou shalt not speak evil of the ruler of thy people."

Acts 24:14: "But this I confess unto thee, that after the way which they call heresy, so worship I the God of my fathers, believing all things which are written in the law and in the prophets:"

Romans 1:17: "For therein is the righteousness of God revealed from faith to faith: as it is written, The just shall live by faith."

Romans 2:15: "Which shew the work of the law written in their hearts, their conscience also bearing witness, and their thoughts the mean while accusing or else excusing one another;)"

Romans 2:24: "For the name of God is blasphemed among the Gentiles through you, as it is written."

Romans 3:4: "God forbid: yea, let God be true, but every man a liar; as it is written, That thou mightest be justified in thy sayings, and mightest overcome when thou art judged."

Romans 3:10: "As it is written, There is none righteous, no, not one:"

Romans 4:17: "(As it is written, I have made thee a father of many nations,) before him whom he believed, even God, who quickeneth the dead, and calleth those things which be not as though they were."

Romans 4:23: "Now it was not written for his sake alone, that it was imputed to him;"

Romans 8:36: "As it is written, For thy sake we are killed all the day long; we are accounted as sheep for the slaughter."

Romans 9:13: "As it is written, Jacob have I loved, but Esau have I hated."

Romans 9:33: "As it is written, Behold, I lay in Sion a stumblingstone and rock of offence: and whosoever believeth on him shall not be ashamed."

Romans 10:15: "And how shall they preach, except they be sent? as it is written, How beautiful are the feet of them that preach the gospel of peace, and bring glad tidings of good things!"

Romans 11:8: "(According as it is written, God hath given them the spirit of slumber, eyes that they should not see, and ears that they should not hear;) unto this day."

Romans 11:26: "And so all Israel shall be saved: as it is written, There shall come out of Sion the Deliverer, and shall turn away ungodliness from Jacob:"

Romans 12:19: "Dearly beloved, avenge not yourselves, but rather give place unto wrath: for it is written, Vengeance is mine; I will repay, saith the Lord."

Romans 14:11: "For it is written, As I live, saith the Lord, every knee shall bow to me, and every tongue shall confess to God."

Romans 15:3: "For even Christ pleased not himself; but, as it is written, The reproaches of them that reproached thee fell on me."

Romans 15:4: "For whatsoever things were written aforetime were written for our learning, that we through patience and comfort of the scriptures might have hope."

Romans 15:9: "And that the Gentiles might glorify God for his mercy; as it is written, For this cause I will confess to thee among the Gentiles, and sing unto thy name."

Romans 15:15: "Nevertheless, brethren, I have written the more boldly unto you in some sort, as putting you in mind, because of the grace that is given to me of God,"

Romans 15:21: "But as it is written, To whom he was not spoken of, they shall see: and they that have not heard shall understand."

1 Corinthians 1:19: "For it is written, I will destroy the wisdom of the wise, and will bring to nothing the understanding of the prudent."

1 Corinthians 1:31: "That, according as it is written, He that glorieth, let him glory in the Lord."

1 Corinthians 2:9: "But as it is written, Eye hath not seen, nor ear heard, neither have entered into the heart of man, the things which God hath prepared for them that love him."

1 Corinthians 3:19: "For the wisdom of this world is foolishness with God. For it is written, He taketh the wise in their own craftiness."

1 Corinthians 4:6: "And these things, brethren, I have in a figure transferred to myself and to Apollos for your sakes; that ye might learn in us not to think of men above that which is written, that no one of you be puffed up for one against another."

1 Corinthians 5:11: "But now I have written unto you not to keep company, if any man that is called a brother be a fornicator, or covetous, or an idolater, or a railer, or a drunkard, or an extortioner; with such an one no not to eat."

1 Corinthians 9:9: "For it is written in the law of Moses, Thou shalt not muzzle the mouth of the ox that treadeth out the corn. Doth God take care for oxen?"

1 Corinthians 9:10: "Or saith he it altogether for our sakes? For our sakes, no doubt, this is written: that he that ploweth should plow in hope; and that he that thresheth in hope should be partaker of his hope."

1 Corinthians 9:15: "But I have used none of these things: neither have I written these things, that it should be so done unto me: for it were better for me to die, than that any man should make my glorying void."

1 Corinthians 10:7: "Neither be ye idolaters, as were some of them; as it is written, The people sat down to eat and drink, and rose up to play."

1 Corinthians 10:11: "Now all these things happened unto them for ensamples: and they are written for our admonition, upon whom the ends of the world are come."

1 Corinthians 14:21: "In the law it is written, With men of other tongues and other lips will I speak unto this people; and yet for all that will they not hear me, saith the LORD."

1 Corinthians 15:45: "And so it is written, The first man Adam was made a living soul; the last Adam was made a quickening spirit."

1 Corinthians 15:54: "So when this corruptible shall have put on incorruption, and this mortal shall have put on immortality, then shall be brought to pass the saying that is written, Death is swallowed up in victory."

2 Corinthians 3:2: "Ye are our epistle written in our hearts, known and read of all men:"

2 Corinthians 3:3: "Forasmuch as ye are manifestly declared to be the epistle of Christ ministered by us, written not with ink, but with the Spirit of the living God; not in tables of stone, but in fleshy tables of the heart."

2 Corinthians 3:7: "But if the ministration of death, written and engraven in stones, was glorious, so that the children of Israel could not stedfastly behold the face of Moses for the glory of his countenance; which glory was to be done away:"

2 Corinthians 4:13: "We having the same spirit of faith, according as it is written, I believed, and therefore have I spoken; we also believe, and therefore speak;"

2 Corinthians 8:15: "As it is written, He that had gathered much had nothing over; and he that had gathered little had no lack."

2 Corinthians 9:9: "(As it is written, He hath dispersed abroad; he hath given to the poor: his righteousness remaineth for ever."

Galatians 3:10: "For as many as are of the works of the law are under the curse: for it is written,

Cursed is every one that continueth not in all things which are written in the book of the law to do them."

Galatians 3:13: "Christ hath redeemed us from the curse of the law, being made a curse for us: for it is written, Cursed is every one that hangeth on a tree:"

Galatians 4:22: "For it is written, that Abraham had two sons, the one by a bondmaid, the other by a freewoman."

Galatians 4:27: "For it is written, Rejoice, thou barren that bearest not; break forth and cry, thou that travailest not: for the desolate hath many more children than she which hath an husband."

Galatians 6:11: "Ye see how large a letter I have written unto you with mine own hand."

Philemon 1:19: "I Paul have written it with mine own hand, I will repay it: albeit I do not say to thee how thou owest unto me even thine own self besides."

Hebrews 10:7: "Then said I, Lo, I come (in the volume of the book it is written of me,) to do thy will, O God."

Hebrews 12:23: "To the general assembly and church of the firstborn, which are written in heaven, and to God the Judge of all, and to the spirits of just men made perfect,"

Hebrews 13:22: "And I beseech you, brethren, suffer the word of exhortation: for I have written a letter unto you in few words."

1 Peter 1:16: "Because it is written, Be ye holy; for I am holy."

1 Peter 5:12: "By Silvanus, a faithful brother unto you, as I suppose, I have written briefly, exhorting, and testifying that this is the true grace of God wherein ye stand."

2 Peter 3:15: "And account that the longsuffering of our Lord is salvation; even as our beloved brother Paul also according to the wisdom given unto him hath written unto you;"

1 John 2:14: "I have written unto you, fathers, because ye have known him that is from the beginning. I have written unto you, young men, because ye are strong, and the word of God abideth in you, and ye have overcome the wicked one."

1 John 2:21: "I have not written unto you because ye know not the truth, but because ye know it, and that no lie is of the truth."

1 John 2:26: "These things have I written unto you concerning them that seduce you."

1 John 5:13: "These things have I written unto you that believe on the name of the Son of God; that ye may know that ye have eternal life, and that ye may believe on the name of the Son of God."

Revelation 1:3: "Blessed is he that readeth, and they that hear the words of this prophecy, and keep those things which are written therein: for the time is at hand."

Revelation 2:17: "He that hath an ear, let him hear what the Spirit saith unto the churches; To him that overcometh will I give to eat of the hidden manna, and will give him a white stone, and in the stone a new name written, which no man knoweth saving he that receiveth it."

Revelation 5:1: "And I saw in the right hand of him that sat on the throne a book written within and on the backside, sealed with seven seals."

Revelation 13:8: "And all that dwell upon the earth shall worship him, whose names are not written in the book of life of the Lamb slain from the foundation of the world."

Revelation 14:1: "And I looked, and, lo, a Lamb stood on the mount Sion, and with him an hundred forty and four thousand, having his Father's name written in their foreheads."

Revelation 17:5: "And upon her forehead was a name written, MYSTERY, BABYLON THE GREAT, THE MOTHER OF HARLOTS AND ABOMINATIONS OF THE EARTH."

Revelation 17:8: "The beast that thou sawest was, and is not; and shall ascend out of the bottomless pit, and go into perdition: and they that dwell on the earth shall wonder, whose names were not written in the book of life from the foundation of the world, when they behold the beast that was, and is not, and yet is."

Revelation 19:12: "His eyes were as a flame of fire, and on his head were many crowns; and he had a name written, that no man knew, but he himself."

Revelation 19:16: "And he hath on his vesture and on his thigh a name written, KING OF KINGS,

AND LORD OF LORDS."

Revelation 20:12: "And I saw the dead, small and great, stand before God; and the books were opened: and another book was opened, which is the book of life: and the dead were judged out of those things which were written in the books, according to their works."

Revelation 20:15: "And whosoever was not found written in the book of life was cast into the lake of fire."

Revelation 21:12: "And had a wall great and high, and had twelve gates, and at the gates twelve angels, and names written thereon, which are the names of the twelve tribes of the children of Israel:"

Revelation 21:27: "And there shall in no wise enter into it any thing that defileth, neither whatsoever worketh abomination, or maketh a lie: but they which are written in the Lamb's book of life."

Revelation 22:18: "For I testify unto every man that heareth the words of the prophecy of this book, If any man shall add unto these things, God shall add unto him the plagues that are written in this book:"

Revelation 22:19: "And if any man shall take away from the words of the book of this prophecy, God shall take away his part out of the book of life, and out of the holy city, and from the things which are written in this book."

## **WRONG**

Occurrences: 24

Genesis 16:5: "And Sarai said unto Abram, My wrong be upon thee: I have given my maid into thy bosom; and when she saw that she had conceived, I was despised in her eyes: the LORD judge between me and thee."

Exodus 2:13: "And when he went out the second day, behold, two men of the Hebrews strove together: and he said to him that did the wrong, Wherefore smitest thou thy fellow?"

Deuteronomy 19:16: "If a false witness rise up against any man to testify against him that which is wrong;"

Judges 11:27: "Wherefore I have not sinned against thee, but thou doest me wrong to war against me: the LORD the Judge be judge this day between the children of Israel and the children of Ammon."

1 Chronicles 12:17: "And David went out to meet them, and answered and said unto them, If ye be come peaceably unto me to help me, mine heart shall be knit unto you: but if ye be come to betray me to mine enemies, seeing there is no wrong in mine hands, the God of our fathers look thereon, and rebuke it."

1 Chronicles 16:21: "He suffered no man to do them wrong: yea, he reproveth kings for their sakes;"

Esther 1:16: "And Memucan answered before the king and the princes, Vashti the queen hath not done wrong to the king only, but also to all the princes, and to all the people that are in all the provinces of the king Ahasuerus."

Job 19:7: "Behold, I cry out of wrong, but I am not heard: I cry aloud, but there is no judgment."

Psalms 105:14: "He suffered no man to do them wrong: yea, he reproveth kings for their sakes;"

Jeremiah 22:3: "Thus saith the LORD; Execute ye judgment and righteousness, and deliver the spoiled out of the hand of the oppressor: and do no wrong, do no violence to the stranger, the fatherless, nor the widow, neither shed innocent blood in this place."

Jeremiah 22:13: "Woe unto him that buildeth his house by unrighteousness, and his chambers by wrong; that useth his neighbour's service without wages, and giveth him not for his work;"

Lamentations 3:59: "O LORD, thou hast seen my wrong: judge thou my cause."

Habakkuk 1:4: "Therefore the law is slacked, and judgment doth never go forth: for the wicked doth compass about the righteous; therefore wrong judgment proceedeth."

Matthew 20:13: "But he answered one of them, and said, Friend, I do thee no wrong: didst not thou

agree with me for a penny?"

Acts 7:24: "And seeing one of them suffer wrong, he defended him, and avenged him that was oppressed, and smote the Egyptian:"

Acts 7:26: "And the next day he shewed himself unto them as they strove, and would have set them at one again, saying, Sirs, ye are brethren; why do ye wrong one to another?"

Acts 7:27: "But he that did his neighbour wrong thrust him away, saying, Who made thee a ruler and a judge over us?"

Acts 18:14: "And when Paul was now about to open his mouth, Gallio said unto the Jews, If it were a matter of wrong or wicked lewdness, O ye Jews, reason would that I should bear with you:"

Acts 25:10: "Then said Paul, I stand at Caesar's judgment seat, where I ought to be judged: to the Jews have I done no wrong, as thou very well knowest."

1 Corinthians 6:7: "Now therefore there is utterly a fault among you, because ye go to law one with another. Why do ye not rather take wrong? why do ye not rather suffer yourselves to be defrauded?"

1 Corinthians 6:8: "Nay, ye do wrong, and defraud, and that your brethren."

2 Corinthians 7:12: "Wherefore, though I wrote unto you, I did it not for his cause that had done the wrong, nor for his cause that suffered wrong, but that our care for you in the sight of God might appear unto you."

2 Corinthians 12:13: "For what is it wherein ye were inferior to other churches, except it be that I myself was not burdensome to you? forgive me this wrong."

Colossians 3:25: "But he that doeth wrong shall receive for the wrong which he hath done: and there is no respect of persons."

## **WRONGED**

Occurrences: 2

2 Corinthians 7:2: "Receive us; we have wronged no man, we have corrupted no man, we have defrauded no man."

Philemon 1:18: "If he hath wronged thee, or oweth thee ought, put that on mine account;"

## **WRONGETH**

Occurrences: 1

Proverbs 8:36: "But he that sinneth against me wrongeth his own soul: all they that hate me love death."

## **WRONGFULLY**

Occurrences: 7

Job 21:27: "Behold, I know your thoughts, and the devices which ye wrongfully imagine against me."

Psalms 35:19: "Let not them that are mine enemies wrongfully rejoice over me: neither let them wink with the eye that hate me without a cause."

Psalms 38:19: "But mine enemies are lively, and they are strong: and they that hate me wrongfully are multiplied."

Psalms 69:4: "They that hate me without a cause are more than the hairs of mine head: they that would destroy me, being mine enemies wrongfully, are mighty: then I restored that which I took not away."

Psalms 119:86: "All thy commandments are faithful: they persecute me wrongfully; help thou me."

Ezekiel 22:29: "The people of the land have used oppression, and exercised robbery, and have vexed the poor and needy: yea, they have oppressed the stranger wrongfully."

1 Peter 2:19: "For this is thankworthy, if a man for conscience toward God endure grief, suffering



wrongfully."

## WROTE

Occurrences: 60

Exodus 24:4: "And Moses wrote all the words of the LORD, and rose up early in the morning, and builded an altar under the hill, and twelve pillars, according to the twelve tribes of Israel."

Exodus 34:28: "And he was there with the LORD forty days and forty nights; he did neither eat bread, nor drink water. And he wrote upon the tables the words of the covenant, the ten commandments."

Exodus 39:30: "And they made the plate of the holy crown of pure gold, and wrote upon it a writing, like to the engravings of a signet, HOLINESS TO THE LORD."

Numbers 33:2: "And Moses wrote their goings out according to their journeys by the commandment of the LORD: and these are their journeys according to their goings out."

Deuteronomy 4:13: "And he declared unto you his covenant, which he commanded you to perform, even ten commandments; and he wrote them upon two tables of stone."

Deuteronomy 5:22: "These words the LORD spake unto all your assembly in the mount out of the midst of the fire, of the cloud, and of the thick darkness, with a great voice: and he added no more. And he wrote them in two tables of stone, and delivered them unto me."

Deuteronomy 10:4: "And he wrote on the tables, according to the first writing, the ten commandments, which the LORD spake unto you in the mount out of the midst of the fire in the day of the assembly: and the LORD gave them unto me."

Deuteronomy 31:9: "And Moses wrote this law, and delivered it unto the priests the sons of Levi, which bare the ark of the covenant of the LORD, and unto all the elders of Israel."

Deuteronomy 31:22: "Moses therefore wrote this song the same day, and taught it the children of Israel."

Joshua 8:32: "And he wrote there upon the stones a copy of the law of Moses, which he wrote in the presence of the children of Israel."

Joshua 24:26: "And Joshua wrote these words in the book of the law of God, and took a great stone, and set it up there under an oak, that was by the sanctuary of the LORD."

1 Samuel 10:25: "Then Samuel told the people the manner of the kingdom, and wrote it in a book, and laid it up before the LORD. And Samuel sent all the people away, every man to his house."

2 Samuel 11:14: "And it came to pass in the morning, that David wrote a letter to Joab, and sent it by the hand of Uriah."

2 Samuel 11:15: "And he wrote in the letter, saying, Set ye Uriah in the forefront of the hottest battle, and retire ye from him, that he may be smitten, and die."

1 Kings 21:8: "So she wrote letters in Ahab's name, and sealed them with his seal, and sent the letters unto the elders and to the nobles that were in his city, dwelling with Naboth."

1 Kings 21:9: "And she wrote in the letters, saying, Proclaim a fast, and set Naboth on high among the people:"

2 Kings 10:1: "And Ahab had seventy sons in Samaria. And Jehu wrote letters, and sent to Samaria, unto the rulers of Jezreel, to the elders, and to them that brought up Ahab's children, saying,"

2 Kings 10:6: "Then he wrote a letter the second time to them, saying, If ye be mine, and if ye will hearken unto my voice, take ye the heads of the men your master's sons, and come to me to Jezreel by to morrow this time. Now the king's sons, being seventy persons, were with the great men of the city, which brought them up."

2 Kings 17:37: "And the statutes, and the ordinances, and the law, and the commandment, which he wrote for you, ye shall observe to do for evermore; and ye shall not fear other gods."

1 Chronicles 24:6: "And Shemaiah the son of Nethaneel the scribe, one of the Levites, wrote them before the king, and the princes, and Zadok the priest, and Ahimelech the son of Abiathar, and before the chief of the fathers of the priests and Levites: one principal household being taken for

Eleazar, and one taken for Ithamar."

2 Chronicles 30:1: "And Hezekiah sent to all Israel and Judah, and wrote letters also to Ephraim and Manasseh, that they should come to the house of the LORD at Jerusalem, to keep the passover unto the LORD God of Israel."

2 Chronicles 32:17: "He wrote also letters to rail on the LORD God of Israel, and to speak against him, saying, As the gods of the nations of other lands have not delivered their people out of mine hand, so shall not the God of Hezekiah deliver his people out of mine hand."

Ezra 4:6: "And in the reign of Ahasuerus, in the beginning of his reign, wrote they unto him an accusation against the inhabitants of Judah and Jerusalem."

Ezra 4:7: "And in the days of Artaxerxes wrote Bishlam, Mithredath, Tabeel, and the rest of their companions, unto Artaxerxes king of Persia; and the writing of the letter was written in the Syrian tongue, and interpreted in the Syrian tongue."

Ezra 4:8: "Rehum the chancellor and Shimshai the scribe wrote a letter against Jerusalem to Artaxerxes the king in this sort:"

Ezra 4:9: "Then wrote Rehum the chancellor, and Shimshai the scribe, and the rest of their companions; the Dinaites, the Apharsathchites, the Tarpelites, the Apharsites, the Archevites, the Babylonians, the Susanchites, the Dehavites, and the Elamites,"

Esther 8:5: "And said, If it please the king, and if I have favour in his sight, and the thing seem right before the king, and I be pleasing in his eyes, let it be written to reverse the letters devised by Haman the son of Hammedatha the Agagite, which he wrote to destroy the Jews which are in all the king's provinces:"

Esther 8:10: "And he wrote in the king Ahasuerus' name, and sealed it with the king's ring, and sent letters by posts on horseback, and riders on mules, camels, and young dromedaries:"

Esther 9:20: "And Mordecai wrote these things, and sent letters unto all the Jews that were in all the provinces of the king Ahasuerus, both nigh and far,"

Esther 9:29: "Then Esther the queen, the daughter of Abihail, and Mordecai the Jew, wrote with all authority, to confirm this second letter of Purim."

Jeremiah 36:4: "Then Jeremiah called Baruch the son of Neriah: and Baruch wrote from the mouth of Jeremiah all the words of the LORD, which he had spoken unto him, upon a roll of a book."

Jeremiah 36:18: "Then Baruch answered them, He pronounced all these words unto me with his mouth, and I wrote them with ink in the book."

Jeremiah 36:27: "Then the word of the LORD came to Jeremiah, after that the king had burned the roll, and the words which Baruch wrote at the mouth of Jeremiah, saying,"

Jeremiah 36:32: "Then took Jeremiah another roll, and gave it to Baruch the scribe, the son of Neriah; who wrote therein from the mouth of Jeremiah all the words of the book which Jehoiakim king of Judah had burned in the fire: and there were added besides unto them many like words."

Jeremiah 51:60: "So Jeremiah wrote in a book all the evil that should come upon Babylon, even all these words that are written against Babylon."

Daniel 5:5: "In the same hour came forth fingers of a man's hand, and wrote over against the candlestick upon the plaister of the wall of the king's palace: and the king saw the part of the hand that wrote."

Daniel 6:25: "Then king Darius wrote unto all people, nations, and languages, that dwell in all the earth; Peace be multiplied unto you."

Daniel 7:1: "In the first year of Belshazzar king of Babylon Daniel had a dream and visions of his head upon his bed: then he wrote the dream, and told the sum of the matters."

Mark 10:5: "And Jesus answered and said unto them, For the hardness of your heart he wrote you this precept."

Mark 12:19: "Master, Moses wrote unto us, If a man's brother die, and leave his wife behind him, and leave no children, that his brother should take his wife, and raise up seed unto his brother."

Luke 1:63: "And he asked for a writing table, and wrote, saying, His name is John. And they

marvelled all."

Luke 20:28: "Saying, Master, Moses wrote unto us, If any man's brother die, having a wife, and he die without children, that his brother should take his wife, and raise up seed unto his brother."

John 5:46: "For had ye believed Moses, ye would have believed me; for he wrote of me."

John 8:6: "This they said, tempting him, that they might have to accuse him. But Jesus stooped down, and with his finger wrote on the ground, as though he heard them not."

John 8:8: "And again he stooped down, and wrote on the ground."

John 19:19: "And Pilate wrote a title, and put it on the cross. And the writing was JESUS OF NAZARETH THE KING OF THE JEWS."

John 21:24: "This is the disciple which testifieth of these things, and wrote these things: and we know that his testimony is true."

Acts 15:23: "And they wrote letters by them after this manner; The apostles and elders and brethren send greeting unto the brethren which are of the Gentiles in Antioch and Syria and Cilicia."

Acts 18:27: "And when he was disposed to pass into Achaia, the brethren wrote, exhorting the disciples to receive him: who, when he was come, helped them much which had believed through grace:"

Acts 23:25: "And he wrote a letter after this manner:"

Romans 16:22: "I Tertius, who wrote this epistle, salute you in the Lord."

1 Corinthians 5:9: "I wrote unto you in an epistle not to company with fornicators:"

1 Corinthians 7:1: "Now concerning the things whereof ye wrote unto me: It is good for a man not to touch a woman."

2 Corinthians 2:3: "And I wrote this same unto you, lest, when I came, I should have sorrow from them of whom I ought to rejoice; having confidence in you all, that my joy is the joy of you all."

2 Corinthians 2:4: "For out of much affliction and anguish of heart I wrote unto you with many tears; not that ye should be grieved, but that ye might know the love which I have more abundantly unto you."

2 Corinthians 7:12: "Wherefore, though I wrote unto you, I did it not for his cause that had done the wrong, nor for his cause that suffered wrong, but that our care for you in the sight of God might appear unto you."

Ephesians 3:3: "How that by revelation he made known unto me the mystery; (as I wrote afore in few words,"

Philemon 1:21: "Having confidence in thy obedience I wrote unto thee, knowing that thou wilt also do more than I say."

2 John 1:5: "And now I beseech thee, lady, not as though I wrote a new commandment unto thee, but that which we had from the beginning, that we love one another."

3 John 1:9: "I wrote unto the church: but Diotrephes, who loveth to have the preeminence among them, receiveth us not."

## WROTH

Occurrences: 47

Genesis 4:5: "But unto Cain and to his offering he had not respect. And Cain was very wroth, and his countenance fell."

Genesis 4:6: "And the LORD said unto Cain, Why art thou wroth? and why is thy countenance fallen?"

Genesis 31:36: "And Jacob was wroth, and chode with Laban: and Jacob answered and said to Laban, What is my trespass? what is my sin, that thou hast so hotly pursued after me?"

Genesis 34:7: "And the sons of Jacob came out of the field when they heard it: and the men were grieved, and they were very wroth, because he had wrought folly in Israel in lying with Jacob's daughter: which thing ought not to be done."

Genesis 40:2: "And Pharaoh was wroth against two of his officers, against the chief of the butlers,

and against the chief of the bakers."

Genesis 41:10: "Pharaoh was wroth with his servants, and put me in ward in the captain of the guard's house, both me and the chief baker:"

Exodus 16:20: "Notwithstanding they hearkened not unto Moses; but some of them left of it until the morning, and it bred worms, and stank: and Moses was wroth with them."

Numbers 16:15: "And Moses was very wroth, and said unto the LORD, Respect not thou their offering: I have not taken one ass from them, neither have I hurt one of them."

Numbers 16:22: "And they fell upon their faces, and said, O God, the God of the spirits of all flesh, shall one man sin, and wilt thou be wroth with all the congregation?"

Numbers 31:14: "And Moses was wroth with the officers of the host, with the captains over thousands, and captains over hundreds, which came from the battle."

Deuteronomy 1:34: "And the LORD heard the voice of your words, and was wroth, and sware, saying,"

Deuteronomy 3:26: "But the LORD was wroth with me for your sakes, and would not hear me: and the LORD said unto me, Let it suffice thee; speak no more unto me of this matter."

Deuteronomy 9:19: "For I was afraid of the anger and hot displeasure, wherewith the LORD was wroth against you to destroy you. But the LORD hearkened unto me at that time also."

Joshua 22:18: "But that ye must turn away this day from following the LORD? and it will be, seeing ye rebel to day against the LORD, that to morrow he will be wroth with the whole congregation of Israel."

1 Samuel 18:8: "And Saul was very wroth, and the saying displeased him; and he said, They have ascribed unto David ten thousands, and to me they have ascribed but thousands: and what can he have more but the kingdom?"

1 Samuel 20:7: "If he say thus, It is well; thy servant shall have peace: but if he be very wroth, then be sure that evil is determined by him."

1 Samuel 29:4: "And the princes of the Philistines were wroth with him; and the princes of the Philistines said unto him, Make this fellow return, that he may go again to his place which thou hast appointed him, and let him not go down with us to battle, lest in the battle he be an adversary to us: for wherewith should he reconcile himself unto his master? should it not be with the heads of these men?"

2 Samuel 3:8: "Then was Abner very wroth for the words of Ishbosheth, and said, Am I a dog's head, which against Judah do shew kindness this day unto the house of Saul thy father, to his brethren, and to his friends, and have not delivered thee into the hand of David, that thou chargest me to day with a fault concerning this woman?"

2 Samuel 13:21: "But when king David heard of all these things, he was very wroth."

2 Samuel 22:8: "Then the earth shook and trembled; the foundations of heaven moved and shook, because he was wroth."

2 Kings 5:11: "But Naaman was wroth, and went away, and said, Behold, I thought, He will surely come out to me, and stand, and call on the name of the LORD his God, and strike his hand over the place, and recover the leper."

2 Kings 13:19: "And the man of God was wroth with him, and said, Thou shouldest have smitten five or six times; then hadst thou smitten Syria till thou hadst consumed it: whereas now thou shalt smite Syria but thrice."

2 Chronicles 16:10: "Then Asa was wroth with the seer, and put him in a prison house; for he was in a rage with him because of this thing. And Asa oppressed some of the people the same time."

2 Chronicles 26:19: "Then Uzziah was wroth, and had a censer in his hand to burn incense: and while he was wroth with the priests, the leprosy even rose up in his forehead before the priests in the house of the LORD, from beside the incense altar."

2 Chronicles 28:9: "But a prophet of the LORD was there, whose name was Oded: and he went out before the host that came to Samaria, and said unto them, Behold, because the LORD God of your

fathers was wroth with Judah, he hath delivered them into your hand, and ye have slain them in a rage that reacheth up unto heaven."

Nehemiah 4:1: "But it came to pass, that when Sanballat heard that we builded the wall, he was wroth, and took great indignation, and mocked the Jews."

Nehemiah 4:7: "But it came to pass, that when Sanballat, and Tobiah, and the Arabians, and the Ammonites, and the Ashdodites, heard that the walls of Jerusalem were made up, and that the breaches began to be stopped, then they were very wroth,"

Esther 1:12: "But the queen Vashti refused to come at the king's commandment by his chamberlains: therefore was the king very wroth, and his anger burned in him."

Esther 2:21: "In those days, while Mordecai sat in the king's gate, two of the king's chamberlains, Bigthan and Teresh, of those which kept the door, were wroth, and sought to lay hands on the king Ahasuerus."

Psalms 18:7: "Then the earth shook and trembled; the foundations also of the hills moved and were shaken, because he was wroth."

Psalms 78:21: "Therefore the LORD heard this, and was wroth: so a fire was kindled against Jacob, and anger also came up against Israel;"

Psalms 78:59: "When God heard this, he was wroth, and greatly abhorred Israel:"

Psalms 78:62: "He gave his people over also unto the sword; and was wroth with his inheritance."

Psalms 89:38: "But thou hast cast off and abhorred, thou hast been wroth with thine anointed."

Isaiah 28:21: "For the LORD shall rise up as in mount Perazim, he shall be wroth as in the valley of Gibeon, that he may do his work, his strange work; and bring to pass his act, his strange act."

Isaiah 47:6: "I was wroth with my people, I have polluted mine inheritance, and given them into thine hand: thou didst shew them no mercy; upon the ancient hast thou very heavily laid thy yoke."

Isaiah 54:9: "For this is as the waters of Noah unto me: for as I have sworn that the waters of Noah should no more go over the earth; so have I sworn that I would not be wroth with thee, nor rebuke thee."

Isaiah 57:16: "For I will not contend for ever, neither will I be always wroth: for the spirit should fail before me, and the souls which I have made."

Isaiah 57:17: "For the iniquity of his covetousness was I wroth, and smote him: I hid me, and was wroth, and he went on frowardly in the way of his heart."

Isaiah 64:5: "Thou meetest him that rejoiceth and worketh righteousness, those that remember thee in thy ways: behold, thou art wroth; for we have sinned: in those is continuance, and we shall be saved."

Isaiah 64:9: "Be not wroth very sore, O LORD, neither remember iniquity for ever: behold, see, we beseech thee, we are all thy people."

Jeremiah 37:15: "Wherefore the princes were wroth with Jeremiah, and smote him, and put him in prison in the house of Jonathan the scribe: for they had made that the prison."

Lamentations 5:22: "But thou hast utterly rejected us; thou art very wroth against us."

Matthew 2:16: "Then Herod, when he saw that he was mocked of the wise men, was exceeding wroth, and sent forth, and slew all the children that were in Bethlehem, and in all the coasts thereof, from two years old and under, according to the time which he had diligently enquired of the wise men."

Matthew 18:34: "And his lord was wroth, and delivered him to the tormentors, till he should pay all that was due unto him."

Matthew 22:7: "But when the king heard thereof, he was wroth: and he sent forth his armies, and destroyed those murderers, and burned up their city."

Revelation 12:17: "And the dragon was wroth with the woman, and went to make war with the remnant of her seed, which keep the commandments of God, and have the testimony of Jesus Christ."

## WROUGHT

Occurrences: 98

Genesis 34:7: "And the sons of Jacob came out of the field when they heard it: and the men were grieved, and they were very wroth, because he had wrought folly in Israel in lying with Jacob's daughter: which thing ought not to be done."

Exodus 10:2: "And that thou mayest tell in the ears of thy son, and of thy son's son, what things I have wrought in Egypt, and my signs which I have done among them; that ye may know how that I am the LORD."

Exodus 26:36: "And thou shalt make an hanging for the door of the tent, of blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen, wrought with needlework."

Exodus 27:16: "And for the gate of the court shall be an hanging of twenty cubits, of blue, and purple, and scarlet, and fine twined linen, wrought with needlework: and their pillars shall be four, and their sockets four."

Exodus 36:1: "Then wrought Bezaleel and Aholiab, and every wise hearted man, in whom the LORD put wisdom and understanding to know how to work all manner of work for the service of the sanctuary, according to all that the LORD had commanded."

Exodus 36:4: "And all the wise men, that wrought all the work of the sanctuary, came every man from his work which they made;"

Exodus 36:8: "And every wise hearted man among them that wrought the work of the tabernacle made ten curtains of fine twined linen, and blue, and purple, and scarlet: with cherubims of cunning work made he them."

Exodus 39:6: "And they wrought onyx stones inclosed in ouches of gold, graven, as signets are graven, with the names of the children of Israel."

Leviticus 20:12: "And if a man lie with his daughter in law, both of them shall surely be put to death: they have wrought confusion; their blood shall be upon them."

Numbers 23:23: "Surely there is no enchantment against Jacob, neither is there any divination against Israel: according to this time it shall be said of Jacob and of Israel, What hath God wrought!"

Numbers 31:51: "And Moses and Eleazar the priest took the gold of them, even all wrought jewels."

Deuteronomy 13:14: "Then shalt thou enquire, and make search, and ask diligently; and, behold, if it be truth, and the thing certain, that such abomination is wrought among you;"

Deuteronomy 17:2: "If there be found among you, within any of thy gates which the LORD thy God giveth thee, man or woman, that hath wrought wickedness in the sight of the LORD thy God, in transgressing his covenant,"

Deuteronomy 17:4: "And it be told thee, and thou hast heard of it, and enquired diligently, and, behold, it be true, and the thing certain, that such abomination is wrought in Israel:"

Deuteronomy 21:3: "And it shall be, that the city which is next unto the slain man, even the elders of that city shall take an heifer, which hath not been wrought with, and which hath not drawn in the yoke;"

Deuteronomy 22:21: "Then they shall bring out the damsel to the door of her father's house, and the men of her city shall stone her with stones that she die: because she hath wrought folly in Israel, to play the whore in her father's house: so shalt thou put evil away from among you."

Deuteronomy 31:18: "And I will surely hide my face in that day for all the evils which they shall have wrought, in that they are turned unto other gods."

Joshua 7:15: "And it shall be, that he that is taken with the accursed thing shall be burnt with fire, he and all that he hath: because he hath transgressed the covenant of the LORD, and because he hath wrought folly in Israel."

Judges 20:10: "And we will take ten men of an hundred throughout all the tribes of Israel, and an hundred of a thousand, and a thousand out of ten thousand, to fetch victual for the people, that they

may do, when they come to Gibeah of Benjamin, according to all the folly that they have wrought in Israel."

Ruth 2:19: "And her mother in law said unto her, Where hast thou gleaned to day? and where wroughtest thou? blessed be he that did take knowledge of thee. And she shewed her mother in law with whom she had wrought, and said, The man's name with whom I wrought to day is Boaz."

1 Samuel 6:6: "Wherefore then do ye harden your hearts, as the Egyptians and Pharaoh hardened their hearts? when he had wrought wonderfully among them, did they not let the people go, and they departed?"

1 Samuel 11:13: "And Saul said, There shall not a man be put to death this day: for to day the LORD hath wrought salvation in Israel."

1 Samuel 14:45: "And the people said unto Saul, Shall Jonathan die, who hath wrought this great salvation in Israel? God forbid: as the LORD liveth, there shall not one hair of his head fall to the ground; for he hath wrought with God this day. So the people rescued Jonathan, that he died not."

1 Samuel 19:5: "For he did put his life in his hand, and slew the Philistine, and the LORD wrought a great salvation for all Israel: thou sawest it, and didst rejoice: wherefore then wilt thou sin against innocent blood, to slay David without a cause?"

2 Samuel 18:13: "Otherwise I should have wrought falsehood against mine own life: for there is no matter hid from the king, and thou thyself wouldest have set thyself against me."

2 Samuel 23:10: "He arose, and smote the Philistines until his hand was weary, and his hand clave unto the sword: and the LORD wrought a great victory that day; and the people returned after him only to spoil."

2 Samuel 23:12: "But he stood in the midst of the ground, and defended it, and slew the Philistines: and the LORD wrought a great victory."

1 Kings 5:16: "Beside the chief of Solomon's officers which were over the work, three thousand and three hundred, which ruled over the people that wrought in the work."

1 Kings 7:14: "He was a widow's son of the tribe of Naphtali, and his father was a man of Tyre, a worker in brass: and he was filled with wisdom, and understanding, and cunning to work all works in brass. And he came to king Solomon, and wrought all his work."

1 Kings 7:26: "And it was an hand breadth thick, and the brim thereof was wrought like the brim of a cup, with flowers of lilies: it contained two thousand baths."

1 Kings 9:23: "These were the chief of the officers that were over Solomon's work, five hundred and fifty, which bare rule over the people that wrought in the work."

1 Kings 16:20: "Now the rest of the acts of Zimri, and his treason that he wrought, are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?"

1 Kings 16:25: "But Omri wrought evil in the eyes of the LORD, and did worse than all that were before him."

2 Kings 3:2: "And he wrought evil in the sight of the LORD; but not like his father, and like his mother: for he put away the image of Baal that his father had made."

2 Kings 12:11: "And they gave the money, being told, into the hands of them that did the work, that had the oversight of the house of the LORD: and they laid it out to the carpenters and builders, that wrought upon the house of the LORD,"

2 Kings 17:11: "And there they burnt incense in all the high places, as did the heathen whom the LORD carried away before them; and wrought wicked things to provoke the LORD to anger:"

2 Kings 21:6: "And he made his son pass through the fire, and observed times, and used enchantments, and dealt with familiar spirits and wizards: he wrought much wickedness in the sight of the LORD, to provoke him to anger."

1 Chronicles 4:21: "The sons of Shelah the son of Judah were, Er the father of Lecah, and Laadah the father of Mareshah, and the families of the house of them that wrought fine linen, of the house of Ashbea,"

1 Chronicles 22:2: "And David commanded to gather together the strangers that were in the land of

Israel; and he set masons to hew wrought stones to build the house of God."

2 Chronicles 3:14: "And he made the vail of blue, and purple, and crimson, and fine linen, and wrought cherubims thereon."

2 Chronicles 21:6: "And he walked in the way of the kings of Israel, like as did the house of Ahab: for he had the daughter of Ahab to wife: and he wrought that which was evil in the eyes of the LORD."

2 Chronicles 24:12: "And the king and Jehoiada gave it to such as did the work of the service of the house of the LORD, and hired masons and carpenters to repair the house of the LORD, and also such as wrought iron and brass to mend the house of the LORD."

2 Chronicles 24:13: "So the workmen wrought, and the work was perfected by them, and they set the house of God in his state, and strengthened it."

2 Chronicles 31:20: "And thus did Hezekiah throughout all Judah, and wrought that which was good and right and truth before the LORD his God."

2 Chronicles 33:6: "And he caused his children to pass through the fire in the valley of the son of Hinnom: also he observed times, and used enchantments, and used witchcraft, and dealt with a familiar spirit, and with wizards: he wrought much evil in the sight of the LORD, to provoke him to anger."

2 Chronicles 34:10: "And they put it in the hand of the workmen that had the oversight of the house of the LORD, and they gave it to the workmen that wrought in the house of the LORD, to repair and amend the house:"

2 Chronicles 34:13: "Also they were over the bearers of burdens, and were overseers of all that wrought the work in any manner of service: and of the Levites there were scribes, and officers, and porters."

Nehemiah 4:16: "And it came to pass from that time forth, that the half of my servants wrought in the work, and the other half of them held both the spears, the shields, and the bows, and the habergeons; and the rulers were behind all the house of Judah."

Nehemiah 4:17: "They which builded on the wall, and they that bare burdens, with those that laded, every one with one of his hands wrought in the work, and with the other hand held a weapon."

Nehemiah 6:16: "And it came to pass, that when all our enemies heard thereof, and all the heathen that were about us saw these things, they were much cast down in their own eyes: for they perceived that this work was wrought of our God."

Nehemiah 9:18: "Yea, when they had made them a molten calf, and said, This is thy God that brought thee up out of Egypt, and had wrought great provocations;"

Nehemiah 9:26: "Nevertheless they were disobedient, and rebelled against thee, and cast thy law behind their backs, and slew thy prophets which testified against them to turn them to thee, and they wrought great provocations."

Job 12:9: "Who knoweth not in all these that the hand of the LORD hath wrought this?"

Job 36:23: "Who hath enjoined him his way? or who can say, Thou hast wrought iniquity?"

Psalms 31:19: "Oh how great is thy goodness, which thou hast laid up for them that fear thee; which thou hast wrought for them that trust in thee before the sons of men!"

Psalms 45:13: "The king's daughter is all glorious within: her clothing is of wrought gold."

Psalms 68:28: "Thy God hath commanded thy strength: strengthen, O God, that which thou hast wrought for us."

Psalms 78:43: "How he had wrought his signs in Egypt, and his wonders in the field of Zoan."

Psalms 139:15: "My substance was not hid from thee, when I was made in secret, and curiously wrought in the lowest parts of the earth."

Ecclesiastes 2:11: "Then I looked on all the works that my hands had wrought, and on the labour that I had laboured to do: and, behold, all was vanity and vexation of spirit, and there was no profit under the sun."

Ecclesiastes 2:17: "Therefore I hated life; because the work that is wrought under the sun is



grievous unto me: for all is vanity and vexation of spirit."

Isaiah 26:12: "LORD, thou wilt ordain peace for us: for thou also hast wrought all our works in us."

Isaiah 26:18: "We have been with child, we have been in pain, we have as it were brought forth wind; we have not wrought any deliverance in the earth; neither have the inhabitants of the world fallen."

Isaiah 41:4: "Who hath wrought and done it, calling the generations from the beginning? I the LORD, the first, and with the last; I am he."

Jeremiah 11:15: "What hath my beloved to do in mine house, seeing she hath wrought lewdness with many, and the holy flesh is passed from thee? when thou doest evil, then thou rejoicest."

Jeremiah 18:3: "Then I went down to the potter's house, and, behold, he wrought a work on the wheels."

Ezekiel 20:9: "But I wrought for my name's sake, that it should not be polluted before the heathen, among whom they were, in whose sight I made myself known unto them, in bringing them forth out of the land of Egypt."

Ezekiel 20:14: "But I wrought for my name's sake, that it should not be polluted before the heathen, in whose sight I brought them out."

Ezekiel 20:22: "Nevertheless I withdrew mine hand, and wrought for my name's sake, that it should not be polluted in the sight of the heathen, in whose sight I brought them forth."

Ezekiel 20:44: "And ye shall know that I am the LORD when I have wrought with you for my name's sake, not according to your wicked ways, nor according to your corrupt doings, O ye house of Israel, saith the Lord GOD."

Ezekiel 29:20: "I have given him the land of Egypt for his labour wherewith he served against it, because they wrought for me, saith the Lord GOD."

Daniel 4:2: "I thought it good to shew the signs and wonders that the high God hath wrought toward me."

Jonah 1:11: "Then said they unto him, What shall we do unto thee, that the sea may be calm unto us? for the sea wrought, and was tempestuous."

Jonah 1:13: "Nevertheless the men rowed hard to bring it to the land; but they could not: for the sea wrought, and was tempestuous against them."

Zephaniah 2:3: "Seek ye the LORD, all ye meek of the earth, which have wrought his judgment; seek righteousness, seek meekness: it may be ye shall be hid in the day of the LORD's anger."

Matthew 20:12: "Saying, These last have wrought but one hour, and thou hast made them equal unto us, which have borne the burden and heat of the day."

Matthew 26:10: "When Jesus understood it, he said unto them, Why trouble ye the woman? for she hath wrought a good work upon me."

Mark 6:2: "And when the sabbath day was come, he began to teach in the synagogue: and many hearing him were astonished, saying, From whence hath this man these things? and what wisdom is this which is given unto him, that even such mighty works are wrought by his hands?"

Mark 14:6: "And Jesus said, Let her alone; why trouble ye her? she hath wrought a good work on me."

John 3:21: "But he that doeth truth cometh to the light, that his deeds may be made manifest, that they are wrought in God."

Acts 5:12: "And by the hands of the apostles were many signs and wonders wrought among the people; (and they were all with one accord in Solomon's porch.)"

Acts 15:12: "Then all the multitude kept silence, and gave audience to Barnabas and Paul, declaring what miracles and wonders God had wrought among the Gentiles by them."

Acts 18:3: "And because he was of the same craft, he abode with them, and wrought: for by their occupation they were tentmakers."

Acts 19:11: "And God wrought special miracles by the hands of Paul:"

Acts 21:19: "And when he had saluted them, he declared particularly what things God had wrought

among the Gentiles by his ministry."

Romans 7:8: "But sin, taking occasion by the commandment, wrought in me all manner of concupiscence. For without the law sin was dead."

Romans 15:18: "For I will not dare to speak of any of those things which Christ hath not wrought by me, to make the Gentiles obedient, by word and deed,"

2 Corinthians 5:5: "Now he that hath wrought us for the selfsame thing is God, who also hath given unto us the earnest of the Spirit."

2 Corinthians 7:11: "For behold this selfsame thing, that ye sorrowed after a godly sort, what carefulness it wrought in you, yea, what clearing of yourselves, yea, what indignation, yea, what fear, yea, what vehement desire, yea, what zeal, yea, what revenge! In all things ye have approved yourselves to be clear in this matter."

2 Corinthians 12:12: "Truly the signs of an apostle were wrought among you in all patience, in signs, and wonders, and mighty deeds."

Galatians 2:8: "(For he that wrought effectually in Peter to the apostleship of the circumcision, the same was mighty in me toward the Gentiles:)"

Ephesians 1:20: "Which he wrought in Christ, when he raised him from the dead, and set him at his own right hand in the heavenly places,"

2 Thessalonians 3:8: "Neither did we eat any man's bread for nought; but wrought with labour and travail night and day, that we might not be chargeable to any of you:"

Hebrews 11:33: "Who through faith subdued kingdoms, wrought righteousness, obtained promises, stopped the mouths of lions."

James 2:22: "Seest thou how faith wrought with his works, and by works was faith made perfect?"

1 Peter 4:3: "For the time past of our life may suffice us to have wrought the will of the Gentiles, when we walked in lasciviousness, lusts, excess of wine, revellings, banquetings, and abominable idolatries:"

2 John 1:8: "Look to yourselves, that we lose not those things which we have wrought, but that we receive a full reward."

Revelation 19:20: "And the beast was taken, and with him the false prophet that wrought miracles before him, with which he deceived them that had received the mark of the beast, and them that worshipped his image. These both were cast alive into a lake of fire burning with brimstone."

## **WROUGHTEST**

Occurrences: 1

Ruth 2:19: "And her mother in law said unto her, Where hast thou gleaned to day? and where wroughtest thou? blessed be he that did take knowledge of thee. And she shewed her mother in law with whom she had wrought, and said, The man's name with whom I wrought to day is Boaz."

## **WRUNG**

Occurrences: 4

Leviticus 1:15: "And the priest shall bring it unto the altar, and wring off his head, and burn it on the altar; and the blood thereof shall be wrung out at the side of the altar:"

Leviticus 5:9: "And he shall sprinkle of the blood of the sin offering upon the side of the altar; and the rest of the blood shall be wrung out at the bottom of the altar: it is a sin offering."

Psalms 73:10: "Therefore his people return hither: and waters of a full cup are wrung out to them."

Isaiah 51:17: "Awake, awake, stand up, O Jerusalem, which hast drunk at the hand of the LORD the cup of his fury; thou hast drunken the dregs of the cup of trembling, and wrung them out."